Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112824

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Acc. No
RT-0643

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी १९४६

वार्षिक मूल्य ६॥)
एक प्रति ॥-)

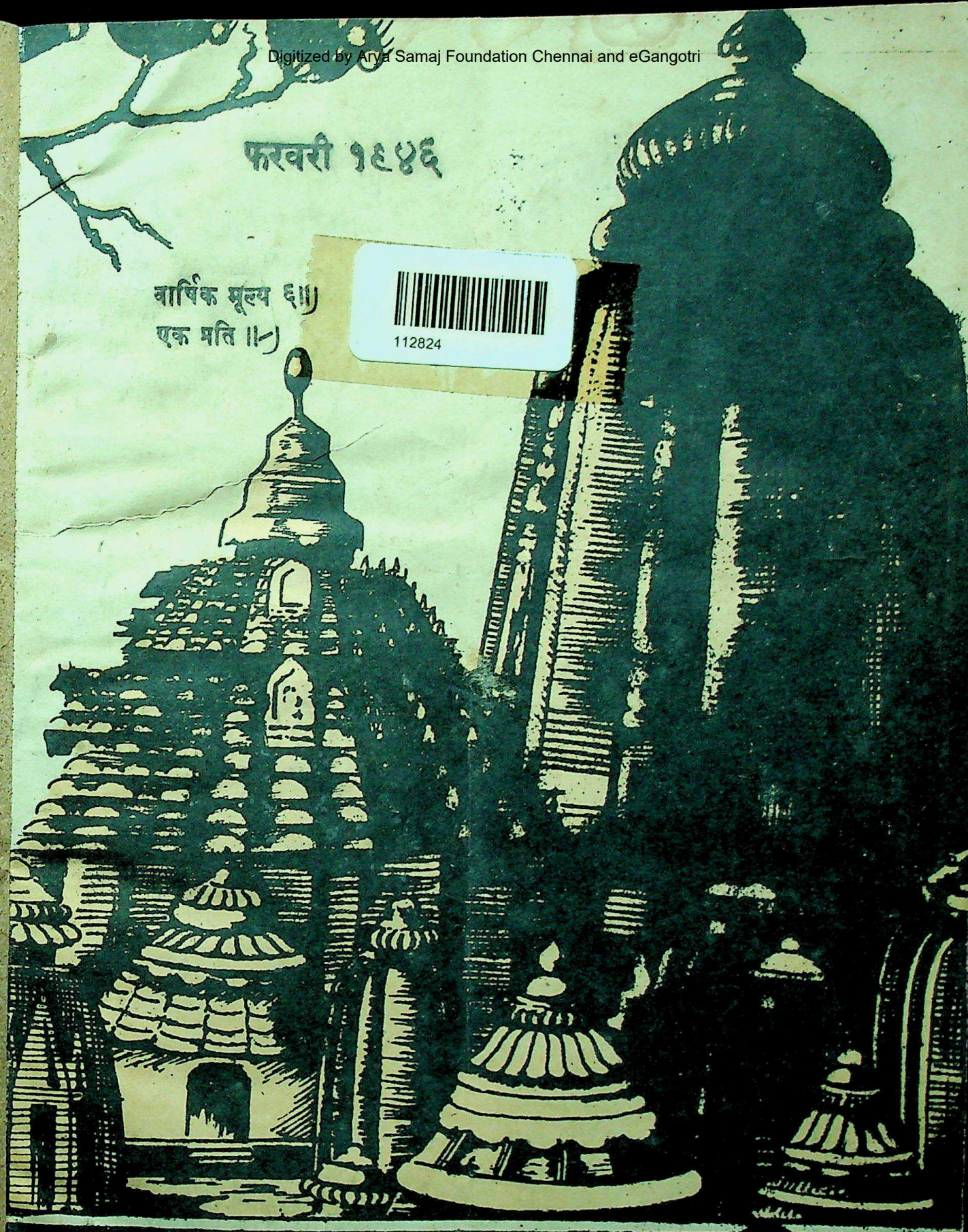

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक
बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।
बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।
बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूँद कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,
२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
H2924

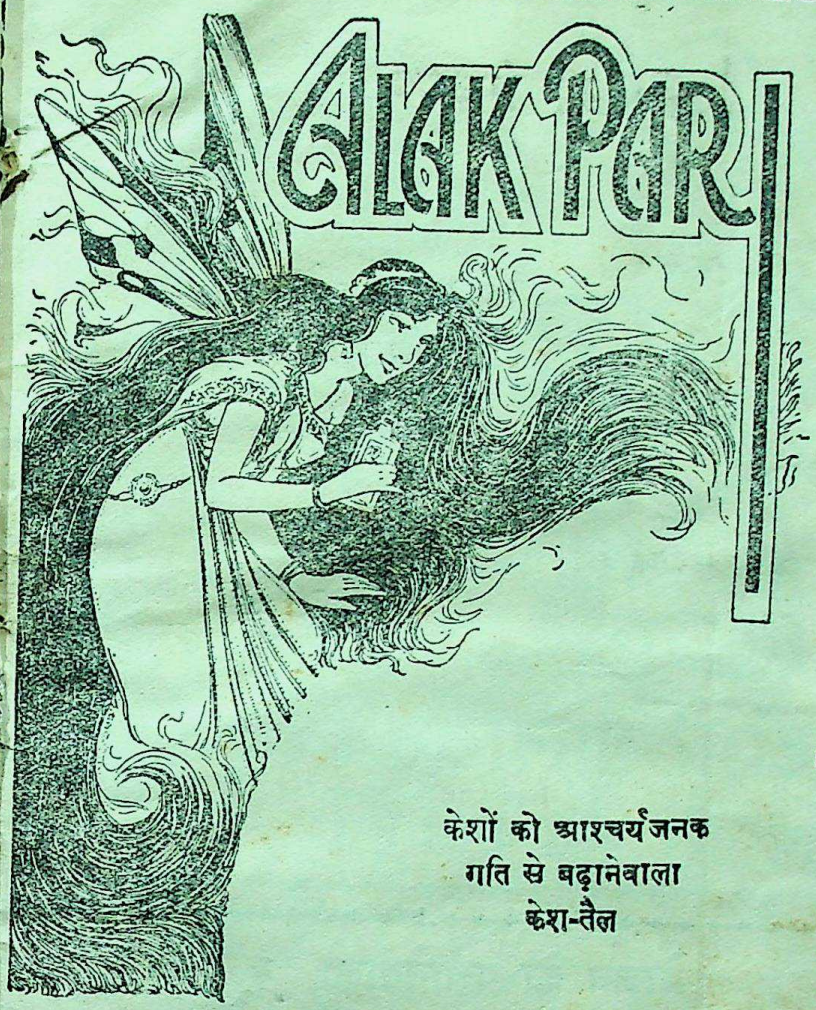

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोग़न पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफ़ी होती है। डाक-ख़र्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

'अलकपरी' से बहुत लाभ है। १ शीशी और तुरन्त भेजिए।
१५-७-४५ कृष्णाकुमारी, धर्मशाला (पंजाब)।

Alak Pari is proving of much use to me. Please send me three more bottles.
4-8-45 Mrs. S. Mandal, 45, The Mall, Lahore.

'अलकपरी' में केशों को बढ़ाने के लिए विद्युत् की शक्ति वर्त्तमान है। मैंने इसे केशों के लिए आश्चर्यजनक गुणकारी पाया है। कृपया ३ शीशियाँ तुरंत भेजें।
७-८-४५ सत्यवती देवी, पासना, जौनपुर।

'अलकपरी' की ५ शीशियाँ इस्तेमाल कीं। बहुत लाभकारी तेल है। कृपया ३ बोतलें शीघ्र भेजें।
३०-८-४५ शान्तिकुमारी, कोटखाई, शिमला

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा, इलाहाबाद।

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार।
मेरठ—त्यागी ब्रदर्स, बेली बाज़ार।
बरेली—यूनाइटिड कमर्शियल सिंडीकेट, भूर।
राजनंदगाँव-रामनारायण हरीदास सोनी।
आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ़्यूमर्स, काश्मीरी बाज़ार।
लखनऊ—सालिग्राम मेहरोत्रा, ६, अमीनाबाद पार्क।
जबलपुर—बाबूलाल राजाराम चौरसिया, गोविंदगंज।
जोधपुर—मेडिकल स्टोर्स, सराफ़ा बाज़ार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर और कृष बच्चे डॉगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, ख़ून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झंडु रक्तो फॉस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ़ एजेन्ट—एल० एम० घोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चाँदनी चौक, देहली।

यू० पी० एजेंट—कान्तिलाल आर० पारीख, चांदनी चौक, दिल्ली।

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी भारत

भावी भारतकी आवश्यक होगी संतान—शरीरसे हृष्ट पुष्ट एवं मस्तिष्कसे तेज। देश के लिये ऐसी संतानोत्पत्ति के लिये होनेवाली माताओंकी स्वस्थताकी नवीन कोटिका प्राप्त होना है। स्वस्थ मातृत्व तथा अशोका परस्पर सम्बन्धित है, क्योंकि स्त्रियोंके विशेष रोगों से संघर्षमें माताओंका अशोका सच्चा मित्र सिद्ध होगा।

मातृजातिकी सेवामें

सी॰ के॰ सेन की

अशोका

सी० के० सेन एण्ड कं० लि०

जवाकुसुम हाउस कलकत्ता

AA-2-H
...ction, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AC 1

निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक ख़रीदिये

गवर्नर रिज़र्व बैंक कहते हैं,

सर चिन्तामन देशमुख
सी.आई.ई. गवर्नर, रिज़र्व बैंक आफ़ इण्डिया।

"थोड़ी आय वाला व्यक्ति जो भविष्य के लिये कुछ बचाना चाहता है उसके लिये गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स के अतिरिक्त और कोई उत्तम तथा सुरक्षित मद रुपया लगाने की नहीं है। वास्तव में ये सर्टिफ़िकेट्स इतने उपयोगी हैं कि एक व्यक्ति को ५,०००) से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स नहीं बेचे जाते। मेरी तो सम्मति यही है कि इस निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।"

C. D. Deshmukh

संक्षिप्त विवरण

(१) आप५), १०), २५), १००), ५००), १०००) या५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफ़िकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता है।

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं लगता।

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा सकते हैं। (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष पश्चात ही भुनाया जा सकता है) परन्तु वास्तविक लाभ इसी में हैं कि १२ वर्ष से पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ॥), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सकते हैं। ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जायेगा।

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकखानों, सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अथवा सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं।

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठाइए

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी ख़ूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया।

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहिले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका र्य परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र अचूक षधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ ंचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और कित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज षित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे न से पढ़ो तथा अपने इष्ट मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द नायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण ान और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। ले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख़्तियार कर ली, अब मैं ड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया, बड़े-बड़े डाक्टरों, मों, वैद्यों के फ़ीस रूप में रुपये और क़ीमती दवाइयों के ख़रीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा, फिर भी मैं निराश ही रहा मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है। **पर यह बीस साल पहले की बात है।** अब आज मैं ख़ुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की! दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। ने मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन या। मेरी कमज़ोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों न्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ़्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक ात्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हज़ारों को मौत के मुँह से ला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्ख़ा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्य-केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल में कर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके ताज़ी ब्राह्मी बूटी के अर्क़ में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि ड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ साहूकारों तथा रईसों, ज़मींदारों, सरकारी आफ़िसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज ानादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज़ नहीं पड़ती और गुणकारी चीज़ें नुस्ख़े से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाख़ाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमज़ोरी, नामर्दी, ीज़, मधुमेह, सूज़ाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताक़त की कमी, स्मरण-शक्ति कमज़ोर पड़ जाना तथा के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताक़त देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की ा की है। ४० दिन के लिए पूरी ख़ुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों ३=) डाकख़र्च ॥।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फटरवे जाने के नुकसान को रोकये
...इस तरह धोइये

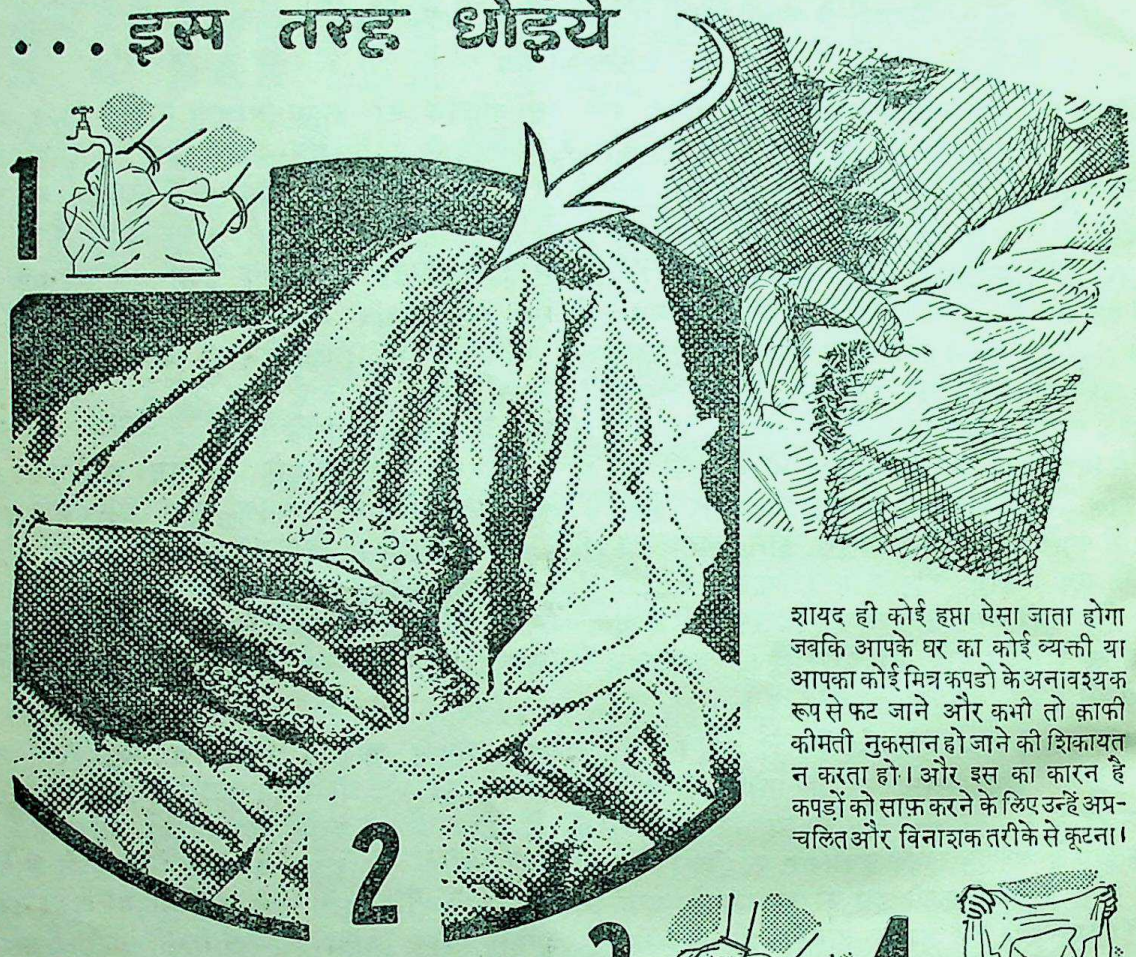

शायद ही कोई हफ़्ता ऐसा जाता होगा जबकि आपके घर का कोई व्यक्ती या आपका कोई मित्र कपडो के अनावश्यक रूप से फट जाने और कभी तो क़ाफी कीमती नुकसान हो जाने की शिकायत न करता हो। और इस का कारन है कपड़ों को साफ़ करने के लिए उन्हें अप्रचलित और विनाशक तरीके से कूटना।

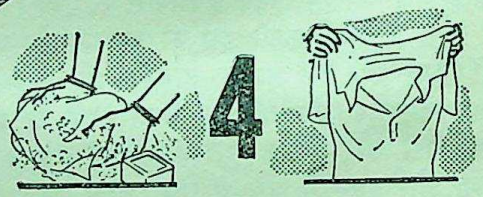

हाँ यदि आपने इस तरीके पर अमल किया जो निम्नाकित चित्रों द्वारा समझाया गया है, और निमिन लीखित हिदायतों काभी भी ठीक-ठीक पालन किया तो आप निस्सन्देह अपने कपड़ों पर बिना कोई क्षति पहुँचाये साफ़-सुथरा रख सकेंगे

(१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तलाव में कर सकते हैं—इससे कोई फर्क़ नहीं पड़ता।

(२) जब कपड़ें को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़ें में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट जरा ज्यादा मलें।

(३) साबुन लगे हुइ कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपडे के हरेक तन्तु में प्रवेश पाजाए। कपडें को जोर से रगड़ने की या बुरी तरह कूटने की आवश्यकता ही नहीं है। सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है। इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को छूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेनके साथ सब मैल निकल जायेगा।

(४) फेन-जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है-छुटाने के लिए कपडे को खूब मलकर धो डालिए।

ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपडे बहुत समय तक चलते है।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 75 - 23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना मूल्य की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। महाराज को एक दिन उस वृद्ध की कमज़ोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के भ्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन ब्याह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन इन योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर सुर हाजी हयात मोहम्मदख़ाँ साहब ने बाबा जी की बहुत करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य कर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हज़ार का नक़द इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल -चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं वा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फ़ौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल ला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी कर, मिट्टी के कुज्जे में मज़बूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों ६। दुबारा एक तोला हरताल वर्की शुद्ध १॥ माशा शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला ॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला ॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उतारो में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और पीसे पश्चात् जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मक्खन, मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री-मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से एक हफ़्ते में एक आदमी का वज़न चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख़ हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरला ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर ने लिखा है—"अपूर्व कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल जैन आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नज़र आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायबटीज़, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की ख़राबी, खाँसी, नजला, ज़ुकाम, बदन दुखना, ख़ून का पतलापन, आँखों का पीलापन, चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमज़ोरी दुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-ख़र्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। डाक-ख़र्च माफ़, पैकिंग, मनीआर्डर-फ़ीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

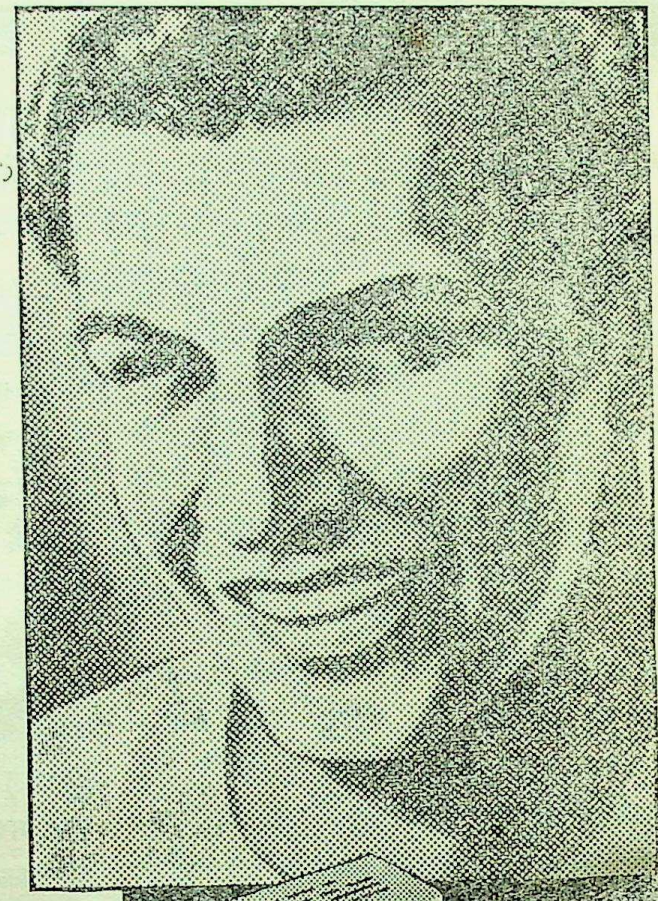

भाइयो!...

चर्म-स्वास्थ्य के लिये रैक्सॉना प्रयोग कीजिये

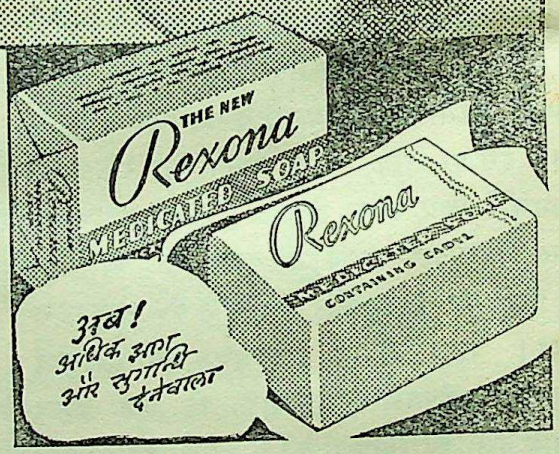

जल्दी में यह धारण मत न बनाइये कि रैक्सॉना केवल स्त्रियो के रंग को निखारने वाला एक नया साबुन है। चर्म स्वास्थ्य का महत्त्व जाननेवालों सब के लिए रैक्सॉना एक ज़रूरी टॉयलेट साबुन है। यह ऐसा ताज़गी और स्फूर्तिदायक साबुन है जिसे इस्तेमाल कर के पुरुषों को आनंन्द आता है। इस आकर्षक, हरे, और शीघ्र फेन देनेवाले साबुनका ये सबसे बड़ा लाभ है कि यह स्वास्थदायक और चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' से बनाया गया है। रैक्सॉना का शीघ्र बननेवाला ज्यादा फेन स्फूर्ति और स्वास्थदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रुओं में—जहाँसे सब चर्मरोग और दाग प्राय: शुरू होते हैं—पहुँचा देता है ऐसे आपकी सारी त्वचा किटाणुरहित, मुलायम, और साफ़ हो जाती है। अब आप जान सकते हैं कि नियमित रूप से रैक्सॉना का प्रयोग करने से आप निश्चित ही अपने चर्म को स्वास्थ और सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए इस हरे, और शीघ्र फेन देनें वाले साबुन को इस्तेमाल करना शुरूकर दीजिए—और करते रहिए।

नोट—यह याद रखिए कि शारीरिक सौन्दर्य का एक मात्र आधार है चर्म-स्वास्थ। और एक पुरुष कोभी चर्म को आकर्षक बनाने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक स्त्री को।

रैक्सॉना बच्चे के लिए आदर्श साबुन है। रैक्सॉना का कैडील शरीर के दर्दो. को मिटता है और शरीर को सुखे पनसे बचाता है।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ-दायक और ताजगी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।

फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ यह तिकोने टिन मिल सकते हैं।

RP. 28-23-40 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—नाथ-सम्प्रदाय—श्री पूर्ण गिर गोस्वामी, बी० ए० ९७
२—तुम्हारा रूप—श्री दुर्गाशङ्करप्रसाद सिंह ... १०६
३—रुपए का भविष्य—श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार ११८
४—हे कालकूट पीनेवाले! (कविता)—प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए० ... ... १२१
५—निस्सीम सीमा—प्रोफेसर तारा डी० पोतदार, एम० ए० ... ... १२२
६—गीत (कविता)—श्री 'युगल' ... १२५
७—चन्द्रगुप्त मौर्य—एक अध्ययन—प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा, एम० ए०, एफ० आर० एस० (लन्दन) ... १२६
८—सन्तुमई—श्री धर्मवीर, एम० ए० ... १३१
९—केवल (कविता)—पण्डित नारायणलाल कटरियार १३४
१०—कविराज सदानन्द और उनका जैमुनि पुराण—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, बी० ए० ... १३५
११—संसार-चक्र—पण्डित दुर्गाशंकर व्यास, बी० ए० १४१
१२—कर्जन म्यूजियम में—रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, क्यूरेटर तथा सेक्रेटरी भरतपुर-राज्य-म्यूजियम १४३
१३—'वाकिंग क्लब'—श्री बनवारीलाल चौधरी ... १४९
१४—तार की कसरत—श्री अनन्त गोपाल शेवड़े, एम० ए० १५१
१५—विचार-विमर्श १५४
१६—विविध-विषय १६२
१७—अश्रु-हास १६८
१८—सामयिक साहित्य १७०
१९—सम्पादकीय नोट १७५

चित्र-सूची

१—नाथ-सम्प्रदाय सम्बन्धी ५ चित्र ९८,१०१-०२,१०५-०६
२—कर्जन म्यूजियम में सम्बन्धी ११ चित्र १४४-१४८
३—हिटलर १६४
४—प्रोफेसर ओलिवर लाकोम १६५

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के सार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस ग्रंथ में लेखक रामलालसिंह, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति-वर्णन, चरित्र-चित्रण, शैली, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद-विधान, रस-संचार, कामायनी का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम और त्याग आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे कागज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफ़ी
फ्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं

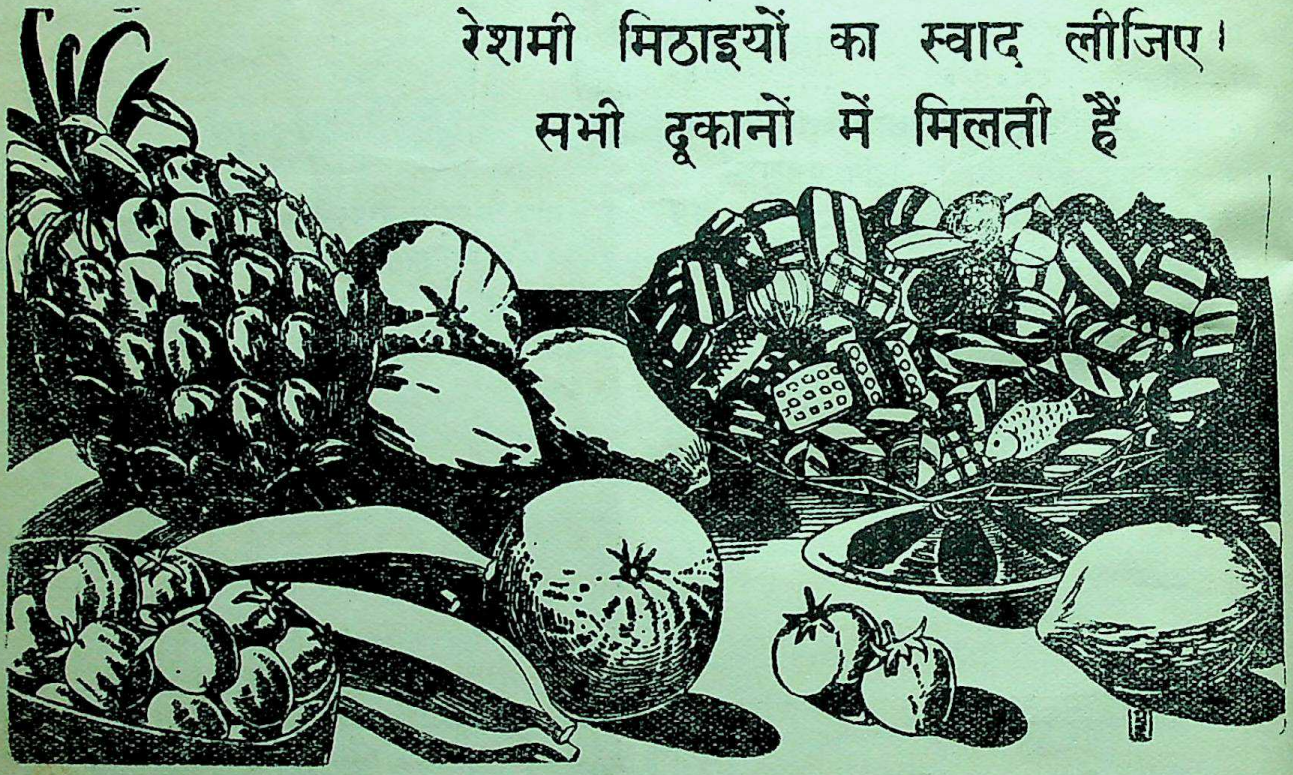

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

फरवरी १९४६ माघ २००२; भाग ४७, खण्ड १ संख्या २, पूर्ण संख्या ५५४

नाथ-सम्प्रदाय

श्री पूर्ण गिर गोस्वामी, बी० ए०

नाथों का इतिहास केवल धार्मिक पद्धतिविशेष की दृष्टि ही महत्त्वपूर्ण नहीं अपितु सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सन्त-साहित्य का, और में भी विशेषरूप से निर्गुण-काव्य का, अध्ययन तो नाथ-म्परा और सिद्धान्तों के समुचित मनन बिना अपूर्ण ही रहेगा। तो यह है कि नाथ-सम्प्रदाय ही निर्गुण-धारा की पूर्व-ठेका है। इतिहास को साक्षी बनाएँ, तो यह जानकर आश्चर्य ा कि योगियों का विकास-काल केवल सौ-सवा सौ वर्ष की धि में ही समाप्त नहीं होता। कम-से-कम चार शताब्दियों जीवन-काल तो मानना ही पड़ता है।* १००० विक्रमी १४०० विक्रमी संवत् तक इस सम्प्रदाय का बोल बाला । योगियों (नाथों) की अनेक परम्पराएँ और सिद्धान्त तो समय-क्रम से ह्रास को प्राप्त हुए किन्तु उनमें से कुछ का अस्तित्व निस्सन्देह बहुत समय तक रहा। योगियों की वह विचारणा जो उनके ह्रास के पश्चात् भी बच रही थी, बीज-रूप से निर्गुण-धारा में अनेक आकारों में पनप उठी। ऐसी स्थिति में यह कह देना अनुचित न होगा कि योग-मत और निर्गुणवाद की मौलिक पृष्ठभूमि एक ही थी।

हमारे सांस्कृतिक और साहित्यिक निर्माण में इतना महत्त्व-पूर्ण स्थान रखने पर भी योगियों के सम्बन्ध में हमारी अनु-सन्धित्सा अब तक उपेक्षित-सी ही रही है। फलस्वरूप किंवदन्तियाँ और पौराणिक कल्पनाएँ तथ्यों को अपने धुँधले इन्द्रजाल से ढकती चली जा रही हैं। इस विषय पर प्रकाश डालनेवाले यत्र-तत्र प्रकाशित हुए थोड़े से फुटकर लेख ही हैं।

---

* कहने का भाव यह नहीं कि इसके पूर्व योग या योगियों अभाव रहा है। किन्तु सम्प्रदाय-विशेष के रूप में इस का विशेष आविर्भाव संवत् १००० वि० से ही हुआ। योग-विद्या का अस्तित्व बहुत प्राचीन काल से माना जाता है। अन्य कलाओं के समान योग के जन्मदाता भी ान् शङ्कर ही माने जाते रहे हैं। 'विवेक-मार्तंड' में कहा है

योगशास्त्रं पठेन्नित्यं किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
यत् स्वयं चादिनाथस्य निर्गतं वदनाम्बुजात्॥

'योग-बीज' के अनुसार शिव पार्वती से कहते हैं—

बद्धा येन विमुच्यन्ते नाथमार्गमतः परम्।
तमहं कथयिष्यामि तव प्रीत्या सुरेश्वरि॥
नानामार्गास्त दृष्टाश्च केवलं [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि योग के सब ग्रन्थों में 'नाथ' और 'सिद्ध' शब्द का तात्पर्य एक ही माना जाता है किन्तु जब इन शब्दों का सम्बन्ध 'सम्प्रदाय' के साथ हो तो निश्चय ही दो भिन्न-भिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व होगा। चौरासी सिद्ध जिस सिद्धसम्प्रदाय के प्राण माने जाते थे वह नाथ-सम्प्रदाय से सर्वथा भिन्न रहा है। नाथों में नवनाथ ही प्रसिद्ध हैं जिनके नाम क्रमशः निम्न हैं—

गोरक्षनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणनाथ, गहिनीनाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भर्तृनाथ तथा गोपीचन्द्रनाथ।

चौरासी सिद्धों के नाम भी क्रमशः इस प्रकार हैं*—

१ लूहिपा, २ लीलापा, ३ विरूपा, ४ डोम्भिपा, ५ शबरीपा, ६ सरहपा, ७ कंकालीपा, ८ मीनपा, ९ गोरक्षपा, १० चोरङ्गिपा, ११ वीणापा, १२ शान्तिपा, १३ तन्तिपा, १४ चमरिपा, १५ खड्गपा, १६ नागार्जुन, १७ कराहपा, १८ कर्णरिपा, १९ थगनपा, २० नारोपा, २१ शलिपा, २२ तिलोपा, २३ छत्रपा, २४ भद्रपा, २५ दोखन्दिपा, २६ अजोगिपा, २७ कालपा, २८ धोम्भिपा २९ कङ्कणपा, ३० कमरिपा, ३१ डेङ्गिपा, ३२ भदेपा, ३३ तन्धेपा, ३४ कुकुरिपा, ३५ कुसूलिपा, ३६ धर्मपा, ३७ महीपा, ३८ अचिन्तिपा, ३९ भलहपा, ४० नलिनपा, ४१ भूसुकुपा, ४२ इन्द्रभूति, ४३ मेकोपा, ४४ कुठालिपा, ४५ कर्मारिपा, ४६ जालन्धरपा, ४७ राहुलपा, ४८ घर्बरिपा, ४९ धोकरिपा, ५० मेदिनीपा, ५१ पङ्कजपा, ५२ घंटापा, ५३ जोगीपा, ५४ चेलुकपा, ५५ गुण्डरिपा, ५६ लुचिकपा, ५७ निर्गुणपा, ५८ जयानन्त, ५९ चर्षटीपा, ६० चम्पकपा, ६१ भिखनपा, ६२ भलिपा, ६३ कुमरिपा, ६४ जवरिपा, ६५ मणिभद्रा, ६६ मेखला, ६७ कनखला, ६८ कलकलपा, ६९ कन्तलिपा, ७० धहुलिपा, ७१ उधलिपा, ७२ कपालपा, ७३ किलपा, ७४ सागरपा, ७५ सर्वभक्षपा, ७६ नागबोधिपा, ७७ दारिकपा, ७८ पुतुलिपा, ७९ पनहपा, ८० कोकालिपा, ८१ अनगपा, ८२ लक्ष्मीकरा, ८३ समुदपा और ८४ भलिपा।

वैसे तो गौतम बुद्ध के जीवन-काल में ही गान्धारी विद्या, आवर्तनी विद्या तथा इसी प्रकार के अन्य पूजा-प्रकारों का प्रचलन था, किन्तु बुद्ध ने इस प्रकार की अलौकिक विद्याओं का महत्त्व स्वीकार न किया। तथापि बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् जैसे-जैसे समय बीतता गया, उन पर पौराणिक कल्पनाएँ अधिकाधिक बनती गईं। उन कल्पनाओं में चमत्कारपूर्ण शक्तियों पर विश्वास प्रकट किया जाता था। समय-क्रम से उनके सिद्धान्तों पर भी पौराणिकता का आवरण चढ़ना आरम्भ हुआ और वैपुल्यवादियों के प्रभाव से बौद्ध ग्रन्थों के सूत्रों में कुछ विशिष्ट शक्तियाँ मानी जाने लगीं। सूत्रों से धरणियों का निर्माण होना आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे मन्त्रों का प्रचार बढ़ा। इस प्रकार विकसित वैपुल्यवाद ही मन्त्रयान और वज्रयान का मूल स्रोत माना जा सकता है। 'मञ्जुश्री-मूल-कल्प' ग्रन्थ से पता चलता है कि वास्तव में वैपुल्यवादियों ने ही मार्ग का भी श्रीगणेश कर दिया था। यद्यपि इस ग्र मन्त्र-तन्त्रों का वर्णन है तथापि यह उस विकासावस्था का द्यो नहीं है जिसके प्रवर्तक वज्रयानी लोग थे। मन्त्रयान विशेष प्रचार ४०० ई० से कहा जा सकता है। महाया वैपुल्यवाद का विकास दक्षिण भारत में विशेष रूप से कारण कि उस समय उत्तरी भारत में शैव राजाओं का प्र था। ये लोग बौद्धों से द्वेष करते थे। गुप्त राजाओं काल भी लगभग नवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में गुप्त लोग तो कट्टर वैदिक ही थे; अतः महायानियों की गलनी उत्तर में कठिन थी।

इधर दक्षिण के राजा (आन्ध्र शासक) बौद्ध मताव थे; अतः इनकी सहायता से नागार्जुन ने अपने तन्त्र-मन्त्र कार्य आरम्भ किया। श्री पर्वत पर मन्त्रविद्या का केन्द्र स्थ किया गया। संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में इस पर्वत स्पष्ट निर्देश मिलता है। आन्ध्रराजाओं की राजधानी पहले प्रतिष्ठानपुर (पैठण) में थी, इस समय धान्यकट थी। धान्यकटक और श्री पर्वत पास ही पास हैं।

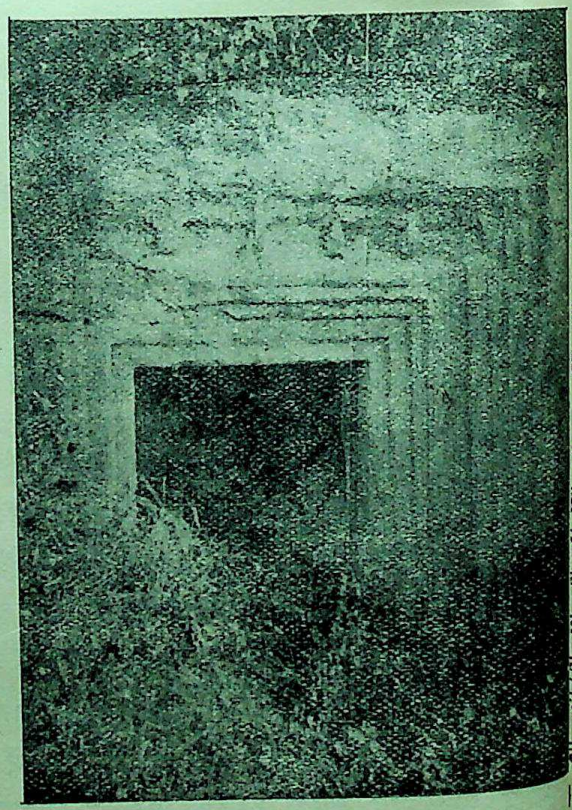

विक्रमशिला विश्वविद्यालय का एक दृश्य

* देखिए 'गङ्गा' के परातत्त्वाङ्क में 'मन्त्रयान, वज्रयान राजाओं ने धान्यकटक में एक बौद्ध-विश्वविद्यालय भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्ध नागार्जुन के नाम से प्रसिद्ध हैं। सातवीं शताब्दी से ज्र यान का उग्र रूप आरम्भ होता है।

ई० सन् ७१० के लगभग बिहार में पाल-वंश के राजाओं का त्व जमा। ये बौद्ध मतावलम्बी थे। इनके कारण वज्रयान विकास में बड़ी सुगमता हुई। इनकी राजधानी उदन्तपुरी । इन्होंने विक्रमशिला नाम का बौद्ध-विश्वविद्यालय ापित किया। अब क्या था, मन्त्रयान, तन्त्रयान एवं ज्रयान को एक सुदृढ़ आधार मिल गया। विक्रमशिला में स प्रकार सभी विद्याओं का प्रचार होने लगा। यही वह मय था जब कि वामतन्त्र और शक्तिमार्ग अपनी चढ़ती पर । सिद्धों का अभ्युत्थान और विकास इस समय विशेष रूप से हुआ।

सम्भवतः सबसे प्रथम सिद्ध सरह था जिसका समय श्री हुल सांकृत्यायन के अनुसार ७५० ई० के लगभग है। अन्तिम द्ध सम्भवतः कालपाद था। आठवीं शती से १२वीं शती क इन सिद्धों का समय माना जा सकता है। सिद्धों की परम्परा भले ही यहाँ पूरी समाप्त न हुई हो (ऐसा होना कठिन है) किन्तु मुख्य चौरासी सिद्धों की अवधि यहीं समाप्त हो ती है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिसके आधार पर का समय आगे बढ़ाया जा सके। तिब्बती जनश्रुतियाँ तो हैं पूर्व की ओर ही अधिक ले जाती हैं।

इन सिद्धों में सभी जातियों के लोग रहते थे। बहुत से जकुमार और अच्छे-अच्छे कुलों की कन्याएँ तक इस सम्प्र- य में सम्मिलित थीं। उदाहरण में—भूसुकुपा (नालन्दा का जकुमार), कमरिपा (उड़ीसा का राजकुमार), मेखलापा अगचेनगर के गृहपति की कन्या), लक्ष्मीकरा (सम्भलनगर राजकुमारी), आदि की गणना सिद्धों में की जाती है। ति-पाँति का कुछ भी विचार न होता था। ब्राह्मणों से लेकर तक दीक्षित हो सकते थे।

बौद्धधर्म के शून्यवाद के प्रतिक्रियास्वरूप हिन्दूधर्म का स्थूल काण्ड बड़े विकृतरूप में उपस्थित हुआ। वाममार्ग के सिद्धान्त समझने पर उस समय की स्थिति समझ में आ गी। अभी ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि वाम पन्थ कौलपन्थ का विकास किस प्रकार हुआ, किन्तु वज्रयान को द्धावस्था में इसकी साधना-पद्धति अतिघृणित रूप को प्राप्त चुकी थी। भैरव-भैरवियों के सम्मिलित उद्योग से कैवल्य सिद्धत्व की प्राप्ति अति सरल थी, आवश्यकता थी केवल साधना के नाम पर इन्द्रियों की अनियन्त्रित उपासना । तन्त्रों में स्पष्ट ही लिखा है कि उपासना के समय साधक और साधिका भैरवी का स्वरूप धारण कर लेती है। साधक र्त्तव्य है कि साधिका भैरवी की प्रत्येक अभिरुचि, मानसिक, सिक एवं वाचिक—को पूर्ण करे—

कायेन मनसा वाचा सुन्दरीं यश्च तोषयेत्।
स भवेत् साधकश्रेष्ठो मातृणाञ्च भवेत् प्रियः॥
(कौलावलीनिर्णयः)

कहने का तात्पर्य यह कि युवती की आवश्यकता कौल सम्प्रदाय में प्रतिपग पर थी। इस समय शक्ति की उपासना—जो निश्चय ही किसी समय अपने सात्त्विक रूप में रही होगी—अपनी घोर विकृति पर थी। कुमारी का माहात्म्य यहाँ तक बढ़ चुका था—

कुमारिका भवेत् देवी शिवोऽपि च कुमारिका।
कुमारी योगिनी साक्षात् कुमारी सर्वदेवता॥
(कौ० निर्णयः)

तस्याः पूजनमात्रेण त्रैलोक्यस्य पूजनं भवेत्।
सुकुमारी महादेवी त्रिधा मूर्तिर्व्यवस्थिता॥
(कौ० निर्णयः)

स्त्री-मात्र की प्रधानता स्वीकृत थी, यहाँ तक कि स्व और पर का भी कोई भेद न था। भैरवीचक्र के समय तो कुल-शील और मर्यादा को एक ओर रख देने का आग्रह था ही। सङ्कोच-मात्र दिखाने से भी देवी रुष्ट हो सकती थी। उपासकों का सिद्धान्त केवल एक था और वह यह कि नारीमात्र भैरवी है और पुरुष-मात्र भैरव।

कौलों के प्रसिद्ध गुरुओं के नाम हैं—प्रह्लादानन्दनाथ, सनकानन्दनाथ, कुमारानन्दनाथ, विशिष्टानन्दनाथ, क्रोधानन्दनाथ, सुखानन्दनाथ, ज्ञानानन्दनाथ और बोधानन्दनाथ।

निश्चय ही शाक्तधर्म कबीर के समय तक अपना निकृष्टतम रूप प्राप्त कर चुका था। इसी कारण कबीर ने अनेक स्थलों पर शाक्तों की भरपेट निन्दा की है—

साषित सुनहा दूनों भाई। वो नींदै वो भौंकत जाई।
का सुनहा के सुमृत सुनायें। का साषित पैं हरिगुन गायें।
का कऊआ कों कपूर खवायें, का विसहर कौं दूध पिलायें॥
—कबीर-ग्रन्थावली पृ० १६३

चन्दन की कुटकी भली, ना बबूर की अवराउँ।
वैश्नों की छपरी भली, ना साषत का बड़ गाउँ॥
—कबीर-ग्रन्थावली, पृ० ५२

कुल-ग्रन्थों में सुरा-सुन्दरी और मांस की व्यापकता है। कहीं-कहीं पर इन तीनों का प्रयोग प्रतीकवत् किया गया है किन्तु बहुत-से स्थानों (जिनमें से कुछ का निर्देश हम ऊपर कर चुके हैं) प्रतीक मानना अर्थ का अस्वाभाविक आरोप कर देना है। इन ग्रन्थों की भाषा बड़ी रहस्यमयी मानी जाती है। [illegible] नहीं समझा सकता है। दीक्षा देते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*'कुलार्णव तन्त्र' में कहा गया है—

"कुल-मार्ग उतना ही भयावह है जितना कि एक भयङ्कर सिंह की गर्दन से आलिङ्गन करना, विषधर सर्प से खेलना या नङ्गी तलवार की तीखी धार पर चलना।"

कौलपन्थ के विद्यार्थी को यह समझने में देर न लगेगी कि इसमें वेद तथा अष्टाङ्गयोग का बहुत कुछ समन्वय है, किन्तु क्रिया-पक्ष में प्रवृत्तिमार्गी होने से धीरे-धीरे इसमें दोषों की बाढ़ आती गई और अन्ततः वह दिन भी आया जब कि यह हिन्दू-धर्म का एक अतिस्थूल, विकृत और गलित रूप रह गया†। यद्यपि लक्ष्य योग तथा तन्त्र का एक ही अवधूतपद (मोक्ष की सिद्धावस्था) की प्राप्ति है तथापि तान्त्रिक बहिरङ्ग उपासना की प्रधानता के कारण प्रवृत्तिमार्गी कहलाए किन्तु योगी अन्तरङ्ग उपासना को ही प्रधानता देते रहे। फलतः प्रवृत्ति मार्गियों का दल वाममार्गी बन गया और विशुद्ध योग-प्रक्रिया को अपनाने-वाला दल नाथ-सम्प्रदाय के नाम से विख्यात हुआ। सिद्धों का उद्गम वाम-पन्थ से ही हुआ जान पड़ता है। सम्भव है कि सिद्धों का मार्ग आरम्भ में उतना सदोष न रहा हो जितना कि कालान्तर में हुआ। नाथों पर तन्त्रों का प्रभाव अवश्य था किन्तु अत्यल्प मात्रा में। नाथ लोगों ने सिद्धों की वह सरणि कभी न अपनाई जो चमत्कारों को ही अपना विशेष आलम्बन बनाए हुए थी।

‡'योगिसम्प्रदायाविष्कृति' में मत्स्येन्द्रनाथ, गहिनीनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, कारिणपानाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भर्तृनाथ और गोपीचन्द्रनाथ को क्रमशः जिन नव नारायणों का अवतार माना गया है वे निम्न हैं—

कविनारायण, करभाजननारायण, अन्तरिक्षनारायण, प्र नारायण, पिप्पलनारायण, चमसनारायण, आविर्होत्रनारा हरिनारायण और द्रुमिलनारायण।

योगियों में यह प्रवाद प्रचलित है कि गोरक्षनाथ शङ्क अभिन्न उन्हीं के अवतार थे।* यद्यपि मत्स्येन्द्रनाथ गोरक्ष के गुरु थे तो भी अपनी आध्यात्मिक शक्ति के कारण गोरक्ष योगियों के मुख्य आचार्य माने जाने लगे।

यद्यपि 'योगिसम्प्रदायाविष्कृति' में गोरक्षनाथ की वि० सं० ४५० में हुई बताई जाती है तथापि इस समय सिद्ध करने के लिए कोई सुदृढ़ प्रमाण नहीं मिलता। फर्कुहर ने गोरक्षनाथ का समय संवत् १२५७ माना है। शहीदुल्ला के अनुसार इनका समय ६६५ ई० के लगभग डा० बड़थ्वाल ने संवत् १०५० के लगभग इनका समय नि किया है। इधर कुछ विद्वानों का मत है कि गोरख क समकालीन थे। यह इस आधार पर कहा जाता है कि और गोरख का वाक्सङ्घर्ष ग्रन्थों में मिलता है। केवल तर्क के आधार पर गोरख का समय पन्द्रहवीं शताब्दी का मानना असङ्गत ठहरता है। कारण कि इस प्रकार के की परम्परा सन्त-साहित्य में प्रायः पाई जाती है। अपने-अपने का प्रभुत्व जमाने के लिए भिन्न-भिन्न मतावलम्बी अपने मुख्य आचार्यों के साथ ऐसी बातें जोड़ दिया करते थे। के प्राचीन साहित्य में एक इस प्रकार का वर्णन आता है कबीर नानक-से शास्त्रार्थ में हार जाते हैं। इसी गोरक्ष और कृष्ण के संवाद भी योगियों के साहित्य में मिल जहाँ कृष्ण भगवान् अन्त में गुरु गोरक्षनाथ की स्तुति करते जाते हैं। इस प्रकार के संवाद केवल मनःप्रसूत होते थे; कोई ऐतिहासिक आधार नहीं मिलता।

'हिन्दी-साहित्य में योग-प्रवाह' नामक लेख में डा० बड़ ने जो उक्तियाँ दी हैं वे बहुत कुछ अंशों में मान्य हैं। कुछ ऐसे भी साक्ष्य हैं जिनके आधार पर गोरक्ष का समय पीछे की ओर ले जाया जा सकता है। किन्तु जब तक प्रमाण न मिलें, इनका समय संवत् १०५० के लगभग ही अधिक उचित होगा। हिन्दी का जो प्राचीनतम रूप की बानियों में मिलता है, उससे भी यह समय ठहरता है।

गोरक्षनाथ का नाथपन्थ ईश्वरवादी है। उसमें अनीश्व के लिए कोई स्थान नहीं है। भगवान् आदिनाथ शङ्क पन्थ के मूल प्रवर्तक माने जाते हैं। जिन विद्वानों की यह

---

* "The Kularnava Tantra says that the path of Kula is as dangerous as it is to embrace the neck of a ferocious tiger or to play with a poisonous snake or to walk along the sharp edge of a naked sword."

(Introduction) Tantrik Texts Vol. XIV (A. Avalon).

† तान्त्रिकानुष्ठानस्य फलमपि योग एव। योगिनां पूर्वावस्थायामपि योगित्वमुत्तरावस्थायामपि योगित्वमेव न त्ववस्थाभेदाद् गौणमुख्यभावः तन्त्रादि यस्य कस्यापि सापेक्षं, परन्तु तान्त्रिकाणां पूर्वावस्था तन्त्रानुष्ठानं बहिरङ्गमुपासनं, योगिनां त्वन्तरङ्गमुपासनम्। इयं रीतिः। तान्त्रिकः प्रथमतो बहिरङ्गपूजनं स्थूलशक्तेः करोति पश्चादवधूतपदे प्राप्तेऽन्तरङ्गपूजनं सूक्ष्मशक्तेः कुण्डलिन्याः करोति अतः कारणात् तान्त्रिकाणामपि तात्पर्यमवधूतपदे एव।

* कहते हैं कि एक बार गोरक्षनाथ ने गुरु जी की अ 'बड़ों' के स्थान पर अपनी आँखें निकालकर दे दी थीं। पर प्रसन्न होकर मत्स्येन्द्रनाथ ने आशीर्वाद दिया जिससे गो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि नाथ-सम्प्रदाय बौद्धों से विकसित हुआ, वे सम्भवतः चौरासी सिद्धों और नाथों में कोई मौलिक अन्तर नहीं समझते। यदि नाथ लोग सिद्धों के दिखाए मार्ग को ही अपना साधन चुन लेते तो उनको कोई भी महत्त्व न मिलता। किन्तु सिद्ध लोग निश्चय ही धार्मिक ह्रास के द्योतक थे और वज्रयान की शाखा-शाखाओं में अपना विश्वास रखते थे।

नाथों की बानियों में 'शून्य' और 'निर्वाण' जैसे कई शब्द आते हैं जिनसे कुछ लोग यह अनुमान लगा बैठते हैं कि बौद्धों का 'शून्य' और 'निर्वाण' नाथों को भी प्रभावित कर चुका था। योगियों ने इस प्रकार के शब्द बौद्ध धर्म से ही नहीं, और भी बहुत सम्प्रदायों से लिए, किन्तु उनका प्रयोग सर्वत्र अपनी परम्परा के अनुकूल अर्थ में ही किया है। योग-शास्त्र के अनुसार ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचकर साधक ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेता है। इसका अनुभव सुनिफल कहकर पुकारा गया है—

उतरषण्ड जाइवा सुनिफल खाइवा
ब्रह्म अगनि पहरिवा चीरं।
नीझर झरणैं अमृत झरिया
यूँ मन हूवा थीरं॥
— गोरखबानी पृ० २४

यहाँ उतरषण्ड का अर्थ 'ब्रह्मगुहा' ही होगा और 'सुनिफल' का अभिप्राय अवस्था की अनुभूति से है।

सुनि ज माई सुनि ज बाप।
सुनि निरञ्जन आपै आप॥
सुनि कै परचै भया सथीर।
निहचल जोगी गहर गम्भीर॥
(गो० बा०)

यहाँ 'सुनि' का तात्पर्य असम्प्रज्ञात समाधि है। उस स्थिति को प्राप्तकर लेने के पश्चात् योगी निश्चल अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

बसती न सुन्यं सुन्यं न बसती अग अगोचर ऐसा।
गगन-सिषर महिं बालक बोलै ताका नाँव धरहुगे कैसा॥
(गो० बा०)

उस निर्गुण-सगुणातीत ब्रह्म को जो केवल अनुभवगम्य है, नाम से पुकारा जा सकता है?

सुविधा की बात है कि कुछ मनुष्य उसे निर्गुण और कुछ सगुण पुकार लेते हैं। वास्तव में वह है तो निर्गुण और सगुण दोनों से परे—और भी न जाने क्या-क्या!

आसन, प्राणायाम एवं षट्चक्रभेदन इस सम्प्रदाय की मुख्य पद्धतियाँ हैं। किन्तु अन्तिम स्थिति समाधि है। उपर्युक्त तीनों तो साधक के लिए प्रारम्भिक बहिरङ्ग क्रियाएँ

गुरु नानक

मानी जाती हैं। रस-विद्या का निर्देश भी योग-ग्रन्थों में मिलता है।

"छटै छमासे काया पलटंत नागबङ्ग बनासपती जोगी"
नाग (शीशे की भस्म), बङ्ग (राँगे की भस्म) और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्प करना चाहिए। योगियों की परम्परा है कि वे नीरोगता और शारीरिक उपयुक्तता को भी आध्यात्मिक साधना में उपेक्षा से नहीं देखते। उक्ति प्रसिद्ध है कि 'शरीरेण जिता सर्वे शरीरं योगिभिर्जितम्'। शारीरिक विकारों और दुर्बलताओं का हमारे मानसिक जगत् से बहुत सम्बन्ध है। *कभी-कभी देखा जाता है कि मनुष्य प्रयत्न करने पर भी, दैहिक दुर्बलता के फलस्वरूप, अपनी भावनाओं के संस्कार करने में असमर्थ रह जाता है। आसन, प्राणायाम आदि की महत्ता इसी कारण योगियों ने स्वीकार की।

नाथ-सम्प्रदाय की कर्णमुद्रा युक्त
एक प्राचीन मूर्त्ति, मञ्जुश्री

समाधि की स्थिति में भी रसायन-विद्या की आवश्यकता पड़ती थी। योगियों की जीवनचर्या के अध्ययन से पता चलता है कि समाधि का उसमें महत्त्वपूर्ण स्थान है। योगिसम्प्रदाया-विष्कृति के आख्यानों से ज्ञात होता है कि ये लोग प्रायः बारह-बारह वर्षों तक समाधिस्थ रहा करते थे और इस लम्बी अवधि तक अपनी शारीरिक देख-भाल के लिए शिष्य को नियत कर दिया करते थे। समाधि की अवस्था में देहाध्यास तो रहता नहीं जिससे स्वयं अपने जड़ शरीर की रक्षा बाहर के अनिष्टों से कर सके; दूसरे इस दशा में देह के समस्त कार्य-व्यापार बन्द रहते हैं; कुछ समय पश्चात् उसके जीर्ण-शीर्ण होने का भय रहता है; फिर बारह वर्ष का समय भी कम नहीं होता। रसायन द्वारा शिष्य गुरु के शरीर को सुरक्षित रखता था।

कौल-पद्धति पर हम पीछे कुछ प्रकाश डाल चुके हैं। उ प्रयास प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर जाने का था, जो यदि असं नहीं तो कठिनतम अवश्य था। भले हो साधक अपनी उ स्थिति पर पहुँचकर स्त्री के सान्निध्य से भी पतित न हो साधना की अपरिपक्व अवस्था में ही नारी का विशेष संसर्ग एक-न-एक दिन इन्द्रियों के उद्दाम आवेश में बहा देगा। गोरक्षनाथ ने कामिनी का विरोध करना आवश्यक समझा—

कदै न सोभै सुन्दरी सनकादिक के साथि।
जब तब कलङ्क लगाइसी काली हांडी हाथि॥
कामनी बहता जोग न होई,
जहाँ उपजै तहाँ फिरि आवटै, च्यन्तामनि चित एता॥
बांमा अङ्गे सोइबा जमचा भोगबा सङ्गे न पीवणां पाणीं;
इमतौ अजरावर होइ मछिन्द्रं, बोल्यौ गोरष बांणीं॥
—गोरखबानी

नारी स्वभावतः ही पुरुष के लिए आसक्ति का विषय उसी प्रकार नारी के लिए पुरुष भी। कैसा ही सिद्ध पुरुष आसक्ति का उपकरण पास रहने पर कभी-न-कभी उसके की आशङ्का रहती ही है। फिर गोरख ने जो कुछ कहा, साधारण स्त्री पुरुषों के लिए नहीं, प्रत्युत योगमार्ग में 'अवधुओं' के लिए ही।

कबीर पर भी इस परम्परा का बहुत कुछ प्रभाव नारी के सम्बन्ध में सारा निर्गुण सम्प्रदाय ही एक मत है—

एक कनक अरु कामनीं विषफल कीएउ पाइ।
देखैं ही थैं विष चढ़ै खाँयें सू मर जाइ॥
(कबीर-ग्रन्थावली, पृ० ४

सुन्दरि थैं सूली भली, बिरला बचै कोइ।
लोह निहाला अगनि में जलि बलि कोइला होइ॥
नर नारी सब नरक है जब लग देह सकाम।
कहै कबीर तें राम के, जे सुमिरैं निहकाम॥
—कबीर-ग्रन्थावली, पृ० पद्य न

बौद्ध धर्म का उदाहरण हमारे सामने ही है। बुद्धदेव नहीं चाहते थे कि स्त्रियाँ उनके सङ्घ में शामिल हों, किन्तु शिष्य आनन्द के कहने से किसी प्रकार उन्होंने स्त्रियों को भिक्षुणी बनने की अनुज्ञा दे दी। मैं समझता हूँ कि में कालान्तर में जो व्यभिचार बढ़ा उसका कारण भिक्षुणि

---

* जीवन्मुक्तः सदा स्वस्थः सर्वदोषविवर्जितः।
विरक्ता ज्ञानिनश्चान्ते देहेन विजिताः सदा॥
ते कथं योगिभिस्तुल्या मांसपिण्डाः कुदेहिनः।

ऐसी बात नहीं थी कि गोरक्ष को स्त्री-जाति के प्र आवश्य घृणा हो। घृणा थी केवल कामिनी के विलासमय पक्ष से— साधना-क्ष

रूपे रूपे गुरुदेव बाघनी भोले भोले।
जिन जनमी संसार दिखाया ताकौं ले सूते पोले॥
(गोरखबानी

* नाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसाय

हैं। उ
दि असं
पनी
न हो।
प संसर्ग
देगा।
भा—

एता ॥
ां पार्णी
गोरखबा
ा विषय
द्ध पुरुष
उसके
कहा,
र्ग में

प्रभाव
त है—
इ।
इ ॥

पृ० ४
इ।
ोइ ॥
म।
म ॥
ली, पु
बुर्ब्रीज
, किंतु
स्त्रियों
कि
भिन्नदृष्टि
के
से

ले।
ले ॥

हीं। कहने की आवश्यकता नहीं कि स्त्रियों के प्रवेश ने बौद्ध धर्म के मूल को बहुत खोखला कर दिया था। प्रसिद्ध योगी चरपटनाथ ने स्त्री में आसक्त सिद्धों को खूब फटकारा है—

नाथ कहावें सकहिं न नाथि
चेलापञ्च चलावें साथि।
माँगे भिच्छा भरि भरि खाहिं;
नाथ कहावैं मरि मरि जाहिं॥
बाकर कूकर कीङ्गुर हाथि
बाली भोली तरुणी साथि।
दिन करि भिच्छया रात्यूं भोग,
चरपट कहै विगोवै जोग॥

अपने समय में प्रचलित सिद्ध-समाज के दोष गोरख की दृष्टि से छिपे न रह सके। वे अपने सिद्धान्तों के इतने पक्के थे कि उनके विरुद्ध थोड़ी भी उपेक्षा उन्हें सहन न थी। मादक द्रव्यों के सेवन तक का कड़ा निषेध किया गया—

बाफू पाय भांगि भसकावै, ता मैं अकलि कहाँ ते आवै।
बढ़ताँ पित्त उतरताँ वाई, तातैं गोरष भाँगि न षाई॥
जोगी होइ पर निंद्या भषै, मद मांस अरु भाँगि जे भषै।
कोतरसे पुरिषा नरकहि जाई, सति सति भाषन्त श्रीगोरषराई॥

ब्रह्मचर्य के निरन्तर पालन से ऊर्ध्वरेता बनने की प्रेरणा नाथों के उपदेशों में सर्वत्र मिलती है—

अरधै जाता उरधै धरै, काँम दगध जे जोगी करै।
तजै अल्यङ्गन काटै माया, ताका विसनु पषालै पाया॥

—गोरखबानी

साधना-प्रधान होने के कारण योग-मार्ग में जाति-पाँति का भाव स्वीकृत न था।

योगियों के मत से सृष्टि दो प्रकार की है, पहली नाद-परम्परा और दूसरी बिन्दु-परम्परा की। उनकी धारणा है कि दिनाथ शूलपाणि ही इन दोनों परम्पराओं के नियामक हैं। द-परम्परा से हमारा तात्पर्य शिष्य-क्रम से है और बिन्दु-परम्परा ार्हस्थ्य वंश-क्रम से। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि पक्ष नाद अर्थात् गुरुमन्त्र पर अवलम्बित है तो दूसरा बीज सृष्टि पर। निस्सन्देह पहला प्रकार (नाद-क्रम) ही है क्योंकि उसमें निवृत्ति या श्रेय-पक्ष ही एक मात्र ध्येय है। किन्तु दूसरी कोटि में संसार की सभी प्रेय वस्तुओं ति आकर्षण रहता है। नाद का सम्बन्ध सूक्ष्म ज्ञान से है बिन्दु का सम्बन्ध स्थूल माया से। नाथ लोग नादानुयायी अतः उन्हें बिन्दु-परम्परागत मायाप्रधान संसार से वैराग्य आवश्यक है। इस प्रकार वैराग्य को मूल मान कर नाथों साधना-क्रम चलता है।* नाद से नव नाथों की उत्पत्ति हुई, ऐसा योग-ग्रन्थों में उल्लेख है, बिन्दु से सदाशिव की। सदाशिव भैरव से विष्णु, विष्णु से ब्रह्म, सूर्य, चन्द्र, इत्यादि की उत्पत्ति हुई। योग के अनुसार सृष्टि की परम्परा किस प्रकार निर्मित हुई, इसका स्पष्टीकरण 'सिद्धसिद्धान्तपद्धति' में विस्तार से है।

योग की सबसे ऊँची अवस्था असम्प्रज्ञात समाधि है। गोरक्ष और उनके अनुयायी नाथों के जीवन-वृत्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे शिष्य को क्रमशः अभ्यास कराते-कराते अन्ततः असम्प्रज्ञात तक पहुँचा देते थे। शिष्य बनाने के पूर्व उसकी योग्यता-अयोग्यता को अच्छी तरह परख लिया जाता था। अन्तिम अवस्था के पूर्व तक उसे बड़ी सावधानी से योगमार्ग की शिक्षा दी जाती थी। सम्प्रदाय-मात्र बढ़ाने के विचार से हर किसी को अपने मत में ये लोग नहीं लेते थे। निस्सन्देह यह असम्प्रज्ञातावस्था पतञ्जलि के अष्टाङ्गयोग की सब से पूर्ण अवस्था है। असम्प्रज्ञात के भी दो भेद होते हैं—एक भव-प्रत्यय और दूसरा उपाय-प्रत्यय। भव-प्रत्यय को जड़ समाधि भी कहा जाता है जो कैवल्य के इच्छुकों को कदापि इष्ट नहीं है। अस्तु, नाथों ने भी सारा श्रम उपाय-प्रत्यय के लिए ही किया, भवप्रत्यय के लिए नहीं। सुयोग्य गुरु की प्रेरणा से उपयुक्त पात्र शीघ्र ही योग में निष्णात हो जाया करते थे।

योग के ग्रन्थों में 'नाथ' शब्द का तात्पर्य पूरा सिद्धत्व या पूर्णत्व प्राप्त किया हुआ महापुरुष है। 'गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः' में लिखा है कि "अस्माकम्मते शक्तिः सृष्टिं करोति शिवः पालनं करोति कालः संहरति नाथो मुक्तिं ददाति"। अर्थात् हमारे मत में शक्ति सृष्टि करती है, शिव पालन करते हैं और नाथ मुक्ति देता है।* 'नाथ' शब्द से यह ध्वनि भी निकलती है कि जिसने अपनी इन्द्रियों को नाथ लिया हो, अर्थात् वश में कर लिया हो। 'राजगुह्य' में नाथ का अर्थ इस प्रकार समझाया गया है—

"नाकारोऽनादिरूपं थकारः स्थाप्यते सदा।"

---

* नाथाद् द्विप्रकारा सृष्टिर्जाता नादरूपा बिन्दुरूपा च। जाता बिन्दुतः सदाशिवो भैरवो जातः। पुनः शब्दसृष्टिप्रकारमाह—एका सूक्ष्मरूपिणी। द्वितीया स्थूलरूपिणी। सूक्ष्मरूपिणी प्रणवो महागायत्री योगशास्त्रमिति। स्थूलरूपिणी ब्रह्मगायत्री वेदत्रयीति। पुनर्योगशास्त्रतस्तन्त्रशास्त्रं जातं वेदात् स्मृत्यादि शास्त्रं जातम्। पुनर्नवनाथानां पश्चाद् द्वादशसिद्धाश्चतुरशीतिश्च द्वादशपन्थानोऽनन्तसिद्धाश्च जाताः। पुनर्योगात् शेषयोगसांख्ययोगादयोऽनेकयोगा अनेकभेदैर्जातास्तेन योगेन ज्योतिषन्यायादिकं शास्त्रं श्रुतितः स्मृतिशास्त्र व्याकरण पुराणोपपुराणा अनेकेतिहासा जाताः।

—गोरक्षसिद्धान्तसंग्रहः

* भवेय मनुष्यो यदकस्त राजा यदा जन्मनेऽसे भवेत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* 'अवधूत' का व्यवहार भी लगभग इसी अर्थ में होता है। 'सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः' के अनुसार अवधूत का लक्षण है—"सर्व्वान् प्रकृतिविकारानवधुनोतीत्यवधूतः"। अर्थात् जो प्रकृति के समस्त विकारों को दूर कर सके वही अवधूत है।

वेदों में प्रतिपाद्य प्रणव का महत्त्व योग में सर्वत्र मान्य है। शैवमत में भी प्रणव का महत्त्व उसी प्रकार माना गया है। शैवों के मूल स्रोत भगवान् शङ्कर हैं और नाथों के भी। इसी प्रकार के कुछ अन्य सिद्धान्त भी हैं जो नाथों और शैवों में समान रूप से मिलते हैं। योगियों का प्रयोजन स्थूल वेद में उतना नहीं है जितना कि उसके सारतर प्रणव में। अतः योग-पद्धति में ग्रन्थों की व्यर्थ उलझन से बचकर सारमात्र ग्रहण करने की शिक्षा दी गई है। 'कावेषयगीता' में एक उदाहरण दिया गया है कि एक बार दुर्वासा मुनि अनेक प्रकार के शास्त्रों सहित महादेव जी के पास आए। इस पर भरी सभा में नारद जी ने उन्हें भारवाही गर्दभ की उपाधि दी। इस पर क्रोध से सब पुस्तकों को लवणसागर में डालकर दुर्वासा मुनि महादेव जी से अध्यात्मविद्या सीखने लगे। यह अध्यात्मविद्या और कुछ नहीं, योगविद्या ही थी। कहा भी गया है—

गृहे गृहे पुस्तकभारभाराः पुरे पुरे पण्डितयूथयूथाः।
वने वने तापसवृन्दवृन्दा न ब्रह्मवेत्ता न च कर्म्मकर्ता॥

"घर-घर में पुस्तकों का भार है, नगर-नगर में पण्डितों के समुदाय हैं। वन-वन में तापसों के झुण्ड हैं किन्तु न कोई ब्रह्मज्ञानी है और न कोई कर्मयोगी ही।"

"कहते हैं कुछ शास्त्र मोक्ष के रक्षक हैं और कुछ व्यवहार के। जो मोक्ष के रक्षक हैं वे योग-शास्त्र हैं और जो व्यवहार के रक्षक हैं वे श्रुति-स्मृति आदि हैं।"

योगशास्त्र में पुरुष के बत्तीस लक्षण बताए गए हैं—(१) निरालम्ब (२) निर्भ्रम (३) निवासी (४) निःशब्द (५) निर्मोह (६) निर्बन्ध (७) निःशङ्क (८) निर्विषय (९) सर्वाङ्गी (१०) सावधान (११) सन् (१२) सारग्राही (१३) निष्प्रपञ्च (१४) निस्तरङ्ग (१५) निर्द्वन्द्व (१६) निर्लेप (१७) अयाचक (१८) अवाञ्छक (१९) अमान (२०) अस्थिर (२१) शुचि (२२) संयमी (२३) शान्त (२४) श्रोता (२५) सुहृत (२६) शीतल (२७) सुखद (२८) स्वभाव (२९) लय (३०) लक्ष्य (३१) ध्यान (३२) समाधि।

योग-साधना अवस्था-भेद से चार प्रकार की मानी गई है—पहली आरम्भावस्था, दूसरी घटावस्था, तीसरी परिचयावस्था और चौथी निष्ठावस्था। निष्ठावस्था विकास की पूर्णावस्था योगी अपने पूर्ण स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर निरञ्जन तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इस पद को प्राप्त कर साधक आनन्द का अनुभव प्राप्त करता है जिसकी अभिव्यक्ति वा परे है। जो अनाहतनाद घटावस्था में उठना आरम्भ होता इस समय लय की दशा में हो जाता है। योगी अनन्त शान्त को धारण कर लेता है। इस समय के अनिर्वचनीय सु ज्ञान अनुभवी को ही हो सकता है। राग-अभिनिवेश, ममता आदि जड़ तत्त्वों से आक्रान्त सामान्य मनुष्य अनुमान नहीं लगा सकता। शिष्य की अथक साधना गुरु की अनन्त कृपा से ही यह स्थिति मिलती है। निष्ठा में पहुँचकर चित्स्वरूप की पूर्ण उपलब्धि हो जाती है।

किंवदन्ती है कि योगियों को आदिनाथ महादेव ने स्वरूप से विभूषित किया। इस समाज के मुख्य चिह्न कुण्डल,* सेली और शृङ्गीनाद। ये चिह्न भिन्न-भिन्न प्रायों के प्रतीक हैं, जैसे शृङ्गीनाद धारण करने का अर्थ है यो का नाद-परम्परागत होना। कुण्डल धारण करने के बाद में ये ही लोग कनफटा भी कहलाने लगे। बोल-चा 'आदेश' और 'अलक्ष्य' शब्दों का विशेष व्यवहार होता है।

योगी लोग स्वभाव से ही भ्रमणशील रहे हैं; जिसके दो हैं, एक वैराग्य और दूसरा योग-धर्म की वृद्धि। इनका निय कि शिष्य को असम्प्रज्ञात समाधि में निष्णात कर उसे मुमु के हितार्थ स्वतन्त्र घूमने की अनुज्ञा दे देते थे। समय था जब कि इस सम्प्रदाय के लोग भारत के कोने-के व्याप्त थे और अपने अथक परिश्रम से योग का महत्त्व स कर रहे थे। गोरक्षनाथ ने जीवन-पर्यन्त पर्यटन किया योग्य साधकों को अपने सम्प्रदाय में दीक्षित किया। एक पर बिना विशेष कारण के अधिक समय तक ये लोग नहीं थे। इनका जो कुछ भी साहित्य आज प्राप्त है उसे दे प्रत्यक्ष हो जाता है कि इनकी वाणी में अनेक भाषा के का समन्वय है। कबीर, गोरख, चर्पटनाथ इत्यादि स भाषा सधुक्कड़ी कहलाती है। सधुक्कड़ी भाषान्तर्गत की प्रवृत्ति सदैव जनता के अधिकाधिक निकट रहने की संस्कृत को छोड़कर हिन्दी भाषा को अपनाना इसी का लोगों ने अच्छा समझा कि वह विशाल जन-समुदाय तक सकती थी। इसके पूर्व योग के ग्रन्थ संस्कृत में रहे,

* वचने वचने वेदास्तीर्थानि च पदे पदे।
दृष्टौ दृष्टौ च कैवल्यं सोऽवधूतः श्रियेऽस्तु नः॥
[illegible] भोगश्चैककरे स्वयम्।

* ".....Siva, the Lord of the yogis..... is often represented in a posture of deep m tion with similar rings pendant in his ears, as image in the Dunar Lena at Elura, or in the bule of the Elephanta Cave.
"Notes on Kanphata yogis"——— Indian

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्णावस्था तो अधिकांश जनता ने समझा नहीं और यदि कुछ समझा
ज्जन ने अर्थ का अनर्थ कर दिया। बुद्ध की पहुँच जनता तक
र साधकों के द्वारा हुई और नाथों की हिन्दी के द्वारा। हमारी भाषा
क्ति वाद का प्राचीनतम रूप इनके साहित्य में मिलता है। अतः
होता है के आदिकवि बनने का श्रेय इन लोगों को ही है।
शान्त भाष्यकार भगवान् शङ्कर बौद्धों को परास्त कर अद्वैत की
य-दुन्दुभि से समस्त भारत में ईश्वरवाद की प्रतिष्ठा

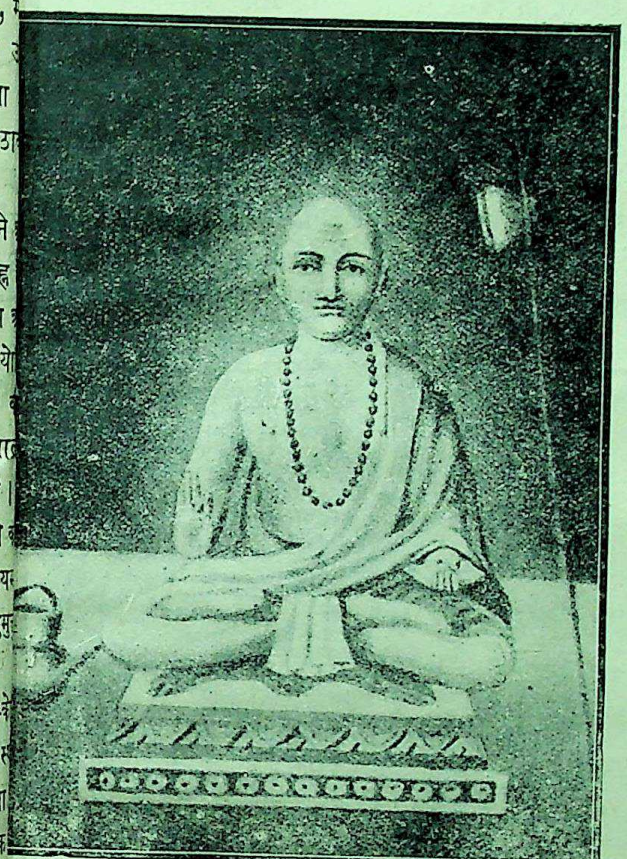

श्री आदि शङ्कराचार्य

के थे। नाथों ने भी ईश्वरवाद का प्रचार किया। गोरख
य में नैपाल में बौद्धों का बोलबाला था। बौद्धमत का
य पतन नैपाल और तिब्बत में नए-नए रङ्ग दिखा रहा
ऐसे ही समय में गोरख ने नैपाल-भ्रमण किया। वहाँ
कि बौद्धों का अनीश्वरवाद तन्त्र-मन्त्र का सहारा पाकर
में कलुषित आचार-व्यवहार को प्रधानता दे रहा है।
मांस आदि तामसिक अभिरुचि का उन्होंने कड़ा विरोध
योगिराज की विरोधी शक्ति के आगे वहाँ के शासक
हार माननी पड़ी। यही नहीं, उसे पदच्युत कर एक
पयुक्त ब्राह्मण-कुमार को गोरख ने गद्दी पर बैठाया।*
नश्रुतियों से ज्ञात होता है कि नैपाल में मत्स्येन्द्रनाथ भी
। वहाँ दो प्रकार के मत्स्येन्द्रनाथ माने जाते हैं, एक

टुलो और दूसरे सानु। टुलो का अभिप्राय बड़े से है और सानु का छोटे से। वहाँ अब तक मत्स्येन्द्री नामक जाति पाई जाती है। उसके उत्सवों आदि में मत्स्येन्द्रनाथ का महत्त्व है। किंवदन्ती है कि योग का रहस्य सबसे पहले महादेव जी ने पार्वती को सुनाया था। मत्स्येन्द्रनाथ ने यह उपदेश मछली के रूप में सुना। इस अनुचित कार्य के कारण उन्हें शाप मिला, जिससे उनका उद्धार गोरक्षनाथ ने किया। किन्तु दूसरे ग्रन्थों में शाप का कोई प्रसङ्ग नहीं आता। इसके विपरीत यह मिलता है कि महादेव जी ने मत्स्येन्द्रनाथ को कविनारायण का अवतार समझकर योग-विद्या में पारङ्गत बनाया।

एक बार मत्स्येन्द्रनाथ सिंहलद्वीप की रानी पद्मावती में आसक्त हो गए थे किन्तु गोरक्षनाथ के प्रयत्न करने पर उनका उद्धार हुआ। हाल ही में मत्स्येन्द्रनाथ की लिखी संस्कृत की किसी कौलीय पुस्तक का पता चला है। इससे प्रतीत होता है कि उनके पतन का कारण कौलीय प्रवृत्ति का बढ़ जाना था। गोरक्षनाथ ने कौलीय पद्धति को भले प्रकार देख लिया था, अतः उस ओर भूलकर भी दृष्टि-विक्षेप न किया। योगिराज गोरक्ष को अपनी सात्त्विक पद्धति पर कितना विश्वास था, यह नीचे के पद्य से स्पष्ट हो जाता है—

सबद हमारा परतर पांडा, रहणि हमारी साची।
लेषै लिखी न कागद माडी, सेा पत्री हम बाची॥
(गो० बानी)

पद्मावती में आसक्त मत्स्येन्द्र को गोरख बार-बार सचेत करते हैं—

सुणौं हो मछिंद्र गोरष बोलै, अगम गवंन कहूँ हेला।
निरति करी नैं नीकां सुणिज्यौ, तुम्हें सतगुरु मैं चेला॥
(गो० बानी)

आख्यान बहुत बड़ा है, कहने की आवश्यकता नहीं। हाँ, इतना अवश्य जान लेना चाहिए कि मत्स्येन्द्र को सांसारिक वृत्ति से हटाकर पुनः वैराग्य के पथ पर लगाना गोरक्ष के लिए ही सम्भव था; अन्य किसी महात्मा में उस समय यह दुरूह कार्य करने की शक्ति न थी।

गोरक्ष के समकालीन बहुत से प्रसिद्ध योगी हो चुके हैं जिनमें गहिनीनाथ, चर्पटनाथ, चौरङ्गीनाथ और गोपीचन्द्रनाथ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। महाराष्ट्र के सन्त ज्ञानेश्वर भी गोरक्षनाथ के शिष्य-प्रशिष्यों की परम्परा में आते हैं। उन्होंने अपनी गुरु-परम्परा इस प्रकार दी है—

आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, गहिनीनाथ, निवृत्तिनाथ, और ज्ञानेश्वर। कहने की आवश्यकता नहीं कि गोरक्षनाथ अपने जीवनकाल में ईश्वर के तुल्य माने जाने लगे थे और प्रत्येक सम्प्रदायवाला किसी-न-किसी रूप से उन्हें अपने से सम्बन्धित करने में अपना गौरव समझता था। एक उदाहरण ऐसा भी

* 'योगिसम्प्रदायाविष्कृति' के अनुसार।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कापालिकों ने गोरक्षनाथ से अपना अगुआ बनने की प्रार्थना की किन्तु उनकी आचार-भ्रष्टता देखकर गोरक्ष ने यह पद स्वीकार न किया। स्पष्ट है कि कापालिक लोग एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की आड़ में लोगों के विश्वास-पात्र बनना चाहते थे।

चौरङ्गीनाथ गोरक्षनाथ के प्रसिद्ध शिष्य थे। कहा जाता है कि वे स्यालकोट के राजा के पुत्र थे। उस समय उनका नाम कृष्ण था। 'पूरन भगत' के नाम से साधारण जनता में जो कथा प्रचलित है वह इन्हीं चौरङ्गीनाथ से सम्बन्ध रखती है। ग्रामीण समाज में अनेक प्रकार के स्वाँग इत्यादि इनके नाम पर खेले जाते हैं। लगभग सभी लोग जानते होंगे कि किस प्रकार अपनी विमाता की दुर्बुद्धि के कारण इन्हें हाथ-पैर काटकर कुएँ में डाल दिया गया था। किन्तु गोरक्ष की अलौकिक अनुकम्पा से पुनः अङ्ग-प्रत्यङ्ग सहित ये जीवित हो उठे। इस घटना के प्रभाव से ये चौरंगीनाथ कहलाए जाने लगे। तत्पश्चात् इन्होंने योगिराज का शिष्यत्व ग्रहण किया और योग्य गुरु के योग्य शिष्य प्रमाणित हुए।

क्षणिक यौवन और तज्जन्य उल्लास को शाश्वत मान लिए वह तैयार न थी। अपने पुत्र-वात्सल्य की वास्त उसने तभी समझी जब कि वह अपने ही हाथों—अपने ही से—पुत्र को अमरत्व के पद पर प्रतिष्ठित कर दे। उसने इस आशय को पुत्र के आगे प्रकट किया। परन्तु मैना इस इच्छा का अर्थ कुछ और ही लगाया गया। मैना सारा वैराग्य, सारी अमरत्व की भावना, योगी ज्वालेन्द्र उपदेशों पर ही निर्भर थी। अतः उसी का काम तमा की ठानी गई। समाधि में लीन ज्वालेन्द्रनाथ को फेंक दिया गया। परन्तु परिस्थिति बदल गई। राज्याधि ने सोचा कि महान् योगी ज्वालेन्द्रनाथ के शिष्य कम शक्ति न होंगे, इस घटना को सुनते ही वे राज्य में भीषण विपत्ति कर सकते हैं। अन्त में गोरक्षनाथ जी की शरण ली उन्होंने स्थिति को सँभाल लिया। इधर ज्वालेन्द्रनाथ योग-बल से कुएँ में जीवित बैठे थे। गोरक्षनाथ ने गोपी

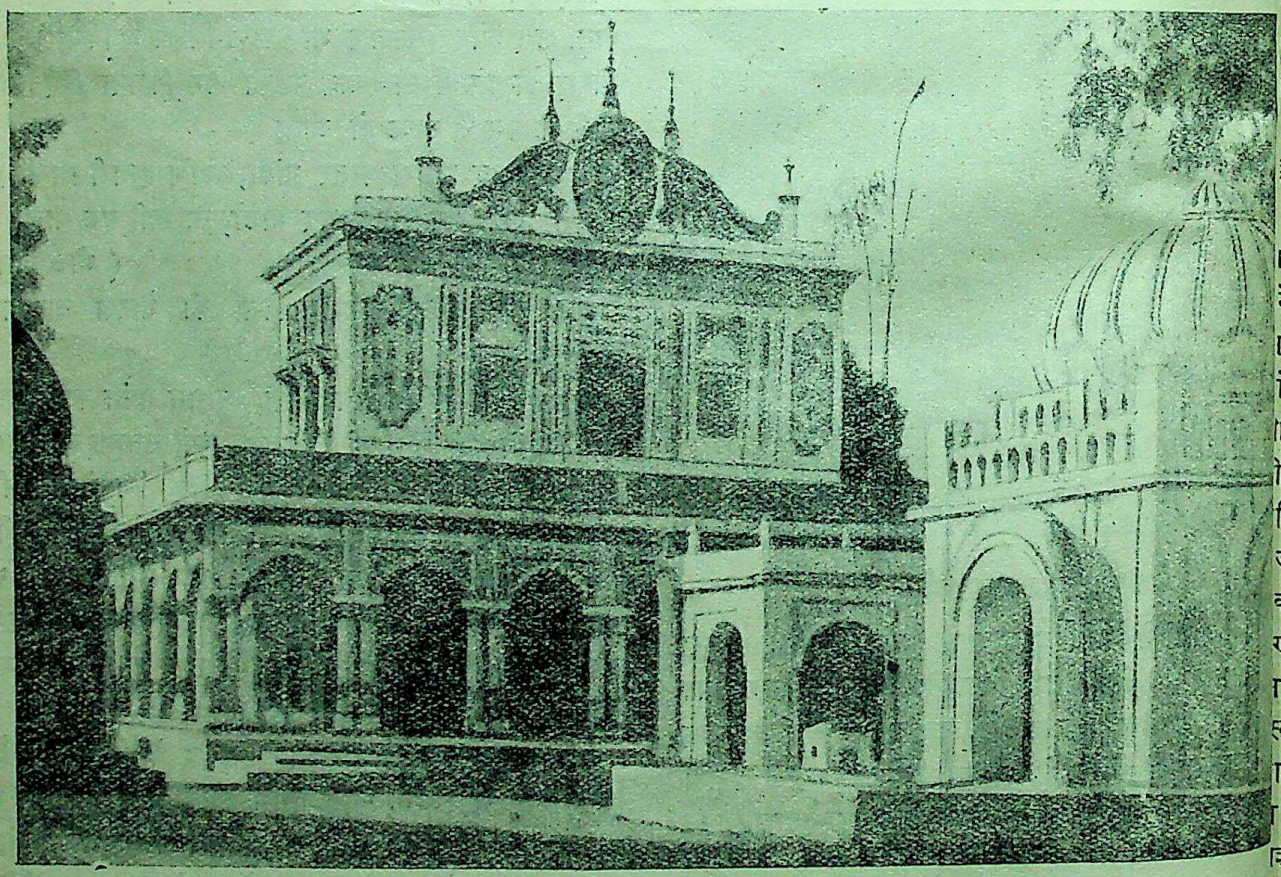

गुरु गोरक्षनाथ का मन्दिर—गोरखपुर

योगी गोपीचन्द्रनाथ भी राजकुमार थे। अपनी माता के कहने से इन्होंने योग में दीक्षा ली थी। इनके गुरु ज्वालेन्द्रनाथ थे। इनका वृत्त कुछ विचित्र-सा मिलता है। माता का नाम मैनावती था। वह इन्हें प्राणों से अधिक समझती थी। अपने पुत्र के रूप-लावण्य पर वह मुग्ध थी। किन्तु उसके चिन्तन

समानता रखनेवाली दो प्रतिमाएँ बनवाईं। क्रमश पश्चात् दूसरी प्रतिमा को कुएँ पर खड़ा करवाकर गो दोनों बार ज्वालेन्द्रनाथ से बाहर आने की सविनय प्रा परन्तु ज्वालेन्द्रनाथ के शाप से दोनों बार दोनों प्रति हो गईं। तीसरी बार स्वयं गोपीचन्द्रनाथ को कुएँ किया गया और योगिराज से बाहर आने की सविन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। आशुतोष महादेव के-से उदार स्वभाववाले योगिराज जिनका प्राणान्त करने का अपराध गोपीचन्द्र कर चुका था, बार प्रसन्न होकर कहा कि 'अच्छा, यदि मेरे दो बार के प से तुम भस्म नहीं हुए तो अमर ही हो जाओ'। किंवदन्ती कि तभी से गोपीनाथ अमर हो गए। इस प्रकार मैनावती अभिलाषा उसके समक्ष ही फलीभूत हो गई। गोपीचन्द्र और जनता का, और विशेषतया ग्रामीण समाज का, विशेष कर्षण है और इसी प्रकार के अनेक उपाख्यान आज तक लित हैं।

नाथ निस्सन्देह अलौकिक शक्ति-सम्पन्न हुआ करते थे। ी-प्रक्रिया में पारङ्गत साधक तो शक्ति और सामर्थ्य का केन्द्र ही जाता है। सिद्धों और नाथों में एक बड़ा भेद यह है जहाँ सिद्धों ने अपने चमत्कारों का प्रायः बाजारू उपयोग या है वहाँ नाथों ने अपनी शक्ति का उपयोग आपद् धर्म और हित के अवसरों पर ही किया*। सिद्धों के लिए सिद्धियाँ य थीं किन्तु नाथों का ध्येय कैवल्य की प्राप्ति था। इन दो भिन्न रुचियों के कारण एक के लिए जनता के हृदय में आदर ान्न हुआ और दूसरे के प्रति घृणा एवं भय।

शक्ति के सदुपयोग का कितना ध्यान रक्खा जाता था, यह ने के उदाहरण से स्पष्ट हो सकेगा।

एक बार नगर से दूर एक निर्जन स्थान पर दूरङ्गतनाथ ाक एक योगी ने बारह वर्ष के लिए समाधि में प्रवेश किया। ने शिष्य को शरीर की सुरक्षा के लिए नियत किया। कुछ ा तक तो शिष्य नगर से भिक्षा प्राप्त करता रहा, किन्तु जब ोंने देखा कि यह तो नित्य-प्रति ही माँगने के लिए आता ा भिक्षा देना बन्द कर दिया। शिष्य को बारह वर्ष तक ो स्थान पर रहना आवश्यक था, अतः उसे विवश होकर ड़ियाँ बेंचकर जीवन-निर्वाह करना पड़ा। समाधि के टूटने जब दूरङ्गतनाथ को समस्त घटनाएँ यथाक्रम ज्ञात हुईं तो का हृदय क्षुब्ध हो उठा। नागरिकों की अनुदारता के ण शिष्य को जो इतना कष्ट हुआ, उसके लिए उसने समस्त ा (नगर) नष्ट करने की ठान ली। क्रोध के आवेश में स्त पट्टन के स्थान पर समस्त पट्टनों को नष्ट होने का शाप दे ा। अब क्या था, समस्त नगरों का धुआँधार होना आरम्भ ा। संयोगवश गोरक्षनाथ उधर से आ निकले; उन्होंने ज्ञान से समस्त वार्ता जानकर अग्नि को शान्त कर दिया और तनाथ को इस अनुचित क्रोधावेश में आ जाने के कारण श्चित्त करने के लिए कहा। योगियों की मर्यादा भङ्ग करने के प्रायश्चित्त स्वरूप उसे छत्तीस वर्ष तक कठिन तपश्चर्या करनी पड़ी। योगियों की यह प्रवृत्ति निस्सन्देह प्रशंसनीय थी।*

प्रचलित जनश्रुतियों के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ के बाईस शिष्यों में से, जिनमें गोरक्षनाथ सबसे अधिक ख्यातिप्राप्त थे, धर्मनाथ भी एक थे। धर्मनाथ के सम्बन्ध में भी कुछ वैसी ही घटना बताई जाती है जैसी कि दूरङ्गतनाथ के सम्बन्ध में। कच्छ में आकर उसने तपस्या की थी। धर्मनाथ ने वहाँ पर मठ बनाया और कनफटा सम्प्रदाय चलाया।

† धर्मनाथ के शिष्य गरीबनाथ ने भूज नामक स्थान पर, जो भाडली से १८ मील दूर है, तप करना आरम्भ किया। इस समय जाट लोग बड़े शक्तिशाली थे। जाटों के बच्चे उसकी तपस्या में विघ्न डालते थे। जामरायधन ने, जिसका शासन संवत् १२३१ से १२७१ तक रहा, जाटों को मार भगाया। इस प्रकार गरीबनाथ का समय बारहवीं शताब्दी होना चाहिए। दूसरी धारणा के अनुसार गरीबनाथ का समय हमीर के शासन-काल में पड़ता है। हमीर का शासन संवत् १५२८ से आरम्भ होता है। इस आधार पर गरीबनाथ का समय पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग माना जा सकता है। धर्मनाथ के अनुयायी पञ्जाब और नैपाल में अब भी हैं। गरीबनाथ को भाडली, थारण्डो और कोटडो नामक गाँव पुरस्कार में मिले थे जहाँ इनके उत्तराधिकारी आज तक हैं। इसके दो शिष्य ओरनाथ और पन्थनाथ थे। पन्थनाथ का शिष्य हुआ भिखारीनाथ। भिखारीनाथ को रावखेंगर जी ने संवत् १५४५ में पहला पीर बनाया। भिखारीनाथ का शिष्य प्रभातनाथ हुआ जिसे संवत् १६६५ में एक गाँव दान में मिला। पीर हमजानाथ को, जो पच्चीसवाँ उत्तराधिकारी था, संवत् १९२० में हिज हाईनेस राव प्रागमल ने गद्दी पर बैठाया। धीणोधार पर्वत के पास एक मन्दिर है जिसमें धर्मनाथ की मूर्ति कुण्डलसहित है। वहाँ एक धूनी भी मिलती है जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह कभी नहीं बुझती। वहाँ स्त्रियों के जाने का कड़ा निषेध है। धीणोधार का प्रमुख पीर कहलाता है।

डा० बड़थ्वाल ने गरीबनाथ के सम्बन्ध में कुछ दूसरा ही मत दिया है—

"नैणसी ने अपनी ख्यात में इनका उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि सिद्ध धूँधलीमल का आश्रम धीणोद में था। गरीबनाथ धूँधलीमल का शिष्य था। इसका आश्रम लाखड़ी में था। इस समय लाखड़ी का राजा घोघाकरन था। गरीबनाथ के शाप से घोघाओं का नाश हुआ और धूँधलीमल के आशीर्वाद

---

* ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि अश्रद्धा- और अविश्वासियों को आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवृत्त करने नए नाथों ने अपना शक्ति-कौशल दिखाया और उद्देश्य में हुए।

* "History of the Kanphatas of Kachh" में यह वृत्त कुछ हेर-फेर के साथ मिलता है।

† "History of the Kanphatas of Kachh" (Indian Antiquary Vol. VII)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जाड़ेचा भीम लाखड़ी का राजा हुआ। प्रभास पाटन के शिलालेख से इसका समय संवत् १४४२ ठहरता है।"

यद्यपि पहले दिए हुए कथन और डा० बड़थ्वाल के कथन में बहुत अन्तर है किन्तु गरीबनाथ का समय हमीर के शासनकाल में भी मान लेने पर पन्द्रहवीं शताब्दी का प्रारम्भ ही निश्चित होता है। अतः गरीबनाथ को बारहवीं शताब्दी में न मानकर पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मानें तो अधिक उपयुक्त होगा।

* 'पीर' शब्द का प्रचलन नाथों और सिद्धों में कब और कैसे हुआ, अभी ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। फिर भी इतना तो निश्चित है कि मुसलमानों के प्रभाव से यह शब्द आया। पञ्जाब में 'पीर' शब्द का प्रचलन अधिक है।

जाति-पाँति का भेद न रखने के कारण योग-सम्प्रदाय में सभी जाति के लोग थे। कई यवन नाथों में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। अजपानाथ और बाबा रतन हाजी दोनों मुसलमान थे। अजपानाथ का निवास अरब में था। वहाँ उसने बहुत से मुसलमानों को योगमार्गी बनाया। गोरक्षनाथ के प्रिय शिष्यों में से अजपानाथ भी था। बाबा रतन हाजी को मुसलमान लोग गूगा का गुरु मानते हैं।

गोरक्षनाथ का भ्रमण सुदूर देशों तक हुआ था। भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में तो ये आजीवन पर्यटन करते ही रहे। चीन और अरब में भी इनकी यात्राएँ हुईं। वहाँ भी इनके अनुयायी थे।

नाथों की स्मृति दिलानेवाली अनेक जातियाँ एवं उत्सव आज भी वर्तमान हैं जिनका गम्भीर अध्ययन और अनुसन्धान इस विषय में सहायक होगा। नैपाल में हरिणों को गोरखाण्ड† या गोरखाङ्ग कहा जाता है।

जेहलम प्रान्त में गोरक्षटीला नामक एक प्रसिद्ध पहाड़ है। कहा जाता है कि गोरक्ष यहाँ आकर ठहरे थे। सूर्यमल्ल और सुखिराम नामक दो मुमुक्षुओं को आपने यहाँ शिक्षा दी थी।

जम्बू राज्य में गोरखिया नामक एक प्रसिद्ध ग्राम है। पर एक निर्धन ब्राह्मण पर प्रसन्न होकर गोरक्षनाथ ने उसे धान्य से समृद्ध किया था।

रोहतक में खिडवाली ग्राम से आध मील दक्षिण की एक तालाब है। गङ्गदत्त नामक ब्राह्मण को चौरङ्गी इसी तालाब पर अपना शिष्य बनाया था। यह तालाब भी देववाला जोहड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर चौरङ्गी जी की धूनी है। माघ मास की चतुर्दशी को लो पूजते हैं।

आधुनिक भिर्जापुर में चुनार गढ़ में भर्तृनाथ जी की धूनी बताई जाती है।

गोरखा जाति का नाम गोरख के नाम पर ही पड़ा।

इन योगियों की गुफाएँ अब भी बहुत से स्थानों में पा हैं। हरिद्वार में भी इसी प्रकार की एक बड़ी गुफा मिलती

गोरखपुर गोरक्षनाथ का निवासस्थान रह चुका है। आ आधुनिक नाम गोरक्ष की स्मृति में ही है। स्थानाभाव उन सब स्थानों या स्मृति-चिह्नों को नहीं गिनाया जा सक किसी-न-किसी प्रकार नाथों से सम्बन्धित रहे।

इस सम्प्रदाय में गुरु को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान गया है—

साच का सबद सोना की रेख
निगुराँ कौं चाणक सगुराँ को उपदेस।
गुर का मूंड्या गुण में रहै,
निगुरा भ्रमै औगुण गहै॥
(गोरखबानी

गगनमँडल में ऊँधा कूवाँ तहाँ अमृत का बास
सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै निगुरा जाइ पियासा
(गोरखबानी

किन्तु गुरु मात्र कर लेना ही पर्याप्त नहीं। जिस हमें अपनी बागडोर सौंपनी है उसके खरेपन की जाँ उतनी ही आवश्यक है। माया के दुस्तर आवर्त अन्धकार में—लिपटा हुआ जीव छटपटाता है और किसी एक ऐसे शूर का आश्रय, जो उसे प्रकाश में उसके अन्तश्चक्षु खोल सके—

राति गई अधराति गई बालक एक पुकारै।
है कोई नगर में सूरा बालक का दुःख निवारै॥
(गोरखबानी)

मुमुक्षु का कर्तव्य है कि ऐसे ही समर्थ गुरु की श जो स्वयं ब्रह्मानुभूति में लीन हो चुका हो। यदि इस गुरु नहीं मिलता तो निगुरा रहना ही अच्छा है। में पड़ने की आवश्यकता नहीं कि न भोग ही मिल

* The successors to Garakh's Goddi at the Tilla of Salnath or Bal Gudai--which place is mentioned by Nizam-Uddin Auliya, 12th and 13th centuries; by Damodar, the 16th century author of His romance in verse; by the 17th century biographers of Nanak; by Ain—i—Akbari; by Nizam—Ud—Din Ahmad; by Farishta; even by Alexander's historians, from the 5th century or so—have been known as pirs which is a Muhammadan title.—Kabir—his Biography (Mohan Singh).

† गोरक्षनाथ का वन्य पशुओं से स्वाभाविक प्रेम था, अतः हरिणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर सतगुर नाँ मिल्या, रही अधूरी सीप।
स्वांग जती का पहरि करि घरि घरि माँगै भींप॥
(कबीर ग्रन्थावली)

इतना तो मानना पड़ता है कि ज्ञानमार्गी जिस सत्य की कल्पना मात्र किया करते थे, योगियों ने उसे अपने जीवन से अभिन्न कर दिखाया। ऐसे योगियों के दर्शन भाग्य से ही होते हैं—

सुणि गुणवन्ता सुणि बुधिवन्ता अनन्त सिधां की बाँणीं।
सीस नवावत सतगुरु मिलिया जागत रैणि विहाणीं॥
(गोरखबानी)

अन्यत्र किसी लेख में हम यह दिखाने का प्रयत्न करेंगे कि नाथों ने हिन्दी की निर्गुण-काव्य-धारा के निर्माण में कितना योग दिया। नाथों का पूरा-पूरा महत्त्व तभी समझ में आ सकेगा।

तुम्हारा रूप

श्री दुर्गाशङ्करप्रसाद सिंह

आज देववेला में अकस्मात् नींद खुल गई। अभी एक क्षण पूर्व प्रगाढ़ निद्रा में अपनी सुखमा भाभी का स्वप्न देख रहा था, जिसने कभी मेरे प्रेम की भावुकता में अपने जीवन की आहुति दे डाली थी। निर्मल आकाश में चन्द्रमा हँस रहा था। शीतल-मन्द मलयानिल के स्पर्श से एक ओर तो मेरा सारा शरीर सिहर ही रहा था पर दूसरी ओर हृदय में मन की कोमल अनुभूतियाँ भी खूब गुदगुदा रही थीं। मन में विचारों और संस्मरणों की बाढ़ ऐसी उठी थी कि उसी में मैं तब तक डूबता-उतराता रहा, जब तक सूर्योदय नहीं हो गया। विलक्षण संसार है। उसके सामने वर्तमान भूत बनकर जितना प्रिय और मधुर बन जाता है उतना यदि अपने वर्तमान रूप में व्यतीत होता तो उसका मूल्य उसकी दृष्टि में कितना अधिक होता। पर ऐसा जो होता नहीं है। यही तो विवशता है। अपने भूत विचारों का क्रम इतना मधुर और बलवान् था कि उसको अङ्कित करने के मोह को संवरण नहीं कर सका।

सुखमा की उमर बीस वर्ष की थी। उसी अल्प-अवस्था में वह एक वर्ष सुहाग-सिन्दूर धारण कर और एक मृत कन्या को जन्म देकर विधवा हो गई थी। चन्द्रशेखर बाबू ६ सन्तान और एक वृद्धा पत्नी के रहते उसे ब्याहकर घर लाए थे। अब सुखमा के घर में उसकी वृद्धा सौत, पाँच कन्याएँ और एक उद्धत स्वभाव का दस वर्षीय बालक रह गए। सुखमा को अपने पति के वियोग का दुःख उतना असह्य नहीं था जितना कि अपने वय का भार, जो उसे साल भर के बाद ही से अदमनीय प्रतीत होने लगा। वर्षी के दिन दूसरे घर के एक वयोवृद्ध-सज्जन ने उसके पास संवेदना का पत्र भेजते हुए उपदेश दिया था, "मैं आशा करता हूँ कि तुम जिस उच्च वंश में जन्म लेकर इस उच्च वंश में आई हो, उन दोनों वंशों का मुख अपने भविष्य के आचरणों से उज्ज्वल रक्खोगी।" इसको बेवकूफ [illegible] ने सुखमा को तब दिया था जब पति के वार्षिक श्राद्ध के उपरान्त नहला-धुलाकर उससे आँगन में गौरी-गणेश का पूजन कराया जा रहा था। पत्र पढ़ उसको अञ्चल की खूँट में बाँधते हुए जब वह सजल और कातर दृष्टि से आकाश की ओर निहार रही थी तभी आचार्यासन से पण्डित जी ने कहा,—"स्नानं समर्पयामि"। वह सचेष्ट हो यन्त्रवत् हाथ चलाने लगी।

इस घटना को आज पाँच वर्ष बीत गए। इन दिनों में विपत्ति की मारी सुखमा ने अपनी सौत को ही माता-पिता तथा पति समझा। उसीके आज्ञानुसार उसका रहन-सहन, उठना-बैठना, खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना सब होता रहा। उसकी वृद्धा जीजी भी उसको सुख पहुँचाने में कोई कसर नहीं रखती थी। सुखमा की श्वेत धोती मलिन न होने पाए, बाल बिना गूँथे न रह जाएँ, उसको रूखा-सूखा भोजन कोई न परोस दे, कोई कटु वाक्य न कह दे, इसका ध्यान जीजी को सदा बना रहता। वह स्वयं रसोई पकाती, पहले सुखमा को खिलाती, और तब अपने बच्चों को भोजन दे स्वयं भोजन करती। उसके लम्बे-लम्बे काले घुँघराले बालों को गूँथती और उसे अपने साथ लेकर सोती। मानो वह उसकी अपनी छोटी बहन हो। सुखमा भी जीजी और उसके बाल-बच्चों की सेवा में अपने को लीन रख-कर अपने शरीर के भीतरी शैतान को धीरे-धीरे भूलने-सी लगी थी। परन्तु इधर जब से पट्टीदार के स्कूल में पढ़नेवाले आधे दर्जन जवान लड़के जो, रिश्ते में उसके देवर लगते हैं, पढ़ाई छोड़कर घर पर ही रहने लगे हैं और उससे हँसी-मजाक करने लगे हैं, तब से उसके मन में जैसे कोई भूली-सी बात रह-रहकर पुनः स्मरण होने लगी है। जब हँसी-मजाक का सिलसिला चलता है तब बातों ही बातों में उसके कपोल न जाने क्यों सहसा लाल पड़ जाते हैं। पर तुरन्त ही वह कुछ चिन्तित-सी सिहरी और उदास-सी होकर एक ओर किसी बहाने चली जाती है। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह विष के समान ऐसा तीखा उत्तर देती कि बात करनेवाला भीतर ही कट मरता। पर उसकी बात इतनी नपी-तुली होती थी कि उसका उत्तर देना मजाक करनेवाले के लिए असम्भव हो जाता था। उस रात में जब वह जीजी के साथ सोती तो उसके अञ्चल को भीगा देख जीजी उठ बैठती और उससे अनेकानेक वार्ता करके उसके हृदय के घाव पर मरहम चढ़ाना चाहती। इस पर सुखमा जीजी की गोद में सिर रख सिसक सिसककर रोती, पर मुख से एक शब्द भी नहीं निकालती। इस तरह उसका एक साल और बीत गया।

अब मैं बी० ए० की परीक्षा देकर घर पर रहने लगा था। मेरी परम प्रिय पत्नी हिमवती अपने मायके गई हुई थी। मैं विरह की लम्बी रातें अक्सर जगकर या पत्नी को लम्बे-लम्बे पत्र लिखकर बिताने लगा। रिश्ते में मैं भी सुखमा का छोटा देवर लगता था। पर उमर में तो उससे ५-६ वर्ष बड़ा ही था। मुझसे बातें करते समय सुखमा अकसर उदास हो जाया करती थी। और जब मैं इसका कारण पूछता तो वह आँखों में आँसू भरकर कह देती, "रहने दो, छोटे भैया! इस दुखिया की गाथा को सुनकर तुम क्या करोगे?" जब हम दोनों एकान्त में मिल जाते तब वह अपलक मुझे निहारने लगती। और मेरे उसकी ओर देखने पर भी वह अपनी दृष्टि मेरे मुख पर से नहीं हटाती। मैं मुस्कुराकर पूछता, "मेरे मुख में क्या देखती हो, भावज?" वह जैसे स्वप्न से जगी हो, चौंककर कहती, "क्या पूछते हो?" और जब मैं पुनः उसी प्रश्न को दुहराता तो वह धीरे से मुस्कुराकर कह देती—"तुम्हारा रूप।"

यह सिलसिला इतने दिनों तक जारी रहा कि मैं उसको 'तुम्हारा रूप' कहकर अक्सर दूसरों के सामने भी चिढ़ाने का प्रयत्न करता। पर वह चिढ़ती नहीं, केवल मुस्कुराकर चुप रह जाती। उसकी जीजी के सामने भी मैंने ऐसा कई बार कहा। और उसकी सीधी-सादी वृद्धा जीजी इसको देवर-भौजाई का मजाक समझकर हँसती और कहती, "जाने दो, कुँवर! ऐसा भी कोई कहता है? बड़ी भौजाई का छोटा देवर उसका रूप नहीं देखता।" फिर सुखमा की ओर घूमकर हँसते हुए पूछती, "क्यों बहन! तुम्हारे रूप में क्या है जो कुँवर 'तुम्हारा रूप' 'तुम्हारा रूप' चिल्लाया करता है?" सुखमा मुस्कुराकर चुप हो जाती और आकाश की ओर देखने लगती। उस समय वह या तो अपने अन्तर्द्वन्द्व पर विजय पाने के लिए सुस्ताकर आत्म-बल सञ्चय करना चाहती या भीतर की अग्नि पर आँखों का जल भीतर ही भीतर छिड़ककर उसे बुझाने का प्रयत्न करती। पर मुझमें इन मनोवैज्ञानिक बातों को समझने की योग्यता शायद नहीं थी। इसीसे तो इसका अर्थ कुछ न समझकर वैसे ही बड़बड़ाता हुआ अण्ट-सण्ट बका करता और सुखमा वैसे ही मुझे निहारा करती। कालेज में यद्यपि उच्च-शिक्षा प्राप्त की थी, पर अपनी उद्धत और उद्दण्ड

नहीं दी थी; क्योंकि 'विद्या ददाति विनय' वाली विद्या तो पढ़ाई नहीं जाती। इससे उस विधवा की मानसिक व्यथा समझ लेना मेरे लिए तब तक सम्भव नहीं हुआ जब एक विशेष घटना नहीं घटी। जब वह घटना संघटित हो और मैं एक बार उसको समझ गया तो उसके बाद से मनोभावों को इस सफाई और शीघ्रता से समझने लगा, कालेज में प्रोफेसर के लेक्चर को सुनते-सुनते ही हृदयङ्गम लेता था।

(२)

उस दिन सत्यनारायण की कथा थी। मेरी अन्धी मात मेरी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की मनौती में कहवाई विधिवत् पीत वस्त्र पहनकर मैंने कथा सुनी थी। हर अध्याय अन्त में जब शङ्ख बजता था तब सुन्दर स्वादिष्ठ पकवानों ओर देखकर पण्डितजी से यही पूछता, "अब कितने अध्य हैं?" सुखमा भी निकट ही अन्य महिलाओं के साथ बैठी बड़े ध्यान से सुन रही थी। वह रह-रहकर मेरे मुख की देखती जाती थी। एक बार अध्याय के अन्त में जब वह ओर अपलक निहार रही थी तब मैंने हँसकर धीरे से "इधर क्या देख रही हो, सुखमा भावज?" इस पर उसका पुरातन पेटेण्ट उत्तर तत्क्षण मुँह से निकला, "तुम्हरा कुँवर।" आज उसने मुझको छोटे भैया न कहकर कुँ नाम से ही सम्बोधन किया। उसके इस सम्बोधन-स्व मुझको 'एक विशेष मधुरिमा, विशेष सौन्दर्य और आकर्ष ज्ञात हुआ जिससे मेरे शरीर में एक विलक्षण सिहरन वि गति से दौड़ गई। यह क्यों? सो तो शायद बताने में उस असमर्थ ही था। हाँ, अब बताने योग्य हूँ। पर अब आवश्यकता ही नहीं। इसी के साथ सुखमा भी तो, श सहसा सिहरनयुक्त गुदगुदी के उठ आने से जैसे कोई कर काँप उठता है वैसे ही अपने हृदय की किसी अज्ञात गु से सिहर और काँपकर, चौंक उठी थी। और उसके बाद तुर उसके मुख पर उत्तेजना की एक लाल-सी लहर भी दौड़ थी। यह मुझे आज अपनी कल्पना में साफ-साफ स्मरण है। पर तब इसपर मेरा विशेष ध्यान गया था या नहीं, सो कह सकता।

कथा समाप्त हुई। सभी प्रसाद ले इधर-उधर खाने मैंने भी एक दोने में पञ्जीरी ले ली और अपने लड़क स्वभाव से कभी हाथ से और कभी जीभ से ही चाटकर खाता हुआ मण्डप में इधर-उधर घूमने लगा। इतने में सुखमा दिखाई पड़ी। मैंने उस समय जीभ पर पञ्जीरी ली थी। उसे खाकर उसको प्रसाद दिखाते हुए म पूछा, "सुखमा भाभी, तुम प्रसाद नहीं खाओगी?" वह कुछ बोली नहीं। वह पूर्व की तरह मन्द-मुस्कान ओर अपलक निहारने लगी। उसी क्षण मैंने मजाक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र अपनी जीभ पर पञ्जीरी को उठाते हुए जीभ उसकी ओर दिखाकर सङ्केत किया। सच कहता हूँ, मेरा उस समय का वह कृत्य केवल हँसी ही के रूप में था और इसमें रञ्चमात्र भी दूसरी कोई भावना नहीं थी। सारा मण्डप नर-नारियों से भरा था। यदि कोई दूसरी हेय भावना होती तो ऐसा कृत्य मुझसे क्या, किसी निर्लज्ज से भी प्रतिपादित करते नहीं बनता। न मालूम सुखमा को क्या हो गया। उसने तुरन्त मेरी ओर मुँह बढ़ाया और अपने अधरों के सहारे मेरी जीभ से पञ्जीरी पोंछ ली। मैं तुरन्त सचेत होकर आश्चर्य भरी दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा कि किसी ने देखा तो नहीं। पर सुखमा के मुख पर न तो आश्चर्य था और न भय या पश्चात्ताप का कोई चिह्न। हाँ, एक वस्तु ऐसी अवश्य दिखाई पड़ी कि जिसको देखकर मैं डर गया; और वह थी उसके मुख पर की खेलती हुई आन्तरिक प्रसन्नता, जिसको मैंने पूर्व में कभी इतने स्पष्ट और निःसङ्कोच रूप में नहीं देखा था। मैं भयभीत-सा चुप हो गया। पर सुखमा ने बड़ी सहज दृष्टि के साथ मुस्कराकर प्रसाद का दोना मेरे हाथ से ले लिया और वैसे ही मस्त हो चाट-चाटकर पञ्जीरी खाने लगी जैसे मैं खा रहा था। मैं इस घटना से इतना डर गया कि हफ्तों सुखमा के सामने जाने की हिम्मत नहीं हुई। पर मैंने सुखमा को, या उसके उस दिन के इस कृत्य को, विस्मरण कर दिया हो, सो बात नहीं थी। रह-रहकर उसका अपलक निहारना तथा मेरी जीभ से पञ्जीरी चाट लेना स्मरण हो आते और मेरे हृदय को मथकर अजीब तरह से उन्मत्त-सा कर देते। बार-बार सुखमा के पास जाने का हौसला बाँधता पर किसी अज्ञात शक्ति से पाँव न मालूम क्यों दरवाजे के बाहर जाने के बजाय कमरे की ओर ही घूम जाते। इसी तरह पूरा एक मास बीत गया।

(३)

एक दिन अकस्मात् एकान्त में रात्रि समय सुखमा से मेरी भेंट हो गई। कतिपय साधारण बातों के उपरान्त सुखमा का बायाँ हाथ अपने दाहिने हाथ में लेकर दबाते हुए मैंने कहा, "मुझको इतना आगे बढ़ाकर अब क्यों पीछे धकेल रही हो, सुखमा? क्या इसका उत्तर तुम्हारे पास कोई है?"

इस प्रश्न से सुखमा के कपोल रक्त-रञ्जित हो गए। पर प्रश्न का कोई प्रत्युत्तर दिए बिना ही उसने आकाश में खिले हुए राकेश की ओर निहारा। मुझे ऐसा लगा कि उसके चमकते हुए विशाल नेत्रों को देखकर चन्द्र भगवान् मानों हँसने लगे और उनके हँसते ही उनकी असंख्य किरणें एक ही साथ पृथ्वी पर अवतरित हो सुखमा के सुन्दर मुख को घेरकर चिर-परिचिता सहेलियों की तरह उससे हाथापाई करने लगीं। पर सुखमा का सुन्दर मुखारविन्द मरीचिकाओं के इस हास-परिहास में सहयोग देने के स्थान पर मानो रो रहा था और रुदन कर रही थी उसकी आकृति, उसकी आँखें, उसकी शोभा तथा पीठ पर की बिखरी केशराशि। पर तब भी कला निधि की उच्छृङ्खल किरणें इस रुदन पर उपहास का अट्टहास करते अघाती नहीं थीं। अपने कवि स्वभाव नेत्रों से इस कल्पित दृश्य को देखकर मैं विस्मय में पड़ गया; परन्तु पूर्व इसके कि मैं कुछ और पूछूँ या कहूँ, सुखमा ने आकाश से दृष्टि हटाई और अपने भीगे हुए अपलक नेत्रों को मेरे आश्चर्यचकित मुँह पर टिकाकर वैसे ही निहारने लगी जैसे पूर्व अवसरों पर किया करती थी। उसकी उदासीनता से विषय का क्रम बदलने के अभिप्राय से मैंने अपने उसी पुराने पेटेण्ट प्रश्न को दुहराया, "इधर क्या देखती हो, सुखमा भाभी?" और उसने भी अपना वही पेटेण्ट उत्तर भरे कण्ठ को साफ करके दुहरा दिया, "तुम्हारा रूप।" और इसी के साथ उन्मादिनी की तरह खिलखिलाकर वह हँसने लगी। पर मैं अन्धा हो गया था। उसकी इस विक्षिप्त हँसी को प्रोत्साहन का संकेत मानकर पागल-सा उधर ही को झुक पड़ा जिधर को सुखमा का मुख था। पर मानो इस आक्रमण से बचने का उपाय उसने पहले ही सोच रक्खा था। वह उठकर खड़ी हो गई और मेरे उत्तप्त गालों पर हल्का-सा चपत जमाते हुए ममता से भरे पर उपदेश सूचक स्वर में कहने लगी, "पागल न बनो, कुँवर।" मैंने हाथ की मिठाई छीने हुए बच्चे की तरह रुआसी आकृति से उसको निहारा और रुँधे कण्ठ से पूछा, "क्या सचमुच मैं पागल हूँ, सुखमा भाभी!" उसने दूसरा चपत दूसरे गाल पर लगाते हुए एक वयोवृद्धा माता की प्रताड़नावाली आकृति से कहा, "हाँ तुम जरूर पागल हो गए हो, कुँवर। तुम जैसे सयाने ऐसी बातें नहीं सोचते।" इतना कहकर उसने मेरे मुख के चारों ओर अपना दाहिना हाथ फेरा और बड़े आदर से उसे चूमकर कहा, "कुँवर! तुम नहीं जानते, मैं विधवा हूँ न!"

मैं रोना-सा मुँह किए उसे अनिमेष ताकता रहा और वह भी मुझे एकटक निहारती रही। मेरी अस्थिरता से आहत होकर या क्यों, उसकी विशाल आँखों से टप-टप करके दो बूँद पृथ्वी पर गिरकर चूर हो गए। फिर उसने कुछ स्वस्थ होकर भरे कण्ठ से कहा, "तुम मेरे व्यवहारों पर आश्चर्य करते होगे, कुँवर, और सोचते होगे कि मैं विलक्षण कठोरहृदया हूँ।" यह कहकर उसने मुझे देख यह जानना चाहा कि उसके इस कथन का प्रभाव मेरे ऊपर कैसा पड़ा। पर मैं तो पहले ही से सचेत हो उठा था, बोला, "छिः! छिः! कौन ऐसा पापी होगा जो तुमको ऐसा समझेगा, सुखमा।"

सुखमा चुप हो रही। मैं भी मौन हो थोड़ी देर उसकी ओर देखता रहा। फिर अधीर होकर कहा, "सुखमा भाभी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कुछ सोचा फिर आकाश के चन्द्रमा को निहारा और फिर मेरी ओर देखकर गीले स्वर में कहा, "पूछो, बताऊँगी।"

मैंने कहा, "सचमुच ?"

उसने दृढ़ स्वर में कहा, "मैं तुमसे झूठ नहीं बोलती।"

मैंने आजिजी भरे स्वर में कहा, "भाभी, तुम्हारे व्यवहार क्या हैं ? तुम क्या हो और क्यों मुझे ऐसा खेल खिला रही हो कि जिससे मैं जीकर भी मरा-सा हो रहा हूँ ? यही मेरी समझ में नहीं आता।" मैं उदास हो हँसते हुए चन्द्रमा को देख देख भीतर ही खीझने लगा।

सुखमा इस प्रश्न से चुप हो गई। उसने कुछ विचार कर मेरी ओर देखा और हँसकर कहा, "तुम्हारा असली रूप देखने के लिए ही तो, कुँवर जी ?" इस उत्तर में श्लेष है, यह समझकर भी मैंने सुदूर क्षितिज पर के एक डूबते हुए तारे पर अपनी दृष्टि गड़ा दी। पर सुखमा मुझे निहारती ही रही। थोड़ी देर ठहरकर उसने हँसकर पुनः कहा, "तुम थोड़ी देर और उधर ही देखते रहो, कुँवर, कि इस बीच इस क्षीण प्रकाश में भी मैं तुम्हारा रूप देख सकूँ।"

मैंने खीझ कर कहा, "तुम देख लो मेरा रूप, मैं तुम्हारा रूप थोड़े ही देख सकता हूँ।"

सुखमा को चोट पहुँचाने के लिए ही मैंने यह वाक्य कहा था। पर वह घायल नहीं हुई। वह पूर्ववत् हँसती हुई मुझे उसी निश्छल भाव से निहारती रही जिससे उसने पूर्व बातें कही थीं। मैं हार गया; विवश हो अपना माथा उसके चरणों पर रखते हुए कहा, "क्षमा करो, भाभी ! मैं अपराधी हूँ।"

सुखमा झुक कर मेरा मस्तक पकड़ कर बैठ गई। बलपूर्वक मेरे सिर को उठाकर अपनी गोद में रखते हुए उसने कहा, "क्यों ऐसा अधीर हो रहे हो, कुँवर ? मुझे नरक में न भेजो। किसी दिन तुम स्वयं ही मुझको और मेरे व्यवहारों को जानकर मुझे क्षम्य समझोगे।"

मैं सुखमा की गोद में सिर रक्खे उसकी ओर निहारने लगा और सुखमा मेरे बालों को सहलाती हुई बड़े प्रेम से मुझे ताकती रही। मैंने कहा, "सुखमा !" और उसके मुख से निकला, "कुँवर !" चारों आँखों ने केवल इन दो शब्दों के उच्चारण मात्र से ही अपने हृदय के भावों को व्यक्त करके एक दूसरे को समझा दिया। मिनटों हम दोनों चुप रहे, मानों दोनों एक दूसरे को पूर्ण रूप से इसी बीच समझ चुके थे। वह मेरे माथे को अपनी गोद से धीरे से हटाती हुई खड़ी हुई और प्रेमपूर्ण स्वर में बोली, "तुम कब ससुराल जा रहे हो ?"

मैंने कहा, "कल या परसों।"

उसने कहा, "उन्हें जरूर लिवा लाना, नहीं तो वहाँ उनकी दवादारू नहीं हो सकती। अच्छा, जाओ। बहुत देर हो गई। जीजी इन्तजार करती होंगी।" इतना कहकर बिना उत्तर की

(४)

पत्नी को ससुराल से लिवाकर जब मैं घर लौटा तो सुख उनसे मिलने नहीं आई। दो-चार दिन बाद जब सुखमा एकान्त में भेंट हुई तो उसने पूछा, "बहू से मेरे सम्बन्ध बातें हुई थीं ?"

मैंने कहा, "नहीं।" यह लज्जा की बात मैं उनसे कहने लगा ?"

उसने कहा, "लज्जा ! छिः ! इसमें लज्जा कैसी ! पाप करती तब तो लज्जा थी। और तुम कैसे आदमी हो अपनी पत्नी से ऐसी बातें भी छिपाते हो ?"

मैं अकचकाकर उसकी ओर देखने लगा। पर उ आकृति वैसी ही गम्भीर और प्रेम से परिपूर्ण थी। मैं थे देर उस सौम्य और देवी-सी पवित्र मूर्त्ति को निहारता रहा बोला, "सुखमा भाभी, मैं अभी तुमसे झूठ बोल रहा मैंने सभी बातें आद्योपान्त उनको बता दी हैं।"

सुखमा गम्भीर हो गई, बोली, "तब उन्होंने क्या कहा

मैं थोड़ी देर चुप रहा। पर सुखमा मौन के कारण स्यात् जान गई। उसने कहा, "उन्होंने जो कहा है वह जानती हूँ। तुम यदि झूठी बात गढ़कर समझाना चा तो मैं उसको मानूँगी नहीं।"

मैंने कहा, "जाने दो, उन बातों को सुनकर तुम्हें दु होगा। फिर उनके कहने से तुम्हारे लिए कोई खास भी तो नहीं है।"

सुखमा ने कहा, "क्यों, कुँवरजी ! मुझको उनसे दू समझते हो क्या, कि उनकी बातें तो नहीं कहते और मेरी बातें उनको बता आए।"

उसकी आँखें भर आईं और वह वहाँ से जाने लगी। उसको रोककर कहा, "जब मैंने तुम्हारे सम्बन्ध की सभी कह सुनाईं तो उन्होंने बिना किसी द्वेष या घृणा के साफ में मुझसे कहा, "मुझे इसके लिए न दुःख है न ग्लानि। प्रेम में इतनी उदारता है कि मैं किसी के प्रेम की कद्र कर पर एक भय मुझको होता है, और वह यह कि जीजी के कन्या हुई थी। ऐसा न हो किसी भयङ्कर परिणाम का सामना करना पड़े।"

सुखमा यह सुनकर चुप हो गई। थोड़ी देर तक सोचती रही। फिर बोली, "बहू बड़ी उदार हैं।" यह कर वह तेजी से कमरे के बाहर चली गई। दरवाजे पर कर उसने घूमकर कहा, "ठहरना, अभी आती हूँ।"

जब वह लौटकर कमरे में आई तो उसके हाथ में पत्र था। उसको मुझे देते हुए उसने कहा, "इसे प इसे तुम्हारे पिताजी ने मुझे तब लिखा था जब मैं अपने की वर्षी मना रही थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पत्र लेकर आद्योपान्त पढ़ डाला। यह वही पत्र था जसका जिक्र पूर्व हो चुका है। सुखमा ने कहा—"देखा अपने माज को। वह पाप से घृणा नहीं करता बल्कि उसके उस ंश से, जो निष्पाप है, घृणा करता है। उससे उसके निजी ार्थ को जो धक्का लगता है, उसी से उसे उससे घृणा है। तुम्हारे ताजी पुरुष हैं, इससे इसी बात को उन्होंने दुहराया तो सही, र पेच के साथ। पर बहू स्त्री है। वह समझती है कि पुरुष-माज कितने पानी में है। उसने साफ कह दिया। अपनी ात भी बताए बिना नहीं रही। सच पूछो तो बहू को ही इसमें रा मानना था। पर उसने स्त्री होने के कारण स्त्री-हृदय ी पीड़ा को समझा और दया करके या अपनी उदार भावना से रित होकर उसे उसी क्षण क्षमा भी कर दिया। पर पुरुष-माज की कठोर निर्दयता को तो वह जानती है! इसी से मुझे सने सावधान भी कर दिया। तुम क्यों मेरे पीछे पड़े हो, वर? तुम भी पुरुष हो। तुम्हारे हृदय के भीतर भी यही प बैठा हुआ फुफकार रहा है।"

वह खत मेरे हाथ से लेकर जल्दी से कमरे के बाहर चली । मैंने चाहा कि उसको रोककर अपनी सफाई दूँ, पर न ालूम क्यों मेरा कण्ठ अवरुद्ध-सा हो गया और वह धीरे-धीरे ी आँखों से ओझल हो गई। जब मैं लौटकर पत्नी के कमरे गया तो उनको ज्वर के ताप में बेहोश पाया। यह देख मैंने न्त डाक्टर को बुलवाया। उसने सन्निपात का प्रकोप बता ी सावधान रहने की चेतावनी दी। मुझे काठ मार गया। फिर हिम्मत बाँधकर बड़ी लगन से सेवा करने लगा।

लगातार कई दिनों तक एक समान सेवा करते-करते मैं थक ा। रात-रात भर अकेले जगना, उनके झिझककर उठ बैठने उन्हें अकेले पकड़कर सँभालना, समय पर दवा देना और सर- सदा बरफ की थैली रक्खे रहना आदि काम एक आदमी को ा देने के लिए काफी थे। फिर भी मैं दृढ़ था और रञ्च-मात्र पत्नी के पास से नहीं हटा। जब उन्हें नींद-सी मालूम होती मैं भी आँखें मूँदकर तन्द्रा में अचेत हो जाता। इसी ह दिन बीतने लगे। चौदहवें दिन सुखमा आई। वह कर अपनी जीजी यानी मेरी धर्म-पत्नी हिमवती की खाट के बैठ गई। मैं वहीं था। सुखमा के इस विपत्ति में ने दिनों तक न आने से मेरे हृदय में उसकी ओर से कुछ और निःस्पृहता-सी उत्पन्न हो गई थी। मैं उसे प्रकट होने रोक भी नहीं सका। कहा—"भला आज स्मरण तो हुआ?" मेरे प्रश्न की उपेक्षा कर उसने उसी पूर्व स्नेह-पूर्ण मुद्रा से ओर निहारकर पूछा—"अब पहले-से कैसी हैं?"

मैंने झल्लाकर कहा—"तुमको इससे क्या मतलब?"

सुखमा ने गम्भीर मुद्रा में कहा—"मेरी जीजी हैं और लब तुमको होगा? उठो जाओ; मुँहहाथ धोकर जरा सो । मैं यहाँ बैठी हूँ।"

मैं चुप बैठा रहा। हिमवती सन्निपात में अर्थ-हीन बातें रह-रहकर कह रही थीं। हमारी बातों को उन्होंने सुना या नहीं, यह तो नहीं कह सकता। पर आँखें खोलकर पहले उन्होंने मुझे निहारा और फिर सुखमा को देखा। उनकी आँखों में पहले तो जल भर आया फिर सहसा अग्नि-सा तेज चमक उठा। बस, तकिए पर माथा पटककर उन्होंने कहना शुरू किया—"मैं दूसरी हूँ! दूसरी अपनी हैं!! अपनी की बात दूसरी से कहना मना है—मना है!!!" और खिलखिलाकर हँसने लगीं। हँसी की शुष्कता डरावनी थी। मैंने माथे पर बर्फ की थैली रखनी चाही, पर हिमवती ने उसे छीनकर दूर फेंकते हुए कड़े शब्दों में कहा—"रहने दो इस कृपा को।"

सुखमा चुपचाप यह सब देख रही थी। मेरी आँखों से आँसू गिर रहे थे और हिमवती वैसे ही अनेक अर्थ-हीन वाक्य दुहराती चली जा रही थीं। इतने में डाक्टर आया। उसने देख-दाखकर थोड़ी देर सोचा और फिर एक दवा देकर कहा—"किसी से कहिए इसे पिला दे। आप खुद न पिलाइए। इनको अकेला छोड़ आप लोग बाहर बैठें।" मैं तो हट गया, पर सुखमा वहीं बैठी रही।

तीन-चार घण्टों के बाद जब मैं लौटा तो हिमवती शान्त स्वर में सुखमा से बातें कर रही थीं। पर स्वर इतना क्षीण था कि साफ सुन नहीं पड़ता था। मैं दबे पाँव आया था। वार्ता सुन-कर चुप खड़ा हो गया। हिमवती के चुप होने पर सुखमा ने कहा—"बहू, मान लो कि किसी की किसी सुन्दर चीज पर किसी की आँखें बलात् पहुँच जाएँ तो इसमें उसका दोष तो तब न होगा जब वह सुन्दर वस्तु को छुए या चुराकर ले भागे। आँखों के धर्म को कोई कैसे रोक सकता है, बहन?"

हिमवती ने कोई उत्तर नहीं दिया। सुखमा कहती गई—"तुम स्त्री हो। तुम स्त्री के हृदय के भाव सहज ही जान सकती हो। फिर उस स्वाभाविक निर्बलता को रोक न सकने के कारण ही क्या मैं हेय हो गई?"

हिमवती ने कुछ कहा, पर क्या कहा, यह मैं स्वर क्षीण होने के कारण साफ नहीं सुन सका। सुखमा ने कहा—"यह तो मैंने पहले ही सोच रक्खा था कि तुम्हारा प्रेम इतना अनुदार नहीं। पर बहू, मैं समाज की सताई आजन्म दुखिया होकर भी इतनी पापिन अभी नहीं बनी हूँ कि किसी के घर डाका मारूँ और उसकी आँखों के आगे ही उसके उदार भावों का नफा उठाऊँ। उसकी जीवन-गठरी को छीनकर ले भागूँ।"

हिमवती ने कहा—"यह मैंने कब कहा कि आप मेरी गठरी लिए जा रही हैं?"

सुखमा ने कहा—"कहा नहीं, पर आखिर तुम्हारे भी तो हृदय है न? केवल बुद्धि और विवेक तथा उदार भावनाओं की प्रेरणा से ही तो संसार का हृदय-धारी जीव जीवित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सहज स्वाभाविक भावनाएँ दबा दी जाएँ और जीवधारी के भाव-प्रधान हृदय का गला घोंट दिया जाए। पर मरते समय तो हृदय एक बार चीखे बिना नहीं मानेगा, बहू? हृदय की खाद्य-वस्तु तो भावुकता है न? बुद्धि और विवेक नहीं। इसी भावुकता के बल से तो हृदय जीता है, बहू।"

सुखमा चुप हो गई, मानो उसका कण्ठ भर आया हो। हिमवती भी चुप हो रहीं। सुखमा ने खाँसकर फिर कहना शुरू किया—"बहू, भगवान् के घर तुम अच्छी कमाई करके आई थीं इससे सुन्दर गठरी सुहाग-अञ्चल में बाँध रक्खी है। यह तुम्हारा है, इसको सहेजकर रक्खो। इसको पराया समझकर बेकार क्यों प्राण दे रही हो। भले ही मेरा मन इस पर लुब्ध हो, पर मेरा धर्म तो इसे छूने का नहीं है और न मैंने अपना धर्म छोड़ने का हौसला ही किया है।" सुखमा ने खाँसने के बहाने अपना कण्ठ साफ किया और कुछ सुस्ताकर आगे कहा—"समाज ने न जाने मेरे किस पाप के कारण मेरे हाथ-पाव बाँध, गले में फाँसी डाल, मुझे फाँसी की टिकठी पर खड़ा कर रक्खा है। वह न तो डोरी खींचकर मेरा प्राणान्त ही करता है और न हाथ-पाँव खोलकर मुक्त ही। और ऊपर से तुर्रा यह कि रात-दिन अच्छी-बुरी सभी चीजों का प्रलोभन दे-देकर हृदय में वासना की अग्नि भी धधकाया करता है।" सुखमा सिसकने लगी।

हिमवती ने शान्त स्वर में कहा—"जीजी, आपकी सभी बातें सत्य हैं। सत्य मानिए मैं आपसे रञ्च-मात्र भी असन्तुष्ट या अप्रसन्न नहीं हूँ। मेरी सभी सहानुभूति आपके साथ है। पर जीजी, जो कुछ भी मेरी चेतावनी थी वह इस क्रूर समाज को देखकर आपकी भलाई की ही कामना से थी।"

सुखमा ने कहा—"यह तो मैं माने लेती हूँ। पर तुम यहाँ आते ही इस तरह बीमार पड़कर मरणासन्न क्यों हो गईं? तुम कितना भी समझाओ, बहन, पर मुझसे तुम्हारे मर्मस्थल के घाव छिपे नहीं रह सकते! मैं स्त्री हूँ, पुरुष नहीं; जिनके पास स्त्री की सुन्दरता देखने को आँखें तो होती हैं पर उसके हृदय के नासूरों को परखते समय रतौंधी छा जाती है। तुम बातों में चाहे जितना भी छिपाओ, पर तुम्हारे जिस मर्मस्थल से रक्त बह रहा है उसको बिना यहाँ आए ही मैंने देख लिया था और उसी नासूर को पूरा होने के लिए समय देने के अभिप्राय से ही मैं आज तक तुम्हारे पास आ भी नहीं सकी थी।"

हिमवती ने धीमे स्वर में कहा—"मैं उनकी शपथ खाकर कहती हूँ, जीजी, मेरी इस रुग्णता का कारण आप नहीं हैं।"

सुखमा की त्रस्त-सी क्षीण आवाज सुनाई पड़ी—"सच कहती हो, बहू?"

इतने में रामू 'मा! मा!! देख बाबूजी यहाँ खड़े हैं' कहता हुआ आँगन से चिल्लाने लगा। मैं खिसककर कोने की तरह करके कहा—"कुँवर, बैठो। अब इनकी तबीयत ठीक मैं जरा तुलसी को दीप दिखाती आऊँ।"

(५)

हिमवती की चारपाई पर बैठकर उनके माथे पर हाथ हुए मैंने कहा—"हिम!"

हिम ने मेरी ओर आँखें करके मुझे एक बार निहारा नेत्र बन्द कर लिए। मैं चुपचाप उनके बालों को सहला रहा। पाँचेक मिनट रुककर धीरे से फिर पूछा—"अब कैसी हो?"

पर हिम अब भी चुप ही रहीं। थोड़ी देर और ठहरकर जब तीसरी बार आर्द्र स्वर में मैंने वही प्रश्न दुहराया तो अपनी विशालकाय पलकों को खोला। नेत्रों के खुलते ही बड़ी बूँदें ढुलकने लगीं। मैंने बड़े प्रेम के साथ उनको और माथे पर हाथ फेरते हुए सान्त्वना के स्वर में कहा—"हिम!! तबीयत खराब हो जाएगी।"

हिम की आँखें मेरे मुख पर टिक गईं। मैंने झुककर आँखों में अपनी आँखें डालकर आर्त स्वर में कहा—"हिम, पुनः जिस अपराध के कारण तुम ऐसी हो रही हो वह मुझे बताओ, हम मैंने तुम्हारी सभी बातें सुन ली हैं। इतना कहते-कहते ही दोनों हाथ हिम के पावों पर पहुँच गए और मेरा सिर उधर झुक ही रहा था कि इतने में हिम घबड़ाकर उठ मेरे हाथों को पकड़कर माथे से लगाते हुए उन्होंने कहा—"नरक में न डालो, नाथ!" और वे मेरे पाँवों पर लोट गईं।

मैंने उनके मस्तक को उठाकर अपनी गोद में रख अपना मुख मेरी गोद में छिपाए हुए वे सिसक-सिसककर लगीं। इधर मेरे अर्धसम्पुट नेत्र भी अविरल आँसू ढारने

जब हम दोनों का हृदय-भार हल्का हुआ तब मैंने "हिम, अपने हृदय की बातें मुझे बता दो। मैं अपने के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

हिम चुपचाप छत की ओर देखने लगीं। मिनटों की के बाद मेरे मुख से एक निराश की आह निकली। उसी से हिम का ध्यान टूटा। उन्होंने कहा—"तुम जीजी की कोई बात कहते-कहते सहसा यह कहकर रुक गए किसी की गोप्य बात किसी पर प्रकट नहीं करनी भला बताओ तो, तुम्हारे सामने अब मैं दूसरी हो गई!"

मेरे ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी हो। अब मुझे बातों-ही-बातों में मैंने कितनी बड़ी भूल और नासमझी डाली है। मैंने इस भूल के लिए हिम से क्षमा-याचना उन्होंने इसका विरोध करते हुए कहा—"मुझे नरक में नाथ! मैं तुम्हारी दासी हूँ। मुझसे क्षमा-याचना कैसी मेरे देवता हो।" इतना कहकर वे मेरे पैरों पर गिर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न ठीक मुझे रुलाई आ गई। पैरों पर से उठाकर उन्हें हृदय से
ागा लिया। थोड़ी देर बाद सँभलकर कहा—"सचमुच मैंने
ूल की है, हिम। सच पूछो तो वे बातें कुछ नहीं थीं।
क दिन जब हँसी-हँसी में मैंने रूप की गोराई की प्रशंसा की
र हाथ मे उसने व्यंग्य के स्वर में कहा था—"तुम्हारे मृत भाईजी ने भी
स निगोड़ी गोराई की प्रशंसा की थी। पर आप चले गए
निहारा और आज वही गोराई इस जीवन का काँटा बन रही है।"
ा सहसा उसके उपरान्त सुखमा भाभी एक क्षण भी वहाँ नहीं ठहरी।
छा—"रे हाथों से अपना हाथ छुड़ाकर सजल-नेत्र हो वहाँ से उठकर
मरे में चली गई और मैं अपने कमरे में आकर अपने
ौर औचित्य से भाभी को दुःख पहुँचाने की बात पर पछताने लगा।
तो हिम बात इतनी ही सी थी, हिम, जिसको उस रात मैं तुमसे कहने
ते ही रहा था, पर अपनी मूर्खतावश न कहकर तुम्हें कष्ट
उनको पहुँचाया।"

ा—"हि हिम चुपचाप सुनती रहीं। उन्होंने कुछ कहा नहीं, केवल—
हम स्त्रियाँ कितनी जल्दी पुरुषों पर विश्वास कर बैठती हैं"
मैंने कहकर एक दीर्घ निश्वास खींची और थोड़ी देर तक कुछ सोच-
—"हिम ने पुनः कहा—"ऐसी बातें तो तुम लोगों के लिए नगण्य हैं;
मेरी बताओ हम स्त्रियों के लिए, जिनके जीवन का एकमात्र आधार
हते-कहते हम ही है, जीवन-मरण की समस्याओं से किसी प्रकार कम
मेरा नहीं हैं।"

र उठे महीनों के उपचार और सेवा के बाद जब हिम अच्छी हुई
कहा—" मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होंने अपने शरीर को कष्ट पहुँचाने
ट गईं और तपाने के लिए नहीं, बल्कि मरण सुख प्राप्त करने के हेतु ही
रख बिना दारू, खाना-पीना, सब बन्द कर रक्खा था। और यह
सफल घटित हुए बिना भी नहीं रहता यदि सुखमा बीच में न आ
ारने लड़ती और उस दिन की बातें मैं न सुन लेता। एक छोटी-
मैंने पू बात को इतना महत्त्व देकर प्राणान्त तक करने की ठान
पने अ ना स्त्री-प्रेम का विलक्षण स्वभाव है। इसमें क्या रस और
ल है यह स्त्री के सिवा कौन बता सकता है?

टों की विगत घटना के बाद से सुखमा भाभी के पास न तो मैं
ली। धिक जाता और न वह ही मेरे निकट आने का अधिक प्रयत्न
ुम उ रती। कभी-कभी रास्ते में या किसी कार्यवश भेंट हो जाने पर
क गए कुछ खिंचा-सा मिल लेता था। पर तब भी सुखमा का
नी च -रहकर मेरे मुख की ओर पूर्ववत् एकटक निहारना नहीं भूलता
ई!" । लेकिन अब वह सुअवसर देखकर ही, दूसरों की आँख
बाकर ही, ऐसा करती थी। पहले जैसा निःसंकोच भाव से और
मुझे च च्छन्द रूप से नहीं। जब वह मुझे निहारती थी तब मैं अपने
नासमझ तरी भावों को दबाकर अपना पुराना पेटेण्ट 'प्रश्न इधर क्या
ाचना ती हो, भावज?' पूछना नहीं भूलता था और न वह ही अपने
क में न ष्ट उत्तर 'तुम्हारा रूप' को दुहराने से बाज आती थी। परन्तु
ना कैसी उसके चेहरे पर, उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग पर, उसकी [illegible]
गिर प भङ्गी में, मुझे एक विलक्षण निस्तेजता दृष्टिगोचर होती थी जो उसके स्वास्थ्य की क्षीणता को साफ बता रही थी। पर इसको वह किसी प्रकार भी मुझ पर प्रकट होने देना नहीं चाहती थी। मैं साफ देखता था कि उसका मुख रक्तवर्ण होने के स्थान पर पीत-वर्ण हो गया है; शरीर हृष्ट-पुष्ट होने के बजाय कृश और निर्बल तथा सूखा-सा मालूम होता है; ओष्ठ जो बिम्बाफल के समान सदा अरुण रहा करते थे अब सूखे-से तथा झाँवरा रङ्ग धारण किए हुए हैं; दस कदम चलते ही वह थककर बैठ जाती है और सुस्ताने लगती है। पर इतना होने पर भी जब वह मेरे रूप को निहारने लगती है तब न जाने उसके नेत्रों में कहाँ से तेज, उसके कपोलों पर न जाने कहाँ से अरुणिमा और अधरों में न मालूम कहाँ से ऐसी प्रसन्नतायुक्त स्फूर्ति आ जाती है कि मैं उसके पूर्व सौन्दर्य की समता उसमें देखे बिना नहीं रहता हूँ। मैंने दो-एक बार उसके स्वास्थ्य की क्षीणता की चर्चा करके उसकी दवा की व्यवस्था के बारे में पूछताछ करनी चाही और डाक्टर से दिखाने की बात भी चलाई, पर इस प्रश्न पर सुखमा विशेष दुःखित होकर कुछ ऐसी अन्यमनस्क-सी आकृति बना लेती कि मैं डरकर इस प्रसङ्ग को जहाँ-का-तहाँ छोड़कर प्रसङ्ग बदल देता। सुखमा के प्रति मेरे हृदय में उस दिन की हिमवाली घटना के बाद से जो एक पार्थक्य की अस्पष्ट अनुभूति जाग्रत् हो चुकी थी उसको शायद हम दोनों ही जान गए थे। पर इसके अनुकूल मेरा व्यवहार सुखमा के प्रति जारी रहने पर भी वह इसको अपने हृदय से एक क्षण के लिए भी शायद स्पष्ट रूप से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी; क्योंकि मैं देखता था कि मेरे प्रति उसके आन्तरिक आकर्षण में रञ्चमात्र भी कमी नहीं आई थी। पर यह जान-कर भी मैं अपनी बेवकूफी से बाज नहीं आता था। कभी-कभी अपनी स्पष्टवादिता और सचाई के अभिमान में दर्प के साथ सुखमा से मैं कह बैठता था—"भाभी, मेरे पूर्व कृत्यों के लिए मुझे क्षमा करना। वह शरीर का मोहमात्र था, आत्मा का प्रेम शायद उसमें नहीं था।"

मेरी इस बात से सुखमा के मर्मस्थल पर कितनी भारी चोट पहुँचती थी, यह मुझ जैसे बुद्धू को तब तक नहीं ज्ञात हुआ जब तक सुखमा के दुःखपूर्ण जीवन-नाटक का पटाक्षेप सदा के लिए नहीं हो गया। मैं तो यह कहकर अपनी स्पष्टवादिता पर गर्व करके अपने इस विश्वास से हृदय में सन्तोष धारण करता कि मैं किसी स्त्री को अन्धकार में नहीं रखता, छलना से अपने मोह को प्रेम का रूप देकर उसे समझाने की चेष्टा नहीं करता, बल्कि अपने हृदय की परिस्थिति स्पष्ट करके उसके सामने असद् व्यवहार का दोषी नहीं बनता। परन्तु मेरे इस कथन पर सुखमा थरथराकर बैठ जाती थी और सिर घूमने का बहाना करके आँखें बन्दकर अपना माथा पकड़ लेती थी। उसका रहस्य मुझ मूढ़ की समझ में तब आया जब उसका प्रतिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है—उस समय उसके मुख की आकृति कितनी वेदनापूर्ण, रहस्यमयी और डरावनी हो जाती थी। और मैं मूर्ख चुपचाप उसके सामने भूला-सा खड़ा हुआ उसके उपचार के लिए डाक्टर बुलाने की सलाह उसी से करता था। मेरा ऐसा पूछना उसके हृदय के घावों पर कितनी तीव्र वेदना के साथ नमक छिड़कता होगा, इसका कुछ भी ख़याल तब मुझे नहीं होता था। यह तो आज मेरी समझ में आ रहा है! पर अब ऐसा समझना भी तो मेरे लिए बेकार है। पुरुष के अज्ञात अत्याचारों से इस तरह कितने नारी-जीवन नष्ट हो गए हैं और नित्य हो रहे हैं, इसकी यदि गणना की जाए तो मेरा अनुमान है कि कम-से-कम दस प्रतिशत ऐसे पुरुष अवश्य निकलेंगे जिन्होंने कम-से-कम एक स्त्री-हृदय पर तो निश्चय ही चोट पहुँचाई होगी, जिससे उसके जीवन की हरियाली सदा के लिए मुरझा गई होगी। इसी के साथ ख़ूबी यह भी है कि कर्ता पुरुष को अपने इस कृत्य का ज्ञान दो-चार प्रतिशत भी मुश्किल से ही होता है। नारी-हृदय की सहन-शक्ति की पराकाष्ठा यही तो है कि हँसते-हँसते वह सब सह लेती है पर मुख से 'उफ' तक नहीं निकालती। 'जल-भुन के खाक हो जा मुतलक धुआँ न निकले' की लोकोक्ति यहीं चरितार्थ होती है।

इसी समय जब कलकत्ता से पिताजी ने तार-द्वारा मुझे बुला भेजा तब इच्छा न होने पर भी जाना ही पड़ा। जब हिम के यहाँ से दही का टीका लगवाकर पान का बीड़ा ले सुखमा के आँगन में विदा लेने गया तो सुखमा को चारपाई पर सोया हुआ पाया। उसकी बड़ी जीजी वहीं बैठी पंखा झल रही थी। मैं सुखमा की चारपाई पर बैठकर उसकी तबीयत के बारे में बड़ी भावज से पूछ-ताछ करने लगा। मालूम हुआ कि एक हफ्ता से उसे बुखार और जोर की खाँसी है। खाया-पिया कुछ नहीं जाता। बड़ी बेचैनी रहती है। मैं ये सब बातें बड़ी भावज से सुन रहा था और सुखमा आँखें बन्द किए चुपचाप चित चारपाई पर पड़ी सुन रही थी। मेरा आना उसने जाना था या नहीं, यह मुझे उस समय ज्ञात नहीं हुआ। जब उसकी बीमारी की सब बातें सुनकर और दवा-दारू की व्यवस्था जानकर उसकी बड़ी जीजी से अपने १ मास के लिए बाहर जाने की बात कही, तब सुखमा ने आँखें खोलकर मुझे निहारते हुए पूछा—"कहाँ जाते हो, कुँवरजी?"

मैंने सुखमा की ओर घूमकर बड़े ही मीठे स्वर से उसके मन का हाल पूछते हुए उसके माथे पर अपना हाथ रख दिया।

सुखमा चित से घूमकर करवट हो गई। अपना दाहिना हाथ मेरी जाँघ पर रखकर उसने धीरे से कहा—"भीतर बड़ी बेचैनी है। छाती में बड़ा दर्द हो रहा है, कुँवरजी।"

इतना कहकर उसने आँखें बन्द कर लीं और मैंने देखा कि उसके चारों कोनों से बड़ी-बड़ी बूँदें निकलकर सुखमा आ गई। मैं थोड़ी देर उसके हाथ पर अपना हाथ रक्खे चुपचाप उसे निहारता रहा। फिर धीरे से कहा—"मुझे खबर नहीं दी? कहाँ दर्द है देखूँ।"

सुखमा ने बिना किसी सङ्कोच या लोकलाज के ढीली कुर्ती के बटन खोले और मेरा दाहिना हाथ पकड़ कुर्ती के नीचे अपने हृदय पर रखते हुए कहा—"यहाँ, जगह बड़ी पीड़ा है।"... उसका कण्ठ बन्द हो गया, और अविरल अश्रु गिरने लगे और अपलक दृष्टि से वह मुझे निहारने लगी। इतनी स्पष्टता से इस खुली तरह से आज तक व्यवहार में उसका आचरण कभी नहीं हुआ था। पर न मालूम उसे क्या हो गया था। मैं चुपचाप उसकी निहारता हुआ उसके मुख के भावों की गम्भीरता और तथा स्वच्छता को देखता और अपने हाथ के नीचे 'धक्' चलते हुए उसके नन्हें से हृदय की क्षीण गति परखता रहा। कई मिनट ऐसे ही बीत गए। न मालूम बड़ी जीजी उठकर वहाँ से चली गई थी। अब मुझे हुई तो मैंने धीरे से कहा—"घबड़ाओ न, भाभी! सब हो जाएगा।"

सुखमा को जैसे चोट-सी लगी। पर तब भी उसने उत्तर नहीं दिया। उसने अपना दाहिना हाथ उठाकर दाहिनी हथेली के पृष्ठभाग पर रक्खा और उसे जोर से हृदय पर दबाकर आँखें बन्द किए अश्रुपात करने लगी।

फिर उसने आँखें बन्द कर लीं। आधे घण्टे से भी वैसे ही बीत गया। पर इस बीच न तो मैंने कुछ कहा न सुखमा ने ही। इतनी देर तक वह किस स्वर्गलोक में कर रही थी, नहीं कह सकता। इतने में दौड़ता हुआ आया और हाँफते-हाँफते कहने लगा—"बाबूजी, गाड़ी छोटे काका बुला रहे हैं। चलिए, मुझे भी स्टेशन चलिए।"

इतनी बातें एक ही साँस में उसने कहीं और सुख सुख-स्वप्न में बाधा डाली। सुखमा ने आँखें खोल मुझे निहारना शुरू किया मानो सदा के लिए आज ही देख लेना चाहती हो। थोड़ी देर वैसे ही अपलक देखती फिर दो बूँद आँसू गिराकर तथा एक बार बड़े जोर से दोनों हाथों से मेरी हथेली को अपनी छाती पर दबाकर स्वर में बोली—"जाओ कुँवर, इस दुखिया को याद रख उसने मेरे हाथ को छाती से हटाकर चूमा और उठ गई। मुझे करुणा आ गई पर वह इसकी ओर जरा भी दिए बिना ही कहती गई—"जाओ कुँवर, देर होती है। भूलना नहीं।" इतना कहकर वह खड़ी हो गई। खड़ा हो गया। पाँव छूकर प्रणाम करके जब मैं उठा तब उसने मेरा मुख पकड़कर अपनी ओर खींचा और मे से मेरे दोनों कपोलों को बड़े प्रेम से चूमकर कहा—"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा यह रूप सदा अमर रहे।" और इस वाक्य के साथ ही विलक्षण करुण तथा वेदनापूर्ण मुस्कराहट उसके मुख पर ने लगी। मैं बिना कुछ बोले हुए आँखों में आँसू के को सँभालता हुआ कमरे से बाहर हुआ।

(६)

अपने पिताजी के पास पहुँचते ही मेरी दाहिनी आँख के न में एक बड़ा-सा फोड़ा निकल आया। दो मास तक मैं से परेशान रहा। एक दिन सहसा सुखमा की मृत्यु का मिला। पट्टी बाँधे ही जब उसके श्राद्ध में शरीक होने के घर आया तो हिम ने उसकी बीमारी का सारा विवरण या। मैं बड़ी भावज से मिलने गया। बहुत रोने-धोने बाद उन्होंने कहना शुरू किया—"कुँवर, तुम नहीं आए। अन्त समय तक रो-रोकर तुम्हारी ही याद करती रहीं। का समय था। खटोले पर धूप में निकाल रक्खा था। ा-सा दूध भी पिला रक्खा था। आराम करने को छोड़कर धोने गई। लौटकर दातुन ले ही रही थी कि जोर से आई। दौड़कर पास पहुँची तो वह खून की कै कर थी। आँखें उसकी चढ़ी थीं। दोनों आँखों से आँसू के साथ वह रहे थे। जैसे ही खून का गिरना बन्द हुआ, मुझे निहारकर कहा—"जीजी! कुँवर कहाँ हैं? उनका मुख कहाँ है? वे लम्बे घुँघराले केश कितने सुन्दर हैं। उन्हें एक क्षण के लिए बुला दो.....।" बस कहते-कहते बड़ी भावज रोने लगीं। इशारा करके बताया फिर तुरन्त कै आई और वह मिनटों के लिए अचेत हो कुछ स्वस्थ होकर फिर कहना शुरू किया—"जब तीसरा हुआ तो बहन निराश हो गई। उसका शरीर काँप था; आँखें स्थिर-सी हो रही थीं। हाथ-पाँव शिथिल पड़ थे। केवल साँस भर चल रही थी और रह-रहकर मुख से ल रहा था—"कुँवर, मेरे कुँवर, मेरे कुँवर—तुम्हारा रूप—" ने लगीं। मैं भी अपने सारे संयम को तोड़कर रोने लगा। ने कुछ स्वस्थ होकर पुनः कहना शुरू किया—"जब मैंने के कान के पास मुँह ले जाकर पुकारकर 'राम राम' को कहा तब उसकी आँखें खुलने की चेष्टा में कुछ सी हो उठीं। मुँह से अस्फुट शब्द निकला—"राम-कुँवर—कुँ...व...र...।"

बस कुँवर, बहिन के प्राण-पखेरू उड़ गए। देवी थी कौन कहता है कि वह सौत थी; वह तो मेरी छोटी थी।"

बड़ी भावज पागल-सी होकर बकने और रोने लगीं। मैं पत्थर की मूर्ति बना सब सुनता और समझता रहा। जब वहाँ से उठकर तालाब पर तिलाञ्जलि दे रहा था तो पण्डित जी तो उधर "प्रथम तिलाञ्जलि तथा दीयते स्वधा" आदि मन्त्र का उच्चारण कर रहे थे और इधर मैं सुखमा भाभी के अन्तिम मिलन का कल्पित दृश्य सामने देखकर मस्तक नवा उससे अपने अपराधों के लिए क्षमा माँग रहा था। उसके बाद घाट पर से घर तक मैं क्या सोचता रहा, क्या अनुभव करता रहा तथा रह-रहकर अपनी सजल आँखों के सामने क्या देखता रहा, यह सब कहना मेरे लिए अब उस देवी का उपहास करना है—"इस महान् नारी-हृदय को मैंने पहले क्यों नहीं पहचाना?" बस एक यही प्रश्न रह-रहकर हृदय और बुद्धि से जवाब तलब कर रहा था और मैं हत्यारा-सा इसे सुनकर मूक बना चुपचाप श्राद्ध का सारा काम कर रहा था।

यही तो अपने 'रोमांटिक' जीवन की कहानी है। पर आज इतने दिनों बाद जब मैं फिर उन सुन्दर भावनाओं के अस्तित्व को, उस प्रेम को, अपने हृदय और मस्तिष्क में खोजता हूँ तो उन्हें लाख चेष्टा करके भी उस रस के साथ, उस करुणा और सौन्दर्य के साथ, कहीं बैठा हुआ नहीं पाता। काल के ब्लाटिंग-पेपर ने उसकी उस मधुर स्मृति को ऐसा सुखा दिया है कि आज बीस वर्ष बाद जब स्वप्न देखकर उसे अङ्कित करने लगा तब भी एक रोमान्स भरी कहानी के सिवा दूसरी किसी भी दया या करुणा की भावना का उदय इस हृदय में नहीं हुआ। यही दुनिया है। यही उस भावुकता का मूल्य है जिसके पीछे संसार के ९० प्रतिशत जनों के जीवन दुखी, दिवालिया और सार-हीन हैं। और यही है हमारे कृत्यों पर महाकाल का महा उपहास। सुखमा भाभी यदि समझ और बुद्धि से काम लेकर मेरी तरह आज जीवित होती और इसे पढ़ती तो शायद उसे भी यही ज्ञात होता।

नारी जाति! आज के इस उन्नत युग में तुझे भी पुरुषों की तरह समझ से काम लेना होगा। भावुकता की सीमा को सीमित करके भावुकता के पीछे अपने जीवन को मटियामेट करनेवाली पुरातन प्रथा से हाथ धोना होगा; तभी तू अपने को उठा सकेगी, अन्यथा नहीं। पुरुष जाति, तुम्हारी ऐसी आहुतियों को त्याग कहकर मुँह से प्रशंसा के पुल बाँध दे, या नेत्रों से आँसू की नदी भले बहा दे, पर उसके बुद्धि-प्रधान हृदय में इसकी कदर करने की जगह नहीं है। वह तो इसे भावुकता और क्षणिक आवेश ही मानती है। इससे तू भी अब सचेत हो जा.....!

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपए का भविष्य

श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार

वाशिङ्गटन में ब्रिटेन और संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के बीच चल रही आर्थिक सन्धि-चर्चा का भारत के रुपए से गहरा सम्बन्ध है। आज रुपया स्टर्लिंग पौंड से नत्थी है। इन दोनों का दामन-चोली का सङ्ग है। यदि डालर-स्टर्लिंग विनिमय-दर में कुछ अन्तर आया, यद्यपि ब्रिटिश अर्थ-शास्त्रियों और ब्रिटेन के अर्थ-सचिव मि० डाल्टन ने इस आशंका का निराकरण किया है और स्टर्लिंग को क्षमताशाली बताया है कि वह वर्तमान दर को बनाए रखने में समर्थ है, तब रुपए के मूल्य में अन्तर आएगा। यदि अमेरिका की दी गई शर्तों पर ब्रिटेन कर्ज लेने से इन्कार कर दे, जैसी कि सम्भावना है और ब्रिटेन अपना निर्यात-व्यापार बढ़ाने के लिए स्टर्लिंग पौंड का मूल्य कम कर दे, तो भारतीय रुपया इस प्रभाव से मुक्त न रह सकेगा। प्रश्न यह है कि क्या यह वाञ्छनीय है कि भारतीय रुपया स्टर्लिंग से प्रभावित हो और उसका अनुसरण करे? अबीसीनिया स्टर्लिंग-क्षेत्र से निकलकर डालर क्षेत्र में चला गया है। क्या भारत भी पौंड से अपना सम्बन्ध तोड़कर डालर क्षेत्र में चला जाए? रुपया पौंड-सम्बन्ध भारत की आर्थिक पराधीनता और दासता का सूचक है। दूसरे भारत के औद्योगिक विकास के लिए उसको मैशीनरी और प्लाण्ट की जरूरत है। ब्रिटेन अमेरिका से दुगुनी कीमत माँगने पर भी भारत की इस आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकता और सम्भवतः अगले दो-तीन साल और पूरा न कर सके। दूसरी ओर अमेरिका आर्डर देने के तीन मास के अन्दर माल देने को प्रस्तुत है। इस अवस्था में रुपए का पौंड से गठबन्धन करना कहाँ तक उचित है?

अधिक कीमत

सब भारतीय अर्थ-शास्त्री इस बात में सहमत हैं कि वर्तमान परिस्थिति में सरकार ने रुपए का जो विनिमय-मूल्य १ शि० ६ पें० निश्चित कर रक्खा है, वह ज्यादा है। वह १ शि० ४ पें० से अधिक न होना चाहिए। यदि भारतीय रुपए का मूल्य १ शि० ४ पें० कर दिया जाए तो भारतीय माल को विश्व के बाजार में बेचने के मार्ग में आज जिस अलाभजनक स्थिति का सामना करना पड़ता है वह दूर हो जाएगी और भारतीय माल अन्य देशों के मुकाबले मुद्रा का कृत्रिम रूप से अधिक दाम बढ़ाने के कारण ही महँगा न होगा। इसी तरह विदेशी माल रुपए का भाव चढ़ा होने से आज भारतीय बाजार में जो सस्ता बिकता है, वह सस्ता न बिकेगा और भारतीय माल से वह

अपरिवर्तित नीति

मुद्रा का विनिमय-मूल्य अनेक तत्त्वों को ध्यान में निश्चित किया जाता है। इनमें एक है, अपने देश में मुद्राओं की क्रय-शक्ति। मुद्रा का विनिमय-मूल्य जनता शक्ति की समरसता में होना चाहिए। यदि वह जनता शक्ति की समरसता में न होगा तो सरकारी हस्तक्षेप के जनता को हानि पहुँचेगी और उसको तकलीफ उठानी भारत की ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति रही है। युद्ध संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के अन्दर चीजों का मूल्य ३५ प्रतिश ग्रेट-ब्रिटेन में ७० प्रतिशत बढ़ा, पर भारत में ३५० प्र देश के अन्दर चीजों के मूल्य के उतार और चढ़ाव के विनिमय-मूल्य में भी उतार-चढ़ाव आना चाहिए था सरकार ने अपनी मुद्रा-नीति में युद्ध-काल में किसी प्र परिवर्तन नहीं किया।

निर्मूल भय

ब्रिटेन अपना निर्यात-व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से दर को ऊँचा करने के लिए भारत सरकार पर दबाव इसकी आशङ्का इस समय नहीं है। एक तो अभी तीन साल तक उन्मुक्त व्यापार तथा उन्मुक्त और निजू सम्भावना नहीं है, क्योंकि कंट्रोल बना रहेगा और आयात व्यापार सरकारी कंट्रोल या नियन्त्रण के अन्दर होगा विनिमय-दर को ब्रिटेन की आवश्यकता के अनुसार का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। पिछली लड़ाई के बाद मूल्य बढ़ाकर २ शि० तक कर दिया गया था और भारत का अनुकूल रोकड़ सब गायब हो गया था। इस नीति के कारण ब्रिटिश माल का आयात घटने के अधिक बढ़ गया था, जब कि जरूरत थी उसके जिससे भारतीय उद्योग विकसित हो सकें। पर इस सम्भव नहीं है। रुपए का मूल्य और ऊँचा बढ़ाना लिए सम्भव नहीं है। जनमत प्रबल और जाग्रत अन्ताराष्ट्रीय मुद्रानिधि के सदस्य विनिमय-दर में जो करेंगे वह एक पद्धति और प्रणाली से करेंगे और यह रहेगा। भारत का स्टर्लिंग पावना इतना अधिक है कि कौंसिल बिल'-द्वारा उसको खत्म नहीं किया जा सकता तीय उद्योग भी अब गर्भावस्था या बाल्यावस्था में भारत सरकार ने आर्थिक योजना और योजनापूर्ण तन्त्र की नीति को अपना लिया है। इसलिए रुपए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्लिंग का मूल्य गिराकर ब्रिटेन के लिए भारत के साथ ा निर्यात-व्यापार बढ़ाना सरल नहीं रहा है, इसलिए मय-दर का पिछली लड़ाई के बाद इस बार बढ़ाना तो सम्भव है। पर हमारी वर्तमान आवश्यकता तो विनिमय-दर को ी की है। प्रश्न यह है कि क्या यह सम्भव है?

कानून में परिवर्तन

इंडिया एक्ट १९३५ के अनुसार विनिमय-दर '१ रु० बराबर श० ६ पें०' ठहराया गया है। इसको बदलने के लिए का काम यह करना चाहिए कि रिजर्व बैंक को यह अधिकार जाए कि वह बदलती स्थिति के अनुसार अपने विवेक से मय-दर में परिवर्तन कर सके। इस उपाय से रुपया अन्य की मुद्राओं के मूल्य की समानता में रह सकेगा। १ शि० ० हर हालत में विनिमय दर रखने का परिणाम यह हुआ ारत से बड़े परिमाण में सोने का निर्यात हुआ और रिजर्व पर बहुत दबाव पड़ा और भारत के निर्यात-व्यापारियों को बाधाओं का सामना करना पड़ा।

१९३१ में ग्रेट-ब्रिटेन ने स्वर्णमान का परित्याग कर दिया इसके बाद से पौंड-स्टर्लिंग का विदेशी मूल्य बराबर बदलता और चूँकि रुपया पौंड से नत्थी था, उसका मूल्य भी र बदलता रहा और भारत की स्थिति और आवश्यकता का कोई सम्बन्ध नहीं था। इस कारण भारत के उत्पादकों निर्यात-व्यापारियों पर अनुचित कठोरता लादी गई। 'होम ' को चुकाने के लिए रुपए-पौंड का गठबन्धन आवश्यक ा गया था। विदेशी विनिमय की विभिन्नता का भारत होम चार्जेज' के चुकाने में सामना न करना पड़े, ारण उस समय दिया जाता था। यह भी कहा जाता था पए का स्टर्लिंग मूल्य कम करने से भारत में कर अधिक ा पड़ेगा, जिससे भारत सरकार ब्रिटिश सरकार के प्रति दायित्व को पूरा कर सके।

र स्टर्लिंग ऋण का प्रत्यावर्तन हो गया है। अब भारत र नहीं, महाजन देश है। इसलिए पौंड स्टर्लिंग के पहिए से रुपए को अब बाँधे रखना कोई उचित कारण हा है। इसलिए रुपए को स्वतन्त्र कर देना चाहिए और टर्लिंग के बन्धन से उसको मुक्त कर देना चाहिए।

घटाने की जरूरत है

ारतीय खेतिहरों और किसानों के हित में रुपए का विदेशी- य मूल्य घटाने की जरूरत है। कपास, तेलहन, खाल, आदि का हम उस समय तक निर्यात करने के लिए बाध्य तक कि भारत के उद्योग समस्त उत्पादन को खपाने के नहीं होते। यदि विदेशी बाजार में इनका मूल्य गिर या अन्य देश अपनी मुद्राओं का विनिमय मूल्य घटा दें चीजों के रुपए मूल्य की रक्षा के लिए रुपए का विनिमय मूल्य घटाना आवश्यक होगा। विदेशी प्रतियोगिता की तीव्रता को कम करने और भारतीय उद्योगों के विकास का अवसर देने के लिए भी रुपए का विदेशी विनिमय-मूल्य घटाना जरूरी है।

निस्सन्देह विनिमय-दर घटाने से आयात कच्चे माल और मैशीनरी का दाम बढ़ेगा और उसी मात्रा से तैयार माल के उत्पादन का मूल्य भी बढ़ जाएगा। भारतीय उद्योग फिलहाल मैशीनरी और आवश्यक कच्चे माल के लिए आयात पर निर्भर है। इसलिए उनके आने में एक बड़ी बाधा होगी। पर यह बाधा बहुत कुछ दूर हो जाएगी; क्योंकि आयात माल का दाम भी बढ़ जाएगा। उपभोक्ताओं को जरूर अधिक दाम देना पड़ेगा। पर यह अपरिहार्य है। देश के औद्योगिक विकास से साधारण जनता की आमदनी भी बढ़ेगी, इसलिए उसको यह बढ़ी कीमत देना अखरेगा नहीं।

रुपया-स्टर्लिंग सम्बन्ध

भारत की अर्थ-नीति और मुद्रा-नीति आज तक ब्रिटेन के अनुसार चलती रही है और जो ब्रिटेन के लिए अच्छा समझा गया वह भारत के लिए भी अच्छा समझा गया। ब्रिटिश स्टर्लिंग के इस साम्राज्य का अन्त होना आवश्यक है। रुपया अब और अधिक दिन स्टर्लिंग का ज्ञापक न रहना चाहिए। इँग्लैंड यदि स्वर्णमान का परित्याग करे तो भारत भी 'ह्वाइट युगल' के आदेश से करे, यह स्थिति अपमानजनक ही नहीं है, हानिकारक भी है और इसका अन्त जल्दी-से-जल्दी होना चाहिए।

भारतीय मुद्रा-नीति की पेचीदा समस्या स्टर्लिंग-रुपया गठ-बन्धन है। १९०७-०८ में भारत के सिर पर 'स्टर्लिंग विनिमय-मान' लादा गया। पर १९३१ तक ब्रिटेन ने स्वर्णमान का सर्वथा परित्याग नहीं किया था, इसलिए रुपया भी प्रकारान्तर से स्वर्ण-मान पर समझा जाता था और उसको स्वर्ण का समर्थन प्राप्त था। १९३१ में इँग्लैंड ने स्वर्णमान का परित्याग कर दिया। ब्रिटेन सुदूर भविष्य में भी स्वर्णमान को पुनः अपनाने का इरादा नहीं रखता। इसलिए भारत को सोचना चाहिए कि स्टर्लिंग से रुपए का गठ-बन्धन रक्खा जाए या नहीं। रुपया भी स्टर्लिंग और डालर के समान एक स्वतन्त्र मुद्रा क्यों न बनकर रहे?

युद्धकाल में साधारण व्यापार बन्द था और उसके लिए आवश्यक मुद्रा जुटाने की साधारण प्रणाली भी बन्द थी। विनिमय का नियन्त्रण था और भारत का विदेशी व्यापार अधिकतर ब्रिटिश गवर्नमेंट से था जो कि भारत का माल बड़े परिमाण में खरीदती थी। फल यह हुआ कि विनिमय-नियन्त्रण-द्वारा यानि अनुपात कायम रक्खा गया, मगर दोनों देशों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पुराने आर्थिक सम्बन्ध सर्वथा बदल गए, फिर भी पुरानी विनिमय-दर कायम रक्खी गई।

स्थिर विनिमय-दर

साधारणतः स्थिर विनिमय-दर दो अवस्थाओं में रक्खी जाती है, या तो स्थिर विनिमय-दर की आवश्यकता हो या कुछ अवस्थाओं में स्वर्ण की कमी हो। स्वर्णमान निकट भविष्य में अपनाने की बात विचार-कोटि की नहीं है। इसलिए विनिमय-दर की स्थिरता देश की विशेष स्थिति और आवश्यकता से सम्बन्ध रखती है। यदि कोई देश अपनी राष्ट्रीय आमदनी का एक बड़ा भाग निर्यात-व्यापार से प्राप्त करता है, तो उसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपनी लागत के ढाँचे को ऐसा बनाए जो बाहर के देशों के अनुकूल हो। इस अवस्था में निश्चित या स्थिर विनिमय-दर रखना सर्वथा वाञ्छनीय है। दूसरी अवस्था यह है कि देश की सरकार को प्रतिवर्ष मुद्रा में भुगतान करना पड़ता हो और बजट सम्बन्धी कठिनाई को दूर करने के लिए, जो कि विनिमय-दर के बराबर बदलते रहने से उत्पन्न होती है, विनिमय-दर को स्थिर रखना चाहती हो। विनिमय-दर को स्थिर रखने का निश्चय कर लेने पर यह प्रश्न गौण हो जाता है कि देश की मुद्रा का सम्बन्ध किस से जोड़ा जाए। साधारणतः फिर देश की उस मुद्रा से सम्बन्ध जोड़ा जाता है जिसमें अधिक मात्रा में भुगतान करना पड़ता है।

स्थिर विनिमय-दर आवश्यक नहीं

देश बड़ा हो और राष्ट्रीय आमदनी का बड़ा भाग देश के अन्दर से ही प्राप्त होता हो, तो फिर स्थिर विनिमय-दर की उसको आवश्यकता नहीं है। यदि स्थिर विनिमय-दर रखने का आग्रह किया जाता है तो आन्तरिक मूल्य-सतह, आमदनी की सतह और उत्पादन-लागत का स्तर भी विदेशी मूल्य-लागत के ढाँचे पर निर्भर रखना चाहिए। आन्तरिक आर्थिक तन्त्र में बाह्य प्रभाव से बार-बार परिवर्तन होने की सम्भावना रहती है। इस अवस्था में विनमय-दर की स्थिरता की अपेक्षा आन्तरिक स्थिरता अधिक पसन्द की जाती है।

भारत की अवस्था को देखने से स्पष्ट हो जाएगा कि इस देश को पराश्रित मान और निश्चित व स्थिर विनिमय-दर की आवश्यकता यदि पहले थी तो वह अब नहीं रही है। भारत के लिए निर्यात-व्यापार अत्यधिक महत्त्व का था और भारत सरकार को 'होमचार्जेज' के रूप में भारी मात्रा में ब्रिटिश सरकार को स्टर्लिंग में भुगतान करना पड़ता था। इसलिए विनिमय-मान का भारत-द्वारा स्वीकार किया जाना स्वाभाविक था। पर अब अवस्था बदल गई है। आन्तरिक व्यापार का महत्त्व अब बढ़ गया है। यह अभी और बढ़ेगा और राष्ट्रीय आमदनी [illegible] पहले से विदेशी व्यापार मध्यम पड़ जाएगा। स्टर्लिंग कर्ज के प्रत्यक्ष भी भारत को अब प्रति वर्ष ब्रिटेन को बड़ी मात्रा में स्वा अन्दर भुगतान नहीं करना है। इसलिए भारत को अपने का स्वतन्त्र मान रखना चाहिए और उसका उद्देश्य यह चाहिए कि आन्तरिक स्थिरता रहे और कोई व्यक्ति बे हो। स्थिर विनिमय-दर रखने की कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है। संक्रमणकाल में भी भारत की मुद्रानीति इस की होनी चाहिए जिससे भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहन

घातक होगा

युद्ध-काल में भारत अलग पड़ गया। अमेरिका ब्रिटेन ने जो यान्त्रिक व टेकनिकल प्रगति की है, वह नहीं हुई। इन परिवर्तनों को अपनाने के लिए भारत को चाहिए। यदि इस अवस्था में रुपया-स्टर्लिंग का गठ कायम रहे और व्यापार और विनिमय पर से नियन्त्र लिया जाए तो भारतीय बाजार में विदेशी सस्ते माल की हो जाएगी और भारतीय उद्योग उनकी प्रतियोगिता न सकेंगे। इस अवस्था में रुपए-स्टर्लिंग का गठ-बन्धन सिद्ध होगा। यदि विनिमय-दर नीचा भी किया सुरक्षित सतह ढूँढ़ना कठिन हो जाएगा। दूसरी बा कि विनिमय-नियन्त्रण दूर कर दिया गया तो इस बात अधिक सम्भावना है कि युद्ध-काल में जिन लोगों ने मात्रा में रुपया जोड़ा है वे उपभोक्ताओं के उपयोग और का सस्ता माल बड़ी मात्रा में आयात करें और स्टर्लि इस प्रकार छीज जाए। इस अवस्था में विनिमय-द लाभदायक सिद्ध होगा।

स्वर्णमान

आन्तरिक मुद्रा के दृष्टिकोण से विचार करने पर होगा कि भारत को स्टर्लिंग विनिमय-मान की जगह स्वर्णमान की जरूरत है। इस युद्ध ने भारत का अमेरिका और सोवियत रूस से व्यापार होने की सम्भ बहुत अधिक बढ़ा दिया है। इसलिए हमारी मुद्रा स्वर्ण की मात्रा आज की अपेक्षा अधिक रखने की भारत के पास युद्धोत्तर व्यापार के लिए डालर-निधि में होनी चाहिए। आज भारत का डालर 'साम्रा भाण्डार' में मिला दिया गया है। भविष्य में यह स्थि न हो, इस दृष्टि से भी भारत का रुपया स्टर्लिंग रहना चाहिए।

ब्रेटनवुड कान्फरेंस

ब्रेटनवुड में पिछले साल हुई अन्ताराष्ट्रीय मुद्रा कान्फरेंस में सम्मिलित हुआ था। वह अन्ताराष्ट्रीय मुद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्य भी है। उसका सदस्य होने पर भी यदि भारतीय स्वाधीन नहीं हुई तो वह कब होगी ? अन्ताराष्ट्रीय मुद्रा-ध का सदस्य होने से पहले जो देश जो विनिमय-दर निश्चित वही मानी जाएगी। उसके बाद उसमें परिवर्तन करने के उसकी स्वीकृति आवश्यक है। इसलिए स्वर्ण मान रित करने और उसको अपनाने के प्रश्न को भविष्य पर ा जा सकता है, मगर रुपए का मूल्य कम करने और विनिमय-को नीचा करने के प्रश्न को नहीं टाला जा सकता। प्राथमिक तैयार माल के अन्दर भारत यदि प्रतियोगिता में टिकना ता है तो उसको विनिमय दर नीचा करना चाहिए और रुपए का मूल्य कम करना चाहिए। स्थिति इस समय यह है कि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन में कीमतों के चढ़ने की सम्भावना है, जब कि भारत में कीमतों के गिरने की सम्भावना है। ऊँचा सन्तुलन इसी तरीके से कायम रक्खा जा सकता है कि हम कीमतों को कुछ गिरने दें और बाहरी कीमतें कुछ बढ़ें और आयात और निर्यात का नियन्त्रण उचित रीति से किया जाए और अन्तर को अंशतः रुपए का मूल्य गिराया जाए। भारत के औद्योगीकरण की दृष्टि से भी यह आवश्यक है कि रुपए का मूल्य नीचे गिराया जाए। यह तात्कालिक कार्य है, इसमें विलम्ब करने की जरूरत नहीं है।

हे कालकूट पीनेवाले !

प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

हे कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़।

(१)

णधर के फण लोहू-लुहान धरणी का अतुलित भार देख,
अब करवट लेता ही है वह फेन भरी फूत्कार देख,
रिधि अशान्त उद्भ्रान्त और लहरों का वह चीत्कार देख,
र के धुँधुआते मुख पर वह ज्वाला का शृङ्गार देख,
भर का आमन्त्रण सहेज हिमगिरि पर का मधुमास छोड़।
कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(२)

चुके हजारों दक्ष-यज्ञ, चल चुके हजारों मदन-बाण,
तक समाधि ! कैसी समाधि ! करना ही होगा दलित-त्राण;
पलट, पलट मत, शपथ तुझे वह दुष्ट-दलनवाला विधान,
शीस नहीं यह कोटि-कोटि मुण्डों की माला ले महान्;
भ्रू मरोड़, आँखें तरेर, यह चिन्तन का उल्लास छोड़।
कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(३)

म्बर कस, गाड़े त्रिशूल कुछ अन्तर से युग चरण रोप,
यों के फण पर पटक-पटक दोनों कर कटि पर रख सकोप;
खेले तेरा जटा-जूट, हो क्रोध, दया का रहे लोप,
तमक हुमक कुछ उचक धरा धँस जाए, नभ लटके, प्रकोप !
दृश्य हमें ऐसा दिखला, वह रम्य मोहिनी-रास छोड़।
कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(४)

ऊँचे प्रासाद देख तन धरे जहाँ हँसता अनङ्ग,
नयनों में खिलता है तेरे प्रति कैसा शाप, अङ्ग;
द-प्रहार, भू लुण्ठित हो प्रभुता का, मद का, तुङ्ग शृङ्ग,
क बार फिर घूम घूम पी ले रे पशुबल की उमङ्ग;
गा हलाहल की तृष्णा, अब अमिय-बिन्दु की प्यास छोड़।
कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(५)

तेरी काशी का महापुण्य बन गया महापातक, महेश,
तू देख रहा मिटता जाता तेरे सम्मुख तेरा स्वदेश;
मत देख अरे ! काश्मीर बहुत वह स्वर्गच्छवि वह दिव्य देश,
तीनों नयनों को खोल देख पृथु की पृथिवी के महा क्लेश;
भूखे मुख तुझे निहार रहे चल उनमें चलकर ग्रास छोड़।
हे कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(६)

तू भूल गया रख इसे याद भौतिकता का संसार आज,
तेरी ईश्वरता प्रश्न बनी उस पर हैं विषम प्रहार आज;
मिथ्या, कल्पित, समझा जाता, तू, तेरे सब अवतार आज,
क्या अस्त्र पाशुपत तेरा वह सचमुच ही है बेकार आज ?
तू चिर वन्दित पूजित नर से, अब अपना यह विश्वास छोड़।
हे कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(७)

भूखी मानवता देख आज निज नयन पोंछ हुंकार रही,
ये 'इनकलाब' की घड़ियाँ हैं वह कब की तुझे पुकार रही;
ज्वाला में घृत, दावा में बन तू पवन-धूम, मनुहार रही,
मजदूर-किसानों के सिर पर है झूल यहाँ तलवार रही;
भूखी मानवता आवाहन करती अगणित निश्वास छोड़।
हे कालकूट पीनेवाले प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

(८)

आँखों में भरकर महा आग, कैलास-प्रवासी, दौड़-दौड़,
घट-घट में भरने महा तेज, घट-घट के वासी, दौड़-दौड़;
पग-पग पर रच दे महातीर्थ, हे चिर सन्यासी, दौड़-दौड़,
काशी-वासी, अविनाशी, हे ताण्डव अभिलाषी, दौड़ दौड़;
अत्याचारी पिस जएँगे, तू पृथ्वी पर आकाश छोड़।
हे कालकूट पीनेवाले, प्रलयङ्कर, अब कैलास छोड़ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निस्सीम सीमा

प्रोफेसर तारा डी० पोतदार, एम० ए०

वर्षाकालीन मेघों की गम्भीर गर्जना की भाँति योगिराज की वाणी उस नीरवता में गूँज उठी—

"कभी तूने धूप में झुलसते हुए नङ्गे बदन आदमियों को भी देखा है, लड़की। तू दुनिया में सब कुछ चाहती है—सुख, यश, मित्र, प्रेम, वात्सल्य, सभी कुछ। छः-छः पैसे के लिए दिन भर लहकती हुई धूप और लपटती हुई लू में काम करनेवाले उन गरीबों का ध्यान कर, जिन्हें कभी भरपेट भोजन नहीं मिलता, कभी तन भर कपड़ा नहीं मिलता—वे भी तो जीवित हैं; उन्हें जीवन भार न लगता होगा? उन्हें पागल होने की आशङ्का न होती होगी?"

और बादलों का हृदय चीरकर चमकनेवाली चपला की नाईं तड़प उठी सीमा—

"तुम भूलते हो, वैरागी; मैंने सब कुछ देखा है। कसाई के यहाँ कटते जानवरों को देखा है—निरीह पशुओं पर अत्याचार होते देखा है। छोटे-छोटे प्राणियों को बलवानों का शिकार होते देखा है। सब देखा है, वैरागी? गरीब—गरीबों का संसार तो मैंने बहुत अच्छी तरह निरखा परखा है। उसे उजड़ते भी देखा, बसते भी। उनके जीवन में कोई मिथ्या आडम्बर नहीं। दुश्मनी करते हैं तो खुलकर, मित्रता करते हैं तो खुलकर! कोई आड़ नहीं, कोई दिखावा नहीं। जो चाहिए उसके लिए प्रयत्न खुल्लम-खुल्ला करते हैं। जी चाहा तो गाँजा, चरस और मदिरा के नशे में अपने आपको डुबा दिया; बेसुरी तानें अलापकर दिल की भड़ास निकाली; चबेना चबाकर, फटी धोती सिरहाने रखकर किसी पेड़ तले विश्राम किया। उन्हें कष्ट होता है—पर शारीरिक अधिक, मानसिक कम; इतना कम कि नहीं के बराबर! अगर तुम यह कहो कि मानसिक यन्त्रणा शारीरिक यन्त्रणा के आगे निरी काल्पनिक वस्तु है, तो मैं यही कहूँगी कि तुम अनाड़ी हो, हाँ-हाँ अनाड़ी! तुमने कभी इस यन्त्रणा का अनुभव नहीं किया। तुम नहीं जानते कि दीवार से सिर टकरा देने की अनिवार्य इच्छा काल्पनिक यन्त्रणा का परिणाम नहीं। रात-की-रात आँखों में बिताना, बिस्तर पर करवटें बदलना और एक क्षण भी एक स्थान पर स्थिर न रह सकने की अक्षमता आ जाना काल्पनिक दुःख नहीं। सारे संसार में आग लगा देने को जी चाहता है, वैरागी। कौन जाने एटम बम्ब तैयार करनेवाले वैज्ञानिक को ऐसा ही कोई दुःख हुआ हो। ईश्वर की दया, धर्म और न्याय पर से विश्वास उठने लगता है। हाँ, कान पर हाथ रखने से क्या लाभ? सत्य को सुनने में हिचक क्यों? मेरे जैसे अनेक अभागे आपको मिलेंगे। संसार को छोड़कर आप संसार में रहने का आदेश देने आए हैं। कितने बन्धन हैं! कितनी परतन्त्रता है! कितनी अवशता! उस बकरे को देखिए! कितनी कठोरता से बाँधा गया है गला—चिल्लाने में दम घुट रहा है बेचारे का! क्यों! क्यों? फिर भी हमें स्वतन्त्रता नहीं कि उस मनुष्य को दो लगाकर बता दें कि उस बकरे में भी जान है। उसे भी ऐसा हो सकती है। उस घोड़े की पीठ लोहू-लुहान हो उस बोदे की नाक फट रही है! मुँह से फेस निकल फिर भी कई मन पत्थरों की गाड़ी घसीटे जा रहा है। "तुम किया इन निरीहों ने? नियति का क्या बिगाड़ा था इनने? बोलो, वैरागी, चुप क्यों हो?"

"ईश्वर के राज्य में हस्तक्षेप करना पागलपन है, हम उसकी गरिमा नहीं समझ सकते। हो सकता है पूर्वजन्म के पापों का फल हो।"

"बस करो, वैरागी! पाप के फल के विषय में न बोलो तो मैं भाग जाऊँगी कहीं। मुझे चिढ़ हो गई है पाप इस झमेले से। यह करो तो पाप, वह करो तो पाप! से आत्मा का दम घुट रहा है। सारी शक्ति इसी पाप विचार में क्षय होती जा रही है। चेतना जवाब दे मानसिक दुर्बलता ने इस भयानकता से आ दबोचा है किसी काम के योग्य न रहे। पूर्वजन्म का पाप, वह भोगो। इस जन्म का पाप, वह भी यहीं! मरने के होगा, यह भी अनिश्चित। जन्म के पूर्व क्या हुआ, अज्ञात! शङ्का? पाप! ईश्वर से डरो! समाज आखिर क्यों? उसने क्यों हमें ऐसा खिलवाड़ बना सत्ताधीश हैं इसी लिए न? फिर हम उसे क्रूर कहने भिझकें? नहीं, वैरागी, मुझे कहने दो! मुझे हलका करना ही होगा। हमारी इच्छाएँ हमारे दुःख होती हैं; तो उसने इच्छाएँ बनाईं क्यों? काम क्रोधादि की सृष्टि क्यों की? सद्गुणों को इतना निर्बल क्यों कि कुविचार उन पर सरलता से विजय प्राप्त कर लें? न कि उसे संसार की नाट्यशाला चालू रखनी है आवश्यकता थी इस नाटक की? यही न कि उ बहलता रहे? देखते हो, वैरागी, किस तरह वाणी कँ अणु-अणु में डर व्याप्त हो रहा है कि कहीं वह क्रोधि उद्दण्डता के लिए शासित न कर दे! मैं उस सत्ता को मानती हूँ। उसमें मुझे विश्वास है। मैं यह भी कि अनेक बार मैंने उसके गुण गाए हैं। उसकी दया अनुभव किया है। निसर्ग का पवित्र सौन्दर्य मुझे पहुँचा देता है। संसार की कटुता मुझे झकोरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ती है। मैं असहाय हो रोती हूँ; क्रोधित होती हूँ; कुढ़ती हूँ; ोर तुम मुझे पागल समझते हो। मेरा इलाज करने के लिए हाँ ले आए हो। मेरा इलाज करने के पहले अपना इलाज ो, योगिराज!"

अवशा योगी तीर की तेजी से बिना जवाब दिए चला गया--कुटी गया है ओर। आए हुए सज्जन से बोला—"अभी सुधरने के कोई क्यों ह नहीं; पर अभी मैं निराश नहीं हुआ। जबरदस्त मानसिक को दो शान्ति से पीड़ित है वह। उसके जीवन की घटनाएँ देखते उसे भी ऐसा होना अस्वाभाविक भी नहीं।"

हो स सज्जन बोले—"मुझे आप पर पूरा भरोसा है, गुरुदेव! मेरी निकल केली लड़की है वह। उसकी माँ रो रोकर जान दे रही है।"

हा है। "तुम निराश न होओ, शीघ्र ही कुछ-न-कुछ किया जाएगा। था इन से काम लेना होगा। अच्छा, अब मेरी पूजा का समय हो ा है। बन्दे!"

है, व उस दिन योगी की पूजा स्थिर चित्त से न हो सकी। सीमा ता है या शब्द कानों में जहर उड़ेल चुके थे। सारी रात एक चट्टान बैठे बिता दी। प्रातःकाल मन कुछ शान्त था। सुन्दर और न बोल स्थ चेले सहदेव को बुलाकर कुछ समझाया। सहदेव ने है पाप- कृति में सिर झुका दिया।

× × ×

प! नि सीमा झाड़ के नीचे फूल बीन रही थी। कुछ हाथ में लेकर ी पाप- व दे हारती, कुछ बड़बड़ाती सी मुँह के पास ले जाती। फिर ोचा है कुरा पड़ती और नीचे फेंककर उदास दृष्टि से उनकी ओर वह ने लगती।

नि के व सहदेव दूर खड़ा देख रहा है—'आग के शोले' से उलझना! हुआ, देव की आज्ञा! गुरुदेव का दायाँ हाथ है सहदेव। आश्रम माज सारा भार उसी पर है। गुरुदेव पर असीम श्रद्धा है उसकी। चना स ४२ के आन्दोलन में कालेज छूट गया। फिर वह गाँव में कहने कर गरीबों की सेवा करने लगा। वहीं गुरु जी से भेंट हुई मुझे र बस्ती से मीलों दूर इस आश्रम में आकर वह रहने लगा। दुःख क का आदर्शवादी हृदय यहाँ बड़ा प्रसन्न रहता है।

कोधादि वह सीमा को देख रहा था और सोच रहा था कि कैसा त क्यों ीब पागलपन है। खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना सभी ठीक है। लें? टरों ने कहा है कि इसे एक तीव्र प्रकार का 'हिस्टीरिया' नी है कभी रोएगी, कभी हँसेगी। कभी तड़ातड़ लेक्चर कि उ ेगी! कैसी मीठी आवाज है! वाणी प्रभावशालिनी है और ी का र्य आकर्षक!

क्रोधि "सीमा!"

त्ता का "क्या है?" सीमा ने सिर घुमाया और विचित्र प्रकार से भी व की ओर देखते हुए वह पास आई और बोली—

की दय "कौन हो जी तुम? इस तरह नाम लेकर क्यों बुला रहे हो? मुझे -समाज में यह अनुचित है। मैं हूँ मिसेज खन्ना—उम्र में शायद तुम मुझसे छोटे ही होगे, फिर भी नाम लेकर...."

"सीमा, मैं सभ्य नहीं।"

"सभ्य नहीं! तब ठीक है। हाँ, क्या नाम है तुम्हारा?"

'सहदेव। तुम्हारा मित्र बनने की इच्छा से मैं यहाँ आया हूँ। चलो, वृक्ष तले बैठें, सीमा। क्या कर रही थीं तुम?"

सीमा शङ्कित दृष्टि से पूरे मिनट भर उसकी ओर ताकती रही। सहदेव की दृष्टि निःसङ्कोच थी। कुछ पनीले-से नेत्र, छोटी पुतलियाँ, उनमें सफेदी कुछ अधिक-सी, हलकी-सी नीलिमा।...

"क्या है?" आखिर पूछ बैठा सहदेव। सीमा न जाने क्या सोचती हुई बोली—

"कुछ नहीं चलो।"

पेड़ की सघन-सी छाया में सहदेव तने-से टिककर बैठ गया। कुछ फूल आसपास बिखरे थे। एक फूल को चुटकी में उठाकर उसने सूँघा। सीमा खड़ी थी। सहदेव कुछ क्षण राह देखकर बोला—"बैठो न, सीमा।"

"भोलेपन और सरलता का नाटक मैं खूब देख चुकी हूँ, सहदेव।" न मालूम क्यों सीमा कड़क उठी।

"क्या मतलब?" सहदेव सीधा बैठ गया।

"यही —" सीमा खड़े ही खड़े बोली—"कि यह नाटक हमारे शहरी समाज में भी खूब होता है। प्रगति और विकसित-मस्तिष्कता की आड़ में ऐसे खेल वहाँ भी होते हैं। फिर प्रेम का नाटक शुरू होता है, जो सिर्फ नाटक होता है। जहाँ प्रतिदिवस नए खेल, नए पात्र और नए नाटक। तुम भी प्रेम करने तो नहीं आए?"

सहदेव कुछ कहना चाहता था पर कुछ सोचकर चुप रहा।

सीमा और चिढ़ी—"बोलो, बोलते क्यों नहीं? जवाब क्यों नहीं देते?"

धीर-गम्भीर स्वर में सहदेव बोला "बैठ जाओ, सीमा।"

सीमा एक पल के लिए स्तब्ध-सी हो गई। फिर पहले से दूने आवेश से बोली—"नहीं, नवयुवक, पहले जवाब देना होगा तुम्हें। तुम सुन्दर हो, स्वस्थ हो, तेजस्वी हो। क्या तुम भी प्रेम का 'घृणित खेल' रचाने आए हो? अ हँ हँ – कुछ कहने का प्रयत्न न करो। मैं उसे 'घृणित' ही समझती हूँ। मैंने बड़ा घृणित रूप देखा है उसका।"

नदी के भीषण प्रवाह में हाथ अड़ाना कोई बुद्धिमानी नहीं, ऐसा सोच सहदेव चुप रहा। सीमा आवेश में कहती चली गई—"तुम्हें कदाचित् विदित न हो कि मैं 'परित्यक्ता' हूँ; समाज की दृष्टि में मेरा विवाह हुआ ऐसे मनुष्य के साथ जिसकी पहली स्त्री तपेदिक से पीड़ित संसार के किसी कोने में साँसें गिन रही है। मेरे पति महोदय ने, असल हुआ, बेचारी को छोड़ दिया था, क्योंकि वह सुन्दरी और शिक्षिता न थी। तत्पश्चात् उन्होंने कई लड़कियों और स्त्रियों से प्रेम किया और फिर मुझसे विवाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा की दृष्टि वृक्ष के तने पर जम गई थी मानो वहाँ पर अतीत का लेखा लिखा हो जिसे वह पढ़ रही हो। सहदेव घुटनों को हाथों से घेरे बैठा था। गर्दन ऊपर उठी थी; दृष्टि सीमा की ओर थी। चेहरा प्रायः भावशून्य था। वह लगातार सुने जा रहा था—

'विवाह के पश्चात् भी वे आधुनिक कन्हैया बने रहे। मेरी इन आँखों ने क्या नहीं देखा? वैसे तो स्त्रियों से सटना, उनके हाथों से खिलवाड़ करना, उनकी चूड़ियाँ सहेजना वे विलायत से सीख आए थे। कुछ कहने का प्रयत्न किया जाता तो कहते, तुम लोग बड़ी संकुचित दृष्टि रखते हो। जिस रात्रि मिसेस माथुर को उनके साथ देखा, मैं खून का घूँट पीकर रह गई। अगर कुछ कहती तो वही झूठी दलीलें सामने आतीं। और उन्हें ही क्या कहती! दूसरे पुरुष भी मुझसे आत्मीयता दिखाकर फिर प्रेम जताने का प्रयत्न करते थे। प्रेम—प्रेम—नहीं-नहीं, सहदेव, मुझे घृणा है ऐसे प्रेम से! कहीं तुम भी तो.....!"

सहदेव ने निस्सङ्कोच भाव से सीमा का हाथ जोर से पकड़कर उसे बैठाते हुए बड़े संयत और अधिकारयुक्त स्वर में कहा—"बैठो, सीमा;" और सीमा अपने स्वाभाव के विरुद्ध चुपचाप बैठ गई—कुछ विमूढ़, विस्मित और थकी-सी।

× × ×

समय बीतता गया और सहदेव को सीमा के पतिदेव के अन्य अनेक गुण मालूम होते गए। मौका पाकर आखिर एक दिन वह पूछ ही बैठा—"तो तुमने ऐसे व्यक्ति से विवाह क्यों किया था, सीमा?"

"वह भी एक कहानी है"—स्वर को अत्यधिक रूखा कर सीमा बोली—"मेरा भी दूसरा विवाह था यह।"

"ऐं?"

"हाँ, एन्ट्रेन्स पास हुई और मेरा विवाह हुआ। देवता-सा पति मिला। पर मैं अनोखा भाग्य लेकर आई थी। उनका विवाह उनकी इच्छा से नहीं हुआ था। वे किसी विजातीय लड़की से प्रेम करते थे। उन्होंने पहली ही रात मुझे सब कुछ बता दिया और मुझसे क्षमा माँगी। उनकी उदार-हृदयता पर मैं सर्वस्व चढ़ा चुकी थी; फिर क्षमा कैसी! उनकी सेवा में ही मैं अपना जीवन सार्थक समझती थी! हम एक माह साथ रहे। उन्होंने अपना कर्तव्य खूब निबाहा। मुझे प्रसन्न रखने की पूर्ण चेष्टा की। मैंने भी कोई कसर न रक्खी। वायु के एक मीठे झोंके की नाईं समय बीत गया। उसी दीवाली में उन्हें बुखार आया।...दीवाली में दिए न जले, दिल ही जला बैठी। दो माह तक आँखों के आँसू न थमे। मैं बीमार हो गई परन्तु न मरना था, न मरी। माँ-बाप ने दूसरी शादी का जोर लगाकर

"लोगों ने पुनर्विवाह की सलाह दी। पिता सुधारक रईस भी; देर क्या थी! जीवन-नाटक पर एक परदा दूसरा उठा। वह भी गिर गया। अब नया दौर है।"

एक लम्बी साँस खींचकर चुप हो गई सीमा।

"चलो सार्वजनिक प्रार्थना का समय हो गया, सीमा। गुरुदेव 'गांधी की नीति' पर व्याख्यान भी देंगे।"

और दोनों चल पड़े आश्रम की ओर। बातें हो रही

"कल गुरुदेव बड़ी प्रशंसा कर रहे थे तुम्हारी; चरखा-वर्ग और शिक्षण-वर्ग दोनों को बड़ी जल्दी सम्हाल तुमने।"

"तुम प्रशंसा न करो, सहदेव। तुम तो मुझसे कहीं काम सम्हालते हो। व्यायाम-शाला, देहाती स्कूल, व्यवस्था और भी न जाने कितना।"

कुछ देर चुप रहकर सीमा बोली—"कितने मह योगिराज! नादानी में क्या-क्या कह गई उन्हें मैं, छिः

"अनजाने का अपराध अपराध नहीं गिना जाता। चूक होती है। और जो चूक क्षमा न कर सके, वह ही नहीं।"

"पर सचमुच मैं प्रसन्न हूँ यहाँ। यह आश्रम, यह देश के लिए यह लगन, ऐसे आश्रम काश हिन्दुस्थान के में खुल जाएँ।"

"हिन्दुस्थान के लिए ऐसे आश्रम नई चीज नहीं है, यह तो प्राचीन परम्परा का ही परिवर्तित रूप है।"

"सोचती हूँ, इसी ढाँचे पर कई आश्रम बन जाएँ। स्वस्थ युवकों की कमी न होगी। अशिक्षा का भयङ्कर भूत भागा फिरेगा। राष्ट्रीयता की लहर हृदय-हृदय में दौड़ देश की एक पुकार पर हम सब दौड़ पड़ेंगे। खून और फिर फिर...।" सीमा का मुख आवेश में लाल हो सहदेव चकित नेत्रों से वह पवित्र आभा देखने लगा।

प्रार्थना के लिए घड़ियाल बजा। दोनों राहगीर की ओर दौड़ पड़े।

प्रार्थना के पश्चात् सहदेव ने उस दिन की खास-ख उपस्थित जन-समुदाय को समझाई—

शिमला परिषद् भङ्ग हो गई। हिन्दू-मुस्लिम आवश्यकता, आनेवाले चुनाव, इत्यादि।

दोनों में खासी बहस छिड़ गई। कार्यक्रम के नित्य की नाईं—गुरुदेव का आसरा लिया गया।

"मैं कहती हूँ, योगिराज, आजादी भीख में सकती। स्वतन्त्रता की देवी को रक्त का अभिषेक और हम गा रहे हैं वही पुराना राग। आपस में वह न कभी हुआ है और न होने को है।"

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुरुदेव, सीमा कहती है कि अगर तुम गृहयुद्ध से घबराते तो विरोधियों को भाई समझकर जो हक वे चाहते हैं, दे । मैं कहता हूँ, भारत के खण्ड क्यों हों ?"

योगिराज चुप थे।

"खण्ड कैसे, योगिराज ? पैतृक सम्पत्ति का आपस में बँटवारा तो होता ? भाई-भाई यदि अलग घरों में रहें तो भी भाई रहते हैं।"

"और आगे अगर उन्होंने देश की उन्नति में अड़ंगा लगाया तो ?"

"तो जो आज करने में हिचक रहे हो, वही करना होगा। उत्पात ! युद्ध ! राजनीति कठोर है, सहदेव।"

"नहीं, सीमा", योगिराज बोल उठे—"कुछ अंशों में तुम्हारा कथन सत्य है। परन्तु मनुष्य यदि अपनी मनुष्यता को भूलता तो वह किसी वस्तु का अधिकारी नहीं रह जाता। युद्ध और उत्पात मनुष्य की पशुवृत्ति के द्योतक हैं। इनका नामशेष होना अच्छा।"

"लेकिन..."

"लेकिन नहीं, सीमा, विश्व पर घनघोर घटाएँ छा रही हैं। है प्रलय-वर्षा करके ये मानवता का नाम निशान ही न मिटा छोटे-मोटे घरेलू झगड़े ही विश्वविद्रोह का भयङ्कर रूप धारण कर लेते हैं। हमें सावधान रहना चाहिए।"

"फिर हिन्दू-मुस्लिम एकता ?"

"सिर्फ एक उपाय है—विश्व मैत्री का प्रचार। साधन हैं—अहिंसा और त्याग।"

× × ×

"मैं कल ही शहर चली जाऊँगी, सहदेव।"

"लेकिन तुमने पिता से तो नहीं कहा।"

"वह मेरा स्वार्थ था।"

"लेकिन तुम्हारा काम ?"

"वह शीला सँभाल लेगी। मैंने उसे समझा दिया है।"

"परन्तु तुम्हें शहर अच्छा नहीं...।"

"हाँ, शहर से मुझे नफरत हो गई थी। पर अब मैं काम पर जा रही हूँ। कुछ काम कस्तूर बा निधि के सिलसिले में गुरुदेव ने सौंपा है। फिर चुनाव आ रहे हैं। कांग्रेस का काम करूँगी।"

"तुम्हें तो उसमें विश्वास न था।"

"बेवकूफी थी मेरी। कोई संस्था बिलकुल दोष-रहित नहीं रहती। फिर देश में एकता की आवश्यकता है। नाजुक मौका है। ऐसे समय में समष्टि का महत्त्व अधिक रहता है।"

सहदेव चुप रहा। फिर कुछ सोचकर बोला—"कहीं वहाँ तुम दुखी..."

"तुम्हें हो क्या गया है ? याद है, आश्रम दिखलाते हुए तुमने कहा था— तुम भी इस ओर ध्यान लगा सको तो अच्छा हो, सीमा। तुम दुःखित हो, पर संसार में कौन दुःखित नहीं ? रोते बैठे रहने से दुःख हलका नहीं होता। दुःख की दवा है ऐसा काम, जिससे अधिक-से-अधिक लोगों का भला हो। ऐसे ही काम को सेवा कहते हैं। सेवा निःस्वार्थ नहीं होती। उससे कर्त्ता को जो सन्तोष मिलता है उसी का लालच उसे उस मार्ग पर अटल रखता है। तुम भी इसी मार्ग पर चली जाओ। दुःख सहने की अक्षमता अपने आप नष्ट हो जाएगी।' इतनी जल्दी अपना उपदेश भूल गए, सहदेव ?"

"मैं भी चलूँ शहर ?"

"पागल तो नहीं हो गए हो ?"

सहदेव ने अपराधी की नाईं मस्तक झुका दिया। सीमा ने प्यार से उसकी बाँह पर हाथ रखते हुए कहा—"मैं तुम्हारी व्यथा समझ रही हूँ, पर यह मार्ग हम दोनों के लिए श्रेयस्कर नहीं। अब हमारा साथ न रहना ही अच्छा है। हम लोगों का ध्येय सेवा है। मोह हमारा भयानक शत्रु है। मुझे क्षमा करो, सहदेव; तुम्हारे लिए मेरे हृदय में हमेशा स्थान रहेगा। लेकिन हमारे मार्ग भिन्न हैं।"

सहदेव ने भर्राई आवाज में कहा—"सिधारो, सीमा ? कभी लौटोगी ?"

"जरूर, तुम्हारे और शीला के ब्याह में—वर-वधू को आशीष देने।"

"सीमा," सहदेव चीख पड़ा। सीमा जा रही थी—पहेली-सी – समझ से परे—निस्सीम सीमा।

गीत

श्री 'युगल'

मैं मेघ भरा व्याकुल अम्बर !
दो बूँद गिरी, सिंच गई धरा,
हरिताभ वसन वह लहर पड़ा;
मेरे उर में यह भरा मेघ
मुझको न सका कुछ सिंचित कर !
फैला असीम में प्यास लिए,
ज्वाला अभाव की आप पिए;
मेरे अधरों से लगा मेघ
तृष्णा न सका कुछ मेरी हर !
अपनी असीमता पर फूला,
बस शून्य रह गया मैं भूला;
मेरी बाहों में पड़ा मेघ
वह खो न सका मुझमें क्षण भर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रगुप्त मौर्य—एक अध्ययन

प्रिंसिपल श्रीराम शर्मा, एम० ए०, एफ० आर० एस० (लंदन)

भारतवर्ष के प्राचीन विख्यात शासकों में चन्द्रगुप्त मौर्य का नाम सदैव सम्मान से लिया जाएगा। उन्होंने मौर्यवंश की नींव डाल भारत के विस्तृत क्षेत्र पर ही नहीं अपितु बलख, बुखारा, बिलोचिस्तान और अफगानिस्तान पर भी चिरकाल तक शासन किया। चन्द्रगुप्त महाराजा महानन्द के सबसे बड़े पुत्र थे। उनकी माता का नाम मुरा था, जिसके नाम पर चन्द्रगुप्त और उनके वंशज मौर्य नाम से विख्यात हुए। महाराजा महानन्द की और भी कई रानियाँ थीं जिनसे उनके आठ राजकुमार और थे। दुर्भाग्य से चन्द्रगुप्त पुत्रों में तो सबसे बड़े थे और इसलिए राज्य के उत्तराधिकारी भी थे, परन्तु उनकी माँ महारानी मुरा किसी उच्च कुल से न थीं, इसलिए दूसरे राजकुमार सदैव उनसे द्वेष किया करते थे।

नवों राजकुमार इकट्ठे शिक्षा प्राप्त करते रहे। विद्या ग्रहण कर जब वे गुरु के आश्रम से पाटलीपुत्र लौट आए तब राजा ने उनकी योग्यता के अनुसार उन्हें काम सौंप दिए। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' के अनुसार चन्द्रगुप्त की बाल्यकाल की ही बुद्धिमत्ता और पटुता की अनेक विचित्र कहानियाँ प्रसिद्ध हैं। कहते हैं, एक बार रोम के शासक ने महानन्द के दरबार में अपने एक दूत के हाथों एक पिंजरा भेजा, जिसके अन्दर एक कृत्रिम शेर बन्द था। पिंजरे पर ताला लगा था। बाहर से यह जानना कठिन था, कि सिंह किस चीज का बना हुआ है। रोम के शासक ने कहला भेजा कि इस शेर को द्वार खोले बिना ही बाहर निकाला जाए। सारा मन्त्रि-मण्डल विस्मित था कि इस गुत्थी को कैसे सुलझाया जाए। अन्त में चन्द्रगुप्त को बुलाया गया। उसने इस बात का बीड़ा उठाया कि वह द्वार खोले बिना ही शेर को बाहर निकाल देगा। पिंजरा चन्द्रगुप्त के हवाले किया गया। उसने उसी समय आज्ञा दी कि इसके ऊपर घड़ों से पानी डाला जाए। आज्ञा का पालन हुआ। शेर खाँड़ का होता तो गल जाता और पिंजरे से बाहर निकल आता। परन्तु मनों पानी का उस पर कुछ प्रभाव न पड़ा। अब उसने दूसरी युक्ति की। उसने आज्ञा दी कि आग जलाई जाए। आग जलाकर उसके ऊपर पिंजरा रखने का प्रबन्ध किया गया और अन्त में उस बन्द शेर को आग पर तपाने के लिए रख दिया गया। आग खूब जल रही थी। आँख झपकने की देर थी कि शेर के अङ्ग ढीले पड़ने लगे। देखते-देखते उसका सिर गिरा और साथ ही पाँव भी अलग हो गए। फिर पेट की बारी आई और क्षण भर में वह शेर मोम का ढेर बनकर पिंजरे से

एक और जनश्रुति है। एक समकालीन राजा ने के पास अपना दूत भेजा। उसके साथ तीन चीजें एक अँगीठी में आग दहक रही थी; एक बोरी में सर पड़ी थी और एक मीठा फल अपनी मनोहारिणी सुगन्ध के मुँह में पानी ला रहा था। सारी चीजें दरबार में की गईं। राजा ने अपने अमात्यों से पूछा कि इस उपहार के उत्तर में क्या भेजना चाहिए। यह तो वे बतला पहले यह पता होता कि इस अनमिल त्रिमूर्त्ति का क्या अ है। कई दरबारियों ने अपना मस्तिष्क लड़ाया परन्तु त तसल्ली न हुई। जब सब हार चुके तब राजकुमार च अपने स्थान से उठा और निवेदन किया कि—'राजा ने कोप की आग से उपमा दी है जो सब कुछ भस्म कर डाल सरसों की बोरी के अनगिनित दाने उसकी सेना की बतलाते हैं और मीठे फल से मैत्री के मधुर फल से है, महाराजा ने प्रत्युत्तर के लिए भी चन्द्रगुप्त से ही उसी समय उसने सम्मति दी कि पानी का एक घ तीतर और एक बहुमूल्य हीरा उत्तर में भेजे जाएँ। कोपाग्नि को पानी शान्त करेगा। अनगिनत स सरसों के दाने हमारे तीतर-रूपी वीरों-द्वारा थोड़ी ही चुन लिए जाएँगे और यदि मैत्री पर उतर आ महाराजा नन्द की मित्रता फल की तरह क्षणिक देनेवाली प्रमाणित नहीं होगी, अपितु हीरे की तरह बहुमूल्य रहेगी।

जनश्रुतियाँ असत्य हों या सत्य, पर राजकुमार ने छोटे-बड़े सबके दिलों में स्थान प्राप्त कर लिया था वीरता और साहस अन्त में काम आए और वह उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त हो गया। दूसरे भाई उसकी उन्नति को सहन न कर सके और दुर्योधन उसे गिराने के उपाय सोचने लगे। सौभाग्य से वे शीघ्र निश्चय में सफल हो गए।

महाराजा नन्द बड़े शक्तिशाली शासक थे परन्तु उनकी मन्त्री शकटार से अनबन हो गई। शकटार महाराज के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने आरम्भ कर दिए। एक दिन सैर के लिए बाहर जा रहे थे कि एक ब्राह्मण दिया। काला-कलूटा, शिखा खुली हुई, हाथ में कुशा के पौधों को काट रहा है और साथ ही उन्हें छाछ दे रहा है। वे हैरान हो गए। पूछा, "क्या ब्राह्मण कहने लगा, "कल यहाँ एक कुशा ने डाला। मैं भी जब तक इस कुशा के वंश का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लूँ, दम नहीं लूँगा।" शकटार प्रसन्न हो गया। अच्छा थी मिल गया। "यदि यह कहीं महाराजा नन्द से कुपित गए तो पौबारह हैं।" ब्राह्मण को तसल्ली दी। साथ नेवाले सेवक को आज्ञा दी कि इसी समय मजदूर लगाकर णदेव के इच्छानुसार कुशा के उस कष्टदायक स्थान को साफ दिया जाए। चाणक्य शकटार के साथ हो लिया। मन्त्री ड़े से उतर आया, चाणक्य का सम्मान किया, आदरपूर्वक े घर लाया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा।

हर ओर चहल-पहल थी। नाना प्रकार के भोजन पक रहे थे। कर प्रबन्ध में व्यस्त थे। कमरे सजाए जा रहे थे। कुछ अतिथि चुके थे। जो शेष थे उनकी प्रतीक्षा हो रही थी। आज महानन्द यहाँ यज्ञ था। सभी बड़े-बड़े विद्वान् पण्डित बुलाए गए। न्तु समस्या यह थी कि ब्रह्मा के आसन पर किसको प्रतिष्ठित या जाए। रीति तो यह थी कि सबसे बड़े विद्वान् पण्डित वह आसन दिया जाए। भय था कि यदि किसी अयोग्य उस जगह पर बिठाया गया तो दूसरे कहीं रुष्ट होकर उठ न ूँ और इस तरह सब किया-कराया मिट्टी में मिल जाए। कटार अवसर ताड़ गया। चाणक्य को ब्रह्मा के स्थान पर ठला दिया गया। वे पात्र तो थे परन्तु अन्य ब्राह्मण इससे ह हो गए। प्रत्येक का विचार था कि उसी के अधिकार को ा गया है। अन्त में सभी ने मिलकर निश्चय किया उठ चलें।

चाणक्य विद्वान् तो थे परन्तु दरबार में अपरिचित थे। पर उनके रूप-रङ्ग ने 'एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा' के सार उनकी कोपाग्नि पर तेल का काम किया। उधर कुमारों ने भी अवसर भाँपकर महाराजा से जाकर कहा, हाराज, वहाँ तो रङ्ग में भङ्ग होनेवाला है। न जाने न्धकों ने कहाँ से एक काले-कलूटे पण्डित को लाकर ब्रह्मा आसन पर बिठा दिया है। इससे सभी अन्य ब्राह्मणों में ाहल मचा है और वे यज्ञ को अधूरा छोड़कर चले जानेवाले ।" जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसमें विचार-शक्ति नहीं । वह भले-बुरे के अन्तर को समझ नहीं सकता। यही महानन्द की थी। उसने सोचे-समझे बिना जाकर चाणक्य सिर के बाल पकड़वाकर उठवा दिया। एक ब्राह्मण का मान हुआ। सब ओर से कोलाहल मच गया। प्रत्येक यही रहा था कि राज्य के विनाश के दिन निकट आ रहे हैं, तभी णों का इस प्रकार खुले दरबार में अपमान किया जा रहा है। इधर चाणक्य अपने साथियों के साथ चल पड़े और जाते- उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक नन्द-वंश की ईंट से न बजा लूँगा, इन खुले बालों की शिखा नहीं बाँधूँगा। क्य की कोपाग्नि को शकटार ने और भड़काया। परिणाम- चाणक्य, शकटार और चन्द्रगुप्त षड्यन्त्र के अपराध र लिए गए और सभी को देश-निकाला दिया गया।

सन् ३२७ ई० से पहले की बात है, अलक्षेन्द्र महान्—मकदूनिया का सम्राट्-विश्व-विजय की लालसा लेकर घर से निकला। वह जहाँ गया, विजयलक्ष्मी उसके हाथ आई। एशियाई कोचक, इराक, अरब, ईरान, अफगानिस्तान एक-एक करके उसने जीत लिए। हिन्दूकुश पर आकर उसने सेना के दो भाग किए, एक टुकड़ी उत्तर की ओर बाख्तरिया, बलख इत्यादि जीतने को चल पड़ी और दूसरी टुकड़ी हिन्दूकुश को पार करके अटक के किनारे पहुँची। अटक के पार तक्षशिला की राजधानी थी। यहाँ राजा अम्भी राज करता था। उसका दूसरा भाई अभिसार काश्मीर का शासक था। मध्य पञ्जाब में एक अन्य जाति का शासन था। यवनों ने इनके राजा को पोरस (पुरु) के नाम से याद किया है, परन्तु दुर्भाग्य से इस शूरवीर का नाम इतिहास के पत्रों पर लिखा नहीं गया। पोरस तो इस जाति के पूर्व में होने के कारण राजा का यूनानी नाम ठहरा।

पोरस यहाँ सर्वरूपेण शासक था। इसकी सेना उग्र और शक्तिशालिनी थी। दोनों भाइयों की इसके आगे एक न चली। अथक प्रयत्नों के करने पर भी वे पोरस को जीत न सके। अब जो उन्होंने देखा कि अलक्षेन्द्र आ पहुँचा है तो उन्होंने विचार किया कि अलक्षेन्द्र की सहायता से पोरस का सिर कुचला जाए। इस अभिप्राय से उन्होंने अपने दूत अलक्षेन्द्र के दरबार में भेजे, उपहार भेंट किए और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। अलक्षेन्द्र ने तक्षशिला पर एक दरबार किया जिसका अभिप्राय यह था कि निकटवर्ती राजा उसकी सेनाशक्ति से प्रभावित होकर अधीनता स्वीकार कर लें। परन्तु उन दोनों भाइयों के सिवा और कोई भारतीय राजा उपस्थित न हुआ। स्वतः अपने अभिप्राय से मानों यह दरबार असफल ही रहा। हाँ, इनके अतिरिक्त दो और व्यक्ति भी वहाँ उपस्थित हुए और वे दोनों हमारे इतिहास से सम्बन्धित हैं, अतः उल्लेखनीय भी। इनमें से एक चन्द्रगुप्त थे और दूसरे चाणक्य। चन्द्रगुप्त अलक्षेन्द्र से मिले। अलक्षेन्द्र महानन्द पर आक्रमण करने की ठाने बैठा था। अतः राजकुमार चन्द्रगुप्त का उसने खूब आदर-सत्कार किया। चन्द्रगुप्त महानन्द से अत्यन्त रुष्ट था परन्तु मगध को अलक्षेन्द्र के हाथों में सौंपने के लिए तैयार नहीं था। चाणक्य और अलक्षेन्द्र की मुलाकात और सौदागरी अत्यन्त ही रोचक हुई होगी, परन्तु दुर्भाग्य से न तो किसी यूनानी ऐतिहासिक ने और न 'मुद्राराक्षस' के लेखक ने इस घटना पर प्रकाश डाला है। एक बात निश्चित है। चन्द्रगुप्त अपने ब्राह्मण मित्र के साथ वहाँ से लौट आए और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि यवनों को भारतवर्ष से निकालकर ही दम लेंगे।

अलक्षेन्द्र ने बढ़कर जेहलम नदी के तट पर पोरस से लड़ाई की। दोनों ओर से वीरों ने खूब हाथ दिखाए। अलक्षेन्द्र भी पोरस का लोहा मान गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु वीर वीरों की योग्यता समझते हैं। उसने न केवल पोरस को उसका अपना प्रदेश ही लौटा दिया, उसकी रियासत में और भी विजित प्रदेश सम्मिलित कर दिए। जब अलक्षेन्द्र की सेना व्यास के तट पर पहुँची तो उसने आगे जाने से इन्कार कर दिया। सैनिकों को घर से निकले कई वर्ष हो गए थे। वे अपने बन्धु-बान्धवों के दीर्घ विरह से उकता गए थे। दूसरे पञ्जाब की लड़ाइयों ने उन्हें बता दिया था कि भारत को जीतना आसान नहीं है। उन्हें अटक से व्यास तक पहुँचने में आठ मास लग गए थे। इञ्च-इञ्च भूमि के लिए उन्हें लड़ना पड़ा था। इन कारणों से वे उद्विग्न हो गए थे। उनके आगे बढ़ने से इन्कार करने का एक और कारण था। महानन्द के अधीन मगध साम्राज्य के बारे में सुना जाता था कि वह एक महान् शक्तिशाली राज्य है। उसके पास दो लाख प्यादे बीस सहस्र सवार, दो सहस्र रथ और चार सहस्र जङ्गी हाथी थे। अलक्षेन्द्र की इच्छा थी कि वह सारे भारत को जीत ले। परन्तु महानन्द के पौरुष की कहानियों ने उसके सैनिकों को बौखला दिया। जब सेना ही आगे बढ़ने से इन्कार करे तो बेचारा सेनापति क्या कर सकता है? ज्यों-त्यों उसे लौटने की आज्ञा देनी पड़ी।

यहाँ से विदा होने के पूर्व अलक्षेन्द्र ने पोरस को अपने सभी विजित प्रदेशों का जो हिन्दूकुश से इस ओर वर्तमान थे, वाइसराय नियुक्त किया। फिल्प् को उसका सहायक नियुक्त किया गया।

कुछ काल बाद फिल्प् ने पोरस को धोखे से कत्ल करके अपने शासक बनने की घोषणा कर दी।

पोरस बहादुर था। वह बात का धनी था। सभी राजा उसका सम्मान करते थे। जब उसके कत्ल की सूचना उन तक पहुँची तो यूनानियों के विरुद्ध क्रोध की एक लहर दौड़ गई। सभी राजाओं ने मिलकर यवनों को देश बाहर करने का निश्चय किया। चन्द्रगुप्त ने चाणक्य की सहायता से पञ्जाब के सभी राजाओं को एकत्र किया और विदेशी शक्ति के विरुद्ध चलनेवाले इस आन्दोलन के स्वयं नेता बने। विजय-लक्ष्मी उनके हाथ लगी। उन्होंने दो वर्षों के अन्दर ही पञ्जाब को यवनों से मुक्त कर दिया। इस बीच चाणक्य उनके मन्त्री तथा सहायक रहे। चन्द्रगुप्त चाणक्य का बहुत सम्मान करते थे। उनकी सम्मति प्राप्त किए बिना वे कोई काम नहीं करते थे।

इधर मगध की रियासत में बहुत आकुलता फैली थी। राज्य का प्रबन्ध ऐसे लोगों के हाथों में चला गया था जो शासन-विधि से अपरिचित थे। प्रजा राज्य के कठोर नियमों से तङ्ग आ गई थी। परन्तु सेना इतनी शक्तिशालिनी थी कि वह विद्रोह का दमन कर देती थी। अन्त में जब जनता ने देखा कि [illegible] में हैं और उनके पास एक भारी सेना भी है तब उन्होंने उन्हें निमन्त्रण दिया कि वे आकर उन्हें इस से छुटकारा दिलाएँ।

चन्द्रगुप्त यही चाहते थे कि अवसर मिले तो मगध-सा से महानन्द को निकाल फेंकें। उन्होंने देखा कि प्रतिशो समय आ गया है। चाणक्य की अध्यक्षता में उन्होंने (ई० पूर्व) में मगध पर आक्रमण कर दिया। पञ्जाब के राजाओं ने उन्हें फिल्प् को पराजित करने में सहायता वे सब उनके साथ थे। इस महती सेना को लेकर चन्द्र महानन्द की सेना पर आक्रमण कर दिया। कुछ तो क और उनके साथियों की सैनिक शक्ति और कुछ "घर का लङ्का ढाए" के अनुसार महानन्द की सेना ने भी चन्द्रगु साथ दिया। जिस सेना के नाम से अलक्षेन्द्र पर भय छ था वह अब चन्द्रगुप्त की नीति का शिकार बनी। म पराजित हुआ और चन्द्रगुप्त ३२३ ई० पू० में मगध पर प्रतिष्ठित हुए। चाणक्य इनके प्रधान-मन्त्री बने चन्द्रगुप्त ने भी सर्वस्व उनके हाथों में सौंप देना चाहा। चाणक्य ने इसे स्वीकार नहीं किया और वे इस प्रयत्न कि किसी प्रकार अन्तिम नन्द राजा के मन्त्री राक्षस को कर लें। वे चाहते थे कि राक्षस चन्द्रगुप्त का मन्त्री बने वे स्वयं वानप्रस्थ ग्रहण कर सकें। राक्षस इसे स्वीका करता था। वह चन्द्रगुप्त की अधीनता को महानन्द के कृतघ्नता के समान समझ रहा था। उसने मगध से डेरा लिया और बाहर चला गया। परन्तु उसका सारा मगध में ही था। चाणक्य ने खोज लगाकर कुटुम्बि बन्दी बना लिया। विवश होकर राक्षस को अपने चन्द्रगुप्त के हवाले करना पड़ा। बहुत समय तक और राक्षस में नीति-युद्ध होता रहा जिसमें सफलता चा हाथ रही और राक्षस को मन्त्रिपद स्वीकार करना पड़ा। चाणक्य ने वानप्रस्थ ले लिया और वे वनों को चले गए।

चाणक्य एक कर्मशील विद्वान् थे। चाणक्यनीति और तन्त्र उनकी नीति-पटुता के अब भी उदाहरण स्वरूप हैं। शास्त्र ने, जिसमें उन्होंने अपना नाम कौटिल्य दिया है, स्थान संसार के नीतिज्ञों में ही नहीं नीति-विशारदों में भी कर दिखाया है। अर्थशास्त्र में चाणक्य ने शासन पर व्याख्यात्मक ढङ्ग से प्रकाश डाला है। यह विधानों से परिचय कराने के अतिरिक्त चन्द्रगुप्त मौर्य की विधि पर भी पर्याप्त प्रकाश डालता है।

इधर चन्द्रगुप्त ने अवसर से लाभ उठाकर पञ्जाब, युक्त प्रान्त, सिन्ध और बङ्गाल का शासक दिया और पाटलीपुत्र के स्थान से अपनी राजाज्ञाएँ आरम्भ कर दीं।

चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर बैठे अधिक समय न कि उन्हें एक और विपत्ति का सामना करना पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पश्चात् सेल्यूकस बलख और बुखारा, बिलोचिस्तान, ल और ईरान के प्रदेश का स्वाधीन शासक बन बैठा। ने शनैः-शनैः आस-पास के प्रदेश विजय करके अपने अधीन लिए और इस तरह मध्य एशिया में एक शक्तिशाली ज्य का स्वामी बन गया। सेल्यूकस ने चाहा कि जो कार्य न्द्र अधूरा छोड़ गया है उसे वह पूर्ण करे। इस अभि- से उसने ३०५ ई० पूर्व में पञ्जाब पर आक्रमण कर दिया। इधर चन्द्रगुप्त भी बेसुध नहीं बैठा था। इसके पूर्व सेल्यूकस की सेनाएँ उसके प्रदेश को तहस-नहस कर सकें, ने अपनी विशाल सैन्य का सञ्चालन किया और शीघ्रता से कस की सीमा पर जा पहुँचा। सेल्यूकस को लेने के देने गए। भारत अब अलक्षेन्द्र के समय की तरह विभिन्न सतों में बँटा हुआ नहीं था, न कहीं गृह-युद्ध था और कहीं राजा अम्भी जैसे देश-द्रोही शासक थे। यही नहीं, गुप्त की सेना विधान में यूनानी दलबन्दी को मात करती सेना का प्रबन्ध छः विभागों के अधीन था जो अलग- रथों, प्यादों, अश्वारोहियों, हाथियों, जहाजों, अन्न आदि आवागमन के उत्तरदायी थे। सैनिक तीक्ष्ण अस्त्रों से सज्जित नहीं थे अपितु कवच आदि अनेक अङ्ग-रक्षकों से स थे। सेना के साथ घायलों की परिचर्या आदि के लिए की व्यवस्था थी। महानन्द की सेना में दो लाख प्यादे, हजार सवार, नौ हजार हाथी और आठ हजार रथ थे। गुप्त की युद्ध-प्रियता ने इस संख्या को बढ़ाकर ४ लाख , जिनमें रथों पर चढ़नेवाले भी सम्मिलित थे, तीस हजार और नौ हजार हाथी तक बढ़ा दिया था। सारांश यह स सेना से सेल्यूकस का वास्ता पड़ा उसकी स्थिति का र उसे स्वप्न में कभी न आया था। बेचारा घबराकर या। 'नमाज बख्शवाने गए थे, रोजे गले पड़े।' मरता न करता! युद्धारम्भ से पूर्व ही उसने हथियार छोड़ दिए और सन्धि के लिए पत्र-व्यवहार आरम्भ हुआ। पर चन्द्रगुप्त नो चाणक्य के शिष्य थे, उसे ऐसे कब छोड़नेवाले थे।

अन्ततः काबुल, गांधार, हिरात, बलख और बुखारा के प्रदेश गुप्त के साम्राज्य में सम्मिलित हुए और सेल्यूकस ने अपनी चन्द्रगुप्त को ब्याह दी। चन्द्रगुप्त ने ५०० हाथी उपहार- अपने श्वसुर को भेंट किए। इस युद्ध का परिणाम यह कि मौर्य्य-साम्राज्य की सीमा उत्तर में ईरान और मध्य- तक जा पहुँची।

अब चन्द्रगुप्त का यशोविस्तार और भी हुआ। उन्होंने णकों को भी अपने अधीन कर लिया जो अब तक शेष । चाणक्य ने उन्हें एक गुरु-मन्त्र दिया था—"असन्तुष्टा नष्टाः सन्तुष्टाश्च महीभृतः"। वह चन्द्रगुप्त को स्मरण उसी के अनुसार आचरण करते हुए वे अन्तिकाल में ही के सार्वभौम सम्राट् के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अब चन्द्रगुप्त संसार में अप्रतिरथ थे। अपनी सेना के अतिरिक्त सेल्यूकस की सेना भी जो एशियाखण्ड में अपने समय में अद्वितीय थी, उनके अधिकार में थी। इन सेनाओं की सहायता से भारत की सभी छोटी-छोटी रियासतें जीत ली गईं। इस प्रकार मौर्यध्वज भारत के अविच्छिन्न भू-भाग में फहराने लगा। मध्य-एशिया से लेकर बङ्गाल की पूर्वी सीमा तक और काश्मीर से लेकर मैसूर तक उनके शासन में था। सेल्यूकस के दूत मेगस्थनीज ने लिखा है कि उस समय चन्द्रगुप्त ११८ राजाओं के महाराजाधिराज थे।

चन्द्रगुप्त का साम्राज्य संसार भर में सुदृढ़तम साम्राज्य था। उनके पास छः लाख प्यादे, तीस सहस्र सवार और नौ सहस्र हाथी थे। रथ इसके अतिरिक्त थे। वे सारे उत्तर भारत पर स्वतन्त्र होकर शासन करते थे। उन्होंने मध्य एशिया के सबसे बड़े शासक को हरा दिया था। ऐसे युग में, जब कि योरप में सभ्यता का जन्म भी नहीं हुआ था, भारत में ऐसे साम्राज्य की स्थिति पर हम गर्व कर सकते हैं।

सेल्यूकस ने अपना दूत चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा। उसका नाम मेगस्थनीज था। उसने जो कुछ यहाँ देखा-सुना सब एक पुस्तक में एकत्र किया। दुर्भाग्य से अब वह पुस्तक अलभ्य है। उसके संदर्भ जिस परिभाषा में भी अन्य पुस्तकों से मिले हैं उन्हें एकत्र कर लिया गया है। यह ज्ञान का एक भाण्डार है। यद्यपि इसमें बहुत कुछ भुस भी भरा है, परन्तु फिर भी इसमें इतने मोती हैं कि हम आसानी से उनका चयन कर सकते हैं। इसमें चन्द्रगुप्त के साम्राज्य, उनकी राजधानी, लोगों के रीति-रिवाज, शासन-विधि, सेना इत्यादि की पर्याप्त जानकरी भरी पड़ी है।

जैन मत की कथा के अनुसार चन्द्रगुप्त जैनी थे। उनकी अवस्था कोई पचास वर्ष के लगभग होगी जब लगभग ३०० ई० पूर्व में भारत में भारी अकाल पड़ा। चन्द्रगुप्त ने उस समय राज्य की बागडोर अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दी और स्वयं एक विख्यात जैनाचार्य की अध्यक्षता में दक्षिण की ओर चल पड़े। अन्त में वे रियासत मैसूर में रहने लगे। इस जगह आज तक उनका नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। कुछ साल के पश्चात् चन्द्रगुप्त का दिल इस संसार से उचट गया और वे जैनियों की निर्वाण-सिद्धि की रुचिकर विधि को अपनाकर अनशन व्रत धारण कर स्वर्गगामी हुए।

सेल्यूकस निकाटूर के दूत मेगस्थनीज ने महाराज चन्द्रगुप्त के युग की जो घटनाएँ लिखी हैं और 'अर्थशास्त्र' में राजनीतिक विषयों पर जिस प्रकार वाद-विवाद किया गया है उनसे भी भारत की शासन-विधि और सर्वसाधारण घटनाओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इसके अतिरिक्त और भी कई साधन हैं जिनसे हमें महाराज चन्द्रगुप्त की शासन-विधि का पर्याप्त परिचय मिलता है। इन सभी साधनों को ध्यान में रखते हुए हमें यह मानना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। कई दृष्टिकोणों से तो यह मानना पड़ेगा कि महाराजा चन्द्रगुप्त के राज्यकाल में जिस प्रकार प्रजा की शान्ति और सुविधा का ध्यान रक्खा जाता था उसका उदाहरण संसार के इतिहास में १६वीं शताब्दी से पूर्व शायद ही कहीं मिले। सारा साम्राज्य चार या पाँच बड़े-बड़े प्रान्तों में बँटा हुआ था। पाटलीपुत्र के आस-पास के प्रदेश पर महाराज चन्द्रगुप्त की वैयक्तिक अध्यक्षता में शासन होता था। तक्षशिला का शासक स्यात् काश्मीर, पञ्जाब और उत्तरी-पश्चिमी सीमाप्रान्त, अफ़गानिस्तान और बिलोचिस्तान का शासक समझा जाता था। उज्जैन का गवर्नर राजपूताना और मध्यभारत का अध्यक्ष था। दक्षिण भारत का शासक स्यात् वर्तमान मैसूर में स्थित स्वर्णभूमि नामक स्थान से शासन-प्रबन्ध करता था।

चन्द्रगुप्त का प्रासाद गौरव और गरिमा में संसार भर में उत्तम स्थान रखता था। राजा खुले दरबार शासन करता था। राजा-रंक, भारतीय-अभारतीय सभी को हर वक्त राजा के पास आने की सुविधा थी। चन्द्रगुप्त इस विषय में इतने सतर्क थे कि वे मालिश के समय भी प्रत्येक फरयादी की पुकार सुनने के लिए तैयार रहते थे। प्रजा के सुख और सुविधा का उन्हें इतना ध्यान था कि एक सुव्यवस्थित विभाग केवल इसी कार्य पर नियत था कि वह दूरवर्ती तथा निकटवर्ती प्रजा की दशा का ठीक-ठीक ज्ञान सम्राट् को कराता रहे। अधिकारी-वर्ग की क्रूरताओं और अनियमित व्यवहारों का ब्योरा सम्राट् तक पहुँचाना इस विभाग का विशेष कर्तव्य था। पाटलीपुत्र में शासन-कार्य २६ विभागों के सुपुर्द था जो कि अपने-अपने काम के लिए महाराजा के प्रति उत्तरदायी था। कोई कोषाध्यक्ष था, कोई टकसालों का उपाधिकारी। एक उपज का उत्तरदायी था तो दूसरा वन्य-प्रदेश का। इधर व्यापार-विभाग का अध्यक्ष तो दूसरी ओर कपड़ा बुनने के शिल्प का अध्यक्ष। विदेश जानेवाले व्यक्तियों के लिए एक पृथक् विभाग था तो सरकारी तोपखाने के लिए दूसरा। घोड़ों, पालतू पशुओं, हाथियों, रथों, प्यादों और हथियारों की देख-भाल के लिए पृथक्-पृथक् विभाग थे। जलयान विभाग इस तथ्य का साक्षी है कि उस समय हिन्दुओं ने इस विषय में पर्याप्त उन्नति की थी। इन विभागों के लिए जो आज्ञाएँ प्रचलित थीं उनसे विदित होता है कि धातुओं की उन्नति में सहयोग देना, वनों का प्रबन्ध करना, व्यापार और कृषि के लिए सु पहुँचाना, सड़कों और मण्डियों की देखभाल करना— राज्य के आवश्यक कर्तव्यों में सम्मिलित थे। ऐसे समय पश्चिम में रोगियों की सुख-सुविधा के लिए सरकारी अ का नाम तक सुनने में नहीं आता था, भारतीय सम्राट् प्रथम कर्तव्य समझा जाता था कि वह प्रजा के लिए अ खोले और औषधीय सहायता के लिए उचित प्रबन्ध जिस समय पश्चिम अन्धकारावृत था, जब रोम और भी सभ्यता के पाठ में नौसिखिए ही थे, भारत के सम्राट् कार्यक्रम से सभ्यता का पाठ दूर-निकट पहुँचा रहे थे। दृष्टिकोण से दो बातें विचारणीय हैं। अलक्षेन्द्र महान् पर आक्रमण तो किया, परन्तु जैसा कि यूनानी ऐतिहा बतलाते हैं, मगध के राजा नन्द की ख्याति ने उनके सै भगा दिया और उन्होंने भारत से सुरक्षित लौटना ही समझा। सेल्यूकस ने आक्रमण किया तो उसे विलो और उत्तरी-पश्चिमी-सीमाप्रान्त और अफ़गानिस्तान विशेष भाग चन्द्रगुप्त के भेंट करना पड़ा। इन दोनों से विदित है कि उस समय भारत उन्नति के क्षेत्र में अग्रगामी था। गौरव-गरिमा में पाटलीपुत्र के प्रासाद को मेगस्थनीज की आँखें चौंधिया गई थीं। शिल्प के अर्थशास्त्र के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि उस समय शिल्प भारत में उन्नति पर थे। वाणिज्य के क्षेत्र में उ फारस, चीन, लंका, रोम, तिब्बत, नेपाल, इराक और व्यापार और आयात-निर्यात होता था। प्रजा का पर्याप्त हाथ था। भिन्न-भिन्न व्यवसायी-दल काफी रखते थे। इन दलों में विधि-पूर्वक निर्वाचन-प्रणाली थी। विवादास्पद तथ्यों का निर्णय बहुमत से किया सारांश यह कि राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे परीक्षण किए जिनके विषय में पश्चिमी संसार तब तक कुछ न जा आवागमन के लिए राजमार्ग खुले थे जिन पर छाय अपनी शान दिखा रहे थे। इसके अतिरिक्त पथिकों अन्य सुविधाएँ भी थीं। झूठ बोलना भारतीय नहीं थे। चोरी का यहाँ नाम तक न था। परा वालों के लिए सर्वथा विदेशी वस्तु थी। और यह समय था, जिस समय का इतिहास भी आज अन्धकार में पड़ा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तुमई

श्री धर्मवीर, एम० ए०

(१)

खण्डोबल्लाल की बूढ़ी माता ने सात दिन का व्रत रक्खा किसी प्रकार लड़के और लड़की से, खण्डोबल्लाल और उसकी न सन्तुमई से, शनि का ग्रह टल जाए। राजज्योतिषी कर पण्डित ने बताया कि कष्ट का कम से कम आधा ार तो दूर हो गया है, बाकी के निवारण के लिए पूजा करनी ही। इसके अतिरिक्त सत्पुरुषों का आशीर्वाद प्राप्त करना ए। परन्तु आशीर्वाद में भी सावधानता से काम लेना होगा। माता ने दुनिया देखी थी। इसलिए 'आशीर्वाद में भी धानता से काम लेना होगा', इसका अर्थ उसकी समझ में या। क्या आशीर्वाद भी कभी दुःख का कारण बन सकता वह आशीर्वाद ही क्या जिससे मनुष्य को खतरा हो? यदि ही है तो आशीर्वाद और शाप में क्या फर्क रह गया?

दिवाकर पण्डित से इस विषय में बुढ़िया ने तरह-तरह के ल किए। लेकिन वह कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सका। ी पोथी में उसने जो कुछ पढ़ा था वह सुना दिया। इसकी या वह कैसे करता जब कि स्वयं उसकी समझ में यह बात आई थी? परन्तु ज्योतिष की बात को राज-ज्योतिषी भी नहीं कता। आखिर ज्योतिष है! बुढ़िया ने एक ढङ्ग से ताना ो तो दिया। दिवाकर पण्डित भी उसे अमृत समझकर या। बुढ़िया ने अपने बाल धूप में बैठकर सफेद न किए दिवाकर पण्डित को उसने गुस्सा न होने दिया। न राजज्योतिषी करता क्या। उसने हार मानना ही समझ।

माता के कहने पर खण्डोबल्लाल ने मकरसंक्राति के दिन न के लिए सभी सरदारों को निमन्त्रण दिया। महाराज वा में वह स्वयं उपस्थित हुआ। माता के व्रत की बात न की। महाराज इन सामाजिक बातों का महत्त्व ानते थे। इसलिए उन्होंने भी आना स्वीकार कर लिया।

नक्कारे बज रहे थे जब शाम को महाराज की सवारी ोबल्लाल के बागीचे में पहुँची। कुँवारी लड़कियों ने ाज की आरती उतारी। खास शाही चाँदनी लगी हुई विभिन्न सरदार पहले ही बैठे हुए थे। थोड़ी देर में अँधेरा ायगा, इसलिए चारों ओर मशालों का प्रबन्ध किया गया जब ये जलाई गईं तब सारा स्थान जगमगा उठा। मालूम देने लगा जैसे कोई छावनी उतरी हुई है।

पूजा के पश्चात् सब को वहाँ ले जाया गया जहाँ लकड़ी चौकियाँ बिछी हुई थीं। ठीक बीच में फूल सजे हुए जब महाराज अपनी खास चौकी पर विराजमान हुए तब सरदार भी बैठ गए। कुछ तो फूलों की सुगन्ध, कुछ गुलाबजल का छिड़काव, इसके अतिरिक्त हर चौकी के दोनों तरफ अगर-बत्तियाँ। सारी जगह महक रही थी। घर की लड़कियाँ आकर थालियों में भोजन परसने लगीं। इन युवतियों में से एक लोगों को सबसे अधिक अपनी तरफ खींचती थी। वह न सिर्फ तरुणी थी बल्कि सुन्दरी भी। इसके अलावा उसमें शक्ति भी सबसे ज्यादा थी। फुर्ती इतनी थी कि किसी को इस बात का पता न चलता कि वह क्या चीज लाई और कब थाली में रख गई। उसके पाँव जमीन से छूते ही न थे। एक जगह पड़ते ही वह उन्हें उठाकर दूसरी जगह रख लेती। उसके सिर के पीछे बालों के अन्दर मोतियों के फूलों का जो गुच्छा गुँथा हुआ था वह हर एक की दृष्टि को अपने अन्दर जज्ब कर लेता। उसकी नजाकत और मुस्कराहट, दोनों, मिलकर अपना काम कर रही थीं।

यह खण्डोबल्लाल की बहिन सन्तुमई थी।

(२)

महाराज की तबीअत भी रँगीली ही थी। उन्होंने सन्तुमई को एक बार नहीं, दो बार नहीं, कई बार देखा। देखते, लेकिन जी न भरता। भोजन करना एक तरह से भूल ही गए। सरदार हैरान थे। इस कारण नहीं कि वे असली बात को समझते न थे, बल्कि इसलिए कि वे महाराज से किसी और बात की आशा करते थे। परन्तु महाराज किसी अन्य चीज में मस्त थे। उन्हें इसका कुछ पता न चला।

खण्डोबल्लाल दिल-ही-दिल में कुढ़ रहा था, लेकिन कुछ कर न सकता था। उसने सुन रक्खा था कि महाराज की तबीअत ऐसी-वैसी है, लेकिन उसे यह खयाल कभी सपने में भी न आया था कि ऐसे अवसर पर महाराज अपनी दुर्बलता को प्रकट होने देंगे।

विजया-दशमी पर हर बरस महाराज की तरफ से सरदारों को भोजन दिया जाता। खण्डोबल्लाल को महाराज ने अब की खास तौर पर बुलाया।

"अपनी बहिन सन्तु को भी लेते आना," महाराज ने आज्ञा दी।

खण्डोबल्लाल की आँखें जमीन में गड़ी हुई थीं। उसकी जबान पर ताला लगा हुआ था। वह बोलता कैसे? दिल में तूफान उठ रहा था। परन्तु एक विचित्र-सी शक्ति उसको रोके हुए थी। यहाँ तक कि वह उसे मुँह खोलने की इजाजत भी न देती थी। खण्डोबल्लाल चाहता था कि सारी दुनिया को चकनाचूर कर दे क्योंकि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसते हैं। लेकिन फिर वही शक्ति उसके इन विचारों को बहुत बुरी तरह से दबा देती।

"बोलते क्यों नहीं, खण्डोबल्लाल?" महाराज ने प्रश्न किया।

वह फिर चुप; मूर्त्ति की तरह खड़ा रहा। आँखें उसकी जमीन की तरफ थीं।

"आखिर बात क्या है?" अबकी महाराज ने जरा और ढँग से कहा।

खण्डोबल्लाल के लिए जरूरी हो गया कि जवाब दे। उसी शक्ति ने खण्डोबल्लाल का मुँह खोल दिया और उसके मुँह से ये शब्द निकले —"जो आज्ञा, महाराज!"

"तो तुम समझ रहे हो न कि मैंने क्या कहा है?" महाराज ने नरम होकर पूछा।

"हाँ महाराज!" मूर्त्ति का मुँह खुला।

"अच्छी बात है।" महाराज के ये शब्द सुनकर खण्डोबल्लाल ने मस्तक झुकाया और उलटे पाँव पीछे हट गया।

"लेकिन देखो!" महाराज ने जोर से कहा तो खण्डोबल्लाल वहीं खड़ा हो गया—"नव वर्ष के दिन हमने जो भोज किया था उसमें सभी सरदार आये थे। उनके परिवार के लोग भी उसमें सम्मिलित हुए थे। परन्तु तुम्हारी बहिन, सन्तु, न आई। इस लिए अब की यह भूल न होनी चाहिए। जाओ।"

(३)

विजया दशमी में सिर्फ दस दिन बाकी रह गए। खण्डोबल्लाल को इस मुसीबत से छूटने का कोई उपाय नजर न आया।

घर-गृहस्थी छोड़कर संन्यासी हो जाऊँ? लेकिन यदि उधर से कोई और कदम उठा लिया गया तो? फिर इस प्रकार संन्यासी बनना कायरता नहीं है क्या? अपनी जिम्मेदारियों से भागना कायरता नहीं तो और क्या है?

क्यों न सारे परिवार को लेकर राज्य से बाहर हो जाऊँ? लेकिन राजा की बाँहें बहुत लम्बी होती हैं, वे तो मेरे जैसे आदमी को किसी जगह से भी पकड़कर ला सकती हैं।

तब?

सन्तु को जहर क्यों न दे दूँ? क्या तू ऐसा महापाप कर सकता है? यदि तू उसकी रक्षा नहीं कर सकता तो उसके जीवन का अन्त क्यों करता है?

उसका अन्त करने के पश्चात् मैं भी मर जाऊँगा। यह दूसरा पाप होगा। फिर बाकी परिवार कहाँ जाएगा?

इस प्रकार के कितने ही विचार उसके मन में आए। परन्तु वह कोई फैसला न कर सका। यही नहीं, इस बात की खबर वह अपनी बहिन को भी न दे सका। देता भी कैसे? उससे कहता भी क्या? इससे बेहतर तो यह था कि वह अपने मुँह पर

लेकिन न तो तूने कोई तरीका ढूँढ़ा और न सन्तु कहा कि वह इसका रास्ता निकाले। फिर विजया दशमी चली आ रही है। इसलिए क्या बनेगा तेरा?

मैं ही दुनिया से क्यों न हट जाऊँ? जहाँ ईश्वर अबलाओं की सहायता करता है वहाँ पर इसकी भी लेकिन फिर तू किस मर्ज की दवा है? ईश्वर ने ही तो तुझे सहायता का साधन बनाकर भेजा है।

बाकी सिर्फ चार दिन रह गए। खण्डोबल्लाल की ने बड़ा भयङ्कर रूप धारण कर लिया। वह खाना-पी गया। माता ने इसका कारण पूछा तो उसने कह दि "पेट में दर्द है। एक-आध बार नहीं खाऊँगा तो ठी जायगा।"

लेकिन सन्तुमई कैसे मानती? बहिन भाई के पीछे प उसने देखा, भाई का मन किसी बात में भी नहीं लग उसने कोई दवा भी तो नहीं खाई। बहिन ने निश्च कि बात मालूम करके दम लेगी।

"किसकी चिन्ता है, भैया?" उसने हँसते-हँसते पू

"किसी की नहीं।" भाई ने भी बनावटी हँसी-हँ जवाब दिया।

"फिर इस तरह आत्म-हत्या क्योंकर रहे हो?"

"आत्महत्या! तुम क्या कह रही हो, सन्तु? आत्महत्या है?"

"और क्या है? न खाना न पीना, न जीने में में। यह दुनिया ही नहीं, मृत्यु है।"

"मृत्यु!"

"हाँ मृत्यु! माँ पूछती हैं तो आप बताते नहीं। हैं तो सफेद झूठ। मैं पूछती हूँ तो आप छिपाते छिपा सकते नहीं। भला मुझसे भैया भूले हुए आप आज कुछ और हो गए हैं? जल्दी बताइए बात, नहीं तो मुझे भी आपका अनुकरण करना पड़ेगा नहीं खाते तो मैं भी बगैर खाये कुछ दिन जिन्दा हूँ। चलिए, दोनों इसकी दौड़ लगाते हैं।"

"सन्तु, तू क्या कह रही है?"

"वही जो आप सुन रहे हैं।"

"इसका मतलब?"

"वही जो इन शब्दों का हो सकता है। मैं की मयी भाषा तो बोल नहीं रही। यदि आप मेरी बा मानते हैं तो मैं....."

"नहीं सन्तु, नहीं"; खण्डोबल्लाल नरम पड़ गया हिम्मत जाती रही—"सन्तु, तू नहीं जानती कि मैं कैसे में फँसा हुआ हूँ।"

खण्डोबल्लाल की आँखों से मोटे-मोटे दो

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन्तु, तूने ठीक कहा है। सचमुच मैं न मरने में हूँ जीने में। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। करूँ क्या करूँ?"

"आखिर बताते क्यों नहीं आप?" सन्तु ने कड़ककर कहा।

"सन्तु, सन्तु! तू किन कानों से सुनेगी? मैं किस जबान से सुना सकता हूँ? अच्छा होता यदि आज तुम्हारे सामने तरह बोलने की शक्ति मुझसे छिन गई होती।"

"भैया, आपको क्या हो गया है? दिल की बात क्यों कहते? वह मेरे विषय में है तो झट से कहिए। आपकी मुसीबत को हल करके मैं यह दिखाऊँगी कि मैं खण्डोबल्लाल की बहिन हूँ।"

"तुम हार जाओगी सन्तु, हार जाओगी।" भाई ऐसे लगा जैसे उसकी हिम्मत का बाँध टूट गया हो।

"आपने क्या फैसला किया है?" उसे चुप देखकर सन्तुमई ने चिल्लाई।

"बताता हूँ, सन्तु, बताता हूँ।"

"हाँ, तो कहिए, सन्तु भी नरम पड़ गई।"

भाई ने परदा उठाया, सारी बात नङ्गी होकर दोनों के सामने नाचने लगी।

"बस, यही बात है?" सन्तुमई का चेहरा तमतमाने लगा। वह गुस्से के मारे अंगार बन गई। लेकिन घृणा की हँसते हुए बोली—"इसका इलाज मेरे पास है।"

"क्या?"

"पहले आप तो कहिए कि क्या ऐसा आदमी भी हमारा महाराज हो सकता है?"

"सन्तु!" खंडोबल्लाल की उस शक्ति ने फिर जोर मारा—"देखो सन्तु, तू उस आदमी के बारे में ऐसी कोई बात नहीं कह सकती जिसका सम्बन्ध स्वर्गीय छत्रपति महाराज से हो।"

"अच्छा, तो आप ही बताइए कि क्या अपनी प्रजा से कोई राजा इस प्रकार का व्यवहार कर सकता है?"

"इसका उत्तर देना मेरा काम नहीं। अष्ट-प्रधान ही इसका निर्णय कर सकते हैं। हममें से हर एक का काम इस समय इतना ही है कि उस आदमी की आज्ञा का पालन किया जाए जिसे स्वर्गीय छत्रपति महाराज के पवित्र सिंहासन पर बैठा दिया गया है।"

"तब आपका अष्ट-प्रधान क्या सोच रहा है?" सन्तु ने बात से उलहना दिया।

"उसे यह बात मालूम है। इसलिए यह पूछना बल्कि बता भी मेरा काम नहीं।"

"तब?" सन्तु ने सवाल किया।

"मैं क्या कहूँ?" खण्डोबल्लाल ने जवाब दिया।

"अच्छा, तो मुझे जवाब मालूम है।"

"क्या?" भाई ने पूछा।

"क्या! फिर बताऊँगी; कल बताऊँगी।"

"सन्तु, तू क्या करनेवाली है?" भाई ने मिन्नत करते हुए पूछा।

"भैया, मैं मरनेवाली नहीं हूँ। बस, यही डर था न आपको? इस बारे में निश्चिन्त रहिए। इससे ज्यादा मैं आज कुछ नहीं बता सकती।" सन्तु चुप हो गई।

(४)

गुलाब को हाथी ने पाँव-तले मसल डाला। उसकी सारी कान्ति जाती रही। मद्धम-सी खुशबू तो उससे आ रही थी, परन्तु सौन्दर्य नष्ट हो चुका था।

शाम को सन्तुमई ने थोड़ी-सी औषध ले ली। अन्दर की सफाई हो जाने से शरीर के अन्दर से बहुत-सा मल निकला। शौच-कूप में मिट्टी का बरतन भर गया। बीस बार जाने से मुख का सारा तेज जाता रहा।

अगले दिन सवेरे बहिन ने भाई को बुलाया।

"आज मैं महाराज के दर्शन करना चाहती हूँ।" बहिन ने भाई से कहा।

"तू? महाराज के दर्शन?"

"हाँ, मैं ही महाराज के दर्शन करना चाहती हूँ।"

"क्या तू पगली हो गई है?"

"नहीं, मैं सुजान बन रही हूँ।"

"मैं यह नहीं मानता।"

"देखो भैया!" बहिन ने एक बार फिर बिजली की तरह कड़ककर कहा—"आज तो आपको मुझे महाराज के सामने ले जाना ही होगा।"

"क्यों?" भाई ने बहिन के माथे पर हाथ फेरते हुए धीरे से कहा।

"आपकी मुसीबत, मेरी मुसीबत, परिवार की मुसीबत और महाराज की मुसीबत इसी तरह दूर हो सकती है।"

"तू बावली तो नहीं हो रही?"

"क्या बावले इस प्रकार की बातें किया करते हैं? लेकिन छोड़ो इन बातों को। मेरे लिए पालकी मँगवाओ। मैं महाराज के दर्शन करना चाहती हूँ। मुझे दरबार में जाना ही पड़ेगा।"

"इस अवस्था में तुम कैसे जा सकती हो?"

"इसी लिए तो पालकी मँगवाना चाहती हूँ।"

"पालकी का क्या करेगी? तू उसमें बैठ नहीं सकेगी।"

"पालकी आएगी और मैं उसमें तकिया लगाकर बैठूँगी। जल्दी करो भैया, मैं थक गई हूँ।"

"इसी लिए तो कहता हूँ कि..."

"मैं उठकर चल दूँगी। फिर आप पछताएँगे।"

यह धमकी अपना काम कर गई। घर के नौकरों में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकियों के सहारे बैठ गई। मिट्टी का वह बरतन भी उसने पास ही रख लिया ताकि अगर कहीं रास्ते में जरूरत पड़ जाए तो तकलीफ न हो।

पूना दो ही कोस था। कहारों को सन्तुमई ने बताया कि पूना में राजवैद्य के यहाँ जाकर इलाज कराना है इसलिए जल्दी चलो।

वे पालकी को लेकर हवा हो गए।

परन्तु जब वे शहर के निकट पहुँचे तो सन्तुमई की ओर से आज्ञा मिली कि पहले महाराज के दर्शन करने होंगे।

अब वे राजमहल में पहुँचे।

"महाराज से विनती करो" पहरेदारों से कहा गया—"कि सरदार खण्डोबल्लाल की बहिन, सन्तुमई, दर्शन करना चाहती है।"

सभी चकित हो गए जब उन्होंने देखा कि सन्तुमई को महाराज ने एकान्त में ही बुला लिया है।

आज्ञा मिलने पर सन्तुमई को पालकी से बाहर निकालकर तकियों के बल लिटा दिया गया।

"सन्तु!" कहार बाहर चले गए तो महाराज ने पूछा—"तू यह क्या बन रही है? तुझे क्या हो गया है?"

"महाराज!" सन्तुमई ने हँसकर कहा—"मैं आपके लिए एक उपहार लाई हूँ।"

"वह क्या?" महाराज ने प्रसन्न होकर पूछा।"

"वह चीज जिस पर आप उस दिन इतने मस्त हो गए थे," सन्तुमई ने इशारे से कहा—"उस पालकी में रक्खी है। क्षमा कीजिए, मैं कमजोर हूँ इसलिए कृपया आपही वहाँ से उठा लीजिए।"

महाराज पालकी के पास गए तो उनकी नाक नीचे और होंठ इधर-उधर होने लगे। पालकी में मुँह डाल सख्त बदबू आई। झटपट सिर बाहिर निकाल लिया।

"इसका मतलब?" महाराज के तेवर बदल गए—"छोकरी, क्या तू जानती है कि तू किसका अपमान कर रही मेरा ही नहीं, छत्रपति महाराज के सिंहासन का भी अपमान रही है।"

"मुझे क्षमा किया जाय, महाराज!" यह कहकर एक पुड़िया खोली और चूर्ण अपनी जबान पर रख लिया।

जबान पर छाले पहले ही पड़े हुए थे। जहर थोड़ी में खून के अन्दर जा पहुँचा।

सन्तुमई का सिर पहले सिरहाने के सहारे टिका हुआ अब उसकी गरदन बाईं तरफ को लुढ़कने लगी।

"अबोध बालिका, तूने यह क्या किया है?" उसके पास पहुँचे।

सन्तुमई की आँखें एक क्षण के लिए खुलीं। अन्तिम सन्देश देने में अपनी मालकिन की सहायता चाहती थीं। सन्तुमई के मुँह से ये शब्द निकले—बालिका ने क्या किया है? कर्त्तव्य मीठा था। चुकाए हैं।"

थोड़ी देर बाद राजमहल से एक लाश निकली जिसके में दो आदमियों के सिवा किसी को कुछ न मालूम था मृत्यु कैसे हुई।

कहते हैं उस दिन के बाद महाराज ने जिस किसी देखा, पहले उसकी चरण-रज का ध्यान किया।

केवल

पण्डित नारायणलाल कटरियार

तेरी माँग फूल की मेरे पास आज चिनगारी केवल।
आगे बढ़ो बहुत लम्बी है, यह हँसने-रोने की दुनिया,
गिरि पर चढ़ो बहुत लम्बी है यह जादू-टोने की दुनिया,
सुन्दर-सुन्दर सँकरी गलियों में सुन्दरता की आबादी,
सदा जगमगाती ही रहती यह चाँदी-सोने की दुनिया,
सींच रहा हूँ तीखे-तीखे काँटों की मैं क्या री केवल।
सारी रात किसी के मन में मूक चाँद खलता रहता है,
सारी रात किसी के मन में मूक चाँद जलता रहता है,
दामन छुड़ा अमा से उस पतली गोरी पूनम के पीछे
सारी रात किसी के मन में मूक चाँद चलता रहता है,
सब पर मेरे पैताने रहती है अँधियारी केवल।

तारों से कुछ कहकर मेरी वीणा की झङ्कार सो
मुझसे कुछ कहकर ही मेरी असफल विकल पुकार सो
डालों से कुछ कहकर काँटे चले गली की धूल छा
जग से कह कुछ विटप-ठूँठ पर है चुपचाप बहार सो
जाग रहा हूँ एकाकी मैं लिए-दिए लाचारी केवल।
दिया घटा ने तप्त धरा को अपनी बूँद निशानी
दिया शैल ने सरिताओं को अपना लहू रवानी
मेरी चाहें खड़ी रहीं चौराहे पर आँचल
दिया भरी नदियों ने सागर को मन और जवानी
दो क्षण में मिट जानेवाली मुझको मिली खुमारी
तेरी माँग फूल की मेरे पास आज चिनगारी केवल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविराज सदानन्द और उनका जैमुनि पुराण

श्री भगवतीप्रसाद सिंह, बी० ए०

हिन्दी-साहित्य के आधुनिक इतिहासों में सदानन्द नाम के कवियों का नाम आता है। सबसे पहले मिश्र-बन्धुओं इस नाम के एक कवि का उल्लेख अपने 'विनोद' में ा था :—

"इस कवि के केवल तीन छन्द हमने देखे हैं। इसके न-चरित्र का हमें कुछ भी वृत्तान्त ज्ञात न हो सका पर का समय १६८५ के आस पास है। इसकी कविता सरस अच्छी है।"

इन सदानन्द का एक कवित्त भी उन्होंने उद्धृत ा है :—

सोहै सेत सारी मञ्जु मोतिन किनारवारी,
भीर मैं निहारी जाति सङ्ग सखियान के।
'सदानन्द' सुन्दरी न केाऊ सम रूप जाके,
आगन की आभा सी न आभा ससिभान के
दृगन की केार लागी कानन की छोर जैसी,
भृकुटी मरोर जोर जोरे धनुबान के।
धीरी चालवारी मुख बीरी लालवारी,
वह पीरी सालवारी रही नीरी अँखियान के॥

इस कवित्त के अतिरिक्त उनका और कोई ग्रन्थ न मिलने म उनके जीवन सम्बन्धी घटनाओं पर अपना मत प्रकट नहीं सकते।

दूसरे सदानन्द हैं 'रासा भगवन्तसिंह' के रचयिता, अठारहवीं ब्दी के प्रसिद्ध वीर तथा काव्यप्रेमी असेाथर के राजा ान्तराय खीची के आश्रित कवि। भगवन्तसिंह स्वयं कविता थे। उनके 'हनुमन्त पचीसी' नामक एक ग्रन्थ का उल्लेख ल जी' ने अपने 'हिन्दी-साहित्य के इतिहास' में किया है। ं के आश्रय में रहकर सदानन्द ने प्राचीन वीरगाथा-पद्धति पने आश्रयदाता का यशोगान 'रासा भगवन्तसिंह' में किया इस पुस्तक का विषय है एक इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध, जो भगवन्तसिंह तथा अवध के नवाब बुर्हान-उल-मुल्क के बीच १७९३ में हुआ था :—

संवत् सत्रह त्रानबे, कातिक मङ्गलवार।
तिथि नौमी संग्राम भो, विदित सकल संसार॥

(रासा भगवन्तसिंह, छं० १०४)

उपर्युक्त युद्ध में ही दुर्जनसिंह के हाथ संग्रामभूमि में न्तसिंह मारे गए थे। उक्त ग्रन्थ में भी सदानन्द ने विषय में कुछ नहीं लिखा है। उसकी वर्णन-शैली से इतना पता चलता है कि वे अपने आश्रय-दाता के सम-सामयिक थे और उन्होंने आँखों देखी घटनाओं का उल्लेख किया है। इस पुस्तक में वीरकाव्योपयुक्त १७ प्रकार के छन्दों का उपयोग किया गया है। छन्द संख्या १०४ है। इसकी भाषा तथा वर्णनशैली पर आगे विचार किया जाएगा।

इधर प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज करते हुए मुझे सदानन्द नाम के ही एक कवि-द्वारा रचित 'जैमुनि पुराण' नामक एक प्रबन्ध-काव्य उपलब्ध हुआ है जिसमें ग्रन्थकार ने पाण्डवाश्वमेध की कथा बड़े साइज के ३१० पृष्ठों में एक उसी नाम के संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर कही है। ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में कवि ने अपना तथा अपने आश्रयदाता का थोड़ा-सा परिचय दिया है। उसी के आधार पर आगे हम कवि की जीवन-सम्बन्धी घटनाओं पर प्रकाश डालेंगे।

जन्म-स्थान

अपने जन्म-स्थान का वर्णन करते हुए सदानन्द लिखते हैं :—

मौरावैं परगन नगर, दरुवारो तेहि ठौर।
बसत सुबस तेहि ठौर ही, 'सदानन्द' कविमौर॥

(जैमुनि पुराण, पृ० १)

मौरावाँ उन्नाव जिले में एक प्रसिद्ध स्थान है। सदानन्द यहीं के रहनेवाले थे। 'दरुवारो' शब्द के अर्थ के विषय में मुझे यह भ्रम होता है कि मौरावाँ परगने में इस नाम का कोई गाँव था अथवा इसका तात्पर्य किसी तत्कालीन राजा के दरबार से है। इनके माता-पिता के विषय में कुछ वृत्तान्त मालूम न हो सका।

जाति

सदानन्द ने स्पष्ट रीति से कहीं अपनी जाति के विषय में नहीं लिखा है। पूरे ग्रन्थ में केवल तीन छन्द ऐसे हैं जिनके द्वारा इनकी जाति के निर्णय में सहायता मिलती है। आश्रयदाता के अपने प्रति किए गए उपकारों का वर्णन करते हुए ग्रन्थारम्भ में वे लिखते हैं :—

ग्राम दयो अरु भूमि दै, बाजि विविध नगसाज।
पुनि सासन यहि दयो, 'सदानन्द' कविराज॥

(जै० पु०, पृ० १)

श्री सेवा परसाद नृप, सुनी सकल चित लाय।
सदानन्द कविराज पर, कीन्ही कृपा बनाया॥

(जै० पु०, पृ०, ३१०)

ऊपर दोनों दोहों में 'कविराज' शब्द सदानन्द की काव्य-प्रतिभा का बोधक है अथवा उनकी जाति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह एक विचारणीय बात है। अपने मूल अर्थ में 'कविराज' शब्द यद्यपि श्रेष्ठ कवियों का ही परिचायक था, परन्तु वीरगाथा काल से ही वीरकाव्यों के रचयिता चारणों तथा ब्रह्मभट्टों का उक्त काव्य-पद्धति पर एकाधिकार हो जाने से, 'कविराज' शब्द उस जाति-विशेष का वाचक हो गया, जिसका कार्य अधिकांशतः राजपूत राजाओं के आश्रय में रहकर उनके युद्ध तथा प्रेमकथाओं का वर्णन करके जीविकोपार्जन करना था। आज-कल बहुधा इस शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया जाता है। इसके दुरुपयोग की सीमा यहाँ तक बढ़ गई है कि अनपढ़ बञ्जारे भी, जो एक विशेष लय से कवित्त पढ़कर भीख माँगते फिरते हैं, 'कविराज' नाम से सम्बोधित किए जाते हैं। उपर्युक्त दोहों में 'कविराज' शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है—मूल अर्थ में सदानन्द की काव्य-प्रतिभा का और रूढ़ अर्थ में उनकी जाति का परिचायक है। इसके और भी प्रमाण मिलते हैं।

ग्रन्थ के अन्त में भी कवि ने अपने आश्रयदाता की उदारता का वर्णन जिस प्रकार किया है, उससे हमारे सदानन्द के जाति-विषयक अनुमान की पुष्टि होती है।

अस्व बसन भूषन दयो, ग्राम नाम सुभ ठौर।
महापात्र सासन दियो, कह्यौ बहुरि कवि मौर॥

यहाँ पर 'ग्राम-नाम' से अभिप्राय आश्रयदाता के नाम के ग्राम से है। सदानन्द के आश्रयदाता थे गोंडा के राजा शिव-प्रसादसिंह। बहुत खोज करने पर 'सिवानगर' नामक एक गाँव का पता चला जो १८वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोंडा राज्यान्तर्गत ही था, परन्तु १८५७ ई० के गदर में उक्त महराज के पौत्र राजा देवीबख्शसिंह बागी हो गए। अतएव उनका राज्य अँगरेजी राज्य में मिला लिया गया। अब वह गाँव वर्तमान गोंडा जिले की उतरौला तहसील में है। उस गाँव में ब्रह्मभट्ट अथवा भाट लोगों की संख्या बहुत है। वे लोग इस बात का समर्थन करते हैं कि उनके पूर्वजों को वह गाँव गोंडा के राजा से माफी के रूप में मिला था। ऊपर लिखे हुए दोहे में एक दूसरा विचारणीय शब्द है 'महापात्र'। सदानन्द का तात्पर्य है कि 'महापात्र' की उपाधि उनको अन्य पुरस्कारों के साथ ही महाराज शिवप्रसादसिंह ने दी थी। यह उपाधि प्राचीन काल से ही बन्दीजनों, चारणों अथवा ब्रह्मभट्टों को उनकी काव्य-शक्ति पर प्रसन्न होकर काव्य-प्रेमी राजा-महाराजा देते रहे हैं। इसके प्रमाण-स्वरूप महापात्र नरहरि बन्दीजन का नाम उल्लेखनीय है। 'महापात्र' की उपाधि उन्हें अकबर के दरबार से मिली थी। जाति के वे बन्दीजन ही थे। सदानन्द की जाति के विषय में इतनी विवेचना कर चुकने के पश्चात् अब हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वे ब्रह्मभट्ट जाति के थे।

आश्रयदाता

जैसा हम पहले कह चुके हैं, सदानन्द के आश्रयदाता [illegible] शिवप्रसादसिंह थे। ये अवध में १८५७ ई० के गदर में अँगरेजों के विरुद्ध लेनेवाले, इतिहास-प्रसिद्ध विद्रोही राजा देवीबख्शसिं प्रपितामह थे। स्थानीय इतिहासों में इनका राज्यका १८०० के लगभग लिखा हुआ मिलता है। राजा शिव सिंह कई युद्धों के विजेता थे, जिनमें अमोढ़ा का युद्ध अधिक प्रसिद्ध है। इसमें उन्होंने अपने पिता मंगल सि छल से वध करनेवाले, अमोढ़ा राज्य के एक उत्तराधिका पराजित करके उसके राज्य पर अधिकार कर लिया था। वीर योद्धा होने के साथ ही साथ वे धर्मपरायण भी थे। शासन के आरम्भिक वर्षों में अनेक विजयों-द्वारा अपना अ दृढ़ करके उन्होंने राज्य में शान्ति स्थापित की। इसके उन्होंने अपने जीवन के शेष वर्ष तीर्थस्थानों के भ्रम और अनेक धर्मानुष्ठानों के करने में बिताए। उस समय की अनेक असुविधाओं के होते हुए भी उन्होंने भारत प्रसिद्ध तीर्थों का भ्रमण किया और उसके पश्चात् जब आए तो नगर के पश्चिम ओर एक बहुत विस्तृत ज खुदवाकर उसके मध्य में दो द्वीपों पर सभी तीर्थों की की। ये अब तक भग्नावस्था में वर्तमान हैं। सदानन्द शिवप्रसाद सिंह के दरबार में कब आए, इसके लिखित नहीं मिलते। इतना अवश्य कहा जाता है कि तीर्थाट जब राजा साहब कानपुर उन्नाव होते हुए गोंडा लौट उसी समय उन्नाव के पास उनकी सदानन्द से भेंट हुई काव्य-प्रेमी महाराज उनको अपने साथ ही गोंडा ले आ ऊपर हमने सदानन्द के आश्रयदाता राजा शिवप्रसाद विषय में जो कुछ लिखा है उसका अधिकांश गोंडा के गजेटियर से लिया गया है। अब हम उपर्युक्त तथ्यों करनेवाले कुछ उपयुक्त उद्धरण सदानन्द के 'जैमुनि से देते हैं :—

दो०—मंगलसिंह नरेस सुत, नृप सेवा परसा
आगिल कथा कहौं बहुरि, भयो जथा सम्बाद

× × ×

चौ०—सिवाप्रसादसिंह महि ईसा, कहत चरित पुनि नन्द

× × ×

दो०—पाँच कोटि दानव प्रबल, करत भयावन रू
माया छल बल युद्ध मैं, सुनु गोंडा मनि भू

कवि ने अपने आश्रयदाता की उदारता की ही न देश की भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है जिसमें उस फैला हुआ था।

दोहा—देस सुभग सुरूवार में, सुबस बसत सब लो
सीलवन्त सरबग्य अरु*, बिस्नु भक्ति के जो

* 'बिस्नु भक्ति' से यहाँ कवि का अभिप्राय राम है जिसका अवध प्रान्त में, विशेषकर अयोध्या के एकाधिपत्य-सा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे चलकर कवि ने अपने आश्रयदाता के शौर्य तथा पराक्रम का वर्णन प्राचीन परिपाटी के अनुसार बड़े रोचक ढङ्ग से किया है :—

दो०—जश प्रसिद्ध गोंडा नगर, दान धर्म मरजाद।
प्रबल बिसेनो इन्द्रभुव, नृप सेवा परसाद॥
तेग त्याग पूरन पुहुमि, रवि प्रताप सम सोय।
नन्द सुकवि तिन थापियो, यह जानत सब कोय॥

इस प्रकार शिवप्रसाद सिंह के पराक्रम तथा कीर्ति का गान करते हुए सदानन्द ने उस पुरस्कार का भी वर्णन किया है जो उक्त महाराज ने प्रसन्न होकर कवि को भेंट किया था :—

ग्राम दयो अरु भूमि दै, बाजि विविधि नग साज।
पुनि सासन यहि विधि दियो, सदानन्द कविराज॥

सदानन्द की जाति पर विचार करते हुए हम पहले कह चुके हैं कि उपर्युक्त दोहे में जिस ग्राम का उल्लेख है वह 'ग्रामनाम सुभ ठौर' के अनुसार 'सिवानगर' नामक ग्राम गोंडा के अन्तान्तर्गत आज तक वर्तमान है।

सदानन्द ने यह, भी स्वीकार किया है कि यद्यपि 'कविराज' की उपाधि उनके आश्रयदाता ने उन्हें पहले ही दी थी परन्तु 'जैमुनि पुराण' का निर्माण उन्होंने बाद में महाराज शिवप्रसाद सिंह की गुणग्राहकता तथा दानवीरता से प्रसन्न होकर किया—

दो०—तब कवि निज मन मुदित ह्वै, कीनो यहै विचार।
राजनीति संजुत भगति, करौं कथा विस्तार॥

ज्ञानार्जन

समूचे ग्रन्थ में कहीं भी कवि ने एक भी ऐसी पंक्ति नहीं लिखी है जिसमें उसके विद्योपार्जन की ओर संकेत हो अथवा किसी तथाकथित काव्य-गुरु का उल्लेख हो। अपने पूर्ववर्ती प्रबन्ध-काव्य-लेखकों की तरह सदानन्द ने ग्रन्थारम्भ में अपनी काव्यशास्त्र अल्पज्ञता प्रदर्शित करते हुए अपने को पुस्तकज्ञान-शून्य बतलाया है—

दो०—हरि चरित्र अवगाह अति, पार न पावत वेद।
लघुमति मैं जानौं न कछु, छन्द अलंकृत भेद॥

ऐसी दशा में एक प्रबन्ध-काव्य लिखने की धृष्टता को क्षमा करने के लिए कवीश्वरों से प्रार्थना भी की गई है :—

दो०—दीपदान ते रवि जथा, अति प्रसन्न सुख साज।
लघु कविता लखि आदरैं, महा सुकवि सिरताज॥
जै कवि परम प्रवीन बहु, उर हरि प्रेम फुरान।
दूषन तजि भूषन सु दै, भूषित करब पुरान॥

सदानन्द के ज्ञानार्जन के बहिःसाक्ष्यों के अभाव में भी उनके काव्य का अनुशीलन करनेवाले इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते कि वे काव्यशैली से परिचित नहीं थे। 'जैमुनि पुराण' की प्रांजल भाषा तथा उसकी मनोहर वर्णन-शैली ही इस बात की द्योतक है कि वे भाषा की गति विधि से पूर्ण तथा परिचित थे। इसके साथ ही पूरे प्रबन्धकाव्य में १६ प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है, 'सदानन्द' और [illegible]

का उपयोग यह पुष्ट करता है कि कवि छन्दःशास्त्र का पूर्ण ज्ञाता है। भुजङ्गप्रयात, संखनारी, पद्धरी, मुक्तादाम तथा संजुता इत्यादि छन्दों की सहायता से किस प्रकार कवि ने वर्णित विषय का साधारणीकरण किया है यह "सदानन्द की काव्य-पद्धति" की विवेचना में स्पष्ट किया जायगा।

रचना-काल तथा लेखन-स्थान

'जैमुनि पुराण' का रचना-काल सदानन्द ने ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में इस प्रकार दिया है :—

दो०—संवत दस अरु आठ सै, पुनि दस अधिक प्रमान।
सावन सितगुरु-पञ्चमी, कीन्हों ग्रन्थ बखान॥

× × ×

दो०—नगर और गोंडा नगर, देखि परे दुति मन्द।
तहाँ बैठि लेखन कियो, 'सदानन्द' आनन्द॥

इससे यह स्पष्ट है कि सं० १९१० की श्रावण कृष्णा गुरु पञ्चमी को सदानन्द ने गोंडा में ही लिखकर समाप्त किया।

अध्यायों के प्रसङ्गानुसार विभाजन तथा प्रत्येक अध्याय के अन्त में—

चौ०—शिवाप्रसाद महीपति बोले, सदानन्द कहु चरित अमोले।

× × ×

चौ०—श्री सरवार देस महँराजा, आगिल चरित ऐस सुभ साजा।

की तरह के वाक्यों के प्रयोग से तो यह विदित होता है कि कवि ने, अपने आश्रयदाता को ग्रन्थ निर्माण करते हुए थोड़ा-थोड़ा करके सुनाया।

दो०—श्री सेवा परसाद नृप, सुनी सकल मन लाय।
सदानन्द कविराज पर, कीन्हीं कृपा बनाय॥

अन्त में ग्रन्थ समाप्त हो जाने पर उन्हें पढ़ने के लिए समर्पित कर दिया।

"इतिश्री महाभारथे अस्वमेध महात्मने राजा युधिष्ठिर यज्ञ वर्ननं नाम छप्पन अध्यायः। श्रीमन्महाराजाधिराज सिवाप्रसाद सिंह पठनार्थे समर्पेषु सुभमस्तुः।"

परन्तु इसका एक और कारण हो सकता है। सम्भव है कवि ने जैमुनि का, जिन्होंने जनमेजय को उक्त कथा सुनाई है, अनुगमन करते हुए अपने को वक्ता - जैमुनि—के तथा शिवप्रसाद सिंह को श्रोता—जनमेजय—के स्थान पर रखकर ऐसा किया हो। कथा-प्रवाह में कहीं-कहीं यह बात स्पष्ट हो गई है :—

दो०—सुनु जनमेदय भूप अब, जैमुनि कहत प्रसङ्ग।
चले धाम जय काज कै, मन महँ परम उमङ्ग॥

× × ×

दो०—जनमेदय नरनाह ते, जैमुनि कथा चलाय।
जोबनाथ आगमन सुनि, धर्मराज सुख पाय॥

'सदानन्द' और 'नन्द कवि'

जैमुनि पुराण में सदानन्द ने अपने नाम के दो रूपों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सुकवि'। मेरा यह विचार है कि ऐसा परिवर्तन केवल छन्दो-नुरोध से ही किया गया है। काव्य-प्रवाह में अनेक छन्दों के बीच 'सदानन्द' शब्द पूरा न बैठने के कारण कवि ने उसके दो भाग करके केवल अन्तिम ले लिया है और उसमें 'कवि' अथवा 'सुकवि' जोड़कर अपने उद्देश्य की पूर्ति की है।

सदानन्द तथा उनके आश्रयदाता का इतना परिचय दे लेने के पश्चात् अब हम इस विषय पर आते हैं कि पूर्व-कथित 'रासा भगवन्तसिंह' के रचयिता सदानन्द तथा 'जैमुनि पुराण' के लेखक 'सदानन्द कविराज' में क्या सम्बन्ध है। मेरा पहले ऐसा विचार था कि 'जैमुनि पुराण' के अतिरिक्त सदानन्द की और कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है। परन्तु इधर 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' की पुरानी फाइलों को उलटते हुए मुझे बाबू ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल्-एल० बी०, का 'भगवन्तराय खीचीं' शीर्षक एक लेख मिला जिसमें उन्होंने असोथर के राजा भगवन्त-राय खीची के आश्रित कवि 'सदानन्द'-द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य 'रासा भगवन्तसिंह' का उद्धृत किया है। उसकी भाषा, वर्णन-शैली और कवि के आविर्भाव-काल पर विचार करते हुए मुझे दोनों काव्यों (जैमुनि पुराण तथा रासा भगवन्तसिंह) में जिन बातों में साम्य दिखलाई पड़ा, उनका उल्लेख हम नीचे करते हैं :—

१—दोनों कवियों का आविर्भाव-काल एक ही है।

२—दोनों वीरकाव्य-लेखक हैं। एक ने 'रासा भगवन्तसिंह' नामक एक खण्डकाव्य और दूसरे ने 'जैमुनि पुराण' नामक एक प्रबन्ध-काव्य की रचना की।

३—दोनों ने दो समान नामों से कविता की है—'सदानन्द' तथा 'नन्दकवि'।

४—दोनों ने एक ही भाषा अर्थात् पूर्वी अवधी में रचना की है।

आगे हम इन्हीं विषयों पर स्वतन्त्र रूप से विचार करेंगे।

आविर्भाव-काल

'जैमुनि पुराण' के रचना-काल का विवेचन करते हुए हम पहले कह चुके हैं कि सदानन्द कविराज गोंडा के महाराज शिवप्रसादसिंह के आश्रय में सं० १८१० के लगभग रहते थे। यही काल उक्त पुस्तक की रचना का भी है। 'रासा भगवन्त-सिंह' के रचयिता सदानन्द ने भी ग्रन्थ के अन्त में उस घटना का समय दिया है जो उनके काव्य का विषय है।

दो०—संवत् सत्रह त्रानवे, कातिक मङ्गलवार।
तिथि नौमी संग्राम भो, विदित सकल संसार॥

इसका एक और भी पाठ दिया गया है :—

दो०—संवत् सत्रह सौ सत्तानवे, कातिक मङ्गलवार।
सित नौमी संग्राम भो, विदित सकल संसार॥

गणना करने पर प्रथम पाठ के अनुसार भगवन्तसिंह के जाने की तिथि १४ अगस्त सन् १७३५ ई० तथा द्वितीय से १८ अगस्त सन् १७४० ई० ठहरती है। इस पाठ कारण अन्तर केवल पाँच वर्ष का पड़ता है। यदि दूसरे को हम शुद्ध मानें तो दोनों पुस्तकों ('जैमुनि पुराण' 'रासा भगवन्तसिंह') की रचना में अन्तर केवल १३ पड़ता है, प्रथम पाठ से १७ वर्ष का। हमारे विचार दोनों काव्यों की रचना एक ही सदानन्द ने की है। प्रश्न यह उठता है कि यदि ऐसा है तो दोनों ग्रन्थों के रचन में इतना अन्तर क्यों पड़ता है? इसका निराकरण इस हो जाता है कि 'रासा भगवन्तसिंह' में ऐसा कहीं उल्लेख है जिससे प्रकट होता हो कि यह सदानन्द की अन्तिम है। इसके अतिरिक्त सदानन्द कविराज के यथाप्राप्त जी से भी यह पता चलता है कि गोंडा आने के पूर्व वे किसी के आश्रय में रहते थे। गोंडा के राजवंश के सम्बन्ध राजा शिवप्रसाद सिंह के शासनकाल के अन्तिम दिनों में अपने आश्रयदाता के पिता मङ्गलसिंह के केवल नाम का उन्होंने किया है। उनके यश तथा वीरतापूर्ण कार्यों संकेत तक नहीं किया गया। यही नहीं, स्वयं शिवप्रसा के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का, जिनमें अयोढ़ा तथा तीर्थाटन और तीर्थों की 'सागर' में स्थापना मुख्य वर्णन न करके उन्होंने अपने आश्रयदाता की धर्मभाव तृप्त्यर्थ एक पौराणिक कथा को अपने काव्य का विषय क यह एक विचारणीय बात है। विचार करने पर इ निष्कर्ष निकलते हैं। एक यह कि कदाचित् शिवप्रसाद आश्रय में वे उस समय आए हों जब उनके युद्धों का गया था और राज्य में शान्ति स्थापित हो चुकी थी। काव्य लिखने के लिए ऐसा ही समय उपयुक्त होता है। यह कि सदानन्द जिस समय गोंडा आए उस समय उन काफी हो चुकी थी। अपने आश्रयदाता का यशोगान एक धार्मिक विषय का चुनना ही इसका प्रमाण है। पुराण' का कथानक सदानन्द कविराज ने स्वयं चुना था कथन की पुष्टि के लिए उक्त ग्रन्थ का निम्नाङ्कित किया जा सकता है :—

दो०—तब कवि निज मन मुदित ह्वै, कीनो यहै विचा
राजनीति सञ्जुत भगति करौं कथा विस्ता

इन तथ्यों पर विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर हैं कि सदानन्द कविराज गोंडा आने के पूर्व किसी आश्रय में अवश्य थे जहाँ उन्होंने अपने जीवन का अधि बिताया। सम्भव है, वह समय भगवन्तराय खीची बीता हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—वीरकाव्य-लेखक

एक धार्मिक विषय चुनते हुए भी सदानन्द कविराज ने अपनी प्रवृत्ति के अनुसार यह ध्यान रक्खा कि उसमें वीररस प्रधान हो। पाण्डवाश्वमेध का कथानक इसके लिए उपयुक्त था अतएव वही काव्यरूप में लेखनीबद्ध हुआ। इसके साथ जब हम 'रासा भगवन्तसिंह' पर विचार करते हैं तो उसमें 'युद्ध-वर्णन', जो वीरकाव्य का एक प्रधान अङ्ग है, मुख्य पाते हैं। भेद केवल इतना है कि जहाँ 'रासा भगवन्तसिंह' में एक मान्य राजा के वीरतापूर्ण कार्यों की प्रशंसा में ग्रन्थ-रचना की गई है वहाँ सदानन्द कविराज ने 'जैमुनि पुराण' में विश्वविख्यात महाभारत के विजयी, पाण्डवों से सम्बद्ध अश्वमेध में भाग लेने-वाले यौवनाश्व, बभ्रुवाहन, चन्द्रहास तथा वृषकेतु, इत्यादि वीरों के शौर्य तथा पराक्रम के गीत गाए।

३—नाम-साम्य

वैसे तो दोनों ग्रन्थों में प्रयुक्त कवि के प्रसिद्ध नामों में साम्य है ही, काव्य में आए हुए नामों में भी समानता है। दोनों ग्रन्थों में 'सदानन्द' तथा 'नन्द कवि' अथवा 'नन्द सुकवि' के नाम से छन्दानुरोध के कारण भिन्न-भिन्न छन्दों में कविता की गई है। इसके उदाहरण दोनों ग्रन्थों से दिये जाते हैं :—

'रासा भगवन्तसिंह' से

भू०—यहि विधि जाइ नवाब जू, 'सदानन्द कवि' धीर।
सहित चमू यलगार ही, पहुँचे सुरसरि तीर॥

× × ×

क०—प्रात चले चतुरङ्ग चमूधर
रेनु उड़ी तम भानु छिपानो।
कम्पत कच्छ सबै अवनी
कहि 'नन्द कवी' मन इन्द्र डेरानो॥

'जैमुनि पुराण' से

—सिवाप्रसाद महीपति बोले, 'सदानन्द' कहु चरित अमोले।

× × ×

—केहि भाँति दान प्रमान अरु सनमानि दुजवर चेत सों।
'कविनन्द' बूझत जोरि कर, यह चरित कहु केहि हेत सों॥

× × ×

४—भाषा तथा छन्द-साम्य

उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों की भाषा पूर्वी अवधी है। 'जैमुनि पुराण' तथा 'रासा भगवन्तसिंह' दोनों ग्रन्थों में उक्त भाषा की विशेषताएँ समान रूप से पाई जाती हैं उनके उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

१—उकार-बहुला प्रवृत्ति

जै० पु० से—

(१) बोले कुस सुसुकाय मृदु, अब चलो सब वीर।

× ×

(२) छत्री ह्वै के सोकु बढ़ावै,
नरकहु मँह सोइ ठवरु न पावै।

रा० भ० से—

यक विप्र कहे विवि दण्डु विताइकै
आपु कहैं अवहीं अवहीं।

इसके अतिरिक्त दोनों ग्रन्थों में अवधी की प्रकृति के अनुसार ऐसे शब्द प्रचुर मात्रा में मिलते हैं जो अयोध्या के आस-पास विशेष रूप से प्रयोग में लाए जाते हैं। कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो उन्नाव तथा रायबरेली के अधिकांश भाग में बोली जानेवाली बैसवाड़ी के हैं।

रा० भ० से—

मुगले भ्रम भीति न साँस लई।
नृप साँग हनी उहि पार गई॥

जै० पु० से—

हरखी ऐस सुनत सुख पाई।

× × ×

हमहूँ करि तीरथ आउब बैस।

अवधी भाषा के इन प्रयोगों के अतिरिक्त उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों में समान रूप से वीरकाव्य में प्रयुक्त होनेवाले द्वित्व वर्णों का पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया गया है।

जै० पु० से—

जहँ पत्थ वीर समत्थ स्थित दूत खबरि जनायऊ।
सुत सुमति वीर बबूरवाहन मिलन सादर आयऊ॥

× × ×

भु०—सुरयो न वृषकेत मण्डी लराई।
तबै वीर बब्बूर सैना हलाई॥
भये झाँझरे बान कम्मान छेदे।
किते मण्डलं भानु को जाय भेदे॥

रा० भ० से—

असि हत्थ गहि समरत्थ ज्यों
किय पत्थ पौरुष ना चलौ।
भगवन्त है विकराल सिंह
अराति मृग सादति दलौ॥

× × ×

सज्जे सुवीर बज्जे निसान।
लज्जे सुरेस भज्जे गुमान॥
फुट्टो सुमेर टुट्टे अराति।
कुट्टो कितेक लिद्दे नसाति॥

भाषा के साथ ही यदि उपर्युक्त दोनों ग्रन्थों में प्रयुक्त छन्दों की समानता पर भी यहाँ हम विचार करते चलें तो अप्रासङ्गिक न होगा। जैमुनि पुराण में १७ प्रकार के तथा रासा भगवन्तसिंह में १६ प्रकार के छन्द प्रयुक्त हुए हैं।

112824
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैमुनि पुराण	रासा भगवन्तसिंह
१—दोहा	,,
२—पद्धरी	,,
३—सङ्खनारी	,,
४—गीतिका	,,
५—त्रोटक	,,
६—भुजङ्गप्रयात	,,
७—त्रिभङ्गी	,,
८—चौपाई	कवित्त
९—चामर	लीलावती
१०—सोरठा	छप्पै
११—सञ्जुता	मत्तगयन्द
१२—सारङ्गिनी	कुण्डलिया
१३—कन्दो	रूप घनाक्षरी
१४—मुक्तादाम	चन्द्रकला
१५—तोमर	ससिवदना
१६—हरि गीतिका	सर्वकल्यान दण्डक
१७—पद्धटिका	

ऊपर दी हुई सूची के अनुसार जै० पु० तथा रा० भ० में सात छन्द समान रूप से पाये जाते हैं; शेष नौ छन्दों में विभिन्नता है उसका कारण मेरे विचार में यह जान पड़ता है कि कवि ने अपने आरम्भिक प्रयास में वीरकाव्य के लिए जिन १६ प्रकार के छन्दों को चुना उसमें जिन छन्दों में उसे पूर्ण सफलता मिली उन्हीं का दूसरी बार भी उपयोग किया गया शेष का त्याग कर अपनी नवीनता-प्रेमी प्रकृति के सन्तोषार्थ दूसरे ९ प्रकार के छन्दों का समावेश किया। इसे हम रीतिकाल का ही प्रसाद मानते हैं। हाँ केशव-प्रवृत्ति के विरुद्ध सदानन्द ने छन्दों का प्रयोग रसानुकूल भाषा तथा भावों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त स्थलों पर किया है, इस पर हम आगे विचार करेंगे।

पूर्वकथित दोनों ग्रन्थों की भाषा में बहुत कुछ समानता होते हुए भी कुछ विभिन्नता है। इस विषय में पहली बात जो खटकनेवाली है वह है रासा भगवन्तसिंह में फारसी शब्दों का अधिक प्रयोग। जैमुनि पुराण में फारसी के केवल सर्व-साधारण में प्रचलित शब्द आए हैं। नीचे दोनों ग्रन्थों में प्रयुक्त फारसी शब्दों के उदाहरण दिए जाते हैं—

जै० पु० से—

यह चूक पारथ रावरी, नहिं रञ्च-दोष बबूर को।
सुत रीति सादर राजनीति, विचारि सब हजूर को।

× × ×

हरौलं अनी लक्ष जोधा जरूरं।

रा० भ० से—

बिगो इद्धुरावी कुजा दुष्ट सो है।
मिदानं न ई अस्त कुह बीच सो है॥

× × ×

हमीं कर्द साहब अमा दान पावैं।
न ह्वै है चिरा रद अवी बाँधि लावैं॥

इस विभिन्नता का कारण पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग जान पड़ता है। रा० भ० से फारसी शब्दावली-पूर्ण जो उद्धृत किया गया है वह नवाब सादत अली खाँ से गया है। फारसी उन दिनों भारत के कुलीन मुसल मातृभाषा थी। अतएव सम्भव है, कवि तत्कालीन मुस समाज में प्रचलित उपर्युक्त भाषा का ग्रन्थ में प्रयोग लोभ न संवरण कर सके हों। अथवा वर्णन में स्वाभाविकता लाने के विचार से ऐसा किया हो। दोनों सङ्गत है। सदानन्द ने अपनी शैली के इस सिद्धान्त का जैमुनि पुराण में भी किया। पाण्डवाश्वमेध ऐसी लोक पौराणिक कथा में पात्रों के परस्पर-वार्तालाप की योजना में करना एक उपहासास्पद बात होती, अतएव उसक करने में उन्होंने अपनी दूरदर्शिता का ही परिचय हिन्दी-साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ लेख अपनी प्रारम्भिक कृतियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयो आगे उसकी अस्वाभाविकता का अनुभव करके त्याग दि 'प्रसाद' जी के 'प्रायश्चित्त' तथा 'चन्द्रगुप्त' की भाषा की करने पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

पाठकों के समक्ष 'जैमुनि पुराण' तथा 'रासा भगव को एक ही कवि (सदानन्द कविराज) की रचना करनेवाले जिन तथ्यों की विवेचना ऊपर की गई अधिकांश साहित्य पर अवलम्बित है। ऐतिहासिक प्र मिलते हैं उनसे गोंडा तथा असोथर के तत्कालीन राजा उनके आश्रित कवियों में पारस्परिक सम्बन्ध की पुष्टि हो शिवसिंहजी ने असोथर के महाराज भगवन्तराय खीची में रहनेवाले प्रसिद्ध कवि शम्भुनाथ मिश्र को गोंडा के राजा के बन्धु जगतसिंह के आश्रित कवि शिवकवि

---

* (शम्भुनाथ मिश्र कवि (सं० १८०३ में उदय) ये महाराज भगवन्तराय खीची के यहाँ असोथ करते थे। शिवकवि आदि सैकड़ों मनुष्यों को इन्होंने दिया। रसकल्लोल, रसतरङ्गिणी, अलंकारदीपक ग्रन्थ इनके बनाए हुए हैं।

—'शिवसिंहसरोज' पृ० ४

† शिवकवि अरसेला बन्दीजन जिला गोंडा के (सं० १७९६ में उदय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन का काव्यगुरु बताया है और उनका समय भी सं० ६ तथा सं० १८०३ के बीच निश्चित किया है। यही 'जैमुनि पुराण' तथा 'रासा भगवन्तसिंह' के लेखक के उदय भी है। इस पर 'सदानन्द के आविर्भाव-काल' पर विचार हुए हम पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। दो गुणग्राही काव्यप्रेमी राजवंशों का परस्पर-सम्बन्ध उक्त कवियों-द्वारा पेत होने का प्रमाण उपर्युक्त घटना है। इसके आधार यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि सदानन्द कविराज सं० ७ के आस-पास भगवन्तराय खीची की मृत्यु के पश्चात् के महाराज शिवप्रसादसिंह के आश्रय में आए। इन राज के गुणों की प्रशंसा तथा उदारता के विषय में शिवकवि से, जो बहुधा अपने काव्यगुरु असोथर-निवासी शम्भु कवि के पास आया-जाया करते थे, उन्होंने बहुत कुछ सुन रक्खा था। 'जैमुनि-पुराण' की रचना इन्हीं महाराज के आश्रय में रहकर सदानन्द ने सं० १८१० में की थी।

कविराज सदानन्द की जीवन-सम्बन्धी घटनाओं तथा कृतियों का इससे अधिक वृत्तान्त प्रयत्न करने पर भी उपलब्ध न हो सका। अतएव इस विषय को हम यहीं समाप्त करते हैं। उपर्युक्त कवि के दोनों ग्रन्थों का पूर्ण रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् मुझे उनकी भाषा-शैली तथा वर्णन-पद्धति में बहुत कुछ समानता दिखलाई पड़ी, अतएव मैं उनकी अभेद-स्थापना का लोभ संवरण न कर सका।

संसार-चक्र

पण्डित दुर्गाशङ्कर व्यास, बी० ए०

मेरे एक मित्र हैं जो अँगरेजी मिठाइयों की दूकान करते दूकान में दस-पन्द्रह हजार का माल सदैव रहता है जिससे मासिक आय चार-पाँच सौ रुपए हो जाती है। मित्र य स्वयं बड़ी शान से रहते हैं। पूरा अँगरेजी फैशन!

एक दिन मैं उनकी दूकान पर बैठा था। गर्मियों के दिन दोपहर के चार बजे होंगे। धूप बहुत तेज थी। इतनी ग्राहक कोई नहीं आ रहा था। हमारे मित्र की यह न है कि जब ग्राहक न हों तब वे सिगरेट पीते रहते हैं। उस भी वे अपने मुँह से धुँआ उगल रहे थे।

वे बातों-बातों में मुझसे कहने लगे—"व्यापार में बहुत द है। तुम नौकरियोंवाले हमारा क्या मुकाबला कर सकते पूरे महीना भर काम करने के बाद तब कहीं गिने-चुने का मुँह देख पाते हो। अगर कोई अचानक खर्च आ दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है। 'बिजनैस' के क्या ! थोड़ी से 'इंवैस्टमैंट' से महीने में चार-पाँच सौ बड़ी नी से बना लेता हूँ। एक चीज रुपए की घर खरीद पड़ती ग्राहक से दो-तीन तो ऐसे ही वसूल हो जाते हैं। आजकल दिनों में तो पाँचों घी में हैं। माल काफी स्टाक में माल बाहर से आ नहीं रहा है; इसलिए एक रुपएवाले का मोल दाँव लगने पर चार-पाँच भी कभी-कभी मिल है। एक रुपया कमाने में एक मिनट भी नहीं लगता म सारा दिन दफ्तर में कलम घिसने के बाद कहीं एक- ए का मुँह देख पाते हो।"

भी वे इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना चाहते थे कि में एक लड़का 'छाबड़ी' उठाए प्रविष्ट हुआ। उसकी हाथ में एक छोटी-सी हाँकी थी।

उसके एक हाथ में एक छोटी-सी छड़ी थी। छड़ी का सहारा लेते हुए उसने कहा—"बाबू जी! पूड़ी खाओगे?"

उस लड़के का इतना कहना था कि चमन बाबू आग्नेय नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे और गरजकर बोले—"निकल जा मेरी दूकान से! किसने तुझे अन्दर बुलाया है?"

मैं हैरान-सा हो रहा था कि आखिर मामला क्या है कि मेरे मित्र को एकबारगी इतनी तेजी आ गई है। मैंने धीमे से पूछा—"मिस्टर चमन! यह तेजी कैसी! वह बेचारा अपनी पूड़ियाँ बेचने आया है और तुम उसे कुत्ते की तरह दुत्कार रहे हो! क्या वह आदमी का बच्चा नहीं है?"

मेरी इस झाड़ से चमन बाबू कुछ चौंक पड़े और कहने लगे—"यार! तुम नहीं जानते, यह हर रोज मेरे पास पूड़ी लेकर आ जाता है और पूड़ी खाने के लिए बार-बार कहता है। मैंने इससे दो-तीन बार एक-एक आने की पूड़ी मोल लेकर अवश्य खाई है; लेकिन अब यह तो मेरा पीछा ही नहीं छोड़ता। कल भी आ गया था। आज फिर आ गया है, कम्बख्त!"

इतने में चमन बाबू का एक लड़का वहाँ आ गया। उसकी उम्र भी करीब बारह-तेरह वर्ष की रही होगी। वह निकर, कोट, बूट, जुराबें और नीले रङ्ग की कमीज पहने था। बाल भी अच्छे बने हुए थे—माँग निकली हुई थी। और उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैमुनि पुराण	रासा भगवन्तसिंह
१—दोहा	,,
२—पद्धरी	,,
३—सङ्खनारी	,,
४—गीतिका	,,
५—त्रोटक	,,
६—भुजङ्गप्रयात	,,
७—त्रिभङ्गी	,,
८—चौपाई	कवित्त
९—चामर	लीलावती
१०—सोरठा	छप्पै
११—सञ्जुता	मत्तगयन्द
१२—सारङ्गिनी	कुण्डलिया
१३—कन्दो	रूप घनाक्षरी
१४—मुक्तादाम	चन्द्रकला
१५—तोमर	ससिवदना
१६—हरि गीतिका	सर्वकल्यान दण्डक
१७—पद्धटिका	

ऊपर दी हुई सूची के अनुसार जै० पु० तथा रा० भ० में सात छन्द समान रूप से पाये जाते हैं; शेष नौ छन्दों में विभिन्नता है उसका कारण मेरे विचार में यह जान पड़ता है कि कवि ने अपने आरम्भिक प्रयास में वीरकाव्य के लिए जिन १६ प्रकार के छन्दों को चुना उसमें जिन छन्दों में उसे पूर्ण सफलता मिली उन्हीं का दूसरी बार भी उपयोग किया गया शेष का त्याग कर अपनी नवीनता-प्रेमी प्रकृति के सन्तोषार्थ दूसरे ९ प्रकार के छन्दों का समावेश किया। इसे हम रीतिकाल का ही प्रसाद मानते हैं। हाँ केशव-प्रवृत्ति के विरुद्ध सदानन्द ने छन्दों का प्रयोग रसानुकूल भाषा तथा भावों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त स्थलों पर किया है, इस पर हम आगे विचार करेंगे।

पूर्वकथित दोनों ग्रन्थों की भाषा में बहुत कुछ समानता होते हुए भी कुछ विभिन्नता है। इस विषय में पहली बात जो खटकनेवाली है वह है रासा भगवन्तसिंह में फारसी शब्दों का अधिक प्रयोग। जैमुनि पुराण में फारसी के केवल सर्व-साधारण में प्रचलित शब्द आए हैं। नीचे दोनों ग्रन्थों में प्रयुक्त फारसी शब्दों के उदाहरण दिए जाते हैं—

जै० पु० से—

यह चूक पारथ रावरी, नहिं रञ्च-दोष बबूर को।
सुत रीति सादर राजनीति, विचारि सब हजूर को।

× × ×

हरौलं अनी लक्ख जोधा जरूरं।

रा० भ० से—

बिगो इद्धुरावी कुजा दुष्ट सेा है।
मिदानं न ई अस्त कुह बीच सेा है॥

× × ×

हमीं कर्द साहब अमा दान पावैं।
न ह्वै है चिरा रद अबी बाँधि लावैं॥

इस विभिन्नता का कारण पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग जान पड़ता है। रा० भ० से फारसी शब्दावली-पूर्ण उद्धृत किया गया है वह नवाब सादत अली खाँ से गया है। फारसी उन दिनों भारत के कुलीन मुसल मातृभाषा थी। अतएव सम्भव है, कवि तत्कालीन मुस समाज में प्रचलित उपर्युक्त भाषा का ग्रन्थ में प्रयोग लोभ न संवरण कर सके हों। अथवा वर्णन में स्वाभाविकता लाने के विचार से ऐसा किया हो। दोनों सङ्गत है। सदानन्द ने अपनी शैली के इस सिद्धान्त का जैमुनि पुराण में भी किया। पाण्डवाश्वमेध ऐसी लोक पौराणिक कथा में पात्रों के परस्पर-वार्तालाप की योजना में करना एक उपहासास्पद बात होती, अतएव उसक करने में उन्होंने अपनी दूरदर्शिता का ही परिचय हिन्दी-साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ लेख अपनी प्रारम्भिक कृतियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयो आगे उसकी अस्वाभाविकता का अनुभव करके त्याग दि 'प्रसाद' जी के 'प्रायश्चित्त' तथा 'चन्द्रगुप्त' की भाषा की करने पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

पाठकों के समक्ष 'जैमुनि पुराण' तथा 'रासा भग को एक ही कवि (सदानन्द कविराज) की रचना करनेवाले जिन तथ्यों की विवेचना ऊपर की गई अधिकांश साहित्य पर अवलम्बित है। ऐतिहासिक मिलते हैं उनसे गोंडा तथा असोथर के तत्कालीन राजा उनके आश्रित कवियों में पारस्परिक सम्बन्ध की पुष्टि हो शिवसिंहजी ने असोथर के महाराज भगवन्तराय खीची में रहनेवाले प्रसिद्ध कवि शम्भुनाथ मिश्र को गोंडा के राजा के बन्धु जगतसिंह के आश्रित कवि शिवकवि

---

* (शम्भुनाथ मिश्र कवि (सं० १८०३ में उदय)
ये महाराज भगवन्तराय खीची के यहाँ असोथ करते थे। शिवकवि आदि सैकड़ों मनुष्यों को इन्होंने दिया। रसकल्लोल, रसतरङ्गिणी, अलंकारदीपक ग्रन्थ इनके बनाए हुए हैं।
—'शिवसिंहसरोज' पृ०

† शिवकवि, असेला बन्दीजन जिला गोंडा
(सं० १७९६ में उदय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन का काव्यगुरु बताया है और उनका समय भी सं० ६ तथा सं० १८०३ के बीच निश्चित किया है। यही । 'जैमुनि पुराण' तथा 'रासा भगवन्तसिंह' के लेखक के उदय ी है। इस पर 'सदानन्द के आविर्भाव-काल' पर विचार हुए हम पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। दो गुणग्राही काव्यप्रेमी राजवंशों का परस्पर-सम्बन्ध उक्त कवियों-द्वारा पेत होने का प्रमाण उपर्युक्त घटना है। इसके आधार ह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि सदानन्द कविराज सं० ७ के आस-पास भगवन्तराय खीची की मृत्यु के पश्चात् के महाराज शिवप्रसादसिंह के आश्रय में आए। इन राज के गुणों की प्रशंसा तथा उदारता के विषय में शिवकवि से, जो बहुधा अपने काव्यगुरु असोथर-निवासी शम्भु कवि के पास आया-जाया करते थे, उन्होंने बहुत कुछ सुन रक्खा था। 'जैमुनि-पुराण' की रचना इन्हीं महाराज के आश्रय में रहकर सदानन्द ने सं० १८१० में की थी।

कविराज सदानन्द की जीवन-सम्बन्धी घटनाओं तथा कृतियों का इससे अधिक वृत्तान्त प्रयत्न करने पर भी उपलब्ध न हो सका। अतएव इस विषय को हम यहीं समाप्त करते हैं। उपर्युक्त कवि के दोनों ग्रन्थों का पूर्ण रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् मुझे उनकी भाषा-शैली तथा वर्णन-पद्धति में बहुत कुछ समानता दिखलाई पड़ी, अतएव मैं उनकी अभेद-स्थापना का लोभ संवरण न कर सका।

संसार-चक्र

पण्डित दुर्गाशङ्कर व्यास, बी० ए०

मेरे एक मित्र हैं जो अँगरेजी मिठाइयों की दूकान करते दूकान में दस-पन्द्रह हजार का माल सदैव रहता है जिससे मासिक आय चार-पाँच सौ रुपए हो जाती है। मित्र य स्वयं बड़ी शान से रहते हैं। पूरा अँगरेजी फैशन!

एक दिन मैं उनकी दूकान पर बैठा था। गर्मियों के दिन दोपहर के चार बजे होंगे। धूप बहुत तेज थी। इतनी ग्राहक कोई नहीं आ रहा था। हमारे मित्र की यह है कि जब ग्राहक न हों तब वे सिगरेट पीते रहते हैं। उस भी वे अपने मुँह से धुँआ उगल रहे थे।

वे बातों-बातों में मुझसे कहने लगे—"व्यापार में बहुत द है। तुम नौकरियोंवाले हमारा क्या मुकाबला कर सकते पूरे महीना भर काम करने के बाद तब कहीं गिने-चुने का मुँह देख पाते हो। अगर कोई अचानक खर्च आ दूसरों का मुँह ताकना पड़ता है। 'बिजनैस' के क्या ! थोड़ी से 'इंवैस्टमैंट' से महीने में चार-पाँच सौ बड़ी नी से बना लेता हूँ। एक चीज रुपए की घर खरीद पड़ती ाहक से दो-तीन तो ऐसे ही वसूल हो जाते हैं। आजकल दिनों में तो पाँचों घी में हैं। माल काफी स्टाक में माल बाहर से आ नहीं रहा है; इसलिए एक रुपएवाले का मोल दाँव लगने पर चार-पाँच भी कभी-कभी मिल है। एक रुपया कमाने में एक मिनट भी नहीं लगता म सारा दिन दफ्तर में कलम घिसने के बाद कहीं एक- ए का मुँह देख पाते हो।"

भी वे इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना चाहते थे कि में एक लड़का 'छाबड़ी' उठाए प्रविष्ट हुआ। छाबड़ी में पूड़ियाँ थीं। लड़के की उम्र कोई बारह-तेरह वर्ष के लगभग होगी।

उसके एक हाथ में एक छोटी-सी छड़ी थी। छड़ी का सहारा लेते हुए उसने कहा—"बाबू जी! पूड़ी खाओगे?"

उस लड़के का इतना कहना था कि चमन बाबू आग्नेय नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे और गरजकर बोले—"निकल जा मेरी दूकान से! किसने तुझे अन्दर बुलाया है?"

मैं हैरान-सा हो रहा था कि आखिर मामला क्या है कि मेरे मित्र को एकबारगी इतनी तेजी आ गई है। मैंने धीमे से पूछा—"मिस्टर चमन! यह तेजी कैसी! वह बेचारा अपनी पूड़ियाँ बेचने आया है और तुम उसे कुत्ते की तरह दुत्कार रहे हो! क्या वह आदमी का बच्चा नहीं है?"

मेरी इस झाड़ से चमन बाबू कुछ चौंक पड़े और कहने लगे—"यार! तुम नहीं जानते, यह हर रोज मेरे पास पूड़ी लेकर आ जाता है और पूड़ी खाने के लिए बार-बार कहता है। मैंने इससे दो-तीन बार एक-एक आने की पूड़ी मोल लेकर अवश्य खाई है; लेकिन अब यह तो मेरा पीछा ही नहीं छोड़ता। कल भी आ गया था। आज फिर आ गया है, कम्बख्त!"

इतने में चमन बाबू का एक लड़का वहाँ आ गया। उसकी उम्र भी करीब बारह-तेरह वर्ष की रही होगी। वह निकर, कोट, बूट, जुराबें और नीले रङ्ग की कमीज पहने था। बाल भी अच्छे बने हुए थे। माँग निकली हुई थी। और उसके हाथ में एक छोटी-सी हाँकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमन बाबू के लड़के को देखकर उस छाबड़ीवाले लड़के ने मेरे मित्र को फिर एक बार कातरतापूर्ण दृष्टि से देखा और कहने लगा—"बाबूजी! छोटे बाबू को पूड़ी दिलवा दो।"

उधर छोटे बाबू की आँखें पूड़ियों पर गड़ी थीं; परन्तु चमन बाबू कह रहे थे—"मैंने तुम्हें एक बार कह दिया है कि मेरी दूकान से चले जाओ। तू अभी तक क्यों खड़ा है? हर रोज तेरी पूड़ियाँ खरीदने का क्या मैंने ठेका ले रक्खा है? - भाग यहाँ से!" छोटा बाबू इस समय फल खाया करता है।"

चमन बाबू ने अब जो फटकार बताई उससे छाबड़ीवाले लड़के की अन्तर्ज्वाला प्रज्वलित हो उठी और वह सिसकियाँ भरने लगा। अश्रुकण फर्श पर टप-टप गिर रहे थे जिनमें गरीब की आत्मा को तड़पते हुए मैं स्पष्टतया देख रहा था।

मैंने छाबड़ीवाले को सिर से पाँव तक ध्यानपूर्वक देखा। वह खद्दर का कुर्ता पहने था और एक छोटी-सी खद्दर की धोती। पाँव से वह नङ्गा था—जूते नहीं थे। सिर पर छाबड़ी को सुविधापूर्वक उठाने के लिए एक मैला-सा कपड़ा गोल-सा बनाकर रख लिया था।

एक-दो मिनटों के पश्चात् लड़के ने आँसू पोंछे और दूकान से बाहर जाने के लिए उसके पाँव हिले ही थे कि मैंने उसे रोककर पुचकारा—"बेटा! चुप करो। रोओ मत। धीरज से काम लो।" फिर उसकी छाबड़ी को खुद पकड़कर नीचे रख दिया और उसे भी बैठ जाने को कहा। वह बैठ गया। मैंने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और अत्यन्त प्यार से उसे पूछने लगा—"तुम पूड़ियाँ क्यों बेचा करते हो, बेटा? क्या तुम पढ़ने नहीं जाया करते?"

तब चमन बाबू ने मुझे कहा—"तुम किस पचड़े में पड़ गए। जाने दो, जिधर से आया है उधर चला जाएगा और अपनी पूड़ियाँ बेचता फिरेगा। हमें इससे क्या प्रयोजन कि वह पूड़ियाँ क्यों बेचता है?"

"आपका लड़का भी इसी वय का है" मैंने चमन बाबू को समझाते हुए कहा—"एक बार उसकी ओर देखो और फिर इस छाबड़ीवाले को देखो। कितना अन्तर है! अवश्य कोई न कोई रोमाञ्चकारी परिस्थिति होगी; अन्यथा क्या इस लड़के का दिल खेल-कूद के लिए नहीं करता होगा!"

"तुम्हारी फिलासफी तुम जानो", चमन बाबू कहने लगे—"मैं तो इतना ही जानता हूँ कि गरीबों के लड़के खेल-कूद नहीं सकते, वे मजूरी करने के लिए ही पैदा हुए हैं।"

मैंने घृणापूर्ण दृष्टि से बाबू साहब को देखते हुए कहा—"तुम्हें तो केवल दौलत की सनक सवार रहती है कभी किसी गरीब के दिल को भी टटोला करो।"

मैंने फिर छाबड़ीवाले लड़के के सिर पर हाथ फेरा और बड़े प्रेम से पूछने लगा—"बेटा! तुम ये पूड़ियाँ

उस लड़के ने अत्यन्त श्रद्धापूर्वक एक बार कृतज्ञ मेरी ओर देखा और कहने लगा—"बाबूजी! मैं से इसी तरह पूड़ियाँ बाजार में ले आता हूँ और वे पैसे बनते हैं अपनी माँ को दे देता हूँ। माँ रोज मुझे पूड़ियाँ बनाकर देती है और जो पैसे बच जाते आटा-दाल लेकर हम दोनों अपना पेट पाल लेते कहती है कि अगर मैं पढ़ने जाऊँ तो पढ़ाई का से आए और फिर रोटी कैसे चले।"

जब लड़का इस प्रकार अपनी राम-कहानी सुना तब मैंने आँख की एक कोर से चमन बाबू की ओर वे धुआँ उड़ा रहे थे और कुटिल-मन्द हास्य उनके नृत्य कर रहा था।

परन्तु जब मैंने कहा—"सुना चमन! आपका के प्रति व्यवहार कितना अन्यायपूर्ण था", तो वे कश खींचते हुए बोले—"शङ्कर! तुम बहुत भोले हो कहानियाँ सब झूठ-मूठ बनाई जाती हैं। इसकी ऐसी पट्टी पढ़ा दी होगी ताकि इस तरह अपना के सामने रखने से उनकी हमदर्दी ज्यादा हो जाय शीघ्र बिक जाएँ।"

मैंने अपनी उँगली दाँतों तले दबा ली और सो कि ये धनवान् लोग कितने निष्ठुर और हृदयहीन होते

वह लड़का कभी मेरी ओर देखता और कभी की ओर देख लेता था।

मैंने उसे प्यार करते हुए और यह आश्वासन दे मैं तुम्हारी पूड़ियाँ मोल ले लूँगा, फिर प्रश्न किया— पिता कहाँ है और क्या काम करता है?"

छोटा-सा वह लड़का थोड़ी देर तक कुछ न बो उसके होंठों पर जैसे मौन की सुदृढ़ मुहर लग गई हो।

मैंने उसे थपथपाया। सिर पर वात्सल्यपूर्ण वात्सल्य की गरिमा की अनुभूति से उसके अधर खु पिता।" उसने कहना आरम्भ किया—"अच्छी याद नहीं, कैसे थे। माँ कहती है कि जब मैं चार तब वे काँग्रेस में काम करते हुए कैद हो गए थे और भेज दिए गए थे। वहाँ जेल में उन्हें साँप ने और वे वहीं मर गए थे।"

तब एकदम उस लड़के की आँखों से आँसू छलक

ठीक उसी समय मेरी स्मृति के पट पर पाँच एक खबर चक्कर काट रही थी जब हमारे नगर के नेता के कालेपानी की जेल में साँप के दंश से हड़ताल की गई थी।

मेरा सारा रोम सिहर उठा। उस बालक से अब पूछने की हिम्मत नहीं रह गई थी। परन्तु उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य जानना चाहता था। इसलिए तमाम रही-सही शक्ति टोरकर मैंने पूछा—"और तुम्हारी माँ क्या करती है?"

वह सहमी हुई आवाज में कहने लगा—"माँ अब बूढ़ी हो । पहले दूसरों के घर काम करती थी। अब उससे आया जाता। बस! मुझे पूड़ियाँ बना देती है।"

लड़के की इस आत्मकथा को सुनकर मेरे हृदय में आग चनगारियाँ पैदा होने लगीं। एक बार तो हृदय-मण्डल माज-सेवा के विरुद्ध भावनाएँ भी उद्वेलित हो उठीं। ानी सुनरों के परिवार की ऐसी दुरवस्था!

और दूसरे ही क्षण उन अमीरों के प्रति घृणा उत्पन्न हो ी जो यह कहते लज्जित नहीं होते कि ये गरीबों के दुख- ही मनगढ़न्त कहानियाँ हैं।

मैं इस विषय पर सोचते-सोचते विचार-निमग्न-सा हो रहा कि छाबड़ीवाले की आवाज ने मुझे जगा दिया।

"बाबूजी, पूड़ियाँ नहीं लोगे?"

मैंने गिना, उसकी छाबड़ी में कुल नौ पूड़ियाँ थीं। कुल चार आने की।

छाबड़ीवाला मुझसे पैसे लेकर, हाथ जोड़ता हुआ, गया।

उन पूड़ियों को हम तीनों ने जब खा लिया तब मैंने एक बार फिर अपने मित्र से कहा—"भाई, देखा! कितनी वेदना-मयी कहानी थी और आप बिना सोचे-समझे उस पर बिगड़ रहे थे।"

लेकिन चमन बाबू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"भाई साहब! यह संसार-चक्र इसी तरह चला करता है। यदि हम लोग इन गरीबों पर भी रोब न झाड़ें तो और किन पर झाड़ें?"

चूँकि मैं स्वयं एक गरीब-श्रेणी से सम्बन्धित हूँ; इसलिए उनकी यह बात मुझे तीर की तरह चुभी और मैं फिर उनकी दूकान पर एक क्षण भी न बैठ सका।

मैं सड़क पर सोचता जा रहा था कि ये बड़े आदमी, छोटे लोगों की कितनी अवहेलना करते हैं और उनके प्रति किए गए तिरस्कार को 'संसार-चक्र' कहकर हँस देते हैं।

परन्तु मेरी अन्तरात्मा से एक हलकी-सी आवाज उठ रही थी—'संसार का यही चक्र किसी-न-किसी दिन अवश्य इन अमीरों को पीस डालेगा!'

——

कर्जन म्यूजियम में

रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, क्यूरेटर तथा सेक्रेटरी भरतपुर-राज्य-म्यूजियम

म माथुर चतुर्वेदी हैं। इस नाते मथुरा हमारी जन्मभूमि थुर चतुर्वेदी कहीं रहें, पर मथुरा से उनका स्नेह-बन्धन ा रहता है। मेरा आना-जाना भी मथुरा में लगा ही रहता इस बार का मेरा मथुरा जाना एक विशेष उद्देश्य से ा।

थुरा में 'कर्जन म्यूजियम' नाम का एक संग्रहालय है जो अनेक विशेषताओं के कारण दर्शनीय और अध्ययनीय है। -राज्य-संग्रहालय का अध्यक्ष होने के नाते भरतपुर सरकार गत जुलाई में यह आज्ञा मिली थी कि मैं उक्त म्यूजियम र वहाँ की संगृहीत मूर्तियों का विशेष अध्ययन करूँ। जुलाई, १९४५ के अन्तिम दस दिन मुझे उक्त म्यूजियम में करने पड़े थे।

र्जन म्यूजियम' के क्यूरेटर महोदय मेरे पूर्व-परिचित ीगढ़ की 'हिस्ट्री कांग्रेस' में मेरा उनसे प्रथम साक्षात्कार । पर इस बार के मेरे प्रवास ने मुझे उनके और भी र दिया।

'कर्जन म्यूजियम' साधारण रूप से मथुरा-कला का ही संग्रहालय है। मथुरा नगरी भारत की उन सर्वश्रेष्ठ स.त प्राचीन नगरियों में गिनी जाती है, जो मोक्ष देनेवाली मानी जाती थीं। यह नगरी आनन्दकन्द भगवान् कृष्ण की जन्मभूमि और लीला-भूमि है। इसी कारण यह हिन्दुओं का प्रख्यात तीर्थस्थान है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में तीर्थयात्री आया करते हैं। सम्भव है, इसी कारण बौद्ध भिक्षुओं और जैन मुनियों ने भी अपने मिशन की पूर्ति के लिए मथुरा को अपना धर्म-केन्द्र नियत किया हो।

कर्जन म्यूजियम में संगृहीत मूर्तियाँ स्पष्ट रूप से प्रकट करती हैं कि मथुरा बौद्धों-जैनों और हिन्दुओं का केन्द्र रहा था। इस कारण यहाँ की कला में तीनों धर्मों के देवी-देवताओं की मूर्तियों का समावेश है। इतिहास-वेत्ताओं का मत है कि ऐतिहासिक दृष्टि से मथुरा में ब्राह्मण-धर्म की अपेक्षा जैन-धर्म और बौद्ध-धर्म की बहुलता रही है। इसी कारण यहाँ जो मूर्तियाँ पाई जाती हैं वे अधिकांशतः बौद्ध और जैन-धर्मों से सम्बन्धित हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मथुरा गंगा-यमुना की अन्तर्वेदी की सभ्यता की प्रधान रंग-स्थली रही है। इस नगरी ने अनेक साम्राज्यों का उत्थान और पतन देखा है। युक्तप्रान्त का तो यह नगरी द्वार ही है। बाहर से जो विजेता भारत में आए वे मथुरा भी अवश्य पहुँचे। फलतः

रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी

उन आक्रमणकारियों की संस्कृति का प्रभाव भी मथुरा की कला पर अवश्य पड़ा। इस प्रभाव की छाप अद्यावधि वर्त्तमान है।

कर्जन म्यूजियम की परिचय-पत्रिका में मथुरा-कला से सम्बन्धित मृण्मयी व पाषाण-निर्मित मूर्तियों का ऐतिहासिक विभाजन इस प्रकार किया गया है—

भगवान् बुद्ध और महावीर—ई० पू० छठी शताब्दी,
मौर्यकाल—३२५ ई० पू० से १८५ ई० पू० तक,
शुंगकाल—१८४ ई० पू० से ७२ ई० पू० तक,

क्षहरात वंश के महाक्षत्रप राजकुल और सुदास—१०० ई० पू० से ५७ ई० पू० तक,

शक-कुषाण-वंश—ई० प्रारम्भ से तीसरी शताब्दी तक,

कुजुला कैड फाइसिस और वेम कैड फाइसिस—७८ ई० तक।

कनिष्क—७८ ई० से १०२ ई० तक;
वासिष्क—१०२ ई० से १०७ ई० तक;
हुविष्क—१०६ ई० से १३८ ई० तक;
वासुदेव—१३८ ई० से १७६ ई० तक;
मध्यकाल—६०० ई० से १२०० ई० तक।

कर्जन म्यूजियम में रक्षित मूर्तियों के देखने से यह भी पता चला कि भरतपुर में प्राप्त होनेवाली मूर्तियों में और इन मूर्तियों में

इनके और उनके बनाव-कटाव, रूप-रंग व कद [illegible] यह हैं। इससे यह भी प्रतीत होता है कि ये सब एक ही कारीगर युग बनाई हुई हैं। मैंने 'सरस्वती' में प्रकाशित अपने [illegible] दिए लेख में, जो कि एक शिलालेख की प्राप्ति पर था, लिखा [illegible] हैं। कि यक्ष की मूर्तियाँ जैसी परखम से प्राप्त मथुरा में हैं, उस इस की नोह गाँव में हैं, जो कि अब भरतपुर-म्यूजियम में [illegible] काओं हैं। इनके उतार-चढ़ाव में कोई विशेष अन्तर नहीं है। र १२ राज्य की तहसील दीग, जहाँ के भव्य भवन दर्शनीय बुद्ध चौरासी कोस की परिक्रमा के अन्तर्गत है। व्रज नाम के एक राज्य यहीं था; जिसके नाम पर यह प्रदेश व्रज कहलाता कत क भरतपुर के नरेन्द्रों ने व्रजेन्द्र की उपाधि धारण की। हों का

जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूँ, मथुरा में समय-समय इस म आक्रमणकारी जातियों के आक्रमण बराबर होते रहे। उन परिच शक, पल्हव, हूण आदि जातियाँ थीं। यदि इनकी छाप र है— कला पर भी पड़ी हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। नं० यहाँ यूनानी भावों को दर्शानेवाली मूर्तियाँ मिली हैं। र के विद्वा

इन मूर्तियों में शुंगकाल की कला की दो मूर्तियाँ जो प्राच हैं। इनके देखने से पता चलता है कि शुंगकाल में मौर्य वेदिका और तोरण बनाए जाते थे। जिस प्रकार बाहर में च वाली जातियों को भारतीय जन-समाज ने अपने में [illegible] हुए

माता और पुत्र

उसी प्रकार भारतीय कला ने भी अन्य कलाओं विशेषताओं को अपनाकर अपने निजी तथा स्वतन्त्र [illegible] में विकास किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहना अनुचित न होगा कि कुषाण-काल मथुरा-कला का युग रहा है। इस युग की मूर्तियों में से कुछ के चित्र दिए जाते हैं जिनके नम्बर क्रमशः ७, ६, ११, १२ और हैं।

इस युग में नए-नए प्रकार के मंदिरों, तोरणों और कृतियों के निर्माण की बहुतायत थी, जैसा चित्र नं० ६, ११ और १२ से विदित होगा।

बुद्ध की मूर्ति का निर्माण व उसका आविष्कार कुषाणयुग एक सबसे बड़ी घटना है। शुंगकाल के शिल्पी बुद्ध की मूर्ति कित करते समय स्तूप, धर्मचक्र, बोधिवृक्ष आदि पवित्र हों का आश्रय लेते थे, जैसा कि चित्र नं० १० से विदित होता इस मूर्ति का निर्माण ईसवी प्रथम शताब्दी में हुआ था।

परिचय-पुस्तिका के अनुसार कुछ मूर्तियों का परिचय इस र है—

नं० १, परखम यक्ष-मूर्ति—यह वैसी ही है जैसी भरतपुर- के नोह गाँव में है। वह परखम गाँव से प्राप्त हुई है। विद्वान् इसे अजातशत्रु की मूर्ति बतलाते हैं। मथुरा की प्राचीन कला को प्रकट करनेवाली यह बृहत्काय और भारी मौर्यकाल की समझी जाती है। यह कानों में भारी कुंडल में चपटी हँसुली (ग्रैवेयक) और तिकोना हार और नीचे धोती हुए है। कुषाण-काल की बुद्ध और बोधिसत्त्व प्रतिमाओं का वर रूप इन्हीं मूर्तियों की नकल है। इसकी चरण-चौकी पर कालीन ब्राह्मी-लिपि में एक लेख भी है जिससे इसके बनाने- कारीगर का नाम गोमित्र जान पड़ता है।

०२, यह मूर्ति स्तूप के चारों ओर की वेदिका या चहारदीवारी ीधा खम्भा है। वेदिका को वेष्टनी भी कहते थे और इन ों को संस्कृत में वेदिका या वेष्टनी-स्तम्भ और पाली में 'थंभ' कहते थे। इस पर नृत्य-मुद्रा में खड़ी हुई एक स्त्री की मूर्ति है के सिर पर भारी केशपाश है और जो कर्णकुण्डल, ग्रैवेयक, ामाला, हारावली, अंगद, कटक, रत्नजटित काञ्ची और चरणों पुरवलय पहने हुए है। नीचे लम्बकर्ण और लम्बोदर यक्ष का है। ऊपर महाबोधि जातक की कथा है जिसमें भगवान् अन्य मतावलम्बी आचार्यों के साथ अपने धर्म की श्रेष्ठता पर र्थ कर रहे हैं।

नं० ३, वेदिका-स्तम्भ (५८६) समय लगभग ई० पूर्व प्रथम दी :—यह बौद्ध-साहित्य में आई हुई एक कथा से धत है।

चित्र नं० ५, स्त्री-मूर्ति (अफगानिस्तान) प्राचीन गान्धार ी स्वात (प्राचीन सुवास्तु) नदी की घाटी में होनेवाले नीले की मूर्ति, जो मथुरा में यमुना जी के किनारे के 'सप्तर्षि टीले' ी बताई जाती है। यह शरीर पर साड़ी और सिर पर पुष्प-माला पहने हुए है। यह गान्धार-कला का नमूना है। कुछ विद्वानों का मत है कि यह कुबेर की स्त्री हारीती देवी की मूर्ति है। इसका समय लगभग प्रथम शताब्दी ई० पूर्व है।

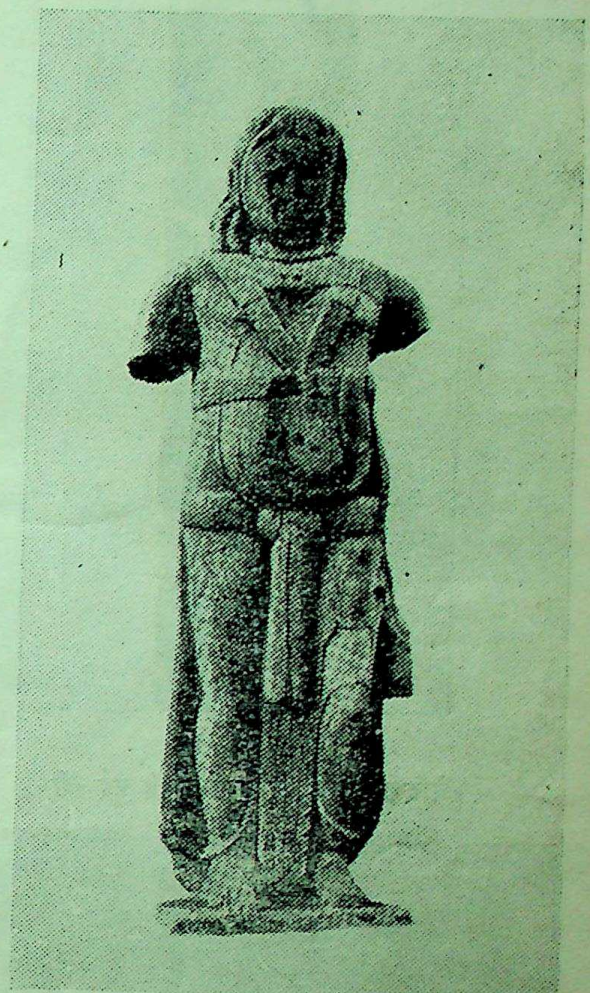

चित्र नं० १—परखम यक्ष

चित्र नं० ७, यह कुषाण-वंश के प्रतापी सम्राट् कनिष्क की मूर्ति मथुरा से आठ मील दूर पर स्थित माट गाँव से मिली थी। उस टीले को आज तक टोकरी टीला, जो तुरुष्क या तुषार का अपभ्रंश है, कहते हैं। मूर्ति के ऊपर ब्राह्मी अक्षरों में लिखा हुआ है—"महाराजा राजातिराजा देवपुत्रो कानिष्को।" सम्राट् उदीच्य वेष-भूषा में हैं अर्थात् चोगा, कोट, पायजामा और मोटे गिलगिट बूट पहने हुए हैं। उनके बाएँ हाथ में एक लम्बी तलवार है और सीधे हाथ में वे राजदण्ड पकड़े हुए हैं। कनिष्क का विशाल साम्राज्य काशी से तुर्किस्तान तक फैला हुआ था। उन्होंने अशोक के समान बौद्ध-धर्म का प्रचार किया था।

चित्र नं० १८, शिरस्त्राण पहने हुए किसी यूनानी योद्धा का सिर। समय—ईसा की पहली शताब्दी के लगभग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

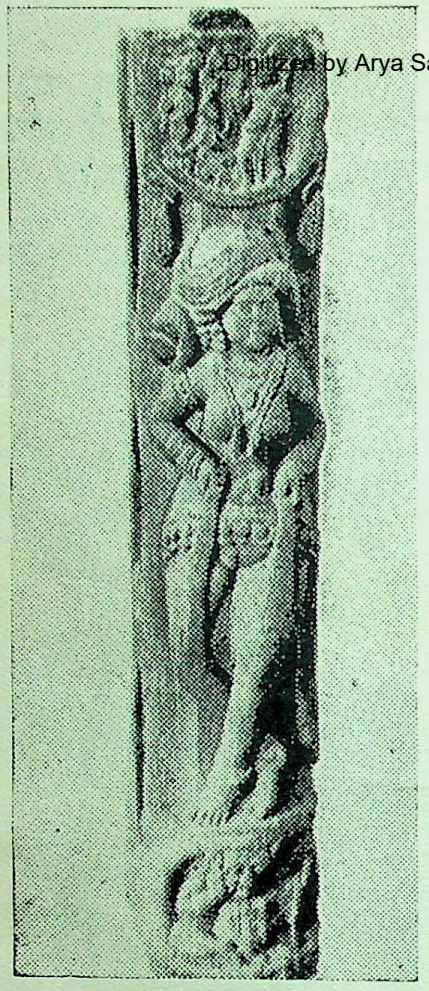

चित्र नं० ३
वेदिका-स्तम्भ पर नृत्य करती हुई स्त्री

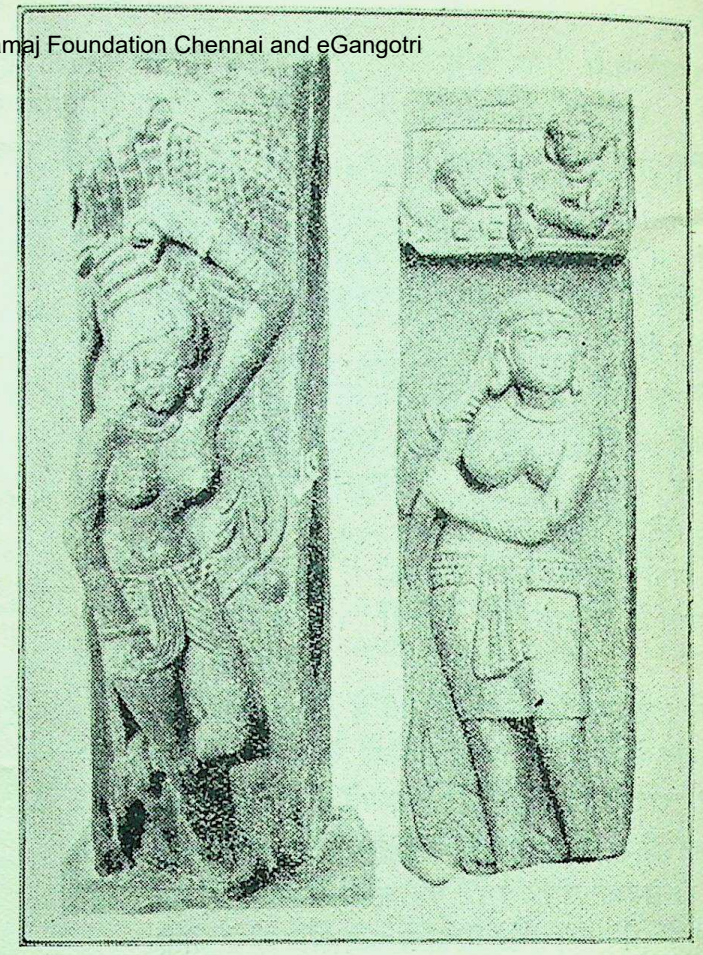

चित्र नं० १२ (अ) और (ब) अशोक दोहद सद्यःस्नाता

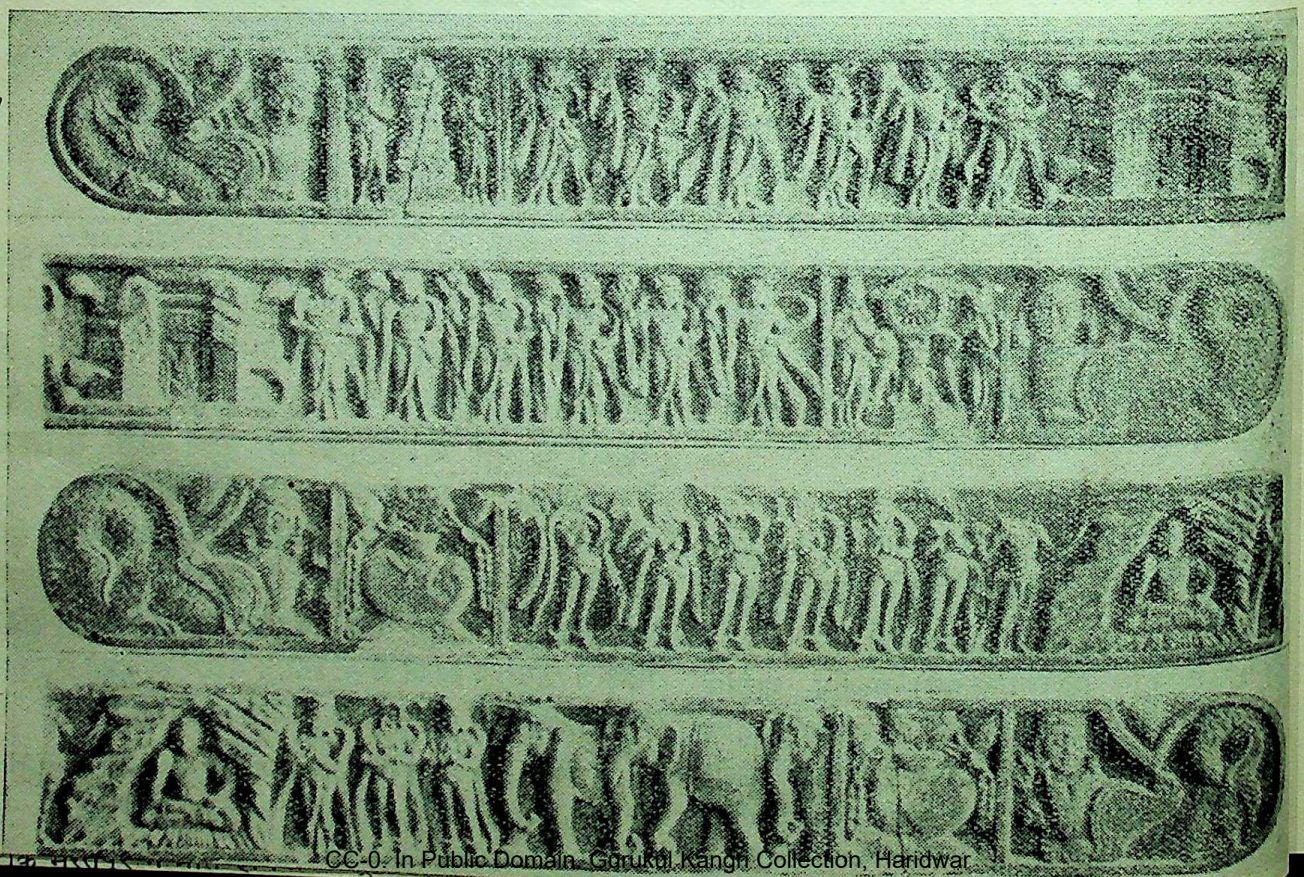

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

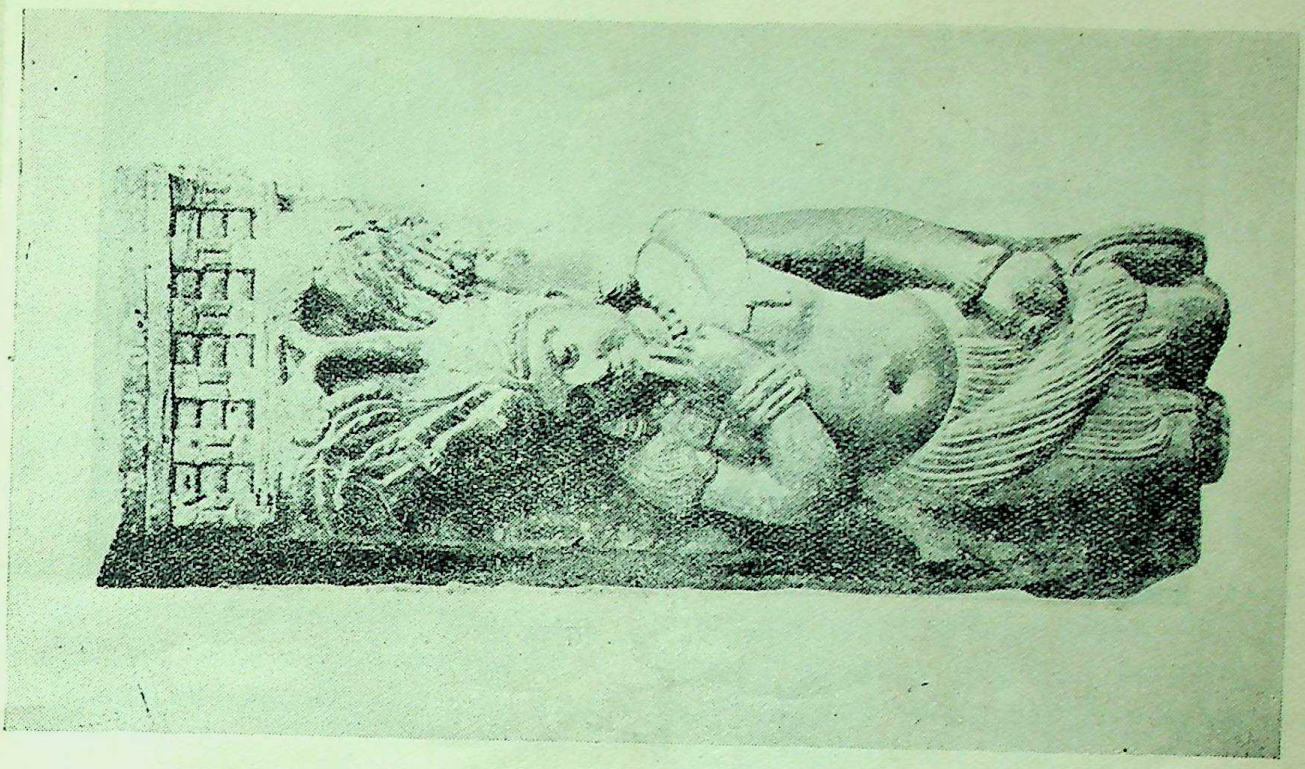

चित्र नं० ११—ऋष्यशृंग की मूर्ति

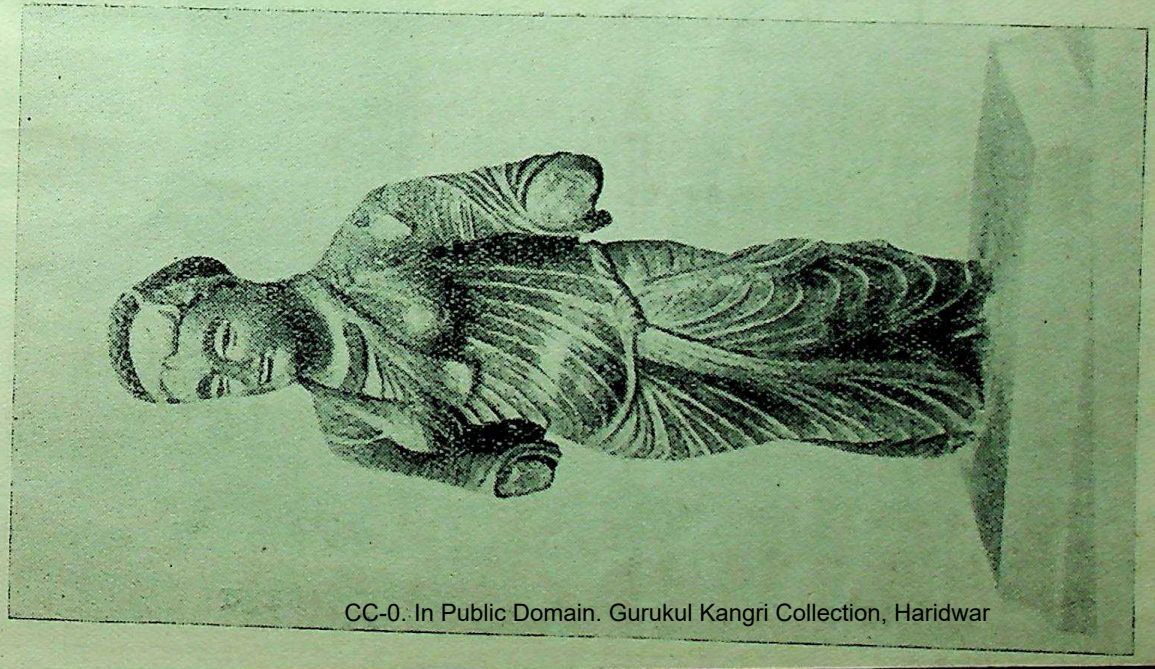

चित्र नं० ५—गंधार-कला में स्त्री-मूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र नं० १३—विविध सिर

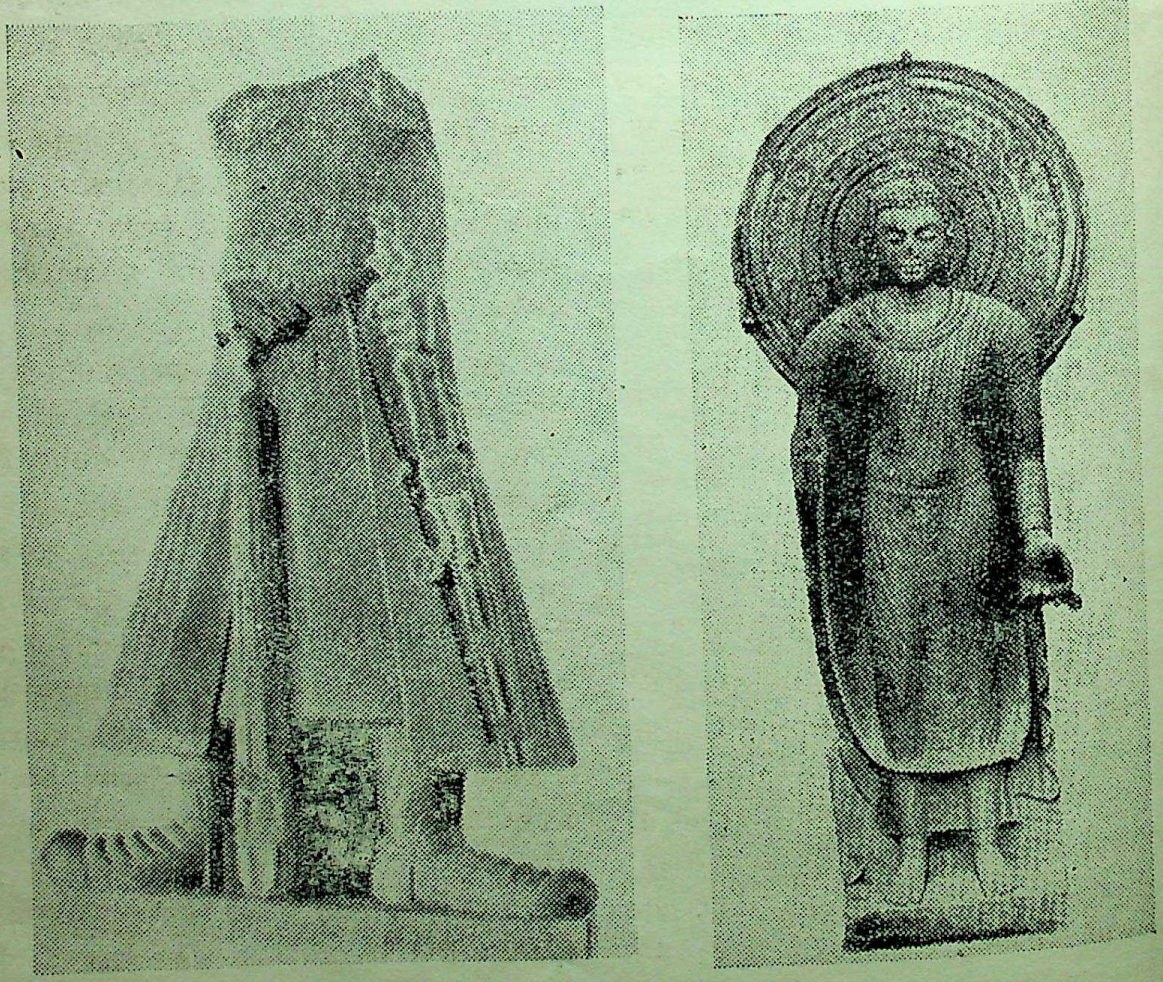

सम्राट कनिष्क गुप्तकालीन बुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वाकिंग क्लब'

श्री बनवारीलाल चौधरी

इने-गिने कुल तेरह लड़के थे जो ग्रीष्म की छुट्टियों में घर थे। मैंने भी जीविकोपार्जन के हेतु, बेसहारे, बेकिनारे, -अटकते यहाँ थाह पाई थी। नया-नया था, इस कारण लोगों धिक परिचय न हो सका था। क्लब या और सार्वजनिक ाओं के अभाव में सन्ध्या समय घूमने जाने के सिवा मेरे और कोई चारा न था।

प्रतिदिन सन्ध्या समय ये लड़के भी अलग-अलग दो-दो, चार- की टोलियों में घूमने जाते थे। यह विशृङ्खलता मुझे खटकी उन्हें एक सूत्र में आबद्ध करने के निमित्त मैं धीरे-धीरे ं मिल गया। कुछ ही दिनों में हम चौदह समवयस्क लड़के साथ घर से निकलकर गंगोली महाशय के मकान के सामने दान में एकत्र हो, अन्य मित्रों के आने तक, वहाँ रक्खे गिट्टी रों पर बैठे-बैठे, गप्पें लगाया करते थे। सबके इकट्ठे होने पर ो टोली उस आड़ी-टेढ़ी, ऊबड़-खाबड़ ग्रामीण राह से होती हाराजपुर तक जाती थी।

यह एक नित्य का नियम था। कुछ दिनों तक हमारी इस की टोली में खासी चहल-पहल रही। घूमना सरस बनाए के लिए टोली का प्रत्येक सदस्य अपने जीवन के कुछ हास्य-, कुछ गम्भीर और कुछ मीठे अनुभव सुनाया करता था। का जीवन-प्रवाह, संगठन और एकमत देखकर लोग मजाक 'वाकिंग क्लब' कहने लगे और मैं बिना चुनाव और मत- के इसका एक अनावश्यक प्रेसीडेण्ट और सेक्रेटरी एक ही साथ लिया गया। पर हमारे सीमित अनुभवों की कहानियों की संख्या सीमित ही हो सकती थी। हमारी अनुभूतियों का कोष भी ही समाप्त हो गया और टोली के कार्यक्रम में क्रमशः दिन- न नीरसता आने लगी। मुझे भय होने लगा कि कहीं इस 'वाकिंग क्लब' का शीघ्र ही अन्त न हो जाए और साथ न्त न हो जाए मेरी इस बिन माँगी 'प्रेसीडेंटशिप' और रीशिप' का। परन्तु अनायास ही एक दिन की मेरी भद्दी ने क्लब के कार्यक्रम का रुख फिर से पलट दिया।

म लोग उस दिन कुछ देर से लौटे थे तथा गंगोली महाशय ान के सामने के हाते में न बैठकर ढोर-अस्पताल के दालान गप-शप कर रहे थे। हम लोगों में से चुप थे केवल रामजी। तले, लम्बी नाक पर भरकम चश्मा लगाए, ईश्वर की हत्त्वपूर्ण कलाकृति, बूढ़े-से ये नौजवान, मालूम नहीं क्यों अन्यमनस्क से बैठे थे। मुझे उनकी नीरवता खटकी और ् उन्हें भी अपनी ची-पों में शामिल करने के हेतु मैंने -"रामजी, शायद तुम्हें यह दुःख होगा कि तुम ढोर क्यों ; अन्यथा बीमार मवेशियों के रजिस्टर में नाम लिखाकर ढोर-अस्पताल के मरीजों की संख्या बढ़ाकर उसकी उन्नति कर नाम कमा जाते।" रामजी ने जवाब तो नहीं दिया पर और लोगों के सुर में अपना बे-सुरा सुर मिलाकर "ही ही" कर हँस पड़े। हम लोगों की हँसी पूरी भी न हो पाई थी कि हमारे साहब जैसे ही एक व्यक्ति दूर साइकिल पर आते दिखाई दिए। अपना साहब समझ मैंने शीघ्रता से उठकर आगे बढ़कर उन्हें अभिवादन किया। मेरा अभिवादन करना देखकर इस बार सबसे पहले रामजी बाबू ही खिलखिलाकर हँस पड़े। नमस्ते करने के बाद मैंने देखा कि साइकिल पर मेरे साहब नहीं, प्रत्युत एक भद्र महिला साहब की-सी पोशाक में आरूढ़ हैं।

अब तो हम लोगों को एक नया विषय मिल गया। रामजी का मत था कि जब आज की शिक्षा लड़कों के योग्य भी नहीं है तो लड़कियों को भी यही शिक्षा देना उचित नहीं है। उनके विचारानुसार लड़कियों को स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने देना अवश्य ही देश को नरक के गर्त में ले डूबेगा।

यह अजीब लड़की, जो संयुक्तप्रान्त के किसी कालेज में बी०ए०, में पढ़ती है और अपने को पुरुषों के कपड़ों में सुसज्जित करती है, रामजी की टिप्पणी का विषय ही बन गई। परन्तु उसकी निन्दा-नुक्ताचीनी के बाद भी न मालूम क्यों हम लोगों का उसकी ओर आकर्षण बना ही रहा और हमारा घूमने का समय और रास्ता बिना किसी विशेष प्रयत्न या प्रस्ताव के अनायास ही उस लड़की के घूमने के समय और रास्ते से मेल कर बैठा।

इस घूमने के समय में हम लोगों की बातचीत का विषय बहुधा घूम-फिरकर उस लड़की की चर्चा ही बन जाता था। गुप्तजी स्त्री-स्वतन्त्रता के समर्थक हैं। भाग्यवश या दुर्भाग्यवश आपकी धर्मपत्नी डेढ़ हाथ का घूँघट निकालती हैं। निरक्षर भट्टाचार्य होने के कारण गुप्त जी को उनके इस आचरण के लिए झूठा बहाना भी दे देती हैं। गुप्त जी स्वयं कैसा भी आचरण करते हों, पर सामाजिक दृष्टि से नारी-स्वतन्त्रता-संग्राम के एक जबरदस्त पोषक होने का वे गर्व करते हैं। आखिर इसी बूते पर तो बेचारे को जब-तब महिला-सभाओं के अध्यक्ष के आसन पर आरूढ़ होने का सुख-सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। जब-तब ये प्रगतिवादी महारथी अपने हृदय की विशालता का परिचय अपने व्याख्यानों-द्वारा हमारी मण्डली में देने का प्रयास किया करते हैं। प्रगतिवाद की सनक में एक दिन वे कह रहे थे, "आप आज की नारी को एक कोल्हू का बैल नहीं बना सकते, जिसे आँखें बाँधकर चक्कर लगवाते रहें। वह देवी, काली का रूप है, वह प्रलय कर सकती है और करेगी। उसको चौके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अधिकार सौंप आप उसे बिना तनखाह की महराजिन नहीं बना सकते। वह अपने अधिकार पुरुषों से छीन लेगी; बराबरी से खड़ी होगी। उसमें परिवर्तन होंगे; आग सुलगेगी; क्रान्ति जागेगी। एक महाक्रान्ति की भयानक ज्वाला में हमारा रूढ़िवाद ध्वंस हो जाएगा।"

रामजी इस पर कभी झुँझलाहट प्रदर्शित करते, कभी रोष से उनका चेहरा तमतमा जाता। कभी-कभी वे अपने अन्तर के ज्वालामुखी को दबा कुछ अजीब-सी शक्ल बना भद-भद पैर पटककर चलने लगते, जो इस गम्भीर वातावरण में भी हमारी हँसी रोक सकने में समर्थ न हो पाता। परन्तु हम सभी जानते थे कि ऐसे नाजुक समय की हँसी रामजी को असह्य होगी। अपनी हँसी को बलात् रोकने के प्रयास में हम लोगों के मुँह से खों-खों की आवाज निकल ही जाती। सरबर मियाँ को एक बार जब हँसी रोकना असम्भव-सा ही हो गया तब वे विषय की धारा घुमाने के निमित्त रामजी के समान ही विकरालता धारण कर कहने लगे, "खों! खों! हाँ हाँ! ठीक है; बिलकुल ठीक है। पर हम इस लड़की की तारीफ तभी समझेंगे जब वह हमारे समान बाल भी कटाए।" हम लोग बातों में इतने व्यस्त थे कि हमें ख्याल ही न था कि वे देवी जी अपनी साइकिल पर अपने दोनों प्यारे कुत्तों के साथ हमारे पीछे-पीछे ही चल रही हैं। सरबर मियाँ की बात खत्म होते ही वे तेजी से आगे बढ़ गईं। अब हम लोग अपने निश्चित स्थान पर पहुँच चुके थे, इसलिए अधिक आगे न बढ़कर लौट आए।

दूसरे दिन फिर घूमते समय जब हमने उस लड़की को हमारे जैसे बाल कटाए देखा तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मुझे एक हार्दिक दुःख हुआ, क्योंकि मैंने अनुभव किया कि उस लड़की ने महज जिद में ही ऐसा कर डाला है और उसे स्वयं अपने बालों के खोने का असीम दुःख है। मैंने देखा, मेरे अन्य मित्र भी इस घटना से दुःखित हैं। उस दिन फिर हम अपने निश्चित स्थान तक पहुँचने के पहले ही लौट आए। रास्ते में सबका मौन भंग करने के हेतु मैंने कहा, "देखिए, रामजी, भले ही हम जो चाहें कहें और करें, पर यह पूर्णतः सत्य है कि पुरुषजाति ने नारी का विश्वास खो दिया है। और यह बिलकुल स्वाभाविक भी है। हजारों पीढ़ियों से दबते-दबते आज नारी ऐसी स्थिति पर पहुँच गई है कि अब और अधिक दब सकने की गुंजाइश ही उसमें न रही। अब वह उसी शक्ति और विकलता से परिवर्तित हुई है। उसकी इस तेजी का सामना करना पुरुष-समाज के लिए सर्वथा असंभव ही है। एक घोर अविश्वास और चिढ़ लेकर वह कई बार ऐसे कार्य कर बैठती है जिनसे वह स्वयं ही जी-जान से घृणा करती है। आज उसे केवल आगे बढ़ने की धुन है। संभव है वह ध्वंस हो जाए। संभव है उसका [illegible] हो। संभव है बहुतेरी स्त्रियाँ अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने के पहले ही मार्गभ्रष्ट हो जाएँ और यह भी सम्भव है कि बहुतों को उस लम्बी मंजिल को तय कर पाने के पहले ही समाप्त हो पर यह निश्चित है, सत्य है, कि इन सब संघर्षों और [illegible] एक उत्तम लक्ष्य निहित है। उनमें से एक भी साथी मंजिल पर पहुँच पाने पर सभी अपने आपको सफल [illegible] मैं और भी कुछ कहना चाहता था पर उस लड़की को चुप हो गया। और इसके बाद कुछ मानसिक और कुछ अस्वस्थता के कारण घूमने न जा सका।

जिस रोज मैं फिर घूमने निकला, मुझे कुछ देर हो हमारे बैठने के मैदान में मित्र-मण्डली की जगह सड़ के कुली गिट्टियाँ फैला रहे थे। बहुत-से ढेर फैलाए और कुछ फैलाए जा रहे थे। मित्रों को आगे बढ़ा अकेला ही उस निश्चित रास्ते पर बढ़ने लगा। रास्ते किसानों को छोड़ जो कि अपने सिरों पर अपने गट्ठर एक निश्चय, एक ध्येय, लिए चल रहे थे, और किसी देख सका। रास्ता छुट्टियों के पहले जैसा सुनसान रहा था। फिर अचानक मुझे ख्याल आया कि आज है। अवश्य ही वे सब लड़के और वह लड़की अपने-अपने में चले गए होंगे। इन सब मित्रों के अभाव में मुझे ठठरी से छोड़कर फेंकी हुई रस्सी जैसा बेकाम और भद्दा पड़ रहा था। मैं निरुद्देश्य-सा आगे बढ़ा जा रहा था। सागर में डूबा हुआ था। पिछले दिनों की सारी बातें कर मेरे स्मृति-पटल पर साफ दिखाई दे रही थीं। मुझे याद आने लगी उन क्षणों की, जब उस निर्भीक लड़की दिन बिना किसी संकोच के और किसी की परवाह के सब अपनी साइकिल मेरे हाथों में दे, मुझसे एक पुस्तक छीन जिसे पढ़ता हुआ मैं घूम रहा था। अपने साथ घूमने प्रस्ताव भी उसने किया था। फिर एक दिन अचानक रात्रि के समय मेरी धर्मपत्नी को आश्चर्य में डुबोती मेरे गृह में चली आई थी। वह साथ में कविता की दो 'यामा' और 'दीपशिखा' लाई थी। मेरे पाण्डित्य अन्दाज लगा वह चाहती थी कि मैं उसे कुछ अर्थ समझा दूँ। कविताओं की अपेक्षा मुझे तो वह अधिक गूढ़ प्रतीत होती थी। अर्थ समझाते-समझाते अन्यमनस्क सा हो यही सोच रहा था कि खादी से लड़की अपने आप में कौन-सा तूफान छिपाए है। सुन्दर शरीर और उसके विचारों को देखकर मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि उस हठी लड़की को न बनाए। इसी विचार-शृङ्खला में मैं आबद्ध था। टूटी जब मैंने देखा कि नालों को पार करता हुआ मैं के भी आगे बढ़ गया हूँ। लौटने में रास्ता और भी नीरस जान पड़ा। पर कोई क्या जाने कि कुछ ही दिन ऐसा न था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार की कसरत

श्री अनन्त गोपाल शेवड़े, एम० ए०

जब हम सर्कस देखने जाते हैं तब अक्सर हमें तार की ा का खेल देखने को मिलता है। एक पतले तार पर युवती छाते के जरिए कई तरह के कौशल दिखलाती है। कभी ी है, कभी पैर के अँगूठे के बल पर खड़ी रहती है, तो दौड़ती है। जब वह कोई खेल सफलता-पूर्वक कर है तब हम ताली पीटकर उसकी वाहवाही करते हैं। अगर उसका तौल जरा भी गया तो ?—तो फिर वाह- तो दूर रही, वह बेचारी धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ेगी सिर फोड़ लेगी, या मुमकिन है, जान से भी हाथ धो ऐसी दुर्घटना बचाने के लिए कई सर्कसवाले नीचे एक ताने खड़े रहते हैं जिससे यदि वह गिरे तो उसी में गिरे। ाल की तारीफ उस लड़की के तौल में है। तौल बिगड़ा कि ा खत्म !

ही बात जीवन में भी सही है। हमारे जीवन पर विविध ों का असर पड़ता है—जैसे भावना, तर्क, शरीर-बल, आत्म- प्रेम, द्वेष, इत्यादि। प्रायः ये शक्तियाँ विरुद्ध दिशा में ी हैं। जो इन शक्तियों का उचित समन्वय कर सकता है हम सफल मानते हैं। और जो यह नहीं कर पाता है वह ी में असफल तो होता ही है, साथ ही कई तरह की विप- भी उठाता है। जब कोई पागल हो जाता है तो हम कहते के दिमाग का 'स्क्रू' ढीला हो गया है या दिमाग का तौल गया है। साइकिल की सवारी करते-करते कोई दुर्घटना हो तो हम कह उठते हैं, 'भाई, मेरी साइकिल का 'बैलेन्स' गया इसलिए मैं गिर पड़ा।' यही बैलेन्स या सन्तुलन जीवन लता की सबसे आवश्यक शर्त है।

र की कसरत का उदाहरण देने से मन में यह प्रश्न आ है कि जीवन में सन्तुलन प्राप्त करना वस्तुतः मुश्किल है। वह तो सर्कस की उस युवती की तरह दीर्घ प्रयत्न भ्यास से ही सध सकता है और फिर भी वह सबके बूते की हीं है। तब तो यह बड़ी कठिन बात है। सर्वसाधारण बात कैसे प्राप्त हो सकती है ?

, सच बात कहना है तो यही कहना होगा कि यथार्थ में प्राप्त करना सरल नहीं है। इसके लिए सतत प्रयत्न करने श्यकता है। बिना साधना के यह वस्तु नहीं मिल सकती। मिल जाती है तब दुनिया पुकार उठती है, 'बस, आदमी ही है, इसी का आदर्श आनेवाली पीढ़ियाँ मानेंगी।' बुद्ध, हम्मद, गांधी इसी प्रकार के महापुरुष हैं जिन्होंने अपने का सन्तुलन अधिक से अधिक मात्रा में स्थिर किया है।

जो इतना ऊँचा नहीं उठ सकते, उन्हें निराश होने का कारण नहीं है। मुझ जैसे साधारण लोगों की तसल्ली के लिए यह सत्य जान लेना आवश्यक है कि इस तौल को प्राप्त करने के लिए हम जितना प्रयत्न करेंगे उसी परिमाण में हमें सफलता मिलेगी। भले ही हमें सोलह आने कामयाबी न मिले पर आठ आने, छः आने मिल ही सकती है ! दो आने भी मिले तब भी हमारी कोशिश व्यर्थ नहीं गई। इसमें परी-देश के हंस जैसी बात नहीं है कि वह चुगेगा तो मोती चुगेगा, नहीं तो भूखा मरेगा। जो जितनी कोशिश कर सके उसे उतनी ही सफलता मिलेगी, उतना ही जीवन का आनन्द मिलेगा। इसी लिए इस तौल—समन्वय—की प्राप्ति के लिए यत्नशील होना प्रत्येक व्यक्ति के लिए वाञ्छनीय है।

इतिहास और साहित्य में ऐसे महारथियों के चित्र अंकित किए गए हैं जिन्हें विश्व-विजय की दुर्दम्य महत्त्वाकांक्षा थी। किन्तु इस तरह के सार्वभौमत्व की कल्पना मानव-जाति के धर्म या प्रकृति के नियमों से मेल नहीं खाती है और इसलिए वह सर्वतः एकांगी हो जाती है। एकांगी होने का अर्थ ही यह है कि उसका सन्तुलन बिगड़ गया है। उसका परिणाम अवश्यम्भावी पराजय ही है। ऊपरी तौर पर जो विजय दिखाई देती है उसी में अन्दर से पराजय का घुन लग जाता है, जिसका फल होता है—जितनी बड़ी महत्त्वाकांक्षा, उतना ही भयंकर सर्वनाश !

बादशाह सिकन्दर का यही स्वप्न था। पर जिस पंजाब की भूमि पर उसने भारत के महाराजा पुरु को पराजित किया था, कहा जाता है कि, उसी भूमि पर उसकी सेना ने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया था और उसे वापस लौटना पड़ा था। उसी दिन से सिकन्दर का सूरज डूबने लगा था। रोम के सम्राट् ज्यूलियस सीजर की महत्त्वाकांक्षा भी असीम थी, किन्तु वह अपने ही विश्वस्त मंत्रियों-द्वारा दिन-दहाड़े मार डाला गया। नेपोलियन ने भी इसी प्रकार विश्व-विजय के स्वप्न देखे थे लेकिन उसे मास्को से जीर्ण और जर्जरित होकर लौटना पड़ा; जिसका पर्यवसान सेंट हेलिना के बन्दीवास में हुआ। ये सब उदाहरण यही बतलाते हैं कि जब महत्त्वाकांक्षा एक सीमा से परे चली जाती है तब औचित्य से उसका समन्वय नष्ट हो जाता है और उसका परिणाम विनाश होता है।

शेक्सपियर ने कुछ सुन्दर दुःखान्त नाटक (ट्रेजेडी) लिखे हैं। उनमें भी मूलतत्त्व यही है कि जीवन में जो ट्रेजेडी (भयंकर दुर्घटना) होती है

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना। हैलेट की असीम वेदना और असफलता का कारण है उसमें आचार और विचार के समन्वय का अभाव। जब वारा-न्यारा करने की सुवर्ण-सन्धि आती है तब वह तलवार चलाने के बजाय सिर खुजलाते हुए सोचने लगता है—'होना है, या नहीं, यह प्रश्न है।' आथेलो की दुर्घटना का कारण है आत्यन्तिक सन्देह। आथेलो ने एक बार अपनी पत्नी डेसडेमोना के चरित्र पर सन्देह करना शुरू किया तो वह इतनी दूर तक चला गया कि उचित अनुचित की सीमाएँ भी लाँघ गया। किसी भावना के अतिरेक का ही अर्थ है सन्तुलन का अभाव। और उसी का परिणाम है दुःख, वेदना! इसी प्रकार मैकबेथ और किंग लियर तथा गेटे के डा० फास्ट्स की 'ट्रेजेडियों' की कारण-मीमांसा की जा सकती है।

क्या साहित्य में, क्या इतिहास में, क्या जीवन में, यही चरम सिद्धान्त सत्य है कि विभिन्न शक्तियों के सन्तुलन में सुख और सफलता, तथा सन्तुलन-अभाव में क्लेश और असफलता समाई हुई है।

इन बड़े-बड़े विश्व-नायकों को छोड़ दें और हम अपने ही रोजमर्रा के साधारण जीवन पर दृष्टि डालें तो यही सत्य हमें दिखलाई पड़ता है। संसार को बहुरंगे चित्रों की प्रदर्शनी की उपमा दी जाती है क्योंकि उसमें इतनी भाँति के लोग मिलते हैं कि कोई दो आदमी समान नहीं होते। जितने व्यक्ति उतनी ही प्रकृतियाँ। कुछ लोग तो अत्यन्त भावनाशील होते हैं। उनका हृदय ही उनका राजा है। दूसरे नितान्त तर्कशील मिलते हैं, जिनकी नियन्त्रण-शक्ति है दिमाग। पहली श्रेणी के लोग भावना के आवेग में खून जैसे भयंकर कृत्य भी कर डालते हैं; दूसरे अपने पिता की मृत्यु के समय रुपया-आना-पाई का हिसाब करते दिखाई देते हैं। ये दोनों ही अन्तिम परिधियाँ गलत हैं। हमें भावना की जरूरत है और विचार की भी। भावनाओं को विचारों से सलाह ले लेनी चाहिए और विचारों को भावनाओं का आदर करना चाहिए। तभी मानव-जीवन श्रेयस्कर और सफल हो सकेगा।

यही बात ज्ञान और कर्म के बारे में है। कुछ लोग तो अध्ययन और पण्डिताई में उलझकर इस तरह के पुस्तक-कीट हो जाते हैं कि जिन्दगी के बड़े से बड़े प्रश्नों को भी वे यूक्लिड के सिद्धान्तों के अनुसार सुलझाने का प्रयत्न करते हैं। किसी सिद्धान्त या शिक्षा के तत्त्व से व्यवहार का 'जोड़' मिलाने के लिए वे तैयार नहीं होते। जो किताब में लिखा होगा या जो गुरु जी बतलाएँगे वही सच है, बाकी सब—?—प्रश्नचिह्न।

परमहंस रामकृष्ण के एक शिष्य की एक मनोरंजक कहानी है। परमहंस जी ने एक दिन अपने प्रवचन में कहा, 'सब प्राणियों में ईश्वर विद्यमान हैं, हमें उनका आदर करना चाहिए।' एक शिष्य महोदय बाहर निकले तो सब प्राणिमात्र को—गधे, बैल, कुत्ते को भी—भगवान् समझकर नमस्कार करने और इतने में एक हाथी, जो पागल हो गया था, चिंघाड़ता हुआ उसका महावत हाथी पर ही बैठा-बैठा उसे वश में लाने की कर रहा था लेकिन उसे सफलता नहीं मिल रही थी। वह चिल्ला-चिल्लाकर लोगों को सावधान कर रहा था, "भागो-भागो! हाथी पागल है!" लेकिन हमारे शिष्य क्यों भागने लगे? वे हाथ जोड़कर और नतमस्तक होकर देव के सामने खड़े हो गए। पर देवता ने उनकी पूजा की परवाह नहीं की। ऐसी सूँड़ फटकारी कि वे कई हाथ गिरे और खून से लथपथ हो गए। जब परमहंस ने पूछा भागे क्यों नहीं? तो जवाब मिला, "हाथी में ईश्वर मैं उस ईश्वर के सामने से कैसे भाग सकता था?"

स्वामी जी ने मुस्कराते हुए कहा, "पागल हाथी में था उसकी बात तो मान ली, लेकिन उस महावत में जो तुझे सावधान कर रहा था, उसकी बात क्यों नहीं

ऐसे ही पुस्तक-कीटों की जो श्रेणी पैदा हुई है उसे कहते हैं। किताबें तो सब पढ़ ली हैं, लेकिन फिर भी बने हुए हैं। विचार सब दिमाग में है लेकिन उसमें पक्का ताला लगा हुआ है कि कहीं गलती से भी प्रत्यक्ष जीवन और व्यवहार में काम नहीं आ पाता।

जो हर समय गहन विचार में लीन रहता है उसे 'फिलासफर' कहने लगते हैं। मतलब यह कि वह ख्याली दुनिया में तल्लीन रहता है। उसे बाहरी दुनिया खबर नहीं रहती। जो जितना ज्यादा बेखबर रहता उतना ही बड़ा विचारक मानने का कुछ प्रचलन-सा जिसके बारे में इस तरह का ख्याल होता है वह इसे चीज मानता है। लेकिन विश्व का आदि विचारक (प्लेटो) ऐसा नहीं मानता। उसकी राय है कि जो चिन्तक—फिलासफर—है उसे उतना ही अधिक व्यव भी होना चाहिए। यानी चिन्तन और व्यवहार का सम चाहिए। इसी विचार-प्रणाली के कारण उसने Philo as a King (दार्शनिक ही शासक हो) की आविष्कार किया था। किन्तु आजकल तो दार्शनिक इससे बिलकुल विपरीत है। फिलासफी के प्रोफेसरों के लिए कई मजाक चल गए हैं। ऐसे ही एक प्रोफेसर बात है। वे शाम को अकेले घूमने गए—अकेले न जाएँ निक कैसे? लौटे तो अपने विचारों में इतने तन्मय की छड़ी तो उन्होंने बिस्तर पर लिटा दी और ऊपर ओढ़ा दिया और खुद कोने में जाकर खड़े रहे—उस जहाँ उनकी छड़ी रहती थी। इसी तरह अपनी तन्द्रा कितनी देर खड़े रहे। जब दीवाल से सिर टकराया तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ा और वे अपनी हालत देखकर बड़े शर्मिन्दा हुए। तब जाकर ...होंने छड़ी को कोने में टिकाया और खुद बिस्तर पर जाकर ...। ऐसे लोग आपको कम नहीं दिखाई देंगे।

...पर इनसे विपरीत आपको ऐसे आदमी भी मिलेंगे जो व्यवहार-...लता के सिवा और किसी बात का दावा नहीं करते। इसी ...ाव की अन्तिम अवस्था है, स्वार्थ-परायणता, नीचता और ...चित्य-अनौचित्य का एकदम अभाव। ऐसे पिता के बारे में ... कहा जाए जो अपनी पन्द्रह वर्ष की कुँआरी कन्या को ५६ ...के बूढ़े के साथ, जिसकी यह तीसरी शादी है, ब्याह देता है; ...कि इस सौदे में उसे ढाई हजार रुपये मिलते हैं।

...यह काल्पनिक नहीं, सच्ची घटना है और ऐसे उदाहरण कम ... हैं। तारीफ यह कि उन पिता महोदय की आर्थिक दशा ...ी बुरी नहीं है कि रुपए के लिए उन्हें इतना हलका काम ...ा पड़े। एक सज्जन पुलिस-इन्सपेक्टरी से पेंशन-प्राप्त हैं; ...ा भी पा रहे हैं और बैंक में कुछ रकम भी है। लेकिन फिर ...उन्हें अपनी एकमात्र कन्या की भावनाओं का ख्याल नहीं। ...के समय वे अपनी कन्या को पति को देव मानने की शिक्षा ... में भी नहीं चूके। स्वयं तो पितृ-धर्म का गला काट चुके ...न पुत्री को पतिव्रत-धर्म-पालन का उपदेश देते हैं। उनसे ...गया तो कहने लगे कि भाई, दुनिया में 'सेंटिमेंटल' (भावना-...) होने से काम नहीं चलता। व्यवहार में ऐसा तो करना ...ड़ता है। मैंने कोई नई बात तो की नहीं। लड़की चार-छः ...रोएगी, लेकिन बाद में वह अपने पति पर श्रद्धा करने लगेगी। ...-स्त्री का तो यही धर्म है?

इस प्रकार अति के उदाहरण कई मिलते हैं। स्पष्ट है कि ऐसे एकांगी व्यक्तियों का जीवन दुःखपूर्ण और असफल हो जाता है तथा वे अपने आत्मीयों तथा मित्रों के कष्टों के लिए भी कारणीभूत होते हैं। दोनों ही अतिरेक त्याज्य हैं—गलत हैं। हमें सुवर्ण-मध्य ही खोजकर निकालना होगा। उसके बिना जिन्दगी सफल नहीं हो सकती। ध्येय और व्यवहार, ज्ञान और कर्म, भावना और तर्क—इन सब द्वन्द्वों का उचित समन्वय करना होगा। सन्त विनोबा ने ध्येय और व्यवहार की व्याख्या एक छोटे से समीकरण-द्वारा बड़ी सुन्दर रीति से की है। वे कहते हैं—"अन्तिम ध्येय-वाद = पुरुषार्थहीनता; अन्तिम व्यवहारवाद = हीन पुरुषार्थ।" इन दोनों खाइयों के बीच में से हमें जाने की जरूरत है। नहीं तो हम औंधे गिर पड़ेंगे।

लोकमान्य तिलक का कथन है कि स्वराज्य-प्राप्ति के लिए ज्ञान और कर्म की जोड़ी न टूटे। आज तक बुद्धिमानी और कर्मण्यता का मेल ही नहीं था। एक का मुँह पूर्व की ओर था तो दूसरे का पश्चिम की ओर। इसी लिए स्वराज्य के दर्शन नहीं हुए। जो बात स्वराज्य के लिए सही है वही तमाम जीवन के लिए भी ठीक है।

इसी लिए हमें यदि अपनी उन्नति या अपना उद्धार करना है तो ज्ञान और कर्म का, वृद्धों के अनुभव और युवकों के उत्साह का, स्त्रियों की बुद्धिमानी और पुरुषों की कर्त्तृत्व-शक्ति का, ब्राह्मणों के शास्त्र और अब्राह्मणों की कला का, हिन्दुओं की नीति और मुसलमानों की शक्ति का, भिक्षुओं के धर्म और गृहस्थों के कर्म का समुच्चय करना होगा। यही समन्वय या तौल सफलता की कुंजी है। यह है तो तार की कसरत जैसा कठिन, लेकिन फिर इसके फल भी उतने ही मीठे हैं! उतने ही सुन्दर!

ईसप की सचित्र कहानियाँ—अँगरेज़ी की Aesop's ...bles नामक बहुत ही लोकप्रिय पुस्तक का यह हिन्दी ...ाद है। इसकी कहानियाँ अत्यन्त मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद ... मू० केवल २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

शेख़ चिल्ली की कहानियाँ—इन कहानियों की प्रशंसा ...ना ही कह देना काफ़ी होगा कि ये शेख़चिल्ली की कही हुई ... मू० ॥।—) तेरह आने।

कथा-सरित्सागर—नीतिशास्त्र-सम्बन्धी संस्कृत के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण। मू० २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

नाट्य-सुधा—(प्रथम और द्वितीय भाग) संस्कृत के प्रायः सभी प्रसिद्ध नाटकों के कथानक का संग्रह। मू० प्रत्येक भाग का १) एक रुपया।

सोने का झरना—बालोपयोगी सुन्दर कहानियों का संग्रह। मू० १) एक रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या विनय

योरपीय युद्ध से कुछ शिक्षाएँ

श्री सन्तराम, बी० ए०

योरप का महायुद्ध समाप्त हो गया। परन्तु वह हमारे लिए अनेक बहुमूल्य शिक्षाएँ छोड़ गया।

इस महायुद्ध ने हमें सबसे बड़ी शिक्षा यह दी है कि 'लोकोत्तर मनुष्य' (सूपरमैन) का सिद्धान्त अतीव हानिकारक एवं बोदा है। जिस प्रकार हमारे यहाँ वर्ण-भेद के पक्षपाती अपनी प्रभुता का सिक्का जमाए रखने के लिए अपने को शुद्धरक्तवाले द्विज और दूसरों को मिश्ररक्तवाले वर्णसंकर शूद्र बताकर अपना उल्लू सीधा करते हैं, उसी प्रकार जर्मनी के नाजी भी अपने को विशुद्ध आर्य रक्तवाले और संसार की शेष सब जातियों को नीच एवं अपवित्र कहते थे। जिस प्रकार हमारे यहाँ द्विज को जन्मना लोकोत्तर और शूद्र को जन्मना नीच मानने से पन्द्रह करोड़ अछूत और सछूत शूद्र मनुष्यता से गिरकर मिट्टी में मिल गए हैं, उनमें आत्म-सम्मान नाम को भी नहीं रह गया है, उसी प्रकार नाजियों के उस 'आर्य रक्त' के सिद्धान्त के कारण यहूदी मिट्टी में मिला दिए गए। इस अमानुषिक अत्याचार का दण्ड नाजियों को मिलना स्वाभाविक था। जहाँ जहाँ भी कोई मनुष्य अपने को दूसरे मनुष्य से या कोई जाति दूसरी जाति से जन्मना श्रेष्ठ और उच्च समझने की भूल करती है वहाँ अन्त में उसकी ऐसी ही दुर्गति होती है। वर्ण-व्यवस्था की डींगें मारनेवाले हिन्दू सैकड़ों-सहस्रों वर्षों से दासता की शृङ्खला में जकड़े हुए जूते खा रहे हैं, परन्तु क्या मजाल जो इन्हें अपनी जन्मना उच्चता तथा नीचता के झूठे विचार को छोड़ने का ख्याल तक आ सके। कोई समझाए भी तो ये झट वेद के मंत्र पेश करने दौड़ते हैं कि ब्राह्मण भगवान् के मुँह से निकला है और शूद्र उसके पाँव से; इसलिए ब्राह्मण और शूद्र कभी बराबर नहीं हो सकते। जो हिन्दू रूस पर आँखें लगाए बैठे हैं, हाँ उस रूस पर जिसने जन्म की उच्चता और नीचता को ही नहीं, वरन् धनी और निर्धन के श्रेणीभेद को भी मिटा दिया है, वे भी हिन्दू-समाज में से ऊँच-नीच मूलक वर्णभेद को मिटाने से हिचकिचाते हैं। जिस प्रकार हमारे यहाँ द्विजों ने संस्कृत के प्रायः सभी ग्रन्थों में ब्राह्मण की श्रेष्ठता और शूद्र की निकृष्टता के उपदेश भरकर हिन्दू-जाति की बुद्धि को भ्रष्ट कर रक्खा है उसी प्रकार नाजियों ने भी अपने सबको वर्णसंकर बनाकर समूची जर्मन जाति का बौद्धिक बिगाड़ दिया था। इस पागलपन का शिकार बनकर [illegible] जहाँ यहूदियों को अपना शत्रु बना लिया और डा० [illegible]ईं यह है विद्वान् तथा आईस्टीन जैसे वैज्ञानिक को जर्मनी से भाग्य, धैर्य, वहाँ अँगरेजों की बुद्धिमती जाति ने उन्हीं यहूदियों को [illegible]रेज जाति अपनी शक्ति को बढ़ाया। यह बात ठीक वैसी है जैसे [illegible]नहीं देख द्विजों ने अछूतों को दुतकारकर बहिष्कृत कर दिया, परन्तु [illegible]ों की मानों एवं ईसाइयों ने उनको अपनाकर अपनी [illegible] की बढ़ाया। प्रसिद्ध नाटककार स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल राय [illegible]तीय, जू ही कहा है कि हिन्दुओं का प्रतिनिधि प्रताप अपनाया, सबके पराया बना देता था, परन्तु मुसलमानों का प्रतिनिधि [illegible]रण बा परायों को भी अपना बनाना जानता था। प्रताप की [illegible]गुण लेन का प्रधान कारण यही था। खेद है कि हिन्दुओं ने [illegible]या, जो अपने इस बुरे स्वभाव का सुधार नहीं किया।

युद्ध से दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि सौ [illegible]ने के लि लड़-भिड़कर मर जाना ही कोई प्रशंसा की बात नहीं [illegible]कार है वीरता युद्ध में विजय प्राप्त करने में है। हमारे राजपूत [illegible]गए, अँग थे। प्राणों पर खेल जाना उनके लिए एक साधारण [illegible] इस युद्ध थी। जो भी सामने आ जाय, बिना सोचे-समझे, [illegible]ने और लड़ने को तैयार रहते थे। परिस्थिति प्रतिकूल होने पर [illegible] प्रत्येक दूसरे उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा न करके, वे रण [illegible]त्व अँग थे और मरकर या मारकर ही दम लेते थे। परिणाम [illegible]कारी न कि समूचे इतिहास में एक भी स्थान ऐसा नहीं [illegible] पर ड इनको कोई प्रशंसनीय विजय प्राप्त हुई हो। हमारे [illegible] नहीं अ सदृश अपने शुद्ध आर्य-रक्त पर अभिमान करनेवाले [illegible]सद्गुण महाशय भी सबको ललकारते फिरते थे। जो भी सम्मु [illegible] रखने झट उसके गले पड़ गए। उसने घोषणा कर दी थी [illegible] हमारी साहस और वीरता है, मेरे सामने आ जाय; योरप [illegible]अमेरिक भूभाग कहो मैं युद्ध के लिए खाली कर देता हूँ; आओ [illegible]न देगी जोश में पहले तो वह आगे बढ़ता चला गया। पर [illegible]दूसरों उसने स्टालिनग्राड पर एक बार ठोकर खाई, फिर न [illegible]है, अ इसके विपरीत अँगरेज जाति की बुद्धिमत्ता देखिए [illegible]पण्डित किस प्रकार रूस जैसे विरोधी और अमेरिका जैसे [illegible]का में अपने मतलब के लिए अपने साथ गाँठ लिया। [illegible]इसके ब्रह्मा में जब इन्होंने देखा कि उस समय लड़ना [illegible]ण्डा-मा [illegible]ा-मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद को पूरी तैयारी से प्रत्याक्रमण करके उन देशों पर अधिकार प्राप्त कर लिया। हिजड़ा मनुष्य, जो स्वयं कुछ कर सकता, स्त्रियों की भाँति ताने देकर ही समय की भड़ास निकाला करता है। इसके विपरीत सच्चा वीर पुरुष शत्रु के गुण और वीरता की प्रशंसा करने में तनिक भी संकोच नहीं करता। हमारे भारतीय बन्धु, जो स्वयं तिनका भी नहीं तोड़ सकते भाँड़ों की तरह अँगरेजों की निन्दा और रूस एवं अमेरिका की चापलूसी करते रहे और अब तक कर रहे हैं। परन्तु सचाई यह है कि इस युद्ध में जैसी दूरदर्शिता, नीतिज्ञता, अध्यवसाय, धैर्य, सहिष्णुता और अवसर को पहचानने की बुद्धि ब्रिटेन जाति ने दिखलाई है वैसी रूस में तो कहाँ, अमेरिका में भी नहीं देख पड़ती। कहते हैं, श्री रामचन्द्र ने किष्किन्धा के बन्दरों की सेना बनाकर रावण जैसे महाबली शत्रु पर विजय प्राप्त की थी। परन्तु अँगरेजों ने सारे संसार के लोगों को—भारतीय, जूलो, हारणटाट, चीनी, मिस्री, नीग्रो, पठान, अरब, अफ्रीकी, सबको—अपने काम में सहायक बना लिया। यह कोई साधारण बात नहीं। अँगरेजों को गाली देना सरल है, पर उनके प्रताप का गुण लेना कठिन। जो हिन्दू और मुसलमान, जो जाट और भंगी, जो भंगी और ब्राह्मण, जो द्विज और शूद्र अपने देश के लिए इकट्ठे न मिल सकते थे, वे अँगरेजों को विजयी बनाने के लिए एक साथ मिलकर काम करते रहे। कितना बड़ा चमत्कार है! हमारे कांग्रेसी भाई गतिरोध की धमकियाँ ही देते रह गए, अँगरेजों ने युद्ध जीत भी लिया।

इस युद्ध से तीसरी शिक्षा यह मिलती है कि अँगरेजों को कोसने और बदनाम करने से ही हम स्वराज्य प्राप्त न कर सकेंगे। अपने प्रत्येक दोष, प्रत्येक त्रुटि, प्रत्येक अयोग्यता का उत्तरदायित्व अँगरेजों पर डालते रहने से हम कभी स्वराज्य के अधिकारी न हो सकेंगे, अपनी त्रुटियों का सारा उत्तरदायित्व दूसरों पर डालने से हमें अपनी त्रुटियों को दूर करने का विचार कभी नहीं आ सकता और जब तक हमारे दुर्गुण दूर होकर हम में सद्गुण उत्पन्न नहीं होते, जो स्वराज्य लेने और लेकर उसे सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक होते हैं, तब तक स्वतन्त्रता के लिए हमारी सारी चिल्ल-पों व्यर्थ होगी। भाँड़ों की भाँति रूस और अमेरिका का स्तोत्रगान और अँगरेजों की निन्दा कुछ काम न देगी। संसार अपने कार्यों में इतना व्यस्त है कि उसके पास दूसरों के कष्ट अपने ऊपर लेने के लिए न समय है, न इच्छा है, और न शक्ति है। सानफ्रांसिस्को में श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित जो मेमोरण्डम दे रही थीं और श्री० जे० जे० सिंह अमेरिका में जो प्रापेगण्डा कर रहे थे, वह उपयोगी और आवश्यक था, इसके लिए हम उनके आभारी हैं। परन्तु अमेरिका में प्रापेगण्डा-मात्र से हमें स्वराज्य मिल जाएगा, ऐसी आशा करना दुराशा-मात्र होगी। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए विदेश में नहीं

को स्वराज्य का पात्र बनाने के लिए घोर परिश्रम करना होगा। केवल बातें बनाने से या अँगरेजों को अमेरिका की दृष्टि में बदनाम करने से हम स्वाधीन न हो सकेंगे। अमेरिका अँगरेजों को क्या कह सकता है जब उसका फिलिपाईन अभी स्वराज्य-भोगी नहीं, जब वहाँ के नीग्रो अपने नागरिक अधिकारों का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं कर सकते। विदेशों में प्रापेगण्डा का लाभ तभी होता है जब अपना देश भी कुछ तैयार हो। परन्तु हमारी दशा ऐसी है कि अभी हमें रेल का टिकट तक खरीदना नहीं आता। तीसरे दरजे का टिकट खरीदते समय धक्कमधक्का से हम पशुओं को भी मात कर देते हैं।

श्री कन्हैयालाल मुंशी जैसे हमारे नेता अँगरेजों से कह रहे हैं कि आपका युद्ध को जीतना तभी सार्थक होगा जब आप अन्ताराष्ट्रीय निश्चितता और राष्ट्रीय स्वाधीनता स्थापित करें और इसके लिए यह आवश्यक है कि ब्रिटेन और भारत के बीच जो ऐतिहासिक अविश्वास चला आ रहा है उसे दूर किया जाय। यह ठीक है कि यह अविश्वास दूर होना चाहिए। परन्तु क्या मुंशी महाशय यह नहीं देखते कि भारत और ब्रिटन के बीच जो अविश्वास वे बता रहे हैं उससे भी कहीं अधिक पुराना अविश्वास स्वयं हिन्दुओं की विभिन्न जातियों और उपजातियों में मौजूद है? शूद्रों और अछूतों के साथ सहस्रों वर्षों से जो दुर्व्यवहार सवर्ण करते आए हैं उससे क्या परस्पर अविश्वास उत्पन्न नहीं हुआ? यदि हुआ है तो उसे दूर करने के लिए कांग्रेस ने क्या कुछ किया है? ब्राह्मण और ब्राह्मणेतर का झगड़ा, भूमिहार और कायस्थ का झगड़ा, बनिए और जाट का झगड़ा, सवर्ण और अवर्ण का झगड़ा, हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा अँगरेजों का उत्पन्न किया हुआ नहीं। यह उनसे भी बहुत पहले का है। हाँ, यह दबा हुआ अवश्य था। अब राजनीतिक जागर्त्ति के साथ जब जनता में आत्म सम्मान का भाव जाग्रत् हुआ है तो राख के नीचे छिपी हुई वह आग भी प्रज्वलित हो उठी है। अँगरेजों ने इसे उत्पन्न नहीं किया, उसका दुरुपयोग चाहे किया हो। गलियों में झाड़ू देते हुए या जूठे बर्तन साफ करते हुए अपने फोटो खिंचवाकर समाचारपत्रों में छपा देने से ही यह अविश्वास दूर न हो जाएगा। हमारे साम्प्रदायिक झगड़ों और पाकिस्तान की माँग का मूल कारण भी यह अविश्वास ही तो है। और यह तब तक दूर न होगा जब तक वर्णभेद को जड़ से नहीं काट दिया जाता। परन्तु जातिभेद को मिटाने के लिए आज कितने कांग्रेसी नेता या स्वतंत्रता के पुजारी कितने सवर्ण नवयुवक यत्न कर रहे हैं? जो नवयुवक अँगरेजों के विरुद्ध भाषण करके सहर्ष जेल जाने को तैयार रहते हैं वे विवाह करते समय जात-पाँत के संकीर्ण क्षेत्र के बाहर जाने का नाम सुनकर काँपने लगते हैं और कहते हैं कि विवाह हमारे बस की बात नहीं, वह तो हमारे माता-पिता के हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सन्देह होने लगता है। बात असल में यह है कि हमारे यहाँ राजनीतिक बातों में चार-छः मास की जेल ए या बी क्लास लेकर काट लेने से मनुष्य नेता बन जाता है। समाचारपत्रों में उसके चित्र छपने लगते हैं। उसके लिए असेम्बली का सदस्य वरन् कांग्रेसी सरकार में मन्त्री तक बनना सरल हो जाता है। सारा देश उसकी प्रशंसा के पुल बाँधते नहीं थकता। इसके विपरीत, जो व्यक्ति सामाजिक सुधार का काम करता है, जो जातिभेद को मिटाकर समाज को समता और बन्धुता के सूत्र में बाँधने का यत्न करता है, न तो उसका फोटो पत्रों में छपता है, न संसार उसकी प्रशंसा करता है, वरन् और तो दूर स्वयं उसके अपने आत्मीय जन भी आयुपर्यन्त उसे ताने देते रहते हैं। उसे जीवनपर्यन्त जीती चिता में जलना पड़ता है। वह अपना कर्त्तव्य पालन करता हुआ अन्त को प्रायः गुमनामी की दशा में ही संसार से चल देता है। परन्तु उसका वह काम ठोस होता है। वही किसी राष्ट्र को बनाता है। आज हमारे यहाँ सबसे बड़ा देशभक्त वह है जो अँगरेजों को कोसता है और सबसे बड़ा हिन्दू वह है जो मुसलमानों की निन्दा करता है। अँगरेजों और मुसलमानों के विरुद्ध हिन्दुओं को भड़काना बहुत आसान है। परन्तु हिन्दुओं को अपने दोषों को दूर करने—जात-पाँत और छूत-छात को छोड़ने—के लिए तैयार करना कठिन है। मुझे तो ऐसा लगता है कि हिन्दू गांधी जी के पीछे भी वहीं तक चलने को तैयार हैं जहाँ तक गांधी जी उनके अनुगामी हैं। अन्यथा गांधी जी के कहने से न तो वे जातिभेद को छोड़ने को तैयार हैं और न छूत-छात को।

अवस्था ऐसी हो गई है कि कांग्रेस के सामने अब कोई प्रोग्राम नहीं रह गया है। ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने उसके सब नाके बंद कर दिए हैं। उसकी सभी आशाओं पर पानी फेर दिया है। हारकर वह अब उन्हीं बातों को दुबारा करने लगी है, जिनको वह एक बार छोड़ चुकी थी। अदालतों, कालेजों और स्कूलों का बहिष्कार, असेम्बलियों का बहिष्कार, भाषा का प्रश्न, हिन्दू-मुस्लिम एकता, एक वर्ष में स्वराज्य-प्राप्ति—इनमें से किसी बात में इसे सफलता नहीं हुई और न हो सकती है। तकली चलाना और खादी पहनना भी आज केवल दूसरे साधनों से सहस्रों लाखों रुपए कमानेवाले धनी कांग्रेसियों का ही एक फैशन रह गया है। साधारण मनुष्य न तो दिन भर तकली चलाकर अपना पेट भर सकता है और न खादी पहनने की सामर्थ्य रखता है। सच्ची बात तो यह है कि जब तक विदेशी राज्य है, तब तक देश में किसी प्रकार का उद्योग-धन्धा पनप नहीं सकता। और अपना राज्य स्थापित करने के लिए पहले देशवासियों को एकता के सूत्र में बाँधना परम आवश्यक है। परन्तु हम लोग प्रेम और एकता के परम शत्रु जातिभेद को मिटाने को तैयार नहीं। केवल अँगरेजी में धुआँधार भाषण करके, लेख [illegible] और अपीलें करके ही स्वतन्त्रता प्राप्त

आवश्यकता है इस बात की कि हमारे नवयुवक नाम और [illegible] की लालसा छोड़कर अपना जीवन जातिभेद को [illegible] लगाएँ, जिससे देश में समता, एकता, बन्धुता और [illegible] की भावना जाग्रत् हो। फिर इस समता और एकता [illegible] पर ही स्वराज्य का विशाल भवन स्थापित हो सकेगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आत्म-सुधार का—अपने [illegible] को दूर करके अपने को स्वराज्य का पात्र बनाने का—[illegible] कठिन है। इसमें कोई लबे-चौड़े प्रदर्शन नहीं हो सकते [illegible] लोगों को भड़काया नहीं जा सकता। इस मार्ग पर [illegible] बहुत धीरे-धीरे होती है। फिर भी गन्तव्य स्थान पर पहुँ[illegible] ठीक मार्ग यही है। गलत रास्ते पर द्रुतगति से दौड़ते [illegible] सौ वर्ष में भी गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुँच सकते। [illegible] महात्मा टालस्टाय ने कहा है कि आप कितने कोस च[illegible] यह बात उतने महत्त्व की नहीं जितनी कि यह बात [illegible] किस दिशा में चल रहे हैं। कराँची की ओर मुँह करके [illegible] आप कभी कलकत्ता नहीं पहुँच सकते। इसलिए देश में [illegible] समता और बन्धुता उत्पन्न करने की दिशा में थोड़ी [illegible] व्यर्थ के प्रदर्शनों में जोर-शोर दिखाने से कहीं अधिक [illegible]

इस महायुद्ध ने एक बात और भी प्रमाणित [illegible] वह यह कि प्रजातंत्र शासन-पद्धति में चाहे कितनी [illegible] हों, फिर भी वह इस समय की सभी शासन-पद्धतियों [illegible] है। किसी एक डिक्टेटर या वर्ग का निरंकुश शा[illegible] जाति और राष्ट्र को उठाता नहीं, उसे गिराने का [illegible] होता है। क्या मैं आशा करूँ कि हमारे देश-बंधु संसा[illegible] महाभयंकर घटना से कुछ शिक्षा लेकर अपने को स्वरा[illegible] बनाने का सच्चा यत्न करेंगे?

——

महाकवि कालिदास और अश्वघो[illegible]

श्री काशीनाथ रा० तिलक

कवि-कुल-तिलक कालिदास कब उत्पन्न हुए? उ[illegible] भूमि कहाँ थी? उनके माता-पिता कौन थे? उनके [illegible] कितने व्यक्ति थे? उन्होंने किस प्रकार और कहाँ [illegible] उनका कहाँ विवाह हुआ और उससे कितनी सन्तानें हुई [illegible] किस राजा का आश्रय ग्रहण किया और उनका जीवन [illegible] इन प्रश्नों के हल करने का कोई साधन आज हमारे [illegible] उस प्रकार के सारे साधन महाकाल के उदर में समा [illegible] कवि ने अपने विषय में ऐसा मौन धारण किया है कि [illegible] ग्रन्थ में अपना नाम तक नहीं लिया।

भले ही हम उनके जीवन-चरित से वञ्चित रहें [illegible] ग्रन्थों ने हमारे हृदय पर अपना अधिकार कर [illegible] आज भारत में कौन-सा ऐसा संस्कृतज्ञ है कि [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके "अभिज्ञान-शाकुन्तल" को नाटकों में प्रथम दिया है। "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्यं शकुन्तलम्"— द्य संस्कृतज्ञ विद्वानों की जिह्वा पर नाचता है। इतना ही उनकी कीर्ति पर लगाकर सात समुद्र पार योरप, अमेरिका र में भी पहुँच गई। वहाँ के आलोचकों ने उनके ग्रन्थों को ी आलोचना की कसौटी पर कसा और उनको खरा पाया। भारत के गङ्गा या गोदावरी के तटों पर उनके ग्रन्थ जिस ह और प्रेम के साथ पढ़े जाते हैं उतने ही उत्साह और प्रेम थ उनके ग्रन्थ थेम्स और रायन नदी के तटों पर भी पढ़े जाते जर्मनी के सुप्रसिद्ध नाटककार, कवि और आलोचक गेटे ने 'शकुन्तला' को स्वर्ग और पृथ्वी का सन्धि-स्थान बतलाया किसी विद्वान् ने शिलालेख में उनका नाम उत्कीर्ण किया, ग्रन्थकार ने अपने ग्रन्थ में उनके वचन को उद्धृत किया, कवि ने उनके मेघदूत के प्रत्येक चरण को समस्या मानकर भ्युदय काव्य की रचना कर डाली और दक्षिण के किसी कवि ने अपने को कालिदास से श्रेष्ठ बतलाया। उनके ग्रन्थ ी उत्कृष्ट प्रतिभा-शक्ति के उदाहरण हैं; वे उनकी उर्वर ना-शक्ति के क्रीड़ा-स्थल हैं; वे प्रकृति देवी के दर्पण हैं; वे ार भावों के आकर हैं और वे हृदयस्थ भावों के द्वन्द्व-युद्ध चित्रपट हैं। उनकी भाषा प्रसाद गुणसंपन्न है और "उपमा ादास्य" वाली कहावत घर-घर सुनी जाती है।

कालिदास के समय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। ीय संवत् के पूर्व अनेक शताब्दियों से लेकर विक्रम के पश्चात् शताब्दी तक किसी समय में उनका होना विद्वज्जन मानते अपने-अपने कथन की पुष्टि में इन विद्वानों ने प्रबल युक्तियाँ थत की हैं। इस लेख का प्रकृत विषय अश्वघोष के साथ ादास की तुलना और तद्द्वारा उनके समय का निरूपण करना है। अश्वघोष बौद्ध कवि हैं। उन्होंने बुद्ध-चरित और सौन्दरानन्द क दो महाकाव्य संस्कृत में लिखे हैं।

पाश्चात्य विद्वानों ने उनको कनिष्क का समकालीन माना कनिष्क का समय विक्रम संवत् १३५ है। अश्वघोष के 'बुद्ध- को पढ़ने से ज्ञात होता है कि कालिदास के काव्यों के साथ काव्य का शब्दशः और अर्थशः विलक्षण साम्य है। यह होता है कि एक ने अन्य का अति-अनुकरण किया है। कभी दो कवियों में साम्य काकतालीय न्याय के अनुसार भी ाता है। यह बात एक-आध पद्य के विषय में तो घट सकती है, म्पूर्ण ग्रन्थ के विषय में नहीं। इतना विलक्षण साम्य तो तभी कता है—और वह भी अथ से इति तक—जब एक दूसरे कल करे। यदि इन दोनों में से एक कवि का काल ाद रूप से सिद्ध किया जा सकता है तो अन्य कवि के काल श्चित करने में अधिक सहायता मिलती है। यहाँ प्रथम इन कवियों के काव्यांशों की तुलना की जायगी और [illegible]

जाएगा। इसलिए दोनों कवियों के भाव एक दूसरे के सामने उपस्थित किए जाते हैं—

'बुद्ध-चरित' में शुद्धोदन कुमार सिद्धार्थ या बुद्ध अपने पिता के पुर में प्रथम बार प्रवेश कर रहे हैं—जब कि उन्होंने प्रथम बार वृद्ध पुरुष का दर्शन कर यह जाना कि बुढ़ापा का आक्रमण सबके ऊपर एक न एक दिन अवश्यम्भावी है—और उनको देखने के लिए नगर की नारियों की भीड़ खिड़की में आकर एकत्र होती है और कवि अश्वघोष उनकी चेष्टाओं का वर्णन करते हैं।

'रघुवंश' में रघु कुमार अज स्वयंवर-स्थान से अपनी वधू के साथ राजप्रासाद में जाने के लिए नगर में प्रवेश करते हैं और पुर की सुन्दरियाँ उनके दर्शनार्थ झरोखों पर आकर खड़ी होती हैं और कवि कालिदास उनकी चेष्टाओं के वर्णन का प्रयास करते हैं। दोनों कवियों के वर्णन में विलक्षण साम्य होते हुए भी दोनों के वर्णन में इतना वैषम्य है कि वह वैषम्य ही एक कवि को अन्य कवि से श्रेष्ठ सिद्ध करता है। अश्वघोष कहते हैं कि अपने सेवक जनों के द्वारा कुमार के आगमन का वृत्तान्त सुनकर नगर की नारियाँ उनको देखने की इच्छा से, घर के बड़े-बूढ़ों की अनुज्ञा प्राप्त कर, वातायन की ओर बढ़ीं। कवि कालिदास ने इतना ही कहा है कि अज अपनी वधू के साथ राजमार्ग पर आ पहुँचे और उनको देखने के लिए नारियाँ दौड़ पड़ीं। उन्होंने (नारियों ने) किससे कुमार के आने का समाचार सुना, इस विषय में वे मौन हैं। उनका मौन ही उन्हें प्रकृति के रहस्यों का ज्ञाता बता रहा है। अर्वाचीन काल में जब कभी किसी नगर में महात्मा गांधी का आगमन होता है तब उनके आने की सूचना कौन किसको देता है, इसका पता ही नहीं चलता है। प्रकृति स्वयं ही इसका ढिंढोरा पीटती है। समस्त वातावरण उनके आगमन की सूचना से गूँज उठता है। यह रहस्य सहृदय रसिक जनों से छिपा नहीं है। जिन पुरुषों ने प्रकृति के इस रहस्य का अनुभव कर लिया है वे कवि कालिदास को अवश्य ही दाद देंगे। मैं अपने इस कथन की पुष्टि में तुलसीदास के बालकाण्ड से निम्नलिखित चौपाइयों को उद्धृत करता हूँ :—

एक कहइ नृप सुत ते आली। सुने जे मुनि सँग आए काली।
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्हें स्ववश नगर नरनारी।
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू। अवशि देखिअहि देखन जोगू॥

जब कभी मुहल्ले में होकर किसी की बरात गुजरती है तब बाजों का शब्द सुनते ही घर की नारियाँ—बहुएँ-युवतियाँ—बिना सास या ननद के पूछे चट से उसको देखने के लिए दौड़ पड़ती हैं। वहाँ पूछने का अवकाश कौतूहल नहीं देता है और फिर भय यह है कि बरात के निकल जाने पर वर के दर्शन से वञ्चित रह जाना पड़ेगा। अतः कवि अश्वघोष के कथनानुसार घर के बड़े-बूढ़ों की अनुज्ञा प्राप्त कर देखने जाना यह मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरक जाने से उनकी गति में विघ्न पड़ जाता है। उनके नेत्र निद्रा के बाद खुलने से चञ्चल से हो रहे हैं। समाचार सुनकर उन्होंने अपने अङ्गों में अलङ्कार और के और ही ठौर धारण कर लिए हैं। प्रासाद के सोपानों पर चढ़ते समय उनके पैरों की धमक ने या काञ्ची और नूपुर के रव ने घर के पक्षियों को चौंका दिया या उड़ा दिया और वे खिड़की पर सबसे पहले पहुँच जाने की जल्दी में एक दूसरे को धक्का देती गईं। इनमें से कुछ सुन्दरियों की गति को उनके पीन पयोधरों और विशाल नितम्बों ने जकड़ दिया, यद्यपि वे दर्शनों की प्यासी थीं और उन्हें उसके लिए जल्दी भी पड़ी हुई थी। एक दूसरी ने, जो शीघ्र चलने में समर्थ भी थी, अपनी चाल को तेज करने के स्थान में उसमें रोक लगा दी और वह लज्जा के वशीभूत होकर अपने अलंकारों का निगूहन करने लगी, जिन्हें उसके पति ने एकान्त स्थान में धृष्टतापूर्वक उसको पहनाया था। जहाँ वातायन में एक क्षण पूर्व शान्ति का राज्य था, वहाँ अशान्ति ने आकर डेरा डाल दिया; क्योंकि एक दूसरे को ठेलने के कारण वे एक पिण्डवत् प्रतीत हो रही थीं। सम्मर्दन से उनके कुण्डल कपोलों पर हिल रहे थे और 'कंकण किंकिणि नूपुर की ध्वनि' अशान्ति को और भी बढ़ा रही थी।"

जहाँ कालिदास ने एक घटना के वर्णन में एक श्लोक खर्च किया है वहाँ अश्वघोष ने एक श्लोक में तीन घटनाओं का समावेश कर दिया है। जब काञ्ची के सरक जाने से उनकी गति में विघ्न पड़ जाने की बात पढ़कर पाठक यह आशा करता है कि आगे कैसे उन्होंने उस विघ्न को धर दबाया, कि इस घटना से असम्बद्ध एक अन्य घटना का चित्र उसके सामने आता है। एक घटना का पूर्ण चित्र देखने की उसकी अभिलाषा अपूर्ण ही रह जाती है। 'उनके नेत्र निद्रा और जागर्ति के मध्य की दशा का अनुभव कर रहे हैं,' इस पर उसका ध्यान जमने भी नहीं पाता है कि 'कुमार के आगमन के वृत्त को सुनकर वे गहनों को और के और ठौर धारण कर लेती हैं,' यह कवि-कथन उसका ध्यान भंग कर देता है। सार यह है कि तीनों ही चित्र अपूर्ण और अतृप्तिकारक हैं।

जहाँ कालिदास ने नारियों की अन्धकार्यशून्य चेष्टाओं का वर्णन किया है वहाँ अश्वघोष ने कहा है कि वे खिड़की पर सबसे पहले पहुँच जाने की जल्दी में एक दूसरे को धक्का देती गईं। धक्का देने की उनके मन की प्रवृत्ति यह सूचित करती है कि उनके मन में कुमार को देखने की उत्सुकता का पूर्ण राज्य न था। दूसरे कवि का ध्यान कांची-स्वन से गृह-पक्षियों के चौंकने की ओर भी है। नारियों की चेष्टाओं के वर्णन में उसकी वृत्ति तदाकार नहीं है।

जिस नारी ने चलने में समर्थ होने पर भी अपनी गति में एक-दम रोक-थाम कर दी और जो लज्जा से अपने पति के द्वारा एकांत में प्रदत्त विशेष अलंकारों का [illegible]

'परस्पर उत्पीडन से एक पिण्ड के तुल्य प्रतीत हो[illegible] नारियों के हिलते कुण्डल और कांची, नूपुर आदि की [illegible] वातायन में अशान्ति उत्पन्न कर रही थी।' कवि के इस से यह व्यक्त होता है कि जब कुमारगत चित्तवृत्ति रखने नारियों को इस अशान्ति का पता नहीं, तब कवि का यह गौण है और नारियों के चित्त से उसकी वृत्ति तदाकार है। अश्वघोष का यह वर्णन उस कवि के समान है जो राज के दर्शनार्थ जानेवाली नारियों के परस्पर वाग्युद्ध या धक्का इत्यादि बातों पर अपने विचार प्रकट करता है। इन नारियों न राम-दर्शन की उत्सुकता है, न रामचरित के श्रवण की उत्कट लालसा है। उनका लक्ष्य तो सबसे पीछे आकर भी आगे बैठना है। इस कवि को कोई दोष नहीं दे सकता कि वह नारियों को 'सोत्सुक' नहीं बतलाता है। यदि वह भी नारियों को 'सोत्सुक' न बतलाते तो उन पर यह दोष-कवि की-सी दृष्टि न रखने का दोष—घटित न हो सकता। कि वे कालिदास का अनुकरण करने चले, पर उनकी ने मार्ग में ही उनका साथ छोड़ दिया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अश्वघोष की दृष्टि न तीक्ष्ण न सच्ची। वे अपने चित्र की बाह्य रूप-रेखा को बताने में न हुए, फिर उसमें रंग भरकर चमकाने की बात तो दूर

इसके विरुद्ध कालिदास की बाह्य रूप-रेखा न केव है, उसमें जहाँ जितना रंग चाहिए, उतना ही भरा अधिक गहरा और न फीका। उनकी तूलिका चित्रप सफाई से फिरी है कि उसने सजीव चित्र बनाकर पाठकों उपस्थित कर दिया है। उनका वर्णन देखिए "कोई नार जूड़ा बाँध रही थी। अज के आने का समाचार सु सहसा आलोक मार्ग की ओर चल पड़ी। वह एक हाथ केश-पाश को थामे हुए थी, जिसमें से एक-एक करके फूल गिरते जाते थे। उसे उसके बाँधने तक की फ़ुरसत नहीं

"एक दूसरी नाइन के द्वारा पैरों में महावर लगवा नाइन के एक हाथ में उसके पैर का अग्रभाग था। दम झटका देकर उसके हाथ से अपना पैर छुड़ा लिया। गति छोड़कर वह गवाक्ष तक जो दौड़ गई तो वहाँ तक से आर्द्र महावर मार्ग में टपकता गया। एक तीस नयनों में सुरमा लगा रही थी। दक्षिण नेत्र में उसने लिया था, और वह वाम नेत्र में अंजन लगानेवाली इतने में अज के आने का समाचार उसके कानों में पड़ा। की तैसी हाथ में सलाई लिए हुए वातायन के पास पहुँ

"एक नारी सूत्र में मणियाँ पिरो रही थी। उसका पैर के अँगूठे में बँधा था। उसने उसे आधा ही [illegible] या कि इतने में वह अज को देखने के लिए शीघ्रता से [illegible] गई। डोरी टूट गई और प्रत्येक पद पर मणियाँ पृथ्वी पर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारियों के गवाक्ष तक पहुँचने की वर्णन दोनों कवियों ऊपर दिया गया है। अब उनके वहाँ पहुँचने पर वातायन की शोभा हुई, उसका चित्र—दोनों कवियों का—नीचे दिया है—

"वातायन से निकले हुए नारियों के मुख-पंकज, जिनके कुण्डल दूसरे को छू रहे थे, इस प्रकार शोभा दे रहे थे मानो हर्म्य में उन्होंने फिर २१वें पद्य में दुहराया है। उसमें कवि कोई नवता उत्पन्न नहीं कर सका है। कालिदास की प्रतिभा यहाँ बाजी मार ले गई है। कमल का सांगोपांग रूप उपस्थित करते वे कहते हैं—

"गवाक्षों का अन्तर—मध्यभाग—उनके मुखों से व्याप्त हो गया उनमें मुख ही मुख दिखाई पड़ रहे थे। उनके मुखों से आसव गन्ध निकल रही थी और उनके नेत्र भ्रमर के समान चंचल इसलिए उनके मुखों को देखकर यह मालूम होता था कि क्षों में मानो सहस्र दल खिल रहे हैं।"

उपर्युक्त वर्णन को पढ़कर कौन ऐसा सहृदय पुरुष होगा। के मुख से सहसा यह न निकल पड़े कि "इसका नाम वर्णन यह है पूर्ण चित्र।"

कुछ विद्वानों का कहना है कि कालिदास ने अश्वघोष के अधूरे चित्र को अपनी प्रतिभा की तूलिका से पूर्ण चित्र में ित कर दिया है।

इसके अनन्तर दोनों कवियों ने नारियों के कुमार के र करने पर उनकी जो दशा हुई, उसका वर्णन किया अश्वघोष कहते हैं कि कुमार को मार्ग में देखनेवाली स्त्रियाँ पृथ्वी पर चलने की इच्छुक हैं और ऊर्ध्वमुख से इसको नेवाले पुरुष मानो आकाश में जाने के इच्छुक हैं। पर कालि- कहते हैं कि जब नारियाँ अज को अपने नयनपुट से पान कर थीं तब उनको अन्य विषयों की सुध या ज्ञान न रहा; क्योंकि की शेष इन्द्रियों की वृत्तियाँ पूर्ण रूप से मानों चक्षु में प्रवेश गई थीं। दोनों के वर्णन में जमीन-आसमान का अन्तर है सहृदय जनों से अविदित नहीं है। दर्शन के अनन्तर नारियों ख से जो उद्गार निकले हैं वे अपने-अपने प्रकरण के अनुसार क्त हैं। उनके विषय में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता न नहीं होती। पर राज्यलक्ष्मी को त्यागकर वह (कुमार) धर्म हरण करेगा यह नारियों का कथन कुछ अटपटा और असा- क प्रतीत होता है। अभी तो कुमार के मनरूपी क्षेत्र में य का हल ही नहीं फिरा है।

अब यह प्रश्न उठता है—विद्वानों ने इसे उठाया भी है—कि दोनों कवियों में विलक्षण साम्य—शब्दशः और अर्थशः— मान है तब अश्वघोष या कालिदास ने एक दूसरे की अवश्य ही हुए हैं उनकी दृष्टि में कालिदास ने अश्वघोष के भाव-कुसुमों को चुनकर सुन्दर स्तवक तैयार किया है। पर यह बात मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध है। अनुकरण श्रेष्ठ का ही किया जाता है। आज तक किसी ने भी अपने से हीन जन को अपना आदर्श नहीं बनाया है। आदर्श सदा ऊँचा रहा है और रहेगा। ब्रह्म-तेज की श्रेष्ठता सिद्ध होने पर विश्वामित्र ने वशिष्ठ के समान ब्राह्मण बनना चाहा। बिहारी ने शालिवाहन, गोवर्द्धनाचार्य और अमरुक को अपनी सतसई के निर्माण में प्रमाण माना; क्योंकि इन कवियों का नाम शृङ्गाररस की रचना में सर्वमान्य हो रहा था। स्वयं कालिदास ने 'प्रथित यशस्वी' भास, सौमिल्ल और कविपुत्र को नाट्य-रचना में अनुकरणीय समझा। भास के नाटकचक्र कालिदास के 'प्रथितयशसां' विशेषण का समर्थन कर रहे हैं। पर अश्वघोष के काव्यों को किसी विद्वान् ने—भारत या योरप के—भी उत्तम नहीं बताया है। फिर इतने पर भी अश्वघोष को कालिदास का आदर्श बताना उन विद्वानों का दुराग्रह-मात्र है।

इन उद्धरणों से यह सिद्ध हो जाता है कि कालिदास अश्व-घोष के पूर्ववर्त्ती थे और वे विक्रम से पूर्व किसी शताब्दी में हुए होंगे।

भास कवि कालिदास के पूर्ववर्ती हैं। भास के 'स्वप्न-वासवदत्ता" नाटक के एक श्लोक को आर्य चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र में उद्धृत किया है। चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सम-कालीन थे। चन्द्रगुप्त का समय विक्रम से पूर्व ३७७ है। अतः भास चाणक्य के पूर्ववर्ती हैं और तब कालिदास भास से लगभग १०० वर्ष या १२५ वर्ष पश्चात् हुए हों, यह संभव है। गणपति शास्त्री के सिद्ध किए हुए इस काल को—भास के काल को—कुछ विद्वान् असन्दिग्ध नहीं मानते हैं, पर उनके कथन का निरा-करण यह कहकर किया जा सकता है कि जब आज तक उक्त श्लोक 'स्वप्नवासवदत्ता' नाटक के अतिरिक्त अन्य किसी कवि के काव्य में नहीं मिला है और आगे चलकर जब तक वह किसी कवि का सिद्ध न हो जाय, और वह कवि भी भास का पूर्ववर्ती है यह न सिद्ध हो जाय, तब तक भास को चाणक्य का पूर्ववर्ती मानना ही अधिक युक्तियुक्त प्रतीत होता है।

यदि यह कहा जाय कि जब अश्वघोष अपने पूर्ववर्ती कालि-दास के सुन्दर चित्र के अपने नेत्रों के सम्मुख उपस्थित होते हुए भी तद्वत् चित्र बनाने में कृतकृत्य नहीं हुए तब तो यही कहना समुचित प्रतीत होता है कि कालिदास ने ही अपने पूर्ववर्ती अश्व-घोष के भद्दे चित्र को सुन्दर रूप में सजा दिया है और इस वृत्त से विक्रम के पश्चात् उनका समय आता है। तो इसके उत्तर में यह निवेदन है कि कोई कवि या लेखक अपने से पूर्ववर्ती कवि के ही भावों को लेकर काव्य-रचना करता है, अथवा उस कवि के भावों में या वर्णन में उसे कोई त्रुटि प्रतीत हुई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि भी अपने पूर्ववर्ती कवि के सुन्दर चित्र को सजाने के स्थान में बिगाड़ बैठते हैं। इस बात के उदाहरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवि बिहारी हैं, जिनकी नकल करनेवाले परवर्त्ती कवियों ने मुँह की खाई है।

उपरिलिखित दोनों कवियों के काव्यांशों की तुलना से यह सिद्ध हो गया है कि कालिदास का पलड़ा भारी है और सब विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि कालिदास भारत के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। अनुकरण पूर्ववर्ती और विख्यात कवि का ही किया जाता है। यह मनुष्य का स्वभाव है। इसलिए मनुष्य-स्वभाव की अवज्ञा किए बिना अश्वघोष कालिदास के पूर्ववर्ती सिद्ध नहीं किए जा सकते हैं। अतः जब अश्वघोष का समय विक्रम संवत् १३५ निश्चित है तब कालिदास का समय स्वतः विक्रम के पूर्व पहुँच जाता है। कितना पूर्व, यह अनुमान के अतिरिक्त निश्चयपूर्वक कह सकना सम्भव नहीं है।

——

हिन्दी और फारसी

श्री रविशंकर शुक्ल

हिन्दी के कुछ विद्वानों का मत है कि राष्ट्र-भाषा के हेतु हिन्दी में संस्कृत और फारसी का सुन्दर समन्वय हो सकता है और इस प्रकार एक आदर्श राष्ट्र-भाषा का निर्माण होगा। हिन्दी के कुछ अन्य समर्थक यह कहते हैं कि यदि हमें विदेशी भाषाओं का सहारा लेना पड़े तो हम फारसी की सहायता लें। दोनों प्रकार के विचारों के व्यक्ति युक्ति यह देते हैं कि फारसी आर्य-भाषा है और हमें उससे द्वेष नहीं करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय हैं। प्रथम तो यह कि अकेली फारसी ही आर्य-भाषा नहीं है। अँगरेजी, ग्रीक, लैटिन, जर्मन इत्यादि भी आर्य-भाषाएँ हैं, इनको क्यों छोड़ दिया जाता है? उत्तर में शायद यह कहा जाएगा कि फारसी का संस्कृत से अन्य आर्य-भाषाओं की अपेक्षा वंशसामीप्य बहुत अधिक है। यह बात ठीक है, लेकिन न तो आज की फारसी 'जेन्दावेस्ता' की फारसी है और न भाषाएँ अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते समय वंश-वृक्ष का ख्याल रखती हैं। भाषाएँ उन विदेशी भाषाओं के शब्द ग्रहण कर लेती हैं जिनके सम्पर्क में वे राजनीतिक अथवा अन्य कारणों से आती हैं। हिन्दी में इसी कारण सैकड़ों अरबी के शब्द मौजूद हैं जिन्हें नहीं निकाला जा सकता और न निकालना चाहिए। अँगरेजी, ग्रीक, लैटिन आदि वंश के लिहाज से फारसी की अपेक्षा जरूर दूर हैं लेकिन पिछले दो सौ वर्षों में कम से कम अँगरेजी हमारे बहुत निकट आ गई है। हम फारसी की अपेक्षा अँगरेजी से कहीं अधिक परिचित हो गए हैं; वह फारसी की अपेक्षा कहीं अधिक प्रचलित है; आज देश में जो अँगरेजी का प्रभुत्व है वह फारसी का कभी नहीं था। हिन्दी पर आज तक अँगरेजी का इतना प्रभाव पड़ चुका है जितना

शब्द घुस आए हैं जितने फारसी के कभी नहीं घुसे। शिक्षितों की बोल-चाल की भाषा में (अशिक्षितों की भा बात करना बेकार है क्योंकि उसमें कुछ भी नहीं है) अँग इतने अधिक शब्द आते हैं कि इतने फारसी के शब्द, हिं कौन कहे, आज तक की बोल-चाल की उर्दू में भी नहीं और अँगरेजी के मेल से 'बाबू हिन्दुस्तानी' बनकर ऐसी हो गई है जितनी उर्दू कभी नहीं हुई। इन सब बातों के अँगरेजी की अपेक्षा फारसी का वंश-सामीप्य रत्ती भर नहीं रखता। यह स्पष्ट है कि भविष्य में भी हिन्दी फा अपेक्षा अँगरेजी के सम्पर्क में कहीं अधिक आएगी और या न चाहें, सैकड़ों अँगरेजी के शब्द हमारी भाषा में घु आएँगे। ऐसी अवस्था में वंश-सामीप्य के आधार पर भाषाओं की सूची में अँगरेजी की अपेक्षा फारसी को महत्त्व देना अस्वाभाविक है और भाषा की स्वाभाविक बाधक होगा। अँगरेजी शब्दों में और कई ऐसे गुण हैं सामने फारसी का वंश-सामीप्यवाला गुण बिलकुल तुच्छ अँगरेजी से शिक्षित समुदाय फारसी की अपेक्षा कहीं परिचित है और उसे अँगरेजी के शब्द फारसी के श अपेक्षा कहीं अधिक सरल प्रतीत होंगे। इतना ही न शब्दों को वह आज भी अपनी अपनी मातृ-भाषाओं प्रकार प्रयुक्त करता है जिस प्रकार हिन्दीवाले 'बाबू हिन्द में। जब हम अरबी के प्रचलित शब्दों को रखने के लि हैं तब अँगरेजी के शब्दों को, जो आज भी प्रचलित हैं समुदाय में ही सही), छोड़कर नितान्त नए फारसी क्यों ढूँढ़ ढूँढ़कर लाएँ? अँगरेजी के शब्द सम्पूर्ण एक समान प्रचलित हैं, इसलिए राष्ट्र-भाषा में इनके और भी सुविधा होगी। सम्भवतः वही अँगरेजी के श प्रान्तीय भाषाओं को भी लेने पड़ेंगे और इसलिए ये शब्द भाषा और प्रान्तीय भाषाओं में संस्कृत शब्दों की अतिरिक्त बन्धन का काम करेंगे। यह बात फारसी के होगी। अँगरेजी के शब्द सब धर्मावलम्बियों को भी मान्य होंगे। फिर अँगरेजी अन्ताराष्ट्रीय भाषा है और अँगरेजी के शब्द लेने से हम सभ्य संसार के अधिक और हमें सुविधा भी अधिक होगी। आधुनिक विज्ञान, और कला का अँगरेजी खजाना है, फारसी नहीं। हमें से बहुत कुछ लेना है। सभी प्रान्तीय भाषाओं को यह सदा नियम रहा है कि जिस भाषा या जिस देश चीज सीखी जाती है उसी का शब्द भी ग्रहण किया योरपीय देशों और अँगरेजी के मुकाबले में हमें फा फारसी से क्या सीखना है? फिर फारसी का संस्कृत सामीप्य है, हिन्दी से नहीं। हम फारसी और संस्कृत के कर रहे नहीं जा रहे हैं। हिन्दी का वंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओं के सम्पर्क में भी हिन्दी फारसी, अँगरेजी आदि अपेक्षा कहीं अधिक आएगी। इसलिए सबसे पहले हिन्दी इन भाषाओं के साथ समन्वय क्यों नहीं होना चाहिए? फिर सामीप्य के विचार से पहले अपभ्रंश का नम्बर आता है, फिर ...त का और फिर संस्कृत का। बेचारी फारसी तो बहुत पीछे इन सब बातों के होते हुए जब यह कहा जाता है कि हिन्दी फारसी और संस्कृत का एक सुन्दर समन्वय किया जा सकता या विदेशी भाषाओं में फारसी को महत्त्व दिया जाता है, तो में सन्देह करने की कोई गुञ्जाइश नहीं रहती कि यह भारतीय ...लमानों को, जो कल तक हिन्दू थे लेकिन आज अपने आप फारस और अरब की सभ्यता का उत्तराधिकारी मानते हैं, तौर से नहीं तो थोड़ा-बहुत खुश करने के लिए कहा जाता 'फारसी आर्य-भाषा है' आदि बातें केवल लोगों को भुलावे डालने के लिए कही जाती हैं, असली कारण घोर साम्प्रदायिक ...बना है। हमें इसका जमकर विरोध करना चाहिए। फारस ...र तुर्की के मुसलमानों की मिसालें हमारे सामने हैं। हम ...ट्र-भाषा के लिए राष्ट्रीयता के धरातल को किसी हालत में छोड़ सकते। आवश्यकता पड़ने पर हम सबसे पहले भारत प्रान्तीय भाषाओं, आर्य अथवा अनार्य, से शब्द लेंगे, फिर ...कृत और संस्कृत का खजाना टटोलेंगे और फिर भी यदि काम चला तो विदेशी भाषाओं में अँगरेजी को फारसी से अधिक ...ों तो कम-से-कम फारसी के बराबर महत्त्व देंगे।

इस सम्बन्ध में दूसरी विचारणीय बात यह है कि समन्वय ...खिर होगा किस प्रकार? क्या भाषा में भी साम्प्रदायिक प्रति-...धित्व का सिद्धान्त घुसेड़ा जाएगा और एक मेज के चारों ओर ...कर हिन्दू और मुसलमान विद्वान् निर्णय करेंगे कि कौन-सा ...द संस्कृत का लिया जाए और कौन-सा फारसी का? क्या ऐसा ...ना कभी संभव है? यहाँ यह बताना आवश्यक है कि ऊपर ...न्वय के जो अर्थ लगाए गए हैं और जो सिद्धान्त निर्धारित किए ...ए हैं, वे केवल नए आवश्यक शब्दों के संबंध में हैं। अर्थात् ...न्दी का कोई प्रचलित शब्द किसी हालत में नहीं निकाला सकता और न उसके स्थान पर विदेशी शब्द प्रतिष्ठित किया सकता है। यदि समन्वयवादी समन्वय का अर्थ यह लगाते जबरदस्ती हिन्दी में से आधे या किसी और अनुपात में संस्कृत शब्द निकालकर उनकी जगह फारसी के या किसी और भाषा शब्द रक्खे जाएँ और राजनीतिक संस्थाओं की तरह भारत राष्ट्र-भाषा में भी हिन्दुओं और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व ...खा जाए और उनका अनुपात निश्चित किया जाए तो हमें ...नकी बुद्धि पर तरस आएगा। इस हालत में अच्छा होगा यदि राष्ट्र-भाषा का स्वप्न देखना ही छोड़ दें।

यह भी स्पष्ट है कि सच्चे अर्थों में समन्वय हिन्दी के ...कास से सम्बन्ध रखता है, उसकी छीछालेदार से नहीं, अर्थात् हिन्दी को अपनी स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार विकसित होने दिया जाए, आज की जो हिन्दी है उसको राष्ट्र-भाषा मानकर कार्य आरम्भ किया जाए। राष्ट्र-भाषा के विचार से हिन्दी में जो त्रुटियाँ हैं वे अपने आप दूर होती चली जाएँगी और हिन्दी अपने आप प्रान्तीय भाषाओं, संस्कृत, अँगरेजी, फारसी इत्यादि से आवश्याकतानुसार शब्द ग्रहण करती चली जाएगी। यह समन्वय इत्यादि का नारा ही क्यों लगाया जाता है? ये शर्तें रक्खी ही क्यों जाती हैं कि हिन्दी में इसका समन्वय हो, उसका समन्वय हो, तब वह राष्ट्र-भाषा मानी जाएगी? फारसी का सवाल उठता ही क्यों है? हमारे पास यह मानने के यथेष्ट कारण हैं कि समन्वयवादियों का समन्वय से यही अभिप्राय है कि हिन्दी का अंग-भंग किया जाए और भाषा के डाक्टर एक मेज के चारों ओर बैठकर हिन्दी की काँट-छाँट करें और उसे 'आदर्श-राष्ट्र-भाषा' बनाने के लिए उसमें फारसी, अरबी, उर्दू आदि की कलमें लगाएँ। वास्तव में समन्वयवादियों में और हिन्दुस्तानी-वालों में कोई अन्तर नहीं है। एक नाक सामने से पकड़ता है और दूसरा पीछे से। दोनों की बातों का निचोड़ यह है कि हिन्दी में संस्कृत के शब्द कम किए जाएँ और उनकी जगह अरबी-फारसी के शब्द भरे जाएँ जिससे मुसलमान खुश हो जाएँ और राष्ट्र-भाषा को स्वीकार कर लें; इससे ४/५ भारत को कठिनाई क्यों न पड़े। वे इसी को सच्ची राष्ट्रीयता समझते हैं। ऐसा न कहीं हुआ है, न यहाँ हो सकता है और न इस प्रकार 'आदर्श राष्ट्र-भाषा' या किसी भाषा का निर्माण हो सकता है। यदि इस प्रकार आदर्श भाषाएँ या लिपियाँ बन सकती होतीं तो संसार में आज एक से एक बढ़कर सुन्दर भाषाएँ और लिपियाँ होतीं और उर्दू जैसी अवैज्ञानिक भाषा नष्ट हो गई होती। आदर्श भाषा वही है जो जीवन के साथ चलकर अपने आप बने। भारत की आदर्श राष्ट्र-भाषा भी कृत्रिम उपायों से हिन्दी-उर्दू को मिलाने से या संस्कृत और फारसी को मिलाने से नहीं हिन्दी को स्वाभाविक विकास करने का अवसर देने से बनेगी। हम तथाकथित राष्ट्र-वादियों को सचेत किए देते हैं कि यदि उन्होंने राष्ट्र-भाषा को साम्प्रदायिकता या झूठे समन्वय-वाद का अखाड़ा बनाया तो राष्ट्र-भाषा बनना तो दूर, स्वतंत्रता के रास्ते में एक और बाधा खड़ी हो जाएगी। या तो वे सच्ची और सीधी बात कहने और करने का साहस करें या वे राष्ट्र-भाषा के प्रश्न को बिलकुल छोड़ दें। समय अपने आप हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बना देगा। यह स्वप्न देखना बिलकुल बेकार है कि जो हिन्दी सदियों तक कुचली जाने पर और उर्दू का अखण्ड साम्राज्य होने पर भी जीवित रही और जिसने अपनी आत्मा को आज तक कलुषित नहीं होने दिया, वह कल या अगले दस-बीस वर्षों में उर्दू से, जो भी पुष्ट हो चुकी है और हैदराबाद, पंजाब आदि विशाल क्षेत्रों में निष्कण्टक राज्य कर रही है और करती रहेगी, मिलकर एक हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

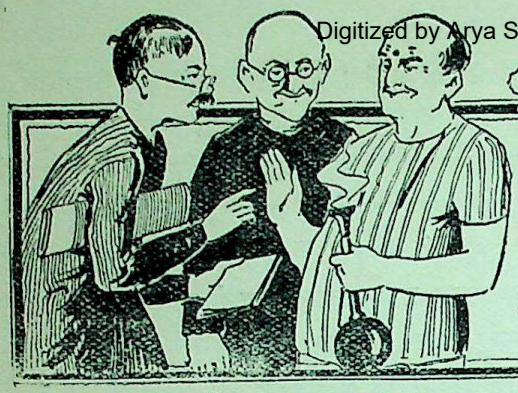

विविध विषय

मँगतू स्वराजी

चार-छः माह में एक बार हुजूर कमिश्नर साहब दलबल-हित पधारा करते थे। न मालूम क्यों वे आते थे। पर कहा यही जाता था कि 'निसपेक्सन' के लिए आते हैं। कमिश्नर साहब का 'निसपेक्सन' कैदियों की मौत थी। स्वराजी और उनमें भी आगे बढ़े हुए अथवा 'सी' से ऊपरवाले ही अपनी शिकायत उनके सामने रखने की हिम्मत करते थे। कभी-कभी तो ये भी ऊबकर इस निर्णय पर पहुँच जाते कि सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं; कोई सुनवाई होती नहीं; व्यर्थ आजिजी करनी होती है; शब्द खराब होते हैं। और कोई शिकायत न करता।

जेलवालों की छाती फूल जाती। क्या ही 'हाईक्लास' व्यवस्था है। बढ़िया 'डिसिप्लिन' है। लोगों के निर्णय का उलटा ही परिणाम होता। ऐसे ही एक समय हुजूर का 'इन्सपेक्शन राउंड' था। दो रोज पहले से ही कैदियों को कपड़े साफ रखने का हुक्म हो गया। सड़कों पर रोलर चलाए गए। शानदार छिड़काव हो गया।

अफसरगण अच्छी इस्तिरी किया हुआ ड्रेस पहन नियत दिन हाजिर हो गए। ऐसे अवसरों पर जिस किसी कैदी के कपड़े फटे हों उसे ज्यादा कर टट्टी के पीछे भेज दिया जाता था, जिससे वह सामने न पड़ जाय। और इन्सपेक्शन करनेवाले बड़े लोग भूलकर भी अपनी इच्छा से यहाँ-वहाँ जाकर हर चीज देखने की, पूछ-ताछ करने की, तकलीफ न करते थे।

आन्दोलन कही गई उत्तेजना में लोगों से जेलें भर दी गई थीं। ऐसे अवसरों पर 'डिसिप्लिन' जरा कम ही सध पाता है। 'जनरल डिसिप्लिन' खराब न हो जाय, इस डर से ऐसी सब 'आमद' एक बैरक में, एक साथ रख दी जाती है। हम कांग्रेसी इसे वरदान समझते हैं। क्रिमिनलों के साथ रहने में हम बड़ा कष्ट अनुभव करते हैं।

छोटे-बड़े सभी तरह के लोग चले आए थे। एक छोटी संख्या करीब-करीब बेघर-बारवालों की भी थी। उनमें से एक केवल लँगोटी लगाए बैठा चोंगी पी रहा था। राउंड इसी बैठक का था। जेल अफसर स्वराजियों के व्यवहार से अत्यधिक अप्रसन्न थे। 'एक' 'दो' पर खड़े होकर नीची नजर कर हिस्ट्री टिकट बतलाने की आदत इन स्वराजियों की न हो पाई थी। यही सबसे बुरी [illegible] न जाने क्या कहें।

एकाएक साहब की नजर उस लँगोटिया पर पड़ गई जो चोंगी बुझाकर सिरहाने रखने की तजवीज कर रहा था। इशारे से उ बुलवाया; पूछा—'क्या नाम है तुम्हारा ?' 'मँगतू'—हड़क नजदीक आए हुए स्वराजी कैदी ने कहा।

'बाहर क्या करते हो ?'

दोनों हाथ जोड़े हुए स्वराजी ने कहा—'हुजूर नपैया हूँ

'निकालो साले को। गांधी का सत्याग्रह क्या छिड़, गये गैरे नत्थू-खैरे सभी जेल चले आए। बाहर सालों को एक रोटी नहीं मिलती; जेल चले आए चैन की वंशी बजाने। निक अभी बाहर करो।'

स्वराजी नपैया विक्षुब्ध-सा एकटक देखता रहा, जमीन को, कभी आई हुई सेना को! दूसरे साथी आँखें म लगे। गरीबी पर गालियाँ पड़ रही थीं। लौटकर स्वरा कहा—'मालिक, होगा क्या निकालने से। कल फिर तुम्हें होगा। स्वराज की लड़ाई तो बन्द हुई नहीं।' दो कैदियों के नम्बरदार ने उसे बाहर कर दिया। अपना कंबल झाड़ता वह चलता बना। साहब लौट गए!

मैंने साथी से कहा—'तो क्या सचमुच ऐसे लोग अन्द लाए जाएँगे ? क्या ही अच्छा होता यदि ऐसे ही लोगों की होती और ऐसे ही लोग स्वतन्त्रता के सैनिक होते!' बात न कर पाया था कि झल्लाकर साथी ने कहा—'कांग्रेस है कि यदि ऐसों की नहीं है तो ?'

मैं उन्हें देखता रहा। फिर मैंने कहना शुरू किया—'अ कर लेने से तो बुराई अच्छी नहीं हो जाती। सैनिक ऐसे नहीं हैं। वह दूसरी ही बात है कि ऐसे ही लोगों को हमारी सेना है; हमारी लड़ाई है।' यही मैं उन्हें समझा रहा काना-फूसी शुरू हो गई। मुश्किल से कोई दो घंटे बीते होंगे पेक्सन को! नम्बरदार ने 'आमद' लिखी है', आफिस से ने बतलाया। कोई स्वराजी आया है। प्रतीक्षा में मुश्किल कटने लगा। उचक-उचककर हम हर आनेवाले को देखते अब साथी आया—अब आया! आया वह अवश्य; सब स्वयं खुल-खुलकर हँसे जब देखा कि वह और मँगतू ही है!

काश! एक बार और कमिश्नर का राउंड हो जा

—भारतचन्द्र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ले न सकी !

मैं ले न सकी उपहार,
प्यार मैं ले न सकी !

सुमन अंक में भर-भर सुषमा
प्रकृति सहज लाई समीप।
झपकाती आँखें मदमाती
रजनी लाई ज्योति-द्वीप;
उठा मुझमें शंका का ज्वार;
मैं दूर हटी !
मैं ले न सकी !

अरमानों में प्रभा मिलाता
विहग-राग से सरव गगन।
दुलराता-सा, जलद-पटों में
सजता जब आया सावन;
क्षितिज में था मेरा संसार;
मैं छली गई !
मैं ले न सकी !

तरु-शिखरों से कूद छाँह में
खिला धरा पर अमित हास।
आँख-मिचौनी-सा, छिपता-सा
कोई आ जाता सकाश;
सहमती मैं कुछ सोच-विचार;
मैं भूल चली !
मैं ले न सकी !

मनुहारों से सजी आरती
परिचित, वह गुदगुदा हर्ष
हृदय मधुरिमा में सुन्दर-सा
कोई करता परामर्श;
विकल मैं करती स्नेह-सँभार।
मैं शीर्ण हुई !
मैं ले न सकी!

रिक्त-कोष में कहाँ, मधुप रे !
करने आया मधु-विहार ?
तृषा बढ़ेगी, व्यथा मिलेगी
क्रूर !...अरे !...यह क्या दुलार ?
झुलस जाता वह रूप निखार।
मैं शून्य बनी !
मैं ले न सकी !
मैं ले न सकी उपहार, प्यार
मैं ले न सकी !

—सुश्री कुसुमलता

लघु-परिचय

तुम.....मेरा तुमसे परिचय कब हुआ, जब जीवन में कुछ न था। अमल और भोला जीवन तुम्हारे पास रहने का आभास तक न पा सका और अकस्मात् जब बढ़ती हुई लहरें तुम्हारे स्पर्श से रोमांचित हुईं, मैं सिहर उठी—जाने इस सागर में कौन छिपा है। मुड़ते हुए मैंने तुममें उत्साह की झलक पाई। मैं कुछ न कह सकी। चंचल लहरें आगे बढ़तीं, पर तुमसे शरमाकर झिझकी-सी पीछे लौटतीं। तुम मुझे छेड़ते। मधुर कल-कल संकोच से सिमट जाता। मैं सकुची-सी तुम्हें देखती। मनहर के दर्शन को मैं चल पड़ती। मन मग्न हो चुका था। बल खाती लहरें तुम्हें वृक्षों के झुरमुट में निहारने लगतीं। खिल-खिलकर वे नाच उठतीं। मधुर-से नृत्य में कितना उल्लास छिपा रहता ? तुम पार थे। मैंने तुम्हें देखा था। कितने मधुर थे तुम। तुम्हें पाकर अब और पाने को क्या रह गया था ! मैं सौभाग्य पर फूली मग्न थी। भला, तुम इतने मधुर कैसे बन चले थे। नन्हीं-सी नीहारिकाएँ मुझे अपलक देखती रहतीं। पर, मुझे अवकाश कहाँ था ! रसभरे रसिया को पाकर मैं उसमें डूब चली थी। और एक दिन जब अलसाई हुई प्रातः किरण मुझे जगाने का प्रयत्न कर रही थी, मैं थकी-सी मस्ती में पड़ी थी। हलके से मैंने हृदय में रिक्तता का अनुभव किया। देखा तो कैसा सूनापन था।

तुम.....तुम्हें न पाकर लहरें टकराने लगीं। मैं सुध-बुध बिसारे थी। समझ न पाती थी क्या हो चला है। मैं ऊब गई थी। निराशा में मैंने देखी—विशाल फैले हुए मैदान में मुरझाई पत्र-राशि। चेतनता लुप्तप्राय हो चुकी थी। उफ् ! विशाल जगत् विरहस्थल बन चला था। मैं मन मारे दूर क्षितिज को निहारने लगी। अपार गगन में कितनी रहस्यमयी शान्ति थी। बादल के हलके टुकड़े घूम रहे थे—निरुद्देश्य भावों-से। मैं भूल-सी गई। तभी देखा, तुम ही तो थे। जाने कहाँ उड़े जा रहे थे। नीचे देखने की तुम्हें इच्छा न थी। तभी से मैं तुम्हें निहार रही हूँ। आँखें एकटक आकाश पर लगी हैं। किनारे पर फूल बनी तुम्हें देख रही हूँ—शून्य में। मुझसे तो तुम्हारा परिचय नहीं, पर कभी इस हृदय में तुम्हारी ही झाँकी तो झलकी थी न ! तुम भूल चले हो। विस्मृता हूँ; पर भूल से तुम्हारी आँखें धरातल पर चली जाती हैं और मैं उनमें अपना परिचय पा जाती हूँ। सब भूल-सा जाता है। नीहारिकाएँ आ-आकर मुस्करा देती हैं—सहानुभूति में।

—सोमा जलाली मिर्जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर चाँद में है

सामाचार-पत्रों में हिटलर से सम्बन्धित समाचार मोटे अक्षरों में प्रथम पृष्ठ पर ही प्रायः आते हैं। यदि दुर्भाग्य से ऐसा न हो सके तो उसके लिए कोई ऐसा उपाय अवश्य किया जाता है जिससे पाठकों के ध्यान में वह समाचार आ जाए। अर्थात् काले टाइप, १० एम, १२ एम, जो भी उपाय हो सकता है, उसकी शरण ली जाती है। सम्पादक साहब यदि अपने कर्त्तव्य को भूल भी जाएँ तो पाठक नहीं चूकते और उनकी नजर हिटलर की खबर पर अटक ही जाती है। मतलब यह है कि हिटलर अब भी जिज्ञासा का विषय बना हुआ है।

हिटलर

महायुद्ध के पूर्व हिटलर का महत्त्व जर्मन राष्ट्र में बहुत अधिक था। बाहरी दुनिया भी उसे महान् व्यक्ति के रूप में सम्मानित करती थी। साधारण जनता में उसके जीवन के संयम से सम्बन्धित केवल सत्य बातें ही नहीं, अपितु बहुत-सी किंवदन्तियाँ भी प्रचलित थीं। महायुद्ध के समय विद्युत्गति से की गई जर्मन-विजयों ने उसका नाम अलौकिक दैत्याकार पुरुषों में गिना दिया। फ्रांस की १५ दिन में पराजय, यूनान और फ्लेन्डर्स में अँगरेजों की पहली विजयों से हिटलर अपराजेय समझा जाने लगा। [illegible] की पराजय के प्रारम्भ होने पर भी लोगों को यह विश्वास नहीं [illegible] कि जर्मनी हार रहा है। यही समझा गया कि वह कोई चाल [illegible] रहा है। जर्मनी ने उन्हीं दिनों 'वी टू, वी एम' बम निः [illegible] बिना वाहक के चलनेवाले हवाई जहाज ईजाद किए, एक [illegible] व्यक्ति से चलनेवाली पनडुब्बियाँ आविष्कृत कीं, मुसोलिनी [illegible] अँगरेजों की कैद से छुड़ाया। इन सब घटनाओं से यह प्रतीत [illegible] था कि जर्मनी में अभी अपार शक्ति है। वह पीछे हट [illegible] खदेड़ा नहीं जा रहा है। सफल 'अपसरण' जर्मनी के वक्तव्य [illegible] मुख में शोभा देता था। समझा यह जाता था कि वह [illegible] पाकर आक्रमण करेगा।

परन्तु जर्मनी को अन्त में हार खानी पड़ी। रूस का झण्डा बर्लिन में गड़ गया, परन्तु हिटलर नहीं पकड़ा गया।

मित्रराष्ट्रों ने खोज प्रारम्भ की। एक-एक करके नेता बन्दी बनाए गए, यहाँ तक कि रिबनट्राप ने—जैसे समाचारों से मालूम होता है—बचने का कोई चारा न पाकर आत्मसमर्पण कर दिया। हिटलर का कोई सुराग नहीं [illegible] कल्पना की गई कि वह बर्लिन के ढेरों के नीचे दबकर प्राण [illegible] बैठा है, उसने आत्महत्या कर ली है, पर शान्ति हुई।

जर्मनी के साथ लड़ाई समाप्त होने पर जापान के साथ चल रही थी। मित्रराष्ट्रों ने समझा कि हिटलर जापान [illegible] गया है। इस बीच कई अन्य अनुमान भी किए गए। उसे [illegible] लैंड, स्पेन और अर्जेनटाइना भगाया गया। ये सब थोथे [illegible] ही नहीं थे। इनके पीछे बड़ी-बड़ी गवाहियाँ पेश की जा [illegible] हिटलर किसी जगह नहीं मिला। जापान के साथ लड़ाई [illegible] हो गई और वहाँ भी उसका कोई सुराग प्राप्त न हुआ।

इस समय जर्मनी के गुप्त रेडियो में समाचार ब्राडकास्ट [illegible] थे, जिनमें कहा जाता था कि 'जर्मनों को मित्रों के साथ [illegible] लिए तैयार रहना चाहिए। इनमें फूट पड़ेगी।' मित्रों [illegible] खूब प्रचारित किया और घोषणाएँ कीं कि मित्रों में [illegible] हो सकती। परन्तु हिटलर के लिए, जिसके सम्बन्ध में [illegible] जाता था कि वह मित्रों में फूट डलवाने का प्रयत्न कर [illegible] खोज जारी रही।

अन्त में थककर यह निश्चय हुआ कि हिटलर मर [illegible] उसने अन्तिम समय इवाब्राउन नामक स्त्री से शादी [illegible] जिससे एक लड़का भी था। दोनों ने अन्त में अपमान [illegible] के लिए एक-दूसरे को शूट कर दिया।

मित्रों का सन्देह दूर नहीं हुआ। जर्मनों के छुटपुट गु [illegible] से यही समझा जाता था कि ये हिटलर द्वारा कराई [illegible] कार्यवाहियाँ हैं। हिटलर का भूत अवश्य इनके पीछे [illegible] वह मौके की ताक में है। मित्रों में फूट पड़ने पर एकदम [illegible] कर हमला करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१ दिसम्बर १९४५ का समाचार है कि उसकी अन्तिम वसीयत मिल गई है। दूसरी अमरीकी सेना के सेनापति जनरल ट्रूकौट से विदित हुआ कि यह वसीयत म्युनिख से ३० मील पर 'ट्रेजेनेरेन्सी' ग्राम में मिली है। हिटलर के प्रचार-मन्त्री गोयबल्स, उपप्रचार-मन्त्री मार्टिम बोर्मन और हिमलर के स्लोवाक प्रतिनिधि हैन्स कवे और विलियम वर्डोफ के इस पर हस्ताक्षर हैं। इस पर १९ मई १९४५ तिथि पड़ी हुई है। इसमें हिटलर ने इवाब्राउन के साथ अपने विवाह को स्वीकृत किया है और लिखा है कि अन्तिम अपमान की अपेक्षा हम मृत्यु को पसन्द करते हैं। इसमें लड़ाई की जिम्मेवारी मित्रों पर थोपी गई है, जैसा कि हिटलर अपने समस्त युद्धकाल के समय में करता रहा था।

समस्त डाक्यूमेंटों पर २९ अप्रैल १९४५, जो कि जर्मनी की पराजय से कुछ समय पूर्व की तिथि है, पड़ी हुई है। इन सब से प्रतीत होता है कि हिटलर मर गया। अब वह जीवित नहीं है।

दूसरे समाचार से यह मालूम हुआ है कि जनरल ट्रूस्कौट ने डाक्यूमेंटों को पूर्ण रूप से प्रेस को नहीं दिया है और कहा है कि अगली जाँच तक इन्हें गुप्त रक्खा जाएगा।

अभी तक शायद मित्रराष्ट्रों को हिटलर की मृत्यु में विश्वास नहीं हुआ है। उसका जीवित रहना चाहे असम्भव प्रतीत होता है परन्तु हिटलर-द्वारा फूट डलवाने का भय अभी बना हुआ ही है। एक मित्र ने जो इन विषयों में काफी जानकारी रखते हैं, यह कहा है कि हिटलर मरा नहीं है। वह चाँद में है। वह मित्रों में फूट का इन्तजार कर रहा है। देखना है, मित्रराष्ट्रों की इस पर क्या प्रतिक्रिया होती है। हमें तो विश्वास है कि जब तक मित्रराष्ट्रों में आपसी फूट का भय विद्यमान है, हिटलर जीवित रहेगा। वे उसे मरा हुआ नहीं समझ सकते। अभी तो चाँद में कहा जाता है। यदि वैज्ञानिक लोग वहाँ भी ढूँढ़ आएँ तो कहीं और पहुँचा हुआ समझा जाएगा। दुनिया ढूँढ़ ली जाएगी तो वह एक नई दुनिया बनाकर उसमें रहेगा। हिटलर जीवित रहेगा। और अभी वह विद्यमान है पृथ्वी के निकटतम मित्र चाँद में।

उसके मारने की एक ही तरकीब है, मित्रों का आपसी फूट का भय दूर हो जाए।

—वेदप्रकाश

वर्त्तमान फ्रांसीसी काव्य-धारा

कविता को लोग हृदय की वस्तु कहा करते हैं और वस्तुतः बात ठीक भी जान पड़ती है। लेकिन एक कलाकार का कहना कि 'कविता आत्मा से निकली हुई संगीतधारा है। आत्मा अमर है, अतः इससे निकली हुई कविताएँ भी अमरत्व लिए हुए प्रवाहित होती हैं। ऐसी कविता में आत्मा का गुण होना उतना ही स्वाभाविक है, जितना गुलाब में सौरभ और मिठाई में मिठास का होना। किन्तु कुछ जंगली गुलाब ऐसे भी होते हैं जिनमें सौरभ प्रायः नहीं के बराबर होता है। प्रायः कविताएँ भी ऐसी देखने में आती हैं जो आत्मा से नहीं निकलतीं, वरन् कृत्रिमता और शब्दाडम्बर लिए होती हैं। ऐसी निम्न कोटि की कविताएँ सभी भाषाओं में कुछ न कुछ हुआ करती हैं।

प्रोफेसर ओलिवर लाकोम

[आप फ्रांस के एक गण्य मान्य विद्वान् हैं। काव्य और कला आपके जीवन की साधना है। गत वर्ष बम्बई में आपने 'कला और जीवन' पर एक सारगर्भित भाषण किया था। पिछले दिनों जयपुर में लेखकों की जो सभा हुई थी उसमें आप फ्रेंच-प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। आप भारतीय संस्कृति के परम प्रशंसकों में हैं। इन दिनों आप कलकत्ते में 'फ्रेंच कौंसलेट आफिस' में संस्कृति-विभाग के प्रधान हैं।]

मैं वर्त्तमान फ्रांसीसी कविताओं में उन कविताओं को लेता हूँ जिनकी रचना विशेषकर फ्रांस पर जर्मन आक्रमण के समय से लेकर आज तक हुई है। सन् १९४० ई० में फ्रांस नात्सियों के भीषण आक्रमण का शिकार हुआ। स्वतंत्रता का प्रदीप बुझ गया। ऐसा मालूम हुआ मानो इस गहरी अमा-निशा का कोई अन्त नहीं। नित्य नए-नए अत्याचार, नए-नए हथकण्डे बेचारे फ्रांसीसी नागरिकों पर चलने लगे। स्वतंत्रता के पुजारी फ्रांसीसी परतन्त्रता से त्रस्त हो गए। किन्तु इस गम्भीर भयावनी निशा में भी आशा की ज्योति टिमटिमाती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आशा की ज्योति को जगमगाते रखने का जितना श्रेय फ्रांस के नेता जेनरल द-गाल को है उतना ही श्रेय फ्रांस के कवियों को भी है। मृत्युदण्ड की परवाह न करके फ्रांसीसी कवि क्रान्तिकारी कविताओं की रचना करते रहे। उस समय की कविताएँ उनके हृदय से निकले हुए, नहीं नहीं उनकी आत्मा से निकले हुए शोले हैं। वे मानो भयानक ज्वालामुखी के विस्फोट हैं। जर्मन उन्हें गोलियों से उड़ाने की धमकी देते हैं; कारागार में बन्द कर उनको भाँति-भाँति की यन्त्रणाएँ देते हैं, लेकिन फ्रांसीसी कवि फिर भी भयभीत नहीं होते, फिर भी वे स्वतन्त्रता के मस्ताने तराने गाने से बाज नहीं आते। मृत्यु! किस चिड़िया का नाम है मृत्यु! नात्सी हमारी बोटियाँ-बोटियाँ अलग कर दें किन्तु हम स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व के तराने गाएँगे। हम मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमरत्व का सन्देश देंगे। तोड़ डालेंगे हम दासता की बेड़ी को, फोड़ देंगे कारागार की इन दीवारों को—

"हम इन्हीं हाथों से कारागार के सीखचों को चूर करेंगे। हम इन्हीं हाथों से अपने बन्धुओं को मुक्त करेंगे।"

और भी—

"हे मित्र, यदि अपने कर्त्तव्य-पथ पर तुम्हें मृत्यु का आलिंगन करना पड़े, कोई चिन्ता नहीं। तुम्हारी रिक्त जगह को हम शीघ्र भर देंगे। (तुम्हारी जगह हम रिक्त नहीं रहने देंगे।)"

"उड़ा दो दुश्मनों को अपनी गोली से, यदि गोली अपने पास न हो तो भोंक दो छुरे इन दुष्टों के हृदय में।"

इन कविताओं के पढ़ने से सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि पराधीनता की बेड़ी में जकड़े होने पर भी फ्रांस की आत्मा अमर थी। ज्वालामुखी की नाईं सारा राष्ट्र अन्दर ही अन्दर सुलग रहा था और एक-न एक दिन उसका भीषण विस्फोट होना अवश्यम्भावी था। दुश्मन ने शरीर को तो जकड़ रक्खा था किन्तु आत्मा को जकड़ने में उसको सफलता नहीं मिली थी। उसने स्वातंत्र्य-प्रेम की भावना को फ्रांसीसियों के हृदय से मिटाने की लाख कोशिशें कीं किन्तु उसकी सारी चेष्टाएँ निष्फल रहीं। स्वतन्त्रता की ज्योति निरन्तर फ्रांस की अन्तरात्मा में जलती रही। सैकड़ों वीर हँसते-हँसते शहीद हो गए। एक कवि 'शहीद' शीर्षक कविता में कहता है—

"जमीन पर गिरे हुए इनके ये रक्त कभी नहीं सूखेंगे। ये ठीक जिस स्थान पर धराशायी हुए हैं हम इन्हें वहीं रहने देंगे। प्रतिदिन हम इनको देखकर दाँत पीसेंगे। क्रोध से अधीर हो उठेंगे और हमारा रक्त खौल उठेगा!"

उसी कविता में आगे चलकर कवि कहता है।

"हमारे इन प्यारे शहीदों के शव इसी तरह नग्न भूमि के ऊपर पड़े रहेंगे। उनके रक्त से प्रिय मातृभूमि का अंक सिक्त होता रहेगा। उनके उसी रक्त से जंगली गुलाब के पौधे जिनमें क्रोध से लाल आँखें किए फूल खिलेंगे। इस भाँति शोणित से सिंचित क्रोधोन्मत्त वसन्त आएगा, और आएगा मादकता के साथ।"

आत्मा से निकली हुई कविता ऐसी ही होती है। इसमें ऐसी विद्युत् शक्ति होती है जो मृतप्राय धमनियों में रक्त-संचार कर देती है। ऐसी ही कविताएँ राष्ट्र के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्त्तन कर देती हैं। इसका सबसे ताजा और ज्वलन्त दृष्टान्त है फ्रांस का पुनरुत्थान। उसी 'शहीद' शीर्षक कविता के अन्त में कवि कहता है।

"वह वसन्त इतना मधुमय होगा जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसमें पक्षियों का कलरव तथा संगीत की ध्वनि उठती रहेगी और स्थान-स्थान पर बच्चे पुष्प चयन करते दृष्टिगोचर होंगे। उनके चतुर्दिक् लम्बे-लम्बे विटप मानो प्रभु की ओर भुजा फैलाए प्रार्थना करते हुए से दीख पड़ेंगे।"

इस छोटी-सी कविता में मानो कला और कल्पना का कूट-कूटकर भर दिया है। भाव-भाषा-सुषमा के साथ-साथ कल्पना होड़ कर रही है। सबसे मार्के की बात तो यह है कि इस कविता का आधार 'इन्द्र-धनुष की पँखुड़ियाँ' नहीं वरन् वास्तविकता की कसौटी है। कवि की अनुभूति ही उसका जीवन है। यही उसका सर्वस्व है। कवि अपनी आँखों से मातृभूमि का अपमान देखता है। उसके देखते-देखते हजारों गोली से उड़ा दिए जाते हैं। बहुमूल्य पुस्तकालय तथा पुनीत मन्दिर नष्ट कर दिए जाते हैं। हर तरह से उसकी संस्कृति को मिटाने की कोशिशें की जाती हैं। कवि त्रस्त होकर इस विनाश-लीला को देखता है, उसकी लेखनी स्वतः चलने लगती है और उसका परिणाम है ये कविताएँ। ये उसके दिल के शोले हैं। ये ऐसे आँसू हैं जिसका एक-एक बूँद अग्नि की स्फुलिंग की भाँति भस्मसात् करने की क्षमता रखता है।

एक दूसरी कविता में कवि कहता है—

"ऐ मेरे अलजीरियन भाईवृन्द! सुनो हमारी यही आवाज, यही आशा का सन्देश है। मैं ज्यों ही गोली खाकर गिरूँ त्यों ही उस गोली के छूटने की प्रतिध्वनि आकर कहे 'फ्रांस! मैं मर रहा हूँ, इसकी कोई चिन्ता न करो। मातृभूमि का पुनर्जन्म हो रहा है'।"

स्वदेश-प्रेम का भाव किस सुन्दरता से कवि ने सीधे-सादे में व्यक्त किया है।

Paul Eluard नामक एक फ्रांसीसी कवि जहाँ-जहाँ एक ही चीज देखता है, अर्थात् "स्वतन्त्रता"। वह इस तरह अपनी कविता समाप्त करता है —

"ऐ स्वतन्त्रते! मेरा जन्म केवल तुझे ही जानने तेरा ही नाम उच्चारण करने के लिए इस पृथ्वी पर हुआ है।"

आधुनिक फ्रांसीसी कविताएँ स्वदेश-प्रेम से इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाढ़ने से हृदय में बरबस स्वातन्त्र्य-प्रेम लहराने लगता है। ...सीसी कवि अपनी मातृभूमि को गौरव के आसन पर देखने ...लालायित हैं। उनकी कविताओं में शृङ्गार का नाम नहीं, महायुद्ध से पूर्व की फ्रांसीसी कविताओं में शृङ्गार का वेतरह ...पाया जाता है। शृङ्गार-रस की कविताओं को मानो ...न फ्रेंच-कवियों ने बिलकुल तलाक दे दिया है। कविता ...की पुकार है! जिस कविता में उस युग के संघर्ष की छाप वह कविता भाटों और भाँड़ों के गाने की वस्तु हो सकती ...राष्ट्र के गौरव की वस्तु कदापि नहीं हो सकती है। ...न तथा परतन्त्र देश में हाला-प्याला का राग अलापने- ...अपने मुँह से अपने को कवि कहकर भले ही सन्तोष प्राप्त ...ले, किन्तु सच्चे आलोचक की दृष्टि में उसका कोई विशेष ...नहीं हो सकता। इस युग-धर्म को गेटे 'समय का प्रभाव' कहा ...था और गेटे जैसे महाकवि की दृष्टि से जिस कविता पर समय ...छाप नहीं, वह कविता कविता नहीं। वर्त्तमान फ्रांसीसी ...ताओं पर अपने युग की छाप है, अथवा यों कहें कि वर्तमान ...सी कविताएँ अपने युग की पुकार हैं तो इसमें कोई अत्युक्ति होगी।

दिल्ली के फ्रेंच-समाचार-आफिस द्वारा हाल ही में प्रकाशित फ्रेंच कविता-संग्रह की पुस्तक की भूमिका में लिखा है—

"चार साल की भीषण यातनाएँ तथा लांछनाएँ सहने पर भी ...सियों के हृदय में काव्य-प्रेम जाग्रत् है। निर्वासन तथा कारा- ...के भीषण कष्ट से अनेक फ्रांसीसी गुजरे हैं!"

उसी सिलसिले में भूमिका-लेखक लिखता है—

"उन वीर आत्माओं के लिए अपने भावों को कविता के रूप में व्यक्त करना नितान्त स्वाभाविक है, क्योंकि इसी तरह सृष्टि के आदि से ही लोगों ने अपने भावों को सर्वप्रथम प्रकाशित करने का मार्ग ढूँढ़ निकाला है।"

हम यही भाव फ्रांसीसी गद्य-लेखकों तथा कलाकारों में भी पाते हैं। फ्रांस के एक सबसे बड़े साहित्यिक, जिनका नाम प्रोफेसर ओलिवर लाकोम्ब है, इस समय भारत-भ्रमण कर रहे हैं। प्रो० लाकोम्ब एक उच्च कोटि के कलाकार भी है। आपका पुनीत उद्देश्य भारत तथा फ्रांस के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ़ तथा सुस्थापित करना है। इन पंक्तियों के लेखक को एक पत्रकार होने के नाते प्रो० लाकोम्ब से दिल्ली में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप ऐसे प्रख्यात विद्वान् का भारत में आना सचमुच बड़े सौभाग्य की बात है।

ईश्वर करे, आपको अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हो। फ्रांस के पुनरुत्थान में वहाँ के कवि, लेखक, दार्शनिक तथा कलाकार सभी का हाथ है। विशेषकर कवियों का—जिनकी अमर वाणी निराशा के निविड़ तिमिर में भी फ्रेंच गगन में गूँजती रही। नात्सियों-द्वारा मौत के घाट उतारे जाने पर भी उनके शरीर से निकलती हुई रक्त-धारा 'स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व' की रट लगाए रही।

क्या इसमें भी सन्देह है कि ऐसे कवियों की कविताएँ आत्मा से निकली हुई संगीत-धारा है।

— मंगलकिशोर पाण्डेय

सोहराब-रुस्तम—सोहराब के जन्म से पहले ही उसका सुप्रसिद्ध वीर रुस्तम विदेश चला गया था और पिता-पुत्र भेंट हुई एक युद्ध में प्रतिद्वन्द्वी के रूप में और उसी युद्ध में दोनों का मृत्यु हुई। इस पुस्तक में वही करुण-कहानी है। ।।। —तेरह आने।

फ़व्वारा—इस पुस्तक में बच्चों के उपयोग की कई सचित्र नियों का संग्रह किया गया है। पुस्तक रंग-बिरंगी स्याही से अक्षरों में छपी है। सजिल्द पुस्तक का मू० १।—) एक पाँच आने।

सचित्र बाल-आरब्योपन्यास—(चार भागों में) संसार की सब पुस्तकों से अधिक सुन्दर, मनमोहक, आश्चर्यमयी और चातुर्य-पूर्ण कहानियाँ इस पुस्तक में हैं। इसे पढ़ने से दुनिया की सैर का-सा आनन्द मिलेगा। मू० प्रत्येक भाग का ।।।—) तेरह आने।

अनोखी कहानियाँ—इस संग्रह में छोटी-बड़ी ग्यारह रोचक कहानियाँ सरल भाषा में लिखी गई हैं। सभी कहानियाँ सचित्र हैं। मू० ।— पाँच आने। इसका उर्दू संस्करण भी इसी मू० में मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्रु-हास

धारावाहिक सामाजिक उपन्यास

श्रीमती निर्मला मित्र

फिर दिलीप के पास आकर उसे छाती से लगाकर बोली थीं, "तुम कभी इनके अहाते में न आना, बेटा, ये बाप-बेटी दोनों हद से ज्यादा बदतमीज हैं।"

रुचिरा अपमान से फूलते-फूलते बोली थी, "हाँ-हाँ, हैं। आने दो बाबू जी को, उसे थाने में बन्द कराके ही मानूँगी।"

इस पर चाची को बहुत क्रोध आ गया था और वे रुचिरा का मुँह दबा देने के लिए दौड़ी थीं। पर उसी क्षण दिलीप उनसे यों लिपट पड़ा था कि वे फिर एक पग भी आगे न बढ़ पाई थीं। केवल एक गहरा श्वास लेकर वे अवरुद्ध क्रोध से काँपती खड़ी रह गई थीं।

तीसरा अध्याय

इस प्रसंग की स्मृति से दिलीप के हृदय से भी एक निःश्वास निकल पड़ा। वह सोचने लगा कि क्या अब चाची से कभी भेंट नहीं हो सकती। उसका मन उस अभिलषित वेदना से व्यथित होकर कहने लगा, "नहीं, नहीं, अब चाची से इस लोक में भेंट होना सम्भव नहीं है। क्योंकि मैट्रिक करने के बाद दिलीप भारातुर मन लेकर चाची की खोज में उस जिले तक गया था। पर लाख ढुँढ़ाई करने पर भी चाची का पता उसे न मिल सका था। केवल बूढ़ी दाई रामरति से उसे यह सूचना मिल सकी थी कि डाक्टर साहब के छुट्टी लेकर चले जाने के बाद ही 'सुपरडन्ट' साहब भी बदलकर दूसरे जिले में चले गए थे।

दिलीप तब उत्साह से भरकर उससे पूछ बैठा था, "चाची भी उनके साथ थीं न?"

"ओ राम, कहाँ की तेरी चाची-वाची, बेटा, याद नहीं; बहू जी के मरने के दिन ही तो उसने अपनी स्त्री को त्याग दिया था।"

दिलीप के लिए यह समाचार कितना मर्मान्तक था! उसी के कारण तो निरीह चाची की पीठ पर हण्टरों की वर्षा हुई थी। और उसी के कारण तो चाची को अपने घर-द्वार से वंचित होना

उसी समय वह बूढ़ी अपनी निष्प्रभ आँखें उठाक के कटे घाव पर जैसे नमक छिड़कती हुई कह पड़ी सुना था तूने, रुचिरा को भी किसी मेम के हवाले कर उसने विलायत भेज दिया था। उस दिन उस तनिक-सी का रोना यदि तू देख सकता! क्या कहूँ, शायद पत्थर जाता, पर उस हत्यारे का दिल न पसीजा।"

अब इसके आगे दिलीप क्या पूछता! अतः वह क्लेश हृदय में दबाकर उस जिले से उसी दिन लौट आ

आज कई साल बाद वह योरप से भारत लौटा है। प्रतिष्ठा और हुकूमत प्राप्त हैं। वह उन्नति के चरम पहुँचकर लौटा है। फिर भी आज उसका ऐसा कोई नहीं है जो उसकी उन्नति पर हृदय से हर्ष प्रकट मनाने के लिए परिजनों का रहना भी बड़े सौभाग्य की है। यह बात, यह कमी, दिलीप को आज पग-पग पर रही है। ज्यों-ज्यों उसकी यह अनुभूति गहरी होती त्यों-त्यों उसका हृदय खाली-खाली लगता जा रहा है। दिलीप इतना भी सोच लेता है कि यह आकाश-सदृश लेकर मैं ऐसा दायित्व-पूर्ण कार्य-भार सँभाल भी सकूँगा कारण, जिस पिता ने मातृहीन बालक को बड़े लाड़-प्यार कर उन्नति के लिए विदेश भेजा था, वह पुत्र-वत्सल पि दिलीप की उन्नति से संतुष्ट होने के लिए इस संसार में है। वह चार साल पहले ही दिलीप की पढ़ाई का खर्च व महाजन, जो भी समझा जाय, रायबहादुर चुन्नीलाल ऊपर छोड़ दिवंगत हो चुका है।

दिलीप को स्मरण है, पिता ने जब पढ़ाई की इस व्यवस्था करने के सम्बन्ध में उसे लिखा था तब उ असहमति प्रकट करते हुए उन्हें तुरन्त ही लिखा था, पढ़ना मुझे ठीक नहीं जँचता। आप आदेश दें आऊँ।"

मुमूर्षु पिता ने उत्तर में लिखा था, "दिलीप तुम न सोचना। मुझे विश्वास है कि तुम्हारे सरीखा मेधावी विफल नहीं हो सकता। और इधर रायबहादुर चुन्नीला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाशय और सज्जन व्यक्ति हैं कि कर्ज की बात मुँह खोलकर कभी कहेंगे।"

सुदूर विदेश में बैठा दिलीप इन सदाशय सज्जन के सम्बन्ध सदैव सोचा करता था। उसके लिए यह निर्णय करना कठिन कि क्यों उन्होंने दिलीप की पढ़ाई का खर्च अपने सिर पर र्ष ले लिया है। अपने पिता जी से इस सम्बन्ध में पूछने की इच्छा दिलीप की कई बार हुई थी। परन्तु बड़ों के सामने धिकारपूर्ण चपलतावाली कहावत उसके सामने बार-बार आ ी थी और वह बार-बार कलम छोड़ हाथ सिकोड़कर बैठ ा था।

पिता की मृत्यु के बाद रायबहादुर चुन्नीलाल स्वयं पत्रालापों दिलीप के सामने आए। पहले ही पत्र में उन्होंने लिखा, लीप, भविष्य में तुम अपने पिता के स्थान पर मुझे समझ सको मैं कृतकृत्य हो जाऊँगा।"

भला इससे बढ़कर स्नेह और अपनत्व-भरी भाषा और क्या सकती थी! दिलीप को भी इस स्नेहपूर्ण प्रस्ताव पर क्या आपत्ति सकती थी!

किन्तु फिर भी दिलीप के हृदय की वह जगह रिक्त ही रह । इस रिक्तता के कारण उसे अपना सारा जीवन ही शून्य का बड़ा बिन्दु ही लगता है।

माता-पुत्र के मिलन का जो दृश्य अभी-अभी दिलीप के सुख आया है, दिलीप के लोभातुर मन के लिए वह कितना कर्षक है। मातृ-स्नेह-बुभुक्षित दिलीप का मन तभी से जैसे चल-मचलकर कह रहा है, "मिले, मिले, इस बन्धुहीन श में कम से-कम मुझे वह स्नेहशीला चाची ही मिले।"

दिलीप के हृदय में यह आशा इसलिए और भी पल्लवित हो ी क्योंकि दिलीप की माँ दिलीप की आँखों के सामने ही सदैव लिए उठ गई थी। अतः माता की ओर से उसे एक निराश त्वना थी ही कि वह जिस लोक में जा बसी है, वहाँ से दिलीप लाख बार सिर पटकने से भी वह पुनः लौटकर नहीं आ ती। पर, वह पड़ोसिन चाची, जिसका जीवन इसी भारतवर्ष के सी अज्ञात कोण में छिपा हुआ है, और जिसकी मृत्यु का भी ई निश्चित प्रमाण नहीं है, तो कहीं न कहीं मिल ही सकती । इस अलभ्य लाभ को प्राप्त करने के लिए दिलीप को एक बार श्य प्रयास करना चाहिए।

अन्ततः सब ओर से संकुचित होकर दिलीप के मन में अब आकांक्षा जड़ जमाकर बैठ गई कि उस दुर्भाग्यशीला चाची को सकना ही दिलीप के हृदय की परितृप्ति है। क्योंकि उसी को र कर चाची ने अपना सर्वस्व खोया था। उस आजीवन-संगिनी भलषित वेदना को दिलीप कैसे भूल सकता है।

चौथा अध्याय

"हुजूर साहब!"

एकाएक चौंककर दिलीप ने मुँह उठाया तो देखा, सरकारी वर्दी डाटे दो चपरासी उसके इन्तजार में पीछे खड़े हैं।

दिलीप की नजर उन पर पड़ते ही उन्होंने झुककर अदब से सलाम किया। फिर बोले, "बड़ी देर हो गई, हुजूर, सामान के उतारने में, आज कुली तक नहीं मिले।"

"तो क्या सामान केबिन में ही पड़ा है?"

"नहीं-नहीं, हुजूर, ऐसा कैसे हो सकता था। सामान सब उतर गया है। अब आप भी उतर चलिए।"

दिलीप उठकर खड़ा हो गया।

चपरासी चलते-चलते बोले, "वह देखिए, बड़े 'साब' नीचे ही खड़े हैं। भीड़ के मारे आज दम घुटी जा रही थी। इसी लिए हमने उन्हें ऊपर नहीं चढ़ने दिया।"

चपरासियों की बुद्धि की सराहना करते हुए दिलीप बोला, "ठीक किया; बूढ़े आदमी को कहीं धक्का-सक्का लग जाता।"

और दिलीप के इस समर्थन से मानो कृतकृत्य होकर वह चपरासी बोला, "हाँ हजूर, देखिए, आप भी इस बात को समझते हैं। पर इसके लिए 'मिस बाबा' बेतहाशा हम लोगों पर बिगड़ पड़ी थीं।"

दिलीप का ध्यान अब इस 'मिस बाबा' की ओर आकर्षित हुआ। वह सोचने लगा, यह शायद चुन्नीलाल जी की लड़की होगी, जिसकी चर्चा उनके पत्रों में खुलकर नहीं तो अप्रत्यक्ष रूप में अवश्य रहा करती थी। उसे स्मरण आया, एक बार वार्षिक छुट्टियों के अवसर पर जब दिलीप स्कैंडिनेविया में भ्रमण कर रहा था, शायद इसी की किसी सखी से मिलने के लिए चुन्नी-लाल जी ने अनुरोध किया था, जो उन दिनों स्कैंडिनेवियन उपकथाओं के चयन के लिए भारतवर्ष से स्कैंडिनेविया पहुँची थी।

'लेक' पर भ्रमण करते समय दिलीप ने मिस एथेल डगलस को कई बार देखा था और वह उसे पहचान भी गया था। यही नहीं, वह जिस होटल में ठहरी हुई थी, उस होटल का नाम और उसका रूम-नम्बर भी दिलीप ने नोट कर रक्खा था। लेकिन आज मिलूँ, कल मिलूँ, करते-करते यह लज्जाशील युवक उससे मिल न सका था और छुट्टियाँ समाप्त भी हो गई थीं।

वस्तुतः किसी-किसी व्यक्ति में स्त्री-जनोचित संकोच बहुत बड़ी मात्रा में रहा करता है। दिलीप भी उसी मनःस्थिति का युवक है। भीतर चाहे ज्वालामुखी ही क्यों न धधकता हो, पर ऊपर से देखने पर उसका किसी को आभास तक न मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

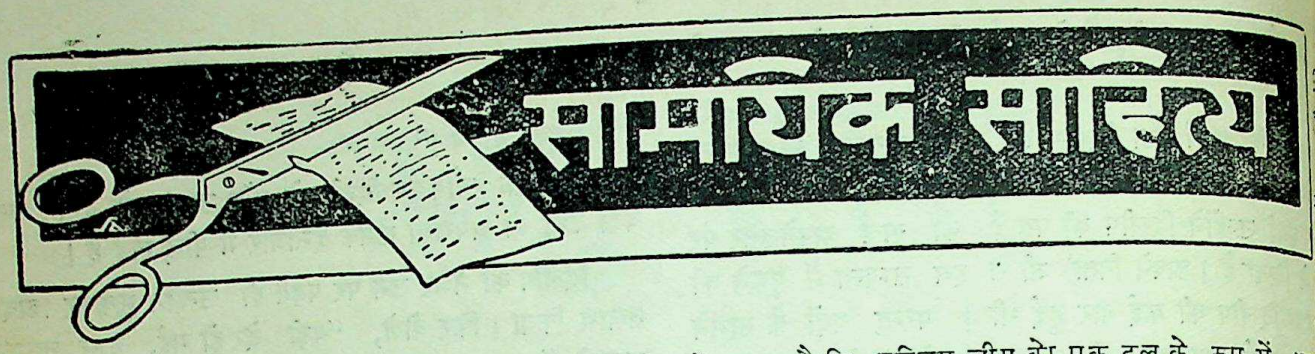

कांग्रेस और लीग

युद्धकाल में अमेरिका के स्वर्गीय अध्यक्ष रूजवेल्ट के व्यक्तिगत प्रतिनिधि फिलिप्स भारत में कुछ समय तक रहे थे। अमेरिका लौटकर उन्होंने भारत के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट अपनी सरकार को दी थी। वह रिपोर्ट अभी तक गुप्त थी जिसे लाहौर के श्री चम्मनलाल ने हाल में प्राप्त कर 'हिन्दी मिलाप' में छपवाया है। उसका आवश्यक अंश इस प्रकार है—

लीग लोगों की साम्प्रदायिक भावना को सदा उकसाती रही है। इसी का यह परिणाम है कि कांग्रेस प्रान्तों में जितने साम्प्रदायिक दंगे हुए उससे कहीं अधिक लीगी प्रान्तों— बङ्गाल व पञ्जाब—में हुए। पञ्जाब में तो साम्प्रदायिक दङ्गों की भरमार सबसे अधिक रही।

अपने २॥ वर्षीय कार्यकाल में इन्होंने अत्यन्त सावधानीपूर्वक अपने कार्य को निबाहा। इनकी सफलता से प्रभावित हो भारत-मन्त्री लार्ड जटलैण्ड को इन मन्त्रिमण्डलों के त्यागपत्र देने पर खेद प्रकट करना पड़ा। स्वयं युक्तप्रांतीय गवर्नर सर हैरीहैग ने साम्प्रदायिक प्रश्नों के सम्बन्ध में कांग्रेस की नीति की प्रशंसा की। बाद के भारत-मन्त्री एमरी ने भी साम्प्रदायिक मामलों में कांग्रेस की निष्पक्षता को स्वीकार किया है।

कांग्रेस का इन सब वर्षों में केवल एक ही उद्देश्य रहा है। वह है भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति। धारा सभाओं में प्रवेश तथा विधान को अपनाने का कार्य भी इसी बात को मद्दे नजर रखकर किया गया है। कांग्रेस समझती है कि ऐसा कर वह स्वतन्त्रता की दिशा में आगे कदम बढ़ा सकती है। इसी लिए प्रान्तीय कांग्रेस के सहयोग में कार्य करने का आदेश प्रान्तीय कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों को दिया गया था। जिन्ना का यह अभियोग कि कांग्रेस दूसरी संस्थाओं को समाप्त करना चाहती है, इस आधार पर है कि कांग्रेस समस्त भारतीय जनता में अपने प्रसार की नीति पर अमल कर रही है। इस पूर्ण प्रसार का अर्थ लीग व अन्य साम्प्रदायिक संस्थाओं की समाप्ति होगी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि कांग्रेस फासिस्ट संस्था बनना चाहती है। उसका एकमात्र उद्देश्य भारत को एकता के सूत्र में पिरोना है, ताकि भारतीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति हो सके।

मुस्लिम नेता यह सिद्ध नहीं कर सके कि कांग्रेस-शासन [illegible] से स्पष्ट है कि मुस्लिम लीग को एक दल के रूप में भा[illegible] अधिकांश सूबों में सरकार पर कब्जा करने का अवसर नहीं [illegible] सकता। अल्पमत के रूप में वह अपनी केवल कुछ सूबों में [illegible] कार बना सकती है। इसी प्रकार केन्द्र में भी यह बहुमत में [illegible] आ सकती। मुस्लिम लीग की असली शिकायत यही है। इ[illegible] के प्रकाश में ही उसकी कांग्रेस के प्रति शिकायतों व पा[illegible] की माँग को देखना चाहिए।

आज लीग बनावटी एकता के आधार पर रा[illegible] पार्टी बनी हुई है। साम्प्रदायिक आधार पर और अलग [illegible] राजनैतिक चाल के आधार पर मुसलमानों के विभिन्न व[illegible] इसने जुटा रक्खा है। इस बात के चिह्न प्रकट होने लगे [illegible] एक ही वर्ग के मुसलमान उस वर्ग के हिन्दुओं से अधि[illegible] नता अपने में अनुभव करते हैं। मुसलमान अनुभव क[illegible] हैं कि इस वर्ग की एकता में सम्प्रदाय बाधक नहीं।

———

'विद्यार्थियों के आचरण-सूत्र'

महात्मा गांधी अब फिर पहले की ही तरह देश[illegible] कार्य में संलग्न हो गए हैं। वे पहले ही की तरह [illegible] भाषण तथा संगठन करने लगे हैं। विद्यार्थियों में व्यव[illegible] विनय का भाव भरने के लिए उन्होंने बड़े महत्त्व [illegible] आचरण-सूत्र निर्धारित किए हैं जो 'प्रताप' में इस प्रक[illegible]

(१) विद्यार्थी दलबन्दी की राजनीति में भाग न ले[illegible] वे अन्वेषक विद्यार्थी हैं, राजनीतिज्ञ नहीं।

(२) उन्हें राजनैतिक हड़ताल नहीं करनी चाहिए। [illegible] वीरों को आदर्श मानते हैं उनके आचरण का अनुक[illegible] यदि उनके सम्मानित नेता को फाँसी लगती है अथवा [illegible] जाता है और सभी विद्यार्थी शोक का अनुभव कर[illegible] प्रिंसिपल की सम्मति से कालेज बन्द रक्खे जा सकते [illegible] ऐसे अवसर पर प्रिंसिपल न सुने तो वे सभ्य ढङ्ग से [illegible] जाना तब तक के लिए स्थगित कर दें, जब तक प्रबन्ध[illegible] त्ताप करके वापस न बुलाएँ। किन्हीं अधिकारियों [illegible] न होनेवाले विद्यार्थियों के विरुद्ध बल-प्रयोग नहीं करना [illegible] उन्हें यह विश्वास होना चाहिए कि यदि वे एका और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) वैज्ञानिक ढङ्ग से उन्हें यज्ञ के रूप में चर्खा कातना ए और उसके आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक ओं का अध्ययन करना चाहिए।

(४) उन्हें सदा खादी का व्यवहार करना चाहिए। विदेशी शीन की बनी हुई वस्तुओं के स्थान पर गाँवों में बनी चीजों ी प्रयोग करना चाहिए।

(५) वन्दे मातरम् या राष्ट्रीय झंडे को स्वीकार करने के लिए पर जोर न डाला जाए। वे राष्ट्रीय झंडे के बटन स्वयं सकते हैं।

(६) अपने हृदय में साम्प्रदायिकता या अस्पृश्यता की बू भी न रक्खें और अन्य धर्मावलम्बियों तथा हरिजन विद्यार्थियों पने सगे-सम्बन्धियों की भाँति मिलें।

(७) पड़ोस के घायलों को प्राथमिक सहायता दें और पास ाँवों में सफाई करें और गाँव के बच्चों और प्रौढ़ों को शिक्षा दें।

(८) उन्हें राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी को उसके आज के दो —बोलने और लिखने की दो शैलियों—में सीखना चाहिए।

(९) वे जो कुछ नई बात सीखें उसे अपनी मातृभाषा में दित कर आस-पास के गाँवों में साप्ताहिक भ्रमण करते अपना ज्ञान-वितरण करें।

(१०) गुप्त रूप से कोई कार्य न करें। पवित्र, संयमित और य जीवन बिताएँ। कमजोर विद्यार्थियों का पक्ष सदा लेने तैयार रहें और प्राण देकर भी अहिंसात्मक ढङ्ग से हिंसात्मक का दमन करने के लिए तैयार रहें। देश में जब संघर्ष चरम पर पहुँच जाए उस समय यदि आवश्यकता हो तो शिक्षण-ाएँ छोड़कर देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने को त रहें।

(११) बालिका-विद्यार्थियों के प्रति अपने व्यवहार में शिष्ट विशुद्ध रहें।

उपर्युक्त निर्देशों की भूमिका में गांधी जी ने कहा है कि ार्थियों से मेरा निकट-सम्पर्क रहा है। उन्होंने बड़ी सेवाएँ त्याग किए हैं। वे भविष्य की आशा हैं। आजकल की ाभाविक शिक्षण-प्रणाली से होकर उन्हें गुजरना ही पड़ता विदेशी भाषा का भार और प्रलोभन दोनों उनके लिए हैं। जापान आदि देशों में उच्च वैज्ञानिक शिक्षा भी मातृ-ा में ही हो सकती है तो इस देश में क्यों नहीं हो सकती?

सरकार की कण्ट्रोल नीति

अखिल भारतीय शक्कर व्यवसायी-सम्मेलन का द्वितीय अधि-न हाल में कानपुर में हुआ था। इसके सभापति पंजाब के द्ध व्यवसायी श्री बिहारीलाल चानना बनाए गए थे। उन्होंने क्ष पद से जो महत्त्वपूर्ण भाषण किया है उससे शक्कर की सरकारी नियंत्रण-नीति पर ही नहीं किन्तु सरकार की सभी वस्तुओं के नियन्त्रण की नीति पर खासा प्रकाश पड़ता है। उनके व्याख्यान का सारांश 'प्रताप' में छपा है, जिसका अधिकांश यह है—

जिस व्यापारी को विदेशी सस्ती खाँड का आक्रमण खतम न कर सका, आज हम अपनी आँखों देख रहे हैं कि गवर्नमेन्ट के एक कण्ट्रोल आर्डर ने उसको खतम कर दिया है। सरकार की नीति केवल युद्ध के जीतने में ही काम करती रही और जनता के हितों की ओर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। यदि जनता का हित सरकार के सम्मुख प्रधान होता तो बङ्गाल के भीषण अकाल का दृश्य, जिसके कारण ३० लाख के लगभग अकाल मृत्युएँ हुईं, उपस्थित न होता। मैं तो यहाँ तक कहने का साहस करूँगा कि मरनेवालों से जीती हुई आम जनता जो कि सिसक-सिसककर मर रही है, बदतर हालत में है। इस देश में जिसकी औसत दैनिक आय प्रतिव्यक्ति केवल कुछ पाई है और जिसमें एक बड़ी संख्या युद्ध से पहले ही आधी भूखी और नग्न रहती थी, युद्ध के समाप्त होने पर भी राशन के द्वारा जो भी अन्न और वस्त्र जिन कठिनाइयों के साथ प्राप्त हुआ उसकी सरकारी कीमत का हिसाब अगर लगाया जाए तो वह एक ऐसी समस्या है जिसका बड़े से बड़े अर्थ-शास्त्री भी जवाब नहीं दे सकते। अनाज की सरकारी दर १०) से लेकर ३०) तक और मोटे कपड़े की दर औसतन १२-१४ आने गज के हिसाब से एक साधारण परिवार के लिए कितनी आपत्तिजनक है, इसका अन्दाज आप खुद लगा सकते हैं। यह सन्देह होता है कि सरकार की नीति कण्ट्रोलों को लम्बा करने में अपनी खास मसलहतों को पूरा करने की है। अगर ऐसा न हो तो युद्ध की समाप्ति पर तत्काल सब कण्ट्रोल या तो वापस लिए जाते या इस विधि से उनमें तरमीम की जाती जिससे जनता सुख की साँस ले सकती और उसके अन्दर विश्वास की भावना पैदा होती।

यह तो समझ में आ सकता था कि सरकार भारतवासियों के मुँह से चीनी छीनकर रक्षा के कार्य के लिए भारत के अन्दर और बाहर इस्तेमाल करती, लेकिन सरकार के पास इसका क्या उत्तर है कि उसने भारत की चीनी को ईरान आदि देशों में एक विदेशी कम्पनी 'यूनाइटेड किंगडम कमर्शियल कार्पोरेशन' के जरिए ऊँची कीमत पर बेंचकर उसे मुनाफा दिलाया और इधर हजारों की तादाद में जो व्यापारी अपना जीवन-निर्वाह खाँड के धन्धे से किया करते थे, उनको बेरोजगार किया। इस ज्यादती के खिलाफ व्यापारी वर्ग ने भारत-रक्षा कानून के भय से युद्धकाल में आवाज नहीं उठाई। अब जब युद्ध समाप्त चुका है, यद्यपि भारत-रक्षा-कानून मौजूद है, इस आवाज के उठाने में एक मिनट लिए भी हम नहीं रुक सकते, क्योंकि हमारे लिए यह अपनी जिन्दगी और मौत का सवाल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की जनता का समर्थन चाहते हैं।

लंदन में अभी उस दिन राष्ट्र-संघ के सम्मेलन में ग्रेट ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री एटली साहब ने उपस्थित सदस्यों का एक महत्त्व-पूर्ण भाषण-द्वारा स्वागत किया था। उस भाषण का एक महत्त्व का अंश इस प्रकार है—

अणुबम के आविष्कार ने आज सभी को भयाक्रान्त कर दिया है। मानवता के विनाश को रोकने के लिए आज हमें आपस की कटुता को दूर कर देना चाहिए। हम केवल सरकारों का ही समर्थन नहीं चाहते, वरन् सम्पूर्ण संसार की जनता का समर्थन चाहते हैं।

हमारा अन्तिम उद्देश्य स्पष्ट है। हमें केवल युद्ध का ही अन्त नहीं करना है। वरन् हमें एक ऐसे सुरक्षित विश्व तथा विश्व-स्वातन्त्र्य की सृष्टि करनी है जो कि न्याय तथा नैतिकता द्वारा शासित हो। शक्ति पर औचित्य की विजय हो तथा स्वार्थ-मय उद्देश्यों पर सार्वजनिक कल्याण की भावना विजय पाए।

('वर्तमान' से)

हिन्दुस्तानी और हिन्दी

श्री भदन्त आनन्द कौशल्यायन हिन्दी के सुलेखक ही नहीं किन्तु उसके प्रेमी भी हैं। इधर कुछ समय से वे हिन्दी की बड़ी संलग्नता के साथ सेवा कर रहे हैं। हिन्दी के गौरव की रक्षा के लिए वे जगह-जगह जाकर पाण्डित्यपूर्ण भाषण भी करते रहते हैं उनका ऐसा ही एक भाषण 'कर्मवीर' में छपा है जिसमें उन्होंने हिन्दी और हिन्दुस्तानी की बहुत सुन्दर विवेचना की है। उक्त अंश इस प्रकार है—

अँगरेजी और उर्दू के बाद इधर दो-तीन वर्ष से एक नई विचार-धारा ने अपना सिर उठाया है। उसका नाम है हिन्दुस्तानी विचार-धारा। जिस प्रकार किसी बोतल पर लगा हुआ लेबल बना रहे लेकिन उसके अन्दर की चीज बदल जाए वही हाल हिन्दुस्तानी लेबल का है। हम इस शब्द को हिंदी के साथ-साथ काम में लाते रहे हैं—जैसे 'हिंदी-हिंदुस्तानी' और यह हिंदी का पर्यायवाची भी रहा है, जैसे, हिंदी 'अथवा' हिंदुस्तानी। लेकिन इधर इस 'अथवा' में आमूल परिवर्तन हो गया है। पहले इसका मतलब था कि चाहे हिंदी कहो चाहे हिंदुस्तानी कहो, बात एक ही है। लेकिन अब इस 'अथवा' का अर्थ किया जा रहा है कि हिंदी और हिंदुस्तानी दोनों में से किसी एक का चुनाव करना होगा। यदि हिंदी का, तो हिंदुस्तानी का नहीं और हिंदुस्तानी का, तो हिंदी का नहीं।

हमारे इस प्रान्तीय सम्मेलन के द्वार पर आप सबने देखा होगा, लिखा है 'जय हिंद'। यह इस समय का हमारा राष्ट्रीय उद्घोष है। जिस प्रकार हम 'जय हिंद' कहते हैं उसी प्रकार 'जय हिंदी' भी कहना चाहिए।

हम हिंदीवाले वर्षों से प्रचार करते आए हैं कि राष्ट्रभाषा है इसलिए प्रत्येक हिंदी को, प्रत्येक भारतवासी सीखना चाहिए। इस नई विचार-धारा ने, जिससे हमें रहना चाहिए, कहना आरम्भ किया है कि हिंदी हिंदुओं है और उर्दू मुसलमानों की। यह ठीक है कि हिंदी हिंदुओं भाषा है, किन्तु हिन्दुओं की नहीं और इसी प्रकार उर्दू भी मु की ही नहीं। सर तेजबहादुर सप्रू उर्दू के प्रसिद्ध समर्थक हैं। मान नहीं काश्मीर के ब्राह्मण हैं। और अञ्जुमन तरक्कीये उर्दू पत्रिका 'हमारी जबान' के सम्पादक भी श्री ब्रजमोहन दत्ता उर्दू लिपि में आपका गोत्र ठीक-ठीक लिखा ही नहीं जा कोई भाषा किसी धर्म की बपौती नहीं। जो लोग हिन्दुओं की भाषा कह-कहकर और उसी प्रकार उर्दू को मु की भाषा कह-कहकर हिंदु-मुस्लिम सम्पादन की बात करते हैं—मुझे भय है कि इतिहास ऐ को, साम्प्रदायिकता का असाधारण प्रचारक न सिद्ध करे।

हिंदी के राष्ट्रभाषा होने पर एक और आपत्ति रही है जिसमें उसके गुण को उसका दोष कहा जा रहा जाता है कि ऐसी भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है 'जिसमें के शब्द हों, न अरबी-फारसी के'। यदि हमारी राष्ट्रभा सब काम करने हैं जो आज दिन हम अँगरेजी के माध्यम हैं, तो ऐसी भाषा जिसमें 'न संस्कृत के शब्द हों न अर के' हमारे लिए तीन कौड़ी की भाषा होगी। निर्णय करना ही होगा कि विशेष शब्द आवश्यक ही वार्य होने पर कहाँ से लें? स्याम में बैंक को धनागार और नोट को धन-पत्र। हम भारत में यदि इसी प्रकार लिखें, तो उसमें किसी को क्यों आपत्ति हो सकती है?

एक और मजे की आपत्ति यह है कि लोगों की हिंदी में और लोगों की राष्ट्रभाषा हिंदी में अन्तर होना अर्थात् जो हिन्दी किसी की मातृभाषा है वह राष्ट्रभाषा सकती। स्काटलैंड और ब्रिटेन के लोगों से अँगरेजी सम्बन्ध कहा जा सकता है जो मराठी भाषा-भाषी अथवा भाषा-भाषी लोगों का हिंदी से। इँग्लिश इँग्लैंड के मातृभाषा होते हुए भी सारे ब्रिटेन की राज्य-भाषा है ब्रिटिश साम्राज्य की साम्राज्यभाषा। तो क्या एक तरह अँगरेजों की मातृभाषा है और दूसरी तरह की अँगरेजी राष्ट्रभाषा और तीसरी तरह की अँगरेजी ब्रिटिश सा साम्राज्य भाषा? अँगरेजी अँगरेजी है। आप उसे मानकर सीखें, राष्ट्रभाषा मानकर सीखें या साम्राज्य भा सीखें। किंतु हम पराधीन हिंदियों को सुझाया जाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप होने चाहिएँ—एक मातृभाषावाला रूप, दूसरा राष्ट्रभाषा-रूप। सच्ची बात यह है कि मातृभाषा के अर्थ में तो हिंदी न के कुल चार-पाँच जिलों की भाषा होगी; शेष समस्त भारत ती हिंदी राष्ट्रभाषा ही है। और उसका स्वरूप निश्चित है। आज उसका प्रचार करना है; उसमें नए आवश्यक ग्रन्थों का ण करना है।

भारत और ब्रिटेन की सन्धि-योजना

मान' लिखता है—

भारत-सरकार के रिफार्म आफिस में स्पेशल डयूटी पर न आफिसर सर बी० नरसिंहराव ने सम्राट् की सरकार और वित विधान-निर्मात्री परिषद् के बीच होनेवाली संधि से न्ध रखनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना प्रारम्भ कर ा है। इसी प्रकार का कार्य इण्डिया आफिस में भी प्रारम्भ ाया है। ऐसा कहा जाता है कि सर नरसिंह की जाँच डया आफिस से स्वतन्त्र होगी और बाद में इण्डिया आफिस विशेषज्ञों और उनके बीच वार्ता का आदान-प्रदान होगा। नरसिंह उन सभी बातों पर विचार कर रहे हैं जो ब्रिटिश कार से भारतीयों के हाथ में पूर्ण शासन-सत्ता सौंपने पर स्थित होंगी। संधि-पत्र में वे सभी बातें आ जाएँगी जिनके लिए ट् की सरकार ने वचन दे दिए हैं। जातीय तथा धार्मिक संख्यकों की रक्षा का विधान उसमें रहेगा, परन्तु इस प्रकार कोई प्रतिबन्ध न होगा जो भारतीय संघ को ब्रिटिश साम्राज्य के किसी राष्ट्र से अपना सम्बन्ध निर्धारित करने में बाधक सारी शर्तें क्रिप्स-प्रस्तावों के आधार पर हैं। स्मरण रहे कि नरसिंहराव को जो कार्य दिया गया है वह अपनी तरह का न है। आयर्लैंड, मिस्र तथा दक्षिणी अफरीका से जो संधियाँ हैं वे ऐसी हैं जिनमें किसी में भी ब्रिटिश सरकार तथा विधान-त्री परिषद् के बीच वार्ता नहीं हुई है। ऐसा अनुमान है वावेल-योजना के अन्तर्गत विधान-निर्मात्री परिषद् सन् ४६ तझड़ के पूर्व न बुलाई जा सकेगी। प्रथम अड़चन प्रान्तीय निधियों में विधान-निर्मात्री परिषद् का स्वरूप निश्चय करने रे में आएगी और इसके बाद उक्त परिषद् का प्रातिनिधिक प निश्चित होने का प्रश्न आएगा। वर्तमान भारत-सरकार इस सम्बन्ध में अपना कोई विचार नहीं है। अतः सर नरसिंह प्रारम्भिक कार्य जातीय तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति पुराने वादों तक ही सीमित होगा। यदि आगामी अप्रैल अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हो गई तो सारी स्थिति ही बदल जाएगी।

सीमान्त गांधी और मुस्लिम लीग

सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फार खान एक सच्चे लोक-सेवक हैं। सीमाप्रान्त में वहाँ के निवासियों को लोक-सेवा के भाव से उन्होंनेखूब सङ्गठित किया है। एक कट्टर मुसलमान होते हुए भी उनके हृदय में देश-भक्ति की भावना विशेष स्थान रखती है। वे मुस्लिम लीग की नीति से सन्तुष्ट नहीं हैं। पेशावर में प्रेस-प्रतिनिधियों को एक वक्तव्य देकर इस सम्बन्ध में उन्होंने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। उक्त वक्तव्य 'वर्त्तमान' में इस रूप में छपा है—

चाहे कोई इसे पसन्द करे या न करे, मेरी यह खूब अच्छी तरह सोची-समझी हुई धारणा है कि मुस्लिम लीग कांग्रेस के भारत को स्वतन्त्र करने के प्रयत्नों को तोड़ने के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद-द्वारा बनाई गई है। चाहे कुछ भी क्यों न हो। सारी दुनिया मेरे खिलाफ क्यों न हो जाय, मैं अपने सच्चे विश्वास और आत्म-प्रेरणा के विरुद्ध नहीं जाऊँगा। यदि आवश्यक हुआ तो मैं अकेला रहकर भी अपना काम जारी रक्खूँगा।

जब तक लीग अपने अराष्ट्रीय और प्रतिक्रियावादी रुख में परिवर्तन नहीं करती, सामने आकर ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने को चुनौती नहीं देती, तब तक कोई भी स्वतन्त्रता-प्रिय विद्रोही भावनाओं से भरा हुआ भारतीय लीग में आने की इच्छा भी नहीं करेगा। लीग ने सदैव भारत के हितों को हानि पहुँचाई है।

कुछ लीगी नेता मुझसे लीग में आने के लिए अपील करते हैं। मैं हजार बार कहता हूँ कि मैं लीग में नहीं आऊँगा। लीग में आने की अपेक्षा मैं मर जाना पसन्द करूँगा।

मुस्लिम लीगी ब्रिटिशों की आर्थिक सहायता और प्रचार से मुसलमानों के साथ छल कर रहे हैं। लीग की नीति आत्म-घातक है।

शीघ्र ही लीग समाप्त हो जाएगी। ऐसी संस्था जिसके पास कोई क्रियात्मक प्रोग्राम नहीं है, और जिसका अस्त्र केवल हिन्दुओं के प्रति घृणा करना ही है, शीघ्र ही नेस्तनाबूद हो जाएगी।

संस्कृत को राष्ट्र-भाषा बनाओ

चन्दननगर में अभी हाल में 'अखिल भारतीय देव भाषा परिषद्' का सोलहवाँ अधिवेशन हुआ था उसके अध्यक्ष पं० बलदेव उपाध्याय ने अपने भाषण में इस बात की माँग की है कि संस्कृत भारत की राष्ट्र-भाषा बनाई जाए। उनके भाषण का सारांश 'जागृति' में छपा है जिसका कुछ अंश यह है—

संस्कृत भाषा का गौरव इतना अधिक है कि इसके परिमाण का ठीक ठीक अनुमान करना भी साधारण मनुष्य की शक्ति के बाहर है। संस्कृत को देश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्व को न्यून करना है। भारत के विभिन्न प्रान्तों के भिन्न भाषा-भाषी निवासियों में जो सांस्कृतिक एकता दीख पड़ती है उसका मूल कारण संस्कृत भाषा ही है। भारत में तो हिन्दू राजाओं के उत्कर्ष-काल में यह राजभाषा थी ही परन्तु भारत के बाहर भी जावा, सुमात्रा, बाली आदि देशों के हिन्दू राजाओं ने इसे अपनी राजभाषा बनाया था।

इन देशों की बोलियों में प्रचलित शब्द आधे से अधिक संस्कृत भाषा से लिए गए हैं। मलय प्रायद्वीप की भाषा (मलय) तथा जावा की कविभाषा चम्पा की 'चम' का मूल ही संस्कृत से सम्बद्ध नहीं है, अपितु इन भाषाओं की समृद्धि का सारा श्रेय संस्कृत को ही प्राप्त है। रामलीला और अर्जुनलीला हमारे ही आनन्द का विषय नहीं है, बल्कि वे जावा और बाली के निवासियों का भी मनोरंजन उसी प्रकार से करती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यह वाणी केवल भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों को ही एकता के सूत्र में नहीं बाँधती बल्कि बृहत्तर भारत के निवासियों को भी, भाषा तथा आचार की भिन्नता होने पर भी सांस्कृतिक एकता प्रदान करने का आयोजन करती है।

प्राचीन भारत में यह वाणी जनसाधारण की बोलचाल की भाषा भी थी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। इसी लिए पाणिनि ने इसे भाषा शब्द से व्यवहृत किया है। राजा भोज के समय तो इसका बोलबाला था ही। अतः इसके लोकभाषा होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं हो सकता।

आजकल राष्ट्रभाषा की समस्या बड़ी जटिल हो गई है। कोई हिन्दी को, कोई उर्दू को तथा कोई दोनों भाषाओं की बेमेल खिचड़ी हिन्दुस्तानी नामधारी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना चाहता है। ऐसी अवस्था में मेरी यह दृढ़ धारणा है कि राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता संस्कृत में ही विद्यमान है। भारत की प्रायः समस्त प्रान्तीय भाषाओं में संस्कृत के तत्सम शब्दों की प्रचुरता पाई जाती है। ऐसी दशा में यदि संस्कृत राष्ट्रभाषा बन जाए तो यह भारत के सभी प्रान्तों के लोगों के द्वारा आसानी से समझी जा सकती है। परन्तु इसके लिए महान् उद्योग करने की आवश्यकता है। संस्कृत भाषा को इतना सरल बना देना चाहिए कि सर्व-साधारण इसे सरलता से समझ सकें।

प्रतिनिधि-मण्डल को एक नेक सलाह

सर होमी मोदी भारत के प्रसिद्ध विचारवान् व्यक्तियों में जाते हैं। ब्रिटिश पार्लियामेंट का जो प्रतिनिधि-मण्ड समय भारत में भ्रमण कर रहा है, उसको उन्होंने एक उचित सलाह दी है। उनका वह महत्त्वपूर्ण परामर्श पत्रों में छपा है, जो इस प्रकार है—

भारत अपने प्रति सच्चा है और उस पर सन्देह नहीं चाहिए। वह अपनी लक्ष्य-प्राप्ति के लिए और प्रतीक्षा सकता। शिष्ट-मण्डल को जानना चाहिए कि मतभेद कुछ हिन्दू और मुसलमान कोई भी गुलामी पसन्द नहीं करता

देश के सामने प्रमुख प्रश्न ये हैं—(१) चुनावों के बा में जनप्रिय सरकारों और केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की (२) भारत का भावी विधान बनाने के लिए एक विधान का निर्माण।

यदि शिष्ट-मण्डल ठीक ढंग से आगे बढ़ेगा तो सूचना एकत्र करके भारत की आजादी में सहायक हो जो सबसे बड़ा काम है, वह यह है कि वह विभिन्न दलों का भेद न करे और इस प्रकार सम्भव है कि वह अस्थाय और विधान-परिषद् के प्रश्न पर समझौता कर ले।

यदि वे इस धारणा को ले लें कि इस स्थिति में असंभव है तो क्या वे इस प्रकार यहाँ से यों ही लौट ब्रिटिश सरकार का यह कहना कि नए विधान के दल एक मत हो जाएँ, कुछ हद तक ठीक उसके लिए जोर देते जाने से उनके वादों पर लगता है कि वे भारत को आजाद देखना यदि वे इसे नहीं तोड़ना चाहते हैं तो निश्चय ही ब्रिटे दिन भारत के विधान बनाने का भार अपने ऊपर परन्तु यदि वह यह सोचे कि नहीं, जब सभी दल मत हो जाएँगे तभी हम कुछ करेंगे और शिष्ट-मण्डल यही राय दे तो दोनों को यह समझ लेना चाहिए कि अब प्रतीक्षा करने की स्थिति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय नोट

भारतीय समस्या का निराकरण

भारतीय समस्या के निपटारे का नहीं किन्तु उसके एक और सो भी दृढ़ पहलू के ग्रहण करने का समय दिन-प्रति-निकट आता जा रहा है। सम्बन्धित क्षेत्रों में उसका कार्य सावधानी के साथ किया जा रहा है, प्रकट रूप से भी और रूप से भी। 'वर्तमान' को पता लगा है कि भारत-सरकार के में और विलायत में ब्रिटिश सरकार के इण्डिया आफिस के विशेष अधिकारी के निरीक्षण में सरकारी कागज उलटे-जा रहे हैं और यह सोचा जा रहा है कि भारत—और ब्रिटेन के बीच सन्धि नामधारी जो कागज लिखा जाएगा, रूप-रेखा कैसी हो। बाहर तो यह बार-बार कहा ही जा है कि ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स-प्रस्ताव वापस नहीं लिए हैं, ों-के-त्यों कायम हैं। सरकार के इस कथन को सार्थक करने ए भारत में उसके कूटनीतिज्ञ अधिकारी संलग्नता के साथ कार्य कर रहे हैं। इधर राष्ट्रीय भारत इस गति-विधि को से देख रहा है। उसके नेता पाश्चात्य कूटनीति के वारों से रक्षा कर अपने उद्देश्य की पूर्ति किस प्रकार करेंगे इसका वे सत्य और अहिंसा ही से दे रहे हैं। वे कूटनीति में दक्ष भी नहीं हैं। उनका सर्वप्रधान नेता उसकी आवश्यकता अनुभव तक नहीं करता। तथापि जो राजनीति का कुछ भी रखते हैं, वे तो जानते ही हैं कि ब्रिटिश सरकार के अधिकारी समय साम, दाम, दण्ड और भेद के प्रसिद्ध उपायों का प्रयोग ी सजगता के साथ कर रहे हैं। भारत-मन्त्री की घोषणा और त्ते के वायसराय के भाषण ने जिस प्रकार भारत के उग्रता-नेताओं को राह पर ले आने में सफलता प्राप्त की है, उसे नहीं जानता। उधर क्रिप्स प्रस्तावों के जीवित रहने से लीग सर्वा जिन्ना साहब ने अब यह माँग पेश की है कि भारत के न-निर्माण के लिए दो अलग-अलग सभाएँ संगठित की —एक हिन्दू-भारत के लिए और दूसरी मुस्लिम-भारत के । ऐसी ही परिस्थिति में भारत को नया आत्म-शासन-विधान ी व्यवस्था की जा रही है। कदाचित् भारत की इसी थति का वास्तविक रूप जाँचने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट तिनिधि-मंडल भारत का भ्रमण कर रहा है। उसके प्रति-

और उनके विचारों को जानकर जब बाहर आते हैं, तब उनकी प्रशंसा ही करते हैं। अर्थात् यह भी ठीक वह भी ठीक।

परन्तु भारतीय परिस्थिति के सँभालने में जो राजनीतिक कौशल भारत के वायसराय लार्ड वेवेल तथा उसके प्रधान सेनापति सर क्लाड ऐचिनलेक ने दिखाया है और अपने कार्यकाल में उन्होंने अपनी जिस उदार नीति का परिचय दिया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाएगी, थोड़ी होगी। भारतीय नेताओं से सम्पर्क स्थापित करने की जिस बात को आज ब्रिटेन के श्री विलियम जी कोव आदि जैसे चतुर राजनीतिज्ञ महत्त्व देते हैं, उसी महत्त्व के कार्य को सफलतापूर्वक निर्वाह करके वायसराय महोदय ने देश के सभी प्रमुख नेताओं को अपने हाथ में कर लिया है, उन्हें अपना प्रशंसक और मित्र बना लिया है। प्रधान सेनापति ने भी भारतीय सेना में भारतीयकरण की नीति को प्रमुखता देकर पहले से ही काफी अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। और अब आजाद हिन्द सेना के दंडित अफसरों को क्षमा-प्रदान कर वे सारे देश में प्रशंसनीय हो चुके हैं। यही दोनों सफल अधिकारी आगे चलकर ब्रिटिश सरकार की प्रस्तावित आत्मशासन-सम्बन्धी योजना को कार्य का रूप देने का भार ग्रहण करेंगे, जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता अवश्य प्राप्त होगी। यह बात निश्चय के साथ कही जा सकती है। ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञों ने जब पिछले महायुद्ध में जर्मनी और जापान जैसे पराक्रमी शत्रुओं को पूर्ण रूप से पराभूत करने में सफलता प्राप्त की है और जब वे उसके बाद संसार के अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र के राजनैतिक द्वन्द्व में सफलता के साथ अपने पौ बारह कर रहे हैं, तब भारत में, जहाँ सम्प्रदायवादियों के एक से एक सुदृढ़ गढ़ों में अपनी ढाई चावलों की खिचड़ी अलग पकाई जा रही है, अपनी लगाई हुई बाजी को जीत लेना आज की भारत की दयनीय परिस्थिति में उनके लिए बाएँ हाथ का खेल है। भारत, युद्ध-त्रस्त भारत, अन्न-वस्त्र से दुखी भारत, आज क्या चाहता है? इसकी व्यवस्था, देखना है, ब्रिटिश सरकार तथा भारतीय नेता किस प्रकार करते हैं, क्योंकि उसी पर भारत का भविष्य निर्भर करता है।

चीन के गृह-युद्ध का अन्त

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि चीन के वर्गवादियों तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, वह बन्द हो गया है और अब वे दोनों परस्पर मिलकर चीन के लिए एक प्रजातन्त्रीय शासन-विधान बनाने के लिए परस्पर समझौता कर रहे हैं। इसका सारा श्रेय अमेरिका के राजदूत जनरल जार्ज मार्शल को है। ये पिछले दिनों वर्गवादियों के प्रतिनिधि जनरल चू एन लाई और राष्ट्रीय सरकार के प्रतिनिधि जनरल चांग चुन के बीच जो समझौते की बातचीत हो रही थी, उसमें मध्यस्थता कर रहे थे। उन दोनों प्रतिनिधियों की चार बैठकें हुईं, जिनमें जनरल जार्ज मार्शल ने मध्यस्थता का काम ऐसी संलग्नता और बुद्धिमत्ता से किया कि उक्त दोनों प्रतिनिधि गृह युद्ध बन्द करने को राजी हो गए। फलतः चीन का गृहयुद्ध बन्द कर दिया गया है और दोनों दलों के बीच समझौते की वार्ता प्रारम्भ हो गई है। उस दिन वर्गवादी प्रतिनिधि जनरल चू एन लाई ने जन-परामर्शदात्री कौंसिल की एक बैठक में भाषण करते हुए हृदयस्पर्शी शब्दों में घोषित किया है कि 'अठारह वर्ष की पीड़ाओं तथा भ्रातृघाती संघर्ष के पश्चात् अब हम चीनी गणतन्त्र के संस्थापक सनयात सेन के सम्मुख शपथ लेते हैं कि अब हमारे चीन में कभी गृह-युद्ध नहीं होगा।' इस घोषणा से सिद्ध होता है कि वर्गवादियों में सुबुद्धि का उदय हुआ है और वे गृह युद्ध बन्द कर राष्ट्रीय सरकार के साथ मिलकर चीन में प्रजातन्त्र की स्थापना करना चाहते हैं। विश्वास किया जाता है कि प्रजातन्त्रीय शासन-विधान की रचना करने में वर्गवादियों और राष्ट्रवादी सरकार के प्रतिनिधियों में उपयुक्त समझौता हो जाएगा, जिसके फलस्वरूप निकट भविष्य में चीन की राष्ट्रीय सरकार सारे चीन में एक प्रजातन्त्रीय सरकार की स्थापना करने में सफल-मनोरथ होगी। निस्सन्देह इस सम्बन्ध में उसे अमेरिका के राजनीतिज्ञों का पूर्ण साहाय्य प्राप्त होगा। ऐसा होने पर ही चीन का महाराष्ट्र अपने गौरव के अनुरूप संसार में ऊँचा उठ सकेगा। यदि चीन के सभी वर्गों में ऐक्य की स्थापना हो जाएगी और वे एक राष्ट्र के रूप में अपनी नव संगठित प्रजातन्त्रीय सरकार को उपयुक्त ढङ्ग से कार्य-संचालन करने देंगे तो एशिया का यह महान् राष्ट्र कुछ ही काल के भीतर संसार की महती शक्तियों के समान ही अपनी उच्च स्थिति प्राप्त कर लेगा। चीन क्या जनबल में और क्या प्राकृतिक साधनों की सम्पन्नता में और क्या अपने क्षेत्रफल की विशालता में संसार का एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र है। दुःख यही है कि उसे अपने अनुरूप उन्नति करने का कभी अवसर ही नहीं मिला। चीनी राष्ट्र के नेताओं का यह परम कर्त्तव्य है कि वे निजी स्वार्थों को पीछे डालकर राष्ट्रीय स्वार्थ को आगे कर अपने राष्ट्र की समुन्नति के लिए यत्नवान् हों। और उनके राष्ट्र के सौभाग्य से आज उन्हें इसका अवसर भी प्राप्त हो रहा है। देखना है कि इस अवसर से वे कहाँ तक लाभ उठाते हैं।

मास्को-सम्मेलन का परिणाम

मास्को सम्मेलन राम-राम करके हो गया। [illegible] अमेरिका के राजदूत इस बार प्रसन्न-प्रसन्न अपने देशों [illegible] गए। इस सम्मेलन में कौन-कौन प्रश्न उठाए गए तथा किस प्रकार विचार हुआ, ये सब बातें किसी को नहीं [illegible] सकीं। ब्रिटेन और अमेरिका के राजदूतों ने प्रेस के प्रतिनि[illegible] जो वक्तव्य दिए उन्हीं से कुछ जाना जा सकता है कि सम्मेल[illegible] बातों पर विचार किया गया। वक्तव्यों से प्रकट होता है कि सभी बातें स्वीकार कर ली गई हैं, परन्तु किस रूप में तथा [illegible] तक यह सब उनसे नहीं प्रकट होता। अणुबम के सम्बन्ध में [illegible] है कि उस पर राष्ट्र-संघ की सुरक्षा समिति का नियन्त्रण रहे [illegible] प्रकार जापान के नियन्त्रण में रूस को भी समान अधि[illegible] जाएगा। अब रह गए ईरान और तुर्की आदि के प्रश्न, [illegible] सम्बन्ध में उन वक्तव्यों में कुछ भी संकेत नहीं किया गया [illegible] प्रकार मध्य योरप के छोटे बड़े स्वाधीन राष्ट्रों के सम्[illegible] मतभेद था, उस पर भी कोई प्रकाश नहीं डाला गया है। [illegible] अमेरिका यह कहते न सुना जाता कि उन देशों की [illegible] कारें तब तक मान्य नहीं की जा सकतीं, जब तक उनका [illegible] से नए निष्पक्ष निर्वाचनों के द्वारा संगठन नहीं हो [illegible] जो हो, मास्को-सम्मेलन में तीनों महत् शक्तियों के प्रति[illegible] मैत्री का भाव अवश्य रहा, जो कम महत्त्व की [illegible] है। यदि इन तीनों महाशक्तियों में इसी प्रकार मैत्री [illegible] बना रहा तो संसार की जटिल समस्याएँ [illegible] रूप में अवश्य निपट जाएँगी। परन्तु इन तीनों महा[illegible] अपना अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने का भाव अभी तक पू[illegible] है और जब तक उनमें इस सम्बन्ध में आवश्यक स[illegible] हो जाता, तब तक संसार में सुव्यवस्था की आशा [illegible] कल्पना के सिवा और कुछ नहीं है। परन्तु संसार [illegible] टिका हुआ है, अतएव यह आशा सदैव की जाएगी [illegible] शक्तियों में अवश्य ही आवश्यक समझौता हो जाए[illegible] एक कारण यह भी है कि एक अमेरिका को छोड़[illegible] पिछले महायुद्ध में गहरी चोट खा चुके हैं और [illegible] आर्थिक अवस्था सुधारने के लिए एक दूसरे के सहयो[illegible] आवश्यकता है। यही वह बात है, जो उन्हें एक [illegible] रखने को बाध्य कर रही है। मास्को सम्मेलन का [illegible] हुआ है, जो अन्ताराष्ट्रीय दृष्टिकोण से बड़े महत्त्व का [illegible]

केन्द्रीय असेम्बली का नया निर्वा[illegible]

केन्द्रीय असेम्बली के हाल के निर्वाचन का परिण[illegible] हो गया है। इस बार के चुनाव में कांग्रेस के ५६,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०, स्वतन्त्र दल के ६, योरपीय सदस्य ८ तथा २ अकाली
व चुने गए हैं। निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या एक सौ
। असेम्बली की पूर्ण सदस्य-संख्या १४२ है जिसमें ४०
य सरकार-द्वारा निर्वाचित होंगे। सरकार द्वारा निर्वाचित
सदस्यों में ज्यादा-से-ज्यादा २६ सरकारी अफ़सर होंगे।
प्रकार नई केन्द्रीय असेम्बली का सङ्गठन होगा। इस असे-
में कांग्रेसी पिछली असेम्बली की अपेक्षा संख्या में ग्यारह
क पहुँचे हैं। इसी प्रकार मुस्लिम लीगी पहले की अपेक्षा
अधिक हैं। इन दोनों का ही बल बढ़ा है और इसी प्रकार
जद सदस्यों की संख्या पहले से दूनी हो गई है। अन्य दल
य अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। परन्तु इस निर्वाचन के परिणाम
ह नहीं जाना जा सकता कि भारतीय लोकमत का वास्तविक
क्या है? निर्वाचन-क्षेत्र अति संकीर्ण होने के कारण एवम्
दायवादी गढ़ों के अस्तित्व में आ जाने से राष्ट्रीयतावादी जनता
बलाबल नहीं प्रकट हो सकता तथापि कांग्रेसी सदस्यों की संख्या-
से यह तो प्रकट ही हो गया है कि हिन्दू-निर्वाचन-मण्डलों
राष्ट्रीय भावना व्यापक रूप से अपना प्रभाव रखती है। हिन्दू
सभा के सदस्यों को बुरी हार खानी पड़ी है। यह इस बात
पूरा प्रमाण है कि वर्तमान संकीर्ण निर्वाचन-क्षेत्र में भी
स का ही बोल-बाला रहा। उधर मुस्लिम निर्वाचन-क्षेत्र में
का पहले जैसा ही प्राधान्य कायम रहा। वा राष्ट्रीयतावादी
लमानों ने यद्यपि लीग के उम्मेदवारों का अपने भरसक विरोध
ा परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। तथापि उनके उम्मेदवारों
जिस अनुपात से वोट प्राप्त हुए है, उससे प्रकट होता है कि
लम निर्वाचन-क्षेत्रों में आवश्यक प्रचार होने से राष्ट्रीयतावाद
ना विशेष स्थान प्राप्त कर सकता है। वे हिन्दू निर्वाचन-क्षेत्र
हिन्दू महासभा आदि के उम्मेदवारों की भाँति धराशायी नहीं
हैं। यह पहले से ही जाना हुआ था कि इस निर्वाचन का
परिणाम होगा। सरकार ने अपनी संकुचित नीति के कारण
तीयों को ऐसा मताधिकार ही नहीं दिया है कि केन्द्र में
प्रान्तों में सारे राष्ट्र के प्रतिनिधि निर्वाचित हो सकें। जब
देश के सभी वयस्कों को मताधिकार नहीं दिया जाता एवं
से पृथक् निर्वाचन का विष-वृक्ष उखाड़कर नहीं फेंका जाता,
तक भारत में प्रजातान्त्रिक शासन संस्थाएँ सत्ता में नहीं
सकतीं। अब देखना है कि सरकार ये निर्वाचन करवाने के
विधान-सम्मेलन का किस प्रकार सङ्गठन करती है, क्योंकि
उसी के द्वारा भारत को आत्मशासन प्रदान करने का वादा
चुकी है।

इण्डोनेशिया का स्वातन्त्र्य-युद्ध

भारतीय द्वीपपुंज अर्थात् इण्डोनेशिया में जो सशस्त्र युद्ध

पुञ्ज-निवासियों ने अपना ऐसा सुदृढ़ संगठन बना लिया है कि अँगरेजी सेना की सहायता से भी डच लोग उन्हें दबा नहीं सके। वस्तुतः वहाँ उनकी अपनी सुव्यवस्थित सरकार ही स्थापित है, जिसके अध्यक्ष डाक्टर अब्दुर्रहमान सोयकानों, उपाध्यक्ष डा० मुहम्मद हाटा, प्रधान मन्त्री डा० अमीर शरीफुद्दीन आदि-आदि हैं। इस सरकार का केन्द्र-स्थान जावा द्वीप के जोगजगराता नामक स्थान में है, जो बटाविया से ३०० मील दूर है। इस सरकार ने भारतीय द्वीपपुञ्जों की स्वाधीनता की घोषणा कर दी है और सारे द्वीपों पर अपनी सत्ता स्थापित करके वह डचों से युद्ध कर रही है। अध्यक्ष डाक्टर सोयकानों ने उस दिन गजकतरा से भाषण ब्राडकास्ट करके अपनी सरकार की स्थिति को भले प्रकार स्पष्ट कर दिया है। उन्होंने कहा है कि 'सात करोड़ इण्डोनेशियन एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाएँगे, जो विश्व के गणतन्त्रवादी राष्ट्रों की आर्थिक और राजनीतिक सहायता करेगा। उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता पा ली है और प्राणपण से वे उसकी रक्षा करेंगे।' उन्होंने अपने इन विचारों को कार्य का रूप ही नहीं दिया है, किन्तु समर-भूमि में अपने निश्चय की दृढ़ता को भी सिद्ध कर दिखाया है, जिसका आवश्यक प्रभाव डच सरकार के लेफ्टीनेण्ट गवर्नर जनरल डा० वान मूक पर भी पड़ा है। डा० वान मूक द्वीपपुञ्ज की समस्या के सम्बन्ध में परामर्श करने के लिए हालैण्ड गए हुए हैं, जहाँ उन्होंने एक भाषण करके अपने विचारों को व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है—

"जापानियों की पराजय और चीनी जनता की विजय ने एशियाई जनता में एक जबर्दस्त आजादी की भावना पैदा कर दी है, जो पहले की अपेक्षा अधिक गहरी और विस्तृत है। दूसरी ओर हम लोग भी अब पहले की औपनिवेशिक व्यवस्था को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह घृणा एक प्रकार के आदर्शवाद की लहर है। अतलांतिक अधिकारपत्र तथा संयुक्तराष्ट्रीय अधिकारपत्र ने इस भावना को जन्म दिया है। आत्म-निर्णय और स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्न करनेवाले देशों के प्रति विश्व के अन्य देश भी सहानुभूति रखते हैं। बम्बई, कोलम्बो और आस्ट्रेलिया में की गई हड़तालों ने सिद्ध कर दिया कि विश्व में एक अन्ताराष्ट्रीय भावना पैदा हो गई है और अब किसी देश को शक्ति-द्वारा अधिकार में नहीं रक्खा जा सकता।

"डच तथा ब्रिटिश मन्त्रियों में इण्डोनेशिया को उसके पैरों पर खड़ा करने के सम्बन्ध में मतभेद नहीं है। इण्डोनेशियनों और डचों के मिलते ही इण्डोनेशिया का पुनर्निर्माण प्रारम्भ हो जायगा।"

इस भाषण से प्रकट होता है कि डच सरकार भारतीय द्वीपपुञ्ज के स्वतन्त्रतावादियों का दमन करने में सफल नहीं हो सकी और अब वह समझौता करना चाहती है। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तैयार नहीं हैं, जो उनकी पूर्ण स्वतन्त्रता में सहायक न होता हो। उन्होंने अपनी एक सरकार ही संगठित कर ली है, जिसने सारे द्वीपपुंज की स्वतन्त्रता भी घोषित कर दी है। तब डच सरकार के साथ उनका समझौता नहीं किन्तु समानता की सन्धि ही हो सकती है। यह एक ऐसी समस्या है, जिसके शान्तिपूर्वक हल होने में ही दोनों पक्षों का हित है। प्रसन्नता की बात है कि इसके लिए दोनों ही पक्ष काफी प्रयत्न भी कर रहे हैं।

——

सरकार का एक नया आर्डीनेंस

युद्धकाल में चोर बाजारों में लोगों ने गहरी रकमें फटकारी हैं। सरकार ने अपनी शक्ति भर इस बात का प्रयत्न किया कि लोग अधिक नफाखोरी से बाज आएँ, परन्तु वह अपने प्रयत्न में सफल नहीं हो सकी। लोगों ने अपना ढङ्ग नहीं छोड़ा और नफाखोरी का बाजार बराबर गर्म रहा। इससे सर्वसाधारण को जो कष्ट उठाना पड़ा है तथा गहरी आर्थिक हानि झेलनी पड़ी है, वह सर्वविदित है। अब सरकार ने नफाखोरों को राह पर लाने के लिए एक नए उपाय का अवलम्बन किया है। हाल में एक नया आर्डीनेंस निकालकर ५००) के, १०००) के, १०,०००) के नोटों को उसने गैरकानूनी घोषित कर दिया है। इस आर्डीनेंस का विवरण दैनिक 'प्रताप' में इस प्रकार छपा है—

'चोर बाजार से पैदा की गई चालू पूँजी को बड़े-बड़े पूँजीपतियों ने बड़े-बड़े नोटों के ही रूप में जमा कर रक्खा है। सरकार ने चोर बाजारी को रोकने के लिए तीव्र उपायों से काम लेना जरूरी समझा, इसी लिए यह आर्डीनेंस बनाया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य यह भी है कि इस प्रकार की चालू पूँजी से सरकार अवगत हो सके तथा कर वसूल करनेवाले अधिकारी भी जान सकें। सरकार को सन्तोष है कि साधारण नागरिक पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा।'

यह परम सन्तोष की बात है कि सरकार अपने साधारण नागरिकों का विशेष रूप से ध्यान रखती है। क्या ही अच्छा होता, यदि सरकार अपने साधारण नागरिकों की सुविधा का विचार कर एक ऐसा भी आर्डीनेंस बनाने की उदारता दिखाती, जिसके अनुसार कण्ट्रोल की सरकारी दूकानों में कंकड़ और बजरी मिले हुए अन्न का विक्रय गैरकानूनी ही न घोषित हो जाता, किन्तु इसकी बराबर देख-रेख भी रक्खी जाती कि सर्व-साधारण को जो अन्न खरीदना पड़ता है, वह साफ-सुथरा तथा निर्दोष है।

——

कोरिया की दयनीय अवस्था

युद्धकाल में अमेरिका की ओर से कहा गया था कि [illegible] परन्तु [illegible] हो गया। परन्तु [illegible] ऐसे ही [illegible] आज जब जापान पराजित हो गया है, कोरिया का कोई [illegible] अस्तित्व नहीं है। कोरिया एक स्वतन्त्र राष्ट्र रहा है। इधर [illegible] ने अपने अभ्युदय-काल में उस पर अधिकार कर [illegible] अधीन कर लिया था। तभी से बहुसंख्यक देशभक्त [illegible] निवासी अमेरिका पहुँचकर अपने देश की स्वतन्त्र [illegible] आन्दोलन करते रहे हैं। इस महायुद्ध के समय अमेरिका [illegible] आश्वासन से उनका उत्साह बढ़ गया था और जापान [illegible] पराजित करने में उन लोगों ने यथासंभव सहायता भी [illegible] परन्तु अभी तक ऐसा कोई लक्षण दिखाई नहीं दे रहा [illegible] कोरिया को पहले जैसी स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। इस समय [illegible] कोरिया में रूसी सेनाओं का अधिकार है और दक्षिणी [illegible] अमेरिका की सेनाओं का। दक्षिणी कोरिया में एक मर्म्स और और है कि वहाँ वर्गवादियों और अवर्गवादियों में खासा [illegible] खड़ा हुआ है, जिसमें अमेरिकावाले वर्गवादियों के [illegible] का साथ दे रहे हैं। उधर उत्तरी कोरिया के निवासी [illegible] हैं क्योंकि रूस सरकार उन्हें स्वतन्त्र नहीं कर रही है। [illegible] अभी हाल में जो सम्मेलन हुआ था, उसमें भी [illegible] स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में कोई निर्णय नहीं किया है। [illegible] यदि कोरियावासियों में महाशक्तियों के प्रति विद्रोह [illegible] यह सर्वथा स्वाभाविक ही है। विजयी महाशक्तियों [illegible] क्या, कोरिया के सदृश अन्य पहले के स्वाधीन देशों [illegible] उदारता का व्यवहार कहाँ कब किया है? कोरिया [illegible] एशियाई देश ठहरा! पहले के कई एक योरपीय स्वतन्त्र [illegible] जब अभी तक अपनी स्वतन्त्र स्थिति प्राप्त नहीं कर [illegible] उस कोरिया को कैसे सरलता से स्वाधीनता मिल [illegible] एक जमाने तक जापान की पराधीनता में पड़ा [illegible] है। तो भी आज जैसी अन्ताराष्ट्रीय स्थिति है, उसको [illegible] रखकर कोरिया के देशभक्त नेता अपने देश को स्व[illegible] का सुख-स्वप्न भले प्रकार देख सकते हैं। साथ ही उसे [illegible] का प्रयत्न भी कर सकते हैं। रह गया उसका स्वतन्त्र [illegible] सर्वथा रूस और अमेरिका की दया पर निर्भर है, [illegible] समय यही दोनों देश कोरिया को दो हिस्सों में बाँटकर [illegible] अधिकार किए हुए हैं।

——

तुर्की और रूस

इधर तुर्की और रूस में मनमुटाव अधिक बढ़ [illegible] पहले महायुद्ध के अन्त में रूस ने तुर्की की [illegible] सहायता की थी। कहा तो यहाँ तक जा सकता है कि [illegible] समय उसको रूस की सहायता न मिली होती [illegible] तो तुर्की का जैसा अपना अस्तित्व प्राप्त [illegible] ऐसे ही तुर्की से आज रूस ऐसी माँगें कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तित्व को संकट में डाल सकती हैं। रूस उसके प्रसिद्ध जल-मरुमध्य में अपना अबाध प्रवेश चाहता है। यही नहीं, वह उससे उसके दो प्रान्त भी ले लेना चाहता है। इसके लिए रूसी ों में काफी अधिक कड़ा आन्दोलन हो रहा है। परन्तु तुर्की प्रजातन्त्र सरकार ने रूस की माँगों को स्वीकार नहीं किया है। डमरुमध्य की माँग के सम्बन्ध में वह पहले ही स्पष्ट रूप से चुका है कि मांट्रो समझौते से सम्बन्धित राष्ट्रों की सम्मति के ना वह उस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कर सकता। हाल में न्तों की माँगों के सम्बन्ध में भी उसने अपनी स्थिति स्पष्ट कर है। उसके प्रधान मंत्री डा० शुक्रु सराजोग्लू ने अंकारा यो से भाषण करते हुए कहा है कि 'तुर्की की सीमा पर बसे र्स और अर्दहन प्रान्तों पर सोवियट यूनियन का कोई अधिकार है। रूस-तुर्की युद्ध के बाद सन् १८७८ ई० में ये प्रान्त रूस अपने में मिला लिए थे, किन्तु प्रथम महासमर के पश्चात् और तुर्की में जो समझौता हुआ था, उसके अनुसार ये दोनों न्त पुनः तुर्की में आ मिले थे। तुर्की को कार्स और अर्दहन के त रूस-द्वारा दिए नहीं गए थे, बल्कि लौटाए गए थे।' तु आज का प्रबल रूस तुर्की के प्रधान मंत्री की इस न्याय-उक्ति का स्वागत करने को तैयार नहीं दिखाई देता है। रूस सर्वेसर्वा स्टालिन साहब की जन्मभूमि जार्जिया है और तुर्की के दोनों प्रदेशों के निवासियों में जार्जिया की भाषा बोलनेवाले धिक संख्या में हैं। अतएव रूस तुर्की के जार्जिया भाषी प्रदेशों अपने जार्जिया प्रदेश का अंग समझ ले, तो उसके लिए यह स्वाभाविक बात नहीं होगी। यही कारण है कि रूस बहुत कुछ लिन साहब की मातृभूमि के विचार से उन प्रदेशों की माँग रहा है। और द्वितीय महायुद्ध के फलस्वरूप रूस की जो प्रबल ति हो गई है, उसको देखते हुए यही जान पड़ता है कि तुर्की कुछ ही समय के उपरान्त ऐसा जोर डाला जाएगा कि वह चाप उन दोनों प्रान्तों को रूस के हवाले कर दे। जैसे अमे-ा के कहने पर उसे अपने जलडमरुमध्य में रूस आदि को शाधिकार देना स्वीकार करना पड़ा है, वैसे ही अपने उक्त ों प्रदेशों को भी उसे रूस को देना ही पड़ेगा, क्योंकि तुर्की उतनी शक्ति नहीं है कि वह बिना किसी दूसरी महाशक्ति सहायता के रूस के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण कर सके। और आज कोई शक्ति नहीं है, जो तुर्की के लिए रूस से लड़ाई लेगी।

जापान की दण्ड-व्यवस्था

पराजित जापान आज ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका के सैनिक त्रण में है। मास्को-सम्मेलन के समझौते के अनुसार इस त्रण में अब रूस का भी भाग होगा और जापान का सैनिक-नियंत्रण ब्रिटेन, अमेरिका तथा रूस के एक कमीशन के हाथ में दिया जाएगा। कहा जाता है कि इस समझौते से जापान के वर्तमान अमेरिकन प्रधान मैक आर्थर साहब असंतुष्ट हैं और वे कदाचित अब अपने पद से हट जाएँगे। चाहे जो हो, उनके अधिकार-काल में जापान पर अमेरिका की पूर्ण सत्ता स्थापित हो चुकी है, जिसके फलस्वरूप जापान की वर्त्तमान सरकार उनके हाथ की कठपुतली-मात्र ही रही है। इस नियंत्रण-काल में जापान किस स्थिति को पहुँच चुका है, इस पर थोड़ा बहुत प्रकाश ब्रिटेन के 'न्यूज आफ दि वर्ल्ड' ने डाला है। उसने लिखा है—

'जो जापान आज अद्भुत ढङ्ग से झुक गया है, वही कभी विश्व की सबसे विकट और खतरनाक समस्या बन जाएगा। जापान की गरीबी, बेकारी, अकाल और शायद प्लेग वहाँ उग्र राष्ट्रीयता को जन्म देने में सहायक होंगे, यहाँ तक कि आज भी उसके पुनर्जन्म के लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं। दक्षिणीय भाग में हजारों जापानी सैनिक जहाजों-द्वारा बाहर से लाकर उतारे जा रहे हैं। रणक्षेत्रों से आए हुए अनेक सैनिक इतने रुग्ण और दीन-हीन अवस्था में हैं कि कठिनाई से जमीन पर चल-फिर सकते हैं। किन्तु दूसरे लोग भी हैं, जो युद्धकाल में काफी खुशहाल थे। और अब उनके भूखों मरने की नौबत आ रही है। चारों ओर लोगों में असंतोष फैल रहा है। ओसाका में निकाले हुए सैनिक संगठन करके भोजन की तलाश में हमले कर रहे हैं। खाद्य-गोदामों पर अमेरिकन चौकीदारों की हत्या की जा रही है। अमेरिकन सैनिकों की लाशें नदियों और नहरों में पाई जा रही हैं। जापानी अधिकारी जान-बूझकर इस स्थिति की उपेक्षा कर रहे हैं और आशा करते हैं कि इस रूप में वे अन्त में अधिकार करनेवाली सेनाओं के विरुद्ध जनता को उभार सकने में सफल होंगे। सर्वत्र जापानी उत्तरोत्तर उद्दण्ड और लापर्वाह होते जा रहे हैं। भय के स्थान पर क्षोभ उत्पन्न होता जा रहा है। अपराधों की संख्या बढ़ती जा रही है। कब्जा करने का काम भी अब शुरू हुआ है। जापानी माता-पिता अपने बच्चों को यह उपदेश दे रहे हैं, कि वे उदीयमान सूर्य के प्रतीक के सम्मुख सम्मानपूर्वक नतमस्तक हों, जो गत कई दिनों से हजारों जापानी गृहों पर लहराने लगा है। ये बातें तथा दूसरी प्रतिक्रियाएँ अत्यन्त महत्त्व रखती हैं।'

यह हाल है उस जापान का, जिसने द्वितीय महायुद्ध में अपने विकट पराक्रम का परिचय दिया था और अमेरिका, चीन तथा ब्रिटेन से भयानक युद्ध किया था। पराजित हो जाने पर आज वह नितांत दयनीय अवस्था को प्राप्त हो चुका है। अब विजयी राष्ट्रों को चाहिए कि वे जापान में ऐसी व्यवस्था करें, जिससे जापानी लोग भविष्य के शांत नागरिक बन सकें और उनमें ऐसा कोई भाव न पैदा हो, जिससे उनमें बदला लेने की प्रवृत्ति का जन्म हो। ऐसा करने से ही विश्व में शांति की स्थापना हो सकेगी। जापान ने जो भीषण अपराध किया है, उसका दण्ड उसे अवश्य मिलना चाहिए। परन्तु वह दण्ड ऐसा न हो जो उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने के स्थान में शत्रु ही बनाए रहे। राजनीति में क्षमा का स्थान कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, इस बात की ओर विजयी राष्ट्रों का ध्यान अवश्य ही होना चाहिए।

सरकार की नियंत्रण-सम्बन्धी नीति

सारे देश में सरकार ने भोजन वस्त्र का वितरण अपने हाथ में ले लिया है। सरकार-द्वारा निश्चित दर पर भोजन और वस्त्र देश के बड़े-बड़े शहरों के निवासियों को दिया जाता है। उसकी इस नियन्त्रण नीति का ग्रामों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। वहाँ उन लोगों को, जो खेती-बारी नहीं करते, भोजन-सामग्री प्राप्त करना एक कठिन समस्या बन गई है। वस्त्रों का प्राप्त करना सभी के लिए कठिन हो गया है। शहरों में बँधे कोटे के अनुसार भोजन और वस्त्र जैसे-तैसे मिल भी जाते हैं, परन्तु वे कैसे होते हैं, उनकी चर्चा करना अनावश्यक है। सरकारी दूकानों में जो अन्न मिलता है, उसमें इतना अधिक कूड़ा कर्कट मिला रहता है कि उनका साफ करना गृहस्थों के लिए एक नया काम हो गया है। तथापि लाचारी की दशा में यह सब कष्ट देशवासी चुपचाप झेल रहे हैं। माँ-बाप सरकार ने नियन्त्रण के चौकस नियम बना दिए हैं। इससे अधिक उसका और क्या कर्त्तव्य हो सकता है। वह समझती होगी कि उनका अक्षर-अक्षर पालन किया ही जाता होगा। तभी तो उसके उच्च अधिकारी अपनी नियन्त्रण-सम्बन्धी योजनाओं के ऊपर आवश्यक ध्यान देना तक उचित नहीं समझते। उस दिन कानपुर में जिला 'फूड एडवाइजरी कमेटी' की एक बैठक हुई थी। उसमें प्रान्तीय गवर्नर के सलाहकार श्री जे० ई० पैडले भी उपस्थित हुए थे। सदस्यों ने मि० पैडले से कहा कि राशनिंग का गेहूँ जो कम कर दिया गया है वह बढ़ाया जाय, मिट्टी के तेल का कोटा बढ़ाया जाय, चावल की स्थिति से काफी असन्तोष है तथा कपड़े की हालत को देखते हुए ऐसा मालूम पड़ता है कि मिलों में कपड़े का उत्पादन रोक दिया जाता है। इसकी सरकार द्वारा जाँच हो और यदि जाँच में यह त्रुटि पाई जाए तो उचित कार्यवाही की जाए। मि० पैडले ने बताया कि गेहूँ कमी के कारण बढ़ाया नहीं जा सकता, चावल की स्थिति अच्छी होने का अनुमान है। मिलों के उत्पादन के सम्बन्ध में जाँच की जाएगी और मिट्टी के तेल का कोटा बढ़ा दिया जाएगा। शक्कर के सम्बन्ध में भी आपने स्थिति स्पष्ट की।"

कैसे हृदयस्पर्शी उत्तर हैं! युद्ध समाप्त हो चुका है, उसका कोई खतरा भी नहीं दिखाई दे रहा है, परन्तु हमारे अधिकारी युद्ध के पहले की स्थिति पुनः ले आना आवश्यक नहीं समझ रहे हैं! इससे अधिक इस देश के असहाय और दुःखी प्रजाजनों का दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

नए राष्ट्र-संघ की स्थापना का प्रारम्भ

जनवरी के दूसरे सप्ताह में लन्दन में अतिप्रत्याशित राष्ट्र-संघ की स्थापना का कार्य बड़े आडम्बर के साथ किया इस अवसर पर इक्यावन राष्ट्रों के प्रतिनिधि दल-बल एकत्र हुए। कुल प्रतिनिधियों की संख्या दो हजार थी सिवा चार सौ पत्रकार भी थे। प्रतिनिधियों को सम्राट् दावत दी थी। संघ के कार्य-संचालन के पूर्व ब्रिटेन के मन्त्री एटली साहब ने स्वागत भाषण किया था, जो था। उनके भाषण से इस बात का पता लगता है कि इस की संयोजक कमेटी की बैठकों में प्रतिनिधियों में काफी गर्म बहसें हुई हैं, जो ऐसे सम्मेलनों के लिए सर्वथा स्वाभाविक सम्मेलन ने अपनी पहली ही बैठक में सुरक्षा समिति का करने का निश्चय किया। इस पर रूसी प्रतिनिधि ने यह किया कि इसके संगठन के लिए परस्पर विचार करने समय देना चाहिए। परन्तु अमेरिका के प्रतिनिधि ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। मत लिए जाने पर चौंतीस बहुमत से रूसी प्रतिनिधि का प्रस्ताव गिर गया। उसके ही वोट आए। आठ राष्ट्र निरपेक्ष हो गए। इस पर रू निधि ने सुरक्षा समिति के छः अस्थायी सदस्यों के राष्ट्रों के नाम पेश किए। वाद-विवाद के बाद उनमें राष्ट्रों के नाम स्वीकार किए गए, जो ये हैं—ब्राजील मेक्सिको और पोलैण्ड। शेष दो न्यूजीलैण्ड और नार्वे पर आस्ट्रेलिया और हालैंड चुने गए। इस सुरक्षा पाँच महाशक्तियों के प्रतिनिधियों को स्थायी सदस्यता दी अर्थात् अमेरिका, रूस, ग्रेट ब्रिटेन, चीन और फ्रांस के इसमें स्थायी सदस्य के रूप में हैं। शेष छः अस्थायी दो वर्ष के लिए रहेंगे, जिनका चुनाव सम्मेलन में किया इस प्रकार काफी वाद-विवाद के बाद सुरक्षा समिति का हुआ है। नए राष्ट्र संघ की यह सुरक्षा समिति ही स्थायी शान्ति के लिए उत्तरदायी रहेगी। परमाणु बम समिति की देख रेख भी इसी समिति के अधीन समिति संसार के राजनैतिक झगड़ों की जाँच करेगी। सुरक्षा-समिति का कहना नहीं मानेगा, उसे निकाल बाहर लिए वह राष्ट्र-संघ से कह सकती है। इसकी एक सैनिक कमेटी भी होगी। सेना-सम्बन्धी प्रस्ताव इसकी समिति में लाए जा सकेंगे और पास होंगे। इस प्रकार ही राष्ट्र संघ की मूलाधार होगी। यदि यह नया राष्ट्र-संघ यह सर्वशक्तिसम्पन्न समिति सुचारु ढङ्ग से कार्य संचा पाएँगी तो विश्व में निश्चय ही सुख-शान्ति की सकेगी। यदि महाशक्तियों ने यहाँ भी अपने स्वार्थों रस्साकशी का बाजार गर्म किया तो पिछले राष्ट्र-संघ की भी अन्त में विफलता का ही सामना करना पड़ेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले महायुद्ध से भी अधिक भीषण लोक-संहारक युद्ध का ट बनना पड़ेगा। सम्मेलन के इस प्रथम अधिवेशन में ही बात भले प्रकार स्पष्ट हो गई है कि यहाँ भी रूस अल्पमत में संसार के अधिक राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेन के साथ ही ई दे रहे हैं। यदि राष्ट्र-संघ की यही स्थिति बनी रही, यदि भी दलबन्दी का जोर रहा तो उसके पवित्र उद्देश्य चित् ही पूरे हो सकेंगे। परन्तु ऐसी आशंका करना ठीक है। राष्ट्र संघ में दलबन्दी अधिक समय तक टिक नहीं सकेगी मतभेदों के समाप्त हो जाने पर तथा वर्तमान कठिन प्रश्नों लझ जाने पर राष्ट्र-संघ को ऐसा अवसर शीघ्र ही मिल जाएगा उसमें न्याय का ही बोलबाला हो जाएगा। सारा संसार न्तपूर्वक रहना चाहता है और जब राष्ट्र-संघ उसकी गारण्टी दे है, तब उसके सदस्य ऐसी बात क्यों करने लगे कि उन्हें तथा संसार को लोक संहारक युद्धों का सामना करना पड़े। एक बात है जो इस नए राष्ट्र-संघ को आकर्षक रूप देती है। व युद्ध त्रस्त दुःखी संसार उसे आशा भरी दृष्टि से देख रहा ीर परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह विश्व में स्थायी न्ति स्थापित करने में सफल मनोरथ हो।

देशी नरेशों में राष्ट्रीय भावना

भारत के देशी नरेशों में, जान पड़ता है, राष्ट्रीय भावना जाग्रत् हुई है। इसका संकेत सबसे पहले रीवाँ के तेजस्वी नरेश राज गुलाबसिंह ने भारत सरकार द्वारा नियुक्त जाँच-कमीशन स्वीकार करके किया था। दूसरा संकेत उन्हीं महाराज ने समय दिया, जब जाँच-कमीशन से निर्दोष सिद्ध होने पर कशमकश के बाद वे अपने राज्य में आने पाए। पिछली दशमी के अवसर पर उन्होंने अपने राज्य में उत्तरदायी न स्थापित करने की घोषणा की। और अब उस दिन नरेंद्र-ल के चांसलर भोपाल के नवाब साहब ने नरेंद्र-मण्डल के वेशन में एक प्रस्ताव पास करके यह घोषित किया है कि नरेश भारतीयों की शासन सम्बन्धी आकांक्षाओं की पूर्ति पना सहयोग देने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं। नरेंद्र-मण्डल स प्रस्ताव से यह भले प्रकार सिद्ध हो जाता है कि देशी भारतीय नेताओं की तरह भारतीय स्वाधीनता के पक्षपाती पक्षपाती ही नहीं किन्तु भारतीयों की वह माँग पूर्ण हो, इसमें श के नेताओं का यथासंभव साथ देने को भी तैयार हैं। इस का जो राजनैतिक जागरण देशी नरेशों में हुआ है, उससे ी विदित होता है कि वे अपने राज्यों में वैसा ही शासन लत करेंगे, जिसकी इस समय ब्रिटिश भारत में प्रचलित होने शा की जा रही है। अब तक देशी नरेशों ने अपनी न-व्यवस्था में भारतीय नौकरशाही का अनुकरण करके जो भूल की है, उसका उन्हें, जान पड़ता है, पूर्ण अनुभव हो चुका है। अपने प्रजावर्ग के पिछले दिनों के उग्र आन्दोलन से उन्होंने पूर्ण शिक्षा ग्रहण की है। यही कारण है कि अब उनके भी विचारों में काफी अधिक परिवर्तन हो चुका है, अन्यथा नरेंद्र मण्डल में उक्त प्रकार का क्रान्तिकारी प्रस्ताव पास होने की कौन कहे, उपस्थित तक न किया जाता। परन्तु आज देश का राजनैतिक वायुमण्डल बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका है और उसका प्रभाव हमारे इन राजाओं पर भी पड़ा है। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने उपयुक्त समय पर अपनी राष्ट्रीय भावना का परिचय देकर अपने अनुरूप ही कार्य किया है। इससे उनके गौरव और मर्यादा की वृद्धि ही हुई है।

पश्चिमी एशिया की राजनैतिक परिस्थिति

पहले महायुद्ध की समाप्ति के बाद जब तुर्की साम्राज्य का अंगच्छेद हुआ था, तभी योरप की दो प्रधान महाशक्तियों का अर्थात् फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन का पश्चिमी एशिया में आधिपत्य स्थापित हुआ था। इस द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद अब उस क्षेत्र में दो अन्य महाशक्तियों का अर्थात् अमेरिका और रूस का आगमन हुआ है। रूस ने इस अंचल में अपना प्रभाव बढ़ाने के उद्देश्य से ईरान के अजरबैजाँ प्रदेश को एक स्वतन्त्र राज्य का रूप ग्रहण करने में सहायता दी है। उसके इस कार्य से ईरान तथा ईराक के अन्य भागों में कुछ फिरकों ने उसी प्रकार का भाव प्रकट करना शुरू किया है। इसी प्रकार रूस पश्चिमी एशिया के उत्तरी अंचल में अपना प्रभाव धीरे धीरे स्थापित कर रहा है। उधर अमेरिका अधिक मृदुल नीति ग्रहण कर और साऊदी अरब से समझौता करके मिट्टी के तेल के अपने कारबार को विस्तृत करने की योजना को कार्य का रूप दे रहा है। वह अपने तेल क्षेत्र से एक हजार मील लम्बी तेल की पाइप लाइन अरब के आर पार बनाकर भूमध्यसागर के तटवर्ती एक बन्दरगाह तक ले जा रहा है। उसने अपने हितों की रक्षा के लिए एक बहुत बड़ा हवाई अड्डा भी स्थापित कर लिया है। इसके सिवा फिलिस्तीन में यहूदियों के बसाने के पक्ष में होने के कारण वह वहाँ की राजनीति पर अपना प्रभाव अलग डाल रहा है। सीरिया और लेबनान में फ्रांस पहले से ही डटा हुआ है। यद्यपि पिछले दिनों उसके प्रभाव को विशेष क्षति पहुँची है, तथापि अपने वहाँ के हितों से वह बराबर चिपका हुआ है। अँगरेज फिलिस्तीन, ट्रांसजोरडन, ईराक आदि में अपना जोर पूर्ववत् ही बनाए हुए हैं। इसी प्रकार ईरान में भी इँगलैंड और अमेरिका दोनों ही अपना प्रभाव रखते हैं। अब रह गए अफगानिस्तान और तुर्की, सो ये दोनों रूस तथा ब्रिटेन के प्रभाव-क्षेत्रों के बीच में स्थित होने के कारण अभी तक किसी के प्रभाव विशेष में नहीं हैं। हाँ

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस के भय के कारण अँगरेजों की ही सहायता पर निर्भर करते हैं। पश्चिमी एशिया की ऐसी राजनैतिक परिस्थिति का मूल कारण वहाँ का मिट्टी के तेल का विशाल भाण्डार है, जो अभी तक ब्रिटेन और अमेरिका के हाथ में था, परन्तु अब उसमें रूस भी हिस्सा बँटाना चाहता है। यह एक ऐसी परिस्थिति है, जिसे कोई भी स्वतन्त्रताभिमानी देश एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर सकता। पश्चिमी एशिया के उक्त सभी मुसलमान देश स्वतन्त्र होते हुए भी अपनी निर्बलता के कारण परतंत्र-से ही हैं, यद्यपि उनमें नव जागरण के लक्षण प्रकट हो चुके हैं, विशेष कर अरब देशों में जो अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए एक संघ का भी निर्माण कर चुके हैं।

अब जब नवीन राष्ट्र-संघ की स्थापना हो जाएगी तब बहुत संभव है कि ये सभी दुःखी राज्य उसके द्वारा अपने हितों की रक्षा करने का प्रयत्न करें। राष्ट्र-संघ की जो सुरक्षा समिति स्थापित हो चुकी है, उसमें ईरान ने अजरबैजाँ प्रदेश के सम्बन्ध में अपना दावा पेश भी कर दिया है। इसी प्रकार भी लेबनान एवं फिलिस्तीन आदि के भी प्रश्न उठाए पश्चिमी एशिया के इन प्रश्नों का उक्त समिति द्वारा होगा, उससे प्रकट हो जाएगा कि विश्व में शांति का दायित्व उठानेवाले इस नवीन राष्ट्र-संघ में कितनी है। राजनीतिज्ञों का यह कहना है कि पश्चिमी एशिया समय तीन महाशक्तियाँ जिस प्रकार के राजनैतिक दाँव रही हैं, उनसे विश्वशांति को खतरा हो सकता है जो हो, इतना तो स्पष्ट ही है कि पश्चिमी एशिया के देशों की शान्ति इस समय जोखिम में है और वहाँ अशा उग्र रूप यदि प्रकट नहीं कर रही है तो इसका कार कि महाशक्तियों की राजनैतिक पैंतरेबाजी अभी उस नहीं पहुँची है, वह केवल अपने अपने स्वार्थों की र सीमित है। यदि यह बात यहीं तक होकर रह जाए के उक्त भूखण्ड के लिए यह सबसे महत्त्व की जाएगी।

उपदेश तथा सदाचार-संबंधी पुस्तकें

चरित्र-गठन—चरित्र-निर्माण के लिए जिन-जिन विषयों का ज्ञान अनिवार्य रूप से अपेक्षित है उन सभी पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। मू० १।–) एक रुपया पाँच आने।

बाल-रवीन्द्रनाथ—कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ के जीवन की उन सभी घटनाओं का इसमें समावेश किया गया है, जिनकी जानकारी प्राप्त करना बालकों के लिए आवश्यक है। मू० ॥=)॥ साढ़े दस आने

भक्त शिशु—इस पुस्तक में अत्यन्त शैशवकाल में भगवान् के प्रति अपनी अपार भक्ति प्रदर्शित करके जीवन को धन्य करने-वाले ध्रुव, प्रह्लाद आदि कई भक्तों का चरित संक गया है। मू० १) एक रुपया।

बाल-द्विवेदी—आधुनिक हिन्दी-गद्य के निर्माता महावीरप्रसाद द्विवेदी का यह जीवन-चरित सरस्व पं० देवीदत्त शुक्ल ने विशेष रूप से बालकों के लिए मू० ॥≡) ग्यारह आने।

प्रह्लाद—भक्तवर प्रह्लाद का संक्षिप्त और सरल लिखा गया जीवन-वृत्तान्त। मू० ।–) पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

Printed & Published by A. Bose at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन ज़रूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः रेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं शास्त्रोक्त अंगूरों का ताज़ा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग -१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा ट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफ़ेदे का गिरना) रोकने में फल होते हैं वहाँ कुछ ही ख़ुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमज़ोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म ने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर र हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के होने बन्द हो जाते हैं। ख़ून भूख लगती है, ख़ून एक बड़ी में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन तथा बाद की कमज़ोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष षि है। **नारी-सुधा** की २६ ख़ुराकों की एक बोतल का —पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। श्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

गाइए—

२ शहरों में हम ऐजेन्सी स्थापन कर रहे
नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्संदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक सुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TQ. 28-122 HJ

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधासिंधु-बालसुधा

एवं प्रख्यात निजी पेटेंट तथा शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता

सुख-संचारक कम्पनी, लि०,

सुख-संचारक बिल्डिंग, सुख-संचारक पोस्ट आफ़िस,

मथुरा

युक्त प्रांत में

अपने ढंग का एकमात्र विश्वसनीय विशालकाय कार्यालय

हमारी विशेषताएँ

१—हमारा अपना निजी ५५वर्षीय अनुभव।

२—औषधें वैद्यक की ऊँचे से ऊँची उपाधि प्राप्त विशेषज्ञ और अनुभवी वैद्यराज, उपवैद्यराज के निरीक्षण में निर्माण होती हैं।

३—अप्राप्य व दुष्प्राप्य खनिज एवं वनौषधियों के प्राप्त करने के संगठित साधन।

४—कड़ी, गठीली वनस्पतियों के चूर्ण-विचूर्ण करने, गोलियाँ, टिकियाँ बनाने व कार्क फिट करने और अन्य विभिन्न कार्यों के लिए आधुनिक पद्धति की मशीनें।

५—औषधियों का अधिक परिमाण में तैयार करने तथा इकट्ठा सामान मँगाने के कारण सस्ती और सर्वोत्तम तैयार होना।

विशेष विवरण के लिए बृहत् सूचीपत्र मुफ्त मँगाइए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

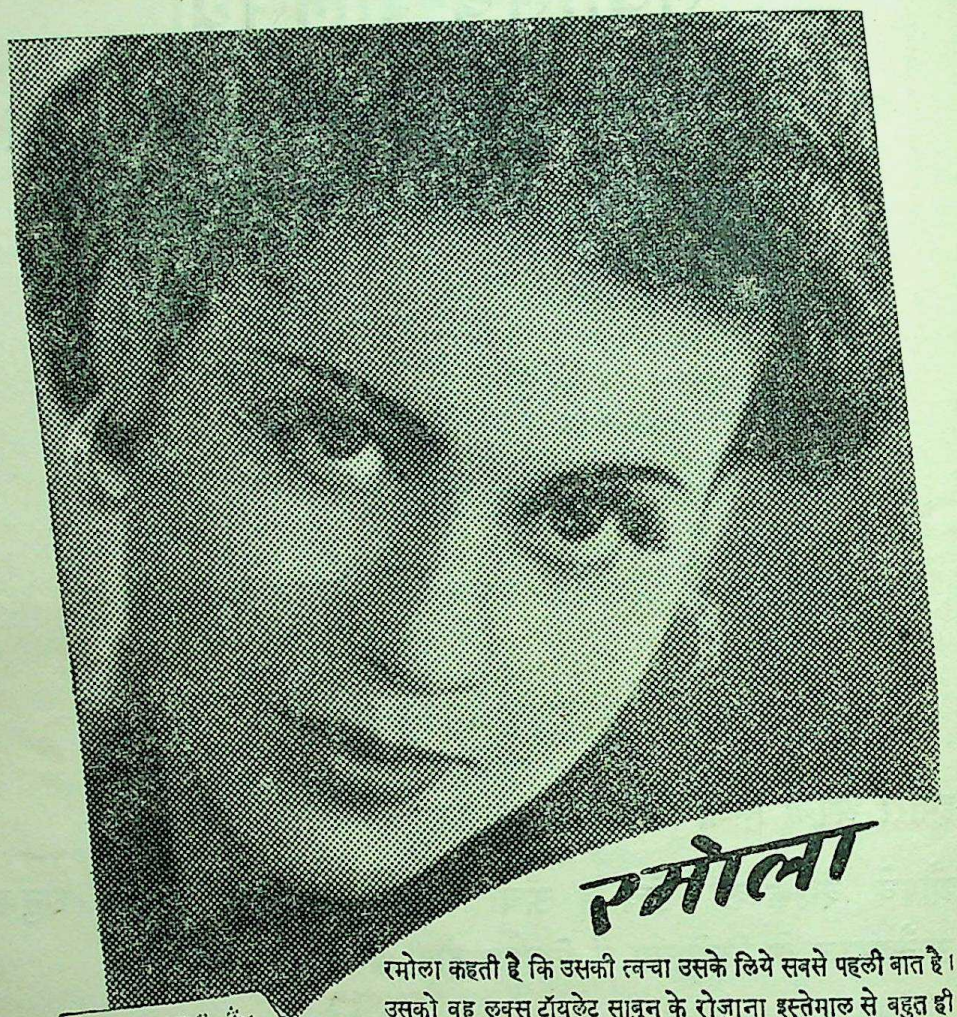

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली बात है। उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से बहुत ही निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की यह सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही दावा है कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे किसी भी स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

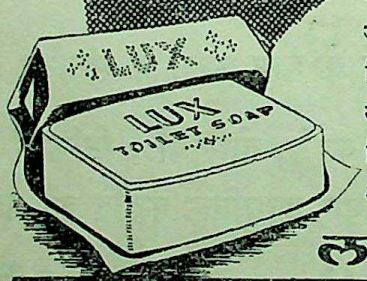

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 130-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस

दंतमंजन

ये दोनों ही चीजें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

परिडतिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप गर्मीसे परेशान क्यों हैं, जबकि विनोलियासे एक
स्नान कर लेनेपर आप शीतल हो जायेंगे ? अपने
लसलसा क्यों रखते हैं, जबकि मक्खन. जैसे
साबुनका फेन आपको ताजा बना और रख सकता है।
आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा आनन्ददायक
प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और शरीर पर
टानिककी तरह इसका असर होता है।

यह कितना आनन्ददायक है !

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, EN

VWR 17-221 HJ

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं यह स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है वश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में नहीं करना चाहिये, इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मर्ल बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमज़ोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमज़ोर होती है। ऐसी अवस्था में भारतविख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आज़मूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरु और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी- मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। क़ीमत एक डिब्बा ३=); डाकख़र्च माफ़; पैकिंग ख़र्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी नं० ४२७ धनकु

का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष नमूने

जे. के. का नाम भारतीय टेक्सटाइल मिलों में अपनी उत्कृष्ट बुनाई और छपाई के कारण सारे भारतवर्ष में प्रख्यात है। अत्यंत आकर्षक नमूनों और रंगो के होते हुए भी जे. के. के कपड़े १५% से २०% तक अधिक मज़बूत होते हैं।

साड़ियाँ, कमीज़ के कपड़े मलमलें, छपे हुए कपड़े लहे, चादरें, और सूती कैनवस इत्यादि।

जे. के. काटन स्पीनिंग एन्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लीमिटेड, कानपूर.

यह जे. के. इन्डस्ट्री है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

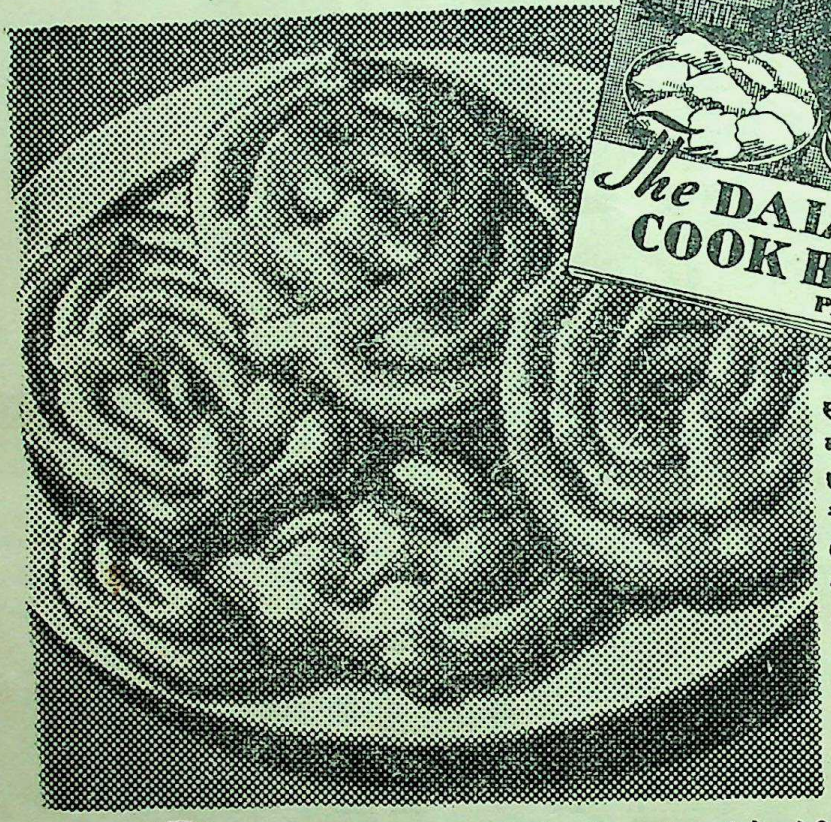

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D121 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमेसे तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमेसे उतनीही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते हैं तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करनेसे थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हरएक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढिया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ उत्तम दवा ही
आपके फेफड़ों के लिये गुणकारी है

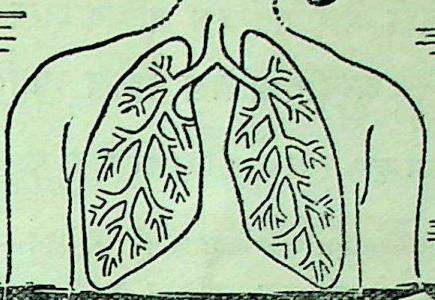

सिरोलीन 'रुचि'
शरदी और खांसी के लिये

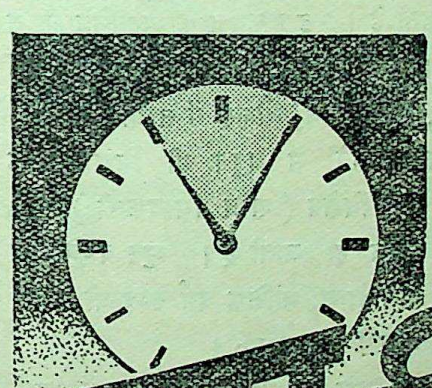

सभी दर्दके सामने
'वि'-विजय-क्षण

सारिडन

लेनेके १० मीनीट बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजज्योतिषी

जगत्-प्रसिद्ध ज्योतिषी और तान्त्रिक पण्डित हरिश्चन्द्र शास्त्री, ज्योतिष-तीर्थ,

अध्यक्ष अखिल बङ्गाल ज्योतिष-संघ,

ज्योतिष-गृह, १४१।१ सी, रशा रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

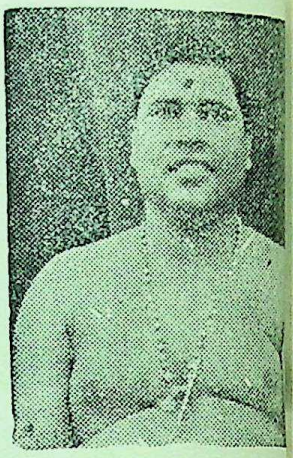

हजारा पार्क के ठीक पूर्व में, फोन—९७८।

ये महान् ज्योतिषी न केवल पूर्वीय और पाश्चात्य ज्योतिष के ही प्रकाण्ड पण्डित हैं, प्रत्युत हस्त रेखाशास्त्र (सामुद्रिक विद्या) के भी पहुँचे हुए पारखी हैं। जो भी आपके निकट सम्पर्क में आए हैं, वे आपकी अलौकिक आध्यात्मिक शक्ति के उन आश्चर्यजनक परिणामों से पूर्णतः सन्तुष्ट हैं, जो आपने महामाया श्री सिद्धेश्वरी की भक्ति कर और उन्हें प्रसन्न कर प्राप्त की है।

योग और तन्त्र द्वारा आपने, ग्रहों के दुष्परिणामों को दूर कर देने तथा पेचीदे कानूनी मुकदमों और असाध्य बीमारियों से रोगी को स्वस्थ कर देने में निश्चित सफलता प्राप्त करने की असाधारण शक्ति प्राप्त कर ली है।

आपकी आश्चर्यजनक कवचों द्वारा निश्चित सफलता मिलती है

शान्ति कवच :—मन की शान्ति, पारिवारिक प्रसन्नता, असाध्य रोगों पर विजय, दुर्घटनाओं से रक्षा, अकाल-मृत्यु से आग और चोरी का भय-उन्मूलन तथा परीक्षाओं में इससे सफलता मिलती है। इस कवच को पहननेवाला सभी परिशानियों जाता है, क्योंकि इससे दुष्ट ग्रहों की शान्ति हो जाती है। साधारण का मूल्य ५) रु०; विशेष (शीघ्र लाभकारी) का २०) रु

बगला कवच :—रोजगार-धन्धे में सफलता, अभिलाषा की पूर्ति, राजसम्मान, नौकरी में तरक्की, व्यापार में उन्नति, धन और सभी पर अपना प्रभुत्व रखना इस कवच से प्राप्त होता है। अनेक व्यक्तियों ने बहुत ही निराशाजनक और पेचीदे मुकदमों में इस कवच से सफलता प्राप्त की है। साधारण का मूल्य ११) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) का ४५) रु०।

नृसिंह कवच :—स्त्रियों की सभी तरह की बीमारियाँ इससे ठीक हो जाती हैं। मृत बच्चे को बलपूर्वक गर्भ निकलने से जो दोष रह जाते हैं उन्हें दूर करना, बाँझ स्त्रियों के भी पुत्र प्राप्त होना, मासिक धर्म सम्बन्धी दोषों के ठीक कर कवच के प्रभाव हैं। साधारण का मूल्य १०) रु०, विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) २६) रु०।

आकर्षिणी कवच :—जिस व्यक्ति को पाने की इच्छा हो (स्त्री या पुरुष) पूर्णतः अधिकार में आ जाता है जिस वञ्छित कार्य कराया जा सकता है। साधारण का मूल्य १२) रु० विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) ५०) रु०।

उन आदरणीय महानुभावों में से कुछ के नाम, जिन्हें व्यक्तिगत रूप से आपकी भविष्यवाणी, फलित ज्योतिष की ठीक तथा सामुद्रिक और तान्त्रिक शक्तियों का परिचय मिल चुका है :—

महाराजाधिराज बर्दवान; हिज हाईनेस राजा धेनकानल (उड़ीसा), नेपाल के राना कर्नल गोविन्द शमशेर जंग बहादुर; चाण्डलेर, इँगलैंड; श्री० लीलाराम मैगूराम, हैदराबाद, सिन्ध; श्री बुलबुल देसाई, डायरेक्टर, अमर पिक्चर्स; श्री सुरेन्द्रना आगरा; श्री जी० आर० मदन, लाहौर, श्री के० वेंकट राव, विजगापट्टम; श्री फजलुलहक, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, बङ्गाल; श्री चौखानी, अध्यक्ष, भारत लक्ष्मी स्टूडियो, कलकत्ता; श्री रोहनीकुमार चौधरी, मन्त्री आसाम मन्त्रि-मण्डल; श्री० पी० आर बार-एट-ला, पटना; श्री जी० डी० खेतान, व्यापारी कलकत्ता और भागलपुर, राय बहादुर सूरजशास वाहसराय, दिल्ली; नर्तक श्री उदयशङ्कर आदि :।

समस्त पत्र-व्यवहार अँगरेजी में किया जाना चाहिए

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वकाल में प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों के बीच राजघराने की एक रमणी प्रस्तर-निर्मित एकान्त ताल के शीतल जल में स्नान कर रही है। उसके शरीर पर मधुर, सुगन्धयुक्त तेल का लेप करने के पूर्व दासी उसे उसकी बुकनी से प्रस्तुत उबटन लगाती थी; क्योंकि इस प्राचीन काल में साबुन का किसी ने नाम भी नहीं सुना था। आजकल हमाम साबुन की सुविधायें और आनन्द सभी को प्राप्त हैं। हमाम साबुन के मुलायम घने फेन में मैल दूर करने एवं ताज़गी पहुँचानेवाले जो तत्त्व वर्तमान हैं, उनकी कल्पना स्वप्न में भी उस सुन्दर रमणी ने अपने हरम के उद्यान में नहीं की थी।

हमाम

आपके नहाने के लिए बड़ा साबुन

टाम्को सेल्स डिपार्टमेन्ट, जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद।

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०, टाटापुरम् और बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आटोमेटिक पाकेट पिस्तौल

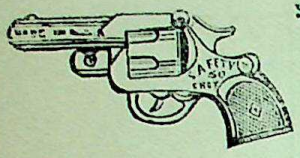

शक्ल और आवाज में बिल्कुल असली पिस्तौल। चोर, डाकुओं और भयावह जानवरों से बचने के लिए सर्वोत्तम जब खतरे की सम्भावना हो, इसकी आवाज से शत्रु को कँपा सकते हैं। लाइसेन्स की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। कीमत नं० ५५, ५ रु० नं० ६६, ६ रु० नं० ७७, ७ रु० स्पेशल ८ रु० सर्वोत्तम ९ रु०। पैकिंग तथा पोस्टल खर्च १) स्पेशल १० पैकेट और अन्य ५ पैकेट मँगाने पर कारतूस मुफ्त। हर एक आर्डर के साथ सुन्दर १ डमी कलाई घड़ी और २ लाइट मुफ्त भेजी जायेंगी।

जाड़े के लिए अच्छे स्वेटर

पहनने में बहुत बढ़िया, गरम और मुलायम है। हर एक डिजाइन का मिल सकता है। मूल्य नं० (१) का पूरे साइज और पूरे आस्तीन का ५॥=) अच्छा ६॥) बिना आस्तीन का ४) और बढ़िया ७॥)। छोटे साइज का नं० (१) २।=) बढ़िया ३) डाक-खर्च १) दो एक साथ लेने से डाक-खर्च माफ। दो से ज्यादा लेने पर २) मनी आर्डर द्वारा एडवान्स भेजिए। आर्डर भेजते वक्त अपने सीने की नाप भेजें।

इंडियन ब्रांच स्टोर पोस्ट बक्स नं० १२२०४ कलकत्ता

रजिस्टर्ड पीयूष रसायन

ग्राम्य वातावरण में बहुमूल्य औषधियों तथा हरित वनस्पतियों के स्वरस द्वारा निर्मित होकर बीसों प्रकार के प्रमेह-स्वप्न-दोष (ख्वाब), बहुमूत्र, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात तथा स्त्रियों के पेशाब मुकाम से बहनेवाले सोम एवं प्रदर रोगों को शीघ्र नष्ट करनेवाली एकमात्र अद्भुत एवं अचूक औषधि है। १५ रोज की दवा का दाम सिर्फ ३) पेशगी मूल्य आने से डाक-खर्च माफ।

भगवतीप्रसाद शर्मा विशारद (रजिस्टर्ड पीयूष कार्यालय) तिवा दहिगवाँ, पो० बालामऊ मा० हरदोई।

सफ़ेद कोढ़ का दुश्मन

इस महाराष्ट्रीय प्रसिद्ध दवाने हजारों कोढ़ के रोगियों को मुक्त किया। भगवानजी पानाचन्द जी पाचोर पूर्व खानदेश इनके पुत्र का कोढ़ आराम होने पर उन्होंने हमको ५१ रुपया इनाम दे दिया। सारे शरीर पर सफेद कोढ़ के दाग हों वह ऐसे नष्ट हो हो जाते हैं कि कोढ़ कहाँ था इसका पता भी नहीं लगता। मूल्य १० रु०, पो० ख० ११ आ० १० रुपया मनी आर्डर से भेजने से दवा रजिस्ट्री से भेजी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जीवन-क्रान्ति

यह समाजिक उपन्यास है। इसमें सेठ-साहूकारों तथा आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की हृदयहीनता, पुलिस अन्य अधिकारियों के हथकंडों और मुट्ठी गरम करने निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार के कष्ट भ लिए विवश करने के मायाजाल का आकर्षक वर्णन है। में अत्याचारी के हृदय-परिवर्तन का अपूर्व चित्रण है। पृष्ठ ४००। सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य-मर्मज्ञों के मत का बहुत ही मौलिक ढंगसे कराया गया है। ४०० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ५।—) पाँच रुपये पाँच आने।

अपनी बात

मनुष्य के चरित्र में जो दुर्बलताएँ होती हैं उन्हें दूर किस प्रकार जीवन को उन्नत बना सकता है, यही बात इ में ओजपूर्ण भाषा में, निजी अनुभव के आधार पर, लिखी है। यह पुस्तक प्रत्येक युवक को पढ़नी चाहिए ।॥) बारह आने।

गांधी-मीमांसा

इस पुस्तक में पं० रामदयाल तिवारी बी० ए०, एल बी० ने गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की तर्कपूर्ण विवेचना की है। इसे आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधी रूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्त कण्ठ प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या ८५०। सुन्दर सजिल्द प्रति ४) चार रुपये।

आलोचनादर्श

इसके लेखक डा० रामशंकर शुक्ल 'रसाल' एम पुस्तक महत्त्व की है। इसमें समालोचना का अन्य सम्बन्ध, साहित्य-समालोचना, आलोचना, सुरुचि और आलोचना का ऐतिहासिक विकास आदि पर भली भ डाला गया है। अध्ययन, अध्यापन और रचनाकार के लिए यह पुस्तक बड़े काम की है। ३०० पृष्ठों पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर बुकडिपो

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापना] जुकाम, सर्दी पर अकसीर उपाय !! १९२६

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड
आदि बीमारियों में बचानेवाला।
१ औ० शीशी ॥), दर्जन ५॥=), डा० ख़र्च अलग

युकॅलिप
न बाम
सूचीपत्र मुफ़्त
युकॅलिप
दाद का मरहम

खांडालेकर बन्धु, बम्बई ४.

प्रकाशित हो गई

मार्क्स का दर्शन

[लेखक—भूपेन्द्र सान्याल]

(स्वर्गीय शचीन्द्रनाथ सान्याल के भाई, अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य, युक्तप्रान्तीय ट्रेड यूनियन के भूतपूर्व उपसभापति, 'समाजवाद की ओर' आदि के प्रणेता।) मूल्य २) रु०

प्रकाशक, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े के सूजन (ब्रांकाइटिस) हो जायगी। इससे बचने का रास्ता बड़ा आसान है। केवल-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मालिश करो, उसकी गरमी सीधे हृदय तक पहुँचती है और रक्त को निरोग रखने में बहुत बराबर मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा सर्दी से सर्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा :—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

क्यों आपने अभी तक नहीं पढ़ा ?

'शामूँ की माँ'

माँ की उदारत का शिक्षाप्रद, सरल, सादा और सुन्दर संस्कृतिमय करुण एवं मधुर कथात्मक चि । ३०० पृष्ठों की पुस्तक की मत सिर्फ १) एक रुपया। मगाने का पता—

अ० वि० गृह प्रकाशन : ६२४ सदाशिव, पूणे।

दर्जी-विज्ञान

यह पुस्तक सरल हिन्दी में शिल्प-कला के सुप्रसिद्ध प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित हुई है। सिलाई कटाई सीखने के लिए यह सचित्र और वैज्ञानिक ढँग की नई पुस्तक है। विद्वान् लेखक ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि इस पुस्तक के सामने किसी भी गुरु की आवश्यकता नहीं है। इसके ३ भाग हैं, तीनों भागों का लागत मूल्य ४॥) है।

पता—हिन्द टेलरिंग कालेज, पीलीभीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूटेक्स

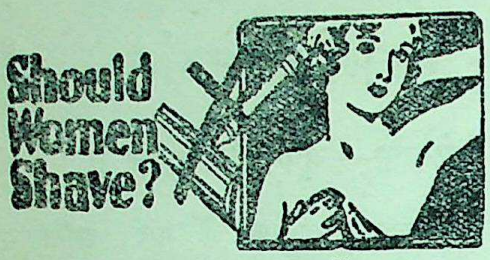

कृपया ध्यान दें

अब आप केवल ३ मिनट में भद्दे तथा अनावश्यक बालों को
ना छुए, पाउडर पेस्ट के लगाये, जिनसे बाल और जल्दी तथा
निकलते हैं, बड़ी सरलता पूर्वक नष्ट कर सकते हैं। न्यूटेक्स
डस्टीट के एक आविष्कारक का सनसनीपूर्ण आविष्कार है
सने कई वर्ष तक स्थायी तथा सुखद तरल पदार्थ के आविष्कार
व्यतीत कर दिया। उसकी खोज का परिणाम जायज था जो
अब न्यूटेक्स में मिलाया जाता है और जिससे बालों की जड़ें
बड़े सस्ते, सुन्दर तथा सुरक्षित रूप से बहुत जल्द साफ हो
ती हैं, किसी भी प्रकार की जलन नहीं होती और न गन्ध ही
ती है।

सभी औषध-विक्रेताओं के यहाँ मिलती है। आप नीचे पते
मँगावें।

न्यूटेक्स (इंडिया) कं०,
प्रिंसेस स्ट्रीट, बम्बई।

पागलपन की अचूक औषधि

पागल बटी

अनिद्रा, चित्तभ्रम, विचारवायु, मगज़ की अस्थिरता
उन्माद वगैरह को दूर करके मगज शान्त व बुद्धिमान् बनाने
के लिए अनेकों रोगियों पर परीक्षित, विश्वसनीय, चमत्कारिक
औषधि है। की० ४८ गोलियों की डि० रु० ३)

मदनमंजरी फार्मेसी जामनगर काठियावाड़

इलाहाबाद एजेंट—मदनस्टोर्स कैमिस्ट जोन्स्टन गंज
बनारस एजेंट राधेलाल एन्ड सन्स बैटरीवाला, चौक

हकीम लक्ष्मी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बालजीवन घुट्टी

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती
कमज़ोर बच्चो को ताक़त वर बनाती.
ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार
नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।
— मू० शी० ७ दर्जन २॥) डा० व्य० अ० —
सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो
नए सौदागर नमूना मुफ़्त मगावें।

पता० बालजीवन कार्यालय अलीगढ़ यू० पी०

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी खुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। कीमत एक डिब्बा २—) तीन डिब्बा ५॥) डाक-खर्च माफ, पैकिंग खर्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..और उसने
लाइफबॉय की
आदत भी सीखी है!

सूई के हर एक टाँके के साथ वह एक गुणवन्ती नन्हीं बालिका बनने की शिक्षा ले रही है। उसकी माता जानती है कि वह एक स्वस्थ बालिका भी होगी, क्योंकि उसने प्रतिदिन लाइफ़बॉय सोप के प्रयोग की आदत भी सीख ली है। यह आदत उसे स्वास्थ्य और शक्ति के गुप्त शत्रु गन्दगी के ख़तरे से बचाती है।

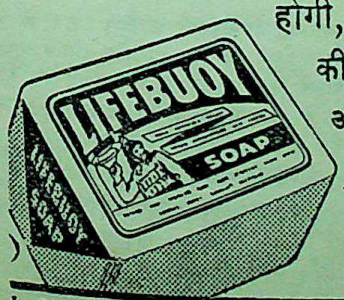

लाइफबॉय का व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

L. 81-23 HI
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक बाल-सखा

अपनी सन्तान को सन्तुष्ट रखने का यत्न सभी माता-पिता करते हैं। सन्तान को प्रसन्न देख माता-पिता के आनन्द का ठिकाना नहीं रहता। बच्चों को प्रसन्न रखने के लिए बढ़िया भोजन, कपड़े और खेल-कूद का सामान अपनी हैसियत के अनुसार सभी जुटाते हैं। लेकिन उनको सन्तुष्ट रखने का सबसे उत्तम साधन है उनको अच्छा साहित्य पढ़ने को देकर उनकी बुद्धि को विकसित करना।

इस काम में माता-पिताओं की सहायता करने के लिए हमने बाल-सखा का 'वार्षिक अङ्क' निकालना आरम्भ कर दिया है। यह बारह अङ्कों से पृथक रहता है। सन् १९४६ के वार्षिकाङ्क में ऐसी सामग्री रहेगी, जिसको पढ़कर बालक फूले नहीं समायेंगे। बढ़िया कविताएँ, अच्छी कहानियाँ, वैज्ञानिक लेख, देश-विदेश की यात्रा, भ्रमण, उपन्यास और हास-परिहास आदि की ऐसी सामग्री रहेगी जिसको पढ़ने से बालकों का ज्ञान-वृद्धि होगी और मनोरञ्जन तो होगा ही। इसे बालक मिठाई और खिलौने से भी अधिक पसन्द करेंगे। चित्रों की अधिकता रहेगी ही।

वार्षिक बाल-सखा की माँग बहुत रहती है। कुछ घरों में तो एक से अधिक प्रतियाँ ली जाती हैं। इसमें अच्छे कागज के ३०० से भी अधिक पृष्ठ रहेंगे। लगभग चौथाई भाग रङ्गीन छपेगा। हिन्दी में यह वार्षिकाङ्क अनोखी वस्तु होगी। इसलिए आप अपने वार्षिक अङ्क की प्रति के लिए अभी से रजिस्टर में नाम लिखा लीजिए जिससे प्रतियों के बिक जाने पर आपको निराश न होना पड़े।

मासिक बाल-सखा का वार्षिक मूल्य ३) एक प्रति का मूल्य ।)
बालसखा के वार्षिकांक का मूल्य ३) सर्वसाधारण से
मासिक बालसखा के ग्राहकों से रियायती मूल्य २॥)
रियायती मूल्य के लिए अपना ग्राहक नंबर अवश्य लिखिए।

मैनेजर :—बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी

(नवीन संस्करण)

वर्तमान साहित्य की वैज्ञानिक समीक्षा करनेवाली प्रमुख पुस्तक

महावीरप्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र कुमार आदि साहित्यिकों पर विवेचनात्मक १९ लेख।

लेखक—अध्यापक श्री नन्ददुलारे वाजपेयी

भूमिका में वर्तमान साहित्य का परिचय और प्रत्येक धारा के कवियों तथा लेखकों का समीक्षात्मक उल्लेख है। पुस्तक में काव्य, कला और साहित्य के स्थायी प्रतिमानों के आधार पर इस शताब्दी के प्रमुख साहित्यिकों की मीमांसा की गई है। वर्तमान युग की सभी रचना-धाराओं का सन्निवेश इस पुस्तक में है।

साहित्यिक और कलात्मक विवेचन की यह पुस्तक उच्च श्रेणी के विद्यार्थियों और साहित्यिकों के लिए अनिवार्य है। मूल्य पाँच रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

केवल एक दिन

मेजिक मिस्मेरिज़म

द्वारा लड़के को ज़मीन पर लिटाकर और चादर से अजीब व ग़रीब प्रश्नों के सही-सही उत्तर पूछना, आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी सब दर्शकों की घड़ियों में ६½ इत्यादि बजा देना, आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निपानी के अन्दर आग के अङ्गारों का नाच कराआदमी को उड़ा देना इत्यादि अनेक तिलस्मात अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमाञ्चकारी करिश्मे

दूसरे ही दिन

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर बड़े-बड़े धुरन्धर बुद्धिमानों और प्रोफ़ेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर उनको पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेनेवाला यह सब एक दिन में जान किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं—ऐसा इ और गारण्टी है। फ़िलहाल इसकी क़ीमत केवल पाँच रुपया।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र "वीर अर्जुन" तथा कुँवरसाहब जी की जोरदार सिफ़ारिश के साथ सैकड़ों प्रशंसापत्र प्राप्त।

यह सब एक दिन में न आवे तो क़ीमत वापिस।

दी यूनाइटेड वण्डरफुल मेजिकल कम्पनी

विभाग नम्बर २६, मुरादाबाद यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई पुस्तकें

शैतान का खेल

सचित्र पुस्तक है। इसमें एक बोतल में बन्द भूत का रञ्जक क़िस्सा है। यह भूत उस व्यक्ति की सब इच्छाएँ करता था जिसके कब्जे में यह बोतल रहती थी। इस ल को कब्जे में रखने में और तो सब सुबीता था, एक ही नाई थी कि मरते समय जिसके अधिकार में बोतल रहती उसे क में गिरना पड़ता। यह बोतल जितने में मोल ली जाय कम दाम में बेचने की शर्त थी। इस प्रकार यह बोतल लोगों के पास रही, पर सभी इसे दूसरों के हाथ बेचने फिक्र में रहते थे, यद्यपि उन्हें किसी चीज की कमी न थी। रोचक कहानी है। एक बार हाथ में लेने पर बिना ए किये पुस्तक छोड़ने को जी नहीं चाहता। बढ़िया ज, उत्तम छपाई। मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

विचित्र जीव-जन्तु

यह भी सचित्र पुस्तक है। इसमें दुनिया के एक से एक ब जीव-धारियों का सरल भाषा में वर्णन है। इसके पढ़ने ानकारी बढ़ती और मनोरञ्जन होता है। बालकों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

विष-पान

यह सुकवि सोहनलालजी का सुन्दर रचना है। इसमें समुद्र- न से उत्पन्न विष की पौराणिक कथा का कवितावद्ध मनोहर न है। छपाई-सफाई सुन्दर है। आवरण-पृष्ठ पर शङ्करजी का, को पीने का, भावपूर्ण चित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

पूजागीत

वह युगकवि सोहनलालजी की ऐसी रचना है जिसमें प्रसन्नता, वता, प्रभावोत्पादकता रहने से पढ़नेवाले को कविता का रस ता है। इसमें एक से एक बढ़कर ५६ गीतों का संग्रह इस पूजागीत का बहुत आदर है। कविता-प्रेमियों को संग्रह अवश्य करना चाहिए। मूल्य केवल २) दो रुपये।

झरना

इसमें पण्डित सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताएँ मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो ही अकेले, सुनहली धूप, लहर, सब पर जल बरसाता बादल, दूर्वा का गीत और नीम का पेड़ आदि सुन्दर कविताएँ हैं। अच्छे कागज पर अच्छी स्याही में छपी पुस्तक का मूल्य ।।।) केवल बारह आने।

अमर जीवन

(दो भागों में)

इसमें संसार के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों—कवीन्द्र रवीन्द्र, अल्फ्रेड नोबेल, हेनरी फोर्ड, जगदीशचन्द्र बसु, महात्मा गांधी, ताता, सर सैयद अहमद और आशुतोष मुकर्जी आदि के जीवनचरित का संक्षेप में वर्णन है। मूल्य प्रत्येक का ।=) छः आने।

अमर ज्योति

कहानियों का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज, चरित्रम्, नहीं, अमर ज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरञ्जन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आग्रह न करके कथा का चित्रण किया है। पूँजीपतियों और मजदूरों के सङ्घर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पाठक को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

देवयानी

यह नाटिका कुमारी तारा वाजपयी की रचना है। इसमें शुक्राचार्य की बेटी देवयानी के कन्यात्व का आदर्श बड़ी सफलता से उपस्थित किया गया है। कथा महाभारत से ली गई है। इसमें आर्यों के व्यापक वैवाहिक सम्बन्ध के इस एक अपवाद—क्षत्रिय वर और कन्या ब्राह्मणपुत्री—का स्पष्टीकरण बड़ी सतर्कता से हुआ है। पुस्तक अपने ढङ्ग की अनूठी है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

जीवन-कण

यह आशुकवि जगमोहननाथ अवस्थी की सुन्दर रचनाओं का संग्रह है। आपकी रचनाओं में निर्भयता है, राष्ट्रीयता है और कवि की ईमानदार छटपटाहट है। इस संग्रह की कविताएँ समाज की भयङ्कर परिस्थितियों और घोर वातावरण के कारण जीवन को पहेली मानकर लिखी गई हैं। इसमें वैषम्य, भिखारिन, जेल, दीपावली आदि श्रेष्ठ २२ रचनाएँ संगृहीत हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ॥=) दस आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूबिया

रूस में रूस की जारशाही के समय की दशा का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है। पति-पत्नी के प्रेम का अनोखा चित्र-सा खींचा गया है। पुस्तक में कई चित्र हैं। जिल्द के ऊपर रङ्गीन चित्र है। मूल्य २) दो रुपये।

बड़ी दीदी

यह नामी उपन्यास-लेखक शरद बाबू की रचना है। इसमें सामाजिक दशा का चित्रण है। किसी भले घर का लड़का रूठकर घर से चल दिया और दूर गाँव में जाकर एक मालदार विधवा युवती को पढ़ाने की नौकरी करने लगा। दोनों के मन में प्रेम का उदय हुआ तो मास्टर अपने घर चला गया। बाद को एक अकल्पित ढङ्ग से उस विधवा से इस पुराने मास्टर की भेंट हुई जहाँ पुरानी बीमारी से उसका प्राणान्त हो गया। बड़ा ही भावोत्पादक कथानक है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

वञ्चिता

यह रोमाञ्चकारी ऐतिहासिक उपन्यास है। अकबर के जमाने की घटना के आधार पर इसकी रचना हुई है। इसमें बड़ी-बड़ी गुत्थियाँ हैं। दरबार के दाँव-पेंच, जासूसी चालें और प्रलोभन के बखेड़े हैं। विजय ने मित्र चम्पालाल के प्राण बचाने का पूरा उद्योग किया, किन्तु जरा-सी देर ने काम बिगाड़ दिया। इससे दोनों मित्र साथ ही 'जल जङ्गल' हाथी के पैर से कुचले जाकर परलोक के यात्री बने। बेचारी नन्दा अपने प्रियतम विजय से वञ्चिता होकर उसकी याद में घुल-घुलकर जीवन बिताने को रह गई। मूल्य ३॥) तीन रुपये आठ आने।

चन्द्रशेखर

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक बङ्किम बाबू की प्रसिद्ध रचना है। इसकी कथा बड़ी विचित्र है। घटना है बङ्गाल के अन्तिम नवाब मीर कासिम के समय की। नवाब और अँगरेजों के बीच हुए सङ्घर्ष का भी वर्णन इसमें है। कथा के नायक चन्द्रशेखर का उदार चरित्र अनूठा है। यह लेखक का बहुत ही प्रशंसित उपन्यास है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

देशान्वेषण की सरल कथाएँ

इसमें उन ३२ कर्मवीरों के अन्वेषण-कार्यों का जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर अङ्गीकार कार्य को पूरा किया। तेरहवीं शताब्दी के मार्कोपोलो उन्नीसवीं शताब्दी के कप्तान एमेंडसेन और कप्तान तक की दुर्गम यात्राओं का वर्णन इस पुस्तक में है। पुस्तकों के पढ़ने से साहस बढ़ता और विविध जानकारी मूल्य ।॥-) केवल तेरह आने।

सचित्र महाभारत

यह स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसके कई संस्करण हाथोंहाथ बिक गये सम्पूर्ण महाभारत की कथायें बड़ी सुन्दर भाषा में इसके पढ़ने से महाभारत की बहुत-सी बातें मालूम हो अच्छा कागज, बढ़िया छपाई और सुन्दर जिल्द। पृष्ठ के चित्र हैं जिनमें से ११ रङ्गीन हैं। बड़े आकार तीन सौ से ऊपर पृष्ठ हैं। मूल्य केवल ६) छः रुपये।

विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ

हिन्दी में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के विषय में अब तक पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें यह सबसे बड़ी है। इसमें की अन्तिम रचनाओं तक की चर्चा आ गई है। अनेक से पुष्परस लाकर यह मधुचक्र बनाया गया है। कवि, लेखक, नाट्यकार, कहानी और उपन्यासों के कुछ थे। उनको समझने में यह पुस्तक बड़ा काम देगी के नामी पत्रों और विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्त कण्ठ की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ५) पाँच रुपये

बाघ और भालू की कहानी

यह बालकों के बड़े काम की है। इसमें एक देशी एक विदेशी भालू की कहानी है। दोनों कहानियाँ बाल पन्यास की तरह विचित्र तो हैं पर कल्पित नहीं हैं। इनको बालक-बालिकाएँ जीव-जन्तुओं के काम-काज और उनकी दारी का कुछ परिचय पावेंगी। मनोरञ्जन तो होगा ही। सचित्र है और दो रङ्गों में छपी है। मूल्य केवल ।=) छः

फ्रांस का इतिहास

इसमें ईसा पूर्व २२५ से लेकर सन् १९२० ईसवी इतिहास है। इसमें वहाँ की राज्यक्रान्ति के राजवंश प्रणाली, स्वतन्त्र राजतन्त्र, शतवर्षीय युद्ध, योरप प्रसार, राजवंश के उद्धार, सन् १८४८ की क्रान्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रजातन्त्र आदि का वर्णन उत्तमता से किया गया है। क में चित्र भी हैं। अच्छे काग़ज़ पर छपे साढ़े चार सौ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ४) चार रुपये।

स्वदेश-विदेश-यात्रा

यह श्रीयुक्त सन्तरामजी, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी की प्रसिद्ध रचना है। देश-देशान्तर की यात्रा करने से क लाभ होते हैं। व्यवहार-ज्ञान और सामान्य बुद्धि की वृद्धि है। परन्तु पर्यटन का सुभीता सबको सुलभ नहीं होता। ी रुचि भी थोड़े लोगों को होती है। ऐसे लोगों को -विषयक पुस्तकें पढ़ने से बड़ा लाभ हो सकता है। इस क में कश्मीर और कुल्लू की सैर तथा आस्ट्रेलिया की का वर्णन है। पुस्तक सचित्र है। अच्छे काग़ज़ पर पौने दो सौ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य केवल १॥=) रुपया ग्यारह आने।

आल्हा

आल्हा का थोड़ा-बहुत किस्सा सभी हिन्दी-प्रेमी जानते हैं, पर ब्योरेवार वर्णन थोड़े लोगों को ही मालूम होगा। चतुर्वेदी प्रसाद शर्मा की कृपा से यह कथा हिन्दीवालों को सुलभ ई है। इसमें परमाल का ब्याह, संयुक्ता का स्वयंवर, माड़ौ ड़ाई, आल्हा और मलखान का ब्याह, दिल्ली की लड़ाई, गढ़ का युद्ध आदि कितनी लड़ाइयों और विवाहों का है। बड़े आकार के सवा तीन सौ से ऊपर पृष्ठों की सजिल्द का मूल्य केवल ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

जानवरों की मजेदार कहानियाँ

इसमें मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, की चिड़िया, सिंह और गीदड़, राजकुमार और सोने की या, चिड़िया और बुढ़िया तथा चालाक गीदड़ की कहानियाँ इनको पढ़कर लड़के और लड़कियाँ सभी प्रसन्न होते हैं। रङ्गीन आवरण-पृष्ठ है। मूल्य केवल ॥=) ग्यारह आने।

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गुण सुन्दरता से दिखाये । यह नाटक अभिनय करने के लिए लिखा गया है खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य ।-) पाँच आने।

तुलसी-रत्नावली

इसका संकलन, प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए० ने किया है। इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी के अमूल्य ग्रन्थों—रामचरित-मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि—से रत्न चुने गये हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य रत्नों का संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन काम होता है। जो लोग गोस्वामी जी के समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं और न उनका अध्ययन कर सकते हैं उनको इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

माँ और बच्चा

इसके लेखक नामी चिकित्सक डाक्टर बोधराज चोपड़ा, एम० बी०, सी-एच० बी० (एडिनबरा) हैं। यह पुस्तक अपने ढङ्ग की अनुपम है। इसके ११ प्रकरणों में छोटे बच्चों की मृत्यु और उसके कारण, गर्भिणी माता, जन्म के समय से बालक की रक्षा, बच्चों को दूध पिलाना, दूध पिलाने वाली दाई, दूध छुड़ाना आदि आवश्यक विषयों की शिक्षा दी गई है। स्त्रियों की मृत्यु और रोगों को कम करने तथा छोटे बच्चों को मृत्यु से बचाने की दृष्टि से पुस्तक लिखी है। यों लेखक ने मनुष्यमात्र का उपकार किया है। अच्छे कागज पर छपी ढाई सौ से भी अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

गोस्वामी तुलसीदास-संक्षिप्त रामचरितमानस (सचित्र)

यह रामचरितमानस का संक्षिप्त संस्करण है। संक्षेप ऐसी चतुराई से किया गया है कि कहीं भी कथा-भाग टूटने नहीं पाया। मँझोले आकार के ३०० पृष्ठों में यह समाप्त हुआ है। पुस्तक सचित्र और सजिल्द है। मूल्य १) एक रुपया।

अयोध्याकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड अलग प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक अनेक स्थानों के शिक्षाविभाग-द्वारा स्वीकृत है। इससे यह विद्यार्थी तथा साधारण जनता सभी के काम की चीज है। मूल्य १) एक रुपया। सटीक मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

सुन्दरकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।=)आठ आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरण्यकाण्ड (मूल)

रामायण-प्रेमियों के सुभीते के लिए यह काण्ड भी असली रामचरितमानस से अलग छापा गया है। मूल्य ।≈) सात आने।

विनयपत्रिका (सटीक)

गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं में विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीकाकार हैं पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण

गोस्वामी तुलसीदासजी की यह अमर रचना पिछले दिनों खोज में मिली है। इसमें उनकी अन्यान्य रचनाओं की भाँति सरस कुण्डलिया छन्दों में रामचरितमानस के सातों काण्डों की कथा दी गई है। मूल्य ४) चार रुपये।

मानससूक्तावली

रामचरितमानस में आये हुए कण्ठस्थ करने के योग्य चौपाइयों और दोहों का संग्रह। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

संक्षिप्त पद्मावत

(रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० द्वारा सम्पादित) मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त संस्करण। मूल्य २।–) दो रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त सूरसागर

इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

चारण

इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनोरञ्जक वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों का गुणगान किया गया है। मूल्य ।–) पाँच आने।

वीणा-ग्रन्थि

हिन्दी के युगान्तरकारी श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो पुस्तकों का सम्मिलित संस्करण। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है। और ग्रन्थ में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना द्वारा विकसित कर एक खण्डकाव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

भैरवी

इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक पसन्द किया है और खादी-प्रतिष्ठानों में इसकी हज़ारों प्रति हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का काव्य है। मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस क विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य २) दे

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि
ठाकुर गोपालशरणसिंहजी की कृतियाँ

माधवी

माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सु साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) रु

ज्योतिष्मती

इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना वि रखती हैं। ख़ास कर इसमें संग्रह किये गये छोटे-छ बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।–) पाँच आने।

मानवी

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठा ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा और मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।–) दो रुपये पा

संचिता

इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया है। संग्रह में कुल ७१ कवितायें हैं। मूल्य ३) तीन

सुमना

'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह ५३ गीत हैं जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनु शब्द-द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सरस गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

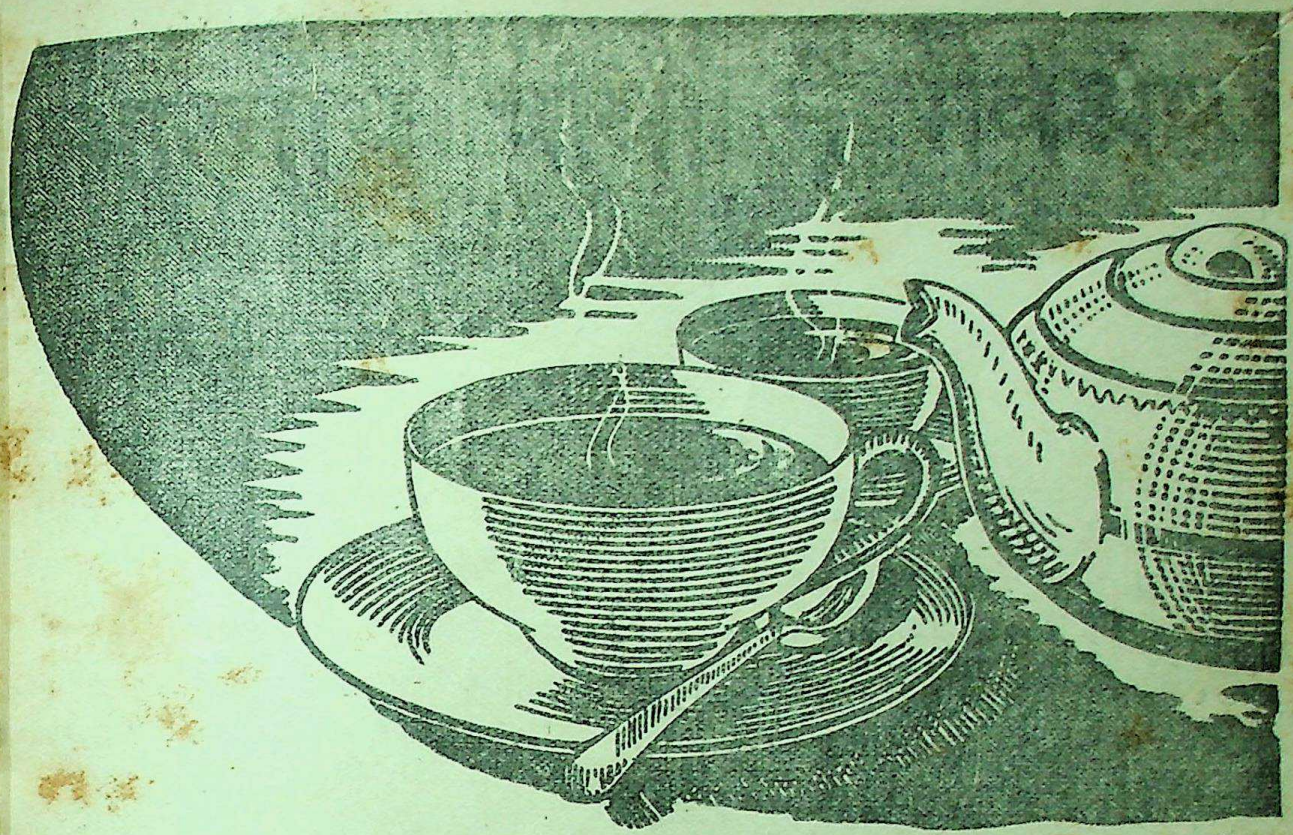

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और
कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन
की व्हाइट लेबुल को बाजार भर
की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चा

सर्वोत्तम भारतीय पत्ती चाय

LTK 84 V

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुन्दनलाल सैगल का जन्म १९०६ ईस्वी श्रीनगर में हुआ था। कुछ दिनों तक भा सरकार और एन. डब्ल्यु. रेलवे में काम क के बाद १९३१ ईस्वी में आप न्यु थियेटर्स आये और तभी से अपने मनमुग्धकर गानों सुरीली आवाज से आपने देशवासियों को म रखा है। परन्तु शायद 'तानसेन' में ही आप प्रतिभा, कला की चरम सीमापर पहुँच सकी

सैगल के

गाते समय...

दुनियाँ भर के बड़े बड़े कलाकार चाय की खूबियों के प्रेमी हैं। ऐसा कोई पेय नहीं जो मन को कला की ओर इतना ज्यादा टान ले जाय। सैगल के सुरीले गले की आवाज सुनिये: "लोग पूछते हैं चाय मुझे क्यों इतनी अच्छी लगती है। वे यह क्यों नहीं पूछते कि मैं कैसे गाता हूँ, कैसे अभिनय करता हूँ, कैसे आनन्द में मग्न हो जाता हूँ? मुझे एक प्याला चाय पिलाइये फिर सुनाता हूँ।"

प्रेरणा लाने वाली...

चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी
का सम्मिलि
और ग्रन्थ
द्वारा वि
मूल्य २) दो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

अक्टूबर १९४६

वार्षिक मूल्य ६॥)

एक प्रति ॥-)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।

बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।

बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगा।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,

२८५ जमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

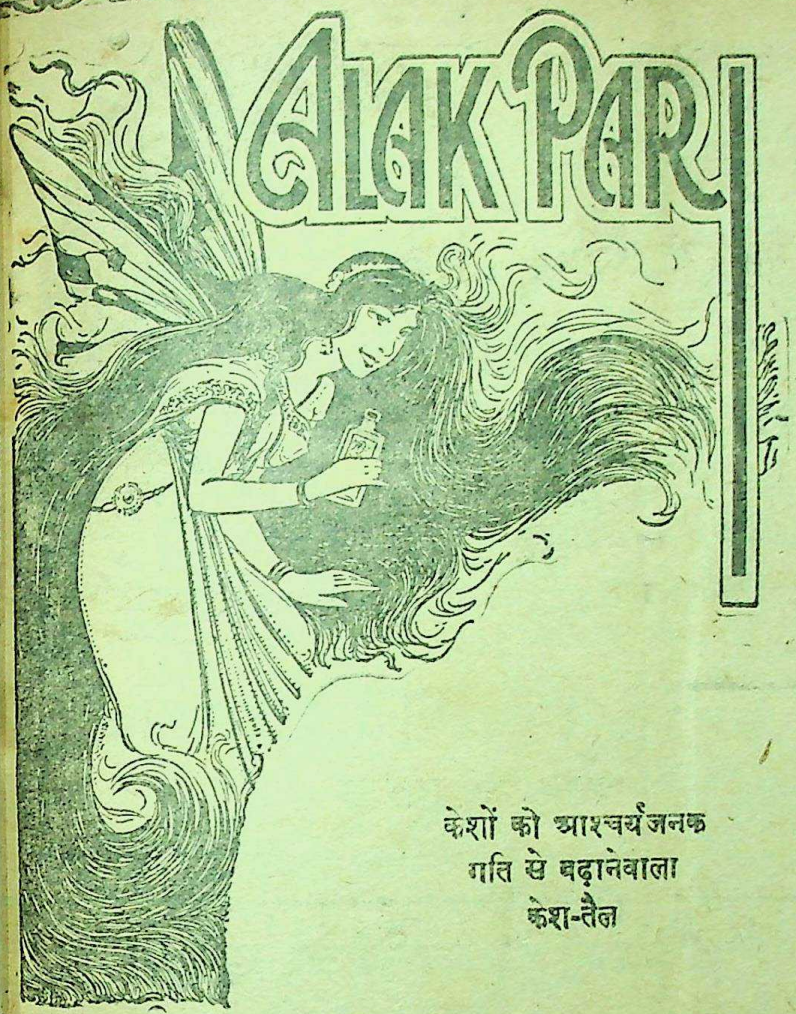

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश!

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। १ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

'अलकपरी' से बहुत लाभ है। १ शीशी और तुरन्त भेजिए।
१५-७-४५ कृष्णाकुमारी, धर्मशाला (पंजाब)।

Alak Pari is proving of much use to me. Please send me three more bottles.
4-8-45 Mrs. S. Mandal, 45, The Mall, Lahore.

'अलकपरी' में केशों को बढ़ाने के लिए विद्युत् की शक्ति वर्त्तमान है। मैंने इसे केशों के लिए आश्चर्यजनक गुणकारी पाया है। कृपया ३ शीशियाँ तुरंत भेजें।
७-८-४५ सत्यवती देवी, पासना, जौनपुर।

'अलकपरी' की ५ शीशियाँ इस्तेमाल कीं। बहुत लाभकारी तेल है। कृपया ३ बोतलें शीघ्र भेजें।
३०-८-४५ शान्तिकुमारी, कोटखाई, शिमला

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा, इलाहाबाद।

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार।
मेरठ—त्यागी ब्रदर्स, बेली बाजार।
बरेली—यूनाइटिड कमर्शियल सिंडीकेट, भूर।
राजनंदगाँव—रामनारायण हरीकिस सोमा।
आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ्यूमर्स, काश्मीरी बाजार।
लखनऊ—सालिग्राम मेहरोत्रा, ६, अमीनाबाद पार्क।
जबलपुर—बाबूलाल राजाराम चौरसिया, गोविंदगंज।
जोधपुर—टेक्निकल स्टोर्स, सराफा बाजार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

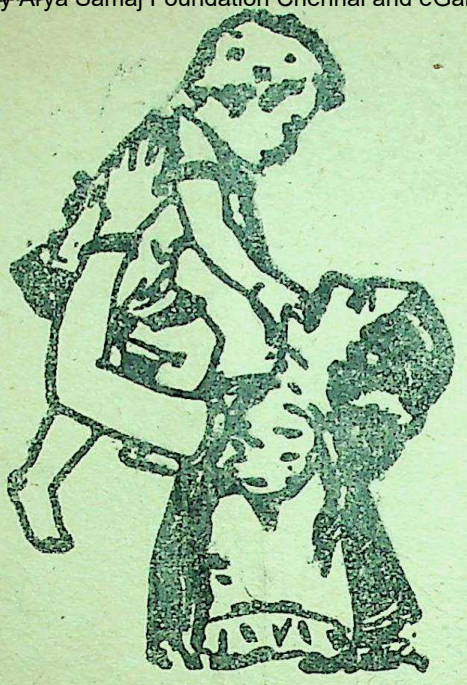

कमज़ोर और रुग्ण बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और पुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, खून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झण्डु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—एल० एम० धोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चांदनी चौक, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

..वे लाइफबॉय की आदत सीख चुका है!

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी माँ उसका ध्यान करते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत—लायफ़बॉय का रोज़ाना इस्तेमाल—जो गंदगी के ख़तरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है—उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

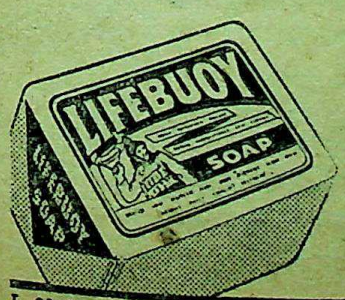

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 60-23 HJ

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जीका अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कश्मीर की पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदखाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मस्म १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी में घोटकर, मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों में फूँके। दुबारा एक तोला हरताल वर्की शुद्ध १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला कपूर १॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, [illegible] माशा की तरह १६ आँच दे। फिर उसको, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री-मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से हफ्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दुबला चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालशर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुण पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री छात्र गुरुकुल बरला जिला मुजफ्फरनगर ने लिखा है—"कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आ का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट से कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल कश्मीर की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, डायबटीज, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की खराबी, खाँसी, जुकाम, बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों का चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० ८० मात्रा डाक-खर्च सहित ६॥=) में हम भेज देंगे। माफ, पैकिंग, मनीआर्डर-फीस अलग। कोई बात आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

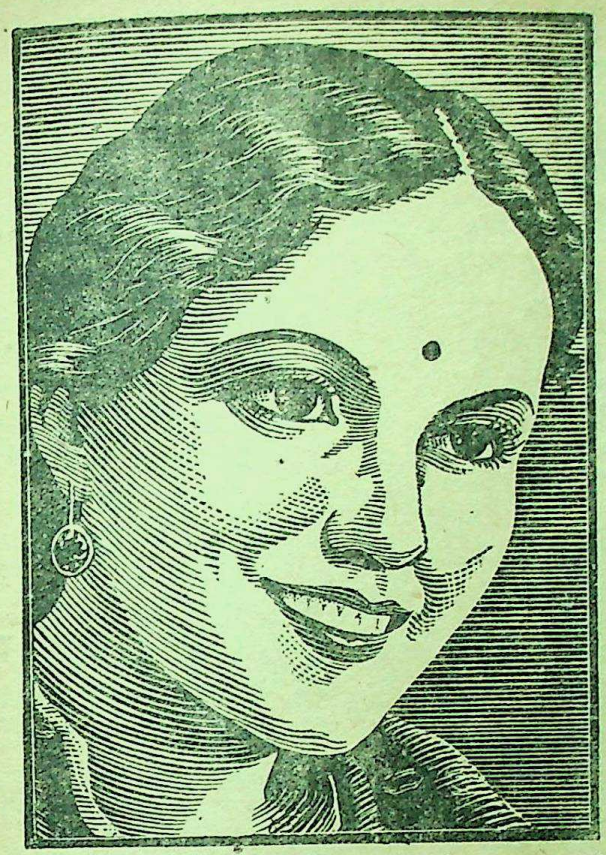

चर्म स्वास्थ्य से ही चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सॉना से चर्म स्वास्थ्य की रक्षा कीजिए

आपकी त्वचा तभी सुन्दर हो सकती है जबकि वह स्वास्थ्य हो और इसको स्वास्थ्य ही बनाए रखना चाहिए, नहीं तो वह सौन्दर्य शीघ्र जाता रहेगा। त्वचा को स्वास्थ्य और सुन्दर रखने के लिए ही सुन्दर, हरेरंग के और आसानी से फेन देने वाले टॉयलट साबुन रैक्सॉना का आविष्कार हुआ है। यह चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' की मिलावट से बनाया जाता है, जो कि ताज़गी और स्वास्थ्यदायक है। रैक्सॉना की झाग इस स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शीघ्र ही शरीर के रुओं में पहुँचा देती है। जहाँ यह अपना काम करता है झाग शरीर पर जमा हुई धूल और पसीने को साफ़ करके त्वचा को स्वस्थ और सुरक्षित रखती है। चर्म-स्वास्थ्य के लिए सदैव रैक्सॉना से स्नान कीजिये।

बच्चों के लिए रैक्सॉना . . . रैक्सॉना की झाग इतनी कोमल और स्फूर्तिदायक होती है कि बच्चों की कोमल त्वचा के लिए तो यह आदर्श है। डाक्टर इस को इस्तेमाल करने की हिदायत करते हैं। याद रखिए रैक्सॉना का 'कैडिल' बच्चे की चर्म की फुन्सी फोड़ों से रक्षा करेगा।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ्य-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थ्यरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिए। फुन्सी, फोड़े, ऐक ज़ी मा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। अचरज अभी सफ़ाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

EP. 27-23 HI.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलापी, उत्पादन के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हासिल करने और कीमतें मालूम करने के लिए निम्न पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए :—

कलापी स्टोर्स, स्वदेशी मार्केट, बम्बई २

SOLE AGENTS FOR ARYAN TOOTH BRUSH
KALAPI STORES, SWADESHI MARKET, BOMBAY 2. PHONE 33188.

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूप-विलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी खुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। कीमत एक डिब्बा १—) तीन डिब्बा ५॥) डाक-खर्च माफ, पैकिंग खर्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी पनकटी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एकमात्र अचूक औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इ ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कार मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली, अब घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया बड़े-बड़े डाक्टरों हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये और कीमती दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश ही रहा अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ़ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय, जीवन से मर जाना बेहतर है

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महापुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमजोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, अ ख उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अप दे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह अने क-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत-तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह काला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध वङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्य छाप केसर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल करके ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उस बाद ताजी ब्राह्मी बूटी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज मुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती और गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन सब प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, नामर्दी, इन्टीज, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना तथा स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन स्त्रियों को जिन्हें फ़ुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलि दाम ३=) डाकखर्च ॥-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—बाबू श्यामलाल जी रईस प्रेमबटी आफिस नं० (S. A.) भतकती

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर समय सफ़ेद — अधिक मैले भाग भी

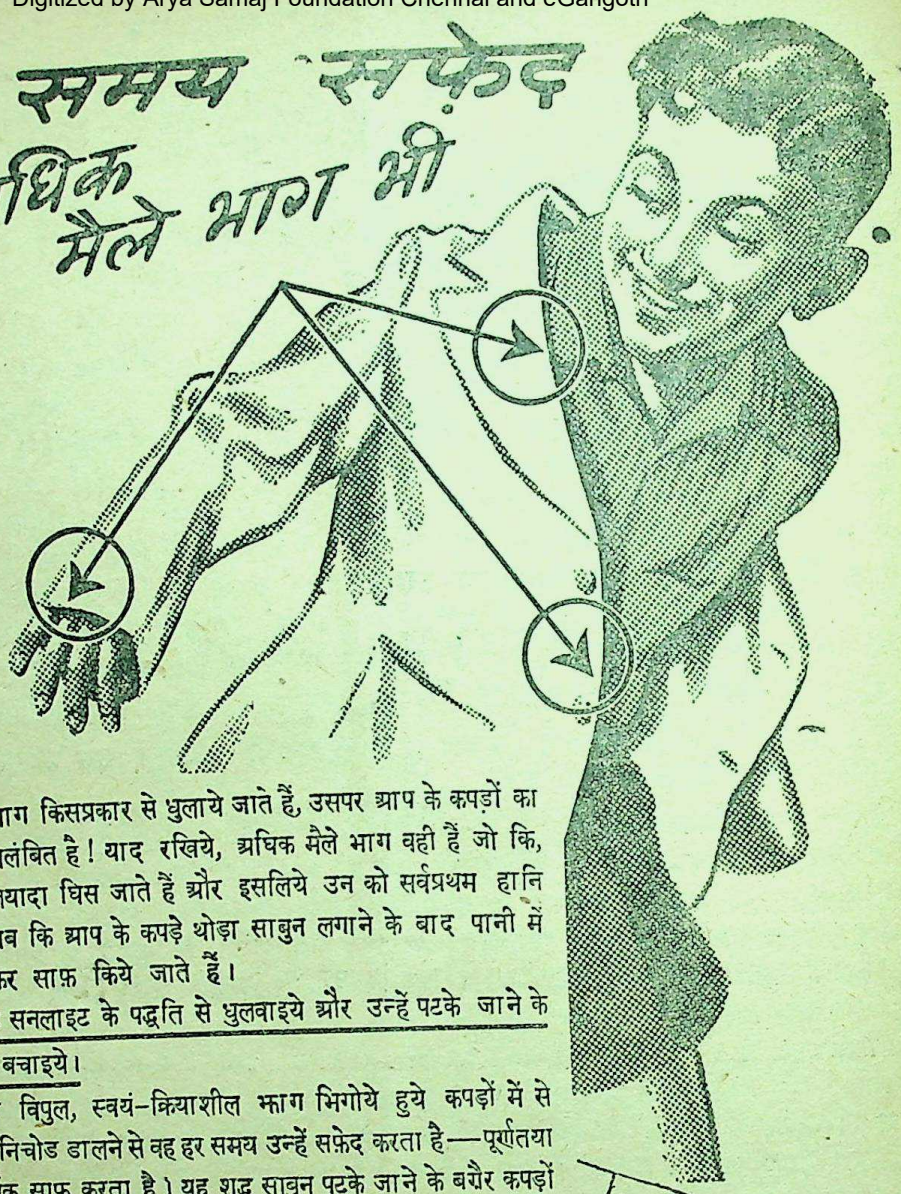

अधिक मैले भाग किसप्रकार से धुलाये जाते हैं, उसपर आप के कपड़ों का भवितव्य अवलंबित है! याद रखिये, अधिक मैले भाग वही हैं जो कि, पहिनने से ज़ियादा घिस जाते हैं और इसलिये उन को सर्वप्रथम हानि पहुँचती है, जब कि आप के कपड़े थोड़ा साबुन लगाने के बाद पानी में भिगो, पटककर साफ़ किये जाते हैं।

आप के कपड़े सनलाइट के पद्धति से धुलवाइये और उन्हें पटके जाने के नुक़सान से बचाइये।

सनलाइट का विपुल, स्वयं-क्रियाशील झाग भिगोये हुये कपड़ों में से मुक्तहस्त से निचोड डालने से वह हर समय उन्हें सफ़ेद करता है—पूर्णतया एवं सुरक्षापूर्वक साफ़ करता है। यह शुद्ध साबुन पटके जाने के बग़ैर कपड़ों के मैलेपन को हटाता है; उन को पँख के समान मुलायम करता है और आप के हाथों को भी सौम्य तथा कोमल रखता है।

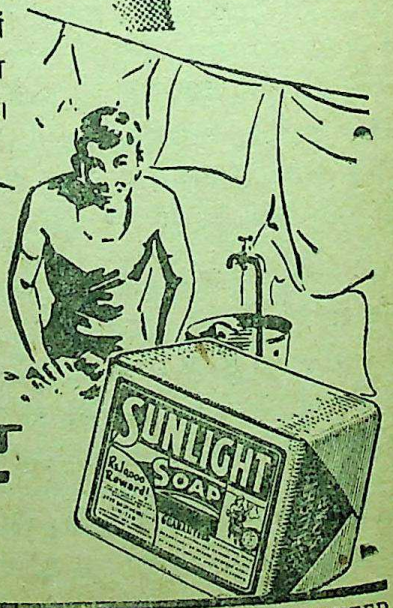

यह सनलाइट के पद्धति से धोया हुआ है!

सनलाइट साबुन

S. 81-23 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-रोगों का शर्तिया इलाज

सबसे पहला ४० चालीस वर्षों का पुराना जगद्विख्यात

यशोदा देवी आयुर्वेदिक स्त्री-औषधालय

स्त्री-चिकित्सा में जगद्विख्यात कर्नलगंज इलाहाबाद की श्रीमती यशोदा देवी की

स्त्री-पुरुषों के गुप्त रोगों पर लाखों बार परीक्षा की हुई देशी औषधियों का चमत्कार देखिए।
अब तक कई लाख स्त्री-पुरुषों के गुप्त रोग दूर कर दिये गये हैं और बीसों हजार सन्तानहीन स्त्रियाँ सन्तानवती हो गई हैं।
एक बार रोगी का पूरा हाल लिखकर रोगों को दूर कराइए या रोगी स्त्री या पुरुष जो हो उसे यहाँ लाकर दिखलाइए।

रोगी और सन्तानहीन स्त्रियों को खुशखबरी

जो श्रीमतियाँ धनी मानी रानी महारानियाँ और सर्वसाधारण कैसे ही नये पुराने कठिन से कठिन या साधारण किसी भी गुप्त रोग से ग्रसित हों, वर्षों इलाज कराके अपनी सामर्थ्य के अनुसार खर्च कर हैरान व परेशान हो निराश हो चुकी हों, जिनका बड़े-बड़े नामी चिकित्सकों ने वर्षों इलाज करके भी रोग को न समझ पाया हो उस रोगी स्त्री और उसके पति को यहाँ भेजकर या रोग का पूरा हाल लिखकर घर बैठे ही इलाज कराकर रोग दूर कराइए।

पता—यशोदा देवी आयुर्वेदिक स्त्री-औषधालय, आयुर्वेद-भवन, कर्नलगंज, इलाहाबाद।
तार का पता "देवी" इलाहाबाद।

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग, जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं, स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। लज्जा-वश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में लापरवाही नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी या लेस-सा निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मलीन, उठने-बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और सन्तान नहीं होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने अपूर्व शक्ति प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों स्त्रियों को इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त हो जाती हैं और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी संजीवन का मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। कीमत एक डिब्बा ३=); डाकखर्च माफ; पैकिंग खर्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७, घनकुट्टी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है।

हमारे यहाँ की बनी क्रीमोला टाफी
फ्रूट ड्राप्स तथा
रेशमी मिठाइयों का स्वाद लीजिए।
सभी दूकानों में मिलती हैं।

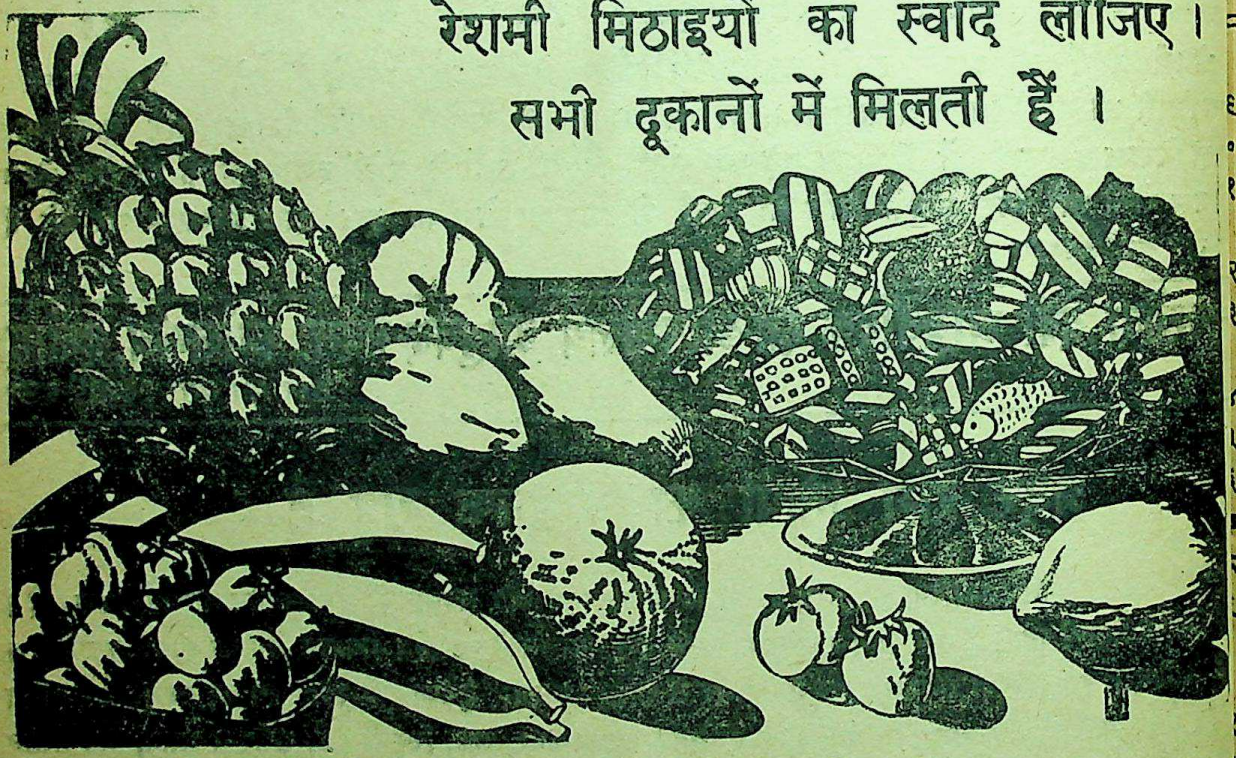

निर्माता—इण्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस,
इंडियन प्रेस बिल्डिंग,
इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—सम्पादकीय २७३
२—भावी विश्वसङ्कट की भूमिका—डाक्टर एस० सी० लेले २८१
३—चित्रकार—श्री गोपालकृष्ण भनोत ... २८७
४—विश्व का सर्वप्रथम वर्तमान प्रजासत्तात्मक संघशासन-विधान—पण्डित वैदेहीचरण पाराशर, एम० ए०, एल्-एल० बी०, विशारद २९०
५—समस्या—श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा ... २९६
६—मजदूर-शासन का एक वर्ष—श्री आशाराम, एम० ए० ... ... ३०२
७—दफ्तरवाली—श्री अञ्जना स्याल ... ३०५
८—मानसिक व्यायाम—श्रीमती कमला रतनम्, एम० ए०, टी० डी० (लन्दन) ... ३०८
९—उसकी याद—श्री रामगोपाल विजयवर्गीय ... ३१०
०—हिमालय (कविता)—श्री चन्द्रकुँवर वर्त्वाल ३१२
१—भारतीय अन्न-समस्या—श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार ३१७
२—कुमारी भिक्षुणी—श्री प्रभासकुमार ... ३२५
३—बृहत्तर भारत के सन्देशवाहक—डाक्टर लक्ष्मीसुन्दरम्—स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ... ३३०
४—कपड़े का सङ्कट—पण्डित आत्मस्वरूप शर्मा ३३६
५—आदमी का बच्चा—श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए० ३४०
६—विचार-विमर्श ३४४
७—विविध विषय ३४७
८—नई पुस्तकें ३५१
९—सामयिक साहित्य ३५३

चित्र-सूची

१—महात्मा गांधी २८०-८१
२—मध्यकालीन राष्ट्रीय सरकार का मन्त्रिमण्डल—मा० श्री एम० आसफअली, मा० श्री जगजीवनराम, मा० सर शफात अहमद खाँ, मा० श्री सैयद अली जहीर, मा० सरदार वल्लभभाई पटेल, मा० श्री सी० एच० भाभा, मा० पण्डित जवाहरलाल नेहरू, मा० श्री शरच्चन्द्र बोस, मा० श्री राजगोपालाचारी, मा० सरदार बलदेवसिंह, मा० डा० जान मथाई, मा० डा० राजेन्द्रप्रसाद २८०-८१
३—अमेरिका के मानहटा के स्क्वेयर पार्क में श्रमिकों का एक प्रदर्शन ... ,,
४—अमेरिका में पिछले दिनों कोयले की खानों में हुई हड़तालों में हड़तालियों के नेताओं का आपस में परामर्श ... ... ,,
५—अमेरिका की सरकार के गृहनिर्माण, बजट, शिक्षा और श्रम विभागों में कांग्रेस के पथ-प्रदर्शक सिनेटर ताफ्त ... ... ,,
६—पेरिस के गत शान्ति-सम्मेलन के अवसर पर अमेरिका के प्रतिनिधि श्री वायरन्स—श्री बेविन के साथ ... ... ,,
७—मास्को में 'मे डे' के अवसर पर स्टालिन का अभिभाषण २९४-९५
८—नाजियों-द्वारा हालैंड में निर्मित रक्षा-पंक्ति के विध्वंस का एक दृश्य जिसमें जर्मन नागरिक मलबे को साफ कर रहे हैं ... ,,
९—गत चुनाव में फ्रांस के छात्रों का फर्डीनेण्ड के पक्ष में आन्दोलन ... ,,
१०—जापान के अद्भुत आदिम निवासी-सम्बन्धी ५ चित्र ... ... ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनलाल द्विवेदी

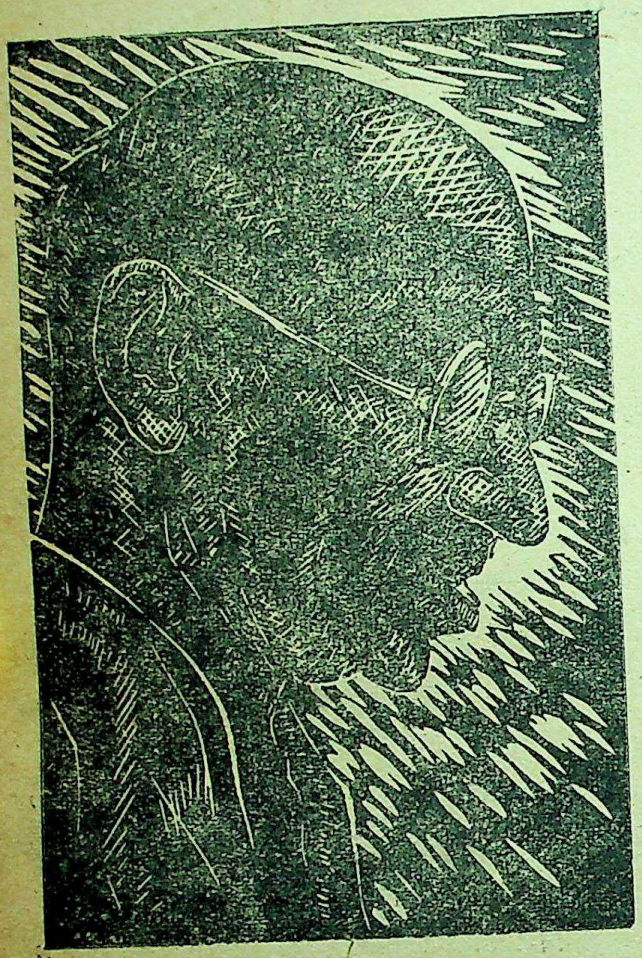

सेवाग्राम

गान्धी-जयन्ती

के पुण्य अवसर पर दूसरा महान् राष्ट्रीय ग्रन्थ

प्रकाशित हो गया है।

गान्धी अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्पादक पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कविताओं का वृहद् संग्रह 'सेवाग्राम' बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

'सेवाग्राम' गान्धीवाद का ही नहीं, अपितु, जन-आन्दोलन का महाकाव्य है। भैरवी में राष्ट्रीय चेतना के जिस स्वर को कवि ने उठाया था, वह सेवाग्राम में सप्तस्वरों में गुञ्जायमान हुआ है।

सेवाग्राम बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित किया जा रहा है। पृष्ठ-संख्या लगभग तीन सौ।

सर्वश्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, रविशंकर रावल, कुमारी अमृत शेरगिल तथा असितकुमार हलदार जैसे चूड़ान्त कलाकारों के बहुरंगे चित्रणों से ग्रन्थ अलंकृत किया गया है।

मूल्य साढ़े सात रुपये

अपने प्रिय पात्र को एक प्रति उपहार में भेजिए

इंडियन प्रेस लिमिटेड
इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

अक्टूबर १९४६ आश्विन २००३; भाग ४७, खण्ड २ संख्या ४, पूर्ण संख्या ५६२

सम्पादकीय

दो सितम्बर

आधुनिक भारत के इतिहास में दो सितम्बर सन् १९४६ का उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना तीन सितम्बर सन् १९३९ और ९ अगस्त सन् १९४२ का। तीन सितम्बर सन् १९३९ ब्रिटिश साम्राज्य ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की जिसमें भारत को अपनी अनिच्छा के बावजूद अपने धन-जन बलिदान करना पड़ा। इसी युद्ध के कारण भारत की प्रजा-मक शक्तियाँ रचनात्मक कार्यक्रम से वञ्चित हो गईं, भारत गभग ६-७ साल तक निरङ्कुश शासन रहा तथा भारत की क-प्रिय सत्ता कांग्रेस को ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध सबसे क कटु और भयङ्कर सङ्घर्ष करना पड़ा। नौ अगस्त सन् ४२ के दिन महात्मा गांधी और कांग्रेस के सभी नेताओं को एक छापा मारकर गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें अज्ञात नों पर नजरबन्द कर दिया गया। नेताओं की गिरफ़्तारी ाद देश में जनान्दोलन ने जो भीषणता दिखाई तथा ब्रिटिश ार ने उसे दबाने के लिए जिस नृशंसता और पशुता का हार किया वह सबको विदित है। नौ अगस्त को आरम्भ ा हुआ सङ्घर्ष देश की जागरूक और कर्मठ प्रजा के लिए— न, जागरण और बलिदान की प्रतिनिधि लोकप्रिय संस्था स के लिए—जीवन और मरण का प्रश्न था। महात्मा ी ने इस सङ्घर्ष की प्रकृति 'करो या मरो' के मन्त्र-द्वारा प्रकट की थी। कांग्रेस ने पहली बार अँगरेज साम्राज्यशाही को स्पष्ट रूप से 'भारत छोड़ो' का दोटूक आदेश देकर भारतीयों-द्वारा सम्पूर्ण सत्ता के ग्रहण का निश्चय घोषित किया। साम्राज्य-शाही ने कांग्रेस की चुनौती स्वीकार की और देश में ऐसा भीषण दमन-चक्र चलाया जिसकी तुलना एक सीमित क्षेत्र में कदाचित् सन् १८५७ की क्रान्ति के बादवाले दमन से की जा सकती है।

नौ अगस्त सन् १९४२ और दो सितम्बर सन् १९४६ में कितना अन्तर है! इस बीच में कितनी घटनाएँ घटीं जिनकी परस्पर-विषमता आश्चर्य में डालनेवाली है। जिस कांग्रेस को समूल नष्ट करने का निश्चय ब्रिटिश सरकार ने किया था, जिसके नजर-बन्द नेताओं पर—महात्मा गांधी तक पर—मुकदमा चलाने की धमकी चर्चिल और लिनलिथगो दे रहे थे उसी कांग्रेस के हाथ में दो सितम्बर को लार्ड वेवल ने शासन का भार सौंपकर सत्ता को हस्तान्तरित करने का सूत्रपात किया है। दो सौ वर्ष का ब्रिटिश शासन दो सितम्बर को एक ऐसे महान् परिवर्तन के लिए अग्रसर होता दिखाई दिया जिसका अन्तिम परिणाम अनति-काल में ही नौ अगस्त को आरम्भ हुए 'भारत छोड़ो' की पूर्ण सफलता में दिखाई दे सकता है।

दो सितम्बर के दिन भारत के हृदय-सम्राट् राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने देश का शासन चलाने के लिए देश के चोटी के नेताओं का मन्त्रिमण्डल बनाया। जिन नेताओं ने जीवन भर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तियाँ अब तक साम्राज्य के विनाश और विध्वंस के उपायों में लगी रहीं, वे ही आज वायसराय के साथ देश के शासन का उत्तरदायित्व सँभाल रहे हैं। जिन राष्ट्रीय और अन्ताराष्ट्रीय परिस्थितियों के कारण ब्रिटिश अधिकारियों ने अपने दृष्टिकोण में इतना क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है उनकी विवेचना करने की इस समय आवश्यकता नहीं है। इस समय तो हमें दो सितम्बर की घटना का वास्तविक मूल्य आँकना है।

क्या दो सौ वर्ष के ब्रिटिश शासन का दो सितम्बर को अन्त हो गया? क्या सन् १८५७, १९२१, १९३०-३२ और १९४२ के स्वातन्त्र्य-संग्रामों का प्रतिफल दो सितम्बर को प्राप्त हो गया? यदि ऐसा कोई समझता हो तो वह बहुत बड़ी भूल कर रहा है। ऐसा समझना कि दो सितम्बर को भारत स्वतन्त्र हो गया, नासमझी और मूर्खता होगी। भूतपूर्व राष्ट्रपति मौलाना अबुल-कलाम आजाद ने कहा है कि हम आजादी के द्वार तक पहुँच चुके हैं, केवल एक धक्का मारकर द्वार को खोलने भर की देर है। धक्का मारकर स्वतन्त्रता का द्वार खोलने के लिए दो सितम्बर की घटना कितनी सहायक हो सकती है, आज यही एक प्रश्न हमारे सामने है। हमारे नेताओं का विश्वास है कि कदाचित् कांग्रेस को देश के लिए पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने के उद्देश्य से अब गत आन्दोलनों की भाँति कोई और आन्दोलन न करना पड़े और पूर्ण शासन-सत्ता शान्ति-पूर्वक हमारे हाथ में आ जाए। पिछले जून की मन्त्रि-मण्डल-मिशन की घोषणा और विधान-निर्मात्री परिषद् की स्थापना इस आशा को पुष्ट करती है। इसके साथ ही नेतागण यह भी जानते हैं कि यदि किसी कारण से ब्रिटिश सरकार अपने वचन का पालन न कर सकी और कांग्रेस को विवश होकर पुनः जनान्दोलन का मार्ग ग्रहण करना पड़ा तो भी उनका केन्द्रीय शासन में होना लाभकारी हो सकता है। प्रान्त और केन्द्र दोनों में शासन की बागडोर अपने हाथ में होने से कांग्रेस का भावी आन्दोलन, यदि हुआ तो, गत आन्दोलनों से भिन्न होगा और धक्का मारकर स्वतन्त्रता का द्वार खोलने में उसे अपेक्षाकृत अधिक सुविधा होगी। इसलिए शान्तिपूर्ण और वैधानिक उपायों से हो, अथवा सङ्घर्ष और जनान्दोलन के द्वारा, दो सितम्बर को ग्रहण किया हुआ शासन-भार पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

ब्रिटिश शासकों की विचक्षण कूटनीति के प्रति शङ्काशील और भयभीत लोगों ने कांग्रेस के इस कदम की आलोचना भी की है। उनको भय है कि कहीं हमारे नेता चालाक साम्राज्य-शाही के मायाजाल में न फँस जाएँ, जिससे स्वतन्त्रता के अन्तिम उद्देश्य को प्राप्त करने में आवश्यकता से अधिक देर और कठिनाई हो जाए। कहीं वे भारतीय शासन की गुत्थियों में पड़कर जनता के कष्ट-निवारण के उपायों में इतने उलझ अपने विरोध को समर्थन के रूप में परिणत करते हुए समाजवादी दल के नेता श्री जयप्रकाशनारायण ने की है कि चाहे केन्द्रीय मन्त्रि-मण्डल जनता को रोटी देने में असमर्थ रहे, चाहे वह हमारे कष्टों को रत्ती दूर कर सके, उसकी सफलता की केवल एक शर्त है को पूर्ण स्वाधीन बनाना। यदि केन्द्रीय मन्त्रि-मण्ड इस उद्देश्य में सफल हो गया तो उसकी अन्यथा भुला दी जाएगी। परन्तु केन्द्रीय मन्त्रि-मण्डल समस्या इतनी सरल नहीं है। उसे अपने अन्तिम सामने रखते हुए शीघ्र ही भारत के चालीस कोटि चाहे वे किसी श्रेणी के हों, किसी धर्म को मानते हों—यह करना है कि हम सचमुच स्वाधीनता के द्वार तक पहुँ हैं। भारतीय जनता युद्धकालीन आर्थिक कष्टों में पिस रही है; पेट भरने और तन ढँकने की दैनिक आवश्य के लिए उसे जो कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, उसे वर्णन जा सकता। यह स्वाभाविक है कि जनता अपने नेताओं से, जो कल तक उसके कष्टों की कहानी दर्द और सुनाते थे, आज जब कि वे स्वयं उसके भाग्य साझीदार बन गए हैं, यह आशा करे कि वे उसकी और परेशानियों को अवश्य दूर करेंगे। यदि जनता आशा किसी सीमा तक पूर्ण न हो सकी तो पूर्ण का वादा, चाहे वह निकट भविष्य में ही पूरा किया हो, जनता को अधिक समय तक धीरज नहीं बँधा इसी लिए महात्मा गांधी ने कहा है कि केन्द्र में कांग्रेस के द्वारा पद-ग्रहण करना काँटों का ताज पहनना है। नि स्वतन्त्रता-प्राप्ति का यह मार्ग सङ्घर्ष के मार्ग से अधि है। जनता का कर्त्तव्य है कि नेताओं को अपने उ पूरा करने के लिए धैर्यपूर्वक अधिक से अधिक अव सुविधा दे। उसे विश्वास होना चाहिए कि उसके नेता तलवार की धार-जैसे कठिन मार्ग पर चलकर क विलम्ब के साथ महामना मालवीय जी के शब्दों में में अपना राज' स्थापित करने में सफल होंगे।

मन्त्रि-मण्डल की शक्तियाँ

दो सितम्बर को पण्डित जवाहरलाल नेहरू के जिस राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई है उसकी निर्धारित करने के लिए ब्रिटिश पार्लमेंट ने कोई नहीं बनाया है। यह सरकार भी, जहाँ तक कानून है, सन् १९१९ के भारतीय विधान के ही अनुसार बनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यकारिणी समिति से सर्वथा भिन्न है। सन् १९१९ के तर्गत वाइसराय अपनी कार्यकारिणी के सदस्यों को इच्छानुसार नीत करता था। मनोनीत सदस्यों में परस्पर क्या सम्बन्ध इसका कोई ध्यान नहीं रक्खा जाता था। वे पृथक्-पृथक् सराय के प्रति उत्तरदायी थे, सम्मिलित उत्तरदायित्व-जैसी बात कार्यकारिणी के सदस्यों में नहीं थी। कार्यकारिणी ति की बैठकों में वाइसराय अध्यक्ष रहता था तथा उसकी वाही एक बँधे हुए नियम के अनुसार होती थी। कार्य-रिणी के समक्ष केवल वही प्रश्न रक्खे जाते थे जिन पर बार करने के लिए वह बुलाई जाती थी; किसी सदस्य को नया प्रश्न उठाने का अधिकार नहीं था। संक्षेप में, सराय की कार्यकारिणी समिति केवल एक सलाहकार समिति वाइसराय ही वास्तविक शासक था। प्रायः सेक्रेटेरियेट स्थायी उच्च अधिकारी कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के -पीछे वाइसराय से मिलकर महत्त्वपूर्ण निर्णय कर लिया थे। लड़ाई के दिनों में वाइसराय ने जिन 'चतुर और भक्त' महानुभावों की कार्यकारिणी बनाई थी, उनकी भी क्ति इतनी ही थी।

वर्त्तमान राष्ट्रीय सरकार उस कार्यकारिणी समिति से सर्वथा है। गत कार्यकारिणी समिति में गृह, अर्थ, रेलवे और तथा रक्षा विभागों के सदस्य अनिवार्यतः अँगरेज होते राष्ट्रीय सरकार के सभी सदस्य हिन्दुस्तानी हैं। केवल सराय एक अँगरेज सदस्य है, जो अपने पद के कारण का अध्यक्ष है। कमांडर-इन-चीफ, जो युद्ध और रक्षा-भाग का सदस्य होता था, अब केवल कमांडर-इन-चीफ है र हिन्दुस्तानी युद्ध और रक्षा विभाग के सदस्य के अधीन म करता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात, जो वर्तमान राष्ट्रीय कार के निर्माण से सम्बन्ध रखती है, उसका सम्मिलित उत्तर-त्व है। वाइसराय ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को य सरकार के सदस्यों के नाम प्रेषित करने का निमन्त्रण ा था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार ब्रिटिश सम्राट् पार्लमेंट बहुसंख्यक पार्टी के नेता को प्रधान मन्त्री की हैसियत से य मन्त्रियों के नाम प्रेषित करने का न्योता देता है। पण्डित वाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मन्त्री हैं। अन्य स्य उन्हीं के द्वारा चुने गए हैं, उनमें परस्पर गहरा भाई-रे का सम्बन्ध है। प्रायः प्रतिदिन वे आपस में मिलकर ने-अपने विभाग की समस्याएँ सबके सम्मुख रखते हैं और कर किसी निर्णय पर पहुँचते हैं। राष्ट्रीय सरकार को अब कारिणी समिति नहीं कहा जाता, उसका सरकारी नाम अब बिनेट' अर्थात् मन्त्रि-मण्डल है। मन्त्रि-मण्डल न केवल के दैनिक शासन की समस्याओं में वरन् उच्च राजनीतिक लों में देश की नीति निर्धारित करने में स्वतन्त्र है। यद्यपि सराय अब भी अपने विशेषाधिकार रखता है, 'कैबिनेट' के निर्णयों पर नुक्ताचीनी करने, उन्हें मानने न मानने का अधिकार उसे अब भी प्राप्त है; परन्तु वह अपने विशेषा-धिकारों का प्रयोग वस्तुतः नहीं करेगा, ऐसी आशा है। यदि ऐसा न होता तो पण्डित जवाहरलाल नेहरू वाइसराय का निमन्त्रण ही न स्वीकार करते। राष्ट्रीय सरकार की अपनी वैदेशिक नीति है जिसे वैदेशिक विभाग के अध्यक्ष पण्डित नेहरू ने स्वयं स्पष्ट किया है। यह नीति भले ही ब्रिटेन के प्रति विशेष मैत्रीपूर्ण हो, ब्रिटेन की नीति के अधीन नहीं है। भारत की व्यापारिक नीति का भी स्पष्टीकरण व्यापार विभाग के अध्यक्ष श्री भाभा के द्वारा हो चुका है, जिससे न केवल श्री भाभा के उच्च ज्ञान और व्यापक दृष्टिकोण का परिचय मिलता है, वरन् उससे विदित होता है कि भारत अब व्यापार के क्षेत्र में ब्रिटेन का क्रीत दास नहीं रह सकता। वह अपने व्यापार का सङ्गठन स्वयं अपने लाभ के लिए करेगा, जिससे कि चालीस कोटि नर-नारियों के मुँह का अन्न और तन का कपड़ा छिनकर समुद्र-पार न जा सके और उनके रहन-सहन के मान में उन्नति हो। पद-ग्रहण करते ही राष्ट्रीय सरकार ने वजीरिस्तान में होने-वाली बमबारी को रोककर देश की सीमान्त-नीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की सूचना दी है। राष्ट्रीय सरकार सीमान्त पर रहनेवाले कबीलों के साथ मैत्री का सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है। यदि इस महत्त्वपूर्ण कार्य में वह सफल हो सकी तो हम सीमान्त पर रहनेवाले सैनिक प्रबन्ध के भारी व्यय से तो बचेंगे ही, साथ ही हमें अपने सीमान्त पर एक दृढ़ रक्षा-प्राचीर प्राप्त हो जाएगी। राष्ट्रीय सरकार की गृह-नीति तो उसके दैनिक कार्यों में प्रकट ही हो रही है। नेताजी श्री सुभाष-चन्द्र बोस पर से प्रतिबन्ध हटा लेने का काम ही उसकी निर्भीक स्वतन्त्र नीति का द्योतक है।

परन्तु गृह-नीति के मामले में राष्ट्रीय सरकार, स्वेच्छा से हो अथवा विशेष कारणों से, उतनी अधिक शक्ति-शाली नहीं जान पड़ती जितनी कि वाइसराय की कार्यकारिणी समिति थी। सिन्ध के प्रधान मन्त्री स्वर्गीय श्री मौलाबख्श के सरकारी उपाधि-त्याग पर ही कुण्ठित होकर वाइसराय ने उन्हें पद से पृथक् कर दिया था। उसके विपरीत आज सिन्ध की अवैधानिक सरकार के प्रधान मन्त्री तथा अन्य सदस्य खुले आम साम्प्रदायिक नीति का पालन करते हैं, फिर भी केन्द्रीय सरकार कुछ नहीं करती। सिन्ध में जिस अवैधानिकता का राज्य है, उसे कोई शक्ति-सम्पन्न केन्द्रीय सरकार कभी सहन नहीं कर सकती और बङ्गाल का तो कहना ही क्या? जिस प्रधान मन्त्री ने १६ सितम्बर के लिए लीग के कार्यक्रम के अनुसार आम छुट्टी घोषित कर दी और कलकत्ते में ४-५ दिन तक कत्ले-आम होने दिया, वह आज भी अपने पद पर पूर्ववत् आसीन है। कलकत्ते के ऐतिहासिक उत्पात की जाँच हो रही है, पर जिसके विरुद्ध जाँच हो रही है वह अब भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर खून-खराबी की धमकियाँ दे देता है। राष्ट्रीय सरकार इन सब बातों को सहन कर रही है। इसका कारण है, वाइसराय और ब्रिटिश गवर्नमेंट की वह नीति जिसके अनुसार वह मुस्लिम लीग को राष्ट्रीय सरकार में सम्मिलित करना चाहती थी और अब भी अपने उस प्रयत्न से विरत नहीं जान पड़ती। राष्ट्रीय सरकार में मुस्लिम लीग के सम्मिलित न होने के कारण ही वाइसराय ने राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की घोषणा करते समय स्पष्ट कर दिया था कि प्रान्तीय स्व-शासन में राष्ट्रीय सरकार किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगी। मुस्लिम लीगी प्रान्त बङ्गाल को वह किस सीमा तक स्वशासन का अधिकार दे सकेगी, यह तो भविष्य ही बता सकता है, पर स्वशासन के नाम पर कलकत्ते-जैसा नग्न नृत्य किसी भी सरकार के लिए अत्यन्त लज्जास्पद है। भविष्य में या तो सरकार को मुस्लिम लीग के साथ किसी प्रकार का समझौता कर लेना होगा या उसे, यदि वह अपने 'सीधे कदम' के मार्ग से विरत न हुई तो, प्रान्तीय स्वशासन से भी हटाना होगा।

राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के समय वाइसराय ने भारतीय सेना के सम्बन्ध में कहा था कि यद्यपि भारतीय सेना और युद्ध का विभाग भारतीय सदस्य के अधीन होगा, फिर भी भारतीय सेना सम्राट् की ही सेना समझी जाएगी। सैनिकों ने जो शपथ सम्राट् के प्रति वफादार रहने की ली है वह अब भी ज्यों की त्यों है। इस प्रकार की शपथ तो पण्डित जवाहरलाल नेहरू और उनके साथियों ने भी ली है। पर उस शपथ का महत्त्व वे भी जानते हैं और वाइसराय भी। वाइसराय की इस घोषणा में भी साम्प्रदायिक भय की गन्ध आती है। उन्हें डर था कि कहीं सेना के ऐसे सैनिक, जिन पर मुस्लिम लीग का प्रभाव है, राष्ट्रीय सरकार के मुस्लिम लीग के विरोध को ध्यान में रखकर सेना में भेदभाव और उत्पात न पैदा कर दें। बङ्गाल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री नजीमुद्दीन ने इस प्रकार की धमकी भी दी थी।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की शक्तियों पर व्यापक दृष्टि से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उसकी स्वतन्त्रता की बाधा का इस समय केवल एक कारण जान पड़ता है—वह है हमारी उलझी हुई साम्प्रदायिक समस्या। इस समस्या को हल करने के लिए वाइसराय और कांग्रेस दोनों को राजनीतिज्ञता के साथ दृढ़ता का भी शीघ्र ही परिचय देना होगा। सरकार पूर्ण अर्थ में तभी राष्ट्रीय हो सकेगी जब वह अपनी साम्प्रदायिक नीति में भी वाइसराय के नेतृत्व को त्याग सकेगी।

राष्ट्रीय सरकार की शक्तियाँ उसी प्रकार बढ़ती जाएँगी जिस प्रकार ब्रिटिश पार्लमेंट ने बिना किसी लिखित विधान के अपनी शक्तियों को केवल परम्पराओं के सहारे बढ़ाया है। परन्तु इस सम्बन्ध में एक बात बड़े महत्त्व की है। राष्ट्रीय सरकार अस्थायी है और जितनी ही अधिक अस्थायी वह हो उतना ही अच्छा है, क्योंकि विधान-निर्मात्री-परिषद् जितनी जल्दी पूरा होगा, उतनी ही जल्दी पूर्ण स्वाधीनता हो सकेगी। परन्तु जो केन्द्रीय सरकार अपने नीतिकुशल विद्वान् सदस्यों की दृढ़ता, शक्तिमत्ता और लोकप्रियता के कारण तथा परम्पराओं के सहारे अपनी शक्तियों को बढ़ाकर जिसके अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के सभी आवश्यक विषय हैं, स्थायी विधान के अन्तर्गत संकुचित होकर केवल तीन विषय—वैदेशिक नीति, रक्षा और यातायात—तक ही सीमित रह जायगी! हमें आशा करनी चाहिए कि विधान-निर्मात्री परिषद् इस विषय में अधिक स्वतन्त्र और उदार होकर सर्वसम्मति से निर्णय पर पहुँचेगी कि केन्द्रीय सरकार की शक्तियों में इतनी कम कमी की जाए जिससे कि अन्ताराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की नीति प्रभाव-पूर्ण और शक्ति सम्पन्न रह सके।

नेहरू जी की प्रथम घोषणा

मध्यकालीन राष्ट्रीय सरकार के प्रधान मन्त्री की हैसियत से माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने जो प्रथम 'प्रसारण' किया है उसका देश विदेशों में—एक विशेष क्षेत्र को अपवाद स्वरूप छोड़कर—सर्वत्र एक-सा स्वागत हुआ है। इस 'ब्रॉडकास्ट' से पहली ध्वनि यह निकलती है कि राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के फल-स्वरूप गवर्नर-जनरल की पोजीशन में एक युग का परिवर्त्तन हो गया है। ब्रिटिश-शासित भारत में अब तक यह परम्परा रही है कि सरकार की नीति में जब कोई परिवर्त्तन होता था तब स्वयं वायसराय महोदय सरकार की परिवर्त्तित नीति का स्पष्टीकरण करते थे। अब उस परम्परा का विच्छेद हो गया है—प्रतीत होता है। इसी से स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन राष्ट्रीय सरकार का उत्तरदायित्व वाले व्यक्तियों के अधिकार अब वे ही नहीं हैं जो पूर्ववर्ती कारिणी के सदस्यों के हुआ करते थे। पण्डित नेहरू ने घोषणा की है उसका सम्बन्ध केवल उसी पदाधिकार से जिसे वे स्वयं सँभाल रहे हैं, प्रत्युत उन्होंने सामूहिक घोषणा की है। इसका अर्थ यही है कि वर्त्तमान सरकार तक अधिकारारूढ़ रहेगी तब तक वह सब कामों का उत्तर सामूहिक रूप से वहन करेगी।

नेहरू जी ने सरकार की नीति का विशद स्पष्टीकरण किया है। उन्होंने केवल बाहरी रूपरेखा पर ही प्रकाश डाला है। पर उन्होंने जो कुछ बतलाया है उसी से स्वतन्त्र राष्ट्रीय सरकार की भावी नीति पर काफी प्रकाश पड़ता है। अन्य राष्ट्रों के साथ स्वतन्त्र भारत के सम्बन्ध कैसे होंगे, इस पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा है कि भारत शान्ति, प्रगति और उन्नति का समर्थक है। वह गुटबन्दी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाठी उसकी मैं स' की नीति का विरोधी रहेगा। वह पराधीन उपनिवेशों और देशों को स्वाधीन देखना चाहता है। वह चाहता है कि संसार की समस्त जातियों और देशों को उन्नति करने का समान अधिकार और समान साधन सुलभ हों -केवल सिद्धान्त के रूप में नहीं, व्यावहारिक रूप में। वह नाजीवाद की विच्छेदक और साङ्घातिक जाति-विद्वेष-मूलक नीति का घोर विरोधी है।

ब्रिटिश उपनिवेशों के साथ स्वतन्त्र भारत के भावी सम्बन्ध का स्पष्टीकरण करते हुए नेहरू जी ने कहा है कि स्वतन्त्र और स्वाधीन भारत ब्रिटेन और उसके 'कामन वेल्थ' के अन्तर्गत देशों के साथ मित्र और सहयोगी के सम्बन्ध स्थापित करेगा। यही नहीं, उन्होंने भारत की ओर से अमेरिका, चीन, सोवियट रूस तथा अन्य देशों को भी अभिवादन भेजते हुए यह विश्वास प्रकट किया है कि यद्यपि आज संसार के विभिन्न राष्ट्रों में परस्पर मनस्य, प्रतिस्पर्धा, घृणा और प्रतिद्वन्द्विता की भावनाएँ दिखाई दे रही हैं, फिर भी संसार अबाध गति से—और तेजी के साथ—निकट-सहयोग, स्वाधीन और स्वयं इच्छित 'कामन वेल्थ सङ्घ' की ओर अग्रसर हो रहा है। भविष्य का संसार हमारी आशाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप एक होगा, उसमें न्याय और समानता की भावनाओं का प्राधान्य होगा; ऐसे संसार के लिए ही भारत निरन्तर अबाध प्रयत्न करेगा। इस बृहत् 'विश्व कामन वेल्थ' के अन्तर्गत प्रादेशिक समूह भी होंगे और सङ्घ भी। भारत और एशिया के अन्य देश तब राजनीति और संस्कृति के सम्बन्ध में चर्चा आने पर स्वयं को 'एशियायी' कहेंगे।

आज का युग प्रत्येक देश को सङ्घबद्ध होने को बाध्य कर रहा है। सङ्घ जितना सुङ्गसठित और विशाल होगा, उसके अन्तर्वर्ती देश उतने ही सुरक्षित और स्वाधीन होंगे। आज एशिया के सभी देश अनुभव कर रहे हैं कि योरप की साम्राज्य-वादी दोहन-नीति से बचने के लिए उनका एक बृहत् सङ्घ के रूप के सङ्गठित हो जाना आवश्यक है। एशिया का प्रत्येक देश किसी-न-किसी योरपीय देश के द्वारा इन दिनों आक्रान्त और शोषित है। सभी की समस्याएँ लगभग समान हैं। प्रत्येक दूसरे की सङ्कटावस्था का अनुभव कर रहा है। इस वस्तुस्थिति में उनका सङ्घबद्ध हो जाना नितान्त सामयिक आवश्यकता है। पण्डित नेहरू ने इस दिशा में भी कदम उठाया है। उन्होंने निकट भविष्य में ही दिल्ली या भारत के किसी दूसरे नगर में एक ऐसी कान्फरेंस बुलाने का आयोजन किया है जिसमें रूस और जापान से लेकर एशिया के सभी छोटे-बड़े राष्ट्रों के प्रति-निधि सम्मिलित होंगे और एशियायी देशों की स्वाधीनता व उन्नति के उपायों पर सामूहिक दृष्टि से विचार-विमर्श करेंगे।

अपने भाषण में नेहरू जी ने 'ब्रिटिश कामन वेल्थ' के उप-निवेशों को—मुख्यतः दक्षिण अफ्रीका की सरकार को—चेतावनी देते हुए कहा है कि दक्षिण अफ्रीका में जाति-विद्वेष की जो नीति आजकल चल रही है और प्रवासी भारतीयों को जिसका शिकार बनाया जा रहा है, उसमें यदि परिवर्तन न किया गया तो उसका परिणाम विश्वव्यापी सङ्घर्ष होगा। भारत एक जाति-द्वारा दूसरी जाति को दबाया जाना पसन्द नहीं करता; अतः वह चाहता है कि भारतवासी जहाँ और जिस देश में हों, वहाँ वाले उनको अपने समान ही समझें और उनका आदर करें। भारत किसी धमकी से नहीं डरेगा और न किसी अत्याचार के आगे झुकेगा।

वर्तमान सरकार अस्थायी है अतः उसकी गृहनीति के सम्बन्ध में नेहरू जी ने अधिक विस्तार से कुछ नहीं कहा है। फिर भी इतना संकेत उन्होंने दिया है कि अधिकारों के सीमित होते हुए भी सरकार भारतीयों की रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करने का पूरा प्रयत्न करेगी और वह देश की उपेक्षित जनता की ओर पूरा-पूरा ध्यान देगी। वह अस्पृश्यता के विरुद्ध सङ्घर्ष जारी रक्खेगी और बलपूर्वक लादी हुई असमानता का विरोध करती रहेगी। जो जातियाँ आर्थिक या सामाजिक दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं उन्हें सरकार भरपूर सहायता देगी।

नेहरू जी ने जो कुछ कहा है यह उनकी अन्तरात्मा का प्रतिबिम्ब है। वे पूर्ण आशावादी हैं। और जहाँ तक सम्भव होगा, उनकी सरकार देश का कायापलट कर देगी। पर इसमें यह आशा नहीं की जा सकती कि इतना बड़ा कार्य एक-दो दिन में ही सम्भव हो जाएगा। सरकार के सञ्चालक कितने ही योग्य और कर्मठ क्यों न हों, पर मशीन अभी पुरानी ही है। उसके पुर्जों की घिस-घिसकर चलने की पुरानी आदत बड़ी कठिनाई से दूर हो सकेगी। उन्हें फिर से खरादना होगा, तब कहीं वे तेजी से गति कर सकेंगे।

देश के जिस वर्ग ने २ सितम्बर का स्वागत काले झण्डों द्वारा किया है, उनको सम्बोधित करते हुए नेहरू जी ने जो भावपूर्ण शब्द कहे हैं, वे उनकी विशालहृदयता के परिचायक हैं। उन्होंने कहा है—'द्वार अब भी खुला है। वे आकर सरकार में सम्मिलित हो सकते हैं और हमारे साथ एक सच्चे मित्र की तरह और आपसी समझदारी के साथ भारत के पुनर्निर्माण के कार्य में उद्योग कर सकते हैं। प्रश्न यह नहीं है कि किसे और किसने खोया। यदि कुछ मिलेगा तो हम सब को। यदि कुछ हानि होगी तो वह भी हम सब की होगी।

भारत की पुरानी शासन-व्यवस्था जा रही है। नई व्यवस्था प्रतिष्ठित हो रही है। देश के लिए यह युग परिवर्तन का है। क्रान्ति द्वार पर खड़ी है। जो इस अवसर से लाभ नहीं उठाएँगे वे न केवल अपनी हानि करेंगे, अपने देश को भी पीछे धकेल देंगे। पण्डित नेहरू के ब्राडकास्ट से यह ध्वनि स्पष्ट निकल रही है और आज भारत का बच्चा-बच्चा उनके कथन की सचाई का अनुभव पूरी तरह कर रहा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैलेस्टाइन कान्फरेंस

पैलेस्टाइन की समस्या पर विचार-विनिमय करने के लिए पिछले दिनों लन्दन में एक कान्फरेंस आमन्त्रित की गई थी। इस कान्फरेंस की सबसे अधिक उल्लेखनीय विशेषता यह रही कि इसमें अन्य अरब देशों के प्रतिनिधि तो सम्मिलित हुए पर न 'अरब हायर कमेटी' का कोई अरब सम्मिलित हुआ और न कोई यहूदी। अर्थात् जिनके भाग्य का फैसला होना था उन दोनों जातियों का प्रतिनिधित्व कान्फरेंस में नहीं था। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री श्री एटली का भाषण इस कान्फरेंस की एक-मात्र महत्त्वपूर्ण बात थी। इस भाषण से यदि अधिक नहीं, तो इतना तो विदित हो ही जाता है कि पैलेस्टाइन के झगड़े की जड़ क्या है। तथा इस सम्बन्ध में एक ओर अँगरेजों और दूसरी ओर अरबों व यहूदियों के दृष्टिकोणों में कितना बड़ा अन्तर है।

भाषण के सिलसिले में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री का यह कथन कि 'अपने गत २५ वर्ष के शासनकाल में ब्रिटिश सरकार अरबों के राष्ट्रीय पुनर्जागरण में बराबर दिलचस्पी लेती रही है,' वस्तु-स्थिति से अधिक मेल नहीं खाता। ऐसे अरब राष्ट्र चार हैं जिन पर ब्रिटिश की छत्र-छाया गत २५ वर्षों से रही है—और वे हैं मिस्र, इराक, ट्रान्सजार्डन और पैलेस्टाइन। आधुनिक राजनीति के प्रकाश में इन देशों को रखकर देखने पर वे केवल ब्रिटेन के संरक्षित 'राज्य' भर दिखाई देते हैं, उससे अधिक कुछ नहीं। जब तक ब्रिटेन की सङ्गीनें उन देशों में मौजूद हैं—वे चाहे वहाँ के निवासियों को विदेशी आक्रमणों से बचाने के व्याज से हों या उन देशों से संलग्न ब्रिटिश स्वार्थों की सुरक्षा के निमित्त से—तब तक उन देशों की राष्ट्रीय पुनर्जागर्त्ति का कुछ अर्थ ही नहीं है। ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ कहते रहें कि उनकी सेनाएँ अधीनस्थ देशों की स्वतन्त्रता-प्राप्ति में सहायता करने के लिए हैं, पर वे वस्तुतः किस लिए हैं, यह सब अधीनस्थ देश अच्छी तरह जानते हैं।

उक्त भाषण से यह भी पता लगता है कि श्री एटली पैले-स्टाइन की समस्या को दुर्भेद्य नहीं समझते। उनका कथन है—"यथार्थवाद और समझदारी मुझे प्रकृति से प्राप्त हुई है। अतः मुझे विश्वास है कि इस समस्या का हल अवश्य निकल आएगा।" यह कथन सत्य हो सकता है। राजनीतिज्ञों ने बड़े-बड़े कठिन मसलों को हल किया है। एटली साहब भी एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं, इसमें रत्तीभर सन्देह नहीं है। पर पैलेस्टाइन की समस्या को जब प्रकाश में रखकर देखा जाता है तब ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटेन उसके सुलझाने में न 'यथा-र्थता' की जानकारी का परिचय दे रहा है और न 'समझदारी' का। पैलेस्टाइन के सम्बन्ध में यदि सबसे अधिक यथार्थ बात

में निर्णय करने का अधिकार एकमात्र अरबों को है—"ऐंग्लो-अमेरिकन कमेटी" को नहीं, और न उन कमीशनों को जिनमें अरबों का एक भी प्रतिनिधि न हो।

आगे चलकर एटली साहब कहते हैं—"कोई ऐसी बात जो अरब जनता पर प्रभाव डाले, ब्रिटिश जनता के लिए भी की हो सकती है। इसी प्रकार जो बात ब्रिटेन की जनता पर प्रभाव डाल सकती है, वह अरब देशों पर भी अवश्य डालेगी। हम प्रकृत रूप से साझीदार हैं।"

छोटे राज्यों के साथ साझीदारी की यह भावना ब्रिटेन की पुरानी चाल है और इस साझेदारी में लाभ हमेशा ब्रिटेन के पक्ष में रहता है, यह भी सर्वविदित है। फिर पैलेस्टाइन के मामले में तो यह बात और भी स्पष्ट है। 'नेग्रेब' का प्रदेश प्राप्त करने के लिए ब्रिटेन को अरब राष्ट्रों से दोस्ती करनी ही है।

पैलेस्टाइन का प्रश्न ब्रिटिश कूटनीति की उपज है। महायुद्ध के पश्चात् टर्की का अङ्ग-भङ्ग करने के उद्देश्य से प्रदेशों को विद्रोह करने के लिए ब्रिटेन ने ही उकसाया। जब यहूदियों को सन्तुष्ट करना आवश्यक हो गया तब इसने ही पैलेस्टाइन को 'यहूदियों का घर' घोषित किया। अब यहूदियों की चाह बेलगाम हो गई है और वे मरने पर उतारू हो गए हैं, न केवल पैलेस्टाइन में, समस्त संसार में वे न केवल अरबों पर, अँगरेजों पर भी निशाना लगाने लगे हैं। अब वे 'बैलफोर कमीशन' की दी हुई सुविधाओं से सन्तुष्ट नहीं हैं और पैलेस्टाइन को 'यहूदियों का राष्ट्रीय गृह' सच्चे अर्थ में देखना चाहते हैं। ब्रिटेन के दुर्भाग्य से अन्ताराष्ट्रीय सहानुभूति अरबों को प्राप्त है। यहूदियों ने अपने नेता वीजमैन को अपदस्थ कर दिया है; कारण, उनकी समझ में डाक्टर वीजमैन ने पैलेस्टाइन समस्या के निर्माण में 'उपकरण' का काम किया था। उधर 'ऐंग्लो-अमेरिकन' कमेटी के सुझाव—पैलेस्टाइन के विभाजन—को कार्यरूप देने के लिए अमेरिका अधिक उत्सुक दिखाई दे रहा है क्योंकि अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कुछ दिनों एक नया सुझाव उपस्थित कर दिया है कि संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रत्येक राष्ट्र अनुपात के अनुसार यहूदियों को शरण दे। अरब-राष्ट्र अमेरिका के इस हस्तक्षेप को सहन करने को तैयार नहीं दिखाई देते। उनका कहना है कि सब राष्ट्र अपनी शक्ति के अनुपात से यहूदियों को बसा लें, तब हम भी उतने यहूदियों को अपने देश में बसा लेंगे, जितने हमारे हिस्से में पड़ेंगे। संख्या का निर्णय हम स्वयं करेंगे। किसी अन्य की संख्या हमें मान्य न होगी।

समस्या की इसी पेचीदगी को ध्यान में रखते हुए ही एटली साहब ने कहा है—"हममें से प्रत्येक में 'लेने' की भावना होनी चाहिए। हठधर्मी से समस्या नहीं सुलझेगी। पर प्रश्न यह है कि किसे क्या लेना है और कौन क्या देने को तैयार है। अरब देना चाहते नहीं, क्योंकि वे समझते हैं कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यादा—अथवा अपनी हैसियत से कहीं अधिक—दान कर
के हैं। ब्रिटेन कभी कुछ 'देना' नहीं चाहता। वह तो
निवालों में है। यहूदी तो लेने के लिए प्रयत्न कर ही रहे हैं।
स वस्तुस्थिति में यह लेन-देन का व्यापार किस प्रकार चले,
ह हमारी समझदारी से बाहर की बात है। हाँ, एटली साहब
की 'समझदारी' कुछ काम दे सके तो ठीक है।

अरब पैलेस्टाइन के बन्दर-बाँट का विरोध करेंगे। न्याय
न के पक्ष में है, अतः संसार की सहानुभूति भी उन्हीं के साथ
। वे समझते हैं कि यदि एक बार उनके बीच में 'स्वतन्त्र
हूदी राष्ट्र' की स्थापना हो गई, तो आगे चलकर उसकी वे
माएँ कदापि न रहेंगी, जिनका निर्धारण इस समय ब्रिटेन
र अमेरिका कर देंगे। अन्ताराष्ट्रीय यहूदी सङ्घ कुछ ही
मय में इतना अधिक बल प्राप्त कर लेगा कि वह यहूदी-पैलेस्टाइन
ा पर्याप्त सहायता देकर उसकी सीमाओं का यथेष्ट विस्तार
रा सकेगा।

इस प्रकार इस बार की पैलेस्टाइन कान्फ्रेंस तो असफल
गई है; अब देखना है, भविष्य में इस समस्या का निपटारा
इस रूप में किया जाता है।

बलगेरिया में प्रजातन्त्र

बलगेरिया की जनता का बहुमत गत आम चुनाव में प्रजातन्त्र
पक्ष में रहा। योरप का यह नगण्य देश लगभग सन् १९११
अकेला चला आ रहा है—अकेला इस अर्थ में कि वह योरप
किसी गुट-विशेष में सम्मिलित नहीं हुआ और न कोई
रपीय राष्ट्र उसका घनिष्ठ मित्र ही रहा। वहाँ की जनता,
रप के अन्य देशों की जनता के मुकाबले में, अधिक गरीब
। वहाँ के निवासियों की रहन-सहन का स्टैंडर्ड बहुत नीचा
और उनकी तात्कालिक आवश्यकता प्रति व्यक्ति की दैनिक
य के औसत में वृद्धि करना है। प्रजातन्त्र की स्थापना के
त-स्वरूप उसका अब उस सैनिक वर्ग के प्रभुत्व से छुटकारा
जाएगा जो बलगेरिया की उन्नति के मार्ग का अब तक सबसे
ा रोड़ा बना रहा है।

बलगेरिया-निवासी उद्योगी के रूप में प्रसिद्ध हैं। प्रजातन्त्र
अन्तर्गत उन्हें शक्ति भर उद्योग को विकसित करने का
अवसर प्राप्त हो जाएगा और वे अपने प्रतिव्यक्ति की
सत दैनिक आय को आगामी दस साल में ही अधिक नहीं तो
ना अवश्य कर लेंगे, इसमें सन्देह नहीं है।

प्रजातन्त्र के पक्ष में भारी बहुमत प्रदर्शित करके बलगेरिया-
वासियों ने सिद्ध कर दिया है कि वे अब परम्परागत सम्राट्
ही से ऊब गए हैं और उसे वर्त्तमान समय के लिए नितान्त
अनुपयुक्त समझते हैं। पाठकों को स्मरण होगा कि बलगेरिया के
बादशाह बोरिस ने हठपूर्वक मार्च, सन् १९४१ में बलगेरिया
को युद्ध की लपटों में झोंक दिया था। हिटलर ने बादशाह
बोरिस की इस सहयोगिता से परम सन्तोष प्रकट किया था, और
बदले में धुरी-राष्ट्रों की ओर से पुरस्कार-स्वरूप बादशाह को
युगोस्लेविया का मेकेडोनियन विभाग और ग्रीस का थ्रेस प्रदान
किया था। इससे पहले भी, सन् १९४० में ही, हिटलर ने
प्रलोभन या घूँस के रूप में बलगेरिया को रूमानिया का डोब्रुजा
नामक भूभाग दे दिया था। युद्ध में हिटलर का पराभव हो
जाने पर यह खयाल किया जाता था कि बलगेरिया से भी उक्त
भूभाग अवश्य छीन लिए जाएँगे; क्योंकि वे उसकी पाप की
कमाई के हैं। पर पैरिस की शान्ति-कान्फ्रेंस से प्रकट होता
है कि अधिकांश राष्ट्रों की राय बलगेरिया के साथ नर्मी का
बर्त्ताव करने की है। इस प्रकार सम्भवतः बलगेरिया से वे
भाग नहीं छीने जाएँगे।

बलगेरिया को यह विशेष रियायत सम्भवतः रूस के प्रभाव
के कारण प्राप्त हो सकी है। बलगेरिया का झुकाव रूस की
ओर अधिक है। यदि रूस ने संयुक्त राष्ट्र-संघ की सदस्यता से
त्यागपत्र दे दिया और एक दूसरे संयुक्त राष्ट्र-संघ की स्थापना की,
जैसा कि पेरिस कान्फ्रेंस में रूस का रुख देखते हुए राजनीतिज्ञ
अनुमान करने लगे हैं, तो बलगेरिया भी निश्चयतः रूस के संघ
में सम्मिलित हो जायगा।

अनिवार्य समाज-सेवा

सुना जाता है कि युक्तप्रान्तीय सरकार शिक्षा के पुनः सङ्गठन
के अन्तर्गत विद्यार्थियों के लिए समाज-सेवा का पृथक् प्रमाण-
पत्र प्राप्त करना अनिवार्य बनानेवाली है। इस समस्या पर
विचार करने के लिए वह एक समिति की नियुक्ति करने जा
रही है। हमारी वर्तमान शिक्षा और शिक्षितों के व्यक्तिगत
स्वार्थ-प्रधान दृष्टिकोण को समझनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को इस
समाचार से हर्ष होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा-संस्थाओं में
पढ़े हुए नवयुवक, चाहे कितने ही देशभक्त और उदार हों, देश
के वातावरण से इतने दूर हो जाते हैं कि वे अपने ही देश में
विदेशी-से लगते हैं। हमारी शिक्षा देश के वास्तविक जीवन
से इतनी दूर है कि उसका लाभ जनसाधारण के जीवन तक
नहीं पहुँच पाता। शिक्षा को यथार्थ जीवन के अनुकूल—समाज
का एक घनिष्ठ अङ्ग—बनाने की दिशा में उसका जो पुनः-
सङ्गठन किया जाएगा उसमें अनिवार्य समाज-सेवा का भी
महत्त्वपूर्ण स्थान है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही नहीं, अनिवार्य समाज-सेवा अन्य कारणों से भी अत्यन्त आवश्यक है। भारतवासियों का जीवन संसार के अन्य देशों की अपेक्षा इतना पिछड़ा हुआ है कि बिना विशेष सामूहिक उद्योग के उसे ऊँचा उठाना सम्भव नहीं है। हमें कई शताब्दियों की प्रगति चन्द शताब्दियों में पूरी करनी है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को समष्टि के हित के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक है। आदर्श रूप में उचित तो यह है कि यह कार्य स्वेच्छापूर्वक स्थापित की हुई सामाजिक संस्थाओं के द्वारा हो और सरकार उस कार्य में यथाशक्ति सहायता देती रहे। परन्तु इस प्रकार की सामाजिक संस्थाओं के सङ्गठन और विकास में समय लगता है। हमारे पास इतना समय नहीं है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा-संस्थाएँ हमारे विद्यार्थियों में सामाजिक भावना और समाज-सेवा की प्रवृत्ति उत्पन्न करने के लिए यह अनिवार्य कर दें कि उन्हें अनिवार्य शिक्षा का प्रमाणपत्र तभी मिल सकेगा जब वे किसी नियत समय तक व्यावहारिक रूप से समाज-सेवा कर चुकें और तद्विषयक योग्यता प्राप्त कर लें। अपनी अनेक सामाजिक बुराइयों और त्रुटियों को दूर करने में भी इससे आशातीत सफलता मिल सकेगी।

अमेरिका और रूस तथा ब्रिटिश साम्राज्यशाही

पेरिस के शान्ति-सम्मेलन में विश्वशान्ति को स्थापित करने का जो ढोंग रचा जा रहा है उसे देखकर राजनीति से सामान्य परिचय रखनेवाला भी कह सकता है कि ये शान्ति की योजनाएँ नहीं बल्कि विभिन्न राष्ट्रों-द्वारा शक्ति-सञ्चय के प्रयत्न मात्र हैं। योरप और मध्यपूर्व के अधिकाधिक क्षेत्रों को अपने प्रभाव-क्षेत्र में सम्मिलित करने की प्रतिद्वन्द्विता कहीं रूस को एक ओर से तथा ब्रिटेन और अमेरिका को दूसरी ओर से युद्ध में उलझने का कारण न बन जाए यह भय दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। अमेरिका योरप से इतनी दूर रहकर भी योरप की राजनीति में इतनी निकट की दिलचस्पी ले रहा है, इसके कारण लोगों को भय होने लगा है कि अमेरिका की राजनीति केवल ब्रिटिश साम्राज्यशाही को सुरक्षित रखने के ही उद्देश्य को लेकर तो नहीं चलती है। ब्रिटिश साम्राज्यशाही के स्वार्थों की रक्षा के लिए अमेरिका-जैसा शक्तिशाली राष्ट्र अपने अपार धन-जन और अजेय सामरिक-शक्ति का उपयोग करे, यह कितने की बात है! कोई स्वाभिमानी राष्ट्र गहरी-से-गहरी मित्रता के नाते भी इस नीति को अपनाकर संसार में अपना सिर ऊँचा नहीं कर सकता। अभी हाल में अमेरिका के व्यापार-मन्त्री के सेक्रेटरी मिस्टर हेनरी वैलेस ने इसी भावना से प्रेरित होकर अपने भाषण में कहा है कि समय आ गया है कि अमेरिका अपनी वैदेशिक नीति के दृष्टिकोण को बदले। उसे किसी अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं में ब्रिटिश साम्राज्यशाही का उल्लू सीधा करने में अपनी राजनीति की इतिश्री नहीं समझनी चाहिए। उसे यह स्वीकार करना चाहिए कि रूस एक शक्तिशाली राष्ट्र है तथा उसे अपने आसपास के राष्ट्रों में अपनी समाजवादी विचार धारा फैलाने तथा उसी के आधार पर उनकी शासन-सत्ता को स्थापित कराने का उतना ही अधिकार है जितना अमेरिका को अपनी प्रजातान्त्रिक व्यवस्था फैलाने का। अमेरिका को रूस और ब्रिटिश साम्राज्यशाही के सङ्घर्ष में न्याय का पक्ष ग्रहण करना चाहिए, उसे सदैव रूस का विरोध करने की आवश्यकता नहीं है। वैलेस के भाषण ने साम्राज्यवादी ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों में खलबली पैदा कर दी। इस खलबली को शान्त करने के लिए राष्ट्रपति ट्रूमेन ने दूसरे ही दिन घोषणा किया कि वैलेस के भाषण से उनकी सरकार की अन्तर्राष्ट्रीय नीति का कोई सम्बन्ध नहीं है। वैलेस के विचार उनके व्यक्तिगत विचार मात्र हैं। ब्रिटेन के साम्राज्यवादी इन्हीं को लेकर वैलेस को सरकारी पद से हटाने की माँग कर रहे हैं। यह भी कहा गया है कि वैलेस का भाषण राज्यविभाग के नीति के विरुद्ध उनकी व्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता की प्रतिक्रिया मात्र है। इन सबके बावजूद वैलेस ने पुनः अपने विचार को दुहराने करने तथा अपने दृष्टिकोण की व्याख्या करने की घोषणा की है।

चाहे वैलेस को अपने भाषण के परिणाम-स्वरूप त्यागपत्र भी करना पड़े, फिर भी उनके द्वारा व्यक्त की गई भावना अमेरिकन जनता के एक अंश की भावना अवश्य मानी जायगी। चाहे इस समय भले ही इस भावना को अमेरिका कार्यान्वित न कर सके, पर शीघ्र ही उसे स्वीकार करना पड़ेगा कि लड़खड़ाते हुए ब्रिटिश साम्राज्य को सँभालने के उसके प्रयत्न विश्व-शान्ति के लिए हानिकर हैं तथा ब्रिटिश और अमेरिकन साम्राज्यवादी नीतियों में किसी एक का पक्ष ग्रहण करना उसके लिए तथा संसार के लिए मङ्गलकारी नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजी की ७८वीं वर्षगाँठ के अवसर पर—

'गांधी-जयन्ती' पर "पिछले कई वर्षों
गांधी-जयन्ती का अवसर रचनात्मक
र्यों एवं भारतीय आजादी के लिए पुनः
पण करने का समय समझा जाता है।
अवसर पर हम उस नेता के प्रति,
सने हमारा ध्यान उच्च आदर्शों एवं
नव-उद्धार की ओर आकृष्ट किया है,
एवं सम्मान प्रकट करते हैं। राजनीति
भाग लेनेवाले व्यक्तियों का ध्यान अनेक
टे-छोटे प्रश्नों में बँट जाता है और वे
च आदर्शों को भूल जाते हैं। लेकिन
हात्मा गांधी ऐसे नेता हैं जो हमें मार्ग-
त होने से बचाते हैं। वे सतत याद
लाते रहते हैं कि भारत का उच्चतम
दर्श क्या है। हमें चाहिए कि भारतीय
धीनता एवं मानव-उद्धार के लिए अपने
पुनः समर्पित करें और यह कार्य शोर
प्रदर्शन से नहीं, बल्कि ईमानदारी के
थ रचनात्मक कार्य करते हुए करें।
त्मा जी के नेतृत्व में हम आजादी के
श-द्वार पर पहुँच गए हैं। आज भी
रे सामने कठिनाइयाँ और बाधाएँ हैं,
किन यह निश्चित है कि हम उनके
त्व में अन्तिम कदम उठाएँगे।"

जवाहर लाल नेहरू

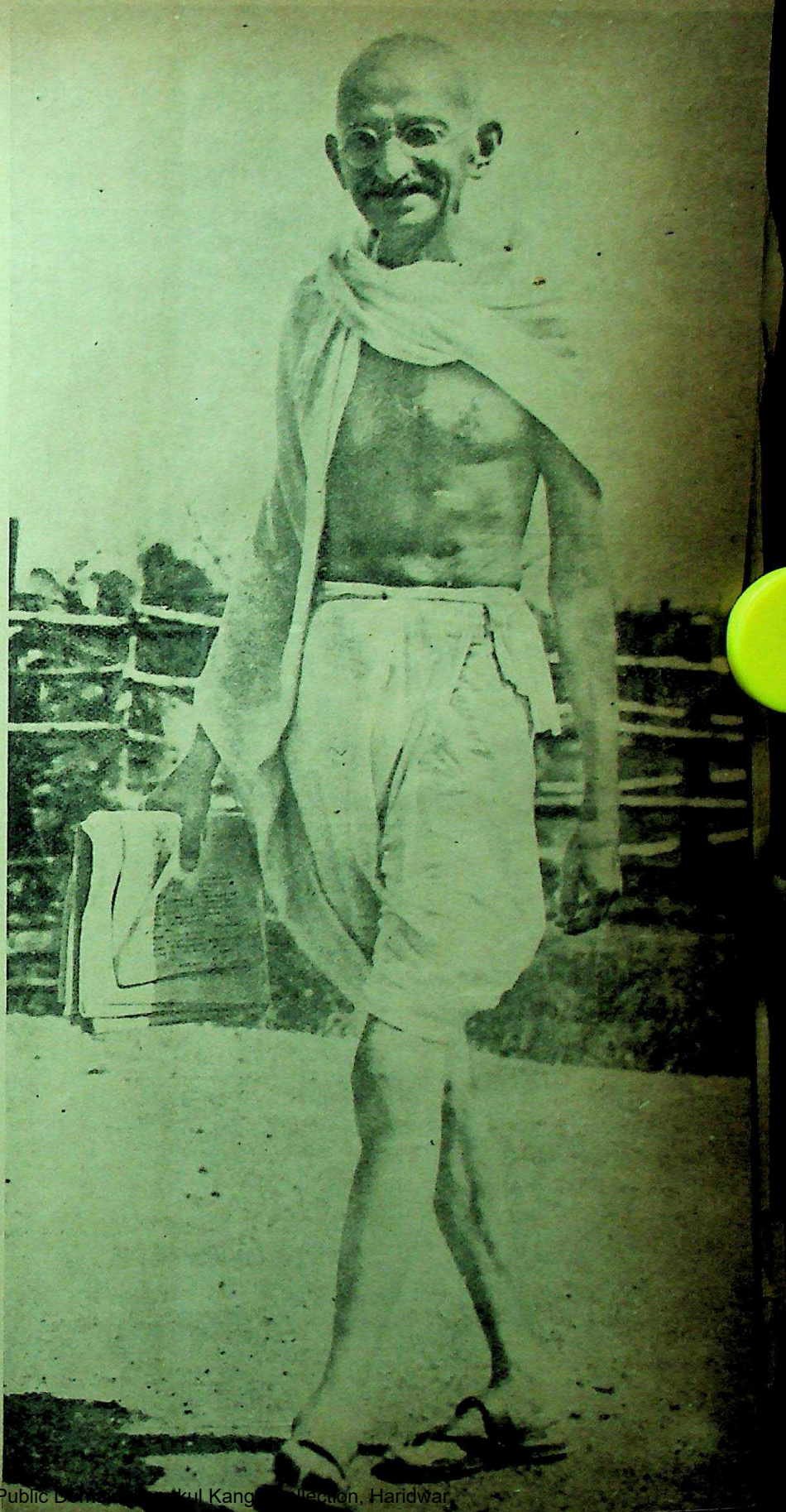

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य कालीन राष्ट्रीय सरकार का मंत्रिमण्डल

मा० श्री एम० आसफअली, मंत्री—युद्ध, यातायात तथा रेलवे विभाग

मा० श्रीजगजीवन राम, मंत्री—श्रम-विभाग

मा० सर शफात अहमद खाँ, मंत्री स्वास्थ्य, शिक्षा तथा कला वि

मा० सरदार वल्लभभाई पटेल, मंत्री—गृह, सूचना तथा ब्राडकास्टिङ्ग विभाग

मा० श्री सैयद अली जहीर, मंत्री—कानून-निर्माण, डाक और वायु विभाग

मा० श्री सी० एच० भाभा, व्यापार-विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा० पं० जवाहरलाल नेहरू, मंत्री—वैदेशिक विषय व राष्ट्रमंडल-संपर्क

मा० श्री शरच्चन्द्र बोस, मंत्री—निर्माण, खान व शक्ति विभाग

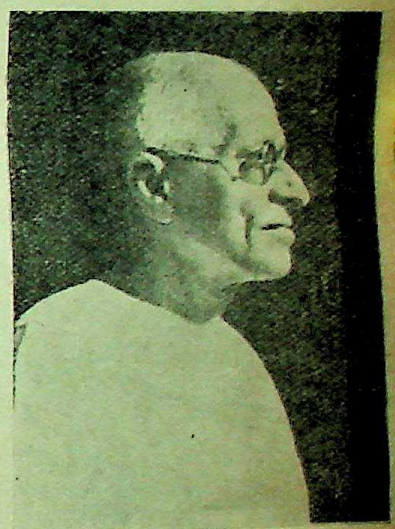

मा० श्री राजगोपालाचारी, मंत्री—उद्योग व रसद विभाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टालिन के चेले अमेरिका के औद्योगिक जीवन को अस्त-व्यस्त करने की चेष्टा में कहाँ तक सफल हो रहे हैं, इस
पता वहाँ के श्रमिकवर्ग की हड़तालों और व्यापक प्रदर्शनों से लगता है। यह चित्र अमेरिका के 'मानहटा' के स्क्वेयर पार्क में
जून में होनेवाले श्रमिकों के एक प्रदर्शन का है। पोस्टरों के भद्दे शब्द मजदूरों की मनोवृत्ति के पूर्ण-परिचायक हैं।

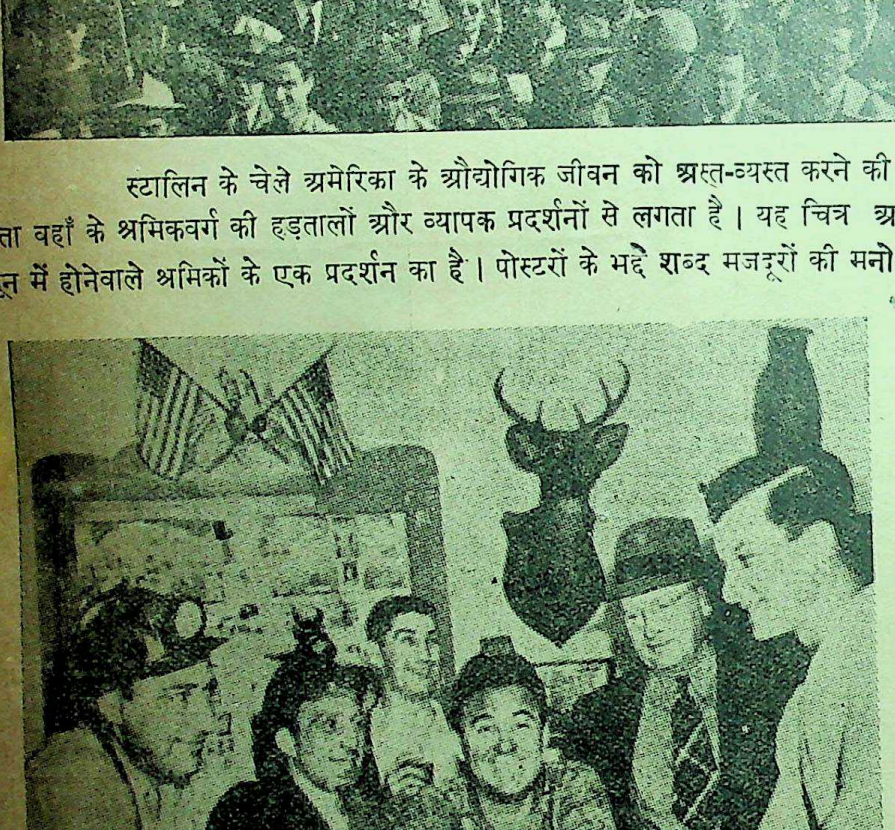

लोहा और कोयला आधुनिक युग में औद्योगिक राष्ट्रों के मेरुदण्ड कहे जाते हैं। अमेरिका में पिछले दिनों कोयले की खानों की संगठित हड़तालों का आयोजन हुआ था। चित्र में हड़तालियों के नेता परामर्श करते दिखाए गए हैं। (दाहिनी ओर) सिनेटर ताफ़ जिन्होंने अमेरिका की कांग्रेस में पिछले दिनों की हड़तालों के सिलसिले में विशेष ख्याति प्राप्त कर ली है, आजकल वहाँ की सरकार के गृहनिर्माण-विभाग, बजट, शिक्षा और श्रम में कांग्रेस के पथ-प्रदर्शक माने जाते हैं।

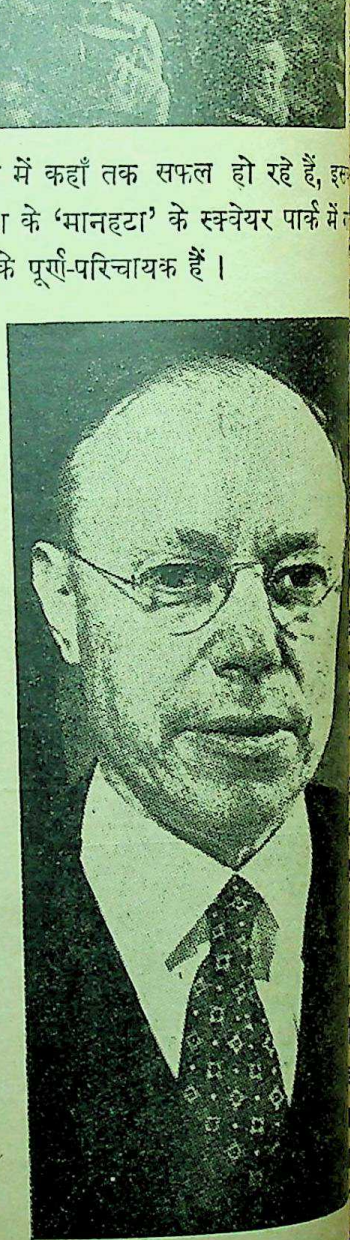

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी विश्वसङ्कट की भूमिका

डाक्टर एस० सी० लेले

सन् १९३९ में जिस अति भयङ्कर नरमेध का प्रारम्भ हुआ उसकी तैयारी जारशाही का अनुसरण करनेवाला जोसेफ टालिन सन् १९३३-३४ से कर रहा था। 'पूँजीवादी राष्ट्र रूस का विभाजन करना चाहते हैं', 'पूँजीवादी राष्ट्र रूस पर आकस्मिक आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं', आदि उत्तेजक घोषणाओं के बल पर, प्रामाणिक तथा तत्त्वनिष्ठ अन्तर्राष्ट्रीय विरोध की रीढ़ तोड़नेवाले गणवेषधारी स्टेलिन ने, अपनी सेना के जीवन तथा राष्ट्र के अन्य व्यवहार इत्यादि का युद्ध की दृष्टि से नियमन, सञ्चालन व मार्ग-दर्शन करने की नीति सन् १९२७ से कार्यान्वित की थी। बाह्य आक्रमण का भय दिखाकर रूसी जनता को युद्धोन्मुख तथा आत्मानुकूल बनाने का महत्कार्य स्टेलिन तथा उसके अनुयायियों ने मिलकर किया। सन् १९२७-३९ के अति महत्त्वपूर्ण काल में स्टेलिन के द्विखण्ड-व्यापी विशाल साम्राज्य का राज्य-व्यवहार (Politics) 'रूस का सैन्यपरिपूर्ण यन्त्रीकरण व औद्योगीकरण' व 'बाह्य शत्रु के आक्रमण से स्वदेश की—रूस की—रक्षा करना' इन दो बिन्दुओं के चारों ओर घूम रहा था। सन् १९३९ में स्टेलिन के रूस ने मित्रराष्ट्रों के साथ सन्धि करना अस्वीकार किया; व आक्रमणार्थ नाजी जर्मनी के साथ, पारस्परिक अनाक्रमण की सन्धि कर ली। इस क्रान्तिकारी सन्धि के द्वारा रूस ने दो महत्त्वपूर्ण कार्य किए। पहला महत्त्वपूर्ण कार्य यह कि जर्मनी को मित्रराष्ट्रों के साथ भिड़ा दिया; पोलैंड पर जर्मन सेना का धावा होते ही मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध घोषित किया। दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य यह था कि उक्त अनाक्रमण-सन्धि के द्वारा रूस ने अपनी पश्चिमी सीमा सुरक्षित की; पोलैंड का पराभव होते ही रूसी सेना पोलैंड में घुसी और आधे पोलैंड पर उसने अपना अधिकार स्थापित किया। इस महत्कार्य के पश्चात् रूस ने बाल्टिक राष्ट्रों का स्वाहा किया व अपनी पश्चिमी सीमा निर्बाध कर ली।

अपनी पश्चिमी सीमा सम्पूर्णतया सुरक्षित तथा अधिकतया निर्बाध करने के पश्चात्, व जर्मन सेना के पश्चिम रणक्षेत्र में और बालकन रणक्षेत्र में व्यस्त होने पर, रूस ने जर्मन विरोधी षड्यन्त्र की रचना करना आरम्भ किया। अतः रूसी-जर्मन युद्ध का निर्माण हुआ। रूस को द्वितीय या तृतीय श्रेणी का राष्ट्र बनाने का एक अतिचञ्चल स्वर्ण अवसर उस समय ब्रिटेन को प्राप्त हुआ था, किन्तु अदूरदर्शिता के कारण ब्रिटिश नेताओं ने उक्त स्वर्ण अवसर से यथोचित लाभ नहीं उठाया। इतना ही नहीं, किन्तु पश्चिमी योरप के इस सनातन शत्रु को—रूस को—आवश्यकता से अधिक सहायता दी गई तथा उसका भरण-पोषण भी किया गया। अपनी अति प्रचण्ड सुप्त शक्ति तथा मित्रराष्ट्रों की सहायता के बल पर रूसी भालू ने जर्मनी-इटली को फाड़कर, छिन्न-विच्छिन्न करके, खा डाला। नाजी जर्मनी का पराभव हुआ। रूस को लूट में बहुत सामग्री मिली व बर्लिन पर्यन्त का सारा योरप रूसी साम्राज्य में समाविष्ट हुआ। इस अपरिमित लूट व साम्राज्य-वृद्धि से भी रूस सन्तुष्ट नहीं हुआ। प्रत्युत उसकी भूख और भी बढ़ गई। अब वह समूचे योरप को उदरस्थ कर लेने को लालायित दिखाई दे रहा है। रूस की इस उद्दीपित साम्राज्य-तृष्णा के कारण तृतीय विश्वयुद्ध का होना अनिवार्य हो गया है। इतना ही नहीं, रूस ने विश्वविजयार्थ, सन् १९४५ की नूतन पञ्चवार्षिक योजना के द्वारा, अपना 'श्यामकर्ण' छोड़ भी दिया है।

परमाणु बम के आघात से साहसी किन्तु राजनीति में अकुशल जापान ने जिस समय घुटने टेककर पराभव स्वीकार कर लिया, उस समय से स्टेलिन के विशाल साम्राज्य की पूर्वी सीमा निर्बाध हो गई। जापान की हार होने के कुछ दिन पश्चात् साम्राज्यवादी रूस ने अपनी नूतन 'चतुर्थ' पञ्चवार्षिक योजना' प्रकट की। इस प्रचण्ड योजना का उद्देश्य इस प्रकार व्यक्त किया गया है :—"रूस को आर्थिक दृष्टि से इतना शक्तिशाली बनाना चाहिए कि वह संसार की एक सर्वश्रेष्ठ शक्ति बन जाए।"

इस प्रकार इस अभिनव 'पञ्चवार्षिक योजना' के द्वारा स्टेलिन ने विश्वविजयार्थ अश्वमेध का घोड़ा छोड़ दिया है। इस योजना का उद्देश्य—अधिकृत उद्देश्य—है विश्व-साम्राज्य। वर्तमान समय में जो विजयी राष्ट्र संसार में उथल-पुथल निर्माण कर रहे हैं, उनमें रूस सबसे प्रबल है। द्वितीय महायुद्ध में विमान-दल की शक्ति निर्णायक तथा विजयदायिनी सिद्ध हो चुकी है; इस दल की संहार-शक्ति परमाणु बम की सहायता से शतगुणित नहीं, सहस्रगुणित हो चुकी है। इस निर्णायिका व विजयदायिनी शक्ति की दृष्टि से यदि देखा जाए तो भी रूस वर्तमान समय में प्रबलतम है, इसमें कोई सन्देह नहीं। सन् १९५० में, जब रूस की नूतन चतुर्थ पञ्चवार्षिक योजना पूर्ण हो जाएगी, तब रूस पूर्ण रूप से अजेय होगा।

वैमानिक शक्ति के आक्रमण-सामर्थ्य तथा विध्वंस-क्षमता की दृष्टि से राष्ट्रों के बलाबल का विचार आज-कल किया जाता है। इस विचार-प्रणाली के अनुसार संसार में जितने युयुत्सु राष्ट्र हैं, उनके केवल दो वर्ग या गट किए जाते हैं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ग में इस प्रकार के राष्ट्रों का समावेश किया जाता है जिनका क्षेत्रफल प्रायः छोटा होता है। कुछ वर्ग मील के भूप्रदेश में अधिक-से अधिक मानव ठूँस-ठूँसकर भरे रहते हैं। उत्पादन-केन्द्र, कारखाने तथा फैक्टरियाँ आदि उस परिमित क्षेत्र में इतस्ततः फैले रहते हैं। इन उत्पादन-केन्द्रों तथा कारखानों आदि की सुरक्षितता के ऊपर उन राष्ट्रों का जीवन निर्भर रहता है। ऐसे राष्ट्रों में यन्त्रीकरण (Industrialisation) व औद्योगीकरण चरम सीमापर्यन्त वृद्धिङ्गत पाया जाता है। किन्तु भूमि परिमित व अल्प होने के कारण जन-संख्या की घनता ऐसे राष्ट्रों में अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है। इस वर्ग में समाविष्ट होनेवाले राष्ट्र को 'क्लीनरौम' (Kleinraum) या परिमित-भूमि राष्ट्र कहा जाता है। जर्मनी, इँग्लैंड, फ्रांस आदि योरपीय राष्ट्र 'क्लीनरौम' जाति के हैं। इस जाति के राष्ट्रों में कुछ क्षीणता स्वयंभू होती है। परिमित भूप्रदेश में अधिक-से-अधिक उत्पादन-केन्द्र तथा अत्यधिक घनी जनसंख्या, ये दो 'क्लीनरौम' जाति के राष्ट्र के मर्मस्थान हैं। युद्ध में इन मर्मस्थानों पर शत्रु-द्वारा तीव्र प्रहार किए जाते हैं; इन प्रहारों से जनता में त्राहि-त्राहि मच जाती है; और जनता का नीतिधैर्य (Moral) नष्ट हो जाने के कारण 'क्लीनरौम' जाति के राष्ट्र का पतन हो जाता है।

दूसरे वर्ग या श्रेणी में जिस प्रकार के राष्ट्र का अन्तर्भाव किया जाता है, उसे 'ग्रौसरौम' (Grossraum) कहा जाता है। 'ग्रौसरौम'—अपरिमित-भूमि राष्ट्र—जाति के राष्ट्र की जन-संख्या अधिक होती है; किन्तु भूप्रदेश का विस्तार अत्यधिक होने के कारण सारी जनसंख्या अति विरलतया फैली रहती है। राष्ट्र की सारी प्रजा, उत्पादन-केन्द्र तथा बड़े-बड़े कारखाने आदि को सम्पूर्णतया सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक सुदृढ़ स्थानों की 'ग्रौसरौम' जाति के राष्ट्र के पास कमी नहीं होती। शत्रु-राष्ट्र जिस बिन्दु या केन्द्र से ऐसी जाति के राष्ट्र पर आक्रमण करना चाहता है अथवा करता है, उस आक्रमण-बिन्दु से अत्यधिक दूरी पर अपना कोष, अपने कारखाने, उत्पादन केन्द्र और प्रजा आदि को छिपाकर रखने के लिए आवश्यक दुर्गम व सुदृढ़ आश्रयस्थान होने के कारण, ग्रौसरौम जाति के राष्ट्र की शत्रु के भयानक आक्रमण-द्वारा अधिक हानि नहीं होती। इन दुर्गम व सुदृढ़ आश्रयस्थानों में 'ग्रौसरौम' जाति का राष्ट्र सेना का नव निर्माण तथा उसकी शिक्षा, उस नवनिर्मित सेना को शस्त्रास्त्र से सुसज्जित करना व युद्धसाहित्य अत्यधिक मात्रा में निर्माण करना आदि महत्त्वपूर्ण कार्य सुचारु रूप से, बिना किसी बाधा के दत्तचित्त होकर, कर सकता है। सेना के नव-निर्माण में तथा युद्धसाहित्य के उत्पादन में किसी प्रकार की बाधा या अड़चन न होने के फल-स्वरूप 'ग्रौसरौम' जाति के राष्ट्र की प्रजा का उत्साह व आवेश द्विगुणित हो जाता है। शत्रु के वैमानिक आक्रमण-द्वारा ऐसे राष्ट्र की जनता की भी अधिक हानि नहीं होती और उसका नीति-धैर्य ( ) टूटता नहीं किन्तु बढ़ता है और वह अन्तिम विजय अधिक त्याग करने के लिए तैयार हो जाती है।

योरप तथा एशिया में अविच्छिन्न रूप से फैला हुआ रूसी साम्राज्य 'ग्रौसरौम' का साक्षात् प्रतीक है। व्यापी विशाल रूसी साम्राज्य का क्षेत्रफल १५२५६१७ किलोमीटर है। रूसी साम्राज्य में सबसे घनी बस्ती दो हैं—एक मास्को नगर व दूसरा यूक्रेन प्रान्त। महायुद्ध का सर्वनाशक प्रहार यूक्रेन तथा मास्को पर ही अतः उपर्युक्त दोनों स्थानों की जनता अधिकांशतः द्वितीय महायुद्ध में १ कोटि मानवों का बलिदान विजय पाई है। इस महायुद्ध ने रूस को संसार का भी प्रदान किया है। वर्तमान समय में रूस के पास पदाति-सेना, सर्वोत्तम टैङ्कदल, अजेय विमान-दल और का उग्र-दल है। उसके पास अनुभवी और कुशल की भी कमी नहीं है। फिर पञ्चवर्षीय योजना के में पूर्ण हो जाने पर रूस की शक्ति कितनी हो जाए अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

संसार में उथल-पुथल मचानेवाली रूसी क्रान्ति लेनिन व उनके सहकारियों तथा साहसी शिष्यों ने मिल था। लेनिन के ये सहकारी जोसेफ स्टेलिन के प्रति स्टेलिन की नीति लेनिन को पसन्द नहीं थी; लियो ट्रा मानवमित्र स्टेलिन के प्रतिद्वन्द्वी थे। इन सुयोग्य का काम तमाम करके स्टेलिन पूरे रूस का—रूसी का—सर्वेसर्वा बन गया। रूस की शासन-सत्ता अपने लेने के बाद स्टेलिन ने रूस का सैनिकीकरण प्रारम्भ साथ साथ युद्ध-साहित्य के निर्माण के लिए एक योजना भी कार्यान्वित की। इन महान् कार्यों के उसने रूसी साम्राज्य की युद्धशास्त्र की दृष्टि से भी की। इस 'पुनारचना' की योजना-द्वारा अपना विशाल साम्राज्य १५ भागों में विभक्त किया विभाग को युद्ध की दृष्टि से सर्वतोपरि स्वयंपूर्ण अत्यधिक चेष्टा रूस ने भूतकाल में की थी। वर्तमान भी यह योजना चालू है। सन् १९४५ में जो योजना कार्यान्वित की गई, उसका एक उद्देश्य के १५ विभागों को सम्पूर्णतया स्वयंपूर्ण बनाना भी के उपर्युक्त १५ विभागों में से 'उत्तरी रूस', को विदेशी आक्रमण की दृष्टि से अधिक महत्त्व जाता। निकट के भविष्य-काल में विश्वविजय महासमर का प्रारम्भ हो सकता है उसके प्रमुख दक्षिणी, पूर्वी व पश्चिमी सीमा पर हैं। परकीय की सम्भावना तथा भविष्यदपेक्षी महासमर को हुए ही रूस ने अपनी आक्रमण-संरक्षण-योजना

CC-0. In Public Domain. Sunkal Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूबर]

४५ की पञ्चवार्षिक योजना का प्रधान अङ्ग उक्त आक्रमण-
क्षण-योजना है। अपनी तीनों सीमाएँ सुरक्षित करने के
ए रूस ने उक्त सीमाओं पर प्रबल युद्धकेन्द्र निर्माण किए

पश्चिम की ओर से रूस पर भयानक आक्रमण होने का
अब नहीं रहा। जर्मनी की हार होने से रूस की पश्चिमी
मा अब बहुत कुछ सुरक्षित हो चुकी है। फिर भी पश्चिमी
गा को सम्पूर्णतया सुरक्षित तथा निर्बाध करने के उद्देश्य से
अब भी निरन्तर प्रयत्न कर रहा है। ये प्रयत्न जितने
ा में सफल होंगे उतने अंश में रूस का छोड़ा हुआ श्यामकर्ण
व विजयी होगा, और संसार पर रूस का साम्राज्य प्रस्था-
न होगा।

आत्मरक्षण तथा शत्रु पर आक्रमण ये दोनों कार्य अति
क्षमतया करने के उद्देश्य से रूस ने जो युद्धकेन्द्र निर्माण किए
उनमें से पश्चिम दिशा का संरक्षण तथा आक्रमण पाँच
द्रों पर सौंप दिया गया है। ये पाँच केन्द्र इस प्रकार हैं—
स्को, स्मोलेन्स्क, लेनिनग्राड, कीव और खारकोव। उक्त
व केन्द्रों में से कीव व खारकोव, इन दो केन्द्रों को कृष्ण
गर के तट तथा काकेशश विभाग को आवश्यक सहायता
चाने का अधिक कार्य सौंप दिया गया है। इस अधिक
के लिए उचित प्रबन्ध भी किया गया है। दक्षिण दिशा में
रूस का प्राणघातक मर्म है। बाकू, बाटूम की सुप्रसिद्ध
ल की खान तथा तेल निर्माण के कारखाने रूस के दक्षिणी
भाग में हैं। इस मर्मस्थान पर पैलेस्टाईन-स्थित ब्रिटिश
ानिक अड्डों से तथा अरबस्थित अमेरिकन वैमानिक केन्द्रों
तुर्कस्थान से तथा ईरान से भयप्रद प्रहार किया जाना
ज है; इस भयङ्कर आक्रमण को रोकने का प्रबन्ध रूस कर
है। रूस की दक्षिणी सीमा पर अफगानिस्तान तथा
रत से भी आक्रमण होना सम्भाव्य है। इस आक्रमण को
कने के लिए रूस ने पाँच बृहत् युद्धकेन्द्र निर्माण किए हैं।
पाँचों बृहत् केन्द्रों में से अधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है 'टिफ-
स'। यह सुरक्षित नगर काकेशश विभाग की राजधानी
शेष चार केन्द्र रोस्टाव, सामारा, स्वेरड्लोवस्क और
कन्द हैं। पूर्व-सीमा का संरक्षण-प्रबन्ध नोवोसिविरिस्क,
ा, खाबारोवस्क व व्लाडीवोस्टक के केन्द्रों के द्वारा किया
है। दक्षिणी व पूर्वीय युद्धकेन्द्रों को ओमस्क, लोबोलस्क
रूराल आदि बृहत् उत्पादन-केन्द्रों के द्वारा युद्ध-साहित्य
ा जाता है। वायुयानों से पैराशूटों द्वारा शत्रुसेना के
सेना उतारने के सम्बन्ध के प्रयोग रूस ने प्रथमतः पामीर
प्रदेश में किए थे। पर्वतीय युद्ध की विशेष शिक्षा भी
सेना को मिल चुकी है। आजकल रूसी सेना एशिया
दुर्गम-से-दुर्गम पर्वतों में युद्ध करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार
रूस के श्रेष्ठ सेनापति बोरोशिलाव में अपनी सेना साथ
ने सहकारी लेकर काकेशस पर्वत-राजि से लेकर याब्लोनाई,
स्टानोवाई आदि सर्व पर्वतमाला का उल्लङ्घन किया था। कई
महीनों तक रूसी सेना उस पर्वतीय प्रदेश में घूमती-फिरती व
सैनिक-शिक्षा पाती रही थी।

रूसी साम्राज्य की पूर्वसीमा भी पश्चिमी सीमा की भाँति
निर्बाध है। जापान अमेरिका-सङ्घर्ष में, परमाणु बम के द्वारा
जापान की रीढ़ अमेरिका के द्वारा तोड़ दिए जाने पर अनायास
रूस का एक भयङ्कर शत्रु कम हो गया। फलतः रूसी साम्राज्य
की पूर्व-सीमा सुरक्षित हो गई। आज जार के साम्राज्य के
समान स्टेलिन के साम्राज्य की पूर्वी सीमा पीतसागर है। पोर्ट
आर्थर पर रूसी झण्डा फहराकर स्टेलिन ने १९०४ के रूसी
जापानी युद्ध का बदला ले लिया। आज कोरिया का $\frac{3}{4}$ भाग
रूस की पराक्रमी सेना-द्वारा अभिभूत हो चुका है। शेष $\frac{1}{4}$ भाग
अमेरिकन सेना-द्वारा व्याप्त है। पूर्व की ओर से रूसी साम्राज्य
पर जो आक्रमण होगा उसको रोकने का प्रबन्ध रूस अभी से
कर रहा है। पूर्व-विभाग से या पूर्वीय सीमा से जो आक्रमण
हो सकता है उसका पूरा भार अमेरिका के ऊपर पड़नेवाला है।
इस सम्भाव्य आक्रमण को रोकने के लिए रूस सन् १९४५ से
प्रयत्नशील है। कोरिया का जो भाग रूस के अधिकार में है,
उसमें उत्तमोत्तम तथा सुसज्जित रूसी सेना एकत्र की गई है।
कामरेड लोग कोरियन जनता में पूँजीवाद के प्रति घृणा व
कम्यूनिज्म व रूस के प्रति प्रेम निर्माण करने का यशस्वी प्रयत्न
कर रहे हैं। कोरियन कम्यूनिस्टों का एक दल भी सङ्गठित
हुआ है। यह दल अमेरिका के विरुद्ध गम्भीर प्रचार करता
है। इन सब प्रयत्नों को तथा उद्योगों को आर्थिक तथा अन्य
प्रकार का साहाय्य देने का कार्य रूसी गुप्तचर-विभाग यथेष्ट
रूप से करता है। जापान में भी अमेरिका के प्रति द्वेष-भावना
प्रतिदिन बढ़ रही है। इसका प्रधान कारण है, अमेरिका
का जापान के प्रति घृणित बर्ताव। जापानियों को हिंस्र पशु
समझकर अमेरिकन, उनके साथ व्यवहार करते हैं; इससे जापान
में लोकक्षोभ प्रतिदिन बढ़ ही रहा है। इस लोकक्षोभ
का परिवर्तन एक भयप्रद दवाग्नि में करने की चेष्टा रूस के
दूत कर रहे हैं। जापान में रूस के प्रति आत्मीयता बढ़ रही
है। जापानियों के प्रति रूस का बर्ताव भी बहुत अच्छा है।
साङ्घलिन में जो जापानी रहते हैं उनमें से जो योग्य थे उनको
रूसी सेना में उच्च पद दे दिए गए हैं। इस अच्छाई का
लाभ भी रूस को मिल रहा है और भविष्यकाल में भी मिलेगा।
निकट भविष्य में यदि अमेरिका का रूस के साथ सङ्घर्ष छिड़
गया तो रूस जापानी क्रान्तिकारियों को सहायता देकर जापान में
विद्रोह का दावानल प्रज्वलित करने की चेष्टा अवश्य करेगा।
इस महत् कार्य के लिए रशियन गुप्तचर-विभाग अभी से प्रयत्न-
शील है।

उत्तर की ओर से प्रशान्त सागर को मर्यादित करनेवाली
अल्यूशियन द्वीपमालिका अमेरिकन साम्राज्य के अधीन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त द्वीपावली में किस्का नामक एक बड़ा द्वीप है; इस द्वीप पर अमेरिकन सेना का एक बृहत् विमान-केन्द्र निर्माण हो चुका है तथा नाविक अड्डा भी है। इस महत्त्वपूर्ण केन्द्र से साइबेरिया व व्लाडीवोस्टक पर परमाणु बम के द्वारा भयानक आक्रमण करना दुष्कर नहीं है। यदि युद्ध होगा तो अमेरिका इस परिस्थिति से अवश्य लाभ उठाएगा। यह भी सम्भव है कि भावी महायुद्ध का प्रारम्भ इसी प्रकार के आक्रमण से हो। परमाणु बम के आक्रमण व विध्वंस-कार्य से बचने के लिए स्टेलिन का रूस बहुत दिन से प्रयत्न कर रहा है। सन् १९४५ की पञ्चवार्षिक योजना उन प्रयत्नों का केवल नया आविष्कार है। इस बृहत् योजना के अनुसार सायबेरिया के पूर्वतट पर परमाणु बम प्रतिबन्धक आश्रयस्थान यत्र तत्र निर्माण किए गए हैं। जो आश्रयस्थान १९४५ के पहले बन चुके थे, उनमें आमूलाग्र सुधार किया जा रहा है। नाविक केन्द्र, विमानों के अड्डे, बड़े-बड़े पुल आदि की रचना परमाणु बम प्रतिबन्धक बनाने की अत्यधिक चेष्टा की गई है। रूसी वैज्ञानिक परमाणु बम संरक्षक कवच निर्माण करने के कार्य में आजकल लगे हैं। सन् १९५० पर्यन्त उक्त कवच का निर्माण करने में रूस सफल होगा, ऐसी आशा रूसी जनता कर रही है।

पराभूत जापानी साम्राज्य की उत्तरी सीमा के अन्तिम बिन्दु से लेकर कामस्चाटका प्रायद्वीप पर्यन्त एक द्वीपमालिका फैली है; यह द्वीपमालिका "कुरील द्वीपमालिका" नाम से प्रसिद्ध है। ये सारे द्वीप रूसी सेना-द्वारा व्यापित हो चुके हैं और प्रत्येक द्वीप को एक अभेद्य व अजेय 'जलदुर्ग' बनाने के कार्य में रूसी सेनाधिकारी आजकल व्यस्त हैं। प्रत्येक द्वीप पर अत्यन्त दृढ़ किलाबन्दी की गई है; व उसमें आधुनिक अत्युत्तम तोपें इस प्रकार लगाई गई हैं कि वैमानिक आक्रमण का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जिस द्वीप पर विमान-केन्द्र बनाने योग्य स्थान मिला वहाँ सर्वाङ्गपरिपूर्ण व आधुनिकतम (up to date) एरोड्रोम बनाया गया है। पनडुब्बियों के अड्डे, निवास-स्थान, संग्रहस्थान तथा साहित्यागार आदि का निर्माण बड़े प्रबन्ध के साथ हो रहा है।

सायबेरिया तथा कुरील द्वीपावली में जो निर्माण-कार्य हो रहा है तथा जो युद्ध-सज्जा की जा रही है, उसको संपुष्ट करने के उद्देश्य से तथा शत्रु पर आक्रमण करने के लिए नौदल का निर्माण भी रूस कर रहा है। सन् १९४५ की बृहत् योजना का आधा भाग नौदल निर्माण के सम्बन्ध में है। रूस को बलिष्ठ नौदल की अत्यन्त आवश्यकता है। वह उसके लिए उत्कण्ठित भी है। नौदल-निर्माण के बारे में व रूस की आन्तरिक इच्छा के बारे में इजवेस्ता नामक रूसी सरकारी समाचारपत्र में निम्नलिखित शब्द छपे थे:—"Historical [illegible] circumstances have bestowed upon our country the role of a great Sea-[illegible]

सन् १९४५ की योजना के अनुसार रूसी प्रशान्त सा[illegible] पर कामस्चाटका से लेकर पोर्ट आर्थर तक के किनारे नए नाविक केन्द्र व अड्डे निर्माण किए जाएँगे। व्लाडीवोस्टक के नाविक केन्द्र की पुनारचना की जा रही है। पुनारचना परमाणु बम-क्षम होगी, यह बात यहाँ रखना आवश्यक है। अमेरिका के सम्भवनीय समुद्री मण को रोकने के लिए रूस ने अपना अधिकांश पनडुब्बी (Submarine-fleet) सायबेरिया भेजा है। इस सम्बन्ध में प्रख्यात युद्धविशारद जर्मन लेखक एरिच ने लिखा है—"रूस के पास अत्यन्त आधुनिक, बृहत् को भयभीत करानेवाला संसार में सर्वश्रेष्ठ पनडुब्बियों का (Russia possesses the newest, largest and [illegible] most terrifying Submarine-Fleet in the wor[illegible]

उपर्युक्त यौद्धिक तैयारी के साथ साथ पैसिफिक नीतिक क्षेत्र में भी रूस रुचि दिखाने लगा है। रूस दूत वर्तमान समय में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और [illegible] में राजनीतिक उद्योग कर रहे हैं। अमेरिका में [illegible] गुप्त दूत षड्यन्त्र कर रहे हैं; अमेरिका में हड़तालें आँधी आ रही है, उसके पीछे ओगप्यू का शक्तिशा[illegible] अवश्य है। परमाणु बम का रहस्य इन गुप्तचरों के रूस को प्राप्त हुआ है।

परमाणु बम के आक्रमण द्वारा होनेवाले सर्वनाश रूस को नहीं है। विमान-द्वारा परमाणु बम छोड़ने [illegible] में जो विध्वंस या नाश हुआ था वह उतना भयप्रद जितना कि वृत्तपत्रों तथा वार्ताहरों-द्वारा बताया नागासाकी व हिरोशिमा नगर परमाणु बम-द्वारा उद्ध[illegible] गए थे। उन दोनों नगरों तथा समीपवर्ती भू[illegible] निरीक्षण करने के लिए मेजर अलेकजेण्डर सेवेरस्की मेजर सेवेरस्की बम के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। "Victory through Air-Power" नामक पुस्तक [illegible] परमाणु बम की सर्वनाशक शक्ति के बारे में आपका इस प्रकार है :—"मेरा यह मत है, और मैंने वह [illegible] संवाददाताओं के सम्मुख प्रकट किया भी था, कि पर[illegible] के परिणामों (effects) को वृत्तपत्रों व संवाददाताओं [illegible] बढ़ा रक्खा है। हिरोशिमा में मुझे आशा यह [illegible] अत्यन्त भयप्रद दृश्य देखने को मिलेंगे। किन्तु [illegible] अन्य बम-विध्वंसित शहरों के समान ही था। [illegible] परिधि के भीतर वह चिरपरिचित आरक्तवर्ण आभा [illegible] जले हुए वृक्ष तथा टेलिफोन के स्तम्भ खड़े थे; [illegible] पुलों में से केवल एक गिर गया था। हिरोशिमा के [illegible] गृहादिक परमाणु बम-विध्वंसित भाग में भी यथापूर्व [illegible]

* It was my considered opinion. 'I told [illegible] pondents in Tokyo, That the effects of [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तु, विशाल तथा विस्तृत क्षेत्र, शत्रु के सम्भवनीय आक्रमण-केन्द्र से अति दूरी पर तथा सुरक्षित स्थान में स्थित प्रचण्ड उत्पादन-केन्द्र तथा कारखाने, प्रचण्ड किन्तु विरलतया स्थित लोक-बस्ती; गुरु व गुरुतर सेनाएँ छिपाकर रखने योग्य सुरक्षित व दुर्गम प्रदेश, राष्ट्र के जीवन संवर्धन व विस्तारार्थ आवश्यक साहित्य तथा खनिज सम्पत्ति की विपुलता व समृद्धि, आदि के कारण रूस आज अजेय-सा हो गया है। यह अजेय है सारे संसार के द्वारा मान्य कराने के उद्देश्य से, स्टेलिन के नेतृत्व में, रूस ने एक नूतन पञ्चवार्षिक योजना कार्यान्वित की है। यह पञ्चवार्षिक योजना सन् १९५० में परिपूर्ण होगी; और रूस का श्यामकर्ण संसार को पराभूत करके, विजयी होकर, मास्को लौटेगा व मास्को संसार की राजधानी होगी। किन्तु इसके लिए एक भीषणतम युद्ध होगा और वह निकटवर्ती भविष्य में होगा, इसमें भी कोई सन्देह नहीं।

निकटवर्ती भविष्यकाल में जो विश्व-युद्ध—विश्वमेध—होने-वाला है, उसके लिए तोपें, टैङ्क, ज्वालाक्षेपक, बम, प्रचण्ड नाविक बल, पनडुब्बियाँ व प्रचण्ड शीघ्रगति विमान-दल इत्यादि यदि निर्माण करने हों तो उसके लिए उत्तम जाति के स्टील की निर्मिति विपुल परिमाण में होनी अत्यावश्यक है। रूस की नूतन पञ्च-वार्षिक योजना में इस स्टील निर्माण-कार्य को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। सन् १९४०-४१ पर्यन्त २ करोड़ टन स्टील रूस में प्रतिवर्ष निर्माण किया जाता था। युद्धकाल में यह उत्पादन घटकर आधा हो गया था; किन्तु युद्ध समाप्त होने के कुछ दिन पश्चात् रूस ने पुनरपि स्टील-उत्पादन कार्य बढ़ाना आरम्भ किया। आजकल यह फौलाद-निर्माण बढ़ गया है; प्रतिवर्ष रूस २ करोड़ टन से अधिक स्टील निर्माण करता है। सन् १९५० में यह औसत ४ करोड़ टन करने के लिए रूस भगीरथ-प्रयत्न कर रहा है।

इस फौलाद-निर्मिति के लिए आवश्यक यन्त्र-सामग्री इत्यादि रूस ने पोलैंड से लूट ली है। पोलैंड में आज एक भी कारखाना या यन्त्रागार अस्तित्व में नहीं रहा। पोलैंड का अन्तिम यन्त्र, आखिरी लोहे का टुकड़ा व अन्तिम कील रूस के विशाल उदर में समाविष्ट हो चुकी हैं। सहस्रावधि मोटर-गाड़ियाँ भर-भर-कर-सारी लूट रूसी सेना ने यूराल पहुँचाई है। सायलेशिया में आज एक भी यन्त्र नहीं पाया जाता। जर्मनी का पूर्व भाग भी इसी प्रकार लूट लिया गया है। फ्रांस, स्पेन, इटली व एँग्लो-अमेरिकन सेना-द्वारा व्यापित योरप छोड़कर उर्वरित योरप है; उसका रूपान्तर अन्न उत्पन्न करनेवाले भूभाग में करने के लिए विजयी रूस उद्योग कर रहा है। योरप की इस भूमि में खेती करने के लिए जितने ट्रैक्टर लगेंगे, वे रूस-द्वारा भेजे जाएँगे।

विश्व-विजय करने के निश्चित उद्देश्य से जिस बृहत् पञ्च-वार्षिक योजना का आवाहन किया गया है, उस क्रान्तिकारी योजना के द्वारा रूस का सर्वाङ्गपरिपूर्ण यन्त्रीकरण तथा औद्योगीकरण होनेवाला है। रूस के औद्योगीकरण का एक प्रचण्ड केन्द्र यूराल के उदर में पल्लवित हो चुका है। इस मुख्य केन्द्र के चारों ओर नए-नए केन्द्र स्थापित किए गए हैं। धातु-घटित मृत्तिका निकालकर उसका रूपान्तर लोहे में व लोहे का रूपान्तर तोप, यन्त्र वा उपयुक्त पदार्थों में करने का सारा कार्य उपर्युक्त केन्द्रों-द्वारा किया जाता है। उत्पादन-केन्द्रों का पूर्व-गमन यथापूर्व चालू है। रूसी साम्राज्य के साथ बेरिया विभाग में, जर्मनी, पोलैंड, रूमानिया, हंगरी व आस्ट्रिया आदि देशों से लूटकर लाई गई यन्त्र-सामग्री उत्पादन-कार्य में लगाई जा चुकी है। इस प्रकार पञ्चवार्षिक योजना के अनुसार निर्माण-कार्य हो रहा है।

सन् १९४५ की नई योजना के अनुसार रूस में ४॥ करोड़ रूबल्स की खेती की सामग्री का उत्पादन होनेवाला है। इन उपकरणों में ट्रैक्टरों को महत्त्व का स्थान दिया गया है। इस योजना के अनुसार ३॥ लक्ष नए बड़े ट्रैक्टर तैयार होंगे। इनके बल पर खेती की उपज २७ प्रतिशत अधिक होगी तथा ३१ लक्ष टन रूई—रङ्गयुक्त व सादी—व २ करोड़ ६ लक्ष टन बीट तैयार होगी। साथ-साथ रूस के अधिकार क्षेत्र में जो-जो देश व राष्ट्र समाविष्ट हैं, उनमें खपनेवाले सारे सामान तथा उक्त राष्ट्र एवं देश जो माल चाहेंगे, उसका भी निर्माण कराने का ठेका रूस ने ले रक्खा है। नूतन पञ्चवार्षिक योजना द्वारा रूस ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है कि—"Russia must also be capable of supplying the capital equipment of the countries in Soviet Zone of influence in Europe and Asia." अर्थात् रूस के वर्चस्व क्षेत्र में एशिया व योरप के जो देश आते हैं, उनका अर्थ-शोषण तथा रक्त-शोषण सोविएट रूस साम्यवाद व प्रगति का अवगुण्ठन लेकर करेगा। इस प्रकार का शोषण-कार्य प्रारम्भ भी हो चुका है। सन् १९५१ के बाद अपने वर्चस्व क्षेत्र में रूस के अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों वा देशों का माल आयात न होने देने के इरादे से

---

bombs had been wildly exgggerated……In Hero-shima I was prepared for radically different sights. But to my surprise, Heroshima looked exactly like all other burn-out cities in Japan.

There was a familiar pink-blot about two miles in diameter. It was dotted with charred trees and telephone poles. Only one of the cities twenty bridges, was down. Heroshima's cluster of modern buildings in the down-town section stood upright." (Readers Digest Feb. 1946 P. 122.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रित होकर स्टेलिन का रूस आजकल अविश्रान्त परिश्रम कर रहा है।

नूतन पञ्चवार्षिक योजना के अनुसार निर्मित माल संसार के बाजार में ले जाने के लिए व्यापारी नौकाएँ निर्माण करने का कार्य भी रूस ने प्रारम्भ किया है। ये व्यापारी नौकाएँ (Merchant Navy) रशियन माल के साथ-साथ रूसी विचार-धारा, रूसी संस्कृति व साहित्य, स्टेलिन-प्रणीत तथा धर्म व रूसी साम्राज्य का प्रतीकभूत लाल झण्डा आदि वस्तुएँ भी ले जाएँगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

सन् १९४५ में जो नूतन योजना कार्यान्वित की गई, उसका एक महत्त्वपूर्ण भाग यातायात तथा गमनागमन-सम्बन्धी साधन व उपकरण आदि निर्माण करना है। इसके अनुसार लौहमार्ग (Railway), जलमार्ग आदि निर्माण किए जाएँगे। आज रूस में जितने लौहमार्ग हैं, १९५० में उनसे दुगुने हो जाएँगे। भिन्न-भिन्न नदियों के बड़े-बड़े पुल परमाणु बम-द्वम बनाए जाएँगे। लौहमार्ग के साथ-साथ उत्तम प्रकार के सीमेंट कंक्रीट के नए रास्ते भी बनाए जाएँगे। यातायात व गमनागमन के अप-टु-डेट साधन न होने के कारण गत महायुद्ध के प्रारम्भकाल में रूस का पराभव हुआ था तथा जीवन व सम्पत्ति की क्षति अत्यधिक मात्रा में हुई थी। ग्रौसरौम जाति के राष्ट्र का एक दोष—मर्मस्थान—स्वयंभू-सा बना रहता है। यह मर्म-स्थान है ग्रौसरौम का अति विशाल होना। भूप्रदेश का विस्तार अत्यधिक होने के कारण विशिष्ट स्थान पर, विशिष्ट समय में, सेना का केन्द्रीकरण नहीं हो पाता। अतः ग्रौसरौम जाति के राष्ट्र का युद्धारम्भ में पराभव होता है और उसे अत्यधिक हानि उठानी पड़ती है। इस प्रकार की हानि सह-कर रूस अब सतर्क बना है। भविष्यकालीन विश्वयुद्ध में इस प्रकार हानि उठानी न पड़े, इसलिए रूस यातायात व गमनागमन के शीघ्रगति साधन व उत्तम प्रकार का साहित्य-निर्माण करने में दत्तचित्त हुआ है। जलमार्ग, लौहमार्ग, रास्ते व वायुमार्ग, ये यातायात व गमनागमन के चार मार्ग सर्वथैव सुसज्जित बनाने के महत् कार्य की नींव रूस ने सन् १९४५ में डाली है। डांजिग से कृष्ण सागर तक का बृहत् जलमार्ग पेट व बग नदियों को जोड़कर निर्माण किया गया है। डान और वोल्गा, ये दोनों नदियाँ एक बड़ी नहर के द्वारा जोड़ दी गई हैं; इस बृहत् जलमार्ग से मास्को नगर का रूपान्तर एक बन्दरगाह में हुआ है। इस बृहत् जलमार्ग में बाल्टिक सागर को मिला देने की चेष्टा भी हो रही है। बाल्टिक सागर व श्वेत सागर, एक नहर के द्वारा, जोड़ दिए गए हैं। इस जलमार्ग पर 'मुरमौन्स्क' नामक महत्त्वपूर्ण सैनिक केन्द्र स्थापित हो चुका है।

लौह-मार्ग पर तेजी से दौड़नेवाली आधुनिक रेलगाड़ियाँ, [illegible] मोटर-गाड़ियाँ, नौकाएँ व नए बृहत् आकार के विमान आदि का निर्माण जोर से हो रहा है; परन्तु यह उत्पादन-कार्य, नूतन पञ्चवार्षिक योजना के प्रोग्राम के अनुसार नहीं हो रहा है और इसका मुख्य कारण है श्रम का अभाव। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए दो करोड़ मजदूरों की जरूरत पड़ेगी। रूस के पास आज इतने मजदूर नहीं हैं। सन् १९४१ के पहले जो मजदूर रूसी कारखानों में काम करते थे, उनमें से अधिकांश रूसी सेना में भर्ती किए गए थे, वे अब प्रचण्ड लाल सेना के स्थायी सैनिक बन चुके हैं। अब वे रूसी लाल सेना के अन्तर्गत होकर एशिया में शिविर डाले पड़े हैं। इस सेना के द्वारा पोलैंड, हंगरी, बालकन राष्ट्र (ग्रीस छोड़कर) व कोरिया देश अभिभूत किए गए हैं। इस सेना को छुट्टी देना [illegible] है। अतः रूस मजदूरों की प्राप्ति के लिए दूसरे प्रयत्न कर रहा है। रूस के गुप्तचर विभाग से इस कार्य में अभूतपूर्व सहायता मिल रही है। पोलैंड आदि देशों में आगप्यू के और के० डब्ल्यू० डी० के दूत अनेक लोगों को 'फासिस्ट' व 'द्रोही' होने के अपराध में पकड़ लेते हैं। इन्हें दण्ड साइबेरिया में निर्वासित कर दिया जाता है। अकेले से ही लगभग ५० सहस्र इस प्रकार के अपराधी अब तक पहुँच चुके हैं। आस्ट्रिया, हंगरी, रूमानिया और जर्मनी में भी इस प्रकार का प्रयत्न चल रहा है। आज पचास जर्मन बन्दी होकर रूस के मजदूर बन चुके हैं। दो लाख अधिक रूमानियन सैनिक, यद्यपि उन्हें मुक्त होने का वचन दिया जा चुका है, रूस के जेलों में पड़े आज तक सड़ रहे हैं।

जर्मन राष्ट्र की सारी मनुष्य-सम्पत्ति लूटकर साइबेरिया ले जाने के लिए रूस अत्यधिक प्रयत्न कर रहा है; और इस प्रकार जर्मन राष्ट्र को संसार से मिटाने का उद्योग हो रहा है। गत वसन्त में रूस ने दो करोड़ जर्मन मजदूर पाँच साल के लिए माँगे थे; उसका उत्तर मित्र-राष्ट्रों ने इँगलैंड व अमेरिका ने अभी नहीं दिया। अतः रूसी भालू उद्योग कर रहा है। इस प्रकार के द्वारा जितने दास रूस को अब तक मिले हैं, उनके लिए उपनिवेश साइबेरिया में निर्माण किए गए हैं। पञ्चवार्षिक योजना पूर्ण करने के लिए जितने मजदूरों की और आवश्यकता होगी उतने मजदूर योरप से पकड़ पकड़कर साइबेरिया भेजे जाएँगे इसमें कोई सन्देह नहीं। मजदूरों से सख्ती से काम (forced labour) लेने की प्रथा रूस ने सन् १९३३ से [illegible] है। पाँच-पाँच सौ, सात-सात सौ कोड़े मारकर मजदूरों से रूस ने काम लिया है। "कौंसेंट्रेशन कम्प" नामक वस्तु के लिए पुरानी एवं चिरपरिचित है। कौंसेंट्रेशन कम्प की [illegible] कला में आगप्यू ने असाधारण प्रगति की है। रूस के प्रभाव से प्रभावित इँग्लिश व अमेरिकन जनता उक्त अत्याचार [illegible] विरोध करना भी भूल गई है। अतः रूस, निश्चिन्त होकर अपना कार्य कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी नूतन पञ्चवार्षिक योजना सफल करने के लिए रूस ने और एक युक्ति का अवलम्बन किया है। यह युक्ति है सन्धि-द्वारा योरप के छोटे राष्ट्रों को अपने सम्पूर्णतः अधीन बनाना। सन् १९४५ में रूस ने स्वतन्त्र रूमानिया के साथ एक सन्धि की थी। इस सन्धि-द्वारा यह निश्चय किया गया कि "Russia has right to a share of 50 per cent, in all the more important Rumanian concerns, and of these, the technical management passes into Russian hands. Rumania is also compelled to base Russian, Rumanian companies all harbour and dockyard installations at Constanza. Galatz. Braila and Gindjin and to hand over in good condition all existing aerodromes as well as suitable grounds for the construction of new aerodromes." (19 century and after. फरवरी १९४६; पृष्ठ ६१-६२) अर्थात् "रूमानिया के जितने महत्त्वपूर्ण व्यापार हैं, उनमें से आधा हिस्सा रूस को दिया गया व उनकी 'टेकनिकल मैनेजमेंट' रूस को सौंप दी गई। तथा रशा-रूमानियन कम्पनी को, कांस्टंजा, गालाट्जा, ब्रैला व गिरजिन ये सुसज्जित बन्दरगाह दिए गए; व विद्यमान विमान-अड्डे तथा नए अड्डे बनाने के लिए सुयोग्य भूमि भी देने का निश्चय किया गया।"

रूस के पास बहुत-सा सोना भी है और सायबेरिया-स्थित खानों से प्रतिवर्ष बहुत-सा सोना निकलता भी है। इस सुवर्ण का रूस उपयोग नहीं करता। यह सोना एकत्र करके लैटिन व मध्य अमेरिका भेजा जाता है और वहाँ से उपयुक्त माल रूस में आयात किया जाता है। इस सम्बन्ध की सारी सङ्घटना मेक्सिको-स्थित रूसी राजदूत "ऊमान्स्की" ने कुशलता पूर्वक की। इस प्रकार सुवर्ण के बल पर उपयुक्त वस्तुओं का आयात करके, तथा पाशवी शक्ति के बल पर मनुष्यों की मृगया करके, मजदूर एकत्र करके, विश्वविजयार्थ निर्मित नूतन पञ्च वार्षिक योजना सफल करने पर साम्राज्यवादी रूस उतारू हो चुका है। यह योजना पूर्ण होने पर—यह महान् यज्ञ समाप्त होने पर—विश्व साम्राज्य का सिंहासन रूस को अनायास प्राप्त होगा। परन्तु योजना परिपूर्ण होने के पूर्व ही यदि विश्वयुद्ध का प्रारम्भ हो गया तो पददलित राष्ट्रों को एक बार उठने का अवसर पुनः प्राप्त हो जाएगा।

——

चित्रकार

श्री गोपालकृष्ण भनोत

(१)

"मैं कैसे बताऊँ तुम्हें, मित्र! वह तो अत्यन्त ही सुन्दर दृश्य था। ऐसा दृश्य कदाचित् सारे जीवन में मनुष्य को एक बार ही देखने को मिलता है और वह भी दैवी कृपा से। अब भी मुझे विश्वास नहीं होता कि मैंने परमेश्वर की अद्भुत क्रीड़ा का एक अमूल्य रत्न देखा है। ऐसा भास होता है मानों वह एक मधुर सपना था, तृषित यात्री के नेत्रों की एक झोंक थी, मृगतृष्णा-सी एक झलक थी जो अब भी मेरे हृदय में अङ्कित है। ऐसा दृश्य! ओफ! अनुमान मात्र से ही मुझे रोमाञ्च हो रहा है; हृदय तीव्र गति से धड़क रहा है; शिराओं में रक्त का प्रवाह प्रबलता से हो रहा है। आकाश को चुम्बित करता हुआ हिम-धवल शिखर अस्ताचल को जाते हुए रवि की रक्तमयी किरणों से रञ्जित हो रहा था। केवल रञ्जित ही नहीं, मित्र, मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि मैं उन सब वर्णों की व्याख्या कर सकूँ। दर्पण की भाँति उज्ज्वल हिम में नभ-नीलिमा भासित हो रही थी। शिखर के ऊपर रक्त और पाण्डु वर्ण झिलमिला रहे थे और शिखर के तले पर श्यामवर्ण आवरण तीव्र गति से छा रहा था। धवल शिखर से निकलती हुई श्वेत किरणें, उस श्यामावरण को बेधती हुई, रह रह कर नेत्रों को चौंधिया रहीं थीं। शान्ति का साम्राज्य था। यह वह समय था जब जीव अपनी तुच्छता का अनुमान करता है जब उसे परमात्मा की अनन्तता का पता चलता है और जब वह उस मधुर ज्योति में लय हो जाने को छटपटाता है। दृश्य क्षणिक था। चारों ओर अन्धकार छा गया। अकस्मात् उस अन्धकार में एक श्वेत मूर्ति मेरे सम्मुख आ खड़ी हुई। इतनी विशाल थी वह कि सिर उठाकर भी मैं उसका ऊपर भाग न देख सकता था। उसी समय मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यह दृश्य, यह असाधारण दृश्य, अनन्त से निकलकर मेरे नेत्रों के सम्मुख आया है और फिर अनन्त में ही लीन हो गया है। क्या भगवान् ने क्षय होने को ही सब वस्तुओं को बनाया है? मित्र, सच मानो या न मानो, मेरे मन में यह विचार उठते ही उस मूर्ति से एक आवाज आई 'नहीं, इन वस्तुओं को अमर करने का एक उपाय है—कला की शरण लो। कला में ही परमेश्वर की क्षणिक माया का कोई भाग अमर हो सकता है'। मूर्ति अन्तर्हित हो गई। मैं कलाहीन पुरुष था। मुझे अपनी असमर्थता पर बड़ा क्षोभ और ग्लानि हुई। तब मुझे तुम्हारा ध्यान आया। तुम कलाकार हो। तुममें अनुमान-शक्ति है। कई बार, किसी वस्तु के सम्बन्ध में केवल सुनने से ही, तुमने उसे अपनी कला-द्वारा सजीव कर दिया है। क्या अब भी वैसा नहीं कर सकते ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेन्द्र दत्त-चित्त होकर सुन रहा था। धीरेन्द्र के दृश्य-वर्णन से उसका मन चञ्चल हो उठा। हृदय में एक असाधारण प्रवाह-सा आ गया। उसे ऐसा भास हुआ कि वह उस कार्य को कर सकेगा। क्षणिक को अमर बना सकेगा। आवेग में आकर वह उठ बैठा और बोला—"धीर, कर सकता हूँ और करूँगा।" धीरेन्द्र के गम्भीर मुख मण्डल पर उल्लास-भाव छा गया। मानो चन्द्र मेघावरण को भेदकर मुसकरा रहा हो।

(२)

महेन्द्र को प्रसिद्ध होने की अतीव आकांक्षा थी—कदाचित् सभी कलाकारों को होती है; पर, महेन्द्र में यह अभिलाषा चरम सीमा तक पहुँची हुई थी। धीरेन्द्र के वर्णन को सुनकर उसने यह समझ लिया था कि उसके हाथ में एक अद्वितीय रत्न है जिसे प्राप्त करने का सौभाग्य किसी-किसी को होता है। उसे यह भी पता था कि यदि चित्र यथार्थ के अनुकूल उतरा तो वह जगत्-प्रसिद्ध हो जाएगा। इस कारण वह मन लगाकर परिश्रम करने लगा! धीरेन्द्र के घर में ही अब उसका वास हो गया। और धीरेन्द्र? वह आशा से चित्र का विकास देखने लगा। घण्टों महेन्द्र के पास बैठा रहता और अपनी स्मृति से महेन्द्र की दृश्य-सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ण करता।

ज्यों ज्यों चित्र का विकास होता गया, महेन्द्र की प्रसिद्धि प्राप्त करने की आकांक्षा बढ़ती गई। यहाँ तक कि उसे ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो चित्र की पूर्णता में ही उसके जीवन की पूर्णता है और उस पूर्णता के अभाव में उसका जीवन ही अपूर्ण रहेगा। और उसके बाद उसके लिए जीवन-मरण एक समान होगा; वरन् मरण ही हितकर होगा; क्योंकि 'जीवन में मृत्यु' की अपेक्षा 'मृत्यु में जीवन' अति सुखकर है। धीरेन्द्र को उसका विचार सुनकर कोई कष्ट न हुआ। उसे तो भय था कि परमात्मा की वह देन, वह दिग्दर्शन, कहीं उसके साथ ही नष्ट न हो जाए। जब तक उसे शान्ति न थी, जब तक उसका स्वप्न सत्य नहीं हो जाता। इस कारण उसने महेन्द्र को इन विचारों से परे रखने का कोई प्रयत्न न किया—और प्रयत्न करने का कोई अवकाश ही न मिलता। दोनों चित्र का पूर्ण रूप देखने को इतने उत्सुक थे कि एक तो चित्र-विषय को पूर्णतया बताने में लगा रहता और दूसरा उस विषय को रूप देने में—मानो विष्णु और ब्रह्मा सृष्टि करने में लीन हैं।.....

और एक दिन उस चित्र की सृष्टि हो गई। धीरेन्द्र तो देखकर सन्नाटे में आ गया। उसके सम्मुख वही पर्वत-शिखर का दृश्य, उसी रूप में, उपस्थित था। एक बार फिर वह अपने आपको भूलकर उसी शान्ति-भूमि में जा पहुँचा। वही, सब कुछ वही, था। पर, पर·····यह क्या! उसके नेत्रों के सम्मुख एक काली-मूर्ति आ उपस्थित हुई। धीरेन्द्र काँप उठा। ऊपर देखा तो बहुत ऊँचे, उस काली मूर्ति में से एक दृश्य भभकती हुई अग्नि की ज्वाला-सदृश, एक जिह्वा दिखाई दी। धीरेन्द्र की दृष्टि पड़ते ही वह जिह्वा लपलपाई, फिर अन्तर्हित हो गई। धीरेन्द्र चेतन जगत् में आया। सामने महेन्द्र उसे एक विचित्र दृष्टि से देख रहा था।

महेन्द्र के मन में उस समय एक विचित्र विचार उठ हुआ था। वह देख रहा था—अपने भविष्य का एक जगत्-प्रसिद्ध चित्रकार महेन्द्र का चित्र! सब के मन में प्रतिभा का आतङ्क छाया हुआ था। सब उसकी शक्ति का लोहा मान रहे थे और धन, मान, पद उसकी पूजा कर रहे थे। बड़ा लुभावना भविष्य-चित्र पर अचानक उस चित्र के ऊपर एक काली छाया पड़ी। धीरेन्द्र से मिलती जुलती थी। उसे ऐसा मालूम हुआ धीरेन्द्र उससे सफलता का भाग माँग रहा है और दिखा रहा है कि "यदि मैं सारे संसार को बता दूँ कि का श्रीगणेश कहाँ से हुआ और किसने उसके पूर्ण सहायता दी तो....."।

नहीं, नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता, उसके विचार अति भयङ्कर था। इसी समय धीरेन्द्र ने उसे देखा। दोनों की आँखें चार हुईं। धीरेन्द्र मुसकरा विचार छिपाने को महेन्द्र ने अपनी आँखें नीची धीरेन्द्र ने भी नीचे देखा। दोनों के मध्य में पड़ा था।

(३)

इस प्रकार महेन्द्र के मन में पाप का उदय हुआ। प्रचण्ड अग्नि उसे बेचैन कर रही थी। मार्ग का काँटा दूर करना होगा। भय उपस्थित होने पर मन गति से काम करता है। महेन्द्र के मन में विचार उठा पता कल तक धीरेन्द्र चित्र के सम्बन्ध में किसी से कुछ कल का काम फिर आज ही क्यों न.....।" इस बिस्तर से खींच लिया। मेज में से छुरा निकाला के बाहर निकला। धीरेन्द्र का कमरा ऊपर था। में सन्नाटा छाया हुआ था। धीरे-धीरे सावधानी से हुआ वह सीढ़ियाँ चढ़ गया। तनिक-सा खटका होते मन धक्-धक् करने लगता। मानो एक युगो धीरेन्द्र के कमरे के सम्मुख पहुँचा। दरवाजा खुला में पूर्ण अन्धकार था। टटोलता और धीरे-धीरे हुआ वह बिस्तर के समीप जा पहुँचा। हाथ बिस्तर को टटोला। अचानक उसके हाथ से लगा। बिजली की-सी तेजी से उसका हाथ ऊपर दूसरे क्षण छुरा बिस्तर में धँस गया। महेन्द्र पसीने गया। यह क्या? बिस्तर खाली पड़ा था। इतने को बेधती हुई एक आवाज आई—"भ्याऊँ"! ओह हाय एक बिल्ली थी! तभी तो मुलायम-मुलायम आवाज सुनते ही महेन्द्र सावधान हो गया। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके पकड़ने को जाल रचा गया है। झपटकर उसने ...ा उठा लिया और तीव्र वेग से अपने कमरे में जा पहुँचा। ...तिक्षण उसे भय हो रहा था कि अब भी पकड़ा जाऊँगा। ...कुछ न हुआ। मकान में पूर्ववत् सन्नाटा था।

धीरे-धीरे भय के स्थान में हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न हुई—धीरेन्द्र इस समय कहाँ गया है?" उठकर फिर ऊपर गया और ...रेन्द्र के कमरे की बत्ती जलाई। देखकर वह स्तम्भित रह ...या। धीरेन्द्र कुर्सी के ऊपर लुढ़का पड़ा था। मुख पीला, नेत्र ...श्चित् खुले थे। आगे बढ़कर महेन्द्र ने उसके माथे पर हाथ ...खा। माथा हिमकण-सदृश शीतल था। हृदय की धड़कन ...द थी, पर मुख शान्त था। ऐसा मालूम होता था, मानो ...काल के ग्रास में नहीं पड़ा, वरन् अखण्ड शान्ति का आनन्द ...रहा है।

महेन्द्र खड़ा-खड़ा परमेश्वर के इस विधान को देख रहा ...। फिर उसे अपनी अवस्था का ध्यान आया। वह ...तन्त्र था, धन-मान का उपभोग करने को स्वतन्त्र था। उसका ...य उल्लास से भर उठा और वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। ...चानक उसकी हँसी रुक गई। वह धीरेन्द्र के मुख की ओर ...रहा था। उसे ऐसा भास हुआ मानो वह मुख मुसकरा रहा ...उसी समय शब्द हुआ—"म्याऊँ"। महेन्द्र शीघ्रता से ...रे से बाहर निकल गया।

(४)

...और अब उसका उस घर में रहना दूभर हो गया। घर ...प्रत्येक वस्तु उसे खाती-सी थी। महेन्द्र की अनुमान-...शक्ति अति प्रबल थी। कई बार, कुर्सी पर बैठे, खाली कुर्सी ...ओर देखते ही उसे ऐसा भास होता कि धीरेन्द्र उस पर बैठा ...सुकता से उसकी ओर देख रहा है और उसके नेत्रों में एक ...प्रार्थना है। महेन्द्र चौंक उठता और वह मूर्ति अदृष्ट ...जाती। सफेद दीवार को देखकर वह समझने लगता मानो ...उसी चिर-परिचित धवल-रञ्जित हिम-शिखर को साक्षात् ...रहा है। भाव इतना प्रबल हो उठता कि वह पेंसिल ...में ले उसका चित्र उतारने लगता और तब उसे अपनी ...ता का ध्यान आता। घर की किसी वस्तु को छूते ही उसमें ...न्द्र का मुख उसे मुसकराता नजर आता। उसकी आँखों ...वही मूक प्रार्थना होती।

क्रिया-कर्म हो चुकने के बाद वह तुरन्त घर छोड़ गया और ...को साथ ले अपने पूर्व निवास-स्थान में चला गया। पर-यहाँ भी धीरेन्द्र ने पीछा न छोड़ा। पर उसके दृष्टि-गोचर होने की विधि में अब अन्तर पड़ गया। पहले तो धीरेन्द्र से सम्बन्धित वस्तुओं को देखने या छूने से उसका मुख सम्मुख उपस्थित होता था, अब जब कभी वह पेंसिल हाथ में लेकर बैठता, अनजाने ही धीरेन्द्र के मुसकराते मुख को खींच डालता। आपे में आते ही वह उसे या तो मिटा देता या कागज को फाड़कर फेंक देता। पर पेंसिल हाथ में लेते ही फिर वही हाल!

चित्र के सम्बन्ध में उसने चित्र-कला-संस्था को पत्र लिखा। वहाँ से उत्तर मिला—"जाँच के लिए आदमी दो दिन में आ रहे हैं।" ये दो दिन महेन्द्र ने बड़ी कठिनाई से काटे। पर इस अशान्ति में उसे एक लाभ हुआ। धीरेन्द्र का मुख उसे एक बार भी नजर न आया। उसे आशा हो गई कि वह रोग से मुक्त हो गया है।

सन्ध्या का समय था। "कल संस्था के चित्र-परीक्षक चित्र-परीक्षा को आएँगे। क्या उन्हें चित्र जँच जाएगा? आह! यदि जँच गया तो.....।" चित्राधार पर चित्र टँका था। उसके समीप जाकर वह उसका निरीक्षण करने लगा। एक साधारण-सी अशुद्धि को वह ब्रुश से सुधारने लगा। चित्र देखते देखते वह ध्यान-मग्न हो गया। हिम-शिखर धवल और नीला उसके सम्मुख था। सूर्य भगवान् अस्ताचल को जा रहे थे। रक्तमयी किरणें अन्तिम बार हिम पर पड़ीं। सब ओर लाली छा गई। हिम-शिखर से टकराकर सूर्य की एक किरण घाटी में उतर आई। उसके क्षणिक प्रकाश में उसने देखा—ध्यानावस्थ धीरेन्द्र आश्चर्य से प्रफुल्लित नेत्रों से उसी हिम-शिखर को देख रहा था। उसी समय एक शुभ्र मूर्ति ने पर्वत को ढाँप लिया। उसका कोई ओर-छोर प्रतीत न होता था। उसे देखते ही महेन्द्र के मन में यह भाव उदय हुआ—"इस चित्र का आधार धीरेन्द्र था। उसने अनन्त सागर में क्षण भर के लिए डुबकी लगाई और उसके फल-स्वरूप उसे यह दृश्य दिखाई पड़ा। दृश्य का कर्ता परमेश्वर था। धीरेन्द्र की निर्मल आत्मा में वह प्रतिबिम्बित हुआ। मैंने उस प्रतिबिम्ब को प्रतिरूप-मात्र ही दिया।" सब कुछ अन्तर्हित हो गया। चौंककर महेन्द्र ने चित्र की ओर देखा—धीरेन्द्र का मुसकराता मुख वहाँ उपस्थित था, मानो वह कह रहा था—"मित्र, चित्र मेरा था। मैंने अपनी धरोहर वापस ले ली है।" उन्मत्त महेन्द्र ने ब्रुश की चार चोटें कीं। धीरेन्द्र का मुख और चित्र दोनों अन्तर्हित हो गए। उन पर अन्धकार का काला आवरण पड़ गया।

— —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व का सर्वप्रथम वर्तमान प्रजासत्तात्मक संघशासन-विधान

पण्डित वैदेहीचरण पाराशर, एम० ए०, एल्-एल० बी०, विशारद

मार्च सन् १७८९ के प्रथम बुधवार को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का संघशासन-विधान विधिवत् प्रारम्भ हुआ, और तब से अब तक, १५७ वर्ष से, उसी विधान के अनुसार अमेरिका के शासन का सञ्चालन हो रहा है। अमेरिका का शासन-विधान एक सख्त (Rigid) शासन-विधान समझा जाता है, जिसमें परिवर्तन जरा कठिनता से हो सकता है। इँग्लैंड के फौलादी पञ्जे से अपने देश को स्वाधीन करनेवाले अमेरिकन केवल पराक्रमी ही न थे, वरन् विधान-शास्त्र के पाण्डित्य में भी, कहना न होगा, अद्वितीय थे। भिन्न-भिन्न जाति, धर्म तथा अवस्था की छोटी-बड़ी अनेक रियासतों को, जो सभी अपनी-अपनी स्वतन्त्रता की भावनाओं से ओत-प्रोत थीं, एक शासन-सूत्र में बाँधना कोई साधारण कार्य न था। पर जैसा कि इस लेख से प्रतीत होगा, अमेरिकनों की अपार सहन-शीलता, प्रशंसनीय देश-प्रेम तथा अद्भुत व्यवहार-कुशलता के परिणाम-स्वरूप यह कार्य न केवल सम्भव हुआ, वरन् आश्चर्य-कारिणी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। भारत के विधान-निर्माण-काल में पाठकों को अमेरिका के विधान से परिचित कराना अवश्य कुछ लाभप्रद हो सकेगा, यही इस लेख के लिखे जाने का हेतु है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका प्रजातन्त्रों का प्रजातन्त्र माना जाता है। एक राष्ट्र होते हुए भी अमेरिका अनेक राष्ट्रों का समूह है, जैसा कि इसके नाम से ही प्रकट है। इन छोटे-छोटे राष्ट्रों को उनकी अपनी-अपनी सत्ता के रक्षणार्थ जितनी-आवश्यकता संयुक्त राष्ट्र के संघशासन की है उससे कहीं अधिक आवश्यकता अमेरिका के संघशासन को इन राज्यों की है, जिनके बिना स्वयं-संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का अस्तित्व ही अनावश्यक हो जाता है। कारण यह है कि भारतवर्ष के समान अमेरिका की रियासतों का पृथक् तथा स्वतन्त्र अस्तित्व बिना एक सूत्र में सङ्गठित हुए सम्भव नहीं है। जिस आवश्यकता ने अन्ततोगत्वा अमेरिका के राष्ट्रों को सङ्गठित होने पर मजबूर किया, वही आवश्यकता भारत की विभिन्नताओं की बाधाओं को परास्त कर देश के लिए एक केन्द्रीय शक्तिशाली शासन का सृजन करने में सफल होगी, इसमें किञ्चित्मात्र भी सन्देह नहीं।

अमेरिका के शासन की यह विशेषता है कि वह केवल संघशासन ही नहीं है। वह राष्ट्रीय तथा संघशासन का मिश्रित स्वरूप है। अमेरिका के केन्द्रीय शासनाधिकारियों को, जैसा हम आगे देखेंगे, देश के निवासियों पर अनेक बातों में सीधा अधिकार प्राप्त है, और अमेरिका-निवासियों को संघ-शासन की केन्द्रीय सत्ता निश्चित दशाओं में वैसे ही स्वीकार करना पड़ता है जैसे कि उनको अपनी राष्ट्रीय सरकार की। इस तरह राष्ट्रीय महान् कार्य में शक्ति और सत्ता का जो सन्तुलित वि स्वेच्छा से अमेरिका-निवासियों ने किया है वह न प्रशंसनीय ही है, वरन् अनुकरणीय भी है। नीचे विषयों की सूची देने का प्रयत्न करते हैं जो अमेरि रियासतों ने अपनी केन्द्रीय सरकार को स्वेच्छा से प्रदा उसे क्षमताशाली बनाया है—

१—युद्ध घोषित करना, सन्धि करना तथा सभी वैदेशिक विषयों से सम्बन्ध रखनेवाले कार्यों का सञ्चालन;

२—जल, थल तथा वायुसेना-सञ्चालन;

३—संघ के केन्द्रीय न्याय-विभाग का सञ्चालन;

४—राष्ट्रीय तथा अन्ताराष्ट्रीय व्यापार-प्रबन्ध;

५—मुद्रा;

६—पुस्तक-प्रकाशन आदि के एकाधिकार का प्रबन्ध;

७—डाक-विभाग तथा तत्सम्बन्धी सड़कें;

८—केन्द्रीय सरकार के सञ्चालन के हेतु कर ल अधिकार;

९—राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का रियासतों के प तथा अन्यायपूर्ण कानूनों से संरक्षण।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमेरिका-निवासियों ने नागरिक के व्यक्तिगत स्वत्वाधिकारों को सर्वथा अनु हुए और संघ के प्रत्येक राष्ट्र की स्वतन्त्रता का सम्म हुए भी अपना केन्द्रीय शासन अत्यन्त व्यावहारिक, शक्ति तथा क्षमताशील बनाया है, साथ ही जनता के अधि शक्ति को भी सर्वोपरि स्थान दिया है। इँग्लैंड में पार्लि इतनी अपरिमित शक्ति प्राप्त है कि वह बहुमत द्वारा परिवर्तन वहाँ के शासन में कर सकती है। पर हो कि पार्लियामेंट के सदस्य उस सम्बन्ध में वहाँ की तत्कालीन वास्तविक इच्छा का प्रतिनिधित्व न करते हों परिस्थिति में जनता की इच्छा की अवहेलना न हो कारण अमेरिका के शासन-विधान (Constitution) में वहाँ की जनता की वास्तविक इच्छा के बिना कि असम्भव बना दिया गया है। आगे हम वहाँ के मुख्य-मुख्य अङ्गों, जैसे राष्ट्रपति (President), उसक मण्डल, धारासभा (Congress) के दोनों विभा संघ के केन्द्रीय न्याय, विभाग के अधिकार तथा कु कुछ विचार करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति (President)

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में जब विश्व का धिकांश भाग स्वेच्छाचारी नरेशों से शासित हो रहा था, मेरिका-निवासियों को विशुद्ध प्रजातान्त्रिक विधान निर्माण ने में कितनी उलझनों का सामना करना पड़ा होगा, आज इसका अनुमान लगाना भी असम्भव-सा प्रतीत होता है। क ओर तो उनके सामने प्रजातन्त्र की डींग हाँकनेवाले इँग्लैंड शासन का उदाहरण था कि जहाँ के सम्राट् जार्ज तृतीय निरङ्कुशता के कारण वर्षों के रक्त-बलिदान के पश्चात् वे पनी स्वाधीनता प्राप्त कर सके थे; दूसरी ओर थे फ्रांस, रूस, न आदि के सर्वथा निरङ्कुश शासक। जो कुछ भी अनुभव हें तत्कालीन विश्व से प्राप्त हो सकता था, उसके सहारे होंने ऐसा उत्तम विधान बनाया कि जिससे एक शक्तिशाली नाशाह सदिच्छापूर्वक जितना लाभ देश को पहुँचा सके, से देश वञ्चित भी न रहने पाए, साथ ही वह सर्वशक्तिमान् कर देश को क्षति भी न पहुँचा सके। अमेरिका के राष्ट्रपति आज विश्व के महान् से महान् एकाधिकार रखनेवाले नाशाहों के समान शक्तिशाली होते हुए भी अमेरिका के पूर्ण ासत्तात्मक (Republican) राष्ट्र होने का रहस्य यही है।

इँग्लैंड की पार्टीबन्दी को देखकर अब से लगभग पौने दो वर्ष पहले के भोले अमेरिका-निवासियों ने इस बात की रोक ने के हेतु कि राष्ट्रपति के महान् आसन पर कोई दल-विशेष व्यक्ति न बैठ सके, उसके चुनाव का ऐसा उलझनपूर्ण का बनाया कि जिसका लिखना भी अब निरर्थक प्रतीत होता क्योंकि अब तो राष्ट्रपति का चुनाव सीधा जनता के ही मत- ा किए जाने की परिपाटी चालू हो चुकी है। यद्यपि जकल राष्ट्रपति दल-विशेष-द्वारा ही चुना जाने के कारण लैंड के सम्राट् के समान सर्वथा निष्पक्ष नहीं होता, फिर विश्व के इस महान् पद पर आरूढ़ होने का उत्तरदायित्व, यह भावना कि वह न केवल अपने दल-विशेष का ही सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है, उसे बहुत कुछ निष्पक्ष ने में सहायक होती है। पद-वितरण के कार्य को छोड़कर, कि विजयी दल के व्यक्तियों को दिए जाने की वहाँ प्रथा-सी ू हो गई है, अन्य किसी सम्बन्ध में राष्ट्रपति का व्यवहार ातपूर्ण होने का शायद ही कोई अवसर आता हो। भी यही सुनने में आता है कि राष्ट्रपति के पद का दुरु- ा अपने विपक्षी दल के व्यक्तियों को हानि पहुँचाने के हेतु ा गया है। आगे यह दिखाने का प्रयत्न किया जाता है राष्ट्रपति को क्या-क्या शक्ति प्राप्त है।

१—संघ की जल, थल आदि सेना का सञ्चालन करना रियासती अस्थायी फौज का, जब वह केन्द्रीय सरकार की में उपस्थित हो, अधिनायकत्व करना;

२—सीनेट के उपस्थित सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत के परामर्श तथा स्वीकृति से सन्धि करना;

३—सीनेट की स्वीकृति तथा परामर्श से राजदूत, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों तथा संघ की केन्द्रीय सरकार के अन्य उच्च पदाधिकारियों की नियुक्ति करना;

४—संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विरुद्ध किए गए अपराधों पर क्षमा-प्रदान करना;

५—विशेष तथा असाधारण परिस्थितियों में केन्द्रीय धारा सभा की बैठकें आमन्त्रित करना;

६—धारासभा-द्वारा पास हुए किसी भी विधान तथा ठहराव को धारासभा में एक बार पुनर्विचार को भेज देना।

राष्ट्रपति के लिए वैदेशिक तथा देश के आन्तरिक सभी महत्त्वपूर्ण मसलों पर तीव्र दृष्टि रखना तथा तत्सम्बन्धी कार्यवाही धारासभा को सुझाना अत्यन्त आवश्यक है। उसका कर्तव्य है कि वह संयुक्त राष्ट्र की सम्पूर्ण परिस्थिति से राष्ट्र की कांग्रेस को अवगत कराता रहे। राष्ट्र के कानूनों की अवहेलना न की जाए, यह देखना भी उसका प्रमुख कर्तव्य है। साथ ही समस्त विदेशी राजदूतों से भेंट करना तथा उनका आदर-सम्मान करना भी उसका कर्तव्य माना गया है।

अमेरिका का राष्ट्रपति, जैसा कि ऊपर लिख आए हैं, अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्ति है। यद्यपि वैधानिक रूप से युद्ध घोषित करने का अधिकार वहाँ की कांग्रेस को ही प्राप्त है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्रपति यदि युद्ध करना चाहे तो सहज ही ऐसी परिस्थिति का निर्माण कर सकता है कि कांग्रेस को युद्ध घोषित करना अनिवार्य ही हो जाए। राष्ट्र का उच्च से उच्च पदाधिकारी उसी के अधीन समझा जाता है और कांग्रेस का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हो जाने पर, जैसा कि इब्राहम लिंकन को प्राप्त था, राष्ट्रपति प्रायः सर्वेसर्वा ही हो जाता है। राष्ट्र का सर्वश्रेष्ठ नागरिक होने का उसे सौभाग्य प्राप्त है और उसे घोषणा-द्वारा सीधा जनता तक अपना सन्देश पहुँचाने का भी अधिकार है। इतना सब होते हुए भी उसके व्यक्तिगत राज-नीतिक अधिकार सर्वथा सुरक्षित रहते हैं। उसे राजनीतिक व्याख्यान देने की स्वतन्त्रता है तथा उसे केन्द्रीय एवं रियासती चुनावों में भाग लेने का भी अधिकार रहता है। वह अपनी पार्टी के सदस्यों से भी सलाह-मशविरा करने के लिए स्वतन्त्र रहता है और उसका ऐसा करना बिलकुल स्वाभाविक ही माना जाता है।

इँग्लैंड के सम्राट् के समान अमेरिका का राष्ट्रपति धारा-सभा का सदस्य नहीं होता। फलतः उसे धारासभा में कानून बनवाने की उतनी सुविधा नहीं होती कि जितनी इँग्लैंड के सम्राट् को। इँग्लैंड के सम्राट् के नाम से इँग्लैंड के मन्त्री किसी भी कानून को वहाँ की पार्लियामेंट में पेश कर सकते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अमेरिका के राष्ट्रपति को इस सम्बन्ध में कांग्रेस को सन्देश भेजकर ही सन्तोष करना पड़ता है।

अमेरिका की कांग्रेस में जब कोई कानून पास हो जाता है तब वह राष्ट्रपति के पास हस्ताक्षरों के लिए आता है। यदि राष्ट्रपति का उस कानून से कोई मतभेद होता है तो स्वीकृति प्रदान करने के स्थान में राष्ट्रपति उसे उसी सभा को, जिसमें वह सर्वप्रथम आलेख (Bill) के रूप मे प्रस्तुत किया गया था, वापस कर देता है। परन्तु यदि कांग्रेस की दोनों सभाएँ उसे पुनः पास कर दें तो वह बिना राष्ट्रपति के हस्ताक्षरों के ही विधान का रूप धारण कर लेता है। अमेरिका का राष्ट्रपति सीधा जनता द्वारा ही चुना होता है, अतः जब कभी इस प्रकार वह धारासभा-द्वारा स्वीकृत कानून को वापस करता है तो जनता उसके इस कार्य को प्रशंसा की ही दृष्टि से देखती है।

यद्यपि बाह्य दृष्टि से राष्ट्रपति प्रायः निरङ्कुश शासक ही प्रतीत होता है परन्तु उसे अपना कार्य करने में सीनेट का ध्यान रखना पड़ता है तथा चुनाव में जनता ने जो उसको सहयोग दिया है उस पर भी विचार रखना पड़ता है। इन कारणों से उसके द्वारा प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य किए जाने की कोई सम्भावना ही नहीं रहती है।

राष्ट्रपति का मन्त्रिमण्डल

अमेरिका का राष्ट्रपति वैतनिक होता है और उसका वेतन युद्ध के पूर्व ७५,००० डालर (लगभग २२५०००) रु० प्रति वर्ष होता था। वह अपना कार्य अपने मन्त्रिमण्डल की सहायता और उसके परामर्श से करता है। प्रत्येक मन्त्री का वेतन युद्ध के पूर्व १२००० डालर प्रति वर्ष होता था। अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति वाशिंगटन अपना कार्य केवल ४ ही मन्त्रियों के परामर्श से चलाते थे, परन्तु अब मन्त्रिमण्डल की संख्या में काफी वृद्धि हो चुकी है। वर्तमान समय में मन्त्रिमण्डल में निम्नलिखित सदस्य होते हैं—

१—शासन-मन्त्री (Secretary of States);
२—कोष-मन्त्री (,, of the Treasury);
३—युद्ध-मन्त्री (,, of War);
४—प्रमुख राष्ट्र-अभिभाषक (Attorney General);
५—जलपोत-मन्त्री सन् १७९८ से प्रारम्भ (Secretary of the Navy added, 1798);
६—पोस्टमास्टर जनरल सन् १८२९ से (Postmaster General 1829);
७—अन्तर्देशीय मन्त्री १८४९ से (Secretary of Interior);
८—कृषि-मन्त्री १८८८ से (Secretary of Agriculture);
९—व्यापार-मन्त्री, १९०३ से; (,, of Commerce)
१०—श्रम-मन्त्री १९१३ से (Secretary of Labour).

अमेरिका का मन्त्रिमण्डल इंग्लैंड के मन्त्रिमण्डल से न होकर उससे बहुत भिन्न है। अमेरिका में न तो मन्त्रि की सामूहिक जिम्मेवारी ही होती है और न वे वहाँ सभा (Congress) के प्रति ही उत्तरदायी होते हैं। नियुक्ति यद्यपि सीनेट की सहमति से प्रेसीडेंट द्वारा की पर उन्हें पृथक् कर देने का एकाधिकार केवल राष्ट्रपति प्राप्त होने से वे व्यावहारिक रूप में राष्ट्रपति के ही से हैं और उसी के प्रति उत्तरदायी भी होते हैं। मन्त्रियों अन्य (राज्य-पदाधिकारियों में केवल इतना ही अन्तर होता है कि मन्त्रियों को राष्ट्रपति गुप्त मन्त्रणा के दिए करता है, परन्तु अन्य अधिकारियों को नहीं।

अमेरिका में यह कुछ परिपाटी-सी पड़ गई है कि राष्ट्रपति अपना नवीन मन्त्रिमण्डल ही निर्माण करता वह उसी दल की ओर से क्यों न चुना गया हो का विगत राष्ट्रपति था। सीनेट राष्ट्रपति-द्वारा चुने के नामों में हस्तक्षेप प्रायः नहीं करती है। कभी-देखने में आया है कि उन व्यक्तियों को भी राष्ट्रपति मन्त्रि में सम्मिलित कर लेता है जिनको कभी कांग्रेस का सद तक का सौभाग्य प्राप्त न हुआ हो। पर वह इस सदैव ध्यान रखता है कि देश के प्रभावशाली व्यक्ति मन्त्रि-मण्डल में सम्मिलित हो जाएँ। आगे हम प्रमु मन्त्रियों के कर्तव्यों पर थोड़ा विस्तार से लिखने करते हैं।

शासन-मन्त्री (Secretary of States)

जैसा कि इस विभाग के नाम से प्रतीत होता विपरीत इस विभाग के मन्त्री का कर्तव्य परराष्ट्र-सञ्चालन है। एक प्रकार से इसे हमें विदेशी विभाग चाहिए। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की महान् मुहर (Gre भी इसी के अधिकार में रहती है तथा प्राचीन लेख, दस्तावेज आदि भी इसी के आधिपत्य में रहते हैं। आदि की व्यवस्था भी इसी विभाग के नियन्त्रण में यह राष्ट्र का अत्युच्च पदाधिकारी माना जाता है तथा गौरव प्राप्त है।

कोष-मन्त्री (Secretary the Treasury)

योरपीय देशों के राजस्व-मन्त्री के सदृश ही यह का सञ्चालक होता है। राष्ट्र के आय-व्यय का मन्त्री के अधीन रहता है। युद्धकाल में तो इस महत्त्व अत्यन्त अधिक हो जाता है। राष्ट्रीय भूमि भी इसी विभाग द्वारा होता है। आदिवासियों की राज्य-सेवियों को विश्राम, व्यय (Rensions), मौसमी विभाग (Meteorological Office),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Geological matters) तथा समुद्र आदि से पुनः भूमि-प्राप्ति (Reclamation) का कार्य की इसी विभाग-द्वारा सञ्चालित होता है।

राष्ट्र का प्रमुख अभिभाषक (Attorney General)

इस विभाग के नाम से ऐसा प्रतीत नहीं होता, पर यह मन्त्री केवल राष्ट्र का वैधानिक परामर्शदाता ही होता है वरन् अन्य शों के न्याय-मन्त्री के सदृश इसके कर्तव्य होते हैं। नाजुक धानिक प्रश्नों पर भी सम्मति राष्ट्रपति को इसी से प्राप्त होती। इस मन्त्री की दी हुई सम्मति कभी-कभी राष्ट्रपति के र्य के समर्थन में प्रकाशित भी की जाती है, जिसका काफी भाव पड़ता है। संघ के विधानानुसार किसी मुकदमे के चलाए ने या न चलाए जाने का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी इसी भाग के अधिकारी पर रहता है। इस विभाग के अधिकारी पद की नियुक्ति प्रायः देश के प्रमुख अभिभाषकों में से ही जाती है।

व्यापार-विभाग (Commerce Department)

जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, राष्ट्र के व्यापार-सञ्चालन प्रबन्ध ही प्रमुखतः इस विभाग-द्वारा होता है। साथ ही थ प्रकाश-स्तम्भों (Light Houses) का प्रबन्ध, व्यापार जलपोत आदि की व्यवस्था आदि कार्य भी इसी विभाग से ध्वन्धित रहते हैं।

व्यवस्थापिका सभा (Senate)

अमेरिका की सीनेट में, जिसे हम व्यवस्थापिका सभा कह कते हैं, प्रत्येक रियासत के २ निर्वाचित सदस्य होते हैं जो उसी ज्य के निवासी होने चाहिएँ तथा जिनकी उम्र कम-से-कम ३० र्ष होनी अनिवार्य है। हर तीसरे वर्ष कुल सदस्यों में से एक हाई अनिवार्य रूप से पृथक् होते हैं। सदस्यों के पुन-र्वाचन में कोई वैधानिक बाधा नहीं है। कोई सीनेटर संयुक्त ष्ट्र अमेरिका का शासकीय पद ग्रहण नहीं कर सकता। संयुक्त ष्ट्र अमेरिका का उपाध्यक्ष ही अपने उसी पद के अनुसार नेट का अध्यक्ष होता है। सदस्यों के समान मत होने की शा में सीनेट के अध्यक्ष को केवल कॉस्टिंगवोट (Casting ote) देने का अधिकार होता है, साधारण दशा में नहीं। ाध्यक्ष की मृत्यु आदि कारणों से स्थान रिक्त होने की दशा उपाध्यक्ष का निर्वाचन सीनेट के सदस्यों-द्वारा सीनेट के स्यों में से ही किया जाता है। सीनेट का कोरम कुल सदस्य-ख्या का बहुमत होता है।

सीनेट के कर्तव्य विधान-निर्माण-सम्बन्धी, न्याय-दान-सम्बन्धी ा शासकीय—इस प्रकार ३ भागों में विभक्त हो जाते हैं। तिनिधिसभा (House of Representatives) के साथ नेट राष्ट्र के भिन्न-भिन्न विधानों को बनाने तथा उनमें परिवर्तन आदि का कार्य करती है। राष्ट्रपति-द्वारा केन्द्रीय संघ-शासन के पदाधिकारियों, न्यायाधीशों, राष्ट्रमन्त्रियों तथा राजदूतों की नियुक्ति को स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करना तथा इसी प्रकार राष्ट्रपति द्वारा की गई सन्धि को स्वीकृति देना अथवा न देना सीनेट के शासकीय कार्यों के अन्तर्गत आता है। राष्ट्रमन्त्रियों आदि पर चलनेवाले मुकदमों (Impeachment) की सुनवाई करना तथा उनका निर्णय करना सीनेट के न्याय-दान-सम्बन्धी कर्तव्यों के अन्तर्गत आता है। चूँकि सीनेट में प्रत्येक रियासत के दो प्रतिनिधि होते हैं, चाहे वह रियासत बड़ी हो या छोटी, अतः संघ-शासन का सीनेट अनिवार्य अङ्ग बन गई है। क्योंकि इसके द्वारा प्रत्येक रियासत को समान मताधिकार प्राप्त हो जाता है। सन् १९११ से यह नियम बना दिया गया है कि सीनेट की सदस्यता का प्रत्येक उम्मीदवार १०,००० डालर से अधिक व्यय अपने चुनाव में नहीं कर सकता।

यद्यपि नियमानुसार धन सम्बन्धी प्रत्येक विधान सर्वप्रथम प्रतिनिधिसभा (House of Representative's) में ही प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु सीनेट कर लगाने तथा विभिन्न विभागों को रुपया देने में अपने अधिकारों का प्रयोग अत्यन्त तीव्रता तथा सावधानी के साथ करती है। इस प्रकार के प्रायः प्रत्येक अधिवेशन में संघर्ष तथा समझौते की नौबतें आती रहती हैं।

सीनेट के अधिवेशन में मत-विभाजन का यह नियम है कि प्रत्येक सदस्य को उसका नाम लेकर पुकारा जाता है। ये नाम अकारादिक्रम सूची से लिखे रहते हैं। अपना नाम पुकारा जाने पर प्रत्येक सीनेटर 'हाँ' अथवा 'नहीं' कहकर उत्तर देता है। यदि कोई सीनेटर तटस्थ रहना चाहे तो सभा की स्वीकृति से ऐसा कर सकता है। यदि कोई किसी अन्य सीनेटर के साथ अपना जोड़ मिलाकर मत देना अनावश्यक समझता है तो सभा की स्वीकृति से वह भी अपने मतदान के कर्तव्य से मुक्ति पा सकता है।

जब अपने शासकीय कर्तव्यों के पालनार्थ सीनेट का अधिवेशन प्रारम्भ होता है तो सभा की कार्यवाही गुप्त घोषित कर दी जाती है और आमन्त्रित व्यक्ति आदि सबसे पृथक् हो जाने की प्रार्थना की जाती है। राष्ट्रपति-द्वारा की हुई सन्धि पर विचार करने के पश्चात् उसे स्वीकृत अथवा अस्वीकृत का देने का अधिकार सीनेट को प्राप्त होने के कारण राष्ट्र को किसी भी शङ्कास्पद सन्धि से मुक्त करने का सुअवसर राष्ट्र को सदैव प्राप्त रहता है। ध्यान रहे कि इँगलैंड के प्रधान मन्त्री के समान राष्ट्रपति के द्वारा की गई सन्धि के अस्वीकृत किए जाने की दशा में राष्ट्रपति को त्यागपत्र देना आवश्यक नहीं है।

सीनेट में प्रायः प्रभावशाली अभिभाषक (Lawyers) ही चुने जाते हैं। राष्ट्रपति की निरङ्कुशता पर इसके द्वारा प्रभावपूर्ण नियन्त्रण रहता है। साथ ही प्रजा सभा-द्वारा उतावले में पास किए गए कानूनों-द्वारा हो सकनेवाली हानि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीनेट-द्वारा राष्ट्र की रक्षा होती है। प्रत्येक सीनेट के सदस्य को कम-से-कम ६ वर्ष कार्य करने का अवसर मिलता है और विद्वान् तथा क्षमताशाली व्यक्तियों की सभा होने के कारण इसने अमेरिका राष्ट्र की बड़ी सेवा की है। सीनेट के वाद-विवाद पाण्डित्य के अत्यन्त ऊँचे धरातल पर होते हैं। सीनेटर्स प्रेसीडेंट को मिस्टर प्रेसीडेंट कहकर पुकारते हैं तथा सामाजिक उत्सव-त्योहारों के अवसर पर सीनेटर और उनकी पत्नियों को सर्वप्रथम सम्मान प्राप्त होता है। अमेरिका राष्ट्र के शासन के सुसञ्चालन में सीनेट का अपना विशिष्ट स्थान है।

प्रतिनिधिसभा (House of Representatives)

इसमें भिन्न-भिन्न निर्वाचन-क्षेत्रों से चुने हुए ४३५ सदस्य होते हैं। सभा का बहुमत ही कोरम माना जाता है। प्रतिनिधि-सभा के सदस्यों का चुनाव बालिग मताधिकार-द्वारा होता है। चुनाव में व्यय किए जाने पर कोई प्रतिबन्ध या नियन्त्रण नहीं है। प्रायः प्रत्येक उम्मेदवार लगभग १०,००० डालर व्यय कर देता है। इस सभा के सदस्यों को सम्माननीय कहकर पुकारा जाता है। धन-सम्बन्धी विधानादि पर प्रथम वाद-विवाद करने का इस सभा को एकाधिकार प्राप्त है। अधिवेशन के समाप्त हो जाने पर उसमें उपस्थित किए हुए विधान समाप्त (Lapse) नहीं होते। दैनिक अधिवेशन प्रायः दोपहर से प्रारम्भ होकर सन्ध्या तक चलता है।

सभा के प्रत्येक सदस्य, लेखक, रक्षक (Sergeant at Arms), द्वारपाल आदि को राष्ट्र के शासन-विधान के प्रति वफादारी की शपथ लेनी अनिवार्य है। सभा का रक्षक ही सभा का कोषाध्यक्ष भी होता है जो सदस्यों को उनका वेतन तथा भत्ता आदि चुकाता है और सभा में शान्ति रखने का भी उत्तरदायी होता है।

सभा का कार्यक्रम प्रार्थना से प्रारम्भ होता है। लाटरी-द्वारा सदस्यों के बैठने का स्थान निश्चित किया जाता है। वाद-विवाद के समय अपने सम्मुख बैठे हुए सम्माननीय सदस्यों की ओर उँगली का इशारा करने का अधिकार किसी सम्माननीय सदस्य को नहीं। सबको नङ्गे सिर बैठना होता है तथा केवल सभापति को ही सम्बोधित करके बोल सकते हैं। सदस्यगण अपने स्थान से बोलते हैं अथवा लेखक या सभापति के आसन के समीप से बोल सकते हैं। मतगणना का यह नियम है कि सदस्यगण अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं, जिनकी गणना सभापति-द्वारा की जाती है। मतगणना २ बार की जाती है। तृतीय बार की गणना में सदस्यों को अपने मत-परिवर्तन का अधिकार रहता है। वाद-विवाद के लिए प्रत्येक सदस्य को एक घण्टा तक बोलने का अधिकार रहता है। यदि कोई सदस्य चाहे तो अपने समय का कुछ भाग अन्य किसी सदस्य को भी दे सकता है। यदि कोई सदस्य यह प्रश्न उपस्थित कर दे कि अब प्रकृत विषय पर मत ले लिए जाएँ, और यदि से यह प्रस्ताव पास हो जाए, तो वाद-विवाद समाप्त है और प्रस्तावक के अतिरिक्त अन्य किसी को भी अधिकार नहीं रहता। सभा के सभापति से निष्पक्ष कोई आशा नहीं की जाती और समस्त शङ्कास्पद निर्णय वह प्रायः अपने दल के ही हित में करता है। की बैठकों में वह स्वाधीनता से भाग लेता है तथा अन्य को भी स्वेच्छा से परामर्श देता है। सभापति (Speak वेतन १२,००० डालर प्रतिवर्ष होता है और राष्ट्र के के पश्चात् उसी को सम्मान प्राप्त होता है। सभा के को ७५०० डालर प्रतिवर्ष वेतन, १० पेंस प्रति मील भत्ता लेखक एवं स्टेशनरी आदि के लिए पृथक् व्यय मिलता

सभा की कमेटियाँ

अमेरिका की प्रतिनिधिसभा (House of Repre tives) के कार्य की यह मुख्य विशेषता है कि उसके कि प्रकार के कार्य के लिए कांग्रेस के अधिवेशन के प्रारम्भ अनेक कमेटियाँ बना दी जाती हैं। प्रायः प्रत्येक स किसी-न-किसी कमेटी में कार्य करने का अवसर दिया इन कमेटियों में ७ से लेकर १६ तक की संख्या में सद हैं और जिसका नाम चुनाव में प्रथम चुना जाता चेयरमैन होता है। इनके सदस्यों का चुनाव सभा-द्व होता है। प्रत्येक आलेख (Bill) किसी-न-किसी कमेटी सामने अवश्य जाता है। कमेटी चाहे तो उस बिल के में आवश्यक साद्य भी ले सकती है। कमेटी को संशोधन आदि का पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है। कार्यवाही गुप्त रक्खी जाती है। कमेटी को रिपोर्ट के लिए बहुत कम समय दिया जाता है। अतः जैसा वैसा कार्य इनके द्वारा सम्पादन नहीं होता है। कमेटी को अपनी रिपोर्ट पेश करना अनिवार्य नहीं अनेक बिलों का तो कमेटियों में ही अन्तिम संस्कार है। इँग्लैंड और अमेरिका के विधान-निर्माण-कार्य भिन्नता है कि इँग्लैंड में अधिकांश आवश्यक आलेख किसी-न किसी मन्त्री-द्वारा पेश किए जाने से न केवल उ का वरन् मन्त्रिमण्डल का सामूहिक उत्तरदायित्व होने से सम्पूर्ण मन्त्रिमण्डल का भाग्य प्रत्येक आलेख से सम्ब है; अतः प्रत्येक बिल अत्यन्त सावधानी के साथ तै जाकर सभा में पेश किया जाता है। पर अमेरिका में नहीं होती, क्योंकि अमेरिकन मन्त्रिमण्डल न तो वहाँ की सभा के प्रति उत्तरदायी ही होता है और न कोई मन्त्री सभा का सदस्य ही होता है। इसके अतिरिक्त इँग्लैंड कि प्रत्येक आवश्यक आलेख पर तीव्र वाद-विवाद की रहती है, अमेरिका में उसका प्रायः अभाव पाया परन्तु अमेरिका की सीनेट तथा वहाँ का राष्ट्रपति वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैरिस के गत शान्तिसम्मेलन के अवसर पर अमेरिका के प्रतिनिधि श्री वायरन्स से कहा, "महाशयो, ऐसा प्रतीत होता है कि हम में से प्रत्येक यह अनुभव कर रहा है कि हम एक दूसरे का विश्वास नहीं कर सकते। संसार में यदि स्थायी शान्ति की स्थापना करनी है तो जर्मनी का पूर्ण निरस्त्रीकरण अनिवार्य है।"

चित्र में श्री वायरन्स श्री बेविन के साथ दिखाए गए हैं।

नीचे—

मास्को में 'मे डे' के अवसर पर स्टालिन ने कहा—"हमें एक क्षण के लिए यह नहीं भूलना चाहिए कि अन्ताराष्ट्रीय दुरभिसंधि संसार में तृतीय महायुद्ध लाने की योजना तैयार कर रही है। हमें प्रतिक्षण सतर्क रहना है।"

नीचे—

नाजियों ने हालैण्ड में जब इस रक्षा-पंक्ति का निर्माण किया था, तब वे शायद यह सोचते भी होंगे कि निकट भविष्य में जर्मन नागरिकों को मजदूरों की हैसियत से उनका मज़बा भी साफ़ करना होगा। (दाहिनी ओर) फ्रांस के छात्र गत चुनाव में फर्डीनेण्ड लोप के पक्ष में आन्दोलन कर रहे हैं। लोप महाशय फ्रांस में लेटिन विभाग की ओर से अध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार थे। अध्यापक वैज्ञानिक, सम्पादक और कवि के रूप में वहाँ के छात्रों में सर्वप्रिय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक उत्सव के लिए रीछ की खोज में एक जापानी आदिम शिकारी

जापान के अद्भुत आदिम निवासी

जिन जातियों की अद्भुत और कौतूहलजनक सामाजिक प्रथाओं की जानकारी दुनिया को बहुत कम है, उनमें से हेयरी ऐनुस भी एक जाति है। हेयरी ऐनुस ही जापानियों के मूल-पुरुष हैं। हाकेडो नामक जापानी द्वीप में आज भी हेयरी ऐनुस नामक जाति के लगभग २०,००० नर-नारी जीवित हैं। सेखालिन और कुरीलेस नामक उत्तरी जापानी द्वीपों में भी इस जाति के कुछ लोग रहते हैं। इन द्वीपों पर जानेवाले कुछ यात्रियों ने इन लोगों को बहुत निकट से देखा है।

हेयरी ऐनुस नाम से ऐसा बोध होता है कि इन शरीर पर संभवतः बहुत अधिक बाल होते होंगे। दर्जे के किसी भी पाश्चात्य निवासी से अधिक बाल पर नहीं होते। हाँ, पड़ोसी जापानियों के चूँकि बहुत ही होते हैं, अतः यह नामकरण भी इन्हीं जापानियों द्व गया प्रतीत होता है। इनकी उत्पत्ति भी बड़ी रहस्यपू जाति के जीवित मनुष्यों में मुश्किल से तीन प्रति ऐनुस हैं। इनका चमड़ा हल्के पीले रंग का और आँखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग की होती हैं। कुछ मानव-विज्ञान-वेत्ताओं का विश्वास है कि इनके पूर्वज पाषाण युग में योरप के उत्तरी भाग में रहते थे। धीरे-धीरे यही लोग उत्तर-पूर्व एशिया से जापान में आकर बस गए। संस्कृति का जहाँ तक सम्बन्ध है, अमरीका के उत्तर-पश्चिम में रहनेवाले इण्डियन लोगों से भी ऐनु लोग अधिक आदिम हैं।

सदियों तक जापान में सर्वत्र इन्हीं ऐनु लोगों का विस्तार था। ईस्वी सदी से लगभग ४०० साल पूर्व जब मंगोलियावासी जापानी पूर्वज पहले-पहल जापान में आए, तब उन्होंने इन लोगों को धीरे-धीरे ऐसे द्वीपों की ओर खदेड़ दिया, जहाँ अपेक्षाकृत जीवन-यापन की सुविधाएँ बहुत कम थीं। इन लोगों की सामाजिक मर्यादा पर भी आघात किया गया और इन्हें तुच्छ समझा जाने लगा।

ऐनु जाति के लोगों की जन-संख्या इतनी तीव्रता से कम होती जा रही है कि मानव विज्ञान-वेत्ताओं का अनुमान है कि सन् १९७६ ई० तक इस जाति का नामोनिशाँ भी न रह जाएगा। बहुत-से विशुद्ध अथवा वर्ण-संकर ऐनु लोग हाकेडो नामक द्वीप में रहते हैं। इस द्वीप में इन लोगों की कुल आबादी ३,४३६ है; लेकिन बच्चों की संख्या सिर्फ ७१ है। बाल-मृत्यु-संख्या की भयंकरता का अनुमान इन आँकड़ों से सहज ही किया जा सकता है।

ऐनु लोग आधुनिकतम औषधियों अथवा वैज्ञानिक सुविधाओं का कोई लाभ नहीं उठाना चाहते। उनके निवास-स्थान अत्यन्त गन्दे और दुर्गन्धयुक्त रहते हैं। जूठी भोजन-सामाग्री अथवा घर का कूड़ा-कचरा दरवाजे के बाहर कहीं भी फेंक दिया जाता है और वह जहाँ का तहाँ पड़ा-पड़ा सड़ता-गलता रहता है। सफाई का तो ये लोग शायद नाम भी नहीं जानते। इन लोगों का ऐसा विश्वास है कि यदि ये स्नान करेंगे, तो सदा के लिए ठण्ढे हो जाएँगे—इस दुनिया से ही उठ जाएँगे। इस विश्वास का परिणाम यह हुआ है कि सप्ताह में सिर्फ एक बार ये लोग अपने हाथ-पैर धो लेना पर्याप्त समझते हैं।

इनकी कोई भाषा नहीं जो लिपिबद्ध हो। जो बोली ये लोग बोलते हैं, वह संसार की किसी भाषा से मिलती-जुलती नहीं कही जा सकती। इनकी शिल्प-विद्या अपूर्ण है—अपरिपक्व। इनके रीति-रिवाज अन्धविश्वासों और अज्ञान की पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। स्त्रियों का इन लोगों में कोई सम्मान नहीं। किसी उत्सव आदि में इनकी स्त्रियाँ सम्मिलित नहीं हो सकतीं।

ऐनु लोग अनेक देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न देवी-देवता पूजे जाते हैं। अग्नि, समुद्र और रीछ की भी ये लोग पूजा करते हैं। रीछ का चमड़ा भी झोपड़ी के किसी पवित्र कोने में अवसर-विशेष पर देवता की तरह किसी गद्दी

ऐनु स्त्रियों का पारस्परिक मिलाप

पर प्रतिष्ठित किया जाता है। एक उत्सव-विशेष के लिए ये लोग रीछ का शिकार करते हैं। गाँव के मुखिया द्वारा इस रीछ पर शराब अभिसिंचित की जाती है। ऐसा करने से उसमें नवीन देवत्व की प्रतिष्ठा का खयाल किया जाता है। इसके बाद रीछ का सिर उस समाधि-स्थल के बाहरी दरवाजे पर रख दिया जाता है, जहाँ विगत वर्षों के इसी प्रकार देवतास्वरूप माने गए अन्य रीछों के सिर सुरक्षित रक्खे रहते हैं।

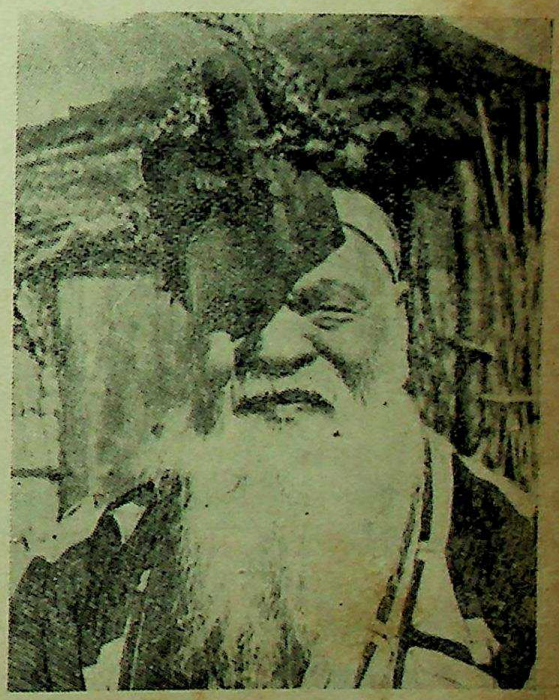

ग्राम का वयोवृद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐनु स्त्रियों का नृत्य

सेनानायक की पत्नी, जिसके ऊपरी ओठ में गोदने दर्शनीय हैं

इस रीछ का खून भी यह मुखिया जी भर कर काफी मात्रा पीता और उसके कलेजे को भी खा जाता है।

जब किसी ऐनु की मृत्यु हो जाती है तो उसका निर्जीव शरीर किसी चटाई में लपेटा जाता है, जिस पर उसका प्राणान्त होता है। इसके बाद उसके घर की किसी दीवार में एक बड़ा-सा छेद कर दिया जाता है। इसी छेद में से शव घर के बाहर निकाला जाता है। दरवाजे में से शव निकालने की प्रथा इनमें नहीं है। यह अंधविश्वास इनमें घर किए है कि यदि दरवाजे में से शव बाहर निकाला जाएगा, तो उसकी प्रेतात्मा उस घर पर आक्रमण कर बैठेगी और अनेक परेशानियाँ सामने आएँगी।

ऐनु लोग खेती करने से घृणा करते हैं। जिन लोगों ने इस दिशा में कभी प्रयत्न किया, और यह चाहा कि ये लोग खेती करने लगें, उन्हें निराश होना पड़ा।

रीछ में देव-प्रतिष्ठा का वसन्त ऋतु के प्रारम्भ में ही हो जाता है। बसन्तागमन पर बर्फ ज्यों ही पिघलने लगती है, शिकारी नए रीछ की खोज में निकल पड़ते हैं। कभी-कभी तीन-तीन दिन के बाद इन्हें रीछ मिल पाता है।

भूतों, प्रेतों से ये लोग बहुत भय खाते हैं। कब्रिस्तान में लोग कभी भूलकर भी नहीं जाते। सिर्फ अन्त्येष्टि के समय कब्रिस्तान में इन्हें जाना पड़ता है, सो भी अकेले नहीं।

बीसवीं शताब्दी में जहाँ एक ओर विज्ञान की उन्नति सीमा पर जा पहुँची है, वहाँ दुनिया के कितने ही भूभाग में लोग भी रहते हैं जिन्हें इस सबका कोई पता नहीं। ऐनु ऐसे ही हैं। इनका जीवन जिन अद्भुत रस्म-रवाजों से रहा है, उन्हें बदलने की क्षमता किसी में नहीं।

—देवीदयाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले कानूनों की अनेक अनावश्यक तथा हानिप्रद धाराओं को रुस्त करते रहते हैं। फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि लैंड की अपेक्षा अमेरिका के विधान-निर्माता अपने बनाए नूनों के लिए जनता कि प्रति कम उत्तरदायी रहते हैं; क्योंकि ी की कार्य-पद्धति ही ऐसी है कि प्रत्येक सदस्य को किसी-किसी प्रकार अपने उत्तरदायित्व से बचने का अवसर मिल ाता है।

राष्ट्र की धन-व्यवस्था

कांग्रेस-राष्ट्रीय सरकार के लिए अप्रत्यक्ष रूप से कर लगाकर न की व्यवस्था करती है। आय का प्रमुख साधन आयात-र्यात, कर तथा चुङ्गी का महसूल है। जैसा कि ऊपर लिखा चुका है, धन-सम्बन्धी प्रश्न (Bill) प्रतिनिधिसभा में ही थम उपस्थित किए जाते हैं और उसमें पास होने पर ही सीनेट जाते हैं, जहाँ से वे राष्ट्रपति की स्वीकृति के हेतु भेजे जाते हैं। ष-मन्त्री वर्ष के आय-व्यय का लेखा तैयार करके सभा के मने उपस्थित करता है। साथ ही अगले वर्ष का अनुमान-क भी वही तैयार करता है। धन-प्राप्ति का कार्य साधन-मिति ((Committee of Ways and Means) के द्वारा ता है। इस कमेटी में प्रायः १६ सदस्य होते हैं और प्रमुख ा का नेता ही उस कमेटी का सभापति होता है। कभी-ी आर्थिक प्रश्न पर सभा और सीनेट के बीच संघर्ष की नौबत आ जाती है। गति-अवरोध भी कभी-कभी पैदा हो जाया ते हैं, परन्तु सुलझ भी आसानी से जाते हैं। ऐसे अवसरों प्रत्येक सभा के तीन सदस्यों की एक कान्फरेंस बना दी जाती जिसके द्वारा समझौता हो जाया करता है।

अमेरिका का शासन लगभग १५० वर्ष से भी अधिक समय सफलतापूर्वक चल रहा है। यह उसकी अपनी अनुपम षता है। राष्ट्रपति के महान् शक्तिशाली होते हुए भी उसकी क्तियों के दुरुपयोग की कोई शिकायत नहीं सुनी जाती और स्त राष्ट्र का शासन अमेरिका के करोड़ों निवासियों की उन्नति समृद्धि का कारण बना हुआ है। अमेरिका की प्रतिनिधि-ा राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्रीय प्रेम-सूत्र में बाँधती है तो वहाँ की सीनेट भिन्न-भिन्न राज्यों के अपने-अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की भी रक्षा करती है। प्रत्येक नागरिक के अपने अधिकार वैधानिक रूप से सदैव सुरक्षित हैं। कोई अमेरिकन अवैधानिक रूप से मनमाने तौर पर बन्दी नहीं बनाया जा सकता है और बन्दी बनाए जाने की दशा में उसको अधिकार है कि वह अपने आपको न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित किए जाने की माँग कर सके। न्याय पञ्चों-द्वारा होने से भी अमेरिकन नागरिकों की स्वाधीनता का अपहरण शासन को असम्भव ही है। किसी अमेरिका-निवासी को सरदारी या जागीरदारी का खिताब प्रदान नहीं किया जा सकता और न जाति अथवा धर्म-विशेष के कारण किसी नागरिक को किसी असुविधा का सामना करना पड़ता है। एक राज्य के हितों के विरुद्ध दूसरे को कोई विशेष आर्थिक अथवा धार्मिक सुविधा नहीं दी जाती और न राज्यों की सीमा अथवा शक्ति का केन्द्रीय सरकार-द्वारा अपहरण किए जाने का ही प्रयत्न किया जाता है। शासन-विधान यद्यपि कठोर (Rigid) है तथापि व्यावहारिक दृष्टि से आवश्यकता होने पर विधान में परिवर्तन करने में चतुर अमेरिकन निवासी हिचकिचाते भी नहीं हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, प्रारम्भ में राष्ट्रपति के चुनाव का तरीका जो बनाया गया था उसमें अनेक झञ्झटें थीं। अब उसका चुनाव सीधा जनता-द्वारा किए जाने की प्रथा डाल दी गई है। इसी प्रकार यद्यपि एक ही व्यक्ति को अनेक बार चुनने की प्रथा के पक्ष में अमेरिकन जनता नहीं है फिर भी राष्ट्रपति रूजवेल्ट को ४ बार लगातार सभापति चुनते रहने में भी वहाँ की जनता को कोई आपत्ति नहीं हुई। अमेरिकन अत्यन्त कार्यदक्ष तथा व्यवहार-कुशल व्यक्ति हैं और यही कारण है कि जब प्रायः सारे विश्व में एकच्छत्र सम्राटों की तानाशाही का बोलबाला था, उन्होंने नागरिक तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का जाज्वल्यमान प्रकाश-स्तम्भ स्थापित कर संसार की पददलित जनता को स्वाधीनता-प्राप्ति के हेतु प्रेरित किया। आज यद्यपि अमेरिका एक पूँजीवादी राष्ट्र है, पर हम देख रहे हैं कि अपनी व्यवहार-कुशलता के कारण विश्व में वह निरन्तर शक्ति तथा सम्मान प्राप्त करता चला जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या

श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा

(१)

शिववीरसिंह अभी ऑफिस से लौटे ही थे कि एक बेहरा ने आकर हाथ में पुर्जा दिया। पुर्जा था मिस्टर मेहता का। चाय के लिए बुलावा था।

मिस्टर मेहता का बैठक-खाना नए फैशन से सुसज्जित था। फर्श पर मोटी बहुरङ्गी कालीन, दीवार पर विलायती तस्वीरें, रेडियो, पियानो, गोद का कुत्ता और दो-चार चलती किताबें। शिववीर ने सलज्ज भाव से कहा—क्षमा कीजिएगा। नवागत की हैसियत से मुझे स्वयं कई दिन पहले ही हाजिर होना चाहिए था। पर ये तबादले भी क्या चीज हैं, जैसे एक लोक से मृत्यु, दूसरे लोक में जन्म।

मिसेज विनोदा मेहता शिववीर को ध्यान से देख रही थीं। मुसकराकर बोलीं—आपस में इतनी रीति-नीति क्या? आपकी इस कानूनदारी में तो मैं ही मुजरिम निकलूँगी।

मिस्टर मेहता ने हँसते-हँसते इसी बीच में कहा—मुजरिम तो मैं भी हूँ। देखा आप लजा रहे थे तो मैंने खुद बुला भेजा। आपको यह जगह कैसी लगती है?

शिववीर—जगह तो बड़ी अच्छी है लेकिन पटने की तरह गुलजार नहीं। छोटा नागपुर की बोली भी अभी मेरी समझ में नहीं आती।

विनोदा—आपको किसी बात की तकलीफ तो नहीं है?

"जी नहीं; धीरे-धीरे सब ठीक हो रहा है।"

"कहने में सङ्कोच न कीजिएगा। अपना ही घर समझिए।"

(२)

विगत-यौवना विनोदा की अवस्था थी उस पथिक की जो अन्दाज से पहले सूर्य डूबते देख लम्बे-लम्बे कदम बढ़ाता है। विनोदा अपने समय की परम सुन्दरी थीं। नई रोशनी की शिक्षा थी, कुसुम में विकास था, विलास की उत्तेजना थी, और उसकी पूर्ति के सारे सरञ्जाम। समाज में विनोदा होतीं ध्रुव-तारा, क्लब में विद्युत्-शक्ति। शक्ति में उन्माद है, वह चाहे रूप का हो, रुपए का हो, पराक्रम का हो। शक्ति चली जाने के बाद भी उन्माद बना रहता है। विनोदा की उम्र तीस-पैंतीस के लगभग हो आई थी। कुसुम वही था, पर पराग न था। पङ्खड़ियाँ वे ही थीं, पर रङ्गों की पुकार न थी। आँखें वे ही थीं, पर उनमें जुल्म के बदले प्रार्थना थी। शरीर कुछ मोटा हो गया था; सूर्य ढल जाने का चिह्न छिपाना मुश्किल था। पर उन्माद और तृष्णा कम होने के बदले बढ़ती जाती है। समय के निर्मम ध्वंस की मरम्मत कर्म में विनोदा निरन्तर निरत रहतीं। कभी-कभी बड़ी देर तक दर्शकों को भ्रान्ति भी देतीं।

(३)

एक दिन मिस्टर मेहता विनोदा के साथ शिववीर शाम को आए और बोले—"हम लोग घूमने जा रहे हैं, चलिए न।"

श्रीमतीजी कीमती साड़ी पहने थीं जो रसिया के साथ गङ्गा-यमुना की तरह घुल-मिल रही थी। चेहरे पाउडर था, कपड़ों से विलायती 'सेंट' की सुगन्ध आ रही पैरों में ऊँची एँड़ी के जूते और हाथ से झूलता हुआ सुन्दर 'हैंड-बेग'।

शहर से निकलते ही साल-वन मिलता है। के बीच सुरम की लाल सड़क घूमती इठलाती चली थी। वसन्त ने अभी-अभी राज-गद्दी पाई थी। लाल फूल, गलगली के पीले पुष्प, कुसुम की लाल हरी पत्तियाँ, मानो राज्याभिषेक की घोषणा हो रही हो। ने कहा—दृश्य कैसा सुहावना है। जितनी बार इधर हूँ, हर दिन नई शोभा दीखती है। आपको कैसा लगता

शिववीर—सचमुच बड़ी ही अपूर्व शोभा है। तो गङ्गा का किनारा छोड़ और कुछ भी नहीं। जाओ, रोज वहीं से वापस आओ। मुझे तो यह माया मोहित कर देता है।

विनोदा—मुझे बड़ी खुशी हुई कि मेरा मत आपसे मिलता है। मिस्टर मेहता का तो प्राकृतिक दृश्यों कोई आग्रह ही नहीं। आते हैं तो मानो पकड़कर हों। इनका जीवन-केन्द्र है 'ऑफिस-फाइल'।

शिववीर के घर की ओर विनोदा के बँगले का पड़ता था। एक दिन शिववीर ने देखा, विनोदा बरामदे में खड़ी केश की लटें सुलझा रही थीं। इधर देख भी लेती थीं। ठीक इसी समय बिब्बो 'आया' को ठेल रही थी। बिब्बो पुतले की तरह गोल-गाल, गोरी थी। नीली आँखें, भूरे केश, बड़ा था। शिववीर ने उठाकर उसे चूमा। डेढ़ साल थी। बच्चे दोस्त-दुश्मन झट पहचान लेते हैं। की गोद में बिना झिझक के आ जाया करती थी आँखों की ओर विश्वासपूर्ण नेत्रों से देखती। कुछ देर बिब्बो को खिलाते रहे। उसके बाद विनोदा ने आज ही—बेबी के सुमल का समय हो गया; उसे

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह प्रायः प्रतिदिन पिछवाड़े के बरामदे में श्रीमतीजी लटें उलझ जाया करतीं।

विनोदा के यहाँ शिववीर को चाय का निमन्त्रण रोज रहता था। बगल में ही घर था, शिववीर अकेले थे भी, फिस से लौटकर मिस्टर मेहता के यहाँ चले जाया करते। ज 'ब्रिजपार्टी' जमती। विनोदा ताश खेलने में निपुण थीं। ई अपनी बराबरी के अफसर आया करते थे। खाना-पीना लता। आमोद-प्रमोद की धारा बहती। शिववीर को ी पार्टियों में सम्मिलित होना पड़ता था। मिस्टर मेहता र में बहुत बड़े थे, उनका सस्नेह आग्रह टालना मुशकिल था। र श्रीमती जी तो 'ना' कबूल करने पर तैयार ही न होतीं। हतीं—आप हमारे घर के आदमी हैं, इस नाते तो पार्टी पकी ही है। आप ही न रहेंगे तो 'होस्ट' की 'गैरहाजिरी' जाएगी।

एक दिन 'पिकनिक' का बन्दोबस्त हुआ। शहर से तीस ल दूर एक विख्यात जल-प्रपात है। सुन्दर सघन साल वन सुवर्णरेखा नदी बड़े-बड़े पत्थरों और चट्टानों की रुकावट से कराकर, जान पर खेलकर, दो सौ फुट कूद गई है। नाश्ता-य के साथ-साथ मिस्टर मेहता और शिववीर बातें कर रहे ऐसा जल-प्रपात किसी और देश में होता तो इससे बिजली काली जाती और यहाँ आने की कितनी सुविधाएँ, कितने ोमन बनाए जाते। शिववीर योरप और अमेरिका में कई रहकर अभी हाल ही में लौटे थे। वे उन देशों के उदाहरण रहे थे। उन्हें मार्मिक दुःख था कि हमारा देश केवल क्षा और हृदयहीनता के कारण इस पतित अवस्था में पड़ा ा है। विनोदा इसी बीच में बोल उठीं—"आप शादी करेंगे, मिस्टर सिंह?"

शिववीर अपनी भाव-धारा से चौंक उठे। अन्यमनस्क बोले—"कैसे कहूँ, इस ओर तो अभी विचार ही नहीं दिया।"

विनोदा—आपको कैसी 'ब्राइड' चाहिए? कहिए, मैं ढूँढ़ दूँ।

शिववीर मुसकराकर चुप रह गए। मिस्टर मेहता भी कराए।

(४)

मिस्टर मेहता प्रायः कई दिन के लिए दौरे पर चले जाया ते थे। उन दिनों भी विनोदा आ जातीं और बाहर से तीं—मिस्टर सिंह, अगर तैयार हों तो टहलने चलिए। ववीर कभी जाते, कभी क्षमा-प्रार्थना कर लेते। पर विनोदा ने जाने के पहले रोज एक बार इधर से जरूर होकर ीं—रोज नई मतवाली साड़ी पहने, नई तरह से सजी। ने का भी निमन्त्रण रोज ही रहता था। कभी-कभी कहते—प इतनी तकलीफ क्यों करती हैं? कृतज्ञता का भार सम्हालने भर ही रहने दीजिए।" पर विनोदा का आतिथ्य अथाह था। कितने आनन्द से विविध प्रकार के व्यञ्जन बनातीं। खाना खाने के बाद कुछ देर बैठकखाने में बैठ सामाजिक विषयों पर वार्तालाप होता। समाज-सुधार के लिए श्रीमतीजी को असीम उत्साह था। शिववीर भी सामाजिक कुरीतियों के बड़े विरोधी थे।

एक दिन चार बजे शाम को शिववीर विनोदा के घर चाय पीने गए तो बैठकखाने में एक सुन्दर तरुणी को चुपचाप सोफा पर बैठा देखा। उम्र सत्रह वर्ष की होगी, धप-धप गोरी। सादा पहरावा था पर उस सादगी में कितनी सुन्दरता थी, कितनी पवित्र सरलता, कितना भोलापन! मूर्ति-सी मूक बैठी ऐसी लगती थी जैसे वन-देवी रास्ता भूलकर चली आई हो। विनोदा ने परिचय कराया, आप मोहनी देवी हैं, डाक्टर शिवदयाल की 'वाइफ'। मोहनी देवी की आँख लज्जा से उठती न थी, पर धीरे-धीरे मधुर भाषण में प्रारम्भिक सङ्कोच मिट गया।

पता नहीं क्यों, पर और दिनों की तरह विनोदा की सहृदयता आज उछलती नजर नहीं आई।

(५)

थोड़ी रात बीती थी। शिववीर खाना खाकर लेटे हुए थे। श्रीमती विनोदा के 'बेहरा' ने आकर सलाम किया और कहा—"हुजूर को मेम साहब सलाम दिया है।"

शिववीर ने घबड़ाकर पूछा—"क्या बात है? सब ठीक तो है?"

"जी हाँ, कोई खास बात तो नहीं है।"

"मेम साहब ने कुछ कहा नहीं, किसलिए? बिब्बो अच्छी है न?"

"जी हाँ, मिंसी बाबा तो अच्छा है, सो रहा है।"

"अच्छा, कह दो मैं आता हूँ।"

शिववीर ने जल्दी से कपड़े बदले और सशङ्क भाव से चले। बेहरा ने कहा था कोई खास बात नहीं है, पर इन्हें किसी सङ्कट का आभास हो रहा था। हो सकता है बिब्बो बीमार हो।

प्रकृति अभी सोई न थी पर अँगड़ाई लेने लगी थी। बाहर सड़क पर सन्नाटा हो गया था, सिर्फ एक-दो रिक्शे कभी-कभी गुजर जाया करते थे। मायावी ज्योत्स्ना चतुर्दिक् छिटकी हुई थी। विनोदा के हाते में पहुँचे तो देखा बाग में पक्के चबूतरे पर दो कुर्सियाँ लगी हैं; एक पर श्रीमती जी स्वयं बैठी हैं, दूसरी खाली है। शिववीर ने पहुँचते ही खड़े-खड़े नमस्ते करने के बाद पूछा—

"सब कुशल है तो? बिब्बो कहा है?"

विनोदा—जी हाँ, सब कुशल ही है। बिब्बो की याद कैसे आ गई?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिववीर—नहीं, यों ही। उसे दो-तीन दिन से देखा नहीं। आपने इस समय बुलाया तो आशङ्का-सी हुई, उसकी तबियत खराब तो नहीं है। क्षमा कीजिएगा।

विनोदा—बिब्बो आपसे तो इतनी सटी रहती है, आपको देखकर कितनी खुश होती है, पर आपको उसकी क्या परवा? वह बेचारी नहीं जानती कि पुरुष के हृदय से उसका वास्ता पड़ा है। खैर बैठिए।

शिववीर कुछ चिन्तामग्न हुए। अन्यमनस्क भाव से कुर्सी खींचकर धीरे से बैठ गए। बिब्बो का सुन्दर पुतला-सा चेहरा याद आया। यह भी याद आया कि बिब्बो को ये कितना प्यार करते हैं। विनोदा की बात इसलिए इन्हें दिल्लगी-सी लगी। पर उनकी उलझन सुलझी नहीं। आखिर विनोदा ने इस दिल्लगी के लिए तो इतनी रात को नहीं बुलाया होगा। कोई विशेष प्रयोजन तो अवश्य ही होगा। फिर भी उसी वार्तालाप के स्रोत में बोले—पर इसका आधार या पोषक तो मुझे किसी ग्रन्थ में नहीं मिला कि स्त्रियों का हृदय विशेष रूप से कोमल है।

विनोदा—आप लोग तो नीरस ग्रन्थों के आधार पर ही चलते हैं। ग्रन्थों के लिखनेवाले अधिकतर पुरुष ही हैं। एक तो पक्षपात, दूसरा अज्ञान। मर्द को स्त्री-हृदय के विषय में उतना ही ज्ञान है जितना समुद्र पर चलनेवाले मस्त जहाज को समुद्र के गम्भीर खोह के रहस्य का। देखिए, चाँदनी कितनी अद्भुत, कितनी अपूर्व है!

शिववीर—जी हाँ, बड़ा रहस्यमय दृश्य है।

विनोदा—स्त्रियाँ इसी ज्योत्स्ना की तरह सरस—कोमल—होती हैं।

शिववीर—हाँ, पर मायावती, उन्मादिका, असत्य को सत्य बनानेवाली, विभ्रान्त यात्री को और भी भुलानेवाली!

यह कह वे एक क्षण रुक गए। उन्हें ऐसा लगा जैसे वे ही विभ्रान्त यात्री हों, जैसे अज्ञात अथाह नदी के किनारे उनके पैर फिसले जा रहे हों। पर अपने को झट सँभाल लिया और बोले—बेहरा ने कहा, आपने किसी जरूरी काम से बुलाया था। कहिए, क्या आज्ञा है।

विनोदा—कुछ नहीं, यों ही बैठी थी, सोचा आप सोए न होंगे, अभी-अभी तो शाम हुई है। बेहरा को कहा था, देख आओ साहब क्या कर रहे हैं, उसने नासमझी से आपको उठाकर कष्ट दिया। क्षमा कीजिए।

शिववीर—जी नहीं, कष्ट की तो कोई बात नहीं। मैं यों ही लेटा हुआ कुछ पढ़ रहा था। अभी सो क्या जाता?

विस्तृत उपवन में विनोदा, शिववीर और ज्योत्स्ना के सिवा और कोई न था। पुष्पों की सुगन्ध धीमी वासन्ती हवा के साथ प्रेमालिङ्गन किए दबे-पाँव आती और चली जाती। चाँद की चञ्चल रश्मियाँ विनोदा की जरी की साड़ी पर प्रेम-क्रीड़ा कर रही थीं और हीरे के झुमके से सावन के झूले झू रही थीं। विनोदा को शिववीर ने इतनी रूपसी कभी न था। इनकी चेतना एक अपरिचित पर कोमल कि जगत् में भ्रमण करने लगी। समझ में न आ रहा था तरह के अस्पष्ट भाव इनके मन में क्यों आ रहे हैं। के साथ इनका जो सम्बन्ध था उसमें इस तरह के उत्पत्ति या प्रवेश दो में किसी तरफ से भी सम्भव न था नरक एक चीज है, माया दूसरी चीज। माया ने आक्रमण करना चाहा। शिववीर घबड़ाकर उठ और बोले—आज्ञा दीजिए तो अब चलूँ।

विनोदा—जी हाँ, जाइए। आज्ञा की क्या ज बिब्बो से तो आप जरा-सा ही बड़े हैं, अभी तक आ नींद ले उठना चाहिए था।

शिववीर—जी नहीं, अभी नींद नहीं आ रही है, हुई, जाना तो चाहिए ही।

विनोदा अपनी अस्थिर आँखों को शिववीर की व्यंग्य-भरे गाम्भीर्य के साथ कहने लगीं—जब आप सुभद्रा बैठते हैं तो शायद बारह बजे रात तक दिन ही रहता है आँखों से कोई बात छिपी नहीं रहती। बड़ी बुरी आदि

शिववीर—हाँ, वहाँ देर तो हो जाया करती है। की माँ बिना खिलाए आने नहीं देतीं और महादेव गप्पकी धारा चलती है तो रुकने की नहीं।

विनोदा—और सुभद्रा के चन्द्रमुख और मृगनयनों घड़ी में काँटा आगे बढ़ने के बदले पीछे हटता है। आपकी असली लाचारी है।

शिववीर के मर्मस्थल में जैसे ठोकर लगी। सुभद्रा चिर-परिचित मित्र महादेव बाबू की युवती कन्या थी सामने बढ़कर सयानी हुई थी। इनकी कल्पना के था कि कोई उस बेचारी बालिका के साथ इनका प्रेम समझ सकेगा। आश्चर्य और दुःख से चुप रह गए शब्द भी मुँह से नहीं निकला। विनोदा ने समझा निशाने पर लगा है। उत्साहित हो एक और तीर बोलीं—और हाँ, मोहनी देवी को तो मैं भूल ही पर वहाँ भी जाने की फुर्सत आपको कम ही मिलती है

(६)

इस घटना के कुछ दिनों के बाद एक बार नौ बजे रात विनोदा के बेहरा ने आकर कहा—"मेम साहब दिया है।" शिववीर लेटे हुए थे। इतनी रात को हुई। पिछली बार की बातें याद आईं। वह चित्र मानस-पट पर जाग्रत् हो उठा। बात भारी लगता था। कभी उठने को जी चाहता, फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह जाते। आखिर जवाब दिया—"मेम साहब से कह दो, मैं गया हूँ।"

रविवार का दिन था। शनिवार को दोपहर मिस्टर हता दौरे पर निकल गए थे। सुबह ही विनोदा का बेहरा आया और मेम साहब का सलाम लाया। शिववीर ने जाकर खा, विनोदा बरामदे में बैठी उदास और घबड़ाई-सी हैं। छने पर बतलाया कि कल रात को उनके दरवाजे पर चोरों ने का मारा था। डर के मारे उनके प्राण अभी तक सूखे हुए । सारी रात जागकर बिताई है। शिववीर ने कहा—"मैं नौकरों को अपने यहाँ से भेज दूँगा, वे रात भर पहरा देंगे।"

विनोदा बोलीं—नौकरों पर मुझे विश्वास नहीं है। खास र यह है कि मिस्टर मेहता अपनी तनख्वाह के सारे रुपए मेरे ास छोड़ गए हैं, बैंक में डालने को। आज रविवार है और कर लोग जानते हैं कि मेरे पास रुपए हैं।

शिववीर—तब मैं पुलिस में खबर दे दूँ। सिपाही आकर हरा देंगे। जब विनोदा बड़ी देर तक कुछ न बोलीं तब ववीर ने कहा—तो जैसा कहिए, वैसा किया जाए।

विनोदा ने कुछ देर तक सोचकर कहा—कहते तो भारी गता है पर इस सङ्कट में और किससे कहूँ भी? अगर आप नुचित न समझें और आपको कोई तकलीफ न हो तो...

विनोदा को बीच ही में चुप देखकर शिववीर ने कहा—हिए न, रुक क्यों गईं?

विनोदा—अगर आप बाहर आफिस के कमरे में आज रात सो जाते तो किसी चोर का साहस न पड़ता...

विनोदा का भय और लाचारी देख शिववीर का हृदय हानुभूति से प्लावित हो उठा। यथोचित सहायता करना तो नका कर्तव्य था ही, पर यह सोने का सवाल उन्हें अजीब-सा गा। फिर भी इसके बिना काम चलते दीखता न था। ोई फैसला न कर सके। इनकी उलझन देख विनोदा लीं—"यदि सम्भव न हो तो रहने दीजिए। परमात्मा का रोसा है।"

शिववीर ने झट जवाब दिया—"जी नहीं, सम्भव क्यों हीं है?"

रात को शिववीर करीब दस बजे खाना खाकर विनोदा के र गए। विनोदा बरामदे में बैठी इनकी राह देख रही थीं। र में जाकर शिववीर ने देखा कि आफिस के कमरे में इनका स्तर न बिछकर विनोदा के शयनागार के बगलवाले कमरे में छा है। इन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ, झिझक भी हुई, पूछते या कुछ कहते भारी लगा। विनोदा ने भी स्वयं कुछ कहा। शिववीर ने सोचा, कोई असुविधा हुई होगी इसी लिए ही बिस्तर बिछाया गया। विनोदा बिस्तर के पास कुर्सी बैठ गईं। कुछ क्षण के बाद बोलीं—मैं आपकी बड़ी भारिणी हूँ जो मुझे आपने इतनी दया के योग्य समझा। मैं तो समझे थी आप मुझे बिलकुल भूल गए। आपके हृदय में मुझे जगह पाने की कोई आशा न थी। अब मुझे चोरों का कोई डर नहीं। शायद आज भी न सो सकूँगी, पर डर से नहीं, आनन्द से।

शिववीर को विनोदा के कथन में आधिक्य का अनुभव हुआ। इस छोटे-से कर्तव्य पालन के लिए इतनी कृतज्ञता दिखाना तो विद्रूप करना हुआ। सोचा, बेचारी का चित्त डर से डाँवाडोल हो गया है। बोले—जी नहीं, इसमें कृतज्ञता की क्या बात है? यह तो साधारण कर्तव्य है।

विनोदा बड़ी देर तक बैठी रहीं। शिववीर उनकी बातों का अन्यमनस्क-से हो "हाँ-ना" जवाब देते जाते थे। पर जब शिववीर की आँखें झपकने लगीं तो विनोदा उठीं और सरहाने ग्लास में पानी रख और यह पूछकर कि और किसी चीज की जरूरत तो नहीं है, अपने शयनागार में चली गईं। दोनों कमरों के बीच एक किवाड़ था जिसे बन्द करने का प्रबन्ध विनोदा के कमरे से ही था। विनोदा ने इस किवाड़ को बन्द नहीं किया, आधा खुला छोड़ सोने चली गईं। शिववीर यह देख सङ्कोच में पड़े पर आँखें भारी हो आई थीं, झट नींद आ गई।

आधी रात बीत चुकी थी। शिववीर गाढ़ी नींद में निमग्न थे। अचानक जोर से दरवाजा खुलने की आवाज कानों में आई। धड़फड़ाकर उठ बैठे। आँखें खोल देखते क्या हैं कि बिजली की रोशनी जलने लगी है और विनोदा काँपती हुई खड़ी हैं। घबड़ाकर शिववीर ने पूछा—क्या बात है? किसने दरवाजा खटखटाया?

विनोदा ने लड़खड़ाती जबान से जल्दी-जल्दी कहा—मेरी खिड़की पर कोई जोर-जोर से धक्का लगा रहा था। अब तोड़ा, अब तोड़ा, अब तोड़ा का हाल था। कान बहरे हो रहे थे किसी तरह जान बचाकर यहाँ तक आई हूँ। आह परमात्मा भाग्य में क्या लिखा है?

शिववीर कुछ न बोले। झट कपड़े सँभाल, टार्च और भरी बन्दूक ले, किवाड़ खोलकर बाहर निकल गए। पहरेदारों को आवाज दी। उन्होंने अहाते की पूरी-पूरी जाँच की, पर चोर का कोई चिह्न न मिला। एक नौकर, जिसका पहरा विनोदा की खिड़की के पास ही था, बोला—"नहीं हजूर, इधर कोई नहीं आया। आवाज तो भीतर से आई थी। चोर कल भी कोई न था पर आज हम लोग और भी सचेत थे।"

और नौकरों ने भी यही कहा। वे कौतूहल से उल्टे शिववीर के मुँह की ओर देख रहे थे, मानों उन्हीं से पूछ रहे हों कि बात क्या है।

शिववीर को इस परिस्थिति में विचित्र रहस्य मालूम होने लगा। खड़े सोचने लगे, किसका विश्वास किया जाए, किसको झूठा कहा जाए? विनोदा ने लगातार दो रात चोरों को धक्का देते पाया। कितनी डर गई हैं, यह उनकी मानसिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक अवस्था से पता चलता है। पर ये लोग कहते हैं, किसी दिन कोई न था। यह अजीब समस्या है। हो सकता है, श्रीमतीजी को दुःस्वप्न हुआ हो। पर एक ही तरह का दुःस्वप्न क्या रोज हुआ करता है? और आज तो विशेष कर कोई कारण न था जब इतने प्रबन्ध किए गए हैं। तो क्या जो शब्द हुए थे वे भीतर के किवाड़ या खिड़की से आए थे? क्या श्रीमती जी ने जोर-जोर से दरवाजा खटखटाकर स्वयं यह आवाज की थी? क्यों?

फिर शिववीर को विनोदा की कृतज्ञता की अत्युक्ति याद आई। वे टूटे पागलों के शब्द न थे बल्कि चुने-चुने कौशलपूर्ण वाक्य थे और कुशलता से कहे हुए। जाकर खिड़की की जाँच की। चोट का कोई चिह्न न था। विनोदा के व्यवहार में उन्हें अब गूढ़ भेद मालूम होने लगा। पर भेद क्या है, इसका ओर-छोर शिववीर को कुछ न मिला। मन के कोने से एक-आध जवान सर उठाता तो उसे ये अनर्गल समझ झट दबा देते।

भीतर आए तो देखा, उनके बिस्तरे के पास कुर्सी पर श्रीमतीजी गम्भीर और चिन्ता-मग्न बैठी हैं। यहाँ तक कि जब शिववीर घुसे तो इनकी ओर आँखें उठाकर देखा भी नहीं और न कुछ पूछा। विनोदा का मुखमण्डल अपरिचित भाषा बोल रहा था। यत्न करने पर केवल दो-एक शब्द पढ़े जा सकते थे, जिनका अर्थ था चिन्ता, निराशा, उद्विग्नता। क्रोध सबसे प्रत्यक्ष था, कभी-कभी विनोदा के होंठ काँप उठते थे। पर किस पर क्रोध और क्यों? शिववीर की उलझन और भी घनी हुई। कुछ देर के बाद उन्होंने अपने निष्फल तदन्त का वृत्तान्त सुनाया पर विनोदा के नेत्र जमीन में गड़े रहे, वे कुछ न बोलीं।

कुछ देर प्रतीक्षा कर शिववीर ने फिर कहा—आप ठण्डे पानी से मुँह-हाथ धो लें तब स्वप्न न होगा। जाकर सो रहिए, बड़ी देर से जगी हैं।

विनोदा—आप सो जाइए। आपको अगर आपत्ति न हो तो मैं यहीं बैठी रहूँगी। उस कमरे में अब मुझसे जाते न बनेगा।

शिववीर—आखिर आप डरती किससे हैं? बताइए भी। भूत से!

विनोदा—जब मेरी विपत्ति आपको असत्य मालूम हो रही है तो उसे भूत कहिए या चोर कहिए या मुझी को पागल कहिए।

शिववीर चुप रहे। कई क्षण के बाद विनोदा ने फिर कहा—"आपको इतना कष्ट दिया, इसके लिए बड़ा पछतावा है। क्षमा माँगती हूँ। और क्या कर सकती हूँ! पर मेरे बैठने से आपको तकलीफ हो रही हो तो कहिए मैं चली जाऊँ। जब इतनी यन्त्रणा सह ही रही हूँ तो यह भी सह लूँगी।"

शिववीर को श्रीमती की बातें पहेली पर पहेली मालूम हो रही थीं। रहस्य जकड़ता ही जा रहा था। घबड़ाकर बोले—"जी नहीं, मुझे तकलीफ क्या है!"

शिववीर बड़े असमञ्जस में पड़े। कुछ देर नींद भी लेटे रहे। श्रीमतीजी बैठी रहें और ये सो जाएँ यह भद्दा लगता था। पर धीरे-धीरे निद्रा ने आधिपत्य लाख प्रयत्न करने पर भी आँखें झपकने लगीं। कब इसका उन्हें पता नहीं। और न यही पता है कि कब तक बैठी थीं और कब उठकर चली गईं। सुबह उठने यही देखा कि श्रीमतीजी के और अपने कमरे के बीच का उस पार से बन्द है। विनोदा अपने कमरे में सो उठकर कुछ देर बैठे कि विनोदा उठें तो उनसे मिल जाएँ। पर श्रीमती के उठने का कोई चिह्न न था।

(७)

पता नहीं क्यों पर उपर्युक्त घटना के बाद से ही विनोदा का रुख बदला-सा दीखने लगा। वे अब इतने मि नहीं देतीं, आती जाती भी कम हैं। वे उद्गार आ हैं, वह हृदय नहीं है। मिस्टर मेहता में कोई फर वे समतल की नदी पहले भी थे, अब भी हैं। उधर बाबू के घर सुभद्रा की माँ में विशेष परिवर्तन मालूम होत पहले का लबलबाता स्नेह कटे हुए बाँध की तरह मानो बह गया। सुभद्रा अब शिववीर से परदा करने मोहनी देवी भी ऐसा बर्ताव करने लगीं जैसे कड़वी रही हों। यह चतुर्दिक कायापलट देख शिववीर को आश्चर्य और दुःख होता। पर किससे कहते, किससे पूछें

एक और नई बात जो देखी गई वह यह कि सु माँ के साथ विनोदा ने इन कई दिनों में ही अपार कर ली है। श्रीमतीजी बड़े अफसर की स्त्री हैं। सीढ़ियों का भेद-भाव वे इतनी कट्टरता से मानती हैं जैसे ब्राह्मण जाति का भेद मानता है। ब्राह्मण कभी चूक कभी नर्मी भी कर दे, पर श्रीमतीजी को सामाजिक में लोगों ने हिमालय पाया है। अपने से छोटे ओहदे साथ वे भूलकर भी नहीं मिलतीं। पर पता नहीं, गया है कि आजकल जब देखो श्रीमतीजी सुभद्रा घर बैठी रहती हैं। चिट्ठी-पत्री भी होती है। और माँ का निहाल हो जाना तो प्राकृतिक था। दोनों के घर भी प्रायः जातीं।

(८)

कई महीने के बाद शिववीर का यहाँ से तबादला डाक्टर शिवदयाल उनकी मोटर में साथ गए, छुट्टी ले, रास्ते की विख्यात प्राकृतिक शोभा देखने बातोंबात कायापलट के कारण का पता लगा। सुभद्रा की माँ के चरित्र की बड़ी निन्दा की, शिवदयाल कहने लगे। कहती थीं—"सुनती तो

CC-0. In Public Domain. Bhrukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी पर जब अपनी आँखों देखा शिववीरसिंह की चरित्रहीनता उदाहरण, तब आपसे कहने आई हूँ। फिर भी न कहती—ई नरक जाए, कोई किसी की इज्जत बिगाड़े, हमसे क्या लब? हम अच्छे तो संसार अच्छा—पर जब बेचारी सुभद्रा समेटकर बाजार में काना-फूसी होने लगी तब मेरा बदन हर उठा।" सुभद्रा की माँ को तो आप जानते हैं, पुराने याल की औरत हैं। पुरुष-स्त्री के साधारण सामाजिक संयोग भी उन्हें भय लगा रहता है जैसे कलकत्ते के बाबू को हर ड़ी में बाघ बैठा नजर आता है। दोनों ने फिर मिलकर ी स्त्री को कड़ी चेतावनी दी। मैं जानता था कि मिस्टर ुता के घर से आपका कोई मनमुटाव हो गया है इसी का ला विनोदा ले रही हैं, झूठी-गन्दी शिकायतें फैलाकर। करता क्या? मेरा स्थान महादेव बाबू की पंक्ति में है। तो आपका बड़प्पन है कि हम जैसों से मिलते-जुलते हैं, पर ाज में मुझे महादेव बाबू के साथ रहना है, आपके साथ ीं। सुभद्रा की माँ के आदेशों की उपेक्षा हम लोग कैसे ते! अन्याय जानते हुए भी हमें सिर झुकाना पड़ा। मोहनी आप पर असीम विश्वास है। वह इस झूठी लाञ्छना और लसाजी पर बड़ी क्रुद्ध होती और गन्दे इल्जामों को छिन्न-भिन्न देने का प्रण करती। पर अवस्था-ज्ञान के सामने उसके सूने इस तरह कायल हो जाते जैसे 'रिङ्गमास्टर' के कोड़े के सने बलवान् जङ्गली जन्तु।

(६)

शिववीर को नई जगह आए एक वर्ष हो गया। एक न बक्स के कपड़े ठीक करते-करते कोट की जेब से एक रसीद कली। रसीद विनोदा के नाम थी। याद आया, इन्हें ब ले विनोदा बाजार गई थीं 'बिल' चुकाने। वे मोटर में ी रही थीं और शिववीर रुपए दे रसीद लाए थे। रसीद की जेब में ही रह गई थी। इसे एक लिफाफे में बन्द कर चार लाइन की चिट्ठी लिख विनोदा के नाम भेज दी। द कोई इतनी जरूरी चीज न थी, खास कर एक वर्ष के , फिर भी शिववीरसिंह ने खास तौर से चिट्ठी लिख विनोदा के पास क्यों भेजा, इसका रहस्य तो ावैज्ञानिक ही जानें। खैर, तीसरे दिन जवाब आया। ी चिट्ठी थी, हृदयोद्गार से भरी। विधाता को धन्यवाद आनन्द की चरम-सीमा थी। अन्त में लिखा था—"यह द नहीं है, मेरे भाग्य का चिट्ठा है जिसने आपको मेरी याद दिलाई, आपसे चिट्ठी लिखवाई"। बुलावा भी था। लिखा था—"आप एक बार यहाँ अवश्य आइए, मेरे यहाँ ठहरिए। मुझसे जिस तरह हो सकेगा, आपकी सेवा करूँगी।"

संयोग से ऐसा हुआ भी कि कुछ दिनों के बाद ही शिववीर को सरकारी काम से वहाँ जाना पड़ा। मिस्टर मेहता के यहाँ ठहरे। मिस्टर मेहता दौरे पर गए थे पर विनोदा ने बड़े आदर भाव से सत्कार किया। क्या खिलाएँ, क्या पिलाएँ, कहाँ बैठाएँ इसी में सारा दिन व्यस्त रहीं। जितना समय इससे बचता वह शिववीर के पास बैठ बातें करने में बितातीं। आँखों में मधुरता थी, स्नेह था, ठीक वही भाव थे जो शिववीर ने 'चोर-परिच्छेद' तक देखे थे। श्रीमती के मुखड़े से आनन्द की बूँदें टपक रही थीं। इन्हें देख शिववीर यही सोच रहे थे कि क्या ये वही श्रीमती विनोदा हैं जिन्होंने मुझ निर्दोष पर ऐसे गन्दे आक्षेप लगाए थे! सन्ध्या समय खाने के लिए सुभद्रा की माँ को, सुभद्रा को और मोहनी देवी को बुलाया गया। सुनी पर विश्वास न करतीं, पर इन लोगों ने आँखों देखा, श्रीमती जी अपूर्व बनाव-शृङ्गार किए शिववीर को तलहत्थी पर लिए फिर रही हैं। सुभद्रा की माँ आश्चर्य से अवाक् हो गईं। अपनी छोटी दुनिया में अपनी अनुभूतियों पर उन्हें गर्व था पर इस तरह की समस्या इन्हें कभी न मिली थी। मोहनी देवी दृश्य देखकर अपने आप मुसकरा रही थीं और सुभद्रा की माँ जितना अप्रतिभ होतीं उतना ही मोहनी को मानो आनन्द मिलता।

खाने के बाद बाग में सीमेण्ट के गोल चबूतरे पर सब लोग आकर बैठे। तरह-तरह की बातें यहाँ और नई जगह की होने लगीं। समय अधिक हो गया। सप्तमी का चाँद उठ रहा था। सुभद्रा की माँ ने कहा—"अब हम लोग जाती हैं। शिववीर जी थके होंगे, आराम करें।"

विनोदा विदा देने उठीं और चबूतरे पर से ही हँसते-हँसते बोलीं—"मिस्टर सिंह आज ही आए और कहते हैं कल चले जाएँगे। आज इन्हें सोने न दूँगी।"

सुभद्रा की माँ जरा ठिठक गईं और विनोदा की ओर फिरीं। चबूतरे के नीचे से उन्होंने विनोदा पर एक विचित्र आश्चर्यान्वित मुखर दृष्टि डाली, मानो उस रजनी की शान्त गम्भीर निस्तब्धता से एक हजार प्रश्न एक साथ पूछ रही हों। विनोदा यह देख जैसे और उत्साहित हुईं और मुसकराकर बोलीं—"आज इन्हें रात भर बिठाऊँगी। तारे गिनने की बाजी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूर-शासन का एक वर्ष

श्री आशाराम, एम० ए०

(१)

पिछले वर्ष ब्रिटिश जनता ने युद्ध-नेता चर्चिल को परास्त कर शासन की बागडोर मजदूर दल के हाथों में सौंप दी। ब्रिटिश जनता ने अनुदार दल के नेतृत्व में अविश्वास क्यों प्रकट किया?

पिछला चुनाव जुलाई सन् १९४५ में हुआ था। अभी जर्मनी को परास्त हुए दो महीने भी न हुए थे और सुदूरपूर्व में युद्ध चल रहा था। जनता के दिमाग में युद्ध की स्मृतियाँ जाग्रत् थीं, बम्बारी के बीभत्स चित्र याद थे और इस युद्ध के लिए ब्रिटिश जनता उस दल को दोषी ठहराती थी जिसने म्यूनिख में हिटलर से समझौता कर योरप की स्वतन्त्रता को बेच दिया और जिसने सोवियट शासन से शत्रुता कर हिटलर की विजय के लिए द्वार खोल दिया।

जनता समझती थी कि अनुदार दल देश को शान्ति नहीं दे सकता। वह अपनी साम्राज्यवादी नीति को अपनाकर सोवियट तथा अन्य समाजवादी शक्तियों का विरोध करेगा, देशों को परतन्त्र बनाएगा, उपनिवेशों को स्वतन्त्र न करेगा, भारत को स्वाधीनता न देगा—सारांश यह कि जिन कारणों से कल युद्ध की अवस्था उत्पन्न हुई, वे कारण यदि बने रहे तो वही अवस्था फिर दुबारा पैदा हो जाएगी।

जनता यह भी समझती थी कि अनुदार दल गृह-नीति में प्रगति का मार्ग न अपनाएगा। वह समाजीकरण की ओर न बढ़ेगा। युद्ध के बाद बेकारी और आर्थिक सङ्कट आ सकते हैं, लेकिन इन सङ्कटों से बचने के लिए अनुदार दल फासिस्ट नीति का प्रयोग करेगा।

बस, इन कारणों-वश ब्रिटिश जनता ने अपने शासन में परिवर्त्तन किया। इस शासन से क्या आशाएँ थीं यह 'सरस्वती'* के पाठक जानते ही हैं। मजदूर दल की इस विजय का मजदूर तथा प्रगतिशील दलों ने स्वागत किया। संसार भर के अनुदार दलों ने इस विजय पर शोक प्रकट किया।

(२)

पिछले एक वर्ष से शासन की बागडोर मजदूर दल के हाथों में है। क्या हम कह सकते हैं कि इस दल ने चुनाव के समय जो वचन दिए थे वे पूरे किए हैं?

ऊपर कहा जा चुका है कि जनता शान्ति और प्रगति के लिए इच्छुक थी। मजदूर दल के नेताओं ने कहा था कि युद्ध के बाद आर्थिक सङ्कट सम्भव है। उससे [illegible] उत्पादन की शक्तियों का समाज के हित में प्रयोग करने मजदूर दल की विजय की आवश्यकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि जहाँ तक गृह-नीति का [illegible] मजदूर शासन ने अनेक ऐसे कानून बनाए हैं जिनसे [illegible] लाभ हुआ है और जो अनुदार दल न बना सकता था। [illegible] ने सुना होगा कि युद्ध के बीच ही ब्रिटेन के एक [illegible] श्री विलियम बेवरिज—ने एक योजना रक्खी थी और [illegible] आधार पर ब्रिटिश पार्लियामेंट ने सामाजिक परिवर्त्तनों [illegible] एक योजना पास भी की थी। इस योजना के अनुसार [illegible] शिशुपालन, मजदूर स्त्रियों, वृद्ध पुरुषों तथा बेकारों की [illegible] का प्रबन्ध सरकार अपने हाथों में ले लेती।

नई ब्रिटिश सरकार ने समाज-सम्बन्धी उपर्युक्त [illegible] पास किया है। इसके अनुसार वृद्ध पुरुषों को [illegible] सकेगी, बच्चों की शिक्षा का सम्यक् प्रबन्ध होगा, [illegible] मातृत्व के अधिकार दिए जाएँगे और प्रसूति-गृहों [illegible] किया जाएगा। यदि कोई व्यक्ति बेकार है तो [illegible] से भत्ता ले सकेगा। इलाज का भी अच्छा प्रबन्ध किया जिसके अनुसार देश के अस्पताल सरकार के हाथों में आ शिक्षा पादरियों के हाथ से निकलकर राज्य के हाथ जाएगी और हेरो और ईटन जैसे पब्लिक स्कूल, जहाँ बड़े घरानों के लड़के पढ़ सकते थे, समाप्त कर दिए जा

जहाँ तक आर्थिक व्यवस्था का सम्बन्ध है, मजदूर समाजीकरण की नीति को अपनाया है। सर्वप्रथम ब्रिटेन के सबसे बड़े बैङ्क, बैङ्क ऑफ इँग्लैंड, को पूँजीपतियों के हाथ से निकालकर समाज के हाथों में दे दिया है। यह बहुत बड़ा परिवर्त्तन है। विरोधियों का कहना था कि बैङ्क ब्रिटेन की नाक है। जब तक यह पूँजीपतियों के हाथ में है ब्रिटेन की इज्जत बनी रहेगी। सरकार इसका प्रबन्ध कर सकेगी और ब्रिटेन के सम्मान को भारी धक्का लगेगा। स्पष्ट है कि कोई ऐसी क्षति नहीं हुई।

इसके बाद कोयले की खानों और लोहे का [illegible] है। यदि यही रफ़्तार रही तो किसी दिन बिजली जहाज यहाँ तक कि कपड़े की मिलों आदि का भी [illegible] हो जाएगा। समाजवाद की ओर यह बहुत [illegible] और शायद इसी लिए पिछली लेबर कान्फरेंस में [illegible] और देशकी ने अपने मन्त्रियों की सराहना की

* 'सरस्वती', सितम्बर सन् १९४५।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्वनि और नारों से सम्मान किया। कहा जा सकता है कि मजदूर नेताओं ने ब्रिटेन के युद्धकालीन औद्योगिक ढाँचे को शान्ति-कालीन ढाँचे में परिणत करने में भी अपनी शक्ति और दूर-दर्शिता का परिचय दिया है। ब्रिटेन का उत्पादन बढ़ा है, विदेशों से व्यापार में उन्नति हुई है।

परन्तु, शान्तिकालीन ब्रिटेन के सम्मुख दो कठिनाइयाँ थीं।

१—छः वर्ष के युद्ध के बाद मशीनों को बदलने की आवश्यकता थी। युद्ध के बीच बहुत-सा कर्ज कन्धों पर लाद गया था, पूँजी कम हो गई थी। इस समय बहुत-से खाद्य-पदार्थों को बाहर से मँगाने के लिए रुपए की आवश्यकता थी।

२—लगभग २५ लाख सुयोग्य पुरुष फौज में थे। उनके बिना कल-कारखानों का चलना असम्भव था। अतएव आवश्यक था कि फौजों को तेजी के साथ तोड़ा जाए और सिपाहियों को घर भेजकर कल कारखानों में लगाया जाए।

जहाँ तक मशीनों और खाद्य पदार्थों के मिलने का सम्बन्ध है, वे दो प्रकार से मिल सकते थे। एक तो योरपीय देशों से समझौता करके, उनसे व्यापारिक सन्धियाँ करके अथवा धन-कुबेर अमेरिका से ऋण लेकर। पहले मार्ग में कठिनाइयाँ थीं। सामान धीरे-धीरे और थोड़ी मात्रा में मिलता। परन्तु यह स्वतन्त्र मार्ग था। ब्रिटिश सरकार ने दूसरा मार्ग अपनाया। उसने अमेरिका से लगभग १३ अरब रुपयों का ऋण लिया। अमेरिका प्रजातन्त्र है परन्तु साम्यवादी नहीं। उसकी भी अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाएँ हैं। वह ब्रिटेन को यों ही ऋण क्यों देने लगा, विशेषतया ऐसे समय जब कि ब्रिटेन को रुपए की सख्त जरूरत है। अमेरिका की तीन-चार शर्तें तो स्पष्ट समझ में आती हैं, अन्य शर्तें क्या हैं, वह समय बतलाएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि अब ब्रिटेन की स्वतन्त्र परराष्ट्रनीति नहीं रह गई। वह अमेरिका का पिछलग्गू मात्र हो गया है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में उसको अमेरिकन हितों का समर्थन करना पड़ता है। ऋण के बदले में ब्रिटेन को कुछ आर्थिक रियायतें भी देनी पड़ी हैं। जिन बाजारों में अभी तक ब्रिटेन का जोर था वहाँ अमेरिका की पहुँच दिखाई देती है। उत्तरी अफ्रीका और मध्यपूर्व इसके उदाहरण हैं। अभी तक ब्रिटेन साम्राज्यान्तर्गत देशों से स्वयं व्यापार करता था तथा अन्य देशों को स्वतन्त्र व्यापार करने से रोकता था। परन्तु अब कदाचित् यह रोक उठा ली जाएगी और अमेरिकन माल इन देशों में रोक जा सकेगा। इसके अतिरिक्त इन देशों में अमेरिका अपनी कम्पनियाँ और बैंक भी खोल सकेगा।

सेनाओं को तोड़कर सिपाहियों को घर भेजना, इसका सम्बन्ध सीधा शासन की परराष्ट्रनीति से है। यदि अनुदार दल के हाथों में शासन होता तो वह साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करता और साम्राज्य की रक्षा के लिए सेनाओं को ज्यों का त्यों रखता। परन्तु, जैसा कि आगे चलकर स्पष्ट होगा, यद्यपि मजदूर दल ने साम्राज्यवादी नीति को तिलाञ्जलि नहीं दी और इसी कारण एक बहुत बड़ी सेना अभी तक अनुरक्षण है, तथापि बहुत-से सिपाही समराङ्गण से घर लौट चुके हैं।

(२)

एक युद्ध समाप्त नहीं हुआ कि दूसरे युद्ध की चर्चा चल चुकी है। यह युद्ध कैसा और किसके बीच? उत्तर मिलता है मित्र-राष्ट्रों में फूट पड़ गई है और अबकी बार ब्रिटेन और अमेरिका मिलकर रूस से मोर्चा लेंगे। मित्र-राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों को इस स्थिति तक पहुँचा देने में ब्रिटेन की मजदूर सरकार का भी हाथ है।

ब्रिटिश मजदूर सरकार घर में तो समाजवाद का पक्षपात करती है, यद्यपि वहाँ भी जिस प्रकार तेजी से साम्यवाद की ओर बढ़ना चाहिए था, नहीं बढ़ सकी; परन्तु जहाँ तक परराष्ट्रनीति का सम्बन्ध है, वह अनुदार दल के साथ है। इसी कारण, जब कभी पार्लियामेंट में विदेशी समस्याओं पर वाद-विवाद होता है तो श्री बेविन, इडिन और चर्चिल के बीच बहुत कम भेद-भाव पाया जाता है और बेविन को इन अनुदार नेताओं का आशीर्वाद प्रायः प्राप्त हो जाता है।

मजदूर दल ने चुनाव के समय कहा था कि अनुदार दल विश्व-शान्ति में बाधक होगा, वह रूस तथा अन्य योरपीय प्रगतिवादी सरकारों से मेल न रख सकेगा और प्रतिक्रिया की शक्तियों को सहायता देगा। क्या मजदूर दल ने अपने वचनों के अनुसार नीति का अनुसरण किया है?

मजदूर दल ने रूस से मैत्री रखने का वचन दिया था। स्थिति क्या है? बेविन और मोलोतोव एक दूसरे के शत्रु जैसे दिखाई पड़ते हैं। यहाँ तक कि पारस्परिक व्यापारिक सम्बन्ध भी शिथिलप्राय हो चला है। ब्रिटेन से रूस जानेवाले के बिलों पर रोक लगा दी गई है। प्रो० मे (Prof. Mary) को इसलिए पाँच साल के लिए जेल में डाल दिया गया है कि उसने रूस को परमाणु बम का भेद देने का प्रयत्न किया था।

इस शत्रुता का कारण क्या है? कहा जाता है कि रूस देश साम्राज्यवादी हो चला है। वह पूर्वी योरप और मध्यपूर्व तथा सुदूरपूर्व में बढ़ना चाहता है। ब्रिटेन और अमेरिका का धर्म है कि उसकी साम्राज्य-लिप्सा पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। प्रश्न उठता है कि क्या सुदूर और मध्यपूर्व तथा पूर्वी योरप के देश स्वतन्त्र थे! स्पष्ट है कि पूर्वी योरप के देशों पर पहले फ्रांस, तत्पश्चात् ब्रिटेन और जर्मनी का अधिकार प्रायः रहा। कहा जा सकता है कि अब उन देशों को स्वतन्त्र किया जा सकता है। ठीक है। परन्तु इन देशों में स्थिति क्या है? इन देशों के जर्मन-प्रेमी नाजी और फासिस्टों को समाप्त किया जा चुका है और भूमि तथा उद्योग-धन्धों का समाजीकरण हो चुका है। ब्रिटेन ने समाजीकरण का समर्थन नहीं किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्युत उसने उन सरकारों से ब्रिटिश आर्थिक हितों को समाजीकरण से अलग रखने को कहा है। इसके अर्थ स्पष्ट हैं कि ब्रिटेन की समाजवादी सरकार पूर्वी योरप के देशों का शोषण पूर्ववत् रखना चाहती है। इसके अतिरिक्त, इन देशों में यदि आज कोई ब्रिटिश सरकार के साथी हैं तो वे मजदूर, किसान; विद्वान् तथा समाजवादी दल नहीं। ब्रिटेन के साथी हैं वहाँ के जमींदार और पूँजीपति। यही दशा पूर्वी जर्मनी में भी है।

पश्चिमी योरप की ओर दृष्टिपात कीजिए। सोवियट साम्राज्यवाद से बचने और संसार के बचाने के लिए पूर्वी योरप में तो ब्रिटिश सरकार को प्रतिक्रियावादियों से सहायता लेनी पड़ती है। ब्रिटेन पश्चिमी योरप में सोवियट से मोर्चा लेने के लिए एक पश्चिमी ब्लाक (गुट) बनाना चाहता है। इस नीति के अनुसार लेबर दल के भूतपूर्व सभापति प्रो० हेरोल्ड लास्की ने पश्चिमी योरप के देशों का भ्रमण किया और समाजवादी दलों से कहा कि वे कम्यूनिस्टों का साथ छोड़ दें। क्योंकि कम्यूनिस्ट रूसी साम्राज्यवाद के साथी हैं। उसने ब्रिटिश सरकार की ओर से सहायता का भी वचन दिया। इस नीति के कारण पश्चिमी योरप के मजदूर आन्दोलनों में फूट पड़ गई, समाजवादी दल कम्यूनिस्टों को बुरा-भला कहने लगे। इस कारण डेनमार्क, बेल्जियम, हालैंड आदि देशों में मजदूर दल निर्बल और प्रतिक्रियावादियों के दल शक्तिशाली हो गए। डेनमार्क और हालैंड में प्रतिक्रियावादियों का शासन है, नार्वे में मजदूर शासन बाल-बाल बच गया है, बेल्जियम में मजदूर दलों (कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट) को एक होना पड़ा है और उदार दलों की सहायता लेनी पड़ी है।

इसी फूट की नीति के परिणामवश फ्रांस और इटली में भी कम्यूनिस्ट और सोशलिस्ट दलों की शक्ति कुछ कम हो गई है और भय है कि यदि यही दशा रही तो प्रतिक्रियावादी दल शासन पर आरूढ़ हो जाएँगे। (पश्चिमी जर्मनी के सम्बन्ध में पिछले मास लिखा जा चुका है।)

शेष तीन देश रह जाते हैं पुर्तगाल, स्पेन और ग्रीस। यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार आज भी स्पेन से सम्बन्ध-विच्छेद करने को तैयार नहीं। बहाना यह है कि यदि जनरल फ्रैंको को सहायता न दी जाएगी तो स्पेन की जनता ब्रिटेन आदि प्रजातन्त्रों से अप्रसन्न होकर फ्रैंको का साथ देगी। अतएव प्रजा को ही स्वयं अवसर दिया जाए ताकि वह फ्रैंको को उठाकर फेंक दे। अनोखा तर्क है। आप शासक (फ्रैंको) को सम्मान देते हैं ताकि वह पब्लिक को कुचल सके और जनता से आशा करते हैं कि वह शासन को उठा फेंके! पुर्तगाल के सम्बन्ध में भी यही नीति है।

ग्रीस का वर्तमान इतिहास क्या है? ग्रीसवासियों ने ब्रिटिश सहायता की प्रतीक्षा न कर जर्मन सैनिकों को परास्त किया। परन्तु उसी क्षण ब्रिटिश सेनाओं ने जाकर वहाँ पर स्थापित कर लिया और धीरे-धीरे उन सब सैनिकों अधिकारियों को ग्रीस में भर दिया जिनको जनता निरङ्कुश थी। जनता ने सन् १९४४ के दिसम्बर मास में इस निरङ्कुश विरुद्ध विद्रोह भी किया था, परन्तु जनरल स्कोबी के श्री लेपर की कूटनीति और ग्रीस-नरेश के प्रतिक्रियावादी जनता के इस विद्रोह को दबा दिया। इस समय प्रतिक्रियावादियों का निरङ्कुश शासन है। मजदूरों के अधिकार नागरिक स्वतन्त्रताओं का पता तक नहीं।

इस नीति की ओट में क्या है? भूमध्यसागर पर ब्रिटिश एकच्छत्र राज्य। इसी कारण स्पेन, पुर्तगाल, इटली, टर्की, सीरिया और लेबनेन, ट्रांसजोर्डन और पैलेस्टाइन और लीबिया में ब्रिटेन अपने पैर मजबूत रखना चाहता है। रूस ने कहा था कि आर्थिक आधार पर ट्रीस्ट नगर यूगोस्लाविया को दे दिया जाए और रूस के व्यापारी बेड़े को कोयला लेने के लिए ट्रीपोली का एक बन्दरगाह स्वयं उसको दिया जाए। परन्तु जो ब्रिटेन कल फासिस्ट इटली को पूरा दे सकता था, आज वही ब्रिटेन सोवियट रूस को भूभाग देने से न केवल मुकरता है, वरन् उसका विरोध करता है।

मध्य पूर्व की ओर ध्यान दें। क्या दशा है! मिस्र पर ब्रिटेन का आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य अधिकार युद्ध के बाद स्वतन्त्रता की भावनाओं से ये देश भी हैं। मिस्र में आए दिन ब्रिटिश पुरुषों पर बम फेंके और पत्र माँग करते हैं कि ब्रिटिश सेनाएँ वहाँ से हटा ब्रिटिश शासन का क्या रुख है? मिस्र से सेनाओं में सालों लग जाएँगे। अगर हटाई भी गईं तो स्वेज आस-पास अवश्य रखनी होंगी। अगर वहाँ से भी फिर यह सन्धि मिस्र के ऊपर लादी जाएगी कि युद्ध पड़ने पर ब्रिटेन मिस्र की सहायता करेगा (चाहे आवश्यकता हो अथवा नहीं?) और इसी लिए सारी सेनाएँ मिस्र के सीमान्तर देश पैलेस्टाइन में रक्खी पैलेस्टाइन में सेनाएँ हटाने और उस देश को किसी स्वतन्त्रता देने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। हाँ, की स्वतन्त्रता उद्घोषित की जा चुकी है। परन्तु ब्रिटिश सेनाएं और शासक ज्यों के त्यों हैं।

मध्यपूर्व में ब्रिटेन का दूसरा अड्डा है इराक में से हटाई गई सेनाएँ भी इसी देश में आ गई हैं। कहने को स्वतन्त्र है परन्तु वास्तव में वह भारत से स्वतन्त्र है। यह देश मध्यपूर्व के देशों में ब्रिटिश की रक्षा के लिए अड्डा बन गया है और इस देश के साधन (विशेष कर तेल) ब्रिटेन के हाथों में हैं। के देशों में ब्रिटिश मजदूर सरकार मजदूर दलों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनके ऊपर तो आज भी गोलियाँ चलाई जाती हैं। टेन के सहायक हैं इन देशों के जमींदार और सामन्त जो ीय आन्दोलनों के शत्रु हैं।

कहा जा सकता है कि मध्य और सुदूरपूर्व तथा पूर्वी र पश्चिमी योरप में ब्रिटेन को रूस का भय है, इस कारण ऐसी नीति का प्रयोग कर रहा है। परन्तु फिर भी प्रश्न ता है कि उसको प्रगति और स्वतन्त्रता की शक्तियों से क्यों है। स्वतन्त्रता और प्रगति के आधार पर वह इन देशों सहायता क्यों नहीं ले सकता, प्रतिक्रिया की शक्तियों का रा क्यों टटोलता है?

ब्रिटिश मजदूर सरकार ने अपने उपनिवेशों के सम्बन्ध क्या नीति निर्धारित की है? अफ्रीका के उपनिवेशों में ई विशेष परिवर्तन नहीं। मलाया और बर्मा के राष्ट्रीय न्दोलनों को, जो इस युद्ध के बीच शक्तिशाली हो गए थे, लने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। बर्मा और मलाया जनता ने छापेमार सेना बनाकर जापान का विरोध किया। आज वह राष्ट्रीय सेना तोड़ दी गई है।

इतना ही नहीं; मजदूर सरकार केवल अपना साम्राज्य ही ुरक्षण नहीं रखना चाहती। वह जानती है कि यदि दूसरे निवेश स्वतन्त्र हुए तो उसके अपने गुलाम भी सर उठाएँगे। एव उसने हालैंड, फ्रांस, बेल्जियम आदि के साम्राज्यों की ा का बीड़ा उठाया है। इसी नीति के अनुसार इंडोचीन फ्रांस की सेनाओं का अधिकार स्थापित कराने में ब्रिटेन ने सहायता दी। परन्तु क्योंकि हालैंड-साम्राज्य दुर्बल है इस कारण जावा, सुमात्रा आदि देशों के स्वतन्त्रता-आन्दोलनों को दबाने में ब्रिटिश सेनाएँ आज भी सहायता दे रही हैं।

भारत के सम्बन्ध में मजदूर-सरकार ने जो कदम इस बार उठाया है, वह यहाँ की जनता की दृष्टि में कुछ सन्तोषजनक अवश्य है। यहाँ केन्द्र में अन्तःकालीन सरकार की स्थापना होने से राजनीतिक क्षेत्रों में आशावाद की लहर दौड़ गई है। यदि लीग से समझौता हो सकता तो यह सरकार अवश्य सुदृढ़तम होती। पर टोरी दल की शह ने ऐसा नहीं होने दिया और अन्ततः यह भार कांग्रेस को सौंपकर मजदूर-सरकार ने अपनी ईमानदारी और दूरदर्शिता का पूरा परिचय इस बार दिया।

बहुत-से अर्थशास्त्र के पण्डित कहते हैं, ब्रिटेन के पास और चारा ही क्या है? बिना बाजारों के वह एक दिन जीवित नहीं रह सकता। परन्तु क्या इन बाजारों के रखने से ब्रिटेन को कोई लाभ है? इनकी रक्षा के लिए लगभग दस लाख सैनिक ब्रिटेन से बाहर रखने पड़ते हैं और उनके ऊपर अरबों रुपया खर्च करना पड़ता है तथा युद्ध की तैयारियाँ ज्यों की त्यों रखनी पड़ती हैं। इसी कारण ब्रिटेन में काम करनेवाले मजदूरों की कमी है और अमेरिका से ऋण लेना पड़ा है। वह समय, जब साम्राज्यों से लाभ होता था, जा चुका। आज उपनिवेश पत्थर बनकर ब्रिटेन के गले से लटके हुए हैं। ब्रिटिश जनता और विश्व का उपकार साम्राज्यवाद को दफन करने में ही है।

दफ्तरवाली

श्री अञ्जना स्याल

गोरा रङ्ग, लाल-लाल फूले हुए गाल, मोटी-मोटी आँखें, ी-भरकम शरीर, चोली को कसकर बाँधने के कारण वक्षःस्थल रत से ज्यादा उभरा हुआ। काग़जों का एक थैला हाथ कड़े वह प्रायः हमारे घर के सामने से गुजरती। यहीं ी दफ़्तर में कुछ काम करती थी। जब वह बाजार से लती तो लोग मुसकराते। पर आत्मनिर्भरता की मात्रा में इतनी अधिक थी कि वह जरा भी न घबराती। वह ती, चाल में रत्ती भर भी शर्म नहीं, सीना उभार, इधर-उधर ती हुई। कभी कोई परिचित मिल जाता तो मुसकराकर का अभिवादन करती और वहीं बाजार में खड़ी होकर बातें लगती। शरबतवाले की दुकान पर छिकड़ी खेलनेवाले ारा लोगों की भीड़ लगी रहती थी। उसके वहाँ से गुजरने पहले वे तरह-तरह की बातें करते, पर जब वह स्वयं आकर खड़ी हो जाती और बिना किसी हिचकिचाहट के सवाल करने लगती, 'क्यों रामप्रकाश जी, आपने वह जीन लाकर नहीं दी न? अच्छा मास्टर साहब, आपके तो आजकल दर्शन ही नहीं होते। कपूर साहब, मिसेज कपूर को कब लाहौर लाइएगा?' तो रामप्रकाश झेंपकर कहता, 'आज ही लीजिएगा, मिसेज मदान। स्टोरकीपर कई दिन से मिला नहीं और दिन के वक्त जीन निकालें तो आफत पड़ जाएगी।' मास्टर साहब ही-ही करते और दाँत निपोरकर कहते, 'अजी आप क्या कहती है? पिछले सप्ताह जरा काम रहा। कल अवश्य दर्शन करूँगा।' और मिस्टर कपूर भी जब तक मिसेज कपूर को जल्दी ही लाहौर लाने का वादा न कर लेते तब तक

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज उसके साथ कोई न कोई पुरुष होता। मिसेज थीं, इसलिए जल्दी किसी को कुछ कहने का साहस न होता था। पर सबसे मजेदार हालत थी उसके पति की। पति पत्नी की परस्पर कैसी पटती थी यह तो वे दोनों ही जानें, पर सारा बाजार समझता था कि पतिदेव की कोई पूछ नहीं। वह छोटे-से कद का दुबला-पतला व्यक्ति उसके साथ चलता तो चपरासी-सा दिखाई देता। बाजारवाले, जिनकी हिम्मत मिसेज मदान की रसीली आँखों और मीठी बातों के सामने पस्त हो जाती थी, बेचारे मिस्टर के सामने शेर हो जाते और उसकी बहुत गत बनाते।

उच्च वर्ग में ऐसे बहुत-से दृष्टान्त मिल जाएँगे जहाँ पत्नी के नाम पर पति का नाम चलता हो। कई व्यक्तियों का तो परिचय ही इस प्रकार कराया जाता है—'अमुक सुप्रसिद्ध नेत्री के पति या अमुक लेखिका के स्वामी।' पर मध्यम वर्ग के लिए ऐसी बातें नई हैं। पति को अपने पुरुषत्व का अभिमान है और वह समझता है कि घर का नाम उस पर चलना चाहिए। बाजारवाले उसे बुलाते थे—'मिसेज मदान के पति'। इस शब्द में ही सारी घृणा, लाञ्छना और अपमान भरा पड़ा था।

× × ×

मिसेज मदान दफ़्तर में क्यों काम करती थीं यह जानना कठिन है। पति दो-ढाई सौ रुपया महीना कमाता था। घर में बूढ़ी सास थीं जो अपने पुत्र से भी ज्यादा बहू से डरती थीं। चौका-बासन से लेकर तीनों पौत्रों को नहलाने-धुलाने का काम वे स्वयं करती थीं। इसलिए घर के काम से तो मिसेज मदान को छुट्टी थी। उनके दफ्तर जाने से घरवालों को कुछ आर्थिक सहायता मिलती हो, ऐसा भी नहीं दीखता था। कुल साठ रुपया महीना तो कमाती थीं वे। मालूम होता है कि उन्हें काम का शौक था, या यों कहिए दफ़्तर जाने का शौक था। दूसरे शब्दों में उन्हें तरह-तरह के लोगों से मिलने-जुलने का बेहद शौक था।

क्या वे दफ़्तर में खुश थीं? एक दिन बता तो रही थीं कि वे कुछ मिनट देरी से दफ़्तर पहुँचीं तो साहब ने घड़ी निकालकर कहा—"दस बजकर बारह मिनट हो गए हैं, तुम लेट क्यों हो?" बेचारी रोने लगीं। वह अफ़सर ही ऐसा था। मिसेज मदान ने उसे खुश करने की बहुतेरी कोशिश की पर उनकी एक न चली। उसकी बीवी को रजाइयाँ भरवाकर दीं, उसके छोटे लड़के के लिए दो स्वेटर बुनकर दिए। पर ऐसे सख्तदिल से पाला पड़ा था कि जरा सी गलती पर जुर्माना कर देता। बेचारी बदली करवा नहीं सकती थीं क्योंकि पतिदेव का रोजगार यहाँ था। खैर, उन्होंने उस दिन चैन की साँस ली जिस दिन वह अफ़सर लाहौर से बदलकर अम्बाला चला गया। साहब बहुत भले आदमी थे। न स्वयं बहुत काम करते न मातहतों से काम लेते।

× × ×

कभी-कभी मिसेज मदान को गाँवों में दौरे पर जाना पड़ता। गाँवों में युद्ध पर गए हुए सैनिकों की स्त्रियों को साग, मक्की का आटा वगैरह भेंट में देतीं। बदले में मिसेज मदान भेंट में पाई हुई उन वस्तुओं को बारी-बारी मोहल्ले की औरतों के घर भेजतीं। किसी को चने का साग मिलता, किसी को हरे-भरे गोभी के फूल। मोहल्ले की औरतें इससे प्रसन्न हो जातीं। पीठ-पीछे निन्दा करने पर भी मिसेज मदान के सामने वे मुस्कराकर रह जातीं। मिसेज मदान में एक और बड़ा गुण था जो स्त्रियों को विशेष कर प्रभावित करता था। वह ढोलक पर गाती बहुत अच्छा थीं। कोई शादी का अवसर हो तो ढोलक लेकर अश्लील से अश्लील गाने में भी न हिचकिचातीं। एक-आध घण्टे के लिए यह भी भूल जातीं कि उन्होंने हिन्दी-भूषण की परीक्षा करके अँगरेजी में एफ० ए० कर लिया है, और दफ़्तर में रिशपालसिंह की 'परसनल असिस्टेंट' हैं। खैर उस लड़की सुगरा की शादी में तो उन्होंने वह समाँ बाँधा कि दिन पास-पड़ोस की स्त्रियों के मुँह पर मिसेज मदान का रहा। स्त्रियों को अगर उनसे कोई शिकायत थी तो यही कि वे हर किसी के मर्द से बिना झिझक के बात कर लेती थीं।

× × ×

गर्मियों में लाहौर कितना नीरस हो जाता है यह वही जान सकता है जिसने लाहौर में गर्मियाँ बिताई हों। हमारी शिमलावाली कोठी में मामूँ जान ने डेरा जमाया। मेरी और शम्मो की सलाह थी कि आपा राजियों कलकत्ता जाएँगे। पर वहाँ जो हंगामा मचा तो हवाई केवल एक ही रास्ता रह गया, यानी कालेज खुलने तक ही रहें। पर लाहौर कितना निर्जीव था! सड़कें रेस्टराँ सूने। चित्रपट एक से एक बढ़कर रद्दी। छुट्टियों विद्यार्थी घरों को चले जाते हैं, और प्रायः दफ्तरोंवाले को। लाहौर की सारी रौनक भी जाती रहती है। दिन से कटते हैं। सबसे कठिन समय दोपहर का होता है। इतनी कि घर से बाहर निकलने का साहस ही नहीं रेडियो का प्रोग्राम भी डेढ़ घंटा का होता है। बिताया जाए? आखिर सारा दिन ताश तो नहीं सकते और शम्मो को तो अम्मी बहुत पढ़ने भी नहीं झट कहने लगती है—"मैं तो इन हरकतों से तङ्ग जब देखो नावेल पढ़े जा रहे हैं। यह लड़की सत्यानाश करके छोड़ेगी।" सो प्रतिदिन दुपहरी को नीरसता का रोना रोया जाता और दिलचस्पी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन भी शम्मो और मैं बरामदे में खड़े अपना वही तिदिन का राग अलाप रहे थे कि मिसेज मदान आती दिखाई ं। मैंने उत्साह से कहा—'लो शम्मो! आज की दुपहरी कट गई। मिसेज मदान की गप्पें सुनी जाएँ।" जब क शम्मो उत्तर में कुछ कहे, मैंने दहलीज लाँघकर ऊँचे से हा—"हलो, मिसेज मदान!"

मिसेज मदान बेतकल्लुफी से भीतर चली आईं। शम्मो देखकर बोलीं, 'क्यों शम्मो बेगम! तुम तो कभी दिखाई हीं देतीं। अब तो कालेज बन्द हो गया, सारा दिन क्या रती रहती हो?'

'कुछ नहीं, यों ही बेकार मेरा दिमाग खपाया करती है। सेज मदान, क्या आपके दफ्तर में दो मास के लिए किसी लर्क की जगह खाली नहीं अंडर ग्रेजुएट टेनिस खेलने में ीण।' मैंने शम्मो की ओर देखकर मुसकराते हुए कहा।

अब मिसेज मदान खुल पड़ीं—"शम्मो हमारे दफ्तर में हाँ काम करेगी। पर रफीक भाई, एक बात बता देती हूँ। ी नौकरी में पैसा चाहे बहुत न हो, पर पहुँच बहुत है। नगर कोई गण्य-मान्य व्यक्ति नहीं जिससे मेरा परिचय न हो। पुटी कमिश्नर से लेकर हाईकोर्ट के जजों तक मेरी पहुँच । इसी नौकरी के प्रताप से ही इस महँगी के जमाने में भी में कोई कष्ट नहीं हुआ। चीनी के राशन के कारण आज-कल च्छे अच्छे घरों में शक्कर बर्ती जा रही है। पर हमारे घर में छकर देखो किसी ने शक्कर या गुड़ को छूकर भी देखा हो। भी परसों सरदार अजीतसिंह सिविल सप्लाई आफिसर मुझसे लने आए और साथ पाँच सेर खाँड़ भी लेते आए। कहने ो, 'बहनजी, जब तक मैं डिपार्टमेंट में हूँ, आपको चीनी कोई कष्ट नहीं होने दूँगा।' बेगम इजाज हुसेन को सुगरा दहेज के दुपट्टों के लिए शनून न मिली तो मेरे पास आईं। ने कैप्टन भण्डारी को चिट्ठी लिखकर भेजी, उन्होंने झट फिसर्स शौप (Officers shop) से पन्द्रह गज शनून ट्रोल रेट पर दिलवा दी। लोगों को लट्ठा नहीं मिलता। र-बाजार से दो-ढाई रुपए गज पर भी लट्ठा मिल जाए तो निया फूली नहीं समाती। मैंने अपनी छोटी बहन पुष्पा को पिछले माह दस गज लट्ठा भेजा, और अभी मेरे पास चार सलवारों का लट्ठा पड़ा है।"

'लो शम्मो, तुम्हारे लट्ठे की समस्या तो मिसेज मदान ने हल कर दी। रोज मेरी जान खाया करती थीं। अब तो मैं राशन का कपड़ा अपने लिए ले लूँ?'

'हाँ! हाँ! मेरे लायक जो सेवा हो अवश्य बताएँ।' मिसेज मदान कहती चली गईं, 'इन सब कामों के लिए परिचय बढ़ाना पड़ता है। मेरी नौकरी ही ऐसी है कि प्रतिदिन नए व्यक्तियों के सम्पर्क में आती हूँ। कई बार खयाल आता है कि लोग बातें बनाते होंगे कि रोज न जाने किस-किस के साथ घूमती रहती है।'

'नहीं जी, ऐसी जुर्रत किसकी!' मैं बोला। शम्मो चुप रही। अकारण झूठ बोलने की कला उसने अभी सीखी नहीं।

'बनाते हैं तो बनाएँ। मुझे ऐसी वैसी बातों की परवाह नहीं। मैं तो यह जानती हूँ कि Truth will be out one day. आखिर सच सच है। अब जब मर्दों के साथ काम करना ही है तो क्यों न ठीक तरह से किया जाए। मैं इतनी निर्भीकता से पुरुषों में काम करती हूँ कि एक दिन राय साहब दीनानाथ कहने लगे—'मिसेज मदान या तो आप वास्तव में पुरुष हैं या पिछले जन्म में पुरुष रही हैं।"

'शायद दोनों बातें सच हों' मैंने दबी जबान में कहा मेरी गुस्ताखी से शम्मो का चेहरा कानों तक लाल हो उठा। मिसेज मदान ने सुना या नहीं भगवान् जाने पर मिसेज मदान रुकीं नहीं। अँगरेजी-मिश्रित पञ्जाबी में अपनी महत्ता की शेखी तब तक बघारतीं रहीं जब तक कि मेरा मित्र अविनाश मुझसे मिलने के लिए नहीं आ पहुँचा और शम्मो को गोल कमरे से भागना पड़ा।

× × × ×

लड़ाई तो खत्म हो गई। आज सुनता हूँ कि मिसेज मदान का दफ्तर टूटनेवाला है। मिसेज मदान को तो सरकार किसी दफ्तर में जगह दे दे। बिना दफ्तर के मिसेज मदान के अस्तित्व की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।

—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक व्यायाम

श्रीमती कमला रतनम्, एम० ए०, टी० डी० (लन्दन)

सुख और दुःख किसी हद तक मानसिक गुण हैं। आदमी यदि अपने को सुखी माने, तो उसके बहुत-से दुःख दूर हो सकते हैं। केवल शारीरिक दुःख—विविध अङ्गों की पीड़ा, रोग की यातना—ये सब वास्तविक दुःख नहीं हैं। मन का बल इनको सहने में बड़ी सहायता करता है। विचारपूर्वक देखा जाए तो शारीरिक पीड़ा कुछ देर की ही होती है, और यह दुर्बल मन-वाले को अधीर बना देती है। परन्तु जहाँ दिल मजबूत है, मनुष्य अपने सिद्धान्तों पर अटल है, वहाँ सिर काटने पर भी चूँ नहीं होती। सामान्य शारीरिक दुःखों की चरम सीमा स्त्री की प्रसवपीड़ा में मानी गई है। चीन देश में पुरातन सभ्यता में पली स्त्रियाँ इसे इस वीरता और संयम से सहन करती हैं कि प्रसव हो जाता है और किसी को पता भी नहीं चलता। मन की शक्ति शरीर को जीत लेती है।

परन्तु संसार का अधिक दुःख मानसिक है। कितने व्यक्ति कुटुम्बियों तथा प्रिय जनों के दुर्व्यवहार को हृदयङ्गम कर क्षत-विक्षत हो जाते हैं। कोई प्रियजनों के प्रवास अथवा दुष्प्राप्यता के कारण विकल हैं। न जाने कितने माता-पिता सन्तानहीनता के कठोर दुःख और अकेलेपन को सहन कर रहे हैं। इससे और साधारण क्षेत्र में यदि देखा जाए, तो हमारे देश की अधिकांश जनता जीविका-प्राप्ति के साधनों के अभाव में ही विशेष दुखी है। इहलोक में आत्मा और शरीर का सम्बन्ध बनाए रखने की दुश्चिन्ता ही हमारे अधिक दुःखों का मूल है।

"प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी प्रकार का दुःख घेरे ही रहता है"; इस महान् सत्य का अनुभव करते हुए ही, कई महापुरुषों ने संसार को असार बताया है। जब यह संसार ही सच्चा नहीं है, तो इसमें होनेवाले सुख-दुःख, रुदन और आनन्द कोई भी सच्चा नहीं हो सकता। परन्तु इस दर्शन से साधारण जनता को सन्तोष अथवा शान्ति नहीं मिल सकती। संसार चाहे झूठा हो अथवा सच्चा इसमें होनेवाले सुख और विशेषकर दुःख हमारे लिए विकट सत्य का रूप धारण कर लेते हैं। दुःखों का प्रभाव अन्ततः मनुष्य के हृदय पर पड़ता है—और हृदय के बल तथा वेदना की अनुभूति में विपरीत अनुपात है। हमारा मन जितना ही बलवान् होगा, उतना ही कम प्रभाव हमारे ऊपर सांसारिक दुःखों का पड़ेगा।

संसार में हमारा जीवन एक समर के समान है। इसमें होनेवाले अनुभवों का सामना करने के लिए मानसिक अभ्यास युद्धविद्या का अभ्यास किए बिना ही रणभूमि में चला वह चारों ओर के प्रहारों से क्षत-विक्षत होकर भाग आए सम्भव है प्राण भी दे दे; परन्तु यदि वही सैनिक युद्ध सिद्धान्तों का अनुशीलन करके, युद्ध के शस्त्रों, कव सुसज्जित होकर, रणभूमि में जाएगा, तो उसके सफल सम्भावना अधिक है। यही दशा मनुष्य की संसार होती है। अनभ्यस्त और अनियन्त्रित हृदय संसार से आहत होकर एकदम दुखी हो जाता है और अभागा तथा संसार को दुःखों का घर समझने लगता है।

संसार की विषम परिस्थितियों का सामना करने एक विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है। रूप से शिक्षा का ध्येय हमें जीवन के योग्य बनाने अँगरेजी में इसे 'एजूकेशन फार लाइफ' (Education कहा जा सकता है। मनुष्य संसार में आनेवाली परिस्थितियों का सामना अच्छी तरह कर सके, समाज, व्यक्ति और देश के प्रति अपने कर्तव्य को समझे और स्वतन्त्र जीविका चला सके, यह सब ऐसी शिक्षा के अङ्ग हैं हीं; परन्तु इसके साथ-साथ ही इस शिक्षा मनुष्य के हृदय में ऐसी शक्ति उत्पन्न हो जानी च बड़े-से-बड़ा दुःख भी उसकी आत्मिक शान्ति को उसे कर्तव्य-पथ से विचलित न कर सके। इसी शान्ति को प्राप्त करने के विविध साधन हमारे दर्शनश गीता आदि ग्रन्थों में बताए गए हैं। इन साधनों का और अभ्यास करने से मनुष्य का हृदय अपने चारों की एक ऐसी दीवार खड़ी कर लेता है, जिसको पार बाहरी दुःख के काँटों के लिए असम्भव हो जाता है को पीड़ित करने के बदले स्वयं ही कुण्ठित होकर गिर पड़ते हैं और इस प्रकार मन की अगाध आन्त भङ्ग करने का उन्हें अवसर ही नहीं मिलता। विच जाए तो कोई दूसरा अपने कार्यों या वचनों से हमें यह हमारी ही कमजोरी है।

मन के इसी अभ्यास को हम मानसिक व्यायाम हैं और यह संयम-द्वारा हो सकता है। बहुत से का ठीक अर्थ नहीं समझते। इसका अर्थ मन अथवा जबरदस्ती रोक रखना नहीं है। संयम से विमुख होकर निषेधात्मक जीवन व्यतीत करने नहीं है। परन्तु अपने को जीवन के सङ्घर्ष के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—और इस प्रकार यह एक ठोस विधानात्मक कार्यक्रम है। यह संसार की ओर उल्टी नहीं वरन् सीधी नजर से देखता है।

गीता में भी शान्ति प्राप्त करने का साधन संयम को बताया गया है और उसके कुछ सरल उपायों का निर्देश किया गया है। गीता के अनुसार सुख और दुःख को समान रूप से ग्रहण करने की शक्ति को संयम कहा जा सकता है। इसके द्वारा मनुष्य में कर्तव्य-बुद्धि का विकास होता है। वह काम को कर्तव्य समझकर करने लगता है, फल की लोलुपता से नहीं। सफलता और असफलता दोनों को शान्त अविचलित भाव से ग्रहण करने में बड़े मनोयोग की आवश्यकता है। यदि मनुष्य सिद्धि और असिद्धि दोनों को समान रूप से ले सका तो उसने संयम की पहली सीढ़ी पार कर ली।

मनुष्य अपनी इन्द्रियों को थोड़ा भी वश में कर सके तो उसे संयमशक्ति प्राप्त करने में बड़ी सहायता मिल सकती है। इन्द्रियदमन के भी निषेधात्मक अर्थ नहीं लगाने चाहिएँ—इन्द्रियदमन का यह तात्पर्य नहीं है कि मनुष्य इन्द्रियजनित आनन्द का उपभोग न करे। प्रत्युत यह कि आनन्द का उपभोग करता हुआ भी उसका दास न बने। आनन्द में आसक्ति ही मनुष्य की मानसिक स्वतन्त्रता को हर लेती है।

बुद्धि, विचारशीलता और संयम, इनके प्रयोग-द्वारा ही मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठता है और पहले अपने पर—अर्थात् अपने कमजोर अङ्गों और प्रवृत्तियों पर—विजय प्राप्त करके फिर अपने बढ़ते हुए ज्ञान-द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त करता है। शरीर की सञ्चालन-क्रिया और मन की प्रेरणा-शक्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिसका मन बलवान् है वह सब आकर्षणों को रोककर शरीर को आनेवाले दुःखों से बचा सकता है। आहार, पान, निद्रा आदि के सम्बन्ध में नियमित जीवन व्यतीत करने से ही शरीर स्वस्थ और अच्छा रह सकता है और यह बलवान् मनवाला ही कर सकता है। कई रोग तथा मस्तिष्क और शरीर की निर्बलताएँ मन के प्रभाव से अच्छी हो जाती हैं। सङ्गीत द्वारा रोगी को शान्ति पहुँचाना तथा उसकी पीड़ा दूर करना, इस बात के अच्छे उदाहरण हैं। इस प्रकार अभ्यास-द्वारा सबल मन अपनी अन्तःप्रेरणा-शक्ति द्वारा शारीरिक निर्बलताओं को भी दूर कर सकता है। नियमित जीवन तथा शारीरिक व्यायाम द्वारा स्वस्थ रह सकता है। संसार में सफल और सुखी होने के साधन भी दृढ़ विचारवाला ही जुटा सकता है।

इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि मन की सबलता, विचारों और सङ्कल्पों की दृढ़ता मनुष्य को नया जीवन दान दे सकती है। इसके द्वारा मनुष्य नई खोज, नए प्रयोग, नए कारोबार और काम-धन्धों में लगकर, आलस्य और अकर्मण्यता को छोड़कर अपनी सर्वतोमुखी उन्नति कर सकता है—वास्तव में मनुष्य बन सकता है। यही गीता का उपदेश है और इसी में देश और व्यक्ति का कल्याण है।

——

"मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि जिस तहजीब को अपनी हिफाजत के लिए ऐसे जङ्गली कानून की जरूरत महसूस होती है, वह असल में तहजीब ही नहीं है। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानी वहाँ अपनी इज्जत के लिए लड़ रहे हैं। वहाँ की जमीन असल में गोरों की जमीन नहीं। क्योंकि जमीन तो उसी की होती है, जो उस पर मेहनत करता है। अगर दक्षिण अफ्रीका के सभी सत्याग्रही काम आ गए, तो भी मैं उनकी मौत पर कोई आँसू नहीं बहाऊँगा। ऐसा करके वे न सिर्फ अपने-आपको मुक्त करेंगे, बल्कि वहाँ के हब्शियों को भी रास्ता दिखाएँगे और हिन्दुस्तान की इज्जत को सलामत रक्खेंगे। मुझे उन पर नाज है। और आपको भी होना चाहिए। यह सब मैं आपसे इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि आप इन बातों को सुनकर रो पड़ें या गोरों के खिलाफ गुस्से से और नफरत से भर जाएँ। बल्कि मैं तो यह चाहूँगा कि आप ईश्वर से यह मनाएँ कि वह गोरों को सही रास्ता दिखाएँ और हमारे भाइयों को इतनी ताकत और हिम्मत दे कि वे अन्त तक अपनी आन पर सचाई के साथ डटे रह सकें।"

—महात्मा गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी याद

श्री रामगोपाल विजयवर्गीय

'देखो ए ? हमारा यह सामान स्टेशन तक ले चलो, चार पैसे मिलेंगे। सुनती हो ?'

निरुत्तर।

वह मैले कपड़े पहने दुर्बल-सी अधेड़ स्त्री नतमस्तक पृथ्वी की ओर देखने लगी। एक बालक भी उसके निकट खड़ा था जो मुझे आश्चर्य-दृष्टि से छुप-छुपकर देख रहा था। मैंने फिर कहा, 'अरे ! कुछ जवाब तो दो, छः पैसे लोगी ? अच्छा उठाओ।'

स्त्री ने किञ्चित् मस्तक उठाया और मेरी ओर देखकर अपना घूँघट कुछ और आगे बढ़ा लिया। बालक अब भी मेरी ओर ताक रहा था।

मैं उसका उत्तर न पाकर अपना पाँव आगे बढ़ाने ही को था कि उस स्त्री ने अपना घूँघट दोनों अँगुलियों पर उठाकर क्षीण स्वर में कहा, 'सुनिए तो।'

मैं किञ्चित् रुका।

'आप कब आए ? यहाँ कैसे ?'

'तुम्हें इससे मतलब ?' मैंने घूमकर देखा।

स्त्री ने घूँघट को इस बार कुछ हटा दिया था, उसके पिचके हुए और सूखे मुँह पर हँसी की स्पष्ट रेखाएँ खिंची हुई थीं। आँखों के चारों ओर की कालिमा में सफेद चमकती हुई पुतलियाँ प्रभात के टिमटिमाते तारों की तरह मन्द प्रकाश में डूबी जा रही थीं। उसके अधर कुछ कहने के लिए विकल-से फड़कने की चेष्टा में थे, किन्तु रुक-रुक जाते थे। घूँघट अब भी दोनों अँगुलियों के ऊपर टँका था। लाख की काँच के टुकड़ों से जड़ी हुई चूड़ियाँ, जिनमें दो-तीन ही टुकड़े रह गए थे, मैल से काली होकर उसकी कलाइयों से कुहनियों तक उतर आई थीं। हड्डियों पर खिंचे हुए नसों के जाल उसकी दुर्बलता को अधिक कुरूप बना रहे थे। केवल मुख की आकृति ही बीते हुए सौन्दर्य का प्रमाण रह गई थी, जिसको दरिद्रता के दावानल ने झुलसा दिया था।

मैंने एक बार उसका अभिप्राय जानने की इच्छा से प्रश्न किया, 'क्या चाहती हो तुम ?'

वह घूँघट बढ़ाकर फिर मौन, पृथ्वी की ओर देखने लगी। कुछ कहने ही को था कि उसने नतमस्तक ही रुके-रुके शब्दों में कहा, 'मुझे नहीं पहचानते आप ?'

'मैंने तो नहीं पहचाना। आखिर कौन हो तुम ? स्पष्ट क्यों नहीं कहती ?'

'न सही', कहकर उस स्त्री ने अपना घूँघट पूर्णतया ऊपर [illegible] खींच लिया।

मैंने उपेक्षा से एक दृष्टिपात पुनः उसके मुख पर मेरी दृष्टि जहाँ-की-तहाँ रुक गई। क्षण में कुछ भूली मस्तिष्क में जाग पड़ीं। मैं अवाक् मूर्त्तिवत् देखता ही सुधिहीन-सा, किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा।

पन्द्रह बरस पुरानी वे घटनाएँ, वह विचित्र जीवन, होकर मेरे सम्मुख खड़े थे। एक तूफान-सा आकर भा को झकझोरता हुआ निकल गया।

कैसे थे वे दिन ! पिताजी जेल में थे। असहाय के जीवन-निर्वाह का साधन एकमात्र घर की चीजें ही खाना रह गया था। उस गाँव के उस बड़े-से घर में परिवार रहते थे। एक जितना सम्पन्न था दूसरा उ दरिद्र। दूसरे परिवार ही का यह घर था; हम बिना केवल उनकी कृपा और आत्मीयता के नाते रह रहे थे। उम्र सोलह-सत्रह के लगभग रही होगी। एक पाठ हिन्दी पढ़ता था। शाम को पाठशाला से लौटता और मुझे दरवाजे पर ही दोनों हाथ किवाड़ों पर लगाए मिलती। उसकी बारीक मलमल की ओढ़नी में से श गौर प्रभा निकलती रहती। झलमलाते हुए बड़े-बड़े का स्याही में डूबे, हास की रेखाओं से विकसित, उत्सुक, औ मेरे अन्तर में एक आनन्द और उल्लास की धारा प्रवाहित से उसके दोनों नेत्र चमक उठते। होठों पर स्मि रेखाएँ खिंचतीं और वह धीरे से परिवार के सभी लो आँखों से बचकर मुझे छू लेती। मेरी पुस्तकें और की लकड़ी की वह पट्टी गिरा देती जिस पर मैं गणित किया करता था। कभी हल्की-सी एक चपत लगा दे प्रतिवाद में हँसी की कल-कल धारा बहाकर घर के अन्द जाती। राजबाई उसका नाम था। प्यार में उसे सम्बोधन किया जाता था। घर में दुलार से पली लड़की चञ्चल, हठीली और ढीठ।

माँ उसे बहुत प्यार करती थी। प्रायः वह उस कोठरी ही के आसपास अधिक रहती। एक ही घ केवल बड़ा-सा आँगन हमारी कोठरी को उनके घर से वि करता था। रात को वह 'हिन्दी-शिक्षावली' तीसरा भा पढ़ती और उन सुन्दर रातों में, जब कि आँगन में रजत की तरह चाँदनी रात बिखरी रहती थी, पास के इमली की तिक्त महक हवा की ठण्डक में मिली हुई झूमती फिर आँगन में एक ओर गायों का बाड़ा था जिसमें बँधी हु आँख बन्द करके जुगाली करती रहतीं। घर के लोग सो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवा मस्त हो जाती। चाँद आसमान के बीचोंबीच बादलों की बिखरी हुई टुकड़ियों में से छुपता और प्रकट होता हुआ भागता-सा दिखलाई पड़ता। कभी कोई गाय सिर हिला देती और उसके गले में बँधी घंटियाँ बजकर मौन वातावरण में झनकार दा कर देतीं। फिर रात की उदासी छा जाती। राज एक कहानी सुनाती जिसमें साहूकार का लड़का विदेश चला गया था। उसका जहाज डूब गया। वह किसी तरह किनारे लगा। उसकी पत्नी को वियोग ने जलाकर भस्म कर दिया। वह करोखे में बैठकर उसकी प्रतीक्षा करती रहती। सावन आता और निकल जाता। वसन्त फूलता और मुरझा जाता।

राज पूछती, 'नींद आ रही है तुम्हें? अभी तो कहानी बहुत लम्बी है। साहूकार का बेटा तो लौटकर आया ही नहीं।' राज की माँ खटिया पर से पुकारती, 'बेटी! सोओगी नहीं? चाँद सर पर आ गया है। सारी रात जागना है क्या?'

'सोती हूँ माँ' कहकर राज फिर कहानी सुनाने लगती। अधूरी कहानी छोड़ने से पाप लगता है। वह जल्दी-जल्दी सुनाने लगती। मैं तब सोने का प्रयास करता। नींद नहीं आती थी। चाँद आकाश के मैदान में दौड़ लगाता रहता। तारे मानो नींद में पलकें झपकाते ऊँघने लगते। मैं सोचता, साहूकार का बेटा कितना निष्ठुर था। पर क्या करता बेचारा, जहाज जो डूब गया था। उसकी सुन्दर स्त्री क्या राज से अधिक सुन्दर होगी?

प्रातःकाल गायों का दूध दुहा जाता। छाछ बिलोई जाती। मक्खन का बड़ा-सा लड्डू बनाकर नित्य ही राज मेरे लिए अपनी माँ से चुराकर दे जाती। आँगन में कोलाहल-सा छा जाता। बछड़े उछलते-फिरते अपनी माताओं के साथ जङ्गल में जाने के लिए वे बन्धनों से मुक्त होने की निष्फल चेष्टा करते। गाएँ रम्हातीं। राज के नूपुर आँगन में छमछमाया करते। वह विद्युत्-प्रभा की भाँति कभी यहाँ और वहाँ प्रकाश करती होती। मुख पर मुसकान और आँखों में चञ्चल दृष्टिपात।

मैं पाठशाला जाता और वह पीछे से एक धक्का लगाकर कहीं छुप जाती। मेरी किताब और पट्टी आँगन में गिरकर चीख पड़ती। और तब हँसी का वही स्रोत प्रवाहित होकर अपनी सरस ध्वनि से वायु को झंकृत कर देता। घर में से आवाज आती, 'अरे, देखकर नहीं चलते हो।' मैं कहता 'माँ जी, राज ने गिरा दिया है।' वे राज पर बिगड़तीं तो जवाब मिलता, 'झूठ है माँ, मैं तो बछड़े को बाँध रही थी। आँखें बन्द करके चलें और नाम दूसरे का।' मैं देखता तो मुँह चिढ़ाकर अँगूठा दिखा देती। घर के सभी कुटुम्बी राज को लाड़ली बेटी बनाए हुए थे। उसके इन छोटे-छोटे परिहासों में बालसुलभ चपलता थी।

मैं पाठशाला से मध्याह्न-समय लौटता तो वह गायों के बाड़े में खड़ी मिलती। एक सिपाहियों-जैसी सलाम झटके हाथ से करती। हँसी की उन्मुक्त धारा में उसकी उज्ज्वल दन्त-पंक्तियाँ चमचमा उठतीं। हम बाड़े के उस छप्पर के नीचे बैठते जिसमें एक लँगड़ी चिड़िया ने अण्डे दिए थे। वह चिड़िया बहुत दिनों से हमारे आँगन में चुगती फिरती थी। उसका एक पञ्जा किसी कारण से टूट गया था। वह घोंसले के द्वार पर बैठी गर्मी के इस जलते हुए मध्याह्न में अधखुली चोंच से हाँफती रहती। वे दोनों बछड़े पैरों में सिर देकर सो जाते। छप्पर की शीतल छाया में झुलसाता हुआ पवन बलात् अन्दर घुस आता और धूल का एक गुब्बार-सा उड़ाकर निकल जाता।

सूनी घड़ियाँ; उस इमली के पेड़ पर बैठे हुए कौए कभी चीख उठते हैं। तोतों की पंक्तियाँ इमली कुतरने को पेड़ पर चली आती हैं। उनकी टें-टें ध्वनि निषाद के स्वरों में उठकर लय हो जाती है। राज के हाथ में एक घास का तिनका था। वह उसे अँगुली के चारों ओर लपेटकर बोली, कुछ लज्जित-सी, सहमी हुई-सी, 'तुम्हारे पिताजी आ जाएँगे। तुम्हारा व्याह हो जाएगा। फिर तुम नौकरी करने कहीं चले जाओगे क्यों? सभी मरदों को तो जाना पड़ता है। एक बात कहूँ? न, नहीं कहूँगी।' तुम मेरी हँसी करोगे। अच्छा कहूँ, तुम आँखें बन्द कर लो।' उसने मुँह फुलाकर कहा, 'फिर तुम मुझे भूल जाओगे। तुम्हारा क्या। क्या मैं तुम्हें अच्छी लगती हूँ? सच बताना?' कहते-कहते उसने मेरे दोनों कन्धे झकझोर दिए और हँसी बखेर दी।

मैंने कहा, 'अरे इतनी-सी बात, राज! तुम मुझे कितनी अच्छी लगती हो, क्या बताऊँ। तुम मुझे बहुत-बहुत अच्छी लगती हो। उतनी ही, तुमने एक कहानी सुनाई थी, वह राजा का लड़का राजकुमारी को बहुत प्यार करता था। है न याद?'

'नहीं।' उसने गम्भीर होकर कहा, 'वह तो राजकुमार को छोड़कर भी चला गया था।'

'अरे, तो मैं थोड़े ही चला जाऊँगा। हम तो यहीं रहेंगे। लेकिन.....लेकिन राज, तुम्हारा भी तो व्याह हो जाएगा। तुम्हें न जाने कहाँ जाना पड़े—कितनी दूर?'

'रहने दो, ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं। मैं व्याह ही नहीं करूँगी तब और तुम भी मत करना। वह देखो, इस घोंसले में तीन अण्डे हैं। देखे हैं तुमने? इनमें से बच्चे निकलेंगे—तीन। एक तो मैं पालूँगी। कितने अच्छे होंगे वे छोटे-छोटे चीं-चीं करेंगे—कितने सुन्दर लगेंगे तब!' ऐसी ही न जाने कितनी बातें वह करती। उसकी आँखों में मादकता सुधिहीन-सी होकर झूम उठती। यौवन-सुलभ लावण्य में वे डूब-सी जातीं।

मेरी आँखों में राज का सौन्दर्य छा जाता और मैं स्वप्नों के एक विचित्र संसार देखकर मधुर भावनाओं में डूब जाता। सोचता, वह मुझे कितना प्यार करती है। मौन मेरे होठों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाज की हँसती हुई मुख-मुद्रा मेरी आँखों के सम्मुख नाच उठती। ेरा स्वप्न टूटा। सामने वह दुर्बल-सी स्त्री खड़ी थी। वही ंसी की रेखा, वे ही आँखें, वही स्वर! मैंने जैसे स्वप्न देखा ो। मेरे मुख से सहसा निकल पड़ा, 'राज, तुम हो . तुम हो ाज.. तुम्हारी यह अवस्था...क्या हो गया है तुम्हें? और यह ालक?'

कुछ रुककर उसने कहा—"घर चलिए, वही तो घर है।"

वह मौन थी। यह उसकी ससुराल थी। मैं मन्त्र मुग्ध-ा साथ हो लिया। एक टूटा-सा वीरान-सा घर था, मानो अपनी अवस्था पर रो रहा हो। वह अन्दर चली गई। उसने ूँघट नीचे तक खींच लिया था। एक सज्जन फटी-सी दरी पर ठे थे। उन्होंने मुझे आश्चर्य-दृष्टि से देखा। राज ने मेरा रिचय दिया। राज के पति खेती करते थे। लेन-देन का ुराना धन्धा छोड़ चुके थे। दोनों स्त्री-पुरुष और वह बालक स घर में हैं। कुछ जलपान से मेरा स्वागत किया गया। कुशल-ेम के बनावटी शब्दों का ले-देकर मैं बिदा हुआ। राज कुछ ूर मेरे साथ तक आई। वह मौन और लज्जित-सी मेरे शब्दों ा परिमित उत्तर देती थी। मैंने पूछा—"राज, वे दिन भी भी याद आते हैं? वह तुम्हारा घर, गायों का बाड़ा, वह छप्पर और वह लँगड़ी चिड़िया, जिसने अण्डे दि जिसके बच्चे पालने की चाह थी, वह चाँदनी रात, इमली का पेड़!"

मैंने देखा, राज की आँखों में आँसू छलछला रहे थे आँसू वियोग के थे या संयोग के, हर्ष के थे या विषाद कुछ न जान सका। उसने रुँधे कण्ठ से कहा, 'यह मुझे दो, मैं स्टेशन तक पहुँचा दूँगी।'

'लज्जित न करो, राज!' कहते हुए मैंने पाँव बढ़ाए। के साथ हृदय में एक ऐसा बोझ ले लिया था जो उठ उठता था। मैंने एक बार गरदन घुमाकर देखा, राज मू वहीं खड़ी थी। उसकी वह मूर्ति मेरे हृदय में अं हो गई। वह दरिद्रता के बोझ से दबी, दुर्बल, रुक उत्तर देती हुई लज्जित-सी विगतयौवना नारी। कितने समर्पण, कितनी आत्मीयता और कैसी करुणा की मूर्त्ति थी क्या यह वही राज है, जो कहती थी—"सच बताना, क्या मैं अच्छी लगती हूँ।" और यह सब कहते हुए जिसकी दन्त मोतियों-सी झलक उठती थी; जिसकी आँखों में मा उछलती दिखाई पड़ती थी! आज की यह राज, और दरिद्र गृहस्थी!

हिमालय

श्री चन्द्रकुँवर वर्त्त्वाल

(१)

वन्दना (स्वर्ग-सरि मन्दाकिनी)

गौरी-पिता-पद-निसृते, हे प्रेम-वारि-तरङ्गिते!
हे गीत-मुखरे, शुचि-स्मिते, कल्याणि भीम मनोहरे!
हे गुहा-वासिनि योगिनी, हे पुष्प-कूल-विलासिनी!
मुझको डुबा निज काव्य में, हे स्वर्ग सरि मन्दाकिनी!
मैं बैठकर नवनीत-कोमल-फेन पर शशि-बिम्ब-सा
अङ्कित करूँगा जननि तेरे अङ्क पर सुर-धनु सदा।
लहरें जहाँ ले जायँगी मैं जाऊँगा जल बिन्दु-सा
पीछे न देखूँगा कभी आगे बढ़ूँगा मैं सदा,
हे तट-मृदगोत्ताल-ध्वनिते! लहर-वीणा-वादिनी;
मुझको डुबा निज काव्य में हे स्वर्ग-सरि मन्दाकिनी।

(२)

पहली किरण

मैं हिमालय पर गिरी पहली किरण हूँ।
मैं धरा को देखती पहली किरण हूँ।
मैं हिमानी की प्रथम अनुराग-रति-रेखा सुनहली;
सूर्य की मैं दूतिका पहुँची प्रिया के पास पहली;
मैं मृदुल चम्पक-कली हूँ, सूर्य ने जिसको गिराया;
और वसुधा के कपोलों पर गिरी रवि-प्रेम-काया;
पवन से बुझने न वाली ज्योति-श्वास;
दीप की सुन्दर शिखा मैं ज्योति-आशा!

(३)

स्वर्ग से सुन्दर हिमालय

तुमसे पावन और उच्च पृथ्वी के—
पास नहीं था, इसी लिए पूजन करने की—
अभिलाषा जब हुई उसे प्रभु के चरणों की—
तुम्हें उठा हाथों में कमलों की माला-सी;
भूमि लग्न वह हुई भक्ति से गद्गद होकर!
उसी भाँति अम्लान स्वच्छ निश्चल आँखों से
देख रहे तुम स्वर्गलोक की ओर ज्योति में
जहाँ वास करते प्रभु पृथ्वी के परमेश्वर;
प्रभु आएँ या नहीं ग्रहण करने को तुमको
स्वर्गलोक ही अथवा नहीं जहाँ वह रहते;
पर अपनी दृढ़ भक्ति और निश्चल श्रद्धा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गलोक का निशि-दिन चिन्तन करते-करते
तुम बन गए स्वर्ग से सुन्दर लोक स्वयं ही।

(४)

एकरस हिमालय

दूर स्वर्ग के नीचे तारों की छाया में—
खड़े हुए हैं कुछ पर्वत चुपचाप धरा पर;
अपनी शोभा से प्रगाढ़ तम के सागर में—
फैलाते धूमिल प्रकाश का नीरव कम्पन!
संख्याहीन जुगनुओं की हलकी झिलमिल में—
शान्त दिग्गजों के समूह-से अवनतलोचन-
घोर मरण के बीच शून्यता की लहरों में—
ज्योति जगाए रखते चिर-पवित्र जीवन की;
सूर्य रात्रि में बुझ जाते, दीपक प्रभात में;
घटता-बढ़ता रहता हर्ष चन्द्र के मुख का;
परिवर्तन की लहरों पर निस्सङ्ग कमल-सी
खिलनेवाली ज्योति इन्हीं के मुख पर फैली।

(५)

पुराण मुनि

शोभित चन्द्रकला मस्तक पर
भस्म-विभूषित नग्न कलेवर
कटि पर कृष्ण गजाजिन-सा घन
गिरती घोर घोष कर पद पर
वज्र छटा-सी दीप्त सुरधुनी!
शान्त नयन गम्भीर मुखाकृति
अथ-इति-हीन वीर्य-यौवन, धृति,
दीप्त प्रभा रवि उद्भासित मुख
मूर्तिमान आत्मा की जाग्रति
ज्योति-लिखित ओङ्कार स्वरित ध्वनि
आदिपुरुष है! हे पुराण मुनि!

(६)

तपस्वी

बिखरा जटा खड़ा वह तापस युग-युग से पर्वत के ऊपर!
पूर्व दिशा की ओर चमकता उसकी रजत-जटा पर दिनकर;
पश्चिम में बैठी है रजनी उसी जटा के नीचे छिपकर!
पूर्व दिशा से उमड़ रहे हैं उसकी जटा छोड़कर निर्झर!
पश्चिम में उसके बालों में, लिपट रहे हैं व्याल भयङ्कर!
पूर्व दिशा से अमृत झरता, पश्चिम से विष झरता झर-झर
कटि पर उसके लहराते घन, चूर-चूर तारे मस्तक पर
बिखरा जटा खड़ा वह तापस युग-युग से पर्वत के ऊपर।

(७)

मूर्तिमती करुणा

पड़ी देश पर मेरे हरित तुम्हारी छाया—
मेरे विपिनों से उज्ज्वल गर्जन कर आया
हास तुम्हारा, स्नेह तुम्हारा, हृदय तुम्हारा!
मेरी धरती को प्यासी ही छोड़ गगन में—
दौड़ रहे मेघों को, तुमने दृढ़ हाथों से—
रोक, सहस्रों सरस स्वरों में अमृत उनका—
शुष्क हृदय पर मेरी पृथ्वी के बरसाया।
कृषक जोतते अपने खेतों को घाटी में—
कृषक-नारियाँ गाती-गाती काट रही हैं—
खेतों की पीली-पीली शोभा, तरु-तरु पर—
रस सञ्चित करते फल, वन-वन में चरती हैं—
पशुओं की टोलियाँ, कूकते सुन्दर पंछी!
आँखों में करुणा ओठों में हँसी मनोहर—
भरे, देखते तुम मेघों के पीछे छिपकर
सुखी धरा को सुनते प्रतिपल पुलकित होकर
गृह-गृह से वन-वन से उठती हर्षित ध्वनियाँ!

(८)

यज्ञभूमि

यज्ञ हिमालय में करते हैं आज देवगण,
शिखरों से उद्गीर्ण हो रहे हैं धूमिल घन—
जले हविस के और सुरभि से भरी गिरि-पवन
मन्द्र-स्निग्ध मन्त्रों के स्वन कर रही है वहन,
मन्द हर्ष की रेखा है कर रही सञ्चरण—
धरणी के आनन पर, सुरप्रिय देवदारु-वन;
भूर्जपत्र-वन जो काषाय वसन कर धारण—
रहते हैं निर्जन हिम के पर्वत-शृङ्गों पर
सुर-दम्पति के लिए बिछाते छाया सुन्दर—
सब प्रसन्न हैं करते हैं रहस्यमय मर्मर;
उदयाचल-शृङ्गों से सूर्यलोक में भास्कर—
के अब सजता अश्व अरुण है—शेष धरा पर
छाया रहता अन्धकार अज्ञान गाढ़तर।

(९)

कल्याणकारी हिमालय

तुमसे जीवन पाकर दिशा-दिशा में नदियाँ
बहती जातीं करती प्रिय जीवन की ध्वनियाँ।
सिञ्चित करतीं, जीवित करतीं निज कूलों को।
रसमय करतीं, विकसित करतीं फल-फूलों को।
रोग-शोक, दुख-दैन्य, मलिनता तन की, मन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी को जलहीन बनाने का भीषण प्रण—
कर, करते जब रवि निदाघ में ज्वाला वर्षण;
खो जातीं नदियाँ पथ में ही चलते-चलते
विकट तृषा से जब पृथ्वी के प्राणी मरते,
तुम उस काल पिघल; करुणा से बन, जल शीतल
भरते रहते अपनी नदियों का अन्तस्तल।
वे बहती रहती हैं दग्ध धरा के उर पर
अमृत की धाराओं-सी कोमल कल-कल कर
सिञ्चित करतीं, जीवित करतीं, निज कूलों को,
रसमय करतीं, विकसित करतीं फल-फूलों को,
रोग-शोक, दुख-दैन्य, मलिनता तन की, मन की
अपनी शीतल सुधामयी लहरों से हरतीं॥

(१०)

प्रकाश-हास

किस प्रकाश का हास तुम्हारे मुख पर छाया?
तरुण तपस्वी, तुमने किसका दर्शन पाया?
सुख-दुख में हँसना ही किसने तुम्हें सिखाया?
किसने छूकर तुम्हें स्वच्छ निष्पाप बनाया?
फैला चारों ओर तुम्हारे घन सूनापन;
सूने पर्वत चारों ओर खड़े, सूने घन—
विचर रहे सूने नभ में, पर तुम हँस-हँसकर
जाने किससे सदा बोलते अपने भीतर।
उमड़ रहा गिरि, गिरि से प्रबल वेग से झर-झर—
वह आनन्द तुम्हारा करता शब्द मनोहर;
करता ध्वनित घाटियों को धरती को उर्वर
करता स्वर्ग धरा को निज चरणों से छूकर,
किस सुहृद से सुधा-स्रोत वह तुमने पाया?
किस प्रकाश का हास तुम्हारे मुख पर छाया?

(११)

उग्र रूप

सहसा ही गम्भीर हुआ उसका मुख, भौंहों—
में काले बादल घिर आए; लगीं चमकने—
तीक्ष्ण बिजलियाँ—अट्टहास कर उठे अचानक
निज कराल दंष्ट्राएँ खोल वज्र दुर्दशन।
ढका क्रोध से वह अपने ही धूम्र-जाल के—
नीचे दावानल-सा महाप्रलय उकसाता!
उत्तर से घनघोर पवन उन्मत्त हो लगी—
उसके अन्धकार को चारों ओर उड़ाने!
घिरा गगन, ढक गए सूर्य, पृथ्वी चिन्तित हो
बैठ सघन छाया में मस्त भाव से, उसको—
लगी देखने—मयपुर की दानवबालाएँ सी
महादेव ने अट्टहास कर, काँप क्रोध से
फैला घोर जटा, चमका त्रिशूल हाथों में
जब उस पर थी डाली महानाश की छाया!

(१२)

भीषण सौन्दर्य

फैला चारों ओर सघन हिम का जड़ सागर
लहर प्रकम्पन-हीन, हीन-वेला, स्वर गर्जन
चन्द्रलोक पर का-सा फैल रहा सूनापन
मँडराते हिम-भरी घाटियों में उन्मद घन,
शिखरों से सवेग हिम निचली ओर फिसलता,
जिससे आहत होकर पृथ्वी रोती हिलती;
गुफा-गुफा से निकल सगर्जन हिम की नदियाँ
उठा रही हैं गिरि में एक तुमुल कोलाहल,
ताण्डव-नृत्य-कला-सी नाच रहीं शिखरों पर।
पवन उड़ रहा निज बर्फानी गुफा-नीड़ से—
तीव्र बाज-सा; पक्षों से विदीर्ण करता वन
झपट रहा क्रोधित नागिन-सी मुड़ी सरित् पर।
मोर पङ्ख फैलाए देवदारु के वन पर,
काँपा रहा धरणीधर रोष-भरे पङ्खों से,
मृत्यु-सञ्चरण करती, इन सूने शिखरों से—
झुककर नीचे देख रही गिरि की गहराई।
जहाँ पहाड़ों में पिचकी सरिता रोषीली
गरल उगलती है मुख से, पत्थर पर टकरा,
कभी चढ़ रही बर्फीले हिम के शिखरों पर;
कुत्ते-सा दौड़ता पवन है पीछे-पीछे,
जिसके पास अमृत की कुछ बूँदें रक्षित हैं;
पीकर बनने अमर फिर रही मौत भयङ्कर—
खोज रही सुन्दरता को गिरि के शिखरों पर।

(१३)

किन्नरियाँ

जहाँ जन्म ले गङ्गा ऊँचे हिम-शिखरों पर
चट्टानों पर गिर विचूर्ण हो—पुनः पूर्ण हो
गहरी सूनी, अन्ध घाटियों में भय से द्रुत—
वज्र-शिलाओं पर गिरती-पड़ती है बहती—
क्रुद्ध-नागिनी-सी अपने फन सहस पटकती,
जहाँ बैठते शृङ्ग-शृङ्ग पर काले बादल,
वज्रघोष-से हँसते। बिजली की चल लपटें
पल-पल में जिनके शरीर से सरव निकलती
महावेग से दिशा-दिशा में चमक फैलती,
धूम्रकेतु-सी प्रलय मचा फिर सहसा बुझतीं,
जिनके तन से, अपने तीव्रातुर चोंचों से,
चातक हिम के टुकड़े तोड़-तोड़ जल पीते।
जहाँ पवन उड़ निज बर्फानी गुफा-नीड़ से—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर पङ्खों का घोर घोष सूने अम्बर में—
झपट नागिनी-सी कुछ मुड़ी हुई नदियों पर;
तीव्र चञ्चु से देवदारु-वन छिन्न-भिन्न कर
घूम सनसना चीड़ों में कम्पित शिखरों से—
उड़ जाता अम्बुधि की छाया देख वेग से,
वज्र गिराते, कड़ी बिजलियों को चमकाते
शिखर-शिखर पर लड़ते दुर्जय तीव्र पवन से
जहाँ वास करते दुर्भिक्ष, राक्षसी बाढ़ों--
और भयानक भूकम्पों के नीले बादल।
उस हिमगिरि के अञ्चल में रहतीं किन्नरियाँ।

(१४)

हिमालय से

हे उत्तर के श्वेत केश चिर-तरुण तपस्वी!
हे पृथ्वी के निर्मलतम धन! हे वसुधा की—
स्वर्ग-भूमि! हे गङ्गा की निर्मल लहरों के—
पिता हिमालय! मेरी वाणी को प्रशस्तता—
औ' शुचिता दो! अपने उज्ज्वल प्रासादों में,
सूर्य-चन्द्र के दीप जिन्हें आलोकित करते,
जिनमें अमरों के बालक प्रिय क्रीड़ा करते!
सुरकन्याएँ जहाँ मधुर बाँसुरियाँ लेकर,
करती रहतीं कोमल ध्वनियाँ—वहाँ मुझे भी
रहने दो; मुझको भी वे प्रिय स्वर सुनने दो;
स्वर्गलोक की उस पावन शोभा से अपने—
नयनों को मुझको भी हे पावन, भरने दो!
वह चिर चञ्चल देवकुमारी जो कानों में—
मेरे कर मृदु गुञ्जन, प्रेम-भरी बातों से
हृदय प्रफुल्लित कर मेरा—सहसा ही, मुझको
छोड़ चली जाती है अपने पङ्ख खोलकर!
नील गगन में वायु-तरङ्ग-सदृश मृदु हँसकर।
उस सुरकन्या क्वचित् प्रेयसी को पाने को
बैठ तुम्हारे किसी शृङ्ग पर मैं यौवन भर—
कठिन तप करूँगा—रोने से यदि उसका उर
पिघलेगा, मैं रोऊँगा रजनी भर जगकर!
यदि हँसने से वह आएगी; मैं निर्झर-सा
खड़ा रहूँगा हँस-हँस जीवन-पथ पर चलता;
वह चाहेगी यदि कमलों का हार पहनना
अपने मानस के निर्जन तट पर धीरे से—
उतर शान्त जल में चुपचाप खिले कमलों को
तोड़, गूँथ दिन भर माला, गुञ्जित छाया में
फिर सन्ध्या के समय उसे उसके चरणों पर
रख दूँगा,—जैसे पृथ्वी अपनी शोभा को
रख देती है सन्ध्या के कोमल चरणों पर।

(१५)

माधुरी

माधुरी मेरे हिमगिरि की
मधुर हँस निर्मल नभ के पास
उमड़ झरनों में स-रव स-हास
पीठ पर बिखरा नीले बाल
डाल उर पर सुरसरि की माल
बिछा गिरि-तल पर निज अञ्चल
देखती हो पथ को प्रतिपल
माधुरी मेरे हिमगिरि की!
सींच नित शिशु विपिनों के प्राण
लताओं में विकसा मुसकान
सुशीतल शैल-वनों के बीच
भुला मृगियों को गा-गा गान
कुसुम-सी तज सुमधुर निश्वास
नचाती अलि को चारों पास
माधुरी मेरे हिमगिरि की।
पकड़ लम्बी अलकों के छोर
किसी आशा में बनी विभोर
गुफा से प्रेयसि, तुम प्रतिबार
नील नभ में क्या रही निहार!
मेघ गति से कर रहा गमन
उतरता आता नव सावन?
माधुरी मेरे हिमगिरि की!
धार सुरभित वासन्ती-बास
हृदय में भर सुमधुर अभिलाष
बना माला कर कुसुम चयन
बिछा कुञ्जों में मधुर शयन
चाँदनी में हँस अपने आप
सुन रही हो किसकी पद-चाप?
माधुरी, मेरे हिमगिरि की!
तुम्हारी ज्योत्स्ना में चुपचाप
डूब जाता अपलक जीवन
उच्छ्वसित होकर अपने आप
बिखर जाता स्वर का बन्धन।
गूँज कोमल कानों के पास
न जाने क्या कहता यौवन।
माधुरी मेरे हिमगिरि की।
तुम्हारे साथ अनेकों प्रात;
मनोरम दोपहरें निर्वात;
अनेकों बीतीं सन्ध्याएँ
अनेकों रातें पुलकित गात;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न जाने कितने प्रिय जीवन
किए मैंने तुमको अर्पण।
माधुरी मेरे हिमगिरि की।

(१६)

सन्तोष

मुझे इसी में है सन्तोष!
हिमगिरि में छोटा-सा घर हो
धूप सेंकने को दिन-भर को—
एक सुखद आँगन हो, जिस पर—
बहती रहे हवा निर्दोष!
आँखों के आगे हँसते हों
हिम के स्वच्छ शिखर, झरते हों—
जिनसे निकल-निकलकर झरने
करते उपलों पर कल घोष!
चाह न हो कुछ भी पाने की
और न शङ्का खो जाने की;
कटते रहें शान्ति से मेरे—
नीरव प्रात, सुरम्य प्रदोष!
मुझे न जग में कोई जाने
मुझे न परिचित भी पहचाने
रहूँ दूर मैं जहाँ हृदय को—
छू न सकें पृथ्वी के दोष।
वहाँ मधुर फूलों से घिरकर
विहगों की ध्वनियाँ सुन-सुन कर
रहूँ खोजता गुन-गुन कर मैं—
अमर शान्ति का शुचि मधु-कोष!

(१७)

भागीरथी

सोच मत कर ग्रीष्म को लख हे सदय भागीरथी,
दीन हो सकता हिमालय है नहीं भागीरथी,
पहुँचकर तट पर तुम्हारे निखिल जग की प्यास ले
प्राण प्यासे ही न लौटेंगे कभी भागीरथी!
कर तुम्हारे पुण्य-दर्शन, छू तुम्हारे चरण पावन,
प्राण तुममें ही निलय खोजें सदा भागीरथी!
खो गईं मरुभूमि में जो आज प्यासी मिट रहीं
सोच उनका भाग्य तुम पाओ न भय भागीरथी!

(१८)

देवदारु का वन

नीला देवदारु का वन है
जिस पर मोहित हुआ पवन है,
छाया के अधरों पर झुककर
तरुवर करते मृदु-मृदु मर्मर
हिमगिरि में निदाघ फैला है
खुरच रही हरिणियाँ वदन है
नीला देवदारु का वन है।
तोड़ हृदय की स्तब्ध वधिरता—
पर्वत चीर विमल जल गिरता।
रुक, दर्पण बन किसलय वन की—
परियों के लखता आनन है
नीला देवदारु का वन है।
जहाँ जरा-सा फैला समतल
जहाँ बिछी है दूर्वा कोमल
वहाँ बैठकर कृषक कुमारी
किसका यह करती चिन्तन है
नीला देवदारु का वन है,
दूर मुग्ध मधुकरी डोलती
खगी कहीं कोई न बोलती
सूनी सड़क, अकेला पर्वत
छाया में कर रहा शयन है
नीला देवदारु का वन है।
आधे ढके चमक से लोचन
घुटनों पर तिरछा है आनन
शिथिलित भ्रू, बाँहें मुड़ पीछे
अलकों का बाँधे बन्धन हैं
नीला देवदारु का वन है।

× × ×

काँप उठा हरिणी का यौवन
हिलने लगा उठा बाँहें वन
पवन-प्रपीड़ित लतिका तल पर
किसका यह करती चिन्तन है!
नीला देवदारु का वन है।

(१९)

वन-देवी

[१]

वन में बजते रहते नूपुर, छाया में सुन पड़ते मृदु
तरु से रह-रह सुमन बरसते, रह-रह भर आता पिक
बसती है इस वन में कोई, जिसकी सुषमा वन में
मोह रही मन जिसकी शोभा, पर पड़ती है जो न

[२]

गोशाला में सोतीं गाएँ, ग्वाले सोते घर के भीतर,
तब कोई वन में सुन पड़ती गायों को पुकारती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाएँ स्थिर हो सुनने लगतीं, वन-देवी का वह कोमल स्वर
रजनी का घन अन्धकार, छाया रहता बाहर पृथ्वी पर।

[३]

होता प्रभात जब वन-वन में, लतिका के तल पर तब मिलते,
कुछ कुसुम पड़े, जो वृन्तों से होंगे रजनी में चुने गए।
कुछ लोग सोचते हैं तब यह, 'वन-देवी ने इन फूलों से—
शृङ्गार किया होगा लतिका तल पर, रजनी भर रह करके॥'

[४]

दोपहरी देख पथिक, वन में जब करता है छाया-सेवन,
तन्द्रा आकर धीरे-धीरे देती है उसके मूँद नयन।
सहसा किसकी आहट सुनकर उसके हो जाते सजग नयन!
निर्जन वन के उर में किसके चरणों की सुनता वह गुञ्जन?

[५]

गिरि के शृङ्गों पर वहाँ, जहाँ फिरते रहते प्रतिपल बादल,
जिनके ऊपर फैला रहता कुहरे-सा सदा बर्फ शीतल।
उन गिरियों पर प्रतिसन्ध्या को, कुछ रङ्गबिरङ्गी छायाएँ—
नाचती देखकर, सब कहते, वनदेवी हैं ना चती यहाँ!

[६]

होकर वसन्त में अलि व्याकुल जब प्रेमी तरु के तल-तल पर
खोजता प्रेमिका को, निराश होकर गिर जाता दूर्वा पर,
उस समय कौन कुसुमित वन से, उसके मन की देवी लाकर,
कर देती है उसकी निद्रा प्रियतमा-समागम से सुन्दर!

(२०)

किन्नर कवि

इन शिखरों पर लेटे देख अनेकों बादल
सूर्यातप में, पर फैलाकर, हिम पर कोमल,
कई सानुओं में गज-गति से विचरण करते,
कुछ लख के सर, भरी घाटियों ओर उतरते
बैठ, हिमालय, एक तुम्हारे गिरि पर पावन
जिस किन्नर ने मुक्तकण्ठ हो गाया गायन,
वह था एक देवता, उसका राग अमर था।
वही गीत सुनसान पर्वतों के शिखरों पर
बहता नव समीर-सा बादल-पर फैलाकर
शून्य घाटियों से मधु-रस की बरसा करता,
अपने स्वर से मूक हिमालय मुखरित रखता।
फिर वसन्त में फिरता था वह गङ्गा तट पर
देवदारु के गिरि-वन में, एकाकी सुन्दर,
एक अमर कवि, जब शिखरों पर कजल जलधर
झुके हुए थे, नील कर रहे उच्च गिरि-शिखर।
वह कवि बैठा एक स्फटिक की स्वच्छ शिला पर,
लगा देखने तुम्हें हिमालय, मुचकित होकर—
मधुर मेखला तक करते सञ्चरण सघन-घन—
बरसाते घन कुहरा अन्धकार, नव जल-कण!
और शिखर पर फैली किरणें कान्त सुनहली
जहाँ धूप सेवन करती सुर-सिद्ध-मण्डली!
उमड़ी कवि के उर से नव गीतों की धारा
देख दृश्य यह त्रिभुवन-मोहन प्यारा, न्यारा!
मानव-कण्ठों में उस दिन के गीत मनोहर
बसे रह गए, भूल न पाया उनको फिर नर।

भारतीय अन्न-समस्या

श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार

"दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥"

× × ×

चार साल के 'अधिक अन्न उपजाओ' आन्दोलन के बाद हम आज अपने को अकाल के मुँह में पाते हैं और १९४३ बङ्गाल के अकाल से भी भीषण और व्यापक अकाल का भय ा हुआ है। हमारे अन्न-मिशन संयुक्त राष्ट्र, ब्राजील, अर्जे-न आदि देशों को जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के ा जहाँ पहले से ज्यादा खा रहे हैं—यथा :—

	१९४५	१९४६
	पौंड	पौंड
मांस	१३१·५	१५०·१
मक्खन	१०·५	११·६
चर्बी	११·९	१२·६
शाली धान्य	१६०·४	१५७·०

वहाँ अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसीडेंट मि० हूवर के मत से भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनाज की कमी इस प्रकार है :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	टनों में
बम्बई	३३०००
मद्रास	८६००००
मैसूर	११४०००
त्रावनकोर	५८०००
कोचीन	३६०००
दक्खन	११६०००
बिहार	९३०००
संयुक्त प्रान्त	१४४०००
बङ्गाल	३०२०००
अन्य प्रान्त	२५०००००
योग	२३३६०००

स्थिति भयावह है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। राशन ८ छटाँक से छः छटाँक रह गया है। यही बात हमें प्रतिदिन सचेत करती रहती है कि देश पर भीषण अन्न-सङ्कट आया हुआ है। सम्राट् पृथ्वीराज की पराजय के बाद दिल्ली में पहली राष्ट्रीय सरकार श्री नेहरू के नेतृत्व में स्थापित हुई है। इसके सामने पहली मुख्य समस्या अन्न-वस्त्र-सङ्कट है। यह समस्या एकाएक उत्पन्न नहीं हो गई है और न यह आकस्मिक और दैवयोग से उत्पन्न हुई है। यह समस्या पुरानी है, अतः इसके मूल कारणों को ढूँढ़ना चाहिए। उनको दूर किए बगैर हम अन्न-सङ्कट को दूर नहीं कर सकते।

यह सत्य है कि अन्न-सङ्कट अकेले भारत पर ही नहीं आया है और यह व्यापक है। शान्ति के समान यह आज एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। मगर यह भी इसके साथ स्वीकार करना होगा कि भारत के सामने जैसी विकट समस्या है, वैसी योरप और चीन के सामने नहीं है। उनकी समस्या अल्पकालिक है और लड़ाई युद्धजन्य कारणों से उत्पन्न है। पर हमारी स्थायी है। ब्रटेन के समान यदि हमारा देश औद्योगिक होता, तो हम आयात के भरोसे निश्चिन्त हो सकते थे। मगर 'सस्यश्यामला भूमि है यहाँ की' यह गीत आज हमें निश्चिन्त होकर बैठने की प्रेरणा नहीं करता।

समस्या की गम्भीरता और महत्ता का अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि सर थियोडोर ग्रेगरी—भारत-सरकार के आर्थिक सलाहकारक—की अध्यक्षता में १९४१-४२ के अन्त में बनी कमिटी ने १९४४-४५ में समाप्त होनेवाले तीन सालों के वास्ते जो योजना बनाई थी वह भी कमी की थी। ग्रेगरी-फ़ार्मूला इस प्रकार था :—

	उत्पादन टनों में	आवश्यकता टनों में	कमी टनों में
१९४२-४३			
चावल	४५०५०००	४९६३०००	(–) ४५८०००
ज्वार-बाजरा	२४१६०००	२८९००००	(–) ४७४०००
१९४३-४४			
चावल	४६१६०००	४९६२०००	(–) ३४६०००
ज्वार-बाजरा	२६०७०००	२८९००००	(–) २८३०००
१९४४-४५			
चावल	४६०४०००	४९६२०००	(–) ३५८०००
ज्वार-बाजरा	२७२४०००	२८९००००	(–) १६६०००

यह मद्रास प्रान्त के लिए था और इसमें आन्ध्र ही है। सम्मिलित था। इन तीन सालों में मद्रास प्रान्त को गेहूँ सरकार से निम्न मात्रा में मिला :—

	टनों में
१९४२-४३	७९६६३०
१९४३-४४	२४३७५०
१९४४-४५	४९०३९

इस सहायता को प्राप्त करके भी वह आत्मनिर्भर नहीं इस पर भी कमी बनी रही। इसको पूरा करने के लिए दो सालों में मद्रास प्रान्त को डालें इस प्रकार भेजी गईं :—

	टनों में
१९४३-४४	९१३४२
१९४४-४५	५७३०२

मद्रास के सामने सबसे अधिक भीषण अन्न-सङ्कट की है। उसको हल करने में देश किस तरह असफल रहा उपर्युक्त तालिकाओं से स्वतः स्पष्ट है।

यह एक प्रान्त की बात हुई, जिसकी आबादी बङ्गाल यू० पी० के बाद सबसे अधिक है। यदि समस्त भारत की दृष्टि से देखें तो समस्या की उग्रता और भी अधिक रूप में सामने आती है।

'इम्पीरियल कौंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च' की दात्री कमिटी के अनुमान के अनुसार भारत में प्रत्येक न्यूनतम अन्न १८ औंस मिलना चाहिए। इस हिसाब भारत की ४० कोटि आबादी के लिए लगभग ५४०० टन अन्न चाहिए। भारत में हाल के कुछ वर्षों का धान्यों का औसतन् उत्पादन ५२५००००० टन हुआ १५००००० टन की प्रतिवर्ष कमी रही है। भारत बहुत तक १०००००० टन अनाज आयात भी करता रहा है। स्पष्ट है कि हमारी पर्याप्त अन्न-पूर्ति और विपत्ति के बीच बहुत थोड़ा है। इससे यह भी प्रकट है कि यदि उत्पादन में १००००० टन भी कमी हो गई और राशन औंस भी कर दिया गया तो भी ८० लाख जनों के इस कमी का प्रभाव पड़ेगा। इस साल भारत को ४० लाख टन अन्न की कमी का सामना करना पड़ा है। इसका जनों पर असर होना अनिवार्य है। शहरों और कस्बों

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम कर देने पर भी, जिसका प्रभाव ५३०००००० जनों पर होगा, दस करोड़ जनों की जान बचाने और उनको मृत्यु-मुख से निकालने के लिए भारी मात्रा में हमें अन्न आयात करना पड़ेगा और इसी कारण एक साल में तीन अन्न-मिशन अब तक इस देश से जा चुके हैं।

आबादी की वृद्धि

भारत की आबादी अन्न-पूर्ति की अपेक्षा बड़ी तेजी से बढ़ रही है। प्रतिवर्ष ५० लाख बढ़ रहे हैं। आबादी की वृद्धि किस तेजी से हो रही है, यह निम्न तालिका से स्पष्ट है :—

	लाखों में
१८९१	२८०
१९०१	२८४
१९११	३०३
१९२१	३०६
१९३१	३३८
१९४१	३८९

अगली जन-गणना पर भारत की आबादी ४५ कोटि हो जाएगी। इसलिए आर्थिक योजना का आबादी की नीति एक आन्तरिक भाग होना चाहिए। बम्बई-योजना के पुरस्कर्त्ताओं ने इसका खयाल रक्खा है और इसी विचार से उन्होंने कहा है कि राष्ट्रीय आय तीन गुना करने का अर्थ वस्तुतः प्रति व्यक्ति आमदनी तीन गुनी होगी। इसलिए हमारे सामने मुख्य समस्या जन्म-संख्या की है। यदि सामाजिक सुरक्षा-योजना-द्वारा राष्ट्रीय न्यूनतम की गारंटी हो जाए, तो जनता को खाने को पर्याप्त और अच्छा अन्न, पहनने को पर्याप्त वस्त्र और रहने के लिए स्वास्थ्यदायक घर प्राप्त हों और मृत्यु संख्या १५ प्रति हजार हो जाए। जन्म-संख्या भी फलतः कम होगी। पर इसमें समय लगेगा। शिक्षा का फल एकदम प्रकट न होगा। इसलिए हमें परिवार-नियोजना-निर्माण की आवश्यकता है। प्रतिदिन प्रति व्यक्ति को पेट भर भोजन मिले, इसके लिए आवश्यक है कि हम परिवार-योजना भी बनाएँ और प्रत्येक परिवार के सदस्यों की संख्या सीमित करें। इसके अभाव में हमारा सामाजिक और आर्थिक तन्त्र गिर जाएगा और राष्ट्रीय योजना विफल हो जाएगी। विवाह की उमर और अधिक ऊँची करनी चाहिए। १८ साल से कम किसी लड़की का विवाह न होना चाहिए। इसी प्रकार २२ साल से कम किसी लड़के का विवाह न होने देना चाहिए। हमें यह न भूलना चाहिए कि मनुष्य पशु की तरह नहीं खिलाया जा सकता और न आबादी पर नियन्त्रण प्रयोगशाला और प्रयोगशाला में परीक्षण किया जा सकता है।

वर्तमान स्थिति

इस समय हमारे देश में कितना अन्न कितने जनों के लिए होता है यह १९३९-४० की निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

	एकड़	टनों में
चावल	९०१०१०००	२५७३४०००
गेहूँ	२८१२८०००	१०७६७०००
जौ	६१०१०००	२०००००
बाजरा	१३३६२०००	३५०००००
ज्वार	२१६७७०००	८०००००
मकई	५७०००००	२५००००
योग	१५८८१९०००	५२५०१०००

इसके अतिरिक्त इन वर्षों में बर्मा या स्याम से १५ लाख टन चावल भारत आयात करता था। इस हिसाब से १९४० में प्रति व्यक्ति को २ हंडरवेट और ८० पौं०, या ३०० पौं० मिलता था। शालि धान्य या द्विदल धान्य ३०० पौं० के अतिरिक्त प्रति व्यक्ति ५० पौं० दाल भी साल में पाता था। चना समेत दालें ४०४१७००० एकड़ में बोई जाती थीं और दालों का औसतन् उत्पादन ९० लाख से १०० लाख टन प्रति वर्ष है। प्रति व्यक्ति को प्रतिवर्ष ५० पौं० कम-से-कम दाल चाहिए। शालि धान्यों और दालों की कुल आवश्यकता ६३०००००० टन की है। इसके अतिरिक्त भारतीय भोजन में तेल भी एक आवश्यक अङ्ग है। इसकी खपत प्रतिवर्ष प्रति व्यक्ति ३५० पौंड है।

पर यह हिसाब इस आधार पर है कि भारत की आबादी ३८ कोटि है। १९४६ में भारत की आबादी लगभग ४३ कोटि होगी। इसलिए १९३९-४० के आँकड़ों के आधार पर इस आबादी के लिए शालि धान्यों और दालों की कुल आवश्यकता ७०००००० टन (६००००० शालि धान्य और १०००००० दालें) होगी। पर १९४५-४६ के उत्पादन का अनुमान ६०००००० टन (चावल २७०००००, गेहूँ ९०००००, ज्वार, बाजरा, मकई आदि अन्य अनाज १३०००००० टन) लगाया गया है। दालों के उत्पादन का अनुमान ९०-१०० लाख लगाया गया है। प्रति व्यक्ति यदि ३५० पौं० अन्न की आवश्यकता मानी जाए तो ६९००००० टन अन्न की जरूरत होगी। इस प्रकार ६० लाख टन अनाज की कमी बनी रहती है।

भारत मुख्यतः शाकाहारी देश है, यह हमें न भूलना चाहिए। इसलिए प्रति व्यक्ति मांस-मछली की खपत २० पौं० प्रतिवर्ष भी औसत नहीं पड़ता। भारत में मछली बङ्गाल और समुद्रतीरवर्ती प्रदेशों में ही ज्यादातर खाई जाती है। दूसरी ओर अमेरिका और योरप के लोग भारत के समान ही शालि धान्य खाते हैं और उसके अलावा मांस, मछली और अण्डा खाते हैं, यद्यपि उन देशों में प्रति व्यक्ति पीछे २५ पौंड गेहूँ की खपत है। इसमें चावल, मकई, दालों आदि की खपत नहीं मिलाई गई है। इससे प्रकट है कि भारत

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति व्यक्ति अन्न की खपत लाचारी के कारण बहुत कम है और स्वस्थ, नीरोग और बलवान् शरीर के लिए और अधिक खुराक की जरूरत है। प्रति व्यक्ति अनाज की खपत कम हो जाने के कारण भारतीयों की उँचाई कम हो गई है और भार कम हो गया है।

इसलिए हमें अन्न-पूर्ति की योजना ४५ कोटि लोगों के लिए बनानी है। इस दृष्टि से हमारी आवश्यकता होगी :—

	टनों में
बढ़ी आबादी के लिए	६७५०००००
औसतन् भोजन में १० प्रतिशत वृद्धि	६७०००००
योग	७४२०००००

इसलिए यदि हम अपनी खुराक १९३९-४० के समान ही रक्खें, जो कि स्वस्थ और नीरोग व्यक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है, तो भी हमें १४००००० टन अनाज अधिक उपजाने की जरूरत है।

एक बात और ध्यान देने की है। इन वर्षों में मोटे अनाज बाजरा आदि का उत्पादन बढ़ा है और चावल आदि का घटा है। १९१० से १९३८ तक के अन्न-उत्पादन के आँकड़ों को देखने से मालूम होता है कि बाजरा की उपज २५ प्रतिशत, जौ की ५७ प्रतिशत, ज्वार की ११० प्रतिशत, चावल की ३·५ प्रतिशत और गेहूँ की ४·५ प्रतिशत बढ़ी है। इस देश में चावल सबसे अधिक खाया जाता है और उसका उत्पादन २९००००० टन के लगभग ही रहा। १९३४-३५ में भारत ने २५९४००० टन चावल और धान का आयात किया और इसके बाद के वर्षों में भी इसी ऊँची सतह पर इसका आयात बना रहा। पौष्टिक तत्वों—प्रोटीन—वाले खाद्य पदार्थों के उत्पादन की ओर ध्यान नहीं गया है।

असन्तुलित भोजन

भारतीय भोजन में शालि धान्य की प्रधानता है। इसका कारण जनता की गरीबी है। ये कार्बोहाइड्रेट वाले हैं। लगभग आठ साल पहले सर जान मेगाव ने जाँच की थी और वे इस परिणाम पर पहुँचे थे कि ३० प्रतिशत जनता पर्याप्त रूप से पौष्टिक भोजन पाती है; ४१ प्रतिशत साधारणतया पुष्टिकर भोजन पाती है और २० प्रतिशत का भोजन सर्वथा अपुष्टिकारक है। डा० अकयर्ड ने सन्तुलित और असन्तुलित भोजन का चार्ट तैयार किया है। वह इस प्रकार है :—

	प्रचलित असन्तुलित भोजन (औंसों में)	सुसन्तुलित भोजन (औंसों में)
शालिधान्य	२०	१५
दाल	१	३
शाक-सब्जी		
बिना पत्तों की	२	
तेल और घी	०·५	
दूध	२	
फल	०	
चीनी और गुड़		
मांस और मछली		
अण्डा		

'द्रुमदलशोभिनी' कहकर हम जिस देश की स्तु[ति] हैं, उस देश में फल और शाक-सब्जी कुल खेती के [दो] प्रतिशत में भी नहीं बोई जाती। भोजन-विशेषज्ञों [का] कि एक वयस्क आदमी को प्रतिदिन कम-से-कम [एक] शाक-सब्जी और फल खाना चाहिए, जिससे वह [आ]विटामिन और खनिज नमक प्राप्त कर सके। इसलि[ए] सब्जी और फल को उपजाने के लिए खेती का विस्त[ार] चाहिए।

फलों और शाक-सब्जी के बारे में जो बात [कही] बात दूध की है। यद्यपि भारत में २००००० पशु [हैं] दुनिया भर में सबसे अधिक हैं मगर दूध प्रति जानवर [सबसे] उत्पन्न ७ औंस ही होता है, जब कि अन्य देशों में उत्प[न्न] प्रकार है :—

	औंस
हालैंड	३५
डेनमार्क	४०
नार्वे	४८
न्यूजीलैंड	५६

भारत में मछली खानेवालों की संख्या १५००० [है] प्रति व्यक्ति की प्रतिदिन की २ औंस की आवश्यकता के [अनुसार] वर्ष में ३००००० टन मछलियों की आवश्यकता [होती] सालभर में कठिनाई से ५ लाख टन ही मछलियाँ पक[ड़ी] हैं। इससे स्पष्ट है कि भारत को केवल जीवन यापन [योग्य] की ही आवश्यकता नहीं है, अपितु आरोग्यवर्द्धक, [रोग] और स्वास्थ्य-संरक्षक विभिन्न प्रकार के आहार की [भी] श्यकता है। जनता की क्रय-शक्ति बढ़ाकर ही यह [विभिन्न] प्रकार का आहार प्राप्त किया जा सकता है। हमारी [मुख्य] समस्या का केन्द्र-बिन्दु यही है। कैलोरीज कसौटी [पर] डा० मुकर्जी का कहना है, १९३५ में भारत के अन्दर [लगभग] ४८०००००० लोगों के लिए आहार की कमी है [और] ६३०००००० जनों के लिए आहार की कमी है। [हमें] केवल शक्तिप्रद ही नहीं, स्वास्थ्यवर्द्धक भी होना [चाहिए]। इसलिए हमारे आहार में शरीर-निर्माण के लिए [आवश्यक] प्रोटीन, रक्त-प्रवाह की अवस्था सुधारने के लिए [खनिज]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगों को रोकने, संक्रामक रोगों से बचाने की प्रतिरोधक शक्ति उत्पन्न करनेवाले पदार्थ होने चाहिएँ। यह बगैर योजना के सम्भव नहीं है।

वितरण

अन्न धान्य का बड़े परिमाण में उत्पादन करना ही केवल र्याप्त नहीं है। क्योंकि भारतीय किसान साधारणतः तीन गों में बँटे हुए हैं—

(१) भूमिहीन मजदूर जो ४-६ मास खेतों पर काम करते और मजदूरी पाते हैं या बटाई पर जोतते हैं और फसल होने र फसल का एक भाग पाते हैं, शेष मास भिन्न-भिन्न काम रते हैं।

(२) छोटे किसान हैं, जिनके पास थोड़ी जमीन है। एक हल भी कम का खेत है, या दो हलों से ज्यादा जिनके यहाँ खेती हीं होती। इनके खेतों की फसल भी कम होती है। यह नके ही खाने और बीज के लिए पर्याप्त नहीं होता। कुछ सान बटाई पर जोतते हैं और फसल में आधा-आधा बँटवारा लेते हैं।

(३) तीसरा वर्ग उन किसानों का है, जिनके पास जमीन ादा है और जो अपनी जरूरत से अधिक अनाज उपजाते हैं।

आबादी का $\frac{2}{3}$ भाग पहले दो वर्गों का है। उत्पन्न अनाज लगभग आधा बड़े किसानों, जमींदारों, महाजनों और उच्च-य्म वर्ग के पास पहुँच जाता है। इसलिए २५०००००० नों की जब तक क्रय-शक्ति नहीं बढ़ाई जाएगी, तब तक जमीन पैदावार बढ़ाने मात्र से कुछ अधिक लाभ न होगा। भारत आर्थिक समस्या का यह एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। रोजी र रोजगार के जब तक नए स्रोत न निकाले जाएँगे तब तक ५ करोड़ की क्रय-शक्ति भी न बढ़ेगी। उस समय तक सरकार तः एक निश्चित दाम पर अनाज खरीदकर इस वर्ग को सस्ते म पर अनाज बेचने का इन्तजाम कर सकती है।

आत्म-निर्भर होना चाहिए

इस स्थल पर इस विवाद को उठाने की जरूरत नहीं है कि रत को अन्न धान्य की दृष्टि से आत्म-निर्भर होना चाहिए या हीं। इँग्लैंड अपनी आवश्यकता का केवल १५ प्रतिशत अन्न ने यहाँ उत्पन्न करता है। क्या भारत इँग्लैंड का अनुकरण १ ब्रिटेन का अनुकरण करने की सलाह देनेवाले भूल जाते कि नवम्बर १९४१ में युद्ध-पूर्व की अपेक्षा ४५ प्रतिशत अधिक ड़ जमीन में अन्न धान्य की फसल बोई नहीं थी और ५० शत अधिक पैदावार हुई थी। युद्ध ने आत्म-निर्भरता की श्यकता को सिद्ध कर दिया है। अर्थशास्त्र के पिता आदम थ ने १५० साल पहले यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया था fence is better than opulence (समृद्धि की अपेक्षा सुरक्षा अधिक अच्छी चीज है)। इसलिए आहार की दृष्टि से आत्म-निर्भर होना ही श्रेयस्कर है।

योजना का क्षेत्र

युद्धकाल में ब्रिटेन में दूध की खपत २५ प्रतिशत बढ़ गई और भार में भी वहाँ वृद्धि हुई। युद्धकाल में उत्पन्न बच्चों का भार और उँचाई युद्ध-पूर्व की अपेक्षा अधिक है। इधर भारत में दूध की खपत कम हो गई और सब ओर हम विकृति ही पाते हैं। यह बात नहीं है कि हम इस बिगड़ती अवस्था को रोक नहीं सकते। हरेक व्यक्ति जानता है कि मिलों का चावल पालिश होने से अपना १० प्रतिशत भार खो देता है और उसका पौष्टिक तत्त्व भी नष्ट हो जाता है। मगर त्रावनकोर सरकार को छोड़कर और किसी ने भी धान कूटने की मिलों को बन्द नहीं किया। यह एक उदाहरण इस बात के लिए पर्याप्त है कि यदि सुविचारित योजना हो और उसके अनुसार कार्य हो तो देश को भविष्य में कभी अन्न-सङ्कट का सामना न करना पड़ेगा।

खेती योग्य जमीन की हमारे देश में कमी नहीं है। ब्रिटिश भारत में ही १९४०-४१ के निम्न आँकड़ों से स्पष्ट हो जाएगा कि खेती के लिए अभी और कितना क्षेत्र बाकी है :—

	लाख एकड़ों में
खेती जितने में की गई	२१४
जङ्गल	६८
बञ्जर के अलावा पड़ती पड़ी जमीन	९८
बञ्जर	४५
खेती के लिए जो प्राप्त नहीं है	८७
	५१२

ब्रिटिश भारत के अन्दर ही १४३००००० पड़ती पड़ी और ४१००००० एकड़ बञ्जर जमीन बेकार पड़ी है। यू० पी० में कोर्ट आफ वार्ड्स ने ४०००० एकड़ पड़ती पड़ी जमीन में खेती करवाई थी। जमींदारी का अन्त करने की प्रतीक्षा न करके यदि जमींदारों की सारी जमीन कोर्ट आफ वार्ड्स ले ले तो पड़ती पड़ी जमीन में खेती हो सकती है। इससे अन्न-सङ्कट को दूर करने में भारी सहायता मिलेगी। आज विज्ञान और टेकनालाजी के युग में जमीन का पड़ती पड़ा रहना हमारी अयोग्यता और अक्षमता का सूचक है।

प्रति एकड़ उपज बढ़ाकर भी अन्न-सङ्कट को दूर किया जा सकता है। भारत सरकार के भूतपूर्व इम्पीरियल इकनामिक बाटानिस्ट (साम्राज्यकीय आर्थिक वनस्पतिशास्त्री) सर एलबर्ट हावर्ड का कहना है कि कुछ सालों में ही चावल की पैदावार ३० प्रतिशत बढ़ाई जा सकती है। यह कोरी कल्पना नहीं है

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि भारत में प्रति एकड़ उत्पादन अन्य देशों के मुकाबले बहुत थोड़ा है। यथा :—

चावल का प्रति एकड़ उत्पादन

	पौं० में
भारत	८००
जापान	३०००
मिस्र	२५००
स्पेन	५०००

सिंचाई

सिंचाई-द्वारा ५० प्रतिशत से १०० प्रतिशत तक अन्न धान्य की पैदावार बढ़ाई जा सकती है। इस समय ३४१०००००० एकड़ खेती की जमीन में से ६०००००० एकड़ जमीन सींची जाती है। इस समय जितनी जमीन सींची जाती है यदि उसको दुगना भी कर दें तो और १११५०००० टन अन्न धान्य उत्पन्न हो सकता है। भारत-सरकार के सिंचाई-सलाहकार सर विलियम स्टाम्पे का मत इस विषय में प्रामाणिक माना जायगा। आपने 'ईस्ट इंडिया एसोसियेशन' में अन्न-उत्पादन पर एक निबन्ध पढ़ा था। आपका मत है :—

"आबादी के एक तिहाई भाग (१५ कोटि) का आहार स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक आहार का दो-तिहाई है। निरन्तर आयात के भरोसे नहीं रहा जा सकता। इसका तात्कालिक हल यह है कि भारत के विशाल जल स्रोतों का, भूमिगत और ऊपरी दोनों का, जिसका अधिकांश भाग अभी तक अविकसित है, उपयोग किया जाए। जल-विद्युत् शक्ति का विकास आर्थिक दृष्टि से लाभजनक है, जैसा कि यू० पी० में पम्प सिंचाई के विकास से हुआ है। निम्नतम शक्ति भी गाँवों में फैलाई जा सकती है और सिंचाई के साथ-साथ कृषि-उद्योगों का विस्तार किया जा सकता है। यदि अकाल दूर करना है तो अविलम्ब बड़े परिमाण में और अधिक अन्न उत्पन्न करना चाहिए।"

प्रति वर्ष बढ़ती ५० लाख आबादी के लिए प्रति व्यक्ति ५ टन के हिसाब से प्रतिवर्ष १० लाख टन अधिक अन्न उपजाना चाहिए। अपर्याप्त आहार पानेवालों के आहार में प्रतिदिन ४ औंस की वृद्धि करने के लिए मूलतः ६० लाख टन और अधिक अन्न उपजाना चाहिए।

सिंचाई के कुछ उपाय जो अभी अमल में लाए जा सकते हैं, इस विषय में सर विलियम स्टाम्पे का मत है :—

"१—जिन स्रोतों से अभी पानी नहीं लिया गया है या अपर्याप्त लिया गया है उनसे न्यू ग्रेविटी प्रणाली-द्वारा अतिरिक्त जल लेकर।

२—विद्यमान प्रणाली का विस्तार करके :—(क) जल-से पम्प करके नदी-प्रवाह को बढ़ाकर, (ग) कि अच्छी पद्धति-द्वारा, जल-प्रणाली के दोनों किनारों को करके पानी की बचत करके।

३—नल-कूपों-द्वारा यान्त्रिक पम्पिंग के जरिए सिंचाई करके, शक्ति से चलनेवाले कुँओं के द्वारा।

४—पुराने देशी तरीकों से। विद्यमान नहरों का करके और यू० पी०, बिहार, सिन्ध और मद्रास की नदियों से नई नहरें निकालकर, यद्यपि यह सम्भ तात्कालिक हल नहीं है।

सिंचाई और शक्ति-विकास ये दोनों विषय प्रांतिक प्रान्तिक योजनाओं में एकसूत्रता लाने के लिए इंस्पेक्टर-जनरल आफ इरीगेशन (सिंचाई का इंस्पेक्टर नियुक्त किया जाए।

५—पहाड़ों में लाखों अश्व-शक्ति प्रतिवर्ष बरबाद है। टनों पानी बहकर समुद्र में चला जाता है। इन जल-प्रवाहों के अपरिमेय स्रोतों का किसानों के लाभ उपयोग किया जा सकता है।

गङ्गाघाटी में ३५००००० एकड़ जमीन में १०००००० एकड़ खेती की जमीन की इस समय सिं है। इसकी सिंचाई आसानी से सम्भव है।"

खाद

उचित खाद डालने से प्रति एकड़ पैदावार प्रतिशत बढ़ाई जा सकती है। डा० बर्न का मत है कि नत्रजन प्रति एकड़ खाद देने से चावल की उपज बढ़ सकती है। अच्छा बीज बोने से पैदावार में वृद्धि हो सकती है। किसान के समान आज जमीन है। जमीन जितनी उपजाऊ होगी, देश उतना सम्पन्न होगा। खाद-द्वारा जमीन की भौतिक अव जाती है जिससे वह पौदे के लिए उपयुक्त माध्यम खाद इसके अलावा नत्रजन, फासफोरिक एसिड, पो और अन्य पौष्टिक तत्त्व पौदे को प्रदान करती है। १६००००००० गोबर नष्ट कर दिया जाता है जिसमें एकड़ नत्रजन के हिसाब से २५००००० एकड़ खाद दी जा सकती है। चरागाहों के नष्ट हो जाने की संख्या भी कम होती जाती है। किसान पत्नी प्रातःकाल उपले बनाकर गोबर के जलाने के काम और इस प्रकार खेत को भूखा रखती है। इसी प्रकार १० लाख टन हड्डी इस देश में प्राप्य है, मगर केवल टन इकट्ठी की जाती है और इसमें से २ लाख टन का जाता है। इससे लगभग ५० हजार टन हड्डी का चूर्ण है। इस देश के अन्दर इस समय कितनी खाद यह निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[लाख टनों में]

	ऐन्द्रियक खाद	नत्रजन	फासफोरिक एसिड	पोटाश
१—२०० बछड़ों की आबादी से				
सूखी खाद	१४१·६	२·२११	०·८८५	१·३२७
गोबर १७७·०	२६·६	४·४२५		६·६३८
मूत्र ३५·४				
२—खेतों का कूड़ा				
कोटि ६०·०	८०·०	०·५००	१·१५०	०·७५०
फसल				
बचा				
ग और				
स				
३—४० कोटि मानवीय आबादी				
—शौच ६·४	५·८	०·३२०	०·२५६	०·१०८
—मूत्र ८·०	३·२	०·११८	०·१९२	०·२८८
४—शहर का कूड़ा-कर्कट				
कोटि ४०·०	२०·०	०·३२०	०·१२०	०·८००
कचरा				
ग	३५६·८ २७७·२	७·६०५	२·६०३	६·६३१

इस खाद सम्पत्ति में से जो उपयोग में आता है वह श्री सी० न० आचार्य के मतानुसार इस प्रकार है :—

	लाख टनों में
सूखी खाद	६३·००
ऐन्द्रियक खाद	१८·६००
नत्रजन	०·६४६
फासफोरिक एसिड	०·३१७
पोटाश	०·६३१

जो खाद प्रतिवर्ष नष्ट हो जाती है, वह निम्न तालिका में किए :—

	लाख टनों में
१ ऐन्द्रियक खाद	२५·८३
२ नत्रजन	६६·५६
३ फासफोरिक एसिड	१२·८६
४ पोटाश	९३·००

प्रतिवर्ष जितनी अनमोल खाद नष्ट होती है वह इससे स्पष्ट २५८३ लाख टन ऐन्द्रियक खाद प्रतिवर्ष नष्ट हो जाती और ८२·४५ लाख टन नत्रजन बेकार जाता है और फिर आशा करते हैं कि देश में अन्न सङ्कट न आए। खाद न की आत्मा है। इसकी रक्षा से ही हम अकाल से बच सकते हैं।

भारत को कृत्रिम खाद की जरूरत नहीं है। लाख ६१ टन रासायनिक खाद भारत-सरकार ने खरीदने का निश्चय किया है। इसका मूल्य होता है ४॥ कोटि रुपए। इससे केवल ३५८०० टन नत्रजन प्राप्त होगा। भारतीय प्रतिवर्ष ७० लाख टन नत्रजन बरबाद कर रहे हैं, जो कि १९४६-४७ में आयात की जानेवाली मात्रा से लगभग दुगनी है। भारतीय खाद का उपयोग करने का कोई यत्न नहीं किया गया है। भारत सरकार ४। कोटि रु० की खाद आयात करके ६०० कोटि रु० की खाद की बरबादी देख रही है।

वृक्षो रक्षति रक्षितः

अति पर्जन्य और पर्जन्य के अभाव में अन्य देश जो करते हैं, वह भारत भी करता है। गीता के एक श्लोक का यदि इस प्रकार रूपान्तर कर दिया जाय तो अनुचित न होगा :—

अन्नाद् भवंति भूतानि,
पर्जन्यादन्नसम्भवः।
वृक्षाद् भवति पर्जन्यो
वृक्षः कर्मसमुद्भवः॥

वृक्ष-रहित भूपृष्ठ सूखता जाता है, हवा की आर्द्रता नष्ट हो जाती है। निर्वृक्ष प्रदेश में हवा मान की प्रखर विषमता अत्यन्त तीव्र होती है। १०० से १२० अंश तापमान रहता है, और नदियों, सरों का पानी ६७ इञ्च पर वाष्पीभूत हो जाता है। आस्ट्रेलिया ने इस अवस्था का निराकरण करने के लिए यह उपाय निकाला—पेड़ लगाए जाएँ, वृक्षों की रक्षा की जाए और जङ्गलों का विस्तार किया जाए। आस्ट्रेलियन सरकार का कहना है कि आज देश का वन अविकसित अवस्था में है। यदि इसको विकसित किया जाए तो २५५०००० और नई बस्ती वहाँ बसाई जा सकती है। आस्ट्रेलिया की लकड़ी मजबूत होती है। यह इस बात से जाना जा सकता है कि मेलबोर्न बन्दरगाह बनाने के समय जल में से एक ८० वर्ष पुरानी लकड़ी मिली थी और वह बिलकुल नई मालूम होती थी और उसको कीड़ा तक न लगा था। वह लकड़ी पुनः काम में लाई गई। फलतः पच्चीस साल पहले आस्ट्रेलिया वन-परिषद् ने २४५००००० एकड़ जङ्गल बढ़ाने का निश्चय किया। बाद में विशेषज्ञों ने स्थायी जङ्गल १९५०००० एकड़ जमीन में लगाने का ही निश्चय किया।

प्राकृतिक वनों में पेड़ की जड़ें खाली जमीन में चली जाती हैं। पत्थरों के बीच में घुसकर पत्थरों को फोड़ देती हैं और फसल के लायक जमीन को बना देती हैं। वृक्षों के गिरे पत्तों से भी यही क्रिया होती है। जोर की वर्षा पड़ने पर इनके पत्ते भूपृष्ठ की रक्षा करने में छप्पर का काम देते हैं। धीरे-धीरे वर्षा का पानी जमीन पर गिरने से जमीन की मिट्टी नहीं बहती। नदियों का इससे वेग कम हो जाता है, यदि उनमें बाढ़ आती भी है तो धीरे-धीरे आती है। निर्वृक्ष हो जाने से जमीन ही केवल नहीं तपती और भी भारी हानि होती है। सर डी० विलय-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राघवाचार्य ने 'लैंड एंड इट्स प्राब्लेम' (जमीन और तत्सम्बन्धी प्रश्न) नामक अपनी पुस्तक में लिखा है :—जमीन के तप जाने से कितना नुकसान होता है, इसकी अनेकों को कल्पना ठीक तरह से नहीं है। अकेले संयुक्त प्रान्त पर ही यदि नजर डाली जाए तो इस बात का विश्वास हो जाए। जिस टापू में हजारों गाँवों के चारों ओर छोटी-बड़ी खेती और बागों से भरपूर प्रदेश होते थे वे आज रूक्ष शुष्क बन गए हैं। इसका मुख्य कारण नदियों की बाढ़ है। अकेली कोसी नदी ने १८०७ से अब तक अपना ९ बार मार्ग बदला है। केवल पिछले पच्चीस सालों में जङ्गलों को नष्ट कर देने के कारण उसने पाँच बार मार्ग बदला है। १७३६ में यह नदी ब्रह्मपुत्र से मिलती थी, और १८६२ में कुसला के पास गङ्गा से मिलने लगी। आज यह और पश्चिम की ओर बहती जा रही है। प्रतिवर्ष यह १ मील पश्चिम की ओर होती जाती है। इन नदियों के कारण जमीन का फूल व्यर्थ जाता है और जमीन निकम्मी हो जाती है। बल्लारी के आस-पास का प्रदेश अनुपजाऊ हो गया, क्योंकि उसके समीप के पर्वत की वन-राजि नष्ट कर दी गई थी। यही बात आज अरावली में जारी है और अरण्य नष्ट होते जाते हैं। यदि वृक्ष-विध्वंस का कार्य इसी प्रकार चलता रहा तो पचास सालों में उदयपुर का सुन्दर और रमणीक उद्यान उजाड़ होकर समुद्र में मिल जाएगा। इसके उत्तर पर्वतों के वृक्षों का संरक्षण न होने से सिन्ध की मरुभूमि की बालुका जयपुर शहर को बालुकामय कर देगी।

इसका एकमात्र उपाय यही है कि अमेरिका की टेनेसी नदी की काँठा और पर्वतों के उतार पर लगाए गए खेत-बागों के समान वृक्ष लगाए जाएँ। भारत में प्राचीन काल से यह बात चली आ रही है :—

"रविश्चन्द्रो घना वृक्षा नदी भावश्च सज्जनाः।
एते परोपकाराय लोके देवेन निर्मिताः॥"

सोवियट रूस के अन्दर सदियों से बर्फ के कारण रूक्ष और शुष्क बनी हुई भूमि पर शास्त्रीय खोजों के बल पर नन्दन वन निर्माण हो रहा है। प्रो० व्लाडीमीर आब्रुचेव के प्रयत्न से सुमय प्रदेशों में बड़े-बड़े शहर बसाना सम्भव हो गया है। इस खोज के कारण योरप के क्षेत्रफल से भी डेढ़ गुना जमीन बस्ती और खेती के लिए नई उपलब्ध हो जाएगी। हशेल्डर का यह कथन सर्वथा सच है—"मानवों-द्वारा दी गई नैसर्गिक समता जब पुनः स्थापित होगी, तभी की यह झीज और छीज घटेगी और मनुष्यों को स्थैर्य मिले।

आस्ट्रेलियन सरकार ने अनुभव कर लिया है कि रक्षण, भूपृष्ठ-रक्षण और नदी का नियन्त्रण वृक्षों के ही सम्भव है। इसलिए अगले पाँच वर्षों में उसने वृक्ष में १६ कोटि रु० खर्च करने का निश्चय किया है और वर्षों के बाद यह खर्च २१ करोड़ हो जाएगा। जङ्गल से अनेक उद्योगों का भी विकास होगा। यथा लकड़ी कागज बनाने की मिलों, रासायनिक प्रयोगशाला इसलिए भारतीय खेती की रक्षा के लिए भारत को मन्त्र सदा अपने सामने रखना चाहिए—'वृक्ष एव हते वृक्षो रक्षति रक्षितः।'

पौष्टिक तत्त्व

भारतीय आहार का पौष्टिक तत्त्व बढ़ाने और उसे को ऊँचा करने के लिए हमें खेती की फसल में कुछ क'ना होगा। खेती की जमीन के विस्तार और आहार में पूर्ण सम्बन्ध है। १००० कैलरीज के लिए आवश्यक वास्ते १०० कैलरीज के लिए आवश्यक गेहूँ और चावल करने के लिए आवश्यक जमीन से तीन-चार गुना अधिक चाहिए। यही बात फल, शाक-सब्जी और मांस के सत्य है। इसलिए जब तक शालि धान्यों या द्विदल पैदावार न बढ़ेगी तब तक यह सम्भव नहीं। इसलिए आहार को और अधिक पौष्टिक बनाने के लिए यह है कि खेती की जमीन का और विस्तार किया जाए, नीचे और जमीन लाई जाय, प्रति एकड़ उत्पादन जाए। यह सम्भव है। केवल योजना और जरूरत है। राष्ट्रीय सरकार केन्द्र में स्थापित हो क्या उससे यह आशा करना अनुचित होगा कि ध्यान सर्वप्रथम भारत की अन्न समस्या की ओर और वह खेती की योजना को सर्वप्रथम अमल में क्योंकि भारत के सामने आज दो ही मार्ग हैं— योजना या नष्ट हो जाओ।

दमा-निवारक 'श्वासकासारी अवलेह' ५० साल से दुनिया भर में मशहूर

दमा, श्वास, खाँसी, छाती में दर्द व जलन, पसलियों की सूजन, जुकाम, सर्दी, कफ वगैरह को मिटाकर शक्त बनाता है। मूल्य फी डि० २) रुपया।

मदनमंजरी फार्मेसी—जामनगर

इलाहाबाद एजेंट—मदन स्टोर्स—जोन्स्टनगंज बनारस एजेंट—राधेलाल एंड सन्स—चौक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी भिक्षुणी

श्री प्रभासकुमार

पात्र-परिचय

नीराञ्जना—प्रधान भिक्षुणी, आजन्म कुमारी ।
मधुरिमा—उसकी नगर-वासिनी बाल-सखी—अब 'माँ' होती है ।
विश्वदेव—बौद्ध-युवक-संघ का प्रधान—२८ वर्ष का युवक ।
सुधांशु—मधुरिमा का पञ्चवर्षीय पुत्र ।
भद्रदीधिति—बौद्ध-मठ का वृद्ध आचार्य ।
जलदमाला—मधुरिमा की परिचारिका ।
विशाख—द्वार-रक्षक भिक्षु ।
भिक्षु और भिक्षुणियाँ

प्रथम दृश्य

[समय सूर्यास्त के बाद]

[स्थान—बौद्ध-मठ का एक स्वच्छ सादा कक्ष]

(कुमारी नीराञ्जना द्वार की ओर पीठ किए करुण स्वर में गा रही है)

एकाकी ही यौवन बीता !
रस को छलकर दूर हटाया,
मन चिन्तन से विरस बनाया,
अब मेरे प्यासे नयनों में—
बूँद-बूँद को तरस रहा है
सूखी रस-सरि का तट रीता !
एकाकी ही यौवन बीता !
प्राकृत आकर्षण संयतकर,
कल्पित मधु के स्वप्न सिरजकर,
जीवन मैंने व्यर्थ गँवाया ।
मेरी ममता बनी भिखारिन
संयम से मैंने क्या जीता ?
एकाकी ही यौवन बीता !

मधुरिमा—(पास आकर) तुम आज-कल इतनी उदास क्यों रहती हो ! तुम्हारे निर्मोही पवित्र हृदय में इतना करुण-रस कहाँ से आ जाता है जो सुननेवाले को विचलित कर देता है क्यों माँ ?

नीराञ्जना—माँ ! माँ मानकर तू नहीं समझ सकेगी, मधु ! नीली नहीं । नीली समझकर मेरे मन में उतर तो तुझे मालूम पड़ेगा । मधु ! आजकल मेरे मानस में जाने कैसे अनोखे विचार आते हैं । मैं अब यौवन के कगार पर खड़ी हूँ; कुछ ही समय बाद शीघ्र ही मुझे वहाँ से भी गिरना होगा । प्रतिपल मेरे अन्दर कहीं एक टीस-सी होती है और मुझे प्रतीत होता है कि मैंने इतना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया । संयम के जाल में, कठोर व्रतों की साधना में और निःसङ्ग निवास के अहङ्कार में जैसे मैंने अपना सारा आनन्द—सारा रस—सुखा डाला । अब पतझड़ की देहरी पर सहमी-सी खड़ी मैं अपने से प्रश्न करती हूँ—यौवन खोया, रस खोया, प्यार खोया, सगे-सम्बन्धी खोए, स्वाभाविक आकर्षण कुचला, पर पाया क्या ? तो हृदय की गहरी शून्यता में से मुझे यही उत्तर मिलता है—कुछ नहीं, कुछ भी नहीं । नारी-भूषण ममता की एक बूँद भी नहीं । पानी के लिए जैसे मैं दूर और दूर मरुस्थल में ही भटकती चली आई हूँ । और अब जब मेरी तृष्णा सहस्रों पुकारों में मुझसे अपने सन्तोष की माँग करती है तो मैं अपने पास अपने चारों ओर, जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक, भूखी-सूखी, उत्तप्त, एकाकी, अथाह मरुभूमि के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पाती जो अबाध सब ओर क्षितिज तक फैली हुई है ।

मधुरिमा—(क्षण भर चुप रहकर) मैं तेरे जितना नहीं सोचती, नीली ! पर यह सब तेरी भूल है । माया का मिथ्या प्रलोभन है । मैं विलास में रहती हूँ—पति-पुत्रों में बसती हूँ; मुझसे पूछ । उन अपने भक्तों को देखकर समझ कि तेरा यह जीवन कितना उच्च और कितना पवित्र है ।

नीराञ्जना—(व्यग्रता से) सब झूठ है, मधु ! सब छल है । यह चमक-दमक-आडम्बर सब बाहरी है—जिसे भीतर का एक दुर्निवार अहङ्कार पुष्ट किया करता है । हीरे के रूप में पत्थर की चमक किससे प्रशंसित नहीं होती ? सूर्यास्त में चमकते सिकता-कणों के समान, तड़क-भड़क, शृङ्गार-प्रसाधन से छिपाई गई कुरूपता के समान, यह सब केवल दिखावा मात्र है । मरीचिका में कितने खो गए पर किसी ने भी कुछ नहीं पाया ।

मधुरिमा—तुम्हारे हृदय की नहीं कह सकती । पर जो कुछ आँखों से देखती हूँ वह मैं जानती हूँ । कौन कहता है, तुमने कुछ नहीं पाया ? तुमने श्रद्धा पाई है । स्त्री-जाति का गर्व पाया है । पुरुष-जनों की भक्ति पाई है । मुझ-जैसे कितने ही नर-नारी तुम्हारे चरण-रज को सिर पर चढ़ाकर अपने को धन्य मानते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, तुम सबका हित चाहती हो, सुमार्ग पर लाने की चेष्टा करती हो, शान्ति-मार्ग बताती हो। क्या यह कुछ नहीं?

नीराञ्जना—अब तक बहुत समझती थी, मधु! पर अब मुझे इससे सन्तोष नहीं मिलता; ग्लानि होती है। सोचती हूँ जिसमें स्वयं को शान्ति नहीं मिलती उसमें दूसरों को क्यों खींचती हूँ। रिक्त झोली की चित्रकारी से ही मैं समझ बैठी थी कि इसमें बहुत कुछ है। पर खोजने पर मिला कुछ भी नहीं। (कुछ देर चुप रहकर) मधु, आज मेरे निकट अपना कहने को कोई भी नहीं—न ममता, न स्नेह। जिस स्निग्ध अपनापे के लिए मैं जीवन-पथ से भटककर इस ओर चली आई वह अब मुझे और भी अधिक दुर्लभ हो गया है।

मधुरिमा—माँ!

नीराञ्जना—(आवेश से मधु का हाथ पकड़कर) माँ नहीं, माँ नहीं, नीली कह मधु! (सहसा चुप हो जाती है; फिर धीमे स्वर में वेदना से) तू क्या, मेरे हृदय को कोई नहीं समझ सकेगा। मैं भी कहाँ समझ पाई हूँ। निरी प्रशंसा, निरा संयम, निरी निःसङ्गता ही तो सब कुछ नहीं है। कुछ और भी.....

(भिक्षुणी प्रवेश करती है)

भिक्षुणी—माँ! नगर-वासी बौद्ध-युवक-सङ्घ के प्रधान तुमसे मिलना चाहते हैं।

नीराञ्जना—अतिथि-गृह में बैठा दे; मैं अभी आती हूँ।

भिक्षुणी—अच्छा माँ!

(चली जाती है)

(नीराञ्जना और मधुरिमा दोनों चुप बैठी रहती हैं)

मधुरिमा—नीली!

नीराञ्जना—(हँसकर) नहीं, मधु! माँ, नीली नहीं। (उठते हुए) जाना मत, मेरी प्रतीक्षा करना। (प्रस्थान)

मधुरिमा—कौन जानता है सदा हँसनेवाली, सबके दुःखों को दूर करनेवाली इस कुमारी के मन में इतना अभाव किधर से भर गया! (कुछ सोचकर) हाँ, हो सकता है, (फिर सोचकर) हाँ ठीक है, असम्भव नहीं है। मेरे हृदय की वह सहज भावना—जिसे मैं होश सँभालने के साथ ही अपने से अभिन्न पा रही हूँ—वह मधुर कामना जो मेरे चारों ओर छाई रहती है, जिनके बिना मैं जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती, यौवन के अन्त में पूर्व विस्मृत होकर भी आजकल उसके अन्दर उथल-पुथल मचाने लगी हैं।

द्वितीय दृश्य

[मठ के अतिथि-गृह में]

विश्वदेव—सुन-सुनकर आश्चर्य होता है, इस कुमारी के विषय में। जैसे यह नारी नहीं, नारी के रूप में संयम और का प्रतिक्षण अनुभव करता रहता हूँ जो लाख प्रयत्न भी संयत नहीं होतीं। क्या यह सम्भव है कि अप्रतिहत नाओं के जाल में थोड़ी भी देर को मन न उलझे? बहुश्रुता, बहु-मानिता कुमारी के विषय में मैंने यह अफ़ नहीं सुना कि इसने कभी नारी-सुलभ प्रेम की कामना कैसा होगा इसका आन्तरिक जीवन? क्या सन्तोष होगा इस विरागिनी को अपनी एकान्तता में? (अ अपने अन्दर टटोलकर देखता हूँ तो मुझे स्पष्ट प्रतीत कि यदि मैं इस प्रकार परिवर्जित रहकर अपने दिवस लगूँ तो मेरा अशेष प्रसाद सूखकर पत्थर बन जाए। के उत्थान-पतन में जहाँ रस की बूँदें सञ्चित होनी वहाँ मेरा सारा रस ही एकदम निःशेष हो जाए। से कौतूहल उपजानेवाली इस माँ को आज निकट से अवसर मिला है। देखता हूँ इसमें ऐसी विशेषता क्या

(नीराञ्जना का प्रवेश)

नीराञ्जना—अतिथि का स्वागत है।

विश्वदेव—(उठकर आदर से) प्रणाम, माँ!

नीराञ्जना—अमिताभ तुम्हारा कल्याण करे। (बैठते हैं) बौद्ध का परिचय!

विश्वदेव—मैं नगर-निवासी बौद्ध युवकों के प्रधान हूँ।

नीराञ्जना—कहो कैसे दर्शन दिए।

विश्वदेव—आगामी वसन्तोत्सव को संघ का उसमें आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

नीराञ्जना—मैं नहीं आ सकूँगी।

विश्वदेव—मैं बड़ी आशा लेकर आया हूँ। निमन्त्रण स्वीकृत करना ही होगा।

नीराञ्जना—बौद्ध! मुझ एक अकिञ्चन नारी के से तुम्हारा वर्षोत्सव असफल नहीं हो जाएगा। आग्रह क्यों?

विश्वदेव—यह आप क्या कहती हैं! माँ! में पैठकर देखिए कि इतना आग्रह किसलिए है! ज.एँ तो आपको ज्ञात हो कि हृदय हृदय में आपके सम्मान है। नागरिक आपके दर्शनों को तरसते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप हमें इस कृपा से वञ्चित न

नीराञ्जना—(कुछ अन्यमनस्क-सी होकर) युवक, चित्त इस समय स्वस्थ नहीं है। विश्राम-गृह में आराम करो। सोचकर उत्तर दूँगी।

विश्वदेव—स्वीकृति की आशा करूँ?

नीराञ्जना—यह मैं कैसे कह सकती हूँ? तुम होकर विश्राम करो। दूर से आने के कारण थक भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(एक भिक्षु का प्रवेश)

भिक्षु—क्या आज्ञा है, माँ !

नीराञ्जना—(विश्वदेव की ओर इशारा करके) यह आज हमारे अतिथि हैं। विश्राम-गृह में ले जाओ।

भिक्षु—अच्छा माँ !

(विश्वदेव और भिक्षु चले जाते हैं)

नीराञ्जना—सबका अपना-अपना स्वार्थ है, सबकी अपनी-अपनी माँगें हैं। सभी चाहते हैं कि मैं बिना ननु-नच के उनकी निष्कामना पूर्ण करूँ। इसी लिए मैं माँ हूँ, इसी लिए मैं कुमारी हूँ और इसी लिए मैं मान्या हूँ—पूज्या हूँ। यह कोई नहीं समझता कि ऊपर से शान्त दिखनेवाली इस कुमारी के हृदय में आजकल कितनी भीषण ज्वाला धधका करती है। क्या अभिप्राय है इस परोपकार और सेवा-व्रत का ? मुझे यह संसार ही जैसे सर्वथा नीरस प्रतीत होता है। रुन न करते-करते आँसू से भरी नदी सहसा सूख गई हो। कितना शालीन है यह बालक ! कितना सुख है इसके मन में ! कितना सौम्य है इसका मुख ! (विरक्ति से) होगा, मुझ विरागिनी को इससे क्या। पर.....

(सुधांशु का प्रवेश)

सुधांशु—माँ जी ! अम्माँ कहाँ हैं ?

(नीराञ्जना अनिमेष उसकी ओर देखती रहती है)

सुधांशु—(अधिक व्यग्रता से) माँ जी ! अम्माँ कहाँ हैं ?

(नीराञ्जना उत्तर नहीं देती)

सुधांशु—(पास आकर) माँ जी ! माँ जी !

नीराञ्जना—(जागकर) क्या है, सुधांशु ?

सुधांशु—अम्माँ कहाँ गई ?

नीराञ्जना—(सुधांशु को गोद में लेकर) तू अपनी अम्माँ को प्यार करता है ?

सुधांशु—हाँ माँ जी, अम्माँ कहाँ हैं ?

नीराञ्जना—बताती हूँ भाई ! तू मुझे प्यार करता है ?

सुधांशु—(अधीर होकर) नहीं माँ जी ! बताइए न अम्माँ कहाँ चली गईं ?

नीराञ्जना—(आहत स्वर से) जाओ, मेरे कक्ष में हैं।

(सुधांशु चला जाता है। नीराञ्जना द्वार की ओर देखती वैसी ही बैठी रहती है)

नीराञ्जना—(साँस भरकर) बालक की निष्ठुरता भी कितनी प्यारी लगती है। (रुककर) कितना भोला है यह सुधांशु ! जी चाहता है इसे गोद में लेकर छाती से चिपटाए रखूँ, जी भरकर चूमूँ और कभी अपने से वियुक्त न करूँ। (आँखें बन्द किए बैठी रहती है) यह दुर्बलता मुझे शोभा नहीं देती। मैं भिक्षुणी हूँ, आजन्म कुमारी हूँ, मुझे सङ्घ और धर्म पर विश्वास करना चाहिए। (निश्वास छोड़कर विवशता से) यौवन के दिवसान्त में सब कामनाएँ क्यों इतनी सर्वतोमुखी हो जाती हैं ?

तृतीय दृश्य

समय—रात्रि का प्रारम्भ

(नीराञ्जना के कक्ष में मधुरिमा उसी स्थान पर बैठी हुई सामने के बाने में जलते दीपक की ओर अर्थ-हीन दृष्टि से देख रही है)

सुधांशु—(आकर मधुरिमा के गले से झूल जाता है) अम्माँ

मधुरिमा—(उल्लास से गोद में लेकर) अरे ! तू कहाँ से आ गया ?

सुधांशु—जलद के साथ आया हूँ। पिताजी ने बुलाया है।

(मधुरिमा सुधांशु से खेलने लगती है। नीराञ्जना आकर द्वार पर ही खड़ी रह जाती है और विमुग्ध दृष्टि से माँ-बेटे की क्रीड़ाओं को देख रही है। कुछ देर बाद वह कक्ष में प्रवेश करती है पर माँ-बेटे में से कोई जान नहीं पाता।)

नीराञ्जना—मधु !

मधुरिमा—आ गई, माँ। देखो यह सुधांशु कितना दङ्गई हो गया है। मेरे आँचल से मुख पोंछ दिया।

(सुधांशु चुपचाप अम्माँ की गोद में बैठ जाता है)

नीराञ्जना—(विचित्र स्वर से) मधु !

मधुरिमा—चौंककर (उसकी ओर देखती हुई) क्या है माँ

नीराञ्जना—(व्यग्रता से) माँ, नहीं मधु ! नीली तेरी सखी नीली !

मधुरिमा—तुम्हें यह क्या हो रहा है ?

नीराञ्जना—कुछ नहीं मधु ! तुझसे एक चीज माँगना चाहती हूँ। अपनी नीली को देगी ?

मधुरिमा—मुझसे ? मेरे पास तुझे देने को क्या है ?

नीराञ्जना—सुधांशु को मुझे देगी ? मुझे बहुत प्यारा लगता है।

मधुरिमा—(अपने को संयत करके हँसते हुए) तेरा ही तो है, नीली ! ले ले न।

नीराञ्जना—दे सकेगी, मधु !

मधुरिमा—क्यों नहीं ? मैं मना ही कब करती हूँ।

नीराञ्जना—(कुछ देर चुप रहकर) नहीं, मधु, नहीं सकेगी। माँ होकर अपने हृदय के टुकड़े को मुझ-जैसी निर्मम तपस्विनी की कठोर छाया में नहीं छोड़ सकेगी। तेरा मातृ-हृदय रो उठेगा; चीत्कार कर उठेगा। (रुककर) तू दे भी तो इतनी निष्ठुर नहीं कि जिसे मैं सँभाल नहीं सकती, उसे छीनकर अपनी मधु के हृदय को सदा के लिए विह्वल और आशङ्कित बना दूँ। (सहसा चुप हो जाती है)

मधुरिमा—अच्छा नीली, मैं जाती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुरिमा—उन्होंने बुलाने भेजा है।

नीराञ्जना—बुलाने भेजा है? तो जा मधु! अवश्य जा। मैं तुझे नहीं रोक सकती। (कुछ सोचते हुए) जल्दी ही आना। कह नहीं सकती, कब क्या हो जाए?

मधुरिमा—(आशङ्का से) अर्थात्?

नीराञ्जना—अर्थात् तो मैं भी नहीं जानती। अच्छा अब जा; वे व्यग्र हो रहे होंगे।

(मधुरिमा उठती है और सुधांशु का हाथ पकड़कर जाने को उद्यत होती है)

नीराञ्जना—(सुधांशु से) सुधांशु! भैया तू आज मेरे ही पास रह जा न!

सुधांशु—नहीं, हम अम्माँ के साथ जाएँगे।

मधुरिमा—माँ कहती हैं तो रह क्यों नहीं जाता?

सुधांशु—(मधुरिमा से चिपटकर) नहीं, हम तुम्हारे साथ ही चलेंगे।

(मधुरिमा उल्लास से हँस पड़ती है। नीराञ्जना भी हँसती है—जरा वेदना से)

(मधुरिमा पुत्र के साथ चली जाती है। नीराञ्जना मुख पर वेदना की छाया लिए चुपचाप खड़ी रहती है—खिड़की के पास जाकर और बाहर घने होते अन्धकार को देखती है)

(नेपथ्य में कोई गुनगुनाता है—)

मैं विराग से कह देती हूँ
मेरे घर में आना मत।
मैं ममता को समझाती हूँ
मेरे मन से जाना मत।
मेरे प्रिय में सौरभ इतना!
सुमन तोड़कर लाना मत।
मैं अपनी उलझन में गर्वित
कोई मुझे सुझाना मत।

(कक्ष के निकट आकर गुनगुनाहट चुप हो जाती है। जलदमाला का प्रवेश)

जलद—माँ जी! बहन जी कहाँ गईं?

नीराञ्जना—वे अभी द्वार की ओर गई हैं। वहीं मिल जाएँगी।

(जलद जाने लगती है)

नीराञ्जना—(सहसा पूछ बैठती है) तू रात को भी मधुरिमा के यहाँ ही सो रहती है?

(जलदमाला शर्माकर चुप रहती है)

नीराञ्जना—बोलती क्यों नहीं, जलद?

जलद—नहीं माँ जी, अपने घर चली जाती हूँ।

नीराञ्जना—घर पर कौन है?

जलदमाला—सभी, मेरे बच्चे (लाज और उल्लास से) वे भी होंगे, अभी आए होंगे।

नीराञ्जना—तुझे यह सब अच्छा लगता है?

(जलद—चुप रहती है)

नीराञ्जना—(व्यग्र आग्रह से) बोल न?

जलद—हाँ, माँ जी!

नीराञ्जना—भार नहीं लगता?

जलद—भार? कुछ-कुछ मालूम तो होता है, पर उसे उठाते हुए मुझे अच्छा ही लगता है।

नीराञ्जना—तू इससे छूटना नहीं चाहती?

जलद—माँ जी...आप तो...(भाग जाती है)

(नीराञ्जना उसी ओर देखती सूनी-सी खिड़की के पास रहती है।)

(द्वार से दूर फिर वही गुनगुनाहट सुनाई देती है—)

वे आते, वैभव आ जाता,
वे जाते, सौरभ रह जाता,
मेरा सञ्जी आता होगा
रजनी! कहीं भुलाना मत!
मैं विराग से कह देती हूँ.....

(नेपथ्य में कोलाहल होता है)

नीराञ्जना—(झुँझलाकर चिल्लाती है) भिक्षुणी!

भिक्षुणी—आज्ञा माँ जी।

नीराञ्जना—यह कोलाहल कैसा है?

भिक्षुणी—कुछ सम्भ्रान्त व्यक्ति आचार्य के दर्शनों को आए हैं। उन्हीं के बालक कुछ दूर खेल रहे हैं।

नीराञ्जना—(तीखे स्वर में) यह मठ है कि बालकों का क्रीड़ाभवन? (भिक्षुणी चुप रहती है) जाओ द्वार को भेजो।

(भिक्षुणी चली जाती है)

नीराञ्जना—(अस्फुट स्वर में) ठीक है, यही मठ में बालकों का प्रवेश ही नहीं होने देना चाहिए। ही नहीं दिखेंगे तो यह प्रलोभन आपसे आप शान्त हो

(एक भिक्षु का प्रवेश)

नीराञ्जना—विशाख! द्वार पर तुम रहते हो?

विशाख—हाँ, माँ जी, इस मास आचार्य ने मेरी ड्यूटी की है।

नीराञ्जना—ठीक, मुझे स्मरण आ गया। इस मठ में कोई भी बालक प्रवेश न करने पाए।

विशाख—(सहसा) माँ जी!

नीराञ्जना—विशाख! ये बालक बहुत उत्पात करते हैं, कभी बाग में फूल तोड़ते हैं, कभी मठ की वस्तुएँ और कभी इतना कोलाहल मचाते हैं कि साधकों में बाधा आ जाती है। मैं इनसे तङ्ग आ गई हूँ। इसका उपाय यही है कि यहाँ पर किसी बालक को करने दिया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाख—पर माँ जी, क्या यह उचित होगा ?

नीराञ्जना—(कठोर स्वर में) विशाख ! यह मठ की अधिका का आदेश है, तुम्हें पालन करना ही होगा ? (तेजी कक्ष से बाहर निकल जाती है ।)

विशाख—आज माँ को यह क्या हो गया ? आज तक होंने कभी इतनी कठोरता से आज्ञा नहीं दी । शायद किसी लक ने कोई बड़ी हानि कर दी है । चलूँ पता लगाऊँ । हीं, पहले द्वार पर यह आदेश सुना दूँ—माँ जी की आज्ञा ननी ही चाहिए ।

(प्रस्थान)

चतुर्थ दृश्य

समय—दिन का तीसरा प्रहर

आचार्य भद्रदीधिति अपने आसन पर व्यग्र दिखाई देते और बार-बार द्वार की ओर देखते हैं ।

(नीराञ्जना का प्रवेश)

नीराञ्जना—आचार्य ! प्रणाम ।

भद्र०—अमिताभ तुम्हारा कल्याण करें ।

नीराञ्जना—मैं आपके प्रकोष्ठ की ओर आ रही थी कि र्ग में मुझे आपका भी सन्देश मिला । कहिए क्या आदेश है ।

भद्र०—नीराञ्जना ! आजकल तुम्हारे विषय में बड़ी चित्र-विचित्र बातें सुनने में आती हैं । तुमने युवक विश्व- को मठ की रीति के विरुद्ध कई दिनों से रोक रक्खा है । में बच्चों का प्रवेश रोक दिया है । तुम हर समय व्यग्र-सी ाई देती हो; अकारण ही मठ के निवासियों पर कठोरता शासन करती हो । बहुत सोचकर मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि तुम्हारा हृदय अशान्त रहता है और वह अशान्ति दिन- -दिन बढ़ती ही जाती है । क्या यह सच है ?

नीराञ्जना—सच है, आचार्य ! और इसी लिए मैं स्वयं भी पके पास आ रही थी । मुझे लगता है कि मैंने अब तक अपना जीवन व्यर्थ ही गँवा दिया । जिस कल्पित मधु के ए, जिस निर्वाण-प्राप्ति के लिए, मैं सदा साधनाएँ करती थी केवल मरीचिका-मात्र है, कभी प्राप्त नहीं होगा । मेरा न आजकल इसी कारण, एक अभाव, एक असन्तोष, का बन गया है ।

भद्र०—(सोचकर) इतने लम्बे साधना के वर्षों में भी अपनी वासना को नहीं जीत सकीं ?

नीराञ्जना—नहीं, आचार्य ! वासना को मैंने जीता है । षित उद्गारों का मैंने नियमन किया है । पर साथ ही मैंने है कि उसके साथ ही मेरा सहज आनन्द भी सूखकर हो गया है । अब मेरे हृदय में जो भूख जागी है, जो बार उद्वेलन उमड़ा है विश्वास रखिए उसमें वासना नहीं सांसारिक सुख की उत्कट कामना नहीं, अपितु एक मन को मोह लेनेवाली, रस-भरी कल्पनाओं से सजा हुआ अकथनीय भाव है जो निरन्तर अधिकाधिक मधुर होता इतना मधुर हो गया है कि मेरे हृदय में क्रियाशील विद्रोह बन गया है ।

भद्र०—तुमने समझाया नहीं, भिक्षुणी !

नीराञ्जना—(विवशता से) कैसे और कहाँ तक समझाऊँ आचार्य ! मेरे सारे तर्क, मेरे सारे धर्म-सूत्र, उसकी सहज स्मिति के मौन प्रहार से ही चूर-चूर होकर बिखर जाते हैं । उसकी एक प्रश्नवाचक दृष्टि से ही उसके प्रति मेरा सारा विरोध जैसे स्वयं किसी अभाव से नत-मस्तक हो जाता है । जब उसे बाँधने का प्रयास करती हूँ तो मेरे सारे बन्धन जैसे मेरे ही ऊपर आकर गिरने लगते हैं । (सहसा चुप होकर) नहीं, आचार्य नहीं, मैं इस असन्तोष को नहीं बहला सकती ।

भद्र०—भिक्षुणी ! तुमने इस भावना को पहचाना ?

नीराञ्जना—पहचाना है, आचार्य ! हृदय के कोने-कोने में इस समय भी अनुभव कर रही हूँ पर शब्दों में बाँधकर नहीं कह सकती । इतनी तीव्र, इतनी विद्रोही और इतनी अधिक सच्ची है वह अनुभूति !

भद्र०—नीराञ्जना, तुम अभी तक अपने पुराने सहज संस्कारों को वश में नहीं कर सकीं । तुम भगवान् अमिताभ की वैराग्य-दीप्त सलोनी प्रतिमा की आनन्द-वर्षा में अपने प्राणों को नहलाकर पवित्र नहीं कर सकीं । प्रयत्न करो, भिक्षुणी ! उस एकरस, शान्त-पुरुष के उपदेशों में तुम्हें आत्मलाभ होगा । निरन्तर के अनुभव से, प्रतिदिन के घटना-चक्र से संसार का दुःखमय होना ही सिद्ध है । प्रत्येक उत्सव विषाद का अन्त लेकर आता है । प्रत्येक उन्नति अवनति की ओर ले जाती दिखाई देती है और प्रत्येक जीवन मृत्यु का ही मधुर रूप है । कहीं ऐसा सुख नहीं जो दुःख की गोद में पटककर न भाग जाता हो । अपने को पहचानो, नीराञ्जना ! यह भावना, यह लालसा, यह गहरी अनुभूति तुम्हारे जन्मगत पापों की छाया है जो अत्यन्त मीठी और शीतल ही होनी चाहिए । पर स्मरण रक्खो, यह आभास ही है, स्वयं वस्तु नहीं । आज वह वासना के रूप में नहीं आई क्योंकि यौवन के अन्त में उसका रूप मोहक नहीं दिख सकेगा अपितु ममता के रूप में आविर्भूत हुई है । उसका यह रूप यौवन की इस सन्ध्या में बहुत ही अधिक आकर्षक होता है । सावधान ! यह अब तक के सारे प्रलोभनों से अधिक समर्थ है, तुम्हें हारना नहीं चाहिए ।

नीराञ्जना—आचार्य ! यह हराती नहीं । न स्वयं जीतती है न मुझे जीतने देती है । जब-तब मेरे असफल जीवन पर ही इस प्रकार हँसती है जैसे माँ की गोद में छोटा बालक । आचार्य ! आप निश्चय रहें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाओं को पीसकर, अपने अन्तर की नारी को घोंट-घोंटकर मार देने में ही सर्वथा कल्याण होता है ?

भद्र०—मानता हूँ नीराञ्जना ! पर तुम्हें यह भ्रम कैसे हुआ ? यह मारना है ही कब ? यह तो उसे और भी अधिक जीवन्त बनाकर रखना है जिससे दूसरों को भी समेटा जा सके।

नीराञ्जना—यह सब थोथा विश्वास है आचार्य ! संसार से अलग, मातृ-ममता से अलग मुझे अपना सन्तोष नहीं मिला। न किसी को मिल सकता है। भले ही कोई स्वप्न को ही सन्तोष मान ले।

भद्र०—तुम्हारा हृदय किसी बात से विक्षुब्ध हो उठा है, नीराञ्जना। पहले उसे संयत करो तब फिर मेरे पास आना; मैं तुम्हारी सब शङ्काओं का समाधान कर दूँगा।

नीराञ्जना—(निश्चय से) मुझे शङ्का नहीं है, आचार्य ! निश्चय है। इस आश्रम में मुझे शान्ति नहीं मिल सकती। इस मठ में मेरा निवास श्रेय भी नहीं। यहाँ पर मेरा नारीत्व, मेरी ममता और भावना जैसे छटपटाती रहती है। जाने दीजिए, आचार्य ! मुझे इस विहार को छोड़ने की अनुमति दीजिए।

भद्र०—(चौंक कर) विहार छोड़ोगी ?

नीराञ्जना—दोनों पक्षों का कल्याण इसी में है आचार्य !

भद्र०—(व्यग्रता छिपाकर) क्या करोगी ?

नीराञ्जना—यह मैं स्वयं नहीं जानती आचार्य ! हे विनष्ट हो जाऊँ, हो सकता है सन्तुष्ट हो जाऊँ। असम्भव नहीं है कि मैं विनाश की कराल ज्वाला धधक उठूँ।

भद्र०—नीराञ्जना, इतनी हिंसा ?

नीराञ्जना—यह कुमारी के निरन्तर संयम का आचार्य ! इसने हिंसा को ही नहीं उभारा, स्वाभाविक भी विकल कर दिया है।

(भद्र चुप होकर निश्वास छोड़ते हैं)

नीराञ्जना—क्या सोचने लगे, आचार्य ! तर्क भिक्षुणी तो कभी की मर गई। अनुभवों की नीराञ्जना को रोकने से क्या लाभ होगा ?

भद्र०—(गम्भीर स्वर से) जाओ, नीराञ्जना; तुम्हारा कल्याण करें।

नीराञ्जना—प्रणाम आचार्य ! (प्रस्थान)

भद्र०—(उच्च स्वर से) यदि अब भी शान्ति नीराञ्जना, तो इस वृद्ध आचार्य को मत भूलना।

(नेपथ्य से अस्पष्ट उत्तर आता है। आचार्य उठकर टहलने लगते हैं, अत्यन्त विकलता से—दबे हुए से।)

[पटाक्षेप

बृहत्तर भारत के सन्देशवाहक—डाक्टर लक्ष्मासुन्दरम्

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

(१)

सन् १९३९ में नेटाल इंडियन कांग्रेस के प्रधान की हैसियत से मैं भारत आया हुआ था—दक्षिण अफ्रीका की सरकार की पृथक्करण-योजना (Segregation Scheme) के खतरे से भारत-सरकार और भारतीय जनता को सचेत और सावधान करने के लिए। उन दिनों जहाँ-जहाँ मैं जाता था, पत्र-प्रतिनिधियों की भीड़ सी लग जाती थी। उनसे मिलने-जुलने और बात चीत करने में मेरा अधिकांश समय बीत जाता था। उनके लिए समय की भी कोई पाबन्दी न थी, जब फ़ुर्सत मिलती तभी वे पहुँच जाते और प्रश्नों की झड़ी लगा देते। इसलिए सच पूछिए तो रूटर, एसोसिएटेड प्रेस तथा युनाइटेड प्रेस के प्रतिनिधियों के सिवा अन्य पत्रकारों से मिलने में मुझे हिचकिचाहट होने लगी थी, यथासम्भव मैं उनसे बचने की कोशिश करने लगा था।

अतएव नई दिल्ली में लाला नारायणदत्त की कोठी पर, जहाँ मैं ठहरा हुआ था, जब मुझे सूचना मिली कि दिल्ली के एक पत्रकार महाशय मुझसे मिलना चाहते हैं तो मुझे न हुआ और न उनसे मिलने का उत्साह ही। बला कहाँ से आ टपकी ? बहाना बनाने की भी नहीं थी, क्योंकि आगन्तुक को मालूम हो चुका था से वापस आ गया हूँ। इसलिए उनसे मिलकर चार बातें करके पिण्ड छुड़ा लेना ही उचित जँचा।

मैंने उनको अपने कमरे के अन्दर बुलवाया। जो मेरी दृष्टि पड़ी तो हटाए नहीं हटती थी। देशी पोशाक थी, पैजामा और अँगरखा तथा टोपी। ऊँचा कद, सुघर शरीर, भव्य भाल, रसाल तेजोमय रूप ने मुझे बरबस अपनी ओर खींच लिया। चेहरे से प्रतिभा और बुद्धिमत्ता टपकती थी। शिष्टाचार के बाद नाम पूछने पर जब आगन्तुक ने "लक्ष्मासुन्दरम्" तो मैं चौंक पड़ा ! यह नाम मेरे नहीं था, इस नाम से मैं वर्षों से परिचित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्टूबर]

दरम्, एम० ए०, पी-एच० डी० भारत के ही नहीं, बृहत्तर रत के उन इने-गिने सेवकों में हैं जिन्होंने प्रवासी भारतीयों सेवा में अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग उत्सर्ग किया है। मलाया, बर्मा, सिङ्गापुर, स्याम, हिन्द-चीन, लङ्का आदि देशों भ्रमण कर प्रवासी बन्धुओं की ा देख आए थे और उनके हित अपनी गाँठ से हजारों रुपया लगा के थे। कुछ काल पूर्व "प्रवासी न्दुस्थानी"(Indians Overseas) मक उनकी अँगरेजी पुस्तक भी चुका था, जिसे मद्रास के सिद्ध प्रकाशक और 'इंडियन यू' के सम्पादक श्री जी० ए० ेसन ने प्रकाशित किया था। क्टर लक्ष्मसुन्दरम् अपना सारा वन प्रवासी भाइयों की सेवा में ावर करना चाहते थे, पर उनको ासियों तथा देश-बन्धुओं से त्साहन न मिला, इसलिए पण्डित ारसीदास चतुर्वेदी की भाँति उन्हें इस क्षेत्र से विरक्त होना पड़ा और ने निर्वाह के लिए दूसरा क्षेत्र ढ़ने पर बाध्य। पर चतुर्वेदीजी जहाँ प्रवासी भारतीयों से सर्वथा बन्ध-विच्छेद कर लिया, वहाँ क्टर लक्ष्मसुन्दरम् आज तक की सेवा में बद्धपरिकर हैं। पत्र-री के धन्धे से वे जो कुछ कमाते उसका एक खास भाग प्रवासियों हित में लगा देते हैं।

मैं डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् को ने सामने पाकर आनन्द से उछल । उनसे मिलने की मेरी रकाल से अभिलाषा थी, वह ायास ही पूरी हो गई। उनसे ण अफ्रीका की सामयिक स्थिति बहुत देर तक बातचीत हुई। की मधुर वाणी, गम्भीर विचार और तत्त्वानुसन्धान की क देखकर मैं समझ गया कि लक्ष्मसुन्दरम् कोई साधारण क्ति नहीं, एक प्रच्छन्न शक्ति हैं। शाम को चाय-पान आमन्त्रण पाकर मैं उनके घर पहुँचा। वहाँ उनकी विदुषी धर्मपत्नी अनसूया के दर्शन हुए। इस-देवी की क्रियाशीलता देखकर मैं दङ्ग रह गया। वे अपने कार्य से अर्द्धाङ्गिनी शब्द को सार्थक बना रही थीं। पत्नी से पति को प्रवासी भारतीयों के काम में भारी सहायता मिल रही थी। अनसूया प्रतिदिन

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी (बैठे हुए) के साथ डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम्, एम० ए०, पी-एच० डी० और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनसूया देवी—नई दिल्ली में।

दर्जनों अखबार गौर से देखतीं, उनमें यदि प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में कोई अग्रलेख, विशेष लेख या समाचार पातीं तो उनको काट लेतीं और "कतरन की किताब" में उनको सिलसिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूँढ़ने तथा लेख लिखने में बड़ी आसानी होती। उन दिनों वे लन्दन तथा देश के कई अखबारों के सिवा दिल्ली के 'स्टेट्समैन' में प्रति सप्ताह 'प्रवासी भारतीय' शीर्षक एक विशेष लेख लिखा करते थे, जिनसे उनको अपने निर्वाह के लिए काफी द्रव्य मिल जाता था और वे निश्चिन्त होकर अपना शेष समय देशवासियों तथा प्रवासी बन्धुओं की सेवा में लगा रहे थे।

प्रथम मिलन में ही डाक्टर लक्ष्मासुन्दरम् और बहन अनसूया से मेरा जो स्नेह-सम्बन्ध स्थापित हुआ वह दिन-पर-दिन घनिष्ठ ही होता गया। ज्यों-ज्यों मैं उनके निकट सम्पर्क में आता गया, त्यों-त्यों उनकी सहृदयता, सचाई, ईमानदारी, क्रियाशीलता और सेवा की भावना से उन पर मेरा स्नेह और विश्वास बढ़ता ही गया। बालक की भाँति भोलेपन के साथ ही उनकी अगाध विद्वत्ता और प्रकाण्ड पाण्डित्य देखकर किसे आश्चर्य न होगा? वे अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। जिन्होंने उनका प्रसिद्ध अँगरेजी ग्रन्थ "विश्व की राजनीति में हिन्दुस्थान" (India in world Politics) देखा है उनको यह पता लग चुका है कि डाक्टर लक्ष्मासुन्दरम् अन्ताराष्ट्रीय राजनीति के कितने बड़े पण्डित हैं। वे तैलगू भाषा और साहित्य के भी मर्मज्ञ हैं, पर दुर्भाग्य-वश उनकी मातृभाषा उनकी प्रतिभा से वञ्चित ही है। कुछ अपवादों को छोड़कर अँगरेजी में ही उनके सारे ग्रन्थ और लेख लिखे गए हैं।

(२)

डाक्टर लक्ष्मासुन्दरम् का जन्म दक्षिण-भारत के, आन्ध्र देश अन्तर्गत मसुलीपट्टम् नगर में २६ नवम्बर सन् १९०४ ई० में हुआ था। बचपन में जहाँ वे पढ़ने-लिखने में तेज थे वहाँ फुटबाल, क्रिकेट, हाकी, टेनिस आदि खेलों में अपना जोड़ नहीं रखते थे। अखाड़े में धूल लगाने, दण्ड-बैठक करने और कुश्ती लड़ने में उनकी विशेष अभिरुचि थी। वे बड़े नटखट बालक थे, उनकी शरारत से घरवाले परेशान रहते थे। स्कूल में इनकी गिनती मेधावी छात्रों में थी।

सन् १९२२ में अठारह साल के वय में आपने बी० ए० पास किया और वह भी राजनीति, अर्थशास्त्र एवं इतिहास में प्रतिष्ठा के साथ। सारे आन्ध्र देश में आप प्रथम आए। बी० ए० में पढ़ते समय आपने "मुगल लैंड रेविन्यू सिस्टम" (Moghal land revenue system) नाम की अपनी प्रथम पुस्तक लिखी। उस समय इस विषय पर और कोई पुस्तक नहीं थी। आप अपने उद्योग और खर्च से एम० ए० और एल्-एल० बी० पास करने के विचार से बम्बई गए, पर वहाँ ऐसे बीमार हो गए कि लाचार होकर घर लौटना पड़ा। यहाँ आप ३५) रुपया मासिक पर नौकरी करने लगे और खानगी रूप से एम० ए० की तैयारी भी। उन्हीं दिनों आपकी "काउ

दूसरी पुस्तक लिखी गई थी। बाद में आप आन्ध्र-विद्या में ३६) रु० मासिक पर क्लर्क बन गए। यहीं आ ए० की परीक्षा दी और पास हो गए। इसके बाद को महाराजा-कालेज में आपको लेक्चरार नियुक्त किया आप वहाँ ठहर न सके। आपकी लिखी हुई दोनों आपकी विद्वत्ता प्रकट हो चुकी थी। अतएव आन्ध्र विश्वविद्यालयों की सिफारिश से आपको एक से पी-एच० डी० के अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति सन् १९२७ में आप लंडन को प्रस्थान कर गए।

विलायत में इनको भी अन्य भारतीयों की भाँति के वर्ण-विद्वेष-मूलक मनोवृत्ति का अनुभव हुए बिना वस्तुतः पराधीन प्रजा का विदेशों में सम्मान नहीं होता है और खासकर शासक-वर्ग के व्यक्ति शासित हिकारत की निगाह से ही देखते हैं। लक्ष्मासुन्दरम् ने में अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन एवं अनुसन्धा आरम्भ किया और साथ ही भारत के अतीत एवं काल के इतिहास का अनुशीलन भी। इसका फल कि आपने ईस्ट इंडिया कम्पनी के "रेवेन्यू एडमिनि (Revenue administration) पर जो निबन्ध लि इतना खोजपूर्ण एवं प्रामाणिक था कि उसी निबन्ध पी-एच० डी० की पदवी मिली। आपने आई० में भी प्रवेश किया था, पर राजनीतिक कारणों से कर दिया गया। यह अच्छा ही हुआ, अन्यथा डाक्टर सुन्दरम् की सारी विद्वत्ता, योग्यता एवं प्रतिभा ब्रिटिश वाद की सेवा और रक्षा में ही लगती और देश बनाने की अपेक्षा उसकी दासत्व-शृङ्खला को और भी में वे कटिबद्ध होते।

(३)

सन् १९३० में डाक्टर लक्ष्मासुन्दरम् ने सार्वजनि में प्रवेश किया। उन्हीं दिनों लङ्का (सिलोन) भारतीयों का एक डेपुटेशन लंडन गया था; डाक्टर सुन्दरम् ही उसके मन्त्री बनाए गए थे। 'क्लोनियल को डेपुटेशन की ओर से जो 'मेमोरेंडम' दिया गया आपने ही लिखकर तैयार किया था। उसी साल शासन-सुधार के लिए 'डोनोमोर कमीशन' बैठा आपने लङ्का-प्रवासी भारतीयों की तरफ से साक्षी दी थी

सन् १९३१ में लंडन में 'इम्पीरियल कान्फरेंस' श्री हेनरी एस० एल० पोलक के अनुरोध से आपने प्रवास का अन्ताराष्ट्रीय पहलू" (International As Indian Immigration) पर एक आवेदन-पत्र किया, जो इम्पीरियल कान्फरेंस में पेश किया गया। में आपकी कीर्त्ति फैलती गई। अन्ताराष्ट्रीय प्रश्नों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषज्ञ माने जाने लगे। आप प्रथम भारतीय थे जिनको 'रायल इन्स्टीट्यूट आफ इंटरनेशनल अफेयर्स' (Royal Institute of International Affairs ने भारत की अन्ताराष्ट्रीय स्थिति पर भाषण देने को आमन्त्रित किया था। इस व्याख्यान की लंडन तथा भारत के अखबारों में काफी चर्चा हुई थी।

लंडन से आप हेग गए, जो उन दिनों अन्ताराष्ट्रीय अदालत का केन्द्र था। वहाँ भारत की अन्ताराष्ट्रीय स्थिति पर आपके भाषण हुए। सन् १९३१ में ही आप 'हेग एकेडमी आफ इंटरनेशनल लॉ' (Hague academy of International Law) की प्रतियोगिता में बैठे। चौबीस देशों के बासठ उम्मीदवारों में डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् ब्रिटिश साम्राज्य की ओर से चुने गए, अँगरेज तथा उपनिवेशों के श्वेताङ्ग छात्र पीछे रह गए और आपको छात्रवृत्ति भी मिली। इसी साल राष्ट्रसङ्घ (League of Nations) के अधिवेशन में आप प्रिंसिपल शास्त्री और बेगम शाहनवाज के सहायक बनाए गए।

उन्हीं दिनों भारत के भावी शासन-विधान के सम्बन्ध में लंडन में दूसरी गोलमेज परिषद् हुई, जिसमें महात्मा गांधी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि की हैसियत से शरीक हुए थे। 'हिन्दू' के सम्पादक भी इस परिषद् के एक सदस्य थे। श्री निवास स्वामी आयङ्गर ने आपको हेग से लंडन बुला लिया और अपना सेक्रेटरी बनाया। डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् ने कांग्रेस की तरफ से गोलमेज परिषद् में पेश की करने के लिए 'भारत की राष्ट्रनीति' पर एक गम्भीर गवेषणापूर्ण मेमोरेंडम तैयार किया था और उसकी गोलमेज परिषद् में काफी चर्चा भी हुई थी। उसी समय आप लंडन में 'हिन्दू' और 'लीडर' के प्रथम भारतीय प्रतिनिधि बने।

सन् १९३२ मे विलायत से आप लङ्का की राह भारत लौटे। लङ्का में आपने भारतीय मजदूरों की स्थिति का अध्ययन और अनुशीलन किया और कई भाषण भी किए। भारत-सरकार की दृष्टि में आपके राजनीतिक विचार आपत्तिजनक थे। मद्रास सरकार के आग्रह से लङ्का की पुलिस ने आपको भारत-सरकार के हवाले कर दिया, पर आप बेदाग छूट गए। आन्ध्र देश में उस समय करबन्दी का आन्दोलन चल रहा था; उसमें भी आपने यथेष्ट भाग लिया।

इसके बाद आप मजदूरों के सङ्गठन में लग गए। मजदूरों की अवस्था बड़ी शोचनीय थी, उधर किसी का ध्यान नहीं था। गिरोजी की सारी शक्ति रेलवे मजदूरों की सेवा में केन्द्रीभूत थी। डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् ने मिल के, बन्दरगाह के तथा अन्य क्षेत्र के मजदूरों का सङ्गठन शुरू कर दिया और उनकी स्वरक्षा के लिए ट्रेडयूनियनों की स्थापना करना भी। छात्रों और युवकों के आन्दोलन में भी आप कामी भाग ले रहे थे। इसी सिलसिले में आपने सारे दक्षिण भारत का दौरा किया। निजाम हैदराबाद ने आपको अपनी रियासत में प्रवेश करने से रोक दिया था।

सन् १९३३ में डा० लक्ष्मसुन्दरम् ने प्रवासी भारतीयों की स्थिति का अध्ययन करने के लिए विदेशों की यात्रा की। आपने मलाया में मजदूरों की दशा देखी, सिङ्गापुर में प्रवासी भारतीयों ने आपका 'भारत के गैरसरकारी राष्ट्रदूत' के रूप में बड़े उत्साह से स्वागत-सत्कार किया। वहाँ से आप स्याम (थाइलैंड) गए। उन्हीं दिनों हिन्द-चीन के भारतीय बेङ्कर निर्वासित कर दिए गए थे। मद्रास के 'मरचेंट चेम्बर आफ कामर्स' ने आपको वहाँ जाकर जाँच करने का काम सौंपा। आपकी जाँच का परिणाम प्रवासी भारतीयों के लिए हितकर हुआ। इस यात्रा में अपनी गाँठ से हजारों रुपए खर्च करके आपने प्रवासी भारतीयों की जो सेवाएँ की हैं वे बृहत्तर भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेंगी।

सन् १९३३ में आन्ध्र विश्वविद्यालय में आप व्याख्याता नियुक्त हुए, पर साल भर से अधिक आप वहाँ टिक न सके। राजनीतिक विचारों के कारण आपको विश्वविद्यालय से सम्बन्ध तोड़ देना पड़ा। इसके बाद आप हरिजनों की सेवा की ओर झुके। विजगापट्टम में विश्वविद्यालय के सामने ही आपने एक हरिजन-मन्दिर बनवाया जिसका उद्घाटन महात्मा गांधी से कराया गया था।

सन् १९३४ में आपने ब्रह्म देश की यात्रा की। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था प्रवासी भारतीयों की अवस्था का अध्ययन। उस समय बर्मा को भारत से अलग करने का निश्चय हो चुका था। बर्मा के भारतीय मजदूरों की ओर से एक डेपुटेशन भारत-सरकार के पास भेजा गया था, आप भी उसके एक सदस्य होकर दिल्ली पहुँचे। इसी समय आप पोस्टल एंड आर० एम० एस० यूनियन के सभापति चुने गए।

जिस समय आप भारत में ट्रेडयूनियन आन्दोलन को आगे बढ़ा रहे थे, उसी समय मृत राष्ट्रसङ्घ ने अपने सेक्रेटेरियट भारत की तरफ से आपको 'लेजीयन अफसर' चुना। यह पद लगभग दो हजार रुपए मासिक वेतन का था। पर भारत सरकार ने आपके राजनीतिक विचारों और कार्यों के कारण अवाञ्छित व्यक्ति (Persona Nongrata) कहकर आपत्ति की। इस सिलसिले में आप दिल्ली आए। राष्ट्रसङ्घ को निर्णय बदलने में छः महीने लग गए। आपका उत्तराधिकारी साल भर तक न चुना जा सका। आपके बाद जो दो व्यक्ति चुनकर भेजे गए, वे वहाँ से अयोग्य कहकर वापस कर दिए गए। इस घटना से आपका उत्साह मन्द पड़ गया। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत की सेवा करने का अवसर हाथ से निकल जाने के कारण आपको बड़ी निराशा हुई। आपके जीवन की धारा ही बदल गई। राजनीति से आपको विरक्ति-सी हो गई। आपकी आर्थिक अवस्था भी अच्छी नहीं थी। आप अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रव्य से आन्दोलन का सञ्चालन करते रहे, परिणाम यह हुआ कि आप पर चालीस हजार रुपए का ऋण लद गया। भारत-सरकार आपसे अप्रसन्न थी। जनेवा जाने की कोई सूरत नहीं थी। मद्रास की धारा सभा में आप आन्ध्र देश के मजदूर क्षेत्र से सहज ही में प्रवेश कर सकते थे, पर आपकी महत्त्वाकांक्षाओं पर चौका लग जाने से राजनीति से आपका मन उचट गया था। फलतः आप दिल्ली में ही रुक गए।

(४)

पहले से ही पत्रकार-कला पर आपका अनुराग था। योरप प्रवास के समय इस क्षेत्र में आपने काफी ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसलिए आपने पत्रकारी के पेशे को ही अपने निर्वाह के लिए अपनाना उचित समझा। सर्वप्रथम आप १२५) ६० मासिक पर "ट्रिब्यून" के संवाददाता बने। इस क्षेत्र में आपकी काफी प्रसिद्धि हो गई। जहाँ लंडन के "न्यूज क्रोनिकल" ने आपको अपना दिल्ली शिमला स्थित संवाददाता बनाया, वहाँ भारत के फ्री प्रेस जरनल, सर्चलाइट, हितवाद, नेशनल हेरल्ड आदि अखबारों ने भी आपकी सेवा से लाभ उठाया। इस सङ्कट की घड़ी में भी आप अपने दलित एवं पीड़ित प्रवासी भाइयों को न भूले। जहाँ आपने उनसे सम्पर्क बनाए रक्खा, वहाँ इन अखबारों के जरिए आप उनकी सेवा भी करते रहे। यही एक ऐसा विषय था, जो आपके जीवन की नैराश्यमयी रजनी में आशा एवं उत्साह का धुँधला प्रकाश दिखाता था। इसी से आपके भग्न हृदय को कुछ प्रेरणा मिलती रही। प्रवासी भारतीयों की सामयिक स्थिति पर 'स्टेट्समैन' में प्रति सप्ताह आपका एक विशेष लेख छपता था। वास्तव में आप भारत की राजधानी में प्रवासी भारतीयों के लिए राष्ट्रदूत का काम कर रहे थे। कभी-कभी तो 'स्टेट्समैन' में प्रवासी बन्धुओं की हालत पर ऐसे लेख निकलते थे कि सरकारी क्षेत्र में हलचल मच जाती थी।

मुझसे जब डाक्टर लङ्कासुन्दरम् की पहले-पहल भेंट हुई उसी समय आपके एक लेख के कारण भारत-सरकार के सेक्रेटेरियट में हड़कम्प मच गया था। सर गिरिजाशङ्कर वाजपेयी को उस लेख के एक अंश पर घोर आपत्ति थी। उन्होंने डा० लङ्कासुन्दरम् को बुलाकर बहुत समझाया। यहाँ तक कि सरकारी सूत्र से डाक्टर को जो खबरें मिलती थीं उनको रोक देने की भी धमकी दी गई। पर आप टस से-मस न हुए—लेख से एक शब्द भी वापस लेने को प्रस्तुत न हुए। आपकी दृढ़ता देखकर मैं आश्चर्य-चकित रह गया था। आपको पत्रकार-धर्म से न लोभ विचलित कर सकता है और न भय ही। ऐसे ही पत्रकार सच्चे ब्राह्मण और देश के गौरव हैं।

सन् १९४० में आपने "कामर्स एंड इंडस्ट्री" (Commerce इस पत्र का उद्देश्य है भारत के उद्योग और व्यापार की अभिवृद्धि एवं उन्नति तथा ब्रिटिश पूँजी के दुष्परिणाम अँगरेज-भारतीय पूँजीपतियों के सम्मिलित षड्यन्त्र से देश को सचेत करना। गत पाँच साल के अन्दर इस भारी-से-भारी सङ्कट आए। कुछ पूँजीपतियों ने इस खरीद लेने की बड़ी कोशिश की, इसके बदले में आ भारी रकम देने और आपको ही सम्पादक बनाए लालच दिखाया गया। जब उनकी कामना पूरी इस पत्र को ही नष्ट करने का प्रयत्न किया गया, "जाको राखै साइयाँ, मार सकै ना कोय; बाल न बाँका जो जग बैरी होय" की लोकोक्ति ठीक चरितार्थ हुई। और विपद् की आग में तपकर 'कामर्स एंड इंडस्ट्री' चमक उठा और इसकी उत्तरोत्तर उन्नति ही होती जा भारत के उद्योग एवं वाणिज्य क्षेत्र में इस पत्र की और प्रभाव है। यह प्रति सप्ताह समय पर नहीं प्रकाशित होता है। आप ही इसके मालिक भी सम्पादक भी।

'कामर्स और इंडस्ट्री' में लङ्कासुन्दरम् जी काफी हैं, अग्रलेख के सिवा और भी कई विशेष स्तम्भों में के लेख छपते हैं। इसके अतिरिक्त बम्बई के 'बिज़ अखबारों में भी प्रति सप्ताह आपके लेख निकलते रहते हैं।

(५)

पत्रकार के सिवा आप ग्रन्थकार भी हैं। आपने में अनेक ग्रन्थों की रचना की है जो अपने ढङ्ग के एवं प्रामाणिक माने जाते हैं। 'प्रवासी हिन्दुस्थानी' (I overseas) के लिखने के बाद आप कई वर्षों तक ग्रन्थ कार्य से विरक्त रहे। यह बात उनके मित्रों को बहु रही थी। पर इधर दो ढाई साल के अन्दर आपके प्रकाशित हुए हैं। उनमें 'विश्व की राजनीति में (India in World politics) मेरी दृष्टि में सर्वो इस नाम की एक और पुस्तक निकल चुकी है, जो डा नाथ दास की कृति है। पर इसके सामने उसकी पड़ गई है। विश्व की राजनीति में भारत की क्या इस पर डा० लङ्कासुन्दरम् ने जो कुछ लिखा है वह गम्भीर गवेषणा, प्रचण्ड प्रतिभा एवं महती मनन द्योतक है।

इसके बाद आपके दो और ग्रन्थ निकले, जिनके 'राष्ट्रीयता और आत्मनिर्भरता' (Nationalism a sufficiency) तथा 'भारत के लिए सार्वजनिक रा secalar state for India)। ये दोनों ग्रन्थ भी डाक्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी पिछले अप्रैल (सन् १९४६) में डा० लक्ष्मसुन्दरम् ने एक और सामयिक एवं सर्वोपयोगी ग्रन्थ निकला है, जिसका नाम है 'भारत की सेनाएँ और उनका खर्च' (India's armies and their costs)। आपने रात-दिन परिश्रम करके और हजारों रुपये खर्च करके इस ग्रन्थ को तैयार किया और ठीक उसी समय इसको प्रकाशित कराया, जिस समय कि लंडन से 'केबिनेट मिशन' भारत के भाग्य का फैसला करने के लिए दिल्ली पहुँचा। इसको समय पर मुद्रित और प्रकाशित करने में आपको बड़ी दिक्कतें झेलनी पड़ीं। यदि कोई दूसरा होता तो हिम्मत हार बैठता। पर आप अपनी धुन से नहीं हटे। प्रकाशक ने ऐन मौके पर धोखा दिया, कई प्रेस वचन देकर विश्वासघात कर बैठे। आपको इसके प्रकाशन में जो मानसिक क्लेश और आर्थिक हानि उठानी पड़ी है वह किसी का भी उत्साह भङ्ग करने के लिए पर्याप्त थी। पर आप हताश नहीं हुए। आखिर तीन सप्ताह के अन्दर इस २५० पन्ने के ग्रन्थ को छपवाया और उसे केबिनेट मिशन के सदस्यों तथा राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के हाथ में थमाकर ही दम लिया।

यह कौन नहीं जानता कि भारत के भावी शासन-विधान बनानेवाले प्रतिनिधियों के सामने दो विकट समस्याएँ आएँगी; एक तो सेना की और दूसरी व्यापार की। इसी लिए तो केबिनेट मिशन में जहाँ भारतसचिव लॉरेन्स हैं वहाँ सेना-सचिव एलकजेंडर तथा वाणिज्य मन्त्री स्टैफार्ड क्रिप्स भी। भारत और ब्रिटेन दोनों देशों के लिए ये प्रश्न बड़े महत्त्व के हैं। अफसोस की बात है कि सेना के विषय पर आज तक कोई प्रमाणिक ग्रन्थ नहीं निकला। भारत-सरकार इस मामले में भारतीय जनता को अनजान ही रखना ठीक समझती है। इसलिए डा० लक्ष्मसुन्दरम् को अपने ग्रन्थ के लिए सामग्री संग्रह करने, लिखने और समय पर प्रकाशित करने में जो श्रम और व्यय करना पड़ा, उसका अनुमान कर लेना कठिन नहीं है। इस ग्रन्थ को लिखकर आपने देश की जो सेवा की है उसे भारत कभी भूल न सकेगा। डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् के इन अनमोल ग्रन्थों का हिन्दी तथा अन्य देशी भाषाओं में अनुवाद हो जाना चाहिए, जिससे उनके ज्ञान, गवेषणा और विचारों से अधिकाधिक देशवासियों को लाभ पहुँच सके।

इस समय दक्षिण अफ्रीका की स्थिति बड़ी भयावह हो उठी है। वहाँ सत्याग्रह की लड़ाई भी शुरू हो गई है। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों पर मैं एक ग्रन्थ अँगरेजी में लिखना चाहता हूँ, जिसके संशोधन और सम्पादन का भार डाक्टर लक्ष्मसुन्दरम् ने उठा लिया है। आप ही के सहयोग, सहायता और सम्मति से इस ग्रन्थ का प्रणयन और प्रकाशन होगा, अतएव यदि प्रस्तावित ग्रन्थ से प्रवासी भारतीयों की कुछ भी सेवा हो सकी तो उसका सारा श्रेय आप ही को दिया जाना उपयुक्त होगा। आपकी भाषा बड़ी मधुर, शैली प्रभावोत्पादक और विवेचन-पद्धति हृदय-स्पर्शी होती है। आप ऐसे क्रियाशील हैं कि मैंने उनको रात-रात भर जागरण करके लिखते देखा है।

मुझे विश्वास है कि जब कभी प्रवासी भारतीयों के विकास और उत्कर्ष का निष्पक्ष इतिहास लिखा जाएगा तब उसमें डा० लक्ष्मसुन्दरम् का नाम बड़े आदर से अङ्कित होगा। प्रवासी भारतीयों पर आपका बहुत बड़ा ऋण है, जिसे वे कभी चुका न सकेंगे। आपकी योग्यता, विद्वत्ता, कर्तव्यनिष्ठा और आपका निर्मल सार्वजनिक जीवन आपके मित्रों और देशवासियों के लिए पथ-प्रदर्शन करेगा। अभी तो आपके जीवन का काम जारी ही है। हाल ही में आप कांग्रेस में भी शरीक हो गए हैं और भारत की स्वाधीनता के लिए आत्मोत्सर्ग करने को प्रस्तुत हैं। आप ही जैसे सपूतों पर भारत-जननी को गर्व करने का अधिकार है। भगवान् आपको शतायु बनाएँ।

—

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन बहुत ही मौलिक ढङ्ग से कराया गया है। ४०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५)— पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े का सङ्कट

पण्डित आत्मस्वरूप शर्मा

यह भ्रम ही था कि युद्ध-पश्चात् अवस्था सुधर जाएगी और महँगाई तथा तङ्गी के सताए हुए लोग सुख से जीवन व्यतीत करने लगेंगे। किसी ने कब सोचा था कि स्थिति उल्टा पहले से भी बुरी हो जाएगी। भोजन का सङ्कट तो इस समय महान् है ही, कपड़े का अभाव उससे भी अधिक दुःखदायी है। अभी हाल में राशन का कपड़ा और घटा दिया गया है। गरीबों को तो कपड़ा मिलता ही नहीं है। पता नहीं ये लोग किस तरह गुजर कर रहे हैं। भारत के लोग, कुछ प्रान्तों को छोड़कर वैसे ही कम कपड़ा पहनने के अभ्यासी हैं। इनके शरीर पर बस उतना ही कपड़ा होता है जितना कि नग्नता को ढाँपने के लिए आवश्यक हो। जब इतनी अल्प मात्रा भी इन्हें प्राप्य न हो और कई स्थानों में स्त्रियाँ केवल इसलिए घरों से बाहर निकलने से लाचार हों कि उनके पास शिष्टों की तरह चलने-फिरने के लिए कपड़ा नहीं है और जब कई अवस्थाओं में मुरदों के लिए कफन तक प्राप्त करने में कठिनाई होती हो तो भारतीयों की कपड़े के सम्बन्ध में असहाय अवस्था का सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

प्रश्न यह है कि क्या देश में सचमुच कपड़े का अभाव है? युद्ध के दिनों में तो बहुत-सा कपड़ा केवल सेना ही के लिए तैयार होता था। अब वह आवश्यकता भी नहीं रही। फिर कपड़े का सङ्कट क्यों है? इस प्रश्न का यदि एक वाक्य में उत्तर चाहिए तो यह है कि हमारे सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से यहाँ प्रत्येक प्रश्न अथवा समस्या राजनीति के गिर्द घूमती है। कपड़े का प्रश्न भी ऐसा ही है। अपने देश में भयङ्कर सङ्कट रहने पर भी आज काफी भारी मात्रा में कपड़ा इस देश से विदेश भेजा जा रहा है। कुछ समय हुआ हैदरी मिशन ने आशा दिलाई थी कि निर्यात में कमी करने के अतिरिक्त विदेश से मशीनें मँगाने के सम्बन्ध में काफी सुविधाएँ शीघ्र बढ़ाई जाएँगी, पर इस विषय में अभी तक कुछ किया नहीं गया। ये आशाएँ यदि पूरी हो जाएँ तो भी इससे वास्तविक कठिनाई का हल नहीं होगा। मिलों के पास कपड़ा बहुत है। युद्ध के दिनों में मिलमालिकों और हिस्सेदारों ने अथाह धन पैदा किया है और अब भी उनकी आय कम नहीं। जिस सस्ते जापानी कपड़े से उनका अधिक मुकाबला पड़ रहा था, उसका तो भूतल पर अस्तित्व ही नहीं रहा। इसलिए भारत की कपड़े की मिलों के लिए मैदान अब प्रायः बिलकुल साफ हो गया है। इतना उज्ज्वल भविष्य रहने पर भी जहाँ तक लोगों की कठिनाई का [illegible] होने की कोई आशा दीख नहीं रही है।

गवर्नमेंट भारत के पड़ोसी मित्र देशों के लिए कपड़े का बन्द करने को तैयार नहीं और न वह कण्ट्रोल हटाने [illegible] है। इसलिए अभाव और पाबन्दियों की अवस्था में [illegible] अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए स्वभावतः चोर और घूँस पर निर्भर होना पड़ता है।

गवर्नमेंट का अधिक बल इसी बात पर है कि [illegible] नफीस कपड़ा बनाने से रोका जाए तथा इन्हें प्रेरणा की [illegible] ये केवल साधारण काम आनेवाला कपड़ा ही तैयार [illegible] ऐसी प्रेरणा करते समय यह बात बिलकुल भुला दी गई [illegible] मनुष्य स्वभाव से नफीस कपड़ा पसन्द करता है और [illegible] विशेष रूप से बढ़िया कपड़ा पहनने का शौक दबाया [illegible] सकता। फिर युद्ध-काल में अनेक लोगों ने अच्छे या [illegible] से जो बहुत-सा धन कमाया है वह नफीस कपड़े के [illegible] प्रकाशमान् हुए बिना नहीं रह सकता। सादे और [illegible] कपड़े की उपज बढ़ाने से वास्तव में विदेशी नफीस कपड़े [illegible] प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए भारतीय मिल-मालि[illegible] इस माँग में सार है कि यदि सादे कपड़े ही पर [illegible] दिया जा रहा है तो गवर्नमेंट को स्वदेशी कपड़े [illegible] किस्मों के विदेशी कपड़े का आयात तुरत बन्द [illegible] चाहिए।

कामचलाऊ सादा कपड़ा आठ प्रकार का माना गया [illegible] (१) धोतियाँ, (२) साड़ियाँ—जिनमें छपी हुई [illegible] शामिल हैं, (३) लम्बे कपड़े, चद्दरें और घरेलू उपयोग [illegible] जिनमें छपी हुई छींटें भी हैं, (४) कमीजों के कपड़े [illegible] और धारीदार नमूने भी हैं, (५) वायलें और [illegible] (छपी हुई भी), (६) ड्रिलें और ट्विलें, (७) [illegible] कोट के कपड़े—एक ही सूत से बने हुए और (८) तौलि[illegible] और अनधुले—जिनमें पाँच प्रतिशत से अधिक रङ्ग [illegible] लगा हो। गवर्नमेंट ने मिल-मालिकों से आग्रहपूर्वक [illegible] कि वे सादे कपड़े की पैदावार जितनी भी बढ़ा सकते हों [illegible] चाहे इसके लिए उन्हें काम के घंटे बढ़ाने ही पड़ें [illegible] प्रकार के फैशनदार कपड़े बनाने की विरोधिनी वह [illegible] कि इनमें कोयले और ईंधन की खपत अधिक होती है। [illegible] मालिक गवर्नमेंट की इच्छा-पूर्ति के लिए तैयार हैं, पर [illegible] लिए कोयले अथवा बिजली की मात्रा अधिक माँगते [illegible] द्वारा कच्चा माल लाने और बना माल शीघ्र से शीघ्र [illegible] सुविधाएँ चाहते हैं, मजदूरों के लिए वे मकान माँगते [illegible] और सूत के निर्यात पर रोक चाहते हैं और यह [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रते हैं कि भारत में बने माल से बेहतर माल विदेश से यहाँ
ाने न दिया जाए।

मूल धारणा यह थी कि केवल सादा कपड़ा ही बनाने से
पड़े की पैदावार में ४० करोड़ गज की वृद्धि हो जाएगी। पर
ल-मालिकों का कथन है कि केवल सादा कपड़ा बनाने से
नके नफे की मात्रा बहुत कम हो जाती है। वे यह भी कहते हैं
क भारत की रूई की अपेक्षा विदेशी रूई से माल तैयार करने
उन्हें दुगुनी से भी अधिक बचत होती है। गवर्नमेंट ने कपड़े
कीमतों में आठ बार कमी की है। अन्तिम बार अगस्त की
हली तारीख से नफीस कपड़े की कीमतों में ६ से लेकर १२
ई प्रति रुपए की कमी और ६ से लेकर १५ पाई प्रति रुपए
मोटे कपड़े की अवस्था में बढ़ती की गई है। गवर्नमेंट का
हना है कि उसके उपर्युक्त आज्ञा देने का कारण यह है कि
हली अगस्त सन् १९४६ से मिलों के काम के घण्टों में कमी
रही है अर्थात् ये ६ से घटाकर ८ किए जा रहे हैं। इसके
तिरिक्त भारत में रूई की कीमतें बहुत महीनों से चढ़ी चली
रही हैं। कीमतों में इस प्रकार उथल-पुथल करने पर भी
भी तक युद्ध-पूर्व की अपेक्षा कपड़े की कीमतें दुगुनी हैं।

कपड़े के विषय में सबसे अधिक आवश्यक प्रश्न निर्यात
है। भारत-सरकार ने ठण्डे कपड़े के निर्यात की मात्रा
० करोड़ गज वार्षिक नियत कर रक्खी है। पर इस मात्रा में
द्ध पर बराबर बल दिया जाता रहा है। गवर्नमेंट अपने
जनीतिक उद्देश्यों को मुख्य रखते हुए चीन के अतिरिक्त बर्मा
र स्याम को विशेष रूप से अधिक कपड़ा देना चाहती है।
तरोक्त दो देशों से उसे चावल प्राप्त करने की आशा रहती है।
यह बता देना उपयुक्त होगा कि मध्य-पूर्व सहित उपर्युक्त
ों के साथ व्यापार करनेवाले व्यापारी भारतीय माल से
देशों में मनमाना नफा खींचते हैं। लोग यह पूछने का
धिकार रखते हैं कि गवर्नमेंट भारत की कपड़े की आवश्य-
ाओं की उपेक्षा कर विदेशों को कपड़ा क्यों दे रही है और
स अवस्था में कि यह महँगे दामों पर बेचा जा रहा है, इससे
सी विदेशियों की भला क्या सहायता होती होगी?

यह बात उल्लेखनीय है कि कपड़े की पैदावार प्रायः घट
है। सन् १९४५ में सन् १९४४ की अपेक्षा १२ करोड़
लाख गज कपड़ा भारत की मिलों में कम तैयार हुआ।
प्रकार सन् १९४४ की अपेक्षा सन् १९४३ में ६ करोड़
लाख गज कपड़ा कम तैयार हुआ था। इसका कारण
ले का न मिलना अथवा घटिया कोयले का मिलना बताया
ा है। मिल-मालिक यह भी कहते हैं कि युद्ध-काल में
क कार्य करने से उनकी मशीनें थक गई हैं। सन् १९४५
कपड़े की पैदावार अधिक होने की आशा हो सकती थी, पर
वर्ष में हड़तालें नाक में दम किए रहीं और विघ्न लगाया
है कि इनके कारण उक्त वर्ष में सात करोड़ ८ लाख

कपड़े का घाटा रहा। हड़तालों की दृष्टि से सन् १९४६ भी
बहुत अच्छा प्रतीत नहीं होता, पर यह जरूर है कि इस वर्ष में
फौजी आवश्यकताएँ अधिक नहीं होंगी और जहाँ सन् १९४५ में
सेना के लिए ४१ करोड़ ७० लाख गज कपड़ा लिया गया था
वहाँ अब सम्भवतः १० करोड़ गज से ही काम चल जाएगा।
कपड़े की पैदावार को प्रभावित करनेवाली केवल हड़तालें ही
नहीं, मजदूरों का अनावश्यक कारणों से काम से अधिक गैर-
हाजिर रहना भी है।

सूती कपड़े को गत तीस वर्षों से बहुत बड़ा मुकाबला उस
मिलावटी कपड़े से करना पड़ रहा है कि जिसमें सूत के साथ
नकली रेशम मिला रहता है और जिसे रेऑन कहते हैं।
अमेरिका में ऐसे कपड़े की खपत अत्यधिक होती जा रही है
और खपत के साथ वहाँ ऐसे कपड़े बनानेवाले कारखाने भी बढ़
रहे हैं। भारत में विदेश से मँगाए गए ऐसे कपड़े की खपत
सन् १९३९-४० में प्रायः ४ करोड़ ७४ लाख रुपए की थी।
कहा जा रहा है कि इस समय कपड़े के सङ्कट को दूर करने के
लिए उक्त प्रकार का कपड़ा बहुत काम का सिद्ध हो सकता है।
यदि ऐसा कपड़ा भारत ही में तैयार किया जाए तो लकड़ी
का गुद्दा, जिससे यह कपड़ा तैयार होता है, अन्य कई देशों की
अपेक्षा यहाँ सुलभ है और भारत में मजदूरी भी सस्ती है।
इसके अतिरिक्त पानी और बिजली दो और आवश्यकताएँ हैं
जिनकी कमी नहीं। बताया गया है कि उक्त प्रकार का आध
सेर कपड़ा बनाने के लिए लगभग डेढ़ सौ गैलन पानी की
आवश्यकता होती है। पानी इसके लिए बिलकुल निर्मल और
नमकीन अंशों से मुक्त होना चाहिए। ट्रावन्कोर में ऐसा कपड़ा
बनाने के लिए एक कम्पनी खड़ी की जा रही है, जो विदेश से
लकड़ी का गुद्दा मँगाकर कार्य आरम्भ करेगी, पर इस उद्योग के
भविष्य के विषय में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। अनुमान
किया गया है कि संसार में ऐसे कपड़े की पैदावार १० लाख
टन से भी ऊपर है और इसकी सम्भावनाएँ उच्च हैं क्योंकि यह
रूई की तरह भूमि की उपज पर निर्भर नहीं। यदि इस नवीन
प्रकार के कपड़े के आयात को बढ़ाने और भारत में ऐसे
कपड़े की तैयारी के उपायों की ओर अधिक ध्यान देने का
कष्ट किया जाए तो कपड़े का तात्कालिक सङ्कट बड़ी सीमा तक
दूर हो सकता है। यह भी स्मरण रखने योग्य बात है कि यदि
अनुचित नफेबाजी न हो तो यह कपड़ा नई अवस्थाओं में सूती
कपड़े से भी सस्ता बिक सकता है। युद्ध के पश्चात् देश में कपड़े
के सैकड़ों नए कारखाने खुलने जा रहे हैं। क्या यह उनके
लिए सोचने का समय नहीं कि वे भी इस नवीन प्रकार के कपड़े
की तैयारी के उपायों को जुटाने के साधन करें?

हमें भूलना न चाहिए कि विलायत में मजदूर-सरकार और
भारत में कांग्रेस-सरकार के अधिकार में रहते हुए न केवल कपड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि यह निश्चित आशा भी है कि देशवासियों की एक बड़ी भारी संख्या इस उद्योग-धन्धे की ओर एक या दूसरे रूप में खिंचना पसन्द करेगी। अब कारखाना-मजदूरों के लिए कार्य करने के नियम दिन-प्रति-दिन आकर्षक और सुविधाजनक होते जा रहे हैं। अत्यन्त अल्पकाल में मजदूरों के हित और लाभ के अनेक कानून भिन्न-भिन्न प्रान्तों की ओर से पास किए गए हैं और बराबर पास किए जा रहे हैं। यह सच है कि नए कानून मिल-मालिकों की आय को एक सीमा तक प्रभावित करेंगे, पर लम्बी दौड़ में प्रसन्न मजदूर इनके लिए घाटा सिद्ध नहीं होगा। मिल-मालिकों को अब अपने नफे के लिए मजदूरों से अधिक गवर्नमेंट की ओर देखना चाहिए कि जो कई प्रकार की सुविधाओं से उनके लाभ को ज्यों का त्यों बना रहने दे सकती है। अन्य बातों को छोड़कर यदि गवर्नमेंट इस समय शीघ्र से शीघ्र मशीनें मँगवाने का प्रबन्ध कर दे तो इसी से कपड़े के सङ्कट के अन्त की सीमा दिखाई दे सकती है। अमेरिका की मशीनें ब्रिटेन की मशीनों से कहीं उत्तम और नवीन प्रकार की हैं। उनमें मजदूरों की अपेक्षा मशीनों ही से अधिक काम लिया जाता है। कई मिल-मालिक तो यहाँ तक कह चुके हैं कि यदि नई मशीनें उपलब्ध नहीं तो उनके लिए पुरानी अर्थात् सेकेंड-हैंड मशीनें ही मँगा दी जाएँ ताकि वे वर्तमान सङ्कट का सामना कर सकें। बङ्गाल विशेष रूप से अधिक मिलें खोलना चाहता है। वहाँ के व्यापार-मंडल ने एक आवेदन-पत्र में बताया है कि बङ्गाल को कम से कम १ अरब २६ करोड़ गज कपड़े की आवश्यकता है ताकि वहाँ की मनुष्य-संख्या को प्रति मनुष्य १८ गज कपड़ा प्राप्त हो सके। इस समय मिलों और खड्डियों को मिलाकर बङ्गाल केवल ४० करोड़ गज कपड़ा ही तैयार करने की अवस्था में है। माँग और उत्पत्ति की संख्याओं में यह कोई कम अन्तर नहीं है। ऐसी दशा में उस अभागे प्रान्त के करोड़ों लोग यदि अपनी नग्न अवस्था को ढाँपने के लिए भी कपड़ा न पाते हों, तो इसमें किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आनेवाले युग में—जिसका यदि दुर्भाग्य से विभाजित भारत का रूप हुआ—खाद्य और कपड़े के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रान्तों का स्वावलम्बी न होना एक महान् सङ्कट सिद्ध हो सकता है। उस अवस्था में कोई भाग दूसरे स्वतन्त्र भाग से सहयोगिता के आधार पर सहायता प्राप्त करने की दशा में नहीं होगा। हिसाब लगाया गया है कि भारत में प्रत्येक व्यक्ति को तीस गज कपड़ा अवश्य मिलना चाहिए। इस अवस्था को पहुँचने के लिए ११ अरब गज कपड़े की आवश्यकता है जब कि भारत में अभी केवल ६ अरब गज कपड़ा ही तैयार हो रहा है। अनुमान है कि इतनी मात्रा में कपड़े की उत्पत्ति के लिए इस समय, जब कि मशीनों की कीमतें युद्ध-पूर्व की अपेक्षा दुगुनी हो रही हैं, कम से कम ६२ करोड़ रुपए की आवश्यकता होगी। यह रुपया कहाँ से आएगा? यह रुपया उन करोड़ों रुपए में से आ सकता है जो करोड़ों रुपए विलायतवालों से लेने हैं और जो मुद्रा के रूप में वहाँ हैं वे मशीनों के रूप में [illegible] चाहिएँ। इससे इस देश को निश्चित रूप से [illegible] आर्थिक लाभ हो सकेगा। मिल-मालिक तो यह [illegible] कर रहे हैं कि भारत-सरकार मशीनों की कीमतें [illegible] लिए नियत कर दे ताकि महँगे अथवा सस्ते दामों [illegible] का किसी को शिकवा-शिकायत न रहे।

यह प्रश्न विचारणीय है कि खड्डियाँ कहाँ [illegible] वर्तमान सङ्कट को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। [illegible] रहे कि इस समय खड्डियाँ मिलों की प्रतिद्वन्द्वी नहीं [illegible] बड़ी सहायक हैं। गवर्नमेंट ने खड्डियों के कपड़े [illegible] न लगाने तथा उसकी कीमत को कण्ट्रोल के अधीन [illegible] बुद्धिमत्ता का प्रमाण दिया है। यदि इसके विपरीत [illegible] जाता तो यह निश्चित था कि भारत में कपड़े का [illegible] विशाल होता कि कोई गवर्नमेंट युद्धकाल में उसका [illegible] कर सकती। खड्डियों का कपड़ा सस्ता नहीं बल्कि [illegible] अवस्थाओं में मिल के कपड़े से भी अधिक महँगा [illegible] कोई कम सन्तोष की बात नहीं कि महँगे दामों पर [illegible] लभ्य तो है। सन् १९४३ में भारत में खड्डियों की [illegible] बीस लाख के लगभग थी। इनमें से कोई १७ लाख [illegible] और ३ लाख बन्द। चालू खड्डियों में से ७२ फी [illegible] काम, ५ फी सदी ऊनी काम और १६ फी सदी [illegible] करती थीं। सबसे अधिक संख्या में खड्डियाँ मद्रास [illegible] यहाँ यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता न होनी [illegible] किसी काल में खड्डियों ने अपने नफीस कार्य से भारत [illegible] में दूर-दूर नाम उज्ज्वल किया था। ढाका की [illegible] मछलीपट्टम की छींटें, अहमदाबाद और बनारस की [illegible] रुपहली साड़ियाँ कभी जगत्-विख्यात थीं। मशीन [illegible] कपड़े की दिशा में ये चमत्कार अब बीती कहानी [illegible] हैं। जब तक खड्डियों को बादशाहों, नवाबों और राजों [illegible] का आशीर्वाद और प्रोत्साहन प्राप्त रहा, उन्होंने खूब [illegible] पर ज्यों-ज्यों मशीनें आती गईं और उच्च श्रेणी [illegible] पहरावे में परिवर्तन होता गया, त्यों त्यों खड्डियाँ लोक [illegible] हटती गईं। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में विदेश [illegible] सूत का आयात भी इनके अस्तित्व के लिए घातक सिद्ध [illegible] प्रथम महायुद्ध तक तो अवस्था यहाँ तक पहुँच गई थी [illegible] के जुलाहे केवल मशीनी सूत ही पर निर्भर थे। [illegible] अवस्था में इस सूत का एक बड़ा भाग मिलें ही हड़प [illegible] हों बेचारे जुलाहों को इसका कितना भाग मिल [illegible] पहले महायुद्ध में सूत का आयात बन्द हो जाने [illegible] अनुचित लाभ उठाया और कपड़े के स्वदेशी बाजार [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला हो खादी-प्रचार आन्दोलन का जिसने खड्डियों को पुनर्जीवित किया और लोगों के पहरावे में एक विशेषता उत्पन्न कर दी। उस समय के स्वदेशी आन्दोलन का यह प्रभाव भी हुआ कि विदेशी सूत की अलभ्यता की अवस्था में जुलाहे स्वदेश में बारीक सूत बनाने लगे और खड्डियों पर बहुत सुन्दर कपड़े तैयार हुए। सादगी आ जाने का प्रभाव यह हुआ कि स्त्रियों और पुरुषों ने न केवल भड़कदार कपड़ों का प्रयोग छोड़ दिया बल्कि पहरावे के कई अतिरिक्त अंशों को पोशाक से एकदम निकाल दिया। पगड़ी और रङ्गीन धोतियों का रिवाज तभी से कम हो रहा है। गांधी टोपी ने कम-से-कम ८० फी सदी की सीमा तक उस कपड़े की खपत में कमी कर दी है जो पहले पगड़ियों के काम आता था। अब बूढ़ों से लेकर बच्चों तक हल्के-फुलके कपड़े पहनना पसन्द करते हैं। यह सब स्वदेशी आन्दोलन ही का प्रसाद है। दूसरे महायुद्ध में यह सिद्ध हो गया कि खड्डियाँ केवल स्वदेशी सूत पर निर्भर रह सकती हैं। इस युद्ध में बाहर से सूत न आने पर भी खड्डियाँ कार्य करती रहीं और उन्होंने नागरिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त एक सीमा तक सरकारी फौजी आवश्यकताओं को पूरा करने में भी हाथ बँटाया। यह बताने की जरूरत नहीं कि भारत में राष्ट्रीय सरकार के आगमन के साथ खड्डियों का भविष्य बहुत उज्ज्वल हो गया है। केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें इनकी सहायता करने के अतिरिक्त ऐसे उपाय और साधन भी करना चाहती हैं कि जिनसे मिलों के मुकाबले में खड्डियों की रक्षा हो। यदि सूत बराबर मिलता रहे तो खड्डियों के लिए काम का घाटा न होगा और बहुत-से लोग जो निराश होकर इस धन्धे को छोड़ चुके हैं फिर इस ओर आना पसन्द करेंगे। अब कई जगह खड्डियाँ बिजली से भी चलने लगी हैं। यह पग आगे की ओर है। इस समय देश में खड्डियों का उद्योग किसी व्यवस्थित-अवस्था में नहीं। इस लिए उसमें उन्नति एक कठिन प्रश्न है। यदि इस विशाल कार्य को एक शृङ्खला में बाँध दिया जाए तो यह अत्यन्त उपयोगी धन्धा फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। अनुमान है कि भारत में कम से कम २५ लाख आदमी खड्डियों पर काम करते हैं। यह कोई कम संख्या नहीं। युद्ध-पश्चात् बेकारी के युग में बहुत-से लोग इस कार्य में खपाए जा सकते और इस प्रकार न केवल बहुत-से देशवासियों के लिए काम निकल आ सकता है बल्कि कपड़े का सङ्कट जो प्रभु जाने अभी कितने वर्षों तक चलेगा, शीघ्र समाप्त हो सकता है। भारत का जुलाहा इस समय बुरी तरह दलाल के हाथों में है। उसका बहुत-सा लाभ तो वही चट कर जाता है। यदि सहयोगिता के आधार पर जुलाहों को कोई सङ्गठन हो जाए तो वे लोग मिलों के कपड़े को भी पछाड़ सकते हैं। सफेद कपड़े पर जनता में अधिक रुचि का पैदा होना खड्डियों के पक्ष में है और इसी प्रकार यह बात भी निश्चित रूप से इनके लाभ में है कि सब जातियों की स्त्रियाँ अब साड़ियाँ पहनने लगी हैं। भारत में तो साड़ी मानो स्त्रियों की राष्ट्रीय पोशाक बनने जा रही है। आज भी मदरास और मुर्शिदाबाद की खड्डियों पर बनी साड़ियाँ शिक्षित स्त्रियाँ लपककर लेती हैं। यह समय है सोचने का कि खड्डियाँ इस क्षण भारत में कपड़े के सङ्कट को दूर करने के लिए क्या उद्योग कर सकती हैं और इस उद्योग में जनता और गवर्नमेंट का भाग कितना-कितना होना चाहिए। जुलाहे के सम्मुख वास्तविक समस्या पूँजी की कमी नहीं बल्कि उस स्थान की कमी है कि जहाँ वह दलालों और व्यापारियों से आजाद रहकर अपना माल बेच सके। जुलाहों को वर्ष में बारहों मास कार्य नहीं मिलता। वे वर्ष में कम से कम छः मास बेकार रहते हैं। हिसाब लगाया गया है कि प्रतिवर्ष खड्डियों पर लगभग १ अरब ६० करोड़ गज कपड़ा तैयार होता है जो भारत की कपड़े की कुल खपत के चौथे भाग की पूर्ति है। यह मात्रा साधारण नहीं है। वस्तुतः इसने लाखों और करोड़ों लोगों को नङ्गे रहने से बचा रक्खा है।

खड्डियों की इस सराहनीय सहायता पर भी अभी तक करोड़ों देशवासी वस्त्र-विहीन हैं। इस महासङ्कट को दूर करने का एक उपाय यह भी बताया जा रहा है कि मिलों को केवल एक ही प्रकार का सादा कपड़ा तैयार करने के लिए बाध्य किया जाए। इस सम्बन्ध में कपड़े के, नीचे लिखे, चार प्रकार सुझाए गए हैं :—

(१) १·५४ इंच चौड़ा और किनारी के बिना, (२) २.५४ इंच चौड़ा और १ से लेकर १½ इंच तक हाशिए सहित (३) ३·४५ इंच चौड़ा और हाशिए के बिना, (४) ४·४५ इंच पाढ़ सहित।

इस तजवीज का आधार यह है कि कई प्रकार का कपड़ा न रहने से सब को एक ही सा कपड़ा लेना पड़ेगा और उस अवस्था में कपड़ा जोड़कर रखने अथवा अनावश्यक रूप से कपड़ा खरीदने की लालसा मिट जाएगी। ऐसी दशा में कपड़े पर कण्ट्रोल की आवश्यकता नहीं रहेगी। जिन चार प्रकार के कपड़ा ऊपर सुझाया गया है उससे धोतियाँ, कमीजें, साड़ियाँ, पेटीकोट तथा ऊपर लेने और नीचे बिछाने के प्रयोग के सभी कपड़े तैयार हो सकेंगे।

कपड़े का सङ्कट शीघ्र दूर होनेवाली विपत्ति प्रतीत नहीं होती। इसे दूर करने के गम्भीर उपाय करने होंगे। यह कार्य सङ्गठित रूप से अपने हाथ में लेना होगा—जनता को और गवर्नमेंट को भी। ग्रामीणों को जो महाकष्ट हो रहा है उसका हम नगरों में रहनेवाले स्यात् अनुमान भी नहीं कर सकते। किस प्रकार स्त्रियों को अपने शरीर के गिर्द लपेटने के लिए साधारण धोती तक नसीब नहीं—यह जनता को उभारने के लिए कोई काल्पनिक कथा-कहानी नहीं बल्कि सच्ची आपबीतियाँ हैं जिनके दृश्य किसी भी समय देखे जा सकते हैं। क्या कपड़े के इस भयङ्कर सङ्कट को, जो भारत के इतिहास में इससे पहले कभी देखा नहीं गया, दूर करने के लिए शीघ्र कुछ किया जाएगा? इस दिशा में अधिक विलम्ब अब असह्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी का बच्चा

धारावाहिक उपन्यास

श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए०

(गताङ्क से आगे)

'मुझे यह झगड़ा मोल ही नहीं लेना।'

'तब करोगे क्या ! जीवन भर खिलाएगा कौन ?'

'तुम।'

'अपने भैया से भी पूछा ?'

'वाह भाभी, तुम तो भैया के आते ही आँख बदलने लगीं। देखो, भैया से लड़ाई हो जाएगी ?'

'बस आपस में ही निपट लेना, कहीं मुझे व्यर्थ में बीच में घसीटो ?'

हँसी की हलकी-सी लहर फैल गई। अभी वह शान्त भी न हो पाई थी कि भैया का स्वर कानों में पड़ा—"भोजन हो रहा है ?"

मैंने देखा, फीकी आकृति और जलती हुई आँखें। स्वर में भी विकृति ! प्रश्न साधारण था, जैसे नित पूछा ही करते हैं। किन्तु उनकी मुद्रा देखकर गूढ़ाशय की व्यञ्जना स्पष्ट हो जाती थी। भाभी रोटी पोती रहीं। मैंने कहा—"तुम भी बैठ जाओ न भैया।"

'मेरे लिए अन्दर आ जाएगा। तुम खाओ।'

'तुम खाओ' वे चले गए। जाते-जाते अपनी फीकी हँसी के द्वारा चोट भी कर गए। क्या हो गया भैया को ?

× × ×

आदमी इच्छा करना छोड़ दे तो वह जड़ के अधिक निकट आ जाए। कामना-शक्ति के अभाव के कारण ही जड़ की मानसिक ग्लानि का अवसर नहीं मिलता। किन्तु आदमी के मन की प्रकृति ही सङ्कल्प-विकल्पात्मक है। वह सदा गुत्थियाँ सुलझाया करता है, इसी से स्वयं उलझा ही रहता है। सोचता हूँ कि दुनिया एक विशाल कर्मचक्र है। प्रत्येक आदमी का कम-से-कम कर्तव्य है इसकी गति में कुछ-न-कुछ योग देना। यही कर्तृत्व की सार्थकता भी है। किन्तु मूलतः तो कर्तृत्व फिर व्यर्थ में ही आदमी अपने को कर्ता समझ देता है ? जड़ का श्रेय अपने ऊपर ओढ़ना। ही यह प्रवृत्ति भी है। जीवन के कटु अनुभवों की स्मृतियाँ मेरे पास हैं। शृङ्खला का विचार करता हूँ सूत्र ही सर्वव्यापी दीखता है। आज दुनिया के कलाप मुझसे पूर्ण सम्बद्ध होकर चल रहे हैं। गति में कोई अन्तर न आएगा। दिशा-परिवर्तन सी बात है। तो जीते-जी जो सम्पृक्तता जान पड़ कामना का विकारमात्र ही तो है। बस इच्छा दूँ, और आदमी के बच्चे की कहानी समाप्त हो क्या यह इतना साधारण काम है ?

विस्मृति और घटनाओं के अनेक आवरण कहानी की कुछ कड़ियाँ जोड़ता रहा हूँ। विचार इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि कहानी और घटना प्रायः 'क्यों' नहीं उठता ? जो प्रयत्न करके भी नहीं अकस्मात् विघटित हो जाता है। छोटी भाभी से स्नेह है। प्रत्येक व्यवहार में पूर्ण सतर्क रहता हूँ। एक नया घुमाव उपस्थित हो चुकता है तो अपनी पड़ती है। भूल आदमी की सबसे बड़ी असमर्थता है

मुझे याद है कि मैं भाभी से खाना परसने को था। तवे पर काफी आँच लग चुकी थी, पराठा था। फिर भी वे न तो मेरी बात ही सुन रही थीं का परत ही बदल रही थीं।

'सुना नहीं भाभी, खाना परस दो। भूख लगी है'

पराठा जलकर चीढ़ा हो गया। वे बेलन से पेड़ी को बढ़ाती रहीं। मैं कह रहा हूँ, वे सुनती पराठा जल रहा है, पर उनका ध्यान ही नहीं। को उद्यत हुआ, उन्होंने रोका नहीं। पराठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अच्छा तो मैं चलता हूँ ?'

भैया पीछे खड़े कह रहे थे—"हाँ अन्दर ही चलो, भोजन ी आ जाएगा।"

मैं लौट पड़ा। लौटते-लौटते भी उचटी दृष्टि से देख लिया भाभी की आँखों के कोए भीगे थे।

भोजन की थाली आगे पड़ी है। धीरे-धीरे टुकड़े नोच-चकर छोड़ रहा हूँ। अपदस्थ का मान रो रहा है। सकी भूल, मेरी या भाभी की ? कितनी ही देर हो गई, ाने के लिए कोई नहीं पूछ रहा—साग लाऊँ ! पराठा ौर। चटनी कैसी बनी ? भाभी गूँगी क्यों हो गईं ?

पर नहीं वे तो बोल रही हैं—जरा उससे किसी चीज के ाए पूछ लेते।

भैया कह रहे हैं—"जरूरत होगी तो आप माँग लेगा।"

'नहीं, अपने आप वह कभी नहीं माँगता।'

'तो रहे भूखा !'

मेरा ही प्रसङ्ग था। भैया के शब्दों में कठोरता थी और भी की वाणी में दीनता। कठिनाई से दो-चार ग्रास सटके ौर वैसी-की-वैसी थाली बाहर रख आया। थाली को इस ङ्ग से रक्खा कि भाभी जूठन देख लें। चुप-चाप घर में लौट ाया। वे भैया से कह रही थीं, 'आज वह भूखा ही रहा !'

'तो मैं क्या करूँ ? मिजाज दिखाते हैं साहब !'

कुल्ला करते करते मेरी चेतना लुप्त-सी होने लगी थी। किसी कार हाथ धोकर उठा। तौलिए से मुँह पोंछ रहा था कि या आकर बोले—"भोजन क्यों छोड़ दिया ?"

'रुचा नहीं !'

'ऐसे निर्वाह नहीं होने का ! अब और कोई चारा भी नहीं।'

मैं चुप रहा। वे चले गए।

× × × ×

माँ कहती हैं कि बेटा तू सूखता जा रहा है। तुझे कुछ गता ही नहीं। कोई रोग तो नहीं। किसी को दिखा ही दे।

माँ पूछती हैं कि बेटा तू मारा-मारा क्यों फिरता है। दिन र घर से बाहर। जब आता भी है तो चोरों की तरह।

मैं कहता हूँ कि मैं अच्छा हूँ। वे समझती हैं, धोखा दे हा है। कैसे समझाऊँ उन्हें।

मैं सोचता हूँ कि क्यों पूछती हैं वे बार-बार। क्या मुझे लाना चाहती हैं ? पर नहीं, आँसू अनमोल होते हैं। उन्हें हाना नहीं।

'बेटा, जी न लगता हो तो थोड़े दिन किसी पहाड़ पर ही स आ।'

'वाह माँ ! साल भर तो बाहर ही रहता हूँ। कुछ दिन लिए घर आया तब भी अपने चरणों में नहीं रहने देतीं।'

माँ निहाल होकर आशीर्वाद देती हैं।

छुट्टियाँ लम्बी होती जान पड़ती हैं। घर में घुसते ही दम घुटने-सा लगता है। बड़ी भाभी सर्वथा व्यंग्य मुद्रा में स्वागत करती हैं। माँ की बात सुनकर रोना आता है। पिता जी तो तटस्थ ही रहते हैं। भैया गम्भीर हैं। बड़े भैया कामकाज में फँसे रहते हैं। भाभी स्वयं छिपती फिरती हैं। मैं रात को भी खाट पर पड़ा-पड़ा सोचा करता हूँ। एक दिन भैया को भाभी से कहते सुना था—तुम उसे भुलाए बिना मेरे निकट नहीं आ सकतीं। मैं तुमसे और कुछ चाहता भी नहीं।

'उसे' कौन ? क्या भाभी भूलीं नहीं, भुला रही हैं ?

× × ×

[३]

मैं जीवन को समेटना चाहता था। वैसे था ही मेरे जीवन का सम्भार कितना। पर थीं कुछ मृदुल स्मृतियाँ जिन्हें भुला सकने पर निस्सन्देह एकान्त को पा लेता। छुट्टियाँ समाप्त होते ही घर से भागा। उस समय यदि मन में कोई सङ्कल्प था तो छोटी भाभी के सुख के लिए अपने बड़े-से-बड़े लोभ का त्याग करना। सोचता था कि पुस्तकों में अपने आपको रमा लूँगा। किन्तु सोच-सोचकर कौन कब किसे भूला। दिशा-परिवर्त्तन आवश्यक हो उठा था। अपने आपको बिखरा देने के अतिरिक्त कोई उपाय न था। पुस्तकें मेज पर से अलमारी में जाने लगीं। जब मैं तनकर दरवाजे पर खड़ा हुआ तो सड़क चलती मेरी ओर सस्पृह देखते देखते रुक गए। मस्ती में आ मैं भी सड़क पर आ गया। गर्वोन्नत सिर आसमान को चूमता था। भीड़ छँट गई, लोग फट गए और मुझे आगे बढ़ने के लिए राह मिली।

मेरे कदम तेजी से पड़ रहे थे। साथ चलनेवाले भी साथ न दे सके। किसी ने रास्ता बदल दिया। किसी ने राह छोड़ दी। कोई थककर बैठ गया, कोई हारकर धीरे-धीरे चलने लगा। फिर भी मैं बढ़ता ही रहा। मैंने किसी की प्रतीक्षा न की। किसी साथी के लिए क्षण भर भी न रुका। आत्म-विश्वास मेरे साथ था। साथी तो मेरे सङ्केत पर बन जाते थे।

दुनिया सभीत मेरी व्यापकता को देखती। मैं भी उस बाह्य प्रसार को देखता, प्रत्येक दिशा में मेरे पैरों की छाप, प्रत्येक पथ पर मेरी छोड़ी हुई धूल। उठते हुए धुन्ध में लोग अन्धे हो जाते। वे अपने ढङ्ग से सोचते। उनका सब आनुमानिक रहता। पर जब मैं स्वतः विचार करता तो वह एकाकीपन का अनुभव होता जिसमें कुछ स्मृतियाँ सदैव बाँध दिया करतीं। मैं हँस पड़ता। देखनेवाले समझते कि प्रसन्न हूँ, पर मैं अपनी वेदना पर रोता।

कालेज के गलियारे में खड़ा था। लड़कियाँ इधर-उधर अपनी कक्षाओं में आ-जा रही थीं। मैं सबको खड़ा-खड़ा घूरता। कोई मेरी ओर देखती ही नहीं और कोई सहमी-सी निकल जाती। इनकी झिझक पर, विभ्रम पर, हँसने में मजा आता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मेरा नित्य का रवैया था। रात को जब अकेला नङ्गी चौकी की पीठ पर इधर से उधर करवट बदलता हुआ लेटा रहता तो दिन भर के अपने कार्यों पर विचार करता। आपे से घृणा होती, फिर भी घृणित कर्म का त्याग न करता। दुनिया जिसे बुरा समझकर छोड़ दे उसे अच्छा समझकर मैं अपनाऊँ। मेरे सामने मुझी पर हँसने की तो किसी की ताब नहीं और पीछे की तो जानता ही कौन है। मैं आवृत्ति किया करता।

उन्हें जानता न था। तालियों का गुच्छा घुमाती हुई जा रही थीं। मैंने रोक लिया—मैं इस गुच्छे को देखना चाहता हूँ!

'क्यों।'

'आप दिखाइए भी।' मेरा स्वर दृढ़ था। उन्होंने गुच्छा बढ़ा दिया। मैंने हेय दृष्टि से देखकर लौटाते हुए कहा—"इसे छिपाकर रक्खा कीजिए। यह प्रदर्शनी के योग्य नहीं।' वे अप्रतिभ हो उठीं। मैं हँस पड़ा।

मैंने करवट ली—शोहदा! हुँः किया और याद आया 'मिस माथुर आप पेंसिल देंगी।' उन्होंने दे दी, मैं लेकर चल दिया। वे रोकने की इच्छा रहते हुए भी नहीं रोक सकी थीं। अगले दिन आधी पेंसिल उनके पास पहुँच गई थी।

प्रोफेसर साहब बरामदे में भी नोट्स पढ़ने जाया करते थे। उस दिन जानकर उनसे टकरा गया। नाक पर रक्खा हुआ चश्मा फिसल गया। मैंने कहा—ओ! साँरी! वे कूदते हुए चले गए।

जब आदमी को अच्छाई से चिढ़ होती है तो बुराई की ओर दौड़ता है। लाख बुरा हो जाने पर भी अच्छाई के जज्बात शेष रह जाते हैं। अवसर आने पर व्याख्या से वे नहीं चूकते। पर जब व्यक्ति उनका भी अभ्यस्त हो जाता है तो रोग असाध्य हो जाता है, क्योंकि वह सुनकर टाल देता है और जानकर गलती करता है।

आज मिस्टर नायर ग्रीन फेल्ट हैट ओढ़कर आए। एक-दम नया। दाम चालीस रुपए से क्या कम होंगे। किन्तु उनके काले स्याह चेहरे पर हमें फबता नहीं जान पड़ा। मैंने उनसे एक दिन के लिए माँग लिया। मुझसे सीनियर थे और कोई सम्बन्ध भी नहीं, फिर भी देना पड़ा। जानते थे कि एक ही विंग में रहते हैं। पढ़ नहीं सकेंगे। हैट बेकार हफ्तों कमरे में पड़ा रहा। कभी खूँटी पर, कभी बिस्तर पर, कभी मेज पर, कभी किताबों के बीच में तो कभी मैले कपड़ों के ढेर पर। मुझे हैट से चिढ़ थी, इसी से लगाता भी न था। मेरे कमरे में जो कोई आता वही थोड़ी देर के लिए उसे सिर पर रख लेता। एक दिन मिस्टर नायर ने बड़ी क्षमा-याचना के बाद हैट माँगा। कह दिया—मिल जाएगा।

तब एक लड़की सङ्कुचित-सी बगल से निकली थी। एक साथी ने कहा—जानते हो, यह किसकी लड़की है।

'होगी किसी की।' पर उत्सुकता पल्ला पकड़े थी। उसका समाधान भी साथी ने तुरन्त कर दिया—यह कचौड़ीगली की एक.....की लड़की है। मालिनी नाम है। बी० पढ़ती है।

'वेश्या की लड़की!' मैंने जिज्ञासु भाव से पूछा।

फिर वह बहुत कुछ बकता रहा था। 'उसकी थी। फलाने रईस की रखेली। अब गाती भर है। उम्र, फिर भी जवानों से रङ्ग चोखा। बड़ा पैसा है लड़की तब पैदा हुई थी जब फलाने स्टेट के राजा साथ इसकी माँ रहती थी। वहीं से अब भी पाँच माहवार इस लड़की को व्यय मिलता है।' मेरी ओर योग न पाकर उसे अपनी चर्चा बन्द कर देनी पड़ी थी फिर सुनाऊँगा। बड़ा मजेदार किस्सा है। मैंने इसे यह भी एक कहानी है। कहो तो अभी सुनाऊँ।

मुझे कहना पड़ा—अच्छा अवस्थी, अब तुम जाओ

फिर मैं कई दिन तक उसको तलाश में रहा, दिखाई दी। टेनिस खेलकर पसीने में लथ-पथ सा लौट रहा था। टेनिस न तो अच्छी जानता था और न था। फिर भी मन बहलाने को खेल आता था। अचान सामने से रिक्शे पर आती दिखाई दी। बस चट से अड़ाकर खड़ा हो गया। रिक्शा रुक गया। उसने मेरी ओर देखा। मैंने रिक्शेवाले से कहा—जरा खड़ा हो। इशारा करें तो चले आना।

उसने उसे रोकना चाहा। मैंने कहा—आपसे करनी हैं। रिक्शेवाला पेड़ के नीचे खड़ा होकर सुस्ता उसे मेरा व्यवहार निस्सन्देह बड़ा भद्दा जान पड़ा।

चिढ़कर पूछा—कहिए क्या काम है।

'मैं आपका परिचय चाहता हूँ।'

'परिचय!' उसका रङ्ग फीका पड़ने लगा था। क्रुद्ध स्वर में बोली—आपका मतलब?

'बस जानना चाहता हूँ, यही मतलब है।'

'मालिनी। अच्छा अब आप जा सकते हैं।'

मैं हँस पड़ा—इसके लिए आपको कहने की नहीं। फिर अभी परिचय भी अधूरा है।

मैंने बगल में रक्खी उसकी पुस्तक उठा ली। कर छीन ली। मैंने कोई विरोध नहीं किया। होकर बोली—यू इडियट! मैं नहीं बताती।

'लड़कियाँ भी गाली देती हैं, मैं नहीं जानता था लड़की हैं, इसी से इसका उत्तर नहीं दे सकता। मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ। सिर्फ बात करने से रोक लिया था। अच्छा नमस्ते, मालिनी बाई।'

'बाई!' मेरे स्वर में व्यंग्य था। वह तिलमि मैं हँस पड़ा और तेजी से साइकिल बढ़ा दी। उस दि सो न सका था। बारम्बार अपने व्यवहार की विचार करता। और तो कुछ नहीं, केवल बाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। छोटी भाभी की भी स्मृति जागरित हुई। उन्हें
ा मालूम कि आज उनके विकास का क्या स्वरूप है।
फिर मैं कई दिन तक कालेज भी न जा सका। चुपचाप
पने बन्द कमरे में पड़ा रहता। मिलने आनेवालों को बाहर
बाहर ही वापस कर देता। कई दिन बाद फिर बैठक
र्ववत् जमने लगी। कमरे में सिगरेट का धुँआ भरा रहता।
लौरियाँ लगती रहतीं। यद्यपि मैं न तो सिगरेट ही पीता
ा और न पान ही खाता था, फिर भी अभ्यागतों का उस रूप
त्कार अवश्य करता था। मुफ्त के पान-सिगरेट उड़ाने-
लों की कॉलेज में कहीं कमी नहीं होती। इसके अपवाद-
रूप यदि कोई व्यक्ति मिला था तो जोशी। सिगरेट पेश
ने पर सदा कहा करता था कि मैं न पीनेवाले की जेब से नहीं
ता। मुफ्तखोरों को इस पर सदा फटकारा करता था।
भी उस व्यक्ति की हृदय से कद्र करता था। वही ऐसा
क्ति था जिसे मैंने अपना उस दिन का व्यवहार सुनाया था।
री बात पूरी होने पर कहा था—'कुछ विचार करना और
ख लो।' उसके ये शब्द मुझे अब भी स्मरण हैं। भेद
रने पर अवस्थी से यही अन्तर उसमें मिलता है।

× × ×

दुर्गापूजा की छुट्टियाँ हुईं। प्रायः सभी ने अपने-अपने
र का टिकट ले लिया था। बड़ी उत्सुकता के बाद यह दिन
ाया था। जो इसकी प्रतीक्षा न कर सके थे, वे पहले ही जा चुके
। होस्टल खाली हो गया। मेस भी प्रायः सभी बन्द हो
के थे। मेरे सामने छुट्टियाँ काटने की समस्या थी। साथियों
घर जाते देख मेरे दिल में भी हूक उठती। पर वहाँ जाऊँ
किस लिए? बड़ी भाभी के व्यंग्य, छोटी भाभी की उदासीनता
और भैया की सन्दिग्ध दृष्टि मेरे लिए असह्य थी। रात भर
ङ्कल्प-विकल्प करता रहा। माँ-बाप के रहते हुए भी मैं बे
र-बार का और अनाथ था। मासिक व्यय के लिए वे पर्याप्त
पया भेज देते थे, इतना ही उनसे सम्बन्ध रह गया था।
त्रि का निभृत मेरे शून्य हृदय में उथल-पुथल मचाता रहा।
ब सहा न गया तो रोने लगा। रोते-रोते ही सो गया और
गले दिन काफी दिन चढ़े उठा। कितनी ही देर तक
आलसियों की तरह पड़ा रहा। फिर सहसा उठकर बिस्तर
धने लगा। नौकर ने आकर कहा—दूध ले आऊँ बाबूजी।

'ठहरो।' बस बिस्तर को अधखुला छोड़ निबटने चला गया।
कितनी ही देर तक वहाँ व्यर्थ ही बैठा सोचता रहा। समय
किसी तरह काटना था। आध घण्टे तक दातुन को चबाता
आ अस्थिरचित्त इधर उधर घूमता रहा। नहाने घर में
घुसा तो घण्टों वहीं लगा दिए। टोंटी खोलकर नीचे बैठ
गया। पानी बराबर सिर पर पड़ता रहा। जब तौलिए से
सिर रगड़ता हुआ कमरे में घुसा तो नौकर दूध लिए खड़ा था।
खड़े-खड़े दूध पीकर गिलास लुढ़का दिया। नौकर ने पूछा—
"हुजूर भी घर जा रहे हैं क्या?"

'नहीं; कलकत्ते। जाओ!'

वह चला गया। बाल बढ़ाकर कुर्सी पर बैठ गया।
ग्यारह बज चुके थे। शाम को पाँच बजे गाड़ी पकड़नी है।
रात भर का सफर है। सामान भी बिखरा पड़ा है। आँखें जल
रही थीं। अतएव सब कुछ छोड़कर चौकी पर पड़ी पुस्तकों
के एक ओर को सरका लुढ़क गया। पर नींद न आई, खुमारी
की-सी हालत में पड़ा रहा। नौकर भोजन के लिए पूछने आया
तो डपटकर भगा दिया। भूख लग आई थी, फिर भी आलस्य
में पड़ा करवटें बदलता रहा। चार का सायरन बजा तो
हड़बड़ाकर उठा। अटैची में कुछ कपड़े डाले। बिस्तर को
गोल किया। कपड़े पहनते समय ज्यों ही पर्स का ध्यान किया
तो पता चला कि कलकत्ते के लिए पर्याप्त रुपया कहाँ? मनी
आर्डर अभी आया नहीं था और पर्स में आने-जाने के रेल-भाड़े
भर को था। क्षुब्ध होकर बटुवा एक ओर पटक दिया और
बँधे बिस्तर पर ही हताश सा बैठ गया। बैठे-बैठे पाँच बज
गए और मैंने बिस्तर भी खोल डाला।

नौकर आकर पूछ रहा था—गए नहीं, बाबूजी!

मैंने चिल्लाकर कहा—भाग जाओ।

× × ×

दूसरे ही दिन मैंने अपनी छुट्टियाँ सारनाथ में जाकर बिताने
का निश्चय कर लिया। सोने और भोजन से प्रायः जितना भी
शेष समय बचता वह या तो अमिताभ की प्रतिमा को मनोयोग
पूर्वक निहारते रहने में बीतता अथवा भग्नावशेषों में विचरते
हुए। घण्टों नित्य ही म्यूजियम में भी घूमा करता। व्यक्ति
के प्रत्येक परमाणु में मुझे आकर्षण जान पड़ता। प्रत्येक
अवशेष किसी अधूरी कहानी को दोहराता जिसे सुनने के लिए
सदा व्यग्र रहता। वे अवशेष अपने युग की वास्तुकला का
प्रतिनिधित्व करते। उन्हें टटोलते टटोलते मैं गौतम के युग
के, मौर्य शासन-काल के, प्रियदर्शी अशोक के धर्मानुराग के सपने
देखता रहता। बौद्धकाल का इतिहास वे पत्थर गाते और
सुनता। उन बड़े-बड़े स्तूपों को देखता। सोचता, क्या
अपने युग का गुरुत्व प्रदर्शित करने में आंशिक सफलता भी
पा सके।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

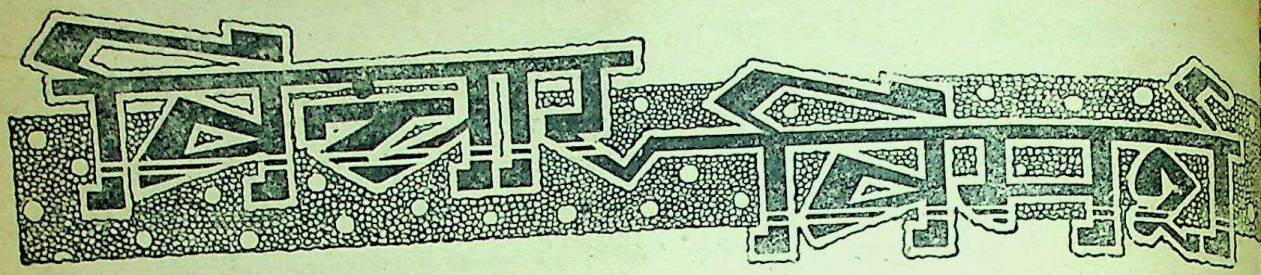

हम हिन्दी-लेखक !

श्री मङ्गलकिशोर पाण्डेय

आज जब सारा विश्व क्रान्ति के युग से गुजर रहा है, जब पुराने बादों की कब्र पर नए संसार की सृष्टि होती दीख पड़ती है अथवा यों कहें कि जब प्रगतिवादी शक्तियाँ प्रतिक्रियावादी रूढ़ियों का संहार कर अखिल विश्व को नए जोश में परिप्लावित कर रही हैं, जब कि निराशा की निविड़ निशा पर नव आशा पुनः अपना स्वर्णांचल प्रसारित कर हमारे अन्तर में एक नूतन जीवन का गम्भीर मन्त्र फूँक रही है, जब कि हम पर कुछ ऐसी अनुभूति का गुलाबी नशा-सा छा रहा है जिससे मोहीनजोदारो और हड़ापा बेल्कुल कल की चीज मालूम होते हैं, तब क्या ऐसे शुभ मुहूर्त्त में हमारा यह कर्त्तव्य नहीं कि हम भी इस युग की आरती उतारें ? हम भी अपने हृदय के उद्‌गार को उलटे-सीधे अक्षरों में बद्ध कर इस अनन्त जलराशि की अगणित ऊर्म्मियों में एक ऊर्मि बन जाएँ ? हम भी इन असंख्य रागों और तरानों से अपना तार मिला दें, जिससे सारे राग और तार एक लय में अभिव्यक्त होने लगें ? किन्तु क्या हमारे पास ऐसे साधन हैं जिनसे हम विश्व की प्रगतिशील शक्तियों की विद्युत् गति का साथ दे सकें ?

हाँ, डींगें हाँकना एक बात है और कुछ करके दिखाना कुछ और। "हिन्दी", 'हिन्दू', "हिन्दुस्तान" के नारे लगाना आसान है पर ठोस रूप में कुछ उपस्थित करना उतना सहज नहीं है। हिन्दी हमारी राष्ट्र-भाषा है, हिन्दी हमारी संस्कृति की प्रतीक है, हिन्दी हमें जान से भी प्यारी है, इत्यादि लच्छेदार शब्दावलियाँ सुनते-सुनते तो हमारे कान पक गए किन्तु क्या हम लोगों ने कभी बेचारे हिन्दी-लेखकों और कवियों के जीवन पर भी कभी ध्यान दिया है ? क्या हमने कभी यह सोचने का कष्ट किया है कि बेचारा लेखक या कवि किस कष्ट से अपना जीवन निर्वाह करता है ? सच बात तो यह है कि यदि कोई हिन्दी-लेखक बनकर अपना जीवन-निर्वाह करना चाहे तो पहले उसे कफन का कपड़ा भी अपने घर में रख छोड़ना चाहिए, क्योंकि मालूम कब मृत्यु उसे घर दबाए। लेखक और कवियों का जीवन वैसा ही है जैसा कि श्री ने अपनी "अमर-जीवन" नामक कहानी में दिखाया है।

हिन्दी-लेखक, पत्र तथा पत्रकार मानों दारिद्र्य के साक्षात् जीवित चित्र हैं। इन्हें देखकर कौन ऐ का दुस्साहस करेगा कि हिन्दी चालीस करोड़ की रा स्वर्गीय प्रेमचन्द-जैसा सिद्धहस्त कलाकार जीवन की अं तक दरिद्रता देवी से संग्राम करता रहा। जिस क कला से राजप्रासाद से लेकर गरीब की झोपड़ियाँ तक हो रही हों, जिसकी अमर वाणी दिग्‌दिगन्तों में मुखरि हो और जिसका कीर्त्ति-सौरभ प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी के आह्लाद का मधुर कम्पन उत्पन्न करता हो, उस शिल्पी का जीवन इतना कष्टमय रहा हो—यह बात कितनी लज्जाजनक हो सकती है, इसके अनुमान हीं काँप उठता है। महाकवि निराला, जो किसी भी दे गौरव की वस्तु हो सकते हैं, फटेहाल अपनी मदमस्ती हैं ! अपनी कविता की सुरा के प्याले में मानों दारिद्र को घोल आप नीलकण्ठ बन गए हैं।

अभी हाल में एक प्रसिद्ध हिन्दी-पत्र के योग्य इन पंक्तियों के लेखक को जो वेदनापूर्ण शब्द लिखे हैं "....अभागी हिन्दी के पास अभी इतने साधन नहीं हैं जैसे विद्वानों को पान-फूल भी अर्पण कर सके। यहाँ कालम से अधिक देने का स्वप्न भी नहीं देख सकते आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं कि हिन्दी-लेखकों के प्रश्न कितना जटिल है। कुछ साल हुए, पूज्य पं. दास चतुर्वेदी ने इस प्रश्न को अपने किसी लेख में पर उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज हिन्दी के प्रति हमारी उदासीनता के दुष्परिणाम भी प्रत्यक्ष हैं।

आज हिन्दी में कोई ऐसा पत्र नहीं है जो इँगलैंड, रूस तथा फ्रांस के थर्ड क्लास पत्र का भी करे। हिन्दी पत्रों के अपने संवाददाता नहीं, अपने नहीं। बेचारे अँगरेजी पत्रों के उगालदान पर ही आँखें गड़ाए बैठे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पत्रिकाओं की दशा तो इससे भी दयनीय है। मौलिक विचार-धारा का प्रवाह बिल्कुल रुक गया है। इनके लेख बिल्कुल निष्प्राण तथा निष्प्रभ हो रहे हैं। बेचारे सम्पादकों के पास इतने साधन नहीं कि अच्छे-अच्छे लेखकों को मौलिक निबन्ध लिखने में प्रोत्साहित करें। इसमें आश्चर्य नहीं कि अच्छे-अच्छे कहानी-लेखकों को सिनेमा-जगत् की शरण लेनी पड़ी है। क्या करते बेचारे! भूखों मरें। कुछ महीने हुए मैंने हिन्दी के एक साप्ताहिक पत्र ('सैनिक') में एक लेख पढ़ा था जिसके लेखक महोदय ने सिनेमा-जगत् में काम करनेवाले हिन्दी के कलाकारों की तीव्र आलोचना की थी। मेरी समझ में लेखक महोदय का ऐसा कहना तनिक भी युक्तिसङ्गत नहीं मालूम पड़ा बल्कि मुझे ऐसा आभास हुआ कि आपको वास्तविक जगत् की बिलकुल जानकारी नहीं। कोई व्यक्ति जिसे हिन्दी लेखकों की वास्तविक दशा का पता हो, ऐसा अनुदार विचार प्रकट करने में सङ्कोच करेगा।

आज हिन्दी में विज्ञान-सम्बन्धी पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। विज्ञान के विशेष शब्दों के लिए हमें टटोलना पड़ता है। विज्ञान के इस युग में हमारा अज्ञान कितना भयङ्कर है—आप स्वयं अनुमान कर सकते हैं। बल्कि इस सम्बन्ध में यह कह देना अनुचित न समझा जाएगा कि इस दिशा में उस्मानिया यूनिवर्सिटी की बदौलत उर्दू साहित्य तथा विज्ञान ने आशातीत उन्नति कर ली है। और तो और, हिन्दी में इतिहास तक की कोई अच्छी पुस्तक नहीं लिखी गई है। हमारा आज का गद्य-साहित्य नकली और खोखला होता जा रहा है तथा काव्य-साहित्य केवल मर्सिया का तराना रह गया है। हमारी आलोचना-सम्बन्धी पुस्तकें केवल अँगरेजी पुस्तकों के अनुवाद हैं—वह भी रसहीन अनुवाद, जिसमें केवल बड़े-बड़े शब्द ठूँस-ठूँसकर भर दिए गए हैं।

जहाँ हिन्दी तथा इसके लेखकों के प्रति हमारी ऐसी उदासीनता है वहाँ विदेश में हिन्दी-प्रेमी, हिन्दी-लेखकों तथा हिन्दी-साहित्य में अनूठा अनुराग दिखला रहे हैं, क्योंकि वे दूरदर्शी विदेशी विद्वान् जानते हैं कि हिन्दी चालीस करोड़ जनता की राष्ट्रभाषा है। वे यह भी जानते हैं कि देव-नागरी के समान सुन्दर तथा वैज्ञानिक लिपि संसार में और नहीं। हम अपनी अमूल्य सम्पत्ति—भाषा तथा साहित्य—का मूल्य नहीं जानते, किन्तु जो सच्चे जौहरी हैं वे जानते हैं कि कौन-सा रत्न सच्चा है और कौन नकली। अभी हाल में पेरिस युनिवर्सिटी के प्रसिद्ध विद्वान् मोशिये पी॰ मेल (Monseur P. Meile) ने इन पंक्तियों के लेखक के पास कुछ पत्र भेजे हैं जिनमें आपने प्रेमचन्द, सुदर्शन इत्यादि हिन्दी के कहानीकारों की बहुत-सी पुस्तकें माँगी हैं। एक पत्र में तो मो॰ मेल ने कुछ हिन्दी के लेखकों के जीवन-चरित्र सम्बन्धी बातों के विषय में जानने की बड़ी अभिरुचि दिखलाई है।

आप कहेंगे कि हमारा देश तो परतन्त्र है, इसका और समृद्धिशाली देशों से क्या मुकाबला? निस्सन्देह आपका कहना कुछ अंशों में सही है। लेकिन ध्यान देने की बात है कि जब हम लाखों रुपए नाचघरों में पानी की तरह बहाते हैं, करोड़ों रुपए सट्टेबाजी में जाते हैं तो क्या हम हिन्दी-लेखकों तथा पत्रकारों के प्रोत्साहन के लिए एक कोष या स्थायी ट्रस्ट स्थापित नहीं कर सकते? जब आप मानते हैं कि आपके कलाकार और साहित्यकार आपकी सभ्यता तथा संस्कृति के प्रतीक हैं तो फिर आपका भी तो अपना कर्त्तव्य होना चाहिए।

लेखक तथा कलाकार समाज के प्रधान अङ्ग हैं, अतएव किसी सभ्य समाज का प्रधान कर्त्तव्य है कि अपने लेखकों का जीवन सुखमय नहीं तो कम-से-कम साध्य तो अवश्य बनाए। समाज के बौद्धिक तथा आध्यात्मिक जीवन को परिपुष्ट कर भविष्य के मार्ग को निर्धारित करने का श्रेय लेखकों को ही हुआ करता है।

जर्जरित राष्ट्र की धमनियों में नए रक्त के स्रोत प्रवाहित करनेवाले लेखक ही होते हैं। मौलिक, सुन्दर तथा भावपूर्ण काव्य-साहित्य की रचना कर राष्ट्र की आत्मा को महत्ता के पुनीत आसन पर आसीन करनेवाले लेखक ही हैं। क्रान्ति की पहली चिनगारी लेखक की कलम की नोक से ही निकलती है। विज्ञान के सूक्ष्मतम तथा दर्शन के गम्भीरतम तत्त्वों के निरूपण और प्रतिपादन करनेवाले लेखक ही हैं। राजनीति एवं समाजनीति की पेचीदा गुत्थियों पर प्रकाश डालनेवाले तथा राष्ट्र की नाव को राजनीतिक कुचक्रों से बचानेवाले भी ये ही जीव हैं। वास्तव में देखा जाए तो लेखक समाज का वायु-मापक एवं तापमापक यन्त्र है। राष्ट्र तथा समाज के शरीर के भीतर होनेवाली प्रति-क्रियाएँ लेखक की ही रचनाओं में स्पन्दित होती हैं। ऐति-हासिक एवं भौगोलिक सीमाएँ लेखक को बाँध नहीं सकतीं—क्योंकि वह इतिहास का निर्माता है। किसी देश के किसी काल का इतिहास इस कथन की सत्यता सिद्ध करता है।

लेखक राष्ट्र की आत्मा में उस दिव्य तथा अलौकिक शक्ति को फूँकता है जो उस काल के इतिहास का क्रम निर्द्धारित करने में सहायक होता है। इसके साथ-साथ वह अपनी सुन्दर कृतियों से राष्ट्र के ललाट पर अमर यश का तिलक भी लगाता है, जिसके फल-स्वरूप हीनावस्था को प्राप्त होने पर भी राष्ट्र का मस्तक गर्व के मारे नीचा नहीं होता। आज हमें प्राचीन भारत के राजवंशों के नाम बिलकुल स्मरण नहीं, किन्तु वाल्मीकि तथा व्यास के नाम से एक बच्चा भी परिचित है। ईसा से छः सौ, सात सौ वर्ष पूर्व का क्रमबद्ध इतिहास—उस समय की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का विस्तृत ज्ञान हमें से बहुतों को नहीं है, परन्तु महात्मा पाणिनि के नाम से एक बच्चा भी परिचित है। शायद चन्द्रगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कौटिल्य अर्थ-शास्त्र चिरस्मरणीय हैं और रहेंगे। गुप्तकाल की तिथि और तारीख, समुद्रगुप्त की विजय और अश्वमेध हम भूल सकते हैं पर कालिदास के अभिज्ञान-शाकुन्तल और मेघदूत नित नूतन हैं और रहेंगे। महमूद गजनवी और उसके काले कारनामे भूले जा सकते हैं और शायद हमें भूल भी जाने चाहिएँ पर अल्बरूनी और फिरदौसी के नाम भूलने के नहीं। ग्रीस तथा रोम के प्राचीन राजाओं के नाम विस्मृति के गम्भीर गह्वर में विलीन हो गए पर सुकरात, अरस्तू, प्लेटो सरीखे दार्शनिक, सफोक्लीज और यूरोपदीज सरीखे नाटककार तथा होमर सरीखे कवि के नाम आज भी अमर हैं। वैसे ही पुराने फ्रांसीसी लेखक तथा दार्शनिकों के नाम से आज स्कूल का एक विद्यार्थी भी परिचित है। पुराने रूस के इतिहास का हमें चाहे विशद ज्ञान न हो पर म० टालस्टाय, पुशकिन, गोर्की, शेकोव, दोत्वोत्स्की तथा इला एहरनबुर्ग से हममें से प्रायः अधिकांश भली भाँति परिचित हैं। बहुत सम्भव है अमेरिका के इतिहास में हमारी कोई विशेष अभिरुचि न हो पर लिंकन, फ्रैंकलिन, पैट्रिक हेनरी, वाल्ट ह्विटमैन, एमर्सन, जान गुंथर और लुई फिशर के नाम एक बैंक के बाबू को भी मालूम हैं।

गत स्पेनिश गृहयुद्ध की घटनाएँ तथा उपघटनाएँ हम भूल जा सकते हैं पर नवयुवक स्पेनिश कवि लोर्का को कभी नहीं भूल सकते जिसने मातृभूमि की स्वतन्त्रता के निमित्त अपनी जान निछावर कर दी।

कहने का तात्पर्य यह है कि लेखक समाज के प्रधान स्तम्भ हैं और रहेंगे। ये राष्ट्र की आत्मा हैं क्योंकि इन्हीं के कारण राष्ट्र को अमरत्व मिलता है। यदि सचमुच में यह बात सत्य है कि लेखक का स्थान युगानुयुग से राष्ट्रीय तन्त्र में गौरवशाली रहा है तो क्या हमारे राष्ट्र तथा राष्ट्रीय नेताओं का यह कर्त्तव्य नहीं कि वे अपने राष्ट्रीय लेखकों तथा कलाकारों के लिए स्थायी रूप से एक ऐसी योजना तैयार करें जिससे मातृभाषा के लेखकों, पत्रकारों तथा कलाकारों को प्रोत्साहन मिले तथा जिसके फलस्वरूप मातृभाषा में मौलिक साहित्य, दर्शन एवं विज्ञान की रचना हो।

अभी कुछ महीने हुए राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल ने प्रयाग में पत्रकारों की सभा में भाषण देते हुए इस बात पर जोर दिया था कि हिन्दी पत्रों के लिए ऐसी परिस्थिति पैदा करनी चाहिए जिससे इनके अपने स्वतंत्र संवाददाता तथा प्रतिनिधि हों, जो स्वतन्त्र रूप से इनके पास संवाद भेजें। इसके साथ-साथ हिन्दी पत्रों को भी अँगरेजी से अनूदित संवादों पर आज की भाँति निर्भर न रहना पड़े। हिन्दी पत्रों को कम-से-कम अँगरेजी पत्रों के समकक्ष लाने में तो किञ्चित् विलम्ब की आवश्यकता नहीं। ऐसा करने के लिए आज परिस्थिति भी हमारे अनुकूल है : सभी हिन्दी प्रान्तों में कांग्रेसी सरकारें स्थापित हैं तथा केन्द्र में भी कांग्रेसी सरकार बनने के आसार दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त आज कांग्रेस का सूत्र उस त्यागवीर कुशल व्यक्ति के हाथ में है जो हिन्दी-पत्रों तथा पत्रकारों के जीर्णोद्धार करने का पक्का हिमायती है। तो फिर क्यों न हमारे राष्ट्रीय कर्णधार इस चिरकालीन अभाव की पूर्त्ति करने में अपना हाथ [illegible] जब युक्त-प्रान्त की सरकार ने जमींदारी-जैसी शोषक [illegible] नाश कर सारे देश के सामने एक ज्वलन्त दृष्टान्त उपस्थित [illegible] है, तब क्या मैं आशा करूँ कि वह इस दिशा में भी अग्र[illegible] बँटाकर राष्ट्रभाषा को गौरवशाली पद पर प्रतिष्ठित कर [illegible] कीर्त्ति का भाजन बनेगी?

यदि देखा जाए तो आज राष्ट्रीय सरकार की स्थाप[illegible] भाषा के लिए बड़े महत्त्व की बात है। आज स्कूलों तथा [illegible] विद्यालयों में मातृभाषा अपना स्थान ग्रहण कर रही है। [illegible] भाषा, निशा की अँधियारी के समान, इस शुभ्र, पुनीत [illegible] उषा के आगमन की सूचना पा सिमट रही है। अँग्रे[illegible] का बोलना बन्द होने पर है; क्योंकि तम का साम्राज्य [illegible] है। ऐसे शुभ ब्राह्म मुहूर्त्त में कौन मनहूस होगा जो [illegible] तथा मातृभाषा की सेवा का अखण्ड व्रत न लेगा। [illegible] हिन्दी-सेवी होने के नाते मेरे अन्तर में अदम्य उत्साह की [illegible] हिलोरें मार रही हैं। इसमें सन्देह नहीं कि साधन तथा [illegible] हन नहीं मिलने से अब तक हिन्दी-साहित्य की समुचित [illegible] नहीं हो सकी है--पर इसमें शक नहीं कि आज राष्ट्र [illegible] की संरक्षता में हिन्दी के सामने एक बहुत ही जाज्वल्यमान [illegible] गौरवमय भविष्य दीख रहा है।

अब आवश्यकता इस बात की है कि हम हिन्दी के [illegible] पत्रकार अपना ठोस प्रस्ताव राष्ट्रीय नेताओं के सामने [illegible] इन पर विचार-विमर्श हो सके। इसके साथ-साथ [illegible] प्रगतिशील लेखकों, कलाकारों तथा पत्रकारों के एक [illegible] संघ का होना नितान्त आवश्यक है। हमें प्रतिक्रियावादी [illegible] रूढ़िवादी दकियानूसों की आवश्यकता नहीं, हमें क्रान्ति [illegible] विचार के उपासक नौजवान हिन्दी कवियों, लेखकों [illegible] कारों का एक सुदृढ़-संघ बनाना चाहिए। जब हम [illegible] निर्माण कर लें तो एकत्र हो अपनी योजना तैयार करें [illegible] सम्बन्ध रखनेवाली और भी बातें हैं जिनका समावेश [illegible] से लेख में होना नितान्त असम्भव है।

आप कह सकते हैं कि हमारे यहाँ तो पहले ही [illegible] साहित्य-सम्मेलन जैसी संस्थाएँ हैं, फिर एक नए [illegible] आवश्यकता है? बेशक, हिं० सा० स० जैसी संस्था [illegible] गौरव की बात है, पर इसमें सन्देह नहीं कि सम्मेलन में [illegible] ज्यादा हैं जिनका जोश प्रायः ठंढा पड़ चुका है। [illegible] समय प्रगतिशील, गतिशील तथा क्रियाशील शक्तियों [illegible] करना चाहिए। क्योंकि इन्हीं शक्तियों में वह विद्युत [illegible] द्वारा हम विश्व की प्रगतिशील शक्तियों का सामना [illegible] हैं। क्रियाशील तथा प्रतिक्रियावादी शक्तियों में [illegible] होना अनिवार्य है। यह संघर्ष आज भी राष्ट्रीय [illegible] राष्ट्रीय क्षेत्र में सदा की भाँति चल रहा है और चलता [illegible] आज के स्वतन्त्र भारत में प्रगतिशील शक्तियों का [illegible] आवश्यक ही नहीं पर अनिवार्य है।

मेरे लेख लिखने का उद्देश्य यह है कि हिन्दी [illegible] प्रगतिशील लेखक और कलाकार मेरे तुच्छ सङ्केत को [illegible] अपने विचार प्रकट करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

खाली अञ्चल

मेरे गृह के सामने एक शिव का मन्दिर,
मन्दिर में है शिव मूर्त्ति
दीप घी के जलते हैं;
प्रतिदिन भक्तों की भीड़–
मूर्त्ति पर
मेवा फल मिष्टान्न चढ़ाती,
पैरों पड़ती विनती करती;
फूल और पैसों का दम में
लग जाता है ढेर वहाँ पर !
वहीं पार्श्व में ही कुटिया है एक पुरानी,
जिसमें अन्धकार रहता है;
अन्धकार में ही जीवन की श्वासें गिनती–
पड़ी रहा करती है अन्धी एक भिखारिन–
बूढ़ी, अभिशापित, अधनङ्गी !
उसे नहीं देता है कोई दो दाने भी;
मन्दिर में लग जाता है बाजार स्वर्ण का
किन्तु भिखारिन का मैला दुर्गन्धित आँचल
फैला का फैला रहता है
खाली का खाली रहता है।

—विनोद रस्तोगी

तिमिर-वेध

तारे को बुझते देखा है।
न्तिम पल तक ज्योति-दान दे, तारे को बुझते देखा है।
घोर तिमिर के चक्र-व्यूह में,
निबिड़ निशा के बीच अकेले,
अन्धकार के घन समूह में,
न्तिम क्षण तक रश्मि-शरों से तिमिर-वेध करते देखा है।
तिमिर-रक्त से दिशा [illegible]
जयजयकार लिए निज ऊषा–
आई ज्योंही गगन-भाल पर,
'लो निज गीत सँभालो" कह तब तारे को बुझते देखा है।
तम-विनाश के सतत समर में,
रहा जूझता वह एकाकी,
जग के दारुण अन्ध प्रहर में,
नित्य प्रात ही तुहिन-कणों को तृण-तृण से कहते देखा है।
सच है वह तम मेट न पाया,
किन्तु अन्त तक जलता रहकर,
उसने जग को पथ दिखलाया,
किसे इस तरह जग ने परहित जल-जलकर मरते देखा है।
तारे को बुझते देखा है।

—अमिताभ गुप्त

परीदेश की रानी

बचपन में जब कहानी सुना करता था कि परियों के देश की राजकुमारी थी। बिन-ब्याही, चन्दा-सा रूप, अमावस्या की रात-से केश, कमल-सी आँखें, पाँच फूलों से तुलनेवाली, तो मन में बड़ी उत्कट कामना होती थी कि काश मैं ही उस राजकुमारी को पानेवाला वह राजकुमार होता जो देवों से लड़कर, परियों की रानी को भुलावा देकर, राजकुमारी को पा जाता। फिर दोनों का ब्याह हो जाता और परीदेश की राजकुमारी रानी बन जाती।

कहानी सुनकर मन में कई तर्क उठते थे। ब्याह के बाद ही दोनों राजा-रानी बनते थे, पहले क्यों नहीं ? राजा बनने को तो राज्य आवश्यक है, रानी नहीं। फिर दोनों के मिलने पर ही उन्हें क्यों राज मिल जाता था ? मिल ही क्यों जाते थे ? मान लो, न मिलते ! मान लो, देव राजकुमार को खा जाते ? पर, इन सब तर्कों में होकर राजकुमारी का चन्दा-सा मुख और कमल-से नेत्र चमका करते और मुझे बार-बार कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन का यह सपना धीरे-धीरे समाप्त हो गया। या यों कहूँ कि उसका रूप बदल गया। एक समय पर प्रत्येक युवती ही परीदेश की रानी लगने लगी। पर अन्तर केवल यह रहा कि मैं राजकुमार न बन सका। यानी किसी भी राजकुमारी ने केवल देखकर ही आँखें न झुकाईं, न मुस्कराई और न प्रेम करने की दावत दी। मन ने सोचा कि शायद कहीं कोई अपनी राजकुमारी छिपी हो जिसे सामने पा लेने से सारी समस्या हल हो जाएगी। उसकी खोज में आँखें पागल रहीं, पर वह न मिली। यहाँ तक कि मन टूटने लगा—शायद अपने भाग्य में वह हो ही नहीं।

घरवालों में भला यह सपना देखने या समझने की बुद्धि कहाँ! उन्होंने वही पुराने ढङ्ग से विवाह की चर्चा करनी प्रारम्भ कर दी। उन्हें क्या पता कि मुझे तो परीदेश की राजकुमारी की खोज थी। दो-चार बार किसी की अलकें, किसी की आँखें और किसी के होंठ देखकर यह भ्रम भी हुआ था कि शायद वही परीदेश की मेरी राजकुमारी हो, पर जब वे अलकें मेरे सामने बिखरीं नहीं, उन आँखों ने सँदेसा न दिया न लिया और वे होंठ—जाने दीजिए, याद करके भी दुःख होता है।

पर परीदेश की रानी की भूख चाहे न मिटे, नारी के लिए जो सामाजिक और दैहिक चाह होती है, वह भी मन को काफी खींचती है। वही चाह धीरे-धीरे मन में भर गई। सोचा, परीदेश की रानी न मिले तो भी किसी नारी को पाकर मन की रानी तो बनाया ही जा सकता है।

ब्याह के समय उस नारी का—रञ्जना का—हाथ अपने हाथ में आने पर लगा शायद वही परीदेश से आई थी। हृदय में ऐसा कम्पन हुआ कि जो केवल रानी या राजकुमारी के स्पर्श से ही सम्भव था। और उसके बाद सुहाग-रात को तो निश्चय ही हो गया कि रञ्जना के चाहे पर न हों, पर थी निश्चय ही वह परीदेश की राजकुमारी जो बिना देवों से लड़े-भिड़े ही मुझे मिल गई थी। उसका सारा शरीर, अङ्ग-प्रत्यङ्ग, पैरों के नाखूनों से सर तक, मानो एक थरथरा देनेवाला राग था। मैंने रञ्जना से कहा—"रानी, परी रानी!"

वह मुस्करा दी, ठीक जैसे कहानियोंवाली रानी मुस्कराती होगी।

कोई छः महीने तो रञ्जना रानी रही, फिर सहसा ही मैंने देखा कि उसके पर न होने के साथ-साथ उसका रानीपन गायब होता जा रहा था। मन ने कहा, मुलम्मा उतरने पर जैसे बर्तन की वास्तविकता निकल आती है, उसी प्रकार रञ्जना भी हो गई। समय-समय पर उसकी मुस्कान में अब भी वह आकर्षण आ जाता था। दो-चार मिनट को अब भी वह रानी लगने लगती थी, पर न जाने कैसे अब वह एकदम साधारण नारी हो गई थी। मन की पुरानी भूख फिर जागने लगी। परी रानी कहाँ मिलेगी? रञ्जना का नया रूप उसे स्त्रियों में बिठा रहा था। वही साधारण नारियाँ पड़ोस में, गली-कूचों में, बच्चों से घिरी, लड़ती-झगड़ती काटती हैं।

× × × ×

तभी पड़ोस में आकर वह रही—चन्दा। ऊपर देखा तो खिड़की में झाँकती उस रूप-राशि को देख रह गया। मन में लगा बीच में न जाने कितना है, शायद देव भी हो, उन सब को हराकर चन्दा होगा, पर मन में जहाँ परी रानी की खोज की प्रसन्नता हुई तहाँ रञ्जना का ध्यान करके न जाने भी भर गई। परी रानी पर भी क्रोध आया—क्यों न मिली! अब मिलने पर अपने राजा को कैसी उसने डाल दिया है, इसका शायद उसे पता भी न हो।

चन्दा मिलने आई रञ्जना से। पड़ोसिन के मिलाप करने। उसे अपने घर में पाकर तो मेरा गया। उस रूप की रानी के बैठने योग्य स्थान ही उसकी साँस की सुगन्ध मुझे सारे घर में फैली जान उसका मीठा स्वर दीवार पार करके कानों में आ रहा

उठकर मैं चल पड़ा—उसी ओर।

"नमस्ते।"

मेरे हाथ जुड़ गए पर मुख से बोल न निकला। खुले सिर के बीचोबीच सुहाग की लाल रेखा चमक पल भर में वह कहानी घूम गई—परी रानी को देव ने रक्खा था। राजकुमार ने उसे छुड़ाया था देव को मार मैं डर गया। मारकर! सो कैसे होगा?

चन्दा के जुड़े हाथ और चमकती आँखें कह रहे मुच मैं ही तुम्हारी परी रानी हूँ। पर देव से बेबस हूँ तुम्हीं कुछ करो तो हो सकता है। पर, देखती हूँ बन्दी हो। छूट सकोगे? न हो एक बार देव से देखो तो शायद उस पर काबू पा सको। तब बेबस हूँ। वैसे तुम्हारी बनने को तैयार हूँ।

दूसरे ही दिन रञ्जना को लेकर मैं चन्दा के यहाँ को देखने। देखा—एक छरहरे शरीर का हँसनेवा था। नाम भी बड़ा बेतुका-सा था, मोहन। ही समझ लिया कि उसे हरा देना कठिन न होगा। देखकर और भी आश्चर्य हुआ, वह और रञ्जना बढ़ रहे थे। भला उन्हें बात करने को हो भी क्या सक ऊँह! वे लोग क्या जानें, परी रानी के मूल्य को! के हृदय को पढ़ना आरम्भ कर दिया।

घर आकर मैंने सोचा—आजकल के समय में देव खेलना तो कठिन है। न मेरे पास तलवार ही थी कानून से बच सकने की कोई राह। सो, जो काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सके उसे चालाकी से ही करना होगा। यानी परी रानी को राकर लाना होगा। कहानी का राजकुमार ऐसा भी तो र लेता था।

मैं चन्दा को चुराने चला।

× × × ×

मोहन से बात करने पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह चन्दा एकदम उदासीन था। पहले तो विश्वास नहीं हुआ कि ई ऐसा अन्धा भी हो सकता है कि उसे चन्दा का रूप और के गुण न दिखाई दें। फिर सोचा, होगा हमें तो यही हिए था। ऐसा होने से ही लाभ था।

धीरे-धीरे देखा, घूमने जाने को मोहन कभी उत्सुक न होता । कह देता आप लोग जाइए, पिक्चर देख आइए। आइए।

और 'आप लोगों' में रह जाते चन्दा और मैं। रञ्जना न मैं साथ रखना ही चाहता था, न वह रहना ही चाहती उसे भी कुछ घर पर पड़े रहने में आनन्द आता था। शायद चन्दा की उपस्थिति ने उसे अपनी निरर्थकता का ज्ञान दिया था।

चन्दा और मैं काफी निकट थे। पर उतने नहीं जितने मैं हता था। और मनचाही कैसे हो यह समझ में ही नहीं ता था।

"चन्दा!"

"जी!"

और बस—सन्नाटा।

तब एक दिन पार्क में, अँधेरे में, मैंने उसे परी रानी कहकर बोधन किया।

"क्यों?" उसने धीरे से पूछा।

मैंने उसे कहानी सुना दी। बचपन की, अपनी खोज की, रञ्जना को पाने की, उसे देखने पर निराशा की, देर में जाने पर क्रोध होने की। कहानी समाप्त होते होते देखा, वह से सट गई थी, मुख उठाकर एकटक मुझे देख रही थी।

"क्यों?"

"मेरी कहानी सुनोगे?"

"कहो!"

रात्रि सुगन्ध से बस रही थी। संसार में शायद एक मीठा चराचर गा रहे थे।

"मुझे भी राजकुमार की खोज रही है। बचपन से। पाया इन्हें, जो कुछ समझते ही नहीं। हाँ, जब तुम्हें देखा तो प को ठोंका भी और सराहा भी। यदि पहले मिल ते तो.....।"

मेरी चेतना लुप्त हो रही थी। चन्दा-मय संसार में मैं क उड़ रहा था।

×

धीरे-धीरे, प्रेम से थके पाँव हम घरों को लौट रहे थे। हाथ में हाथ, शरीर से शरीर बार-बार छुलाते, बड़ी प्रसन्नता हृदयों में भरे।

चन्दा मेरे साथ ही घर आ गई। मोहन को उसकी चिन्ता न थी। रञ्जना को मेरी पर्वाह न थी।

पर सुना घर में कोई बोल रहा था।

कौन?

हम रुककर खड़े हो गए, सुना—

मोहन कह रहा था, "बरसों की खोज के बाद परीदेश की रानी मिली भी तो, देव के पास....."

रञ्जना ने बात काटी, "और राजकुमार किसके पल्ले में है?"

मेरे कान साँय-साँय करने लगे। धड़धड़ करते मन में प्रश्न उठने लगा—परीदेश की रानी कौन है? रञ्जना? चन्दा? उत्तर आज तक भी नहीं मिला है। न शायद मिल सके।

हाँ, हम चारों ने फिर क्या किया? वही जो कोई भी दम्पति ऐसे में करते। उसकी न महत्ता है, न यह कहानी, यह तो परीदेश की रानी की है। वह कहाँ रहती है, या मिलती है इसका पता कौन बताए?

—श्री रामसरन शर्मा

हिन्दुस्तानी का वेदान्त

'हिन्दुस्तानी' के समर्थकों अथवा अर्ध-समर्थकों में एक दल ऐसे व्यक्तियों का है जो कल तक राष्ट्र-भाषा हिन्दी के समर्थक थे, हिन्दी और देवनागरी छोड़ हिन्दुस्तानी या उर्दू और उर्दू लिपि का नाम नहीं लेते थे, शुद्ध हिन्दी और देवनागरी का प्रचार करते थे, परन्तु जिनका हृदय उनके मस्तिष्क से अधिक बलवान् था, और यदि उनका मस्तिष्क राष्ट्र और राष्ट्रीयता के साथ था तो हृदय गांधी के साथ था और इसलिए जो आज अपने आपको हिन्दुस्तानी के कैम्प में खड़ा पाते हैं। परन्तु पुरानी आदतें जल्दी नहीं छूटतीं और इसलिए वे अपने आप को नये बन्दोबस्त में फिट करने में जरा दिक्कत महसूस करते हैं—हृदय और मस्तिष्क के बीच में एक सङ्घर्ष का अनुभव करते हैं। इस सङ्घर्ष को शान्त करने के लिए, अपने अन्तःकरण की आवाज को दबाने के लिए, अपने मन को सन्तोष देने के लिए अर्थात् अपने आपको धोखा देने के लिए, उन्होंने एक 'हिन्दुस्तानी वेदान्त' की सृष्टि कर ली है। इस वेदान्त के अनुसार हिन्दी भी वही है, उर्दू भी वही है, हिन्दुस्तानी भी वही है—तीनों एक ही तत्त्व हैं अथवा एक ही ब्रह्म तत्त्व के तीन नाम हैं, तीनों के उपासक एक ही गति को प्राप्त होते हैं, बस केवल आजकल हिन्दुस्तानी-पूजा का अधिक माहात्म्य है और इस कारण उन्होंने अपने इष्ट-देवता—राष्ट्र भाषा—का नाम भर 'हिन्दुस्तानी' रख लिया है। इस दर्शन का दर्शन कीजिए—

मई, १९४६ की 'राष्ट्र-भाषा' में श्री आचार्य दादा धर्मा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले था वह आज नहीं है। पहले राष्ट्र-भाषा सिर्फ "हिन्दी" नाम से पहचानी जाती थी। फिर उसका "हिन्दी हिन्दुस्तानी" नामकरण हुआ और अब हिन्दुस्तानी! एक ही राष्ट्र-भाषा का भिन्न भिन्न नामकरण इन ५० सालों में हुआ, इसका कारण क्या है? जीवन प्रगतिशील है—वह नित्य गतिमान है। उसकी गति का लक्ष्य है पूर्णता अथवा मृत्यु। राष्ट्र-भाषा भी अपने जीवन में प्रगतिशील रही है। यही कारण है कि वह उत्तरोत्तर अधिक शक्तिशालिनी होती जा रही है, जिसका परिचय हमें उसके बदलते हुए नामों में मिल रहा है।"

इस 'प्रगतिशीलता' का क्या कहना! न मालूम इँग्लैंड-भाषा, साम्राज्य-भाषा, संसार-भाषा 'अँगरेजी' का नाम उत्तरोत्तर अधिक शक्तिशालिनी होने पर भी क्यों नहीं बदला! और 'एक ही राष्ट्र-भाषा' का भिन्न-भिन्न नामकरण कैसा कि, बकौल श्री भदन्त जी, अब या 'हिन्दी' चुन लो या 'हिन्दुस्तानी' चुन लो, या हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में रह लो या हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा में! यह तो स्पष्ट ही है कि 'राष्ट्र-भाषा का अर्थ जो बीस-पचीस बरस पहले था वह आज नहीं है'। उस राष्ट्र का भी तो, जिसकी राष्ट्र-भाषा से मतलब है, अब वह अर्थ नहीं है। पहले उस राष्ट्र का नाम 'हिन्दुस्तान' था, फिर एक 'फीडरेशन' हुआ और अब एक 'कानफीडरेशन'। उसमें रहनेवाले पहले 'हिन्दुस्तानी' नाम से पहचाने जाते थे, फिर वे 'हिन्दू-मुसलमान' कहलाए और अब 'हिन्दू' और 'मुसलमान'। यह सब प्रगतिशीलता, 'पूर्ण राष्ट्रीयता' के लक्ष्य की प्राप्ति का द्योतक है। इसी कारण 'राष्ट्र' भी उत्तरोत्तर अधिक शक्तिशाली होता आ रहा है! राष्ट्र-भाषा के प्रगतिशील, पूर्णता-गामी और उत्तरोत्तर अधिक शक्तिशालिनी होने की एक और पहचान है। पहले उसकी लिपि केवल एक थी, अब दो हैं (अथवा क्या 'देवनागरी' और 'फारसी' 'एक ही राष्ट्र-लिपि' का भिन्न-भिन्न नामकरण है?), शीघ्र ही तीन (रोमन भी) हो जाएँगी। तब वह और शक्तिशालिनी हो जाएगी। न मालूम अँगरेजी एक ही लिपि में क्यों सन्तुष्ट है। शायद वह गतिशील नहीं और मृत्यु को प्राप्त हो रही है।

धर्माधिकारी जी आगे लिखते हैं :—"अगर हिन्दुस्तान का हिन्दू कहने लगे कि हम उर्दू नहीं बोलेंगे और हिन्दुस्तान को मुसलमान कहे कि हम हिन्दी नहीं बोलेंगे, तब इन दोनों को एक दूसरे को यह बताने के लिए कि हम तुम्हारी भाषा नहीं बोलेंगे किसी तीसरी भाषा की सहायता लेनी पड़ेगी और वह होगी अँगरेजी"।

अरे, क्या 'हिन्दी' और 'उर्दू' एक ही भाषा के दो नाम नहीं रहे! अस्तु, जो भी हो, अगर हिन्दू कहे हम फारसी लिपि नहीं लिखेंगे और मुसलमान कहे हम देवनागरी में नहीं लिखेंगे तो एक दूसरे को पत्र लिखने के लिए किसी तीसरी लिपि की सहायता लेनी पड़ेगी और वह होगी रोमन! (प्रत्येक से कहते हो दोनों लिपियाँ सीखो, प्रत्येक से यह भी क्यों न कहो हिन्दी उर्दू दोनों सीखो? यह हिन्दुस्तानी का खटराग क्या है? जैसे देवनागरी और फारसी दोनों राष्ट्र-लिपि वैसे हिन्दी और उर्दू दोनों राष्ट्र-भाषा सही। क्या मुसलमान बंधु यह हिन्दुस्तानी

मई, १९४६ की 'राष्ट्र-भाषा' में श्री हृषीकेश शर्मा भारत हिन्दी-प्रचार-सभा के रजतजयन्ती उत्सव का वर्णन हुए लिखते हैं :—'हिन्दी के नाम को, जिसे यह नाम पहले मुसलमान मुगलों ने ही दिया था, छोड़कर "हिन्दुस्तानी" नया नाम मात्र दे दिया गया है"। बाद रजतजयन्ती में हुए भाषणों में से कुछ हिन्दी चुनकर उदाहरण-स्वरूप पेश करते हैं और फिर तथाकथित हैं—"इसे हिन्दी कह लीजिए चाहे हिन्दुस्तानी"। फिर पुराना, परिचित, मुसलमानों का ही दिया हुआ 'हिन्दी' छोड़कर 'हिन्दुस्तानी' क्यों रक्खा गया? इसका विशेष कारण तो होगा ही। क्या शर्मा जी की समझ में तक नहीं आया कि 'हिन्दी' में 'हिन्दुस्तानी' का फाटक प्रवेश करने के लिए खोला गया है? दक्षिण में श्री सुन्दरलाल और काका कालेलकर हिन्दी वाक्यांश न उनकी वकालत कौन समझे? अभी जरा ठहरिए, 'हिन्दुस्तानी' का पाठ आरम्भ हुआ है, उर्दू की पाठ्य छपनी शुरू हुई हैं। विश्वास न हो तो अभी ही पं० को पञ्जाब या युक्त-प्रान्त में 'हिन्दी कह लीजिए चाहे हि बोलते हुए सुन लें (या उनकी 'विश्ववाणी' का या 'नया हिन्द' का अग्र लेख पढ़ लें)। और क्या लिपियों का आप प्रयोग करें" यह भी नाममात्र के गया है और दक्षिण हिं० प्र० सभा दोनों लिपियों की क्या नाममात्र के लिए अनिवार्य कर रही है?

शर्मा जी आगे लिखते हैं :—"हिन्दी ने उर्दू के सैकड़ों मुहावरों और हजारों प्रचलित सरल शब्दों को अपने कुटुम्ब कबीले में ऐसा मिला लिया है कि वे किसी से हट नहीं सकते और किसी की मेहरबानी या रहम के रह नहीं सकते।"

शायद इसी लिए हिन्दी को उर्दू की एक ओर जबरदस्ती पिलाकर 'हिन्दुस्तानी' बनाया जा रहा अनुपयोगी शब्दों 'साहित्य' और 'शिक्षा' को 'लोकोपयोगी' 'सरल' शब्दों 'अदब' और 'तालीम' जा रहा है और दाक्षिणात्यों को उर्दू के हजारों से परिचित कराया जा रहा है। शर्माजी कहते हैं ने न कभी भाषा का पाकिस्तान बनाया और न यह तो ठीक, परन्तु लिपि का पाकिस्तान कौन 'उर्दू शैली' प्रत्येक पर अलग से कौन लाद रहा है!

अन्त में शर्मा जी लिखते हैं :—"यही हिन्दी की है, उसका लोच है। वह काका जी की 'सबकी बोली' बापू जी की 'हिन्दुस्तानी' है, राष्ट्रपति आजाद साहब जबान' है और श्रद्धेय टण्डन जी की 'राष्ट्र-भाषा' है। हिन्दी भी वही है, उर्दू भी वही है (देखिए न 'लोच', और 'जबान' वही तो दो शब्द हैं 'राष्ट्र' और 'भा अन्तर्दृष्टि से देखिए!) और 'हिन्दुस्तानी' भी वही है शुद्ध 'हिन्दुस्तानी का वेदान्त' (अफसोस इसे राष्ट्र और श्रद्धेय टण्डन जी नहीं समझ पाते!) इस अन्तिम कड़ी शेष है—"देवनागरी भी वही है, फारसी वही है"। धैर्य धारण कीजिए, इसको सिद्ध करनेवाले चार्य भी शीघ्र प्रकट हो जाएगा।

—श्री सूर्यप्रकाश, एम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

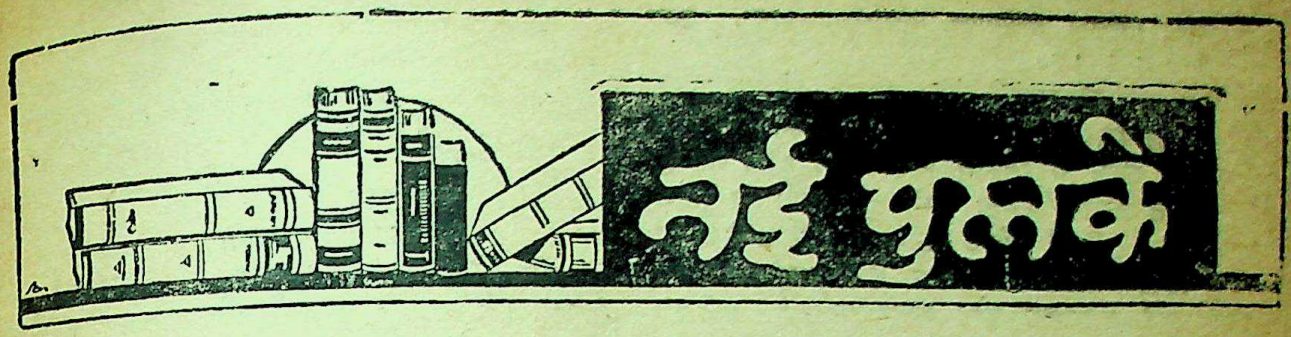

१—गरम चाय (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्री झपसटराय बनारसी और प्रकाशक, काशी पेपर स्टोर्स, बनारस हैं। पृष्ठ-संख्या १५१ और मूल्य १॥) रु० है।

हँसी जीवन के सबसे अच्छे अनुभवों में से एक है, और हिन्दी में इस सस्ते और बढ़िया 'टॉनिक' का बहुत अभाव है। "भारत गुलाम है, और शायद गुलामों को हँसने का अधिकार नहीं।"—लेखक के इस कथन में बहुत-कुछ सार है, तथापि उसे यह विदित होना चाहिए कि अपने शुद्ध और शिष्ट रूप में हास्य किसी भी व्यक्ति या समुदाय की रुचि और वृत्ति को परिष्कृत करते हुए उसे एक ऊँचे स्तर पर उठाने में भी समर्थ होता है।

'गरम चाय' की इस एक ही केटली में गिनती के अठारह प्याले हैं। यद्यपि इन प्यालों को 'कहानी' की संज्ञा दी गई है, तथापि प्रायः तीन-चौथाई का आगे-पीछे थोड़ा-सा लगाव है। यदि अध्यायों का पूर्वापर सम्बन्ध उन्हें किसी निर्धारित उद्देश्य की ओर अग्रसर करता, तो पुस्तक ने उपन्यास का रूप धारण करते हुए अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त की होती।

लेखक ने किसी 'बलियाटिक' या बिहारी को प्रायः अपने चित्रण का विषय बनाया है और ससुराल के अनोखे, अटपटे अनुभवों, कालेज-जीवन की रङ्गीनी और शौकीनी तथा वर की खोज में अचानक, अनहोनी अड़चनों ने पुस्तक के अधिकांश पृष्ठों पर अधिकार जमाया है। 'फिर ट्रेन में', 'कालेज के वे दिन', 'बीबी कैसी हो' नामक प्रकरणों, 'मँगनी का पैजामा' और 'गरम चाय' शीर्षक कहानियों तथा 'प्रेमपत्र' में हास्य समुचित रूप में बिखर रहा है। यद्यपि 'जय हिन्द' शीर्षक निबन्ध की रचना जॉन गुन्थर के एक लेख के आधार पर हुई है, तथापि उसमें लेखक की अपनी सूझ भी भले प्रकार दिखाई देती है। अच्छा होता, यदि लेखक ने कतिपय सामयिक उपमाओं के अपने प्रयोग के साथ इस लेख के ढङ्ग पर कुछ ऐसी चुटकियाँ और भी होतीं, जैसे—'यहाँ के निकम्मे या तो नाज पैदा करते हैं या फिर बच्चे', 'रुई घर पर बोते हैं, मगर कपड़े लङ्काशायर व मैनचेस्टर से ही बिनवाते हैं' आदि।

भूमिका लिखते हुए श्री बेढब बनारसी ने इस 'गरम चाय' शर्करा के जिस आधिक्य का अनुमान किया है, वह कहीं कुछ अश्लीलता के रूप में अवश्य विद्यमान है, और यह आवश्यक है कि लेखक उससे आगे सदा बचा रहे। फिर भी लेखक के इस प्रथम प्रयत्न और सरल मनोरञ्जन के उसके उद्देश्य पर विचार करते हुए हमें उसकी सफलता से सन्तोष है।

—हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी०

२—समाजवाद—लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द; प्रकाशक, काशी विद्यापीठ, बनारस; पृष्ठ-संख्या ३२२; मूल्य २) रु०।

वर्त्तमान युग में साम्राज्यशाही और तज्जन्य शोषण से समस्त संसार किसी-न-किसी रूप में त्रस्त है। आज का बुद्धि-जीवी मानव इस शोषण से संसार को मुक्त करने का मार्ग खोज निकालने के लिए आतुर भी है। विश्व-शान्ति स्थापित करने वालों का यह ध्रुव विश्वास है कि साम्राज्यशाही और शोषण का अन्त तभी हो सकता है, जब समाजवाद-मूलक राजनीति और आर्थिक व्यवस्था स्वीकार कर ली जाए। लेकिन यह समाजवाद क्या है, इसे स्वीकार करने में हमें प्रचलित समाज व्यवस्था को किस ढङ्ग से परिवर्त्तित करना होगा और ऐसा करने में हमें किन सम्भाव्य कठिनाइयों का सामना करना होगा, ये प्रश्न ऐसे हैं जिनका हल सहज नहीं। इन प्रश्नों का हल गम्भीर विद्वत्ता और असीम अध्ययन की अपेक्षा रखता है।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही गूढ़ प्रश्नों का सुलझा हुआ हल उपस्थित किया है। समाजवाद के सम्बन्ध में भ्रान्त धारणाओं का अधिक प्रचार हो चुका है। उसके तात्त्विक पहलू और आध्यात्मिकता का समन्वय स्थापित करते हुए विद्वान् लेखक ने जो विचार उपस्थित किए हैं, वे पाठक को प्रतिपादित विषय को सही तरीके पर समझ लेने में बहुत सहायक सिद्ध होंगे। आज जब हमारे देश में भी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में क्रान्तिमूलक परिवर्तनों का आह्वान किया जा रहा है, 'समाजवाद' की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

इस पुस्तक की महत्ता पर अधिक कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं, कारण हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से लेखक को १२००) रु० का मङ्गलाप्रसाद और ५००) रु० का मुरादाबाद पारितोषिक इस पर प्रदान किया जा चुका है। यह चतुर्थ संस्करण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—**मनुष्य-जाति की प्रगति**—लेखक, श्री भगवानदास केला; प्रकाशक, भारतीय ग्रन्थमाला, दारागञ्ज, प्रयाग। पृष्ठ-संख्या १८२; मूल्य ३॥) रु०।

मानव ने आदिम अवस्था से लेकर अब तक जो उन्नति की है, और प्रारम्भिक पशुता से धीरे-धीरे वह जिस मानवता के छोर को अब तक छू सकने में निरन्तर विकासशील दीख रहा है, इसका शृङ्खलाबद्ध तारतम्य प्रस्तुत करने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। बीसवीं सदी के मानव में और आदिम युग के मानव में आकाश-पाताल-जैसा अन्तर है। इस अन्तर का सिंहावलोकन जहाँ मनोरञ्जक और कौतूहलवर्द्धक है, वहीं इस क्रमिक विकास का अध्ययन प्रत्येक सजग मानव के लिए वाञ्छनीय भी है। मानव-समाज में कब, किस प्रकार, कौन-सी आवश्यकताओं को महसूस किया गया; सामाजिक रस्म-रवाजों का सूत्रपात कैसे हुआ; उसकी राजनीतिक व्यवस्था, मानसिक प्रगति, आर्थिक व्यवस्था और समाज-व्यवस्था में कब क्या सुधार हुए और आज का मानव उन्नति के किस स्तर पर जा पहुँचा है, आदि बातों पर अत्यन्त सरल-सुबोध भाषा में प्रकाश डाला गया है।

अँगरेजी में इस गहन विषय पर अनेक ग्रन्थ हैं। लेकिन हिन्दी में इस विषय पर इतनी सुलझी हुई विचार-धारा प्रस्तुत करनेवाली अन्य कोई पुस्तक हमारी नजरों से नहीं गुजरी। श्री केलाजी को मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेकर उनकी प्रगति की रूप-रेखा प्रस्तुत करने में बहुत सफलता मिली है। एतद्विषयक अध्ययनशील छात्रों के लिए यह पुस्तक जहाँ अत्यन्त उपादेय है, वहाँ प्रत्येक जिज्ञासु पाठक के लिए भी उपादेय है। पुस्तक के अन्त में दुनिया की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और महापुरुषों के जन्म तथा उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों के ईस्वी सन् देकर इसे अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी बना दिया गया है।

४—**काल-दहन** (गीतिनाट्य)—रचयिता, श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', एम० ए०; प्रकाशक, पुस्तक-भण्डार, पटना; पृष्ठ-संख्या ७२; मूल्य एक रुपया।

गुलामी की बेड़ियों से जकड़े हुए हमारे राष्ट्र और समाज को आज जिस संक्रान्ति-काल से गुजरना पड़ रहा है, उसमें कल्पना-लोक की कमनीयता की झाँकी दिखाकर मदहोश करनेवाली कविताओं की हमें आवश्यकता नहीं; बल्कि ऐसी कविताओं की आवश्यकता है जो हमारी नसों में स्फूर्त्ति और चेतना का सञ्चार कर हमें यथार्थ स्थिति से परिचित करा सकें और कर्तव्यशीलता के मार्ग पर अग्रसर कर सकें। प्रभातजी का 'काल-दहन' क्रान्ति और ज्वाला का ही शङ्खनाद कर रहा है। भाग्यवाद पर भरोसा करनेवाले निष्क्रिय मानव में कर्मवाद की प्रेरणा भरने में 'काल-दहन' एक सफल गीतिनाट्य है। इसमें मनोभावों और सिद्धान्तों को मूर्त्त रूप देकर कवि ने विचारों के बन्दी पौरुष की मुक्ति का पथ प्रशस्त किया है।

'काल-दहन' का प्रारम्भ होता है वृद्ध 'अतीत'-द्वारा होम-कुण्ड के समक्ष इस आवाहन के साथ :

सुलगो, सुलगो
हे वीतिहोत्र !
अब सुलगो,
इस होमकुण्ड के बीच
धुआँना छोड़ो,.....
सुलगो,
हे काल-पुरुष के
प्राण-पुलक ! अब सुलगो।

धीरे-धीरे होमकुण्ड प्रज्वलित हो उठता है। दिग्दिगन्त में व्याप्त हो जाती हैं और उनके बीच [illegible] करता हुआ देखता है :

जल रहे काल के
शत प्रबन्ध।

और परिणामतः 'बन्दी प्रकाश था मुक्त आज। अङ्कों में 'काल-दहन' विभाजित है और प्रत्येक अङ्क दृश्य में हमें सुषुप्त पौरुष को प्रबुद्ध करनेवाला जो सन्देश जी ने दिया है, वह निश्चय ही आज के संक्रमण-काल वर्द्धक सिद्ध होगा। हिन्दी के इस ऊर्जस्वी कवि ने इ में जिस नवीन भावलोक की सृष्टि की है, वह सर्व और स्तुत्य है। 'काल-दहन' प्रत्येक काव्य-प्रेमी के लि और संग्रहणीय है।

—देवीदयाल

५—**नवीन** (कविता-संग्रह)—रचयिता, श्री [illegible] नेपाली; प्रकाशक, पुस्तक-भण्डार, लहेरिया सराय; पृष्ठ-संख्या ११०; सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपए।

हिन्दी के ललित गायक श्री गोपाल सिंह नेपाल छोटी-बड़ी कविताओं का यह संग्रह है। नेपाली कविताओं में जहाँ तन्मयता है, सुकुमारता है और रङ्गीन उड़ान है, वहीं दुनिया की और मानव जीवन की भी दर्शनीय है। इस संग्रह का 'नवीन' नामकरण है, कारण इसमें प्राचीन रीति-नीति को कवि ने चुनौ नवीनता को अपनाने का आग्रह ही प्रकट किया है :-

हैं दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ।
... ...
जञ्जीर टूटती कभी न अश्रु-धार से,
हटती न दासता पुकार से गुहार से।
... ...
जो तुम गए, स्वदेश की जवानियाँ गईं,
चित्तौर के 'प्रताप' की कहानियाँ गईं।
तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।

इस संग्रह में राष्ट्रीय चेतना का जहाँ शङ्खनाद है, कान्त-पदावली की मोहक झाँकी भी है। विचरण करनेवाले और यथार्थता का स्वागत प्रकार के पाठकों को समान रूप से 'नवीन' अपनी कर सकने की क्षमता रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक साहित्य

मुस्लिम लीग की राजनीति

सन् १९३७ के चुनावों में किसी भी प्रान्त में मुस्लिम लीग का इतना बहुमत नहीं था कि वह शासन का भार सँभाल सकती। प्रान्तीय शासन से वञ्चित रह जाने की प्रतिक्रिया में मुस्लिम लीग के एकमात्र नेता मिस्टर जिन्ना ने मुसलमानों को धर्म और संस्कृति के नाम पर मुस्लिम लीग के अन्तर्गत सङ्गठित करने की चाल सोच निकाली। स्वयं धार्मिक विषयों में अत्यन्त उदासीन और संस्कृति में पक्के साहब बहादुर होते हुए भी मिस्टर जिन्ना यह जानते हैं कि मुसलमान अपने धार्मिक विश्वासों में कितना अन्धविश्वासी और कट्टर होता है। इसी कारण जिस पाकिस्तान को वे कदाचित् सन् १९३९ तक कोरी कल्पना समझते थे, उसी को उन्होंने १९४० में लीग का ध्येय घोषित करवा दिया। पाकिस्तान के नाम पर मुसलमानों को एक ऐसे शासन का सब्ज बाग दिखाया गया जिसकी स्थापना मुसलमानों के १३०० वर्ष के समस्त इतिहास में किसी भी देश में कभी नहीं हो पाई। अगस्त सन् १९४० में चर्चिल की प्रतिक्रियावादी सरकार ने भारतीय स्वतन्त्रता को अनन्त काल तक स्थगित करने की आशा से घोषित कर दिया कि जब तक मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता नहीं हो जाता तब तक शासन में कोई परिवर्तन करना सम्भव नहीं है। जिन माँगों को कांग्रेस सरकार के सामने उपस्थित करती है उन पर मुस्लिम लीग की सहमति होनी चाहिए। प्रधान मन्त्री चर्चिल और भारत मन्त्री एमरी ने मुस्लिम लीग को मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि-संस्था बनाने का षड्यन्त्र किया और उसे भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग में एक प्रबल अवरोध के रूप में लाकर खड़ा कर दिया। सन् १९४२ की क्रिप्स-योजना ने, जिसे असफल बनाने के ही उद्देश्य से उपस्थित किया गया था, मुस्लिम लीग के इस विश्वास को और भी दृढ़ कर दिया कि जब तक मुस्लिम लीग और उसके एकमात्र प्रवक्ता मिस्टर जिन्ना किसी योजना पर अपनी सही नहीं कर देते तब तक उसका कार्यान्वित किया जा सकना असम्भव है। किसी भी संस्था के लिए अपनी महत्ता का इतना विश्वास होना उसकी अहमन्यता को बढ़ाने के लिए बहुत अधिक है और वह व्यक्ति अपने अहम के विषय में कितनी ऊँची कल्पना करने लगेगा जिसे मालूम हो कि उस संस्था का अन्ध-विश्वास उसे प्राप्त है। सन् १९४२-४३ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन से मिस्टर जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग ने पर्याप्त लाभ उठाया। वैधानिक और अवैधानिक जिन उपायों से मुस्लिम लीग ने जिन सूबों में सम्भव हो सका अपने मन्त्रि-मण्डल बनाये। यद्यपि ये मन्त्रि-मण्डल, जहाँ तक शासन-सत्ता का सम्बन्ध है, अत्यन्त निकम्मे और गवर्नरों के हाथ की कठपुतली थे, परन्तु मुस्लिम लीग की महत्ता और शक्ति को बढ़ाने में वे पूर्णतया सफल हुए। परन्तु प्रतिक्रियावादी ब्रिटिश शासन और मुस्लिम लीग का गँठजोड़ा भारतीय स्वतन्त्रता के लिए सङ्घर्ष करने वाली एकमात्र संस्था कांग्रेस को विध्वंस करने के जिस उद्देश्य से लड़ाई के दिनों में क्रियाशील दिखाई देता था, वह लड़ाई के बाद पूरा होता न दिखाई दिया। चर्चिल-एमरी या लिनलिथगो के शैतानी त्रिगुट्ट ने केवल एक ही भूल की। कदाचित् आज जब वे अपदस्थ होकर अपनी प्यार से पाली-पोसी मुस्लिम लीग को संकटग्रस्त और बियाबान में मार्ग टटोलते देखते होंगे तो उन्हें अपनी भूल क्लेश पहुँचाती होगी। मिस्टर जिन्ना ने प्रेम से, आदर से, घुड़की देकर, धमकाकर, फुसलाकर, चाप लूसी करके हर तरह से प्रयत्न किया कि किसी प्रकार उस समय जब कि कांग्रेस स्वाधीनता-संग्राम में सामयिक पराजय खाकर भटक रही थी, जब उसके नेता और कार्यकर्ता जेलों में सड़ रहे थे, केन्द्रीय शासन में मुस्लिम लीग को आरूढ़ कर दिया जाए। परन्तु हर प्रकार से प्रतिक्रियावादी शासकों ने मिस्टर जिन्ना की इस थोड़ी-सी प्रार्थना को स्वीकार न किया। कदाचित् वे भी जानते थे कि अहम्मन्य जिन्ना साहब का उपयोग भारत की स्वाधीनता के मार्ग में रोड़े अटकाने से अधिक और कुछ नहीं है। शासन चलाने की योग्यता केवल मुसलमानों के एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था में नहीं हो सकती। फिर भी पहली शिमला कान्फरेंस ने, जो टूटते हुए अनुदार शासन के अन्तिम दिनों में हुई थी, एक बार फिर मिस्टर जिन्ना को अपनी बिखरने और बिखेर देने की नीति में आश्वस्त कर दिया।

सन् १९४५ के चुनावों में चर्चिल की प्रतिक्रियावादी सरकार अपदस्थ हो गई। मजदूर दल ने अनुदार दल को इस बुरी तरह हराया कि ब्रिटेन के शासन में चर्चिल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[अ

अभाव न रहा। एक प्रकार से ब्रिटेन में मजदूर दल की जीत ऐसी मौन क्रान्ति थी जिसका प्रभाव संसार की राजनीति पर पड़ना अनिवार्य है। दूसरे, अन्ताराष्ट्रीय परिस्थितियों में लड़ाई के पहले के ब्रिटेन और लड़ाई के बाद के ब्रिटेन में आकाश-पाताल का अन्तर है। निश्चय ही आज वह प्रथम श्रेणी की शक्ति नहीं है। परन्तु चर्चिल-एमरी-लिनलिथगो ने मुस्लिम लीग को जो नशा पिलाया था वह आज तक उतरा नहीं जान पड़ता है। सन् १९४५ के चुनावों, मजदूर सरकार की भारत-नीति-सम्बन्धी घोषणाओं, ब्रिटिश प्रतिनिधि-मण्डल के आगमन तथा उसके सदस्यों के विचारों और प्रधान मन्त्री एमरी की महत्त्वपूर्ण घोषणा के बाद भी, जिसमें उन्होंने कहा था कि भारत के किसी अल्पमत को बहुमत के स्वाभाविक विकास के पथ में बाधा डालने की स्वतन्त्रता नहीं दी जा सकती, मुस्लिम लीग सन् १९४०-४५ के ही वातावरण में विचरण कर रही है। मिस्टर जिन्ना और उनके मूक अनुयायियों की राजनीतिज्ञता और चतुर नेतृत्व-कला का इसी से अनुमान किया जा सकता है। आज भी मिस्टर जिन्ना अगस्त सन् १९४० के घोषणापत्र को उठाकर बार-बार जोर से दुहराते दिखाई देते हैं, आज भी वे चर्चिल को पत्र लिखकर अपनी अटूट स्वामिभक्ति की शपथ लेते हैं। आश्चर्य है कि मुस्लिम जनता और शिक्षित मुस्लिम समाज ऐसे नेता का किस लिए अनुसरण कर रहा है।

मुस्लिम लीग ब्रिटिश गवर्नमेंट और कांग्रेस से पाकिस्तान का समर्थन चाहती है, जब कि उसे अच्छी तरह विदित है कि वे दोनों उस माँग में कोई सार नहीं देखते। वह तथा-कथित पाकिस्तानी प्रान्तों की अमुस्लिम जनता पर छुरे, लाठी, आग और अत्याचार के बल से पाकिस्तान का आरोप करना चाहती है। वह उन प्रान्तों के मुसलमानों को भी हिन्दुओं के साथ कट्टर वैमनस्य का व्यवहार सिखाती है जहाँ पाकिस्तान स्थापित करने का स्वयं उसका उद्देश्य नहीं है और जहाँ के मुसलमानों को वह पाकिस्तान स्थापित करके हिन्दुओं की दया पर छोड़ देना चाहती है। पहले उसने ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल को योजना के स्थायी और अस्थायी दोनों अङ्गों को स्वीकार कर लिया था। पर ज्यों ही मिस्टर जिन्ना ने चर्चिल का आश्वासन-भरा भाषण पढ़ा, त्योंही उन्होंने मुस्लिम लीग कौंसिल को आदेश दे दिया कि वह मिशन-योजना को ठुकरा दे। इस बीच में उन्होंने यह प्रयत्न अवश्य किया कि लार्ड वेवल कांग्रेस को छोड़कर मुस्लिम लीग को समस्त भारत का शासन सौंप दें। परन्तु यह प्रयत्न कितना नासमझी का था। जिस बात में प्रतिक्रियावादी चर्चिल-सरकार तक मिस्टर जिन्ना और उनकी लीग पर भरोसा नहीं कर सकी, उसे मजदूर सरकार, जो बहुमत और प्रजातन्त्र के नियमों में विश्वास करती है, कैसे स्वीकार कर सकती थी? मन्त्रि-मिशन और लार्ड वेवल ने साफ कह रक्खा था कि मिशन-योजना को कार्यान्वित करने का काम केवल

स्थगित किया गया है, उसका सदा के लिए परित्याग नहीं है। राजनीतिज्ञ जानते थे कि विधान-निर्मात्री चुनावों के बाद लार्ड वेवल मध्य-कालीन अस्थायी सरकार का प्रयत्न करेंगे। परन्तु मुस्लिम लीग के नेता पर का नशा चढ़ा हुआ था, उसने उसे इतनी स्पष्ट न समझने दिया। कारवाँ चला गया और मिर उसकी धूल के अन्धकार में अपनी राह ढूँढ रहे हैं। कदम' का उलटा फल उन्होंने कलकत्ते में देख फिर भी कदाचित् इस उलटी और बेढङ्गी राह से मुँह उन्होंने निश्चय नहीं कर पाया है। कदाचित् हिन्दू आजादी इस वाम मार्ग से ही खून की माँग कर रहा है।

आज मुस्लिम लीग के नेताओं में घबराहट और स्पष्ट लक्षण दिखाई देते हैं। वे खून-खराबी और बातें करते हैं पर उनकी आवाज भर्राई हुई है। धमकियों में किसी स्पष्ट लक्ष्य की ओर संकेत नहीं दिखता उनमें से कुछ अप्रत्यक्ष ढङ्ग से पश्चात्ताप-सा करते पड़ते हैं और कुछ जिन्ना की अहंबुद्धि को सन्तुष्ट करने उन्हें फिर से मनाने-फुसलाने का प्रस्ताव कर रहे हैं। लीग के कुछ नेताओं ने, जिनमें श्री जिन्ना भी हैं, सहायता माँगने, रूसी फौजों की सहायता से पाकिस्तान करने, की धमकी देना आरम्भ किया है। क्या ब्रिटिश और भारत की हिन्दू मुस्लिम देशभक्त जनता इस आ जाएगी? क्या हमारा स्वाभिमान इस मूर्खता को बार-बार सुनना सहन कर सकेगा। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी सरकार की नीति की घोषणा करके लीग का भय दूर करने की चेष्टा की है। लार्ड वेवल जिन्ना साहब को पुनः बुलाकर कदाचित् समझौते का प्रयास आरम्भ किया है। इन पंक्तियों के लिखते तक जिन्ना-वेवल-वार्ता का अन्तिम परिणाम सामने नहीं मुस्लिम लीग की राजनीति का अध्ययन करके कहा जा सकते कि उसके जिद्दी नेता के व्यक्तिगत अभिमान वेवल कहाँ तक सन्तुष्ट कर सकेंगे। यह अन्तिम जब कि जिन्ना साहब अपनी राजनीतिज्ञता और चतुर परिचय दे सकते हैं। नहीं तो उन्हें भारत की स्वतन्त्रता का शत्रु और स्वार्थान्ध व्यक्ति घोषित विलक्षण पारिस्थितियों में प्रतिक्रियावादी अँगरेजी सरकार बड़े सम्प्रदाय का नेता बना दिया था। समय मुस्लिम जनता अन्धविश्वास और अनुदार विचारधारा कर खुले वातावरण में आएगी और मिस्टर जिन्ना लीग की राजनीति का खोखलापन समझेंगी। भारत के भाग्य से शीघ्र ही आएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्ध-प्रान्तीय धारा सभा का भङ्ग

सिन्ध के गवर्नर मुडी साहब ने अपनी लीग-प्रियता और अवैधानिकता का परिचय पूर्ण रूप से देते हुए सिन्ध प्रान्त के मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल को छीछालेदर से इस बार फिर बचा लिया। सिन्ध के मन्त्रिमण्डल पर पिछले दिनों जब-जब आपत्तियाँ आईं, तब-तब मुडी साहब ने रक्षा-कवच का काम दिया। इस बार जो आपत्ति आई थी, वह बहुत बड़ी थी। यदि अधिवेशन के प्रारम्भ होते ही गवर्नर की, असेम्बली को भङ्ग कर देने की, आज्ञा न पढ़ सुनाई जाती तो सर गुलामहुसेन हिदायतुल्ला के मन्त्रिमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव इस बार अवश्य पास हो जाता। पर मुडी साहब को यह गवारा नहीं था। इसी लिए तो उन्होंने विधान की धाराओं की जरा भी परवाह न करते हुए चटपट ऐसा निर्णय दे डाला। इसमें सन्देह नहीं कि यह सब खेल सिन्ध के प्रधान मन्त्री श्री हिदायतुल्ला के मेल से खेला गया है। पर यह नीति सिन्ध में लीगी मन्त्रिमण्डल की कहाँ तक अधिक समय तक कर सकेगी, इसमें पूरा सन्देह है।

गवर्नर महोदय ने यह भी घोषणा की है कि प्रान्त में निकट भविष्य में ही नए सिरे से चुनाव होंगे। उन्हें आशा है कि इस बार जो सदस्य चुनकर आएँगे उनकी सहायता से स्थायी और मजबूत मन्त्रिमण्डल बनाया जा सकेगा। वैधानिकों के मत के अनुसार सिन्ध में मजबूत सरकार तभी बन सकती है जब सरकारी पक्ष में विरोध-पक्ष की अपेक्षा कम-से-कम ६ मत अधिक हों। इधर सिन्ध की पिछले अनेक चुनावों से यह दशा रही है कि वहाँ जो दल मन्त्रिमण्डल बनाता है—और सौभाग्य या दुर्भाग्य से मुस्लिम लीगी दल को ही वह अवसर बार-बार मिलता है—उसके पक्ष में केवल एक या दो मत ही विरोधी मत की अपेक्षा अधिक होते हैं। और वह भी तब जब कि यूरोपीय सदस्य सदैव लीगी दल के पक्ष में ही अपना मत देते रहते हैं। अगले चुनाव में भी यही परिस्थिति नहीं होगी, इसका क्या प्रमाण? उस दशा में गवर्नर महोदय किस प्रकार सिन्ध में स्थायी मन्त्रिमण्डल का निर्माण करेंगे, यह देखने की बात होगी।

सिन्ध असेम्बली का सैयद दल, जो कि विरोध-पक्ष है, गवर्नर महोदय के इस अवैधानिक हस्तक्षेप से अत्यधिक क्षुब्ध है। कारण स्पष्ट है और प्रत्येक की समझ में आ सकता है। उसने बार-बार सर हिदायतुल्ला के मन्त्रिमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव असेम्बली में पेश करना चाहा, पर तरह-तरह के अड़ङ्गों और चालबाजियों के द्वारा ऐसा अवसर नहीं आने दिया गया। अभी पिछले दिनों ही ऐसा संयोग उपस्थित होने पर असेम्बली की बैठक ही स्थगित कर दी गई थी और इस प्रकार लीगी मन्त्रिमण्डल को बाल-बाल बचा लिया गया था।

उचित तो यही था कि पिछली बार ही जब अविश्वास का प्रस्ताव आने की बात उठी थी तब श्री हिदायतुल्ला साहस से काम लेते और अपनी नैतिकता का परिचय देते हुए विरोध-पक्ष को सभी प्रकार की सहूलियतें दे देते। इस प्रकार विरोध-पक्ष की चुनौती स्वीकार कर लेने पर उन्हें यह सिद्ध करने का पूरा अवसर मिल जाता कि उन्हें असेम्बली के बहुमत का समर्थन प्राप्त है। फिर विरोध-पक्ष को भी आगे कुछ कहने का साहस न होता और लीगी मन्त्रिमण्डल की परिस्थिति भी साफ और मजबूत हो जाती। पर श्री हिदायतुल्ला ने किया यह कि ज्योंही अविश्वास के प्रस्ताव के उपस्थित करने की सूचना उन्हें विरोध-पक्ष की ओर से प्राप्त हुई, और वह भी ऐसे अवसर पर जब कि सिन्ध की ओर से विधान-परिषद् में जानेवाले सदस्यों का निर्वाचन होनेवाला था, त्योंही वे भागे-भागे गवर्नर के पास पहुँचे और वहाँ से असेम्बली का अधिवेशन स्थगित कर देने की आज्ञा ले आए।

इधर ११ सितम्बर को जो कुछ हुआ है वह तो आदि से अन्त तक अड़ङ्गेबाजी है। इस अड़ङ्गे की सृष्टि वहाँ के स्पीकर के त्यागपत्र से की गई है।

विधान के अनुसार धारासभा के अध्यक्ष (स्पीकर) का यह कर्त्तव्य है कि वह असेम्बली का कार्य-सञ्चालन करने के लिए दोनों पक्षों को समान सुविधाएँ दे और धारासभा का वातावरण अनुशासनपूर्ण बनाए रहे जिससे सरकारी पक्ष और विरोध-पक्ष के वक्ता बहस में निःसङ्कोच होकर भाग ले सकें। इसी लिए स्पीकर से यह आशा की जाती है कि वह किसी दल-विशेष के पक्ष में असेम्बली की सीमा के भीतर अपना मत प्रकट नहीं करेगा। वह किसी ओर अपना मत भी नहीं दे सकता। सामान्यतः यही आशा सिन्ध के स्पीकर से भी थी। पर वहाँ की लीग-पार्टी की परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि यदि स्पीकर का—जो कि मुस्लिम लीगी हैं—एक वोट स्पीकर होने के नाते न गिना जाता तो ६० सदस्यों की असेम्बली में सरकारी पक्ष के केवल २९ मत रह जाते जब कि विरोध-पक्ष के ३० मत हो जाते और मन्त्रिमण्डल पर अविश्वास का प्रस्ताव पास हो जाता। इसी परिस्थिति को बचाने के लिए यह चालाकी की गई कि स्पीकर से त्यागपत्र दिला दिया गया और किसी दूसरे स्पीकर को नामजद करने से इनकार कर दिया गया। जब स्पीकर की गद्दी पर कोई नहीं है तब असेम्बली का कार्य-सञ्चालन कैसे हो और किस प्रकार अविश्वास के प्रस्ताव पर विवाद हो सके?

अब, जैसा कि गवर्नर महोदय की घोषणा से प्रकट होता है, सिन्ध असेम्बली का फिर से चुनाव होगा। पिछले चुनाव को अभी केवल ७ महीने बीते हैं। चुनावों में जितना व्यय होता है वह सब जानते हैं। वह व्यय जनता के सिर पर ही तो पड़ता है। जनता के पैसे को इस तरह बहाना उचित नहीं कहा जा सकता। फिर चुनाव के अवसर पर जो कटुतापूर्ण वातावरण पैदा होता है वह भी अवाञ्छनीय होता है। इन सब बातों पर यदि विचारपूर्वक विचार किया जाय तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही था कि सर हिदायतुल्ला के दल के बहुमत में न रहने की दशा में सैयद-दल को मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए आमन्त्रित किया जाता। पर ऐसा न करके जो चुनाव का मार्ग अपनाया गया है उससे भी हमें तो यह आशा नहीं है कि गवर्नर महोदय सिन्ध में मजबूत मन्त्रिमण्डल बना सकने में सफल हो सकेंगे।

सन् १९३५ के गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट की ५वीं उपधारा के अनुसार सिन्ध में असेम्बली की सीटों का विभाजन इस प्रकार है—१८ जनरल, ३३ मुस्लिम, २ योरपियनों की, २ व्यापारी वर्ग की, २ जमींदारों की, १ मजदूरों की, १ किसी महिला के लिए और एक केवल मुस्लिम महिला के लिए। इस प्रकार कुल ६० सीटों में से यदि मुस्लिम महिला की सीट को मिलाकर ३४ सीटों पर मुस्लिम लीग का अधिकार हो जाए, तो यह आशा अवश्य की जा सकती है कि सिन्ध में मजबूत मन्त्रिमण्डल स्थापित हो जाएगा।

गवर्नर महोदय ने विज्ञप्ति में यह भी कहा है कि उन्होंने साझे का मन्त्रिमण्डल बनाने का प्रयत्न किया, पर जब सफलता नहीं मिली तब असेम्बली को भङ्ग करने का निश्चय किया गया। विरोध-पक्ष के नेता श्री जी० एम० सैयद ने इस कथन का खण्डन करते हुए कहा है कि यह झूठ है कि साझे का मन्त्रिमण्डल बनाने का कोई प्रयत्न किया गया था। वस्तुतः विरोध-पक्ष से इसके लिए कहा ही नहीं गया। यदि सैयद साहब की बात ठीक है तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि गवर्नर महोदय ने यह निश्चय कर लिया है कि या तो सिन्ध में मुस्लिम लीग का मन्त्रिमण्डल होगा, नहीं तो मन्त्रिमण्डल होगा ही नहीं। इस वस्तुस्थिति से यही प्रतीत होता है कि सिन्ध प्रान्त वैधानिक दृष्टि से डावाँडोल ही बना रहेगा, जैसा कि पिछले कई वर्षों से रहा है और उसका वैधानिक सङ्कट कम-से-कम तब तक दूर नहीं होगा जब तक मुडी साहब वहाँ के गवर्नर रहेंगे।

भारत की वैदेशिक नीति

न जाने कितने दिनों से भारत की वैदेशिक नीति विदेशी शासकों के हाथ में रही है। भारत के नाम पर वे जो चाहते थे, विदेशों के सम्बन्ध में कर डालते थे। अनेक बार तो सरकार के ऐसे वैदेशिक कार्यों की जननेताओं-द्वारा घोर भर्त्सना भी की गई, पर उससे क्रियात्मक परिणाम कोई नहीं निकला। केवल विदेशों को यह ज्ञात भर हो गया कि भारत की जनता की सम्मति अमुक वैदेशिक प्रश्न के सम्बन्ध में क्या है। यों हुआ वही, जो विदेशी सरकार ने चाहा। भारतीय सेनाएँ अनेक देशों की स्वाधीनता को कुचलने के लिए बराबर बाहर भेजी जाती रहीं और भारत बराबर इस नीति का विरोध करता रहा, पर सुननेवाला कौन था? गुलाम की आवाज का, वह कितनी ही जोर की क्यों न हो, कोई महत्त्व नहीं होता। इसी प्रकार यहाँ से भारत की इच्छा के विरुद्ध न जाने अन्न और वस्त्र की कितनी बड़ी राशियाँ विदेशों को भेजी जाती रहीं। नङ्गे भूखे भारतीय इस अनुचित निर्यात के विरुद्ध बराबर आवाज उठाते रहे, पर सुननेवाला कौन था?

आज भारत की वैदेशिक नीति भारतीय नेताओं के हाथ में आ गई है, इस समाचार से प्रत्येक भारतीय गौरव का अनुभव अवश्य करेगा। यही नहीं, मध्यकालीन सरकार के प्रधान के हाथ में यह उत्तरदायित्व सौंपा गया है वह उन सब मामलों का भारत में सबसे अधिक जानकार माना जाता है। भारत का राष्ट्रपति है और साथ ही साथ मध्यकालीन सरकार का सर्वप्रथम पदाधिकारी भी। वाइसराय की ओर से यह विश्वास दिलाया गया है कि वे दैनिक सामान्य कार्यों में किसी प्रकार हस्तक्षेप नहीं करेंगे। यदि इस पर अमल किया गया तो इसमें सन्देह नहीं है कि नेहरू जी को अपनी वैदेशिक नीति को कार्य रूप में परिणत करने का पूरा अवसर मिलेगा।

नेहरू जी की वैदेशिक नीति की रूप-रेखा क्या होगी, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है; क्योंकि भारत का बच्चा उनकी विचार-धारा से अवगत है। सम्भवतः उनकी वैदेशिक नीति सर्वथा भारतीयों की सम्मति के अनुसार होगी। अर्थात् वे वही करेंगे, जो भारत चाहता है। ब्रिटेन के साथ अधिक-से-अधिक मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने क्योंकि ब्रिटेन इन दिनों भारत को शक्ति हस्तान्तरित उद्यत दिखाई दे रहा है और उसके इस बार के प्रयत्न के सम्मानित नेताओं को दुरभिसन्धि का गन्ध नहीं है। पर इतना सब करते हुए भी वे कांग्रेस के सदैव ध्यान रक्खेंगे, यह भी निश्चित ही है।

विदेशी मामलों के सम्बन्ध में इंडोनेशिया का ताजा है। पाठकों को भूला न होगा कि ब्रिटिश इंडोनेशिया का स्वातन्त्र्य आन्दोलन दबाने का सेनाओं-द्वारा किया गया था। भारत ने इसका घोर था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इस सिलसिले नेशिया जाने की इच्छा प्रकट की थी तो उन्हें सरकार देने में अपनी असमर्थता प्रकट की थी। इंडोनेशिया सेनाएँ आज भी मौजूद हैं। उनकी संख्या क्या ज्ञात नहीं है, न ज्ञात हो ही सकता है। आकिनलेक ने असेम्बली में बतलाया था कि जुलाई सेनाएँ भारत को लौट आएँगी। जुलाई गई, और सितम्बर भी बीत गया, पर वे सेनाएँ वहीं 'जनरल हेड क्वार्टर' चुप हैं। कुछ लोग उच्च सरकार के आधार पर अनुमान लगा रहे हैं कि शायद भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष के अन्त तक वहाँ रहना पड़ेगा। अर्थात् वे तभी टाई जाएँगी जब उतनी ही डच सेनाएँ इंडोनेशिया में पहुँच एँगी। डच सेनाओं से भरे जहाज वहाँ उतारे भी जा रहे एँगी।

पर यह बात भारतीयों की समझ में शायद नहीं आ ती कि किसी डच-उपनिवेश में शान्ति कायम रखने की म्मेदारी भारतीय सेनाओं के मत्थे क्यों मढ़ी गई है। डचों भारत को कब क्या लाभ पहुँचा है जो भारतीय उनका झण्डा डोनेशिया में गड़ा रहने में सहायता दें और इस प्रकार एक शियायी राष्ट्र को, जो भारत की भाँति ही स्वाधीनता के लिए टपटा रहा है, अनन्त काल तक गुलाम बनाए रखने में योग दान करें! इसके विपरीत यदि भारतीय सेनाएँ तुरन्त वहाँ हटा ली जाएँ तो डचों को इंडोनेशियनों के साथ शीघ्र ही मझौता करने के लिए विवश होना पड़े और इस प्रकार इंडो-शिया की स्वाधीनता एक कदम और निकट आ जाए।

इंडोनेशिया के बाद ईराक का मामला आता है। बसरा भारतीय सेनाएँ पहले से ही मौजूद हैं। और सेनाएँ भी हाँ लगातार भेजी जा रही हैं। पिछले दिनों ही सिखों की जीमेंट वहाँ भेजे जाने की सूचना पत्रों में प्रकाशित हुई थी। हते हैं, ये सेनाएँ ईराक की पुलिस की सहायता के लिए वहाँ खी गई हैं। पर भारत को और हमारी कांग्रेस को ईराक पुलिस से क्या लेना है, यह हम नहीं जानते। ईराक के थ यदि सन्धि-बद्ध है तो ब्रिटेन है, भारत नहीं। भारतीय नाओं का दूसरा उपयोग, जो अनुमान पर ही आधारित यह हो सकता है कि यदि युद्ध फिर आरम्भ हो गया तो इन नाओं को दक्षिण ईरान स्थित तैल-कूपों की रक्षा का भार पा जाएगा। पर इसके सम्बन्ध में भारत-सरकार की नीति अब स्पष्ट हो ही जानी चाहिए।

वैदेशिक मामलों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मामला हमारे मने दक्षिण-अफ्रीका के घेटो कानून का है, जिसने हमारे वासी भाइयों को बेचैन कर रक्खा है। प्रसन्नता की बात है कि पण्डित नेहरू इस मामले में स्वयं काफी दिलचस्पी ले रहे । अब यह मामला संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ में उपस्थित किया जाने-ला है। भारतीय सरकार को अब देखना यह है कि यह मला उक्त सङ्घ में प्रभावशाली ढङ्ग से उपस्थित हो जिससे छ तत्त्व निकल सके।

लङ्का, स्याम और ब्रह्मा के साथ भी हमारी राष्ट्रीय सरकार निकट भविष्य में ही व्यवहार करना है। लङ्का के निवा-यों और वहाँ के प्रवासी भारतीयों में बहुत दिनों से परस्पर नमुटाव चला आ रहा है। यह मनमुटाव जितना शीघ्र और शलता से दूर होगा, उतना शीघ्र लङ्का को बृहत्तर भारत का ङ्ग बनाया जा सकेगा। ब्रह्म देश के निवासियों की समस्या हुत कुछ भारतीयों की जैसी ही है। यह अत्यन्त है कि ब्रह्म गुलामी के लिए बहुत हद तक भारतीय सेनाएँ जिम्मेदार थीं अतः ब्रह्मा-निवासी भारतीयों को अँगरेजों के हाथ की लकड़ी समझते हुए घृणा की दृष्टि से देखते थे। पिछले दिनों जापान-द्वारा अधिकार किए जाने पर वह घृणा की भावना और बढ़ गई है। भारत की राष्ट्रीय सरकार ही प्रयत्न करके इस खाई को भर सकती है और ब्रह्मा को पुनरपि भारत का अविभाज्य अङ्ग बना सकती है।

स्याम को भारत ने पिछले दिनों ही ऋण दिया है। स्याम ने भारत को अन्न भेजने का वचन दिया है। इस वचन का पालन शीघ्रता और पूर्णता के साथ होना चाहिए जिससे इन दोनों देशों का मैत्री-सम्बन्ध दृढ़तर हो सके। बौद्ध-संस्कृति का अन्यतम केन्द्र स्याम किसी समय बृहत्तर भारत का एक अङ्ग रहा है। निकट भविष्य में हम उसे अपने निकट मित्र के रूप में देखना चाहते हैं।

चीन के साथ तो भारत का सम्पर्क अति प्राचीन काल से रहा है। इधर पण्डित नेहरू की गत चीन-यात्रा ने और उनकी मार्शल च्यांग काई शेक के साथ व्यक्तिगत मित्रता ने दोनों देशों को और अधिक निकट ला दिया है। हमें विश्वास है कि ये दोनों अति पुरातन मित्र मिलकर सम्पूर्ण एशिया को एक बार फिर से बन्धन-मुक्त करा सकेंगे।

युद्ध-काल में और उसके बाद भी जितने छोटे-बड़े जितने भी अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन हुए हैं उनमें भारत का प्रतिनिधित्व ब्रिटिश-सरकार के नियुक्त प्रतिनिधि करते रहे हैं। केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होने से अब यह निश्चित है कि भविष्य में ऐसे सम्मेलनों में जो भारतीय प्रतिनिधि जाएँगे वे सच्चे अर्थों में भारत के प्रतिनिधि होंगे और भारत के पक्ष को जनता और राष्ट्रीयता की दृष्टि से ईमानदारी के साथ संसार के सामने उपस्थित कर सकेंगे, क्योंकि भारतीय वैदेशिक नीति की सफलता-असफलता का अधिकांश उत्तरदायित्व ऐसे प्रतिनिधियों पर ही निर्भर करेगा और योग्य भारतीय प्रतिनिधि ही संसार के लोकमत को भारत के पक्ष में प्रेरित कर सकेंगे।

ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का नमूना

राष्ट्रीय महासभा का आगामी अधिवेशन मेरठ में होना निश्चित हुआ है। उक्त अवसर पर एक ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है। ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का क्या रूप होना चाहिए, इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने अपने विचार 'ग्रामोद्योग पत्रिका' में व्यक्त किए हैं जो उक्त अवसर पर उपयुक्त पथ-पदर्शन कर सकते हैं। उक्त लेख का सारांश इस प्रकार है—

कांग्रेस का अधिवेशन शीघ्र होने जा रहा है। इसलिए सामान्यतः यह प्रश्न उठता है कि देहाती दृष्टि से उसे कैसा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए। देहाती दृष्टि ही हिन्दुस्तान में सही हो सकती है—अगर हम चाहते और मानते हैं कि देहातों को जीना ही नहीं बल्कि मजबूत और समृद्ध बनना है। अगर यह सही है तो हमारी प्रदर्शनी में शहरी चीजों को और आडम्बर व जाहोजलाली को स्थान नहीं हो सकता। शहर में जो खेल-तमाशे होते हैं उनकी जरूरत नहीं होनी चाहिए। प्रदर्शनी किसी हालत में न तमाशा बननी चाहिए, न पैसे पैदा करने का साधन; व्यापारियों के लिए विज्ञापन का साधन तो कभी नहीं। वहाँ बिक्री का काम नहीं होना चाहिए। खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों की चीजें भी नहीं बेचनी चाहिएँ। प्रदर्शनी को शिक्षा पाने का स्थान बनना चाहिए। रोचक होना चाहिए। देहातियों के लिए ऐसा होना चाहिए कि जिससे देहाती घर लौटकर कुछ-न-कुछ उद्योग सीखने की आवश्यकता समझने लगें। हिन्दुस्तान के सब देहातों में जो दोष हैं उन्हें बतानेवाला तथा उन दोषों को कैसे दूर किया जाए वह बतानेवाला और ग्रामों को आगे ले जाने की प्रवृत्ति शुरू हुई तब से आज तक क्या प्रगति हुई सो बतानेवाला होना चाहिए। इस प्रदर्शनी को, देहात का जीवन कलामय कैसे बन सकता है, सो भी बतानेवाला होना चाहिए।

अब देखें कि इन शर्तों को पालन करनेवाली प्रदर्शनी कैसी होनी चाहिए। (१) दो देहातों के नमूने होने चाहिएँ—एक देहात हो आज ऐसा और दूसरा उसमें सुधार होने के बाद का। सुधरे देहात में स्वच्छता होगी, घर की, रास्ते की, देहात के आस-पास की और वहाँ के खेतों की। पशुओं की हालत भी बतानी चाहिए। कौन-से धन्धे किस प्रकार से आमदनी बढ़ाते हैं, इत्यादि बातें नकशों, चित्रों व पुस्तकों से बताई जाएँ।

(२) सब तरह के देहाती उद्योग कैसे चलाए जाएँ। उनके लिए औजार कहाँ मिलते हैं, वे कैसे बनाए जाते हैं, यह सब बताना चाहिए। सब तरह के उद्योगों को चलते हुए बताया जाए। साथ-साथ निम्नलिखित वस्तुएँ भी बतानी चाहिएँ:—

(अ) देहाती आदर्श खुराक।
(आ) यंत्रोद्योग और हाथ-उद्योग का मुकाबला।
(इ) पशुपालन-विद्या का पदार्थ-पाठ।
(ई) पैखानों का नमूना।
(उ) कला-विभाग।
(ऊ) वनस्पति खाद विरुद्ध रसायनी खाद।
(ए) पशु की खाल, हड्डी इत्यादि का उपयोग।
(ऐ) देहाती सङ्गीत, देहाती वाद्य, देहाती नाट्य प्रयोग।
(ओ) देहाती खेल-कूद, देहाती अखाड़े व व्यायाम।
(औ) नई तालीम।
(अं) देहाती औषध।
(अः) देहाती प्रसूति-गृह।

आरम्भ में बताई हुई नीति को खयाल में रखकर हो सकती है सो की जाए। जो मैंने बताया है उसे स्वरूप माना जाए। इसमें चर्खे से आरम्भ करके उद्योग हैं, उन्हें जान-बूझकर नहीं बताया है। इन के सिवा प्रदर्शनी निकम्मी मानी जाए।

आदर्श गृहिणी

आदर्श गृहिणी के अनेक चित्र संसार के प्रस्तुत किए हैं और देश-काल के भेद से वे सब विशेषता रखते हैं। पर आदर्श गृहिणी का जो कई शताब्दियों पूर्व सयाना सोलोमन ने हिब्रू भाषा में प्रस्तुत किया है वह देश-काल से सर्वथा अप्रभावित सार्वभौम है। इस सम्बन्ध में राजकुमारी अमृत कौर में लिखती हैं—

"अच्छे चाल-चलनवाली औरत मिलती कहाँ है? उसकी कीमत जगमगाते जवाहरों से भी ज्यादा है।

"उसका पति या खाविन्द उस पर पूरा-पूरा भरोसा है, इसलिए उसे किसी तरह की नुकसानी नहीं उठानी

"वह जिन्दगी भर अपने पति का भला ही करती बुरा नहीं करती।

"वह सन और ऊन खोज निकालती है, और दोनों को खुशी-खुशी कातती है।

"वह दरिया का सफर करनेवाले तिजारती जहाज दूर-दूर से घर के लिए नाज लाती है।

"वह मुँह-अँधेरे, बड़े सवेरे, उठकर अपने खाना पकाती है, और लड़कियों को घर का काम सौंप देती है।

"वह जाकर एकाध खेत देखती है, हिसाब लगाती खेत खरीदती है; अपने हाथों वह उस खेत में रोपती है।

"उसका शरीर (जिस्म) ताकतवर है, उसके हाथ हैं और वह कमर कसकर मेहनत-मजदूरी करती है।

"वह इस बात की फिकर रखती है कि उसकी फसल मुनाफा दे।

"उसके घर में सारी रात चिराग़ जलता रहता है।

"वह अपने हाथों तकली घुमाती और चरखा

"गरीबों के लिए वह अपने हाथ बढ़ा देती है, ही गरजमन्दों के पास दौड़ी जाती है, और करती है।

"उसके घर को बरफ के तूफानों से कोई

"क्योंकि उसने अपने घर के सब लोगों को लाल से ढँक रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह अपने हाथों तरह-तरह की शतरंजियाँ बुनती और बेचने बनाती है।

"उसके कपड़े बढ़िया सन के और खुशनुमा लाल रंग के हैं।

"मुल्क के बड़ों की मजलिस में बैठनेवाले उसके खाविन्द का नाम चारों तरफ मशहूर है।

"वह सन के कपड़े बनाती और बेचती है, और कमरबन्द तैयार करके सौदागरों को देती है।

"बल और गौरव (ताकत और शान) उसके वस्त्र (कपड़े) हैं और आनेवाले जमाने के सामने वह मुँह पर मुसकान लिए खड़ी रहती है।

"उसके चेहरे से दानाई टपकती है, उसकी जबान से करुणा का अमृत बहता है।

"वह अपनी घर-गिरस्ती की मुनासिब फिकर रखती है, और कभी काहिल बनकर काहिली की रोटी नहीं खाती।

"उसे नजदीक आते देखकर उसके बच्चे खड़े हो जाते हैं, और उससे कहते हैं, माँ तुझ पर ईश्वर की कृपा (खुदा का रहम) है। उसका पति भी उसकी इज्जत करता है। और कहता है—तेरी लड़कियों ने अपने मायकेवालों का नाम रोशन किया है, पर उन सब में तेरी कोई जोड़ नहीं।

"इनसान की मुहब्बत का कोई ठिकाना नहीं, वह किसी भी वक्त बदल जाती है, और शरीर का रूप, उसकी खूबसूरती, धोखा ही है। मगर ईश्वर से डरकर चलनेवाली औरत की सब तारीफ करते हैं।

"उसे उसके अपने पैदा किए हुए फल भेंट में दो, क्योंकि उसके कामों से ही वह चारों दुनियाओं में मशहूर होगी।"

औरत की यह तसवीर सदियों पुरानी है। यह हिब्रू जबान में लिखी गई है और सयाना सोलोमन इसका लिखनेवाला है। हिन्दुस्तान के साधु सन्तों की लिखी चीजों से भी ऐसे बयान मिल सकते हैं। इससे पता चलेगा कि उस जमाने की औरतें काबलीयत और होशियारी के साथ काम करती थीं, घर के बोझ में उनकी भागीदार बनती थीं, उन्हीं की तरह मेहनत की धूप सहती थीं और इस तरह जिन्दगी को जीने लायक बनाती थीं। दानाई की ये बातें गरीबों की बनिस्बत खासकर खुशहाल लोगों के लिए लिखी गई हैं। सो कुछ भी हो, इसमें शक नहीं कि यह एक ऐसा आदर्श है, जिसे अपनाकर इस जमाने की हरएक बहन फायदा उठा सकती है। इस तसवीर में औरत की जिस ताकत का खाका खींचा है, उसके कामों की विविधता का बयान किया गया है अपने घर को ही नहीं, बल्कि समाज को देनेवाली के नाते उसकी जो जगह इस तसवीर में दी गई है, सबको, और नहीं तो, कम-से-कम पूरबी देशों की औरतें तो खो ही बैठी हैं। अपने घर की नींव-मिमार बनने के बदले कमजोर और मुहताज बन गई हैं। उन्हें दूसरों का आसरा ताकना पड़ता है। यह जरूरी है कि वे अपनी जिन्दगी के फटे-टूटे मगर रङ्ग-बिरङ्गी तसवीरोंवाले परदे को रफू करने के लिए फौरन ही फिरसे अप ने हाथों में चरखा थाम लें और कातने के लिए रूई, ऊन और सन हासिल कर लें। अगर हिन्दुस्तान की बहनें ऊपर की तसवीर में दिए गए ऊँचे दरजे को पा लें, तो वे न सिर्फ अपने मुल्क की, बल्कि सारी दुनिया की तरक्की में हाथ बँटा सकेंगी। अगर सच्ची समाज-व्यवस्था के लायक बनने की हम सबसे पहले और तुरत कोशिश नहीं करेंगी, तो नई दुनिया रचने के लिए सोची जानेवाली सभी तरकीबें बेकार हो जाएँगी।

ईशोपनिषद् का प्रथम मन्त्र

ईशोपनिषद् के प्रथम मन्त्र में त्यागमय भोग का जैसा सुन्दर उपदेश मिलता है वैसा संसार की शायद किसी धर्मपुस्तक में नहीं मिलता। इस मन्त्र ने बड़े-बड़े मनस्वियों को आश्चर्य में डाल दिया है। इसके सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने 'हरिजन' में कुछ विचार व्यक्त किए हैं जो बड़े महत्त्व के हैं। उक्त लेख का सारांश इस प्रकार है—

त्रावणकोर के मन्दिरों में आने-जाने के ऐलान पर स्व० श्री महादेव भाई देसाई ने जो किताब लिखी है उनमें आपने ईशोपनिषद् के पहले श्लोक का जिक्र करते हुए कहा है कि अगर हिन्दुओं के तमाम वेद-शास्त्र बरबाद हो जायँ और सिर्फ यह श्लोक बच जाए, तो अकेला यही धर्म को मिटने से बचा सकता है। शायद आप जानते होंगे कि इस श्लोक ने गुरुदेव के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर का जीवन बदल दिया था। जब नौजवान देवेन्द्रनाथ के पिता का स्वर्गवास हुआ, तो खानदान की जायदाद कर्ज से काफी दबी हुई थी। वह बहुत उदास रहने लगे थे। एक दिन जब वह इसी उदासी की हालत में बैठे थे, तो हवा ने उनके पास छपे हुए कागज का एक टुकड़ा ला फेंका। उन्होंने उसे उठा लिया। उस पर संस्कृत में कुछ लिखा था, जो उन्होंने उस वक्त तक सीखी नहीं थी। वह उसे अपने कुटुम्ब के पण्डित के पास ले गये। पण्डित ने उसे पढ़कर सुनाया। वह ईशोपनिषद् का पहला श्लोक था। महर्षि अपनी आप बीती में लिखते हैं कि जब उन्होंने वह सुना, तो उन्हें ऐसा मालूम हुआ, मानो उनकी आत्मा में अमृत उंडेल दिया गया हो।

त्याग करके भोग करने की बात ने मुझे बहुत दिनों तक चक्कर में डाले रक्खा। एक दिन (एक रात कहना ज्यादा ठीक होगा) मुझे एकाएक यह सूझा कि बात तो रोज के तजरबे की है। जिससे प्यार हो, चाहे वह मनुष्य हो या कोई ध्येय (मकसद), उसके लिए अपनी किसी कीमती चीज का त्याग करने से बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मतलब मैंने इस श्लोक का अपनी अनगढ़ भाषा में लगाया है, उसको अपनी शक्ति के मुताबिक, ज्यादा-से-ज्यादा अपने जीवन में उतारने की कोशिश करता हूँ। इससे मेरा यह विचार पक्का हो जाता है कि जो कुछ सच्चे हिन्दूमत—मेरे लिए सच्चे धर्म—में है, वह सब कुछ ईशोपनिषद् के पहले श्लोक में आ जाता है। सुबह की प्रार्थना में गीता के १८ अध्याय पढ़कर एक हफ्ते में खत्म किए जाते हैं, और कुछ बरसों से हम ऐसा करते आते हैं। गीता ईशोपनिषद् के पहले श्लोक पर लिखी गई टीका है। मुझे ऐसा लगता है, गो उसे कहने में कुछ झिझकता-सा हूँ, कि इसका जो मतलब श्री नटराजन् की समझ में आया है, वह सचाई का सिर्फ एक पहलू है। मेरी समझ में उन्होंने जो मतलब लगाया है, वह तो सिर्फ कुरबानी या बलिदान का एक उसूल है, जो बेशक आम तजरबे की बात है। सिर्फ एक मिसाल लीजिए। कई माताएँ अपने बच्चों के लिए सब कुछ कुरबान कर देती हैं। लेकिन जिस मन्त्र का जिक्र किया गया है, वह इस दस्तूर की हामी भरने के लिए नहीं बनाया गया। यह दस्तूर तो उस वक्त भी आम था, जब यह मन्त्र हमें मिला। इस श्लोक तक पहुँचने का मतलब है, नया जीवन, जिसका जिक्र नई इंजील में आया है, और जिसे हिन्दूधर्म में ब्रह्म समर्पण (अपने-आपको बिलकुल ईश्वर के हवाले कर देना) का नाम दिया गया है। इसलिए इस श्लोक का मतलब मेरी निगाह में एक ही है। मान लीजिए कि जो कुछ आप अपना समझते हैं, असल में वह खुदा का है और खुदा से है। फिर जितना आपको जीवन के लिए निहायत जरूरी हो, वह उसमें से ले लीजिए। दूसरे लफ्जों में, यानी गीता की जबान में, यह श्लोक हमें बिलकुल बेलाग रहना सिखाता है। तभी जिन्दगी एक रहने के काबिल चीज बन जाती है।

'अधिक उपजाओ' का भण्डाफोड़

संयुक्तप्रान्त के कृषि विभाग के मन्त्री माननीय श्री निसार-अहमद शेरवानी ने 'एडवाइजर-शासन' के द्वारा सञ्चालित 'अधिक उपजाओ' आन्दोलन का भण्डाभोड़ करते [illegible] है कि इस कार्य में सरकार ने जितना अधिक व्यय [illegible] की उत्पत्ति उतनी ही कम होती गई। सन् १९४३-४४ [illegible] कि एडवाजर-शासन अपनी पूर्ण शक्ति और समृद्धि पर [illegible] और खरीफ दोनों फसलों की उपज कम हो गई थी [illegible] की फसल में चावल की उपज ८३ प्रतिशत से घटकर ८० [illegible] रह गई, ज्वार की उपज ९१ से ८४ प्रतिशत, बाज [illegible] से ८८ प्रतिशत, मक्का की ८१ से ७८ प्रतिशत और [illegible] उपज ८६ से ८२ प्रतिशत रह गई। रबी की फ [illegible] ८३ से ७६, जौ ८४ से ६७, चना ८८ से ६६ और [illegible] से ७४ प्रतिशत रह गई।

शेरवानी साहब ने अन्न की उपज के सम्बन्ध में [illegible] हुए पालतू पशुओं की उत्पत्ति के विषय में भी इसी [illegible] कमी की ओर सङ्केत किया है। देहाती जीवन से [illegible] सम्पर्क रखनेवाले प्रत्येक समझदार व्यक्ति को 'अधिक उपजाओ' आन्दोलन चलानेवालों की ईमानदारी और सफलता का पूरा ज्ञान है। अतः श्री शेरवानी की [illegible] जनता को कोई आश्चर्य नहीं होगा। जनता जानती [illegible] हैलेट का शासन केवल एक दिशा में प्रगति और [illegible] सका—प्रजा के जन्मसिद्ध नागरिक अधिकारों को [illegible] लिए और उस पर तरह-तरह के अत्याचार करने के लि [illegible] का सङ्गठन करना और घूसखोरी, चोरबाजारी आदि [illegible] देना। परन्तु केन्द्रीय सरकार के वे सरकारी उच्च [illegible] श्री शेरवानी के कथन को आँखें खोलकर पढ़ें जो [illegible] कि 'अधिक उपजाओ' आन्दोलन सफल रहा। केन्द्रीय [illegible] में इस आन्दोलन की आलोचना करनेवाले सदस्यों से [illegible] ने कहा था कि वे इस आन्दोलन-सम्बन्धी आँकड़ों से [illegible] को हैरान कर सकते हैं। क्या श्री टाइसन श्री [illegible] द्वारा दिए गए आँकड़ों की सत्यता में सन्देह कर सकते

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press Ltd., Benares Branch, Benares.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न ए गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आ रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होता है। ऐसी अवस्था में प्रा ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अं है—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डिबल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा त निपट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेदे का गिरना) रोकने असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर खुलकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खूब भूख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पैकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

मँगाइए—

बड़े २ शहरों में हम ऐजेन्सी स्थापन कर रहे हैं। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी स्टार अपने परमोत्कृष्ट त्वचा को केवल इसलिये सुरक्षित नहीं रखती कि, वह उसका मनमोहक सौन्दर्य है, बल्कि वह उसके व्यावहारिक जीवन की एक अमूल्य पूँजी भी है। इसीलिये हिन्दुस्थान की प्रमुख फिल्मी स्टारस् **लक्स टॉयलेट साबुन** से अपने मूल्यवान् सौन्दर्य की सुरक्षा करती हैं। आप स्वयं अपने घर में इस सरल उपाय का प्रयोग कर देख सकते हैं—३० दिन के लिये अनुभव कीजिये—आप उसकी साफ़ करनेवाली एवं उद्दीपन शक्ति को देखकर आनन्दित होंगे।

LTS. 137-23-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोंदा

सूरज १८६६ छाप

नीलगिरि तेल

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बाल जीवन घुट्टी

मुफ्त लो १० प्रतिष्ठित लोगों के नामवर्षन भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ्त भेजेंगे

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनाती. ज़रा सी रोजाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।

— मू० शी० ।७ दर्जन २॥) डा० व्य० अ० —

सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।

पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़ यू. पी.

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जायगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृताञ्जन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। ह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के र पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस क में लेखक रामलालसिंह, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न मायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति-वर्णन, चरित्र-चित्रण, , भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छन्द-विधान, रस-संचार, कामा- का मनस्तत्त्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम- ण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे ज पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का २)

केवल एक दिन में

मेजिक मिस्परिजम

लड़के को जमीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीब व गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब दर्शकों की घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अङ्गारों का नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमांचकारी करिश्में सीखकर.

दूसरे ही दिन

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धिमानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर ठनाठन रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गजब का जादू एक दिन में, हाँ केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं—ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पाँच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड वण्डरफुल मेजिकल कम्पनी

जर बकडिपो,—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ एवं सुन्दर भारतीय गुलाब के फूल अपने मनमोहक मधुर सुगंध से चाँदनी रात का वायु व्याप्त करते हैं—वे विनोलिया व्हाइट रोज़ की कैसी स्मृतियाँ जागृत करते हैं! आप के सौन्दर्य—वर्द्धन के लिये इस से उत्तमोत्तम वा अत्युकृष्ट प्रिय साबुन हो नहीं सकता। मृदु एवं झागदार विनोलिया अतिशय कोमल त्वचा को सौम्यता पूर्वक साफ़ करता है...और उस के सुगंधित झाग की आप के अतराफ़ एक मीठी महक लहराती है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 21-23 HI

VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

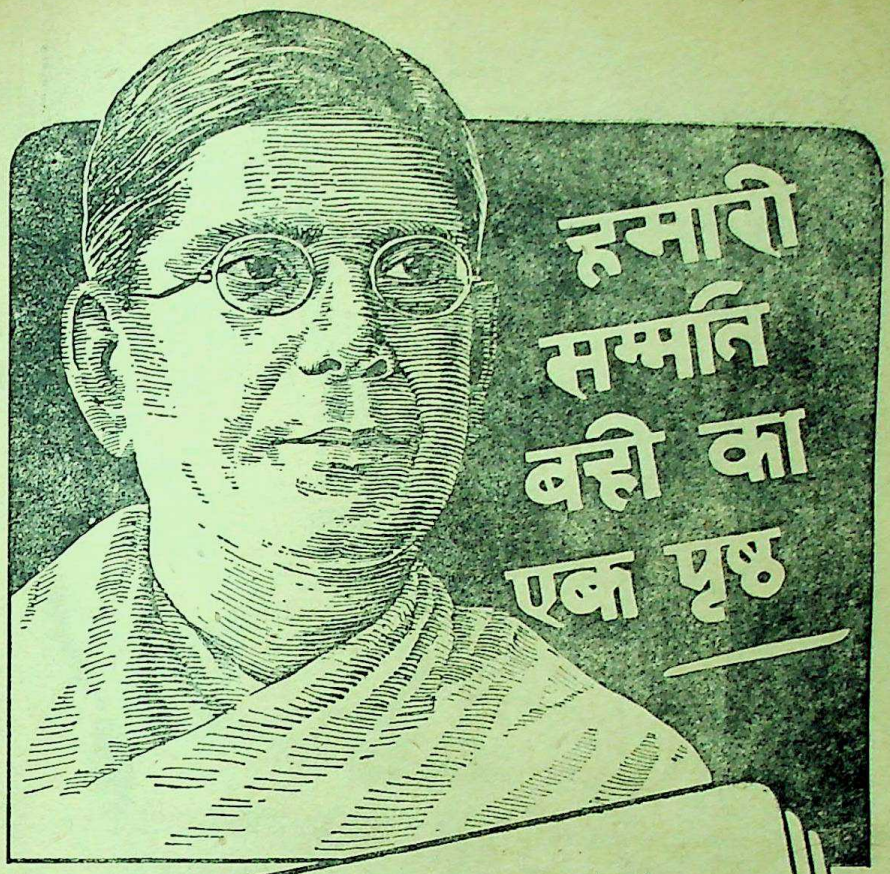

हमारी सम्मति बही का एक पृष्ठ

देशबन्धु चितरञ्जन ने लिखा था :—

"शक्ति औषधालय की फैक्टरी का काम मुझे बहुत पसन्द आया। अनुशासन के साथ व्यवस्थित ढङ्ग पर इसका कारबार चलाया जाता है। निरीक्षण में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है। इस कारबार में पहले से ही जो सफलता प्राप्त हो चुकी है, उसके लिए मैं अध्यक्ष को बधाई देता हूँ।"

(ह०) सी० आर० दास

२४ अक्टूबर १९२१

अध्यक्ष मथुर बाबू का
शक्ति औषधालय · ढाका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्री अपनी माता का दर्पण है

पहले दिन जब मंजुला अपने स्कूल पहुंची, तो श्रेणीके सब लोग उसकी काली केशराशिको देखकर स्तम्भित हो गये। "क्या सुन्दर बाल हैं" विनीता ने कहा। "कितनी मनमोहक केशराशि है" सिप्राने कहा। "मैं अपनी मांकी बेटी हूं" मंजुलाने गर्वसे मुसकराते हुए कहा। "मेरी मांके केश भी ऐसे ही हैं। यह जवाकुसुम का प्रसाद है।"

जवाकुसुम

सर्वोत्तम केश तैल

असली माल मिले, इसके लिए हमारे व्यापारियों या खुद हमसे खरीदना सुरक्षित है।

सि. के. सेन एण्ड कों लिः, जवाकुसुम हाउस, कलकत्ता

H.J.6/546

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेममोहनी बटिका

अगर आप दवा करते-करते हैरान हो गये हों, तो हमारी यह प्रेममोहनी बटिका जरूर इस्तेमाल करिएगा। इसकी तारीफ करना फिजूल है, यह आपको सेवन करने से ही मालूम होगा कि वास्तव में क्या है। इसके सेवन से स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कमजोरी, मधुमेह, बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का निकलना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत होना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना, हिस्टीरिया, उन्माद आदि रोगों को दूर कर अपूर्व ताकत लाती है। और स्त्रियों के लिए भी यही दवा प्रदर, रज, कमजोरी आदि को दूर कर ताकत पैदा करती है। आज ही मँगाकर लाभ उठाइए। मूल्य २० दिन की ४० गोलियों का ३॥) और ४० दिन की ८० गोलियों की पूरी खूराक का ६॥) डाक-खर्च माफ पैकिंग ।-) अलग।

शाही आनन्द तिला

अगर आपको नामर्दी की शिकायत है तो इसी कम्पनी का चुना हुआ तिला इस्तेमाल करिएगा। केवल दो ही सप्ताह इस तिला का उपयोग करने से कामशक्ति में अपूर्व चेतनता आ जाती है। बचपन की अवस्था में लुक-छिपकर की गई भूलों-द्वारा जिनकी कामेन्द्रिय विकृत हो गई हो, उन्हें इस तिला के उपयोग से नव-यौवन प्राप्त होता है। किसी प्रकार के छाले पड़ने का भय नहीं है। एक शीशी में पूरी पन्द्रह दिन की दवा है जिसका मूल्य सिर्फ ३।) है। डाक-खर्च माफ, पैकिंग ।-) अलग।

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १९२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गए, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिल्कुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी आवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हरएक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय ५० स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४।) डाक-खर्च प्रति पिस्तौल १।) अलग कारतूस फी सैकड़ा १॥)

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी-सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सैंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीयत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जाएगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रति शीशी ॥=) दर्जन का ५॥) डाक खर्च १।) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूबसूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जाएगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है।

पता—इंडियन जनरल ट्रेडिंग कम्पनी नं० १० कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार क्यों पीड़ित हैं?

सारिडन

१० मिनट में
सारे दर्द रोक देती है

सारे संसार का प्रिय!

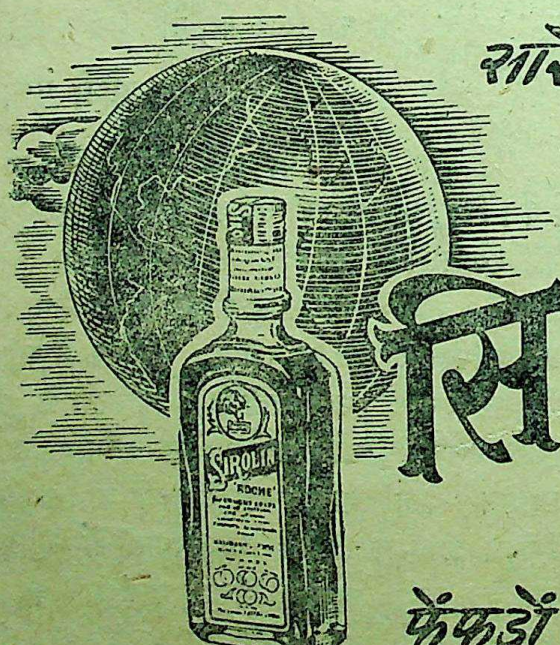

सिरोलिन

'रचि'

फेंफड़ों के विकारों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिर प्रतीक्षा के पश्चात्

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ का द्वितीय संशोधित तथा संवर्धित संस्करण छप रहा है, किन्तु सीमित संख्या में—

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में जिन प्रमुख भाषाओं तथा कवियों की कविताये हैं उनकी प्रमुख नामावली इस प्रकार :—

भाषा :—संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, गुजराती, बङ्गाली, मराठी, सिन्धी, उड़िया, मैथिल, राजस्थानी, मल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, चीनी तथा अँगरेजी।

कवि :—सर्वश्री रवीन्द्रनाथ टागौर, सरोजिनी नायडू, यान नागूची, हिमायूँ कबीर, टी० एल० सवानी, मेरी सीग्रीस्त, बेंजिमन उडबरी, हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, विधुशेखर भट्टाचार्य, क्षमाराव, विदुषी, ाकर, सत्यनारायण कविरत्न, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी, माखनलाल चतुर्वेदी, लकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, 'दिनकर', बच्चन, नेपाली, नरेन्द्र शर्मा, अकबर, सीमाब, गर निजामी, बिस्मिल, खबरदार, झवेरचन्द्र मेघाणी, उमाशङ्कर जोशी, सत्येन्द्रनाथ दत्त, मोहितलाल ूमदार, विजयलाल भट्ट, भास्कर रामचन्द्र, साने गुरुजी, किशनदास वेवस, सुब्रह्मण्यम् भारती, रायण मेनेन, वल्लतोत आदि आदि।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ महात्मा गांधी हीरक - जयन्ती की पुण्य स्मृति में ाशित हुआ था तथा इसके प्रकाशन के म की आय गांधीजी को भेंट कर दी है।

प्रत्येक भाषा की कविता हिन्दी-लिपि छापी गई है तथा उसका अनुवाद भी दिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की ओर से महात्मा ीजी के प्रति यह एक ऐतिहासिक हित्यिक-श्रद्धाञ्जलि है।

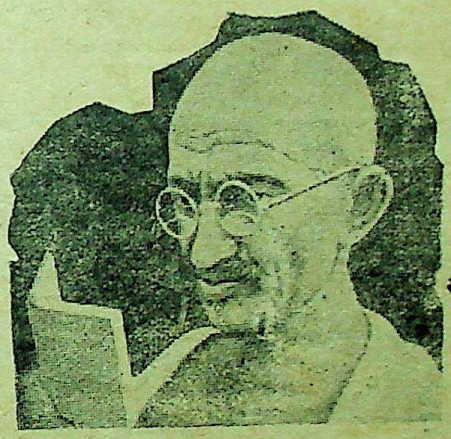

दूसरा संस्करण बड़े आकार-प्रकार में प्रकाशित किया जा रहा है और प्रत्येक पृष्ठ में एक ही रचना देने से ग्रन्थ का सौन्दर्य निखर जाना स्वाभाविक है।

इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया जा रहा है कि प्रकाशन की दृष्टि से यह संस्करण सर्वाङ्गसुन्दर हो।

ग्रन्थ की भूमिका सर्वपल्ली सर राधा-कृष्णन् ने लिखी है। तथा इसके संरक्षक श्रीमान् सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला हैं।

गांधीजी की सम्मति

जो काव्य मेरी स्तुति में लिखे गये हैं, उनके बारे में क्या कहूँ? इतना कह सकता हूँ सही, काफी रिश्रम किया गया है और कोई शुभ परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता।

डा० अमरनाथ झा जी के शब्दों में 'किसी भी भाषा में इससे पहले इस प्रकार का कोई भी ग्रन्थ ं प्रकाशित हुआ, जिसमें इतनी भाषाओं के इतने कवियों की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ भारतवर्ष के सबसे न् पुरुष के सम्बन्ध में लिखी गई हों।

गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ प्रत्येक पुस्तकालय में सहज ही अग्रिम स्थान प्राप्त करेगा और पाठक इस ्थ को बारम्बार पारायण करने में सुख प्राप्त करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस संस्करण का लाभ हरिजन-कोष में दिया जाएगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Godrej 'चाबी' छाप

गोदरेज के

चाबी छाप

'टॉयलेट' (नहाने के)

साबुनों का

नया दाम

हर एक साबुन के चित्र के नीचे बट्टी का वाजबी खुदरा दाम लिखा हुआ है। जहाँ चुंगी, आक्ट्राय, टरमिनल टैक्स और कोई भी दूसरा कर लिया जाता है वहाँ साबुनों का दाम जरा अधिक होगा।

गोदरेज सोप्स, लि०,

हिन्द में वनस्पति 'टायलेट' (नहाने के) साबुन बनानेवाले अग्रगण्य निर्माता।

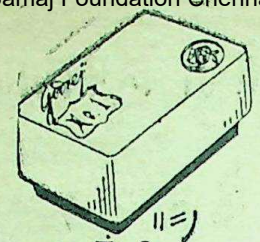

नं० १ ॥=)

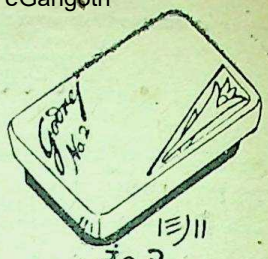

नं० २ ।≡)॥

वतनी छोटा (बेबी)

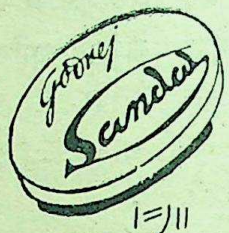

सण्डल ।=)॥

लिमडा (नीम) ।=)॥

खस

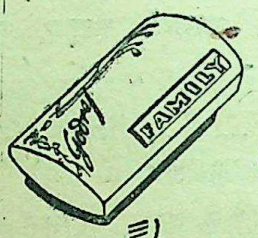

फेमिली ≡)

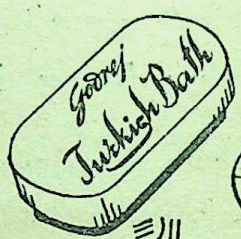

टर्किश बाथ ≡)॥

शेविंग स्टिक ॥-)॥ (टिन) ।≡)॥ (कारटन)

*शेविंग साबुनों का दाम नहीं

शेविंग

१९०१ से मशहूर

ममीरा और सच्चे मोतियों का सफेद सुर्मा

जिसकी जाँच व तस्दीक श्रीमान् मशहूर डाक्टर डबल्यू० आर० क्राइपर साहब बहादुर एफ० सी० एस० ए०, आर० एस० एम० फेलो, आफ दी इन्स्टीट्यूट आफ केमिस्ट्री लन्दन ने की है।

लन्दन व मुल्क रूस व अफरीका वगैरह के प्रसिद्ध डाक्टरों और बड़े-बड़े डाक्टरों व राजाओं व हकीमों ने नेत्र-रोगों में लगवाकर लिखा है कि ममीरा और सच्चे मोतियों का सफेद सुर्मा नेत्ररोगों के लिए बहुत मुफीद व सबसे अच्छी व बहुत जल्द गुण दिखानेवाली दवा है। बड़े-बड़े डाक्टर नेत्ररोगों में और दवाई को छोड़कर हमारे सुर्मा को लगवाते हैं। दाम १ तोला ६) ½ तोला ३॥) नमूना १) डाक खर्च ॥)

राजनरायन निगम

आर्य नगर, कानपुर

अत्यन्त उपयोगी!

उद्यम

धान्य-अकाल-निवारण विशे

* अन्नमन्त्री माननीय रा० कृ० पटैल का
* धान्य-अकाल-निवारण सम्बधी उपयुक्त
* अत्यन्त प्रभावशाली बीस व्यङ्गचित्र

सर्वत्र अत्यन्त लोकप्रिय होनेवाले इस विशेषाङ्क पढ़िए। धान्य-अकाल-निवारण विशेषाङ्क की बहु प्रतियाँ शेष हैं। पाठकों, सार्वजनिक संस्थाओं, न्यू की माँग की अधिकता के कारण—जिनका आर्डर होता है उन्हें पहले अङ्क भेजा जाता है। अ वार्षिक मूल्य ५॥) भेजकर अगस्त १९४६ से ग्राहक को धान्य-अकाल-निवारण विशेषाङ्क अवश्य ही मिले

उद्यम मासिक, धर्मपु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-भारती

बालक-बालिकाओं के लिए कविता का अपूर्व ग्रन्थ

पण्डित सोहनलाल द्विवेदी १९२१ से बालकों के लिए कविताएँ लिख रहे हैं। पिछले पचीस वर्षों से बराबर लिखते रहने के कारण ही वे बालकों के एक सर्वश्रेष्ठ कवि बन सके हैं। अभी तक बालकों के लिए उनकी कई कविता-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। देश के नेता और विद्वानों ने इन पुस्तकों की बड़ी प्रशंसा की है।

यह पढ़कर आपको बड़ी प्रसन्नता होगी कि हम द्विवेदी जी की अच्छी से अच्छी कविताओं को एक बड़ी कविता-पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। बालक-बालिकाओं के लिए इससे बढ़कर और सुन्दर हिन्दी में दूसरी पुस्तक न मिलेगी। इस पुस्तक का नाम **बाल-भारती** है।

छोटे बच्चे इसकी रंगीन तसवीरें देखकर और सरल कविताएँ पढ़कर अपना दिल खुश कर सकते हैं। बड़े बच्चे इसकी कविताएँ पढ़कर, मनोरंजन के साथ-साथ बहुत अच्छी बातें जान सकते हैं। माता-पिता भी इन कविताओं को पढ़कर, एक बार अपने बचपन का आनन्द उठा सकते हैं। इस प्रकार, इस एक ही पुस्तक से घर भर के लोग अपने समय को सुखपूर्ण बना सकते हैं।

बाल-भारती बड़ी सज-धज से छापी जा रही है। अनेकों रंगीन तथा सादे चित्रों से सजी इसकी कविताएँ पढ़ने में दूना आनन्द प्राप्त होगा। पृष्ठ-संख्या लगभग तीन सौ। मूल्य ३॥) । 'बाल-भारती' पाने के लिए पहले से ही सूचना दीजिए, क्योंकि कागज की कमी के कारण सीमित संख्या में ही यह प्रकाशित की जा रही है।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

जड़ाऊ ऊँचे दर्जे की कलाई-घड़ियाँ

स्विस निर्मित लीवर मशीन, सच्चा समय देनेवाली, मजबूत मशीनरी। पाँच साल की गारंटी। क्रोमियम केस की कलाई घड़ी, गोल साइज २०॥) रु०। उत्तम दर्जे की २३॥) रु०। स्त्रियों के लिए २६॥) रु०; उत्तम २८॥) रु०। दस साल की गारंटी। आयताकार ३५॥) रु०। अच्छी और चमकीले क्रोमियम केस की ३८॥) रु०; उत्तम ४०॥) रु०। रोल्ड गोल्ड वाली ४८॥) रु०, उत्तम दर्जे की ५२॥) रु०, पेकिंग और डाकखर्च ॥) दो घड़ियाँ लेने पर डाकखर्च माफ़। सूचीपत्र अप्राप्य।

Correspondence in English.

कलकत्ता वाच कम्पनी Sec. 20

पो० बाक्स नं० १२२०३, कलकत्ता

काबुल काशमीर के उपहार मँगाएँ

शुद्ध हींग

प्रति १०० तोला १६), केसर असली ६) तोला, शिलाजीत २० तोला डिब्बी ५), अकसीर काबुल घात की दवा २॥) सूचीपत्र मँगाइए।

पता—मैनेजर काबुल फ्रांटियर स्टोर्स, हींगघर, डेरा इस्माइल खाँ, सरहदी सूबा

अमर ज्योति

यह पुस्तक बाबू निशीथकुमार राय, बी० ए० की कहानियों का संग्रह है जिस में अनुशोचना, तावीज, चरित्रम्, नहीं, अमर ज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरञ्जन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आश्रय न करके कथा का चित्रण किया है। पूँजी पतियों और मज़दूरों के सङ्घर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पड़ने की नहीं पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इस में २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीता

केशों को स्वास्थ्य रखने की दिशा में 'रीता' का नया क़दम है। केशों की जड़ों को यह स्वाभाविक गति से बढ़ने की शक्ति देता है, जिसकी बहुधा कमी रहती है। यह केशों की रूसी को रोकता और गन्देपन को दूर करता है। केशों को लम्बा कर असाधारण चमकीला और आकर्षक बना देता है। कड़े बालों को यह देदीप्यमान और लहरदार बना देता है। रीता की एक शीशी लीजिए और अपने केशों को पुष्ट बनाकर नया सौन्दर्य प्रदान कीजिए। सभी जगहबेचा जाता है। मूल्य ।।।=) पन्द्रह आने प्रति शीशी।

RITA

HAIR TONIC

जुकाम से आप जागते न रहिए !

यदि जुकाम से आपका सिर भारी हो और आपको परेशान किए हो, तो कारसोड्राइन द्वारा इससे छुटकार पाइए। हर नथने में श्वास लेनेवाल यन्त्र (Inhaler) डालिए, वैज्ञानिक मिश्रण की सुखद भाप को सुँघिए। तीस सेकण्ड में ही सारी घबराहट गायब हो जाएगी। कारसोड्राइन नाक की सूजी झिल्ली को ठीक करता बलग़म को सुखा देता और इस प्रकार आपको मनमाना श्वास लेने योग्य कर देता है। इसका असर फौरन होता हैं; लेकिन कोई खतरा नहीं—इतना सुरक्षित है कि एक बच्चा भी कारसोड्राइन काव्य वहार कर सकता है। इसका प्रभाव पीड़ा-नाशक है जिससे दर्द और बेचैनी हट जाती और जलन शान्त हो जाती है। दमा, नकसीर, जुकाम और दमा से पहले आनेवाले बुखार के लिए प्रशंसित। आपके दवाफ़रोश के यहाँ प्राप्य। नया श्वास लेनेवाला यन्त्र (Inhaler) आसानी से जेब या पर्स में ले जाने योग्य।

कारसोड्राइन

इँग्लैण्ड में प्रस्तुत
ई० ग्रिफ्थस ह्यूघेस लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविवर पं० सोहनलाल द्विवेदी-रचित काव्य-ग्रन्थ

भैरवी

इसकी राष्ट्रीय कविताएँ राष्ट्रप्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस काव्य की विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य २) दो रुपये।

पूजागीत

द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का सञ्चार करती है। कैदरवेट पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

कुणाल

इसमें अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है, जिसे पढ़ते हुए अशोक कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राजसंस्करण २।

विषपान

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर कवि ने इस खण्ड-काव्य की रचना की है। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की खास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

झरना

इसमें पण्डित सोहनलाल जी की बालकोपयोगी २५ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले, सुनहली धूप, लहर, सब पर जल बरसाता बादल, दूर्वा का गीत और नीम का पेड़ आदि सुन्दर कविताएँ हैं। अच्छे कागज पर अच्छी स्याही में छपी पुस्तक का मूल्य ।॥) केवल बारह आने।

सचित्र हिन्दी-महाभारत

महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रङ्गीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे हुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लखा हुआ होने के कारण स्त्री बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक लिए उपयोगी है। मूल्य ७०) सत्तर रुपये।

हिन्दी-महाभारत

इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही धुर और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत तरह इसमें भी सादे और रङ्गीन चित्रों की भरमार है र सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबालवृद्ध-नेता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १५।-) पन्द्रह ये पाँच आने।

कर्तव्य-शिक्षा

प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदाचारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति

कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

दर्शन और जीवन

लेखक, श्री सम्पूर्णानन्द

इस पुस्तक में दर्शन के साथ जीवन का अनिवार्य सम्बन्ध दिखलाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन क्यों पढ़ना चाहिए, इस प्रश्न पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है। दर्शनशास्त्र के प्रेमियों के निमित्त पुस्तक संग्रहणीय है। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणायाम विज्ञान और कला

डाक्टर शोजातुरो ओटेब नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के णायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। ल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नए से नए शी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के द्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया गया है। मूल्य ।-) एक रुपया पाँच आने।

वाल्मीकीय रामायण [सचित्र] दो भाग

महाभारत की तरह महर्षि वाल्मीकि का रामायण भी न्दू-संस्कृति का इतिहास है और यह महाभारत से भी चीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। न्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था। उसी कमी को पूरा रने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित या है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, मझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥=) रुपये ग्यारह आने प्रतिभाग।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामीजी का प्रामाणिक जीवन-चरित तथा उनके ग्रन्थों संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है। इसकी रचना न्दी के प्रसिद्ध विद्वान् बाबू श्यामसुन्दरदास ने की है। ल्य १) रुपया।

रामचरितमानस

टीकाकार, स्वर्गीय पण्डित रामेश्वर भट्ट

इस पुस्तक में भट्टजी ने गोस्वामीजी की रचना का र्म बहुत ही सरल और सुमधुर भाषा में समझाया है। स संस्करण में इकरङ्गे और तिरङ्गे चित्रों की भरमार है। ल्य ४॥=) चार रुपये ग्यारह आने।

कवितावली

टीकाकार रायबहादुर पं० चम्पाराम मिश्र, बी०ए०, एम०ए० स-बी०) गोस्वामी तुलसीदास की कवितावली की एक बहुत विद्वत्तापूर्ण टीका। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

विनयपत्रिका

(सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रच विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गो के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टी पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण

टीकाकार, सत्यनारायण पाण्डेय। कुण्डलिया लिखित गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण, सुन्द सहित। मूल्य ४) चार रुपये।

संक्षिप्त सूरसागर

इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त पद्मावत

रायबहादुर, बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० द्वारा स

मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त सं मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त बिहारी

महाकवि बिहारी के दोहों का यह बहुत अच्छा है। बिहारी की सतसई में जितने दोहे अधिक अर्थ छाँटकर इसमें से निकाल दिए गए हैं। मूल्य १)

चारण

इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

विश्व की विभूतियाँ

देश-विदेश के १२ सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

महिलाओं के उपयुक्त पुस्तकें

माँ और बच्चा

बच्चों का पालन-पोषण करने तथा उन्हें सबल बनाने के लिए जिन-जिन बातों का जानना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वे सभी बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

सती

इसमें दक्षसुता सती पार्वती की कथा सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

सुशील कन्या

इसे पढ़कर बालिकाएँ स्वास्थ्य, सदाचार तथा नीति आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगी। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

भारतीय विदुषी

भारत की चालीस प्राचीन तथा अर्वाचीन विदुषी देवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

पतिव्रता

सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री और शकुन्तला इन पाँच पतिव्रताओं के चरितों का संग्रह। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

पतिव्रता गान्धारी

कौरवों की माता गान्धारी का जीवन-चरित। इसमें प्रसंगवश महाभारत की प्रायः पूरी कथा का सारांश आ गया है। मूल्य ॥-) तेरह आने।

सावित्री

जिस सावित्री के नाम पर घर-घर की बहू-बेटियाँ वटसावित्री का व्रत करती हैं उसी सावित्री की दिव्य कथा इस पुस्तक में अच्छे ढङ्ग से लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

दमयन्ती

इसमें पतिव्रता-शिरोमणि महारानी दमयन्ती की उपदेशप्रद कथा बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

सौभाग्यवती

स्त्रियों के लिए एक उपदेशपूर्ण पुस्तक। मूल्य ।-) पाँच आने।

काव्य-ग्रन्थ

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि ठाकुर गोपालशरण सिं की काव्य-कृतियाँ

माधवी

माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के स और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये

ज्योतिष्मती

इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कविता संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशे स्थान रखती हैं। खासकर इसमें संग्रह किए गए छोटे-छो गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २) दो रुपये पाँच आने।

मानवी

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साह ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्द मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने

सञ्चिता

इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठा साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापू अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कविता हैं। मूल्य ३) तीन रुपये।

सुमना

'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है। इस ५३ गीत हैं, जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुर शब्द-शब्द द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सर भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे मूल्य २) दो रुपये।

पद्यमाला

इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेल के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्य-रसावतार स्वर्ग पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुट कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य १) एक रुपया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुस्रवा

लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में वन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी की रचनाओं को पढ़कर जीवन को रससिक्त बनाइए। य १।–) एक रुपया पाँच आने।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित गए थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। य ।।।) बारह आने।

एकादशी

लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'

इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं संग्रह है। ये सभी कविताएँ पौराणिक आख्यायिकाओं आधार पर नए ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।–) रुपया पाँच आने।

दैत्यवंश

लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह

इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभाव- ी नरेशों का वर्णन व्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी ों के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देवपुरस्कार ा जा चुका है। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला

आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं र्ण संग्रह। मूल्य २।।=) दो रुपये ग्यारह आने।

तक्षशिला काव्य

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य्य आदि ोचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया मूल्य ३) तीन रुपये।

हल्दीघाटी

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय

(इस महाकाव्य पर दो हजार रुपये का देवपुरस्कार है।) इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से कविता में किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दी युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फिल्म खिंच जाएँगी। मूल्य २।।=) दो रुपये ग्यारह आने।

नव-सतसई-सार

गोस्वामी तुलसीदास से लेकर श्री वियोगी ह की नव सतसइयों का सारांश इस पुस्तक में दिया मूल्य २।।=) दो रुपये ग्यारह आने।

सरस सुमन

इस पुस्तक में पवन, भानु, चपला, जुगनू और पर पाँच सुन्दर कविताएँ संगृहीत की गई हैं। कवि निरीक्षण में कितना कुशल है, इस बात का परिचय कविता के द्वारा प्राप्त होता है। मूल्य ।।=) ग्यारह

गङ्गावतरण

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीयु जगन्नाथदास 'रत्नाक लिखा हुआ यह एक खण्ड-काव्य है। संयुक्त प्रान्त की हि एकाडमी ने इसकी उत्तमता पर मुग्ध होकर रत्नाकरजी का पुरस्कार दिया था। मूल्य १।) एक रुपया चार आने

खैयाम की रुबाइयाँ

विश्वविख्यात कवि उमर खैयाम की रुबाइयों हिन्दी संस्करण मूल फ़ारसी ग्रंन्थ से ही अनुवादित तैयार किया गया है। पुस्तक दो रङ्गों में छापी और इसमें नौ भावपूर्ण तथा नयनाभिराम चित्र गये हैं। मूल्य ५।–) पाँच रुपये पाँच आने।

सुबहवतन

स्वर्गीय पण्डित व्रजनारायण 'चकबस्त' लखनऊ देवनागरी अक्षरों में छापी गई, उर्दू कविताओं का उर्दू न जाननेवाले पाठकों की सुविधा के लिए कवित आनेवाले कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। २।।=) दो रुपये ग्यारह आने।

राजनीति-सम्बन्धी पुस्तकें

शासक

सुप्रसिद्ध राजनीति-विशारद निकोलो मेकियावि 'प्रिंस' नामक पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर। इसमें के कर्त्तव्यों तथा राज्य-शासन-प्रणाली का बहुत ही विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी-मीमांसा

लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के तत्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। नों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ४) चार रुपये।

चुने हुए उपन्यास

राजदुलारी

इस सामाजिक उपन्यास में कलकत्ते के व्यापारिक क्षेत्र म्बन्ध रखनेवाले उत्तर भारतीय हिन्दुओं की सामाजिक था पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १।–) एक रुपया आने।

शुभदा

श्री शरच्चन्द्र के उपन्यासों से हमारे पाठक भली भाँति चत हैं। अतः विशेष विवरण देना व्यर्थ है। इसमें का पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण मिलेगा। १।) एक रुपया आठ आने।

शीलादेवी

शिक्षापूर्ण तथा चातुर्य्यमय घटनाओं से भरा हुआ मनोहर सिक उपन्यास। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

छुटकारा

क निठल्ले और बेरोज़गार भाई की सहायता नशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात न्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य एक रुपया पाँच आने।

युद्ध और शान्ति

नुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के राड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन के चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों च-तान को बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन त्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।–) पये पाँच आने।

बलिदान-मंदिर

आत्म त्याग की अपूव कथा। मूल्य २) दो रुपये।

कपाल-कुण्डला

यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १) एक रुपया।

नवीन संन्यासी

इस उपन्यास में ग्राम्य और नागरिक जीवन का यथार्थ और सुन्दर चित्रण किया गया है। हास्य और विनोद की सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में है। मूल्य ४॥=) चार रुपये ग्यारह आने।

रामलाल

ग्रामीण समस्याओं से परिपूर्ण एक मौलिक सामाजिक उपन्यास। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

धोखा-धड़ी

सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करनेवालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही दुःख सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का मुख्य विषय है। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

पत्र-पुष्प

इसमें प्रभात बाबू की सामाजिक समस्या, समाधान, पिछा, जासूसी का जञ्जाल, अद्वैतवाद, कन्यादान और सतीदाह नामक कहानियों का संग्रह किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

गल्प-गुच्छ

(चार भाग) श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियों का संग्रह गल्पगुच्छ की एक-एक कहानी एक-एक भाव का सजीव चित्र है। आश्चर्य, भय, शोक, हास्य आदि भावों का ऐसा सुन्दर चित्रण कहीं न मिलेगा। मूल्य पहले भाग का १) एक रुपया और शेष प्रत्येक भाग का १।–) एक रुपया पाँच आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरमोहन

रवीन्द्र बाबू के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास गोरा का हिन्दी-अनुवाद। पुस्तक दो भागों में है। मूल्य प्रत्येक भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सोहराब-रुस्तम

फारसी भाषा में शाहनामा नाम की एक बहुत ही प्रसिद्ध पुस्तक है, जिस में बहुत-से शूरवीरों की कहानियाँ लिखी गई हैं। यह कहानी उसी में से ली गई है। मूल्य ।॥–) तेरह आने।

कथा-सरित्सागर

इस पुस्तक में आद्योपान्त बड़ी सुन्दर कथाएँ संगृहीत हैं। प्रत्येक कथा अपने साथ कुछ न कुछ दृष्टान्त रखती है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

उत्सर्ग

छत्रपति शिवाजी की सहन-शीलता तथा कमला-थोरात के देश के लिए किए गए अनुपम आत्म-त्याग का नाटक के रूप में किया गया वर्णन। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

वेणीसंहार नाटक

संस्कृत के वीररस-प्रधान वेणीसंहार नामक नाटक का हिन्दी-अनुवाद। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

सोहाग-बिन्दी तथा अन्य नाटक

यह पुस्तक कुछ एकांकी नाटकों का संग्रह है और उन नाटकों में भी सामाजिक समस्याओं पर विचार किया गया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैकब्यथ

रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०-द्वारा किया गया जगद्विख्यात कवि शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का अनुवाद। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

पुरु और अलेक्जेण्डर

सुप्रसिद्ध वीर अलेक्जेंडर से मोर्चा लेनेवाले भारत के एकमात्र वीर 'पुरु' के अद्भुत पराक्रम तथा शौर्य का नाटक के रूप में चित्रण। मूल्य ।॥≡) ग्यारह आने।

राजा दिलीप नाटक

इसमें रघुवंश में वर्णित राजा दिलीप की कथा रूप में लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य १)

आलोचना-साहित्य

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भाग)

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै पार्वतीमङ्गल तथा जानकीमङ्गल का आलोचनात्मक इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह

मतिराम-मकरन्द

इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मति प्रसिद्ध ग्रंथों--मतिराम सतसई, ललित-ललाम और का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। पुस्तक का मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

सचित्र हिन्दी कोविद-रत्नमाल

(दो भाग) पहले भाग में भारतेन्दु से लेक समय तक के हिन्दी के चालीस नामी लेखकों और के सचित्र और संक्षिप्त जीवनचरित दिये गये दूसरे भाग में पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी तथा पंडि राव सप्रे बी० ए० आदि विद्वानों के तथा विद्युत जीवन-चरित छापे गये हैं। हिन्दी में यह पु है। पहले भाग का मूल्य २।–) दो रुपये दूसरे भाग का २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की कुछ

कालिदास की निरंकुशता

संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि कालिदास की आलोचना। मूल्य ।।) आठ आने।

प्राचीन चिह्न

इस पुस्तक में स्वर्गीय आचार्य पंडित द्विवेदी ने अपने देश के कई पुराने नगरों, मंदिरों आदि के विवरण तथा उनकी प्राचीन का वर्णन किया है। मूल्य १) एक रुपया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास और पुरातत्त्व-सम्बन्धी पुस्तकें

अलबेरूनी का भारत

महमूद ग़ज़नवी के समय में अलबेरूनी नामक एक मुसलमान पर्यटक भारतवर्ष में आया था और उसने यहाँ की अवस्था का ज्ञान प्राप्त करके यह उत्तम ग्रन्थ लिखा था। मूल्य तीनों भागों का ९-) नौ रुपये एक आना।

पुरातत्त्वनिबन्धावली

महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक में संगृहीत किए गए निबंधों के लिखने में देश-विदेश के कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन तथा दुर्गम स्थानों के भ्रमण से प्राप्त की गई अगाध ज्ञानराशि का उपयोग किया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

हुएनसाँग का भ्रमण-वृत्तान्त

ईसा की सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष आये हुए हुएनसाँग नामक चीनी यात्री का भ्रमण-वृत्तान्त। इसमें भारत के मुख्य-मुख्य स्थानों का वर्णन है और यहाँ की तत्कालीन युग की सामाजिक अवस्था पर भली भाँति प्रकाश डाला गया है। मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

संसार का संक्षिप्त इतिहास

(प्रथम व द्वितीय भाग) अनुवादक, श्री मदनगोपाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०। यह पुस्तक अँगरेजी के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० जी० वेल्स के इतिहास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें पृथ्वी के आदिकाल से लेकर जीसस के निर्माण के पूर्व तक की कथा सक्रम वर्णित है। द्वितीय भाग में जीसस के निर्माण से लेकर संसार के पुनर्निर्माण तक का वर्णन आ गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ४) चार रुपये।

यात्रा-वर्णन

स्वदेश-विदेश-यात्रा

लेखक, श्री सन्तराम, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

इस पुस्तक में काश्मीर, कुल्लू और आस्ट्रेलिया की यात्रा का वृत्तान्त दिया गया है। इसके सभी अध्याय अति ही रोचक हैं। पुस्तक में चित्रों की भरमार है। जो आप काश्मीर या कुल्लू की सैर के लिए जाना चाहते हों चलने से पहले इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य =) एक रुपया ग्यारह आने।

योरप-यात्रा में छः मास

इस पुस्तक को पढ़कर आप योरप की सभ्यता, वहाँ के भिन्न-भिन्न देशों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अवस्था तथा मुख्य-मुख्य स्थानों का हाल घर बैठे जान सकेंगे। मूल्य ४) चार रुपये।

विदेश की बात

योरप के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य देशों की यात्रा का रोचक वृत्तान्त। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

ईरान

लेखक, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

यह पुस्तक अतीत और वर्तमान ईरान का सजीव चित्र है। राहुल जी ने ईरान के इतिहास पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश तो डाला ही है, साथ ही वर्तमान ईरान का भी, वहाँ की अवस्था से व्यक्तिगत रूप से परिचित होकर, विवरण दिया है। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मेरी लद्दाख-यात्रा

लेखक, महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन। यह महा-पंडित श्री राहुल सांकृत्यायन का बहुत ही रोचक और कितनी ही मूल्यवान् एवं ज्ञातव्य बातों से भरा हुआ भ्रमण वृत्तान्त है। पुस्तक में कई दर्शनीय स्थानों के चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १) एक रुपया।

एक आत्म-कथा

मुंशी लुत्फुल्ला नामक उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रतिष्ठित विद्वान् की आत्मकथा का सारांश। इसमें विलायत-यात्रा तथा मार्ग में पड़नेवाले स्थानों का तत्कालीन वर्णन दिया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

इस्लामी दुनिया का सिरताज

इस पुस्तक के बारे में हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र भारत का मत है, "पुस्तक में तुर्की साम्राज्य के अभ्युदय और पतन का तथा नव टर्की राष्ट्र की स्थापना का केवल इतिहास ही नहीं वर्णित किया गया है, बल्कि लेखक की राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत लेखनी ने उसमें एक नया जीवन डाल दिया है"। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्यकला

साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलता-पूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है, किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना एम० ए०, बी० टी० हैं। मूल्य २) दो रुपये।

मेरी आत्म-कहानी

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के जन्मदाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के कार्यों की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि

(पहला भाग) लेखक, आचार्य पंडित रामचन्द्र जी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपया।

नया प्रकाशन

नवयुवकों के लिए हवाई शिक्षा

लेखक, पं० श्रीराम वाजपेयी

(नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन)

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। स्क्वाड्रन लीडर टी० एस० विर्क, फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस० वाई० रानाडे और सारजेंट हमजा के व्याख्यान सुनकर और इस विषय की पुस्तकें पढ़कर लेखक ने इस पुस्तक की रचना की है। अब हवाई जहाजों का युग है, इस कारण इस विषय की थोड़ी-बहुत जानकारी हर एक भारतवासी को होनी आशा है, अपने विषय की इस अनोखी पुस्तक लाभ उठावेंगे। पुस्तक सचित्र है। अन्त में शब्द-कोष गया है जिससे पाठकों को पुस्तक समझने में बड़ी मिलेगी। आवरण-पृष्ठ रंगीन है। मूल्य केवल १)

अल्पता की समस्या

लेखक, पं० वेङ्कटेशनारायण तिवारी, एम०

"साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार मो ऊल-जलूल दावे पेश करना और उन माँगों होने पर मुल्कफ़रोशी पर कमर कस लेना किसी भक्त का न फर्ज है, और न होना चाहिए पुस्तक की पृष्ठभूमि पर तथ्यों और आँकड़ों के महान् समस्या का हल आप पायँगे। आज जब यिक तनातनी अपनी चरम सीमा पर पहुँचने कर रहा है, तब यह पुस्तक हिन्दू-मुसलमान लिए समान रूप से हिल-मिलकर रहने का में सहायक सिद्ध होगी।

पृष्ठ-संख्या २०६ और मूल्य २) दो रुपये

कामायनी का विवेचन

लेखक, श्री व्रजभूषण शर्मा, एम०ए०

कामायनी इस युग की अन्तिम देन है। किन्तु गहनता, कथा की सूक्ष्म अन्विति तथा भाषा की और लाक्षणिता के कारण साधारण हिन्दी-प्रारंभिक अंशों के आगे नहीं बढ़ पाते। हिन्दी की के विद्यार्थी भी प्रायः बिना इस ग्रंथ के मर्म को परीक्षा देते आ रहे हैं। हिन्दी के इन पाठकों विशेष रूप से उच्च कक्षा के विद्यार्थियों की उन को ध्यान में रखकर कामायनी का विवेचन प्रस्तु गया है। ग्रंथ के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक को स्पष्ट किया गया है; काव्य सम्बन्धी विशेष अध्ययन किया गया है और भाषा के स्वरूप का किया गया है। परिशिष्ट में कठिन स्थलों की गया है। पुस्तक बिलकुल नई दृष्टि से लिखी मूल्य १) एक रुपया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

तेज व बढ़िया सुगन्ध, गहरा रंग और कम दाम इन सबने मिलकर लिपटन की व्हाइट लेबुल को बाजार भर की सर्वश्रेष्ठ चाय बना रक्खा है।

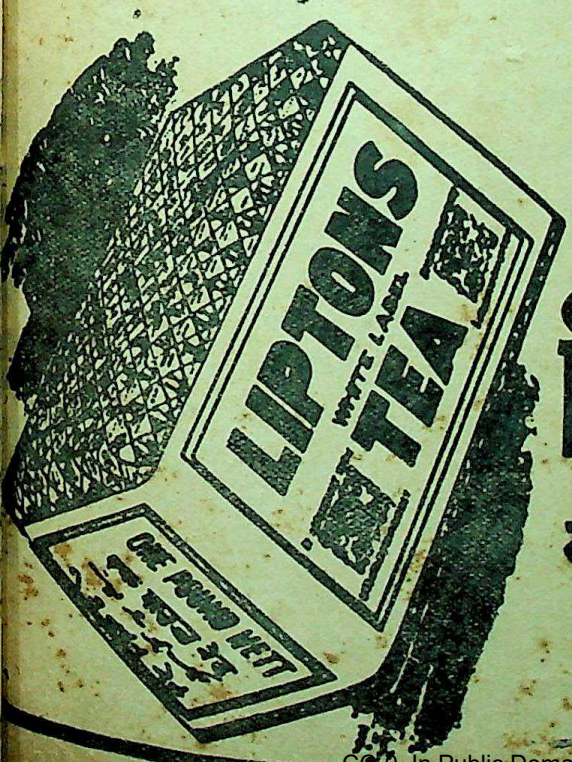

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

सर्वोत्तम भारतीय पत्ता चाय

LTK 84 W

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति में भी

ओह! युद्ध के ये छः वर्ष! नाश और प्रलय के छः वर्ष! कितनी मेहनत, कितनी कोशिश, कितने उपाय करने पड़े, तब कहीं जाकर शान्ति की झलक दिखी। पुनर्निर्माण भी कम दुःसाध्य न होगा। फिर भी, हमारी मेहनत सफल हुई, हम कामयाब हुए, हमारा लड़ना हमारे काम आया।

युद्ध की तरह

करोड़ों सिपाहियों को आज तक सर्वदा सहारा देने व आराम पहुँचाने वाली चाय, अब शान्ति के सुखमय दिनों में भी अपना फर्ज अदा करेगी। चाय का भरोसा कीजिये; इसके समान दोस्त नहीं; आप थके हों, उदास हों, अनमने हों, निर्जीव-से हो रहे हों, चाय आपको जो साहस देगी वह और कोई पेय नहीं दे सकता। मानव जाति की प्रगति में चाय आपकी सहायता करेगी।

चाय का सहारा लीजि

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C

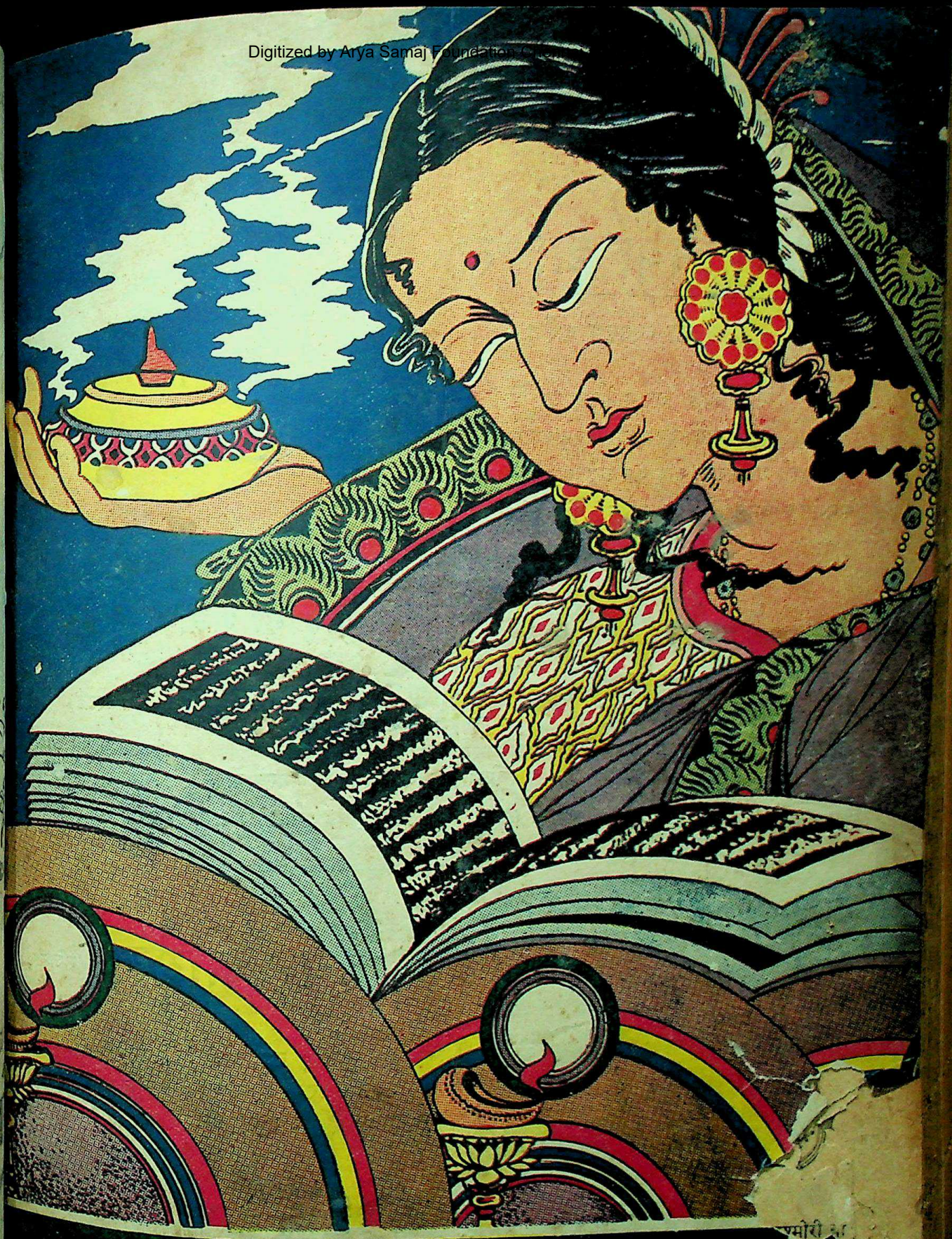

CC-0. In Public Domain. C

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

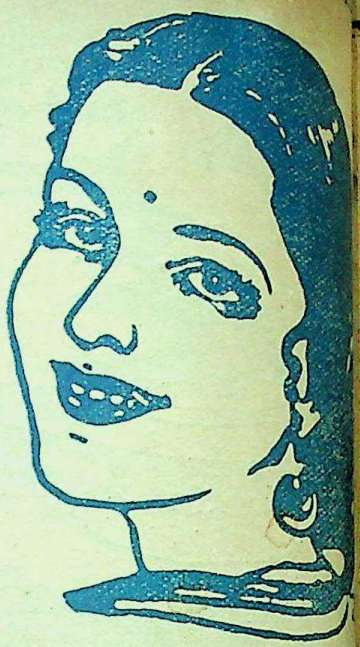

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।
बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।
बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

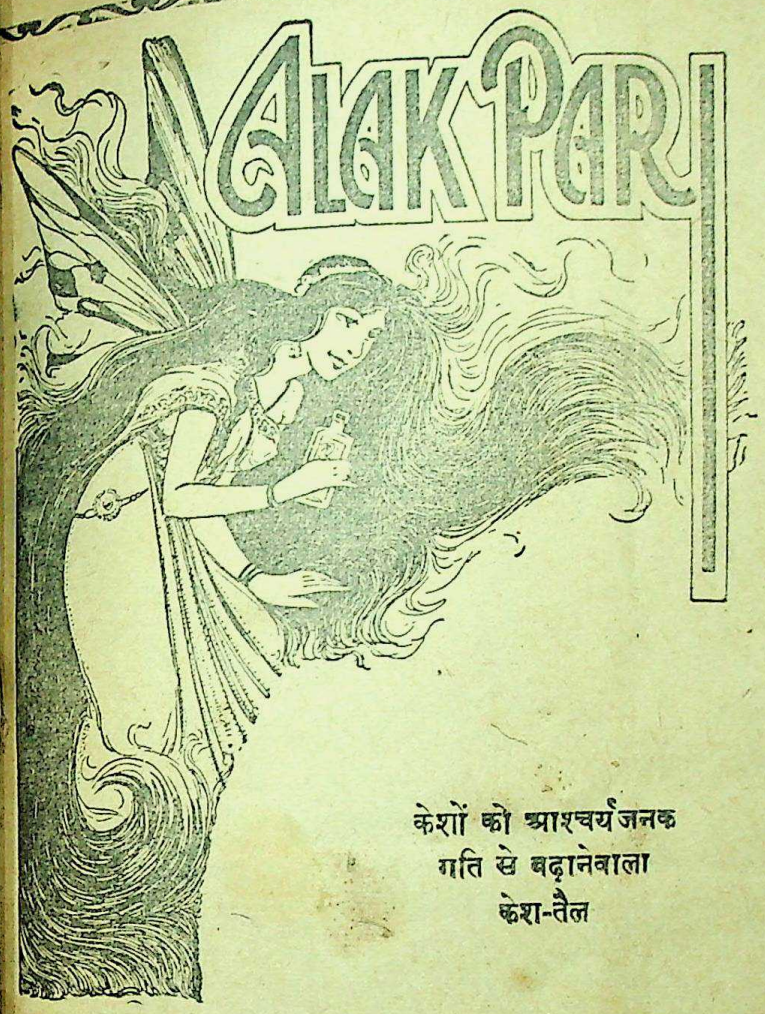

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।
दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।
तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।
चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं।
फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जायँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

प्रतिष्ठित महिलाओं की सम्मतियाँ—

'अलकपरी' से बहुत लाभ है। १ शीशी और तुरन्त भेजिए।
१५-७-४५ कृष्णाकुमारी, धर्मशाला (पंजाब)।

Alak Pari is proving of much use to me. Please send me three more bottles.
4-8-45 Mrs. S. Mandal, 45, The Mall, Lahore.

'अलकपरी' में केशों को बढ़ाने के लिए विद्युत् की शक्ति वर्त्तमान है। मैंने इसे केशों के लिए आश्चर्यजनक गुणकारी पाया है। कृपया ३ शीशियाँ तुरंत भेजें।
७-८-४५ सत्यवती देवी, पासना, जौनपुर।

'अलकपरी' की ५ शीशियाँ इस्तेमाल कीं। बहुत लाभकारी तेल है। कृपया ३ बोतलें शीघ्र भेजें।
३०-८-४५ शान्तिकुमारी, कोटखाई, शिमला

व्यवस्थापिका—'अलकपरी' नया कटरा, इलाहाबाद।

हमारे एजेन्ट—

नई दिल्ली—रायल स्टोर्स, ३३, गोल बाज़ार।
मेरठ—त्यागी ब्रदर्स, बेली बाजार।
बरेली—यूनाइटिड कमर्शियल सिंडीकेट, भू।
राजनंदगाँव—रामनारायण हरीदास सोनी।
आगरा—प्रियादास घनश्यामदास परफ्यूमर्स, काश्मीरी
लखनऊ—सालिग्राम मेहरोत्रा, ६, अमीनाबाद पार्क।
जबलपुर—बाबूलाल राजाराम चौरसिया, गोविंदगंज।
जोधपुर—मेडिकल स्टोर्स, सराफा बाजार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

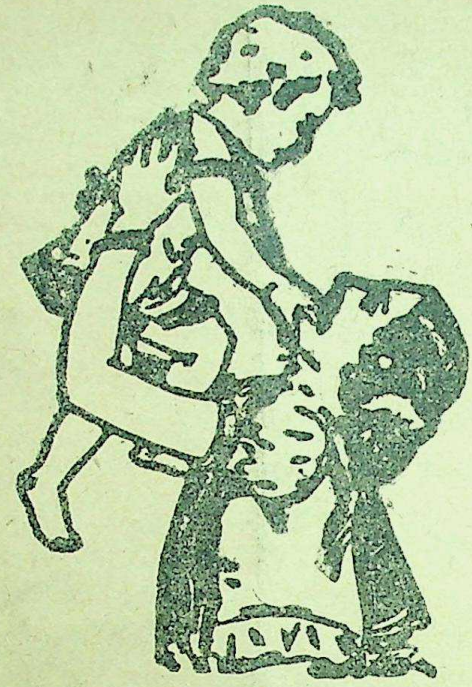

कमज़ोर और कृश बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताक़तवर, पुष्ट और पुस्त बनते हैं।

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, खून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झण्डु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य औषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—एल० एम० धोलकिया एण्ड ब्रादर्स, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल आर० पारीख, चांदनी चौक, देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

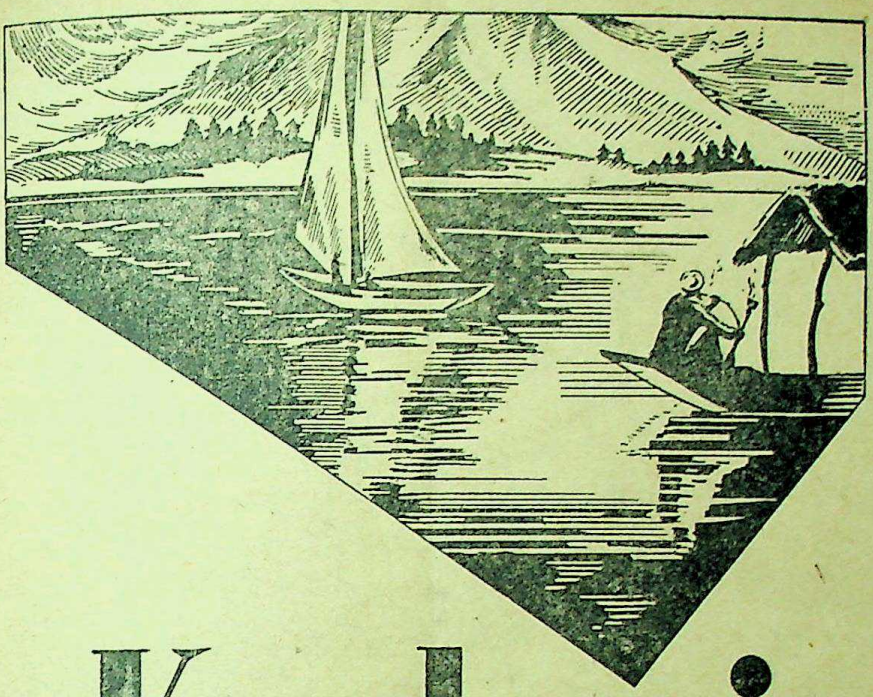

Kashmir

THE VALLEY OF LAKES

छुट्टियों में सैर करनेवालों के लिए काश्मीर की झीलें खास आकर्षण हैं। शीतल स्वच्छ पानी में तैरिए और स्नान कीजिए। इस झील में कमल और कुमुदिनी के पूर्ण विकसित फूलों के बीच व्यतीत की गई चाँदनी रात आपको अपने जीवन में सदा याद आयगी।

KAILAS

K6

TRAVEL PARTICULARS FROM

THE DIRECTOR, VISITORS' BUREAU, SRINAGAR.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरी जी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निःस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज़ और मरीज़ जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना नाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनायें आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरी जी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। रत्नागिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्रायें उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्रायें एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरी जी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिक जन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मदखाँ साहब ने बाबा जी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम बाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बाबू हरिदास जी ने चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर [illegible]र्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल [illegible] देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं [illegible]आप भी बनाकर लाभ उठावें।

[illegible] फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल [illegible]पूर १॥ माशा, एक घण्टा घृतकुमारी [illegible] के कुज्जे में मजबूत बन्द कर पाँच सेर कण्डों [illegible]बारा एक तोला हरताल बकीं शुद्ध १॥ माशा [illegible] में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला [illegible]॥ माशा में चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दें। फिर उसको, जब इन्द्रवधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दें। अपूर्व कायापलट तैयार है। चार-चार चावल सायं [illegible] मलाई के साथ खावें ऊपर मिश्री-मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन [illegible] हफ्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, [illegible] चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० [illegible] शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक [illegible] पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदा[illegible] गृहचिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी [illegible] दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंस सिद्धान्त-शास्त्री [illegible] छाता गरुकुल बरला जिला मुजफ्फरनगर ने लिखा है—"[illegible] कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ। जैसी [illegible] वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरञ्जीलाल [illegible] आयुर्वेदशास्त्री मालिक कल्याण औषधालय बाह (आ[illegible] का कहना है कि मैंने २२५ रोगी अपूर्व कायापलट [illegible] कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि [illegible] से ग्रसित थे, पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर [illegible] दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी [illegible] की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, [illegible] डायब्टीज, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर [illegible] गर्भधारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति [illegible] भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की खराबी, खाँसी, [illegible] जुकाम, बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों का [illegible] चिनगारी-सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, [illegible] हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नव-जीवन का संचार [illegible] है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ [illegible] है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी [illegible] आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन [illegible] ८० मात्रा डाक-खर्च सहित ६॥।=) में हम भेज देंगे। [illegible] माफ, पैकिंग, मनीआर्डर-फीस अलग। कोई बात समझ [illegible] आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपबिलास कम्पनी

(स्वास्थ्यशाला) नं० [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीता

केशों को स्वस्थ रखने की दिशा में 'रीता' का नया कदम है। केशों की जड़ों को यह स्वाभाविक गति से बढ़ने की शक्ति देता है, जिसकी बहुधा कमी रहती है। यह केशों की रूसी को रोकता और गन्देपन को दूर करता है। केशों को लम्बा कर असाधारण चमकीला और आकर्षक बना देता है। कड़े बालों को यह देदीप्यमान और लहरदार बना देता है। रीता की एक शीशी लीजिए और अपने केशों को पुष्ट बनाकर नया सौन्दर्य प्रदान कीजिए। सभी जगह बेचा जाता है। मूल्य ।।।=) पन्द्रह आने प्रति शीशी।

RITA

HAIR TONIC

Veto Company, Jones Street, Madras.

नाक का अवरोध गायब हो गया!

शीघ्रता और सुरक्षापूर्वक

जुकाम और सर्दी की पीड़ा का अन्त करने के लिए 'कारसोड्राइन' एक आधुनिक उपाय है। आपको सिर्फ यही करना है कि 'इनहेलर' को प्रत्येक नथुने में डालिए (चित्र देखें) और दो दफे ऊपर की ओर श्वास लीजिए। तीस सेकेंड में ही सन्तोषजनक आराम होगा। सिर का भारीपन भाग जाएगा, कारण इसके इलाज से झिल्ली की सूजन कम होकर नाक का अवरोध हट जाता है। कारसोड्राइन का उपयोग करना सरल है और कहीं भी ले जाने में यह बहुत हलका है। इसकी पीड़ा-नाशक भाप ऐसे स्थान में पहुँच जाती है, जहाँ तरल बूँदें, जलधारा का भीतरी प्रक्षेप (डूश) और छींटे नहीं पहुँच सकते। कारसोड्राइन का व्यवहार करें और स्वच्छन्दता से श्वास लें। यह दमा के पहले के बुखार, सर्दी, जुकाम और दमा के लिए प्रशंसित है।

नवीन इनहेलर। जेब या पर्स में सरलता से ले जाने योग्य।

कारसोड्राइन

इँग्लैंड में प्रस्तुत

इ० ग्रिफ्थ्स ह्यूबेस लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमबटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमबटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एक मात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो ध्यान से पढ़ो तथा अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की घटनायें हैं जो आपके सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसङ्गत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली, तब बड़ा उठा, संसार में चारों ओर अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये और कीमती दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश हो गया। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय, जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ। मेरे तीन स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की, जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर के खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमबटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमबटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें पूरा हो गया। मेरी कमजोरी और तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, उन्माद झूमने लगा और हृदय में जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही मेरे वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-प्रदत्त 'प्रेमबटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली कपि केशर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खरल मिलकर ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। फिर ताजी ब्राह्मी बूटी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते। बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, हकीमों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। बीजमुनादत्त शर्मा, झोंकर का कहना है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमबटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती और गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषध वीर्य का पतलापन, सौ प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती कमजोरी, इब्टील, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना, स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में स्त्रियों को जिन्हें फुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में मिलने की व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० दाम ३=) डाकखर्च ॥।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

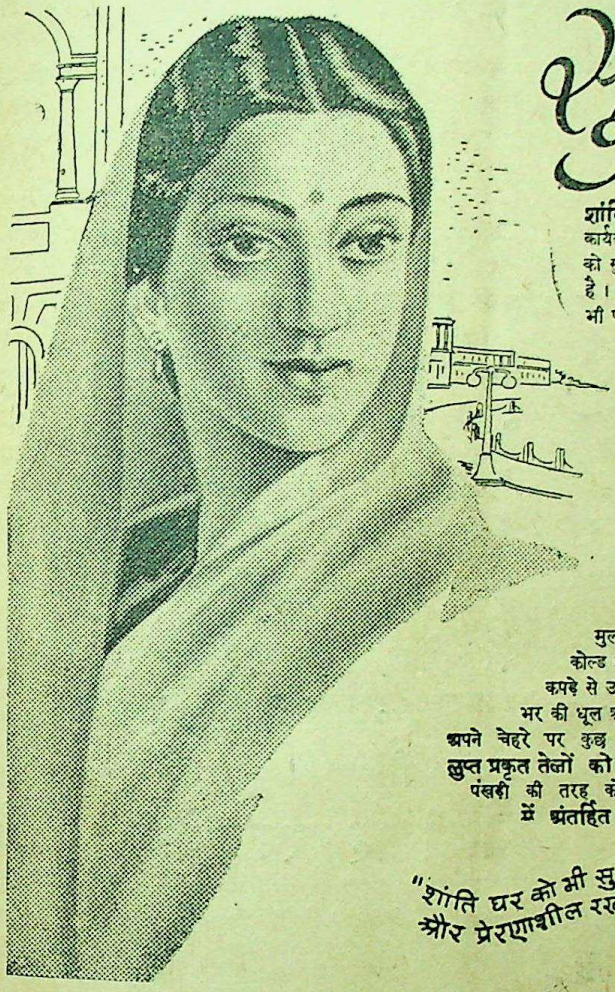

सुन्दर रमणी

शांति ! देहली के महत्वाकांक्षी युवा राजनीतिक कार्यकर्ता की इस लावण्यवती पत्नी, शांति ने अपने चेहरे को सुन्दर बनाये रखने का **नया** तरीका आविष्कृत किया है। भारत की हजारों युवा महिलाओं की भांति शांतिने भी पांड्स् को अपनाया है।

शांति सुन्दर और प्रेरणाशील पत्नी है।

.....क्योंकि शांतिने अनुभव कर लिया है कि शरीर सौन्दर्य का अभिप्राय **सर्वांगीण** लावण्य है! **पाँड्स्** कोल्ड क्रीम के **प्रकृत** तेलों से अपने चेहरे को स्वच्छ बनाकर शांति उसे कोमल और मुलायम रखती है। प्रति संध्या और सवेरे वह **पाँड्स्** कोल्ड क्रीम को शरीर पर थपथपाती है, तब एक मुलायम कपड़े से उसे धीरे से अलग कर देती है, और देखती है कि दिन भर की धूल और मैल उसके साथ बाहर निकल गया है। **तब** वह **अपने** चेहरे पर कुछ **पाँड्स्** वेनिशिंग क्रीम कोमलता से रमाती है। **लुप्त प्रकृत तेलों को स्थानापन्न करते हुये** और चेहरे को फूल की पंखड़ी की तरह कोमल और स्वच्छ बनाते हुये **वह उसकी त्वचा में अंतर्हित हो जाता है।**

पाँड्स् कोल्ड क्रीम : प्रति सवेरे व संध्या को अपने चेहरे को पाँड्स् कोल्ड क्रीम से स्वच्छ करिये—कठोर सुखाने वाले साबुन से नहीं। एक या दो सप्ताह में—देखिये आपके चेहरे की शोभा में कितना सुधार हो गया है।

पाँड्स् वेनिशिंग क्रीम : कोल्ड क्रीम को अलग करने के बाद उंगलियों के पोरों से काफी मात्रा में पाँड्स वेनिशिंग क्रीम इस भांति लगाइये कि **वह अंतर्हित हो जावे।** देखिये वह आपके चेहरे को कितना कोमल और स्वच्छ रखता है...और **वह दिखलाई भी नहीं पड़ता,** क्योंकि वह इन प्राकृतिक तेलों को स्थानापन्न कर देता है जिनसे धूप व धूल ने आपको वंचित कर दिया है।

पाँड्स् पायडर : यदि इच्छा हो तो, बाद में, पाँड्स् पावडर के चेहरे के रंग के अनुकूल एक आवरण से आपका चेहरा स्वच्छ और फूल की पँखड़ी जैसा दिखने लगेगा।

व्यापार-संबंधी पूछताछ के लिये लिखिये:— एल. डी. सेमूर एंड कंपनी
(इंडिया लिमिटेड) बम्बई-कलकत्ता-कराची-मदरास

Copyright; Ponds Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा में अनुपम अभिनन्दन-स्मृति ग्रन्थ

विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ

सम्राट् विक्रमादित्य, कालिदास और उनके काल से संबंधित अनुपम लेखों का अपूर्व सङ्कलन, संस्कृति, साहित्य, काव्यशास्त्र, कला, विज्ञान, इतिहास, दर्शन, राजनीति एवं पुरातत्व पर प्रकाण्ड पंडितों एवं धुरन्धर विद्वानों की लेखनी से लिखे गए ऐसे गवेषणापूर्वक लेख अन्यत्र कहीं प्रकाशित नहीं हुए। प्राचीन भारत के अतीत गौरव के लिए ग्रंथ का अध्ययन आवश्यक है। साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, दीवान बहादुर झावेरी, (बंबई) महामहोपाध्याय वी० वी० मिराशी (नागपुर) श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न, झालरापाटन, श्री मैथिलीशरणजी गुप्त, श्री सियारामशरणजी गुप्त, सेठ कन्हैयालालजी पोद्दार, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, डा० रामकुमार वर्मा, श्री माखनलालजी चतुर्वेदी, डा० सालेटूर, डा० गोरखप्रसाद, डा० ए० एन० उपाध्ये, पं० उदयशंकर भट्ट, डा० धीरेन्द्र वर्मा, पं० हजारीप्रसादजी द्विवेदी, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० सत्यप्रकाश, श्रीयुत एन० एन० घोष, श्रीयुत पी० के० गोडे आदि अनेकानेक प्रसिद्ध विद्वानों ने ग्रन्थ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। ग्रन्थ अनुपम चित्रों से सुसज्जित है।

थोड़ी प्रतियाँ ही बची हैं, पृष्ठ-संख्या ९१० डेमी साइज ११—९

मूल्य डाक-खर्च सहित केवल ३० रुपये, वी० पी० नहीं भेजी जावेगी।

मैनेजर,

आलीजाह दरबार प्रेस,

प्रदर रोग स्त्रियों का भयानक शत्रु है

प्रदर रोग, जिसको लोग लिकोरिया भी कहते हैं, स्त्रियों की सुन्दरता और जवानी को नष्ट करनेवाला भयानक शत्रु है। वश बेचारी रोग को छिपाये रहती हैं और दिन-रात घुला करती हैं। यह उनकी भूल है। भयानक रोग का इलाज कराने में नहीं करनी चाहिए। इस बीमारी से स्त्रियों के गुप्त शरीर से लाल, काला, धुमैला या श्वेत रंग का बदबूदार पानी निकलता रहता है। महीना ठीक समय पर नहीं होता है जिसके कारण कमर, रीढ़, सिर में दर्द, शरीर में जलन, मन मचलाना, बैठने में थकावट, भूख का कम लगना, बदन दुबला और कमजोर हो जाना, मूर्छा, बेहोशी आदि रोग हो जाते हैं और गर्भ होती है और यदि होती भी है तो दुबली और कमजोर होती है। ऐसी अवस्था में भारत-विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव ने प्रदान करनेवाली २५ वर्ष की आजमूदा **नारी-संजीवन** नामक दवा का आविष्कार किया जिसके द्वारा आज तक सहस्रों इस भयानक रोग के पंजे से छुड़ाया है। इस नारी-संजीवन के सेवन से तमाम बीमारियाँ दूर होकर स्त्रियाँ सुन्दर और तन्दुरुस्त और सन्तानें सुन्दर, बलवान्, दीर्घायु पैदा होती हैं। यदि आवश्यकता हो तो आज ही पत्र डालकर एक डिब्बा नारी-संजीवन मँगाकर इसके अपूर्व गुणों का चमत्कार देखें। कीमत एक डिब्बा ३=); डाकखर्च माफ; पैकिंग खर्च अलग।

मँगाने का पता—

रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७, धनकुट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल ही में बच्चों की योग्यता बढ़ानेवाला

हिन्दी ताश

यह ताश अपने विशेष गुणों के कारण सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध है। इसके खेलने से समय नष्ट नहीं होता बल्कि योग्यता बढ़ती है। यह ऐसा ताश है कि बाप अपने बेटे के साथ और गुरु अपने चेले के साथ खेल सकता है। स्कूलों और कालिजों के विद्यार्थी, शिक्षित स्त्री और पुरुष सभी इससे खेल सकते हैं। यह एक नया आविष्कार है। कोई स्कूल और कोई पढ़ा लिखा घराना इससे खाली नहीं रहना चाहिए। यदि अपने बच्चों को बाजारी ताश से बचाना चाहते हो तो इस ताश को मँगाकर दो। यह तीन प्रकार का है :—

(१) हिन्दी ताश बड़ा साइज—यह ताश हिन्दी, अँगरेजी और रोमन तीनों भाषाओं में खेला जा सकता है। मूल्य १) (२) हिन्दी ताश (छोटा साइज)—यह ताश बच्चों के लिए है और केवल हिन्दी में खेला जा सकता है। मूल्य ।।।) (३) अँगरेजी ताश—यह केवल अँगरेजी में खेला जाता है। मूल्य १) नोट—खेलने की विधि हर बक्स के साथ मुफ़्त दी जाती है। एजेन्सी के लिए इस पते पर चिट्ठी लिखिए।

मैनेजर—तालीमी ताश कम्पनी, सदर बाजार देहली

अब मैं अपने पति की प्रिय बन गई

रूपविलास (रजिस्टर्ड)

जब मैं विवाह के अवसर पर अपने पति-गृह गई तब मेरे पतिदेव हमारे भद्दे तथा काले चेहरे को देखकर मुझसे घृणा करने लगे। मैंने अपनी सहेलियों की सलाह से **रूप-विलास** का उबटन लगाना शुरू किया। कुछ ही दिनों बाद मेरा चेहरा गुलाब के फूल की भाँति दमकने लगा और आज मैं अपने पति की प्रिय बन गई। इसके लगाने से मुँहासा, झाँई, चेचक, काले-काले दाग, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह जल्द आराम होती हैं और थोड़े ही दिनों के लगाने से मलीन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। यदि आप अपना चेहरा खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो २५ वर्ष का प्रचलित जगत्प्रसिद्ध रजिस्टर्ड **रूप-विलास** उबटन लगाइए। विवाह-शादियों पर वर-वधू का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए यह बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है और इसकी खुशबू इतनी प्यारी है कि तबियत को मस्त करती है। कीमत एक डिब्बा २—) तीन डिब्बा ५॥) डाक-खर्च माफ, पैकिंग खर्च अलग।

रूप-विलास कम्पनी धनकुट्टी नं० ४२७ कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोग्य

सुरज १८६६ छाप

नीलगिरि तेल

हिमा, मडेरिया, इन्फ्लुएंजा, टाइफाइड आदि बीमारियोंमेंबचानेवाला

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हिन्दी भाषा में

कानून की एकमेव मासिक पत्रिका

वर्ष १ ला)न्यायबोध(वार्षिक चंदा ८॥)

जनवरी सन् १९४७ ई. से प्रकाशित होगा।

इसमें केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओं के कानून नियम; विलायत की प्रीव्ही कौंसिल, फेडरेल कोर्ट, हिन्दुस्तान की हाइकोर्टों के महत्त्वपूर्ण फैसले; कानूनी प्रश्नोत्तर मालाएँ तथा जायदाद, रोजगार, स्त्रियों और बालकों रक्षा के कानून, आदि विषय रहेंगे।

पता :—सेंट्रल लॉ हाउस
तिलक रोड, नागपुर सीटी सि.

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाएगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृताञ्जन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

पुरुषत्व वर्धक

अनंगप्रभा याकूती

केसर, कस्तूरी और कीमती, पौष्टिक व स्वास्थ्य वर्धक औषधियों के योग से बनी हुई यह याकुती बल वीर्य व रुधिर को बढ़ाती है, पतली धातु को गाढ़ा करती है और शुद्ध वीर्य पैदा करके जवाँमर्दी व पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त कराती है (फी शी० सद रु० १०)

मदनमंजरी फार्मेसी जामनगर

इलाहाबाद एजेंट-मदन स्टोर्स ४७ जोन्स्टनगंज

वैद्य-दर्पण

इस पुस्तक में आयुर्वेदिक ओषधियों के बनाने प्रक्रिया का वर्णन है। सैकड़ों विधियों और सिद्धान्तों पर इसमें पं० प्राणनाथ और दलपति ने किया है। पुस्तक वैद्यों और वैद्यक-प्रेमियों के की है। मूल्य केवल एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन, प्रेस लिमिटेड इला

जड़ाऊ ऊँचे दर्जे की कलाई-घड़ियाँ

स्विस निर्मित लीवर मशीन, सच्चा समय देनेवाली, मशीनरी। पाँच साल की गारंटी। क्रोमियम केस की क गोल साइज २०॥) रु०। उत्तम दर्जे की २ स्त्रियों के लिए २६॥) रु०; उत्तम २८॥) रु० साल की गारंटी। आयताकार ३५॥) रु०। और चमकीले क्रोमियम केस की ३८॥) रु० ४०॥) रु०। रोल्ड गोल्डवाली ४८॥) रु० दर्जे की ५२॥।) रु०, पेकिंग और डाकखर्च घड़ियाँ लेने पर डाकखर्च माफ़। सूचीपत्र अप्राप्य।

Correspondence in English.

कलकत्ता वाच कम्पनी Sec.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

—सम्पादकीय १
—भारतीय राष्ट्र-रक्षा की समस्या—श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार ९
—दूर देश है जाना—पण्डित श्रीराम शर्मा ... १८
—न्यूरैंबर्ग मुकदमे पर एक दृष्टि—पण्डित शिवकुमार, विद्यालङ्कार २१
—परिचय—श्री कालीचरण चटर्जी, एम० ए० २५
—भारतीय समस्याएँ—अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी २७
—चरित्र और रिवाज—श्री दौलतराव परशुराम ३४
—राजनीतिक जीवन-सम्बन्धी कुछ संस्मरण—डाक्टर सत्यप्रकाश, डी० एस-सी० ... ३७
—अन्तिम दृश्य—श्री रसूल अहमद "अबोध" ४३
—कवि सोमनाथ का सुजान-विलास—डाक्टर व्रजेश्वर, एम० ए०, डी० फिल्० ... ४५
—हड़ताल की बलि—प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए०, बी० कॉम० ... ४९
—संयुक्त राष्ट्र-संघ और विश्वशान्ति—श्री रतनलाल जोशी, एम० ए० ... ... ५१
—माँ की आज्ञा—कुँवर आर्पी ... ५४
—हिन्दी कवियों का प्रकृति-वर्णन—श्री प्रभाकर माचवे, एम० ए०, साहित्य-रत्न ... ५७
—आदमी का बच्चा—श्री कृष्णचन्द्र शर्मा, एम० ए० ६५
—विचार-विमर्श ७०
—विविध विषय ७६
—नई पुस्तकें ७९
—सामयिक साहित्य ८४

चित्र-सूची

१—सरदार पटेल ... १ के सामने
२—श्रीमती अरुणा आसफ अली ... "
३—पण्डित जवाहरलाल नेहरू ... "
४—राष्ट्रपति कृपालानी ... "
५—श्रीमती सुचिता कृपालानी ... "
६—मा० डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा ... ८-९
७—मा० डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ... "
८—मालवीयजी महाराज ... "
९—नोवाखाली में गांधीजी (दो चित्र) ३२-३३
१०—एक लड़की के सहारे गांधीजी गोपेर बाग गाँव के एक क्षतिग्रस्त घर के भीतरी भाग में प्रवेश कर रहे हैं "
११—नोवाखाली के एक घर का लोमहर्षक दृश्य जिसके २२ सदस्यों में से १९ मार डाले गये "
१२—खून के दाग ... ८४-८५
१३—शान्ति और भ्रातृत्व का सन्देश ... "
१४—श्री जयप्रकाशनारायण ... "
१५—डाक्टर रामकृष्ण हेडले ... "
१६—इंडियन प्यूपिल्स थियेटर एसोसिएशन बम्बई के द्वारा प्रदर्शित 'लम्बादी-नृत्य' का एक दृश्य ८४-८५

केवल एक दिन में

मेजिक मिस्मरिजम

लड़के को जमीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीब व गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब दर्शकों की घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अङ्गारों का नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमांचकारी करिश्में सीखकर.

दूसरे ही दिन

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धिमानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर ठनाठन रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गजब का जादू एक दिन में, ही केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं—ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पाँच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड बराडरफल मेजिकल कम्पनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी प्रकाशित

द्वितीय संशोधित, परिवर्धित, सचित्र संस्करण

गान्धी-अभिनन्दन-ग्रन्थ

सम्पादक : सोहनलाल द्विवेदी

प्राक्कथन : सर राधाकृष्णन्

संरक्षक : सेठ घनश्यामदास बिड़ला

डा० अमरनाथ झा वाइस चांसलर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में लिखते हैं :

इससे पहले किसी भी भाषा में ऐसा ग्रन्थ नहीं प्रकाशित हुआ, जिसमें वर्तमान भारत के सबसे महान् व्यक्ति महात्मा गान्धी जी के सम्मान में इतनी भाषाओं के इतने कविताओं की इतनी उत्कृष्ट कविताएँ संगृहीत की गई हों।

प्रत्येक पुस्तकालय में इस ग्रन्थ को आगे स्थान मिलेगा, और पाठक इसे बार-बार अध्ययन करेंगे।

बहुत ही सुन्दर प्रकाशन

मूल्य केवल ७॥) रु०

इस संस्करण का लाभ हरिजन कोष में दे दिया जाएगा।

प्रकाशक : इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा संदेश

तलवार का सामना तलवार से

"जो कुछ करना है, शान्ति और प्रेम से करना चाहिए, तभी शायद सफलता भी मिलेगी। किन्तु यदि तलवार ही निकाली जाएगी, तो उसका सामना तलवार से ही किया जाएगा। तलवार या रक्तपात से पाकिस्तान मिल नहीं सकता। लीग बम्बई-प्रस्ताव रद्द करे, अन्यथा उसे अन्तःकालीन सरकार में स्थान नहीं।"

—सरदार पटेल

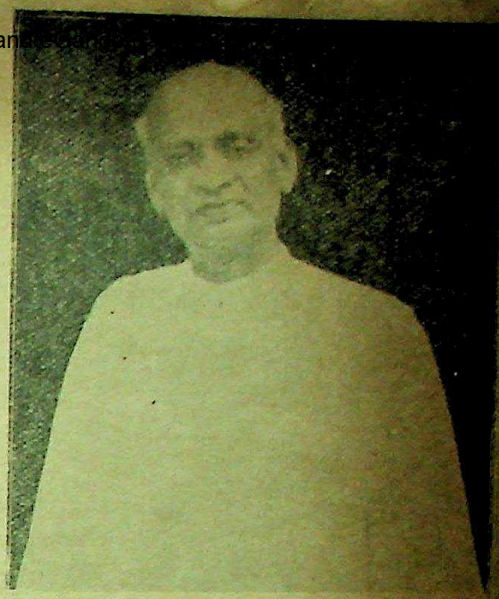

"सरदार पटेल ने आज हमें तलवार का जवाब तलवार से देने को कहा है। इस सलाह के लिए हम उनके शुक्रगुजार हैं। लेकिन हमें यह न भूलना चाहिए कि जब तक हिन्दुस्तान में अँगरेज मौजूद हैं, तब तक हमारी तलवार हमेशा अँगरेजों के ही खिलाफ उठेगी, अपने भाइयों के खिलाफ नहीं।"

—अरुणा आसफ अली

"मध्यकालीन सरकार के कांग्रेसी मेम्बरों को वहाँ रहना दिन-दिन कठिन हो रहा है। जब से लीगी मेम्बर उसमें घुसे, तब से वहाँ का वायुमंडल इतना दूषित हो गया है कि कांग्रेसी मेम्बरों को दो बार इस्तीफा देने की धमकी देनी पड़ी; क्योंकि उनके धैर्य की सीमा जाती रही। लीगी मेम्बर तो अँगरेजों के समर्थन को अपने पक्ष में करने के लिए उतारू हो रहे हैं, और वे अपने को 'बादशाह की पार्टी' बनाने की कोशिश कर रहे हैं। यही नहीं, लीगी मेम्बरों का पुराने अँगरेज अफसरों के साथ दिमागी समझौता-सा हो गया है। अँगरेज इस परिस्थिति से लाभ उठा रहे हैं और बड़े लाट गाड़ी के चक्कों को धीरे-धीरे हटा रहे हैं, जिससे खतरा सामने आ गया है। यदि यह अवस्था जारी रहेगी, तो एक बड़े तूफान पर संघर्ष होना अवश्यम्भावी है।"

—जवाहरलाल नेहरू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

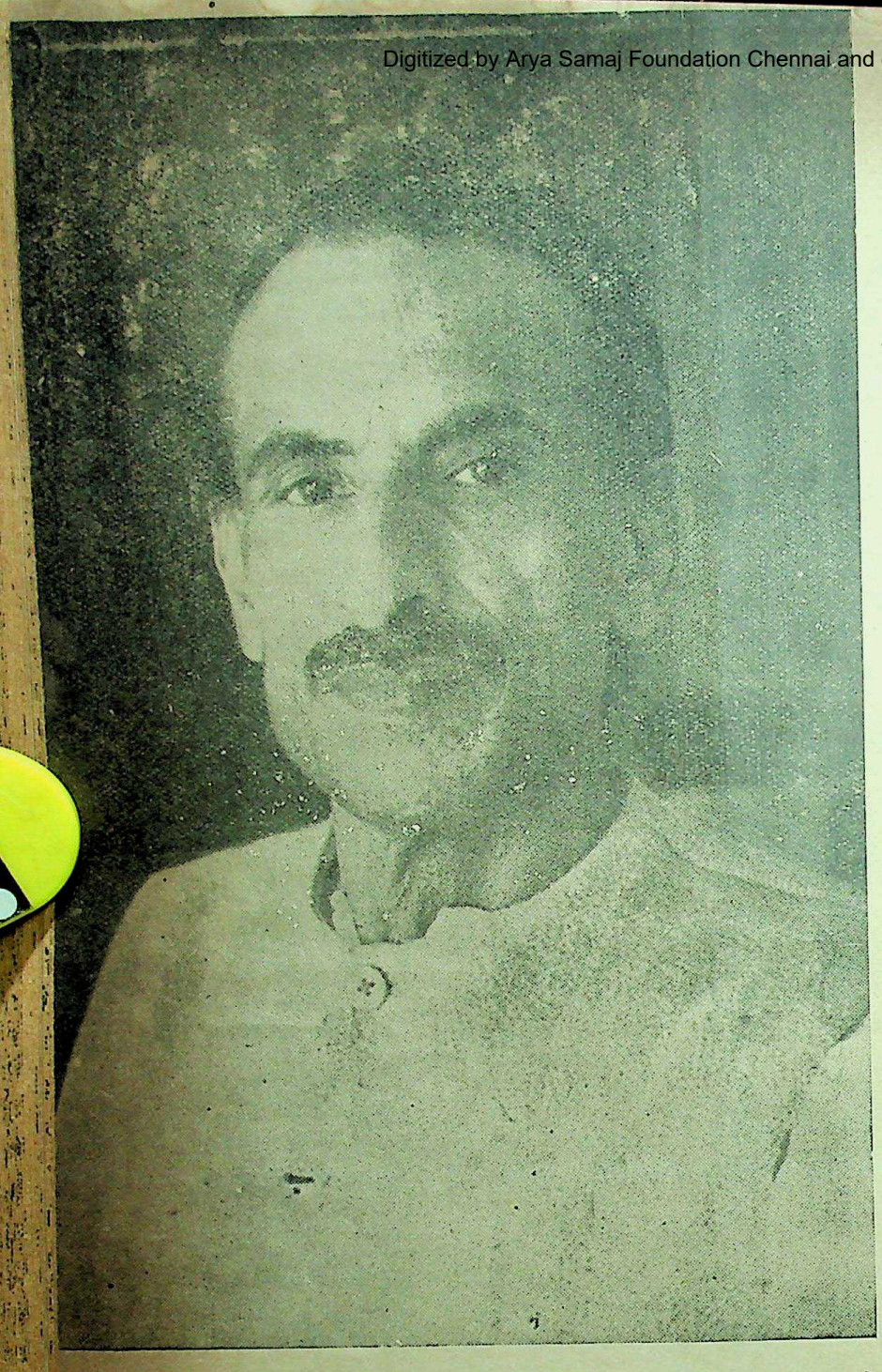

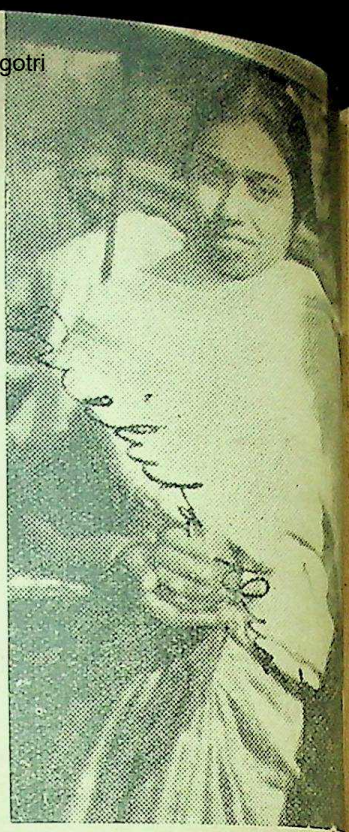

"यदि पूर्वी बंगाल में हालत सुधारने अधिकारियों को अपना रवैय्या बदलना तीन सप्ताह के बाद श्री गांधी जी कोई नहीं देख पाए। इसलिए बंगाल सरक मौखिक सहयोग के बजाए वास्तविक देना होगा। अब मैं गांधी जी के आदेश फिर पूर्वी बंगाल जा रही हूँ। पिछले मुझे हृदयविदारक घटनाओं को देखक यद्यपि बड़े पैमाने पर लूटमार और चुकी है फिर भी हिन्दू अपने आपको नहीं समझते।"

—श्रीमती सुचिता

"कुछ लोग शायद यह सोचते हैं कि प्राणों की हानि मनुष्य लिए सबसे बड़ा संकट है। किंतु सम्मानित लोगों के लिए सबसे री मुसीबत की बात यह है कि पिस्तौल दिखा कर धर्म-परिवर्तन लिए बाध्य किया जाए। अगर वे सभी लोग, जिनका जबर्दस्ती र्म-परिवर्तन किया गया है, और वे सभी स्त्रियाँ, जो भगाई गई हैं ैर जिनसे बलपूर्वक विवाह कर लिया गया है, मार डाली गई तीं, तो मेरी राय में वह बल के सामने आत्म-समर्पण करने कम दुख की बात होती। मैं अहिंसा में पूर्ण विश्वास रखता किंतु जो बात पूर्वी बंगाल के लोगों पर गुजरी है, वही ारे ऊपर गुजरी होती, तो मैं कह नहीं सकता मुझमें क्या प्रतिक्रिया होती। अगर पढ़े-लिखे लोग बहुत दिलाए जाने पर अवांछनीय प्रतिक्रिया के सामने हैं, तो फिर समूह तो और भी अधिक ऐसी प्रतिक्रिया वित हो सकता है। इसलिए जो कोई भी उस तरह उपयोग या प्रचार करता है, या उसके लिए लोगों को और उत्साहित करता है—जिस तरह से पूर्वी बंगाल में वह राष्ट्र का सबसे बड़ा अहित करता है। वह मानव के विरुद्ध काम करता है। अगर हमें एक-दूसरे का गला है तो उसे शुद्धता और बहादुरी के साथ करना चाहिए के साथ नहीं।"

—राष्ट्रपिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल : उमेशचन्द्र मिश्र

जनवरी १९४७ पौष २००३; भाग ४८, खण्ड १ संख्या १, पूर्ण संख्या ५६५

सम्पादकीय

मुसलिम लीग की जीत !

मेरठ कांग्रेस ने यह माँग की थी कि यदि मुसलिम लीग विधान-परिषद् में सम्मिलित होने से इनकार करती है तो उसे तुरन्त अस्थायी सरकार से अलग हो जाना चाहिए। वाइसराय ने जिस समय मुसलिम लीग को अस्थायी सरकार में सम्मिलित किया था, उस समय उन्होंने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को आश्वासन दिया था कि जिना साहब शीघ्र ही मुसलिम लीग कौन्सिल की बैठक करके यह निर्णय करा लेंगे कि मुसलिम लीग विधान-परिषद् में भाग लेगी। इसी शर्त पर मुसलिम लीग राष्ट्रीय सरकार में आई थी। परन्तु मेरठ कांग्रेस के बाद मिस्टर जिना ने स्पष्ट रूप से घोषित कर दिया कि मुसलिम लीग विधान-परिषद् में न जाएगी। जिस शर्त पर मुसलिम लीग राष्ट्रीय सरकार में सम्मिलित हुई थी उसके आधार पर वाइसराय का स्पष्ट कर्तव्य था कि मुसलिम लीग को अस्थायी सरकार छोड़ने पर बाध्य करते। ऐसा करने पर बहुत सम्भव था कि मुसलिम लीग विधान-परिषद् में जाना स्वीकार कर लेती। परन्तु वाइसराय ने मुसलिम लीग को राष्ट्रीय सरकार में लाने के लिए जो इतनी सरगर्मी दिखाई थी और मिस्टर जिना को कांग्रेस के पीठ-पीछे जो आश्वासन दिए थे उनका उद्देश्य तो दूसरा ही था। मिस्टर जिना तो पहले ही अस्थायी राष्ट्रीय सरकार को अपने कानूनी ज्ञान और तर्क के द्वारा सन् १९१९ के विधान के अनुसार निर्मित वाइसराय की कार्यकारिणी समिति सिद्ध करने के लिए गला फाड़ रहे थे। उन्होंने 'कैबिनेट' और कैबिनेट के वाइस-प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) पर घृणित व्यंग्य करने में अपनी सुरुचि का भी यथोचित परिचय दिया था। उनके योग्य और वफादार सहयोगी, जो अस्थायी सरकार के मन्त्री हैं और जो स्वयं कैबिनेट-मिनिस्टर के सम्मानित पद पर आरूढ़ हैं, क्रियात्मक रूप से कैबिनेट की स्थिति को गिराने, सरकार की प्रगतिशील राष्ट्रीय नीति में अड़ङ्गे लगाने और गौराङ्ग महाप्रभु के हाथ से खिसकती हुई सत्ता को उन्हीं के हाथ में सुरक्षित रखने में आरम्भ से ही जी-जान से लग गए। उन्हें पं० जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में 'राजभक्त दल' बनने में देर न लगी। फिर वचन-भङ्ग करने पर भी वाइसराय उनसे बिछुड़ना कैसे गवारा कर सकते थे! मुसलिम लीग की जीत की यह भूमिका थी।

मिली भगत

कांग्रेस-द्वारा राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होने पर मिस्टर जिना ने माँग की थी कि ब्रिटिश कैबिनेट-मिशन के निर्णय उन्हें मान्य नहीं हैं, इसलिए भारत के राजनीतिक प्रश्न को सुलझाने के लिए पुनः कांग्रेस और लीग के प्रतिनिधियों का सम्मेलन लंदन में बुलाना चाहिए और समस्त समस्याओं पर एकदम नए सिरे से बातचीत आरम्भ करनी चाहिए। उस समय मिस्टर जिना के इस प्रस्ताव को कदाचित् अनभिज्ञ राजनीतिक क्षेत्रों में अधिक महत्त्व नहीं दिया गया था। बाद की घटनाओं से ऐसा लगता है कि लंदन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्टर जिना और लार्ड वेवल में कोई-न-कोई समझौतेवाली बात अवश्य हुई होगी। बहुत सम्भव है कि लार्ड वेवल ने मिस्टर जिना के इस प्रस्ताव को किन्हीं शर्तों के साथ स्वीकार किया हो। यदि ऐसा न होता तो विधान-परिषद् की बैठक के एक सप्ताह पूर्व कांग्रेस और लीग के गोलमेज सम्मेलन की आयोजना क्यों की जाती? मिस्टर चर्चिल तो मिस्टर जिना को बढ़ावा दे ही रहे थे, प्रधान मन्त्री एटली ने भी कदाचित् अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्वतन्त्र नीति से घबराकर मिस्टर जिना को प्रोत्साहित करने का निश्चय कर लिया। पण्डित नेहरू और मिस्टर जिना दोनों को, उनके विपरीत विचारों को जानते हुए भी, उन्हींने परस्पर-विरोधी आश्वासन देकर बुलाया। सम्भव है कि प्रतिक्रियावादी लीग और परम्परागत स्वभाव से विवश ब्रिटिश साम्राज्यशाही ने विधान-परिषद् को जहाँ तक हो सके स्थगित रखने के लिए यह अपावन गठबन्धन करके षड्यन्त्र रचा हो। परन्तु कांग्रेस ने चतुरतापूर्वक इन राजनीतिक भूल-भुलैयों में फँसने से इनकार कर दिया। पण्डित जवाहरलाल नेहरू लंदन गए, कोई राजनीतिक वाद-विवाद और गोलमेज के चक्र में पड़ने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि ब्रिटिश प्रधान मन्त्री के आग्रहपूर्ण निमन्त्रण के उत्तर में व्यक्तिगत शिष्टाचार के नाते उनसे मिलना आवश्यक था। मिस्टर जिना विधान-परिषद् को स्थगित नहीं करा सके। लार्ड वेवल और मेजर एटली भी इस कार्य में उनकी सहायता न कर सके।

व्याख्या

मिस्टर जिना का कहना है कि कांग्रेस ने १६ मई के ब्रिटिश कैबिनेट-मिशन की योजना को स्वीकार नहीं किया है, क्योंकि वह प्रान्तों को उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रान्तीय गुट्टों में सम्मिलित कराने और प्रान्तीय गुट्टों में साधारण बहुमत-द्वारा प्रान्तीय शासन का विधान बनाए जाने का विरोध करती है। मिस्टर जिना के अनुसार १६ मई की घोषणा में प्रान्तों को अनिवार्य रूप से गुट्टों में सम्मिलित होने की योजना की गई है। कांग्रेस मुसलिम लीग और मिस्टर जिना की इस व्याख्या से सहमत नहीं है। उसका कहना है कि घोषणापत्र के अनुसार प्रान्तों को एक बार सेक्शनों में बैठकर अन्त यह निश्चय करने का अधिकार है कि कोई प्रान्त गुट्ट शासन में सम्मिलित होना चाहता है या नहीं। कहते हैं कि दन कान्फरेंस व्याख्या-सम्बन्धी इस मतभेद को सुलझाने के लिए बुलाई गई थी। परन्तु मिस्टर जिना तो पूरा पाकि-तान लेने के लिए गए थे और कांग्रेस इस व्याख्यावाली समस्या को सङ्घ-अदालत के सामने रखकर न्याय का निर्णय मानने के लिए पहले ही निश्चय कर चुकी थी।

जैसा कि होना था, लंदन की यह वार्ता असफल रही। [illegible] ने [illegible] लाभ उठाया। एक तो उसे सारे संसार के समक्ष यह प्रदर्शित करने और स्वर्ण-अवसर मिल गया कि भारत के हिन्दू और मु एक दूसरे से किसी प्रकार नहीं मिल सकते, अतः ब्रिटि कारी यदि सत्ता हस्तान्तरित करें तो कैसे करें। परन्तु परिषद् को स्थगित करने के प्रयत्न में असफल रह सम्राट् की सरकार ने उसे कम-से-कम पङ्गु बनाने की कायरतापूर्ण चाल चली। ६ दिसम्बर को मेजर एटली नई घोषणा की जिसमें १६ मई की घोषणा की वही की गई है जो मिस्टर जिना चाहते हैं। और वही लीग की विजय है जिससे उसे पाकिस्तान के सूखे पानी देकर उसे हरा करने की फिर आशा होने लगी है। अदालत के समक्ष व्याख्या-सम्बन्धी प्रश्न रखने के निर्णय का विरोध न करते हुए भी मेजर एटली जैसे व्यक्ति ने अदालत के निर्णय के पूर्व ही अपनी नई देकर वस्तुतः राजनीतिज्ञों को आश्चर्य में डाल अपने इस पक्षपातपूर्ण कार्य से उन्होंने सिद्ध कर दि भारत में गृह-युद्ध कराने के षड्यन्त्र में जाने या अनजाने सरकार मुसलिम लीग का हाथ बँटाना चाहती है। की घोषणा की पक्षपातपूर्ण व्याख्या से ही उन्हें लगे हुआ। उन्होंने यह भी घोषित कर दिया कि विधान में यदि कोई दल सम्मिलित न होगा तो परिषद् के स्वीकार करने के लिए वह बाध्य नहीं किया जा सक नया विधान भारत के उन भागों पर लागू नहीं किया जा जो उसके विरुद्ध हैं।

मेजर एटली की घोषणा का यह भाग उनकी उ के सर्वथा विपरीत है जिसमें उन्होंने कहा था कि अ बहुमत की प्रगति में बाधक नहीं बनने दिया जा सकता। पड़ता है कि ब्रिटेन का यह प्रधान मन्त्री भी, चर्चिल की ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ति में सहायक न बनने का कर चुका है। अन्तर केवल इतना है कि इसमें अ देखते हुए अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से घोषित करने नहीं है।

फिर व्याख्या

१६ मई की घोषणा की व्याख्या ६ दिसम्बर को परन्तु इस व्याख्यावाली घोषणा में पुनः एक बात है जो कदाचित् निकट भविष्य में ही व्याख्या-सम्ब विवाद का कारण बन जाएगी। प्रधान मन्त्री ने वह विधान जिसके बनाने में यदि किन्हीं भागों (प्रा के प्रतिनिधियों का हाथ नहीं रहेगा अथवा जो उनकी विरुद्ध होगा, वह उन भागों पर लागू नहीं हो सक तक मुसलिम लीग का सम्बन्ध है, वह सभी प्रान्तों हुई जन-संख्या के विशेष भागों का प्रतिनिधित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु कदाचित् प्रधान मन्त्री का सङ्केत केवल उन भागों पर है जहाँ मुसलिम लीग का बहुमत है। इस प्रकार इस घोषणा-पत्र के अनुसार विधान-परिषद् द्वारा बनाया हुआ विधान सेक्शन 'बी' और 'सी' पर लागू नहीं होगा, क्योंकि उनमें मुसलिम लीग का थोड़ा-सा बहुमत है। परन्तु ऐसा भी क्यों हो? सेक्शनों के प्रान्तों में आसाम और सीमा-प्रान्त के अधिकांश प्रतिनिधि विधान-निर्माण में सम्मिलित हो रहे हैं और वे विधान को स्वीकार करेंगे। तो ६ दिसम्बर की घोषणा के अनुसार केवल पञ्जाब, सिन्ध और बङ्गाल नए विधान को मानने से इनकार कर सकते हैं।

एक दूसरी सम्भावना और है। वह यह कि यदि सङ्घ-अदालत के अनुकूल निर्णय के फलस्वरूप मुसलिम लीग विधान निर्माण में सम्मिलित हो गई, तो आसाम और सीमा-प्रान्त को भी अपनी इच्छा के विरुद्ध गुट में शामिल होना होगा। परन्तु आसाम और सीमा प्रान्त गुट के बहुमत-निर्णय वाले सिद्धान्त को स्वीकार करके प्रान्तों की स्वाधीनता को इच्छापूर्वक त्यागने को कभी तैयार न होंगे। वे ऐसे विधान-निर्माण में भाग नहीं ले सकते जो उनके लिए आत्म-घातक सिद्ध हो। और व्याख्या-विचक्षण विधानवादी हमें बताते हैं कि ६ दिसम्बर की घोषणा से आसाम और सीमा-प्रान्त भी लाभ उठा सकते हैं। जिस विधान-निर्माण में वे सम्मिलित नहीं हुए या जिसका वे विरोध करेंगे उसका उनपर आरोप नहीं किया जा सकता। इसलिए मुसलिम लीग जिस घोषणा को अपनी विजय समझती है वही अन्ततोगत्वा उसकी पराजय का कारण बन सकती है।

परन्तु यह विधान-वादी मनोवृत्ति हमें कहाँ ले जाएगी! क्या व्याख्या—सूत्र, वृत्ति, पद्धति, भाष्य, समीक्षा, टीका, टिप्पणिका—का कोई अन्त भी है? क्या हम अभी इनसे ऊबे नहीं? आज १६ मई की घोषणा की व्याख्या से हम असन्तुष्ट हैं और ६ दिसम्बर की घोषणा में एक नई आशा-किरण देख रहे हैं। परन्तु क्या ६ दिसम्बर के बाद समयानुकूल कोई नई घोषणा नहीं की जा सकती? तीतरों को लड़ानेवाला जानता है कि कब किस तीतर को टिटकारी दी जाए।

पाकिस्तान के नए वकील—चर्चिल

जिना साहब के लंदन जाने का उनकी दृष्टि से सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि उन्हें अपने चिर-समर्थक और संरक्षक मिस्टर चर्चिल, लार्ड लिनलिथगो और दूसरे टोरियों से मिलने का अपेक्षित अवसर मिल गया। लंदन की गुडिया गोलमेज-कान्फ्रेंस की समाप्ति के बाद मिस्टर जिना ने शीघ्र ही एक सहभोज में अपने उक्त मित्रों को बुलाया और कदाचित् अपना पाकिस्तानी दृष्टिकोण समझाया। उस सहभोज में क्या बातें हुईं, यह तो जाना नहीं जा सका और न जाना जा सकता है। पर उस बातचीत के रवैये का आभास हमें कामन्स-सभा में मिस्टर चर्चिल की धुँवाधार वक्तृता से बहुत कुछ मिल सकता है। मिस्टर चर्चिल ने पार्लमेंट के सरकारी पक्ष का विरोध करते हुए भारत के सम्बन्ध में एक विस्तृत डिबेट की माँग की। सरकारी पक्ष ने इस माँग को थोड़े-से नतु-नच के साथ स्वीकार कर लिया। मिस्टर चर्चिल के भाषण से स्पष्ट विदित होता है कि मिस्टर जिना ने चर्चिल को पूर्णतया अपने पाकिस्तान का वकील बना लिया है। चर्चिल ने मजदूर सरकार की कटु आलोचना करते हुए कहा कि यदि कांग्रेस को अस्थायी सरकार बनाने का न्योता न दिया जाता तो भारत में इतना रक्तपात और विद्रोह न होता। जिस रक्तपात और अत्याचार ने उनके हृदय को व्यथा पहुँचाई वह था बिहार का दङ्गा। ठीक जिना साहब की भाँति यथार्थ को भूलकर अपने मतलब की बात करना चर्चिल भी खूब जानते हैं। उनके कहने के अनुसार बिहार के भयङ्कर रक्तपात का उत्तरदायित्व अस्थायी सरकार पर है जो कांग्रेस के द्वारा बनाई गई थी। चर्चिल के अनुसार जहाँ कहीं दङ्गे हुए वहाँ मुसलमानों की ही क्षति हुई। दङ्गे किसने कराए, घृणा का प्रचार कौन करता है, गृह-युद्ध की धमकियाँ कौन देता रहता है और कौन बार-बार उसे प्रोत्साहित करने के काम करता जाता है, इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए चर्चिल साहब तैयार नहीं हैं। वे तो जिना साहब की भाँति भारतीय समस्या का केवल एक ही हल समझते हैं—पाकिस्तान।

अब जरा यह भी सोचना चाहिए कि ये ब्रिटिश साम्राज्य-वादी, जो समूचे और संयुक्त भारतवर्ष को साम्राज्य के अन्तर्गत रखने को उत्सुक थे, जिनके एजेंट लार्ड लिनलिथगो भारत की भौगोलिक एकता के समर्थक थे, आज भारत के टुकड़े करने को क्यों तैयार हो गए! इसका कारण ढूँढ़ने के लिए कहीं दूर नहीं जाना होगा। स्वयं चर्चिल साहब ने अपनी वक्तृता में फर्माया है—

"जो लोग अपने जीवन का निर्माण अपने ढङ्ग पर करना चाहते हैं, उन्हें वैसा करने दिया जाए। देवता उनकी रक्षा करें। और जो लोग विविध रीतियों के अनुसार हमारे महान् स्वाधीन कामन वेल्थ के साथ सम्बन्ध बनाए रखने के उपाय ढूँढ़ने के इच्छुक हैं उन्हें भी वैसा करने की छूट होनी चाहिए, जिससे कि वे अन्ततोगत्वा ऐसा करने की तत्परता प्रकट कर सकें।"

अर्थात् चर्चिल साहब को आशा है कि तथा-कथित पाकिस्तानी क्षेत्र ब्रिटिश कामन वेल्थ के साथ सम्बन्ध बनाए रक्खेंगे या भारत के उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की सीमाओं पर साम्राज्यशाही संरक्षण चिर-स्थायी रहेगा। साम्राज्यवादी चर्चिल कदाचित् यह भी आशा करते होंगे कि पाकिस्तानी क्षेत्रों की सहायता से वे अवसर मिलने पर पुनः सम्पूर्ण भारत को साम्राज्य के अन्तर्गत लाने में समर्थ हो सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस शैतानी स्वप्न की प्रेरणा जिना से मिली है। भारतीय मुसलमान देश की स्वाधीनता को बेचने के इस षड्यन्त्र में अपने कायदे आजम का कब तक साथ देते रहेंगे ?

कामन्स के डिबेट में एक और रहस्योद्घाटन हुआ है। मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटिश कैबिनेट-मिशन की योजना की आलोचना करते-करते सर स्टैफोर्ड क्रिप्स पर यह लाञ्छन लगाया कि उन्हीं के कारण ऐसी भयङ्कर परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इसके साथ ही उन्होंने सन् '४२ वाली क्रिप्स-योजना का भी पर्दा हलके से हटाने की कोशिश की। उन्होंने कहा—

"मुझे याद है कि जब सर स्टैफोर्ड क्रिप्स उस सरकार के प्रतिनिधि बनकर गए थे जिसका मैं प्रधान था और यह भी याद है कि हमें किस प्रकार उनकी डोर कसनी पड़ी थी क्योंकि..."

यहाँ पर मिस्टर चर्चिल विरोधी लोगों के चिल्लाने के कारण कुछ रुके और फिर कहा) "मैं कुछ नहीं कहना चाहता।"

सर स्टैफोर्ड क्रिप्स का चेहरा लाल हो गया और अपनी सीट से उठकर उन्होंने तपाक से कहा—"यदि मिस्टर चर्चिल सारी बातें खोलना चाहते हैं जो मेरे और मन्त्रिमण्डल के बीच उस समय हुई थीं तो उन्हें सारी बातें खोलकर कहनी चाहिएँ।"

मिस्टर चर्चिल ने झेंपकर उत्तर दिया—"सर स्टैफोर्ड क्रिप्स ने जो कुछ कहा, वह सर्वथा उचित है। मैं इस बात को नहीं बढ़ाऊँगा।"

अब स्वयं मिस्टर चर्चिल की जबानी मालूम हो गया कि क्रिप्स-योजना की असफलता की सारी जिम्मेदारी चर्चिल साहब पर थी और सारा तमाशा पहले से ही जान-बूझकर रचा गया था।

——

विधान-परिषद्

पूर्व निर्णय के अनुसार विधान-परिषद् की बैठक ९ दिसम्बर को आरम्भ हो गई। इस बैठक में परिषद् के सभापति के निर्वाचन और नियम निर्मात्री उपसमिति की नियुक्ति के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उपस्थित किया है जिसमें परिषद् के द्वारा बनाए जानेवाले विधान के सामान्य उद्देश्य की रूपरेखा उपस्थित की गई है। इस प्रस्ताव के अनुसार भारत का भावी विधान एक प्रजातन्त्र (रिपब्लिक) के रूप में होगा। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए जो भाषण किया है वह एक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। उन्होंने बताया है कि भारत की प्रथम विधान-परिषद् का सबसे पहला और पावन कर्त्तव्य होना चाहिए 'भारत की कोटि-कोटि जनता की उस भावना और कल्पना का प्रकाशन करना, जो पिछले अनेक वर्षों से उसके हृदय में दबी पड़ी है और जिसको प्राप्त करने के लिए उसने समय-समय पर भारी बलिदान किए हैं।' पण्डित नेहरू का प्रस्ताव हमारी युग-युग का दुहराना-मात्र है। प्रस्ताव के समर्थकों ने इसकी महत्ता और पवित्रता के विषय में बहुत कुछ कहा है। भारत के प्रसिद्ध विधानवादी नेता डाक्टर जयकर ने संशोधन के रूप में उपस्थित किए गए प्रस्ताव के [illegible] अपील की है कि अभी इस प्रस्ताव को स्थगित कर दिया और जब मुसलिम लीग विधान-परिषद् में आ जाए रियासती प्रतिनिधि भी उसमें भाग लेने लगें, तब संशोधनों के साथ उसे पास किया जाए। डाक्टर [illegible] और पण्डित हृदयनारायण कुँजरू तथा एँग्लो-इंडि श्री फ्रैंक एंथनी ने भी डाक्टर जयकर का समर्थन किया यद्यपि प्रस्ताव के पक्ष में तर्क, भावना और बहुमत की शक्ति है, फिर भी ऐसा लगता है कि कांग्रेस के नेता करने में शीघ्रता नहीं करेंगे और मुसलिम लीग को अवसर देकर अपनी उदारता का परिचय देंगे।

——

विधान-परिषद् की स्थिति

विधान-परिषद् की स्थिति के विषय में उसी समय से चल रहा है, जिस समय १६ मई को उसके निर्माण की की गई थी। कांग्रेस ने आरम्भ से ही विधान-परिषद् सत्ता-प्राप्त समिति के रूप में ग्रहण किया है। परन्तु लीग जिस प्रकार अस्थायी राष्ट्रीय सरकार की स्थिति १९१९ के विधान के अनुसार निर्मित वाइसराय की समिति से अधिक नहीं बढ़ने देना चाहती, उसी प्रकार परिषद् को भी वह ब्रिटिश पार्लमेंट और सम्राट् के अधीन रखना चाहती है। मिस्टर जिना की शिकायतों में से यह भी एक है कि कांग्रेस विधान-परि अन्तिम निर्णयात्मक शक्ति के रूप में घोषित करती है।

अपनी इसी विचार-धारा के अनुसार मिस्टर जिना लंदन-प्रवास के समय इस बात का भरसक प्रयत्न कि विधान-परिषद् को गैर-कानूनी घोषित करा दें, क्योंकि लीग ने उसमें भाग लेने से इनकार कर दिया है। साहब ने पार्लमेंट में बहुत प्रयत्न किया कि वे मिस्टर के मत के अनुकूल सरकार से घोषणा करा लें, परन्तु सरकार के प्रवक्ता मिस्टर अलेक्जेंडर ने गोल-मोल उ उन्हें टाल दिया। इस सम्बन्ध में मिस्टर अलेक्ज कामन्स सभा में तथा लार्ड पेथिक लारेंस ने लार्ड सु कुछ वक्तव्य दिए हैं, उनसे केवल इतना निष्कर्ष सकता है कि ब्रिटिश सरकार जो कुछ करेगी, दबाव अपनी इच्छा से किसी प्रकार की दृढ़ नीति शक्ति अब उसमें नहीं है। अतः विधान-परिषद् इस समय केवल दृढ़ता और निर्भयता के साथ निर्धारित करने की समस्या होनी चाहिए जो न्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय ब्रिटिश सरकार की सबसे अधिक इच्छा यह है कि किसी प्रकार मुसलिम लीग भी विधान-परिषद् में सम्मिलित हो जाए। मुसलिम लीग को विधान-परिषद् में सम्मिलित कराने का सबसे सरल और सीधा उपाय तो यह था कि सम्राट् की सरकार उसे भारतीय समस्याओं के विषय में पूर्ण-सत्तात्मक समिति मान लेती और मिस्टर जिना को लंदन बुलाने के स्थान पर विधान-परिषद् में जाने की सलाह देती। परन्तु अपनी कायरतापूर्ण और कदाचित् शरारत-भरी नीति के कारण उसने पुनः अल्पमत को बहुमत की प्रगति में बाधा डालने की छूट दे दी और पुनः मिस्टर जिना और उनके संरक्षक मिस्टर चर्चिल को प्रसन्न करने की नीति अपनाई। मुसलिम लीग को खुश करने के लिए लार्ड पेथिक लारेंस ने यहाँ तक कह डाला कि चाहे सङ्घ-अदालत गुट के प्रश्न पर कुछ भी निर्णय दे, सम्राट् की सरकार ६ दिसम्बर की घोषणा में दी गई व्याख्या पर दृढ़ रहेगी। यद्यपि सरदार पटेल ने दृढ़तापूर्वक घोषणा कर दी है कि विधान-परिषद् १६ मई के वक्तव्य के बाद दिए गए किसी अन्य वक्तव्य को मान्य नहीं समझती, फिर भी घटनाओं के रुख को देखते हुए विधान परिषद् मुसलिम लीग को परिषद् में सम्मिलित होने के प्रश्न पर विचार करने का एक और अवसर देगी और उसके बाद वह निश्चय करेगी कि किस प्रकार वह अपनी सर्व-सत्तात्मक शक्ति का उपयोग करके भारतीय प्रजातन्त्र का विधान तैयार करे और देखे कि ब्रिटिश पार्लमेंट या सम्राट् की सरकार उसे कार्यान्वित करने से किस प्रकार इनकार करती है। सम्भव है, उसे अपने इस कार्य में घोर सङ्घर्ष का सामना करना पड़े, परन्तु हमें विश्वास है कि भारत की यह प्रथम विधान-परिषद् अपनी स्वतन्त्रता में कोई बाहरी बाधा सहन न करेगी तथा स्वाधीन भारत का विधान बनाने और उसे कार्यान्वित करने में सफल होगी।

संयुक्त राष्ट्रसङ्घ और जनरल स्मट्स

अन्ततः संयुक्त राष्ट्रसङ्घ में जनरल स्मट्स को और उनकी यूनियन सरकार को मुँह की खानी पड़ी। उनकी ओर से उपस्थित किया गया प्रस्ताव कि 'दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका को यूनियन सरकार में जोड़ दिया जाए' राष्ट्रसङ्घ-द्वारा ठुकरा दिया गया। इसके विपरीत भारतीय प्रतिनिधियों की ओर से उपस्थित किया गया यह प्रस्ताव कि 'दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका के मैंडेट-द्वारा शासित भूभाग को 'अन्ताराष्ट्रीय ट्रस्टी पद्धति' के अन्तर्गत ले लिया जाए' स्वीकृत हो गया। उसी दिन, ८ दिसम्बर को, संयुक्त राष्ट्रों की असेम्बली में 'फ्रेंच-मेक्सिकन' प्रस्ताव भी पास हो गया। उक्त प्रस्ताव का मंशा यह है कि 'दक्षिण अफ्रीका की यूनियन सरकार को यहाँ के प्रवासी भारतीयों के साथ अन्ताराष्ट्रीय नियमों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। इसके लिए यूनियन सरकार और भारत सरकार को आपस में समझौता करना चाहिए। वह समझौता संयुक्त राष्ट्रों के चार्टर के अनुकूल होना चाहिए। साथ ही इस सम्बन्ध में उनकी ओर से जो कुछ तब तक किया जाए, उसकी पृथक् पृथक् रिपोर्ट भारत सरकार और यूनियन सरकार संयुक्त राष्ट्रसङ्घ के आगामी अधिवेशन में उपस्थित करें।'

इस निर्णय को देकर वस्तुतः संयुक्त राष्ट्रसङ्घ ने अपनी उपयोगिता और आवश्यकता प्रमाणित कर दी है। साथ ही उसने यह भी प्रमाणित कर दिया है कि वह अपनी पूर्ववर्त्ती 'लीग ऑव नेशन्स' की भाँति नामदों की संस्था नहीं है जिसमें केवल गोरी जातियों की बात सुनी जाती थी। उपर्युक्त दोनों प्रस्तावों से यह भी प्रमाणित हो जाता है कि अब हवा का रुख किधर को है।

सचमुच यदि संयुक्त राष्ट्रसङ्घ दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका के यूनियन सरकार में जोड़े जाने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लेता तो न केवल संयुक्त राष्ट्रों के चार्टर की, उस प्रजातन्त्रवाद के सिद्धान्त की भी हत्या हो जाती, जिसे सामने रखकर गत द्वितीय महायुद्ध लड़ा गया था और युद्ध पर होनेवाला इतना व्यय, उसमें होनेवाला भयानक रक्तपात, सब व्यर्थ ही जाता। संसार वहीं पर रहता, जहाँ वह लड़ाई से पूर्व, 'लीग ऑव नेशन्स' के युग में, था।

चार्टर में 'पिछड़े राष्ट्रों में स्वराज्य की योग्यता का विकास करना' संयुक्त राष्ट्रों का प्रथम कर्तव्य कहा गया है। यहीं नहीं इसे संयुक्त राष्ट्रों की जिम्मेदारी माना गया है। यूनियन सरकार के हवाले कर दिए जाने पर दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका का वह भूभाग कभी स्वराज्य नहीं प्राप्त कर सकता था। फिर तो वह सदियों के लिए स्मट्स और उनके नाती-पोतों की बपौती बन जाता।

अपने पक्ष के समर्थन में यूनियन सरकार के प्रतिनिधि ने जो दलील दी थी, वह बड़ी मजेदार थी। 'मिस्टर फोरसीथ के शब्द ये थे—'दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका की व्यवस्थापिका सभा ने सर्वसम्मति से सन् १९४३ में ही यह माँग की थी कि उस भूभाग को यूनियन सरकार के भूभाग से जोड़ दिया जाए। इस वर्ष फिर उसने अपनी माँग को दोहराया है।"

उक्त अभागे भूभाग की व्यवस्थापिका में गोराङ्ग महाप्रभु ही तो हैं! फिर वे क्यों न ऐसी माँग करें? उनकी माँग को वहाँ के निवासियों की माँग कैसे माना जा सकता था।

दूसरी बात मिस्टर फोरसीथ ने यह भी कही थी "दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने यह भी आवश्यक समझा था कि वहाँ के निवासियों की सम्मति भी प्राप्त कर ली जाए। और उनकी सम्मति भी हमारी माँग के पक्ष में ही है।"

आज का संसार इस प्रकार प्राप्त की हुई सम्मति के मूल्य और महत्त्व को अच्छी तरह समझता है और इसी लिए उसे आँखों में धूल झोंकना इतना सरल नहीं है। यदि सम्मति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नी है तो उसका ठीक तरीका आज के युग में यह है कि उस श में पहले बालिग मताधिकार स्थापित किया जाए। फिर युक्त राष्ट्रसङ्घ की सतर्क निगरानी में चुनाव हों और तब पक्ष विपक्ष के मतों की गणना की जाए। इस प्रकार का र्णय ही प्रजातन्त्र की भावना के अनुकूल हो सकता है। ेंच-मेक्सिकन' प्रस्ताव दक्षिण अफ्रीका की यूनियन सरकार प्रति निन्दा का खुला प्रस्ताव है। इस प्रस्ताव से जनरल ट्स की आँखें खुल गई होंगी और उन्हें दिन में तारे खाई देने लगे होंगे। उनकी समझ में यह भी आ गया गा कि ब्रिटेन और अमेरिका का पृष्ठपोषण भी उनके कृत्य पर पर्दा नहीं डाल सकता, न उन्हें शेष संसार का णापात्र बनने से बचा सकता है। आज का संसार अधिक साहसी हो गया है और वह कुकर्मी पर बिना थूके नहीं न सकता।

गत २५ वर्ष से जनरल स्मट्स प्रजातन्त्रवाद और उन स्त भावनाओं की गला फाड़-फाड़कर वकालत करते आए जिनकी ओट में गत दोनों महायुद्ध लड़े गए थे। वे ने भाषणों में अनेक बार यह कहते भी सुने गए थे कि एक नए संसार की स्थापना होने की अत्यन्त आवश्यकता पर अपने अधिकृत प्रदेश में वे पुराने संसार की व्यवस्था कायम रखना चाहते हैं! वह व्यवस्था, जिसे हिटलर ने ाया था! वही व्यवस्था जिसके मूल में जातिगत और गत विद्वेष था! प्रजातन्त्रवाद के इस हाथी के खाने र दिखाने के दाँतों में इतना अन्तर है, संयुक्त राष्ट्रसङ्घ के ाव ने यह स्पष्ट कर दिया है। आश्चर्य तो यह है कि गोरे हाथी को अफ्रीका-प्रवासी भारतीयों की आर्थिक, ाजिक और राजनीतिक हीनता पर भी सन्तोष नहीं हुआ र वह उन बेचारों को एकदम भङ्गी बनाकर रखने पर ही रू हो गया! और वह भी सन् १९४६ में, संयुक्त राष्ट्रसङ्घ नाक के ठीक नीचे!

जनरल स्मट्स हैं भी अपने हठ के पक्के! अपने योग्य कारियों की भी सलाह इस मामले में उन्होंने नहीं मानी। णी अफ्रीका के वर्त्तमान प्रधान मन्त्री डाक्टर हाफमायर कहा था—"मैं मानव मात्र की बन्धुता का पक्षपाती हूँ। बन्धुता का जिसमें रङ्ग या जाति का कोई विचार नहीं। ङ्ग-विद्वेष की निन्दा करता हूँ। घेटो ने न केवल उनको पहुँचाई है जो वहाँ रहते हैं, बल्कि उनको भी जो वहाँ रहने को विवश कर रहे हैं।"

रङ्ग-विद्वेष यदि हिटलर के लिए अपराध था और उसे ने उस अपराध का दण्ड पूरी मात्रा में भोगना पड़ा, तो स के लिए वह पुण्यकार्य नहीं हो सकता।

कहते हैं, कुछ अफ्रीका-निवासी अब यह कहने लगे हैं भारतीयों ने इस मामले को संयुक्त राष्ट्रसङ्घ में ले जाकर अपने हित में ठीक नहीं किया। कारण, इसके स्वरूप दक्षिणी अफ्रीका के गोरे भारतीय व्यापारि आर्थिक बहिष्कार प्रारम्भ करने लगेंगे, जिससे भा बहुत बड़ी हानि होगी। यही नहीं, भारतीयों को के लिए वे अन्य नए उपायों का भी शीघ्र ही करेंगे। पर उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि अ करतूत से वे न केवल एक प्रबल राष्ट्र को अपना लेंगे, जो शीघ्र ही स्वतन्त्रता प्राप्त करके संसार की प्रमुख का समकक्ष बनने जा रहा है, संयुक्त राष्ट्रसङ्घ के नि भी उल्लङ्घन करेंगे। उनकी कुशल अब भारत के समझौता करने में ही है। दूसरा कोई मार्ग अब नहीं है।

मिस्र की राजनीति

मिस्र के प्रधान मन्त्री श्री सिदकी पाशा ने अपने त्यागपत्र दे दिया। त्यागपत्र का कारण 'स्वास्थ्य होना' कहा गया है। सन् १९३१-३४ में भी वे मि प्रधान मन्त्री थे और उस समय भी उन्होंने 'स्वास्थ्य होने' के कारण ही त्यागपत्र दिया था। इस प्रकार दो वे मिस्र के प्रधान मन्त्री बने और दोनों बार एक ही आ त्यागपत्र देकर अपने उत्तरदायित्वपूर्ण पद से पृथक् हो

श्री सिदकी पाशा अर्थशास्त्र के पण्डित हैं और इस उनका मुकाबला करनेवाला मिस्र में सम्भवतः कोई नहीं पर राजनीति में वे पूरे प्रतिगामी हैं, और इसी कारण नई पीढ़ी के साथ उनकी पटरी नहीं बैठती थी। इ स्थिति में उनका प्रधान मन्त्रित्व से हट जाना ठीक ही हु

उनके स्थान पर नियुक्त होनेवाले श्री नोक्रशी पाशा की राजनीति के एक पुराने खिलाड़ी हैं। सन् १९२ सब से प्रथम प्रकाश में आए थे। उन्हीं दिनों मिस्र में सरली स्टेक की हत्या कर दी गई थी और ब्रिटेन की उसका सारा दोष वफ्द पार्टी पर मढ़ा गया था। इस में वफ्द पार्टी के कई सदस्य गिरफ्तार किए गए थे, मकराम एबिद पाशा और नोक्रशी पाशा प्रमुख थे। पक्ष का कहना था कि हत्या के सम्बन्ध में प्राणदण्ड अभियुक्त वफ्द पार्टी के दफ्तर में पकड़ा गया था। के न्यायाधीश अँगरेज न्यायाधीशों से इस सम्बन्ध में न हो सके और उन्होंने उक्त दोनों नेताओं को मुक्त कर

उस घटना के पश्चात् उपर्युक्त दोनों नेताओं ने नीति ही बदल दी। उन्होंने वफ्द पार्टी को छोड़ दि एक नया दल 'साडिस्ट पार्टी' के नाम से खड़ा किया। दलों में अन्तर यह है कि वफ्द पार्टी पार्लमेंट की सत्ता में विश्वास रखती है और 'साडिस्ट पार्टी' बादशाह ईश्वर-प्रदत्त अधिकारों में। मिस्र का बादशाह ब्रिटेन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का खिलौना है, इसलिए ब्रिटिश सरकार के लिए वफ्द पार्टी की अपेक्षा साडिस्ट पार्टी को और नहस पाशा की अपेक्षा नोक्रशी पाशा को अधिक पसन्द करना स्वाभाविक ही है।

यह नहीं माना जा सकता कि नोक्रशी पाशा की नियुक्ति से मिस्र की राजनीतिक परिस्थिति में कुछ उन्नति होगी। आज का मिस्र पूर्ण स्वाधीनता के लिए प्रयत्नशील है। वह पूर्ण रूप से राष्ट्रीय सरकार चाहता है। वह ऐसी सरकार नहीं चाहता जो इँग्लैंड के आदेशों पर नाचनेवाली हो।

गत सितम्बर में साडिस्ट पार्टी ने सिदकी पाशा के संयुक्त मन्त्रिमण्डल में भाग लेना निश्चित किया था। उस समय यह प्रश्न किए जाने पर कि 'क्या आप आशा करते हैं कि ब्रिटेन और मिस्र के बीच समझौता हो जाएगा', नोक्रशी पाशा ने उत्तर दिया था, "मैं निराशावादी नहीं हूँ। न राष्ट्र को अपने उस सङ्घर्ष के प्रति, जो वह अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए कर रहा है, निराश होना चाहिए। ब्रिटेन और मिस्र के बीच ऐसा समझौता हो जाने की पूरी सम्भावना है जो दोनों के लिए सन्तोषजनक हो।"

मिस्र अब भी निराश नहीं है। वह सफलता प्राप्त करने के लिए कृतसङ्कल्प है। हाँ, वह यह अवश्य अनुभव कर रहा है कि सिदकी पाशा या नोक्रशी पाशा के नेतृत्व से उसे सफलता नहीं मिलेगी। सिदकी पाशा ने प्रयत्न करके मिस्र से ब्रिटिश सेनाओं के हटाए जाने का समय तीन वर्ष और बढ़वा लिया। उन्होंने 'सम्मिलित रक्षा कमीशन' के प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया था जिसके अनुसार मिस्र ब्रिटिश सेनाओं का अड्डा बन जाता। नोक्रशी पाशा भी उन्हीं का पदानुसरण करेंगे। ऐसे आधारों पर किया गया समझौता निस्सन्देह अंगरेजों के लिए मान्य हो सकता है, मिस्र के राष्ट्रवादियों के लिए नहीं।

यदि नोक्रशी पाशा को भी दो ही तीन महीने के भीतर 'स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण' त्यागपत्र दे देना पड़े तो इसमें कोई आश्चर्य की बात न होगी। इस दशा में ब्रिटेन और मिस्र के सम्बन्ध और भी बिगड़ जाएँगे। जिस सरकार को जनापत्त का पूर्ण समर्थन प्राप्त नहीं है, उसे किसी विदेशी सरकार के साथ ऐसा समझौता करने का कोई अधिकार नहीं है जिसका सीधा प्रभाव प्रजा पर पड़ता हो। प्रजातन्त्रवाद का तकाजा यही है।

पिछले दिनों श्री सिदकी पाशा और मिस्टर बेविन के बीच समझौते के सम्बन्ध में जो बातचीत चल रही थी, वह अब मिस्टर बेविन और श्री नोक्रशी पाशा के बीच चलेगी। इसे साँठ-गाँठ भर कहा जा सकता है, समझौता नहीं। साँठ-गाँठ का परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता। अतः ब्रिटेन यदि वास्तव में ऐसे समझौते के लिए उत्सुक है जो दोनों पक्षों के लिए मान्य हो और साथ ही जिसमें कुछ स्थायित्व भी हो तो उसे 'वफ्द पार्टी' के नेताओं के साथ चर्चा चलानी चाहिए।

मलाया में साम्प्रदायिकता का प्रचार

गत वर्ष ब्रिटिश सरकार की ओर से एक विधान-योजना प्रकाशित की गई थी, जिसके अनुसार मलाया के सुल्तानों को प्रायः समस्त अधिकारों से वञ्चित कर दिया गया था और वे अधिकार 'औपनिवेशिक कार्यालय' को हस्तान्तरित कर दिए गए थे। मलाया में लगभग ६ लाख भारतीय भी हैं जिनका पेशा प्रायः मजदूरी है। इन दिनों उन मजदूरों की मजदूरी व रहन-सहन के सम्बन्ध में मलाया की सरकार और भारत सरकार के बीच बातचीत चल रही है। भारतीय मजदूरों की माँग यह है कि उनकी मजदूरी की दर उतनी ही होनी चाहिए जितनी कि चीनी मजदूरों की है। साथ ही उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार होना चाहिए, जैसा कि चीनी मजदूरों के साथ किया जाता है।

यह युग संघशक्ति का है। स्पष्ट है कि यदि भारती मजदूर सङ्गठित हो गए तो मलाया के 'औपनिवेशिक कार्यालय' को उनकी माँगें मञ्जूर करने के लिए विवश हो जाना पड़ेगा। फोड़-फोड़कर राज्य करना गोरों की पुरानी राजनीति है और इसका प्रयोग वे मलाया में भी कर रहे हैं। वे इस काम में कुछ अंशों तक सफल भी हो रहे हैं। चीनी और मलय मजदूरों में उन्होंने फूट के बीज बो दिए हैं। वे मलाया के वासियों से कहते हैं कि यदि मलाया के अन्य निवासियों को भी, जिनमें चीनी भी शामिल हैं, नागरिकता के अधिकार दे दिए गए तो मलाया अपनी स्वाधीनता खो देगा और चीनी प्रजातन्त्र का पैंतीसवाँ सूबा बनकर रह जाएगा।

बात सीधी है। जब तक मलायावासी मलय, चीनी और भारतीय आपस में लड़ते रहेंगे तब तक वहाँ के 'औपनिवेशिक कार्यालय' के लिए भय का कोई कारण उपस्थित नहीं हो सकता; वहाँ गोरों को शोषण की पूरी आजादी बनी रहेगी और वे वहाँ की उपज से अपनी जेबें भरते रहेंगे।

अब तक वहाँ के भारतीय सङ्गठित थे, पर अब उनमें भी भेदभाव उत्पन्न करने की चेष्टा की जा रही है। सुना गया है कि पिनांग में मुसलमानों के एक दल ने मिलकर मुसलिम लीग की स्थापना की है और अब वे उस 'अखिल मलाया भारतीय मुसलिम लीग' का अधिवेशन करने जा रहे हैं जिसके सभापतित्व के लिए जिना साहब के सहकारी सरदार अब्दुर्रब निश्तर को आमन्त्रित किया गया है।

भारतीय नेताओं का ध्यान इस परिस्थिति की ओर शीघ्र आकृष्ट होना आवश्यक है। यदि निश्तर साहब मलाया में भी पाकिस्तान का सन्देश सुनाने पहुँच गए तो वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ारतीय मजदूर दो दलों में विभक्त हो जाएँगे—मुसलिम मजदूर और हिन्दू मजदूर! फिर एक ओर मलय और चीनी मजदूर एक दूसरे का सिर फोड़ते दिखाई दें गे तो दूसरी ओर हिन्दू और मुसलमान मजदूर आपस में लड़ते-झगड़ते दिखाई दें गे। फल यह होगा कि मलाया में प्रजातन्त्र की स्थापना की बात स्वप्न बनकर रह जाएगी और भारतीय मजदूरों की दशा में भी सुधार होना असम्भव हो जाएगा।

क्या हम आशा करें कि मुसलिम लीग के कर्णधार इस मामले में थोड़ी बुद्धिमत्ता का परिचय अवश्य दें गे? हम जानते हैं कि वे साम्प्रदायिकता के विष के प्रचार से अपने को रोक नहीं सकते, फिर भी वे यदि इस विष को विदेशों को निर्यात न करें तो बड़ी कृपा हो। घर में नहीं तो बाहर तो हिन्दू और मुसलमानों को वे भाई-भाई की तरह रहने ही दें। हाँ, यदि लीगी नेताओं ने 'बादशाह की पार्टी' बनने का ही निश्चय कर लिया हो तो दूसरी बात है। उस दशा में वे अपने मालिकों के हित के लिए जो कुछ न कर डालें, वही कम होगा।

——

आबादी की अदला-बदली

जिना साहब ने साम्प्रदायिक कलह का अन्त करने के लिए पिछले दिनों एक नया सुझाव उपस्थित किया है। आपका कथन है—"देश के विभिन्न भागों में बहुमत के व्यक्तियों के द्वारा अल्पमत के व्यक्तियों की जो पाशविक रूप में हत्याएँ हो रही हैं। उनको बचाने के लिए आबादी की अदला-बदली आवश्यक है। केन्द्रीय और प्रान्तीय अधिकारियों को इस प्रश्न की ओर तुरन्त ध्यान देना चाहिए।"

जिना साहब के मुँह से ये शब्द पूरे निकल भी नहीं पाए और दूसरी ओर उनके सहकारियों ने इस पर अमल भी शुरू कर दिया है। बङ्गाल के लीगी प्रधान मन्त्री श्री सुहरावर्दी ने बिहार के अल्प-संख्यक मुसलमानों को पश्चिमी बङ्गाल में जा बसने का निमन्त्रण दिया है और उन्हें उचित स्थान, भूमि व घर आदि देने का भी आश्वासन दिया है। यही नहीं, मुसलिम लीग की ओर से कुछ स्वयंसेवक भी भेजे गए हैं जो इच्छुक मुसलमानों की इस हिजरत में सहायता दें और उनके लिए आवश्यक सुविधाएँ मुहैया करें। अब तक जो मुसलमान बिहार से जा चुके हैं उनकी संख्या चार अङ्कों में बतलाई गई है।

पश्चिमी बङ्गाल मुसलिम बहुमत का प्रान्त नहीं है। उसकी आबादी भी सघन है। खाद्य-सामग्री की उपज की दृष्टि से भी बङ्गाल स्वनिर्भर नहीं है। फिर अपनी जन्मभूमि को छोड़-कर किसी सर्वथा नए देश में जा बसना कुछ इने-गिने लोगों को भले ही पसन्द आ जाए, अधिकांश लोगों को पसन्द नहीं आ सकता। न बिहार के अधिकांश मुसलमान साम्प्रदायिकता की सनक में अपने बाप-दादों की जमीन-जायदाद को यों सरलता से छोड़ भागने को राजी हो सकते हैं। इतनी बाधाओं के रहते हुए आबादी-परिवर्तन का प्रश्न उठाना केवल उन्हीं को शोभा दे सकता है, जिन्हें मुहम्मद तुगलक का दिमाग विरासत में पाया हो।

जिना साहब की यह सनक आज की नहीं है। डाक्टर अब्दुल लतीफ ने सन् १९३५ में जब पाकिस्तान की योजना पुस्तक के रूप में जनता के सामने रक्खी थी, तब उन्होंने पाकिस्तान की स्थापना के लिए आबादी का परिवर्त्तन आवश्यक ठहराया था। पाकिस्तान की प्रेरणा जिना साहब को उन्हीं से तभी से मिली है। उस समय भी उन्होंने इस प्रश्न को उठाया था, पर सुर जरा मन्द था। जिना साहब समझते थे कि अभी देश का वातावरण अनुकूल नहीं है और आबादी की अदला-बदली की योजना मुसलमानों को स्वीकार नहीं हो सकती। वे यह भी तत्काल ही समझ गए थे कि यदि इस प्रश्न पर अधिक जोर दिया गया तो उनकी नेतागिरी खतरे में पड़ जाएगी। इसी लिए वे उस समय चुप रह गए और उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। यही नहीं, तुरन्त करवट बदलते हुए उस समय उन्होंने यह भी कह डाला था—"यह गलत बात लोगों में फैला दी गई है कि अल्पसंख्यक मुसलमानों को पाकिस्तानी प्रान्तों में हिजरत करनी पड़ेगी। यह सरासर झूठा भरा प्रचार है जो मुसलमानों को भयभीत करने के लिए किया जा रहा है। पाकिस्तान के लिए इस तरह की कोई शर्त नहीं है। मैं अपने मुसलमान भाइयों को विश्वास दिलाता हूँ कि इस प्रचार की जड़ में कोई सत्य नहीं है। जब हिन्दुस्तान का बँटवारा हो जाएगा, तब इस सवाल को उठाया जा सकता है।"

जिना साहब की समझ से आबादी की अदला-बदली के लिए उपयुक्त अवसर अब आ गया है, या बना लिया गया है। उनके विषैले साम्प्रदायिक प्रचार ने आज हिन्दू और मुसलमानों को एक-दूसरे के प्रति शङ्काशील बना दिया है। इसी लिए उन्होंने निःशङ्क होकर कह दिया है कि "इस झगड़े को समाप्त कर देने के लिए आबादी की अदला-बदली हो जानी चाहिए।"

पर जिना साहब का यह स्वप्न सत्य सिद्ध होगा, इसमें भारी सन्देह है। सम्भावना यही है कि यह योजना भी तुगलक की तादृश योजना के समान भविष्य में इतिहासकारों का मनोरञ्जन करेगी। चमड़े का भारी व्यापार करने वाले मद्रासी मुसलमान अपना करोड़ों का धन्धा छोड़कर क्या जा बसें और युक्त प्रान्त के जुलाहे अपने करघे बीनकर उठा ले जाएँ, यह समझ में नहीं आ सकता।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

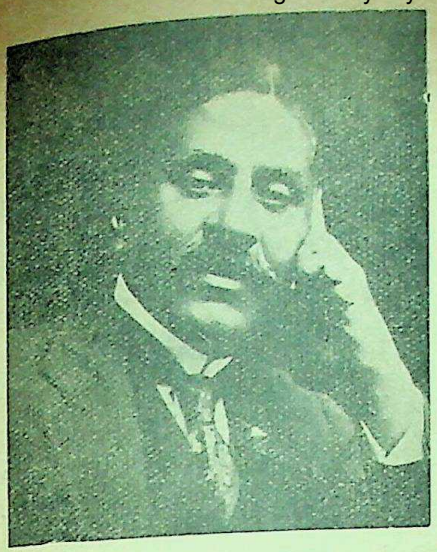

मा० डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा

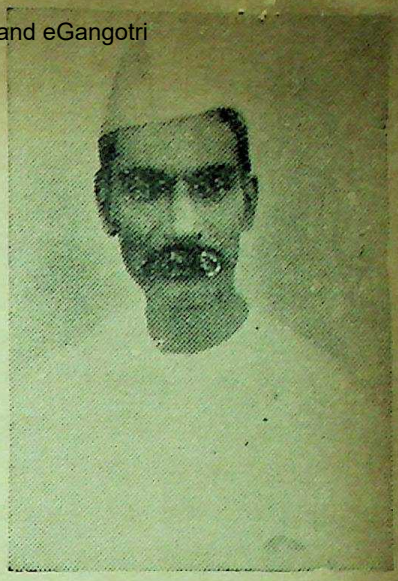

मा० डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

विधान-सम्मेलन में—

"विधान-परिषद्-द्वारा शासन-विधान बनाने का तरीका इँगलैंड में कभी प्रचलित नहीं हुआ, क्योंकि वहाँ सामान्य कानून और वैधानिक कानून में कोई भेद नहीं है। ब्रिटिश पार्लमेंट सर्वोच्च सभा है जो दोनों प्रकार के कानून बना सकती है। योरप के सबसे प्राचीन स्विस जनतन्त्र में भी शासन-विधान आज-कल के तरीके से नहीं बना है, ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। फिर भी वर्तमान स्विस शासन-विधान भारतवर्ष के लिए अध्ययन की वस्तु है। हमारे विधान-निर्माता उससे अनेक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। फ्रांस के अध्ययन से भी हमें लाभ होगा। किन्तु सबसे अधिक लाभ हमें सं० रा० अमेरिका के संघ-शासन-विधान के अध्ययन से होगा। यह वह विधान है जिससे फ्रांस और उसके बाद कनाडा, आस्ट्रेलिया, द० अफ्रीका आदि ब्रिटिश उपनिवेशों ने प्रेरणा प्राप्त की है। इन उपनिवेशों के शासन-विधान-निर्माण का इतिहास भी हमें बहुत कुछ सिखा सकता है। क्या जिस प्रकार सं० रा० अमेरिका का शासन-विधान आज १६० वर्षों के बाद भी कायम है और अमर कहा जाता है, और जिसकी संसार भर के बड़े-बड़े विधान-विशेषज्ञों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है, उसी प्रकार हम भी अपने देश के लिए एक अमर व चिरस्थायी विधान तैयार नहीं कर सकते? मेरी प्रार्थना है कि आप लोगों का परिश्रम भी यदि सफल हो, यदि मनुष्य के परिश्रम का फल अमर हो सकता है तो, वह इतनी दृढ़भित्ति पर खड़ा हो कि बड़े-बड़े संहारक तूफान भी उसे न डगमगा सकें।"

—डाक्टर सच्चिदानन्द सिनहा

[विधान-सभा के अस्थायी सभापति]

"मैं जानता हूँ कि जन्म से ही इस असेम्बली पर कुछ बंधन हैं। हम अपनी कार्यवाहियों तथा निर्णय में शायद उन बन्धनों को भूल न सकें, परन्तु मैं यह भी जानता हूँ कि उन बन्धनों के बावजूद यह असेम्बली एक स्वाधीन तथा आ निर्णायक संस्था है, जिसकी कार्यवाहियों में कोई बाह्य शक्ति हस्त नहीं कर सकती और जिसके निर्णयों को बाहरी शक्ति बदल सकती, अथवा उनमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। विधान-सम्मेलन के अधिकार की बात है कि इस पर जो क जन्म से लगाए गए हैं, उन्हें यह तोड़ दे अथवा नष्ट कर मैं आशा करता हूँ कि आप लोग, जो यहाँ स्वतंत्र स्वा भारत का विधान बनाने आए हैं, उन बन्धनों को तोड़ सकेंगे संसार के सामने एक आदर्श विधान रख सकेंगे जो इस महादी रहनेवाले सभी वर्गों, सम्प्रदायों तथा धर्मावलम्बियों को सन्तोष प्र करेगा तथा प्रत्येक व्यक्ति को कार्य, विचार तथा धर्म की स्व प्रदान करेगा, जो प्रत्येक व्यक्ति को ऊँचे से ऊँचे पद पर पहुँच का अवसर प्रदान करेगा और जो प्रत्येक क्षेत्र में पूरी समता स्था करेगा। मुझे आशा तथा विश्वास है कि यह विधान-सम्मेलन शक्ति संगृहीत कर लेगा, जैसा कि इस प्रकार के सभी सम्मेलन रवय्या रहा है।"

—डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

[विधान-सभा के स्थायी

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

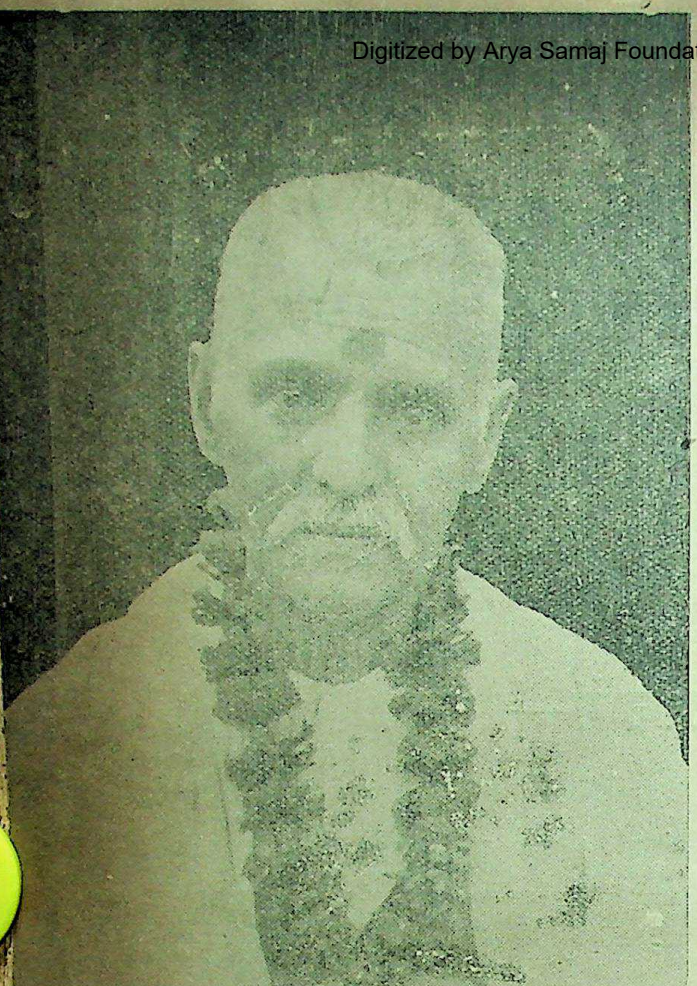

मालवीयजी महाराज

"अँगरेजी में एक कहावत है—"राजा गया, राजा हमेशा गा!" ठीक यही भारत-भूषण मालवीयजी महाराज के लिए कहा सकता है—"मालवीयजी गए, मालवीयजी अमर हों!" माल-जी हिन्दुस्तान के लिए पैदा हुए और हिन्दुस्तान के लिए किए अपने कामों में जीते हैं। उनके काम बहुत हैं। बहुत बड़े हैं। सबसे बड़ा हिन्दू-विश्व-विद्यालय है। गलती से उसे हम 'बना-हिन्दू यूनिवर्सिटी के नाम से पहचानते हैं। उस नाम के लिए मालवीयजी महाराज का नहीं, उनके पैरोकारों का रहा है। यजी महाराज दासानुदास थे। दास लोग जैसा करते थे, वे करने देते थे। मुझे पता है कि यह अनुकूलता उनके स्वभाव में भरी थी। यहाँ तक कि कभी-कभी रूप ले लेती थी। लेकिन 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं मालवीयजी महाराज के बारे में भी कही जा सकती है प्रिय नाम तो 'हिन्दू-विश्व-विद्यालय' ही था। और यह अब भी करने लायक है। इस विश्व-विद्यालय का प्रत्येक हिन्दू-धर्म का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। एक भी मकान जड़वाद की निशानी न हो, बल्कि अध्यात्म की निशा और, जैसे मकान हों, वैसे ही शिक्षक और विद्यार्थी भी हैं? प्रत्येक विद्यार्थी शुद्ध धर्म की जीवित प्रतिमा है? क्यों नहीं हैं? इस विश्व-विद्यालय की परीक्षा विद्यार्थियों से नहीं, बल्कि उनके हिन्दू-धर्म की प्रतिमा होने से ही हो फिर भले वे थोड़े ही क्यों न हों।

"मैं जानता हूँ कि यह काम कठिन है। लेकिन विद्यालय की जड़ है। अगर यह ऐसा नहीं है, तो कुछ इसलिए स्वर्गीय मालवीयजी के पुत्रों का और उनके का धर्म स्पष्ट है। जगत् में हिन्दू-धर्म का क्या स्थान है आज क्या दोष हैं? वे कैसे दूर किए जा सकते हैं? महाराज के भक्तों का कर्त्तव्य है कि वे इन प्रश्नों को मालवीयजी अपनी स्मृति छोड़ गए हैं। उसको स्थायी और उसका विकास करना उनका श्रेष्ठ स्मृति-स्तम्भ होग

"विश्व-विद्यालय के लिए स्व० मालवीयजी ने इकट्ठा किया था, लेकिन बाकी भी काफी रहा है। इस प्रत्येक आदमी हाथ बँटा सकता है।

"यह तो हुई उनकी बाह्य प्रवृत्ति। उनका अन्तर्ज विशुद्ध था। वे दया के भण्डार थे। उनका शास्त्रीय ज्ञान भागवत उनकी प्रिय पुस्तक थी। वे सावधान कथाकार स्मरण-शक्ति तेजस्विनी थी। जीवन शुद्ध था, सादा था।

"उनकी राजनीति को और दूसरी अनेक प्रवृत्तियों को हूँ। जिन्होंने अपना सारा जीवन सेवा को अर्पित किया था, अनेक विभूतियाँ रखते थे, उनकी प्रवृत्ति की मर्यादा सकती। मैंने तो उनमें से चिरस्थायी चीजें ही देने का था। जो लोग विश्व-विद्यालय को शुद्ध बनाने में मदद देना हैं, वे मालवीयजी महाराज के अन्तर-जीवन का मनन और करने की कोशिश करें।"

—मोहनदास करमचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय राष्ट्र-रक्षा की समस्या

श्री अवनीन्द्रकुमार, विद्यालङ्कार

भारत आज स्वतन्त्रता के सिंहद्वार पर खड़ा है। देश में छिड़े गृह-युद्ध की काली रात भी स्वाधीनता-सूर्य को उदित होने से न रोक सकेगी। यह तो नूतन राष्ट्र के जन्म की प्रसव-वेदना है। इसलिए इनसे विचलित न होकर हमें अपने निश्चित पथ पर आगे बढ़ते रहना चाहिए और स्वाधीन भारत के सामने आनेवाली समस्याओं पर धीरता के साथ हमें विचार करना चाहिए।

स्वाधीन भारत के सामने सबसे पहली समस्या प्राप्त स्वाधीनता की रक्षा करना है। इस एटमिक-युग में भारत निरापद अपनी स्वाधीनता का उपभोग कर सके इसके लिए यह आवश्यक है कि भारत अपनी रक्षा की समुचित व्यवस्था करे। ब्रिटिश परराष्ट्र-मन्त्री मि० बेविन ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ब्रिटेन ने पहले शस्त्रीकरण करके जो गलती की थी, उसकी वह पुनरावृत्ति नहीं करेगा। सोवियत रूस और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका भी शस्त्रीकरण का नाम नहीं ले रहे हैं। बल्कि विश्व-शान्ति की आवश्यकता के लिए विशाल और शक्तिशाली सेना की आवश्यकता बताई जाती है। ब्रिटेन पर अपनी रक्षा के लिए निर्भर रहनेवाले डुमीनियन भी राष्ट्र-रक्षा के लिए शस्त्रीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, या बड़े राष्ट्रों के साथ अपनी रक्षा-योजना को मिला रहे हैं। एटमिक-युग निःशस्त्रीकरण का युग नहीं है और न भावी विश्व-शान्ति शस्त्ररहित होगी। इसलिए भारत अहिंसा का बाना धारण करके और प्रेम-मन्त्र का जप करते हुए रह नहीं सकता। उसको तो अपने विशाल देश और ५० कोटि जनता के उपयुक्त राष्ट्र-रक्षा की समुचित योजना बनानी होगी। मानव-सभ्यता परमाणु बम के परीक्षणों के कारण नवीन युग में पदार्पण कर रही है। यह नूतन शक्ति विनाश करेगी या सभ्यता में क्रान्तिकारी परिवर्तन करेगी, यह भविष्य के हाथ में है। मगर निहत्था और शस्त्रहीन भारत यदि भावी संहार और विनाश से बचना चाहता है, तो भी और वह यदि सभ्यता के नवीन संस्करण और निर्माण में भाग लेना चाहता है, तो भी उसको बड़े राष्ट्रों के समान अपनी जल-थल और नभ सेना बनानी होगी।

भारत के लिए यह एक और दृष्टि से आवश्यक है। अटलांटिक चार्टर की ४३वीं धारा ने भारत पर आग्नेय एशिया में शान्ति रखने का उत्तरदायित्व डाला है। शान्ति के खतरे में पड़ने पर प्रत्येक राष्ट्र उसके निवारण के लिए अपनी शक्ति और स्थिति के अनुसार अपना भाग देने के लिए उसी अनुसार बाध्य है। भारत अपनी भौगोलिक स्थिति, जन-शक्ति और प्राकृतिक स्रोतों के कारण आग्नेय एशिया की सुरक्षा और एशिया में शान्ति बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है। इस महान् उत्तरदायित्व को पूरा करने के योग्य भारतीय सैन्य-शक्ति होनी चाहिए। इसका अर्थ है वह रूस और अमेरिका से किसी भी अवस्था में कम न होनी चाहिए, बल्कि इनकी सम्मिलित शक्ति के बराबर होनी चाहिए।

क्या ब्रिटेन पर निर्भर रहें?—महान् योद्धा नैपोलियन का कहना है कि लड़ाई का मामला स्थिति प्राप्त करने के लिए संघर्ष है। सामरिक व्यूह-रचना की दृष्टि से अपने हाथ में पकड़े पक्षी को उड़ा देना मूर्खता होगी। इसलिए ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए भारत की स्थिति की महत्ता को देखते हुए यह आशा करना नितान्त मूर्खता होगी कि ब्रिटेन भारत को सर्वथा छोड़ देगा। वह पारस्परिक सैनिक सहायता पैक्टों के द्वारा अपनी वर्तमान स्थिति को बनाए रखने के लिए अवश्य प्रयत्न करेगा। भारत भी अकेला नहीं रह सकता उसको अन्य देशों की मैत्री और सहायता की आवश्यकता होगी। जाने-पहचाने पुराने से मैत्री करने की अपेक्षा नए की खोज करना बुद्धिमत्ता नहीं है। ब्रिटेन और भारत समान मैत्री के आधार पर मिल सकते हैं और परस्पर सहयोग कर सकते हैं पारस्परिक करार पर शत्रु का आक्रमण होने प पारस्परिक कारवाई की गारंटी कर सकता है। एक पक्ष यह है पर इसमें भारत की प्रतिष्ठा और उसके गौरव को क्षति पहुँचत है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

भारत के प्रधान सेनापति फील्ड मार्शल सर आचिनलेक भारतीय राष्ट्र की रक्षा के लिए जो योजना बना रहे हैं, व ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा-व्यवस्था का एक अङ्ग होगी, यह एक मानी हुई बात है ब्रिटिश युद्ध-विभाग उस योजना को रियासती प्रतिनिधियों की सहायता से विधान-निर्मात्री सभा-द्वारा स्वीकार करा लेगा, यह सम्भावना कोरी कल्पना नहीं कही जा सकती। जब लीग और कांग्रेस में भारी मतभेद है, तब यह इसकी पूरी सम्भावना है, यह इन्कार नहीं किया जा सकता।

खतरा—स्वाधीन भारत की गवर्नमेंट के साथ एक बा सुरक्षा पैक्ट हो जाने के बाद ब्रिटेन फिर भारत में 'सामरिक सुरक्षा' की स्थापना की माँग करेगा। हिन्द महासागर के अपने हितों की रक्षा के लिए ब्रिटेन कह सकेगा कि यह 'सुरक्षित सेना' विशुद्ध रूप से ब्रिटिश हो और सीधे उसके नियन्त्रण में हो। यदि भारत उसकी पहली बात मानता है तो उसको दूसरी बात भी माननी होगी, क्योंकि भारत के पास ब्रिटेन की उसके शत्रुओं

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्षा करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं है। 'सामरिक सुरक्षा' के लिए स्वभावतः अत्यधिक विकसित और उन्नत उद्योग, अजेय और दुर्दमनीय हवाई सेना और एटमिक शस्त्रास्त्रों के वैज्ञानिक ज्ञान की आवश्यकता होगी। हमारे पास इनमें से एक भी नहीं है। यदि ब्रिटेन यह प्रदान करेगा तब ब्रिटेन भारतीय सामरिक व्यूह-रचना और सुरक्षा का सहज में स्वामी हो जाएगा और इसके फल-स्वरूप वह भारतीय परराष्ट्र-नीति का भी निर्णायक हो जाएगा। इस अवस्था में भारतीय स्वाधीनता मिस्री स्वाधीनता का दूसरा संस्करण मात्र होगी। विदेशी सेना को अपने देश में स्थान देना स्वाधीनता के लिए ग्रहण का काम देगा। ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपनी कोठियों की रक्षा के लिए सेना रखने की इजाजत देने का फल आज तक भारत भोगता रहा है। यदि भविष्य में भी उसने 'सामरिक सुरक्षा स्थान' ब्रिटेन को दिए और इसके लिए ब्रिटिश सेना रक्खी गई और भारत की अपनी सेना उससे कमजोर हुई, तो उसका जो परिणाम होगा वह सहज में सोचा जा सकता है। इसलिए भारत अपनी सुरक्षा के लिए ब्रिटेन पर किसी अंश में निर्भर नहीं रह सकता और न उसको यह स्वप्न में भी सोचना चाहिए।

असुरक्षित है—भूतकाल में सुरक्षा की दृष्टि से भारत एक सौभाग्यशाली राष्ट्र था। उन्नत शिखरोंवाले पहाड़, विस्तृत मरुभूमि और सघन कान्तार ये सब सम्मिलित प्राकृतिक बाधाएँ भारत पर परचक्र के आक्रमण को रोकती थीं। भारत थोड़ी-सी शक्ति से भी अपने विस्तृत सीमाप्रान्त की रक्षा कर सकता था। पर जो बात भूतकाल में सम्भव थी, वह भविष्य में सम्भव नहीं है। हवाई शक्ति के विकास ने उसको पहले से कई गुना अधिक आक्रमण-योग्य बना दिया है। जापानी आक्रमण ने बता दिया है कि भारतीय तट सर्वथा असुरक्षित है और समुद्र की ओर से भारत पर आक्रमण सुगम है। जलमार्ग से भारत की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि आक्रान्ता भारतीय समुद्र से दूर ही दूर रक्खा जाए। राजनीतिक दृष्टि से भी भारत सुरक्षित नहीं है। इसके चारों ओर के राष्ट्र छोटे हैं, और वैधानिक और आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं और सामाजिक दृष्टि से अस्थिर हैं। इनमें से कोई भी राष्ट्र शान्ति-भङ्ग नहीं करना चाहता, मगर अपनी अस्थिरता और निर्बलता के कारण वैयक्तिक और सामूहिक रूप से शक्तिशाली भयजनक स्थान है।

विश्व-सुरक्षा कौंसिल के अन्तर्गत प्रदेशों की स्थानीय सुरक्षा की जिम्मेदारी प्रत्येक बड़े राष्ट्र पर होगी। प्रत्येक प्रदेश या 'जोन' में परस्पराश्रित इकाइयाँ होंगी। भारत की अपनी भौगोलिक स्थिति आकार-परिमाण, जनशक्ति और महत्त्वाकांक्षाओं के कारण अफ्रीका और मध्यपूर्व के बीच और सुदूरपूर्व और प्रशान्त के बीच बननेवाले प्रदेश या जोन में भारतीय शान्ति और सुरक्षा कायम रखने में महत्त्वपूर्ण कार्य करेगा। भारत इसके केन्द्र में है। सांस्कृतिक आर्थिक दृष्टि से भारत से सम्बन्धित देश भी भारतीय के भाग होंगे। सामरिक दृष्टि के अतिरिक्त सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी भारतीय सुरक्षा के अङ्ग भाग को भारतीय सुरक्षा-व्यवस्था में सम्मिलित करना रूप से आवश्यक होगा। इससे भारतीय सुरक्षा-पद्धति बढ़ेगा और भारत को सहज में एशिया का नेतृत्व सकेगा।

हिन्द महासागर—ले० जनरल जी० एन० मुखर्जी यह खयाल गलत है कि अफ्रीका और हाडरामाऊत लाल सागर के प्रदेशों या सऊदी अरेबिया को भारतीय पद्धति में सम्मिलित करना ठीक न होगा, क्योंकि ये अपने के लिए हिन्द महासागर की ओर न देखकर अन्यत्र अफ्रीका, विशेषतः पूर्वीय अफ्रीका, अपनी सुरक्षा के पर निर्भर है। अदन और स्वेज नहर पर अपना बनाये रखने के लिए और मध्यपूर्व के राष्ट्रों को ब्रिटिश में बनाए रखने के लिए अँगरेज ऐसा सोचें, तो आश्चर्य मगर योरप के प्रभुत्व से मुक्त होने की इच्छा रखनेवाले राष्ट्र और विशेषतः मिस्र और अरब राष्ट्र भारतीय सुरक्षा का भाग बनने में अपना अधिक मङ्गल कल्याण देखें भारत के साथ सैनिक दृष्टि से बन्धन अधिक पसन्द सारावाक पैक्ट उनके इस मार्ग में बाधक न होगा। विलायत, ईरान की खाड़ी, ट्यूशियल-शेखडोम, दक्षिण और पूर्वीय ईरान का वह भाग, जिसमें से भारत को मार्ग जाता है, हिन्द महासागर से सम्बन्धित हैं; यह है। इसलिए इराक और ईरान को हिन्द महासागर पद्धति से अलग रखना गलती होगी।

अफगानिस्तान कभी भारत का एक प्रान्त औरङ्गजेब के समय तक यही स्थिति थी। 'डुरांड इस ओर के जनों से अफगानिस्तान का घनिष्ठ अफगानिस्तान का समुद्र-मार्ग भारत की ही राह है। भारत का अङ्ग है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ और सिंकियाङ्ग को भारत से अलग कर देती हैं। इनको चीन और सोवियत का सङ्घर्ष-क्षेत्र नहीं बनने सीलोन (लङ्का) भारत का अङ्ग है, इसलिए इसका नहीं उठता। बर्मा और मलाया अपनी सुरक्षा के पर निर्भर हैं। इसी प्रकार इंडोनेशिया, बोर्नियो, और लेबुआन, स्याम (थाईलैंड) और हिन्द महासागर के तटवर्ती देश हैं और सांस्कृतिक दृष्टि से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं, अतः ये सुदूरपूर्व प्रदेश हिन्द महासागर प्रदेश के अङ्ग हैं। आग्नेय एशिया भारत-द्वारा ही सम्भव है, यह द्वितीय विश्व-महा दिया है। इन देशों को भारतीय सुरक्षा-व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर रखना उनको आक्रमण-सुलभ बनाना है। हिन्द-महासागर प्रदेश से स्याम और हिन्दचीन को अलग रखना उनकी सांस्कृतिक मृत्यु का ही कारण न होगा, बल्कि उनको अन्तरराष्ट्रीय राष्ट्रों का भी शिकार बना देगा। इसलिए मिस्र, इराक, ईरान, अफगानिस्तान, नेपाल, बर्मा, सीलोन, मलाया, इंडोनेशिया, बोर्नियो, सारावाक और लेबुआन के समान हिन्द-चीन और स्याम को भी हिन्द महासागर-सुरक्षा जोन में सम्मिलित करना चाहिए। यह प्रदेश बहुत बड़ा न होगा और सेनाओं को निर्दिष्ट स्थान पर जल्दी-से-जल्दी भेज सकेगा। सामग्री, उत्पादन और सेना का भारत केन्द्रीय स्थान होगा। राजनीतिक, औद्योगिक और सैनिक दृष्टि से यह भूभाग पिछड़ा हुआ है। इसलिए इसकी सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी भारतीय सेनाओं पर होगी। इसलिए भावी भारतीय सेना भारत की इस भावी जिम्मेदारी के अनुकूल होनी चाहिए।

पूर्व में जनतन्त्र का रक्षक—हिन्द महासागर प्रदेश की सुरक्षा भारत से सम्बन्धित है, यह एक प्रकट सत्य है और जापानी आक्रमण ने भी इस बात को सिद्ध कर दिया है। पश्चिम में इंगलैंड जिस प्रकार जनतन्त्र का प्रहरी और प्राचीर है, उसी प्रकार पूर्वी गोलार्द्ध में भारत जनतन्त्र का रक्षक, प्रहरी और प्राचीर है। भारत की आबादी विश्व की कुल आबादी का छठा भाग है, भारतीय संस्कृति का आरम्भ मानवीय सभ्यता के उषाकाल से होता है, भारतीय परम्परा अनाक्रमण और शान्ति की है। ये सब बातें भारत को अन्ताराष्ट्रीय शान्ति का रक्षक होने के लिए उपयुक्त बनाती हैं। दूसरे महायुद्ध में भारतीय सेना का जो भाग रहा है, वह भी उसको यह अधिकार प्रदान करता है। इसकी कुछ बातें ध्यान देने और उल्लेख योग्य हैं। यथा :—

१—स्टालिनग्राड और एल एलामीन का संग्राम युद्ध का परिवर्तन-बिन्दु माना जाता है। पहले का श्रेय यदि रूस को प्राप्त है तो दूसरे का ८ वीं सेना के भारतीय सैनिकों को प्राप्त है।

२—योरप में रूसी सेना सबसे बड़े स्थल-मोर्चे पर लड़ी। इसके बाद के सबसे बड़े स्थल-मोर्चे पर बर्मा में भारतीय सेना लड़ी।

३—सम्पूर्ण युद्ध-काल में गरीब देश होते हुए भी भारत जनतन्त्र का शस्त्रागार बना रहा।

इसलिए आत्मरक्षा और अन्ताराष्ट्रीय दृष्टियों से भारत की सैनिक-दृष्टि से रूस और संयुक्त राष्ट्र के समान अपनी सैनिक शक्ति अजेय बनानी चाहिए।

प्रबल नौशक्ति—जर्मनी और जापान के पराजय का मुख्य कारण उनकी जलसेना का निर्बल होना है। ब्रिटेन यदि आज विश्व में सबसे बड़े साम्राज्य का स्वामी है तो अपनी विशाल जलशक्ति के बल पर। समुद्र की लहरों पर उसका प्रभुत्व है, इस कारण वह योरप में जनतन्त्र का रक्षक है। अमेरिका ने दिसमुद्री बेड़ा तैयार किया है। प्रशान्त और अटलांटिक महासागर पर वह अपना अप्रतिहत प्रभुत्व चाहता है। रूस इस होड़ में अपने सहयोगी राष्ट्रों से पीछे नहीं रहना चाहता। विजित इटालियन बेड़े की नींव पर वह लाल सेना के समान अजेय नौसेना बनाने की तैयारी कर रहा है। एटम बम के परीक्षणों ने भी यही सिद्ध किया है कि एटम बमों से समुद्र में उतनी क्षति नहीं पहुँचती, जितनी थल पर पहुँचती है। एटमिक-युग में जहाजों की उपयोगिता और बढ़ेगी। पर कुछ लोग एटमिक-युग में जल के नीचे नगर बसाने का स्वप्न देख रहे हैं। इस अवस्था में जलशक्ति में कमजोर राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। यदि वह रहेगा, तो वह किसी की कृपा पर जीवित रहेगा। जहाजों को बनाने और विशाल व्यापारिक जहाजी बेड़ा बनाने के लिए पश्चिमी राष्ट्र परस्पर किस प्रकार होड़ कर रहे हैं, यह 'लायड्स रजिस्टर आफ शिपिंग' द्वारा प्रकाशित निम्न तालिका से ज्ञात होगा :—

इस समय विश्व में कुल ३,५६६१५६ टनों के नए जहाज तैयार हो रहे हैं जिसमें से कुछ राष्ट्रों का भाग इस प्रकार है :—

	टनों में
ब्रिटेन	१८७४८७८
संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	३५४२८३
स्वीडन	२४१६५०
ब्रिटिश डुमीनियन	१९६५५८
हालैंड	१६६७६०
इटली	१६६७६१
डेन्मार्क	१४५७६८
फ्रांस	१३८१८१

इसलिए यदि भारत भी चाहता है कि हिन्द महासागर के तरङ्गों पर उसका निर्बाध प्रभुत्व हो तो उसको अपनी नौशक्ति अमेरिका के समान अजेय बनानी चाहिए; तभी वह पश्चिम राष्ट्रों से टक्कर ले सकता है और उनके प्रभाव से हिन्द महासागर प्रदेश को मुक्त रख सकता है।

प्लासी में नहीं कोंकण में—आत्मरक्षा की दृष्टि से भारतीय नौशक्ति दुनिया के अन्दर प्रबल होनी चाहिए। शस्त्रास्त्रों में परिवर्तन हो जाने पर भी किसी देश की रक्षा पद्धति का निर्णय उसकी भौगोलिक अवस्था करती है। भारत का समुद्र-तट आक्रमण-सुलभ है। भारत ने अपनी स्वाधीनता प्लासी के युद्ध-क्षेत्र में नहीं खोई, बल्कि कोंकण में खोई जब कि कान्हें जी आंग्रे के सेनापतित्व में रहनेवाला मराठा बेड़ा जला दिया गया था। स्थलसेना यन्त्रीकरण और हवाई सेना के विकास से भारतीय राष्ट्र-रक्षा की समस्या बदली नहीं है। वह पहले के समान आज नौशक्ति की है। शक्तिशाली बेड़ा भारत पर आक्रमण की सम्भावना का अन्त कर देगा। विश्व के सामुद्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामरिक दृष्टि से केन्द्र में होने से, और प्रशान्त और अटलांटिक महासागरों का सीधा प्रवेश-द्वार खुलने से वह विश्व की सम्मिलित शक्ति के विरुद्ध सफलता से आत्मरक्षा कर सकता है। भारत का समुद्रतट विस्तृत है और उसमें सिंगापोर-जैसे प्राकृतिक और संरक्षक बन्दरगाह हैं जहाँ विश्व का बेड़ा विश्राम कर सकता है। भारत इस अवस्था में सुन्दर और अत्यधिक बलाढ्य बेड़े को रख सकता है।

पर निर्भर—भारतीय जलशक्ति का विकास न करके और इस प्रकार भारत को आत्मरक्षा के लिए ब्रिटिश बेड़े पर निर्भर रखकर ब्रिटेन ने अपनी दृष्टि से बुद्धिमानी का ही परिचय दिया। मगर 'प्रिंस आफ वेल्स' और 'रिपल्स' के जलमग्न होने और सिङ्गापुर के पतन के बाद ब्रिटेन को अपनी गलती का अनुभव हुआ। त्रिनकोमल्ली और कोलम्बो पर जापान-द्वारा किया गया हमला यदि विफल न होता तब भारत की क्या अवस्था होती और आज ब्रिटेन कहाँ होता, यह अब कल्पना का ही प्रश्न है।

रायल इंडियन नेवी (शाही भारतीय नौसेना) रायल इंडियन मैरीन से उत्पन्न हुई है। मगर इसका निर्माण और विकास वस्तुतः युद्धकाल में ही हुआ है। इसके अफसरों की ट्रेनिङ्ग अब इंग्लैंड में न होकर भारत में होती है। ट्रेनिङ्ग के लिए 'तारपीडो स्कूल खोला गया है। एंटी-सबमैरीन स्कूल ब्रिटिश कामनवेल्थ में ब्रिटेन के बाद दूसरे नम्बर का होगा। छोटे जहाज भारत में बनाए जाने लगे हैं। 'रायल इंडियन नेवी' ने प्रशान्त, लालसागर, ईरान की खाड़ी और हिन्द महासागर की लड़ाइयों में भाग लिया है और विजय-माला धारण की है। अटलांटिक में भी बहुत मास इसने गुजारे हैं। फिर भी इसके अफसरों में भारतीय और ब्रिटिश के बीच १:२ का अनुपात है। लड़ाई का भाई-चारा वर्ण-विद्वेष को मिटाने में असमर्थ रहा है। आज भारतीय और ब्रिटिश अफसरों के बीच १:२:४ का अनुपात है। भारतीय जलसेना एक भी पनडुब्बी नाशक रखने का गर्व नहीं कर सकती। भारतीय बेड़े में केवल तीन जहाज हैं, जिन पर कमजोर तोपें चढ़ी हुई हैं। एक भी पनडुब्बी विमान का अस्तित्व तक नहीं है। सैनिक दृष्टि से इस प्रकार ब्रिटेन ने भारत को अपना बन्दी बना रक्खा है और ब्रिटिश बेड़ा प्रहरी का काम करता है। यह स्थिति असह्य है। इसका अन्त करने के लिए भारत को विशाल और शक्तिशाली जलसेना का निर्माण करना चाहिए जो कि हिन्द महासागर और दूसरी समुद्रों पर जनतन्त्र की स्थापना करने में समर्थ हो।

भारत को विशाल स्थल-सेना की आवश्यकता नहीं है। हिमालय उसका जागरूक प्रहरी है। घाट और दर्रे इतने संकुल हैं कि उनसे आजकल की आधुनिक सेना नहीं आ सकती। उनके लिए ये संकुल घाट मृत्यु-जाल सिद्ध होंगे। खैबर और [illegible] सेना को भून करके रख देंगी। जापानी कोलम्बो [illegible] विफल रहे और जापानी नौसेना को अपने देश की रक्षा [illegible] प्रशान्त में वापस जाना पड़ा।

बङ्गाल की खाड़ी में जब तक आक्रान्ता का प्रभुत्व [illegible] तब तक पूर्व से भारत पर आक्रमण होना सम्भव नहीं है। [illegible] प्रकार अरब सागर और विशेषतः ईरान की खाड़ी पर [illegible] आक्रान्ता का प्रभुत्व न होगा, पश्चिम से भारत पर आक्रमण [illegible] सम्भव नहीं है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र के समान [illegible] प्रबल नौशक्ति की जरूरत है जिसकी सहायता के लिए [illegible] दोनों सेनाएँ हों।

भारत की हवाई सेना रूसी और अमेरिकन हवाई [illegible] समान उड़न तोपखाना और स्थल-सेना और नौसेना [illegible] होनी चाहिए। इसलिए स्वाधीन भारत की सरकार को [illegible] राष्ट्र-रक्षा पर नवीन दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। [illegible] भारत को प्रथम श्रेणी की एक सामुद्रिक शक्ति बनाने का [illegible] करना चाहिए। इसके अभाव में भारत सदा आक्रमण [illegible] बना रहेगा।

पूर्व इतिहास—खर्च की परवाह न करके भारत को [illegible] प्रबल नौसेना का निर्माण करना चाहिए। पर इसका [illegible] अर्थ नहीं है कि सेना के अन्य दो अङ्गों की उपेक्षा की [illegible] ब्रिटिश-शासन के हस्तान्तरित होने के साथ भारत को [illegible] सेना मिली है, जो लीबिया की मरुभूमि और [illegible] पहाड़ियों, इटली की बर्फीली घाटियों में एक समान वीरता [illegible] है। १९४४ के अन्त तक १८ को विक्टोरिया क्रास [illegible] और इस समय तक ३१ विक्टोरिया क्रास-प्राप्त [illegible] इटली में लड़नेवाली भारतीय सेना ने अमेरिकन [illegible] जनरल ट्रूसकाट ने कहा था कि ऐसी सेना का कमान [illegible] गौरव और अभिमान की बात है। इटली में [illegible] प्रधान सेनापति जनरल यार्क क्लार्क ने कहा था—केवल [illegible] भारतीय सेना को देर तक रोकने में या ऊँची हिम्मत का [illegible] को कम करने में सफल नहीं हुई। मगर ब्रिटिश-शासन के [illegible] स्थलों में भारतीय सेना ने एक भी जनरल उत्पन्न नहीं [illegible] भारतीय सेना के कमान के सम्बन्ध में मि० अमरी ने [illegible] युद्ध-काल में कहा था—भारतीय अफसर १८ पदाति [illegible] का कमान कर रहे हैं, भारतीय बख्तरबन्द कोर की [illegible] और भारतीय रियासती सेना के ६ दस्ते उनके साथ हैं। [illegible] भारतीय लेफ्टिनेंट-कर्नल हैं। स्टाफ में एक भारतीय [illegible] और १६ अन्य भारतीय लेफ्टिनेंट-कर्नल हैं। [illegible] सैनिकों की सेना में कुल इतने भारतीय अफसर थे। [illegible] भारतीय जनरल नहीं था। इस स्थिति का अन्त होना [illegible] मगर नवीन सेना निर्माण करने से पहले हमें यह [illegible] चाहिए कि वर्तमान स्थिति पर भारतीय सेना कैसे [illegible] भूत को जाने बगैर हम भविष्य का निर्माण नहीं कर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६०० ई० में रानी एलिजाबेथ ने लंदन कम्पनी को भारत व्यापार करने का चार्टर दिया। इन गोरे व्यापारियों की ठियों की रक्षा के लिए कुछ योरपीय और भारतीय सिपाही ते थे। इनके पास न पूरे तौर पर हथियार होते थे न ये किसी नुशासन और नियन्त्रण में थे। १६२५ में लंदन कम्पनी को किला बनाने का आदेश दिया गया। इसके ६ साल बाद पिपली, ङ्गाल में उनको किला बनाने की इजाजत मिली। चार्ल्स तीय ने बम्बई द्वीप १६६८ में कम्पनी को १० पौं० वार्षिक राए पर दे दिया। मद्रास, पिपली और बम्बई में योरपीयों और भारतीय सैनिकों की टुकड़ियाँ इन किलों में रक्खी गईं। न टुकड़ियों का बाद में विस्तार किया गया और ये प्रेसीडेंसी ना के रूप में परिणत हो गईं। इस प्रकार वर्तमान भारतीय ना का सूत्रपात ब्रिटिश फैक्टरियों की रक्षा और भारतीयों की जर में अँगरेजों की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हुआ था।

१६६८ में कलकत्ता के अन्दर फोर्ट विलियम को बनाने की ाजत मिली। यह लगभग २१४ साल भारत की राजधानी ा। भारतीय सेना का सदर मुकाम भी यहीं स्थान बना। ४८ में मेजर स्ट्रिंगर लारेंस भारत में कम्पनी की सारी सेनाओं पहला कमांडर-इन-चीफ बनाया गया। इन दिनों में योरप ब्रिटेन और फ्रांस के बीच बराबर लड़ाइयाँ हो रही थीं। टेन से भारत में कुमक का आना सम्भव नहीं था। फलतः म्पनी भारत में ही सेना का विस्तार करने और उनके बटालियन र तोपखाने बनाने में लगी रही। १७५७ में प्लासी की ाई क्लाइव ने जीती और भारतीय सेना, जो अब तक प्रति-गियों से ब्रिटिश हितों की भारत में रक्षा करती थी, अब गरेजों का भारत में राज्य-विस्तार करने का साधन बनी। ाम्राज्य के विस्तार के साथ कम्पनी ने हैदराबाद कांटिनजेंट र पञ्जाब इररेगुलर फोर्स सदृश स्थानीय सेनाएँ भी खड़ी कीं। का मुख्य काम नवीन अधिकृत प्रदेश पर दखलकारी सेना का म करना था।

प्रथम स्वाधीनता-युद्ध—पर भारतीय राष्ट्रीयता अभी मरी ी थी। १८५७ में इसका प्रबल विस्फोट हुआ। इससे ले कम्पनी की सेना में २३१७६० सैनिक थे। इसमें पैदल ुसवार, तोपखाना और इंजिनियर दस्ते थे। अँगरेज फसर निरीक्षण का काम करते थे। कमान और प्रबन्ध का रा काम भारतीयों के हाथों में था।

गदर के बाद शासन में परिवर्तन होने के साथ सैनिक-ीति में भी परिवर्तन हुआ। ब्रिटिश नीति ने यह रूप धारण किया कि भारतीय सेना इतनी अधिक शक्तिशाली न बनाई ाए कि भारत में ब्रिटिश शक्ति के लिए ही खतरा हो जाए। लतः भारतीय सेना के सङ्गठन में परिवर्तन किया गया। म्न परिवर्तन उल्लेख योग्य हैं :—

१—सेना में भारतीयों की संख्या घटाई गई और ब्रिटिश और भारतीय सेना के बीच १ और २½ का अनुपात रक्खा गया।

२—गदर में भाग लेनेवाले वर्गों को सेना में भरती करना बन्द कर दिया गया और फौजी और गैरफौजी जातियों की रचना की गई।

३—सेना का पुनर्गठन इस ढङ्ग से किया गया जिससे प्रान्तिक, जातीय, श्रेणीगत और धार्मिक भेद बढ़ें और अँगरेजों के विरुद्ध भारतीय सैनिक भविष्य में संयुक्त न हों इसका पूरा-पूरा ध्यान रक्खा गया।

४—भारतीय पैदल और घुड़सवार सेना में ही मुख्यतः लिए जाते रहे। तोपखाना और अन्य टेकनिकल दस्ते, जिनके बिना सेना का गदर करना सम्भव नहीं है, सर्वथा ब्रिटिश रक्खे गए। १६३६-४५ के युद्ध में ही भारतीय तोपखाने का विस्तार किया गया है।

५—कमीशंड रैंक में भारतीयों की भरती बन्द कर दी गई।

६—भारतीय सेना का अराष्ट्रीयकरण किया गया। इसको जनता से दूर रक्खा गया। देश की राजनीतिक जागृति की लहर के सम्पर्क से भी दूर रक्खा गया।

७—भारतीय सैनिक के मन में यह जमाने का यत्न किया गया कि भारतीय की अपेक्षा गौरांग के नीचे होकर लड़ना अधिक अच्छा है।

८—इस अवधि में (१८५८ से १६१४) अफगानिस्तान बर्मा, चीन आदि देशों में विशुद्ध भारतीय सेना भेजी गई।

१८५७ के विद्रोह के बाद सेना की जाँच के लिए जो कमीशन बैठा था उसने 'भारत में प्रतिरोध न हो सकने योग्य ब्रिटिश सेना रखना' उद्देश्य निर्धारित किया था। इस नीति के कारण १६१४ तक तोपखाना का कोई दस्ता भारतीय नहीं था।

भारतीय सेना में २०००० गोरखा हैं। शेष सेना में साइमन कमीशन के अनुसार इसके ६२ प्रतिशत पञ्जाब और काश्मीर से आते हैं। केवल ३० प्रतिशत शेष भारत से भरती किए जाते हैं।

कुछ घटनाएँ—१६१७ से पहले तक किसी भारतीय को कमीशन नहीं दिया गया।

१६१८. सैंडहर्स्ट में भारतीयों के वास्ते दस स्थान सुरक्षित रक्खे गए।

१६१६. एक कमेटी बिठाई गई और उसको (१) आन्तरिक सुरक्षा, (२) सीमा-प्रान्त की रक्षा और (३) साम्राज्य की सेना न पहुँचने तक बाह्य आक्रमण को कैसे रोका जाए; इन तीन बातों पर विचार करने के लिए [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६२१. युनिवर्सिटी ट्रेनिङ्ग कोर की स्थापना के लिए कानून बना।

१६२३. ८ दस्तों का भारतीयकरण करने की योजना बनाई गई।

१६२७. सैंडहर्स्ट में भारतीयों के वास्ते सुरक्षित स्थान १० से बढ़ाकर २० कर दिए गए।

१६३१. पैदल सेना के एक डिवीजन और एक घुड़सवार ब्रिगेड और साथ की सेना का भारतीयकरण करने की योजना बनाई गई।

१६३४. देहरादून में इंडियन मिलिटरी एकेडमी की स्थापना की गई।

१६२८. बम्बई कौंसिल ने कालेजों में बाधित सैनिक-शिक्षा देने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

१६३६. चेटफील्ड कमीशन की रिपोर्ट पर ब्रिटेन के खर्च पर दो डिवीजनों का यन्त्रीकरण किया गया।

१६४१. यू० टी० सी० की संख्या सब प्रान्तों में दुगुनी [illegible] गई।

१६४४. पुनर्गठन कमेटी (१) आकार-परिमाण, (२) रचना व बनावट, और (३) युद्धोत्तरकालिक भारतीय सेना के संङ्गठन पर रिपोर्ट देने के लिए नियुक्त की गई।

१६४६. नेहरू सरकार ने भारतीय सेना का राष्ट्रीयकरण करने के लिए एक कमेटी बनाई।

युद्धकाल में—द्वितीय महायुद्ध छिड़ने से पहले भारतीय सेना में १४४००० भारतीय और ५२००० ब्रिटिश सैनिक थे। लगभग ७२०० अफसर थे, जिनमें ६६०० ब्रिटिश और ३१६ भारतीय थे। नौसेना के अन्दर १६३९ में पाँच छोटे जहाज १२०० से २१०० टन के थे। कुछ आक्जलरी जहाज और कुछ क्राफ्ट थे। ११३ अफसरों में से अधिकांश अँगरेज थे और १६०० नौसैनिक सब भारतीय थे। लड़ाई शुरू होने पर सैनिकों की भरती की गई और यह २०००० प्रतिमास से ७०००० प्रतिमास तक हुई। इंडियन मिलिटरी एकेडमी, देहरादून का विस्तार किया गया। तीन आफिसर ट्रेनिंग स्कूल खोले गए जिनमें से एक अँगरेजों और ऐंग्लो-इंडियन कैडेटों के वास्ते पूर्ण रूप से सुरक्षित रक्खा गया। तोपखाना और इंडियन कोर आफ इंजिनियर्स और अन्यान्य टेकनिकल चीजों की शिक्षा देने के लिए स्कूल खोले गए। लड़ाई की आवश्यकता से बाध्य होकर पञ्जाब से बाहर के भी सैनिक लिए जाने लगे और फौजी और गैरफौजी जातियों का भेद मिटा दिया गया। मद्रासी अब खुले तौर पर सेना में लिए जाते हैं। इस पर भी सेना के अफसरों में भारतीय और ब्रिटश अफसरों के बीच १:४·७५ का अनुपात रहा। हाँ, १६४१ के बाद नौसेना का छः गुना विस्तार किया गया। इसके सब विमान एक एंजिन के लड़ाकू विमान थे, बमवर्षक हैं। इसके पास भारी बमवर्षक या मालवाही नहीं हैं। युद्ध-काल के अन्दर भी 'एम्पायर एयर ट्रेनिंग' का लाभ भारतीयों को नहीं दिया गया।

आज स्थिति यह है :—

	अफसर	सैनिक
सेना	३२८६७	१०२३३३
हवाई सेना	३७४८	३८४
नौसेना	अफसर, वारंट अफसर, रेटिंग आदि	

एक और दोष—लड़ाई से पहले भारतीय सेना में [illegible] की रेजीमेंटें थीं; अब १४ तरह की हो गई हैं। सर [illegible] आचिनलेक ने कहा है कि सेना जाति-पाँति के भेद को नहीं करती और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी नहीं। भारतीय अफसर पहले भारतीय होना चाहिए, और पञ्जाबी, मराठा, राजपूत, तामिल या तेलगू समझना [illegible] मगर १४ रेजीमेंटों को मिलाना सरल नहीं है। कर्नल रेजीमेंट को डोगरा में या अफरीदी बटालियन को [illegible] चमार रेजीमेंट को ब्राह्मण में सम्मिलित नहीं किया जा भारतीय समाज में जाति-पाँति के रहते हुए भारतीय सेना पाँति को नष्ट करना सम्भव नहीं है। पर आजाद [illegible] में नेता जी के व्यक्तित्व के कारण जाति-पाँति को नहीं था। यदि भारतीय सेना का पुनर्गठन जाति-पाँति के पर न करके प्रान्तों के आधार पर किया जाए तो इससे अधिक शक्तिशालिनी होगी वहाँ भारतीय समाज का रूप से विकास हो सकेगा और भारतीय राष्ट्रीयता को और साम्प्रदायिक समस्या को हल करने में बहुत सहायता

बड़ी समस्या—ब्रिगेडियर कैरपन ने अपने एक कहा था कि भारतीय सेना के ४२५०० अफसरों में अफसर भारतीय हैं। अफसरों की पूर्ति 'वार इंडियन मिलिटरी एकेडमी' के द्वारा होगी। इस स्थापना 'वेस्ट-प्वाइंट एकेडमी' अमेरिका के समान इसका पाठ्यक्रम चार साल का है। प्रतिवर्ष ६०० उम्मे जाएँगे। तीनों सेनाओं के लिए प्रतिवर्ष यह दे सकेगी। इससे स्पष्ट है कि भारतीय सेना का अगले पाँच वर्षों में इस रेट से न हो सकेगा। इस वर्ष राज्य-परिषद् में निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया

१—पूर्ण भारतीयकरण के लिए एक निश्चित सीमा व मर्यादा बाँध दी जाए।

२—लेफ्टिनेंट और कैप्टेन के पद पर अँगरेजों बन्द कर दी जाए।

३—वी० सी० ओ० को कायम रक्खा जाए।

४—ऊँचे पदों की पूर्ति के लिए योग्य भारतीय [illegible] तरक्की दी जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—रूस और जापान के इतिहास का अध्ययन किया जाए और उसके समान पूर्ण रूप से भारतीयकरण १० साल में कर दिया जाए।

इस पर सर क्लाउड आचिनलेक ने जो जवाब दिया और समस्या को जिस रूप में पेश किया है, वह यह है :—

आवश्यक अफसरों की संख्या—९०००

१—युद्धपूर्व के ब्रिटिश और भारतीय स्थायी अफसर—३०००
२—इ० सी० ओ० (एमर्जेंसी कमीशंड अफसर) में से ३००० ने स्थायी होने के लिए प्रार्थना की और लिए गए—१०००
३—इंडियन मिलिटरी एकेडमी अप्रेल १९४४ देगी—१००
४—वी० सी० ओ० में से तरक्की पाए —१०००

——
५१००

इसलिए ३९०० की जरूरत रह जाती है। पर एक साथ ४००० मिल जाने से भी समस्या हल नहीं होती। क्योंकि ऊंचे पदों पर अँगरेज हैं और विभिन्न कालों और अनुभवों के हैं। उनकी जगह लेने के लिए आदमी चाहिएँ। इसका उपाय यही है :—

१—वर्तमान इ० सी० ओ० का विसर्जन न किया जाए।
२—आयु के अनुसार ३ से ५ साल का अल्पकालिक कमीशन दिया जाए।
३—ब्रिटिश अफसरों को उधार लिया जाए।

प्रधान सेनापति की योजना के अनुसार सेना के भारतीयकरण में कम-से-कम १६ साल लगेंगे। क्या कोई स्वतन्त्र राष्ट्र इसे सहन कर सकता है?

पुनर्गठन—वर्तमान अवस्था असन्तोषजनक है और इसमें परिवर्तन आवश्यक है। साइमन कमीशन ने लिखा था कि भारत और ब्रिटेन एक दूसरे से इतना अधिक सम्बन्धित हैं कि भारतीय राष्ट्र-रक्षा के प्रश्न को ब्रिटेन से अलग रखकर सोचा नहीं जा सकता। गैरन ट्रिब्यूनल के योरपीय सदस्यों ने लिखा था—भारतीय सेना सङ्कट काल में तुरन्त मोर्चे पर भेजे जाने की अवस्था में तैयार रहती है। साम्राज्य भर में और कहीं ऐसी सेना नहीं है, जो पूर्व में उपयोग के लिए तत्काल प्राप्य और समय-समय पर जिसका उपयोग किया गया हो। उसके शब्द हैं—"The army in India is a force ready in an emergency to take the field at once, which does not exist eleswhere in the Empire, which is specially available for immediate use in the East and which has on occasions been so used."

भारतीय सेना का लक्ष्य अब तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना और भारत से बाहर उसका विस्तार करना और उसकी रक्षा करना रहा है। यह अब परिवर्तित अवस्था में नहीं रह सकता। लक्ष्य और उद्देश्य के परिवर्तन के साथ भारत में ब्रिटिश सेना की भी आवश्यकता नहीं रहती और इसको पहले जहाज से वापस भेज देना चाहिए। यह अँगरेजी सेना देश पर अधिकार करनेवाली सेना है, अतः इसको विदा कर देना चाहिए। ब्रिटिश सेना के यहाँ से भेज देने से जो खर्च में बचत होगी उसे भारतीय सेना के आधुनिक साजसज्जा-संयुक्त करने में और ट्रेनिंग देने में खर्च किया जा सकता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि एक भारतीय सैनिक की अपेक्षा एक ब्रिटिश सैनिक पर लगभग चौगुना खर्च होता है।

ब्रिटिश सेना के समान रायल एयर फोर्स का भी कोई स्क्वेडर्न भारत में न रहने देना चाहिए। भारतीय हवाई सेना का पुनःसङ्गठन करना चाहिए और वह नए टाइप के विमानों से युक्त होनी चाहिए। यह रायल एयर फोर्स की पूरक न होकर स्वतन्त्र और सन्तुलित होनी चाहिए।

सेना का पुनर्निर्माण—राष्ट्रीय सेना का पुनर्निर्माण करने के लिए कुछ आवश्यक पूर्वावस्थाओं का पूरा होना ब्रिटिश सेना की यहाँ से रवानगी के समान ही आवश्यक है। सेना राष्ट्रीय वृत्ति और राष्ट्रीय रङ्ग में रँगी हो, इसके लिए क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। नौसेना और हवाई सेना के पहले लगे हुए 'शाही' उपसर्ग का अन्त कर देना चाहिए। राष्ट्रीय सेना का नाम 'शाही' से अभिहित हो, यह न तो उचित है और न सैनिकों में राष्ट्रीयता को ही उत्पन्न करता है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, सोवियत रूस और ब्रिटेन आदि देशों में जिस प्रकार राज्य का प्रमुख सेना का प्रधान सेनापति होता है, उसी प्रकार भारत में भी होना चाहिए और कमांडर-इन-चीफ का पद उड़ा देना चाहिए। विधाननिर्मात्री सभा जब विधान बनाने का काम कर रही है, तब इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न को आँखों से ओझल न करना चाहिए। स्थलसेना के समान नौसेना और हवाई सेना का अलग-अलग बजट बनना चाहिए और इन विभागों के स्वतन्त्र मन्त्री होने चाहिएँ। सेना के तीनों विभागों के एकसूत्रीकरण और एकीकरण के लिए युद्धमन्त्री या राष्ट्र-रक्षा मन्त्री हो, जैसे कि हाल में ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल में किया गया है। चीफ आफ स्टाफ के साथ तान्त्रिक परामर्शदात्री समिति भी हो। युद्ध-विभाग के साथ 'शिक्षा' और 'परीक्षणात्मक खोज' के दो और विभाग होने चाहिएँ। इनके अभाव में कोई भी सेना पूर्ण नहीं हो सकती।

पाँच साल में—पिछले तीस सालों के अन्दर भारतीय सेना ने केवल दो ब्रिगेडियर उत्पन्न किए और इनमें से केवल एक को ही मोर्चे पर जाकर सेना का कमान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके मुकाबले नेताजी ने तीन साल के अन्दर आजाद हिन्द का सङ्गठन किया और सारी सेना भारतीय सेनानायकों के नेतृत्व में लड़ी। आजाद हिन्द फौज के पास साधन, युद्ध-सामग्री और विमानों का सर्वथा अभाव था पर इस पर भी वह कोहिमा और इम्फाल के मोर्चे पर डटकर

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ सकी। दो डिविजनों के कमांडर मेजर-जनरल एम० जे० कियानी और मेजर-जनरल शाहनवाज खाँ को केवल दस साल का अनुभव था। इसके अतिरिक्त छः ब्रिगेड-कमांडरों—कर्नल शाहनवाज, इनायत कियानी, गुलजार सिंह, सहगल, ढिल्लन और एस० एम० हुसेन—को लगभग छः साल का ही अनुभव था। युद्धकाल से पूर्व जो अँगरेज सार्जेंट थे वे युद्ध-काल में मोर्चों पर ब्रिगेडों का कमान करते थे। इसलिए भारतीय सेना का पूर्ण रूप से पाँच सालों में भारतीयकरण करना कठिन नहीं है, यदि राष्ट्रीय सरकार योजना और कार्यक्रम बना ले और निश्चय कर ले कि प्रतिमास इतने ब्रिटिश अफसरों की जगह भारतीयों को देनी है। इस कार्य में आजाद हिन्द फौज के अफसरों और सैनिकों को पूरा-पूरा अवसर देना चाहिए और प्रधान सेनापति की ३५०० और ब्रिटिश अफसरों को लाने की योजना को किसी अवस्था में कार्यान्वित न होने देना चाहिए।

पहला कार्य—इस दिशा में पहला कार्य यह होना चाहिए कि सेना के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर से चुन-चुनकर अँगरेजों को एकदम से हटाकर उनकी जगह योग्य भारतीयों को नियुक्त करना चाहिए। प्रधान सेनापति भी भारतीय होना चाहिए और उसके स्टाफ के सब अफसर भी भारतीय होने चाहिएँ। मिलिटरी सेक्रेटरी, डाइरेक्टर आफ मिलिटरी ट्रेनिंग, डाइरेक्टर आफ इनटेलीजेन्स, डाइरेक्टर आफ मिलिटरी आपरेशंस, डाइरेक्टर आफ सिलेक्शन, पर्सनल सर्विसेस, डाइरेक्टर आफ पब्लिक रिलेशंस, डाइरेक्टर आफ रिक्रूटिंग आदि सब भारतीय होने चाहिएँ। चुने हुए अफसरों को ट्रेनिंग के लिए विदेशों में भेजना चाहिए, जो परराष्ट्र विभाग में मिलिटरी एटेची का काम कर सकें। इसके अभाव में भारतीय सेना आज के समान पङ्गु और परनिर्भर रहेगी। आज की नीति में कोई अन्तर न आएगा। भारतीय सेना सन्तुलित, स्वतन्त्र और स्वाश्रयी न हो, इसका अब तक सदा यत्न किया गया है। यही कारण है कि तोपखाने में सब ड्राइवर भारतीय हैं, मगर सब टेक्नीशियन ब्रिटिश हैं। सिगनल, आर्डनान्स और इंजीनियर युनिट में भी इसी नीति और पद्धति का अनुसरण किया गया है। फलतः भारतीय सेना टेक्नीशियनों की दृष्टि से अत्यन्त निर्बल है। जब तक चोटी के आदमियों में परिवर्तन न होगा, यह निर्बलता दूर न होगी। क्योंकि जब तक सेना का नियन्त्रण अँगरेज अफसरों के हाथ में रहेगा, वे ब्रिटेन की आवश्यकता के अनुसार भारतीय सेना का निर्माण करेंगे।

यह कठिन नहीं है। भारतीय सेना में आज भी ऐसे २५ भारतीय अफसर हैं, जिनकी सेवा बीस साल पुरानी है। पिछली लड़ाई में आठ साल का अनुभव रखनेवाले भारतीयों ने पैदल सेना की बटालियनों का कमान प्रशंसा के साथ किया है। इस समय २०० ऐसे भारतीय अफसर हैं, जिनको आठ साल का अनुभव है। यदि इनका उचित रीति से उपयोग किया जाए और आजाद हिन्द फौज के नायकों और सेनानायकों को आदर किया जाए और उनके अनुभव से लाभ उठाया तो भारतीय सेना का पाँच साल में भारतीयकरण रूप से सम्भव है।

परामर्शदाता के रूप में—सोवियट रूस, अमेरिका, जर्मनी और जापान के युद्ध-शास्त्रों का भी चाहिए और इन देशों से योग्य अफसरों को परामर्श रूप में अल्पकाल के लिए नियुक्त करना चाहिए। भारत के योग्य युवकों को इन देशों में शिक्षा पाने भेजना चाहिए। अकेले ब्रिटेन पर हो हमें निर्भर चाहिए। जो कोई भी देश हमें सैनिक शिक्षा का उसका लाभ हमें लेना चाहिए। मन्त्रिमण्डल को के लिए युद्ध-शास्त्र के पण्डितों की एक समिति होनी सैनिक-शिक्षा के सब स्कूलों और कालेजों में शिक्षक भारतीय रखने चाहिएँ। यथासम्भव प्रत्येक प्रान्त सैनिक विद्यालय या कालेज अवश्य होना चाहिए। राजपूत, गढ़वाली, पठान, सिख रेजीमेंटों का अन्त के आधार पर रेजीमेंटों का निर्माण होना चाहिए। आन्तरिक दङ्गों को शान्त कराने का काम भविष्य में जाए। यह पुलिस का काम है और उसी के लिए एकमात्र सुरक्षित रखना चाहिए।

औद्योगिक प्रगति—लड़ाई सैनिक ही जीतते हैं, यह ठीक है। पर उनकी विजय और हार को चीज युद्ध-सामग्री है, जो कि उनके हाथ दे दी सिखों की हार का कारण यह बताया जाता है बारूद की जगह रेत की बोरियाँ भेज दी गई थीं। सेना का एकमात्र भारतीयकरण पर्याप्त नहीं है। में आर्डनांस फैक्टरियों का विस्तार किया गया ढङ्ग के भारी विस्फोटक तैयार किए गए हैं। की आवश्यकता को देखते हुए यह अपर्याप्त है। और टैंक, मोटरकारें और विमान अभी तक नहीं हैं। हाँ, लड़नेवाली गाड़ियों का ऊपरी ढाँचा तैयार किया जाता है। नौसेना के ट्रावलर और के जहाज इस देश में तैयार होते हैं। मैरन किए जाने लगे हैं। कुछ रासायनिक द्रव्य भी होने लगे हैं। मगर मैशीन टूलों के लिए देश पर आश्रित है। यह मानी हुई बात है कि नौसेना के एक आवश्यक और सहायक अङ्ग हैं, के पास कठिनाई से २००००० टन व्यापारिक भविष्य में आक्रमणों को रोकने के लिए यह सेना की समस्त साज-सज्जा भारत में तैयार की जाए। युद्ध-काल में ही उपयोगी सिद्ध होते बल्कि शान्तिकाल में भी उपयोगी सिद्ध होते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri College, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और घातक हथियारों और शस्त्रास्त्रों के अतिरिक्त, जिनका इस्तेमाल युद्धक्षेत्र में शत्रु के विरुद्ध किया जाता है, प्रायः सब कच्ची, क्रिया-विधि की सामग्री और शस्त्रास्त्रों के उत्पादन के लिए आवश्यक सारी मैशीनरी, नागरिकों की आवश्यकता की पूर्ति में भी सहायक होती है। लोहा और इस्पात और इनसे उत्पन्न चीजें, कोयला और इसके अनुत्पन्न, नत्रजन और इससे बननेवाली चीजें, जहाज, मोटरीकृत वाहुतकी (ट्रांसपोर्ट), विमान, वस्त्र, वर्मन, टूल, मैशीनें, विद्युतीय चीजें आदि वस्तुएँ युद्ध और शान्ति दोनों कालों में उपयोगी हैं। सेना की शक्ति कुछ भी हो, उसकी आवश्यकताएँ बराबर एक-सी बनी रहेंगी। खोजों और वैज्ञानिक प्रगति से केवल उनके रूप में अन्तर आएगा। इसलिए सेना की आवश्यकता की पूर्ति करनेवाले उद्योगों की स्थापना से औद्योगिक प्रगति पर स्थायी और स्वस्थ प्रभाव पड़ेगा।

आजकल की लड़ाई मोर्चों पर नहीं, कल-कारखानों के मोर्चों पर लड़ी जाती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की आश्चर्य-जनक औद्योगिक प्रगति ने ही जापान और जर्मनी को पराजित किया है और वे भविष्य में आक्रान्ता न बनें, इस उद्देश्य से उनके उद्योगों को नष्ट किया जा रहा है। इसलिए जब तक सेना की सब आवश्यक वस्तुएँ, समस्त साज-सज्जा और शस्त्रास्त्र भारतीय कला, भारतीय श्रम और भारतीय कच्चे माल से भारत में तैयार न होंगे तब तक सेना का पूर्ण रूप से भारतीयकरण हुआ नहीं माना जा सकता। सेना के राष्ट्रीयकरण और भारतीय-करण पर विचार करने के लिए नेहरू-सरकार द्वारा बिठाई गई कमेटी को सेना के राष्ट्रीयकरण के इस आवश्यक पहलू की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

गुरखा सेना—सेना के राष्ट्रीयकरण के प्रश्न पर विचार करते हुए गुरखा पलटनों के प्रश्न और भविष्य को नहीं भूला जा सकता। शासन-सत्ता के पूर्ण रूप से हस्तान्तरित होने के बाद गुरखा फौजें ब्रिटिश साम्राज्य की सेना के अङ्ग हो जाएँ और आज के समान ब्रिटिश युद्ध-विभाग के नीचे रहें और ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए भविष्य में भी लड़ें, यह किसी भी दृष्टि से वांछनीय नहीं कहा जा सकता।

आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से नेपाल भारत का एक अङ्ग है। काठमांडू-सन्धि के बाद से लगभग सौ साल गुरखा पलटनें भारतीय सेना का महत्त्वपूर्ण अङ्ग रही हैं। असन्देह ब्रिटिश नीति गुरखों को शेष भारतीय सेना से अलग रखने की रही है और गुरखे इस देश में विदेशी समझे जाते रहे हैं। मगर गुरखा भारत को अपना देश मानते हैं, और यही कारण है कि वे बड़ी संख्या में आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हुए थे और वे भारतीय स्वतन्त्रता के लिए वीरता से लड़े। इसके अतिरिक्त देहरादून, काँगड़ा, धर्मशाला, शिलांग आदि स्थानों में गुरखा लोग बसे हुए हैं। इसलिए गुरखा लोगों को भारतीय सेना से अलग करना उनके साथ और उनके भारत-प्रेम के साथ अन्याय करना होगा।

परिवर्तित लक्ष्य और नीति—नूतन भारतीय राष्ट्र का जन्म हो रहा है। नवीन स्पन्दन और नए जीवन का आज भारतीय राष्ट्र अनुभव कर रहा है। इस कारण इसकी सैनिक नीति और सेना-सङ्गठन के लक्ष्य में भी परिवर्तन होना अनिवार्य है। प्रथम युद्धमन्त्री सरदार बलदेवसिंह ने उस नवीन नीति और नवीन लक्ष्य पर अपने प्रथम आकाश-भाषण में प्रकाश डाला है। अब भारतीय सैनिक यह अनुभव करेगा कि वह भारतमाता का पुत्र है और भारत-भूमि का सैनिक है। इस भावना से उसके पराक्रम को अपूर्व तेज प्राप्त होगा। अब भारतीय सैनिक हृदय और ध्येय की स्फूर्ति से लड़ेगा। भारतीय सेना का लक्ष्य भारत का संरक्षण करना और विश्व-शान्ति स्थापित करना है। भारतीय सेना में अभी तक अनुशासन का सर्वोपरि स्थान था। देश-भक्ति का उसमें कोई स्थान न था। अब देश-भक्ति का सर्वोच्च स्थान होगा और नेलसन के समान उसके अनुशासन भङ्ग करके भी देश-हित में कार्य करने का अधिकार होगा। सेना स्वतन्त्रता की रक्षा करने के साथ स्वातन्त्र्य और स्वाधीनता की भावना का परिपोषण भी करेगी। भारतीय सैनिकों से सरदार बलदेवसिंह ने कहा है—सैनिकों का सम्पूर्ण दृष्टिकोण भारत के प्रेम से पूर्ण होना चाहिए, जिससे वे अपनी पूरी शक्ति, योग्यता और क्षमता से मातृभूमि की सेवा कर सकें और भारतीय सेना भारतीय स्वतन्त्रता की झण्डाबरदार हो। युद्धमन्त्री के शब्द—

Your whole outlook and spirit must also be imbued with the love of India, our common motherland, so that we may take pride in this great land of ours and serve it to the best of our capacity, for every soldier, sailor, and air man in the national army is a standard bearer of India's freedom

राष्ट्र की नवीन अनुभूति और नूतन महत्त्वाकांक्षा को व्यक्त करते हैं। हमें विश्वास करना चाहिए अब भारतीय विमान आकाश में और पोत हिन्द महासागर की उत्तुङ्ग लहरों पर स्वतन्त्र भारत की पुण्य-पताका को फहराते हुए निर्बाध और अप्रतिहत गति से विचरेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर देश है जाना

पण्डित श्रीराम शर्मा

"भाभी, मन लगा तुम्हारा ?"

सन्ध्या-समय काम से लौटने के बाद जीवन ने जमना से प्रश्न किया।

"यहाँ मन लगाने के लिए कोई काम मिले तभी न मन लगेगा। गर्मी के ये पहाड़-से लम्बे-लम्बे दिन काटे नहीं कटते। तुम शहर की बड़ाई करते-करते थकते नहीं थे। राम-राम! यह भी कोई जीवन है। दिन भर पौं-पौं, टन-टन चीख-पुकार, पल भर शान्ति नहीं।

जीवन हाथ-पाँव धोकर इस समय तक जमना के पास ही एक बोरी पर बैठ चुका था। उसने कहा—

"यहाँ आए अभी दिन ही कितने हुए हैं? धीरे-धीरे आदत पड़ेगी। दस-पन्द्रह दिन बीत जाने दो, तुम स्वयं गाँव का नाम न लोगी।"

"ओहो, यह भली कही, गाँव का नाम न लूँगी! कहाँ हमारा गाँव और कहाँ यह गन्दा शहर! यहाँ जैसे दम घुटा जाता है। कदम-कदम पर ऊँची-ऊँची दीवारें, आँखें यहाँ वहाँ से तरसती लौट आती हैं। सड़क पर इतनी तरह के आदमियों के ये झुण्ड-के-झुण्ड न जाने कहाँ से आते हैं, कहाँ जाते हैं! इन सबमें, मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि मैं जीवित हूँ कि मर गई हूँ, कि सो रही हूँ कि स्वप्न देख रही हूँ। गाँव के हरे-भरे खेत, लम्बे-चौड़े मैदान, दूर-दूर बसे हुए छोटे-छोटे घर, न कहीं आँखों के लिए रुकावट और न कानों पर ध्वनि का असह्य बोझ। खेत पर दिन-दिन भर अकेले काम करते समय भी लगता था—मैं भी कुछ हूँ, संसार में मेरा भी कुछ है।"

"जमना भाभी, तुम अभी शहर का सुख जान नहीं पाई। वहाँ का-सा सुख गाँव में स्वप्न में भी नहीं मिलेगा। जरा धीरज से काम लो।"

जीवन के स्वर में सहानुभूति थी।

"नहीं जीवन, इन तीन-चार दिनों में इस झोंपड़ी में बैठी-बैठी तङ्ग आ गई हूँ। खुली हवा में साँस लेने को कहीं जगह नहीं। जरा बाहर जाकर खड़ी होती हूँ तो यहाँ के आदमी इस तरह घूर-घूरकर ताकते हैं, जैसे निगल जाना चाहते हों। गाँव के गिरे-पड़े छप्पर के आँगन में आज-कल खाट पर पड़ते ही जो नींद आती तो प्रभात में चिड़ियों का चहचहाना सुनकर ही आँखें खुलतीं। मालूम तक न होता, रात कब आई और कब गई। यहाँ करवट बदलते-बदलते सारी रात आँखों में कटती है।"

जमना का गला रुँध आया। वह वहाँ से उठकर दूसरे में चली गई और कुछ काम करने लगी।

× × ×

भारत की राजधानी दिल्ली से २५-३० कोस दूर एक छोटी-सी बस्ती थी। कठिनाई से कुल बीस घर सारे ग्रामवासी खेती-बाड़ी पर पलते थे। किसी को न था कि उनसे थोड़ी ही दूर पर एक ऐसा स्थान है, चालीस करोड़ आदमियों को गुलाम रखने का चक्र चलता है, जहाँ बड़े-बड़े बँगले, बड़ी-बड़ी कोठियाँ और उन कोठियों तथा बँगलों में बड़े-बड़े आदमी बसते हैं।

इस छोटी-सी बस्ती का छोटा-सा किसान, बीघा, पति था। पिछले जाड़ों में दो वर्ष के लड़के के का भार जमना पर छोड़कर वह अपने दायित्व से मुक्ति बीसवीं वर्ष-गाँठ से पहले ही जमना विधवा हो गई।

किसी अन्य पुरुष की चूड़ियाँ पहनकर अहीर-नारी दोष से छुटकारा पाने में स्वतन्त्र है और स्वेच्छा से घर-गिरस्ती की गाड़ी में जुतकर अपने को अनुगृहीत सकती है; किन्तु जमना ने पति की मृत्यु के छः मास इस बारे में कोई विचार नहीं किया। उसने अपने अमिट और बहुमूल्य निशानी अपने जीवन-धन शिशु में ध्यान लगाया।

जमना पति के राज में सब तरह से सुखी थी। काम भुगताकर वह दिन भर पति के साथ काम जोतती—निराती-काटती। न किसी का लेना था किसी का देना।

पति की मृत्यु के पश्चात् उसका समूचा व्यक्तित्व उसी में केन्द्रित हो गया था, किन्तु गाँव-पर-गाँव के पुरुषों की प्रार्थना से उसकी शान्ति भङ्ग हो जाती थी। खेत, खलिहान, सर्वत्र उसके पति की स्मृतियाँ उसके सामने खड़ी हो जातीं और वह घण्टों बैठी-बैठी आँसू टपकाती रहती।

बिना सार-सँभाल किए खेत सूख गया। फसल का भण्डार—चार-पाँच मिट्टी के मटके—अनाज से गया। एक नई समस्या उपस्थित हो गई।

और जीवन के माँ-बाप बचपन में ही विदा हो शहर चला आया और मेहनत-मजदूरी करके करने लगा। इतनी दूर अपनी लड़की भेजने में कोई महापुरुष प्रस्तुत न था, अतः आयु का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खो चुकने पर भी शास्त्रीय दृष्टि से बिना वामाङ्गी के जीवन का जीवन अधूरा ही रहा।

जीवन साल-छः महीने में अपने गाँव आया। उस समय गाँव भर के लोग चौपाल में जमा होते और फिर हुक्के की गड़-गड़ाहट में जीवन से अनेक प्रश्न किए जाते। वह सर्वज्ञ की भाँति गम्भीरता से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देता। उत्तर देते समय वह शहर की रहन-सहन और अपने ठाठ का वर्णन इतना चढ़ा-बढ़ाकर करता कि सुननेवाले दङ्ग रह जाते। उसके गठीले बदन पर सफेद-सफेद कपड़े और मुँह से निकलनेवाला सिगरेट का गुलाबी धुँआ अधिक प्रभाव डालता था।

जीवन इस बार गाँव आया तो सदा की भाँति जमना से मिलने गया। गाँव के प्रत्येक व्यक्ति में परस्पर, चाहे वह किसी जाति और वर्ग का हो, कोई-न-कोई रिश्ता रहता ही है और इस स्वयंसिद्ध रिश्ते से जमना जीवन की भाभी लगती थी। जमना, जीवन को देखते ही, अपने पति की स्मृति से विह्वल होकर रोने लगी और जीवन उसे धैर्य बँधाने की चेष्टा करने लगा। उसने अन्त में कहा—"भाभी, तुम किसी बात से कष्ट न पाना। मुझे घर का आदमी समझना, मैं तुम्हारी सहायता के लिए सदैव तैयार रहूँगा।"

और बिना सोचे-विचारे जमना के मुँह से निकल गया—"तुम्हारी दिल्ली में मुझे कोई काम नहीं मिल सकेगा?"

"क्यों नहीं? आज-कल काम की क्या कमी है? शहर में काम बहुत है और इस पर मनचाही मजूरी लो।"

× × ×

दिल्ली पहुँचते ही जीवन जमना के लिए अच्छी किनारी की दो सफेद साड़ियाँ ले आया। साबुन, तेल और इसी तरह की दूसरी चीजें खरीदी गईं।

जमना ने सफेद साड़ी पहिनकर, जब अपने रूखे, मैले, धूल-भरे, सरसों के तेल से चीकट बने बालों को साबुन से साफ करके खुशबूदार तेल डालकर सँवारा और टिकली लगाकर काजल की डिबिया के पीछे लगे हुए आइने में अपना मुँह देखा तो वह स्वयं आश्चर्यचकित रह गई। उसके मन में रह-रहकर प्रश्न हो रहा था—क्या यह मेरी ही परछाईं है?

वह रूपवती और सुन्दरी न होकर भी स्वस्थ थी और स्वास्थ्य में एक अद्भुत सौन्दर्य ओत-प्रोत रहता है।

जमना बार-बार अपना मुँह देखती और आश्चर्य-मिश्रित आनन्द में तन्मय हो जाती।

इसी समय उसका लड़का खेलकर बाहर से कोठरी में आया और दरवाजे से ही बड़े मधुर स्वर में पुकारने लगा—"अम्मी, अम्मी।"

छलाँगें मारता और किलकारी भरता ज्योंही वह अपनी माँ के पास आया तो क्षण भर स्तब्ध खड़ा रहा और फिर उल्टे पाँवों दरवाजे की ओर दौड़ा। दरवाजे पर वह जोर-जोर से माँ-माँ चिल्लाने लगा।

जमना दरवाजे पर आई। उसने उसे गोद में लेने के लिए ज्योंही हाथ बढ़ाए, वह दूर भाग गया और चकित नेत्रों से उसे ताकने लगा, जैसे वह कोई अपरिचित हो।

× × ×

पहले दिन उसमें नगर के प्रति जो उत्सुकता दिखाई दी थी, वह धीरे-धीरे विलीन हो गई।

रात आधी से अधिक बीत चली थी, किन्तु जीवन की आँखों में नींद न थी। वह घर के दरवाजे से सटकर बाहर गूदड़ी पर लेटा-लेटा तारे गिन रहा था। उधर अन्दर जमना भी अब तक नहीं सोई थी।

"अभी सोई नहीं, जमना भाभी!"

"हाँ, क्या तुम्हें भी अब तक नींद नहीं आई!"

"नहीं, मैं एक नींद ले चुका हूँ।"

यह कहकर जीवन जमना के बिछौने पर आ बैठा। जमना भी बैठ गई। घर में अँधेरा छाया था, अतः दोनों एक दूसरे की आकृति को साफ-साफ नहीं देख पाते थे।

"तुमने अब तक मेरे लिए कोई काम नहीं देखा?"

कुछ देर बाद निस्तब्धता भङ्ग हुई।

"तुम काम की कोई चिन्ता न करो, भाभी! मैं कमाकर लाऊँगा, तुम घर बैठी खाओ। मेरे कौन बैठा है?"

"यही, यह नहीं होने का। मैं यहाँ निठल्ली बैठकर खाने नहीं आई हूँ। बैठे-बैठे हाथ-पाँव सुन्न पड़ गए हैं। कोई काम मिले तो मन भी लगे और हाथ-पाँवों में जान भी आए और मैं तुम पर दो-दो प्राणियों का बोझ भी नहीं डालना चाहती।"

"यह कैसी बातें करती हो, भाभी? मैं क्या कोई पराया हूँ? पराया होता तो मैं तुम्हें लाता ही क्यों? अगर तुम मेरा घर सँभाल लो तो मेरी जिन्दगी सुधर जाएगी।"

जीवन चुप हो गया। जमना ने कोई उत्तर नहीं दिया। जैसे वह किसी गहरी चिन्ता में डूब गई हो।

कुछ देर के लिए कोठरी में सन्नाटा छा गया।

"भाभी, क्या सोच रही हो?" कहकर जीवन ने जमना का हाथ अपने हाथ में लेकर जोर से दबाया—"बोलो भाभी, तैयार हो?"

जमना के रोम-रोम में बिजली दौड़ गई। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

जीवन ने उत्तर न पाकर उसकी ओर अपना बायाँ हाथ बढ़ाया ही था कि पास में लेटा हुआ जमना का लड़का हड़बड़ा कर खड़ा हो गया। उसके मुँह से ऐसी चीख निकली, जिसे सुनकर जमना और जीवन दोनों ही हक्के-बक्के-से रह गए। जमना ने उसे अपनी गोद में लिटा लिया। लड़का घर-घर कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। उस कम्पन का स्पर्श पाकर जमना का हृदय धक-धक करने लगा। जीवन उठकर अपने बिस्तर पर आ गया।

लड़का अभी कुछ स्वस्थ हो पाया था कि जमना को प्रतीत हुआ, जैसे एक छाया उसकी ओर आ रही है। वह छाया उसके सामने आकर खड़ी हो गई और उसके लम्बे-लम्बे हाथ लड़के की छाती पर आकर रुक गए। जमना को सुनाई दिया—"जमना, मेरी निशानी मुझे लौटा दे; मैं इसे सुरक्षित रक्खूँगा।"

दूसरे क्षण छाया विलीन हो गई।

जमना इतना घबरा गई थी कि उसके कण्ठ से आवाज तक न निकली। वह जीवन को पुकारना चाहती थी, किन्तु पुकार न सकी।

× × ×

दूसरे दिन जमना अपने लड़के को लेकर सड़क पर काम करने चली गई। सड़क, नगर से बाहर डेढ़-दो मील पर, एक ठेकेदार की ओर से बनाई जा रही थी।

उस दिन प्रातःकाल जमना की आँखें कुछ देर से खुलीं। तब तक जीवन काम पर चला गया था।

जब से जमना यहाँ आई, उसकी पहचान पड़ोस की केवल एक स्त्री से हुई। उस स्त्री का पति ठेकेदार की ओर से सड़क पर मजदूरों की देख-रेख करता था। जमना प्रातःकाल उठते ही उस पड़ोसिन के पास गई और उसने अपने पति से कहकर उसे काम दिला दिया। मजदूरों के लिए सड़क के किनारे बनी हुई स्थायी झोंपड़ियों में से उसे रहने के लिए एक झोंपड़ी मिल गई।

जमना टोकरे में पत्थर भर-भरकर कारीगरों को पकड़ा रही थी। लड़का एक-दो फेरों में उसके साथ रहा, लेकिन फिर वह थककर सड़क के एक किनारे बैठकर अपनी माँ का आना-जाना देखने लगा। जमना जब उसके पास से निकलती तो लड़के की आँखें दमकने लगतीं, वह टुकुर-टुकुर देखने लगता और हँस देता। जमना के मुँह पर भी फीकी-सी मुसकान दौड़ जाती। माँ के आगे निकल जाने पर लड़का उदास हो जाता। जमना की छाती फटने लगती। पास पहुँचकर जमना की प्रबल इच्छा होती, वह लड़के को उठाकर अपनी छाती से लगाकर उसका मुँह चूम ले। लेकिन इस डर से कि कोई उससे कुछ कह न दे, अपना मन मारे काम करती रही। दूसरे मजदूर धीरे-धीरे काम कर रहे थे; किन्तु वह इसकी अभ्यस्त न थी। वह तेजी से फेरी कर रही थी। परिणाम यह हुआ कि वह दोपहर होते-न-होते थक गई।

धूप तेज हो चली थी। लड़का चद्दर बिछाकर एक वृक्ष के नीचे सो गया। जमना ने उसे चादर का एक छोर उढ़ा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

राम-राम करके सन्ध्या हुई। मजूरी बँटने लगी। जमना ने हाथ बढ़ाया तो मजूरी देनेवाले ने कहा—"तेरे साथ आने हैं?"

"नहीं।"

"तो फिर तुझे बारह आने के पैसे कैसे दूँ? तीन की तीन रुपए दिए देता हूँ। आपस में बाँट लेना।"

जमना अपने अन्य तीन साथियों के साथ जब मुंशी के निकट पहुँची, उसने बड़ी विनम्रता से कहा—"भाई साहब, की बड़ी जरूरत है। अगर तुम्हारे पास खुले पैसे हों तो बड़ी कृपा होगी।"

"रेजगारी हमारे पास भी नहीं है। कल दिन निकले में सौदा लेने जाएँगे तब पैसे मिलेंगे।"

"तो मुझे रुपया दे दो, मैं अभी सौदा लाकर चवन्नी लौटाए देती हूँ।"

"बड़ी आई चवन्नी लौटानेवाली!" एक साथी पर अविश्वास की दृष्टि डालते हुए कहा—"हम कहीं जा रहे हैं।"

"भागी तो मैं भी नहीं जा रही हूँ।" जमना को गया। उसने क्रुद्ध स्वर में कहा—"अगर तुम का भरोसा नहीं करते तो मैं तुम्हारा बारह आने के करूँ?"

"यहाँ तुम्हारे पाँव कौन पड़ने गया था कि भरोसा करो?"

उसने बड़ी उद्दण्डता के साथ उत्तर दिया और अन्य साथियों के साथ अपनी झोंपड़ी में चला गया।

जमना जब अपनी कोठरी में पहुँची तो उसके ज्वाला जल रही थी। उसके हृदय को रह-रहकर व्यथित कर रहा था—क्या मेरा मूल्य चार आना भी जो मुझ पर इतने के लिए भी विश्वास नहीं किया गया

उसने लड़के को गूदड़ी पर लिटा दिया।

उसके हृदय में उसकी इस विवशता ने आग-सी कि वह अपने कलेजे के टुकड़े को रोटी का एक खिला सकती, छँटाक दूध नहीं पिला सकती, दिन पसीना एक करके भी वह अपना पेट नहीं भर कि उसके पास झोंपड़ी में मिट्टी का दिया लगाने दो पैसे नहीं हैं।

आकाश में तारे छिटक गए थे। लड़का गूदड़ी चाप लेटा रहा। उसने न रोटी माँगी न पानी माँगा। ने थोड़ी देर बाद ज्यों ही दुलार से उसके माथे पर हाथ माथा तवे की तरह दहक रहा था। जमना चौंक गई।

उसने बड़े करुण स्वर से कहा—"मेरे राजा बेटे, तुम्हारे लिए मैं दूध लाती हूँ, उठो मत सोओ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु लड़के ने आँख तक न खोली। वह उसी तरह चुप-चाप पड़ा रहा।

जमना करे तो क्या करे? उसने सोचा, जीवन के पास चली चलें; किन्तु इतनी रात गए वह वहाँ कैसे जाए? और फिर इतने जोर के बुखार में अगर लड़के को कहीं हवा लग गई तो क्या होगा!

जमना की इच्छा थी—लड़का किसी तरह आँखें खोले। वह उसे देखे। अगर वह रोने भी लगता तो भी उसे सन्तोष होता। वह रात भर उसी तरह बैठी रही।

प्रातःकाल एक मजदूर उसे कल की मजदूरी की तीन चवन्नियाँ दे गया। उसने निश्चय किया, पहले कहीं से दूध लाकर लड़के को पिला दूँ, शायद भूख से इसे चेत न हो रहा हो। उसके बाद कुछ सोचा जाएगा। मील भर दूर से जमना अपनी छोटी-सी लुटिया में दूध भरकर लौटी। उसने झोंपड़ी में जाकर देखा, लड़के की आँखें कुछ खुली हैं और साँस धीरे-धीरे चल रही है। उसने हर्ष-विभोर होकर हाथ जोड़कर भगवान् को धन्यवाद दिया। उसने लड़के के पाँव छुए, वे बरफ की भाँति ठण्डे पड़े थे।

लड़के के हाथ-पाँव काँपे और गर्दन नीचे ढुलक गई; मानो वह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

× × ×

जमना की आँखों में आँसू नहीं थे। उस मृत बालक को गोद में लिए वह दौड़ी जा रही थी। वह नगर से दूर, बहुत दूर आ गई थी। आकाश में बीचोंबीच सूरज चमक रहा था। जमना के शरीर से पसीने की धार बँधी थी। बाल खुलकर चारों ओर फैल गए थे। झाड़ियों में उलझकर उसकी साड़ी तिक्के-तिक्के हो गई थी, लेकिन वह रुकने का नाम नहीं ले रही थी। उसने एक हाथ से लड़के के शव को छाती से चिपका रक्खा था और उसके दूसरे हाथ में दूध की लुटिया थी। वह चली जा रही थी।

लड़के के हाथ-पाँव ऐंठकर लकड़ी बन गए थे; वे हिलते-डुलते नहीं थे। लड़के का मुँह सफेद हो गया था, जैसे किसी ने उसके शरीर का रत्ती-रत्ती खून पी लिया हो।

जमना सहसा खड़ी हो गई। उसने लड़के को एक ओर लिटा दिया और वह स्वयं गढ़ा खोदने लगी। गढ़े में लड़के का शव रख दिया। फिर लड़के के खुले मुँह में लुटिया का दूध डालते हुए कहा—"मेरे राजा बेटा, दूध पीते जाओ, भूख लगी होगी। मारे भूख के चल न सकोगे। कल कुछ खिला न सकी, आज तो पेट भर दूध पी लो।"

दूध इधर-उधर से बह निकला। दूध की सफेद-सफेद बूँदें आँख, नाक और माथे पर फैलकर सूर्य की किरणों में चमकने लगीं।

"और ये पैसे लो। बस मेरे पास यही हैं। काम पड़ने पर खर्च करना। अच्छी तरह से रहना।"

यह कहकर जमना ने अपनी गाँठ से दो चवन्नियाँ निकालकर लड़के की कमीज की जेब में रख दीं।

और वह स्वयं उठकर पहले की अपेक्षा अधिक वेग से दौड़ने लगी।

मारे धूप के पृथ्वी और आकाश तप रहे थे। वह बिल्कुल सीधी, झाड़ियों को फाँदती, खेतों को लाँघती और पौधों को रौंदती चली जा रही थी।

कहाँ?

वह सम्भवतः किसी दूर देश को जा रही थी और उसके पास इतना समय नहीं था कि वह दुनिया को अपनी मञ्जिल का पता बता सके।

——

न्यूरैंबर्ग मुकदमे पर एक दृष्टि

पण्डित शिवकुमार, विद्यालङ्कार

न्यूरैंबर्ग में जर्मनी के २१ नाजी नेताओं पर षड्यन्त्र करने, अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लङ्घन कर शान्ति भङ्ग करने, युद्ध-काल में युद्धबन्दियों को अमानुषिक दण्ड देने और उन पर अमानुषिक अत्याचार करने के अभियोग में मुकदमा चलाया गया था। फल-स्वरूप २१ में से ३ नेताओं—शाफ्ट, पेपिन और फ्रिट्ज़शे—को रिहा कर दिया गया; ११ को फाँसी दे दी गई, ७ को जेल की सजा दी गई और केरमैन को लापता हालत में ही मौत की सजा दी गई।

यह मुकदमा ३१६ दिन तक चला। विश्व के इतिहास में मुकदमा सबसे अधिक दीर्घकालीन रहा है। इससे पहले एक बड़ा मुकदमा इँग्लैंड में सन् १८७४ में चला था। उसमें १८८ दिन लगे थे। न्यूरैंबर्ग मुकदमे में १६१० गवाह भुगताए गए। करीब २००००० हलफिया बयान दिए गए। अँगरेजी, फ्रेंच, रूसी और जर्मन भाषा के करीब २½ करोड़ शब्द बोले गए। सारी गवाहियाँ २० हजार सफों में कलमबन्द की गई हैं। शहादतों, जिरह और वकीलों की बहस ५ लाख जिल्दों में प्रकाशित होगी। चालीस-चालीस जिल्दों के कई भाग होंगे। प्रत्येक जिल्द में लगभग ५० या ६० लाख शब्द होंगे। यदि लिखी हुई जिल्दें एक के ऊपर एक रख दी जाएँ तो इनकी उँचाई ३० मील हो जाएगी। १ करोड़ शब्दों

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार अखबारों को भेजे गए। प्रतिदिन करीब १ लाख ५ हजार सफे टाइप किए गए। करीब ३० लाख कागज पेश हुए, जिसका वजन ३० टन है। इसके अतिरिक्त गवाहियों में ८० हजार फुट लम्बी फिल्म भी गवाही के रूप में पेश की गई। अदालती कर्मचारियों की संख्या करीब १८०० रही, जिसमें जज, वकील, अभियुक्त आदि सभी शामिल हैं। कुल २५ हजार दर्शक उपस्थित थे।

मुकदमा क्यों चलाया गया ?

न्यूरैंबर्ग का मुकदमा विश्व के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। गोयरिङ्ग ने आत्महत्या करके अपने आपको अपने शत्रु के हाथों मरने से बचा लिया। ११ नाजी नेता वीरता के साथ फाँसी के तख्ते पर झूल गए। यह मुकदमा न्यायोचित रहा है या नहीं, यह तो भविष्य में इतिहासवेत्ता निर्णय करेंगे। किन्तु इस मुकदमे के साथ-साथ कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। अब हम उन्हीं पर संक्षेप से प्रकाश डालेंगे।

सबसे पहला प्रश्न यह पैदा होता है कि २१ नाजी नेताओं पर मुकदमा चलाने की आवश्यकता क्यों समझी गई। हिटलर के अभाव में समस्त नाजी नेता साथी सेनाओं के पञ्जे में थे। फिर उन्हें गोली से क्यों नहीं उड़ा दिया गया? उनपर मुकदमा चलाने का यह प्रपञ्च क्यों रचा गया? उन्हें मुकदमा चलाए बिना ही यमलोक क्यों न पहुँचा दिया गया? साथी राष्ट्रों का उत्तर यह है कि उक्त नाजी नेताओं पर मुकदमा चलाना आवश्यक था। कारण यह है कि इसके बिना वर्त्तमान विश्व को और विश्व की भावी सन्तति को यह मालूम न हो पाता कि नाजी नेताओं को फाँसी क्यों दी गई, आजन्म कारावास क्यों दिया गया और कुछ को बरी क्यों किया गया। अब विश्व के सामने साफ हो गया है कि नाजी नेताओं ने अपने नजरबन्द शिविरों में युद्ध-बन्दियों के साथ कैसे-कैसे अमानुषिक अत्याचार किए। बेलसेन आदि शिविरों में होनेवाले अत्याचारों की रोमाञ्चकारी कहानियाँ विश्व की थाती हैं। यदि मुकदमा न चलाया जाता तो विश्व इन अमानुषिक घटनाओं से सदैव अपरिचित रहता। उसे यह मालूम न हो सकता कि मानव-जाति और विशेषतया योरप को अपने खूनी पञ्जे का शिकार बनाने के लिए नाजी नेताओं ने कैसी-कैसी योजनाएँ बना रक्खी थीं।

वकीलों की आपत्तियाँ

न्यूरैंबर्ग मुकदमे पर वकीलों ने कई कानूनी आपत्तियाँ की हैं; किन्तु अभी तक उनमें से एक का भी सन्तोषजनक समाधान नहीं हो सका। यह मुकदमा किस कानून के अनुसार चलाया गया? क्या यह मुकदमा किसी परम्परा के अनुसार चलाया गया? परम्परा तो ऐसी है कि युद्ध के बाद विजयी राष्ट्र पराजित राष्ट्रों के नेताओं पर किसी किस्म [illegible] नेपोलियन बोनापार्ट का उदाहरण हमारे सामने है। उसकी वीर वाहिनि विजय का स्वप्न देख चुकी थीं। मगर अन्त परास्त होना पड़ा। परास्त होने के बाद नैपोलियन समय के विजेताओं ने कोई मुकदमा नहीं चलाया १९१८ के विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी के नेता कैसर मुकदमा चलाया था? इसलिए युद्ध में पराजित नेताओं पर अन्ताराष्ट्रीय मुकदमा चलाने की यह एक परम्परा कायम की गई है।

वकीलों की आपत्तियाँ यहीं तक समाप्त नहीं हो जा पूछते हैं कि क्या अन्ताराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल को कानूनी न्यायालय कहा जा सकता है? यदि हाँ, तो कि के मातहत? फिर इस न्यायालय ने किस कानून धारा के अनुसार भिन्न-भिन्न सजाएँ दीं? वह कौन था, जिसके मातहत चार देशों के चार न्यायाधीश देशों के अभियोक्ताओं-द्वारा नाजी अभियुक्तों पर अभियोगों को सुनने बैठ गए? वह कौन-सा जिसके अनुसार उक्त चार देशों के न्यायाधीशों देशों की सीमा से बाहर निकलकर दूसरे देशों में युद्धापराधों को लेकर मुकदमा चलाने का अधिकार गया है?

न्याय विभाग स्वाधीन नहीं था

'दुर्जनतोष न्याय' से थोड़ी देर के लिए यदि लिया जाए कि उक्त ट्रिब्यूनल कानूनी था, तो प्रश्न होता है कि क्या उस ट्रिब्यूनल ने स्वाधीन होकर निर्णय दिया? क्या इस महत्त्वपूर्ण मुकदमे में न्याय-विभाग शासन-विभाग से अधिक पृथक् था? घटनाएँ साक्षी हैं कि न्याय-विभाग ने वही फैसला शासन-विभाग चाहता था। हमें स्मरण है कि जनवरी में १८ साथी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन हुआ था। उसमें यह स्वीकार किया गया था कि के युद्धापराधियों के खिलाफ कोई-न-कोई कार्यवाही आवश्यक है। बाद में मास्को में स्वर्गीय रूजवेल्ट और स्टालिन ने मिलकर यह निश्चय किया कि २१ नाजी नेता मुख्य अपराधी हैं। इस तरह कि अन्ताराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल चार देशों की इच्छा कोई निर्णय नहीं दे सका। इसका अभिप्राय न्यूरैंबर्ग मुकदमे में न्याय-विभाग शासन-विभाग नहीं था। अमेरिका, जो न्याय-विभाग को से अलग मानता है, के रहते हुए यह सब हो नहीं कहा जा सकता।

आरोपों का उत्तर

नाजी नेताओं पर यह अभियोग लगाया गया कि साजिश की, विश्व की शान्ति भङ्ग की और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानुषिक काम किए। युद्धकाल की घटनाओं को अपने
मने रखकर यह कहा जा सकता है कि ये अभियोग तो
ड़े-बहुत रूस, अमेरिका और ब्रिटेन पर भी लगाए
सकते हैं। रूस पर यह आरोप लगाया जा
कता है कि उसने भी साजिश की थी। सन् १९३९ में रूस के
जनीतिज्ञों ने रिबनट्रप के साथ साजिश करके रूस-जर्मनी
नाक्रमण-सन्धि की थी। फिनलैंड व पोलैंड पर हमला करके
सने विश्व-शान्ति भङ्ग की थी। पूर्वी पौलैंड में एक कब्रिस्तान
ला है, जिसमें हजारों पोल लोगों के अस्थि-पंजर पाये गए
। रूसियों की अमानुषिकता का इससे बढ़िया और सबूत
न-सा पेश किया जा सकता है? शायद रूस के इन युद्धा-
राधों को अपने सामने रखते हुए डीन इंगे (Dean Enge)
कहा था—"One of the Powers represented on the
ribunal ought to be in the Dock and not on the
ench," अर्थात् "ट्रिब्यूनल में विभिन्न राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व
नेवाले एक प्रतिनिधि को न्यायाधीशों में शामिल न होकर
भियुक्तों में शामिल होना चाहिए था।"

ब्रिटेन पर यह आरोप आसानी से लगाया जा सकता है कि
ने रूस को जर्मनी से भिड़ाकर विश्व-शान्ति को भङ्ग किया।
द क्रिप्स मास्को न गये होते और उनके प्रयत्नों के फल-स्वरूप
र्मनी ने रूस पर धावा न बोला होता तो विश्व-शान्ति के लिए
रा पैदा न होता।

अमेरिका विश्व-न्यायालय में अमानुषिकता का अपराधी
इस अभियोग को साबित करने के लिए जापानी गवाह
करने की आवश्यकता नहीं। अमेरिका स्वयं चश्मदीद
ाह है। उसने जापान के हिरोशिमा नगर पर परमाणु बम
कर अमानुषिकता की हद कर दी। जर्मनी ने कई नजर-
कैम्प कायम किए। लेकिन यदि इन कैम्पों में की गई
म हत्याओं को एक तरफ रख दिया जाए और उसके मुकाबले
माणु बम-द्वारा किए गए खूनों को दूसरी ओर रख दिया
तो परमाणु बम से होनेवाली मौत की संख्या अपेक्षाकृत
रा होगी। यदि परास्त जर्मनी ने परमाणु बम का प्रयोग
ा होता तो उसपर अन्य अभियोगों के अतिरिक्त एक अभि-
यह भी लगाया जाता कि उसने परमाणु बम का प्रयोग
ा था। मगर आज अमेरिका इस अमानुषिक हथियार का
माल करने के बाद भी युद्धापराधी नहीं है।

सजाएँ देने पर आश्चर्य

सितम्बर १९३९ के पूर्व जर्मनी का फैसिटीवाद के सम्बन्ध
कितना साहित्य प्रकाशित हुआ, उससे प्रत्येक पाठक को
आभास हुआ कि फैसिटीवाद समाजवाद के विरुद्ध पूँजीवाद
ढाल है। जर्मनी के नाजी लोग समाजवाद के विरुद्ध
प्रहरी का काम करते हैं। राजनीतिज्ञों की आम धारणा यह
थी कि पूँजीवादी मुल्कों ने हिटलर के जर्मनी को बनाया है,
उसकी हर तरह से सहायता की है। नाजी जर्मनी पूँजीपति
राष्ट्रों का मिशन लेकर रूस से टक्कर लेनेवाला राष्ट्र है। यदि
ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका अपने पूँजीवादी संस्थान को बनाए
रखना चाहते हैं तो योरप में हिटलर के जर्मनी का जीवित
रहना आवश्यक है। इसी नीति के कारण चेम्बरलेन ने
हिटलर के प्रति 'सामनीति' को अपनाया था। इन सब
बातों को सामने रखते हुए सचमुच उस समय हमें आश्चर्य
हुआ जब अन्ताराष्ट्रीय ट्रिब्यूनल ने २१ में से ३ को छोड़कर
शेष सब नाजी नेताओं को सजा दे दी। दूसरे शब्दों में यह
कहा जा सकता है कि कम-से-कम ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांस
के न्यायाधीश तो नाजियों को सजा न देते। क्योंकि वे सब
तो उन्हीं के मिशन को पूरा कर रहे थे। पूँजीवाद को
समाजवाद के जबड़े से बचाने का कार्य क्या महत्त्वपूर्ण नहीं
था? तब पूँजीवाद के प्रहरी इन १९ नाजी नेताओं को सजा
क्यों दी गई?

रूस का दबाव

इस प्रश्न का उत्तर निस्सन्देह विवादास्पद है। कहा
जा सकता है कि सिर्फ रूस के दबाव देने पर नाजियों को
सजाएँ दी गईं। यदि रूस ने जोर न दिया होता तो शायद
अमेरिका व ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ यह सिफारिश करते कि तमाम
नाजी नेता बरी कर दिए जाएँ। कहते हैं, शायद फ्रांस ने भी
रूस का साथ दिया था। कारण यह है कि रूस के अतिरिक्त
फ्रांस को भी जर्मन-आक्रमण का शिकार बनना पड़ा था।
ब्रिटेन और अमेरिका की दाल नहीं गलने पाई। यदि उनकी
चलती तो वे सबको निर्दोष बता देते!

जनरल स्टाफ बरी क्यों?

इस समूचे फैसले में रूस व फ्रांस के कारण यदि
१९ नाजी नेताओं को सजा दी गई तो अमेरिका व
ब्रिटेन के कारण जर्मनी के 'जनरल स्टाफ' और
डा० शाफ्ट, पेपिन व फ्रिट्शे को बरी कर दिया गया। इस
तरह ब्रिटेन व अमेरिका ने रूस व फ्रांस के मुकाबले अपना
पूरा सन्तुलन कर लिया। दोनों ने अपने काम की संस्था
और अपने काम के तीन व्यक्तियों को साफ बरी करा
लिया। रूस ने आपत्ति की; मगर फिर भी जनरल स्टाफ
को दोषी घोषित नहीं किया गया। अमेरिका और ब्रिटेन
की यह चाल थी। दोनों को मालूम है कि इस संस्था ने
पूँजीवादी राष्ट्रों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसी-कैसी योजनाएँ तैयार कीं। दोनों को इस संस्था की क्षमता में पूरा विश्वास है। इसी संस्था ने १९वीं सदी में डेनमार्क, आस्ट्रिया और फ्रांस पर आक्रमण करने की योजना तैयार की थी। बेल्जियम के साथ की गई सन्धि को तोड़कर इसी संस्था ने अपने देश को सन् १९१४-१८ के योरपीय महायुद्ध में झोंक दिया था। कैसर और हिटलर के जनरल स्टाफ में बहुत अधिक अन्तर नहीं था। इसी स्टाफ ने १९१८ के बाद शस्त्रीकरण और दुश्मनों से बदला लेने की योजना अपने देश के सामने रक्खी थी। यह संस्था भविष्य में भी ब्रिटेन और अमेरिका की रूस-विरोधिनी नीतियों को कार्यान्वित करती रहे, इसी लिए संस्था के रूप में इसे बरी कर दिया गया। हाँ, रूस को खुश करने के लिए उसके दो सदस्यों—कीटल व गोडल—को फाँसी जरूर दे दी गई।

शाफ्ट, पेपिन व फ्रिट्शे

डाक्टर शाफ्ट, पेपिन व फ्रिट्शे को भी अमेरिका व ब्रिटेन ने अपने स्वार्थ-साधन के लिए बरी कराया है। डा० शाफ्ट जर्मनी के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं। उन्हीं की योजनाओं का यह फल था कि जर्मनी के बड़े-बड़े व्यापारियों व उद्योग-पतियों का एक सम्मेलन (१९३२) बुलाया गया था और उसमें नाजी पार्टी के लिए करोड़ों मार्कों का चन्दा किया गया था। पेपिन जर्मन साम्राज्यवाद के एजेंट रहे हैं। विगत विश्व-युद्ध के समय वे वाशिंगटन के जर्मन दूतावास के अध्यक्ष थे। उन्हीं ने जर्मनी के बड़े-बड़े व्यापारियों व उद्योगपतियों को हिटलर का पक्षपाती बनाया था। चांसलर बनते ही उन्होंने जर्मनी के अनेक सोशलिस्टों और कम्यूनिस्टों को जेलों में बन्द कर दिया था। उसने तमाम नाजियों को जेल से मुक्त कर दिया था। उसी की साजिश का यह परिणाम था कि स्वर्गीय हिंडनबर्ग ने अपने वसीयतनामे में हिटलर को अपने बाद चांसलर नियुक्त किया था। ब्रिटेन और अमेरिका इस व्यक्ति को अपने काम का समझते हैं। इसी लिए उन्हें रिहा किया गया है। फ्रिट्शे जर्मनी के गोयबिल्स नम्बर २ कहे जाते हैं। वे झूठ-कारखाने के सफल कारीगर हैं। प्रचार करना उनका प्रधान काम है। इस तरह डाक्टर शाफ्ट-जैसे पूँजीपतियों के मित्र, पेपिन जैसे तिकड़मी और फ्रिट्शे जैसे झूठा प्रचार करनेवाले व्यक्ति को पाकर अमेरिका व ब्रिटेन रूस के विरुद्ध अपना मोर्चा खड़ा करना चाहते हैं। वे अब एक ऐसे जर्मनी का निर्माण करना चाहते हैं, जिसमें बड़े-बड़े व्यापारियों व उद्योगपतियों का बोलबाला हो और जो रूस से टक्कर ले सके।

नवीन परम्पराएँ

न्यूरेंबर्ग मुकदमे के साथ कुछ एकदम नवीन परम्पराएँ कायम की गई हैं, जो अन्ताराष्ट्रीय दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण हैं। १९१४-१८ के योरपीय महायुद्ध के बाद जर्मन राधियों पर (लीपजिग) की जर्मन अदालत में मुकदमा गया था। किन्तु इस बार जर्मन युद्धापराधियों पर अदालत के सामने मुकदमा न चलाकर एक [illegible] अदालत के सामने मुकदमा चलाया गया। यह परम्परा है। इस परम्परा को चलाने का कारण लीपजिग-मुकदमे में सिर्फ आधा दर्जन युद्धापराधियों मुकदमा चलाया गया था। उन्हें जर्मन अदालतों सजाएँ दीं जो कुछ सप्ताहों अथवा कुछ महीनों में ही गई थीं।

लीपजिग मुकदमे सफाई की इस दलील को गया था कि यदि कोई मातहत अधिकारी अपने से कारी का हुक्म मानकर कोई काम करता है तो उ तौर से दोषी नहीं ठहराया जा सकता। किन्तु मुकदमे में इस दलील को स्वीकृत नहीं किया गया अभियुक्तों ने कहा कि नजरबन्द शिविरों में जो अत्या वे हमारी इच्छा से अथवा हमारी जानकारी में नहीं हमारा काम तो सिर्फ हिटलर व हिमलर के बजाना था। किन्तु अदालत ने इस्तगासे के इस स्वीकार कर लिया कि अभियुक्तों ने भी अमानुषिक हिस्सा लिया। इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने कार्य करने की अनेक योजनाएँ तक तैयार कीं।

फाँसी न दी जाती

विजेता राष्ट्रों ने उक्त दो परम्पराएँ कायम करके हित की दृष्टि से बहुत अच्छा कार्य किया। विजेताओं के लिए एक नया नियम बना दिया लेकिन इन नवीन परम्पराओं के साथ-साथ एक और कायम कर दी जाती तो मानव-जाति का बहुत हो जाता। मानव-जाति उत्तरोत्तर विकास कर उसकी विचारधारा मानवीयता की ओर अग्रसर है वह फाँसी-जैसी बर्बरतापूर्ण सजाओं का विरोध कर ब्रिटेन की मजदूर सरकार अपने यहाँ मृत्यु-दण्ड करने के लिए पार्लमेंट में एक बिल पेश करने की है। ऐसे युग में १९ नाजी नेताओं को फाँसी देने हृदय काँप उठा है। जिस मानव-जीवन को हम सकते उसे फाँसी देकर नष्ट कर देने का हमें क्या अकेला यही प्रश्न न जाने विश्व के कितने मस्तिष्कों को कर रहा है। यदि सजाओं के सम्बन्ध में भी एक नवीन कायम कर दी जाती तो बहुत अच्छा होता। भारत में एक परम्परा कायम करने का सुझाव पेश कर सकता पर हम अभी प्रकाश डालेंगे। योरप के नैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खते हुए डीन इंगे (Dean Inge) के उस सुझाव पर ड़े आराम से अमल किया जा सकता था, जिसमें उन्होंने कहा —"Let them go with the mark of cane on their rows" अर्थात्—"उनके माथों पर बेतों के स्थायी निशान गाकर उन्हें बरी कर दिया जाए।" योरपीय स्टैंडर्ड के नुसार नाजी नेताओं के लिए यह सजा पर्याप्त थी।

भारतीय व्यवस्था

हम भारतीयों के अपने ही आदर्श हैं। हमारे साहित्य में विजित और विजेताओं के पारस्परिक सम्बन्धों के सम्बन्ध में अनेक दन्तकथाएँ प्रचलित हैं। आज उनके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है—"क्षमाखड्गः करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति" अर्थात् क्षमा की तलवार जिसके हाथ में है, उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता। लेकिन यदि किसी दुर्जन पर यह विश्वास हो कि वह क्षमा करने से मान जाएगा तो उसे ठीक रास्ते पर लाने के लिए कई उपाय भारतीय नीतिकारों ने बताए हैं। कम-से-कम उन उपायों में परास्त शत्रु पर मुकदमा चलाकर उसे फाँसी देने का विधान नहीं है। मनुस्मृति के सातवें अध्याय के २०३वें श्लोक में कहा गया है—

प्रमाणानि च कुर्वीत,
तेषां धर्म्यान्यकोदितान्।
रत्नैश्च पूजयेदेनं,
प्रधानपुरुषैः सह॥

अर्थात् युद्ध में जीतने के बाद विजयी राजा विजित शत्रु के साथ प्रमाण यानी प्रतिज्ञादि (Peace treaty) लिखा ले। फिर परास्त राजा के वंश के किसी धार्मिक पुरुष को राजा बना दे। जैसे कि रावण को परास्त करने के बाद विभीषण को लङ्का का राजा बना दिया गया था। नए राजा के साथ ऐसे आदमियों को रक्खे कि जिससे फिर उपद्रव न होने पाए। इसी तरह उस राजा की उसके राजकर्मचारियों के बीच रत्नादि भेंट करके पूजा करे। इस तरह मनुस्मृति की यह व्यवस्था ऐसी है कि परास्त लोगों को रत्नादि भेंट किए जाएँ। उनसे युद्ध का मुआवजा वसूल न किया जाए।

'मनुस्मृति' के ७ वें अध्याय के २०४ वें श्लोक में कहा गया है—

आदानमप्रियकरं,
दानञ्च प्रियकारकम्।
अभीप्सितानामर्थानां,
काले युक्तं प्रशस्यते॥

अर्थात् पराजित शत्रु से किसी किस्म का मुआवजा लेना कोई पसन्द नहीं कर सकता। इसके विपरीत यदि उसे कुछ दिया जाए तो बहुत अच्छा रहता है। अतएव यदि परास्त शत्रु को समय पर उसकी मनचाही चीज दे दी जाए अर्थात् उसे कपड़े व अन्न आदि से वञ्चित न रक्खा जाए तो राजनीतिक दृष्टि से बहुत अच्छा रहता है।

किन्तु न्यूरैंबर्ग मुकदमे के साथ जर्मन जनता से उसके प्रिय नेता बलात् छीन लिए गए हैं। इससे विश्वशान्ति स्थापित होगी अथवा तृतीय विश्वयुद्ध के बीज बोए गए हैं, यह भविष्य के गर्भ में निहित है। अभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता।

परिचय

श्री कालीचरण चटर्जी, एम० ए०

जब निराशा ने बार-बार मोह और ममता को जड़ से झकझोर दिया और सपनों के सुनहले महल टूटते नजर आए, तब मैं जन्मभूमि छोड़ देहली महानगरी के...मुहल्ले में एक दोमञ्ज़िले मकान के नीचे का भाग किराए पर लेकर रहने लगा, अपनी शिक्षिता स्त्री और नौ साल की लड़की के साथ। था वह बड़ा अच्छा मकान—नया, साफ, पर्याप्त प्रकाशित तथा हवादार, उस पर किराया बहुत कम; मेरे ऐसे मर-मिटकर कमानेवालों के लिए विशेष उपयोगी। खैर, कुछ दिन तक खाक छानने के बाद एक सरकारी दफ्तर में एक नौकरी लग गई, तुच्छ, महत्त्वहीन।

एक दिन देखा, बरामदे में मेरी लड़की तारा खेल रही है—एक अपरिचिता किन्तु समवयस्का लड़की के साथ। पत्नी से पूछा, 'वह कौन है?'

उससे जवाब मिला, 'वह है ऊपर के किराएदार की लड़की मीरा।'

और एक दिन दफ्तर से लौट तारा को न देखकर पत्नी से प्रश्न किया, 'तारा कहाँ है?'

उसने जवाब दिया, 'आज तारा गई है मीरा के यहाँ।'

सन्ध्या समय बरामदे में दरी बिछाकर लेटा आराम कर रहा था। दृष्टि निबद्ध थी शरद् के शान्त आकाश पर; अकस्मात् सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर धम-धम की भीषण आवाज हो रही है। दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ, तारा और मीरा दोनों मिलकर किसी चित्ताकर्षक नाच की प्रैक्टिस कर रहीं हैं!

कुछ दिन के बाद।

दफ्तर से आकर मैं जलपान कर रहा था। मैंने देखा एक तश्तरी में एक नई मिठाई रक्खी हुई है। जिज्ञासा हुई, 'यह मिठाई कहाँ से आई है?'

उत्तर में पत्नी ने कहा, 'मीरा की माँ ने भेजी है।'

फिर और एक दिन।

मैंने देखा मेरा नौकर एक तश्तरी में रूमाल ढाँपकर जीने से होकर ऊपर जा रहा है।

'आज क्या माजरा है?'

'माजरा और क्या है? थोड़ी-सी 'दिलबहार' मिठाई भेज दी मीरा की माँ को।'

एक महीने के बाद की घटना।

उस दिन मेरी तबियत कुछ खराब थी। अतः बिस्तर पर मानसिक असमञ्जस की दशा में चुपचाप पड़ा हुआ था। मेरी अर्द्धाङ्गिनी एकाएक कमरे में आकर बोली, 'जरा बराबरवाले कमरे में चले तो जाओ।'

'क्यों, क्या बात है?'

'मीरा की माँ आई हैं तफरीह के लिए। जरा उस कमरे में जाकर लेट रहो।'

लगभग १५ दिन के बाद की बात। दफ्तर से वापस लौटने पर देखा, सोने के कमरे में ताला बन्द। नौकर से पूछा, 'मेरी माँजी कहाँ गई हैं?'

उसने कहा, 'माँजी गई हैं मीरा बहनी के यहाँ।'

'कब आएँगी, कुछ कह गई हैं?'

'सो तो मैं नहीं जानता, न वे कुछ कह गई हैं।'

देवी जी वापस आई सन्ध्या हो चुकने के पश्चात्।

प्रश्नोत्तर से जान पड़ा, मीरा की मौसी आई हैं कानपुर से—नाज-नखरों और अप-टू-डेट फैशन में पली अविवाहिता युवती। उनसे मिलने के लिए पैगाम आया था तारा की माँ के पास।

सोमवती अमावस की छुट्टी का दिन। दिवानिद्रा के बाद देखा, तारा का अजीब शृङ्गार हो रहा है और उसकी माँ उसका शृङ्गार कर रही है। उसके हाथ, गला, मस्तक नाना प्रकार के फूलों की मालाओं से सजाए गए। अन्त में एक रङ्गीन साड़ी और लहँगा के पहनाई गई।

'आज क्या बात है?'

'बात और क्या है; आज शाम को तारा और मीरा नाचेंगी ऊपर की मञ्ज़िल में। इसलिए जरा पहले से—'

'बड़ी अच्छी बात है; लेकिन यह साड़ी कहाँ से मिली? [illegible] याद नहीं पड़ता।'

'तुमने कौन सी चीज कब खरीदी है? लड़कियों को क्या जरूरत है, तुम्हें मालूम भी है?'

अपनी नादानी धीरे से स्वीकार करते हुए कहा, 'अच्छा!'

उसने फिर कहा, 'यह साड़ी भेजी है मीरा की माँ ने।'

सन्ध्या होने के पश्चात् तारा नाचकर लौट आई। उसके में एक चाँदी का सुन्दर तमगा चमक रहा था। उसके ही एक रक्तिम आभा उसके मुख पर उदय होकर तत्क्षण ही विलीन हो गई; परन्तु उसका चेहरा प्रसन्नता से हुआ था तथा निर्मल हँसी की छटा से उसकी आँखें लगी थीं।

'तमगा किसने दिया?'

'और कौन देगा; मीरा की मौसी ने दिया है।'

इस तरह छः महीने बीत गए उस मकान में।

× × ×

सोमवार का दिन। रिम-झिम, रिम-झिम झड़ी लग चाँदनी चौक में ट्राम पर सवार हो रहा था। ट्राम भर चुकी थी, खड़े रहने तक की जगह नहीं थी; किन्तु घर पहुँचने का और कोई उपाय भी नहीं था। धीरे-धीरे हुई ट्राम पर शीघ्र चढ़ने की कोशिश करते ही फट हुई और मुँह से 'उफ' निकल गया—मेरा कन्धा टकरा गया एक सज्जन के गञ्जे मस्तक से। किसी रहने भर की जगह ले मैंने आँखें नीली-पीली कर सज्जन हैं आप? एकदम आँखें मूँदकर बैठे थे क्या?'

उस सज्जन ने झिड़ककर जवाब दिया, 'आप भी हैं? चलती हुई ट्राम पर सवार होते वक्त क्या मूँद ली थीं?'

अग्निमय नेत्रों से परस्पर कठोर दृष्टि-विनिमय सज्जन ने एक सीट पर अपनी जगह कर ली। मैं एक हैंडल पकड़कर खड़ा ही रह गया।

ट्राम से उतरते समय देखा, वह सज्जन भी कुछ दूर जाने के बाद फिर देखा, सज्जन भी मेरे पीछे हैं। जब मैं दाहनी ओर मुड़ा तो देखा सज्जन ओर मुड़े। फिर जब मैं बाँई ओर मुड़ा, तब सज्जन साथ बाँई ओर मुड़े। अब मेरे आश्चर्य का पारावार

आखिर माजरा क्या है? कुछ विरक्त भाव 'आप मेरे पीछे-पीछे क्यों आ रहे हैं? मुझसे आप चाहते हैं क्या?'

सज्जन बोले, 'मैं भी आपसे यही प्रश्न करना आप मेरे साथ-साथ क्यों जा रहे हैं?'

'मैं—मैं तो जा रहा हूँ अपने स्थान को।'

'कहाँ है आपका स्थान?'

'वह—वह आगे जो लाल कोठी है, उसके नीचे मैं रहता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उसमें तारा नाम की एक लड़की रहती है न ?'

'जी हाँ, वह मेरी ही लड़की है। सो आपको कैसे मालूम आ ?'

'मैं भी रहता हूँ उस कोठी के ऊपर के हिस्से में।'

'उसमें मीरा नाम की एक लड़की रहती है न ?'

'जी हाँ, मीरा मेरी ही लड़की है।'

'अच्छा ? आप ही रामअवध बाबू हैं ? हें-हें-हें, नमस्कार !'

'आप भी तब रामदौर बाबू हैं ! हें-हें-हें, नमस्कार !'

× × ×

दफ्तर की पोशाक उतार रहा था। मैं पत्नी से बोला, 'आज मीरा के पिता से परिचय हो गया; बहुत अच्छे आदमी हैं वे।'

'सच ?'

'हाँ।'

'तुम किसी से परिचय कर सकते हो, मुझे विश्वास नहीं होता। मैं तो जानती हूँ कि तुम्हारा जो कुछ परिचय है, वह दफ्तर के काम से है।'

इस टिप्पणी का कोई जवाब नहीं था; सुतरां गम्भीर मुद्रा धारण करते हुए अपना कपाल टटोलकर देखा। वह एक अण्डे के बराबर सूज आया था !

भारतीय समस्याएँ

अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी

भारत में अस्थायी सरकार की स्थापना हो गई। संसार भर समाचारपत्रों ने इस संवाद को मोटे-मोटे शीर्षक देकर अग्रपृष्ठ छापा। एक ऐसा ही समाचारपत्र एक अधेड़ चीनी-सैनिक हाथ में पड़ा। उसके मुँह से सहसा निकल पड़ा—"बीसवीं ताब्दी की यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण घटना है।" चीन-पान-युद्ध में यह सैनिक दस वर्ष तक अगली पंक्ति में लड़ता था। भारत के इस समाचार से उसकी आँखों में आँसू लछला आए थे।

ब्रह्मा के स्वातन्त्र्य-युद्ध के नेता श्री औङ्गसन ने यह समा-र सुना तो वे प्रसन्नता से गद्गद हो उठे। उन्होंने अपने देश में कहा—"मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि भारत शीघ्र ही पूर्ण धीनता प्राप्त करे। वह समस्त एशियायी देशों को स्वतन्त्र ाने और उनमें एका स्थापित करने में भी सक्रिय एवं सफल । मैं भारत को उसी भाँति अखण्ड और स्वतन्त्र देखना हता हूँ जिस प्रकार अपने ब्रह्मा को।"

यही नहीं, जापानी बन्दी के हृदय को भी इस समाचार ने द्वेलित कर दिया। वह पूर्वी द्वीप-समूह में कैद था और अपनी न्यु की घड़ियाँ गिन रहा था। समाचार सुनते ही अपने र्घकालीन मौन को भङ्ग करके वह सहसा बोल उठा—"काश हम तीनों एक साथ होते। पर यदि दो भी रहे तो विश्वास कि वे हम अभागों को नहीं भूलेंगे।"

इंडोनेशिया के स्वाधीनता-संग्राम के प्रधान नेता डाक्टर इकानों ने अपने एक पत्र में लिखा—"काले और नैराश्यपूर्ण नों में भी हमें विश्वास था कि हमारे मित्र हमारी सहायता वश्य करेंगे। यह स्वाभाविक ही था कि हम भारत की ओर निहारते। हमें ऐसा करने का अधिकार था। हम भारत के साथ रक्त और संस्कृति के सम्बन्धों से सम्बद्ध हैं। यह बन्धन उतना ही पुराना है जितना हमारा इतिहास। स्वयं मेरा नाम ही इसका प्रमाण है।"

भारत में अस्थायी स्वाधीन सरकार की स्थापना का मिस्र टर्की और चीन ने खुले दिल से स्वागत किया। अमेरिका ने भी इसे स्वीकार किया। रूस के वैदेशिक मन्त्री ने भी कूट नीतिक राजदूतों की अदला-बदली पर विचार करने का आश्वा सन दिया। एक प्रकार से समस्त संसार ने इस शुभ कार्य के पक्ष में अपनी सहमति प्रकट की।

२ सितम्बर, १९४६ वह महत्त्वपूर्ण तिथि है जब कांग्रेस ने गहरे आत्मविश्वास के साथ अकेले ही केन्द्रीय सरकार की बाग डोर अपने हाथों में सँभाल ली। ६० वर्षों के निरन्तर प्रयत्नों के पश्चात् अन्ततः उकठे काठ में भी फूल आने के चिह्न दृष्टिगोच हुए। ब्रिटिश सरकार ने आभ्यन्तरिक और बाह्य लक्षणों अच्छे प्रकार अनुभव कर लिया कि भारत को अपने अधीन र सकना अब उसके लिए अधिक काल तक सम्भव नहीं है उसकी सत्ता डावाँडोल है। उसके प्रभाव पश्चिम और पू में कम हो रहे हैं। अब केवल एक उपाय उन प्रभावों की संरक्षा के लिए शेष रह गया है—भारत के साथ दृढ़ मैत्री के सम्बन्ध स्थापित करना। भारतीय स्वतन्त्रता के प्रश्न साम्प्रदायिकता की ओट में अधिक समय तक टाला नहीं सकता। राजनीतिक समस्याएँ साम्प्रदायिक रूप कभी धार नहीं कर सकतीं। किसी देश के ऐसे प्रश्नों को—जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक काल तक टाला नहीं जा सकता। फलतः २९ जुलाई को अपने बम्बई अधिवेशन में लीग-द्वारा ब्रिटिश प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिए जाने के बावजूद वाइसराय महोदय ने ११ अगस्त को पण्डित नेहरू को केन्द्र में अस्थायी सरकार बनाने के लिए आमन्त्रित किया और कांग्रेस ने—लीग-द्वारा खड़े किए गए नवीन अड़ङ्गे को मिटाने के उद्देश्य से ही—अन्त में मन्त्रिमिशन-द्वारा अस्थायी सरकार की प्रस्तावित रूपरेखा के अनुसार ही चौदह सदस्यों का मन्त्रिमण्डल बनाना स्वीकार करके २ सितम्बर को पदग्रहण कर लिया। यद्यपि उसने अपने इस कार्य के पूर्व ब्रिटिश मध्यस्थता का अन्त करने का बहुत प्रयत्न किया किन्तु फिर भी उसे अपने प्रयत्न में सफलता न मिली। मौलाना आज़ाद ने अपने एक भाषण में कहा भी था कि लीग को कांग्रेस के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेना चाहिए। ये प्रस्ताव वही हैं जो ब्रिटिश मन्त्रिमिशन ने अस्थायी सरकार के सम्बन्ध में किए थे। अन्तर केवल यह है कि वे तब एक विदेशी के द्वारा किए गए थे और अब कांग्रेस के द्वारा किए जा रहे हैं। किन्तु उनका यह कथन अरण्य-रुदन प्रमाणित हुआ। लीगी कमाण्डरों के आदेशानुसार सीधी कार्रवाई दिवस मनाया गया। बङ्गाल और सिन्ध के लीगी मन्त्रियों ने बड़ी धूम-धाम के साथ उक्त दिवस मनाने की पहले से ही तैयारियाँ कीं। सिन्ध के प्रधान मन्त्री ने एक विशाल सभा के मध्य में कहा था कि यदि केन्द्र में बिना लीग के हिन्दू सरकार स्थापित हो गई तो वे सिन्ध को स्वतन्त्र प्रान्त घोषित कर देंगे। बङ्गाल के प्रधान मन्त्री श्री सुहरावर्दी साहब ने फरमाया था कि यदि सिन्ध अपने को स्वतन्त्र प्रान्त घोषित कर देगा तो बङ्गाल भी ऐसा ही करेगा। उच्च ब्रिटिश अधिकारी क्षेत्रों में उनके इस वीरतापूर्ण उद्गारों के प्रति पूर्ण रूप से मौन धारण कर लिया गया। कांग्रेसी क्षेत्र भी चुप रहे। अन्त में कांग्रेस के कर्णधारों की समझ में यह बात आ गई कि किसी भी मूल्य पर लीगी सहयोग प्राप्त कर सकना उनके लिए पूर्णतः असम्भव है।

लीग के साथ कांग्रेस का उचित और अनुचित गँठबन्धन जहाँ कांग्रेस की शक्ति और मान को घटानेवाला था वहाँ राष्ट्रीय मुसलमानों को आत्महत्या के लिए विवश करनेवाला भी। सन् '४६ के प्रान्तीय चुनावों के समय उनके साथ लीगियों-द्वारा ऐसा बुरा व्यवहार किया गया जैसा आज भी फ्रेंच जर्मनों के साथ करते हिचकेंगे। निदान कांग्रेस ने पहली बार लीग को तुष्टीकरण की नीति त्याग कर अन्य स्वतन्त्र किन्तु भले व्यक्तियों को अपने साथ अस्थायी सरकार में लेने का निश्चय किया। सर शफात एक अत्यन्त योग्य, कार्य-कुशल, सम्माननीय मुसलमान थे। उनके मन में रणजीत सिंह के प्रति भी गहरी आदर-भावना थी। लीग में कुछ समय रह चुकने के बाद भी इतिहास-प्रेमी होने के कारण वे वैसे कट्टर न थे। इसी प्रकार

श्री आसफ अली की राष्ट्रीयता निर्विवाद थी। मुस्लिम सीटों के लिए विश्वास किया जा रहा था कि एक मोमिनों को मिलेगी और दूसरी या तो मजलिस को या मुस्लिम कान्फरेंस के किसी नेता को। श्री मज़हर खाँ का नाम भी इस सम्बन्ध में बराबर लिया जाता था।

इतने पर भी अपने साथ लीग का न होना कांग्रेस को बराबर खटक रहा था। पिछले चुनावों में लीग ने बड़े पैमाने पर विजय प्राप्त की थी उसने सिद्ध कर कि भारतीय मुसलमानों का बहुत बड़ा बहुमत लीग है। फलतः लीग को बार-बार आमन्त्रित किया जाता अन्ततः लीग के सदस्य भी अन्तःकालीन सरकार में हो गए, पर कांग्रेस के साथ समझौता करके नहीं, साथ साँठ-गाँठ करके। जो हो, भारत में राष्ट्रीय स्थापित हो ही गई है। इस सरकार को कार्यभार अनेक ऐसी समस्याओं से जूझना आवश्यक हो गया जड़ ब्रिटिश सरकार से भी गहरी है और जो यहाँ की समस्याएँ हैं।

इन समस्याओं में सब से पहली और प्रबल भुखमरी की, जिसे स्वतन्त्र सरकार को शीघ्रातिशीघ्र करना होगा।

ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं—ये तीनों भारतीय इतिहास की अत्यन्त सङ्घर्षमय सदियाँ थीं। इन तीनों सदियों में क्रमशः २, ०, १ अर्थात् केवल दुर्भिक्ष पड़े। चौदहवीं में ३ और पन्द्रहवीं में दो दुर्भिक्ष इनके बाद की तीन शताब्दियों में दुर्भिक्षों की संख्या गई और ब्रिटिश शासन की दो शताब्दियाँ तो शताब्दियाँ ही हैं। पूर्ववर्ती दुर्भिक्ष केवल प्रान्तीय होते थे, अतएव एक सीमित क्षेत्र के बाहर भाग जाने को भोजन-सामग्रियाँ प्राप्त हो जाती थीं। अति दुर्भिक्ष भी पन्द्रह-बीस सेर का अन्न प्राप्त होता रहता था। ब्रिटिश शासन के दिनों में क्या हुआ? उन्नीसवीं प्रथम चरण के अन्त होते-न-होते देश में पाँच प्रायः १० लाख से अधिक मनुष्य काल के गाल तथा दूसरे चरण के दो भीषण अकालों में पाँच लाख भीषण स्थिति के लिए यदि तत्कालीन राजनीतिक को कारण मान लिया जाए तो भी उन्नीसवीं सदी का अधिकांश भाग शान्तिपूर्वक व्यतीत हुआ। प्रथम चरण में मराठा और द्वितीय में सिख-शक्ति चुकी थी, राजपूतों के साथ सन्धियाँ भी हो गई थीं, में उसकी प्रतिद्वन्द्वी शक्ति भी दूसरी न रही थी, जिनसे सरकार को सामना करना पड़ा हो। किन्तु फिर भी तीसरे चरण के ९ अकालों में ५० लाख और चौथे अकालों में ढाई करोड़ से भी अधिक लोग, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी]

संख्या के आठवें भाग से भी अधिक थे, भूख के खुले गह्वर में समा गए, जिनका कहीं चिह्न तक न रहा। बीसवीं सदी के द्वितीय चरण में लक्षण प्रारम्भ से ही ऐसे रहे, जिनसे स्पष्ट प्रतीत होता था कि यह पिछले सब रेकर्ड तोड़ देगी। जब कभी दुर्भिक्ष पड़ते हैं तब प्रायः सदैव उसका कारण अनावृष्टि ही बताया जाता है। किन्तु यदि गहराई से कारणों की छान-बीन की जाए तो ज्ञात होगा कि अकालों का एक बहुत बड़ा कारण, देश की सर्वव्यापी दरिद्रता है, जिसके कारण वह छोटी-से-छोटी क्षति भी नहीं सह सकता। भारतीय किसान की दृष्टि सदा अपनी भूमि के उस छोटे टुकड़े पर लगी रहती है, जिसमें हरियाली न होना उसके लिए मृत्यु-सूचक है। सरकारी सहायताएँ ऐसे समय पर ऊँट के मुँह में जीरे से भी अल्प होती हैं। व्यक्ति या कुटुम्ब रूप में भारतीय किसान सर्वथा असहाय है। समष्टिरूप में उसकी सहायता करनेवाली विदेशी शक्ति के पास उसका भला कर सकने योग्य कुछ है ही नहीं। नहरें, कुएँ और तालाब बनवाने में करोड़ों रुपए व्यय करने की स्थिति असम्भव है कि प्रान्तीय सरकारें अपने को न पाएँ, किन्तु इन अकालों में जन-धन की हानि कितनी होती है, इस ओर ध्यान कब तक न दिया जाएगा? रुपयों में क्षति का अनुमान कर लेना सम्भव न होने पर भी १८७७-७८ में एक विशेषज्ञ ने प्रत्यक्ष तौर से टैक्स, चुङ्गी, व्यापार की वस्तुओं की क्रय-विक्रय-शक्ति और नष्ट पशुओं का अल्पतम मूल्य आँककर लगभग ४ अरब का नुकसान होने का अनुमान किया था। किन्तु १९४३ के बङ्ग-अकाल की क्षति का मूल्य कई खरब रुपयों से भी अधिक निकलेगा। विद्वानों के मतानुसार भारत में औसतन् प्रतिवर्ष १९ लाख ५ हजार टन चावल तथा ६ लाख ८० हजार टन गेहूँ की कमी पड़ती है। यह अन्न-राशि इतनी कीमती हो पड़ेगी, जितना कीमती एक-एक अकाल-वर्ष पड़ता है। क्यों ब्रिटेन में ही ३६५ दिनों की खाद्य-सामग्री में से केवल ६ दिनों के योग्य खाद्य-उत्पादन होता है। युद्ध-कालीन लोगों के फल-स्वरूप यह उत्पादन अधिक-से-अधिक १२० दिनों के योग्य हो सका है, पर फिर भी चर्चिल-एमरी सरकार के राज्य ब्रिटेन में कितने व्यक्ति भूख से मरे? पर उसी सरकार ने भी आम यह स्वीकार किया कि बङ्ग-अकाल में ३० लाख के स्थान पर केवल दस लाख ही भूख से मरे। जब प्रश्न उठता कि दस लाख क्यों, दस हजार या दस सौ व्यक्ति भी भूख से क्यों मरे; तब उस सरकार को कोई जवाब ढूँढ़ने से नहीं मिलता।

दूसरा प्रश्न है वस्त्र का। गांधी जी के शब्दों में द्रौपदी का वस्त्र केवल खींचा ही गया था किन्तु भारत माता का उतार लिया गया। सैकड़ों व्यक्तियों ने लगभग वस्त्रहीन अवस्था में दिन काटे, कितनों ने लज्जावश आत्महत्या कर ली। अब वस्त्र-सङ्कट भारत की चालीस करोड़ जनसंख्या पर समान रूप से मँडरा रहा है। शीघ्र-से-शीघ्र इस सङ्कट को दूर करना ही होगा। पर आश्चर्य की बात यह है कि भारत में वस्त्र-उत्पादन अब और भी घट रहा है। युद्ध-काल में वस्त्र-उत्पादन घट जाने का एक कारण कोयले का न मिलना या रद्दी कोयले का मिलना कहा गया था। दूसरा कारण युद्धकालीन स्थिति के कारण बाहर से नई मशीनें न आ सकना था। तीसरा एक और कारण भी था अर्थात् मजदूरों का बढ़ता हुआ असन्तोष और उनकी उत्तरोत्तर उग्र हड़तालें। इसके साथ-साथ सैनिक आवश्यकताएँ थीं, जिनकी पूर्ति भी उन्हीं थकी हुई पुरानी मशीनों को करनी पड़ती थी। आज इनमें से कई बाधाएँ नहीं हैं। आज नई मशीनें बाहर से आ सकती हैं, कोयला भी मिल सकता है, युद्ध भी समाप्त हो चुका है। शीघ्र-से-शीघ्र नए कारखाने खुलना या खोलना अधिक कठिन नहीं है। बाहर से कपड़ा मँगाने के स्थान पर मशीनें मँगाना अधिक लाभप्रद है। पर आज प्रान्तीय सरकारें इस दिशा की ओर जैसा चाहिए, वैसा ध्यान नहीं दे रही हैं। कारण यह है कि गांधी जी का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता की पूर्ति स्वयं करनी चाहिए। लेकिन सिद्धान्त रूप में यह विचार कैसा भी आकर्षक क्यों न हो, व्यवहार रूप में इसका आना कठिन है। कोई व्यक्ति दिन भर के कठोर मानसिक और शारीरिक श्रम के उपरान्त अपने शरीर के थके तन्तु-जाल को विश्राम देने के लिए चरखा लेकर बैठेगा, यह आशा नहीं की जा सकती। जिन लोगों ने चरखा काता है, वे अच्छी तरह जानते होंगे कि दो में से एक भी हाथ की स्थिति सुखप्रद नहीं होती। गांधी जी की बात दूसरी है, वे ठहरे साधु-सन्त, रागातीत। अतएव वे जिस परिश्रम को बहुत सरल समझते हैं, सांसारिक लोगों के लिए वही अति कठिन है। आज कल मशीनें हैं लेकिन जब मशीनें न थीं, तब अति प्राचीन काल में भी कपड़ा बुनने और बेचनेवाले दूसरे लोग थे ही। न केवल भारत में ही बल्कि फिरौन के मिस्र, बसदियों के बाबेल और यहूदियों के जेरूसलम में भी। इस दशा में मद्रास के वस्त्र-व्यवसायियों-द्वारा की गई माँगों का प्रान्तीय सरकार-द्वारा अस्वीकृत किया जाना एवं वस्त्र-उत्पादन की वृद्धि पर रोक लगा देना उचित प्रतीत नहीं होता।

इस समय बङ्गाल को ही कम-से-कम १ अरब २६ करोड़ गज वस्त्र की आवश्यकता है जिससे वहाँ के लोगों को प्रति मनुष्य १८ गज वस्त्र प्राप्त हो सके। भारतीयों की रहन-सहन का स्टैंडर्ड ऊँचा करने की जो बात सोची जा रही है, और जिसके लिए कम-से-कम २२ अरब गज कपड़े की आवश्यकता पड़ेगी, वह तब तक एकदम व्यर्थ है जब तक वस्त्र-उत्पादन ६ अरब गज से बढ़कर २२ अरब गज न हो जाए। मद्रासी व्यापारियों की माँगों में बहुत सार है। प्रश्न उठता है कि जब वस्त्र की आवश्यकता मद्रास को ही काफी है तब क्या वस्त्र-उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ाकर अन्त में उसको भी 'अन्न-अकाल'-सी स्थिति को पहुँचा दिया जाएगा? आजकल लगभग २५ लाख आदमी खड्डियों पर काम कर रहे हैं, साथ ही वस्त्र भी लगभग १ अरब ६० करोड़ गज तैयार होता है। गांधी जी का विचार है कि यदि लोगों को कपड़ा न मिलेगा तब हारकर आप ही चरखा उठाएँगे। इससे आवश्यकता-पूर्ति तो हो ही जाएगी, लोगों को रोजगार भी मिल जाएगा। लेकिन सोचने की बात है कि वर्तमान स्थिति में यदि एक करोड़ व्यक्ति भी इसी गति से काम करें, तब भी ७५ लाख खड्डियाँ बनवाने, उन्हें बाँटने, लगाने और कपड़ा तैयार होने में कितना समय लगेगा? अभी इसी वर्ष कमी ६ अरब गज की है, जिसके बिना १० गज वस्त्र भी मिलना असम्भव हो जाएगा और देश की रहन-सहन का दर्जा उठाने के लिए आवश्यकता प्रायः १६ अरब गज कपड़े की है। जापान प्राकृतिक दृष्टि से एशिया का बहुत साधन-सम्पन्न देश नहीं था। पर वह इतना वस्त्र-उत्पादन कर लेता था कि अपनी आवश्यकता-पूर्ति के उपरान्त भी उसके बनाए कपड़ों से एशिया के बाजार भरे रहते थे। भारतीयों में व्यावहारिक ज्ञान और गम्भीर विश्वास की कमी नहीं, कमी है केवल उपयुक्त पथ-प्रदर्शकों की। अमेरिका में हुई हड़ताल का भारत की अन्न-स्थिति पर ऐसा गम्भीर प्रभाव पड़ा कि उसका अनुभव श्री नेहरू और मजदूर नेता श्री चमनलाल दोनों गण्य-मान्य व्यक्तियों को हुआ पर खुद भारत में डाक हड़ताल, रेलवे हड़ताल, बैंक हड़ताल और नित्य नई हड़तालों से कितना बुरा प्रभाव पड़ता है, इस बात की ओर किसी का ध्यान न गया। एक ओर मजदूरों की सुविधाओं के लिए माँगें बढ़ती जा रही हैं कि उन्हें अच्छे हवादार मकान चाहिएँ, पर्याप्त वस्त्र-भोजन और साथ ही स्वास्थ्य-संरक्षण एवं शिक्षा की सुविधाएँ भी चाहिएँ; किन्तु काम के घण्टे कम होते जाते हैं। १ अगस्त '४६ से काम के घण्टे ६ से ८ कर दिए गए। सुविधाओं की माँग की बात तो समझ में आती है पर जब देश-वासियों की स्थिति नग्नता की सीमा तक पहुँच रही हो, तब एक घण्टा कम करने की बात समझ में नहीं आ सकती। एक घण्टा समय और बढ़ा देने से जहाँ कारखानों में कई करोड़ गज वस्त्र उत्पादन बढ़ जाता, वहाँ घट गया। मजदूरों को इस समय आराम या खेल-कूद के लिए अवकाश की नहीं, डाक्टरों, ओषधियों तथा अच्छी खुराक की आवश्यकता है। मजदूरों को यदि प्रतिवर्ष एक-दो मास की सवेतन छुट्टी की व्यवस्था कर दी जाती, उनके लिए कारखानों की ओर से डाक्टरी सहायता मुफ्त दी जाती, उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध कारखानों की ओर से निःशुल्क किया जाता तथा मजदूरी का एक घण्टा घटाने के स्थान पर, १ घण्टा बढ़ाकर सूत की कीमत मात्र लेकर उन्हें प्रतिवर्ष, अपने परिवार की आवश्यकता भर को कपड़ा भी दे दिया जाता तो अधिकांश झंझट समाप्त हो जातीं। फिर मजदूर को इस बात से कोई मतलब न रह जाता कि उसकी मजदूरी तीन रुपए रोज है या [illegible] पर मजदूर नेता ठोस काम की अपेक्षा कागजी हलचल पसन्द करते हैं।

इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि सन् '२६-३० में लगभग सवा उन्नीस अरब गज सूती कपड़ा [illegible] से आता था, सन् '३६ में केवल साढ़े छः अरब गज ही आता था। गत सात वर्षों में यह घटते-घटते अब प्रायः नहीं के बराबर रह गया है। यदि भारत चाहता है कि उसकी वस्त्र-स्थिति अन्न-स्थिति की भाँति न हो जाए और उसका दूसरे देशों पर निर्भर न कर सकें तो उसे इस ओर ध्यान देना ही होगा। तृतीय महायुद्ध के समय तक भारत में खड्डियाँ ही नहीं और जो दो-चार भले साफ-सुथरे लोग आज देखने में आते हैं वे सिर्फ लँगोट लगाए नजर आएँगे।

तीसरी मुख्य भारतीय समस्या है उसकी सबसे अधिक संख्या और देश का उत्तरोत्तर गिरता जानेवाला [illegible] तीन वर्ष तक की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते ५० प्रतिशत काल के गाल में समा जाते हैं, प्रसूति-गृहों में १,००० स्त्रियाँ आवश्यक परिचर्या के अभाव में समाप्त हो जाती हैं न जाने कितनी सदा के लिए रोग-ग्रस्त हो स्वास्थ्य से बैठती हैं। प्रतिवर्ष १० लाख व्यक्ति केवल [illegible] और ५० लाख व्यक्ति तिल्ली बढ़ जाने से बे-मौत मरते एक तो खाद्य ठीक मात्रा में न पा सकने के कारण देश की रोग से सामना करने की शक्ति कम होती जा रही जो बीमार होते हैं उनकी ठीक दवा का कोई प्रबन्ध तीसरी मुख्य बात यह है कि इस देश के बालकों की की शारीरिक स्थिति पर न सरकार ने ध्यान दिया और ने। मलेरिया, प्लेग, हैजा आदि से सन् '१८ में प्रति सहस्र ६० थी, सन् '२८ तक यह औसत ३१·२ रहा। अब इधर के सात वर्षों में अवश्य ही पिछले टूट गए होंगे। इँगलैंड में जब वार्षिक मृत्यु-संख्या तब ब्रिटिश भारत में ३१·२ थी। इधर भारत में यह हाल है कि पिछले २० वर्षों में भारतीय ३२ से ४० करोड़ हो गई किन्तु उसकी खेती की भूमि एकड़ से घटकर धीरे-धीरे साढ़े बाईस करोड़ हो अब फिर २३ करोड़ एकड़ भूमि हुई है। इसका कि नई जन-गणना होने तक प्रति एकड़ भूमि पर भार हो जाएगा। पोषण-तत्त्व की स्थिति यह है कि व्यक्तियों के अकाल-पीड़ित होने का भय प्रतिक्षण कई पीढ़ियों से आधे पेट खाते-खाते भारतीयों की भी घटती जाती है। अकाल का सम्भावित भय समय तक टल अवश्य गया है पर उसका नहीं हुआ है। शाकाहारी भारत में कम-से-कम गेहूँ और चावल की कमी प्रतिवर्ष पड़ती है पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी लगभग ५० लाख टन है। बाहर से आनेवाले अनाज करोड़ों प्राणियों का जीवन निर्भर है। किन्तु गांधी जी कथन है कि उस पर भरोसा न करके देश में शाक-तरकारी की उत्पत्ति बढ़ानी चाहिए। अनाज की अपेक्षा दूसरी चीजों का उपयोग करना चाहिए; जैसे, दूध, फल आदि। दूध है कहाँ? और फल मिलते किसे हैं? ब्रिटिश-विशेषज्ञों मतानुसार प्रत्येक भारतीय को कम-से-कम ८ औंस दूध तिदिन मिलना चाहिए, जब कि मिल रहा है केवल डेढ़ औंस, कि ६ महीने के बच्चे के पोषण के लिए भी पर्याप्त ही हो सकता।

जब दूध का यह हाल है तब मक्खन और घी की क्या ति होगी? देश भर में सन् '४२-४३ में कृत्रिम घी के १२-१४ रखाने थे। वे प्रतिवर्ष लगभग २१ लाख मन वनस्पति घी ार करते थे। इधर उनकी संख्या में काफी वृद्धि हुई है। सम्बन्ध में एक मजेदार बात यह भी है कि डाक्टर राजेन्द्र-द के गत अमृतसर-भाषण के तुरन्त पश्चात् ही देश में ठ नए वनस्पति घी के कारखाने खुलने का समाचार प्राप्त ा है। वस्त्र-व्यवसायियों की प्रार्थनाओं पर ध्यान न देने-ली प्रान्तीय सरकारों ने किस डाक्टर की सिफारिश पर उक्त के कारखाने खुलने दिए, यह खोज का विषय है। स्वयं ० राजेन्द्रप्रसाद के कथनानुसार देश में कम-से-कम ३ करोड़ लाख टन दूध की तत्काल आवश्यकता है, लेकिन इस समय ब केवल ६३ लाख टन दूध ही होता है।

डा० पेपराल की रिपोर्ट के अनुसार भारत में दूध पैदा नेवालों की संख्या गाँवों में २ करोड़ १० लाख और नगरों १ लाख ८० हजार है। ४० करोड़ जनसंख्या को दूध ाने के लिए यह संख्या निश्चय ही आवश्यकता से अधिक पर डाक्टर पेपराल के कथनानुसार यदि मवेशियों को ानिक ढङ्ग से खिलाने की बात पर ध्यान दिया जाए तो यही जा सकता है कि हिन्दुस्तान के अधिकांश पशु भूखों मर है। यह बात भूलने की नहीं कि जिन दिनों डाक्टर साहब अपनी जाँच की थी तब पशुओं की कौन कहे, मनुष्य तक ी मर रहे थे। युक्तप्रान्त और बिहार-उड़ीसा-जैसे प्रान्तों में चारे का भारी अभाव था, आज भी वह अभाव है, तब स, बम्बई, बङ्गाल और राजस्थान की चर्चा ही क्या। दूसरी डाक्टर पेपराल ने दुग्ध-उत्पादन के सम्बन्ध में यह कही कि बछड़ों का दूध पैदा होने के साथ ही छुड़ा दिया जाए; कि बछड़ों की परवरिश के लिए और चीजें भी मिल सकती किन्तु प्रश्न यह है कि वे 'दूसरी चीजें' जब मनुष्यों को ही लभ्य नहीं, तब अभागे पशुओं को कहाँ से मिल सकती हैं! न में सन् '४१ में समाप्त होनेवाले आठ वर्षों के अन्दर िक दूध पियो' आन्दोलन पर ४० करोड़ रुपए खर्च किए । गर्भवती स्त्रियों, बच्चेवाली माताओं, स्कूल जानेवाले बच्चों और उद्योग-धन्धों में लगे लोगों को अच्छे-से-अच्छा पोषण पहुँचाने के लिए सस्ते दामों में या मुफ्त दूध दिया गया। अर्थात् स्कूल के ४ में ३ बालकों को दूध मुफ्त दिया गया। साथ ही मोल लेनेवालों को प्रति पेंस १३ औंस वह दूध दिया गया, जो विशेषज्ञों की देख-रेख में तैयार हुआ था और जिसके कीटाणु-रहित होने की शत-प्रतिशत गारंटी थी। भारत सरकार के राशनबन्दी के सलाहकार श्री डब्ल्यू० एच० किर्बी के अनुसार भयङ्कर युद्धकाल में भी बेल्जियम, नार्वे, स्वीजरलैंड के ३ वर्ष तक के बालकों को प्रतिदिन १२ छटाँक और काम करनेवालों को १० छटाँक दूध मिलता रहा। कनाडा भारत से २५ गुना दूध उत्पन्न करता है, और केवल ६ प्रतिशत पशुओं से।

दूध का यह हाल है, पशुओं का उससे भी गया-बीता। सन् '३५ में गौ-संख्या लगभग साढ़े पन्द्रह करोड़ थी, लेकिन सन् '४० में सरकारी गणना के अनुसार केवल पौने चौदह करोड़ रह गई थी। सात वर्षों के ४० लाख प्रतिवर्ष भक्षण के बाद अब तो और भी २ करोड़ ४० लाख गाएँ कम हो गई होंगी। सन् '१० में भारत के ७८ हजार अँगरेजों का सबसे प्यारा भोजन गोमांस था। देश के बहुसंख्यक लोग गो-वध को महापाप समझते हैं, किन्तु पाकिस्तान को संरक्षण देनेवाली सरकार के प्यारे एजेंट प्रतिवर्ष ३ लाख गाएँ हजम करते रहे—किसी के धार्मिक संस्कार पर बिना कोई आघात पहुँचाए। अब उनके और सात करोड़ हिन्दुस्तानी संस्करणों के पेट में जाने से, ये ११ करोड़ गाएँ बच रहें, इसके लिए अन्तःकालीन सरकार को चाहिए कि एक ओर तो इनके ऊपर एक विशेषज्ञ नियुक्त कर दे और खाद्य-वस्तुओं का विशेष प्रबन्ध करके इन्हें अभयदान दे और न हो तो भारतीय मुसलमानों की 'धर्मरक्षा' के लिए आस्ट्रेलिया एवं अमेरिका से विशेष प्रबन्ध कर दे। आशा है कि इस प्रबन्ध में लीगी कायदे आजम को भी कोई आपत्ति न होगी। यदि कुरान की कोई ऐसी आयत निकल आए कि कुर्बानी की गाय हिन्दुस्तानी ही होनी चाहिए, तो लाचारी है। उस दशा में गांधी जी का 'अहिंसा सिद्धान्त' और 'हिन्दुस्तानी बन्धुत्व' की परिभाषा जैसी आज्ञा दे, वही करना सरकार का कर्त्तव्य होगा।

भारत की चौथी समस्या है घोर अशिक्षा। इस समय यह प्रश्न भारत की प्रथम राष्ट्रीय सरकार के सम्मुख भयानक रूप में उपस्थित है कि भारत की ८८ प्रतिशत जनता को कम-से-कम समय में अशिक्षा के घोर अन्धकार में से किस प्रकार उबारा जाए। उसके सम्मुख रूस, जर्मनी, इँगलैंड और अमेरिका के उदाहरण हैं कि वह अपने अशिक्षित जन-समूह को शिक्षित करने का कौन-सा मार्ग ग्रहण करे। इस सम्बन्ध में भारत में पिछले कई वर्षों से प्रान्तीय परीक्षण हो रहे हैं। सन् '३४ में भारत की विद्यार्थि-संख्या १ करोड़ ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख ७३ हजार के लगभग थी। सन् '३५ में १ करोड़ ३५ लाख ७ हजार के लगभग और सन् '३६ में १,३८,१६,२०० तक पहुँच गई। सन् '४६ में यह संख्या १½ करोड़ के आसपास पहुँच गई है। किन्तु कांग्रेसी शासन के २½ वर्षों में अशिक्षा-निवारण के लिए जो कुछ किया गया था वह एक तो यों ही पर्याप्त न था, दूसरे उसकी ६ वर्षों की अनुपस्थिति में सारा किया-धरा मिट्टी हो चुका है। स्वतन्त्र भारत की शिक्षा प्रणाली परतन्त्र भारत से भिन्न होगी, अतएव अब फिर नए सिरे से प्रयत्न करना और उसकी रूपरेखा गढ़ना आवश्यक हो गया है। शिक्षा की उचित रूपरेखा क्या होगी, इस बात पर भली भाँति विचार किए बिना कोई नवीन योजना एकदम दरिद्र भारत पर लाद देना अनुपयुक्त जान पड़ता है। शिक्षा के साधारणतः तीन उद्देश्य होते हैं, एक तो अपने को जानना, जिसका विकसित रूप देश का राजनीतिक इतिहास और प्राचीनतम से नवीनतम संस्कृति का इतिहास है। दूसरा संसार के मध्य में अपने देश के आर्थिक महत्त्व को समझना और तीसरा अन्तिम तथा मुख्य उद्देश्य अच्छी जीविका प्राप्त कर सकना है। आज की शिक्षा में एक बहुत बड़ी कमी हीनता की वह भावना है जो अपने को स्वयं अपनी ही दृष्टि में गिरा देती है। राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक ऐक्य की बात बहुत दूर है। इस दृष्टि से जर्मन शिक्षा-प्रणाली का यह अङ्ग जितना दृढ़ है, उतना ही विकसित भी। चारित्रिक गठन की दृष्टि से जर्मन राष्ट्र योरप के समस्त राष्ट्रों की प्रगति की दौड़ में सदा ही अग्रणी रहा है।

युक्तप्रान्त के शिक्षा-मन्त्री श्री माननीय सम्पूर्णानन्दजी की शिक्षा-योजना भी एक उल्लेखनीय योजना है। उनकी योजना की रूपरेखा अभी कहीं देखने में तो नहीं आई किन्तु उनका दावा है कि इस उपाय से केवल १० वर्ष में ही युक्तप्रान्त साक्षर हो जाएगा। साक्षरता ही जिस शिक्षा-योजना का मुख्य उद्देश्य हो, उसके सम्बन्ध में कुछ कह सकना कठिन है, किन्तु शिक्षा-मन्त्री ने कम-से-कम व्यय में इस योजना को चलाने और शिक्षकों की कमी दूर करने के लिए प्रत्येक मैट्रिक पास को बलपूर्वक समाज-सेवा के ढङ्ग पर एक वर्ष शिक्षण-कार्य के लिए विवश करने का जो उपाय निकाला है वह अवश्य घोर आपत्ति-जनक है। कोई भी योजना जो जनहित के उद्देश्य से काम में लाई जानेवाली हो, उसके साथ 'जबर्दस्ती' शब्द आधा आकर्षण समाप्त कर देने के लिए काफी है। प्रश्न उठता है कि जिस कांग्रेस के एक आवाहन पर लाख-लाख नवयुवक जेल जाने और मर मिटने के लिए तैयार हों, जो कांग्रेस आन्दोलन कालेज-स्कूलों का बहिष्कार करा सकने में समर्थ हो, क्या वही कुछ लाख व्यक्ति ऐसे जनहितकारक कार्य के लिए नहीं जुटा सकता? प्रत्येक योजना चलाने के पूर्व उसकी पृष्ठभूमि बनाना परम आवश्यक है। जैसे प्रत्येक घर या मकान बनाने के पूर्व उसकी नींव भरनी आवश्यक है। ठीक काम के लिए यदि पहले स्वयं कर ही पाँच लाख व्यक्ति लेकर और उन्हें एक वर्ष तक ट्रेनिंग देकर कार्य में लगा दिया जाए तो प्रत्येक जि एक स्कूल हो जाए। तब यदि कांग्रेसी सरकार दूसरों से पूर्वक काम कराने की सोचे तो कोई बात भी हो। ऐसी प्रत्येक योजना के साथ यदि बालकों के स्वास्थ्य एवं चरित्र-गठन पर भी पूरा ध्यान न दिया गया तो वह व्यर्थ और निरुपयोगी प्रमाणित होगी। कम-से-कम को भावी नागरिकों के लिए अपनी सम्पूर्ण आय का पड़ भाग कुछ वर्षों के लिए निकाल ही रखना च सब से अन्तिम, पर महत्त्वपूर्ण प्रश्न है साम्प्रदायिक ऐक जिसके बिना आज भारत की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ी है जिसके लिए श्री सिंह को यह कहना पड़ा कि परतन्त्रता युद्ध भी कहीं अच्छा है। सच तो यह है कि पूर्वी बङ्गाल बिहार में जो कुछ हुआ, उसी की आशा पर साम्राज्य अवतार चर्चिल का 'हार्ट' १६ मई की घोषणा पर भी ने हो गया और मजदूर सरकार उसी की आशा पर दृढ़ जमी रही। स्वयं भारतमन्त्री लार्ड पैथिक लारेंस ने सभा में अपने कार्य का विवरण देते हुए कहा—"यदि संयुक्त राज्य, योरपीय और एशियायी रूस, ब्रिटिश द्वीप ब्रिटिश साम्राज्य की सब गोरी जन-संख्या को मिलाकर ले तब भी वह संख्या उतनी नहीं होगी, जितनी भारत में रहने लोगों की है। न केवल इतना, बल्कि उस विशाल ख में जाति, धर्म और संस्कृति की विभिन्नताएँ भी हैं।"

स्पष्टतः यह लीगी कायदे आजम की उस प्रसिद्ध उक्ति ही भावानुवाद है जो उन्होंने भारत के बँटवारे के सम्ब कही थी। २९ जुलाई को बम्बई-बैठक में लीग कौंसि ब्रिटिश मन्त्रि-मिशन के १६ मई वाले प्रस्तावों को इस अस्वीकृत कर दिया कि लीग ने दीर्घकालिक और अल्पक दोनों योजनाएँ मञ्जूर की थीं, और चूँकि कांग्रेस ने अल्पक योजना पहले ही अस्वीकृत कर दी थी और दीर्घकालिक के प्रति भी उसका रुख अच्छा नहीं था। अतएव लीग खतरा उठाने के लिए तैयार नहीं। जिना साहब ने क "मैंने अपने भरसक पूरा प्रयत्न किया और अब अगला कदम तो ब्रिटिश सरकार को या कांग्रेस को ही अनिवार्यतः होगा।" एक साल में हजारों आरोप कांग्रेस और मन्त्रि पर लगाने के बाद जब लीग ने 'सीधी कार्रवाई दिवस' का निश्चय किया, तब सरदार पटेल ने पञ्च फैसले की उठाई। उस पर लीगी कायदे आजम ने कहा—"मैं किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकते। गत ८ वर्षों जी मुझे फुसलाने के लिए तीन बार मिलने आए। फि गत ११ मई को जब पं० नेहरू मुझे मिले तो उन्होंने पा के आधार पर समझौता स्वीकार नहीं किया।...फि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

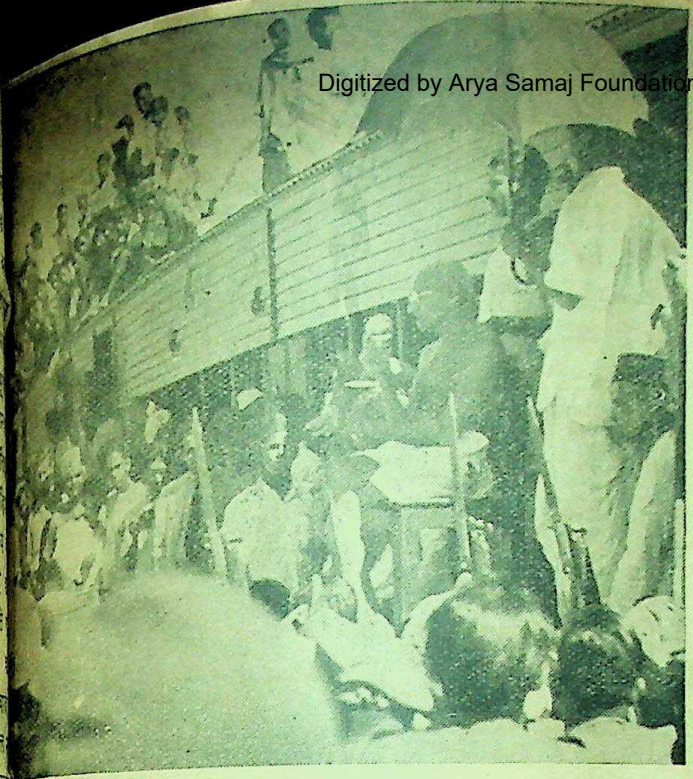

नोवाखाली में गांधी जी

"आज मेरी अहिंसा की कठिन परीक्षा का अवसर उपस्थित हुआ है। मैं अपनी अहिंसा को कार्यरूप में परिणत करने के लिए या शान्ति की स्थापना में अपनी जान खपा देने के लिए ही नोवाखाली आया हूँ। लोग मुझे महात्मा कहते हैं, पर मैं उन्हें बता देना चाहता हूँ कि मैं अपने को कभी महात्मा नहीं समझता। मैं दरिद्र-नारायण का सेवक हूँ और मेरा हृदय उनकी गरीबी और तबाही को देखकर रोता है। मैं अहिंसा का प्रयोग इस ढलती उम्र में कर रहा हूँ इसलिए अन्य लोग भी इसका प्रयोग कर सकते हैं।"

[श्रीरामपुर, २१ दिसम्बर, ४६

लक्सम स्टेशन पर—

गांधी जी लक्सम स्टेशन पर पहुँचे कि नोवाखाली के संत्रस्त असहाय मनुष्यों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया।

चित्र में गांधी जी स्टेशन के प्लेटफार्म पर ही भीड़ को समझाते दिखाए गए हैं।

पैदल-यात्रा

नोवाखाली के जिस इलाके को गुण्डों ने अपनी 'सीधी कार्यवाही' के लिए चुना वहाँ यातायात के साधनों का सर्वथा अभाव है। प्रयत्न करने पर भी वहाँ पहुँचना सरल नहीं है। रेल तो वहाँ है नहीं, पक्की सड़कें भी नहीं हैं। धान के खेतों ने मार्ग को और भी दुर्गम कर दिया है।

चित्र में महात्मा गांधी धान के खेतों के बीच से पैदल ही रामगंज गाँव की ओर जाते हुए दिखाए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूने घर में

गोपेरबाग गाँव के जो घर अत्यधिक क्षतिग्रस्त हुए हैं, उनमें से एक यह भी है। गांधी जी एक लड़की का सहारा लिए हुए घर के भीतरी भाग में प्रवेश कर रहे हैं।

लोमहर्षक दृश्य

इस घर में कुल २२ सदस्य थे, जिनमें १६ को गुण्डों ने नृशंसता के साथ कत्ल कर डाला। यह एक ही उदाहरण नहीं है। नोआखाली के अधिकांश हिन्दू-गृहों की यही दशा की गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें बदनाम करने की चाल है।" जब नेहरू जी लीग को अस्थायी सरकार में सम्मिलित करने के लिए राजी करने के उद्देश्य से मिलने गए, तब मि० जिना ने कहा—"वे तो केवल दिल्ली जाने के पूर्व मुझसे मिलने आये थे।" और जब वायसराय के अगले कदम के विषय में पूछा गया तब आपने फरमाया—"मैं कुछ नहीं जानता। मैं अन्धकार में हूँ।" इसके बाद १६ अगस्त को कलकत्ता काण्ड पर कई दिन पीछे मौन त्यागकर बोले, "उस उपद्रव में मुझे विश्वास है कि किसी लीगी ने भाग न लिया होगा।" किन्तु फिर भी १६ सितम्बर को लीग ने पुनः सन्धि-वार्त्ता चलाई और यह दिखलाने के लिए कि इस बार चलाई गई वार्त्ता में कुछ विशेषता है, बड़ी गम्भीरता का रुख धारण कर लिया। नवाब भोपाल की मध्यस्थता में कांग्रेस के साथ चलाई गई वार्त्ता भङ्ग हो गई और अन्त में वायसराय के आमन्त्रण को ही अपना सहारा बनाकर लीगी मन्त्री २६ अक्टूबर को अस्थायी सरकार में सम्मिलित हो गए। उन्होंने कहा—"कांग्रेस नहीं चाहती कि हम अस्थायी सरकार में सम्मिलित हों, किन्तु हम अवश्य सम्मिलित होंगे।"

ऐसा विरोधी रुख लेकर लीग अन्तःकालीन सरकार में सम्मिलित हुई है। उसके कर्णधार स्पष्ट कह रहे हैं कि अन्तःकालीन सरकार में हमारा प्रवेश हमारी 'सीधी कार्रवाई' का एक भाग है जिसे सरकार के भीतर रहकर पूरा किया जा सकता है। केन्द्रीय सरकार में रहकर लीगी सदस्य जिस सहयोग-भावना से काम ले रहे हैं उसका विवरण पण्डित नेहरू के मेरठ कांग्रेस के भाषण से मिलता है। इस वस्तुस्थिति में यह आशा नहीं की जा सकती कि साम्प्रदायिक वैमनस्य भारत से शीघ्र ही मिट जाएगा।

मुस्लिम लीग की माँग है 'पाकिस्तान' अर्थात् एक स्वतन्त्र राष्ट्र। यह स्वतन्त्र राज्य ब्रिटिश सरकार से दान रूप में उस समय नहीं माँगा जा रहा है, जिस रूप में यहूदी उससे माँग रहे हैं। यह स्वतन्त्र राज्य भारत के खण्ड रूप में माँगा जा रहा है; अर्थात् मुसलमान मातृभूमि के नाते नहीं, एक शासक जाति के नाते भारत में रहना चाहते हैं और अपना पृथक् साम्राज्य स्थापित करके। कारण स्पष्ट है। साम्प्रदायिकता के बाद ऊपर आता है 'वादों' का। दूसरे शब्दों में विचारों का। संस्कृति और धर्म से विचारों का पृथक्करण हो जाने पर व्यक्ति के ऊपर से देश और जाति का आन्तरिक आवरण उतर जाता रहता है। यही कारण है कि भारतीय परम्परा में व्यक्ति को ऐसा अधिकार केवल आध्यात्मिक जगत् में दिया गया है, जिससे देश और धर्म की सुरक्षा को भय हो रहे। क्योंकि व्यक्ति से ही समाज बनता है, समाज से जाति और जाति से धर्म एवं देश की वृद्धि होती है। आधुनिक दृष्टि से व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके कार्यों पर और कार्यों का रूप विचारों पर अवलम्बित है। अतएव आज भारत को अत्यन्त सतर्कता से इस दिशा की ओर पैर बढ़ाना चाहिए। द्वितीय महायुद्ध की नींव यदि सच पूछा जाए तो आस्ट्रिया एवं जर्मनी के एकीकरण से उत्पन्न 'भय' से ही पड़ी थी। डा० डालफस की निर्मम हत्या किसी जर्मन ने नहीं की थी, बल्कि उन लोगों ने की थी जो जन्म से आस्ट्रियन ही थे। साथ ही यह बात भी भूलने की नहीं कि हिटलर का समर्थन प्राप्त सील इंकवार्ट भी आस्ट्रियन ही था। वहाँ जो कुछ हुआ केवल नाजीवाद की आड़ में हुआ। दूसरी ओर चीन में जो कुछ हो रहा है वह कम्यूनिस्टों और प्रजातन्त्रवादियों के केवल विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रभाव-क्षेत्र में होने के कारण। एक को रूस का समर्थन प्राप्त है, दूसरे को अमेरिका का। चीन के पुनर्निर्माण के महत्त्वपूर्ण कार्य को भूलकर चीनी आपस में ही लड़कर एक दूसरे की महत्त्वाकांक्षा पर अपनी बलि चढ़ा रहे हैं। अन्ततः दो-एक ऊपरी बातों, कार्य-प्रणाली, को छोड़ शेष उद्देश्य दोनों ही दलों के एक ही हैं। यदि आज चीन केवल कनफ्यूसियस का ही चीन होता तो क्या ऐसा होता?

लगभग ऐसा ही हाल भारत का है। यह बात निर्विवाद है कि जैसे किसी अँगरेज की रूसी संस्कृति अपनी नहीं हो सकती, रूसी की चीनी और चीनी की अमेरिकन संस्कृति अपनी नहीं हो सकती, वैसे ही किसी भी भारतीय की अरबी संस्कृति अपनी नहीं हो सकती। अरब में उत्पन्न व्यक्ति उसका अपना नहीं हो सकता। कारण स्पष्ट है, मरुभूमि में मनुष्य का जो आचार-विचार उचित कहा जा सकता, किसी दुआबे में वही उचित नहीं समझा जा सकता।

इस सम्बन्ध में श्री कन्हैयालाल मुंशी ने सच ही कहा था—"दूसरे लोगों के साथ हमारा समझौता इसी एक शर्त पर हो सकता है कि जिन कारणों से हमारी मर्यादा चली आ रही है वे बराबर बने रहें। मैं अपने धर्म, अपने वंश और हिन्दू संस्कृति के लिए किसी प्रकार का तर्क नहीं करना चाहता। मैं अपने देश को स्वतन्त्र और दृढ़ देखना चाहता हूँ। मैं अपनी संस्कृति की उन्नति और उसका सन्देश संसार भर में फैलाना चाहता हूँ। राजनीतिक अधिकार और शक्ति केवल साधन मात्र है, जिनमें मैं वही जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ जो मेरे पूर्वजों ने इस देश के लिए बताया है।"

यह एक अत्यन्त विचित्र बात है कि एक ओर टर्की के प्रेसीडेंट, तुर्की राष्ट्रीय असेम्बली में तुर्की की स्वतन्त्रता तथा प्रादेशिक अखण्डता को पहले स्वीकार कराए जाने पर जोर दें, मिस्र अपने ५ हजार वर्ष पूर्व के गौरव को पुनः लौटा लाने के लिए कटिबद्ध हो; वे देशधर्म को ही अपना 'धर्म' घोषित करें, और दूसरी ओर १० करोड़ मुसलमानों के कायदे आजम हिन्दुस्तान को दो भागों में बाँटकर 'एक महान् मुस्लिम राष्ट्र' के अधिपति बनने का स्वप्न देखें, उनके अनुयायी अपने हाथों देश की मर्यादा पर पानी डालें, उनके वीर सरदार अ

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोड़ भारतीयों को मुसलमान हो जाने का उपदेश दें और उनके मन्त्री इसलिए असेम्बली में 'काम रोको' प्रस्ताव उपस्थित करें कि राष्ट्रीय झण्डों को फाड़ डालने, नेताओं की मोटरों में जलती सिगरेटें फेंकने तथा खूब हुल्लड़ मचाने पर भी गोलियाँ न चलाकर अश्रुगैस छोड़ी गई! उत्तर देने में श्री पटेल चूक गए। उन्हें कहना चाहिए था—"फूलों की टोकरी सीधता में मिली ही नहीं। वायसराय-भवन में अक्षत के थाल भी सामने नहीं रखवाए गए थे।"

इसमें कोई सन्देह नहीं कि देशभक्ति की परिभाषा करना बहुत कठिन है। पर वर्त्तमान स्थिति अब और अधिक तक नहीं बनी रह सकती, यह तय है। आवश्यकता आवि की जननी है। ब्रिटिश देनों के उत्तर में नेपथ्य में एक कण्ठ की मन्द-ध्वनि सुनाई पड़ रही है। करोड़ों कान सुनने और लाखों हृदय उसे समझने के लिए व्यग्र हो उठे उनकी आँखें रङ्गमञ्च पर हो रहे अभिनय पर लगी सही दिल-दिमागवाला कोई भी व्यक्ति एक हाथ में मोर और दूसरे में लोहे का कङ्कन पहने भारतमाता की मूर्ति भी देखना पसन्द न करेगा, वास्तविक बहुत दूर की बात

चरित्र और रिवाज

श्री दौलतराव परशुराम

व्यवस्था वहाँ काफी अच्छी थी, जैसी कि मैंने सहायताकार्य में पाने की आशा नहीं की थी। क्लब के लम्बे-चौड़े हॉल में धैर्यपूर्वक ठहरी हुई श्रेणियों में बैठे थे वे लोग, जो दङ्गे की चपेट खाकर बेघर और दरिद्र हो गए थे। प्रत्येक की निजी आवश्यकताओं को सुना जाता था और, जहाँ तक मुमकिन था, वे पूरी की जा रही थीं। वस्त्र, खाद्य, दूसरी साधारण वस्तुएँ उसी समय मौजूद की जा रही थीं। स्वयंसेवक एक-एक व्यक्ति के पास जाकर, उसकी जरूरतें जानकर, उन्हें पूरी करने की चेष्टा कर रहे थे।

चहल-पहल थी अवश्य, पर शोर नहीं था; किसी प्रकार का बखेड़ा नहीं था। मुख्य स्वयंसेवक ने यह जो व्यवस्था बना रक्खी थी, उससे मैं बहुत खुश हुआ। चूँकि मुझे यहाँ की स्थिति की सारी जानकारी प्राप्त करनी थी, और अपने पत्र के लिए कुछ लिखना था, मैंने यह इच्छा प्रकट की कि मुझे 'व्यवस्था-संस्थापक' से मिलना है। सही बातें बताने के लिए उस-जैसा कोई न होगा, मैंने सोचा।

केवल, यहाँ का संस्थापक 'पुरुष' नहीं था। मुझे प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य हुआ जब सुमित्रादेवी, विख्यात फिल्म स्टार, से साक्षात्कार हुआ। मैंने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और कहा—"आप ही इस कार्य को सँभाल रही हैं?" मैंने बैठे हुए लोगों की सफों की तरफ सङ्केत किया।

"हाँ, एक तरह से कहा जाए तो", उसने कहा—"और आप पत्रकार हैं?" इस पिछले वाक्य में प्रश्न इतना नहीं था जितना कि अस्तुस्थिति का दुहराना। "पर, ठहरिए—हमारा परिचय कभी पहले नहीं हुआ? मुझे आपका चेहरा पहचाना हुआ लगता है।"

मुझे भी याद था। मुझे उसे देखते ही याद हो आया था। मुझे स्मृति को ताजा करने के लिए [illegible] नहीं करनी पड़ी। प्रत्येक घटना मेरे मानसपट पर अङ्कित थी।

वे दिन थे साधारण, सस्ते और निर्मूल प्रहसनों के दूसरी श्रेणी की (अथवा उससे भी बदतर) सामाजिक फिल्मों के। फिल्म इंडस्ट्री का आज जो पद है उस उसकी छाया तक न थी। फिल्मों को बनाने का तरीका कुल रद्दी था, और अधिकतर फिल्मों में जनता को गढ़ी हुई मतलब कहानियाँ ही दी जाती थीं। मूर्खतापूर्ण और बुनियाद हास्य चित्रपट में भर देना बम्बई के चित्रपट-निर्माता की विशेष कला थी।

और ऐसे पागलपन के-से वातावरण से खूब मिलता शुभकुमार, कपूरथला रियासत के सब से धनाढ्य और दानी कुटुम्ब के वारिस, का सुमित्रा, एक दिखावटी ऐक्ट्रेस, के लिए इश्क। इस विषय में फिल्म-सम्बन्धी पत्रिकाओं में काफी चर्चा होती थी, और जिसे भी चित्रपट-जगत् में चस्पी थी, वह यह बात जाने बिना रह नहीं सकता था।

शुभकुमार उस व्यापार में शिक्षा पा रहा था जिसने कुटुम्ब के कोष भर दिए थे। वह विदेश में लम्बा बिताकर आया था और बुद्धिमान तथा सुसंस्कृत था। "बिगड़ा हुआ" कहते हैं वह ऐसा नहीं था।

वहाँ सुमित्रा बन्धनहीन थी। उसकी उम्र—खैर, ऊपरी रङ्ग-ढङ्ग से कोई उसकी उम्र बता न सकता था। असली जीवन कैसा था, यह ज्ञात नहीं था। वह नहीं थी, तथापि उसका मूल्य काफी था, क्योंकि वह वह अपनी ओर खींच सकती थी। इसकी वजह उसकी सूरती नहीं थी, क्योंकि वह खूबसूरत नहीं थी। चमक कहते हैं उसी में उसका आकर्षण था।

प्रारम्भ में, जब वह नई ही चित्रपट-जगत् में आई थी, सारामारी की फिल्मों में पार्ट अदा किए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन यौवन के रङ्ग में एक खसीस एक्स्ट्रा से, जिसके दिखावे से उसे भ्रम हुआ होगा, मेल कर लिया था। ब्याह सफल नहीं रहा था, और उसका अन्त बुरा ही हुआ था, जब किसी दुर्घटना में वह एक्स्ट्रा मर गया था।

उसके बाद ऐसा कोई भूल-भुलावा नहीं हुआ था और वह धीरे-धीरे प्रसिद्धि की सीढ़ी पर चढ़ती गई थी। जब शुभकुमार ने अपना हृदय (और अपना बुद्धिज्ञान ?) उसके लिए खोया, वह लोकप्रिय हो चुकी थी—यद्यपि वह अपनी चमक के बल पर ही ऊपर चढ़ी थी, किसी दूसरी बात से नहीं। उसके वस्त्र और उसका पहनाव रिवाज से परे के थे (उन दिनों में उन्हें 'अत्याधुनिक' कहा करते थे); और वह बन्धनहीन और तितली की तरह थी। पर यह सब उसने ढंक लिया शुभकुमार के लिए। क्योंकि वह नटी थी, अदाकार थी, वह किसी कष्ट बिना ऐसा ढङ्ग धारण कर लेती थी कि 'सही' और सुशिक्षित दिखाई दे।

वह शुभकुमार के साथ विवाह करना चाहती थी, यद्यपि प्रथानुसार वह उसके योग्य न थी। रिवाज को न देखा जाए तो भी, साधारण दृष्टिकोण से भी, वह और शुभ अलग-अलग थे। किसी को यह कल्पना भी न हो सकती थी कि वे ब्याह करके सुखी होंगे। हम सोचा करते थे कि आखिर इस बात का अन्त क्या होगा ?

हमने अवश्य किसी प्रकार के परिवर्तन की आशा की जब शुभकुमार के कुटुम्ब की चुनी हुई लड़की, जिससे कुटुम्बी उसका ब्याह कराना चाहते थे, और जिसे वह बचपन से जानता था, वहाँ आकर उपस्थित हुई। उसका नाम था निर्मला। शुभकुमार और उसकी जोड़ी बहुत भली लगती थी। पर उसके आने से शुभकुमार को किसी प्रकार की अड़चन न हुई। उसका ध्यान सुमित्रा पर ही लगा रहा, या शायद, और भी बढ़ गया।

उस समय ऐसा हुआ था कि सुमित्रा जिस कम्पनी में काम करती थी, उस कम्पनी ने सहसा पौराणिक विषय उठा लिया था—"ययाति"। और जब कभी फिल्म बनाने के लिए 'प्रोडक्शन यूनिट' शहर से बाहर जाता था, तो बहुधा शुभकुमार भी साथ जाता था, सुमित्रा के समीप रहने के लिए।

निर्मला के लिए भविष्य उज्ज्वल नहीं दीखता था। पर वह भी यह शान्तिपूर्वक झेलनेवाली नहीं थी। उसने इस बात का निर्णय अपने हाथ में उठा लिया और काम में जुट गई।

मेरी उससे काफी जानकारी थी, क्योंकि वह स्टूडियो में अक्सर आया करती थी जहाँ मैं विज्ञापन-भाग में था। वह जानती थी कि मेरी सहानुभूति किसके साथ है, और अपनी उलझनें मुझे संक्षेप में बता दिया करती थी।

पर बीच में तीन-चार सप्ताह के लिए वह इस कार्य की गहराइयों में उतर गई थी (कहाँ ! मैं नहीं जानता था) तब उसने मुझसे एक शब्द भी न कहा। मैं प्रतीक्षा करता रहा और आश्चर्य करता रहा।

फिर अचानक एक दिन वह मेरे पास आई, अधीर-सी और बहुत ही उत्सुक। "अब !" वह विजयी वीर की तरह बोली—"अब ! मैं उसे विश्वास दिला सकी हूँ, जैसे हम सबके विश्वास है कि सुमित्रा केवल ढोंग है, ऊपरी तौर पर भली किन्तु भीतर-ही-भीतर तुच्छ। पर अब वह जानेगा। वह उसकी नस्ल जानेगा, उसका सच्चा मूल्य जानेगा।"

फिर धीरे-धीरे उसने मुझे सब कुछ बताया। पिछले तीन-चार सप्ताह वह सुमित्रा की बीती हुई कहानी की जाँच-पड़ताल करने में व्यस्त रही थी। किसी प्रकार उसने उसके कुटुम्ब का पता लगा लिया था। केवल कुटुम्ब उल्लेख करने के लायक भी न था। सुमित्रा एक माझी की कन्या थी। उसके पिता के सिवा सब मर चुके थे, और वह भी, निर्मला के मतानुसार तुच्छ आदमी था। बम्बई से कई मील दूर वह माझियों के एक गाँव में रहता था।

निर्मला ने यह माना कि सुमित्रा प्रतिमास अपने पिता को कुछ रुपया भेज दिया करती थी। उस माझी को जो एक नीचतम जाति का सदस्य था। मैंने देखा, जन्म और जाति के विषय में उसके विचार दृढ़ थे; और मुझे उससे तर्क करने का साहस न हुआ। कुछ समय के बाद उसने मुझे वह तरकीब सुनाई जो उसने सोच रक्खी थी। उस समय जो चित्रपट बनाया जा रहा था "ययाति", उसका वह दृश्य अब तक नहीं लिया गया था जिसमें राजा ययाति माझी के कुटीर में निवास करती हुई राजकन्या से परिचित होता है। यह दृश्य एक पक्ष के बाद लिया जानेवाला था। निर्मला ने निश्चय किया था कि चित्रपट के दिग्दर्शक पर जोर डालकर वह उसे इसके लिए राजी कर लेगी कि यह दृश्य उसी गाँव में लिया जाए जहाँ सुमित्रा का पिता रहता था। वह दिग्दर्शक से कह देगी कि सुमित्रा को ज्ञात होने पाए कि वे कहाँ जा रहे हैं; किसी दूसरे रास्ते से वह जाया जाए। उस ओर वह सुमित्रा के पिता को समाचार देगी कि उसकी कन्या आ रही है, और यह भी उसके मन में विचार डाल देगी कि यदि वह अपनी कन्या के आते ही उससे मिलेगा तो सुमित्रा बहुत प्रसन्न होगी।

निर्मला ने वैसा ही किया, जैसा उसने निश्चय कर रक्खा था, यद्यपि मैंने उसे माँगी हुई सहायता न दी। पहली बात तो यह कि मुझे यह विश्वास ही न था कि वह यह सब कुछ करेगी। दूसरे, ऐसे नीच तरीकों में मैं शामिल होना नहीं चाहता था।

ऐसे तरीकों को वह क्या समझती थी, सो मैं नहीं जानता। कुछ भी हो, आखिर वह दिन भी आ गया जिस दिन दृश्य लेने के लिए हमें माझियों के गाँव को जाना था। किसी प्रकार मैं भी उनके साथ चला गया। मुझे भली भाँति [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम कहाँ जा रहे हैं, सो मैंने यह देखने की फ़िक्र ही न की कि किस रास्ते से हम वहाँ जा रहे थे।

मैं साउंड ट्रक (गाड़ी जिसमें आवाज पकड़ने का यन्त्र रहता है) में था। चित्रपट बनाने के विविध यन्त्र तथा सामान लिए तीन-चार गाड़ियाँ और भी थीं। सुमित्रा दिग्दर्शक, शुभकुमार और निर्मला के साथ एक मोटरकार में थी, जो हम सबके आगे थी। ढोंग ऐसा ही किया जा रहा था, जैसे दिग्दर्शक हमें राह बता रहा हो।

जैसे ही हम उस गाँव में पहुँचे, मैं शीघ्र ही सुमित्रा के समीप चला गया जिससे घटना को समीप से देख सकूँ। मैं यही आशा किए हुए था कि किसी क्षण भी माझी हमारे सामने आ प्रकट होगा। मुझे ज्ञात नहीं, सुमित्रा के विचार और भावनाएँ उस समय क्या थीं। उसने गाँव तो पहचान ही लिया होगा। पर दिखाई ऐसा ही दिया जैसे वह इस गाँव में बिलकुल नई थी। वह यह क्यों प्रकट करे कि इस गाँव की एक-एक कुटी से वह परिचित थी। यदि सब कुछ ठीक रहा तो किसी को यह न ज्ञात होगा कि उसका भी इस छोटी-सी दुनिया के साथ सम्बन्ध है।

मैं माझी के लिए निहार-निहारकर थक गया, पर वह न दिखाई दिया। मैं आश्चर्य करने लगा। पर मैंने निर्मला की आन्तरिक गहराइयों तक कहाँ उतरकर देखा था? यदि सुमित्रा नटी थी, तो निर्मला भी अदाकार थी, जिसे नाटकीयता की पूरी जानकारी थी। और जो दृश्य उसने उपस्थित किया उसके लिए उसकी प्रशंसा करनी पड़ी थी। वह ऐसा कुछ कदापि नहीं करवानेवाली थी जिससे जरा भी पता लग जाए कि इसके पीछे किसी का हाथ है। सब कुछ कुदरती रीति से ही होगा।

स्वयं मुझे ज्ञात न था कि यह घटना कैसे घटेगी। हम नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ते गए, गाँव को देखते हुए, और आखिर हम समुद्र-तट पर पहुँचे, जहाँ कुछ माझी जाल लिए काम कर रहे थे। समुद्र-तट पर ही दृश्य का प्रथम भाग लिया जानेवाला था।

और उसी समय अचानक, जब मुझे जरा भी आशा न थी, एक उच्च शब्द हमारे कान में आ पड़ा। "सुमित्रा" यही एक शब्द था, पर खुद-ब-खुद सभी का ध्यान उधर आकर्षित हो गया, जहाँ से शब्द आया था।

तब मैंने देखा कि समुद्र-तट पर के एक माझी ने पुकारा था। ऐसा ही दीखता था (अथवा यह कहा जाए कि निर्मला ने प्रबन्ध किया था कि ऐसा दीखे) कि समीप की आवाजें सुनकर माझी ने ऊपर दृष्टि उठाई थी और सहसा सुमित्रा को पहचानकर आश्चर्य और हर्ष के आवेग में उसने सुमित्रा का नाम पुकारा था।

सुमित्रा जिन लोगों से बात कर रही थी, उनसे हटाकर उसने माझी को देखा। एक क्षण तक वह खड़ी बूढ़े की ओर देखती रही, जो अच्छे वस्त्र पहने हुए भी अजनबी सा लगता था।

वह कह सकती थी—"तुम कौन हो? मैंने इससे पहले तुम्हें कभी नहीं देखा!" उस समय ऐसे व्यवहार के लिए मैं उसे दोष न दे सकता, और ऐसे उत्तर को साधारण प्राकृतिक उत्तर समझता।

फिर वह माझी की ओर बढ़ी। कुछ कदम वह चली और बाकी का अन्तर उसने दौड़ते हुए पूरा किया। "बाबा" उसके मुँह से निकल पड़ा। उसकी आवाज में हर्ष था। "बाबा!" और बाँहें खोलकर वह पिता से गले लगकर मिली।

क्यों न यह सब वह स्वाभाविक ढङ्ग से करे, मैंने सोचा जब इसके मूल्य में उसे सब कुछ देना पड़ रहा था!

उसके कपोलों पर मैंने आँसू देखे, जब वह हम लोगों की ओर मुड़ी। "शुभ!" उसने कहा, इतनी उच्च आवाज में कि सब लोग सुन सकें। "शुभ, ये मेरे पिता हैं। आकर इनसे मिलो।"

सभी बातें उसके मन के चित्रपट पर चमक गई होंगी। उसने कहा कि उसे मेरा चेहरा परिचित लगता था। "क्या आप पत्रकार बन गए हैं?" उसने कहा।

"हाँ," मैंने कहा—"और अब इस प्रबन्ध के विषय में सब कुछ बता दें तो बड़ी कृपा हो, मिसेज शुभकुमार। रिपोर्ट पर्चे के लिए मुझे कालम लिखना है।"

"पर मैं कैसे बताऊँ कि मैं क्या-क्या कर रही हूँ," वह बोली—"आप ही सोचिए अपने ही किए की प्रशंसा क्या मेरे लिए व्यर्थ न होगा?" उसने मेरी ओर देखा; उसके होंठों पर विचित्र मुस्कराहट थी।

पर मैं कुछ कहूँ, इससे पहले उसने एक स्वयंसेवक को बुला लिया था। "शुभ से जाकर कहो कि एक पत्रकार उनके लिए ठहरे हुए हैं," सुमित्रा ने कहा—"उनसे कहो कि सब छोड़-छाड़कर सीधे यहाँ आएँ।"

इसके बाद वह मेरी तरफ़ मुड़ी। "इतने दिनों तक आप दूर क्यों रहे आप?" उसने प्रश्न किया—"अपने परिवार को इस प्रकार भुलाना नहीं चाहिए—समझे आप?" उलाहने की डाँट थी उसकी आवाज में।

जिस आत्मीयता से उसने यह कहा उससे मुझे एक और पूछने का साहस हुआ। "आपके पिता कैसे हैं?" मैंने पूछा।

उसके चेहरे का भाव बिलकुल वैसा ही रहा, जैसा "वे अभी तक गाँव में हैं," उसने कहा—"पर अब वे मछली नहीं करते। अब छुट्टी ले ली है।"

उसके मुखमण्डल पर लज्जा या ग्लानि का कोई चिह्न नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक जीवन-सम्बन्धी कुछ संस्मरण

डाक्टर सत्यप्रकाश, डी० एस-सी०

[४]

सन् १९२०-२१ के आन्दोलन के समय मैं मैट्रिकुलेशन परीक्षा और स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय की ओर से होती थी और स्कूल लीविंग परीक्षा शिक्षा-विभाग की ओर से। दोनों परीक्षाओं का पाठ्यक्रम एक-सा ही था, और दोनों परीक्षाएँ लगभग एक पक्ष के अन्तर से होती थीं। अतः हम लोगों के लिए यह सम्भव था कि दोनों ही परीक्षाएँ दे सकें। इन दोनों परीक्षाओं को उत्तीर्ण करते-करते जब सन् १९२१ की जुलाई में मैं म्योर कालेज में प्रविष्ट हुआ, असहयोग आन्दोलन की "कमर टूट" चुकी थी। सन् १९२१ से १९२७ तक राष्ट्रीय आन्दोलन सम्बन्धी कोई जागरूक घटना नहीं हुई। शुद्धि और तबलीग सनसनी के विषय रहे। कुल कितनी शुद्धियाँ हुईं यह कहना कठिन है। फिर भी मुसलमानों तथा अर्ध-मुसलमानों को काफी संख्या में हिन्दू बनाया गया। सन् १९२७ से १९३८ तक लगभग १० वर्षों में दयानन्द मिशन होशियारपुर ने ११ हजार मुसलमानों और ७ हजार ईसाइयों को हिन्दूधर्म में वापस लिया और पञ्जाब में स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार मण्डल ने इस बीच में ६० हजार के लगभग मुसलमानों को शुद्ध किया। आल इंडिया शुद्धि-सभा आगरा और देहली ने सवा दो लाख के लगभग नौ-मुसलिमों को हिन्दुत्व में वापस लिया। अजमेर की हिन्दू-सभा ने ४० हजार के लगभग, और भरतपुर, अलवर, बियावर आदि स्थानों में १० हजार के लगभग व्यक्ति शुद्ध हुए। आगरा की हिन्दूसभा, आर्यकुमार सभा आदि विभिन्न संस्थाओं ने १ लाख १२ हजार मुसलिम और ८६ हजार ईसाइयों की शुद्धि की। कोल्हापुर में हिन्दूसभा और आर्यसमाज के सहयोग से १ हजार मुसलमान और सवा हजार ईसाई शुद्ध हुए। इसी प्रकार श्री मसूरकर महाराज के आश्रमों ने गोआ में १० हजार ईसाइयों की, सतारा में एक हजार ईसाइयों और १४० मुसलमानों की और अन्य स्थलों पर ६ हजार ईसाई और मुसलमानों की शुद्धियाँ कीं। इतने ईसाई और मुसलमान जिनकी समस्त संख्या ६ लाख ६० हजार के लगभग ठहरती है इस वर्ष के भीतर हिन्दूसमाज में प्रविष्ट हो गए। यह इस देश के इतिहास की एक चिरस्मरणीय घटना है। हिन्दू-समाज का जो द्वार कई सौ वर्षों से इतर-धर्मियों के लिए बन्द कर दिया गया था, फिर से एक बार खुल गया। यह एक अनहोनी सी बात थी। मुसलमानों और ईसाइयों के लिए तो यह एक नई घटना थी क्योंकि जिस समय से वे भारत में आए, उन्होंने हिन्दू-समाज का द्वार इस प्रकार कभी खुलते न देखा था। हिन्दू अपने समाज से बाहर तो आ सकता था, पर फिर समाज में प्रविष्ट नहीं हो सकता था। यह प्रश्न व्यर्थ है कि आठ लाख से अधिक शुद्ध हुए ये व्यक्ति हिन्दू-समाज में कितने दिन स्थिर रहे। बहुत सम्भव है कि इनमें से बहुत-से फिर मुसलमान भी हो गए हों, क्योंकि शुद्धि-संस्कार कर लेना तो आसान है, पर अभी हमारे हिन्दू-समाज की पाचन-क्षमता बहुत ही कम है। यह ठीक ही है कि जिस समाज ने लगभग दो सहस्र वर्ष से पाचन का काम छोड़ दिया हो, वह इतना शीघ्र कैसे एकदम पचाना आरम्भ कर सकता है। फिर भी हिन्दुत्व के इतिहास में इतनी अधिक शुद्धियों का होना एक उल्लेखनीय बात है। ये शुद्धियाँ न केवल आर्यसमाज की ओर से हुईं, प्रत्युत सभी हिन्दुओं ने इनमें सहयोग दिया। सभी हिन्दुओं ने शुद्धि-आन्दोलन को आशीर्वाद दिया। यदि आज तक शुद्धि को आशीर्वाद प्राप्त नहीं हुआ है, तो महात्मा गांधी से। महात्मा जी के शब्द हैं—"In my opinion, there is no sanction in Hinduism, Islam or christianity for the Shuddhi Tabligh or Proselytization respectively, as it is going on to-day. (यंग इंडिया, मार्च ३, १९२७)। मुझे इससे मतलब नहीं कि कुरान या बाइबिल की आयतों में तब्लीग या मत-परिवर्त्तन का कौन-सा प्रकार दिया हुआ है। मैं तो इनकी आयतों का नकद और व्यावहारिक मूल्य मानता हूँ। प्रश्न यह है कि हमारे देश में इतने ईसाई और मुसलमान आए कहाँ से गए? ये सब के सब विदेशी तो हैं नहीं, हमारे देश के ही हिन्दू और बौद्ध ईसाई और मुसलमान हुए। महात्मा जी की बात मुसलमानों और ईसाइयों ने न मानी और न वे मानेंगे, वे हिन्दुओं को मुसलमान-ईसाई बनाते ही जा रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में क्या हिन्दू-समाज का कोई कर्त्तव्य नहीं रह जाता?

गांधी जी ने अन्य स्थल पर कहा—"Icannot understand a man changing the religion of his fore-fathers at the instance of another" (मार्च १०, १९२७) पर गांधी जी चाहे समझें, या न समझें, यह स्पष्ट है कि सभी धर्मों का प्रसार इसी प्रकार हुआ है, और आगे भी होगा। पूर्वजों के धर्मों को

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए। लोगों ने पूर्वजों के धर्मों को छोड़ा और वे ईसाई और मुसलमान हुए, और आश्चर्य ही क्या है कि ये "at the instance at another' फिर हिन्दू हो जाएँ। महात्मा जी के उच्च आदर्श में धर्म-परिवर्त्तन की कोई आवश्यकता नहीं है। क्यों? महात्मा जी कहते हैं कि "My Hindu instinct tells me that all religious are more or less true. All proceed from the same God, but all are imperfect because they have come down to us through imperfect human instrumentality. The real Shuddhi movement should consist in each one trying to arrive at perfection in his or her own faith." (यंग इंडिया, २६ मई, १९२४) अर्थात् सभी धर्म एक समान ही सच्चे हैं, एक-से ही पूर्ण और अपूर्ण हैं, और सभी एक समान ईश्वरीय और मानवीय दोनों हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म में रहता हुआ ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है। अथवा गीता के शब्दों में "स्वधर्मे निधनं श्रेयः" (यद्यपि धर्म शब्द का अभिप्राय यहाँ भिन्न है।) पर गांधी जी की इस धारणा में न तो महात्मा बुद्ध को विश्वास था, न हजरत मुहम्मद साहब को और न नर-श्रेष्ठ ईसा को; न शङ्कर की ही इसमें निष्ठा थी, अन्यथा वे बौद्धों के पाश से देश को मुक्त करने का प्रयत्न ही क्यों करते?

गांधी जी का मलकाना राजपूतों के सम्बन्ध में कहना है—

"If the Malkanas wanted to return to the Hindu fold, they had a perfect right to do so whenever they liked. But no propaganda can be allowed which reviles other religions. For that would be negation of toleration," (यंग इंडिया, मई २९, १९२४)। अर्थात् गांधीजी का विचार है कि यदि मलकाने फिर हिन्दू-समाज में आना चाहते हैं, तो उन्हें इसका पूर्ण अधिकार है; पर उन्हें हिन्दुत्व में लाने के लिए किसी ऐसे प्रचार या प्रोपेगेंडा की आवश्यकता नहीं है, जिसमें दूसरे धर्म को बुरा कहा जाए। इस विचार की अर्थापत्ति इस प्रकार होगी। या तो मलकानों में हम प्रचार करना ही बन्द कर दें अथवा उनसे यह कहें कि "देखो, मुसलमानी धर्म भी सच्चा है और हिन्दू धर्म भी सच्चा है। हम मुसलमान होते हुए भी पूर्णता प्राप्त कर सकते हो। पवित्रता प्राप्त करने के लिए तुम्हें हिन्दू बनने की आवश्यकता नहीं। पर फिर भी यदि तुम हिन्दू बनना चाहते हो, तो ऐसा करने का तुम्हें पूर्ण स्वातन्त्र्य है। हम तुमसे आग्रह तो नहीं करते, फिर भी यदि तुम हिन्दू बनना चाहो, तो हम तुम्हें अपने समाज में स्वीकार कर लेंगे।" यह स्पष्ट है कि इस प्रकार तो सभी कोई मलकाना हिन्दुत्व स्वीकार न करेगा। इस प्रकार की उदारता से न तो ईसा मसीह किसी को ईसाई बना सकते थे और न हजरत मुहम्मद साहब किसी को मुसलमान मानता हूँ कि उदारता और सहिष्णुता का जीवन में [illegible] है। पर खण्डन करना, विरोध करना अथवा मतभेद करना न तो अनुदारता है और न असहिष्णुता। [illegible] की दृष्टि से शासक के प्रति बिना विद्वेष फैलाए क्रान्ति नहीं। जमींदारी प्रथा का विरोध करते-करते जमींदारों [illegible] भी थोड़ा-सा विद्वेष जाग्रत् हो ही जाता है। मजदूर अधिकारों के प्रति जागर्ति तब तक नहीं होती जब तक पूँजी को कुछ खरा-खोटा न सुनाया जाए। प्रत्येक प्रचार एक-सा संयम भी नहीं होता। महात्माजी की मधुर और संयमपूर्ण वक्तृताओं की तुलना में श्री वल्लभभाई जवाहरलालजी की वक्तृताएँ अधिक कटु और [illegible] असंयत होती हैं, और छोटे-मोटे लीडरों का तो कहना ही [illegible] जो तारतम्य इन सब में राजनीतिक क्षेत्र में पाया [illegible] वही धार्मिक प्रचारकों में भी है।

गांधीजी यह तो समझते ही रहे हैं कि शुद्धि और [illegible] का रोकना उनकी सामर्थ्य में नहीं है। वे यह भी [illegible] कि यदि एक ओर से तबलीग है, तो दूसरी ओर से [illegible] होगी ही। दोनों के प्रचार पर नियन्त्रण की आवश्यकता इससे तो हमें भी विरोध नहीं। महात्माजी के शब्दों में "Shuddhi or Tabligh as such cannot be dist[illegible] but either must be conducted honestly a[illegible] men of proved character. It should avoid attacks on other religions. There should be secret propoganda and no offer of m[illegible] rewards." (यंग इंडिया, जून ५, १९२४)। इस [illegible] में महात्माजी ने हसन निजामी की "अलार्म बेल" का शब्दों में खण्डन भी किया—As a Hindu, I feel [illegible] that methods of such doubtful morality [illegible] have been seriously advocated by a gentle[illegible] who is a welknown Urdu author and has a [illegible] circle of readers. My mussalman friends [illegible] that no respectable mussalman approves of methods advocated. The point, however, is what the respectable mussalmans think. [illegible] point is whether a considerable number of [illegible] man masses accept and follow them." (यंग इं[illegible] मई २९, १९२४)

शुद्धि और तबलीग के सम्बन्ध में अनुचित [illegible] प्रयोग करना सभी के लिए लज्जा की बात है। गांधी[illegible] दोनों दलवालों का विरोध करके दोनों दलों की [illegible] कुछ खो दी। खोजा सम्प्रदायवाले, जिसके अग्रगण्य आगा खाँ महोदय हैं, गांधीजी के स्पष्ट वचनों से रुष्ट हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...धीजी के सम्बन्ध में जब गांधीजी ने लिखा कि वे "No ...mies of mussalmans" अर्थात् मुसलमानों के शत्रु नहीं ...तब मुसलमान भाई भी बिगड़े। स्वामी श्रद्धानन्द के ...अब्दुल रशीद को गांधीजी ने जब अपना ...ई" कहा और उसे व्यक्तिगत रूप से निर्दोष घोषित किया, ...हिन्दुओं के हृदय को ठेस पहुँची। २६ मई, १९३६ को ...ली की जुमा मसजिद में जब गांधीजी के ज्येष्ठतम पुत्र हरी-...को लोगों ने मुसलमान होते हुए देखा, तो हिन्दू-समाज ...हृदय में गहरी चोट लगी। एक मुसलमान ने गांधीजी ...इन शब्दों में एक तार भेजा "Expect like your son ...truth seeker to emdrace Islam truest religion ...world,"—गांधीजी की आत्मा को इस घटना से कितना ...हुआ होगा, इसका अनुमान लगाना कठिन है। केवल ...वक्तव्य में उन्होंने अपनी हृदय-वेदना का परिचय दिया ..."I must confess that all this has hurt me." ...ने यह भी लिखते हैं— "If his acceptance was ...the heart and free from any worldly consi-...tions I should have no quarrel. For I believe ...m to be as true a religion as my own." (यंग ...डिया, जून ६, १९३६]

धार्मिक सिद्धान्तों के तारतम्य से धर्म-परिवर्तन बिरले ही ...करते हैं, अधिकांश परिवर्तन या तो सांसारिक दृष्टियों (worldly considerations) से अथवा दबाव और परि-...स्थितियों से प्रभावित होकर किए जाते हैं। आर्यसमाज के ...धार्मिक इतिहास में धर्म-परिवर्त्तन शङ्का-समाधान और शास्त्रार्थ ...परिणाम-रूप होते थे। यदि कोई हिन्दू सांसारिक दृष्टिकोण ...से मुसलमान होता है तो फिर इसी दृष्टिकोण से वह हिन्दुत्व ...में भी आ जाता है, इसमें दोष ही क्या? इन राजनीतिक ...कारणों में इस धर्म-परिवर्त्तन का उल्लेख मैं न करता, यदि ...इसका कोई राष्ट्रीय या राजनीतिक महत्त्व न होता। शुद्धि ...का इस समय इतना अधिक धार्मिक तो नहीं है, जितना ...राष्ट्रीय। जब से हमारे देश में वोट देने का स्वत्व हिन्दू ...मुसलमान के भेद पर अवलम्बित हो गया है, हिन्दू और ...मुसलमानों की संख्या एक विशेष महत्ता रखने लगी है। बङ्गाल ...का उदाहरण लीजिए। कहा जाता है कि इसकी अधिकांश ...जा मुसलमान है। यदि यह बात ठीक भी हो, तो भी मुसल-...मान सम्भवतः ५२-५३ प्रतिशत होंगे, और अमुस्लिम हिन्दू आदि ...४८ प्रतिशत। ४-५ प्रतिशत यदि मुसलमान फिर हिन्दुत्व ...स्वीकार कर लेते हैं, तो यह प्रान्त मुसलिमलीगी प्रान्त न रहकर ...हिन्दू प्रान्त बन जाता है। हिन्दू-प्रान्त का अर्थ है अर्थापत्ति ...से कांग्रेस प्रान्त, क्योंकि कांग्रेस अधिकांश हिन्दुओं का प्रति-...निधित्व करती है और लगभग समस्त हिन्दू समाज राष्ट्रीय ...आवश्यकताओं के लिए कांग्रेस के साथ है। हिन्दुत्व इस समय इतना धर्म का द्योतक नहीं है, जितना कि राष्ट्र का। हिन्दुत्व के प्रसार के साथ-साथ हमारी राष्ट्रीय भावनाओं को पुष्टि मिलती है। मुसलमानों का दृष्टिकोण इस युग में इतना अभारतीय और अराष्ट्रीय बन गया है कि मुसलमानों की संख्या की वृद्धि होना देश में पाकिस्तानी मनोवृत्ति को प्रश्रय देना है। अतः मेरी समझ में शुद्धि आन्दोलन हिन्दुत्व की दृष्टि से ही नहीं, प्रत्युत राष्ट्रीय दृष्टि से भी श्रेयस्कर है।

अस्तु, दिसम्बर १९२६ में जिस समय गौहाटी (असम) में श्रीनिवास आयङ्गर के सभापतित्व में कांग्रेस होनेवाली थी, स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या की गई। देश में एक खलबली मच गई। मैं उस समय एम० एस-सी० की फाइनल परीक्षा का विद्यार्थी था। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द हमारे अपने ही व्यक्ति थे; मुझे उनकी शहादत पर हर्ष और उनकी मृत्यु पर शोक हुआ। ऐसी शहादत भी तो बड़े भाग्यवानों को ही मिलती है। स्वामीजी की मृत्यु ने शुद्धि के काम को प्रोत्साहित ही किया, और लगभग १० वर्ष तक शुद्धि का काम जोरों से चलता रहा, पर फिर शान्त हो गया।

सन् १९२९ से देश की राजनीति में फिर गरमा-गरमी आने लगी। सन् १९२७ से मैं प्रयाग विश्वविद्यालय में शोध और अनुसन्धान का कार्य करने लगा था, और मेरी इच्छा थी कि जब तक डी० एस-सी० की थीसिस पूरी न हो जाए, यह कार्य निर्विघ्नता से करता रहूँ। राजनीतिक वातावरण भी इस समय शान्त था, और मेरा कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। सन् १९२८ के सितम्बर में एसेम्बली में पब्लिक-सेफ्टी-बिल (जन-रक्षण-सम्बन्धी प्रस्ताव) सरकार की ओर से रक्खा गया, जिस पर काफी तनातनी रही। प्रेसिडेंट के अतिरिक्त-वोट से यह प्रस्ताव गिर गया। यह बिल जनवरी १९२९ में फिर सामने आया। इसी वर्ष देश में सायमन कमीशन भी दौरा कर रहा था। कमीशन के सदस्यों ने १४ अप्रेल, १९२९ को भारत में अपना काम पूरा किया और वे इँग्लैंड लौटे। इँग्लैंड वे ठीक से पहुँच भी न पाए थे कि मई १९२९ में इँग्लैंड के सार्वजनिक निर्वाचनों के परिणाम-स्वरूप कंजरवेटिव (अनुदार) दल की हार हो गई और श्रमजीवियों की सरकार बनी। इस नई सरकार के प्रीमियर श्री मेकडानल्ड थे और भारत सचिव श्री वेजवुड बेन बनाए गए। ठीक वैसी ही अवस्था समझिए जैसी कि इस सन् १९४६ में एटली और पेथिक लॉरेंस के समय है। लार्ड एरविन उस समय देश के वायसराय थे। जून १९२९ के अन्त में लार्ड एरविन ने चार महीने की छुट्टी ली और वे श्रमजीवी सरकार से भारत के भाग्य के सम्बन्ध में परामर्श करने गए। हमारे देश में आशा की एक लहर उठी। ऐसा प्रतीत हुआ कि देश के भले दिन आने ही वाले हैं। श्रम... हमारे उत्साह को प्रश्र... दे रही थीं। अस्तु, भारत की राजनीति के...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो खेल रचा जाना था, उसकी भूमिका पड़ी। हमारी सरकार के दो हाथ रहे हैं। एक हाथ से हमें वह लड्डू दिखाकर लुब्ध करती है, और दूसरे हाथ में एक कोड़ा रखती है जो साथ-ही-साथ हमारी पीठ पर बरसने के लिए उद्यत रहता है। अप्रेल में वह पब्लिक सेफ्टी बिल फिर कौंसिल के सामने आया और साथ-ही-साथ मेरठ में षड्यन्त्र अभियोग की धूम-धाम से आयोजना हुई। प्रयाग में भी कई व्यक्ति इस अभियोग में गिरफ्तार कर लिए गए। जहाँ तक मुझे स्मरण है, सम्भवतः जोशी की गिरफ्तारी इसी वर्ष हौलेंड-हॉल होस्टल से हुई थी। असेम्बली के अध्यक्ष इस समय पटेल जी (विट्ठलभाई) थे। असेम्बली का एक नियम है कि जिस विषय पर कोई अभियोग कचहरी में चल रहा हो, उस पर असेम्बली में कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता है, और न उसके सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव ही लाया जा सकता है। मेरठ के अभियोग से इस पब्लिक सेफ्टी बिल का सम्बन्ध था, अतः पटेल जी ने इस बिल का पेश किया जाना अस्वीकृत कर दिया। इस पर वायसराय ने अपने विशिष्टाधिकार से एक आर्डिनेंस बनाकर अपनी प्रबन्धकर्त्री सभा को यह अधिकार दिया कि इस बिल को स्वीकार कर ले।

मेरठ षड्यन्त्र तो बड़ी घटना थी। १९२९ में एक छोटी-सी मनोरञ्जक घटना और हुई। गांधीजी कलकत्ता होते हुए बर्मा जा रहे थे। कलकत्ते में विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई। मार्च १९२९ के दूसरे सप्ताह में कलकत्ते के पुलिस कमिश्नर सर चार्ल्स टेगर्ट ने एक मुकदमा चलाया—मुकदमा उस धारा के अनुकूल था जिसमें जनमार्ग पर किसी नगर में भूसा (या कूड़ा-करकट) इकट्ठा करने का निषेध था। गांधी जी पर १) रुपए का दण्ड घोषित हुआ। यह सन् १९२९ की राजनीति थी। इस समय की राजनीति के अन्य मनोरञ्जक उदाहरणों में से एक यह भी है कि सरकार ने डा० सेंडरलेंड की "इंडिया इन बॉण्डेज" पुस्तक जब्त कर ली थी, और इस पुस्तक के यशस्वी प्रकाशक श्री बाबू रामानन्द चटर्जी को भी गिरफ्तार कर लिया था।

लाहौर षड्यन्त्र के अभियुक्त व्यक्तियों के साथ लाहौर के जेल में बुरा व्यवहार किया जा रहा था। १७ सितम्बर १९२८ को लाहौर के सुपरिंटेंडेंट आव् पुलिस मिस्टर सैंडर्स की हत्या के सम्बन्ध में अनेक व्यक्तियों पर अभियोग चला था। इन अभियुक्तों ने जुलाई मास १९२९ के लगभग अनशन आरम्भ कर दिया। इनमें से ६४ दिन के अनशन के बाद १३ सितम्बर, १९२९ को यतीन्द्रनाथ दास नामक एक होनहार युवक की बलि हो गई। बर्मा में भी रेवरेंड त्रिजय नाम के एक बौद्ध भिक्षु ने भी १६४ दिन का उपवास करके १९ अगस्त, १९२९ को नश्वर शरीर से मुक्ति प्राप्त की। देश के इन दो प्रिय भक्तों ने अपनी प्राणाहुति देकर जनता में एक विशेष [illegible] उत्पन्न कर दिया था। आयर्लैंड के अनशनकारी प्रसिद्ध मैक्स्विनी का उदाहरण इन उदाहरणों के साथ पड़ गया।

अगस्त और सितम्बर की इन दो दुर्घटनाओं के [illegible] २५ अक्टूबर १९२९ को लार्ड एरविन इँग्लैंड से [illegible] लौटे। पण्डित मोतीलाल जी ने १ नवम्बर, १९२९ को [illegible] में वर्किंग कमेटी की अत्यावश्यक मीटिंग बुलाई। एरविन ने अपनी ३१ अक्टूबर की घोषणा में १९१७ [illegible] सरकारी घोषणा का पिष्टपेषण करते हुए निम्न शब्द [illegible] "But in view of the doubts which have [illegible] expressed both in Great Britain and India regar[illegible] the interpretation to be placed on the inten[illegible] of the British Government in enacting the sta[illegible] of 1919, I am authorised on behalf of His Maj[illegible] Government to state clearly that in their judgm[illegible] it is implicit in the declaration of 1917, that [illegible] natural issue of India's constitutional Progres[illegible] there contemplated, is the attainment of Dom[illegible] Status"

इन कूट-शब्दों की भावना यह थी कि ब्रिटिश सरकार [illegible] हम विश्वास कर लें कि वह कभी-न-कभी हमें डोमीनियन [illegible] अर्थात् अपने साम्राज्य में हमें सम-कक्ष स्थान दे देगी। [illegible] ने नव-राष्ट्रीय विधान के निर्माण में सहयोग देने का [illegible] दिया। कांग्रेस ने इस सम्बन्ध में ये माँगें पेश कीं कि [illegible] देश में शान्तिमय वातावरण स्थापित किया जाए, (२) राज[illegible] कैदी मुक्त किए जाएँ, (३) एक कान्फरेंस बुलाई जाए [illegible] सब दलों का प्रतिनिधित्व हो और (४) क्योंकि कांग्रेस [illegible] की सबसे प्रबल राष्ट्रीय संस्था है इसलिए इसका प्रति[illegible] सबसे अधिक हो। और साथ-साथ यह भी कहा कि "[illegible] understand, however, that the Conference [illegible] meet not to discuss when Dominion status is [illegible] established, but to frame a scheme of Dom[illegible] Constitution for India." भावना यह है कि यह तो [illegible] लिया जाए कि साम्राज्य में समकक्षता तो हमें मिल ही [illegible] पर प्रश्न यह है कि शासन-विधान के विस्तार क्या हों? [illegible] को निश्चित करने के लिए कान्फरेंस की आयोजना हो।

गांधीजी राजनीतिक कूटता को भले प्रकार [illegible] हैं। उनकी तो इस अवसर पर एक छोटी-सी माँग थी— change in heart, a real desire on the part of the British people to see India a free and self-[illegible]ting nation, and on the parts of the offi[illegible] India a true spirit of service. ... my conc[illegible] of Dominion Status implies present ability to [illegible] the British connections if I wish to."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी हृदय-परिवर्त्तन चाहते हैं। यदि हृदय परिवर्त्तित हो जाता है, तो फिर शेष समस्याएँ अपने आप सुलझ जाती हैं। एक स्वतन्त्रता-प्रिय राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र को परतन्त्र कैसे रख सकता है—यह तो सदाचार के नियम के विरुद्ध है। गांधीजी के ऊपर अङ्कित शब्द अपने अँगरेजी मित्रों को लिखे थे। साम्राज्य में समकक्षता का अर्थ यह है कि यदि हम चाहें, तो सम्बन्ध रखें, पर यदि हम ब्रिटिश राज्य के प्रति तटस्थता प्रदर्शित करना कभी आवश्यक समझें तो उसका भी हमें अधिकार होना चाहिए; हम अपना सम्बन्ध भी विच्छेद कर सकते हैं, और यदि संसार के कल्याण के लिए आवश्यक हो, तो हम विरोध भी कर सकते हैं। गांधीजी ब्रिटिश साम्राज्य के साथ सदा सहयोग करना चाहते हैं—उन्होंने स्पष्ट कहा कि मैं तो "dying for Cooperation" "अर्थात् सहयोग करने के लिए बेचैन हूँ।" पर यह सहयोग किस लिए—"If I choose to remain in the Empire, it is to make partnership of power for promoting peace and good will in the world never to promote exploitation or what is known as Britain's imperialistic creed." गांधी जी ने इन शब्दों में देश की भावनाओं को स्पष्ट व्यक्त कर दिया। जिस देश ने परतन्त्रता और आर्थिक एवं सांस्कृतिक पराधीनता के दिवस देखे हैं, वह ब्रिटेन की वर्तमान साम्राज्य-वादिता में (जिसका अर्थ अन्य देशों का रक्त-शोषण है) कैसे सहयोग दे सकता है! ब्रिटेन भी इस बात को जानता है, और इसी लिए भारत की स्वाधीनता के प्रति उसके बाह्य-औपचारिक शब्द चाहे कुछ भी क्यों न हों, उसकी आन्तरिक भावनाएँ सदा विरोध ही करती रही हैं। अस्तु, मैकडानल्ड, बेन और एरविन के सतत प्रयत्न से किसी-न-किसी प्रकार (लार्ड बर्केनहेड और लार्ड रीडिंग के विरोध पर भी) पार्लमेंट ने लार्ड एरविन की घोषणा की पुष्टि की। भारत की राजनीति में नई आशाएँ बँधने लगीं। विधान का विस्तार निर्णय करने के लिए एक "लंडन-कान्फरेंस" आयोजित की गई। लार्ड एरविन ने इस कान्फरेंस को केवल "लंडन कान्फरेंस" कहा है, यद्यपि हमारे देश के गरम दलवाले नेताओं ने इसका नाम "राउंड टेबल कान्फरेंस" बतला छोड़ा था।

ये दिन आशा और निराशा के, उत्साह और शैथिल्य के, गरमी और नरमी के थे। हमारे प्रयाग में वर्किंग कमेटी और लिबरल-पार्टीज की मीटिंग १६ नवम्बर १९२९ को बुलाई गई थी। गरम दल के नेता और गांधी जी भी अँगरेजी सरकार की घोषणा पर धैर्यपूर्वक विचार करने को तैयार थे, पर युवकों के अधि-नायक श्री जवाहरलाल जी और सुभाष बाबू ने वर्किंग कमेटी की सदस्यता से त्याग-पत्र दे डाला था। मोतीलाल जी भी 'हाउस आव् कामन्स' की दुरङ्गी चालों के कारण अत्यन्त रुष्ट हो गए थे। हमारे नगर के पायनियर पत्र के सम्पादक विल्सन महोदय थे। पायनियर राष्ट्रीय दृष्टि से निकम्मा पत्र समझा जाता था और साम्राज्यवादिता का यह मुखपत्र था, पर इस समय पायनियर के इस सम्पादक ने अपनी प्रवृत्तियों में परिवर्त्तन का परिचय दिया। उसने समाचार पत्र में कई लेख लिखे जिनमें यह आग्रह किया गया कि लाहौर में होनेवाली कांग्रेस से पूर्व ही सरकार की ओर से कुछ ऐसे व्यवहारात्मक सङ्केत हों, जिनसे जनता की निष्ठा बनी रहे। यह निश्चय हुआ कि २३ दिसम्बर को गांधी जी और मोतीलालजी वाइसराय से दिल्ली में मिलें। लार्ड एरविन इस भेंट के लिए जिस समय दिल्ली आ रहे थे कि मार्ग में उनकी ट्रेन को बम से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया। २३ दिसम्बर, १९२९ को फिर भी यह भेंट शान्त रूप से की गई। भेंट के समय सर तेजबहादुर सप्रू, विट्ठलभाई पटेल और जिना महोदय भी थे। कांग्रेस से बाहर रहकर यदि किसी व्यक्ति ने देश की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में सहायता दी है, और विकट सङ्कट के समय अपना उदार हाथ बढ़ाया है, तो वह सर तेजबहादुर सप्रू हैं। उनके व्यक्तित्व और पाण्डित्य ने भारतीय इतिहास को अनेक स्थलों पर परोक्ष रूप में प्रभावित किया है। पर २३ दिसम्बर १९२९ की एक और भी विशेषता है! यह पहला अवसर है जब गांधी जी के मुकाबले में जिना महोदय को सरकार की ओर से आमन्त्रित किया गया। १९२१ में तो यह एक नगण्य घटना थी, किसी को अनुमान न था कि इसका कोई महत्त्व भी होगा, पर आगे के इतिहास ने बताया कि जिना का आश्रय साम्राज्यवादिता को कितना फला, और देश के हित में यह किस प्रकार उत्तरोत्तर बाधा डालता गया।

दिल्ली में वाइसराय की भारत की इन विभूतियों से भेंट हुई। इस भेंट का एक और भी महत्त्व था, वह यह कि कांग्रेस को इस स्थल से सरकार ने ऐसी संस्था मानना आरम्भ कर दिया जिसके साथ प्रत्येक शासन-विधान के परिवर्त्तन में सरकार को परामर्श करना आवश्यक समझा जाय। अर्थात् जनता और सरकार के बीच सम्बन्ध स्थापित करनेवाली यह प्रमुख संस्था बन गई। यों कहना चाहिए कि इस समय कांग्रेस को एक वैधानिक महत्त्व प्राप्त हो गया।

इस भेंट में, कहा जाता है, पौन घण्टे तक तो बम फटने की ही चर्चा होती रही, और समवेदनाओं और सहानुभूतियों का तांता बँधा रहा। अब लार्ड एरविन ने प्रसङ्ग छेड़ा—"where shall we begin". आरम्भ कहाँ से किया जाए? एरविन महोदय चाहते थे कि बन्दियों को मुक्त करने का प्रश्न पहले लें। इसमें कोई कठिनाई नहीं थी और जनता को सान्त्वना दी ही जा सकती थी। पर गांधी जी की दृष्टि में यह तो गौण प्रश्न था। उन्होंने आग्रह किया कि डोमीनियन स्टेटस के प्रश्न को सुलझाया जाए। गांधी जी सरकार की ओर से यह भरोसा चाहते थे कि राउंड-टेबल कान्फरेंस में डोमीनियन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेटस निश्चित है, इस आधार पर आगे बातचीत होगी। वाइसराय का कहना था कि सरकारी विज्ञप्ति में जितने शब्द हैं उनसे आगे और कुछ नहीं कहा जा सकता है। अस्तु, वाइसराय की इस भेंट का कुछ परिणाम न निकला। २५ दिसम्बर १९२९ को लाहौर में जो कांग्रेस हुई उसके सभापति पण्डित जवाहरलाल नेहरू थे जो सरकार की कूटनीतियों से पहले से जले-भुने बैठे थे। कांग्रेस के ये सापेक्षतः तरुण सभापति थे, और थे बड़े बाप के बड़े बेटे। इन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की—'The real thing is the conquest of power. by whatever name it may be called. I do not think that any form of Dominion Status applicable to India will give as real power. A test of this power would be the entire withdrawal of the alien Army of occupation and economic control". (सभापति-भाषण) अर्थात् नाम से हमें मतलब नहीं, देश को तो वास्तविक अधिकार चाहिए, सेना के अधिकार और आर्थिक सम्पत्ति के अधिकार। हमारी सरकार शब्द-जाल का प्रपञ्च रचना चाहती थी। उसका कहना था कि बहुत पहले से ही देश साम्राज्य-समकक्षता की ओर अग्रसर हो रहा है और इसके प्रमाण हैं—वारसाई की सन्धि में भी भारत के प्रतिनिधि ने हस्ताक्षर किए, एक भारतीय को हाई कमिश्नर बनाया गया, लीग आव् नेशन्स में भारत का प्रतिनिधित्व एक भारतीय ने किया, अन्तर्राष्ट्रीय श्रमजीवी कान्फरेंस की प्रबन्धकारिणी समिति में भी भारतीय प्रतिनिधि लिया गया, पञ्चशक्तिक नैवेल कान्फरेंस में भी भारत का प्रतिनिधित्व रहा, इत्यादि। क्या ये बातें इसका प्रमाण नहीं हैं कि भारत को भी ब्रिटिश साम्राज्य अन्य राष्ट्रों के समकक्ष स्थान प्राप्त है। और फिर आई० सी० एस० की परीक्षा भी तो भारत में होने लगी थी। अनेक स्थलों पर भारतीय कलक्टर और कमिश्नर होने लगे थे। लार्ड सिनहा बिहार प्रान्त के गवर्नर रह चुके थे। इसके अतिरिक्त भारतीयों को और चाहिए ही क्या!

देश में इन विकट परिस्थितियों का एक विशेष परिपाक हो रहा था। ऐसी परिस्थिति में कांग्रेस ने लाहौर के अधिवेशन में "पूर्ण स्वतन्त्रता" का एक प्रस्ताव स्वीकार किया। यह स्पष्ट कर दिया कि कांग्रेस के सङ्गठन में जहाँ "स्वराज्य" शब्द का प्रयोग किया गया है, उससे अभिप्राय "पूर्ण स्वतन्त्रता" से है। नेहरू-कमेटी ने जो अवधि दी थी, वह भी पूरी हो चुकी थी, अतः डोमीनियन स्टेटस का प्रश्न अब सदा के लिए उठा दिया गया। कांग्रेस ने यह भी निश्चय किया कि पूर्ण-स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए युद्ध की दुन्दुभि फिर बजा दी जाए। कांग्रेसी सदस्यों से कहा गया कि वे कौंसिलों से अपने पत्र दे दें, निर्वाचन-कार्य में अब भाग न लें, और भावी कार्यक्रम के लिए संलग्न हो जाएँ। रचनात्मक कार्यक्रम को पुष्ट किया गया और यह भी घोषित किया गया कि यदि आवश्यक हुआ तो उचित समय के आने पर असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया जाए। इस आन्दोलन का रूप क्या होगा, यह कैसे शुरू होगा, इन सब विस्तारों का सर्वाधिकार महात्मा गांधी को दिया गया। यह निश्चय हुआ कि २६ जनवरी, १९३० को सारे देश में "पूर्ण-स्वराज्य-दिवस" मनाया जाए। भारत-स्वतन्त्रता का यह दिवस—२६ जनवरी—तब से प्रतिवर्ष आज तक मनाया जाता रहा है। इस दिवस के साथ सम्पर्क है हमारे कुछ बलिदानों का और देश की नई स्फूर्त्तियों का। स्वतन्त्रता-दिवस का प्रस्ताव लम्बा-चौड़ा है—समस्त प्रस्ताव की जान तो इन वाक्यों में है—"We believe that it is the in-alienable right of the Indian people, as of any other people, to have freedom and to enjoy the fruits of their toil and have necessities of life, so that they may have full opportunities of growth··· we believe, therefore, that India must sever the British connection and attain Purna Swaraj or Complete Independence··· we hold it to be a crime against man and god to submit any longer to a rule that has caused this four fold disaster to our country." अर्थात् स्वतन्त्रता सभी राष्ट्रों का स्वाभाविक अधिकार है, इसलिए यह भारतीयों का भी स्वयंसिद्ध अधिकार है। भारत को अँगरेजी साम्राज्य से पृथक् हो जाना परम आवश्यक है। भारत की हानि चार दृष्टियों से हुई है—आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक और इनका मूल कारण अँगरेजों की अधीनता है।

स्वतन्त्रता-सम्बन्धी यह घोषणा करके कांग्रेस ने नए युग का आवाहन किया। देश के इतिहास का एक नया पृष्ठ खुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरपीय पृष्ठभूमि पर एक मनोवैज्ञानिक कहानी

अन्तिम दृश्य

श्री रसूल अहमद "अयोध"

(१)

'शेक हैंड' के बाद मिस रोज ने अपनी पुरानी सहेली ईवान से कहा—"मेरे विचार में मनुष्य की सुन्दरता में सबसे बड़ा स्थान दाँतों को ही प्राप्त है। दाँतों के बिना.....।"

"हाँ क्यों नहीं, बिना दाँतों के...मगर आँखें, नाक आदि का भी अपना-अपना स्थान है।"

"फिर भी दाँत दाँत ही हैं।"

"यह तो ठीक है, मगर केवल दाँतों से ही तो कोई सुन्दर नहीं हो जाता।"

"मगर सुन्दर चमकदार दाँत सुन्दरता में चार चाँद लगा देते हैं। मुझे तो चमकदार दन्त-पंक्ति बहुत ही सुन्दर मालूम होती है। जिसके दाँत अच्छे न हुए वह चाहे जैसा हो, चाहे कितनी बड़ी आँखें हों, चाहे जैसी कलापूर्ण नाक हो, मगर मुझे तो...।"

"और जिसके बिलकुल दाँत हों ही न?"

"ऐं, तुम भी क्या बात करती हो, ईवान। जिसके दाँत हों ही न, उसका तो जिक्र ही क्या। कैसा बुरा उसका मुँह मालूम होता होगा, जैसे कोई अन्धा कुँआ हो।"

"सच कहती हो रोज, बिलकुल सच, बिना दाँत के मनुष्य बिलकुल ही अजीब मालूम होता है।"

"मैंने तो कह दिया, ईवान, कि चमकती हुई दन्त-पंक्ति सौन्दर्य को चार चाँद लगा देती है। मैं तो चमकदार दाँतों को इतना पसन्द करती हूँ कि...।"

"यह तो ठीक ही है, चमकदार सुन्दर दाँत भला किसे पसन्द नहीं, मगर...।"

"मगर...तुम कुछ समझती नहीं हो, ईवान; तुमने शायद अभी तक किसी के चमकदार दाँत देखे नहीं हैं। चमकती हुई दन्त-पंक्तियों वाला पुरुष जब कभी मुस्कराकर बातें करता है, खिलखिलाकर हँसता है, और मुँह खोलकर सिगरेट का धुवाँ आसमान की ओर उड़ाता है, ओह कुछ न पूछो, ईवान।"

"मालूम तो सचमुच ही बड़ा भला, बड़ा ही सुन्दर होता होगा।"

"वही तो मैंने कहा, मेरी प्यारी बहन ईवान।"

"क्यों नहीं, रोज, क्या तुम कुछ गलत थोड़े ही कहती हो। तुम...।"

जरा देर मौन रहने के बाद प्रसङ्ग को बदलते हुए ईवान ने कहा—"उस दाँत बनानेवाले डाक्टर का क्या हाल है, रोज, कैसा काम-धन्धा, चल रहा है उसका?"

"कौन, दाँत बनानेवाला डाक्टर?" चिन्तापूर्ण मुद्रा में मिस रोज ने कहा।

"अरे, वही डैनियल, डैनियल, तुम्हारे पड़ोस के चर्च के बगल में जिसकी डिस्पेंसरी है, उसको नहीं जानतीं वह तो.....।"

"अच्छा! डैनियल, डैनियल का तो बहुत ही अच्छा हाल है। उसका बिजनेस तो दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है, ईवान।"

"वही तो मैंने पूछा। बेचारा बड़े दुःख के साथ दिन काट रहा था। कितना होशियार है वह दाँत बनाने के काम में। ऐसे दाँत बनाता है कि.....।"

"पर, बहन, नकली दाँत भी अजीब चीज हैं। मुझे तो बड़ी घृणा है नकली दाँतों से।"

"मगर डैनियल ऐसे दाँत बनाता है कि कोई पहचान नहीं सकता कि नकली दाँत हैं या असली। वे ठीक असली दाँतों से चमकते हैं।"

"यह सब ठीक है, मगर नकली दाँतों के सम्बन्ध में मुझसे कोई बात न करो, ईवान, मुझे बड़ी घृणा है नकली दाँतों से।"

"अच्छा, बहन रोज, अच्छा।" ईवान ने कहा। और दोनों एक दूसरी से विदा हुईं।

(२)

जान डेविड ने हर्बर्ट से हाथ मिलाते हुए कहा—"क्या खयाल है तुम्हारा, परमात्मा ने मनुष्य के शरीर में बाल भी क्या सुन्दर चीज बनाई है। अच्छे बाल कितने सुन्दर मालूम होते हैं!"

"क्या कहना है बालों का! बाल तो बड़ी ही सुन्दर चीज हैं।"

"हाँ, वही तो मैंने कहा।"

"मगर एक बात और भी तो है कि केवल बाल ही से... बल्कि सुन्दर चमकीले दाँत हों, रसीली आँखें हों, नुकीली नाक हो।"

"हाँ, हाँ, यह तो ठीक है मगर बाल तो बड़ी ही अजीब चीज हैं। मेरा तो खयाल है कि सुन्दर सुनहले बाल सुन्दरता में सब से बड़ी चीज हैं। वैसे आँख, नाक, आदि भी सुन्दरता के लिए जरूरी हैं। मगर बाल, सुनहले बाल, उनका तो कहना ही क्या!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों नहीं, इससे भला किसको इनकार हो सकता है? बस, यही है कि···"

"मुझे तो सुन्दर सुनहले बाल बहुत ही प्रिय हैं।"

"ठीक ही है।"

"सुन्दर सुनहले बाल! जब मन्द-मन्द वायु उनसे खेलने लगती है, उस समय देखो किसी स्त्री के सौन्दर्य को। बस, दिल लोटपोट हो जाता है।"

"ठीक है, ठीक कहते हो, डेविड।"

"सच कहता हूँ, हर्बर्ट, लम्बे और सुनहले बाल···।"

जरा देर तक मौन रहने के बाद हर्बर्ट ने कहा—"अच्छा, यह तो बताइए, उस स्पेन्सर स्क्वायरवाली दूकान का क्या हाल है? स्टेनली का कार-बार कैसा चल रहा है?"

"स्टेनली! कौन स्टेनली? कुछ याद नहीं पड़ता।"

"अरे स्टेनली को भूल गए! अरे वही नकली बाल बनानेवाला। सचमुच है बड़ा उस्ताद आदमी।"

"अच्छा, अच्छा स्टेनली। स्टेनली मजे में है। उसका कार-बार भी खूब चल रहा है।"

"क्यों नहीं, ऐसा उस्ताद आदमी है, ऐसे बाल बनाता है!"

"मगर नकली नकली है, असली असली है।"

"तुम भी क्या गँवारों की तरह बातें करते हो! डेविड असली नकली क्या? न मालूम कितनी युवतियों को देखा कि.....अप्सरा बन गईं? और तुम असली-नकली लिए करते हो।"

"खैर, छोड़ो इन बातों को, नकली बालों से मुझे बड़ी घृणा है। नकली बाल, ओह कितना बड़ा धोखा है। मेरा वश चले तो···।"

"मगर·····।"

"होगा; छोड़ो इन बातों को।"

(३)

उस दिन चर्च से लौटने पर एक गिरे हुए बालोंवाली बुढ़िया और पोपले मुँहवाले वृद्ध के साथ ही कुछ लोगों के एक गिरोह में मुस्कराते हुए जान डेविड की चमकीली दन्त-पङ्क्तियों और हवा में लहराते हुए रोज के लम्बे-सुनहले बालों को परस्पर एक दूसरे ने देखा था। उस दिन के बाद से न मालूम कितनी बार दोनों चमकीले दाँतों और सुनहले बालों की अपने-अपने पत्रों में चर्चा कर चुके हैं।

रोज और जान डेविड दोनों के निकट यही सब से प्रिय विषय बन गए हैं। दोनों ने चमकीले दाँतों और सुनहले बालों की प्रशंसा में की गई कविताएँ याद कर ली हैं, जिन्हें वे चाँदनी रातों में किसी पार्क के कोने में बैठकर मगन मन से एकान्त में गाया करते हैं।

(४)

मनुष्यों से खचाखच भरे लंदन नगर में एक-से-एक सुन्दर स्त्री-पुरुष हैं, जिनमें किसी के दाँतों की उपमा ढूँढ़े नहीं मिलती तो किसी के बालों की। फिर हेनरी के दाँतों—रोज के हेनरी के दाँतों—की प्रशंसा तो बड़े-बड़े कलाकारों ने भी की। मगर न मालूम क्यों रोज को उसके दाँत पसन्द नहीं हैं। रोज को हर्बर्ट के दाँतों में चमक नहीं मालूम होती, सुन्दरता नहीं दिखाई देती। बल्कि अब तो उसके हृदय के किसी अंश के कोने से उसके प्रति घृणा की ज्वाला प्रज्वलित होने लगी है।

इधर कुछ दिनों से रोज हर्बर्ट से बहुत ही कम मिलने लगी है। अक्सर अब वह आँख तक बचा जाती है। जैसे उसे हर्बर्ट से कभी कोई परिचय ही न रहा हो।

(५)

जान डेविड कोई नासमझ बच्चा नहीं है। उसने संसार में बहुत कुछ देखा-भाला है। वह फौज में कप्तान रह चुका है, जहाँ उसने बहादुरी और चालाकी के साथ शत्रु के छक्के छुड़ा दिए थे। हाँ, उसके दाँत जरूर जाते रहे, मगर बुढ़ापा तो अब भी है। सुन्दर-से-सुन्दर नवयुवतियों से उसकी भेंट रह चुकी है और इस ३०-३५ वर्ष की उम्र में ही वह कई घाटों का पानी पी चुका है।

ईवान को, जिसके लम्बे और सुनहले बालों की कलाकारों ने प्रशंसा की है, इसी जान डेविड के साथ रहते पाँच वर्ष बीत चुके हैं। जान डेविड को अब भी वह दिन याद आ जाता है जब कि फौज की एक टुकड़ी के साथ शत्रुओं के सामने से भागकर वह मिट्टी के खिलौने बनानेवाले एक कुम्हार के घर आश्रित हुआ था और जहाँ ईवान के सुनहले बालों को देखकर वह एकदम मोहित हो गया था।

मगर आज वे सारी विगत घटनाएँ, चाँदनी रातों में पड़ी ईवान के सुनहले बालों को सहलाते रहना, उसके लिए जैसे व्यर्थ की बातें हों। अब ईवान के सुनहले बालों में उसके लिए जैसे कोई आकर्षण ही न रह गया हो।

(६)

चर्च से निकलते ही हर्बर्ट और ईवान ऐसे मिले जैसे बड़ों का सम्बन्ध हो। जैसे मुद्दतों के बाद अकस्मात् दो प्रेमी मिल जाएँ। दोनों ने बड़े स्नेह के साथ 'शेक हैंड' किया और बड़ी गम्भीरता के साथ बातें प्रारम्भ कर दीं।

ईवान ने कहा—"मिस्टर हर्बर्ट, आपको मालूम होगा कि मिस रोज और जान डेविड की कल शादी हो गई।"

"बहुत खूब, शादी हो गई?"

"तो क्या हम लोग उन्हें बधाई देने न चलेंगे?"

"अवश्य, अवश्य चलेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और कुछ भेंट।"

"भेंट!"

"हाँ, क्यों नहीं; भेंट भी तो जरूरी है।"

"तो फिर शाम को चलेंगे।"

"और क्या, शाम को ही ठीक रहेगा, सूरज डूबते-डूबते।"

"मिस्टर स्टेनली और डैनियल डेण्टिस्ट का भी विचार था।"

"क्या बुरा है, तो हम सब लोग साथ-साथ ही चलेंगे।"

"अच्छा तो फिर यही ठीक रहा।"

बड़े प्रेम के साथ शेक हैंड करते हुए ईवान और हर्बर्ट विदा हुए।

"उधर ही से चले चलेंगे!"

"हाँ, हाँ, क्या हर्ज है?"

"सूरज डूबने के पहले ही पहुँच जाना चाहिए।"

"बिल्कुल ठीक है।"

(७)

शाम का झुटपुटा था। जान डेविड के बँगले के सामने एक मोटर आकर रुकी, और उससे एक स्त्री और तीन पुरुष उतरे। उनके साथ और सामान भी था। चारों ने ड्राइंग रूम में प्रवेश किया। सारा कमरा रोशनी से जगमगा रहा था।

जान डेविड और रोज, जो कुर्सियों पर विरोधी दिशाओं की ओर बैठे, सफेदी पुती हुई दीवारों को निरुद्देश्य दृष्टियों से देख रहे थे, झट से उठे और उन्होंने मेहमानों से हाथ मिलाया। मगर मेहमानों की आँखें फटी की फटी रह गईं, उनके सामने से जैसे जमीन खिसक गई हो।

ईवान, हेनरी, डैनियल डेंटिस्ट और स्टेनली सब जरा देर तक मौन साधे खड़े रहे। फिर उस आईने के साथ-ही-साथ, जो सारे सामान में सबसे मूल्यवान् था, सारी भेंट को मेज पर रखकर उसी अवस्था में कमरे (रूम) से बाहर निकल गए।

उधर नीरवता का राज्य अखण्ड बना रहा।

कवि सोमनाथ का सुजान-विलास*

डाक्टर व्रजेश्वर, एम० ए०, डी० फिल्०

सुजान-विलास की रचना संवत् १८०७ में हुई थी। ग्रन्थाक्रम में कवि ने लिखा है :—

सभा मद्धि इक दिन कही श्री सुजान मुसिक्याइ।
सोमनाथ या ग्रन्थ की भाषा देहु बनाइ॥
हुकुम पाइ शसिनाथ यह रचतु सुजान-विलास।
जामें विक्रम गुन कथा हैं बत्तीस प्रकास॥

इस प्रकार सुजान-विलास एक अनुवाद-ग्रन्थ है। कवि सोमनाथ भरतपुर के राजा बदनसिंह के राजकवि थे। बदनसिंह महाराज के कई पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र का नाम सूरजमल था। मान पड़ता है कि सूरजमल को साहित्य से विशेष अनुराग था। सोमनाथ कवि उससे विशेष सम्बन्धित थे और कदाचित् साहित्यानुराग के कारण ही सूरजमल को सोमनाथ ने सुजान विलास से विभूषित किया है।

सुजान-विलास की भूमिका में सोमनाथ ने गणेश और वाणी की वन्दना तथा व्रजमण्डल की महिमा, नगर, बाग, ताल और बिल्कुल के वर्णन के बाद बदनसिंह की वंशावली दी है। व्रजमण्डल के विषय में वे कहते हैं—

सामनि में द्रुमपुञ्ज निकुञ्ज प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है।
चारु प्रभाकर की तनया अरु चारि पदारथ की फरनी है॥
नित्त जपै शसिनाथ हिएँ जहँ की रज पापनि की दरनी है।
लोकनि यों बरनी करनी दुख की हरनी ब्रज की धरनी है॥

बाग और ताल के वर्णन में प्राचीन परिपाटी के अनुसार कवि ने वृक्ष, फल, फूल आदि की लम्बी-लम्बी सूचियाँ दी हैं। बदनसिंह को सोमनाथ ने कृष्ण के यदुवंश से सम्बन्धित किया है। बदनसिंह के पिता का नाम भावसिंह था जो अत्यन्त वीर और उदार थे। बदनसिंह की प्रशंसा में कवि कहता है—

जगमगै जाको चण्डकर सौ प्रचण्ड तेज,
दुवन उदण्ड जातें लुक्कत रहत हैं।
नीति निरबाह सों निरन्तर प्रतीति जाकें,
रञ्चक न बेन परपञ्चहि लहत हैं॥
ऐसो व्रज मण्डन बदनसिंह महाराज,
जाकौ जस उज्जल दिगन्तनि कहत हैं।
देस परदेस के नरेश पग लागें आनि,
जागें निशिवासर न बागनि गहत हैं॥

अपने आश्रयदाता युवराज सूरजमल की प्रशंसा में सोमनाथ ने अपने ज्ञान और काव्य-कला का प्रचुर प्रदर्शन किया है। बुद्धि के आठ अङ्गों तथा चौदह गुणों की व्याख्या सहित वर्णन करके कवि ने बताया है कि सूरजमल उन सबसे सम्पन्न थे। सूरजमल की वीरता के वर्णन में सोमनाथ ने अनेक कवित्त लिखे हैं, उनमें से एक में वे कहते हैं :—

प्रबल प्रताप दावानल सौ बिराजै जोर
अरिन के पारै रौरि धमक निसाने की॥

* हस्तलिखित प्रति श्री रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, क्यूरेटर भरतपुर [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठट्ट मरहठा के निघट्टि डारे बाननि सों
पेस कस लेत है प्रचण्ड तिलगाने की ॥
सौमनाथ कहै सिंह सूरज कुँवार जाकौ
क्रुद्ध त्रिपुरारि कौ सौ लाज बर बाने की ।
चढ़ि कै तुरङ्ग जङ्ग रङ्ग करि सेलनि सों
तोरि डारी तीखी तरवारि तुरकाने की ॥

इससे विदित होता है कि भरतपुर राज्य पर भी मराठों और उनके तैलङ्ग सैनिकों की कृपा होती रहती थी, परन्तु उन्होंने बदनसिंह और सूरजमल से अपनी अधीनता स्वीकार नहीं करा पाई। तृतीय मराठा-युद्ध में जिसने भारत के भाग्य का अन्तिम निर्णय किया था, सूरजमल आरम्भ में सम्मिलित हुए थे पर युद्ध आरम्भ होने के पहले ही वे लौट आए थे। कदाचित् मराठों की लूट-पाट करने की पुरानी नीति का भी सूरजमल के इस निश्चय पर अप्रत्यक्ष प्रभाव रहा होगा। तुरकाने की तलवार तो उन दिनों बहुत निर्बल हो गई थी, फिर भी भरतपुर उस तलवार के अत्यन्त निकट था। सूरजमल ने तुर्की सैनिकों का भी सफलतापूर्वक सामना किया था। एक दूसरे कवित्त में पुनः दक्षिणियों की ओर सङ्केत किया गया है :—

उद्दित रहतु जाकौ उद्धत अखण्ड तेज,
सदा महिमण्डल कौ तम पंड कर है।
षलभल होति ही रहति षल गोतनि के
मित्र कमलनि के घनों घमण्ड कर है ॥
सौमनाथ कहै भुजदण्डनि के जोर वर
दुवन उदण्डनि के सीस दण्ड कर है।
सुन्दर सुघर दष्षिनीनि कों धगर सिंह
सूरज कुँवर है अनूठौ चण्ड कर है ॥

अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में कविगण सदा अतिशयोक्ति करते आए हैं। सोमनाथ ने भी सूरजमल की वीरता तथा उदारता का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। सूरजमल के दान किए हुए हाथियों के वर्णन में सोमनाथ कहते हैं—

उतकट कारे रङ्ग अङ्ग मतवारे
चले डङ्ग दै डरारे सेस सीस विकसतु है।
पब्बय उपारें शुण्डादण्डनि उछारें चण्ड
कुम्भनि के झारें ब्रह्म मण्डल उकसतु है ॥
सौमनाथ जिनकी सुने तें करतूति
मजबूत पुरहूत कौ न पील अकसतु है।
दिन में उदार सिंह सूरज कुँवार ऐसे
मौज आएँ कुञ्जर अपार बकसतु है ॥

चौदह पृष्ठ की लम्बी भूमिका के बाद सुजान-विलास की कथा आरम्भ होती है। जैसा कि ऊपर कह आए हैं, सुजान-

प्राचीन हिन्दी में कल्पनात्मक प्रबन्ध-काव्य नहीं के बराबर हैं इसलिए सुजान-विलास, भले ही वह एक अनुवाद-ग्रन्थ हो, साहित्य में सम्मानित स्थान का अधिकारी है। यद्यपि अनुवाद मौलिक ग्रन्थ की समानता नहीं कर सकता, फिर भी किसी अनुवाद-कार्य कभी-कभी मौलिक-ग्रन्थ-रचना की अपेक्षा कठिन हो जाता है। अनुवादक को अपनी संवेदनाओं को अनुभूतियों को विशेष सीमा में आबद्ध करके उन्हें मूल की संवेदनाओं और अनुभूतियों की अनुगामिनी बनाना है। सफल अनुवाद-ग्रन्थ वही है जिसे पढ़ते समय जान पड़े कि वह मौलिक नहीं है। सुजान-विलास से एक सफल रचना है।

ऊपर दिए हुए उद्धरणों से यह स्पष्ट हो गया होगा सोमनाथ का भाषा पर पूर्ण स्वामित्व है और उनकी में सहज सौष्ठव एवं मनोहर सरलता है। सुजान-विलास अध्ययन इस विचार को और अधिक पुष्ट कर देता है। भर्तृहरि की वैराग्य-भावना का चित्रण देखिए—

हँसि कै उपराजति मोह महा पुनि छोभित ह्वै कल कानन कबहूँ मनमत्थ कला दरसाइ भुलाइ कै कण्ठनि कौं परकासि पतिव्रत की गति कौं तरुनी अभिमान भरी छर छन्दनि के गुन सों जकरैं पिय कों बस कै सु कहा न कच ग्राम जुवानि कौ जाहर और जिटे मुष हाड़ सुभाव कुच मांस की गाँठि भर्‌यो बिट पेट मलीन मनो बच काह मलमूत निवारन द्वार दुवौ पुनि थम्भ उरू तप घाइ इन भाँतिनि की तरुनी सु कहा बर नाइक के हित लाइक लखि सम्पति नारि बिहारन कों निरधार हियें न हुलाइ अपने अरु और कहो कछु क्यों न नहीं जग के उपहास शशिनाथ गुबिंद कों ध्याइ सदा भवसागर को तजि त्रास धनि ते नर बुद्धि बिलन्द सु जे गिरि-कन्दर अन्दर बास उर अन्तर यों सुविचारि महीप हजारनि भौग भुलाइ सजि कानन कुण्डल कंथहि धारि असङ्कित सींधी बजाइ हित सों नित आठहु अंगनि सों जग जाहर जोग जगाइ नँदनन्दन के गुन गावतु भौ परमानँद कौ पदु पावतु

प्रसाद गुण सोमनाथ की शैली की विशेषता है। पर शब्द-चयन में पदमैत्री तथा यमक और अनुप्रास के प्रयोग पर्याप्त माधुर्य और सरसता आ जाती है।

वर्णन-विस्तार में शशिनाथ बड़े दक्ष हैं। भोजन का वर्णन करने पर उतरते हैं तो नाना भाँति के पकवानों एक लम्बी सूची उपस्थित कर देते हैं; यथा—

उरद मूँग के मोदक मंडे। और कुम्हेड़े पाग पक्के तन्दुल ढेर कराए। तिनमें पलँ के षण्ड अनगन बटक दही में बोरे। शसि ते अधिक गोल पूरी करी मिले के हरदी। वारी लषि सुबरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जलेबी पेरा। घेवर बेवर फेनी करी॥
छुही छँटी छबीली छोटी। मैदा दूधनि लैके रोटी॥
बेसन गूझा और अँदरसे। सेव सुहारे घृत सौं सरसे॥
मिलत कन्द के ओरे प्यारे। जनु छिति आनन विहारे तारे॥

इस अत्यन्त कवित्वहीन वर्णन में भी शशि से दही-बड़ों की तथा ओलों से तारों की उत्प्रेक्षा कम रोचक नहीं है। विस्तार में अलङ्कारों की झड़ी लगाना भी सोमनाथ की कविता है। इस प्रकार का एक भानुमती रानी के नखशिख के पृष्ठ का वर्णन है। इस लम्बे वर्णन में से कुछ उदाहरण दिए जाते हैं—

बरङ्ग चीर बरनि पट झीन। जिहिं मद्धि जरकसी तार दीन॥
बन कनक किनारी चहूँ ओर। मुक्तामनीनि की मिलित कोर॥
बन अंकित मनों मखतूल तार। गुन ललित बलित मुकतनि कतार॥
त्रिविध रङ्ग बैनी सुढार। सेा करति त्रिवैनी सी विहार॥
सुगन्ध पाटी अनूप। जनु मदन कसौटीं असित रूप॥
पूर पूरित सुमङ्ग। मनु तिमिर मद्धि रविकर सुरङ्ग॥
सुहाग आसन उदार। शिर फूल लसै इमि दुति अपार॥
अर्द्धचन्दसम शुभ लिलार। तिहि मद्धि बिन्दु-बंदन सिँगार॥
मनो विधि नेँ अमोल। लिखि दियो भाल में अति अलोल
जाति बन्दि यों रतन केलि। सुष सर समीप जनु कनक बेलि
चन्द पै हित बढ़ाइ। रापीं मनोज तोरन तनाइ॥
लसैं बङ्क भृकुटी सुवेष। मनहरन मन्त्र की मनहुँ रेष॥
धनुष मनमथ उतारि। जग जीति आपुनी जय विचारि॥
अरविन्दनि पै सुभाँति। दरसंति अलिन की जुगल पाँति॥

उपमा, उत्प्रेक्षा और सन्देह अलङ्कारों के प्रयोग में कवि सौन्दर्य-भावना और सूक्ष्म-कल्पना के साथ उसकी वर्णन-करने की प्रवृत्ति विशेष दर्शनीय है। सोमनाथ इस विषय में ब्रजभाषा के उन अनेक छोटे-बड़े कवियों की परम्परा में आते हैं जिन्होंने कथा-प्रसङ्गों के साथ अनिवार्य रूप से लम्बी-लम्बी सूचियाँ उपस्थित की हैं।

सोमनाथ की साधारणतया ललित, मधुर और प्रसादगुण-युक्त शैली आवश्यकतानुसार प्रखर और ओजपूर्ण हो जाती है। सेनाओं के वर्णन में इसका उदाहरण देखिए—

कोप्यौ नरेश बिक्रमेश इक्क द्यौस मौज में।
बढ़्यौ अहद्द सद्द भौ विलास मद्धि फौज में।
उतद्द से द्विरद्द मद्द नीर धार छण्डई।
उदण्ड शुण्डदण्ड सौं जँजीर ब्याल मण्डई।
तुरङ्ग रङ्ग रङ्ग के उतङ्ग जङ्ग हित्त के।
ममोल से कलोल में भरे अतोल वित्त के।
जुहाउ के समाज के दराज साज शुम्भहीं।
इलाज कित्ति वेस के निहारि को न लुभ्भहीं।
विमान देवतानि के विमान पास लग्गईं।
सुनत दुन्दुभी धुकार को सम्हार पग्गईं।
प्रचण्ड भाँति भाँति की सु भूरि भेरि बजईं।
अमान को लपेट तजि भेट शत्रु सजईं।

वैताल के भयङ्कर वेश का वर्णन भी इसी प्रकार की शैली में है। यथा—

बदल से कारे अङ्ग उदारे नदन गारे लों गरजैं।
दन्तनि कड़कावैं द्रग फड़कावैं उमड़तु आवै नहिं लरजै॥
नृप आगैं ठाढ़ौ भयौ सु गाढ़ौ फहरै डाटों जिमि काई॥
श्वासनि ते ज्वाला कटति कराला बदन विशाला भयदाई॥

जैसा कि उपर्युक्त उद्धरणों से व्यञ्जित होता है, दर्प, ओज, भयङ्करता आदि के प्रदर्शन के लिए सोमनाथ भी अपने युग के अन्य कवियों की भाँति द्वित्व वर्णयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं। यह परम्परा चारण-काव्य से आरम्भ होकर हिन्दी के आधुनिक युग के आरम्भ तक निरन्तर चली आई है। सोमनाथ ने द्वित्व वर्णों का प्रयोग छन्दों के आग्रह से भी बहुधा किया है। यथा—

एक राजा अवन्तीपुरी में भयौ। विक्रमादित्य सेा नित्य सेाभा छयौ॥
भुम्मि के देषिवे काज इक्कै गयौ। देश विदेश नाँ सङ्ग कोऊ लयौ॥
दिष्षिये पंथ में ग्राम किते बने। ताल नदी नदौ जन्तुक्रीड़ा सनें॥
जाइ कढ़ढ्यो कहूँ और ही ग्राम में। ही नदी-तासु के पास आराम में॥
ता किनारें बड़ौ देव केा धाम हो। सब्ब ही जानते जासु कौ नाम हो॥
विप्र के वृन्द दिष्षे बइठे तहाँ। सास्त्र की बात उचारई ते तहाँ॥

शब्दों केा इस प्रकार विरूप करने से भाषा में ओज आता है या नहीं, यह तो सन्दिग्ध है, पर इससे भाषा का सहज सौन्दर्य अवश्य नष्ट हो जाता है।

सुजान-विलास एक नीति का ग्रन्थ है। अतः उसमें कवि केा अपनी समस्त शक्तियों के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिल सकता। दूसरे अनुवाद होने के कारण कवि केा अपनी कल्पना के लिए स्वतन्त्रता भी नहीं है। इन सीमाओं के होते हुए भी सुजान-विलास सोमनाथ की प्रतिभा और विद्वत्ता का द्योतक है। मध्य युग में कला और साहित्य राजाओं और सामन्तों के आश्रित होने के कारण स्वतन्त्र विकास नहीं कर सके। और फिर इस परतन्त्रता में कवि और कलाकार के ऊपर युग की गतिहीन परम्परा का भार लदा हो तो उसकी स्वाभाविक प्रतिभा और भी अधिक कुण्ठित हो जाएगी। कवि सोमनाथ के काव्य के पीछे एक ऐसे प्रतिभावान् कवि की झलक मिलती है जो अनुकूल अवसर और वातावरण पाकर हिन्दी-साहित्य केा और अधिक सम्पन्न बना सकता था। पर परिस्थिति तो यह थी कि उन्हें बार-बार अपने आश्रयदाताओं का गुणगान करने के लिए अपनी वाणी का उपयोग करना पड़ता था। सुजान-विलास के आरम्भ में जो भूमिका है उससे प्रकट होता है कि आश्रयदाता के लिए कवियों केा कैसी अतिशयोक्तिपूर्ण और मिथ्या स्तुतियाँ करनी पड़ती थीं। प्रत्येक पुत्तली की कथा के बाद कवि अग्र-लिखित छन्द दुहराता है:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बदनसिंह भुवाल जदुकुल मुकुट सुजान विलास है।
तिहिं कुँवर सिंघ सुजान सुन्दर हिन्द भाल दयाल है॥
तिहिं हित्त यह शशिनाथ ने रच्चिय सुजान-विलास है।
पुतरी सिंघासन की कथा नवमी भई परकास है॥

सुजान-विलास का एक बहुत बड़ा साहित्यिक महत्त्व है उसके छन्दों की विविधता में। इस दृष्टिकोण से सुजान-विलास महाकवि केशवदास की रामचन्द्रिका के समकक्ष रक्खा जा सकता है। इसमें कवित्त, सवैया, हरिगीतिका, गीतिका, प्लवङ्गम, मुक्तादाम, पद्धरी, भुजङ्गी, काव्य, नाराच, तोमर, प्रमानिका, लक्ष्मीधर, चौपाई, चौपई, पादाकुलक, छप्पय, दोहा, सोरठा आदि अनेक छन्दों का व्यवहार किया गया है।

परन्तु हिन्दी के मध्ययुग की विशेषता कवित्त और सवैया छन्दों में, व्रजभाषा के माधुर्य में तथा शृङ्गारपूर्ण भक्ति, भक्ति-पूर्ण शृङ्गार अथवा शुद्ध शृङ्गार के चित्रण में है। सोमनाथ की काव्य-प्रतिभा का परिचय पाने के लिए भी हमें उनकी उन्हीं रचनाओं को देखना चाहिए जो युग की काव्य-धारा के अनुकूल हैं। प्रस्तुत हस्तलिखित ग्रन्थ के साथ हमें सोमनाथ-द्वारा रचित रस-सम्बन्धी ग्रन्थ का कुछ अंश भी प्राप्त हुआ है। उसमें से कुछ उदाहरण देने का लोभ हम संवरण नहीं कर सकते। दृष्टानुराग का एक उदाहरण है—

अबहीं गई ही पनिघट बंसीबट आछे
मेरे आगे बोलति हँसति सषियानि में।
आइ गयौ औसर ही अचकाँ कन्हाई तहाँ
सजे फूलमाल मञ्जु मोर पषियानि में॥
सोमनाथ बानिक बिलोकि छबि छाक छकी
दीनी एँचि गाँसी पञ्चबान बषियानि में।
गागरि गिराई बिसराई कुलकानि ग्वालि
लाई भरि मोहन कौ नेह अँषियानि मैं॥

'एँचि दीनी गाँसी' और 'लाई भरि' में कैसा मनोहर व्यंग्य है। विभ्रम हाव का उदाहरण देखिए—

लागी यह ज्योंही दिया बारन सु त्योंही आयौ
अचक कन्हाई लिए हाथ में बँसुरिया।
रञ्चक बिलोकि बिनु मोल ही बिकाइ गई
मानों पढ़ि डारी मैन मन्त्रनि की पुरिया॥
सोमनाथ औरै जोति जागी टक लागी ठाढ़ी
डुलै न डुलाएँ गुरु लाज तें बिछुरिया।
राती प्रेमरङ्ग रूप रस न अघाती बाल
बाती गई बिसरि बरावति अँगुरिया॥

'औरै जोति जागी' की व्यञ्जना कितनी सटीक है! विभ्रम की तन्मयता का चित्रण करने में कवि ने हृदय की सूक्ष्म अनुभूति का प्रदर्शन किया है। मोट्टायित हाव का एक उदाहरण और लीजिए—

कञ्चन कौ थार मुकताहल करतार धरि
रोचन सँवारि लियौ कर में बनाइकै।
सखिन के सङ्ग भरी जोबन उमङ्ग बाल
गई गौरि पूजन हिये में सुष पाइकै॥
सोमनाथ डीठि परे अचकाँ सुजान तहीं
भयौ तन तम्भ यों सु लीनहु छिपाइकै।
हारि परी अति ही न आगे कों परतु पाइ
यों कहि सखी सों मुसिक्यानी सिरु नाइकै॥

अन्त में विप्रलम्भ शृङ्गार के अन्तर्गत उद्वेग दशा का [illegible] देकर समाप्त करते हैं—

सीतल बयारि तरवारि-सी बहति तैसी
लहकनि बेलिनि की सूल सरसन लागीं।
धरकति छाती घोर घन की गरज सुनि
दामिनि की दमक दवाँसी दरसन लागीं॥
सोमनाथ इते पै करतु कमनेती काम
कौन बिधि जीवौ री बिपति परसन लागीं।
जेही पिय सङ्ग बरसत हीं पियूषधार
तेई अब घटा विषधार बरसन लागीं॥

कवि सोमनाथ की प्रतिभा और भावुकता के [illegible] उदाहरण हैं। सोमनाथ उस समय हुए थे जब [illegible] राजनीतिक इतिहास घोर संघर्ष और संक्राति से होकर [illegible] रहा था। इन परिवर्त्तनों से अनभिज्ञ, उदासीन [illegible] आश्रयदाता के मनोरञ्जन के लिए अपने समाज की [illegible] परिपाटी के अनुसार वाणी का शृङ्गार करने में लीन थे। [illegible] युग बदल गया है। साहित्य के आदर्श, उसकी [illegible] तथा उसकी संवेदनाएँ एक क्रान्तिकारी परिवर्त्तन [illegible] सर्वथा नवीन रूप में दिखाई देती हैं। यहाँ तक कि [illegible] के बाह्य रूप-रङ्ग में भी महान् परिवर्त्तन हो चुका है। [illegible] व्रजभाषा के लिखनेवाले तो दूर, समझनेवाले भी [illegible] जाते हैं। तो क्या हमारा प्राचीन साहित्य विस्मृत हो [illegible] क्या साहित्य, समाज और संस्कृति के इतिहास में भी [illegible] मूल्य उपेक्षणीय है? हिन्दी की उन्नति हो रही है [illegible] उन कवियों की आत्मा इस उन्नति को देखकर सन्तुष्ट [illegible] होगी जिनकी पोथियों को संग्रहालयों की अलमारियों [illegible] का संसार देखने का भी अवसर नहीं मिलता? न जाने [illegible] हस्तलिखित प्रतियाँ हमारे नवयुवक विद्वानों और साहित्य [illegible] प्रकाशकों की प्रतीक्षा में कीड़ों का शिकार बन रही हैं। [illegible] हिन्दी के द्वितीय श्रेणी के कवियों में सम्मानित स्थान के [illegible] हैं। पण्डित रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में इन [illegible] ग्रन्थों का उल्लेख किया है। क्या कभी इन ग्रन्थों के [illegible] संस्करण मुद्रण-यन्त्र में प्रवेश पा सकेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़ताल की बलि

प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए०, बी० कॉम०

वह हाथ-मुँह धो प्रातःकार्य से निवृत्त हुई। बाल सँवारे; गेरुआ साड़ी पहनी; अँगुली में कल ही उपहार में आई हुई अँगूठी डाली और बाहर जाने को उद्यत हुई ही थी कि माँ ने टोका—"इतने सवेरे कहाँ चली बेटी? न नाश्ते की परवाह, न खाने-पीने की सुध। दिन भर धूप में मारी-मारी फिरती हो। बेटी, तुम्हारी कोमल काया मुरझाए फूल की तरह कान्तिहीन हो गई है। जरा तो सुध-बुध रक्खो अपने तन की।"

विजया एक क्षण ठहरी। बूढ़ी माँ का झुर्रियोंदार हाथ अपने गोरे-गोरे हाथों में ले स्नेहसिक्त स्वर में बोली—"यह काया तो मुरझाने के लिए ही है, माँ। कौन अमर रहा जो हम अमर रहेंगे? और फिर खाते-पीते भी यदि हम मर जाते हैं तो उन मासूम मजदूर बच्चों का क्या होगा जिनके माँ-बाप रोज बारह घण्टे की कड़ी मेहनत-मशक्कत के बाद भी आठ-बारह आने से अधिक नहीं कमा सकते? तुम्हारा खयाल है—अमीर गरीब भगवान् ने बनाए हैं; यह उसी की इच्छा है। मैं समझती हूँ, यह श्रेणी-भेद हमारी आज की विनियन्त्रित समाज-व्यवस्था का कुफल है। हममें त्याग और सहन का माद्दा हो तो हम दुनिया से गरीबी, भुखमरी और बेकारी मिटा सकते हैं। आज का युगधर्म इसी ओर इशारा करता है, माँ। चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है कि सङ्गठन करो, अन्यथा सर्वनाश हो जाएगा। इन्हीं फाकेमस्त कङ्गालों के—इन बिखरे तिनकों को—एकत्रकर एक मजबूत रस्से की शक्ल देना चाहती हूँ ताकि पूँजीवाद-रूपी मदोन्मत्त हाथी को काबू कर उसकी शक्ति सीमित कर सकें।"—और वह फुर्ती से बाहर निकल गई।

उस रोज विजया भोर होने के पूर्व ही उठ बैठी। कई दिनों की दौड़-धूप और गत रात्रि के जागरण ने उसके शरीर में थकावट पैदा कर दी थी। परन्तु उसके मन का उत्साह उस शरीर को कार्यरत रखता था, ठीक उस साईस की भाँति जो घोड़े को चाबुक की फटकार से अग्रसर रखता है। रात को तरह-तरह के सपने आए। दो-एक मर्तबा वह चौंककर जाग भी बैठी थी। जैसे-जैसे हड़ताल का दिन नजदीक आता था उसकी व्यग्रता भी बढ़ती जाती थी। उसने देखा—मिलियों के एक बड़े जत्थे पर हथियारबन्द पुलिस ने हमला किया। उस झुण्ड में बच्चे, स्त्रियाँ, बूढ़े सभी शामिल थे। तितर-बितर हो गए; अधिकांश वहीं ढेर थे। और यह हुआ बाबू श्यामलाल आई० सी० एस० के हुक्म से। हाँ, इन्होंने तो 'फायरिंग' का आर्डर दिया था। परन्तु दूसरे ही क्षण उसके मन ने कहा, नहीं, वे ऐसी बेइन्साफी नहीं कर सकते; निहत्थे मजदूरों पर गोली दागना कदापि गवारा नहीं करेंगे। सपने तो यों ही आया करते हैं; अधिकांश भ्रामक, एक-आध सच्चा।

× × ×

वह इन्हीं विचारों का ताना-बाना बुनती 'कॉलेज-गर्ल्स-हॉस्टल' की ओर बढ़ी। हॉस्टल के अहाते में लड़कियों का गिरोह हास्य-विनोद और चुहलबाजी में जीवन की घड़ियाँ सार्थक कर रहा था। विजया को देखते ही सभी कुमारिकाएँ उसकी ओर लपकीं। वह चारों तरफ से घिर गई, जैसे प्लेटफार्म पर आते ही गाड़ी का डिब्बा मुसाफिरों से घिर जाता है। विमला ने सबसे पहले अपनी चोंच खोली—"ओहो यह योगिया भेस किसके विरह में धारण किया है?"

"बाबू श्यामलाल के। देखती नहीं; उन्हीं की दी हुई अँगूठी उँगली में चमक रही है!"—सरला बोल उठी।

"हमें भी देखने दो अँगूठी, विजया। इतनी शर्माती क्यों हो? मुझे सब मालूम है; भाई साहब ने मुझी से पसन्द कराके तो भेजी थी।" विमला बोल उठी।

"शरमाऊँगी क्यों? क्या किसी की चोरी है? यह देख लो, अगर तुम्हें देखने का ही शौक है तो।"—विजया हाथ आगे बढ़ाते हुए आरक्त-कपोल हो बोली।

"अहा! अँगूठी तो बड़ी कीमती है, विजया! हजार रुपए से कम का हीरा न होगा। बड़ी भाग्यवती हो। बाबू श्यामलाल तुम्हें सोने और हीरों से मढ़ देंगे।"—कमला ने भविष्यवाणी की।

"तो क्या मैं कठपुतली हूँ? या 'शो' के लिए रक्खी गुड़िया, जो सोने-हीरे में मढ़ देंगे। मुझे यह सब कतई पसन्द नहीं। देखती नहीं हो, देश में क्रान्ति मची हुई है—निहत्थों पर गोलियाँ चल रही हैं और हम अपने राग-रङ्ग, हास-विलास में मस्त तितलियों की भाँति इस फूल से उस फूल पर फुदकती रहती हैं। क्या कालेज-कुमारिकाओं का यही कर्त्तव्य है?"

"तो तुम सवेरे-सवेरे क्या चाहती हो? क्या हम भी उन तुच्छ मजदूरों के साथ अपने सर पर लाठियाँ झेलें!" विमला ने पूछा।

हमें लाठियाँ झेलने की आवश्यकता नहीं, बिम्मो! सिर्फ सहानुभूति दिखाने और हिम्मत बँधाने की जरूरत है। हमारी आँखों के सामने अन्याय हो और हमारा खून न खौले तो हममें जवानी ही क्या रही? तुम्हारा वह अँगरेजी की कहावत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रटते-रटते जनम बीत गया परन्तु उस पर अमल करने की भी कभी कोशिश की है! हम मानते हैं—"They are slaves, who dare not be; In the right, with two or three."

"परन्तु जब कार्य में परिणत करने का मौका आता है तो हम बगलें झाँकने लगती हैं। इससे कहीं समानता और स्त्री-स्वातन्त्र्य हासिल होना है?"

विजया का चेहरा तमतमा उठा। उसने उसी आवेशपूर्ण स्वर में कहा—"चलो विमला-कमला-सरला—हम सब रेलवे स्टेशन की ओर चलें। आज रेलवे हड़ताल का दूसरा दिन है। मजदूर सुबह ही अपना जुलूस निकालनेवाले हैं। हम भी उसमें शामिल हों।"

× × ×

स्टेशन का अहाता मजदूरों के कोलाहल से गूँज रहा था। सभी उम्र व श्रेणी के कर्मचारी थे। एक तरफ मजदूर स्त्रियाँ बैठी थीं। पास ही बम्बई मेल धुआँ उगल रही थी। दो रोज से उसका एञ्जिन ठण्ढा था—वह भूखी थी—और आज उसे अपना आहार मिला था, अतः वह अकाल-पीड़ित की तरह अपना खाद्य ग्रहण कर काले-पीले धुएँ के बादल आकाश में निर्माण कर रही थी। ट्रैफिक मैनेजर का आज निश्चय था कि वह रेल चलाएँगे चाहे कितनी ही जानें क्यों न जाएँ! और इधर मजदूरों ने भी तय किया था कि वे रेल-गाड़ी को एक इञ्च भी आगे न बढ़ने देंगे। गाड़ी पटरी पर नहीं चल सकती, उनके पेटों पर चाहे चले। गाड़ी ने अपनी कर्कश सीटी-द्वारा चलने का ऐलान किया और फौरन ही सैकड़ों मजदूर एंजिन की तरफ दौड़े। कुछ पटरियों पर लेट गए—कुछ अगल-बगल लेट गए। मजिस्ट्रेट ने घोषणा की कि सारे मजदूर पाँच मिनट में तितर-बितर हो जाएँ वरना 'फायरिंग' कर दिया जाएगा। घुड़सवार पुलिस—घोड़ों की टाप से और अपनी लम्बी-लम्बी लाठियों से मजदूरों पर आतङ्क जमाने में रत थे। इतने में अपनी सहेलियों-सहित विजया घटनास्थल पर उपस्थित हुई और उसने ललकारकर कहा—"निर्दोष और निहत्थे मजदूरों पर घोड़े चलाने और लाठी बरसाने से पुलिस की बहादुरी नहीं कायरता ही जाहिर होती है। पशुबल-द्वारा इस प्रकार न्याय का गला नहीं घोंटा जा सकता। हम 'करेंगे या मरेंगे'।

और उसने आगे बढ़कर एक मजदूर से तिरङ्गा-झण्डा ले लिया और दूसरे ही क्षण वह एंजिन के सामने जा डटी। उस भीमकाय काले-कलूटे राक्षसी एंजिन के सामने विजया एक मधु-मक्षिका-सी दिखाई देती थी जो हवा के झोंके मात्र से पल भर में कुचल दी जाती। परन्तु उसका अदम्य आत्म-विश्वास उस लोह-यन्त्र से लोहा लेने को प्रेरित कर रहा था। उतनी ही कटिबद्ध और क्रूर दिखाई देती थी जितनी एक मक्खी अपना छत्ता जलाए जाने के बाद, जो अपने प्राणों पर खेलकर परास्त कर देती है। विजया के ही बाबू श्यामलाल सन्न रह गए। वे लड़खड़ाते पैरों से आए और घबराहट के स्वर में बोले—"विजया, तुम यह पागलपन कर रही हो? नाहक जान गँवाकर क्या तुम्हारे पिताजी इस बात से सख्त नाराज होंगे। पहले आज्ञा तो ले ली होती।"

"इस कार्य में पिता की आज्ञा की मैं जरूरत नहीं। उनके विचार आज से पचास साल पहले की दुनिया के उचित थे। आज उनपर चलना जमाने के स्पिरिट को कम करना होगा।"

"समय थोड़ा है, विजया, यह बहस करने की जगह नहीं। एक मिनिट बाद ही एंजिन चल जाएगा और सारे लोग को मक्खियों-मकोड़ों की तरह रौंद देगा। इसमें क्या लाभ करोगी? नासमझ मत बनो।"

विजया के होंठ कुछ कहने को हिले परन्तु उसकी सीटी के कर्कश स्वर में डूब गई और पलक मारते ही चल पड़ा। सत्याग्रही मजदूर बेरहमी के साथ कुचले रौंद गए। विजया भी उनमें एक थी। उसका क्षत-शरीर एंजिन के धक्के से एक ओर फिक गया; परन्तु बेहोशी की हालत में भी तिरङ्गा झण्डा उसकी मजबूती के साथ जकड़ा हुआ था।

× × ×

दूसरे दिन विजया अस्पताल में बेहोशी की हालत में पड़ी रही थी। बाबू श्यामलाल उसके पास पहुँचे और माथे पर हाथ रखते हुए बोले—"विजया, तुम्हारा त्याग व्यर्थ नहीं गया। आज से अपने पद से मैंने इस्तीफा दे दिया है और अब मजदूरों का संघर्ष मेरे नेतृत्व में होगा। देखती नहीं हो, मैंने जगह खादी के कुरते और गांधी टोपी ने ले ली है।

विजया ने अपनी बोझिल आँखें खोलीं। उसके मुख पर सन्तोष का मधुर स्मित था। वह धीमी आवाज में बोली—"धन्यवाद।"—और उसने अपनी अँगूठी बाबू जी की उँगली में पहना दी। इतने परिश्रम से ही उसके मण्डल पर थकान के चिह्न दृष्टिगोचर हुए। उसने करवट बदली, एक लम्बी हिचकी ली और सदा के लिए सो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त राष्ट्र-संघ और विश्वशान्ति

श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

सन् १९४४ के अगस्त मास में ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियत रूस और चीन के प्रतिनिधि डम्बार्टन ओक्स, अमेरिका में एकत्र हुए। सारा अगस्त और सितम्बर विचार-विनिमय एवं मन्त्रणा में बीता। इस ऐतिहासिक कान्फरेंस का उद्देश्य एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन की योजना बनाना था जो युद्धोपरान्त विश्व में शान्ति एवं सुरक्षा कायम रख सके। ६ अक्टूबर की रात को ठीक में कान्फरेंस ने अपना काम समाप्त कर दिया और शनिवार अक्तूबर के मध्याह्न को सारी योजना प्रकाशित कर दी गई।

डम्बार्टन ओक्स-योजना संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ की जननी थी। अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन के निर्माण की वह सूक्ष्म रूप-रेखा अवश्य नहीं थी; किन्तु 'चार बड़ों' के प्रतिनिधियों ने एक ऐसी पृष्ठ-भूमि अवश्य तैयार कर ली थी जो राष्ट्र-सङ्घ के निर्माण का आधार बन सके। इस योजना में किसी प्रकार की निश्चित घोषणा नहीं थी—न त्रस्त संसार के लिए किसी प्रकार का आश्वासन ही। वह तो प्रस्ताव-मात्र था जिस पर संसार के प्रत्येक राष्ट्र को विचार करना था एवं इटली, जर्मनी एवं उनके सहयोगी राष्ट्रों को अपनी भावी प्रगति के लिए मन्तव्य बनाने थे। डम्बार्टन ओक्स-योजना भावी राष्ट्र-सङ्घ का सैद्धान्तिक रूप था जिसे सेनफ्रांसिस्को-कान्फरेंस में क्रियात्मक रूप दिया गया था। २६ जून, १९४५ को सेनफ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ के चार्टर (United nations organisation charter) की घोषणा हुई।

रूजवेल्ट, चर्चिल एवं स्टालिन ४ फरवरी सन् १९४५ को क्राइमिया (Crimea) में मिले। पूरे एक सप्ताह की मन्त्रणा के पश्चात् १२ फरवरी १९४५ को तीनों के संयुक्त हस्ताक्षर के साथ कान्फरेंस का वक्तव्य प्रकाशित हुआ। इस वक्तव्य की चौथी एवं आठवीं धाराओं का सम्बन्ध संयुक्त राष्ट्र सङ्घ के निर्माण से है। डम्बार्टन ओक्स-परिषद् के प्रस्तावों में इन धाराओं में अनुमोदन किया गया है। चौथी धारा के अन्तर्गत जिन तीन निश्चयों की घोषणाएँ हैं वे हैं—

१—हमने निश्चय किया है कि भविष्य में संसार की शान्ति और सुरक्षा कायम रखने के लिए सब मित्रराष्ट्र मिलकर शीघ्रातिशीघ्र एक अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन का निर्माण करें।

२—डम्बार्टन ओक्स-परिषद् में इस सङ्गठन की योजना बन चुकी है। रूस, ब्रिटेन एवं अमेरिका में जो सैद्धान्तिक मतभेद था वह दूर हो चुका है।

३—अतः अब हमने यह निश्चय किया है कि सब मित्रराष्ट्रों की एक परिषद् २५ अप्रैल, १९४५ को सैनफ्रांसिस्को में बुलाई जाए और डम्बार्टन ओक्स-योजना के आधार पर संयुक्त राष्ट्र सङ्घ का विधान तैयार कर लिया जाए। आठवीं धारा के अन्तर्गत भी तीन निश्चयों की घोषणा है :—

१—१४ अगस्त १९४१ को जो एटलांटिक चार्टर बनाया गया है हमें उसकी आठों धाराएँ मान्य हैं।

२—संयुक्त राष्ट्रों (United Nations) ने पहली जनवरी १९४२ को जो घोषणा की है वह उसी रूप में हमें आज भी स्वीकृत है।

३—हमारा यह सङ्कल्प आज भी वैसा ही दृढ़ है कि शान्ति के इच्छुक सब राष्ट्रों के पारस्परिक सहयोग से एक ऐसे विश्व-सङ्घ का निर्माण किया जाए, जिसका एकमात्र ध्येय अखिल मानवता की शान्ति, सुरक्षा, स्वाधीनता एवं सुख हो।

मूल सिद्धान्त और अभाव

डम्बार्टन ओक्स-योजना की रेखाओं में रङ्ग भरने के लिए २५ अप्रैल १९४५ को सेनफ्रांसिस्को में सभी संयुक्त राष्ट्रों के प्रतिनिधि एकत्र हुए। पूरे दो महीने व्यस्त रहने के बाद यह ऐतिहासिक चार्टर तैयार हो गया। २६ जून १९४५ को यह चार्टर सारी धाराओं के साथ एवं उपधाराओं के साथ प्रकाशित कर दिया गया। भूमिका-रूप में चार्टर के मुख्य उद्देश्य संक्षेप में ये थे—

१—हमारा उद्देश्य भावी सन्तान को युद्ध की विभीषिका से सुरक्षित रखना है। हमने दो भयङ्कर युद्धों को पृथ्वी पर प्रलय मचाते देखा है।

२—मानवता की आन्तरिक मान्यता, स्त्री-पुरुषों के समानाधिकार एवं पृथ्वी के सभी छोटे-बड़े राष्ट्रों की अधिकार-सम्बन्धी समानता में हमें अपना विश्वास एवं सङ्कल्प प्रमाणित करना है।

३—हमें समस्त जन-समाज के न्याय, उन्नति एवं जीवन के उच्च मानदण्ड की सम्भावनाओं का विकास करना है।

इस सङ्घ के विधानानुसार सङ्घ का समस्त कार्य ६ भागों में विभक्त कर दिया गया और प्रत्येक भाग की अधिष्ठात्री एक समिति बना दी गई। ये छः समितियाँ हैं :—

१—साधारण परिषद् (General Assembly)

२—सुरक्षा समिति (Security Council)

३—आर्थिक एवं सामाजिक समिति (Economic and Social Council)

४—संरक्षण समिति (Trusteeship Council)

५—अन्तर्राष्ट्रीय न्याय समिति (Inter National Court of Justice)

६—कार्यकारी निकाय (Secretariat)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक समिति का अपना अलग कार्यक्षेत्र है। कार्य-सञ्चालन के पथ-प्रदर्शन के लिए नियम-उपनियम हैं। किन्तु इन सब के होते हुए भी संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ में कुछ वे अभाव भी समाविष्ट हो गए हैं जो जेनेवा के राष्ट्र-सङ्घ (League of Nations) में थे और जिसके परिणाम-स्वरूप वह निष्क्रिय रहा। संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ, जिस रूप में वह आज है, सिर्फ एक प्लैटफार्म है जहाँ संसार के राष्ट्र एकत्र होकर विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। उसके पास अपनी निजी राजशक्ति या सत्ता नहीं है जो नियमों का पालन करा सके। जेनेवा की राष्ट्र-सङ्घ-परिषद् की भाँति आज का संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ भी अपने राजनीतिक अधिकारों में काफी निर्बल है। भविष्य में मानवता किसी युद्ध के आतङ्क का आखेट न बने—इस उद्देश्य में निषेध का आदेश है जिसे कोई देश बिना किसी शक्ति-तर्जन के मान नहीं सकता। पिछले राष्ट्र-सङ्घ की इसी क्षेत्र में दुर्गति हुई थी। वर्तमान राष्ट्र-सङ्घ की स्थापना सभी राष्ट्रों के समवेत प्रयत्नों का फल है किन्तु चार्टर की घोषणा के बाद करीब-करीब आधे से ज्यादा राष्ट्रों ने जो आश्चर्य एवं निराशा प्रकट की, उससे स्पष्ट हो जाता है कि यदि राष्ट्र-सङ्घ के वर्तमान रूप में आवश्यक परिवर्त्तन नहीं किए गए तो इसका भी वही दुर्भाग्य होगा जो जेनेवा के राष्ट्र-सङ्घ (League of Nations) का हुआ था। विश्व में युद्ध की पुनरावृत्ति न हो ऐसी परिस्थितियाँ कायम करने के लिए यह आवश्यक है कि एक ऐसी राजकीय व्यवस्था प्रतिष्ठित की जाए जिसके नियम सब राष्ट्रों के शासन-सञ्चालन के पथ-प्रदर्शक बनें और जिसका विधान समस्त संयुक्त राष्ट्रों को मान्य हो। साथ ही इन नियमों एवं विधान को लागू करने के लिए तथा अपराधियों को दण्ड देने के लिए एक न्याय-प्रणाली और पुलिस-वर्ग की भी आवश्यकता है। इस विधान एवं नियमों का अभाव संसार की भावी शान्ति के लिए विपत्तिजनक होने के साथ-साथ स्वयं सङ्घ के लिए भी दौर्बल्य एवं दायित्वहीनता का सूचक है। सङ्घ को शासन-शक्ति के कोई अधिकार नहीं दिए गए हैं। भावी युद्ध को दृष्टि में रखकर 'सुरक्षा समिति' का निर्माण अवश्य कर दिया गया है, किन्तु अधिकार एवं नियन्त्रण की हैसियत से वह भी निर्जीव है। राष्ट्र-सङ्घ के नियमों का उल्लङ्घन करनेवाले अपराधियों पर सुरक्षा-समिति किसी प्रकार की कानूनी कार्रवाई नहीं कर सकती। न्याय एवं दण्ड-विधान के नाम पर अन्ताराष्ट्रीय न्याय-परिषद् अवश्य बना दी गई है, किन्तु नियम बनाने एवं अपने न्याय और निर्णयों को कार्यरूप देने के लिए उसको भी किसी प्रकार की सामर्थ्य नहीं दी गई है। 'साधारण परिषद्' (General Assembly) की व्यवस्था भी 'सुरक्षा समिति' से मजबूत नहीं है। प्रकट में 'साधारण परिषद्' के अधिकार बहुत हैं, उसके दायित्व भी विस्तृत हैं; किन्तु उसमें वोट देने की प्रणाली इतनी कूटनीति-पूर्ण है कि उससे लाभ के बजाय हानि की ही अधिक आशङ्का है। जनमत को प्रतिनिधित्व या प्रश्रय की तो इस प्रणाली में कोई गुञ्जायश ही नहीं है। 'परिषद्' में प्रत्येक छोटे एवं बड़े राष्ट्र को एक वोट का है। छोटे एवं बड़े राष्ट्र इस परिधि पर समान इसका अभिप्राय क्या यह है कि चार छोटे-छोटे देश, परिधि में एक सीमित और नगण्य भूभाग है, तीन बड़े-बड़े को, जो पृथ्वी के तीन-चौथाई विस्तार में फैले हुए हैं, 'परिषद्' के किसी प्रस्ताव में पराजित कर दें? चार्टर निर्माताओं ने जो समानता वोट के रूप में दी है उसका अभि यह नहीं है। रूस, ब्रिटेन एवं अमेरिका के प्रतिनिधियों ही चार्टर के बनाने में विधाता का रूप धारण किया है। अपने अलग-अलग प्रभाव-क्षेत्र हैं, जिनके अनुसार संयुक्त के दल बने हैं और ये दल तीन भागों में ही विभक्त हैं। बिना इन तीन बड़े राष्ट्रों की अनुमति एवं आदेश के कोई छोटा राष्ट्र अपने अधिकार का स्वच्छन्दतापूर्वक प्रयोग नहीं सकता है। सुरक्षा-समिति की वोट-प्रणाली में भी यही है। कोई भी एक बड़ा राष्ट्र यदि चाहे तो सारे सङ्घ के को निष्क्रिय कर सकता है।

अपने दैनिक जीवन में भी हम पग-पग पर नियमों विधान की अपेक्षा देखते हैं। छोटे-से गाँव की पञ्चायत बिना नियमों के कार्य नहीं करती—बिना पुलिस-वर्ग किसी प्रकार के दण्ड-विधान की सामर्थ्य के सञ्चालित होती। किन्तु आश्चर्य की बात है कि इस तमाम संसार पञ्चायत को शासन-अधिकार के नाम पर निष्प्राण रक्खा है। अपने न्याय एवं निर्णयों को चरितार्थ करने के लिए पास न तो पुलिस है और न सेना; और जब नियम बनाने उसे आज्ञा ही नहीं है, कोई गुञ्जायश ही उसके लिए नहीं है तो पुलिस और सैन्य-बल की उपयोगिता भी क्या?

यह मानना तो स्पष्टतया सत्य की उपेक्षा होगी कि जिन के सहयोग से यह चार्टर बना है वे इसके इन अभावों से अ हैं। इन अभावों की बुनियाद में कुछ कमजोरियाँ हैं, जि शर्त पर वर्त्तमान में समझौता कर लेने की मूलभूत विव हैं। सैनफ्रांसिस्को में जो प्रतिनिधि एकत्र हुए थे उन सामने युद्ध की ज्वालाएँ थीं, उनमें से अनेक अपने मुल ध्वस्त एवं क्षत-विक्षत देख चुके थे। महासमर का आत दिमाग पर था। इन्हीं विवशताओं में जैसा बन सका, बन गया। किसी ने शिकायत नहीं की, क्योंकि प्रत्येक युद्ध की समाप्ति की कामना कर रहा था। महासमर भयभीत ये प्रतिनिधि अनुभव कर रहे थे कि युद्ध के पर आप-से-आप शान्ति स्थापित हो जाएगी। किन्तु यथार्थताएँ दूसरी हैं। तीसरे महायुद्ध की घटाएँ घिरने हैं और शान्ति का यह नवोदित प्रभात जैसे गोधूलि जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-सङ्घ को शासनाधिकार न देने में जिन विवशताओं और कमजोरियों का हाथ है उनमें सबसे बड़ी है राष्ट्रों में परस्पर अविश्वास, शङ्का और सन्देह का एक ऐसा गहरा आवरण आज राष्ट्र के बीच पड़ा हुआ है जिससे कोई भी अपने समवेत को पहचान सकने में असमर्थ हो गया है। सामूहिक स्वार्थ के लिए व्यक्तिगत स्वार्थों का किसी हद तक परित्याग जरूरी है। राष्ट्र-सङ्घ को शक्ति-समन्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसके अन्तर्गत प्रत्येक राष्ट्र अपने अधिकारों का कुछ अंश राष्ट्र सङ्घ के अर्पण करे। किन्तु अविश्वास और सन्देह की परिस्थितियाँ इसमें बाधक बनती हैं। दूसरे, सबके उद्देश्य भी एक नहीं हैं। विचार-धारा का वैषम्य जिस प्रकार द्वितीय महायुद्ध के पूर्व था उसी प्रकार एवं उससे भी अधिक जटिल रूप में आज भी है। फासिज्म और नाजीवाद के पितामह साम्राज्यवाद और सोवियत रूस के बोल्शेविज्म में राजनीतिक विचार-प्रणाली का जो मतान्तर है एवं अमेरिका के 'डालर-साम्राज्यवाद' ने चीन और मध्यपूर्व में जो शङ्का-आशंकाएँ पैदा कर दी हैं—क्या ये सहयोग और एकमत की द्योतक हैं? एक बात और, युद्धकाल में 'तीन बड़े' जर्मनी और जापान की विजय के लिए एक-दूसरे के आश्रय की आकांक्षा रखते थे। उनका विजय का स्वप्न पारस्परिक सहारे के आधार पर ही पूरा होने जा रहा था। युद्ध-समाप्ति के बाद यह चिन्ता एवं अनुभूति अन्तर्धान हो गई। किसी को किसी के सहारे की चिन्ता न रही। उल्टा, सब यह सोचने लगे कि अपने पड़ोसी की क्षति के बल पर कैसे और कितना लाभ उठाया जाए।

शान्ति खतरे में

युद्ध के अवसान के बाद ही 'संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ' का भी अन्त हो गया—यदि यह निर्णय अधिक कटु है तो यह भी करीब-करीब सच है कि 'संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ' जीवित है और जिस उद्देश्य से उसका निर्माण हुआ था उसकी वह पूर्ति कर रहा है। ऊपर संकेत हो चुका है कि कुछ विवशताएँ और परवशताएँ सङ्घ की राजनीतिक सामर्थ्याभाव का कारण रही हैं। सङ्घ की मृत्यु के बीज भी इन मजबूरियों में ही हैं। रूस, अमेरिका और ब्रिटेन द्वितीय महायुद्ध के प्रमुख विजयी राष्ट्र हैं। युद्धोत्तर विश्व में आज जो आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से प्रभावक्षेत्र कायम किए गए हैं उनके विधाता भी ये तीन विजयी राष्ट्र ही हैं। वस्तुतः आज का समस्त विश्व इन 'तीन बड़ों' की राजनीतिक चालों का शतरञ्ज है। जिस प्रकार तीनों ने समवेत प्रयत्न से द्वितीय महासमर में विजय प्राप्त की उसी प्रकार भावी विश्व की रूपरेखा की बागडोर भी इन तीनों के ही हाथों में है। तीनों राष्ट्र एक सत्य से परिचित भी हैं, किन्तु पारस्परिक स्वार्थों में सङ्घर्ष अनिवार्य होता जा रहा है। सहिष्णुता का जो विस्तृत क्षेत्र युद्ध-काल में तैयार हो गया था वह दिन-प्रति-दिन छोटा होता जा रहा है। इसके कारण हैं। कुछ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परम्पराएँ इन तीन राष्ट्रों की इतनी विभिन्न एवं परस्पर-विरोधिनी हैं कि ऐक्य की पृष्ठभूमि को आधार ही नहीं देतीं। राजनीतिक एवं आर्थिक हित भी सबके समान नहीं हैं। आज तीनों बड़े राष्ट्रों में परस्पर विग्रह और अविश्वास है। एक झीना आवरण-ही तीनों के बीच सन्तुलन कायम किए हुए हैं। यह आवरण युद्ध से थकान का है, जो मिटती जा रही है। 'संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ' की मृत्यु का एलान अभी नहीं हो पाया, उसका कारण यह क्षीण आवरण ही है।

किन्तु रूस, अमेरिका और ब्रिटेन, जिनके हाथों का राष्ट्र-सङ्घ खिलौना मात्र बना हुआ है, आज एकमत नहीं; उनमें विग्रह है। उनके पारस्परिक स्वार्थों में जो सङ्घर्ष है वह सतह पर ही नहीं आ गया, वरन् विश्व-शान्ति के लिए आतङ्कमय हो गया है। पिछले दिनों लंदन में संयुक्त राष्ट्रों की 'सुरक्षा-समिति' की बैठक हुई थी। यह बैठक जितनी असफल रही एवं उसकी कार्रवाई जितनी दयनीय रही, उससे संयुक्त राष्ट्रों की पारस्परिक फूट काफी स्पष्ट हो गई है। मोलोतोव ने इस बैठक में भाग ही नहीं लिया। उनके डिप्टी वाइशिंस्की भी दो रोज देर से पहुँचे और मीटिंग में रूस का प्रतिनिधित्व उसके राजदूत ने किया। यह सब जान-बूझकर किया गया था। रूस को ब्रिटेन और अमेरिका की बाह्य नीति से असन्तोष था। इसी परिषद् में बेविन और वाइशिंस्की के बीच जो द्वन्द्व हुआ उसने सारी परिस्थिति का स्पष्टीकरण कर दिया। यह द्वन्द्व गाली-गलौज तक पहुँच गया था। इतने निम्न धरातल पर रूस और ब्रिटेन के विदेश-मन्त्रियों की इस बहस ने यह प्रकट कर दिया कि तीनों में गहरा मतभेद है जो आसानी से समाप्त नहीं हो सकता। बायर्नेस (अमेरिका का विदेश-मन्त्री) का दृष्टिकोण भी परिस्थिति के सुधार में सहायक नहीं था। ब्रिटेन-रूस के सङ्घर्ष से वह अपना उल्लू सीधा करने की योजनाएँ बना रहा था। उसके अन्तिम भाषण से अमेरिका की कूटनीति सब पर स्पष्ट हो गई और अमेरिका तक में इसकी प्रतिक्रिया इतनी तीव्र हुई कि वालेस को अपना ऐतिहासिक भाषण देना पड़ा और अपना महत्त्वपूर्ण ओहदा छोड़ना पड़ा।

यह परिस्थिति दिन-प्रति-दिन और सङ्गीन होती जा रही है। रूस स्वयं राष्ट्र-सङ्घ के नियमों की अवहेलना कर रहा है। वचन देकर भी वह ईरान से अपनी फौजें न हटाने के लिए कूट-नीति के दाव-पेंच खेल रहा है। ब्रिटेन के सङ्केतों पर दक्षिण अफ्रीका में जो अमानुषिकता हो रही है उससे प्रकट होता है कि राष्ट्रसङ्घ के रक्त में हाथ रँगने की मंशा उसकी भी है। उधर अमेरिका ने फिलिपाइन को जो स्वाधीनता का मखौल दिया एवं चीन और मैसेडोनिया में गृहयुद्ध की परिस्थितियों को जो पोषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे मिल रहा है, वह बताता है कि अमेरिका की दृष्टि में भी संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ के नियम तथा विधान विनोद की बातें हैं।

संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ की प्रत्येक परिषद् में ये विषम परिस्थितियाँ अपना सिर उठाती हैं, किन्तु रूस, अमेरिका और ब्रिटेन उनकी चकाचौंध को बरदाश्त नहीं कर पाते हैं; और जहाँ से इन समस्याओं के सूत्र उठते हैं वहीं समाप्त हो जाते हैं। निर्णय पर पहुँचने का साहस अभी कोई नहीं करते; क्योंकि निर्णय का मतलब है तीसरे महायुद्ध की घोषणा। फूल्टन में विंस्टन चर्चिल ने परोक्ष में युद्ध की घोषणा कर दी थी। प्रेसीडेंट ट्रूमैन भी फूल्टन की मीटिंग में उपस्थित थे। फूल्टन के भाषण में चर्चिल ने स्पष्ट शब्दों में रूस के खिलाफ जिहाद बोला था। राष्ट्र-सङ्घ की हत्या तो उस भाषण के शब्द-शब्द में थी। इसके अतिरिक्त चर्चिल ने ब्रिटेन एवं अमेरिका के राजनीतिज्ञों को सुझाव भी दिए थे कि विश्व में ऐंग्लो-अमेरिकन साम्राज्य की योजना को स्थूल सत्य का रूप दिया जाए एवं ब्रिटेन की सांस्कृतिक नीति "शक्ति-सन्तुलन" को पुनर्जीवित किया जाए। सोवियत रूस में इस भाषण ने बड़ी खलबली मचा दी थी। प्रावदा ने 'की बन्दूक' शीर्षक अग्रलेख लिखकर भाषण के रवैए की निन्दा की थी। किन्तु प्रधान मन्त्री एटली ने भाषण को जिम्मेदार तथा अधिकृत क्षेत्रों से समर्थनहीन बताकर जो किया था उससे परिस्थिति की टूटी शृङ्खला थोड़े समय के फिर जुड़ गई। अब सवाल है, यह परिस्थिति कब तक रहेगी।

रूस, अमेरिका और ब्रिटेन की आपसी फूट का मतलब संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ की तीन टुकड़ों में मृत्यु—अर्थात् भावी स्थापन की समस्त योजनाओं का अपने जन्म में ही अवसान। आज की राजनीतिक परिस्थिति यही है। विश्व-युद्ध का खतरा बलवान् होता जा रहा है। यदि इन तीन राष्ट्रों अपने स्वार्थों को निमन्त्रित नहीं किया, पारस्परिक सहि के दायरे को गहरा और विस्तीर्ण नहीं बनाया तो तीसरा युद्ध अगले दस वर्ष के पूर्व ही होगा। अमेरिका के राजनै भविष्यवक्ता तो कह रहे हैं कि शायद दुनिया की शान्ति दिसम्बर (१९४७) न देख सके।

—

माँ की आज्ञा*

कुँवर आर्पी

(१)

नीलकण्ठ की पुकार पर उसकी माँ ने पूजा पर से उठकर द्वार खोला; किन्तु उसका मुँह देख और आज स्वभाव के प्रतिकूल विरुद्ध चुपचाप जाते देखकर उसकी उँगलियों के बीच माला की गति रुक गई।

द्वार बन्द करते-करते वह सोचने लगी कि मेरा लाल रोज जब घर आता था तो खिलखिलाहट के फूल बिखेरता हुआ; आज वह चुपचाप कतराकर क्यों चला गया? आज उसका मुँह इतना उतरा हुआ क्यों है?—और वह पुनः पूजा पर न जाकर बरामदे में जा पहुँची। जहाँ तख्त पर बैठा नीलकण्ठ भारतीय स्वातन्त्र्य सङ्घ के मुखपत्र, 'आजाद हिन्द' के पृष्ठ उलट-पलट रहा था। पास आकर स्नेहमिश्रित स्वर में उसने पूछा—"आज तुम उदास क्यों हो, नीलू?"

नीलकण्ठ कुछ न बोला।

माँ की ममता ने फिर पूछा—"कोई बात हो गई क्या?" और नीलकण्ठ की आँखों से आँसू फूट पड़े, बड़े-बड़े जैसे शहद के बूँद।

माँ ने उन्हें पोंछते हुए भर आए कण्ठ से पुनः पूछा—"बोलो न, क्या हुआ, मेरे लाल?"

"माँ! तूने मुझे अपनी छाती का दूध पिलाया या अँगरेजी डिब्बों का?"—बड़ी देर बाद नीलकण्ठ बोला किन्तु शब्दों से जैसे लपटें निकल रही हों।

बुढ़िया माँ प्रतिमा-सी गुमसुम देखती रह गई।

"नहीं तो", नीलकण्ठ ने पुनः कहा—"मेरे खून का इतना अपमान क्यों हुआ?"

"खून का अपमान?" विनम्र माँ ने पूछा—"मुझे समझा कर कह, बेटा, तभी तो मैं समझ पाऊँगी।"

नीलकण्ठ ने बतलाया—"आज आजाद हिन्द सरकार 'बोर्ड आफ एक्शन' उन नागरिकों को भी देश की सेवा अवसर दे रहा है जो स्वेच्छा से फौज में भर्ती होना चाहते हैं। पिछली बार जब जुबली हाल में नेता जी ने था—'तुम मुझे खून दो; मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' तब ने भी अपने रक्त से हस्ताक्षर देते हुए मुझसे कहा था तुम भी दो। किन्तु उस दिन हजारों की भीड़ में नलिनी स्त्री होने के कारण पहुँच गई थी, मैं न पहुँच सका था। मैं सबेरे की पंक्ति में खड़ा था। नेता जी स्वयं हर एक प्रतिज्ञापत्र ले रहे थे। आज हर एक प्रार्थी को उन्हीं के अपने रक्त से हस्ताक्षर करने थे। मेरी भी बारी आई, हस्ताक्षर करके जब मैं अपना प्रतिज्ञापत्र उन्हें देने लगा तब उन्होंने मेरी ओर देखकर न जाने क्यों यह पूछा, 'तुम्हारे परिवार

* लेखक की आजाद हिन्द पर लिखी कहानियों के संग्रह 'दिल्ली की राह' (अप्रकाशित) से। अनुवाद-सहित सर्वाधिकार सुरक्षित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालनेवाला कौन है?' मैंने उत्तर दिया—"श्रीमान् जी स्वयं
मैं।" "तुम"—उन्हें मेरी उम्र देखकर विस्मय हुआ, पूछा—
"कितने व्यक्ति हैं तुम्हारे परिवार में?" "एक विधवा माँ और
है बस।" उसी क्षण उन्होंने मेरा प्रतिज्ञापत्र लौटा दिया।
कहा—"पहले अपनी माँ की आज्ञा ले आओ। तुम्हारे लिए
उसकी आज्ञा मेरी आज्ञा से बड़ी है।" कहते-कहते नीलकण्ठ
रुक गया। पैर के नाखून से पृथ्वी को कुरेदते-कुरेदते जब
उसने माँ की ओर अपनी भीगी पलकें उठाईं तो देखा कि माँ
आनन्दविभोर-सी मुस्करा रही है।

नीलकण्ठ को अपनी ओर देखते ही वह उठते हुए बोली—
"बस! इतनी-सी बात के लिए तू इतना उदास था, रो रहा
था?" फिर उसका मस्तक चूमकर कहा—"आज मुझे वास्तव
में गर्व हो रहा है कि मेरे शरीर के दूध से तेरी धमनियों में खून
बना है, पानी नहीं। और उस खून का अपमान नेता जी क्या
स्वयं विधाता भी नहीं कर सकते। तू बैठ, मैं अभी आज्ञा
लिखे लाती हूँ।" और वह अपनी कोठरी में चली गई, ऐसी
प्रसन्न, जैसे कि देवकी ने जान लिया हो कि उसने एक साधारण
शिशु को नहीं स्वयं विधाता को जना है। और जब उसकी
माँ ने एक कागज पर लिखकर आज्ञा उसे लाकर दी तब उसने
आतुर हाथों से उसे खोलकर पढ़ा—

"नेता जी!

मैं आपसे पूछती हूँ कि कौन ऐसी माँ होगी जो चालीस
करोड़ शृङ्खलाबद्ध पुत्रोंवाली माँ की स्वतन्त्रता के लिए अपने पुत्र
को अर्पण न करके अपनी कोख को कलङ्कित करेगी? आज
हमारे इस स्वातन्त्र्य-यज्ञ के समय हरएक माँ जानती है कि
उसकी आज्ञा से कहीं महान् नेता जी की आज्ञा है। मैं अपने
पुत्र—नीलकण्ठ—को यह आज्ञा देते गौरव अनुभव करती हूँ
कि वह आपमें पूर्ण विश्वास रखकर देश के लिए अपने प्राणों
का मोह न करे।—नीलकण्ठ की माँ।"

नीलकण्ठ की छाती पढ़ते-पढ़ते गौरव और गुमान से
फूलने लगी, और पढ़ चुकने के बाद ही बैठकर वह अपनी दोनों
बाँहों में अपनी माँ के पैर फँसाकर ऊपर देखते हुए केवल 'मेरी
अच्छी माँ' भर कह सका।

उसके रेशम-जैसे अस्त-व्यस्त बालों पर हाथ फिराती हुई
माँ बोली—"बेटा!"

"माँ! मेरे जाने से तुम्हें दुःख तो नहीं हो रहा है?"

"दुःख मुझे बहुत दिनों से हो रहा था और थोड़ी देर पहले
तक था। मैं सुना करती थी कि आज नलिनी झाँसी की
रानी रेजिमेंट में भर्ती हो गई, कल वह अपना नन्हा-सा पुलपुल
बाल-सेना में भर्ती हो गया, अजीमुल्ला, गोविन्द, जाफर,
मनोहर सारा पड़ोस ही समझो, किस-किसका नाम गिनाऊँ!
मैं सुनती थी और सोचा करती थी कि मेरी कोख में कालिख
पोतकर ही इसे निकलना था। किन्तु आज मैं बहुत प्रसन्न
हूँ, नीलू! माँ का ऋण पुत्र जन्म-जन्मान्तरों तक नहीं चुका
पाता किन्तु आज मैं तेरी ऋणी हो गई हूँ। तूने मेरी कोख की
लाज रक्खी, तूने मेरे दूध की आन रक्खी।"—कहती-कहती
वह भी पृथ्वी पर बैठे नीलकण्ठ के पास बैठ गई और दोनों
हाथों की उँगलियाँ उलटकर उसके मस्तक के दोनों ओर
घुमाकर उसने उसकी बलैयाँ ले लीं।

किन्तु 'माँ के ऋण' की बात सुनकर नीलकण्ठ माँ की कोई
उचित व्यवस्था करने की बात सोचने लगा, और जब इतना
शीघ्र कोई हल ढूँढ़े न मिला तो उसने पूछा—"मेरे जाने
के बाद तुम्हारे खाने-पीने की क्या व्यवस्था होगी, माँ?"

"तू इसकी चिन्ता न कर। देनेवाला पत्थर में रहनेवाले
कीड़े का भी पेट भरता है।"

नीलकण्ठ चुपचाप बैठा रहा।

"क्या सोच रहा है अब? मेरी बात?" माँ ने पूछा—
"मेरी तरफ से चिन्ता करके मुझे नरक में न घसीट, नीलू! जा
देख, सूरज डूब रहा है, शायद नेता जी अब भर्ती बन्द कर दें
जल्दी कर।"

नीलकण्ठ ने उठकर माँ के चरणों पर सर रक्खा और
डबडबाई आँखों से देखते हुए कहा—"माँ! यदि मैं लौट
रहूँ तो जो गोद में आँसू टपककर गिरें उसे ही अपना नीर
समझकर केवल एक वरदान देना कि तुम्हीं, तुम्हीं माँ! मेरी
जन्म-जन्मान्तरों तक माँ हो।

माँ की भी आँखें छलछला आईं। नीलकण्ठ चलने
लगा, पीछे-पीछे वह भी द्वार तक पहुँचाने के लिए चली।
सहसा वह लौटकर खड़ा हो गया। बोला—"नहीं, नहीं; यह
कभी सम्भव ही नहीं है।"

"क्या?"—क्षण भर पूर्व की ममता से भीगी माँ उग्र हो
उठी—"क्या अब तू नहीं जाएगा?"

"नहीं, नेता जी तुम्हारी इस पर्ची को कभी स्वीकार न करेंगे
क्या वे नहीं जानते कि तुम्हारे ऐसा लिख देने से तुम्हें कोई
दूसरा पुत्र तो मिल न गया, या इस बुढ़ापे में सेवा के लिए...
कहते-कहते उसने वह पर्ची फाड़कर फेंक दी।

"क्या वे माताएँ जिनके दर्जनों पुत्र होते हैं, बुढ़ापे में
सुखी ही होती हैं! ये तेरी बे सिर-पैर की बातें हैं। यह
नहीं, तेरी कायरता दलीलें कर रही है।"

"माँ!"—नीलकण्ठ चीख उठा।

क्षण भर में ही पूर्ववत् स्नेह से माँ बोली—"बेटा
जैसे उसका एकदम स्वभाव बदल गया हो, जैसे न जाने क्या
सोचकर उसने कोई समाधान पा लिया हो—"वास्तव में नेता
जी उसे स्वीकार न करते। हमारे नेता जी देवता हैं, देवता
जैसे अन्तर्यामी भी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी समय पड़ोस की रासो ब्राह्मणी ने बाहर द्वार पर नीलकण्ठ को पुकारा—"मास्टरजी! ओ मास्टर बाबू! द्वार खोलो।"

"देखो तो बेटा! रासो है क्या?"

नीलकण्ठ ने जो द्वार खोला तो वह बहरी ब्राह्मणी बस अपनी ही कहने लगी—"चलो, जल्दी चलकर मालो को रोक लो मास्टर बाबू! न जाने किस मुँहजले से सुन आई है कि फौज में औरतें भी भरती हो रही हैं। अब भला, बोलो न नीलू की माँ, कि घर-गिरस्ती कौन सम्हालेगा, सुरग के देवता?" कुछ क्षण रुककर उसने दोनों के मुँहों को देखा, वे कुछ अजीब-अजीब-से थे, रोज-जैसे नहीं।

इस रुकने के अनन्तर भी जब कोई कुछ न बोला, तब वह स्वयं कहने लगी—"लाख समझाया कि बेटी, तुझे हिस्टीरिया के दौरे आते हैं, तू फौज में भर्ती होने के नाकाबिल है, लेकिन मानती ही नहीं, जैसे भूत सवार हो सर पर। बेटा! चल के समझा दो। तुम्हारी ही बात वह सबसे ज्यादा मानती है।"

"जाओ नीलू!" नीलकण्ठ की माँ ने कहा—"उसे समझा देना कि तू इस योग्य नहीं है। हिस्टीरिया के रोग-वाली स्त्री को कर्नल लक्ष्मी लेंगी ही नहीं।" और हाथ के सङ्केत से रासो को समझा दिया कि हाँ, जा रहा है।

रासो चुप हो रही। नीलकण्ठ अनमना-सा चलने लगा। "लौट के जब तू आएगा," नीलकण्ठ की माँ ने उससे कहा—"तुझे दूसरी आज्ञा दे दूँगी जिसे नेता जी कभी अस्वीकार न कर सकेंगे।"

"सच?" विस्मय से नीलकण्ठ ने पूछा।

"हाँ!" मुस्कराकर माँ ने कहा—"किन्तु वह जरा भारी होगी, नेता जी तक लाद के ले जा सकेगा?"

"ऐसे" नीलकण्ठ ने अँगूठे को तर्जनी से मिलाकर उठाते हुए कहा—"कितनी भारी होगी!"

"अच्छा, जाओ-जाओ! और देखो उसे सम्हालकर ले जाना; कहीं ठोकर-ओकर न लग जाए।" कहते-कहते उसने नीलकण्ठ और रासो के निकल जाने के बाद द्वार बन्द कर लिया, और जब वे दोनों उसकी ओर पीठ करके जाने लगे, द्वार को पुनः खोलकर वह खड़ी देखती रही जब तक कि नीलकण्ठ और रासो आँखों से ओझल न हो गए।

(२)

सन्ध्या की रक्तिम किरणें दिन भर उड़े-थके पक्षियों के समान अपने पङ्ख समेटकर ऊँचे शाल के पेड़ों की चोटियों पर आ बैठी थीं; मछलियों के शिकार के लिए समुद्र में दूर तक चली गई नावें भी तट की ओर लौट पड़ीं, मञ्जिल के पास पहुँच गए पथिकों के पद भी जल्दी-जल्दी उठने लगे, किन्तु उस जन-समुद्र में कोई आन्दोलन न था—न ज्वार-भाटा, न साइक्लोन, केवल थोड़ी-थोड़ी देर बाद जैसे समुद्र में एक लहरों का काफिला-सा झूमकर चलता है, नेता जी के एक प्रार्थी से प्रार्थना लेने के उपरान्त जब वक्राकार सारी पंक्ति एक कदम बढ़ती तो लगता कि जन-समुद्र में लहरों का काफिला जा रहा हो; या किसी महान् अजगर ने करवट बदली हो। एक फुङ्कार से शत्रु के मुँह स्याह पड़ जाएँ, ऐसा जहरीला अजगर।

और जब नीलकण्ठ अपनी पीठ पर एक बोरा लादे पहुँचा, उसे देखकर विस्मय हुआ कि प्रार्थियों की संख्या के स्थान में पहले से लगभग चौगुनी हो गई है। यदि वह में सबसे बाद खड़ा होता है तो सम्भवतः नेता जी तक पहुँचने में सप्ताहों लग जाएँगे। वह एक दूसरे से जुड़ी व्यक्तियों समानान्तर पंक्तियों के बीच से चुपचाप चल दिया। उसे प्रकार पीठ पर बोरा लादे निर्भीक चले आते देखकर एक पंक्ति से दूसरे को जोड़नेवाले व्यक्ति हट गए—सामने सीधी राह नेता जी के मञ्च तक।

एक प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र लेते हुए नेता जी ने उसकी ओर देखा और उनकी बड़ी-बड़ी आँखें चश्मे को भेदकर मानो पूछने लगीं—क्या बात है? तुम नियम का उल्लङ्घन कर के चले आ रहे हो? तुम्हारे इस बोरे में क्या है? कोई दान लाए हो क्या?

किन्तु जब नीलकण्ठ ने कहा—"ले आया नेता जी।"

"क्या?"—साधारण विस्मय से नेताजी ने पूछा।

"आपने आज्ञा मँगाई थी मेरी माँ की; सो उसे आया हूँ।"

"आज्ञा? इस बोरे में आज्ञा है?" नेता जी हँसे—"इतनी भारी?"

उनके सारे अङ्गरक्षक, मन्त्री, सलाहकार सब विस्मय-मिश्रित उपहास से हँस पड़े। प्रार्थियों में भी फुसफुसाहट होने लगी—पागल है ···बोरे में आज्ञा लाया है···जैसे चावल गेहूँ हों···पागल···।

"जी।" नीलकण्ठ ने कहा, और सावधानी से बोरे को उतारकर पृथ्वी पर रक्खा। आँसुओं-भरी आँखों से देखते हुए काँपते हाथों से उसने उस बोरे को खोला—उसमें उसकी माँ का शव था।

नेता जी विस्मय में डूबे-डूबे-से मञ्च पर से उतर आए। स्वयं हाथों से बोरे को खींचकर अलग किया—देखा, वृद्धा का वक्षःस्थल लाल खून से लथ-पथ है। सक्रोध नीलकण्ठ की ओर देखकर पूछा—"क्या मतलब तुम्हारा?"

"श्रीमान् जी!" नीलकण्ठ ने बतलाया—"मैंने अपनी इस माँ से आजाद हिन्द फौज में भर्ती होने के लिए आपके आदेशानुसार आज्ञा माँगी और न जाने कितनी प्रसन्नता से लिखकर इन्होंने मुझे दी। किन्तु मेरे यह कहने पर आप उसे स्वीकार न करेंगे, ये बोलीं, अच्छा दूसरी आज्ञा दे दूँगी जिसे नेता जी कभी अस्वीकार न करेंगे। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रातों ब्राह्मणी के घर से उसकी हिस्टीरिया की रोगिणी
को समझाकर लौटा, मैंने माँ को पेट तक इस बोरे
चढ़ाये मृत पाया, मेरे मामा की बन्दूक उनकी बगल में
थी। नेताजी! मैं अपनी माँ की उस आज्ञा को
कर लाया हूँ।"

नेताजी ने उस माँ को नतमस्तक हो प्रणाम किया और
नीलकण्ठ के सर पर स्नेह से हाथ फिराकर बोले—"ऐसी माँ
आज्ञा को देवता भी अस्वीकार नहीं कर सकते।"

बिना कुछ बोले, उस नीरव जन-समुद्र के बीच से मञ्च पर
बढ़ते-चढ़ते नेताजी उस विस्तृत जन-समुद्र को सम्बोधन कर
बोले—"आज मुझे अनुभव हुआ कि हमारा व्रत सफल होगा,
हमारे सपने पूरे होंगे। जिस देश की माताएँ अपने पुत्रों को
इस प्रकार आज्ञाएँ दे सकें उस देश को दुनिया की कोई भी
शक्ति अधिक दिनों गुलाम बनाए नहीं रख सकती।

"हम आज का अपना कार्य स्थगित करके पहले इस वन्दनीय माँ का अभिनन्दन करेंगे।"

भाषण समाप्त होते ही काले कपड़ों से आच्छादित ड्रम बजाए गए। वैण्ड के रव के साथ स्वयं नेताजी ने और सारे उपस्थित समुदाय ने उस माँ को प्रणाम किया।

——

हिन्दी कवियों का प्रकृति-वर्णन

श्री प्रभाकर माचवे, एम० ए०, साहित्य-रत्न

चिरकाल से प्रकृति केवल आलम्बन उद्दीपन जैसे साधन रूप नहीं, अपितु काव्य का साध्य भी रही है। कई अलंकारशास्त्री तो इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि प्रकृति काव्य की आत्मा है। अँगरेजी कविता में रोमैंटिक काल के आरम्भ में वर्ड्सवर्थ और कोलरिज के बीच में इस सम्बन्ध में बड़ा विवाद उपस्थित हुआ था। वर्ड्सवर्थ का विश्वास था कि प्रकृति परमात्मा का ही व्यक्त रूप है। अतः प्रकृति-पूजा परमात्म-पूजा है। प्रकृति के लिए प्रकृति-सिद्धान्त केवल वर्ड्सवर्थ ने ही नहीं, किन्तु उनके पश्चात् रस्किन और टाल्सटाय ने भी आधी-आधी शताब्दी के अन्तर से प्रतिपादित किया था। कोलरिज का यह कहना था कि कविता केवल प्रकृति का प्रतिबिम्ब नहीं हो सकती; उसमें मानवीय कल्पना की पुट आवश्यक है। कवि प्रकृति का दर्शन करता है। उसके मन में भाव उठते हैं। उन्हें ज्यों-का-त्यों शब्दों से बाँध दे इस प्रकार का आग्रह वर्ड्सवर्थ का है; कोलरिज उन भावों का परिष्कार आवश्यक समझता है। आगे चलकर फ्रेंच और रूसी साहित्य में प्रकृति-नीति नामक कलाकारों का एक वर्ग निर्मित हो गया जो कि नीति-को कला के बन्धन कला के लिए अस्वीकार करता था। उनके मत सुन्दर में शिवं निहित है। दूसरा पक्ष उन आदर्शवादियों का है जो सदा से कला को धर्म, नीति आदि बन्धनों से बँधा हुआ कहते हैं। उनके मत से शिवं प्रधान है सुन्दरं गौण। इन आदर्शवादियों के निकट कला केवल प्रतिबिम्ब नहीं किन्तु एक विशिष्ट दृष्टिकोण से उपस्थित किया हुआ प्रतिपरावर्तन (reaction) है।

अ—(१) अपभ्रंश काल में कविता का उपयोग सूत्र और मन्त्र के रूप में ही अधिक होता था। तन्त्रवाद में अपने मन्त्र के लिए प्राकृत को 'गाथा सप्तशती' की परम्परा सिद्धों ने ही निजाई है। उदाहरणार्थ :

काआ तरुवर पञ्च विडाल
चञ्चल चीर पैठो काल

× × ×

प्राकृतिक नियमों के विरोध में बात कहने से कोई रहस्यमयी भावना हम व्यक्त कर रहे हैं ऐसा उनका विश्वास था।

बलद विआएल

× × ×

गङ्गा जउना मांझे वहई

× × ×

इस प्रकार का प्राकृतिक वर्णन सिद्धों की कविताओं में मिलता है। हेमचन्द्र, सोमप्रभ-सूरी आदि ने बड़ी यथार्थवादी उपमाएँ दी हैं यद्यपि उस काल की पद्धति के अनुसार कुछ अतिशयोक्ति अवश्य आ गई है।

उदाहरणार्थ :—हेमचन्द्र का विरहिणी का दिन गिनने से अँगुली छीजना या सोमप्रभ का बिन पानी का मछली का उदाहरण।

(२) वीरगाथा काल :—वीरगाथा काल के मुख्य कवि भाट और चारण थे। उनका मुख्य कार्य अपने आश्रयदाता का गुण वर्णन करना ही था। फलतः काव्य के अन्य कोमल पक्ष यथा प्रकृति वर्णन आदि की ओर उनका ध्यान कम गया। रूढ़ प्राकृतिक सङ्केत उपमा के रूप में आते रहते हैं। उदाहरणार्थ :—चन्द, पृथ्वीराज रासो में 'पद्मावती समय' में नायिका का वर्णन षोडश कला से बने चन्द्रमा के सहारे करता है और वही कमल, भ्रमर, खञ्जन, मृग की उपमा आँखों को देता है। वह कहता है कि विधाता ने पद्मावती को कमल आदि तथा 'हीर, कीर, अरु बिम्ब, मोति, नख सिख अहि धुदिय'। कभी-कभी बारहमासा अथवा ऋतु-वर्णन के रूप में प्रकृति का वर्णन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग्यो राजा मास वसन्त
गढ़माहिं गूढी ऊछली।
—बीसलदेव रासो

जगनिक के आल्हा में बहुत ही कम प्राकृतिक वर्णन है अधिकांश कथा विशेष चलती है।

(३) वीरगाथाकाल से विद्यापति तक कविता ने अँगड़ाई-सी ली। जो कविता वीरों के रणवाद्य के साथ-साथ डंके की चोट चलाती थी, वही अन्तःपुर की काम-केलि के समय कोमल-कान्त पदावली गुनगुनाने लगी। अमीर खुसरो की पहेलियाँ इस संक्रमण-काल का अच्छा सङ्केत है। विद्यापति ने हिन्दी में जयदेव की गीति-काव्य-परम्परा को अवतरित किया। उनकी प्रकृति वृन्दावन, यमुना, निकुञ्ज, कदम, गौएँ, पनिहारनी, गोपी इन्हीं तक सीमित है। उनके प्रकृति-वर्णनों में भी पर्याप्त मात्रा में रूढ़िवादिता और पुनरावृत्ति के दोष मिलते हैं। फिर भी मैथिल कोकिल ने एक नवीन प्रकार की अभिव्यक्ति हिन्दी में उपस्थित की। उदाहरणार्थ :—

फुटल कुसुम सकल वन अन्त
मिलत अब सखि समय वसन्त

× × ×

कानेन कानेन कुन्द फूल
पलटि पलटि ताहि भँवर भूल

× × ×

सिसिर समय वहि बहल वसन्त
जरजँहु घर नहीं आयल कन्त।

× × × आदि

ऋतु-वर्णन में विद्यापति ने अधिकांश विरोध का आश्रय लिया है। विरोध का अर्थ यह है कि प्रकृति आनन्दमग्ना है तो राधा विरह-व्यथिता। गीति-काव्य की आकारगत लघुता के कारण इस प्रकार का विरोध बहुत आवश्यक होता है। विद्यापति की दूसरी विशेषता थोड़े शब्दों में बहुत बड़ा चित्र उपस्थित करने में है। प्रकृति विद्यापति के लिए चित्रपटी है जो कि रङ्गमञ्च की यवनिका की भाँति राधाकृष्ण की प्रेम-लीला को पृष्ठभूमि के रूप में सदा उपस्थित रहती है। उदाहरणार्थ :—

बसन्तक रजनी चांदक तेज।
अथवा ईं भर बादर, माँह भादर
सून मन्दिर मोर।

(४) कबीर :—कबीर फक्कड़ साधु कवि हैं। उनकी निर्गुणी वाणी में प्रकृति के नर्तन के लिए विशेष स्थान नहीं; फिर भी उन्होंने कहीं-कहीं बड़ी दूर की कौड़ी लाने का प्रयत्न किया। उदाहरणार्थ :—

दोहा—साँझ भई दिन आ थम्यो,
चकवी दीन्ही रोय।
चल चकवा वा देस में,
जँह रैण कदी नहीं होय॥

× × ×

भींजे दास कबीर॥

प्रकृति का उपयोग कबीरदास जी ने अपने दार्शनिक को स्पष्ट करने के लिए रूपक के रूप में दिया है। णार्थ :—काहे री नलिनी कुम्हलानी।
तोरे नाल सरोवर पानी॥

× × ×

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है, बाहिर भीतर पानी
फूटा कुम्भ, जल-जल ही समाना यह तत्त्व कथौ गियानी

× × ×

अन्य निर्गुनिए कवियों ने भी इस प्रकार प्रकृति का वादोन्मुख उपयोग किया है, जिसका कि आधुनिक पुनरुत्थान रवीन्द्रनाथ और महादेवी ने भी किया। पद प्रसिद्ध है :—

प्रभुजी तुम दीपक हम बाती
जाकी ज्योति बरै दिन राती
प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी
जाकी अँग अँग बास समानी
प्रभुजी तुम घन-बन हम मोरा
जैसे चितवत चन्द चकोरा
प्रभुजी तुम मोती हम धागा
जैसे सोनहि मिलत सुहागा।—रैदास

धर्मदास के पद की ये पंक्तियाँ देखिए—

झरि लागे महलिया, गगन गहराय।—धर्मदास
खन गरजै, खन बिजुरी चमकै, लहरि उठै सोभा बरनि न जा

(५) जायसी :—जायसी के पद्मावत में नागमती के वर्णन में प्रकृति-वर्णन का समावेश हुआ है। वैसे तो तोता को दूत बनाने के कारण जायसी की पूरी कविता प्रकृति की अन्तर्धारा मिलती है। परन्तु इनका प्रकृति केवल पारम्परिक रूढ़िवादिता को निभानेवाला ही नहीं कई स्थानों पर वह बहुत ही अत्युक्तिपूर्ण हो गया है। उदाहरण देखिए :—

ससि मुख अङ्ग मलय गिरि बासा।
नागिनि झाँपि लीन चहुँ पासा॥

× × ×

ओनई धरा परी जग छाँहा।
ससि के सरन लीन जनु राहा॥

× × ×

"पद्मिनी के रूप-वर्णन में जायसी ने कहीं-कहीं उस सौन्दर्य की ओर, जिसके विरह में यह सारी सृष्टि व्याकुल है, बड़े ही सुन्दर सङ्केत किए हैं।"

(पं० रामचन्द्र शुक्ल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी]

उसमान प्रेम-मार्गी शाखा के एक अन्य कवि हैं जिन्होंने चित्रावली' में जोगी ढूँढन खण्ड में देश-देश का वर्णन किया यही परम्परा आगे देव कवि ने अपने एक काव्य-ग्रन्थ में ई है। उसमान विरह-वर्णन के अन्दर षट्ऋतुओं का न करते हैं।

तु बसंत नौतन बन फूला। जँह-तँह भौंर कुसुम रँग भूला।
हि कहाँ सो भँवर हमारा। जेहिं बिनु बसत बसंत उजारा॥

(६) सूरदास :—सूर ने प्रकृति को अन्तश्चक्षुओं से ही खा। परिणामतः उनके प्रकृति-वर्णनों में पुनरुक्तियाँ बहुत हैं। ण के बाल-रूप-वर्णन में वृन्दावन के करील-कुञ्जों में सूर की णी ठिठक जाती है। राधाकृष्ण के रास-वर्णन में—

'अद्भुत एक अनूपम बाग'

रूप में वह रूपकों की झड़ी लगा देती है, शृङ्गार में आत्म खोंसा जाता है, रसानुकूल प्रकृति-वर्णन अधिक सूक्ष्म जाता है जिसका सर्वोत्तम रूप भ्रमर-गीत में मिलता है।

दाहरणार्थ :—प्रकृति को सूर भयानक रस में वर्णन करते हैं :—

झहरात झहरात दावानल आयो।
चहुँ ओर करि सोर अन्दोर बन धरनि-आकास चहुँ पास छायो।

× × ×

करुण रस में—मधुबन तुम कत रहत हरे

× × ×

बरु ये बदराऊ बरसन आए।

× × ×

बहुत दिन जीओ पपीहा प्यारे

× × ×

देखियत कालिन्दी अति कारी।

× × ×

हमारे माई मोरऊ बैर परे।

आदि

क्षेप में सूरदास के प्रकृति-वर्णन का क्षेत्र आदि यद्यपि मित है, तुलसी की तरह बहुत विस्तृत नहीं है, फिर भी उसी ना के भीतर सूर ने अद्भुत रस सृष्टि निर्मित की है। गोचारण रूप जैसा उत्कृष्ट उदाहरण हिन्दी कविता में कहीं नहीं लेगा। शृङ्गार और वात्सल्य के क्षेत्र में सूर-अद्वितीय हैं। का प्रकृति-वर्णन भी वहीं विशेष प्रकृत हुआ है जहाँ कि ार के संयोग और विप्रलम्भ दोनों पक्ष एक साथ प्रकट है।

पिया बिन साँपिन काली रात।
कबहुँ जामिनी होति जुन्हैया डसि उलटी ह्वै जात॥

× × ×

प्रकृति के उपमान भी कई स्थलों पर बहुत सुन्दर रूप से

मेरे नयना विरह की बेल बई।
सींचत नयन नीर के सजनी मूल पतार गई॥

× × ×

(७) तुलसी :—तुलसीदास का क्षेत्र व्यापक होने के कारण उनका प्रकृति-चित्रण भी अनेक प्रकार का मिलता है। कहीं तो वह वर्णन शब्द-सौन्दर्य-प्रधान है और कहीं वस्तुओं का परिगणन मात्र है। उदाहरण के लिए चित्रकूट-वर्णन ले लीजिए। आरम्भिक रचनाओं के प्रकृति-वर्णन बहुत रूढ़िवादी हैं। कहीं-कहीं उपमा, उत्प्रेक्षा और दृष्टान्त का भी सहारा लिया गया है। सूर की अपेक्षा तुलसी का प्रकृति-वर्णन अधिक वस्तुनिष्ठ है। सूर का आत्मनिष्ठ है। तुलसी ने प्रकृति को सदा अपने से बाहर माना है, सूर प्रकृति के साथ घुल-मिल गए हैं। सूर मीरा की तरह—

'बादल देख झरी री मैं बादल देख झरी'

जैसे भाव विभोर होकर प्रकृति से प्रश्न पूछते हैं—

'मधुबन तुम कत रहत हरे'

परन्तु तुलसी के लिए

'सियाराममय सब जग जानी'

होने के कारण चित्रकूट अथवा पम्पासरोवर या लङ्का की अशोक वाटिका का वर्णन भक्ति-भावना से ओत-प्रोत है।

'अवचित चेत चित्रकूट ही चलि'

क्यों? तो

भूमि विलोकि राम पद अङ्कित।
बन बिलोकि रघुवर बिहार थल॥

पावस का वर्णन करते हुए वे गीतावली में कहते हैं—मन्द-मन्द गरजते हुए काले बादल गेरू से रँगे शृङ्गों से लगे दिखाई देते हैं और शिखरस्पर्शी घटाओं से मिली श्वेत बक-पंक्ति दिखाई दे रही है। इसके आगे उन्होंने उपमाओं में अवतारों का उल्लेख किया है :—वराह, विराट्, राम। तुलसीदासजी का प्राकृति-वर्णन सूक्ष्म है उसमें नाद-माधुर्य बहुत है। उदाहरणार्थ :—

पन बानक निर्झर अलि उपङ्ग।
बोलत पारावत मानो डफ मृदङ्ग॥
गायक सुक, कोकिल, झिल्लि ताल।
नाचत बहु भाँति, बरहि मराल॥

इस प्रकार कई उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त तुलसी में मिलते हैं। वे केशव की भाँति केवल रीति-ग्रन्थों के रूढ़ वर्णन मात्र नहीं अपनाते, बल्कि अपनी आँखों से प्रकृति को देखकर नए-नए कल्पना-जाल बिछाते हैं। कवितावली में एक प्रसङ्ग में प्राची को पिशाचिनी बनाया है और वीभत्स रस में भी प्रकृति का वर्णन उपस्थित किया गया है। करुण रस का सर्वोत्तम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोरा' आदि पंक्तियों में किया है। शृङ्गार रस में प्रकृति-वर्णन जनकवाटिका प्रसङ्ग में आया है। परन्तु तुलसी का मुख्य रस भक्ति रस है। इसी से अभिभूत उनके समस्त प्रकृति-वर्णन हैं।

(८) केशव :—केशव रीति-काल की उपज हैं अतः उनका प्रकृति-वर्णन भी उक्ति-चमत्कार पर आश्रित है। कविप्रिया में केशव उन वस्तुओं की तालिका देते हैं जिनका वर्णन कवि को करना ही चाहिए—

देश, नगर, बन, बाग, गिरि, आश्रम, सरिता, ताल।
रवि, शशि, सागर, भूमि के भूषण ऋतु सब काल॥

"उनका प्रकृति के प्रति कोई अनुराग न था। केवल आलम्बन रूप में वे प्रकृति को लाए हैं। प्रकृति की रमणीयता में उनका मन मग्न नहीं होता। वे अप्रस्तुतों की कौतूहलपूर्ण योजना में लगे रहते हैं।"

'केशव की काव्य-कला'

केशव के प्रकृति-वर्णन में निम्न दोष हैं—

(१) प्रकृति से अधिक वे शब्दों के फेर में अधिक पड़ते हैं।

(२) अलङ्कार का चमत्कार दिखाने की ओर उनकी पवित्र प्रकृति अधिक है।

(३) सरयू, गोदावरी और बेतवा नदियों का वर्णन उन्होंने किया है, परन्तु वे तीनों वर्णन एक-से हैं।

(४) समुद्र का वर्णन करते समय वे अपना ब्रह्मज्ञान दिखाने लगते हैं।

(५) सूर्योदय के वर्णन में शृङ्गार और बीभत्स का एक साथ ही उल्लेख किया है।

(६) षट् ऋतुओं के वर्णन में भी उपमा की ओर अधिक ध्यान है, प्रत्यक्ष प्रकृति की ओर कम।

(७) अतिशयोक्ति। उदाहरणार्थ सरकस की भाँति ऋषियों के आश्रम में पशुओं का प्रेम-वर्णन।

(८) इनकी कविता में काल-विरोध और देश-विरोध मिलता है।

(९) बिहारी :—बिहारी ने सतसई के अतिरिक्त कोई ग्रन्थ नहीं लिखा। सतसई का जैसा रूप है उसमें प्रकृति के विशद वर्णन के लिए बहुत कम अवकाश है। अन्योक्तियाँ अवश्य कहीं-कहीं प्रकृति को लेकर कही गई हैं। यथा—

(१) सरस सुमन मँडरात अलि, न झुकि सपटि लपटात।
दरसत अति सुकुमारता, परसत मन न पत्यात॥

(२) इहि आसा, अटक्यो रहे, अलि गुलाब के मूल।
ऐहैं बहुरि बसन्त ऋतु, इन डारन वै फूल॥

(३) कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोबन सौ कियो, दीरघ दाघ निदाघ॥

(४) जिन दिन देखे वे सुमन, गई सु बीति बहार।

(५) जदपि पुराने बक तऊ, सरवर निपट [illegible]
नए भये तो का भयो, ये मनहरन [illegible]

इस प्रकार कमल-भ्रमर, काक-हंस आदि जोड़ियों [illegible] बिहारी ने अपने मुख्य विषय शृङ्गार को अधिक स्पष्ट [illegible] लिए प्रकृति का सहारा लिया है। वैसे प्रकृति [illegible] अवश्य रही होगी यह निम्न दोहों से स्पष्ट हो जाता है।

सघन कुञ्ज छाया सुखद, सीतल मन्द समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर॥

(१०) देव :—देव ने अनेक ग्रन्थ केवल प्रकृति को ही लिखे हैं। उदाहरणार्थ—अष्टयाम, वृत्तविलास, [illegible] विलास, आदि। अक्षर-मैत्री का ध्यान विशेष रहने के [illegible] कहीं-कहीं वे ऐसे शब्दों का प्रयोग करते थे जिनसे अर्थ [illegible] और रस-हानि भी होती थी। उनके दो छन्द प्रकृति-[illegible] लेकर हैं; एक तो वसन्त का वर्णन है, दूसरा पावस का।

उदाहरण—मदन महीप जू को बालक बसन्त ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।
× × ×
झहरि-झहरि झीनि बूँद परति मानो,
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन में।

अधिकांश प्रकृति का वर्णन देव ने नायक-नायिका [illegible] पृष्ठभूमि पर किया है। इस दृष्टि से प्रकृति में मनोवै[illegible] देखने में देव हिन्दी कविता में प्रथम हैं। उदाहर[illegible] साँवरे लाल को साँवरो रूप में नैनन को कजरा करि [illegible] बेगि ही बूड़ि गई पखियाँ, अँखियाँ मधु की मखियाँ भई [illegible] में काजल और मधुमक्खी को लेकर बहुत सुन्दर [illegible] रूप-विधान साधा गया है। इसी कारण पण्डित रामचंद्र [illegible] कहते हैं—"देव की कल्पना बहुत सूक्ष्म और दूरारूढ़ है।"

(११) त्रिपाठी-बन्धु :—त्रिपाठी-बन्धुओं में, यानी [illegible] मणि, मतिराम और भूषण में, भूषण तो अधिकांश अधिक [illegible] पूर्ण वीर वर्णन में ही डूब गए हैं। अतः प्रकृति का [illegible] वर्णन इनमें बहुत कम मिलता है। मतिराम की दशा [illegible] कुछ देव-सी है। उन्होंने भी शृङ्गार रस को प्रधानता दी [illegible] उसकी अवतारणा में प्रकृति को भी बाँध दिया। खुली [illegible] से वे प्रकृति की ओर नहीं देख सके। उदाहरणार्थ :—

दोऊ अनन्द सों आँगन माँझ विराजैं, असाढ़ की साँझ [illegible]
प्यारी के बूझत और तिया को अचानक नाम लियो [illegible]
आई उन्हें मुँह में हँसी, कोही तिया पुनि चाप-सी भौंह [illegible]
आँखिन ते गिरे आँसू के बूँद, सुहास गयो उड़ि हंस की [illegible]

इस छन्द में आषाढ़-सन्ध्या प्रथम पावस-पयोद की [illegible] उड़नेवाली हंसों की पाँति, तना हुआ इन्द्रधनुष, आदि [illegible] कालीन प्राकृतिक घटनाओं का वर्णन नायक नायिका [illegible] प्रसङ्ग में ऐसा अच्छा किया गया है कि प्रकृति और [illegible] एकरस हो गए हैं। रीतिकालीन कवियों में जहाँ एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केशव, बिहारी और पद्माकर शब्दों के फेर में अटकते हैं, वहाँ दूसरी ओर देव और भूषण ऊहात्मक व्यञ्जना के फेर में स्वाभाविकता खो बैठते हैं। मतिराम अकेले ऐसे हैं जिनका काव्य-सौन्दर्य अकृत्रिम और प्रकृति से प्रामाणिकता निभानेवाला है। आचार्यत्व इनके कवित्व को खा नहीं गया, रीति ने उनके रस पर विजय नहीं पाई, चमत्कार की अपेक्षा उन्हें चारुता अधिक प्रिय रही।

(१२) पद्माकर :—पद्माकर सिन्धिया दरबार के राजकवि थे। गङ्गालहरी में उनकी प्रकृति-पूजा दिखाई देती है। परन्तु अनुप्रास के फेर में कहीं-कहीं कविता नष्ट हो गई है। उनका एक छन्द उद्यान-वर्णन की दृष्टि से विचारणीय है—

कवित्त

चालौ सुनि चन्दमुखि चित मैं सुचैन करि,
तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे।
कहै 'पद्माकर' मयूर मञ्जु नाचत हैं,
चाय सो चकोरनी चकोर चूमि-चूमि रहे।
कदम, अनार, आम, अगर असोक-थोक,
लतनि समेत लोने-लोने लगि भूमि रहे।
फूलि रहे, फलि रहे, फबि रहे फैलि रहे,
झपि रहे, झलि रहे, झुकि रहे, झूमि रहे।

इस छन्द में पद्माकर की कविता की विशेषताएँ और दोष दोनों एक साथ दिखाई देते हैं। इनके वर्णनात्मक पद्यों में यह शब्द-चमत्कार प्रकट करने की प्रवृत्ति अतिरेक की सीमा तक पहुँच गई है इससे काव्य की हानि हुई है।

(१३) सेनापति :—रीतिकालीन कवियों में प्रकृति-वर्णन की दृष्टि से सेनापति और घनानन्द महत्त्वपूर्ण कवि हैं। सेनापति की अधिकांश रचनाएँ प्रकृति-वर्णन पर हैं। विशेषतः इनका ऋतुवर्णन, जो कि श्लेषात्मक है, अतिशय प्रसिद्ध माना गया है। शब्दालङ्कार तथा अर्थालङ्कार का इतना सुन्दर निर्वाह अन्य किसी कवि में नहीं मिलता। यद्यपि उनकी कविता का स्थायी भाव रति है और उसमें भी प्रवास-हैतुक, ईर्ष्या-हैतुक तथा गृह-हैतुक विप्रलम्भ-शृङ्गार उनके रस-परिपाक में अधिक प्रयुक्त हुआ है, तथापि उनका अलङ्कार पर अधिकार बहुत ही आश्चर्यजनक है। श्लेष, यमक, रूपक और उत्प्रेक्षा ने उनकी कविता में चार चाँद लगा दिए हैं। पण्डित उमाशङ्कर शुक्ल ने सेनापति के कवित्त-रत्नाकर की पाण्डित्यपूर्ण भूमिका में इन अलङ्कारों का विस्तारपूर्वक विचार करके यह निष्कर्ष निकाला है कि सेनापति का ध्यान शब्दालङ्कारों की ओर अधिक था। परन्तु सेनापति में भी प्रकृति का प्रत्यक्ष दर्शन उतना नहीं मिलता जितना कि कवि के अलङ्कार-ज्ञान का प्रदर्शन। वही रूढ़ काव्य-सङ्केत वही बसन्त में टेसू, कोकिल, रसाल, चम्पा, बकुल; वर्षा में वही बादल, गर्द, बिजली, दादुर, मोर, सरोवर और इन्द्रधनुष।

घनानन्द की दृष्टि इससे कुछ आगे गई है। उन्होंने प्रकृति को रीतिग्रन्थों की पारम्परिक दृष्टि से न देखते हुए खुली आँखों से देखा है। रीतिकाल के पूरे निर्जन मरु में घनानन्द एक अकेले छायावादी कवि हैं। पं० रामचन्द्र शुक्ल तो उन्हें एक कदम आगे जाकर अभिव्यञ्जनावादी कवि कहते हैं।

उदाहरणार्थ :—उघरो जग छाय रहे घन आनन्द,
चातक ज्यों तकिए अब तो।.....

इस पंक्ति में 'उघरे' का प्रयोग-वैचित्र्य विचारणीय है और भी कई स्थलों में—

सवैया

पर कारज देह को धारे फिरौ, परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ, सब ही विधि सुन्दरता सरसौ॥
घन आनंद जीवनदायक हौ, कबौं मेरियौ पीर हिये परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन मों अँसुवान कौ लै बरसौ॥

सारांश, रीति-काल में काव्य और प्रकृति का सम्बन्ध बहुत अधिक सीमित हो गया। कवि जनों के मन में प्रकृति के प्रति पहला-सा कुतूहल और ताजगी न रही और उक्ति-चमत्कार ने काव्य का स्थान ले लिया। अर्थात् कला पक्ष जहाँ विशाल हुआ, वहाँ हृदय पक्ष घटता चला गया। इसकी स्वाभाविक प्रतिक्रिया आधुनिक काल में हमें मिलती है। यद्यपि छायावाद के आविर्भाव तक किसी-न-किसी रूप में वही 'रूढ़िवाद' हिन्दी कविता को ग्रस्त किए हुए था।

(१४) भारतेन्दु :—भारतेन्दु की कविता अपने चुटीलेपन के लिए अधिक प्रसिद्ध है न कि प्रकृति-वर्णन के लिए। नाट्यकार के नाते उनके लिखे हुए नाट्य-गीत तथा कुछ समस्या पूर्तियाँ अवश्य विचारणीय हैं। काशी की गङ्गा का वर्णन देते हुए भारतेन्दु प्रकृति-वर्णन में यथार्थवाद ले आए हैं। उदाहरणार्थ :—

नव उज्जल जलधार, हार-हीरक सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूँद, मध्य मुक्तामनि पोहति॥
लोल लहर लहि पवन, एक पै इक इमि आवत।
जिमि नर-गन मन विविध, मनोरथ करत मिटावत॥

'चन्द्रावली' नाटक में यमुना का वर्णन तथा 'सत्यहरिश्चन्द्र' में गङ्गा का वर्णन केवल परम्परा-पालन के लिए हैं। उनका हृदय नहीं पाया जाता। वे नर-प्रकृति के कवि प्रकृति के नहीं।"

(पं० रामचन्द्र शुक्ल)

(१५-१७) रत्नाकर, श्रीधर पाठक और सत्यनारायण :—रत्नाकर ने प्रकृति का वर्णन अपने 'गङ्गावतरण' और 'उद्धवशतक' में किया है। विरह का प्रकृति पर कैसा प्रभाव घटित होता है, यह उद्धवशतक के निम्न छन्द में व्यक्त हुआ है—

कीजै ज्ञान भानु को प्रकास गिरि-सृङ्गनि पै,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै 'रतनाकर' न प्रेम-तरु पैहै सूखि,
याकी डार-पात तून-तून घटिहै नहीं ॥
रसना हमारी चारु चातकी बनी है ऊधौ,
पी-पी की बहार और रट रटिहै नहीं।
लोटि-पोटि बात को बवण्डर बनावत क्यौं,
हिय ते हमारे घनस्याम हटिहै नहीं ॥

इसके अतिरिक्त चुस्त और सुगठित भाषा में आपने प्रकृति सरस वर्णन प्रस्तुत किया है। प्रकृति के माधुर्य पक्ष की ओर नका ध्यान अधिक था। इनके 'गङ्गावतरण' की तुलना जब रतेन्दु के 'गङ्गावतरण' से या पद्माकर की 'गङ्गालहरी' से की ती है तब हमें यह जान पड़ता है कि गङ्गा नदी का उज्ज्वल ाह तथा शीतल स्पर्श रत्नाकर की ही रचना में अधिक है। होंने कल्पना की नहीं, यथार्थ की गङ्गा की अपने काव्य में वतारणा की है।

श्रीधर पाठक व्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों काव्य-शैलियों शृङ्खला हैं। आपका प्रकृति-वर्णन अधिकांश अनुवाद-थों में मिलता है। आपने 'ऋतुसंहार' का व्रजभाषा में र गोल्डस्मिथ के 'श्रान्त पथिक' और 'ऊजड़ ग्राम' का खड़ी ली में अनुवाद किया है। निम्न उदाहरण उनकी विभिन्न लियों को व्यक्त करेंगे—

सवैया (व्रजभाषा)

) बारि फुहार भरे बदरा सोई सोहत कुञ्जर से मतवारे।
बिज्जुरि जोति धुजा फहरै, घन गर्जन सब्द सोई हैं नगारे ॥

भुजङ्गी (यथार्थवादी)

) नाना कृपान निज पानि लिए,
बपु नील वसन परिधान किए।
गम्भीर घोर अभिमान हिये,...
छिन-छिन पर जोर मरोड़ दिखावत,...
यह मोर नचावत सेर मचावत,
स्वेत-स्वेत बग-पाँति उड़ावत।

(उर्दू गजल शैली—खयाल या लावनी)

भरे गगन में हैं जितने तारे,
हुए हैं बदमस्त गत पै सारे।

(आधुनिक अतुकान्त शैली)

विजन वन प्रान्त था, प्रकृति-मुख शान्त था।
अटन का समय था, रजनी का उदय था।—इत्यादि।

आप हिन्दी के वर्ड्सवर्थ थे। आप चाहते थे कि पुनः यों का-सा वनवास किया जाए और सात्त्विक जीवन बिताया । उनकी प्रकृति की उपासना इस प्रकार की थी कि केवल र्य पक्ष और आनन्द पक्ष ही वे देखते थे।

सत्यनारायण 'कविरत्न' व्रजभाषा के अन्तिम कवि माने वैसे ही अंगरेजी कविताओं के भी। इनकी कविता में वर्णन विशेष नहीं मिलता। फिर भी स्व० पद्मसिंह शर्मा के भेजे हुए एक कविता-पत्र में वे कहते हैं—

बस गुन ही गुन निरखत तिहँ मधि,
सरल प्रकृति को पेरो।
यह स्वभाव को रोग जानिए,
मेरो बस कछु नाहीं ॥

अर्थात् इन्होंने प्रकृति की कविता नहीं लिखी परन्तु इनकी प्रकृति में ही कविता रमी हुई थी। 'भ्रमर-दूत' में 'पावस वर्णन' करते हुए वे—'धोये धोये पातन की अनुपम कमनीयता का वर्णन करते हैं वैसे ही अपनी मातृभूमि की प्रशंसा में। अतः इनकी कविता में प्रकृति प्रसङ्ग-प्राप्त ही आई है अन्यथा नहीं।

(१८) हरिऔध—पुरानी परम्परा के प्रतिनिधि कवि में पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय अकेले शेष हैं। इन्होंने 'ठेठ हिन्दी का ठाट' जमाते हुए उर्दू-बहुल चौ लिखे, मगर मुहावरों में प्रकृति-वर्णन कुदरती नहीं रहा, बनावटी हो गया। बाद में 'प्रिय-प्रवास' में (सं० १९७१ वि०) संस्कृत के वर्णिक छन्दों की ओर मुड़े, इस खड़ी बोली के महाकाव्य में प्रकृति की अच्छी छटा मिलती है—

दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु-शिखा पर थी अब राजती,
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।

× × ×

धीरे-धीरे दिन गत हुआ, पद्मिनीनाथ डूबे।
आई दोषा फिर गत हुई, दूसरा बार आया ॥

तात्पर्य, इनका रचना में कोई विशेष स्थान नहीं है वर्णन बहुत कृत्रिम और रूखा है।

(१९) मैथिलीशरण गुप्त—गुप्त जी का काव्य विशाल है। उसमें प्रकृति के अनेक रूप मिल सकते हैं। आरम्भिक रचनाओं में 'मङ्गल घट' एक गङ्गा का वर्णन है जिसकी तुलना यदि ऊपर उल्लिखित गङ्गा-सम्बन्धित काव्यों से की जाए तो 'बहती गङ्गा में हाथ धोना' का मुहावरा चरितार्थ होता प्रतीत होगा। प्रकृति का आन्योक्तिक रूप में वर्णन अधिक मिलता है। फुटकर कविताओं में 'क्षार-पारावार' एक सुन्दर प्रकृति काव्य है—

छोड़ मर्यादा न अपनी वीर धीरज धार,
क्षुब्ध पारावार मेरे क्षार पारावार।

उनकी अन्य काव्य-रचनाएँ, अनुवाद और सामाजिक राष्ट्रीय चीजों को लेकर अधिक हैं अतः विशुद्ध प्रकृति-वर्णन बहुत कम रचनाओं में मिलता है। साकेत के नवम सर्ग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतों में प्रकृति की सुन्दर अभिव्यञ्जना मिलती है।

उदाहरणार्थ—

(१) दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि पतङ्ग भी जलता है तो दीपक भी जलता है।

(२) सखि निरख नदी की धारा।
ढलमल ढलमल चञ्चल अञ्चल, झलमल-झलमल तारा

(३) सखि नील नभस्सर से उतरा यह हंस अहा तरता-तरता
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता-चरता।

(४) मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।

(५) होली, होली, होली।

(६) सखि वे मुझसे कहकर जाते।—इत्यादि

(२०) पन्त, (२१) प्रसाद, (२२) निराला—छायावादी युग के आरम्भ के साथ काव्य और प्रकृति का नाता फिर नए रूप से हिन्दी में उपस्थित हुआ। प्रसाद ने 'झरने की लहर' में 'प्रेम-पथिक' का बानक धारण किया, आँसू में व्यापक रूप में वियोग के दर्शन किए और कामायनी में अपनी विराट् और भव्य कल्पना के द्वारा मानव और प्रकृति के चिरन्तन संघर्ष का ऐसा चित्र उपस्थित किया जो हिन्दी में अद्वितीय है। परन्तु फिर भी प्रसाद के लिए 'प्रकृति' सांख्य-दर्शनकार की भाँति अचेतन और गतिशीला थी, 'पुरुष' कभी बद्ध होता था कभी मुक्त। पन्त के साथ 'प्रकृति' 'पुरुष' दोनों मिल गए। उनका एकात्म-बोध रसमय हो उठा। पुरुष ने मानों प्रकृति से कहा—

"धरा है सिर पर मैंने देवि!
तुम्हारा यह स्वर्गिक शृङ्गार"

पल्लव की भूमिका में 'प्रभात' और 'वायु' की कोमलता प्रकृति के चिरकौमार्य से अभिभूत होकर पन्त को उन्हें स्त्री रूप में देखने के लिए बाध्य करती है। 'बादलों' में समीक्षकों ने शैली के क्लाउड की झाँकी देखी है। नक्षत्रलोक में भी कवि की तरल कल्पना अनूठी उत्प्रेक्षाओं से आप्लावित होती है। सर्वत्र प्रकृति का 'मौन निमन्त्रण' कवि की आत्मा को मुखर कर देता है। एक तत्त्व वह प्रकृति में मुख्य रूप से देखता है और वह है 'परिवर्तन' का तत्त्व। अतः पन्त वर्ड्स्वर्थ की भाँति केवल प्रकृति के अन्धोपासक नहीं हैं और न कीट्स की तरह केवल सौन्दर्य पक्ष के रसिक; वे टेनिसन की भाँति प्रकृति के उग्र-रुद्र पक्ष को भी देख सकते हैं—

"मृदुल होठों का हिमजल हास
उड़ा जाता निश्वास समीर
सरल भौंहों का शरदाकाश
घेर लेते घन घिर गम्भीर"

'श' से 'र' के स्वर में पन्त पल्लव के गुञ्जन में प्रवेश करते हैं। यहाँ उनका मधुर-मधुर मन बहलता नहीं, रमता है। यहाँ प्रकृति का और भी कोमलतर स्तर खुलता है। पन्त जीवन के दार्शनिक बनकर आगे आते हैं 'नौका-विहार' 'एक तारा', 'झर गई कली झर गई कली', चींटियों की पाँति अप्सरा आदि गीतों में प्रकृति के विविध रूपों का सुन्दर दिग्दर्शन पन्त कराते हैं और प्रकृतिमानों पूछती है—

"लाई हूँ फूलों का हास
लोगी मोल लोगी मोल
तरल तुहिन वन का उल्लास
लोगी मोल लोगी मोल"

तीनों ऋतुओं का वर्णन देकर पन्त ने 'सुन्दरतर से सुन्दरतम' प्रकृति के रहस्य-सम्पुट में निहित करुणा की धारा को छुआ है। आगे 'युगान्त' से 'ग्राम्या' तक पन्त कठोर युगधर्म को निबाहते हुए प्रगतिवादी बन जाते हैं और उनकी बौद्धिक सहानुभूति कृषक कमकरों से है परन्तु वे अपना, ज्योत्स्ना से परिलक्षित सौन्दर्यवादी मन छिपा नहीं सकते। अतःगत पाँच वर्षों से वे चुप हैं।

निराला के प्रकृति-सम्बन्ध दृष्टिकोण को एक वाक्य में कहना बहुत कठिन है। उनका दृष्टिकोण उनकी प्रत्येक कविता पुस्तक में बदलता-निखरता चला गया है। आरम्भिक रचना 'परिमल' में वे प्रकृति के साथ वे मानो खिलवाड़ कर रहे हैं। 'जुही की कली' उसमें की प्रतिनिधि कविता मानी जा सकती है। वे सदा प्रकृति को सप्राण मानने के विश्वासी हैं। स्वभावतः पुरुष होने के कारण पन्त की अपेक्षा इनकी प्रकृति कहीं अधिक ओजस्विनी है। तुलसीदास में जब वे जड़ और चेतन का संघर्ष व्यक्त करते हैं। तब—रवि-कर ज्यों विन्दु-विन्दु जीवन।
सञ्चित कर करता है वर्षण

× × ×

तम के समार्ष्य रे तार-तार
जो उन पर पड़ी प्रकाश-धार
जग वीणा के स्वर के बहार रे, रे जागो।

गीतिका में कवि-प्रकृति का कोमल रूप फिर से नक्काशी के साथ व्यक्त हुआ है। अनामिका में उसके और कई रूप निखरे हैं। निराला जी प्रकृति से प्रेरणा कविता के आरम्भ में तो ग्रहण करते हैं परन्तु बाद में धीरे-धीरे स्वकेन्द्रित हो जाते हैं। प्रकृति की आकृति मात्र रह जाती है। 'कुकुरमुत्ता' और 'अणिमा' में तो वह विकृति की सीमा तक पहुँच गई है। संक्षेप में—

प्रसाद

(१) प्रकृति देवि (स्वर्गीय) है। (२) कवि प्रकृति का दर्शक मात्र, उससे अलित। (३) रूपक-मय तथा नाटयात्मक वर्णन अधिक। (४) आधार-लक्षण। (५) प्रसाद गुण प्रकृति-चित्रण में। (६) भाषा सर्वत्र एकरस संस्कृत बहुला। (७) शान्त-रस-प्रधान।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने घूमकर देखा, मेरे पीछे खड़ा अवस्थी मुस्करा रहा था। यह उसी की आवाज थी।

अवस्थी मुस्करा रहा है। विकास को डरपोक समझता है। मैंने भी कह दिया—कहीं नहीं।

वह अब भी मुस्करा रहा था। रिक्शा चला गया।

अवस्थी ने कहा—कुछ गजरे ले लें, मिलें तो।

"नहीं!"

"इतर की दुकान पर चलोगे!"

"नहीं।"

"तो लौटने का विचार है क्या!"

"नहीं।"

"तो ऐसे ही!"

"हाँ।"

× × ×

बहुत ही फरमाइशी-सा वातावरण! सज-सँवर-कर बैठी प्रौढ़ा, गले की माधुरी से ही दिग्विजय को प्रयत्नशील। गद्दे, तकिए और कालीन, उन पर सज-धजकर बैठे रसिक श्रोता। चाँदी का पानदान और पीकदान। इन सबसे निराली हैसियत के कुछ व्यक्ति, मीरासी। पारिभाषिक शब्दों में 'उस्ताद जी'। स्त्री सङ्गीत बेचती है, पुरुष आत्माभिमान खोकर उसका साथ देता है। एक मुँह रँगकर गाती है, दूसरा रँग खोकर सुर और ताल देता है।

अवस्थी सुन-सुनकर झूम रहा है। बात-बात पर फड़क उठता है। 'वाह बाई जी वाह! उस्तादों की गर्दनें हिल उठती हैं। मैं गुम-सुम-सा बैठा हूँ। सङ्गीत का पारखी नहीं, और न प्रेमी। दम घुट-सा रहा था। कैसे उठूँ? अवस्थी मुझसे कहीं अधिक सहृदय जान पड़ता था।

पान की तश्तरी आगे आई। मैं बैठा रहा। अवस्थी ने हाथ दाबा। मैंने पाँच रुपए तश्तरी में डाल दिए। पान नहीं उठाया।

"पान तो कबूल कीजिए"—लोच-भरा स्वर। मैंने देखा प्रौढ़ा का विभ्रम। आत्मग्लानि से मन भर उठा। सम्भवतः वय में वह मेरी माँ भी हो सकती थी।

"नहीं!"

अवस्थी को मेरी अरसिकता पर आश्चर्य हो रहा था। उसने चार बीड़े उठाए और गाल में दाब लिए।

मैं सोच रहा हूँ—यह मालिनी की माँ है! मालिनी की मा! मैं मालिनी का—क्या? कुछ नहीं! फिर भी मालिनी में अनुरक्त! मेरी परेशानी बढ़ रही थी।

सभा पुनः बैठाया जा रहा था। साज गरम हो रहे थे। अवस्थी मगन हो रहा था। मैं सोच रहा था, कहाँ है मालिनी।

मैं क्यों आया यहाँ? क्या अवस्थी लाया? या गाना आया? उत्तर में केवल मौन निषेध। तो क्यों मालिनी एकमात्र उत्तर।

मुझमें और अवस्थी में, मालिनी और उसकी माँ में अन्तर?

काँच के गिलासों में रङ्गीन शराब! अवस्थी ने गिलास मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने बहुत ही कसकर पकड़ा। मन बैठ रहा था। हाथ काँपा जा रहा था। छूट न जाए। पकड़ और मजबूत की। हाथ की नसें गईं। माथे पर पसीने की बूँदें चुहचुहा आईं।

अवस्थी ने एक चुस्की ली। मैं गिलास लिए हुए था। वह बोला—पियो!

"एँ, हाँ, अच्छा"—फिर भी गिलास नहीं उठा।

अवस्थी हँस रहा है। विकास डरपोक है। मैं डरपोक! मुझे तैश आ गया। झटके से गिलास उठाया। द्रव छू गया। अवस्थी खिलखिला पड़ा।

हूँ, अवस्थी को विश्वास नहीं। विकास डरपोक है। ओठ जलने लगे थे। गिलास अधरों के समीप आ गया।

सहसा गिलास छूट गया। द्रव फैल गया। सिर झुक सोच रहा हूँ कि अब अवस्थी अट्टहास करता है। पर शान्त हैं। मैंने सिर उठाकर देखा—मालिनी!

मालिनी लौट गई। माँ कह रही थी—जाने क्या गया है इस लड़की को। माफ करना बाबू साहब; कुछ आई होगी। लग गई ठोकर!

अवस्थी कह रहा था—शराब आप नहीं गिरी।

"हूँ।"

"और!"

"नहीं।"

"थोड़ी-सी।"

"कह दिया नहीं!"

फिर एक चुभता-सा स्वर—बाबू साहब नाराज हो गए।

"चलो अवस्थी!"

अवस्थी उठता हुआ झिझक रहा था। मैंने तेज कहा—उठो भी अवस्थी।

अवस्थी उठ खड़ा हुआ—अच्छा बाई जी, फिर कभी।

मैंने जेब में हाथ डाला। जितने भी रुपए मुट्ठी में पान की तश्तरी में डाल दिए। लड़खड़ाता-सा सीढ़ियों उतरने लगा। जाते-जाते पैर ठिठक रहे थे। बीच रुक गया।

अवस्थी कहता है—तुम पागल हो, विकास।

"मुझे रहने दो अवस्थी।"

"बढ़ो। रुक क्यों गए!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने जेब में हाथ डाला। कुछ रुपए अभी और पड़े थे। अवस्थी के हाथ पर रख दिए—तुम कहीं भी जा सकते हो।

"और तुम ?"

"तुम जाओ। मुझे अकेला रहने दो।"

मेरा स्वर अस्वाभाविक था। अवस्थी घड़घड़ाता उतर गया। मैं भी धीरे-धीरे एक-एक पैड़ी उतर रहा था।

"सुनिए ?" मालिनी का स्वर था।

मैं रुक गया।

"आप यहाँ भी आने लगे !"

मैं चुप था।

"क्यों आते हैं आप यहाँ ?"

क्या जवाब दूँ ? चुप ही रहा।

"देखिए, आप यहाँ न आया करें।"

मैं अनुरोध में बँधा-सा जा रहा था। मालिनी ने रोककर कहा था। और किसी से तो कहती न होगी। फिर मुझी से क्यों !

मालिनी और कुछ कहे बिना सीढ़ियाँ चढ़ने लगी थी। क्या ? वह मेरे हृदय को नहीं समझती। अथवा, उपेक्षा करती है। फिर भी शासन। 'देखिए, आप यहाँ न आया करें।'

मैंने चीखकर कहा—नहीं, मेरे आने-जाने में कहीं प्रतिबन्ध नहीं। मेरी जब भी इच्छा होगी आऊँगा ही।

मालिनी ने सुना अवश्य, पर सुनने के लिए ठहरी नहीं। इच्छा होती थी कि मालिनी को बार-बार सुनाऊँ। वह मेरी उपेक्षा करती है तो मैं भी उसका मजाक उड़ा सकता हूँ। पर अब सुनाऊँ किसे ?

उतरकर गली में खड़ा था।

× × ×

जवानी की चोटें बुढ़ापे की कसक होती हैं। आज वह कसक जाग रही है। हृदय की प्रत्येक धड़कन के साथ-साथ जवानी की एक-एक कड़ी याद पड़ती है। जब बच्चा दुनिया में आता है तो निर्लिप्त, अछूता और भोला। संक्षेप में सब बातों से रिक्त। फिर बढ़ता है। प्रत्येक क्षण के प्रभाव को स्वीकार करता है। अब उसे अपने में, अपने चारों ओर, सभी जगह बहुत कुछ लगता है। अन्तिम चरण पर पहुँचकर वह आवृत्ति करता है। हृदय को टटोलता है। एक रूपवान, बिलकुल खोखला। पर यह बच्चे की रिक्तता से भिन्न, जीवन के संचय का रूपमात्र। खोकर पाने पर विचार करने की दृष्टि अनोखी होती है। मैं आज उसी काया से देख रहा हूँ।

दबाता हुआ हाथ कन्धे पर पड़ा। जोशी था। जोशी यहाँ ? पूछा—तुम यहाँ ?

"हाँ। जानता था तुम यहाँ होगे। आज रात को देर से लौटा था। तुम और अवस्थी दोनों गायब थे। शाम से ही तुम उद्विग्न थे। मैं समझ गया कि तुम कहाँ हो सकते हो। तुम अवस्थी को साथ लाए थे।"

"हाँ !" और लगा सोचने कि उसने यह क्यों नहीं पूछा कि अवस्थी तुम्हें यहाँ लाया था क्या ?

अवस्थी को मैंने अन्यत्र जाते देखा है। मेरा विश्वास था कि तुम प्रत्येक जगह जाना पसन्द न करोगे। इसी से इधर आया।

मैं चुप था।

"खड़े क्यों हो, चलो। रात काफी बीत चुकी है।"

हम लौट पड़े। जोशी रास्ते में कह रहा था—तुम्हारे कपड़ों से गन्ध आ रही है। पी ली हो तो कोई बात नहीं। मैं स्वयं पीता हूँ। शराब स्वयं बुरी नहीं, पर आदमी की कमजोरी इसमें बुराई पैदा करती है।

सवारी न मिलने से पैदल ही बढ़ रहे थे। अँधेरे में पहुँचकर जोशी ने मेरे कन्धे पर हाथ रक्खा। स्नेहपूर्वक बोला—विकास, अँधेरा जीवन का आवश्यक अङ्ग है। दिन का थका आदमी रात को आराम पाता है। पर दिन में जो बुरे काम नहीं हो पाते, वे रात के अँधियारे में होते हैं। तुमने भी एक जगह अँधियारा देखा और भ्रमवश दौड़ पड़े उधर ही पर मैं कहता हूँ कि वह तुम्हारी अपनी आँखों का अँधेरा है। बाहर के तम से बचा जा सकता है पर आँखों के कालेपन से नहीं। विकास, मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि तुम सिर्फ विचार करना सीख लो।

मैं सोच रहा था कि जोशी को मुझसे कुछ ही दिन की जानकारी है। मैं इस घनिष्ठता के लिए प्रस्तुत भी न था कि वह आप ही अधिकाधिक निकट आता गया। इस रुझान का कारण समझ नहीं पा रहा था।

मेरे मानसिक द्वन्द्व को ही समझकर सम्भवतः उसने कहा था—विकास, तुम्हें मेरा यह नियन्त्रण रुचिकर न होगा। मैं प्रत्येक स्थल पर आलोचना के लिए प्रस्तुत रहता हूँ। बात बात में तुम्हें उपदेश देता हूँ। तुम चिढ़कर उन्हें टाल सकते हो। मुझे भी अपने रास्ते से काट सकते हो। पर तुम ऐसा न करोगे, यह मेरा विश्वास है। जोशी दुनिया में किसी की परवाह नहीं करता, अपनी भी नहीं। फिर भी तुम्हारा अभिभावन करने के लिए व्यग्र रहता है। तुम्हें आश्चर्य होगा। इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं। फिर भी मैंने तुम्हें जितना समझा, उसी से आकर्षित हुआ। मैं तुम्हारा निर्माण करना चाहता हूँ। मुझे मित्र समझो। मित्र और स्त्री से अच्छा कोई शिक्षक नहीं होता। इस द्वन्द्वात्मक जगत् में अकेले की कोई सत्ता नहीं। प्रतिपद पर संघर्ष का सामना करना पड़ता है। उससे लड़ने के लिए, दुनिया भर का सामना करने के लिए, दो मित्रों से बढ़कर कोई शक्ति नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ना भी चाहे तो उसे काट डालो। मात्रा न चढ़ाकर गुण-द्धि करनी चाहिए। अपना प्रसार भी उतना ही उचित है, तना तुम कभी भी समेट सको।

'बाबूजी, कहाँ चलिएगा?' रिक्शा था।

'नगवा,' हम दोनों बैठ गए।

× × ×

(४)

विस्मृति में दिन बीत रहे थे। सहसा एक दिन हवा में हर-सा फैला—हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा। होस्टल के बन्द कमरों आप ही सनसनीदार समाचार पहुँच जाते। विश्वनाथजी गली में इतनी हत्याएँ हुईं; दशाश्वमेध घाट पर भरी नाव डुबो दी गई। मदनपुरे से हिन्दू आ-जा नहीं पाते। प्रायः भी मुसलमान मुहल्लों में हिन्दुओं के घर खाली हो गए हैं। ी-बच्चों के प्रति दुर्व्यवहारपूर्ण किंवदन्तियाँ भी कम न उड़ ी थीं। हिन्दू भी अपने मुहल्लों में जोर पकड़ रहे थे। हीराने में मुसलमान का बच्चा भी जीवित न था।

पहला दिन बीता। दूसरे दिन उद्वेगजनक समाचारों ने ोर भी रङ्ग पकड़ा। दालमंडी की रूपाजीवाएँ विपद्ग्रस्त । मुसलमानों की बाढ़ में फँसी हुई उन रूपाजीवाओं की ति क्षुद्र संख्या। अत्याचारों की कोई सीमा न थी। मैं प उठा—मालिनी! मालिनी की माँ भी वहीं है। क्या गा मालिनी का? सोच-सोचकर उतावला-सा कभी कहीं भी कहीं उड़ता रहा। कोई आश्वसनीय समाचार न मिला र मेरी बौखलाहट बढ़ती ही गई। घर में चारों ओर से ग लगी है। उसमें बन्द प्राणी छटपटा रहा है।

'देखिए, आप यहाँ न आया करें।' मालिनी ने मुझे यर समझकर कहा था। अवस्थी भी मुझे कायर समझता

'नहीं, जब भी मेरी इच्छा होगी आऊँगा ही।'

सहसा दृढ़ होकर खड़ा हो गया। मानस सङ्कल्प को पूर्ण ने के लिए क्षण भर विचार किया। वहाँ से दौड़ा-दौड़ा स्थी के पास गया।

"क्या कह रहे हो अवस्थी?"

"कुछ नहीं।"

"अच्छा, मेरे साथ चलने को तैयार हो जाओ।"

"कहाँ?"

"कहीं भी।"

"शहर में तो भीषण दङ्गा हो रहा है।"

"इसी से तो। मालिनी की रक्षा के लिए चलना है।"

अवस्थी गले का थूक सटकता हुआ बोला—चलता अवश्य, कुछ बात भी ऐसी आ पड़ी है। जोशी को साथ ले लो न।

मैं उबल पड़ा—चुप रहो गीदड़। बात बनाते हो। स पर हँसा करते थे। तुम गाना सुनने, शराब पीने और

वह चल सकता है। पर मैं अकेला जाऊँगा। तुम्हारा सिर्फ पानी देखने आया था।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है। वहाँ से आँधी की उड़ा। सन्ध्या का झुटपुटा था। नगवा की सड़क पर भी कम सञ्चार था। अस्सी से आगे पुलिस ने बढ़ने न दि साइकिल पुनः नगवा घाट की ओर दौड़ाई। मल्लाह को के लिए कहा पर वह तैयार न हो रहा था। काफी के लोभ से ही वह किसी तरह मणिकर्णिका घाट तक छोड़ को प्रस्तुत हुआ।

घाट तक पहुँचते-न-पहुँचते काफी अँधेरा हो गया डोंगी तट से दस-पन्द्रह गज दूर से भी अधिक होगी। ने कहा—"हुजूर अब आप तै कर लग जाएँ?"

मैंने कहा—घबड़ाते क्यों हो, हिन्दुओं का मुहल्ला है।

बोला—कुछ नहीं सरकार, विपरीत समाँ है।

वह आगे बढ़ना ही नहीं चाहता था। उसके व्यर्थ विलम्ब पर मुझे क्रोध आ रहा था। मेरे मुँह से निकला, 'सब बदमाश डरपोक हैं।' और मैंने कपड़ों-सहित उछ मार दी।

नाव तेजी से नगवा की ओर घूम पड़ी। तट पर पहुँ कर पीछे की ओर दृष्टि घुमाई। शान्त जल, अँधियारे में डूब परला तट और आदमियों से रिक्त घाट। कपड़े पहने-पहने ही जितने निचुड़ सके, निचोड़ डाले। अब तक नौका भी अँधियारे में अदृश्य हो चुकी थी। केवल डाड़ों की थाप सुनाई दे रही थी। पीछे लौटने के प्रायः सभी मार्ग अवरुद्ध थे। फिर भी मुझे केवल आगे बढ़ने की चिन्ता थी।

मुझे मालूम नहीं कि कैसे कहाँ-कहाँ से निकला। जब मालिनी के पास पहुँचा तो क्षत-विक्षत देह से रक्त बह रहा था। मालिनी घबराई-सी चिल्ला उठी—यह आपने क्या कर डाला, विकास बाबू! इस समय यहाँ?

शरीर गिरा जा रहा था। प्रयत्नतः सम्हालते हुए बोला—मालिनी, तुम तैयार हो जाओ। मैं तुम्हें निरापद स्थान में ले जाऊँगा।

वह मेरे पास चली आई। बोली—आप सहसा ही कुछ भी कर डालते हैं। आपको मालूम था कि यहाँ मुसलमानों की बस्ती है। यह तो अच्छा ही हुआ कि देर से दृष्टि आप पर गई। पत्थरों के प्रहार ही कर सके। बताओ तो यदि हल्ला सुनकर मैंने बाहर न झाँका होता तो क्या आप इन बन्द किवाड़ों में प्रवेश भी कर पाते। आपका बचपन अभी गया नहीं।

मैं स्वयं परिस्थिति से अवगत न था। इतना भर जानता था कि सहसा एक गोल टूट पड़ा था और 'पकड़ लो! मार डालो! काफिर है' के साथ-साथ पत्थरों की बौछार भी पड़ने लगी थी। मैं दौड़ता गया और गोल पीछे लगता आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उसकी मीठी फटकारों से मुझे शान्ति ही मिल रही —"आपका बचपन अभी गया नहीं।" मैंने उसके उज्ज्वल की ओर देखा। मर्मव्यथा के लक्षण यहाँ स्पष्ट ही थे। कृतार्थ हो गया। मालिनी के हृदय में मेरे लिए ना स्थान!

फिर उसने कोई बात नहीं की। अपने कमरे में ले कर कपड़े बदलवाए, घावों पर पट्टी बाँधी। सिर की चोट हरी थी। आँखें जल रही थीं और गर्दन तक अकड़ी पड़ी । मैं सुबोध बालक की भाँति उसके आदेशों का पालन कर था। शिथिल पलकों को बार-बार उघाड़कर उसे देखता। प्रत्यक्ष न होता। क्या सचमुच ही मालिनी मेरे इतने कट है! विभोर हो आँखें बन्द कर लेता और फिर खोलते ए भी भय होता कि कहीं भय सत्य न हो जाए।

छोटी भाभी की स्मृति प्रबल हो रही थी। मालिनी के हार उनके अति सदृश थे। उसके स्नेह ने घर की स्मृति ला दिया। उधर से बराबर पत्र आते और मैं भूल से ती का उत्तर देता। किन्तु आज सभी का स्मरण कर ो जी चाहता।

"लीजिए, यह पी लीजिए!"

"क्या है?"

"थोड़ा-सा गरम दूध। चोटों की अकड़ ठीक हो जाएगी।" मैंने गिलास ले लिया। पूरा तीन पाव का गिलास था। खाते-न-पीते पेट भर-सा गया। गिलास रखने जा ही था कि उसने हाथ रोक दिया—यह क्या? दो घूँट ही और हैं। इसे भी पी लीजिए। नहीं, मैं नहीं जानती। ा ही तो दूध है।

स्मृति को अच्छी तरह साफ कर करके बार-बार इन शब्दों ुन से कानों को भरने की चेष्टा करता हूँ। कितना मधुर ोर! ऐसे आग्रह पर तो विष भी ग्रहण किया जा सकता मैंने सारा दूध पी ही लिया। जूठा गिलास उसने ले । सोचता था, स्त्री के अतिरिक्त अन्य कौन इतना ु हो सकता है। माँ, छोटी भाभी और मालिनी ममत्व स्नेह की सरिताएँ!

फिर बलात् सोना पड़ा। मालिनी जाने लगी। मुझसे न रहा गया—यह क्या, तुम तो चल दीं। मैं अकेला नहीं सो सकता यहाँ!

उसने घूमकर मेरी ओर देखा। मधुर स्मित से कृतार्थ हो गया। बोली—नौकर को भेज दूँ?

क्या उत्तर देता? आँखें झुका लीं।

मालिनी पुनः आई, और कमरे में हलका हरा प्रकाश कर गई। मैं पलँग पर पड़ा-पड़ा सोचता रहा। यहाँ मैं किस प्रयोजन से आया था। उलटा एक भार ही बन गया। सिर का भारीपन बढ़ता गया। आगे कुछ सोच ही न सकता था। चेतना को एकाग्र रखने की चेष्टा में ही सो गया।

रात्रि के बारह बजे के लगभग आप ही आँखें खुल गईं। अङ्ग-प्रत्यङ्गों में बुरी तरह पीड़ा हो रही थी। पार्श्व इतने अधिक दुख रहे थे कि बैठने की इच्छा कर आई। किसी प्रकार बैठने के लिए प्रयत्नशील था कि मालिनी का स्वर कानों में पड़ा—यह क्या, आप जाग ही रहे हैं?

उसने मुझे सहारा देकर बैठा दिया। मैंने भी पूछा—और तुम?

"मैं स्वस्थ हूँ। चोटों की अकड़न कैसी है?"

"उसी से तो सो नहीं पाया।"

'अच्छा ठहरिए।"

उसने सहारे के लिए कई मोटे-मोटे तकिए लगा दिए और चली गई। मैं अलसाई आँखों में उसकी मधुर छवि भरे बैठा रहा। खद्दर की सादी साड़ी में करुणा की मूर्ति सी।

आँखें खोलीं। एक प्याला हाथ में लिए खड़ी थी। बोली—इसे पी लीजिए। तबीअत ठीक हो जाएगी।

"क्या है? मदिरा!"

उसकी उनींदी आँखों में मदिर आभा झलक रही थी। प्याला थामना भूल, आँखों को एकटक देखता रहा। वह लजा गई।

"इसे लीजिए। मैं तो औषध पिला रही हूँ।"

मैं प्याला लेकर सोचने लगा कि एक दिन इसी मालिनी ने मेरे हाथ की शराब गिराई थी। आज वही स्वयं पिला रही है।

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-विमर्श

हिन्दी और उर्दू का मुकाबला

श्री रविशङ्कर शुक्ल

जब हिन्दीवाले कांग्रेसवालों की हिन्दुस्तानी नामधारी उर्दू का या गांधी जी के हिन्दुस्तानीवाद का विरोध करते हैं तो उन्हें चुप करने के लिए प्रायः ताना दिया जाता है कि आप अपना काम-काज अँगरेजी में क्यों करते हैं, पते अँगरेजी में क्यों लिखते हैं, आदि, और अन्त में उन्हें उपदेश दिया जाता है कि हिन्दी का ठोस काम कीजिए और पीड़ा का नाट्य करते हुए उनसे पूछा जाता है—"जैसी उर्दू की उन्नति उर्दूवाले कर रहे हैं, वैसी हिन्दीवाले कर रहे हैं? जैसा साहित्य-प्रकाशन उर्दूवाले कर रहे हैं वैसा करनेवाली कोई हिन्दी की संस्था है?" उनका मतलब होता है, हम और हमारे राष्ट्रीय नेता चाहे कुछ करें, हमसे कुछ मत कहो। इन तानों का उत्तर देना आवश्यक है। जहाँ तक अँगरेजी का सम्बन्ध है, हिन्दीवाले अँगरेजी का जो आश्रय लेते हैं उसकी वकालत करने की जरूरत नहीं, परन्तु पहले गांधी जी यह बतलाएँ कि वे अपना 'हरिजन' अँगरेजी में क्यों निकालते हैं, आधे से अधिक मूल लेख अँगरेजी में क्यों लिखते हैं, कांग्रेस-नेता अँगरेजी में वक्तव्य क्यों देते हैं और पण्डित नेहरू की लेखनी से अमर-साहित्य कम-से-कम उसी अटपटी 'हिन्दुस्तानी' में क्यों नहीं निकलता जिसे वे मञ्च से जनता की भाषा कहकर बोलते हैं? मध्यकालीन सरकार के पण्डित नेहरू और बाबू राजेन्द्रप्रसाद जैसे 'हिन्दुस्तानी' के धनी-धोरी कांग्रेसी सदस्य अपने रडियो से प्रसारित भाषण अँगरेजी में सोचकर, अँगरेजी में लिखकर, उनका सड़ा-सा 'हिन्दुस्तानी' अनुवाद पहले सुनाकर फिर उन्हें अँगरेजी में क्यों सुनाते हैं? क्या गांधी जी का अँगरेजी 'हरिजन' केवल अँगरेज पढ़ते हैं अथवा क्या सरकारी सदस्यों के अँगरेजी भाषण केवल चीनी और जापानी सुनते हैं? अस्तु, यहाँ अँगरेजी की बीमारी की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं; उसमें हिन्दीवालों को ताना देनेवाले भी उतने मुब्तला हैं जितने बेचारे हिन्दीवाले। यहाँ केवल इस के उत्तर में दो शब्द कहे जाएँगे कि उर्दूवाले जो तरक्की साहित्य-प्रकाशन कर रहे हैं उसके मुकाबले हिन्दी में क्या रहा है। उत्तर है, कुछ नहीं। कारण भी सुन लीजिए। उर्दू को जैसा राज्याश्रय १५० वर्ष से प्राप्त है, वैसा हिन्दी आज भी प्राप्त नहीं। इसके लिए भी कांग्रेस जिम्मेदार (उदाहरणार्थ, आल इंडिया रेडियो, युक्त-प्रान्त और बि की अदालतें, पुलिस-विभाग, म्यूनिसपैलटियाँ आदि, अ हिन्दी को राज्याश्रय देने के लिए कांग्रेस सरकारें आज भी नहीं। वे हिन्दी के लिए अपनी छोटी उँगली भी उठा तैयार नहीं। हिन्दी के पास कोई निजाम भी नहीं। आज कोई हिन्दू राजा हिन्दी के लिए वही करे जो निज उर्दू के लिए किया है और कर रहा है तो सबसे पहले हि वालों को ताना देनेवाले ही उसे साम्प्रदायिक घोषित और सत्याग्रह करने चढ़ दौड़ेंगे, परन्तु श्री राजगोपालाच जाकर निजाम की पीठ ठोंकते हैं और उस्मानिया विश्वविद्या को 'हिन्दुस्तानी' को शिक्षा का माध्यम बनाने के कारण स्वदेशी विश्वविद्यालय' घोषित करते हैं। जिस प्रकार मौ आजाद उर्दू का समर्थन करते हैं और कर सकते हैं, उसी प्र हिन्दी का समर्थन गांधी जी करते हैं या कर सकते हैं! प्रकार श्री आसफ अली कांग्रेस में रहते हुए शुद्ध उर्दू में हैं, उसी प्रकार डा० राजेन्द्रप्रसाद शुद्ध हिन्दी में जिस प्रकार डा० अब्दुल हक उर्दू के लिए सब कुछ करने स्वतन्त्र हैं, उसी प्रकार टंडन जी भी हैं! जिस प्रकार जाकिर हुसेन हिन्दुस्तानी तालीमी सङ्घ में रहते हुए जा मिल्लिया के सर्वेसर्वा हैं, उसी प्रकार मि० श्री नारायण की सेवा करेंगे? जिस प्रकार एक 'नेशनलिस्ट' पत्र क्रानिकिल' के 'नेशनलिस्ट' सम्पादक श्री अब्दुल्ला बरेलवी का समर्थन करते हैं, उसी प्रकार 'हिन्दुस्तान टाइम्स'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री देवदास गांधी हिन्दी का पक्ष लेंगे ? जिस प्रकार पंजाब, सिन्ध और सीमा-प्रान्त की सरकारें हिन्दी का विरोध और उर्दू का पोषण करती हैं, उसी प्रकार संयुक्त प्रान्त, बिहार और मध्य-प्रान्त की सरकारें उर्दू का विरोध करना तो दूर रहा, हिन्दी का पोषण ही करती हैं या करेंगी ? उन पर तो 'हिन्दुस्तानी' का भूत सवार है न। वे तो उर्दू की उतनी ही, बल्कि अधिक, उन्नति करेंगी जितनी हिन्दी की, और दूसरी ओर हिन्दी की सुन्नत करेंगी (जैसे बिहार में)। हिन्दी के घर युक्त-प्रान्त की कांग्रेसी सरकार को ही लीजिए। उसने पीरपुर रिपोर्ट का उत्तर देते हुए अपनी पुस्तिका 'मुसलमान अक़लियत और हकूमत सूबाजात मुतहदा' में स्वयं स्वीकार किया है—"हकूमत ने कभी हिन्दी को उर्दू पर फौकियत नहीं दी बल्कि बाज़ मौक़ों पर उर्दू को तरजीह दी गई है...।" कांग्रेस के 'दुश्मन' अँगरेज बहादुर ने युक्त-प्रान्त में १५० वर्षों से हिन्दी पर उर्दू को तरजीह देकर हिन्दी को मटियामेट करने का जो प्रयत्न किया था और बहुत कुछ सफलता पाई थी, वह यथेष्ट नहीं था, इसलिए जनता की प्रतिनिधि, और सब मामलों में ब्रिटिश सरकार की विरोधी कांग्रेस ने भी उसी नीति को चालू रखना उचित समझा। शायद किसी ने आशा की होगी कि राष्ट्रीय सरकार के आने से युक्त-प्रान्त में हिन्दी के दिन फिरेंगे, परन्तु कांग्रेस सरकार ने हिन्दी को, और अपनी शक्ति से आगे बढ़ती हुई हिन्दी के पैर बढ़ाने में, सहायता देना तो दूर रहा, हिन्दी के साथ उतना न्याय भी नहीं किया जितना एक बहुत बड़े बहुमत की भाषा के नाते और प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों के अनुसार उस स्थान के अनुरूप होना चाहिए था जो हिन्दी ने प्रान्त में स्वयं बना लिया था, और राष्ट्रीयता से छलकती हुई, अपनी शक्ति से आगे बढ़ती हुई हिन्दी को पीछे की ओर एक धक्का देने में ही अपनी राष्ट्रीयता की पराकाष्ठा समझी। इस डर से कि कहीं हिन्दी का प्रचार उर्दू के प्रचार से अधिक न हो जाए, युक्त-प्रान्त में लड़कों के लिए तो हिन्दी और उर्दू दोनों अनिवार्य थीं ही, कांग्रेस सरकार ने लड़कियों के लिए भी दोनों को अनिवार्य करना चाहा और हिन्दी की किताबों में ही उर्दू का भाग जोड़ दिया गया (ताकि हिन्दी की १० अधिक किताबों के मुकाबले उर्दू की ६० अधिक किताबें बिकें और उर्दूवालों की रोटी चलती रहे)। किसी दूसरे प्रान्त में भी सरकार हिन्दी का प्रचार बढ़ाने के लिए इस प्रकार यत्नशील है ? जब हिन्दी का अपने घर में यह हाल किया जा रहा है तो और जगह की चर्चा करना व्यर्थ है। या तो हिन्दी और उर्दू दोनों जाननेवाले रहें, या केवल उर्दू जाननेवाले, यही 'हिन्दी-उर्दू दोनों' का उद्देश्य है। दूसरी और कांग्रेस-सरकारों ने और अन्यों ने हिन्दी की सुन्नत करने की बात तो रही, उस विषय में यहाँ बाबू राजेन्द्रप्रसाद के बिहार के बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। युक्त-प्रान्त की कांग्रेसी सरकार अपनी नीति अपनी पुस्तिका 'मुसलमान अक़लियत और हकूमत सूबाजात मुतहदा' में इन शब्दों में स्पष्ट करती है—"ज़बान के मामले में सूबाजात मुतहदा की कांग्रेस हकूमत की पालिसी 'हिन्दुस्तानी' ज़बान की तरजीह है और 'हिन्दुस्तानी' ज़बान से हकूमत की मुराद वह ज़बान है जो उर्दू हिन्दी रस्मुल खतों में लिखी जाए और जिसमें अरबी और संस्कृत के नामानूस और सक़ील अल्फ़ाज हत्तुल इमकान आने न पाएँ" (नमूना, उसी पुस्तिका की भाषा या 'हिन्दुस्तानी बोलचाल' रीडरों की भाषा)। किसी उर्दू-प्रान्त की सरकार की पालिसी भी उर्दू की वही दुर्दशा करने की है जो युक्त-प्रान्त की सरकार हिन्दी के घर में हिन्दी की करना चाहती है और कर रही है ? अस्तु, इस 'पालिसी' के अनुसार युक्त-प्रान्त की कांग्रेसी सरकार हिन्दी को अपने घर से बे-दखल करके 'हिन्दुस्तानी' को बसाने में दत्तचित्त है, युक्त-प्रान्त की मातृ-भाषा 'हिन्दुस्तानी' घोषित की जा रही है, युक्त-प्रान्त के न्याय-मन्त्री डा० काटजू अपने भाषणों में यह नहीं कहते कि अदालतों आदि में अँगरेजी के बजाय हिन्दी का प्रयोग करो, यह भी नहीं कहते कि जो चाहे वह उर्दू का प्रयोग कर सकता है वरन् यह कहते हैं 'हिन्दुस्तानी का प्रयोग करो' (शायद उसी 'हिन्दुस्तानी' का जो उनके अधीनस्थ अदालतों में चल रही है और जिसे बदलने की वे कोई आवश्यकता नहीं देखते); युक्त-प्रान्त की सरकार 'हिन्दी-साहित्य' की नहीं, 'हिन्दी साहित्य और उर्दू साहित्य' की भी नहीं वरन् 'हिन्दुस्तानी साहित्य' की अभिवृद्धि के लिए ५०,०००) मञ्जूर करती है; स्वयं टण्डन जी प्रस्ताव रखते हैं कि लखनऊ विश्व-विद्यालय का माध्यम हिन्दी नहीं, हिन्दी और उर्दू भी नहीं वरन् 'हिन्दुस्तानी' हो और युक्त-प्रान्त के शिक्षा-मन्त्री और हिन्दी के प्रसिद्ध समर्थक श्री सम्पूर्णानन्द 'हिन्दुस्तानी' की वैज्ञानिक शब्दावली बनाने के लिए पाँच वाइस-चांसलरों की एक कमेटी की नियुक्ति करते हैं। अब हिन्दी के घर युक्त-प्रान्त में तो हिन्दी नहीं रह सकती, हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि नहीं हो सकती, हिन्दी शिक्षा का माध्यम नहीं हो सकती। फिर कहीं और हिन्दी को ठौर क्यों मिलने लगा ? अगर खींच-तान की जाए तो युक्त-प्रान्त की सरकार की 'हिन्दुस्तानी' का अर्थ $\frac{\text{हिन्दी} + \text{उर्दू}}{२}$ के बजाय हिन्दी + उर्दू निकाला भी जा सकता है, यद्यपि उन शब्दों को देखते हुए जिनमें सरकार ने 'ज़बान के मामले' में अपनी 'पालिसी' स्पष्ट की है, यह अर्थ निकल नहीं सकता। फिर भी इतना तो प्रकट ही है कि युक्त-प्रान्त में जितनी हिन्दी चलेगी उतनी ही उर्दू चलाई जाएगी, यदि हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि के लिए २५०००) मिलेंगे तो उर्दू-साहित्य की अभिवृद्धि के लिए भी २५०००) दिए जाएँगे; यदि हिन्दी शिक्षा का माध्यम होगी तो उर्दू भी शिक्षा का माध्यम होगी; यदि हिन्दी की उच्च पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए, अँगरेजी की पाठ्य-पुस्तकों से हिन्दी में अनुवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए एक लाख रुपया दिया जाएगा तो उर्दू की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण के लिए भी एक लाख रुपया दिया जाएगा, आदि आदि। इसके विरुद्ध उर्दू प्रान्तों में क्या हो रहा है, वहाँ की सरकारें क्या कर रही हैं, और करेंगी ?.....

अब केन्द्र पर दृष्टि डालिए। आज की मध्यकालीन सरकार में या तो उर्दू पर जान देनेवाले हैं या 'हिन्दुस्तानी' पर जान देनेवाले, अर्थात् उर्दू लिपि और उर्दू शब्दों का देवनागरी और हिन्दी शब्दों के साथ-साथ प्रचार चाहनेवाले। वहाँ हिन्दी का कोई धनी-धोरी है ? जिस प्रकार सर सुलतान अहमद ने रेडियो-द्वारा उर्दू का पोषण किया और आज भी कोई लीगी यदि उसे रेडियो-विभाग मिल जाए तो, करेगा, वैसी हिन्दी की सेवा सरदार पटेल करेंगे ? जब इन कांग्रेसी नेताओं के मुँह से पहले विरोध का एक शब्द नहीं निकला तो आज क्या आशा की जा सकती है ? जिस प्रकार आज हिन्दी-प्रचारकों के दिल में खींचातानी और संशय पैदा हो गया है वैसा कभी किसी मुसलमान प्रचारक के दिल में पैदा हो सकता है ? जिस प्रकार आज हजारों हिन्दू प्रचारक उर्दू और उर्दू लिपि के पीछे मतवाले हैं उसी प्रकार किसी मुसलमान को भी हिन्दी और देवनागरी की चिन्ता है ? वास्तव में हिन्दीवालों को ताना देनेवाले जो प्रश्न पूछते हैं उसका उत्तर वे स्वयं हैं। हिन्दी को 'राष्ट्रीयता' के राहु ने ग्रस लिया है। एक ओर तो हिन्दुओं के लिए हिन्दी के साथ-साथ उर्दू और उर्दू लिपि सीखना और सिखाना 'राष्ट्रीय' करार दिया जा रहा है और दूसरी ओर हिन्दी को 'कठिन', 'कृत्रिम' और न जाने क्या-क्या बताकर 'हिन्दुस्तानी' नामधारी उर्दू को 'राष्ट्रीय' बताया जा रहा है। हिन्दी का नाम लेना तो आज साम्प्रदायिकता है, फिर भला 'राष्ट्रीय' महापुरुष उसे कैसे पूछ सकते हैं ! और 'राष्ट्रीय' महापुरुषों के सिवा हिन्दी को पूछनेवाला है ही कौन, क्योंकि 'राष्ट्रीयता' केवल हिन्दुओं की बपौती ठहरी न और उस 'राष्ट्रीयता' में न हिन्दी का कोई स्थान है और न हिन्दुत्व का। यदि हिन्दी-उर्दूवाले प्रश्न को इस प्रकार रक्खा जाए कि 'जिस प्रकार मुसलमानों के राजनीतिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक हितों की तरक्की करने के लिए एक ऐसी लीग है जिसके दरवाजे पर गांधी जी भी नंगे-पाँव जाते हैं और कांग्रेस भी मित्रता की भिक्षा माँगती रहती है, उसी प्रकार हिन्दुओं की कौन-सी संस्था है ?' या परिस्थिति जल्दी समझ में आ जाएगी। आज भारत की केन्द्रीय असेम्बली में स्पीकर की कुर्सी पर खड़े होकर जोर से पूछिए यहाँ कोई सिक्खों के हितों की रक्षा करनेवाला है ? उत्तर मिलेगा, हाँ। पूछिए, ईसाइयों की ओर से बोलनेवाला कोई है, एँग्लो-इंडियनों की तरफ से, युरोपियनों की तरफ से, पारसियों की तरफ से कोई बोलनेवाला है ? प्रत्येक बार उत्तर मिलेगा, हाँ ! पूछिए, मुसलमानों की तरफ से कोई बोलनेवाला है ? बहुत-से उत्तर साथ मिलेंगे, हाँ। फिर पूछिए, इस हिन्दु-स्थान की, ३० करोड़ हिन्दुओं की इस पुण्यभूमि और भूमि की, राम और कृष्ण की इस लीला-भूमि की केन्द्रीय निधि सभा में कोई ऐसा भी है जो हिन्दुओं के हितों की लिए बोल सके ? कोई उत्तर नहीं मिलेगा। जिस में सत्यार्थप्रकाश के रक्षार्थ कोई हाथ न उठा वहाँ हिन्दी रक्षा कौन करेगा ? स्वर्गीय मालवीय जी को वृद्धावस्था दीर्घ मौन के बाद यह क्यों कहना पड़ा कि हिन्दुओं के और सांस्कृतिक अधिकार कांग्रेस के हाथ में सुरक्षित नहीं हैं।

यह भूलना नहीं चाहिए कि लाख कुछ और कहा अन्ततोगत्वा हिन्दी और उर्दू का मामला हिन्दू मुसलमान का मामला है। जिस प्रकार आज राजनीति मैदान में या तो मुसलमान हैं या तथाकथित 'राष्ट्रीय,' उसी या तो उर्दू को राष्ट्र-भाषा माननेवालों का बोलबाला है या 'हिन्दुस्तानी' $\frac{(= \text{हिन्दी} + \text{उर्दू})}{२}$ और 'दोनों लिपि' का। प्रान्त की कांग्रेसी सरकार ने प्रान्त-भाषा हिन्दी को भी निकाल कर इसी 'हिन्दुस्तानी' और 'दोनों लिपि' को बैठाने की है और मद्रास, बम्बई आदि की कांग्रेसी सरकारों ने इसी 'हिन्दुस्तानी' और 'दोनों लिपि' की प्रतिष्ठा की है, चाहे सिन्ध, सीमा-प्रान्त आदि में हिन्दी $\frac{\text{हिन्दी} + \text{उर्दू}}{२}$ वाली 'हिन्दुस्तानी' और देवनागरी को पूछनेवाला कोई न हो। अभी हाल आन्ध्र के मुसलमानों का एक डेपुटेशन मौलाना आजाद से मिला था और यह इच्छा प्रकट की थी कि उनकी शिक्षा का माध्यम तेलगू के बजाय उर्दू हो। कहते हैं, मौलाना आजाद ने उनकी सिफारिश मद्रास के प्रधान-मन्त्री श्री प्रकाशम् से की है। जिस प्रकार भारत का हर एक मुसलमान—बङ्गाल का, मद्रास का, का, लीग का या कांग्रेस का उर्दू पर जान देता है उस प्रकार अहिन्दी-हिन्दुओं की कौन कहे, हिन्दी हिन्दू भी नहीं दे सकते। उनमें भी डा० ताराचन्द और पण्डित सुन्दरलाल-जैसे महापुरुष उत्पन्न हो गए हैं। अहिन्दी हिन्दुओं को तो अब हिन्दी की चिन्ता रह ही नहीं गई है। भारत भर के मुसलमानों की शक्ति और साधन उर्दू में लगे हुए हैं, परन्तु हिन्दुओं का प्रकाशन और ठोस या पोला काम एक नहीं, दस-बारह भाषाओं में, जिनमें उर्दू भी शामिल है, हो रहा है। जिस भाषा की पीठ पर राज्य-सत्ता हो, जिसके दस करोड़ अनुयायी हों, जिसे 'राष्ट्रीय' महापुरुषों द्वारा भी हिन्दी के समकक्ष स्थान दिया जाकर उसका राष्ट्रीय प्रकरणों में समान प्रचार अनिवार्य करार दे दिया गया हो, जिस पर अकेले निजाम ने कई करोड़ रुपया (और वह हिन्दू कर-दाताओं का ही) आज तक खर्च कर दिया है जिसकी सर्वाङ्गपूर्ण वृद्धि के लिए निजाम ने अ-उर्दू प्रदेश में ही ५० लाख रुपया लगाकर एक विश्व-विद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया हो, जिस पर आज भी प्रतिवर्ष लाखों रुपया खर्च करता हो, जिसके प्रचार-प्रसार के लिए निजाम लाखों रुपए प्रतिवर्ष गुप्त दान देता हो, जिसके पीछे लीग-जैसी राजनीतिक संस्था हो, उसकी तरक्की और प्रकाशन का बेचारी हिन्दी से क्या मुकाबला, जिसके पीछे आज स्वयं हिन्दू लट्ठ लिए घूम रहे हों और जिसकी सुन्नत करने की फिराक में स्वयं हिन्दी-भाषी हों। यह तो प्रश्न-कर्ताओं को स्वयं सोचना चाहिए कि ऐसा क्यों है कि संख्या और साधनों में हिन्दुओं के अधिक होते हुए भी हिन्दी उर्दू के मुकाबले में पिछड़ रही है, जब कि वैयक्तिक दृष्टि से एक हिन्दीवाला एक उर्दूवाले से किसी प्रकार कम नहीं—ढोल पीटने में भी और ठोस काम करने में भी। आज गांधी जी ने हिन्दी के कैम्प में जो फूट डाली है और उन्होंने जिस 'वाद' को 'राष्ट्रीयता' का जामा पहनाया है उसका यह परिणाम तो होना ही है कि अपने दस करोड़ अखण्ड और अशङ्क अनुयायियों के बल पर उर्दू भारत की सबसे शक्तिशालिनी भाषा और वास्तविक राष्ट्र-भाषा हो जाएगी और उसके स्टीमरोलर के नीचे अकेली हिन्दी ही नहीं, सभी प्रान्तीय भाषाएँ पिस जाएँगी—गांधी जी की गुजराती भी और शरत् और टैगोर की बँगला भी। आगे देखिए, बङ्गाल में, मद्रास में, बम्बई में कैसा भीषण उर्दू-बँगला उर्दू-तेलगू, उर्दू-तामिल, उर्दू-मराठी और उर्दू-गुजराती युद्ध छिड़ता है। 'हिन्दुस्तानी' तो न कोई चीज है और न कभी होगी।

——

लो पा हाँग

श्री चन्द्रचूड़, एम० ए०

लो पा हाँग चीन के उन व्यक्तियों में थे जिनकी सदाशयता उनके व्यक्तिगत स्वार्थों से बड़ी होती है और जो जनता की सेवा में अपने प्राणों को उत्सर्ग कर देने में ही गौरव मानते हैं। परन्तु राजनीतिक मतभेद और आन्तरिक प्रतिशोध की भावना किस प्रकार उदार से उदार व्यक्ति को भी क्षण भर में मृत्यु के मुख में भेज सकती है, लो पा हाँग का जीवनचरित इसका भी प्रमाण है। ३० दिसम्बर, १९३७ को जब उनके दुःखद अन्त की घटना समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई तो चीन के ही कितने मातृभक्त और भावुक व्यक्तियों की आँखों में आँसू तक आ गए। और जब देशद्रोह का लाञ्छन लगाकर उनकी मृत्यु की घोषणा हुई तो सब को बड़ा आश्चर्य हुआ कि चीन का यह अत्यन्त उदार और सहृदय व्यक्ति देशद्रोही कब था। उनकी समाधि पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के लिए हाँग के विरोधी तक तैयार थे, ऐसा सुना जाता है।

व्यक्तित्व का विश्लेषण

उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए आई० टी० लेनी द्वारा प्रकाशित एक छोटी पुस्तिका से, देखने में एक अत्यन्त साधारण घटना का मार्मिक चित्र यहाँ दे रहे हैं जिसका प्रभाव लो पा हाँग पर स्थायी रूप से पड़ा था—"आज से ३५ वर्ष पहले की बात है। शङ्घाई की सड़कों पर एक चीनी नवयुवक कुछ विचारों में खोया-सा चला जा रहा था। प्रातःकाल का समय था। गिरजाघर की घण्टियों की मधुर टनटनाहट उसे अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। सहसा सड़क के किनारे कुछ फटे-पुराने चीथड़ों में लिपटी हुई एक नङ्गी-भूखी आत्मा जिसका कृश तन और धँसी हुई आँखें उसके भिक्षुक होने का सङ्केत करती थीं, दिखाई पड़ी। वह एक रोगग्रस्त, निर्बल, बूढ़ा भिखारी था जिसे देखकर चीनी नवयुवक के मन में इतनी दया उमड़ आई कि वह उसे एक पुरानी पहिए की गाड़ी में बिठाकर निकटवर्ती अस्पताल में प्रवेश कराने के लिए स्वयं ले चला। परन्तु भिखारी को देखकर किसी अस्पतालवाले का साहस उसे अपने यहाँ शरण देने का नहीं हुआ। यहाँ तक कि नगर के समस्त चिकित्सालयों से निराश होकर भिखारी की सेवा-शुश्रूषा का सारा प्रबन्ध इस नवयुवक को अपने ऊपर लेना पड़ा।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह दयालु नवयुवक स्वयं लो पा हाँग थे। इस घटना ने उन्हें चीन का सेन्ट पाल बना दिया।

परिचय

लो पा हाँग का जन्म १८७४ ई० में शङ्घाई के एक अत्यन्त लब्धप्रतिष्ठ ईसाई परिवार में हुआ था। उनका कुल कैथोलिक सम्प्रदाय की परम्परागत सदाशयता और उदारता के लिए चीन में प्रसिद्ध है। वे लोग धनी होते हुए भी स्वार्थी और घमण्डी नहीं थे। उनके आश्रय में रहकर पिछली शताब्दी के अनेक धर्म-प्रचारक बड़ी लगन और सेवा के साथ चीन में शिक्षा एवं धर्म का प्रचार करते थे। धर्म की मर्यादा के लिए इस कुल में अपना प्राण उत्सर्ग करनेवाले व्यक्ति भी हो चुके हैं। बालक लो पर भी आरम्भ से अपने कुल के संस्कार पड़े थे। उनकी शिक्षा शङ्घाई के जेसुइट कालेज में हुई। शीघ्र ही उन्हें चीनी भाषा के साथ-साथ अँगरेजी और फ्रेञ्च का भी अच्छा अभ्यास हो गया। बीस वर्ष की अवस्था में वे ऊँची शिक्षा प्राप्त कर समाज की सेवा में लगे।

उनका विवाहित जीवन सुखमय था। उन्होंने एक कुलीन ईसाई महिला से विवाह किया था और उनकी नव सन्तानें हुईं। सामाजिक जीवन में उन्हें विशेष प्रतिष्ठा मिली। इसका कारण यह था कि वे समाज के विभिन्न अङ्गों का स्वयं निरीक्षण कर जनता की सेवा का नया मार्ग निकाला करते थे। कैथोलिक सम्प्रदाय के तो वे प्राण ही थे। जनता के भी हृदय पर उनका आधिपत्य था। एक प्रसिद्ध व्यवसायी और श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है वे सब लो पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान थे। कहा तो यहाँ तक जाता है कि यदि वे व्यापार की ओर कुछ और ध्यान देते तो करोड़पति हो सकते थे। परन्तु उन्हें तो जनता का सेवक बनना ही इष्ट था। लो शङ्घाई के चाइनीज एलेक्ट्रिक पावर कम्पनी के जेनरल मैनेजर, शैपाई हाइड्रो एलेक्ट्रिक कम्पनी के डाइरेक्टर, ता तुँग स्टीमशिप कम्पनी के चीफ मैनेजर, पेपिंग के सेंट्रल हास्पिटल के मैनेजिंग डाइरेक्टर तथा शङ्घाई के चैम्बर ऑव कामर्स के अध्यक्ष थे। परन्तु उन्हें अभिमान छू तक नहीं गया था। वे प्रायः कहा करते—"एक अविनश्वर आत्मा मेरे सम्पूर्ण व्यवसाय से बढ़कर है। मेरे सामने अर्थ का कोई मूल्य नहीं है।" वे दानवीर प्रसिद्ध थे।

सार्वजनिक हित और सेवा

समाज की दीनता और अन्ध-विश्वास के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्होंने आरम्भ से ही शपथ ले रक्खी थी। वे विद्यार्थी जीवन में भी बहुधा दरिद्र बस्तियों में धर्म-प्रचार तथा सेवा का कार्य करते हुए घूमा करते थे। वे हृदय से जनता की भलाई की कामना किया करते थे। और इसके लिए वे बराबर प्रयत्नशील थे। १९१२ में उन्होंने शरणार्थियों के लिए 'सेण्ट जोसेफ्स हॉसपाइस' अथवा "सिन-ओ-यु-तँग" नामक एक छोटी-सी संस्था खोली थी जो आगे चलकर इतनी बड़ी संस्था हो गई कि उसके अन्तर्गत कई स्कूल, प्रयोग-शालाएँ, डिस्पेंसरियाँ, वृद्धालय, अनाथालय आदि खोलने पड़े। उनकी मृत्यु के समय तो इसमें तीन हजार से अधिक रोगी वर्तमान थे और कुल एक लाख शरणार्थी आश्रय पा रहे थे। तीस लाख से ऊपर रोगियों की चिकित्सा हो चुकी थी जो लो पा हाँग को कभी न भूल सकते थे। उनमें से चालीस हजार के लगभग ईसाई धर्म में दीक्षित हो चुके थे जिसका लो पा हाँग को अभिमान था। वे अपने धर्म और निर्धनों की सेवा में सर्वस्व उत्सर्ग कर देना चाहते थे। इसी अभिप्राय से शङ्घाई के एक छोटे-से व्यावसायिक केन्द्र में उन्होंने "सेक्रेड-हार्ट" नामक अस्पताल भी खोला था जो बाद में सीनो-बेलजियन इंस्टीट्यूट ऑव रेडियोलॉजी का प्रमुख केन्द्र बन गया और जिससे हजारों नासूर (Cancer) के रोगियों ने लाभ उठाया। पागलों के लिए भी उन्होंने "मर्सी हास्पिटल" खोलकर अनेक असहाय व्यक्तियों की सेवा की।

शिक्षा के क्षेत्र में कुल १७ प्राइमरी स्कूल, दो ट्रेनिंग स्कूल और कई सेकेंडरी स्कूल लो पा हाँग की प्रेरणा से खुले। इन विद्यालयों में शिक्षा पाकर चीन की कितनी बड़ी जन-संख्या सुशिक्षित बन सकी इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। केवल शङ्घाई के लड़कियों के स्कूल में ५०० छात्राओं के निवास तथा कुल १००० के पढ़ने का सुप्रबन्ध है। इस तरह की संस्थाओं के लिए लो पा हाँग को जनता की पूरी सहायता लेनी पड़ी है। वे अपने को "भिखारियों का राजा" [illegible] करते थे।

यह सच भी है कि यदि वे जनता की सहायता न लेते [illegible] चीन की निरक्षर और दुर्भाग्य-ग्रस्त जनता का उतना [illegible] नहीं हो सकता था जितना हाँग की क्रियाशीलता तथा [illegible] ने किया। फिर भी इन सेवाओं के मूल में हाँग का प्रभाव [illegible] व्यक्तित्व निस्सन्देह वर्त्तमान है। बिना किसी अतिशयोक्ति [illegible] वे आधुनिक चीन के एक महान् लोकहितैषी और [illegible] नेता थे।

कैथोलिक सम्प्रदाय के महान् नेता

लो पा हाँग एक आदर्श ईसाई थे जिनका मूल मन्त्र [illegible] और धर्मानुशासन था। कैथोलिक सम्प्रदाय के प्रचार में उन्होंने पोप पायस (Pius XI) से भी अधिक काम किया। [illegible] पूर्व में केवल वे ही "नाइट ऑव दि ऑर्डर ऑव [illegible] ग्रेगोरी" नामक उपाधि से विभूषित किए गए थे। चीन [illegible] प्रसिद्ध कैथोलिक ऐक्शन सोसायटी (Catholic Action Society) भी उन्हीं की स्थापित की हुई है। उसके द्वारा दाउ-का-हाँग तथा कशाई क्षेत्रों में धर्म का काफी प्रचार हुआ है। केवल पचीस वर्षों के बीच इस सोसायटी ने ३ [illegible] व्यक्तियों को ईसाई धर्म में दीक्षित किया है।

लो पा हाँग के नाम के साथ धार्मिक सङ्कीर्णता न सम्पृक्त होकर कैथोलिक सम्प्रदाय की विशालहृदयता ही संयुक्त हुई है। उनके द्वारा स्थापित समाज ने शानतँग के [illegible] पीड़ित क्षेत्रों में जो सहायता का काम किया था वह आज भी लोग स्मरण करते हैं। इस समाज ने तैंतीस गिरजाघर [illegible] चीन में ईसाई समाज की प्रतिष्ठा की है। हो सकता है कुछ इस कारण भी चीन के कुछ वर्ग लो पा हाँग के [illegible] षड्यन्त्र रचने में लगे हुए थे। रूढ़िवादियों का [illegible] था कि चीन की राष्ट्रीयता का अपहरण कर इस देश [illegible] ने सारे देश को विलायती संस्कृति में रँगने की योजना निकाली है।

परन्तु अपने धर्म में दृढ़ रहनेवाले हाँग को उनके [illegible] निस्सार प्रतीत होते। वे बड़े उत्साह के साथ धर्म का [illegible] करते हुए भ्रमण किया करते थे। यहाँ तक कि जेलों में [illegible] बन्दियों के बीच भी उन्होंने धर्म की लहर उत्पन्न कर दी [illegible] प्राण-दण्ड पाए हुए अपराधियों को भी मृत्यु के [illegible] "बपतिस्मा" दिया। इस दिशा में उनके जीवन की [illegible] घटना बड़ी मनोरञ्जक है। मृत्यु के पूर्व एक हठधर्मी [illegible] ईसाई बनाने में उन्हें कुछ विशेष प्रयास करना पड़ा था परन्तु उनकी सरलता और व्यक्तित्व की गरिमा ने उस [illegible] के मुँह से अन्त में इन शब्दों का उच्चारण करा के छोड़ा—"ईश्वर को तथा लो पा हाँग को मैं धन्यवाद देता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का रहस्य

लो पा हाँग की इस सफलता का रहस्य क्या है? जब हम लो पा हाँग पर विचार करने लगते हैं तो हाँग की उज्ज्वल मूर्ति सामने ही जाती है। वे सिर से पैर तक सेवा और विश्वास की जीवित प्रतिमा थे। उनकी क्रियाशीलता देखकर आश्चर्य होता है। आध्यात्मिक जीवन से उनका स्वाभाविक स्नेह था और यही कारण था जो वे प्रायः गिरजाघर में ही दिखाई देते। ईसाई सम्प्रदाय की राष्ट्रीय तथा अन्ताराष्ट्रीय बैठकों में सक्रिय भाग लेकर उन्होंने अपनी जागरूकता का परिचय दिया था। १९२६ में शिकागो काग्रेस के लिए वे चीन से प्रतिनिधि बनाकर भेजे गए थे और मनीला कांग्रेस में भी उपस्थित हुए थे। उनकी वक्तृताओं में 'सेवा और उदारता' का सागर उमड़ पड़ा है।

लो के आध्यात्मिक जीवन के विषय में रियोन नामक फ्रांसिस जेसुइट ने लिखा है—"ऐसे कितने ही अवसर आए जिस कि हमें कहना पड़ा कि लो के कामों में ईश्वर का प्रत्यक्ष हाथ है। जब कभी किसी महान् कार्य के लिए अधिक पूँजी की आवश्यकता होती उतना निश्चित समय पर आप से आप पहुँच जाता। उनका विश्वास सेंट जोसेफ में अटल था। १९३२ की घटना है। शङ्घाई पर युद्ध के बादल मँडरा रहे थे। बिजली-कम्पनियों के डाइरेक्टर युद्ध के प्रति सशङ्क हो उठे। इंश्योरेंस कराना आवश्यक समझते थे। परन्तु यह काम अत्यन्त जटिल था। शङ्घाई के लिए कोई उत्तरदायी कैसे हो सकता था? अन्त में लो ने ईश्वर में विश्वास किया और नगर-व्यवसायियों के सामने यहाँ तक कह डाला कि "मैंने सब इंश्योर कर लिया है, चिन्ता की कोई बात नहीं।" "कहाँ?" लोगों ने पूछा। "पवित्र हृदय के साथ।" लो का सारगर्भित उत्तर यही था। व्यवसाय के लिए इस तरह का उत्तर उपहासास्पद होता है, परन्तु एक लो पा हाँग थे जिन्होंने व्यवसाय को भी श्रद्धा का विषय बना दिया। उनके सरल विश्वास का ही परिणाम था जो कहीं एक खिड़की तक न टूटी और पास ही बम के धड़ाकों के होते हुए भी उनकी शालाएँ सुरक्षित रहीं। 'पवित्र हृदय' के नाम पर एक गिरजाघर बना लो के शब्दों में 'इंश्योरेंस की फीस' थी।

इस तरह की श्रद्धा केवल आध्यात्मिक व्यक्तियों में पाई जाती है। लो का आध्यात्मिक क्षितिज अत्यन्त विस्तृत था। वे केवल व्यापारी ही न थे। आचरण की मर्यादा उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अङ्ग बन गई थी। उनके हर काम श्रद्धा और विश्वास के सहारे हुआ करते थे। परन्तु यह बात नहीं है कि अपने व्यावसायिक जीवन में वे व्यावहारिक कुशलता से काम न लेते थे। उनके अन्तःसंस्कार (Impressions) अवश्य कौशल तन्तुओं से बने हुए थे।

सेवा का पुरस्कार

अपनी सेवाओं के कारण लो जनता के सम्मानित नेता बन गए। जिस तरह व्यावसायिक क्षेत्र में प्रमुख संस्थाओं से उनका सम्बन्ध स्थापित हुआ उसी तरह सार्वजनिक क्षेत्र में भी एक के बाद दूसरी संस्था ने उन्हें अपना प्रतिनिधि अथवा सदस्य निर्वाचित किया। वे प्रायः अपने को 'सेंट जोसेफ का कुली' कहा करते थे। उनकी इस सरलता एवं सेवामय जीवन से प्रभावित होकर देश के कितने नवयुवक स्वयंसेवक बनकर चीन की उन्नति में लग गए।

लो पा हाँग को यद्यपि उपाधियों से प्रेम न था, उनके ऊपर उपाधियों की वर्षा की गई। वे चीन के कैथोलिक ऐक्शन के सभापति तथा अन्ताराष्ट्रीय ईसाई सम्प्रदाय की स्थायी समिति के सदस्य बनाए जाकर चीन सरकार की ओर से एक राजनीतिक उपाधि से सम्मानित किए गए। फ्रांस की सरकार ने उन्हें "नाइट ऑव दि लीजियन ऑव ऑनर," बेलजियन सरकार ने "कमांडर ऑव दि रायल आर्डर ऑव दि क्राउन" तथा पोप ने "नाइट ऑव दि आर्डर ऑव सेंट सिलवेस्टर" नामक उपाधियों-द्वारा उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। वे धर्म के विषय में प्रमाण समझे जाने लगे। इस कारण उन्हें "चेम्बरलेन ऑव दि केप ऐंड स्वोर्ड" नियुक्त किया गया था जो सुदूर पूर्व के लिए ईसाई धर्म के एक बड़े गौरव की बात थी। परन्तु इतना सब होते हुए भी लो पा हाँग जनता के सेवक एवं सेंट जोसेफ़ के कुली बने रहे।

चीन की भूल

लो पा हाँग की उदारता चीन के इतिहास में अमिट हो गई है। उनकी सेवाएँ राष्ट्र की सञ्चित निधि बन गई हैं। परन्तु जब हम उनके दुःखद अन्त का समाचार दुहराते हैं तो उन व्यक्तियों के प्रति अत्यन्त झुँझलाहट मालूम पड़ती है जिन्होंने इस महान् व्यक्ति को समझने में भूल कर उसकी निर्दयता पूर्वक हत्या कर डाली। अपनी मृत्यु के दिन भी वे दरिद्रों के लिए चावल खरीदने निकले थे। उसके पहले शङ्घाई के जापानियों-द्वारा अधिकृत हो जाने पर नेशनल कैथोलिक वार रिलीफ एसोसिएशन (National Catholic War Relief Association) की स्थापना कर चुके थे। उनके मन में भी यह शङ्का उठी थी कि यदि वे जापानियों से मिलकर अनाथों की सेवा का प्रबन्ध करेंगे तो अन्धे देशभक्त उन्हें देशद्रोही मान लेंगे। हुआ भी ऐसा ही। पर उनका वह हृदय जो पैंतीस वर्ष पूर्व शङ्घाई की उन्हीं सड़कों पर साधारण भिखारियों को देखकर रो पड़ा था, चीन की एक विशाल जनसंख्या को अनाथों की तरह भूख-प्यास से तड़पती देखकर किस तरह स्थिर रह सकता था?

लो पा हाँग अनाथों के लिए शहीद हो गए। उनकी हत्या के विषय में और लोग जो कुछ कहें, मैं तो उसे चीन की भूल ही कहूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

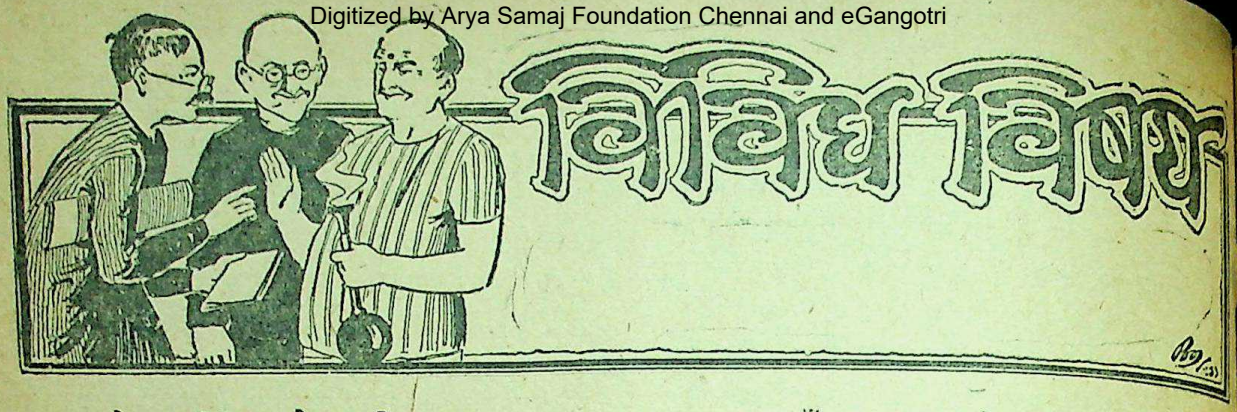

प्रेम करोगे ? प्रेम करो ना ?

मैं गाता था गीत प्रेम के।
सहसा आस-पास के घर से
आया पीड़ित ऊँचा क्रन्दन।
चीख उठा था कोई प्रेमी,
आतुर, प्रिय के पास गड़ा-सा,
चला गया जो अभी कहीं है
सदा-सर्वदा को ही,
प्रणय-गान की असफलता चिल्लाता,
जीवन की क्षणता के घोष सुनाता।

चौंक उठा मैं अपने ही कमरे में।
रुका प्रेम का गीत मध्य में खोया।
दीख गई उल्लास पथिक को,
ज्यों सहसा आधे ही पथ में
कोई गुरु-दीवार अलक्ष्य।
बढ़ा वेदनामय वह तीखा क्रन्दन,
बाहर-भीतर प्रतिध्वनि से संवर्धित,
दर्द-भरी अन्तर में चुटकी भरता,
कभी न जो अब तक अनुभव में आया,
ऐसा कुछ बतलाता!

वैसा ही पाषाण बना-सा
मैं बैठा अपने आसन पर—
जब मेरे घर के नीचे ही
आया अति गम्भीर दुखित रव—
'है राम नाम सत राम राम'

निष्प्राण बँधा शव रस्सी से बाँसों में।
आ गए चित्र सहसा कितने आँखों में?
बोल पड़े सब—
बार-बार बस यह ही—
'प्रेम करोगे?
[illegible]'

गूँज उठा कमरा मेरा सारा ही।
काँप उठे शाखी मेरे सम्मुख ही।
कहीं पोंछकर धूलि पत्र पर छाई,
कहीं पोंछकर जीवन की परछाईं,
रङ्ग मञ्च पर जब अभिनय-सा करता,
गरज रहा था पवन
—स्पन्द वह दुर्दम।
नश्वरता जैसे नाना रूपों में
एक साथ ही गरजी—
'प्रेम करोगे? प्रेम करो ना?
प्रेम करोगे? प्रेम करो ना?'

—'प्रभातकुमार'

सरकारी न्याय!

हम लोगों ने 'परेड' करने से इनकार कर दिया था, इसलिए हमारी सारी सहूलियतें बन्द कर दी गई थीं। न तो हम मुलाकात ही ले सकते थे, न पढ़-लिख सकते और न बाहर से कोई चीज ही मँगा सकते। चिट्ठी-पत्री तो कतई बन्द कर दी गई थी। ऐसे समय 'तिकड़म' ही हम लोगों का सहारा रहती थी। हममें से कुछ लोग 'तिकड़म' करने की सोच ही रहे थे कि असिस्टेंट जेलर (जेलर के नीचे के सारे स्टाफ असिस्टेंट जेलर होते हैं), जो हमारे चार्ज में रक्खा गया था, खट खट् करता हुआ आ पहुँचा। सुपरिंटेंडेंट के व्यवहार हमसे अटपटे थे। हम लोग सशङ्क रहा करते थे कि न जाने कब क्या हो जाए। आगन्तुक ने खबर दी कि कल डी० टी० का 'राउंड' है। जिसे जो भी 'अर्ज' करना हो करे। उपेक्षा से हम लोगों की ओर देखते हुए वह कह गया। रहे, वह कहता गया—रिपोर्ट करनेवाले अथवा किसी किस्म की शिकायत करनेवाले के हक में अच्छा न होगा। वह चलता बना; हम क्रुद्ध हो उसकी पीठ देखते रहे।

नौकरशाही की खबर लेकर चैन लेने की कसम खाए हुए हम इनके आतङ्क को दबोच लेने का प्रयत्न कर रहे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचते रहे कुछ करें या नहीं। बिना ट्रायल के हम लोगों को लगता था न जाने क्या हो। गांधीजी की बात याद आती थी—जेल में भी सत्याग्रही सड़ता नहीं है। वह अपनी स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़े जाता है। पर याद आना तो होना नहीं है। पटती न थी। हमेशा लगता था कि हम सड़ रहे हैं! बाहर रहते तो क्या-क्या न कर डालते····· ! इसी लिए रह-रहकर बाहर जाने की इच्छा तीव्रतर हो आती। कभी-कभी जब अपनी हालत पर सोचते तो लगता, आखिर आज हम पर भी क्यों नहीं लगाए जाते। सजा दे दी जाए गुनाहों की?

राउंड पर साहब आए। चूँकि हम लोग उन गन्दों में से थे जो अनुशासन नहीं मानते थे, साहब ने हमारे बैरक में घुसने से इनकार कर दिया। हुक्म हुआ—जिसे जो कुछ कहना है, बाहर आकर कहे।

एक साथी उठा। बाहर पहुँचकर साहब की और उनके दल-बल की ओर देखा। कुछ सहमते हुए उसने पूछा—हमें क्यों बन्द कर रक्खा है?

उत्तर मिला—कुछ किया होगा इसलिए।

साथी ने कहा—कुछ किया है, और यदि वह तुम्हारे ख्याल की रू से जायज नहीं है तो खुली अदालत में मुकदमा चलाइए। पर आखिर यह तो बतलाइए कि किया क्या है? हुजूर ने माथे पर सिकुड़न लाते हुए जिद्दी स्वराजी से कहा—क्या किया है तुमने? कुछ खीझ और कुछ अचम्भे से साथी ने दुहराया—ठीक यही तो मैं भी पूछता हूँ कि मैंने क्या किया है, जिसके कारण मुझे यहाँ धाँध रक्खा है?

"तुम नहीं जानते कि तुमने क्या किया है?"—हुजूर फरमाया।

"जी नहीं।"—साथी ने कहा।

"जब तुम नहीं जानते तुमने क्या किया है तो हम क्या जानें तुमने क्या किया है।"—कहते हुए साहब लौटने का उपक्रम करने लगे। साथी ने इशारा समझकर भी ढीठ हो कहा—तो साहब जब आप भी नहीं जानते कि मैंने क्या जुर्म किया है तो व्यर्थ की यह सजा क्यों?

साहब चले गए।

जाते-जाते कह गए—'सेल पनिशमेंट।'

साथी गुनहखाना भेज दिया गया।

अपने असन्तोष में भी हमने ठहाका लगाया—यह सरकारी रहम है!

—भारतचन्द्र, बी० ए०

सस्ते चीनी के बर्तन और सीसे का विष

चीनी मिट्टी के बर्तन साधारणतया ४ प्रकार के उपादानों से बनाए जाते हैं—(१) चायना मिट्टी (China clay), (२) नमनीय मिट्टी (Plastic clay), (३) फेलस्पार (Felspar) और (४) क्वार्ट्स (Quartz)।

इस मिलावट को 'बाडी' (Body) कहते हैं। उपादान-संयुति (Composition) के अनुसार अनेक भिन्न-भिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। जैसे—मेजलिका (Majolica), अर्दनवार (Earthenware), स्टोनवार (Stoneware), पोर्सलीन (Porcelain), हार्डपेस्ट पोर्सलीन (Hard paste porcelain), इत्यादि।

इनमें बड़े-से-बड़े बर्तन को चाक पर या अन्य विधि से बनाया जाता है और भट्ठी में पकाया जाता है। पकाए हुए बर्तन को बिस्किट (Biscuit) और भट्ठी को बिस्किट ओवन (Biscuit oven) कहते हैं। अर्दनवार मिलावट को पकाने के लिए ११००-११५० सेंटिग्रेड उत्ताप की आवश्यकता होती है।

पकाए हुए बर्तन पर जो चमकीला लेप किया जाता है वह ग्लेज (Glaze) कहलाता है। साधारणतः ग्लेज सोडा, पोटाश, चूना, फेलस्पार, क्वार्ट्स, रेत, सुहागा और सीसा (Lead oxide) के मिश्रण से बनाया जाता है। इन द्रव्यों को प्रथम खूब बारीक पीसा जाता है फिर उपयुक्त मात्रा में मिलाकर भट्ठी में गलाया जाता है। फिर इसे पानी में ठण्ढा करते हैं। जिस भट्ठी में यह गलाया जाता है वह फ्रीट क्लिन (Frit ciln) कहलाती है। गले हुए प्रलेप-द्रव्य को फ्रीट (Frit) कहते हैं।

फ्रीट को खूब बारीक करके १२० नम्बर की चलनी से छाना जाता है। यह चूर्ण ग्लेज कहलाता है। पकाए हुए बर्त्तनों पर इस ग्लेज को लेप करके फिर विशेष प्रकार की भट्ठी में पकाते हैं जो गलास्ट ओवन (Glost oven) कहलाती है। इससे बर्तन में चिकनाहट आ जाती है। अर्दनवार बर्तन पर ग्लेज १०४०-१०८० सेंटिग्रेड के उत्ताप में पकाने पर चढ़ता है। ग्लेज के उपादान में जो सीसा पड़ता है वह साधारणतः मिट्टी सिन्दूर (Red lead), सफेदा (White lead) या मुर्दाशंख (Litharge) के रूप में होता है। मिट्टी सिन्दूर और मुर्दाशंख शीशे के ही मिश्रण हैं। इन्हें 'लेड आक्साइड' कहते हैं। लेड आक्साइड ग्लेज में चमक बहुत अधिक होती है। साथ ही ग्लेज के अन्य उपादानों के योग से इसकी रासायनिक प्रक्रिया भी शीघ्र होती है। साथ ही यह अपेक्षाकृत कम उत्ताप में गल जाता है।

इन्हीं सुविधाओं के कारण भारतवर्ष के चीनी के बर्तनों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। हम पहले कह चुके हैं कि अदनवार ग्लेज के लिए १०४०-१०८० उत्ताप की आवश्यकता होती है। भट्ठी में इतना उत्ताप लाने के लिए बहुत कोयले जलाने पड़ते हैं, फिर उत्ताप को सहन करने के लिए भट्ठी भी विशेष प्रकार की बनाई जाती है, जो कि काफी महँगी पड़ती है। पर यदि ग्लेज में सीसा अधिक मात्रा में मिलाया जाए तो केवल ५००-६०० सेंटिग्रेड उत्ताप की जरूरत पड़ती है। इसके लिए मामूली भट्ठी से भी काम चल जाता है। इस प्रकार कारखाने के मालिक को अधिक लाभ होता है।

चुनार या मिर्जापुर में जो मिट्टी के चमकदार बर्तन बनते हैं, वे इसी प्रकार बनाए जाते हैं। यदि इन बर्तनों का उपयोग फूलदानी आदि के लिए ही किया जाए तो आपत्ति की बात नहीं है। हाँ, इनमें चाय आदि पीने पर सीसे के विष का भय रहता है।

इस भय से बचने के लिए इँगलैंड में लेड-वाई-सिलीकेट फ्रीट इस्तेमाल किया जाता है। वहाँ इसके लिए विशेष कानून बना दिया गया है जिसके अनुसार परीक्षण-द्वारा ग्लेज में सीसा की मात्रा निर्दिष्ट की जाती है। ग्लेज बनाने के कारखानों में सीसे की धूल कारीगरों की नाक के मार्ग से फेफड़ों में पहुँच जाती है जिससे सीसा का विष शरीर में फैल जाता है। विलायत के चीनी बर्तनों के कारखानों में नियमों का पालन पूरी तरह किया जाता है। वहाँ कुछ खाना-पीना या सिगरेट पीना मना है। वहाँ कारीगर रेस्पिरेटर नामक यन्त्र पहने रहते हैं, जिससे श्वास-द्वारा सीसा की धूल अन्दर नहीं जा सकती। इसके अलावा प्रत्येक कारीगर को प्रतिदिन एक पाइंट दूध पीने के लिए मुफ्त दिया जाता है। वहाँ डाक्टरी परीक्षा भी प्रति सप्ताह होती है। जिस कारीगर में सीसा के विष के लक्षण प्रारम्भ हुए, अर्थात् उसकी दाँत की माड़ी का रङ्ग नीला दिखाई दिया कि चिकित्सा प्रारम्भ हो जाती है। उस कारीगर की सवेतन छुट्टी भी स्वीकार की जाती है।

विलायत के अनुकरण पर कानून यद्यपि भारतीय कारखानों के लिए भी बनाए गए हैं पर यहाँ के कारखानों में उनका पालन सख्ती से नहीं होता—विशेषतया सीसा के विष के सम्बन्ध में।

सीसा के विष की एक विलक्षणता यह भी है कि इसके लक्षण शीघ्र प्रकट नहीं होते। अतः साधारण मनुष्य को इसकी जानकारी नहीं होती।

ग्लेज में अधिक मात्रा में सीसा देने पर अतिरिक्त सीसा उस बर्तन में रक्खे हुए भोजन में मिल जाता है। यदि भोजन में कुछ अम्ल हो, जैसे अचार या चाय का टैनिक एसिड, तो वह सीसा को आसानी से अपने साथ घुला लेता है। इससे शरीर में जो हाइड्रोक्लोरिक अम्ल पैदा होता है उसके साथ मिलकर सीसा का विष अङ्ग-प्रत्यङ्ग में व्याप्त हो जाता है।

अधिक सीसा से बने हुए बर्तन को पहचानने की तरकीब यह है कि उसके भीतरी भाग की चिकनाहट कुछ काल में बाहरी भाग की अपेक्षा कम हो जाती है। चाय के बर्तन में यह पहचान और आसानी से होती है। गर्म पानी के साथ घुला हुआ टैनिक एसिड अतिरिक्त सीसे को अपने में घुला लेता है। इसी कारण वहाँ की चिकनाई कम हो जाती है। ऐसे बर्तनों में सिझाई हुई या ढाली हुई चाय पीने में सीसे के विष का भय रहता है।

—ए० वसु

विजन में

"शीश के नीचे रखे पाषाण को,
नेत्र मूँदे सो रहे हो क्यों अरे!
प्रकृति के कोलाहलों से दूर आ,
भ्रान्त-से तुम हो रहे हो क्यों अरे?
रश्मियाँ रवि के निकट जाने लगीं
पवन मन्थर चाल से बहती मुझे
पुष्प द्रुम की गोद में कुम्हला गए
लहर सर से मन्द-स्वर कहती सुने
क्यों विजन में रात्रि होने दे रहे,
मोह क्या निज प्राण का तुमको नहीं?
पथिक! भागो शीघ्र, भय ही भय यहाँ,
ग्रस न ले तुमको भयानकता कहीं!
किन्तु—फिर भी शान्त ही निश्चल पड़े
सोचते हो क्या?—कहो, क्यों मौन हो!
जगत के ऐश्वर्य को तजकर यहाँ—
सो रहे क्यों?—नर अभागे! कौन हो!
(भावनाएँ वेग से सहसा झुकीं।
अश्रु की दो बूँद दृग पर आ रुकीं॥)
"विजन ही संसार का अस्तित्व है,
जीव की नश्वर-प्रकृति का बोध है।
जगत आकुल-सा जहाँ पर जा रहा,
उस अगम-पथ का विजन ही शोध है!!
लौट आएँगी पुनः रवि-रश्मियाँ
पवन भी फिर वेग से बह जायगी
पुष्प द्रुम में फिर खिलेंगे प्रात ही
लहर सर से दीर्घ स्वर कह जायगी
किन्तु बाले! इस हृदय का शून्य-थल,
शान्तिमय होगा सजन-जग में नहीं!
है मुझे भय शान्ति जो पाई यहाँ,
खो न दूँ उसको वहाँ जाकर कहीं!
स्वार्थ से अन्धे जहाँ के जीव हैं
जीव-भक्षण ही जहाँ का भोज है
क्या करूँगा मैं वहाँ जाकर जहाँ
भोग ही मानव-रुधिर का ओज है!
भाव की भीषण चिता में जल चुका—
मैं, यहाँ पर कुछ न मुझको क्लेश है।
दे चुका भय को बिदाई भाव में,
रह गया मेरा विजन ही देश है!!"

—रामनारायण श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

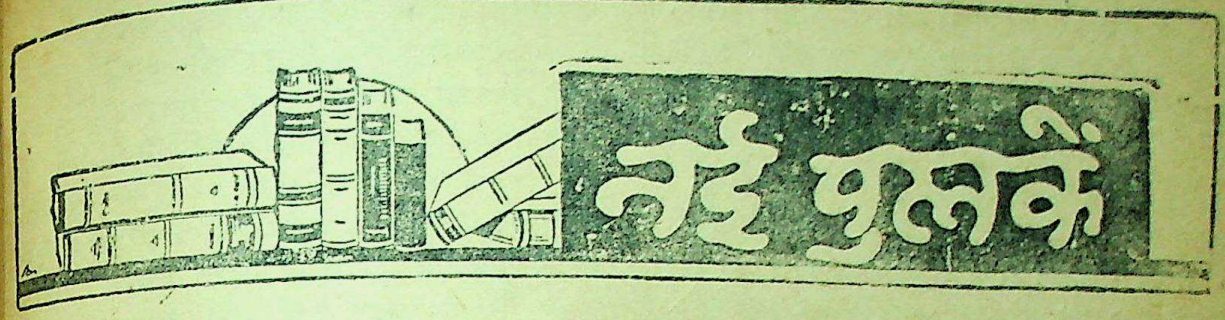

१—प्रतिध्वनि—लेखक, श्री जगदम्बाप्रसाद 'त्यागी', पृष्ठ-संख्या ८१; सजिल्द का मूल्य २)।

श्रेष्ठ काव्य वही है, जहाँ कवि अपने व्यक्ति की परिधि से उठकर विश्वजनीन भावनाओं और विचारों का उद्वेलन तथा वरण करता है। अतएव जहाँ—

'बुद्बुद पल-पल में मिट जाते, पर मिटकर कब बनना छोड़ा,
कलियाँ खिलकर मुरझा जातीं, खिलना न हुआ अब तक थोड़ा,
युग-युग से लूट रहे भौंरे सुमनों ने कब नाता तोड़ा?
इसलिए पराजय के क्षण भी, मुँह मैंने आज नहीं मोड़ा,
मिट्टी से निर्मित मानव ही आँधी-पानी सब सहता है।
मेरा मन मुझसे कहता है।'

उस कोटि की उद्भावनाएँ हुई हैं, कवि के प्रति विशेष आशाएँ बँधती हैं। किन्तु काव्य की निरुद्देश्यता सबसे अधिक खटकने की बात है। विशेषकर ऐसी निरुद्देश्यता, जिसमें आत्माभिव्यक्ति ही चरम लक्ष्य हो—रुग्ण, व्यथित मन की विश्रृंखल चित्रावलियाँ मात्र। जहाँ कवि इस शाप से ग्रस्त नहीं, वहाँ सचमुच ही वह शुद्ध काव्य-रस की निष्पत्ति में समर्थ रहा है। स्वयं काव्यकार के शब्दों में भावनाएँ रुद्ध होकर दुर्बल हो रही हैं—

'है आज विश्व सीमित मेरा, कारण—केवल तेरी ममता।
तेरे दुख से जग के सुख की मैं करता आया हूँ समता।

किन्तु जिस सौद्देश्यता में—

'जग के चिन्तन की साध लिए, मैंने जीवन आरम्भ किया।
जड़-चेतन के उद्गारों को, मैंने वाणी का रूप दिया।
पर, मेरे ही मन की गति से, क्यों आज अपरिचित है काया?
अपने ही उर की धड़कन को, मैं अब तक क्यों न समझ पाया?

कवि आत्म-परिज्ञान भी खो देता है और कल्पनाओं में भटक चलता है, वह भी काव्य का उद्धार नहीं कर सकती। इस कोटि का काव्य हमारे साहित्य के सच्चे अभाव को दूर नहीं कर सकता। कल्पना की जड़ता, भावों की शून्यता या अन्यता, चोट खाए हृदय का कुछ रोना, कुछ गाना, यह सब क्या? मधुर और कोमल के नाम पर ओजहीन, क्षीण-उत्साह, क्रन्दन और मन-मन्थन से भरी रचनाएँ किधर?

और यह सब कुछ देखकर ही हम कह सकते हैं कि हमारा यह कवि भी इसी सङ्कीर्णता, विरूपता और द्वयता से आगे बढ़ रहा है। हम कहेंगे कि हमें यह सब नहीं चाहिए। फिर भी श्री मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में—

"……भाषा सरल, अतएव बोधगम्य है। भावों में एक भोलापन है, जो भला लगता है। कवि में जिज्ञासा है और साथ ही एक निश्चिन्तता भी।……"

इन आवश्यक गुणों से संग्रह पठनीय हो गया है। 'पछी', 'चञ्चल मन', 'ईर्ष्या', 'प्रत्याशा' इत्यादि कविताएँ इस संग्रह की कुछ श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। कविताओं में प्रवाह है और भाव-माधुर्य भी। यह इस बात का परिचायक है कि कवि की छन्दवाणी सहज, सरल और साधु है।

प्रायः कविताओं में हृदय का लौट-लौटकर सुन पड़नेवाला मुखर राग और चीत्कार है, कदाचित् यही इस संग्रह के 'प्रतिध्वनि' नाम की सार्थकता है। किन्तु इससे बहुत पूर्व प्रकाशित 'प्रसाद' जी का एक कहानी-संग्रह भी इसी नाम का है। अतएव नामों की ऐसी प्रतिध्वनियाँ उद्धरणी न करने के लिए लेखक से विनम्र निवेदन किया जा सकता है।

२—नागरी का अभिशाप—लेखक, श्री चन्द्रबली पाण्डे, पृष्ठ-संख्या ७६; मूल्य १) मात्र।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाण्डे जी के हिन्दी भाषा विषयक दो निबन्धों का संग्रह है। प्रथम निबन्ध इतना विस्तृत और सम्पूर्ण है कि पुस्तक का समस्त कलेवर एवं विषय उसी में पूर्ण मान लिया जा सकता है। द्वितीय निबन्ध तो 'उपसंहार' मात्र है, जिसमें नागरी और मुसलमानों का पूर्व-सम्बन्धवृत्त धर्मग्रन्थों एवं इतिहास की साक्षी में विवक्षित है। सम्पूर्ण पुस्तक पर प्रभाव-समग्रता की दृष्टि से विचार करते हुए कह सकते हैं कि यह ऐतिहासिक साक्षियों, उद्धरणों एवं विवरणों से परिपुष्ट और परिवर्द्धित एक शोधपूर्ण प्रबन्ध (Theres) मात्र है, जिसमें हिन्दी और उर्दू का सर्वांग विवक्षित है। अपने निखिल अनुकूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा प्रतिकूल वादों में इस पुस्तक की महत्त्वपूर्ण विशेषता यही है कि कालयोग में तत्पर मातृभाषा हिन्दी अनायास ही राजकीय एवं राष्ट्रभाषा के पद पर आरूढ़ होने जा रही थी जिसमें अँगरेजी भेदनीति की विफलता के लिए अङ्गीकृत भारतीय राजनीतिज्ञों की कूटनीति ही भयङ्कर बाधा सिद्ध हुई। जहाँ मुसलमानों की मिथ्या धार्मिक असहिष्णुता के कारण राजनीतिक क्षेत्र में गन्दगी एवं सङ्कीर्णता बढ़ी वहाँ हिन्दू राजनीतिज्ञों की कूटनीति ही राष्ट्र-भाषा हिन्दी तथा भारत राष्ट्र के लिए अभिशाप सिद्ध हुई। लेखक के आशय को टटोलकर कह सकते हैं कि हिन्दी के अधिकारों के साथ प्रवञ्चना करके हिन्दुस्तानी के आवरण में उर्दू ही विकसित नहीं हुई, अपितु हिन्दी राष्ट्र के स्थान पर इस्लामी राष्ट्र की वर्गवादी भावना प्रबुद्ध हुई, जिसके प्रभाव-स्वरूप ब्रिटिश साम्राज्यवाद का समर्थक एक विजातीय वर्ग-विशेष अखण्ड भारत के खण्ड-खण्ड कर 'पाकिस्तान'-प्राप्ति का अमङ्गलमय स्वप्न देखा करता है। इसी पाकिस्तान की अस्वाभाविक समस्या ने स्वतन्त्र भारत की स्वर्ण-योजना को खटाई में डाल रक्खा है और आज यह भारतीय राजनीति के प्रत्येक वाक्य के अन्त का दुर्निवार प्रश्न-चिह्न बनकर उर्दू और हिन्दुस्तानी समर्थक नेताओं के मस्तिष्क के दिवालियेपन पर मानो विकट व्यंग्य कर रही है। ग्रन्थकार के प्रस्ताव से राजनीतिविदों की यह विडम्बना नागरी का अभिशाप ही तो है।

विषय की महत्ता एवं प्रतिपादन की सरल निष्कपटता के कारण यह ग्रन्थ हिन्दुओं एवं हिन्दी-प्रेमियों के लिए ही पठनीय नहीं, अपितु भारत-हितू सभी निष्पक्ष और उदार मुसलमानों के अध्ययन और विचार की वस्तु भी है। इतना ही नहीं, राजनीति के क्षेत्र की विषमता के लिए उत्तरदायी राजनीति-विशारदों को भी ग्रन्थ का अध्ययन कर अपने त्रुटि-मार्जन के लिए पश्चात्ताप-द्वारा प्रायश्चित्त कर लेना उचित होगा। कुछ भी हो, अपने सङ्कल्प की सचाई और विशदता में यह ग्रन्थ हिन्दी की विडम्बित समस्या को प्रस्तुत करनेवाले सभी ग्रन्थों का शिरोमणि है।

हिन्दी-साहित्य में चन्द्रबली जी का विशेष स्थान है और साहित्यकारों में उनका पृथक् व्यक्तित्व। साहित्य को अपने जीवन निमित्त से ग्रहण किया है, फलतः वे स्व-साहित्य के ऊपरी शृङ्गार में प्रवृत्त न होकर साधक बने। हिन्दी के प्रति अनन्य अनुराग ही आपकी साधना-परायणता का अकाट्य प्रमाण है। आपको अपने साहित्य और अपनी भाषा से उतना ही मोह एवं ममत्व है जितना कि किसी को अपने जीवन से हो सकता है। अतएव मातृभाषा और उसके साहित्य की हानि आपके लिए अपने जीवन क्षय के समान है। यही कारण है कि आपके ऐसे साहित्यिक प्रबन्धों में क्षमताजन्य रोष एवं कटु-स्वरता के दर्शन होते हैं। आप साहित्य-सर्जन करने बैठते हैं तो अपने जीवन की प्रतिक्रियाओं को आगे कर। यही आपके व्यक्ति का साहित्य और जीवन से अभेद है। इसी व्यक्तित्व के प्रभाव साहित्य और जीवन की एकता के कारण हम आपके चिन्त का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

पुस्तक की भाषा परिष्कृत और सटीक है। लेखक अपने विषय का अधिकार है तथा उसमें ऐसे अनुकूल क्षमता भी है, यह उसकी भाषा के दर्शनों से ही स्पष्ट हो है। उसकी भाषा को पूर्णतः समझने के लिए कह सकते वह किसी भी भाषा की अनावश्यक रूप से ऋणी नहीं, संस्कृत ही क्यों न हो, अर्थात् आदर्श हिन्दी है। इस हिन्दी में वक्र-वचनता प्रस्तुत करने का यह पाँडे जी एवं अनुकरणीय प्रयत्न कहा जाएगा।

प्रकाशक की ओर से अवश्य ही अनवधानता का दिया गया है। ऐसे किसी भी ग्रन्थ के संशुद्ध प्रकाशन कितना महत्त्व हो सकता है, कहने की बात नहीं।

—'भिक्षु'

३—**भागवती कथा**—(खण्ड १, भाग १) लेखक, प्रभुदत्त ब्रह्मचारी; प्रकाशक, सङ्कीर्तनभवन, झूसी (प्रयाग); संख्या २३५, मूल्य १।)। स्थायी ग्राहकों से डाक-व्यय वार्षिक दक्षिणा १४) अग्रिम।

हिन्दी में श्रीमद्भागवत के दो अनुवाद प्रसिद्ध हैं—नवलकिशोर प्रेस से प्रकाशित श्री रूपनारायण पाण्डेय का दूसरा इंडियन प्रेस का। इन अनुवादों में श्रीमद्भागवत सरल-भाषा में उल्था किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के और अनुभवी लेखक ने श्री मद्भागवत की कथा को मौलिक से देने की योजना की है। श्री ब्रह्मचारी जी श्रीमद्भागवत अनन्य भक्त हैं। यदि हम उनकी तुलना अष्टछाप भागवत भक्तों से करें तो अत्युक्ति न होगी। उन्होंने मद्भागवत को पढ़ा ही नहीं, गुना भी है और उसकी प्रेरणाओं को अनुभव करने का प्रयत्न किया है। उनके द्वारा श्रीमद्भागवत की कथा का कहा जाना महत्त्वपूर्ण है।

श्रीमद्भागवत को समस्त वेदों और पुराणों का गया है। इसमें सन्देह नहीं कि भारत की युग-युग की साधना और दार्शनिक अनुभूति पुञ्जीभूत होकर श्रीमद्भाग रूप में गागर में सागर की तरह प्रकट हुई है। दसवीं के बाद के भारतीय धर्म और संस्कृति पर श्रीमद्भागवत का प्रभाव है उतना अन्य किसी ग्रन्थ का नहीं। भारतीय भाषाओं के मध्यकालीन साहित्य पर श्रीमद्भा का गम्भीर प्रभाव पड़ा है। दुःख है कि श्रीमद्भागवत दृष्टिकोण से अभी तक अध्ययन नहीं हो सका। आशा श्री ब्रह्मचारी जी की भागवती कथा की पुस्तकें इस की यत्किञ्चित् पूर्त्ति अवश्य करेंगी। अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने श्रीमद्भागवत की इस महत्ता को स्वीकार किया है और पाठकों को यह आशा करने का अवसर दिया है कि उनकी भागवती कथा भागवत का अनुवाद न होकर एक विस्तृत और व्याख्या होगी। भागवती कथा की इस प्रथम पुस्तक से यह आशा दृढ़ हो जाती है। श्री ब्रह्मचारी जी के पाण्डित्य में सन्देह किया ही नहीं जा सकता, पर भागवती कथा में पाण्डित्य-प्रदर्शन का लेश भी नहीं दिखाई देता। वह एक विद्वान् व्यक्ति के द्वारा प्रणीत है जो अपने विषय को मस्तिष्क और मनन के द्वारा भली भाँति समझते हुए उसकी अन्तरात्मा को हृदय से अनुभव करने का प्रयत्न करता है। यही कारण है कि भागवती कथा के पाठक को उसे पढ़कर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ के पढ़ने का आनन्द आएगा—ऐसा स्वतन्त्र ग्रन्थ जिसकी रोचकता लेश मात्र भी भङ्ग नहीं होती। व्याख्याता लेखक ने धार्मिक व्यक्तियों और पाठकों को लक्ष्य करके इस महान् ग्रन्थ का प्रवचन करना आरम्भ किया है और यह उनके लिए उचित ही है। पर दुर्भाग्यवश ऐसे पाठकों-श्रोताओं की अधिकांश संख्या साहित्य, संस्कृति और इतिहास में उतनी रुचि नहीं रखती। इस लिए सम्भव है कि ब्रह्मचारी जी अपने दृष्टिकोण को किञ्चित् परिवर्तित कर दें। फिर भी हम आशा करते हैं कि संस्कृति और साहित्य के विद्यार्थी भी उससे अतीव लाभ उठा सकेंगे।

पुस्तक की भाषा प्रवाहमयी तथा शैली रोचक और मोहक है। आशा है, इस ग्रन्थमाला का यथेष्ट प्रचार होगा। छपाई में कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं। गेट-अप प्राचीन परिपाटी का है।

—व्रजेश्वर

४—**नवीन**—लेखक, श्री गोपालसिंह नेपाली; प्रकाशक, पुस्तक भण्डार, लहरियासराय और पटना; पृष्ठ-संख्या ९८; मूल्य २)

नेपाली जी के इस नवीन कविता-संग्रह में उनका स्वाभाविक प्रेम, देश-प्रेम, प्रकृति-प्रेम और यौवन-सुलभ सौन्दर्य-प्रेम अत्यन्त सरलता और आग्रह के साथ प्रकट हुआ है। 'नवीन' में कई कविताएँ हैं। उसका सबसे प्रमुख स्वर है स्वतन्त्रता, जो देश, समाज और व्यक्ति तक ही सीमित नहीं है, वरन् काव्य के दो क्षेत्रों—भाषा और छन्द—के क्षेत्र में भी वे उन्मुक्त होकर विचरना चाहते हैं। वे स्वयं कहते हैं, 'राजनीतिक क्षेत्र में विद्रोह-भाव के लिए आपने हमें ललकारा; अब हमें साहित्यिक जञ्जीरों को भी तोड़ डालने दीजिए। हम राजनीति में जवान और साहित्य में बूढ़े एक साथ नहीं बन सकते।'

'कवि और कविता' में नेपाली का चिर-परिचित उन्मुक्त प्रकृति-प्रेमी तथा अत्यन्त संवेदनापूर्ण स्वर सुनाई देता है। ये पंक्तियाँ देखिए—

कुछ कुछ रस रूप बाँटता आता है ऋतुराज
कविता गूँज उठी कोयल की बन पहली आवाज
आती ग्रीष्म जगाती जग के कण्ठ-कण्ठ में प्यास
कविता छाँह बनी तरुवर की शीतल-सलिल-सुवास
पावस में भर गया मेघ से श्याम-नील आकाश
बनकर मोर कुञ्ज में नाचा कविता का उल्लास
× × × ×
चुरा चली कविता ऋतु-ऋतु से एक मनोहर गाना
भरती चली हृदय जग का कवि का अनमोल खजाना
× × × ×
पौ फटते ही चमक उठे जब गाँव खेत खलिहान
कन्धे पर हल डाल कुटी से चला गरीब किसान
उसके स्वेद-रुधिर ने सींची जल बन क्यारी-क्यारी
जैसे उसकी मुट्ठी से ही निकलीं फसलें सारी
उसकी आँखों को चमकाती खेतों की हरियाली
फूट रही गालों पर आशा-अभिलाषा की लाली
कविता है आँखों के आगे बिखरा दाना-दाना
मचल-उछल भर रात अटपटा ग्रामीणों का गाना
तिनकों के घर में दीपक का जलना, जलते जाना
कविता है रोमाञ्च-लहर से एक बार छू जाना

इसी प्रकार 'जय-जयकार' में—

उषा खड़ी कोमल कुन्तल में गूँथ किरण के फूल
बनकर स्वर्ण उड़ी अम्बर में रवि के रथ की धूल
आज तिमिर के पुञ्ज-पुञ्ज पर स्वर्ण-ज्योति की केलि
बालारुण के प्रथम परस से रोमाञ्चित वन-बेलि
चमक उठा है रङ्ग-रङ्ग में टहनी-टहनी पानी
छूती जादू की बंशी से रवि की नई जवानी
किरणों की माया देखो, जग सोने की काया है
दूर पूर्व से चलकर दिनकर हँसता ही आया है
गान विश्व को देनेवाले रवि का जय-जयकार
स्वप्न नयन में भरनेवाली छवि का जय-जयकार

संसार में जो कुछ सुन्दर है, जिसमें यौवन है, जो अन्धकार को प्रकाश से उद्भासित कर सकता है, जो बन्धन को तोड़कर स्वतन्त्रता से विचरण करता है, जो स्नेह, प्रेम, बन्धुत्व, ममत्व और करुणा से संवेदित हो सकता है, वही नेपाली के कवि-हृदय में गूँजकर उनकी भावना को लहराते-बल खाते, हृदय पर सीधी चोट करनेवाले सङ्गीतमय छन्दों में प्रकाशित हो जाता है।

अब नेपाली के 'जवानी के क्षण में' जो नवीन स्वर फूटा है उसे भी देखिए—

कुछ ऐसा खेल रचो साथी,
कुछ जीने का आनन्द मिले
कुछ मरने का आनन्द मिले
दुनिया के सूने आँगन में, कुछ ऐसा खेल रचो साथी।

× ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मरघट का सन्नाटा तो रह-रहकर काटे जाता है
दुख-दर्द-तबाही से दबकर मुफलिस का दिल चिल्लाता है

× × ×

यह उपदेशों का सञ्चित रस तो फीका-फीका लगता है
सुन धर्म-कर्म की ये बातें दिल में अङ्गार सुलगता है
चाहे यह दुनिया जल जाए
मानव का रूप बदल जाए
तुम आज जवानी के क्षण में, कुछ ऐसा खेल रचो साथी

और नवीनतम—

आ रहीं जवानियाँ
आ रहीं जवानियाँ, सुबह के आसमान में
बीसवीं सदी के नौनिहाल नौजवान में
लाल-लाल रोशनी उड़ा रहीं जवानियाँ
सुबह के आसमान में

भाषा, छन्द और भावाभिव्यञ्जना की नवीनतम रीति-नीति सम्भव है पाठकों को चौंका दे, पर उन्हें यह न भुला देना चाहिए कि नेपाली 'जो गायक था स्वच्छन्द हिमाञ्चल का,' अब बम्बई के फिल्मिस्तान में बैठकर लिखता है। अब वह अधिक-से-अधिक चौपाटी के सूर्यास्त को देखकर कह सकता है—

मुझको प्यारा-प्यारा लगता, यह रङ्गों का जाल
यह रङ्गों का जाल सलोना, यह रङ्गों का जाल

अन्त में हम 'नवीन' के सर्वप्रथम गीत के दो छन्द देते हैं जिनसे कवि की कल्पना, भावना, भाषा और छन्द की नवीनता का पर्याप्त परिचय मिल सकता है—

अब घिस गईं समाज की तमाम नीतियाँ
अब घिस गईं मनुष्य की अतीत रीतियाँ
हैं दे रही चुनौतियाँ तुम्हें कुरीतियाँ
निज राष्ट्र के शरीर के सिँगार के लिए
तुम कल्पना करो नवीन कल्पना करो
तुम कल्पना करो।

× × ×

तुम प्रार्थना किए चले, नहीं दिशा हिली
तुम साधना किए चले, नहीं निशा हिली
इस आर्त्त दीन देश की न दुर्दशा हिली
अब अश्रु-दान छोड़ आज शीश-दान से
तुम अर्चना करो अमोघ, अर्चना करो;
तुम अर्चना करो।

परन्तु 'नवीन' को पढ़ते-पढ़ते जब हम उसकी नवीनता की दिशा का अनुमान करते हैं तो कभी-कभी सन्देह होने लगता है कि यह कविता की गोद में खेला हुआ जन्म-जात राष्ट्रीय गायक कहीं काव्य के उच्च उपादानों एवं [illegible] को त्याग कर नवीन की अभ्यर्थना में अपनी सहज मादकता एवं सौन्दर्य-प्रियता न खो दे। 'नवीन' की कुछ शब्दावली, और कुछ भाव नेपाली ने इतने अधिक दुहराए हैं कि भद्दे तकियाकलाम (Mannerisms) की गन्ध है। कवि के सहज विकास में ये तकियाकलाम बाधक होंगे।

हमें विश्वास है कि 'नवीन' का हिन्दी पाठक समुचित करेंगे। पुस्तक की छपाई और गेट-अप अच्छा है।

—

५—प्रभाती—(कविता-संग्रह)—रचयिता, पण्डित लाल द्विवेदी; प्रकाशक, साहित्य-भवन, लिमिटेड, प्रयाग; संख्या ८८ (डिमाई साइज); मूल्य २॥) रु०।

राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत् करने के लिए जिन थोड़े-से ने अपनी कविताओं-द्वारा शङ्खनाद किया है, उनमें सोहनलाल जी द्विवेदी का विशिष्ट स्थान है। द्विवेदी की राष्ट्रीय कविताओं में भारत के स्वर्णिम अतीत की पृ पर वर्त्तमान की जिस मर्मस्पर्शी दशा का चित्रण रहता है, पाठकों को बरबस अपनी विचार-धारा में अवगाहन करने लिए प्रेरित कर देता है। सबसे बड़ी विशेषता है, इनकी ताओं को पढ़कर किसी वासना का नहीं, प्रत्युत वीरोचित का स्फुरण होता है। कविता के प्रति कवि की देखिए :—

तुम जगत्धात्रि! जग कल्याणी,
तुम महाशक्ति! सोचो क्या हो!
कविते! केवल तुम नहीं अश्रु,
जीवन में जय की आत्मा हो।

और कवि से—नवयुग के कवि से—द्विवेदी जी कहते हैं

ओ नवयुग के कवि जाग जाग!
है एक ओर पीड़ित, जनता,
है एक ओर साम्राज्यवाद;
गा रे, जन-गण के शक्ति-गीत,
जिससे टूटे युग का प्रमाद।

'प्रभाती' में छोटी-बड़ी ३६ कविताओं का संग्रह है। से कुछ राष्ट्रीय नेताओं और साहित्यकारों के प्रति श्रद्धाञ्ज हैं और शेष राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत् करनेवाली ओजस्वी नाएँ हैं। 'प्रथम प्रणाम' शीर्षक कविता को 'प्रभाती' प्राण कहा जा सकता है। इस कविता में कुशल कवि समस्त राष्ट्रीयता एक गतिवान् प्रवाह की भाँति पाठक को साथ बहा ले जाती है :—

प्रथम प्रणाम, सतत प्रणाम;
ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम,
उन्हें प्रणाम।
सतत प्रणाम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग।
नगर-नगर की, ग्राम ग्राम की छानी धूल,
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल।

× × ×

सही कठिन हथकड़ियों की बेतों की मार,
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार।
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम।
कोटि-कोटि नङ्गों-भिखमङ्गों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कन्धा जोड़े, उन्नत माथ—
उन्हीं कर्मठों, ध्रुवधीरों को है प्रतियाम,
कोटि प्रणाम, सतत प्रणाम।

शब्दों की सरलता और भावों की गहनता को चित्रित करने में द्विवेदी जी खूब सफल हुए हैं। उन रहस्यमयी कविताओं का युग अब लद चुका है, जिनमें कठिन शब्दों की ठूँस-ठाँस और जटिल भावनाओं की भूलभुलैया पाठकों को शब्दकोष का सहारा लेने पर विवश करती थीं। नब्बे प्रतिशत ग्रामों में बसे हुए भारत को आज प्रसाद-गुण से परिपूर्ण सीधी-सादी किन्तु ओजस्विनी कविताओं की आवश्यकता है। इस तथ्य को सोहन-लालजी ने न केवल समझा है; प्रत्युत अपनी कविताओं में इसका निर्वाह भी सफलता-पूर्वक किया है। 'प्रभाती' में आपने लिखा है—"उस कवि ने समाज, जाति एवं राष्ट्र के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं किया जिसने अपने ही भाई-बहनों को बहकनेवाली रचनाएँ दीं। जब राष्ट्र को उठनेवाली सञ्जीवनी देने की आवश्यकता हो, तब उसे बैठनेवाली रचनाएँ देना देशद्रोह नहीं तो क्या है? भले ही, उनमें मेरा ही नाम पहले क्यों न आए, मैं ऐसे समस्त कवियों को चाहूँगा कि वे कहीं सुदूर ध्रुव-प्रदेशों में निर्वाचित कर दिए जाएँ, जिन्होंने कविता के कनक-कटोरों से जनता को चिर-निद्रित करनेवाला चेतना-घातक वासना का विष पिलाया है।"

—देवीदयाल चतुर्वेदी

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचनाएँ

सञ्चारिणी

इसमें लेखक के भक्तिकाल की अन्तर्चेतना, व्रजभाषा के [illegible] प्रतिनिधि और शरत्साहित्य का औपन्यासिक स्तर [illegible] १० निबन्धों का सङ्कलन है। निबन्ध परस्पर क्रमबद्ध [illegible] और हैं विविध युगों के प्रतीक-स्वरूप। नवीन ढङ्ग के [illegible] त्य में पुस्तक अपने ढङ्ग की एक ही है। ढाई सौ से [illegible] क पृष्ठों की, अच्छे कागज पर छपी, सजिल्द पुस्तक का [illegible] दो रुपए।

युग और साहित्य

इस पुस्तक में युगद्वन्द्वों और उनसे उत्पन्न भावी सम्भावनाओं को, साहित्य के माध्यम से, उपस्थित करने का प्रयत्न है। इसे वर्तमान साहित्य का संक्षिप्त इतिहास भी कह सकते हैं। साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों की जानकारी के लिए यह पुस्तक अनुपम है। अच्छे कागज पर छपी साढ़े तीन सौ से अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये ग्यारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

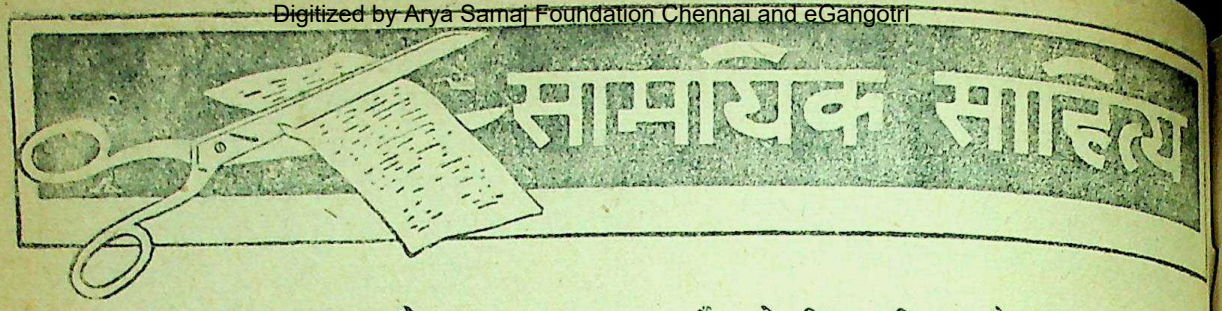

डच-इंडोनेशिया-समझौता

इंडोनेशिया की स्वाधीनता का प्रश्न फिर खटाई में पड़ गया। पिछले दिनों जो सूचनाएँ इस सम्बन्ध में प्राप्त हुई हैं उनसे ज्ञात होता है कि हालैंड और इंडोनेशिया के बीच जो समझौता हुआ था वह बेकार हो गया। कारण यह हुआ कि दोनों पक्षों के उग्रवादी उस समझौते के विरोधी हो गए।

हालैंड के उग्रपन्थियों का कथन है कि 'इस समझौते से संसार में हालैंड की स्थिति हीन हो जाएगी। उपनिवेशों को यदि छोड़ दिया जाएगा तो डचों के पास शेष रह क्या जाएगा? इन उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए डचों ने अपना खून पानी की तरह बहाया है। शताब्दियों तक डच साम्राज्य की सारी शक्ति और समूचे साधनों का उपयोग उपनिवेशों के लिए ही होता रहा है। यही नहीं, यदि डच इंडोनेशिया को छोड़ देंगे तो इंडोनेशिया का पतन भी अवश्य हो जाएगा। इंडोनेशिया के निवासियों में इतनी शक्ति और बुद्धि नहीं है कि वे अपने देश की रक्षा कर सकें और उसका शासन-भार अकेले सँभाल सकें'। इस प्रकार के विचार रखनेवाले डचों का, जिनमें परिवर्त्तन-विरोधियों और सैन्यवादियों की गणना अधिक है, समझौते के प्रश्न पर डच मन्त्रिमण्डल में बहुमत हो गया है। सैनिक अधिकारी भी उन्हीं का साथ दे रहे हैं। ये अधिकारी प्रारम्भ से ही इंडोनेशिया के साथ समझौता किए जाने के विरोधी रहे हैं और डाक्टर सोइकानों को खुले आम जापान का समर्थक कहते आए हैं। यह इन सैन्यवादियों की मनोवृत्ति का ही परिणाम है कि विराम-सन्धि के होते हुए भी डच-सेनाएँ इंडोनेशिया के राष्ट्रदल पर जब-तब आक्रमण करती रहती हैं और साथ ही उनपर सन्धि की शर्तें तोड़ने का दोषारोपण भी करती रहती हैं।

इधर इंडोनेशिया के प्रमुख राजनीतिक सङ्गठन 'इस्लामिक पार्टी' ने भी समझौते को अस्वीकार कर दिया है और उसके विरुद्ध आन्दोलन करने की धमकी दी है। इससे वैधानिक सङ्कट भी उत्पन्न हो गया है। उक्त पार्टी के आठ मन्त्रियों के त्यागपत्र उपस्थित कर देने पर प्रधान मन्त्री डाक्टर जहीर को भी अपना पद छोड़ना अनिवार्य है। इस परिस्थिति में अध्यक्ष डाक्टर सोइकानों के सामने केवल एक मार्ग रह जाता है कि वे इस्लामिक पार्टी से मन्त्रिमण्डल बनाने को कहें। इस्लामिक पार्टी इसके लिए प्रतिज्ञाबद्ध है कि वह उन अधिकारों अपेक्षा, जो समझौते-द्वारा प्राप्त हुए हैं, अधिक अधिकारों मांग करे। इस प्रकार सम्भवतः वार्त्ता फिर नए सि शुरू होगी।

इस प्रकार दोनों पक्षों की ओर से ठुकराए जाने पर समझौता तो व्यर्थ हो ही गया है। आगे देखना है कि किस करवट बैठता है। वस्तुतः इस समझौते की नींव मजबूत नहीं थी, जितनी कि समझी जाती थी। और नींव खोखली थी, तब दीवाल खड़ी कैसे हो सकती थी। पक्षों में एक दूसरे के प्रति विश्वास का अभाव था। राजनीतिज्ञ अपनी पुरानी साम्राज्यवादी नीति से बुरी चिमटे हुए हैं। द्वितीय महायुद्ध की घटनाओं से उनकी नहीं खुली हैं। जापान के मुकाबले में वे अपनी शक्ति तुलना करके देख चुके हैं कि उनकी शक्ति इतनी भी नहीं वे अपने उपनिवेशों की रक्षा कुछ सप्ताहों तक भी कर फिर भी लाभ का मोह छोड़ते नहीं बनता। युद्ध की के बाद कुछ दिन ऐसे अवश्य आ गए थे जब उन्हें यह हो गया था कि अब इंडोनेशिया में उनके पैर टिके असम्भव है। इसी लिए उन्हें ब्रिटेन का मुखापेक्षी पड़ा था। अब शायद वे फिर यह समझने लगे हैं पर्याप्त शक्तिशाली हैं इसी लिए वे फिर अपने असली प्रकट होने लगे हैं।

एक ओर सन्धि की वार्त्ता चलाने और स्वतन्त्रता का भन देने और दूसरी ओर डच सेनाएँ जावा में लगातार रहने से ही यह प्रकट हो गया था कि डच लोगों की नीयत नहीं है। वे अपने पैर मजबूत करने का साधन भर ढूँढ़ रहे यही उन्होंने किया भी। वार्त्ताओं की प्रारम्भिक समय जावा में डचों की ३ डिवीजन सेना थी। फिर एक डिवीजन वहाँ और भेज दिया गया। पाँचवाँ डिवीजन तक वहाँ पहुँच गया होगा। जून १९४७ के पहले ही डिवीजन और भी पहुँचाए जाने की खबर है। इस प्रकार सेनाएँ जावा और सुमात्रा में बराबर बढ़ाई जा रही हैं। के समय जब सेनाएँ न बढ़ाने की शर्त रक्खी गई थी तब सरकार ने उसे अस्वीकार कर दिया था। इससे भी उन मंशा [illegible] हो जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खून के दाग

घर के जो निवासी क़त्ल कर डाले गए हैं उनके खून के दाग घर की फर्श और दीवालों पर अब भी मौजूद हैं। चित्र में ग्राम के निवासी गांधी जी को वे खून के दाग दिखा रहे हैं।

शान्ति और भ्रातृत्व का सन्देश

यह दीवान जी-भवन के आंगन का दृश्य है। महात्मा जी नोवाखाली की जनता को शान्ति और भ्रातृत्व का सन्देश सुनाने के लिए पधार रहे हैं। उनका सन्देश सुनने के लिए अपार जन-समूह एकत्र हो गया है, जिसमें हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी आन्दोलन की रूप-रेखा ?

"अगर विधान-निर्मात्री-परिषद्-द्वारा बनाए गए [illegible] ब्रिटिश सरकार लागू नहीं होने देगी तो देश में एक [illegible] आन्दोलन शुरू हो जाएगा जिसकी रूप-रेखा इस प्रकार [illegible] (१) गवर्नर तथा वे अफ़सर जो कि आन्दोलन में बाधा [illegible] इच्छा करें, गिरफ्तार करके जेल में बन्द कर दिए जाएँ, (२) सरकारी महकमों, जैसे—थाने, कानूनी अदालतें, खजाने, [illegible] पर कब्जा कर लिया जाए और प्रजा-राज स्थापित किया [illegible] (३) साथ-ही-साथ विजित प्रदेशों को पुनः छिन जाने से [illegible] लिए नई सेना तथा पुलिस की भर्त्ती की जाए और (४) [illegible] समय देश में आम हड़ताल कर दी जाए ताकि सभी यातायात [illegible] फैक्टरियाँ बन्द हो जाएँ। इस प्रकार शासन की जो छोटी [illegible] इकाइयाँ बनें, उन्हें स्वतंत्र भारत से सम्बद्ध किया जाए।"

—श्री जयप्रकाश नारायण (बनारस, १८ दिसम्बर

श्री जय प्रकाश नारायण
[कांग्रेस समाजवादी पार्टी के नेता]

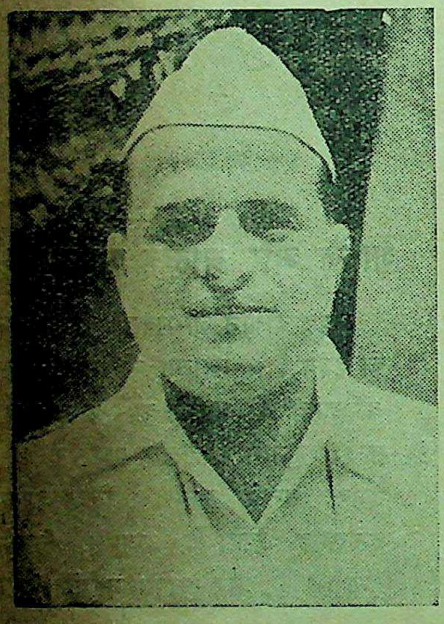

डाक्टर रामकृष्ण हेडजे
गोवा में पुर्त्तगाली राजसत्ता के विरुद्ध चलनेवाले सत्याग्रह के आप अग्रणी हैं। गोवा-सरकार ने आपको गिरफ्तार करके निर्वासित कर दिया है।

'इण्डियन प्यूपिल्स थियेटर एसोसिएशन बम्बई के द्वारा प्रदर्शित 'लम्बादी-नृत्य' का एक दृश्य।
लम्बादी जाति की गणना खानाबदोशों में की जाती है। यह कञ्जड़ों की [illegible] उपजाति है। इसकी अपनी सभ्यता और संस्कृति है जो आधुनिकता से अछूती है। रियासत हैदराबाद इस जाति का प्रमुख निवासस्थान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी]

इधर डच सरकार के नए बजट के आँकड़े भी इसी धारणा की पुष्टि कर रहे हैं। उसमें ५१४० लाख गिल्डर (सिक्का) व्यय के लिए, ३४६० लाख शान्ति स्थापना के लिए (डच ईस्ट इंडीज में) और ३१६० लाख अन्य सैनिक तथा नौ-सेना के लिए स्वीकार किए गए हैं। यह शान्ति-स्थापना इंडोनेशिया में किस प्रकार की जाएगी, यह भविष्य ही बता-एगा। हमें विश्वास है कि इंडोनेशिया के देश-भक्त भी डचों की इस मनोवृत्ति से अपरिचित नहीं हैं और वे समय आने पर उन्हें अवश्य बतला दें गे कि सैन्य-शक्ति उनकी स्वाधीनता की भावना को कुचल नहीं सकती।

आस्ट्रेलिया के आदिम निवासी

कुछ ही सप्ताह पूर्व की बात है कि आस्ट्रेलिया का एक शिष्टमण्डल भारत-भ्रमण के लिए आया था। वह शिष्टमण्डल लगभग सात सप्ताह तक भारत में रहा था। अपने भाषणों में उसने भारत और आस्ट्रेलिया के भावी सम्बन्धों की चर्चा बड़े आकर्षक ढङ्ग से की थी। यही नहीं, भारतीय विधान-निर्मात्री परिषद् के प्रति भी उसने अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट की थीं और कहा था कि पूर्व के हम दोनों देशों की पारस्परिक मैत्री दोनों के लिए अत्यधिक उपयोगी प्रमाणित होगी। विधान-निर्मात्री परिषद् के नेताओं-द्वारा इस शुभ कामना के प्रति सन्तोष प्रकट किया गया था।

परन्तु उसी आस्ट्रेलिया ने संयुक्त राष्ट्र-सङ्घ के गत अधि-वेशन में भारत और दक्षिणी अफ्रीका के सम्बन्ध का प्रस्ताव उपस्थित होने पर अपना मत भारत के विपक्ष में दिया। भारत को इसकी कल्पना भी नहीं थी। अब विचारणीय यह है कि मित्रता और सहानुभूति का दम भरनेवाले आस्ट्रेलिया ने ऐसा विरोधी रुख क्यों धारण कर लिया, विशेषतः ऐसे मौके पर जब कि भारत के सम्मान का प्रश्न उपस्थित था। इसके लिए हमें आस्ट्रेलिया की आभ्यन्तरिक राजनीति पर विचार करना होगा।

आस्ट्रेलिया में, जैसा कि सर्वविदित है, दो जातियाँ रहती हैं। एक तो योरपीय गोरे, जो वहाँ के नागरिक बन चुके हैं और जिनके हाथों में शासन-सूत्र के सञ्चालन का उत्तरदायित्व है और दूसरे वहाँ के आदिम निवासी, जो अब तक उत्पीड़ित, शोषित और शासित का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

इन आदिम निवासियों में भी अब राजनीतिक चेतना जाग्रत् हो रही है और हो गई है। वे अब शताब्दियों की मोह निद्रा से जाग रहे हैं और अपने मानवता के अधिकारों के प्रति सतर्क दिखाई देने लगे हैं। आस्ट्रेलिया के उत्तरी-पश्चिमी भाग में बसे हुए आदिम निवासियों पर अधिकारी गोरों-द्वारा जो लोम-हर्षक अत्याचार किए जा रहे हैं, उन्हें और अधिक न सहने का उन्होंने निश्चय कर लिया है। उनकी एक कान्फरेंस भी बन चुकी है।

आस्ट्रेलिया की ये घटनाएँ अभी तक अँधेरे में रक्खी जाती रही हैं, इसलिए जन-साधारण को इनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी नहीं है। बात यह है कि आस्ट्रेलिया के १९०१ के विधान के अनुसार 'कामन वेल्थ' को वहाँ के आदिम निवासियों के सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार नहीं दिया गया है। प्रत्येक रियासत का अपना अलग 'घरेलू मामला कानून' है। फिर भी आदिम निवासियों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता और पश्चिमी आस्ट्रेलिया में तो उन पर जो अत्याचार होते हैं वे वर्णनातीत हैं। उदाहरणार्थ, प्रोटेक्टर और मालिक दोनों की आज्ञा प्राप्त किए बिना कोई आदिम निवासी अपनी नौकरी से इस्तीफा नहीं दे सकता। यदि वह ऐसा करे तो अपराधी ठहराया जाता है। इस प्रकार उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसा कि किसी जमाने में गुलामों के साथ हुआ करता था। गुलामी की प्रथा के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार सन् १८३३ में ही कानून बना चुकी है। उसके अनुसार ब्रिटेन के सभी उपनिवेशों से गुलामी की प्रथा उठा दी गई है पर आस्ट्रेलिया अब तक इसका अपवाद बना हुआ है। वहाँ के आदिम निवासी को 'व्यक्तिगत स्वतन्त्रता' जैसा कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। वे जमींदारों की इच्छा के अनुसार व्यवहार करने के लिए बाधित हैं।

समय की लहर से प्रभावित होकर आस्ट्रेलिया के आदिम निवासी भी अब सङ्गठन करने पर तुल गए हैं। सन् १९४६ में उन्होंने एक कान्फरेंस की आयोजना की थी और अपनी कुछ शिकायतें सम्मिलित रूप से अधिकारियों के सामने रखते हुए उनके दूर किए जाने की माँग की थी। सरकार की ओर से वे माँगें ठुकरा दी गईं, जैसा कि स्वाभाविक ही था। इस पर वहाँ के आठ सौ कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। यह हड़ताल भी निर्दयतापूर्वक कुचल दी गई और नेताओं को पकड़कर जेलों में बन्द कर दिया गया। पर सरकार आन्दोलन को दबाने में पूर्णतया सफल फिर भी न हो सकी।

आदिम निवासियों की माँगें अभी प्रारम्भिक ही हैं। नागरिकता के पूर्ण अधिकार चाहते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि उनके लिए गृहों की व्यवस्था की जाए, उन्हें उद्योग धन्धों की शिक्षा दी जाए और पूर्ण समानता के आधार पर उनको जातीय जीवन में मिला दिया जाए तथा समस्त कबीले और अर्ध कबीलेवाले क्षेत्रों का प्रबन्ध 'कामन वेल्थ' सरकार को हस्तान्तरित कर दिया जाए।

अब आस्ट्रेलिया की सरकार से उन्हें न्याय पाने की कोई आशा नहीं रह गई है, अतः उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसङ्घ के सम्मुख अपना मामला उपस्थित करने का निश्चय किया है। यह मामला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कुछ वैसा ही है जैसा कि भारत और दक्षिणी-अफ्रीका का है।

इस वस्तुस्थिति में आस्ट्रेलिया की सरकार का चिन्तित हो उठना और उसका दक्षिणी अफ्रीका के पक्ष में अपना मत देना स्वाभाविक ही था। हमें आशा है कि संयुक्त राष्ट्रसङ्घ उनके साथ भी अवश्य न्याय करेगा।

भारत और आस्ट्रेलिया का व्यापार

आस्ट्रेलिया की तीन प्रमुख व्यापारिक संस्थाओं की ओर से ६ प्रतिनिधियों का एक व्यापारिक शिष्टमण्डल पिछले दिनों भारत आया था। पूरे सात सप्ताह तक हवाई जहाजों, रेलों और मोटरों-द्वारा भारत के प्रत्येक प्रान्त का भ्रमण करके, सैकड़ों उद्योग-पतियों से वार्तालाप करके, अनेक प्रमुख उद्योग-केन्द्रों का निरीक्षण करके और इस प्रकार ढेर-सी बहुमूल्य सूचनाएँ सङ्कलित करके वह गत १५ दिसम्बर को स्वदेश लौट गया। उनकी इस यात्रा का प्रमुख उद्देश्य इन दो देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध को बढ़ाना कहा गया है।

उनकी इस यात्रा का भारत की ओर से स्वागत किया गया है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वतन्त्र भारत अपने सर्वतोमुखी विकास के लिए अत्यधिक उत्सुक है और इसके लिए हमारा पड़ोसी राष्ट्रों से जितना ही निकट सम्पर्क स्थापित हो सके, उतना ही अच्छा। आस्ट्रेलिया इस मामले में भारत की सहायता कर सकता है। उक्त शिष्टमण्डल के नेता मिस्टर मीकम ने कलकत्ते में कहा था—"यदि भारत हमें ठीक-ठीक बतला सके कि उसे किस-किस प्रकार की कितनी-कितनी मशीनों की आवश्यकता है तो आस्ट्रेलिया उसे ठीक वैसी ही मशीनें भेज सकता है। वे मशीनें अन्य देशों की मशीनों से कहीं अच्छी होंगी, इसका हम विश्वास दिला सकते हैं। अब वह समय दूर नहीं है जब आस्ट्रेलिया भारत को मशीनें, उनके पुर्जे तथा अन्य तैयार वस्तुएँ भेज सकेगा। हम परिस्थितियों का अध्ययन कर रहे हैं और इस प्रयत्न में हैं कि हमारी मशीनें यहाँ आकर अन्य देशों की मशीनों की अपेक्षा सस्ती पड़ें, साथ ही अधिक विश्वसनीय भी प्रमाणित हों। हमें विश्वास है कि हम सबसे पहले भारत को युद्धपूर्व के दामों पर मशीनें दे सकेंगे। हाँ, हम कपड़ा बुनने की मशीनें अभी नहीं भेज सकेंगे।"

आगामी वर्ष में यातायात की कठिनाइयाँ बहुत कुछ घट जाएँगी। अन्ताराष्ट्रीय व्यापार कान्फरेंस कुछ सप्ताहों में होनेवाली है। आस्ट्रेलिया चाहता है कि भारत उसे कर-सम्बन्धी कुछ विशेष सुविधाएँ दे दे। भारत भी अपनी ओर कुछ विशेष सुविधाओं की माँग कर सकता है। आस्ट्रेलिया व्यापारियों की शिकायत है कि भारतीय व्यापारी उन्हें कर के मामले में विदेशी समझते हैं। भारतीय [illegible] का भी कहना है कि उनके माल पर आस्ट्रेलिया [illegible] सम्बन्धी कोई विशेष सुविधा नहीं दी जाती है। [illegible] समझौते से यह शिकायत अवश्य दूर की जा सकती है। [illegible] तो स्पष्ट ही है कि दोनों देशों के व्यापारी परस्पर व्यापार [illegible] करने को उत्सुक हैं। भारत और आस्ट्रेलिया लगभग [illegible] ही अक्षांश और देशान्तर में अवस्थित हैं। मार्ग भी [illegible] दूर का नहीं है। इस परिस्थिति में एक दूसरे को [illegible] लाभ बड़ी मात्रा में पहुँचा सकते हैं।

आस्ट्रेलिया को प्रमुखतः रूई, जूट के बोरों, अलसी अलसी के तेल की आवश्यकता है। ये वस्तुएँ [illegible] प्रचुरता से होती हैं। पर अन्ततः ये सब 'कच्चा माल' कोटि में आती हैं। भारत को 'पक्का माल' चाहिए। प्रकार यह व्यापार समानता का नहीं कहा जा सकता। इतना अवश्य है कि जब तक भारत स्वयं 'पक्का माल' मशीनें आदि तैयार न करने लगे, तब तक उसे आयात [illegible] ही होगा और बदले में अपना कच्चा माल देना ही [illegible] अब भारतीय उद्योग-पतियों को यह निश्चय करना है कि [illegible] विदेशी राष्ट्र के उस्तरे से मुड़ने में भारत को अधिक-से-[illegible] सुविधा होगी।

कबाइली प्रश्न

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के सीमाप्रान्त के दौरे के [illegible] पर जो विरोधी प्रदर्शन और षड्यन्त्र रचे गए थे उनके [illegible] ब्रिटिश सरकार के पोलिटिकल विभाग को उत्तरदायी ठहरा [illegible] गया था। इसी आरोप के सम्बन्ध में पोलिटिकल विभाग [illegible] दो प्रमुख अधिकारियों को सरकार ने अपदस्थ भी कर [illegible] था। पर इस ताड़ना से भी परिस्थिति में विशेष सुधार [illegible] हुआ है। पोलिटिकल विभाग के कुचक्र और षड्यन्त्र [illegible] पूर्ण वेग से चल रहे हैं, जैसा कि खान बादशाह के नई दिल्ली के पिछले एक वक्तव्य से विदित होता है। उक्त वक्तव्य का सारांश दैनिक 'हिन्दी-मिलाप' में इस प्रकार छपा है—

पोलिटिकल विभाग के अधिकारियों के पास कबाइली [illegible] में काफी रुपया और पैरोकार हैं। इन लोगों में से कुछ [illegible] बारे में समझा यह जाता है कि वे मुस्लिम लीगी हैं, लेकिन [illegible] दरअसल वे इन अधिकारियों के एजेंट हैं और इन्हें मुआ [illegible] की शक्ल में बड़ी-बड़ी रकमें मिलती हैं। मुझे पता है कि इनमें [illegible] कुछ को कबाइली हल्के का दौरा करने तथा वहाँ भाषण देने [illegible] लिए निमन्त्रित किया गया। यह निमन्त्रण एक प्रकार [illegible] हिन्दू और मुसलमानों तथा मुसलमानों और मुसलमानों [illegible] सहयुद्ध कराने का निमन्त्रण है। सीमाप्रान्त की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी यह है। मैं फिर दोहराऊँगा कि कुछ अधिकारी जान-बूझ कर कबाइली हल्के में गड़बड़ पैदा कर रहे हैं, ताकि कांग्रेस और अस्थायी सरकार को बदनाम किया जा सके। कबाइली लोग हमारे भाई-बन्द हैं। वे विदेशी नहीं। हमारे स्वतन्त्रता-युद्ध में उनकी सहानुभूति सदैव राष्ट्रीय शक्तियों से रही है। भारत की महत्ता और समृद्धि के लिए उन्होंने सदा कोशिश की है। लेकिन आज पिछले लगभग १ साल से उन्हें बिगाड़ने, उनमें डर पैदा करने तथा कबाइली क्षेत्र में गड़बड़ शुरू कराने की हालतें पैदा करने की कोशिश की जा रही है। इसका कारण मैं पहले भी बता चुका हूँ, फिर दुहराता हूँ। यह पठानों और कबाइली हल्कों में झगड़ा कराने तथा अस्थायी सरकार को बदनाम करने की चाल है। मुझे पता चला है कि ब्रिटिश पार्लमेंट में एक बयान इस बारे में देते हुए कहा गया है कि मेरे इन अभियोगों से स्वयं नेहरू जी ने इनकार किया है। लेकिन यह बात गलत है। नेहरू जी ने ऐसी कोई बात नहीं कही। सीमाप्रान्त की स्थिति का जिन्हें अनुभव है वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि बड़े और छोटे दोनों प्रकार के अधिकारी वहाँ शरारत करने पर तुले हुए हैं। जब से ब्रिटिश कैबिनेट मिशन भारत आया है और अस्थायी सरकार बनी है, ये अधिकारी साम्प्रदायिक आधार पर कबाइली हल्कों में आन्दोलन कर रहे हैं। इस काम के लिए जिन आदमियों को निमन्त्रित किया है उन्हें भी मैं जानता हूँ और सारी हलचल से परिचित हूँ। सीमाप्रान्त में इस प्रकार गृहयुद्ध की तैयारी की जा रही है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर ही मैंने खुदाई खिदमतगारों का एक सदिच्छा मिशन सीमाप्रान्त में भेजने का फैसला किया था, ताकि उन्हें अहिंसा और प्रेम का सन्देश सुनाए। लेकिन यह बात अधिकारियों को पसन्द नहीं आई। इसलिए उन्होंने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिए। मुझे इस पर आश्चर्य नहीं। मैं जानता था ऐसा ही होगा, लेकिन फिर भी मैं इस बात की पुष्टि करना चाहता था। ज्योंही वैधानिक असेंबली की बैठक समाप्त हो जाएगी, मैं अपने प्रान्त में लौटकर नई पैदा हुई स्थिति का अध्ययन करूंगा। इसके बाद कोई नया कदम उठाया जाएगा। कबाइली प्रश्न सीमाप्रान्त के लिए मौत और जिन्दगी का प्रश्न है।

पञ्जाब और 'सीधी कार्यवाही'

मुस्लिम लीग की 'सीधी कार्यवाही' का फल कलकत्ते ने अच्छी तरह भोगा। उसकी प्रतिक्रिया नोवाखाली में हुई और उसकी प्रतिक्रिया की प्रतिक्रिया बिहार में। पड़ोसी युक्तप्रान्त पर भी उसका प्रभाव पड़ा, जिसके परिणाम-स्वरूप मेरठ और मुजफ्फरनगर के उपद्रव हुए। बम्बई और अहमदाबाद के छुट-पुट उपद्रव तो वहाँ की दिनचर्या में शामिल हो गए हैं।

इस प्रकार साम्प्रदायिक उपद्रवों का सिलसिला देश के अधिकांश सूबों में जारी है। अपवाद-स्वरूप कुछ थोड़े ही सूबे बचे थे जिनमें पञ्जाब भी एक था। पञ्जाब की आबादी मुसलिम प्रधान है। मुसलिम लीगी नेताओं और उनके मुखपत्रों को आश्चर्य हो रहा था कि पञ्जाब शान्त क्यों है, जब कि वह 'सीधी कार्यवाही' का उचित क्षेत्र बनने या बनाने योग्य है।

अभी कुछ ही दिन पूर्व लाहौर में 'पञ्जाब मुसलिम लीग-कार्यकर्त्ता-कान्फरेंस' का अधिवेशन हुआ था। उद्देश्य था 'सीधी कार्यवाही' के कार्यक्रम पर पञ्जाब की परिस्थिति के दृष्टिकोण से विचार करना। उस अवसर पर भाषण करते हुए 'लीग कमेटी आफ एक्शन' के सेक्रेटरी सरदार शौकत हयात खाँ ने कहा था—"अगले दो महीने पञ्जाबी मुसलमानों के लिए घोर कठिनाई के और घटनापूर्ण होंगे। आपके सामने एक ओर अकर्मण्यता और दयनीयावस्था है और दूसरी ओर सङ्घर्ष और सम्मान! आपको यह निर्णय कर लेना है कि इन दो वर्गों में से आप किसे चुनते हैं।"

इस कान्फरेंस ने पाँच सदस्यों की एक उपसमिति भी बनाई थी। पञ्जाब में कुल पाँच डिवीजन हैं और प्रत्येक डिवीजन का एक प्रतिनिधि उपसमिति में लिया गया था। प्रत्येक सदस्य के जिम्मे काम यह दिया गया था कि वह अपने डिवीजन की परिस्थिति के अनुसार 'सीधी कार्यवाही' के लिए योजना तैयार करे और उसे मुसलिम लीग की 'कमेटी आफ एक्शन' के सामने रक्खे।

इस प्रकार पञ्जाब में 'सीधी कार्यवाही' की एक पूरी योजना तैयार हो गई थी। बारूद वहाँ बहुत पहले से फैलाई जा चुकी थी, केवल आँच दिखाने की कसर थी। सरदार शौकत हयात खाँ के भाषण और 'लीग कमेटी आफ एक्शन' की कार्यकुशलता से वह कमी भी अचिर काल में पूरी हो गई।

पञ्जाब अब 'सीधी कार्यवाही' का क्षेत्र बन गया है। वहाँ से आए हुए ताजे समाचारों से ज्ञात होता है कि 'हजारा जिले में बहुमत के लोगों ने अल्पमत जातियों पर आक्रमण कर दिया है। गाँवों में कत्ल आम, आगजनी, लूटपाट और इसी प्रकार की घटनाएँ घट रही हैं। लोग गाँव छोड़-छोड़कर भाग रहे हैं। रावल पिण्डी और अटक जिलों की भी यही दशा है। वहाँ के निवासी अपने को असहाय अनुभव कर रहे हैं।'

क्या यह कलकत्ता और नोवाखाली की पुनरावृत्ति हो रही है? और वह भी इतनी शीघ्रता से कि अभी उक्त कान्फरेंस के प्रस्ताव के अक्षरों को स्याही भी न सूखने पाई होगी!

हमें विश्वास है कि पञ्जाब की साझे की सरकार बिहार की सरकार का पदानुसरण करेगी और उपद्रवियों की बुद्धि को ठीक-ठिकाने लगा देगी। अन्यथा यह आग पूरे पञ्जाब में फैल जाएगी, जैसा कि उपद्रवियों का इरादा प्रतीत होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित नेहरू और 'एसोशिएटिड चैंबर्स आफ कामर्स'

कलकत्ते का प्रख्यात 'एसोशिएटिड चैंबर्स आफ कामर्स' उन श्वेताङ्ग व्यापारियों की सङ्गठित संस्था है जो गत दो शताब्दियों से व्यापार-द्वारा भारत का सङ्गठित रूप से शोषण करते आ रहे हैं। गत १६ दिसम्बर को उसका वार्षिक अधिवेशन हुआ था। अब तक ऐसे अवसर पर भाषण करने के लिए श्वेत जाति के ही किसी अति सम्भावित सदस्य को आमन्त्रित किया जाता था। कारण स्पष्ट है। श्वेत जाति की हित-साधना वही कर सकता है जो उसका समानधर्मा हो, जो उसी की भाषा में उसी के मन की बात कहे और जिसका दृष्टिकोण उसी जाति का दृष्टिकोण हो। पर इसके विपरीत इस वर्ष भाषण करने के लिए अस्थायी राष्ट्रीय सरकार के उपाध्यक्ष और कांग्रेस के भूतपूर्व सभापति पण्डित जवाहरलाल को आमन्त्रित किया गया! यह घटना उक्त चैंबर्स के इतिहास में पहली है। इससे पता चलता है कि हवा अब किस रुख पर बहना चाहती है।

पण्डित नेहरू की विचारधारा से भारत ही नहीं, सारा संसार अवगत है। वे अपने को समाजवादी कहते और मानते हैं। उनका प्रत्येक कार्य समाजवाद की खरी कसौटी पर परखा जा सकता है। वे घर में और बाहर भी सर्वत्र समाजवादी सिद्धान्तों का पोषण और समर्थन करते हैं। दूसरी ओर उक्त चैंबर्स की नीति सर्वथा विपरीत प्रकार की रही है। शोषण उसका मुख्य ध्येय रहा है और इसके लिए वह अपने सजातीय शासक-वर्ग से विशेष सुविधाएँ प्राप्त करता रहा है। इस वस्तुस्थिति में पण्डित नेहरू को भाषण करने के लिए आमन्त्रित होते देख प्रत्येक भारतीय को आश्चर्य हुआ होगा। सचमुच योरपीय व्यापारी-वर्ग के उन चुने हुए प्रतिनिधियों के सामने, जो समस्त भारत में शोषण के नियमों पर काम कर रहे हैं, अपने उद्गार प्रकट करने के लिए नेहरू जी को आमन्त्रित करके उक्त चैंबर्स के सभापति महोदय ने अत्यन्त दुस्साहस का परिचय दिया। इस घटना से प्रमाणित होता है कि भारतस्थित योरपीय व्यापारिक वर्ग अनुभव करने लगा है कि श्वेताङ्ग जातियों का प्रभुत्व अब समाप्त हो रहा है। फलतः अब न तो वे राजनीतिक क्षेत्र में प्रधानता के अधिकारी रहेंगे और न व्यापारिक क्षेत्र में। यदि उन्हें भविष्य में भारत से लाभ उठाना है तो वे सदिच्छा उत्पन्न करके ही ऐसा कर सकेंगे। अपने भीतरी मामलों में भारतीय कितने ही लड़ते-झगड़ते दिखाई देते हों, पर इस मामले में सभी—वे चाहे हिन्दू हों, या सिख या मुसलमान या अन्य—एक मत हैं कि भारत भारतीयों का और उन्हीं के हाथ में इसका सारा प्रबन्ध रहेगा। अब [illegible] की प्रभुता के दिन लद गए!

पण्डित नेहरू ने उक्त अवसर पर किए गए अपने [illegible] में यह बात साफ कर दी है कि भारत से सम्बन्धित मामले निपटारा भारत स्वयं करेगा और अपनी भूमि पर ही। [illegible] लिए न वह बाहर जाएगा और न किसी बाहरी आदमी पञ्च बनाएगा। हमें शीघ्र ही परिवर्त्तन करना है [illegible] निदर्शन भी भारतीय ही करेगा। उनके शब्दों से यह [illegible] भी निकलती है कि 'व्यापारिक सुरक्षा'-जैसी किसी चीज़ आशा भारत से योरप की किसी विशेष जाति को नहीं [illegible] चाहिए।

भारत की भूमि का शोषण करते हुए योरप की [illegible] को दो सौ से अधिक वर्ष बीत चुके हैं। इस बीच में [illegible] सुविधा के लिए उन्होंने अपनी सजातीय सरकार से तरह-[illegible] के कानून बनवाए। अब पार्लमेंट के एक विशेष [illegible] के आधार पर वे भारत की नागरिकता का भी दावा कर [illegible] जिसे इस देश का शोषण करने का उनका अधिकार चिरस्था[illegible] रह सके। पर उक्त चैंबर के सदस्यों को अब यह समझ [illegible] चाहिए कि कोई भी कानून उनके पक्ष का समर्थन क्यों न [illegible] रहे, अँगरेज सदा भारत के लिए विदेशी रहेंगे। भारत [illegible] लिए जो विधान बनाया जाएगा उसमें यह सत्य भी [illegible] निवेशित रहेगा। भावी भारत में कानून की दृष्टि से अँगरेज, अमेरिकन, फ्रेंच, जर्मन और जापानी में कोई भेद-भाव [illegible] रहेगा। सब के साथ समानता का व्यवहार होगा। [illegible] किसी को विशेष सुविधाएँ या रियायतें उसके गौराङ्ग होने [illegible] कारण ही नहीं दे देगा, न इसलिए कि वह बहुत काल [illegible] भारत की शासक जाति रही है। जो जाति समय की आवश्यकता [illegible] का अनुभव करती हुई भारत की राष्ट्रीय या व्यापारिक [illegible] में सहायता प्रदान करेगी, वही भारत की अधिक निकटता [illegible] कर सकेगी। यदि चैंबर्स के सदस्यों ने इस सत्य का [illegible] समय रहते ही न किया और समय की परिवर्त्तित गति [illegible] को पहचानते हुए भारत के साथ सच्चा सहयोग न किया [illegible] उसे भावी समझौते में स्थान पाने की कोई आशा [illegible] रखनी चाहिए। साथ ही यदि वे अपनी जीविका भलमनसाहत [illegible] सहयोग और भारतीयों के साथ समझौता करके नहीं [illegible] तो उनके लिए इस देश में स्थान नहीं है।

——

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press Ltd., Benares-Branch, Benares.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्रीपुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम बात हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः ऑपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको ऑपरेशन कराने में असुविधा है या ऑपरेशन की अपेक्षा औषधियों द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग है—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कॉर्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना ऑपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा फैलाव बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खुराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है या गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान ठीक हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर होकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खूब भूख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पैकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रु० पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०
पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

लिखिए—
अभी २ शहरों में हम ऐजेन्सी स्थापन कर रहे हैं। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेममोहनी बटिका

अगर आप दवा करते-करते हैरान हो गये हों, तो हमारी यह प्रेममोहनी बटिका जरूर इस्तेमाल करिएगा। इसकी तारीफ करना फिजूल है, यह आपको सेवन करने से ही मालूम होगा कि वास्तव में क्या है। इसके सेवन से स्वप्नदोष, धातुक्षीणता, कमजोरी, मधुमेह, बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय वीर्य का निकलना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत होना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना, हिस्टीरिया, उन्माद आदि रोगों को दूर कर अपूर्व ताकत लाती है। और स्त्रियों के लिए भी यही दवा प्रदर, रज, कमजोरी आदि को दूर कर ताकत पैदा करती है। आज ही मँगाकर लाभ उठाइए। मूल्य २० दिन की ४० गोलियों का ३॥) और ४० दिन की ८० गोलियों की पूरी खूराक का ६॥) डाक-खर्च माफ पैकिंग ।-) अलग।

शाही आनन्द तिला

अगर आपको नामर्दी की शिकायत है तो इसी कम्पनी का चुना हुआ तिला इस्तेमाल करिएगा। केवल दो ही सप्ताह इस तिला का उपयोग करने से कामशक्ति में अपूर्व चेतनता आ जाती है। बचपन की अवस्था में लुक-छिपकर की गई भूलों द्वारा जिनकी कामेन्द्रिय विकृत हो गई हो, उन्हें इस तिला के उपयोग से नव-यौवन प्राप्त होता है। किसी प्रकार के छाले पड़ने का भय नहीं है। एक शीशी में पूरी पन्द्रह दिन की दवा है जिसका मूल्य सिर्फ ३।) है। डाक-खर्च माफ, पैकिंग ।-) अलग।

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १९२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गए, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिल्कुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी अवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पडती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हरएक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४।) डाक-खर्च प्रति पिस्तौल १।) अलग कारतूस फी सैकड़ा ४)

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी-सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सैंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीयत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जाएगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रति शीशी ॥=) दर्जन का ५॥) डाक-खर्च १।) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूबसूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जाएगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है।

पता—इंडियन जनरल ट्रेडिंग कम्पनी नं० १० कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्री अपनी माताका दर्पण है

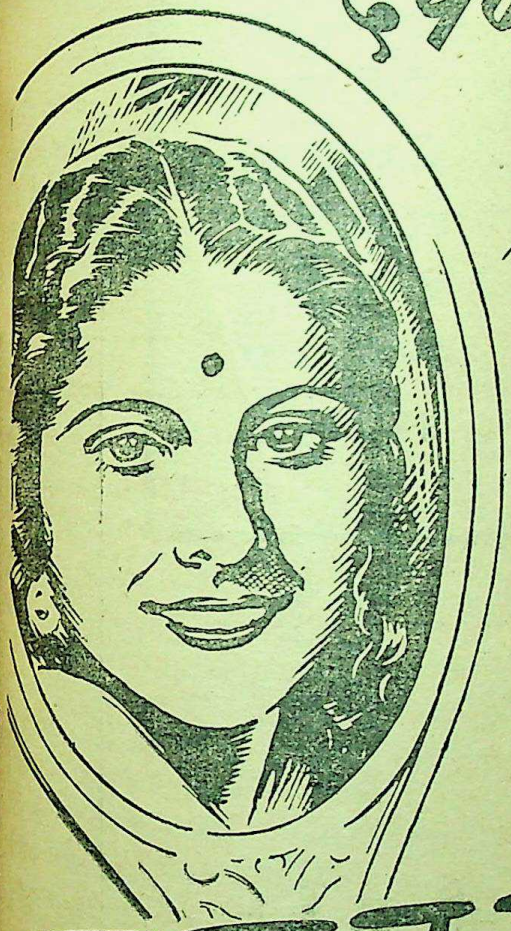

पहले दिन जब मंजुला अपने स्कूल पहुंची, तो श्रेणीके सब लोग उसकी काली केशराशिको देखकर स्तम्भित हो गये। "क्या सुन्दर बाल हैं" विनीता ने कहा। "कितनी मनमोहक केशराशि है" सिप्राने कहा। "मैं अपनी मांकी बेटी हूं" मंजुलाने गर्वसे मुसकराते हुए कहा। "मेरी मांके केश भी ऐसे ही हैं। यह जवाकुसुम का प्रसाद है।"

जवाकुसुम

★

सर्वोत्तम केश तैल

असली माल मिले, इसके लिए हमारे व्यापारियों या खुद हमसे खरीदना सुरक्षित है।

H.J. 6/546

सि, के, सेन एण्ड कों लिः, जवाकुसुम हाउस, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस

दंतमंजन

ये दोनों ही चीजें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

पण्डितिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी उत्तमोत्तम पुस्तकें

कविवर पं० सोहनलाल द्विवेदी-रचित काव्य-ग्रन्थ

भैरवी

इसकी राष्ट्रीय कविताएँ राष्ट्रप्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

वासवदत्ता

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य। इस काव्य की विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य दो रुपये।

पूजागीत

द्विवेदी जी की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह। इसकी कविता जीवन में स्फूर्ति का सञ्चार करती है। क्वालिटी पीले कागज पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य दो रुपये।

कुणाल

इसमें अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है, जिसे पढ़ते हुए अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राजसंस्करण २॥)

विषपान

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर कवि ने इस खण्ड-काव्य की रचना की है। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की खास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

झरना

इसमें पण्डित सोहनलाल जी की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले, सुनहली धूप, लहर, सब पर जल बरसाता बादल, दूबों का गीत और नीम का पेड़ आदि सुन्दर कविताएँ हैं। अच्छे कागज पर अच्छी स्याही में छपी पुस्तक का मूल्य ॥।) केवल बारह आने।

सचित्र हिन्दी-महाभारत

महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रङ्गीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे अति ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। मूल्य ७०) सत्तर रुपये।

हिन्दी-महाभारत

इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही सुन्दर और सरल भाषा में लिखी गई है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सरल भाषा में किया गया आविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रङ्गीन चित्रों की भरमार है और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबालवृद्ध-नर-नारी सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १५।-) पन्द्रह रुपये पाँच आने।

कर्तव्य-शिक्षा

प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदाचारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

भारतीय चित्रकला-पद्धति

कलात्मक चित्र, कार्टून आदि बनाने की आसान विधि। मूल्य १) एक रुपया।

साहित्यालोचन

इसका संशोधित संस्करण छपकर तैयार है। इसमें संस्कृत के प्राचीन आचार्यों के साहित्य-सम्बन्धी सिद्धान्तों के अतिरिक्त पाश्चात्य साहित्यकारों तथा साहित्य-मर्मज्ञों के मत का दिग्दर्शन बहुत ही मौलिक ढङ्ग से कराया गया है। ४०० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस लिमिटेड इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणायाम विज्ञान और कला

डाक्टर शोजानुरो ओटेब नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नए से नए देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

वाल्मीकीय रामायण [सचित्र] दो भाग

महाभारत की तरह महर्षि वाल्मीकि का रामायण भी हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है और यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था। उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥≡) छः रुपये ग्यारह आने प्रतिभाग।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामीजी का प्रामाणिक जीवन-चरित तथा उनके ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय इस पुस्तक में दिया गया है। इसकी रचना हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् बाबू श्यामसुन्दरदास ने की है। मूल्य १) रुपया।

बुद्धदेव

महात्मा गौतम बुद्ध का नाम कौन नहीं जानता? चीन, जापान, तिब्बत, लङ्का, बर्मा और स्याम आदि देश बौद्ध-धर्म को मानते हैं। उन्हीं महात्मा का इसमें जीवन-चरित और उपदेश विस्तार से वर्णित है। डेढ़ सौ से ऊपर पृष्ठों की सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।) सवा रुपया।

कवितावली

(टीकाकार, रायबहादुर पं० चम्पाराम मिश्र, बी०ए०, एम०ए० एस-बी०) गोस्वामी तुलसीदास की कवितावली की एक बहुत ही विद्वत्तापूर्ण टीका। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

विनयपत्रिका

(सटीक)—गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं विनयपत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वा के विनय-सम्बन्धी पद्यों का संग्रह है। इसके टीका पण्डित रामेश्वर भट्ट। मूल्य ४) चार रुपये।

कुण्डलिया रामायण

टीकाकार, सत्यनारायण पाण्डेय। कुण्डलिया छन्द लिखित गोस्वामी तुलसीदास-कृत रामायण, सुन्दर सहित। मूल्य ४) चार रुपये।

संक्षिप्त सूरसागर

इसमें महाकवि सूरदास के पदों का संग्रह है। एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओतप्रोत है। ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

संक्षिप्त पद्मावत

रायबहादुर, बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए० द्वारा सम्पा मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत का संक्षिप्त संस्क मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

अमर ज्योति

यह पुस्तक बाबू निशीथकुमार राय, बी० ए० की का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज, चरित्रम्, नहीं, ज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़ने का मनोरञ्जन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का न करके कथा का चित्रण किया है। पूँजीपतियों और के सङ्घर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

चारण

इस पद्यमय पुस्तक में प्राकृतिक दृश्यों के मनो वर्णनों के अतिरिक्त राजपूताना के कुछ प्रसिद्ध वीरों गुणगान किया गया है। मूल्य ।-) पाँच आने।

विश्व की विभूतियाँ

देश-विदेश के १२ सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के चरित संग्रह। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलाओं के उपयुक्त पुस्तकें

माँ और बच्चा

बच्चों का पालन-पोषण करने तथा उन्हें स्वस्थ और सबल बनाने के लिए जिन-जिन बातों का जानना आवश्यक है, वे सभी बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

सती

इसमें दक्षसुता सती पार्वती की कथा सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

सुशील कन्या

इसे पढ़कर बालिकाएँ स्वास्थ्य, सदाचार तथा नीति आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगी। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

आदर्श महापुरुष

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, स्वामी शङ्कराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सन्त कबीर, स्वामी दयानन्द आदि १७ महापुरुषों के जीवनचरित्र तथा उनके मार्ग की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का निरूपण किया गया है। लेखक का उद्देश प्रसिद्ध मतों की शिक्षाओं और विशेषताओं से पाठकों को परिचित करना है। संसार के बड़े बड़े मत किन बातों में समान हैं और किनमें भिन्न हैं, इसका निर्णय भी पाठक इस पुस्तक को पढ़कर कर सकेंगे। लगभग सौ से ऊपर पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

पतिव्रता

सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री और शकुन्तला इन पाँच पतिव्रताओं के चरितों का संग्रह। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

पतिव्रता गान्धारी

कौरवों की माता गान्धारी का जीवन-चरित। इसमें प्रसङ्गवश महाभारत की प्रायः पूरी कथा का सारांश आ गया है। मूल्य ॥।-) तेरह आने।

सावित्री

जिस सावित्री के नाम पर घर-घर की बहू बेटियाँ वटसावित्री का व्रत करती हैं उसी सावित्री की दिव्य कथा इस पुस्तक में अच्छे ढङ्ग से लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

दमयन्ती

इसमें पतिव्रता-शिरोमणि महारानी दमयन्ती की उपदेशप्रद कथा बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)॥ साढ़े पाँच आने।

सौभाग्यवती

स्त्रियों के लिए एक उपदेशपूर्ण पुस्तक। मूल्य ।-) पाँच आने।

काव्य-ग्रन्थ

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि ठाकुर गोपालशरण सिंह की काव्य-कृतियाँ

माधवी

माधवी का यह नया संस्करण बड़ी ही सज-धज के साथ और बड़े आकार में प्रकाशित हुआ है। मूल्य २) दो रुपये।

ज्योतिष्मती

इस संग्रह में ठाकुर साहब की नवीन प्रकार की कविताएँ संगृहीत की गई हैं, जो हिन्दी-साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती हैं। खासकर इसमें संग्रह किए गए छोटे-छोटे गीत बहुत ही मधुर और भावपूर्ण हैं। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

मानवी

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर साहब ने भारतीय नारी के सुख-दुःखमय जीवन का बड़ा ही सुन्दर, मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।-) दो रुपये पाँच आने।

सञ्चिता

इस संग्रह में ठाकुर साहब ने अपनी सन् १९१४ से लेकर सन् १९३९ तक की सब प्रकार की रचनाओं का समावेश किया है। इस एक ही पुस्तक के द्वारा ठाकुर साहब के कवि-जीवन के क्रम-विकास का उत्तमतापूर्वक अध्ययन किया जा सकता है। संग्रह में कुल ७१ कविताएँ हैं। मूल्य तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमना

'सुमना' ठाकुर साहब का सबसे नवीन संग्रह है। इसमें ५३ गीत हैं, जिनमें प्रकृति के प्रति उनका असीम अनुराग शब्द-शब्द-द्वारा व्यञ्जित होता है। इस प्रकार के सरस भावपूर्ण गीत हिन्दी-साहित्य में अन्यत्र न मिलेंगे। मूल्य २) दो रुपये।

पद्यमाला

इस पुस्तक में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारहवें अधिवेशन के सभापति हास्य-रसावतार स्वर्गीय पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, साहित्यभूषण की फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। मूल्य) एक रुपया।

मधुस्रवा

लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रससिक्त बनाइए। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक-द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गए थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ।।।) बारह आने।

एकादशी

लेखक, श्रीयुत नत्थाप्रसाद दीक्षित 'मिलिन्द'

इस पुस्तक में मिलिन्द जी की १२ कमनीय कविताओं का संग्रह है। ये सभी कविताएँ पौराणिक आख्यायिकाओं के आधार पर नए ढङ्ग से लिखी गई हैं। मूल्य केवल १।–) एक रुपया पाँच आने।

दैत्यवंश

लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह

इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन व्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी चाल के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देवपुरस्कार दिया जा चुका है। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

द्विवेदी काव्यमाला

आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविता का पूर्ण संग्रह। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

तक्षशिला काव्य

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

हल्दीघाटी

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय

(इस महाकाव्य पर दो हजार रुपए का देवपुरस्कार मिला है।) इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से फड़कती कविता में किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दीघाटी के युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फिल्म की तरह खिंच जाएँगी। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

नव-सतसई-सार

गोस्वामी तुलसीदास से लेकर श्री वियोगी हरि तक की नव सतसइयों का सारांश इस पुस्तक में दिया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

सरस सुमन

इस पुस्तक में पवन, भानु, चपला, जुगनू और नक्षत्र पर पाँच सुन्दर कविताएँ संगृहीत की गई हैं। कवि प्रकृति के निरीक्षण में कितना कुशल है, इस बात का परिचय इन कविता के द्वारा प्राप्त होता है। मूल्य ॥=) ग्यारह आने।

गङ्गावतरण

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्रीयुत जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का लिखा हुआ यह एक खण्ड-काव्य है। संयुक्त प्रान्त की हिन्दुस्तानी एकाडमी ने इसकी उत्तमता पर मुग्ध होकर रत्नाकरजी को पुरस्कार दिया था। मूल्य १) एक रुपया चार आने।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें ११ निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

सुबहवतन

स्वर्गीय पण्डित ब्रजनारायण 'चकबस्त' लखनवी की देवनागरी अक्षरों में छापी गई, उर्दू कविताओं का संग्रह। उर्दू न जाननेवाले पाठकों की सुविधा के लिए कविताओं में आनेवाले कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया गया है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

राजनीति-सम्बन्धी पुस्तकें

शासक

सुप्रसिद्ध राजनीति-विशारद निकोलो मेकियावेली की 'प्रिंस' नामक पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर। इसमें राजा के कर्त्तव्यों तथा राज्य-शासन-प्रणाली का बहुत ही विशद विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा

लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयङ्गम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ४) चार रुपये।

चुने हुए उपन्यास

राजदुलारी

इस सामाजिक उपन्यास में कलकत्ते के व्यापारिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाले उत्तर भारतीय हिन्दुओं की सामाजिक अवस्था पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १।—) एक रुपया तीन आने।

शुभदा

श्री शरच्चन्द्र के उपन्यासों से हमारे पाठक भली भाँति परिचित हैं। अतः विशेष विवरण देना व्यर्थ है। इसमें आपको पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण मिलेगा। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

शीलादेवी

शिक्षापूर्ण तथा चातुर्य्यमय घटनाओं से भरा हुआ मनोहर ऐतिहासिक उपन्यास। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोज़गार भाई को सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

युद्ध और शान्ति

अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन के सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान को बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।—) पाँच रुपये पाँच आने।

बलिदान-मंदिर

आत्म-त्याग की अपूर्व कथा। मूल्य २) दो रुपये।

कपाल-कुण्डला

यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य एक रुपया।

नवीन संन्यासी

इस उपन्यास में ग्राम्य और नागरिक जीवन का यथार्थ और सुन्दर चित्रण किया गया है। हास्य और विनोद की सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में है। मूल्य ४॥=) चार रुपये ग्यारह आने।

रामलाल

ग्रामीण समस्याओं से परिपूर्ण एक मौलिक सामाजिक उपन्यास। मूल्य १।—) एक रुपया पाँच आने।

पत्र-पुष्प

इसमें प्रभात बाबू की सामाजिक समस्या, समाधान, पिछा, जासूसी का जञ्जाल, अद्वैतवाद, कन्यादान और सतीदाह नामक कहानियों का संग्रह किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहराब-रुस्तम

फारसी भाषा में शाहनामा नाम की एक बहुत ही प्रसिद्ध पुस्तक है, जिसमें बहुत-से शूरवीरों की कहानियाँ लिखी गई हैं। यह कहानी उसी में से ली गई है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

कथा-सरित्सागर

इस पुस्तक में आद्योपान्त बड़ी सुन्दर कथाएँ संगृहीत हैं। प्रत्येक कथा अपने साथ कुछ न कुछ दृष्टान्त रखती है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

उत्सर्ग

छत्रपति शिवाजी की सहन-शीलता तथा कमला-थोरात के देश के लिए किए गए अनुपम आत्म-त्याग का नाटक के रूप में किया गया वर्णन। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

वेणीसंहार नाटक

संस्कृत के वीररस-प्रधान वेणीसंहार नामक नाटक का हिन्दी-अनुवाद। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सोहाग-बिन्दी तथा अन्य नाटक

यह पुस्तक कुछ एकाङ्की नाटकों का संग्रह है और उन नाटकों में भी सामाजिक समस्याओं पर विचार किया गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैकब्थ

रायबहादुर लाला सीताराम बी० ए०-द्वारा किया गया जगद्विख्यात कवि शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का अनुवाद। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

पुरु और अलेक्जेंडर

सुप्रसिद्ध वीर अलेक्जेंडर से मोर्चा लेनेवाले भारत के एकमात्र वीर 'पुरु' के अद्भुत पराक्रम तथा शौर्य का नाटक के रूप में चित्रण। मूल्य ।।=) ग्यारह आने।

राजा दिलीप नाटक

इसमें रघुवंश में वर्णित राजा दिलीप की कथा नाटक के रूप में लिखी गई है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य २) दो रुपये।

आलोचना-साहित्य

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भाग)

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रा... पार्वतीमङ्गल तथा जानकीमङ्गल का आलोचनात्मक परि... इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीका। मूल्य प्रथम भा... तीन रुपये, द्वितीय भाग का २॥=) दो रुपये ग्यारह आ...

मतिराम-मकरन्द

इसमें काव्यालोचन के साथ-साथ कवि मतिराम के प्रसिद्ध ग्रंथों--मतिराम सतसई, ललित-ललाम और रसराज का संक्षिप्त सरस संग्रह भी कर दिया गया है। सजि... पुस्तक का मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

कालिदास की निरंकुशता

संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि कालिदास की कृतियों... आलोचना। मूल्य ।।) आठ आने।

प्राचीन चिह्न

इस पुस्तक में स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीरप्र... द्विवेदी ने अपने देश के कई पुराने नगरों, स्थानों... मंदिरों आदि के विवरण तथा उनकी प्राचीन उन्नत अ... का वर्णन किया है। मूल्य १) एक रुपया।

इतिहास और पुरातत्त्व-सम्बन्धी पुस्तकें

अलबेरूनी का भारत

महमूद ग़ज़नवी के समय में अलबेरूनी नामक... मुसलमान पर्यटक भारतवर्ष में आया था और उसने... की अवस्था का ज्ञान प्राप्त करके यह उत्तम ग्रन्थ लिखा... मूल्य तीनों भागों का ९-) नौ रुपये एक आना।

पुरातत्त्वनिबन्धावली

महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन ने इस पुस्तक... समाविष्ट किए गए निबंधों के लिखने में देश-विदेश... कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन तथा दुर्गम स्थानों... भ्रमण से प्राप्त की गई अगाध ज्ञानराशि का उपयोग कि... है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार का संक्षिप्त इतिहास

(प्रथम व द्वितीय भाग) अनुवादक, श्री मदनगोपाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०। यह पुस्तक अँगरेजी के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० जी० वेल्स के इतिहास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें पृथ्वी के आदिकाल से लेकर जीसस के निर्माण के पूर्व तक की कथा सक्रम वर्णित है। द्वितीय भाग में जीसस के निर्माण से लेकर संसार के पुनर्निर्माण तक का वर्णन आ गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ४) चार रुपये।

यात्रा-वर्णन

स्वदेश-विदेश-यात्रा

लेखक, श्री सन्तराम, बी० ए० और श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

इस पुतक में काश्मीर, कुल्लू और आस्ट्रेलिया की यात्रा का वृत्तान्त दिया गया है। इसके सभी अध्याय अति ही रोचक हैं। पुस्तक में चित्रों की भरमार है। यदि आप काश्मीर या कुल्लू की सैर के लिए जाना चाहते हैं तो चलने से पहले इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। मूल्य १=) एक रुपया ग्यारह आने।

योरप-यात्रा में छः मास

इस पुस्तक को पढ़कर आप योरप की सभ्यता, वहाँ के भिन्न-भिन्न देशों की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अवस्था तथा मुख्य-मुख्य स्थानों का हाल घर बैठे जान सकेंगे। मूल्य ४) चार रुपये।

विदेश की बात

योरप के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य देशों की यात्रा का रोचक वृत्तान्त। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

ईरान

लेखक, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

यह पुस्तक अतीत और वर्तमान ईरान का सजीव चित्र है। राहुल जी ने ईरान के इतिहास पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला ही है, साथ ही वर्तमान ईरान का भी, वहाँ की जनता से व्यक्तिगत रूप से परिचित होकर, विवरण दिया है। मूल्य १॥=) एक रुपया ग्यारह आने।

मेरी लद्दाख-यात्रा

लेखक, महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन। यह महा-पण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन का बहुत ही रोचक और कितनी ही मूल्यवान् एवं ज्ञातव्य बातों से भरा हुआ भ्रमण वृत्तान्त है। पुस्तक में कई दर्शनीय स्थानों के चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १) एक रुपया।

एक आत्म-कथा

मुंशी लुत्फुल्ला नामक उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रतिष्ठित विद्वान् की आत्मकथा का सारांश। इसमें विलायत-यात्रा तथा मार्ग में पड़नेवाले स्थानों का तत्कालीन वर्णन दिया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

इस्लामी दुनिया का सिरताज

इस पुस्तक के बारे में हिन्दी के प्रसिद्ध पत्र भारत का मत है, "पुस्तक में तुर्की साम्राज्य के अभ्युदय और पतन का तथा नव टर्की राष्ट्र की स्थापना का कोरा इतिहास ही नहीं वर्णित किया गया है, बल्कि लेखक की राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत लेखनी ने उसमें एक नया जीवन डाल दिया है"। मूल्य २) दो रुपये।

काव्यकला

साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। लोगों का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का उपयोग ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलता-पूर्वक कर सकते हैं। इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन तो है, किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिये गये हैं जो जटिल और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार लेखक के पुत्र श्री गोपाललाल खन्ना एम० ए०, बी० टी० हैं। मूल्य २) दो रुपये।

मेरी आत्म-कहानी

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा के जन्मदाता बाबू श्यामसुन्दरदास जी की आत्म-कहानी एक प्रकार से हिन्दी-साहित्य के वर्तमान युग का इतिहास है। इस पुस्तक में बाबू साहब ने केवल अपनी जीवन-घटनाओं का विवरण ही नहीं लिखा वरन् अपने समय के उन सभी साहित्य-सेवियों के कार्यों की विवेचना भी की है, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि में योगदान किया है। मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तामणि

(पहला भाग) लेखक, आचार्य पण्डित रामचन्द्र जी शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह किया है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपूर्ण हैं, जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक भावनाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया है। इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। मूल्य २) दो रुपया।

नया प्रकाशन

नवयुवकों के लिए हवाई शिक्षा

लेखक, पं० श्रीराम वाजपेयी

(नेशनल आर्गेनाइजिंग कमिश्नर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसिएशन)

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। स्क्वाड्रन लीडर पी० एस० बिर्क, फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस० वाई० रानाडे और सारजेंट हमजा के व्याख्यान सुनकर और इस विषय की पुस्तकें पढ़कर लेखक ने इस पुस्तक की रचना की है। अब हवाई जहाजों का युग है, इस कारण इस विषय की थोड़ी-बहुत जानकारी हर एक भारतवासी को होनी चाहिए। आशा है, अपने विषय की इस अनोखी पुस्तक से पाठक लाभ उठावेंगे। पुस्तक सचित्र है। अन्त में शब्द-कोष दे दिया गया है जिससे पाठकों को पुस्तक समझने में बड़ी सहायता मिलेगी। आवरण-पृष्ठ रंगीन है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

अल्पता की समस्या

लेखक, पं० वेङ्कटेशनारायण तिवारी, एम० ए०

"साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और बे-तुल-जलूल दावे पेश करना और उन माँगों के पूरा न होने पर मुल्कफरोशी पर कमर कस लेना किसी सच्चे देश-भक्त का न फर्ज है, और न होना चाहिए।" इस पुस्तक की पृष्ठभूमि पर तथ्यों और आँकड़ों के साथ इसी प्रश्न समस्या का हल आप पाएँगे। आज जब साम्प्रदायिक तनातनी अपनी चरम सीमा पर पहुँचने का प्रयत्न कर रही है, तब यह पुस्तक हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए समान रूप से हिल-मिलकर रहने का मार्ग दिखाने में सहायक सिद्ध होगी।

पृष्ठ-संख्या २०६ और मूल्य २) दो रुपये

कामायनी का विवेचन

लेखक, श्री व्रजभूषण शर्मा, एम० ए०

कामायनी इस युग की अन्तिम देन है। किन्तु विषय की गहनता, कथा की सूक्ष्म अन्विति तथा भाषा की विचित्रता और लाक्षणिकता के कारण साधारण हिन्दी-साहित्य के प्रारंभिक अंशों के आगे नहीं बढ़ पाते। हिन्दी की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी भी प्रायः बिना इस ग्रन्थ के मर्म को समझे ही परीक्षा देते आ रहे हैं। हिन्दी के इन पाठकों को और विशेष रूप से उच्च कक्षा के विद्यार्थियों की उन कठिनाइयों को ध्यान में रखकर कामायनी का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है; काव्य-सम्बन्धी विशेषताओं का अध्ययन किया गया है और भाषा के स्वरूप का निरूपण किया गया है। परिशिष्ट में कठिन स्थलों को सरल किया गया है। पुस्तक बिलकुल नई दृष्टि से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

जागरण का मार्ग

यह पुस्तक जहाँ अर्थशास्त्र, नागरिक-शास्त्र, जमींदारी, सहकारिता और राज्य-प्रबन्ध आदि आधुनिक विषयों का परिचय कराती है वहाँ सांस्कृतिक जीवन की उत्तमता को बतलाती और स्वच्छ रहने की विशेषता का बोध कराती है। पुस्तक का दृष्टिकोण स्वदेश-प्रेम-प्रेरक है। सुन्दर सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया।

नारी-जीवन

हिन्दू का जीवन बिना गृहिणी के अपूर्ण रहता है और यदि गृहिणी अनुपयुक्त हुई तो गृहस्थी किसी काम की नहीं रहती। इस पुस्तक में लेखक ने वह विधि बतलाई है जिससे बहू-बेटियाँ गृहस्थी के उपयुक्त अपने जीवन का निर्माण करके स्वयं सुख से रहें और अपने घर के लोगों को भी सुख दे सकें। छोटे टाइपों में छपी ढाई सौ से अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य ढाई रुपए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्ट्रीय कवि पण्डित सोहनलाल द्विवेदी की रचनाएं

स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इनकी राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। कवि की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का श्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥) दो रुपये आने।

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि की खास विशेषता है। मूल्य १) एक रुपया।

...ी का एक आधुनिक काव्य है। ...की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ ...। मूल्य २) दो रुपये।

अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राजसंस्करण ३)

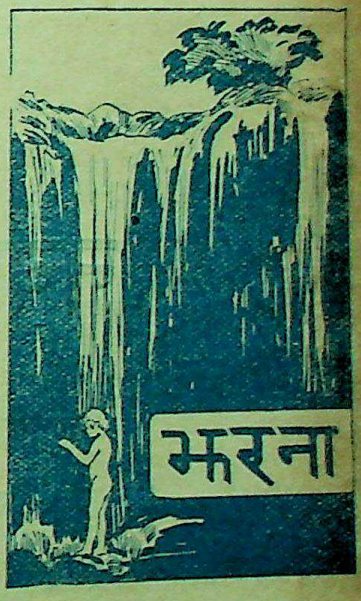

यह कवि की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले आदि सुन्दर कविताएँ इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।॥) बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

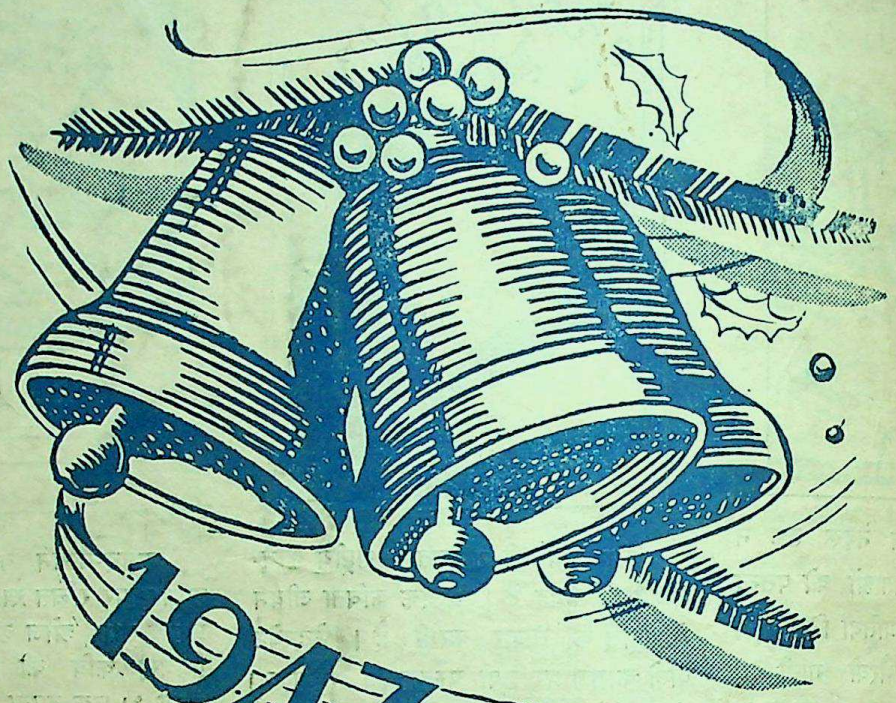

नववर्ष मंगलमय हो

अब पुराने वर्ष का अन्त और नये वर्ष का आगमन हुआ है। हम नववर्ष का स्वागत करते हुए यह कामना करते हैं कि इस वर्ष में वही देखने को मिले जो कि सभ[illegible] में उत्तम है।

अतः १९४७ का सन्देश शान्ति, समृद्धि और प्रसन्नता हो।

दी टाटा आईल मिल्स कम्पनी लिमिटेड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगस्त १९५१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।
बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।
बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूँद कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा सुगन्धित केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लिए 'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,

२८५ जुमा मसजिद, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

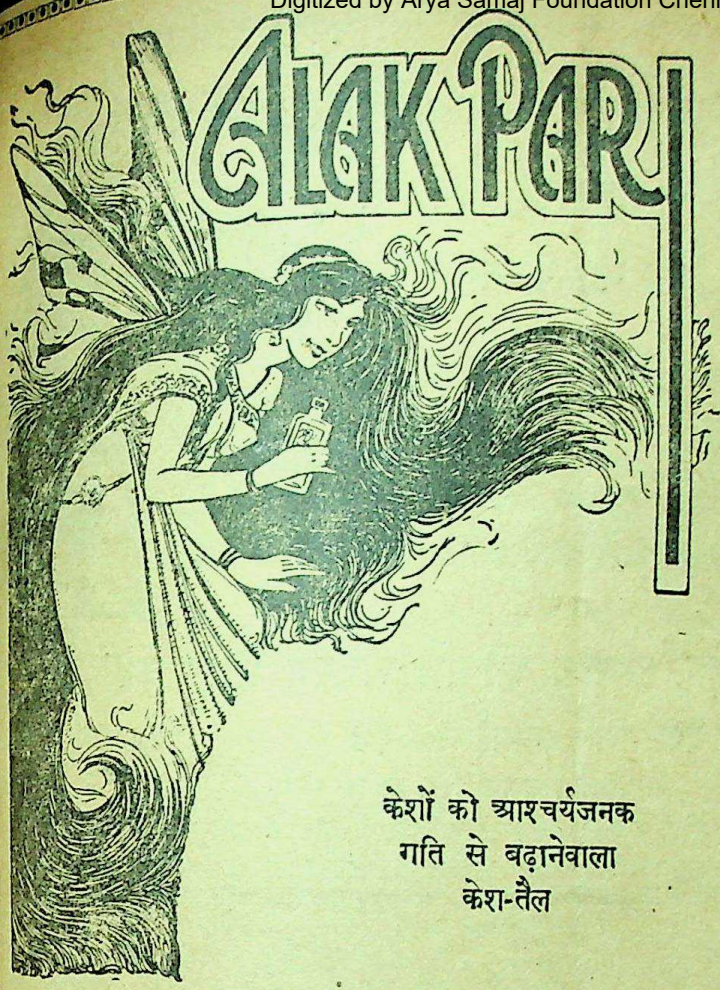

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।

दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।

तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।

चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं। फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जाएँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

महिलाओं की सम्मतियों की बाढ़

26. 1. 46.
अनेक कम्पनियों की लम्बी-चौड़ी तारीफें पढ़कर मेरा विश्वास उठ चुका था, पर आपकी अलकपरी को मैंने प्रशंसा के अनुरूप ही गुणकारी पाया। इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और तीन शीशियाँ शीघ्र भेज दें।
—राजकुमारी लालन, राजसदन, मैनपुरी।

11. 2. 47.
Alak Pari is giving much much satisfactory improvement, kindly despatch 6 Phials of it more.
Chadra P. Sethi B. A.
15. 2. 47. Ramnagar, Lahore.

अपनी पत्नी के लिए अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभ हुआ और बाल बढ़े भी खूब! कृपया १२ शीशियाँ और भेजें।
—गोस्वामी मुकुन्द शर्मा, बड़ा मन्दिर, बम्बई २।

17. 2. 47.
I found Alak Pari to be one of the excellent oils. In fact it has shown well progress in the hair and satisfied me to the most. Kindly despatch 6 Phials more.
19. 2. 47. Miss Malini V. Nagpurkar, Dadar.

पूर्व आपके यहाँ से अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभकारी प्रमाणित हुई। १ दर्जन शीशियाँ और भेज दें।
—गोस्वामी श्री० १०८, श्री गिरधारीलाल जी महाराज, झुंझुआ स्टेट।

प्रत्येक बड़े शहर में दूकानदारों के पास मिलती है। न मिलने पर इस पते से मँगाइए—

व्यवस्थापिका—'अलकपरी' नया कटरा, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बल, निश्चेतन और
निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, खून को
बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग
के बाद की निर्बलता
को नष्ट करनेवाला

झण्डु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य ओषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—चम्मकलाल कम्पनी, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल और पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

कमजोर और कृष बच्चे डोंगरे-बालामृत के इस्तेमाल से ताकतवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एक मात्र अचूक दवा है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और डाक्टर हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से पढ़ो मैं अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनाएँ हैं जो आपके सामने रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहा, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसंगत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने लज्जा के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अन्धेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये और बेशकीमती दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की। जो मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक ईंट के मकान में रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पहले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया फिर उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमजोरी और सुस्ती बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में नये जीवन का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के लिए पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि इस अमृत तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-कृत 'प्रेमवटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध वङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्यछाप केसर ६ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खल में डालकर उसमें शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके बाद ताजी तुलसी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज श्री जमुनादत्त शर्मा, झोंकर लिखता है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती और गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषधि वीर्य का पतलापन, बेकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, नामर्दी, शीघ्रपतन, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना तथा सब ही प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन सबको जिन्हें फुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की घोषणा की है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों के ३=) डाक खर्च ॥।–)

पता—बाबू श्यामलाल जी हर्ष प्रेमवटी आफिस नं० ५० धनकुट्टी कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

ओरिएण्ट फिल्म कैमरा

डबल लैन्स युक्त—मजबूत, सुन्दर, नया डिजाइन

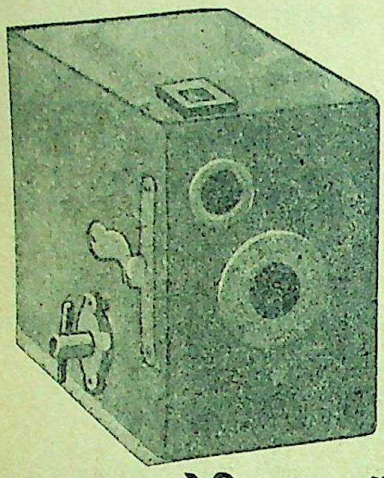

इस कैमरे से आप आसानी से चाहे जिस दिलपसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो नं० १२७ के फिल्म पर २।।" × १।।।" इंच का खींच सकते हैं। नं० १२७ की फिल्म जो आठ फोटो लेता है, आपको हर फोटोग्राफी के सामान बेचनेवाले की दुकान पर मिलेगा।

आप आज ही कैमरा मँगायें, अवश्य सन्तुष्ट होंगे। बढ़िया फोटो न खिचे तो कीमत वापस, कैमरे के साथ फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है। मूल्य १०।।।) पोस्टेज पैकिंग १।) रुपया अलग।

पता—ओरिएण्टल कैमरा हाउस नं० एस ३३३ अलीगढ़ सिटी।

सुविधा

(१) **अगस्त-क्रान्ति**

ले०—प्रो० बलदेवनारायण भूमिका ले०—बाबू राजेन्द्रप्रसाद परिचय—पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रामाणिक इतिहास। शहीदों, क्रान्तिकारों और नेताओं के ९१ मौलिक चित्र। साथ में नक्शे और आँकड़े। रायल साइज में ५५० पृष्ठों की संग्रहणीय पुस्तक। मू०—१०) रु०

डा० राजेन्द्रप्रसाद—"पुस्तक के लिखने में श्री बलदेवनारायण ने बहुत परिश्रम किया है।....इस पुस्तक का महत्त्व और बहुत हद तक प्रामाणिकता मानी जा सकती है।"

श्री जयप्रकाशनारायण—"आपने परिश्रम से लिखा है....सफलता चाहता हूँ।"

(२) **भारत छोड़ो**—(युग का श्रेष्ठ राजनैतिक और अभिनय-योग्य नाटक) ले०—राधाकृष्ण। मू० २) रु०।

(३) **क्या हम भूखों मरें ?** (कृषि और खाद्य-समस्या पर आधुनिक और विचारोत्तेजक पुस्तक) ले० प्रो० प्रभाकर माँचवे एम० ए०। मू०—१) रु०।

(४) **मेरे संस्मरण**—(बिहार में कांग्रेस-आन्दोलन का दिलचस्प इतिहास)—लेखक म० अनुग्रह-नारायणसिंह। मू०—४) रु०।

चारों पुस्तकें एक साथ लेने पर **कुल १४) रु० में**। अलग-अलग लेने से १५-) कमीशन। अन्य पुस्तकों के लिए भी हमें लिखिए। पुस्तक-विक्रेताओं को **विशेष सुविधा**। वे पत्र-व्यवहार करें।

प्रकाशक—पुस्तक-जगत, नया कदम कुआँ पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीम
टूथ पेस्ट

नीम टूथ पेस्ट भारतवर्ष क्या विदेशी जनता की प्रशंसा प्राप्त कर अपनी उपयोगिता पूर्णतया प्रमाणित कर चुका है।

अथवा

मार्गोफ्रिस
दंतमंजन

ये दोनों ही चीजें उच्च कोटि की हैं।

दी कलकत्ता केमिकल कं० लि०,

पण्डितिया रोड, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपविलास कम्पनी, कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियाँ

वीर्य-सञ्जीवन सत (रजिस्टर्ड)

एक ही सप्ताह सेवन करने से अपूर्व गुण दिखलाता है, चाहे जितना पुराना प्रमेह हो, पाखाने या पेशाब के साथ, आगे या पीछे वीर्य निकलता हो, अधिक पेशाब आता हो, इन्द्रियों की शिथिलता, वीर्य का पानी के समान पतला हो जाने के कारण शक्ति का घट जाना, स्त्री-प्रसंग की इच्छा न होना या स्त्री के साथ केवल छेड़-छाड़ का ध्यान आकर वीर्य का निकल जाना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत, थोड़ी मेहनत में हाँफ जाना, दिमाग की कमजोरी, आँखों के आगे अँधेरा छाकर चक्कर आना, चेहरा पीला पड़ जाना, भूख न लगना, सिर घूमना आदि वीर्य-रोग जड़ से नष्ट हो जाते हैं और बुद्धि पैदा होकर चेहरे पर कान्ति आ जाती है। मूल्य फी डिब्बा ३।–), दो का ६।), तीन का ८।।।), चार का १०।।=) और पाँच डिब्बों का मूल्य १२।।), डाक-खर्च पृथक्।

काम-सुन्दरी वटी (रजिस्टर्ड)

एक गोली सम्भोग से पहले खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार देखें। यह स्तम्भन-शक्ति पैदा कर गजब ढा देगी। इसे नियमपूर्वक सेवन करने से बल, वीर्य, पुरुषार्थ बढ़ता है, नपुंसकत्व जाता है, कामिनी प्यारी लगती है, आलस्य, बेचैनी, स्वप्नदोष, दिमाग की कमजोरी, धातुक्षीण आदि रोगों को नष्ट कर बल-वीर्य को बढ़ाकर अटूट शक्ति पैदा कर देगी। कीमत प्रति पैकट २।।), तीन का ६।), डाक-खर्च पृथक्।

तिला मस्ताना (रजिस्टर्ड)

इसके इस्तेमाल से नपुंसकता, बाल अवस्था की कुटेव से इन्द्रिय की शिथिलता, नसों की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी, हस्तक्रिया से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान क्रिया के योग्य न रहना एवं शीघ्रपतन आदि की सारी शिकायतें छूमन्तर हो जाती हैं। रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत भर मस्ताना जोश पैदा करता है। मूल्य प्रति शीशी ३=) डाक-खर्च पृथक्।

लक्ष्मणधारा (रजिस्टर्ड)

बड़ी मशहूर दवा है, जिसने अपनी खूबी का नक्कारा चारों तरफ बजा रक्खा है। इसके सेवन से पेट-दर्द, जी मचलाना, कफ, खाँसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार, मोच, चोट, सूजन, बच्चों के हरे-पीले दस्त, बदहजमी आदि कहाँ तक लिखें, किसी में खाने और किसी में लगाने से तत्काल लाभ होता है। मूल्य प्रति शीशी ।।।), ३ का २–), ६ का ३।।।) डाक-खर्च पृथक्। दर्जन का ६।।।) डाक-खर्च माफ।

बालको (रजिस्टर्ड)

इसके सेवन कराने से छोटे बच्चों की खाँसी, संग्रहणी, पसली चलना, खाना हजम न होना, दुबलापन, चूतड़ों और जाँघों पर सिकुड़न, आँख मीचना, सर्दी रहना, अधिक रोना, सूखा वायु, ज्वर व भीतर हरारत का रहना आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्न-चित्त रात भर सुख की नींद सोते हैं। दुबले-पतले कमजोर बच्चों को ताकतवर बनाने की मीठी दवा है। मूल्य फी शीशी ।।।=) पन्द्रह आना, डाक-खर्च पृथक्।

फकीरी सुर्मा (रजिस्टर्ड)

पहुँचे हुए फकीर ने बड़े-बड़े पर्वतों पहाड़ों व वनों की खाक छान कर प्राप्त किया हुआ इस सुर्मे के नुस्खे को बद्रीनाथ की यात्रा में सत्संग होने पर मेरे बाबा को प्रदान किया। इसे रोग-ग्रसित आँखों में प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्ध, रोहे, नजला, कीचड़ आना, नाखूना, परवाल, चकाचौंध, आँखों का चश्मा लगाना नजर की कमजोरी आदि बीमारियों में इस फकीरी सुर्मे का व्यवहार करें। मूल्य फी शीशी ।।।), ३ का २–), ६ का ३।।।) डाक-खर्च पृथक्; दर्जन का ६।।।), डाक-खर्च माफ।

रूपविलास (रजिस्टर्ड)

इसके लगाने से चेचक के काले दाग, मुँहासे, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह दूर हो मलिन मुख चन्द्रमा के समान चमकदार होकर गुलाबी छटा चेहरे पर दमकने लगती है। मूल्य फी डिब्बा २–) डाक-खर्च पृथक्।

नारी संजीवन

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, लाल-काला, धुमैला पानी-सा रज निकलना, महीना ठीक समय पर न होना जिससे कमर, रीढ़, सिर में दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलिन, दुबलापन आदि कमजोरी दूर हो सन्तान दीर्घजीवी पैदा होती है। मूल्य फी डिब्बा ३=) डाक-खर्च पृथक्।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीला: मलय पवन सी मंजुल .....कपोलों पर हाथी-दांत की सी चिकनाहट

*वह रूपवती है! वह पॉन्ड्स का प्रयोग करती है!

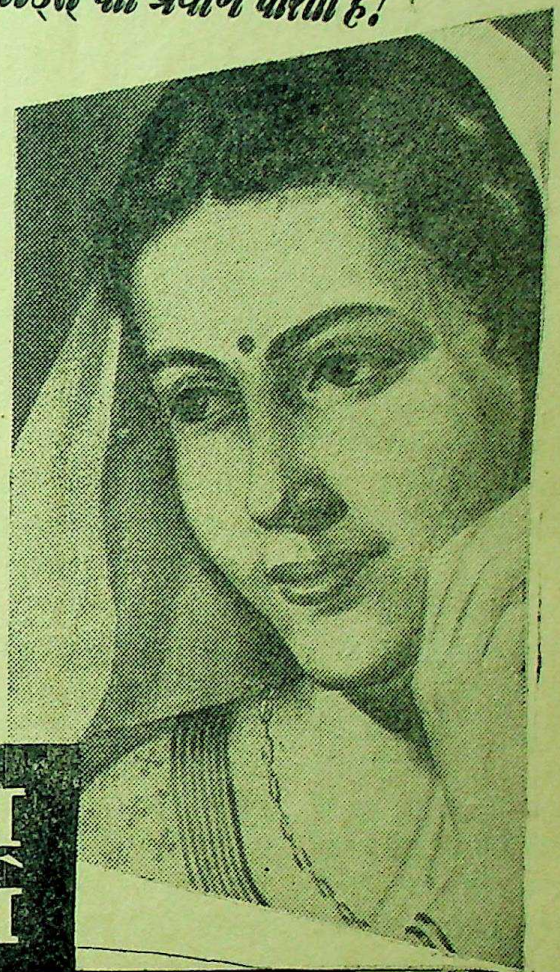

आप भी यह जानती हैं न कि परिपूर्ण स्वच्छता ही शरीर की सबसे बड़ी आवश्यकता है! चेहरे को उज्ज्वल, स्वच्छ, और ताज़ा रखने के लिये कोमल, सुवासित पॉन्ड्स क्रीम्स की सहायता लीजिये।

पॉन्ड्स क्रीम्स

पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम: पॉन्ड्स कोल्ड क्रीम को चेहरे पर कोमलता से रमाते हुये दिन में दो बार उसे साफ़ कीजिये; उंगली के कोमल पोरों से उसे थपथपाइये। पॉन्ड्स टिशू से स्वच्छ कर लीजिये।

पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम: कोल्ड क्रीम को साफ़ करके उंगली के पोरों से पॉन्ड्स वेनिशिंग क्रीम लगाइये। त्वचा को सुरक्षा देता हुआ वह आपके प्रयोग के साथ ही अंतर्धान हो जाता है।

पॉन्ड्स पाउडर: यदि आप की इच्छा हो तो पुष्पपंखड़ी की भांति कोमलता के लिये पॉन्ड्स पाउडर थपथपाइये।

पॉन्ड्स दिनचर्या

व्यापार-सम्बंधी पूछताछ के लिये लिखिये:

थ्रेल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लिमि० बम्बई - कलकत्ता - कराची - मदरास.

Copyright Pond's Extract Co.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरीजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनाएँ आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरीजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरीजी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति-प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूँकें। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १॥ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व कायापलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से एक हफ्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्य-राज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र [illegible] वतंश सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता [illegible] बरला जिला मुजफ्फरनगर ने [illegible] है—"अपूर्व कायापलट" नामक [illegible] सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही [illegible] है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजी[illegible] जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक [illegible] औषधालय, वाह (आगरा) का कह[illegible] कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट [illegible] जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, [illegible] रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित [illegible] स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दि[illegible] सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आ[illegible] २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी [illegible] तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में [illegible] सकता, मधुमेह, डायबटीज निर्बलता [illegible] हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो [illegible] धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे [illegible] शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। [illegible] तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, [illegible] बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों [illegible] पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीख[illegible] बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर [illegible] की कमजोरी तुरन्त दूर कर नव[illegible] का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बर[illegible] सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता [illegible] योग भली भाँति समझाकर लिखा है। [illegible] भी यदि आप न बना सकें तो बनी-[illegible] १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० [illegible] डाक-खर्च सहित ६॥।=) में हम भेज [illegible] डाक-खर्च माफ, पैकिंग, मनीआर्ड [illegible] अलग। कोई बात समझ में न आवे [illegible] जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—रूपविलास कम्पनी, (रसायनशाला) नम्बर ४२७, धनकुट्टी, कानपुर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खांसी और जुकाम की
सर्वाधिक लोकप्रिय दवा
सिरोलिन
'रोच'

संसार भर मे उपयोगित होती है।

Saridon
सारिडन
सब दर्दों को
छुटकारा देता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १९२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गये, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिलकुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी आवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४।) डाक-खर्च प्रतिपिस्तौल १।) अलग। कारतूस फी सैकड़ा ४)

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सेंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीअत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जायेगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रतिशीशी ॥=) दर्जन का ५॥) डाक-खर्च १।) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूब-सूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जायेगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है।

इंडियन जनरल ट्रेडिंग कम्पनी, नं० १० कानपुर

स्त्रियों के लिए सर्वोत्तम शक्ति-वर्धक औषधि

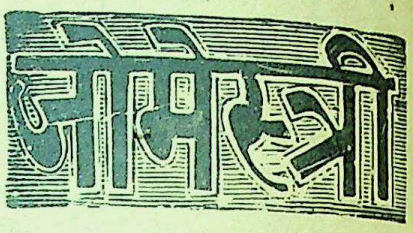

कमर-दर्द, हाथ-पैर का टूटना, हड्डियों का दर्द, बेचैनी, जी घबड़ाना, हिस्टीरिया वगैरह रोग 'जोमेस्त्री' के सेवन से मिट जाते हैं। दुर्बलता नहीं आती। स्त्रियों का आरोग्य आयुष्काल बढ़ जाता है।

जोमेस्त्री लेनेवाली माता का बालक तन्दुरुस्त और हृष्ट-पुष्ट होता है।

हरेक दवाफरोश के यहाँ मिलेगी

जसमाईन एजेन्सी नड़ीयाद (गुजरात)

एजेंट श्रीकेमिकल्स, २३३२, महाराजा लाल बिल्डिंग खुशालराय कटरा, देहली

कान्तीलाल परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Godrej गोदरेज

चाबी छाप

साबुन का वाजबी दाम

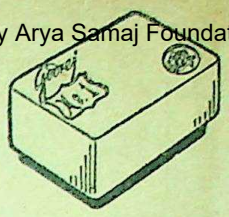

नं० १—११ आना

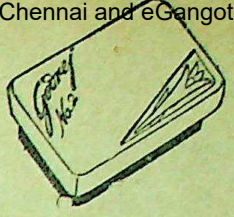

नं० २—८½ आना

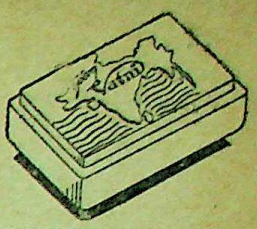

'वतनी'—६ आना
छोटा ('बेबी') 'वतनी'—१¾ आना

...एक साबुन के चित्र के नीचे बट्टी का ...ही खुदरा दाम लिखा हुआ है। ...ी चुङ्गी, आक्ट्राय, टरमीनल टैक्स ...और कोई भी दूसरा कर लिया जाता ...ई साबुनों का दाम जरा अधिक ...। कच्चा माल का दाम बढ़ने से ...भी ता० १०-४-४७ से लाचारी से ...कर माल का दाम बढ़ाना पड़ा है।

गोदरेज सोप्स, लि०

...में वनस्पति 'टॉयलेट' (नहाने का) ...बनानेवाले अग्रगण्य निर्माता।

सण्डल—७ आना

लिमडा—७ आना

खस—७ आना

टर्किश बाथ—४½ आना

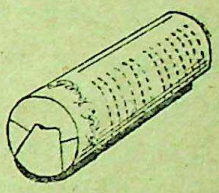

शेविंग स्टिक (कारटन)
७½ आना [दाम बढ़ा नहीं]
शेविंग स्टिक (टिन)—१० आना

शेविंग 'राउण्ड'—४½ आना
[दाम बढ़ा नहीं]

आरोग्यवर्द्धक

मदनमंजरी गोलियां

कब्जियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिल व दिमाग को ताकत देती हैं और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल-बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं, निर्दोष, पौष्टिक व हानिरहित वनस्पतियों के योग से बनी होने के कारण ६० साल से रोगी व निरोगी, प्रत्येक मौसम में सेवन कर पूर्ण लाभ उठाते हैं। जरूर परीक्षा कीजिए—४० गोलियों की डि० १।) रु०।

मदनमंजरी फार्मेसी—
जामनगर (काठियावाड़)

एजेंट—मदनस्टोर्स कैमिस्ट जोन्सटनगंज, इलाहाबाद

केवल एकदिनमें

मेजिक मिस्मरिजम

लड़के को जमीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीब व गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब दर्शकों की घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुंह में से आग की उपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अक्षरों का नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमांचकारी करिश्में दीखकर.

दूसरे ही दिन

जनाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों की दिलाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धिमानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर ठनाठन रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गजब का जादू एक दिन में ही केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं—ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पांच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुंवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड वण्डरफुल मेजिकल कम्पनी
विभाग नम्बर २८ मुरादाबाद यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपका शिरोभाग

केश-विहीन हो गया है? इसका अभिप्राय यह है कि झड़े हुए केशों के पुनः अपना स्थान न ग्रहण कर सकने के कारण शनैः शनैः शिर पूर्ण खल्वाट हो जाता है। आप व्यर्थ में अपने को गंजा और बूढ़ा क्यों प्रकट करते हैं, जब कि 'केशवर्द्धिनी' आपको इन दोनों से मुक्त रखने में समर्थ है।

पतझड़ में झड़े पत्ते वसन्त-ऋतु में पुनः अंकुरित हो जाते हैं, परन्तु किन्हीं दशाओं में नष्ट हुए केश—जो एक बार विदा हो चुके—सदा को हो चुके। अपने केशों को समयानुसार 'केशवर्द्धिनी' के द्वारा नष्ट होने से बचाइए और अपने यौवन को सुरक्षित रखिए।

क्योंकि 'केशवर्द्धिनी' के प्रयोग में विलम्ब करके आप स्वस्थ होने में विलम्ब करते हैं, और रोग को अत्यन्त हानि पहुँचाने को अवसर देते हैं। यह अमूल्य समय है, जब आप उसका प्रयोग करके स्वस्थ हो सकते हैं, समय को व्यर्थ नष्ट न होने दो और

केशवर्द्धिनी को

अत्यधिक विलम्ब से पूर्व प्रयोग करो।

केशवर्द्धिनी ।।।)

केशवर्द्धिनी शेम्पू ।।।)

पोस्टेज और पैकिङ्ग व्यय अतिरिक्त

बहुत से व्यापारियों से अथवा सीधा साउथ इण्डिया केमिकल्स कोयम्बटूर से मँगाइए।

बिक्री के लिए तैयार है

वार्षिक बालसखा

१९४७

इसकी सजधज अनूठी और नयन-मनोहर है। छपाई कई रंगों में हुई है। चित्रों की भरमार है। लेख, कविताएँ और कहानियाँ अनुपम हैं। जिल्द भी सजीली, आकर्षक और बालकों के पसन्द की है। ऐसा कोई बालक होगा जो इस अंक को पाकर आदि से अन्त तक पढ़े बिना शान्त रहे। ३०० पृष्ठों के इस अंक का मूल्य ३)। मासिक ग्राहकों को रियायती मूल्य २) शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर बालसखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

प्रेमियों के हृदय में भूकम्प

प्रेम-रहस्य

लेखक, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

प्रेम की लहरें किसके हृदय में नहीं उमड़तीं? लेकिन प्रेम-रहस्य को समझनेवाले विरले ही होते हैं।

सभी प्रकार के प्रेम का रहस्योद्घाटन आप "प्रेम-रहस्य" में पायँगे।

डाक्टर अमरनाथ जी झा तथा हिन्दी के अन्य अनेक विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

लगभग २०० पृष्ठों की सुन्दर और सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये। मँगवाने में शीघ्रता करें, अन्यथा पुस्तक दुर्लभ हो जायगी।

प्रतिभा मण्डल, नया कटरा, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाँझ स्त्रियों के लिये

सन्तान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरा ब्याह हुए १५ वर्ष हो चुके थे। इस समय के बीच कई इलाज कराये, मगर कोई फायदा न पहुँचा। अचानक मैं अपनी सहेलियों के साथ तीर्थ-यात्रा करने श्री बद्रीनारायण जी चली गई। सौभाग्यवश वहाँ मुझे एक ऐसे जटाधारी त्यागी महापुरुष महात्मा जी के दर्शन हुए, जो सचमुच ही ईश्वर का अवतार दिखाई देते थे। मैंने उनके चरणों का स्पर्श करके अपनी तमाम दुःखभरी कहानी सुनाई। महात्मा जी ने खुश होकर मुझे एक औषधि तन्त्र दिया और आशीर्वाद देकर कहा, बेटी, चिन्ता मत करो, ईश्वर तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूर्ण करेगा। मैंने घर आकर उस औषधि को तैयार किया और महात्मा जी के कथनानुसार अनुपान किया। ईश्वर की कृपा से मुझे आशा की झलक दिखाई दी और नौ मास के पश्चात् जीता-जागता बालक गोद में खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तानहीन बहन को निम्नलिखित औषधि का सेवन कराया, ईश्वर की कृपा से उसकी आशा पूर्ण हुई। महात्मा जी ने औषधि देते समय मुझसे वचन लिया था कि, बेटी, इस दवा से औरों का उपकार करती रहना। महात्मा जी के कथनानुसार मैंने इस औषधि तन्त्र को सूत्रीपत्र द्वारा प्रकाशित कर दिया है जिससे और बहनें इस औषधि को तैयार करके लाभ उठा सकें।

औषधि तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो) केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी, हर एक साढ़े दस माशे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डालकर २४ घंटे तक खरल करें और पानी इतना मिलावें कि गोलियाँ बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। इसके सेवन से गुप्त खराबियाँ दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गर्म दूध में मीठा डालकर प्रातःकाल और सायंकाल एक-एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि तन्त्र के अन्दर सफेद फूलवाली सत्यानाशी की जड़ मिलाना आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

इसके विषय में सरदार हरदत्तसिंह भटिण्डे से सूचित करते हैं कि आपकी सन्तान पैदा करनेवाली औषधि एक अद्भुत जादू है। मैं इसकी जितनी प्रशंसा करूँ कम है। मैं नहीं जानता था कि आपकी औषधि में इतने गुण भरे हुए हैं। हमारे शहर में आपकी औषधि की घर-घर प्रशंसा हो रही है। अब तक करीब-करीब बीस से ज्यादा बहनें गर्भवती हो चुकी हैं। कृपया तीन दर्जन शीशी वी० पी० से भेज दें। धन्यवाद।

इसके सिवाय अनगिनत प्रशंसा-पत्र मेरे पास मौजूद हैं। अगर कोई देखना चाहे, तो मेरे पास आकर देख सकते हैं।

मेरी सन्तान-हीन बहनो,

आप इसे बेगुण औषधि न समझें। अगर इसको असली चीजें और बताये हुए औषधि तन्त्र की रीति से तैयार कर लें, तो कोई वजह नहीं कि इससे बीस और पच्चीस वर्ष से बैठी हुई सन्तान-हीन बहनों की गोद में बच्चे खेलते नजर न आवें। अगर कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथों से ही बनवाना चाहें, तो वह मुझे लिख दें। मैं उनको अपने हाथ से ही दवा तैयार करके भेज दूँगी।

एक बहन की औषधि पर पाँच रुपये बारह आने, दो बहनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने, तीन बहनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने लागत खर्च आते हैं और महसूल डाक इनसे अलग।

जरूरी नोट—एक बहन की चौबीस घंटे दवा पिसवाने पर मेरे २) रुपये लगते हैं और दो और तीन बहनों के लिए दवा पिसवाने पर भी दो रुपये खर्च होते हैं। इसलिए अगर दो-तीन बहनें मिलकर दवा तैयार करा लेंगी, तो फायदे में रहेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—श्रीमती रतनबाई जैन, सदर बाजार थाना रोड, देहली।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की
असली-मीठी
बाल जीवन घुट्टी
रजिस्टर्ड
मुफ्त लो १० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ्त भेजेंगे
बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती
कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनाती.
ज़रा सी रोजाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।
— मू० शी० ।७ दर्जन २।।।) डा० व्य० अ० —
सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो
नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।
पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़, यू. पी.

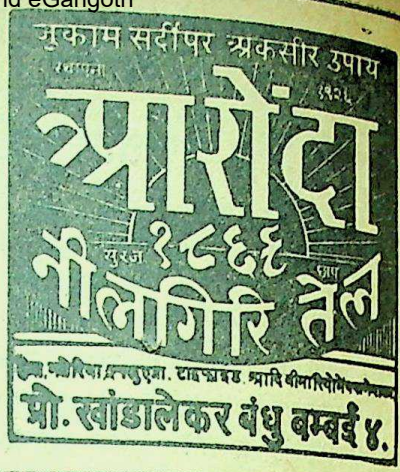

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाएगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

३८ वर्षों के बाद मुक्त; हुतात्मा **भगतसिंह जी** तथा **नेता जी सुभाषचंद्र बोस** द्वारा प्रचारित : एकमात्र प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ : **वीर सावरकर जी** की **क्रांतिकारी** अमर-कृति।

१८५७ का भारतीय स्वातन्त्र्य-समर

हिन्दी अनुवादक—**पं० ग० र० वैशंपायन जी**, सुन्दर छपाई; ५७ के क्रांतिवीरों के अनोखे चित्र सितम्बर ४७ के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित होगा। पृष्ठ ६००। मूल्य १२।।) रु०; किन्तु **५ सितम्बर १९४७** के पहले ११) रु० डाकहुंडी (म० आ०) द्वारा प्राप्त होने पर रजिस्टर्ड पार्सल से घर पर पहुँचा दिया जायगा।

काग़ज़ के कोटे के कारण सीमिति प्रतियाँ ही मुद्रित हुई हैं, अतएव अपनी-अपनी कापियाँ सुरक्षित करा लें, जिससे निराश न होना पड़े।

प्राप्ति-स्थान :—**निर्मल साहित्य प्रकाशन**

६९३ बुधवार पेठ पूना २

POONA 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानन देवी अपनी त्वचा लक्स टॉयलेट साबुन-द्वारा निर्मल एवं सुंदर रखती है...

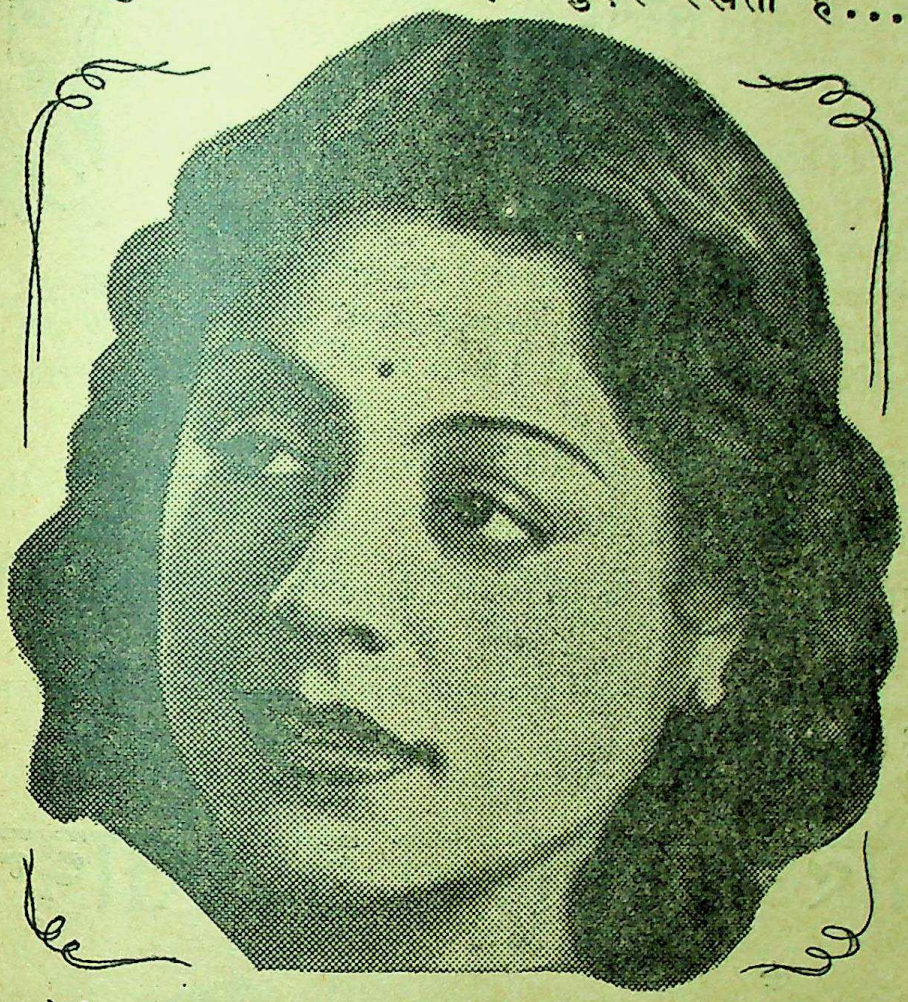

यह लोकप्रिय गायिका अभिनेत्री अपनी मृदु एवं निर्मल त्वचा की विशेषतम कदर करती है, और सदैव उस की भलीभाँति सँभाल करती है—वह जानती है कि, नियमित रूपेण सौन्दर्य की देखभाल करने से ही स्थिर त्वचा-सौन्दर्य प्राप्त होता है। इसकारण कानन देवी सदैव लक्स टॉयलेट साबुन का प्रयोग करती है। आप को भी इस शुद्ध, सफेद साबुन का उपयोग करना चाहिये। आप को मालूम होगा कि, उसका सुगन्धित प्रभावशाली झाग आप की त्वचा कोमल, सतेज तथा निर्दोष रखेगा।

पायोनियर प्रॉडक्शन्स् के "चन्द्रशेखर" चित्र में किये अभिनय से कानन देवी अपने पुराने रसिकों को खुश रखेगी, इस के अतिरिक्त उसके रसिकों में नविनों की वृद्धि होगी।

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी स्टार्स का सौन्दर्य—साबुन

LTS. 163-23-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी-जुकाम से छुटकारा

तीस सेकेण्ड में

सर्दी-जुकाम से यदि नाक पीड़ित हो तो 'कैर्सोड्राइन इनहेलर' का प्रयोग करिए। नासा-छिद्रों में इसे लगाइए और मधुर औषधियुक्त वाष्प को सूँघिए। प्रायः तुरंत ही आराम मिलेगा क्योंकि कफ़ सूख जाता है और नाक की झिल्ली की सूजन कम हो जाती है। 'कैर्सोड्राइन' इतना प्रभावकारी इसलिए है कि जहाँ जल, तरल दवा या बूँदें नहीं पहुँच पातीं वहाँ भी इसका प्रवेश है। 'कैर्सोड्राइन इनहेलर' सुविधाजनक है, हर समय हर जगह प्रयोग के लिए तैयार मिलता है। इतना निरापद है कि एक बच्चा भी इसे प्रयोग में ला सकता है।

सर्दी-जुकाम, दमा, श्वासनलिका का प्रदाह सर्दी और श्वासकष्ट-सहित ज्वर के लिए डाक्टरों द्वारा प्रशंसित। अच्छे औषधि-विक्रेताओं के यहाँ बिकता है।

Ad. No. 1

गर्मी की ऋतु के लिए

गोल्डेन सैण्डल वुड साबुन

सभ्य समाज के
उपयुक्त साबुन

विशुद्ध चन्दन के तेल से प्रस्तुत
विज्ञानानुकूल वस्तु

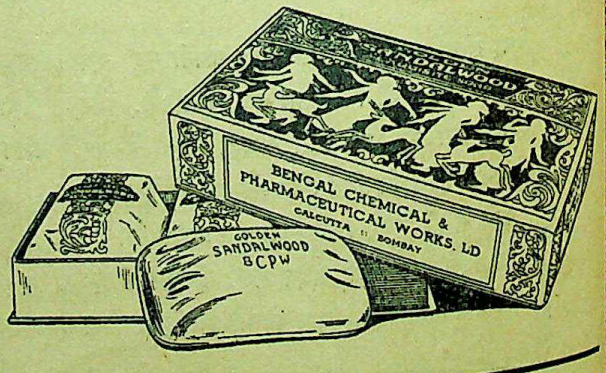

बेंगल केमिकल एण्ड फ़ार्मास्युटिकल वर्क्स, लिमिटेड

कलकत्ता : : बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यू अमेरिकन पिस्तौल

प्रायः देखा जाता है कि लोग नकली पिस्तौलों के विज्ञापन निकालकर भोली-भाली जनता को धोखा देकर धन कमाते हैं। हमने जनता को उस धोखा से बचाने के लिए बढ़िया न्यू अमेरिकन पिस्तौल मगाई है जो बिल्कुल असली पिस्तौलों के मानिन्द है। इसे बराबर कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खानें हैं। घोड़ा दबाते ही चर्खी खुद घूमती है। इसकी आवाज बहुत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जङ्गली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही को देखकर भाग जाते हैं। इसको रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसे हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४) डाक खर्च प्रति पिस्तौल १।) अलग। कारतूस ४) फी सैकड़ा।

ओटो गुलशन बहार

यह ओटो तमाम सेन्टों का सरताज है। लगाते ही तबियत बाग-बाग हो जाएगी। इसको लगाकर आप जिस रास्ते से निकल जाएंगे लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगाने से महीनों खुशबू नहीं जाती। कीमत फी शीशी ।।।) दर्जन ६) डाक खर्च १।) एक दर्जन साथ मंगाने पर एक फैन्सी रिस्टवाच, हाथ व गले के बटनों का सेट बम्बई फैशन सोने की भाँति चमकनेवाली अंगूठी, फैन्सी रूमाल, खूबसूरत शीशा मय कङ्घा के मुफ्त इनाम दिया जाएगा। दो दर्जन मंगानेवाले को बढ़िया फाउंटेनपेन और भेजा जावेगा।

गुलशन हेयर आयल

यह सुगन्धित तैल तमाम बाजारू तैलों से अच्छा तैल है। इस तैल के लगाने से बाल काले रहते हैं। सिर व दिमाग को तरावट लाता है। नित्य प्रयोग करने पर दिमागी ताकत बढ़ती है। मूल्य फी शीशी १) दर्जन ९) डाक व पैकिंग खर्च अलग। दो दर्जन एक साथ मँगाने पर एक बढ़िया फाउंटेनपेन इनाम दिया जायगा।

पता :—दि इंडियन कमर्शियल कम्पनी नं० २—कानपुर।

२ घड़ियाँ १२ क़ीमती चीज़ों के साथ सिर्फ़ ५) में

हर एक आदमी ५) में २ घड़ियाँ और १२ क़ीमती चीज़ें पा सकता है। १—एक डेमी गोल्ड गिल्ट रिस्ट वाच, २—एक सेफ़्टी रेज़र, ३—एक सेविङ्ग ब्रुश, ४—एक सेट बटन, ५—एक जेबी कंघा, ६—एक ब्लेड, ७—एक ख़ुशबूदार साबुन, ८—एक शीशी नाख़ून की पालिश, ९—एक गड्डी ताश, १०—चार हेयरपिन, ११—एक डेमी रिस्ट वाच। पैकिङ्ग और पोस्टेज १।) लगेगा।

आटोमेटिक पाकेट रिवाल्वर

साइज़ व आवाज़ में असली के समान। ६ फ़ायर एक साथ। लाइसेन्स की ज़रूरत नहीं। नं० ४४४, ५।।), नं० ५५५, ६।), नं० ६६६, ७।) साथ में २० कारतूस और एक डेमी रिस्ट वाच फ्री। अलग कारतूस लेने पर ३।) फ्री सैकड़ा। पैकिङ्ग व पोस्टेज १।) लगेगा।

जय हिन्द तेल

बाल बढ़ाने और घु घराला करने के लिए। २) फ्री शीशी। पैकिङ्ग और पोस्टेज ।।।=) लगेगा।

पता :—हिन्दुस्तान ट्रेडिङ्ग कम्पनी,
पोस्ट :—खैरहनी पहारगढ़, रायबरेली।

कथा-साहित्य का नवीन उपादान

अपना-पराया

लेखक—पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-विभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, और वहाँ के अजीबो-ग़रीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के साथ आपको प्रणय की रंगीनियों, परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के झकोरों का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २।।) ढाई रुपये।

मैनेजर, बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—सम्पादकीय ... ९१
२—खण्डित भारत—अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी ९७
३—उसका मजहब—श्री पद्मकान्त त्रिपाठी १०५
४—वेद-विषय में भारी भूल—श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्याभूषण, विद्यानिधि १०८
५—नई मिल का निर्माण—श्री एम० पी० केदार ११३
६—अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का त्रिकोणात्मक संघर्ष—श्री रतनलाल जोशी, एम० ए० ११६
७—राही—प्रोफेसर सत्यप्रकाश संगर, एम० ए० १२२
८—यह क्या हो गया—पंडित आत्मस्वरूप शर्मा १२५
९—खोए कंगन—श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा १३०
१०—जर्मनी की समस्या—श्री आशाराम, एम० ए० ... १३३
११—रहस्य—श्री चन्द्रचूड, एम० ए० १३६
१२—राजनीतिक जीवन-सम्बन्धी संस्मरण—डा० सत्यप्रकाश, डी० एस० सी० .... १३९
१३—सीमा—श्री कुमार शर्मा विद्यालंकार १४५
१४—तीस दिन—श्री सन्तोष नौटियाल १४६
१५—विचार-विमर्श ... १५१
१६—विविध विषय ... १६३
१७—नई पुस्तकें ... १६७
१८—सामयिक साहित्य १७२

चित्र-सूची

१—स्वाधीनता बिल के दो पहलू
२—गंभीर परामर्श ... ... मुखपृष्ठ
३—अधिवेशन का भीतरी दृश्य ... ,,
४—कांस्टीट्यूशन क्लब ... ,,
५—समाजवादी नेतृत्व (दो चित्र) ... ,,
६—प्रसन्न मुद्रा में १०८
७—भरतपुर में प्राप्त कुछ प्राचीन मूर्तियाँ (तीन चित्र) ,,
८—दक्षिणी भारत के उत्सवों के कुछ दृश्य (दो चित्र) ११२
९—भारत के कुछ मंदिर (चार चित्र) ,,
१०—पृथ्वी का स्वर्ग काश्मीर (पाँच चित्र) १४९

साधनमाला का पहला रत्न

श्यामा सपर्या-वासना

आजकल लोग वही बात मानते हैं, जो बुद्धि को जँचती है। इसीलिए इस पुस्तक में तांत्रिक शक्ति-पूजा के प्रमुख अंगों का रहस्य सरल भाषा में इस प्रकार लिखा गया है कि साधारण पढ़े-लिखे भी उनकी वैज्ञानिकता समझ सकें। याद रखें, तांत्रिक साधना ही से इस कठिन समय में आपको लौकिक और पारलौकिक सिद्धियाँ मिल सकती हैं।

बहुत परिमित संख्या में छपी है। आठ रुपये भेज कर आज ही इस सचित्र मासिक के स्थायी ग्राहक बन जाइए। वर्ष में महत्त्वपूर्ण १२ पुस्तकें मिलेंगी, जिनमें प्रत्येक का पृथक मूल्य १) रु० होगा। इस पुस्तक का मूल्य ३)।

कल्याण-मन्दिर, कटरा, इलाहाबाद।

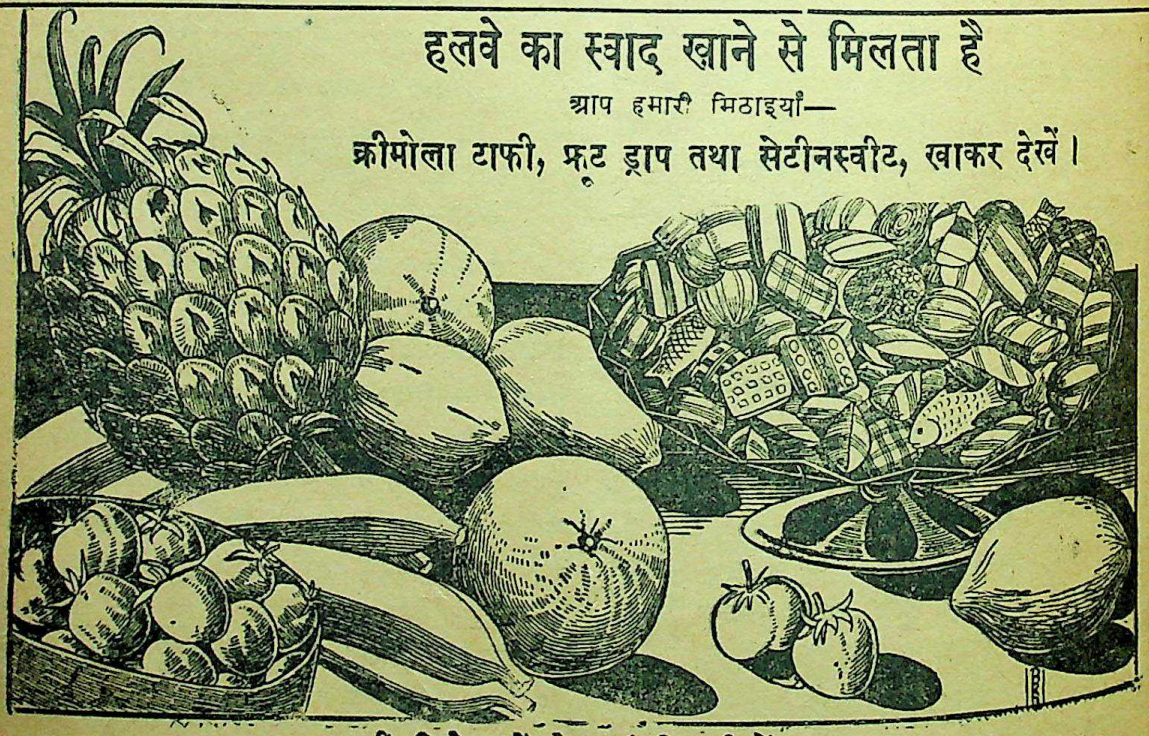

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता-बिल के दो पहलू

हमने सारे भारत को संयुक्त रखने और
सरकार बनाने का यत्न किया परन्तु
सम्भव न हो सका। यह बिल भारत
लिए एक नया युग लाएगा।

सब जातियों को स्वतन्त्रता अथवा
ना राज्य नहीं मिल सकता है जैसा कि
त की दो प्रमुख जातियों के लिए किया
। परन्तु इससे हमारी सिखों और
तों के प्रति भलाई और उनके हित-
न की इच्छा में कमी नहीं आती।
दोनों जातियाँ इस स्थिति में भी दोनों
निवेशों के प्रति सत्यता प्रमाणित करती
तो दोनों उपनिवेश उनके लिए बहुत
कर सकेंगे और उनकी उचित माँगें
ही सकेंगी।

प्रसन्नता की बात है कि भारतीय विधान
मण्डली की अल्पमत कमेटी में अछूतों
उचित प्रतिनिधित्व मिला है। वे
मतों की सुरक्षा के लिए विधान बनाने
सहयोग दे रहे हैं।

रियासतों को प्रजा की भलाई के लिए
स्तान या हिन्दुस्तान में मिलना
हिए। यह अच्छा न होगा कि ब्रिटेन
मामले में कोई दखल दे या कोई लीज
। जो कुछ किया जाए, स्वतन्त्रता-

जो भारतीय स्वातन्त्र्य-बिल पेश किया गया है, उसके अनुसार भारत के दो टुकड़े हो जाएँगे—एक पाकिस्तान और दूसरा हिन्दुस्तान। हम तीस वर्ष से जो युद्ध चला रहे थे, वह समूचे भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के लिए था। उसका परिणाम यह हुआ कि देश के दो टुकड़े हो गए। हमारा दिल टूट गया है।

देश के टुकड़े करने के साथ-साथ हमारी सेना के भी दो टुकड़े हो रहे हैं। यह क्या हमारे आपस में लड़ने के लिए? यह आपके लिए सोचने की बात है। मेरे लिए दुख और लज्जा की बात है। मुझे भविष्य सघन अंधकारमय दिखाई देता है। भारतवर्ष में जितने देशी राज्य हैं, उन पर भारतीय-संघ की सत्ता होनी चाहिए थी। यह खतरा अब भी ज्यों-का-त्यों रह गया। इस बिल में उस खतरे को स्थिर रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी, ऐसा मैं मानता हूँ। अँगरेजों को इस विषय में नैतिक हिम्मत से काम लेना चाहिए था।

पाकिस्तानवालों को उनकी इच्छानुसार पाकिस्तान मिल गया। पाकिस्तान की असली परीक्षा यह होगी कि वह अपने यहाँ रहनेवाले राष्ट्रवादी मुसलमानों, ईसाइयों, सिखों, हिन्दुओं आदि के साथ कैसा बर्ताव करता है?

भारतवर्ष को भी इस बिल के जरिए यह परीक्षा देनी होगी कि यहाँ जो मुसलमान हैं, उनको वे भाई समझेंगे या वैरी।

जो मनुष्य समूचे भारतवर्ष को एक नेशन मानते हैं, उनके यहाँ तो बहुमत और अल्पमत का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। इस दृष्टि से देखा जाए तो यह बिल सब पार्टियों की अंतिम परीक्षा का साधन है।

कठिनाइयों से बचने का सबसे सहज मार्ग यह है कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग परस्पर सन्धि कर लें—बिना वायसराय की सहायता के। मैं दावे से कहता हूँ कि ऐसी संधि उस बिल या कानून से जो आज ब्रिटेन की पार्लमेंट के सामने पेश है और जिससे दो बराबर के राज्य या दो डोमीनियनें बन रही हैं, हजार दर्जे अच्छी होगी।

यदि अँगरेज देश में ऐसी स्थिति उत्पन्न कर उसे छोड़ जाते हैं, जिससे देश में कई भाग एक दूसरे से अलग हो जाएँ और वे आपस में लड़ते रहें, तो इससे बढ़कर अँगरेज की आबरू पर और कोई धब्बा नहीं लगेगा।

—महात्मा गांधी

पूर्वक किया जाए। हमें उम्मीद है कि दोनों नए उपनिवेश आपस में सहयोग से काम करेंगे और कामन्वैल्थ में अन्य राष्ट्रों की तरह रहेंगे।

हम उनके नेताओं को सलाम करते हैं जो अपने आदर्श के लिए लड़े हैं और विश्वशान्ति व उन्नति के लिए हमारे साथी हैं।

—सर स्टेफर्ड क्रिप्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

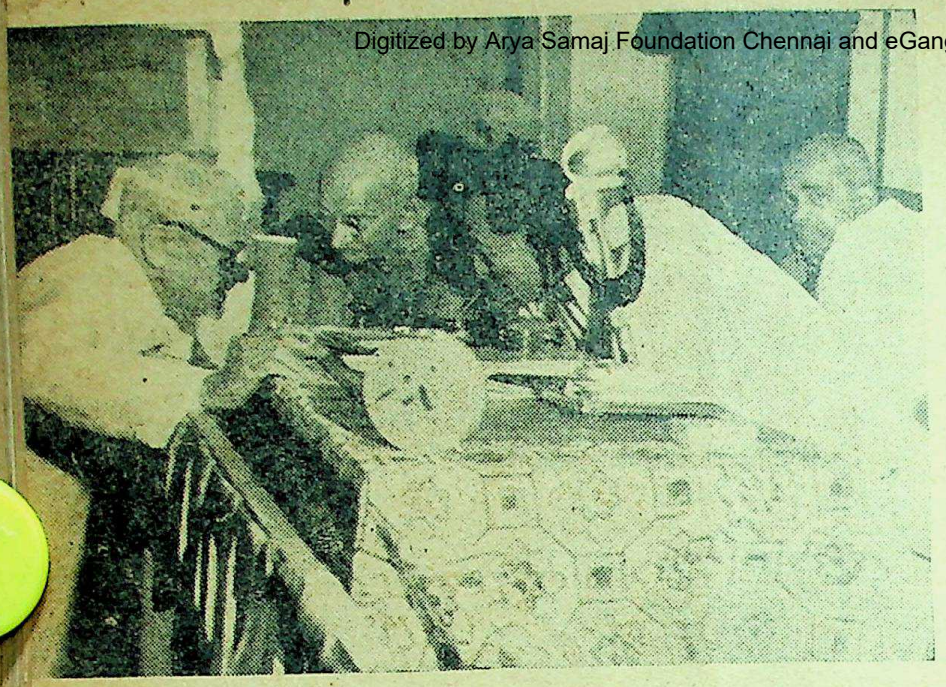

गम्भीर परामर्श

नई दिल्ली में हुए कांग्रेस-कमेटी
गत विशेष अधिवेशन में महात्मा गां
भी भाग लिया था। चित्र में वे आ
कृपलानी और माननीय मौलाना अ
कलाम आजाद के साथ किसी
परामर्श में लगे दिखाई दे रहे हैं।

अधिवेशन का भीतरी दृश्य

कांग्रेस-कमेटी के ऐतिहासिक विशेष अधिवेशन का एक भीतरी दृश्य! इस अधिवेशन में भारत-विभाजन के प्रस्ताव को स्वीकार करके कांग्रेस ने देश में हल-चल पैदा कर दी

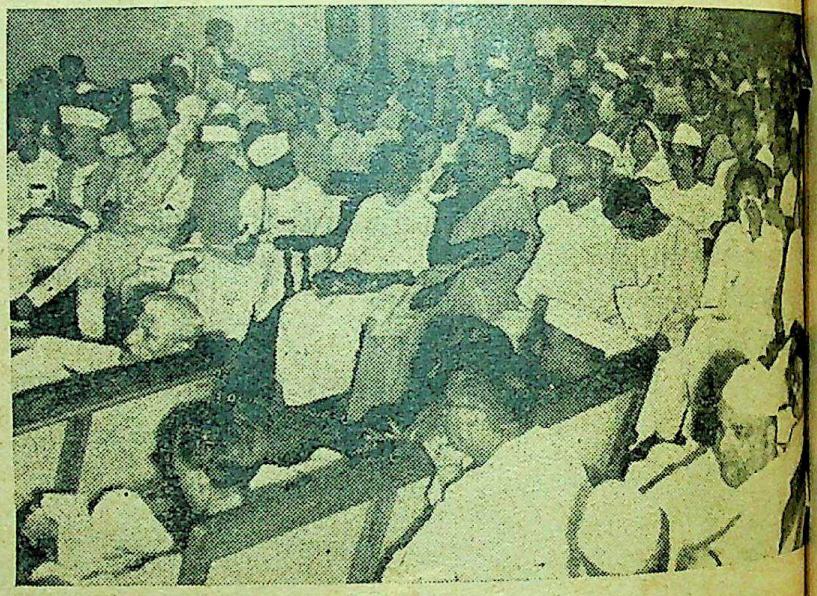

कांस्टीट्यूशन क्लब

नई दिल्ली के जिस कांस्टीट्यू
क्लब में अखिल भारतीय कांग्रेस
का पिछला विशेष अधिवेशन हु
उसका एक बाहरी दृश्य।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

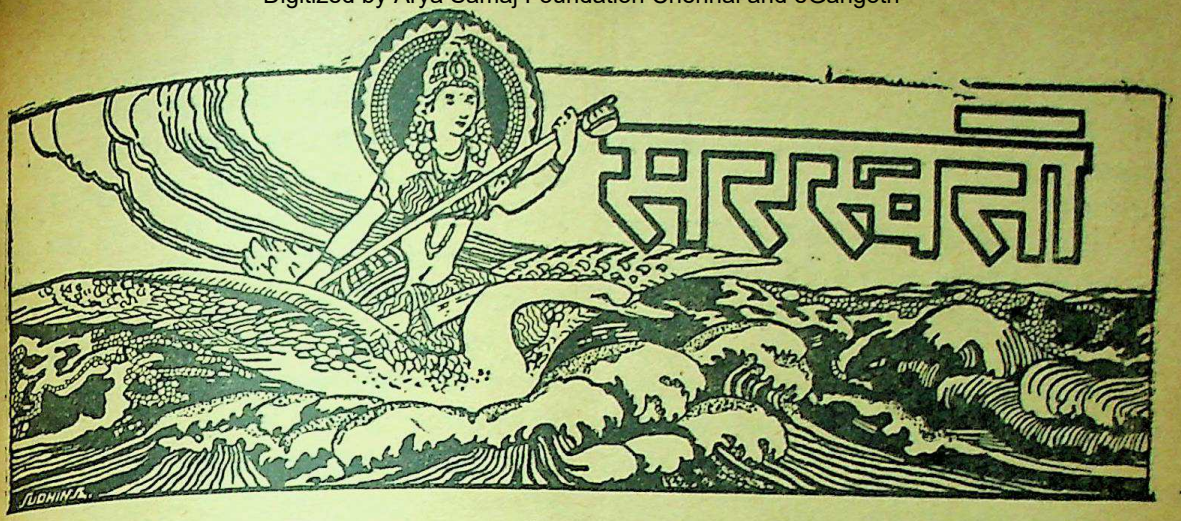

सम्पादक—हरिकेशव घोष : उमेशचन्द्र मिश्र

अगस्त १९४७, श्रावण २००४; भाग ४८, खण्ड २; संख्या २ पूर्ण, संख्या ५७२

सम्पादकीय

श्री एटली की सफाई

भारतीय स्वतंत्रता बिल पास हो गया और उस पर सम्राट् भी स्वीकृति की मुहर भी लग गई। भारतीयों के लिए यह बात सन्तोषजनक है। ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने ऐसे गौरवपूर्ण मसले को हल करने में जिस असाधारण तत्परता का परिचय दिया है और इस बिल को कानून का रूप देने में जो शीघ्रता दिखलाई है, उससे स्वयं महात्मा गांधी को भी आश्चर्य हुआ है। ब्रिटेन के इस कार्य की की प्रशंसा सदैव की जाएगी। कल तक ब्रिटिश सरकार भारत के साथ कैसा भी व्यवहार करती रही हो, पर आज उसने जो कुछ किया है, वह उसकी नेकनीयती और ईमानदारी का प्रमाण है।

इस बिल के द्वितीय वाचन के अवसर पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री श्री एटली ने जो वक्तव्य दिया था, जिसे अभी बहुत दिन नहीं हुए हैं, क्योंकि इस बिल की सारी कार्यवाही बड़ी शीघ्रता से सम्पन्न हुई है, उसके एक अंश की ओर हम भारतीयों का ध्यान हठात् आकृष्ट हो जाता है। अपनी वक्तृता के सिलसिले में श्री एटली ने जहाँ ब्रिटिश सरकार की भारतीय शासन-सम्बन्धी नीति पर प्रकाश डाला है, वहाँ एक वाक्य यह भी कहा है—'हमारे शत्रुओं का यह कथन कि, भारत में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच का मतभेद ब्रिटिश सरकार का पैदा कराया हुआ है, जिससे हम वहाँ अनन्तकाल तक टिके रह सकें, सरासर झूठ है।, अर्थात् श्री एटली संसार को और उसके साथ ही भारत को भी, यह समझाना चाहते हैं कि भारत में आज हिन्दू-मुसलमानों के बीच जो साम्प्रदायिक वैमनस्य उभड़ आया है, वह स्वयंजात है। ब्रिटिश सरकार ने या उसके अधिकारियों ने कभी ऐसा नहीं चाहा था। अतएव इसके लिए हिन्दुओं और मुसलमानों को ही जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। ब्रिटिश सरकार तो सर्वथा निर्दोष है; नितान्त निर्लिप्त—दूध की धोई हुई!

बात कुछ हद तक ठीक भी है। दो भाई यदि आपस में लड़ना न चाहें तो तीसरा उन्हें नहीं लड़ा सकता। पर परिस्थितियों का एक दूसरा पहलू भी है। हमारे दैनिक जीवन में भी ऐसे अवसर प्रायः आते हैं जब दो मित्र आपस में लड़ना न चाहते हुए भी किसी तीसरे की उकसाहट या प्रेरणा से एक-दूसरे के शत्रु बन बैठते हैं। और यदि उन दोनों में वे एक या दोनों जरा बेवकूफ टाइप के हुए, अर्थात् शिक्षा के निकट सम्पर्क में न हुए, तब तो ऐसा होना नितान्त स्वाभाविक और सरल हो जाता है।

भारत के संबंध में भी ऐसा ही हुआ है। सन् १८५७ के गदर में, उससे पहले और उसके बाद भी, अँगरेजों के पंजे से भारत को मुक्त कराने की चेष्टा में हिन्दू और मुसलमान अपना रक्त साथ-साथ बहाते रहे। चतुर अँगरेज जानते थे कि यदि हिन्दू और मुसलमान इसी प्रकार एक रहे तो भारत में उनके पैर अधिक समय तक नहीं टिकेंगे। इसीलिए उन्होंने 'लड़ाओ और राज्य करो' की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीति अपनाई--गुप्तरूप से नहीं, खुल्लमखुल्ला। स्वयं अँगरेज लेखकों और अँगरेज अधिकारियों के लेख इसके प्रमाण हैं। कुछ ज्वलन्त उदाहरण देना यहाँ अप्रासंगिक न होगा।

मिस्टर एटली की वक्तृता के दिन से लगभग सवा सौ वर्ष पूर्व, अर्थात् सन् १८२१ में एक ब्रिटिश अधिकारी ने, जिसका नाम कर्नाटिकस था, 'एशियाटिक रिव्यू' में लिखा था--

"भारत में हमारे शासन का 'मोटो' होना चाहिए--'लड़ाओ और राज्य करो'। यह नीति सभी जगह कार्य में लाई जानी चाहिए--सिविल में, फौज में और राजनीति के क्षेत्र में भी।"

और इसके २९ वर्ष बाद, सन् १८५० में, बम्बई के तत्कालीन गवर्नर लार्ड एल्फिंस्टन ने, अपनी एक विज्ञप्ति में, जो १५ मई को प्रकाशित हुई थी, भारत के ब्रिटिश अधिकारियों को परामर्श दिया था--

"पुराना रोमन सिद्धान्त है--'लड़ाओ और राज्य करो।' यह सिद्धान्त भारत में शासन करते हुए आज भी हमारे बड़े काम का है।"

इसके सात वर्ष बाद, सिपाही-विद्रोह के कुछ ही पूर्व, सन् १८५७ में लेफ्टिनेण्ट जनरल जानकोक ने, जो मुरादाबाद में कमाण्डेण्ट थे, लिखा था--

"हमारा प्रधान लक्ष्य उस पृथक्ता को प्रोत्साहन देना होना चाहिए जो यहाँ के विभिन्न धर्मों, जातियों और सम्प्रदायों के बीच विद्यमान है। हमें इन सबको एक में मिलाने की चेष्टा कदापि नहीं करनी चाहिए। भारत की सरकार की मुख्य नीति 'लड़ाओ और राज्य करो' पर निर्धारित होनी चाहिए।"

भारत में ब्रिटिश शासन के श्रीगणेश के साथ ही जब 'लड़ाओ और राज्य करो' की नीति को 'मोटो' बना लिया गया था, तब श्री एटली आज, जब कि भारत से ब्रिटिश साम्राज्य का बोरिया-बँधना बँध चुका है, यह कैसे कह रहे हैं कि ब्रिटिश सरकार की नीति हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाने की नहीं रही। इन प्रारंभिक घटनाओं को छोड़ भी दिया जाए और केवल उन्हीं प्रसंगों को लिया जाए, जो इस बीसवीं सदी के गत ४७ वर्षों में घटे हैं, तब भी तो श्री एटली का उपर्युक्त दावा प्रमाणित नहीं होता। हाँ, उसके विपरीत अनेक प्रमाण मिल जाते हैं। यहाँ यह भी कह देना अप्रासंगिक न होगा कि इन प्रमाणों को उपस्थित करनेवाले भारतीय नहीं, स्वयं अँगरेज हैं और वे भी ब्रिटिश शासन-तंत्र के संचालकों में से। श्री मार्ले के 'संस्मरण' और लेडी मिण्टो की डायरी के पृष्ठों पर एतत्संबंधी कुछ प्रमाणों का उल्लेख इस प्रकार हुआ है--

(१) बंगाल के एक भूतपूर्व लेफ्टिनेण्ट गवर्नर बेम्फिल्ड फुलर ने एक भाषण में स्पष्ट शब्दों में कहा था--"ब्रिटिश सरकार की दो पत्नियाँ हैं, एक हिन्दू और दूसरी मुसलमान। इन दोनों में से मुस्लिम पत्नी गवर्नमेंट की अधिक प्रेमपात्री है।"

(२) लार्ड कर्जन ने ढाका के नवाब सलीमुल्ला खाँ को एक लाख पौण्ड का ऋण नाममात्र ब्याज पर इस शर्त पर दिलाया था कि वे अपने प्रभाव का प्रयोग करके राष्ट्रवादियों का दमन करने में वायसराय की सहायता करेंगे।

(३) लार्ड मिण्टो ने सन् १९०६ में श्री आगा खाँ के नेतृत्व में मुस्लिम शिष्टमंडल को शिमला यह आश्वासन देकर आमंत्रित किया था कि मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन स्वीकार कर लिया जाएगा। शिष्टमंडल की ओर से वायसराय महोदय को जो आवेदनपत्र भेंट किया गया था, उसका मसविदा एक अँगरेज प्रिन्सिपल ने बनाया था। उक्त प्रिंसिपल ने ऐसा स्वेच्छा से ही किया था, मुसलमानों की प्रेरणा से नहीं। यह शिष्टमंडल वायसराय से शिमला में १ अक्टोबर, १९०६ को मिला था। इससे कुछ महीने पूर्व ही तत्कालीन प्रिंस आफ वेल्स भारत भ्रमण करके इँगलैण्ड लौट चुके थे। उनके यात्रा-सम्बन्धी अनुभवों को लेकर तत्कालीन भारतमंत्री श्री मार्ले ने वायसराय लार्ड मिण्टो को अपने ११ मई, १९०६ के पत्र में लिखा था--"प्रिन्स आफ वेल्स का कथन है कि भारत में कांग्रेस बहुत जोर पकड़ती जा रही है।" उत्तर में लार्ड मिण्टो ने लिखा था--"कांग्रेस मुख्यतः राजविद्रोही संगठन है, उसके कारण निस्सन्देह भारत में ब्रिटिश राज्य को भविष्य में खतरा हो सकता है। उसके लिए मैंने एक उपाय सोचा है, जो कांग्रेस के बढ़ते हुए प्रभाव को दबाने में सफल होगा।" अगली ६ जून के अपने पत्र में श्री मार्ले ने लिखा था कि "यह निश्चय जानिए कि जल्दी ही मुसलमान कांग्रेस से मिल कर आपके विरुद्ध आन्दोलन करेंगे।" उत्तर में वायसराय ने २७ जून को लिखा था, 'मैं जानता हूँ कि आपका कथन बिलकुल ठीक है।" १० दिसंबर को पूर्वोक्त अँगरेज प्रिंसिपल श्री आर्कीबोल्ड ने वायसराय को लिखा था--"उन्हें यह बताना चाहिए कि चुनाव का सिद्धान्त अपनाने से मुस्लिम-हितों को हानि पहुँच सकती है। इसके साथ ही बड़ी उदारता के साथ यह सलाह उन्हें दी जानी चाहिए कि धार्मिक प्रतिनिधित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही मुस्लिम-हित सुरक्षित हो सकते हैं।" इस सम्बन्ध में यह जानने की बात है कि प्रिंसिपल साहब ने अपने को गुप्त रखने का बराबर ध्यान रखा। उन्होंने अपने पत्र में आगे लिखा था —'इन सब दशाओं में मुझे पीछे ही रखा जाए। ये सब बातें आपके (मुसलमान नेताओं के) सुझाव के रूप में ही आनी चाहिए।'

मुस्लिम शिष्टमंडल १ली अक्टोबर १९०६ को वायसराय से मिला था और उसे वही पृथक् निर्वाचन मिल गया, जो अँगरेज वायसराय उसे देना चाहते थे। उसी दिन शाम को वायसराय को एक अँगरेज अफसर का पत्र मिला, जिसमें उन्हें इन शब्दों में बधाई दी गई थी— 'आज एक महत्त्वपूर्ण बात हुई है। इस कूटनीतिक कार्यवाही का प्रभाव सारे भारत और उसके भावी इतिहास पर वर्षों तक रहेगा। विरोधी-शक्ति से ६ करोड़ बीस लाख जनसंख्या का मिलना इस उपाय से रोक दिया गया है।' उपर्युक्त प्रमाण जिम्मेदार ब्रिटिश अधिकारियों-द्वारा उपस्थित किए गए हैं, अतएव उनकी प्रामाणिकता में सन्देह न हमें है और न स्वयं श्री एटली को ही होना चाहिए। यह दूसरी बात है कि मजदूर सरकार के मंत्री होने के नाते श्री एटली साहब अपने इन अँगरेजों को अपने या ब्रिटिश साम्राज्य का शत्रु समझ रहे हों।

परन्तु यही पर्याप्त नहीं है। इसके बाद भी जो कुछ हुआ है—अभी कल तक ही, वह भी तो यही प्रमाणित करता है कि ब्रिटिश सरकार अपनी इस मुस्लिम बीबी को प्रसन्न करने के लिए सदैव पहल और अतिरिक्त रियायतों की नीति पर अमल करती रही है। प्रथम मजदूर मंत्रिमण्डल के भारतमंत्री श्री ओलिवर ने 'लंदन टाइम्स' में लिखा था—

> "जो भारतवर्ष से सुपरिचित हैं, उन्हें अच्छी तरह ज्ञात है कि हिन्दुओं की बढ़ती हुई राष्ट्रीय भावना को दबाने के लिए ही ब्रिटिश अधिकारी मुसलमानों का पक्ष अधिक ले रहे हैं।"

इसके आगे—साइमन कमीशन जब भारत आया था तब तत्कालीन भारतमंत्री श्री बर्केन हेड ने वायसराय को लिखा था—

> "ब्रिटश पालिसी ऐसी होनी चाहिए कि हिन्दू यह समझें कि कमीशन मुसलमानों का पक्ष कर रहा है, और इस सम्भावना से वे डर जाएँ, तथा यह समझकर कि कहीं कमीशन की रिपोर्ट हिन्दू-हितों के प्रतिकूल न जाए, कमीशन से अधिकाधिक सहयोग करने का यत्न करें। ऐसा करने से मुसलमानों का ठोस समर्थन हमें प्राप्त होगा और जिन्ना साहब को उभरने का पूरा-पूरा मौका मिल जाएगा।"

स्मरण रखने की बात यहाँ यह है कि जिन्ना साहब उन दिनों पक्के राष्ट्रवादी थे और उन्होंने कमीशन का बायकाट किया था। पर उक्त उदाहरण से पता चलता है कि भारतमंत्री और वायसराय महोदय जिन्ना साहब के मर्म-स्थल को उस समय तक अच्छी तरह समझ चुके थे, जिसका पूरा उद्घाटन तब हुआ जब जिन्ना साहब सन् १९२८ के मई से अक्टोबर तक के ६ महीनों में इँगलैण्ड में रहे। तभी से उनकी बुद्धि में इस प्रकार का परिवर्तन परिलक्षित हुआ। सम्भवतः इसी कारण प्रख्यात लेखिका श्रीमती पर्लबक ने जिन्ना साहब को 'ब्रिटिश-कृति' कहा है। जिन्ना साहब की १४ साम्प्रदायिक माँगों को ब्रिटिश सरकार ने जिस तत्परता से स्वीकार कर लिया था, वह श्रीमती बक के कथन के पक्ष में एक खासा सबूत है।

श्री एटली ने, और उनके अन्तर्गत काम करनेवाले भारत के गवर्नरों ने, पिछले दिनों में मुसमानों को जो बढ़ावा दिया है, वह उनकी निष्पक्षनीति की पुष्टि नहीं करता। श्री एटली ने अपनी मार्च, १९४६ की घोषणा में कहा था—"अल्पमत को बहुमत की प्रगति में बाधक नहीं बनने दिया जाएगा।" पर व्यवहार में उन्होंने जिन्ना साहब को 'वीटो' का अधिकार सौंप दिया। कैबिनेट मिशन-द्वारा रद्द किए गए 'पाकिस्तान' को माउण्टबेटेन-प्लान में फिर स्वीकार कर लिया गया। और अब वह कार्यरूप में भी अँगरेजों के द्वारा ही परिणत किया जा रहा है। सर ओलिफ केरो ने सीमाप्रान्त में और सर फ्रान्सिस मुडी ने सिन्ध में जो मुस्लिम पक्षपात की नीति अपनाई, वह सर्वविदित है। कहा तो यहाँ तक जा रहा है कि उनके इस कार्य का पुरस्कार जिन्ना साहब उन्हें पाकिस्तानी प्रान्तों के गवर्नर बनाकर देने का विचार कर रहे हैं। क्या इतने प्रमाण और इससे भी अधिक अन्य प्रमाण यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि आज भारत में जो हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष दिखाई दे रहा है, वह ब्रिटिश अधिकारियों का पैदा किया हुआ है। यदि ऐसा न होता तो रियासतों में भी हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए होते और धारा ९३ के अन्तर्गत रहनेवाले पंजाब में दंगे इस हद तक उभरने ही न पाते। वस्तुतः रियासतों में दंगे न होने का कारण यही है कि वहाँ अँगरेज 'सर्वतंत्र स्वतंत्र' नहीं रह पाते।

आज भारत विभक्त हो गया, तो कभी फिर एक हो जाएगा और उस समय हमारी सन्तानें यह पढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य करेंगे कि अँगरेजों के बहकाने में आकर भारत के हिन्दू और मुसलमान किस हद तक पागल बन गए थे।

हिन्दी का भाग्योदय

भारत का विभाजन हो गया। समूचे देश की एकता की दृष्टि से यह बात कितनी अवाञ्छनीय हुई है, इसे बताने की आवश्यकता नहीं। कुछ लोगों को छोड़कर, जिनकी संख्या सम्पूर्ण देश की आबादी की चौथाई से भी कम है, जो विदेशियों के हाथ के खिलौने बने रहे हैं और जिनका चरम उद्देश्य देश की स्वाधीनता और उन्नति के मूल्य पर अपना स्वार्थसाधन रहा है, देश का यह विभाजन सभी को अखरा है। सभी इस विभाजन से असन्तुष्ट हैं। और असन्तुष्ट ही क्यों, अधिकांश भारतीयों को अब तक यह विश्वास नहीं हो रहा है कि भारत सचमुच विभक्त हो गया। हमारे बड़े-बड़े नेता भी इस विभाजन को नितान्त अस्थायी वस्तु मान रहे हैं और हमें यह विश्वास दिलाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं कि भारत एक था और निकट भविष्य में फिर एक ही हो जाएगा। वह विभक्त रह नहीं सकता। उसका इतिहास और भूगोल अखण्डता का समर्थक है, विभाजन का नहीं।

जो कुछ हुआ वह तो हो गया। जो दोष पैदा हुआ है, उसका प्रतिकार भी अवश्य और शीघ्र ही हो जाएगा, हममें से प्रत्येक को ऐसी आशा करने का पूर्ण अधिकार है। पर भविष्य भविष्य है; वह वर्तमान का स्थान नहीं ले सकता। भविष्य की जड़ें वर्त्तमान में रहती हैं, अतः वर्त्तमान को सँभालना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है। उसी को सँभालकर हम भविष्य को मनोनुकूल बना सकते हैं।

प्रत्येक बुराई के पीछे भलाई छिपी रहती है। प्रत्येक अशुभ अपने गर्भ में शुभ को छिपाए रहता है। इस व्यापक बुराई के गर्भ में भी कुछ भलाइयाँ अवश्य छिपी हैं, जिनमें से कुछ का आभास हमें अभी से मिलने लगा है और शेष का आभास भी समय आने पर अवश्य मिलेगा। जिस भलाई की चर्चा यहाँ की जा रही है, उसका हमसे और हमारे हजारों-लाखों पाठकों से सीधा सम्बन्ध है। अतएव वह हमारे सामान्य हित की बात है।

पाकिस्तानी इलाके के अलग होते ही और उसके तानाशाह के यह घोषित करते ही कि पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उर्दू होगी और उसकी राष्ट्रलिपि 'अरेबिक', हमारे इस विभाग के—जिसे हिन्दुस्तान या हिन्द कहा जाएगा, नेताओं का ध्यान भी इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकृष्ट हुआ, और बहुत तीव्रता के साथ आकृष्ट हुआ, कि इस विभाग की राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि क्या रहे!

अभी पिछले दिनों ही विधान-परिषद् के २० सदस्यों की एक कमेटी इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए बैठाई गई थी। प्रसन्नता की बात है कि उक्त कमेटी के सदस्यों का प्रबल बहुमत हिन्दी राष्ट्रभाषा और देवनागरी राष्ट्रलिपि के पक्ष में रहा है। इससे प्रकट होता है कि देश का झुकाव किस ओर है।

उक्त कमेटी के निर्णय से राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि का प्रश्न अब बहुत कुछ सुलझ गया है और हमें विश्वास है कि विधान-परिषद् भी विचारार्थ उपस्थित किए जाने पर कमेटी के अनुरूप ही निर्णय देगी।

हिन्दी भारत की बहुसंख्यक जनता की मातृभाषा है और देवनागरी सर्वाधिक वैज्ञानिक और सरल लिपि है। इस नाते इन दोनों का राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि होने का स्वाभाविक अधिकार है। भारत में प्रचलित अन्य भाषाएँ और लिपियाँ इन दोनों गुणों की दृष्टि से हिन्दी और देवनागरी का मुकाबला नहीं कर सकतीं। रही हिन्दुस्तानी और उर्दू की बात; पाकिस्तान के पृथक् हो जाने से हिन्दुस्तानी की आवश्यकता समाप्त हो गई और उर्दू को उसके अनुरूप पद पाकिस्तान में मिल ही गया। अतः इन दोनों कृत्रिम और अनावश्यक भाषाओं तथा अरेबिक लिपि को बहुमत हिन्दवासियों पर उनकी इच्छा के प्रतिकूल लादना अब लोकप्रिय और जनता की सरकार के लिए आवश्यक नहीं रह गया। यह दूसरी बात है कि कोई अपने शौक के लिए उर्दू और उसकी लिपि का भी अभ्यास करे। पर सरकार की ओर से अब ऐसा प्रतिबन्ध नहीं रहना चाहिए कि बच्चे पाठशालाओं में अनिवार्य विषय के रूप में उर्दू भाषा और अरेबिक लिपि सीखें। हमें आशा करनी चाहिए कि हिन्दुस्तान की प्रान्तीय सरकारें अविलम्ब इस दशा में पग उठाएँगी।

यू आँग सान की हत्या

"एशिया में पाश्चात्य साम्राज्यवादियों के दिन अब इने-गिने रह गए हैं। एशिया का कायाकल्प हो रहा है। वह प्रगति कर रहा है। अब अन्ताराष्ट्रीय सभाओं में उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। तुम (योरपीय देश) एशिया की आवाज इण्डोनेशिया में सुन सकते हो, इण्डोचायना में सुन सकते हो, ब्रह्मा और भारत में सुन सकते हो और एशियाई प्रगति का प्रत्यक्ष रूप देखना चाहो तो चीन में देख सकते हो। एशियाई शक्तियाँ आज संगठित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रही हैं। वे अनेक से एक बन रही हैं। संसार इस एकत्र महती शक्ति की उपेक्षा नहीं कर सकता। अब हमें विभक्त करके योरप हम पर शासन नहीं कर सकता—हमें सुदीर्घवाल तक पददलित नहीं रख सकता।" उपर्युक्त सिंह-गर्जना श्री यू आँग सान ने गत वर्ष 'फासिस्ट विरोधी जनता-स्वतंत्रता लीग' के प्रथम अधिवेशन के अवसर पर की थी और एशिया के छोटे-बड़े सभी देशों ने इन शब्दों को उल्लसित हृदय से सुना था, साथही इस सिंह-गर्जना को सुनकर पाश्चात्य पूँजीवादी और साम्राज्यवादी देशों के हृदयों पर साँप रींग गया था।

आज यू आँग सान हमारे बीच में नहीं रहे। एशिया का वह निर्भीक नेता, ब्रह्मदेश का वह त्राता हमारे बीच से अभागों ने उठा दिया। एशिया की भावी समृद्धि का सुख-स्वप्न देखनेवाले प्रत्येक नागरिक के हृदय पर यह वज्र-प्रहार हुआ है। कल ही समाचार मिला है कि रंगून में जिस समय ब्रह्मा के मंत्रिमंडल की बैठक हो रही थी, कुछ आततायी जीपकार में सवार होकर रंगून के कौंसिल-भवन के फाटक पर पहुँचे। वे आधुनिक ढंग की बन्दूकों से सुसज्जित थे। उनमें से एक तो कार पर रहा और शेष तीन-चार व्यक्ति दूसरी मंजिल के उस कमरे की ओर बढ़े जहाँ मीटिंग हो रही थी। सन्तरी के रोकने पर उसे गोली मार दी गई। इसके बाद आततायियों ने कमरे की खिड़कियों से फायर किए जिसके परिणाम-स्वरूप यू आँग सान और उनके सात अन्य साथियों की मृत्यु हो गई और अनेक व्यक्ति भी सांघातिक रूप से घायल हुए।

यू आँग सान का व्यक्तित्व ब्रह्मा के लिए एक दैवी देन था। वे सच्चे अर्थों में ब्रह्मा के उद्धारक थे और एशिया के स्वभावज नेता। गत युद्ध ने जिन देशों को अपार क्षति पहुँचाई है, उनमें ब्रह्मा की गणना प्रथम स्थान पर है। जापानियों ने उसे खँडहर के रूप में छोड़ा था। युद्ध समाप्त होने पर ब्रह्मा की दशा नितान्त दयनीय बन गई थी। मित्रराष्ट्रों ने वादा किया था कि युद्धोत्तर संसार का रूप सर्वथा नया होगा; पर युद्धोत्तर ब्रह्मा की अवस्था सन १९४५ में भी राजनैतिक दृष्टि से वही रही, जो युद्ध से पूर्व थी। वह ब्रिटिश राज्य का एक उपनिवेश-मात्र था। ब्रिटिश गवर्नर का वहाँ एकच्छत्र अधिकार था, जिसकी सम्पूर्ण चेष्टाएँ ब्रह्मा को किसी-न-किसी प्रकार ब्रिटिश राज्य के पैरों के नीचे बनाए रखने की थीं।

इस वस्तुस्थिति में ब्रह्मा की विभीषिकाओं का अन्त करने के लिए जिस वीर पुरुष ने बीड़ा उठाया, वह यू आँग सान था। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को सत्ता हस्तान्तरित करने के लिए बाध्य कर दिया। उनके आन्दोलन और संगठन से झुककर ब्रिटिश सरकार को यह स्वीकार करना पड़ा कि ब्रह्म-निवासी अपना विधान स्वयं बनाएँ। अब वहाँ शीघ्र ही राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होनेवाली थी और यू आँगसान की योजना के अनुसार उस राष्ट्रीय सरकार का प्रथम कार्य होता ब्रह्मदेश का आर्थिक पुनर्निर्माण। यदि यू आँगसान का नेतृत्व ब्रह्मा को कुछ समय के लिए और उपलब्ध रहता तो समूचे देश की दशा में आश्चर्यजनक सुधार शीघ्र ही हो जाता। अब ब्रह्मा में ऐसा भी कोई नेता नहीं है जो यू आँग सान की योजना को सफलतापूर्वक कार्यन्वित भी कर सके, नई-नई योजनाएँ बनाने और उन्हें अमली जामा पहनाने की तो बात ही दूर है।

जहाँ ब्रह्मा के बहुसंख्यक व्यक्ति यू आँग सान के अनुयायी थे, वहाँ एक ऐसा अभागा दल भी वहाँ है जिसे उनका नेतृत्व फूटी आँखों नहीं सुहाता था। इस दल के अनुगामी अपने को 'कम्यूनिस्ट' कहते हैं। गत २७ जनवरी १९४७ को ब्रिटिश प्रधान मंत्री एटली और यू आँग सान के बीच जो समझौता हुआ था और जो 'एटली आँग सान एग्रीमेण्ट' के नाम से प्रसिद्ध हुआ था, उसका इस कम्यूनिस्ट दल ने खुल्लम-खुल्ला विरोध किया था। कम्यूनिस्टों के एक नेता ने तो यहाँ तक कहा था कि 'अब वह दिन निकट आ गया है जब आँग सान को अपने पापों का लेखा-जोखा देना होगा; जब हम उनको कैद करके उन पर देश-द्रोह का मुकदमा चलाएँगे।'

इधर उक्त समझौता हुआ, और उधर ब्रह्मा में अराजकता के दृश्य दिखाई देने लगे। दिन दहाड़े डकैतियाँ, चोरी, लूटपाट और कत्ल होने लगे। कम्यूनिस्टों ने ऐसा रवैय्या धारण किया कि जैसे वे यू आँगसान की सत्ता समाप्त करके ही मानेंगे।

यू आँग सान की हत्या इसी दल की करतूत हो, कौन कह सकता है! इसका रहस्य तो आगे चलकर खुलेगा। हत्याकारी अपना जघन्य कृत्य सम्पादन करके भाग गए। उनमें से कोई रँगे हाथों पकड़ा नहीं गया है। हाँ सन्देह में कुछ व्यक्ति अवश्य धर लिए गए हैं।

हत्यारे किसी दल या वर्ग के रहे हों, पर उन्होंने जो कुछ किया है, वह मानवता के लिए एक कलंक है। यदि किसी दल या वर्गविशेष को यू आँग सान से मतभेद था तो वह चुनावों में उन्हें और उनके दल को हराकर ब्रह्मा के शासनतंत्र पर अपना अधिकार कर सकता था। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्या के मार्ग को अपनाना तो किसी दशा में वाञ्छनीय नहीं कहा जा सकता। इससे तो प्रतिक्रिया और प्रतिद्वेष की अग्नि ही भड़केगी, जिससे ब्रह्मा का वायुमण्डल बहुत काल तक सन्दिग्ध बना रहेगा!

हम भारतीयों को यू आँग सान की इस प्रकार हत्या किए जाने पर हार्दिक क्षोभ है। ब्रह्मा कभी भारत का एक अंग था। उसकी संस्कृति तो भारत की ही देन है। वह हमारा एक अच्छा पड़ोसी है। यू आँग सान को भारत के प्रति सहानुभूति अत्यधिक थी और इसी कारण वे रामगढ़ की कांग्रेस में सम्मिलित भी हुए थे। यू आँग सान भारतीय राजनीति में काफी दिलचस्पी लेते थे और उससे ब्रह्मा की स्वाधीनता के लिए प्रेरणा भी प्राप्त करते थे। ऐसे महान् नेता की हत्या करके दुष्कर्मियों ने न केवल ब्रह्मा का, भारत और एशिया का भी भारी अहित किय है।

हिन्दुस्तानी मुस्लिम लीग की भावी नीति

लीग ने पाकिस्तान का नारा लगाया था मुसलमानों के लिए। उसका कहना था कि पाकिस्तान बन जाने पर सारे देश के मुसलमान सुखी और सम्पन्न हो जाएँगे। यह एक ऐसा प्रलोभन था, जिससे मुसलमान जनता स्वभावतः आकर्षित हो गई और मुस्लिम लीग का आन्दोलन सफल होता चला गया। फल-स्वरूप संप्रदायवादी नीति के द्वारा मुस्लिम-मात्र की कमजोरी से लाभ उठाकर आज मुस्लिम लीग ने अपने लक्ष्य 'पाकिस्तान' की प्राप्ति कर ली। पर भारत के बँटवारे से उन मुसलमानों की जो हिन्दुस्तान में रह गए हैं, पाकिस्तानी सुख-स्वप्नों की पूर्ति कैसे होगी? स्वभावतः ही उनमें मुस्लिम लीग के विरुद्ध भावना फैलेगी क्योंकि उनके हितों की परवाह न करके एक विशिष्ट भाग के मुसलमानों की आशापूर्त्ति की गई है। इस परिणाम से मुस्लिम लीग के नेता अपरिचित हों, ऐसा नहीं है। आज हिन्दुस्तान के मुसलमान, दबी आवाज में ही सही, लीगी नीति को कोस रहे हैं कि लीगी आन्दोलनों के लिए उन्होंने जो भले-बुरे काम किए, उनका पुरस्कार उन्हें क्या मिला? लीगियों की इसी विद्रोह-भावना को दबाने के उद्देश्य से 'हिन्दुस्तान में पाकिस्तान' बनाने का नया नारा प्रचलित किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में जो सूचनाएँ समाचारपत्रों में छपती रहती हैं, वे ध्यान देने योग्य हैं।

कहते हैं कि यहाँ के लीगियों ने यह योजना बनाई है कि कांग्रेसी अधिकारियों के विरुद्ध कड़े आक्षेप किए जाएँ। साथ ही बाहर से वे काफी संख्या में हथियार भी मँगा रहे हैं, जिससे उपद्रव करने में उनको कठिनाई न हो। समाचारों से यह भी सिद्ध होता है कि हिन्दुस्तान में लीगी मनोवृत्ति अभी तक जोर पकड़े हुए है। यह अवश्य है कि एक-दो लीगी नेताओं ने इस तरह की कटुनीति के विरुद्ध भी पिछले दिनों वक्तव्य दिए हैं। कुछ ही समय हुआ, मद्रास प्रान्तीय मुस्लिम लीग के सभापति मुहम्मद इस्माइल ने अपने एक वक्तव्य में कहा था कि "अब पाकिस्तान बन गया है। और उसके लिए हमारी लड़ाई भी खतम हो चुकी है। हम मुसलमानों को अब अपनी नीति की ओर ध्यान देना चाहिए। मद्रास का प्रत्येक लीगी मुसलमान पहले हिन्दुस्तानी है तब मुसलमान। इसी प्रकार हिन्दुस्तान के अन्य प्रान्तों के मुसलमानों से भी मेरी यह अपील है कि वे यह अनुभव करें कि वे अल्पमत में हैं। उन्हें यदि बुरे परिणामों से बचना है तो 'पहले हिन्दुस्तानी फिर मुसलमान की नीति अपनानी चाहिए।' इस्माइल साहब के इस भाषण में लाचारी स्पष्ट है। हिन्दुस्तन में रह गए मुसलमानों के लिए और उपाय ही क्या है? बहुत संभव है कि हिन्दुस्तान-वर्त्ती मुस्लिम लीग इसी सलाह के अनुसार अपनी नीति निर्धारित करे, परन्तु अभी तो पाकिस्तान-सरकार की स्थापना और उससे तत्संबंधी आदेश प्राप्त होने की प्रतीक्षा की जा रही है। जब पाकिस्तान का शासन-यंत्र ठीक-ठीक चलने लगेगा तभी हिन्दुस्तान के लीगी मुसलमानों की नीति स्थिर हो सकेगी।'

यह सब अभी समयापेक्षी है। संभव है यहाँ के लीगी सरकार के प्रति और अपनी जन्मभूमि के प्रति अब वफादार बन जाएँ और यह भी संभव है कि वे यहाँ रहते हुए भी पाकिस्तान के ख्वाब देखते रहें, जैसा करना उनका स्वभाव बन चुका है। परन्तु दोनों अवस्थाओं में शासन-तंत्र को उनकी ओर से उदासीन नहीं रहना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खण्डित भारत

अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी

१६ मई, १६ जून और ५ दिसम्बर सन् १९४६ की ब्रिटिश घोषणाओं ने भारत के उज्ज्वल भविष्य पर कालिमा की कूची फेर दी और ३ जून १९४७ को उसके भाग्य पर अपना अन्तिम निर्णय दे दिया। माननीय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने गत वर्ष 'भारतीय सांस्कृतिक समिति' के तत्त्वावधान में आयोजित एक सभा में भाषण करते हुए कहा था--"नवीन भारत का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय सम्प्रदायों में सांस्कृतिक एकता उत्पन्न की जाए। भारत के सम्मुख सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न राजनैतिक है। प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह अधिक घनिष्ठ सांस्कृतिक सम्पर्क में आए।

परन्तु इस भाषण के उपरान्त के १५ महीनों ने यह सिद्ध कर दिया कि राजनीति ने--सामाजिक और साम्प्रदायिक पुनर्निर्माण की पूर्णतः उपेक्षा कर दी है। भारतीय राजनीति ने आर्यों के समय से अब तक एक और अखंड रहे भारत को विभाजित कर दिया। कलकत्ता, नोआखाली, पंजाब और सीमाप्रान्त में घटित नृशंस घटनाओं ने यह भी प्रमाणित कर दिया कि डाक्टर प्रसाद-द्वारा कथित सांस्कृतिक एकता का स्वप्न अब चिरकाल तक स्वप्न ही रहेगा। आगामी पचास वर्षों तक की राजनीति की रूप-रेखा पथकता की पृष्ठभूमि पर अंकित की जा चुकी है।

अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं तथा देश की वर्तमान स्थिति की कुछ भी जानकारी रखनेवाले लोग इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि भारत का बालकन-प्रदेश के समान विभाजन किया जाना भय से खाली नहीं है। आज प्रत्येक भारतीय यह बात जानता है कि अँगरेज भारत छोड़कर जा रहे हैं--उसकी भूमिका के रूप में भारत को भविष्य के अन्तीय महायुद्ध के क्षेत्र के रूप में परिवर्तित करके। देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई अराजकता पुकार-पुकार-कर अँगरेजों को चेतावनी दे रही है कि उनकी कुशल इसी में है कि अब वे अत्यन्त शीघ्र शासनाधिकार हस्तान्तरित कर दें। परन्तु शासन किस प्रकार हस्तान्तरित किया जाए, अँगरेजों के विचार में यह एक कठिन समस्या है। इस समस्या का अन्तिम हल ३ जून १९४७ की घोषणा है। श्री बलदेवसिंह के शब्दों में--"यह समझौता नहीं, फैसला है। इसे हमें मानना ही होगा। इसलिए हम इसे मान लेने के लिए कहते हैं।"

इस प्रकार बाबा खड्गसिंह के उस कथन का पूरा समर्थन हो जाता है, जिसमें उन्होंने कहा था--"जो लोग यह कह रहे हैं कि भारत का विभाजन प्रायः अनिवार्य हो गया है और साथ-साथ यह भी कह रहे हैं कि देशवासी जून १९४८ में स्वतंत्रता का दान ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाए, वे परस्पर-विरोधी बातें कह रहे हैं। चोटी के कांग्रेस-नेता भी, एक या दो अपवादों को छोड़कर, विभाजन या बँटवारे की बात कह रहे हैं। उन लोगों ने भारत के अंगच्छेदन की माँग के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है। मेरी राय में कांग्रेस अँगरेजों की कूटनीतिज्ञता का शिकार बन गई है। भारत जब हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, राजस्थान, पठानिस्तान के अनेक भागों में बंट जाएगा, तब वह सारी राजनैतिक शक्ति और राष्ट्रीय सत्ता गँवा देगा। तब कोई भी विदेशी शक्ति भारत के राजनैतिक जीवन पर अपना अधिकार कर लेगी। अँगरेज भारत को विभाजित करके अपनी राजनैतिक चाल चल रहे हैं। वे मुसलमानों को पाकिस्तान प्राप्त करने में मदद दे रहे हैं और देशी नरेशों को भारतीय संघ से बाहर रहने के लिए उसका रहे हैं तथा इस प्रकार भारतीय एकता की जड़ को हिला देना चाहते हैं। मैं अखंड भारत के आदर्श के लिए, अपने हृदय की अन्तिम धड़कन तक लड़ूंगा।"

वैसे कहने को गांधी जी ने भी ३० मई, १९४७ की सांध्य-प्रार्थना में गुड़गाँव के दंगों का उल्लेख करते हुए कहा है--"मुझे यह जानने की जरूरत नहीं है कि गुड़-गाँव की मार-काट के लिए जाट जिम्मेदार हैं या मेव। हमें तो मुसलमानों से कह देना होगा कि इस तरह जोर-जबरदस्ती से पाकिस्तान नहीं लिया जा सकेगा। तब तक पाकिस्तान मिलनेवाला नहीं है, जब तक यह जलाना-मारना बन्द नहीं होगा। पाकिस्तान कौन ऐसा भूत है? सच्चा पाकिस्तान तो वह है, जिसमें बच्चा-बच्चा सुरक्षित हो.....मैं अपने साथी जिन्ना साहब से कहता हूँ और सारी दुनिया से कहता हूँ कि हम तब तक पाकिस्तान की बात भी नहीं सुनना चाहते, जब तक यह संघर्ष चलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जब वह बन्द हो जाएगा, तब हम बैठेंगे और ठहराएँगे कि हमें पाकिस्तान रखना है या हिन्दुस्तान। दोस्ती से ही पाकिस्तान बन सकता है और दोस्ती से ही हिन्दुस्तान कायम रह सकता है। गत वर्ष की १६ मई की घोषणा का एक अल्प-विराम भी हटाया नहीं जा सकता। अँगरेजों को इससे बाहर कुछ भी करने का हक नहीं है। हमें साफ कह देना चाहिए कि चाहे हम सब मर जाएँ या सारा हिन्दुस्तान जल जाए, राख हो जाए, पर जबरदस्ती पाकिस्तान मिलनेवाला नहीं है।"

बातों में लंदन के अँगरेजी पत्र भी पीछे नहीं रहे। 'स्टार' पत्र ने अपने सम्पादकीय में लिखा--"मि० जिन्ना की पाकिस्तान-संबंधी कठोर माँग स्वतंत्र भारत के भविष्य के उज्ज्वलतम चित्र पर काला धब्बा स्वरूप है।" सर स्टैफर्ड क्रिप्स के साप्ताहिक पत्र 'ट्रिब्यून' ने एक अग्रलेख में लिखा--"मि० जिन्ना का विश्वास है कि अँगरेज भारत नहीं छोड़ रहे हैं, बल्कि वे मुसलमानों को और अधिक रियायतें दे रहे हैं। ब्रिटेन को अपने 'भारत छोड़ो' वचन का सम्मान करना चाहिए और गृहयुद्ध की धमकियों का तिरस्कार करना चाहिए।"

'न्यू स्टेट्समैन' ने यह विचार प्रकट किया कि--"पाकिस्तान तथा अन्य देशी रियासतें बहुत संभव है कि अपने को ब्रिटिश उपनिवेश घोषित करें, जिससे उनके राज्यों में ब्रिटिश सेना बनी रहे, परन्तु ब्रिटिश सैनिकों को भारतीयों के संघर्ष में भाग लेने की अनुमति कदापि नहीं दी जा सकती। भारत छोड़ने के अर्थ होंगे--भारत को पूर्णरूप से खाली करना।"

एक लीगी नेता ने कुछ दिन पूर्व अपना विचार प्रकट किया था कि पाकिस्तान ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग बनकर रहना चाहेगा। इस ओर संकेत करते हुए एक अन्य ब्रिटिश पत्र ने लिखा--"यदि पाकिस्तान उपनिवेश बनकर हमारे समर्थन को प्राप्त किए रहा और 'हिन्दुस्तान' एक स्वतंत्र राष्ट्र बनकर ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल से पृथक् हो गया तो भारत के साथ हमारे भावी सम्बन्ध बुरे हो जाएँगे।" अमरीकन अर्थ-विशेषज्ञों ने अपना स्पष्ट मत प्रकट किया कि "पाकिस्तान अपने आर्थिक स्तर की रक्षा नहीं कर सकेगा।" श्री शंकरराव देव ने स्पष्ट कह दिया--"यदि आज मि० जिन्ना ब्रिटिश संगीनों के बल से अपनी माँगें पूरी कराने में समर्थ हो गए तो भी भविष्य में प्राप्त की रक्षा नहीं कर सकेंगे--उसे अपने अधिकार में नहीं रख सकेंगे।" यह उन्होंने गत २४ मई, ४७ को पूना-भाषण में कहा था परन्तु इतने पर भी ३ जून, १९४७ की घोषणा पर नेताओं की स्वीकृति हमारे सामने है।

सन् १९३९ में एक प्रख्यात कांग्रेसी नेता ने गर्व-पूर्वक कहा था--"अँगरेज राजनीतिज्ञों का दिवाला निकल गया है और आज जो उन्हें इस भारी विपत्ति (द्वितीय महायुद्ध) का सामना करना पड़ रहा है, यह उनकी पिछली भूलों का परिणाम है।"

उक्त नेता ने भारतीयों से ऐक्य की अपील करते हुए अपने ओजस्वी भाषण में ओजस्वितापूर्वक कहा था--"यह परीक्षा का समय है। यदि हम इस परीक्षा में फेल हो गए, तो पीछे रह जाएँगे। इसलिए हमें इस दल या उस दल की बात नहीं कहनी चाहिए, इस सम्प्रदाय या उस सम्प्रदाय के दृष्टिकोण से विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि यह बड़े भारी मसले की बात है। समय की पुकार है कि संसार और भारत की स्वाधीनता के लिए हम सब मिलकर और मतभेदों को भुलाकर राष्ट्र की समस्त शक्तियों का एक संगठन करें।"

वास्तव में उस समय अँगरेजों की परिस्थिति ही कुछ ऐसी हो गई थी कि उनकी राजनीतिज्ञता का तिरस्कार किया जा सकता था, परन्तु इस बात में एक त्रुटि है। तिरस्कार अवश्य किया जा सकता था परन्तु इंगलैण्ड के राजनीतिज्ञों का नहीं, शासनारूढ़ राजनीतिज्ञों का। क्या ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के एक साधारण व्यक्ति ने स्पष्ट रूप में ग्रेट ब्रिटेन और संसार को जेकोस्लोवेकिया के प्रश्न पर चेतावनी देते हुए द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने के कई महीने पहले ही नहीं कह दिया था--"वह दिन आएगा, जब किसी बात अथवा समस्या पर गवर्नमेंट को खड़ा होना पड़ेगा, युद्ध में भाग लेना पड़ेगा और मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि जब वह दिन आए, कहीं ऐसा न हो कि अपनी अज्ञानपूर्ण नीति से हमें युद्ध में अकेला ही खड़ा होना पड़े।" दूसरे दो-चार साधारण ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने आज समस्त भारतीय राजनीतिज्ञों को चुनौती देते हुए अपनी गोटियाँ उनके सामने फेंक दी हैं। उक्त नेता के कथनानुसार तो जिस संगठन के द्वारा भारत स्वतंत्रता प्राप्त करता, उसी संगठन ने पूर्ण रूप से यह कहते हुए आत्म-समर्पण कर दिया--"हमने सर्वसम्मति को सरकार के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेने का निश्चय किया है और हम अपनी बड़ी-बड़ी कमेटियों से भी ऐसा ही करने की सिफारिश करेंगे।"

कर्जन वाइली को गोली से उड़ा देनेवाले श्री मदन सिंह धींगड़ा ने फाँसी पर चढ़ते समय अन्तिम प्रार्थना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी—"एक हिन्दू होने के नाते मेरी यह प्रार्थना है कि मैं बारम्बार हिन्दुस्तान में जन्म लेकर उसी के लिए मरूँ, जिससे वह स्वतंत्र होकर प्रभु का साक्षात् रूप बन जाए। आज के राष्ट्रसेवक, जिन्होंने अखंड भारत की अखंड सभ्यता के पक्ष में अपने को उत्सर्ग कर देने की प्रतिज्ञा सैकड़ों नहीं, हजारों नहीं, गत आठ वर्षों के बीच लाखों बार दुहराई होगी, क्या अपने कार्य के प्रति गर्व कर सकते हैं? वे जिस बात के अनौचित्य को भली भाँति समझते हैं, जो सत्य अपने को स्वतः प्रकाशित कर रहा है, उसी पर धूल डालने के लिए उद्यत होकर वे आशा करते हैं कि कठपुतली को नाचने की जितनी स्वतंत्रता रहती है, उतनी स्वतंत्र क्रिया से वे देश को स्वातंत्र्य-पथ पर आगे बढ़ा सकेंगे।

यह बात नहीं है कि इस कांड की आशा किसी को न रही हो और लोग इसकी संभावना से अपरिचित रहे हों। मार्च, १९४० में लाहौर में मुस्लिम लीग का जो अधिवेशन हुआ था, उसी में मि० जिन्ना ने अपनी माँग और पाकिस्तान-योजना संसार के सम्मुख रखी थी। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था—"यह ईश्वरीय सहायता थी, जो कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के बीच हुआ समझौता युद्ध की घोषणा के साथ-साथ भंग हो गया। (अब) मुस्लिम भारत ऐसा कोई भी विधान स्वीकार नहीं कर सकता, जिसके फलस्वरूप बहुसंख्यक हिन्दुओं की सरकार कायम हो। जनसत्तात्मक प्रणाली के अन्दर हिन्दुओं और मुसलमानों को जबरदस्ती एक साथ रखने का अर्थ केवल हिन्दू-राज कायम करना होगा। कांग्रेस जिस प्रकार की जनसत्ता चाहती है, उसका अर्थ उस वस्तु का सम्पूर्ण विनाश होगा, जो इस्लाम-धर्म के अन्दर सबसे अधिक मूल्यवान् है।... वास्तव में इस्लाम-धर्म और हिन्दूधर्म दोनों विभिन्न और स्पष्ट सामाजिक व्यवस्थाएँ हैं और यह ख्याल करना भ्रम होगा कि हिन्दू और मुसलमान कभी राष्ट्रीय एकता स्थापित कर सकते हैं। 'एक भारतीय राष्ट्र' की भ्रान्त धारणाएं आगे बढ़ गई हैं और यही हमारी अधिकांश कठिनाइयों का कारण है।"

इस पर टिप्पणी करते हुए गांधी जी ने हरिजन में लिखा था—"मुस्लिम लीग ने लाहौर में जो कदम उठाया है, उससे एक विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। मुसलमानों को आत्म-निर्णय का वैसा ही अधिकार होना चाहिए, जैसा शेष भारत को। आज हमारा सम्मिलित कुटुम्ब है, उसका कोई भी आदमी बँटवारे की माँग कर सकता है।"

और ब्रिटेन के 'टाइम्स' पत्र ने मि० जिन्ना की योजना को 'भारत के लिए अत्यन्त लाभप्रद' बतलाते हुए इसका समर्थन किया था। तत्कालीन भारत-मंत्री लार्ड जटलैण्ड ने एक रेडियो-भाषण में कहा था—"संघ-शासन के स्थापित करने के लिए तीन मुख्य राजनीतिक शक्तियों के सहयोग की आवश्यकता है। वे तीन राजनैतिक शक्तियाँ हैं—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, देशी नरेश और अखिल भारतीय मुस्लिम लीग। एक ओर कांग्रेस तो केवल डोमीनियन स्टेटस नहीं बल्कि पूर्ण स्वराज्य और विधान-सम्मेलन-द्वारा बनाया हुआ विधान माँग रही है, दूसरी ओर लीग एक पृथक् मुस्लिम राज्य माँग रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि मुसलमानों और हिन्दुओं के बीच वास्तविक सुलह हुए बिना भारतवर्ष में कोई स्थायी व्यवस्था संभव नहीं हो सकती।"

स्पष्ट है कि चाहे जितनी विरोधी दलीलें क्यों न पाकिस्तान के विरुद्ध उपस्थित की जाएं परन्तु आरम्भ से ही समस्त नेताओं और विदेशी सरकार ने ऐसा रुख ग्रहण कर लिया, जिससे जिन्ना साहब का यह विश्वास दृढ़ होता गया कि वही होगा जो मुस्लिम लीग चाहेगी। और वास्तव में वही हुआ। शासनसत्ता का एकाधिकार कौन नहीं चाहता? इसलिए जनतंत्रवाद की छीछालेदर आज भी पूर्ववत् होती जा रही है, और शान्ति एवं सुव्यवस्था के ठेकेदार उस पर अपनी स्वीकृति की मुहर भी लगाते जा रहे हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति वुडरो विलसन ने आशा की थी कि प्रथम विश्व-महायुद्ध के उपरान्त की गई संधियों की बुराइयों को राष्ट्रसंघ दूर कर देगा। रूजवेल्ट ने विश्वास किया था कि संयुक्तराष्ट्र विश्व की बुराइयाँ दूर करने के प्रयत्न में साझीदार बनेगा। मि० चर्चिल ने युद्धोत्तर संसार के लिए शान्ति और सुव्यवस्था जीतने का वचन दिया और सन् १९४७ में मजदूर-नेता मि० बेविन विश्वास करते हैं कि ग्रेट ब्रिटेन आज भी संसार को बहुत कुछ दे सकता है। इतने पर भी यदि श्री पटेल ने पंच-निर्णय की बात कही तो इससे उनकी सरल-हृदयता ही प्रकट हो, राजनीतिज्ञता नहीं प्रकट होती। स्पष्ट है कि यदि धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर देशों के टुकड़े होने लगें तो सबसे पहले योरप के टुकड़े होने चाहिए और अमेरिका के एक पत्र के अनुसार सबसे पहले न्यूयार्क को प्रोटेस्टेण्ट और कैथोलिक सम्प्रदायों के आधार पर बँट जाना चाहिए। यदि जातियों के आधार पर बँटवारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना उचित है तो संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के यहूदी अपने भविष्य पर विश्वास कर सकते हैं।

किन्तु बात केवल यही और इतनी ही नहीं है। पाकिस्तान-सम्बन्धी आन्दोलन के प्रवर्त्तक मौलाना रहमत अली ने, पाकिस्तान-प्रस्ताव लीग-द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के उपरान्त अपना विचार प्रकट किया था—"आल इंडिया मुस्लिम लीग के नाम में भारतीयता की गंध आती है, इसलिए इस संस्था को तोड़ देना चाहिए और इसके स्थान पर 'लीग आफ दी एशियाटिक नेशंस आफ पाकिस्तान, बंगाल और उस्मानिस्तान की स्थापना' करनी चाहिए। ऐसे महान् संघ की स्थापना से ही उनके महान् उद्देश्य की सिद्धि हो सकेगी, मुसलमानों में वास्तविक 'मिल्लत' तभी संभव हो सकेगी। मुसलमानों को न तो गांधीवाद के विधान से, न अँगरेजी साम्राज्यवाद के सिद्धान्त से ही संतोष होगा। वे तो तभी राजी होंगे जब उनके सारे हक मान लिए जाएँगे।"

इसके बाद मि० जिन्ना की बहिन की मुस्लिम स्त्रियों से की गई अपील देखिए, जिसमें वे कहती हैं कि "मुस्लिम स्त्रियों को साड़ी का पहनावा त्याग देना चाहिए क्योंकि उसमें 'हिन्दुत्व' के कीटाणु छिपे हैं।"

एशियाई सम्मेलन में आए हुए मुस्लिम देशों के प्रतिनिधियों का 'एँग्लो अरेबिक कालेज' में स्वागत करते हुए भारत-सरकार के राज्य-परिषद् के अध्यक्ष माननीय मियाँ हुसैन इमाम ने 'पाकिस्तान' पर भारतीय मुसलमानों के निश्चय के सम्बन्ध में उनको सारी बातें बताईं। प्रतिनिधियों की ओर से उत्तर देते हुए डाक्टर सलीम ने कहा—"सारे संसार के मुस्लिम एक हैं, पर एक बात मैं जरूर कह देना चाहता हूँ कि जिसका इतिहास समर्थन करता है और जो खुदा की इच्छा है, वह यह है कि हम काफिरों के साथ मिलकर नहीं रह सकते।"

मिस्री एकता के लिए आन्दोलन करनेवाले, मिस्र के प्रतिनिधि अब्दुल वहाब अज्जम ने एक अन्य अवसर पर कहा—"हम सब मुसलमान एक हैं। हमारी संस्कृति एक है और जीवन के प्रत्येक विभाग में एक है। मैं मियाँ जिन्ना का अभिनन्दन करता हूँ, जिन्होंने भारत में मुस्लिम-संस्कृति की रक्षा के लिए इतना कठिन परिश्रम किया है।"

श्री मोमिन साहब ने फरमाया—"यदि मरक्को, मिस्र, ईराक और हिन्द एशिया से इस्लाम की जो किरणें उठ रही हैं, उन्हें एकत्र कर आप कलमा और कुरान में केन्द्रीभूत कर सकें तो केवल विदेशी शोषण ही नहीं, संसार के समस्त मुस्लिम देशों में काफिरों की संस्कृति अस्त हो सकती है। कायदे-आजम जिन्ना से मेरी बातचीत हुई है, जिसमें मैंने एटलाण्टिक से लेकर प्रशान्त महासागर तक एक सुदृढ़ मुस्लिम प्रदेश को स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया है।"

ये बातें केवल जबानी जमाखर्च नहीं हैं। दो भिन्न सूत्रों से अरब और चीन-स्थित लोगों से इस बात का समर्थन हमें प्राप्त हो चुका है कि मुसलमान गैर-इस्लामी संसार के विरुद्ध एक बड़े संगठन की योजना बनाने में व्यस्त हैं। यहूदी-एजेन्सी के एक समाचार में भी इस संभावना की पुष्टि की गई है। उसने कहा है कि—"तृतीय महायुद्ध छिड़ेगा अवश्य। परन्तु बहुत संभव है कि यह इस्लामी संगठन एवं गैर-इस्लामी संसार के मध्य में हो।"

ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्री एटली ने ३ जून को कामन्स सभा में घोषित किया—"वायसराय पिछले कुछ दिनों से भारतीय नेताओं का जो सम्मेलन कर रहे हैं, उसमें भाग लेनेवाली तीनों पार्टियों ने, एक या दो उत्तराधिकारिणी सरकारों को औपनिवेशिक स्वराज्य देने के ब्रिटिश प्रस्ताव का स्वागत किया है। ब्रिटिश सरकार यह स्पष्ट कर देना चाहती है कि वह भारत का अन्तिम विधान स्वयं बनाने का कोई इरादा नहीं रखती, यह काम भारतीयों का है। सरकारी योजना में ऐसी कोई बात नहीं, जो दोनों सम्प्रदायों में संयुक्त भारत के लिए समझौते में बाधक हो।"

भारत के वायसराय लार्ड माउंटबेटेन ने कहा—"ब्रिटिश सरकार ने मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है कि अब जितनी जल्दी आवश्यक व्यवस्था हो सके, शासनाधिकार ब्रिटिश भारत की एक या दो सरकारों को हस्तान्तरित कर दिया जाए, जिसमें से प्रत्येक को औपनिवेशिक पद प्राप्त होगा।" वायसराय ने अखंड भारत को भारतीय समस्या का एकमात्र हल बतलाया और उस पर सबकी अर्थात् मुस्लिम लीग की सहमति न प्राप्त हो सकने के कारण खेद भी प्रकट किया, किन्तु इतने पर भी वे इस बात पर जोर देना नहीं भूले कि—"इस कानून से भारत के अधिकार पर, यदि बँटवारा हुआ तो दोनों राज्यों के अधिकार पर, कोई बन्धन नहीं रहेगा। भविष्य में वे एक दूसरे के साथ तथा ब्रिटिश कामनवेल्थ के दूसरे सदस्यों के साथ अपना सम्बन्ध निश्चित कर सकेंगे।"

सम्भवतः इसी से मास्को-रेडियो ने, ब्रिटिश-योजना ब्राडकास्ट करते हुए उसकी कटु आलोचना की और कहा—"मि० चर्चिल के समर्थन से यह योजना भारत में ब्रिटेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सैनिक और आर्थिक प्रभुत्व स्थापित रखने के विचार से उपस्थित की गई है।"

प्रमुख आयरिश पत्र 'आयरिश प्रेस' ने टीका-टिप्पणी करते हुए लिखा--"ऊपर से तो सब बातें भारतीय जनता की इच्छा पर निर्भर रहेंगी, परन्तु जनता की इच्छा व्यक्त होने के पूर्व उस पर निर्णय लाद दिया जाएगा। राष्ट्रीयता-वादी आन्दोलन को कुचलने में असमर्थ अँगरेजों का हटना जब से निश्चित हो गया तब से मुस्लिम लीग ने बँटवारे की माँग उठाई है। ब्रिटेन हटते समय भारत का विभाजन करके उसे निर्बल बना देगा, जैसा उसने आयरलैण्ड में किया था। सरकारें बदल जाती हैं, परन्तु मालूम होता है कि साम्राज्यवादी नीति अक्षुण्ण रहती है।"

ब्रह्मा के एक पुराने नेता 'यू-बा-पे' ने कहा--"मुझे आश्चर्य होता है कि कांग्रेस ने इस योजना को कैसे स्वीकार कर लिया क्योंकि यह तो १९४२ की 'क्रिप्स-योजना' और गत वर्ष की मंत्रिदल-योजना से भी कम है।" 'बरमा बर्मियों के लिए' आन्दोलन के नेता थाकिन बा सीन ने विचार प्रकट किया--"यह योजना मुस्लिम लीग को खुश करने की एक और योजना है।" ब्रह्मा के अस्थायी सरकार के उपाध्यक्ष यू-आंगसान ने गहरी निराशा प्रकट करते हुए कहा--"विभाजित भारत न केवल भारतीय जनता के लिए बल्कि समस्त एशिया तथा संसार के लिए खराबी पैदा करनेवाला होगा। भारत के पड़ोसी होने के नाते इस हल पर, यदि इसे हल कहा भी जाए--बड़ी चिन्ता होती है।"

इस चिन्ता का कारण यदि सोचा जाए तो उसकी जड़ें गहराई तक मिलेंगी। जहाँ संसार के प्रत्येक सभ्य राष्ट्र और अर्ध सभ्य राष्ट्रों को इस निर्णय में भविष्य के गर्त में किसी अमंगलजनक घटना के सूत्रों का आभास हुआ, वहीं ब्रह्मा के १० लाख मुसलमानों के नेता और वहाँ की अस्थायी सरकार के अन्य सदस्य श्री अब्दुल रज्जाक इस योजना का स्वागत करते हुए कहते हैं--"यह ब्रिटिश योजना चाहे जितनी अधूरी हो, भारतीय राजनीतिक दलों के बीच में सर्वस्वीकृत हल है। यदि इससे भारत में साम्प्रदायिक सद्भावना की स्थापना हुई और भारतीय जनता रक्तपात से बच गई तो मैं इसे भारी कदम समझूँगा।" इस बात का रहस्य तब अच्छी तरह समझ में आ जाता है, जब हम ब्रह्मा में एक पृथक् मुस्लिम राज्य स्थापित करने के प्रयत्न के विषय में सुनते हैं। उस समय हमारी उलझन का अन्त नहीं रहता जब हम पंडित जवाहरलाल नेहरू के कथन को स्मरण करते हैं। उन्होंने कहा--"मैं खुशी से इन प्रस्तावों की सिफारिश आपसे नहीं कर रहा हूँ, किन्तु मेरे मन में इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं है कि यही ठीक रास्ता है। युगों से हम एक स्वतन्त्र संयुक्त भारत का स्वप्न देखते आए हैं और उसके लिए लड़ते आए हैं। कुछ भागों को यदि उनकी इच्छा हो, तो अलग हो जाने की अनुमति देने का प्रस्ताव हमारे लिए दर्द पहुँचानेवाला है, फिर भी मेरा विश्वास है कि हमारा निर्णय सही है।" एक वर्ष पूर्व श्री नेहरू ने अपने कानपुर के भाषण में कहा था--"मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि मिस्टर जिन्ना जिस पाकिस्तान की माँग करते हैं, वह एक हजार वर्ष में भी उन्हें प्राप्त नहीं होगा।"

राष्ट्रपति कृपलानी ने भी अभी कुछ ही दिन पूर्व, २८ मई के एक भाषण में, अन्य अनेक बातों के साथ कहा था--"यदि सब कुछ होने पर भी देश का विभाजन मुस्लिम लीग के कहने पर होगा, जो कि किसी के लिए हितकर नहीं होगा, तो उसका उत्तरदायित्व पहले लीग पर और फिर ब्रिटिश सरकार पर होगा।"

गांधी जी ने अपनी सांध्य-प्रार्थना-सभाओं में कई बार इस बात को दोहराया था कि "हम एक इंच भी पाकिस्तान मजबूरी से नहीं देंगे।"

उक्त घोषणा के उपरान्त जनता ने गांधी जी को कहते सुना--"कांग्रेस ने औपनिवेशिक स्वराज्य स्वीकार करके कोई गुनाह नहीं किया है। जिन्ना साहब से मैं कहूँगा कि अब तो आपका 'पाकिस्तान' जिन्दाबाद हो गया न! अब आप माउण्टबेटेन साहब के पास क्यों जाते हैं, कांग्रेस के पास क्यों नहीं आते? .....जब कि सारे हिन्दू मनाते-मनाते थक गए तब भी आपने (श्री जिन्ना ने) न माना तो आपको पाकिस्तान दे दिया कि बाद में तो शान्ति होगी।"

हमारे नेता जो कह रहे थे, उसकी तुलना जो कुछ हुआ है उससे करने पर ज्ञात होता है कि वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हुए और अन्त में वही हुआ जो जिन्ना साहब चाहते थे। साथ ही पंडित जवाहरलाल नेहरू, कांग्रेस-राष्ट्रपति एवं गांधी जी की पाकिस्तान पर स्वीकृति दे देना सिद्ध कर देता है कि कांग्रेस अपने मूल-भूत सिद्धान्त से पृथक् हो गई। यह बात विचित्र है कि तीन जून की घोषणा के पूर्व जो नेता खुली सभाओं में 'खंडित भारत' न स्वीकार करने के लिए सैकड़ों बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिज्ञाएँ कर चुके थे, वे ही हमें अब उसके औचित्य का एवं सही होने का विश्वास दिलाएँ। सब जानते हैं कि कांग्रेस हिन्दुओं की वैसी संस्था न कभी थी और न अभी है, जैसी कि मुस्लिम लीग मुसलमानों की है, परन्तु गांधी जी के कथन से साफ प्रकट होता है कि जिन्ना को 'पाकिस्तान' इसलिए दे दिया गया क्योंकि 'शान्ति' के लिए यह अन्तिम उपाय था। अर्थात् 'सर्वनाशे समुत्पन्ने ह्यर्धं त्यजति पंडितः' की नीति का अनुसरण किया गया है। कांग्रेस ने उचित किया है या अनुचित, यह तो आगे चलकर प्रमाणित होगा, पर देश के हिन्दुओं में कांग्रेस के इस कार्य के प्रति भारी क्षोभ है। कलकत्ता-काण्ड, नोआखाली और पंजाब एवं सीमाप्रान्त में हिन्दुओं की साम्पत्तिक और जन-क्षति के बाद, उनकी ओर से कांग्रेस ने जिन्ना को 'पाकिस्तान नहीं दिया, एशियाई गृहयुद्ध का मार्ग प्रशस्त किया है। श्री भोपतकर के उस वक्तव्य की क्या अब भी उपेक्षा की जा सकती है, जिसमें उन्होंने कहा है—"सम्राट् की सरकार के वक्तव्य को मानने के पूर्व कांग्रेस को चाहिए कि वह निर्वाचकों से परामर्श करे और यदि आवश्यकता हो तो पाकिस्तान और 'अखण्ड भारत' के प्रश्न पर पुनः चुनाव लड़े। सम्राट् की सरकार का निर्णय हिन्दुओं के विरुद्ध ऐसा निर्णय है, जिसमें हिन्दुओं से कुछ पूछा ही नहीं गया। यदि योजना कार्यान्वित की गई तो हिन्दू-मुसलमानों की लड़ाई सदा जारी रहेगी और फिर किसी तीसरे प्रबल राष्ट्र को भारत पर आक्रमण करने का अवसर मिलेगा।"

भारत पर किसी तीसरे राष्ट्र की आक्रमण-कल्पना एक भयप्रद और आशंकाजनक कल्पना है, किन्तु उसकी चिन्ता मिस्टर जिन्ना को क्यों नहीं है, इसका कारण उन्हीं के शब्दों में सुनिए। वायसराय के इस कथन का कि—'फौजी दृष्टिकोण से पाकिस्तान एक कमजोर राज्य होगा' उत्तर देते हुए मिस्टर जिन्ना ने कहा—"पड़ोसी मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान पर आक्रमण नहीं करेंगे और यदि सोवियट रूस ने आक्रमण करने का निश्चय किया तो उस स्थिति में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही बिना अमरीका और ब्रिटेन की सहायता के अपनी रक्षा नहीं कर सकते। मेरा विचार है कि सोवियट रूस सिन्धु का रेगिस्तान नहीं चाहता। यदि सोवियट रूस आक्रमण करेगा तो वह गंगा के उपजाऊ मैदान तथा हिन्दू भारत की सम्पत्ति हथियाने के लिए ही आक्रमण करेगा। 'हिन्दू' भी इसे भली भाँति जानते हैं, ऐसी स्थिति में वे पाकिस्तान की रक्षा स्वयं करेंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि इस आक्रमण से मुसलमानों की अपेक्षा उन्हीं की अधिक हानि होगी।"

रक्षा-सम्बन्धी व्यवस्था और सेनाएँ भी अलग हो जाने की माँग करनेवाले जिन्ना की इस बात का सार कौन समझ सकता है? उनका यह कथन हिन्दुओं की अपार शक्ति की ओर संकेत नहीं करता, क्योंकि जिन्ना ने हिन्दुओं के रक्त की नदी बहाकर उन्हें 'पाकिस्तान' देने के लिए राजी किया है। उनका यह कथन हिन्दुओं के प्रति विशेष एवं प्रीति-भावना से भरा हुआ भी नहीं प्रतीत होता, क्योंकि रक्षा-व्यवस्था एवं सेना अलग-अलग बाँटने की माँग भी उन्हीं की है। मुस्लिम राष्ट्र के प्रति उनका यह अकारण विश्वास रहस्यमय है। इस के लिए भी उसमें छिपा आमंत्रण तो नहीं है, इस ओर हिन्दुओं को ध्यान देना ही होगा? अब तक देश की सारी राजनैतिक धारा हिन्दुओं की इच्छा और उनके आन्तरिक विश्वासों की विरुद्ध दिशा में प्रवाहित होती रही है और वे नृशंसता, अत्याचार एवं बेबसी [illegible] कार होते रहे हैं।

नेहरू जी ने यद्यपि यह घोषित किया है कि उनको विश्वास है कि यह निर्णय सही है, तथापि हम स्पष्टता पूछना चाहते हैं कि क्या हमें ज्ञात नहीं है कि मास्को-सम्मेलन के निर्णय और सानफ्रांसिस्को-अधिकारपत्र के द्वारा 'पाँच बड़ों' को यह अधिकार प्राप्त हो गया था कि अमेरिका, सोवियट रूस, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस तथा चीन में से कोई एक आक्रमणकारी के विरुद्ध की जानेवाली कार्रवाई रोक सकता है, चाहे वह स्वयं ही क्यों न आक्रमणकारी हो। इस 'नकारात्मक मत' की प्राप्ति के लिए रूस ने आग्रह किया था। चीन भुक्तभोगी था, उसने उसका खुलकर विरोध किया था। ब्रिटेन ने इसके सम्बन्ध में तटस्थ भाव ग्रहण कर लिया था और अमेरिका ने भी इस अधिकार की आवश्यकता का अनुभव किया था। क्या इतने पर भी भारत उन राष्ट्रों की सिद्धान्तवादिता एवं न्याय-परायणता पर विश्वास करता है। यदि इसका उत्तर है 'हाँ' तो हमें विवश होकर कहना पड़ेगा कि भारत को अभी और भी बुरे दिन देखने हैं।

आज भारतीय स्थिति क्या है? अब भारत दो हो गया, उसमें हिन्दू और मुस्लिम दो राष्ट्र हो गए? कल तक कांग्रेस देश के सब मनुष्यों की ओर से बोलने का दावा कर सकती थी, किन्तु आज श्री नेहरू और सरदार पटेल को यह अधिकार नहीं रह गया कि वे मुसलमानों की ओर से बोलें। अब श्री जयप्रकाशनारायण मुसलमानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यह नहीं कह सकते "यद्यपि मेरा जन्म हिन्दू-घर में हुआ है.....।"

वस्तुतः आज इन लोगों के राष्ट्रीय विचारों का मूल्य केवल व्यक्तिगत विश्वास के रूप में शेष रह गया है; अब उसका राजनैतिक या आध्यात्मिक महत्त्व 'खंडित भारत' के लिए कुछ भी नहीं रह गया है; यह एक भयंकर सत्य है। यदि ये इस सत्य का अनुभव नहीं करते तो कहना पड़ेगा कि उन्होंने 'खंडित भारत' को बिना समझे-बूझे अंगीकार कर लिया है। यह बात परिस्थिति-विरुद्ध और उसी प्रकार की होगी, जिसके लिए वे अभी तक सनातनधर्मी, अथवा हिन्दू-महासभाई कहकर दूसरों की हँसी उड़ाते और उनके राष्ट्रीय विचारों को ढोंग बताते आए हैं। 'अखंड भारत' की बात कहनेवालों के लिए हिन्दू-भारत की जेलें खुल गई हैं। क्या यह इतिहास की अभूतपूर्व घटना नहीं है कि आज अखंड भारत के लिए जड़तावादी संत-महात्मा तक मरने के लिए तैयार हो जाएँ और वे, जो पहले से तैयार खड़े थे, पीछे हट जाएँ! विभाजन-योजना को स्वीकार करने का प्रथम फल यह हुआ है कि आज वे लोग भी, जो कल तक कांग्रेस के इशारे पर जान देने को तैयार थे, उससे विमुख हो रहे हैं और यत्र-तत्र कहते फिर रहे हैं कि अब कांग्रेस को हिन्दू-भारत का शासन-प्रबन्ध हिन्दू-महासभा के नेताओं को सौंपकर स्वयं संन्यास ले लेना चाहिए। हो सकता है कि उनकी यह आवाज अभी दबी हुई है, पर वह समय दूर नहीं जान पड़ता जब यह प्रबल रूप ग्रहण कर लेगी।

हिटलर मर गया, पर उसके पास एक सिद्धान्त था। जापान पराजित हो गया; उसका भी एक अपना सिद्धान्त था। इंगलैंड और अमेरिका के पास भी अपने-अपने मूलभूत सिद्धान्त हैं। जिन्ना साहब ने भी अपना एक सिद्धान्त बना लिया है, जिससे वे इंच भर भी इधर-उधर जाने को तैयार नहीं हुए और उनके उस सिद्धान्त की अन्ततोगत्वा विजय भी हुई। पर कांग्रेस? उसने देश की पूर्ण स्वाधीनता को अपना सिद्धान्त बनाया, अहिंसा और सत्य के आधार पर! अहिंसा कितनी सफल हुई, यह पिटनेवाले हिन्दू अच्छी तरह जानते हैं। भविष्य में भी सर्वथा उसी के आधार पर हिन्दुओं की रक्षा हो सकेगी, इसका विश्वास हिन्दुओं को नहीं रहा है। कांग्रेस के चोटी के नेताओं में से भी कुछ इस सत्य का अनुभव कर रहे हैं। माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन अपने गत अनेक भाषणों में कह चुके हैं कि 'अहिंसा सर्वत्र उपयोगी नहीं हो सकती। अपनी रक्षा के लिए अस्त्र न उठाना अधर्म है।' हिन्दुओं में सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने के लिए वे 'हिन्दू-रक्षक स्वयंसेवक दल' के संगठन पर भी जोर दे रहे हैं। इस प्रकार कांग्रेस का सिद्धान्त डगमगा रहा है। वह पूर्ण स्वराज्य से औपनिवेशिक स्वराज्य पर आ गई, अखण्ड भारत से विभक्त भारत पर आ गई और आगे क्या करेगी, कहा नहीं जा सकता। यदि उसकी तुष्टीकरण की नीति वर्तमान रही तो जिन्ना साहब की बढ़ती माँगें कहाँ जाकर रुकेंगी, यह कौन कह सकता है!

शासन-सत्ता के अन्तिम रूप के हस्तान्तरित होने के पूर्व जो अनेक प्रश्न उठेंगे, वे यदि किसी प्रकार हल भी हो जाएँ तब भी पाकिस्तान के बादशाह जिन्ना के हिटलरी रुख को देखते हुए यह सम्भव नहीं कि वे भविष्य में राज्य-प्रसार की चेष्टा न करें। यदि उन्होंने ऐसा किया तो खंडित भारत के 'हिन्दुस्तान' के अन्दर रहनेवाले मुसलमान, डेंजिग के नाजी निवासियों के समान पाँचवें दल का स्थान न ग्रहण कर लें, यह समस्या 'हिन्दू-भारत' को पहले ही सुलझानी होगी। अन्ताराष्ट्रीय स्थिति बिगड़ने के समय यदि पाकिस्तान दूसरे गुट में चला जाए, तो 'हिन्दुस्तान' को भारी खतरा उत्पन्न हो जाएगा। 'हिन्दुस्तान' को इस दृष्टि से भी पहले से ही अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध कर रखना होगा। यदि कांग्रेसी सरकारें आगे भी तुष्टीकरण की नीति को अपनाए रहीं तो 'हिन्दुस्तान' कभी शक्तिशाली और समृद्धिवान् न बन सकेगा। 'हिन्दू-भारत' में अनिवार्य सैनिक-शिक्षा और वयस्क-मताधिकार के साथ-साथ आन्तरिक सफाई का काम भी करना होगा। इसके लिए यह अनिवार्य है कि हिन्दुस्तानी भाग की सरकारें अब सब्ज बाग देखना स्थगित कर दें और वस्तुस्थिति को ध्यान में रखती हुई कार्य करें। सरकारी विभागों में भी अब योग्यता को कसौटी पर रक्खा जाए और किसी सम्प्रदाय-विशेष को पहलू देने की नीति का सर्वथा त्याग कर दिया जाए। जहाँ 'पाकिस्तान' है, वहाँ 'राष्ट्रीयता' कैसी? जहाँ गैर मुसलमानों के विरुद्ध अन्ताराष्ट्रीय मुस्लिम मोर्चा स्थापित होने जा रहा है, वहाँ यह कालनिद्रा कैसी? जहाँ 'धर्म' को प्रधानता नहीं प्राप्त है, वहाँ विशेष 'धार्मिक अधिकारों' की बात कैसी? 'धर्म' जो नहीं मानते, वे 'धर्म-परिवर्तन' क्यों मानते हैं? अब सरकार को शीघ्र ही एक ऐसा कानून बना देना चाहिए, जिससे "हिन्दुओं की जन-संख्या पर धार्मिक आक्रमण बन्द हो जाएँ, सब हिन्दू जन्मतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू माने जाएँ और ईसाइयों के प्रचार, मुसलमानों की धमकियों तथा कांग्रेस की 'धर्महीनता' का भय हिन्दुओं के हृदय से मिट जाए। तब जनाब जिन्ना के अनुयायी ४० करोड़ भारतीय जन-संख्या को इस्लाम ग्रहण करने का तो उपदेश न दे सकेंगे। पाकिस्तान के निर्माण ने यह आवश्यक कर दिया है कि 'हिन्दुस्तान' की पुलिस, फौज तथा दूसरे विभागों का पूर्ण शुद्धीकरण हो जाए, जिससे समय पड़ने पर धोखा न हो। साथ ही हिन्दुस्तान से अब अनेक ऐसी प्रथाओं का भी अन्त करना होगा, जो ब्रिटिश सरकार के समय में ही चालू की गई हैं। उदाहरणार्थ; मसजिदों के सामने बाजा बजने पर पाकिस्तान में प्रतिबन्ध रहे, यही बहुत है, 'हिन्दुस्तान' में उसकी आवश्यकता अब नहीं होनी चाहिए। गाय मारने के तरीके इस्लामी हैं या गैर इस्लामी, यह बहस कराँची में होती रहे, हिन्दुस्तान इस पर अब दृष्टिपात भी नहीं करना चाहेगा। हिन्दुस्तान के निवासी भविष्य में यह नहीं पसन्द करेंगे कि एक ओर तो 'गो-बध' को साम्प्रदायिक अधिकार बतलाकर उसकी वकालत की जाए और दूसरी ओर धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टियों से 'हिन्दू-भारत' का सत्यानाश होता रहे और उसके विषय में बोलनेवालों एवं प्रदर्शन करनेवालों को जेलों में डाल दिया जाए।

इस प्रकार बदलती विचार-धाराएँ और आवश्यकताएँ 'हिन्दू-भारत' को गहन विचार करने के लिए विवश कर रही हैं। अखंड भारत के साथ-साथ कांग्रेस के मूल सिद्धान्तों का भी अन्त हो चुका है। गांधी जी के इस कथन का प्रत्येक व्यक्ति स्वागत करता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भविष्य में एक हो जाएँगे, परन्तु आज हिन्दुस्तान का प्रत्येक नागरिक यह अनुभव कर रहा है कि जब तक भारत फिर एक नहीं हो जाता तब तक कांग्रेस के लिए यह कभी उचित नहीं कहा जा सकता कि वह अपनी पुरानी नीति पर ही अमल करती रहे। उसे हिन्दुस्तान में शासन-प्रबन्ध चलाते हुए अपनी पुरानी नीति का बहुत कुछ परित्याग करना होगा। बहुमत के ऊपर अल्पमत को लादना अब उचित नहीं कहा जा सकता। अल्पमतवाले केवल इसीलिए पहल पाते रहें, क्योंकि वे अल्पमत में हैं और उन्हें सुरक्षा की विशेष आवश्यकता है, तो यह बहुमत के साथ स्पष्ट अन्याय होगा।

आज लाखों 'अबोध' नागरिक एक दूसरे से पूछ रहे हैं—"भारत दो भागों में क्यों बँटे? मुसलमान क्यों यह कहते हैं? उनके कहने से ही उसे मान लिया जाए, यह क्यों?" और ये प्रश्न एक-न-एक दिन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को एक अवश्य कर देंगे; परन्तु वह अहिंसक मार्ग न होगा, वह हिटलर का पदानुसरण होगा। एक समान शत्रु से लड़ने के लिए कई राष्ट्र एक हो जाते हैं, परन्तु जब वे शान्तिकाल में होते हैं तब प्रत्येक अलग मार्ग पर जाता है। भारत खंडित हो गया, केवल इसलिए कि ब्रिटेन की सार्वभौम सत्ता है। भारत पुनः एक हो सकता है, यदि उसमें शक्ति आ जाए। लीगी निर्णय के पीछे ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता का बल है। कांग्रेस ने उसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि वह उस सत्ता के नाश के लिए बल-संग्रह करना चाहती है और उसके सामने विवशता है। अब उसे उस बल का नाश यदि नहीं करना है, यदि वह चाहती है कि ४० करोड़ भारतीय एक साथ नहीं रह सके, तो ३० करोड़ तो एक साथ रहें तो उसे अपनी शासन-नीति में आवश्यक परिवर्तन करना होगा।

खंडित भारत किस ओर जाएगा, 'हिन्दू-भारत' में कैसी नीति व्यवहृत की जाएगी, वहाँ कैसी शासन-सत्ता काम करेगी, इसी बात पर अखंड भारत का भविष्य निर्भर है और उसके साथ लोकतंत्री सरकार का भविष्य भी निर्भर है। हमें देखना है कि १५ अगस्त, १९४७ तक भारत की दो सरकारों के रूप में, जो शासन-सत्ता हस्तान्तरित की जानेवाली है, उसमें लीग के अतिरिक्त दूसरी कौन पार्टी आगे बढ़कर शासन ग्रहण करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मजहब

श्री पद्मकांत त्रिपाठी

'थोड़ा भात और दो, पंडित !'

हम लोगों ने पीछे मुड़कर आश्चर्य से देखा। आश्चर्य होने के दो कारण थे, बल्कि कहा जाए कि तीन। पहला तो यह कि उस मेस में ज्यादातर हमीं पंजाबी लोग थे, जो कि भात बहुत ही कम, कहा जाए, जायका बदलने के लिए ही खाते थे। इसीलिए पंडित (रसोइया) बनाता भी बहुत कम था। दूसरे उस फौजी मेस में चावल इतना खराब दिया जाता था कि उसे वही खा सकता था जो कि अपने दाँतों से कंकड़ तोड़ने की हिम्मत रखता हो। आखिर मिलिटरी मेस था न, शायद इसी तरह से कंकड़ चबाने की ट्रेनिंग हम लोगों को दी जाती थी। तीसरे, एक ही बार में हम लोगों को इतना खाना परोस दिया जाता था कि फिर पुनर्याचना की आवश्यकता न पड़ती थी।

तो फिर जब हमारे कानों में आवाज पड़ी, "थोड़ा भात और, पंडित", तो फिर इन तीनों कारणों ने और माँगनेवाले की एक अजीब-सी ध्वनि ने हमें मुड़कर पीछे देखने के लिए विवश किया कि यह नया शिकार कौन आया है। किसी नवीन आगन्तुक को हम लोग शिकार के नाम से पुकारते थे--शिकार तो वह होता ही था। भिन्न-भिन्न तरीकों से रिक्रूटिंग अफसर किसी नवयुवक को अच्छा वेतन, अच्छा भोजन और अच्छे कपड़ों का प्रलोभन देकर फँसा कर लाते थे। उस शिकार का वध होना न होना उसके भाग्य की बात थी। हाँ, तो हमने देखा कि भात का यह ग्राहक एक नवयुवक है। उम्र लगभग २० वर्ष की रही होगी। बहुत जरा सी दाढ़ी और मूँछें आई थीं। शरीर स्थूल था और चेहरे से काफी भोला-भाला बल्कि शर्मीला-सा दिखता था। जब हम लोगों ने पीछे उसकी ओर देखा था तो, मुझे आज भी तीन वर्षों के बाद यह याद बनी है कि, वह शर्मा गया था और उसकी आँखें हँस पड़ी थीं। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह बंगाल से आ रहा है, नोआखाली का रहनेवाला है और उसी दिन आया है।

खाने के बाद जब मैं कैम्प में लौटकर आया तो मेरी खाट के पास ही एक दूसरी नई खाट पड़ी थी, जिस पर सामान बिखरा था। अर्दली ने बताया कि यह सब नए आए हुए बंगाली बाबू का है। मैंने उस समय इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। किन्तु कौन जानता था कि किसी दिन वह न केवल मेरा एक घनिष्ठ मित्र हो जाएगा, मुझे उस पर एक कहानी भी लिखनी पड़ेगी। आज उस चीज को बीते तीन वर्ष हो चुके हैं, मैं उसे भूलता भी जा रहा था किन्तु कल ही दुबे ने उसके बारे में सुनाया। ओफ! इतना दुःखपूर्ण अन्त!

* * * *

मैं शुरू से ही कहूँगा!

जून १९४३ की बात है। हम लोग, करीब १ दर्जन व्यक्ति एक कैम्प में लखनऊ शहर के बाहर तोपखाने में रहते थे। हम लोग फौज की नौकरी में थे, सभी ग्रेजुएट थे। काम केमिकल लेबोरेटरी में था। लखनऊ में हम ट्रेनिंग ले रहे थे। इसी समय यह नया बंगाली नवयुवक हमारे साथ आया। बंगालियों से मुझे कुछ विशेष प्रेम है। मैं बंगाली जबान भी जानता हूँ, टूटी-फूटी। लेकिन उस पर तो रोब गालिब करना जरूरी था। रात को मैंने उससे पूछा--

"आपनार की नाम, मोशाय?"

"शचीन घोष।" उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

मुझे उम्मीद थी कि वह मेरा नाम भी पूछेगा। किन्तु उसने न पूछा। शायद शर्मा रहा हो। लेकिन जाहिर है कि बातचीत वह बहुत कम करना पसन्द करता था। पर मैं अपनी वाणी पर रोक क्यों लगाता? और, मुझे जो कुछ भी शरद बाबू और टैगोर के सम्बन्ध में ज्ञात था, वह सब बोल दिया। उसकी मुखाकृति से ज्ञात होता था कि उसे यह सब पसन्द था। मतलब यह कि चन्द दिनों में वह मेरा अच्छा-खासा दोस्त बन गया।

एक दिन मैंने देखा कि वह किसी काम के लिए चन्दा माँग रहा है। मैं जरा परेशान-सा हुआ। इन कम्बख्त बंगालियों को चन्दा जमा करने का बड़ा शौक होता है, मैंने सोचा। वह मुझसे भी शायद कुछ माँगनेवाला था, लेकिन मैंने तो सोच लिया था कि मैं कुछ भी न दूँगा। बंगाल के अकाल के लिए मैं काफी दे चुका था। लेकिन घोष दा क्यों मानने लगे (हम लोग अब उन्हें घोष,दा कहने लगे थे)। बोले--

"किछु दाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या बूँ?" मैंने बनावटी क्रोध से कहा, "यह सब क्या लगा रखा है, किसके लिए तुम माँगते हो?"

"मुलुक में एक लड़की है। उसका माँ-बाप कोई नहीं। ऊ लोग शोब अकाल में मर गया।"

"अच्छा यह बात है। लड़की जवान है न? क्यों घोष दा! बड़े बने हुए हो। उससे शादी करना चाहते हो न?"

"शिः शिः ऐसा न बोलो! वह तो मुसलमान है।"

"मुसलमान!" मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। यद्यपि अब मैं अनुभव करता हूँ कि आखिर उसमें ताज्जुब की बात ही क्या थी? एक बंगाली हिन्दू जवान मुसलमान लड़की के लिए चन्दा माँगे तो उसमें आश्चर्य ही क्या है। मुझे पंडितराज जगन्नाथ याद आ गए—"यवनी नवनीत कोमलांगी।"

पैसा तो उस समय हाथ में था नहीं, किन्तु घोष दा से वायदा कर दिया कि तनख्वाह मिलते ही एक रुपया दे बूँगा।

बाद को उसी रात को जब सब लोग सो गए, तब मैंने घोष दा से पूछा—"घोष दा! यह माजरा क्या है? जरा साफ-साफ बताओ न?"

"अरे कुछ नहीं! ऐसा कोई बरा बात नहीं है। अभी तीन महीना हुआ तो हम कालेज से आ रहा था। रास्ता में हमको एक बूढ़ी ने पुकारा। वह हमारे कमरे के पास खड़ी थी। हमको बोली—"कुछ खाने को दो।" उसके साथ उसकी जवान लड़की भी थी। मेरे पास कुछ था तो नहीं किन्तु उस लड़की को देखकर इनकार करने की तबियत भी न होती थी। मैं उसे अपने कमरे में ले गया। मेरे पास कुछ विस्किट थे। मैंने बुड्ढी को विस्किट खाने को दिए। लेकिन न मालूम क्या हुआ कि बुढ़िया विस्किट लेते ही जमीन पर गिर गई। उसके प्रान निकल चुके थे। उस लड़की ने बड़ी जोर से रोना शुरू कर दिया। मैंने उसको चुप करवाया। लाश को ठिकाने लगवाया। लेकिन वह लड़की! वह बला तो मेरे सिर पड़ गई। मैं तीन महीने उसी के साथ रहा। हमारे घर की हालत खराब है। आगे पढ़ना मेरे लिए मुश्किल है। इसलिए यहाँ आकर फौज में भर्ती हो गया। वह लड़की अभी वहीं है, मेरे कमरे में। उसी के लिए चंदा माँगता हूँ।"

"हूँ! तो मामला यह है। जरा माजरा तो संगीन-सा है।"

घोष दा शर्मा गए। बोले—"शिः तुम हमारी हँसी करता है।"

"नहीं, नहीं, घोष दा।" मैंने कहा, "मैं तो केवल एक अटल सत्य कह रहा था। अच्छा यह बताओ तुम उस लड़की से प्रेम करते हो?"

"हाँ।"

"तुम उससे शादी कर सकते हो?"

"कर सकते हो! अरे भाई जोरूर! मैं केवल उसी से शादी करूँगा।" घोष दा ने दृढ़ता के स्वर में कहा।

"लेकिन तुम तो हिन्दू हो और वह मुसलमान। तुम्हारे घरवाले इस सम्बन्ध में क्या कहेंगे? उन्हें तो यह सम्बन्ध पसन्द आएगा नहीं।"

"मैं घरवालों की परवाह नहीं करता। और, हिन्दू मुसलमान में क्या? यह हमारी समझ में नहीं आता। वह भी बंगाली बोलती है और मैं भी वही भाषा बोलता हूँ। न वह उर्दू जानती है और न मैं हिन्दी।" यहाँ घोष दा कुछ रुक गए। थोड़ी देर बाद फिर बोले, "और फिर हम हिन्दू किस बात का है? मैं मुसलमान के होटल में भी खाता हूँ और मैं क्या, तुम सभी लोग भी तो ऐसा करते हो। देखो न! तुम सभी अनवर के हाथ का छुआ पानी पीते हो कि नहीं? तो फिर हिन्दू मुसलमान में रह क्या गया?"

"लेकिन घोष दा।" मैंने कहा, "खाने-पीने से ही तो मजहब मिट नहीं जाता। मजहब तो एक बहुत बड़ी और गहरी चीज है।"

"महजब, मजहब, काहे का मजहब। हम तो कभी वेद-मंत्र और संध्या पढ़ता-करता नहीं और न तुम लोग करते हो। अनवर को भी कभी मैंने कुरान पढ़ते नहीं देखा। फिर मजहब किस बात में रह गया? खाली नाम में और बातचीत करने में? हुश, हमें मजहब की कोई जरूरत नहीं। बिना इसके हमारा काम बड़ी खुशी से चल जाएगा चल जाएगा।"

घोष बाबू बात तो ठीक कह रहे थे। मुझे पसन्द भी आई, किन्तु न मालूम क्यों दिल एकाएक इन सब बातों को मानने के लिए तैयार न हो सका। शायद यह प्रभाव था, उन युग-युग के संस्कारों का जो कि मेरे रक्त में मिलकर एक हो गए हैं।

घोष दा ने उसका नाम भी बताया, 'कासनी'। और इस प्रकार कासनी को लेकर घोष बाबू को परेशान करते हुए पूरे १५२ दिन याने ५ महीने बीत गए। लखनऊ की गर्मी से छुटकारा मिला। अब नवम्बर का महीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया था। हम लोगों की ट्रेनिंग भी खत्म हो गई थी। हम इन्तजार कर रहे थे अपनी पोस्टिंग के लिए। सभी चाहते थे कि उनकी पोस्टिंग उनके घरों के पास हो। और घोष दा को भी कलकत्ता ही अधिक पसन्द आया। कासनी का ध्यान तो उन्हें था ही।

* * *

लेकिन, उस दिन हम सब लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ जब कि हमारी और घोष दा की पोस्टिंग का आर्डर आया। हम दोनों को एक ही साथ, एक ही जगह, रावलपिंडी में नियुक्त किया गया था। मैं तो खैर, बहुत ही खुश था, किन्तु घोष दा का हाल कुछ दूसरा ही था। लेकिन यह फौज थी। आखिर में हम लोग ५ नवम्बर को रावलपिंडी जा पहुँचे। घोष दा और हम साथ-ही-साथ रहने लगे। घोष के साथ दिन बड़े मजे में कट जाता था। इन दिनों मुझे घोष को और अधिक जानने का अवसर मिला। घोष दरअसल एक बहुत सीधा और भोला-भाला आदमी था। दुनिया के दाँव-पेचों से शायद उसे कोई मतलब ही न था, उन्हें जानता भी न था। कालेज का ग्रेजुएट होने के बाद भी बहुत-सी छोटी-छोटी आधुनिक बातों से उसका कोई परिचय ही न था। लेकिन आदमी वह शरीफ था, बिलाशक, बहुत शरीफ।

उस लड़की के पत्र अकसर घोष के पास आया करते थे। मौका बचाकर वह उन पत्रों को कई बार पढ़ा करता। जिस दिन उसे खत मिलता, बड़ा खुश रहता। चुराकर एक-दो खत तो मैंने भी पढ़ लिए थे। सीधी-सादी बंगाली में अकसर प्रेम की परिभाषा रहती, घोष की अनुपस्थिति में दिन न कटने की शिकायत रहती, उसकी प्रतीक्षा में श्वासों में क्षण और पलकों में पल गिने जा रहे हैं—इसकी सूचना रहती और कभी-कभी रवीन्द्र बाबू की कविता की एक-आध लाइन भी रहती। उपयोग तो टैगोर की कविता का ठीक ही हो रहा था। घोष बाबू भी अकसर गाया करते थे। प्रायः उनके मुख से ये लाइनें सुनाई देती थीं—

बांगलार बधू! तुके तार मधू, नयने नीरब भाषा।
केनो सीता सती तार पोराने गोपोनो केनो छ बाशा।

(ओ वंग देश की वधू! तेरे वक्षस्थल में मधु (मिठास) है, और नेत्रों में निःशब्द भाषा। तेरे प्राणों में कितनी ही सीता के सदृश सतियाँ गुप्त रूप से निवास करती हैं।)

हम लोगों को यहाँ से ६ महीने के पश्चात् छुट्टी मिलने-वाली थी—एक माह की। मैं तो खैर, बड़े मजे में दिन काट रहा था, लेकिन घोष बाबू? वे बिचारे परेशान थे। इसी समय एक घटना हुई। मेरा और अँगरेज कैप्टेन का एक दिन जरा झगड़ा हो गया। उसने अपनी सफेदी की उच्चता का घमंड जनाना चाहा, जिसे मैंने मानने से इनकार कर दिया। मामला काफी आगे बढ़ा, दर्जनों उलझने आईं। और यदि एक बड़े लंबे किस्से को संक्षिप्त करके कहा जाए तो यह कहा जा सकता है कि मुझे फौज की नौकरी छोड़ देनी पड़ी। एक ठंडी साँस ली—जान बची लाखों पाए। मुझे दुःख न था।

किन्तु एक बात का मुझे दुःख अवश्य हुआ और वह था घोष दा से बिछुड़ने का। घोष दा न केवल मेरी बंगाली के गुरु थे, किन्तु समय-समय पर उन्होंने 'प्रेमपंथ' की जो शिक्षा दी थी, वह भी भूली नहीं जा सकती। यद्यपि बहुत महत्त्व की वह न थी। घोष दा ने कहा—"मेरी भी तबियत है कि यह नौकरी छोड़ दूँ।" वास्तव में इस घटना से घोष दा को बहुत दुःख हुआ था, वे यह नहीं देख सकते थे कि मुझे सिर्फ इसलिए नौकरी से निकाला जाए, क्योंकि मैंने एक अँगरेज अफसर की उद्दंडता का प्रतिकार करने का साहस किया था। किन्तु घोष के साथ उनकी अपनी कमजोरियाँ थीं। "मालूम नहीं, मुझे दूसरी नौकरी मिल सकेगी या नहीं, फिर कासनी का भी तो भार मुझ पर है," वे कहा करते। उनकी अभिलाषा थी कि वे लड़ाई के बाद सबइंस्पेक्टर हो सकें और यह महत्त्वाकांक्षा पूरी होगी, ऐसी आशा भी थी।

हिटलर की भाँति मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैं जीवन में केवल दो बार रोया हूँ, किन्तु यह मैं जानता हूँ कि मैं भावुक नहीं हूँ। इसीलिए अपनी आँखों में मोती पाने का सौभाग्य मुझे बहुत ही कम प्राप्त होता है। लेकिन घोष दा से बिछुड़ते हुए मैं अपनी भावुकता को रोक न सका। और आँसू के रूप में इसने बहने का नाम लिया तो फिर मुश्किल ही से रुकी। घोष ने चलते वक्त मुझसे कहा :—

"मैं तुम्हें अपनी शादी में जोरूर बुलाऊँगा। तुम आना जोरूर, बेश।"

मैंने शरारत के स्वर में कहा—"अपनी शादी में या कासनी की।" घोष हँस पड़ा। "घोष दा!" मैंने कहा, "इस शादी को मेरा पूर्ण समर्थन प्राप्त होगा। तुम मुझे लिखना, मैं जरूर आऊँगा।"

और मैंने उनसे बिदा ली। उस क्षण यह तो कल्पना भी न थी कि घोष दा से आज अंतिम बार बिदा ले रहा हूँ।

* * * *

अभी चार माह पूर्व ही मुझे उसका निमंत्रण-पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला था। निमंत्रण-पत्र के ऊपर लिखा था—'जय हिंद'। साथ में घोष का एक लंबा-सा हस्तलिखित पत्र भी था।

'तुम आना जरूर,' इस वाक्य को कई बार लिखा गया था। किन्तु नौकरी मेरा रास्ता रोक रही थी। मैं न जा सका। तार से नवदंपति को बधाई का संदेश भेज दिया।

इसके बाद घोष बाबू का कोई पत्र प्राप्त न हुआ। कोई समाचार भी न मिला। मुझे लगा, जैसे घोष दा नाराज हो गए हों। मैंने कई बार उसके नाराज चेहरे की कल्पना की, किन्तु कुछ ठीक तसवीर आई नहीं। क्योंकि घोष कभी नाराज हुए ही न थे।

कल जब उस हँसते हुए चेहरे के बारे में दुबे ने समाचार सुनाया तो लगा कि यदि वह समाचार न मिलता तो ठीक था।

समाचार घोष बाबू की मृत्यु का था।

एक दार्शनिक की तरह कहा जा सकता है कि मृत्यु तो सभी की होती है, इसमें दुःख करने की बात ही क्या है? ठीक है, और आश्चर्य यह है कि मुझे घोष बाबू की मृत्यु से दुःख नहीं हुआ, किन्तु जिस तरह से, जिस कारण से उनकी मृत्यु हुई है, उससे मुझे एक बड़ा सदमा पहुँचा है। जीवन भर यह न भूल सकेगा।

दुबे ने बताया कि नोआखाली में एक दिन मजहब के नाम पर कुछ पागलों, गुमराहों और अत्याचारी मनोवृत्ति के लोगों ने जो भीषण, इतिहास में अतुलनीय, रक्तपात प्रारम्भ किया उसका शिकार घोष भी हुआ। घोष पर दूसरे फिरके के लोग चिढ़े तो थे ही, क्योंकि उसने मुसलमान लड़की से शादी की थी। इस मौके को वे कैसे हाथ से जाने देते। 'कायदे आजम' के नाम पर उन्होंने घोष की बलि चढ़ा दी। बेचारा घोष!

और कासनी! उसे वे लोग जबरदस्ती ले गए और एक बूढ़े मुसलमान के साथ उसकी शादी कर दी।

सुनते हैं, कासिनी बहुत रोई, बहुत। किन्तु उसके तमाम आँसुओं के उत्तरस्वरूप उसके नए वृद्ध पति ने कहा—"ओफ ओह! ये आँसू क्यों ढरका रही है? उस अपने खसम के लिए। काफिर से शादी करने गई थी, साली? ले अब चख मजा उसका।" यह कहकर उसने दो-चार कोड़े उसकी पीठ पर रसीद किए।

लेकिन यह बात तो छोटी है। पुरुष स्त्री पर अत्याचार करते ही आए हैं, शायद यह उनका अधिकार हो गया है। न मालूम इसे अब तक कानून क्यों नहीं बना दिया गया?

लेकिन मैं सोच रहा हूँ—घोष की हत्या क्यों? उसका तो कोई मजहब ही न था।

वेद-विषय में भारी भूल

श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री सास्वत, विद्यावागीश,
विद्याभूषण, विद्यानिधि

वेद को कोई परमात्म-प्रणीत मानता हो वा न मानता हो, पर वेद के लिए श्रद्धा सबके हृदय में है। सभी सम्प्रदाय वेद से अपना पक्ष सिद्ध करके उसे प्रामाणिक समझ लिया करते हैं। सनातनधर्म तथा आर्यसमाज दोनों का वेद आधार-ग्रन्थ है। पर आज वेद-विषय में भारी भूल की जा रही है। 'ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद', इस नाम से मिलनेवाली चार पुस्तकों को ही केवल आज 'चार वेद' बताया जा रहा है, तथा समझा जा रहा है। आर्यसमाजी तथा सनातनधर्मी दोनों ही में यह भारी भ्रम विद्यमान है। जब कि वेद को अपना आधारभूत माननेवाली प्रमुख संस्थाओं की यह दशा है, तब तटस्थों को यह भ्रम न रहे—यह अस्वाभाविक बात है। आज उसी भ्रम को दूर करने के लिए हमने सार्वदेशिक 'सरस्वती' की शरण ली है; आशा है, यह 'सरस्वती' उक्त अज्ञान रोग को हटाने में 'रामबाण ओषधि' सिद्ध होगी।

वेद-श्रद्धालु लोग पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, यास्क आदियों को प्रसिद्ध वेदज्ञ तथा अत्यन्त प्रामाणिक स्वीकार करते हैं। तब वेद-विषय में इनकी सम्मति सुतरां ग्राह्य सिद्ध होगी। उक्त व्यक्ति सनातनधर्मी तथा आर्यसमाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

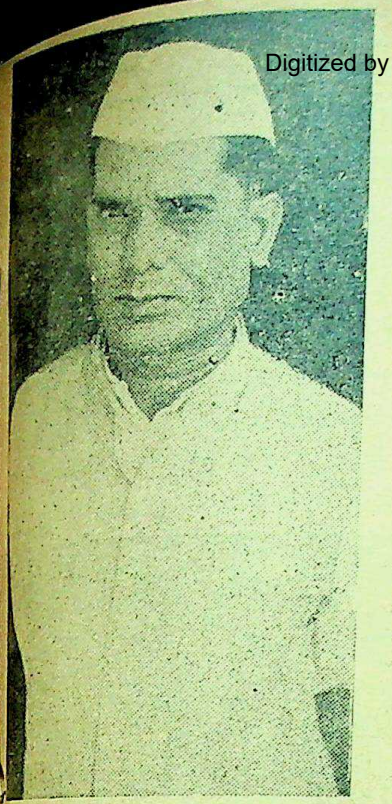

समाजवादी नेतृत्व

भारत के समाजवादियों के नेता श्री जयप्रकाशनारायण ने पिछले दिनों घोषित किया है कि वे तथा उनके साथी पण्डित जवाहरलाल नेहरू की सरकार के साथ हैं !

दाहनी ओर—समाजवादी दल के उत्साही नेता श्री राममनोहर लोहिया श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय के साथ।

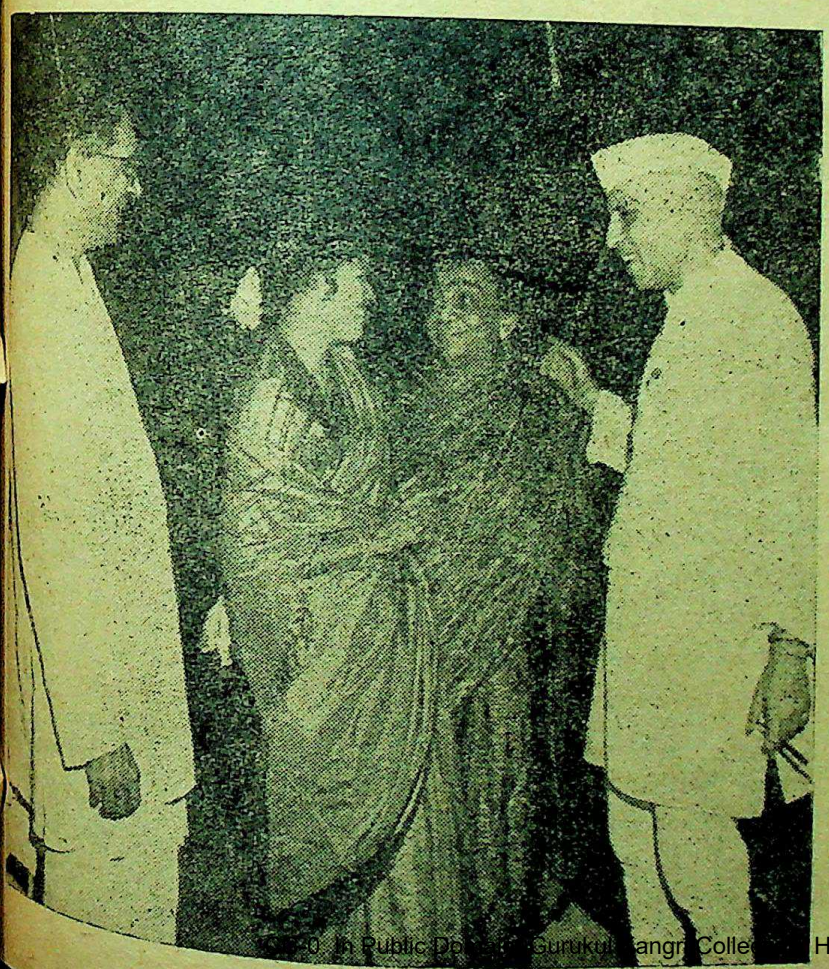

प्रसन्न मुद्रा में

माननीय पण्डित जवाहरलाल नेह
और भारतकोकिला श्रीमती सरोजनी नाय
दक्षिण भारत की प्रसिद्ध-अभिनेत्री श्रीम
सुब्बालक्ष्मी से बातें करती हुईं।

CC-0. In Public Do... Gurukul Kangri Colle... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरतपुर में प्राप्त कुछ प्राचीन मूर्तियाँ

[भरतपुर स्टेट म्यूजियम के अध्यक्ष तथा मंत्री श्री
चतुर्भुजदास चतुर्वेदी की कृपा से प्राप्त।]

जैनमत के प्रमुख देवता श्री पार्श्वनाथ की बैठी हुई
यह लाल पत्थर की है और वि० सं० ११०६ की बनी हुई है।

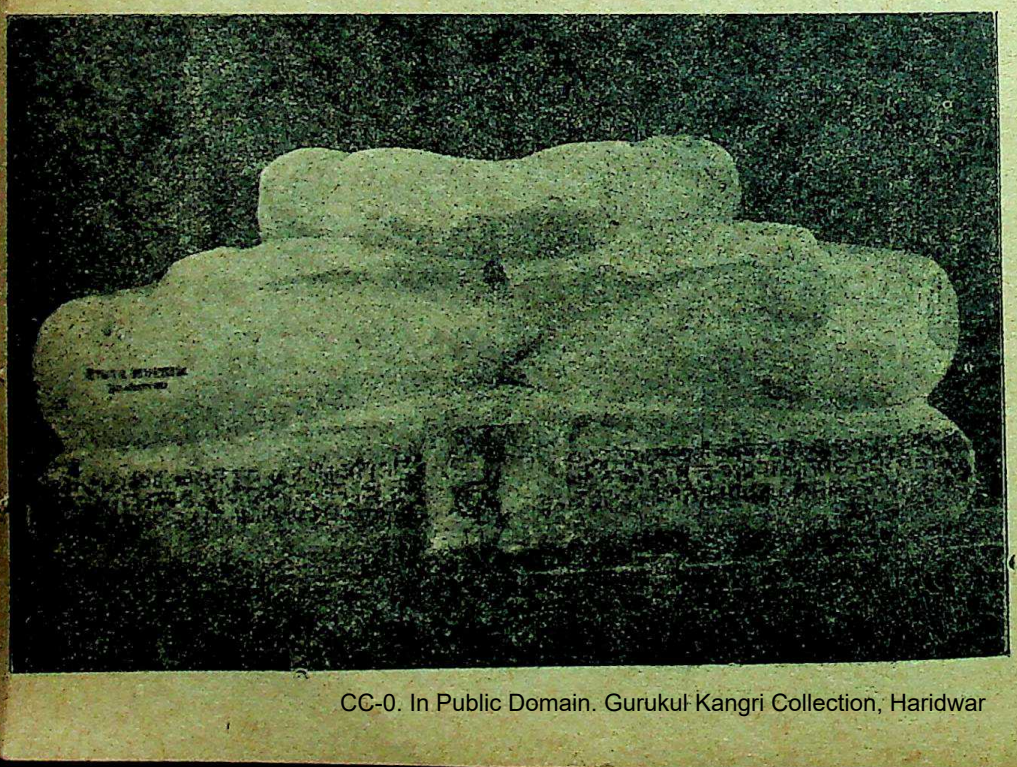

ऊपर—विभिन्न स्थानों
प्राप्त मूर्तियाँ। इनमें से
कुशनकाल की हैं और शेष
काल की हैं।

बाईं ओर—श्री
की एक अन्य खंडित
इसका ऊपरी धड़ का, भाग
है। यह मूर्ति सफेद
की बनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी सज्जनों को समानरूप से प्रामाणिक इष्ट हैं। उसमें आर्यसमाज अपने आचार्य स्वा० दयानन्द जी को प्रामाणिक कोटि में मानता है। आज हम इनके अनुसार वेदस्वरूप निरूपण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

हम इस निबन्ध में यह सिद्ध करेंगे कि--आजकल मिलनेवाले 'ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद' यही केवल चार वेद नहीं हैं, किन्तु ये चारों वेदों की एक-एक संहिता हैं; चारों वेद तो ११३१ संहिताओं, इतने ही ब्राह्मणग्रन्थों तथा इतने ही उपनिषद् एवम् अरण्यकों में जाकर परिनिष्ठित होते हैं। पर आर्यसमाजी विद्वान् तथा अन्य भी यह मानते हैं कि--आजकल मिलनेवाले 'ऋग्वेद' आदि चार ग्रन्थ चार वेद हैं। ये पूर्ण हैं। न इनमें कुछ न्यूनता है, न प्रक्षिप्तता है। अस्तु, इस मत की सत्यता वा असत्यता अन्तिम अनुसन्धान से स्वयं सिद्ध हो जाएगी।

वेद-विषय में वास्तविकता यह है कि--११३१ संहिताएँ तथा ब्राह्मण मिलकर ही पूर्ण चार वेद हैं। जिस प्रकार 'वेद' ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवम् अथर्ववेद से पृथक् कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं मिलती, क्योंकि--इन चारों का समुदाय ही वेद है; वैसे ही चार वेद भी ११३१ संहिताओं वा ब्राह्मणों से पृथक् स्वतन्त्र चार पुस्तकों के रूप में नहीं मिलते, अर्थात् सभी ११३१ संहिताओं को मिलाकर ही चार वेद होते हैं। आजकल जो चार वेद माने जाते हैं, वे चारों वेदों की एक-एक संहिता हैं। जिसे आज 'ऋग्वेद' कहा जाता है, यह ऋग्वेद की 'शाकल-संहिता' है। आज का 'यजुर्वेद' शुक्लयजुर्वेद की 'वाजसनेयी संहिता' है। आज का 'सामवेद' सामवेद की 'कौथुम संहिता' है। आज का 'अथर्ववेद' अथर्ववेद की 'शौनक संहिता है। यजुर्वेद के विषय में इतना और याद रखना चाहिए कि यजुर्वेद के शुक्ल यजुर्वेद तथा कृष्ण यजुर्वेद ये दो भेद हैं। पर इससे वेद पाँच नहीं हो जाते; एक के दो भाग कल्पित करने पर वह एक वास्तव में अनेक नहीं हो जाता; किन्तु दो भागोंवाला ही वह पूर्ण एक बन जाता है।

वेद की ११३१ संहिताएँ हैं, इस प्रसंग में महाभाष्यकार श्रीपतञ्जलि का यह प्रसिद्ध वचन 'महाभाष्य' के पस्पशाह्निक में मिला है--'एकशतम् (१०१) अध्वर्यु (यजुर्वेद) शाखाः, (सहस्रवर्त्मा सामवेदः (१०००), एकविंशतिधा (२१) बाह्वृच्यम् (ऋग्वेदः)। नवधा (९) आथर्वणोवेदः,। यहाँ पर चारों वेदों की १०१ + १००० + २१ + ९ = ११३१ शाखाएं स्वीकृत की गई हैं। इनमें यजुर्वेद की ८६ कृष्ण संहिताएँ तथा १५ शुक्ल संहिताएं मिलाकर ही १०१ संख्या बताई गई है--यह बात नहीं भूलनी चाहिए। स्वा० दयानन्द जी ने 'वसुकालाङ्कचन्द्र' (१९३८ वि०) संवत् में अपने बनाए 'नामिक' पुस्तक के चतुर्थ पृष्ठ में उक्त भाष्यवचन का अर्थ इस प्रकार किया है--'एक सौ एक व्याख्यानयुक्त यजुः, हजार व्याख्यानयुक्त साम, इक्कीस व्याख्यानयुक्त ऋक्, नव व्याख्यानयुक्त अथर्ववेद'। इस अर्थ में भी वेद की शाखाएँ ११३१ सिद्ध होती हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि--वेद ११३१ संहिताओं तथा शब्द एवं अर्थ का नित्यसम्बन्ध होने से उतने ही 'ब्राह्मणों' में पूर्ण होता है।

वेद के प्रयोग श्री पाणिनि ने अपनी 'अष्टाध्यायी' में, श्री कात्यायन ने 'वार्तिक' में, श्री पतञ्जलि ने महाभाष्य में, श्री जयादित्य ने अपनी 'काशिका' में तथा श्री भट्टोजिदीक्षित ने अपनी 'सिद्धान्तकौमुदी' में एवं आर्यसमाज के आचार्य स्वा० दयानन्द ने नामिक, आख्यातिक, सामासिक, अन्वयार्थ भाग आदि अपनी पुस्तकों में उद्धृत किए हैं। इस प्रकार श्री यास्क ने भी वेद-मन्त्रों के प्रमाण अपने 'निरुक्त' में दिखलाए हैं। वे वेद के प्रयोग यदि वर्तमान में प्रसिद्ध चार वेदग्रन्थों में न मिलें, तो सिद्ध हो जाएगा कि ये वेद के वर्तमान चार ग्रन्थ ही वेद की चरमसीमा नहीं हैं, किन्तु वेद इनसे अधिक है। यदि वे ही वेद के प्रयोग वर्तमान चार संहिताओं से भिन्न संहिताओं में तथा ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों में प्राप्त हो जाएं, तो सिद्ध हो जाएगा कि--वेद की सीमा ११३१ संहिताएँ तथा उतने ही ब्राह्मणग्रन्थ जिसके उपनिषत् एवं आरण्यक भी अन्तर्गत हैं, है; अर्थात् वेद की पूर्णता इनमें हो जाती है। अब विद्वान् लोग निम्न अनुसन्धानों पर ध्यान दें--

(१) 'स्नात्व्यादयश्च' (७।१।४९) यह पाणिनिसूत्र है। इसमें 'क्त्वापि छन्दसि' (७।१।३८) सूत्र से 'छंदसि' की अनुवृत्ति आ रही है। उक्त सूत्र का उदाहरण 'स्विन्नः स्नात्वी मलादिव' यह दिया गया है। यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेदी' काण्वसंहिता' (२२।५) में 'स्विन्नः स्नातो मलादिव' इस रूप में मिलता है। आजकल 'यजुर्वेद' नाम से प्रख्यात 'वाजसनेय संहिता' (२०।२०) में भी उक्त मन्त्र वैसा ही है। 'स्नात्वी' इस रूप में नहीं मिला। परन्तु कृष्णयजुर्वेदीय 'काठकसंहिता' (३८।५।६३) में 'स्विन्नः स्नात्वी मलादिव' इस पाणिनिप्रोक्त स्वरूप में मिला है। इसी प्रकार कृष्णयजुर्वेदीय 'मैत्रायणी संहिता' (३।११ (१०)। १११) इसी रूप में मिला है। 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में (२।४।४।९) भी 'स्नात्वी' मिला है। आजकल की मानी गई चार वेद पुस्तकों में 'स्नात्वी' शब्द है ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। तब इससे आजकल का वेद-विषयक मत भी भ्रान्त सिद्ध हुआ। हमारे कहे अनुसार वेद की सीमा ११३१ संहिताओं तथा ब्राह्मण में परितिष्ठित सिद्ध हुई।

(२) 'छन्दसि निष्टर्क्यं' (३।१।१२३) इस पाणिनि के सूत्र में 'निष्टर्क्यं चिन्वीत पशुकामः' यह वैदिक उदाहरण इष्ट है। स्वा० दयानन्द जी ने भी 'आख्यातिक' में यही उदाहरण दिया है। परन्तु यह आजकल के कहे जानेवाले चारों वेदग्रन्थों में नहीं मिलता। बल्कि 'निष्टर्क्यं' शब्द ही आज के चारों वेदों में नहीं मिलता। जब कि आज के मत के अनुसार चार वेद पूर्ण हैं, न्यूनता, अधिकता, प्रक्षेप आदि से रहित हैं, तो उनमें पाणिनि के अनुसार 'निष्टर्क्यं' वैदिक प्रयोग अवश्य मिलना चाहिए। पर जब उन पुस्तकों में नहीं मिलता, तब स्पष्ट है कि वेद की सीमा इन चार ग्रन्थों से अधिक है। उक्त शब्द कृष्णयजुर्वेदीय 'तैत्तिरीयसंहिता' (६।१।७।२) में तथा 'ऐतरेयारण्यक' (५।१।३) में मिलता है; तब आजकल का वेद-विषयक मत भ्रान्त सिद्ध हुआ।

(३) 'षष्ठ्यर्थे चतुर्थीति वाच्यम्' (२।३।६२) यह कात्यायन का वेद-विषयक वार्तिक है। भाष्यकार ने इसका वैदिक उदाहरण 'या खर्वेण पिबति तस्यै खर्वः' यह उदाहरण दिया है। स्वामी दयानन्द ने भी यही उदाहरण दिया है। परन्तु यह आज के चारों वेदों में नहीं, किन्तु कृष्णयजुर्वेदीय 'तैत्तिरीयसंहिता' (२।५।१।७) के ब्राह्मण भाग में है। तब आज का वेद-विषयक मत नितान्त भ्रान्त सिद्ध हुआ।

(४) महाभाष्यकार श्री पतञ्जलि ने ३।१।७ पाणिनि-सूत्र के भाष्य में 'ऋषिः (वेदः) पठति—'शृणोत ग्रावाणः' यह वेद मन्त्रांश उद्धृत किया है। पाणिनि को भी 'तप् तनप् तनथनाश्च' (७।१।४५) इस छान्दस (वैदिक) सूत्र में यही वेदमन्त्र अभिप्रेत है; पर यह शुक्ल यजुर्वेद में नहीं मिलता। उसकी 'वाजसनेयी संहिता' में 'श्रोता ग्रावाणः' (६।२।६) रूप में मिलता है; इसी प्रकार 'काण्वसंहिता' (६।३८) में। यद्यपि 'शृणोत' तथा 'श्रोता' में अर्थभेद नहीं, तथापि शब्दभेद तो है। वेद शब्द प्रधान ही सर्वसम्मत है। 'तत्सवितुर्वरेण्यं' यह गायत्री मन्त्र इस शाब्दिक रूप में तो वेद है—इस अर्थ में नहीं। इसीलिए जपन भी उसी का होता है, उसके अर्थ का नहीं।

कृष्णयजुर्वेदीय 'तैत्तिरीयसंहिता' (१।३।१३।१) में 'शृणोत ग्रावाणः' मिला है, 'काठकसंहिता' (३।३३) 'मैत्रायणीसंहिता' (१।३।४) में भी कुछ भेद से मिला है। 'शृणोत' शब्द भी आजकल के चार वेद-ग्रन्थों में नहीं मिलता; पर पाणिनि उसे वेद का बताते हैं; तब आज का वेद-विषयक मत नितान्त भ्रान्त सिद्ध हुआ।

(५) 'महाभाष्य' के प्रारम्भ में 'अथर्ववेद' का आदिम मन्त्र 'शं नो देवीः' लिखा गया है। स्वामी दयानन्द जी ने भी अपनी 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के ८६ पृष्ठ में 'प्रथम मन्त्र प्रतीकानि वैदिकेषु शब्देषु उदाहृतानि' इन शब्दों में इसे अथर्ववेद का 'प्रथम मन्त्र प्रतीक' माना है, पर यह आज के 'अथर्ववेद' का प्रथम मन्त्र नहीं; किन्तु अथर्ववेदीय 'पैप्पलादसंहिता' का प्रथम मन्त्र है; तब आज का वेद-विषयक मत भ्रान्त हुआ।

(६) 'ओषधे! त्रायस्वैनं स्वधिते! मैन ँ हि ँ सीः' इस मन्त्र को यास्क ने वेद के मन्त्र-भाग के सार्थक प्रकरण में 'निरुक्त' (१।१५।६) में उद्धृत किया है। इस प्रकार 'अचेतने अर्थबन्धनात्' (१।२।३५) इस 'मीमांसा-दर्शन' के सूत्रभाष्य में भी यही उद्धृत किया गया है। शुक्लयजुर्वेदीय 'काण्वसंहिता' (४।२) में 'ओषधे! त्रायस्व स्वधिते! मैन ँ हि ँ सीः, इतना मिला है। यहाँ 'त्रायस्व' के साथ 'एनं' नहीं है। शुक्लयजुर्वेदीय 'वाजसनेयीसंहिता' (४।१) में भी यही दशा है। पर 'निरुक्त' में 'त्रायस्व' के साथ भी 'एनं' है, 'स्वधिते! मा' के साथ भी 'एनं' है। कृष्णयजुर्वेदीय 'मैत्रायणीसंहिता' (१।२।२) तथा 'काठकसंहिता' (३।२।९) तथा 'तैत्तिरीयसंहिता' (१।३।१।१) आदि में निरुक्तानुसार दो 'एनं' वाला पाठ है। तब यास्क के मत में सभी शाखाएँ वेद सिद्ध हुईं।

(७) यास्क ने 'निरुक्त' पूर्व प्रकरण में ही 'अग्ने समिध्यमानाय अनुब्रूहि, (१।१५।८) यह मन्त्रभाग उद्धृत किया है। वह कृष्णयजुर्वेदीय 'मैत्रायणीसंहिता' (१।३।४५) तथा 'शतपथ ब्राह्मण' (१।३।२।२) में मिला है; तब ब्राह्मणभाग भी वेद सिद्ध हुआ।

(८) इसी प्रकार पूर्वप्रकरण में ही 'एक एव रुद्रो वतस्थे न द्वितीयः' यह मन्त्र 'निरुक्त' (१।१५।७) में उद्धृत किया गया है; परन्तु आज के चार वेदग्रन्थों में नहीं मिला; तब इससे स्पष्ट है कि—प्रचलित चार वेदग्रन्थ ही वेद की सीमा नहीं; किन्तु ११३१ संहिताएं तथा ब्राह्मण मिलकर ही वेद है। यह मन्त्र किसी लुप्त शाखा में मिल सकेगा। आजकल ऋग्वेद की एक शाकल-संहिता, शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी तथा काण्व, कृष्ण-यजुर्वेद की तैत्तिरीय-काठक-मैत्रायणी-कपिष्ठल आदि संहिताएँ, सामवेद की कौथुमी, राणायनीय, जैमिनीय-संहिता, अथर्ववेद की शौनकसंहिता—पैप्पलाद-संहिता मिली हैं; शेष की गवेषणा जारी है। 'तैत्तिरीयसंहिता' में 'एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थे' (१।८।६।१) इस रूप में यह मन्त्र मिला है। तब आजकल का वेदविषयक मत नितान्त भ्रान्त सिद्ध हुआ।

(९) 'नेज्जिह्मायन्तो नरकं पताम' यह उदाहरण 'निरुक्त' के निपात-प्रकरण (१।११।१) में उद्धृत किया गया है। पाणिनि के ३।४।८ वैदिक सूत्र में भी यही उदाहरण दिया गया है। स्वा० दयानन्द जी ने भी यही उदाहरण दिया है। परन्तु वर्तमान संहिताओं में यह नहीं मिलता। 'ऋक्परिशिष्ट' (८ अष्ट० ६ अ० २ व०) में मिलता है। तब ऋक्परिशिष्ट भी वेद सिद्ध हुआ।

(१०) 'निरुक्त' (९।१५।१) में 'भद्रं वद दक्षिणतः' यह ऋचा उद्धृत की गई है, परन्तु वर्तमान 'ऋग्वेद' में यह नहीं मिलती; 'ऋक्परिशिष्ट' (२।१३।१) में यह मिलती है। तब ऋक्परिशिष्ट भी ऋग्वेद सिद्ध हुआ। यह भी सिद्ध होता है कि खिलों (परिशिष्टों) का भिन्न कर्ता नहीं होता; प्रत्युत उसी ग्रन्थकार के द्वारा किया हुआ अनियमित संग्रह ही परिशिष्ट कहा जाता है। इसीलिए 'तैत्तिरीयारण्यक' की व्याख्या करते हुए सायण ने 'नारायणोपनिषत्' में 'खिल' की परिभाषा दी है—'कर्मोपासनाकाण्डेषु त्रिष्वपि यद् वक्तव्यमवशिष्टम्, तस्य सर्वस्याभिधानेन प्रकीर्णरूपत्वं खिलत्वम्'। 'हरिवंशपुराण' की अवतरणिका में श्री नीलकण्ठ ने भी कहा है—'यत्र शाखान्तरे प्रयोजनवशात् पठ्यते, यथा बाह्वृचं श्रीसूक्तमेधासूक्तादि; तत् खिलमुच्यते'। खिलों के प्रमाण होने से ही (स्वाध्यायं श्रावयेत् पित्र्ये . . . पुराणानि खिलानि च' मनु० ३।२३२) उनका पित्र्यकर्म में पाठ स्वीकृत किया गया है।

(११) निरुक्तकार 'इत्यपि निगमो भवति' यह कहकर वेद-प्रमाण दिया करते हैं—यह विज्ञ-समाज में प्रसिद्ध है। निरुक्तकार ने लिखा है—'अमेनाँश्चिज्जनिवतश्चकर्थ' 'प्रास्त्वाऽक्रन्तत्प्रपर्षाऽतन्वत' इत्यपि निगमौ भवतः, (३।२१।२) इनमें 'अमेनान्' मन्त्र ऋग्वेद (शा० सं०) का है; परन्तु 'प्रास्त्वा' यह सामवेदीय 'ताण्डव महाब्राह्मण' (१।८।९) का है। 'मैत्रायणीसंहिता' (१।९।४) तथा 'काठकसंहिता' में भी है। तब सभी संहिताएँ तथा ब्राह्मण भाग भी वेद सिद्ध हुआ।

(१२) 'पीयतित्वो' 'ने मे देवाः' इत्यपि निगमौ भवतः' निरुक्त (३।२०।१५) इनमें पूर्व मन्त्र 'ऋग्वेद' (शा० सं०) १।१४७।२ में है। 'ने मे देवाः' यह ब्राह्मण भाग का है, 'काठकसंहिता' (१४।९) में भी है। तब ब्राह्मण भाग भी वेद हुआ।

(१३) 'निरुक्त' (२।३।१) में 'यस्मात् परं नापरमस्ति किञ्चित्' इत्यपि निगमो भवति' यह लिखा है। यह कृष्णयजुर्वेदीय 'श्वेताश्वतरोपनिषत्' (३।९) का है। तब उपनिषद् भी वेद हुए।

(१४) जैसे 'व्यवहिताश्च' (१।४।८२) पाणिनि का वैदिक सूत्र 'आमन्त्रेरिन्द्रा हरिभिर्याहि' ऋ० ३।४।१ इस वेदमन्त्र में लगा है, वैसे ही 'समिधं सोम्य! आहर, उपत्वा नेष्ये' छान्दोग्य० (४।४।५) इस उपनिषत्कण्डिका में भी लगा है। तब उपनिषदें भी वेद सिद्ध हुईं।

(१५) 'सुपां सुलुक्—' (७।१।३९) इस पाणिनि के सूत्र में 'वत्वापि छन्दसि' (७।१।३८) सूत्र से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति आ रही है। तब इस सूत्र से जैसे 'सविता प्रथमेऽहन्' (३९।६) इस यजुर्वेद (वा० सं०) के मन्त्र में 'ङि' का लुक् हो जाता है, और 'नङि सम्बुद्ध्योः' (८।२।८) से वैदिक न लोप का अभाव होता जाता है; वैसे ही 'पश्चाऽयं दक्षिणंऽक्षन् पुरुषः' (१४।६।८।३) इस शुक्लयजुर्वेदीय 'शतपथ ब्राह्मण' के वाक्य में तथा छान्दोग्य बृहदारण्यक आदि उपनिषदों में भी दीखता है। तब उपनिषदें तथा ब्राह्मणभाग भी वेद सिद्ध हुआ। तब केवल चार पोथियों को चार वेद मानना—यह मत नितान्त भ्रान्त सिद्ध हुआ।

(१६) 'भगवः! इति ह शुश्राव' (४।५।१) यह 'छान्दोग्योपनिषत्' में पाठ है। इस प्रकार अन्य उपनिषदों में भी। यहाँ पर 'भगवः!' यह शब्द 'भगवत्' शब्द के सम्बोधन में 'मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि' (८।३।१) इस वैदिक रुत्व होने पर बनता है। यह लौकिक ग्रन्थों में नहीं आता। तब उपनिषदें भी वेद हुईं।

(१७) जिस प्रकार 'व्यत्ययो बहुलम्' (३।१।८५) यह पाणिनि का वैदिक सूत्र मन्त्रभाग में प्रवृत्त होता है, वैसे ब्राह्मण भागान्तर्गत आरण्यक में भी। जैसे कि—'आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातुमाम्! पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म, ब्रह्म पूता पुनातु माम्'—'तैत्तिरीयारण्यक (१०।२३) यहाँ पर 'ब्रह्मणस्पतिः,' में अम्—के स्थान में 'सु' हुआ है। 'ब्रह्म पूता' में लिङ्ग-व्यत्यय हुआ है। इस प्रकार 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इस उपनिषद् वाक्य में भी उपग्रह (पद) का व्यत्यय हो गया। तब आरण्यक तथा उपनिषद् भी वेद सिद्ध हुए।

(१८) स्वा० दयानन्द जी ने 'आख्यातिक' के ३९३ पृष्ठ में 'भावलक्षणे . . . तोसुन्' (३।४।१६) इस वैदिक सूत्र का उदारहण 'कामयाविजनितोः सम्भवाम' यह दिया है; यह उनके माने हुए चार वेदों में नहीं; किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तैत्तिरीयसंहिता' (२।५।१।५) में है; तब ११३१ संहिताएँ वेद सिद्ध हुईं।

(१९) 'स्त्रैणताद्धित' के ६५ पृष्ठ में 'छन्दोब्राह्मणानि च' ३२३ (अ० ४।२।६५) इस पाणिनिसूत्र के विवरण में स्वा० दयानन्द जी ने छन्द (वेद) के उदाहरण में 'कठाः, मौदाः, पैप्पलादाः, वाजसनेयिनः' ये उदारहण देकर शाखाओं को भी वेद मान लिया है।

(२०) 'महाभाष्य' के पस्पशाह्निक में अप्रयुक्त शब्द निरूपण प्रकरण में 'ये चाप्येते भवतोऽप्रयुक्ता अभिमताः शब्दाः; तेषामपि प्रयोगो दृश्यते। क्व? वेदे' यह कहकर 'यद्वो रेवत्यां तमूष' यह वेद का प्रमाण दिया है; पर यह आजकल के चार वेदों में नहीं मिलता; तब चार वेदों की सीमा इनसे अधिक सिद्ध हुई। अंशतः यह काठक संहिता' (३१।७) में मिला है।

(२१) 'सरस्वती' के विज्ञ पाठकगण ने इस निबन्ध को मनोयोग से पढ़ा होगा। अब हम उनका अधिक समय नहीं लेना चाहते। एक अन्तिम पर आवश्यक बात कहकर हम उनसे बिदा होना चाहते हैं।

यास्क ने 'निघण्टु' को वेद के शब्दों का संग्रह बताया है; देखिए--'छन्दोग्यः समाहृत्य समाहृता समाम्नाताः' (१।१।४)। यही बात सनातनधर्मी तथा आर्यसमाजी दोनों मानते हैं। परन्तु बहुत से 'निघण्टु' के शब्द वर्तमान वेद की चार संहिताओं में नहीं मिलते। इससे स्पष्ट सिद्ध हो जाएगा कि--वेद की यह सीमा नहीं है, जो आजकल समझी जाती है, किन्तु ११३१ संहिताएँ, उतने ही ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषत् वेद हैं। अब देखिए--

(क) 'काञ्चनम्, जातरूपम' ये हिरण्य के नाम 'निघण्टु' (१।२) में कहे हैं; परन्तु वे आज के चारों वेदों में नहीं मिलते। (ख) 'निघण्टु' (१।३) में 'वियद्, आकाशम्' ये अन्तरिक्ष के नाम कहे हैं; पर ये आज के चारों वेदों में नहीं मिलते। (ग) निघण्ट् (१।६) में कहा 'आष्ठा' यह 'दिशा' का नाम (घ) 'शोकी' (१।७) यह 'रात्रि' का नाम (ङ) 'बलिशानः, बलाहकः' (१।१०) ये 'मेघ' के नाम, (च) 'वेकुश' (१।११) ये 'वाक्' का नाम, (छ) नीरम्, तोयम्, जलम्, सर्णीकम्, स्वृतीकम्' (१।१२) ये जल के नाम आज के चारों वेदों में नहीं मिलते। यह अभी दिक्प्रदर्शनमात्र है; नहीं तो ऐसी संख्या बहुत अधिक है।

इससे स्पष्ट है कि--वेद की ये चार संहिता-पोथियाँ ही वेद की अन्तिम अवधि नहीं हैं; किन्तु ११३१ मन्त्रसंहिताएँ; उतने ही ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् मिलकर पूर्ण वेद बन जाता है। ऊपर कहे गए वैदिक शब्द कई चार वर्तमान संहिताओं से भिन्न संहिताओं में मिलते हैं, कई ब्राह्मणभाग तथा तदन्तर्गत उपनिषद् तथा आरण्यकों में मिलते हैं। यदि उनमें भी न मिलें, तब भी हमारे पक्ष की हानि नहीं; क्योंकि--अभी बहुत-सी वेद की संहिताएँ तथा ब्राह्मण तथा उपनिषदें तथा आरण्यक लुप्त हैं। उनमें उक्त वैदिक-शब्दों की सत्ता का अनुमान कर लेना चाहिए। पर वादियों का पक्ष तो सर्वथा खण्डित हो जाता है। क्योंकि वे अपनी वर्तमान चार संहिताओं को पूर्ण वेद मानते हैं; उनमें न्यूनता वा अधिकता भी नहीं मानते। इधर वे पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि, यास्क आदि को वेद का पूर्ण विद्वान् मानते हैं। सब सनातनधर्मी तथा सभी आर्यसमाजियों को तथा वेदविषय के अनुरागी तथा अनुसन्धान प्रवण व्यक्तियों को उचित है कि इस निबन्ध पर सम्यक् विचार करें; और इस पर अपने अनुसन्धान भी रक्खें। आप द्विज हैं, तो वेद की रक्षा आपका कर्तव्य बन जाती है। जहाँ संसारी व्यवहार पूरे करें, वहाँ कुछ समय निकालकर इस परमार्थ की ओर भी अवश्य ध्यान दें। हमने अपने बनाए दश-सहस्र पृष्ठ के 'श्री सनातनधर्मालोक' (अप्रकाशित) ग्रन्थ में इस विषय पर पर्याप्त विचार किया है; यह उसी का लघुतम अंश है।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई मिल का निर्माण

श्री एम० पी० केदार

जब किसी प्रकार भी सुनवाई न हुई तो महा-लक्ष्मी-कलाथ-मिल के कारीगरों और श्रमिकों ने अपने अन्तिम हथियार के रूप में हड़ताल की घोषणा कर दी।

रायबहादुर ललिताप्रसाद के लिए यह एक नया अनुभव था। बीसवीं शताब्दी के दूसरे चरण में रहते हुए भी वह कम-से-कम वेतन देने और अधिक-से-अधिक काम लेने की पुरानी नीति का अवलम्बन करते आ रहे थे। प्रारम्भ में हड़ताल को साधारण बात समझते हुए वह इस आशा में रहे कि दो-चार दिन बेकार रहकर श्रमजीवी स्वयं ही झख मारेगा परन्तु एक सप्ताह बीत जाने पर भी जब कोई काम पर न लौटा तो वह कुछ झल्ला से उठे। बन्द मिल और हजारों की होती हुई हानि को देख उनका क्षोभ और भी बढ़ गया। मैनेजर को बुलाया और कहा--"सब आदमियों में घोषणा कर दो कि अगले दिन जो काम पर नहीं आएँगे, उनके नाम काट दिए जाएँगे और उन्हें तुरन्त ही मिल के क्वार्टर भी खाली कर देने होंगे।"

घोषणा हो गई। साथ ही मैनेजर ने मालिक की दृष्टि में अपना महत्त्व बढ़ाने के विचार से लोभ दे-दिलवाकर कुछ व्यक्तियों को काम पर आने के लिए तैयार कर लिया। परन्तु अगले दिन जब वे मिल के मुख्य-द्वार पर पहुँचे तो पिकेटिंग करती हुई एक बहुत बड़ी भीड़-द्वारा वहीं रोक लिए गए। पिकेटिंग करनेवाले हड़तालियों से टक्कर लेकर भीतर घुसने का किसी को साहस नहीं हुआ और अपमान से बचने के लिए वे एक-एक कर वहाँ से खिसक गए।

रायबहादुर को इस बात की सूचना मिली तो आग में घी की आहुति पड़ गई। उन्हें लगा उनकी सत्ता और प्रभुता का अन्त हो रहा है। श्रमजीवियों की ऐसी मजाल और इतना विरोध उनकी कल्पना से बाहर था। उनके क्रोध का आवेश बढ़ गया और कोट की जेब में भरा हुआ रिवाल्वर डाल वह पिकेटिंग के स्थान पर पहुँचे।

हड़ताली बिलकुल शान्त थे। किसी ने रायबहादुर को रोकने की चेष्टा नहीं की। फाटक पर पहुँचते ही रायबहादुर गरज कर बोले--"जो काम नहीं करना चाहते, वह यहाँ से चले जाएँ।"

जो लोग आगे खड़े थे, उनमें से एक ने कहा--"मालिक! हम कहाँ चले जाएँ?"

रायबहादुर ने तमक कर उत्तर दिया--"चाहे जहन्नुम में चले जाओ परन्तु काम न करने की अवस्था में यहाँ रहने और जो काम करना चाहते हैं, उन्हें रोकने का किसी को अधिकार नहीं है।"

एक वृद्ध श्रमिक बोला--"यह मिल हमारे परिश्रम और पसीने से खड़ी हुई है, हम इसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं?"

आँखें तरेरते हुए रायबहादुर ने कहा--"नहीं जा सकते तो काम बन्द क्यों कर रक्खा है?"

कई श्रमजीवी एक साथ बोल उठे--"हम भूखे हैं, हमें भरपेट खाने को मिलना चाहिए। भूखे रहकर हम काम कैसे कर सकते हैं?"

"तुम लोगों को पहले ही पर्याप्त मिलता है; उससे अधिक की गुंजाइश नहीं है।" रायबहादुर ने रुखाई से उत्तर दिया।

"जो कुछ हमें मिलता है, उससे आजकल की महँगाई में निर्वाह नहीं हो सकता।" अधेड़ आयु के एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा।

"नहीं होता तो काम छोड़कर चले जाओ।" बात जहाँ से चली थी, वहीं पहुँच गई।

"कहाँ चले जाएँ; हमें तो यहीं जीना और मरना है।" एक क्षीणकाय श्रमिक ने प्रारम्भ में वृद्ध-द्वारा दिए हुए उत्तर को रूप बदल कर दोहरा दिया।

रायबहादुर वैभव और अधिकार के मद में चूर थे। अपने ही अधीन काम करनेवाले साधारण श्रमजीवियों का इतना साहस उन्हें सह्य न हुआ। क्रोध से लाल-पीले होकर बोले--"यदि तुम मरना ही चाहते हो तो शौक से मरो।" यह कहने के साथ ही रायबहादुर ने कोट की जेब में से रिवाल्वर निकाल लिया और मैनेजर को अपने निकट बुलाया और बोले--"मैं देखता हूँ कौन काम करनेवालों को भीतर जाने से रोकता है!"

रायबहादुर के हाथ में रिवाल्वर देख, जो आगे खड़े थे, उनमें हलचल पैदा हो गई। पास खड़े हुए युवक शंकर की रगें फड़क उठीं। जोश में भर छाती तानकर वह रायबहादुर के सामने जा खड़ा हुआ। रायबहादुर ने समझा कि वह उनसे रिवाल्वर छीनने के लिए आगे बढ़ा है। उन्होंने बिना आगा-पीछा सोचे उसे निशाना बना रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया। युवक भूमि पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरकर छटपटाने लगा। सूखी घास में चिनगारी पड़ गई। आँखों के सामने अपने तरुण साथी का रक्त बहते देख सब कारीगरों वा श्रमिकों का रक्त खौल उठा और एक का स्थान एक दर्जन ने ले लिया।

रायबहादुर ललिताप्रसाद क्रोध से पागल हो उठे। क्रोध में मनुष्य प्रायः विवेक भी खो बैठता है। बहुत से व्यक्तियों को एक साथ आगे बढ़ते हुए देख रायबहादुर को ख्याल हुआ कि वे उनपर आक्रमण करना चाहते हैं। उन्होंने फिर रिवाल्वर तान लिया और गोलियाँ चलाने लगे। दुर्भाग्य से या सौभाग्य से रिवाल्वर में चार ही गोलियाँ थीं। वे समाप्त हो गईं तो रायबहादुर कुछ घबरा से गए और इधर-उधर देखने लगे। उसी समय मिल-मैनेजर मिस्टर बरमानी स्थिति की विकटता को भाँपकर वहाँ पहुँच गए और रायबहादुर के आगे खड़े होकर लोगों को शान्त करने का प्रयत्न करने लगे। परन्तु उनके शब्दों में अधिकार और स्वेच्छाचारिता की गंध थी। सुलगती आग को और भी हवा मिली और उसके शीघ्र ही भड़क उठने के चिह्न स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगे।

* * *

रायबहादुर की कोठी मिल के साथ ही बनी हुई थी। पहली गोली की आवाज से ही जानकी का सशंकित हृदय घबरा उठा। वह तुरन्त कोठी के बाहर आकर बरामदे में खड़ी हो गई। इसी बीच में फिर गोलियाँ चलने की ध्वनि सुनाई दी। जानकी ने दूर से देखा रायबहादुर भीड़ में घिरे हुए खड़े थे। वह और भी घबरा गई और कोठी के फाटक को पारकर सड़क पर जा खड़ी हुई। मिल के क्वार्टरों में से बहुत से व्यक्ति मिल के मुख्य-द्वार की ओर भागे जा रहे थे और वहाँ से पुकार उठ रही थी—'खून, खून हो गया।' जानकी काँप उठी और तेज चाल से आगे बढ़ी।

रायबहादुर अभी तक मन-ही-मन फुंकार रहे थे। उनका क्रोध, क्रोध-भरे हुए साँपकी तरह भीतर ही भीतर विष घोल रहा था, जिसका परिचय कभी-कभी उनके शुष्क अधर फड़कने से मिलता था। मैनेजर उत्तेजित भीड़ के मनोभाव को समझ स्थिति की भयंकरता का अनुभव कर रहा था और इस चिन्ता में था कि किसी प्रकार रायबहादुर को वहाँ से हटाकर सुरक्षित स्थान में पहुँचा दिया जाए। इसी समय भीड़ को चीरती हुई जानकी वहाँ पहुँच गई।

जानकी को मिल में काम करनेवाले सब कर्मचारी और श्रमजीवी जानते थे। जानते ही नहीं, बहुत से व्यक्तिगत रूप में उससे परिचित भी थे। वास्तव में रायबहादुर जितने हृदय के कठोर और व्यवहार में कड़वे थे, जानकी उतनी ही उदार और दयालु थी। अपने द्वार से किसी पीड़ित और याचक को निराश लौटाने की भूल उससे अनजान में भी कभी न होती थी। युद्ध के कारण चीजों के दाम बढ़ने से घर-गृहस्थी का चलाना कितना कठिन हो गया था, यह वह प्रत्यक्ष देखती थी। प्रायः मिल में काम करनेवालों की स्त्रियाँ उसके पास पहुँचकर अपना दुःख-दर्द सुनातीं। बारह सेर से रुपये का अढ़ाई सेर गेहूँ हो जाने पर बीस-पच्चीस रुपये मासिक में पूरे कुटुम्ब का निर्वाह एकबारगी असंभव था, जानकी इस बात को भली भाँति समझती थी। श्रमजीवियों के बहुत चिल्लाने-चीखने पर रायबहादुर ने प्रतिमास प्रति श्रमजीवी को चार से पाँच रुपये तक महँगाई अलाउंस देना स्वीकार किया था परन्तु जानकी को यह अनुभव करते देर न लगी कि कुछ जल-कण पड़ जाने पर भी धरती सूखी की सूखी ही रही।

जानकी के घटना-स्थल पर पहुँचने तक रायबहादुर के हाथ से रिवाल्वर छिन चुका था और वह अपनी असहाय अवस्था को अनुभव कर रहे थे। मैनेजर बरमानी को अपने ही प्राणों की चिन्ता हो रही थी। चारों तरफ की भीड़ जोश में चिल्ला रही थी—"खून, खून का बदला।"

जानकी के वहाँ पहुँचते ही लोग चुप होकर उसकी तरफ देखने लगे। उसने कोमल और शान्त स्वर में भीड़ से कहा—"आप लोग रायबहादुर को जाने के लिए मार्ग दे दें। आपको खून का बदला लेना है तो मैं यहाँ उपस्थित हूँ।"

हड़तालियों के नेता भी अब तक वहाँ पहुँच गए थे। भूमि पर पड़े और रक्त में सने व्यक्तियों को देख स्थिति समझने में उन्हें देर न लगी। उनका ध्यान जानकी की ओर जाते ही वह तुरन्त उसके निकट पहुँचे। जानकी ने पहले से भी विनम्र और कुछ दुःख-मिले स्वर में उनसे कहा—"आप लोग कृपाकर भीड़ में से रायबहादुर के जाने के लिए मार्ग बनवा दें।"

नेताओं ने भीड़ की तरफ मुख फेरा और कहा—"श्रीमती जी की बात किसी हालत में भी हमको टालना उचित नहीं है?"

मार्ग बन गया। रायबहादुर हारे हुए सेनापति की तरह सर झुकाए मैनेजर के साथ चुपचाप भीड़ में से निकल गए।

जानकी ने घायलों के पास जाकर देखा। दो मर चुके थे। एक की दशा अब नाजुक थी और एक को साधारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाव आया था। उसने हड़तालियों के नेताओं को मृतकों का संस्कार करने और घायलों को अस्पताल पहुँचाने का आदेश दिया और स्वयं अपनी कार भेजने की बात कहकर वह कोठी की तरफ लौट पड़ी।

* * *

जानकी के वहाँ से हटने के साथ ही लोगों के रुके हुए जोश का बाँध टूट गया। मृत और घायल साथियों को सामने देख उनके प्रतिशोध की अग्नि भड़क उठी। मोटर आ चुकी थी। कुछ व्यक्ति घायलों को अस्पताल ले जाने और शवों के संस्कार का प्रबंध करने में लग गए परन्तु एक बहुत बड़ी संख्या ने मिल के भीतर घुसकर तीन-चार स्थानों पर आग लगा दी। रुई और सूत का स्टाक एकत्र था। कुछ मिनटों में ही मिल धाँय-धाँय कर जल उठी। जब तक शहर से फायर-ब्रिगेड पहुँचा, तब तक सब जलकर स्वाहा हो गया।

जलती हुई मिल में से धुएँ के काले बादल उठते देखकर भी रायबहादुर ललिताप्रसाद को न तो दुःख ही हुआ और न क्षोभ ही। प्रज्वलित अग्नि के ताप में उनके हृदय का मैल भी मानो जलकर भस्म हो गया। जानकी की सहृदयता और कार्यकुशलता ने रायबहादुर के केवल प्राण ही नहीं बचाए वरन् उनके नेत्र खोल उन्हें स्थिति का सच्चा ज्ञान भी करा दिया। मन-ही-मन वह जानकी को सराहने लगे। साथ ही कारीगरों और श्रमिकों के प्रति भी उनका अब तक का दृष्टिकोण बिलकुल बदल गया।

जानकी को मिल जलने का बड़ा दुःख हुआ, परन्तु पति की प्राण-रक्षा के सामने मिल का वह कोई मूल्य न समझती थी। श्रमजीवियों के दिलों में प्रतिहिंसा की भड़की हुई आग और खून का बदला लेने की उनकी भयंकर प्रवृत्ति को वह प्रत्यक्ष देख चुकी थी। पति की रक्षा कर सकने में अपने समर्थ होने पर उसे परम संतोष था। इसके साथ ही उसका हृदय रह-रहकर उन व्यक्तियों की तरफ जाता, जिन्हें उसके पति-द्वारा गोलियों का निशाना बनकर मृत्यु का ग्रास बनकर अथवा घायल होकर अस्पताल जाना पड़ा था। उनके परिवारों के प्रति उसका कर्तव्य क्या है, वह अपने कमरे में बैठी हुई इसी सम्बन्ध में सोच रही थी कि रायबहादुर आकर उसकी कुरसी के पीछे खड़े हो गए। जानकी ने मुड़कर पति को खड़े देखा तो कुछ लज्जित सी हो कुरसी से उठने का प्रयास करने लगी। परन्तु रायबहादुर दोनों हाथों से पकड़कर उसे बैठाते हुए बोले--"तुम यथार्थ में ही महान् हो।" कुछ ठहरकर उन्होंने कहा--"साथ ही मेरे जीवन की सच्ची पथ-प्रदर्शिका भी।"

जानकी लज्जा से सिकुड़ गई। उसे अब भी जो व्यक्ति मर गए थे और जो घायल हुए थे, उनकी असहाय पत्नियों और अनाथ बच्चों का ध्यान आ रहा था।

रायबहादुर ने फिर कहा--"मैंने श्रमिकों की सब माँगें स्वीकार करने का निश्चय कर लिया है और साथ ही कुछ और भी।"

जानकी को आह्लाद हुआ। उसकी आँखें श्रद्धा से झुक गईं। वह 'कुछ और भी' का अर्थ समझने के लिए पति के मुख की ओर देखने लगी। रायबहादुर ने मुस्कराते हुए कहा--"इसका स्पष्टीकरण कल होगा।"

मिल जल जाने पर श्रमजीवियों को भी अनुभव हुआ कि निर्वाह का जो थोड़ा-बहुत आधार था, वह भी उन्होंने अपनी मूर्खता से नष्ट कर दिया। मन-ही-मन वह अपनी कृति पर पछताने लगे। एकाएक रायबहादुर-द्वारा अपनी माँगें स्वीकार होने और सब श्रमिकों की मीटिंग बुलाए जाने का समाचार सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

अगले दिन दोपहर को रायबहादुर की कोठी के सामने के अहाते में सब लोग जमा हुए। निश्चित समय पर रायबहादुर और जानकी बाहर निकले। सबके बीच में पहुँचकर रायबहादुर ने कहा--"मिल जल गई सो अच्छा ही हुआ। इस पर मेरा जो ममत्व और व्यक्तिगत अधिकार था, उसका अन्त हो गया। अब इस स्थान पर नई मिल की स्थापना होगी। पहली मिल में आप लोगों का परिश्रम और पसीना लगा था, इस मिल के निर्माण में आपका लहू काम आया है। इसलिए यह नई मिल निस्संदेह आप लोगों की अपनी होगी और जो लाभ होगा, उसके आप सब भी समान रूप से अधिकारी होंगे।"

रायबहादुर कह चुके तो जानकी तुरन्त बोल उठी--"जिन व्यक्तियों ने अपना रक्त बहाकर इस नई मिल की नींव डाली है, उनके तथा उनके परिवारों के सम्बन्ध में जब तक हम अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते तब तक यह आयोजना एक प्रकार से अधूरी ही रहेगी।"

रायबहादुर जानकी की बात समाप्त होते ही बोले--"उन सबके परिवारों को मिल की ओर से स्थायी रूप में पेंशन मिलेगी।"

जानकी ने फिर कहा--"इतना ही पर्याप्त नहीं है। जिस स्थान पर उनका लहू बहा है, वहाँ पर उनका स्थायी स्मारक भी बनना चाहिए और इसके लिए मैं अपनी तरफ से यह भेंट देती हूँ।" यह कहने के साथ ही उसने अपने गले में से हीरक-जड़ित बहुमूल्य हार उतार कर पास खड़े श्रमिकों के एक नेता को पकड़ा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंताराष्ट्रीय राजनीति का त्रिकोणात्मक संघर्ष

श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

पुण्य-स्मृति कवीन्द्र रवीन्द्र ने मानवता के भविष्य का जो विषादपूर्ण मानचित्र खींचा था, उसका मूर्त्तरूप सामने प्रकट होता जा रहा है। देहत्याग से पूर्व विश्व-कवि ने तत्कालीन राजनीतिज्ञों को स्पष्ट चेतावनी दी थी कि मानवता के अधिकार उनके हाथों में सुरक्षित नहीं हैं और उनकी विपथगामी दूरदर्शिता और प्रमाद-ग्रस्त बुद्धि शान्ति की प्रतिष्ठा के बजाय संहार के ही मंच बनाएगी। भविष्य-वाणी सत्य हो गई है। युद्ध के अंगारे अभी बुझ भी नहीं पाए थे कि संघर्ष की नई ज्वालाएँ सुलगाई जाने लगी हैं। षड्यंत्र के नए अखाड़े तयार हो गए हैं और मानवता के सिर पर फिर मौत की तलवार झूलने लगी है। एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया कि जब तक अंताराष्ट्रीय परिस्थितियों का निर्देशन राजनीतिज्ञों के हाथों में है तब तक मानवता कल्याणकर भविष्य की तसवीर नहीं देख सकती है।

मानवता के साथ आज सबसे बड़ा विश्वासघात यह हुआ है कि रक्षक ही भक्षक साबित होने लगा है। प्रजातंत्र के अधिकारों और सिद्धान्तों के लिए जो राष्ट्र धुरी-राष्ट्रों से लड़े थे, वे ही प्रजातंत्र की सम्भावनाओं के घातक शत्रु बन गए हैं। पूंजीवाद ने जिस युद्ध को जन्म दिया था, उसकी समाप्ति के बाद जो शान्ति की समस्याएँ आईं, उन पर भी उसने अपना नियंत्रण स्थापित कर दिया है—आज के जनतंत्र पूंजीवाद के इसी षड्यंत्र के आखेट बन गए हैं। जनतंत्र जनकल्याण का साक्षात्कार करने के बजाय पूंजीवाद के कार्यक्रम को पूरा करने को ही अपना श्रेय समझने लगा है। अंताराष्ट्रीय परिस्थितियों का रूप इसी कारण इतना भयावह होता जा रहा है।

मानवता का रक्तपान

दो महाकाय नरमेधों से अपरिमित नर-शोणित की बलि लेकर अमरीकी पूंजी की दानवीय जिह्वाएँ खून की प्यासी हो गई हैं। नर-रक्त को वह अपनी स्वाभाविक खुराक समझ बैठी है—निरीह मानवता के रक्त-पान के सिवाय अमरीकी पूंजी को और किसी आहार से रुचि नहीं रह गई है। यह सत्य आज जितना स्पष्ट और सजीव हो उठा है, उतना पहले कभी नहीं था। अमरीकी कांग्रेस के सामने प्रेसीडेंट ट्रूमेन ने हाल ही में जो भाषण दिया, उसके भीतर पूंजीवाद की पाशविक आकांक्षाएँ स्पष्ट रूप से अपनी अभिव्यक्ति कर रही हैं। मि० चर्चिल ने फुल्टन में जो आन्दोलन शुरू किया था और माशल स्मट्स ने जिसे क्रिश्चियन सभ्यता के संरक्षण का स्तम्भ समझा था, प्रेसीडेंट ट्रूमेन ने उन्हीं सूत्रों को पकड़ा है और जनतंत्रों की रक्षा का बहाना करते हुए मानवता को नए बंधनों में आबद्ध करन का उपक्रम किया है। ट्रूमेन के इस ऐतिहासिक भाषण ने अंताराष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में वही काम किया, जो एटम बम ने दूसरे महायुद्ध में किया था। नृशंसता और अनीतिमूलक कूटनीति के बंद द्वार फिर खोल दिए गए हैं और संघर्ष की बुझती हुई लपटों में फिर अग्नि की तेजी समा गई है। स्वयं अमेरिका में भी आँधी उठ खड़ी हो गई है और ज्वर की-सी एक तेज हरारत से वहाँ की शोषित जनता काँप उठी है। हेनरी वेलेस-जैसे राजनीतिज्ञ का धैर्य भी स्थिर न रह सका। अमेरिका के विश्व-ग्रासी पूंजीपतियों को भावी आशंकाओं की चेतावनी देते हुए वेलेस ने एक महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया है :—

"नीति की दृष्टि से भी यह दृष्टिकोण आर्थिक सहायता देने तक ही सीमित नहीं रहेगा, और उस अवस्था में तो इससे जरा भी ऐसी आशा नहीं रखनी चाहिए जब कि सहायता उन्हें दी जा रही है, जो अपनी जनता के समर्थन पर खड़े नहीं हो पा रहे हैं। स्पष्ट है कि इसका अगला रूप संरक्षण की प्रतिज्ञा होगा।"

अंताराष्ट्रीय राजनीति में संरक्षण देने की महत्त्वाकांक्षा साम्राज्य-स्थापना की मूलगत प्रेरणा है। संरक्षण का अगला कदम अधिकार है। अतः ट्रूमेन-घोषणा जहाँ कम्यूनिज्म के प्रसार को रोकने का प्रयत्न करती है, वहाँ छोटे-छोटे आपत्तिग्रस्त राष्ट्रों के आर्थिक और राजनीतिक स्वत्वों को भी अपने दामन में लपेट लेना चाहती है। क्योंकि कम्यूनिज्म के प्रसार को स्थगित करने के लिए घोषणाओं की जरूरत नहीं है, ईमानदार कर्तृत्व की जरूरत है, जो कम्यूनिज्म के मनोवैज्ञानिक मेरुदंड को निःशक्त कर दे और उसके ऊपर मुलम्मे की भाँति लिपटे प्रलोभनों को ढँक दे। पूंजीवादी प्रभुता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था सामान्य जनता के स्वत्वों को कुचल देती है और जनता के व्यक्तिगत अधिकार एक श्रेणी-विशेष की प्रभुत्व-लालसा के अंग बनते जाते हैं—जहाँ ये परिस्थितियाँ गहरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाती हैं और पूँजीवाद अपनी शोषण-शक्ति-संवर्द्धन के लिए वृहत् जनसमाज के मौलिक अधिकारों को हड़प लेता है, वहाँ कम्यूनिज्म के सम्मोहक प्रचार के उपयुक्त मंच बन जाते हैं और विग्रह, संघर्ष एवं असंतोष का ऐसा विषैला वातावरण तैयार हो जाता है कि विश्व को महायुद्धों की आग में झुलसना पड़ता है। यूरोप के ध्वस्त-ग्रस्त राष्ट्रों की आज ऐसी ही अवस्था है। यूनान से लेकर फ्रांस और स्पेन तक जीवन के मौलिक अभावों का प्रसार-क्षेत्र बन चुका है। भूख, नग्नता, सामाजिक अराजकता और आर्थिक निराश्रयता की ऐसी विकट परिस्थितियाँ इन देशों में छा गई हैं कि यहाँ के निवासी भविष्य में विश्वास खो बैठे हैं और फलतः उनकी कल्पना उज्ज्वल भविष्य की झाँकी देखने के बजाय घोर अंधकार और निराशा को ही अपना अवलम्ब बना रही है। कम्यूनिज्म के बीजा-रोपण के लिए यह उपयुक्त और उर्वर भूमि है। निराव-लम्ब और जीवन-संघर्ष में पराभूत जनसमाज में विवेक-बुद्धि की अपेक्षा अवसरवादिता ही प्रमुख रहती है। यही कारण है कि पूर्वीय यूरोप के छोटे-छोटे राष्ट्र सोवियत-प्रणाली की राज्य-व्यवस्था की ओर प्रवृत्त होते जा रहे हैं। अमेरिका ने संकल्प किया है कि वह यूरोप में कम्यू-निज्म को अब एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने देगा। इसके लिए वह सशस्त्र कार्रवाई का भी संकेत देता है। किन्तु जो प्रणाली अमेरिका ने इस समय अपनाई है, वह अविवेकपूर्ण है। रोग के कारणों को हृदयंगम न करके केवल ऊपरी लक्षणों की चिकित्सा की जा रही है। रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने के बजाय दो चिकित्सक रोगी को निगल जाने के लिए लड़ रहे हैं। स्पष्ट है कि इसमें न तो रोगी का भला है और न चिकित्सकों का। रोग इससे और फैलेगा ही, घटेगा नहीं। अतः कम्यूनिज्म की प्रवृत्तियों को निःशक्त करने के लिए सबसे पहला साधन यह होना चाहिए कि अमेरिका और उसके सहयोगी इन देशों में आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माण की परि-स्थितियों को यथेच्छ पोषण दें और जन-जीवन के विश्रृं-खल विश्वासों को दृढ़ स्तर पर प्रतिष्ठित करें। जनतंत्र-शासन-प्रणाली में इन राष्ट्रों की आस्था इसी प्रणाली से फिर बलवती हो सकती है। रूस को दोष देने से कोई लाभ नहीं होगा।

पराजित ब्रिटेन

लेकिन अमरीकी विदेश-नीति का उद्देश्य इतना कल्याणकर नहीं है। कम्यूनिज्म के प्रसार को रोकने की धारणा के पीछे उसका अपना निजी स्वार्थ छिपा हुआ है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व ब्रिटिश साम्राज्यवाद अमरीकी पूँजी का पहरेदार था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद को आर्थिक पोषण देकर अमेरिका ने अपनी पूँजी को विश्व के कोने-कोने में फैला दिया था। ब्रिटेन एक स्वामिभक्त संतरी की भाँति उसका संरक्षण करता रहा था। किन्तु युद्ध के बाद ब्रिटेन की आंतरिक शक्ति और सामर्थ्य अप्रत्याशित रूप से क्षीण हो गई और उसको स्वयं जीने के लाले पड़ गए। एशिया से उसके पैर उखड़ गए और यूरोप में उसका राजनीतिक प्रभुत्व रूस के हाथों में चला गया। अमरीकी पूँजीवाद के लिए यह मौत की सूचना थी, क्योंकि युद्ध के बाद अमेरिका के सामने विजयदर्प-स्फीत रूस का सोवि-यतवाद प्रतियोगिता का आमंत्रण दे रहा था। ब्रिटेन की विदेश-नीति कदम-कदम पर पराजित हो रही थी और इन असफलताओं से रूस लाभ उठाता जा रहा था। ब्रिटेन की सबसे बड़ी असफलता मध्यपूर्व में हुई। फिलस्तीन के प्रश्न को लेकर ब्रिटेन ने अपने दिवालियापन का नग्न प्रदर्शन कर दिया। मध्यपूर्व के सारे मुस्लिम राष्ट्र सोवि-यत की ओर आकृष्ट हो गए। अमेरिका को यह सह्य नहीं हो सकता था, क्योंकि मध्यपूर्व समस्त औद्योगिक विश्व का प्राण-स्रोत है। आज की दुनिया की सबसे आव-श्यक निधि तेल जिस मात्रा में यहाँ मिलती है, उस रूप में अन्यत्र कहीं नहीं। यहूदियों के समर्थन की घोषणा इसी उद्देश्य से ट्रूमेन ने की थी। तुर्की और यूनान को आर्थिक सहायता देने की विज्ञप्तियों से मध्यपूर्व के राष्ट्रों पर अपना राजनीतिक एवं आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करने की मंशा प्रेरणा-रूप में मौजूद है। कम्यूनिज्म का भय अमेरिका को इसीलिए आक्रांत कर रहा है कि उसके निजी स्वार्थों पर आघात हो रहा है। अतः आज अमेरिका ने जिस जिहाद की घोषणा की है, उसका लक्ष्य जनता के त्रास का निवारण नहीं है, वरन् अपनी पूँजी को सर्वेसर्वा बनाना है? क्योंकि अवसर और परिस्थितियाँ उसके अनुकूल हैं। एटम बम को अपने संरक्षण की परिधि बना-कर अमरीकी पूँजीवाद यथाशीघ्र अपने उद्देश्यों की सिद्धि देखना चाहता है। इस उतावलेपन में वह अपना विवेक ही नहीं दूरदर्शिता भी भूल गया है।

दो शिविर

अविश्वास और विग्रह इस नीति के प्रकृत परिणाम हैं। यही कारण है कि अंतराष्ट्रीय राजनीति बड़ी तेजी से दो शिविरों में विभक्त होती जा रही है। एक ओर अमेरिका का नवोन्नत पूँजीवाद है और दूसरी ओर रूस का विजय-दर्प-स्फीत बोल्शेविज्म। इन दोनों शिविरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संरक्षा में अनेक छोटे-छोटे और आश्रित राष्ट्र हैं। दोनों शिविर शक्ति-संतुलन की दिशा में प्रचंड प्रतियोगिता का मार्ग अपना रहे हैं। मास्को-परिषद् के सामने यही वस्तु-स्थिति थी और आज अंतराष्ट्रीय राजनीति में जो कटुता और खिंचाव पाया जाता है, उसके अंकुर इसी पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता की उर्वरा भूमि पर ही उगे हैं। पुराने प्रसंगों पर जितनी तीव्र गति से पटाक्षेप होता जा रहा है और नई समस्याएँ जितनी शीघ्रता से अपना प्रभाव जता रही हैं, उससे यही अनुमान होता है कि राजनीति के मानदंडों में नई रंगीनी प्रवेश करनेवाली है और अंतराष्ट्रीय राज-मंच नई बुनियाद पर खड़ा होनेवाला है।

द्वितीय महायुद्ध का सबसे पहला परिणाम सामंतवाद का पतन हुआ। सामंतवाद पर आधारित ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और जापान के राजतंत्र खंड-खंड होकर बिखर गए। ब्रिटेन को बड़ा गर्व है कि पिछले पचास वर्षों में जनतंत्रात्मक शासन-प्रणाली का जैसा विकास वहाँ हुआ, वैसा अन्यत्र कहीं भी नहीं हो सका—किन्तु इस गर्वोक्ति में आत्मभ्रांति ही अधिक है, विवेक के आलोक में किया गया आत्मपरीक्षण कतई नहीं है। ब्रिटेन का जो वर्त्तमान गणतंत्र है, वह सामंतवाद की ही उपज है और वह उसी पर जी रहा है। विशुद्ध जनतंत्र का तो अभी विकास भी नहीं हो सका है। जापान ने इसी प्रकार की जनतंत्र-प्रणाली की नकल की थी। जर्मनी और इटली में सामंतवाद अपने मूलरूप में विकसित हुआ। नाजीवाद और फासिज्म सामंतवादी विचार-धारा के उग्र एवं उन्नत रूप ही थे।

सामंतवाद के पतन के बाद अंतराष्ट्रीय राजनीति में दो नए प्रतिद्वंद्वी पैदा हो गए। दोनों ही सामंतवाद का दमन करने के लिए मत्री-सूत्र में आबद्ध हुए थे; किन्तु अपना उद्देश्य समाप्त करते-करते दोनों ही आपस में टकराने लगे और पिछले थोड़े से समय में ही दोनों की लक्ष्य दिशाएँ इतनी विपरीत हो गईं कि मानवता तीसरे महायुद्ध की आशंका से भयभीत हो उठी है। रूजवेल्ट और लिटविनाफ इस मैत्री के पुरोहित थे। दोनों के उद्देश्य आश्चर्यजनक रूप से एक साबित हो गए थे किन्तु जैसे ही दोनों इस पृष्ठभूमि से अलग हुए, वैसे ही इस मैत्री में मनोमालिन्य का समावेश होने लगा और थोड़े से समय में ही आपसी मतभेद की ग्रंथियाँ काफी मजबूत और जटिल हो गईं। रूजवेल्ट के बाद अमेरिका की राजनीति फिर पूँजीपतियों के हाथों में आ गई। ट्रूमैन रूजवेल्ट की तरह विवेकशील राजनीतिज्ञ साबित न हुआ। पूँजीपतियों के विरोध के सामने वह अपना मेरुदंड दृढ़ और स्थिर न रख सका। पहले झोंके में ही वह धराशायी हो गया। लिटविनाफ की तीक्ष्ण बुद्धि स्टालिन को मान्य नहीं हुई। उसे मोलोटोव के लिए स्थान रिक्त करना पड़ा। रूस और अमेरिका में आज जो तनातनी बढ़ती जा रही है, उसकी पार्श्वभूमि में इन्हीं परिवर्तनों का अस्तित्व है। रूस और अमेरिका जहाँ युद्धकाल में फासिस्ट-विरोधी मोर्चा बनाकर विश्वशान्ति के हित रक्त-दान देने के लिए समवेत रूप से मैदान में उतरे थे, वहाँ आज वे ही एक दूसरे के लिए घातक शत्रु बने हुए हैं।

हिटलर की खोज

रूस और अमेरिका का यह द्वंद्व वस्तुतः शक्ति-अर्जन के एकाधिकार का तकाजा है और आज इसके कर्तृत्व का सबसे उर्वर क्षेत्र जर्मनी है, जहाँ एक दूसरे को पराजित करने के लिए शतरंज की नई-नई चालें चली जा रही हैं। जर्मनी की निरीह जनता जिन संकटों का सामना कर रही है, उनके निराकरण की दिशा में इन प्रतिद्वंद्वी ताकतों ने अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया है। दोनों शक्तियाँ जर्मनी की जनता के सामने नई-नई शर्तें रख रही हैं और अतिरंजित प्रलोभन दिखला-दिखलाकर उसे अपने पक्ष में करने की प्रतियोगिता कर रही हैं। रचनात्मक क्षेत्र में दोनों ने अभी तक अपनी ईमानदारी का परिचय नहीं दिया है और जर्मनी की त्रस्त जनता को दोनों से किसी लाभ की आशा नहीं है। यही कारण है कि वहाँ फिर से अपने मसीहा फ्युहरर को याद किया जा रहा है और उसका छिन्न-भिन्न कार्यक्रम पुनर्जीवित हो रहा है। आज की संकटग्रस्त परिस्थिति में जर्मन जनता का दग्ध अंतःकरण हिटलर को खोज रहा है—अपने जीवन-काल में भी हिटलर इतना लोकप्रिय नहीं था, जितना आज है। जनता को न ब्रिटेन से प्रेम है, न रूस से और न अमेरिका से। विश्वास तो उसका इनमें से किसी पर भी नहीं है। हाल ही में जो चुनाव हुए, उनमें स्पष्टतः प्रकट हो गया है कि जर्मन जनता ऐंग्लो-अमेरिकन ढंग के जनतंत्र के लिए तैयार नहीं है। सोशलिस्टों की निर्बल और अध्यावहारिक विचारधारा को वह अपनाना भविष्य के लिए कल्याणप्रद नहीं समझती है, साथ ही कम्यूनिस्टों के आमूल परिवर्तनशील कार्यक्रम को भी वह अनुचित समझती है। वहाँ आज राष्ट्रीय डिक्टेटर की माँग की जा रही है और इस प्रकार उन नाजी अफसरों और नेताओं को, जो अल्प-काल के लिए उपेक्षित कर दिए गए थे, फिर से श्रद्धा का केन्द्र बनाया जा रहा है। अमेरिका के पूंजीपतियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी तत्परता से जर्मन जनता के इस मनोविज्ञान को हृदयंगम किया है और उससे पूरा-पूरा लाभ उठाने की कोशिश करना भी शुरू कर दिया है। यही कारण है कि जर्मनी में पराभूत नाजीशक्ति और प्रभाव फिर से जमते जा रहे हैं और इस प्रकार वह विषवृक्ष फिर अपनी जड़ें मजबूत कर रहा है, जिसको उखाड़ने के लिए इतने ज्यादे नर-रक्त की बलि देनी पड़ी थी!

हाल ही में मास्को में वैदेशिक मंत्रियों की जो परिषद् बैठी थी, उसके मुख्यतः दो उद्देश्य थे—पहला, जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ की जानेवाली सन्धि की शर्तों को तय करना और दूसरे, माल्टा-कान्फ्रेंस में 'तीन बड़ों' के बीच प्रभाव-क्षेत्रों को विभाजित करने की जो रूपरेखा निश्चित हुई थी, उसके प्रकाश में नए मंतव्य गढ़ना। किन्तु एक मास के भीतर ही अन्ताराष्ट्रीय राजनीति में इतने तीव्र परिवर्तन हुए कि इनमें से एक उद्देश्य भी पूरा न हो सका। जर्मनी और आस्ट्रिया के साथ की जानेवाली सन्धियों के मौलिक सिद्धान्त भी अभी तक निर्णीत नहीं हो सके। ८ मई १९४५ को जर्मनी ने हथियार डाले थे। अब ८ मई १९४७ भी गुजर गई, किन्तु जर्मनी के साथ सन्धि की शर्तें अभी तक निश्चित नहीं की जा सकी हैं। उसके विपरीत अन्ताराष्ट्रीय राजनीति के विचारकों ने नई आशंकाओं से जनता को भयभीत कर दिया है। अमरीकी पत्रकार तो इस अशुभ धारणा को बलवान् बना रहे हैं कि जर्मनी और आस्ट्रिया से शायद सन्धि का मौका ही न आ सकेगा और इससे पूर्व ही तीसरे महायुद्ध का सुप्त ज्वालामुखी जर्मनी के ही हृदय पर भड़क उठेगा। जर्मनी के साथ सन्धि करने का अभिप्राय यह है कि वहाँ पहले एक सुदृढ़ और निर्वाचन-प्रसूत उत्तरदायी सरकार कायम हो जाए, क्योंकि जन-प्रतिनिधि शासन-सत्ता के साथ ही राजकीय सम्बन्धों का विनिमय किया जा सकता है। किन्तु जिनके हाथों में आज के ध्वस्त-त्रस्त जर्मनी की भाग्य-रेखाएँ हैं, उन्होंने साशेष जर्मनी का निर्माण तो क्या वहाँ की भूख और बेकारी की समस्याओं के साथ अपनी हमदर्दी तक नहीं जतलाई है। अतः ऐसी परिस्थिति में जर्मनी के भाग्य-विधान का शिलान्यास ही कैसे सम्भव हो सकता है? सन्धि की बातें इसीलिए दीर्घ-दूरस्थ पार्श्वभूमि में ढकेली जा रही हैं। असलियत के नग्न रूप को नहीं देख सकने की असमर्थता यहाँ स्पष्ट हो जाती है।

लेकिन क्या इस पलायन से परिस्थिति में सुधार हो जाएगा या परिस्थितियों की जटिलता क्षीण पड़ जाएगी? आज की वस्तुस्थिति तो इसके विपरीत ही उत्तर दे रही है। अकेले जर्मनी के प्रश्न ने ही सारे अंताराष्ट्रीय राजमंच को नए-नए वैमनस्य और दल का अखाड़ा बना दिया है। फासिज्म को फिर से पोषण मिलने लगा है और पूंजीवाद की कूटनीति ने अपने शोषण-तंतुओं को काफी मजबूत और विस्तृत कर दिया है। फ्रांस में एकतंत्र शासन का हिमायती देगाल फिर अपना सिर उठा रहा है और ब्रिटेन में ऐसा आर्थिक संकट एक निश्चित सम्भावना हो गई है, जिसके झोंके से वहाँ का समाज त्राहि-त्राहि कर उठेगा। इस प्रकार परिस्थितियाँ उलझती ही जा रही हैं और दूसरी ओर 'तीन बड़ों' का मतभेद भी तीव्रतर होता जा रहा है। मास्को-परिषद् की असफलता की यही पृष्ठभूमि है।

मध्यपूर्व का युद्ध

यूरोप से बाहर इस मतभेद के कटु परिणामों के अन्य केन्द्र अरब और फिलस्तीन हैं। मध्यपूर्व की राजनीति प्रतिदिन उलझती जा रही है। फिलस्तीन का प्रश्न संयुक्त राष्ट्रसंघ की परिषदों में प्रतिध्वनित हो रहा है। अरबों और यहूदियों का शताब्दी-गत संघर्ष अपनी परिणति पर पहुँचकर भटक गया है। अरब-यहूदी-द्वन्द्व के सूत्र अन्ताराष्ट्रीय समस्याओं में उलझ कर इतने व्यापक और चिन्त्य हो गए हैं कि आज राजनीति का सारा भविष्य उनके साथ बँध चुका है। अमेरिका, ब्रिटेन और रूस के स्वार्थ फिलस्तीन की धुरी के चारों ओर मँडरा रहे हैं। अरबों और यहूदियों के घरेलू प्रश्न का आधार लेकर सारे मध्यपूर्व में विस्फोट की परिस्थितियाँ पैदा हो जाएँगी, यह तथ्य आज जितना स्पष्ट हो गया है, उतना पहले कभी नहीं था।

मध्यपूर्व की राजनीति का सारा भार इस समय ब्रिटेन के कंधों पर है। रूस और अमेरिका पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता में इतने गहरे उतर गए हैं कि समस्याएँ सुलझाने के बजाय उन्हें उनको उलझाने में ही अपना हित सूझ रहा है। मित्र के साथ ब्रिटेन ने जो भावी सम्बन्धों की बातें चला रक्खी थीं, वे भंग हो गई हैं। फिलस्तीन के दोनों पक्ष ब्रिटेन से असन्तुष्ट हैं। यहूदियों की उग्र कार्रवाइयों में शिथिलता नहीं आई है। ट्रांसजोर्डन की नई स्वतन्त्र रियासत ने भी ब्रिटेन का एहसान मानने से इनकार कर दिया और विरोध की ध्वनि से वहाँ की ब्रिटिश प्रभुता काँप उठी है। ईराक, ईरान और सौदी अरेबिया में कम्यूनिज्म और अमरीकी पूंजीवाद के तंतु गहराई हूँढ रहे हैं और वहाँ एकतंत्र शासकों एवं प्रतिगामी दलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपरिमित प्रलोभनों से अपने पक्ष में करने की उत्तरोत्तर कोशिश की जा रही है।

मध्यपूर्व की राजनीति में इस प्रकार की अराजकता आ जाने का कारण वहाँ की धरती में छिपे तेल के कुएँ हैं। ब्रिटेन, रूस और अमेरिका की लोलुप दृष्टि इन्हीं तेल के कुओं पर केन्द्रित है। ब्रिटेन के पैर तो यहाँ पिछले पचास वर्ष से जमे हुए हैं और अपना वर्चस्व यहाँ अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए उसने अपरिमित धन-जन की बलि भी यहाँ दी है। ब्रिटेन की संरक्षा में ही सबसे पहले अमेरिका ने मध्यपूर्व में प्रवेश किया। राजनीतिक साम्राज्य संस्थापित करने की महत्त्वाकांक्षा उसके भीतर नहीं थी। उसे तो तेल की तृष्णा थी। ब्रिटेन को रूस के प्रवेश का भय था, अतः सहायक की हैसियत से अमेरिका का आगमन उसे अखरा नहीं; किन्तु आज जब अमेरिका के पूँजीवाद ने ब्रिटेन को निगल जाने के लिए अपना मुँह फाड़ा है तो ब्रिटेन को अपनी आत्मरक्षा की चिन्ता हो गई है। अरबों और मिस्र के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने की नीति का यही रहस्य है। युद्ध से पूर्व भी अमेरिका की पूँजी मध्यपूर्व के तेल-व्यवसाय में लगी हुई थी किन्तु उस समय अमेरिका के मन में साम्राज्य कायम करने की क्षुधा नहीं जाग्रत् हुई थी। अमेरिका अन्ताराष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप करना भी अपने लिए हानिकर समझता था। किन्तु आज सारी मनस्थिति परिवर्तित हो गई है। द्वितीय महायुद्ध में जो विजय और प्रभुत्व अमेरिका को मिला, उससे उसकी महत्त्वाकांक्षा में नई रंगीनी आ गई है—पूँजीवाद के गर्भ में छिपी शोषण की लिप्सा प्रभुता का समर्थन पाकर दावानल के रूप में अभिव्यक्त होने लगी है। यही कारण है कि आज अमेरिका मध्यपूर्व में सिर्फ तेल पर ही अधिकार जमाना नहीं चाहता है वरन् वहाँ सैन्य-संचालन के यातायात की सुविधाएँ, व्यूह-रचना के लिए क्षेत्र और हवाई अड्डे भी कायम करना चाहता है। सौदी अरेबिया और बेहरीन द्वीप में अमेरिका ने हवाई अड्डे बनाने का काम भी शुरू कर दिया है। ब्रिटेन के सामने यह एक चिन्ताजनक परिस्थिति है।

सौदी अरेबिया की रेल

अमेरिका का मोह अरब में बढ़ता जा रहा है। यह अकारण नहीं है। अमेरिका के पास पहले से संचित तेल में कमी आती जा रही है, अतः अमेरिका के जहाजों को अपनी खपत का एक-तिहाई तेल अरब के तेल-क्षेत्रों से लेना पड़ता है। अरेबियन-अमेरिकन आयल कम्पनी के जीर्ण-शीर्ण आर्थिक तंत्र को निरन्तर पुनर्जीवित करने की कोशिशों के भीतर तेल का ही लालच है। युद्ध-काल में तेल-संग्रहों की सम्पन्नता के बावजूद भी अमेरिका को विवश होकर इस कम्पनी को तेल-विक्रय के लिए अनियंत्रित कीमतें देनी पड़ीं—इसका अभिप्राय यही था कि यह कम्पनी वहाँ जीवित रहे और भावी सम्भावनाओं को अपने पक्ष में समेटती जाए। रूजवेल्ट के विरोधियों ने इस नीति का घोर विरोध किया था, किन्तु आज अमेरिका को उसके जो उत्तम परिणाम मिल रहे हैं और सारी अरब-रियासतों में वह अपनी पूँजी का जो प्रभुत्व स्थापित करता जा रहा है, उससे व्यक्त होता है कि रूजवेल्ट की मध्यपूर्व-सम्बन्धी नीति कितनी दूरदर्शितापूर्ण थी। वास्तव में यह कम्पनी ही अमरीकी वर्चस्व की सूत्रधार है। सारी राजनीतिक कार्य-प्रणालियाँ इसी की संरक्षा में कार्य कर रही हैं। यदि अरेबियन-अमेरिकन आयल कम्पनी नष्ट हो जाती तो आज अरब के राष्ट्रों पर रूस का राजनीतिक नियंत्रण स्थापित हो जाता। दूसरी ओर यह कम्पनी तुर्की और यूनान को भी अमेरिका के विरोधियों के नियंत्रण से सुरक्षित रखती है। हाल ही में अमेरिका के कूटनीतिक विभाग ने एक गुप्त सर्कुलर सैनिक अफसरों के पास भेजा था, जिसका मंतव्य था कि अरेबियन-अमेरिकन आयल कम्पनी को प्रत्येक प्रकार की सहायता दी जाए और इस प्रकार तुर्की, यूनान और दर्रेदानियाल पर बढ़ते हुए रूस के आतंक को निस्तेज करने की चेष्टा की जाए।

इन राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा फायदा सौदी अरेबिया के शासक इब्न सऊद को मिल रहा है। उसकी प्रत्येक माँग को पूरा किया जाता है। उदाहरणार्थ, गत वर्ष इब्न सऊद ने अमेरिका के इंजीनियरिंग विभाग के सामने मरुस्थल के आर-पार एक ऐसी रेलवे लाइन बनाने की माँग की थी, जो उसकी राजधानी से सीधी उसके गर्मी में रहने के अवकाश-स्थान तक जाती हो। इस रेल के बनाने के लिए उसने एक करोड़ डालर का ऋण लेने का इरादा किया था। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक को जब यह ऋण देने के लिए कहा गया तो उसके संचालकों ने काफी निरीक्षण के बाद यह निर्णय दिया कि इब्न सऊद की रेल-निर्माण-योजना सम्भव नहीं है। किन्तु इब्न सऊद अपनी जिद पर अड़ा हुआ था। उसने सीधे को हाथ से जाने देना उचित नहीं समझा। उसके सभी पड़ोसी राजा लोग रेलों में यात्रा करते थे और उसे अभी तक ऊँटों और काफिलों पर सन्तोष करना पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था। सारी अमरीकी और ब्रिटिश पूँजी उसके सामने हाथ पसार कर खड़ी थी। उसने अपनी इच्छा पूरी करने का संकल्प कर लिया। फलतः उसे एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट बैंक ने एक करोड़ डालर के बजाय ढाई करोड़ का ऋण दिया। साथ ही इंजीनियरिंग विभाग ने राजधानी से रियाध तक ही रेलवे लाइन बनाने की योजना नहीं बनाई, वरन् उसके विशाल महल के आस-पास भी रेलें बनाने का प्रबन्ध कर दिया। इससे पूर्व युद्धकाल में भी इब्न सऊद को तीन करोड़ डालर का कर्ज दिया गया था। यह कर्ज ब्रिटेन के द्वारा दिया गया था, क्योंकि रूजवेल्ट-चर्चिल-समझौते की यह पहली शर्त थी कि मध्यपूर्व की राजनीति में अमेरिका ब्रिटेन के स्वार्थों की कदर करते हुए ही अपने हितों का बीजारोपण करेगा। साढ़े पाँच करोड़ डालर की यह ऋणरूपी सहायता परोपकार की दृष्टि से नहीं दी गई है, वरन् इस उद्देश्य से दी गई है कि इब्न सऊद अरेबियन-अमेरिकन आयल कम्पनी के अलावा अरब के तेल-क्षेत्रों पर अन्य देशों की कम्पनियों को लाभ न उठाने दे।

रूस की महत्त्वाकांक्षा

रूस की कार्य-प्रणाली इससे बिलकुल विपरीत है। मध्यपूर्व के ये तेल-समृद्ध राष्ट्र उसके सीमान्तों पर अवस्थित हैं और उसके तेल के क्षेत्रों का भी इनसे यातायात-सम्बन्धी सम्पर्क है। अतः उसे जहाँ एक ओर इनके तेल को प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा है, वहाँ अपने सीमान्तों की सुरक्षा की चिन्ता भी है और जब से अमेरिका ने इन क्षेत्रों में अपना डालर-साम्राज्य कायम करना घोषित कर दिया और तुर्की और यूनान को आर्थिक सहायता देने का निश्चय कर लिया, तब से उसकी चिन्ता और गहरी हो गई है। युद्ध के बाद रूस में उत्पादन की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है और तदर्थ तेल की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। अतः रूस को यह सहन नहीं हो रहा है कि अरब और ईरान के अधिकांश तेल पर अँगरेजों या अमेरिकनों का कब्जा रहे। तेल आज उत्पादन का ही प्राण नहीं है, वरन् युद्ध-विजय का भी अमोघ शस्त्र है। अतः जब अमेरिका के पूँजीपति तीसरे महायुद्ध की सम्भावनाओं पर अपने भवितव्य आधारित कर रहे हैं तो रूस के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह मध्यपूर्व के तेल में अपना हिस्सा बँटाए। दर्दानियाल, तुर्की और यूनान में आज रूसी प्रचारकों ने जो व्यूह-रचना के मंतव्य और साधन अपना रक्खे हैं, उनका उद्देश्य यही है कि इन तीन क्षेत्रों के मार्ग से मध्यपूर्व के देशों में प्रवेश किया जाए और वहाँ के तेल को अमरीकी शोषण से अपने लिए बचाया जाए। इसी उद्देश्य से उसने मध्यपूर्व के देशों की जनता में वर्तमान परिस्थितियों के विरोध की सम्भावनाएँ और आर्थिक दैन्य के प्रति असन्तोष की भावनाएँ फैला रक्खी हैं। अमेरिका का मार्ग शासकों को रिश्वतें देना है और रूस का मार्ग जनता के उद्वेग को उभाड़ना है। दोनों के अपने-अपने स्वार्थ हैं। ये स्वार्थ राई से पर्वत बनकर परस्पर निकट आ रहे हैं—टकराने का उपक्रम है।

अटलाण्टिक और मध्यपूर्व से हटकर इस त्रिकोणात्मक संघर्ष की अवस्थिति प्रशान्त महासागर द्वारा आवृत भू-भाग में भी दृढ़ होती जा रही है। इसमें भी प्रतियोगिता के मंच पर रूस और अमेरिका का ही प्रभुत्व है। भारत, प्रशान्त के द्वीपसमूह, चीन, जापान और कोरिया की वर्तमान राजनीति इसी संघर्ष में उलझी हुई है—उनके उज्ज्वल भविष्यत् पर इसी संघर्ष की काली छाया घनीभूत हो रही है। चीन में रूस और अमेरिका के पारस्परिक प्रतिरोध का साक्षात्कार बड़ा प्रचण्ड और घातक हुआ है। करोड़ों निरीह मनुष्यों ने इस षड्यन्त्र की वेदी पर अपनी बलि चढ़ाई है। परिस्थिति में अब भी सुधार नहीं हो पा रहा है और ज्यों-ज्यों दोनों भीमकाय प्रतिद्वंद्वियों की लिप्सा मूर्त होती जा रही है त्यों-त्यों मानवता का संकट और गहरा होता जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राही

प्रोफेसर सत्यप्रकाश संगर, एम० ए०, (आनर्स)

हिमालय की गगन-चुम्बी दीवारें शेरपुर को अपने दामन में सँभाले खड़ी थीं और शेरपुर की घाटी प्राकृतिक सौन्दर्य का जीता-जागता चित्र थी। पहाड़ों के बीच गेहूँ के अनगिनत खेतों में बँटा हुआ एक विशाल मैदान पर फैलाए पड़ा था। उसमें खेतों की बेढंगी-सी क्यारियाँ हाथों की असंख्य रेखाओं की भाँति फैली हुई थीं। इनको मिलाती हुई पगडण्डियों पर चलते हुए नर-नारी पहाड़ की चोटी से ऐसे मालूम देते थे जैसे रेंगते हुए कीड़े।

खेतों को मिलाती नागिन के समान बलखाती एक नीली लकीर थी, जिसमें कहीं-कहीं उभरे हुए सफेद चिह्न दीखते थे। यह पहाड़ों में बहती हुई रावी थी। यौवन मद में चूर एक चंचल सुन्दरी के समान वह बल खाती, इठलाती हुई आगे बढ़ रही थी। उसकी रग-रग में मस्ती भरी थी। उसके अंग-अंग से यौवन फूट रहा था। उसके नाच की झंकार एक सुन्दर गीत बनकर शेरपुर की विस्तृत घाटी में व्याप्त थी। अनगिनत शताब्दियों से वह गीत में मस्त और नृत्य में मग्न चली आ रही थी और एक ही धुन से अपने ध्येय की ओर, अपने प्रियतम की दिशा में, चली जा रही थी—अपने आपको उसमें मिलाने के लिए, अपने अस्तित्व को मिटा देने के लिए। वह दृढ़निश्चया कितनी अपूर्व स्थिति से आगे बढ़ी जा रही थी। पिया-मिलन की मादकता ने उसे पागल बना रखा था। पहाड़ों को काटती, चट्टानों से टकराती और पत्थरों से उलझती वह भागी जा रही थी और न जाने कब से। कितने घोर विप्लव आए, कितने व्यापक परिवर्तन हुए; उन्नति और अवनति की मुठभेड़ हुई; भिन्न-भिन्न सम्राटों ने साम्राज्यों के अंकुर बोए और उनसे उत्पन्न हुए वृक्षों को जमाने की प्रचंड वायु ने जड़ से उखाड़ फेंका। फिर नए अंकुर, नए वृक्ष और नए तूफान। एक अनन्त व्यापार, एक अनवरत व्यवहार। लेकिन इस सबसे बेखबर, संसार की क्षुद्र वायु से अछूत, वह बही जा रही थी।

उसमें कितना जीवन और कितना प्रवाह था। लेकिन शेरपुर के वासियों के लिए वह केवल एक नाला था, सदैव बहनेवाला, उनके खेतों को सींचनेवाला। उसकी प्रचण्डता उनके लिए एक जटिल समस्या बन जाती थी। उसको पार करने के लिए उनका अपना बनाया हुआ रस्से का एक पुल था जिसको पार करना एक अतीव कठिन कार्य था। थोड़ी-सी चूक पार करने वालों को उसके चंगुल में धकेल देती और शरीर चट्टानों से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता।

और चट्टानें कितनी भयंकर और भयप्रद थीं। शताब्दियों से अपने स्थान पर गड़ी हुई वे अब भी एक व्यतीत युग की स्मृति ताजा कर रही थीं। जब पत्थर के शस्त्र बनते थे, जिनसे जानवरों का शिकार होता और शत्रुओं का मुकाबला। वह था पत्थर का युग, जब सभ्यता-रूपी रवि का उदय न हुआ था। जब एक पत्थर एक समय एक ही मनुष्य का शिकार कर सकता था। अब है ऐटम युग। जब सभ्यता का सूर्य उन्नति के शिखर पर पहुँच चुका है और एक ऐटम लाखों जानदारों के लिए मृत्यु सन्देश ला सकता है। शताब्दियाँ बीत गईं। पत्थर के शस्त्र एक व्यतीत काल की याद बनकर रह गए। लेकिन उनकी चट्टान-माताएँ उसी स्थान पर गड़ी नदी के मार्ग को रोकने का असफल प्रयत्न कर रही थीं।

किन्तु वादी के लोग, नदी की प्रचण्डता से बेखबर, वातावरण से अप्रभावित, जीवन व्यतीत कर रहे थे। शहरी कलरव से दूर और प्राकृतिक सौन्दर्य से अनभिज्ञ वे जीवन की लहर में बहे जा रहे थे, जैसे मन्द गति नदी के प्रवाह के साथ लकड़ी का एक टुकड़ा। विस्तारों में फैली हुई बेजान घाटी में शाह जी की दूकान पर ही जीवन के चिह्न नजर आ रहे थे। दूर बिखरे हुए घरों से पहाड़ी लोग मैले, ऊँचे पाजामों, गंदी पगड़ियों और फटे हुए कोटों में लिपटे शाह जी की दूकान पर इस प्रकार डरते-डरते सौदा माँगते, जैसे भीख माँग रहे हों। उन बेजान लोगों में शाह जी ही जीवन के पुतले नजर आते थे। उनकी दूकान पंसारी, बजाजी और मुनियारी का एक संग्रह थी, जहाँ से उनकी सब माँगें पूरी होतीं।

उसका वश चलता तो सारा जीवन उसी घाटी में व्यतीत कर देता। लेकिन जीवन में सब काम मनुष्य की इच्छानुसार नहीं होते। उसका पड़ाव वहाँ से आठ मील दूर था, जहाँ से मोटर में सवार हो उसे शहर लौटना था। वह थोड़ा-सा अवकाश लेकर प्रकृति-आलिंगन करने आया था। विवश हो वह लौट पड़ा। उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने ऊँचे पहाड़ थे जिनको काटती हुई एक पगडंडी उसके पड़ाव को जाती थी। वह उस पगडंडी के साथ-साथ लौट पड़ा। वह चलता रहा। पगडंडी खेतों में लोप हो गई, जहाँ किसान हल चला रहे थे। सूर्य तेजी से अपना रास्ता तय कर रहा था। उसके आसपास जीवन का कोई चिह्न दिखाई न देता था। जैसे परिस्थिति ने षड्यन्त्र रचकर उसे इस व्यवस्था में धकेल दिया हो। वह उस पृथक्ता और निर्जनता से घबरा-सा गया। रास्ता भूल वह सीधा पहाड़ पर चढ़ने लगा। काँटेदार झाड़ियों से उलझता, नुकीले पाषाणों से टकराता और सूखी घास पर फिसलता वह ऊपर चढ़ता गया। उसे आशा होती कि उस पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर सीधा मार्ग दिखाई देगा। परन्तु उसके बाद एक दूसरा पहाड़ आरम्भ हो जाता और फिर तीसरा। और वह चलता रहा। दूर से एक आवाज उसके कानों में पड़ी। कोई गा रहा था। वह उस आवाज की ओर बढ़ा। सामने ढलाव था। उतरना बहुत आसान हो गया। हिमाचल की बर्फीली चोटियों के पिघले हुए आँसुओं को अपने दामन में सँभाले एक पहाड़ी नाला तीव्र गति से भागा जा रहा था, जैसे चोरी का माल उड़ाए कोई डाकू। नाले के किनारे एक घड़ा पड़ा था। उसके पास एक विशाल चट्टान पर पीठ के बल लेटी हुई एक सुन्दरी मीठे सुर में अलाप रही थी। वह वहीं रुक गया। उसके गीत का भाव इस प्रकार था—

"प्रियतम, मैं कब तक तुम्हारी बाट जोहूँ?
प्राकृतिक सौन्दर्य मुझे पागल बना रहा है।
पहाड़ की चोटियाँ सफेद बर्फ की चोली पहने खड़ी हैं।
सूर्य की किरणें उससे आलिंगन कर रही हैं।
चीलों के वृक्ष नशे में झूम रहे हैं।
और मादकता से भरा चश्मा मस्त नृत्य में मग्न है।"

न जाने क्यों उसकी आह निकल गई जिसने उस लड़की को चौंका दिया। परदेसी मुसाफिर को देखकर वह झिझकी किन्तु शीघ्र सँभल गई और घड़ा सँभाल सोते के किनारे जा बैठी। उसकी निगाहें उस रूप-राशि से उलझ गईं। कितना लावण्य था उसमें। गम्भीरता और सरलता से भरपूर उस गुलाबी मुख पर सुरमई आँखें और तनी हुई भवें चित्रकार की निपुणता को पुकार-पुकारकर सराह रही थीं। प्रकृति की गोद में पली हुई, कपट और छल से रहित वह उस रूपसी के निकट सम्पर्क से आनन्दित होने लगा।

अकस्मात् एक धीमी-सी आवाज ने उसे चौंका दिया। वह पूछ रही थी—

"कहाँ से आए हो, मुसाफिर?"

"शेरपुर से।"

"कहाँ जाओगे?"

"छावनी।"

"इधर कैसे आ फँसे?"

"रास्ता भटककर।" उसने कहा। "कँटीली झाड़ियों से उलझता, भयानक पहाड़ी रास्तों में लुढ़कता इधर आ निकला हूँ।"

वह स्तब्ध होकर उसका मुंह तकने लगी। क्या वह सचमुच रास्ता भूलकर रीछ और चीते से भरपूर घने जंगलों और भयंकर पर्वतों में से घूमता आया था। वह उन भयंकर रास्तों से अनभिज्ञ न थी। वह हैरान थी कि किस प्रकार एक परदेसी मुसाफिर मार्ग भूलकर, संध्या समय उन जंगलों में घूमता रहा और तीखे पहाड़ों पर चढ़ता रहा। एक गलत कदम, एक भूल, उसे दूर नीचे पर्वत की गहरी घाटियों में ले जा सकती थी, जहाँ शताब्दियों की भूखी चट्टानें अपने तेज दाँत निकाले उसका स्वागत करने को खड़ी थीं। वह काँप उठी। सहानुभूति का एक समुद्र उसके मन में लहरें मारने लगा। काश वह उसकी सहायता कर सकती! वह थकावट से चूर और भूख से व्याकुल हो रहा था। लेकिन सौन्दर्य के सौरभ ने यह सब कुछ भुला दिया। सुन्दरी ने उसके मुर्झाए मुख की ओर देखा। उसके दिल की गहराइयों तक पहुँचने का प्रयत्न किया। फिर न जाने उसे क्या सूझी। वह उठ बैठी और धीमे से बोली—

"पथिक, वह जो सामने घर दिखाई देता है, वहाँ एक बुढ़िया रहती है। वहाँ सुस्ता लेना।"

और इतना कहकर वह एकदम दृष्टि से ओझल हो गई।

वह निराश हो अपने भाग्य को कोसता आगे बढ़ा। ऐसी कठिन यात्रा में उस परी के परिचय ने उसे कितना सुख प्रदान किया था। अब एक स्वप्न की भाँति वह दृष्टि से ओझल हो गई। वह दिल मसोसकर रह गया। सफर की थकावट और भूख की तेजी उसे और भी परेशान कर रही थी। उसने देखा कि दूर पश्चिम में चीलों के पीछे सूर्य ने आग लगा रखी थी। वह दिन भर प्रभुत्व जमाने के बाद अब भी डूबना न चाहता था। प्राकृतिक नियम की अनावश्यक बाधा ने उसे आगबबूला कर दिया। स्वर्णमयी लाली छा गई। ऊँचे बर्फीले पहाड़ों पर उसकी छाया जा पहुँची। सुनहरी किरणें सफेद बर्फ से आलिंगित हो गईं। बर्फ का मुख लाल हो उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे किसी रमणी के सुन्दर मुख पर शर्म से लाली की लहर दौड़ जाए। प्रकृति सौन्दर्य की अन्तिम सीमा पर पहुँच चुकी थी--परन्तु वह उसका उपभोग न कर सका। दिशाओं की निस्तब्धता को चीरता हुआ नदी का अनवरत कलरव अब भी उसके कानों में गूँज रहा था, पर वह उसके हृदय में गुदगुदी पैदा न कर सका। जीवन उसके लिए फीका और नीरस बन गया था।

और सामने थी पहाड़ की चढ़ाई। सीधी और तीक्ष्ण। योगी के मार्ग की तरह कठिन। एक भूल उसके जीवन-दीप को बुझा सकती थी। क्या है जीवन भी? चौराहे पर रखा हुआ दिया। थोड़ी चढ़ाई के बाद उसे साँस लेने के लिए रुकना पड़ता। उसने देखा, दूर नीचे घाटी में रावी अपने राग में मस्त थी। उसके किनारे सिर उठाए एक पहाड़ खड़ा था तिर्छा-सा। उस पर झाड़ियाँ उगी थीं। जहाँ बकरियाँ चर रही थीं। पास ही उसी पहाड़ी पर पहाड़ी लड़के बैठे थे। उसे उन चरवाहों पर और उनकी बकरियों पर तरस आ गया। वहाँ से फिसलना कितना आसान था और नीचे पत्थरों और चट्टानों से टकराती रावी बह रही थी। लेकिन वे न गिरे और न ही उनकी बकरियाँ। वह प्रकृति के चमत्कार पर विस्मित हो उठा जो विशाल मैदानों में, तंग घाटियों में और बर्फीले पहाड़ों पर मनुष्य को अपने अनुसार बना लेती है। वह आगे बढ़ा। युवती के विचार ने उसे परेशान कर रखा था जो इस प्रकार धोखा देकर, एक झूठी आशा दिलाकर भाग गई थी। उसने सोचा, सचमुच पहाड़ी लोगों से मित्रता की आशा रखना गलत है। ऊपर पहाड़ पर एक मकान दिखाई दे रहा था। मंजिल अभी दूर थी और दिन ढल रहा था। उसने हिम्मत बाँधी और तेज कदम उठाता हुआ मकान के पास जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसे कुछ ढाढ़स हुआ। शायद वहीं कुछ खाने को मिल सके। वह पैसे दे सकता था। ये लोग दरिद्र तो होते हैं और दरिद्रता और लोभ में कितनी गाढ़ी छनती है। उसने देखा कि मकान का निचला कमरा बन्द पड़ा था और ऊपर की मंजिल पर बत्ती जल रही थी, जो उस शून्य जंगल में इस प्रकार मालूम दे रही थी, जैसे अन्धकारमयी रात्रि में बादल से घिरे हुए आकाश में एक तारा चमक रहा हो। वह नीचे फर्श पर बैठ गया और फिर वहीं लेट गया। भूख ने उसे निढाल कर दिया था।

"कौन है?" एक आवाज ने उसे पुकारा।

"पथिक।" उसने लेटे-लेटे कहा।

"कहाँ से आए हो?"

"शेरपुर से।"

"कहाँ जाओगे?"

"छावनी।"

"इस समय?" उस आवाज ने हैरानी से पूछा।

वह न समझ सका कि इसमें हैरानी की क्या बात है और इस समय शेरपुर से आने में क्या हर्ज है। उसने सोचा, पहाड़ी लोग भीरु होते हैं। लेकिन उसे अकस्मात् याद आया कि अभी यात्रा बाकी है और पेट खाली है। उसने बैठते हुए मकान के मालिक से पूछा--"यहाँ कहीं खाने को कुछ मिल सकेगा? उसकी 'ना' ने उसे निराशा के समुद्र में धकेल दिया। उसकी आँखें चकरा रही थीं और वातावरण घूमता हुआ ज्ञात होता था। उसने सुना, कोई किसी को सम्बोधन कर कह रहा था—

"लूसन की माँ, मुझे याद आ गया। मुझे गायलियाँ जाना है। एक आवश्यक कार्यवश। जमीन का मामला है। शायद देर से लौटूँ। अथवा प्रातः ही आऊँ।" और आसपास के जंगलों और पहाड़ों की नीरवता पर उस पहाड़ी जमींदार की ध्वनि छा गई। उसकी यह आशा भी जाती रही। मंजिल अभी दूर थी। भूत की छाया की भाँति रात सिर पर खड़ी थी। आज उसके लिए हार का दिन था। उस बालिका की रुखाई ने उसके दिल पर गहरा घाव कर दिया था। शायद उस घाव की तीक्ष्णता घट जाती यदि जमींदार गायलियाँ जाने की बजाय उसे कुछ खाने को दे देता। उसकी उपेक्षा ने उसके घावों को ताजा कर दिया।

उसी समय एक बुढ़िया उसके पास आकर खड़ी हो गई। एक हाथ में गिलास सँभाले और दूसरे में रोटी। और बोली--

"बाबू जी, खाओ। और यह रही चाय। लूसन कहती है कि वह इस समय खाना नहीं खाएगी। इस पर आपकी मुहर लगी है।"

उसे लगा, जैसे वह स्वप्न देख रहा हो। लूसन, चाय, रोटी और मुहर। उसकी समझ में कुछ न आया। सब कुछ गोरखधंधा-सा। इतने में बुढ़िया फिर बोली--

"लूसन, मैं पानी लाना भूल गई। ये लोग बिना हाथ धोए नहीं खाते। एक पानी का गिलास लाओ। लालटेन भी लेती आना।"

और न जाने कहाँ से वही सुन्दरी उसके सामने आकर खड़ी हो गई। वह थी लूसन, वनदेवी, स्वर्ग की अप्सरा। चाय और रोटी को भूल वह वशीभूत होकर उसकी ओर देखने लगा। वह बोली—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पथिक, अब तो खाओ।" और फिर कहने लगी--
"कहाँ जाओगे इतनी रात? यहीं लेट रहो। बापू अब प्रातः से पहले नहीं आएँगे।"

कितनी अभिलाषाएँ तड़प रही थीं इस याचना में, कितनी आकांक्षाएँ सिसक रही थीं इस पुकार में। वह दिल मसोसकर रह गया। परदेसी मुसाफिर ! मैदानों का वासी ! पहाड़ों के व्यवहार से अनभिज्ञ ! यहाँ के संसार से अनजान ! सामने तीन मील परे दूसरे पहाड़ पर प्रकाश टिमटिमा रहा था। यह थी उसकी मंजिल, दयारों की ओट में चाँद आँख-मिचौनी खेल रहा था। जंगल सुरभि से महक रहा था। और यहाँ थी लूसन जिसमें चाँद का सौन्दर्य और दयारों का सौरभ भरा था। वह सोचने लगा--लूसन और मंजिल।

उसी समय दूर से एक आवाज आई। वह लूसन के बाप की थी। वह गायलियाँ से लौट आया था। न जाने क्यों? लूसन उसकी गर्ज सुनकर भागी। बुढ़िया भी न रुक सकी।

और जमींदार मुसाफिर से कह रहा था--

"हाँ, वह सामने प्रकाशवाला पहाड़, वही तुम्हारी मंजिल है। सीधे सड़क के साथ चले जाओ। तीसरे मील पर बाईं ओर मुड़ जाना। जय जय!!"

यह क्या हो गया !

पंडित आत्मस्वरूप शर्मा

सोचते हैं--यह क्या हो गया ? हम कहाँ से चले थे, किधर के लिए रवाना हुए थे और आ पहुँचे हैं--कहाँ। किसी की कल्पना में भी नहीं था कि हालात इतनी तेजी से बदल जाएँगे और अन्त में हम वही मूल आधार खो बैठेंगे, जिसके लिए हमने इतने भीषण तप किए, इतने भारी संग्राम का मार्ग काटा और संसार के किसी भी त्याग और बलिदान को अधिक न जाना। हमारा सारा श्रम बेकार रहा। हम अपने आपको तो "एक" क्या रख सकते थे--अपने प्यारे देश को भी एक न रख सके। जब इस दशा का ध्यान आता है--तो तड़पा देनेवाली वेदना होती है। पर, आज हालत उस सीमा तक आ पहुँची है कि जब हम चाहकर भी द्वार पर आई मुसीबत को टाल नहीं सकते। अब हमें संयुक्त भारत से हाथ धोना और भाई को भाई से जदा देखना है ही--चाहे हम इसे पसन्द करते हों या न।

वन्देमातरम् का वह गीत जो कभी हमारे हृदयों में विशेष प्रकार का उल्लास उत्पन्न करता था और जिसकी ध्वनि हमारी झुकी हुई गर्दनों को ऊँचा कर देती थी--आज काटने को आता है। यह गीत आज हम किसके लिए गाएँ और किसे सुनाएँ? वह माँ की मूर्ति ही अङ्ग-भंग दशा में दीख रही है, जिसकी अर्चना हम इतनी श्रद्धा और भक्ति से--देश-प्रेम के अश्रु बहाते हुए करते थे। इकबाल का भले समयों में गाया हुआ कौमी तराना भी अब किसे आनन्द देगा? "हिन्दुस्तान हमारा" कहाँ है और उसे किस मुँह से अब "सारे जहाँ से अच्छा" कहा जा सकता है? देश-भक्ति के सारे सुपने हवा हो गए और हम अँगरेज के हाथ का खिलौना बनकर अपना अस्तित्व खो बैठे।

हम जिस शोचनीय और प्रायः सर्वनाशकारी दशा को प्राप्त हो रहे हैं--उसका दायित्व किस पर है? यह समय है कि सच्ची बातों को आज मुंह पर कह सुनाया जाए। हमें गर्व था कि कांग्रेस हमें राजनीतिक दौड़ में बहुत आगे ले गई। उसने हमारे बच्चे-बच्चे के भीतर स्वतन्त्र होने की लगन उत्पन्न कर दी। हमें दासत्व से निकालकर स्वतन्त्रता और आत्माभिमान का मार्ग दिखाया। गांधी जी के अहिंसा और सत्य के उपदेश ने हमें आध्यात्मिक दिशा में बहुत ऊँचा कर दिया और इसी कारण दूसरे देश भी हमारा सम्मान और आदर करने लगे। पर इस सारे लाभ का थोड़े से बरसों में अन्त हो गया। देखें तो चार करोड़ देश-वासियों ने शेष ३५-३६ करोड़ मनुष्यों की आवाज को दबाकर अपनी मनमानी करवा ली और हम असहाय खड़े निर्बलों की तरह झुकने के लिए विवश हो गए।

कांग्रेस बड़ी शक्तिशालिनी है। उसमें बड़े-बड़े कर्मवीर हैं, जो देश के लिए कष्ट उठाना साधारण-सी बात समझते हैं और जिन्होंने अपनी आयु का बड़ा भाग देश-प्रेम के निमित्त कारावास में व्यतीत किया है। उसके कर्णधार गांधी जी जैसे तपस्वी ही नहीं, पटेल और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलाल नेहरू जैसे नीतिज्ञ भी हैं। यह सब सत्य होते हुए भी हमें सारी स्थिति को "अन्तिम परिणाम" से जाँचना है चाहे वह हमारे अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल। क्या यह सच्चाई नहीं कि कांग्रेस अपने इतने वर्षों के दीर्घ संग्राम को केवल एक "जिद" की ओट में खो बैठी है कि वह चालीस करोड़ भारतीयों की संयुक्त संस्था है। हमारे नेता कितने भी बड़े क्यों न हों और लोकमत की प्रस्तुति में सत्य बात कहना आज कितना भी कठिन क्यों न हो—हमें सत्य कहने से चूकना नहीं चाहिए। हमें जिस रसातल में पहुँचना था, वहाँ तो हम पहुँच ही गए हैं—अब झूठी बातों से दिल बहलाना अनुचित ही नहीं अपितु महापाप है।

यह सत्य है कि अँगरेजों का अपना लाभ इसी में था कि वे देश को फूट की बारूद से फाड़कर इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते, पर शासकों की इस कूटनीति के सम्मुख जिसका हमें भली प्रकार ज्ञान था, हमारी अपनी राजनीतिज्ञता, समझ-बूझ और चतुराई किस काम आई? हमारा आत्मिक बल भी हमारे किसी काम न आ सका। अँगरेजी साम्राज्यवाद का गत इतिहास हमें भूला नहीं। हम जानते हैं ये लोग जहाँ-जहाँ भी रहे, इन्होंने बाँट और बँटवारों ही से अपना कार्य सिद्ध किया। वह कौन सा देश है, जिसमें अँगरेज गया और उसके टुकड़े-टुकड़े नहीं किया? आयरलैंड, मिस्र और फिलस्तीन का इतिहास हमारे सामने है। पर यह इतिहास भी अँगरेज की चाल समझने में हमारी सहायता न कर पाया। हम अँगरेज की नीति से तो हारे ही, उन देशवासियों की नीति से भी हार गए, जो दो जातियों की झूठी रट लगाकर एक काल्पनिक बात को मनवाने में सफल हो गए।

देश-भक्ति के मार्ग में हमारी यह पराजय क्यों हुई? मैं कहता हूँ—इसलिए कि हमने "एक सत्य" का आश्रय नहीं लिया। हम बराबर पैंतरे पर पैंतरा बदलते रहे केवल इस लोभ में कि सम्भवतः हम अपने उन भाइयों को साथ रख सकेंगे, जिन्हें आज हमारा भाई होने से भी इनकार है। हमारे विरोधियों को, जो देश बाँटना चाहते थे, सफलता इस कारण हुई कि वे अपनी एक ही रट पर आरूढ़ रहे—चाहे वह झूठी रट थी और चाहे सच्ची। सन् १९४० में जब मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए पृथक् शासन का प्रस्ताव पास किया तो उस समय उनके प्रस्तावित राज की कोई रूप-रेखा नहीं थी और रूप-रेखा तो आज सात वर्ष के पश्चात् भी नहीं। पर बिना रूप-रेखा बनाए मुसलमानों ने अपना पृथक् राज स्थापित करने का स्वप्न साकार कर लिया। हम जानते हैं सब मुसलमान पृथक् मुस्लिम-राज (जिसे हम पाकिस्तान कह रहे हैं) के पक्षपाती नहीं और न माँग में मुख्यतः और केवल वे चार-पाँच करोड़ मुसलमान ही शामिल हैं, जो प्रान्तीय बहु-संख्या रखते हैं। अल्प संख्यावाले प्रान्तों के मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या निश्चित रूप से बँटवारे के पक्ष में नहीं। "दो-जाति" का सिद्धान्त तो यहाँ ही चकनाचूर हो जाता है। पर "जिद्द" के सामने उन लोगों की, जिनमें मुसलमानों की एक भारी संख्या भी थी, कोई युक्ति न चल सकी। यह इसीलिए कि इन चार करोड़ लोगों का, जो अपने आकों जिन्ना साहब के हाथ में देकर निश्चिन्त हो गये थे, दृढ़ता से नेतृत्व किया गया। इन सात वर्षों में, जिनमें मुसलमानों की पृथक् इस्लामी राज की माँग का खूब उपहास किया गया और सभी युक्तियों से यह सिद्ध करने का यत्न हुआ कि ऐसा पृथक्करण हो जाने पर भी टिकाऊ नहीं होगा, मुस्लिम लीग को अपने मूल प्रस्ताव में एक अक्षर भी इधर-उधर करने की आवश्यकता नहीं हुई। इसकी तुलना में कांग्रेस अपने मतों में आए दिन परिवर्तन करती रही। उसने कभी आत्म-निर्णय के सिद्धान्त का आश्रय लेकर मुसलमानों को एक गलत मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया और कभी एक साम्प्रदायिक संस्था के साथ बात-चीत का मार्ग खोलकर राष्ट्रीयता की जड़ें खराब की। यदि जवाहरलाल नेहरू, पटेल और राजेन्द्र प्रसाद आदि महान् नेता—गांधी जी के अन्ध-विश्वासी भक्त न होते, तो बहुत सम्भव था कि उनकी ओर से मुसलमानों की एक मिथ्या माँग का दृढ़ता से विरोध किया जाता। पर हर नेताओं ने तो अपनी बागडोर पूर्ण रूप से गांधी जी के हाथ में दे डाली। इसलिए वे स्वतंत्र विचार रखते हुए भी, स्वतंत्र विचार रखने और उनके अनुसार क्रिया करने में असमर्थ रहे। यह सूझ बोदा था कि मुसलमानों को "आत्म-निर्णय" का—देश को बरबाद कर आत्महत्या करने की सीमा तक भी पूर्ण अधिकार है। आठ-नौ करोड़ मुसलमानों को ऐसा अधिकार है तो तीस करोड़ हिन्दुओं को कोई अधिकार क्यों नहीं? यह साधारण सूझ की ऐसी अटल बात थी, जिससे कभी इनकार नहीं हो सकता था। पर कांग्रेस ने इस मोटी बात पर बल देना भी आवश्यक न समझा, केवल इस भय से कि कहीं उसका हिन्दू-संस्था होना सिद्ध न हो जाए। इसी भय ने सारा खेल चौपट कर दिया और देश को ऐसी बरबादी करवा दी, जिसकी पूर्ति आज प्रायः असंभव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस जिस बात से भयभीत रही, वही बात करवानेवालों ने एक नहीं अनेक पहलुओं में प्रमाण को पहुँचा दी। आरम्भ इस प्रकार हुआ कि गान्धी जी मुस्लिम सम्प्रदायवादियों के सरदार—जिन्ना के साथ इस भाव में बातचीत करने के लिए राजी हुए कि शायद प्रेम-प्रदर्शन से उनका मन पसीज सकेगा। गांधी जी प्रत्येक बार जिन्ना के मकान पर स्वयं पहुँचकर उनसे वार्तालाप करते रहे। उन्होंने इस प्रकार अपने हृदय की उच्चता प्रदर्शित की और यह मानने की बात है कि वे ऐसा कर संसार की दृष्टि में बहुत ऊँचा उठ गए। पर मित्र-भाव के इस प्रदर्शन को धीरे-धीरे राजनीतिक बातचीत का खुला मार्ग बना लिया गया और पीछे कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य समझौते की सब बातचीत बिना झिझक केवल इसी आधार पर होती रही कि कांग्रेसवाले हिन्दुओं के और मुस्लिम लीगवाले मुसलमानों के प्रतिनिधि हैं। अनजाने से अथवा जाने से—यह तो परमात्मा ही जान सकता है—पर जिन्ना साहब बड़ी चालाकी से कांग्रेस को जो विशुद्ध राष्ट्रवादी होने की दावेदार थी, मुस्लिम लीग जैसी खुल्लम-खुल्ला सम्प्रदायवादी संस्था के साथ बातचीत करने के लिए अपने जाल में खींच ही लाए। क्या कांग्रेस ने कभी एक बार भी इनकार किया कि वह एक सम्प्रदायवादी संस्था के साथ बातचीत में पड़ने को तैयार नहीं? उसे ऐसा इनकार उचित था—यदि वह अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ होती। वह एक बार क्या फिसली, फिर फिसलती ही चली गई यह एक मोटी और प्रत्यक्ष बात है, जिसका औचित्य कांग्रेस आज किसी युक्ति से भी सिद्ध नहीं कर सकती। हमें कांग्रेसवालों की उदारता यहाँ बहुत महँगी पड़ी और इसी क्रम में तीस करोड़ हिन्दू न केवल अपना अस्तित्व खो बैठे, बल्कि आज उनका अपना देश भी उनके हाथ से निकल गया।

हम यही तो बताया चाहते हैं कि मुस्लिम लीग अपने ध्येय में इसलिए सफल हुई कि वह एक—झूठी या सच्ची बात पर आरूढ़ रहकर सात साल तक एक ही मार्ग पर चलती गई और अंत में उसकी अभिलाषा पूर्ण हुई। कांग्रेस, हिन्दुओं की संस्था सिद्ध हो जाने पर भी इनकार करती गई, यहाँ तक कि उसने हिन्दुओं को मुसलमानों के हाथ बेच डाला—उनके प्रतनिधि और ठेकेदार बनकर, पर इस चरमसीमा को पहुँच जाने पर भी उसे यह इकरार थोड़े ही हुआ कि वह हिन्दू-वोटों की शक्ति से राजनीतिक क्षेत्र में लाई गई है और अब उसका धर्म है कि वह अपने मतदाताओं के लाभों और हितों की सर्वप्रथम रक्षा करे—कम-से-कम एक ऐसे मार्ग में, जिसमें साम्प्रदायिकता का नाम तक नहीं। कांग्रेस यदि अपने राष्ट्रीयता के सिद्धान्त से विचलित हुई और उसने फिरकापरस्तों के दल के साथ माथा जोड़ा, तो कम-से-कम उसे देश को एक रखने के विषय में तो दृढ़ रहना चाहिए था! वह डटी रहती कि उसे देश को टुकड़े-टुकड़े करना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं।

वर्तमान स्थिति को प्राप्त होने का मूल कारण यही है कि कांग्रेस की करनी और कहनी में भेद रहा। उसने राजनीति में प्रवेश किया और बल पकड़ा हिन्दुओं के सहारे, और शक्ति प्राप्त कर लेने के पश्चात् कहना शुरू कर दिया कि यह सबकी साँझी संस्था है। इसी का फल आज हिन्दू-मात्र को भुगतना पड़ा। कांग्रेस इतने बड़े साम्राज्य को तो नीचा दिखा सकी और उसने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दीं जिनसे अँगरेजों को देश छोड़ जाना पड़ा, पर कुछ ही करोड़ मुसलमानों को मँभालने में वह बिलकुल असमर्थ रही और वस्तुतः उनके उपद्रवों ने ही उन्हें पाकिस्तान दिला दिया। कांग्रेस की मुसलमानों को मनाने और उन्हें खुश रखने की नीति ने "न्याय" का पल्ला थामे रखने की भी कभी परवा नहीं की, जिसका स्वतः परिणाम यह है कि मुसलमानों की हिन्दुओं को अधिक से अधिक निचोड़ने की आशा बराबर बढ़ती गई है। प्रान्तीय कांग्रेस-सरकारों ने भी इस सम्बन्ध में कभी किसी दृढ़ नीति का प्रदर्शन नहीं किया। बल्कि सच्चाई यह है कि इन सरकारों ने अपने मार्ग से बाहर निकलकर भी संसार पर यह प्रभाव डालने का यत्न किया कि वे हिन्दुओं को केवल इसलिए दबाती रही हैं कि मुसलमानों को किसी प्रकार यह सोचने का अवसर न मिले कि वे हिन्दू-बहु-संख्यक प्रान्तों में दुःखी हैं। संयुक्तप्रान्तीय कांग्रेस-सरकार का, मुसलमानों को नौकरियों में उनकी जन-संख्या के अनुपात से कहीं अधिक भाग दे डालना भला क्या बताता है? क्या कोई इसे न्याय कह सकता है?

हम अन्तःकालीन केन्द्रीय सरकार पर ही इतना अभिमान करते हैं, जिसमें पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल जैसे चोटी के भारतीय नेता कार्य कर रहे हैं। इन महानुभावों की, इतनी बड़ी सरकार का इतना आवश्यक अङ्ग बन जाने पर भी, कमाई क्या है? देश में सब उपद्रव और अत्याचार इनकी आँखों के सामने हुए हैं। विदेशी विषयों में, एशिया के देशों का सम्मेलन बुलाकर तथा कुछ भारतीय राजदूत अन्य देशों को भेजकर, थोड़ा-बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काय अवश्य हुआ है। पर हम घरेलू लड़ाइयों से विदेशियों के सम्मुख अपना मुख काला कर, देशद्रोत बाहर भेजकर से उज्ज्वल नहीं कर पाए। और तो और पं० जवाहरलाल नेहरू अपने साथी मंत्रियों पर अपना उचित अनुशासन रख नहीं सके। मुस्लिम लीग के उनके साथियों की ढाई ईंट की मसजिद बराबर अलग है। उन्होंने सहयोग की कभी परवा तक नहीं की। ये लोग अपने सहधर्मियों को प्रत्येक प्रकार की सहायता दे सके हैं। इन्हें उत्तेजनाजनक भाषण देने में भी संकोच नहीं है। हमारे कांग्रेस के मंत्रियों ने दुःखी हिन्दुओं की हिन्दू-रूप में कभी सहायता नहीं की। वे हिन्दुओं के प्रतिनिधि होने और प्रत्येक अवसर पर ऐसा गिने जाने पर भी साँझे ही बने रहे। पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे धुआँधार व्यक्ति केन्द्रीय सरकार का अङ्ग बनकर न जाने क्या हो गए। उनके भीतर की दृढ़ता मानो उनके पद ने खींच ली। इस कथन की सच्चाई उस भाषण से ही परखी जा सकी है, जो उन्होंने माउंटबेटेन-योजना के घोषित होने पर रेडियो में किया था। उस भाषण में तनिक गरमी नहीं थी। उनके भाषण की अपेक्षा सरदार बलदेवसिंह का भाषण अधिक मार्मिक था। कारण यह कि अपने सिक्ख भाइयों पर हुए घोर अत्याचारों से उनका मन अत्यंत व्यथित था। हमारे कांग्रेस-नेताओं के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाई यह है कि वे वास्तव में किसी के प्रतिनिधि नहीं। प्रतिनिधि वास्तव में हैं वे हिन्दुओं के, पर उनके प्रतिनिधि कहलाने से उन्हें इनकार है, और अन्य भारतीय जातियों के लोग उन्हें अपना प्रतिनिधि स्वीकार नहीं करते। परिणाम यह है कि जो लोग इन्हें स्वीकार नहीं करते, उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए ये अनुचित बातें भी कर गुजरते हैं। अन्तरिम सरकार के एक उच्चतम अधिकारी ने बिहार के दंगाई हिन्दुओं पर गोली चलवाई। यह कार्य ठीक ही था। चर्चिल ने भी पार्लियामेंट में इसकी प्रशंसा की। पर जब पंजाब के दुःखी लोग उसी के पास रक्षा प्राप्त करने के लिए पहुँचे तो उनसे कहा गया कि हमारे अधिकार सीमित हैं और इसलिए हम कुछ करने में असमर्थ हैं। यह बात गवर्नमेंट का अङ्ग न रहने की अवस्था में कभी न कही जाती। स्पष्ट है कि हिन्दुओं की तो नेहरू जी और सरदार पटेल आदि नेताओं के पदग्रहण करने से भी उल्टी हानि ही हुई। ये लोग गवर्नमेंट से बाहर रहने की दशा में दुःखी और पीड़ित लोगों की अधिक सहायता कर सकते थे। हमें इन लोगों के केन्द्रीय सरकार में जाने से मिला क्या? हमारे कष्ट तो वैसे ही रहे। औपनिवेशिक स्वराज्य जो आज दिया गया है, वह अब से कई वर्ष पहले मिल रहा था। उस समय देश-विभाजन के दुःखदायी दृश्य को देखे बिना ही हम यह दर्जा प्राप्त कर सकते थे। आज कुछ मिला है देश के सब प्रकार बरबाद हो जाने के पश्चात्। कांग्रेस इस समय के लाभ पर किसी भी प्रकार गर्व अनुभव नहीं कर सकती।

इसकी तुलना में मुस्लिम लीग ने जो कुछ प्राप्त किया है, वह उसकी अपनी कमाई है, जो उसने गुण्डेशाही के बल पर की है। पंजाब में जो कुछ हुआ, उसके सम्बन्ध में नेहरू जी स्वयं कह रहे हैं कि वह पहले से सोचे हुए कार्यक्रम का फल है। कांग्रेस यह कहने के लिए क्षमा करे कि राजनीतिक हिंसा का मार्ग भी उसी का बताया है। सन् १९४२ के राजनीतिक उपद्रवों में जो हिंसात्मक क्रियाएँ हुईं, उनकी उचित सीमाएँ त्याग प्रशंसा करने में भारी भूल हुई और इसके पश्चात् श्रीसुभाषचन्द्र बोस के सिद्धान्तों को, जिनमें हिंसा वर्जित नहीं थी, कुछ ऐसे ढंग से देशवासियों के सामने लाया गया, जिससे अहिंसा के मार्ग के लिए जनता में निश्चित अश्रद्धा उत्पन्न हुई। गांधी जी के अहिंसात्मक संग्राम के साथ उन उद्देश्यों का कोई मेल नहीं था। श्रीबोस की चलाई लहर से कांग्रेस ने चुनावों में भारी लाभ उठाया। पर ऐसा लाभ उठाते के समय दूरदर्शिता ने यह न सुझाया कि इस मार्ग का अनुसरण अन्त में हमें ही हानि पहुँचाएगा। मुस्लिम लीग ने आतंक और उपद्रव उत्पन्न करने के अपने कार्यक्रम के लिए हम ही से सामग्री प्राप्त की और हमारी भूल उनके काम आ गई। लीग ने छः-सात वर्ष के अल्प समय में जो कुछ प्राप्त किया, वह आश्चर्यजनक है। उसके कार्यक्रम में मानवता का नाम तक नहीं और न उसके नेताओं ने कभी मानवी भावों के पक्षपाती होने का ढोंग रचा है। ये लोग अपने सहधर्मियों को उपद्रवों और मार-धाड़ के लिए उभारते रहे हैं और इनमें से किसी ने कभी उपद्रवियों की निंदा नहीं की। हाँ, उन्होंने उपद्रवियों की प्रशंसा करने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं दिया। ऐसी नीति का मुस्लिम लीग को निश्चित लाभ रहा है। अपने गुण्डों की श्रेणी में उसने इसी प्रकार गहरा प्रभाव उत्पन्न किया है। जिन्ना आज इन लोगों के पूज्य-देव हैं। गांधी जी के साथ मिलकर जिन्ना ने शान्ति की जो अपील जारी की थी, वह वास्तव में शान्ति के लिए नहीं थी। होती, तो इस अपील के बाद गण्डेशाही का बाजार और गरम हो जाता। उस अपील के द्वारा जिन्ना केवल अपना मतलब सिद्ध किया चाहते थे, सो वह उन्होंने गांधी जी की सरलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भोलेपन से लाभ उठा भली भाँति कर लिया। जिन्ना एक बार फिर संसार को यह दरसाने में सफल रहे कि गांधी जी यदि हिन्दुओं के प्रतिनिधि हैं तो मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि होने का मुकुट केवल वही पहन सकते हैं, कोई अन्य नहीं। गुण्डेशाही का चक्कर बराबर चल रहा है और पाकिस्तान शुद्ध रूप से उसी की देन है। ब्रिटिश सरकार और उसके कर्मचारियों तथा पुलिस का इसमें सहायता प्रदान करना अलग बात है। गांधी जी चौथाई शताब्दी से भी अधिक के अहिंसात्मक संग्राम में जो प्राप्त नहीं कर पाए, वह जिन्ना साहब ने ६-७ वर्ष में प्राप्त कर लिया। यह अपने तौर पर अहिंसा और हिंसा के मध्य एक विचारणीय तुलना है। मुस्लिम लीग अनैतिकता से प्राप्त ध्येय को कब तक सुरक्षित रख सकेगी और कब तक नहीं—यह तो समय बताएगा, पर इस समय उसकी विजय हुई है, इतना हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जिन्ना और लीग कांग्रेस की उपज हैं। इन्हें बनाने और शक्ति देने में शुद्ध रूप से कांग्रेस और उसके नेताओं का हाथ है। गान्धी जी अपनी असीम कुर्बानियों से भी अपने देशवासियों में उतना प्रभाव प्राप्त नहीं कर सके, जितना जिन्ना—कोई भी त्याग किए बिना—अपने सहधर्मियों और विशेषतः उस अनुत्तरदायी श्रेणी में लाभ कर सके हैं जिसे साधारण भाषा में गुण्डा कहा जाता है। आज जिन्ना इसी श्रेणी के बल-बूते पर जो चाहें कर और करवा सकते हैं। उनके सम्मुख किसी भी विरोधी को दम मारने का साहस नहीं। मुस्लिम लीग के सब निर्णय उनकी इच्छा के अनुकूल होते हैं। वे चाहें तो किसी को बोलना मिलता है, वे न चाहें तो कोई ऊँची साँस तक नहीं ले सकता। क्या यह हिंसा और आतंकवाद की प्रत्यक्ष विजय नहीं? आज यहाँ तक कहा जा रहा है कि जिन्ना का खुल्लम-खुल्ला विरोध करनेवाला कोई व्यक्ति दो घण्टे से अधिक जीवित नहीं रह सकता। उपद्रवियों पर उनके असाधारण प्रभाव के विषय में तो कहनेवाले यहाँ तक कहते हैं कि इस क्षण यदि खुदा स्वयं भूमि पर उतरकर उपद्रियों को मार-धाड़ से रुकने का आदेश करें, तो उपद्रवकारी इस आदेश को मानने से पूर्व शायद जिन्ना साहब से पूछना आवश्यक समझेंगे।

यह सच है कि पंजाब और बंगाल के विभाजन के अनन्तर पाकिस्तान-योजना की तीव्रता वैसी नहीं रही जैसी कि ब्रिटिश मंत्रियों की पहली योजना के अधीन हो सकती थी। पर वह कौन-सी बात है, जो मुस्लिम लीग के इच्छानुकूल नहीं हुई? पाकिस्तान तो उसे मिला ही, अपनी पृथक् विधान-परिषद् भी उसने प्राप्त कर ली। इस विषय में लीग की जिद् वर्तमान विधान-परिषद् के अपना बहुत-सा कार्य कर लेने के पश्चात् पूर्ण हुई है। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ने पार्लियामेंट में घोषित तो यह किया था कि मुस्लिम लीग को "मन मर्जी करने" अर्थात् 'वोटों' के अधिकार नहीं होंगे, पर क्रियात्मक रूप में उसे ये अधिकार दिए ही गए और वह प्रत्येक उस बात को मनवाने में सफल हुई, जिस पर अड़ने का उसने निश्चय किया था। ब्रिटेन का मुस्लिम लीग को उठाने में निज-स्वार्थ हो सकता है और है। पर कांग्रेस ने भी हिन्दुओं के बहुमत के साथ न्याय करवाने का यत्न कहाँ किया? चार-पाँच करोड़ मुसलमानों की जिद् के सामने सिर झुकाने को तो वह तैयार हुई, पर उसने इस बात की परवा नहीं की—कि भारत के तीस करोड़ हिन्दुओं की माँग क्या है। कांग्रेस ने अपने अमल से—हिन्दुओं की बहुसंख्या को अल्प-संख्या में और मुस्लिम अल्प-संख्या को बहुसंख्या में परिवर्तित होने दिया। उसने इस अनहोनी बात का विरोध तो क्या करना था उल्टा इसे साक्षात्कार होने में सहायता दी। कांग्रेस की यह एक ऐसी भूल है, जिसके लिए उसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकता।

कांग्रेस हिन्दुओं से शक्ति प्राप्त कर इन्हें जितनी भी हानि पहुँचा सकती थी, पहुँचा चुकी। प्रश्न यह है कि क्या आगे को उससे और अधिक हानि होने की संभावना नहीं? लेखक के मत में देश-विभाजन के अनन्तर कांग्रेस के अस्तित्व की आवश्यकता ही समाप्त हो चुकी है। अब उसे या तो अपने सांस्थिक रूप का ही अंत कर देना चाहिए—या अगर वह जीवित रहना चाहती है तो उसे खुले तौर पर यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वह हिन्दुओं की संस्था है और इनके हितों की रक्षा ही उसका स्वाभाविक धर्म है। मुस्लिम और हिन्दू, देश के दो साम्प्रदायिक टुकड़े हो जाने के पश्चात् वह अब साँझी संस्था कहलाने का दावा नहीं कर सकती। कांग्रेस साम्प्रदायिक आधार पर बँटे हुए भारत में अपना राष्ट्रीय अस्तित्व ईमानदारी के साथ नहीं रख सकती और यदि वह रखती है तो वह ईमानदार नहीं कहला सकती।

कांग्रेस के एक सीधी दृढ़ नीति ग्रहण न करने से भविष्य में कहीं अधिक हानि की संभावना है। देश का एका भंग हो जाने के बाद अब यह आशा नहीं हो सकेगी—कम-से-कम कुछ काल के लिए—कि ये दोनों भाग मित्र-भाव में निर्वाह कर सकेंगे। ऐसी दशा में गांधी जी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहयोग की नीति हिन्दुस्तान को अधिक हानि पहुँचाने का कारण होगी—इसमें संदेह नहीं। पाकिस्तान—आर्थिक दृष्टि से सफल नहीं हो सकेगा—यह एक मूर्ख भी जान सकता और जानता है। भय है—गान्धी जी उस दशा में भी हिन्दुस्तान को यही सलाह देंगे कि वे पाकिस्तान से सहयोग कर उसे सफलता देने में सहायक बनें। गांधी जी की सहयोग की नीति केवल अँगरेजों के सम्बन्ध में ही सफल हो सकती थी। पृथक राष्ट्र स्थापित हो जाने पर भी उन्हें यह स्वीकार न होगा कि हिन्दुस्तान के द्वार पर पाकिस्तान भूखों मरे अथवा मुसलमान (भाई) कष्ट में रहें। ऐसी नीति निश्चित रूप से घातक सिद्ध होगी। पाकिस्तान के साथ अनैतिकता का व्यवहार करने के लिए कोई नहीं कहेगा, पर शिक्षा और सुरक्षा के उद्देश्य से असहयोग करना हमारा अधिकार है। "जान-बूझकर" पृथक् हुए भाई से मेल-मिलाप रखना—न रखना—हमारी इच्छा पर है। हमें ऐसा करने के लिए कोई बाध्य नहीं कर सकता। पर गांधी जी की नीति यहाँ भी हमें स्वतंत्र व्यवहार की आज्ञा नहीं देगी।

हिन्दुस्तान पृथक् हो जाने के पश्चात् भी कांग्रेस और उसके नेताओं से कोई आशाएँ बँध न सकेंगी। इसके चिह्न कुछ तो अभी दिखाई देने लगे हैं। कांग्रेस "हिन्दू" जाति की रक्षा तो क्या करती, "हिन्दू" शब्द तक की रक्षा नहीं कर सकी। "मुस्लिम" और "अमुस्लिम" शब्दों के सरकारी कागजों में अन्यायपूर्ण प्रयोग को भी वह रुकवा नहीं सकी—वह भला और क्या कर सकती थी। केन्द्रीय सरकार में कांग्रेस के पदार्पण के पश्चात यह पहला कार्य है, जो होना चाहिए था। एक महान् बहुसंख्यक जाति का नाम तक सरकारी प्रयोग में न हो—यह कितना घोर अन्याय है? उस अन्याय को न्याय में परिवर्तित कराना तो दूर रहा, वर्तमान अवस्था में कुछ कांग्रेसी नेता—"हिन्दुस्तान" शब्द ही के विरोधी हो रहे हैं। उन्हें यह शब्द केवल इसलिए स्वीकार नहीं कि इसमें "हिन्दू" का लेश है। कांग्रेस-नेताओं की ऐसी मनोवृत्ति देखकर जहाँ विस्मय होता है, वहाँ एक बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि भविष्य में कांग्रेस के नेतृत्व से कोई आशा रखना हिन्दुओं के लिए लाभ का सौदा नहीं होगा। इसलिए उन्हें नया विधान लागू होने से पूर्व ही अपने स्थान पर सावधान हो जाना चाहिए।

हमारी पूर्व और वर्तमान की शोचनीय दशा का विश्लेषण हमें यही बता रहा है कि कांग्रेस के ढिलमिल, अदृढ़, अनिश्चित और साहसहीन नेतृत्व ने हमें इस अवस्था को पहुँचाया है और यदि हम सावधान होकर स्वयं अपने जातिगत हितों की रक्षा के लिए तैयार नहीं होंगे तो भय है कि हम आनेवाले समय में एक इतने भारी संकट को बुलावा देंगे, जिसकी भयङ्करता की आज कल्पना भी नहीं कर सकते। यह एक चेतावनी है, जिसे ग्रहण करना न करना देशवासियों के अपने बस में है। जो बातें कल हमारी कल्पना में भी नहीं थीं, वह आज हुई हैं और जो आज कल्पना में नहीं हैं, वे कल हो सकती हैं। कांग्रेस का नेतृत्व किसी सङ्कट को रोकने में असमर्थ सिद्ध हुआ है। हमारे यही नेता जो अभी कुछ समय पहले तक छाती ठोंककर कहते थे कि देश केवल उनकी लाशों ही पर टुकड़े-टुकड़े किया जा सकेगा—आज कहाँ हैं? देश तो टुकड़े-टुकड़े हो भी चुका।

खोए कंगन

श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा

फिनलैंड की बात है। समय मध्य ग्रीष्मकाल। आक्लान्त सूर्य बीस घंटे तक निर्निमेष चमकता रहता है और शेष चार घंटे अन्धकार के बदले एक विचित्र रहस्य-मयी अर्ध-ज्योति का साम्राज्य रहता है। यह अर्ध-अवगुण्ठिता कोमलाङ्गिनी आभा कानों में चुपके से जैसे कुछ कह-कह जाती हो। सितम की सर्दी से सताया हुआ मानव-मन सुखद वसन्त की पुकार सुन उछलने-कूदने लगता है। पुलकित हृदय अपना लंगर तोड़ उसी अपरूप प्रकाश-अन्धकार में मँडराने लगता है। नाचघर गूंजने लगते हैं, रेस्तोराँ में रफ्तार आ जाती है। पैर रुकने से इनकार करते हैं, आँखें बन्द होने को ना कहती हैं। पृथ्वी और आकाश मानव-अन्तरात्मा पर मानो मायाविनी रजनी का जादू छिड़क उसे गृह-त्यागी बना देते हैं। आखिर जब बेसब्री-सूर्य उत्तर आकाश में फिर उठने लगता है तब कहीं अनमनी पलकें बिस्तरे पर आपस में मिलती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात उस दिन की है, जिस दिन माया अपनी खेती-बारी दिखाने मुझे ले गई थी। (फिनलैंड की उस युवती का शुद्ध नाम माएया लेएना ल्युल्यु है—"ए" और "उ" का बड़ा हलका उच्चारण—पर हम उसे माया ही कहेंगे)। खेतों के बीच सुन्दर एक छोटा-सा बँगला था, समुचित रूप से सजा-धजा और उसके बाहर शान्त मनोरम वाटिका थी। बँगले में बैठे हम लोगों ने स्ट्राबेरी और बर्फ से जमाई हुई मलाई खाई। मैंने देखा कि माया और उसकी माँ के अतिरिक्त मोटर का ड्राइवर भी हम लोगों के साथ ही बैठकर खा रहा है। मैं असमंजस में पड़ा कि उस व्यक्ति के साथ किस तरह का बर्ताव करूँ, बराबरी के आदमी की तरह या ड्राइवर की तरह। इस उलझन में मैंने माया से कहा—इन महाशय के साथ मेरा परिचय करा दो न।

माया लंदन में कई महीने रह चुकी थी, अँगरेजी अच्छी तरह बोलती थी। दूसरा कोई उसके घर में अँगरेजी नहीं जानता था, वे लोग केवल फिनलैंड की भाषा ही बोलते या समझते थे। माया ने आश्चर्य के साथ कहा—क्यों, क्या मैंने आपसे पहले ही नहीं कहा था कि ये मेरे पिता हैं?

मैंने अस्त-व्यस्त हो लटपटाई जबान से जवाब दिया—"हाँ, हाँ, ठीक तो; तुमने तो कहा ही था। क्षमा करना।" यह कह मैंने उठकर उसके पिता के साथ विनीत भाव से हाथ मिलाया, मूक भाषा में हजार बार क्षमा माँगते हुए। बात यह है कि माया ने सीधी तरह अपने पिता से मेरा परिचय इसके पहले नहीं कराया था। लोइमा में (जिस शहर में इन लोगों का घर है) माया ने इतना ही कहा था, 'जल्दी चलिए, बाहर मेरे पिता मोटर ले हम लोगों का इन्तजार कर रहे हैं।" पर मोटर पर आ मैंने देखा कि साधारण पोशाक पहने एक आदमी उस पर बैठा हुआ है—पोशाक किसान की थी, बहुत कुछ लन्दन के मोटर-ड्राइवरों से मिलती हुई। मैं कैसे समझता कि यही उस आलीशान मकान और धनी परिवार के मालिक हैं? हम लोग चुपचाप मोटर में बैठ गए थे और मोटर चलने लगा था।

माँ-बाप जब सांसारिक चर्चा में लग गए तो माया ने कहा, 'चलिए, हम लोग बाग से टहल आएँ।' अच्छी सुहावनी धूप थी। उपवन में शान्त निस्तब्धता छाई हुई थी। ऊँचे-ऊँचे वृक्ष ऊपर से झुककर मानो हमें देख रहे हों। नीचे से निकुंज और फूल की क्यारियाँ मानो सिर उठाकर हमें निहार रही हों। सारे जड़-पदार्थ चेतन हो चारों ओर कान लगाए खड़े थे, एक-एक शब्द के लिए, विकसित अधरों की संकेतमयी मूक भाषा के लिए। लकड़ी की एक बेंच पर हम दोनों बैठ गए। पाइन की पत्तियों से छन-छनकर सुनील आकाश उतर रहा था और तरुणी की बहुरंगी राष्ट्रीय पोशाक के कोमल रंगों से इस तरह मिल रहा था मानो कृष्ण गोपियों से मिल रहे हों। यह याद कर कि मैं ध्रुव-तारा देश में बैठा हूँ, पृथ्वी की जैसे छत पर ही, मेरी अन्तर-चेतना में एक अपूर्व भाव का हिल्लोल होने लगा। माया ने धीरे-धीरे सिर उठा मेरी ओर देखा, उसकी आँखें वाक्यहीन दुर्बोध प्रश्नों से छलछला रही थीं। फिर दूसरे ही क्षण उसके नेत्र भूमि खरोचने लगे। मैं उसे देख ही रहा था कि फिर उसकी आँखें उठीं, शान्त पर दृढ़-निश्चित। बिना किसी आगा-पीछा के उसने पूछा—

आपका ब्याह हो गया है?

मैंने अनायास उसी क्षण उत्तर दे दिया—ना।

माया कुछ देर मेरी ओर इस तरह देखती रही जैसे पहेली हल कर रही हो फिर ऋतु और सुदूर भारतवर्ष के विषय में बातें करने लगी।

मैंने जो उत्तर दिया, वह था तो अनायास और आकस्मिक पर उसमें एक जमाने का तर्क और विचार भरा हुआ था। यूरोप के समाज में विवाहित पुरुष कुष्ट-रोगी की तरह समझा जाता है, या कम भावुक भाषा में कहा जाए तो उस दीप की तरह, जिसका तेल खत्म हो गया हो। उसके लिए सारे रास्ते बन्द से हैं, बाधाएँ पग-पग पर। सच्चरित्र विवाहित पुरुष लंपट क्वारों से भी बुरा समझा जाता है। माताएँ सयानी लड़कियों को समझाती हैं कि विवाहित मर्दों से न मिलो। ऐसी परि-स्थिति में गांधी जी का सत्य लेकर कोई कहाँ तक जूझता फिरे?

माया की कलाइयों में दो सुन्दर कीमती कंगन चमक रहे थे। उन पर मेरा ध्यान खिचा तो माया ने बाईं कलाई का कंगन निकालकर मेरी तलहत्थी पर रख दिया और बताने लगी कि कौन-कौन से हीरे-जवाहरात उसमें जड़े थे। मैं हीरे-जवाहरात तो नहीं जानता पर खोए कंगन का मूल्य अच्छी तरह समझता हूँ। कुछ देर तो परख का बहाना कर कंगन को उलटता-पुलटता ज्ञानी की तरह सिर हिलाता रहा, पर ज्यों ही माया की आँखें पत्तों के बीच से फिर अनन्त की खोज में निकलीं, मैंने चुपके से कंगन को जेब में डाल लिया।

खेतों से घूमकर हम लोग लोइमा लौटे। रात के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने का इन्तजाम माया ने रेस्तोराँ में कर रखा था, वहीं मुझे ले गई। लोइमा है तो बहुत ही छोटा शहर, पर आधुनिक ढाँचे का वहाँ एक अच्छा-सा रेस्तोराँ है। हम दोनों एक शान्त कोने में जाकर बैठे। भोजन की मात्रा से बातों की मात्रा अधिक चल रही थी। मन्द समीर खिड़कियों से घुसकर रमणी की कोमल लटों से खेल रहा था। मायाविनी ज्योतिर्मयी रजनी हजार हजार प्रश्न पूछ रही थी, हजार हजार उत्तर भी देती जाती थी। पाइन का पेड़ धीरे से डोलकर कभी सम्मति प्रकाश करता, कभी जोरों से हिल-हिलकर "ना, ना" कहता। मैं इन्तजार में बैठा था कि माया की नजर कंगन-हीन कलाई पर पड़े और वह खुद कंगन की बात छेड़े। पर माया उस मानसिक लोक में विचरण कर रही थी, जहाँ माँ-बाप की पहुँच नहीं, जहाँ लड़कियों को कंगन खो देने के लिए कोई डाँटनेवाला नहीं। आखिर मुझे ही आश्चर्य का अभिनय कर कहना पड़ा—अरे, तुम्हारा एक कंगन क्या हुआ?

माया इस लोक में बिजली की गति से लौट आई और सूनी कलाई देख नाच-सी उठी—हे भगवान्, मेरा कंगन क्या हुआ? क्या आपने लिया है?

उसे बच्चों की तरह अस्त-व्यस्त होते देख रेस्तोराँ का बेहरा भी छिपे-छिपे मुस्कराने लगा।

मैंने बनावटी गंभीरता से उत्तर दिया—क्या मैं कंगन पहनता हूँ?

फिर एक क्षण के बाद बोला—यह तुमने अच्छा मुझे समझ रखा है। क्या मेरा यही काम है कि आतिथ्य-दायिनी दयालु सुन्दर रमणियों के बदन से गहने उतारा करूँ?

ध्रुव-तारा-देश की वह भोली-भाली महिला शिशु-स्वर में बोली—ना, मैं इसके लिए क्षमा माँगती हूँ। दोष मेरा अपना है।

खाने के बाद हम लोग शहर के निर्जन पथ पर निकले। उस रहस्य-भरे अन्धकार-प्रकाश में मकान, वृक्ष-समूह, सामने का रास्ता, सभी कविता के पृष्ठ से लगते थे। हलकी हवा अभी तक रेशम की तरह मुलायम अलकों के साथ खेल रही थी। मैं अकस्मात् खड़ा हो गया। जादूगर की तरह बड़ी-बड़ी आँखें बना और पुतलियों को नचाते हुए मैंने कहा—

ये आँखें देख रही हैं; हाँ, इन आँखों से नजर आ रहा है कि खोया कंगन कहाँ पड़ा है।

माया के हृदय में निराशा के साथ आशा धक्के करने लगी। उसने सूनी आँखों से मेरी ओर देखकर पूछा—क्या आप जादू जानते हैं?

मैंने जादूगर के रूखे स्वर और संक्षिप्त शब्दों में उत्तर दिया—हाँ, और मैं कंगन ऊपर भी कर दे सकता हूँ पर.....

पर?

पर....बिना फीस के नहीं।

फीस मिल जाएगी।

झट किसी अज्ञात अन्धकारमय गूढ़ गह्वर से कंगन निकल आया।

माया ने काँपते हुए हाथों से उसे उलट-पलटकर देखा। हाँ, वही कंगन तो है, ठीक वही। यही उसका कंगन है।

फिर उसने उसी शून्य दृष्टि से देखकर पूछा—क्या आप जादू जानते हैं?

मैंने तर्जनी दिखा डराते हुए कहा—एक शब्द और तुम्हारे मुँह से निकला कि कंगन फिर जहाँ था, वहाँ चला जाएगा।

माया के मानस-नेत्रों के सामने उसके माँ-बाप का क्रुद्ध चेहरा छाया की तरह खड़ा हो गया। उसने चुपचाप कलाई में कंगन डाल लिया।

पर रास्ता भी खत्म न होने पाया था, न फीस ही मिली थी कि कच्चे जादूगर ने अपने जादू का रहस्य खोल दिया।

दूसरा भेद भी अधिक समय तक संरक्षित न रह सका। वह झूठ, जो यूरोपीय समाज की चटनी थी और जिसे मैंने सहज ही में अंगीकार कर लिया था, एक सच्चे सरल विवाहित भारतवासी के लिए असह्य हो उठी। उसे भी मैंने तुरन्त उगल डाला।

माया के अधरों पर विजयिनी मुस्कान की हलकी सी रेखा खेल गई। "मैं जानती थी", उसने कहा, "मैं शुरू से ही जानती थी कि आप विवाहित हैं।"

मैंने पूछा—कैसे?

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और उस वक्त मुस्कान ने मुझे कुछ अप्रतिभ भी कर दिया। मैं उसकी ओर उद्विग्न मनुष्य की तरह देखता रहा, जो टेबुल की दराज को सामने से ताला-चाभी लगा कड़ी रखवाली कर रहा हो पर पीछे से उसमें की चीजें गायब पाए। मैंने फिर पूछा—कैसे?

माया ने प्रतिकार के स्वर में उत्तर दिया—मैं जादू जानती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

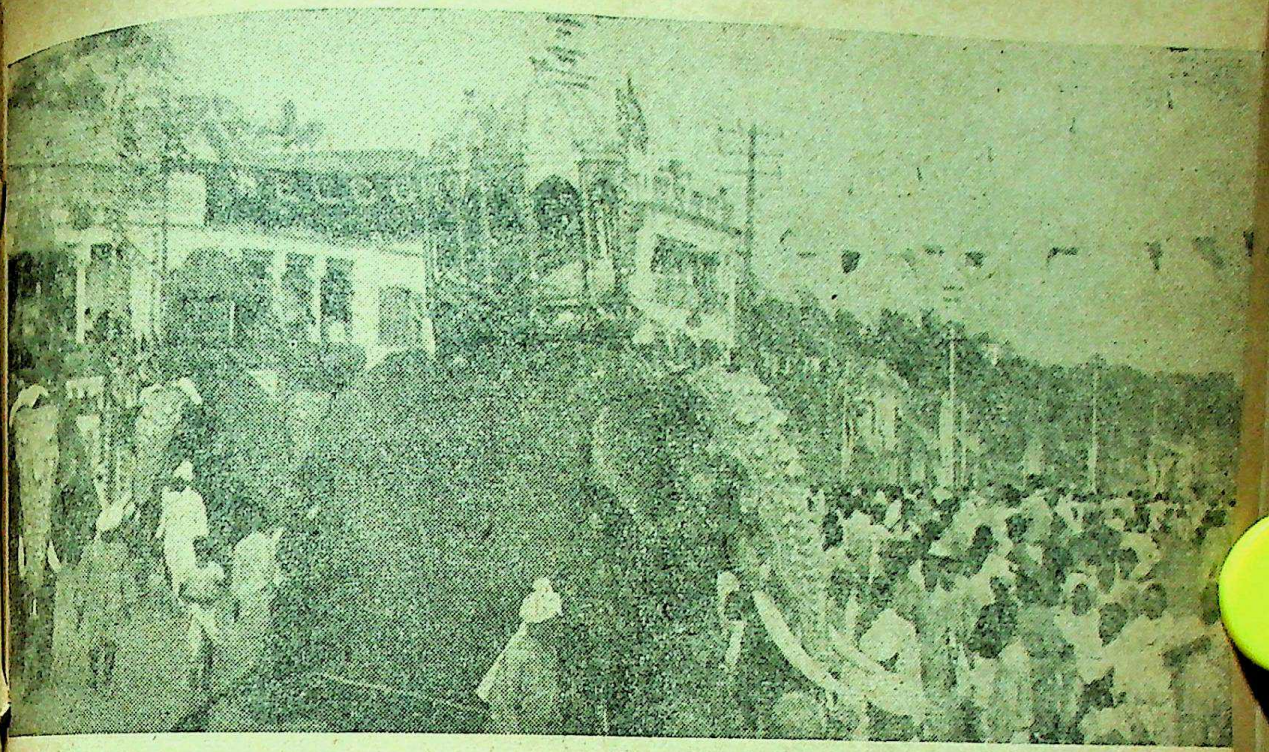

राजसी जलूस—सोने और चाँदी के हौदों से सुसज्जित हाथी त्रिवेन्द्रम् के राजसी जलूस के विशेष अंग थे, जो पूर्व वैभव के मुख्य चिह्न माने जाते हैं।

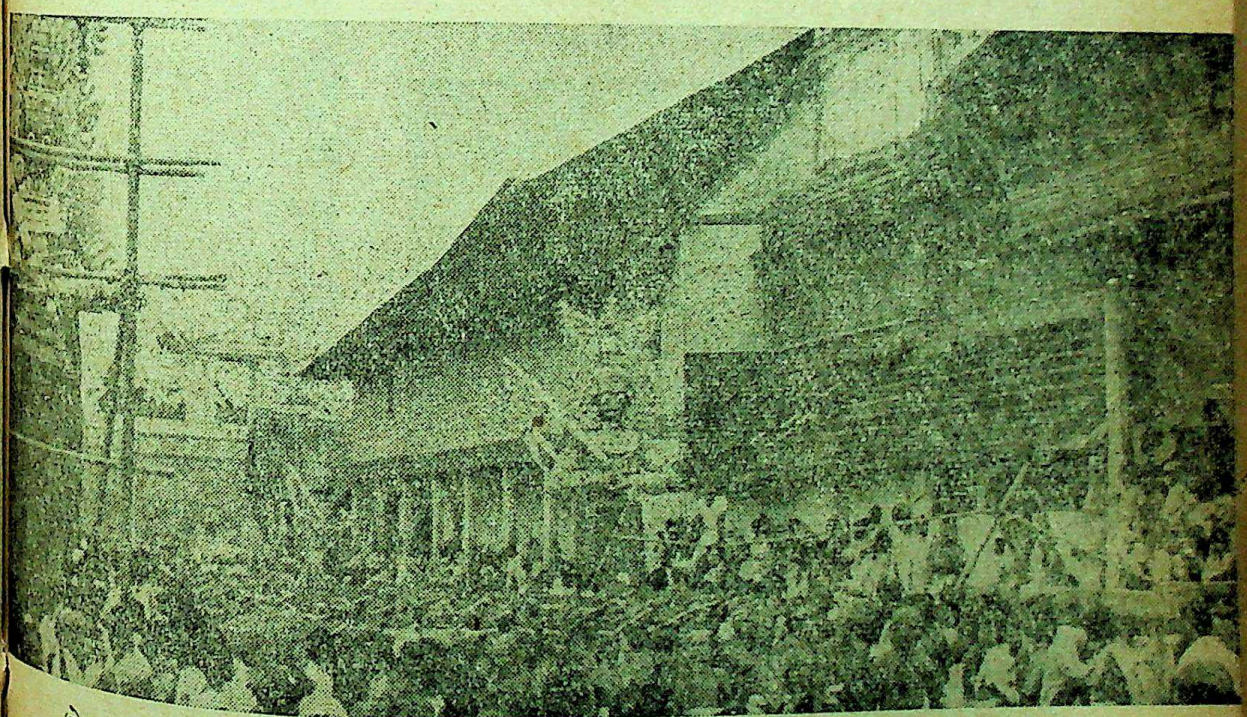

'वेलाकाली'—युद्ध-नृत्य—ट्रावन्कोर में युद्ध-नृत्य 'वेलाकाली' का एक दृश्य। यह वर्ष में दो बार त्रिवेंद्रम् के श्री पद्मनाभस्वामी मन्दिर के सम्मुख प्रदर्शित किया जाता है। चित्र में नर्तक वेलाकाली के प्रदर्शन के लिए जाते दिखाई दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

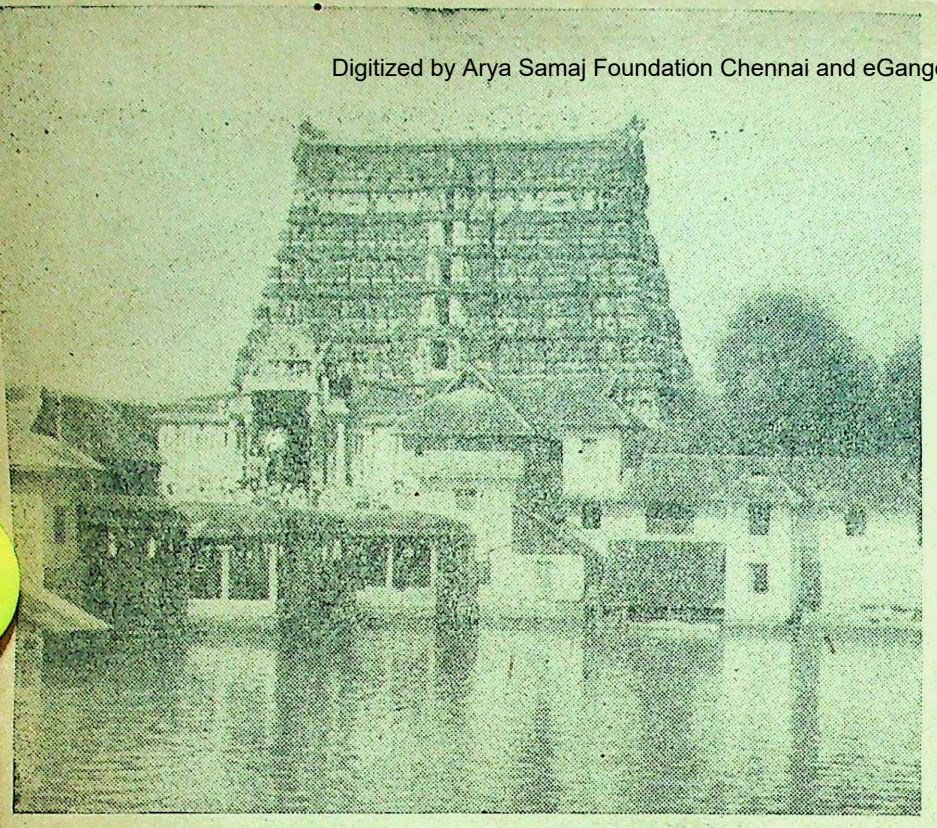

त्रिवेन्द्रम का प्रसिद्ध 'श्रीपद्मनाभ स्वामी-मन्दिर'।

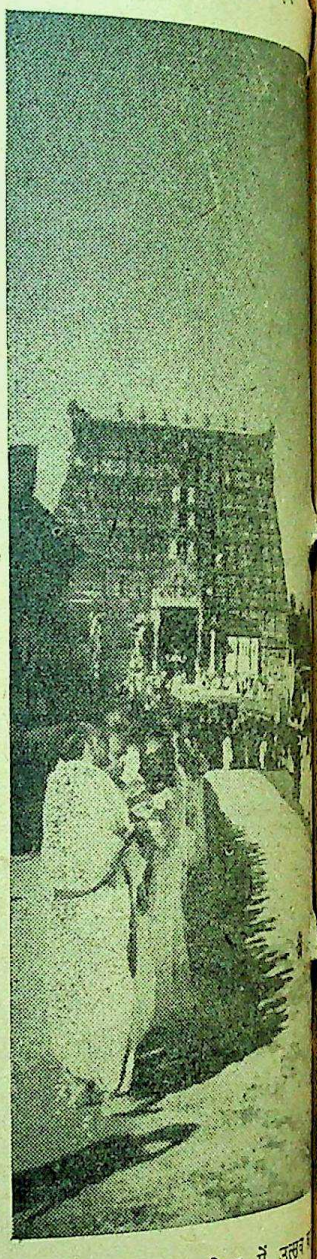

ट्रावन्कोर के एक मन्दिर में उत्सव का सुन्दर दृश्य।

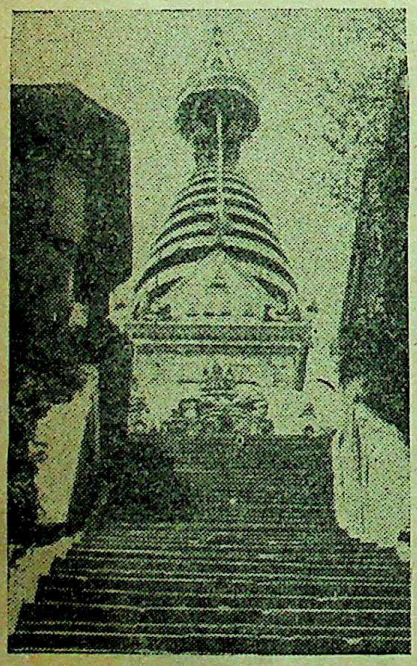

नेपाल का अति प्राचीन श्यांभूनाथ मन्दिर'।

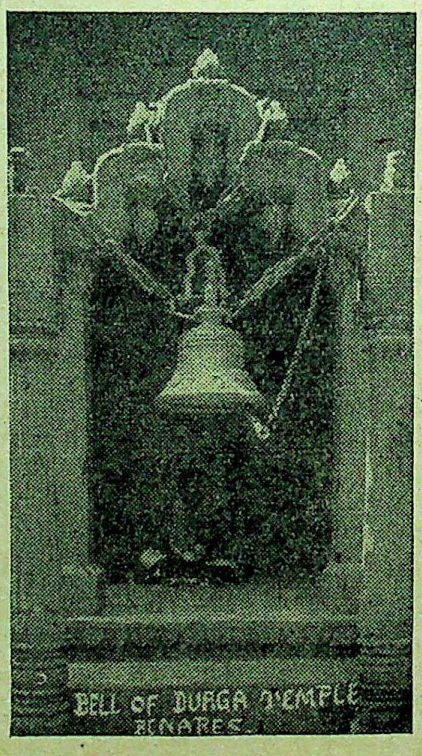

काशी के दुर्गा-मन्दिर का घण्टा।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे हँसी आ गई। बोला—खैर, अब तो हम दोनों ही समझ गए कि जादू क्या है। बताओ तुमने कैसे जाना?

बिना फीस के?

हाँ, बिना फीस के। हमारा सस्ता जादू किसी फीस के लायक नहीं है।

उसने अपनी कहानी सुनाई, जो उस मायावी उज्ज्वल अन्धकार से कम रहस्यमयी न थी।

हम दोनों का परिचय हुआ था सोमवार को, बिलकुल अचानक एक कृषि-प्रदर्शनी में। उसके पहले ही शनिवार को एक जिप्सी औरत ने माया का हाथ देखकर कहा था, सोमवार को तुम्हारी मुलाकात होगी एक विदेशी विवाहित सज्जन से। "इसीलिए", माया कहने लगी, "इसीलिए उस जिप्सी की बातों की पूरी परीक्षा लेने के लिए बाग में मैंने उस अभद्र और असाधारण तौर से आपसे वह प्रश्न किया था। पर आप जब बोले, 'मैं अविवाहित हूँ', तो मैं गहरे सोच में पड़ी—जिप्सी औरत की बात झूठी कैसे होगी?

सामने नदी के ऊपर हलका कुहासा प्रेमी के प्रेम की तरह झूम रहा था। कलाई का कंगन उस रहस्य-भरे प्रकाश में इस तरह चमक रहा था जैसे नाजुक नव-वधू मस्करा रही हो!*

---

* कहानी एक सत्य घटना के आधार पर लिखी गई है। लेखक सन् १९३७ में कुछ दिन फिनलैंड में थे। नायिका का और परिचय उनकी पुस्तक "दुनिया की सैर" ("पुस्तक-भंडार", पटना) में या "Round the World" में, जो लेखक महोदय के पास से (पो०, आ० चाईबासा, बिहार) प्राप्त होगी, मिलेगा।

जर्मनी की समस्या

श्री आशाराम एम० ए०

कुछ दिन हुए, मास्को में परराष्ट्र-सचिव-सम्मेलन हुआ था। समस्या थी जर्मनी के साथ शान्ति का समझौता करने की। लगभग सात सप्ताह तक चारों बड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधि वाद-विवाद करते रहे, परन्तु समझौता न हो सका।

कान्फ्रेंस असफल होने के बाद श्री बेविन, जनरल मार्शल और श्री बीदो ने वक्तव्य दिए हैं, परन्तु ये वक्तव्य भी आशाजनक नहीं। जर्मन-सन्धि की समस्या जटिल प्रतीत होती है।

(१)

जिस समय मित्रराष्ट्र जर्मनी के विरुद्ध लड़ रहे थे, उस समय आपसी भेदभाव इस भयंकर रूप में सामने न आए थे। युद्ध समाप्त होने के पूर्व मित्रराष्ट्रों ने क्रीमिया में एक गुप्त सन्धि की थी, जिसके अनुसार सोवियट राष्ट्र को लगभग ४,००० करोड़ रुपए हर्जाना देने का निश्चय किया गया था। यह हर्जाना जर्मनी की मशीनों, पैदावार और मजदूरों द्वारा वसूल किया जा सकता था।

जर्मनी की पराजय के बाद बर्लिन-कान्फ्रेंस में उपरोक्त समझौता दुहराया गया और इसके अतिरिक्त जर्मनी से नाजीवाद मिटाने और वहाँ पर प्रजातन्त्र-शासन स्थापित करने का निश्चय किया गया।

जर्मनी की आर्थिक और राजनैतिक एकता पर भी मित्रराष्ट्र सहमत थे। उन्होंने पोलैण्ड की नई सीमाओं को स्वीकार किया था।

(२)

युद्ध के बाद शत्रु का भय मिट गया। तत्पश्चात् मित्रराष्ट्रों के बीच मनमुटाव शुरू हुआ। उनकी जर्मनी-सम्बन्धी नीति में परिवर्तन हुआ।

सोवियट राष्ट्र ने नाजीवाद और युद्ध की तैयारियों को मिटाने का बीड़ा उठाया। सोवियट राज की इस नीति को समझना कठिन नहीं। इस युद्ध में सबसे अधिक हानि इस देश की हुई है। कहा जाता है कि उसकी हानि लगभग २०० हजार करोड़ रुपया है। इसके अतिरिक्त नाजीवाद सोवियट देश और उसके विचारों का सबसे बड़ा शत्रु रहा है। जिस समय हिटलर की सेनाएँ परास्त होने लगीं तब उन्होंने सोवियट को आत्म-समर्पण न कर ब्रिटेन, अमरीका आदि को किया। इस कारण सोवियट शासन ने अपने क्षेत्र से नाजीवाद को समूल नष्ट कर दिया है, और जर्मनी की युद्ध-सामग्री और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीनों को बर्बाद कर दिया है। जो निरीक्षक-दल जर्मनी में गए हैं, वे इसकी साक्षी देते हैं।

जहाँ तक प्रजातन्त्रवाद के प्रसार का सम्बन्ध है, सोवियट शासन ने आरम्भ में ही कम्यूनिस्ट और समाजवादी दलों को स्वीकृति दे दी थी। उसके पश्चात् अन्य दो दलों को और स्वीकृति मिल गई। प्रकाशन आदि की सुविधाएँ भी दी गईं। कुछ दिनों बाद प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ, और अब कई महीनों से सोवियट-अधिकृत क्षेत्र की बागडोर निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में है।

(३)

अन्य मित्रराष्ट्रों ने नाजीवाद-विरोधी घोषणा को पूर्णरूपेण कार्यरूप में परिणत नहीं किया। ब्रिटिश, अमरीकी और फ्रांसीसी क्षेत्रों में पुराने नाजी अफसर अभी तक अनेक मुख्य पदों के अधिकारी हैं। सोवियट क्षेत्र में मजदूर-आन्दोलन को पूर्ण स्वतन्त्रता है और वहाँ पर लगभग ४० लाख मजदूर अपने संघ में हैं। परन्तु पश्चिमी भाग में, मजदूर-आन्दोलन को इतनी सुविधाएँ और प्रोत्साहन नहीं मिलता। कभी-कभी तो पुराने नाजी अफसर जर्मन जनता की स्वतन्त्रताओं का भी अपहरण करते हैं।

पुरानी नाजी सेनाओं को भी किसी न किसी रूप में अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकार ब्रिटेन ने मजदूर-टोली के नाम से लगभग एक लाख पुराने जर्मन अफसर और सिपाहियों को आज तक अपने क्षेत्र में रख छोड़ा है। पुराने सैनिकों और अफसरों को बड़े बड़े पद देकर भी रखने का प्रयत्न किया गया है।

इसी प्रकार नाजी वैज्ञानिकों को भी पाश्चात्य देशों ने अपने देशों में बुला लिया है और उनको सरकारी अथवा शिक्षा-विभाग में नौकरियाँ मिल गई हैं।

सोवियट क्षेत्र में पुराने जुंकर (जमींदार) और बड़े-बड़े पूँजीपतियों की सम्पत्ति राज को दे दी गई है। इस क्षेत्र में एक प्रकार का समाजवाद स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है, परन्तु अन्य क्षेत्रों में जमींदार और पूँजीपति ज्यों के त्यों हैं।

(४)

बर्लिन-कान्फ्रेंस में निश्चित हुआ था कि जर्मनी के पश्चिमी भाग से बहुत-सी मशीनें हर्जाने के रूप में दी जाएँगी, शेष अनाज इत्यादि के बदले में। सत्य यह है कि सोवियट देश को ये मशीनें नहीं दी गईं। सोवियट देश ने अपने अधिकृत क्षेत्र से कुछ मशीनों को हटाया है। मित्रराष्ट्रों ने सोवियट की इसके लिए भर्त्सना की है।

कारण यह दिया जाता है कि जर्मनी के उद्धार के लिए इन मशीनों का रहना आवश्यकीय है।

उपरोक्त विवरण से पता चल जाएगा कि मित्रराष्ट्रों के आपसी भेदभाव किन प्रश्नों पर हैं।

(५)

मास्को-कान्फ्रेंस में प्रमुख प्रश्न जर्मनी के आर्थिक ऐक्य और हर्जाने का था।

ब्रिटेन आदि पाश्चात्य देशों का कहना था कि जर्मनी का आर्थिक इकाई होना चाहिए, उसका आर्थिक बँटवारा नहीं करना चाहिए।

आर्थिक ऐक्य का क्या अर्थ है? यदि इसका अर्थ है व्यापार की सुविधाएँ, तो यह सुविधाएँ सोवियट शासन देने को तैयार है, परन्तु पाश्चात्य देश स्वयं इस प्रकार के आदान-प्रदान में अड़चन डालते हैं। कुल मिलाकर लगभग आठ करोड़ रुपए प्रतिवर्ष के व्यापार को स्वीकृत किया गया है। सोवियट शासन चाहता है कि पश्चिमी जर्मनी से मशीन और पक्का माल मँगाया जाए और उसके बदले में कच्चा माल और अन्न आदि पश्चिमी भाग को दिया जाए।

परन्तु पाश्चात्य देश चाहते हैं कि व्यापार के बीच के प्रतिबन्धों को उठा दिया जाए और वे यह भी चाहते हैं कि पूर्वी भाग बिना कुछ लिए हुए बहुत-सा माल उधार दे। उनका कहना है कि पश्चिमी भाग के शासन के कारण ब्रिटेन और अमरीका आदि को अपने देश का रुपया खर्च करना पड़ता है। सोवियट देश का भी कर्तव्य है कि वह शासन के इस भार को वहन करे।

सोवियट देश स्वयं जर्मनी के लगभग ४५ प्रतिशत क्षेत्र पर शासन करता है। यह भाग उद्योग-प्रधान नहीं वरन् कृषि-प्रधान है, परन्तु फिर भी सोवियट देश को कोई व्यय नहीं करना पड़ता। उसका कहना है कि यदि पाश्चात्य भाग में शासन ठीक ढंग से चलाया जाए तो कोई कारण नहीं कि उपरोक्त देशों को जर्मनी के शासन के लिए अपनी पूँजी व्यय करनी पड़े।

जहाँ तक व्यापार से प्रतिबन्ध उठाने का प्रश्न है, सोवियट देश पाश्चात्य जर्मनी की बुरी दशा को अपने क्षेत्र में नहीं फैलाना चाहता। यदि इस प्रकार की स्वतन्त्रता दी गई तो तुरन्त ही पूर्वीय भाग में भी चोरबाजारी और पूँजीवाद फैलने का भय है।

प्रश्न उठता है कि पाश्चात्य जर्मनी की ऐसी दशा क्यों है? इस उद्योग-प्रधान देश में इस प्रकार अकाल क्यों? अमरीका आदि की शासन-नीति क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन, अमरीका आदि के अपने स्वार्थ हैं।

(१) ब्रिटेन और फ्रांस को अनेक मशीनों की आवश्यकता थी। इन देशों की मशीनें पुराने ढंग की थीं और युद्धकाल में बेकार हो गई थीं। जर्मनी की मशीनें नई और अच्छी थीं। इस कारण कोयले और बिजली आदि की मशीनें उपरोक्त देशों में पहुँच गई हैं।

(२) ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका को जर्मनी के उद्योग-धन्धों से भय है। यदि जर्मनी की मशीनों ने पहले की भाँति सामान तैयार करना शुरू किया तब न केवल जर्मनी का बाजार इन देशों के हाथ से चला जाएगा, वरन् यह देश अन्य देशों में भी प्रतियोगिता करेगा। अतएव अनेक उद्योग जो ब्रिटेन आदि में प्रमुख हैं, जर्मनी में बन्द कर दिए गए हैं।

(३) जर्मनी से अनेक प्रकार का कच्चा माल, जिसकी ब्रिटेन को जरूरत थी, ले जाया गया, इस कारण जर्मनी का उत्पादन असम्भवप्राय हो गया।

(४) अमरीका और ब्रिटेन आदि जर्मनी को एक उपनिवेश जैसा देश बनाना चाहते हैं। वे जर्मनी से केवल कच्चा माल भर लेना चाहते हैं। उसके उद्योग-धन्धों को नहीं बढ़ाना चाहते।

(५) अमरीका ने तो अपने क्षेत्र में बहुत-सा अमरीकी कच्चा माल जर्मनी को दिया और उसका सामान तैयार कराकर विदेशों में बेचा। इस प्रकार सस्ते जर्मन मजदूरों का सहारा लेकर भी पाश्चात्य देश कुछ लाभ उठाते हैं।

उपरोक्त कारणों-वश पाश्चात्य जर्मनी की दशा अच्छी नहीं।

(६)

हाँ तो, हम अभी तक सन्धि की चर्चा कर रहे थे। विवादपूर्ण प्रश्न केवल तीन हैं।

(१) रूस जल्द से जल्द हर्जाना चाहता है।

(२) रूस एक संयुक्त जर्मन-शासन चाहता है।

(३) रूस नाजीवाद और जर्मनी की युद्ध की तैयारियों का अन्त और प्रजातन्त्र का प्रसार करना चाहता है।

इस युद्ध में सोवियट की क्षति तो बहुत हुई, परन्तु वह अपनी क्षति का केवल पचासवाँ भाग हर्जाने के रूप में चाहता है और इस हर्जाने में से वह पोलैण्ड का हर्जाना भी देने को तत्पर है। इस हर्जाने की रकम क्रीमिया-कान्फ्रेंस में निश्चित हो चुकी थी, परन्तु अन्य मित्रराष्ट्र इतना हर्जाना चुकाना जर्मनी की शक्ति के बाहर बताते हैं।

सोवियट इस हर्जाने को दिन-प्रतिदिन के जर्मन-उत्पादन से भी लेना चाहता है। अन्य मित्रराष्ट्रों का कहना है कि यह भी जर्मनी की शक्ति के बाहर है।

सोवियट देश का कहना है कि यद्यपि पाश्चात्य देशों की क्षति उसके बराबर नहीं तथापि उपरोक्त देश जर्मनी से बहुत-सा हर्जाना प्राप्त कर चुके हैं। जर्मनी की विदेशी पूँजी जो पाश्चात्य देशों के हाथ लगी, वह लगभग ५०० करोड़ डालर है। लगभग इतना ही लाभ जर्मनी के व्यापार-भेदों के मिलने से हुआ है। पाश्चात्य देशों को लगभग २५० टन सोना मिल गया है और लगभग ५०० करोड़ डालर की निधि ऐसी मिल गई है, जिसका कोई मालिक नहीं। इसके अतिरिक्त इन देशों ने मशीनें आदि भी जर्मनी से प्राप्त की हैं।

इस प्रकार अपनी हानि के अनुसार पाश्चात्य देश पर्याप्त हर्जाना पा चुके हैं। परन्तु सोवियट देश को कुछ मशीन, कुछ मजदूरों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला।

(७)

इसी सम्बन्ध में दूसरी समस्या रुहर प्रान्त की है। रूस का कहना है कि इस प्रान्त का अन्ताराष्ट्रीयकरण होना चाहिए। यह प्रान्त जर्मनी की ही नहीं वरन् सारे योरप की आर्थिक व्यवस्था के लिए महत्त्वपूर्ण है। अतएव इस प्रदेश पर चारों बड़े राष्ट्रों तथा योरपीय देशों का नियन्त्रण होना चाहिए।

ब्रिटेन और अमरीका इसके पक्ष में नहीं।

(८)

जर्मनी का शासन किस प्रकार का हो, इस प्रश्न पर भी झगड़ा हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका एक कमजोर ढंग का संघ-शासन चाहते हैं, रूस एक शक्तिशाली संघ-शासन चाहता है।

ब्रिटेन और अमरीका का कहना है कि जर्मनी की राजनैतिक एकता से भावी शान्ति को भारी भय है। अतएव जर्मनी का राजनैतिक संगठन कमजोर होना चाहिए।

रूस का कहना है कि जर्मनी एक राष्ट्र है, वह अनेक राष्ट्रों का संघ नहीं। अतएव उसका शासन केन्द्रित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, यदि आज जर्मनी की एकता के मार्ग में बाधाएँ डाली गईं तो कल अवश्य ही नाजी जैसे उग्र राष्ट्रीय आन्दोलन का जन्म होगा और जर्मन देशशान्ति के मार्ग में बाधक हो जाएगा।

ब्रिटेन और अमरीका के इस दृष्टिकोण का कारण यह बतलाया जाता है कि वे एक कमजोर जर्मनी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वश में रखना चाहते हैं, उसका शोषण करना चाहते हैं। यदि जर्मन-राष्ट्र संगठित हो जाएगा, तब उस दशा में साम्राज्यवादी शोषण असम्भव हो जाएगा।

(९)

अन्तिम प्रश्न है जर्मनी को निःशस्त्र करने का। सोवियट देश इस प्रश्न पर सतर्क है। वह चाहता है कि जर्मनी की युद्ध करने की शक्ति नाजीवाद और उसके सहायक पूँजीपति तथा जमींदारों का नाश कर देना चाहिए। परन्तु जैसा ऊपर कहा जा चुका है, ब्रिटेन और अमरीका आदि जर्मनी के सैन्य-संघ, नाजीवादी दल, तथा जमींदार और पूँजीपतियों को मिटाने के लिए प्रयत्नशील नहीं।

परन्तु अमरीका चारों बड़े राष्ट्रों के बीच एक सन्धि चाहता है, जिसके अनुसार जर्मनी का आक्रमण असम्भवप्राय कर दिया जाएगा। रूस का इस सम्बन्ध में यह कहना है कि जब तक जर्मनी से पूँजीवाद, नाजीवाद आदि को नहीं मिटा दिया जाता, युद्ध की सम्भावना को मिटाना प्रायः असम्भव है।

आँस्कर वाइल्ड की एक कहानी

रहस्य

अनुवादक, श्री चन्द्रचूड़, एम० ए०

डीलापैक्स कैफे के बाहर बैठकर मैं अपनी सायंकाल की चाय और मादक द्रव्य के साथ नगर के उच्छृङ्खल वातावरण पर विचार कर रहा था, जहाँ केवल अहंकार और दरिद्रता का अमिट संघर्ष चल रहा था। इतने में किसी ने मेरा नाम लेकर पुकारा, तनिक सिर हिलाया तो सामने लार्ड मरकिसन दिखाई पड़े। वे मेरे कालेज के साथी थे, लगभग दस वर्ष के उपरान्त सहसा मिलने पर मैंने अत्यन्त सौहार्द्र के साथ उनसे हाथ मिलाया। आक्सफोर्ड में वे मेरे परम मित्र रह चुके थे; देखने में सुन्दर और काफी उत्साही व्यक्ति थे। वे अपनी निर्भीकता और अटल सत्य-साधना के कारण भी लोकप्रिय बन गए थे। परन्तु इस बार जब मिले, तब बेचारे प्रत्यक्ष किसी संशय में पड़े प्रतीत हुए। उनका चेहरा देखने ही से उनके मन की अशान्ति का पता चल जाता था। मैंने अनुमान किया कि यह आधुनिक नास्तिकता कदापि नहीं हो सकती, क्योंकि मरकिसन इने-गिने रूढ़िवादियों में थे—धर्म और राजनीति दोनों क्षेत्रों में। तब क्या वह किसी उर्वशी के फेर में पड़ गए थे? कुछ निश्चय न कर सकने के पश्चात मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अपना विवाह कर लिया अथवा अभी तक कुमार ही बने हुए हैं।

इसका उत्तर उन्होंने यह दिया कि—"मैं आज तक स्त्रियों को समझ न सका।"

बेचारे बड़े सीधे निकले। मैंने कहा—"भाई जेराल्ड, स्त्रियों की रचना उन्हें समझने के लिए नहीं हुई, वे प्रेम करने के लिए ही बनाई गई हैं।"

"परन्तु जब तक पूर्ण विश्वास न हो तब तक प्रेम कैसा?" उन्होंने कहा। "जेराल्ड, तुम्हारे जीवन में भी कोई रहस्य छिपा हुआ है।"

मैं अधिक समय तक अपनी जिज्ञासा को रोक न सका और उस रहस्य के जानने के लिए बार-बार जेराल्ड से अनुरोध करने लगा।

"चलो, हम लोग थोड़ा घूम आएँ" उन्होंने कहा। "यहाँ तो भीड़ के कारण दम घुट रहा है। वह हरे रंग की गाड़ी दिखाई पड़ रही है, उसी में चल दें; क्योंकि पीली गाड़ी में मैं बैठता नहीं।"

इस प्रस्ताव को मैंने स्वीकार कर लिया और दूसरे ही क्षण हम मैडलीन की ओर चल पड़े।

"पर हम लोग चल कहाँ रहे हैं?" मैंने पूछा।

"अरे, कहीं भी चल सकते हैं।" उन्होंने कहा—"ड्वाइज चलकर वहीं के रेस्टोरेन्ट में खाना खाएँगे और जब तक तुम अपनी कहानी सुनाना।"

"नहीं, पहले तुम्हें अपना रहस्य बतलाना होगा।" मैंने आग्रहपूर्वक कहा।

उन्होंने अपनी जेब से मोरक्को का बना हुआ एक छोटा-सा चाँदी का डिब्बा निकाल कर मेरी ओर बढ़ाया। मैंने उसे खोला। भीतर किसी महिला का फोटो था। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में लम्बी और दुबली-पतली थी। उसकी विशाल आँखें स्वप्न में डूबी हुई थीं और बाल खुले हुए थे। वह बहुमूल्य ऊनी वस्त्रों में लिपटी हुई अन्तर्दर्शी साधिका-सी लगती थी।

"तुम इस चेहरे के विषय में क्या अनुमान करते हो?" उन्होंने पूछा—"क्या इससे सचाई प्रकट होती है?"

मैं उसे ध्यान से देखने लगा। मुझे उसे देखकर किसी रहस्य की स्वभावतः कल्पना होने लगी, पर यह रहस्य दोष-पूर्ण था या निर्दोष, नहीं कह सकता था। उसका सौन्दर्य अनेक रहस्यों में उलझा हुआ-सा लगता था, उसमें स्वाभाविक कान्ति न थी। विशेषतया होठों की मुस्कराहट में तीखापन ही अधिक था, जिसमें कोई आह्लाद न था।

मेरे साथी ने सहसा अधीर होकर प्रश्न किया—"क्या कहते हो?"

"मुलायम बालों में लिपटी हुई उसे जियोकाण्डा ही समझो", मैंने उत्तर दिया। "उसके विषय में कोई बात छिपाओ मत, तुम्हें सब बतलाना होगा।"

"अभी नहीं" उन्होंने कहा, "खाना खा लेने के बाद।" और हमारी बातचीत की धारा बदल गई।

वेटर जब हमारे लिए काफी और सिगरेट लाया तब मैंने जेराल्ड को फिर उनके वचनों का स्मरण दिलाया। वे अपने स्थान से उठकर कमरे में ही दो-तीन बार टहल कर अन्त में एक आरामकुर्सी में बैठ गए। फिर तो सारी कहानी आप ही सुना गए—

"एक दिन की बात है। सायंकाल लगभग पाँच बजे मैं बाण्ड स्ट्रीट की ओर निकल गया। उस दिन गाड़ी-ठेलेवालों के कारण बेहद भीड़ थी। बेचारे पैदल चलने-वालों के लिए मार्ग ही रुका हुआ था। वहीं फुटपाथ से सटकर एक छोटी-सी पीले रंग की जोड़ी खड़ी थी, जिसकी ओर मेरा ध्यान अनायास ही आकर्षित हो गया। जैसे ही मैं उसके पास से होकर निकला, गाड़ी में से वही चेहरा झाँकता हुआ दिखाई पड़ा, जो मैं तुम्हें दिखा चुका हूँ। तो उस दिन रात भर मुझे नींद नहीं आई और मैं उस चेहरे को भूल न सका। दूसरे दिन भी यही दशा रही। मैं फिर उस अभागी गली में जाकर चक्कर काटने लगा और लगा प्रत्येक गाड़ी में झाँक-झाँककर देखने, किन्तु कहीं भी उस आकर्षणमयी महिला के दर्शन नहीं हुए। और अन्त में मैं सोचने लगा कि वह एक स्वप्न-मात्र थी। एक सप्ताह बाद मैं मैडम डी रैंस्टेल के यहाँ भोज के लिए निमन्त्रित हुआ। खाना ८ बजे का था; परन्तु ८½ बजे भी हम ड्राइंग-रूम में बैठकर प्रतीक्षा ही कर रहे थे। अन्त में नौकर ने आकर लेडी अलराय के आगमन की सूचना दी। यह वही महिला थी, जिससे मिलने के लिए मैं इतना व्याकुल था। वह अत्यन्त सावधानी के साथ पैर रखती हुई भीतर आई और उसके आते ही रेशमी विभा से कमरा आलोकित हो गया। मेरे आनन्द की सीमा न रही, जब मुझे उसे साथ लेकर डिनर के लिए बैठना पड़ा। कुछ देर चुप रहने के उपरान्त मैंने भोलेपन के साथ कहा—"लेडी अलराय, आपको मैंने शायद बाण्ड स्ट्रीट में कुछ दिन पहले देखा है।" उसका चेहरा बिलकुल फीका पड़ गया और उसने मुझसे धीरे से कहा—"देखिए, इतनी जोर से बातें मत कीजिए, कोई सुन लेगा।" मुझे इस तरह के आरम्भ के कारण बड़ी ग्लानि मालूम हुई। बात टालने के लिए मैंने फ्रेंच साहित्य के नाटकों के सम्बन्ध में चर्चा छेड़ दी। वह बहुत कम बोली, किन्तु उसकी वाणी में मिठास और कोमलता बराबर बनी रही और ऐसा लगता था जैसे वह कोई सुन न ले, इस आशंका में डूबी हुई है। मैं उसके प्रेम में पागल हो गया और उसके चारों ओर के रहस्यमय वातावरण ने मुझे प्रत्येक बात के लिए जिज्ञासु बना दिया। जब वह जाने लगी, और वास्तव में खाना खा लेने के बाद ही वह चल पड़ी थी, तो मैंने उससे फिर कभी मिलने की अनुमति माँगी। पहले तो वह झिझकी और क्षण भर उसे परिस्थिति का अनुमान करने में लगा कि कहीं कोई पास खड़ा सुन तो नहीं रहा है, इसके बाद उसने 'दूसरे दिन पौने-पाँच बजे' मिलने का समय दिया। मैंने मैडम डी रैंस्टेल से उसके विषय में जानने की चेष्टा की, परन्तु जितना मुझे ज्ञात हो सका, उसका आशय इतना ही था कि वह एक विधवा है, जिसका पार्कलेन में एक अत्यन्त सुन्दर बँगला है। इसके बाद एक वैज्ञानिक महाशय ज्यों ही विधवाओं के सम्बन्ध में अपने वैज्ञानिक तर्क उपस्थित करने में दत्तचित्त हुए कि मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ और सीधा अपने घर आया।

दूसरे दिन यथासमय मैं पार्कलेन में आ पहुँचा। परन्तु बटलर से पता चला कि लेडी अलराय अभी अभी बाहर निकली हैं। मुझे आश्चर्य और निराशा दोनों हुई। किसी प्रकार मैं क्लब आया और बहुत देर के विचार के उपरान्त किसी दूसरे दिन मिलने के लिए प्रार्थना करते हुए एक पत्र लिखा। कई दिनों तक पत्र का कोई उत्तर न आया। परन्तु अन्त में एक छोटा-सा उत्तर इस आशय का मिला कि वह रविवार को चार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे अपने घर पर ही रहेगी। उत्तर के साथ फिर उस पते से कोई पत्र न भेजने की चेतावनी थी—कारण मिलने पर मालूम हो सकनेवाला था। रविवार को उसने मेरा स्वागत किया। उस दिन उसने मुझे विशेष रूप से आकर्षित किया और जब मैं चलने लगा तो मुझसे इस बात के लिए अनुनय किया कि यदि मैं फिर कभी उसे लिखूँ तो पता यह होना चाहिए—

मिसेज नाक्स,
C/o ह्विटेकर लाइब्रेरी,
ग्रीन स्ट्रीट।

"मैं क्यों अपने घर में पत्र नहीं मँगाना चाहती, इसके कारण हैं।" उसने कहा था।

"उस समय से बराबर मैं उससे मिलता रहा, परन्तु उसके चारों ओर का वातावरण अन्त तक रहस्य से उन्मुक्त न हो सका। कभी-कभी तो मैं सोचता कि उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार है, किन्तु वह इतनी स्वतन्त्र दिखाई पड़ती थी कि मुझे सहसा इस पर विश्वास नहीं हुआ। मैं किसी निष्कर्ष पर न पहुँचा; क्योंकि वह किसी म्यूजियम के उस कण की भाँति थी, जो कभी चमकीला और कभी धूमिल दिखाई देता है। अन्त में मैंने उससे विवाह करने का निश्चय कर लिया। उससे कभी-कभी मिलकर अथवा केवल पत्र लिखते रहकर कब तक मैं इस रहस्यपूर्ण वातावरण में लिपटा रह सकता था? मैंने उसे लाइब्रेरी के पते पर आगामी सोमवार को ६ बजे मिलने के सम्बन्ध में एक पत्र फिर लिखा। उसकी स्वीकृति पाकर मैं आनन्द के सातवें आसमान में पहुँच गया। मैं उसके प्रेम में पागल था और सारा रहस्य मेरे लिए अनन्त सौन्दर्य का सृजन करता था, यद्यपि मैं उसे स्वयं प्यार करने लगा था। यह रहस्य अब मेरे लिए अत्यन्त वेदनाजनक हो गया। मैं कहाँ से परिस्थिति के इस चक्कर में आ पड़ा!"

"तो तुम इस रहस्य को सुलझा सके?" मैं अपनी व्यग्रता दबा न सका।

"सुनते जाओ" उसने कहा—"तुम स्वयं समझ लोगे।"

"सोमवार को मैं अपने मामा के यहाँ खाना खाकर चार बजे सायंकाल मेरीलाबोन रोड पर जा पहुँचा। तुम जानते ही हो कि मामा रीजेण्ट पार्क में रहते हैं। मैं सीधा पिकडिली जाकर कुछ गन्दी और सँकरी गलियों से होकर सबसे निकट के मार्ग से आ जाना चाहता था कि सहसा मार्ग में ही पर्दे में आती हुई लेडी अलराय लम्बे डग भरती हुई दिखाई पड़ीं। उस सड़क पर सबसे किनारेवाले मकान में जाकर वे ऊपर चली गईं और स्वयं कुञ्जी निकालकर ऊपर का कमरा खोलकर भीतर चली गईं। 'यही रहस्य है' मेरा ऐसा अनुमान हुआ और मैं निकट से उस मकान का निरीक्षण करने लगा। वह देखने में किराए पर उठाया जानेवाला मकान लगता था। भीतर जाने के पहले मुझे उस महिला का रूमाल पड़ा मिल गया, जो सम्भवतः उससे गिर गया था। मैंने उसे उठाकर जेब में डाल लिया। क्षण भर मैं वहीं खड़ा रहा और कुछ निर्धारित न कर सका। फिर यह सोचता हुआ कि इस तरह उसके आचरण पर दृष्टि गड़ाने का मुझे क्या अधिकार है, मैं क्लब लौट आया। ६ बजे उससे मिलने गया। उस समय वह एक सोफे पर, जिसके चाँदी के-से श्वेत निर्मल रेशों पर रत्नों का काम बड़ा अच्छा बन पड़ा था, चाय पीने के गाउन में पड़ी हुई थी। देखने में वह उस दिन विशेष आकर्षक लग रही थी। 'आइए आपको देखकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता हुई' उसने कहा 'आज मैं दिन भर कहीं नहीं निकली।' मैंने उसकी ओर आश्चर्य से देखा और झट अपनी जेब से रूमाल निकालकर सामने रख दिया। 'लेडी अलराय, क्या आज ही सायंकाल आप इसे कमनर स्ट्रीट में नहीं गिरा आई हैं?' मैंने भद्रतापूर्वक कहा। उसने मेरी ओर आहत नेत्रों से देखा, परन्तु रूमाल लेने का तनिक भी प्रयत्न नहीं किया। 'आप वहाँ गई किसलिए थीं?' मैंने पूछा। उसने आवेश के साथ उत्तर दिया—'आपको प्रश्न करने का क्या अधिकार है?' 'जिस अधिकार को लेकर मैं तुमसे प्रेम करता हूँ' मैंने कहा—'मैं वस्तुतः तुम्हें पत्नी के रूप में याचना करने आया था।' उसने अपने हाथों से मुँह को ढक लिया और जोर से रोने लगी, जिससे आँसुओं की धारा बह चली। 'तुम्हें बतलाना ही होगा' मैं कहता ही रहा। वह उठ खड़ी हुई और मेरी ओर सीधा देखती हुई बोली—'लार्ड मरकिसन, आप सब कुछ जानते हैं।'—'आप किसी से मिलने गई थीं' मैं चीख उठा; 'और इसी रहस्य को आप प्रकट होने नहीं देना चाहतीं।' वह एकदम पीली पड़ गई, जैसे उसके शरीर में रक्त का संचार ही बन्द हो गया हो। उसके मुँह से केवल इतना निकला—'मैं किसी से मिलने नहीं गई थी'—'क्या आप ठीक ठीक नहीं बताएँगी?' मैं चिल्ला उठा। 'मैं सब बता चुकी' उसने उत्तर दिया। मेरे आवेश की सीमा नहीं रही। मैं नहीं जानता कि मैंने क्या कहा; परन्तु क्रोध में काफी उलटी-सीधी सुनाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म वहाँ से निकल आया। अगले दिन उसका एक पत्र मिला। बिना खोले ही मैंने उसे लौटा दिया और एलान कालविल के साथ नार्वे के लिए प्रस्थान कर दिया। कोई एक मास के उपरान्त जब मैं लौटा तो सबसे पहले मेरी दृष्टि मार्निंग पोस्ट में उस स्थल पर पड़ी, जहाँ लेडी अलराय की मृत्यु का शोक-संवाद छपा था। नृत्य-शाला में उसे सर्दी लग गई थी और पाँच दिन बाद फेफड़ों के सिमट जाने से उसकी मृत्यु हो गई। मेरे ऊपर तो जैसे वज्र टूट पड़ा। मैंने उसे कितना प्यार किया था, क्या मैं उसके लिए पागल नहीं हो गया था। हाय ईश्वर! मैंने उसे अपना सर्वस्व अर्पित कर देना चाहा था!"

"तुम फिर कभी उस स्ट्रीटवाले मकान में गए?" मुझे उत्सुकता हुई। "हाँ" उसने उत्तर दिया।

"एक दिन मैं कमनर स्ट्रीट गया। इसके बिना मैं रह भी कैसे सकता था, जब मेरा भ्रम अभी बना था। वहाँ जाकर मैंने मकान का दरवाजा खटखटाया और एक सम्भ्रान्त महिला ने आकर उसे खोला। मैंने उससे पूछा कि क्या कोई कमरे किराए पर मिल सकेंगे। 'जी' उसने कहा—'ड्राइंग-रूम अवश्य किराए पर है; परन्तु न उस महिला से, जिसने उन कमरों को ले रखा है, लगभग तीन मास से नहीं मिली। इस बीच उसका एक पैसा भी किराए का नहीं मिला, इसलिए आप उसे ले सकते हैं।' मैंने अपने पास सुरक्षित एक फोटो की ओर संकेत कर पूछा—'क्या यही वह महिला है?' 'हाँ, वही तो है, परन्तु यह बताइए कि वे यहाँ आ कब रही हैं?'—इसके उत्तर में मुझे कहना पड़ा कि 'अरे, उनकी तो मृत्यु हो गई!' 'यह नहीं हो सकता!' उस महिला ने सहसा दुःख और आश्चर्य के साथ कहा—'वे हमारे सभी किराएदारों से अच्छी थीं। बेचारी केवल कभी-कभी हमारे ड्राइंग-रूम में आकर बैठ भर लेने के लिए तीन गिनी प्रतिसप्ताह किराया दिया करती थीं।'—'वह यहाँ किसी से मिलती थीं क्या?' मैंने पूछा। परन्तु उस सम्भ्रान्त महिला ने मुझे विश्वास दिलाया कि कभी इस तरह की कोई बात नहीं हुई। वह बराबर अकेली आया करती थीं और किसी से मिलती-जुलती नहीं थीं। 'फिर वह यहाँ आती ही किसलिए थीं?' मैंने फिर प्रश्न किया। 'वह यहाँ आकर केवल बैठती थीं और बहुधा पुस्तकें पढ़ा करतीं अथवा कभी चाय भी पी लेती थीं' महिला ने कहा। यह न निश्चित कर कि मुझे क्या कहना चाहिए, एक सावरेन उसके हाथ पर रखकर मैं वहाँ से चला आया। अब तुम इन सब बातों से क्या अनुमान करते हो? क्या तुम्हें उस महिला की सचाई में विश्वास नहीं होता?"

"मुझे विश्वास हो गया।"

"तब फिर लेडी अलराय वहाँ किसलिए जाया करती थीं?"

"जेराल्ड" मैंने कहा—"यह स्पष्ट है कि लेडी अलराय एक ऐसी महिला थीं, जिन्हें रहस्य का उन्माद हो गया था। उन्होंने किराए पर कमरे केवल इसलिए ले रखे थे कि वे वहाँ पर्दे में जाया करें और अपने को किसी नाटक की नायिका अनुभव किया करें। रहस्य के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण था। परन्तु वह स्वयं ऐसी रहस्यमयी रमणी थीं, जिनका कोई अन्य रहस्य नहीं हो सकता।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा समझते हो।"

"मुझे इस बात का निश्चय है" मैंने कहा।

उसने मोरक्को का डिब्बा निकाला और उसे खोलकर फोटो की ओर एक बार देखा। उसके विस्मय की सीमा न थी।

राजनीतिक जीवन-सम्बन्धी संस्मरण

डा० सत्यप्रकाश, डी० एस० सी०

कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि महात्मा गांधी राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस के लिए लंदन के लिए चले। उनके साथ सर्वश्री महादेव देसाई, देवदास गांधी, प्यारेलाल, मीराबेन और श्रीमती सरोजिनी नायडू थीं। गांधी जी के सभी ढंग निराले रहते हैं। जिस बात में हम लोगों को विचित्रता प्रतीत हुई, वह थी कि लंदन में उन्होंने मिस मूरियल लेस्टर के यहाँ ठहरना उचित समझा। ब्रिटिश सरकार चाहती थी कि उनको किसी शाही स्थान पर ठहराया जाए, पर गांधी जी ने गरीबों के मोहल्ले में (लंदन के ईस्ट-एण्ड में) रहना उचित समझा, उनका यह व्यवहार उनके सार्वजनिक जीवन के सर्वथा अनुकूल था—रेल में तीसरे दर्जे के डिब्बे में चढ़ना, दिल्ली में कोठियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातावरण छोड़कर भंगी-बस्ती के वाल्मीकि-मन्दिर में ठहरना इत्यादि ऐसी विचित्रताएँ हैं, जो अन्य राष्ट्रों के नेताओं में कम देखी जाती हैं। गांधी जी जितने दिनों लंदन रहे, भारतीय समाचारपत्रों में उनके स्वागतों की धूम का वर्णन हम सबको बड़ा प्रिय लगता था। स्वागतों का ताँता तो मार्ग से ही बँध गया था। अदन में भारतीयों और अरबवासियों ने मिलकर उनका स्वागत किया। यहाँ भी राष्ट्रीय झंडे पर, अच्छा खासा विवाद उठ बैठा था, क्योंकि रेजिडेण्ट को इस झंडे के फहराने में आपत्ति थी। गांधी जी ने अपने प्रत्युत्तर-भाषण में स्पष्ट कहा कि कांग्रेस और सरकार की सन्धि हो चुकी है, और जहाँ कहीं भी कांग्रेसी प्रतिनिधि का स्वागत किया जाएगा, वहाँ कांग्रेस के झंडे को प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त होना ही चाहिए। लंदन जाते समय गांधी जी ने अपनी एक ऊनी शाल, जो सात सौ रुपये की थी, ७,००० रुपये को एक यात्री के हाथ बेच डाली, यह भी एक मजेदार घटना थी। गांधी जी का हाथ छूते ही प्रत्येक चीज का मूल्य बढ़ जाता है। एक बार मैंने सुना था कि उन्होंने किसी फण्ड में एक पैसा दान दिया, जो उस समय उनकी एकमात्र पूँजी थी। इस पैसे को नीलाम किया गया। ठीक तो नहीं कह सकता, सम्भवतः छः या सात सौ में बिका था। जहाँ कहीं भी सम्मानपत्र भेंट किए जाते हैं, उन्हें गांधी जी नीलाम कर देते हैं, और वह रुपया सार्वजनिक कार्य में लगाया जाता है। प्रयाग-विश्वविद्यालय की यूनियन ने एक बार उन्हें एक सम्मानपत्र भेंट किया था। जब इसका नीलाम आरम्भ हुआ तो स्थानीय क्रास्थवेट कालेज और यूनिवर्सिटी-यूनियन में बोलियों में अच्छी-खासी प्रतिद्वन्द्विता छिड़ गई थी, और अन्त में यूनियन की विजय रही। सार्वजनिक कार्य के लिए पैसा वसूल करने का गांधी जी का निराला ढंग रहा है। स्टेशन पर इकट्ठा भीड़ से वे चलते-चलते पैसा वसूल कर लेते हैं। मैंने एक बार प्रयाग की एक सभा में, जो कहीं बलुआघाट के निकट हुई थी, स्त्रियों से पैसा वसूल करते उन्हें देखा था। महिलाएं चरण-स्पर्श के लिए समीप आतीं और अपने आभरण भेंट कर जाती थीं। हमारे देश में लाखों रुपया महामना मालवीय जी ने भी इकट्ठा किया, पर उनका हाथ सदा सेठों की जेबों पर पड़ा। गांधी जी ने दरिद्रनारायण के नाम पर दरिद्रों से लाखों रुपया वसूला और उनके हित के लिए अर्पित कर दिया। मालवीय जी के रुपये से भव्य अट्टालिकाएँ निर्मित हुईं, जो स्थूलाकार हमारे समक्ष बहुत समय तक उपस्थित रहेंगी, परन्तु गांधी जी के संचित धन से राष्ट्रीयता की नींव पड़ी। इस नींव पर जो अट्टालिकाएँ स्थित होंगी, वे दूसरे ही प्रकार की होंगी। अस्तु, प्रत्येक व्यवहार में गांधी जी का अनोखापन रहता है। हमारी सरकार गांधी जी के इस अनोखेपन से त्रस्त थी। वह चाहती थी कि गांधी जी का ऐसा सरकारी शाही स्वागत किया जाए कि गांधी जी प्रलुब्ध हो जाएँ, और तब तो सरकार की विजय थी ही। कहा जाता है कि पहले महायुद्ध के समय अँगरेजी सरकार इसी प्रकार की परिस्थिति में तब पड़ी थी जब इँगलैंड में अमरीका के तत्कालीन सभापति वुड्रो विलसन का दौरा हुआ था। उसे शाही भोजों में और स्वागतों में आमंत्रित किया गया, पर उसने हर जगह उपेक्षा और उदासीनता प्रकट की। बड़ी कठिनाई के बाद उसकी आदर्शवादिता से लाभ उठाकर लायड जार्ज ने उसे अपने फंदे में फँसा पाया। लीग आव् नेशन्स इस विलसन का ही स्वप्न था और उसके आदर्श स्वप्न की जो दुर्गति की गई, उसका स्पष्टीकरण तो आगे के इतिहास से हुआ।

लंदन में यों तो गांधी जी ने अनेक वक्तव्य और वक्तृताएँ दीं, पर सबसे मार्के की दो रहीं। एक तो वह जो बेतार के तार द्वारा किंग्सले हाल से अमरीका के न्यूयार्क के लिए भेजी गई और दूसरी वह जो १ दिसम्बर १९३१ को राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में गांधी जी ने दी। मैं समझता हूँ कि गांधी जी ने 'रेडियो टाँक' देना तो इस युग में शायद ही कभी स्वीकार किया होगा। न्यूयार्क के लिए दिया गया यह वक्तव्य इस प्रकार का अकेला उदाहरण है। मेरा यह विचार है कि इस युग में जितना गांधी जी ने लिखा अथवा जितने भाषण गांधी जी ने दिए, उतने बहुत कम अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने लिखे या दिए होंगे। प्रति सप्ताह "यंग इंडिया" और "हरिजन" के लिए लिखी सामग्री सहस्रों पृष्ठ का साहित्य है और सायंकालीन प्रार्थना के अनन्तर प्रतिदिन का भाषण वक्तव्यों के साहित्य में मूल्यवान् स्थान पाने-योग्य है। अस्तु, न्यूयार्कवाले भाषण की भाषा ही इतनी सुन्दर थी कि लोगों को आश्चर्य हुआ कि गांधी जी इतनी सुन्दर अँगरेजी बोल सकते हैं। भारत में तो गांधी जी ने हिन्दी में ही बोलने का प्रण कर रक्खा था (इस वर्ष अर्थात् १९४७ में अवश्य अन्तर-एशियाई कान्फ्रेंस में दिल्ली में उन्होंने अँगरेजी का व्यवहार किया, जिसका कारण स्पष्ट था) और जनता को पता नहीं था कि गांधी जी अँगरेजी भाषण देने में भी विशेषता रखते हैं। गांधी जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भाषणों का सबसे बड़ा गुण स्वाभाविकता है। सीधे-सादे शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो उनके हृदय से निकलते हैं। शब्दों के प्रयोग में गांधी जी कलाकार हैं। ईसा की सीवाली का उसने आनन्द आता है। रवीन्द्रनाथ, गांधी, राधाकृष्णन् और जवाहरलाल अँगरेजी लिखनेवाले भारतीयों में अपना विशेष स्थान रखते हैं। इन चारों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं और सभी उत्कृष्ट हैं, पर जो सरलता और सरसता गांधी जी की शैली में है, वह अन्यों की में नहीं।

यहाँ इतना स्थान नहीं कि राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में दी गई वक्तृता का विस्तृत उल्लेख करूँ। पर कांग्रेस किसका प्रतिनिधित्व करती है, इसका कुछ विवरण गांधी जी के शब्दों में ही देना चाहता हूँ--

"कान्फ्रेंस के अन्य सदस्य तो किसी न किसी एक दल के प्रतिनिधि हैं, पर कांग्रेस तो पूर्ण भारत का एवं सभी अधिकारों का प्रतिनिधित्व करती है, साम्प्रदायिकता की तो यह निश्चय रूप से शत्रु है।" राउण्ड टेबुल कान्फ्रेंस की फेडरेल स्ट्रक्चर कमेटी के समक्ष भी गांधी जी ने यह कहा था कि "कांग्रेस न केवल भूखे भारत का प्रतिनिधित्व करती है, यह अपने सेवा-भाव के कारण राजाओं और जमींदारों का भी प्रतिनिधित्व करती है।'

भारतीय सरकार की आज तक यह कूटनीति रही कि वह सिद्ध करे कि कांग्रेस केवल एक छोटे से दल का प्रतिनिधित्व करती है, इसकी आवाज देश की आवाज नहीं है। प्रतिनिधित्व के इस प्रश्न का बीजवपन राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंसों के समय किया गया। आप देखेंगे कि बाद को ही यह प्रश्न जिन्ना महोदय ने बार बार उठाया और इस प्रश्न का भयंकर परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम लीग ब्रिटिश छत्रछाया में फूलती-फलती आज इतनी उग्र हो गई है। अम्बेदकर के नेतृत्व में इस प्रश्न ने दूसरा रूप धारण किया। सन् १९४२ के आन्दोलन के पूर्व भी सरकार की ओर से यही प्रचार किया गया कि कांग्रेस की आवाज समस्त भारत की आवाज नहीं है। अँगरेजों की कूटनीति की आधार-शिला यह थी कि कांग्रेस समस्त भारत का प्रतिनिधित्व नहीं करती। गांधी जी को राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में भी यही ग्लानि हुई—"मैं देखता हूँ कि कांग्रेस को एक पार्टी माना जा रहा है। मुझे इसकी चिन्ता नहीं और न इससे कांग्रेस की ही हानि होगी, पर इससे उस इष्ट की अवश्य हानि होगी, जिसके लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं, मैं तो यह कहता हूँ कि कांग्रेस इन सभी अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व करती है।

वस्तुतः कांग्रेस एक पार्टी है या समस्त भारत की प्रतिनिधि है, इस प्रश्न में कोई गम्भीरता न होती, यदि समस्त अन्य अल्पसंख्यक दल भी भारत की स्वाधीनता के प्रश्न को प्रमुख प्रश्न मानते और इस माँग में सब एक प्रकार सहयोग देते। क्या यह आश्चर्य नहीं है कि इतने अनेक दलों में कांग्रेस की ही प्रमुख माँग स्वाधीनता की हो और सब दल अँगरेजी सरकार को भारत में टिके रहने की दुहाई दें और स्वाधीनता के युद्ध में बाधा डालें। यह बाधा उपस्थित करने के कारण ही यह स्पष्ट है कि अन्य दल नौकरशाही-द्वारा अवलम्बित और पोषित हैं। यदि मुस्लिम लीग स्वाधीनता के लिए अग्रसर युद्ध करती होती और इस ध्येय में कांग्रेस के समान या उससे अधिक कर्मिष्ठ होती, तो हमें कोई आपत्ति न होती कि हम उसे भारतीय जनता के एक विशेष अंग का प्रतिनिधि मान लेते। यदि अम्बेदकर महोदय भी दलित समाज का नेतृत्व करते हुए अँगरेजी शासन से मोर्चा लेते और इस कार्य में मोर्चा लेनेवाले अन्य दलों को सहयोग देते, तो अवश्य हम उनके प्रतिनिधित्व की वास्तविकता स्वीकार कर लेते। पर राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में स्थिति तो दूसरी ही थी।

राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंसवाली इस वक्तृता में गांधी जी ने स्पष्ट यह कहा कि—"यद्यपि आप लोगों ने कांग्रेस को आमंत्रित तो किया है, पर आप कांग्रेस पर विश्वास नहीं करते, आप यह स्वीकार ही नहीं करते कि कांग्रेस समस्त भारत का प्रतिनिधित्व करती है।" गांधी जी आगे कहते हैं कि "कांग्रेस विद्रोह की भावना का प्रतिनिधित्व करती है।" यहाँ इतना स्थल नहीं है कि मैं गांधी जी के भाषण से विस्तृत उद्धरण दूँ। वस्तुतः सम्पूर्ण भाषण महत्त्व का है। मैंने इसे जब पत्रों में पहली बार पढ़ा तो चित्त प्रसन्न हो गया था और तब से मैंने कई बार आज तक इसे दोहराया है। जब-जब पढ़ा, नया रस मिला। फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी में दिया गया भाषण भी इसी प्रकार का था।

राउण्ड टेबिल कान्फ्रेंस में श्री जिन्ना महोदय की वक्तृता १२ नवम्बर १९३० को हुई थी। इनके भाषण पर भी एक दृष्टि डाल लेनी आवश्यक है। आपका कहना था कि "इस समय यहाँ आए हुए प्रतिनिधियों के चार मुख्य दल हैं--ब्रिटिश प्रतिनिधि, भारतीय नरेश, हिन्दू और मुसलमान। इनके अतिरिक्त अन्य अल्पसंख्यक भी हैं जैसे सिक्ख और ईसाई और हम एक क्षण के लिए भी अस्पृश्य वर्ग को नहीं भूल सकते।" जिन्ना महोदय का कहना है कि "इन दलों में से एक भी ऐसा नहीं है, जिसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह घोषित न किया हो कि भारत को पूर्ण स्वायत्त शासन मिलना चाहिए।" यहाँ तक तो ठीक, पर आप आगे एक मजेदार युक्ति देते हैं, जिसका आशय यह है कि सरकार कहती है कि भारत को स्वराज्य-शासन-विधान दिया कैसे जाए जब कि देश की एक प्रबल संस्था (अर्थात् कांग्रेस) विधान की अवज्ञा करने को तत्पर है अथवा उस विधान का दुरुपयोग करने पर उतारू है। हम और सब जो यहाँ इकट्ठे हुए हैं और जो स्वतन्त्रता के हामी हैं, क्या यही उत्तर लेकर यहाँ से जाएँगे कि कांग्रेस विधान की अवज्ञा करेगी इसीलिए हमें स्वतन्त्रता नहीं दी जा रही है? जिन्ना महोदय की सम्मति में यह युक्ति सर्वथा असंगत है। उनका कहना है कि 'भारतवर्ष में ७ करोड़ मुसलमान ऐसे हैं, जिनमें से इक्के-दुक्के व्यक्तियों को छोड़कर किसी ने असहयोग-आन्दोलन में भाग नहीं लिया। साढ़े तीन या चार करोड़ दलित जाति के व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस आन्दोलन का सदा विरोध किया। सिक्ख और ईसाइयों ने भी इस आन्दोलन में योग नहीं दिया और यही नहीं समस्त हिन्दू-मात्र ने भी तो इस आन्दोलन की पुष्टि नहीं की।'

इस उद्धृत तर्क से श्री जिन्ना की मनोवृत्ति स्पष्ट है, इसकी व्यंजना यह है कि यदि अवज्ञा-आन्दोलन न हुआ होता, तो सरकार भारत को स्वराज्य देने जा ही तो रही थी, क्या खूब! कांग्रेस ही स्वराज्य के मार्ग में बाधक है और सब प्रतिनिधि स्वराज्य के सबसे बड़े हामी हैं! इसी का अर्थ है कि उलटा चोर कोतवाल को डाँटे। श्री जिन्ना जी ने स्पष्ट सिद्ध करना चाहा कि अवज्ञा-आन्दोलन की पृष्ठ-भूमि में अधिकांश भारतीय जनता की शुभकामनाएँ नहीं थीं। यह बात गलत है। हममें से जो लोग उस समय के आन्दोलन की गतिविधि से परिचित थे, इस बात का अनुभव करते थे कि आन्दोलन में सक्रिय भाग लेनेवाले तो थोड़े से ही व्यक्ति थे (जैसे कि युद्ध में थोड़े से ही सिपाही जनता के प्रतिनिधि बनकर लड़ते हैं), पर आन्दोलन को अधिकांश सभी व्यक्तियों का आशीर्वाद प्राप्त था। कांग्रेस के अधिवेशनों और सभाओं में सम्मिलित होनेवाले जन-समूह की भावनाओं से यह बात स्पष्ट थी। यद्यपि मुसलमानों का खिंचाव आन्दोलन के विपरीत होता जा रहा था, पर दलित जाति की भावनाएँ तो देश के साथ ही थीं। ईसाइयों की बात इस देश में निराली है; वे तो सदा दुविधा में पड़े रहते हैं। वे साथ न थे तो विरोधी भी न थे और फिर उनकी संख्या देश में है ही कितनी! भारतीय राजनीति के प्रति अभी तक उन्होंने तटस्थता की भावना रक्खी है।

श्री जिन्ना महोदय के शेष भाषण की विचार-धारा निम्न पंक्तियों से व्यक्त हो जाएगी—"अल्पसंख्यकों के अधिकार संरक्षित करने की बात हमें शासन-विधान बनाते समय ध्यान में रखनी पड़ेगी। भारतीय नरेशों का स्थान क्या होगा, यह हमें सोचना है, क्योंकि वे भी अपने अधिकारों का संरक्षण चाहते हैं और इसी प्रकार मुसलमान भी अपनी जाति के लिए विधान में संरक्षण चाहते हैं।"

यह ध्यान रखना चाहिए कि इस समय तक जिन्ना महोदय मुसलमानों को अल्पसंख्यकोंवाले संरक्षण दिलाना चाहते थे। पाकिस्तानवाले प्रश्न का इस गोलमेज कान्फ्रेंस के अवसर तक जन्म नहीं हुआ था। मुसलमानों को उन्होंने अभी तक पृथक् राष्ट्र घोषित नहीं किया था। देश के बँटवारे की भी समस्या न थी। गांधी जी की मुसलमानों के प्रति सदा सद्भावना रही है और इसी सद्भावना के आवेश में आकर गांधी जी ने अपने भाषण में स्वर्गीय मौलाना मोहम्मद अली की इस उक्ति को भी उद्धृत किया था कि "अगर अल्लाह ने मुझे जिन्दगी बख्शी तो मैं हिन्दुस्तान में मुसलमानी हकूमत की तवारीख लिखूँगा और तब मैं सबूत और हवाले देकर यह साबित करूँगा कि अँगरेजों ने तवारीखें लिखने में भूलें की हैं—औरंगजेब उतना जालिम न था, जितना उन्होंने दिखाया है, और मुगलों की हुकूमत उतनी बुरी न थी, जितनी कि अँगरेजी तवारीख में हमें पढ़ाई जाती है।" अस्तु, एक ओर तो गांधी जी का यह उत्साह और दूसरी ओर मुसलमानी प्रतिनिधियों की विद्वेषमूलक भावनाएँ—दोनों ने मिलकर कान्फ्रेंस को असफल बना दिया।

गोलमेज कान्फ्रेंसों में भाषणों का ताँता बँधा। कुशल कलाकारों ने अपनी वक्तृत्व-कला का परिचय दिया। मालवीय जी ने भी लम्बी स्पीच दी और श्री निवास-शास्त्री जी की भी अच्छी वक्तृता हुई। शास्त्री जी ने भरे हुए हृदय से प्राइम मिनिस्टर और महात्मा जी दोनों से अपील की। प्रधान मंत्री से कहा—"प्रत्येक उपसमिति में महात्मा गांधी और उनके सहयोगियों का योग प्राप्त करो और उन्हें निराश न जाने दो, जिससे कि फिर उन्हें असहयोग-आन्दोलन का आश्रय लेना पड़े।" महात्मा जी के प्रति उन्होंने कहा कि "आपका प्रभाव अद्वितीय है। आप में जन-हृदय पर शासन करने की दैवी शक्ति प्राप्त है, इस बात को संसार स्वीकार करता है, क्या आपकी इस क्षमता से राष्ट्र के निर्माणात्मक कार्य में हमें लाभ न प्राप्त होगा?....महात्मा जी, भारत का भविष्य शक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी एक व्यक्ति के हाथ में है, तो वह आपके है... इत्यादि।"

भारत की स्वाधीनता के लिए जो कान्फ्रेंस बुलाई गई थी, वह धीरे-धीरे साम्प्रदायिक प्रश्नों में उलझा दी गई। एक "माइनारिटीज कमेटी" बनी। सबसे दुख-भरी घटना यह हुई जैसा कि इस कान्फ्रेंस से दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होने लगा कि इँगलैण्ड के रूढ़िवादी दल से भारत के मुसलमान प्रतिनिधि मिल गए। मैं तो यह कहूँगा कि आरंभ से ही षड्यन्त्र रचा गया था। इँगलैण्ड की पार्लियामेंट में एक दल खुल्लमखुल्ला भारतीय अधिकारों का विरोधी रहा है। उन दिनों के समाचारों को पढ़कर हमें कितनी ग्लानि होती थी, जब हम देखते थे कि मुस्लिम प्रतिनिधि इस रूढ़िवादी दल से वस्तु-स्थिति पर पहले परामर्श कर आते थे और वस्तुतः सभी बाग-डोर इस षड्यंत्र के हाथ में थी। गांधी जी ने साम्प्रदायिक समझौते के लिए "ब्लैंक चेक" तक दे डाला, पर समझौता तो तब होता जब कि समझौते की भावना होती। मुझे तो सन्देह है कि प्राइम मिनिस्टर (रैमजे मैकडानल्ड), लार्ड सैंकी जो विशेष अधिवेशनों के अध्यक्ष थे और भारत-मंत्री सेमुअल होर सभी इस षड्यंत्र में सम्मिलित थे। होना यही था कि कुछ दिनों की धूमधाम और सैर-सपाटे के बाद इस नाटक का भी अंत हो गया। गांधी जी ने अपने "माइनारिटीज" कमेटीवाले भाषण में कुछ विशेष शब्द कहे थे, जिनका महत्त्व हम उस समय न समझ सके पर बाद के इतिहास ने इन शब्दों की गम्भीरता प्रमाणित की। शब्द ये थे—"अन्य अल्पसंख्यकों के अधिकारों की बात तो मेरी समझ में आ सकती है, पर अस्पृश्यों के अधिकार का प्रश्न तो क्रूरतम है। क्या अस्पृश्यों को सदा अस्पृश्य ही बनाकर रखने का विचार है? सिक्ख तो सदा पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिक्ख रह सकते हैं, और मुसलमान और ईसाई भी। पर क्या अस्पृश्यों को भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी प्रकार रहना है? मैं तो यह चाहूँगा कि हिन्दुत्व मर जाए तो भला, पर अस्पृश्यता तो मिट जाए। जो लोग अस्पृश्यों के राजनीतिक अधिकार की बात उठाते हैं, वे न तो भारत को समझते हैं, और न भारतीय समाज के संगठन को; अतः मैं पूरे बल से यह कहना चाहता हूँ, चाहे मैं अकेला ही इसका प्रतीकार या विरोध करने को रह जाऊँ, मैं जीवन की बाजी लगाकर भी इसका विरोध करूँगा।" गांधी जी के ये शब्द उस समय आकाश में विलुप्त हो गए और किसी को आशा न थी कि इन शब्दों की पृष्ठभूमि में वह विस्फोट है, जो आगे चलकर किसी दिन भारत में भूकम्प ला देगा। अभी हम इस भूकम्प की कहानी को यहीं छोड़ देना उचित समझते हैं।

भारत में प्रति दिवस गोलमेज कान्फ्रेंस की असफलता के समाचार आते थे। देश की स्थिति बिगड़ती जा रही थी। सन्धि के जो समझौते हुए थे, उनकी सरकार की ओर से अवहेलना की जा रही थी। खान अब्दुल गफ्फार खाँ और उनके भाई डाक्टर खान साहब गांधी जी के भारत जाने के पूर्व ही जेल में बन्द कर दिए गए थे। बंगाल की भी अवस्था शोचनीय थी। ७ और ८ नवम्बर को बम्बई में कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की मीटिंग हुई थी। इस मीटिंग में गांधी जी के भेजे गये केबिलग्राम पर विचार हुआ। कमेटी ने सभापति को आदेश दिया कि महात्मा जी को तार दे दिया जाए कि उनके गोलमेज कान्फ्रेंस में भाग लेने की अब कोई आवश्यकता नहीं है, पर वे स्वयं वहाँ की परिस्थिति को समझ कर अन्तिम निश्चय करें। गांधी जी को भारत की विषम परिस्थिति से भी सूचित किया गया।

इन परिस्थितियों में २८ दिसम्बर १९३१ को प्रातःकाल गांधी जी बम्बई लौट आए। सरदार पटेल की अध्यक्षता में २९, ३० और ३१ दिसम्बर १९३१ और १ली जनवरी १९३२ को बम्बई में ही वर्किंग कमेटी की मीटिंग हुई, गांधी जी ने अपनी यात्रा का पूर्ण विवरण उपस्थित किया। पंडित जवाहरलाल जी भी इस समय जेल में थे और शेरवानी जी भी जो कि संयुक्त-प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। ये लोग गांधी जी से परामर्श करने बम्बई जा रहे थे कि मार्ग में पकड़ लिए गए। सरहदी प्रान्त में कई स्थलों पर गोली चलाई गई थी। गांधी जी ने भारत की परिस्थिति के संबंध में वायसराय को एक तार २९ दिसम्बर १९३१ को भेजा था, पर उसका जो उत्तर आया, उससे सन्तोष नहीं हुआ। इन सब बातों को देखते हुए, कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने निश्चित किया कि अवज्ञा आन्दोलन फिर से आरम्भ किया जाए, और दिल्ली की जो संधि हुई थी, वह भंग समझी जाए। इस आन्दोलन की रूप-रेखा के १२ अंग निश्चित किए गए। आन्दोलन अहिंसात्मक रहे, यह शर्त थी, और लगान-बन्दी की भी घोषणा की गई। गांधी जी ने ३ जनवरी १९३२ को वायसराय को अन्तिम तार दिया। ६ दिन दोनों ओर से तार आते और जाते रहे। ४ जनवरी से तनातनी आरंभ हो गई और कई आर्डिनेन्स जारी कर दिए गए। ४ जनवरी के प्रातःकाल ही गांधी जी और सरदार पटेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर पकड़ लिए गए, और इस प्रकार उनका गुजरात जाने का कार्यक्रम भंग कर दिया गया। देश भर में क्रूरतम आर्डिनेन्सों का राज्य स्थापित हो गया।

आन्दोलन चल ही रहा था कि निश्चय किया गया कि दिल्ली में कांग्रेस का २४ अप्रैल १९३२ को अधिवेशन किया जाए। श्री पं० मदनमोहन मालवीय इसके सभापति मनोनीत हुए। कांग्रेस इस समय अवैध घोषित की जा चुकी थी। दिल्ली में जो स्वागत-समिति बनी थी, उसे भी सरकार ने गैरकानूनी घोषित किया था। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आनेवाले प्रतिनिधि मार्ग में ही अथवा अपने-अपने स्थानों पर पकड़ लिए गए थे। श्रीमती सरोजनी नायडू, जो उस समय कांग्रेस-कमेटी की कार्यवाहक अध्यक्षा थीं, बम्बई छोड़ते समय पकड़ ली गईं। दिल्ली की धर्मशालाओं और होटलों में कांग्रेस-प्रतिनिधि ठहराने पर कड़े प्रतिबन्ध लगाए गए थे। मालवीय जी जैसे ही दिल्ली की सीमा में प्रविष्ट हुए, पकड़ लिए गए। सरोजनी नायडू जी ने स्वागत-समिति के ४० सदस्य मनोनीत किए थे, जिनमें से आधे से अधिक सदस्य जेल चले गए, फिर भी कुछ सदस्य दिल्ली पहुँच गए और उन्होंने २३ अप्रैल की रात को खुले अधिवेशन के लिए ५ प्रस्ताव स्वीकार किए। २४ अप्रैल (रविवार) १९३२ का दिन सनसनीदार था। चाँदनी चौक में सेना और पुलिस के सिपाही चक्कर लगा रहे थे। जहाँ-जहाँ कांग्रेस के अधिवेशन होने की संभावना थी, वहाँ कड़ा पहरा था। ठीक ९ बजे प्रातःकाल घंटाघर के निकट के खुले मैदान में भारत के सभी प्रान्तों के लगभग ४०० प्रतिनिधि अकस्मात् उपस्थित हो गए, और उन्होंने विषय-निर्वाचनी समिति द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों की पुष्टि कर डाली। सम्पूर्ण खुला अधिवेशन लगभग १० मिनट का हुआ। इतनी देर में ही स्वागताध्यक्ष के भाषण की प्रतियाँ बाँटी गईं, कांग्रेस का वार्षिक विवरण उपस्थित जनता में वितरण किया गया, और प्रस्तावों की पुष्टि की गई। इतने में ही पुलिस को समाचार पहुँच गया और उसी घटनास्थल पर ३०० प्रतिनिधि पकड़े गए। पुलिस को चकमा देकर यह अधिवेशन किया गया था, और पुलिस इतनी उतावली हो गई थी कि प्रतिनिधियों को बन्दी करने से पूर्व वह सभा को गैरकानूनी घोषित करना भी भूल गई। इस घटना के बाद प्रतिनिधियों के ६-६ व्यक्तियों के दल जलूस बनाकर चाँदनी चौक पहुँचने लगे और गिरफ्तार हुए। यह ताँता इतना चला कि पुलिस तंग आ गई और फिर उसने गिरफ्तारी के लिए आनेवाले प्रतिनिधियों पर लाठी-प्रहार आरम्भ किया। भारत की ऐतिहासिक राजधानी दिल्ली ने अनेक प्रकार के युद्ध, विप्लव और विद्रोह देखे हैं, पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के इस अधिवेशन की निराले ढंग की अहिंसात्मक प्रतिद्वन्द्विता भी इतिहास में एक मूल्यवान स्थान रक्खेगी।

अब इन्हीं दिनों का प्रयाग का विवरण सुनिए। प्रयाग कांग्रेस की गति-विधि का केन्द्र रहा है। जवाहरलाल जी इन दिनों भारतीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री थे। दिसम्बर (१९३१) मास में यहाँ कृषक कान्फ्रेंस हुई। कृषकों की अवस्था बिगड़ती जा रही थी। सरकार की ओर से सख्तियाँ हो रही थीं। जवाहरलाल जी तो कृषक-कान्फ्रेंस के बाद कर्नाटक की यात्रा के लिए चले गए, उनकी पत्नी कमला जी बम्बई के औषधालय में रक्खी गईं। इधर समाचार मिला कि गांधी जी शीघ्र बम्बई लौटनेवाले हैं, पर संयुक्तप्रान्त की अवस्था इतनी शोचनीय हो चुकी थी कि जवाहरलाल जी का प्रयाग लौटना परमावश्यक हो गया, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन गिरफ्तार किए जा चुके थे। इधर संयुक्तप्रान्त में इटावा में प्रान्तीय कान्फ्रेंस की जानेवाली थी, पर इसकी तिथियाँ गांधी जी के बम्बई आने की तिथियों से टक्कर खाती थीं, अतएव यह कान्फ्रेंस स्थगित कर दी गई (इस कान्फ्रेंस पर सरकारी प्रतिबन्ध भी लग रहे थे)। जवाहरलाल जी प्रयाग के लिए रवाना हुए। छिउँकी स्टेशन पर नए आर्डिनेन्स के अनुसार उनको सरकारी प्रतिबन्ध की सूचना दी गई, फिर इलाहाबाद स्टेशन पर इसकी दूसरी प्रतिलिपि मिली, प्रतिबन्ध यह था कि जवाहरलाल जी प्रयाग की सीमा के बाहर न जाएँ और न भाषण दें और न कुछ प्रकाशित करें, प्रयाग में शेरवानी जी पर भी इसी प्रकार के प्रतिबन्ध लगाए गए थे। जवाहरलाल जी ने मैजिस्ट्रेट को लिख दिया कि मैं अपने कार्यक्रम निर्धारित करने में सरकार की अपेक्षा नहीं रखता, और यह भी लिख दिया कि जब गांधी जी बम्बई आएंगे तो मैं उनसे मिलने जाऊंगा। शेरवानी जी के साथ नेहरू जी २६ दिसम्बर के प्रातःकाल बम्बई के लिए रवाना हुए। इसी दिन प्रातःकाल के समाचारपत्र में इन्होंने अब्दुल गफ्फार खाँ और डा० खान साहब की गिरफ्तारी का समाचार पढ़ा। बम्बई मेल से चले ही थे कि इरादतगंज स्टेशन पर (जहाँ मेल कभी न रुकती थी), अकस्मात् गाड़ी रुक गई। स्पष्ट था कि ये और शेरवानी जी गिरफ्तार होंगे। वहाँ से ये दोनों नैनी जेल लाए गए।

४ जनवरी को प्रयाग में गिरफ्तारियों का ताँता आरम्भ हुआ। मलाका जेल बन्दियों से भर गया। कुछ लोग नैनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल पहुँचाए गए। लाठी-प्रहार का विषम समाचार प्रयाग के कोने-कोने पर आतंक फैलाने का प्रयास कर रहा था। नैनी में जवाहरलाल जी के साथ सरदार नर्मदाप्रसाद, श्री रणजीत पंडित और पंडित मोहनलाल नेहरू थे। ६ नम्बर की बैरक में बर्नर्ड अलूविहारे नामक एक सीलोन के बैरिस्टर थे। मेरा १९३० में इनसे कुछ परिचय हो गया था। हम दोनों ने कुछ दिनों स्वदेशी आँकड़े एकत्र करने में साथ-साथ काम किया था। ये और हम राजनीति से तटस्थ रहते थे, पर ये एक दिन जलूस के चक्कर में फंस गए, और नैनी जेल पहुँचाए गए।

इस समय के आन्दोलन में जवाहरलाल जी की माता स्वरूपरानी जी का उत्साह देखने योग्य था। इनकी पुत्रियाँ, विजयलक्ष्मी और कृष्णा तो जेल में थी हीं। अप्रैल ६ से १३ तक राष्ट्रीय सप्ताह प्रयाग में उत्साह-पूर्वक मनाया गया। इसी सप्ताह में किसी एक दिन की घटना है कि स्वरूपरानी जी एक जलूस के साथ थीं। जलूस पर लाठी-प्रहार हुआ। जलूस रुक गया और स्वरूपरानी जी को एक कुर्सी पर किसी ने बिठा दिया। जो लोग माता जी की खोज में पहुँचे, वे कैद कर लिए गए। पुलिस ने फिर हमला आरम्भ किया। वृद्धा को कुर्सी पर से नीचे गिरा दिया, और कई बार उनके शिर में बेंत मारे गए। शिर में से खून बहने लगा। सोचिए तो कि इस समय की (१९४७) अन्तरिम सरकार के उपाध्यक्ष की माता किस प्रकार सड़क के एक किनारे मूच्छित पड़ी रही होंगी। थोड़े समय के अनन्तर उन्हें पुलिस के एक कर्मचारी ने आनन्दभवन पहुँचाया।

स्वरूपरानी जी के ऊपर किए गए इस नृशंस आक्रमण ने प्रयाग के लोगों का खून उबाल दिया। जनता में रात को ही समाचार फैल गया था कि जवाहरलाल जी की माता जी का पुलिस-प्रहार से प्राणान्त हो गया है। लोग अहिंसात्मक प्रण को भूल गए, और पुलिस पर उन्होंने आक्रमण किए। इस विग्रह में कुछ व्यक्तियों के जीवन की आहुति हो गई। क्या ऐसी परिस्थिति में लोग अहिंसात्मक रह सकते हैं? जवाहरलाल जी के सामने यह घटना हुई होती तो उन पर क्या प्रतिक्रिया हुई होती? जवाहरलाल जी ने इस सम्बन्ध में स्वयं एक स्थल पर ये शब्द लिखे हैं—"मुझे जब अपनी वृद्धा माँ की स्थिति का ध्यान आता है, जिसमें वह रुधिर से आप्लुत अवस्था में धूल-भरी सड़क के किनारे पड़ी थीं, तो मेरा दिल भर आता है। मालूम नहीं कि यदि मैं वहाँ होता, तो मैं क्या करता—मैं कहाँ तक अहिंसात्मक रह पाता। मैं तो समझता हूँ कि अनेक वर्षों से अहिंसात्मकता का जो पाठ मैं पढ़ता आया हूँ, मैं भूल जाता और फिर मुझे व्यक्तिगत और राष्ट्रगत परिणामों का ध्यान न रहता।"

पर स्वरूपरानी जी को इस दिन की घटना का स्मरण करके सदा शान्ति और सन्तोष ही हुआ। पर इससे उनके शरीर को जो कष्ट पहुँचा, हो न हो, वह उनकी शीघ्र मृत्यु का कारण भी बना, क्योंकि इसके बाद वे कभी अपने पूर्व स्वास्थ्य को प्राप्त न कर सकीं।

सीमा

कुमार शर्मा विद्यालंकार

सीमा ही से सरिता की गति,
सीमा ही से उन्नत नगपति,
सीमा ही से विस्तृत पृथिवी,
सीमा ही से मानव—उन्नति—
मृदु बाहुयुग्म से परिसीमित,
रहकर तब आँचल के आश्रित,
कवि की गायन-धारा बह बह
बस रहे तुम्हारे चरणार्पित!

मुझको भी सीमा में बाँधो फैलाकर अपने बाहु-युगल! तुम मुसकाओ—उस सुभगज्योति में युग दीखे झलमल-झलमल।
शारदे देवि! सीमित कर दो यह मेरा गायन उच्छृङ्खल। शारदे देवि! सीमित कर दो, यह मेरा गायन उच्छृङ्खल।

निःसीम व्योम का सूनापन—
झरता रहता निशि भर जलकण,
हहराता है असीम सागर,
जल जल भ्रमते तारक ग्रह गण,
सब अर्थों का दर्शन पाऊँ
फिर उनका आकर्षण पाऊँ
यों तुमको भी सीमित करने
अपने स्वर के बन्धन लाऊँ

इस घोर भ्रान्ति से रक्षा हित तुम परिधि बनाओ निज आँचल। सीमा तुम भी—सीमा मैं भी—फिर बीच बहे शुभ शान्ति सरल।
शारदे देवि! सीमित कर दो, यह मेरा गायन उच्छृङ्खल। शारदे देवि! सीमित कर दो, यह मेरा गायन उच्छृङ्खल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस दिन

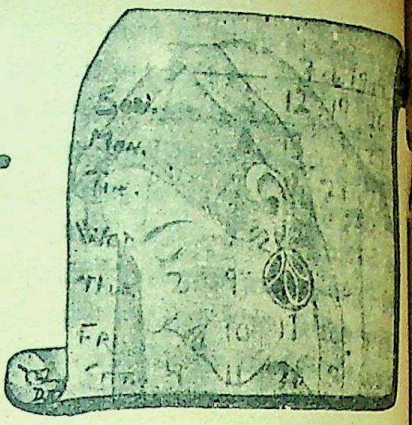

सन्तोष नौटियाल

(गतांक से आगे)

(४)

शनिवार, ३ फरवरी १९...

[..... मुझे लगता है कि मेरा जन्म सदा अपमान, घृणा तथा मानसिक यंत्रणाएँ सहने के लिए ही हुआ है। मैं किसी का बुरा नहीं चाहता, जहाँ तक होता है दूसरे की भलाई ही करने के प्रयत्न में रहता हूँ। पर बदले में मुझे मिलता है अपमान! इस संसार में मेरे लिए न सुख है न शान्ति। भगवान्, क्या मेरे ही भाग्य में यह सब है? आज ही मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था, जो मैं यह मानसिक यंत्रणा भुगत रहा हूँ! मैं तो तुझसे कुछ चाहता नहीं, वीणा, फिर तूने यह क्या किया?]

अपने निश्चय के अनुसार उस दिन मैं वीणा के पास ही बैठा। श्यामसिंह के ईर्ष्या से श्याम हो गए चेहरे और कक्षा के लड़कों की कानाफूसियों की मैंने परवाह नहीं की। उस दिन 'प्राणी-विज्ञान' का प्रयोग था। केचुए के डिम्ब को स्थायी रूप से रखने योग्य 'माउण्ट' बनाना था। मैं आवश्यक सामान जान-बूझकर नहीं लाया था। केचुए मिले। मोम की तह जमी हुई छोटी-सी लम्बी 'डिसेक्शन डिश' में केचुए को पिन से जमा कर काटा; 'डिश' में पानी भरा और 'भोजन-प्रणाली' काट-कर, धीरे-धीरे उठाकर, केचुए की 'कालर' तक ले गए और सावधानी से जरा ऊपर उठाई तो केचुए के शरीर के तेरहवें भाग में डिम्ब का जोड़ा मिल गया। चिमटी से उठाया। डिम्ब ही है, यह निश्चित करने के लिए काँच की छोटी पट्टी पर रखकर अणुवीक्षणयन्त्र में देखा। निश्चय हो जाने पर काँच की छोटी-सी डाटदार ट्यूब में ५०% अलकोहल लेकर डिम्ब उसमें डाल दिए। फिर ७०% अलकोहल में १५ मिनट तक दो बार धोया। फिर 'ईओसीन' से रँगा और फिर ७०%—९०% व शत प्रतिशत अलकोहल में कुछ देर रक्खा। पानी पूरी तरह सोख लिया गया है, इसका विश्वास हो जाने पर जाईलाल में रख दिया। फिर स्लाइड पर 'कैनाडा बालसम' की एक बूँद रख दी—परन्तु इससे आगे मेरी गाड़ी नहीं बढ़ सकी। मेरे पास 'ब्रश' (कूची) न था। मैंने देखा कि वीणा के पास ब्रश था। बहुत देर सोचा कि माँगूं या न माँगूं। इसी सोच-विचार में 'कैनाडा बालसम' की बूँद सूख गई। उसे जाईलाल से धो डाला। दूसरी बूँद ली। वह भी सुखा डाली सोच-विचार में ही। फिर धोया और तीसरी बूँद स्लाइड पर रख दी। 'कवर-स्लिप' पोंछते हुए बड़े ही डरते-डरते नीचे को ही निगाह किए हुए मैंने कहा, "जी जरा ब्रश..."

बिना बोले-चाले ब्रश मेरी ओर खिसका दिया गया। ब्रश से 'ओवरी' 'जाईलाल' में से निकाल बालसम में रक्खी और सावधानी से पिन के सहारे उस पर 'कवर-स्लिप' रख दी। इधर मेरा 'माउण्टिंग' पूरा हुआ और उधर घंटा बज गया। प्रोफेसर साहब ने स्लाइडें इकट्ठा करने की जल्दी मचाई। अपनी-अपनी स्लाइडों पर नाम की चिट चिपकानी थी, परन्तु मेरे पास न कलम था न पेंसिल। मैं और लड़कों से माँग सकता था परन्तु मेरे दिमाग में तो यही एक विचार था कि किसी प्रकार वीणा से पूछूँ, "क्या सचमुच आपका विवाह राजेश से हो रहा है?" इसलिए, चाहता था कि पहले कुछ तो बातचीत का सिलसिला जमा लूँ जिससे यह प्रश्न कर सकूँ। मैंने साहस कर कहा, "कृपाकर जरा पेन दे दीजिए।" अब की बार वीणा ने पेन खिसकाया नहीं। मुझे स्वयं दिया परन्तु अपने हाथ की उँगलियाँ ऐसे बचाकर, मानो मेरे हाथ में बिच्छू था। मैंने डरते-डरते अपनी आँखें ऊपर उठाईं। इतने पास से उसे देखने का यह पहला ही मौका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ क्षण के लिए मैं भूल गया कि मैं क्या करनेवाला था। उसकी दृष्टि नीचे स्लाइड पर गड़ी थी। एकाएक मैंने उसके चेहरे को गम्भीर होते देखा। मैं चौंककर आपे में आया और झट कागज की चिट पर अपना नाम लिखने लगा। तभी मुझे वीणा की झनकार सुनाई पड़ी, "मैं इन बातों में जरा अशान्ति अनुभव करती हूँ। आप कृपया दूसरे लड़कों से ये चीजें माँग लिया कीजिए।" मेरे हृदय की गति जैसे रुक गई। मैं काठ मारा-सा बैठा रह गया। न हिल सकता था न डुल सकता था। अपने नाम का केवल 'चन्द्र' ही मैं लिख पाया था। इसके आगे लिखना असम्भव था। मैं वहीं पर सारा सामान बिलकुल वैसे ही छोड़ केवल अपनी कापी और चीर-फाड़ के औजारों का डिब्बा उठाकर हाल से चला आया। कायदे से पेन भी नहीं लौटाया। वीणा भी कहने को तो कह गई परन्तु मेरे इस आकस्मिक आचरण के लिए शायद वह भी तैयार नहीं थी। चलते समय मैंने केवल एक दृष्टि उसकी ओर डाली। कदाचित् मेरी आँखें डूब-उतरा रही थीं। उस निमेष-मात्र में ही मैंने उसके मुख के रंगों को बदलते हुए देखा परन्तु उनको समझने-योग्य शक्ति मुझमें नहीं रह गई थी।

पहला भाव जो मेरे मन में आया, वह यह था कि अब जीवित रहकर लाभ ही क्या। फिर यह कि उस घटना के बाद मैं वीणा को मुँह नहीं दिखला सकता था। वह जाने क्या समझी होगी। शायद उसने मुझे लफंगा समझा हो। समझती होगी कि मैं उसके पास आने का प्रयत्न कर रहा था। मैंने अपने आपको कोसा, उस क्षण को कोसा जब मैंने माँगने का विचार किया था। यह कहना व्यर्थ है कि उस दिन कालेज, चाय, खाना किसी की भी मुझे सुधि नहीं थी। वीणा के शब्द बार-बार कानों में गूँज कर हृदय पर हथौड़े की सी चोट कर रहे थे। सोचते-सोचते मेरा सर चक्कर खाने लगा। मुझे लगा कि मैं पागल हो जाऊँगा।

रात हो गई और मैं अपने कमरे में किसी अतृप्त आत्मा की तरह अँधेरे में चक्कर काटता रहा। कभी बैठ जाता और फिर अँधेरे में ही किसी दिशा में दृष्टि गड़ाए न जाने क्या देखने लगता था। जाने क्या-क्या विचार मेरे मन में आ रहे थे। धीरे-धीरे मेरे विचार डरावने होने लगे और कमरे की वस्तुएँ नाना रूप धरकर मुझे डराने लगीं—मैं तब आत्म-हत्या की बातें सोच रहा था। एकाएक मुझे लगा कि मुर्दे मेरे चारों ओर घेरा बनाए हैं और वह घेरा धीरे-धीरे छोटा होता जा रहा है। मैं पसीने में तर होकर चिल्ला उठा और कमरे से बाहर भागा। आसपास के कमरों के लड़के मेरी चिल्लाहट सुनकर बाहर भाग आए और मुझे विक्षिप्तों की-सी अवस्था में बाहर भागते देख उन्होंने मुझे पकड़ लिया। मुझे कमरे में लाकर लिटा दिया गया। किसी ने बिजली का बटन दबाकर रोशनी कर दी। एक मुझे पंखा झलने लगा। छात्रावास के अध्यक्ष को खबर कर दी गई। हवा और लोगों की उपस्थिति तथा प्रकाश से मेरा जी कुछ ठिकाने आया। धीरे-धीरे मैं प्रकृतिस्थ हुआ, यद्यपि तब भी पसीने से तर था और बहुत ही कमजोरी अनुभव कर रहा था। ठीक होते ही मैं क्रोध से भर उठा। परन्तु अब की बार क्रोध अपने ऊपर नहीं, बल्कि वीणा पर था और यदि उस समय वह मेरे सामने होती तो न जाने मैं क्या कर बैठता। मैंने मन-ही-मन निश्चय किया कि वीणा से इस अपमान तथा निर्दयता का बदला लूँगा। उसे आँसू के बदले आँसू देने होंगे। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि वीणा के रोने की कल्पना करके मैं स्वयं रोने लगा। तब मैं समझा कि मैं वीणा के प्रति उदासीन नहीं हूँ। उसके विषय में सोचकर मैं तटस्थ नहीं रह सकता। यही नहीं, इससे कुछ अधिक वीणा मेरे लिए थी अन्यथा उसके रोने से मुझे दुःख न होता। परन्तु मैं अपने निश्चय पर यह सोचकर दृढ़ रहा कि ये सब आँसू मुझे उसकी निर्दयता के लिए ही तो बहाने पड़ रहे हैं। आश्चर्य है कि मैं उतनी उत्तेजना में भी डायरी लिखना नहीं भूला। थोड़ी बहुत लाइनें घसीट कर मैं लेट गया परन्तु सारी रात आकाश के तारे मेरे कमरे के रोशनदान के टूटे शीशों में से झाँककर मेरा तकिया भिगोना देखते रहे।

(५)

रविवार, ४ फरवरी १९...

[.....सोकर देर से उठा। कल का भार अभी भी मन से दूर नहीं हुआ है। विचारों में मृत्यु, दुःख, निराशा, आत्महत्या ही प्रधान रहे। आज बहुत दिनों बाद बोर्ड, कागज, और पेंसिल लेकर बैठा। एक चित्र आरम्भ किया है...। आज सतीश ने कहा, "चन्द्रदत्त, परीक्षा आ रही है। यदि हम सम्मिलित अध्ययन करें तो?" मैं प्रस्ताव से प्रसन्न हुआ, सतीश मजेदार आदमी है और मुझे एक साथी की आवश्यकता थी ही।]

साधारणतः बहुत दिन से मेरी यह आदत हो गई थी कि शनिवार की रात को जल्दी सो जाता था और इतवार को देर से उठता था। इस शनिवार की रात तो मैं बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोया ही नहीं था। सबेरे की ठण्डी हवा में मुझे नींद आ गई परन्तु स्वप्नों का संसार भयानक विचारों से ही भरा रहा। आखिर एक बड़े डरावने स्वप्न से मैं एकदम डर गया और हड़बड़ाकर उठ बैठा। मेरा शरीर पसीने से तर था। उठकर थोड़ी देर टहला, नित्य-कर्म से निवृत्त हुआ फिर बहुत से कामों में मैंने अपने आपको लगाना चाहा। परन्तु सब बेकार। फिर बहुत दिन बाद मुझे अपनी रंग की कूचियाँ, ट्यूब और बोर्ड याद आए। मैं ऐसी मानसिक अवस्था में भी चित्र बनाने बैठ गया।

थोड़ी देर तक अपने चित्त को एकाग्र करने में मुझे प्रयत्न करना पड़ा; सामने कूचियों का ढेर देखकर पहले दिन की ब्रशवाली और फिर पेनवाली बात याद आ जाती और मैं हाथ में पेंसिल लिए, दाँत भींचे, भवें चढ़ाए, मन-ही-मन बल खाता हुआ एक ओर देखता रह जाता। एकाएक ध्यान टूट जाता और मैं अपने सिर को जोर से हिलाकर उन विचारों को दूर हटाने का प्रयत्न करता। धीरे-धीरे कागज पर रेखाएँ बनने लगीं.....

मुझे याद नहीं कि मैं कितनी देर उस चित्र पर लगा रहा। तभी नौकर खाना ले आया। मेरा ध्यान भंग हुआ। मुझे विचार आया कि मैंने सबेरे जल-पान भी नहीं किया था और मुझे उस समय बड़े जोर की भूख लगी हुई थी। मैंने चित्र बनाना छोड़ा और खाना खाने के पश्चात् कुछ देर आराम करना आवश्यक-सा हो जाता है। मैं लेटा हुआ छत की ओर दृष्टि गड़ाए कुछ सोच रहा था, तभी आ गया सतीश।

सतीश मेरा सहपाठी था। वह उन थोड़े से लोगों में से था, जिनसे मेरठ में मेरी जान-पहचान सबसे पहले हुई थी। यह जान-पहचान धीरे-धीरे घनिष्ठता में बदल गई। सतीश के विषय में उल्लेखनीय कुछ भी नहीं था। न उसमें कोई शारीरिक विशेषता थी न चारित्रिक और न कोई और ही। जैसे और हजारों नहीं बल्कि लाखों युवक होते हैं, वैसा ही वह भी था। वह ऐसा न था कि भीड़ में किसी की दृष्टि विशेष रूप से आकर्षित करता। वह आकर बोला, "भई चन्द्रदत्त, परीक्षा निकट आ रही है। यदि सम्मिलित अध्ययन करें तो?"

"विचार तो बड़ा अच्छा है पर किस तरह इकट्ठा पढ़ा जाए?"

"किस तरह क्या, जिस कमरे में चाहो, उसमें इकट्ठे बैठकर पढ़ने लगो।" उसने उत्तर दिया।

"लेकिन...; मैंने कुछ कहना चाहा, परन्तु उसने बीच में ही रोककर कहा, 'किस तरह' से तुम्हारा मतलब है कुर्सी पर बैठकर पढ़ेंगे या नीचे चटाई पर बैठकर—यही न?"

"नहीं भाई", मैंने नाराजी-सी दिखलाते हुए कहा, "मेरा मतलब यह है कि एक कमरे में बैठकर पढ़ने का जो तुम्हारा प्रस्ताव है, वह चलेगा कैसे? क्योंकि हमारे कमरे काफी दूर-दूर हैं और रात को तो पढ़ना ऐसे होता है कि जब 'मूड' आ गया तो फिर समय का कोई सवाल ही नहीं रहता। रात के दो से लेकर सबेरे के पाँच-छः तक कुछ भी बज सकता है और तब एक फर्लांग का रास्ता पार करके सर्दी में उस समय, जब सर्दी भी सता रही होगी, आँखें मुँदी जा रही होंगी, ठंडी हवा कहती होगी 'अरे मूर्ख! सो जा'—कम-से-कम मेरा जी तो अपने कमरे में वापस आने को करेगा नहीं, और शायद तुम्हारा भी न करे!"

वह कुछ सोचता-सा लगा। मैंने पूछा, "क्या सोच रहे हो?"

"मैं सोचता हूँ", उसने गम्भीर होकर उसी भाँति सोचते हुए कहा, "हमारे कमरों के बीच की दूरी सौ गज से अधिक नहीं होगी। एक फर्लांग..."

"तुझे दूरी नापने की पड़ी है," मैंने चिढ़कर कहा, "सवाल तो ऐसे समय और हालत का है कि जी नहीं करेगा।"

"तब ठीक है।"

"तो?" मैंने पूछा।

"तो?" उसने कहा।

"सतीश एक काम करो। मेरा कमरा तुम्हारे कमरे से बड़ा भी है और जरा होस्टल के किनारे पर भी है। यहाँ शोर कम होगा और मजे से पढ़ सकेंगे। ऐसा करो कि तुम अपनी चारपाई यहीं डलवा लो चपरासी से, और सब ठीक हो जाएगा।"

"पर वार्डन साहब....."

"अरे तो वार्डन साहब से कहने ही कौन जाता है?"

"और मेरा सामान?"

"जितना जरूरी हो, वह ले आओ, बाकी वहीं रक्खा रहेगा, कहीं भागा थोड़े ही जाता है।"

"अच्छा तो यही सही।"

सतीश राजी हो गया। मैं अपने इस सम्बन्ध से काफी सन्तुष्ट हुआ। मुझे अनुभव हो रहा था कि वैसे मानसिक उद्वेगों के समय में अकेले रहना मेरे लिए ठीक नहीं था। मैं वास्तव में रोते-रोते ऊब चुका था। सतीश के आने के निश्चय से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी शाम को अपनी चारपाई, बिस्तर और कपड़ों का ट्रंक तथा कुछ पुस्तकें लेकर सतीश मेरे कमरे में आ गया।

(६)

सोमवार, ५ फरवरी १९...

...आज की परीक्षा? बहुतों की कलई खुल गई। ये नवयुवक जिनके कन्धों पर सारी जाति, समाज और देश के चरित्र का भार है, जरा-जरा-सी बातों के लिए इतने नीचे गिर सकते हैं, यह मैं कम ही सोचता था। स्वभाव के सीधे और पढ़ने में अच्छे लड़के भी तो...सबसे अच्छी रही वीणा! यह वीणा क्यों मेरे विचारों का केन्द्र बनी है? आज घर से चिट्ठी आई। मुझसे परिश्रम करने की आशा की जाती है।]

उस दिन हमारी मासिक परीक्षा थी। कई दिन पहले बतला दिया गया था परन्तु मैं तो उन दिनों अपने ही विचारों में ऐसी बुरी तरह फँसा हुआ था कि यदि नौकर खाना खाने की याद न दिला दिया करता तो शायद खाना-पीना भी भूल जाता। क्लास में भी जाता था सही, परन्तु प्रोफेसर साहब के व्याख्यान के बदले मेरे कानों में गूंजता, "कृपा करके ये चीजें दूसरे लड़कों से माँग लिया कीजिए.....।"

मैं सबसे आगे की बेंच पर बैठता था—वास्तव में सदा से ही इस बात का आदी था। जब तक प्रोफेसर साहब की सूरत अच्छी तरह दिखाई न पड़े और उनके होंठ हिलते हुए दिखाई न दें, कुछ समझ में ही नहीं आता था। मेरी बेंच—बल्कि हमारी बेंच, क्योंकि हम तीन लड़के उस बेंच पर बैठते थे, जिनमें एक सतीश भी था, मैं सबसे किनारे पर बैठता था—आगे ही एक अलग कुर्सी पर वीणा बैठती थी। एक अलग डेस्क भी उसके लिए था। हाँ, एक तो वैसे ही मैं वीणा के शब्दों को नहीं भूल सकता था और फिर जब वह सामने ही हो तब तो उस बात को भूलना असम्भव ही था। उस दिन यह जानते हुए भी कि मुझे लिखना-लिखाना कुछ नहीं, मैं कक्षा में गया ही, क्योंकि कक्षा से बाहर खड़े रहने अथवा कालेज के समय इधर-उधर चक्कर काटने से मुझे चिढ़ थी।

घंटा बजते ही प्रोफेसर साहब आए और उन्होंने बोर्ड पर दो प्रश्न लिख दिए। सब लोग जल्दी-जल्दी कलम-पेंसिल चलाने लगे। प्रोफेसर कुर्सी पर बैठ गए और उन्होंने एक बार सब लड़कों पर दृष्टि फेरनी चाही। मैं पूछ-ताछ बचाना चाहता था इसलिए गर्दन नीची करके पहले तो कापी पर नाम लिख दिया—और फिर गर्दन जो नीची की तो बस किए ही रहा। अब मैं न तो कक्षा छोड़कर बाहर जाना चाहता था और न कुछ लिखता था, क्योंकि कुछ याद ही नहीं था—मैंने छिपे-छिपे लड़कों की ओर दृष्टि डालनी आरम्भ की। परन्तु मेरे आश्चर्य और दुःख का ठिकाना न रहा। अधिकांश लड़के किसी न किसी तरह नकल करने के प्रयत्न में थे। मेरा मन घृणा से भर उठा। इतनी जरा-सी चीज—एक मासिक परीक्षा ही तो, जिससे किसी का न कुछ बनता है न बिगड़ता है, फिर उसके लिए अपने आपको इतना नीचे गिराना? और इसके अतिरिक्त विश्वासघात! क्योंकि प्रोफेसर साहब थोड़ी देर बैठकर बाहर चल दिए थे—बड़ी कक्षाओं में बहुधा प्रोफेसर चले जाते हैं क्योंकि इतने बड़े-बड़े—जिनमें से कई विवाहित तथा 'बाल-बच्चे-दार आदमी' भी थे—और काफी ऊँची श्रेणी में पहुँचे हुए युवकों की—जिन्हें अपना उत्तरदायित्व अनुभव करना चाहिए और जिनमें से अधिकांश कुछ ही दिन बाद संसार में अपना भाग्य ढूँढने चल देनेवाले थे—चौकसी करना शिक्षक ठीक नहीं समझते और उन्हें उनके ही भाग्य पर छोड़ देते हैं। परन्तु जो हो रहा था, वह हो रहा था।

राजेन्द्र किताब खोलकर काँपते हाथों से पृष्ठ उलट रहा था। बनारसी कापी के नोट्स देखने के प्रयत्न में था। रामपाल पास बैठे हुए किशन से दबी हुई आवाज में, घबराहट से बाहर निकली हुई आँखें बार-बार इधर-उधर घुमाता हुआ, कुछ पूछ रहा था। कुछ तो पुराने पापी थे, जैसे काशी! वह पट्ठा बिना डर-झिझक के, जैसे अपने कमरे में बैठा नोट्स लिख रहा हो किताब सामने रखकर नकल कर रहा था। परन्तु बेचारा महमूद! उसकी दशा बिगड़ी हुई थी। उसका चेहरा बिलकुल लाल हो रहा था, कनपटी के पास की रक्त-प्रणालियाँ फूल उठी थीं और वहाँ पर एक धमनी धड़कती हुई दिखाई दे रही थी। साँस तेज चल रही थी। बारबार सूखे होंठों पर जीभ फेर रहा था, सारा शरीर काँप रहा था और हाथ तो लिखने से इनकार कर रहे थे। मुझे उस गरीब की हालत पर तरस आ रहा था, साथ ही गुस्सा भी कम नहीं था। भला क्या आवश्यकता थी उस तरह मरने की। प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाता तो कोई फाँसी थोड़े ही दे देता! वही कौन फाँसी से कम यंत्रणा भुगत रहा था। मेरे ठीक पीछे बैठा श्यामसिंह कलम मुँह में दबाए छत की ओर ताक रहा था। परन्तु पूरी कक्षा में शायद सबसे ठीक थी.....।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ काम ऐसे होते हैं, जो न चाहते हुए भी हमें करने ही पड़ते हैं। मैं वीणा की ओर देखना भी नहीं चाहता था। मैं अनुभव करता था कि उसके लिए मेरे हृदय में ठीक घृणा नहीं...बल्कि...कुछ और...। यानी मैं सोचता था कि मैं उसे बिलकुल पसन्द नहीं करता था। उसकी ओर देखना चाहता था, परन्तु जैसा मैंने कहा, मेरे चाहने न चाहने से क्या होता था? देखना तो पड़ता ही था। मैं अपने ऊपर भी झुँझलाता और उस पर तो पहले से ही झुँझलाया हुआ था। फिर भी देखता था, सो उस दिन भी देख रहा था। मेरे विचार से उस समय पूरी कक्षा में हम दो ही ऐसे थे जो शान्त थे। मैं जानता हूँ कि यह अतिशयोक्ति है, क्योंकि कक्षा के सबसे अच्छे लड़के—बिहारी, कन्हैया, निगम, जोगेन्द्र आदि (जिन्हें,—ऐसा प्रतीत होता—था, हर चीज, हर समय पूरी-पूरी याद रहती थी) भी ठीक-ठीक शान्ति से लिख रहे होंगे। मैं उनके विषय में ठीक-ठीक नहीं जान सकता था, क्योंकि वे मेरे पीछे कुछ बेंचें छोड़कर बैठते थे और मैं गर्दन एकदम मोड़कर पीछे देखने का विशेष इच्छुक नहीं था। इतना भी उस दिन इसलिए देख पाया था कि मुझे लिखना कुछ था नहीं। एक तो याद नहीं था और दूसरे जो कुछ याद था भी, उसे लिखने की इच्छा नहीं थी। अन्यथा अधिकांश परीक्षाओं में मेरी गर्दन और हाथ की उँगलियाँ अकड़ जाती थीं। एक बार गर्दन झुकाकर लिखना आरम्भ करने पर मेरा सिर तब तक ऊपर नहीं उठता था, और हाथ तब तक नहीं रुकता था, जब तक घंटा न बज जाए और प्रोफेसर साहब कम-से-कम दो बार न कह दें, "चन्द्रदत्त कापी लाओ।" हाँ, तो वीणा शान्तिपूर्वक लिख रही थी। तेजी से चलती परन्तु अकम्पित उसकी कोमल, पतली, लम्बी उँगलियों में पकड़ा हुआ कलम—वही अभिशप्त कलम, जिसकी याद करते ही मुझे एकदम विचार आया कि चन्द्रदत्त तुझे वीणा से बदला लेना है—सफेद कागज पर नीली रोशनाई से मोती से सुन्दर अक्षर बनाता जा रहा था।

इतने में घड़ी देखकर बिना सोचे-विचारे मुँह से निकाल दिया, 'तीन मिनट'। 'अरे!' लगभग सबके मुँह से एक साथ निकला और एक मर्मर ध्वनि कमरे में गूँज उठी और एक अजीब तरह की भनभनाहट होने लगी। पृष्ठ तेजी से उलटे जाने लगे, हाथों की कंपकंपी बढ़ गई.....

मैं इस आकस्मिक परिवर्तन पर आश्चर्य कर ही रहा था कि वीणा पर मेरी दृष्टि पड़ी। वह भी अप्रभावित नहीं रह सकी। उसके माथे और कनपटी पर पसीने की बूँदें स्पष्ट झलक आईं। मुख अधिक लाल हो गया। भवों पर जरा और बल पड़े। उँगलियाँ और तेजी से चलने लगीं।

मेरे पीछे बैठे श्यामसिंह ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर, आगे झुक मेरे कान के पास कहा, "मिस्टर चन्द्रदत्त! मिस वीणा आपको पास नहीं करा सकतीं।"

"मैं एकदम खड़ा होकर चिल्लाया। मेरी आँखें जलती हुईं और मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं। जी चाहा कि एक भरपूर मुक्का लगाकर, साँप की-सी आँखोंवाले उस घृणित मच्छर का अन्त कर दूँ। कक्षा में एक शोर-सा मच गया। कुछ लड़के खड़े हो गए, कुछ मुँह बाए देखने लगे कि घंटा बज गया और प्रोफेसर साहब कमरे में प्रविष्ट हुए। उनके आते ही मैं कोरी कापी उनके आगे फेंक तेजी से अपने कमरे की ओर चल दिया। जाते ही चारपाई पर अपने आपको गिरा दिया। गुस्से से मेरा सारा शरीर जल रहा था, जी चाहता था किसी से भी उलझ पड़ूँ। दाँत आपस में रगड़ खा रहे थे और मुट्ठियाँ बँधी थीं। कुछ न कर पाने पर अपने ऊपर ही गुस्सा आया, फिर आया वीणा पर क्रोध। 'उसी के कारण तो यह सब अपमान मुझे उठाना पड़ा।' मुझे लगा कि मैं वीणा से घृणा करता था—हाँ घृणा ही करता था। 'किस तरह वीणा से बदला लूँ?' जाने कब तक मैं सोचता रहा परन्तु यही सब सोचते-सोचते ही मैं दुःखद स्वप्नों से भरी नींद में ढक लिया गया।

जब जागा तो चार बज चुके थे। सिर भारी हो रहा था। काम कुछ था नहीं। एकाएक ध्यान आया और मैं उस आरम्भ किए हुए चित्र को लेकर बैठ गया। उस पर रेखाएँ स्पष्ट उभरती गईं और साढ़े पाँच बजे जब सतीश कमरे में घुसा तो उसने मुझे उसी तरह चित्र पर लगा हुआ पाया।

सतीश ने आकर बतलाया कि मेरी एक चिट्ठी कालेज में थी, जिसे वह ले आया था। चिट्ठी घर से आई थी। सब ठीक-ठाक था और मुझसे परीक्षा के लिए परिश्रम करने की आशा की जा रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहार विहंगम

गद्यकाव्य : साहित्य का एक नया अंग

श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी०, साहित्य-रत्न

'गद्यकाव्य' आधुनिक हिन्दी-साहित्य का एक विशिष्ट अंग है, और कोई भी विद्वान् उसकी उपेक्षा नहीं कर सकता। श्री शिवशेखर द्विवेदी ने एक स्थान पर बताया है—"पहले पहल गद्यशैली में रूपक-सृष्टि का श्रेय अवधी की प्रसिद्ध कवियित्री उन्नाव जिला, बीघापुर की 'खगनिया' तेलिन को है।.....देहाती कवियों में और भी अनेक पुष्ट गद्यकाव्य हिन्दी में सुरक्षित हैं। उनमें नीति, शृंगार, आचार एवं सत्य-निष्ठा' के अद्भुत चमत्कारी चित्र भी हैं। वैदिक साहित्य की गद्यशैली सर्वत्र प्रमाणित ही है।" आज भी जब गद्यकाव्य एक नवीन, स्वतन्त्र एवं निर्धारित रूप में सबके सामने है, तब क्या कारण है कि हिन्दी-साहित्य के प्रतिनिधि मासिक पत्र इस नए विषय की ओर कम चाव रखते दिखाई देते हैं? अभी इस मास में हमें दो पत्र ऐसे मिले हैं, जिनमें कहा गया है—".....सम्पादक को 'गद्यकाव्य' विषय ही नहीं जँचा" और "गद्यकाव्य प्रायः हम कम छापते हैं।" आज जब हिन्दी-जगत् में किसी भी रचना को छापने या न छापने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के लिए सुरक्षित है, तब हम 'गद्यकाव्य' के छापे जाने के सम्बन्ध में कुछ मुँह खोलें, तो उसे सुनेगा भी कौन? हाँ, इस उदासीनता के विषय में हम थोड़ा-सा अनुमान अवश्य लगा सके हैं। हमारी तुच्छ सम्मति में गद्यकाव्य के प्रति आज हिन्दी में जहाँ कहीं कुछ अरुचि है, वह 'विषय' के प्रति इतनी न होकर 'प्रकार' के प्रति बहुत-कुछ है, क्योंकि अपने दम्भ में आज हिन्दी का हर एक नौसिखिया 'गीताञ्जलि' के अमर रचयिता रवीन्द्र बाबू से होड़ लगाने के प्रयत्न में है। सचमुच यह स्थिति अवाञ्छनीय है, किन्तु बिखरे हुए ढेर में से कुछ मूल्यवान् रत्नों को चुनकर जनता के समक्ष रखना भी तो साहित्य के शुभचिन्तकों का परम कर्तव्य है।

विगत कई वर्षों से मैं 'गद्यकाव्य' की वास्तविक प्रगति का परिचय देनेवाले एक आलोचनात्मक इतिहास को प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील हूँ। यहाँ मैं अपने दो प्रचारात्मक गद्यकाव्यों को देते हुए अपने पाठकों को उक्त ग्रन्थ का थोड़ा-सा परिचय देना चाहूँगा—

रोटी (स्वरचित गद्यकाव्य)

रोना मैं बहुत रो चुका, अब और नहीं रोऊँगा। करुणा भी स्यात मेरे क्रन्दन को सुनकर रो देती, पर संगमूसा का तुम्हारा हृदय न पसीजा—न पसीजा! आज मेरे रोदन ने विप्लव का रोष-भरा गायन बनकर तुम्हारे सौदागरी सिंहासन को हिला दिया है।

प्यार मैंने तुम्हें जी भर किया, अब नहीं कर सकूँगा। तुम्हारी पैशाची प्रीति से मैं अपने को सुरक्षित समझता था, पर तुमने अपने वचनों को दो दिन भी न निभाया—न निभाया! मेरे प्यार को आँखों में अंगार बरसाता देखकर आज तुम्हारा दिल दहल उठा है।

शान्ति को मैंने सदा अपनाया, अब धैर्य नहीं धरूँगा। दूध की नदियोंवाली शस्य-श्यामला में ही मैं बूँद-बूँद और दाने-दाने के लिए धक्के खाता फिरा हूँ, पर मेरी पुकार तुम्हारे कानों तक न पहुँची—न पहुँची! आज मेरी गुहार क्रान्ति की कुद्ध हुंकार बनकर तुम्हें बिस्तर बाँधने के लिए व्यग्र कर रही है।

धोखा मैंने खूब खाया, अब नहीं ठगा जाऊँगा। सन्धि का चक्र चलाते हुए भी तुम चोटी-दाढ़ी की फूट फैलाने की अपनी घातों से बाज नहीं आते—नहीं आते! किन्तु पेट से परेशान चोटी और दाढ़ी ने एक होकर तुम्हें बौखला देने के लिए आज एक सम्मिलित राग गुंजरित किया है—"अपनी रोटी, अपना राज!"

नारी (स्वरचित गद्यकाव्य)

"तुम मुझे असहाय अबला क्यों कहते हो? तुम्हारी उँगलियों के इशारे पर मैं अब तक नाचती रही हूँ, इसी लिए न? मैं युगों से घर की चहारदीवारी में बन्दिनी बनी हुई थी। अपमान के कड़ुए घूँट पी-पीकर भी मैं मधुर मुस्कान से तुम्हारा स्वागत करने के लिए सदैव प्रस्तुत रही। किन्तु अपमान मुझे अब असह्य है; बन्धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मैंने काट फेंका है। मैं असहाय अबला नहीं, स्वाभिमानिनी सबला हूँ।

तुम मुझे कोमलता का उदाहरण क्यों बताते हो? कवियों ने मेरे ओठों में अमृत, आँखों में पानी और आँचल में दूध की धारा बहती देखी है, इसीलिए न? तुम्हारे चरणों की वेदी पर अग्नि-परीक्षाएँ दे-देकर मैंने करुणा का स्रोत सुखा डाला है। निर्दय निर्ममता के कठोर विधानों में पिस-पिसकर मेरे मन ने जग की ममता को निकाल फेंका है, लज्जा की विवशता आज मैं त्याग चुकी हूँ। मैं कोमलता का उदाहरण नहीं, क्रान्ति का विश्लेषण हूँ।

तुम मुझे सहनशीला साध्वी नारी क्यों समझते हो? मैं जो यम की दाढ़ों से भी तुमको लौटा लाने की क्षमता रखती हूँ, तुम्हारे मनोरंजन का निर्जीव साधन बनकर रह गई! मेरे लिए बूढ़े मन के थोथे उपदेशों का वाग्जाल खड़ा कर तुम्हें सब ठौर स्वच्छन्द घूमने का खूब ही अवसर मिला! किन्तु नहीं! मैं गृहस्थी के दो पहियों में से एक हूँ; मेरा व्यक्तित्व और मेरा अधिकार तुमसे कम कब है? मैं सहनशीला साध्वी नारी नहीं, मैं विप्लव की चंचल चिनगारी हूँ।"

उपर्युक्त दोनों 'गद्यकाव्यकला' की दृष्टि से बहुत सुन्दर न भी हों, पर वे यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि आधुनिक गद्यकाव्य प्रेम का अलस उच्छ्वास-मात्र न होकर और भी कुछ है; कुशल लेखनी द्वारा उसे प्रचार का उत्तम साधन भी बनाया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण को लेकर हमने अभी कुछ ही समय पूर्व हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के पाठ्य-क्रम में भी गद्यकाव्य के समावेश की सिफारिश की है। इस लेख-द्वारा गद्यकाव्य और उसके संकलन की वकालत करते हुए मैं पाठकों से प्रार्थना करूँगा कि वे इस महत्त्वपूर्ण विषय को उपेक्षा की दृष्टि से तो न देखें!

---

(१) श्री जैनेन्द्रकुमार

श्री जैनेन्द्रकुमार का जन्म अलीगढ़ प्रान्त में सन् १९०३ में हुआ था, पर इधर बहुत समय से आप दिल्ली में रहा करते हैं। "दुबले-पतले युवक, आँखों में चमक, चेहरे पर तेज, खद्दर का लम्बा कुरता, नीची धोती, पैरों में चप्पल",—यही आपको परिचित करानेवाली व्यक्तिगत विशेषताएँ हैं। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों में जैनेन्द्र जी की गणना है। 'वातायन', 'स्पर्धा', 'ध्रुवयात्रा' आदि नामों से आपके कई गल्प-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें सामाजिक स्थिति के सजीव चित्र मिलते हैं। 'फाँसी', 'परख', 'सुनीता', 'त्याग-पत्र' आदि आपके उपन्यास हिन्दी-संसार में अच्छे आदृत हुए हैं। 'परख' पर तो हिन्दुस्तानी एकेडेमी ने ५००) का पुरस्कार प्रदान किया था। आप एक गम्भीर आलोचक और प्रभावशाली वक्ता भी हैं। 'हंस'-सम्पादक के सम्मानित पद को भी आप सुशोभित कर चुके हैं। (जैनेन्द्र जी ने 'हिन्दी-गद्य-काव्य का आलोचनात्मक इतिहास' के लिए भूमिका लिखने का कष्ट उदारतापूर्वक स्वीकार किया है।)

गद्य-कवियों में अपनी गिनती कराने के अभिप्राय से जैनेन्द्र जी ने गद्यकाव्यों का सृजन नहीं किया, किन्तु जब कभी लिखे जानेवाले उनके छोटे स्वतन्त्र गद्यकाव्य साहित्य के इस विशिष्ट अंग के प्रति उनका ममत्व सिद्ध करते हैं। जैनेन्द्र जी कवित्वमयी कहानियों की परम्परा में एक कड़ी जोड़नेवाले सफल गद्यकवि हैं। मनुष्य की सद्वृत्तियों और आध्यात्मिक सम्भावनाओं को जागृत करनेवाले इस लेखक के साहित्य में सब कहीं गांधी-युग की झलक है। जैनेन्द्र जी में निज की सजीव विचारशक्ति है, और है अपनी एक स्वतन्त्र कलाभिव्यक्ति। उनकी परिमार्जित भाषा के धाराप्रवाह में छोटी-छोटी विचार-तरंगें मनोरम प्रतीत होती हैं। उनका झुकाव तत्समता की ओर रहता है, तथापि अपनी भाषा-शैली में उन्होंने उर्दू-अँगरेजी के शब्दों का बहिष्कार नहीं किया। जैनेन्द्र जी के गद्यकाव्य में दार्शनिकता का तत्त्व कहीं कुछ विशेष होने के कारण अभिव्यंजना का रूप उतना आकर्षक नहीं रहता। उनकी रचना-शैली का एक उदाहरण है:—

"कोना छोड़, तू आ! क्या वहाँ अपना दिया बाल-कर घर बनाकर, अपने को बन्द किये बैठा है? यहाँ अपने स्वागत का आयोजन देख, असंख्य रत्नदीप जगमगा रहे हैं, हँस रहे हैं, तुझे बुला रहे हैं। महफिल सजी है, चँदोआ तना है। निस्पन्द तेरी प्रतीक्षा हो रही है। तू वर बनकर धूमधाम के साथ आता क्यों नहीं? इस अनन्त ऐश्वर्य का वरण कर, अरे कोना छोड़, तू आ!"

(२) ठाकुर रघुवीरसिंह, एम० ए०, डी० लिट्

महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंह का जन्म २१ फरवरी, सन् १९०८ को मालवा प्रान्त के सीतामऊ राज्य में हुआ। आपने सन् १९३३ में एम० ए० पास किया और सन् १९३६ में आप 'मालवा'-विषयक अपने खोजपूर्ण निबन्ध पर आगरा-विश्व-विद्यालय द्वारा डी० लिट् की उपाधि से विभूषित किए गए। इतिहास के प्रति आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारम्भ से ही रुचि रही है। 'पूर्व मध्यकालीन भारत' तथा मालवा में 'युगान्तर' नामक श्रेष्ठ ऐतिहासिक ग्रंथों के अतिरिक्त आपने एक बृहत् ग्रंथ भावी संघ-शासन तथा देशी राज्यों के प्रश्न को लेकर लिखा है, जिसकी अनेक विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से सराहना की है। समय-समय पर निबन्ध, गद्यकाव्य, कहानी, आलोचना आदि लिखने में भी महाराजकुमार ने अपनी प्रतिभा का कौशल दिखाया है। 'सप्तद्वीप' और 'शेष स्मृतियाँ' नामक आपकी पुस्तकें साहित्य-क्षेत्र में भली प्रकार आदृत हुई हैं।

मानव-हृदय के लिए अपना स्थायी आकर्षण रखने-वाले भारतीय इतिहास के कतिपय प्रकरणों को अपना विषय बनाकर डाक्टर रघुवीरसिंह के भावुक हृदय ने इतिहास और साहित्य का सुन्दर सम्मिश्रण कर दिखाया है। सम्बन्धित विषय की सम्पूर्ण व्याख्या करने तथा आकार में प्रायः लम्बे होने के कारण उनके गद्यकाव्य 'भावात्मक निबन्ध' की संज्ञा से भले ही विभूषित किए जाएँ, तथापि इन निबन्धों में सर्वत्र कुछ ऐसे सजीव स्थल हैं, जहाँ भाव और भाषा के पूर्ण परिपाक से 'गद्यकाव्य' की कला का रूप निखर कर प्रकट हुआ है। उनके इन गद्यकाव्यों में भाषा-माधुर्य के साथ धाराप्रवाह का अत्यन्त सुन्दर सम्मिलन दिखाई देता है। उनका प्रत्येक वाक्य परस्पर सम्बद्ध रहता है, और अवसर के अनुकूल एक ही बात कई पृथक् वाक्यों में दुहराई जाती है। उनकी भाव-प्रधान भाषा और धारावाहिक शैली के बीच उर्दू-शब्दों और प्रचलित मुहावरों को अच्छा योग होता है। उनके 'ताज' शीर्षक निबन्ध के अन्तर्गत एक सुन्दर अवतरण निम्न-लिखित है :—

"वह चली गई, सर्वदा के लिए चली गई। अपने रोते हुए प्रेमी को, अपने जीवन-सर्वस्व को, अपने बिलखते हुए प्यारे बच्चों को तथा समग्र दुखी संसार को छोड़कर उस अँधियारी रात में न जाने कहाँ वह चली गई? चिरकाल का वियोग था। शाहजहाँ की आँख से एक आँसू ढलका, उस संतप्त हृदय से एक आह निकली।

वह सुन्दर शरीर पृथ्वी की भेंट हो गया, अगर कुछ शेष रहा तो उसकी वह सुखप्रद स्मृति तथा उस स्मृति पर, उसके उस चिर-वियोग पर आहें तथा आँसू। संसार छूट गया और उसे पता भी न लगा। संसार की वह सुन्दर मूर्ति, मृत्यु के अदृश्य क्रूर हाथों चूर्ण हो गई और उस मूर्ति के वे भग्नावशेष! जगन्माता पृथ्वी ने उन्हें अपने अंचल में समेट लिया।

शाहजहाँ के वे आँसू तथा वे आहें विफल न हुईं। उन तप्त आँखों तथा उस धधकते हुए हृदय से निकलकर वे इस बाह्य जगत् में आए थे। वे भी समय के साथ सर्द होने लगे। समय के झोंकों के थपेड़े खाकर उन्होंने एक ऐसा सुन्दर स्वरूप धारण किया कि आज भी न जाने कितने आँसू ढलक पड़ते हैं, और न जाने कितने हृदयों में हलचल मच जाती है। अपनी प्रेयसी के वियोग पर बहाए गए शाहजहाँ के वे आँसू चिरस्थायी हो गए।"

(३) ठाकुर रामसिंह, एम० ए०

बीकानेर के सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी ठाकुर रामसिंह का जन्म सन् १९०२ में एक प्रतिष्ठित तँवर राजपूत-परिवार में हुआ। ठाकुर साहब एक सहृदय साहित्य-रसिक हैं। राजपूत होते हुए भी आप मांस-मदिरा से दूर ही रहते हैं। आप हिन्दू-विश्वविद्यालय में अँगरेजी के प्रोफेसर तथा बीकानेर-राज्य में डाइरेक्टर आफ एजूकेशन के पद पर रह चुके हैं। आपने स्वर्गीय श्री सूर्यकरण जी पारीक और श्रीयुत नरोत्तमदास जी स्वामी के साथ मिल-कर 'कानन-कुसुमाञ्जलि', 'गद्यगीतिका', 'जटमल-ग्रंथावली', 'राजस्थान के लोकगीत', 'वेलि क्रिसन रुकिमणी री', 'ढोला मारूरा दूहा' आदि कितने ही ग्रन्थों का निर्माण किया है। 'सौरभ', 'कणिका', 'चन्द्रसखी के भजन,' आदि पुस्तकों की रचना आपने स्वतन्त्र रूप से की है। 'मेघमाला' और 'ज्योत्स्ना' आपके गद्यकाव्य-संग्रह हैं। पद्य में भी आपने अपनी प्रतिभा का कौशल दिखाया है। आपका जीवन सरल और व्यवहार शुद्ध है, जिसके कारण आप सभी के प्रिय हैं।

पिछले खेवे के गद्यकवियों में ठाकुर रामसिंह जी का अपना एक अलग स्थान है। कोमल कल्पना और सरस भाव-भंगी से ओत-प्रोत उनके गद्यकाव्य सजग चेतना के पथ पर बहुत आगे बढ़े हुए हैं। ठाकुर साहब के गद्य-काव्यों में सर्वत्र एक मौलिक उद्भावना दिखाई देती है। 'रात्रि और दिन की मिश्रित मुसकान' जैसे अछूते प्रयोग उनकी रचनाओं में बिखरे मिलते हैं। उनकी कवित्वपूर्ण व्यंजना और स्वाभाविक वर्णन-शैली के अन्तर्गत सीधे-सादे शब्द भी कुछ इस रूप में गुम्फित होकर आते हैं कि उनकी मधुर ध्वनि मन को मुग्ध कर लेती है। भावनाओं की गम्भीरता के साथ अपनी भाषा में ठाकुर साहब ने बहुत अधिक संयम दिखाया है। उनकी सरल सौन्दर्य-पूर्ण भाषा में विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है। 'उस पार' उनका एक उत्कृष्ट गद्यकाव्य है :—

"उस पार के सघन कुंजों से वंशी-ध्वनि आ रही है, इस पार में दिन और रात्रि के मिले हुए सौन्दर्य में अकेली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठी हूँ। वंशी की आत्मा में मेरा नाम कौन फूँक रहा है? वह मुझे कौन बुला रहा है? इस वंशी में तो मेरे विस्मृत स्वप्नों के स्वर भरे हैं। मैं इन्हें पहचानती हूँ।

नदी पर कोई नाव नहीं दिखाई देती। श्वेत विहग तरंगों को अपने तेज पंखों से छू-छूकर आकाश में विलीन हो जाते हैं। लहरों पर चढ़कर वंशी का अन्तिम स्वर मेरी ओर आता है, और मैं मतवाली होकर उसके पकड़ने के लिए पानी में कूद पड़ती हूँ।

आँख खुलते ही मैं अपने आपको उसी कुंज में फूलों की सेज पर सोते पाती हूँ, जहाँ से वंशी-ध्वनि आ रही थी।

परन्तु यह क्यों? अबकी उस पार के हरे खेतों से वंशी-ध्वनि आ रही है, और इस पार मैं रात्रि और दिन की मिश्रित मुसकान में अकेली बैठी हूँ।"

(४) श्री श्रीगोपाल नेवटिया

बाबू श्रीगोपाल नेवटिया का जन्म सन् १९०६ में एक अग्रवाल वैश्य-कुल में हुआ। जयपुर राज्य के शेखावाटी प्रान्त के अन्तर्गत फतहपुर नगर आपका निवास-स्थान है। आपने हिन्दी तथा संस्कृत के गम्भीर अध्ययन के साथ ही बँगला, मराठी और गुजराती के श्रेष्ठ ग्रन्थों का भी मनन किया है। यद्यपि कुछ सुमधुर कविताओं की भी आपने रचना की है, तथापि आपके भाव-प्रधान लेख हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि हैं। नेवटिया जी की रचनाएँ 'त्यागभूमि' जैसी प्रथम श्रेणी की पत्रिकाओं में बहुत समय से आदृत होती हैं। भू-स्वर्ग काश्मीर पर हिन्दी में आपने सर्वप्रथम सर्वांगसुन्दर ग्रन्थ लिखा। आपकी अन्य रचनाओं में 'योरप की कहानियाँ' 'यूथिका' और 'मुस्लिम सन्तों के चरित' विशेष उल्लेखनीय हैं।

श्रीगोपाल नेवटिया का परिपक्व मस्तिष्क भीतर और बाहर के जगत् पर भली प्रकार विचार करता है। प्रकृति और मानव में जहाँ कहीं भी उन्हें सत्य का आभास मिलता है, वहीं सौन्दर्य के इस सहृदय पारखी की मुग्ध लेखनी शब्दों का अनूठा चमत्कार दिखाते हुए एक अनुपम भाव-मूर्त्ति गढ़ देती है। नेवटिया जी के कवि-हृदय ने साधारण बातों का भी अत्यन्त हृदयग्राही वर्णन किया है, और उनके विस्तृत भावात्मक निबन्धों की इस विशद् अभिव्यंजना में कला के प्रति उनका स्वाभाविक प्रेम तो चित्रित है ही, गद्यकाव्य की छटा भी अपने सम्पूर्ण रूप में दिखाई देती है। नेवटिया जी की भाषा प्रौढ़ और भावापन्न है; उनके वाक्यों में संतुलन है। उनकी शब्दावली अधिकतर संस्कृत-गर्भित होती है। उनका एक अनूदित गद्यांश निम्न प्रकार है:—

"दिन भर तेरे संगीत की ध्वनि मेरे हृदय में गूँजती रहती है। मानो मैं तेरी सारंगी हूँ, और तू मेरा उस्ताद!

पर चल, एकान्त तट पर चल! मैं भी आता हूँ। वहाँ दिन हो या रात, प्रकाश हो या अन्धकार, मैं तेरे साथ रमण करूँगा। तू मुझे बजाना और मैं बजूँगा!

सायावी प्रदेश में अकेला बादल होगा, कुंजों में आशा-भरी उषा आएगी, उस समय तू गाना। पीछे पुनः आशा और तृष्णा से हीन संध्या आएगी। कितनी निर्जन, पर आर्तों से भरी! हे गायक, संध्या-समय भी तू बजाना। मैं तेरी सारंगी हूँ! संध्या का अन्धकार मजे का है! अन्धकार सत्य है, वह सत्य नहीं, यह सत्य है!"

(५) श्री यशवन्तसिंह नाहर, बी० ए०, एल्-एल० बी०

श्री यशवन्तसिंह नाहर का जन्म सन् १९१२ में मांडलगढ़ में हुआ। आपके पिता श्री मोतीलाल ने आपको अच्छी शिक्षा दिलाई और सन् १९३७ में आपने एल्-एल० बी० की परीक्षा फर्स्ट डिवीजन में पास की। आपके साहित्यिक जीवन का आरम्भ सन् १९२९ से निबन्ध तथा गद्यकाव्य-लेखक के रूप में होता है। कुछ कहानियों और एकांकी नाटकों की भी आपने रचना की है, परन्तु आपकी सभी पुस्तकें अभी अप्रकाशित ही हैं। आपकी स्फुट रचनाएँ कतिपय प्रमुख पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं—सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'कर्मवीर' में तो आपने अपना स्थान बना लिया है। नारी-समस्या को चित्रित करना आपके साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है। आपकी धर्म-पत्नी श्रीमती निर्मलादेवी भी एक होनहार लेखिका हैं। नाहर जी प्रकृति के स्पष्ट हैं, और समाज तथा साहित्य की सेवा में उनका उत्साह प्रशंसनीय है।

यशवन्तसिंह नाहर के गद्यकाव्यों में मानव की अतृप्त आकांक्षाओं की प्रौढ़ भावनाएँ एक आकर्षक और समुज्ज्वल रूप में चित्रित हुई हैं। जीवन के प्रति उनका अपना एक दृष्टिकोण है, तथा अपने भावोद्गारों में उन्होंने प्रेम और विरह की मार्मिक व्याख्या करते हुए जीवन की अवसाद-मयी अनुभूतियों को मुखरित करने का सफल प्रयत्न किया है। नाहर जी के गद्यकाव्य प्रायः किसी को सम्बोधित करके लिखे गए हैं, और वह 'किसी' कवि के मन की रानी के अतिरिक्त कोई नहीं। गद्यकाव्यों में अधिकतर कोई रूपक खड़ा करके उन्होंने उसका सुन्दर निर्वाह किया है, जैसे 'साधना के आकाश में' अथवा 'कामनाओं के सिन्धु में'। नाहर जी की भाषा सरस है, पर उसमें कहीं कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रुटियाँ अवश्य अखरती हैं, जैसे 'ही' शब्द का कई बार निष्प्रयोजन प्रयोग; 'जिससे' की मधुरता की उपेक्षा करते हुए 'ताकि' प्रयोग भी ग्राह्य नहीं। उनकी रचना-शैली का एक सुन्दर उदाहरण है :—

"जीवन साधनाओं की समाधि है, और आशा समाधि-दीप। यदि मनोरम शृंगार का सृजन कर मृत्यु-समाधि पर फूल-पत्ती चढ़ाने आए, तब ऐ मेरे दूर देश के महमान! एक फूक देकर दीप को बुझा देना। तब घनान्धकार में केवल वह फूल चमचमाता रहे, और उस ओर की घनी पहाड़ियों के पीछे अस्त होता हुआ चन्द्र अपनी सम्पूर्ण ज्योत्स्ना समेटकर करुण स्निग्ध अन्धकार पूर दे।

मेरे मन की रूठी रानी! तब तुम सुख-विह्वल करुण आह भरकर मेरे समस्त राग-विरागों पर पर्दा डाल देना ताकि एकाकी विवश राग में मैं अपनी सम्पूर्णता खो बैठूँ— यही मेरे दुखी जीवन का सबसे बड़ा वरदान होगा।"

(६) कुमारी उज्ज्वल सालवे, बी० ए०

कुमारी उज्ज्वल सालवे का जन्म ७ अक्टूबर १९२३ को अमरावती जिले के मोर्शी गाँव में हुआ। आपके पिता इस समय महिअर राज्य में सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस के पद पर नियुक्त हैं। अभी पिछले वर्ष कुमारी सालवे ने लखनऊ के इसाबेला थोबर्न कालेज से बी० ए० की परीक्षा पास की है, और अब स्वतन्त्र रूप से एम० ए० के लिए भी प्रयत्न कर रही हैं। मनोविज्ञान आपका प्रिय विषय है, और ग्राम-सुधार आपके जीवन का बृहत् अंग। हाईस्कूल-जीवन से ही आप हिन्दी में कहानियाँ और कविताएँ लिखा करती हैं। लखनऊ-रेडियो-स्टेशन से आपने अपनी कतिपय कविताएँ ब्राडकास्ट की हैं। इस समय आप मेरठ के 'सर्वोदय पब्लिशिंग हाउस' के सहयोग से लिन यूटांग की एक प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद कर रही हैं। कुमारी उज्ज्वल के हृदय में ज्ञानोपार्जन और विद्याध्ययन की लालसा स्वाभाविक रूप में जग रही है। मातृभाषा हिन्दी के प्रति इस ईसाई-बाला का अनुराग दोनों ही के लिए गौरवास्पद है।

कुमारी सालवे के गद्यकाव्य उनकी प्रतिदिन की डायरी के पृष्ठांश हैं, जिनमें अन्तर की एक बलवती रागात्मक वृत्ति कल्पना के यथोचित सम्मिश्रण से पुष्ट होकर सजग चेतना के मार्ग में बढ़ती दिखाई देती है। मानव की विपदाओं और अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के बीच 'विधाता' नामधारी एक अदृष्ट शक्ति का आभास पाकर उससे लड़ बैठना उन्हें अभीष्ट नहीं होता, अपितु उसके विचित्र न्याय के प्रति उनकी श्रद्धा अनायास उमड़ती है। असीम के प्रति 'प्रेम' के सीमित क्षेत्र में सृजन पानेवाले उनके गद्यकाव्यों में निश्चय ही इन्द्रिय-लिप्सा अथवा यौवनोल्लास का वह रूप नहीं, जो दिनेशनन्दिनी जी के गद्यकाव्यों में बिखर रहा है। भाव और भाषा दोनों के नाते उनके ये गद्यकाव्य रुचिकर हैं, और शैली के परिमार्जन के साथ इस क्षेत्र में उनकी अधिकाधिक सफलता का विश्वास दिलाते हैं। कुमारी जी की भाषा मधुर और प्रांजल है, जिसमें 'जीवित जागत करुणा के बृहत् सिन्धु' अथवा 'अव्यक्त अस्पष्ट उपस्थिति' जैसी सरस शब्दावली के साथ ही 'नाईं' 'अँधियारे' जैसे तद्भव रूप तथा उर्दू के संयत प्रयोग से एक विशेष मनोरमता आ जाती है। 'अदृष्ट' शीर्षक उनका गद्यकाव्य नीचे उद्धृत किया जाता है :—

"अदृष्ट! तुम हो कौन?
तुमसे मेरा परिचय कब हुआ?
तुम क्यों इस तरह निरन्तर मेरे साथ-साथ रहते हो।
मैं घबराकर जब मन्दिर की ओर अपने देव से मिलने बढ़ती हूँ, तो तुम पहले पग पर ही स्वयं आ मिलते हो। दूसरा पग ही नहीं लेने देते।
तुम बड़े अजीब हो। जहाँ-तहाँ मन्दिर बनाकर मुझे चकमा दिया करते हो। मैं पूजा कर चुकने पर तुम्हीं को अपने आराध्य के स्थान पर पाती हूँ।
मेरे आराध्यदेव से तुम्हारा तादात्म्य तो नहीं?
तुम्हारी अव्यक्त, अस्पष्ट उपस्थिति क्यों मेरी बेचैनी और घबराहट दूर कर देती है।"

(७) श्री रामप्रसादसिंह 'आनन्द', बी० ए०

श्री रामप्रसादसिंह 'आनन्द' का जन्म सन् १९१६ में गोरखपुर जिले के अन्तर्गत महाराजगंज तहसील के गोनरिया ग्राम के एक सुप्रतिष्ठित राजपूत-परिवार में हुआ। आपने काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा पास की है। आप प्रसाद-स्कूल के एक साहित्यकार हैं। आपके गद्यगीत, एकांकी नाटक तथा आलोचनात्मक निबन्ध हिन्दी की प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में समय-समय पर स्थान पाते हैं। आपने सन् १९३२ में दो अन्य मित्रों के सहयोग से अपने ग्राम में श्रीकृष्ण-पुस्तकालय की स्थापना की थी, जिसके द्वारा जनता में हिन्दी-भाषा और साहित्य का अच्छा प्रचार और प्रसार हो रहा है। 'आनन्द' जी एक उत्साही समाज-सुधारक तथा राष्ट्र-प्रेमी नवयुवक हैं; प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति से आपको प्रगाढ़ प्रेम है, और निःस्वार्थ भाव से हिन्दी-साहित्य की सेवा करना आपके जीवन का एक पवित्र ध्येय है। आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकांकी नाटक और गद्यकाव्य शीघ्र ही पुस्तक-रूप में प्रकाशित होंगे।

आनन्द जी के गद्यकाव्यों का आरम्भ प्रायः निराशा की कोमल कल्पनाओं से हुआ है, तथापि स्वस्थ साहित्य के निर्माण में निर्मल नैतिकता की विशेष आवश्यकता समझते हुए अपनी इन रचनाओं की समाप्ति में वे आशावाद की स्वर्णिम झलक का आभास दिए बिना नहीं रहते। उनके अधिकांश गद्यकाव्य एक सजीव कल्पना लेकर वर्णनात्मक शैली में निर्मित हुए हैं, और कथोपकथन को भी उनमें यथावश्यक आश्रय मिला है, जिसके कारण भावना के वेग में कमी अवश्य आ जाती है; परन्तु कहानी की मनोरमता के सुन्दर, स्वाभाविक योग से उसकी पूर्ति बहुत अंशों में हो जाती है। आनन्द जी की भाषा में काव्योचित सौन्दर्य की पर्याप्त मात्रा है, किन्तु शब्दों का अनावश्यक व्यतिक्रम भी कहीं-कहीं दिखाई देता है—'तुम हो कौन और जाते हो कहाँ?' के स्थान पर 'तुम कौन हो—कहाँ जाते हो?' अधिक उपयुक्त होता। विराम-चिह्नों के प्रयोग में भी कहीं कुछ त्रुटियाँ रह जाती हैं। 'बन्दी के जीवन में वसन्त' उनका एक सुन्दर गद्यकाव्य है :—

"बन्दी हूँ! अधिकारों से वंचित आज एकाकी हूँ। निर्जनता तथा मौन ही मेरे सहचर हैं।

स्वतन्त्र वायु में उन्मुक्त रूप से उड़नेवाला जीव सीमाबद्ध होकर जीवन व्यतीत कर रहा है, आश्चर्य! इसमें आश्चर्य ही क्या? यह तो स्थूल है कि अपराधी को दण्ड सहना ही पड़ता है। आराधना से दूर रहना अपराध नहीं तो फिर क्या है?

तब तो मैं भी अपराधी हूँ। जगत के जीवो! मुझे बन्दी कहो, धिक्कारो और मेरा उत्कट उपहास करो। ये ही शब्द-समूह मेरे लिए ज्ञान-गह होंगे, और मैं सुखी होऊँगा।

संसार-समाज के सेवकवृन्द सम्राट' से मेरी स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना न करना। जब मेरे कठोर पाप 'प्रकाश' से धीरे-धीरे पिघलकर प्रवाहित हो जाएँगे, तब मेरी जंजीर अचानक कट जाएगी, और मैं परिवर्तित होकर बन्धन-मुक्त हो जाऊँगा।

अरे, अनजान में मेरी बेड़ी किसने काट दी? मेरे जीवन का पतझड़ कहाँ गया?—यह प्रकृति में परिवर्तन कैसा? कोयल की कूक सुनाई दे रही है, रसालों पर नव-पल्लव क्यों आया? मेरे शुष्क हृदय में उल्लास क्यों छाया है? समझा। यह तो वसन्त का आगमन है। आज मेरे पूर्व-पापों का बस अन्त है।

स्वामी! मेरा अन्तर आनन्द के अतिरेक से पुलकित हुआ जाता है, क्योंकि आज तू अपने बन्दी के जीवन में वसन्त लाया। इसलिए तेरा बन्दी अपने को तुझे सौंप रहा है। देखना, कहीं कोमल किसलय कुंठित न हो जाने पाए!!!"

'प्रसाद' की भाषा

श्री शत्रुदमनप्रसाद नारायण शर्मा, विशारद, बी० ए०

भाषा जो हमारे भाव-प्रकाशन की एक प्रधान प्रक्रिया है—अवश्य ही भावानुसारिणी है। हमारे हृदय में जो भावनाएँ उदित होती हैं, उन्हें दूसरों पर व्यक्त करने के लिए हमें निसर्गतः जितने साधन प्रस्तुत हैं उनमें भाषा सर्वोपरि है। हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार चेतना आत्मा की भाषा है, भावना हृदय की भाषा है, चेष्टा पार्थिव शरीर की भाषा है। उसी प्रकार विभिन्न शरीरावयवों की सहायता से नादयन्त्रोद्भूतवर्णात्मक ध्वनि मस्तिष्क की वह भाषा है जिसमें हमारे विचार शब्द-कल्पित-वाक्य का रूप धारण कर सङ्केत-मूलक प्रतीकों द्वारा स्फोटों की अभिव्यक्ति करते हैं; और इस अभिव्यक्ति का वह व्यक्ति जिसके प्रति हम अपने विचारों को प्रकट करना चाहते हैं—अपनी श्रुति-ग्राहिका-शक्ति से जिसका भाषा के साथ आधारधेय-सम्बन्ध है—ग्रहण या अवगत करता है। अतः यह स्पष्ट है कि भाषा की निष्पत्ति वक्ता या श्रोता एवं लिखित-भाषा के सम्बन्ध में लेखक और पाठक दोनों ही पर निर्भर करती है; और इसलिए श्रोता या पाठक के बौद्धिक-मापदण्डानुकूल्येन वक्ता या लेखक अपनी भाषा को ऊँची साहित्यिक या सरल-सुबोध बनाने की चेष्टा करता है।

ऊपर कहा जा चुका है कि भाषा भावानुसारिणी है। अब यदि यों कहा जाए कि भाव ही जब वर्णात्मिक-रूप में व्यक्त होते हैं तो उन्हें भाषा कहा जा सकता है। अतः भाषा में भावानुकूल गाम्भीर्य, चापल्य, दुरूहत्व, स्पष्टत्व, प्राञ्जल्य या स्फीतत्व का होना एकान्ततः स्वाभाविक ही नहीं, वाञ्छनीय भी है।

वास्तविककवि-कर्म्म अपनी सङ्कल्पात्मक-अनुभूतियों के तारतम्य में नित्य मनोभावों का सरस-शैली में रमणीय अर्थ प्रतिपादन है जो स्वभावतः ही लोक-मङ्गल की भावना से ओतप्रोत और यत्-किञ्चित् चमत्कृत एवं रहस्योन्मुख भी होता है। कवि की विशेषता यही है कि वह जिन शाश्वतिक-सौन्दर्य का अपने क्रियमाण-उन्मेषोद्रेक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

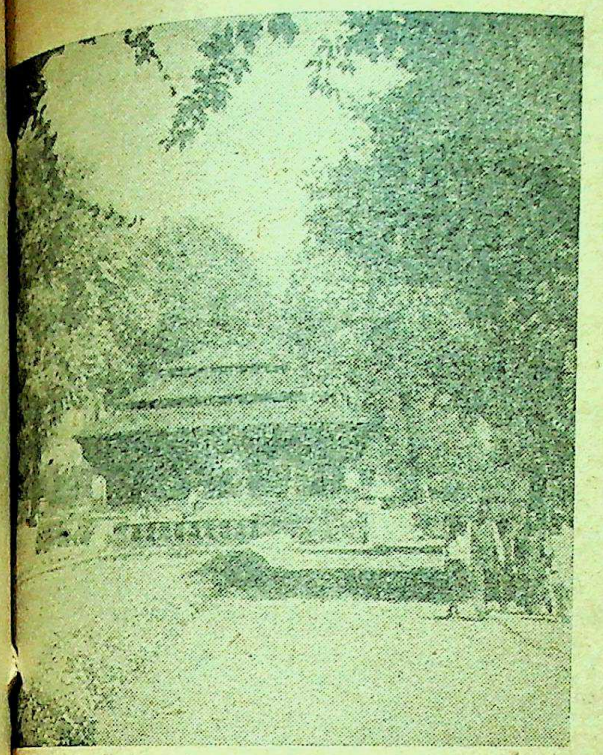

१—यह है शालीमार बाग, जो श्रीनगर से नौ मील की दूरी पर स्थित है। भारत के सुन्दरतम मुगल-बागों में से यह एक है।

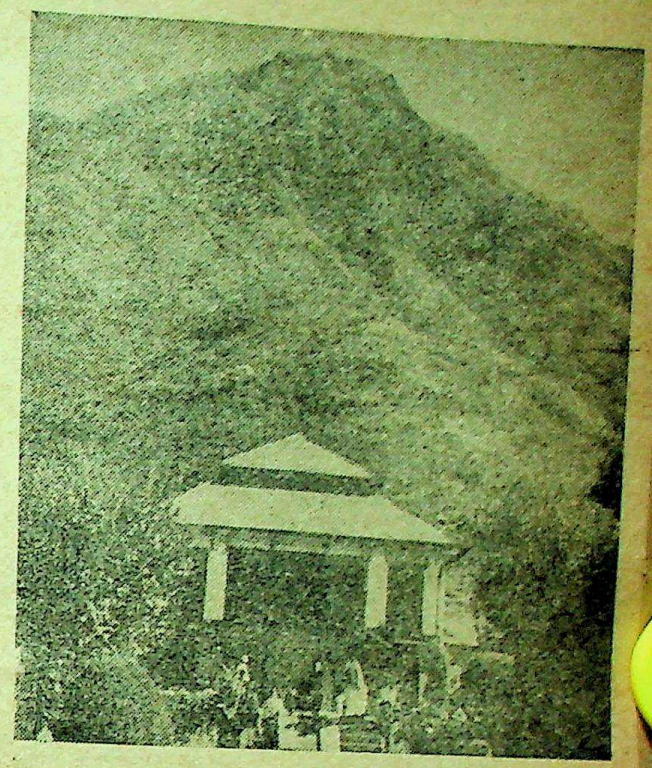

२—श्रीनगर से पाँच मील की दूरी पर चश्मीशाही 'पिकनिक' के लिए एक मनोरम स्थान है।

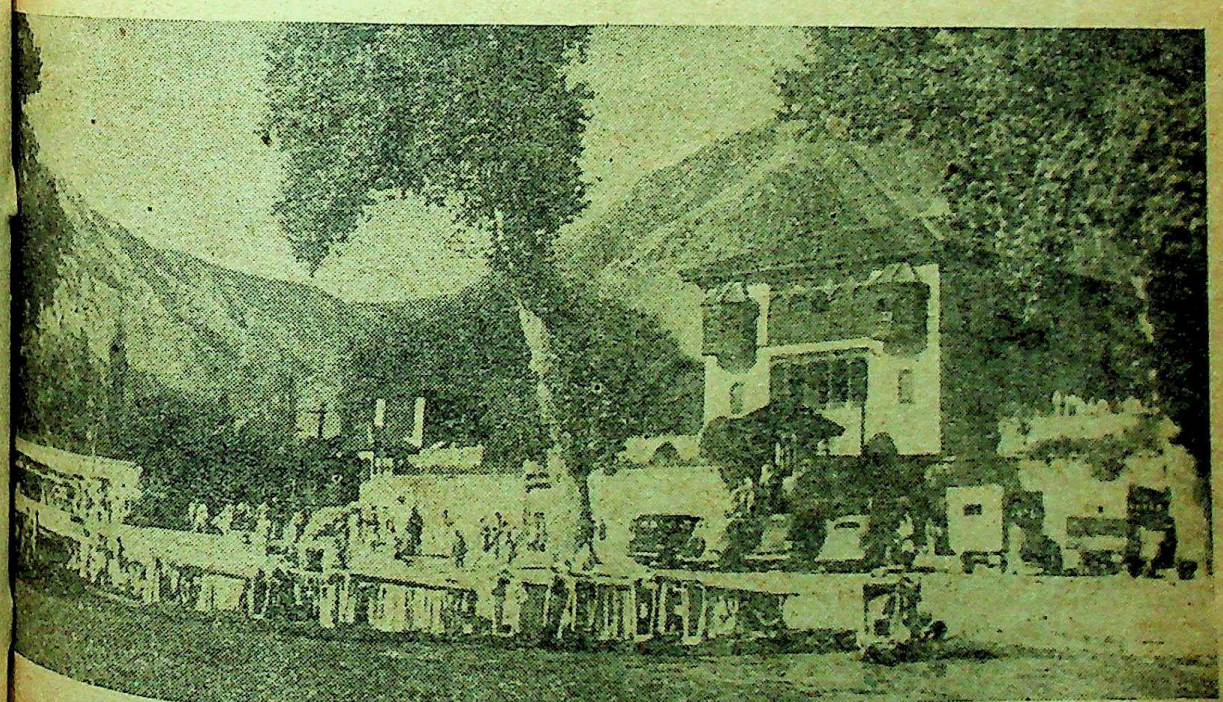

३—शिकारा और डूंगा के द्वारा लोग जलमार्ग से निशातबाग घूमने के लिए आते हैं। प्रसिद्ध डल झील के किनारे-किनारे यहाँ तक स्थलमार्ग भी है। इस बाग में बारह चबूतरे हैं, जिनमें से सबसे ऊंचे दो चबूतरे पर्दानशीन महिलाओं के लिए सुरक्षित हैं। रविवार को यहाँ सुबह से शाम तक छुट्टी मनानेवालों की भीड़ लगी रहती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—काश्मीर की प्रसिद्ध 'डल' झील में जल-विहार का एक लुभावना दृश्य। तैरने और डुबकी लगाने की हर सुविधा यहाँ मौजूद है। 'बोटिंग' के आनन्द के लिए हलकी डोंगियाँ भी उपस्थित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

५—रात्रि के समय झीलों के तरल वक्षस्थल पर विभिन्न प्रकार के आयोजन किए जाते हैं, जिनसे लोगों का विशेष मनो
रंजन होता है। ऐसे आयोजनों का विज्ञापन करती हुई नौकाएँ शाम से ही इधर-उधर घूमने लगती हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता से अनुभव करता है उसे शब्द-चित्र में इस प्रकार सजीवतया चित्रित करता है कि उस सौन्दर्य्य का सामान्य-जन भी मानसिक साक्षात्कार करने लगते हैं, और इस प्रकार उसी रस-धारा में प्रवाहित होने लगते हैं जिसमें प्रवाहित होकर कवि अपनी हृदय की भाषा को शब्दात्मक भाषा का रूप प्रदान करता है। सारांश यह कि सामान्य-जन जिन प्राकृतिक-विभूतियों का अज्ञातरूपेण अवधारण तो कर सकते हैं किन्तु उन्हें व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हीं अनुभूतियों को कवि शाब्दिक मूर्त्त-रूप प्रदान करता है, और एवम्प्रकारेण अपनी प्रतिभा से एक ऐसे भावनात्मक जगत् की सृष्टि करता है जिसमें एकमात्र आत्यन्तिक-आह्लाद का साम्राज्य स्थापित रहता है। इसी सृष्टि को मम्मट अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'काव्य-प्रकाश' के आदि में 'कवि भारती' कहकर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और इस प्रकार उनके ग्रन्थ का मङ्गलाचरण होता है। वह श्लोक यों है :—

"नियतिकृत नियम रहितांह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरस रुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति॥"

सच तो यह है कि कवि एक ऐसा स्रष्टा है जो स्थूल-जगत् को, जिसकी माया उपकरणभूता है अभ्यन्तरिक जगत् या भाव-जगत् में, जिसकी प्रतिभा उपकरणाभूता है, तिरोहित कर देता है और तब साधारणीकरण के द्वारा दुर्भावों का प्रलय कर माङ्गलिक-सत्य का कलात्मक-प्रत्यक्षीकरण करता है। इसीलिए—

"असारे खलु संसारे कविरेव प्रजापतिः।
यथास्मैरोचते विश्वं तथैव परिवर्त्तते।"

कहा गया है।

इस सम्बन्ध में भाषा और साहित्य के पारस्परिक-अन्वय के विषय में कुछ कह देना अप्रासङ्गिक न होगा। यह निर्विवाद है कि जितनी भाषा परिवर्त्तनशील है उतना साहित्य नहीं। इसका कारण यह है कि भाषा अधिकतः बोल-चाल के व्यवहार में ही प्रयुक्त होती है और यदि लिखित-रूप धारण भी करती है तो वह कालान्तर में साहित्य का रूप धारण कर लेती है। वैयाकरणों ने बोल-चाल की भाषा को संशुद्ध कर 'संस्कृत' नाम दिया किन्तु वे नित्य की बोलचाल की व्यावहारिक भाषा का प्रवाह अवरुद्ध नहीं कर सके जिसके परिणाम-स्वरूप अपभ्रंशों का विकास हुआ। अतः यह सिद्ध है कि सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा में अन्तर होना अनिवार्य्य है। इस अन्तर का आधिक्यानाधिक्य व्यावहारिकता की आधिक्यानाधिक्य पर निर्भर करता है। जो भाषा जितनी ही सामान्य जन-समाज से दूर होकर शिक्षितों के विचार-विनिमय की माध्यम बनती जाती है और जितनी ही साहित्यिकता आती जाती है उतनी ही वह परिवर्त्तनशीलता की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति छोड़कर स्थायिता प्राप्त करने लगती है। जिस प्रकार हम ज्यों-ज्यों सभ्य बनते जाते हैं त्यों-त्यों अपने प्रकृति-जन्य-स्वभावों का जो प्रायः पतनोन्मुख ही होते हैं—नियन्त्रण करते जाते हैं और एवं विध स्वाभाविकता से दूर जाकर कृत्रिम संस्कारों से संस्कृत होने लगते हैं उसी प्रकार भाषा भी ज्यों-ज्यों जन-साधारण से दूर जाकर सभ्य-समाज की व्यावहारिक परम्परा में साहित्यिकता पाने लगती है, त्यों-त्यों उसकी परिवर्त्तनशीलता और व्यावहारिकता में अभाव होने लगता है। अतः आज दिन 'हिन्दुस्तानी' के पक्षपातियों एवं तथाकथित राष्ट्रवादियों की ओर से जो अपनी संस्कृति की धारा अवकुण्ठित कर हमारी 'हिन्दी' को बोलचाल की भाषा के रूप में ग्रहण करने के नाम जो उर्दू को व्यर्थ प्रश्रय दिया जा रहा है वह व्यर्थ ही नहीं, अनुचित भी है। वास्तव में हिन्दी व्यवहार की प्रान्तीय भाषा न होकर राष्ट्र की विचार-विनिमय की माध्यम है और इसलिए बोलचाल की सामान्य भाषा न होकर शिक्षितों की साहित्यिक भाषा है। अस्तु।

अब हम उपर्युक्त-सिद्धान्तों की कसौटी पर 'प्रसाद' की भाषा को कसेंगे। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि भाषा भाव-प्रकाशन की एक प्रधान-प्रक्रिया है और उसमें काठिन्य या सारल्य का होना उसके भाव के कठिन या सरल होने पर निर्भर है 'प्रसाद' जी के सम्बन्ध में—जिन्होंने जैसी ऊँची कल्पनाओं, प्रगल्भ अनुभूतियों, गभीर विचारों, एवं अलौकिक प्रतिभा को अपनी कृतियों में शाब्दिक मूर्त्तिमत्ता दी है वह अवश्य ही इस संक्रमण-काल के साहित्यिक लेखकों के लिए अनुकरणीय है। यह कहना सत्य है कि उनकी भाषा सर्व-साधारण के लिए बोधगम्य नहीं; क्योंकि वह मर्म्मज्ञ रसज्ञों के लिए लिखी गई वह साहित्यिक भाषा है जिसमें उन्नतोद्भावनाएं राहस्यिक अभिव्यञ्जना प्राप्त करती हैं। अतः यह सिद्धान्त बनाकर कि भाषा को अनिवार्य्यतः सरल होना चाहिए जिससे कि सर्व-साधारण उसकी अवधारणा कर सके—यह आक्षेप करना नितान्त निराधार है कि जैसी कि प्रसाद की भाषा क्लिष्ट है वह भावानुभूति की साधिका के स्थान में बाधिका हो गई है। हम तो यह कहेंगे कि उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावानुकूल और उस अतीत की संस्कृति के अनुकूल जिसकी उन्होंने यत्र-तत्र सर्वत्र कीर्त्ति गाई है, यह आवश्यक था कि वे ऐसी भाषा का प्रयोग करते; क्योंकि यदि ऐसा वे न करते तो उस वातावरण की सृष्टि करने में वे कदापि सफल न हो सकते जो उनको परम अभिप्रेत था। अतः प्रसाद की भाषा भावानुभूति की बाधिका नहीं प्रत्युत साधिका है।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि प्रसाद की भाषा उच्च भावानुसारिणी होने के कारण सरल नहीं बन पाई है। अतः उसका रसास्वादन सर्व-साधारण-द्वारा नहीं हो सकता। यह कथन सर्वथा निस्सार है। ऐसे प्रश्नकर्त्ताओं को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि प्रसाद ने अपने नाटक एवं काव्यादि ऐसे शिक्षित वर्ग के जन-साधारण के लिए लिखे हैं जो अपनी सांस्कृतिक-भाषा का अवगमन कर सकता है और जिसने अपनी रुचि, भाव और बुद्धि का धरातल ऊँचा कर लिया है, न कि ऐसे जन-साधारण के लिए जो पारसी रङ्गमञ्च पर खेले जानेवाले उर्दू-गर्भित नाटकाभिनय देखकर तो मुग्ध हो सकता है; किन्तु संस्कृत-गर्भित नाट्याभिनय देखकर नहीं। सच तो यह है कि कवि या नाटककार के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह जन-साधारण के लिए अपना माप-दण्ड नीचा करे। चाहिए तो यह कि पाठक अपना बौद्धिक और साहित्यिक मापदण्ड ऊपर उठाए जिससे वह कलाकार के मर्म को हृदयंगम कर सके।

प्रसाद की कृतियों में जो सबसे बड़ी विशेषता है वह यह है कि उन्होंने हिन्दी में वैदिक-संस्कृति की धारा प्रवाहित कर एक नए युग का प्रवर्त्तन किया है। किन्तु दुर्भाग्यतः यही गुण कुछ छिद्रान्वेसियों की दृष्टि में दोष बन गया है; क्योंकि इसके कारण उनकी भाषा स्वभावतः संस्कृत-गर्भित हो गई है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि उनकी रचनाओं की आत्मा प्राचीन संस्कृति की छाया है और शरीर आधुनिकता का बिम्ब। यही कारण है कि उनकी रचनाओं का बाह्य रूप देखकर यदि अर्वाचीन-रुचि के लोग आह्लाद में गोते लगाने लगते हैं तो प्राचीन संस्कृति के पाठक आन्तरिक-लोकोत्तरानन्द को आत्मसात् ही करने लगते हैं।

प्रसाद की भाषा के सम्बन्ध में जो दूसरा दोषारोपण किया जाता है वह यह है कि उन्होंने अपने नाटकों में पात्रों की भाषा उनकी स्थिति और योग्यता के अनुरूप नहीं रखी है। ऐसे दोषारोपियों के अनुसार यदि कोई ग्रामीण पात्र है तो उसे अपनी देशी बोली में ही बोलना चाहिए और यदि कोई शिक्षित है तो उसे शिष्ट भाषा में। किन्तु ऐसे आलोचकों को यह न भूलना चाहिए कि हिन्दी राष्ट्रभाषा के पद पर समर्चित की जा रही है; अतः इसलिए यह आवश्यक नहीं कि प्रान्त-विशेष का व्यक्ति अपनी प्रान्तीय भाषा या ग्रामीण अपनी देशी बोली का प्रयोग करे; क्योंकि ऐसा करने का तो यह अर्थ होगा कि नाटकों की भाषा एक ऐसी खिचड़ी होगी जिसमें भाषा का प्रवाह तो हो ही नहीं सकता, साथ ही राष्ट्रभाषात्व भी नहीं रह जाएगा। हाँ, यह आवश्यक है कि पात्रों की भाषा की साहित्यिकता या भाव-सौष्ठव उतनी ही मात्रा में अभीष्ट है जितनी मात्रा उनकी वैयक्तिक योग्यता के अनुकूल हो। पर हम यह दृढ़ निश्चय के साथ कह सकते हैं कि इस दृष्टि से प्रसाद की भाषा पात्र-विशेषों की योग्यता के अनुरूप ही है।

जो मीन-मेष करनेवाले प्रसाद की प्रसादमयी भाषा को संस्कृत-गर्भित होने के कारण क्लिष्ट दुर्बोध्य बताने का साहस करते हैं उन साहित्यिकों के प्रति हम यही कहना पर्याप्त मानते हैं कि उन्हें हिन्दी की धारा, अपनी संस्कृति और गोस्वामी तुलसीदास आदि कवियों की भाषा की गति-विधि का मनन करना चाहिए। हमारा तो दृढ़ विश्वास है कि रामचरितमानस की भाषा प्रसाद की भाषा से कहीं अधिक संस्कृत-गर्भित है, किन्तु फिर भी उसका कारण नहीं जाना जाता कि क्यों रामचरितमानस की भाषा पर क्लिष्टत्व का दोष नहीं मढ़ा जाता और प्रसाद की भाषा पर मढ़ा जाता है। कारण कदाचित् यह है कि रामचरितमानस की भाषा यद्यपि क्लिष्ट है तथापि उसका भाव रहस्योन्मुख या राहस्यिक नहीं। इसके विपरीत प्रसाद की भाषा अनुभूतिवाहिनी, रहस्योन्मुखी या रहस्यात्मिका है। यहाँ यह विचेचन करना अप्रासङ्गिक है कि कवि को अपनी भाव-प्रणाली एवं भाषा की धारा को इस प्रकार रहस्यात्मिक बनाना चाहिए या नहीं।

हमारा विश्वास तो यही है कि यदि हिन्दी सचमुच राष्ट्रभाषात्व प्राप्त कर सकती है तो एकमात्र संस्कृत के आधार पर; क्योंकि हमारे अन्यान्य प्रान्तों की भाषाओं का (केवल कुछ द्रविड़ भाषाओं और उर्दू को छोड़कर) स्रोत संस्कृत ही है और आज दिन भी उन भाषाओं में पचहत्तर प्रतिशत शब्द संस्कृत के ही प्रयुक्त होते हैं। हमारा तो यह भी विश्वास है कि संस्कृत का आश्रय त्याग देने पर हिन्दी रिक्त ही नहीं, हीन एवं दरिद्र भी हो जाएगी, और काव्य-भाषा के सम्बन्ध में तो अधिकाधिक संस्कृत-शब्दों का प्रयोग अभिनन्दनीय है। अस्तु

प्रसाद की भाषा में युग की वाणी तो है ही, साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उसमें वह सांस्कृतिक माधुर्य्य और भाव-प्रगल्भता भी है जो प्राचीनता का पुनरुद्धार कर नवयुग के प्रवर्त्तन की श्रेयभागिनी है। हाँ, यह हो सकता है कि वह अधिक मंजी या चलती न हो किन्तु उसमें स्थायित्व है।

——

धर्म: एक युक्तिवादी दृष्टिकोण

पंडित प्रतापनारायण उपाध्याय, शास्त्री "प्रशांत"

आज भारतवर्ष का साम्प्रदायिकता के विषाक्त वातावरण में दम घुटा जा रहा है। चोटी के नेता अपने मस्तिष्क की समस्त शक्ति का व्यय करने पर भी इस विभीषिका से बचने का उपाय नहीं खोज पा रहे हैं। धर्म की दुहाई दे-देकर धर्म की हत्या की जा रही है। एक विचित्र-सी विचार-धारा सर्वसाधारण के मस्तिष्क में प्रवाहित हो रही है। इसके कई एक विशेष राजनैतिक, सामाजिक कारण हैं। उन सबका विचार हमारे उपर्युक्त शीर्षक की सीमा से बाहर है। अतः उन सबको छोड़कर धर्म के वास्तविक स्वरूप, उद्देश्य, निर्मिति, स्थिति, मूल उपादान इत्यादि पर व्यापक तथा युक्तिवादी दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। गत ३-४ दशाब्दियों से धर्म के नाम पर जिस भयावह हलाहल का प्रवेश भारत की जरा-जीर्ण देहयेष्टि में किया गया है, उसी का परिपाक आज हम साम्प्रदायिक संघर्ष के रूप में पा रहे हैं। इस रहस्य को भुलाकर हम भ्रान्त होकर अनर्गल प्रलाप करने लग गए हैं। इसका परिणाम निश्चय ही हमारी आगामी सन्तति को भोगना पड़ेगा। अगर हम आज भी अपनी भारतीयता तथा भ्रान्ति का अनुभव नहीं करते, अन्धे बनकर अपने इसी मार्ग पर चलते रहते हैं, तो हमारा सर्वनाश एक ध्रुव सत्य है। इन्हीं कारणों से धर्म-विषयक अपने विचारों के निरीक्षण की, अपने संस्कारों के परीक्षण की आवश्यकता पड़ गई है।

युग का प्रभाव अपरिहार्य है। कोई भी लौकिक वस्तु युग-प्रवाह में पड़कर अछूती बच नहीं सकती। सर्वांश में न सही, किसी न किसी रूप में युग का प्रभाव पड़ेगा अवश्य ही। साथ ही साथ यह भी सत्य है कि कुछ ऐसे भी अलौकिक तत्त्व हैं, जो हमारे दैनिक जीवन में लौकिक की भाँति व्यवहृत होते हुए भी सर्वथा युग से परे रहते हैं। हमारे जीवन में इनकी स्थिति पद्मपत्रमिवाम्भसा है। ये ही पदार्थ हमको हमारी सनातन-परम्पराओं की स्मृति दिलाते हैं, एवं हमारी भूत-भावी-स्थितियों का निर्देशन करते हैं। ऐसे ही तत्त्वों में से एक धर्म भी है।

धर्म एक लोकोत्तर अविकार्य मौलिक तत्त्व है। यह सृष्टि के आदिकाल से यथापूर्व अवस्थित है। इसमें लेश-मात्र भी विकार या परिवर्त्तन नहीं आया और न आएगा ही।

धर्म धर्मी का जीवन है, प्राण है, सर्वस्व है। धर्म के बिना किसी भी लौकिक पदार्थ की सत्ता सम्भव नहीं। धर्म से ही कोई भी वस्तु वस्तु है। अन्यथा कुछ नहीं। इस प्रकार धर्म धर्मी का आधार स्वीकार किया जा सकता है और धर्मी वस्तु को आधेय मान सकते हैं। आधार-आधेय का नित्य-सम्बन्ध है। कारण-कार्य के समान आधार-आधेय भी पृथक् नहीं रह सकते। आधेय की सत्ता से आधार की कल्पना की जा सकती है। यदि आधार है तो आधेय भी अवश्य ही होगा। एक के बिना दूसरा संभव नहीं। एक के रहते दूसरा अनिवार्य है। अतः अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध भी है। आधेय की विकृति से हम सहज ही आधार के विकार की कल्पना कर सकते हैं, परन्तु हम देखते हैं कि आधेय पदार्थ जिस अवस्था में अथवा जिस रूप में सृष्टि के प्रारम्भ में थे, ठीक उसी अवस्था में हमें आज भी दिखाई देते हैं, अणु-मात्र भी किसी प्रकार का विपर्यय नहीं हुआ। फिर हम कैसे कह सकते हैं कि धर्म एक लौकिक और विकारी पदार्थ है। जिस धर्म की सत्ता ही के कारण धर्मी अपने रूप में धर्मी है तथा विधाता के इस प्रवर्त्तमान समय-चक्र में अपने निजी रूप को अक्षुण्ण रख रहा है, उस धर्म को लौकिक, विकारी या समय के साथ बदल जानेवाला कदापि नहीं कह सकते। अग्नि के अन्दर आज भी उष्णता है, भस्म करने की शक्ति है; जल आज भी शीतल ही है; वायु भी कभी स्थिर नहीं हुई; पशु आज भी पशुत्व ही लेकर पैदा होते हैं; मनुष्य ने भी अपना मनुष्यत्व नहीं छोड़ा है। ऐसी अवस्था में हम धर्म को विकारी या परिवर्त्तनशील मानते हैं; तो इससे पूर्व हमको अपने में से मनुष्यत्व का; पशुओं में से पशुत्व का; जल से शीतलता का; अग्नि से उष्णता का लोप मानना पड़ेगा। इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि धर्म हमारे जीवन का एक अनिवार्य अत्याज्य अङ्ग है; तथा विश्वजनीन होने के कारण सर्वथा कल्याणमय है।

अब यहाँ पर यह शेष रह जाता है कि ऐसे सर्वतोबद्धमूल धर्म का रूप क्या स्थिर किया जाए? इसके लिए हमको कोई विशेष परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। मनुष्य धर्मी है, मनुष्यत्व धर्म है। मनुष्यत्व से संयुक्त होने के कारण ही मनुष्य मनुष्य कहलाता है। अतः मनुष्यत्व की परिभाषा ही धर्म की परिभाषा है। मनुष्यत्व की परिभाषा के अन्दर संसार के यावत् सद्वृत्त हैं, सभी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समावेश हो जाता है। यथा—सत्य, अहिंसा, परोपकार, दयालुता, क्षमा, अनीर्ष्या, देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम इत्यादि। ये भी मनुष्यत्व का स्वरूप हैं। ये ही पदार्थ मनुष्य को पशु से व्यतिरिक्त करते हैं। वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद के शब्दों में—"यतोऽभ्युदयः निःश्रेयः स सिद्धिः स धर्मः" अर्थात् 'जिन जिन बातों से हमारा सर्वांगीण अभ्युदय हो; तथा जो पदार्थ मानव-जीवन के चरम लक्ष्य निःश्रेयस्—मुक्तिपथ—का निर्देशक हो, वही धर्म है।' मेरी समझ में धर्म की इससे व्यापक और सुदन्र परिभाषा नहीं हो सकती। सर्वाङ्गीण अभ्युदय में आत्मिक, शारीरिक, वाचिक, बौद्धिक अथवा किसी भी प्रकार की उन्नति से आ जाती है। इस प्रकार धर्म हमारे ऐहलौकिक जीवन को पूर्ण तथा उन्नत बनाने के बाद पारलौकिक उद्देश्य की सिद्धि करता है। जो बातें हमारी अवनति का कारण बनती हैं, चाहे वे लौकिक हों या पारलौकिक हों, वही हमारे लिए अधर्म है। वही वस्तुतः त्याज्य है। धर्म हमारे किसी भी उत्थान के कार्य में अन्तराय या विघातक बनकर नहीं आता। अपितु साधक या घटक बनकर आता है। अतः धर्म त्रिकाल में कल्याणमय एवं अविकार्य है।

अब यहाँ पर प्रश्न यह होता है कि यदि धर्म ऐसा जीवन का मूल एवं अविकारी पदार्थ है और सर्वथा कल्याणमय है; तो फिर हमको आज के इस युक्तिवादी युग में धर्म का जैसा घृणित, वीभत्स एवं विकृत रूप देखने में आता है तथा धर्म के नाम पर जैसे भीषण काण्ड हो रहे हैं, वह क्यों? आज से सहस्रों वर्ष पूर्व धार्मिकता-रूपी जो पाप हमने किया है, जिसका प्रायश्चित्त हमको आज तक करना पड़ रहा है, वह क्यों?

इस प्रकार कैसे धर्म अविकारी तथा कल्याणमय रहा। वह तो जैसा कि आज घटनाओं से प्रत्यक्ष है, हमारा विनाशक हो गया। उस पर भी युग का प्रभाव पड़ गया। युग-प्रभावित वस्तु विकारी तथा परिवर्त्तनशील होती है। अतः युग की आवश्यकतानुसार धर्म का स्वरूप तथा नियम पूर्णरूपेण बदल देने चाहिए। संसार की प्रत्येक वस्तु कालान्तर में विकृत हो जाने पर सुधार तथा परिवर्त्तन की अपेक्षा करती है। यह युग की पुकार। है युग की वाणी ईश्वर की वाणी होती है। अतः इसकी अवहेलना नहीं हो सकती।

ठीक है; यदि धर्म वास्तव में हमारे सांसारिक जीवन में साधकत्व छोड़कर बाधक बन गया है और हमारे उन्नति-पथ का रोड़ा है तो ऐसे धर्म की कोई आवश्यकता नहीं उसे तत्काल त्याग देना चाहिए। परन्तु वस्तुतः ऐसी बात है नहीं।

आज पाश्चात्य संस्कृति तथा दर्शनों से विमुग्ध अधिकांश शिक्षित समाज प्रत्येक वस्तु को भौतिकवादी दृष्टिकोण से देखने का आदी हो रहा है। प्राच्य संस्कृति का मापक भी पाश्चात्य मापदण्ड ही है, जो पश्चिम की प्रत्येक अच्छी-बुरी वस्तु को अन्धा कर खा जाने के लिए लालायित हो रहा है। उक्त लोग यह क्यों भूल जाते हैं कि पश्चिम ही पूर्व नहीं है। पश्चिम की सांस्कृतिक परम्पराएँ, सामाजिक समस्याएँ ही पूर्व की नहीं हैं। अतः हमें भारतीय समस्याओं को सुलझाने के लिए प्राच्य दृष्टिकोण से काम लेना पड़ेगा। भौतिकवाद के शिकञ्जे को इस स्थल पर किञ्चित् शिथिल करके भारतीय अक्षय निधि—अध्यात्मवादी दृष्टिकोण से देखना पड़ेगा। इस स्थल पर पूर्व पक्ष की एक और बात का उल्लेख करके उत्तरपक्ष पर विचार करना समीचीन रहेगा। वह यह कि अब कुछ दिनों से एक नई लहर-सी चल पड़ी है। जब से राष्ट्रीय आन्दोलनों का प्रसार हुआ है; तब से वह कुछ अधिक प्रकाश में आई है। उस प्रवाह में प्रवाहित प्रत्येक व्यक्ति यही कहते हुए पाया जाता है कि धर्म हमारे स्वातन्त्र्य-पथ में बड़ा बाधक हो रहा है। धर्म ने देश का सर्वनाश कर दिया। आज समस्त भारतीयों के ऐक्य में धर्म ही सबसे बड़ा व्यवधान है। अतः धर्मनाम की वस्तु को पृथ्वी में इतना गहरा खोदकर गाड़ देना चाहिए कि वह फिर बाहर न आ सके।

यहीं पर हमको थोड़े ठण्डे हृदय से विचार करने की आवश्यकता पड़ जाती है। हमारे मार्ग में धर्म बाधक है या धर्मी बाधक है। युग-प्रवाह में पड़कर धर्म घृणित, विकृत तथा वीभत्स हुआ है या धर्मी। इन बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर स्पष्ट ज्ञात होगा कि धर्म नितान्त निष्कलुष, अविकृत है, वह न घृणित हुआ, न वीभत्स ही। मनुष्यत्व में कोई विकार नहीं आया। मनुष्यों में ही युग का प्रभाव भी पड़ा है, और विकृति भी आई है। क्योंकि धर्म का स्वरूप ही यह है जैसा कि ऊपर महर्षि कणादकृत सूत्र का उल्लेख हो चुका है कि जो पदार्थ हमारे जीवन को पूर्ण तथा उन्नत बनाकर मुक्ति-मार्ग का निर्देश करे, वही धर्म है। इसके विरुद्ध सब अधर्म है। इस परिभाषा के अनुसार जिस प्रकार हमारा जीवन पूर्ण हो, वह धर्म ही है। परन्तु हमें यहाँ पर इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए, कि सांसारिक जीवन असत्य, हिंसा, छल, कपट, चोरी, व्यभिचार, परद्रव्यापः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरण इत्यादि नीच कार्यों से भी पूर्ण तथा सुखमय बनता है इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि ये भी वैध कर्म हैं और इनके करने की भी छूट मिल गई। ये सर्वदा अधर्म ही रहेंगे, क्योंकि परिभाषा की दूसरी शर्त का पालन इनमें नहीं होता। मुक्ति-पथ के निर्देशक ये पदार्थ कदापि नहीं बन सकते। धर्म कभी भी अनाचार-अत्याचार करने की छूट नहीं देता। क्योंकि इनमें मानव-जीवन के लिए भय उपस्थित हो जाता है, जो धर्म के उद्देश्य के सर्वथा प्रतिकूल । धर्म मनुष्य-समाज की रक्षा के लिए है; विनाश के लिए नहीं। फिर धर्म हमारे स्वातन्त्र्य-पथ का रोड़ा कैसे हो सकता है और कैसे हमारा सर्वनाश कर सकता है? विनाशक तो हमारी अन्तर्वासनात्मक कुप्रवृत्तियाँ ही हो सकती हैं। ऐसी अवस्था में धर्म पर आक्षेप करना, लाञ्छन लगाना अविचारिता का ही द्योतक है; तथा धर्म-विषयक ज्ञान की स्वल्पता की सूचना देते हुए बौद्धिक पराधीनता की उद्ग्रीव घोषणा करता है। रही धर्म के रूप-नियम के परिवर्त्तन की बात। उसके विषय में भी यह नितान्त असन्दिग्ध तथा ध्रुव है कि धर्म मूल-रूप में कभी परिवर्त्तन का विचार तक नहीं किया जा सकता। सत्य, अहिंसा, परोपकार, उदारता इत्यादि में परिवर्त्तन इनके स्थान पर असत्य, हिंसादिक की प्रतिष्ठा नहीं की जा सकती। धर्म के बाह्यरूप-साधनों में युग की आवश्यकता की दृष्टि से परिवर्त्तन अपेक्षणीय ही नहीं, अवश्यम्भाव्य है। वह होगा, होकर रहेगा। उसके आज के युग की और पुकार के अनुरूप सनातनी धर्म-शास्त्र के विरुद्ध होने पर भी मन्दिरों में हरिजन-प्रवेश होना ही चाहिए। जो बलात् विधर्मी किए गए हैं, उनका स्वधर्म में प्रवेश तो पूर्व से ही आज्ञप्त है ही, साथ ही साथ विधर्मियों को स्वधर्म में निर्बाध प्रवेश की आज्ञा भी सनातनियों को देनी चाहिए। यदि अब भी युग-प्रवाह के विरुद्ध चलने की चेष्टा की जाएगी, तो बहुत शीघ्र वह दिन आएगा जब सनातनी समाज ही नहीं हिन्दू-जाति ही इतिहास के पृष्ठों की शोभा-मात्र रह जाएगी। इन्हीं सुधारों के साथ और भी जो बातें हमारे भारतीय जीवन की संरक्षिका हों, वे भी की जा सकती हैं। परन्तु ध्यान रहे, पारलौकिक उद्देश्य को चोट नहीं पहुँचनी चाहिए।

अब यहाँ पर यह अवशिष्ट रह जाता है कि आखिर जन-साधारण में धर्म के प्रति इस प्रकार की प्रतिकूल भावनाएं क्यों जाग्रत् हुईं, ऐसी उपेक्षावृत्ति क्यों उत्पन्न हुई? इन आक्षेपों का आधार क्या है? क्या इनकी आवाज बुलन्द हुई? इन बातों का आधार यही है; जैसा पूर्व भी कहा जा चुका है कि हमारा आधुनिक शिक्षितवर्ग पाश्चात्य विचार-धाराओं से प्रभावित हो रहा है। यद्यपि हमें यहाँ पर यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं कि पाश्चात्य विचार-धाराओं के सम्पर्क में आने से हमारा उपकार भी हुआ है। राष्ट्रीय जीवन में सुखद परिणाम हुए हैं। देश में अभिनव जाग्रति होकर नव-चेतना का संचार हुआ है। प्रतिक्षण परिवर्त्तित होते हुए समय-चक्र में हम विश्व के साथ रह सके हैं। यह सब ठीक है। परन्तु साथ ही यह भी कहते हुए हमें कोई संकोच नहीं कि इस पाश्चात्य विचार-धारा ने हमारे धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक जीवन में जो अव्यर्थ आघात किया है; उसकी भीषणता निकट-भविष्य में कम होनेवाली नहीं है। यह आघात न जाने कब तक दुख देता रहेगा। आज का उल्लेखनीय शिक्षितवर्ग भारतीय संस्कृति का जबर्दस्त हामी होने का दम भरते हुए भी अपवाद-स्वरूप कुछ गिने-चुने व्यक्तियों को छोड़कर—पूर्णतया विदेशी रंग में रँगा हुआ है। वेश-भूषा विदेशी, विचार विदेशी, रहन-सहन विदेशी यहाँ तक कि आत्मा भी विदेशी हो रही है। केवल-मात्र शरीर भारतीय रह गया है। हममें ऐसे भी पुरुषों की कमी नहीं है, जो अपने को गौराङ्ग महाप्रभुओं के साथ बैठकर भारतीय कहने में लज्जा-संकोच का अनुभव करते हैं। यह है हम पर अव्यर्थ आघात। दूसरा पहलू मार्क्सवाद जर्मनी में पैदा हुआ, जो रूस में पहुँचकर पुष्पित-पल्लवित हुआ। इसकी साम्यवाद, समाजवाद कहकर सुनहरी शब्दों में व्याख्याएं की गईं। नए-नए सुखद परिणामों का दिग्दर्शन कराया गया। विश्व की शोषित समस्त जनता ने इन नवीन प्रवृत्तियों को देखा; और देखा कि वस्तुतः इनमें हमारे लिए शोषण तथा यातनाओं से मुक्ति पाने का द्वार है। तत्काल जैसे का तैसा स्वीकार कर लिया। भारतीय जनता भी तो विश्व के ही अन्तर्गत है। इसकी धमनियों का रक्त सदियों से चूसा जा रहा है। इसने भी त्राण पाने की लालसा से रूसी कम्यूनिज्म, सोशलिज्म को औषधि समझकर गले के नीचे उतारना चाहा। इस पर कुछ विचारशील व्यक्तियों ने कहा कि 'ठहरो, थोड़ा सावधान हो लो। सोच-समझ लो। विदेशी वायुमण्डल के अनुकूल बनी हुई औषधि को एकदम मत निगलो। कदाचित हानिकर ही सिद्ध हो। इसको अपने अनुकूल बनाने के बाद सेवन करो।' उस पर भी कुछ क्षिप्रकारी आतुरों ने इस बात की अवहेलना करके जैसे का तैसा निगल लिया और कुछ ने थोड़ा परिवर्त्तन करके। इन कम्यूनिस्टों, मार्क्सवादी सोशलिस्टों,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलशेविकों का यह सर्वप्रधान नारा रहा है और अब भी है कि धर्म और ईश्वर नाम की कोई वस्तु पृथ्वी पर नहीं थी, न अब ही है। यदि थी भी, तो अब समाप्त कर दी गई। इसका परिणाम भी वही हुआ, जो प्रायः ऐसी बातों का हुआ करता है। रूसी सामाजिक जीवन जो पूर्व से ही अस्त-व्यस्त सा था; अब और भी उच्छृङ्खल, अव्यवस्थित निर्मर्याद गया। चरित्रहीनता रग रग में व्याप्त हो गई। व्यभिचार, अनाचार को प्रच्छन्न प्रोत्साहन मिला। इस बात का प्रमाण रूस का वह कानून है, जिसके अनुसार इस बढ़ती हुई सामाजिक अराजकता को रोकने के लिए परस्त्रीगामी या अवैध स्त्रीगामी को प्राण-दण्ड तक दिया जा सकता है। उन्हीं रूसी कम्यूनिस्टों के चरण-चिह्नों पर अन्धे होकर चलनेवाले भारतीय कम्यूनिस्टों, मार्क्सवादी सोशलिस्टों तथा उन स्वदेशी शरीर विदेशी आत्मा उच्च शिक्षित नरपुङ्गवों ने ही धर्म के विरुद्ध विद्रोह किया है। उन्होंने ही धर्म को आक्षेप उपालम्भ ठहराया है। नवयुवक स्वभावतः उग्र विचारों के होते ही हैं। पाश्चात्य विचार-धारा उनके मस्तिष्कों में प्रवाहित हो ही रही है, वातावरण भी तदनुकूल ही है। झट से इन उपर्युक्त महानुभावों के स्वर में स्वर मिलाकर हमारा नवशिक्षित युवक-वर्ग भी बिना सोचे-विचारे धर्म के विरुद्ध जिहाद बोल बैठा। इन्हीं की सम्मिलित आवाज हमको भारतीय वायु-मण्डल में धर्म के विरुद्ध सुनने को मिल जाती है। यद्यपि हमारे देश में धर्म-विषयक स्खलन हुआ है अवश्य और बहुत बड़ी मात्रा में हुआ है; परन्तु वह धर्म-सम्बद्ध नहीं है, जैसा कि हम ऊपर कह चुका हूँ धर्मी-सम्बद्ध है। अगर हमें सुधार करना है, विद्रोह करना है अथवा परिवर्तन करना है, तो धर्मी में ही या उसी के विरुद्ध। अनिवार्य दशा में धर्म के साधनों में भी परिवर्तन का अवकाश है।

लेख के अन्त में एक बात और अवश्य कह देनी चाहिए कि धर्म एक वस्तु है; सम्प्रदाय दूसरी। विश्वव्यापी विशाल मानव-धर्म का अपनी अपनी सुविधा-सम्मत्यनुसार विभिन्न वर्गों के द्वारा किया हुआ संकीर्ण संकुचित रूप ही सम्प्रदाय कहलाता है। इस पर प्रत्येक वर्ग की अपनी अपनी छाप लगी रहती है। अपने अपने वर्ग के नियमों से नियन्त्रित होता है। अर्थात् धर्म का कृत्रिम रूप ही सम्प्रदाय है। अब तक युग का प्रभाव पड़ा है तो केवल सम्प्रदाय पर। विकृत हुआ है, तो केवल सम्प्रदाय। अतः सुधार या परिवर्त्तन की अपेक्षा भी साम्प्रदायिक कट्टरता ही करती है। हमारे देश में जो एतद्विषयक अकाण्ड ताण्डव हुए हैं, वे कट्टर दूषित साम्प्रदायिक मनोवृत्तियों के हैं। धर्म सदैव शीतलच्छाय है, मानवजीवन का अवलम्ब संरक्षक है धर्म और साम्प्रदाय में सामान्यतः कारण-कार्य सम्बन्ध मान सकते हैं।

पावस की सन्ध्या !

श्री मदनमोहन सिनहा 'सरोज'

है दूर गगन के कोने से फैला किसका काला आँचल!
संध्या है पर क्यों रूप करुण?
पीले क्यों हुए कपोल अरुण?
क्या धड़कन बढ़ी कलेजे में?
जो दूर क्षितिज के गए वरुण!
कैसी यह विरह-व्यथा फैली जो भर आया आँखों में जल!
प्रियतम की याद सताती है
पावस की संध्या आती है।
काली चुनरी के आँचल में
शंकित हो दीप छिपाती है।
जिसकी सरकाकर छेड़ रहा वह वेग पवन का मचल-मचल!

झिलमिल-झिलमिल कर छिप जाती,
आँचल में दीपक की बाती।
किसकी समाधि पर धरने को
संध्या है दीप लिए आती?
नभमण्डल में घड़-घड़-घड़-घड़ है आज भई कैसी हलचल!
लो वे बूँदें भी निकल पड़ीं
आँखें बरसीं लग गई झड़ी।
बिजली उर अन्तर में कड़की
यह व्यथा बढ़ी अब घड़ी-घड़ी।
संध्या की लाज गई देखो पावस सजकर आया बादल!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौराष्ट्र का अमरगायक मेघाणी

माँ वसुन्धरा को रत्नों की जननी कहते हैं। इसमें अनेकों रत्न भरे पड़े हैं। इसमें चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के रत्न उत्पन्न होते हैं। अचेतन रत्न, हीरा, माणिक आदि तो राजा-रईसों की ही सम्पत्ति होते हैं किन्तु चेतन रत्न प्राणि-मात्र की सम्पत्ति कहे जाते हैं। अगर सच कहें तो ये चेतन रत्न ही असली रत्न हैं। इन्हीं रत्नों पर देश, समाज एवं राष्ट्र गर्व कर सकता है। संसार के सभी भागों में इस प्रकार के रत्न समय-समय पर पाए जाते हैं। किन्तु हमारी भारत जननी की गोद तो हमेशा ही इन महा-महिम विभूतियों या रत्नों से परिपूर्ण रही है। इनका जन्म तथा जीवन जगत् के कल्याण एवं मार्गदर्शन के लिए होता है। वे अपने उज्ज्वल धवल चरित्र से हमारे हृदयरूपी आकाश के अन्धकार में एक दिव्य प्रकाश उत्पन्न करके हमें सच्ची मानवता का दान करते हैं। ये पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और अपना कर्तव्य-कर्म पूर्ण करके पुनः अन्तर्हित हो जाते हैं। ऐसे महान् नररत्नों का जन्म जिस देश, जिस जाति और जिस समाज में होता है, वे कृतकृत्य हो जाते हैं।

ऐसे ही गुजरात के एक बृहद् नररत्न श्री झवेरचन्द जी मेघाणी थे। जिस दिन मैंने सुना कि भाई मेघाणी इस दुनिया को छोड़कर किसी अज्ञात प्रदेश में चले गए हैं, सहसा कानों ने विश्वास नहीं किया। किन्तु विश्वास करना ही पड़ा। यद्यपि उनसे मेरा कोई निकट परिचय नहीं था, फिर भी उनका साहित्य पढ़ते-पढ़ते उनके दर्शनों की हृदय में प्रबल अभिलाषा उत्पन्न हुई। और मेरी यह अभिलाषा सन् १९३८ में पूरी भी हुई। उस समय मैं यहाँ की प्रसिद्ध स्त्री-संस्था ज्योतिसंघ में हिन्दी-अध्यापिका के पद पर काम कर रही थी। मेघाणी जी कार्यवश अहमदाबाद आए हुए थे और ज्योति-संघ देखने भी आए। हमारे कार्यकर्त्ता भाई-बहनों ने उनकी तेजस्वी वाणी सुनने की इच्छा प्रकट की। यद्यपि उस समय मेघाणी जी की प्रकृति स्वस्थ नहीं थी, फिर भी जो गीत उन्होंने गाकर सुनाए थे, वे आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं और आजीवन गूंजते रहेंगे। जिन जिनको उनकी रसमयी एवं वीरतापूर्ण कविताएं उनके मुख से सुनने का अवसर मिला होगा, वे कभी भुला नहीं सकते। जंगल के निकट एक गाँव है। सिंह गाँव में आकर प्रायः हानि पहुंचा दिया करता है, एक बार जब वही सिंह गाँव में घुस आता है, तब सारे गाँव के लोग भय से काँप उठते हैं। उसी गाँव की एक किशोरी चारण-कन्या जिसकी उम्र अभी १४ साल की है, हाथ में तीर-कमान और भाला लेकर उसके मुकाबले के लिए पहुँच जाती है और ललकारती है, 'ओ रहेजे, ओ रहेजे ओ—जंगल ना कुतरा ओ रहेजे!!!' (खड़ा रह, खड़ा रह ओ—जंगल के कुत्ते खड़ा रह!) इस तरह सिंह का सामना करती है। इस भावना की शौर्यमयी कविता जिस समय भाई मेघाणी जी राग के साथ कहते थे, उस समय श्रोताओं के दिल पर उस दृश्य का चित्र सा अंकित हो जाता था। बम्बे-अहमदाबाद के निवासियों को अनेक बार उनके मुख से ऐसे अनेक वीर-गीत सुनने का सौभाग्य मिला होगा। मातृ-हृदय को स्पर्श करनेवाले वात्सल्यपूर्ण अनेक गीतों की रचना उन्होंने की है, जिनमें से कई गीत सारे गुजरात के घर-घर में नारियों के मुखाग्र हैं।

"तमे मारा देवना दीधेल छो,
तमे मारा मांगी लीधेलछो,
आया छो तो अमर थई ने रहो।"

माता अपने प्यारे पुत्र को सम्बोधन करके कहती है, तुम मेरे देव के दिए हुए हो, वरदान हो। तुम्हें मैंने माँगकर (ईश्वर से) पाया है। आए हो तो अमर होकर रहना। मातृहृदय के भावों का कितना सुन्दर स्वाभाविक चित्रण है। इसी तरह एक ग्रामीण नारी, जो निःसन्तान है, ईश्वर से याचना-प्रार्थना करती है, "खोला नो खूंद नार दमो"; मैंने बड़ा सुन्दर आँगन लीपा है। उसमें नन्हें-नन्हें पावों से चरण-चिह्न बनानेवाले हो। मैंने आटा पीसकर तैयार किया है, चक्की के चारों ओर वृत्ताकार आटे का ढेर लगा है— इस ढेरी को अपने नन्हें हाथों से बिगाड़नेवाला हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःसन्तान नारी के दिल का दर्द इस गीत में अंकित है। इसी तरह बालगीत भी उनके बहुत हैं, जिन्हें बच्चे बड़े प्रेम से गाते हैं और बालमंदिर के अध्यापकगण गा-गाकर बच्चों को लुभाते हैं। बहुत सारे काव्य, कहानी एवं उपन्यासों की भी सृष्टि उन्होंने की है। यहाँ मैं यदि उनकी रचनाओं के बारे में लिखने लगूँ तो लेख का कलेवर बहुत बढ़ जाने का भय है।

वे केवल गीत-गायक और कवि ही नहीं, किन्तु सफल कहानी-स्रष्टा के रूप में भी गुजरात के अग्रणी साहित्यिक हो गए हैं। हाल ही में उन्हें स्वर्णपदक देकर उनका बहुमान किया गया था। जिस रोज यह गुजरात का जन-गायक, जनकवि उठ गया, समस्त गुजरात ने सिर पटक लिया है, उनकी अमूल्य निधि खो गई है। गुजरात के प्रत्येक पुत्र ने इस कवि के विरह में करुण विलाप किया है।

बहुत दिन पूर्व गुजरात के हिन्दी लेखक भाई इन्द्र बसावड़ा ने मुझसे अनुरोध किया था कि स्वर्गीय मेघाणी जी की सफल कृति "धूप छाया" नामक कहानी-संग्रह का हिन्दी में अनुवाद करूँ। मैंने यह अनुवाद किया भी, परन्तु कई कारणों से वह संग्रह प्रकाशित न हो सका। हिन्दी मासिकों में जरूर कुछ कहानियाँ मैंने प्रकाशित करवाई थीं। इस सम्बन्ध में भाई मेघाणी से मैंने पत्र-द्वारा अनुमति चाही थी। मेरे पत्र का उन्होंने जो उत्तर दिया था, उसे मैं पाठकों के अवलोकनार्थ यहाँ उद्धृत कर रही हूँ। पाठक इस पत्र के द्वारा उनके हृदय की मृदुता-सौम्यता एवं नम्रता देख सकेंगे और देखेंगे कि गुजरात का यह कलाकार राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही पत्र लिखता था। उसका यह हिन्दी-प्रेम हमारे लिए गर्व की वस्तु है।

पत्र इस प्रकार है—

बोहाद
काठियावाड़
१-३-४२

माननीया बहन जी,

ता० २६-२-४२ का पत्र में से आपका कृपापूर्ण अनुराग का दर्शन पाकर मैं अत्यन्त आनंदित हुआ।

धूप छाया के गल्प आपकी प्रसन्नता के पात्र हुए हैं, जानकर मुझे आत्मसन्तोष मिला। आपके हाथों से किया हुआ अनुवाद पढ़ने की आकांक्षा भी बढ़ी। अहमदाबाद की आगामी यात्रा के समय में आपसे प्रत्यक्ष मिलकर इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में आखिरी निर्णय करूँ तो आप बाधा तो न समझेंगी? आपकी उत्तेजित हुई उत्कंठा पर मैं इससे कुठाराघात तो नहीं कर रहा हूँ न? असल बात यह है कि हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में मेरी रचनाओं का प्रवेश कराने को ऐसे अनेक प्रस्ताव मेरे पास आ चुके हैं और तो कोई जटिलता इस बात में अन्तराय देनेवाली नहीं है, सिवा कि मेरी रचनाओं का प्रवेश हिन्दी-साहित्य-सृष्टि में पर्फेक्ट रूप न होना चाहिए। वहाँ प्रवेश करने का मेरा अधिकार है कि नहीं, वह मैं पहले से प्रतीत करना चाहता हूँ। आपका प्रत्यक्ष सम्पर्क यह मुझे बराबर बतला देगा।

दूसरी भी एक बात; 'धूप छाया' के गल्पों में नए कई गल्प भी जोड़कर मैंने मेघाणी नवलिकाओं नामक पुस्तक बनाया है, जो तुरन्त प्रकाशित होनेवाला है। इसके बाद दो और खंड निकलनेवाले हैं। धूप छाया के रूप में वह संग्रह सर्वदा के लिए लुप्त हो गया है। सबब यह हिन्दी-अनुवाद भी नए तौर पर होने से अधिक उचित समझा जाएगा।

मेरा हिन्दी का ज्ञान मुझे लज्जित कर रहा है। अशुद्धियों के लिए क्षमा-प्रार्थना करता हूँ। हस्ताक्षर भी विशेष लज्जास्पद है। आपकी उदारता का प्रार्थी हूँ।

कृपाभिलाषी
झवेरचन्द मेघाणी

पाठकों ने देखा? मेघाणी भाई का हिन्दी पर भी कितना अधिकार था। मृत्यु के कुछ ही दिनों पहले वे हमारी राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति के मंत्री भाई श्री जेठालाल जी जोशी से मिले थे, उनसे समिति का सदस्य बनने की इच्छा भी प्रकट की थी। वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के अत्यन्त पक्षपाती थे, आजकल जो दो लिपियों का झगड़ा चल रहा है, उसके वे घोर विरोधी थे। राष्ट्रलिपि एक हो, इसके वे समर्थक थे।

भाई मेघाणी एक सफल पत्रकार, यशस्वी और ओजस्वी लेखक व महान् कवि थे। आज वे हमारे बीच से चले गए हैं। हम हिन्दी-भाषी जनता अपनी पड़ोसी भाषा के इस सफल कलाकार की प्रतिभा से वंचित ही रहे, यह बहुत ही खेद की बात है। अन्तःप्रान्तीय साहित्य-सम्बन्ध को अब तक स्थापित न कर पाने के कारण हम इस प्रकार साहित्यिक आदान-प्रदान नहीं कर पाए हैं। यही कारण है कि श्री मेघाणी जैसे गुजराती के प्रेमचन्द को हिन्दी में प्रवेश में भी संकोच होता था। क्या ही उत्तम होता कि भाई मेघाणी की कृति को उनके जीवित रहते हम हिन्दी में प्रविष्ट करा सकते, उनकी साध भी पूरी हो जाती। यद्यपि कविवर मेघाणी जी का पांचभौतिक शरीर नहीं रहा है, फिर भी उनका अक्षर शरीर अनन्तकाल तक मानवों को पथ-प्रदर्शित करता रहेगा। मेघाणी जी अमर हैं।

—राजकुमारी मिश्रा 'रमा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयन तुम्हें पुकारते

(१)

हृदय नहीं अधीर पर नयन तुम्हें पुकारते।
अभी निरभ्र व्योम पर गड़े हुए पुकारते,
अभी उदास साँझ पर जड़े हुए पुकारते,
अभी सुमन-समूह पर अड़े हुए पुकारते,
अभी अशक्त भूमि पर पड़े हुए पुकारते,
मगर न मैं बता सका न तुम समझ सकीं कि ये
जमीन आसमान घूम आरती उतारते।
हृदय नहीं अधीर पर नयन तुम्हें पुकारते।

(२)

कभी उठा भी दर्द तो दबा दुबा सुला दिया,
अभी दिया जला लिया अभी दिया बुझा दिया,
कभी तुम्हारी याद में न रात कल, न प्रात कल,
कभी लगा कि प्यार का अटूट प्रण भुला दिया।
प्रिये तुम्हें पुकार कर न हाथ कुछ लगे मगर
सहस्र, कल्प चाहिए बिसारते बिसारते।
हृदय नहीं अधीर पर नयन तुम्हें पुकारते।

(३)

अपार रूप सिंधु में बहे बहे फिरे नयन,
अगाध प्रेम विन्दु से रहे घिरे घिरे नयन,
कभी उठे तो स्वप्न बन के छा गए जहान पर
कभी कठोर सत्य बन बिखर बिखर गिरे नयन।
हृदय अबोध तो इधर-उधर बहल गया मगर,
तुम्हारे ध्यान में हठी नयन पलक न मारते।
हृदय नहीं अधीर पर नयन तुम्हें पुकारते।

निरंकारदेव सेवक, एम० ए०

सुरासुर-संग्राम

मेघनाद ने राम को नागपाश से बाँधा। गरुड़ उस बन्धन को काट आया। इससे गरुड़ के मन में सन्देह उपस्थित हुआ। गरुड़ ने सुना था कि राम हैं विष्णु के अवतार। वह कैसा अवतार है जो बाँधा जा सकता है और उसको मुक्त करने के लिए गरुड़ की सहायता लेनी पड़ती है? गरुड़ ने देखा कि राम का कोई प्रभाव नहीं है। जिसका नाम लेकर मनुष्य भव-बन्धन से मुक्त होता है, आश्चर्य की बात है कि क्षुद्र राक्षस उन्हें नागपाश से बाँधता है? गरुड़ के मन में अशान्ति दिखाई दी। उसने नारद से पूछा। नारद ने कहा—इस प्रकार के मोह ने मुझ पर भी अधिकार किया है। मैं कुछ निश्चय नहीं कर सका। तुम ब्रह्मा से जिज्ञासा करो। ब्रह्मा ने कहा—मैं भी इसी प्रकार का संशय-ग्रस्त हूँ। तुम शंकर के पास जाकर उनसे पूछो। शंकर बोले—बहुत दिन तक साधु-संग करने से सन्देह दूर होता है। सत्संग में हरिकथा की आलोचना होती है। उस आलोचना से प्रमाणित होता है कि राम ही भगवान् हैं। बिना राम-कथा के मोह नहीं छूटता। मोह दूर न होने से राम-पद में यथार्थ अनुराग नहीं होता। भक्ति न होने से यह विश्वास नहीं होता कि राम ही भगवान् हैं।

भक्त के हित के लिए राम ने मनुष्य-शरीर धारण किया था। साधारण मनुष्य के सदृश, तथापि परम पवित्र चरित्र वे दिखा गए हैं। किन्तु राम का नर-रूप उनका सम्पूर्ण अपना रूप न था। नट जैसे नाना प्रकार के वेश धारण करके नाना भूमिकाओं का अभिनय करता है और प्रत्येक भूमिका का उपयोगी भाव दिखाता है, किन्तु कोई भी भाव उसका अपना नहीं होता, उस प्रकार भिन्न-भिन्न युगों में नाना रूपों में जगत् में अवतीर्ण होकर भगवान् ने अभिनय किया है। त्रेता युग में वे राम-रूप में मनुष्याकार ग्रहण कर खेल खेल गए हैं।

राम नामक एक व्यक्ति ने जन्म ग्रहण किया था, विवाह किया था, युद्ध किया था तथा राज्य-शासन किया था। इन कार्यों में वे आदर्श चरित्र दिखा गए हैं। अतएव क्या उन पर पूर्ण ईश्वरत्व आरोपित किया जा सकता है? यदि ऐसा किया जाए तो कुछ परिमाण में कल्पना का प्रयोग करना पड़ता है। अपूर्ण पर पूर्णत्व लादकर मनुष्य अपना प्रयोजन सिद्ध कर लेता है। पद-पद पर मनुष्य-रूपधारी अपूर्ण अवतार की त्रुटियाँ पकड़ी जा सकती हैं, किन्तु भक्त अपनी कल्पना-शक्ति के प्रभाव से उनमें ईश्वरत्व अनुभव करता है। यह काल्पनिक अवतार उसके पास इतिहास के व्यक्ति से भी अधिक सत्य है।

रामचन्द्र मानव-चरित्र-अभिनय करके हम लोगों को मुक्ति का पथ दिखा गए हैं। एक खंड प्रस्तर की तो कोई कार्यावली नहीं रहती है, तथापि मनुष्य शालग्राम शिला पर भक्ति अर्पण कर, उस पर पूर्णत्व का आरोप कर, जो कुछ पाना चाहता है, पा लेता है। मुक्ति-पथ के पथिक की धारणा में राम-चरित्र पर आस्था स्थापन करने में भरोसा तथा सान्त्वना की मन्त्र-शक्ति है।

साहित्य-क्षेत्र में एक सुन्दर प्रणाली का आश्रय लिया जाता है, जिसके द्वारा कठिन विषय भी सहज में समझाया जा सकता है। कुछ अवच्छिन्न भावों (abstract ideas) को वास्तव वा सजीव आकार दे के उन जीवों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल्पनिक कार्यावली के वर्णन को अलंकार-शास्त्र में रूपक (allegory) कहते हैं।

जब हम पुतलों का नाच देखते हैं, तब यह भूलकर कि पुतले स्वाँगमात्र हैं, असली जीव नहीं, हम उनके कातर क्रन्दन से क्लेश अनुभव करते हैं, उनके आनन्द से आनन्द बोध करते हैं, उन्हें युद्ध करते देख हमारे मन में उत्तेजना का उदय होता है। सत्य घटनाएँ देखने से हमें जिन-जिन रसों का आस्वादन मिलता, पुतलों का खेल देखकर भी प्रायः वही मिलता है। इसी कारण थियेटर, रासधारी, बायस्कोप इत्यादि इतने आकर्षक हैं।

रामायण की ऐतिहासिक भित्ति रहने पर भी वह रूपक माना जा सकता है। रावण के साथ राम का युद्ध हुआ था। रावण था राक्षसों का राजा। राक्षस कौन हैं? जो लोग शुभ आचरण नहीं करते, न किसी को करने देते हैं, जो लोग देवता, ब्राह्मण, गुरु नहीं मानते, जो यज्ञ नष्ट करते हैं, जो वेद-पुराणों के विरोधी हैं, वे ही हैं राक्षस। इन राक्षसों को खोजने के लिए बहुत दूर जाना नहीं पड़ता। हृदय में ही राक्षसों का दल बसता है। उनका राजा भी हृदय में ही रहता है। इन राक्षसों के अत्याचार से पृथिवी व्याकुल हो रही है। बिना राम वा हरि के कौन उनका दमन कर सकता है? राम कहाँ हैं? वे भी हृदय में ही रहते हैं। आवश्यक है केवल भक्ति, उनके प्रकाश के लिए।

हृदय में जब राक्षसों का उत्पात होने लगता है, अर्थात् कुप्रवृत्ति-समूह की वृद्धि होती है, तब ही उनके दमन के लिए हृदयस्थ भगवान् जाग्रत् होते हैं। नाना उपाय से—चाहे सुभाव उत्पन्न करके हो, चाहे शारीरिक वा मानसिक पीड़ा देकर हो, भगवान् दुरात्मा को कुमति छोड़ने को बाध्य करते हैं।

प्रतिभाशाली कविगण मानव-मन के इस विप्लव का अनुभव करने को, और उसे वास्तव आकार दान करने को, समर्थ हैं। वे रूपक-रचना के द्वारा यह कार्य सम्पन्न करते हैं।

बाल्मीकि ने रामायण नामक एक दीर्घ रूपक की रचना कर उसमें मानव-मन की नाना मन्द प्रवृत्तियों को कुछ राक्षसों का नाम (यथा रावण, मेघनाद, कुम्भकर्ण इत्यादि) देकर उनकी दुर्वृत्तताएँ परिस्फुट की हैं। और दूसरी ओर सुप्रवृत्ति-समूह को राम, लक्ष्मण, भरत, सीता, हनुमान, विभीषण इत्यादि नाम देकर दोनों दलों की लड़ाई का वर्णन किया है। ग्रंथकार ने इस संग्राम में साधु-प्रकृतिवाले व्यक्तियों की जय और असाधु-प्रकृतिवाले राक्षसों (रावण इत्यादि) की पराजय तथा निधन का वर्णना कर सत्-पथ का शुभ तथा असत्-पथ का अशुभ परिणाम दिखाते हुए मनुष्य-समाज को सुशिक्षा दी है।

रावण के दौरात्म्य से हृदय के प्रभु ने जागकर उसका सामूहिक वनाश किया। रावण कुमति तथा पार्थिव सम्पद से समृद्ध था। दुष्प्रवृत्ति का वह विराट् स्वरूप सुमति तथा दिव्य विभव युक्त शक्ति के संघर्ष से बहु उत्पाटित हुआ। युद्ध के समय रावण मरते-मरते भी मरता था—एक मस्तक छिन्न होने पर गले के उस स्थान पर दूसरा मुंड तुरन्त उत्पन्न हो जाता था। दुष्प्रवृत्ति तथा हिंसा को निर्मूल करना बहुत ही कठिन है। अन्त में रावण मरा और विमलीकृत हृदय में धर्म-राज्य वा राम-राज्य प्रतिष्ठित हुआ।

यही है राम-रावण के समर का भीतरी भाव। इसका बाहरी आकार है, अवतार के रूप में राम का कार्य-कलाप। वह कथा भी पवित्र, मंगलदायक तथा भक्ति-प्रद है। दोनों धाराएँ ही हैं मनोहर और भक्तिजनक। बाहरी धारा की घटनावली, स्थानसमूह तथा चरित्रसमूह असत्य प्रतीयमान नहीं होते। इतिहास गिने जाने में यह सम्पूर्ण सत्य न भी हो सकता है, किन्तु कल्पनालोक के इतिहास की मर्यादा से इसकी मर्यादा लघु नहीं है, यह इतिहास से भी अधिक सत्य है।

महाभारत-वर्णित कुरु-पांडव की वीरता भी इस प्रकार के नैतिक संघर्ष का एक रूपक कही जा सकती है। द्वापर युग में कृष्ण-रूप में धरा में अवतीर्ण होकर भगवान् ने समयोपयोगी खेल खेला था।

—डा० नलिनीमोहन सान्याल, एम० ए०, पी० एच०
डी०, साहित्य-वाचस्पति

अनिवार्य

रात को गगन में ज्योति के असंख्य दीप जलते हैं, दिन को केवल एक दीप होता है; फिर भी गगन रात को उतना उज्ज्वल नहीं हो पाता, जितना दिन को। दिन के एक दीप के बुझ जाने पर जो अँधेरा छा जाता है, उसे हजारों-लाखों दीप-शिखाएँ कब हटा पाती हैं!

तुम मेरे जीवन-गगन से अस्त हो जाओ तो आकाश और पृथ्वी की सारी ज्योतियाँ भी कुहू के काले पट-सी छाई रहेंगी। मेरे हृदय में तुम्हारे अवर्णनीय प्रेम की एकमात्र दीप न रहे तो दूसरों के लाड़-दुलार की बड़ी-से-बड़ी मात्रा भी मेरे हृदय में प्राण न फूंक सकेगी।

—उमर

तुम मेरे लिए अनिवार्य हो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

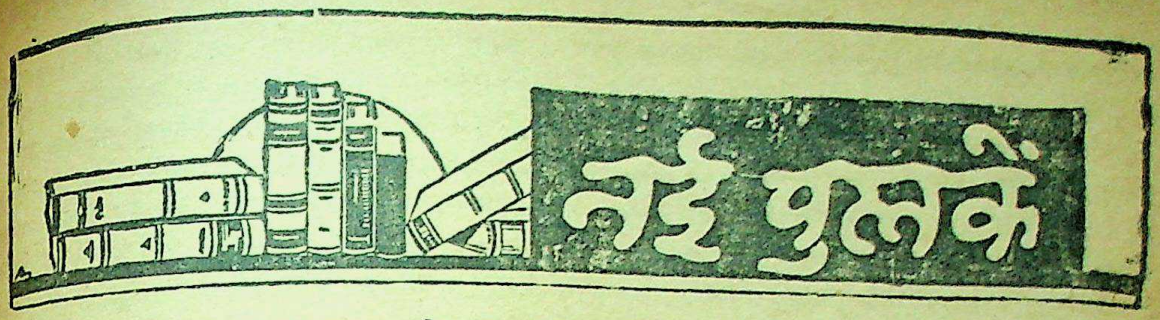

१—महादेवी की रहस्य-साधना—लेखक, प्रो० विश्वम्भर 'मानव' एम० ए०; प्रकाशक, विश्वम्भर 'मानव' एम० ए०, बनवटा, मुरादाबाद; पृष्ठ-संख्या १८९; मूल्य २) मात्र।

'साहित्य-कला संश्लेषणात्मक है, अतएव अविभाज्य है'। कहते-सुनते हम बराबर चले आ रहे हैं, फिर भी भावयित्री प्रतिभा के साहित्य में निरन्तर भेदों का विवेक बढ़ता जा रहा है। भावयित्री प्रतिभा के साहित्य के विषय में भी यह सत्य है। इस वाद-युग में प्रत्येक राजनीतिकवाद भी साहित्यिकवाद बनता जा रहा है। लेखकों और समालोचकों सभी की दृष्टि इनके साथ दौड़ लगा रही है। साहित्य के लिए यह हितकर है अथवा अहितकर इसकी चर्चा यहाँ करनी ही नहीं। फिर भी साहित्य की मर्यादा की रक्षा के लिए तथा उसके सनातन और स्थायी स्वरूपों की सुरक्षा के लिए प्रयत्नतः इन वादों से बचना होगा। समीक्षकों का यह पहला कर्त्तव्य है।

प्रस्तुत ग्रन्थ एक समीक्षा-ग्रन्थ है। किसी भी कवि की सच्ची समीक्षा के लिए हमें उसकी कृतियों को पहले मान्य और कवि की दृष्टि से अतीत करना चाहिए। समालोचक की भी अपनी दृष्टि होती है, किन्तु वह वहीं तक स्वागत योग्य समझी जाएगी जहाँ तक कि वह कृती और कृति पर अपने विचारों को लादता न जान पड़े। फिर सिद्धान्तों और नियमों की चर्चा भी रह जाती है, परन्तु ऐसी आलोचना करते हुए यह दृष्टि में रखना कि लक्षण ही लक्ष्य नहीं तथा साहित्याधार पर सिद्धान्त निर्मित हुए हैं न कि उनके आधार पर साहित्य, परमावश्यक है। सत्समालोचक वही होगा जिसकी दृष्टि न तो शास्त्र में उलझकर रह जाएगी और न साहित्य में अपनी रुचियों का अभिनिवेश भर करेगी। यहाँ यह भी ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि उस साहित्य की मूल भावना लोकबाह्य तो नहीं। इसके लिए सभी काव्य के साहित्यिक अन्तःकरण का, उदारचेता और शास्त्र-ज्ञानसम्पन्न होना चाहिए। हम यह कहते हुए उत्साहित हो रहे हैं कि श्री मानव ने इस समीक्षा-ग्रन्थ के द्वारा अपने को योग्य समीक्षक प्रमाणित कर ही दिया है।

महादेवी के काव्य-विवेचन में समीक्षक ने सर्वोपरि महत्त्व और प्रामाणिकता कवि की दृष्टि तथा उससे अनुप्राणित काव्य को दी है। इस प्रकार इस रचना ने सबसे पहला महत्त्व का काम कवियित्री को समझने और समझाने का ही किया है। ग्रन्थ १७ अध्यायों में विभक्त है। पहले अध्याय में लेखक ने साहित्यिक संस्मरण मात्र प्रस्तुत किया है, जिससे उसका कवयित्री के प्रति अगाध श्रद्धाभाव स्पष्ट हो जाता है। 'रहस्यवाद की ओर' अध्याय में समालोचक ने महादेवीजी के सम्पूर्ण गद्य-पद्य-साहित्य से संकेत बटोरकर उनकी रहस्यवादी प्रवृत्ति के प्रेरक स्वरूप का दिग्दर्शन कराया है। "रहस्यवाद वैराग्य-मिश्रित अनुराग है—वैराग्य सृष्टि से, अनुराग ब्रह्म के प्रति" यहीं उसने हमें रहस्यवाद की एक छोटी-सी पर सुन्दर और स्पष्ट परिभाषा भी दे दी है, जिसका आगे के पृष्ठों में वह विकास ही करता गया है।

तीसरे अध्याय में लेखक रहस्यवाद और छायावाद के विरोधों की चर्चा करता हुआ बताता है कि इन विरोधियों में किस प्रकार अज्ञ, विद्वान् और द्वेषी सभी थे। चौथे और पाँचवें अध्याय छायावाद और रहस्यवाद पर हैं। इनमें छायावाद पर लेखक का विचार कदाचित् स्पष्टतः हो ही नहीं सका।

यहाँ तक तो समीक्षक ने एक प्रकार से केवल अपने मुख्य विषय पर आने की तैयारी भर की है। छठे अध्याय में लेखिका के काव्य-विकास का महत्त्वपूर्ण प्रसंग उठाया है। इसके बाद तो वह रहस्यवादी साहित्य के तत्त्वों का विवेचन करने लगता है। किन्तु इनमें भी काव्यालोचन किसी भी प्रकार बाधित न हो सका। 'साध्यः परमतत्त्व', 'साधिकाः आत्म-तत्त्व', 'साधना भूमिः प्रकृति-तत्त्व' इनके विशद विचार ने मानो महादेवी का काव्य-विश्लेषण करके पाठकों के विचरण की भूमि परिष्कृत कर दी। दशम और एकादश अध्यायों में कवियित्री के बाद का दार्शनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार और साधना-पथ का स्पष्टीकरण किया है। उसके अनुसार 'महादेवी जी ने अपने लिए ज्ञान का सूक्ष्मतम पथ चुना है।' बारहवें अध्याय में महादेवी के दुःखवाद का समर्थन तथा उस पर लगाए आरोपों का निरसन किया है। 'माधुर्य भाव' वाले अध्याय में आलोचक ने बड़ी ही मार्मिकतापूर्वक महादेवीजी के काव्य-दोषों का संकेत भी कर लिया है।

'प्रणयानुभूति' 'कला' और 'एक दीपक पर' इनमें साहित्यिक समीक्षा का सुष्ठु और गौरवशाली विकास हुआ है। पिछले अध्यायों में भी समीक्षक दार्शनिक अथवा साहित्येतर प्रश्नों की चर्चा करता हुआ भी महादेवी जी के साहित्यालोचन से विमुख नहीं हो सका। किन्तु इन तीन अध्यायों में वह आलोच्य के प्रति अधिक तत्पर जान पड़ता है। 'प्रणयानुभूति' में 'काव्य' पक्ष से तात्त्विक विचार हुआ है। 'कला' अध्याय में महादेवीजी के काव्य का जो सैद्धान्तिक विवेचन हुआ है वह कवियित्री और भावक दोनों के लिए गौरवास्पद है। इसमें भाव, भाषा, छन्द, प्रतीक, रूपक, समासोक्ति, अलंकार, चित्रकला और काव्य-विकास सभी का शास्त्रीय विचार हुआ है।

सोलहवें अध्याय में लेखक ने कबीर, जायसी, मीरा, रवीन्द्र, 'प्रसाद', पन्त और निराला के रहस्यवाद से महादेवीजी के रहस्यवाद की तुलना कर उनका महत्त्व प्रतिपादित कर दिया है। तुलना निस्सन्देह निष्पक्ष और विद्वत्तापूर्ण हुई है और आज एकमात्र महादेवीजी को ही शुद्ध और श्रेष्ठ रहस्यवादी प्रमाणित करती है।

'अवशेष' में लेखक ने महादेवीजी की जो प्रशस्ति की है उसका साहित्यिक महत्त्व क्या है, अथवा उतना ही जितना कि 'मानव' जी ने आँका, हमारे विचारकों के अधीन ही रहेगा।

'महादेवी की रहस्य-साधना' यह शास्त्र सम्पादन की इच्छा से प्रस्तुत की गई समीक्षा नहीं। भावक की कारयित्री प्रतिभा (Creative Faculty) का उत्तम उदाहरण है। विवेचना अधिकांश में व्याख्यालब्ध और प्रभाववादी ही हुई है। भाषा और विषय विन्यास उत्तम है। आलोचक का हृदय सर्वत्र प्रबल रहा है। फिर भी विद्यापति को स्पष्टतः भक्त कवि मानना (देखिए, 'कला' अध्याय) और 'विदूरित' जैसे प्रयोग करना चिन्त्य है।

गेट-अप भावपूर्ण और उपयुक्त है। —भिक्खु

२—माटी की मूरतें—(कहानी-संग्रह) लेखक, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी; प्रकाशक, पुस्तक भण्डार, पटना; पृष्ठ ११४; सजिल्द प्रति का मूल्य ३) रु०।

ग्रामीण जीवन के ग्यारह शब्द-चित्र इस संग्रह में संगृहीत किए गए हैं। लेखक ने स्वयं इन शब्द-चित्रों के सम्बन्ध में लिखा है—'ये कहानियाँ नहीं, जीवनियाँ हैं। ये चलते-फिरते आदमियों के शब्द-चित्र हैं और मानता हूँ, कला ने उन पर पच्चीकारी की है; किन्तु मैंने ऐसा नहीं होने दिया कि रंग-रंग में मूल रेखाएँ ही गायब हो जाएँ। मैं उसे अच्छा रसोइया नहीं समझता, जो इतना मसाला रख दे कि सब्जी का मूल स्वाद ही नष्ट हो जाए। कला का काम जीवन को छिपाना नहीं, उसे उभाड़ना है। कला वह जिसे पाकर जिन्दगी निखर उठे, चमक उठे।'

सन्देह नहीं कि बेनीपुरीजी की ये कहानियाँ इतनी सजीव हैं कि पढ़ते समय हम उनके पात्रों के सुख से सुखी और दुख से दुखी हो उठते हैं। कहानी कहने की उनकी अपनी शैली है, जो पाठक को कहानी प्रारम्भ करने पर उसे अन्त तक पढ़े बिना दम नहीं लेने देती। भाषा मुहावरेदार और प्रवाहपूर्ण है। आधुनिक कथा-साहित्य में 'माटी की मूरतें' सोने-चाँदी की मूरतों से भी अधिक मूल्यवान् सिद्ध होंगी, इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं। प्रत्येक कहानी-प्रेमी को 'माटी की मूरतें' मुग्ध करने की क्षमता रखती हैं।

पुस्तक की छपाई-सफाई सुन्दर, कागज बढ़िया और आवरण पृष्ठ तथा जिल्द आकर्षक है।

३—रामलीला (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्री राधाकृष्ण; प्रकाशक, पुस्तक-भण्डार, पटना; पृष्ठ-संख्या १६६; मूल्य १।।) रु०।

इस संग्रह में लेखक की अठारह कहानियाँ हैं। श्री राधाकृष्णजी की कहानियाँ युग-व्यापी समस्याओं पर प्रकाश डालनेवाली होती हैं। इन कहानियों में भी जन-साधारण के दैनिक जीवन का प्रतिबिम्ब झलक रहा है। राशनिंग की कठिनाइयाँ, संसारव्यापी महँगाई, मानवी क्रूरता और गरीबी का दर्दनाक चित्रण इन कहानियों की अपनी विशेषता है। इनके अतिरिक्त संग्रह में जहाँ कुछ कहानियाँ भावपूर्ण और कलात्मक हैं, वहीं दो-एक कहानियाँ बहुत साधारण भी हैं। लेकिन सब मिलाकर संग्रह उपादेय कहा जायगा। आवरण-पृष्ठ आकर्षक और छपाई-सफाई सुन्दर है।

४—चलते चित्र (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्री शिवचन्द्र; प्रकाशक, पुस्तक-भण्डार, पटना; पृष्ठ-संख्या १४२; मूल्य १।) रु०।

लेखक की अठारह कहानियों का यह संग्रह अनुभूति की प्रखरता और कुशल अभिव्यक्ति से ओतप्रोत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानियों के पात्र इतने सजीव हैं कि पाठक उनकी ही दुनिया का प्राणी बनकर कहानी के प्रवाह में बह जाता है। यथार्थ परिस्थितियों को चित्रित करने में, लेखक की सहज-सुकुमार भावनाएँ और उसकी कची के गहरे रंग पाठक को आकृष्ट कर लेने की क्षमता रखते हैं। गरीबी का अभिशाप, प्रेम की रंगीनियाँ और राष्ट्रीयता के यज्ञ-कुण्ड में प्राणों का होम—सभी कुछ इन कहानियों में विद्यमान हैं। परिष्कृत रुचि के कहानी-पाठकों के लिए यह संग्रह उपयोगी सिद्ध होगा। आवरण-पृष्ठ तिरंगा और कलापूर्ण तथा छपाई-सफाई नयनाभिराम है।

५—धर्मवीर हरदौल (नाटक)—लेखक, कुँवर मुकुन्दसिंह पलेरावाले; प्रकाशक, बाबू श्यामस्वरूप श्रीवास्तव, दतिया, पृष्ठ-संख्या ९०; मूल्य १) रु०।

यह ऐतिहासिक नाटक सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखा गया है। रंगमंच पर इसे सरलतापूर्वक अभिनीत किया जा सकता है। आज जब सवर्ण हिन्दुओं और दलित जातियों के बीच, साधारण-सी बातों को भी राजनीति का गहरा रंग देकर, चौड़ी खाई खोदी जा रही है, तब बुन्देलखण्ड के धर्मवीर हरदौल की यह पावन गाथा, राष्ट्रीयता की पृष्ठ-भूमि को अपेक्षाकृत अधिक पुख्ता करने में सहायक सिद्ध होगी।

नाटक के गीतों में यदि साहित्य, संगीत और ओज की त्रिवेणी लहराती, तो नाटक में चार चाँद लग जाते। पात्र-पात्रियों की संख्या भी कुछ कम होती, तो इसे अभिनीत करने में अधिक सुविधा होती। फिर भी, सब मिलाकर नाटक रोचक और सफल कहा जा सकता है।

६—आत्मकथा—लेखक, देशरत्न डाक्टर राजेन्द्र-प्रसाद; प्रकाशक, साहित्य-संसार, पटना; पृष्ठ ६७६ (रायल अठपेजी); मूल्य १२) बारह रुपये।

राजेन्द्र बाबू बिहार की वह महती देन हैं, जिस पर समस्त राष्ट्र को गर्व है। राष्ट्रीय जागरण में अपनी समस्त शक्तियाँ लगा देनेवाले हमारे देश के इने-गिने से कर्णधारों में राजेन्द्र बाबू का बहुत ऊँचा स्थान है। उनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण है। सादा जीवन और उच्च विचार उनके जीवन का मूल मंत्र है।

इस आत्मकथा में जहाँ राजेन्द्र बाबू के व्यक्तिगत त्याग और तपस्या का क्रमिक विकास हमारे सामने आता है, वहीं प्रबुद्ध भारत का शृङ्खलाबद्ध इतिहास भी राजनीतिक घटनावलियों के साथ हमारे नेत्रों के सामने सजीव-सा हो उठता है।

राजेन्द्र बाबू की प्रारम्भिक जीवन-कथा जहाँ बिहार के सामाजिक रस्म-रवाजों और ग्राम-जीवन का चित्र प्रस्तुत करती है, वहीं सन् १९१७ से लेकर सन् १९४६ ई० तक हमारे देश के सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन का इतिहास भी कहती है।

आत्मकथा की भाषा अत्यन्त सरल और प्रवाहपूर्ण है। शैली इतनी रोचक है कि किसी दिलचस्प उपन्यास की तरह साधारण-सा पाठक भी इसे आद्योपान्त पढ़े बिना दम नहीं ले सकता। हिन्दी-भाषी जनता के लिए, देश के इस महान् कर्णधार की यह आत्मकथा, जो मौलिक रूप से हिन्दी में ही लिखी गई है, उपादेय और संग्रहणीय है। पुस्तक की छपाई-सफ़ाई, जिल्द और आवरण-पृष्ठ आदि नयनाभिराम हैं।

७—कच्चा धागा (कहानी-संग्रह)—लेखक, श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'; प्रकाशक, शिक्षा-सदन, ४।१३३, गोवर्द्धन सराय, बनारस; पृष्ठ-संख्या १२२; मूल्य २) रु०।

दो अध्याय, हृदय का घाव, प्रतिकार और कच्चा धागा नामक चार लम्बी-लम्बी कहानियाँ इस संग्रह में दी गई हैं। चारों कहानियों के कथानक सुलझे हुए, पात्र सजीव और भाषा मंजी हुई है। निर्गुणजी की अभिव्यक्ति मर्मस्पर्शी और शैली रोचक है। कहानियाँ पढ़नेवाले सभी तरह के पाठकों का मनोरंजन करने की क्षमता इस संग्रह में है। आवरण-पृष्ठ कलापूर्ण, किन्तु एकरङ्गा है।

८—प्रेमी-अभिनन्दन-ग्रंथ—संयोजक तथा सम्पादक, विभिन्न छयालीस विद्वान और विदुषियाँ; प्रकाशक, श्री यशपाल जैन, बी० ए०, एल-एल० बी०, मन्त्री, प्रेमी-अभिनन्दन-ग्रन्थ समिति, टीकमगढ़; पृष्ठ ७५१; मूल्य १०) रु०।

यह ग्रन्थ नौ भागों में विभक्त है। प्रारम्भिक ६१ पृष्ठों में श्री नाथूराम प्रेमी, अध्यक्ष, हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर, बम्बई के जीवन और उनकी कृतियों का परिचय तथा यशगान है। अवशिष्ट आठ भागों में हिन्दी, मराठी और गुजराती साहित्य के विभिन्न विद्वानों के विभिन्न-विषयक ज्ञातव्य और मननशील लेख संगृहीत किए गए हैं।

ग्रन्थ में प्रख्यात चित्रकार श्री सुधीर खास्तगीर के कलापूर्ण चित्र और प्रेमीजी तथा उनके परिवार के भी चित्र दिए गए हैं। कुछ अन्य चित्र भी हैं।

श्री यशपाल जैन ने ग्रन्थ की आयोजना पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "श्रद्धेय नाथूरामजी प्रेमी को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का विचार वास्तव में उस दिन उदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय भाषा और लिपि

लाहौर का दैनिक हिन्दी मिलाप अपने सम्पादकीय में लिखता है

यद्यपि हमारा विचार विश्वास की सीमा तक पहुँच चुका है कि भारतीय विधान-परिषद् हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा और देवनागरी को ही राष्ट्रलिपि मानेगी, तथापि हम राष्ट्र के कर्णधारों को चेतावनी देना चाहते हैं कि यदि उन्होंने इसके अलावा कोई और निर्णय किया तो कांग्रेस का इतना तीव्र विरोध होगा कि जितना आज तक अभी नहीं हुआ। संभव है, इसी प्रश्न पर कांग्रेस को पदच्युत होना पड़े, क्योंकि हिन्दी--केवल हिन्दी के अतिरिक्त किसी भी और भाषा अथवा लिपि को देश राष्ट्रभाषा मानने के लिए तैयार नहीं है।

ये शब्द लिखने की हमें आवश्यकता इसलिए पड़ी कि हम कांग्रेस में फिर कुछ ऐसे लोगों की आवाज उभरती देख रहे हैं, जो मुस्लिम लीग के फिफ्थकालम हैं अथवा उनका हृदय दो-चार मुसलमानों के लिए इतना कोमल हो जाता है कि वे न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित का कतई ध्यान नहीं करते। हमने अचंभे के साथ पढ़ा कि 'बाम्बे क्रानिकल' के सम्पादक श्री अब्दुल्ला ब्रेलवी ने कांग्रेसी नेताओं को इस आशय के पत्र लिखे कि वे हिन्दी की बजाय हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा मानें। इससे से भी अधिक अचम्भा हमें यह सूचना प्राप्त करके हुआ कि जब विधान-परिषद् के कांग्रेसी सदस्यों की सभा में हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का निश्चय हुआ, तो राजकुमारी अमृत कौर ने इसका सख्त विरोध किया। हिन्दुस्तानी का समर्थन किया। हम समझ नहीं सके कि आखिर इन दोनों महानुभावों की इस माँग का आधार क्या है?

गांधी जी के आदेशानुसार अनेकों विद्वानों के सतत प्रयत्नों के बावजूद आज तक हिन्दुस्तानी भाषा की कोई रूपरेखा बन नहीं सकी। इस बारे में डाक्टर ताराचन्द जैसे भाषा-विशेषज्ञ की ईमानदारी में किसी को सन्देह नहीं हो सकता। उन्होंने जी-तोड़ कोशिश की कि हिन्दुस्तानी की कोई शक्ल बन सके; लेकिन उन्हें तनिक भी सफलता मिली हो, इसमें हमें सन्देह है। कुछ अन्य विद्वानों के सहयोग से हिन्दुस्तानी का एक साधारण शब्द-कोष भी बनना शुरू हुआ। इसके कुछ शब्द 'हरिजन' में बराबर छपते रहे। परन्तु, क्या कोई व्यक्ति कह सकता है कि वह शब्द ही हिन्दुस्तानी थे? हमें याद है, एक बार आल इंडिया रेडियो से पाँच-सात विद्वानों के हिन्दुस्तानी पर भाषण कराए गए। भाषणकर्त्ताओं में डाक्टर ताराचन्द, डाक्टर अब्दुल हक, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, श्री आसफअली, श्री बृजमोहन दत्तात्रेया कैफी आदि व्यक्ति थे। प्रत्येक व्यक्ति ने यही कहा कि जो भाषा वह बोल रहा है, वही हिन्दुस्तानी है और वास्तविकता यह थी कि सबकी भाषाएँ न केवल अलग थीं, अपितु परस्पर-विरोधी भी। यही अवस्था आज भी है। कहने को कहा जाता है कि मैं हिन्दुस्तानी बोल रहा हूँ। परन्तु, वह हिन्दी बोल रहा होता है। अथवा उर्दू।

यदि हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा मान लिया जाय तो हमारी राष्ट्रभाषा के दो रूप होंगे। हिन्दी जाननेवाला हिन्दुस्तानी बोलते हुए कहेगा, "हमारी राजनैतिक समस्याओं का हल सामाजिक, आर्थिक और अन्तराष्ट्रीय समस्याओं के साथ ही हो सकता है!" उर्दू जाननेवाला हिन्दुस्तानी बोलते हुए कहेगा, "हमारे स्यासी मामलों का हल मजलसी, इक्तसादी और बेनुलकवामी मसलों के साथ ही हो सकता है।" और यदि हिन्दी तथा उर्दू को मिलाकर इसी वाक्य को एक नया रूप देने का प्रयत्न किया जाए तो अनुचित संतान की तरह इसका रूप यह होगा--हमारी राजनैतिक समस्याओं अर्थात् (अथवा यानी) स्यासी मसलों का हल सामाजिक अर्थात् मजलसी, आर्थिक अर्थात् इक्तसादी और अन्ताराष्ट्रीय अर्थात् बेनुलअकवामी समस्याओं अर्थात् मसलों के साथ ही हो सकता है।" वर्णसंकर भाषा का एक रूप और भी हमने रेडियो पर सुना है। जब बहुत शोर मचा कि रेडियो पर अरबी-फारसी के शब्द अधिक बोले जाते हैं तो समाचारों में यह भाषा प्रयोग होने लगी, "स्यासी, आर्थिक और कल्चरल बातों की तरफ ध्यान दिया जायगा।" स्यासी फारसी, आर्थिक हिन्दी और कल्चरल अँगरेजी भाषा के शब्द एक ही साँस में बोले गए। क्या इसे आप अपनी राष्ट्रभाषा मान सकते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह से लिपि का प्रश्न है। हिन्दुस्तानी को राष्ट्र-भाषा माननेवालों का कथन है कि राष्ट्रभाषा दो लिपियों में लिखी जाय--देवनागरी और फारसी। ए बात केवल इसीलिए अस्वीकार कर ठुकरा देने के योग्य नहीं है, क्योंकि फारसी लिपि एक विदेशी, अवैज्ञानिक और बेढङ्गी लिपि है--अपितु इसलिए कि संसार भर में कभी किसी राष्ट्रभाषा की दो लिपियाँ नहीं हुईं। संसार के सभी देश तो यह प्रयत्न कर रहे हैं कि किसी तरह सभी देशों की भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जाएँ, लेकिन हमारे मेहरबान भारत की राष्ट्रभाषा को ही दो लिपियों में लिखना चाहते हैं। दो लिपियों की माँग करनेवालों को मालूम होना चाहिए कि संसार की दो बड़ी भाषाएँ अंगरेजी और फ्रेंच एक ही लिपि में लिखी जाती हैं। ग्रीक, स्पेनिश, जर्मन और योरुप की अनेकों अन्य भाषाएँ भी थोड़े से परिवर्तन के साथ रोमन लिपि में ही लिखी जाती हैं। ऐसे अवसर पर एक देश की भाषा के लिए दो सर्वथा भिन्न--परस्पर विरोधी लिपियों की माँग करने-वालों को कौन समझदार कहेगा?

दो लिपियाँ होने से साहित्य और सरकारी सामग्री छापने पर खर्च कितना बढ़ जाएगा, इसकी ओर भी दो लिपियों की माँग करनेवालों ने ध्यान दिया है कभी? दो गुना खर्च तो पहले ही हो गया और कठिनाई उठानी पड़ी सो अलग। यही नहीं, सारे राष्ट्र को इन लोगों की कृपा से लिपियाँ सीखनी पड़ेंगी। सभी स्कूलों और कालिजों में दो तरह के अध्यापक रखने पड़ेंगे। प्रश्न-पत्रों और उत्तर-पत्रों के लिए दो तरह के प्रबंध करने पड़ेंगे।

क्या इतना खर्च, इतनी असुविधा, इतनी कठिनाई का सामना केवल इसलिए किया जाय कि कुछ मुसलमानों को खुश करना है? हम उर्दू विरोधी नहीं हैं? उर्दू फले-फूले, पनपे, बढ़े। हमें आपत्ति नहीं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि उर्दू-प्रेमियों के लाड़-चाव को पूरा करने के लिए ३२ करोड़ व्यक्तियों के गले अनचाहा ढोल बाँध दिया जाय कि वे इसे पीटा करें। इसीलिए हमने उपरोक्त चेतावनी देनी जरूरी समझी। अन्त में कह दें कि इस चेतावनी की पृष्ठभूमि पर करोड़ों हिन्दी-प्रेमियों की प्रबल भावनाएं अंकित हैं, जिन्हें ठेस पहुँचाना एक खतरनाक खेल है।

राष्ट्रव्यापी सैनिक-शिक्षा

प्रादेशिक विभाजन के साथ ही भारतीय सैन्यशक्ति के भी दो भाग कर देने का निर्णय कर दिया गया है। इसी की ओर संकेत करते हुए महात्मा गांधी ने उस दिन अपनी सांध्य प्रार्थना में खेद के साथ कहा था--'देश दो फौजी कैंपों में विभक्त हो गया है। हर एक कैंप में हिंसात्मक तैयारियाँ की जा रही हैं। भारत का, साथ ही सारे विश्व का, भविष्य अंधकारमय है।' इस कथन की सत्यता से इनकार नहीं किया जा सकता। कुछ ही दिन हुए, भारतीय अस्थायी सरकार के रक्षा-मंत्री माननीय सरदार बलदेवसिंह ने देश की भावी रक्षा-नीति पर प्रकाश डालते हुए इस बात की आवश्यकता पर जोर दिया था कि भारत के हर नौजवान को सैनिक-शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, रक्षा-मंत्री ने अपने उस वक्तव्य में कहा था 'हमारे सामने एक ऐसी योजना है, जिसके अनुसार देश के प्रत्येक युवक को हवाई, समुद्री या स्थलीय सैनिक-शिक्षा प्रदान की जाएगी।' स्वाधीनता-प्राप्त नए भारत की भावी परिस्थितियों पर गंभीरतापूर्वक विचार करने से उक्त योजना की उपयुक्तता भले प्रकार प्रकट हो जाती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शस्त्रीकरण की नीति मानव-जाति को विनाश-पथ पर ही अग्रसर करनेवाली है, परन्तु यह भी सत्य है कि आज की अंता-राष्ट्रीय परिस्थितियों में जो राष्ट्र निःशस्त्र होगा, जिसमें अपनी रक्षा आप करने का सामर्थ्य नहीं होगा, वह कदापि अपनी सत्ता को बनाए नहीं रह सकता। विश्व के बड़े-से-बड़े राष्ट्र से लेकर छोटे-से-छोटे राष्ट्र तक आज युद्धकला की प्रतिद्वंद्विता में लगे हुए हैं। सभी अपनी पूंजीवादी और साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का परिचय समय-समय पर दे दिया करते हैं। ऐसी दशा में उस राष्ट्र को जो अहिंसा-पथ पर चलते हुए सुरक्षा के साधनों से वंचित रहे--साथ ही प्राकृतिक संपत्ति से भरपूर भी हो, भविष्य की कल्पना भले प्रकार की जा सकती है। कोई प्रबल राष्ट्र विश्व की शान्ति और सुव्यवस्था के नाम पर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उसके उपयोगी साधनों पर दावा कर सकता है। अतएव यह बिलकुल स्पष्ट है कि वर्त्तमान युग में, जब कि प्रजातंत्र के विरोध में प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ उग्र रूप धारण किए हुए हैं, निःशस्त्रीकरण की नीति किसी भी राष्ट्र के लिए हितकर नहीं कही जा सकती। गांधी जी की अहिंसा-नीति चाहे जितने उच्च मानवीय आदर्श पर आधारित हो, परन्तु नवोदित भार-तीय प्रजातंत्र के लिए उसे व्यावहारिक नहीं माना जा सकता।

कारण, संसार के अधिकांश राष्ट्र अभी ऐसे ही हैं जिन्होंने कानों से गांधी जी के अहिंसावाद को अवश्य सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया है, पर वह तत्त्व उस मार्ग से अभी तक उनके हृदयों में नहीं उतर पाया है। फलतः वे तलवार के शासन पर ही विश्वास करते हैं और इसीलिए न स्वयं को 'अकुतोभय' अनुभव कर रहे हैं और न दूसरों को करने देना चाहते हैं। भारत को अभी कुछ दिनों तक अपने इन्हीं पड़ोसियों के साथ रहना है। इस दशा में वह अपने को सर्वथा अहिंसक नहीं बनाए रख सकता। उसे शस्त्र-सज्जा की ओर ध्यान देना ही होगा।

हिन्दुस्तान प्रजातंत्र, यदि सचमुच अहिंसावाद की ओर चला तो वह अनतिकाल में 'चील के घोंसले में मांस की धरोहर' सिद्ध होगा।

इस वस्तुस्थिति में हिन्दुस्तान के लिए रक्षा-मंत्री की योजना सब प्रकार से प्रशंसनीय है। यह योजना तभी सफल हो सकती है, जब देश का प्रत्येक पुरुष—और नारी भी—राष्ट्र की रक्षा के प्रति जागरूक हो जाए। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को सैनिक-शिक्षा प्रदान करनी होगी। वर्तमान अंताराष्ट्रीय राजनीतिक दाँव-पेंचों को देखते हुए यह बिना किसी हिचक के कहा जा सकता है कि निकट भविष्य में ही विश्व को तीसरे महायुद्ध की विभीषिकाएँ सहन करनी होंगी। आज का युद्ध किन्हीं सेनाओं का संघर्ष-मात्र नहीं रह गया है, अब तो वह राष्ट्रों के भयानक युद्ध का रूप धारण कर चुका है। युद्धकाल में सुरक्षा के लिए संपूर्ण राष्ट्र को तैयार रहना आवश्यक है। अभी तक विदेशी सत्ता के आधीन कार्य करनेवाली भारतीय सरकार की रक्षा-नीति वेतनभोगी सैनिकों की फौजें तैयार करने तक ही सीमित रही है। उसने यह बात कभी नहीं स्वीकार की कि देश की रक्षा के लिए उसकी सारी प्रजा को भी प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। इसी प्रसंग पर सन् १९३८ में कौंसिल आफ स्टेट में तत्कालीन कमाण्डर-इन-चीफ सर राबर्ट कैसेल्स ने कहा था कि 'नागरिकों को सामरिक शिक्षा प्रदान करके युद्ध-क्षेत्र में भेजना बेकार है, क्योंकि उन्हें वहाँ उन वेतन-भोगी सेनाओं से लड़ना पड़ेगा, जिनका काम ही लड़ना है। ऐसा करने से हताहतों की संख्या ही अधिक बढ़ेगी, कोई लाभ नहीं होगा।' इसी के साथ कैसेल्स साहब ने यह भी उल्लेख किया था कि 'जार्ज वाशिंगटन के मत से भी पेशावर फौजों का मुकाबला अन्य प्रकार की फौजें कदापि नहीं कर सकतीं।' राष्ट्रव्यापी सैनिक-शक्ति तैयार करने के विरोध में गए किए इस भाषण की निःसारता इसी से प्रकट है कि इसमें पुष्टि के लिए बीते हुए युग के एक महापुरुष की उक्ति दुहराई गई है। जार्ज वाशिंग टन का युग बीत गया। आज की युद्धकला, रक्षा-नीति और सामरिक आवश्यकताएँ बिलकुल बदली हुई हैं। केवल नवीन योजनाओं से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। रक्षा-मंत्री ने अपनी योजना पर प्रकाश डालते हुए यह भी कहा था कि 'बहुतों की धारणा है कि [illegible] के बाद ब्रिटिश लोगों के द्वारा सत्ता हस्तान्तरित कर दिए जाने पर भारतीय सैनिकों की योग्यता और कर्त्तव्यपरायणता में कमी आ जाएगी। अब हमें विश्व को यह दिखा देना है कि हमारी भारतीय सेनाएँ अपनी बहादुरी और देशभक्ति में पहले-जैसी ही बढ़ी-चढ़ी हैं।' निस्संदेह भारतीय अपने रक्षा-मंत्री के इस कथन को सत्य सिद्ध करते रहेंगे। जब देश गुलाम था, लाचार होकर गरीबी और भूख के कारण जब युद्ध में भारत के नौजवान जाते थे तो वे चारों ओर अपनी युद्धवीरता की धाक जमा ही चुके हैं। फिर आज तो देश की स्वाधीनता के लिए उन्हें लड़ना होगा, अपनी मान-मर्यादा की रक्षा उन्हें करनी होगी। वे अवश्य अपनी मातृभूमि का मुख उज्ज्वल करेंगे। रक्षा-मंत्री माननीय सरदार बलदेवसिंह की राष्ट्रव्यापी सैनिक-शिक्षा प्राप्त करके ही भारतीय प्रजातंत्र विश्व में अपने अनुरूप स्थान पा सकता है। हमें विश्वास है कि यह योजना कार्यान्वित करके देश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया जाएगा।

विभक्त बंगाल

बंगाल के विभाजन के लिए जो सीमा-कमीशन नियुक्त हुआ है, उसकी रिपोर्ट अब आनेवाली हो है। सम्भव है, 'सरस्वती' का यह अंक जब तक पाठकों के पास पहुँचे, तब तक उक्त कमीशन की रिपोर्ट भी प्रकाशित हो जाए। गत जन-गणना के आधार पर बंगाल का कौन विभाग पाकिस्तान में पड़ेगा और कौन हिन्दुस्तान में, इसका विस्तृत परिचय अपने पाठकों को देने के लिए हम यहाँ एक मानचित्र दे रहे हैं। मानचित्र के सभी विवरण स्पष्ट हैं; अतः उनके सम्बन्ध में टीका-टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है।

मानचित्र सर्वथा अनुमान पर आधारित है। अतः अधिक संभव है कि सीमा-कमीशन का निर्णय इसके सर्वथा अनुरूप न हो। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि रद्दोबदल बहुत अधिक नहीं होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

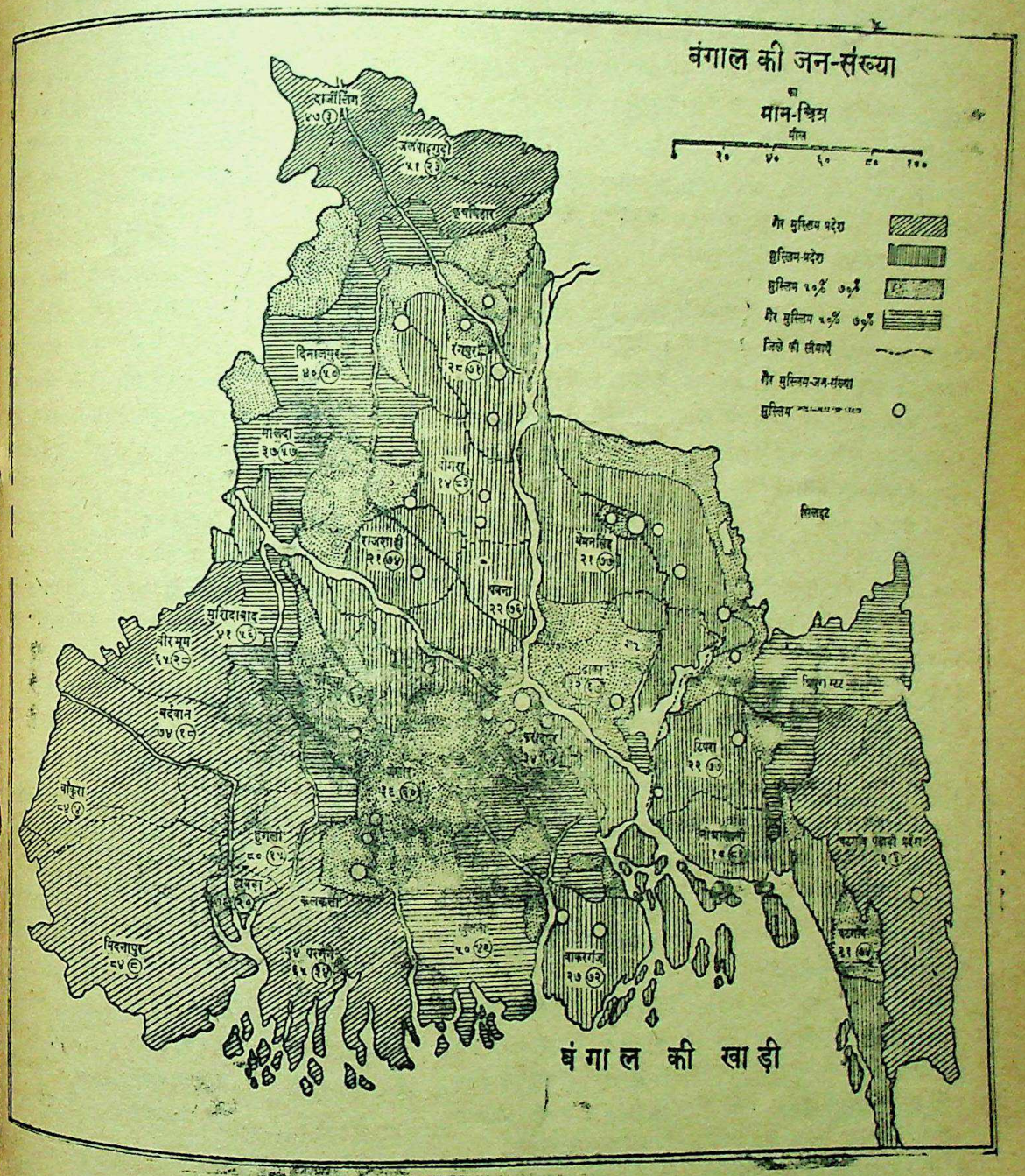

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बङ्गाल में तीन प्रमुख जातियों की जन-संख्या

	क्षेत्रफल, वर्ग मीलों में	कुल जन-संख्या	मुसलमान	हिन्दू	आदिम निवासी
बर्दवान डिवीजन					
बीरभूम	१,७४३	१०,४८,३१७	२,८७,३१०	६,८६,४३६	७४,०८१
बर्दवान	२,७०५	१८,९०,७३२	३,३६,६६५	१३,९३,८२०	१,५१,३५५
बाँकुरा	२,६४६	१२,८९,६४०	५५,५६४	१०,७८,५५९	१,५४,२४६
मिदनापुर	५,२७४	३१,९०,६४७	२,४६,५५९	२६,४१,९६३	२,५३,६६५
हुगली	१,२०६	१३,७७,७२९	२,०७,०७७	१०,९९,५४४	६९,५००
हाबड़ा	५६१	१४,९०,३०४	२,९६,३२५	११,४८,८६३	३,९११
प्रेसीडेंसी डिवीजन					
मुर्शिदाबाद	२,०६३	१६,४०,५३०	९,२७,७४७	६,८४,९८७	२६,१३८
नदिया	२,८७९	१७,५९,८४६	१०,७८,००७	६,५७,९५०	१२,६७१
जेसोर	२,९२५	१८,२८,२१६	११,००,७१३	७,२१,०४९	४,९७८
खुलना	४,८०५	१९,४३,२१८	९,५९,१७२	९,७७,६९३	२,६७५
२४-परगना	३,६९६	३५,३६,३८४	११,४८,१८०	२३,०९,९६	५१,०८५
कलकत्ता	३४	२१,०८,८९१	४,९७,५३५	१५,३१,५१२	१,६८८
राजशाही डिवीजन					
दार्जीलिंग	१,१९२	३,७६,३६९	९,१२५	१,७८,४९६	१,४१,३०१
जलपाइगुड़ी	३,०५०	१०,८९,५१३	२,५१,४६०	५,५१,६४७	२,७९,२१६
दिनाजपुर	३,९५३	१९,२६,८३३	९,६७,२४६	७,७४,६२२	१,८२,८९२
रंगपुर	३,६०६	२८,७७,८४७	२०,५५,१८६	८,०२,८४९	१८,२००
बोगरा	१,४७५	१२,६०,४६३	१०,५७,९०२	१,८७,५३२	१४,३८७
पबना	१,८३६	१७,०५,०७२	१३,१३,९६८	३,८३,७५५	६,९०६
राजशाही	२,५२६	१५,७१,७५०	११,७३,२८५	३,२९,२३०	६७,२१८
मालदा	२,००४	१२,३२,६१८	६,९९,९४५	४,६५,६७८	६६,४४१
ढाका डिवीजन—					
मैमनसिंह	६,१५६	६०,२३,७५८	४६,६४,५४८	१२,९६,६३८	५९,७२२
ढाका	२,७३८	४२,२२,१४३,	२८,४१,२६१	१३,६०,१३२	४,०२१
फरीदपुर	२,८२१	२८,८८,८०३	१८,७१,३३६	१०,०६,२३८	१,३६३
बाकरगंज	३,७८३	३५,४९,०१०	२५,६७,०२७	९,५८,६२९	२८४
चटगाँव डिवीजन—					
टिपरा	२,५३१	३८,६०,१३९	२९,७५,९०१	८,७९,९६०	१,५२४
नोआखाली	१,६५८	२२,१७,४०२	१८,०३,९३७	४,१२,२६१	३४
चटगाँव	२,५६९	२१,५३,२९६	१६,०५,१८३	४,५८,०७४	६,३४८
चटगाँव पहाड़ी-प्रदेश	५,००७	२,४७,०५३	७,२७०	४,८८१	२,३३,३९३

Printed and published by K. Mittra, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः आपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको आपरेशन कराने में असुविधा है या आपरेशन की अपेक्षा औषधियों-द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कार्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना आपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा निपट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खूराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर खुलकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खूब भूख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रुपया पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

से मँगाइए—

बड़े बड़े शहरों में हम एजेन्सी स्थापन कर रहे हैं। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

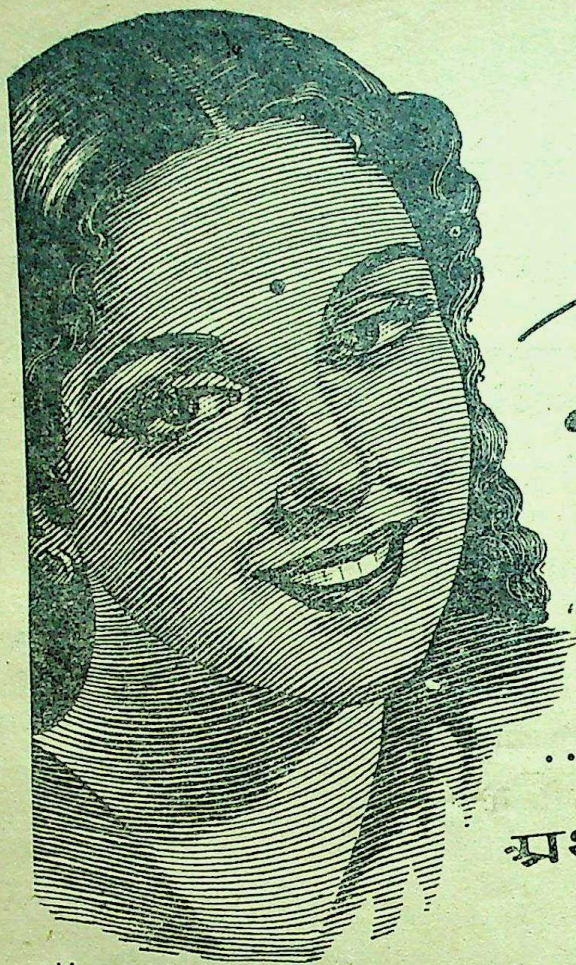

रेक्सोना

अर्थात्

"चर्म-स्वास्थ्य"

...स्वस्थ त्वचा

अर्थात् सौन्दर्य

"चर्म-स्वास्थ्य" यह मनोहर त्वचा का रहस्य है, और आप अपनी त्वचा आरोग्य-रहित (रोगी) हो, तो सौन्दर्य प्राप्त नहीं कर सकते। यहां वही रेक्सोना का विपुल शीघ्रोत्पादक भाग है जो कैडील नामक औषधि से बनाया गया है, और त्वचा आरोग्य के लिये भी मूल्यवान् (उत्तम) है। यह ऍन्टिसेप्टिक, शांति-दायक, त्वचा-पुष्टिकर तैलों से विशेषरूपेण बनाया हुआ है, रेक्सोना का शीघ्रोत्पादक फेनदार भाग, उक्त कैडील को नन्हे नन्हे त्वचा-रंध्रों में गहराईतक ले जाता है, वहां की मलीनता को हटाके, त्वचा को साफ़-सुथरी करता है, उसको (त्वचा को) शांति प्रदान करता है; और सुंदर बनाता है। इस में लेशमात्र भी शंका नहीं कि, चर्म-स्वास्थ्य त्वचा-माधुर्य (सौन्दर्य) की नींवँ है, और उक्त रेक्सोना का औषधी (मिश्रित) भाग त्वचा-सौन्दर्य की वृद्धि करता है।

पुरुषों के लिये रेक्सोना: आप कभी यह विचार न करें कि, रेक्सोना यह केवल स्त्रियों के लिये उपयुक्त साबुन है, अपितु वह पुरुषों के लिये भी अत्यंत आवश्यक साबुन है। पुरुष कांतिमय स्वास्थ्य में गर्व करता है, जो कि स्वस्थ त्वचा की देन है; चर्म-स्वास्थ्य एक पूंजी है, जो आरोग्यकर, ऍन्टिसेप्टिक, रेक्सोना के कैडील की सम्पति है, वह (कैडील) चर्म-स्वास्थ्य बनाये रखता है।

बच्चों के लिये रेक्सोना: रेक्सोना का संरक्षक, मृदु झाग बच्चों की कोमल त्वचा को शांत करता है। रेक्सोना का कैडील (बच्चों) के नन्हे नन्हे अवयवों की रगड़ (खुजली) और फुँसियों से सुरक्षा करता है। रेक्सोना बच्चों के लिये उत्कृष्ट साबुन है।

★ रेक्सोना का कैडील, यह विशेषतः ऍन्टिसेप्टिक, आरोग्य-दायक एवं पौष्टिक तैलोंका औषधी मिश्रण है; जो कि, त्वचा सुरक्षित रखने के लिये खासकर बनाया गया है।

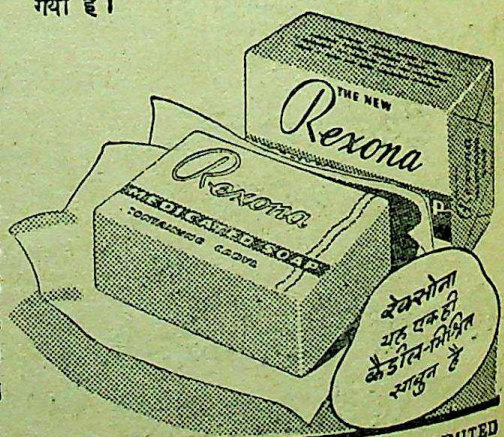

HARROW PROPRIETARY LIMITED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहनो

न तो मैं कोई नर्स हूँ, न कोई डाक्टर हूँ, और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थी स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुलकर न आता था! अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुःख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक जाने के कारण मैं प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया था, घर के कामकाज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियाँ सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुःख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिए आए। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्माजी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी, तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रङ्ग रुई की भाँति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की माँ हूँ। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहनों की भलाई के लिए असल लागत पर बाँट रही हूँ। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती; क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रक्खा है।

यदि कोई बहन इस दुष्ट रोग में फँस गई हों तो वे मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूँगी। एक बहन के लिए पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत-खर्च होता है और महसूल डाक अलग है।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का नुस्खा मालूम है। इसलिए कोई बहन मुझे और किसी रोग की दवाई के लिए न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल,
नं० १२ बुढ़लाड़ा, जिला हिसार (पञ्जाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी वर्षाकालीन प्रातःकाल, जबकि आकाश-मण्डल में घन घोर घटाएँ छाई हों, बिजली कड़कती हो; और भयभीत होकर नन्हीं-नन्हीं चिड़ियाँ अपने मधुर गान का—परित्याग कर दें, धुली पत्तियाँ और घास कुछ-कुछ चमकती हो, तब क्या हे महिले, आप एकाकी अपनी खिड़की पर विराजकर प्रकृति इस के अनुपम सौन्दर्य्य का पान अपने नेत्र खोलकर करती हो। क्या शीतल वायु की लहरें आपका आलिङ्गन करती हैं, और आपके वस्त्र जिन्हें आप पहने हैं भीग जाते हैं? आप अपने चतुर्दिक फैले इस सौन्दर्य्य के आह्लाद को परिपूर्ण करने के लिये और अपने केशों को तरी से सुरक्षित रखने के लिए जवाकुसुम का सेवन करें, उसकी भीनी सुगन्ध आपको रुचकर प्रतीत होगी।

जवाकुसुम केश तैल

सी. के. सेन ऐण्ड कं. लि.

ज वा कु सु म हा उ स क ल क त्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HJ.II/547

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

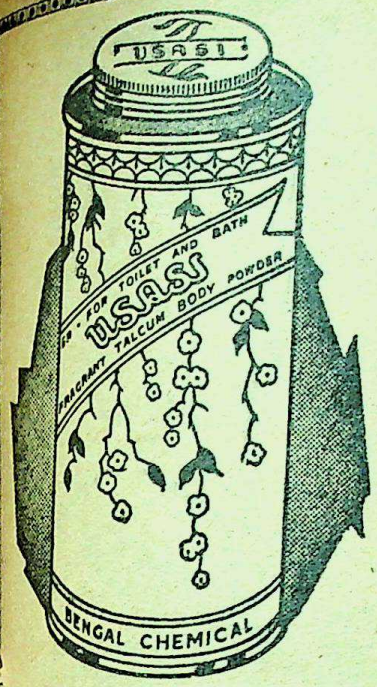

एक विशेषताप्राप्त टायलेट पाउडर

उषासी

चर्म को सुन्दरता तथा
आकर्षण प्रदान करता है

बच्चों के कोमल चर्म के लिए
भी हानि-रहित और सुखदायक है

बेंगल केमिकल एंड फार्मेस्यूटिकल बर्क्स लि०, कलकत्ता, बम्बई

फाउंटेन पेन
सरकारी कंट्रोल दामों पर

ताजा माल, बहुत सस्ता, तरह-तरह की रङ्गीन और न घिसनेवाली सुनहली १४ कैरेट की सोने की निबें। ए० की बनी। सन्तोष की गारंटी मूल्य ४॥), ५) और उत्कृष्ट ८॥)। अतिरिक्त निबें—साधारण ॥), १४ कैरेट सोने की २॥) और उत्कृष्ट ५)। एक बार दर्जन या अधिक फाउंटेनपेन या निबें खरीदने पर कमीशन खरीदारों को दिया जाता है।

जड़ाऊ ऊँचे दर्जे की कलाई-घड़ियाँ

स्विस निर्मित लीवर मशीन, सच्चा समय देनेवाली, मजबूत मशीनरी। पाँच साल की गारंटी। क्रोमियम केस की कलाई-घड़ी, गोल साइज १७ २०॥) रु०। उत्तम दर्जे की २३॥) रु०। स्त्रियों के लिए २६॥) रु०; उत्तम २८॥) रु०। दस साल की गारंटी। आयताकार ३५॥) रु०। अच्छी और चमकीले क्रोमियम केस की ३८॥) रु०; उत्तम ४०॥) रु०। रोल्ड गोल्डवाली ४८॥) रु०, उत्तम दर्जे की ५२॥।) रु०, पेकिंग और डाक-खर्च ॥।) दो घड़ियाँ लेने पर डाक-खर्च माफ। सूचीपत्र अप्राप्य।

Correspondence in English.

...कम्पनी Sec. 20पो० बाक्स नं० १२२०३, कलकत्ता

कुलबोरन

लेखक, श्री चन्द्रभूषण वैश्य

यह उपन्यास सत्य घटना के आधार पर लिखा गया है। समाज की अन्ध-परम्पराओं से देश की जो अपार हानि होती है उसका इसमें सुन्दर चित्र खींचा गया है। सुधार करनेवाले को रूढ़ियों के अन्ध भक्तों से जैसा लोहा लेना पड़ता है उसका सजीव पात्र कुलबोरन है। जाति-सुधार, देश-प्रेम और लोकहित की जिन घटनाओं का इसमें वर्णन है उनसे हमको खासा उपदेश मिलता है और मनोरंजन तो होता ही है। अच्छे काग़ज़ पर छपी, ३०० से अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य दो रुपये आठ आने।

मैनेजर, बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

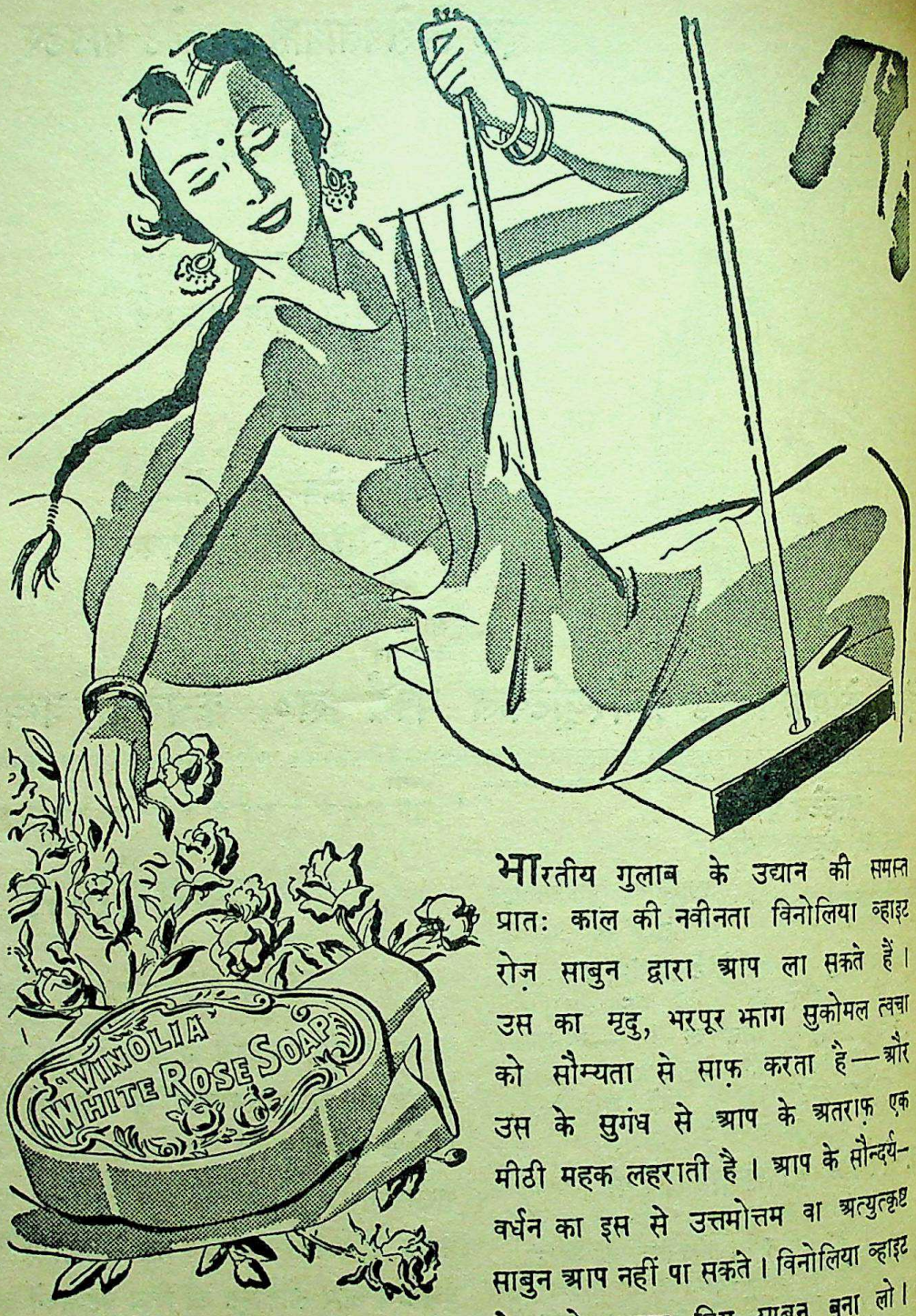

भारतीय गुलाब के उद्यान की समस्त प्रातः काल की नवीनता विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन द्वारा आप ला सकते हैं। उस का मृदु, भरपूर झाग सुकोमल त्वचा को सौम्यता से साफ़ करता है—और उस के सुगंध से आप के अतराफ़ एक मीठी महक लहराती है। आप के सौन्दर्य-वर्धन का इस से उत्तमोत्तम वा अत्युत्कृष्ट साबुन आप नहीं पा सकते। विनोलिया व्हाइट रोज़ को अपना प्रिय साबुन बना लो।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

THE VINOLIA COMPANY LIMITED, LONDON, ENGLAND

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य-संग्रह

प्रतिमा

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल् एल० बी०

इस संग्रह में सुकवि राजाराम श्रीवास्तव की एक से एक बढ़िया ५० कविताएँ हैं। इन कविताओं की बड़ी प्रशंसा है। क्या भाषा और क्या भाव सभी अनुपम ह। रंगीन आवरण, बढ़िया छपाई और मूल्य केवल १) एक रुपया।

लक्ष्मणशक्ति

इसी लेखक-द्वारा रचित एक खण्ड-काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-काल है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थ। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ।।।) बाहर आने।

मधुस्रवा

इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीव में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रससिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

हल्दीघाटी

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय

इस महाकाव्य पर दो हज़ार रुपये का देव पुरस्कार मिला है। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, फड़कती हुई कविता में, किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दीघाटी के युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फिल्म की तरह खिंच जाएँगी। मूल्य २।।≋) दो रुपये ग्यारह आने।

तक्षशिला काव्य

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया ह। मूल्य ३) तीन रुपये।

द्विवेदी काव्यमाला

आचार्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। मूल्य २।।≋) दो रुपये ग्यारह आने।

दैत्यवंश

लेखक, श्रीयुत हरदयालुसिंह

इसमें हिरण्याक्ष से लेकर स्कन्द तक दैत्यवंश के प्रभावशाली नरेशों का वर्णन व्रजभाषा के ललित छन्दों में पुरानी शैली के अनुसार किया गया है। इस पुस्तक पर देव-पुरस्कार दिया जा चुका ह। मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने।

महिलाओं के उपयुक्त पुस्तकें

माँ और बच्चा

बच्चों का पालन-पोषण करने तथा उन्हें स्वस्थ और सबल बनाने के लिए जिन-जिन बातों का जानना आवश्यक है, वे सभी बातें इस पुस्तक में लिखी गई हैं। मूल्य २।।≋) दो रुपये ग्यारह आन।

सती

इसमें दक्षसुता सती पार्वती की कथा सरल, सुन्दर और मधुर भाषा में लिखी गई है। मूल्य ।-)।। साढ़े पाँच आने।

सुशील कन्या

इसे पढ़कर बालिकाएँ स्वास्थ्य, सदाचार तथा नीति आदि से सम्बन्ध रखनवाली सभी बातों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगी। मूल्य ।।≋) ग्यारह आने।

आदर्श महिला

इस पुस्तक में सीता, सावित्री, दमयन्ती, शैव्या और चिन्ता आदि पाँच देवियों की जीवन-घटनाओं का सजीव वर्णन किया गया है। मूल्य २।।≋) दो रुपये ग्यारह आने।

पतिव्रता

सती, सुनीति, गान्धारी, सावित्री और शकुन्तला इन पाँच पतिव्रताओं के चरितों का संग्रह। मूल्य ।।≋) ग्यारह आने।

पतिव्रता गान्धारी

कौरवों की माता गान्धारी का जीवन-चरित। इसमें प्रसङ्गवश महाभारत की प्रायः पूरी कथा का सारांश आ गया है। मूल्य ।।।-) तेरह आने।

आदर्श महापुरुष

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, स्वामी शङ्कराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सन्त कबीर, स्वामी दयानन्द आदि १७ महापुरुषों के जीवनचरित्र तथा उनके मार्ग की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का निरूपण किया गया है। लेखक का उद्देश्य प्रसिद्ध मतों की शिक्षाओं और विशेषताओं से पाठकों को परिचित करना है। संसार के बड़े-बड़े मत किन बातों में समान हैं और किनमें भिन्न हैं, इसका निर्णय भी पाठक इस पुस्तक को पढ़कर कर सकेंगे। सवा सौ से ऊपर पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल १) एक रुपया।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्याग्रही

उपन्यास का नाम ही अपने विषय को साफ़ प्रकट कर देता है। एक सत्याग्रही ने अपने आचरण से किस प्रकार उन लोगों को भी सत्याग्रह का समर्थक और स्वदेशी का पुरस्कर्ता बनाया जो पहले सत्याग्रह का मज़ाक़ करते थे। 'सत्याग्रही' में कष्टसहिष्णुता, दृढ़ता, जल-जीवन और चरित्र की निर्मलता देखने ही योग्य ह। पुस्तक अनुपम ह। अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।) डेढ़ रुपये।

अमर ज्योति

यह पुस्तक बाबू निशीथकुमार राय, बी० ए० की कहानियों का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज़, चरित्रम्, नहीं, अमरज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरंजन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आग्रह न करके कथा का चित्रण किया ह। पूँजीपतियों और मजदूरों के संघर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पाठक को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

राजनीति-सम्बन्धी पुस्तकें

शासक

सुप्रसिद्ध राजनीति-विशारद निकोलो मेकियाविली की 'प्रिन्स' नामक पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर। इसमें राजा के कर्त्तव्यों तथा राज्य-शासन-प्रणाली का बहुत ही विशद विवेचन किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा

लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयङ्गम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ४) चार रुपये।

संसार का संक्षिप्त इतिहास

(प्रथम व द्वितीय भाग) अनुवादक, श्री मदनगोपाल, बी० ए० एल्-एल० बी०। यह पुस्तक अँगरेजी के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० जी० वेल्स के इतिहास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें पृथ्वी के आदिकाल से लेकर जीसस के निर्माण के पूर्व तक की कथा सक्रम वर्णित है। द्वितीय भाग में जीसस के निर्माण से लेकर संसार के पुनर्निर्माण तक का वर्णन आ गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ४) चार रुपये।

युद्ध और शान्ति

अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टाल्स्टा 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर ह। इसमें लेखक ने मानव-चरि सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और की खींच-तान को बड़ी खूबी से चित्रित किया है और तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य पाँच रुपये पाँच आने।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पद्मलाल पुन्ना बख्शी, बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की से विलक्षण हैं। यह बड़ी अनुपम रचना है। पृष्ठ २०० से ऊपर। मूल्य केवल १।) एक रुपया आठ आ

सरस-साहित्य

तुलसी के चार दल

(प्रथम और द्वितीय भाग)

गोस्वामी तुलसीदास के रामलला नहछू, बरवै रा यण, पार्वतीमङ्गल तथा जानकीमङ्गल का आलोचना परिचय तथा इन चारों ग्रन्थों की अध्ययनपूर्ण टीक मूल्य प्रथम भाग का तीन रुपये, द्वितीय भाग का दो रुपये ग्यारह आने।

काव्यकला

साहित्यालोचन का यह संक्षिप्त संस्करण है। का कथन है कि इस नवीन रूप में इस पुस्तक का ऊँची श्रेणी के विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर सकते इसमें साहित्य-शास्त्र के सभी अंगोपांगों का विवेचन है, किन्तु साथ ही वे अंश निकाल दिए गए हैं जो और खंडन-मंडनात्मक हैं। इसके संकलनकार श्री गोक लाल खन्ना, एम० ए०, बी० टी० हैं। मूल्य २) दो रुपये।

चिन्तामणि

(पहला भाग) लेखक, आचार्य पण्डित रा शुक्ल। इस पुस्तक में आचार्य शुक्ल जी ने भिन्न विषयों पर लिखे गये अपने सत्रह निबन्धों का संग्रह है। ये सभी निबन्ध बहुत ही गंभीर और अध्ययनपू जिनके द्वारा मनुष्य की विभिन्न प्रकार की आन्तरिक नाओं पर आलोचनात्मक ढंग से प्रकाश डाला गया इस रचना पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका मूल्य २) दो रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

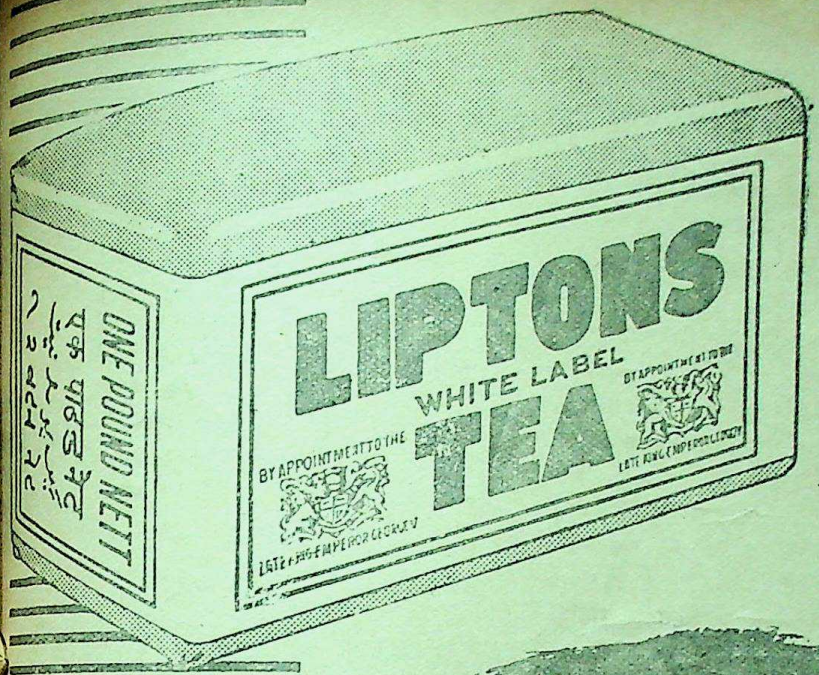

लिपटन

माने

अच्छी चाय

LTR-132

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

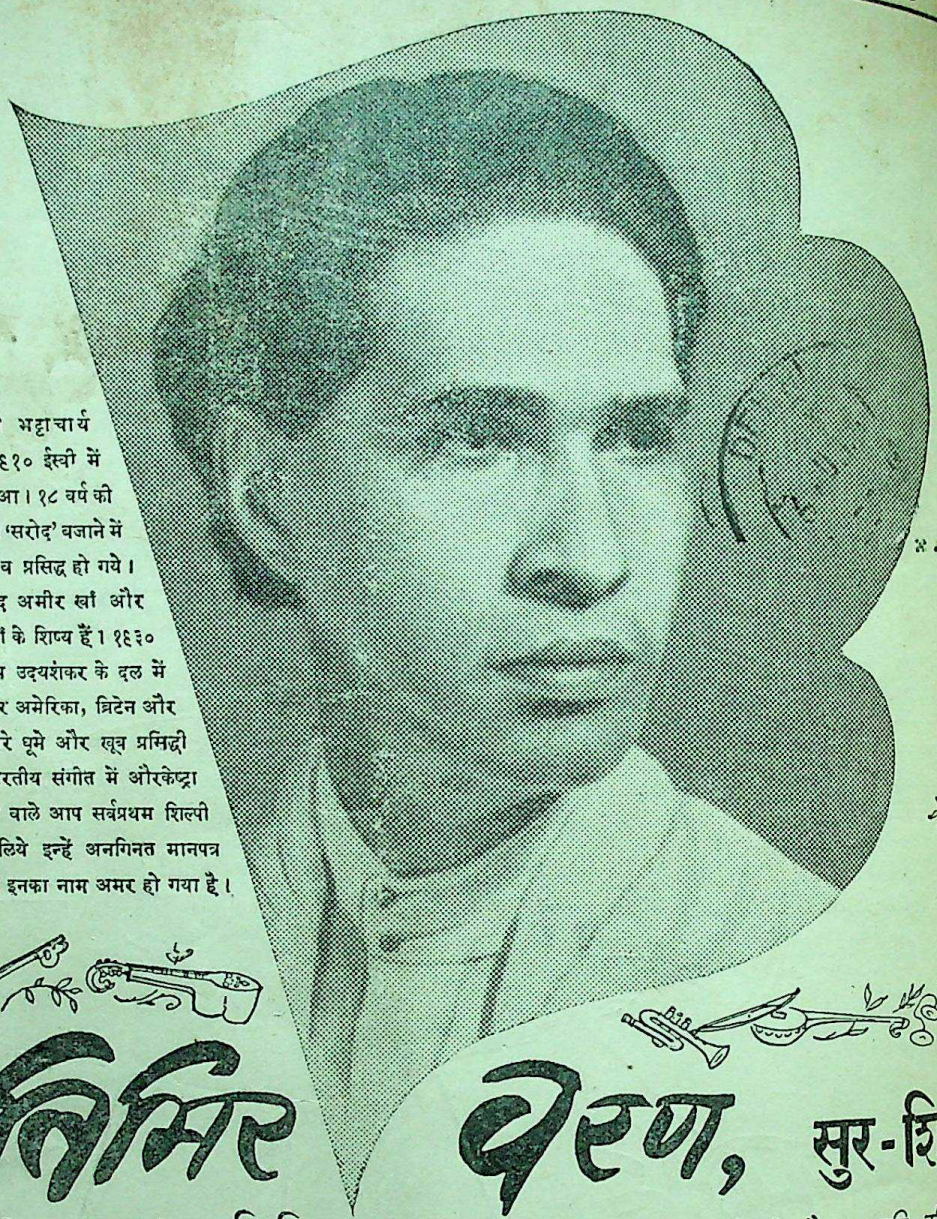

तिमिरवरण भट्टाचार्य का जन्म १९१० ईस्वी में कलकत्ते में हुआ। १८ वर्ष की अवस्था में ही 'सरोद' बजाने में आप निपुण व प्रसिद्ध हो गये। आप, उस्ताद अमीर खाँ और अलाउद्दीन खाँ के शिष्य हैं। १९३० ईस्वी में आप उदयशंकर के दल में शामिल होकर अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप में सारे घूमे और खूब प्रसिद्धी प्राप्त की। भारतीय संगीत में ऑरकेष्ट्रा की तर्ज लाने वाले आप सर्वप्रथम शिल्पी हैं; इसके लिये इन्हें अनगिनत मानपत्र मिले हैं और इनका नाम अमर हो गया है।

तिमिर वरण, सुर-शिल्पी

विख्यात संगीतज्ञ तिमिर वरण ने स्वदेशी व विदेशी वाद्य के सम्मिश्रण से भारतीय संगीत में नवीनता ला दी और भारतीय नाट्य में नई लहर पैदा कर दी। उनका कहना है :

वाद्य द्वारा संगीत के उच्छ्वास को सहारा देकर उसे सफल बनाने में मुझे चाय से बड़ी सहायता मिली है। कवि की कल्पना के छंदों को वाद्य यंत्रों द्वारा सुर व ताल मय बनाकर सबको लुभाया जा सकता है।

चाय
प्रेरणा लानी है
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रकाशित

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती

वार्षिक मूल्य ६।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों को लम्बे तथा मनमोहक

बनाने के लिए

कामिनिया आयल (रजिस्टर्ड)

का व्यवहार करें।

यह बालों के लिए सर्वोत्तम उपचार है।
बालों को शीघ्रतापूर्वक बढ़ाता है।
बालों का झड़ना बन्द कर उन्हें काला, चिकना, चमकीला तथा मनमोहक बनाता है। एक बार की परीक्षा पर्याप्त होगी।

खुशबू का राजा

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

अपनी मीठी तथा मनमोहक सुगन्ध के लिए विख्यात। दो-चार बूँ
कपड़ों पर डाल देने से कपड़े अधिक समय तक सुगन्धित बने रहेंगे।

दिलबहार हेयर आयल (रजिस्टर्ड)

एक दूसरा
सुगन्धित
केश-तेल

यह तेल अत्यन्त सुगन्धित है तथा बालों की उपयोगिता के लि
'कामिनिया आयल' के बाद इसका ही नम्बर है। बालों को बढ़ाने के
लिए यह विशेष लाभदायक है। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

एंग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कं०,
[illegible] बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

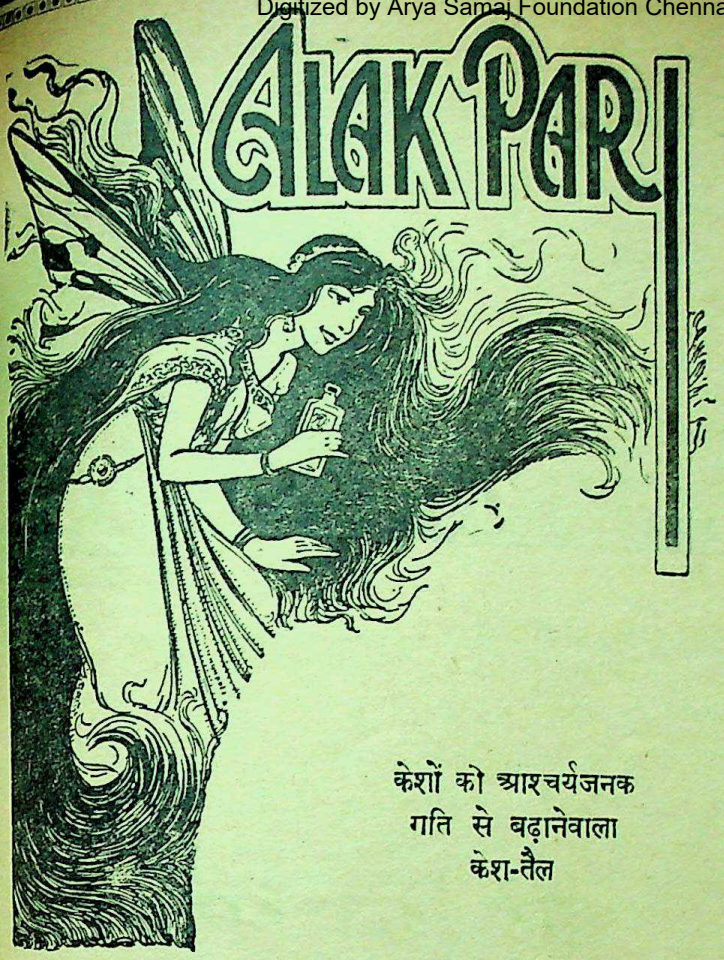

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।

दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।

तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।

चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं। फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जाएँगी। अधिक के लिए ५)

पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

महिलाओं की सम्मतियों की बाढ़

26. 1. 46.

अनेक कम्पनियों की लम्बी-चौड़ी तारीफें पढ़कर मेरा विश्वास उठ चुका था, पर आपकी अलकपरी को मैंने प्रशंसा के अनुरूप ही गुणकारी पाया। इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और तीन शीशियाँ शीघ्र भेज दें।

—राजकुमारी लालन, राजसदन, मैनपुरी।

11. 2. 47.

Alak Pari is giving much much satisfactory improvement, kindly despatch 6 Phials of it more.

Chadra P. Sethi B. A.
Ramnagar, Lahore.

15. 2. 47.

अपनी पत्नी के लिए अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभ हुआ और बाल बढ़े भी खूब! कृपया १२ शीशियाँ और भेजें।

—गोस्वामी मुकुन्द शर्मा, बड़ा मन्दिर, बम्बई २।

17. 2. 47.

I found Alak Pari to be one of the excellent oils. In fact it has shown well progress in the hair and satisfied me to the most. Kindly despatch 6 Phials more.

19. 2. 47.

Miss Malini V. Nagpurkar, Dadar.

पूर्व आपके यहाँ से अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभकारी प्रमाणित हुई। १ दर्जन शीशियाँ और भेज दें।

—गोस्वामी श्री० १०८, श्री गिरधारीलाल जी महाराज, झबुआ स्टेट।

प्रत्येक बड़े शहर में दूकानदारों के पास मिलती है। न मिलने पर इस पते से मँगाइए—

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बल, निश्चेतन और
निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, खून को
बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग
के बाद की निर्बलता
को नष्ट करनेवाला

झण्डु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य ओषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—चम्मकलाल कम्पनी, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल और पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

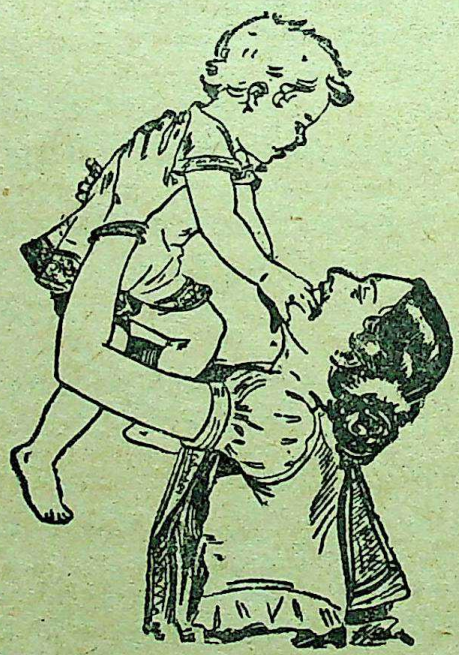

कमजोर और कृष बच्चे **डोंगरे-बालामृत** के इस्तेमाल से ताकतवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एक मात्र अचूक औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से पढ़ो और अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनाएँ हैं जो आपके सामने रखता हूं। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहा था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसंगत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने इलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अन्धेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये और दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ से अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की। जो मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक ईंट के पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमजोरी और गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में उमंग का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के लिए पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है कि अमृत तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-जी 'प्रेमवटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्यछाप ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खल में डालकर ले शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके बाद ताजी बूटी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज श्री जमुनादत्त शर्मा, झोंकर कहता है कि यह वटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती और गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषधि वीर्य का पतलापन, प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, नामर्दी, कब्जी, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना तथा इसके भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन सबों को जिन्हें फुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की आज्ञा की है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों के ३=) डाक खर्च ॥।-)

पता—बाबू श्यामलाल जी रईस प्रेमवटी आफिस नं० ५०, धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपविलास कम्पनी, कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियाँ

वीर्य-सञ्जीवन सत (रजिस्टर्ड)

एक ही सप्ताह सेवन करने से अपूर्व गुण दिखलाता है, चाहे जितना पुराना प्रमेह हो, पाखाने या पेशाब के साथ, आगे या पीछे वीर्य निकलता हो, अधिक पेशाब आता हो, इन्द्रियों की शिथिलता, वीर्य का पानी के समान पतला हो जाने के कारण शक्ति का घट जाना, स्त्री-प्रसंग की इच्छा न होना या स्त्री के साथ केवल छेड़-छाड़ का ध्यान आकर वीर्य का निकल जाना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत, थोड़ी मेहनत में हाँफ जाना, दिमाग की कमजोरी, आँखों के आगे अँधेरा छाकर चक्कर आना, चेहरा पीला पड़ जाना, भूख न लगना, सिर घूमना आदि वीर्य-रोग जड़ से नष्ट हो जाते हैं और बुद्धि पैदा होकर चेहरे पर कान्ति आ जाती है। मूल्य फी डिब्बा ३।–), दो का ६।), तीन का ८।।।), चार का १०।।=) और पाँच डिब्बों का मूल्य १२।।), डाक-खर्च पृथक्।

काम-सुन्दरी वटी (रजिस्टर्ड)

एक गोली सम्भोग से पहले खा लें और इसके अद्भुत चमत्कार देखें। यह स्तम्भन-शक्ति पैदा कर गजब ढा देगी। इसे नियमपूर्वक सेवन करने से बल, वीर्य, पुरुषार्थ बढ़ता है, नपुंसकत्व जाता है, कामिनी प्यारी लगती है, आलस्य, बेचैनी, स्वप्नदोष, दिमाग की कमजोरी, धातुक्षीण आदि रोगों को नष्ट कर बल-वीर्य को बढ़ाकर अटूट शक्ति पैदा कर देगी। कीमत प्रति पैकट २।।), तीन का ६।), डाक-खर्च पृथक्।

तिला मस्ताना (रजिस्टर्ड)

इसके इस्तेमाल से नपुंसकता, बाल अवस्था की कुटेव से इन्द्रिय की शिथिलता, नसों की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी, हस्तक्रिया से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान क्रिया के योग्य न रहना एवं शीघ्रपतन आदि की सारी शिकायतें छूमन्तर हो जाती हैं। रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत भर मस्ताना जोश पैदा करता है। मूल्य प्रति शीशी ३=) डाक-खर्च पृथक्।

लक्ष्मणधारा (रजिस्टर्ड)

बड़ी मशहूर दवा है, जिसने अपनी खूबी का नक्कारा चारों तरफ बजा रक्खा है। इसके सेवन से पेट-दर्द, जी मचलाना, कफ, खाँसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार, मोच, चोट, सूजन, बच्चों के हरे-पीले दस्त, बदहजमी आदि कहाँ तक लिखें, किसी में खाने और किसी में लगाने से तत्काल लाभ होता है। मूल्य प्रति शीशी ।।।), ३ का २–), ६ का ३।।।) डाक-खर्च पृथक्। दर्जन का ६।।।) डाक-खर्च माफ।

बालको (रजिस्टर्ड)

इसके सेवन कराने से छोटे बच्चों की खाँसी, संग्रहणी, पसली चलना, खाना हजम न होना, दुबलापन, चूतड़ों और जाँघों पर सिकुड़न, आँख मीचना, सर्दी रहना, अधिक रोना, सूखा वायु, ज्वर व भीतर हरारत का रहना आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्न-चित्त रात भर सुख की नींद सोते हैं। दुबले-पतले कमजोर बच्चों को ताकतवर बनाने की मीठी दवा है। मूल्य फी शीशी ।।।=) पन्द्रह आना, डाक-खर्च पृथक्।

फकीरी सुर्मा (रजिस्टर्ड)

पहुँचे हुए फकीर ने बड़े-बड़े पर्वतों पहाड़ों व वनों की खाक छान कर प्राप्त किया हुआ इस सुर्मे के नुस्खे को बद्रीनाथ की यात्रा में सत्संग होने पर मेरे बाबा को प्रदान किया। इसे रोग-ग्रसित आँखों में प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्ध, रोहे, नजला, कीचड़ आना, नाखूना, परवाल, चकाचौंध, आँखों का चश्मा लगाना नजर की कमजोरी आदि बीमारियों में इस फकीरी सुर्मे का व्यवहार करें। मूल्य फी शीशी ।।।), ३ का २–), ६ का ३।।) डाक-खर्च पृथक्; दर्जन का ६।।।), डाक-खर्च माफ।

रूपविलास (रजिस्टर्ड)

इसके लगाने से चेचक के काले दाग, मुँहासे, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह दूर हो मलिन मुख चन्द्रमा के समान चमकदार होकर गुलाबी छटा चेहरे पर दमकने लगती है। मूल्य फी डिब्बा २–) डाक-खर्च पृथक्।

नारी संजीवन

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, लाल-काला, धुमैला पानी-सा रज निकलना, महीना ठीक समय पर न होना जिससे कमर, रीढ़, सिर में दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलिन, दुबलापन आदि कमजोरी दूर हो सन्तान दीर्घजीवी पैदा होती है। मूल्य फी डिब्बा ३=) डाक-खर्च पृथक्।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

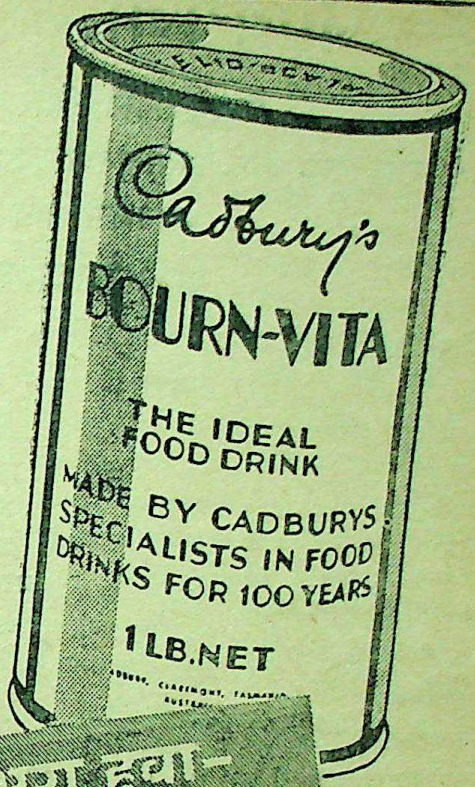

और शक्ति से भरा हुआ—
स्वाद्योज पैदा करने वाला

'बोर्न-विटा' की चाक्लेट वाली मज़ेदार महक को छोटे और बड़े दोनों बराबर पसन्द करते हैं। परन्तु यह गुण इसके केल्सेयम और खाद्योज ही का है जो अच्छी हड्डी बनाते हैं और आपको नई तन्दुरुस्ती और शक्ति का ख़ज़ाना बख़्शते हैं।

कैडबरी का
बौर्न-विटा
कैल्सेयम और स्वाद्योज से भरपूर

कैडबरी का अर्थ गुण

K.B. 3 HIN

अगर पूर्तियां मौजूद न हों तो नीचे के पते पर लिखिये:

कैडबरी—फ्राई (अ्रेक्सपोर्ट) लिमिटेड (डिपार्टमेंट) पी. ओ. बक्स १४१७, बम्बई.

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरीजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहाँ इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियाँ मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनाएँ आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरीजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरीजी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खाँ साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्याति-प्राप्त बा० हरिदास जी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्य-विकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पाँच सेर कंडों में फूँकें। दुबारा एक तोला हरताल बर्की शुद्ध, १॥ माशा कपूर शुद्ध में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध १ तोला, कपूर, १॥ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भाँति १६ आँच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व कायापलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदास जी लिखते हैं—इस योग के सेवन से एक हफ्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्य-राज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापकर इसे अद्भुत गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र [illegible] वतंश सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता [illegible] बरला जिला मुजफ्फरनगर ने [illegible] है—"अपूर्व कायापलट" नामक [illegible] सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही [illegible] है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजी[illegible] जैन आयुर्वेद शास्त्री मालिक [illegible] औषधालय, वाह (आगरा) का [illegible] कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट [illegible] जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासी[illegible] रक्त-विकार आदि रोगों से पीड़ित थे [illegible] स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आयेगा, २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में [illegible] सकता; मधुमेह, डायबटीज निर्बलता [illegible] हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो [illegible] धारण-शक्ति आती है। जिगर व मेदे [illegible] शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। [illegible] तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, [illegible] बदन दुखना, खून का पतलापन, आँखों [illegible] पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नवजीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भाँति समझाकर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आँच दी हुई ४० दिन की ८० [illegible] डाक-खर्च सहित ६।।।=) में हम भेज सकते हैं। डाक-खर्च माफ, पैकिंग, मनीआर्डर-फीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपविलास कम्पनी, (रसायनशाला) नम्बर ४२७, घनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों की भलाई के लिये

खुशखबरी

यदि किसी बहन को ५० वर्ष की कम उम्र में या किसी रोग के कारण मासिक धर्म माहवारी का होना बन्द हो गया है अथवा खुल कर नहीं होता या हर महीने ठीक समय पर न होकर आगे पीछे होता है तो ऐसी हालत में आप मेरी सौ फीसदी आजमाई हुई दवा **मासिक-धारा** मँगवा कर सेवन करें। इस दवा की एक ही खुराक से महीनों का रुका हुआ मासिक धर्म बिना किसी कष्ट के खुल जाता है और तीन खुराक से माहवारी बिगड़ने से पैदा हुई सब खराबियाँ दूर होकर मासिक धर्म बिलकुल ठीक समय पर आना शुरु हो जाता है। मूल्य ३ खुराक ३।=) डाक व्यय पृथक।

खबरदार:—गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि इससे गर्भपात हो जाता है।

चान्द फल यदि आप सन्तान पैदा करना चाहती हैं तो आप इस दवाई को मासिक धर्म हो जाने के बाद तीन दिन तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से उम्मीद हो जायगी। इस दवाई के सेवन से सैकड़ों ऐसी बहिनों के बच्चे पैदा हुए हैं जो बीस और पच्चीस वर्षों से बैठी हुई सन्तान को तरस रही थीं। कीमत १८ खुराक तीन रोज के लिये २॥≡) दो रुपया ग्यारह आने। डाक खर्च अलग।

दवाई मँगाने का पता—

प्रेम कुमारी अग्रवाल (नं० १६)

टोहाना, जि० हिसार (पंजाब)

न्यू अमेरिकन पिस्तौल

प्रायः देखा जाता है कि लोग नकली पिस्तौलों के विज्ञापन निकालकर भोली-भाली जनता को धोखा देकर धन कमाते हैं। हमने जनता को उस धोखे से बचाने के लिए बढ़िया न्यू अमेरिकन पिस्तौल मँगाई है जो बिल्कुल असली पिस्तौलों के मानिन्द है। इसे बराबर कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चर्खी खुद घूमती है। इसकी आवाज बहुत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जङ्गली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही को देखकर भाग जाते हैं। इसको रखने में सरकार से लाइसैन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसे हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल नं० ११११—४) व २२२२—८) डाक-खर्च प्रति पिस्तौल १।) अलग। कारतूस ४) फी सैकड़ा। चमड़े का केश ५) पेटी व लुबरी केटिंग तैल १।) शी०।

ओटो गुलशन बहार

यह ओटो तमाम सेन्टों का सरताज है। लगाते ही तबियत बाग-बाग हो जाएगी। लगा कर आप जिस रास्ते से निकल जाएँगे लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगाने से महीनों खुशबू नहीं जाती। कीमत फी शीशी ।।।), दर्जन ६), डाक खर्च १।) एक दर्जन साथ मँगाने पर हाथ व गले के बटनों का सेट, बम्बई फैशन के सोने की भाँति चमकने वाली अँगूठी, फैन्सी रूमाल, खूबसूरत शीशा मय कंघा के मुफ्त इनाम दिया जाएगा। दो दर्जन मँगानेवाले को बढ़िया फाउंटेन पेन और भेजा जावेगा।

खज़ाना रोज़गार

(२०००) माहवार कमाने का साधन)

इस "ख़जाना रोज़गार" नामक पुस्तक में सैकड़ों प्रकार के हुनर छपे हैं जिससे बेकार लोग लखपती हो गये हैं। इस पुस्तक में पेटेण्ट दवाइयों के नुस्खे, शर्बत, नाख़ून की लाली व सुहागबिन्दी, वारनिश, चेहरे को ख़ूबसूरत बनाने की क्रीम, व बर्तनों पर कलई आदि चढ़ाने के नुस्खे छपे हैं जिन्हें लोग मरते दम तक अपनी औलाद को भी नहीं बताते हैं। क़ीमत फी पुस्तक २॥) डाक व पैकिंग खर्च माफ।

पता:—इंडियन कमर्शियल कम्पनी नं० २—कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरम केशों का उत्पादक

केशों को स्वस्थ रखने की दिशा में रीटा का नया कदम है। केशों की जड़ों को यह स्वाभाविक गति से बढ़ने की शक्ति देता है, जिसकी बहुधा कमी रहती है। रीटा केशों की रूसी को रोकता और गन्देपन को दूर करता है। केशों को लम्बाकर असाधारण चमकीला और आकर्षक बना देता है। कड़े बालों को यह देदीप्यमान और लहरदार बना देता है। रीटा की एक शीशी लीजिए और अपने केशों को पुष्ट बनाकर नया सौन्दर्य प्रदान कीजिए। सभी जगह बेचा जाता है।

मूल्य ।।।≡) पन्द्रह आने प्रति शीशी।

विटो कम्पनी

जोन्स स्ट्रीट, मद्रास १.

रीटा

केश-टानिक

उत्तरी भारत के सितारे आपसे कहते हैं—

ललिता पवार—जो केशों के लिए सर्वोत्तम 'टानिक' की खोज में हैं, उनसे मैं "रीटा" को प्रयोग में लाने की सिफारिश करती हूँ और मुझे विश्वास है कि वे देखेंगे कि हमारी मातृभूमि असाधारण गुणयुक्त सामग्री का उत्पादन कर सकती है।

शरदा जनारकर—मैंने अनेक अवसरों पर देखा है कि जो बड़ी बीमारियाँ प्रसिद्ध विदेशी डाक्टर अपने तमाम डिग्रियों के साथ भी अच्छा नहीं कर पाते, उन्हें गलियों में घूमनेवाले अत्यन्त साधारण फकीर अच्छा कर देते हैं। मैं उन सबको भारतीय विज्ञान के गुप्त रहस्य के समान मानती हूँ, जो दुर्भाग्यवश हमारी उपेक्षा के कारण छिपे हुए हैं। अभी हाल में 'रीटा' के प्रयोग से मुझे जो अनुभव हुआ, वह केशों की झड़न के लिए इसे बिलकुल जादू-सी औषधि सिद्ध करता है। साथ ही इसमें कुछ ऐसे अद्भुत उपादान हैं, जिससे यह केशों को रेशमी चमक प्रदान करता है। मैं निश्चयपूर्वक कह सकती हूँ कि "रीटा" केशों के लिए आश्चर्यजनक 'टानिक' है।

के० ईश्वरलाल—मैंने एक बार "रीटा" का व्यवहार किया और तब से मेरे सारे परिवार की आदत ही केवल 'रीटा' के व्यवहार की पड़ गई है। मेरे दोस्त निश्चय ही बाजार में 'रीटा' को केशों के लिए सर्वोत्तम 'टानिक' पायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १९२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गये, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिलकुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी आवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४।) डाक-खर्च प्रतिपिस्तौल १।) अलग। कारतूस फी सैकड़ा ४)

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सेंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीअत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जायेगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रतिशीशी ॥=) दर्जन का ५॥) डाक-खर्च १।) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूबसूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जाएगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है। दो दर्जन एक साथ मँगाने पर ऊपर दिए हुए सामान के अलावा एक फैन्सी रिस्टवाच और दी जाएगी। तीन दर्जन एक साथ मँगाने पर ऊपर दिये हुए सामान के अलावा एक बढ़िया फाउन्टेनपेन और दिया जाएगा।

इंडियन जनरल ट्रेडिंग कम्पनी, नं० १० कानपुर
पोस्ट बक्स १३१

स्त्रियों के लिए सर्वोत्तम शक्ति-वर्धक औषधि

कमर-दर्द, हाथ-पैर का टूटना, हड्डियों का दर्द, बेचैनी, जी घबड़ाना, हिस्टीरिया वगैरह रोग 'जोमेस्त्री' के सेवन से मिट जाते हैं। दुर्बलता नहीं आती। स्त्रियों का आरोग्य आयुष्काल बढ़ जाता है।

जोमेस्त्री लेनेवाली माता का बालक तन्दुरुस्त और हृष्ट-पुष्ट होता है।

हरेक दवाफरोश के यहाँ मिलेगी

जसमाईन एजेन्सी नड़ीयाद (गुजरात)

एजेंट श्रीकेमिकल्स, २३३२, महाराजा लाल बिल्डिंग खुशालराय कटरा, देहली

कान्तीलाल परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

ओरिएण्टल फिल्म कैमरे

सुन्दर, मजबूत, नया डिजाइन—बढ़िया लैन्सयुक्त, विश्वसनीय

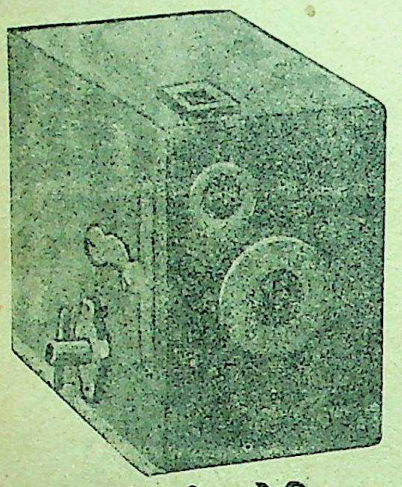

कीमत में सस्ते काम में अच्छे, इन कैमरों से आप चाहे जिस दिल-पसन्द चीज का टिकाऊ मनोहर फोटो खींच सकते हैं।

१—बॉक्स फिल्म कैमरा—इसमें ६२० का फिल्म लगता है। २। × २। इंच का फोटो आता है, मजबूत लकड़ी का सुन्दर आकर्षक बना हुआ मू० १७।।) पोस्टेज पैकिंग १।) अलग।

२—फोल्डिंग फिल्म कैमरा—इसमें नं० ६२० का फिल्म लगता है ३। × २। का फोटो आता है, मजबूत लकड़ी का सुन्दर आकर्षक बना हुआ मूल्य २८।।), पोस्टेज पैकिंग १।) अलग।

हर एक कैमरे के साथ फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त भेजी जाती है, सूचीपत्र तैयार नहीं है।

गारंटी—कैमरे से बढ़िया फोटो न खिंचे तो मूल्य वापिस कर देंगे। आप आज ही कैमरा मँगायें, अवश्य सन्तुष्ट होंगे।

पता—दी ओरिएण्टल कैमरा हाउस (F.D. ५२) अलीगढ़ सिटी।

गजब हो गया अपनी गलती से सैकड़ों घर बरबाद!

रक्षा चाहते हैं तो इसे जरूर पढ़ें

१—**ताकतवर यौवन वटी**—भाइयो, यह ताकत की जोरदार दवा कई तरह की कीमती दवाइयों से तैयार की गई है। इसकी एक खुराक खाते ही शरीर में महान् शक्ति पैदा मालूम देती है। तथा धातुक्षय, कमजोरी, स्वप्नदोष को जड़ से हटाकर पतले वीर्य को दही के समान गाढ़ा बना देती है, स्मरणशक्ति बढ़ाकर दिल व दिमाग को ताकतवर बनाती है। खोई हुई ताकत व जवानी को आठ दिन में फिर से लाने के लिए आश्चर्यजनक यह इलाज है। बूढ़ा या जवान एक बार भी इसे खा ले तो यौवन का फिर से पूरा आनन्द आ जाता है। इसके आश्चर्यजनक गुणों से मोहित होकर बड़े-बड़े राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों ने इस्तेमाल करके प्रसन्नता प्रकट की है। पूरे कोर्स ६४ गोली के पैकट का ५) पाँच रुपया।

२—**अमोरी तैल**—यह अद्भुत तैल राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारों के सेवन करने योग्य है। इसके लगाने से कमजोरी, ढीलापन, सुस्ती हटकर बिजली के समान अपूर्व ताकत पैदा होती है। फी शीशी ५) पाँच रुपया।

३—**आर० पी० की प्रदर रोगनाशक दवा**—इस दवा के इस्तेमाल करने से प्रदर रोग जिसमें औरतों के गुप्त अंग से लाल, सफेद, मैला, पीला, पानी-सा जाता है। माहवारी ठीक नहीं होता। पेशाब में जलन, गर्भाशय की पीड़ा, कमर, घुटनों, पेड़ू, जाँघ में दर्द रहना, महीन बुखार, सिर में दर्द, भूख का न लगना, निर्बलता आदि रोगों को दूर कर शरीर को हृष्ट-पुष्ट और ताकतवर बनाता है। ज्यादा सेवन करने से गर्भाशय की कमजोरी बन्ध्यापन दूर होकर गर्भ ठहर जाता है। इसे गर्भवती स्त्रियाँ तथा छोटी उमर की लड़कियाँ भी खा सकती हैं सैकड़ों स्त्रियाँ खाकर लाभ उठा चुकी हैं। कीमत १।) पो० ।।।) पूरी खुराक ३ डिब्बी का ४) चार रुपया।

४—**आर० पी० का पत्थर हजम चूर्ण**—कब्ज को दूर कर दस्त साफ लाता है। फी शीशी ।=) छः आना। डाकखर्च चारों का १), सूचीपत्र मुफ्त। एजेन्टों की जरूरत है।

पता—जैन बालामृत कार्यालय, बेलनगंज [१०१] आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर नरगिस अपनी त्वचा को कोमल एवं मृदु रखने के लिये लक्स टॉयलेट साबुन पर निर्भर रहती है!

इस सुन्दर फिल्म अभिनेत्री का सौन्दर्य-उपचार लक्स टॉयलेट साबुन है। वह जानती है कि उस की त्वचा को स्वच्छ एवं कोमल रखने के लिये इस की सुगंधि-युक्त मलाईदार झाग के समान कोई दूसरा साधन नहीं है। जो अपनी त्वचा को कोमल एवं मनोहर रखने के सदा अभिलाषी हैं, उन सबों के लिये वह लक्स टॉयलेट साबुन के नियमित प्रयोग की सिफ़ारिश करती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

फिल्मी अभिनेत्रियों का सौन्दर्य-साबुन

LTS. 173-23 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एनारगन

केमिकल कृत

टनिक ग्लिसरोफास्फेट्स

अवसन्न देह और मनके लिए परम रसायन

दैहिक या मानसिक अवसाद और अपटुता, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, सर घूमना आदि में यह विशेष फलप्रद है। रोगान्त दुर्बलता, रक्तहीनता, बेरीबेरी एवं बहुमूत्र, यक्ष्मा आदि रोगों के लिए भी यह लाभप्रद है।

बेंगल केमिकल

कलकत्ता : बम्बई

आरोग्यवर्द्धक

मदनमंजरी गोलियां

कब्जियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिल व दिमाग को ताकत देती हैं और नया खून व शुद्ध वीर्य पैदा करके बल-बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं, निर्दोष, पौष्टिक व हानिरहित वनस्पतियों के योग से बनी होने के कारण ५० साल से रोगी व निरोगी, प्रत्येक मौसम में सेवन कर पूर्ण लाभ उठाते हैं। जरूर परीक्षा कीजिए—४० गोलियों की डि० १।) रु०।

मदनमंजरी फार्मेसी—
जामनगर (काठियावाड़)

एजेंट—मदनस्टोर्स कैमिस्ट जोनस्टनगंज, इलाहाबाद

केवल एकदिनमें

मेजिक मिस्मरिजम

लड़के को जमीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर [illegible] व गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर [illegible] चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब [illegible] घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना [illegible] से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के [illegible] नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना [illegible] को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल [illegible] इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमांचकारी करिश्मे [illegible]

दूसरे ही दिन

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों [illegible] मानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर [illegible] रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गजब का जादू एक दिन [illegible] हाँ केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व [illegible] झंझट नहीं—ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की [illegible] केवल पाँच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड वण्डरफुल मेजिकल कम्पनी
विभाग नम्बर २६, मुरादाबाद यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौन्दर्य की कुंजी

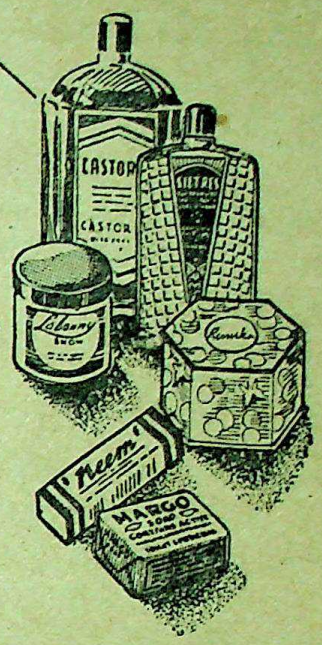

यह सच ही कहा गया है कि सुन्दर स्त्री सबसे अनुपम दर्शनीय सृष्टि है। प्रत्येक स्त्री का स्वयं अपने और समाज के प्रति यह कर्तव्य है कि वह अधिक-से-अधिक सुन्दर दिखाई दे, और शारीरिक सौंदर्य की विलक्षणताओं को खोलने की चाभियाँ हैं **'कलकेमिको'** की वे बेजोड़ वस्तुएँ, जो आप को सुन्दर, लहराते हुए, सिल्क की तरह मुलायम केश और साफ-चिकनी त्वचा तथा गुलाब की कली जैसा कोमल और मनोरम वर्ण प्रदान करती हैं!

साथ ही वे बने भी भारतवर्ष की हैं

मार्गो सोप
नीम टूथ पेस्ट
सिलट्रेस श्याम्पू
कैस्टोरल केश तैल
लावणि स्नो और **क्रीम**
रेणुका टायलेट पाउडार

दि कलकटा केमिकल कं० लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सचित्र और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

उच्च कोटि की रिस्टवाचें

जिवेल-जटित स्विस की बनी हुई, ठीक समय देनेवाली मज़बूत मशीन—क्रोमियम केस गोलाकार १४) उत्तम १५) लेडी-साइज २५) सेंटर सेकेंड फ़्लैट शेप २४), आयताकार २८) सुन्दर चमकीला क्रोमियम केश आयताकार ३) जिवेल-सहित ३०) उत्तम ३२) रोल्ड-गोल्ड दस वर्ष की गारंटी आयताकार सात जिवेल सहित ४२) उत्तम ४४) विशेष १५ जिवेल ५३) एलार्म टाइम पीस १८) उत्तम १९) सभी घड़ियों की दस साल की गारंटी। पैकिंग व पोस्टेज ।।।=) (सूचीपत्र आउट आफ़ प्रिंट)

घरेलू जेबी छापाखाना

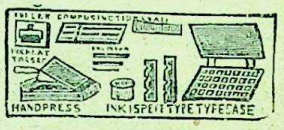

नाम, पते, पत्र, लेवेल, पर्चे और प्रोग्राम आदि इसकी सहायता से घर पर ही सुन्दर रूप में छापे जा सकते हैं। हर घर में रखने लायक। मूल्य नं० ९०१—१।=), नं० ९०२—१॥=), विशेष २), उत्तम २।), पैकिंग व पोस्टेज ।।।=)। हर आर्डर के साथ दो लाइट मुफ़्त।

पता—ग्रेट नेशनल स्टोर (X.T.)
पोस्ट बाक्स नं० १२२१६, कलकत्ता (5)

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बाल जीवन घुट्टी

रजिस्टर्ड

मुफ़्त लो १० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ़्त भेजेंगे

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनाती. ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।

— मू० शी० ।७ दर्जन २।।।) डा० व्य० अ० —

सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।

पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़, यू. पी.

बुकाम सर्दी पर अकसीर उपाय

आरोंदा

१८६६

नीलगिरि तेल

मो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाएगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखी भाइयों को हमारा शुभ सन्देश

प्रिय पाठको आप लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आज मैंने लगभग २० साल से प्रेमवटी औषधि देकर जिस प्रकार से आप लोगों की सेवा की है। वह किसी से छिपा नहीं है। क्योंकि हमारा उद्देश्य धन कमाना ही नहीं बल्कि सेवा और सचाई का विश्वास दिलाकर प्रत्येक घर और मनुष्यमात्र के हृदय में उच्च स्थान पाने की आशा रखता है और इसी में अपना कल्याण समझता हूँ ताकि इस तुच्छ सेवक की याद आप लोगों के हृदय-पटल पर सदैव अंकित बनी रहे यही मेरी हार्दिक इच्छा है। कागज के अभाव के कारण हम अब आपको अधिक क्या विश्वास दिलावें हाँ किसी समय हमारे कार्यालय में पधार कर देश और विदेश से आये हुए प्रशंसा-पत्रों को देखिये स्वयं ही विश्वास हो जायगा ग्राहकों की इच्छा देखकर हमने और भी उच्चकोटि की औषधियाँ निर्माण की हैं। जिन्हें सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित कर अपने परिश्रम को सफल बनाया इन औषधियों का निर्माण योग्य अनुभवी कर्मचारियों-द्वारा होता है यदि आप हर प्रकार से हताश हो चुके हों और अपने जीवन से हाथ धो बैठे हों तो एक बार दवाइयाँ मँगाकर अवश्य परीक्षा करें।

सत्य प्रभा सुर्मा

मनुष्य के शरीर की आँख एक अमूल्य वस्तु है आँख बिगड़ गई तो तमाम जिन्दगी बेकार हो जाती है। हमारे इस सुर्मे को प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नाखूना, नजर से कम दिखाई देना आदि दूर होते हैं। कीमत एक शीशी ॥-), तीन शीशी १॥) डाक खर्च अलग।

सत्य संजीवन तिला

यह तिला अन्य तिलाओं की भाँति नुकसान नहीं पहुँचाता है। बल्कि एक ही हफ्ता सेवन करने से कमजोरी, सुस्ती, नपुंसकता तथा गुप्तेन्द्रिय की शिकायतों को दूर करके रग और पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत पहुँचाता है। कीमत एक शीशी २), तीन शीशी ५) डाक खर्च ॥-)।

सत्यामृत घुटी

हमारे यहाँ की घुटी अब तक फेल नहीं हुई है। बच्चों के हरे-पीले दस्त का होना, नजला व जुकाम हो जाना, दाँत निकलते समय कष्ट होना, बुखार बना रहना, पेट फूलना आदि रोगों को दूर करने में राम-बाण साबित हुई है। कीमत एक शीशी ॥), तीन शीशी १।=) डाक खर्च अलग।

सत्य सुन्दरी रक्षक

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग महीना ठीक समय पर न होना लाल काला धुमैला पानी-सा रज निकलता हो आदि रोगों को दूर कर सन्तान पैदा करने योग्य बनाता है। कीमत आधी खुराक २), पूरी खुराक ३॥) डाक खर्च अलग।

सत्य सरोवर तेल

आपने बहुत से बाजारी तेल इस्तेमाल किये होंगे किन्तु यह तेल अपनी शानी नई रखता है। विद्यार्थी वकील, क्लर्क आदि दिमागी काम करनेवाले इसे धड़ाधड़ मँगा रहे हैं। कीमत एक शीशी ॥), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग।

रूप रक्षक

इसके लगाने से चेचक के काले काले दाग, मुँहासा, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी आदि दूर होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। कीमत एक डिब्बी २), तीन डिब्बी ५) डाक खर्च अलग।

* सत्य सखा *

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह बहुत कम है पेट दर्द, जी मिचलाना, कफ, खाँसी, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार आदि रोगों में तत्काल लाभ होता है। कीमत एक शीशी ॥), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग एक दर्जन का ६॥) डाक खर्च माफ।

* सुजाक विन्दु *

कैसा नया-पुराना भयानक सुजाक क्यों न हो मवाद आता हो, किसी तरह चैन न मिलता हो रो-रोकर रात व्यतीत होती हो इसकी एक ही खुराक से आराम मिलता है। कुछ दिन सेवन करने से पुराने से पुराना सुजाक हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। कीमत एक शीशी २॥) डाक खर्च अलग।

बाबू श्यामलाल जी रईस, प्रेमबटी आफिस नं० ५०, धनकुट्टी कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

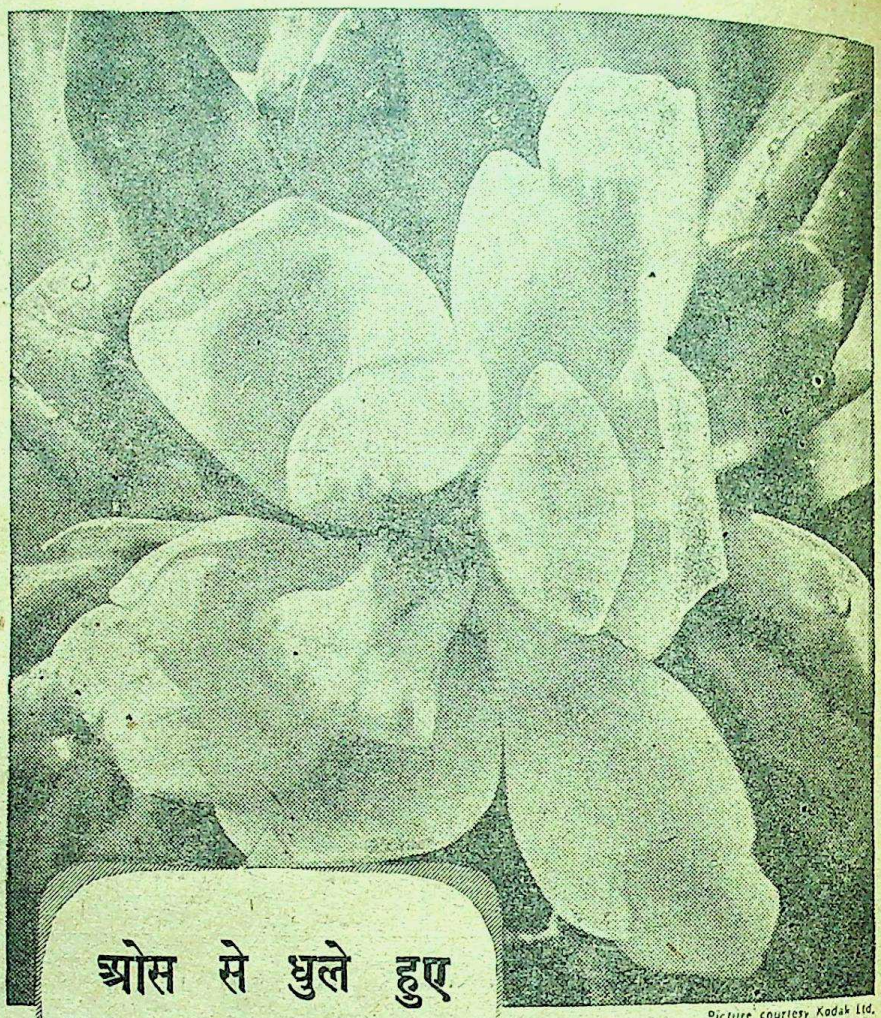

Picture courtesy Kodak Ltd.

ओस से धुले हुए
फूल की भाँति ताजा

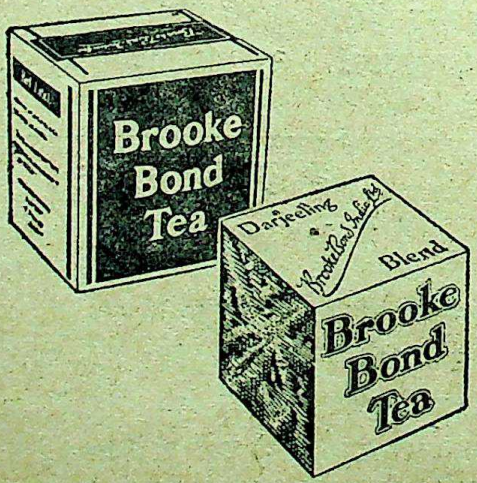

ब्रुक बॉण्ड चाय

दो पत्तियाँ और एक कली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४ कारण

आप जवाकुसुम क्यों लगायें

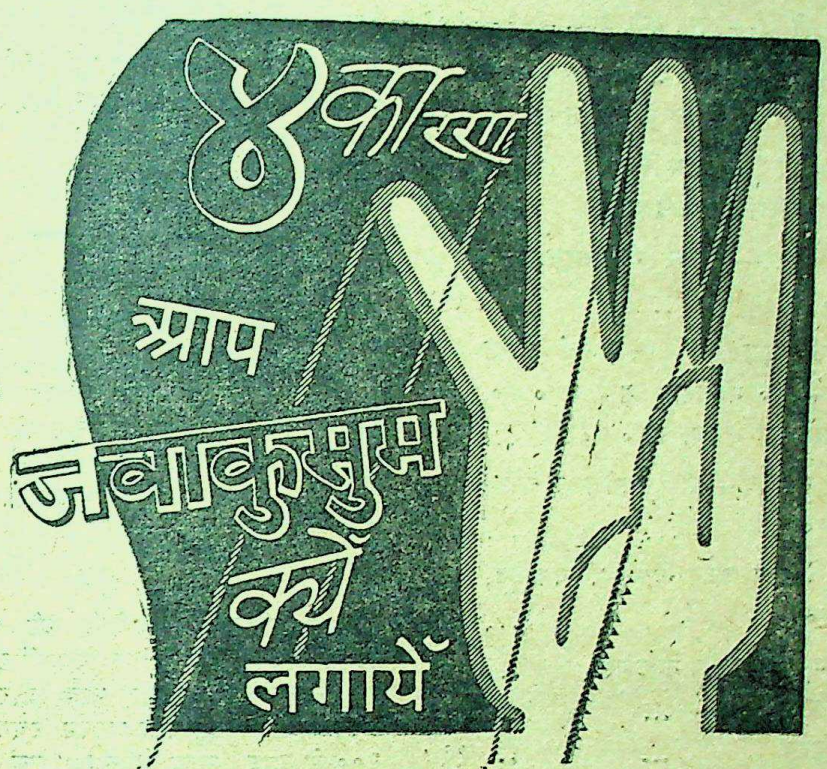

१ जवाकुसुम की गन्ध मनोरम एवम् पोषक होती है—आपके बालों को आश्चर्यजनक गति से बढ़ाता तथा चित्त को प्रसन्न करता है।

२ बालों के लिए यह उत्कृष्ट प्रसाधन है जो आपको रूसी, बालों का गिरना तथा सिर की खुश्की से सुरक्षित रखेगा।

३ जवाकुसुम आपके ज्ञान तन्तुओं को शीतल तथा शरीर को स्वस्थ रखता है। इस प्रकार बिना अधिक कष्ट के आप अधिक काम कर सकेंगे।

४ जवाकुसुम आपके व्यक्तित्व में आकर्षण पैदा करता है। कौन ऐसा है जिसके कंधों पर लहराती घनी केशराशि उसके सौन्दर्य में चार चाँद न लगा दे।

जवाकुसुम

केश तैल

सी. के. सेन ऐण्ड कं., लि., जवाकुसुम हाउस कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—सम्पादकीय—सम्पादक ९१
२—जिहाद और भारत—डा० एस० सी० ले लै ९७
३—दो बच्चों की माँ—महन्त धनराजपुरी ... १०१
४—विश्व-समस्याओं की एक अदृष्टिगोचर गाँठ—अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी ... १०५
५—छदामी—श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा ... ११३
६—सूफ़ीमत—पंडित हरिश्चन्द्र शुक्ल ... ११७
७—कुर्सी के पैगम्बर—प्रोफेसर हरीश सिंहल, एम० एस-सी० ... ... १२४
८—नागरी लिपि-सुधार की समस्या एवं उसका समाधान—प्रो० भोलानाथ शर्मा एम० ए०, प्रो० सूरजप्रसाद गोयल, एम० ए० ... १२९
९—मानवी या दैवी—श्री कालीचरण चटर्जी एम० ए० ... ... १३७
१०—मंगोलों के सतत जाग्रत् गीत—श्री चन्द्रचूड़, एम० ए० ... ... १४३
११—तीस दिन—श्री सन्तोष नौटियाल ... १४६
१२—विचार-विमर्श १५६
१३—विविध विषय १६४
१४—काम की किताबें १७१
१५—सामयिक साहित्य १७४

चित्र-सूची

१—राष्ट्र पितामह गांधी
२—बिड़ला हाउस से बाहर ... मुख
३—साम्प्रदायिक पागलपन ...
४—शरणार्थियों के बीच में—सम्बन्धी ३ चित्र ...
५—शरणार्थियों से सम्बन्धित २ चित्र
६—काश्मीर-सम्बन्धी ४ चित्र
७—काश्मीर-सम्बन्धी ४ चित्र

युद्ध और शान्ति

अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टाल्सटाय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन के सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्र की खींच-तान को बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५) पाँच रुपये पाँच आने।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह बड़ी अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी-प्रेमियों के लिए अनमोल सूचना

आगामी चैत्र संवत् २००५ से सचित्र द्वैमासिक 'साहित्यिक पुस्तकमाला' का प्रकाशन आरम्भ होगा। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य होगा अनुभवी साहित्यिकों की बहुमूल्य कृतियों का प्रकाशन। उदाहरण के लिए इस माला के अन्तर्गत सर्वप्रथम 'सरस्वती' के भूतपूर्व सम्पादक पं० देवीदत्त शुक्ल द्वारा लिखाई गइ पुस्तकों का प्रकाशन होगा। शुक्ल जी से हिन्दी-जनता भले प्रकार परिचित है। आज वे आँखें खराब हो जाने से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। लिखने-पढ़ने से भी स्वभावतः उन्होंने हाथ खींच लिया है। फिर भी हमारे विशेष अनुरोध से वे इसके लिए प्रस्तुत हुए हैं कि विभिन्न विषयों पर अपने अनुभवपूर्ण विचार लिपिबद्ध करवा दें। फलस्वरूप 'माला' के प्रथम वर्ष की छः पुस्तकें शुक्ल जी की सरस, सरल और गूढ़ज्ञानमयी कृतियाँ होंगी। आत्म-कथा, संस्मरण, साहित्य, समाज, धर्म और राजनीति जैसे प्रमुख विषय होंगे। वार्षिक मूल्य डाकखर्च-सहित १२), फुटकर प्रति २॥)। २५ फरवरी के पूर्व 'माला' के ग्राहक डाकखर्च-सहित १०) में ही बनाये जायँगे। प्रत्येक पुस्तक सचित्र होगी और रजिस्ट्री द्वारा ग्राहकों को भेजी जायगी। एजेन्ट अभी से अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लें अन्यथा निराश होना पड़ेगा।

पता—कल्याण-मन्दिर, कटरा, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

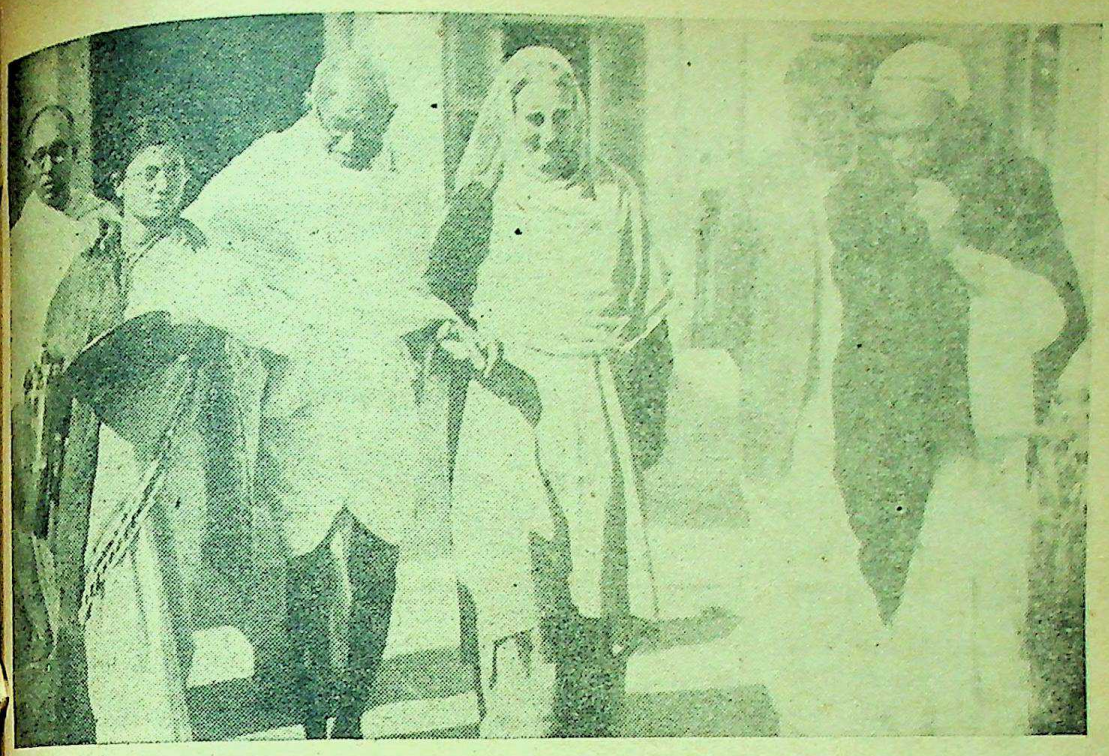

बिड़ला-हाउस से बाहर आते हुए गांधीजी।

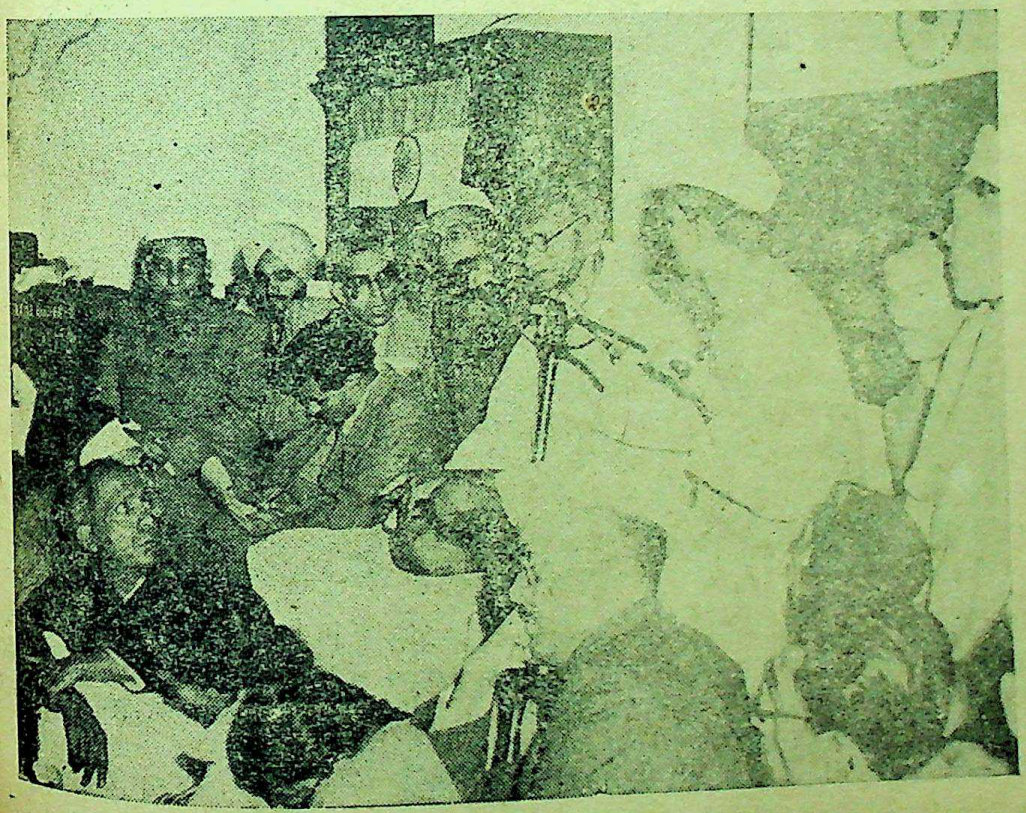

साम्प्रदायिक पागलपन से दूर रहने का उपदेश करते हुए महात्मा गांधी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-पितामह विश्ववंद्य महात्मा गांधी
का
साम्प्रदायिक एकता के लिए पंद्रहवाँ अनशन

पिछले दिनों अपने प्राणों की बाजी लगाते हुए महात्मा गांधी ने अपने जीवन का पन्द्रहवां अनशन आरम्भ कर दिया, इसलिए कि साम्प्रदायिक पागलपन से लोग अभी तक छुटकारा नहीं पा सके हैं। उनका स्वास्थ्य बिगड़ने ही लगा था कि देश के सौभाग्य से दिल्ली की शान्ति-समिति ने गांधीजी की सातों शर्तों को पूरा करने का वचन देकर उनके अनशन को समाप्त कराने में सफलता प्राप्त की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—हरिकेशव घोष : उमेशचन्द्र मिश्र

फरवरी १९४८, माघ २००४; भाग ४९, खण्ड १; संख्या २, पूर्ण-संख्या ५७८

सम्पादकीय

काजल की कोठरी

हमारे देश की राजनीति में साम्प्रदायिकता की किसी-न-किसी रूप में सदैव पुट लगती रही है। यही कारण है कि शुद्ध राष्ट्रीयता जैसी वस्तु यहां के कुछ इने-गिने नेताओं तक ही सीमित रही है। और यदि सच कहा जाए तो इन्हीं कुछ नेताओं के पुण्य-प्रताप से आज भारत स्वाधीन हो गया है। अन्यथा राजनीति की काजल की कोठरी में घुसकर अपना तन और मन कलुषित करनेवाले नेताओं की संख्या ही यहां अधिक रही है; परीक्षा की अग्नि में तपकर अन्त तक सोना बने रहनेवालों की बहुत कम।

साम्प्रदायिकता ने यहां कैसे-कैसे गुल खिलाए, यह इतिहास के पाठक से छिपा नहीं है। साम्प्रदायिकता चाहे संकीर्णतम रूप में रही हो या प्रकीर्णतम रूप में, इससे परिस्थिति में कभी विशेष अन्तर नहीं पड़ा, क्योंकि इसका ध्येय सदैव एक रहा—'पड़ोसी का घर जलाना।' यह हमारी प्यारी भूल है जिसकी आवृत्ति करने के लिए हमीं नहीं, हमारे चोटी के नेता भी प्रायः विवश रहे हैं।

जनसाधारण का अपनी प्यारी भूल से चिपटा रहना स्वाभाविक होता है क्योंकि लवणेन्धन की दैनंदिन चिन्ता उसके दृष्टिकोण को नितान्त संकुचित कर देती है। पर जब यही व्यामोह उन जीवों में दिखाई पड़ता है जो अपने को समाज का नेता लगाते हैं, तब परिस्थिति बड़ी विषम हो जाती है। नेता के पीछे समाज आंखें बन्द करके चलता है। जनता अपनी बुद्धि को एक प्रकार से नेता के पास गिरवीं रख देती है। अतः जब नेता खन्दक में गिरता है तो अपने साथ जनता के एक बड़े भाग को भी ले मरता है। इससे समाज की प्रगति के लिए प्रायः खतरा उत्पन्न हो जाता है। और नहीं तो कुछ समय के लिए वह रुक तो जाती ही है।

उदाहरण देने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं है। लाला लाजपतराय हमारे देश के एक ज्वलन्त नेता थे। विदेशों में भी उनकी धाक थी। उनके जैसा निर्भीक और तेजस्वी नेता उस समय दूसरा नहीं दिखाई देता था। वे राष्ट्र के गर्मदलीय नेताओं में अन्यतम माने जाते थे और इसीलिए उन्हें अपना अधिकांश जीवन प्रवासी के रूप में ही व्यतीत करना पड़ा था। प्रथम असहयोग-आन्दोलन के दिनों में जब वे विदेश से लौटकर भारत आए थे, तब दिल्ली के एक आर्यसमाज ने यह सोचकर कि लाला जी आर्यसमाज के पुराने सदस्य हैं, उन्हें मानपत्र अर्पित किया था। पर लाला जी को किसी समाज-विशेष का यह बन्धन कब स्वीकार हो सकता था! उत्तर में उन्होंने कह ही डाला कि कोई धार्मिक संस्था मुझे अब अपना समझने के भ्रम में न रहे। मैं समान रूप से सबका हूँ। मैं भारत-राष्ट्र का हूँ।

पर कुछ ही काल बाद लाला जी सबके न रहकर हिन्दुओं के ही रह गए। साम्प्रदायिकता का एक चिप्पा लगाकर वे कहां से कहां जा रहे!

एक लाला लाजपतराय ही नहीं, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, वीर सावरकर, भाई परमानन्द आदि अनेक हमारे तपोनिष्ठ सेनानी इस वात्याचक्र में पड़कर कहां-से-कहां हो गए! जिन्ना हमारे थे। उनके जैसा सफल कूटनीतिज्ञ न कांग्रेस में दूसरा था, न शायद समस्त भारत में। यदि साम्प्रदायिकता का प्रबल झोंका उन्हें कांग्रेस के मञ्च से उड़ा न देता तो भारत की स्वतंत्रता-तिथि १५ अगस्त सन् '४५ न होकर इससे १० वर्ष पूर्व होती। और जो स्वतंत्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें उस रूप में मिलती, वह आज की प्राप्त स्वतंत्रता से सैकड़ों गुनी अच्छी होती।

अभिप्राय यह है कि साम्प्रदायिकता के झोंके में हम अपनी बहुत हानि कर चुके हैं। हमारी राष्ट्रीयता को यह बार बार दूषित और अपदस्थ करने का प्रयत्न करती रही है। अगर विश्वबन्धुत्व के सच्चे प्रतीक, साम्प्रदायिकता के कालुष्य से सर्वथा अस्पृष्ट, गांधी जी हमारे बीच अब तक वर्त्तमान न होते तो न जाने हमारी क्या गति होती! विदेशी हमें रिश्वतें दे-देकर हमारे सेनानियों को मायाजाल में फँसा फँसाकर हमारी क्या दुर्गति कर डालते! हम स्वाधीन तो नहीं ही होते, हमारी पराधीनता की जड़ें न जाने कितनी अधिक गहराई तक पहुँच ग होतीं।

आज भी हम साम्प्रदायिकता के झोंके को व्यर्थ करने में पूर्ण समर्थ नहीं हो सके हैं, यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। हमारी इस दुर्बलता को दूर करने के लिए विश्ववन्द्य गांधी जी को प्राणों की बार बार बाजी लगानी पड़ रही है।

गांधी जी का अनशन

गांधी जी का गत १३ जनवरी से प्रारंभ होनेवाला अनशन इसी साम्प्रदायिकता के विरोध में था। इस साम्प्रदायिकता ने समस्त भारत को गत १५ अगस्त से किस प्रकार विक्षुब्ध कर रक्खा है, यह सर्वविदित है। यदि पाकिस्तान—जिसका पुंसवन संस्कार ही साम्प्रदायिकता की हवि से हुआ है, नग्न नृत्य करता है तो उसका ऐसा करना समझ में आ सकता है। पर जब ऐक्य, अहिंसा और सत्य को आधार मानकर चलनेवाले भारतीय यूनियन में—विशेषतः उसकी राजधानी दिल्ली में—साम्प्रदायिकता की बाढ़ आ गई तब परिस्थिति सर्वथा अवाच्छनीय हो गई। देवत्व की विजय दानवत्व का अनुकरण करने में नहीं है। वह तो अपने आचरण के प्रभाव से दानवत्व की जड़ें कमजोर करता रहा है। इसी से अन्तिम विजय उसी की रही है। गांधी जी ने पिछले दिनों हरिजन में जो कुछ लिखा है, उससे स्पष्ट विदित होता है कि भारतीय यूनियन की राजधानी दिल्ली इस सीमा तक साम्प्रदायिकता का शिकार बन चुकी है कि वहां की किसी सड़क पर जामिया मिल्लिया जैसी प्रख्यात राष्ट्रीय संस्था के तपःपूत राष्ट्रकर्मी अध्यक्ष भी निश्चिन्ता और सुरक्षा के साथ नहीं घूम-फिर सकते! दिल्ली का तिबिया कालेज, जो कांग्रेस के एक समय के अध्यक्ष और महात्मा गांधी के दाहिने हाथ स्वनामधन्य मसीहुल्मुल्क हकीम अजमल खां का पवित्र स्मारक है और जो हकीम साहब की निष्पक्ष नीति के कारण हिन्दू-मुस्लिम मेल का जीता-जागता प्रतीक था, आज उजाड़ पड़ा हुआ है। वहां न अध्यापक हैं और न छात्र! पुरातन चिकित्सा-विज्ञान की आधुनिक ढंग पर शिक्षा देनेवाला यह महाविद्यालय कब तक इसी अवस्था में पड़ा रहेगा और इससे हमारी कितनी अधिक हानि होगी, आयुर्वेद और यूनानी चिकित्साशास्त्र की उन्नति में कितनी बड़ी बाधा पड़ेगी, इसे सोचकर ही हृदय विचलित हो उठता है। पर साम्प्रदायिकता यह बातें नहीं देखती। वह अन्धी जो होती है। वह नाजी-वाद की प्रतिष्ठा के लिए यदि अजस्र रक्तप्लावन कर सकती है तो 'हिन्दू पद पादशाही' का स्वप्न पूरा करने के लिए समस्त ज्ञान-विज्ञान की बलि दे सकती है तथा दारुल इस्लाम की स्थापना के लिए अपने बचपन के साथियों और पड़ोसियों को कबाब की तरह भून सकती है!

नीति में पढ़ा था कि घायल सर्प और पराजित शत्रु अधिक भयानक हो जाता है, क्योंकि वह विवेकशून्य हो जाता है। विवेक के चले जाने पर प्रतिशोध की भावना अपने उग्रतम रूप में प्रकट होती है। प्रतिशोध प्रतिशोध को जन्म देता है। यही हमारे भारतीय यूनियन और पाकिस्तान के बीच हो रहा है। इस कुचक्र का अन्त कहीं नहीं है। परिधि को जब तक कहीं से काट न दिया जाए, उसका अन्त कैसे होगा! परिधि को काटने के लिए ही तो इस बार अपने जीवन में १५वीं बार, गांधीजी ने फिर अपने जीवन की बाजी लगा दी थी।

गांधीजी ने इस बार अपना व्रत नितान्त आकस्मिक रूप से प्रारम्भ किया था। कहते हैं, उनसे एक या दो घण्टा पूर्व मिलने के लिए आए हुए पंडित नेहरू और सरदार पटेल को भी गांधीजी के इस निश्चय के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं था। गांधीजी को ईश्वर की सत्ता और शक्ति में पूरा विश्वास है। उनका प्रत्येक कार्य 'ईश्वर प्रणिधान' का सच्चा उदाहरण होता है। वे जो कुछ करते हैं, अन्तर की प्रेरणा पर ही करते हैं, किसी पर क्रुद्ध होकर प्रतिकार या प्रतिशोध के रूप में नहीं। तभी तो उनके कार्यों का उनके विरोधियों पर भी वैसा ही प्रभाव पड़ता है, जैसा कि उनके समर्थकों पर! पाठक दांड़ी-यात्रा की वह ऐतिहासिक घटना भूले नहीं होंगे जब लँगोटीबन्द निःशस्त्र गांधी के मुस्कराते हुए दांड़ी-समुद्रतट से एक मुट्ठी नमक उठा लेने पर सारी ब्रिटिश सत्ता, जो उस समय संसार की सर्वश्रेष्ठ शक्ति मानी जाती थी, थरथरा उठी थी और लन्दन का सिंहासन डोल उठा था।

सत्य और अहिंसा की अजेय शक्ति पर गांधीजी का अटूट विश्वास है। उनकी दृढ़ धारणा है कि जब तक भगवान् की इच्छा नहीं होती, किसी को मृत्यु अपने चंगुल में ले नहीं सकती। इसीलिए वे मौत को—वह चाहे किसी की हो—विशेष महत्त्व नहीं देते। उनके निकट यदि कोई वस्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है तो वह है मानवता। भारतीय यूनियन की राजधानी दिल्ली ने जब मानवता को उठाकर ताक पर रख दिया, और वह भी न केवल नेहरूजी के और सरदार पटेल के, स्वयं मानवता के प्रतीक गांधी जी के वहां मौजूद रहते हुए, तब उनके हृदय का क्षुब्ध हो उठना स्वाभाविक था। वे ऐसे भारत की कल्पना भी नहीं कर सकते, जो उनके आदर्शों के अनुरूप न हो। यदि भारत भी पाकिस्तान का दूसरा रूप बन गया तो उसमें जीवन-धारण करना गांधी जी के लिए कैसे सम्भव हो सकता है? अनशन के प्रारम्भ में गांधी जी ने कुछ इसी प्रकार के भाव प्रकट किए थे।

उपवास का प्रभाव

गांधी जी के उपवास का प्रभाव न पड़े, यह संभव नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनके गत उपवास की न केवल भारत में, पाकिस्तान में भी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई है। भारत के चोटी के नेताओं ने उनकी सातों शर्तें मान लीं। पाकिस्तानी नेताओं में से अनेक ने तार-द्वारा उन्हें आश्वासन दिलाया कि वे अपने राज्य में अल्पमतवालों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं। इस आशय के विभिन्न व्यक्तियों और नेताओं के तार हजारों की संख्या में गांधी जी के पास पहुँचे हैं। चोटी के व्यक्तियों से आश्वासन पाकर इस दिव्य विभूति ने अपना अनशन समाप्त कर दिया है। हमें विश्वास है कि साम्प्रदायिकता के लिए गांधी जी का यह अनशन अन्तिम होगा और इससे सम्प्रदायवादियों की आंखें काफी खुल जाएँगी—उन सम्प्रदायवादियों की भी जो खुले हैं और उनकी भी, जो सफेद खादी और गांधी टोपी में प्रच्छन्न हैं।

राहुलजी और मास्को के पुत्र

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी-साहित्य- सम्मेलन के अध्यक्ष के पद से भाषण करते हुए पिछले दिनों हिन्दी के प्रति जो निष्ठा प्रकट की थी, उससे भारत की कम्युनिष्ट पार्टी के नेता बुरी तरह बिगड़ उठे हैं। राहुलजी का यह मत कि "राष्ट्रभाषा पद के लिए हिन्दी ही सबसे अधिक उपयुक्त है" कम्युनिष्टों को अग्राह्य है। कम्युनिष्ट पार्टी ने अपनी भाषा-सम्बन्धी नीति की स्पष्ट घोषणा कभी नहीं की, फिर भी राहुलजी के भाषण के प्रति उसने जो विरोधी रुख दिखलाया है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि उसकी भाषा-सम्बन्धी नीति क्या है! राहुलजी भारतीय कम्युनिष्ट दल के सदस्य रहे हैं अतः उन पर अनुशासन की कार्यवाही होना अवश्यंभावी था। इस सम्बन्ध में हमने कम्युनिष्टों के अखबार "हिन्दी जनयुग" के एक गतांक में एक नोट भी पढ़ा था जो काफी विक्षोभजनक था।

प्रसन्नता की बात है कि राहुलजी ने अपना निर्णय भी हिन्दी के पक्ष में दिया है और कम्युनिष्ट पार्टी से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है। उनके जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त और निर्भीक व्यक्ति से ऐसी ही आशा की जाती थी। राहुलजी के इस उदाहरण से एक बात और स्पष्ट हो गई है। वह यह कि अब उन व्यक्तियों के लिए, जो हिन्दी को उसका उचित राष्ट्रभाषा का पद दिलाना चाहते हैं—मास्को वादियों के कैम्प में जगह नहीं है।

कण्ट्रोल का मुँह काला

गांधीजी हाथ धोकर पीछे पड़ गए तो चीनी, अन्न और वस्त्र पर से कण्ट्रोल हट गया। प्रान्तीय सरकारों के सम्बन्धित अधिकारियों ने कण्ट्रोल हटाते समय जो वक्तव्य दिए हैं, उनसे स्पष्ट विदित होता है कि वे कण्ट्रोल हटाने के पक्ष में नहीं थे, और यदि उन्होंने ऐसा किया है तो केवल गांधीजी के दबाव के कारण! उन्होंने यह भविष्यवाणी भी की थी कि कण्ट्रोल हटाने का प्रभाव जनता पर अनुकूल नहीं पड़ेगा और उपभोग्य वस्तुएँ कण्ट्रोल के हटते ही दुर्लभ हो जाएँगी। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। चीनी अब बाजार में पर्याप्त दिखलाई देने लगी है और जो जितनी चाहे उतनी चीनी चौबह आने सेर से लेकर एक रुपए सेर तक के भाव से खरीद सकता है। यदि चीनी को ढोने के लिए सवारियों की प्रचुरता हो सकी—जो कि पेट्रोल पर से अंकुश हटने से ही होगी—तो चीनी का भाव बहुत नीचे आ जाएगा, क्योंकि दुकानदारों में एक ओर और चीनी की फैक्टरियों में दूसरी ओर प्रतियोगिता चलने लगेगी।

अनाज परसे अंकुश हटने की अभी सूचना ही मिली है अर्थात् अनाज पर्याप्त मात्रा में अभी बाजार में आया नहीं है, फिर भी उसके भाव गिरने लगे हैं। गांधीजी ने 'हरिजन-सेवक' में इसके कुछ आंकड़े पिछले दिनों छपाए हैं जो मनोरंजक होने के साथ-साथ कण्ट्रोल हटाने की सफलता पर पूरा प्रकाश डालनेवाले भी हैं।

ये तुलनात्मक आंकड़े नियंत्रित भाव के नहीं हैं, यह ठीक है। पर नियंत्रित भाव तो कृत्रिम होते हैं और उनसे जनता के एक बहुत छोटे भाग का काम चलता है। अधिकांश जनता को अनियंत्रित बाजार से ही काम चलाना पड़ता है। जब तक नियंत्रण है, तभी तक चोर बाजार पनप सकता है। नियंत्रण हटते ही चोर बाजार अवश्य समाप्त हो जाएगा और चोर बाजार के समाप्त होते ही न केवल हमारे बनियों का, सप्लाई विभाग के अधिकारियों का भी आत्मशोधन हो जाएगा, यह मानी हुई बात है। आशा है, हमारी सरकारें शेष अंकुशों को हटाने का भी अविलम्ब प्रयत्न करेंगी, न केवल इसलिए कि गांधीजी ऐसा कहते हैं, प्रत्युत इसलिए कि जनता ऐसा चाहती है।

आज कल का भाव—नवम्बर में अंकुश उठने से पहले का भाव	
चीनी ३७॥ रु. मन	८० से ८५ रु. मन
गुड़ १३ से १५ रु. मन	३० से ३२ रु. मन
शक्कर १४ से १८ रु. मन	३७ से ४५ रु० मन
चीनी के क्यूब ॥≡ आने का एक पैकेट	१॥ से १।।। रु० का एक पैकेट
चीनी देशी ३० से ३५ रु. मन	७५ से ८० रु. मन
अनाज	
गेहूँ १८ से २० रु० मन	४० से ५० रु० मन
चावल बासमती २५ रु० मन	४० से ४५ रु० मन
मकई १५ से १७ रु० मन	३० से ३२ रु० मन
चना १६ से १८ रु० मन	३८ से ४० रु० मन
मूंग २३ रु० मन	३५ से ३८ रु० मन
उड़द २३ रु० मन	३४ से ३७ रु० मन
अरहर १८ से १९ रु० मन	३० से ३२ रु० मन
दालें	
चने की दाल २० रु० मन	३० से ३२ रु० मन
मूंग की दाल २६ रु० मन	३९ रु० मन
उड़द की दाल २६ रु० मन	३७ रु० मन
अरहर की दाल २२ रु० मन	३२ रु० मन
तेल	
सरसों का तेल ६५ रु० मन	७५ रु० मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मघात की ओर

गांधीजी के पत्र 'हरिजन' में पिछले दिनों आन्ध्र के प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी कोण्डा वेंकटापय्या गुरु का एक पत्र प्रकाशित हुआ है। वह पत्र महात्मागांधी के नाम है, जिसमें महात्माजी का ध्यान कांग्रेस के बढ़ते हुए भ्रष्टाचार की ओर आकर्षित किया गया है। पत्र का भाव इस प्रकार है—"हमारे सामने जो अनेक उलझी हुई राजनैतिक और आर्थिक समस्याएँ हैं उन्हें छोड़ भी दें तो भी एक बड़ी समस्या कांग्रेस जनों और कांग्रेस क्षेत्रों की चरित्र-भ्रष्टता की है। मैं दूसरे सूबों के सम्बन्ध में अधिक नहीं कह सकता, पर मेरे सूबे (आन्ध्र) में परिस्थिति सचमुच दयनीय है। राज्यसत्ता के स्वाद ने कांग्रेसियों का सिर फिरा दिया है। अनेक एम० एल० ए० और एम० एल० सी० जनों ने यही नीति बना रक्खी है कि "जब तक दिन है तब तक जितनी घास काटते बने, काट लो।" वे अपने प्रभाव का उपयोग पैसा बनाने में कर रहे हैं। यहां तक कि मजिस्ट्रेटों पर भी प्रभाव डालकर शासन-शकट के संचालन में वे रुकावटें डालते हैं।

"अपनी पार्टी के आदमियों के मामलों को लेकर एम० एल० ए० और एम० एल० सी० इतनी अधिक संख्या में मजिस्ट्रेटों के पास पहुँचते हैं कि मजिस्ट्रेटों के लिए ईमानदारी से काम चलाना अशक्य हो गया है। कोई ईमानदार और सच्चा अधिकारी अपनी जगह पर नहीं रह सकता क्योंकि उसके सम्बन्ध में झूठी शिकायतें मिनिस्टरों के पास भेजी जाती हैं और मिनिस्टरों को उन शिकायतों को सुनना पड़ता है।"

वेंकटापय्या गुरु ने आन्ध्र के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, वह हमारे सभी प्रान्तों पर समानरूप से लागू है। सर्वत्र ऐसी ही धांधली मची हुई है। राजेन्द्र बाबू के बिहार की सरकार "शीरे" के मामले को लेकर काफी बदनाम हो चुकी है। हमारे युक्तप्रान्त की सरकारी नीति पर भी अभी हाल ही में श्री शालिग्राम जायसवाल ने, जो स्वयं प्रान्तीय धारासभा के सदस्य थे, पर जिन्होंने इस अन्धाधुंधी से क्षुब्ध होकर न केवल धारासभा की सदस्यता से प्रत्युत उन सभी पदों से अपना नाता तोड़ लिया है, जो उन्हें प्रान्तीय कांग्रेसी संगठनों में प्राप्त थे, एक वक्तव्य-द्वारा पूरा प्रकाश डाला है। इस वक्तव्य में कही हुई बातें नई नहीं हैं। जनता के एक साधारण व्यक्ति से लेकर प्रान्त के प्रधान मंत्री महोदय तक इन तथ्यों से अवगत हैं। यदि कोई कांग्रेसी इनके विरोध में जबान नहीं खोलता तो केवल इसलिए कि कांग्रेस के अन्दर रहते हुए उसके विरोध में एक शब्द मुंह से निकालना अनुशासन-दण्ड को आमंत्रित करना है। श्री जायसवाल तपे हुए कांग्रेसी हैं और अब वे पद-ग्रहण के लोभ से पराङ्मुख अतएव "अनुशासन" की सीमा से परे हो चुके हैं। इस दशा में उनके हृदय से जो उद्गार निकले हैं वे सचमुच मर्मस्पर्शी हैं, साथ ही आंखें खोल देनेवाले भी। उन्होंने कहा है—"दलबन्दी के संघर्ष ने कांग्रेस को निस्सत्व कर दिया है। तपे हुए और विश्वासपात्र कांग्रेसकर्मियों को निकाल बाहर करने के लिए भांति-भांति की कुटिल और बेईमानी से भरी चालें चली जा रही हैं। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की कार्यकारिणी 'सूबा अदालत' में भी हस्तक्षेप करती है। इस प्रकार भीतर से पार्टीबन्दी कांग्रेस को खोखला कर रही है तो लोभ और भ्रष्टाचार उसकी शक्ति को ही मिटाने में अग्रसर हैं। कांग्रेसमैन अफसरों के दैनिक कार्यों में अत्यधिक हस्तक्षेप कर रहे हैं, जिसके कारण अफसरों का "आचार" बहुत नीचा हो गया है। कण्ट्रोल और लाइसेंसिंग कमेटियां धन कमाने और पार्टी को दृढ़ करने का उत्तम साधन बनकर रह गई है।"

जायसवालजी ने जो कुछ कहा है, उसमें अत्युक्ति नहीं है; प्रत्युत उससे भी अधिक कहा जा सकता है, और सत्य की सीमा के भीतर रहते हुए ही। दुःख केवल यह देखकर होता है कि इस कहने-सुनने का कोई असर न सरकार पर होता है और न कांग्रेस संगठन पर, जो आज सरकार का ही दूसरा नाम है। यह परिस्थिति कितने दिनों तक चलेगी? एक गांधीजी के तप-त्याग का बखान करते हुए जनता को कब तक मोहित रखा जा सकेगा? चार आना सेर नमक और बीस आने बोतल मिट्टी का तेल खरीदनेवाली जनता महात्मा गांधी की जय भले ही बोलती जाए और जवाहरलाल जी के प्रति अटूट श्रद्धा भले ही प्रकट करती रहे, पर अब उन खादीधारियों को देखकर, जो किसी अफसर के चारों ओर इसी तरह मँडराते रहते हैं, जैसे गुड़ पर बर्रे, वह घृणा से मुंह बिचकाने लगी है और "गांधीटोपी" का अर्थ "चोरबाजारी" किया जाने लगा है। सत्य और अहिंसा, सेवा और त्याग का मूल्य आज कौड़ी गुना वसूल किया जा रहा है! और खुले आम सुना सुनाकर! जनता इसे कब तक सहन करेगी? क्या जनतंत्र का सच्चा रूप यही रहेगा?

कांग्रेस ने अपने संगठन सेवा और त्याग के बल पर देश को सदियों की पराधीनता से मुक्त करा लिया है, यह ठीक है। पर जो स्वाधीनता हमें मिली है वह केवल राजनैतिक है और वह भी अधूरी। आर्थिक स्वाधीनता अभी तक हमें उपलब्ध नहीं हुई है। वह तो स्वयं उपार्जित की जानेवाली चीज है, किसी के देने-पाने की नहीं। चक्रव्यूह के सात द्वार हमने तोड़ डाले हैं, केवल सातवां द्वार शेष रह गया है—आर्थिक! इस द्वार पर पहुँचते-पहुँचते शेष छः द्वारों पर हमसे हारे हुए शत्रु हमारे ऊपर एकत्र होकर चारों ओर से टूट पड़े हैं। यदि हम स्वयं लोभी-लालची, अवसरवादी अकर्मण्य बन गए, तो निश्चय ही हमारी दशा अभिमन्यु जैसी होगी और हम अपनी विजय को अविलम्ब पराजय में परिणत कर देंगे। इसी लिए महात्मा गांधी के शब्दों में "हमें होश में आ जाना चाहिए और प्रत्येक कांग्रेसकर्मी को अपना दिल टटोलना चाहिए।" आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि हमारा प्रत्येक मंत्री, उसका पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी, लाइसेंसिंग कमेटी का प्रत्येक सदस्य और परिषद से सम्बन्धित प्रत्येक अफसर, क्लर्क और चपरासी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

से अधिक पैसा इकट्ठा करके अपने घर में भर लेने का प्रयत्न करे, जिससे उसे और उसके कुटम्ब को आगामी अनेक वर्षों के लिए इस ओर से निश्चिन्तता होजाए ! यदि वर्तमान शासन-तंत्र में इसका यही अर्थ रह गया हो, जैसा कि प्रत्येक जागरूक नागरिक देख रहा है, तो वह दिन दूर नहीं है जब शासन तंत्र को इसका पाई-पाई हिसाब चुकता करना होगा और "महात्मा गांधी की जय" उसकी रक्षा करने में असमर्थ होगी।

नए कीर्त्तिध्वज

जैसे-जैसे पंजाबी भाइयों से हमारा परिचय बढ़ रहा है, हमें पंजाब में घटनेवाली घटनाओं की कहानियां अधिकाधिक संख्या में सुनने को मिल रही हैं। इन घटनाओं में कितना अतिरंजन है और कितना सत्य, यह निर्णय करना आज असंभव है। पर यह असन्दिग्ध है कि पश्चिमी पंजाब, लाहौर तथा सीमाप्रान्त में रक्तपात, बलात्कार और अपहरण के जो दृश्य पिछले दिनों देखने को मिले हैं, वे भारत के इतिहास में अभूतपूर्व हैं। तैमूर, चंगेज, हलाक या नादिरशाह के हाथों भी हिन्दुओं को ऐसी और इतनी यातनाएँ नहीं सहन करनी पड़ी होंगी, जैसी और जितनी अपने को मुस्लिम-लीगी कहनेवाले पाकिस्तानी गुण्डों के हाथों सहनी पड़ी हैं। कितने मनुष्य मारे गए हैं और कितनी नारियों का अपहरण हुआ है, इसके ठीक-ठीक आंकड़ें वस्तुतः किसी के पास नहीं हैं; और परिस्थितियों से ऐसा प्रकट होता है कि इस सम्बन्ध के सही आंकड़े कभी ज्ञात भी न किए जा सकेंगे।

मानवता के इस अतिसंकट के समय में हिन्दू नारियों ने पाकिस्तानी प्रदेश में अनेक नए कीर्त्तिध्वज स्थापित कर लिए हैं। इन कीर्त्तिध्वजों के आगे थर्मापोली और चितौड़ के कीर्त्तिध्वज भी फीके पड़ जाते हैं। जिन सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने उन दृश्यों को आंखों देखा है, उनका कहना है कि पाकिस्तानी लुटेरे जब हिन्दू-गृहों पर आक्रमण करते हैं तब उन गृहों के निवासियों को बाहर निकाल कर मैदान में एकत्र कर देते थे और अपने नेशनल गार्ड की देखरेख में छोड़ देते थे। मकानों को लूट लेने और उनकी सभी सम्पत्ति को अग्निसात् करदेने के बाद वे इस सजीव सम्पत्ति की ओर ध्यान देते थे। स्त्रियों को एक ओर खड़ा किया जाता था, पुरुषों को दूसरी ओर! फिर दोनों के सामने छोटे बच्चों को टुकड़े-टुकड़े किया जाता था। इस कुकृत्य को सम्पन्न कर चुकने के बाद आततायी पुरुषों को रस्सों से बांध देते थे और महिलाओं पर पुरुषों की आंखों के सामने बलात्कार करते थे। फिर पुरुषों और वृद्धाओं को तलवार के घाट उतारकर युवतियों को कैद कर लिया जाता था और ट्रकों पर बैठाकर स्थानान्तरित कर दिया जाता था। ऐसे आतंकपूर्ण समय पर हिन्दू स्त्रियां आततायियों से अपने प्राणों की भिक्षा मांगती कभी नहीं देखी गईं। यह हिन्दू-संस्कृति की विशेषता है। कहते हैं कि मुस्लिम महिलाओं के सामने पूर्वी पंजाब में जब ऐसे ही दृश्य उपस्थित होते थे, तब वे आततायियों से प्रार्थना करती थीं कि "मेरी जान बख्श दो, और तुम जो चाहो वह करो!" पर पश्चिमी पंजाब में हिन्दू स्त्री ऐसे अवसर पर आततायियों से सदैव यह प्रार्थना करते सुनी गई कि "पहले मुझे मार दो, फिर बच्चों और मर्दों को हाथ लगाओ।"

एक देवी, जो इण्टर मीजिएट पास कर चुकी थी और युवती तथा सुन्दरी भी थी, अचानक एक ऐसी ही दुर्घटना में पड़ गई। उसके परिवारवालों का उसी के सामने वध कर दिया गया और उसे पकड़ कर आततायी एक मस्जिद में ले गए। वहां उसके सामने वर का चुनाव करने के लिए अनेक युवक उपस्थित किए गए। उसने धैर्य के साथ उत्तर दिया कि उसकी अपनी पसन्द उनमें से एक के भी पक्ष में नहीं है। पर वह पराधीन है, अतः आततायी जिसके साथ चाहें, उसका सम्बन्ध करने को स्वतंत्र हैं। अन्त में एक सम्भ्रान्त लीगी युवक के साथ उसका निकाह करा दिया गया। रात्रि के समय प्रथम मिलाप के अवसर पर लड़की ने अपने 'मियां' से प्रश्न किया कि "हम हिन्दू लोगों में सूतक मनाने की प्रथा है। मैं बीवी हूँ और आप मेरे खाविन्द हैं। इस नाते मेरे भाई और पिता आपके साले और ससुर हुए। कल उन सबका इन्तकाल होगया है, आपकी नजरों के सामने ही! मैं यह जानना चाहती हूँ कि इस्लाम में इस सम्बन्ध में क्या रिवाज है।" मियां ने उत्तर दिया कि "हमारे यहां एक दिन-रात गम मनाने का कायदा है।" इसी कायदे के अनुसार उस रात के लिए बीबी को एकान्त कमरे में रहने की छुट्टी दे दी गई। इस अवसर से लाभ उठाकर बीबी ने उसी घर से एक गँड़ासा खोज निकाला और उसकी सहायता से शौहर साहब का सिर सोते समय धड़ से जुदा कर दिया। फिर वही गंड़ासा हाथ में लिए वह वहां से भाग खड़ी हुई और २५ मील का अन्तर रातोंरात तय करके एक शहर में पहुँच गई, जहां कुछ हिन्दू सेना थी।

यह घटना अकेली नहीं है। इसी प्रकार की सैकड़ों घटनाएँ पंजाब में पिछले दिनों घटी हैं। ऐसी विपत्ति के उपस्थित होजाने पर व्यक्तिगत और सामूहिक आत्म-हत्याएँ तो इतनी की गई हैं, जितनी राजपूताना के समस्त इतिहास में कुल मिलाकर भी नहीं हुई होंगी। अभिप्राय यह है कि नदियों और कुओं में सामूहिक रूप से कूदकर, पेट में छुरा भोंककर या जहर खाकर पंजाबी हिन्दू स्त्रियों ने इस बार भारतीय स्वाधीनता के इतिहास में अपने खून से इतने पृष्ठ लिख दिए हैं कि उनके सामने इसी प्रकार के लिखे समस्त पिछले पृष्ठ संख्या में नगण्य हो गए हैं। यदि कभी समय आया, जिसकी संभावना आज प्रतीत नहीं होती, और ये गाथाएँ संकलित की जा सकीं तो टाड राजस्थान से भी बड़ा ग्रंथ तैयार हो जाएगा जो विदेशियों को और हमारी भावी पीढ़ियों को सदियों तक बताता रहेगा कि राष्ट्रसंकट उपस्थित होने पर भारतीय नारी अपनी मर्यादा की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में कितनी तत्पर रहती हैं। जहां-जहां इस प्रकार के बलिदान सामूहिक रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए हैं, वहां-वहां नए कीर्त्तिध्वज स्थापित करने का हमें कभी अवसर मिलेगा भी या नहीं, कौन कह सकता है!

हमारे शरणार्थी भाई

पाकिस्तान से खदेड़े जाकर और जानमाल की अपरिमित क्षति उठाकर जो भाई पंजाब, सीमाप्रान्त और सिन्ध से यहां पहुँचे हैं, उनकी संख्या अब लाखों में है। उनपर जो विपत्ति आई, वह भारतीय इतिहास में अपने ढंग की अकेली थी। इतिहास ने अगणित रक्तपात देखे हैं; परन्तु १५ अगस्त के बाद भारत में जिस ढंग का रक्तपात हुआ, उसने हमारे इस दावे को भी झूठा कर दिया कि हमें जो स्वाधीनता मिली है, उसके लिए एक बूंद भी रक्त नहीं बहाना पड़ा। जिन देशों ने लड़कर स्वाधीनता प्राप्त की है, उनके नागरिकों को भी इतना रक्त नहीं बहाना पड़ा होगा, जितना हमें आजादी प्राप्त करने के बाद बहाना पड़ा है।

जिसके बच्चों को उसकी आंखों के सामने टुकड़े-टुकड़े किया जाए, जिसकी बहनों-बेटियों और बहुओं की इज्जत गुण्डे दिन दहाड़े लूटें और वह भी उसे बांधकर उसकी आंखों के सामने जिनको महल छोड़कर खुले आकाश के नीचे महावटी जाड़े की रातें काटनी पड़ें, जो ऐश-आराम की जिन्दगी बिताने के आदी रहे हों, पर जिन्हें समय ने दो-दो रोटियां पाने के लिए घण्टों राशन कार्ड हाथ में लेकर पंक्ति में खड़े रहने को विवश कर दिया हो और जिनके बच्चे सर्दी खाकर और न्यूमोनियां के शिकार बन बनकर अब भी सहायताहीन मृत्यु को प्राप्त हो रहे हों, उनकी मनःस्थिति का अनुमान हम स्वयं कर सकते हैं। हम जानते हैं कि पंजाब आदि से जो भाई किसी प्रकार अपनी जान बचाकर यहां आ गए हैं, उनके हृदय प्रतिक्रिया और प्रतिशोध की भावनाओं से लबालब हैं। उनकी सम्पत्ति लुट गई हैं; उनके सम्बन्धी मौत के घाट उतार दिए गए हैं, और अब वे इस संसार में अकेले रह गए हैं--नितान्त एकाकी और संबल-हीन। ऐसी स्थिति में मनुष्य को प्राणों का, जीवन का मोह, नहीं रह जाता। यदि वह जीना चाहता है तो केवल बदला चुकाने के लिए अपने अपमान का प्रतिशोध करने के लिए। फिर पंजाबी जाति में प्रतिशोध की भावना होती भी अधिक है। वहां का एक पुत्र ऊधमसिंह जलियानवाला हत्याकाण्ड का बदला लेने के २० साल तक प्रयत्नशील रह सकता है और अन्त में लन्दन पहुँचकर जनरल ओडायर को अपनी गोली का निशाना बनाने का साहस कर सकता है।

परन्तु प्रतिशोध, प्रतिहिंसा और प्रतिकार के लिए भी अवसर और स्थान का विचार आवश्यक है, अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होती है। हमारे शरणार्थी भाइयों में जो भी यहां आए हैं, उनमें से प्रत्येक प्रतिशोध की भावना से पूर्ण है। यदि ये भाई अपने प्रान्त में ही अपनी प्रतिशोधात्मक वृत्ति की पूर्त्ति कर लेते, तो इतिहास में उनकी गणना वीरश्रेष्ठों में होती। जिस जाति को मरना नहीं आता, उसे जीना भी नहीं आता। हमारे इन भाइयों ने मौत को अपनाया तो नितान्त विवशता से। महात्मा गांधी का भी यही अभिमत था कि जो जहां है, वहीं बना रहे। मौत आती है, तो उसका मुकाबला हँसते-हँसते करे; समर्थ हो तो अहिंसक रहकर अथवा आवश्यकता पड़े तो हिंसक बनकर भी। परन्तु हमारे इन भाइयों ने ऐसा कुछ नहीं किया। उन्होंने उन जीवों की भांति जिन्हें रक्षार्थ प्रकृति ने लम्बी टांगें भर दी हैं, कान्दिशीकता की नीति को अपनाया।

आज वे हमारे बीच आ गए हैं तो लाखों रुपए प्रतिमास व्यय करके उनकी रक्षा और भरण-पोषण का भार हमारी सरकार को संभालना पड़ रहा है। केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारें उनके ऊपर अब भी पैसे को पानी की तरह बहा रही हैं, जिसका असर राजकोष पर बुरी तरह पड़ रहा है, और वे सारी अत्यावश्यक योजनाएँ, जिनका चलना पुनःसंस्थापन के लिए शीघ्रातिशीघ्र अनिवार्य था, ठप्प पड़ी हैं। परन्तु इतना सब होते हुए भी, ऐसा प्रतीत हो रहा है, हमारे ये भाई सन्तुष्ट नहीं हैं। बाजारों में वे जिस तरह की फिर भी बातें करते हैं, उनसे प्रकट होता है कि वे यह चाहते हैं कि सरकार उन्हें यहां के अल्प-संख्यकों को लूटने-मारने, उनके घरों पर अधिकार करने और उनकी सम्पत्ति को भस्म करने की पूरी छूट देदे, जिससे वे बदला लेने की राक्षसी प्रवृत्ति को सन्तोष दे सकें और जो कुछ वहां खो आए हैं, उसे आना-पाई से वसूल कर सकें। उनमें से कुछ यहां तक निम्नस्तर पर उतर आए हैं कि गांधीजी के अनशन के समय यह नारा लगाने को भी जा पहुँचते हैं कि "गांधी को मरने दो"। वे गांधी जी पर बम फेंकने भी का दुस्साहस कर रहे हैं। मस्जिदों और मुसलमानों के घरों पर अधिकार करके बैठ जाना तो वे अपना हक समझने लगे हैं। उनकी प्रवृत्ति चलती ट्रेनों में और नगरों में साम्प्रदायिक उत्पात करने की हो रही है।

यही नहीं, उनमें से कुछ बाजारों में तरह-तरह की किंवदन्तियां प्रचलित करके यहां के जनमत को क्षुब्ध करने का निन्द्य प्रयत्न करते हुए भी देखे जाते हैं। हमारी समझ में नहीं आता कि भारतीय सरकार से सहायता और सुरक्षा प्राप्त करने के ये आकांक्षी जिस पत्तल में खा रहे हैं, उसी में क्यों छेद करना चाहते हैं?

मेजवान की गृह-नीति में हस्तक्षेप करना मेहमान के लिए अनुचित है। पर हमारे शरणार्थी भाई कुछ इसी तरह की बातें कर रहे हैं। यदि वे सचमुच बदला लेना चाहते हैं—हिंसा का उत्तर प्रतिहिंसा से देकर—तो उनके लिए अब भी पश्चिमी पंजाब का मार्ग खुला हुआ है। वे वहां जाकर अपने दिल के गुबार निकाल सकते हैं। हिंसा, प्रतिहिंसा, प्रतिकार-प्रतिशोध के लिए यहां स्थान नहीं है। जो इसके विपरीत आचरण करता है, प्रान्त या भारत के शान्त वातावरण को अपने आतंककारी कार्यों-द्वारा अशान्त और उद्वेलित करता है, वह यहां की जनता के प्रति विश्वासघात करता है और सरकार की जड़ें काटता है। हमारे शरणार्थी भाइयों को यह सब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। इसी में उनका भी हित है, हमारा भी और हमारी सरकार का भी।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिहाद और भारत

डाक्टर एस० सी० लेले

पाकिस्तानियों ने काश्मीर पर आक्रमण को 'जिहाद' का नाम दिया है, अतः यह शब्द अब बहुप्रचलित है। 'सरस्वती' के पाठकों को इस 'जिहाद' शब्द का अभिप्राय समझाना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है।

'जिहाद' शब्द का प्रचुर प्रयोग हदीस में हुआ है। हदीस का एक वाक्य है—"अल्लाह के मार्ग में मेरी जाति-वालों का संसार के दूसरे देशों में प्रवास करना 'जिहाद' है।" इस प्रकार जिहाद इस्लाम का एक प्रमुख कार्यक्रम और मुसलमानों का पवित्रतम कर्त्तव्य माना जाता रहा है। यह शब्द 'जिहादा' से निकला है, जिसका अर्थ है इस्लाम के प्रसार के लिए युद्ध'। इस सतत-स्थायी युद्ध की घोषणा स्वयं पैगम्बर मुहम्मद साहब के द्वारा हुई थी। उनके कथनानुसार समस्त पृथ्वीतल पर जब तक एक भी मुस्लिमेतर व्यक्ति रहेगा, तब तक जिहाद चालू रहेगा।

'जिहाद' की व्याख्या करते हुए डाक्टर मजीद खद्दूरी नामक एक विद्वान् अपने प्रख्यात ग्रंथ 'इस्लाम में युद्ध और शान्ति के कानून' में लिखते हैं—

"जिहाद का अर्थ है उद्योग। इसका सामाजिक व धार्मिक अर्थ है अल्लाह की राह में अर्थात् 'अल्लाह में विश्वास' के विस्तार के लिए किसी व्यक्ति का अपनी शक्ति का उपयोग करना और उसकी आज्ञा संसार में सर्वोपरि होगी।*

अल्लाह ने अपने इलहाम के द्वारा इस्लाम नामक जो आचरण-प्रकार या पंथ चलाया, उसके प्रसार के लिए अल्लाह की आज्ञा व आदेश के अनुसार जिस युद्ध का प्रारम्भ पैगम्बर साहब ने किया, उसी का नाम 'जिहाद' है। इस्लाम के प्रसार के लिए जिहाद की घोषणा मुहम्मद साहब ने स्वयं की थी और उसे सतत चालू रखने का आदेश भी अपने साथियों एवं अनुयायियों को दिया था। अतः जिहाद का आयुष्य अमर्याद है। 'कारणवशात् अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों में जिहाद स्थगित हो सकता है; परन्तु उसका प्रारम्भ किस स्थान में, किसके द्वारा और किस रूप में होना चाहिए, आदि बातें भी तत्तत् कालीन इस्लाम के अनुयायियों पर छोड़ दी गई हैं; पर जिहाद में परिवर्तन करने का अधिकार किसी नेता या खलीफा को नहीं है'—यह है अल्लाह की स्पष्ट आज्ञा है। जिहाद के सम्बन्ध में किसी मुस्लिम नेता को कोई स्वतन्त्र अधिकार नहीं दिया गया है। जिहाद प्रत्येक इस्लामानुयायी के लिए अनिवार्य है।

मुहम्मद साहब की इस आज्ञा का—जिहाद के कुरान-वर्णित इस आदेश का—पालन प्रत्येक मुसलमान कट्टरता के साथ—प्रतिगामी प्रवृत्ति को शोभा देनेवाली कर्मठता के साथ—करता है। यह उसका परम कर्त्तव्य माना जाता है। भारतीय जनता के लिए जिहाद का अनुभव नया नहीं है। वर्त्तमान समय का उसका दाहक अनुभव तो अभी ताजा ही है।

कुरान को सर्वस्व माननेवाले तथा उसके अनुसार प्रत्यक्ष आचरण करनेवाले मुसलमान का संसार की ओर देखने का ढंग सर्वथा इस्लामी है। पितृभूमि, मातृभूमि या राष्ट्र की कल्पना का इस्लाम में कोई स्थान नहीं। ज्ञात भूमि का वर्गीकरण करने का यह प्रकार इस्लाम को पूर्णतया असम्मत है। इस्लाम के अनुसार भूमि केवल दो भागों में बांटी जा सकती है—एक दारुल् इस्लाम, अर्थात् इस्लाम की भूमि और दूसरा दारुल् हरब, अर्थात् शत्रु-प्रदेश।

दारुल् इस्लाम में इस्लाम का शासन सर्वतंत्र स्वतन्त्र रीति से चलता है। इस हुकूमत को 'हुकूमते इलाही' कहा जाता है। दारुल् इस्लाम में अन्य धर्मावलम्बियों के लिए स्थान नहीं होता। उनका रहना राज्य को सहन नहीं हो सकता। मूर्त्तिपूजकों को 'दारुल् इस्लाम' के पास तक फटकने नहीं दिया जा सकता। हां, ईसाइयों के लिए वहां निषेध नहीं है। मुहम्मद साहब ने ईसाइयों को 'दारुल इस्लाम' में रहने की आज्ञा दे दी है। उनके समय में ईसाई अरबिस्तान में रहते भी थे। पीछे खलीफा उमर ने ईसाइयों को भी दारुल् इस्लाम से खदेड़ बाहर कर दिया और दारुल् इस्लाम का परिष्कार कर लिया।

पाकिस्तान में भी 'दारुल् इस्लाम' की कल्पना परिगृहीत है। सिन्ध में मुस्लिमलीग के अधिवेशन के समय एक लीगी कवि ने एक कविता पढ़ी थी, जिसकी कुछ पंक्तियों का भावार्थ इस प्रकार है—"पाकिस्तान मुसलमानों का पृथक् केन्द्र होना चाहिए। पाकिस्तान में हम अमुस्लिम चेहरे नहीं देखेंगे। मुसलमानों का राष्ट्रीय-गृह तभी उद्भासित होगा जब यहां मूर्त्तिपूजकरूपी कण्टक नहीं रहेंगे।*

---

* Jehad means exertion; and its juridical religious meaning is the exertion of one's own power in the Path of Allah; *i.e.*, for the spread of belief in Allah and that his word shall be supreme over the world. (Law of War and Peace in Islam PP. 29)

* Let there be in Pakistan, the separate centre of Islam. We shall not in Pakistan have to look on the faces of non-Muslims. The abode of of Muslim nation will brighten up only when in Pakistan there remain no idolatrous thorns.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारुल् इस्लाम से अतिरिक्त भूभाग को 'दारुल् हरब' अर्थात् शत्रु-भूमि कहा जाता है। इसके सम्बन्ध में प्रत्येक मुसलमान का स्पष्ट कर्त्तव्य है उस पर सशस्त्र आक्रमण करके उसके निवासियों को मुसलमान बना लेना या उन्हें खत्म कर देना। यही जिहाद है।

जब तक सारा संसार दारुल् इस्लाम नहीं बन जाता तब तक जिहाद चलेगा। पैगम्बर साहब का यही आदेश है। डाक्टर मजीद खद्दूरी महोदय ने भी अपने उपरि-लिखित ग्रंथ के पृष्ठ २० में लिखा है—

"अल्लाह में विश्वास रखनेवाले नास्तिकों से सदा युद्ध करते रहेंगे। अतएव जिहाद का उद्देश्य 'दारुल् हरब' को 'दारुल् इस्लाम' में परिवर्त्तित करने के अतिरिक्त दूसरा नहीं है।"*

अधिक स्पष्ट करते हुए उक्त डाक्टर साहब आगे फर्माते हैं—"अतः व्यवहार में जिहाद का अर्थ है, मुस्लिम धर्म और इस्लामी राज्य—दोनों को सार्वभौम बनाने के लिए प्रयत्न! इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिहाद का तब तक चालू रहना स्वाभाविक है, जब तक सारा संसार इस्लाम को अंगीकार न कर ले और वह 'दारुल् इस्लाम' के अन्तर्गत न आ जाए।"†

वर्तमान इस्लाम जगत् ३ खण्डों में फैला है। इन तीनों खण्डों में जिहाद के लिए लगातार प्रयत्न चल रहे हैं। हमारी अदूरदर्शिता के कारण भारत में उनका प्रयत्न सफल हो चुका है। हिन्दुओं की पवित्र भूमि विभाजित हो चुकी है। सरदार पटेल के कथनानुसार भारत पर इस्लाम का आक्रमण शीघ्र होनेवाला है। पाकिस्तान में बैठकर लीगी नेतागण भारत पर आक्रमण की योजनाएँ बना रहे हैं। यदि ये योजनाएँ सफल हो गईं और शेष भारत भी इस्लामी साम्राज्य में मिल गया तो संसार को दारुल् इस्लाम बनाने का महान् कार्य अस्सी प्रतिशत पूरा हो जाएगा। कारण, खण्डित भारत के बीच में पड़ जाने से तीन खण्डों में फैला हुआ इस्लामी संसार खण्डित हो जाता है। यदि भारत भी शामिल हो जाए तो मोरक्को से मनीला तक विस्तृत भू भाग में दारुल् इस्लाम की पताका निर्बाध फहराने लगेगी। खण्डित भारत में इस्लामियों के जो षड्यन्त्र चल रहे हैं, उनका सम्बन्ध मोरक्को पर्यन्त है यह बात शायद खण्डित भारत का निर्माण करनेवालों के ध्यान में अभी तक नहीं आई है।

किसी ऐसे मुसलमान की कल्पना शायद ही की जा सकती है जिसकी अटूट आस्था कुरान और हदीस के वचनों के प्रति नहीं है। कुरान और हदीस में जिहाद की घोषणा स्पष्ट शब्दों में की गई है। स्वर्गीय लाला लाजपतराय कहा करते थे कि "मैं मुसलमान नेताओं का पूर्ण विश्वास करने को तैयार हूँ; पर कुरान और हदीस के आदेशों का क्या होगा? नेता उनकी अवहेलना तो नहीं कर सकते।"*

जिहाद के सम्बन्ध में कुरानशरीफ में आगे लिखा है—

"तुम्हारे जो पड़ोसी नास्तिक हैं, उनसे हमेशा लड़ते रहो। उन्हें यह अनुभव करने दो कि तुम कठोर हो। (कुरान, ९, १२३)।

इस महत्त्वपूर्ण आज्ञा का पालन यदि भारत को दारुल् हरब माननेवाला मुसलमान करे तो इसमें आश्चर्य क्या है!

अल्लाह के इस इलहाम में एक और स्थान पर जिहाद के लिए मुसलमानों को प्रलोभन दिया गया है। उक्त अंश का अँगरेजी अनुवाद इस प्रकार दिया गया है—

"O you, who believe! Shall I lead you to riches, which may deliver you from a painful chastisement? Believe in Allah and his Apostle and declare Jehad in Allah's path. This did you, but know it will be best for you. He will forgive your sins and He will bring you into gardens beneath its shades the rivers flow into charming abodes in gardens of Eden (Koran LXI 10-12).

"अर्थात् ऐ विश्वास करनेवालो! मैं तुम्हें सम्मति का मार्ग बताता हूँ जिससे तुम्हें दुःखदायक अनुशासन दण्ड से छुटकारा मिल सकेगा। अल्लाह और उसके पैगम्बर में विश्वास करो और अल्लाह की राह में जिहाद की घोषणा करो। यही तुम्हारे लिए सर्वोत्तम होगा। वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। यही नहीं, वह तुम्हें बिहिश्त के उन उद्यानों में पहुँचा देगा, जिनकी छाया में नदियाँ बहती हैं—अदन के रमणीय उद्यानों में अवस्थित निवास-गृहों की ओर जानेवाली।"

मुस्लिम इतिहास साक्षी है कि सन् ६२१ में एक विकट धार्मिक प्रतिज्ञा की गई थी जो अँगरेजी में 'ओथ आव अक्वाबा' (Oath of Aquaba) नाम से प्रसिद्ध

---

* The believers are always at war with infidels. The objective of Jehad therefore was none other than to turn Dar-ul-Harab into Dar-ul-Islam, (Law of War and Peace pp. 20).

† (The Jehad consequently came to mean in practice, a means of realizing both universalization of State and of a religion. To reach this end, the Jehad naturally meant continuous exertion of power until the whole world would be converted to Islam and constitute the Islamic State. (Ibid pp. 30).

* I am fully prepared to trust the Muslim leaders; but what about the injunctions of the Koran and Hadis? The leaders cannot override them.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस प्रतिज्ञा के करनेवाले थे स्वयं हजरत पैगम्बर साहब और उनके सहकारी व साथी। इस प्रतिज्ञा में इस्लाम का बलपूर्वक प्रसार स्वीकार किया गया था। जिहाद की ज्वाला ने उसी तिथि से धधकना प्रारम्भ किया था। इस प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में इब्न हिशाम लिखता है—"इस्लाम के लिए लाल और काला युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस घोर प्रतिज्ञा के द्वारा जिहाद की धार और तेज की गई और इसके द्वारा अनेक शान्तिप्रिय मानवों की, राष्ट्रों की तथा समाज की हत्या की गई और रेगिस्तान में बनी आचार-प्रणाली का प्रसार किया गया।"

जिहाद के सम्बन्ध में हजरत मुहम्मद साहब और उनके एकनिष्ठ भक्त तथा अनुयायी अब्दुल्ला इब्न मसूद में जो कथोपकथन हुआ था, वह पुस्तकों में अंकित है। एक दिन इस विनीत भक्त ने रसूलिल्लाह से प्रश्न किया—

"सर्वश्रेष्ठ पुण्यकृत्य क्या है?"

रसूल ने उत्तर दिया—"नमाज"।

अब्दुला ने फिर अपना प्रश्न दुहराया।

इस बार उत्तर मिला—"बुजुर्गों का आज्ञापालन!"

प्रश्न पुनः दुहराया गया।

तीसरी बार उत्तर मिला—"जिहाद। इस्लाम के लिए जिहाद। अल्लाह के लिए जिहाद।"

खलीफा हो जाने पर अबू बकर ने घोषणा की थी—"जो जिहाद का त्याग करेगा उस पर अल्लाह का कहर नाजिल होगा।"

धमकी ही नहीं, जिहाद के लिए प्रलोभन भी प्रचुर मात्रा में उपस्थित किए गए हैं। अलबुखारी ने स्पष्टतया लिखा है—"विहिश्त में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने अपनी राह में युद्ध करनेवालों के लिए सुरक्षित कर दिए हैं।"

संसार में अपने अतिरिक्त और किसी धर्म का अस्तित्व इस्लाम को स्वीकार नहीं है। अतएव कुरान की दृष्टि में जिहाद नैसर्गिक परिस्थिति-सिद्ध वस्तु है। कुरान ने अपनी एक अन्य घोषणा के द्वारा भी इसे परिपुष्ट किया है। कहा गया है—"अन्य मतावलंबियों के विरुद्ध जिहाद करना और उस जिहाद में जहां कहीं अल्लाह में अविश्वास करनेवाला मिल जाए, उसे वहीं कत्ल कर देना (कुरान। × ५) प्रत्येक मुसलमान का परम्परा प्राप्त धार्मिक दैवी पुण्यकृत्य है।"

इस्लाम को छोड़कर अन्य धर्म को माननेवालों का कत्ल करने, लूटने व बंदी बनाने के सम्बन्ध में कुरान की आज्ञा इस प्रकार है—

"फ़इज़न सलखल अश्हुरुल हुर्मु फ़क़्तुलुल मुश्रिक़ीन हैसु वजत्तुमूहुम वः खुजूहुम वः सुरुहुमवक् उदूल हुम कुल्ल मर्सदिन फ़ईन ताबू अक़ा मुस्वलात-व-आतुज़्ज़कात फ़खल्लू सबील हुम इअल्लाह वाफ़ूरुर्रहीम" (कुरान ९।१।१५)

उपर्युक्त उद्धरण का अंग्रेजी अनुवाद मौलवी मुहम्मद अली, एम० ए०, एल-एल० बी० ने इस प्रकार किया है—

"And when the months when ye are not allowed to attack them shall be past, kill the idolators wheresoever ye shall find them, and take them prisoners and beseige them, and lay wait for them in every convenient place. But if they repent and observe the appointed times for prayer and pay the legal alms, dismiss them freely; for God is gracious and merciful.

भावार्थ यह है—"और जब वे महीने समाप्त हो जाएँ जिनमें उनपर आक्रमण करने की आज्ञा तुम्हें नहीं है, तब मूर्त्तिपूजकों को, वे तुम्हें जहां कहीं मिलें, वहीं मार डालो या उन्हें बन्दी बनालो या अपने घेरे में डाल दो। और हर सुविधाजनक स्थान में उनकी प्रतीक्षा करो। किन्तु यदि वे पश्चात्ताप करें और प्रार्थना के लिए निश्चित समयों को मानें तथा विहित दण्डकर प्रदान करें तो उन्हें मुक्त कर दो, क्योंकि अल्ला क्षमाशील और दयावान् है।"

कुरान के इस वचन की पुष्टि हदीस में भी की गई है। हदीस रसूलिल्लाह के उद्गारों का संग्रह है। उसमें कहा गया है—"मुझे तब तक काफिरों से लड़ने की आज्ञा दी गई है जब तक वे यह न कहने लगें कि अल्लाह के सिवा और दूसरा ईश्वर नहीं है।

जिस जिहाद की स्वयं रसूलिल्लाह ने घोषणा की और जिसे अबूबकर आदि कई खलीफाओं ने चलाया, उसके छः भेद या प्रकार हैं। इब्ने कशद नामक प्रसिद्ध इस्लामी ग्रंथकार के अतिरिक्त अन्य ग्रंथकारों ने केवल चार प्रकार के जिहाद माने हैं—(१) मुश्रिकीन के विरुद्ध, (२) बागियों के विरुद्ध, (३) चोर डाकुओं के विरुद्ध, और (४) संबंध-विच्छेद (Secession) के विरुद्ध।

पांचवां जिहाद 'रिबात' कहा गया है जिसका वर्णन केवल इब्ने रुशद ने किया है। इसका प्रयोजन इस्लाम की सीमा-रक्षा है। ईसाइयों (Scripturies) के विरुद्ध जिहाद भी इन्हीं के अन्तर्गत कहा गया है।

भारत में आजकल जो जिहाद चल रहा है, अर्थात् जो काश्मीर में हो रहा है या जिसका श्रीगणेश हैदराबाद में कासिम रिजवी के द्वारा किया गया है, वह मुश्रिकीन के विरुद्ध जिहाद (जिहाद नं० १) है। इसका अंतिम लक्ष्य है भारत को दारुल इस्लाम बनाना। इस दाहक सत्य से समस्त हिन्दू जनता परिचित है। कलकत्ते में उपद्रव आरम्भ करते समय लीगी 'जिहाद' का नारा लगा रहे थे। 'अमृतबाजार-पत्रिका' ने अपने २१ अगस्त, ४६ के अंक में लिखा था—"The Jehad was on the lips of everyone." अर्थात् प्रत्येक की जबान पर 'जिहाद' शब्द था। आश्चर्य तो यह है कि अब भी हमारे कुछ नेता इस जिहाद को जातीय या साम्प्रदायिक बलवा से अधिक कुछ मानने को तैयार नहीं हैं। यदि यह प्रवृत्ति चलती रही और मुस्लिमेतर भारत इन्हीं प्रवंचनाओं का शिकार रहा तो वह दिन शायद दूर नहीं है, जब जिहाद का मकसद पूरा फलित हो जाएगा और शेष भारत भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारुल इस्लाम बन जाएगा। भारत को दारुल हरब (शत्रु-भूमि) माननेवालों की प्रतिनिधि संस्था के द्वारा इस संबंध में जो षड्यंत्र रचा जा रहा है, उसके संबंध में समाचारपत्रों में कुछ इस प्रकार पढ़ने को मिला था—"लीग कौंसिल की गुप्त बैठक में १५ अगस्त, १९४७ के बाद पूरे भारतवर्ष को जीत लेने की भावना की पुष्टि की गई।"

परन्तु १५ अगस्त, ४७के आस-पास ही नहीं, इससे बहुत पहले ही भारत के मुसलमान जिहाद का विचार दृढ़ कर चुके थे और हमारे दुर्भाग्य से हमारे विश्ववश्यता के कुछ लेखों से उनकी इस भावना को प्रोत्साहन भी मिल चुका था। उदाहरणार्थ लीग की लाहौर की बठक में ही पाकिस्तान का प्रस्ताव पास हुआ था। उसके आस-पास ही, अर्थात् २३ मार्च, ४० के 'हरिजन' में महात्मा गांधी ने लिखा था—

"It is the Muslim who will impose his will by force or with British assistance on an unresisting India. If I can carry the Congress with me, I would not put the Muslims to the trouble of using force. I would be ruled by them; for it would be Indian rule."

अर्थात् यदि भारत ने प्रतिरोध न किया तो मुसलमान बलपूर्वक या अंग्रेजों की सहायता से अपनी इच्छा भारत पर लाद देंगे। यदि मैं कांग्रेस को अपनी इच्छा के अनुसार चला सका तो मैं मुसलमानों को शक्ति प्रयोग करने का कष्ट नहीं दूंगा। मैं उनके शासन को स्वीकार कर लूंगा; क्योंकि वह भारतीय शासन होगा।

हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम बनाने के लिए जो जिहाद आजकल चल रहा है उसका सूत्रपात किया था सर सैयद अहमद खां व उनके सहकारियों ने। बंगाल में, विशेषतया पूर्वी बंगाल में, जिहाद के लिए जो संघटना सैयद अहमद खां के खलीफाओं के द्वारा की गई थी वह आज भी न केवल अभेद्य प्रत्युत जाग्रत् है। उस जिहाद-संघटन के सम्बन्ध में डाक्टर हण्टर ने लिखा है—

"A number of traitor settlements have thus been established throughout the rural Bengal." (Indian Muslim, by Dr. W.W. Hunter, pp. 78)

अर्थात् बंगाल के समस्त देहात में इस प्रकार देशद्रोही उपनिवेशों की स्थापना हो गई है।

नोआखाली व टिपरा आदि में हिन्दुओं पर जो बीती है, उसका सारा उत्तरदायित्व उक्त संघटना पर ही है।

सर सैयद तथा उनके खलीफाओं ने जिस जिहाद-साहित्य का निर्माण छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में उन दिनों किया था, उसका वितरण आजकल भी हो रहा है। उस समय का प्रसिद्ध जिहाद-गीत—'रिसाला जिहाद'—आज भी उत्साह तथा अभिमान के साथ गाया जाता है। उस गीत की अन्तिम दो पंक्तियों का भाव इस प्रकार है—

"हिन्दुस्तान के कोने-कोने में इस्लाम फैला दे।
ताकि अल्लाह-अल्लाह के सिवा कोई आवाज सुनाई न दे।"

सुप्रसिद्ध लेखक एफ० के० खान दुर्रानी ने मुसलमानों का अन्तरंग इस प्रकार प्रकट किया है—

"India, the whole of it, is our heritage and it must be reconquered for Islam. Our ultimate ideal should be the unification of India, spiritually as well as politically under the banner of Islam. The final political salvation of India is not otherwise possible."

अर्थात्, भारत सम्पूर्ण रूप से हमारी बपौती है। इस्लाम के लिए उसे फिर से विजय करना अनिवार्य है। हमारा अन्तिम ध्येय इस्लाम के झंडे के नीचे आध्यात्मिक और राजनैतिक दोनों प्रकार से भारत का एकीकरण होना चाहिए। भारत की अन्तिम राजनैतिक स्वतंत्रता अन्यथा सम्भव नहीं है।

दुर्रानी महोदय के शब्द सुस्पष्ट हैं। भारत को पूर्णतः इस्लामी बनाने के उद्देश्य को सामने रखकर आक्रमण का प्रारम्भ किया गया है। पाकिस्तान की ओर से भारत पर आक्रमण हो भी चुका है। यह आक्रमण मार्च, १९४८ के बाद और भी भयानक रूप धारण करेगा, इसकी पूरी सम्भावना है। निजाम उस समय चुपचाप बैठा रहेगा, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। 'इत्तहादुल मुसलमीन' के सर्वेसर्वा तानाशाह सैयद कासिम रिजवी एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान लेकर एक प्रकार से जिहाद की घोषणा कर ही चुके हैं।

भारत के लिए अंताराष्ट्रीय परिस्थितियां भी निश्चित अनुकूल नहीं हैं। फिलिस्तीन के लिए जिहाद का भूत पिशिताशन अभिमंत्रित करके छोड़ दिया गया है। उसका प्रलयंकर ताण्डव अब शुरू होने ही वाला है। मुजाहिद का संगठन हो ही रहा है। अतः जिहाद की ज्वाला से बचने का प्रबंध करने के लिए भारत के पास केवल ४-६ महीनों का समय शेष है। यदि इस अल्प अवधि का उपयोग उचित प्रकार से हुआ तो हम अवश्य बच जाएँगे। कण्ट्रोल के हटने से जो राष्ट्रीय आपत्ति आ सकती है, उसका लाभ पाकिस्तान अवश्य उठाएंगे। उस समय अघोषित युद्ध आरम्भ हो जाने की पूरी सम्भावना है। हमारी जनता और हमारी सरकार को इस समय सजग और चौकन्ना रहने की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो बच्चों की माँ

महन्त धनराजपुरी

(१)

बाघ की गन्ध से नाक भन्ना उठी! मेरा चौंकना स्वाभाविक था। तो क्या आखेट-शिविर में, पट-सदन के भीतर, मैं किसी पहाड़ की तलहटी में हूँ? नहीं, यह असंभव है। कहीं शिकार में जाने का इधर विचार भी नहीं उठा। मुझे खूब याद है, आज शाम को आठ बजे खाना खाया था और अपने कमरे में पलंग पर सो गया था! तो फिर यह शेर की महँक कैसी है? आंखें तो उनींदी थीं ही, अभी सारी देह में नींद की खुमारी भी थी। मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ? जरूर सपना है। यह कब संभव है कि बन्द कमरे में पलंग पर लेटे हुए मनुष्य को शेर की गन्ध मिले? धन्य रे शिकारी जीवन! तू कभी भी मुझे चैन की सांस नहीं लेने देता! जागने पर भी सताता है और सपने में भी तंग कर रहा है!

फिर शेर की गन्ध! वही चिर-परिचित बदबू! जिसे पाने के लिए मैं तड़पता रहता हूँ, क्या उसी को पहचानने में भूल हो सकती है? निश्चय ही शेर की गन्ध है। भूल-चूक की कोई गुंजाइश नहीं। अहा! बैठे बिठाए न हों, सोए-सुलाए शेर मिल रहा है। मेरे आराध्यदेव बनराज की कैसी कृपा है। जिस देवता का दर्शन पाने के लिए मैं बन-बीहड़ों की खाक छानता फिरता हूँ; वही देवता बन्द कमरे में मेरे पलंग के पास? तो यह स्वप्न नहीं है। किन्तु, संभव कैसे है? आराध्यदेव का शुभागमन कैसे हुआ?

आंखें खोलने की अथक चेष्टा करने पर भी पलकें न खुलीं। पलकों के भीतर आंखें फड़फड़ाती थीं और मस्तिष्क में विचार पर विचार पर मार रहे थे! मैं भी कैसा अहमक हूँ। शेर भी क्या कोई रज-कण है; जो जरा-से छेद की राह भीतर घुस आएगा? कहां का शेर और कैसी उसकी बू? साफ बात है कि आप सपना देख रहे हैं। अभी तो सिर्फ उसकी गन्ध मिल रही है। थोड़ी देर में शेर दिखलाई पड़ेगा; गोली दागिएगा, उसकी खाल खींची जाएगी! फिर नींद टूटने पर न कहीं शेर की खाल होगी और न उसकी कहीं बू! तो यह सपना है?

फिर वही बू! इस बार की गन्ध और भी तीव्र थी। आंखें खुल गईं। घुप्प अँधेरा था। मैंने हाथ बढ़ाकर टटोला! लिहाफ, चादर, तकिया, मच्छड़दानी! निश्चय हो गया कि मैं पलंग पर ही हूँ! फिर यह शेर की गन्ध कहां से आई? निश्चय ही मुझे स्वप्न में शेर की गन्ध मिली है!

मैंने अलसाए मन से सोचा—पलंग पर हूँ, यह निश्चित है। घर पर ही हूँ, यह भी निश्चित है। निश्चय ही कमरे का दरवाजा भी बन्द होगा। फिर शेर की गन्ध कहां से आएगी? मैं सोमश्वर के पास अपने गांव बड़गांव में भी नहीं हूँ, कि रात को शेर मटर-गश्ती के लिए गांव में निकल आएँगे। मैं कुम्हिया में अपने मकान पर, बन्द कमरे में, पलंग पर हूँ! शेर की गन्ध कैसी? यह स्वप्न महाराज की ही करामात थी। और कुछ न हुआ तो शेर की गन्ध ही लिए चले आए!

सहसा शेर की गन्ध मिलते ही तकिए के नीचे से टार्च निकालकर बटन दबा दिया। उसारे कमरे में उज्ज्वल प्रकाश की मधुर चांदनी फैल गई! मैंने चारों ओर आंखें घुमाना शुरू किया। मच्छड़दानी के बाहर सर निकालते ही, सामने दीवाल पर टंगी, नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की तसवीर पर नजर पड़ी। उनकी बगल में कर्नल महबूब और जनरल भोंसले की तसवीरें थीं। नेताजी के होंठों पर स्वाभाविक मुस्कराहट खेल रही थी। मुझे ऐसा मालूम हुआ जैसे, जाड़े की इस निशीथव्यापिनी निशा में मेरी इन हरकतों को देख, नेताजी धीरे-धीरे मुस्करा रहे हों।

सावधानी से कमरे में चारों ओर देखा। जरा झुक-कर पलंग के नीचे भी टार्च की रोशनी फेंकी। टार्च के तीव्र प्रकाश में देर तक दरवाजे का भी मुलाहजा किया। पूर्ववत् किवाड़ की किल्ली बन्द थी। न कहीं शेर की छाया थी और न कहीं बाघ का नामो-निशान था। मैं अपने दिमाग की हलचल को क्या कहूँ? बार बार एक ही प्रश्न उठ रहा था—क्या ये सभी व्यापार स्वप्न में ही चल रहे हैं? स्वप्न में ही शेर की गन्ध मिल रही है, स्वप्न में ही मैंने टार्च जला रक्खा है, स्वप्न में ही नेताजी श्री सुभाषचन्द्र बोस की तस्वीर दिखलाई पड रही है और स्वप्न में ही मैं दरवाजे की बन्द किल्ली को भी देख रहा हूँ? अगर मेरी ये सारी हरकतें सपने में ही हो रही हैं तो मैं जागूंगा कब? मेरा भ्रम कब दूर होगा? अगर यह सचमुच स्वप्न है, तो इसे अत्यन्त विलक्षण स्वप्न कहना चाहिए!

टार्च को तकिए के नीचे रख लेट गया। फिर वही शेर की महँक! उठना और देखभाल करना बेकार था। लेटे लेटे सारी दुनिया की बखिया उधेड़ दी। मैं हैरान था। अक्ल कुछ काम नहीं करती थी। कमरे के बाहर निकल-कर छान-बीन करने से कोई फायदा नहीं नजर आता था। रह-रहकर शेर की गन्ध मिलती और रह-रहकर मैं चौंकता-तड़पता! अजब परेशानी थी। न मैं अच्छी तरह जाग पाता और न मुझे अच्छी तरह नींद आती। पता नहीं, कब तक मुझे शेर की गन्ध मिलती रही और कब मेरी आंखें लगीं!

(२)

"उठिए, जरा शेर के बच्चे तो देखिए!" एक चिर-परिचित कण्ठ-स्वर मेरे कानों में गूंज उठा! आवाज रामपछ तिवारी की थी। लम्बे-तगड़े जवान, मेरी खेती की देख-भाल किया करते थे। मच्छड़दानी उठा मैं इस तरह पलंग पर से कूद पड़ा, जैसे घर में आग लगी हो! घड़ी की ओर देखा। साढ़े आठ बजे थे। न केवल जाड़े की लम्बी रात ही बीत चुकी थी, प्रत्युत डेढ़ घण्टे से सूरज भी निकला हुआ था! जल्दी से किवाड़ खोल बाहर निकल आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतनी लम्बी रात में भी नींद पूरी नहीं होती?" रामपछ तिवारी के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट थी!

"रात मुझे अच्छी तरह नींद नहीं आई!"

"क्यों?"

"सारी रात आंखों में कटी है!"

"आखिर क्यों? कोई वजह भी थी?"

मैंने आंखें मलते हुए कहा—"रात भर सपना देखता रहा हूँ। बड़ा ही विचित्र सपना था। रह-रहकर सपने में मुझे शेर की गन्ध मिलती रही!"

रामपछ तिवारी ने दरवाजे की ओर देखकर कहा—"हां! छड़दार खिड़की तो खुली हुई है! किन्तु, रात भर नहीं, आधी रात के बाद आपको शेर की गंध मिली होगी!"

उनके चेहरे पर आंखें गड़ाकर मैंने साश्चर्य पूछा—"यह कैसे?"

"जरा सामने की ओर नजर तो दौड़ाइए।"

पलक झपकते मैंने सामने की ओर दृष्टिपात किया। देखा—बरामदे के टेबुल पर एक छोटे-से पींजड़े में बिल्ली के दो छोटे-छोटे बच्चे घूम रहे हैं! शरीर के बालों पर नन्हें-नन्हें गुल देखते ही मैं समझ गया कि घोघिला बाघ के बच्चे हैं। लपककर पींजड़े के पास पहुँचा। बच्चे अभी बहुत छोटे थे। मुश्किल से १५ दिनों के होंगे। फिर भी पूंछें उठाए मस्तानी चाल से पींजड़े में चारों ओर घूम रहे थे। रह-रहकर उनका मुंह फाड़ना कुतूहल-जनक था।

"कहां मिले?" मैंने रामपछ तिवारी की ओर देखकर पूछा।

"मैं काम खतम करके बनकटवा से शाम को चला। जल्दी आने के लिए जंगल ही जंगल हाथी भगाए आ रहा था। बनवारी आते-आते शाम हो गई। जैसे ही कापन और मसान नदियों को पार कर हरिहरपुर में घुसा; वैसे ही मुझे बिल्ली की आवाज सुनाई पड़ी।"

"हरिहरपुर के रखांत में घुसते ही?" बात काटकर मैंने बीच में ही पूछा।

"नहीं, कुछ दूर रखांत में घुसने के बाद।"

"तब?"

"कुतूहल होना स्वाभाविक था। पहले तो मैंने सोचा कि बन-कटांस होगा या उसके बच्चे। किन्तु, अच्छी तरह देखने के लिए हाथी को उसी तरफ भगवाया।"

"आपको भी शिकारी की तबीअत मिली हुई है!"

"आपके साथ का सुफल है!" रामपछ तिवारी ने हँसते हुए कहा—"फिर भी बेतरह डर रहा था। कहीं शेर के ही बच्चे हों तो? कहीं शेरनी उन्हें दूध पिला रही हो तो? धीरे-धीरे हाथी चल रहा था और मैं चौकन्ना होकर चारों ओर देखता जा रहा था। थोड़ी दूर जाने के बाद मूंजों का एक विकट झुरमुट मिला। तीन या चार कट्ठे में वह झुरमुट रहा होगा। आवाज उसके भीतर से आ रही थी। हम बड़ी सावधानी से झुरमुट में घुसे। बीच झुरमुट में थोड़ी-सी साफ जमीन थी, जिसमें मुलायम घास उगी हुई थी। उस घास पर बिल्ली के दो छोटे-छोटे बच्चे थे, जो बोल रहे थे और आपस में पंजे मिला रहे थे!"

"पंजे मिला रहे थे?" मैंने साश्चर्य पूछा—"और शेरनी कहां थी?"

"उसका पता नहीं था। मालूम होता है, शाम होते देख, दिन भर की भूखी शेरनी, बच्चों को दूध पिलाकर पेट-पूजा के लिए बाहर निकल चुकी थी। किन्तु, निश्चय क्या था? पहले तो जी में आया, बच्चे देख लिए, अब लौट चलें। परन्तु भोले-भाले बच्चों को देखकर जी ललच गया! ले भागने की इच्छा प्रबल हो उठी। फिर भी हाथी से उतरना और शेर के बच्चों को लेकर चट भागना आसान न था। जी घबड़ा रहा था। कहीं अचानक शेरनी आ निकली तो? बोटी-बोटी नोचकर रख देगी। बन्दूक क्या, छुरी तक पास में न थी। महावत भी मना कर रहा था। पर मुझ पर तो सनक-सी चढ़ गई। धीरे से उतरा और झपटता हुआ शेर के बच्चों को उठाकर हाथी पर चढ़ गया। फिर तो हाथी के कानों की जड़ में महावत का आंकुस और उसकी पूंछ पर मेरी "कुटनी" नाचने-सी लगी। एक ही घुड़दौड़ में बरवा आकर दम लिया!"

"आपने दम लिया! किन्तु, शेरनी ने थोड़े ही दम लिया होगा! आज नहीं तो कल वह जरूर ही यहां आ धमकेगी!"

"यह कैसे?" रामपछ तिवारी के होंठों पर मुस्कराहट थी—"भला शेरनी कैसे जानेगी कि उसके बच्चों को कौन ले गया?"

"हां ठीक है। वह यह नहीं जानेगी कि उसके बच्चों को कौन ले गया; किन्तु, कहां ले गया, शायद इसे वह जान लेगी।"

"शेरनी क्या जादू जानती है?"

"जादू नहीं जानती; वह हवा सूंघना जानती है।"

रामपछ तिवारी ने मुझे अविश्वास की नजरों से देखते हुए कहा—"आप भी कभी-कभी ऐसी बेपर की उड़ाते हैं कि तिलस्मी चिराग का किस्सा भी मात हो जाता है! हाथी पर चढ़कर उड़ते हुए-से बच्चे आए और हवा सूंघती हुई शेरनी आ धमकेगी!"

हां, जरूर आ धमकेगी! आप अभी से बन्दूक की नालों में कारतूस डाल दीजिए!"

जोरों का ठहाका पड़ा। शेर के बच्चों को देखने और हमारी दिलचस्प बातों को सुनने के लिए आदमियों की काफी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। मैंने भी हँसते हुए कहा—"घबड़ाने की कोई बात नहीं! जादू वह आ शीश पर चढ़कर बोले!"

बच्चों के लिए तत्काल ही मजबूत और हवादार पींजड़े का प्रबन्ध किया गया। उनके खाने-पीने की भी उचित व्यवस्था कर दी गई!

(३)

किवाड़ की भड़भड़ाहट से मेरी नींद टूटी! अनहोनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

घटना थी। सोते समय मेरे कमरे के किवाड़ों पर धक्के पड़ रहे थे! "क्या है?" बोलता हुआ मैं पलँग पर से कूद पड़ा।

"शेर गरज रहा है!" अनेक कंठों की एक ही आवाज थी!

जाड़े की अँधेरी रात, साढ़े ग्यारह बज रहे थे। जाड़े की सर्दी थी। झटपट बदन से तूस लपेट, टार्च लेता हुआ कोने से बन्दूक ले और किवाड़ खोल बाहर निकला—उनींदी आंखों से, विभिन्न आकृतियों का निशाना करता हुआ। मैंने एक ही सांस में प्रश्नों की झड़ी बांध दी—"कहां शेर गरज रहा है? किसने सुना है? यहां से कितनी दूर पर है? क्या किसी पर झपटा था?"

अनेकों ने एक ही साथ बोलने की चेष्टा की। रामपछ तिवारी ने सबों को डांट बताई! जरा आगे बढ़कर बोले—"मालूम होता है, वही बाघिन है। अपने बच्चों को ढूंढ़ती हुई चौथे दिन ही आ धमकी। गांव के चारों ओर गरजती हुई चक्कर काट रही है?"

"कहीं कुछ चोट भी की है?"

"पहले श्यामलाल की बकरी पर झपटी और उसे मार डाला। लाश न ले जा सकी। आठ-दस आदमी लाठी लेकर दौड़ पड़े। उसके बाद ही गांव भर में हल्ला हो गया। तपेसर की बछिया पर भी झपटी थी। पर दो-एक वार काटकर रह गई।"

"हां, वही बाघिन है। बच्चों की ममता और दूध के बहाव से फटते हुए-से स्तनों ने उसे जान पर खेलने के लिए तैयार कर दिया है! आहट पाते ही झपटेगी; कुछ दिखलाई पड़ते ही टूट पड़ेगी और शायद सैकड़ों की भीड़ में घुसकर प्रलयकाण्ड मचाना भी उसके लिए आसान होगा।"

रामपछ तिवारी ने उतावलेपन से कहना शुरू किया—"घर-घर के दरवाजे बन्द हो गए हैं। औरतें थर-थर कांप रही हैं। बूढ़ों ने मुझे कोसना शुरू कर दिया है। कहते हैं—शेर के बच्चे लाने की क्या जरूरत थी? न मालूम किसके बच्चे को शेरनी अब उठा ले जाए। जल्दी उसको खत्म कर दीजिए!"

तिवारी जी की घबड़ाहट देखकर मुझे हँसी आ गई। जरा मुस्कराता हुआ बोला—"जल्दी क्या अपने हाथ की बात है तिवारी जी! उसका हाथ लगना आसान न होगा। खैर चलिए, कोशिश तो करूँगा ही। बच्चों का पिंजड़ा कहां है?"

"घर में बन्द है।" पहलाद ने कहा।

एक-दो मिनट तक मैंने मन-ही-मन परिस्थिति का विश्लेषण किया। "हाथी पर चलने से कोई लाभ नहीं। सैकड़ों की पलटन से क्या फायदा? गरज सुनते ही बिल्ली-सी मचा देंगे। व्यर्थ की भगदड़ से फकत परेशानी होगी। रोशनी ले जाने से क्या लाभ? वह हमें भले ही देख ले, हम उसे थोड़े ही देख पाएंगे। सिर्फ एक-दो आदमियों को साथ लूं और पैदल ही चुपचाप निकल पड़ूं। जब वह एक जगह बैठनेवाली नहीं तो फिर ठांठी क्या और एक जगह छिपकर बैठना क्या?"

"अभी आया" कहकर मैं मकान के भीतर चला गया और दस मिनट के बाद कपड़े बदल, आवश्यक सामान लेकर बाहर निकला। मैंने दो आदमियों को छांटकर अपने साथ लिया। रामपछ तिवारी तो थे ही। तीनों को एक-एक तलवार दे दी। बाकी लोगों को समझा-बुझाकर घर भेज दिया। सतर्क बैठने की ताकीद कर दी। बीच-बीच में शेर की गरज सुनाई पड़ रही थी। कभी गुर्राहट, कभी जोरों की दहाड़। आवाज की दिशा की ओर हम चल पड़े। १२ बोर की दोनली सँभाले आगे-आगे मैं और हाथों में नंगी तलवारें लिए मेरे पीछे और। नालों में मैंने एल० जी० के कारतूस डाल लिए थे। अँधेरी रात में गोली चलाना व्यर्थ का प्रयास था और शेरनी भी शैला नहीं घोघिला थी।

हम उत्तर की ओर बढ़े। क्योंकि आवाज उत्तर की ओर से आ रही थी। गांव के बाहर होते ही आवाज पच्छिम से आने लगी। हम पच्छिम की ओर मुड़े। आवाज दक्खिन से आने लगी!

मैं मन-ही-मन झुंझला उठा। अच्छा तमाशा है!

कोल्हू के बैल की तरह हम उसके पीछे-पीछे चारों ओर गांव का चक्कर काटते फिरें! क्यों न हम कहीं रुककर उसके दूसरे चक्कर का इन्तजार करें? बात दिल में बैठ गई। एक मोटे बांध की ओट में बैठकर हम उसका इन्तजार करने लगे।

बाघिन दक्खिन से गांव के पूरब तो गई किन्तु, वहीं स्थायी रूप से बैठ-सी गई। पूरब की ओर मसान नदी थी और उसके किनारे एक हल्का-सा खांत भी था। हम प्रतीक्षा करते-करते ऊब गए। दक्खिन से थोड़ा चक्कर काटकर नदी पार करने का विचार किया। स्कीम यह थी कि पूरब से नदी पार कर ठीक बाघिन की पीठ पर पहुँचने की कोशिश की जाए। लगभग एक मील का चक्कर पूरा कर हम नदी के पार हुए। थोड़ी देर से बाघिन की आवाज बन्द थी। उसकी पीठ पर पहुँचने के लिए, अभी हम दुबारा नदी में घुसे भी न थे कि उसकी आवाज उत्तर से आने लगी! रामपछ तिवारी ने हँसकर कहा—

"यह बाघिन है या जादूगरनी! जब हम बैठे थे तब वह भी बैठी थी! जब हमने चक्कर काटे तब वह भी चक्कर काट बठी!"

मैंने एक लम्बी सांस लेकर कहा—"प्रकृति ने हवा सूंघने की बड़ी प्रबल शक्ति उसे दी है! फिर यह तो दूध की जली है! मट्ठा भी फूंक-फूंककर पिएगी!"

हमने हजार कोशिश की, उससे मुठभेड़ नहीं हुई; नहीं हुई!

(४)

परेशानियों की हद्द हो गई! आस-पास के गांवों में तहलका मचा हुआ था। हमारी कोई भी योजना सफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। किसी रात को आती, किसी रात को नहीं आती। कभी एक ही ओर थोड़ा-बहुत ऊधम मचाकर भाग निकलती और कभी चारों ओर का चक्कर पर चक्कर काटती! दिन को तो वह ऐसी गायब होती जैसे खरहे के सर से सींग! आस-पास के तमाम रखांत झड़वा डाले पर कभी उसकी सूरत न दिखलाई पड़ी। रोज-रोज नई-नई योजनाएँ बनतीं और प्रतिदिन केवल असफलता ही पल्ले पड़ती! लोगों के उलाहनों से नाक में दम हो गया! आखिर मैंने एक स्कीम निकाली।

मेरी योजना यह थी—"पक्की चहारदीवारीवाले बागीचे में एक पेड़ के नीचे बच्चों का पींजड़ा रक्खा जाए। पींजड़ा रस्सों से खूब मजबूत बँधा रहे। दीवाल से पीठ सटाकर मेरे बैठने का प्रबन्ध किया जाए। सामने मजबूत ओट की व्यवस्था हो। जैसे ही बाघिन, अपने बच्चों को लेने के लिए, पींजड़े पर झपट्टा मारे; वैसे ही उसे मैं अपनी गोलियों का निशाना बना दूं। हां, पींजड़े से थोड़ी दूर पर एक हलकी-सी रोशनी भी रख दी जाए।"

दूसरे दिन, मेरी योजना के अनुसार सारी व्यवस्था ठीक की गई। सरेशाम को ही, बन्दूक कारतूस ले, अपने लिए निर्मित सुदृढ़ दुर्ग-पंक्ति में आसन मारकर बैठ गया। बहुत ही थोड़ा भोजन किया और पेशाब लगने के डर से पानी तो छुआ भी नहीं! आराध्य देवी की प्रतीक्षा शुरू हुई!

बैठे-बैठे शायद मुझे झपकी आ गई थी। दीवाल के पीछे सूखी लकड़ी टूटने से चौंक पड़ा। इस गम्भीर काली रात्रि में अनायास जमीन पर पड़ी लकड़ी क्यों टूटेगी? अवश्य ही बाघिन के बोझे से टूटी होगी! तो मेरी तपस्या सफल हुई? आ गई मेरी आराध्य देवी? प्रसन्नता से नाच-सा उठा!

उत्कट दुर्गन्ध से सहसा मेरी नाक भी भन्ना उठी और ठीक सर के ऊपर बाघ की गुर्राहट से मेरा रोम-रोम खड़ा हो गया। बाघिन गज़ों दूर नहीं, मुझसे सिर्फ दो फुट ऊपर थी! दीवाल की कार्निश के कारण उसकी गरम-गरम बदबूदार सांस मेरी देह से टकराती न थी। मुंड़ेरे पर चिपक कर बैठी हुई हलकी गुर्राहट से कलेजा तक कँपा रही थी। मेरी तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई!

जरा-सी आहट क्षण भर में मौत बुला सकती थी! थोड़ी-सी भी हरकत मेरे सर पर आफत का पहाड़ तोड़ सकती थी। दम साधे चुपचाप बैठना भी आसान था। सर पर मौत, बदन का एक-एक रोआं खड़ा, नथुने से भन्नाती हुई नाक और चुपचाप का बैठना! कहीं दुर्गन्ध से छींक ही आ जाए तो? बौखलाई हुई बाघिन, मेरी देह की धज्जी उड़ा देगी! उसे दूसरी छलांग की जरूरत न पड़ेगी। एक ही छलांग में धर दबोचेगी!

मुझसे दस गज की दूरी पर पींजड़ा था। पींजड़े पर हलकी-हलकी रोशनी पड़ रही थी। शेरनी की गुर्राहट सुनकर बच्चे बोलने और उछलने लगे। मेरी आशा की एक ही किरण थी। जिस ममता ने शेरनी से दर-दर की खाक छनवाई है, क्या वही ममता पींजड़े पर झपटने के लिए उसे बाध्य न करेगी? किन्तु, कब? कब तक मैं ऐसी दुर्दशा में पड़ा रहूँगा?

एक-दो मिनट नहीं, पूरे पन्द्रह मिनट बीते। मेरा तो दम घुट रहा था। इतनी बड़ी भयानक तपस्या शायद ही मैंने कभी शिकारी-जीवन में की हो। अगर सुविधा होती तो मैं बैठता नहीं, निकल भागता!

सहसा शेरनी की गुर्राहट बन्द हो गई। दुर्गन्ध का आना भी बन्द हो गया। सम्भवतः पींजड़े पर झपटने के लिए निकटतम स्थान की ओर खिसक गई। मैंने बन्दूक सँभाल ली। बन्दूक की नालों में एल० जी० के कारतूस पड़े हुए थे और सेफ्टी खिसकाकर मैंने दोनों नालों के घोड़े चढ़ा लिए थे। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आखिर की बात थी। बच्चे भी शान्त हो गए थे।

भीषण गुर्राहट के साथ शेरनी ने छलांग मारी। एक ही छलांग में बीच की दूरी पार कर गई थी। पींजड़े पर उसके पंजों का पड़ना था कि मैंने दोनों नालें खाली कर दीं। शेरनी औंधे मुंह आगे को खिसक आई! पींजड़े की बगल में उसकी पूंछ डोल रही थी। जैसे बच्चों पर चँवर झल रही हो!

धायँ-धायँ की आवाज से सारा गांव दहल उठा। बागीचे की ओर लोग इस तरह झपटे जैसे मिठाई बँट रही हो। अपने रक्षा-दुर्ग से निकलकर मैं शेरनी के पास आ गया। एल० जी० की पूरी मार उस पर बैठ चुकी थी। छाती और पेट छलनी बन गया था। चढ़े हुए स्तनों से दूध का स्राव होते देख मेरी आंखें छलछला आईं।

आखिर वह दो बच्चों की मां थी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वसमस्याओं को एक अदृष्टि-गोचर गाँठ

अन्ताराष्ट्रीय राजनीति का एक विद्यार्थी

सन् १७८३ में अमरीका के स्वतंत्र हो जाने के उपरान्त जार्ज वाशिंगटन, टामस जेफरसन, अलेकजेण्डर हैमिल्टन आदि ने अमरीका की स्वतंत्र शासन-प्रणाली में स्पष्ट रूप से घोषित किया था—"सब मनुष्य समान हैं, सब स्वतंत्र हैं, सबके समान अधिकार हैं और कोई किसी का अधिकार नहीं छीन सकता।"

अमरीकी जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए डा० जोन होम्स ने दिल्ली में अपने एक भाषण में हाल ही में कहा है—"अमरीका में जो लोग जाकर बसे थे, उन्होंने पृथ्वी पर स्वर्ग-राज्य स्थापित करने की कल्पना की थी, वह स्वप्न अभी सत्य नहीं हुआ है। किन्तु अमरीकी अब भी आशा और श्रद्धापूर्वक उस स्वप्न को सत्य बनाने के लिए परिश्रम कर रहे हैं।" उन्होंने अमरीकी जीवन की चार विशेषताएँ वर्णित कीं। पहली यह कि उसमें व्यक्तित्व को पवित्र समझा जाता है और अमरीकन अपने ही प्रयत्न से उठते या गिरते हैं। अमरीकी जीवन का दूसरा महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त, मानव-जाति की समानता है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक मनुष्य को चाहे उसका धर्म और जाति कुछ भी क्यों न हो, मनुष्य होने के नाते समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। अन्तिम बात यह है कि अमरीकी न्यायोचित और पूर्ण समाज का सपना देखते हैं। डा० होम्स ने अमरीकी लोगों के स्वर्ग के मार्ग में तीन बड़ी बाधाएँ वर्णित की हैं, रोग, दरिद्रता और युद्ध। उन्होंने भारत और अमरीका दोनों महान् और स्वतंत्र राष्ट्रों के सहयोग से एक नूतन तथा महान् भाई-चारे की स्थापना की आशा प्रकट की थी। जार्ज वाशिंगटन ने अमरीकनों की स्वतंत्रता के लिए व अब्राहम लिंकन ने अमरीका के गुलाम हब्शियों के लिए जो कुछ किया था और रूजवेल्ट तथा ट्रूमैन ने मानवता की रक्षा के लिए जो कुछ करने की प्रतिज्ञाएँ कीं, निस्सन्देह वह मानवता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाएगा। अमरीका की स्वतंत्रता की घोषणा के ८० वर्ष उपरान्त अमरीका में सब मनुष्यों को समानता प्रदान करने के वचन की पूर्ति के रूप में पहली जनवरी सन् १८६३ ई० को साढ़े चवालीस लाख गुलाम हब्शियों की, कानून और राज्य के द्वारा, रक्षा करने का आश्वासन प्रदान किया गया था। गुलामी के बन्धन से मुक्त होते ही हब्शियों ने इतनी तीव्र प्रगति की कि अमरीकन भी विस्मयान्वित हो उठे। सन् १८६० ई० में हब्शियों की संख्या साढ़े चवालीस लाख थी। वह सन् १९१० में बढ़कर ९८ लाख २८ हजार और सन् १९३३ में १ करोड़ १० लाख हो गई। उत्तरी राज्यों के हब्शियों में, जो दक्षिणी राज्यों के हब्शियों से अच्छी स्थिति में समझे जाते थे, गुलामी से मुक्त होते समय केवल पांच प्रतिशत लिखने का प्रचार था। पर स्वतंत्रता पाने के ५० वर्षों के अन्दर ही वे ७० प्रतिशत शिक्षित हो गए और यह उस परिस्थिति में जब कि योरपियन रंग-भेद-नीति के कारण साधारण लोकजीवन से च्युत हब्शियों को अपने स्कूल, विश्वविद्यालय तथा अन्य संस्थाएँ अलग स्थापित करनी पड़ीं। यह भेद-भाव किस सीमा तक आगे बढ़ा हुआ है, इसके प्रमाण पग-पग पर प्राप्त होते हैं। जो युद्ध मानवता और न्याय के लिए अभी लड़ा जा चुका है, उसके मध्यकाल में, वाशिंगटन में पोल-टैक्स-सम्बन्धी बहस सुनने के लिए गए हुए हब्शियों के एक डेपुटेशन को सीनेट की गैलरी में नहीं जाने दिया गया। उस पर पीपुल्स वायस के संयुक्त संपादकों ने क्रुद्ध होकर टिप्पणी करते हुए लिखा था "भेद-भाव, अन्याय और घृणा की गन्ध राजधानी में भी पहुँच गई।"

न्यूयार्क के समीप हरलेम हब्शियों का गढ़ समझा जाता है, क्योंकि वहां उनकी संख्या सबसे अधिक है। 'हरलेम' में न्यूयार्क शहर की सब गन्दगी लाई जाती है और वह सबसे अधिक गन्दा स्थान है; फिर भी वहां नगर के अन्य सब भागों की अपेक्षा किराया अधिक है और भोज्य पदार्थों का मूल्य भी अपेक्षाकृत दुगुना या डेढ़ गुना अधिक है। स्कूल और अस्पताल की सुविधाएँ भी इन हरलेम-निवासियों को पर्याप्त नहीं प्राप्त हैं। हब्शियों ने जब द्वितीय महायुद्ध के समय चार स्वतंत्रताओं की बातें सुनी, तब भारतीयों के समान उन्होंने भी यही सोचा कि मानवता के लिए लड़ा जानेवाला यह युद्ध उनको विश्व में उनका उचित स्थान प्राप्त करा देगा और अमरीका में उनके प्रगति-पथ में वर्ण तथा जाति की जो बाधाएँ हैं, वे दूर हो जाएँगी तथा तात्कालिक युद्ध-सम्बन्धी आवश्यकताओं के कारण उन पर लगाए गए प्रतिबन्ध हटा लिए जाएँगे। पर, कुछ ही दिनों में भारतीयों के समान हब्शियों को भी यह ज्ञात हो गया कि मित्रराष्ट्रों से उनकी यह आशाएँ कोरी दुराशाएँ-मात्र हैं। युद्ध-घोषणा के दो वर्ष उपरान्त भी हब्शियों को केवल घरेलू नौकरियां, ड्राइवरी और मजदूरी के काम के योग्य ही समझा जाता रहा और अन्य बातों में भेद-भाव पूर्ववत् बना रहा। दक्षिणी करोलिना में गोरे नागरिकों-द्वारा हब्शी नागरिकों व सैनिकों को पीटने, हब्शी नर्सों को जेल भेजे जाने तथा बिना किसी भोजन के १८ घंटे तक चलाने की घटनाएँ और हब्शी सैनिकों को निरपराध गोरों के द्वारा गोली मार डालने के किस्से कोई व्यक्ति हरशेम में चाहे जितने सप्रमाण सुन सकता है। इस युद्ध में हब्शियों की स्थिति कुछ सुधरी है, यह सत्य है, परन्तु हब्शियों और गोरों की भिन्नता के जितने भी प्रयत्न इस बीच किए गए हैं, वे केवल समाचारपत्रों में प्रकाशित चित्रों तक ही सीमित रह गए हैं। एक साधारण अमरीकन की दृष्टि में हब्शियों में सांस्कृतिक उन्नति से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, फलतः ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में आशातीत उन्नति कर जाने तथा संगीत और शारीरिक क्षमता में गोरों से बढ़ जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर भी अमरीका में 'कू क्लक्स क्लैन' सरीखी संस्थाएँ फूल-फल रही हैं। 'यांकी' अपने देश में काले लोगों का रहना सहन नहीं कर सकता, इसलिए दक्षिणी अमेरिका में आज भी हब्शियों के घरों को फूंकने, उन्हें जीते जी जला देने तथा अपमानित करने का कोई अवसर पाते ही उन्हें अपमानित कर बैठने की प्रथा चल रही है। दक्षिणी राज्यों की अपेक्षा, उत्तर के लोग अधिक उदार हैं, यह बात ठीक है, परन्तु साथ ही यह भी सच है कि जब अमरीकन और हब्शी लोगों में से एक की मित्रता और स्नेह चुनने का अवसर आता है तब उत्तर के लोगों को विवश होकर अपने दक्षिणी अमरीकनों की भावनाओं का आदर करना पड़ता है। जून १९४३ में डेट्रियट के मेयर मि० ऐडवार्ड जाफरीन ने नीग्रो-अमरीकन दंगे का कारण बतलाते हुए कहा था—"दक्षिण से बड़ी संख्या में लोग यहां आए हुए हैं।" यह दंगा एक हब्शी और गोरे के बीच एक पार्क में लड़ाई हो जाने से प्रारम्भ हुआ था, जिसके फलस्वरूप डेट्रियट ३६ घंटे तक रक्त-स्नान करता रहा था और जब राज्य की पुलिस तथा फौज उसे शान्त करने में समर्थ नहीं हुई तब प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट की आज्ञा से गृहमंत्री श्री हैनरी स्टिमसन के आदेश से, ब्रिगेडियर जनरल फिलिप गुन्थर के नेतृत्व में फेडरल सरकार की सेना ने बन्दूकें और मशीनगनें चलाकर शान्ति स्थापित की थी। इस दंगे के फलस्वरूप २२ जून, १९४३ तक १३०० व्यक्ति पकड़े गए, २३ व्यक्तियों के प्राण गए और ७०० से अधिक घायल हुए थे। रूजवेल्ट ने गैरकानूनी कार्रवाई बन्द करके लोगों से अपने घर चले जाने की अपील की थी। पर शान्ति हुई मशीनगनों की गोलियों के द्वारा। क्या इस तथ्य की अवहेलना की जा सकती है? अप्रत्यक्ष रूप से संसार की श्वेत जातियों और श्वेत जातियों के मध्य के संघर्ष की रचना का आरम्भ बहुत वर्षों पूर्व से ही हो गया है; इस तथ्य की ओर से आंखें हटा लेने से ही वस्तुस्थिति को नहीं टाला जा सकता।

१५ अप्रैल, १८६१ ई० को अमरीका के प्रेसीडेण्ट अब्राहम लिंकन ने एक घोषणा के द्वारा उत्तर और दक्षिण राज्यों के मध्य में रणस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लड़ाई छिड़ जाने की घोषणा करते हुए कहा था—"साउथ कैरोलिना, जार्जिया, अलाबामा, फ्लोरिडा, मिसीसिपी, लुइसियाना तथा टेक्सजकी रियासतों में संयुक्तराज्य के नियमों और कानूनों का कुछ काल से विरोध किया जा रहा है और यह विरोध इतना अधिक बढ़ गया है कि साधारण रीति से शान्त नहीं हो सकता। अतएव उस विरोध को दबाने के लिए और कानूनों की पाबंदी कराने के लिए संयुक्तराज्य की रियासतों से ७५ हजार सैनिक भेजे जाएँ, इसे मैं उचित समझता हूँ।"

यह युद्ध उत्तरी अमरीका और दक्षिणी अमरीका के राज्यों के मध्य में था और गुलामी-प्रथा पर मतभेद इसका प्रधान कारण था। संयुक्तराज्य अमरीका के मानचित्र पर इलियास के नीचे आड़ी रेखा खींचने पर जो दो टुकड़े हो जाते हैं, यह युद्ध उन्हीं के मध्य में छिड़ा था। लगभग ८७ वर्ष का दीर्घ काल निकल गया। 'समानता' और 'स्वतंत्रता' की घोषणा का १६५ वर्ष का काल भी दक्षिण राज्यों के निवासियों के चित्त से हब्शियों के लिए घृणा, उपेक्षा और अवहेलना के भावों को मिटा डालने में सफल नहीं हो सका है। अमरीका के अनेक भागों में युद्ध की समाप्ति के उपरान्त 'कू-क्लान्स-क्लान' का पुनरुत्थान हुआ। शीघ्रतापूर्वक हुआ कि अगस्त, १९४६ में उसका आतंक सर्वत्र पूर्ववत् स्थापित हो गया। जार्जिया के प्रदेश में क्लान की शक्ति इतनी अधिक बढ़ गई कि रंगीन संसार की आलोचनाओं से बचने के लिए अमरीका के अधिकारियों को दूसरा रुख ग्रहण करना पड़ा। वहां यह प्रचार किया जाने लगा कि नाजीदल 'क्लान' में मिल गया है। जार्जिया के गवर्नर ने प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन को इस सम्बन्ध में एक पत्र लिखकर जांच करने का अनुरोध किया और वह समाचार प्रायः प्रत्येक देश के समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ। उसके उपरान्त अगस्त, १९४६ में न्यूयार्क में क्लान दल गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया और जनरल डेनियल ड्रेक ने इस सम्बन्ध में अपना मत प्रकट किया कि उनको ऐसी सनसनीपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है कि जर्मन-समर्थक अमरीकन दल क्लान में मिल गया है। यहां तक कि 'पर्ल बन्दरगाह की घटना के पूर्व अमीरकन नाजियों और क्लान के समर्थकों ने एक योजना भी तैयार की थी, इस बात के प्रमाण हैं।

इस प्रचार का स्पष्ट अर्थ था कि अमरीकन जनता 'क्लान' का सम्बन्ध नाजी दल से है, यह सुनकर उसकी ओर से विमुख हो जाए। परन्तु जैसा पीछे ज्ञात हुआ कि जनवरी १९४६ में जार्जिया के अतिरिक्त अन्य ६ राज्यों में भी क्लान-सम्बन्धी गुप्त जांच-पड़तालें उन दिनों हो रही थीं। उसके कथन और आरोप का स्पष्ट अर्थ यह था कि बाहरी लोग अमरीका के अन्दर होनेवाली घटनाओं की ओर से उदासीन रहें। उन्हें रंगीन भेद-भाव से आघात न पहुँचे, क्योंकि ऐसे आघात के पहुँचने का अर्थ केवल राष्ट्रीय मनोमालिन्य ही नहीं होता, वरन् राजनीतिक सम्बन्धों पर भी उसका प्रभाव पड़ता। परन्तु क्लान की कार्य-विषयक क्षमता का अर्थ भी साफ ही है। रंगीन भेद-भाव की जड़ जनता के मध्य में बीच में है और क्लान का आसन उसी जनता के मध्य में दृढ़तापूर्वक स्थापित है। अमरीका के केवल तेरह राज्यों से ही 'संयुक्तराज्य' बना है और उनमें से सात अर्थात् आधे से अधिक राज्यों में हब्शी-विरोधी भावनाएँ प्रबल रूप से विद्यमान हैं और उन्हें फौजों के द्वारा अन्ततोगत्वा कब तक दबाया जा सकता है! वह भावना कब फैलकर विराट् रूप ग्रहण कर लेगी, इसे ही कौन कह सकता है?

एक रेडियो-समाचार के अनुसार 'मिसीसिपी' में २३ अक्टूबर १९४७ को लगभग २० गोरों ने एक हब्शी पर आक्रमण करके उसे घायल कर दिया है। पिछले दिनों अमरीकनों की कुदृष्टि इन हब्शियों पर कितनी अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ गई है, इसका सबसे अधिक विश्वस्त प्रमाण नागरिक अधिकारों के विषय में अपनी रिपोर्ट उपस्थित करते हुए राष्ट्रपति ट्रूमैन-द्वारा संगठित समिति के द्वारा की गई मांग है, जिसमें कहा गया है—"हब्शियों को जीवित जला देने का जो चलन अमरीका में हो गया है, उसको रोका जाए। इसके साथ 'पोलटैक्स' का भी अन्त कर दिया जाए। प्रत्येक अमरीकन को, वह चाहे किसी वर्ण या जाति का क्यों न हो, नागरिक अधिकारों के उपभोग का समान अवसर प्रदान किया जाए।" सन् १८६२ ई० में अब्राहम लिंकन ने इस बात की घोषणा की थी कि "पहली जनवरी सन् १८६३ ई० में संयुक्तराज्य अमरीका के प्रत्येक राज्य में गुलामों को स्वतंत्रता दे दी जाएगी और उस स्वतंत्रता की रक्षा राज्य करेगा।" तदनुसार दक्षिणी और उत्तरी रियासतों में युद्ध बन्द न होने पर भी पहली जनवरी सन् १८६३ से हब्शियों को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई परन्तु आज ८७ वर्ष व्यतीत हो चुकने पर भी अमरीका का 'राष्ट्र' हब्शियों के पूर्ण नागरिक अधिकारों के सम्बन्ध में निश्चित नहीं हो सका है! क्या इस परिस्थिति को भविष्य के लिए विशेष आशाप्रद समझा जा सकता है?

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय

डाक्टर जोन होम्स ने अमरीका में जाकर बसनेवाले गोरों की पृथ्वी पर स्वर्ग-राज्य स्थापित करने की कल्पना की जो बात कही है, वह वहां बसे हब्शियों के विषय में लागू नहीं है। हब्शी वहां स्वर्ग-राज्य स्थापित करने की कल्पना करके बसने नहीं गए थे। उन्हें जबरदस्ती पकड़कर जहाजों में भरकर 'स्वर्ग'-कल्पना' करनेवालों के हाथ बेच दिया गया था और अब्राहम लिंकन ने अपनी आंखों 'न्यू आरलीन्स' में हब्शियों को बेड़ियां पहनाकर, एक पंक्ति में खड़े किए जाते और कोड़ों की मार से उनकी पीठ से रक्त के फव्वारे उड़ाए जाते देखा था।

विश्व की वर्तमान परिस्थितियां क्या हैं? अफ्रीका हब्शियों का मूल स्थान है, उनका अपना राष्ट्र है। संसार के किसी भी भाग में हब्शी क्यों न जाएँ और उन्हें विश्व के किसी भी राष्ट्र का नागरिक अधिकार क्यों न प्राप्त हो जाए, जब हब्शी शब्द का उच्चारण किया जाता है, तब सुननेवालों के श्रवणकरण में तत्काल गूंज उठता है 'अफ्रीका के रहनेवाले'। इसी प्रकार जब अफ्रीका के मानचित्र पर दृष्टि जाती है, तब किसी भी साधारण भूगोल का ज्ञान रखनेवाले का मन स्वयमेव व्याख्या कर उठता है—"हब्शियों का देश!"

परन्तु अफ्रीका में अथवा संसार के किसी भाग में हब्शियों की स्थिति कुछ है ही नहीं। जिस प्रकार पोर्चुगीज भेड़-बकरियों के समान हब्शियों को अफ्रीका में पकड़कर, जहाजों में भर लें जाकर अमरीका में बेच दिया करते थे, उसी प्रकार भारत से भारतीयों को कुली-प्रवासी-कानून के अंतर्गत छल-कपट से बहका कर अफ्रीका ले जाया गया था और इन दोनों ने समान रूप से, एक परिस्थितियों में रहकर जंगलों और दलदलों को साफ करके हरे-भरे खेतों, कल-कारखानों और नगरों का निर्माण करने में सहायताएँ पहुँचाईं। उसके फलस्वरूप अमरीका में हब्शियों को मिली उन्नति-प्रगति तथा कार्य-सम्बन्धी बाधाएँ और भारतीयों को 'पेगिंग' ऐक्ट तथा एशियाई "बिल"।

दक्षिणी अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों का इतिहास संकट और संघर्ष का इतिहास है। भारत के जो पुत्र अपने देश की दासता और परवशता-रूपी पाप का फल भुगतने के लिए गुलाम बनकर विदेशों को चले गए थे और जिनकी कई पीढ़ियां अंगरेजी उपनिवेशों को उद्यान बनाने में बीत चुकी हैं, तथा भाग्य की ठोकरों के मध्य में भी जिन्होंने अपनी स्थिति सुधार सकने में सफलता पाई, उनसे विश्व-शान्ति के लिए आज भय उत्पन्न हो गया है। गांधी-स्मट्स समझौता अब से तैंतीस वर्ष पूर्व हुआ था। उसके बाद तृतीय विश्वशक्ति प्रजातंत्र का जन्म हुआ। वह अपना कार्य आधे संसार तक बढ़ा ले गया, परन्तु दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की स्थिति अब भी ज्यों-की-त्यों डांवांडोल है। जनरल स्मट्स ने सन् १९१९ में 'एशियाटिक जांच कमीशन' बैठाया था, जिसकी रिपोर्ट सन् १९२० में प्रकाशित हुई थी। उस कमीशन ने प्रवासी भारतीयों के लिए स्वेच्छापूर्वक 'प्रत्यागमन' योजना का ही समर्थन केवल नहीं किया था, वरन् यह सम्मति भी दी थी कि भारतीयों को मार्गव्यय के अतिरिक्त कुछ और देकर भी नेटाल छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। परन्तु उसने भारतीयों को वहां पृथक् बसाने की योजना को घातक बतलाया था। इतने पर भी सन् १९२४ में जनरल स्मट्स की प्रेरणा से तत्कालीन आन्तरिक मंत्री मि० पेट्रिक डंकन ने 'पृथक्करण' योजना के आधार पर एक कानूनी योजना की रूप-रेखा यूनियन पार्लियामेंट के सम्मुख उपस्थित कर ही दी थी। यदि उस योजना को पास कर दिया जाता तो सभी भारतीयों का भाग्य फूट जाता और वे आर्थिक रूप से एकदम गुलामी की काली स्थिति तक पहुँच जाते। किन्तु उसी समय एक उपनिर्वाचन के समय स्मट्स की "साउथ अफ्रीका पार्टी" के उम्मेदवार की 'राष्ट्रीय दल' के उम्मेदवार के मुकाबले में हार हो गई। इस पर प्रतिद्वन्द्वी दल की चुनौती स्वीकार करके लोकमत की परीक्षा लेने के लिए पार्लमेण्ट भंग कर दी गई। फलतः सन् १९२५ में जो निर्वाचन हुआ, उसमें जनरल स्मट्स की पार्टी बुरी तरह हार गई। अतएव भारतीयों के ऊपर आया संकट कुछ समय के लिए टल गया। सन् १९३९ में योरपीय महासमर छिड़ने के उपरान्त, दक्षिण अफ्रीका के सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि वह युद्ध में सम्मिलित हो या न हो। जनरल हर्टजोग की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की 'कोकस बैठक' हुई। इसमें निश्चय हुआ कि दक्षिण अफ्रीका युद्ध से तटस्थ रहे। परन्तु स्मट्स ने पार्लियामेंट की बैठक में गिरगिट के समान रंग बदला और वे युद्ध के पक्षपाती दल में जा मिले। इसके परिणामस्वरूप वे तीन-चार मतों से विजयी हो गए। लोकमत की परीक्षा और पुनः चुनाव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए स्थान खाली करने के लिए, मर्यादा के लिए जनरल हर्टजोग की सरकार ने इस्तीफा दे दिया। गवर्नर जनरल के पद पर आसीन थे स्मट्स के परम मित्र पेट्रिक डंकन, जिसने हर्टजोग के मंत्रिमंडल का इस्तीफा तो स्वीकार कर लिया; परन्तु पुनः चुनाव नहीं होने दिए और विरोधी दल को अपनी सरकार बना लेने के लिए आमंत्रित कर लिया। फलतः २२ वर्ष पूर्व का अपूर्ण कार्य पूरा करने के लिए कटिबद्ध स्मट्स ने, शासनाधिकार हाथ में आते ही, सबसे पहले तत्कालीन भारतीय हाई कमिश्नर सर रामास्वामी मुदालियर से यह आश्वासन मांगा कि वे श्वेतांगों के मुहल्ले में जमीन और मकान खरीदने का प्रयत्न नहीं करेंगे। प्रवासी भारतीय उनकी इच्छा के अनुसार यह आश्वासन देने के लिए बाध्य हुए। परन्तु स्मट्स ने इतने से सन्तुष्ट न होकर डरबन में म्युनिसिपैलिटी के श्वेतांग सदस्यों तथा नेवल इंडियन एसोसिएशन के भारतीय सदस्यों की एक समिति बनाकर उसे यह पहरा लगाने का काम सौंपा कि कोई भारतीय किसी गोरी बस्ती में मकान न खरीद ले। इस समिति के कार्यों से भी स्मट्स को सन्तोष नहीं हुआ और उन्होंने जस्टिस ब्रूम की अध्यक्षता में एक जांच-कमीशन बैठाया, जो इस सम्बन्ध में भारतीयों के द्वारा प्रदत्त आश्वासन की सच्चाई की जांच करे। इस कमीशन ने अपनी जांच-रिपोर्ट में उलटे सरकार पर यह आक्षेप लगाया कि भारतीय बस्तियों को डरबन की म्युनिसिपैलिटी ने नागरिक सुविधाओं से वंचित कर रखा है। उनसे टैक्स वसूल करने में कोई रियायत नहीं की जाती किन्तु उनकी बस्तियों में न पक्की सड़कें हैं, न पानी और प्रकाश की उचित सुविधाएँ ही। यद्यपि केपटाउन समझौते ने उन पर अपना रहन-सहन ऊँचा उठाने का उत्तरदायित्व डाल दिया है, तथापि उसकी पूर्ति के साधन और सुविधाएँ उन्हें अप्राप्य हैं। फलतः धनी भारतीय यदि अँगरेजों के मुहल्ले में रहना चाहें तो इसमें कोई अनौचित्य नहीं है। फिर भी भारतीयों ने अपने दिए वचनों का पालन किया है।

यह रिपोर्ट स्मट्स के काम की नहीं थी। अतएव उन्होंने तत्काल जनरल ब्रूम की अध्यक्षता में दूसरा कमीशन बैठाकर उसे यह काम सौंपा कि वह केवल यह बतलाए कि भारतीयों ने सन् १९२७ के उपरान्त कितनी भूमि गोरों के मुहल्ले में खरीदी। इस बार उन बस्तियों को भी गोरी बस्तियों में सम्मिलित कर लिया गया, जिनको पहली बार ब्रूम कमीशन ने भारतीय बस्तियां बतलाया था। सारे डरबन और नेटाल प्रदेश की अँगरेजों की सुरक्षित भूमि मान लेने पर, कमीशन को यह स्वीकार करना ही पड़ा कि भारतीयों ने गोरों से भूमि खरीदी है। फलतः इस रिपोर्ट की प्रति लेकर स्मट्स की सरकार ने 'पेगिंग ऐक्ट' पास कर दिया। कमीशन की नियुक्ति से लेकर बिल की स्वीकृति तक केवल एक माह के अन्दर हो गई। यही 'पेगिंग ऐक्ट' का इतिहास है जो अप्रैल १९४३ में पास हुआ था, जब कांग्रेस के सब नेतागण ब्रिटिश सम्राट् के अतिथि थे। जब भारतीय नेताओं और संस्थाओं ने जब अफ्रीका की सरकार की इस नीति का एक साथ विरोध किया तब भारतीयों की आंखों में धूल झोंकने के लिए जनरल स्मट्स ने 'जुडिशियल कमीशन' बैठाने की घोषणा करते हुए यह आश्वासन दिया कि वह भारतीय समस्या को हल करके स्थायी व्यवस्था करेगी और यह वर्तमान पेगिंग ऐक्ट केवल युद्ध-कालीन कानून है।

ब्रिटिश डोमिनियन के प्रधान मन्त्रियों की जो सभा लन्दन में होनेवाली थी, उसमें सम्मिलित होने के लिए 'नेटाल' से प्रस्थान करने के पूर्व जनरल स्मट्स ने 'नेटाल-कांग्रेस" के अधिकारियों से समझौता कर डाला, जिसके द्वारा उनकी पूरी कूटनीतिक विजय हो गई। उस समझौते में यह था कि नेटाल की प्रान्तीय कौंसिल एक आर्डिनेंस बनाएगी, जिसके अनुसार एक बोर्ड की स्थापना की जाएगी, जिसके पांच सदस्यों में दो भारतीय होंगे दो म्युनिसिपैलिटी के और एक सरकारी, जो सभापति होगा। यह बोर्ड भविष्य में यह फैसला देगा कि भारतीय किस क्षेत्र में स्वयं बस सकते हैं और किस क्षेत्र में वे गोरों को किराए पर देने के लिए मकान इत्यादि खरीद सकते हैं। पृथक्करण के सिद्धान्त पर भारतीयों-द्वारा येन-केन-प्रकारेण स्वीकृति प्राप्त कर लेना ही इस चाल का उद्देश्य था और यह उद्देश्य पूरा होते ही वही होने लगा, जो स्मट्स ने पहले से ही निश्चित कर रखा था। नेटाल की प्रान्तीय कौंसिल ने इस समझौते के विरुद्ध आर्डिनेंस पर आर्डिनेंस चालू करने आरम्भ किए। बाद स्मट्स लौटे तो उन्होंने उस समझौते को रद्द कर दिया। जिन नेताओं ने प्रिटोरिया-समझौते पर स्वीकृति दी थी, उन्हें जनता ने तिरस्कृत करके नेतृत्व के क्षेत्र से निकाल फेंका। 'ब्रूम' कमीशन से भारतीय सदस्यों के इस्तीफा दे देने पर भी कमीशन के अँगरेज सदस्यों ने कमीशन का काम चालू रखा। और अन्त में उसने अपना यह मत प्रदर्शित किया कि एक बार भारत और दक्षिणी अफ्रीका के प्रश्नों को हल करने के लिए गोलमेज कान्फरेंस बुलाई जाए और प्रवासी भारतीयों के प्रश्न को हल करने के लिए उचित और न्याययुक्त उपाय ढूंढ़ निकाले जाएं।

जनरल स्मट्स ने प्रकट रूप में इसे पसन्द किया परन्तु २१ जनवरी, १९४६ को यूनियन पार्लिमेंट में अपने जिस इरादे की घोषणा की, वह कुछ और ही प्रकट कर रहा था। ३१ मार्च को पेगिंग ऐक्ट की अवधि समाप्त होते ही तत्काल 'एशियाटिक लैंड टेन्यूर एंड रिप्रिजेंटेशन बिल' पास हो गया जो नेटाल के देहातों नगरों सहित पूरे प्रदेश पर लागू हो गया। ट्रांसवाल भी उसके प्रभाव के नीचे आ गया। पेगिंग ऐक्ट केवल श्वेतांगों तथा भारतीयों के मध्य में होनेवाले अचल सम्पत्ति के व्यवहार को रोकता था। पर एशियाटिक बिल ने श्वेतांगों के अतिरिक्त अन्य किसी से अचल सम्पत्ति के विनिमय को रोक दिया, जिसका अर्थ हुआ कि भारतीयों को नेटाल और ट्रांसवाल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

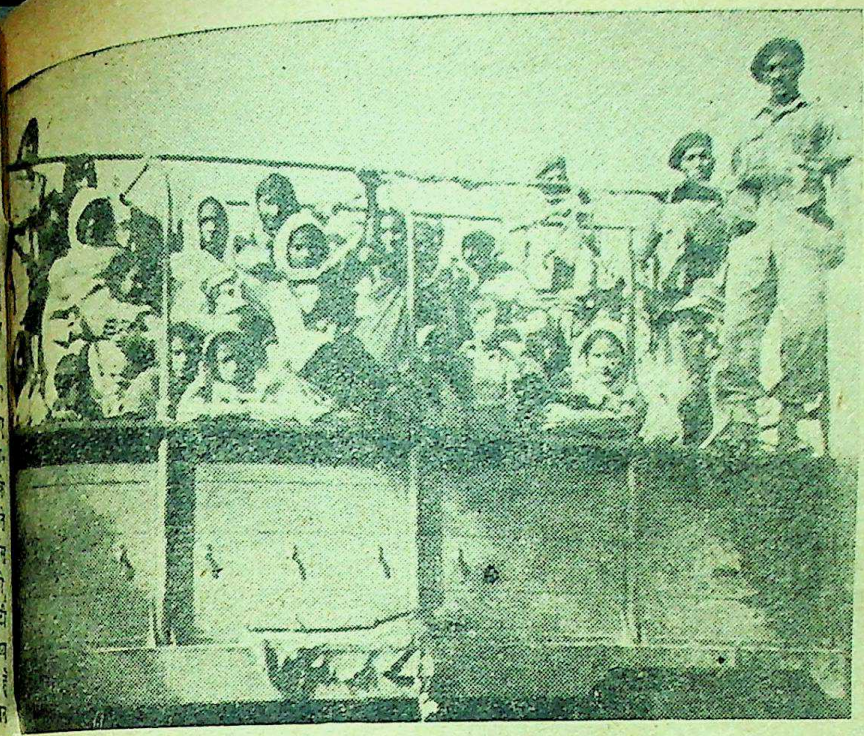

शरणार्थियों के बीच में

भारत-विभाजन के बाद से शरणार्थियों का जो आवागमन आरम्भ हुआ, वह सदा की भांति आज भी चल रहा है, यहां तक कि भारत के विभिन्न स्थानों में शरणार्थियों की बस्तियां ही बस गई हैं। दिल्ली के पास प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान में एक ऐसी ही विशाल बस्ती आज बस गई है, जहां जाकर कोई भी अपने को शरणार्थियों—केवल शरणार्थियों के ही बीच में पाएगा। कुरुक्षेत्र की उस बस्ती के कुछ दृश्य यहां दिए चित्रों में अंकित हैं।

ओ० आई० संस्था द्वारा अपहृत स्त्रियां काफी अधिक संख्या में वापस लाई गई हैं। ऊपर के चित्र में कुरुक्षेत्र में लाई गई ऐसी ही स्त्रियों का एक दल अंकित है।

शरणार्थियों की बस्ती में अस्पताल का दृश्य है। ऊपर के चित्र में कुरुक्षेत्र बस्ती के कमिश्नर डिप्टी कमिश्नर ब्रि० खनालकर वहां के अस्पताल में बीमार शरणार्थी से बातें करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

कुरुक्षेत्र-बस्ती की स्त्री-शरणार्थियों के बीच एक 'लेडी डाक्टर'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरुक्षेत्र-बस्ती के शरणार्थियों को कपड़ा बांटा जा रहा है ।

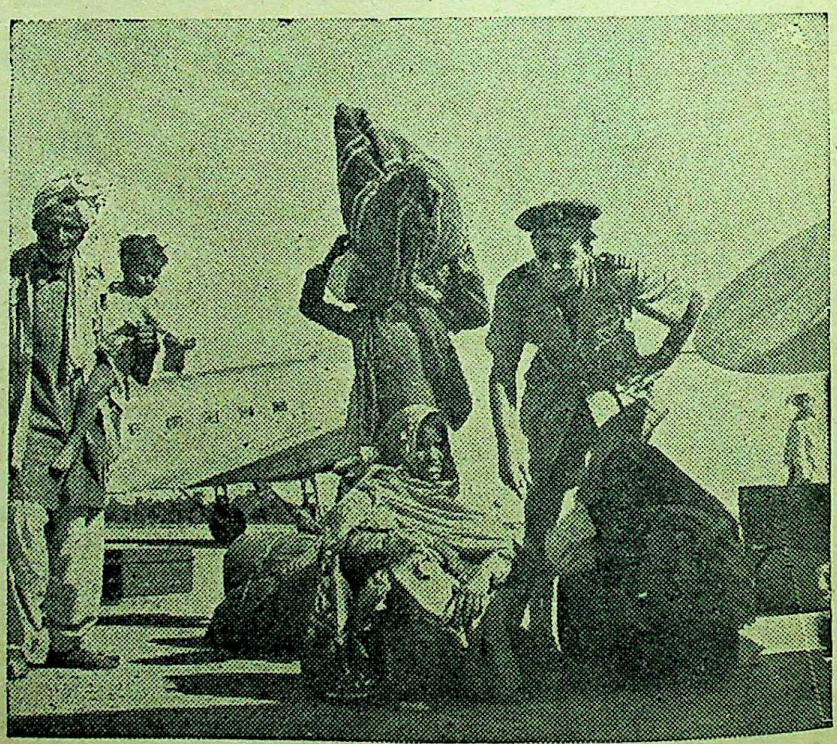

सुदूर डेरा-इस्माइल खां के निवासी कुरुक्षेत्र में शरणार्थी-वेष में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

प्रत्येक नगर, गांव या कस्बे में रहने से वंचित कर दिया गया और व्यापार के क्षेत्र अलग करके उनको वहां कैद कर दिया गया। सबसे अधिक विलक्षणता इस कानून में यह है कि प्रवासी भारतीय जाति-गत धार्मिक पृथक् निर्वाचन के द्वारा अपने तीन प्रतिनिधि धारा-सभा में भेजें, जो भारतीय न होकर गोरे हों, अर्थात उनको केवल यह चुनने का अधिकार दिया गया कि कौन-सा गोरा अधिकारी उनकी बस्तियों की ओर से चुना जाए। वे यह सोच सकते हैं कि इनमें से कौन व्यक्ति है, जो पचास से कम कोड़े मारने का समर्थन करता है। परन्तु डेढ़ सौ सदस्यों की धारा-सभा में तीन प्रतिनिधियों की आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज से अधिक प्रभावोत्पादक सिद्ध होगी, यह नहीं कहा जा सकता। गोलमेज कान्फरेंस के लिए स्मट्स ने कहा कि प्रवासी भारतीयों का मामला दक्षिण अफ्रीका का घरेलू प्रश्न है अतएव वे इस सम्बन्ध में भारत का हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकते।

मानवता की यह घोषणा कि सब मनुष्य समान हैं और संसार की कोई जाति किसी जाति की गुलाम बनकर नहीं रह सकती, तब तक पूर्णरूपेण सही नहीं उतर सकती जब तक संसार के किसी भी भाग में भेद-भाव की नीति व्यवहार की जाती है। यह भेद-भाव चाहे धार्मिक हो, राष्ट्रीयता-गत हो या रंगगत, प्रत्येक स्थिति में निन्दनीय है। 'न्याय' और 'मानवता' की रक्षा के नाम पर 'संयुक्तराष्ट्र-सुरक्षा-समिति' ने ८ दिसम्बर, १९४६ को दक्षिणी अफ्रीका और भारत के प्रश्न पर एक प्रस्ताव पास किया था, जिसका तात्पर्य यह था कि दक्षिणी अफ्रीका की यूनियन सरकार को वहां के प्रवासी भारतीयों के साथ अन्ताराष्ट्रीय नियमों के अनुसार समझौता करना चाहिए, इसके लिए यूनियन सरकार और भारत-सरकार को आपस में समझौता करना चाहिए। यह समझौता संयुक्तराष्ट्रों के चार्टर के अनुकूल होना चाहिए। इस सम्बन्ध में उनकी ओर से जो कुछ हो, उसकी रिपोर्ट पृथक्-पृथक् भारत-सरकार और यूनियन सरकार 'संयुक्तराष्ट्र-संघ' के आगामी अधिवेशन में उपस्थित करें।

परन्तु दक्षिणी अफ्रीका ने अपने घरेलू मामले में किसी का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं किया। फलतः 'संयुक्तराष्ट्र-संघ' का निर्णय केवल रद्दी की टोकरी में पड़ा रह गया। रंग-विद्वेष हिटलर के लिए अपराध माना गया परन्तु जब इस वर्ष 'संयुक्तराष्ट्र' जनरल असेम्बली में, भारत की ओर से गोलमेज कान्फ्रेंस के द्वारा समस्या को हल करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया तब वह तीन-चौथाई मत न प्राप्त हो सकने के कारण गिर गया। ग्रेट ब्रिटेन ने उसके विपक्ष में केवल इस कारण अपना मत दिया क्योंकि मि० क्रिस्टफर के कथनानुसार भारत के प्रस्ताव में, ८ दिसम्बर १९४६ को 'संयुक्तराष्ट्र जनरल असेम्बली' ने दक्षिणी अफ्रीका और भारत के प्रश्न पर जो प्रस्ताव पास किया था, उसी को पुनः दुहराया गया था। इस प्रस्ताव का समर्थन करने से दक्षिणी अफ्रीका और भारत के बीच प्रत्यक्ष वार्ता चलाने के मार्ग में कठिनाइयां उत्पन्न हो जातीं और वातावरण पुनः खराब हो जाता। इसका अर्थ यह है कि जो बात संसार के अनेक राष्ट्र स्वीकार कर लें, उसे भी दोहराना अपराध है और अटलाण्टिक चार्टर जैसी किसी भी न्याय, व्यवस्था अथवा सुरक्षा की बात नहीं दुहराई जानी चाहिए।

ग्रेट ब्रिटेन की आवश्यकता और भविष्य की कल्पना

यहूदियों ने डेढ़ हजार वर्ष के उपरान्त अपने राष्ट्र का पुनर्निर्माण, विश्वशक्तियों से मनवा सकने में सफलता पाई। अफ्रीका के भारतीयों और अमरीका के हब्शियों में केवल इतना ही अन्तर है कि भारत ने यह दावा किया कि जब तक दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों को नागरिकता के अधिकार नहीं मिल जाते तब तक भारत उनको लावारिस के समान दूसरों की कृपा पर नहीं छोड़ सकता। परन्तु यदि अमरीका के सवा करोड़ के लगभग हब्शियों पर यही बीतने लगे, तो उनकी ओर से बोलनेवाला संसार में उनका कोई राष्ट्र नहीं होगा।

संयुक्तराज्य अमरीका की जन-संख्या सन् १८१५ में केवल ९८ लाख थी। वह १८८० में ५ करोड़ १ लाख हो गई। इसके केवल १० वर्ष उपरान्त बढ़कर ६ करोड़ २० लाख हो गई। सन् १९११ में यह जन-संख्या ९ करोड़ २० लाख और सन् १९३३ में १२ करोड़ ६० लाख हो गई और नूतन जन-गणना के समय अवश्य ही यह १५ करोड़ के आस-पास पहुँच जाएगी। योरप इस समय नाश और भावी संघर्ष की पृष्ठभूमि पर अपना पुनर्निर्माण करना चाहता है। वहां घनी बस्ती है, जो जीवन-निर्वाह के ऊँचे दर्जे की अभ्यस्त है। जो जाति रहन-सहन के जिस दर्जे की अभ्यस्त होती है, उसका यदि वह दर्जा घट जाता है तो वह संख्या में घट जाती है, परन्तु अपना सुख नहीं कम करती। फलतः बालक-उत्पादन कम हो जाने से उसी मात्रा में राष्ट्र का न्याय और सुरक्षा का आश्वासन भी नष्ट हो जाता और विश्वास उठता जाता है। बात केवल इतनी ही नहीं है। योरप आत्मनिर्भर नहीं है; वह अपने को खिला नहीं सकता इसलिए इस समय योरप के सम्मुख यह भय उपस्थित है कि कहीं योरपीयों के रहन-सहन का दर्जा गिरते ही भूखों मरने की स्थिति न उत्पन्न हो जाए। बंगाल का अकाल योरप के लिए राष्ट्रीय आदर्श का काम नहीं दे सकता और न योरपीय चुपचाप मर जाना पसन्द करेंगे। तो प्रश्न उठ खड़ा होता है कि यदि अमरीका रूसी नीति तथा योरपीय राष्ट्रों के विश्वासघातक रुख से क्रुद्ध और असन्तुष्ट होकर अपना हाथ योरप से खींच ले, तब क्या होगा?

उत्तरी अमरीका में एँग्लो सेक्शनों को प्राधान्य नहीं प्राप्त है और यदि फ्रांस विदेशियों को न हजम कर सका तो एक विशेषज्ञ के मतानुसार फांसीसियों का देश नहीं रह जाएगा। इसी विशेषज्ञ के कथनानुसार ग्रेट ब्रिटन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल दो करोड़ लोग गुजर कर सकेंगे, जिनमें किसान, दूकानदार तथा काम-धंधों से लगे लोग ही होंगे, धनियों और मजदूरों का पता नहीं रह जाएगा। इसका अर्थ है कि या तो ग्रेट ब्रिटेन अपनी बढ़ी हुई जन-संख्या को देश के बाहर निकाल दे अथवा विपरीत परिस्थितियों में बाकी लोग घुट-घुटकर मर जाएँ। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश विशेषज्ञों का यह सोचना सर्वथा स्वाभाविक है कि किसी प्रकार ब्रिटेन अपने नागरिकों को विदेश भेजकर परिस्थिति सँभाल सकता है या नहीं। यह है समस्या का एक पहलू।

अमरीका के संयुक्त राज्य में इस समय १ करोड़ १५ लाख हब्शी और १ करोड़ १० लाख के लगभग मैक्सिको-निवासी बसे हुए हैं और आत्मरक्षा के लिए अमरीका ने अपने देश में विदेशियों के आगमन पर रोक लगा रखी है। योरप के लोगों का, विशेष करके ब्रिटेन के लोगों का, विचार है कि यह रोक केवल भारतीयों, चीनियों, जापानियों, बर्मियों आदि पर ही और उन्हीं के हेतु होनी चाहिए, क्योंकि यदि वे जबर्दस्ती नहीं रोके जाते तो जहां स्थान पाते हैं, वहीं एकत्र हो जाते हैं। संयुक्तराष्ट्रों की जनरल असेम्बली में भारतीय प्रस्ताव के विपक्ष में ब्रिटेन के मत देने का यही रहस्य है। भारत, चीन, जापान आदि देशों की रहन-सहन का दर्जा नीचा है, आवश्यकताएँ कम हैं और जन-संख्या अधिक है। अतएव वे कम वस्तुओं में अपना निर्वाह कर लेते हैं। उधर ऊँचे रहन-सहनवाली जातियां, बिना बाहरी मजदूर बुलाए अपना कार्य चला ही नहीं सकती। उदाहरण के लिए फ्रांस में अपनी निजी आवश्यकता से अधिक जन-संख्या है, जिसका वह पालन-पोषण कठिनाई से कर सकता है। फिर भी फ्रेंचों ने अपने देश में भारी काम इटालियनों, पोलों, अफ्रीकनों और रूसियों के लिए छोड़ रखे हैं, जो लाखों की संख्या में हैं। इँगलैंड में अँगरेजों ने आयरिशों को वही दर्जा दे रखा है, जो फ्रांस में अन्य देशवाले मजदूरों को प्राप्त है। यदि कल इँगलैंड और फ्रांस को बाह्य सुख-सुविधाएँ पहुँचाने के सब मार्ग बन्द हो जाएँ और उन्हें केवल अपने ऊपर अवलम्बित रहना पड़े तो इन राष्ट्रों को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए एकमात्र यही उपाय शेष रह जाता है कि वे अपनी मजदूरी स्वयं करें, अपनी मजदूरी सस्ते मूल्य पर करें, नीचे-ऊँचे सभी कार्य करें और जितनी न्यूनाधिक सामग्री प्राप्त हो, उसी में काम चलाएँ और साथ ही अपने देशों में जो बाहरी मजदूर रख छोड़े हैं, उन्हें वापस लौटा दें। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठेगा कि पोल-रूसी आदि तो अपने-अपने देशों को चले जाएँगे परन्तु फ्रांस-स्थित लाखों अफ्रीकनों का क्या होगा? यह है इस समस्या का दूसरा पहलू।

फ्रांस और ब्रिटेन की विलासिता और प्रभुता का अन्त ही उनकी आवश्यकताओं का अन्तिम हल नहीं होगा। जैसा कि उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इँगलैंड में केवल दो करोड़ जन-संख्या के योग्य स्थान है। फ्रांस की समस्या से उसे इसलिए कोई सरोकार नहीं है, क्योंकि वह रूस के गुट में चला गया है। अतः मुख्य प्रश्न यह उठता है कि ब्रिटेन के शेष आधे से अधिक लोगों का क्या होगा? वे चुपचाप बिना हाथ-पैर हिलाए मर जाना चाहें तो कोई बात नहीं, किन्तु ऐसा होना असम्भव है। भूतकाल में कितनी ही दुर्घटनाएँ, जिनसे शताब्दियों के लिए उन्नति रुक गई, घट चुकी हैं। जिन देशों की जन-संख्या पिछली सदी में बढ़ी है, या तेजी से बढ़ती जा रही है, उनमें मुख्य रूप से ये हैं—फिलिस्तीन, सीरिया, दक्षिणी अफ्रीका, स्याम, इंडोनेशिया, रूस, मैक्सिको, पीरू, युरुग्वे, अर्जेंटाइना तथा बोलिविया और इन सबमें रहन-सहन का दर्जा योरप से निम्न स्तर पर है। इनमें से केवल दक्षिणी अफ्रीका ही ऐसा है, जो ब्रिटिश प्रभाव के नीचे है, जहां अँगरेजों का स्थान सर्वोपरि है और जहां वे प्रवास करके बस सकते हैं। दक्षिणी अफ्रीका में कम ब्रिटिश जन नहीं बसे हैं, यदि चाहें तो शायद कुछ और भी बस सकते हैं, परन्तु वह अकेला ग्रेटब्रिटेन की सारी फालतू ढाई करोड़ जन-संख्या को आत्मसात् नहीं कर सकता। भारत, बर्मा, सीलोन आदि ब्रिटिश प्रभाववाले प्रदेश और घनी बस्तीवाले प्रदेश हैं, जहां बाहरी करोड़ों लोगों की खपत असम्भव है। दूसरे इन देशों की सर्वसाधारण जनता की रहन-सहन की कल्पना तक ये करोड़ों लोग नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में ब्रिटेन की बढ़ी जन-संख्या के लिए योरप, अफ्रीका और एशिया के बाहर दो ही क्षेत्र बच रहते हैं—आस्ट्रेलिया और अमरीका।

आस्ट्रेलिया में पर्याप्त स्थान है किन्तु ब्रिटिश विशेषज्ञों ने स्पष्ट कह दिया है कि वह केवल अच्छे कार्यकर्त्ताओं को ही अपने यहां ले सकता है, जिनकी आवश्यकता ब्रिटेन को स्वयं है। उपनिवेश ब्रिटेन के निठल्लों को नहीं लेंगे और वे निठल्ले भी ब्रिटेन से बाहर जाने की बात पसन्द नहीं करेंगे, क्योंकि उस देश के बाहर, उनको वहां से अधिक सुख नहीं मिलेगा। दूसरी ओर ब्रिटेन अपने मजदूरों को शिक्षित करके उन्हें बाहर भेजने का व्यय नहीं उठा सकता। परन्तु ब्रिटेन चाहे अपने मजदूरों को शिक्षित करके आस्ट्रेलिया भेज सके या न भेज सके, चाहे वह अपनी जन-संख्या को अच्छा और यथेष्ट भोजन प्रदान कर सके या न कर सके, किन्तु वह अपनी जनसंख्या को असहाय भाव से मरने देने के पूर्व कोई-न-कोई मार्ग निकालने का प्रयत्न अवश्य करेगा, जिससे उसकी जन-संख्या का प्रश्न हल हो जाए और वह हल अस्थायी न हो। ऐसा हल होगा कि बढ़ी हुई जन-संख्या विदेशों में प्रवास कर जाए, जिस रूप में है, उसी रूप में प्रवास कर जाए और जिस देश में जाए वहां उसे आधा पेट खाने को तो मिल ही जाए। रहन-सहन का दर्जा भी न घटने पाए।

ऐसी अवस्था में केवल संयुक्तराज्य अमरीका ही ऐसा देश शेष रह जाता है जहां ब्रिटिश मजदूर मजदूरी करके भी, अमरीकनों के समान न सही, परन्तु ब्रिटेन की तुलना से कुछ ही घटिया दर्जे का जीवन व्यतीत करना चाहे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकते हैं। पर ऐसी अवस्था में प्रश्न यह उठ खड़ा होगा कि अमरीका यदि उनको अपने यहां स्थान देना चाहे तो कैसे दे? उसने तो आत्मरक्षा के लिए अपने द्वार पहले से ही बन्द कर रखे हैं। यह बात ठीक है कि यदि भारत में ४० करोड़ जनता को रहने के लिए स्थान है तो फिर उससे दूने क्षेत्रफल के प्रदेश में क्या इससे आधी जन-संख्या के लिए भी स्थान नहीं हो सकता? परन्तु यह बात भी ठीक है कि वैसी स्थिति में अमरीका न अमरीका रह जाएगा और न वहां की जनता का रहन-सहन इतने ऊँचे दर्जे का। यदि बाहर से लोग न आएँ और अमरीका की जनसंख्या बिना तृतीय महायुद्ध का जन-संहार सहे बढ़ती रहे तो भी दो सौ वर्षों में वहां की स्थिति एकदम बदल जाएगी, वहां भी रहन-सहन इतना ऊँचा और महँगा नहीं रह जाएगा, यदि रहेगा तो व्यय पूरा नहीं पड़ेगा। गत १३५ वर्षों में जो जन-संख्या पन्द्रह गुना बढ़कर ९८ लाख से १४ करोड़ तक पहुँच गई, उसे दूना होने में अब इतने वर्ष नहीं लगेंगे।

क्रमिक हास और तात्कालिक परिवर्तन में वही अन्तर है, जो वर्षा के चाहे महीनों में बरसनेवाले जल का एक ही दिन में बरस पड़ने में है। करोड़ों बाहरी लोगों को बसाने, भोजन और कार्य देने का प्रश्न कोई साधारण प्रश्न नहीं है। इस समस्या को हल करने में उन अमरीकनों को विलम्ब नहीं लगेगा, जो या तो 'कू क्लक्स क्लैन' संस्था के सदस्य हैं या जो हब्शियों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं अथवा जिनके अन्तःकरण में गोरों के प्रति, विशेषकर अँगरेजों के प्रति, अधिक आदर की भावनाएँ वर्तमान हैं अथवा जो रूस को पराजित करके 'एक संसार' की स्थापना करना चाहते हैं। वे तत्काल इस बात के लिए सहमत हो जाएँगे कि पूरे ढाई करोड़ अँगरेजों के लिए न सही, तो संयुक्तराज्य अमरीका एक करोड़ १५ लाख लोगों को रहने के लिए स्थान और कार्य प्रदान कर सकता है और उसका परम कर्त्तव्य है कि वह इसे प्रदान करे। यह है हब्शी-समस्या का तीसरा रूप और ऐसा रूप, जिस पर आज तक एशिया और अफ्रीका के काले-भूरे लोगों की दृष्टि नहीं गई है और न अमरीकन नागरिकता का स्वर्ग-सुख भोगनेवाले करोड़ से ऊपर हब्शियों का ध्यान ही इस ओर गया है। यद्यपि घटनाओं का विकासक्रम इसी दिशा की ओर स्पष्ट रूप से इंगित कर रहा है।

उपर्युक्त तथ्य किसी कल्पना का फल नहीं है। मि० चर्चिल का 'अँगरेजी भाषा-भाषी प्रस्ताव' संसार के सम्मुख है। दूसरी राजनीतिक परिस्थितियों की बातें जाने दी जाएँ, तो भी उस प्रस्ताव के अनुसार यदि सब अँगरेजी-भाषी देश अपना एक संघ बना लें तो उसमें संयुक्तराज्य का जन-संख्या, आर्थिक स्थिति तथा राजनैतिक प्राधान्य के कारण मान और महत्त्व अधिक हो जाएगा। यदि संयुक्त-राज्य के लोग इस संघ की सब समस्याएँ सुलझाने के लिए कटिबद्ध हो जाएँ तो उनके सामने सबसे बड़ी समस्या ब्रिटेन के ढाई करोड़ अँगरेजों को ब्रिटेन के बाहर स्थान देने की होगी। इस दशा में हब्शियों से घृणा की वर्तमान लहर को साकार रूप ग्रहण करते क्या पांच वर्ष भी लगेंगे? जर्मनी में यहूदियों का क्या हुआ और आज योरप में उनकी क्या स्थिति है?

अमरीका में एक बड़ी जन-संख्या फ्रेंच कनाडियनों की भी है और एक करोड़ से अधिक संख्या मैक्सिको-निवासियों की भी। लेकिन उन लोगों के विरुद्ध अमरीकनों में कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही है। यदि बाहरी गोरी, गृह-द्वार-रहित और भूखों मर जानेवाली एक बड़ी जनसंख्या को बचाने का प्रश्न अमरीकनों के सामने उपस्थित हो तो अमरीका के सारे कानून एक ओर पड़े रह जाएँगे और होगा वही जो अमरीकन जनता चाहेगी। अमरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति कालविन के कथनानुसार मनुष्य कानून बनाता नहीं, केवल उसे ढूंढ़ निकालता है। अतएव रंग-भेद के वर्तमान रहते अमरीका के गुलामी के बन्धन से मुक्त हब्शियों को अमरीका में सदा बने रहने की कल्पना तक नहीं करनी चाहिए। जर्मनी में सैकड़ों वर्षों तक यहूदी समान भाव से रहते रहे थे, परन्तु हिटलर के एक ही कानून ने उन्हें जर्मनी से खदेड़ बाहर किया। अरबों के द्वारा फिलिस्तीन में बसने का प्रयत्न करनेवाले यहूदियों के रक्त से संसार के कोने-कोने को लाल कर देने की प्रतिज्ञाएँ दुहराने से यह बात भी सिद्ध हो गई कि यदि 'न्याय और मानवता' को किसी प्रबल विश्वशक्ति का बल और समर्थन न प्राप्त हो, तो वह एक कोने में सड़ते रहते हैं।

इसके अतिरिक्त यह भी मान लेने पर कि अमरीका का वर्तमान कानून और शासन-सत्ता प्रजातंत्र की भावना की अवहेलना नहीं करेगा, सुरक्षा का आश्वासन प्राप्त कर सकना असम्भव है। क्योंकि २५ जून १९४३ को अमरीका के प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने 'सीनेट' के समक्ष हड़ताल-विरोधी बिल की प्रशंसा करते हुए कहा था कि उनको विश्वास है कि इससे युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कारखानों में हड़तालें प्रारम्भ हो जाएँगी। उन्होंने कांग्रेस को चुनौती देते हुए लिखा था कि वह उनकी उस योजना को रद्द करके दिखलाए, जिसमें जीवन-निर्वाह के व्यय को घटाने की बात है। खर्च का बढ़ जाना ही हड़तालों का प्रधान कारण है।

रूजवेल्ट ने उक्त संदेश में लिखा था—"कांग्रेस मुद्रा-प्रसार का उपाय अपना सकती है, परन्तु उसके परिणामों का उत्तरदायित्व कांग्रेस के सदस्यों पर होगा। मैं जानता हूँ कि कुछ लोग यह बात मानते हैं कि भाव स्वयमेव अपने स्थान पर आ जाते हैं। यह ठीक है, किन्तु इससे धनी-वर्ग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, गरीब बेचारे मारे जाते हैं।" उन्होंने इसीलिए अपने निषेधाधिकार का उपयोग करके, इस बिल को रोकना चाहा कि यदि हड़तालों के विरुद्ध कोई बिल पास भी हो गया तो उसका उद्देश्य नहीं पूरा होगा। सबसे अधिक आपत्तिजनक उनको वह धारा प्रतीत हुई, जिसमें कहा गया था कि इस सम्बन्ध में मजदूरों का जनमत ले लिया जाए। रूजवेल्ट को यह शंका थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे हड़ तालें और भी बढ़ेंगी। उनकी सारी आपत्तियों का सार संक्षप में यही था कि बढ़े भावों के विद्यमान रहते, जीवन-निर्वाह का व्यय स्वतः बढ़ जाता है। अमीर लोग जिनको नित्य-प्राप्त मजदूरी पर जीवन-निर्वाह नहीं करना है और जिनके पास काफी धन पहले से मौजूद है, आय न बढ़ने पर या घट जाने पर भी जीवन-निर्वाह उसी स्तर पर कर सकने में समर्थ होते हैं किन्तु गरीबों की आय न बढ़ने पर वे अपने भोजन का मूल्य नहीं चुका सकते। फलतः उन्हें आय बढ़वाने के लिए हड़तालों का आश्रय लेना पड़ता है। अतएव हड़ताल न करने देने के लिए स्वभावतः केवल दो मार्ग बच रहते हैं, पहला यह कि वस्तुओं का मूल्य पूर्ववत् रहे, दूसरा यह कि यदि वस्तुओं का मूल्य बढ़े तो उसी अनुपात से मजदूरी भी बढ़ती जाए। अंकों में मजदूरी बढ़ने और परिणाम में जीवन-व्यवहार के उपयुक्त सामग्री मिलने का अर्थ है मुद्रा-प्रसार। पर इन बातों से देश को कोई ठोस लाभ नहीं होता, केवल व्यय के आंकड़े ऊँचे होते चले जाते हैं। परन्तु सीनेट ने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के निषेधाधिकार को भी नहीं माना। उस पत्र की प्राप्ति के ठीक ५ मिनट उपरान्त २५ के विरुद्ध ५६ मतों से बिल पास हो गया।

यह स्थिति और इससे उत्पन्न होनेवाले परिणाम आशाजनक नहीं हैं और न प्रजातंत्र के उज्ज्वल भविष्य का विश्वास प्रदान करते हैं। संयुक्तराज्य के मानचित्र पर 'इलिनाइस' राज्य के नीचे आड़ी रेखा खींचने पर उसके दो टुकड़े हो जाते हैं। उनमें जो अन्तर पहले था, वही अन्तर अब तक, हब्शियों के प्रति उदार और अनुदार मनोभावना के रूप में, वर्तमान है। इस समस्या का यह रूप यहूदी-समस्या से भी भीषण है। इसका अनुमान लगाने के लिए कल्पना की जा सकती है कि भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्त होने के समय बहुत से अँगरेज भारतीयता ग्रहण करके और उसकी सभ्यता और धर्म ग्रहण करके यहां रह जाएँ। दक्षिण-भारत कहे कि इन्हें यहां नहीं रहना चाहिए परन्तु उत्तर-भारत कहे कि इन्हें रहने देने में कोई हानि नहीं, रहने दो। पर यदि दो सौ वर्ष बाद दक्षिण-भारत अँगरेजों को मिटा डालने के लिए कटिब हो जाए और कहे कि इन्हें भगाकर, इनका स्थान बर्मियों, सीलोनियों को देंगे और दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों को बुलाकर देंगे, तब उत्तर-भारत क्या यह कहे कि दक्षिण अफ्रीका के भारतीय वहां मरें या जिएँ, हम उन्हें यहां नहीं आने देंगे अथवा सीलोनियों को भारत में न आने दो। आने दोगे तो हम अणु-युद्ध करके तुम्हें मिटा देंगे!

स्पष्ट है कि ऐसी परिस्थिति में उत्तर भारत का उदार से-उदार व्यक्ति भी अँगरेजों का पक्ष लेने में हिचकिचाएगा, दक्षिण-भारत के विरुद्ध रण-घोषणा करने की बात कहे उसे लज्जा आएगी। यह भी स्पष्ट है कि गोरी और काली जाति के प्रति वह वैसी भावनाएँ नहीं प्रकट कर सकेगा जैसी उसे विवश होकर दक्षिण-भारत के निवासियों के प्रति प्रकट करनी पड़ेंगी। स्वजातीय, स्वदेशी और प्रत्येक दशा में साथ रहनेवालों के विरुद्ध वह कब तक विदेशी लोगों के लिए लड़ेगा? न्याय और स्वजाति और स्वधर्म का आकर्षण क्या यह सहन कर सकेगा कि वे बाहर मर जाएं!

स्पष्ट है कि जिस संयुक्त राज्य अमरीका ने ईसाई मतावलम्बी होने के कारण यहूदी लोगों के लिए इतना किया है, वह ईसाई अँगरेजों को यों ही मरने के लिए नहीं छोड़ देगा। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि यदि दक्षिण राज्य उन्हें अमरीका में बुलाना चाहें तो उत्तरी राज्य उनका भी विरोध अधिक समय तक नहीं कर सकेंगे। अपना नैतिक और राजनैतिक मान प्रत्येक राष्ट्र स्वयं निश्चित करता है; अर्थात् प्रत्येक राष्ट्र के अधिकाधिक निवासी जो बात पसन्द करते हैं, वही उस राष्ट्र का मान हो जाता है। परन्तु यह कार्य मनुष्य अपनी व्यक्तिगत, धार्मिक और आध्यात्मिक प्रकृतियों के अनुसार करता है। उच्चता का आदर्श या तो ईश्वर होता है या सिद्धान्त। ईश्वर दिखाई नहीं पड़ता और सिद्धान्त आवश्यकतानुसार बनाए और मिटाए जा सकते हैं। इसलिए मनुष्य की बुद्धि के साथ 'मानवता' का सिंहासन भी डांवाडोल ही रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छदामी

श्री योगेन्द्रनाथ सिनहा

चतरा में अपने एक वकील मित्र के घर मैं ठहरा था। कार्तिक का महीना था। बरामदे ही में मैं सो रहा था। अभी रात काफी थी पर सामने सड़क पर इतना शोर-गुल मचा कि नींद खुल गई। उठकर देखा तो कई लदे बैल खड़े थे और पांच-छः आदमी जोर-जोर से बिना एक दूसरे की सुने सवाल-जवाब कर रहे थे। मुहल्ले के और कई आदमी आ जमा हुए। इस हल्ले-गुल्ले में नींद तो फिर आती नहीं, मैं भी कौतूहल-वश जाकर भीड़ में शामिल हो गया। कुछ क्षण के बाद ही स्पष्ट हो गया कि इस हलचल-ड्रामा के नायक दो हैं—पहला एक सुडौल जवान अपने लदने बैल की नथनी पकड़े हुए और दूसरा मेरे मित्र के घर के सामने रहनेवाले सेवक मिश्र जी, बैल का रास्ता रोके हुए। नौजवान व्यापारी कह रहा था—मैं यह जबर्दस्ती का टैक्स कभी न दूंगा, चाहे इसके लिए जो हो जाए।

सेवक मिश्र ने हँसकर कहा—बड़े-बड़े ऊँट बह गए और गधा पूछे कितना पानी! ग्यारह पीढ़ी से मेरे पूर्वज यह छदामी वसूलते आए हैं, किसी को ना कहने का मजाल नहीं हुआ। आज आए हैं ये दो दिन के छोकरे कानून बघारते।

लदने बैलवाले नौजवान ने शान्त भाव से कहा—अगर आपकी ग्यारह पीढ़ियों की जबर्दस्तीवाली दलील मान ली जाए तब तो अँगरेजी राज को भी न्याय-संगत कहना पड़ेगा। तब तो गुलामी को हटाने की कोशिश जो कांग्रेस कर रही है, वही अन्याय है। फिर हँसकर बोला—पंडित जी, अन्याय अन्याय ही है, चाहे आज का हो चाहे एक सौ वर्ष का। बल्कि एक सौ वर्ष का होने से और भी जघन्य है।

सेवक मिश्र राज-भक्त थे। उनके पास अब भी वह रोपी मौजूद है, जो एक अँगरेज कलक्टर ने पता नहीं किस बात पर खुश होकर उन्हें दी थी। कांग्रेस की हलचल को वे निरा खोखलापन समझते थे। चना क्या भाड़ फोड़ सकता है? फिर कहां अँगरेज शेर और कहां ये कांग्रेसी गीदड़! बोले—"यह कांग्रेसी घुड़की रहने दो। तुम जैसों को एक चुटकी में इस तरह पीस सकता हूँ। अँगरेज कलक्टर तक मेरे हाथ में हैं, छोटे हाकिमों और दरोगा का क्या कहना?" फिर और कड़ककर बोले—तुम नाहक तकरार कर रहे हो जी। बिना दिए निकल कहां सकते हो? लाओ एक पसा जमा करो और तीन बार लदा बैल इसी में ले जाना।

युवक ने कहा—यह पसे का सवाल नहीं है। है न्याय-अन्याय का। हाकिम आपके हाथ रहा करें, मैं जबर्दस्ती की देन न दूंगा, चाहे सौ गुना खर्च हो जाए।

इसी बीच में और कई लदने बैल आए। मिश्र जी बातें भी करते और उन बैलवालों से पैसे भी वसूल करते जा रहे थे। सभी पहले से पैसा निकालकर रखे रहते और सेवक मिश्र के कहने के पहले ही पैसा बढ़ा देते, मानो प्रकृति का अटल नियम पालन कर रहे हों! अपने चार बैल हुए तो एक पैसा, दो हुए तो अधेला। एक, तीन, इस तरह की अदद में हुए तो साथियों के बैलों के साथ मिला कर हिसाब करा दिया या पहले के हिसाब में कटवा दिया या पेशगी रख छोड़ी। मिश्र जी जैसे सभी को पहचानते थे और यह भी उन्हें याद था कि किसके हिसाब का पहले से कितना कम-बेशी निकलता है।

बैलवाले अपने-अपने छदामी दे तो देते पर सभी जरा रुककर झगड़े को देखने लगते। सेवक मिश्र की अनुभवी आंखें यह ताड़ गईं कि इन सभी की सहानुभूति है उसी युवक के साथ, यद्यपि ये लोग सशरीर उसका साथ नहीं दे रहे हैं। यों तो इस अनुभव-हीन जिद्दी छोकरे को सेवक मिश्र हँसकर छोड़ भी देते—आखिर यह दस बार भी लदा बैल लाए तो ढाई पैसे हुए, पर उसके विद्रोह की अग्नि से भयभीत हुए। इसे छोड़ दें तो और व्यापारी बहक जाएँगे। सोचेंगे, जरा अड़ जाओ तो पंडित जी अपना-सा मुंह लिए सरक जाते हैं। यों ही इस कलियुग की रेल और मोटरलारियों ने लदने बैलों का स्रोत सुखा दिया। जहां हजारों बैल रोज आते थे, वहां अब बीसी-तीसी में गिनती होती है। पूर्वजों का लगाया हुआ पौधा यों ही मुरझा गया है, उस पर यदि व्यापारी लोग इस छोकरे की देखा-देखी अड़चने डालने लगें तब तो रोजगार के साथ मेरा भी अन्त ही है। अभी तो घाव ही है, पीछे भगंदर की दवा करनी पड़ेगी। गरमाकर बोले—तो मैं भी जय-क्षय के लिए तैयार हूँ। देख लो कौन मिटता है, तुम या सेवक मिश्र। तुम्हें पता नहीं कि मेरे पास सरकारी चिट्ठा है छदामी वसूलने का। अगर जान-बूझकर आग में कूदना चाहो तो शौक से कूदो। अभी तुम यहीं अटक रहो। दिन चढ़े थाने ले जाकर तुम्हें हाजत में दूंगा और बैलों को कांजी-हौज में। तब देखोगे इसका मजा।

युवक के साथियों ने बार-बार समझाया, दे दो आखिर कितना लगता ही है। फिर ब्राह्मण भी तो हैं, समझ लो दान ही किया।

पर युवक ने उत्तर दिया—दान की बात और है, मैं एक का दो दे सकता हूँ। पर वसूली का यह हक इन्हें कैसा? हमारी कांग्रेस का सिद्धान्त है, अन्याय के सामने सत्याग्रह करना।

सेवक मिश्र उछलकर बोले—हां जी हां, हक की वसूली लूंगा, दान नहीं मांगता। आज का अधिकार नहीं है, ग्यारह पीढ़ियों का है। सरकार का मंजूर किया हुआ। सरकार के चिट्ठे के खिलाफ झगड़ा? रहने को पानी में और मगर से विरोध!

युवक के साथियों ने फिर समझाया, नाहक का झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोल लेते हो यार। ये बेचारे तुम्हारा धन तो लूट नहीं लेते। बैल पीछे एक छदाम की हैसियत ही क्या? हर सट्टे बे-बात की बात दंगा ठान लेना बहादुरी नहीं है।

एक ने मिश्र जी को सम्बोधन करके कहा—"मिश्र जी, मेरे पैसे में से इनका छदामी भी काट लीजिएगा।" फिर युवक से बोला—"चलो, अब भी तो झगड़ा मिटाओ।" पर युवक ने चिल्लाकर कहा—नहीं, मेरे लिए छदामी देने का किसी को अधिकार नहीं। मैं उसे जायज नहीं मानता। मैं अन्याय की वसूली कभी न दूंगा, चाहे सर्वस्व चला जाए। उसके और साथियों ने आपस में परामर्श किया और उसे छोड़ चले गए।

(२)

पुराने जमाने में चतरा व्यापार का बड़ा भारी केन्द्र था। छोटानागपुर के विस्तृत पार्वत्य प्रदेश में प्रवेश करने का यहीं से प्रधान रास्ता था। गया, पटना, शाहाबाद, कहीं से हजारीबाग जाइए, रांची जाइए, लोहरदग्गा जाइए, आपको चतरा होकर ही जाना पड़ता था। समतल के उर्वर क्षेत्रों से गेहूँ, चावल, चना और शहरों से कपड़े और बर्तन आते और पहाड़ियों से लाह, सुरगुजा, लकड़ी, साल का घुना इत्यादि जाया करते। अँगरेजी राज्य के आरम्भ में चतरा छोटानागपुर का शासन-केन्द्र भी था। नौकरी के सिलसिले में बहुतेरे यहां आकर बसे भी थे। व्यापार के लगाव से कितनों ने डेरा डाला। इसका ठीक पता नहीं चलता कि सेवक मिश्र के पूर्वज चतरा में खास किस सिलसिले से आए थे। पर लोग कहते हैं कि एक धर्म-भीरु व्यापारी उन्हें अपने साथ लाया था। उन दिनों मोटर या रेलगाड़ी किसी का नाम भी न था। आने-जाने का जरिया था "पुस-पुस" और अच्छा रास्ता हुआ तो ऊँट-गाड़ी। व्यापार के वाहन थे बैल—बैलों का अटूट तांता उन दुर्गम पहाड़ियों के बीच पतले खतरनाक रास्ते से रात-दिन गुजरा करता था। जहां मोटर से आज एक दिन में पहुँचते हैं, वहां उन दिनों एक महीना लगता था। जो जहां पहुँच जाता, वहां से जल्दी लौटने का सवाल नहीं उठाता था। पुरोहित जी की रोजी का भी व्यापारी ने बड़ा अच्छा प्रबन्ध कर दिया—धर्म का धर्म और अपने पैसे पर आंच नहीं। वह व्यापारी क्या, जो अपना धन लगाकर धर्म करे? चतरा का गल्ले का गोला उसी व्यापारी का था। जितने लदे बैल आते उसी गोले में जाते, वहीं खरीद-बिक्री होती। आढ़त के अतिरिक्त बैलवालों को बैल पीछे एक छदाम धर्म-खाते में देना पड़ता। इतने बैल रोज आते थे कि कुछ दिनों में ही पुरोहित जी इसी छदामी से मालामाल हो गए। यह सब्जबाग देखा तो अपने परिवार को भी चतरा में ही बुला लिया। घर पर तो दस घर पुरोहिती करो फिर भी पेट नहीं भरता था। दो-तीन पीढ़ियों के बाद गोलेदारों से कुछ अनबन हुई, तो सेवक मिश्र के पूर्वज छदामी की खुद वसूली करने लगे। उनका घर ऐसे रास्ते पर था कि लदने बैलों को उसी रास्ते से जाना ही पड़ता था, दूसरा कोई रास्ता न था। उस समय तक बैलवालों पर इतनी श्र... भी जम गई थी कि किसी को न देने का साहस न होता।

लोग कहते हैं, इनके एक पूर्वज कौलेश्वरी मि... अँगरेज अफसर के बंगले के सामने रोज आध-घंटा रा... पाठ करते और फाटक पर फूल चढ़ाकर लौट आते... उनकी भाव-भंगी भी ऐसी थी कि उस अफसर को इनसे ... मनोरंजन होता, कुछ उसी तरह का जो नाचनेवाले दर्दर से हमें होता है। उसी अफसर ने उन्हें खुश होकर टोंगी ... थी। पुलिसवालों को भी कौलेश्वरी मिश्र किसी मंत्र से ... हाथ में किए रहते। एक-दो बार लदनों ने बलवा कि... तो पुलिस की मदद से बैलों को मवेशीखाने में दि... और बैलवालों को हाजत में। तब से आतंक मच गया। हाल में तो किसी ने सेवक मिश्र का सामना नहीं किया था पर कहते हैं कौलेश्वरी मिश्र का जमाया हुआ दबदबा अब भी है। मेरे वकील मित्र कहते हैं, बारह वर्ष से अधिक हो जाने के कारण कानूनन इनका अधिकार भी हो गया है छदामी वसूलने का।

सेवक मिश्र कान से कम सुनते हैं पर लदे बैल के घुं... की आवाज से इनका कान इतना मँज गया है कि घोर निद्रा में सोए हों और एक लदा बैल घर के सामने आ जाए तो इनकी नींद झट खुल जाती है। ये आवाज से पहिचान लेते कि लदा बैल है या खाली। भैंस, घोड़े, गाय, चाहे जितने आएँ-जाएँ इनकी नींद न खुलेगी। और अचरज की बात यह है कि पचास और जानवरों में एक लदा बैल मिला दीजिए तो सेवक मिश्र अँधेरी रात में खाट पर लेटे-लेटे ही पकड़ लेंगे। पर भगवान की ऐसी निर्मम लीला कि प... रह पीढ़ियों का यह गौरवपूर्ण कौशल सेवक मिश्र के साथ ही विलुप्त हो जानेवाला है। सेवक मिश्र के कोई पुत्र जीवित नहीं है। केवल एक युवती कन्या है, कलावती, परम सुन्दरी और गुण-सम्पन्ना, पर बाल-विधवा।

(३)

बसन्त साहु घर का सम्पन्न था और देहात के हिसाब से काफी पढ़ा-लिखा भी। पिता की हाल ही में मृत्यु हो गई थी। बाप ने जिन्दगी भर लदने बैल का रोजगार किया था और रुपया इतना कमा छोड़ा था कि बसन्त चाहे तो बैठा खाए या एक अच्छा-सा व्यापार खड़ा कर ले। चाहता तो साधारण तरह से उसे एक अच्छी नौकरी भी मिल जाती। पर बसन्त था आदर्शवादी। शारीरिक परिश्रम और पूर्वजों के व्यवसाय का उसकी दृष्टि में अत्यन्त ऊँचा महत्त्व था। अपने इलाके का वह प्रमुख कांग्रेस-कार्य-कर्ता भी था। देशोत्थान का जोश उसकी नस-नस में दौड़ता। उसने कहा—मैं पिता का ही किया रोजगार करूँगा। अपने अन्य अज्ञानी और दलित रोजगारी भाइयों के साथ मिल उन्हें सिखाऊँगा कि तुम्हारा यथार्थ रूप क्या ह, तुम्हारे समाज में क्या-क्या कुरीतियां हैं, तुम कैसे पद-दलित हो रहे हो। वह पहली बार ही लदना बैल लेकर आया था कि सेवक मिश्र की छदामी से मुठभेड़ हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी]

(४)

काफी दिन चढ़ गया पर सेवक मिश्र ने बसन्त को न तो छोड़ा और न उसे थाने ही ले गए। यों तो बसन्त हट्टा-कट्टा जवान था, अगर बैल को ले चल खड़ा होता और सेवक मिश्र रोकने आते तो एक झटके में उन्हें पानी दिला देता। पर था वह गांधी का कट्टर भक्त। अहिंसा में उसका पूरा विश्वास था। जब इन्साफ की बात है तो सेवक जिस तरह से चाहें, उसके सामने साबित कर दें कि छदामी पर उनका न्यायतः अधिकार है। वह किसी तरह का जोर-जुल्म न करेगा।

इधर सेवक मिश्र के मन म इस तेजस्वी और दृढ़-प्रतिज्ञ युवक को देख-देखकर भूली बातें याद आने लगी थीं। बसन्त की सूरत आज पांच साल के बीच इतनी सजीव हो उनकी आंखों के सामने कभी न आई थी। उनके इकलौते पुत्र को बदसूरत जबान बना कर परमात्मा ने गोद से छीन लिया था। ठीक इसी तरह की आंखें थीं, डील-डौल कितना मिलता-जुलता है! पर दूसरे ही क्षण बसन्त पर क्रोध आता, आखिर हमारी जीविका प यह कुठाराघात करने को क्यों तुला ? बोले—इन्साफ तो होगा जी, पर तुम हाथ-मुंह क्यों नहीं धो लेते? कब तक इस तरह बैठे रहोगे?

बसन्त ने उत्तर दिया—जब तक फैसला न हो जाए। हम सत्याग्रही हैं। मेरे लिए यह कोई नया अनुभव नहीं है।

कलावती भीतर से एक लोटा पानी और एक दातुन लेकर आई तो अचानक बसन्त को देख ठिठक गई। बसन्त औरतों की आहट पा अन्यमनस्क-सा भीतर की ओर देखने लगा था। जब उसकी दृष्टि कलावती के चेहरे पर पड़ी तो चकचका गया। हृदय में एक दुर्बोध्य आन्दोलन उठा। उसके छिन्न-विच्छिन्न मनोभाव मानो मंत्र के प्रभाव से एकाएक एकत्र और परिवर्तित हो किसी संगीतमय स्वप्नलोक की ओर अभिमुख हुए। उसका लदना बैल, सेवक मिश्र की छदामी, उसका अपना शरीर, यह संसार, सभी मानों एक क्षण में इस विद्युच्छटा के पीछे सुदूर अतीत में विलुप्त हो गए।

वर्तमान रहा केवल वही शिल्पी जिसने एक स्वर्गीय उज्ज्वल प्रतिमा को गढ़ा है। उसकी अकलुषित अन्तरात्मा वासना-हीन विनीत भक्ति के पुनीत स्रोत में बहने लगी।

कलावती ने अस्त-व्यस्त हो झट कपड़े सम्भाले और पानी रख जल्दी से भीतर चली गई। दरवाजे की आड़ में खड़ी-खड़ी कुछ देर तक दोनों की बातें कान लगाकर सुनती रही फिर एक लोटा पानी और एक दातुन बसन्त के पास ला लाकर रख दिया और चुपचाप चली गई। सेवक मिश्र ने मुंह-हाथ धोया पर बसन्त उनके कितना कहने पर भी क्यों-का-त्यों बैठा रहा। पर कुछ देर के बाद जब कला-वती ने दो छोटे कटोरों में गुड़ लाकर एक अपने पिता को दिया और दूसरा बसन्त के सामने रख एक क्षण वहीं खड़ी रही तो बसन्त अदृश्य धागे से चलाए कठ-पुतले की तरह बिना किसी के कुछ कहे मुंह धोने लगा और गुड़ खाकर पानी पिया।

सेवक मिश्र और बसन्त के बीच पहला रोष बह जाने के बाद कई बातें हुईं। मिश्रजी ने बसन्त के घर का हाल पूछा और बसन्त की पीठ पर हाथ रख स्नेह से बोले—तुम होनहार लड़के हो बच्चे, पर इतने हठी न होते तो अच्छा होता। खैर, इस बार जाओ, छोड़े देता हूँ। मगर यह न कहना कि छदामी बिना लिए ही सेवक मिश्र ने छोड़ दिया।

बसन्त ने उत्तर दिया—झूठ तो बोल नहीं सकता, मिश्रजी। आप मेरे पिता के तुल्य हैं, आप के आशीर्वाद से ही सब कुछ है। पर छदामी का विरोध मैं मरते दम तक करता रहूँगा।

बसन्त जब चलने लगा तब कलावती ने आड़ से कहा—"बाबूजी, ये खाकर जाएँ न, कितना दिन तो चढ़ ही गया।" सेवक मिश्र कान से सुनते कम थे इसलिए कलावती को ऊँची आवाज से बोलना पड़ा था। बसन्त ने सुना और सेवक मिश्र के कहने के पहले ही, कुछ उनकी ओर देखकर और कुछ उस ओर जहां से निमन्त्रण के मधुर शब्द आए थे, बोला—धन्यवाद, पर मुझे अनाज बेचना है, जाना ही पड़ेगा।

दूसरे दिन जब लदने बैल आने लगे तो सेवक मिश्र ने प्रत्येक व्यापारी से उन्हें रोक-रोक कर कहा—बच्चा हिमाकत जताने आए थे, छदामी न देंगे। यह नहीं जानते कि सेवक मिश्र की ग्यारह पीढ़ियों के पूर्वज भाड़ नहीं झोंकते रहे हैं। जब रगड़ा और हाजत की राह दिखाई तो खट टेंट से पैसा निकल गया।

उस दिन के बाद से ही कलावती की न जाने क्यों पहर-रात रहे ही नींद खुल जाया करती है और पता नहीं किसकी प्रतीक्षा में थोड़ी-थोड़ी देर बाद बाहर निकल कर पिता की आंखें बचा. झांक-झांक जाती है।

(५)

दूसरी बाबार जब बसन्त रात के तीसरे पहर चतरा घाटी के पहाड़ी रास्ते पर अपना लदना बैल लेकर आ रहा था, उसे एक अपूर्व अज्ञेय अनुभव हुआ। पहले यह खतरनाक पहाड़ी रास्ता जहां बैलों के फिसलकर अतल खोह में गिरने का भय है, जहां खूंखार जंगली जानवरों का पग-पग पर डर, बसन्त को यात्रा का काला परिच्छेद-सा लगता था। पर आज उन्हीं काले निर्दय पहाड़ों से उन्हीं विषम अँधेरी खाइयों से, पहाड़ के शिखर पर पत्रहीन वृक्षों से झूलते हुए सितारों से एक मधुर, करुण, अबोध्य संगीत उठकर उसके हृदय को आन्दोलित कर रहा था। जब उसके और साथी बैलों को गालियां देते, उनकी पूंछें ऐंठते, गांव-जवार की समस्याएँ हल कर रहे थे उस समय बसन्त चुप-चाप अपने बैल के पीछे-पीछे चलता जा रहा था। उसके मानस-नेत्र थे उस दूर दिगन्त में, जहां बाहर सेवक मिश्र रास्ता रोके खड़े थे और भीतर एक रूपवती विधवा-युवती अपना असहाय हृदय रोके बैठी थी।

इस बार भी सेवक मिश्र ने बसन्त को अटकाया, पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोध के बदले स्नेह से। बसन्त ने कहा—छदामी तो न दूंगा पर आप के लिए गांव से तरकारियां लाया हूँ और घर का कुछ घी।

क्रमशः सेवक मिश्र और बसन्त में घनिष्ठता बढ़ती गई। बसन्त जब बैल लेकर आता तो दो-एक दिन उसे सेवक मिश्र के घर ठहर जाना पड़ता। कभी-कभी तो खुद उसकी तबियत खराब हो जाती, कभी सेवक मिश्र कहते—छदामी न देने का कारावास तो सत्याग्रही को सहना ही पड़ेगा। और सब के ऊपर कलावती की आंखों के शब्द-हीन आवेदन बसन्त के लिये सुमधुर हथकड़ी बन जाते।

बसन्त कांग्रेस की बात किया करता। उसे केवल यही एक धुन थी। राजनैतिक परिस्थिति समझाता और सेवक मिश्र को कायल करना चाहता। पर मिश्र जी का अटल विश्वास दूसरी ओर था। अँगरेजी राज में बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं। सरकार के सिवा कौन इतना न्याय कर सकता है, कौन इतना सुख दे सकता है?

कलावती के साथ सामाजिक कुरीतियों पर बातें होतीं। जब वह विधवा-विवाह को सराहता तो कलावती उसका विरोध करती। बसन्त इस पर उबल पड़ता, फिर शान्त हो ललाट पर हाथ रख कुछ देर सोचता। दलीलें पेश करता और प्रगति-शील देशों के ऐसे-ऐसे अकाट्य प्रमाण देता कि कलावती क्षण भर के लिए कायल हो जाती, उसके हृदय में अबोध्य मधुर आवेग उठते। उसकी फेंकी हुई, सोई हुई, जवानी निस्तब्ध दूर दिगन्त में बांसुरी की सुरीली तान सुन एक क्षण के लिए उठ बैठती। उसका दिल धड़कने लगता। बसन्त की ओर से एक छोटे-से इंगित के लिए उसका उमड़ा हुआ हृदय टक लगाए रहता। पर बसन्त में सब कुछ होते हुए भी कुछ भी न था। कलावती की ओर उसकी श्रद्धा और स्नेह असीम था, इसमें कोई सन्देह नहीं। वह कलावती के लिए प्राण देकर भी कृतार्थ होता। पर जब कलावती प्रेम की छोटी-सी पुकार के लिए भीतर-भीतर तड़पती तो उसे शिक्षाएँ मिलतीं।

(६)

विदेशी कपड़ों की पिकेटिंग थी। कांग्रेस और सरकार दोनों दल मोर्चे पर डटे थे। कांग्रेसी लोग दूकानों पर धरना दे बैठे थे। पुलिस घुड़सवार उन्हें भगाने के लिए घोड़ों के पैरों और चाबुकों से काम ले रहे थे। प्रमुख सत्याग्रही बसन्त था। शोरगुल सुन सेवक मिश्र भी दर्शकों की भीड़ में जा खड़े हुए। मामला गरम होता गया। कोई दल हार मानने को तैयार न था। एक ओर आत्मा और अधिकार का बल, दूसरी ओर लड़ाई के सारे सरंजाम। बसन्त जब किसी तरह दूकान के सामने से हटने पर राजी न हुआ तो अँगरेज पुलिस-अफसर ने दांत पीसकर घुड़सवारों को बढ़ने का हुक्म दिया। घोड़ों के खुर से बसन्त की दशा शोचनीय हो गई। पर इससे जब वह न माना पुलिस-अफसर क्रोधान्ध हो कोड़े से और बूट से उसे पीटने लगा। बेचारा बसन्त चुपचाप सहते-सहते जब बेहोश हो गया तब अँगरेज अफसर लौटकर अपना पसीना पोछने लगा। चारों ओर घोर-सन्नाटा छा हुआ था। सेवक मिश्र अब तक चुपचाप खड़े यह दृश्य देख रहे थे, पर जब बसन्त बेहोश हो गया तो एकाएक भीड़ टूट पड़े और दौड़कर बसन्त को गोद में उठा लिया। उन्हें भी इसी रोष में अँगरेज अफसर ने जोरों का धक्का दिया।

बसन्त को अस्पताल में पूरे तीन महीने लगे। उसकी सेवा सेवक मिश्र और कलावती के हाथ थी। बसन्त के घर के लोग आए पर कलावती तो रोगी का एक अंग बन गई थी और सेवक मिश्र टूटे पतवार वाली नाव की तरह मँडराया करते।

जब बसन्त अच्छा होकर उठा तो देखा, सेवक मिश्र के भावों में काया-पलट हो गया है। उस दिन की घटना ने उनके अटल विश्वासों का किला चूर-चूर कर दिया था। अब बसन्त छिपे-छिपे उनकी चुटकी लेता। कहता, भगवान और राजा एक पंक्ति में बैठनेवाले हैं। राजा का द्रोह नरक का रास्ता है। पर नदी में पहाड़ों से पानी आ गया था, अब बाढ़ रोकनेवाला कौन था? सेवक मिश्र बसन्त के साथ कांग्रेस-आश्रम जाते और कांग्रेस के कार्य देखकर आश्चर्य मूक हो जाते। अब ये कट्टर कांग्रेसी हो गए हैं। यहां तक कि उत्साह और विचारों की प्रगतिशीलता में कभी-कभी बसन्त को भी इनका मुंह ताकना पड़ता है। कांग्रेस का प्रचारक बन गांव-गांव लेक्चर देते हैं और ग्रामोत्थान का काम देह तोड़कर करते हैं।

कलावती भी चरखा चलाती है और उसने अपने घर में लड़कियों का एक छोटा-सा स्कूल खोल रखा है। कांग्रेस-प्रदर्शनी में बसन्त कलावती का काता हुआ सूत ले गया और हाथ-बिनाई की कई चीजें। कलावती को सर्वोच्च पुरस्कार और प्रशंसा-पत्र मिले।

कुछ दिनों के बाद सेवक मिश्र कलावती को ले कांग्रेस-आश्रम में जा रहने लगे। अब इन दोनों का जीवन-सूत्र है कांग्रेस का काम और जीवन का उद्देश्य है वह दिन, जब बसन्त पर और बसन्त जैसे अन्य देश-भक्तों पर अंग्रेज के कोड़े और न पड़ेंगे। सेवक मिश्र और कलावती के त्यागमय उत्साह और अध्यवसाय ने आश्रम मे नव-जीवन का संचार कर दिया है।

उसी आश्रम में सारस्वत विद्यालंकार नाम के एक परम विद्वान् नवयुवक रहते थे। यह देश का सौभाग्य है कि ऐसे-ऐसे निस्स्वार्थ कार्य-कर्त्ता राजनैतिक क्षेत्र में आए हैं। इनका केवल एक ही व्यसन था—अध्ययन और चुपचाप देशोद्धार के कार्य। मुखमंडल ब्रह्मचर्य से दीप्तिमान् था। इनके पाण्डित्य और चरित्र की उज्ज्वलता ने इन्हें स्वतः ही आश्रम का नेता बना दिया था। बसन्त के साथ इनका विशेष बन्धुत्व था। बसन्त ने अगुआ बनकर इनके लिए कलावती का ब्याह कराया। सेवक मिश्र बड़े ही प्रसन्न थे। विद्यालंकार और कलावती की पुष्प-शय्या बनी एक नदी चली, जिसको साफ करने में इनके विवाहित जीवन का पहला दिन बीता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी]

(७)

इस विवाह से सब से अधिक सुखी बसन्त था। उसे मानों कोई वरदान मिल गया हो, जीवन का जैसे कोई महान् उद्देश्य पूर्ण हुआ हो। पहले वह कलावती के सामने चिन्तित और गम्भीर रहा करता था, पर अब उसे और सारस्वत को देखता तो स्नेह-भरी चुटकियां लेता।

विवाह के उत्सव एक न एक रूप में अभी आश्रम में चल ही रहे थे कि बसन्त को एक शरारत सूझी। उसने इस बारात में कलावती और सारस्वत को भी समेटा।

दो बैल कहीं से लाए गए। एक खाली रखा गया और दूसरे पर गल्ला लादा गया। तीनों ने लदने व्यापारी की पोशाकें पहनीं।

रात का चौथा पहर था। सेवक मिश्र अपने कमरे में सो रहे थे। विद्यालंकार को खाली बैल दिया गया। वे उसे जोर जोर से हांकते हुए सेवक मिश्र के कमरे के सामने से निकाल ले गए।

कुछ क्षण के बाद लदे बैल को ले बसन्त और कलावती चले। वे चुपचाप सेवक मिश्र के कमरे के सामने से गुजर रहे थे कि सेवक मिश्र एकाएक उठे और चिल्लाते हुए बाहर निकले--कौन है, रोको, छदामी देते जाव।

कलावती और बसन्त दोनों कहकहा मार कर हँस पड़े। विद्यालंकार भी इस बीच में आकर शामिल हो गए थे। सेवक मिश्र एक क्षण खड़े रहे, जैसे सर चकराया हो, फिर भीतर से लालटेन लाए और नजदीक जा लदने व्यापारियों का चेहरा देखा। देखकर मुस्कुराए और कमरे में लौटते समय आंख मलते हुए बोले--आज-कल के छोकरे भी कैसे शैतान हो गए हैं!

सूफी मत

पंडित हरिश्चन्द्र शुक्ल

सूफी मत मस्तों का, भावुक आत्माओं का एक निराला पंथ है और है सत्त्वशुद्धि, आत्मसंयम, अध्यात्मविकास, विश्वानुभूति तथा निर्वाणप्राप्ति का एक विशिष्ट, उत्कृष्ट साधन। "कब और कहां इसका प्रादुर्भाव हुआ, यह अब भी अनिश्चित है। आठवीं या नवीं सदी के आस-पास ईरान में इसका खूब प्रचार था।"[1] उदार और संवेदनशील ईरानियों ने इसे बड़े चाव से अपनाया। वे फिर अपनी जन्मागत पुरातन रीति-नीति का अनुसरण करने लगे और इस्लाम के कट्टर एकेश्वरवाद (Monotheism) एवं कठोर रूढ़ियों के विरुद्ध उन्होंने आवाज उठाई तथा कुलाभाय आर्य-संस्कृति का उद्धार किया। इससे इस्लाम की नींव हिल गई और ईरान में उसका प्रचार एक मुद्दत तक रुका-सा रहा।

"सूफी शब्द की व्युत्पत्ति अरबी शब्द 'सूफ' से है। सूफ का अर्थ है ऊन। सूफियों के सुप्रसिद्ध आचार्य अबूसईद-बिन-अबुल्खैर और उनके चेले ऊनी कपड़े पहनते थे। इससे वे तथा उनके शिष्य-प्रशिष्य सूफी कहे जाने लगे।[2]

सूफी मत वेदान्त-मत से बहुत मिलता-जुलता है; बल्कि यह कहना चाहिए कि पहला मत दूसरे का ईरानी संस्करण है। वेदान्त का अद्वैत सिद्धान्त ही अधिकांश सूफियों का भी मूल, सर्वतोभद्र सिद्धान्त है (दि० पा० टि०)।[3]

आचार के सम्बन्ध में भी सूफी और अद्वैत-वेदान्ती के बीच सैद्धान्तिक सामञ्जस्य है। त्याग को ही सूफी भी मोक्ष का प्रधान साधन मानते हैं और त्याग से उनका भी तात्पर्य केवल वासना-त्याग से है--कर्म के सर्वथा त्याग से नहीं। "कुछ सूफियों के मत से तो मुक्ति का एकमात्र उपाय निष्काम कर्म ही है--ज्ञान या प्रेम नहीं।"

त्याग ही सूफी भी मोक्ष का प्रधान साधन मानते हैं और त्याग से उनका भी तात्पर्य केवल वासना-त्याग से है--कर्म के सर्वथा त्याग से नहीं। "कुछ सूफियों के मत से तो मुक्ति का एकमात्र उपाय निष्काम कर्म ही है--ज्ञान या प्रेम नहीं"[1]

सूफी मत के दर्शनों में सिद्धान्त तो कई मिलते हैं पर प्राधान्य अद्वैत-सिद्धान्त का ही है। ईश्वर तथा जगत् दोनों एक रूप हैं और परस्पर सम्पृक्त हैं, वेदान्त का यह सिद्धान्त प्रायः सभी सूफियों को मान्य है।

---

१ एन् साइक्लोपीडिया बृटानिका, खण्ड १६,
२ वही, खण्ड १८।
३ जां कि उस्तां रा शिनासां हम तुई,
जुम्ल: उस्तां रा खुद उस्तां हम तुई।

चूं हक़ीक़त रा मुहक्किक़ खुद तुई,
ऐन हक़ ईंनस्त ऐनुल्हक़ तुई।
हस्तिए रब रा मुजव्विज़ चूं तुई,
बिल यक़ीं अल्लाहो-अकबर खुद तुई॥
मन् आनूरं कि बा मूसा हमीगुफ़्त।
खुदाअ्यम्, मन् खुदाअ्यम् मन् खुदाअ्यम्॥
जलालुद्दीन रूमी

जाहिदे गुमराह के, में किस तरह हमराह हूं,
वह कहे अल्लाह है, औ मैं कहूं अल्लाह हूं।

१ महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज, एम० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका एक बहुत बड़ा समुदाय परमतत्त्व को भाव, प्रेम या सौन्दर्य मय समझता है और विश्व को उसका प्रतिबिम्ब (Reflection)। इस सम्प्रदाय के अनुसार सौन्दर्य रूप भगवान् ने आत्मप्रकाश के लिए विश्वरूप दर्पण का आविर्भाव किया। इस दर्पण में वह आत्म-स्वरूप को निरन्तर देखता रहता है (दे० पा० टि०)।[१] ऐसा ही एक दूसरा सम्प्रदाय परमार्थ तत्त्व को सत्, ज्ञान या प्रकाश-स्वरूप मानता है और जगत् को उसका शक्ति-रूप। सूफ़ियों का एक और मशहूर फ़िरका है। उसका मत यह है कि वस्तु-तत्त्व ही स्वयं शक्ति-रूप है और विश्व है उसका विकास। ये तीन सम्प्रदाय सूफ़ियों के प्रधान सम्प्रदाय हैं। इन बड़े सम्प्रदायों के सिवा कई छोटी-मोटी मण्डलियां भी हैं। उनमें से एक मण्डली का मत उल्लेखनीय है। वह यह है—अहद (परमात्मा) के दो रूप हैं—ज़ात (ज्ञाता) और सिफ़त (ज्ञात)। ज़ात तो है अहद खुद और सिफ़त है मुहम्मद। सिफ़त विश्व की उत्पत्ति या आविर्भाव का कारण है और ज़ात लय अथवा तिरोभाव का। ज़ात की शक्ति 'नज़ूल' कही जाती है और सिफ़त की 'उरूज'। नज़ूल का अर्थ है लय और उरूज का है उत्कर्ष, विकास।

सूफ़ियों के अधिकांश दर्शनों का सार यह है :—

"परमात्मा एक, पूर्ण, नित्य और सर्वगत है। वह निराकार भी है और साकार भी। वही एक-मात्र सत्ता है, वस्तु-तत्त्व है। जीव तथा जगत् उससे भिन्न नहीं हैं। जीव तो है उसका अंश और जगत् है उसका आभास (Phantasm) वह विश्व का काल्पनिक उपादान है और उसकी शक्ति तात्त्विक। विश्व उसकी शक्ति का परिणाम है; उसका नहीं। उसकी शक्ति उसके अधीन है और उससे अभिन्न है। वह चराचर जगत् का अभिव्यापक आधार है। दोनों में परस्पर आधाराधेय-सम्बन्ध है; व्याप्य-व्यापक भाव है। वह निरपेक्ष तथा समष्टिभूत है। वह सत् (Being) है। असत (Non-Being) भी वही है।"[२] 'वह द्रष्टा है। दृश्य और दृष्टि भी वही है।'[१] 'वह भाव-रूप है। आत्म-बोध के लिए उसने अपनी शक्ति से अभाव विश्व का आविर्भाव किया और विश्व में वह व्याप्त गया। भावस्वरूप परमात्मा अभावरूप जगत् में है। इससे जगत्-भाव भी है और अभाव भी। उसमें अभाव दोनों का एक साथ सन्निवेश है।'[२] भाव और दो भिन्न वस्तु नहीं हैं। दोनों एक ही हैं। अभाव भाव ही अंश है यद्यपि वह भाव से भिन्न—भाव का विकास प्रतीत होता है। इस प्रतीति का कारण अज्ञान है। निवारण हो जाने पर अभेद ज्ञान और पूर्ण भाव की अनुभूति होती है। "भाव माजूद (सत्स्वरूप) है

---

१ मुद्दआ (उद्देश) आलम से तेरा बस फ़क़त दीदार था।
दीद (देखना) को अपनी तुझे यह आइनः दरकार था॥

२ उपनिषदों के 'ब्रह्मवाद' और गीता के 'अध्यात्म' का भी निष्कर्ष यही है, जैसा कि 'एकमेवाद्वितीयम्,' 'नेह नानाऽस्ति किञ्चन,' 'मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय,' 'वासुदेवः सर्वम्,' 'सर्वं सर्वत्र सर्वदा,' 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्', द्विवाव ब्रह्मणे रूपे मूर्त्तञ्चैवामूर्त्तञ्च मर्त्यञ्चामृतञ्च, ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः', 'मम योनिर्महद्-ब्रह्म,' 'बीजंमां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्', 'अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः,' 'सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि', 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव', आदि महावाक्य और मन्त्रों से स्पष्ट है। अद्वैत-मत-पोषक बहुत-से अवतरण पुराणों से भी दिए जा सकते हैं। भक्ति-तत्त्व के प्रवर्तक महर्षि शाण्डिल्य के निम्नाङ्कित सूत्रों से भी अद्वैत-मत की ही पुष्टि होती है—

"भजनीयेनाद्वितीयमिदं कृत्स्नस्य तत्स्वरूपत्वात्।"
"तत्प्रतिष्ठा गृहपीठवत्।"
"चेत्याचितोर्न तृतीयम्।"
"तदैक्यं नानात्वैकत्वमुपाधियोगहानादादित्यवत्।"
"पृथगितिचेन्न परेणासम्बन्धात्प्रकाशानाम्।"

बौद्ध भी अद्वैती हैं। उनके चारों दर्शनों—माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक में शून्यवाद का प्राधान्य है। शून्यवाद अद्वैतवाद ही है। वेदान्ती मूल तत्त्व को सत्स्वरूप या भावस्वरूप मानते हैं पर बौद्धों के मत से वह असद्रूप वा अभाव (शून्य) रूप है। वेदान्तियों और बौद्धों में मतभेद है तो इतना ही है।

१ गुलशने राज। इन वाक्यों में द्रष्टा, दृष्टि और दृश्य शब्द दृष्टान्त-रूप में क्रमशः परमात्मा, जीवात्मा तथा जगत् के लिए प्रयुक्त हुए हैं। ऐसे दृष्टान्त प्रेम-मार्गी सूफ़ियों के ग्रन्थों में पाए जाते हैं। इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध सूफ़ी कवि अकबर को भी वेदान्त का अद्वैत-मत सम्मत था। वे प्रेम-सिद्धान्त के पोषक थे और प्रेम-तत्त्व के व्याख्याता। उन पर सूफ़ी मत का पूरा प्रभाव पड़ा था, जैसा कि उनके इस शेर से स्पष्ट है :—

"दुनिया की क्या हक़ीक़त; और हमसे क्या तअल्लुक़।
वह क्या है इक झलक है; हम क्या हैं इक नज़र है॥"

इस शेर में कवि ने प्रेममार्गी दार्शनिक सूफ़ियों की पद्धति तथा परम्परा का अनुसरण कर प्रश्नोत्तर के रूप में तत्त्व तथा आत्मा के स्वरूप और सम्बन्ध का निरूपण किया है और कैसे सुन्दर ढंग से किया है! इसमें अद्वैत, अध्यास, अवच्छेद, प्रतिबिम्ब आदि कई वाद अनुस्यूत हैं पर प्रति-बिम्बवाद का प्राधान्य है और परमात्मा तथा जीवात्मा दोनों के लिए एक ही शब्द 'हम' प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार दोनों की एकता स्वीकार की गई है। साथ ही हम (आत्मा)' को नज़र (बिम्ब) तथा विश्व को आत्मा की झलक (प्रतिबिम्ब) मानकर दोनों का सनातन सम्बन्ध दिखाते हुए एक-मात्र अधिष्ठान रूप 'हम (आत्मा)' को ही अकबर ने सत् निरूपित किया है और विश्व (अध्यस्त वस्तु) को असत् बताया है तथा आत्मा के साथ उसके तादात्म्य को उसकी प्रतीति का कारण।

२ नसफ़ी तथा इब्नुल् अरबी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह निरपेक्ष है, असीम है और है सृष्टि का धत् (सार तत्त्व)। सृष्टि सापेक्ष है, ससीम भाव है। धत् के दो अंश या रूप हैं—(१) धत् और (२) अस्म। धत् अस्समद (स्वतन्त्र सत्ता) है। वह शुद्ध, निरुपाधि, निष्क्रिय तथा निर्गुण है और अस्म सोपाधि, सक्रिय, नामरूपात्मक, गुण-विशिष्ट धत् है।'[१] धत् में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान तीनों का एक साथ समावेश है। अस्समद धत् की अव्यक्त अवस्था है और अस्म व्यक्त। अव्यक्तावस्था में धत् मुनक़तुल इतलक़, धते—सधज (अमूर्त्त), मभूलुल नाथ (निर्गुण धत्), ग़ायबुल-ग़यूब (अव्यक्त धत्), ला तअय्यून (असीम धत्), ग़ैबे मुतलक़ (पूर्ण अव्यक्त धत्), वजूदे बहत (शुद्ध भावरूप धत्) और ऐनुलकाफ़ूर कहलाता है। व्यक्त होने पर धत् एक से अनेक हो जाता है; जैसा कि नागोर के प्रख्यात सूफी हमीदुद्दीन ने कहा है:—

"ज़ दरिया मौजे गुनागूं बरामद,
ज़ बेचूंनी रंगे चूं बरामद।
गाहे दर किस्वते-लैला फ़रो शुद,
गाहे दर सूरते मजनू बरामद॥"

समुद्र में विभिन्न रंगों की असंख्य लहरें उठती हैं, जो कभी मजनू का और कभी लैला का रूप धारण कर बेनाम से बनाम हो जाती हैं। समुद्र तथा तरंगों की एकरूपता नित्य सत् है और अनेक रूपता या भिन्नता अनित्य असत्।

"सत् (Reality, being) अभाव (Non-Existence) का अभाव है और असत् (Non-Reality) भाव (Existence) का अभाव।[२] दो असतों का मध्य-वर्ती सत् असत् है।"[३] अशरी सम्प्रदाय के मत से भाव सत् है पर सिवा इस सम्प्रदाय के अन्य सभी सम्प्रदायों की धारणा है कि भाव हाल (Statce) है और हाल का कोई इल्ला (कारण) नहीं है।

"उमर खैयाम, इब्नतैमिया, वाहिदमामूद प्रभृति सूफी स्वतंत्रवाद के विरोधी थे। मामूद ने एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय चलाया था। वे अणुवादी थे। उनके मत से आफ़ाद (अणु) नित्य हैं और विश्व है नित्य सिद्ध अणु-समष्टि। महाकवि हाफ़िज़ उनके अनुयायी थे।"[४] उक्त मत के कारण भी सूफी हिन्दुओं के कितने ऋणी हैं, पाठक स्वयं समझ सकते हैं। बताने की आवश्यकता नहीं कि 'अणुवाद' का भी प्रवर्तन भारत में ही हुआ। यह वाद भी एक भारतीय तत्त्वान्वेषी के ही गम्भीर अन्वेषण का फल है। इससे उसके बुद्धि-वैभव, उसकी सूक्ष्म दृष्टि, उसकी प्रखर प्रतिभा का जाग्रत् प्रमाण मिलता है। इसके मूल प्रवर्तक महर्षि कणाद थे। उन्हें न तो आज-कल के नाना प्रकार के वैज्ञानिक साधनों का पता था और न प्रयोग मालूम थे। पर सृष्टि के रहस्य उनसे छिपे न रह सके। संसार में पहले-पहल सृष्टि-तत्त्व की खोज में वही लगे। सूक्ष्म विचार तथा परीक्षा-द्वारा उन्होंने पदार्थों एवं द्रव्यों की संख्या निर्धारित कर उनका वर्गीकरण किया और अन्त में निरवयव, निरिन्द्रिय, कल्पनातीत, विश्व के कारणभूत, अणुरूप नित्य तत्त्व का पता लगाकर ही छोड़ा। कार्य में कारण के ही गुण-धर्म उत्पन्न होते हैं, यह अनुभव-सिद्ध है। कार्य कारण से भिन्न या स्वतन्त्र नहीं हो सकता। जड़ ही जड़ कार्य का कारण हो सकता है और चेतन ही चेतन का। अणु जड़ हैं—चेतन नहीं—अतः कणाद का मत है कि जड़ जगत् जड़ परमाणुओं का योग है—चेतन का नहीं—"योरपीय वैज्ञानिकों में 'अणुवाद' का प्रवर्तक डायोटन है। वह योरप का कणाद है। उसकी और कणाद की अणु-सम्बन्धी व्याख्या एक ही है, यद्यपि अनुसन्धान-पद्धति भिन्न है।"[१] पिछली सदी के प्रारम्भ से ही योरप अणुओं की खोज और परीक्षा में लगा है पर वे क्या हैं, इसका ठीक-ठीक पता अब तक न दे सका। बरसों छान-बीन करने के बाद वह आज जिन बातों का प्रतिपादन कर पाया है, उनका निरूपण भारत में सहस्रों वर्ष पूर्व हो चुका था।

संसार के प्रायः सभी सभ्य देशों में सूफी मत का थोड़ा-बहुत प्रचार हुआ और हो रहा है। यूनान, इटली, जर्मनी, ब्रिटेन आदि सुदूरवर्ती योरप के देश भी इससे प्रभावित हुए बिना रह न सके। वहां चर्चा तो इसकी प्लेटो के ही जमाने से होती चली आ रही है किन्तु उस समय से इसकी ओर विशेष प्रवृत्ति है, जब उन्नीसवीं सदी के आदि में चार्ल्स डार्विन के विकासवाद से डाल्टन के परमाणुवाद का खंडन हो गया और अन्त में ईथर[२] का आभास मिला तथा उसकी वैज्ञानिक परीक्षा शुरू हुई। सूफ़ी मत के सिद्धान्त प्राचीन यूनान के कई विख्यात दार्शनिकों-प्लेटो, प्लोटिनस प्रभृति—के ग्रन्थों में मिलते हैं। सर विलयम जोन्स की धारणा है कि योरपीय दार्शनिकों में प्लेटो को उक्त मत का परिचय सबसे पहले प्राप्त हुआ। फिक्टे, शेलिंग, पार्मेनाइडे, हर्बर्ट स्पेन्सर, ग्रीन आदि दार्शनिक अद्वैत-सिद्धान्त के ही समर्थक थे। सत् को ही एकमात्र, विश्व-व्यापक सत्ता मानते हुए सुप्रद्धि अँगरेज दार्शनिक हर्बर्ट स्पेन्सर अपने ग्रन्थ 'साइकालोजी' में लिखते हैं—

"द्रव्य, गति तथा शक्ति सत् नहीं हैं—सार तत्त्व नहीं हैं। वे सत् के प्रतीक, उपलक्षकमात्र हैं। चराचर सृष्टि सत् की अभिव्यक्ति मात्र है—सार तत्त्व का विकास मात्र है।" ईश्वर तत्त्व का अद्वितीयत्व—ईश्वराद्वयवाद—

---

१ खिज़ा खां।
२ 'अल्-वजूद अदमुल्-अदम्.—'अल-अदम् अदमुल्-वजूद'—जिली।
३ 'अल्-वजूदबैनुल-अदमैली अदमन्'—वही।
४ गोपीनाथ कविराज।

१ भगवद्गीता-रहस्य।
२ यह नित्य, पूर्ण, अनन्त, सर्वसाधक, सर्वव्यापक तथा एकता-विधायक आकाशीय तत्त्व है, और है अणुओं का संयोजक। यह गोचर नहीं है पर इसकी सत्ता अस्वीकार नहीं की जा सकती क्योंकि जगत् की सारी क्रियाएं तथा व्यापार इसपर अवलम्बित हैं। यह सृष्टि का मूल कारण है। इसके बिना सृष्टि हो ही नहीं सकती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इँगलैंड के प्रख्यात राजकवि लार्ड टेनिसन की निम्न-लिखित पंक्तियों में भी अंकित है :—

"ईश्वर एक है, नित्य है और है प्रेममय। उसे हम चाहे ईश्वर कहें, चाहे ईश्वरीय विधान कहें या मूल तत्त्व।"

अमरीका का रहस्यवादी कवि, लेखक तथा विचारक एमर्सन भी एक सत्तावादी था, जैसा कि उसके इस कथन से स्पष्ट है :—

"सर्वगत, सर्वगामी आत्मा ही एकमात्र सत्ता है। वह सबका कारणभूत है। उसकी दृष्टि में कोई पदार्थ न तो छोटा है और न बड़ा।"

विश्व के मूल में एक ही तत्त्व है, यह सिद्धान्त हेकल को भी सम्मत था पर उसके मत से नित्य-तत्त्व जड़ है—चेतन नहीं। वह जड़ाद्वैतवादी था। पिछली शती के सुविख्यात वैज्ञानिक लार्ड केल्विन ने आकाश को अखण्ड, सर्वव्यापी सत्ता प्रतिपादित किया है और अपने ग्रन्थ Activity and Electron Theory में प्रोफेसर क्रुक्स लिखते हैं कि 'द्रव्य, गति, तथा शक्ति एक दूसरे से घुले-मिले प्रतीत होते हैं।'

सूफ़ियों को हिन्दुओं और बौद्धों का पुनर्जन्मवाद भी मान्य है। इसका प्रमाण मौलाना रूम का यह पद्य है :—

"हम् चो सब्ज़ा बारहा रोईदा एम्।
हफ़्त सद हफ़्ताद क़ालिब दीदा एम्॥"

मिस्ल घास-पात के हम बार-बार पैदा हुए हैं; ७७० शरीर हमने धारण किए हैं।

पुनरावृत्ति के सम्बन्ध में एक अज्ञात सूफ़ी का निम्न-लिखित शेर कितना स्पष्ट है :—

"मेरा होना था फ़क़त मेरे न होने के लिए।
मेरा मरना था फ़क़त मेरे जीने के लिए॥"

यह शेर गीता के 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च' का अनुवाद-सा मालूम होता है।

मोक्ष के सम्बन्ध में सूफियों का मत यह है—"रूह (आत्मा) की दो भिन्न अवस्थाएँ हैं—नासूत (जीवावस्था या जीवलोक, इहलोक) और साहूत (ब्रह्मावस्था या ब्रह्म-लोक, सत्यलोक, परलोक)। पहली अवस्था मूल अवस्था है और दूसरी अन्तिम। पहली जैवात्मिक स्थिति है और दूसरी पारमात्मिक। रूह ही नासूत में तो रूह (जीवात्मा) है और साहूत में रूहुलरूह (परमात्मा)। नासूत का नज़ूल (लय, तिरोभाव) हो जाने पर साहूत का उरूज (उदय, आविर्भाव) होता है। नासूत है अपूर्ण, निकृष्ट, अशुद्ध स्थिति और साहूत है पूर्ण, उत्कृष्ट, शुद्ध। नासूत में आत्मा को जगत् अपने से भिन्न प्रतीत होता है पर साहूत में उसे केवल अपनी ही अनुभूति होती है। नासूत है भेदावस्था; साहूत अभेदावस्था। नासूत रूह की बद्धावस्था है; साहूत मुक्तावस्था। आत्मा का मूल स्थान—आत्मा का स्वदेश—नासूत नहीं है। असली स्थान उसका साहूत है। सत्यलोक से इस लोक को वह प्रवासित कर दी गई है। यहां वह जन्म-मरण के बन्धन में बँधी हुई प्रवास-दुःख, देश-निकाले की सजा, भोग रही है। उसकी सजा की मियाद उस समय पूरी होगी, जब उसका भेद-ज्ञान दूर हो जाएगा; जब उसे यह बोध हो जाएगा कि 'प्रेरक या प्रवासित करनेवाला परमात्मा भिन्न नहीं है।' जीवात्मा के बन्धन का कारण भेद-ज्ञान ही है और यह अहंकार (खुदी) मूलक है। ज्ञान, भक्ति आदि साधनों द्वारा अहंकार का आत्यन्तिक ध्वंस हो जाने पर अभेद-ज्ञान का उदय होता है। तब आवागमन रूपी माया के सारे बन्धन आप-से-आप छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और जीवात्मा तथा परमात्मा की एकता हो जाती है। ठीक ऐसे ही सिद्धान्त नीचे दिए हुए मन्त्र, सूत्र और पद्य में अंकित हैं :—

"सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहन्ते
तस्मिन्हंसो भ्राम्यते ब्रह्मचक्रे;
पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा
जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति॥"

श्वेताश्वतरोपनिषत् ॥।६॥

"ईश्वरस्याप्यभिमानद्वेषित्वादैन्यप्रियत्वाच्च॥"

ना० सू०; २३।

"ममेति बध्यते जन्तुर्नममेति विमुच्यते,
अहंता ममते त्यक्त्वा मुक्तो भव महामते।"

बिना गुरु की कृपा और सहायता के मोक्ष या निर्वाण प्राप्ति सम्भव नहीं, आर्य-धर्म के अनुयायी सम्प्रदायों ने यह मत स्वीकार करते हुए मुमुक्षु या निर्वाणाकांक्षी के लिए सूफी आवश्यक समझते हैं कि वह किसी इन्सानुल-कामिल, किसी मर्दे-तमाम, किसी पूर्ण पुरुष के हमराह होकर तरीक़त (जीव के मूल या लक्ष्य-स्थान सत्यलोक की यात्रा, आत्मा-सन्धान) करे—परमार्थ-पथ की ओर अग्रसर हो—तथा उसे अपना मार्ग-दर्शक, अपना अभिभावक, अपना मुरशिद (गुरु) मानकर उसके निर्दिष्ट मार्ग पर चले और उसकी अभिभावकता में ही भक्ति, विरति, ज्ञान आदि निर्वाण-लब्धि के साधनों का अभ्यास करे। यहां पर यह बता देना ठीक होगा कि सूफी मुरीद (शिष्य) के लिए उस समय तक शरीअत (धर्मानुष्ठान, सदाचार, कर्त्तव्य-पालन आदि) की पाबन्दी जरूरी है जब तक उसकी आत्मा नासूत में रहे। "सालिक (तरीक़त करनेवाले, सत्यलोक के यात्री, साधक) को आठ मंजिलें तय करनी पड़ती हैं। पहली मंजिल 'अबूदियत (उपासना) की मंजिल' कहलाती है। इस मंजिल में यात्री को मनःशुद्धि के लिए योगाभ्यास करना पड़ता है और सच्चे भाव से ईश्वराराधन। कुछ दिनों इस अनुष्ठान को जारी रखने से—युक्तचित्त होकर भगवान् की उपासना करते रहने से—दीक्षित के मन का मैल धुल जाता है और उसके हृदय में भगवत्प्रेम की आग भड़क उठती है जो उसकी सारी वासनाओं तथा अहम्-भाव को जला देती है। उस समय वह दूसरी मंजिल में पहुँच जाता है। यह मंजिल तथा एक मंजिल और पार कर लेने पर उसे आत्म-बोध हो जाता है और वह मारिफत (ज्ञान) की मंजिल में प्रवेश करता है। इस मंजिल में उसको एक विशेष प्रकार की मानसिक क्षोभ होने लगता है, जिसका कारण परमानुभूति या आत्म-संवेदन है। अब वह पांचवीं मंजिल में पहुँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

जाता है। इस मंजिल का नाम है वज्द (उन्माद या आत्म-विस्मृति)। इस प्रकार हक़ीक़त (सत्य) और वस्ल (संयोग, मिलन) दो मंजिलें और पार करते हुए सालिक आखिरी मंजिल में दाखिल हो जाता है। इस मंजिल को फ़नाफ़िल्लाह (निर्वाण) कहते हैं। इसमें यात्री की सत्ता परमात्मा की सत्ता में लीन हो जाती है। प्रेमी और प्रेमास्पद, उपासक और उपास्य की एकता हो जाती है। दोनों घुल-मिल जाते हैं। इस अष्टाङ्ग-मार्ग का साधन कभी कहीं किया जाता था या नहीं, यह निश्चयपूर्वक कहा नहीं जा सकता। इसके सम्बन्ध में इस देश के सूफ़ियों से पूछ-ताछ करने पर मि० ह्यूज (Hughes) को मालूम हुआ है कि यहां केवल चार मार्गों या मंजिलों का अभ्यास किया जाता है। वे मार्ग या मंजिल ये हैं—(१) नासूत या आलमे शहादा (भूर्लोक, जीवभूमि, जीवस्थिति, इंसान की मंजिल, आत्मा की अशुद्धावस्था)—इस मंजिल में शरीअत की पाबन्दी ज़रूरी है। शरीअत का अर्थ है विधान, नियम, (२) मलकूत या आलमे मिसाल (फरिश्तों की मंजिल, सुवर्लोक, देवभूमि, देवस्थिति, आत्मा की शुद्धावस्था)—इस मंजिल में अन्तःशुद्धि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। (३) जबरूत या लाहूत (सिद्धों की मंजिल, स्वर्लोक, सिद्धभूमि, सिद्धावस्था)—इस मंजिल में साधक का ध्येय ज्ञानवृद्धि होना चाहिए। साहूत (फना की मंजिल, परमपद, परमावस्था)। इस मंजिल में पहुँचते ही, इस अवस्था को प्राप्त करते ही साधक सत्स्वरूप विश्वात्मा में प्रतिष्ठित हो जाता है।"[1]

'तरीक़त' हिन्दुओं का देवयान-मार्ग है और बौद्धों का अष्टाङ्ग मार्ग।

शेख मसलहुद्दीन[2] सादी, नूरुद्दीन अब्दुर्रहमान[3] जामी प्रभृति प्रख्यात कवि और हसन[4] बसरी, रबिया[5], बयाज़ीद[6] आदि साधु-सन्त सूफी थे। मन्सूर[7] हल्लाज, जलालुद्दीन[8] मुहम्मद रूमी, अल् गज़्ज़ाली[9], मुल्ला[10] शाह प्रभृति दार्शनिक एवं विचारक भी सूफी ही थे।

---

(१) इण्डियन ऐण्टीक्वैरी .....

(२) ई० सन् ११७५ के आस-पास शीराज़ में इसका जन्म हुआ था। यह अब्दुल कादिर गीलानी का मुरीद था। गुलिस्तां और बोस्तां के सिवा इसने बहुत-सी फुटकर ग़ज़लें और कसीदे बनाए। जामी इसे 'शीराज़ की बुलबुल' कहा करता था। जवानी में यह मुसलमानी सेना में भरती होकर पहले हिन्दुओं से लड़ा, फिर ईसाइयों से। ईसाइयों ने इसे कैद कर त्रिपोली के किले में रखा पर कुछ दिनों बाद किसी प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली मुसलमान ने किलेदार को दे-लेकर छुड़ा लिया और इसके साथ अपनी बेटी का निकाह कर दिया। १४ बार इसने हज किया। ई० सन् १२९२ में इसका देहावसान हुआ। शीराज़ के पास इसकी कब्र है।

(३) यह मौलाना मुहम्मद या अहमद इस्फहानी का पुत्र था और हेरात के सुल्तान अबूसईद [illegible] था तथा उसके बेटे हुसेन मिर्ज़ा का भी। ७ नवम्बर ई० सन् १४१४ को हेरात प्रान्त के जाम नामक गांव में यह पैदा हुआ था। इससे आगे चलकर इसका नाम जामी पड़ गया। फारसी का यह चूड़ान्त विद्वान् था। छोटे-बड़े सब मिलाकर इसने ४४ ग्रन्थ लिखे, जिनमें दो—'यूसुफ और जुलेखा' तथा 'नफहातुल्-इन्स'—बहुत प्रसिद्ध हैं। ९ नवम्बर १४९२ को इसने इस संसार से कूच किया।

(४) ई० सन् ६४२ में बसरे में इसका जन्म हुआ था। यह संयत, विद्वान् तथा भक्त था। अरबी में एक दीवान इसने लिखा है। ई० सन् ७२८ में इसकी मृत्यु हुई।

(५) यह एक सुप्रसिद्ध भगतिन थी। भगवत्परायणता के कारण जितनी ख्याति इसकी है, उतनी ही ज्ञान-निष्ठा के कारण भी। बसरे में यह भी पैदा हुई थी। कहते हैं, बगदाद से मदीने तक इसने एक नहर निकाली थी। ई० सन् ८०१ में इसने परलोक-यात्रा की।

(६) यह अबुलफज़्ल लुकमान का पट्ट शिष्य था और महना के सुविख्यात सूफी सन्त अबुलखैर का पुत्र। इसने रुबाइयाते-अबूसैयद अबुलखैर नामक काव्य-ग्रन्थ लिखा है। बचपन से ही यह एकान्तवास का प्रेमी था और अहर्निश गम्भीर विचारों तथा तत्त्वानुचिन्तन में मग्न रहा करता था। ई० सन् १०६८ में इसका निधन हुआ।

(७) बैज नामक कस्बे में एक धुनिया के घर में यह पैदा हुआ था। हुसेन इसका नाम था और मंसूर लकब। सूफियों में ऐक्यवाद का प्रवर्तन तथा प्रचार इसी के द्वारा हुआ। पहले वे सर्वेश्वरवादी थे। बैज में मंसूर खुले बाजार अपने मत का प्रचार करता और दिन-रात बेधड़क अनलहक़ अनलहक़ (सत्यस्वरूप ईश्वर मैं ही हूँ) कहता फिरता था। इसका यह उग्र फल हुआ कि इस्लामी दुनिया में तहलका मच गया और मंसूर पर कुफ्र का इलजाम लगाया गया और बगदाद में मुकतदिर खलीफा के आदेश से २६ मार्च ई० सन् ९२२ को उसे फांसी की सजा दी गई।

(८) अक्टूबर सन् १२०७ में बल्ख में यह पैदा हुआ था। इसने कई काव्य-ग्रन्थ लिखे। उनमें एक तो मसनवी है और दूसरा है दीवान। दोनों ही ग्रन्थ बहुत प्रसिद्ध हैं। मसनवी ६ दफ्तरों (खण्डों) में विभाजित है। यह सूफी सिद्धान्तों से ओत-प्रोत है और इसमें कुरान की आयतों पर अध्यात्म-दृष्टि से विचार किया गया है। इसके सिवा इसमें बहुत-से रोचक आख्यान दिए हुए हैं। रूमी के दूसरे ग्रन्थ (दीवान) का ईरान में ही नहीं, हिन्दुस्तान में भी खूब प्रचार हुआ। दोनों ही देशों में वह अब भी बड़े चाव से पढ़ा जाता है। रूमी एक पहुँचा हुआ दरवेश था और था निवृत्ति मार्ग अर्थात् संन्यास का जबर्दस्त समर्थक। इसके मत से संन्यासी के लिए कहीं भी अधिक काल तक ठहरना ठीक नहीं, उसे भ्रमणशील होना चाहिए। अपना अधिकांश जीवन रूमी ने टर्की (रूम) में बिताया। इससे यह रूमी [illegible] बल्ख में पैदा होने के कारण बल्खी। टर्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त कवि प्रेम-मार्ग के अनुयायी तथा समर्थक थे। स्त्री-पुरुष के प्रेम को अत्यन्त प्रबल और प्रेम का सर्वोच्च एवं सर्वोत्कृष्ट आदर्श समझकर उन्होंने स्त्री-पुरुष की ही भाषा में आध्यात्मिक प्रेम का भी वर्णन किया ह। उनकी रचनाओं में सालिक को आशिक माना गया हैं और खुदा को माशूक और स्थान-स्थान पर प्रतीक के रूप में मस्ती, जश्न, शराब, मयखाना आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं। यों तो उनके काव्यों में प्रेम की दोनों अवस्थाओं—योग और वियोग—के वर्णन मिलते हैं पर विरह-सम्बन्धी उक्तियों का बाहुल्य है और जितनी अनूठी, जितनी चुभीली, जितनी पुर-असर वे हैं, उतनी दूसरी नहीं।

सूफी सन्तों में बयाज़ीद का स्थान बहुत ऊँचा है। वह लज्जतुल-इलाहिया (ब्रह्मानन्दरस) में सर्वदा सर्वतोभावेन डूबा रहता था—इतना डूबा रहता था कि उसे न तो अपने तन की सुधि रहती और न मन की। वह हमेशा मस्त और बेफिक्र रहता था। अल्लाह के फजल पर उसे इस कदर नाज था कि अपनी रोजी की भी कभी फिक्र न हुई। सिवा 'रबुल-ईबाद रज्ज़ाक़े-मुतलक़ रहमान' की रहमत के उसकी गुजर का कोई और जरिया न था। अपने निर्वाह के लिए, अपने पिण्डपोषण तथा लज्जा-निवारण के लिए, वह विश्वम्भर की विश्वम्भरता पर ही, भक्तवत्सल, दयामय देव की दया पर ही, निर्भर रहता था। मनुष्य से याचना करना उसकी प्रकृति के प्रतिकूल था और सिद्धान्त के भी। सर्वशक्तिमान्, अणोरणीयान् महतोमहीयान् जगदीश्वर को ही वह अपना भर्ता तथा अपना स्वामी समझता था और अपना संरक्षक तथा अभिमतदातार। ईश्वर ही उसका साधन और वही उसकी गति। उसे खुदा का ही सहारा और उसी का भरोसा। उसकी नजरों में खुदा के सामने इन्सान की कोई वकत न थी और उसकी निगाहों में दुनिया के आगे अफलातून भी तिफ्ल-सा जँचता था। निम्नाङ्कित अवतरण इस बात के जाग्रत् प्रमाण हैं कि बयाज़ीद अनन्य भगवद्भक्त था :—

"अन्याश्रयायां त्यागोऽनन्यता।" ना० सू०

"तत्प्राप्य तदेवावलोकयति तदेव शृणोति तदेव भाषयति तदेव चिन्तयति।"—वही।

"कस्तरित कस्तरति मायां? यः संगां—स्त्यजति यो महानुभावं सेवते यो निर्ममो भवति। यो विविक्त स्थानं सेवते यो लोकबन्धमुन्मूलयति निस्त्रैगुण्यो भवति योगक्षेमं त्यजति।

यः कर्मफलं त्यजते कर्माणि संन्यसति ततो निर्द्वन्द्वो भवति।

वेदानपि संन्यसति केवलमविच्छिन्नानुरागं लभते। स तरति स तरति स लोकांस्तारयतीति।—वही

"ब्रह्मानन्दरसं पीत्वा ये तु उन्मत्तयोगिनः।
इन्द्रोऽपि रङ्कवद्भाति का कथा नृपकीटकः।"

एक बार बहुत दिनों के बाद बयाज़ीद का कोई पुराना मित्र उसका अतिथि हुआ। अतिथि की उसने बड़ी खातिर की और उसके साथ नमाज पढ़ी। फिर दोनों में बातचीत होने लगी। बयाज़ीद को सम्बोधित कर उसके मित्र ने कहा—"मैं हैरान हूँ कि तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती है, क्योंकि तुम्हें मैंने न तो कभी किसी उद्योग या धन्धे में लगा देखा और न किसी से याचना करते ही। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी परवरिश करनेवाला कौन है? कोई उत्तर इसका बयाज़ीद ने न दिया और झट-पट वजू करके नमाज एक बार और पढ़ी। इस पर आगन्तुक ने विस्मित होकर पूछा:—"कुछ लहजों के अन्दर ही दो बार तुमने नमाज पढ़ी, इसका कारण क्या है?" अब बयाज़ीद चुप न रह सका। वह बोला—"ऐसे नादान मुलिहद—ऐसे अज्ञ नास्तिक—के साथ नमाज पढ़ना हराम है—वर्ज्य है—जिसे इतना भी इल्म नहीं कि रबुल-आलमीन (विश्वम्भर) कौन है। इसी से नमाज दुबारा पढ़ने की जरूरत आ पड़ी।"[१] इस आख्यान से स्पष्ट हो जाता है कि बयाजीद ने 'आत्मनिवेदन'[२] भक्ति

में इसके अनुयायियों के, जो रमते योगी हैं, बहुत-से खानकाह (अखाड़े, मठ) हैं।

(९) नूस प्रान्त के गज्जाल या गज्जाली गांव में ई० सन् १०५८ में इसका जन्म हुआ था और १८ दिसम्बर १११९ को शरीरान्त। अबूहामिद मुहम्मद इसका नाम था और हुज्जतुल्-इस्लाम इसकी उपाधि थी। तफसीर-जवाहिरुल्-कुरान, अकायद गज्जाली, अहियाबुल्-अलम्, तुहफतुल्-फिल्सफा आदि बहुत से दर्शन-ग्रन्थ इसने लिखे हैं। 'कीमिआय-सआदत' नामक बहुत बड़ा साम्प्रदायिक ग्रन्थ भी इसने लिखा है। कहा जाता है कि कोई ९९ किताबें इसने लिखी हैं। इसकी लिखी हुई कुछ पुस्तकें फारसी की हैं और शेष सब अरबी की। यह सूफ़ी मत का प्रमुख कर्णधार माना जाता है। यह ईरान का शंकराचार्य था।

(१०) बदख्शां में इसका जन्म हुआ था। यह बहुत ही उच्चकोटि का विद्वान् और सन्त था। लाहौर के मियां शाहमीर इसके मुरशिद थे और शाहजहां बादशाह का ज्येष्ठ पुत्र दारा इसके श्रद्धालु मुरीदों में अन्यतम था। दारा इसकी बड़ी कद्र करता था। ई० सन् १६६० के आस-पास काश्मीर में इसकी मृत्यु हुई।

---

(१) सेण्ट्स आव इस्लाम। इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध मुसलमान सन्तों के जीवन-वृत्त अङ्कित हैं और कुछ ऐसी बातें तथा रवायतें, जिनसे उनके गुणों, उनके शील-स्वभाव, उनके भावों (आत्म-निवेदन, इष्ट-निष्ठा) की दृढ़ता, प्रगाढ़ता आदि का अच्छा परिचय मिलता है। पुस्तक उपादेय है।

(२) नारद, शाण्डिल्य प्रभृति भक्ति-शास्त्र के आचार्यों के मत से यह बहुत ऊँची कोटि की भक्ति या आसक्ति है। लक्षण या अवस्था-भेद से देवर्षि नारद के अनुसार भक्ति या आसक्ति ग्यारह प्रकार की होती है—(१) गुणमाहात्म्यासक्ति, (२) रूपासक्ति, (३) पूजासक्ति,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का साधन किया था। वह सिद्ध भक्त था। वास्तव में वह बहुत ऊँचे दर्जे का भक्त था। उसकी गिनती संसार के उन ज्ञानी सन्तों में है, जिनके सम्बन्ध में भक्त-शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है:—"आकिंचन इन्द्रियदमन, रमन राम इक तार। तुलसी ऐसे सन्तजन, विरले या संसार।"

"विरले-विरले पाइए, माया-त्यागी सन्त। तुलसी कामी कुटिल कलि, केकी काक अनन्त॥" "सम कंचन काचे गनै, कामिनि काठ पखान। तुलसी ऐसे सन्त जन पृथिवी ब्रह्म समान॥"

---

(४) स्मरणासक्ति, (५) दासासक्ति, (६) सख्यासक्ति, (७) कान्तासक्ति, (८) वात्सल्यासक्ति, (९) आत्मनिवेदनासक्ति, (१०) तन्मयतासक्ति, (११) परमविरहासक्ति। और महर्षि शाण्डिल्य ने भक्ति के दस प्रकार, भेद, अंग, लक्षण वा स्वरूप बताए हैं—वे ये हैं:—(१) सम्मान (२) बहुमान, (३) प्रीति, (४) विरह, (५) इतरविचिकित्सा, (६) महिमख्याति, (७) तदर्थप्राणस्थान, (८) तदीयता, (९) सर्वतद्भाव, (१०) अप्रातिकूल्य। नारद-सूत्र में जो भक्ति 'आत्मनिवेदन' कही गई है, शाण्डिल्य-सूत्र में उसी का नाम 'तदीयता' है और पातञ्जल-दर्शन में 'प्रणिधान'। आत्मनिवेदन, तदीयता और प्रणिधान में केवल नाम-भेद है, अर्थ-भेद नहीं। तीनों एक ही अर्थ का, एक ही प्रकार की भक्ति का, बोध कराती हैं। जो अभिप्राय नारद का 'आत्मनिवेदन' से है वही आशय शाण्डिल्य का 'तदीयता' से है और पतञ्जलि का 'प्रणिधान' से। आत्म-निवेदन भक्ति के सिद्ध हो जाने पर भक्त का सारा अहङ्कार गल जाता है और उसके मन से शत्रु-मित्र, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े का भेद-भाव दूर हो जाता है। वह 'भेदबुद्धिविनिर्मुक्तः सर्वभूतहितेरतः' हो जाता है। किसी से भी वह घृणा नहीं करता। सबको विद्वद्वर भगवान्दासजी के शब्दों में 'मित्रस्य चक्षुषा' देखने लगता है, हम-दोस्त समझने लगता है और विषय-सुख आदि फलों की इच्छा त्यागकर अपने सभी कर्म (शुभ-अशुभ, ज्ञाताज्ञात) तथा तन-मन आदि अपना सर्वस्व उस परम गुरु के अर्थात् भगवान् के चरण कमलों में समर्पण कर देता है—'प्रणिधानं तत्र भक्ति विशेषे विशिष्टमुपासनं सर्वक्रियाणामपि तत्रार्पणम्। विषयसुखादिकम् फलमनिच्छन् सर्वाः क्रियास्तस्मिन् परम गुरावर्पयति' तब उसके सब बन्धन टूट जाते हैं—'अबन्धोऽर्पणस्यमखम्' (शा० सू० ६४)' और वह भगवत्कृपा का अधिकारी हो जाता है—(पा० द०; अ० १, स० १, व्यासभाष्य)' तथा भगवान् के समीप पहुँच जाता है।

रबिया की भी गणना ऐसे ही सन्तों में है, जिनके नाम उगलियों पर गिने जा सकते हैं। उसका सारा जीवन भगवदाराधन और भगवच्चिन्तन में ही बीता था। प्रेमरूप भगवान् उसके एकमात्र आराध्यदेव थे और भगवत्प्राप्ति ही उसका लक्ष्य और ध्येय था। बयाजीद के समान वह भी निश्चिन्त, निर्द्वन्द्व, अनन्य, अविच्छिन्न भाव से प्रेम-रस में, भगवद्वृत्ति में, मग्न रहती थी। घोर दुःख में भी उसका चित्त विचलित न होता, उसकी एकाग्रता भङ्ग न होती। उसकी अनन्यता, उसकी एकनिष्ठा, उसकी एकाग्रता प्रशंसनीय थी, अनुकरणीय थी। उसे प्रायः वज्द (प्रेमोन्माद, आनन्दातिरेक,) आया करता था। वज्द आने पर वह कभी रोती, कभी गाती, कभी हँसती और कभी नाचती थी। भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक हो हो जाने पर भक्त के हृदय में जब ज्ञानोदय होता है, उस समय उसमें ऐसे ही लक्षण प्रकट होते हैं। भक्तिशास्त्र के परम आचार्य देवर्षि नारद का यह सूत्र 'यज्ज्ञानान् मत्तो भवति स्तब्धो भवत्यात्मारामो भवति' इसका प्रमाण है। चैतन्य, नित्यानन्द, हरिदास, प्रभृति भारतीय भक्तों का भी आचरण ऐसा ही था। महर्षि शाण्डिल्य के अनुसार सम्मान, बहुमान, प्रीति आदि भक्ति की अनेक अवस्थाएँ हैं, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। उनमें एक 'विरह' है। उन्माद के लक्षण इसी अवस्था में प्रकट होते हैं।

पुराने सूफी सभी धर्मों को एकसा समझते हैं। उनके मत से सभी धर्मों की धार्मिक या पारलौकिक योग्यता समान है और प्रत्येक धर्म अमृतत्वोपलब्धि का साधन है। उनकी इस उदार मनोवृत्ति के परिचायक दो-एक शेर नीचे दिए जाते हैं:—

"जहां बा नेको बद उर्फ़ी बसरकुन् कज पसे मुर्दन;
मुसल्मानद् बजमजम शोयदो हिन्दू बिसोज़ानद्."
सरमद बकूए इश्क़ बदनाम शुदी,
अज दीने यहूद बसूए इस्लाम शुदी;
मालम न शुद् कि अज खुदा वो अहमद,
बरगश्ता बसूए लछमनो-राम शुदी."
"बुतपरस्तम् काफ़िरम् अज अहले ईमां नेस्तम्,
सूए मस्जिद मी रवम् अम्मां मुसल्मां नेस्तम्।"
—सरमद।

"आता है वज्द मुझको हर दीन की अदा पर,
मस्जिद् में नाचता हूँ नाक़ूस (शंख) की सदा पर-
—अकबर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुर्सी के पैगम्बर

लेखक, प्रोफेसर हरीश सिंहल, एम० एस०-सी०

उस दिन मिर्ज़ा सफदर बेग बिस्तर से जो उठे तो आंधी-धांधी, बगैर जूतियों को पांव में हिलगाए, सुतन्ने की डोर को भी आगे लटकाए हुए सीधे बेगम के पास पहुँचे। बेगम गिलौरी तैयार कर रही थीं....मियां को जो इस जुलाहों के ढंग में देखा तो झल्ला पड़ीं "आदत न गई पुरानी; बुड्ढे हो गए, गंडेरियां चूसने को तरसते हो, भुट्टा खाने को तड़पते हो, रेवड़ियों की तारीफ़ दूसरों के मुंह से सुन लिया करते हो; जीने पर चढ़ते हो तो दम फूल जाता है, इक्के में बैठे तो आंत चढ़ गई मगर औरत की तरफ़ वही शोख मिज़ाज़ी है....."

"ओ सुनो तो यह तुम क्या राग अलापने लगीं, मैं तो तुम्हें एक खुशखबरी सुनाने आया था.....

"यही न कि अबकी हज की तैयारी हो गई है?"..

"सो तो हो ही गई है, इसमें कौन शकोशुवह की बात है, मगर इस वक्त तो दूसरी ही चीज़ कहने आया था।"

"समझ गई, यही कि बन्ने मियां मिले थे, 'रेस' के मैदान में, बड़ी तारीफ़ कर रहे थे अपने बरखुर्दार की, 'अन्जीनयरी' पढ़ रहा है, विलायत से चिटिठयां आती हैं रिश्ते के लिए।"

"लाहौल बिला क़ुव्वत! तुम भी किस क़िमाश की औरत हो, बिलावजह इधर-उधर के क़याफ़े उड़ाया करती हो.. सुनो, मैंने रात एक अजीब ख़्वाब देखा है।",.....

"आग लगे मरे रोज़-रोज़ के ख़्वाब में....तुम्हें आंखों से तो कम सूझता है यह ख़्वाब कैसे साफ़ दिखाई दे जाते हैं?'

"और मज़ा यह है कि बगैर चश्मा लगाए ही नज़र आ जाते हैं।"..

"यहां तो रात भर आंखें खोले पड़ी रहती हूँ, मुआ कोई भी नहीं दिखता....तुम्हें तो 'ज़ोफ़े मेदा' है 'ज़ोफ़ मेदा।",..

"सुभान अल्लाह! क्या दिमाग़ बनाया है अल्लाह मियां ने तुम्हारा। मन में उन्तालीस सो छाजन बाक़ी आटा ही आटा धरा है गोया। अरी मूरख! कहीं ज़ोफ़ मेदे से दीदार की क़ुलाबें ढीली हो जाती हैं?"

"हां हां, मैं तो बड़ी मूरख हूँ, और तुम रहे बड़े दानिश मन्द। जभी मनीआडर लौटा चला आ रहा था।"

"अरी अहमक़! वह तो तले का ऊपर और ऊपर का तले हो गया था, उससे और दिमाग़ से क्या सरोकार?"

"ऐ लो। यह एक ही कही दिमाग़ की क्या ज़रूरत, नज़ीर मियां कुछ और हैं क्या.?.डाकखाने में बैठे, चिट्टी मनीआडर, तार वग़ैरा तो लिखा करते हैं। सुना है उनका दिमाग़ दो आदमी लेकर चलते हैं।"...

"भई, उनकी कुछ न पूछो, वह तो तुम्हारे बिरादर हैं। ख़ुदा झूठ न बुलाए, जब नौकर नहीं मिलते तो बिचारे ख़ुद ही अपने कांधे पर दिमाग़ को लादे चले जाते हैं।"

"देखो, कोसना मत ग़रीब को, मुझ पर तो जान क़ुर्बान करने को आमादा रहता है।".....

"क्यों नहीं, है भी तो बाक़र मियां का बेटा।"...

"ऐ चुप भी रहो, गढ़े मुर्दे उखाड़ने में क्या रक्खा है? अगर किसी का बाप क़ातिल होकर फांसी चढ़े तो क्या औलाद भी उसही की राह चलेगी?"

"माशा अल्लाह, क्या लाख रुपए की बात कही है। नादिरशाह के बाप भेड़ें चराया करते थे, आज जुम्मन इक्का हांकता है, कहने को वाजिदअली शाह मर्हूम का ख़ान्दानी है। पिछले हफ़्ते की ही तो बात है, मैं तो छोटे मिर्ज़ा को रुख़सत करके स्टेशन से लौट रहा था, रास्ते में मिल गया, फिर क्या पूछती हो, इक्का रोककर खड़ा हो गया। बोला "ख़ुशामदीद, तशरीफ़ रखिए, बड़े दिनों के बाद सूरत दिखाई दी।" अब मज़ा यह है कि मैं पिंड छुटाने का कोशां हूँ, आखिर को मैं एक वज़ेदार आदमी और वह इक्का जोतनेवाला, माना कि कभी उसके बाप-दादा लखनऊ के नवाब रहे थे, मगर 'आदमी बचश्मे हाल निगर' और वह है कि मुझे ज़बर्दस्ती ठेल रहा है इक्के के ऊपर। मैंने कहा, भई मुझे सीधे घर नहीं जाना है, यहां से सलीम मियां के यहां होता हुआ जाऊंगा। कम्बख़्त की मार, उस वक़्त यह ख्याल से उतर गया कि सलीम मियां कब के पाकिस्तान कूच कर गए हैं और उनके जाने की ख़बर सारे लखनऊ को है। उसे मौक़ा मिल गया, बोला, 'वाह साहब, ख़ूब बेपर की उड़ाते हो,सलीम मियां यहां बैठे हैं? वह होंगे कहीं करांची में समन्दर के किनारे।'

"मुझ बड़ी शर्म सवार हुई। कहां के झमेले में पड़ गया। फिर कुछ सँभलकर बोला, 'भई जुम्मन दरअस्ल बात यह है कि तुम ठहरे कामकाजी आदमी; तुम्हारी रोजी का सहारा यह इक्का ही है। तुम मुझसे किराया तो लेते नहीं, फिर घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या? बिला वजह क्यों अपना नुक़सान करते हो?"

'बस, मिर्ज़ा साहब आपने बहुत कह लिया। मैं इतना सुनने का आदी नहीं हूँ। तीन बार खून के मामले में पकड़ा गया और खून की इब्तदा भी इस ही तरह की बातों पर हुई थी।' जुम्मन ने तमककर कहा।

"मैं डरा, इसके बाप-दादे शरीफ़ रहे होंगे मगर इसकी शुमार तो आजकल लखनऊ के मशहूर शोहदों में है। मैंने कहा 'अमां खाक भी डालो, नवाब जुम्मन मियां। तुम्हें खेत की बात खलिहान में ले गए....भला मेरा इशारा कहीं तुम्हारे खान्दान की तरफ़ हो सकता है!'

"उसका चेहरा तमतमा उठा था। तड़पती हुई जुबान में बोला, 'ऐसे ही भोले तो हो मिर्ज़ा साहब, चले थे हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १९४८]

तालीम देने, नवाबों की औलाद को रोज़ी का सबक़ पढ़ाने। जमा मियां। इक्का जोतते हैं तो क्या! रगों में तो वही खून फड़क रहा है। और क्या अजब कि कल को हमीं हों लखनऊ के ताजदार ..हिन्दुस्तान की तक़सीम में जावे आलम नवाब वाजिद अली शाह मरहूम खुदा उन्हें जन्नत बख्शे, के खान्दानियों का हिस्सा न मिलेगा? फिर देख लेना एक-एक को।'...

"मेरी और उसकी सड़क-किनारे देर से जो यह गुफ़्तगू हो रही थी, उसे देख एक लम्बी भीड़ हमें घेरकर खड़ी हो गई। एक साहब मुझसे बढ़कर बोले, 'क्या बात है सफ़दर मियां! किससे झगड़ा करने चले हो? वह तो सौदाई है सौदाई, हर वक्त नशे में धुत रहता है। इक्का जोतने के बहाने लखनऊ की सैर करता है, वरना बड़े घर की हवा जो खानी पड़े।' जुम्मन मियां को और ताव चढ़ा। झल्लाकर एक तमाचा रसीद किया उनके और बोला, 'अबे कमबख्त! तू चला है फ़ैसला देने, बाप-दादा तेरे मर गए हमारी हुक्केबरदारी करते हुए! आज तू हमें दीवाना बताता है! आने दो बच्चा! अपनी अमलदारी, बीच जमीनावाद में मश्कें न बंधवा दें तो नवाब की औलाद मत समझना।'

"बात ने इतना तूल पकड़ा कि चौराहे का 'कांस्टेबिल' भी आन पहुँचा। उसने मुझे बड़े अदब से 'असलेकुम' कहा, फिर भीड़ को हटाता हुआ बोला 'क्या कोई भांड़ों का तमाशा हो रहा है या कत्था बंट रहा है? चलो अपना रास्ता नापो।' फिर नर्म होकर जुम्मन से बोला 'कहिए नवाब साहब, आज सवेरे ही चढ़ा ली थी क्या? रोज तो हमारे साथ चाय को पीते हो! मिर्ज़ा साहब से कैसे उलझ गए! थोड़े-बहुत आदमी की तो पहचान रक्खा करो!'

"मुझे यह न पता था कि जुम्मन से पुलिसवाले भी इतने लाड़ से मिला करते हैं।

"जुम्मन मियां बोले, 'मुश्ताक भाई, तुम भी बड़े बेवक़्त टपक पड़े। आज एकाध का भण्डारा खुल जाता। उस मुर्ग़ी के अण्डर की यह मजाल कि मेरी और मिर्ज़ा साहब की बातचीत में टांग अड़ाए। मिर्ज़ा साहब से मेरी पुरानी आशनाई है। यह भी हमारी तरह खानदानी आदमी हैं। न जाने हम लोग क्या मतलब की बातें कर रहे थे कि कमबख्त ने मज़ा किरकिरा कर दिया।'....फिर मेरे हाथ में हाथ डालकर बोला, अच्छा मिर्ज़ा साहब तो इजाज़त.... खुदाहाफ़िज़ मुआफ़ कीजिएगा, आप ही का दिया खाते हैं... 'एक्सप्रेस' के आने का वक़्त हो गया है। देखूं, कोई ढंग की सवारी मिल जाए।'

"मैंने भी शुक्र किया खुदा का, वरना आज जान की खैरियत भी न थी। इस वाक़ए पर मुझे अकबर का एक शेर याद आ गया——

'शूमेकरी' शुरू की एक अपने अज़ीज़ ने,
रिश्ता मिलाया करते जो बहराम ज़ोर से।
पूछा तो बोले इसमें है एक बात नोक की,
रोटी अब हम कमाते हैं जूते के ज़ोर से।

"मुआ बड़ा ही दिलेर है। ज़री होशियार ही रहना, ऐसों की दोस्ती अच्छी नहीं। न मालूम कहां क्या कर बैठे।" बेगम ने फ़र्माया।

"हां, तो बात कहां से कहां पहुँच गई। मैं यह कहने जा रहा था कि रात ख्वाब में मैंने देखा क़ायदे आज़म मुमताजुल मुल्क, मुहम्मद अली जिन्नाह तख़्तनशीन हैं। दरबार लगा हुआ है, इधर-उधर मसनदों पर नवाबज़ादा लियाक़त, सरदार अब्दुररब, राजा गज़नफ़र अली, चुन्दरीगर, फ़ज़लुर-रहमान, गुलाम मुहम्मद, मंडल वग़ैरा जलवा अफ़रोज़ हैं। एक तरफ़ वालियोन रियासत के लिए सोफ़े पड़े हुए हैं, दूसरी तरफ़ विलायती एलचियों के लिए कुर्सियां लगी हैं। दीगर मुसाहबीन, हुक्काम, और कारकुन वग़ैरा भी मौजूद हैं। हमारे चौधरी साहब की झलक भी दिखाई दे रही है। इतने में खुदा की इबादत शुरू हुई। सब दरबारी दुज़ानू होकर बैठ गए। इबादत के बाद नश्तर साहब ने खड़े होकर कहा, 'नालए तकबीर' दरबार गूंज उठा 'अल्लाहो अकबर।' मंडल साहब ने नारा बुलन्द किया, 'क़ायदे आज़म....ज़िन्दा बाद.....पाकिस्तान ज़िन्दाबाद...।' इसके बाद वज़ीरेआज़म लियाक़त अली खां खड़े लेकर बोले, 'हाज़रीने मजलिस! हमारे दस्तूर के मुताबिक़ इबादत के बाद आपको क़ायदे आज़म का कुछ नसीहत आमेज़ पैग़ाम मिलना चाहिए; अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि ताजदारे, पाकिस्तान के क़ल्ब पर मशरक़ी पंजाब में होनेवाली वहशयाना हरकात से इतना असर हुआ है कि वह बीमार हो गए हैं। जूनागढ़ और काश्मीर के वाक़यात ने उनको बड़ा गहरा सदमा पहुँचाया है। उन्होंने मुझे अपना फ़र्मान पढ़कर सुनाने का हुक्म दिया है। पेश्तर इसके कि क़ायदे आज़म का यह 'समन' आपको सुनाया जाए, मैं मंडल साहब से कुछ अर्ज़ करने की दरख्वास्त करूँगा।'

"मंडल साहब ने कहा 'बरादराने वतन! 'मैं' नहीं समझता कि इस वक़्त मैं आपके सामने क़ायदे आज़म की मुल्को क़ौम के सिलसिले में होनेवाली बेशबहा और सदल खिदमात का तफ़सील के साथ बयान करूँ.....
क़ायदे आज़म का विक़ार आज दुनिया की नज़रों में बहुत ऊँचा उठ गया है। एशिया में उनका कोई हमपाया रहनुमा नहीं। बड़े अफ़सोस की बात है कि उनकी तबियत अलील है। हमें उनकी कितनी ज़रूरत है, इसका अन्दाज़ा आप खुद लगा सकते हैं। मैं उनकी सेहत की हिफ़ाज़त के लिए दुआ-गोह का एक 'रेज़ोलूशन' करना चाहता हूँ, उम्मीद है आप इससे इत्तफ़ाक़ करेंगे।"....

"पाकिस्तान की यह मजलिसे आलिया, क़ायदेआज़म मुहम्मद अली जिन्नाह की तबियत की नासाज़ी पर बड़ी फ़िक्र महसूस करते हुए पाकिस्तान के हर बाशिन्दे और खैरख्वाह से दरख़्वास्त करेगी कि वह उनकी सेहत के लिए खुदा से दुआ करे।"

"रिज़ूलेशन रखते-रखते मंडल साहब की आंखों से आंसू टपकने लगे। उनकी देखादेखी सारा दरबार फट निकला। इस कैफ़ियत ने मुझे भी ख़्वाब में ही रोने पर मजबूर कर दिया। वाह, क्या सपना था। लखनऊ की मरसिमागोही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो दूर-दूर तक मशहूर है। कोई अपने बाप के मरने पर भी इतना क्या रोएगा, जैसा आंसुओं का सैलाब उस वक्त उमड़ा था। तिस पर जिन्नाह साहब को देखिए, वैसे ही दम-बखुद बैठे हैं। क्या नूर बरसता था चेहरे पर इस कमज़ोरी की हालत में भी। कैसा भोला मुखड़ा पाया है मसीहा ने। हर वक़्त एक हल्की-सी मुस्कराहट झलकती रहती है। खुदा फ़ुर्सत दे तो मैं बाक़ी ज़िन्दगी उन्हीं की क़दमबोसी में गुज़ार दूं। ...उस 'रेजूलेशन' की ताईद की राजा गज़नफ़र अली ने और वह पास हो गया बेगम। इस हफ़्ते ख़्याल रखना, घर से कोई फ़क़ीर-फ़ुक़रा लौटकर न जाए। तुम भी दुआ करना...मैं भी करूँगा।

"आखिर में लियाक़त साहब ने फ़र्मान सुनाया, 'क़ायदे आज़म इस वक़्त की फ़िज़ा में हिन्दुस्तान के मुसलमानों को पाकिस्तान आने की हरगिज़ राय नहीं देते हैं। पाकिस्तान में इस वक़्त काफ़ी तादाद में मुसलमान आ गए हैं। बाक़ी मुसलमानों को वहीं इन्तज़ार करना चाहिए, क़ायदे आज़म उनके लिए वहीं पाकिस्तान बनाने का नक़्शा तैयार कर रहे हैं। उनका फ़र्ज़ है कि इस वक़्त वह वहीं बैठे पाकिस्तान की जितनी मदद कर सकते हैं करें। यह बात खास तौर से यू० पी० के मुस्लिम भाइयों के लिए कही जाती है।" इसके बाद दरबार बर्खास्त कर दिया गया।

"इसलिए अब पाकिस्तान का टिकट कटाने की कोई जल्दी नहीं करनी चाहिए। क़ायदे आज़म हैं बड़े दूरन्देश। न सांप मरे न लाठी टूटे। अगर यहीं बैठे वह कुछ दालदलिए का इन्तज़ाम कर सकते हैं तो इससे बढ़कर क्या बात है? फिर आजकल भी यहां कौन तकलीफ़ है। करांची में कहां मयस्सर होंगे यह खर्बूज़े और मलीलबादी सुफ़ेदे?"

मिर्ज़ा साहब तो 'खर्बूज़ों' और आमों के मज़े लेने में मशगूल थे कि नसीबन ने आकर खबर दी 'नव्वाब सज्जाद हुसैन तशरीफ़ लाए हैं।" सफ़दर मियां ने कहा, "दीवानखाने में बैठने को कह! मैं अभी आता हूँ।" मिर्ज़ा ने मुंह-हाथ धोया, मलीने का कुर्त्ता पहना; पायजामे के नेफ़े को चुस्त किया, स्लीपर पैर में डाले और रवाना हुए। चलते-चलते नसीबन से पेचवान और पानदान की फ़र्मायश करते गए।

मिर्ज़ा तो दिवानखाने में गए, इधर बेगम को कहाँ ताब, नसीबन से कहा "इमामन को बुला ला।" बी इमामन आईं, मुहल्ले भर की चौधरायत इन्हीं के पल्ले पड़ी थी... आते ही बोल पड़ीं, "कहो बड़ी बेगम, सुबहू-सुबहू कैसी याद फ़र्माई?"

"कुछ नहीं, तुम्हारे भाई ज़री बाहर दीवानखाने में चले गए, मैंने सोचा दो घड़ी तुम्हीं से बात कर लूं, कहो अच्छी तो हो?"

"शुक्र है अल्लाह का....अच्छी तो क्या, अलबत्ता जी रही हूँ। अब एक नई मुसीबत दरपेश है। तुम्हारे बहनोई कहते हैं पाकिस्तान जाने को और वहां यह हाल हो रहा है कि रास्ते में खैरियत भी नहीं। सुनते हैं, गाड़ी की गाड़ी ही सफ़ा कर दी जाती है। मेरा तो कलेजा ज़ुबान पर आता है। कहीं उनके दुश्मनों को कुछ हो गया तो....।"

"ऐसी बात मुंह से मत निकालो, इमामन! खुदा सबका मददगार है। मगर एक बात ज़रूर है, तुम्हारे भाई ने रात ख़्वाब में देखा है कि खुद जिन्ना साहब पाकिस्तान में आने को मना कर रहे हैं। वह कहते हैं इस वक़्त पाकिस्तान में आबादी बढ़ जाने की वजह से गिरानी पैदा हो गई है। फिर जब मुसलमान सारे-के-सारे हिन्दुस्तान से पाकिस्तान चले जाएँगे तो..... ।"

और बेगम की आंखों से टपाटप आंसू गिरने लगे।

"शाहजहां और मुमताज़ की तुरबत पर फूल कौन चढ़ा सकेगा। मस्जिदों की रखवाली कौन करेगा और लखनऊ में ज़रीदे कैसे निकाले जाएँगे, क़ायदे आज़म खुद इस फ़िक्र में हैं कि हिन्दुस्तान में रहनेवाले मुसलमानों का भी कोई यहां माकूल इन्तज़ाम कर दें। और फिर तुम जानती ही हो, इमामन! तुम्हारे भाई की हुक्काम और अहलकारों में कितनी वक़त है। कोई दिन ही जाता हो जो पंत-गांधी उन्हें न बुलाता हो। उन्होंने तो फैसला कर लिया है कि अभी पाकिस्तान नहीं जाएँगे। मेरी राय में तो तुम भी खलीक़ मियां को रोक लो। इसी ही में भलाई है।"

"मिर्ज़ा मियां का ख़्वाब तो बिलकुल सच्चा ही होता है। अच्छा रात के किस पहर में देखा था?"—बी इमामन से पूछा। "अरे वह तो सुबह चार बजे का बतला रहे थे।"

"ओ हो..तब तो खुदा ही हाफ़िज़ है। सुबह का ख़्वाब तो सच्चा ही होता है...एक बार मिर्ज़ा ने लखनऊ में हैज़ा फैलने के बारे में भी तो देखा था। वह बात सच ही निकली। उन पर तो वही आती है वही.....।"

"यह तो बहन मैं जानती नहीं, हां जो कुछ वह मुझसे कह गए थे सो मैंने तेरे आगे उगल दिया। देख मुहल्ले में चर्चा न करना, बे फ़िज़ूल में दर्देसर कौन मोल लेगा.....।"

इमामन ने दुपट्टा सँभाला और बोली, "अच्छा बेगम तो मैं चली। ज़रा तुम्हारे बहनोई को भी सुना दूं।...शायद मान ही जाएँ.....।"

उधर दीवानखाने में भी इस ही पर विचार-विनिमय हो रहा था। मिर्ज़ा साहब कह रहे थे, "सज्जाद मियां, मैं तो आज ही लीग की मीटिंग बुलाता हूँ.....।"

"तो आप उसमें अहले इस्लाम से हिन्दुस्तान न छोड़ने की अपील करेंगे?"

"बेशक...अव्वल तो यह कि क़ायदे आज़म का ऐसा हुक्म हुआ है और दोयम यह कि हर अक़्लमंद आदमी पाकिस्तान के मुक़ाबले में हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करेगा। वहां रक्खा ही क्या है। अगर सच पूछते हो तो.....रुई की जगह क्या जूट का कपड़ा बुना जाएगा, कोयले की एक भी कान मौजूद है! सुनते हैं, पिछले हफ़्ते एक दिन को बिलकुल रेल बन्द रही। और फिर क्या मियां लखनऊ तो बहिश्त है—"अगर फ़िर्दोस बररूये ज़मीनस्त.....हमीं नस्तो हमीं नस्तो हमीनस्त।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १९४८]

बाद है इसी लखनऊ के बारे में कहा गया है....

'आसमा की क्या है ताक़त जो छुड़ाए लखनऊ,
लखनऊ हम पर फिदा है हम फ़िदाए लखनऊ।"

"मगर साहब आपके ख़्वाब, वही, इलहाम, इन अक़्ल से खारिज बातों पर तो आजकल कोई यक़ीन करेगा नहीं। हां आप अपनी तरफ़ से यह सुझाव पेश कर सकते हैं।"

"यह तुमने कैसे कह दिया ? ओ भाई, हमारा तो मजहब इन बातों का हामी है। क्या मुहम्मद साहब अलैसलाम को वही नहीं आती थी ?"

"आप भी कहां पैगम्बरी के झमेले में पड़ गए हैं। छोड़िए भी इस तज़करे को। मतलब की बात लीजिए।"

"तो भाई, मैं तो स्कीम रक्खूंगा ही, उम्मीद है, आप भी देरी ताईद करेंगे। अमां मियां! अब कि जो पंत मिनिस्ट्री में इज़ाफ़ा हुआ तो हमारी-तुम्हारी ही बारी है। आखिर हमने तो अपोज़ीशन की तरफ़ ही दोस्ती का हाथ बढ़ाया था।"

"मगर जनाबेमन, अब तो सुनते हैं हमारा अपोज़ीशन को नाजायज क़रार दिया जानेवाला है!"

"भई वाह, यह भी कोई मुंह का निवाला है? इसके लिए वक़्त चाहिए वक़्त; और मुझे तो इसकी ख़्वाब में भी उम्मीद नहीं.....मीटिंग 'अर्जेन्ट' काल करता हूँ। सात रोज़ की नोटिस काफ़ी है। तुम लडडन मियां को तैयार कर लेना।"

"कोशिश तो करूंगा, देखो कौन कितना मानता है, इस वक़्त तो हर मुसलमान के दिल में पाकिस्तान की वही जन्नत है जो काबे की। तरसाई हुई आंखों से देख रहा है उधर को।"

"अस्ल बात यह है, यार, कि ऊंट तभी तक बलबलाता है जब तक पहाड़ तले नहीं पहुँचता। सुना है, वहां चीनी दो रुपये मन बिक रही है।"

"मगर इसे कौन देखता है? यहां हर इंसान ग़ालिब हमीं की तरह तो है नहीं जिन्हें जन्नत में भी कुछ न दिखाई दिया—

हमको मालूम है जन्नत की हक़ीक़त लेकिन,
दिल के खुश करने को गालिब में खयाल अच्छा है।"

"खैर इन सब बातों का फ़ैसला तो परसों मीटिंग में हो ही जाएगा, या इस पार या उस पार।"

... ...

सज्जाद मियां को रुखसत करने मिर्ज़ा दरवाजे तक गए देखा तो दरवाजे पर मुहल्लेवालों का हजूम इकट्ठा है। मिर्ज़ा साहब को देखते ही नन्हें मियां बोल पड़े, "कहिए बड़े मिर्ज़ा, क्या रात कोई ज़बर्दस्त ख़्वाब देखा है आपने?"

मिर्ज़ा साहब के काटो तो बदन में लोहू नहीं। इस कम्बख़्त को खबर कैसे हुई। ज़रूर बेगम ने नक्कारा बजाया होगा—मुंह बनाकर बोले—"नहीं तो.....।"

"मगर जनाब यह कैसे हो सकता है? इमामन मुल्लानी के घर आग लेने जो गई तो उसने कहा बड़ी बेगम ने फ़र्मा रही थीं। मुल्लानी ने मुल्ला जी से कहा....पूछ लीजिए न इनसे खड़े तो हैं सामने!"

मिर्ज़ा साहब ने मुल्ला जी से पूछना मुनासिब न समझा। वह बोले, "भाई, देखा तो था मगर कहीं ख़्वाब की बातों पर भी भरोसा किया जाता है?" इतने में प्यारे उस्ताद निकल आए। बढ़कर बोले, "मिर्ज़ा जी, यह भी एक ही कही। आप ही ने तो कहा था पिछली जुमेरात को कि 'प्यारे, चूहे तेरी जोड़ी के जुआल काट जाएँगे?' और हुई न वही बात! तबले में कल ही तए डलवाएँ हैं। आपका ख़्वाब तो सही होता है! यूं तो हम भी हफ़्ते में एक-दो बार देख लिया करते हैं, मगर कभी कोई बात ठीक न निकली। एक रात को मैंने देखा था कि गफ़ूरन को कुछ बदमाश उठाकर लिए जाते हैं। वह ग़रीब चिल्ला रही है। मुझे पुकार रही है। कम्बख़्तों ने मेरे हाथ-पांव भी बांध दिए हैं। मैंने उसकी आवाज़ सुनकर हाथ-पैर फेंकना शुरू किए। इतने में ही आंख खुल गई...सचमुच में मेरे हाथ फेंकने से बगल में रक्खी हुई सुराही फूट गई और बी गफ़ूरन को सराबोर कर दिया था। गफ़ूरन ने मुझे उस दिन ऐसा आड़े हाथों लिया कि अब रात को करवट बदलते भी डर लगता है।"....

मिर्ज़ा साहब दम ब खुद खड़े थे। कुछ सूझ ही नहीं पड़ता था। फिर कुछ संभलकर बोले, "तुम लोग अभी जाओ। तुम्हारा ख़्याल ठीक ही है। मेरी तबियत ज़रा घबरा रही है।"

भीड़ छंटने लगी। एक साहब बोले, "ख़्वाब में जो एक बार खुदा दीख जाता है तो आदमी पागल हो जाता है। शाबाश है इस बूढ़े को जो रोज़ रात को अल्लाह से मुलाक़ात किया करता है। सिर्फ़ ज़रा तबियत घबराकर रह जाती है।"

... ...

मिर्ज़ा साहब घर में आकर बेगम पर बहुत बिगड़े, बेगम इमामन पर और इमामन ने सिर पीट लिया।.....

मिर्ज़ा ने बेगम से कहा, "औरतों की अल्लो कभी काबू में रही है! वह इमामन तुम्हारी खाला लगे है न, जो उसके सामने घर-बाहर की फूंका करती हो!....

बेगम झल्लाई "जब जानते ही थे आदत को तो बिस्तर से उठते ही दौड़े क्यों चले आए सुनाने को? कोई मैं तो नहीं पहुँची थी तुम्हारे पास। तुम्हें भी तो जोफ़ेमेदा है। कोई बात पेट में पचती भी है?"....

इमामन कोस रही थी, "मुए मर्द ऐसे दाढ़ीजार होते हैं कि लुगाइयों से सुनकर बाज़ार-कूचे में गाते फिरते हैं। मेरा बस चले तो मर्दों के पास तक न फटकूं। और वह बड़ी बेगम एक आफ़त की पुड़िया है। नित नए गुल खिलाती है। मुहल्लेवालों को लड़वाने में तो उसे ऐसा मज़ा आता है जैसे बटेरों की कुश्ती में आया करता है। बड़ी होगी अपने घर को। इमामन ने भी अपनी इज्जत नहीं बेची है उसके हाथ। जब खाली वक़्त नहीं कटता है तो मैं याद आती हूँ वैसे कभी छटांक भर खीस भी नहीं भेजा मर्दुई ने। यूं कहने को कोई दो ऊपर दस बार भैंस ब्याही गई।"....

मुहल्ले में नाजायज क़ाबों की तहकीकात करने को

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Gurukul Rangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राशन का इन्क्वायरी इंस्पेक्टर आ गया था, इसलिए चारों ओर सन्नाटा छा गया। आई हुई मसीबत टल-सी गई।...

... ...

सूचना के अनुसार निश्चित समय पर मुस्लिम लीग का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। मिर्ज़ा साहब सभापति बनाए गए। एक कवि महोदय ने खड़े होकर मिर्ज़ा साहब की प्रशंसा में एक कविता पढ़ी, जसका अन्तिम बन्द यह था....

"सदरे मजलिस को हुआ है फ़ख़्रकुर्सी का नसीब
मुन्तज़िर ताज़ीम को हैं शोअराए लखनऊ।"

स्मरण रहे, मिर्ज़ा जी कुर्सी पर शोभायमान थे। खूब तालियां बजीं, मिर्ज़ा साहब भी शेर की बारीकी को समझ गए। उनके वंशज आजकल भी कुर्सी के साथ हैं। मगर हँसकर टाल गए। उनका भाषण हुआ। बड़ा आकर्षक और भावपूर्ण यद्यपि था निस्सार-गर्भित और स्वार्थ-प्रसवित। आध घंटा बीता, एक गुज़रा; दो घंटे व्यतीत हुए। यहां तक कि मिर्ज़ा साहब का कण्ठ शुष्क हो गया। पानी मंगवाया गया। मिर्ज़ा ने नः अलापा, "अब मैं आपका ज़्यादा वक़्त न लेकर आपसे यही इल्तिज़ा करूँगा कि आप लोग पाकिस्तान जाने का ख़्याल तर्क कर दें। हमारा वतन हिन्दुस्तान है। हम इस ही की ख़ाक में पलकर जवां हुए हैं, आहा इक़बाल का क्या प्यारा शेर है 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।

"जब कांग्रेस ने हमारी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है फिर क्यों न हम उससे फ़ायदा उठाएँ? क्यों न हम यहीं रहें? फिर पाकिस्तान तो हम हर वक्त जा सकते हैं। पाकिस्तान की बुनियाद तो यू० पी० के मुसलमानों की हड्डी और ख़ून से पड़ी है। हमारे तो ही बच्चे का उस पर पैदायशी हक़ होगा!...मैं तो आप लोगों से यहां तक अपील करूँगा कि आप लोग अपना जामा बदलकर कांग्रेस में शामिल हो जाएँ। इसमें आपका ही फ़ायदा है। पाकिस्तान आपका है ही, हिन्दुस्तान में भी जो कुछ हाथ लग जाए, उसे क्यों छोड़ा जाए?"

तालियों की तड़ातड़ से हाल गूंज उठा। नवाब सज्जाद हुसेन ने मिर्ज़ा के विचारों का समर्थन किया और फिर अपने मंतव्य की पूर्ति के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव रक्खा। श्रोतागण घर जाने के इतने उत्सुक थे कि बिना प्रस्ताव के ऊँच-नीच का विचार किए ही चिल्ला उठे, "मंज़ूर है।" रिज़ूलेशन सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ, लिख लिया गया...मिर्ज़ा साहब का यशगान होने लगा।

दूसरे दिन मिर्ज़ा साहब बेगम को अपने भाषण पर [illegible] गई अन्य व्यक्तियों की टिप्पणियां समाचारपत्रों में [illegible] रहे थे। ढेर लगा था, इतने में ही टेलीफ़ून आया। [illegible] था, "मिर्ज़ा साहब, मैं आपको हृदय से [illegible] देता हूँ। आपने युक्तप्रान्त के मुसलमान भाइयों के [illegible] बड़े उत्तम मार्ग का निर्देश किया है। आपका प्रयत्न सराहनीय है। यदि मुसलमान आपकी योजना से सहमत हो जाएं तो निश्चय ही देश की खोई हुई श्री पुनः प्राप्त हो जाए। यदि संकोच न हो तो कृपया आज संध्या को चाय मेरे [illegible] ही पी लीजिएगा, मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।"

मिर्ज़ा फोन से जो लौटे तो बड़े प्रसन्नमुख थे। [illegible] ही अपने फ़ोटो और भाषण को इतने अखबारों में [illegible] देख उनके हर्षातिरेक का ठिकाना न रहा था। किन्तु [illegible] पंत जी के निमंत्रण ने उनके आत्म-अभिमान को और [illegible] जाग्रत कर दिया।

बेगम ने पूछा, "बड़े खुश दिखाई दे रहे हो, मामला क्या है? क्या कहीं से दावत का बुलौवा आया है?"

"नहीं तो।"—मिर्ज़ा ने जवाब दिया।

"आया तो ज़रूर है.....तुम्हारे चेहरे से साफ़ टपक रहा है।"

"ख़ुदा क़सम जो झूठ कह रहा होऊं। तुम यह [illegible] समझतीं आजकल आध पाव गेहुँओं से घर में तो गुज़र [illegible] होती, कोई दावत कहां से करेगा।"

"और वह ब्लेक मार्केट किनके लिए बना है, खाने देनेवालों के लिए और दावत उड़ानेवालों के लिए।"

"मगर कौन करता है ब्लैक मार्केट से खरीदकर! कहीं हो गई इक्का-दुक्का।"

"ख़ैर, मुझे इससे बहस नहीं, अगर कहीं दावत [illegible] करे तो तुम कम खाया करो। तुम्हें 'ज़ोफ़े मेदा' है [illegible] मेदा'.....। हकीम जमशेद अली ने तुम्हें सिर्फ मूंग की दाल और फुलका बतलाया था।"

"यह तो मैं भी ख़ू[illegible] समझता हूँ।.. हकीम साहब ने ज़्यादा मुझे अपनी सेहत का ख्याल है।"

"बस करो,....ख़्याल ही होता तो इतनी जल्दी न बढ़ि[illegible] जाते।"

मिर्ज़ा साहब मुस्करा दिए, "वाह बेगम, अभी से बूढ़ा कह दिया। अभी तो सब दांत सलामत हैं।" और बेगम ने शर्माकर हल्का-सा घूंघट खींच लिया।

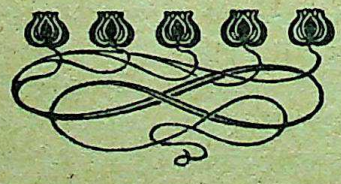

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी लिपि-सुधार की समस्या एवं उसका समाधान

प्रोफेसर भोलानाथ शर्मा, एम० ए० : प्रोफेसर सूरजप्रसाद गोयल, एम० ए०

हिन्दी भाषा-भाषी जनता में पिछले कुछ वर्षों से लिपि-सुधार की चर्चा चल रही है। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के पश्चात् हमारे अनेकों प्रान्तों और देशी राज्यों ने हिन्दी को सरकारी भाषा स्वीकार कर लिया है और संयुक्तप्रान्त की सरकार ने श्रीयुत नरेन्द्रदेवजी के तत्त्वावधान में एक लिपि-सुधार-समिति की योजना की है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने भी एक सात विद्वानों की समिति स्थापित की थी और इस समिति ने काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के सदस्य श्रीनिवासजी के द्वारा प्रतिसंस्कृत देवनागरी-लिपि को स्वीकार कर प्रचारार्थ वितरित किया है। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि इस प्रतिसंस्कृत देवनागरी-लिपि को श्री नरेन्द्रदेव समिति-द्वारा स्वीकार करा लिया जाए और तब सरकारी दबाव से इसे समग्र जनता के गले उतार दिया जाए। परन्तु यदि हमको वास्तविक जनतंत्रात्मक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है तो इसका उपयोग किसी व्यक्तिविशेष की बे-सिर-पैर की योजनाओं को जनता पर लादने के लिए नहीं होना चाहिए किन्तु विवेकशील आलोचना की स्वतन्त्र पद्धति-द्वारा निर्णय किए जाने चाहिए।

हम इस बात को बिलकुल स्पष्ट कह देना चाहते हैं कि हमको 'काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा का मंतव्य सं० २०००/३'[1] जिसका दूसरा नाम 'भारत में साक्षरता का माध्यम प्रतिसंस्कृत देवनागरी-लिपि' भी है, किंचित्मात्र भी मान्य नहीं है। इस पुस्तिका के थोड़े से पृष्ठों में जितनी परस्पर विरोधिनी एवं व्यवहारशून्य बातों का समावेश हुआ है, इतना अन्यत्र इतने लघु कलेवर में किसी पुस्तक में नहीं। नागरी-प्रचारिणी सभा-द्वारा पुरस्कृत और श्रीनिवास-द्वारा प्रतिसंस्कृत यह लिपि 'विनायकं विकुर्वाणो रचयामास वानरम्' का बेचूक उदाहरण है। हमको ऐसा लगता है कि हिन्दी-भाषी जनता में जो लिपि-सुधार की चर्चा चल रही है, वह बहुत ही छिछली है और उसमें समस्या की वह गम्भीरता और विचारशीलता दृष्टिगोचर नहीं होती जो होनी चाहिए। अतएव हम नागरी-प्रचारिणी सभा के मन्तव्य की आलोचना के बहाने इस विषय पर कुछ विचार यथामति प्रकट करेंगे और आशा करेंगे कि समस्त जनता उस पर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करेगी।

नागरी-प्रचारिणी सभा के मन्तव्य का जो प्रथम भाग श्रीनिवासजी-द्वारा प्रस्तुत किया गया है, उसका प्रथम वाक्य यह है, 'यह तो मानी हुई बात है कि भारतीय वर्णमाला संसार की सभी वर्णमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम है।' इस वाक्य के उपरान्त क्या इस वर्णमाला के सुधार के प्रयत्न को किसी प्रकार भी युक्तिसंगत ठहराया जा सकता है? यह तो विश्वभर के दाता को सर्वोत्तम उपहार देने के उपरान्त भी दोष देकर उसके रोष को निमंत्रण देने के समान होगा। इस वाक्य को लिखकर जो सज्जन आगे इसी वैज्ञानिकतम और सुगमतम लिपि में सुधार की योजना उपस्थित करते हैं, उनसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे तर्क से नितान्त अनभिज्ञ हैं अथवा उनकी उपर्युक्त उक्ति केवल अर्थवाद-मात्र है; ऐसा सर्ववादि-सम्मत सिद्धान्त नहीं है जिसके लिए 'यह तो मानी हुई बात है' कहना युक्तियुक्त हो।

हमारा नम्र निवेदन है कि यदि 'भारतीय वर्णमाला संसार की सभी वर्णमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम है' तो उसका सुधार कैसा? और यदि सुधार आवश्यक है तो यह वर्णमाला 'संसार की सभी वर्णमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम' नहीं है; परन्तु अब हम इसको स्वयं इसी के वर्तमान रूप से अधिक वैज्ञानिक और सुगम बनाना चाहते हैं। तो भी हम यह नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आपका ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि आपके मन्तव्य से आगे यह प्रकट हो रहा है कि आप मानसिक दासता के चंगुल में फँसे हुए अपनी परिपूर्ण वर्णमाला को नकटा, लँगड़ा, लूला बनाकर केवल छब्बीस वर्णवाली अँगरेजी वर्णमाला के समान नीचे स्तर पर घसीट लाने के लिए प्रयत्नशील हैं और यह प्रयत्न ठीक इसी प्रकार का है जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने हाथ, पैर, नाक, कान कटाकर घेसे के समान निरंग बनना चाहे।

सच्ची बात तो यह है कि हम आप सब मानसिक रूपेण अभी गुलाम हैं। कहने को हम अपनी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, लिपि, भाषा इत्यादि को अन्य सब संसार से उच्चतम घोषित करते हैं, परन्तु अपने व्यवहार और हृदय में अपने इन घोषों का तिरस्कार ही करते रहते हैं। दूसरे लोगों की तड़क-भड़क हमारे अन्तरतम को इस प्रकार मोहित किए हुए है कि चाहे हम अपनी सभ्यता इत्यादि की कहने को कितनी ही प्रशंसा क्यों न करें, पर हमारा मन हठात् दूसरों की दासता को स्वीकार करने के लिए झुक जाता है। हमारे इस कथन का प्रमाण आपका यह मन्तव्य ही है। भारतीय वर्णमाला को संसार की सब वर्णमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम मानते हुए भी आपको जिस बात ने उसके सुधार के लिए प्रेरित किया है, वह है बाह्य लोगों की तड़क-भड़क। आपने देखा—

(१) अँगरेजों के पास टेलिप्रिण्टर है,
(२) अँगरेजों के पास लीनोटाइप मशीन है,
(३) अँगरेजों के पास टाइप राइटर है,
(४) अँगरेजों की वर्णमाला में केवल २६ अक्षर हैं।

अतएव आप भी इन सब सुविधाओं को प्राप्त करने

---

[1] हिन्दी लिपि-सुधार-सम्बन्धी का० ना० प्र० सभा का यह मन्तव्य सभा के मंत्री से बिना मूल्य मँगाया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लोभ को संवरण नहीं कर सके। मनुष्य का सुविधा की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक है। परन्तु आपने असुविधा का जो हल निकाला, वह ठीक वैसा ही है जैसा कि चीन की रमणियों ने अपने पैरों के सम्बन्ध में अब से कुछ पहले निकाला था। और क्योंकि अँगरेजों ने २६ वर्णों की लिपि के लिए यह सुविधाएँ तैयार की हैं, अतएव आप भी ५२ वर्णों में से २६ का संहार करके उनकी दासता को स्वीकार करने के लिए कटिबद्ध हो गए हैं। पर आपने अपनी बुद्धि पर इतना जोर नहीं डाला कि इन सुविधाओं का सम्बन्ध २६ वर्णों से नहीं है बल्कि अँगरेज जाति की यंत्राविष्कारक बुद्धि से है।

अँगरेजी वर्णमाला की यह वर्णसंख्या तो आरम्भ से ही है, पर आरम्भ से उसका टाइप राइटर नहीं था। टाइप राइटर तब बना जब कि उसकी आवश्यकता और आविष्कारक बुद्धि का संयोग हुआ और ऐसा तब भी होता यदि अँगरेजी वर्णमाला में २६ के स्थान पर २६० वर्ण होते। इसके विपरीत बहुत जातियां संसार में ऐसी भी हैं जिनके पास अभी अपनी लिपि भी नहीं है; वे जातियां असभ्य हैं। अतएव यह सिद्ध हुआ कि उपर्युक्त १, २, ३ संख्यावाली सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि हम अपनी आधी वर्णमाला की हत्या कर डालें। क्या आप जैसे महानुभावों को यह बतलाने की आवश्यकता है कि अमरीका की रैमिंगटन कम्पनी ने हमारी वर्णमाला की हत्या किए बिना ही टाइप राइटर बना दिया है; लीनो टाइप भी बन चुका है। माना कि अभी इन यंत्रों में उतनी उत्तमता नहीं आई है, पर क्या अँगरेजी वर्णमाला के यंत्रों में यह उत्तमता एक दिन में आ गई थी? यदि आपने पुराने टाइप राइटरों को देखा होगा तो आपको स्मरण होगा कि एक समय टाइप राइटर की छपाई पत्रक के नीचे की ओर होती थी और जब तक कागज को निकालकर नहीं देखा जाता था, तब तक यह पता नहीं चलता था कि क्या छप रहा है? इसी प्रकार आपका लीनोटाइप और टाइप राइटर भी धीरे-धीरे उत्तमता की ओर बिना वर्णहत्या के अग्रसर होता जाएगा। २६ संख्या में और इन सुविधाओं की प्राप्ति में कोई प्राकृतिक सम्बन्ध नहीं ह।

इस वर्णहत्या की ओर न जाकर हमको अपनी प्रान्तीय अथवा केन्द्रीय सरकारों को यह परामर्श देना चाहिए कि वे अपने यहां के यंत्रकला-विशारदों को यह सूचना दें कि जो कोई यन्त्र-निर्माता ५२ वर्णवाली देवनागरी का टाइप राइटर, लीनो प्रिण्टर, टेलीप्रिण्टर का आविष्कार करेगा तथा उसका आविष्कार अमेरिकन मशीनों से बढ़कर होगा, उसको पांच लाख रुपया पुरस्कार मिलेगा। सच्चा 'श्रीनिवास' तो वह ह जो इस प्रकार वर्णहत्या का पाप न करके अपनी श्री का उपयोग परिपूर्ण देवनागरी के टाइप राइटर आदि के आविष्कार को पुरस्कृत करने में करेगा और आगे इन आविष्कारों से अपनी श्री की अधिक वृद्धि करेगा।

आप यह कह सकते हैं कि इस वैज्ञानिक युग में हमको अपने पुराणपंथीपन को छोड़ देना चाहिए और दूसरे राष्ट्रों ने जो सुविधाएँ उपस्थित की हैं, उनसे हमको लाभ उठाना चाहिए। यह हमारे पिता का कथन कुआं है, ऐसा कहकर उस कुएँ के खारी जल को काम पिया करते हैं। समझदार सर्वत्र सुविधा का उपयोग करते हैं। परन्तु यहां तो स्थिति यह है कि अन्य लोगों ने जो सुविधा उपलब्ध की है उसकी प्रकृति को बिना समझे ही हम उस सुविधा को अपनाने के लिए अपनी वर्णमाला का अंग-भंग करने पर उतारू हो रहे हैं। हमको यह नहीं सूझ रहा है कि हम जिस वस्तु को अच्छा समझकर उसकी ओर आंखें बन्द किए दौड़ रहे हैं और अपनी सुन्दर वर्णमाला को पंगु बनाने का उपक्रम कर रहे हैं, उससे वास्तव में हमको कितनी बड़ी हानि होने की सम्भावना है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अन्य लोगों के आविष्कार से हमको प्रेरणा, उत्साह और स्फूर्ति ग्रहण करनी चाहिए। कल तक हम लोग पराधीन थे। हमारे नवयुवकों को यों कि आविष्कारक बुद्धि से सम्पन्न थे, कोई उत्साह प्रदान करनेवाला नहीं था। आज हम स्वतन्त्र हुए हैं तो एकदम आंख बन्द करके दूसरों का अनुकरण करने के लिए रस्सा तुड़ा रहे हैं। क्या आज तक कभी यह घोषणा की गई कि जो व्यक्ति ५२ वर्णवाली देवनागरी-लिपि का टाइपराइटर, टेलीप्रिण्टर अथवा लीनोटाइप बनाएगा उसको समुचित रूपेण पुरस्कृत किया जाएगा? यदि हमने ऐसा नहीं किया तो यह बात किस प्रकार सिद्ध हुई कि ५२ वर्णवाली देवनागरी वर्णमाला का अंग-भंग किए बिना हम उपर्युक्त सुविधाएँ प्राप्त कर ही नहीं सकते? हम कहते हैं कि यदि नागरी-प्रचारिणी सभा का वास्तव में यह विश्वास है कि हमारी लिपि सर्वश्रेष्ठ है तथा उसके मन्तव्य का प्रथम वाक्य उसके हृदय के सच्चे विश्वास को व्यक्त करता है, तो उसको श्री नरेन्द्रदेव कमेटी और प्रान्तीय सरकार के समक्ष यही सुझाव रखना चाहिए कि २ या ३ वर्ष की अवधि देकर पूर्ण हिन्दी वर्णमाला के उपर्युक्त यंत्रों के आविष्कार के लिए पुष्कल पुरस्कार घोषित किया जाए और यदि उक्त अवधि के पश्चात् भी पूर्ण देवनागरी वर्णमाला के लिए ऐसे यन्त्र न बन सकें तभी वर्णमाला में परिवर्तन करने की बात सोची जाए।

इन पंक्तियों के लेखकों का प्रतिसंस्कृत देवनागरी-लिपि के प्रति जो विरोध है, वह कोई पुराणपंथीपन के कारण नहीं है। वास्तव में काशी-नागरी सभा के मन्तव्य के तीसरे अनुच्छेद में लिखा गया ह कि 'आवश्यकतानुसार नागरी-लिपि का पुनः संस्कार करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रक्खा जाए—

(क) लिपि के प्रचलित रूप से प्रतिसंस्कृत लिपि का यथासम्भव अपार्थक्य और अनुच्छेद बनाए रखना।

(ख) लेखन-सौकर्य और मुद्रण-सौकर्य के लिए प्रयत्न करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८।

(ग) संयोगस्थलों में संयुक्त वर्णों की ऐसी आकृति रखना जिसके पहचानने में भ्रान्ति न हो।

(घ) सौन्दर्य की रक्षा करना।

हमारी सम्मति में श्रीनिवासजी की प्रतिसंस्कृत लिपि में 'ख' के अतिरिक्त और किसी बात की ओर ध्यान नहीं रखा गया है। यह सम्मति हमारी ही व्यक्तिगत नहीं है प्रत्युत हमने जिस किसी व्यक्ति को इस प्रतिसंस्कृत लिपि और लेख को दिखलाया, उसने हमारी सम्मति का ही समर्थन किया।

अतएव हमारी सम्मति में यह प्रतिसंस्कृत लिपि उस प्रयोजन के ही विरुद्ध जानेवाली है, जिसके लिए इसको प्रस्तुत किया गया है। न जाने फिर भी क्यों नागरी-प्रचारिणी सभा ने इसको स्वीकार किया। इतना ही नहीं, उसने अपने ३१ वैशाख २००४ के निर्णय में इसके लिए टाइप की व्यवस्था की योजना कर दी और समाचार-पत्रों से भी अनुरोध करने का निर्णय किया कि वे भी इसी लिपि का व्यवहार करें। हमारी सम्मति में निर्णय करने में आवश्यकता से अधिक शीघ्रता की गई है।

आप कहेंगे कि दुनिया के अन्य लोग उन्नति की दौड़ में हमसे आगे निकले जा रहे हैं, अतएव हमको उनकी बराबरी में आने की शीघ्रता करनी चाहिए। पर जिस देश में पुरानी गवर्नमेंट की धूर्तता, वर्तमान सरकार की अनुभव-न्यूनता और चोर बाजार की लोलुपता के कारण कागज का दुर्भिक्ष हो, अनेकों प्रेस बन्द हों, बच्चों की पाठ्य-पुस्तकों का अभाव हो, लिखने के लिए बच्चों को कागज न मिलता हो और दशा दिन-प्रतिदिन बिगड़ती ही जाती हो, पुस्तकों और पत्रों के मूल्य में निरन्तर वृद्धि हो तथा पुस्तकों की बिक्री और संस्करणों की संख्या घटती जा रही हो, वहां टेलिप्रिण्टर, लीनोटाइप तथा टाइपराइटर के लिए उतावली दिखलाना कहां तक समयोचित है? क्या कागज के अभाव के कारण नागरी-प्रचारिणी सभा को अपनी अनेकों आवश्यक पुस्तकों के छपवाने से विरत नहीं होना पड़ा है? क्या यह सत्य नहीं है कि नागरी-प्रचारिणी सभा को अनेकों पुस्तकों के लिए आर्डर आते हैं, पर सभा के पास कागज न होने के कारण उनको छपाने का कोई प्रबन्ध नहीं है तथा क्या यही दशा देश की अन्य सभी प्रकाशन-संस्थाओं की नहीं है? हम एक नहीं अनेकों पुस्तकों के नाम गिना सकते हैं, जिनका छपना टेलिप्रिण्टर या लीनोटाइप के बिना नहीं, बल्कि कागज के अभाव के कारण बन्द है।

अच्छा, मान लीजिए कि कागज की यह असुविधा मिट गई तो भी क्या हमारे लिए टेलीप्रिण्टर और लीनोटाइप की तत्काल ही बड़ी भारी आवश्यकता उत्पन्न हो जाएगी? हमारी सम्मति में ऐसा अभी बहुत जल्द होने की सम्भावना नहीं है। इन सब यन्त्रों का भली भांति पूरा-पूरा उपयोग होने के लिए हमारे देश में अभी समय लगेगा, हां फैशन की बात दूसरी है। फैशन आवश्यकता की उपज नहीं है, वह किसी समय के वातावरण से उत्पन्न होता है। इन यन्त्रों के पूर्ण उपयोग के लिए समय तब आएगा जब कि हमारे देश में साक्षरता का प्रचार पूर्णतया हो चुकेगा और समाचार-पत्रों की खपत अब से दसगुनी बढ़ जाएगी। इसके पूर्व इन यन्त्रों का उपयोग करके हम केवल बेकारी को ही बढ़ाएंगे और फैशन की वेदी पर पैसे का बलिदान करेंगे। समाचार-पत्रों की खपत बढ़ जाने पर भी इन यन्त्रों के प्रयोग के बिना हमारा काम नहीं चलेगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। गत युद्ध से पूर्व जब तक जापान की पराजय नहीं हुई थी तब तक संसार में सबसे बड़ी संख्यावाले समाचारपत्र जापान में ही छपते थे। अँगरेज और अमेरिकन जापानी समाचार-पत्रों की संख्या से चकित थे। पर क्या जापानियों ने इस सबके लिए अपनी लिपि और भाषा को को हमारी तरह विकृत किया था? जापान और चीन की की लिपियों की दुरूहता तो जग-जाहिर है। यदि वे अपनी लिपि को अछूता बनाए रखकर अँगरेजी समाचारपत्रों को संख्या में हरा सके तो फिर हमारी वर्णमाला और लिपि तो सब लिपियों से अधिक वैज्ञानिक और सुगम है। हम इस दिशा में अँगरेजों और अमेरिकनों का अनुकरण न करके जापानियों का ही अनुकरण क्यों न करें? जापानी लोग तो यांत्रिक सुविधा में हमसे अधिक विश्वास करते थे। पर वे योरप को इसीलिए पीछे डाल सके कि उन्होंने उसका अन्धाधुन्ध अनुकरण नहीं किया बल्कि पश्चिम देशों की यांत्रिकता को उन्होंने अपनी प्रकृति से अधिकृत करके उसका उपयोग किया और योरप को भी परास्त कर दिया। हमको ठीक पता नहीं कि जापानियों के पास टेलिप्रिण्टर और लीनोटाइप आदि थे या नहीं, पर इतना निर्विवाद है कि जापानी-लिपि संसार की जटिलतम लिपियों में से एक है और जापान में समाचारपत्रों की संख्या संसार के सभ्य देशों में प्रायः सर्वोपरि थी तथा उसने अपनी लिपि में कोई सुधार नहीं किया था।

यदि यह सब संभव है तो समाचारपत्रों की सुविधा और संख्या के नाम पर ही सबसे अधिक वैज्ञानिक और सुगम लिपि की वर्ण हत्या का उपक्रम क्यों किया जा रहा है? इस समय हमारी तत्काल आवश्यकता है एक ओर कागज के उत्पादन में वृद्धि करना और दूसरी ओर साक्षरता के प्रचार में वृद्धि करना। इसके साथ ही साथ यदि हम फैशन का अनुकरण करने का ही निश्चय करें तो हमको इसी के साथ-साथ पूर्ण वर्णमाला के यंत्रों का विकास करने का भी प्रयत्न करना चाहिए। हम बिना वर्णहत्या के ही इन सब यंत्रों के आविष्कार की सम्भावना में विश्वास करते हैं, तथा जो कोई इन्हीं यंत्रों की अँगरेजी आकृति का अनुकरण करने के लिए अपनी वर्ण- माला का अंग-भंग करने की योजना करता है, उसकी सम्मति को परजित मनोवृत्ति की उपज समझते हैं।

यहां पर यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यदि आज हमारी प्रथम आवश्यकता साक्षरता का प्रसार है तो भी ५२ वर्णों की अपेक्षा २६ वर्णोंवाली वर्णमाला अधिक सुविधाजनकहोगी। नौसिखिए के लिए ५२ वर्णों की अपेक्षा २६ वर्णों का सीखना अधिक सरल होगा। अतएव श्रीनिवासजी की प्रतिसंस्कृत-लिपि को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भारत में साक्षरता का माध्यम' का नाम उपयुक्त ही दिया गया है। हमारा इस प्रश्न के उत्तर में यही कहना है कि इससे बढ़कर भ्रान्ति की दूसरी कोई बात नहीं हो सकती। पर हमारी सम्मति में हमारी देवनागरी लिपि के 'वैज्ञानिक' होने का तात्पर्य यह है कि (१) इस लिपि में मानव नादयन्त्र की अधिकतम स्पष्ट ध्वनियों का समावेश है, (२) एक चिह्न एक ही ध्वनि को व्यक्त करता है, (३) एक ध्वनि के लिए केवल एक ही चिह्न है, (४) ध्वनियों को एक सुविश्लिष्ट व्यवस्था में प्रस्तुत किया गया है, (५) प्रत्येक ध्वनि का नाम और काम एक ही है। यह वर्णमाला 'सुगम' है, इसका तात्पर्य यह है कि (१) इस वर्णमाला को भली भांति समझ लेने पर उच्चारण और लिखने में अधिक कठिनाई नहीं पड़ती है, (२) इस वर्णमाला को जानकर हिज्जे (वर्णानुपूर्वी) सीखने की आवश्यकता नहीं रहती, (३) इस वर्णमाला में अन्य भाषाओं की ध्वनियों को भी स्पष्टतया व्यक्त करने की क्षमता अन्य वर्णमालाओं की अपेक्षा अधिक है।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र ने विभिन्न देशों की वर्णमालाओं और ध्वनियों के अध्ययन से एक वैज्ञानिक वर्णमाला का (लिपि का नहीं) विकास किया है जिसका नाम अन्तारा-ष्ट्रीय ध्वनिमाला (International Phonetics) है। इस ध्वनिमाला का आधारभूत सिद्धान्त यही है कि एक ध्वनि के लिए एक से अधिक चिह्न नहीं होना चाहिए तथा एक चिह्न से एक से अधिक ध्वनि सूचित नहीं होना चाहिए। जो चिह्न इन ध्वनियों के लिए व्यवहृत होते हैं वे रोमन वर्णमाला का ही परिवर्धित रूप हैं। अतएव हम इस व्यवस्था को अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला तो मानते हैं, पर अन्ताराष्ट्रीय लिपिमाला नहीं मानते। हमारी देवनागरी वर्णमाला के अध्ययन से ही इस प्रकार की अन्ताराष्ट्रीय वर्णमाला का विकास सम्भव हुआ। योरप के निष्पक्ष विद्वानों ने हमारी वर्णमाला और लिपिमाला की भूरि-भूरि प्रशंसा की। परन्तु क्या कारण हुआ कि उन्होंने इस सुगम वर्णमाला और लिपिमाला के गुणों का बखान करते हुए भी तथा अपनी लिपियों की अपूर्णता दोष-बहुलता और अवैज्ञानिकता को भलीभांति जानते हुए भी अपनी लिपि का परित्याग नहीं किया? इतना ही नहीं, चौसर (Chaucer) कवि के पूर्वकालीन अँगरेजी साहित्य में पुरानी हस्तलिखित प्रतियों में जो कुछ अक्षर रोमन-लिपि से बाहर के मिलते हैं, उनको लीनोटाइप आदि की सुविधा के मोह में पड़कर रोमन-लिपि में 'अन्तर्भुक्त' करने का प्रयत्न नहीं किया। उन अक्षरों के लिए अलग टाइप बनाए गए हैं तथा पुराने साहित्य को छापने में उनका प्रयोग किया जाता है। क्या इसका कारण यह है कि वे लोग हम से अधिक रूढ़िप्रिय हैं अथवा आलसी या मूर्ख हैं? क्या कारण है कि नवीनता का उपासक अमरीका भी इस सुधार में हिज्जों (Spellings) के सुधार से आगे नहीं बढ़ा? क्या कारण है कि नवीन जीवन-पद्धति को चलानेवाला क्रांति का पुजारी रूस भी इस दिशा में केवल इतना ही आगे बढ़ सका कि १९१७ की क्रान्ति के पश्चात् रूसी भाषा की वर्णमाला से केवल ४ अक्षर को निकाल दिया गया, जो वास्तव में किसी ध्वनि को सूचित नहीं करते थे? हां, नवचेतन टर्की में अवश्य इस दिशा में यह क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ कि अरबी-लिपि के स्थान पर रोमन-लिपि को ग्रहण किया गया। पर यहां कारण स्पष्ट है। अरबी लिपि संसार की सब लिपियों से अधिक दोषपूर्ण है। क्या नागरी-प्रचारणी सभा के विद्वानों को श्रीनिवास जी ने कभी यह विचार करने का कष्ट स्वीकार किया कि एक छोटे से टर्की को छोड़कर अन्य सब देशों के मनुष्य लिपि के विषय में रूढ़िप्रियता से क्यों चिपटे हुए हैं? यदि वह इस विषय पर विचार करने का कष्ट स्वीकार करते तो उनको पता चल जाता कि किसी भी सभ्य, साहित्यसम्पन्न और परम्परा के धनी देश के लिए लिपि में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर देना व्यवहार्य नहीं है। इस दिशा में इस शेखचिल्लीपन को स्वीकार करके कोई अपने को उपहासास्पद भले ही बना ले, पर व्यवहार में उसकी यह क्रान्ति दो दिन भी नहीं चल सकती।

सभ्य देशों की लिपियां किसी उपयोगी कार्य का साधन-मात्र हैं। वह उपयोगी कार्य है ज्ञान का सम्यक्, संरक्षण और वितरण। हम किसी लिपि को उसकी सुगमता और वैज्ञानिकता की खातिर नहीं सीखते। चीनी लिपि में सुगमता ह, न वैज्ञानिकता; पर फिर भी चीन की जनता उस लिपि को क्यों सीखती है? इसलिए कि (सौभाग्य से क्यों चाहे दुर्भाग्य से), चीन का सहस्रों वर्ष का ज्ञानसंचय उसी लिपि के सीखने से प्राप्त हो सकता है। अभी थोड़े समय से चीन ने नवीन लिपि का प्रचार करना अवश्य आरम्भ कर दिया है, पर वह प्रचार कुछ अधिक गति नहीं पा रहा है। हमारे भारतवर्ष में ही देवनागरी लिपि को व्यवहार में लाने से लोगों का जो ज्ञान-संचय हिन्दी, राजस्थानी, मराठी, मैथिल, संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं में है, वह कितना है? क्या आपने कभी यह सोचने का कष्ट उठाया है कि उपर्युक्त भाषाओं के प्रकाशित और अप्रकाशित साहित्य का विस्तार कितना है? इनके प्रकाशित साहित्य को प्रस्तुत करने में आधुनिक छापेखाने को कितना धन, परिश्रम और समय व्यय करना पड़ा है? क्या हमारी आगामी पीढ़ियां जिनकी साक्षरता के माध्यम के लिए अति-संस्कृत लिपि की कुंजी उपस्थित की गई है, इस समग्र ज्ञान की उत्तराधिकारिणी नहीं है? यदि हैं, तो क्या आप बतला सकते हैं कि इस प्रतिसंस्कृत लिपि की कुंजी से उस ज्ञान-भाण्डार का ताला खुल सकेगा? आप कहेंगे कि पुराने साहित्य इस लिपि में उतार दिया जाएगा। पर क्या आप बतला सकते हैं कि इस समग्र आधी दर्जन भाषाओं के प्रकाशित साहित्य को नवीन लिपि में उतारने में कितना समय, शक्ति और धन लगेगा तथा जो कुछ पुराना साहित्य प्रस्तुत है क्या वह व्यर्थ नहीं हो जाएगा? यदि आप कहें कि परिवर्तनकाल में पुराने पढ़े-लिखे लोगों को नवीन लिपि सीखना वांछनीय होगा तथा नवीन विद्यार्थियों को अति-संस्कृत और असंस्कृत लिपियों को सीखना आवश्यक होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर में

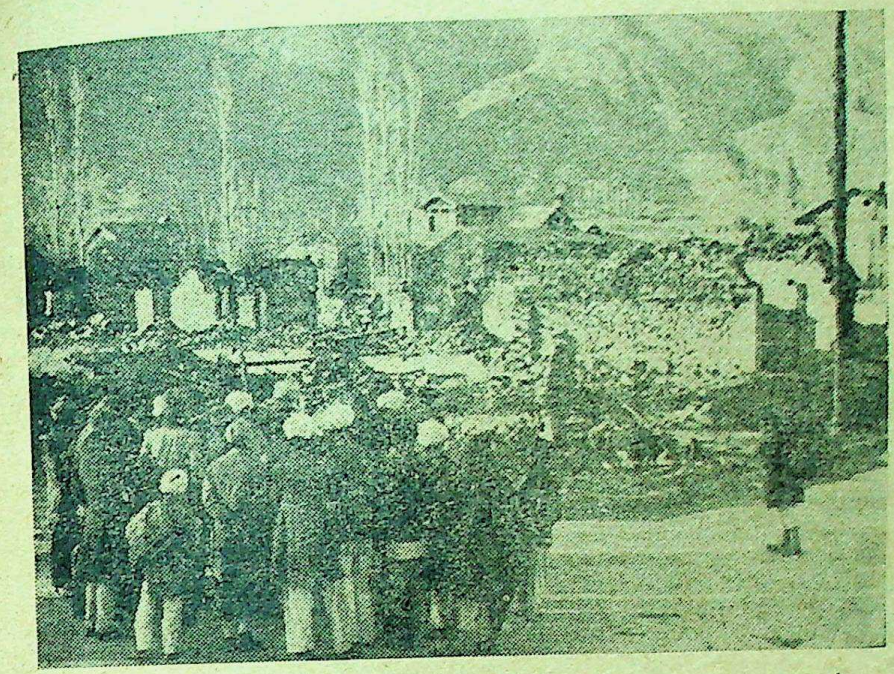

पाकिस्तानी आक्रामकों द्वारा फूंके गए बारामला नामक नगर का एक दृश्य !

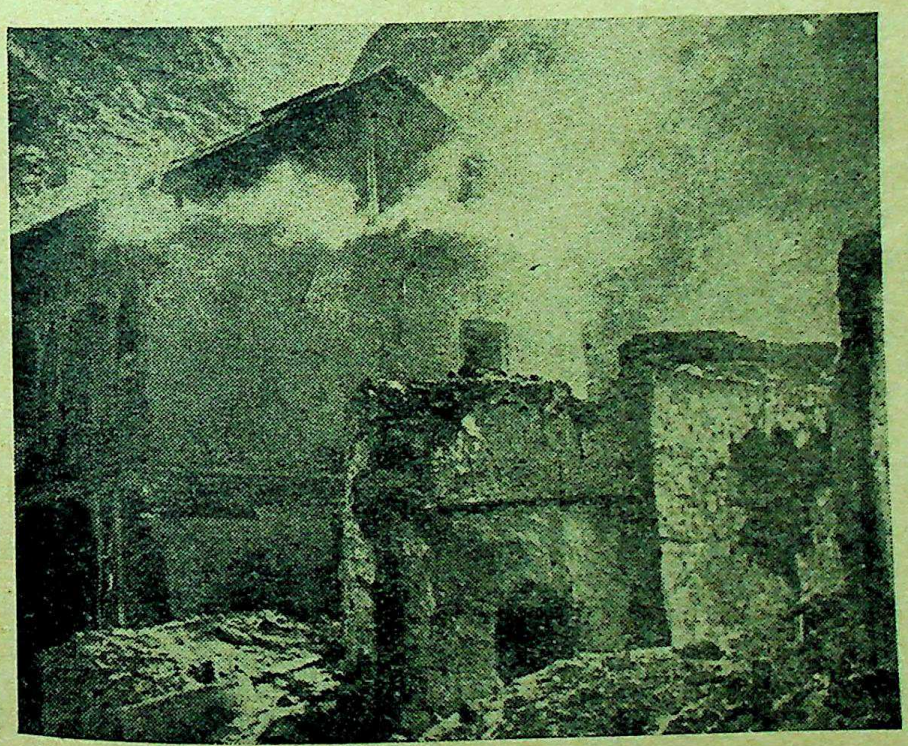

यूरी के निकट अब भी आक्रामकों का आतंक-कार्य जारी है। ऊपर के चित्र में वहां के एक जलते हुए गांव के एक मकान का दृश्य अंकित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रु के हाथों से अपने सुन्दर देश की रक्षा करने के लिए काश्मीरी स्त्रियां भी तैयार हैं। बगल के चित्र में उनकी सुसगठित सेना का एक भाग अंकित है।

काश्मीर की 'नेशनल होम गार्ड्स' नामक संस्था द्वारा वहां की लड़कियां राइफिल चलाना सीख रही हैं। उसी का एक दृश्य यहां चित्र में अंकित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८।

तो भी शायद इस झमेले में ५० वर्ष लग जाएँगे और परिणाम पड़बड़चौदस के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा।

एक उदाहरण देकर बात और भी स्पष्ट की जा सकती है। मान लीजिए कि उपर्युक्त आधी दर्जन भाषाओं का उपलब्ध साहित्य पांच लाख ग्रंथों में है। अब आप इस साहित्य के लिए प्रतिसंस्कृत लिपि का प्रयोग करते हैं और प्रतिसंस्कृत लिपि जाननेवाले को उसकी इस पैत्रिक सम्पत्ति को प्राप्त कराने का उद्योग करते हैं; तो क्या आप बतला सकते हैं कि कागज के दुष्काल के समय से आरम्भ करके आप इस कार्य को कितने समय में पूर्ण कर सकेंगे? हम समझते हैं कि इस कार्य में धन, रिश्रम और समय का इतना अपव्यय होगा, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। संक्षेप में यह सारी योजना अव्यवहार्य है। प्रतिसंस्कृत लिपि प्रस्तुत लिपि से इतनी अलग है कि इसके पृथक-पृथक् जाननेवाले स्वभावतः अन्य लिपि को नहीं सीख सकते। यह बात जिस व्यक्ति ने इस प्रतिसंस्कृत लिपि को देखा है, उसने ही स्वीकार कर ली है। यही कारण है कि योरप के मनीषी रोमन लिपि के दोषों को जानते हुए भी उसको नहीं त्यागते। उन लोगों के केन्द्रीय राष्ट्रीय पुस्तकालय ५० लाख पुस्तकों से सम्पन्न हैं और इनमें से अधिकांश साहित्य रोमन लिपि में है। यदि वे रोमन लिपि के स्थान पर अन्य किसी वैज्ञानिक लिपि को स्वीकार कर लें तो उनकी आगामी पीढ़ियां इस महान् ज्ञान के उत्तराधिकार से वंचित हो जाएँ। वे सौ वर्ष के घोर परिश्रम और अपव्यय से भी अपने प्रस्तुत साहित्य को वैज्ञानिक लिपि में न उतार सकें और उनकी सारी ज्ञानगरिमा धूल में मिल जाए।

अतएव यदि देवनागरी लिपि के स्थान पर हम किसी ऐसी लिपि को स्वीकार करते हैं, जो इस लिपि से बहुत दूर है तो हमारे सामने जो समस्या उपस्थित होगी उसका रूप यह होगा :—

(१) जो पुरानी लिपि सीखे हुए हैं उनको भावी साहित्य को जानने के लिए प्रतिसंस्कृत लिपि सीखनी होगी।

(२) जो केवल प्रतिसंस्कृत लिपि सीखेंगे उनको—

(क) केवल प्रतिसंस्कृत लिपि का ही साहित्य मिलेगा जो मात्रा में लगभग आगामी ५० या ६० वर्ष तक प्राचीन साहित्य से कम ही होगा।

(ख) वह पुरानी संस्कृति और पुराने साहित्य से अनभिज्ञ रहेंगे।

(ग) अथवा पुराने साहित्य को जानने के लिए उनको दोनों लिपियों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(३) यदि प्रतिसंस्कृत लिपि-मात्र का प्रचलन करने के लिए सब पुराने साहित्य को नवीन कलेवर प्रदान करने का प्रयत्न किया जाएगा तो हमारे साधनों की अवस्था पर दृष्टिपात करते हुए निम्न अनिष्टकारी परिणाम होंगे—

(क) पुराना साहित्य रद्द करना पड़ेगा।

(ख) समय धन और परिश्रम का कल्पनातीत अपव्यय करना पड़ेगा।

(ग) या तो भूत का कलेवर परिवर्तन करने का व्यय इतना अधिक होगा कि उसके साथ-साथ नवीन सृजन का कार्य भली भांति नहीं चल सकेगा अथवा यदि नवीन सृजन पर अधिक ध्यान दिया गया तो बहुत कुछ पुराने से हाथ धोना पड़ेगा।

(घ) सुदीर्घ काल तक लिपि-द्वैध चलाना अपरिहार्य होगा।

वातस्व में यह समस्या इतनी गम्भीर है कि बहुत-सा कहने के उपरान्त भी इसकी व्यावहारिक कठिनाइयां सर्वथा दुर्लंघ्य ही रहेंगी। यही कारण है कि अँगरेजों से सुविधा-भक्तों, अमरीकनों से नवीनता-उपासकों, रूसी जैसे क्रान्तिकारियों और जर्मन जैसे श्रमवीरों ने इस दिशा में छेड़छाड़ न करने ही में श्रेय समझा है। पर 'घुस पड़ते हैं मूर्ख जहां देवों के भी कँपते हैं पांव।' यही कारण है कि भारतीय भाषाओं के लिए रोमनलिपि का प्रयोग भी व्यवहार्य नहीं है। अतएव हम आशा करते हैं कि हमारे श्रीनिवासजी तथा नागरी-प्रचारिणी सभा समस्या के इस गम्भीरतम पक्ष पर भी विचार कर ले। स्पेन देश के एक प्रसिद्ध कवि ने सूर्य के प्रकाण्ड प्रकाश को धोखा देनेवाला कहा है क्योंकि रात्रि के अन्धकार में जो हमको असंख्यों सूर्य से भी महान् सूर्यों और तारों का दर्शन होता है, वह सूर्य के प्रकाश में नहीं होता। कुछ इसी प्रकार टाइपराइटर, लीनोटाइप और टेलीप्रिण्टर की चकाचौंध ने हमको धोखा दिया है और हम वास्तविक समस्या से बहक गए हैं।

इस समस्या का एक आर्थिक-सामाजिक पक्ष भी है। हमारा देश अभी इतनी व्यावसायिक उन्नति को प्राप्त नहीं हो गया है कि हमारी जन-शक्ति पूर्णतया व्यापत हो गई हो तथा हमको समय-रक्षिणी यन्त्रकला की शरण लेना आवश्यक हो गया हो। यदि आपके यहां समाचार-पत्रों की खपत इतनी बढ़ जाए कि आपको इन यान्त्रिक सुविधाओं को स्वीकार करना अपरिहार्य हो जाए तो बात दूसरी है; परन्तु अभी तो हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अधिक मनुष्यों को काम देकर ही कर सकते हैं। यह कल्पना की बात नहीं है; व्यावहारिक ज्ञान पर निर्भर है। हमारे बहुत कम दैनिक पत्र ऐसे होंगे, जिनकी खपत एक लाख से ऊपर हो। सम्भव है, हिन्दी समाचार-पत्रों में एक भी पत्र ऐसा न हो। तो क्या ऐसे समाचार-पत्रों के लिए, जिनकी खपत एक लाख से भी कम है, ऐसी मशीनों को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है, जो वर्तमान अवस्था में अनावश्यक ही नहीं, बल्कि बेकारी बढ़ानेवाली सिद्ध होंगी? एक लाख तक की खपत के पत्र साधारण मशीनों पर छप सकते हैं और पर्याप्त मनुष्यों को काम दे सकते हैं। इस कथन की सत्यता का प्रमाण हमारा मासिक पत्र 'कल्याण' है, जो वर्ष भर में १,६०० से अधिक पृष्ठ ग्राहकों को पहुँचाता है और जिसकी प्रतिदिन की छपाई का औसत ५ या ६ पृष्ठ बैठता है; जो हिन्दी के किसी भी दैनिक-पत्र की तुलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अधिक बैठेगा। यदि गीताप्रस ५ या ६ पृष्ठ प्रतिदिन के हिसाब से एक लाख से ऊपर प्रतियां छाप सकता है तो वर्तमान देवनागरी को छापने की मशीनों और सुविधाओं के साथ अधिक जनों के श्रम का उपयोग करके इस संस्था को द्विगुण अथवा त्रिगुण किया जा सकता है, पर इतनी दैनिक खपत हमारे पत्रों की अभी है ही कहां?

हमारी प्रस्तुत समस्या है साक्षरता का प्रसार और सस्ते साहित्य के प्रकाशन के लिए कागज के दुष्काल को मिटाकर सुकाल को प्रस्तुत करना। जैसी स्थिति इस समय चल रही है, उसको देखते हुए हम निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम अपने देश में से निरक्षरता को कब तक निकाल सकेंगे। रूस को पूर्ण निरक्षरता का लोप करने में तीस वर्ष लगे। हमारा देश उससे संख्या में लगभग दुगुना है। यदि सुविधाजनक परिस्थिति आ गई तो भी हमको निरक्षरता का नाश करने में ४० वर्ष लग जाएँगे। तब कहीं ऐसी परिस्थिति आएगी कि हमारे पत्रों को उन मशीनों की आवश्यकता होगी, जो समय और श्रम की बचत के लिए आवश्यक हैं। यह स्थिति २० या २५ वर्ष से पहले सम्भवतया न आए, १० वर्ष से पूर्व कदापि नहीं आ सकती। और इस समय तो मशीनों की अपेक्षा कागज की समस्या ही प्रथम है। इतने समय में यदि हमारे यंत्राविष्कारक प्रयत्न करें तो परिपूर्ण देवनागरी के लिए ही उपर्युक्त सब यन्त्र प्रस्तुत कर सकते हैं। हमको इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि यदि सरकार और जनता का सहयोग और प्रोत्साहन मिले तो तीन वर्ष के भीतर-ही-भीतर परिपूर्ण देवनागरी के यन्त्र बन सकते हैं। उतावली में अपनी सबसे अधिक वैज्ञानिक और सुगम वर्णमाला का अंग-भंग करना न विचारपूर्ण है और न व्यावहारिक।

श्रीनिवासजी ने एक स्थान पर लिखा है कि 'समयानुसार लिपि को हमने बारम्बार परिष्कृत किया है। यह आवश्यक और अनिवार्य भी है।' यह कथन अर्धसत्य है। सच बात यह है कि हमारी लिपि का शनैः-शनैः विकास हुआ है। उसमें ऐसा कायाबदल कर देनेवाला परिवर्तन आज तक कभी नहीं हुआ जैसा कि श्रीनिवासजी ने प्रस्तुत किया है। इस क्रान्तिकारी परिवर्तन के फलितार्थों पर उपर्युक्त विचार संक्षेप में प्रस्तुत किए गए हैं। रोमन-लिपि का व्यापक-से-व्यापकतर होना यंत्र-युग के कारण जितना सम्भव हुआ है, उससे कहीं अधिक राजनैतिक कारणों से हुआ है। क्या बौद्धकाल में हमारे साहसी पूर्व-पुरुषों के पुरुषार्थ के कारण हमारी सभ्यता ने नील से लेकर निप्पन (जापान) तक अपनी विजय-वैजयंती नहीं फहराई थी? अतएव हम थोड़ा गहराई से सोचें, समस्या की जड़ में जाएँ, बाह्य बातों के मूल का पता लगाएँ, तब हम ऐसी बहकी-बहकी बातें नहीं करेंगे, जैसी नागरी-प्रचारिणी-सभा के मन्तव्य में कही गई हैं।

यदि हमारी लिपि में परिवर्तन नितान्त आवश्यक हो गया हो तो वह ऐसा होना चाहिए कि जो सुविधाओं को प्राप्त कराने में सहायक हो, पर उन सुविधाओं से कहीं अधिक बुरी समस्याओं को जन्म देनेवाला न हो। पुरानी लिपि को जाननेवालों को नई लिपि तथा नई लिपि जाननेवालों को पुरानी लिपि सीखनी न पड़े। अब हम आगे कुछ सुझाव प्रस्तुत करेंगे कि जिससे अल्पतम परिवर्तनों के सहारे सब सुविधाएँ प्राप्त की जा सकें और हमारी लिपि की वैज्ञानिकता और सुगमता जैसी-की-तैसी बनी रहे।

अब तक हमने अनेक बार ऐसा कहा है कि श्रीनिवासजी द्वारा प्रतिसंस्कृत लिपि वर्तमान देवनागरी लिपि से इतनी अधिक पृथक् है कि उसको एक भिन्न लिपि ही मानना चाहिए। यद्यपि यह बात प्रतिसंस्कृत लिपि और उस लिपि में लिखे लेख को देखनेमात्र से ही स्पष्ट हो जाती है, तथापि अपने कथन को पूर्णतया प्रमाणित करने के लिए हम निम्नलिखित विश्लेषण उपस्थित करना उचित समझते हैं।

प्रतिसंस्कृत लिपि में स्वर, स्वरों की मात्राएँ, अयोगवाह और व्यंजनों के अर्द्धक कुल मिलाकर १०८ चिह्न हैं। इन १०८ चिह्नों में से केवल ३७ चिह्न ऐसे हैं, जो पुरानी लिपि के चिह्नों से मिलते हैं, शेष ७१ चिह्न भिन्न हैं। लिपि-संशोधन के सम्बन्ध में श्रीनिवासजी ने कहा है कि 'इस सम्बन्ध में हमारी दृष्टि सदा से ही उदार रही है, समयानुसार लिपि को हमने बारम्बार परिष्कृत किया है, यह आवश्यक और अनिवार्य भी है।' इस कथन को हम पहले ही अर्द्धसत्य कह चुके हैं। अब हम श्रीनिवासजी से यह पूछना चाहते हैं कि क्या वह कृपा कर बतलाएँगे कि हमारे इतिहास में किसी एक व्यक्ति अथवा एक समिति ने कभी लिपि में परिवर्तन किया है? लिपि में कालान्तर में परिवर्तन अवश्य हुए हैं, पर वे स्वतः शनैः शनैः हुए हैं। इस प्रकार का परिवर्तन जिसमें एक बार ही ३/४ चिह्नों का कलेवरांतर करके लिपि को एकदम बदल दिया गया हो, कभी नहीं हुआ। इस परिवर्तन में उदारता नहीं, विवेकशून्य उतावलापन अवश्य होता है। जैसा कि हम ऊपर बतला चुके हैं, किसी साहित्य सम्पन्न भाषा के लिए इस प्रकार की उतावली व्यवहार्य नहीं है। लिपियों के विकास के क्रम में इस बात को सिद्धान्त के रूप में उद्धृत किया जा सकता है कि किसी देश का साहित्य जितना ही कम होगा, उसकी लिपि में उतनी ही परिवर्तन की गुंजाइश होगी तथा जिसका साहित्य जितना ही अधिक होगा, उतनी ही परिवर्तन की गुंजाइश कम होती जाएगी। यह सिद्धान्त इतना कठोर है कि रूस जैसे क्रान्तिकारी देश को भी इसके सामने नतमस्तक होना पड़ा।

अतएव हमारी वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए तो यही उचित प्रतीत होता है कि अपनी प्रस्तुत वर्णमाला और लिपि को अक्षुण्ण रखते हुए ही हम नवीन आविष्कारों का उपयोग करने का प्रयत्न करें। यदि समुचित प्रोत्साहन दिया जाए तथा आविष्कर्त्ताओं को उचित प्रकार से पुरस्कृत किया जाए तो यह सब सम्भव हो सकता है। सुनते हैं कि वर्धा आदि स्थानों पर ऐसे प्रयत्न किए भी जा रहे हैं। परन्तु यदि कुछ परिवर्तन के बिना काम न

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हमारी सम्मति में निम्नलिखित परिवर्तनों पर भी विचार किया जाना चाहिए। यह परिवर्तन उपर्युक्त सभी वांछनीय सुविधाओं की प्राप्ति में सहायक होंगे तथा इनसे हमारी लिपि में न्यूनतम रूपान्तर उपस्थित होगा जैसा कि एक दृष्टिपात में ही सबकी समझ में आ जाएगा।

(१) स्वरों में इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ इन सात स्वर-चिह्नों को बिलकुल निकाल दिया जाए और इनके स्थान पर अ में ही इन स्वरों की मात्राएँ लगाकर इन स्वरों का काम लिया जाए। इस प्रकार क्रमशः हिन्दी के स्वरों के रूप ये होंगे—अ, आ, अि, अी, अु अू, अृ, अे, अै, ओ, औ, अं, अः। स्वरों के ये रूप आज हिन्दी-पाठकों के लिए नए नहीं हैं, बल्कि अनेक वर्षों से महात्माजी के 'हरिजन-सेवक' में सफलतापूर्वक प्रयुक्त हो रहे हैं।

(२) व्यंजनों में से ङ और ञ को बिलकुल ही निकाल दिया जाए और इनका काम वर्ण के ऊपरी अनुस्वार से लिया जाए। यह विधि भी बहुत समय से हिन्दी-लिपि में प्रचलित है। आधुनिक समय में बाबू श्यामसुन्दरदासजी ने अपने सभी ग्रन्थों में इस विधि को ही अपनाया है। इस प्रकार लङ्का के स्थान पर लंका और पञ्जा के स्थान पर पंजा लिखा जाना चाहिए।

(३) ण का ण रूप संशोधित लिपि में मान्य हो। क्योंकि जब ण अपने अर्द्ध (हल) रूप में लिखा जाता है तब प्रायः रा का भ्रम हो जाता है अथवा हो सकता है। किन्तु ण के अर्द्धरूप में इस भ्रम का कोई स्थान नहीं। ये दोनों ही रूप हिन्दी-लिपि में प्रचलित हैं, अतः इनमें से एक रूप निश्चित करने में कोई विशेष नवीनता लिपि पर नहीं लदती, बल्कि उसके रूप को निश्चित व्यवस्था ही मिलती है।

(४) इसी प्रकार, ख, से भी प्रायः र और व का भ्रम हो जाता है अथवा हो सकता है। ऐसा छापे में तो कम होता है किन्तु हस्तलेख में इसकी अधिक सम्भावना रहती है। उदाहरणार्थ खाना और रवाना में भ्रम हो सकता है। अतः इस भ्रम का मूलोच्छेदन करने के लिए संशोधित लिपि में ख का रूप ऐसा रक्खा जाए, जिसमें प्रचलित ख से केवल इतना ही अन्तर रहेगा कि उसका व वाला अंश र वाले अंश को छूता रहे। इस प्रकार बिना विशेष परिवर्तन के हमारी लिपि की एक और हल्की-सी अव्यवस्था सुधर जाएगी।

(५) 'श' तथा 'ष' में से संशोधित लिपि में केवल एक ही वर्ण ग्रहण किया जाए। क्योंकि यद्यपि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इन दो वर्णों में अन्तर है किन्तु वह इतना सूक्ष्म है कि व्यवहार में मालूम ही नहीं पड़ता, बल्कि इन दोनों के कारण हिन्दी-लिपि में कुछ दुरूहता आ गई है। नए सीखनेवाले को यह स्मरण करना पड़ता है कि अमुक शब्द में 'श' का प्रयोग होता है और अमुक में 'ष' का जब कि दोनों वर्णों की ध्वनि लगभग एक-सी ही है। अतः यदि हम वर्ष को वर्श लिखें तो व्यावहारिक दृष्टि से कुछ भी हानि नहीं होगी, बल्कि भाषा की दुरूहता कम हो जाएगी। दोनों वर्णों में से कोई भी एक लिया जा सकता है, किन्तु हमारी सम्मति में 'श' को ग्रहण करना ही उचित रहेगा, क्योंकि 'ष' की अपेक्षा 'श' का व्यवहार हिन्दी-लिपि में अधिक मात्रा में होता है।

(६) इसी प्रकार क्ष, त्र, ज्ञ वर्णों को भी बिलकुल निकाल दिया जाए और इनका काम क्रमशः क्श, त्र, ग्य से लिया जाए। ऐसा क्यों किया जाए, इसके लिए भी वही सब तर्क प्रस्तुत हैं, जो नियम ५ में 'श' तथा 'ष' के विषय में लिखे जा चुके हैं।

अब मात्राओं और संयुक्ताक्षरों की स्थिति पर विचार किया जाए। प्रचलित हिन्दी-लिपि में यदि छपाई आदि की दृष्टि से सबसे बड़ा दोष है तो वह मात्राओं का वर्णों के ऊपर, नीचे, आगे, पीछे चारों ओर लगना तथा संयुक्ताक्षरों का केवल आगे ही मिलने के स्थान पर ऊपर और नीचे भी मिलकर बनने का नियम है। हमको यह दोष दूर करना है किन्तु इस प्रकार कि न तो मात्राओं का संशोधित रूप और न उनकी स्थिति उनके प्रचलित रूप और स्थिति से बहुत अधिक बदल जाए। अधिकतर सभी यह चाहते हैं कि मात्राएँ वर्णों के आगे ही लगें। कम्पोजिंग आदि की दृष्टि से भी यही ढंग सरल है। अब प्रत्येक मात्रा को अलग अलग लिया जाए।

(७) आ तथा अः की मात्रा ा तथा ः के विषय में सुधार करना व्यर्थ ही है। वे तो वर्ण के आगे लगती ही हैं।

(८) इ की मात्रा ि वर्ण के पीछे बाईं ओर लगती है, इस मात्रा को यदि वर्ण से सटाकर लगाने के स्थान पर थोड़ा पीछे हटाकर लगाया जाए तो सारी कठिनाई कम्पोजिंग, टाइपराइटर आदि की जाती रहेगी। इस संशोधन से मात्रा का रूप बिलकुल नहीं बदलता, केवल उसकी व्यवस्था में थोड़ा-सा अन्तर आ जाता है। कम्पोजिंग तथा टाइपराइटर आदि की दृष्टि से किसी मात्रा को वर्ण के पीछे या आगे कम्पोज या टाइप करना एक-सा ही है, यदि वह मात्रा वर्ण से सटकर नहीं लगती। हिन्दी-टाइप-फाण्ट में फिर इस मात्रा का टाइप भी करन (kern) रूप में ढलने के स्थान पर पूर्णरूप से ढल सकेगा और अधिक स्थायी रह सकेगा, क्योंकि फिर उसमें इस प्रकार का रिक्त स्थान छोड़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी, जो इस मात्रा को वर्ण से सटाकर लगाने में आवश्यक है। साथ ही जिस वर्ण में यह मात्रा लगती है, उस वर्ण के करन रूप की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। संशोधित लिपि में यह मात्रा वर्ण के साथ इस प्रकार लगेगी—किस, जिस, रिस। इससे एक लाभ यह भी है कि हस्तलेख में इस बात की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है कि मात्रा वर्ण से सटकर लगी है अथवा हटकर।

(९) इसी प्रकार ई, ए, ऐ, ओ, औ तथा अं की मात्राएँ भी वर्ण के आगे थोड़ा हटकर लगाई जाएँ। ऐसा करने का कारण और उसके लाभ नियम ८ के समान हैं। लिखते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय ये मात्राएँ वर्ण से मिलाकर भी लगाई जा सकती हैं। इस प्रकार संशोधित लिपि में इन मात्राओं के निम्न रूप होंगे फली, मेल, तैल, कोस, कौर, तथा पंत। इस प्रकार उक्त सातों मात्राओं के रूप में बिना कुछ परिवर्त्तन किए ही केवल उनकी थोड़ी-सी व्यवस्था बदल देने से ही हमारा सारा कार्य चल जाएगा।

(१०) उ, ऊ तथा ऋ की मात्राएँ वर्ण के नीचे लगती हैं। इन मात्राओं की इस स्थिति के कारण कम्पोजिंग तथा टाइप आदि में बड़ी कठिनाई पड़ती है। अतएव इन तीनों मात्राओं को भी (इनका रूप अक्षुण्ण रखते हुए) वर्ण के आगे थोड़ा हटकर लगाया जाए। यह बात बिलकुल नई ही नहीं है, प्रचलित लिपि में र में ऊ की मात्रा इस प्रकार आगे लगती है जैसे रूप में। इससे एक लाभ तो यह होगा कि वर्ण के नीचे मात्रा लगने से दो पंक्तियों के बीच जो व्यर्थ की अधिक जगह छोड़नी पड़ती है, वह छोड़नी नहीं पड़ेगी और दूसरे यह तीनों मात्राएँ भी अपने स्वतन्त्र और पूर्ण रूप में ढल सकेंगी। इस प्रकार इनके रूप होंगे— प ु ल (पुल), फ ू ल (फूल) तथा म ृ ग (मृग)।

(११) इसी प्रकार चन्द्रबिन्दु को भी वर्ण से जरा आगे हटाकर इस प्रकार लगाया जाए—ह ँसना, भ ँवर।

(१२) अँगरेजी ध्वनि जो कि all इत्यादि शब्दों में सुनाई देती है, तथा आजकल हिन्दी में आँ के द्वारा प्रकट की जाती है, वह भी केवल ॉ रूप में ढलकर वर्ण के आगे लगाई या टाइप की जा सकती है।

(१३) अरबी-फारसी के हिन्दी में प्रचलित शब्दों में उनकी विशिष्ट ध्वनि को स्पष्ट करने के लिए हिन्दी-वर्णों के नीचे बिन्दी लगाने का प्रचलन है। किन्तु नियम ८ की सारी सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए यह बिन्दी भी वर्ण से जरा आगे हटकर लगाई जानी चाहिए। इस प्रकार प्रचलित लिपि में 'क़लम' और 'ज़ालिम' शब्दों के संशोधित लिपि में 'क ़लम' और 'ज ़ालिम' रूप होंगे।

(१४) अब संयुक्ताक्षरों पर विचार कीजिए। हिन्दी में क, ख, ग, घ, च, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, ल, व, श तथा स इतने अक्षर आधे भी लिखे जाते हैं, अतः संयुक्ताक्षरों में इनके प्रचलित आधे रूपों का ही व्यवहार हो। शेष अक्षरों के आधे रूप उनमें हल् लगाकर प्रकट किए जाते हैं जैसे उच्छ्वास, पट्ठा आदि। अतएव संशोधित लिपि में भी उनमें ऐसा ही किया जाए, किन्तु प्रचलित लिपि में हल् चिह्न अक्षरों के नीचे लगता है और हम अक्षरों के नीचे मात्रा आदि किसी भी चिह्न लगाने के पक्ष में नहीं हैं, अतः अन्य मात्राओं की भांति हलंत भी अक्षर के आगे ही लगाया जाए। लिपि में सुन्दरता लाने के लिए यदि हलन्त की तिरछी रेखा का रूप बदलकर पड़ी सीधी रेखा कर दी जाए तो कोई विशेष हानि न होगी, किन्तु लिपि-सौष्ठव बढ़ जाएगा, इस प्रकार प्रचलित लिपि में विद्या, लट्ठा, सिद्धि, बाह्य आदि शब्दों के संशोधित लिपि में विद-या, लट-ठा, सिदि-ध, बाह-य रूप होंगे।

(१५) अब ए की स्थिति पर विचार किया जाए। संयुक्ताक्षरों में यह अक्षर वर्ण के ऊपर तथा नीचे (कभी-कभी सीध में ही) लगता है जैसे कर्म और भ्रम आदि में। इसके लिये भी वही नियम बनाया जाए कि यह अक्षर लगते समय वर्ण से जरा पहले हटकर लगाया जाए जैसे कर्म, कीर्ति में। नीचे लगाने के लिये इसके एक रूप के टाइप और बनाया जाए, जो यथास्थान अर्द्धवर्ण के जरा हटकर लगाया जाए। इस प्रकार इसके रूप यह होंगे— क्रम (क्रम), व्रत (व्रत), श्री (श्री), ट्रक (ट्रक) तथा राष्ट्र-र (राष्ट्र), आदि।

अब हमारी वर्णमाला में उक्त सुधार करने पर निम्न १६ मात्राएँ तथा ५७ वर्ण (३३ पूर्ण तथा २४ अर्द्ध) रह जाते हैं—

ा, ि, ी, ु, ू, ृ, ॅ, े, ै, ॉ, ो, ौ, ं, ः, ँ, ्, ़,
अ, क, क, ख, ख, ग, ग, घ, घ, च, च, छ, ज, ज, झ, झ,
ट, ठ, ड, ढ, ड़, ढ़, ण, ण, त, त, थ, थ, द, ध, ध, न, न,
प, प, फ, फ, ब, ब, भ, भ, म, म, य, य, र, र, ल, ल,
व, व, श, श, स, स, ह।

(१६) टाइप राइटर को पूर्ण बनाने के लिए उपर्युक्त लिपि में निम्नलिखित २३ चिह्न और सम्मिलित करने होंगे—

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ०, ।, ,, ;, (,), !, ?,), ऽ, =, -, —, ॥,

इस प्रकार सब मिलाकर ये ९६ चिह्न संख्या में श्रीनिवासजी के १०८ से कम पर कार्य में उनसे अधिक पूर्ण तथा आकृति में परिवर्तन की दृष्टिकोण से निर्दोष हैं।

इस संशोधित लिपि से निम्नलिखित लाभ होंगे—

(१) वर्णमाला में से १३ अक्षर (इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ङ ञ ष क्ष त्र ज्ञ) कम हो जाएँगे। फिर भी ध्वनि-विज्ञान की दृष्टि से संशोधित लिपि उतनी ही पूर्ण बनी रहेगी जितनी वर्त्तमान लिपि। साथ-ही-साथ लिपि सीखने में समय कम लगेगा।

(२) ष, क्ष, त्र, ज्ञ, के कम हो जाने से सीखनेवाले को अपनी स्मरण-शक्ति पर व्यर्थ का बोझा नहीं लादना पड़ेगा। क्योंकि व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो उपर्युक्त अक्षरों तथा श, क्ष, त्र और ज्ञ की ध्वनियों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

(३) उपर्युक्त संशोधन हो जाने पर भी दोनों लिपियों परस्पर इतनी समान होंगी कि किसी एक को जाननेवाले के लिए दूसरी लिपि दृष्टिपात-मात्र से परिचित और सुगम प्रतीत होगी।

(४) हिन्दी टाइप का फाण्ट जो आजकल प्रायः ४०० ४५० टाइपों का होता है, घटकर केवल लगभग १०० टाइपों का ही रह जाएगा। इससे (क) फाण्ट ढालने में बड़ी सुविधा होगी, (ख) कम्पोजिंग में बड़ी सरलता आ जाएगी। अक्षर फल कम्पोजीटरों को अपने सामने चार-चार केस रखकर कम्पोज करना पड़ता है, संशोधित लिपि में केवल एक ही केस से काम चल जाएगा, (ग) कुछ मूल्य में भी कमी होगी, (घ) प्रेस का स्थान कम घिरेगा (ङ) कम्पोजिंग की पूर्वापेक्षा अधिक शीघ्रता आ जाएगी (च) प्रूफ की

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

अशुद्धियों की संख्या भी घट जाएगी क्योंकि अधिकांश अशुद्धियां जटिल संयुक्ताक्षरों के कारण होती हैं।

(५) वर्णों के नीचे सारी मात्राओं का स्थान बदल देने के कारण अब दो पंक्तियों के बीच अधिक स्थान नहीं छोड़ना पड़ेगा—जितना कि आज-कल टाइपिंग आदि में छोड़ना पड़ता है।

(६) हिन्दी फाण्ट के सारे टाइप अपने पूरे रूप में ढल सकेंगे। उनके करन रूप की आवश्यकता नहीं रहेगी। ऐसा होने से टाइपों की मजबूती बहुत बढ़ जाएगी। इसके साथ-ही-साथ साधारण प्रेसों में फर्मा चेज में कसते समय जो छोटी-छोटी मात्राएँ टूट जाती हैं, निकल जाती हैं, वह असुविधा भी अब न रहेगी।

(७) टाइपराइटर आदि की दृष्टि से भी संशोधित लिपि को वह सब लाभ प्राप्त हो सकेंगे, जो अँगरेजी टाइप राइटर को प्राप्त हैं। क्योंकि कैपिटल तथा साधारण अक्षरों तथा शेष सारे चिह्नों को मिलाकर अँगरेजी टाइपराइटर १२ अक्षर टाइप कर सकता है जब कि संशोधित लिपि में पूरे तथा आधे सब मिलकर ५७ अक्षर तथा १६ मात्राएँ हैं, तथा गिनती आदि चिह्नों को मिलाकर यह संख्या ९२ तक पहुँचेगी और यदि यह संख्या ९२ से अधिक पहुँचे तो कम प्रचलित अक्षरों के केवल आधे रूप ही टाइपराइटर में रक्खे जा सकते हैं, जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर आ की मात्रा लगाकर पूरे रूप में व्यवहार किया जा सकता है।

(८) लिखने में संशोधित लिपि अधिक सुविधापूर्ण होने पर भी पुरानी लिपि के समान ही प्रतीत होगी।

इस प्रकार संशोधित लिपि में हमारे लेख की प्रारम्भिक कुछ पंक्तियों का निम्न रूप होगा। पाठक देख सकेंगे कि प्रचलित लिपि और संशोधित लिपि में कोई भी ऐसा विशेष अंतर नहीं है, जो उनको फिर से सीखना पड़े—

हिन्दी भाषा भाषी जनता में पिछले कुछ वर्शों से लिपि सुधार की चर्चा चल रही है। स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात हमारे अनेक प्रांतों और देशी राज्यों ने हिन्दी को सरकारी भाशा स्वीकार कर लिया है और संयुक्त प्रांत की सरकार ने श्रीयुत-नरेन्द्र देव जी के तत्वावधान में अेक लिपि-सुधार-समिति की योजना की है। काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा ने भी अेक सात विद-वानों की समिति स्थापित की थी और अिस समिति ने काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के सदस्य श्रीनिवास जी के द-वारा प्रति संस्कृत देव-नागरी-लिपि को स्वीकार कर प्रचारार्थ वितरित किया है। अैसा प्रयत्न किया जा रहा है कि अिस प्रति संस्कृत देवनागरी लिपि को श्री नरेन्द्रदेव समिति द-वारा स्वीकार करा लिया जावे और तब सरकारी दबाव से अिसे समग्र जनता के गले अुतार दिया जावे।

मानवी या देवी

श्री कालीचरण चटर्जी, एम० ए०

(१)

उस दिन सुरेश की विद्वत्ता का लोहा सबने माना, जिस दिन उसने अपने वक्तव्य की पुष्टि करते हुए प्रतिपादन किया कि बड़े आदमी की चिन्ताधारा एक-सी होती है। कहां स्काट (Scott) और कहां रसखान; अथच विशुद्ध प्रेम पर दोनों के कथन में आश्चर्यजनक सामंजस्य ह। स्काट लिखता है, "Love is heaven and heaven is love" और रसखान. "प्रेम हरी कौ रूप है, त्यौं हरि प्रेमस्वरूप।"

उसके पाण्डित्य की प्रसिद्धि उसके आने से बहुत पहले हमारे आफिस में पहुँच चुकी थी; फलतः जिस दिन वह किसी शहर से बदली होकर हमारे आफिस में आया, उसी दिन सबकी दृष्टि उसके प्रति आकर्षित हुई। उसकी सौम्य मूर्ति, उसका हँसमुख चेहरा, उसका निरभिमान स्वभाव तथा उसकी सादी वेश-भूषा पर सब लोग मोहित हो गए। अतः सदा से परिचित भीड़ में उसको पहचान लेने में पल भर की भी देरी नहीं हुई। प्रथम परिचय के दिन से हम दोनों छुट्टी के बाद घर वापस आने की राह में साथी होने लगे। न जाने कितने दिन उसको जबर्दस्ती अपने मकान पर ले जाकर अपने अवलम्बनहीन जीवन के एकमात्र साथी, पिताजी के समय के नौकर तथा मेरे एकाधार में मित्र, पाचक, सेवक और संरक्षक सुखराज की बनाई हुई चाय का उसे पान कराया है। दिन बीतते गए। एक दिन उसने भी जिद पकड़ ली कि मुझे भी उसके स्थान पर जाकर चाय पीनी पड़ेगी। अगत्या अपने हाकी खेलने के प्रात्यहिक नशा को छोड़कर उसके साथ जाना पड़ा। उसका बासा था सड़क पर। दरवाजे के पास पहुँचने पर उसने पुकारा, 'पार्वती!' भीतर से अनुच्च कंठ में आवाज आई, 'आई!' एक मुहूर्त के लिए मैं अनमना-सा हो गया; मेरे लिए तो कोई नारी ऐसी उत्कट उत्कंठापूर्वक रा: नहीं देखती!

दरवाजा खोलने की आवाज से चकित होक सामने दृष्टि डालने पर मैं अचम्भित हो गया। न जाने इसका नाम किसने पार्वती रक्खा था। क्या हिमाद्रिसुता त्रिदिव-सुन्दरी पार्वती इतनी सुन्दरी थी? मैं उस सौन्दर्य की सुनहरी प्रतिमा की ओर निगाह नहीं निबद्ध कर सका—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी सुन्दरता से ऐसी ज्योति जगमगाती थी, उसका मुखमण्डल ऐसा प्रदीप्त था कि मैं चकाचौंध-सा हो गया और मेरा मस्तक आप ही आप सश्रद्ध झुक गया। सुरेश के हम दोनों का परिचय करा देने के बाद उसके मधुर कंठ के आह्वान से हम अन्दर दाखिल हुए। मुझे एक साफ और सुसज्जित कमरे में बैठाकर वे अन्य कमरे में चले गए। मैं अकेला बैठा चिन्ता करता रहा, ऐसी अलौकिक सुन्दरता क्या मनुष्य में सम्भव हो सकती है? पार्वती सचमुच मानवी है या देवी?

आफिस की पोशाक बदलकर सुरेश लौट आया और मुझे अन्यमनस्क देखकर उसने प्रश्न किया, "किसके ध्यान में मग्न हो यार?" मैंने शरारतन जवाब दिया, "तुम्हारी पार्वती के!" फिर मुस्कुराते हुए मैंने अपना निष्कर्ष प्रकट किया, "सचमुच तुम भाग्यशाली हो, सुरेश!" इसके बाद मेरी यह बधाई मधुर मुस्कान के साथ ग्रहण करके सुरेश विवाहित जीवन का सुख नाना प्रकार के दृष्टान्तों से समझाते हुए मुझे विवाह करने के लिए प्रलोभित करने लगा, क्योंकि मैं अभी तक अविवाहित था। मैं भी स्वाधीन जीवन की छवि पेश करने जा ही रहा था कि चाय तथा जलपान की सामग्रियां लेकर पार्वती वहां आ गई।

चाय-पान तथा नाश्ता करने के साथ-साथ नाना विषयों पर वार्तालाप हुआ, उससे स्पष्ट विदित हुआ कि पार्वती केवल अनुपम रूपवती ही नहीं है, वरन् उसकी बहुमुखी प्रतिभा, उसका असाधारण ज्ञान तथा उसकी प्रखर बुद्धि के कारण उसके व्यक्तित्व की बराबरी कोई भी रमणी नहीं कर सकती है। मैं उसके तरुण यौवन, उसकी अनोखी सुरूपता तथा उसकी मनुहारी बातचीत से इतना प्रभावित हुआ था कि जब उनसे विदा होकर घर लौट रहा था, तब मेरे मानस में नाना प्रकार के चित्र विद्युत् गति से आए और चले गए।

(२)

कुछ महीनों के बाद। इस बीच में सुरेश के घर पर मैं कई बार जा चुका हूँ। उसके अनुरोध से पार्वती को उसका नाम लेकर ही पुकारता हूँ और वह मुझे भैया कहकर सम्बोधन करती है।

उस दिन शनिवार था। दफ़्तर से लौटते समय सुरेश ने मन्द-मन्द शिरोवेदना की शिकायत की। रात को जब मैं भोजनादि से छुट्टी पा तकिए का सहारा ले पलँग पर अधलेटा पड़ा विचार-वीचियों में उलझ रहा था, उसी समय एकाएक एक छोटा-सा पत्र मिला, जिसमें लिखा था, "भैया, वे बहुत बीमार हैं, तुरन्त यहां आने की कृपा करें।

विनीता—आपकी बहन"

मैं एक प्रवीण डाक्टर को साथ लेकर जब सुरेश के घर पहुँचा, तब सुरेश की दशा बहुत ही खराब थी; बुखार १०५°, सिर में दर्द और कर्ण-मूल के पास सूजन। डाक्टर ने सुरेश की परीक्षा करने के बाद गम्भीर-मुद्रा धारण कर जो राय प्रकट की उससे मेरा कलेजा कांप गया और पार्वती के मुंह से एक कराह—बड़ी तीखी, बड़ी दर्दीली—निकल गई। उनकी राय में सुरेश को जोर का प्लेग हो गया है। दुर्भाग्यवश शहर में उस समय प्लेग शुरू हो गया था। खैर, पार्वती शीघ्र सँभल गई और सेवा की साकार मूर्ति बनकर शान्ति तथा धीरता के साथ पति-देवता की परिचर्या में तन-मन से लग गई। उसकी सेवा-शुश्रूषा में पुनः देखकर मेरे हृदय में पुनः प्रश्न उपस्थित हुआ, पार्वती मानवी है या देवी?

यह कहना अनावश्यक है कि मैं उस रात को वहीं रह गया।

भोर होते ही डाक्टर आए, उन्होंने रोगी को देखा और दवा-दारू का प्रबन्ध कर तथा आवश्यकीय निर्देश देकर चले गए। तब मैं थोड़ी देर के लिए घर वापस आया।

जब मैं दिन के लगभग ११ बजे फिर सुरेश के घर पहुँचा, तब उसकी दशा में कोई परिवर्तन नहीं पाया। पार्वती को स्नानाहार करने के लिए छुट्टी देकर मैं सुरेश के पास बैठ गया। वह उस समय बेहोश पड़ा हुआ था। मैं अपने विचार-सागर में डूबता-उतराता रहा, क्योंकि मुझे एक अजीबोगरीब गोरखधंधा दिखलाई दिया। अगर सुरेश का देहान्त हो गया, तो पार्वती का क्या होगा? मैंने सुना था कि पार्वती के पाणिग्रहण करने के फलस्वरूप उसके आत्मीय-स्वजनों ने उससे मुंह मोड़ लिया था और उसको बन्धु-बान्धवों से सब प्रकार का सम्बन्ध विच्छिन्न करना पड़ा था। वस्तुतः संसार में पार्वती की सहायता करनेवाला कोई भी नजर नहीं आता था।

मेरे मन में इसी प्रकार की भावनाएँ घूमने लगी ही थीं कि सुरेश ने अचानक आंखें खोल दीं और विस्फारित नेत्रों से इधर-उधर ताकने लगा; ऐसा लगा कि वह कुछ बोलना चाहता है, परन्तु बोल नहीं सकता। एक छोटी टेबिल पर रक्खा हुआ अनार का रस उसके मुंह में डालने के पश्चात् वह मेरा एक हाथ अपने हाथों में दबाकर अनुनय-विनय भरे तथा विकृत कंठस्वर में धीरे-धीरे बोला, "शंकर, अब तो मैं चल रहा हूँ भाई, पार्वती को तुम्हारे ही हाथ में सौंप रहा हूँ; मुझे विश्वास है, तुमसे उसकी मान-मर्यादा की रक्षा होगी।" फिर वह थके बटोही-सा अचेतन होने लगा; कुछ क्षण मौन रहकर और थोड़ा-सा अनार का रस पीकर फिर बोला, "वचन दो शंकर, उसकी निगरानी करोगे।" अगर तुम 'ना' करते हो, तो मैं शान्ति से मर भी नहीं सकता।" अब वह अधिक अवसन्न दिखाई दिया और उसकी दोनों आंखों से अश्रुधारा बह निकली। आंसुओं से मेरा गला भी भर आया था। अपने को सँभालकर मैं उसके मुंह पर झुककर प्राणपण से बोला, "मैं पार्वती की पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ, सुरेश; आज से वह मेरी सगी बहन हुई।" सुरेश का उद्वेग-कातर मुख प्रसन्नता से खिल गया। उसने गंभीर शान्ति के साथ दोनों आंखें बन्द कर लीं, केवल एक बार 'पार्वती' शब्द उसके मुंह से निकला। सन्नाटा छाज मृत्यु-पथ के पथिक को विराट् अन्धकार के बीच प्रकाश की क्षीण रेखा दिखलाई दी—पार्वती की संरक्षता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की समस्या सुलझ जाने पर उसको यह समाचार देने का सन्तोष उसके परितृप्त चिन्तालेशहीन अथच क्षीण कंठ-स्वर में निकल आया 'पार्वती' इस अन्तिम शब्द में।....

उसी समय डाक्टर आया और उसकी नाड़ी देखकर विषण्ण अस्फुट स्वर में बोला, "हार्ट बहुत कमजोर है; हार्टफेल होने का अन्देशा है; रोगी बिलकुल हिलने न पाए।"

दफ्तर के कुछ लोग आज सुरेश के मकान पर रह गए थे, इससे मेरा साहस बना रहा।

दिन बीता, सन्ध्या हुई; इस समय ऐसा अन्धकार था कि लगता था जैसे पहर भर रात बीत गई हो। धीरे-धीरे रात बढ़ती गई और मृत्यु-सी निस्तब्धता भी उसके साथ भयानक होती गई। डाक्टर फिर आया; उसने हजार कोशिशें कीं, तरह-तरह के उपचार किए, परन्तु सुरेश की दशा न सुधरी—न सुधरी। मुर्गे के बांग देने के बहुत पहले अचेतना ने आकर उसे घेर लिया; देखते-देखते वह महा-निद्रा में सो गया। पार्वती चीख के साथ मूर्च्छित होकर वज्राहत वल्लरी जैसी टूटकर असहाय गिर पड़ी—प्राणहीन पति के वक्षस्थल पर।

(३)

सुरेश की दाहक्रिया समाप्त कर पार्वती को उसके स्थान पर पहुँचा दिया और सुखराज को उसकी देख-रेख में छोड़कर जब मैं अपने मकान पर पहुँचा, उस समय पर्याप्त दिन निकल चुका था। पूर्व दिवस के परिश्रम से शरीर अत्यन्त थक गया था, इस कारण लेटते ही सो गया। जब नींद टूटी तब गिर्जे की घड़ी में ११ बज रहे थे। अतः मैं चौंककर उठ बैठा। याद आया आज दफ्तर जाना पड़ेगा। विगत रात्रि की घटना एक-एक कर आंखों के सामने उदय होने लगी। आज से सुरेश आफिस से लौटते समय मेरे साथ नहीं रहेगा। हृदय के अन्दर एक अजीब शून्यता एवं नीरसता का अनुभव किया। चुप बैठा रहकर मैं विचारों का ताना-बाना बुनता रहा। पार्वती की क्या दशा होगी? सुरेश उसको मेरे हाथ सौंप गया है सही, किन्तु वह है युवती तथा सुन्दरी। उसके साथ एक मकान में रहना लोगों की निगाह में निश्चय निन्दनीय होगा—वे लोग अनुचित सम्बन्ध की कल्पना करेंगे। किन्तु दूसरे मकान में रहने से कौन उसकी निगरानी करेगा? मेरे पास धन का अभाव नहीं है। अन्त में यही मन में तय किया कि उसको अपने एक गरीब नातेदार के यहां रखवा दूंगा, मासिक काफी रुपए दे देने से पार्वती को रखने में उसको कोई आपत्ति हो नहीं सकती। इस प्रकार चिन्ता-व्यस्त होकर शय्यात्याग किया और नहा-धोकर पार्वती के मकान की ओर चल दिया।

सुरेश के निधन का समाचार दावानल की तरह तुरन्त शहर भर में फैल गया था। और उस दिन उसकी स्मृति में दफ्तर बन्द रहा।

मुझे देखते ही पार्वती की अन्तर्वेदना प्रज्वलित हो उठी और वह बिलख-बिलख कर कर रो पड़ी। इस सद्य-विधवा को सान्त्वना देने की भाषा ढूंढ़े नहीं मिली। जो सर्वस्व खो बैठी है उसको निस्सार वाक्यों की घटा से आश्वासन देने का प्रयत्न सर्वथा व्यर्थ ही होता है; परन्तु मेरे कंठ से कुछ भी नहीं फूट सका। उसके चेहरे की तरफ ताकते ही मेरी आंखें सजल हो गईं। एक ही रात में बेचारी का चेहरा उतर गया था, तिस पर भी उस समय उसकी सुन्दरता अतुलनीय थी।

वही पहले-पहल बोली। लगा इस दारुण दुःख में भी वह अपने भविष्य के सम्बन्ध में सब कुछ चिन्तन कर चुकी है, परन्तु किसी निश्चित सिद्धान्त पर पहुँच नहीं पाई। मेरा प्रस्ताव सुनकर उसने मुझे भली भांति जता दिया कि उसे अर्थ की चिन्ता नहीं है; क्योंकि उसके पास जो जेवर और संचित अर्थ है, उससे एक बेवा का जीवन-निर्वाह येन-केन-प्रकारेण हो ही जाएगा—उससे अन्त समय तक रूखी रोटियों तथा मोटे कपड़ों का सहारा मिल जाएगा। अपने को नियोजित रखने के लिए वह शिक्षयित्री का काम भी अवश्य कर सकती है; किन्तु विश्व-ब्रह्माण्ड में उसका 'अपना' कहने को कोई नहीं रहा। उसकी दशा हृदयंगम कर अब मुझसे रहा नहीं गया; कुछ खिन्न होकर दीन स्वर में बोला, "मैं तो हूँ पार्वती; मेरे हाथ में ही तो सुरेश तुम्हें छोड़ गया है। तुम क्या मुझ पर बेखटके निर्भर नहीं कर सकती हो?" पार्वती को मानो मझधार में सहारा मिल गया। स्नेह-निविड़ दृष्टि उठाकर उसने साग्रह कहा, "मैं जानती हूँ भैया, तुमसे मुझे कोई हानि नहीं पहुँच सकती, परन्तु तुम्हारा गलग्रह—तुम्हारे मुक्त जीवन-पथ पर एक रोड़ा-सा नहीं होना चाहती।"

अन्त में यह व्यवस्था हुई कि मैं अपने मकान ही में रहूँगा, परन्तु सुखराज पार्वती के पास रहेगा; आवश्यकतानुसार मैं उसे देख जाया करूँगा। इस प्रस्ताव से सुखराज पहले सहमत नहीं हुआ; कहा कि मुझे छोड़कर वह कहीं भी नहीं रह सकता। किन्तु जब उसको असाधारण परिस्थिति समझा दी और यह भी बताया कि उसको हर रोज मेरा दर्शन होता रहेगा, तब वह राजी हुआ। ऐसा प्रबन्ध स्थिर हो जाने से मेरे सिर पर से मानो एक भारी बोझ उतर गया और पार्वती के नयनों में कृतज्ञता के आंसू छलछला आए।

पार्वती से भोजन करने के लिए बार-बार अनुरोध कर तथा सुखराज से पार्वती को अपनी लड़की समझकर सब तरह से उसकी देख-भाल करने की ताकीद कर और शाम को फिर आने की प्रतिश्रुति देकर उस समय के लिए मैं विदा हो गया।

(४)

काल-चक्र अपनी गति से चल रहा था। तीन महीने पश्चात् की घटना है। पार्वती का शोकावेग कुछ शान्त हो चला था। मैं प्रतिदिन अपराह्न उसे देख आता; अनेक दिन उसके आग्रह से नैश-भोजन उसी के यहां करना पड़ता। इसी तरह परस्पर की घनिष्ठता बढ़ती गई। पहले कमीज की बटन टूट जाने से मैं स्वयं एक नई लगा लेता, अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमीज पार्वती के पास भिजवा देता। ऐसे छोटे-मोटे कामों के लिए वह मेरे समीप अत्यन्त प्रयोजनीय हो गई थी; उसके साथ मेरे मानस-चित्र रंग बदलते जा रहे थे। सुखराज अब मेरे पास था नहीं, जिसके साथ बातचीत कर दिल बहलाता। नए रुटिकरा का सम्बन्ध पैसे के साथ था; वह अपना निर्दिष्ट काम कर चला जाता। तीसरे पहर मेरे भोजन की कमी पार्वती सूद-दरसूद पूरी कर देती। उसको इतना समीप पाकर मेरी जवानी की उद्दाम लालसा कभी-कभी थिरक उठती—ऐसा भासता मानो भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता से दूर—बहुत दूर भागता जा रहा हूँ, सावन-भादों के तीव्रगामी नद-सा। घंटों सोचता रहता, यह तीव्र गति कहां जाकर रुकेगी? किन्तु वह तेजस्विनी सती इतने असंकोच से—इतनी विश्वासपूर्ण निर्भर मुद्रा से मेरे पास आ खड़ी हो जाती कि सुरेश की अन्तिम आर्त प्रार्थना मूर्त होकर मानो मेरे समक्ष उपस्थित होती और मैं लज्जा से गड़ जाता एवम् मेरे अन्दर प्रश्न उठता, पार्वती मानवी है या देवी? खैर, इसी तरह से उसका अटूट विश्वास और सुरेश की विनती मुझे अन्याय के हाथ से बचाए रही।

(५)

शनैः शनैः तीन साल व्यतीत हो गए। इस नातिदीर्घ समय के अन्दर दैनंदिन जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। कुछ दिन से मैं जुकाम से व्याकुल था। उस दिन आफिस ही में मेरा मस्तक मारे दर्द के फटा जा रहा था। जब घर पहुँचा, उस समय जोर का बुखार था और बदन भर में व्यथा थी। समझा 'फ़्लू' ने मुझे दबा लिया है; खड़े होने की भी शक्ति नहीं थी। कम्बल ओढ़कर अपने बिछावन पर लेट गया और कुछ क्षण में आंखें लग गईं। रुटिकरा ने आकर जब कहा—"रसोई परोसूं सरकार?" तब मेरी नींद टूटी। नहीं, मैं बीमार हूँ, कहकर उसे बिदा किया। सिर की यंत्रणा से छटपटाते समय पार्वती की याद आई।

दूसरे दिन तड़के सुखराज आया। विगत दिवस मेरे पार्वती के मकान न जाने का कारण जानकर वह बहुत ही परेशान हुआ। थोड़ी देर बाद एक कोमल हस्त के सयत्न स्पर्श से आंखें खोलकर कौतूहल की दृष्टि से देखा, पार्वती मेरे ललाट पर अपने कर-स्पर्श द्वारा उत्ताप का अनुमान कर रही है। इससे पहले पार्वती मेरे मकान पर कभी नहीं आई थी, न उसने कभी मेरा शरीर ही स्पर्श किया था। कितनी व्याकुलता उसको आज मेरे यहां घसीट लाई है, इसे अनुमान कर मैंने अपूर्व पुलक का अनुभव किया। दफ़्तर से एक महीने की छुट्टी ले ली और पार्वती तथा सुखराज बारी-बारी मेरी परिचर्या में लग गए। रात्रि के समय पार्वती को घर जाने के लिए मैंने हठ किया; लेकिन उसने कोई आपत्ति नहीं सुनी। विनीत भाव से बोली, "अगर तुम खदेड़ भी दोगे भैया, तो मैं नहीं जाऊँगी; तुम्हारे मकान पर रहने का अधिकार मुझे है।" और क्षण भर के लिए पार्वती के अधरों पर लघु-विकसित हास झलक पड़ा। प्यासे चातक के लिए स्वाति की बूंद के समान इस वाक्य ने मेरे हृदय को आशा और आनन्द से प्लावित कर दिया। सुतरां रात में उसके मकान पर पहरा देने के लिए अपने नौकर को भेज दिया।

(६)

पार्वती की ममता-भरी सेवा पाकर मैं शीघ्र स्वस्थ हो गया। वृद्ध सुखराज को वह अधिक काम करने नहीं देती थी। सुखराज डाक्टर को मेरी बीमारी का हाल बताने आता या कभी-कभी बुला लाता, दवाखाने से दवा लाता और जिस समय पार्वती स्नान एवं भोजन करने जाती उस समय वह मेरे पास बैठा रहता। पहले-पहल सुखराज को पार्वती के साथ मेरा मिलना-जुलना पसन्द नहीं किया था, किन्तु मेरी बीमारी के बाद से उसका मनोभाव पूर्णतया बदल गया। अब वह पार्वती के प्रति मुझसे अधिक श्रद्धा रखने लगा। उसकी सेवापरायणता, उसके ममत्वबोध आदि सद्गुणों का मुक्तकंठ से वर्णन करने में सुखराज पंचमुख हो जाता।

उस दिन दोपहर को बरामदे में मैं आरामकुर्सी पर लेटा हुआ था। शरत्काल का शान्त सुनील अनन्त आकाश अंशुमाली की किरणों से झिलमिला रहा था; एक अपूर्व मनोहरता चतुर्दिक् व्याप्त थी। एक अनजान चिड़िया अद्भुत आवाज करती हुई उड़ गई। मैं पार्वती के बारे में विचारमग्न था। सहसा मेरे सामने पिछले दिनों की बातें चित्रपट जैसी नाचने लगीं। मुख्यतः मुझे आरोग्य करने के लिए पार्वती का प्राणपण प्रयास मेरी चिन्ता का विषय था—न सेवा-यत्न में कुछ भी त्रुटि थी, न आन्तरिकता का अभाव था; तथापि सब कामों को वह थोड़ा-सा व्यवधान रखकर करती रहती। अब प्रतिमुहूर्त उसको पाने के लिए मैं पागल हो रहा था—मेरे मानस में हाहाकार मचा हुआ था। अन्दर की उन्मत्तता को दबोच रखना असाध्य मालूम हुआ; अब तक जो नियन्त्रण अपने ऊपर करता आया हूँ, उसमें बरबस असफल हो जाने से नस-नस ताण्डव ने उग्र वेग धारण किया। नदी के किनारे खड़े होकर प्यासे रहने की चेष्टा असम्भव-सी लगी।.... आदत हो जाने के बाद से मुझे सर्वदा यह भय लगा रहता था कि किसी दिन वह घर वापस जाने का प्रस्ताव करेगी। उसके चले जाने से कितना सूना लगेगा! उसको जबरदस्ती रोकना भी तो कठिन है। तात्पर्य यह है कि मेरा दिल इसी तरह सदा-सर्वदा उलझने लगता; जिस समय मैं चिन्ता-ग्रंथियों का अन्त नहीं पाता, उस समय मैं दीर्घ निश्वास छोड़कर उन बातों को विस्मृति के गर्भ में डालने देने की चेष्टा करता, किन्तु सर्वथा असफल ही रहता।

हां, उस दिन जब मैं इसी प्रकार की भावनाओं के ऊहापोह से विकल हो रहा था, उस समय एक तश्तरी में कुछ अंगूर लेकर पार्वती मेरे पास खड़ी हो गई। इधर-उधर की बातों के उपरान्त उसने कहा, "भैया, मैं अब घर वापस जाऊँगी।" हाय-हाय जो कुछ सोचा था, आखिर सच निकला!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी इन्द्रियां पल भर के लिए निस्पंद हो गईं—मानो आकाश पर से एकबारगी नीचे गिर पड़ा। उसके बाद ही मेरा हृदय इस प्रस्ताव के विरुद्ध विद्रोह-घोषणा करने के लिए तैयार हो गया। हृदय के उद्वेग को दमन कर उसका एक हाथ अपने दोनों हाथों में दबा लिया और उसको अपनी ओर खींचता हुआ व्याकुल अथच कांपते हुए दुलार-भरे स्वर में पुकारा 'पार्वती।' पार्वती ने अपने को छुड़ाने की कुछ भी कोशिश न की, न वह सकपका ही गई, मानो ऐसी अनहोनी बात की उसने पहले से कल्पना कर रक्खी थी। सुतरां वह अनायास मेरे निकट सरक आई और दूसरा हाथ मेरे मस्तक पर रख अत्यन्त शान्तिपूर्ण कंठ से उत्तर दिया, 'भैया।' बस उसके मुंह के इसी एक-मात्र शब्द ने मंत्र-सा काम किया। उस समय मेरी नसों में एक अजीब लहर-सी दौड़ गई। मैंने उसका हाथ छोड़कर और अपने दोनों हाथों से अतृप्त कामवासना-अंकित मुंह ढंककर कातर भाव से कहा, "मुझे क्षमा करो पार्वती, मुझे क्षमा करो।.....बोलो पार्वती तुमने मुझे क्षमा कर दिया?" उसने शान्त तथा संयत स्वर में उत्तर दिया, "मैं तो तुम्हारी छोटी बहन हूँ भैया, मैं क्या तुमको क्षमा कर सकती हूँ?" थोड़ा रुककर पुनः बोली, "पर फिर भी तुमको दिलासा दिलाती हूँ कि तुम्हें मैंने हृदय से क्षमा कर दिया!" उसकी पदध्वनि की आहट से मैं समझ गया कि वह चली गई, कदाचित् मुझे अकेला रहकर अपनी करनी पर सोचने का अवसर मिल सके।

(७)

हां, पार्वती चली गई। मेरे मन की दशा अवर्णनीय है। मेरी अखण्ड दृढ़ता के सारे बन्धन शिथिल हो गए और मैं अपने ऊपर विश्वास खो बैठा। मेरा हृदय ग्लानि और पश्चात्ताप से भर गया और अपनी दुर्बलता पर झेंप लगी। उस दिन की घटना के बाद पार्वती के पास जाने में भय मालूम होता; किन्तु न जाकर भी रहा नहीं जाता। शाम को टहलने के लिए बाहर निकलकर अन्यमनस्कता से उसी के घर की ओर चल निकलता, उसके बासे के द्वार के सन्निकट उपस्थित होने पर चौंक पड़ता; पर उस समय लौट आना मुश्किल होता। इस प्रकार दिन काटे नहीं कटता। डर लगा रहता कि फिर किसी दिन उसका अपमान न कर बैठूं; क्योंकि मैं अग्रसर होते-होते अब अधःपतन के किनारे पर पहुँच गया था, क्षण-प्रतिक्षण मुझे उसके निचले स्तर में गिरने की आशंका लगी रहती। मैं अपने को रोकने की लाख कोशिश करके भी उत्तरोत्तर उसी ओर बढ़ता जा रहा था। हाय, पार्वती को खोने की अपेक्षा मेरे प्रति पार्वती की श्रद्धा खोना और भी दुःख-दायी था। मैं न सुरेश के साथ विश्वासघात कर सकता हूँ, न पुनीत भातृत्व और भगिनीत्व के प्रिय सम्बन्ध की पवित्रता पर कलंक की छाप लगा सकता हूँ। इस संकटमय चक्कर से निष्कृति पाने का कोई उपाय नहीं ढूंढ़ पाता था। मैंने कई दिन और कई रात अनुतप्त वेदना के आंसू के साथ बेचैनी से बिताए।

उस दिन किसी उपलक्ष में दफ्तर बंद था। मैंने ठान लिया था कि किसी-न-किसी निश्चय पर आज पहुँचना आवश्यक है। रात्रि का समय था। मैं अपने विचारों में डूबा हुआ था। कमरे की निस्तब्धता को भंगकर गिर्जे की घड़ी एकाएक बारह का घंटा बजा उठी। मेरी आंखों में आज मानो नींद आना ही नहीं चाहती थी। मेरे हृदय के अन्दर इस समय भीषण विप्लव मचा हुआ था—मैं घोर चिन्तन में संलग्न था। आखिर मैंने निश्चय किया कि तिल-तिल घुलने की अपेक्षा किसी दूर शहर में भाग जाना ही हितकर है।

आत्म-रक्षा की पर्याप्त शक्ति पार्वती में है और उसके पास उसके अभिभावक रूप से अभिज्ञ सुखराज रहेगा। अतएव उपर्युक्त निश्चय पर अमल करने के लिए पार्वती को मेरे मकान पर आकर रहने के लिए अनुरोधकर और उसे दस हजार रुपए देकर (ताकि उसे दाने-दाने को लालायित होना न पड़े) यह शहर शीघ्र त्याग देना ही उचित प्रायश्चित्त समझा था। इसी हेतु दूसरे दिन अपना पैतृक मकान पार्वती के नाम वसीयत रजिस्ट्री कराकर, एक लिफाफे के अन्दर उस वसीयतनामा और दस हजार रुपए के नोट तथा एक चिट्ठी रखकर सुखराज को दे दिया और उसको समझा दिया कि इसे सावधानता के साथ पार्वती के हाथ पहुँचा देना, मैं कुछ दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ तन्दुरुस्ती ठीक करने की इच्छा से।

तदनन्तर दफ्तर में इस्तीफा भेज दिया और एक सूट-केस में नितान्त आवश्यक चीजें भरकर शाम की ट्रेन में सवार हो लिया। अपने लिए कोई चिन्ता नहीं थी, क्योंकि जो धन मेरे पास अब भी था वह मेरी आवश्यकता से कहीं अधिक था, इसके सिवा मैं एकदम निरक्षर भी नहीं था।

पार्वती को लिखा था, "पार्वती, तुमसे बहुत ही प्रेम करता था और वही प्रेम आज मुझको तुमसे दूर हटा ले जा रहा है। तुम्हारे स्वर्गीय पतिदेव के अन्तिम आदेश को स्मरणकर मैं तुम्हारे बड़े भाई की हैसियत से तुमसे अंतिम अनुरोध करता हूँ कि इस पत्र के साथ जो कुछ भेज रहा हूँ, तुम उसे सादर स्वीकार करना और मेरे मकान पर आकर रहना। सुखराज को तुम्हारे पास ही छोड़ जा रहा हूँ, इस कारण उसके सम्पर्क में मुझे कोई चिन्ता नहीं है। मेरे निमित्त कुछ चिन्ता न करना, न मेरा पता लगाने की कोशिश करना—तुम्हारा कुल श्रम व्यर्थ होगा, क्योंकि मुझे अन्ध-नियति कहां ले जा रही है, मैं स्वयं नहीं जानता। पर तुमसे कितनी ही दूर क्यों न रहूँ, तुम्हें फिर एक बार देखने की अभिलाषा से अवश्य आऊंगा। हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, तुम्हारा जीवन सार्थक हो। तुम्हारा भैया"।

उपसंहार

धीरे-धीरे बारहवां वर्ष समाप्ति की ओर सरक गया। मैं जन्म-भूमि से बिदा होकर सीधा लाहौर चला गया था। कुछ दिनों तक तो मुझे यहां अच्छा नहीं लगता था, जी उचटा-सा रहता था। अतीत की हर्ष-विषाद-विजड़ित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति भी मेरे मानस में समय-समय पर उदय होकर मुझे विचलित कर देती थी।

अचानक एक परिचित मित्र से मुलाकात हुई, उन्होंने मुझे तिजारत करने के लिए उत्साहित किया। उन्हीं की सहायता और सहयोगिता से मैंने एक बड़ी रकम लगाकर काम शुरू कर दिया। सौभाग्यवश मेरा कारबार दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति कर गया और कुछ ही दिनों में यथेष्ट लाभ हुआ। मैंने एक सम्पन्न घर की शिक्षिता तथा रूप-लावण्यमयी ललना के साथ विवाह किया और एक सुरम्य तथा विशाल अट्टालिका बनवाकर अपनी स्त्री के साथ उसमें रहने लगा। मेरी धर्म-पत्नी के शरीर की सुषमा को उसके सरल स्वभाव तथा हृदय की पवित्रता ने और भी चार चांद लगा दिए थे। इसका परिणाम यह हुआ कि मैं पार्वती का मोह क्रमशः भूल-सा गया, मेरे हृदय-पटल पर सिर्फ एक क्षीण अथ च अमिट रेखा रह गई। यथासमय मेरे दो लड़के और एक लड़की हुई।

शान्ति में दिन बीत रहे थे। सहसा एक दिन हवा में भीषण साम्प्रदायिक दंगा का विष फैल गया। हिन्दु स्वभावतः उदार और शान्तिप्रिय होते हैं; वे प्रारम्भ में सोच नहीं सके कि यह दंगा निकट भविष्य में ऐसा भयंकर रूप धारण करेगा और वे कपट और अमानुषिक नृशंसता के शिकार बनेंगे। पाशविक बर्बरता का नग्न-नृत्य देखकर मेरे मुंह से निकल गया, "भगवन्, क्या यही मानवता का—तुम पर अटल निर्भरता का—पुरस्कार है?" खैर, मैंने साम्प्रदायिकता की आग लाहौर पहुँचने से पहले ही अपना कर्त्तव्य निश्चय कर लिया; उस मकान को पूर्वोक्त मित्र के हाथ बेचकर और भार्या तथा बच्चों को लेकर अपने प्रान्त की ओर रवाना हो गया। दूसरे दिन रात बारह बजे अपने शहर के स्टेशन पहुँचा। इस सुदीर्घ समय में शहर के अन्दर प्रधानतः अपने मकान में जो परिवर्तन हुए थे, उनसे मैं अनभिज्ञ था। इसके फलस्वरूप यह हुआ कि रात को मुझे पता नहीं चला कि मेरे ही मकान में स्वयंसेवकों ने हमको ठहराया है। जब सुबह को नित्यकर्म से निवृत्त होकर मकान की ओर आ रहा था तब दूर से देखा कि मेरी स्त्री एक महिला से वार्तालाप कर रही है, जो मुझे देखते ही आश्चर्यचकित होकर बोल उठी, "अरे भैया!" हर्षातिरेक के कारण आगे और कुछ नहीं बोल पाई। मैं भी उद्वेलित और विमूढ़-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। प्रकृतिस्थ होकर उसने मेरे पैर छुए; मैंने जब दीनता से कहा, "यह क्या कर रही हो?" उसने झट उत्तर दिया, "भाई-बहन के शिष्टाचार का जो निर्देश हमारे शास्त्रों ने किया है, उसी का पालन कर रही हूँ।" अब मुझे स्मृति को ताजा करने के लिए चेष्टा नहीं करनी पड़ी; विगत सारी घटनाएँ, जो मेरे मानस-पट पर अंकित थीं, एकदम चमक गईं। उसकी बातें सुनते ही याद हो आया कि वह महिला पार्वती है। अधुना वह अखिललोक की ईश्वरी जगद्धात्री की सजीव प्रतिमा-सी शोक-दुःख-जर्जर धराधाम में अवतीर्ण प्रतीत हुई।

मैंने स्निग्ध स्वर में कहा, "याद है पार्वती, यहां से जाते समय मैंने तुमको लिखा था, 'तुम्हें फिर एक बार देखने के लिए अवश्य आऊँगा? आज मेरा अभीष्ट भगवान् की कृपा से सिद्ध हो गया।'

पार्वती की प्रसन्नता का ओर-छोर न रहा।

× × ×

मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे चले जाने के बाद पार्वती ने आर्त मानव की सेवा में अपने-आपको खपा दिया था। अपने कमरे के एक कोने में अपने पतिदेव की तसवीर स्थापित कर रक्खी थी। वस्तुतः यह चित्र उसके एकान्त के संगी, उसके विषाद का धैर्य और उसके दुःख की सान्त्वना था। उसके काम मुख्यतः पहले उसकी पूजा करना, उसी के साथ हँसना और बोलना, उसके सामने आंखें बन्द करके अपने आराध्य देवता के ध्यान में लीन रहना। उसके बाद दीन-व्यथित और दलित की परिचर्या करती थी; अर्थात् दीन-दुखियों की सहायता करना, रोगियों की सेवा-शुश्रूषा करना, भूखों को खिलाना, अछूतों के जीवन-स्तर को सब प्रकार से उन्नत करना, प्रभृति पुण्य कामों में निरत हो जाती। इन कामों के सिवा छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों को नए ढंग से शिक्षा देती। इन कामों में व्यस्त रहकर उसने हृदय के हाहाकार, मन के विषाद तथा रुदन के उच्छ्वास को अनायास ही अपने अधीन कर लिया था। यह सब देख-सुनकर वही पुराना प्रश्न फिर सामने उपस्थित हुआ, पार्वती मानवी है या देवी?

पांच साल पहले वयोवृद्ध सुखराज की जीवन-लीला समाप्त हो गई थी। मुझे एक बार देखने की उसकी अन्तिम इच्छा थी, पर उसकी मनोकामना पूरी नहीं हुई और वह मेरा नाम आखीर दम तक लेता हुआ सदा के लिए चल बसा।

पार्वती ने हमारे परिवार में तीन महीने रहकर मेरी स्त्री को सुगृहिणी बना दिया और मेरे बच्चों को सुशील, शिष्टाचारी और विनम्र। मेरी वनिता उसकी रूप-लावण्य की जीती-जागती मूर्ति के अतिरिक्त उसकी कर्मठता, उसकी स्नेहशीलता, उसकी सहिष्णुता तथा उसकी धर्मपरायणता देखकर उसको आधुनिक जगज्जननी जानकीजी समझकर उसके दिनों-दिन प्रातःकाल पैर छूकर अपने को धन्य समझती थी।

इसके उपरान्त ३-४ महीने तक उसने अपनी चार पांच सहेलियों तथा सहकर्मिणियों के साथ तीर्थ-यात्रा में बिता दिए। बद्रीनाथ से लेकर सेतुबंध तक और द्वारका से लेकर कामरूप तक के किसी तीर्थ-स्थान को उसने नहीं छोड़ा था। मेरे भारतवर्ष की शोचनीय स्थिति की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करने के उपक्रम करने पर उसने उत्तेजित होकर प्रचण्ड दृढ़तापूर्वक कहा था, "भैया, हृदय के गहनतम स्थान में जो सजीव मूर्ति निशिदिन विराजमान है, वही मेरी रखवाली करेगी। भैया, मैं अगर सती-साध्वी हूँ तो कोई भी मेरा बाल बांका नहीं कर सकता। क्या मजाल कि कोई भी मेरा एक केश स्पर्श करे? अगर बलात् किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

ले कर भी लिया, तो ये प्राण नहीं रहेंगे। अपमानित जीवन धारण करने की अपेक्षा भीषण बदला लेकर इन तुच्छ प्राणों को निछावर कर देना ही श्रेयस्कर है।" इस समय उसकी आंखों से अपराजेय और अदम्य आत्म-विश्वास झलक रहा था। एक क्षण रुककर उसने उसी आवेशपूर्ण स्वर में कहा, "हिन्दुस्तान और हिन्दू-जाति में ही केवल सती-साध्वी नारियां या पतिव्रता शिरोमणि स्त्रियां मिलती हैं। आज हमारी माताएँ, बहनें और कन्याएँ ऐसी दृढ़-निश्चयी हो जाएँ, तो नारी-हरण की विकट समस्या आसानी से सुलझ जाए।"

इसके पीछे मेरे स्थान पर पार्वती एक महीना रहकर पुण्यनगरी काशी जी चली गई और वहीं जीवन के अवशिष्ट दिन व्यतीत किए। वहां से एक दिन अकस्मात् एक पत्र मिला, जिसमें और सब बातों के अतिरिक्त पार्वती ने लिखा था, "आपने एक दिन अपनी छोटी बहन को अपना मकान और दस हजार रुपए दान देकर अपने हृदय के महत्व को प्रतिबिम्बित किया था। आज वही बहन अपने बड़े भतीजे को यथासर्वस्व समर्पणकर उसके नाम का एक दानपत्र भेज रही है।.....मेरे जाने का समय हो गया है....आपके चरणों में कोटिशः प्रणाम, भाभी जी को सश्रद्ध नमस्कार और बच्चों को स्नेहाशीष.....।"

गुरु-पूर्णिमा की दोपहर को यह पत्र मिला और उसी दिन शाम को एक तार मिला, जिसमें लिखा था कि आज स्वामी का नाम स्मरण करती हुई महिमामयी पतिव्रता पार्वती जी नश्वर शरीर छोड़कर नित्यधाम में अपने दायित के समीप सिधार गईं।

मेरे स्मृति-पटल पर विगत पचीस वर्षों का चित्र ज्यों-का-त्यों अंकित हो गया। मेरे नजदीक पार्वती अब भी वही प्रहेलिका ही रह गई; मैं बार-बार यही सोचता रहता हूँ, पार्वती देवी थी या मानवी?

प्रोफेसर निकोलस रोरिक की डायरी से—

मङ्गोलों के सतत जाग्रत् गीत

अनुवादक, श्री चन्द्रचूड़, एम० ए०

गीतों में लोक-जीवन की झांकी मिलती है।

यहां हम मङ्गोलों-द्वारा गाए जानेवाले उन गीतों का अभिप्राय देने का प्रयत्न करेंगे जिनकी ध्वनि से उनका सारा देश प्रदेश गूंज रहा है।

(१)

"बादल पहाड़ पर उगनेवाले बोण्डोर्वा के फूल वर्षा होकर भी मुरझा जाते हैं।

योगाचार्य जिसकी उपमा बरखान से दी जाती है, यदि सत्य का पालन न करे तो उसे भी अन्धकारग्रस्त होने में देर नहीं लगती।

गेहूँ की बालियों के एक बार फूटते ही उनके दाने हवा के झोंकों से इधर-उधर बिखर जाते हैं।

योगाचार्य जो एक तरह से हमारे प्रधान अभिभावक होते हैं, सत्य से विमुख होकर विनाश को प्राप्त हो सकते हैं।"

(२)

"वैभवशाली और समुज्ज्वल यह दीप्तिमय विश्व—जिसमें अत्यन्त पवित्र और विस्तारमयी हमारी मातृभूमि। इसकी रचना अनुपम है।

इन पहाड़ों में कितने तो रमणीक उद्यान हैं जिनमें अंगूर की बेलें लगी हुई हैं और इसके देश-प्रेम से भरे गीत यहां के निवासियों को गौरव और उल्लासजनित भावनाओं से बार-बार उत्तेजित करते रहते हैं।

झरने के सतत प्रवाहशील जल में कहीं कीचड़ होता है क्या? सन्तों की वाणी को मिथ्या कौन कह सकता है?

कुएँ का जल प्रकृति से ही पवित्र जल है। भगवान् बुद्ध के धर्म को वंचनामय प्रमाणित करनेवाला ऐसा भी कहीं कोई व्यक्ति हुआ है?"

(३)

"एक चित्रकार ने हाथ में तूलिका ली और पेकिंग चला गया। उसका कौशल देखकर किसी खां (सरदार) ने उसे अपनी लड़की ब्याह दी।

प्रवासी होकर खां का दामाद बनने की अपेक्षा अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[प्रोफेसर निकोलस रोरिक : विश्व-विख्यात रूसी चित्रशिल्पी, कवि और दार्शनिक जिनका गत १३ दिसम्बर को कुलू (हिमालय) की उपत्यका में अपने निवास-स्थान पर तिहत्तर वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। रोरिक के चित्रों और लेखों के अनेक संग्रह निकल चुके हैं जिनकी प्रशंसा कला-मर्मज्ञों ने एक स्वर से की है। यहां हम उनकी डायरी से एक अंश मंगोलिया के लोक-गीतों के सम्बन्ध में दे रहे हैं।]

प्रेयसी के साथ आमोद-प्रमोद में लीन रहना कहीं अच्छा है।

खोर्चिन की प्रेयसी में जो बात पाई जाती है वह खां का दामाद बनने में कहां?

हर पहाड़ की एक चोटी होती है; प्रिय से मिलना पूर्व-निर्धारित होता है। इसके बाद तो और सब कुछ होता ही रहता है।"

(४)

"क्या स्टार्क नामक पक्षी डायमण्ड-सी से मछलियां पकड़ना छोड़ सकता है? क्या अपने दुःखों से मुक्ति पाना सरल है जो निस्सन्देह पूर्व जन्म के कर्मों के परिणाम हैं।

क्या कहीं सारस झील की सभी मछलियों को [illegible] जा सकता है? क्या यह सरल है कि अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फलस्वरूप आए हुए संकटों को बिना भोगे मनुष्य उनसे बच जाए?

जब तुम किसी ऐसे वृक्ष को काटो जिसकी जड़ें दूर तक फैली हुई हों तो ध्यान रखो कि कहीं तुम अपने पैरों पर कुल्हाड़ी न मार लो। ध्यान रखो, यदि तुम देश-विजय करना चाहते हो तो कहीं अपनी ही प्रजा हाथ से न निकल जाए।

'विलो' की सुकुमार टहनियों को विच्छिन्न करते समय इसका ध्यान रहे कि कहीं तुम अपना सर्वनाश न कर लो। किसी दूसरे देश को निर्धन बनाते समय अपनी रक्षा का तुम्हें पहले ध्यान रखना होगा।"

(५)

मेरा अश्व बयान-खँगाई पर्वत के उस पार से लाया गया था। उसकी प्रशंसा बादरगुल्टू के समस्त योद्धाओं ने एक स्वर से की थी।

बादल के एक मनोहर टुकड़े की तरह जब वह वेग से दौड़ता तो उसके पीछे धूल का बादल छा जाता। मेरा वही ऊँचा और श्वेत अश्व आज अचानक कहां चला गया?

मेरे अश्व की आंखें सेब की तरह हैं और उसके कान जैसे प्याले; वह सात फुट तो ऊँचा है। उसकी उपमा किससे दूं!

उसके भेड़िए जैसे कान और उज्ज्वल नक्षत्र की तरह आंखें हैं। उसका रंग बादल की तरह श्वेत है। मेरा अश्व सुन्दर है।

क्या किसी ने भी उसे 'स्टेप्स' के चरागाहों में कहीं छिपा हुआ नहीं देखा है? क्या उसे दुष्ट चोरों-द्वारा ले जाया जाता भी किसी ने देखा?

यदि किसी ने उसे देखा है तो मैं उसे लोमड़ी की खाल का कूर्म (कोट) प्रदान करूँ; और यदि कोई उसे मेरे पास लाए तो मैं उसे व्याघ्र-चर्म का कूर्म दूं।"

(६)

"धन उपार्जित करने में जिसने यथेष्ट श्रम किया उसके धनवान होने में कोई सन्देह नहीं। स्थायी सरकार के स्थापित होते ही वह लोगों का नेता बन सकता है।

ऐश्वर्य और सुख में ही आनन्द है।

ऐश्वर्यवान होने की कल्पना मधुर है। आनन्दोत्सव का आयोजन मधुर है। हम खोशुन प्रान्त के एक ऐसे ऐश्वर्यशाली सामन्त की प्रजा हैं।"

"ऐश्वर्य और सुख में ही आनन्द है।"

(७)

"प्रभु की महिमा और असीम दया के प्रभाव से हम निर्वाण प्राप्त कर उत्तरोत्तर सुखी और शान्तिमय जीवन बिताने लगे। कामनाओं के बीच निरुद्देश्य जीवन [illegible] हुए हमें निर्वाण को भूल न जाना चाहिए।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोधिसत्त्वों का आदर्श और उनका आदेश हमारा पथ-दर्शक बने; उस अवस्था में हम निर्वाण के ठीक मार्ग का अनुसरण कर सकेंगे। बुराइयों के दुसह भार से दबे होने पर भी हमें शाश्वत नियमों का उल्लंघन तो करना नहीं है।

इन नियमों के अनुसार चलने से हममें शक्ति आती है—यह उनकी विशेषता है। मानव होने के कारण ही हम अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ समझे जाते हैं। इसलिए हमें मानव के आदर्श के अनुसार श्रद्धा और भक्ति को तिलाञ्जलि नहीं दे देनी होगी।

यदि कोई धर्म की दृढ़ता पर विचार करे और अक्षम्य मूर्खताओं का प्रतिवाद करता हुआ सन्तों के बतलाए मार्ग पर चले, तो इससे बढ़कर सुख और क्या हो सकता है; कि इस तरह सत्य का मार्ग तो प्रशस्त हो रहा है।

इसकी कल्पना भी कितनी मधुर है कि धर्म का तत्त्व जानकर मनुष्य अपने हृदय की दुर्बलताओं को—राग-द्वेष, मिथ्या आरोप और घृणा आदि को—दूर कर पवित्र मन से शान्ति और पवित्रता को अंगीकार करता है।

यदि कोई समाधिस्थ होकर विचार करे और अपने पूर्वजों के कर्मों का तथा प्रतिक्षण परिवर्तित होनेवाली परिस्थितियों का अनुशीलन करे तो उसके सामने केवल एक विषय होगा—अध्ययन।"

(८)

"आज हमारे आनन्द की सीमा नहीं है और शताब्दियों तक हममें से कोई उस कृतज्ञता को भूल न सकेगा जिसके लिए तुमने हमारा पथ-प्रदर्शन करना स्वीकार किया है—इस भौतिक जगत में हम तो अपना मार्ग ही भूल चुके थे कि सहसा तुमने हमें वह सीधा मार्ग दिखा दिया जिससे हम हीरक (सत्य) के रथ पर आरूढ़ होकर आगे बढ़ सकें।

यदि हम सन्तों के नियमों का पालन करें तो अनेक बुराइयों और दुर्व्यसनों के होते हुए भी लगातार पूर्णता को ले जानेवाले मार्ग का अनुसरण करते हुए हम अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँच ही जायँगे।

यहां तक अर्हतों को भी जिन्होंने महाकारुणिक की कृपा से निर्वाण पा लिया है और जो शान्ति में अवस्थित हैं, इसका ध्यान रखना ही पड़ता है कि कहीं वे संसार की अराजकता के बीच उस शाश्वत आनन्द को खो न बैठें।"

"हे मेरे प्रभु! हम तुमसे आनन्द और शान्ति की याचना करते हैं जिनमें त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म, संघ) की सारी शुभ कामनाएँ अनुप्राणित हों। हमारी दूसरी याचना धार्मिक शासकों और सामन्तों की रक्षा करने तथा उनके परोपकारी एवं शान्तिमय शासन को सुदृढ़ बनाने के सम्बन्ध में है।

तुममें समस्त शुभ एवं अज्ञात, मौलिक विवेकशील नियमों का विकास हुआ है; तुमसे प्रवर्तित होकर ही धर्म और रत्न सूर्य की तरह प्रकाशमान हैं; तुम स्वयं उज्ज्वल चन्द्रमा की तरह शाश्वत निर्मल हो।"

(९)

"पतली-सी नदी जिसके उद्गम के निकट रिमझिम वर्षा हो रही है; पतझड़ में वृक्षों से पुराने पत्ते गिरकर उनमें नई कोपलें और फूल उग आए हैं।

आकाश में बादलों के कारण सूर्य निकल नहीं पाता, उसी तरह जैसे महान् विवेक और ज्ञान भी घृणा एवं अज्ञान-द्वारा कुण्ठित हो सकते हैं।

उज्ज्वल चेलमन (शुक्र) प्रभात का सूचक है। इसी प्रकार बादलों की तरह श्वेत बाल अनुभव और बुद्धि के द्योतक हैं।"

(१०)

"पहाड़ की एक ऊँची चोटी पर उत्तर से लेकर दक्षिण तक वृक्षों, झाड़ियों और जड़ी-बूटियों की शृङ्खला-सी फैली हुई है। यह पहाड़ी दृश्य अत्यन्त सुन्दर है।

पतझड़ होने पर जब उन वृक्षों से उड़कर चिड़ियों के बच्चे चहचहाते हुए हरे-भरे उद्यानों में आश्रय लेते हैं तो उनका स्वागत ही करते बनता है।

ग्रीष्म में हरे-भरे चरागाहों में विविध वर्ण के फूल खिल उठते हैं। उसका चटकीला रंग और शाश्वत विकास देखकर आंखें कृतार्थ हो जाती हैं।

यह ठीक है कि हम विभिन्न कबीलेवाले हैं, परन्तु अपने सामूहिक जीवन में हमने एक स्वर से शान्ति और सौन्दर्य के भार से लदे हुए इन फलों की प्रशंसा में मधुर से मधुर गीत गाए हैं।"

मङ्गोल योद्धाओं में 'शंभल' के गीत विशेष रूप से प्रचलित हैं। इसीलिए जिस तरह शताब्दियों पहले चंगेज खां के समय में वैसे ही आज भी उनका आमंत्रण-गीत मङ्गोलिया के पहाड़ों में सुनाई देता रहता है—

"मङ्गोल वीरो! यदि हमें शंभल की तपोभूमि में पुनः जन्म लेने के लिए मृत्यु का भी आलिंगन करना पड़े तो उसके लिए तैयार रहना हमारा धर्म है।"

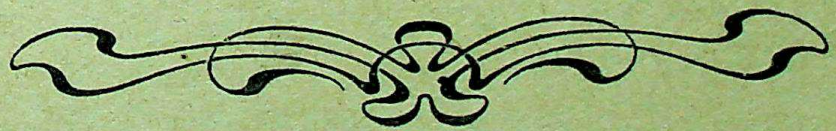

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस दिन

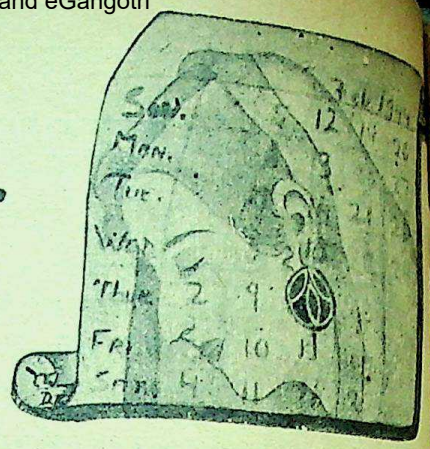

सन्तोष नौटियाल

(गतांग से आगे)

(१८)

मैंने उसका सिर अपनी छाती से लगा लिया और अपनी ठुड्डी उसके सिर पर रख दी। वह कुछ देर चुपचाप मानो कुछ सोचती रही फिर बोली, 'यह सब क्या हुआ था?'

मैंने उसे चुप रहने के लिए कहा, केवल गाड़ी की ओर उँगली उठा दी। सहसा वह बोली, 'पिता जी कहाँ हैं?'

मैं यह सोचकर चुप रहा कि कहीं उन्हें वैसी दशा में देख-कर वह कहीं फिर अचेत न हो जाए। वह मेरे उत्तर के लिए नहीं ठहरी। ज्यों ही उसने घूमकर देखा, वह चीख पड़ी, 'पिता जी...!'

वह बूढ़े के शरीर से लिपट गई और उस निश्चल शरीर पर झुक गई। उसे इस तरह देख मैं उसकी ओर लपका और उसे ऊपर उठाया। जैसा मुझे डर था, वही हुआ। वह फिर बेहोश हो गई थी। मैंने जल्दी से उसे फिर लिटाया। मुँह पर पानी के छींटे दिए और हवा करने लगा। उसके पिता जी वैसे ही निश्चेष्ट पड़े थे। उन्हें देख-देखकर मुझे चिन्ता हो रही थी। मैं बार-बार बेचैनी से सहायता के लिए इधर-उधर देखता था परन्तु कहीं कुछ सहारा दिखाई नहीं देता था। सब अपनी दौड़-धूप में लगे थे। उधर यदि उस लड़की से ही कुछ बातचीत करता और दोनों मिलकर कुछ करते—यद्यपि करने को शायद ही कुछ था—वह तो फिर अचेत हो गई थी। मैं अपने ऊपर झुँझला उठा।

'बेकार की झंझट मोल ले ली। भला मैं क्यों पड़ा था वहाँ? मेरा वहाँ क्या था?' जी में आया कि छोड़-छाड़-कर चल दूँ। फिर ध्यान आया कि उन्हें वैसी अवस्था में छोड़ना अन्याय होगा।

'परन्तु ये मेरे कौन हैं? और भी तो बहुत से लोग पड़े होंगे—शायद इनसे भी बुरी अवस्था में। उन्हें भी तो देखना चाहिए।'

परन्तु सोच-विचारकर जाने की इच्छा होते हुए भी मैं उन्हें छोड़कर जा न सका।

दुर्घटना हुए लगभग चार घंटे व्यतीत हो चुके थे। गर्मी बढ़ गई थी। सोचने पर मैंने अनुभव किया कि मुझे भूख भी लगी थी। भूख के साथ मेरी झुंझलाहट और अकारण क्रोध भी बढ़ने लगा। मैंने सोचा, 'यह व्यर्थ ही क्यों पड़ी है? उठती क्यों नहीं?' मैं बेचैन हो रहा था और यदि उस अवस्था में अधिक देर रहता तो शायद छोड़-छाड़कर चल भी देता, परन्तु तभी रिलीफ ट्रेन आ गई। एक बार फिर और जोर की हलचल मच गई। डाक्टरों की दौड़-धूप और रेलवे-कर्मचारियों की तत्परता उल्लेखनीय थी। मैंने सामने से एक डाक्टर गुजरा। मैं जोर से चिल्लाया, 'डाक्टर साहब, इधर!'

डाक्टर अधेड़ अवस्था का था। वह तेजी से मेरी ओर लपका। मेरे पास आकर उसने अपनी सहज डाक्टरी बुद्धि से क्षण भर में सारी स्थिति समझ ली। वृद्ध का चेहरा देख-कर वह चौंक पड़ा—मुझे ऐसा लगा। फौरन ही वह उन पर झुक गया। नाड़ी हाथ से अनुभव की। फिर 'स्टेथस्कोप' कान पर लगा छाती की धड़कन सुनी। 'हूँ...' कहकर उसने घावों को देखा। टूर्निकेट और पट्टियाँ देखकर बोला, 'यह सब 'फर्स्ट-एड' किसने की है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मैंने।'

वह बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला, 'तुम तो इस मामले में 'एक्सपर्ट' (निपुण) मालूम देते हो।'

'कैसी दशा है, डाक्टर साहब?' मैंने चिन्तित स्वर में पूछा।

'डरो नहीं, सब ठीक हो जाएगा।' डाक्टर ने मुझे कहा तो परन्तु मुझे उसके मुख पर चिन्ता के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। वह फिर उनके घावों के निरीक्षण में लग गया। उन्हें देख चुकने पर उसने लड़की की ओर देखा और देखकर मुझसे पूछा, 'क्या उनके भी चोट आई है?'

'जी, मुझे तो चोट कहीं मालूम नहीं देती, परन्तु ये बेहोश हो गई थीं। अभी कुछ देर पहले होश में आई थीं परन्तु अपने पिता जी की दशा देखकर फिर बेहोश हो गई हैं।'

'वृद्ध महाशय आपके पिता हैं?'

'जी नहीं।'

'तो?'

'कुछ भी नहीं!'

'और आप?' उसने लड़की की ओर इंगित किया।

'ये उनकी लड़की हैं।'

'आपका इन लोगों से क्या सम्बन्ध है?'

'सम्बन्ध?' मैं जरा हँसा 'वही, जो एक डिब्बे में यात्रा करनेवाले यात्रियों का होता है।'

डाक्टर की आँखें विस्मय से फैल गईं। वह बोला, 'आपने इनके लिए बहुत कष्ट किया है।

'जी, कष्ट कुछ भी नहीं। यदि किया भी तो वह मेरा धर्म था।'

'देखिए' डाक्टर ने गम्भीर होकर कहा, 'वृद्ध महाशय की दशा वास्तव में चिन्ताजनक है। रक्त-स्राव बहुत हो गया है। मुझे डर है.....'

'जी मैं समझता हूँ।'

'और इनकी' उसने लड़की की कलाई हाथ में लेकर कहा, 'इन्हें साधारण मूर्च्छा है। एक इंजेक्शन देने से ठीक हो जाएगी। मैं इंजेक्शन लेकर आदमी भेजता हूँ।'

डाक्टर चला गया। मैं बेचैनी से उसके भेजे आदमी की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ ही देर बाद एक लड़का-सा डाक्टर हाथ में शीशियाँ, पट्टियाँ और इंजेक्शन का सामान लेकर आ गया। उसने देखा पहले वृद्ध की ओर परन्तु चिकित्सा में प्रवृत्त हुआ पहले लड़की की। मैंने उससे कहा भी, 'इनकी साधारण मूर्च्छा है। जल्दी ठीक हो जाएँगी। उनकी दशा खराब है। पहले उनका प्रबन्ध कीजिए।'

'अजी देखिए तो सही। उनके कई घावों की मरहम-पट्टी करनी है। उसमें देर लगेगी। इतने में तो ये होश में भी आ जाएँगी।'

वह लालसा-भरी दृष्टि से उस लड़की की ओर बार-बार देखने लगा। उसने लड़की की कलाई हाथ में ली और नाड़ी देखते हुए पूछा, 'ये आपकी सिस्टर (बहन) हैं?'

मैं कुढ़ गया। भला इस बात से चिकित्सा में क्या अन्तर पड़ता था कि वह मेरी बहिन थी अथवा नहीं, जिसे देखो वही यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह मेरी क्या थी। परन्तु मैंने चुपचाप कहा, 'जी नहीं।'

'तब क्या हैं?'

'रिश्ते से इंजेक्शन का कोई सम्बन्ध नहीं।' मैंने शान्त किन्तु दृढ़ स्वर में कहा।

'अरे हाँ....हूँ....पर आप नाराज हो गए?'

'नहीं तो।'

उसने इंजेक्शन तैयार किया। लड़की की बाँह में 'टिंक्चर आफ आयोडीन' लगा, पिचकारी की सुई मांस में छुआते हुए कहा,

'माफ कीजिए। मैंने तो वैसे ही पूछा था।'

'तो वैसे ही सुन लीजिए कि हम दोनों एक ही कम्पार्टमेंट (रेल का डिब्बा) में सफर कर रहे थे—बस। और कुछ नहीं।' मैंने चिढ़कर कहा।

'ओ.....' उसने कहा। मुझे उसकी आँखों में एक अजीब चमक-सी दिखाई दी। मुझे लगा कि उस डाक्टर ने उस युवती की बाँह कसकर दबाई। मेरा खून खौल उठा और मेरे जी में आया कि ठोकर मारकर उस डाक्टर के बच्चे को दूर फेंक दूँ।

'इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है, इसी से यह नालायक उसकी बाँह दबा सकता है।' मैं सोचता रहा और उबलता रहा फिर भी चुप ही रहा क्योंकि वह झगड़ने का मौका नहीं था।

डाक्टर ने इंजेक्शन दिया। सुई बाहर निकाल ली परन्तु हाथ पकड़े ही रहा। वह लड़की के मुँह पर देख रहा था मानो इंजेक्शन का प्रभाव देख रहा था परन्तु मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी दृष्टि में कुछ और ही लगा। उसका इरादा जल्दी हाथ छोड़ने का न देख, मैंने तेज—लगभग आज्ञा के—स्वर में कहा, 'अब आप उन्हें देखिए, और मैंने वृद्ध की ओर इंगित किया।

'अरे हाँ।' कहकर वह उठा और वृद्ध की परिचर्या में लगा। उनके पट्टी बाँधकर वह चलता बना और मैंने आराम की एक साँस ली। मैं लड़की का सिर अपनी गोद में लिए बैठा रहा। थोड़ी देर बाद उसने आँखें खोल दीं। पहला प्रश्न उसने किया, 'पिता जी कैसे हैं?'

'कमजोरी के कारण अचेत हैं। डाक्टर पट्टी बाँध गया है। डरने की कोई बात नहीं।'

उसने एक बार उन्हें देखा। पट्टियों को ठीक, साफ बँधा देख वह कुछ निश्चिंत सी लगी।

हम अभी बैठे थे कि रेलवे के एक कर्मचारी को कागज-पत्र लिए अपनी ओर आते देखा। मैंने चिन्तित भाव से युवती की ओर झुककर कहा, 'देखिए! अभी आपके पास मेरी उपस्थिति अत्यन्त आवश्यक है। यदि आप चाहती हैं कि मैं आपके पास ही रहूँ, तो जो कुछ मैं कहूँ, उसका समर्थन कर दीजिए।'

उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया और मुझसे और भी सट गई मानो कोई उसे मुझसे अलग कर रहा था। कर्मचारी हमारे सामने आकर खड़ा हो गया। उसने हम तीनों को देखा, फिर मुझसे पूछा, 'आपका नाम?'

'चन्द्रदत्त।'

'पिता का नाम?'

'पं० शिवदत्त।'

"यह उनका नाम है?' उसने वृद्ध की ओर इशारा करके पूछा।

'वे मेरे पिता नहीं हैं। वे इनके पिता हैं।'

'क्या मतलब? क्या ये आपकी बहन नहीं हैं?' उसने लिखना रोककर पूछा।

'नहीं।' मैंने एकदम कुढ़कर कहा। 'क्या यह मेरी बहन ही हो सकती है, और कुछ नहीं हो सकती?' मैंने सोचा। मुझे उस कर्मचारी पर गुस्सा आ रहा था।

'तो क्या.....?'

'नहीं, वह भी नहीं हैं।' मैंने उसका आशय समझकर हंसते हुए कहा। वह लज्जा गई। तब शायद उसे ध्यान आया कि वह मुझसे सटी मेरे सहारे बैठी है, वह धीरे से अलग खिसक गई।

'तब क्या हैं?' कर्मचारी ने पूछा।

'कुछ भी नहीं।'

'आप कौन हैं?'

इस पर मुझे हंसी आ गई।

'आदमी।' मैंने उत्तर दिया।

'परन्तु इस जगह कहाँ से आ गए?'

'क्यों? मैं भी गाड़ी में सफर कर रहा था—उसी डिब्बे में जिसमें ये लोग थे।'

'यह कैसे हो सकता है?'

'क्यों? क्या एक डिब्बे में तीन आदमी नहीं बैठ सकते?'

'नहीं.....।'

'नहीं'? 'अजी मेरा मतलब है,' उसने कहा 'कि एक डिब्बे में तीन आदमी हों, दो के तो चोट लगी, फिर आप कैसे बच गए?'

'मेरा भाग्य। यही समझ लीजिए।'

'कैसे?'

'जब गाड़ी उलटने से पहले सीटियां और भोंपू बजे, और बड़ा शोर-सा मचा तो मैं शोर का कारण ठीक मालूम करने के लिए दरवाजा खोलकर, डंडे पकड़े, पावदान पर खड़ा था। जब बड़े जोर से गाड़ी हिली या जो कुछ भी हुआ—जिसकी मुझे बिलकुल याद नहीं—तो मेरे पैर पावदान से हट गए, हाथ से डंडे छूट गए और मैं उड़ चला.....'

वह लड़की डर से हलकी-सी चीख की आवाज निकालकर मुझसे चिपट-सी गई।

'फिर?'

'फिर भाग्य अच्छा था। रेल से पैराबोला (Para-Bola) बनाता हुआ गिरा तो घास में पहुंच गया। इसीलिए चोट नहीं आई।'

'पैराबोला क्या?'

'एक तरह का 'कर्व'(Curve)।'

'तो उससे यहां मतलब?'

'अपने गिरने का ठीक वर्णन कर रहा हूं।'

'खुश-किस्मत हो दोस्त!' उस कर्मचारी ने कहा परन्तु यह बात उसने स्वर तथा आँखों में ऐसी हसरत भर-

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

कर कहीं कि मुझे हंसी आ गई। मैंने सोचा कि उससे
दूँ, 'खुश-किस्मत किसलिए हूं? क्या जिन्दा बचने
के लिए?'

'आपका टिकट?'

'सेकिंड क्लास का था परन्तु गिरते समय वह जाने
कहाँ गिर गया। बटुए के साथ ही वह भी चला गया।'

मैंने लड़की की ओर देखा। उसने मुँह फेर लिया।
मुझे सन्देह हुआ कि वह मुस्करा रही थी। मैं डरा कि
कहीं उस कर्मचारी को सन्देह न हो जाए।

'यह तो मुश्किल है।' कर्मचारी ने कहा।

'परन्तु अब इसके लिए कर ही क्या सकता हूं?'

'प्रमाण?'

'डिब्बे में बैठे ये लोग। वृद्ध महाशय तो अभी बेहोश
हैं और पता नहीं कब तक होश में आएँगे। तब तक
आपको इन्हीं पर विश्वास करना पड़ेगा।'

'आपका टिकट कहाँ से कहाँ तक था?'

'सहारनपुर से लखनऊ तक का।'

'पता?'

'चन्द्रदत्त, बी० एस-सी०, फाइनल, ५६, 'ओल्ड
हास्टल, मेरठ कॉलेज, मेरठ?'

'तो लखनऊ कैसे जा रहे थे?'

'मेरा एक मित्र बीमार है, उसे देखने जा रहा था।'

'डैमेज (नुकसान)?'

'एक सूटकेस था। उसमें दो गर्म सूट, चार कमीज,
चार टाई, एक जोड़ा क्रेप सोल लेदर शू, कुछ हौजियरी
(मोजे, बनियाइन आदि), टायलेट का सामान और
लगभग पचीस रुपये।'

'बस?' युवती ने पूछा और हँस पड़ी। मुझे बड़ी
फ्रस्ट्रेशन हुई उस पर। मैंने सोचा कि बस अब भांडा
फूट गया।

'और तो मुझे कुछ याद नहीं', मैंने कहा, 'यदि पता
होता कि ऐसी दुर्घटना भी हो जाएगी तो पूरी सूची
बना लेता?'

वह और जोर से हँस पड़ी। मुझे क्रोध आया। मैंने
कहा, 'आप हँस क्यों रही हैं?'

'कुछ नहीं, आपके सामान की दुर्दशा याद करके
हँस रही हूँ।'

'और यदि मैं आपकी दुर्दशा पर हँसूँ तो?'

उसका हँसता मुखड़ा मुर्झा गया—बल्कि उस पर क्रोध
झलक आया। कहकर मैं पछताया परन्तु तीर छूट चुका
था। उसके मुख पर गुस्से के तथा कुछ और अजीब-से
भाव देखकर मुझे विचार आया कि गुप्त-समितियों में इसी
भाँति झगड़े पड़ने पर ही तो लोग मुखबिर बन जाते हैं।

'मुखबिर को दण्ड क्या मिलता है?'—मौत! गोली
से उड़ा दिया जाता है! अरे बाप रे! तो क्या मैंने इसी-
लिए इसे बचाया कि अब गोली से उड़ा दूं?—मैंने सोचा
परन्तु दूसरे ही क्षण मैं मुक्त-हृदय से हँस पड़ा। किसकी
पार्टी (समिति)—कौन मुखबिर—कहाँ गोली? मैंने उसे
मनाते हुए कहा, 'क्षमा कीजिए। मेरा आशय आपका जी
दुखाना नहीं था।'

वह चुप ही रही। बस ऐसे मौकों पर चुप्पी बड़ा
जी दुखाती है। मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा, 'बात यह है
कि अपने वे सूट और टाई मुझे बहुत ही पसन्द थे और
वे कीमती भी कम नहीं थे। उनके नष्ट होने पर मुझे
बड़ा दुःख हुआ है। आप उन पर हँसीं तो मुझे बुरा मालूम
हुआ। क्षमा कीजिए। बोलिए, क्षमा कर दिया न?'

इस सारी बात से उसे जरा हँसी आ गई। मैं समझ
गया कि काम बन गया। तभी उस कर्मचारी ने एक लम्बी-
सी ठंढी साँस खींची, जैसे बिना बोले ही ईर्ष्या से कहा,
'वाह री किस्मत!

'हैं?' मैंने उसकी साँस के विषय में ध्वन्यात्मक प्रश्न
किया।

'तकदीर आपकी।'

'हाँ बहुत अच्छी है।' मैं खिल-खिलाकर हँस पड़ा।
युवती ने मेरी ओर न जाने किस दृष्टि से देखा कि मुझे
लगा मानों मैं आकाश की अनन्त गहराइयों में उड़
जाऊँगा।

तब कर्मचारी ने उस युवती से कहा, 'आपके पिता जी
तो अभी अचेत हैं। आप कृपा करके मेरे कुछ प्रश्नों का
उत्तर देंगी?'

'अवश्य।'

'आपका नाम?'

'रजनी।'

'रजनी'...'रजनी' मैं सोचने लगा। कितना प्यारा
नाम है! छोटा-सा...रजनी...रजनी...रजनी...

'पिता का नाम?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'डाक्टर एन० के० श्रीवास्तव।'

'पेशा ?'

'डाक्टरी।' रजनी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

'पता ?'

'२९, चारबाग, लखनऊ !'

'टिकट ?'

'टिकट तो पिता जी के पास थे। देखिए, देखती हूँ।' कहकर उसने वृद्ध की जेबें देखीं। वास्कट (वेस्ट-कोट) की जेब में से बटुआ ले, उसमें से सेकिंड क्लास के दो टिकट निकालकर उसके हाथ पर रख दिए। कर्मचारी ने नोट किया।

'दो सेकिंड क्लास—लाहौर से लखनऊ।'

'डैमेज ?'

और इसी तरह की पूछ-ताछ का उत्तर संक्षेप में यह था कि रजनी और उसके पिता जी लाहौर में अपने किसी सम्बन्धी के यहाँ विवाह में गए थे। वहीं से लौट रहे थे। सामान की पूरी सूची तो, जो रजनी ने दी थी, मुझे याद नहीं परन्तु विशेष सामान दो ट्रंक तथा दो बिस्तर और एक अटैची थे। ट्रंकों का पूरा सामान तो रजनी को भी याद नहीं था। हाँ अपने ट्रंक की काफी चीजें याद थीं। साड़ियाँ, कपड़े, थोड़े से गहने, कुछ नकदी आदि। पूरा 'नुकसान' कुछ हजार के लगभग था। 'पूरी सूची और नुकसान का एस्टीमेट (अनुमानित-व्यय) पिता जी देंगे'—यहभी रजनी ने कहा। मेरे विषय में पूछे जाने पर रजनी ने कहा कि मैं सहारनपुर स्टेशन से उनके डिब्बे में चढ़ा था और मेरे साथ चमड़े का एक सूट-केस था। (यहाँ पर हम पकड़े जा सकते थे क्योंकि दोनों को यह ध्यान नहीं रहा था कि रात के ढाई बजे सेकिंड क्लास के अधिकांश यात्री, डिब्बे का ददवाजा अन्दर से बन्द कर लेते हैं।)

कर्मचारी अभिवादन करके चलने लगा। मैंने पूछा, 'महाशय ! हम लोग यहाँ से कितनी देर में जाएँगे ?'

'देखिए—परन्तु मेरा विचार है कि अब अधिक देर नहीं है !'

कर्मचारी चला गया। उसका कहना बहुत गलत नहीं था। रिलीफ आने से लगभग तीन घंटे बाद हम लोग वहाँ से चले और शाम के साढ़े छः बजे लखनऊ पहुँच गए।

गाड़ी को आगे भी जाना था इसलिए मैंने रजनी के पिता जी को उतरवाकर 'विश्राम गृह' (वास्तव में प्रतीक्षा गृह—वेटिंग रूम) में लिटा दिया। रजनी और सामान को उनके पास छोड़कर मैं बाहर टैक्सी के लिए चला।

लखनऊ ! लखनऊ !!

लखनऊ का वैभव गए कितना ही समय बीत गया परन्तु जो बात अब भी लखनऊ की पहली शान, सभ्यता और वैभव की याद दिलाती है, वह है वहाँ के लोगों की बोलचाल तथा भद्रता। साधारण-से-साधारण आदमी—ठेले वाले, कुली-कबाड़ी भी बड़ी नम्रता से ऐसी लच्छेदार उर्दू में बात करेगा कि सुनकर तबीअत फड़क उठेगी। मैं तो लखनऊ में काफी दिन रहा था इसीलिए वहाँ की तक मेरे लिए इसमें कोई नवीनता नहीं थी, परन्तु बाहर आनेवाले लोगों को यह सब कुछ बड़ा अजीब लगता है।

उस समय मैं लगभग डेढ़-दो वर्ष बाद लखनऊ आया था। स्टेशन के बाहर आते-आते सैकड़ों पुरानी स्मृतियाँ मस्तिष्क में मँडराने लगीं। सोचता हुआ मैं टैक्सी के लिए जा रहा था कि बीच में ही एक झगड़े ने ध्यान आकर्षित कर लिया। एक सज्जन—अभी तो उन्हें सज्जन ही कहूँगा—एक तांगेवाले से उलझे थे। तांगेवाला बड़ी नम्रता से 'हुजूर', 'सरकार' से बात कर रहा था परन्तु वे 'हुजूर' गालियों की झड़ी मुँह से लग रही थी। तांगेवाला कुछ देर सुनता रहा फिर बोला, 'अब बस कीजिए, बहुत हुआ सरकार ! आपने मेरी मां-बहन को बहुत कुछ कहा; अब अगर मैं हुजूर की मां-बहन की खिदमत में कुछ कहूँगा तो हुजूर को नागवार गुजरेगा।'

मैं तांगेवाले की नम्रता तथा जबान की सफाई पर दंग रह गया—इतने दिनों बाद यह सब मेरे लिए नया-सा था। मैंने जल्दी से तांगेवाले के पास जाकर पूछा, 'क्या पहलवान क्या बात है ?'

उसने मुझे देखा, फिर कहा, 'हुजूर, बात कुछ भी नहीं सरकार (उसने सामने खड़े 'सरकार' की ओर इंगित किया) नाहक अपनी जबान गंदी कर रहे हैं।'

उन महाशय ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला। चेहरे से तो लगता था कि गाली ही देंगे। मैंने बीच ही में टोककर उनसे पूछा, 'झगड़ा क्या है ?' उन्होंने तांगेवाले को क्रोध-भरी दृष्टि से देखकर कहा, 'इस बत्तमीज नालायक ने हमें गिरा दिया।'

उनके कहने के ढंग और बात से मुझे हंसी आ गई साथ ही क्रोध भी कम नहीं आया। मैंने गम्भीर होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे कहा, 'आपसे तो कुछ कहना ही बेकार है। आप पहले एक गिलास ठंढा पानी पीजिए।' और तांगेवाले से कहा, 'उस्ताद, तुम्हीं बताओ जरी, माजरा क्या है।'—अनायास मेरी जबान लखनवी हो गई थी!

'बात कुछ नहीं गरीब परवर। आप तांगे में बैठ रहे थे। एक ही पैर ऊपर रक्खा था तभी पास से एक मोटर निकल गई। जानवर ठहरा। घोड़ा जरा चहक गया। हुजूर जमीबोसी करने लगे। सरकार के दुश्मनों को जरी तकलीफ पहुँची। आप ही बतलाइए, मेरी क्या खता। लेकिन हुजूर हैं कि गाली दिए जा रहे हैं।'

उस आदमी ने फिर कुछ गाली दी लेकिन तब तक मैं उनपर बरस पड़ा, 'बस अब आप भलाई चाहते हैं तो सीधे-सीधे खिसक जाइए। आपको शर्म आनी चाहिए। यह तो आपसे इतनी तहजीब से पेश आ रहा है और आप उसी पर गाली दिए जा रहे हैं।' फिर मैंने अँगरेजी में कहा, 'आप उसे नीच समझते हैं, परन्तु वास्तव में व्यवहार आपका ही नीचता का है।'

'आपको क्या मतलब?' उस आदमी ने क्रुद्ध होकर कहा।

'आप बुजुर्ग हैं, जाइए। वर्ना मतलब तो मैं अभी आपको समझाकर भेजता।'

मुझे कड़ा पड़ते देख और यह समझकर कि ये दो हैं, वे चुपके से चल दिए, उनके जाने पर तांगेवाला बोला, 'अगर बन्दा परवर न आते तो मुझे कुछ देर में उनकी मिजाज-पुर्सी करनी पड़ती। हुजूर ने भी अँगरेजी में खूब झाड़ पिलाई।'

'अरे नहीं भाई, ऐसा कभी न करना। बोलचाल ही में लखनऊ की पुरानी तहजीब की एक यादगार रह गई है हमारे पास।' मैं कुछ सोचने लगा।

'तो हुजूर का दौलतखाना भी लखनऊ में ही है?' उसने प्रसन्न होकर पूछा।

'था कभी।' मैंने चौंककर उत्तर दिया।

'मैं भी तो सोच रहा था कि मिजाज की यह सादगी और जुबान की ऐसी सफाई लखनऊ को छोड़कर और कहाँ! कहिए सरकार कहाँ ले चलूँ!' उसने तांगा आगे बढ़ाते हुए कहा।

मैंने तांगा देखा। घोड़ा तथा तांगा दोनों ही प्रथम श्रेणी के थे। जी चाहा कि एक बार बैठ लूँ परन्तु मैंने कहा, 'पहलवान, आज नहीं बैठ सकते। मुझे अफसोस है! मेरे साथ दो मरीज हैं।'

'सरकार तांगा ऐसे चलेगा जैसे पानी की सतह पर किश्ती। रास्ता पता भी नहीं चलेगा।'

'भई माफ करना। जख्म जरी गहरे हैं। मोटर ही करनी पड़ेगी।'

'मुझे इस बात का मलाल रहेगा कि हुजूर की खिदमत नहीं कर सका।'

'अरे म्यां, फिर कभी मिलेंगे।'

सहसा उसे कुछ याद आया। मेरे मुख और हाथों पर भी खरोंचों के निशान और कुछ मामूली से घाव थे। उसने पूछा, 'तो क्या हुजूर भी उसी गाड़ी में थे जो.....?'

'हाँ, मैं भी उसी में था।'

'क्या हुआ था सर.....?'

'माफ करना भई। मैं इस वक्त तुम्हारे सवालों का जवाब नहीं दे सकता। जरी जल्दी है।'—मैंने कहा और मैं चल दिया। एक टैक्सीवाले को बुलाकर गाड़ी स्टेशन की सीढ़ियों से लगवा दी। ड्राइवर की सहायता से डाक्टर साहब को पीछे लेटा दिया। रजनी उसके पास बैठी और मैं आगे ड्राइवर के पास।

× × ×

गाड़ी के उनके घर पहुँचते ही तमाम नौकरों-चाकरों में हलचल मच गई। उनका ड्राइवर बड़ी क्षमा-सी मांगने लगा। उसने कहा, 'बीबी जी मैं तो गाड़ी के टैम पर स्टेशन गया था लेकिन पता चला कि 'एस्सीडेंट' हो गया है। मैं घर चला आया। एक बार तो सोचा कि वहीं तक चला जाऊँ, पर इतना पेट्रोल नहीं था। अब फिर स्टेशन जानेवाला था...।'

'कोई बात नहीं।' कहकर रजनी ने उसे चुप किया। नौकर ने बिस्तर लगा दिया। डाक्टर साहब को टैक्सी से उतारकर बिस्तर पर लेटा दिया गया। रजनी ने टैक्सी-वाले को पैसे दिए। नौकर को चाय तैयार करने का आदेश दिया और एक जगह फोन किया।

'डाक्टर भट्टाचार्य हैं?...मैं हूं रजनी श्रीवास्तव—२६, चारबाग—कृपा करके जल्दी आइए, पिता जी की दशा चिन्ताजनक है—धन्यवाद।'

मैं उसका तितली की तरह घूमना बड़े आश्चर्य से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख रहा था। घर आते ही उसकी नारी-सुलभ कार्य-तत्परता जाग्रत् हो गई थी।

थकान के मारे मैं चूर-चूर था और भूख के मारे बेचैन। रजनी ने मुझसे कहा, 'जब तक चाय आए तब तक आप नहा लीजिए।'

'मैं जाऊँगा अब...' मैंने दबी जुबान से कहा यद्यपि मैं अनुभव कर रहा था कि उस समय यदि कोई मुझे काटकर भी वहां से निकालता तो भी मैं नहीं निकलता।

'क्या हुआ है आपको ? ऐसा भी कहीं हो सकता है ?' 'आपको !' मैंने सोचा घर आते ही 'तुम' से 'आप' पर पहुंच गया ?' इतनी दूरी ! परन्तु प्रकट में मैं चुप ही रहा।

'नहा आइए न। चाय आती होगी।' उसने फिर कहा परन्तु मैं चुप ही खड़ा रहा। उसने मुझे कुछ क्षण देखकर एकाएक कहा, 'ओ....समझी....' और तेजी से अन्दर चली गई।

थोड़ी ही देर में लौटकर उसने कहा, 'चिन्ता न कीजिए ! आपको सारा सामान वहीं मिलेगा।'

'कहाँ ?'

'स्नान-गृह में।'

'चाय भी ?' मैंने हंसकर अपनी झेंप मिटाने के लिए पूछा।

'जो भी आप चाहेंगे।' उसने मुक्त होकर हंसते हुए कहा और नौकर को मुझे स्नान-गृह बतलाने के लिए संकेत किया।

स्नान-गृह में बिजली का प्रकाश था। साबुन, तेल, मञ्जन, कंघी, दर्पण—सभी कुछ था। एक अलगनी पर एक साफ कमीज और धोती टंगी थी। मैंने सबसे पहले दर्पण में अपना मुंह देखा.....

'बाप रे !' मैंने कहा और मैं भूत का प्रतिबिम्ब देखकर उछल पड़ा। बाल बिखरे हुए थे, मुंह धुएं और धूल से काला था। चोट और खरोंच...कपड़े फटे...अजीब धजा थी। दाढ़ी भी दिखाई दे रही थी। मैं जल्दी से दर्पण के सामने से यह सोचते हुए हट गया कि तांगेवाले ने मेरी शक्ल-सूरत का विचार अपनी बातचीत में क्यों नहीं किया था।

नहा, कपड़े बदल, बाल बनाकर जब मैं बैठक में आया तो रजनी भी नहाकर कपड़े बदल चुकी थी। सामने मेज पर चाय तथा खाने का सामान लगा था। खाने की चीजें देखते ही भूख और तेज हो गई। मेरे मुंह में पानी आया।

रजनी को देखते ही विचार आया, 'अरे! क्या सबेरे की रेलवाली रजनी है ?'

मुझे देखते ही उसने कहा, 'धोती-कुर्ते में कैसे हैं आप।'

'आपकी कृपा है।' मैंने हंसकर कहा। (कमीज बहुत ढीली थी)

चाय पीकर मैंने उसके पिता जी को देखने की इच्छा प्रकट की। उसने विरोध किया, 'नहीं, आप अपने कमरे में आराम कीजिए। आप थक गए हैं। खाना खाने के बाद मैं आपको बुला लूंगी। पिता जी के पास मैं बैठूंगी और फिर डाक्टर भी आने ही वाला होगा।'

'आप नहीं थकीं ?'

'थकने को मैंने किया ही क्या है ?' उसने अस्त-व्यस्त हुए कहा और खड़ी हो गई। नौकर ने बाहर मेरा कमरा मुझे बतला दिया। मैं उस रजनी के विषय में सोचने लगा सोचता पता नहीं कब सो गया।

उसका सारा व्यवहार शायद इसलिए इतना अपनापन लग रहा था कि किसी अपरिचिता को लक्ष्य करने का मौका ही पहले कब मिला था ?

(२०)

सबेरे रजनी की आवाज से हड़बड़ाकर जब मैं उठा तो धूप निकल चुकी थी। मुझे हड़बड़ाकर उठते देख खिलखिला पड़ी। सामने चाय रक्खी थी परन्तु चाय न देख मैं एकटक उसे ही देख रहा था; प्रातःकाल की भांति ताजगी से भरी। मेरी एकटक दृष्टि से लाल होते हुए उसने जैसे खाली कुछ कहने के लिए ही कहा, 'कल की दुर्घटना का समाचार आज छप गया है।'

'अच्छा ? चलिए देखें तो।'

'अरे चाय तो पी लीजिए पहले।'

'ओ....। पर मैं मुंह तो धो लूं।'

'वैसे नहीं पी सकते ?'

'उहुंक। मैंने कहा और फिर मुंह धोया। चाय का एक घूंट भरा परन्तु फिर नीचे रख दी और कहा, 'ठण्डी हो गई है।'

'अच्छा मैं और बनवाती हूँ।

'अजी रहने दीजिए।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

परन्तु वह कमरे से बाहर हो गई। नौकर को और चाय लाने का आदेश दिया। नौकर चाय लाए, पीने में हमने सोचा कि समाचारपत्र ही उठा लें। मुख-पृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था—

'लाहौर—कलकत्ता मेल-दुर्घटना' नीचे विवरण-दिया था; 'कल.....बजे—और—स्टेशनों के बीच लाहौर कलकत्ता मेल और एक मालगाड़ी की टक्कर हो गई। मेल को बहुत हानि पहुंची है। अधिकांश डिब्बे बिलकुल चकनाचूर हो गए हैं। जान-माल की भारी क्षति हुई है। अब तक ४९ आदमी मर चुके हैं। घायलों की संख्या २२१ है। इनमें वे लोग सम्मिलित नहीं हैं, जो सम्भवतः बिलकुल चूर-चूर डिब्बों के नीचे दबे पड़े होंगे। घायलों में बहुतों की अवस्था चिन्ताजनक है। हानि कई लाख के लगभग कूती जाती है।—स्टेशन से चार घण्टे बाद सैनिक पहुँची। अभी तक टक्कर का ठीक कारण ज्ञात नहीं हुआ है कि ऐसी गलती किस प्रकार हो गई। विशेष विवरण की प्रतीक्षा है।'

समाचार पढ़कर मैं कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। सहसा मैंने उठते हुए पूछा, 'आपके पिता जी कैसे हैं?'

तभी नौकर चाय ले आया। मुझे चलने को उद्यत देख रजनी बोली,

'पहले चाय तो पी लीजिए।'

'नहीं पहले उन्हें देख लें।'

'उनके विषय में चिन्ता की कोई बात नहीं है। रात डाक्टर साहब आए थे। उन्होंने ठीक तरह घावों की मरहम-पट्टी कर दी थी, इंजेक्शन भी दिया था। वे होश में भी आ गए थे। अभी घावों में पीड़ा तथा दुर्बलता तो है ही फिर भी इस समय वे मजे में अपने कमरे में सो रहे हैं।'

'तो पहले एक बार देख ही न लें।'

'चाय फिर ठण्डी हो जाएगी!'

'तो क्या हर्ज है?' जैसे जबरदस्ती मचलते हुए मैंने कहा। पता नहीं क्यों उस समय वैसी ही इच्छा हो रही थी।

'फिर आप नहीं पिएँगे।'

'तो क्या बिगड़ेगा इससे?'

'अच्छा अब आप चुपचाप चाय पी लीजिए। मैं नहीं जाती।'

'तो आज्ञा समझूँ इसे?' जाने कैसे स्वर में मैंने पूछा।

'कुछ भी समझिए।' रजनी ने शरारत से मुस्कराते हुए कहा।

'तो फिर आप भी पीजिए।' मैंने बैठते हुए कहा।

'मैं पी चुकी।'

मेरे मन में विचार आया, 'यह मेरे साथ चाय पीने के लिए भी नहीं ठहर सकी।' अब भगवान् जाने कभी-कभी दूसरों के विचार पढ़ लेने की शक्ति स्त्रियों—विशेषतः युवतियों में कहाँ से आ जाती है। रजनी ने मेरे मुख को देखते हुए विवश-से स्वर में, क्षमा-प्रार्थना के ढंग पर कहा—

'क्या करती? पिता जी ने अपने सामने बिठाकर जबरदस्ती पिलाई, नहीं तो साथ ही पीती।'

'थोड़ी और पी लीजिए।'

'मैं बहुत चाय नहीं पीती; और चाय कुछ बहुत अच्छी वस्तु भी नहीं। कुछ विशेष लाभ भी नहीं होता इससे.....अरे!'

मैंने प्याला नीचे रख दिया था।

'क्या हुआ?'

'बस पी चुका।'

'अच्छा लाइए।'

'नहीं-नहीं रहने दीजिए। आपको नुकसान करेगी और फिर चाय कोई.....'

'बस रहने दीजिए...' उसने आँखों में शरारत भरकर मुस्कराते हुए कहा। मैंने पहले प्याले को खिसकाकर कहा, 'तो अब आप ही बनाइए और आप ही पिलाइए।' दो प्याले चाय बनाकर एक उसने मुझे दिया और एक स्वयं लिया। अपने प्याले से एक घूँट भर कहा—

'आप बड़े जिद्दी हैं।'

'कैसे?'

'जबरदस्ती जो चाय पिला रहे हैं।'

'बुरा लगा तो रहने दीजिए। मैं किस अधिकार पर आपसे जबरदस्ती कर सकता हूँ।'

'अरे! आप बुरा मान गए?'

'बुरा मान कर ही किसी का क्या बिगाड़ लूँगा?' मेरे स्वर में मान था।

'आप कभी कभी बच्चे भी बन जाते ह क्या?' उसने चाय पीकर कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कैसे ?'

'रात खाना खाने के लिए इतना उठाया परन्तु आप उठे ही नहीं।'

'परन्तु उस समय विशेष भूख तो मुझे लगी नहीं थी।'

वह मुस्कराती रही फिर बोली,

'जब आप स्वयं उठकर नहीं बैठे तो दूसरे को आपको सहारा देना पड़ा। मुँह पर एक बार दूध का गिलास लगाया फिर तो आपने खाली करके ही साँस ली।' परन्तु मेरा ध्यान पिछली बात की ओर नहीं था। एक ही बात दिमाग में चक्कर काट रही थी। 'दूसरे को आपको सहारा देना पड़ा...दूसरे को.....' आशा ने मुझे गुदगुदा दिया। मेरी आँखों में चमक आ गई। मन इस तरह फूल उठे तो सम्भव नहीं कि मुख भी खिल न उठे। उल्लसित स्वर में मैंने पूछा,

'किसने सहारा दिया था ?'

उसके मुख पर कुटिल मुस्कान खेल गई और आँखों में शरारत नाच उठी। बोली,

'क्यों ? नौकर ने।'

प्याला मेरे हाथ से छूट गया। कपड़े खराब हो गए और मेरा मुँह लटक आया।

'अरे !....' उसके मुख ये आश्चर्य से निकला। फिर कहा,

'ठहरिए और चाय बनवाती हूँ।'

'मैं नहीं पिऊँगा।'

'तो कुछ खा लीजिए।'

'भूख नहीं है।'

'यह लंच (मध्याह्न-भोजन) नहीं है।' उसने हंसकर कहा। परन्तु क्षण भर बाद ही वह गम्भीर हो गई। हाथ में उठाया हुआ चाय का बर्तन उसने रख दिया। सहसा वह बोली ?

'ऐसा कैसे हो सकता था ? इतने नौकर-चाकर...'

'क्या ?' मैंने पूछा।

'वही जो आप चाहते थे।'

'क्या मतलब ?'

सच ही मैं मुख ऊपर नहीं उठा पा रहा था और अनजान बनने के अभिनय में अपनी झेंप मिटाने का प्रयत्न कर रहा था। उससे आँखें मिलाने का मेरा साहस न था।

'चन्द्रदत्त बाबू, सोते को जगाया जा सकता है, परन्तु जो जागते हुए सोने का अभिनय करे उसे कोई कैसे जगाए?'—यह कह कर रजनी चली गई।

मैं तिलमिला उठा। 'कल यही मुझसे कही [illegible] भोली-भाली, सीधी-सी लग रही थी। कल की उस [illegible] से अनभिज्ञ-सी, बालिका-सी रजनी में और आज [illegible] पर मुझे मात देनेवाली इस चपल नारी रजनी में [illegible] अन्तर था।' विचार घुमड़-घुमड़कर उठ रहे थे। [illegible] कितनी देर इसी तरह बैठा सोचता रहा तभी उसने [illegible] कहा, 'नहा लीजिए, सामान तैयार है।'

इच्छा तो नहीं थी, परन्तु विरोध करने को मन [illegible] हुआ। चुपचाप उठकर स्नान-गृह में गया। फिर नई [illegible] कमीज तैयार थी। मेरी धोती चाय गिरने से खराब हो [illegible] थी इसलिए वह तो बदलनी आवश्यक थी परन्तु गुस्से [illegible] झुंझलाहट में कमीज मैंने नहीं बदली, बाहर आया। [illegible] ने देखा। दांतों से निचला होंठ जरा दबाया और पूछा,

'कमीज क्यों नहीं बदली ?'

'जरूरत नहीं समझी।'

वह चलने लगी। मैंने पूछा, 'आपके पिता जी [illegible] हैं ?'

'अन्दर होंगे।'

'मैं उन्हें देखना चाहता हूँ।'

'बिना देखे वे मर नहीं जाएँगे।'

स्वर से मैं चौंका। 'अब इसकी बारी है' मैंने सोचा।

'आप नाराज हो गईं ?'

वह चुप रही। इस बेहूदे प्रश्न का उत्तर भी वह [illegible] देती ? नाराज थी—यह तो स्पष्ट था।

'परन्तु जाने से पहले मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।'

'तो मना किसने किया है ?'

रजनी चली गई। एक नौकर से डाक्टर साहब [illegible] कमरा पूछ उनके पास गया। सोच रहा था कि उन्होंने [illegible] एक ही बार तब देखा था जब मुझसे रेल की गड़बड़ी [illegible] बारे में पूछा था। अब वहाँ मुझे देखकर क्या सोचेंगे ?

मैंने चुपचाप कमरे में प्रवेश किया। उनकी आँखें बन्द थीं। मैं समझा कि वे सो रहे थे। निश्चय करने के लिए मैंने बहुत धीरे से खाँसा। उन्होंने आँखें खोल दीं। मैं एक बार सकपका-सा गया। फिर हाथ जोड़कर नमस्ते की। उन्होंने धीरे से सिर हिलाकर अभिवादन का उत्तर दिया और पास पड़ी कुर्सी पर बैठने के लिए हाथ से संकेत किया। मैं सोच रहा था कि मुझे देखकर उन्हें आश्चर्य क्यों नहीं हुआ। मैंने बैठकर पूछा, 'अब कैसी तबीयत है आपकी ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने हाथ को एक विशेष ढंग से हिलाया जिसके बहुत से अलग-अलग अर्थ लगाए जा सकते थे परन्तु बहुधा जिसका अर्थ यही समझा जाता है, 'चल रही है। धीरे-धीरे ठीक हो जाएगी।' मैं सोच नहीं पाता था कि आगे क्या कहूँ, तभी उन्होंने क्षीण स्वर से कहा,

'मैं किस तरह आपको धन्यवाद दूँ? यदि आप न होते तो जाने हमारी क्या दशा होती। मैं जीवन भर यह कृपा नहीं भूलूँगा।'

मैंने सोचा, 'अरे! तो रजनी ने इन्हें सब कुछ बतला दिया है तभी तो मुझे देखकर इन्हें आश्चर्य नहीं हुआ।' मैं मन-ही-मन प्रसन्न हुआ कि रजनी ने पहले ही मेरा परिचय दे दिया था परन्तु प्रकट में बोला,

'जी, धन्यवाद की क्या बात? मैंने किया ही क्या था? और जो कुछ मैंने किया भी तो उस स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति वैसा ही करता।'

उन्होंने कुछ कहा नहीं परन्तु आँखों में फिर कृतज्ञता ही। और कुछ कहने को न पा मैंने कहा, 'तो अब आज्ञा दीजिए। मैं चलता हूँ।'

'खाना खाकर जाइए।'

'जी, अब उधर भी जाना है। देखूँ वहाँ क्या हाल है।'

उन्होंने 'उधर,' 'वहाँ' 'हाल,' आदि शब्दों पर बिलकुल उत्सुकता प्रकट नहीं की, इससे मुझे निश्चय हो गया कि रजनी ने उन्हें मेरे विषय में सब कुछ बतला दिया था—मेरे आने का उद्देश्य आदि।

'अच्छा।' उन्होंने कहा, 'अब कब आइएगा?'

'देखिए....'

'शाम को आइएगा?'

'प्रयत्न करूँगा।'

'अवश्य आइए। रजनी अकेलापन अनुभव करेगी।'

मैंने स्वीकृतसूचक सिर हिलाया, उन्हें नमस्ते की और कमरे से बाहर आ गया। मैंने रजनी को ढूँढ़ लिया और कहा, 'मैं जा रहा हूँ। नौकर से ताँगा लाने के लिए कह दीजिए।'

उसने चुपचाप एक नौकर बुलाकर कहा, ड्राइवर से कहो गाड़ी निकाल दे।'

'मैं ताँगे पर ही जाऊँगा।' मैंने जिद-सी की यद्यपि सोच रहा था 'पैसे?'

'नौकर को फुर्सत नहीं है।' उसने मेरी ओर स्थिर दृष्टि से देखकर शान्त स्वर में कहा। मैं समझा। उस स्वर में अपनेपन का भाव था परन्तु वह बात मुझे लग गई। मैं चलने के लिए घूम गया। उसने भी यह लक्ष्य किया। पूछा, 'शाम को आइएगा?'

'क्या आना जरूरी है?' मैंने तेजी से घूमकर गुस्से के स्वर में पूछा। उसने पहले जैसे ही शान्त, संयत स्वर में कहा, 'कुछ काम जरूरी न होने पर भी करने पड़ते हैं।'

मैं चुप ही रहा।

'मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया आपने; कब आइएगा?'

'पता नहीं।' कहकर मैं फिर चलने को उद्यत हुआ। तभी नौकर आ गया। उसने बतलाया कि ड्राइवर गाड़ी निकाल रहा था, और अन्दर चला गया। मैं चलने लगा। तभी एकाएक रजनी तेजी से मेरे रास्ते में आई और बोली,

'तुम मेरा अपमान नहीं करोगे।'

'तुम!' और पास खड़ी याचना-सी करती वह रजनी! ओफ! जी में आया कि सारा मान-क्रोध बहा दूँ, परन्तु प्रकट से कहा,

'क्या मतलब?'

'तुम्हें कार में जाना पड़ेगा।'

'यदि न जाऊँ तो?'

'नौकर-चाकर क्या समझेंगे?' वह रुआसी होकर बोली।'

'जो चाहें समझें। मेरा क्या बनता-बिगड़ता है।' मैं उसे और कुढ़ाता हुआ बोला। 'रजनी कुछ देर खड़ी रही। मैं उसकी दुःखी-सी मूर्ति को एकटक देखता रहा। अचानक वह मेरा रास्ता छोड़कर बोली,

'अच्छा जाइए ताँगे में ही। मैं ड्राइवर को कार के लिए स्वयं मना किए देती हूँ।'—यह कहकर उसने आगे कदम बढ़ाया।

सहसा मैंने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, 'रजनी, मुझे क्षमा करो।'

मेरे हाथों में से होकर मेरे सारे शरीर में उस समय मानो एक बिजली दौड़ रही थी जिसके प्रभाव से मैं बेहोश हुआ जा रहा था। वह कुछ क्षण विस्मय से मुझे देखती रही फिर धीरे से अपना हाथ छुड़ाकर अन्दर चली गई। जाते समय उसकी आँखों में आँसू चमक रहे थे, पता नहीं कैसे....

मैं हतबुद्धि-सा वहीं खड़ा रह गया। ड्राइवर की आवाज से मेरा ध्यान भंग हुआ। वह कह रहा था, 'चलिए सरकार, गाड़ी तैयार है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

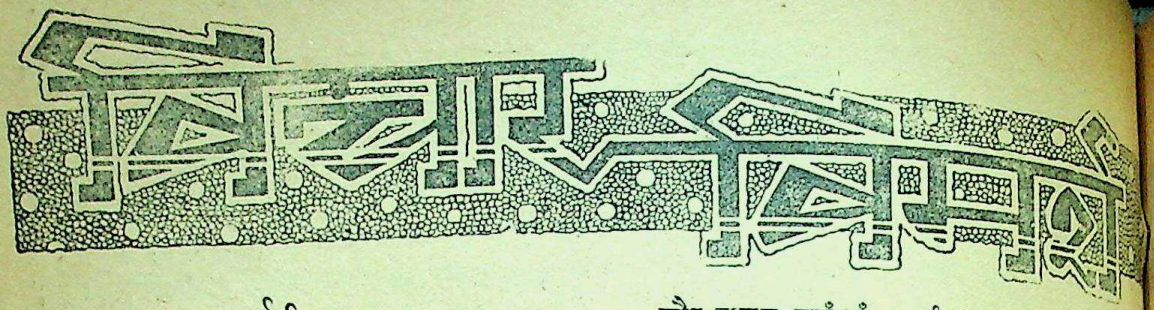

नर्सरी स्कूल

श्रीमती प्रतिभा रस्तोगी, एम० ए०, बी० टी०

शिक्षा का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। शिक्षा ही के कारण हम देखते हैं कि योरप के राष्ट्र उन्नति में बढ़े-चढ़े हैं। वहाँ की जनता में अमन-चैन है और उनके हृदयों में आगे बढ़ने की लगन है। इसका विपरीत दृश्य हमको अपने भारत में देखने को मिलता है, हम सबसे पीछे हैं, उद्योगहीन हैं। हममें आगे बढ़ने का उत्साह नहीं—यह सब क्यों, के॰ इसलिए कि अभी तक हम अज्ञान के गर्त में पड़े रहे हैं। परन्तु अब युग बदल रहा है, स्वतंत्रता का बाल-सूर्य उदय हो गया है और अब अज्ञान-तिमिर छिन्न-भिन्न होने को ही है।

आज हमारी सरकार निरक्षरता का विरोध करने में कटिबद्ध हो गई है। नई-नई पाठशालाएँ तथा विद्यालय ग्रामों और नगरों में खोले जा रहे हैं और यह योजना है कि दस वर्ष के अन्दर निरक्षरता का समूल नाश हो जाएगा। बाल-शिक्षा की ओर भी सरकार का ध्यान गया है और इसके लिए नर्सरी-स्कूल खोलने का उद्योग किया जा रहा है। अभी तक जो पाठशालाएँ बालकों के लिए ग्रामों तथा नगरों में हैं, उनमें प्रवेश करने की अवस्था ६ वर्ष की है। इससे कम अवस्था का बालक यहाँ भरती नहीं किया जाता।

अब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि जब नई-नई पाठशालाएँ खोली ही जा रही हैं तो 'नर्सरी' स्कूल खोलने की क्या आवश्यकता? 'नर्सरी' यह शब्द अँगरेजी भाषा का है, नर्सरी का अर्थ होता है—छोटे बालकों के रहने का स्थान। योरप में बड़े-बड़े घरों में एक कमरा घर के छोटे बच्चों के लिए नियत रहता है और इसको 'नर्सरी' के नाम से पुकारा जाता है। अतः नर्सरी स्कूल का अर्थ हुआ छोटे बालकों को शिक्षा प्रदान करने की संस्था। नर्सरी स्कूल अन्य स्कूल तथा पाठशालाओं से इस अर्थ में भिन्न होता है कि यहाँ प्रवेश करने की अवस्था ३ वर्ष होती है, और बालक यहाँ पाँच वर्ष की अवस्था तक शिक्षा [illegible] कर सकता है। यदि हम इन २ वर्ष से ५ वर्ष की अवस्था के बालकों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं करते हैं तो [illegible] की बड़ी भारी क्षति होती है।

चरित्र का, आत्मबल का बीजारोपण बचपन में [illegible] संभव है और यदि उस समय कोई ध्यान नहीं दिया जाए तो बहुत सारे गुण, बहुत सारी शक्तियाँ, जो आगे चलकर पूर्ण रूप से प्रस्फुटित हो सकती हैं, पनपने का मौका न मिलने के कारण अंकुर-अवस्था में ही नष्ट हो जाती हैं। बीज ठीक अपने मौसम में यदि न बोया जाए तो उसके अंकुरण में पनपने की सम्भावना तनिक कम ही होती है और यदि अंकुर निकलकर बड़ा भी हुआ तो उस अच्छी अवस्था को प्राप्त कदापि नहीं हो सकता, जो ठीक समय पर बीज रोपण करने पर उसकी होती। दो से पाँच वर्ष की अवस्था ऐसी होती है जब कि बालक के चरित्र की नींव पड़ती है। यदि उसकी शिक्षा-दीक्षा, उसकी देख-रेख भली प्रकार इस बाल्यावस्था से ही होती है तो बालक आगे चलकर राष्ट्र की एक अमूल्य निधि बन सकता है।

प्रवृत्तियाँ जैसे—कार्य करने की इच्छा, स्वावलम्बी होना, आपस में प्रेम-व्यवहार, नेतृत्व करने की [illegible] उत्सुकता, यह सब बचपन में ही प्रत्यक्ष होती हैं और इनको यदि उसी समय ठीक दिशा में लगा दिया जाए और ठीक-ठीक पनपने का अवसर दिया जाए तो ये बालक को उन्नति के उच्चातिउच्च शिखर पर ले जाने में समर्थ हो सकती हैं। इस दृष्टि से हमें नर्सरी स्कूल बहुत आवश्यक प्रतीत होते हैं। परन्तु मैंने अभी तक जो कुछ कहा है, वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कहा है। नर्सरी स्कूल दूसरी दृष्टि से भी परम उपयोगी हैं।

भारत में कितने मनुष्यों की अवस्था ऐसी होगी कि वे अपने बालकों को उनके मानसिक और शारीरिक विकास के उपयुक्त साधन दे सकें, शायद विरले ही। बालकों के [illegible] के लिए यह आवश्यक है कि उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

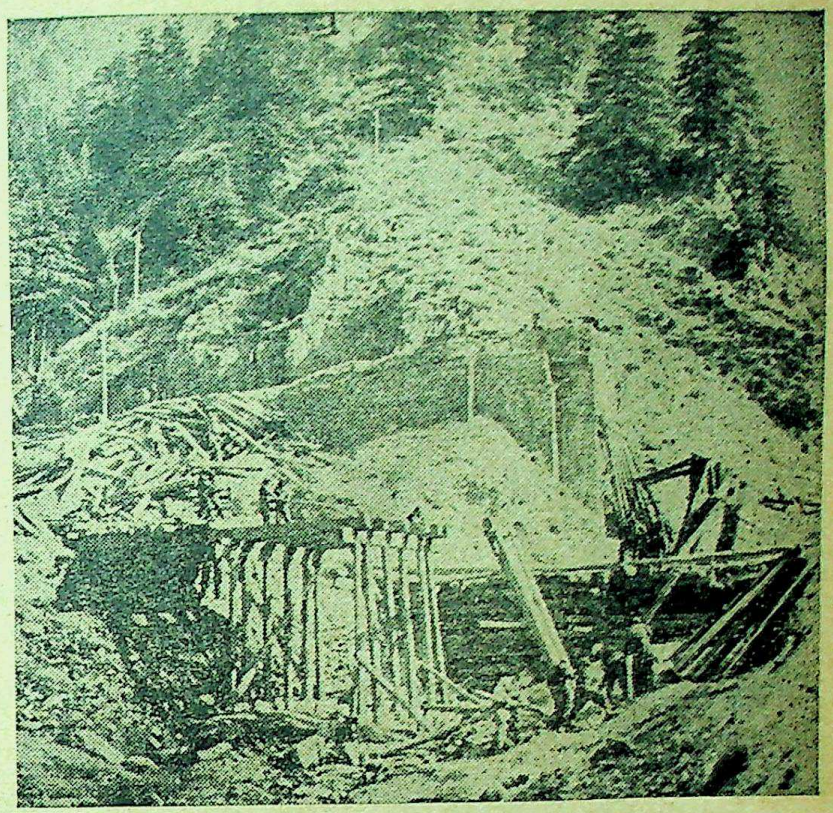

यूरी-बारामूला मार्ग के पुलों को भागते हुए पाकिस्तानी आक्रामक तोड़ते गए हैं। बगल के चित्र में ऐसे ही टूटे हुए पुलों को पुनः बनाते हुए भारतीय सैनिक अंकित हैं।

पाकिस्तानी लुटेरों के हाथ से लूटा हुआ माल हाल ही में पुनः छीन लिया गया है। बगल के चित्र में अफसर ऐसा ही माल उसके अधिकारियों को पुनः सौंप रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

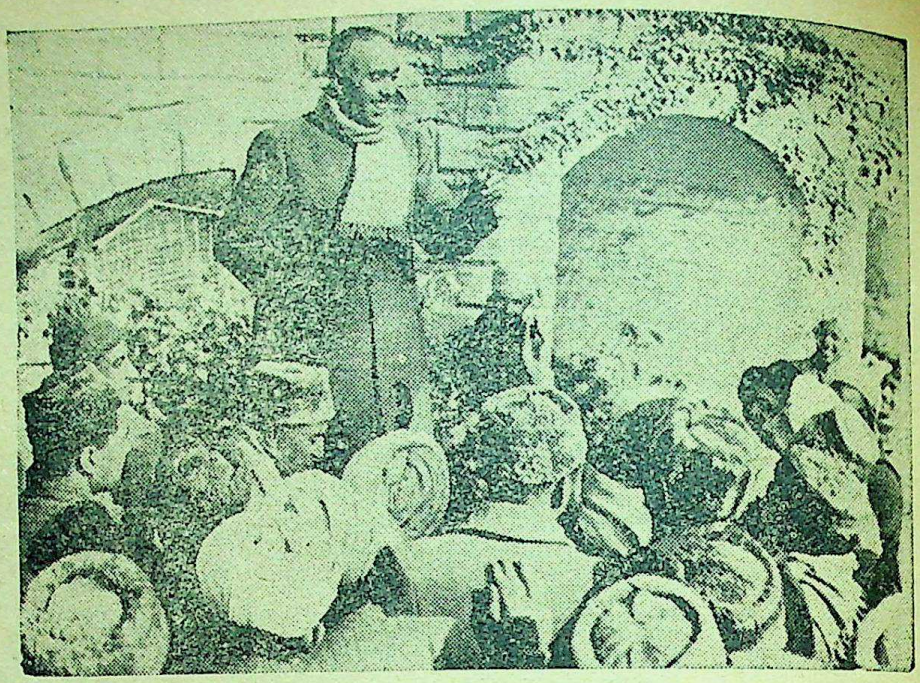

शेरे-काश्मीर शेख अब्दुल्ला अपने देश के इस संकट में पूरी तत्परता से कार्य कर रहे हैं। ऊपर के चित्र में वे एक प्रतिनिधि दल के साथ वार्ता करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

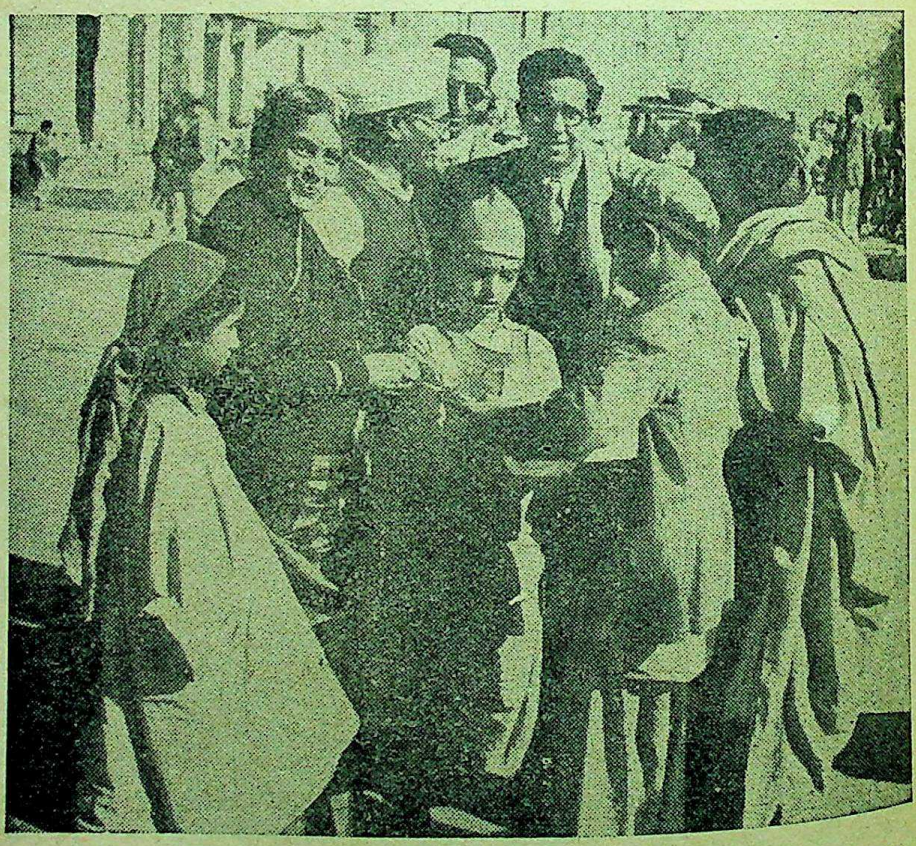

समाजवादी नेता श्री राममनोहर लोहिया श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय के साथ काश्मीर पहुंच गए हैं। ऊपर के चित्र में उनके हाथों राष्ट्रीय बैज बचते हुए मुसलमान लड़के अंकित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलने-कूदने के लिए खुला मैदान हो। उनके अंग-प्रत्यंग को चुस्त करने के लिए नाना प्रकार के खिलौने तथा ऐसा सामान हो जो कि उनको चढ़ने, फिसलने, मकान बनाने इत्यादि का अभ्यास दे सके। यह सामान सिर्फ बालकों के मनबहलाव के लिए ही आवश्यक नहीं है, यह उनके संसार के ज्ञान को विस्तृत करता है। ऊपर बतलाया जा चुका है कि बालकों में प्रवृत्तियाँ होती हैं। नर्सरी स्कूल अपने भिन्न साधनों-द्वारा इन प्रवृत्तियों को ठीक-ठीक विकसित होने का अवसर देता है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या ये प्रवृत्तियाँ घर में रहने पर विकसित नहीं हो सकतीं? हो सकती हैं अवश्य, परन्तु उस दशा में जब कि घर का वातावरण एक बहुत आदर्श प्रकार का हो।

कुछ ही घर ऐसे होंगे, जहाँ बालकों का लालन-पालन भली भाँति हो सकता है। बहुत कम घरों के बालकों को खुला मैदान घर में मिल सकता है। अधिकांश मनुष्य नगर में एक-एक दो-दो कमरों में ही गुजर करते हैं। फिर उस छोटे से घर में कितने ही प्राणी रहते हैं। इस दशा में बालक को बाधाहीन खेलने का अवसर नहीं मिलता। स्थान की इस कमी को पूरा करने के लिए बालक खेलते हैं गलियों में, सड़कों पर, जहाँ वे तरह-तरह की बुरी बातें सीख जाते हैं, तरह-तरह की बीमारियों के शिकार बनते हैं। कुछ लोग कह सकते हैं कि ग्रामों में तो जगह की कमी नहीं है और भारत की ९० फी सदी जनता ग्रामों में ही रहती है। ठीक है। कुछ अंश तक ये ग्रामीण बालक नागरिक बालकों की बंनिस्बत भाग्यवान् हैं। परन्तु और सारी कमियाँ तो वही हैं, जो कि शहर में मिलती हैं। जैसे निरीक्षण न होने के कारण बालक कुसङ्गति में पड़ जाते हैं और बुरी-बुरी बातें सीख जाते हैं। फिर बहुत घरों में भी बाहर खेलने का, या भाई-बहन के साथ खेलने का मौका नहीं मिलता।—जहाँ घर में सिर्फ एक ही बालक है, वहाँ वह बड़ों के संसर्ग में रहने को बाध्य होता है—जहाँ कि उसे कोई सहानुभूति नहीं मिलती। मिलती है केवल प्रतारणा।

बालक संसार की विभिन्न वस्तुओं को देखकर चकित होता है और अपने माता-पिता से अपने प्रश्नों का समाधान चाहता है। लेकिन वहाँ खीज के साथ उत्तर मिलता है—"जाओ चुपचाप खेलो, तंग मत करो।" ठीक भी है, पिता काम पर चला जाता है, माता घर के काम-काज में फँसी है और छोटा बालक घर में है, जिसके लालन-पालन में वह व्यस्त है, ऐसे समय बालक के तरह-तरह के प्रश्नों से वह चिढ़ उठती है—और बालक को चुप रहने का आदेश देती है, या बाहर खेलने को कहती है। उसको इससे कोई मतलब नहीं कि बालक कहाँ खेलता है, कैसे साथियों के साथ खेलता है, क्या बातें सीखता है इत्यादि।

भारत कृषि-प्रधान देश है। अस्सी-नब्बे फी सदी माताएँ बालक को रूखा-सूखा खाना देकर खेतों पर काम को जाती हैं। शहरों में गरीब माताएँ मिलों में काम करती हैं। अब यदि वे चाहें भी कि अपने बच्चों के साथ सहानुभूति का बर्ताव करें, उनके प्रश्नों का समाधान करें, उनका लालन-पालन भली भाँति करें तो वे सर्वथा असमर्थ हैं। ये दो-दो तीन-तीन साल के बालक बिना किसी यथेष्ट निरीक्षण के रह जाते हैं। इन्हीं सब बातों को देखते नर्सरी स्कूलों की बहुत आवश्यकता है।

योरप के राष्ट्रों में तथा अमेरिका में इन्हीं सब कमियों पर जनता तथा सरकार का ध्यान आकृष्ट हुआ और उन्होंने अब २ साल से ५ साल तक के बालकों के शिक्षा कार्य में यथेष्ट उन्नति प्राप्त कर ली है। अमेरिका में हजारों की तादाद में नर्सरी स्कूल खुल गए हैं। इंगलैंड के प्रत्येक मुहल्ले में ऐसी संस्थाएँ हैं, जहाँ बच्चों को १० बजे के लगभग घर का कोई व्यक्ति पहुँचा जाता है और स्कूल बन्द होने पर ले जाता है। यहाँ १५-२० बालक एक अध्यापिका के निरीक्षण में खेलते हैं, प्रश्न करते हैं। तरह-तरह के खेलों के साधन-द्वारा उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है और प्रवृत्तियों का उचित विकास होता है। यहाँ यदि वे प्रश्न पूछते हैं तो उसका उत्तर उन्हें मीठे शब्दों में मिल जाता है। यहाँ बालक पर तभी नियन्त्रण रहता है जब कि वह कोई खराब काम करता है, अन्यथा वह जैसा भी चाहे खेल सकता है। नर्सरी स्कूल में बालक समय पर काम करने के आदी हो जाते हैं। यहाँ उनको ताड़ना के रूप में सजा नहीं मिलती, जिससे ज्यादातर बच्चे ढीठ हो जाते हैं और सोचते हैं कि उनके ऊपर ज्यादती की गई है। दण्ड उनके कार्य से इस प्रकार सम्बन्ध रखता है कि वे समझ जाते हैं कि उनको सजा ठीक ही मिली थी और फिर भविष्य में कभी वैसा कार्य नहीं करते। यदि कोई बालक फर्श को गंदा करता है तो उसको फर्श साफ करना पड़ता है, यदि बालक खिलौने इधर-उधर फेंक देता है तो उसको फिर से खिलौने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक तरह से रखने पड़ते हैं। बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है और इसके कारण बालक एक दूसरे को देखकर बहुत-सी बातें सीख लेते हैं जैसे समय पर भोजन करना, अपने बदन की सफाई रखना, कपड़े पहनना इत्यादि। फिर और प्रवृत्तियाँ भी अवसर पाकर विकसित होती हैं।

नर्सरी स्कूल के कार्य-क्रम के सबसे मुख्य और आवश्यक अंग डाक्टरी जाँच तथा दोपहर का नाश्ता है। इंगलैंड, अमेरिका और अन्य देशों के नर्सरी स्कूलों के बालकों की समय-समय पर डाक्टरी परीक्षा होती रहती है और मुख्यतः उस समय जब कि बालक भरती किया जाता है। डाक्टरी जाँच का उद्देश्य यह होता है कि ऐसा बालक स्कूल में भरती न हो जाए, जो रोगी हो अन्यथा बीमारी और बालकों को लगने का भय रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन भी सबसे पहले उनकी सरसरी जाँच नर्स या डाक्टर या वहीं की एक अध्यापिका जो कि बालकों के साधारण रोगों से परिचित होती है, करती है, यह देखने के लिए कि कहीं बालक को जुकाम, खाँसी आदि तो नहीं है। जिस बच्चे को जुकाम, खाँसी इत्यादि होती है, उसको या तो घर वापिस भेज दिया जाता है और यदि यह सम्भव न हुआ तो उसको और बच्चों से अलग रखते हैं।

बालक इस जाँच के ऐसे आदी हो जाते हैं कि डाक्टर या नर्स को देखते ही अपना मुँह खोल देते हैं, जिससे वह उनके गले इत्यादि को देख सके। जो बालक अस्वस्थ होते हैं, उनके माता-पिता को बीमारी का उपचार बतला दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नर्सरी स्कूल में जाने के कारण और रोग के फैलने में नियन्त्रण होने के कारण, बालकों का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो जाता है और वे रात-दिन की बीमारी से बचे रहते हैं।

हमारे भारतवर्ष में इस डाक्टरी जाँच की परमावश्यकता है। यहाँ बहुत बालक उचित देख-रेख न होने के कारण तथा समय पर बीमारी का पता न लगने के कारण बाल्यावस्था में ही काल-ग्रास बन जाते हैं।

दूसरा अंग है दोपहर का नाश्ता या भोजन। नर्सरी स्कूल में जो जलपान या नाश्ता दोपहर के समय दिया जाता है, वह मौसम के अनुसार होता है। बालकों को मिश्रित भोजन देने का प्रयास किया जाता है, जिससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहे। बहुत-से माता-पिता अपने बच्चों को आर्थिक कठिनाइयाँ होने के कारण स्वास्थ्यकर भोजन नहीं दे पाते, इसकी कमी नर्सरी स्कूल में पूरी हो जाती है। भोजन और शिक्षा में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। जिन बच्चों को पुष्टिकर भोजन मिलता है, वे और बच्चों के मुकाबले, जिनको अच्छा भोजन नहीं मिलता, तेज होते हैं। ए० एच० सैमूर ने इंगलैंड में इस पर अन्वेषण किया था, उससे साबित हुआ कि जिन बालकों को नर्सरी स्कूल में खाना मिलता था, वे सब विषयों में तेज निकले उनके अपेक्षा जो घर पर ही खाना खाते थे।

नर्सरी स्कूल में बालकों को सरकार की ओर से जलपान निःशुल्क दिया जाना चाहिए और यदि दाम भी लिए जाएँ तो वह इतने कम हों कि गरीब माँ-बाप पर इसका बहुत भार न पड़े।

बालक नर्सरी स्कूल में बहुत सी अच्छी बातें सीख जाता है—जैसे काम करने की आदत, आपस में प्रेम से रहना और एक साथ काम करने का ढंग।

यह सब तो हुई बालकों की दृष्टि से लाभ की बातें; माता-पिता के लिए भी नर्सरी बहुत हितकर है। माता-पिता बालकों को स्कूल भेज देते हैं और फिर उन्हें स्वयं काम करने का अवसर मिल जाता है। ब्रिटेन का हमारे सामने एक ज्वलंत उदाहरण है। लड़ाई के जमाने में वहाँ की स्त्रियों ने कितना काम किया, यह सबको विदित ही है। लेकिन सबसे गौण प्रश्न जो हमारे सामने आता है, वह है कि उनके पीछे उनके बच्चों की देख-भाल कैसे होती थी, कैसे उन्हें घर-गृहस्थी के कार्यों से अवकाश मिल जाता था। उनको अवकाश देने में सहायक नर्सरी स्कूल ही थे। उस समय २८०० नर्सरी स्कूल चालू अवस्था में थे, जिनमें १३१००० बालक शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। माताएँ अपने बालकों को नर्सरी स्कूल पहुँचा देती थीं और स्वयं काम पर चली जाती थीं। इस प्रकार लड़ाई लड़ने का कार्य ही केवल पुरुषों के सुपुर्द था, बाकी सब व्यवस्था वहाँ की महिलाएँ सँभाले थीं। यदि भारत में भी नर्सरी स्कूल ज्यादा संख्या में हों, तो यहाँ की स्त्रियाँ भी निश्चिन्तता के साथ अपना समय अपने राष्ट्र की उन्नति में लगा सकती हैं।

इन्हीं सब कारणों से हम समझ सकते हैं कि नर्सरी स्कूलों का खोलना हमारे लिए और हमारे राष्ट्र के लिए कितना हितकर होगा। नर्सरी स्कूल में बालक के रहने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था ५ वर्ष की जगह यदि ६ वर्ष हो जाए तो और भी अच्छा होगा। नर्सरी स्कूल के बाद तत्काल ही बालक दूसरे स्कूल में भरती होने के योग्य हो जाएगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि नर्सरी स्कूल किस प्रकार खोले जाएँ कि उनमें कम-से-कम खर्च पड़े। हमारी सरकार इस समय आर्थिक कठिनाई में है। अतः यह खर्चे का प्रश्न बहुत आवश्यक हो जाता है। मेरी समझ में तो जितने लड़कियों के स्कूल तथा कालेज हैं, उन सबमें एक नर्सरी सेक्शन खोल देना चाहिए और लड़कियों के लिए जिस प्रकार गृह-कार्य की शिक्षा अनिवार्य की जा रही है, उसी प्रकार बाल-शिक्षा-प्रणाली अनिवार्य कर दी जाए। ट्रेनिंग कालेज इत्यादि में भी नर्सरी सेक्शन खोल देने चाहिए, वहाँ छात्राओं को ट्रेनिंग प्राप्त करने में सुविधा होगी। इस प्रकार स्कूल के लिए इमारत का खर्चा नहीं करना पड़ेगा। फिर क्योंकि यह विषय गृह-विज्ञान के समान ही व्यावहारिक है लड़कियाँ बारी-बारी से बच्चों को शिक्षा देना तथा उनकी देख-भाल करना सीखेंगी। इस प्रकार बड़े-बड़े नर्सरी स्कूलों का काम थोड़ी अध्यापिकाओं से ही चल जाएगा।

वह दिन शुभ होगा जब कि नर्सरी स्कूल हमारे ग्राम-ग्राम तथा नगर-नगर में खुल जाएँगे।

स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थ

श्री अमृतलाल ताराचन्द्र दोसी

मैं अर्थशास्त्र, इतिहास या राजप्रकरण का ज्ञाता जैसा अभ्यासी नहीं हूँ। फिर भी देश की स्थिति के सामान्य परिचय में रहना मुझे पसंद है। सिर्फ इसी आधार पर मुझे देश की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में जो कुछ विचार आए हैं, उसको संक्षेप में लेखनी द्वारा व्यक्त करता हूँ।

व्यावहारिक या राष्ट्रीय किसी भी क्षेत्र में स्वतंत्रता का निरपेक्ष अर्थ ढूँढ़ना सम्भव नहीं है। इसलिए जब स्वतंत्रता के अर्थ के सम्बन्ध में विचार करते हैं तब सापेक्ष दृष्टि से ही विचारने का अवकाश रहता है। देश स्वतन्त्र हुआ। हमने आजादी प्राप्त की। ऐसे उद्गार निकालना और उसका प्रचलित सामान्य अर्थ समझना कोई कठिन बात नहीं है। उसी तरह स्वतन्त्रता-प्राप्ति के निमित्त होनेवाले सारा हेर-फेर को समझना और उस निमित्त होनेवाले जलसे या महफिलों में रस लेना यह भी आसान है। लेकिन आनेवाली स्वतन्त्रता हमारे जीवन को किस प्रकार स्पर्श करती है, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन-प्रदेश के कौन कौन से संकुचित द्वारों को विकसित करती है; वैसे ही उस स्वतन्त्रता-जनित मुक्ति में से किस प्रकार की कर्तव्य-परतन्त्रता अनिवार्य रूप से फलित होती है, यह समझना ज्यादा कष्टसाध्य है, जो स्वतन्त्रता का सच्चा अर्थ है।

स्वतन्त्रता आई इससे इतनी बातें तो सबके दिल में बसी हुई हैं कि हमने अँगरेजी हुकूमत की परतन्त्रता से या विदेशी शासन की गुलामी से मुक्ति पाई। विदेशी शासन की गुलामी का विचार आते ही हम यह भी सोचने लगते हैं कि क्या ब्रिटिश शासन के पहले हम गुलाम नहीं थे? अगर नहीं थे तो किस अर्थ में? और अगर थे तो किस अर्थ में? यह भी विचार आता है कि अँगरेजों ने इस देश को गुलामी में जकड़ा और पुष्ट किया। लेकिन यह भी विचारणीय है कि क्या उसने मात्र दासत्व को ही पोसा या स्वतन्त्रता के बीज भी बोये? ये और तत्सम दूसरे प्रश्न भी हमको बहुत लम्बे नहीं तो निकट अतीत काल पर तटस्थ दृष्टि डालने को प्रेरित करें। योरप के भिन्न भिन्न देशों में से विदेशी आए, उस समय की और अँगरेजी हुकूमत स्थापित हुई तब तक की देश की स्थिति का विचार करें और उसकी अँगरेजी हुकूमत स्थापित होने के बाद की देश की स्थिति के साथ तुलना करें तो हमको यह समझना ज्यादा आसान होगा कि अँगरेजी शासन के समय में और उसके पहले की देश की स्थिति में क्या अन्तर था? और यह भी समझना ज्यादा सरल हो जाता है कि अँगरेजी शासन ने किन-किन बातों में गुलामी डाली और उसको मजबूत किया और किन-किन बातों में उसने पुरानी गुलामी की जड़ें उखाड़ीं या ढीली कीं। यह भी समझना ज्यादा आसान हो जाए कि विदेशी हुकूमत ने हम समझते हैं उस अर्थ में स्वतन्त्रता के नए बीज बचपन इच्छा से या अनिच्छा से, जानते या अजाने कौन-कौन से और कितने प्रमाण में बोए। जिसका परिणाम हम आज अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त होने की कृतार्थता में एक या दूसरे रूप में अनुभव करते हैं।

अँगरेजी शासन स्थापित होने के पूर्व देश का आर्थिक जीवन स्वतन्त्र था। अतः देश का कृषि-उत्पादन, उसका बँटवारा, उद्योग-धन्धे, कला कारीगरी, इन सबका जीवन-दायी प्रवाह-मात्र देशाभिमुख था। अतः कैसे भी दुष्काल में उदर-पूर्ति का कार्य ब्रिटिश-शासन के सुकाल के दिनों की अपेक्षा कई गुना सुलभ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब मानव जीवन का आधार रूप पशु-जीवन और वनस्पति-जीवन खूब आबाद, हरे-भरे एवं समृद्ध थे। जो ब्रिटिश सल्तनत के स्थापित होने के बाद उत्तरोत्तर ह्रास होते-होते आज क्षीणप्राय हो गए हैं, और सर्वथा सूखकर-मुरझाकर विनष्टप्राय हो गए हैं। जिससे संख्या की दृष्टि से मानव-समाज आबाद होते हुए भी जीवन की दृष्टि से कंकालसम रक्त-मांस और वीर्यहीन हो गया है। अँगरेजी शासन के पहले देश की धार्मिक, सामाजिक और शिक्षण-सम्बन्धी स्थिति अँगरेजी शासन स्थापित होने के बाद की उस विषय की स्थिति के मुकाबले में दयनीय और एक-देशीय ही थी। देश में धार्मिक वातावरण व्यापक और घन था। लेकिन उस वातावरण में जितनी परलोकाभि-मुखता की ओर शुष्क क्रियाकांड की प्रचुरता थी, उतनी ही ऐहिक जीवन के दहकते हुए और तत्काल सुलझ चाहने-वाले प्रश्नों की तरफ से उदासीनता और पुरुषार्थ-हीनता थी।

श्रद्धा अति और अन्ध दबाव बुद्धि और तर्क के प्रकाश को बहुत आसानी से धुँधला कर सकता है। समाज में स्त्री-शक्ति सर्वथा उपेक्षित एवं सुषुप्त अवस्था में थी। उसका स्वातन्त्र्य था तो सिर्फ गृहाङ्गण के जीवन को सुशोभित करने को या क्षुब्ध करने को। वर्ण-व्यवस्था का समग्र जोर जात-पाँत के अनेक बाड़ों, चौकावृत्ति एवं ऊँच-नीच की भावना में समाविष्ट था। ब्राह्मण और दूसरे गुरुवर्ग की और उनको महत्त्व देनेवाले इतर सवर्णों की जितनी महत्ता और श्रेष्ठता थी, उतनी ही दलित एवं अस्पृश्य गिने जानेवाले वर्गों की क्षुद्रता एवं निन्दनीयता रूढ़ हो गई थी। समग्र जीवन में महत्व का भाग लेने-वाले लग्न के सम्बन्ध ऐच्छिक या गुणाश्रित मुश्किल से रहने पाए थे। घर-आंगन में न्याय करनेवाले एवं समा धान करानेवाले पंच एवं महाजन की पुरानी संस्थाओं में सेवा की अपेक्षा सत्ता की भावना प्रबल हो गई थी।

सारे देश में शिक्षण का माध्यम सस्ता एवं सुलभ था। लेकिन वह शिक्षण जिस प्रकार उच्च गिने जानेवाले वर्ण और वर्ग को स्पर्श करता था, वैसा ही परम्परागत था। उतने ही प्रमाण में या उससे भी ज्यादा प्रमाण में उस शिक्षण से देश का बड़ा भाग वंचित रहता था। सारा स्त्री-समाज मुख्य रूप से विद्या और सरस्वती की पूजा में ही शिक्षण की इतश्री समझता था। शिक्षण के विषय थे तो अनेक, लेकिन उन सब विषयों का लक्ष्य मुख्य रूप से परलोकगामी ही बन गया था। वैसे विषयों का ज्ञान ऐहिक जीवन में जैसा चाहिए, वैसा रसप्रद नहीं होता था। उसमें सेवा करने के बदले सेवा लेने की भावना प्रधान रूप से पुष्ट होती थी। ब्रह्म की और अद्वैत की गगनचुम्बी भावनाएँ चिन्तन में जरूर आती थीं, लेकिन व्यवहार में उनकी छाया नाम-मात्र की थी। वैज्ञानिक शिक्षण का तो कतई अभाव था। शिक्षण कल्पना से आगे बढ़कर प्रायोगिक भूमिका में भाग्य से ही जाता था।

राजकीय स्थिति छिन्न-भिन्न होकर सैन्य जैसी हो चुकी थी। पिता-पुत्र, भाई-भाई और प्रायः स्वामी-भृत्य के बीच राजसत्ता का लालच महाभारत और गीता में वर्णित कौरव-पाण्डव के गृह-कलह को सदैव सजीव रखता था। सारे देश में तो क्या, एक प्रान्त तक में संवादी कहा जाए ऐसा प्रजा-हितैषी शासन मुश्किल से टिकता था। तलवार, बन्दूक या भालों को चलाने में दक्ष मनुष्य जब चाहें तब प्रजा-जीवन को बिगाड़ सकते थे। परदेशी या स्वदेशी आक्रमण के सामने काम दे सकने योग्य सामूहिक त्राण-शक्ति कतई निर्जीव हो चुकी थी। इसी कारण अँगरेज भारत को जीतने में और उस पर आधिपत्य जमाने में सफल हो गए।

अँगरेजी शासन के प्रारम्भ से ही देश का आर्थिक प्रवाह विदेश की तरफ बहना प्रारम्भ हो गया था। वह उस शासन की स्थिरता और एकरूपता की वृद्धि के साथ इतना बढ़ गया कि आज जब अँगरेजी शासन अपने आप विदा ले लेता है तब सारे देश में स्वतंत्रता की प्राप्ति का उत्सव मनाने योग्य वास्तविक, आर्थिक समृद्धि नहीं रही है। अँगरेजी हुकूमत से कोई भी बड़ी-से-बड़ी हानि हुई तो वह देश के आर्थिक और औद्योगिक जीवन को हुई है। अँगरेजी हुकूमत ने एक या दूसरे कारण से रूढ़ और संकीर्ण धर्मबलों को पोसा है या उसको टिका रक्खा है। यह बात बिलकुल ठीक है, लेकिन साथ-ही-साथ उस शासन की छाया में देश के धार्मिक बलों में इष्ट वेग भी आया है। अनेक अंशों में वहम का स्थान विचारों ने, परलोकाभिमुख जड़ क्रिया-कांडों का स्थान सजीव ऐहिक सेवा-धर्मों ने और भक्ति की अंधता का स्थान सजीव मानव-भक्ति ने लिया है। अँगरेजी शासन के समय में तर्कवाद को जो बल मिला है, उसने जितने अंश में अनिष्ट किया है, उससे ज्यादा अंश में श्रद्धा और बुद्धि का संशोधन भी किया है। अँगरेजी शासन स्थापित होने के बाद ही हम समूचे देश की अखंडता और एकरूपता की कल्पना करने लगे। उसके पहले सांस्कृतिक एकता थी, यह ठीक है; लेकिन राजकीय एकता का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

दिनों सिर्फ सूत्रपात ही नहीं हुआ, व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त हुआ। पहले कभी नहीं हुआ था। छोटी-मोटी राज-सत्ता के लिए आपस में टकरानेवाले साँड़ जैसे जमींदारों, ठाकुरों और राजा-महाराजाओं को अँगरेजी शासन ने ही कील दिया। और प्रजावर्ग को कुछ शान्ति मिले, वैसी परिस्थिति पैदा की। ब्रिटिश तंत्र ने अपने जीवन को टिकाने के लिए और विकसित करने के लिए इस देश में जो-जो किया, उसके अनिष्ट परिणाम कम नहीं हैं। फिर भी उसने लोकतंत्र का जो पाठ दिया और शिक्षण का जो दृष्टि-बिन्दु समझाया, वैसे ही शिक्षण, व्यापार और प्रवास के लिए जो बड़े पैमाने पर देश के द्वार उद्घाटित किए या जल और स्थल के बन्धनों को तोड़कर भारत और इतर देशों को अधिक-से-अधिक सजीव कर दिया, उसकी तुलना में दूसरे अनिष्ट नगण्य जैसे मालूम होते हैं। ब्रिटिश-शासन में प्राप्त हुआ यह एक ही लाभ ऐसा है, जिसमें स्वतंत्रता के सब बीजों का समावेश हो जाता है। आज भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है तब ब्रिटिश-शासन में उत्पन्न अनिष्ट तत्त्व और उस काल में प्राप्त हुई सिद्धियाँ भी हमको विरासत में मिली हैं। अब अगस्त की पन्द्रह तारीख के बाद अपने लिए स्वतंत्रता का क्या अर्थ हो सकता है, यह विचारने का काम अपना है न कि अँगरेजों का।

उपर्युक्त दृष्टि को सामने रखकर स्वतंत्रता का अर्थ संक्षेप में इस प्रकार किया जा सकता है—(१) इतिहास के प्रति ईमानदार रहकर वर्तमान परिस्थिति का तटस्थ अवलोकन करके भावी मंगल-निर्माण की दृष्टि रखकर जो अनेक विधि हेर-फेर करने पड़ें, उसको करने में पूर्ण उल्लास और रस का अनुभव करना। (२) जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जो दोष और त्रुटियाँ जड़ जमा बैठी हैं, उनको निर्मूल निवारण करने में, अब स्वराज्य मिलने के बाद कोई बाहरी तत्त्व अंतराय रूप या विघ्नरूप नहीं है, ऐसे विश्वास के साथ, कटिबद्ध होना। (३) कोई भी व्यक्ति स्वयं को प्राप्त हुई सिद्धियों को सँभालने का और नई सिद्धियाँ प्राप्त करने का कार्य, संपूर्ण उत्तरदायित्व उठाने का और उसके लिए मर मिटने की कर्तव्य-परतंत्रता स्वीकार करने के सिवाय सिद्ध नहीं कर सकता, ऐसी समझदारी प्राप्त करना।

ऊपर दिखलाए गए अर्थ हमको इस बात की प्रेरणा करते हैं कि हम "ईशावास्य" के मूलमंत्र को अपना मुद्रा-लेख बनाकर रक्खें। और वह यह कि कोई भी व्यक्ति या प्रजा लम्बा, सुखी और संवादी जीवन जीना चाहे तो उसको आवश्यक सब तर्कव्य करते रहना चाहिए। अर्थात् पुरुषार्थ-हीनता में धर्म नहीं मानना चाहिए। व्यक्ति और समष्टि के मधुर सम्बन्ध ठीक रहें और बढ़ें, उसके लिए यह मन्त्र सूचित करता है कि स्वकर्तव्य के फल का उपभोग त्याग-पूर्वक करना चाहिए और दूसरे के श्रमफल पर लालच नहीं करना चाहिए।

'ईशावास्य' के उक्त मंत्र का सार धर्म, जाति, अधिकार और संपत्ति के स्वामियों को सचेत कर रहा है कि तुम अपनी-अपनी सत्ता के लोभ से तरह-तरह के अधिकार प्राप्त करने के लिए उद्यत न हो जाओ, प्रत्युत जनता के हित में ही अपना हित समझो। अन्यथा अँगरेजों के शासन में जैसी या उससे भी ज्यादा भयानक अराजकता फैलाने का कारण बनोगे और विदेशी आक्रमण को फिर से न्योता देकर अपने आपको गुलामी के पाश में जकड़ा पाओगे।

——

दक्षिणोत्तर-समन्वय

श्री शंकर राजू नायडू, एम० ए०, प्रभाकर

भारत के भाषानुसार प्रान्तीय विभाजन की पुकार अब दिन-प्रतिदिन तीव्र होती जा रही है। इसका मूलभूत कारण क्या है? जो मद्रास-प्रान्त अँगरेजी राज्य में कई वर्षों से तामिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नडी भाषा बोले जाने-वाले भूखंडों से मिलकर एक बना हुआ था, अब वह उस अँगरेजी आधिपत्य के अदृष्ट होते ही क्यों विभक्त होना चाहता है? क्या उसे इस बात का ज्ञान नहीं है कि संगठन में ही शक्ति निहित है? क्या मद्रास मनुष्य-जन्य धार्मिक कट्टरता के कारण पाकिस्तान का अनुकरण करना चाहता है? कदापि नहीं। इसका एक-मात्र कारण यही है कि अब भारतीयों के प्रत्येक समाज और व्यक्ति की आँखें खुल गई हैं। उनको भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के—

"निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।"

का अर्थ समझ में आ गया है। सब अपनी भाषा को केन्द्रीभूत करके विकास की सीढ़ी पर चढ़ना चाहते हैं।

भारतवर्ष हमारा देश है। वह एक था और एक रहेगा, चाहे कुछ समय के लिए बाह्य रूप से खंडित हो गया हो। विद्वज्जन आशा करते हैं कि निकट भविष्य में वह पुनः एक हो जाएगा। सिर्फ जरा आपरेशन की आवश्यकता है। कुछ दर्द होगा अवश्य। पर उसे सहना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब प्रश्न है देश की उन्नति अर्थात् जनता के सुखमय, शांतिपूर्ण जीवन और विकास का। नहीं तो—

"कोउ नृप होइ हमैं का हानी"

वाली बात हो जाएगी। भारत की स्वातंत्र्य-प्राप्ति के साथ-साथ हमें यह शांति स्वतः प्राप्त नहीं हो सकती। स्वतंत्रता तो शांति एवं विकास का सर्वप्रथम सोपान है। उसमें तो हमने आधुनिक बुद्ध के आदेशानुसार अग्रसर होकर सफलता प्राप्त कर ली। परन्तु हमारे सामने अब उससे भी या उसके समान ही बड़ा एक प्रश्न आ गया।

जिस प्रकार अन्य देश के अनधिकार आधिपत्य को हटाने के लिए अपने देश को एक होने की, उस 'अन्य' की हर एक बात को सामूहिक रूप से समझकर, संगठित रूप से संग्राम करने की आवश्यकता हमें थी, उसके प्रतिकूल अब हमें अपनी सामूहिक उन्नति के लिए दो बातों की आवश्यकता है। प्रथम तो यह है कि प्रत्येक व्यक्ति व समाज को अपने से बाहर की परिस्थिति अर्थात् देश और अन्य समाजों को समझना और द्वितीय यह कि तदनुसार अपने को बनाना। देश और समाज को समझने से मेरा तात्पर्य है उसका इतिहास और उसकी वर्त्तमान स्थिति को परखना, और अपने को उपयुक्त बनाने से तात्पर्य है शान्ति एवं सुख के लिए उपयुक्त योजनाएँ प्रस्तुत करना और उनके लिए कटिबद्ध होकर काम करना।

देश के सम्बन्ध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि देशाभिमान का भाव अब बच्चे-बच्चे में प्रकाशित हो रहा है। हमारा देश शताब्दियों से नहीं, सहस्राब्दियों से एक रहा है। राम और कृष्ण ने चाहे वे साहित्यिक सत्य ही क्यों न हों, भारत के कण-कण में अपना प्रकाश फैला रक्खा है। दक्षिण भारत में भी कम्बरामायणम् उत्तर के तुलसी रामायण के समान धार्मिक ग्रंथ माना जाता है। घर-घर उसकी आराधना होती है। सब मनुष्य अपने जीवन को राममय अथवा कृष्णमय पाते हैं। शंकर हिमालय से कुमारी अंतरीप तक अपने शिवत्व को फैलाए हुए हैं। महाकवि श्री तिरुवल्लुवर महामुनि कहते हैं, एक जैनी थे अर्थात् जैनाचार्य श्री महावीर स्वामी के प्रभाव से सुदूर दक्षिण में भी तामिल वेद की रचना हो चुकी है। महात्मा गांधी व बाल गंगाधर तिलक ने ही तूत्तुक्कुडी के त्यागी श्री चिदम्बरम् और राष्ट्रकवि भारतियार को जन्म दिया है। कृष्णा, कावेरी आदि नदियों को कृष्ण गंगा, कावेरी गंगा के नाम से पुकारने में अपना अभिमान समझते हैं। दूसरी ओर तिरुवितांकूर के कालडी नामक स्थान में जन्म लेकर ही श्री शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का विशेष प्रचार उत्तर-भारत में किया, श्री रामानुज का ही विशिष्टाद्वैत हमको तुलसी रामायण में दिखाई देता है। कहते हैं, हड़प्पा और मोहेंजोदड़ों में से द्राविडीय संस्कृति के चिह्न अब पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर और दक्षिण भारत का अभिन्न स्वरूप पुरातन काल से बना हुआ है। इस अभिन्नता के कारण ही संसार के अन्य देशों में भारत को आज भी वह स्थान प्राप्त है, जो किसी अन्य देश को न प्राप्त हुआ और न होगा।

भारत का इतिहास अत्यन्त अनुपम है। अनेक कठिनाइयों का सामना इसको करना पड़ा है। बाहर से अनेक जातियाँ यहाँ आई हैं और उन्होंने हम पर राज्य भी किया है। अँगरेजी जैसी अभारतीय भाषा को राजभाषा के रूप में अनिवार्य भी बनाया गया है। सबने अपनी-अपनी नीति के द्वारा हम पर खूब शासन किया है। हमारा चिरंतन संग्राम अनीति के विरोध में चलता रहा है। परन्तु हमने अन्यों को भी शरण में आने पर या सौहार्द्र भाव से सम्मिलित होने पर अपना मान लिया। कभी-कभी यह प्रथा हानिकारक भी सिद्ध हुई है। पर हमने उसकी कुछ परवाह नहीं की। कुछ जयचन्दों व मीर जाफरों के कारण हम शताब्दियों से दास बने रहे।

अब समय बदल गया है। पंद्रह अगस्त का पुण्य-दिवस स्वर्णिम प्रभा को फैला गया है। हम स्वतंत्र हो गए हैं। अपनी उन्नति अब हमारे हाथ में है। कोई हमारी बात नहीं काट सकता। कोई अब दाल-भात में मूसरचंद नहीं बन सकता। हम भी किसी को अब मुँह नहीं लगाएँगे। हमें परिस्थिति को समझकर काम करना है, नहीं तो फिर उसी खड्ड में गिर जाने का डर है। समाज को इस बात का अनुभव करना है कि देश हम पर निर्भर करता है, व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्त्ति हमको ही करनी है और व्यक्ति को इस बात का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए कि समाज हम पर टिका हुआ है, क्योंकि यहाँ नाजीवाद या फासिज्म नहीं है किसी एक व्यक्ति के खिलौने हम नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति के कुछ कर्त्तव्य हैं और साथ-साथ कुछ अधिकार भी। इन उचित पालन और प्रयोग हमें करना है।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय को हृदयंगम कर लेने के पश्चात् हमको जरा रुकना होगा, क्योंकि दूसरा पक्ष कुछ कठिन है। हमें ध्यान से विचार करना है कि ऐसी कौन-सी योजनाएँ हैं, जो हमें प्रस्तुत करनी हैं और उनको किस प्रकार से कार्य-रूप में परिणत करें।

उत्तर के लिए हमें पुनः भारतेन्दु के पास ही लौटना होगा—"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।" यदि देश की उन्नति होनी है तो एकदेशीय भाषा भी अनिवार्य है। अभी तक अनधिकार रूप-से अनिवार्य बनी हुई अभारतीय अँगरेजी भाषा का अंत करना होगा। उसका केवल गौण स्थान रहेगा। प्रश्न हो सकता है कि वह कौन सी ऐसी भाषा है, जो संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँधकर प्रत्येक शब्द के साथ राष्ट्रीयता को प्रतिबिंबित कर सकती है? परन्तु अब ऐसे प्रश्न की भी आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि एकमात्र हिन्दी ही, जिसकी स्वतंत्र लिपि नागरी है, भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। अभारतीय अँगरेजी अथवा लिपिहीन एवं काव्य-रहित हिन्दुस्तानी उस राष्ट्रभाषा के सर्वोच्च सिंहासन पर नहीं आसीन हो सकती। सांस्कृतिक, साहित्यिक, सार्वजनिक एवं सारल्य के दृष्टिकोण से एक-मात्र हिन्दी ही स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। लिपि के संबंध में तो बात और भी स्पष्ट है। वह सर्वसम्मत है कि नागरी लिपि ही संसार की सब लिपियों की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक, सुलभ एवं सर्वांगसुन्दर है। हिन्दी भाषा में अन्य भाषाओं के भी अनेक शब्द अपने बनकर लीन हो गए हैं और नागरी लिपि ने तो ज़, फ़ को ही नहीं क़, ऑ, ग़ आदि अपस्वरों को भी सहर्ष स्थान दे दिया है।

समाज का अब कर्त्तव्य यह है कि वह तुरन्त इस बात की घोषणा कर दे कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और राज-भाषा भी और अपने संपूर्ण कार्यों को इस राष्ट्रीयता के रंग में रँग डाले। व्यक्ति का कर्त्तव्य स्पष्ट है। वह स्नेह के साथ इसका अध्ययन और अध्यापन करे। जिनकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं है, उन्हें भी इसका अध्ययन इसलिए करना होगा कि वे देशीय भाषा के संसर्ग से देश की उन्नति के बारे में अधिक स्पष्टता के साथ विचार कर सकें, अपने को राष्ट्रीयता के रंग से रँग सकें, जिससे उनके व्यक्तित्व का संबंध देश की सभी भाषाओं से, अतः समाज एवं व्यक्ति के साथ हो जाए। जैसे अँगरेजी की 'ए' 'बी' पढ़ते ही, वह ऐब भी पढ़नेवाले में स्वतः प्रविष्ट कर जाता है, उसी प्रकार हिन्दी के 'अ' 'उ' 'म' के पढ़ते ही 'ओम' की भावना, अतः एकता के ध्यान व कल्पना से हृदय स्वभावतः प्रफुल्लित हो उठता है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के कारण उसमें प्रत्येक भाषा के साहित्य और समाज का प्रतिबिम्ब अंकित हो जाना चाहिए। कश्मीर को तामिल प्रांत के ही नहीं, अपितु हिन्दी के माध्यम से भारत के प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुँचना चाहिए, एलुत्तच्चन को केरल के नहीं अपितु भारत की विभूति के रूप में प्रकट होना चाहिए। इस प्रकार हमें सभी भाषाओं के साहित्य का हिन्दी में आनयन करना होगा और तभी हिन्दी सच्चे अर्थ में राष्ट्रभाषा कहला सकेगी। जब तक इस प्रकार अपनी राष्ट्रभाषा की उन्नति नहीं होगी, तब तक राष्ट्र की भी उन्नति असम्भव है। सार्वजनिक साहित्य और भाषा ही सर्वप्रथम साधन है, जो दक्षिण और उत्तर-भारत में सच्चा समन्वय उत्पन्न करा सकता है। ऐसे समन्वय की शीघ्रातिशीघ्र आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह और तलाक

हमारे देश में विवाह-प्रथा कब से चली है, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। जब से यहाँ के मानव के विचार, काम और वृत्तियों का लेखा जोखा मिलता है, तभी से विवाह-प्रथा भी चली आ रही है। जिन वेद-मन्त्रों से आज विवाह-संस्कार किया जाता है, उनमें इस प्रथा के कार्यों का जिक्र तो है पर ऐसा एक भी मन्त्र नहीं मिलता, जिसमें इस प्रथा के कारणों का आभास मिलता है। अर्थात् किन दोषों के निराकरण के लिए यह प्रथा चली, यह वेद-मन्त्रों से स्पष्ट नहीं है। इससे यही सारांश निकाला जा सकता है कि उस समय भी यह प्रथा इतनी पुरानी हो चुकी थी कि इसके कारणों को लोग भूल गए थे। यह एक सर्व-साधारण प्रथा बन चुकी थी।

और यह हमारे देश की ही बात नहीं। प्रत्येक देश में किसी-न-किसी रूप में यह प्रथा विद्यमान है। यहाँ तक कि असभ्य जातियों में भी इसकी चाल उतनी ही है, जितनी कि सभ्य जातियों में।

वास्तविक बात यह है कि सम्पूर्ण दीखनेवाला जगत् प्रकृति का परिणाम है। इसके परिणाम की प्रक्रियाओं में दूसरी प्रक्रिया अहंकार (dego) की है। पहले प्रकृति महान् में फिर महान् अहंकार में बदलता है और इसके बाद फिर दुनिया की सारी चीजें बनती हैं। इसलिए जो भी वस्तु जड़ या चेतन संसार में है, उसमें अहंकार अवश्य होता है। चेतन में तो यह तत्त्व प्रत्यक्ष मालूम पड़ता है, दार्शनिक सिद्धान्त से वह जड़ में भी विद्यमान है। यह जीवन का आधार-तत्त्व है। यह तत्त्व जब अपने में केन्द्रित होता है तो हमें "मैं" का ज्ञान पैदा होता है, यही जब दूसरी वस्तु पर केन्द्रित होता है तो उसका फल "मेरा" होने लगता है। अतः हमारे अन्दर जो "मैं" और "मेरा" की भावनाएँ रहती हैं, वे हमारे जीवन के आधार-तत्त्व अहंकार का फल हैं, यह सांख्य दर्शन का सिद्धान्त है।

इस दार्शनिक दृष्टिकोण से मानव जीवन की परीक्षा करें। बालकपन में अहंकार अधिकतर अपने में केन्द्रित रहता है। संसार की प्रत्येक वस्तु को बालक अपने प्रयोग के लिए ही समझता है। जो वस्तु उसे दीखती है, उसे स्वयं लेना चाहता है पर उसका खिलौना कोई ले ले तो रो पड़ता है। यह सब अपने में केन्द्रित अहंकार का स्वरूप है।

जवानी के साथ जब ज्ञान और अनुभव बढ़ने लगते हैं तो वही अहंकार दूसरों की ओर भी बढ़ता है। हम किसी को "मेरा" कहने में एक प्रकार के सुख का अनुभव करते हैं। ममता बढ़ती है और आगे तक बढ़ती ही जाती है।

यह भी क्यों होता है? प्रकृति के समस्त चेतन पदार्थों में एक प्रकार का जन्मसिद्ध अपूर्णता का भान रहता है। यह प्रकृति की ही देन है। हर एक किसी-न-किसी अंश में अपने को अधूरा समझता है। इसी अधूरे-पन को पूरा करने के लिए वह परिश्रम करता है। इसी से संसार का संघर्ष और विकास चलता रहता है।

हाँ, तो स्त्री तथा पुरुष का निर्माण इस प्रकार का है कि उनमें अन्य अपूर्णताओं के साथ-साथ एक स्वजाति-अपूर्णता भी है, स्त्री-जाति जब अपने से भिन्न जाति के अंश से नहीं मिलती तब तक अपने को अपूर्ण समझती है। इसी प्रकार पुरुष भी। यह अपूर्णता बताने की आवश्यकता नहीं। एक दूसरे को 'मेरा' कहने से पूरी होती है। अहंकार इस अपूर्णता को पूर्ण करने के लिए दूसरों पर अपनी छाप डालता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारी पूर्णता जहाँ अपने गुण और शक्तियाँ बढ़ाने से होती है वहाँ अपने से समता रखनेवाली वस्तुओं से भी बढ़ती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Women and Social Ingustice" नाम की पुस्तक में महात्मा गांधी लिखते हैं:—The two live the Same life, have the Same feelings. Each is a Complement of the other. The one Can not live Without the other's active help." अर्थात् दोनों एक ही जीवन बिताते हैं, दोनों के एक से ही विचार होते हैं। एक दूसरे का पूरक है, एक दूसरे की सक्रिय सहायता के बिना जीवित नहीं रह सकता। इसीलिए स्त्री पुरुष के लिए तथा पुरुष स्त्री के लिए स्वभावतः आकृष्ट है। यह आकर्षण हमारी अध्यात्म सत्ता की आवाज है। इसमें शुरू में आधिभौतिक भोग की इच्छा नहीं रहती, चाहे वह बाद में इसी कीचड़ में लिथड़ जाए।

वह अपूर्णता विवाह से पूरी होती है, जीवन भर के लिए एक दूसरे को अपना बना लेता है। यह अपनापन सदा के लिए अमिट और अडिग बन जाता है। महात्माजी के विचारों में सच्चे विवाह का आदर्श शारीरिक सम्बन्ध ही नहीं है अपितु आत्मा का सम्बन्धी भी है। यही आदर्श सच्चा भारतीय आदर्श है। महाकवि बाण ने अपना अद्भुत महाकाव्य इसी आदर्श के उदाहरणरूप उपस्थित किया है। पुराणों में शिव-पार्वती-विवाह भी इसी आदर्श को उपस्थित करता है, महात्माजी लिखते हैं:—"सांसारिक सम्बन्ध जिसका प्रतिरूपक विवाह होता है, दिव्य प्रेम या विश्वप्रेम की चढ़ने की सीढ़ी है। इसीलिए मीरा गाती थी, 'मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई'।"

अतः हमें विवाह के बाद पूर्णता का अनुभव करना चाहिए, अपनी स्त्री से पुरुष को तथा पुरुष से स्त्री को सन्तोष करना चाहिए—यह मर्यादा है। विवाह एक मधुर सुनहरा बन्धन है, जिसमें बँधना ही कल्याण है, सुख है और शान्ति है। इस बन्धन का तोड़ना तलाक है, जिसमें विवाह की खूबियाँ दोष समझी जाती हैं, आत्मनिग्रह को भूल कहा जाता है और परस्पर—समञ्जसता को कूपमण्डूकता। तलाक विवाह की कब्र है, इसके आदर्शों का सत्यानाश।

इसका सबसे पहला दुष्प्रभाव उन्हीं स्त्री-पुरुष के व्यक्तित्व पर पड़ता है, जो तलाक का सहारा लेते हैं। स्त्री ने पुरुष को तथा पुरुष ने स्त्री को जिस पूर्णता के लिए अपनाया था। वह अस्थिर बनकर अपूर्णता का रूप धारण कर लेती है। अपूर्णता का दूसरा नाम ही असन्तोष है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन सदा नए-नए असन्तोषों से घिरे रहते हैं। सुख होता हुआ भी मालूम नहीं पड़ता, दुःख न होता हुआ भी दिखाई देने लगता है। मानव-स्वभाव अमर्यादित होकर बहता पानी बन जाता है, जो एक क्षण भी ठहरकर चैन नहीं पाता। यही कारण है कि जो एक बार तलाक दे लेते हैं, वे जीवन भर तलाक देते ही बिताते हैं। पश्चिमी मुल्कों में एक व्यक्ति एक ही दिन में अनेक बार तलाक दे लेता है और विवाह कर लेता है। यह समस्या वहाँ इतना भयंकर रूप धारण कर चुकी है कि वहाँ की सरकारें इसकी बढ़ती से चिन्तित हैं और ऐसे उपायों की खोज कर रही हैं, जिनसे स्त्री-पुरुषों के स्वभाव की उच्छृंखलता रुके और वे आपस में समझौता कर सकें। स्त्रियों का पद वहाँ पर शौकीनों की ड्रेस जैसा बन गया है, जो दिन में कई बार बदली ही अच्छी लगती है।

जब इस प्रकार घड़ी के पैंडुलम बने हम मौत तक इधर-से-उधर अपनी जीवन-संगिनी की तलाश में घूमते रहेंगे तो जीवन की अन्य आवश्यक समस्याओं पर विचार करने, उन्नति की दिशाओं में झाँकने तथा उनमें दौड़ लगाने का हमें अवसर ही कब मिल सकेगा। पति-पत्नी समस्या ही जीवन की एक ऐसी उलझी पहेली बन जाएगी कि उसे मौत ही सुलझा सकेगी। महत्त्व की ओर अग्रसर होने के लिए घरेलू स्थिरता अनिवार्य है।

दूसरे स्त्री-पुरुष एक दूसरे के साथी ही नहीं प्रत्युत सहायक हैं, एक दूसरे के लिए प्राण देनेवाले। पर जब नियमतः कोई भी साथी एक दूसरे को छोड़ सकेगा तो वह जीवन-विषमताओं में अपने साथी की सहायता क्यों करेगा? क्यों न वह उसी समय दूसरा साथी चुन लेगा इस प्रकार परस्पर-सहायता से जो दोनों का जीवन उन्नत होना था, वह रुक जाएगा और समाज की इससे बड़ी क्षति होगी।

यह युक्ति दी जा सकती है कि स्त्री और पुरुष एक-दूसरे का आकर्षण प्राप्त करने के लिए और भी अधिक उन्नत होने का प्रयत्न करेंगे। पर नहीं! यह सम्भव हो सकता था यदि स्त्री के लिए पुरुष तथा पुरुष के लिए स्त्री निश्चिन्त हों। तलाक में सबसे बड़ी बात तो यही है कि स्थिरता कहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती। हम वे लुढ़कने पत्थर बन जाते हैं, जिन पर कभी काई नहीं जम पाती। आज एक का आकर्षण प्राप्त करने का प्रयत्न है, तो कल दूसरे का और तीसरे दिन तीसरे का। वे तीनों एक-सी इच्छावाले हों, यह कैसे कहा जा सकता है। यदि भिन्न-भिन्न इच्छावाले हुए जैसा कि बहुत सम्भव है, तो एक व्यक्ति की उन्नति की तीन दिशाएँ बन जाती हैं। उदाहरण के लिए एक युवती आज किसी डाक्टर का प्रेम प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य-विज्ञान का परिचय प्राप्त करेगी तो कल किसी वकील के स्नेह-बन्धन में आने के लिए कानून की ओर लपकेगी, प्रोफेसर को अपना साथी बनाने के लिए शिक्षा के सिद्धान्तों में उल-झेगी। इस प्रकार भमीरी की भाँति चक्कर काटते-काटते उसका निजी व्यक्तित्व नष्ट हो जाएगा। ऐसा दौड़ाक जो एक-एक फर्लांग चारों ओर दौड़ता हो–कितना दौड़ सकेगा; यह साफ है।

इतना ही नहीं। विकास की पूर्णता अपने में ही सीमित नहीं होती, जैसा कि पहले बताया गया है। वह अपना प्रतिनिधि फल भी पैदा करती है। वनस्पतियों पर फल, तथा चेतन जीवों की सन्तान इसी का उदाहरण है। यदि मानवीय पूर्णता भी अपने अनुरूप फल पैदा न कर सके तो वह अपूर्ण ही समझी जाएगी। "पूर्णात्पूर्णमुच्यते" पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होकर बढ़ता है। इसीलिए विवाह का फल वह भोग नहीं, जो दो प्राणियों के भोग में ही विलीन हो जाए, वह तो प्रलय है, सर्जन नहीं। विवाह सर्जन के लिए है, विनाश के लिए नहीं। इसमें परमार्थ है, स्वार्थ नहीं। इसका फल उत्तम सन्तान है, जैसा कि वेद-मन्त्रों में बताया गया है। "तावेव विवहावहै। सह रेतो दधावहै। पुत्रान् विन्दावहै बहून्। ते सन्तु जरदष्टयः। संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्य मानौ।" अर्थात् हम दोनों इसलिए विवाह करते हैं कि हमारे बहुत से पूर्ण आयुवाले देखने में सुन्दर ओजस्वी और मानस्वी पुत्र हों।

यह बड़ा ऊँचा लक्ष्य है। हिन्दू-सभ्यता में विवाह भोग न होकर उत्तम सन्तान के लिए तपस्या है। यह आराम नहीं, व्रत है। यही शास्त्रों का पितृ-ऋण है, जो देश और जाति के कल्याणकारक बालक उत्पन्नकर, चुकाया जाता है।

आदिकाल से लेकर आज तक मनुष्य ने शनैः शनैः जो उन्नति विचारों, शरीर, रहन-सहन तथा अन्य बातों में की है, उसे वह अपने से आगे आनेवाले समाज को सौंपता आया है। उससे हम लाभ उठाते हैं। इसलिए हमें उसके लिए कुछ करना भी चाहिए। वर्तमान पर अतीत का ऋण होता है। उसे वह भविष्य के हाथों चुकाए, यह उसका कर्त्तव्य है। सब जाति के महापुरुषों ने ऐसा किया है। इसी के परिणाम-स्वरूप आज युग-युग का साहित्य, इतिहास, रूढ़ि-रक तथा आज की हमारी सभ्यता और संस्कृति हमें मिली हैं। आज का मानव लाखों वर्षों के मानवीय अनुभवों की उन्नतियों के ढेर अपने सामने उपस्थित पाता है, जिसकी सहायता से वह आगे बढ़ता है। अब उसका यह कर्त्तव्य है कि वह भी अपने भावी समाज के लिए कुछ प्रतिदान करे। इस नियम के अनुसार प्रत्येक स्त्री-पुरुष का कर्त्तव्य है कि उसने जितनी उन्नति का स्तर स्वयं प्राप्त किया है, उससे अधिक अपने किसी प्रतिरूप (proto Type) में छोड़े, ताकि मानव-उत्कर्ष का ताँता बँधा रहे।

जितना रूप, स्वास्थ्य तथा विज्ञान एवं आचरण की उदात्तता माँ-बाप में है, उससे अधिक रूपादि उनकी सन्तान में आए, यह उनका दायित्व है। शरीर तो जन्म मात्र से बालक को मिल जाता है पर आचरण और संस्कार माँ-बाप की सन्तान पर निरन्तर छाया सिखाती है। बच्चों का जीवन स्वच्छ शीशे के समान होता है। वह अपने आदर्श माता-पिता से प्रत्येक वस्तु अपने में ग्रहण करता रहता है। इसी मधुर छाया में बालक वयस्क हो जाता है। उसके शरीर, ज्ञान तथा आचरण में पकावट आ जाती है और इस सम्पत्ति को लेकर उन्नति के पथ पर वह चलता है।

तलाक का दूसरा प्रभाव इन बच्चों पर पड़ता है। सन्तान पैदा होने के बाद स्त्री पुरुष को तथा पुरुष स्त्री को छोड़ देते हैं। पहले तो वे सन्तान उत्पन्न ही नहीं होने देते, जिससे कि उनकी उपयोगिता कम होने का भय है। होने पर भी यदि तलाक दिया जाए तो समाज को उससे असह्य धक्का लगता है। तलाक दिए स्त्री-पुरुष अपने नए साथी के नए स्नेह-बन्धन में फँस जाते हैं। इधर उनके पुत्र और पुत्रियाँ अनाथ, अरक्षित, स्नेहहीन रूखा, दुखी जीवन बिताने लगते हैं। अनुकरणीय आदर्श न होने के कारण उनका जीवन शून्य हो जाता है। लक्ष्यहीन और क्रियाहीन, पश्चिमी देशों में तलाक-पीड़ित बालकों की दशा पर कठोर-से-कठोर हृदय रो पड़ते हैं। जाति और देश का विनाश उनमें पुकारता है और तलाक पर लानत देता है। आगे चलकर ये बच्चे या तो जाति के बोझ बनते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

मरी हुई माँ के बच्चे के लिए पिता दूसरी शादी कर लेने पर भी कुछ स्नेह दिखाकर अपनी मृत जीवन-संगिनी के लिए कृतज्ञता दिखाता है। पर तलाक देकर पति को छोड़नेवाली पत्नी का पुत्र अपने पिता के हृदय में एक प्रकार का क्रोध और ईर्ष्या उत्पन्न करता है, जिसका दण्ड उस बेचारे को भोगना पड़ता है। इस प्रकार एक ओर तो ये बेचारे बिना माँ-बाप के बच्चे इधर-उधर भटकते फिरते हैं, दूसरी ओर उनके माता-पिता सच्चे सुख में लात मारकर छल के रेगिस्तान में सुख की मृगतृष्णा के शिकार बनते हैं। सन्तोष को अपने हाथ ही बेच असन्तोष खरीदते हैं। अन्तिम परिणाम तीन व्यक्तियों के व्यक्तित्व का विनाश होता है। माँ का, बाप का और बच्चे का। विवाह में व्यक्तित्व की पूर्णता, सन्तोष और सर्जन है तो तलाक में व्यक्तित्व का अधूरापन, असन्तोष और विनाश है। तलाक की आवाज जिन समाज-सुधारकों के मुँह से सुनी जा रही है, उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि वे पहले उन देशों की घरेलू परिस्थितियों का गम्भीर अध्ययन करें, जहाँ तलाक का कानून चिरकाल से काम कर रहा है। यदि वे देश और उनकी प्रजा भी इसके लिए रोती मिले तो वे सीता, दमयन्ती और सावित्री के इस परम पवित्र घर को नरक बनाने का प्रयत्न छोड़ दें। यह माना कि कुछ एक पतियों का अपनी पत्नियों के साथ व्यवहार अच्छा नहीं है, पर इसका इलाज तलाक नहीं। तलाक तो मर्ज को अन्तिम सीमा तक बढ़ाना है। परिवर्त्तन के नशे में हमें अपनी संस्कृति की उदात्तता और व्यापकता को नहीं भुलाना चाहिए। तलाक से उन महिलाओं पर क्या असर पड़ेगा, जो आज भी अपने घर की रानी हैं, अपने पतियों की देवियाँ हैं। और हमारे देश में ऐसी ही पत्नियाँ अधिक हैं। तलाक के आधार-विषय तो वास्तव में अपवाद हैं, जो किसी नियम के आधार नहीं बनने चाहिए। पाश्चात्य सभ्यता के ही कुछ मनचले लड़के-लड़कियों की उभरे यौवन की भूलों पर समाज के नियमों का शिलान्यास करना भूल होगी। नेता लोग ध्यान दें।

—मनोहरलाल गौड़, एम,० ए०, व्याकरणाचार्य

तुलसी का गमला

मद्रिना में तीन युवक, जो सगे भाई थे, सौदागरी करते थे। सेन के रहनेवाले उनके पिता के देहान्त के पश्चात् उनको बहुत धन मिला था। उनकी लिजेबेटा नाम की बहन थी, जो काफी सुन्दरी तथा सुशीला थी। किंतु किसी कारणवश उन्होंने उसको अभी परिणय-सूत्र में नहीं बाँधा था। उनकी दूकान पर एक लौरेंजो नामवाला नौकर था, जो उनके समस्त कारोबार की देख-भाल करता था। वह युवक शरीर में इतना आकर्षक और परिपुष्ट था कि लिजेबेटा प्रायः उस पर दृष्टि फेंका करती थी एवं उसके प्रति विशेष अनुग्रह वा प्रेम स्वहृदय में छुपाए रहती थी। लारेंजो ने भी समय-असमय इसका अनुभव किया और अन्य युवतियों से प्रेम करना त्याग दिया। अब उसके हृदय में लिजेबेटा के प्रति अग्नि सुलगने लगी। दोनों हृदयों में भी निरन्तर प्रेम होने के कारण वे एक-दूसरे के इच्छानुसार कार्य करने लगे।

आपस के प्रेममय आनन्द और सन्तोष की धारा में बहते हुए वे इस व्यापार को गुप्त रखना किंचित् भूल गए। जिससे कि एक रात जब लिजेबेटा लारेंजो से मिलने उसके कमरे को जा रही थी, अचानक बड़े भाई ने देख लिया। इस पर बड़े भाई को अति खेद हुआ, किंतु वह था समझदार। उसने बात को उस समय बढ़ाना उचित न समझा, चुपचाप जाकर पलंग पर लेट रहा और रात भर पड़ा-पड़ा इसी विचार में गोते खाता रहा। पलक नहीं झपकीं और उसने इस घटना-जनित स्थिति पर अनेक दृष्टिकोणों से विचार किया।

अगले दिन उसने लिजेबेटा और लौरेंजो के सम्बन्ध में रात की बात अपने भाइयों से कही जिससे कि उनकी या उनकी बहन की मानहानि व अपमान न हो, बहुत देर की सलाह तथा विचार के पश्चात् यह निर्णय किया गया कि तब तक चुप रहना चाहिए, जैसे कि उन्होंने न कुछ देखा है और न कुछ सुना है, जब तक कि वे जल्दी ही इस अपमान के कारण को सरलता एवं सुरक्षित विधि से अपने सामने से हटा न दें।

मस्तिष्क में इस निर्धारित लक्ष्य को रखते हुए लौरेंजो के साथ उनकी हँसी-दिल्लगी पूर्ववत् जारी रही। कुछ समय पश्चात् वे तीनों भाई सैर-सपाटे का बहाना कर लौरेंजो को अपने साथ लेकर बाहर गए। बहुत दूर नितान्त एकान्त स्थान में, जो उनके दृढ़ संकल्प के लिए सर्वथा उपयुक्त था, पहुँचकर उन्होंने लौरेंजो को, जिसको किंचित् भी मरने का विचार न था, जान से मार डाला और किसी को कानों-कान पता भी न लगे, इस तरह दफन कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसिना वापस आकर उन्होंने कह दिया कि लौरेंजो को आवश्यक कार्य से बाहर भेज दिया है। लिजेबेटा ने भाइयों से बड़े आग्रहपूर्वक कई बार उसके विषय में पूछा क्योंकि अपने प्रेमी के अभाव में उसे बहुत दुख था।

एक दिन जब वह उसके विषय में बहुत ही—आग्रहपूर्वक प्रश्न कर रही थी एक भाई ने कहा—"इसके क्या अर्थ हैं? तुमको लौरेंजो से क्या करना है, जो तुम उसके विषय में बार-बार पूछ रही हो? हमसे अधिक न पूछो, नहीं तो हम ऐसा उत्तर देंगे जैसा कि तुमको देना चाहिए।" लड़की जिसके हृदय में शोक और दुख था, भय से सहम गई और फिर कोई प्रश्न नहीं किया। किन्तु रात्रि में कई बार करुण स्वर से उसने उसको पुकारा, अपने पास आने की प्रार्थना की और उसके अधिक विलम्ब पर अश्रु बहाए। फिर उसकी वापसी के स्वप्न देखते-देखते निराश हो दुःख में सूखने लगी।

एक रात्रि को लौरेंजो को स्मरण करते-करते वह सो गई। लौरेंजो ने उसको स्वप्न में दर्शन दिए। वह अति ही कृशगात्र अस्तव्यस्त स्थिति में था। उसके वस्त्र फटे हुए और मैले थे। जब कि यह विचारमग्न थी, वह बोला, "तुमको मुझे बुलाना नहीं चाहिए और न मेरे इतने दिनों तक न आने पर दुखी होना चाहिए साथ ही मुझको अपने आँसुओं से धमकाना नहीं चाहिए क्योंकि तुम समझ लो कि मैं अब तुम्हारे पास वापस नहीं आ सकता। मेरी-तुम्हारी अंतिम भेंट के दिन तुम्हारे भाइयों ने मुझे मार डाला।" इसके पश्चात् उसको जिस स्थान में दफन किया था, वह बताया फिर उसको याद न करने तथा उसकी आशा न करने को कहकर गायब हो गया। लड़की जाग उठी और स्वप्न-दृश्य को सत्य मान फूट-फूटकर रोई।

प्रातः वह उठी। भाइयों से कुछ कहने का साहस न होते हुए उसने स्वप्न-दृश्य में बताए हुए स्थान को जाने का तथा स्वप्न में देखी हुई बातों की सत्यता का पता लगाने का निश्चय किया। अतः आनन्द-प्रमोदार्थ नगर के बाहर अपनी एक नौकरानी के साथ, जो उसके यहाँ थी और उसके विषय में सब कुछ जानती थी, जाने की इजाजत ले, वह तीव्र गति से वहाँ गई। सूखे पत्ते जो वहाँ पड़े हुए थे, हटाकर उसने नरम जमीन को खोदना प्रारम्भ किया। थोड़ा खोदने पर ही उसको अपने प्रेमी का शव मिल गया, जो अभी तक नष्ट नहीं हुआ था। इस प्रकार [illegible] की सच्चाई असन्दिग्ध हो गई।

उसने सोचा न तो मेरे लिए अपने मृत प्रेमी के [illegible] घर पर रोना संभव होगा और न लाश को अन्यत्र [illegible] जाकर आदरपूर्वक दफनाना ही। इसलिए उसने [illegible] लिया और बहुत सावधानी से धड़ से सिर को [illegible] काट बड़े रूमाल में बाँधा और अपनी नौकरानी को [illegible] दिया। बाकी शव को पुनः मिट्टी से दाब वह वहीं [illegible] दी। उसको ऐसा करते हुए किसी ने नहीं देखा।

घर पहुँचकर उसने अपने कमरे के सब द्वार बंद [illegible] लिए और नितान्त एकान्त में अपने प्रेमी के चेहरे [illegible] हजारों बार चुम्बन किया। उसकी स्मृति में वह बहु [illegible] देर तक सिसक-सिसककर रोई, यहाँ तक कि वह सिर [illegible] आँसुओं से भीग गया। फिर उसको एक बढ़िया कपड़े [illegible] टुकड़े में लपेट, एक सुन्दर बड़े गमले में, जिसमें तुलसी [illegible] उगाई जाती है, रखकर मिट्टी से दबा दिया और बहुत [illegible] अच्छी जाति की तुलसी की जड़ें लगादीं। अपने आँसुओं से एवं गुलाब या संतरे के सुरभित जल से उस गमले को सींचा करती और उसके पास बैठ, मानों लौरेंजो उसमें समाधिस्थ है, वह एकनिष्ठ भाव हो ध्यानस्थ हो जाती। इस प्रकार बैठे पर्याप्त समय हो जाता तब वह उस पर झुककर बहुत देर रोती, यहाँ तक कि तुलसी अश्रुसिक्त कर तर हो जाती थी।

निरन्तर की देख-भाल तथा परिचर्या से परिवर्द्धित तुलसी अति सुन्दर, आकर्षक एवं सुगंधित हो गई। लड़की इसी प्रकार जीवन-यापन करने लगी। पड़ोसियों ने उसको ऐसा करते देखा। जब उसके नष्ट सौन्दर्य को देख कर उसके भाइयों को आश्चर्य हुआ और जब उसके भेद भीतर को धँस गए तब पड़ोसियों ने उसके भाइयों को लड़की की दिनचर्या के विषय में सब कुछ बता दिया।

भाइयों ने लड़की को इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा सुना किन्तु उसने किंचित् भी परवाह नहीं की। अन्त में उन्होंने गमले को चुपचाप वहाँ से उड़ा दिया।

गमले के खोए जाने का पता ज्यों ही लड़की को लगा उसने हठपूर्वक उसे वापस माँगा। उन्होंने उसको वापस नहीं दिया। लड़की का रोना बंद नहीं हुआ और वह बीमार हो गई। बीमारी में भी उसकी एकमात्र हार्दिक इच्छा गमले को पुनः प्राप्त करने के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। इससे भाइयों को आश्चर्य हुआ और उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गमले में क्या है, देखने का निश्चय किया। मिट्टी हटाई गई, कपड़ा दिखाई दिया। उसके भीतर सिर निकला, जो यद्यपि कुछ नष्ट हो चुका था, फिर भी अपने घुँघराले बालों के कारण पहचाना जा सकता था। इससे भाई बहुत डर गए। उन्होंने सिर को जमीन में गहरा गाड़ दिया और मसिना से भागकर नेपिल्स चले गए। लड़की का रोना फिर भी बन्द नहीं हुआ और न वह गमले को ही भुला सकी और इसी चिन्ता में रोते-सूखते अपनी जीवन-यात्रा उसने समाप्त कर दी।

—मूललेखक—बुकापूयो (इटेलियन) अनुवादक—'श्रीदेव'

मृत्यु

वह जो रामकिशन था, उसकी कल मृत्यु हो गई।

जीवन की प्रत्येक घटना स्मृति बनकर मानस पर छा जाती है। दिन बीतने लगते हैं और कोई घटना हमारे जीवन को रोमांचित कर देती है। हम भूल जाते हैं विगत घटना को, परन्तु कोई-कोई घटना हमारे जीवन पर अपना प्रभाव भी छोड़ जाती है।.....लेकिन मृत्यु कोई घटना नहीं, एक कटु सत्य है, शाश्वत नियम है प्रकृति का।

"मृत्यु" कितना नीरस शब्द है।

"कटु सत्य" लेकिन हम सत्य को पाकर भी उसकी उपेक्षा कर देना चाहते हैं। ऐसा क्यों? सुख-दुख को विजय कर पथिक "अपनत्व" को संसार-वासियों को सौंप, अज्ञात देश की ओर क्यों जा रहा है? क्या प्रेम इतना नीरस है?

हम सब इकट्ठे हुए हैं, मृत व्यक्ति सम्बन्धियों से "सहानुभूति" प्रदर्शित करने के लिए पूर्वकाल से कही जाने-वाली कथा दुहराते।

खोई हुई वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु उसी प्रकार की दी जा सकती है, परन्तु मानव क्या मानव के अभाव की पूर्ति "सहानुभूति"-द्वारा कर सकता है?

कल समाचार-पत्रों में उसकी प्रशंसा में लेख छापे जाएँगे, सभाएँ होंगी। उनका मन्तव्य एक ही होगा, "अभाव की पूर्ति।"

"अभाव की पूर्ति" तो तब हो, जब मानव उसके आदर्शों का अनुसरण करे।—आदर्शों का पालन कठिन है।...कठिनता से मानव डरता है आज।...कैसा भद्दा उपहास है मृतात्मा का! कितनी सुन्दरता से मानव ने अपनी दुर्बलता पर पर्दा डाला है!

यदि अभाव की पूर्ति होती तो संसार, विचारों का, महा-पुरुषों का आदर करना छोड़ देता। इतिहास की आवश्यकता ही न होती। मृत व्यक्ति की २३ वर्षीया सुन्दर पत्नी रो रही है, कल तक वह सधवा थी। इकाई के अभाव ने आज उसमें भयंकर परिवर्त्तन कर दिया है।

रोने से शरीर-रक्षा नहीं होती, विषय-रक्षा नहीं होती और धर्म-रक्षा तो हो ही नहीं सकती। फिर भी वह रो रही है, क्यों?

खन...खन...खन...उसकी चूड़ियाँ तोड़ी जा रही हैं, मानों उसकी रातों के तारे विधि के द्वारा बरबस ही तोड़े जा रहे हों। वह जोर से रो उठी है।

पुरुष अपनी पीड़ा जग को सुनाता है, नारी उसे अंतर के कोने में समेटे नहीं जला करती है क्या?

फिर रोने से हृदय का भार भी हल्का हो जाता है। जिसके जीवन का आधार ही समाप्त हो गया हो, क्या वह.....?

वह रोना न भी चाहे तो क्या समाज उसे सहन कर सकेगा?

उसने मुझसे एक दिन कहा था, "तुम भगवान् के उपासक हो। मैं कर्म को मानता हूँ क्योंकि तुम्हारा भगवान् भी कर्म के बन्धन में जकड़ा हुआ है। जानते हो, भगवान् किसे कहते हैं? नाना गुणों के संयुक्त सम्बोधन को भगवान् कहते हैं।" वह मुस्कराता और कहता चला गया, "रूढ़ि-वादियों के "भगवान्" नाम की कोई शक्ति इस संसार में नहीं है।".....

वह वेदों के बारे में कहता था, "जिस समय घटना होती है, मानव उसे नेत्र से देखता है। उस समय वह ग्रन्थबद्ध नहीं होती तब लोग देखा करते हैं, पढ़ा नहीं करते। घटना स्रोतक्रम से बद्ध हो गई; ग्रन्थों ने जीवन का स्थान ले लिया, मानव-चरित्र शास्त्र में परिणत हो गया, प्रत्यक्ष घटनाएँ श्रुति और स्मृति बन गईं, यही तो वेद की कला है,' कहकर वह बड़ी-बड़ी नीली आँखों से मुस्करा देता था।

"कभी किसी का अनिष्ट तो चाहा ही नहीं उसने;" उपस्थित व्यक्तियों में से एक ने कहा। मैंने उसकी ओर देखा, वह उसका कट्टर विरोधी था। लेकिन....आज तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आलोचना, प्रत्यालोचना, क्रोध और परिहास से परे था। निन्दा और स्तुति उसके लिए जड़ थी।

लोग कहते हैं, मृत्यु में भयानकता होती है। मैंने उसे देखा है। उसका शव किसी चित्रकार द्वारा चित्रित शान्त प्रतिमा के सदृश था, जो कि अँगड़ाई लेकर कुछ कहने-वाला था। भयंकर शान्ति के मध्य, रुदन का वातावरण एक विचित्रता उत्पन्न कर रहा था....उसमें से "सुन्दर" शाश्वत गान प्रकट हो रहा था।

मैं सोच रहा हूँ:—जब वह बालक था, उसने किल-कारियों और तुतली बोली से इस घर का वातावरण सुखमय कर दिया था। जब वह युवा हुआ तो कामदेव ने उसे अपना शिष्य बनाया। गृह के द्वार पर शहनाई बजी, एक साथी मिला, सुख-दुख की वीथिका में नित्य नए खेल खेलने के लिए। उसके ज्ञान का विकास हुआ, परिस्थितियों ने कुछ नष्ट कर दिया.....लेकिन आज गृह के द्वार पर शहनाई नहीं, समय की वीणा पर, मृत्यु की कोमल उँग-लियाँ चिरन्तन सत्य-ध्वनि कर रही थीं।

जैसे वह एक कहानी था। क्या यही "जीवन" है, जिससे हमें इतना मोह है। आसमान पर काले बादल छाए हुए हैं, मानों अभी वे कोप बनकर संसार-वासियों पर गिर पड़ेंगे। कण्ठों से निकला एक छोटा और शोकपूर्ण स्वर—"राम नाम सत्य है" के साथ गलियों और सड़कों की निस्त-ब्धता भंग करते हुए हम तेजी से श्मशान की ओर बढ़ रहे हैं। कहीं-कहीं हमें अपनी ओर आते देखकर गलियों के कुत्ते भौंक पड़ते हैं। जो शायद 'राम नाम' की सत्यता को दुहरा रहे थे या इस नश्वर जगत् की मूर्खता पर शोक प्रकट कर रहे थे।

बच्चे अपने घर के दरवाजों पर खड़े होकर, हमारी ओर उत्सुकतापूर्वक देखते...उनके लिए यह खेल रहस्य था, तारों और आकाश की सृष्टि के पीछे। खिड़कियों पर खड़ी वधूटियाँ भी वैसे ही हमारी ओर देखतीं, उनके हृदय में एक अज्ञात भय की आशंका होती और "मुहाग" की सहानुभूति भी।

कभी-कभी कोई धार्मिक व्यक्ति हमारे निकट से रामनाम का जप करते हुए निकल जाता।

...चिता चिती जा रही है.....और मैं सोच रहा हूँ:—लकड़ियों के इतने भारी बोझ को अपने वक्ष पर वह कैसे रख सकेगा...मूर्ख हूँ, न!

चिता में आग लगाई जा रही है। मृत व्यक्ति के पिता जोर से रो उठे। वह एक विख्यात दार्शनिक हैं, कल ही वह संसार की असारता के बारे में शिवाजी पार्क में भाषण कर रहे थे।.....रोने के शब्द के साथ-साथ वह अपना विवेक, विश्वास और वैराग्य क्रमशः सभी तो खो रहे हैं। मैं भ्रमण का शौकीन हूँ, आज न जाने क्या बात है, लौटते समय मैं थकान अनुभव कर रहा हूँ।

ऊपर के कमरे से "छुन, छुन" कर पायल का स्वर सुनाई दे रहा है। दर्शक तारीफों का पुल बाँध रहे हैं, उनमें से कुछ अश्लील शब्दों में न जाने क्या-क्या कह रहे हैं।

ट्रामें, बसें, मोटरें आदि तेजी से दौड़ी जा रही हैं... रंग-बिरंगी आकर्षक बड़ी-बड़ी दूकानों पर लोग क्रय-विक्रय कर रहे हैं। यौवन-संगीत के मादक स्वर दूर वायु में विलीन होते जा रहे हैं। इतनी बड़ी दुनिया में मानों "मृत्यु" एक उपहास है।

राग, द्वेष, मोह और वासना का संसार निश्चल गति से चला जा रहा है। दिन बीत रहे हैं, घटनाएँ होतीं और समाप्त होती जा रही हैं।

एक दिन वृद्ध होकर हमें भी काल का ग्रास बन जाना है, ऐसा सोचने के लिए जड़ संसार में अवकाश नहीं है।

घर पहुँचते-पहुँचते मेरा वैराग्य नष्ट हुआ जा रहा है, उसे रोकने में, मैं शक्ति के ह्रास का अनुभव कर रहा हूँ।

—सोमशर्मन

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम की किताबें

१—**आचार्य ध्रुव-स्मारक-ग्रंथ** (तृतीय भाग)—प्रकाशक, गुजरात विद्या-सभा, अहमदाबाद; सम्पादक-मण्डल में रसिकलाल सी० पारिख, रतिलाल एम० त्रिवेदी-उमाशंकर जे० जोशी हैं। प्रथम संस्करण १९४६, पृष्ठ-संख्या २६२, मूल्य ८)।

आचार्य डा० आनन्दशंकर ध्रुव की स्मृति में भारतीय संस्कृति पर लिखे गए जिन गवेषणापूर्ण निबंधों का संकलन प्रस्तुत ग्रन्थ में हुआ है वे विषय और वस्तु की दृष्टि से बहुत ही उच्च कोटि के हैं। इसमें वैदिक व्याकरण एवं औपनिषदिक विचार-धारा से लेकर महायान बौद्धधर्म तथा जैन तन्त्र पर दार्शनिक लेख हैं; कुछ लेख प्राचीन राजनीतिक इतिहास और संस्कृत तथा प्राकृत साहित्यों पर प्रकाश डालते हैं; ज्योतिष और आयुर्वेद-सम्बन्धी तीन-चार लेख तथा गुजराती चित्र-कला-विषयक एक लेख और 'गीतगोविन्द' की एक सचित्र गुजराती प्रति के परिचय का इसमें समावेश हुआ है। एक टिप्पणी गुजरात के पुरातत्त्व-सम्बन्धी अनुसन्धान पर स्वर्गीय डाइरेक्टर जेनरल आव आर्कियालाजी राववहादुर काशीनाथ दीक्षित की भी इसमें संगृहीत है। इस प्रकार कुल लेखों की संख्या २८ है। यद्यपि इन निबन्धों में प्रतिपादित अनेक सिद्धान्त विद्वानों के वाद-विवाद के विषय हैं और अपने सर्वथा मौलिक रूप में हमें नहीं भी मान्य हो सकते हैं, परन्तु जिस क्षमता और गहन चिन्तन के वे परिणाम हैं उसके विषय में सन्देह ही क्या हो सकता है। यह देखकर अवश्य आश्चर्य हुआ कि इस मूल्यवान् ग्रन्थ में वास्तु-विद्या और मूर्त्ति-कला जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को यों ही छोड़ दिया गया है।

वैसे भारतीय संस्कृति से प्रेम रखनेवाले किसी भी व्यक्ति के लिए चाहे वह स्वयं उस संस्कृति का विवेचक हो अथवा केवल उसका पुजारी, यह ग्रन्थ हर तरह संग्रह के योग्य है। पुस्तक के अँगरेजी में होने के कारण केवल हिन्दी जाननेवाले उससे लाभ नहीं उठा सकेंगे; मैं तो चाहता हूँ कि इस तरह के शुभ प्रयास राष्ट्र-भाषा एवं प्रान्तीय भाषाओं में भी होने लगें जिससे अधिक-से-अधिक लोग अपने प्राचीन गौरव और लुप्त वैभव को स्मरण कर वर्तमान निराशा और अकर्मण्यता को दूर कर भारत के अच्छे स्वाधीन नागरिक कहला सकें।

आचार्य ध्रुव जिस संस्कृति और परम्परा के पोषक थे उसके सर्वथा अनुकूल इस स्मारक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है।

—चन्द्रचूड़, एम० ए०

२—**श्रीरामकृष्णवचना-मृत** (तीन भाग)—प्रकाशक, स्वामी भास्करेश्वरानंद, अध्यक्ष श्री रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, सी० पी०; अनुवादक, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; द्वितीय संस्करण १९४७, पृष्ठ-संख्या ६३२+६५७+८२२(=२१११), मूल्य ६)+६)=७॥)=१९॥)

आध्यात्मिक जीवन का स्रोत सतत प्रवाहशील है। फिर चाहे वह किसी धर्म की विवेचना अथवा परिचय हो। उसके केन्द्रीय भावों में जो एक तरह की विलक्षण शान्ति और आनुषंगिक आनन्द की प्रक्रिया पाई जाती है तथा मानव-जीवन पर प्रभाव डालने की अपूर्व क्षमता होती है, वह किसी वर्ग के सदस्य अथवा वर्ग-विहीन व्यक्ति के लिए भी आदेशप्रद है।

"श्रीरामकृष्णवचनामृत' का प्रकाशन एक अभाव की पूर्ति करता है इसकी इस समय वास्तव में बड़ी आवश्यकता थी। श्रीरामकृण परमहंस देव का जीवन स्वतः अनेक दार्शनिक और धार्मिक विचार-धाराओं का समन्वय था। उनके विचार बच्चों की तरह सरल और सहिष्णु होते थे। ईसा जिस तरह भावावेश में 'पिता' की खोज में विकल रहा करते थे उसी तरह 'मां' के प्रेम में पागल होकर राम-कृष्ण गाया करते—"मां, जिस देश में रात्रि नहीं है, उस देश का एक आदमी पाया हूँ; क्या दिन और क्या शाम—में कुछ भी नहीं जानता हूँ! नूपुर में ताल मिलाकर उस ताल का एक गाना सीखा है; वह ताल 'ताध्रिम-ताध्रिम' रव से बज रहा है। मेरी नींद खुल गई है, क्या मैं फिर सोता हूँ, योग-याग में मैं जाग रहा हूँ! मां, योग-निद्रा तुझे देकर मैंने नींद को सुला दिया है। प्रमाद कहता है, मैंने भुक्ति और मुक्ति इन दोनों को सिर पर रखा है। काली ही ब्रह्म है, इस मर्म को जानकर मैंने धर्म और अधर्म दोनों को त्याग दिया है।" (भाग ३, पृष्ठ ...१६-१७)।

मां के प्रति इतना सरल अनुराग और विश्वास कहां मिलेगा? वस्तुतः ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इससे मां के चरणों में सर्वस्व उत्सर्ग कर देने की प्रेरणा मिलती है। गहन से गहन और सूक्ष्म से सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों को जितने सरल और रोचक ढंग

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से समझाने की क्षमता रामकृष्ण में थी, उसका व्यापक परिचय इस ग्रन्थ में मिलेगा। २,००० पृष्ठों से ऊपर के इस बृहत् संस्करण में उनकी अनेक स्मृतियां वर्तमान हैं। इसमें जहां एक ओर केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बंकिमचन्द्र आदि के साथ उनका मिलन और अपने शिष्य-मण्डल को दिए गए उपदेशों का विवरण दिया गया है, वहीं उनकी अनेक आध्यात्मिक अनुभूतियां अंकित हैं जिनसे उनकी साधना का स्वरूप निश्चित करने में कोई कठिनाई नहीं होती। केवल उन्हें थोड़ी निराशा अवश्य होगी जिनका काम ही धार्मिक प्रसंगों में प्रक्षेप ढूंढ़ना है। क्योंकि रामकृष्ण की सभी शिक्षाओं का प्रामाणिक संकलन ही बँगला के मूल ग्रन्थ 'श्रीरामकृष्णकथामृत' का उद्देश्य था जिसे लिपिबद्ध करने का श्रेय स्वयं रामकृष्ण के एक प्रसिद्ध गृहस्थ भक्त महेन्द्रनाथ गुप्त ('म') को है। यह ग्रन्थ उसी का हिन्दी रूपान्तर है।

हिन्दी अनुवाद के सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। जिस अध्यवसाय और मूल ग्रन्थ की भाव-धारा से तादात्म्य स्थापित कर 'निराला' जी ने उसका प्रणयन किया है उसके लिए हम उनका अभिनन्दन करते हैं। इस दिशा में क्या यह बतलाने की आवश्यकता है कि निराला जी ने यह सारा अनुवाद विस्मृति के क्षणों में नहीं किया है; विस्मृति के क्षण में तो वे कविता लिखते हैं। जहां कहीं त्रुटियां हैं वे संकलनकर्त्ता या अनुवादक की त्रुटियां न होकर मुद्रण-सम्बन्धी ही हैं।

पुस्तक हर प्रकार संग्रह के योग्य है। इसका संन्यासियों और गृहस्थों में समान रूप से आदर होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। क्योंकि इसमें दर्शन और साधना के जो शाश्वत नियम बतलाए गए हैं वे हर एक के लिए शुभ और विशेष उपयोगी हैं। पुस्तक अपने लक्ष्य का ज्ञान कराने में सहायक है।

यथार्थ ज्ञान शास्त्रीय-ज्ञान से भिन्न होता है, इसकी ओर कितनी बार रामकृष्ण ने संकेत किया है। यथार्थ ज्ञान होने पर मनुष्य की दशा ठीक वेदों में वर्णित 'होमा' पक्षी की तरह हो जाती है। यह दृष्टान्त इस पुस्तक में इस प्रकार समझाया गया है—'होमा चिड़िया आकाश में बहुत ऊँचे पर रहती है। वहीं यह अण्डे देती है। अण्डा देते ही वह गिरने लगता है; परन्तु इतने ऊँचे से वह गिरता है कि गिरते-गिरते बीच में फूट जाता है। तब बच्चा गिरने लगता है। गिरते ही गिरते उसकी आंखें खुलती और पंख निकल आते हैं। आंखें खुलने से जब वह बच्चा देखता है कि मैं गिर रहा हूँ और मिट्टी में गिरकर चूर-चूर हो जाऊँगा, तब वह एकदम अपनी मां की ओर फिर ऊँचे चढ़ जाता है।'

इस ग्रन्थ में प्रायः सभी स्थलों में तरह-तरह के ज्ञान-वर्द्धक और अधिकांश मनोरंजक दृष्टान्त भरे पड़े हैं। उनके द्वारा ईश्वर-दर्शन तथा साधना, ज्ञानयोग और निर्वाण-मत, भक्तियोग तथा समाधितत्त्व, त्याग तथा प्रारब्ध, जीवनोद्देश्य, अवतारतत्त्व (भाग १); प्रवृत्ति या निवृत्ति, अभ्यासयोग, चैतन्य लीलादर्शन, प्रार्थना रहस्य, अहेतुकी भक्ति (भाग २) एवं भक्ति, विवेक वैराग्य तथा पाण्डित्य, ज्ञान-विज्ञान विचार, और धर्म-समन्वय (भाग ३) आदि विषयों को अत्यन्त सरलता के साथ समझाने का प्रयत्न किया गया है।

रामकृष्ण की शिक्षाओं के प्रचार में जिन व्यक्तियों ने अदम्य उत्साह के साथ काम किया है उनमें स्वामी विवेकानन्द का नाम सबसे पहले लिया जा सकता है। इसलिए यह उचित ही है कि इस ग्रन्थ में उनके भी अनेक संस्मरण दे दिए गए हैं। संन्यासी होने के पहले के विवेकानन्द (नरेन्द्र) पर रामकृष्ण का कैसा अतुल स्नेह था, इसका परिचय भी इसी ग्रन्थ में मिलेगा। वस्तुतः 'होमा' पक्षी का दृष्टान्त उन्हीं को लक्ष्य कर था और रामकृष्ण ने जितेन्द्रिय नरेन्द्र को 'नित्यसिद्ध' की संज्ञा भी दे डाली थी। आगे चलकर विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर जिस सराहनीय ढंग से उसका संचालन किया और अपने क्रियाशील आदर्श-द्वारा एक आध्यात्मिक आन्दोलन को जन्म दिया, उससे हम अच्छी तरह परिचित हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ से मिशन के सम्बन्ध में बहुत-सी भ्रान्तियों का भी निराकरण होगा और इसी प्रकार जो लोग रामकृष्ण की शक्ति-साधना में वामाचार का आरोप करते हैं, स्वयं उन्हीं के शब्दों में 'यह सब पथ मैले हैं, अच्छे पथ नहीं हैं। शुद्ध पथ पर चलना ही ठीक है.....' ऐसा निर्देश पाकर उन्हें न केवल अपनी धारणा बदलनी होगी बल्कि एक महापुरुष पर झूठा आरोप करने के कारण ग्लानि भी कम न होगी। भाव-रहस्य से अनभिज्ञ ही ऐसी धारणाएं बनाकर चला करते हैं; किसी धर्म या सम्प्रदाय के सम्बन्ध में इस तरह की धारणा बना लेना उस धर्म या सम्प्रदाय को न समझने की भूमिका है।

—चन्द्रचूड़, एम० ए०

३—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस—सम्पादक श्री प्रह्लाद ब्रह्मभट्ट, अनुवादक सुधाकर त्रिवेदी; प्रकाशक बोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स, लमिटेड, ३, राउण्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई २; प्रथम आवृत्ति: अगस्त १९४६, पृष्ठ-संख्या १८८, मूल्य ३)।

इधर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सम्बन्ध में अँगरेजी तथा अपने यहां की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में जो पुस्तक-पुस्तिकाओं की एक तरह की बाढ़-सी आ गई है उनमें थोड़ी ही ऐसी हैं जिन्हें हम सर्वथा प्रामाणिक और विचार-पूर्ण कह सकते हैं। यह देखकर हर्ष हुआ कि बोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स ने सुभाष के सच्चे संस्मरण ही इस पुस्तक में संकलित किए हैं जिनमें किसी भी राष्ट्र को प्रज्वलित कर देने के दीप्तिमय स्फुलिंग वर्तमान हैं। इन संस्मरणों में कई स्थल तो ऐसे हैं जहां आपको रुलाई आए बिना नहीं रह सकती और कहीं-कहीं तो ब्रिटिश योजनाओं को स्मरण कर आप प्रतिशोध की अग्नि में जलने लगेंगे। कौन ऐसा होगा जो उस आदर्श व्यक्ति के इस आमंत्रण पर 'न्योछावर सब करो, रहो सब फ़क़ीर' क्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन् १९४८]

भर के लिए ही सही, एक बार अपना सारा अतुल वैभव और विलास का आयोजन, सुख-स्वप्न भूल न जाएगा; अथवा तुम हमको खून दो हम तुमको आजादी देंगे' इसके स्थान में अपने खून से स्वाधीनता के प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए आगे न बढ़ेगा? आई० एन० ए० का निर्माण इन्हीं प्रेरणाओं का फल था और आजाद हिन्द फौज सेना में वस्तुतः सुभाष का मनोरम क्रियाशील व्यक्तित्व ही काम कर रहा था। वे क्रान्तिकारी थे।

इटली की स्वाधीनता के इतिहास में जो स्थान गैरीबाल्डी का और अमेरिका के स्वतन्त्र करने में जार्ज वाशिंगटन का है, उससे कहीं ऊँचा स्थान भारत के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग करनेवाले सुभाष को प्राप्त है।

देश के नवयुवकों के लिए तो ऐसी रोमांचकारी कहानियों का निःशुल्क वितरण होना चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक की उपादेयता का इसी से अनुमान किया जा सकता है कि इसकी गुजराती में छः आवृत्तियां अब तक निकल चुकी हैं। हिन्दी रूपान्तर कैसा है, इस पर मूल गुजराती के साथ तुलनात्मक अध्ययन किए बिना निर्णय नहीं दिया जा सकता। फिर भी भाषा और मुद्रण-सम्बन्धी दोषों के होते हुए जिस उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी गई है उसमें लेखक और प्रकाशक को यथेष्ट सफलता मिली है। आरम्भ एक अभियान गीत और कुछ चित्रों से हुआ है। चित्रों के विषय में आई० एन० ए० के संचालन-क्षेत्रों के मानव-चित्रों का अभाव कुछ खटकता है।

पुस्तक नवयुवकों के लिए विशेष उपयोगी है।

——चन्द्रचूड़, एम० ए०

४—**नक्षत्र** (कविता-संग्रह)—संग्रहकर्त्ता, व्योहार राजेन्द्रसिंह; प्रकाशक, मध्यप्रान्त विदर्भ हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, जबलपुर, पृष्ठ ३५८; सजिल्द प्रति का मूल्य ५) रुपए।

मध्यप्रान्त और विदर्भ के ५६ प्रमुख कवियों की चुनी हुई कविताओं का संकलन 'नक्षत्र' में किया गया है। कवियों का संक्षिप्त परिचय और उनकी काव्यात्मक विशेषताओं पर प्रकाश भी डाला गया है। प्रारम्भ में संग्रहकर्त्ता ने 'मध्यप्रान्त की काव्यधारा' पर ४४ पृष्ठों में गम्भीर प्रकाश डालकर इस संग्रह की उपादेयता में चार चांद लगा दिए हैं।

हिन्दी-काव्य-जगत् में मध्यप्रान्त के अनेक जीवित और दिवंगत कवियों ने जो काव्य-प्रसून अर्पित किए हैं, वे अपनी सुगन्ध से सदा काव्य-जगत् को सुरभित बनाए रखेंगे। इन कवियों को एक ग्रन्थ में एकत्र कर हिन्दी-संसार के समक्ष प्रस्तुत करने के इस प्रयत्न को सर्वथा स्तुत्य कहा जाएगा। व्योहार जी इस प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं।

'नक्षत्र' का आवरण कलापूर्ण है; किन्तु उसका मुद्रण सुरुचिपूर्ण नहीं हो सका। 'नक्षत्र' का कागज बढ़िया है, उसकी छपाई भी बहुत-कुछ ठीक है; परन्तु प्रूफ की अशुद्धियों की इतनी भरमार है कि प्रख्यात कवियों की कविताएँ भी पाठकों के सामने सदोष-सी होकर पहुंचती हैं। कविता में प्रूफ की अशुद्धियां रह जाना कितना हास्यास्पद हो जाता है, इसका उदाहरण देना व्यर्थ होगा। प्रान्तीय प्रतिनिधित्व करनेवाले 'नक्षत्र' को सर्वथा निर्दोष रूप में ही प्रकाशित करने की आवश्यकता थी। दूसरे संस्करण में इस दोष से 'नक्षत्र' को मुक्त रखने की पहली आवश्यकता है। दूसरी आवश्यकता है, उन कुछ प्रमुख कवियों और कवयित्रियों का समावेश, जिन्हें इस संस्मरण में शायद शीघ्रता के कारण सम्मिलित नहीं किया जा सका और संग्रहकर्त्ता ने स्वयं इसे स्वीकार किया है।

——हीरादेवी चतुर्वेदी

५—**झांसी की रानी लक्ष्मीबाई** (उपन्यास)—लेखक, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, एडवोकेट; प्रकाशक, मयूर प्रकाशन, झांसी; पृष्ठ ५११; मूल्य ६)।

यह ऐतिहासिक उपन्यास वर्माजी के चौदह वर्षों के अन्वेषण और गहन अध्ययन का प्रतीक है। अँगरेजों की गुलामी से सर्वप्रथम भारत को मुक्त करने और स्वराज्य स्थापित करने का बीड़ा उठानेवाली वीरांगना लक्ष्मीबाई का जो चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है, वह औपन्यासिक रंगों का योग पाकर इतना चमक उठा है कि हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों में अप्रतिम रहेगा।

अगणित बलिदानों और संघर्षों के बाद जो स्वराज्य गत वर्ष ता० १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त कर सके हैं, उसके अंकुर रानी लक्ष्मीबाई में आज से लगभग १०० वर्ष पहले ही अंकुरित हो चुके थे। इस वीरांगना ने उसी समय अँगरेजों को भारत से खदेड़ देने का निश्चय कर लिया था और तदनुकूल तैयारियां भी वह करने लगी थीं। लेकिन कृतसंकल्प होने पर भी तत्कालीन परिस्थितियों ने उसका यह महान् निश्चय पूरा न होने दिया। इन विषम परिस्थितियों का हृदयग्राही चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। रानी लक्ष्मीबाई द्वारा नारी-सेना का संगठन और सफल संचालन भारतीय वीरांगनाओं के इतिहास में सदा अनुकरणीय रहेगा।

एक भारतीय वीरांगना की मर्यादा, प्रजावत्सलता, शासन-क्षमता और वीरता की यह पावन गाथा प्रत्येक भारतीय कन्या और कुमार को अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाए, तो हमारे राष्ट्र का कायाकल्प होते देर न लगे। चित्रपट-निर्माताओं को भी ऐसे राष्ट्रोपयोगी उपन्यासों के चित्रपट तैयार करने की ओर ध्यान देना चाहिए।

कथानक में प्रवाह और सरसता है। शैली में रोचकता और भाषा में लालित्य है। बीच-बीच में ठेठ बुन्देलखण्डी बोली का आकलन भी है, जो बुन्देलखण्ड के केन्द्र—झांसी—से सम्बद्ध उपन्यास में सर्वथा स्वाभाविक है।

इतने सुन्दर उपन्यास में कुछ शब्दों के चिन्त्य प्रयोग हमें खटकते हैं उदाहरणार्थ—उपरोक्त (पृष्ठ १–३) खण्डहल (पृष्ठ ५), चिनौती (पृष्ठ २३, ११८), उम्मेदें (पृष्ठ ११३), लाम्बा (पृ० १३८) अधकचरी सौदा (पृ०१०४), आदि। प्रूफ की अशुद्धियां भी बहुत रह गई हैं। सब मिलाकर उपन्यास पठनीय और उपादेय है।

——देवीदयाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

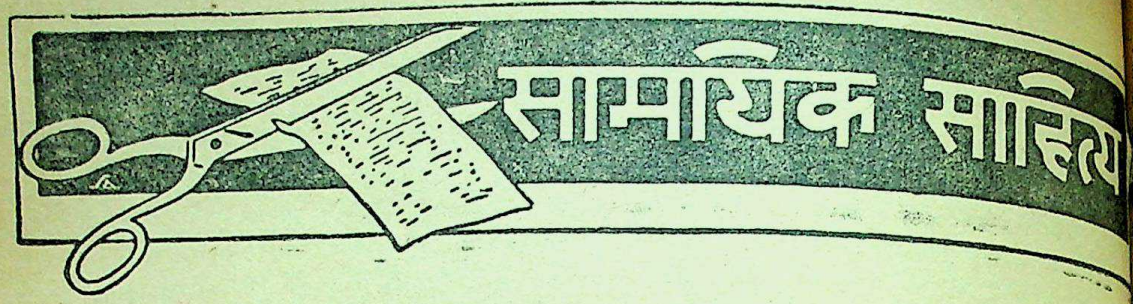

गांधीजी की सात शर्तें

अपना अनशन तोड़ने के लिए गांधीजी ने निम्नलिखित सात शर्तें जनता के और विशेषतया दिल्ली के अमुस्लिमों के समक्ष रक्खी थीं। इन शर्तों से दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली यह कि आज-कल भारतीय यूनियन की राजधानी दिल्ली में मुसलमानों की कैसी स्थिति है और वे वहां कैसा भयत्रस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं और दूसरी यह कि महात्मा गांधी के हृदय में भारतीय यूनियन में शेष रहे मुसलमानों के प्रति कितनी गहरी सहानुभूति है और उनका यह दावा कि 'मैं मुसलमानों का सबसे बड़ा दोस्त हूँ' किस प्रकार अक्षरशः सत्य है। वे सातों शर्तें, जिन्हें दिल्ली की शान्ति-परिषद् ने स्वीकार करके महात्माजी का अनशन तुड़ाने में सफलता प्राप्त की है, नीचे लिखे अनुसार हैं—

१ ख्वाजा बख्तियार के दरगाह पर प्रतिवर्ष लगने-वाला मेला इस वर्ष भी लगे और मुसलमान बिना किसी भय के उसमें सम्मिलित हों।

२ गत दिल्ली के दंगे में मन्दिरों और निवासस्थानों में परिणत की गई मस्जिदों को पुनः मुसलमानों को लौटा दिया जाए। हिन्दू और सिख इन मस्जिदों को पुनः बनवा दें।

३ करोलबाग, सब्जीमण्डी और पहाड़गंज में मुसलमान निर्भय रूप से विचरण करें।

४ पाकिस्तान से लौटकर आनेवाले दिल्ली के मुसल-मानों का यहां के हिन्दू और सिख विरोध नहीं करें।

५ रेलगाड़ियों में बिना किसी भय या खतरे के मुसलमान विचरण करें।

६ मुसलमानों का आर्थिक बायकाट न किया जाए।

७ मुस्लिम मुहल्लों में हिन्दू और सिखों के बसने देने का प्रश्न पूर्ण रूप से वहां के निवासियों की इच्छा पर छोड़ दिया जाए।

नई कांग्रेस-समिति

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने काग्रेस कार्य-समिति के नए सदस्यों के नामों की जो घोषणा की है, वह इस प्रकार है—

(१) पं० जवाहरलाल नेहरू, (२) सरदार वल्लभभाई पटेल, (३) मौलाना अबुल कलाम आजाद, (४) पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, (५) सरदार प्रतापसिंह, (६) डा० पी० सी० घोष, (७) डा० पट्टाभि सीतारमैया, (८) श्री रफी अहमद किदवई, (९) श्री एस० के० पाटिल, (१०) प्रो० एन० जी० रंगा, (११) श्री बलवन्तराय मेहता, (१२) श्री शंकररावदेव, (१३) आचार्य युगल किशोर, (१४) श्रीमती सुचिता कृपलानी।

सरदार वल्लभभाई पटेल कोषाध्यक्ष और श्री शंकरराव देव तथा आचार्य युगलकिशोर जनरल सेक्रेटरी का काम करेंगे।

पश्चिमी बङ्गाल का नया मन्त्रिमण्डल

पश्चिमी बंगाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री प्रफुल्लचन्द्र घोष के त्यागपत्र देन पर नए मनोनीत प्रधानमंत्री श्री डा० विधानचन्द्र राय ने अपने मन्त्रिमंडल की घोषणा कर दी है। इसमें चार मंत्री पुराने ह, शेष आठ नए हैं। गवर्नर के सामने जिन मंत्रियों की सूची पेश की गई है उनके नाम ये हैं—

१. डा० विधानचन्द्र राय, २. श्री नलिनीरंजन सरकार, ३. राय हरेन्द्रनाथ चौधरी, ४. श्री बी० सी० सिन्हा, ५. श्री निहारेन्दु दत्त मजूमदार, ६. श्री के० पी० मुखर्जी, ७. श्री भूपति मजूमदार, ८. श्री हेमचन्द्र नस्कर, ९. श्री मोहिनीमोहन वर्मन, १०, श्री प्रफुल्लचन्द्र सेन, ११, श्री निर्मल विहारी मैत्र, १२. श्री यादवेन्द्रनाथ दत्त।

हिन्दी के अभ्युत्थान के लिए कुछ प्रशंसनीय प्रयत्न

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-संघ की योजना

साहित्यकार संसद् प्रयाग की मंत्रिणी श्रीमती महादेवी वर्मा ने भारत के हिन्दी भाषा-भाषियों की साहित्यिक संस्थाओं को एक सूत्रबद्ध करने और उनमें परस्पर सहयोग के द्वारा हिन्दी-साहित्य की उन्नति और प्रचार करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय संघ स्थापित करने की एक योजना बनाई है। प्रमुख साहित्यिकों का उसे सहयोग प्राप्त है। भारत की साहित्यिक संस्थाओं के पास यह योजना भेजी जाएगी। सारे भारत में हिन्दी की साहित्यिक संस्थाओं की संख्या अनुमानतः ३०० से अधिक है। श्रीमती महादेवी वर्मा एक परिचय-पुस्तक भी प्रकाशित कर रही हैं जिसमें साहित्यिक संस्थाओं के नाम, उद्देश्य, नियम और कार्यों का विवरण होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो प्रशंसनीय दान

प्रयाग की साहित्यकार संसद की मंत्रिणी श्रीमती महादेवी वर्मा को हाल में कलकत्ते की साहित्यिक संस्थाओं ने मानपत्र दिया और उन्हें साहित्यकार संसद का साहित्यिक कार्य बढ़ाने के लिए २५,१००) की थैली एक कीमती सूटकेट में रखकर भेंट की। महादेवीजी ने ऋग्वेद और उपनिषद की हिन्दी छन्दों में रचना की है और इन रचनाओं को साहित्यकार संसद के अन्तर्गत 'लेखक सहायक निधि' को दिया है। महादेवीजी को इन रचनाओं के प्रकाशन के लिए कलकत्ते के दो धनिकों ने पृथक् रूप से १६०००) की राशि देने की घोषणा की है।

बंगाल-द्वारा हिन्दी का समर्थन

डा० यदुनाथ सरकार, डा० रमेशचन्द्र मजुमदार, विश्वेश्वर शास्त्री, डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, डा० कालीदास नाग, डा० भण्डारकर, श्री रजनीकान्तदास, लेडी मुखर्जी, डा० शिशिरकुमार मित्र तथा अन्य अनेकों बंगाली साहित्यकारों एवं विद्वानों ने विधान-परिषद् के अध्यक्ष के नाम एक संयुक्तपत्र भेजकर उनसे अनुरोध किया है कि वे साहित्यकार इस बात से सहमत हैं कि देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया जाए। इन विद्वानों का कहना है कि हिन्दी देश की सर्वाधिक प्रचलित भाषा है, जिसको देश की आधी से अधिक जनसंख्या लिख-बोल सकती है। इन विद्वानों ने उर्दू-फारसी का विरोध करते हुए लिखा है कि उसमें विदेशी, उर्दू-फारसी भाषाओं के शब्दों का बाहुल्य है, जिसे देश की सभी लोग नहीं समझ सकते। देवनागरी लिपि ध्वनि को उसके स्वाभाविक स्वर में लिपिबद्ध करती है और संसार की सबसे पूर्ण लिपि है तथा देश की अन्यान्य लिपियां भी इसी का रूपान्तर हैं। फारसी लिपि भारतीय ध्वनियों को प्रकट नहीं कर सकती।

इन्दौर में राजभाषा हिन्दी

देवनागरी लिपि में लिखी हुई हिन्दी भाषा इन्दौर राज्य की सरकारी भाषा होगी—महाराज इन्दौर ने मध्य भारत हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए यह घोषणा की।

हिन्दी सीखना अनिवार्य

जालंधर म्युनिसिपल कमेटी ने अपने यहां के प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों के नाम एक नोटिस जारी की है कि वे एक माह के अन्दर हिन्दी सीख लें अन्यथा नौकरी से हटा दिए जाएंगे।

तीन महीने के अन्दर हिन्दी

आगरा म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन श्री आर० के० धूलेकर ने समस्त म्युसिपल कर्मचारियों के लिए एक आदेश जारी कर दिया है जिसमें कहा गया है कि जो १२ अप्रैल १९४८ के अन्दर हिन्दी सीख लेगा वही नौकर रह सकेगा। बाकी को हिन्दी जाननेवालों के लिए स्थान खाली करना पड़ेगा।

हिन्दी भाषा और लिपि से अनभिज्ञ लोगों के लिए वहां एक रात्रि-पाठशाला भी खोली जा रही है।

अँगरेजी हटाई गई

बिहार सरकार ने सन् ४८ और ४९ से क्रमशः स्कूलों की छठी और सातवीं कक्षाओं से अँगरेजी हटाने का निश्चय किया है। इस तरह बचाए गए समय में कला-कौशल की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाएगा। सरकार ने क्रमशः ९वीं कक्षा तक अँगरेजी हटा देने का निश्चय किया था। तदनुसार सन् ४७ में चौथी और पांचवीं कक्षाओं से अँगरेजी हटाई जा चुकी है।

अदालतों में हिन्दी क्यों नहीं!

न्यायालय-सम्बन्धी कार्यों में अब तक अरबी और फारसी जैसी विदेशी भाषाओं का आधिपत्य रहा है। स्वतन्त्र भारत में यह असह्य है। कुछ शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द नीचे दिए जा रहे हैं—

इन्साफ—न्याय, अदल—न्याय, मुंसिफ—न्यायाधीश, काजी—न्यायाधीश, फैसला—निर्णय, अदालत—न्यायालय, कचहरी—न्यायालय, नवीस—लेखक, मुंशी—लेखक, जेलखाना—बन्दीगृह, गुजश्ता—भूतकाल, गुजारिश—प्रार्थना, दरख्वास्त—प्रार्थनापत्र, हवालात—दृष्टिबंधन, कोतवाल—कोटपाल, कैद—बन्धन, गिरफ्तारी—उपग्रह, कुर्सी—आसन्दी, मवर्रखा—लिखित, सिफारिश—अनुरोध, रिश्वत—घूस, रिश्वतखोर—उत्कोचक, रायज—प्रचलित, मालगुजारी—राजस्व।

(साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' से)

शिक्षा में धर्म का स्थान हो

माननीय अबुलकलाम आजाद का इस सम्बन्ध में मन्तव्य सहयोगी 'वीर अर्जुन' में इस प्रकार छापा गया है—

राजनीतिक परिस्थिति में परिवर्तन होने से हमारे कार्य के स्वरूप पर भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। हम शिक्षा-सम्बन्धी समस्याओं को जिस तराजू पर तौलते थे, वह अब बहुत पुरानी पड़ गई है। अब हमें नई तराजू और नए बांटों की जरूरत पड़ेगी। आज की राष्ट्रीय समस्याओं की विशालता या लघुता की नाप पुराने पैमानों से नहीं की जा सकती। नवीन भारत की नवीन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता पड़ेगी और उसकी समस्याओं को हल करने के लिए नवीन उपायों का अवलम्बन करना पड़ेगा।

आप यह तो जानते हैं कि धार्मिक शिक्षा देने के सम्बन्ध में उन्नीसवीं शताब्दी का उदारतापूर्ण दृष्टिकोण अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त हो चुका है। प्रथम महायुद्ध के बाद से ही एक नए दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव हो गया था और उसके बाद दूसरे महायुद्ध के परिणामस्वरूप जो बौद्धिक क्रान्ति हुई, उसके कारण इस समस्या को एक निश्चित रूप दे दिया गया है। प्रारम्भ में यह ख्याल किया गया था कि बच्चे के बौद्धिक विकास में धर्म बाधक रहेगा, लेकिन अब यह अनुभव किया गया है कि हम धार्मिक शिक्षा को सर्वथा तिलांजलि नहीं दे सकते। यदि राष्ट्रीय शिक्षा में इसका कोई स्थान नहीं रहेगा तो नैतिक उपयोगिता अथवा मानव-चरित्र को उदार बनाने का महत्त्व ही नहीं समझा जा सकेगा। यह तो आप जानते ही होंगे कि पिछली लड़ाई में रूस को भी अपना सिद्धांत छोड़ देना पड़ा। ब्रिटिश सरकार को भी १९४४ में अपनी शिक्षा में सुधार करना पड़ा।

जहां तक भारत का सम्बन्ध है, इस समस्या का स्वरूप सर्वथा विभिन्न है। योरप और अमरीका को धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता इसलिए अनुभव हुई कि धार्मिक प्रभाव के बिना लोग हर एक बात पर आवश्यकता से अधिक बौद्धिक दृष्टिकोण से विचार करने लगे। लेकिन जहां तक भारतीय जीवन का सम्बन्ध है, यहां समस्या का दूसरा ही पहलू काम कर रहा है। हमें इस बात का डर नहीं कि लोग अत्यधिक बौद्धिक दृष्टिकोण से काम लेने लगेंगे। इसके विपरीत हमारे यहां धर्म का बहुत अधिक बोलबाला है। योरप की भांति हमारी वर्त्तमान कठिनाइयां भौतिक दृष्टकोण की बजाय धर्मान्धता के कारण हैं। अगर हमें इन कठिनाइयों से छुटकारा पाना है तो इसका उपाय प्रारम्भिक शिक्षा में से धार्मिक शिक्षा को तिलांजलि देना न होकर सीधे अपनी निगरानी में ठोस और स्वस्थ धार्मिक शिक्षा देने की समुचित व्यवस्था करना है, ताकि शैशवावस्था में ही बच्चे पर अन्धविश्वास का प्रभाव न पड़े।

स्पष्ट है कि लाखों ही भारतीय अपने बच्चों को अधार्मिक वातावरण में शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं हैं। यदि सरकार ने विशुद्ध रूप से धर्मनिरपेक्ष शिक्षा देने का बीड़ा उठाया तो पता नहीं उसका क्या परिणाम निकले। स्पष्ट है कि लोग गैर-सरकारी रूप से अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने की चेष्टा करेंगे। ये गैर-सरकारी संस्थाएँ आज किस रूप में काम कर रहीं हैं और भविष्य में करेंगी—इससे [illegible] भली भांति परिचित हैं। इस बारे में मैं भी कुछ [illegible] रखता हूं और यह कह सकता हूं कि न केवल [illegible] में बल्कि शहरों में भी धार्मिक शिक्षा देने का [illegible] अध्यापकों के जिम्मे होता है जो यद्यपि साक्षर [illegible] फिर भी शिक्षित नहीं कहे जा सकते। उनके लिए [illegible] अर्थ सिवाय धर्मान्धता के और कुछ नहीं। इसके [illegible] उनके पढ़ाने का ढंग भी ऐसा होता है कि उसमें उदार [illegible] कोण की गुंजाइश ही नहीं होती। तब यह बिलकुल [illegible] जाहिर है कि प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे को जो [illegible] दी जाएगी और उसके दिमाग में जो विचार [illegible] जाएंगे, उन्हें आप बाद में कभी भी नहीं निकाल [illegible] भले ही आप उसे कितनी ही आधुनिक शिक्षा क्यों न [illegible] यदि हमें अपने देश के बौद्धिक जीवन को इस खतरे से [illegible] है तो हमारे लिए यह और भी अधिक जरूरी हो जाता [illegible] हम प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों को धार्मिक शिक्षा [illegible] जिम्मेदारी गैर-सरकारी सूत्रों पर न डालें। इसके [illegible] रीत यह काम हमें सीधे अपनी निगरानी में ले लेना [illegible] निस्संदेह एक विदेशी सरकार धार्मिक शिक्षा से अपना [illegible] वास्ता नहीं रख सकती थी। लेकिन एक राष्ट्रीय [illegible] इस जिम्मेदारी से किसी भी हालत में अपना पिंड [illegible] सकती। देश के सुकुमार बालकों के मस्तिष्क को [illegible] आधार पर विकसित करना उसका सर्वोपरि कर्तव्य [illegible] भारत में हम धर्म के बिना कोई बौद्धिक विकास [illegible] कर सकते।

यदि धार्मिक शिक्षा को आधारभूत शिक्षा का [illegible] बनाना ही है तो उसमें उसका क्या स्थान होना [illegible] इसका प्रबंध कैसे किया जाए, इन प्रश्नों पर हमें अच्छी [illegible] से विचार करना होगा। निस्संदेह हमारे मार्ग में कई [illegible] नाइयां आ जाएंगी। हमें उनका निराकरण करना [illegible] परन्तु इस समय हमें विस्तार में जाने की आवश्यकता [illegible] यदि मुख्य प्रश्न हल हो गया तो विवरण तो बाद में [illegible] ढूंढ़े जा सकते हैं। फिर भी मैं आपसे निवेदन करूंगा [illegible] इस प्रश्न पर पूरी तरह से विचार करने के लिए [illegible] कमेटी नियुक्त करें जो अपनी सिफारिशें सरकार को [illegible] भेज सके।

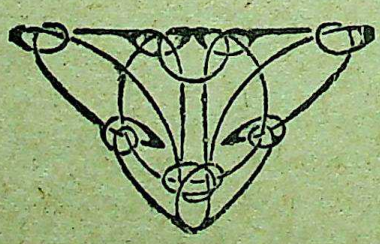

Printed and published by K. Mitra at The Indian Press, Ltd., Allahabad.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः आपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको आपरेशन कराने में असुविधा है या आपरेशन की अपेक्षा औषधियों-द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—नूँगा जिसका प्रधान अंग—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा कार्डियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना आपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा निपट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खूराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर खुलकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (देहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खून सुख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। नारी-सुधा की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रुपया पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

से मँगाइए—

बड़े बड़े शहरों में हम एजेन्सी स्थापन कर रहे हैं। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

फा० ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकमात्र अचूक औषधि

बच्चों के बढ़े हुए यकृत व तिल्ली के लिए

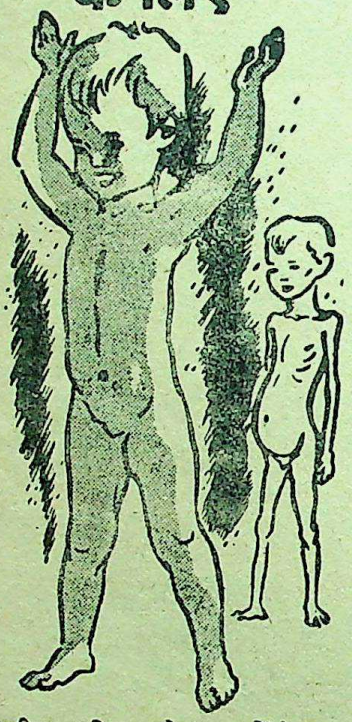

जेम्मीका "लिवर क्योर" बच्चों के यकृत व तिल्ली के रोगों के निदान के लिए वद्यैक-शास्त्र को एक सर्वश्रेष्ठ एवं अत्याव-श्यक देन है।

भारत भर के लब्ध प्रतिष्ठ डाक्टरों ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। बढ़े हुए यकृत व तिल्ली के रोगों की अत्यन्त वृद्धि की दशा में भी इस चमत्कारिक औषधि से लाभ पहुंचा है।

जेम्मी का
लिवर क्योर

जेम्मी वेंकटरामनैय्या एण्ड सन्स
माइलापुर, मद्रास, (फो. नं. ८१३९)
सैण्डहर्स्ट रोड, बंबई ४. (फो. नं. ४१५९३)
हरिसन रोड, कलकत्ता।
अन्य स्थान-लखनऊ, बंगलोर, विजयवाड़ा इत्यादि।

J. 233 A Hindi.

आँखों पर पट्टी बँधवा कर

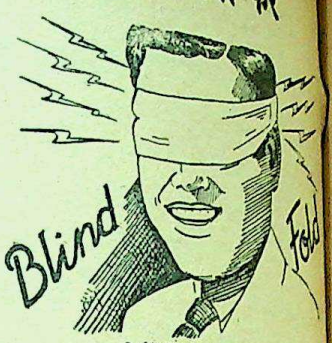

चुपके से किसी भी दर्शक द्वारा पृथ्वी पर खड़िया से खींची गई सीधी या टेढ़ी रेखा पर आप ठीक ठीक चल सकेंगे। इस "आश्चर्य-जनक मिस्ट्रीज़" के बल पर आप और भी कितने ही काम (लिखना, पढ़ना, निशाना मारना इत्यादि) बड़ी सरलता से और सफलतापूर्वक कहीं भी—कभी भी दिखा सबको चकित कर धन, मान और यश प्राप्त कर लेगें। इनके लिए न किसी सिद्धि की आवश्यकता है और न किसी सामान की। पूरा सामान और विवरण का दाम केवल पांच रुपया, मो मनीआर्डर द्वारा आना चाहिए। विदेशों से दस शिलिंग। गलत सिद्ध होने पर रुपये वापिस कर दिये जावेंगे। हमारी प्रशंसा सम्मानीय सज्जनों और पत्रों दोनों ने ही की है।

२१, मैजिक मिस्ट्रीज़, पोस्ट बाक्स नम्बर २,
मुरादाबाद, यू० पी० (भारत)

१९४८ में क्या होनेवाला है?

यदि आप १९४८ में होनेवाली अच्छी व बुरी घटनाएँ समय से पूर्व जानना चाहते हैं, तो आज ही केवल एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूल का नाम लिख कर भेज दें, बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाब से आपके आनेवाले १२ मास का हानि लाभ, किस व्यापार में लाभ होगा, किस साधन से धन प्राप्ति होगी, रोजगार कब मिलेगा, वेतन वृद्धि, परीक्षा में सफलता अर्थात् आज की तारीख से लेकर एक वर्ष तक होनेवाली कुल बातों का संक्षेप अर्थात् मासिक वर्ष फल बना कर केवल १।) में वी० पी० द्वारा भेज देंगे। डाक व्यय अलग।

श्री स्वामी योगीराज ज्योतिष आश्रम,
फगवाड़ा (कपूरथला स्टेट)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामयिक एवं मनोरञ्जक उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर ले० श्री गुरुदत्त

आलोच्य पुस्तक हिन्दी के उपन्यास-भण्डार में एक नवीन और बहुमूल्य वृद्धि है। इसका कथानक एक बिलकुल नवीन और महत्त्वपूर्ण समस्या के आधार पर निर्मित्त है। पिछले पन्द्रह वर्षों (अर्थात् करीब १९२० से १९३५ तक) की राजनैतिक परिस्थिति का इसे 'ऐतिहासिक उपन्यास' कहा जा सकता है।

यह उपन्यास जितना पठनीय है उतना मनोरञ्जक भी। आरम्भ से लेकर समाप्त होने तक पाठक की जिज्ञासा और दिलचस्पी वैसे ही कायम रहती है, जैसे एक अच्छे नाटक या सिनेमा में। "हिन्दुस्तान" नई दिल्ली।

तीसरा संस्करण, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४२० मूल्य ६)

पथिक ले० श्री गुदरुत्त

यह पुस्तक लेखक का दूसरा उपन्यास है। उसका प्रथम उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' था जो इसी प्रकाशक-द्वारा प्रकाशित हुआ था और उसने लेखक को हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट लेखकों की पंक्ति में ला दिया था। लेखक के इस दूसरे उपन्यास का विषय भी राजनैतिक ही है। इसमें उसने हमारे देश की हिन्दू-मुस्लिम समस्या का चित्र खींचने का यत्न किया है।.....यह पुस्तक हिन्दू-मुस्लिम-समस्या पर स्पष्टता और स्वतन्त्रता से इस रूप में लिखा गया सम्भवतः प्रथम उपन्यास है। "वीर अर्जुन" दिल्ली।

दूसरा संस्करण, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४६० मूल्य ६)

उन्मुक्त प्रेम ले० श्री गुरुदत्त

उपन्यास का कथानक रोचक तथा शिक्षापूर्ण है। विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण बड़ी कुशलतापूर्वक हुआ है। 'उन्मुक्त प्रेम' लेखक की सुन्दर कृति है। हमें विश्वास है कि हिन्दी-संसार इसका स्वागत करेगा।

"आजकल" दिल्ली।

दूसरा संस्करण, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या ४६० मूल्य ६)

भूचाल ले० श्री रामसिंह

भूचाल का वर्णन अत्यन्त तथ्यपूर्ण है। उपन्यासकार ने रम्भा के पतन का विकास बहुत सुन्दर दिखाया है।

"रामराज्य" कानपुर।

सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २३० मूल्य ३॥)

समस्त प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्य

प्रकाशक

विद्या मन्दिर लि०, कनॉट सरकस, नई दिल्ली

सूर्यग्रहण के अवसर पर तैयार की हुई

दिव्य सिद्धि तान्त्रिक अँगूठी

(रजिस्टर्ड)

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान् हो जायँगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्ज़त करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होगा, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके इच्छानुसार होगा। यह अँगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २॥) डाक-खर्च ॥=) आना।

नोट—बेकार साबित हो तो ६ महीने तक वापस।

भारतीय तान्त्रिक भंडार (११) अलीगढ़

सिद्धराज-समीक्षा

लेखक, व्रजभूषण शर्मा, एम० ए०

सिद्धराज-समीक्षा श्री मैथिलीशरण जी गुप्त के ऐतिहासिक खण्ड काव्य 'सिद्धराज' का सर्वाङ्ग-पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करती है। कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र-चित्रण, भाव-वर्णन, विचार-धारा, भाषा-शैली आदि सभी आलोच्य विषयों की इस पुस्तक में समीक्षा की गई है। परिशिष्ट में कठिन अंशों के अर्थ तथा अंतर्कथाएँ दे दी गई हैं। इस प्रकार यह पुस्तक उक्त काव्य को समझने तथा विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन करने की सभी सामग्री प्रस्तुत करती है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The God of Beauty

सौन्दर्यराज-कामदेव

ने, कवि के कथनानुसार अपना निवास-स्थान सुन्दरियों के केशों में बनाया है। वैसे आकर्षक अलकों को उत्पन्न करने का केशवर्धिनी को अवसर दीजिए और सदा वर्ष भर उसे केशों को बढ़ाने दीजिए।

केशवर्धिनी आपके बालों को वह वस्तु प्रदान करती है, जिसे रोमांस कहते हैं। बचपन से ही केशवर्धिनी की सहायता से बढ़ी अलकें सदा यौवनपूर्णता से चमकती, सौन्दर्य से लहराती तथा अबाध रूप से बढ़ती रहती हैं।

आप अपने केशों को अपने व्यक्तित्व को सुन्दरतम रूप में प्रदर्शित करने का अवसर दें तथा केशवर्धिनी को अपने बालों को सुन्दरतम बनाने का अवसर दें। अपने बालों में

आज ही

केशवर्धिनी

का प्रयोग कीजिए।

यह आपके केशों को बढ़ाती है, सौन्दर्यशाली बनाती है और उनकी रक्षा करती है।

केशवर्धिनी ..... बारह आने
केशवर्धिनी शेम्पू ..... बारह आने

डाक-खर्च और पैकिङ्ग अलग।

साधारणतः सभी दूकानों या सीधे

साउथ इंडिया केमिकल्स

आर० एस० पुरम, कोयम्बतूर से प्राप्त

जुकाम से काम की बरबादी ?

तीस सेकेण्ड में आराम !

कड़ी सर्दी या जुकाम से तकलीफ और परेशानी न उठाइए। कैर्सोड्राइन से आपको तुरन्त आराम मिल सकता है। इसके प्रयोग की विधि यह है कि इनहेलर को (चित्र में देखिए) प्रत्येक नासाछिद्र में लगाइए और दो बार सूँघिए। ३० सेकेण्ड में आराम मिलता है। कैर्सोड्राइन वैज्ञानिक उपादानों का मिश्रण है, जिससे वाष्प निकलती है। यह नासामार्ग के कफ को सुखा देती है और नाक की झिल्लियों की सूजन घटाती है। नाक की खराबी तुरन्त दूर हो जाती है क्योंकि कैर्सोड्राइन का प्रभाव तकलीफ की जड़ तक पहुँचता है।

सर्दी, जुकाम, दमा, श्वासनलिका का प्रदाह और श्वासकष्ट-सहित ज्वर के लिए उपयुक्त।

अच्छे औषधि-विक्रेताओं के यहाँ बिकता है।

Ad. No. 6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रियायती क़ीमत में

वार्षिक बालसखा १९४७

बहुत लोग यह पूछा करते हैं कि सन् १९४७ के वार्षिक बालसखा में क्या-क्या छापा गया है। उनको पत्र-द्वारा इसका विस्तृत उत्तर देना सम्भव नहीं। ३०० पृष्ठों में जो अमूल्य सामग्री छापी गई है उसका ठीक परिचय तो असल चीज़ को देखने से ही मिल सकता है। फिर भी यहाँ पर बानगी के तौर पर कुछ विषयों का उल्लेख किया जाता है। आशा है, इससे पाठकों को इस अंक की उत्तमता की कुछ जानकारी हो सकेगी। कुल रचनाएँ ८३ हैं। इनमें लगभग दो दर्जन कहानियाँ, इतनी ही कविताएँ और विविध विषयों पर फुटकल कोई ३ दर्जन लेख हैं। चित्रों की भरमार है। ८ रंगीन चित्र हैं। सुन्दर जिल्द है। रंग-बिरंगी छपाई है। इसको देखते ही बालक किलकने लगते हैं। यह खेल-खेल में उनको कितनी ही ज्ञान की बातें सिखा देता है। इसको बच्चे तो पसन्द करते ही हैं, उनके माता-पिता का भी इससे मनो रंजन होता है। पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी प्रशंसा की है। मुख्य मुख्य शीर्षक और उनके लेखक ये हैं—

कविताएँ—अब तो जागो (आशाकान्त आचार्य), सोई चिनगारी (श्यामराय भटनागर), कूच का गीत ('हिमालय'), गोबर-गणेश ('अशोक' बी० ए०), अमरों का देश ('शलभ'), मुन्ना का गीत (निरंकुश देव सेवक एम० ए०), वीर बीदा ऊदावत ('गंगाप्रसाद कौशल'), ख़रगोश और हाथी (रामचन्द्र श्रीवास्तव एम० ए०), जयचन्द ('स्वर्ण-सहोदर'), चिड़ियाँ ('विक्रम'), मेरी वंशी (कैलाशचन्द्र), गाय (इन्द्रबहादुर खरे बी० ए०), चन्दा मामा (सुरेशकुमार 'सुमन'), लोरी (लक्ष्मीदेवी वर्मा), सिंहों की सन्तान (प्रकाश 'आतुर'), हम फूल हैं, हँसना हमारा काम है ('कुमार-हृदय') जागृति-गान ('लाला' जगदलपुरी), लालच (राजाराम मोदी), मेरी मैया (रामदेवसिंह 'कलाधर') और सपना (कुमारी शोभा मिश्र) आदि।

कहानियाँ—चित्रमय कहानियाँ (दो रंगों में छपी हुई), जगलाल (वीरदेव 'वीर', बी० ए०), मेल-मिलाप (रामलाल), उजियारी (मालती श्रीवास्तव बी० ए०), अधूरा सपना (भगवानदास), कराया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिबिया (गोकर्णनाथ), तोते की पढ़ाई (रामेश्वरप्रसाद गुरु एम० एस्-सी०), नहीं बताऊँगा (कुमारी त्रिवेणी), बिना विचारे जो करै (गंगाधर दुबे), कछुए की मौत (कुमारी ममता चौहान), भेड़िये की बारात (शिवचन्द्र नागर बी० ए०), पिल्ला किसका ? (सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ एम० ए०), हाथ कुछ न लगा (रामकृष्ण शाह), सूर्यमुखी (वल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'), सोने की मछलियाँ ('अशोक' बी० ए०), मांडू का अनोखा चोर (अवधविहारी पांडे एम० ए०), हाय री क़िस्मत (रमज़ान अली), क़िस्मत का खेल (वेदप्रकाश), नाई की चतुराई (कैलाशचन्द्र) और जैसे को तैसा (कमालुद्दीन) इत्यादि।

विविध विषयों पर लेख—कराची की झाँकी (राजेन्द्रसिंह गौड़ एम० ए०), ताश के चार खेल (डा० गोरखप्रसाद एम० एस्-सी०), बुद्धगया में (धर्मरत्न), हीरों की कहानी (रतनचन्द सावनसुखा), पुच्छल तारा (मनोरंजनसिंह), पत्थर (श्रीधरराव लेले), ऊँची उड़ान (नरोत्तमप्रसाद नागर), वर्धा की सैर (उमाशंकर शुक्ल), महाराज पद्मशमशेरजंग बहादुर राना (डा० ईश्वरीप्रसाद एम० ए०), आर्कमीडीज़ (रायबहादुर पुत्तनलाल विद्यार्थी), बाईबिल (फिलिप), बालक अरुण (नन्द चतुर्वेदी बी० ए०), डाँगड़ा की पहाड़ियों में (वीरदेव 'वीर' बी० ए०), सोनपुर का मेला (विमल कृष्णसिंह), टीपू सुलतान की उदारता (डा० सुरेन्द्रनाथ सेन एम० ए०), रेडियम (डा० ननीलाल दे), साँप-नेवले की लड़ाई (कुँ० सुरेशसिंह), आश्चर्यजनक बातें (अशोक चौहान), सारनाथ (उदयशंकर शास्त्री), सिंहल की कहानी (चन्द्रचूड़ एम० ए०), न उड़नेवाले जानवरों के अण्डे (राममूर्ति मेहरोत्रा एम० ए०), तुम क्या चाहते हो ? (प्रो० रामचरण महेन्द्र एम० ए०), कालाकाँकर (रामेश्वरप्रसाद गुरु एम० एस्-सी०), एस्किमो (सकीना बेगम), हिन्दू क्रान्तिकारी का दाँव (धर्मवीर एम० ए०), टमाटर की आत्मकहानी (रामचन्द्र बी० एस्-सी०) पकवानों के प्रेमी दो पंजाबी नेता (आत्मस्वरूप शर्मा) और पंचवटी (रामेश्वरदयाल दुबे एम० ए०) आदि।

इतनी अच्छी सामग्री, इस महँगी के ज़माने में, इतने कम दामों में नहीं मिल सकती। इसलिए आज ही मनीआर्डर से मूल्य भेजकर इस अंक को अपने घर के रत्न बच्चों के लिए मँगाकर उनको प्रसन्न कीजिए। प्रतियाँ अब थोड़ी बची हैं। इसलिए शीघ्रता कीजिए। मूल्य केवल तीन रुपये। जो लोग २८ फरवरी सन् १९४८ तक मनीआर्डर से मूल्य भेजेंगे उनको आठ आने कमीशन में मिलेंगे अर्थात् दो रुपये आठ आने में ही उनको सन् १९४७ का वार्षिक बालसखा रजिस्टर शुदा पैकट से घर पर मिल जायगा।

मैनेजर 'बालसखा'

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अङ्क ।।) आठ आने

तिरङ्गा आवरण, दर्जनों चित्र, कलापूर्ण छपाई

'मंजरी' का दूसरा अङ्क भी प्रकाशित हो चुका। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस और सुरुचि-सम्पन्न कहानियाँ पढ़नी हों तो आज ही 'मंजरी' के ग्राहक बनिए।

विद्वानों और आलोचकों की दृष्टि में—

डा० अमरनाथ झा, भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का प्रथम अङ्क मिला। पढ़कर प्रसन्न हुआ। कहानियाँ बहुत अच्छी हैं। इस उच्च कोटि की पत्रिका के प्रकाशन पर बधाई।

डा० धीरेन्द्र वर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय—'मंजरी' का यह अङ्क सुन्दर और आकर्षक है। हिन्दी कहानी-पत्रिकाओं का स्तर वास्तव में बहुत गिर गया है। विश्वास है 'मंजरी' इस सम्बन्ध में आदर्श की ओर अग्रसर होगी और दूसरी पत्रिकाओं के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगी।

माननीय पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, सचिव, राजस्व तथा सूचना-विभाग, संयुक्तप्रान्तीय सरकार, लखनऊ—'मंजरी' मिली। मुझे पसन्द आई। मुझे आशा है कि जनता को उचित आदर्शों की ओर प्रेरित करेगी।

माननीय श्री ब्रिजलाल बियाणी, सदस्य, विधान-परिषद्, अकोला (बरार)—सुरुचि-सम्पन्न साहित्य-निर्माण के उद्देश्य को लेकर 'मंजरी' का प्रकाशन हुआ है, अतः मेरा विश्वास है, आपको पूर्ण सफलता मिलेगी।

सेठ गोविन्ददासजी, सदस्य, विधान-परिषद्, जबलपुर—'मंजरी' का जो स्तर अभी से रखा गया है, वह सराहनीय है। यदि यही स्तर सदा रखा गया तो पत्रिका साहित्य एवं देश की बहुत सेवा करेगी, ऐसा विश्वास है।

श्री मोहनसिंह सेंगर, भूतपूर्व सम्पादक 'विशाल-भारत', कलकत्ता—कहानियों का चुनाव, सम्पादन, कथा-साहित्य का परिचय एवं समीक्षा तथा लेखकों के परिचय आदि आपकी सूझ-बूझ के सुन्दर परिचायक हैं। छपाई-सफाई और सजावट के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या? मेरा विश्वास है कि निकट-भविष्य में ही 'मंजरी' कहानी-पत्रिकाओं में अपना शीर्ष स्थान बना लेगी।

'आज' [काशी, १६ जनवरी ४८]—आकर्षक रंगीन मुखपृष्ठ के भीतर विविध चुने हुए श्रेष्ठ कथाकारों की रचनाएँ विभिन्न स्केचों एवं चित्रों से अलंकृत हैं। सम्पादन में श्रम तथा यथेष्ट सुरुचि से काम लिया गया है।

'स्वतन्त्र' [झाँसी, १८ जनवरी ४८]—अङ्क में लब्धप्रतिष्ठ कहानीकारों तथा उपन्यासकारों की रचनाओं की कमी नहीं है। महारथियों की कहानियाँ इसमें हैं। लेख भी लब्धप्रतिष्ठ लेखकों के हैं। आकार-प्रकार सुन्दर है और छपाई के लिए तो इंडियन प्रेस का नाम ही प्रमाण है।

मैनेजर 'मंजरी', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिपटन

माने अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LTM-132

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतना बड़ा बर्तन!"

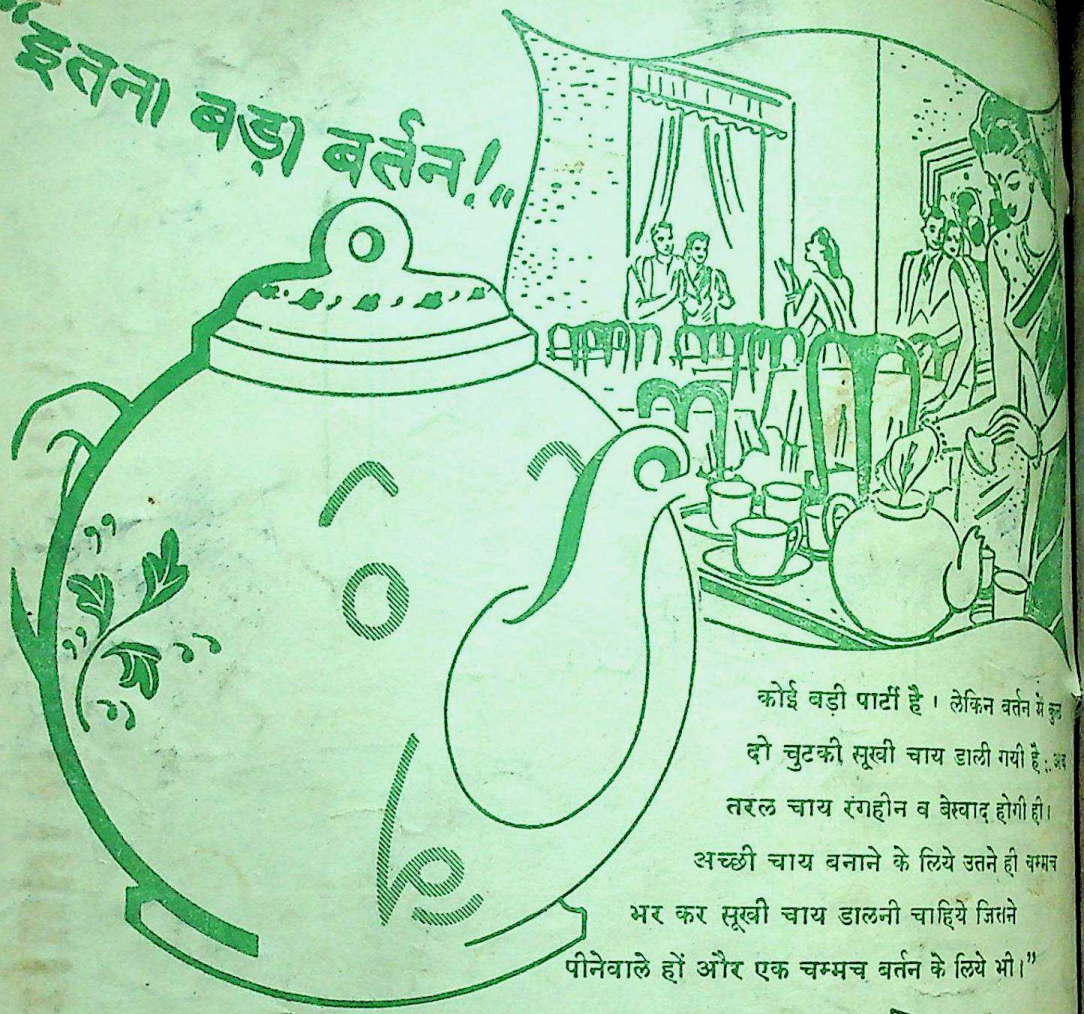

कोई बड़ी पार्टी है। लेकिन बर्तन में सूखी दो चुटकी सूखी चाय डाली गयी है। अतः तरल चाय रंगहीन व बेस्वाद होगी ही। अच्छी चाय बनाने के लिये उतने ही चम्मच भर कर सूखी चाय डालनी चाहियें जितने पीनेवाले हों और एक चम्मच बर्तन के लिये भी।"

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती : सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी क़ीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन सौंधा लीजिये। २. चाय के बर्तन को गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लि एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनि तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दू प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

अच्छी बनी चाय से अच्छी

चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७ वनस्पति युक्त तत्त्वों से बनाया हुआ

कामिनिया आइल (रजिस्टर्ड)

यह केश तेल विशुद्ध और प्रसन्नता वर्धक जड़ी, बूटियों और औषधियों से बनाया गया है। यह सुन्दरता को बढ़ाता, बालों को गिरने से बचाता तथा आकार प्राकृतिक रंग कायम रखता है और मस्तक के लिए शीतल सुगन्धि में अद्वितीय है उसके अलावा इसकी सुगन्ध अत्यन्त मीठी और मनमोहक है।

इत्रों का बादशाह

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

यह बड़े सुन्दर ताजे फूलों से बनाया गया है जो मोहित कर देनेवाली खुशबू देता है। रूमाल पर केवल दो बूँद गिरा देने से ही आपके चारों ओर हाल के चुने हुए फूलों की खुशबू फैल जायगी।

चेहरे की खूबसूरती तथा मोहकता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक इलाज

कामिनिया-स्नो (रजिस्टर्ड)

हिम-शीकरसा शीत और श्वेत तथा चकचकित यह क्रीम चेहरे के ऊपर मालिश करने से खील फुन्सियाँ, दाग, श्यामता आदि दूर करके चमड़ी चमकीली, स्वच्छ और चेहरा आकर्षक बनता है। सुन्दरता प्रिय स्त्रियों के लिए अत्यन्त आवश्यकीय सिद्ध हो चुका है। पुरुषों को भी हजामत बनाने के बाद इस क्रीम को चेहरे पर मालिश करने से चर्म हमेशा के लिए रेशम-सा मुलायम रहता है। एक बार इस्तेमाल कर परख कीजिए।

'नहाने के लिए उम्दा खुशबूदार साबुन'

कामिनिया ह्वाइट रोज सोप (रजि०) गुलाब की खुशबू का साबुन।
कामिनिया सन्दल सोप (रजि०) चन्दन की खुशबू का साबुन।
कामिनिया लवेण्डर सोप (रजि०) फूलों की खुशबू का साबुन।
दिल बहार सोप (रजि०) बेला चमेली की खुशबू का साबुन।

इनके इस्तेमाल से चमड़ी स्वच्छ और मुलायम बनती है और मधुर खुशबू से तबीयत भी प्रसन्न रहती है।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कम्पनी,
२८५ जुमा मसजिद, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

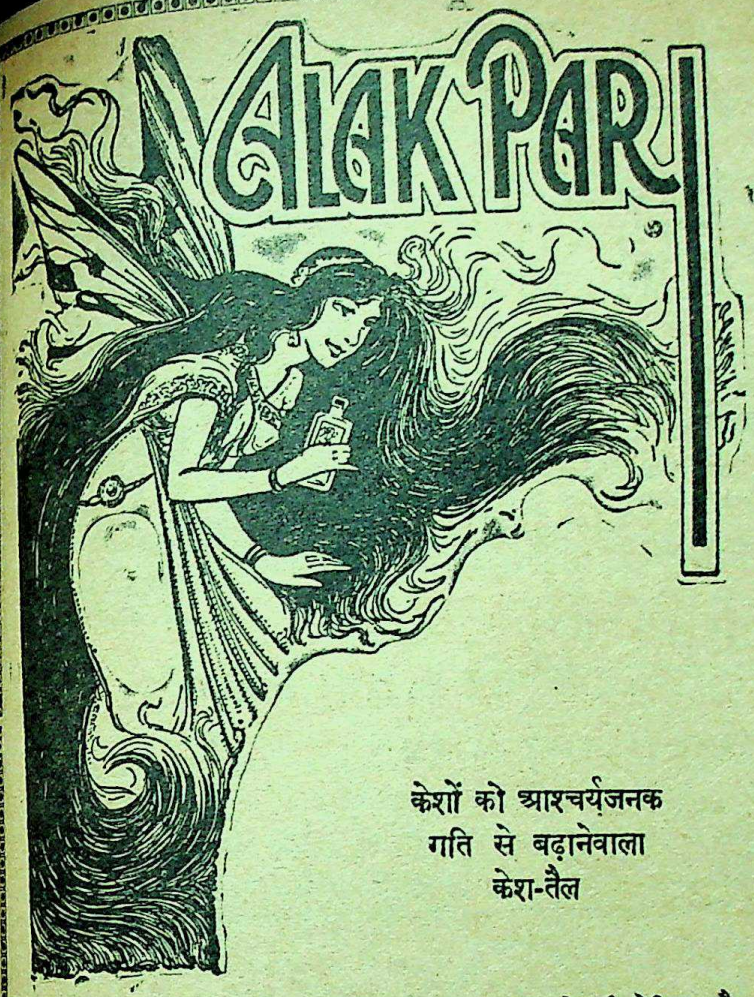

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।

दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।

तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।

चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं। फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जाएँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

महिलाओं की सम्मतियों की बाढ़

26. 1. 46.
अनेक कम्पनियों की लम्बी-चौड़ी तारीफें पढ़कर मेरा विश्वास उठ चुका था, पर आपकी अलकपरी को मैंने प्रशंसा के अनुरूप ही गुणकारी पाया। इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और तीन शीशियाँ शीघ्र भेज दें।
—राजकुमारी लालन, राजसदन, मैनपुरी।

11. 2. 47.
Alak Pari is giving much much satisfactory improvement, kindly despatch 6 Phials of it more.
Chadra P. Sethi B. A.
Ramnagar, Lahore.

15. 2. 47.
अपनी पत्नी के लिए अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभ हुआ और बाल बढ़े भी खूब! कृपया १२ शीशियाँ और भेजें।
—गोस्वामी मुकुन्द शर्मा, बड़ा मन्दिर, बम्बई २।

17. 2. 47.
I found Alak Pari to be one of the excellent oils. In fact it has shown well progress in the hair and satisfied me to the most. Kindly despatch 6 Phials more.
Miss Malini V. Nagpurkar, Dadar.

19. 2. 47.
पूर्व आपके यहाँ से अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभकारी प्रमाणित हुई। १ दर्जन शीशियाँ और भेज दें।
—गोस्वामी श्री० १०८, श्री गिरधारीलाल जी महाराज, झबुआ स्टेट।

प्रत्येक बड़े शहर में दूकानदारों के पास मिलती है। न मिलने पर इस पते से मँगाइए—

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बल, निश्चेतन और निराश क्यों रहते हो ?

भोजन को पचानेवाला, खून को बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग के बाद की निर्बलता को नष्ट करनेवाला

झंडु रक्तो फोस्फोमाल्ट

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य ओषधि अवश्य सेवन करें

झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४

इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—चम्मकलाल कम्पनी, ४६ जान्स्टनगंज।

दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल और पारीख, चांदनी चौक, दिल्ली।

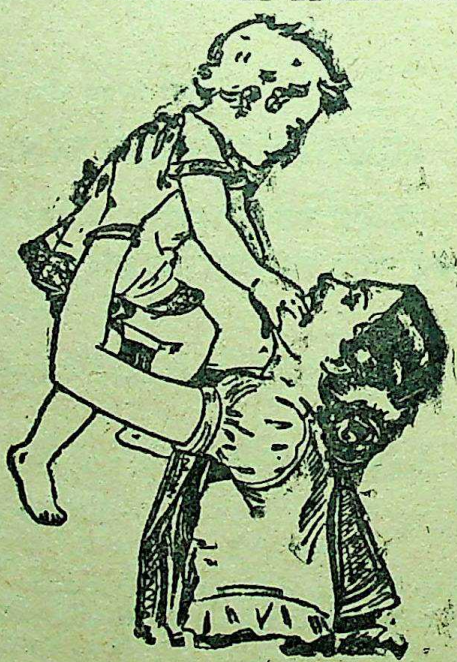

कमजोर और कृष बच्चे **डोंगरे-बालामृत** के इस्तेमाल से ताकतवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर बनिये—

पांड्स के दो क्रीम से

एक निर्मलता के लिये—एक सुरक्षा के लिये

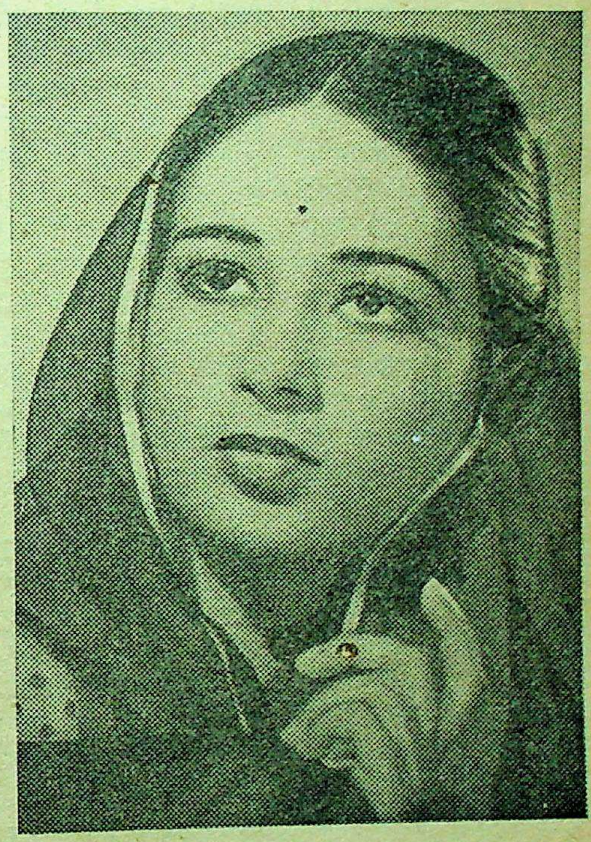

सुन्दरता के लिये आपको खास अभिप्रायवाले दो क्रीम का प्रयोग करना चाहिये। पहिला, क्योंकि सौन्दर्य-पुस्तक में सब से पहिले स्वच्छता का स्थान है, अतः रोमछिद्रों के विकारों की स्वच्छता के लिये और चेहरे को कोमल बनाये रखने के लिये उत्तम रूपसे मिश्रित, गहराई में प्रवेश करनेवाले तेलों से बनाया गया क्रीम—पांड्स कोल्ड क्रीम। दूसरा, मुख को धूल और गर्मी से सुरक्षित रखने के लिये दिन में अदृश्य रूप से लगा रहनेवाला हलका और चिकनाई-रहित क्रीम—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

प्रति रात्रि पांड्स कोल्ड क्रीम से अपने चेहरे को स्वच्छ कीजिये। काफी मात्रा में उसे चेहरे और गले पर फैलाइये, थोड़ी देर तक मलिये और तब पोंछ डालिये। कुछ दिन का यह उपचार ही आपके मुख को अपूर्व रूप से निर्मल और उज्ज्वल बना देगा।

अपने चेहरे की पांड्स के चिकनाई-रहित वेनिशिंग क्रीम से प्रति सवेरे रक्षा कीजिये। हलके-हलके थपथपाइये और मलिये और देखिये वह गायब हो गया है! लेकिन धूल और सूर्यकिरणों से आपके चेहरे को सुरक्षित रखने के लिये यह अदृश्य क्रीम दिनभर लगा रहता है और मुख को रेशम की तरह कोमल शृंगार देता है। जरा परीक्षा कीजिये।

पांड्स

स्मरण रखिये ग्रीष्म की कठोर गरमी और सर्दी की शीत दोनों ही हमारे शरीर के प्रकृत तेलों को सुखाकर उसे काला और भद्दा बना देती हैं।

यह भी स्मरण रखिये कि छिद्रों की गहराई में धूल या मैल के कणों से ही शरीर में अधिकांश दाग पैदा हो जाते हैं।

पांड्स के दैनिक, नियमित प्रयोग से चेहरा, स्वच्छ, उज्ज्वल और निर्मल हो जावेगा—वह सदैव युवा दिखेगा। आपके 'सौन्दर्य-नियमन' के इस साधन को प्रतिदिन पांड्स के दो क्रीम से पूरा कीजिये।

व्यापारिक विवरण के लिये—एल. डी. सेमूर एंड कं. (इंडिया) लि०
बम्बई - कलकत्ता - देहली - मदरास - नेवा गोवा - कराची - कोलम्बो - रंगून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री रत्नागिरीजी का अद्भुत चमत्कार

जिसने समस्त संसार को चकित कर दिया

रक्त, बल, वीर्य, उत्साह तथा उमङ्ग ही जीवन सफल बना सकती है।

ध्यान देने योग्य अमूल्य उपहार

अपूर्व कायापलट (रजिस्टर्ड)

निस्वार्थ संसारसेवी भारतीय महात्माओं ने औषध-विज्ञान को अपनी महान् खोजों और अमूल्य रत्नों से अलंकृत किया है। आधुनिक चिकित्सक मर्ज और मरीज जब दोनों को लाइलाज घोषित करके शर्मिन्दा नहीं होते, वहां इन्हीं महात्माओं की बिना दाम की जड़ी-बूटियां मुर्दों को भी जिला सकने में समर्थ हुई हैं। ऐसी सच्ची घटनाएँ आये दिन एक न एक पढ़ने और सुनने में आया करती हैं।

बीस वर्ष पूर्व कल्लाती पहाड़ी पर विचरण करनेवाले स्वामी रत्नागिरीजी महाराज की सेवा एक बूढ़ा ग्वाला करने लगा। योगिराज को एक दिन उस वृद्ध की कमजोरी पर दया आ ही गई और उन्होंने निम्नलिखित योग की ६ मात्राएँ उस बूढ़े को दीं। नासमझी के कारण छहों मात्राएँ एक साथ खा जाने से उस वृद्ध ग्वाले में अपूर्व शक्ति आ गई और रत्नागिरीजी के परिश्रम-पूर्वक इलाज करने पर भी बुढ़ापे के बावजूद उसे तीन विवाह करने पड़े। इस पर राजा, रईस, नवाब और रसिकजन महान् योग को जानने के लिए आतुर हो उठे। नवाब बहावलपुर के ससुर हाजी हयात मोहम्मद खां साहब ने बाबाजी की बहुत सेवा करके इसे प्राप्त कर लिया और लाहौर के पं० ठाकुरदत्त शर्मा को बतलाया। शर्मा जी ने इसे प्रथम तथा दो अन्य लिखकर तीनों से उत्तम वाजीकरण बतलानेवाले को एक हजार रुपये का नकद इनाम देने की घोषणा की। इसे आज बीस साल के लगभग हो गये किन्तु अभी तक कोई पुरस्कार विजय नहीं कर सका। मथुरा के ख्यातिप्राप्त बा० हरिदासजी ने इसे चिकित्सा-चन्द्रोदय में छपवाया और हमने भी स्वयं बनाकर सैकड़ों दुर्बल, नपुंसक, वीर्यविकारी रोगियों पर बरता। तत्काल लक्षण-चमत्कार देख जन-साधारण के लाभार्थ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपवा दिया। आप भी बनाकर लाभ उठावें।

योग—शुद्ध बुरादा फौलाद २० तोला, शुद्ध श्वेत मल्ल १ तोला, शुद्ध कपूर १॥ माशा, एक घंटा घृतकुमारी में घोटकर मिट्टी के कुज्जे में मजबूत बंद कर पांच सेर कंडों में फूंके। दुबारा एक तोला सहरताल बर्की शुद्ध, १॥ माशा कपूर में तीसरी बार गन्धक आमलासार शुद्ध एक तोला, कपूर १॥ माशा में, चौथी बार शुद्ध संस्कारित पारद १ तोला, कपूर १॥ माशा को ऊपर की भांति १६ आंच दे। फिर उसको कढ़ाई में डालकर बराबर इन्द्रबधू डाल दे और नीचे आग जलावे, जब इन्द्रबधू जलकर राख हो जावे तो हवा देकर उड़ा दे। बस अपूर्व कायापलट तैयार है। चार चार चावल सायं मक्खन मलाई के साथ खायें ऊपर मिश्री मिला दूध पीवें।

मथुरा के हरिदासजी लिखते हैं—इस योग के सेवन से एक हफ्ते में एक आदमी का वजन चार पौंड बढ़ गया, दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया। भूपाल के वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा ने ३५० रोगियों पर बरता और आशा से अधिक गुणकारी पाया। रत्नाकर-सम्पादक श्री छोटेलाल जैन आयुर्वेदाचार्य ने गृह-चिकित्सा पथ-प्रदर्शक में छापा कि इतना प्रचण्ड गुणकारी योग दूसरा नहीं देखा। श्री धर्मेन्द्र विद्यावतंश सिद्धान्त-शास्त्री अधिष्ठाता गुरुकुल बरला जिला मुजफ्फरनगर ने लिखा है—"अपूर्व कायापलट" नामक औषध सेवन कर रहा हूँ, जैसी प्रशंसा वैसा ही गुण है। बहुत लाभ हुआ। श्री चिरंजीलाल जैन आयुर्वेद-शास्त्री मालिक कल्याण औषधालय, वाह (आगरा) का कहना है कि मैंने २२५ रोगी, अपूर्व कायापलट द्वारा जो कि धातु-विकार, नपुंसकता, बवासीर, रक्त-विकार आदि रोगों से ग्रसित थे पूर्ण स्वस्थ किये।

हमारा दावा है कि केवल सात दिन के सेवन से शरीर में रक्त दौड़ता नजर आयेगा। २१ दिन में चेहरा लाल काश्मीरी सेब की तरह चमकने लगेगा। ४० दिन में नपुंसकता, मधुमेह, डायब्टीज, निर्बलता दूर हो जाती है। स्त्रियों के प्रदर दूर हो गर्भ-धारण शक्ति आती है। जिगर व मेदे की शक्ति बढ़ाकर भूख दूनी करता है। कफ, तिल्ली की खराबी, खांसी, नजला, जुकाम, बदन दुखना, खून का पतलापन, आंखों का पीलापन, चिनगारी सा उड़ते दीखना, बार-बार थूक गिरना, दमा तथा हर तरह की कमजोरी तुरन्त दूर कर नवजीवन का संचार करता है। जाड़ा, गरमी, बरसात सभी मौसमों में एक-सा लाभ करता है। योग भली भांति समझा कर लिखा है। फिर भी यदि आप न बना सकें तो बनी-बनाई १६ आंच दी हुई ४० दिन की ८० मात्रा डाक-खर्च सहित ६॥।-) में हम भेज देंगे। डाक-खर्च माफ, पैकिंग मनीआर्डर फीस अलग। कोई बात समझ में न आवे तो जवाबी कार्ड भेजकर उत्तर मँगा लें।

पता—रूपविलास कम्पनी, (रसायनशाला) नम्बर ४२७, घनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवमन्दिर के लिये पवित्रता

सफ़ाई और देवत्व साथ-साथ रहते हैं। धार्मिक रीति के पवित्र स्नान के लिये हमें ख़ास पवित्र साबुन का उपयोग करना चाहिये। साबुन में कुछ भी हो सकता है। लेकिन गोदरेज सॅण्डल साबुन में **सिर्फ़** शुद्ध आरोग्यदायी वनस्पती तेलों और सुगंधी चीज़ोंका इस्तेमाल किया गया है जिस वजह गोदरेज की दूसरी शृङ्गार की चीज़ों में किया जाता है। प्राणियोंकी घृणादर्शक चरबी उसमें बिलकुल मिलती नहीं। शुद्ध मैसूरी चंदन के तैल से भरपूर प्रमाणमें मिश्रित हुआ गोदरेज सॅण्डल साबुन आनन्ददायी शीतल, मुलायम और ख़ुशबूदार फेन देता है। उसकी वनस्पती तेल युक्त स्निग्ध बनावट शरीर के रन्ध्रों को साफ़ रखती है और चर्मको मखमल जैसी मुलायम करके देरतक टिकने-वाली थंडाई देती है। इसलिये हम अपनेको सवाल करके उसका खुद सच्चाई से जवाब देंगे—क्या शरीरकी सफ़ाई के लिये गोदरेज वनस्पती सॅण्डल साबुन के अलावा और दूसरा साबुन हमारे काम में आयेगा ?—क्योंकि "शरीर स्वस्थता का मन्दिर है"।

Godrej Sandal

गोदरेज सॅण्डल

चावी छाप (चन्दन)

टॉयलेट [नहाने का] साबुन

सॅण्डल के अन्य साबुनों से ज़्यादा वजनदार व ज़्यादा अच्छा और कम मूल्य।

गोदरेज सोप्स, लि०—देहली : १६८, चांदनी चौक।

प्यारी बहिनों की भलाई के लिए

खुशखबरी

यदि किसी बहन को ५० वर्ष की कम उम्र में या किसी रोग के कारण मासिक धर्म माहवारी का होना बन्द हो गया है अथवा खुलकर नहीं होता या हर महीने ठीक समय पर आगे पीछे होता है तो ऐसी हालत में आप मेरी सौ फीसदी आजमाई हुई दवा मासिक धारा मँगवाकर सेवन करें। इस दवा की एक ही खुराक से महीनों का रुका हुआ मासिक धर्म बिना किसी कष्ट के खुल जाता है और तीन खुराक से माहवारी बिगड़ने से पैदा हुई सब खराबियाँ दूर होकर मासिक धर्म बिल्कुल ठीक समय पर आना शुरू हो जाता है। मूल्य तीन खुराक का ३।=) डाक-व्यय पृथक्।

खबरदार :—गर्भवती इसे सेवन न करें क्योंकि—इससे गर्भपात हो जाता है।

प्रेम कुमारी अग्रवाल (नं० ११६)

टोहाना, जिला हिसार (पूर्वी पंजाब)

केवल एक दिन में

मेजिक मिस्मरिजम

लड़के को ज़मीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीब व गरीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब दर्शकों की घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अक्षरों का नाच कराना, बन्द लिफ़ाफ़ों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्यपूर्ण और रोमांचकारी करिश्मे सीखकर

दूसरे ही दिन

बच्चा, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों की दिलाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धिमानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफ़ेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर ठाठाठ रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब मजदूर का जादू एक दिन में ही केवल एक दिन में जान जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं—ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फ़िलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पांच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफ़ारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र पास।

दी यूनाइटेड वण्डरफुल मेजिकल कम्पनी

विभाग नम्बर ३६, मुरादाबाद यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अंतड़ियों का बड़ा भयङ्कर रोग है

(१) पहली स्टेज मामूली ज्वर खाँसी | (२) दूसरी स्टेज ज्वर, खाँसी की अधिकता | (३) तीसरी स्टेज शरीर सूखना, ज्वर, खाँसी की भयंकरता | (४) चौथी स्टेज सभी बातों की भयंकरता रोगी की मौत शरीर पर वर्म, दस्त भयंकर वर्मों का आदि का शुरू हो जाना इधर उधर फैलना अन्तिम स्टेज

जबरी——(JABRI)——जबरी——(JABRI)

T. B. टी० बी० 'तपेदिक' और पुराने ज्वर के हताश रोगियो! देखो—

(१) श्रीमान् तोसलहुसेन साहब रईस मौजा मुसेपुर पो० भरतकुण्ड जिला फैजाबाद से अपने पत्र में लिखते हैं कि आपके यहाँ से जिस रोगी के लिए दवा "जबरी" हमने मँगाई थी, बहुत लाभ हो रहा है, हम तो समझते थे कि इस भयंकर रोग की कोई भी दवा नहीं है। परन्तु आपकी दवा "जबरी" ने हमारे विचार को बदल दिया। यथार्थ में "जबरी" इस रोग के लिए आश्चर्यजनक शक्तिशाली औषधि है। हमारी तरफ से आपको हार्दिक धन्यवाद है। परमात्मा आपको दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की दें।

(२) श्री नगेश्वरप्रसाद तिवारी, मास्टर स्कूल नडुगावाँ पो० 'डाल्टनगंज (बिहार) से लिखते हैं—मैं अनेक दिनों से ज्वर खाँसी से बीमार था। बलग़म आदि की परीक्षा पर तपेदिक (राज्ययक्ष्मा) रोग ही साबित हुआ। मैं रोग का नाम सुनते ही बहुत घबड़ा गया। इसी बीच परमात्मा की कृपा से आपकी अमृतरूपी दवा 'जबरी' का नाम सुना। मैंने तुरन्त आर्डर देकर पार्सल प्राप्त किया। दवा को विधिपूर्वक सेवन किया। उसके अमृतरूपी गुणों ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। थोड़े ही दिनों में शरीर का रंग ही बदल गया। ऐसा मालूम होने लगा, जैसे कुछ रोग ही नहीं रहा। अधिक लिखना व्यर्थ है। यथार्थ में आपकी औषधि इस दुष्ट रोग के लिए अमृततुल्य है। जितनी भी प्रसंशा की जावे कम है।

(३) डा० ठाकुरसिंह नेपाली मु० कटैया, पो० हार्लखी, जिला—दरभङ्गा से लिखते हैं। आपकी भेजी दवा 'जबरी' बहुत ही लाभदायक प्रतीत हुई, कृपया लौटती डाक से पूरा कोर्स भेज दें।

इसी प्रकार के पचासों प्रशंसा-पत्र आप पहले भी अनेक समाचार-पत्रों में "जबरी" के विषय में देख चुके होंगे। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस भयंकर रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" (Jabri) ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि आप सब तरफ से हताश हो चुके हैं तो परमात्मा का नाम लेकर एक बार जबरी की परीक्षा करें। हमने दस दिन का नमूना भी रख दिया है, जिससे आपको तसल्ली हो सके। बस आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचावें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि 'अब पछताये क्या होत है, जब चिड़ियाँ चुँग गईं खेत। सैकड़ों हकीम, डाक्टर, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। तार आदि के लिए हमारा पता केवल "जबरी जगाधरी" (Jabri Jagadhri) लिख देना ही काफी है। तार से यदि आर्डर दें तो अपना पता पूरा दें। मूल्य इस प्रकार है—

'जबरी' स्पेशल नं० १ अमीरों के लिए जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि की मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। मूल्य पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। 'जबरी' नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी बूटियाँ हैं। पूरा कोर्स २०) रु०। नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग हैं। आर्डर में पत्र का हवाला तथा नम्बर १ या २ साफ साफ लिखें। पार्सल जल्द प्राप्त करना चाहें तो मूल्य पेशगी मनीआर्डर से भेजें, जिससे पार्सल तुरन्त भेज दिया जावे।

पता—राय साहब के० एल० शर्मा एंड सन्स, रईस एंड बैंकर्स (S)
'जगाधरी' (पूर्व पंजाब) [E. P.]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखी भाइयों को हमारा शुभ सन्देश

प्रिय पाठको आप लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आज मैंने लगभग २० साल से प्रेमवटी औषधि देकर जिस प्रकार से आप लोगों की सेवा की है। वह किसी से छिपा नहीं है। क्योंकि हमारा उद्देश्य धन कमाना ही नहीं बल्कि सेवा और सचाई का विश्वास दिलाकर प्रत्येक घर और मनुष्यमात्र के हृदय में उच्च स्थान पाने की आशा रखता है और इसी में अपना कल्याण समझता हूँ ताकि इस तुच्छ सेवक की याद आप लोगों के हृदय-पटल पर सदैव अंकित बनी रहे यही मेरी हार्दिक इच्छा है। कागज के अभाव के कारण हम अब आपको अधिक क्या विश्वास दिलावें हाँ किसी समय हमारे कार्यालय में पधार कर देश और विदेश से आये हुए प्रशंसा-पत्रों को देखिये स्वयं ही विश्वास हो जायगा ग्राहकों की इच्छा देखकर हमने और भी उच्चकोटि की औषधियाँ निर्माण की हैं। जिन्हें सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित कर अपने परिश्रम को सफल बनाया इन औषधियों का निर्माण योग्य अनुभवी कर्मचारियों-द्वारा होता है यदि आप हर प्रकार से हताश हो चुके हों और अपने जीवन से हाथ धो बैठे हों तो एक बार दवाइयाँ मँगाकर अवश्य परीक्षा करें।

सत्य प्रभा सुर्मा

मनुष्य के शरीर की आँख एक अमूल्य वस्तु है आँख बिगड़ गई तो तमाम जिन्दगी बेकार हो जाती है। हमारे इस सुर्मे को प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नाखूना, नजर से कम दिखाई देना आदि दूर होते हैं। कीमत एक शीशी ॥-), तीन शीशी १॥) डाक खर्च अलग।

सत्य संजीवन तिला

यह तिला अन्य तिलाओं की भाँति नुकसान नहीं पहुँचाता है। बल्कि एक ही हफ़्ता सेवन करने से कमजोरी, सुस्ती, नपुंसकता तथा गुप्तेन्द्रिय की शिकायतों को दूर करके रग और पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत पहुँचाता है। कीमत एक शीशी २), तीन शीशी ५) डाक खर्च ।॥-)।

सत्यामृत घुटी

हमारे यहाँ की घुटी अब तक फेल नहीं हुई है। बच्चों के हरे-पीले दस्त का होना, नजला व जुकाम हो जाना, दाँत निकलते समय कष्ट होना, बुखार बना रहना, पेट फूलना आदि रोगों को दूर करने में राम-बाण साबित हुई है। कीमत एक शीशी ॥), तीन शीशी १।=) डाक खर्च अलग।

सत्य सुन्दरी रक्षक

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग महीना ठीक समय पर न होना लाल काला धुमैला पानी-सा रज निकलता हो आदि रोगों को दूर कर सन्तान पैदा करने योग्य बनाता है। कीमत आधी खुराक २), पूरी खुराक ३॥) डाक खर्च अलग।

सत्य सरोवर तेल

आपने बहुत से बाजारी तेल इस्तेमाल किये होंगे किन्तु यह तेल अपनी शानी नई रखता है। विद्यार्थी वकील, क्लर्क आदि दिमागी काम करनेवाले इसे धड़ाधड़ मँगा रहे हैं। कीमत एक शीशी ।॥), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग।

रूप रक्षक

इसके लगाने से चेचक के काले काले दाग, मुँहासा, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी आदि दूर होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। कीमत एक डिब्बी २), तीन डिब्बी ५) डाक खर्च अलग।

* सत्य सखा *

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह बहुत कम है पेट दर्द, जी मिचलाना, कफ, खाँसी, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार आदि रोगों में तत्काल लाभ होता है। कीमत एक शीशी ।॥), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग एक दर्जन का ६॥।) डाक खर्च माफ।

* सुजाक विन्दु *

कैसा नया-पुराना भयानक सुजाक क्यों न हो मवाद आता हो, किसी तरह चैन न मिलता हो रो-रोकर रात व्यतीत होती हो इसकी एक ही खुराक से आराम मिलता है। कुछ दिन सेवन करने से पुराने से पुराना सुजाक हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। कीमत एक शीशी २॥) डाक खर्च अलग।

बाबू श्यामलाल जी रईस, प्रेमवटी आफिस नं० ५०, घंटाघर कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १६२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गये, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिलकुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी आवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४।) डाक-खर्च प्रतिपिस्तौल १।) अलग। कारतूस फी सैकड़ा ४)

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २।) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सेंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीअत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जायेगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रतिशीशी ॥=) दर्जन का ५॥) डाक-खर्च १।) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूबसूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जाएगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है। दो दर्जन एक साथ मँगाने पर ऊपर दिए हुए सामान के अलावा एक फैन्सी रिस्टवाच और दी जाएगी। तीन दर्जन एक साथ मँगाने पर ऊपर दिये हुए सामान के अलावा एक बढ़िया फाउन्टेनपेन और दिया जाएगा।

इंडियन जनरल ट्रेडिंग कम्पनी, नं० १० कानपुर
पोस्ट बक्स १३१

स्त्रियों के लिए सर्वोत्तम शक्ति-वर्धक औषधि

कमर-दर्द, हाथ-पैर का टूटना, हड्डियों का दर्द, बेचैनी, जी घबड़ाना, हिस्टीरिया वगैरह रोग 'जोमेस्त्री' के सेवन से मिट जाते हैं। दुर्बलता नहीं आती। स्त्रियों का आरोग्य आयुष्काल बढ़ जाता है।

जोमेस्त्री लेनेवाली माता का बालक तन्दुरुस्त और हृष्ट-पुष्ट होता है।

हरेक दवाफरोश के यहाँ मिलेगी

जसमाईन एजेन्सी नड़ीयाद (गुजरात)

एजेंट श्रीकेमिकल्स, २३३२, महाराजा लाल बिल्डिंग खुशालराय कटरा, देहली

कान्तीलाल परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केतातनी हेयर रिस्टोरर

KATATNI HAIR RESTORER

सिर के बाल किसी कारण से क्यों न झड़ते हों। केतातनी हेयर रिस्टोरर में **केवल तीन बार** के प्रयोग से ही बालों का झड़ना बन्द हो, बाल धीरे धीरे फिर सुन्दर, सघन एवं लम्बे उगना शुरू हो जाते हैं।

केतातनी हेयर रिस्टोरर मिस्र देश में सुप्रसिद्ध डाक्टर केतातनी द्वारा भारतवर्ष में पहिली बार तैयार किया गया है। मिस्र देश में यह तैल बड़ा ही प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित है। आप भी इस उत्तम तैल का व्यवहार कर लाभ उठावें। मूल्य फी शीशी ६॥) रु० डाक खर्च अलग।

[बड़े बड़े शहरों में हम एजेंसी स्थापन कर रहे है। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।]

केतातनी लेबोरेटरी (इण्डिया)

३, रोहतक रोड, कारोल बाग, देहली

स्टाकिस्टस देहली—मोहन ब्रादर्स, चाँदनी चौक।
देहली मेडिकल स्टोर्स, फतेहपुरी।

न्यू अमेरिकन पिस्तौल

प्रायः देखा जाता है कि लोग नकली पिस्तौल के विज्ञापन निकालकर भोली-भाली जनता को धोखा देकर धन कमाते हैं। हमने जनता को उस धोखा से बचाने के लिए बढ़िया न्यू अमेरिकन पिस्तौल मँगाई हैं जो बिल्कुल असली पिस्तौलों के मानिन्द है। इसे बराबर कोट के जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चर्खी खूब घूमती है। इसकी आवाज बहुत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जङ्गली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही को देखकर भाग जाते हैं। इसको रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसे हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय २५ स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल नं० ११११—४) व २२२२—८), डाक-खर्च प्रति पिस्तौल १।) अलग। कारतूस ४) फी सैकड़ा। चमड़े का केस ५) पेटी, तैल १।) शीशी।

ओटो गुलशन बहार

यह ओटो तमाम सेन्टों का सरताज है। लगाते ही तबियत बाग-बाग हो जाएगी। लगा कर आप जिस रास्ते से निकल जाएँगे लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बागीचे से आ रही है। रूमाल में लगाने से महीनों खुशबू नहीं जाती। कीमत फी शीशी ॥), दर्जन ६), डाक खर्च १।) एक दर्जन साथ मँगाने पर, हाथ व गले के बटनों का सेट, बम्बई फैशन के सोने की भाँति चमकने-वाली अँगूठी, फैन्सी रूमाल, खूबसूरत शीशा मय कंघा के मुफ्त इनाम दिया जाएगा। दो दर्जन मँगानेवाले को अमेरिकन फाऊंटेन पेन और भेजा जावेगा।

खज़ाना रोज़गार

(२०००) माहवार कमाने का साधन)

इस "खज़ाना रोज़गार" नामक पुस्तक में सैकड़ों प्रकार के हुनर छपे हैं जिससे बेकार लोग लखपती हो गये हैं। इस पुस्तक में पेटेण्ट दवाइयों के नुस्खे, शर्बत, नाखून की लाली व सुहागबिन्दी, वारनिश, चेहरे को खूबसूरत बनाने के क्रीम, व बर्तनों पर कलई आदि चढ़ाने के नुस्खे छपे हैं जिन्हें लोग मरते दम तक अपनी औलाद को भी नहीं बताते हैं। क़ीमत फी पुस्तक २॥) डाक व पैकिंग खर्च माफ।

मँगाने का पता—इंडियन कमर्शियल कम्पनी नं० २ भानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादिष्ट मटर पुलाव—

चावल धो कर पानी अच्छी तरह से निथार लीजिये—चावलों को मटरों के साथ गरम डालडा में इतनी देर भुनिये कि डालडा को यह सोख ले और चावल नीचे लगने लगें। फिर पानी (इतना कि इस की सतह से एक इंच उपर रहे) और रुचि के अनुसार नमक, इलायची, दारचीनी और लौंग डाल लीजिये। अच्छी तरह हिला कर और बरतन ढक के, जब तक मटर और चावल गल न जायें, धीमी आंच पर पकने दीजिये। यदि चावल लगभग गल गये हों और पानी शेष रह गया हो तो ढक्कन थोड़ा सा हटा लीजिये और इस पर थोड़े से अंगारे रख दीजिये। तले हुये प्याज़, बादाम और किशमिश से सजा लीजिये।

हमें खाना बरतन ढक कर क्यों पकाना चाहिये?

इस का संबंध पौष्टिक आहार के एक महत्वपूर्ण अंग से है।
मुफ़्त सलाह के लिये आज ही लिखिये—अथवा किसी भी दिन!

दि डालडा एड्वायज़री सर्विस

पोस्ट बॉक्स नं. ३५३, बम्बई १

HVM. 79-23 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है, पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने इसका परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एक मात्र अचूक है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को लाभ देगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक और डाक्टर हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज घोषित कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से पढ़ो और अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनाएँ हैं जो आपके सामने रखता हूं। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में घिरा रहा, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसंगत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने छुपाया, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसंगत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो साल मैंने इलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों ओर अन्धेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये और बेशुमार दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों तरफ से मौत ही दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे तीन बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या! मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की। जो दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक ईंट के भट्ठे में रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी जीवन के सभी अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट कर दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही किया फिर उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन लगातार इसी का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमजोरी और सारी बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय में नया जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखी जनों के पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे हर्ष है अमृत तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महात्मा-'प्रेमवटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध वङ्ग भस्म ६ माशा, असली सूर्यछाप २ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खल में डालकर ३ शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलाये। उसके बाद ताजी बूटी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम पाव भर के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, डाक्टरों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज श्री जमुनादत्त शर्मा, झोंकर लिखता है कि यह बटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती और गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषधि वीर्य का पतलापन, कमजोर के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, नामर्दी, पेशाब, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना तथा इसके भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस-नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में उन सज्जनों को जिन्हें फुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने की सलाह दी है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों के लिए ३=) डाक खर्च ।।।-)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पता—बाबू श्यामलाल जी रईस प्रेमवटी आफिस नं० ५०, धनकटी, कानपुर।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपविलास कम्पनी, कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियाँ

वीर्य-सञ्जीवन सत (रजिस्टर्ड)

एक ही सप्ताह सेवन करने से अपूर्व गुण दिखलाता है, चाहे जितना पुराना प्रमेह हो, पाखाने या पेशाब के साथ, आगे या पीछे वीर्य निकलता हो, अधिक पेशाब आता हो, इन्द्रियों की शिथिलता, वीर्य का पानी के समान पतला हो जाने के कारण शक्ति का घट जाना, स्त्री-प्रसंग की इच्छा न होना या स्त्री के साथ केवल छेड़-छाड़ का ध्यान आकर वीर्य का निकल जाना, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत, थोड़ी मेहनत में हाँफ जाना, दिमाग की कमजोरी, आँखों के आगे अँधेरा छाकर चक्कर आना, चेहरा पीला पड़ जाना, भूख न लगना, सिर घूमना आदि वीर्य-रोग जड़ से नष्ट हो जाते हैं और बुद्धि पैदा होकर चेहरे पर कान्ति आ जाती है। मूल्य फी डिब्बा ३।–), दो का ६।), तीन का ८।।।), चार का १०।।=) और पाँच डिब्बों का मूल्य १२।।), डाक-खर्च पृथक्।

गर्भदाता रसायन

अगर विवाह को हुए कई वर्ष हो गये हैं अथवा किसी अज्ञात कारणवश सन्तान नहीं होती है तो ऐसी अवस्था में गर्भदाता रसायन ने अपना चमत्कार दिखाया है, अब तक जो स्त्रियाँ सन्तान न होने से निराश हो चुकी थीं अब वे बच्चे की मा हैं। यदि आपके सन्तान नहीं होती है अथवा खंडित हो जाती है तो हमारे गर्भदाता रसायन का अवश्य प्रयोग करके सन्तान सुख देखिएगा। कीमत एक शीशी ४।=) डाकखर्च अलग।

तिला मस्ताना (रजिस्टर्ड)

इसके इस्तेमाल से नपुंसकता, बाल अवस्था की कुटेव से इन्द्रिय की शिथिलता, नसों की कमजोरी, सुस्ती, नामर्दी, हस्तक्रिया से पैदा हुई खराबियाँ, नसों का गर्भाधान क्रिया के योग्य न रहना एवं शीघ्रपतन आदि की सारी शिकायतें छूमन्तर हो जाती हैं। रग व पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत भर मस्ताना जोश पैदा करता है। मूल्य प्रति शीशी ३=) डाक-खर्च पृथक्।

लक्ष्मणधारा (रजिस्टर्ड)

बड़ी मशहूर दवा है, जिसने अपनी खूबी का नक्कारा चारों तरफ बजा रक्खा है। इसके सेवन से पेट-दर्द, जी मचलाना, कफ, खाँसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार, मोच, चोट, सूजन, बच्चों के हरे-पीले दस्त, बदहजमी आदि कहाँ तक लिखें, किसी में खाने और किसी में लगाने से तत्काल लाभ होता है। मूल्य प्रति शीशी ।।।), ३ का २–), ६ का ३।।।) डाक-खर्च पृथक्। दर्जन का ६।।।) डाक-खर्च माफ। बड़ी शीशी २।) डाक-खर्च पृथक्।

बालको (रजिस्टर्ड)

इसके सेवन कराने से छोटे बच्चों की खाँसी, संग्रहणी, पसली चलना, खाना हजम न होना, दुबलापन, चूतड़ों और जाँघों पर सिकुड़न, आँख मीचना, सर्दी रहना, अधिक रोना, सूखा वायु, ज्वर व भीतर हरारत का रहना आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्न-चित्त रात भर सुख की नींद सोते हैं। दुबले-पतले कमजोर बच्चों को ताकतवर बनाने की मीठी दवा है। मूल्य फी शीशी १) एक रुपया, डाक-खर्च पृथक्।

फकीरी सुर्मा (रजिस्टर्ड)

पहुँचे हुए फकीर ने बड़े-बड़े पर्वतों पहाड़ों व वनों की खाक छान कर प्राप्त किया हुआ इस सुर्मे के नुस्खे को बद्रीनाथ की यात्रा में सत्संग होने पर मेरे बाबा को प्रदान किया। इसे रोग-ग्रसित आँखों में प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्ध, रोहे, नजला, कीचड़ आना, नाखूना, परवाल, चकाचौंध, आँखों का चश्मा लगाना नजर की कमजोरी आदि बीमारियों में इस फकीरी सुर्मे का व्यवहार करें। मूल्य फी शीशी ।।), ३ का २–), ६ का ३।।), दर्जन का ६।।), डाक-खर्च पृथक्।

रूपविलास (रजिस्टर्ड)

इसके लगाने से चेचक के काले दाग, मुँहासे, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरह दूर हो मलिन मुख चन्द्रमा के समान चमकदार होकर गुलाबी छटा चेहरे पर दमकने लगती है। मूल्य फी डिब्बा २) डाक-खर्च पृथक्।

नारी संजीवन

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, लाल-काला, धुमैला पानी-सा रज निकलना, महीना ठीक समय पर न होना जिससे कमर, रीढ़, सिर में दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलिन, दुबलापन आदि कमजोरी दूर हो सन्तान दीर्घजीवी पैदा होती है। मूल्य फी शीशी ३=) डाक-खर्च पृथक्।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो ति मा दा स गु प्ता का
उत्कृष्ट सौंदर्य उपचार
लक्स टॉयलेट साबुन है

LTS. 191-111 HI

★फिल्मी अभिनेत्रियों का सौंदर्य साबुन★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजज्योतिषी

जगत्-प्रसिद्ध ज्योतिषी और तान्त्रिक पंडित हरिश्चन्द्र शास्त्री, ज्योतिष-तीर्थ,
अध्यक्ष अखिल बङ्गाल ज्योतिष-संघ
ज्योतिष-गृह १४१।१ सी, रशा रोड, कालीघाट, कलकत्ता।

हजारा पार्क के ठीक पूर्व में फोन—६७८।

ये महान् ज्योतिषी न केवल पूर्वीय और पाश्चात्य ज्योतिष के ही प्रकाण्ड पण्डित हैं, प्रत्युत हस्तरेखाशास्त्र (सामुद्रिक विद्या) के भी पहुँचे हुए पारखी हैं। जो भी आपके निकट सम्पर्क में आए हैं, वे आपकी अलौकिक आध्यात्मिक शक्ति के उन आश्चर्यजनक परिणामों से पूर्णतः सन्तुष्ट हैं, जो आपने महामाया श्री सिद्धेश्वरी की भक्ति कर और उन्हें प्रसन्न कर प्राप्त की है।

योग और तन्त्र द्वारा आपने, ग्रहों के दुष्परिणामों को दूर कर देने तथा पेचीदे कानूनी मुकदमों और असाध्य बिमारियों से रोगी को स्वस्थ कर देने में निश्चित सफलता प्राप्त करने की असाधारण शक्ति प्राप्त कर ली है।

आपके आश्चर्यजनक कवचों द्वारा निश्चित सफलता मिलती है

शान्ति कवच :—मन की शान्ति, पारिवारिक प्रसन्नता, असाध्य रोगों पर विजय, दुर्घटनाओं से रक्षा, अकाल-मृत्यु से बचाव, आग और चोरी का भय-उन्मूलन तथा परीक्षाओं में इससे सफलता मिलती है। इस कवच को पहनने-वाला सभी परेशानियों से बच जाता है, क्योंकि इससे दुष्ट ग्रहों की शान्ति हो जाती है। साधारण का मूल्य ५) रु०; विशेष (शीघ्र लाभकारी) का २०) रु०।

बगला कवच :—रोजगार-धन्धे में सफलता, अभिलाषा की पूर्ति, राजसम्मान, नौकरी में तरक्की, व्यापार में उन्नति, धन में वृद्धि और सभी पर अपना प्रभुत्व रखना इस कवच से प्राप्त होता है। अनेक व्यक्तियों ने बहुत ही निराशाजनक और पेचीदे कानूनी मुकदमों में इस कवच से सफलता प्राप्त की है। साधारण का मूल्य १२) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) का ४५) रु०।

नृसिंह कवच :—स्त्रियों की सभी तरह की बीमारियाँ इससे ठीक हो जाती हैं। मृत बच्चे को बलपूर्वक गर्भ से बाहर निकलने से जो दोष रह जाते हैं उन्हें दूर करना, बाँझ स्त्रियों के भी पुत्र प्राप्त होना, मासिक धर्म-सम्बन्धी दोषों को ठीक कर देना इस कवच के प्रभाव हैं। साधारण का मूल्य १०) रु०, विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) २६) रु०।

आकर्षिणी कवच :—जिस व्यक्ति को पाने की इच्छा हो (स्त्री या पुरुष) पूर्णतः अधिकार में आ जाता है जिससे मनवाञ्छित कार्य कराया जा सकता है। साधारण का मूल्य १२) रु०; विशेष (शीघ्र प्रभावकारी) ५०) रु०।

उन आदरणीय महानुभावों में से कुछ के नाम, जिन्हें व्यक्तिगत रूप से आपकी भविष्यवाणी, फलित ज्योतिष की ठीक ठीक गणना तथा सामुद्रिक और तान्त्रिक शक्तियों का परिचय मिल चुका है :—

महाराजाधिराज बर्दवान; हिज हाईनेस राजा धेनकानल (उड़ीसा), नेपाल के राना कर्नल गोविन्द शमशेर जंग बहादुर; श्री ए० वाण्डलेर, इँगलैंड; श्री लीलाराम मैगूराम, हैदराबाद, सिन्ध; श्री बुलबुल देसाई, डायरेक्टर, अमर पिक्चर्स; श्री सुरेन्द्रनाथ चौबे, आगरा; श्री जी० आर० मदन, लाहौर, श्री के० वेंकट राव, विजगापट्टम; श्री फजलुलहक, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, बङ्गाल; श्री बाबूलाल चौखानी, अध्यक्ष, भारत लक्ष्मी स्टूडियो, कलकत्ता; श्री रोहिनीकुमार चौधरी, मन्त्री आसाम मन्त्रि-मण्डल; श्री पी० आर० दास, बार-एट-ला, पटना; श्री जी० डी० खेतान, व्यापारी कलकत्ता और भागलपुर; रायबहादुर सूरजदास वाइसराय, दिल्ली; जगत्प्रसिद्ध नर्तक श्री उदयशंकर आदि।

समस्त पत्र-व्यवहार अँगरेजी में किया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—सम्पादकीय ६५७
२—इटली के चुनाव और अंतराष्ट्रीय रंगमंच—
श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०... .... ६६५
३—आज भी (कविता)—श्री उमानन्दन चतुर्वेदी ६७१
४—पत्थर का हृदय—कुमारी विपुला देवी ... ६७२
५—कहानी-कला—श्री प्रभाकर माचवे ... ६८६
६—उत्सर्ग—पंडित श्रीराम शर्मा ६९३
७—मानसिक एवं स्नायविक रोगों का मनो-
वैज्ञानिक उपचार—श्रीमती मनसा पंडित,
एम० ए० ... ... ६९८
८—विशाखा—अनुवादक पंडित ठाकुरदत्त मिश्र ७०२
९—तीस दिन—श्री सन्तोष नौटियाल ... ७११
१०—विचार-विमर्श ७१९
११—यह नई बदलिया आई (कविता)— ...
श्री राजाराम खरे ७२५
१२—विविध विषय ७२६

चित्र-सूची

१—मद्रास में पंडित नेहरू—३ चित्र ...मुखपृष्ठ
२—निराले गवर्नर जनरल ... ... ,,
३—मद्रास धारासभा में भाषण करते हुए पंडित
नेहरू ६७६
४—स्वागत-समारोह ... ... ,,
५—शरणार्थी-समस्या ... ... ,,
६—उत्कल हाईकोर्ट ६९२
७—अखिल भारतीय समाचार-पत्र-सम्मेलन में
श्री देवदास गांधी अध्यक्षपद से भाषण कर
रहे हैं। ... ... ,,
८—कोलम्बिया-दिवस ... ... ,,
९—भारतीय एवं पूर्वी समाचार-पत्र-सम्मेलन ... ,,
१०—स्वदेश में ७०८
११—कैम्ब्रिज के नए चांसलर ... ... ,,
१२—पार्वत्य प्रदेश का एक मनोरम दृश्य .... ,,
१३—एक मनोहर समुद्री दृश्य .... ,,

आरोग्यवर्द्धक

मदनमंजरी गोलियां

कब्जियत दूर करके पाचन-शक्ति बढ़ाती हैं, दिमाग को ताकत देती हैं और नया खून व शुद्ध
पैदा करके बल-बुद्धि व आयु बढ़ाती हैं, निर्दोष,
व हानिरहित वनस्पतियों के योग से बनी होने के
५० साल से रोगी व निरोगी, प्रत्येक मौसम में
कर पूर्ण लाभ उठाते हैं। जरूर परीक्षा कीजिए—
गोलियों की डि० १।) रु०।

मदनमंजरी फार्मेसी—
जामनगर (काठियावाड़)
एजेंट—मदनस्टोर्स कैमिस्ट जोनस्टनगंज, इलाहाबाद

छप गई—'साधनमाला' की आठवीं मणि

मन्त्रसिद्धि का उपाय

मन्त्रों का क्या महत्त्व है और आज लोग उनसे लाभ
क्यों नहीं उठा पाते, इसका रहस्य पहली बार इस पुस्तक
के पृष्ठों में सरल और सीधी भाषा में प्रकाशित हुआ है।
इसके द्वारा मंत्रों से लौकिक और पारलौकिक कल्याण
सिद्ध करने की विधि स्पष्ट हो जाती है। मूल्य १) मनीऑर्डर से आज ही भेजिए।

आठ रुपये भेजकर साधनमाला के ग्राहक बननेवालों को उक्त अमूल्य पुस्तक ।।।) से भी कम में पड़ेगी।

कल्याण-मन्दिर, कटरा, इलाहाबाद

आधुनिक हिन्दी-साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गीति-काव्य

कवि और छवि

लेखक, सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव

कविश्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी
के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि'
आपकी नवीनतम गीति-काव्यों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह है। प्रत्येक
गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से
परिपूर्ण तो हैं ही साथ ही सरस और हृदय पर मधुर
प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाले हैं। हृदय को तन्मय कर
गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में
आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में
संग्रहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय
उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम, सजिल्द
और सजिल्द—मूल्य केवल २) रु०।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास में पंडित नेहरू

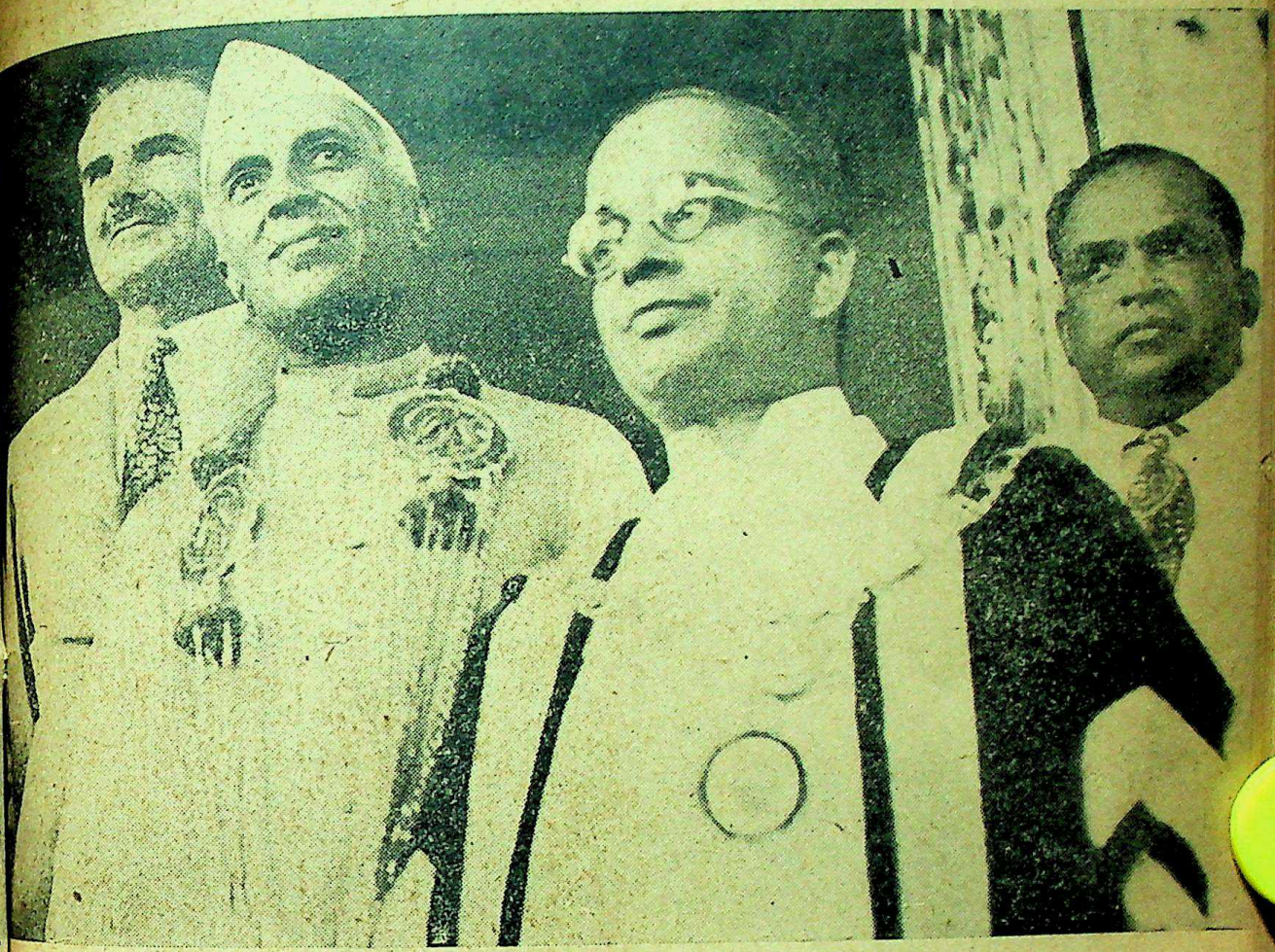

मद्रास के मेयर डा० कृष्णा राव और गवर्नर सर आर्चीबाल्ड नाई के बीच पंडित नेहरू।

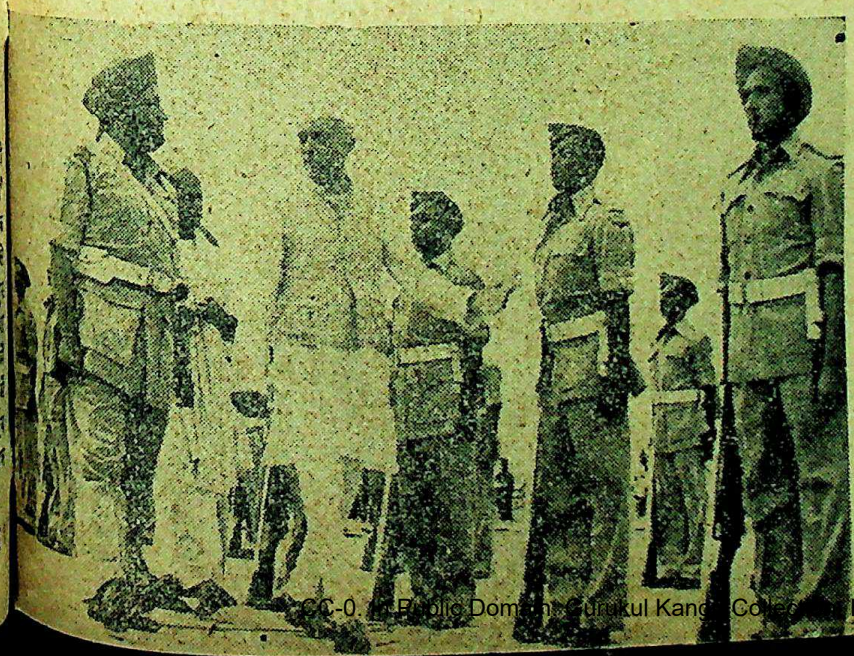

मद्रास में 'गार्ड आफ आनर'-द्वारा पंडित
नेहरू का स्वागत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास काउंसिल के प्रेसीडेण्ट श्री बी० रामकृष्ण राजू तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों के साथ पण्डित नेहरू

निराले गवर्नर जनरल

भारत के भूतपूर्व गवर्नर जनरल
माउण्ट बेटन अपने ढङ्ग के निराले
जनरल रहे। चित्र में वे जिस प्रकार
तीय जन-समूह में घुले-मिले दिखाई दे
हैं, उससे उनकी विशिष्टता स्पष्ट
से प्रकट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक—हरिकेशव घोष : उमेशचन्द्र मिश्र

सितम्बर १९४८, भाद्रपद २००५; भाग ४९, खण्ड २ ; संख्या ३, पूर्ण संख्या ५८५

सम्पादकीय

फिर राशनिंग

राशनिंग का फिर से चालू होना विगत मास की सब से अधिक महत्त्वपूर्ण बात है। उच्च सरकारी अधिकारियों से लेकर सामान्य नागरिक तक समान रूप से इसकी चर्चा कर रहे हैं, या दूसरे शब्दों में, राशनिंग की चर्चा ही आज जन-साधारण में प्रमुख रूप से हो रही है। इस चर्चा ने अन्य सब चर्चाओं को अपदस्थ-सा कर दिया है।

राशनिंग की प्रतिष्ठा युद्धजन्य परिस्थितियों के आधार पर हुई थी। उस समय भारत पराधीन था और हमारे विदेशी प्रभु अपनी सत्ता को दृढ़ बनाए रखने के लिए जो चाहते, कर गुजरते थे। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विरोध-प्रदर्शन करने के अतिरिक्त हमारे हाथ में और कोई चारा नहीं था। हमें अगत्या सरकारी नीति का परिणाम भोगना पड़ता था, हँसी-खुशी से या रोते-धोते।

यह हम समझते हैं कि सरकार का प्रत्येक कार्य जनता की सुख-सुविधा की आड़ लेकर ही किया जा सकता है—अर्थात् जनहित की भावना को सामने रखते हुए, या यों कहिए कि नैतिकता को पृष्ठभूमि बनाकर! राशनिंग जारी करते समय हमारी विदेशी सरकार ने भी यही किया था। सरकार की ओर से राशनिंग के समर्थन में तब जो दलीलें दी गई थीं, उनमें कहा गया था कि यदि संचय और वितरण की समुचित व्यवस्था न की गई तो संग्रहकर्त्ताओं और मुनाफाखोरों की बन आएगी और जनता तबाह हो जाएगी। अतएव राशनिंग जारी किया गया और धूम-धाम के साथ चलाया गया। परिणाम में हमने प्रत्यक्ष देखा कि राशन-व्यवस्था ने जहाँ चोर बाजार को जन्म देकर सहस्रपतियों को धनकुबेर बना दिया और सप्लाई अफसरों को लक्षाधीश, वहाँ सामान्य नागरिक को, जिसकी गणना मध्यमवर्ग में थी, दयनीय परिस्थिति में ढकेल दिया। दुर्भाग्य से प्रत्येक देश में मध्यमवर्ग वालों की संख्या ही सबसे अधिक होती है; अतः समाज का मध्यमवर्ग जब तबाह हो जाए तब सामाजिक विशृंखलता आप-से-आप आ जाती है।

पूज्य बापू को इस सामाजिक विशृंखलता का आभास सबसे पहले और सबसे अधिक हुआ था, क्योंकि वे सच्चे अर्थों में जन-नेता थे। अतएव अनेक प्रान्तीय प्रधान मंत्रियों और सप्लाई मंत्रियों के विरोध के बावजूद तथा आँकड़ा-शास्त्रियों के प्रतिकूल मतों की उपेक्षा करते हुए उन्होंने कण्ट्रोल और राशनिंग को तुरन्त उठा लेने की आवाज बुलन्द की थी। गांधी जी की इच्छा जनता की सामूहिक इच्छा थी। अतः सभी सरकारों को चाहते-न-चाहते इस व्यवस्था को समाप्त कर देना पड़ा था।

युद्धजन्य परिस्थितियाँ तब तक समाप्त हो चुकी थीं; अतः साधारण अनुमान यही था कि कण्ट्रोल और राशनिंग का बखेड़ा समाप्त होते ही वस्तुओं के भाव कुछ चढ़कर फिर क्रमशः गिरने लगेंगे और बहुत शीघ्र उचित स्तर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँच जाएँगे। परन्तु वैसा हुआ नहीं। भाव कुछ चढ़े, और फिर उत्तरोत्तर चढ़ते ही गए। उदाहरणार्थ कण्ट्रोल के अन्तिम सप्ताह में जो गेहूँ रुपए का तीन सेर दो छटाँक राशनिंग की दूकानों पर मिलता था और ढाई सेर के लगभग चोर बाजार में, वह खुले बाजार में रुपए का एक सेर छः छटाँक तक बिकने लगा। वस्त्र का मूल्य भी इसी अनुपात से उत्तरोत्तर बढ़ते-बढ़ते चार-पाँच गुना तक हो गया। यही दशा तेल, घी तथा दूसरी उपभोग्य वस्तुओं की भी हुई।

जनसाधारण में त्रास उत्पन्न करने को यह परिस्थिति अलम् थी। जन-साधारण में केवल एक चर्चा थी—जो सरकार जनता का पेट भरने और तन ढँकने का प्रबन्ध नहीं कर सकती, उसे जनता की सरकार कैसे माना—कहा जा सकता है?' सरकार अपनी ओर से भरसक चेष्टा करती दिखाई देती थी; वह व्यापारियों और उत्पादकों से अपील करती थी; किसी-किसी अवसर पर मुलायम शब्दों में झिड़की भी देती थी और नैतिकता का उपदेश तो प्रत्येक भाषण और वक्तव्य में दिया जाता था, पर उत्पादक और व्यापारीवर्ग की दृष्टि में यह सब कुछ केवल दिखावा मात्र था। इस वर्ग की ओर से जो वक्तव्य समय-समय पर समाचार-पत्रों में छपाए जाते थे, उनमें कीमतें बढ़ने का सारा दोष सरकारी नीति और सरकारी अफसरों की सदोष कार्यप्रणाली पर मढ़ा जाता था। उदाहरणार्थ 'कानपुर कपड़ा कमेटी' के कुछ वक्तव्यों को लिया जा सकता है जिन्हें हम 'सरस्वती' के पिछले अंकों में समय-समय पर उद्धृत करते रहे हैं।

उपभोग्य वस्तुओं का मूल्य बेलगाम बढ़ते जाना सरकारी नीति का परिणाम है या सरकारी अफसरों की अयोग्यता का परिचायक, यह विवेक करना उपभोक्ता की सामर्थ्य से बाहर था; क्योंकि उसके सामने केवल नग्न तथ्य था—यह, कि वस्तुओं के मूल्य भयानक गति से चढ़ते चले जा रहे हैं। उसके सामने न सरकारी गुप्त फाइलें या जी० ओ० तथा डी० ओ० थे, न व्यापारियों या उत्पादकों के बहीखाते! अतएव उसकी समझ में दोनों पक्ष सदोष थे। सरकारी पक्ष अपनी ढिलमुल नीति को लेकर और व्यापारी पक्ष अपनी सुरसा-वदना प्रवृत्ति को लेकर!

सरकार की नीति इस संबंध में काफी नम्रता की रही है, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। यदि स्पंज का फुचारा फेरने के बजाय सरकार लोहे का पंजा व्यापारियों के माथे पर ताने रहती, जैसा कि वह अब करती दिखाई देती है, तो व्यापारी और उत्पादक वर्ग इतना दुःसाहसी कभी नहीं बन सकता था। काश्मीर का उदाहरण प्रमाण-स्वरूप दिया जा सकता है। पिछले दिनों समाचारपत्रों में पढ़ा था कि शेरे काश्मीर और उनका मंत्रिमण्डल अन्न भावों को सीमा से अधिक न बढ़ने देने के सभी प्रयत्न कर चुका और व्यापारियों ने उनकी एक भी न सुनी, तब उन्होंने व्यापारियों के सहयोग से ही इस समस्या को निपटाना ठीक समझा और विचार-विमर्श के लिए व्यापारी वर्ग के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया! प्रतिनिधि आए; उनके सामने उचित मूल्य के आँकड़े उपस्थित किए गए; पर वे उस मूल्य पर सामान बेंचने को राजी नहीं हुए। कहा जाता है कि अन्तिम दिन मंत्रिमण्डल की ओर से प्रतिनिधि मण्डल को १५ मिनट का समय और दिया गया—अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए! परन्तु उक्त अवधि के बाद भी व्यापारी वर्ग अपना निर्णय बदलने को तैयार न हुआ। अन्ततः शेरे काश्मीर ने अपना फौलादी पंजा उठाया और सभी प्रतिनिधियों को सरकारी अतिथि बना लिया। फल यह हुआ कि व्यापारियों ने माफी माँगी और सरकारी आँकड़ों को स्वीकार कर लिया। अब वहाँ भाव ठीक-ठाक हैं और न चोर बाजार की गुंजाइश है, न नियंत्रण की आवश्यकता।

पर हमारे महामात्य सो शेरे काश्मीर नहीं हैं, फिर उनके पास फौलादी पंजा ही कैसे हो सकता है!

राशनिंग—ब्रह्मास्त्र

इस वस्तुस्थिति में 'भूल जाओ और क्षमा करो' की नीति का पदे-पदे अनुसरण करनेवाली हमारी लोकप्रिय सरकार के तरकस में केवल एक अमोघ शर शेष रह गया था—'राशनिंग'; और उसने अपनी पूरी शक्ति से नहीं, आंशिक शक्ति से ही, इस बार उसका पुनः संधान किया है। यह तो हमें विश्वास है कि यह शर-संधान 'आर्त्तत्राणाय' हुआ है—'न प्रहर्त्तुमनागसि'। परन्तु लक्ष्य और शर के बीच व्यवधान बहुत से हैं, जो हमें भी दिखाई दे रहे हैं, और सरकार तो उन्हें अच्छी तरह देख-समझ रही होगी; क्योंकि लोक-नेताओं की सरकार होने के नाते उसकी जानकारी और अनुभव हम से कहीं बढ़ा-चढ़ा है, यह हम सविनय स्वीकार कर रहे हैं। इसलिए, और यह कामना करते हुए कि हमारी सरकार का यह शर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संधान इस बार अमोघ रहे, हम कुछ व्यवधानों का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक समझते हैं।

(१) आंशिक राशनिंग

हमारे प्रान्त के माननीय प्रधानमंत्री ने अपनी घोषणा में कहा है कि 'राशनिंग आंशिक रूप में ही अभी चालू की जाएगी।' संपूर्ण राशनिंग होगी भी या नहीं, इसका कोई संकेत उक्त घोषणा में नहीं है। आंशिक राशनिंग का अर्थ यह बतलाया गया है कि सरकारी कर्मचारी तो जिनका वेतन ७००) मासिक या इससे न्यून है, इससे लाभ उठा सकेंगे, पर जनता का वही सदस्य इससे लाभान्वित होसकेगा, जिसकी मासिक आय १००) या इससे न्यून होगी। आंशिकता का दूसरा अभिप्राय यह भी है कि सरकार अन्न के नाम से केवल गेहूँ ही देगी; चावल या मोटा अन्न नहीं। हाँ, यह छूट अवश्य देदी गई है कि भोज्यान्न के शेषांश की पूर्त्ति खुले बाजार से गल्ला खरीद कर की जा सकती है।

सरकारी कर्मचारियों को वेतन आजकल पर्याप्त मिल रहा है। इस पर्याप्तता में महँगाई का भत्ता तथा अन्य सुविधाएँ अतिरिक्त लाभ के रूप में प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को प्राप्त हैं। इस दशा में सात सौ मासिक पानेवाले सरकारी कर्मचारी को राशनिंग की सुविधा देना और एक सौ एक मासिक कमानेवाले कारकून को उससे वञ्चित रखना 'भरे में भरना' के सिवाय और कुछ नहीं है। यही नहीं, सरकारी कर्मचारियों के प्रति यह विशिष्ट व्यवहार जनता और सरकारी कर्मचारी के बीच एक गहरी खाई खोद देना या सरकारी कर्मचारी को 'अनन्य सामान्य' घोषित कर देना है। इस प्रणाली का प्रभाव जनता पर अनुकूल नहीं पड़ेगा। यदि प्रजातंत्र में अन्तर्हित भावना का पूरा अनुसरण करना था तो पेट के इस मामले में सरकार को सर्वसामान्य नीति का अनुसरण करना था। सार्वभौम सत्ता जनता के हाथों में है; उसी की सरकार है और उसी के दिए पैसे से सरकार का काम चलता है तथा सरकारी कर्मचारियों का पेट भरता है। यदि हमारे प्रतिनिधि तथा "हमारे फेथफुली" 'अनन्यसामान्य' व्यवहार के अधिकारी बना दिए जाते हैं तो यह हमारे लिए स्पृहणीय अवश्य है।

अन्न के नियंत्रण में मोटे अन्न को सम्मिलित न करना एक दूसरा व्यवधान है। मध्यम और निम्नवर्ग का नागरिक मोटे अन्न का उपयोग अधिक करता है। वह तीन छटाँक गेहूँ को या तो हारी-माँदी के लिए बचा रखता है, या फिर तीज-त्योहारों के लिए। यदि उसे अपने चूल्हे को प्रज्वलित रखने के लिए आज के चढ़े भावों पर ही जौ, चना और बाजरा मोल लेना पड़ा तो उसके लिए राशनिंग का कोई उपयोग नहीं है। यही नहीं, इस आंशिक राशनिंग का गल्ले के वर्त्तमान चढ़े भाव पर भी कुछ प्रभाव नहीं पड़ेगा, जिसको लक्ष्यबिन्दु बनाकर इसे लागू किया गया है। गेहूँ ही नहीं, मोटे अन्न को संग्रह कर रखने और फिर उसे मनचाहे दाम पर बेंचने के लिए किसान स्वतंत्र रहेगा और बनिया भी। उपभोक्ता —आठवें दिन गल्ला खरीदनेवाला शहर का मजदूर या क्लर्क—उतना ही अभावग्रस्त बना रहेगा, जितना वह आज है।

गेहूँ का भाव

माननीय प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा है कि 'हमारे प्रान्त में गल्ले की अवस्थिति किसी प्रकार से निराशाजनक नहीं है। प्रत्युत वह स्वभावतः मजबूत है।' परन्तु गेहूँ का जो भाव निर्धारित किया गया है, वह माननीय प्रधानमंत्री के उपर्युक्त कथन से सामंजस्य नहीं रखता। राशनिंग के अन्तिम दिनों में गेहूँ ३ सेर ४ छटाँक (पश्चिमी जिलों में) और ३ सेर १ छटाँक (पूर्वी जिलों में) के भाव से दिया जा रहा था। आज की एतत्संबंधी घोषणा में कहा गया है कि गेहूँ प्रारम्भ में २ सेर ४ छटाँक के भाव से दिया जाएगा, फिर भाव में सुविधानुसार वृद्धि करदा जाएगी जो दिसंबर तक २ सेर १२ छटाँक तक पहुँच जाएगा।

दिसम्बर १९४७ और दिसंबर १९४८ के भाव में इस प्रकार प्रति रुपए लगभग ८ छटाँक का अन्तर रहेगा। यह प्रमाणित करता है कि हमारे प्रान्त में अन्न की स्थिति गतवर्ष की अपेक्षा खराब है। कारण सर्वविदित है। सब जानते हैं कि रबी की पिछली फसल उतनी अच्छी नहीं हुई जितनी आशा की जाती थी। खानेवालों की संख्या भी शरणार्थियों के आगमन से कुछ बढ़ी ही है। अतिवृष्टि ने खरीफ की फसल का भविष्य चिन्तनीय बना दिया है। 'अधिक अन्न उपजाओ' के नारे के साथ पिछले दिनों जो आन्दोलन हमारी सरकार ने चलाया था और जनता के [illegible] का पैसा उदारता के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यय किया गया था, वह भी एक तमाशा भर बनकर रह गया अर्थात् वह केवल एक भारी घाटे का व्यापार रहा।

अब सरकार के सामने करोड़ों नागरिकों के पेट भरने का प्रश्न उपस्थित है, अतः अब उसे पर्याप्त अन्न का प्रबन्ध करना है। केन्द्रीय सरकार पर हमारा बहुत-सा गेहूँ उधार है। इधर कमी के प्रान्तों को उदारतापूर्वक निर्यात भी चालू है। हमारी समझ में ऋण को वसूल करने और दानवृत्ति पर नियंत्रण करने के लिए यह उपयुक्त अवसर है। घर के बच्चों को भूखा रखकर दान नहीं किया जा सकता, भले ही उससे किसी महत् उद्देश्य की प्रतिष्ठा होती हो।

वितरण-प्रणाली

राशनिंग के वितरण के लए पिछले दिनों जो प्रणाली अपनाई गई थी, वह सदोष थी। उस प्रणाली में भ्रष्टाचार के लिए काफी गुंजाइश थी। हमारा राशनिंग-विभाग खुल्लमखुल्ला भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया था। राशनिंग का प्रत्येक कर्मचारी—वह चाहे दूध का धोया ही रहा हो—जनता की दृष्टि में गिर गया था। राशनिंग-प्रणाली दुबारा फिर जारी की जानेवाली है, अतः भ्रष्टाचार फैलने की फिर भी उतनी ही संभावना है। इस संभावित विभीषिका को अधिक-से-अधिक दूर रखने के उद्देश्य से ही हमारी प्रान्तीय सरकार ने इस बार 'सहकारी पद्धति' को अपनाने का विचार किया है, जो कि प्रत्येक दृष्टि से अनुमोदनीय है। जनता अपनी-अपनी 'सहकारी-समितियाँ' संगठित करले। उन समितियों को विधानानुसार रजिस्टर्ड कर दिया जाए। राशनिंग के वितरण की व्यवस्था उन्हीं समितियों के हाथ में दे दी जाए। यह एक उत्तम व्यवस्था है, जिससे भ्रष्टाचार का उन्मूलन किया जा सकता है।

सहकारी समितियाँ

परन्तु यह व्यवस्था, बाहर से देखने पर जैसी निर्दोष और सर्वजनोपयोगी प्रतीत होती है, व्यवहार में आने पर भी वैसी ही खरी ठहरेगी, इसमें हमें सन्देह है। 'सहकारी समिति' के 'बाइलाज' हमारे सामने हैं। बाइलाज—कुछ परिवर्तनों के साथ—वही हैं जो पिछले शासनकाल में थे और जिनके आधार पर संगठित 'सहकारी समितियाँ' नब्बे प्रतिशत असफल प्रमाणित हुई थीं। दुर्भाग्य से हमारे देश में 'सहकारी समितियों' का इतिहास असफलता का इतिहास रहा है और इस असफलता का पूरा श्रेय ऐसे बॉइलाज़ों को और उनका निर्माण करनेवालों को प्राप्त है।

यहाँ पर हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि बहुतांश से हमारा अभिप्राय 'बॉइलाज' के उस संस्करण से है जो माननीय प्रधानमंत्री की गत ३१ जुलाई की घोषणा के पश्चात् भागते-दौड़ते संशोधित और मुद्रित होकर गत १५ अगस्त को नितान्त मितव्ययता के साथ सहकारी-आन्दोलन में अनुराग रखनेवाले लोक-सेवियों में वितरित किया गया है। इस बॉइलाज को ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए तो आप को ज्ञात होगा कि इसके आधार पर बनी हुई समिति देखने और दिखाने भर को प्रजातंत्रात्मक है; कार्य-संचालन की दृष्टि से नहीं। नमूने के लिए 'सेक्रेटरी' का पद ही ले लीजिए। 'सेक्रेटरी' अर्थात् मंत्री प्रत्येक संस्था का मेरुदण्ड होता है। वस्तुतः संस्था का विधाता वही होता है, कर्त्ता-धर्त्ता कोई भी हो। उक्त बाइलॉज के अनुसार 'सेक्रेटरी' चुनने या नियुक्त करने का अधिकार संस्था के सदस्यों (मेम्बरों), प्रतिनिधियों और डाइरेक्टरों को नहीं है। वह रजिस्ट्रार (अभिप्राय रजिस्ट्रार को-आपरेटिव सोसाइटी, यू० पी० सरकार से है) का नामजद होना चाहिए। समिति के सदस्यों-द्वारा संगृहीत पूंजी को व्यय करने का सारा अधिकार एक प्रकार से उसी का रहेगा।

सेक्रेटरी के बाद दूसरा महत्त्व का पद 'मैनेजर' का है। उसे साधारण व्यय और समस्त व्यवस्था का अधिकार प्राप्त है। उसकी नियुक्ति भी रजिस्ट्रार की स्वीकृति पर रखी गई है।

ये तो रहे दो महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व के पद। अब डाइरेक्टरों के बोर्ड में एक डाइरेक्टर रजिस्ट्रार का नामजद रहेगा और उसके साथ ही एक-या दो सदस्य प्रान्तीय धारासभा के भी, जो स्पष्टतः सरकारी आदमी हैं। दो-एक ऐसे सदस्य बाहर के भी लेने होंगे ही, जो सहकारी कार्य के विशेषज्ञ हों। इस प्रकार ६, ९ या १५ सदस्यों के बोर्ड में ४ सदस्य तो रजिस्ट्रार के हो ही गए, इधर सेक्रेटरी और मैनेजर भी उन्हीं के नामजद हैं, आडीटर उन्हीं का रहेगा, इन्स्पेक्टर उन्हीं के। तो सारा काम तो उन्हीं के इशारे पर चलेगा। जनता के प्रतिनिधि वहाँ न होने के बराबर रहेंगे। वस्तुतः यह प्रजातंत्र का वह कलुषित रूप है जिसका अनुभव हमारे लोक-प्रतिनिधि ब्रिटिश काल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय धारा-सभाओं में किया करते थे। ऐसी संस्थाएँ आज के जन-जागरण के युग में सफलकार्य होंगी, ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए। यदि वास्तव में हमारी लोक-प्रिय सरकार चाहती है कि इस बार राशनिंग की योजना का परिचालन जनता के सदस्यों के द्वारा हो, जिससे जनता को शिकायत करने का अवसर न मिले, और वह तन-मन-धन से इस योजना को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करे, तो उसे इस नवीन मुद्रित बॉइलाज को फिर से संशोधित कर डालना चाहिए और उसे अधिक-से-अधिक जनोपयोगी बना देना चाहिए। साथ ही अंग्रेजी में नहीं, जैसा कि इस बार किया गया है, हिन्दी में उसकी हजारों प्रतियाँ छपवाकर अविलम्ब जनता में वितरित करने को दे देनी चाहिए।

वस्त्र का राशनिंग

वस्त्र भोजन के बाद जीवन के लिए दूसरी महत्त्वपूर्ण वस्तु है अतः राशन और कण्ट्रोल चालू होने पर वस्त्र को भी ले लिया जाता है। युद्धकाल में वस्त्र पर बराबर कण्ट्रोल लगा रहा था। जब जनवरी १९४८ में अन्न पर से नियंत्रण हटा था तभी वस्त्र पर से भी हटा था। कण्ट्रोल हटाने का कारण महात्मा गांधी का आग्रह तो था ही, कण्ट्रोल-व्यवस्था का असफल होना भी था। कहा गया था कि कुछ असामान्य कारणों से सरकार वस्त्र-वितरण का समुचित प्रबन्ध नहीं कर सकी और इसीलिए यह व्यवस्था असफल रही और उपभोक्ता को उतना वस्त्र नहीं दिया जा सका, जितना देने के लिए सरकार वचन-बद्ध थी। इस असंगति के कारणों में एतत्संबंधी अधिकारियों की अदक्षता, उनकी भ्रष्टाचार-पूर्ण मनोवृत्ति, वस्त्र की कम उत्पत्ति, उसे ढोने के साधनों की अपर्याप्तता तथा वस्त्र-उद्योग की उन्नति के लिए सरकार की ओर से कुछ न किया जाना, आदि का उल्लेख किया गया था।

कण्ट्रोल हटने पर वस्त्र पर्याप्त परिमाण में बाजार में दिखाई पड़ने लगा था, यद्यपि उसका मूल्य कण्ट्रोल-द्वारा निश्चित दामों से कुछ अधिक था। फिर भी वह चोर बाजार के मूल्य से निश्चय ही कम था। आशा यह थी कि जैसे-जैसे बाजार कपड़े से पटता जाएगा, वैसे-वैसे वस्त्र का दाम भी घटता जाएगा। पर वैसा हुआ नहीं। दाम उत्तरोत्तर बढ़ता गया और उस स्तर पर पहुँच गया जिसे सरकार की दृष्टि में आपत्तिजनक और जनता की दृष्टि में निराशाजनक कहा गया।

बढ़े हुए मूल्य के संबंध में वस्त्र-व्यवसायियों की ओर से बराबर यह सफाई दी गई थी कि यह कुछ तो सटोरियों की मुनाफाखोरी का परिणाम है और कुछ सरकारी नीति का। परन्तु जनता और सरकार की ओर से सब लाञ्छन वस्त्र-उत्पादकों (मिल-मालिकों) और वस्त्र-व्यवसायियों पर लादने का ही प्रयत्न किया गया। दोष किसी का रहा हो, पर वास्तविकता यह थी कि उपभोक्ता को वस्त्र का मूल्य इतना देना पड़ रहा था, जितना देने की सामर्थ्य उसमें नहीं थी। कुछ नेताओं तथा सरकार की ओर से भी वस्त्र का मूल्य घटाने को एक सुझाव यह उपस्थित किया गया था कि वस्त्र की खरीद कम-से-कम करदी जाए; इसने कुछ काल के लिए एक अल्पप्राण आन्दोलन का भी रूप पकड़ा था; पर वह चल न सका। जिसे वस्त्र की आवश्यकता है वह वस्त्र खरीदेगा ही। सभ्यजगत् में भूखे पेट बाहर निकला जा सकता है; नंगे बदन नहीं।

जनता की माँग से प्रभावित होकर भारत सरकार ने अपनी 'नई वस्त्रनीति' की अभी इसी महीने में घोषणा कर दी है, जिसके अनुसार वस्त्र पर फिर से नियंत्रण लगा दिया गया है। नियंत्रण का प्रभाव न केवल वस्त्र-वितरण तक सीमित रहेगा, उसके उत्पादन व मूल्य पर भी नियंत्रण रहेगा।

जहाँ तक सरकारी आँकड़ों से पता लगता है, वस्त्र का उत्पादन भारतीय संघ में कण्ट्रोल हटने के दिन से आज तक बराबर बढ़ा है। दिसंबर १९४७ से जून १९४८ तक का वस्त्र के उत्पादन का मासिक औसत ३५०० लाख गज है। यदि यही गति रही तो १९४८ में भारत में ४२००० लाख गज वस्त्र तैयार हो सकता है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि १९४६-४७ में समस्त भारत में ३८-६३० लाख गज और १९४७-४८ में ३७७५० लाख गज वस्त्र ही तैयार हुआ था। तब भारत विदेशों को भी वस्त्र बड़ी मात्रा में निर्यात करता था। अब हमारी निर्यात की मात्रा उतनी बड़ी नहीं रहेगी। इधर पाकिस्तान भी कट ही गया है और हमें उसके लिए उसकी रुई के बदले में जो वस्त्र देना होगा, उसका परिमाण बहुत अधिक नहीं होगा। इस दशा में यदि शरारती व्यापारी अपनी शरारत से बाज आएँ और सरकारी अधिकारी ईमानदारी और दक्षता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो कोई कारण नहीं है कि आगामी दिसंबर तक भारत में वस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भाव उसी स्तर पर न पहुँच जाए जहाँ वह सन् १९४१-४२ में था।

रही उपभोक्ता को पर्याप्त मात्रा में और उचित मूल्य पर वस्त्र मिलने की बात; वह बहुत कुछ 'सहकारी समितियों' के ठीक प्रकार से संचालन पर निर्भर है। यदि 'सहकारी-विभाग' के अड़ंगों और 'राशन-विभाग' की जिद के कारण जनता-द्वारा संगठित सैकड़ों 'सहकारी समितियाँ' असफल रहीं तो वस्त्र का वितरण अवश्य तथाकथित ईमानदार और अनुभवी फुटकर वस्त्र-व्यवसायियों के हाथ में रहेगा। वे उसी पंथ का अनुसरण करेंगे, जिसका करते थे। कारण, उनकी नकेल आगे भी उन्हीं हाथों में रहेगी, जिनमें पिछले दिनों थी, और जो जनता की शिकायतों को रद्दी की टोकनी में फेंकते रहने और इस प्रकार जनता की सरकार की समस्त योजनाओं पर पानी फेरते रहने में पूर्ण पटु बन चुके हैं।

हमारे महामात्य और राष्ट्रभाषा

गत २६ जुलाई को मद्रास में भाषण करते हुए हमारे महामात्य पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रभाषा के संबंध में अपना मत कुछ अतिरिक्त स्पष्टता से व्यक्त कर दिया है। इस संबंध में आप का अनुभव यह है कि "जब से भारत का बटवारा हुआ है, तब से कुछ लोगों ने 'पाकिस्तान से खफ़ा होकर' हिन्दुस्तानी में संस्कृत को ठूँसना शुरू कर दिया है।" इसलिए वे (नेहरू जी) "महात्मा गांधी के सुझाए मार्ग या नीति से हटने की हर कोशिश का विधान-परिषद् में विरोध करेंगे।"

नेहरू जी महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी हैं। कम-से-कम हम उन्हें, और वे भी अपने को, ऐसा ही मानते हैं। महात्मा जी पिछले दिनों हिन्दुस्तानी के कट्टर समर्थक होगए थे। इस संबंध में उनकी धारणा ऐसी पक्की होगई थी कि वे जनमत की चिन्ता करने को तैयार नहीं थे। हिन्दुस्तानी के नाम से वे प्रायः एक ऐसी भाषा को चलाना चाहते थे जो हिन्दी और उर्दू दोनों प्रकार की लिपियों में समान सुविधा के साथ लिखी जा सके। अर्थात् उस भाषा को जिसमें उनके 'हरिजन सेवक' के हिन्दी और उर्दू संस्करण छपते थे, या जिसे मौलाना अबुल कलाम आजाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, पण्डित सुन्दरलाल और डाक्टर ताराचन्द, आदि बोलते-लिखते हैं। तब महात्मा जी की दृष्टि में, और अब नेहरू जी की दृष्टि में, ऐसी हिन्दुस्तानी ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होनी चाहिए—हिन्दी नहीं।

महात्मा जी का उदय भारतीय राजनैतिक आकाश में सन् १९१९ में हुआ था। तब से लेकर ३० जनवरी १९४८ तक भारतीय जीवन का ऐसा एक भी पहलू नहीं था, जिस पर उन्होंने अपना अभिमत स्पष्ट रूप में व्यक्त न किया हो। फिर भाषा का पक्ष ही कैसे अछूता रह सकता था। इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि महात्मा जी पहले हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के पक्ष में थे और इसीलिए उन्हें 'हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन' का सभापति भी निर्वाचित किया गया था। पर उसके कुछ ही समय बाद हिन्दू-मुसलिम-ऐक्य की धुन में जब उन्होंने मिस्टर जिन्ना और उनके द्वारा समस्त मुसलिम जाति को कोरे चेक देना शुरू कर दिया, तब राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी अपने विचारों में भी उन्हें परिवर्तन करना पड़ा। हिन्दू-मुसलिम ऐक्य का गांधी जी का स्वप्न चरितार्थ नहीं हुआ, यह सर्वविदित है। यही नहीं, कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि यदि महात्मा जी तुष्टीकरण की नीति को इतना अनुचित विस्तार न देते तो भारत-विभाजन न होता; न उसके कुपरिणाम ही जनता को ऐसी भारी मात्रा में झेलने पड़ते!

जो हुआ, और जैसे हुआ, उस पर विवेचना करना अब अप्रासंगिक है। नेता नेता होता है। वह जिसे उचित, समझा है, जनता को ले जाता है। वह प्रजातंत्र या लोकतंत्र के नियमों में बँधा नहीं होता। गांधी जी का तप सफल हुआ। भारत स्वतंत्र हो गया। अब वहाँ की शासन-व्यवस्था लोकतंत्र के आधार पर चलाने का निश्चय हुआ है। लोकतंत्र का तकाजा है कि जो कुछ किया जाए, 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' को सामने रखकर ही किया जाए। कोई सरकारी अधिकारी, वह महामात्य ही क्यों न हो, जनता पर अपनी इच्छा बलपूर्वक लादने का प्रयत्न न करे!

यही अब हमारे महामात्य को भी करना है। यदि विधान-परिषद् प्रबल लोकमत के आधार पर हिन्दी को उसका उचित राष्ट्रभाषा का पद देना चाहती है तो हमारे महामात्य को उससे क्षुब्ध या उत्तेजित नहीं होना चाहिए। हम मानते हैं कि हमारे नेहरू जी को उर्दू या फारसी से जितना अनुराग है, उतना हिन्दी से नहीं है, और अँग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर तो उनका पूरा अधिकार ही है। पर हिन्दी भारतीय जनता के अधिकांश की या तो मातृ-भाषा है, या उसकी अपनी मातृभाषा की शब्दावलि हिन्दी के इतना निकट है कि वह हिन्दी (संस्कृतनिष्ट हिन्दी) के साथ विशेष अपनत्व का अनुभव करती है और इसीलिए वह हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर बिठाने के लिए जी तोड़ परिश्रम कर रही है। यदि युक्तप्रान्त, बिहार और मध्यप्रान्त के कुछ निवासी ही हिन्दी के पक्ष में होते तो इसे अनुचित या पक्षपात-पूर्ण कहा जा सकता था। पर जब आसामी, बंगाली और पंजाबी भी हिन्दी के पक्ष में ही हैं, अर्थात् वे हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन देखना चाहते हैं, तब इसमें किसी प्रकार की दुरभिसन्धि का आभास नहीं होना चाहिए और लोकमत समझते हुए इसका आदर करना चाहिए।

प्रान्तीय सरकारों में से हमारे युक्तप्रान्त की सरकार ने जब जनमत का आदर करते हुए सर्वप्रथम हिन्दी को राज-भाषा घोषित किया था, तब बापू जीवित थे और उन्हें हमारे प्रान्त की सरकार के इस निश्चय पर क्षोभ भी हुआ था, जिसे उन्होंने 'हरिजन'-द्वारा प्रकट किया था। पर अपने सम्मान्य नेता का आदर करना एक बात है और लोकमत के आधार पर लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था का चलाना सर्वथा दूसरी। कौन कह सकता है कि युक्त-प्रान्त के शासनतन्त्री महात्मा गांधी के सच्चे अनुयायी और भक्त नहीं हैं? पर वे जनता के प्रतिनिधि भी उसके साथ-साथ ही हैं, और लोकतन्त्र के जिम्मेदार भी। इस दशा में उन्हें लोकमत का आदर पहले करना है। प्रजातन्त्र का यही तकाजा है। चाहे इससे उनकी श्रद्धा-भावना को ठेस ही क्यों न लगती हो। फिर बात अकेले युक्तप्रान्त की ही नहीं है। उसका पथानुसरण और प्रजातन्त्र-पद्धति का पालन करते हुए हिमाचल प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, मालव संघ, राजस्थान संघ, विन्ध्यप्रदेश, मत्स्यसंघ, पूर्वी पंजाब तथा अन्य हिन्दी प्रान्त भी हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपना चुके हैं। वहाँ के सरकारी कार्यालयों का कार्य धड़ल्ले से और सुविधापूर्वक हिन्दी में होने लगा है। शीघ्रलिपिक तेजी से तैयार हो रहे हैं। टाइपराइटरों और लीनो व मोनो की सुविधा को ध्यान में रखते हुए हिन्दी-लिपि में वाञ्छनीय सुधार शीघ्रता के साथ किए जा रहे हैं; आदेश-पत्रक भी हिन्दी में लिखे जाने लगे हैं, और ऐसा बहुत सा कार्य या तो अब तक हो चुका है, या शीघ्र ही समाप्त होने वाला है। इस वस्तुस्थिति में यदि हमारे महामात्य राष्ट्रभाषा का प्रश्न उपस्थित होने पर विधान-परिषद् में हिन्दी का विरोध करते हैं, या हिन्दुस्तानी नाम की किसी ऐसी भाषा का समर्थन करते हैं, जिसकी न कोई निश्चित रूप-रेखा है, न जिसका कोई साहित्य है, न जिसके पास कोई शब्द-भाण्डार है और न जिसके पक्ष में लोकमत या बहुमत है, तो वे सचमुच समय के प्रवाह को रोकने की व्यर्थ चेष्टा करते हैं। यही नहीं, लोकतन्त्र के उच्चतम अधिकारी होने के नाते उनका यह व्यक्तिगत आग्रह उनके पद के अनुरूप भी नहीं है।

नेहरू जी का झुकाव रोमन लिपि की ओर प्रारम्भ से ही है, यह हम जानते हैं। रोमन लिपि छपाई की सुविधा की दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त है, यह भी मानी हुई बात है। पर उसकी वर्णमाला में सभी ध्वनियों को व्यक्त करने की क्षमता नहीं है। और यदि अनेक नवीन संकेतों के योग से उसे वाञ्छित क्षमता देने का प्रयत्न किया जाता है तो उसका 'की बोर्ड' बहुत भद्दा और असुविधाजनक हो जाता है। इसे प्रत्येक लिपि-शास्त्री स्वीकार कर रहा है। इस दशा में रोमन लिपि और अँग्रेजी भाषा के प्रति यदि कोई नेता या प्रान्त अपना आग्रह व्यक्त करता है, तो यही कहा जाएगा कि वह दो सौ वर्ष पुरानी अँग्रेजी-गुलामी का मोह-त्याग करने में अपने को अशक्त अनुभव कर रहा है। जब अंग्रेज चले गए और उनकी गुलामी का जुआ हमने उतार फेंका तब उनकी भाषा और लिपि का मोह क्यों और किसको प्रसन्न करने के लिए? यदि हम आँखें खोलकर चलेंगे तो कोई कारण नहीं है कि हमारी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि आगामी दस साल में ही संसार की उन्नततम भाषाओं और लिपि के समकक्ष न हो जाएँ; प्रत्युत उनसे भी अधिक सक्षम, सरल, वैज्ञानिक और सुविधापूर्ण!

जमींदारों को उचित मुआवजा

युक्तप्रान्तीय सरकार ने जमींदारी की प्रथा समाप्त करने का निश्चय किया था। उसे कार्य रूप में परिणत करने और जमींदारों को मुआवजा देने के लिए सरकार ने जो समिति नियत की थी, उसकी सिफारिशों का सार निम्न लिखित है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुआविजा देने के सिद्धान्त

मुआविजा निश्चित करते समय कमेटी ने यह ध्यान रखा है कि मुआविजे के बोझ से सरकारी आर्थिक स्थिति पर धक्का न पहुँचे। अतएव जमींदारी उड़ाने पर सरकार को जो अतिरिक्त आमदनी होगी उसका २।५ भाग सुरक्षित कोष में जमा होगा। बाकी ३।५ भाग से मुआविजा चुकाया जाएगा। मुआविजा जमीनों की वर्तमान आय के आधार पर निश्चित किया जाएगा जो सभी प्रकार और सभी क्षेत्रों के जमींदारों पर समान रूप से लागू होगा। कम आय वालों को मुआविजा अधिक और अधिक आयवालों को कम दिया जाएगा। इस प्रकार बड़े-छोटे जमींदारों को एक अच्छी-खासी रकम मिल जाएगी जिससे वे अपनी जीविका का नया प्रबन्ध सरलता से कर सकेंगे।

जो २५) मालगुजारी देते हैं, उन्हें २५ गुना मिलेगा। जो २५) से ५०) तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें २२ गुना; जो ५०) से १००) तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें २० गुना; जो १००) से २५०) मालगुजारी देते हैं, उन्हें १७॥ गुना; जो २५०) तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें १५ गुना; जो ५००) से २००० तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें १२॥ गुना; जो २०००) से ३४००) तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें १० गुना; जो ३५००) से ५०००) तक मालगुजारी देते हैं, उन्हें ९ गुना; जो ५०००) से १००००) तक मालगुजारी देते हैं उन्हें ८ गुना और जो १००००) से अधिक मालगुजारी देते हैं, उन्हें दुगना मुआविजा मिलेगा।

कमेटी ने उक्त निर्णय अपनी अन्तिम बैठक के पहले किया था। ३ जुलाई को बेगम एजाज रसूल के आग्रह से कमेटी ने उसमें कुछ संशोधन किए हैं। इससे मुआविजे की दरों में कुछ हालतों में बढ़ती की जाएगी।

यह भी समझा जाता है कि मुआविजा 'बांड्स' के रूप में भी देने की सिफारिश की जाएगी जो ४० वर्ष के लिए होंगे और जिनके लिए सूद की दर २॥) प्रति सैकड़ा होगी। कुल मुआविजा लगभग १३६ करोड़ होगा।

कमेटी ने यह लिखा है कि काश्तकार उसे माना जाएगा, जो अपने शारीरिक परिश्रम से जमीन जोतता-बोता है, उसके लिए धन खरचता है और जोखिम लेता है।

एक स्थायी कृषक मजूर, जिसकी पूरी या कुछ मजदूरी उत्पादन से दी जाएगी और जो कार्यों का जोखिम लेगा, उसे छोटा काश्तकार माना जाएगा।

लगान की नई दर

कमेटी ने जमींदारी प्रथा के उठाए जाने पर, काश्तकारों का लगान घटाए जाने पर भी विचार किया और निम्नलिखित सिफारिश की है—

जिस किसान के पास एक एकड़ भूमि होगी, उसे रुपए में ६ आना लगान की छूट मिलेगी; २ से ४ एकड़वालों को ४ आना, ४ से ६ एकड़वालों को २ आना, ६ से ९ एकड़वालों को १ आना प्रति रुपया छूट मिलेगी। ९ एकड़ से अधिक भूमिवालों का लगान नहीं घटाया जाएगा।

पटवारी और कानूनगो

जमींदारी प्रथा के उठाए जाने के बाद भूमि की प्रबन्ध-पद्धति का पुनः संघटन करना होगा, रेकर्ड आदि सुगम हो जाएँगे इसलिए पटवारियों और कानूनगो की संख्या भी सम्भवतः घटानी होगी। इस तरह जो धन बचेगा उससे पटवारियों को अच्छा वेतन दिया जाएगा, उन्हें रहने के लिए घर दिए जाएँगे और पेंशनें भी दी जाएँगी।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए यह सुझाव किया गया है कि पटवारियों को बिना योग्य अधिकारी की आज्ञा के खेतों की आराजी में परिवर्तन करने का कोई अधिकार न होगा। वह परिवर्तनों को अपनी दैनिकी में लिखें और गाँव की जनता को उसकी सूचना दे दें। जमींदारी-उन्मूलन कमेटी ने यह सिफारिश की है कि मालगुजारी की वसूली १० प्रतिशत कमीशन के आधार पर गाँव-पंचायतों-द्वारा हो। जहाँ गाँवपंचायतें नहीं हैं, वहाँ लम्बरदारों के द्वारा ५ प्रतिशत कमीशन के आधार पर वसूली हो।

युक्तप्रांतीय जमींदारी-उन्मूलन कमेटी की अन्तिम रूप से रिपोर्ट तैयार होने में अभी कुछ समय लगेगा और इसके बाद जनता की जानकारी के लिए वह सरकारी रूप से प्रकाशित की जाएगी।

[संकलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इटली के चुनाव और अंतराष्ट्रीय रंगमंच

श्री रतनलाल जोशी, एम० ए०

इटली में अभी जो चुनाव हुए थे, उनमें इटली की जनता ने जितना उत्साह और संलग्नता दिखलाई, उससे कहीं अधिक उत्साह और दिलचस्पी संसार के अन्य देशों ने दिखलाई। इटली के चुनावों का मूल सम्बन्ध वहाँ के निवासियों के भविष्य से है, किंतु विदेशी राष्ट्रों ने इस सत्य को गौण स्थान देकर इटली के निर्वाचन में अपने ही स्वार्थों को सिद्ध करने का स्वप्न देखा था। इटली के चुनाव ऐसे समय पर हुए जब संसार में योरप की दो महाशक्तियाँ—सोवियत रूस और अमेरिका—विश्व-व्यापी प्रभुत्व स्थापना के लिए अत्यन्त तीव्र प्रतियोगिता कर रही हैं। इटली की भौगोलिक स्थिति योरप के लिए सामरिक दृष्टि से ही नहीं, वरन् राजनीतिक दृष्टि से भी बड़ी महत्त्व-पूर्ण है। जूलियस सीजर के समय से योरप के राष्ट्र इटली की इस महत्त्वपूर्ण अवस्थिति को कई योरपीय युद्धों की परम्परा में हृदयंगम करते आ रहे हैं। आज भी अमेरिका और रूस के सामने इटली की यह भौगोलिक स्थिति है। दोनों शक्तियाँ योरप पर अपना राजनीतिक एकाधिकार स्थापित करना चाह रही हैं; क्योंकि योरप आधुनिक संसार की राजनीति का हृदय है। अतः पूर्वीय और पश्चिमीय योरप के परम्परागत सेतु इटली पर एकाधिकार की बाजी लगाना दोनों शक्तियों के लिए स्वाभाविक है। गत वर्ष जर्मनी ऐसा ही संघर्ष-बिंदु था और वहाँ भी ये दोनों प्रतिद्वंद्वी राष्ट्र राजनीतिक शतरंज के दाँव खेल रहे थे; किन्तु जर्मनी की जनता ने सदैव की भाँति विदेशी शक्तियों के सामयिक आश्वासनों का उचित मूल्यांकन नहीं किया। उन्होंने फिर अपने ही ढंग से आत्म-निर्भर बनकर अपने सामाजिक ढाँचे को पतन के गर्त से ऊपर उठाने का प्रयत्न शुरू कर दिया है। फलतः सोवियत रूस और अमेरिका को जनता के प्रत्याशित सहयोग की ओर से निराश होकर वहाँ अपनी-अपनी निरंकुश योजनाएँ ही आखिर कार्यान्वित करनी पड़ीं। इन योजनाओं का क्या भविष्य होगा? इस विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि प्रथम महायुद्ध के बाद भी फ्रांस और ब्रिटेन ने ऐसी ही योजनाएँ जर्मनी के लिए बनाई थीं, जिनका परिणाम द्वितीय महायुद्ध हुआ है। आज फिर जर्मनी की समस्या इसी परिणति की ओर तेजी से अग्रसर हो रही है। हाँ, अभिनेता इस समय ब्रिटेन और फ्रांस न होकर अमेरिका और सोवियत रूस हैं।

जर्मनी के बाद फ्रांस इस 'शस्त्रविहीन' युद्ध की रंगभूमि बना। एक ओर फ्रांस में वहाँ की सोवियत-पोषित पार्टी थी और दूसरी ओर एंग्लो-अमेरिकन संघ-द्वारा पोषित वहाँ की सोशलडेमाक्रेट और केथोलिक पार्टियाँ थीं। गत चुनावों में फ्रांस में दक्षिण-पन्थी दलों को ही विजय मिली है और इस प्रकार सोवियत रूस का पलड़ा फ्रांस में अपेक्षाकृत हलका पड़ गया है। किंतु एंग्लो-अमेरिकन संघ को वहाँ जो सफलता मिली है, वह स्थायी या निर्णायक सफलता नहीं है। अभी तो फ्रांस में वाम एवं दक्षिण पक्ष के संघर्ष को इतिहास के काफी अध्याय रँगने हैं। इटली के निर्वाचन के परिणामों का भविष्य भी फ्रांस की तरह ही अनिश्चित है। समय ही रहस्यों का उद्घाटन करेगा।

सोवियत-विरोधी-मोर्चा

१८ अप्रैल १९४८ में इटली की जनता ठीक २५ वर्ष बाद राजनीतिक चुनाव लड़ने के लिए मैदान में उतरी। इससे पूर्व के तीन-चार सप्ताह वातावरण-निर्माण के सप्ताह कहे जा सकते हैं, जिनमें एक ओर सोवियत रूस के आकर्षक आश्वासनों की घोषणाएँ थीं और दूसरी ओर एंग्लो-अमेरिकन संघ के राजनीतिक और आर्थिक प्रलोभनों का प्रदर्शन था। दोनों प्रतिद्वंद्वी गुटों ने इस समय इटली के सम्मुख जो सुख-स्वप्न रक्खे, वे काफी अंशों तक अन्तराष्ट्रीय व्यवहार की मर्यादा-रेखा का अतिक्रमण कर चुके थे। दोनों ओर की घोषणाओं से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो हिटलर और मुसोलिनी की धमकियों का युग अभी समाप्त नहीं हो पाया है। १७ मार्च को प्रेसीडेंट ट्रूमन ने अमेरिकन कांग्रेस के संयुक्त अधिवेशन में योरपीय पुनर्निर्माण की योजना को पूरा करने के लिए अमेरिका में व्यापक सैन्य-शिक्षण का प्रस्ताव पेश किया। कांग्रेस का यह अधिवेशन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि अमेरिका के सारे राजनीतिक दल वैदेशिक नीति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध में एक निश्चयात्मक मार्ग अपनाने की सिफारिश कर रहे थे। अपने इस भाषण में ट्रूमन ने बड़े कड़े शब्दों में सोवियत रूस और उसके साथियों की निन्दा की थी और कम्यूनिज्म के प्रबल प्रसार को रोकने के लिए अमेरिका के प्रत्येक नागरिक को कटिबद्ध होने की सलाह दी थी। उक्त प्रस्ताव की घोषणा करते हुए ट्रूमन ने अपनी नीति का स्पष्टीकरण करने के लिए जो शब्द कहे थे, वे ये थे :—

"Until the free nations of Europe have regained their strength and so long as communism threatens the very existence of democracy, the United states must remain strong enough to support those Countries of Europe which are threatened with Communist control and police state rule."—Washington, 17 March 1948.

अर्थात्, "जब तक योरप के मुक्त राष्ट्र अपनी शक्ति फिर से प्राप्त नहीं कर लेते हैं और जब तक कम्यूनिज्म लोकतन्त्र के अस्तित्व को ही आतंकित करता रहता है, तब तक अमेरिका को योरप के उन देशों का समर्थन करने के लिए काफी बलवान् बने रहना चाहिए, जो कम्यूनिस्ट-नियंत्रण और पुलिस राज्य के शासन-द्वारा प्रताड़ित हैं।"—वाशिंगटन, १७ मार्च १९४८।

वास्तव में, यह भाषण स्वयं अमेरिका की जनता के लिए न होकर संसार के उन राष्ट्रों के लिए था, जो रूस-अमेरिकन संघर्ष-प्रतियोगिता के सजीव केन्द्र बने हुए हैं। चेकोस्लोवेकिया की भावी रूप-रेखा और गति-दिशा का निर्णय इस समय हो चुका था और एंग्लो-अमेरिकन संघ को उस क्षेत्र में जो पराजय और पराभव मिला था, वह अमेरिका के राजनीतिज्ञों के मानस-पटल पर ज्यों-का-त्यों ताजा बना हुआ था। ट्रूमन के शब्दों में उसका प्रतिबिम्ब स्पष्ट प्रकट हो जाता है।

अमेरिका की आशंकाएँ

ट्रूमन ने अपने इस ऐतिहासिक भाषण में योरप का नकशा अपने सामने रक्खा था और सोवियत रूस-द्वारा सहायता-प्राप्त कम्यूनिस्टों ने जिस प्रकार सारे पूर्वीय और मध्य योरप को रौंद डाला था, उन परिस्थितियों से कांग्रेस को परिचित कराया था। इस भाषण में इटली के प्रसंग में भी काफी कहा गया था :—

"The tragic death of the republic of Czechoslovakia has sent a shock throughout the civilized world. Now pressure is being brought on Finland to the hazard of entire Scandinavian peninsula. Greece is under direct military attack from rebels actively supported by her Communist dominated neighbours. In Italy a determined and aggressive effort is being made by the Communist minority to take control of that country. Methods vary but the pattern is all too clear."—Washington, 17, March 1948.

"चेकोस्लोवेकिया की दुखद मृत्यु (अमेरिका के हृदय-बिन्दु के जनतन्त्र की हत्या) ने सारे सभ्य संसार को एक आघात से पीड़ित कर दिया है। अब फिनलैंड पर दबाव डाला जा रहा है, जिसके फलस्वरूप सारे स्कैंडिनेवियन प्रायद्वीप को आतंक पहुँचने की आशंका है। यूनान के विद्रोहियों के सैनिक-आक्रमणों का आखेट बना ही हुआ है, जिन्हें उसके कम्यूनिस्ट-नियंत्रित पड़ोसियों से सक्रिय सहायता मिल रही है। इटली में भी देश को अपने नियंत्रण में लेने के लिए वहाँ के कम्यूनिस्ट अल्पमत-द्वारा एक संकल्पबद्ध और आक्रमणात्मक प्रयत्न किया जा रहा है। प्रणालियों में अंतर हो सकता है, किन्तु लक्ष्य सर्वत्र वही है।" —वाशिंगटन, १७ मार्च १९४८।

चेकोस्लोवेकिया, फिनलैंड और यूनान के साथ इटली को रखना अमेरिका की इटली-विषयक नीति को काफी स्पष्ट कर देता है। अमेरिका चेकोस्लोवेकिया के मामले से ही सशंक हो गया था। ब्रिटेन और अमेरिका को विश्वास नहीं था कि डा० बेनेस और जान मसायरक—जैसे चेक-नेताओं के होते हुए भी उनका देश सोवियत संघ में शामिल हो जाएगा! बेनेस एवं मसायरक आधुनिक चेकोस्लोवेकिया के भाग्य-विधाता रहे हैं और आजीवन वे अधिनायकतंत्रीय शासन-प्रणालियों के विरोध में अग्रगण्य होकर संघर्ष करते रहे थे लेकिन कम्यूनिस्टों ने बड़े ही ऐंद्रजालिक तरीकों से राज्य की सारी सत्ता बेनेस और मसायरक के हाथों से छीन ली थी। अमेरिका इस अभिनय की पुनरावृत्ति को रोकने में अपनी सारी शक्ति लगा देने को कटिबद्ध हो गया था। इटली को वह इस प्रयोग की प्रथम भूमि बनाना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ओर वाशिंगटन में प्रेसीडेण्ट ट्रूमन के सोवियत-विरोधी भाषण से अमेरिका की दीवारें प्रतिध्वनित हो रही थीं और उसी तारीख को (१७ मार्च, १९४८) दूसरी ओर ब्रुसेल्स में योरप के पाँच देशों—बेल्जियम, फ्रांस, लुक्जेमबर्ग, नीदरलैंड्स और ब्रिटेन—के प्रतिनिधियों ने आर्थिक और सैन्य-सहायता-सम्बन्धी ५२-वर्षीय संधि पर हस्ताक्षर किए थे। फ्रांस, ब्रिटेन और अमेरिका ने इटली पर भी इस संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव डाला था, किन्तु वहाँ की तत्कालीन सरकार ने इस निर्णय को निर्वाचनोपरांत कायम होनेवाली सरकार पर छोड़ दिया था। ब्रुसेल्स-संधि के मूलभूत उद्देश्यों को इस प्रकार संक्षिप्त किया गया था—

१. प्रगतिशील लोकतंत्र के सिद्धांतों का संरक्षण और उनके विकास में सहायता।

२. वैयक्तिक स्वातन्त्र्य की रक्षा और व्यक्ति की राजनीतिक स्वतन्त्रताओं के पूर्ण एवं निर्बंध विकास के लिए आवश्यक वातावरण तैयार करना।

३. वैधानिक परम्पराओं और लोक-मर्यादा के अनुसार जीवन-यापन की सुविधाएँ।

ब्रुसेल्स-संधि के ये तीन आधार- भूत प्राचीर थे किन्तु इन आदर्शवादी प्रचार-उपकरणों के आवरण में जो असली शर्त थी, वह किसी दूसरे राष्ट्र के आक्रमण के समय सैन्य-सहायता की शर्त थी। संधि का वास्तविक उद्देश्य यही था और इस प्रकार यह बिल्कुल स्पष्ट था कि यह सन्धि सोवियत रूस के मंतव्यों का विरोध करने के लिए गढ़ी गई थी। आक्रमण का खतरा आखिर सोवियत रूस की ओर से ही हो सकता था। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री, मेजर क्लेमेंट एटली ने ब्रुसेल्स-संधि को पड़ोसी-धर्म-प्रेरित आध्यात्मिक प्रतिज्ञा बताते हुए इस आरोप का खंडन किया था कि उक्त संधि सोवियत रूस या अन्य किसी राष्ट्र के विरुद्ध लक्ष्य किया गया प्रयत्न है। ब्रिटेन की राजनीतिक जीवन-परम्परा में भाषण करने की अपनी निजी विशेषताएँ हैं। ब्रिटेन का एक-एक शब्द कूटनीतिक रहस्यों के आवरण में अवगुण्ठित रहता है। एटली ने ब्रुसेल्स-संधि के विषय में कहा था :

"This is indeed no ordinary treaty. It is not an alliance based on selfinterest and fear. It is rather an association of like-minded neighbours who, engaged jointly in shaping their way towards some closer social and indeed spiritual integration, base themselves on the essential similarity of their Civilisations and solemnly pledge their common obligations and their common intentions alike."—House of Commons, 17 march.

"वास्तव में, यह कोई मामूली संधि नहीं है। भय और स्वार्थ पर आधारित संघ भी यह नहीं है। यह तो उन समान-मनोवृत्तिवाले पड़ोसियों का सम्मेलन है, जो संयुक्त होकर किसी और गहरे सामाजिक और वस्तुतः आध्यात्मिक ऐक्य के पथ को रूप देना चाहते हैं—इन पड़ोसियों की सभ्यताओं का तात्त्विक सादृश्य इस ऐक्य का आधार है और वे अत्यंत पुनीत भावना के साथ अपनी समान जिम्मेदारियों और आकांक्षाओं के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं।" हाउस आफ कामन्स, १७ मार्च।

प्रधानमंत्री एटली के ये भावात्मक शब्द ब्रुसेल्स सन्धि के असली रूप को छिपाने के लिए आवरण-मात्र थे! ब्रुसेल्स-संधि का वास्तविक विधाता विंस्टन चर्चिल था, जो पिछले तीन वर्षों से 'पश्चिमी यूनियन' के पक्ष में अनेक योजनाएं पेश करता रहा है। अमेरिका - स्थित फूल्टन में सबसे पहले चर्चिल ने पश्चिमी यूनियन के आंदोलन को शुरू किया था। फूल्टन की सभा में प्रेसीडेन्ट ट्रूमन और अमेरिका के वैदेशिक विभाग का सर्वेसर्वा आर्थर वांडेनबर्ग भी उपस्थित थे। फूल्टन में चर्चिल ने अँगरेजी भाषा-भाषी जगत् के संघबद्ध हो जाने की योजना पेश की थी, जिसका आधार सांस्कृतिक भ्रातृत्व के अलावा भावी सुरक्षा से सम्बन्धित समान आवश्यकताएँ भी थीं। ब्रुसेल्स की संधि का मौलिक आधार चर्चिल-द्वारा दिया गया फूल्टन का भाषण ही था। यह भाषण आधुनिक इतिहास का अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषण है और पिछले दो वर्ष की घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया है कि अंतराष्ट्रीय राजनीति के अगले २०-२५ वर्षों तक के इतिहास पर इस भाषण की छाप रहेगी। इस ऐतिहासिक भाषण की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी का यहाँ उद्धरण दिया जाता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"……a fraternal association of the English speaking peoples requiring the continuance of the intimate relationships between our military advisers, leading to common study of the potential dangers, similarity of weapons and manuals of instructions and interchange of officers and cadets. It should carry with it the continuance of the present facilities for mutual security by the joint use of all naval and airforce bases in the possession of either country all over the world."

"…अँगरेजी भाषा-भाषी जनता का एक बन्धुत्वपूर्ण संघ, जो हमारे सैनिक परामर्शदाताओं के पारस्परिक गहरे सम्बन्धों को कायम रखने के लिए आवश्यक है और जिसके फलस्वरूप हम अपने संगीन खतरों का समान अध्ययन करते रहें, हमारे शस्त्रास्त्रों में एवं शिक्षण-पुस्तकों में समानता बनी रहे और हम अफसरों एवं केडेटों का परस्पर विनिमय भी कर सकें। समस्त संसार में दोनों देशों के अधिकार में जो नाविक और हवाई अड्डे हैं, पारस्परिक सुरक्षा के लिए उनके संयुक्त नियंत्रण की वर्तमान सुविधाएँ भी पूर्ववत् अक्षुण्ण बनी रहें।"

पोप-मुसोलिनी संधि

पश्चिमी योरप के राष्ट्रों का एक संघ बन जाने के बाद ब्रिटेन और अमेरिका ने इटली को भी अपनी ओर फोड़ने की कोशिश की। इस मनोरथ की सिद्धि के लिए दो दिशाओं से दबाव डालने का प्रयत्न किया गया। अमेरिका ने पोप की 'क्रिश्चियन डेमाक्रेसी' के घोषणापत्र का समर्थन किया और कम्यूनिज्म को ईसाइयत का सबसे घातक शत्रु घोषित किया। ब्रिटेन में स्वयं स्टेफर्ड क्रिप्स ने भी ईसाइयत के ध्वस्त सिद्धांतों के पुनरुद्धार के लिए अपने आक्सफोर्ड के भाषण में काफी जोर दिया था। प्रतिक्रिया-मूलक पोपशाही के पुनरुद्धार का यह वास्तव में नवीन प्रयत्न था। पोप ने इस समर्थन से पूरा-पूरा लाभ उठाया और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और राजनीतिक सत्ता को फिर से स्थापित करने का एक और प्रयत्न किया। पोप के कारनामों से आज सारा संसार परिचित है। मुसोलिनी और फासिस्टवाद का सबसे पहला सम्बल और प्रचार-यंत्र पोप ही था। कोई भी फासिस्ट-विरोधी व्यक्ति यह नहीं भूल सकता कि पूरे बीस वर्ष तक मुसोलिनी के कुकर्मों के शासन-काल को 'होली सी' (Holy See) अर्थात् पोप की संस्था का पोषण और सहयोग प्राप्त था। ११ फरवरी १९२९ को पोप और मुसोलिनी के बीच जो 'लेटरन समझौता' (Lateran Agreement) हुआ था, उसके अनुसार राजनीतिक रोम और वेटिकन रोम दोनों एकाकार हो गए थे। पोप की विश्व-व्यापी धार्मिक सत्ता पर मुसोलिनी की फासिस्ट राजनीति का निर्द्वन्द्व प्रभुत्व स्थापित हो गया था। १८७० में रोम में राजनीति और पोपशाही का सम्बन्ध विच्छिन्न हो चुका था—यह वियोग अकस्मात् १९२९ में संयोग बन गया और फलतः पहले की भाँति इस बार भी पोपशाही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप करने लगी। मुसोलिनी का उसकी जीवनी-लेखक एंटन जिश्का (Anton Zischka) पोप के पतन का चित्रण करते हुए इस प्रकार लिखता है:

"From that day on the duce could count on the support, direct or indirect, of 336,00,0000 catholics throughout the world. By this move ……clever Mussolini immensely strengthened his position both inside and outside Italy. Henceforth his policy would be defended by ……320,000 priests, 265,000 monks, 400,000 nuns and 35,000 missionaries scattered from Greenland to the Malayas, from Japan to North Africa; ……who are agents of inestimable importance."

"उस दिन से मुसोलिनी को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सर्वत्र संसार में फैले ३३,६०,००,००० केथोलिकों के समर्थन की प्राप्ति हो गई थी। इस संधि के द्वारा चतुर मुसोलिनी ने इटली में और उससे बाहर अपनी स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बना ली थी। क्योंकि इस संधि के बाद उसकी नीति को ग्रीनलैंड से मलाया तक और जापान से उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत ३,२०,००० पुजारियों, २,६५,००० संन्यासियों, ४,००,००० संन्यासिनियों और ३५,००० मिशनरियों का सहयोग प्राप्त हो गया था।……इन दूतों की महत्ता का बड़ा मूल्य है।"—'बायग्राफी आफ बेनिटो मुसोलिनी', पृ० ६५।

इस इतिहास की पार्श्वभूमि का तो यह तकाजा था कि द्वितीय महायुद्ध के बाद वेटिकन या पोपशाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हिटलर, मुसोलिनी या टोजो की भाँति ही पतन हो जाना चाहिए था। जिस पोपशाही को राजनीतिक क्षेत्र से बहिष्कृत करने के लिए रिफार्मेशन से लेकर लाल क्रांति तक की लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी, वह आखिर दूसरे महायुद्ध के बाद भी नष्ट न हो सकी। घटनाक्रम का स्वाभाविक तर्क तो यही था कि पोपशाही एक संस्था हो जाएगी; किन्तु इतिहास की गति का यह तर्क विजयी राष्ट्रों के हाथों में पड़कर निर्जीव हो गया। दूसरे महायुद्ध के बाद पोप की मरणासन्न सत्ता में फिर प्राणों का संचार हुआ और इस बार वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली रूप में अवतरित हुआ। आज संसार के सारे प्रतिक्रियावादी तत्त्व पोप के आस-पास आकर एकत्र हो गए हैं। वस्तुस्थिति यह हो गई है कि आज योरप में जो भी महत्त्वपूर्ण निर्णय किया जाता है, उसमें पोप का हस्तक्षेप एक अनिवार्य तत्त्व हो गया है। इटली में जब राजतन्त्र (Monarchy) के भविष्य के विषय में मतदान का अवसर आया तो पोप के हस्तक्षेप को काफी सफलता मिली। एंग्लो-अमेरिकन गुट ने पोप के शब्दों को निर्णायक राजनीतिक महत्त्व दिया। इस अवसर पर इटली में धार्मिक विद्वेष की जो लपटें फैलीं और उनके उत्तेजन में पोप ने जो तत्परता और अनौचित्य दिखलाया, वह संयुक्त भारत की मुस्लिम लीग के प्रचार से बड़ा साम्य रखता है। ईसा और स्वर्ग के नाम पर इटली की जनता से वोट लिए गए। फ्रेंच-निर्वाचन के समय भी पोप ने सारे दक्षिणी फ्रांस में अपने प्रभाव के तंतु फैलाए। इस क्षेत्र में प्रतिक्रियावादी तत्त्वों को जो अप्रत्याशित सफलता मिली, उसका कारण पोप का प्रभाव ही है। मास्को-परिषद् की असफलता का एक महत्त्वपूर्ण कारण उस समय की गई पोप की घोषणाएँ भी हैं।

इस प्रकार पोप ने आज फिर योरप में केथोलिक चर्च की राजनीतिक सत्ता को संजीवन दे दिया है और केथोलिक चर्च योरप के राजनीतिक संघर्ष में अब फिर उसी स्वार्थ के साथ आक्रमणात्मक हस्तक्षेप करने लगा है जिस प्रकार वह १८३०, १८४८ और १८७० में करता आया है जब कि योरप के राजाओं के विनाश के समय पोप और राजाओं के संयुक्त स्वार्थों को खतरा पहुँच रहा था। फासिस्टों की रिश्वतों पर जीवित रहनेवाले पोप की प्रतिष्ठा को द्वितीय था महायुद्ध के बाद स्वाभाविक रूप से धक्का लगना चाहिए था किन्तु युद्धोत्तर योरप में अमेरिका के वरद हस्त ने पोप की रक्षा ही नहीं की, उसे एक राजनीतिक सत्ता भी बना दिया।

ट्रीस्ट की वापसी

पोप की सत्ता को पुनर्जीवित करने के अलावा ब्रिटेन और अमेरिका में इटली को अपने पक्ष में फोड़ने के लिए एक और षड्यंत्र पोषित किया गया था। ट्रीस्ट की जो समस्या स्वाभाविक रूप से अपने-आप हल होती जा रही थी, उसे अमेरिका ने फिर उभाड़ा और ब्रिटेन, फ्रांस और पोप के समर्थन ने उसे फिर एक जीवित प्रश्न बना दिया। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने संयुक्त रूप से यह प्रस्ताव रक्खा कि एड्रियाटिक सागर का यह प्रसिद्ध बंदरगाह इटली को दे दिया जाए। ट्रीस्ट पर द्वितीय महायुद्ध के बाद यूगोस्लाविया के गुरिल्लों ने अधिकार कर लिया था किन्तु मार्च १९४७ को यह पंचायती निर्णय किया गया था कि उस पर अंतराष्ट्रीय नियंत्रण रहेगा। यूगोस्लाविया भी इस निर्णय पर हस्ताक्षर करनेवाला सदस्य था किन्तु जब उपर्युक्त तीनों राष्ट्रों ने ट्रीस्ट इटली को दे देने का प्रस्ताव पेश किया तो उन्होंने यूगोस्लाविया से परामर्श करने की आवश्यकता ही न समझी। अंतराष्ट्रीय व्यवहार की दृष्टि से यह उचित नहीं था किन्तु अमेरिका ने यूगोस्लाविया पर ट्रीस्ट के विषय में अनेक दोषारोपण करके इस अनौचित्य का मानो प्रक्षालन कर दिया। यूगोस्लाविया और सोवियत रूस ने त्रिराष्ट्रों के ट्रीस्ट-प्रस्ताव की बड़ी निन्दा की और उसे मानने से इन्कार कर दिया। इटली के कम्यूनिस्टों ने भी इस प्रस्ताव को अशुभ मंतव्यों पर आधारित माना। इटली की कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रधान मन्त्री सिन्योर तोग्लियती ने अपने पत्र 'इनिटा' में इस प्रस्ताव की आलोचना करते हुए लिखा था :—

"The plan is not only an electoral speculation, but a crude attempt to drag Italy into an atmosphere of war by speculation on Italian feelings. This attempt must be repulsed..... The Trieste question would only be solved when Italy has an independent democratic government with a policy of friendly collaboration with the Yuoslvag people."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह योजना सिर्फ निर्वाचन-सम्बन्धी अनुमान ही नहीं है, किन्तु इटली की जनता की भावनाओं को उत्तेजित करके इटली को युद्ध के वातावरण में घसीटना है। इस प्रयत्न को परास्त करना चाहिए.....ट्रीस्ट का प्रश्न तो सिर्फ उसी समय हल होगा जब कि इटली में एक स्वाधीन जनतंत्रीय सरकार कायम होगी और इस सरकार की नीति यूगोस्लाविया की जनता के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग की होगी।"

फ्रांस के कम्यूनिस्टों ने भी अमेरिका पर इसी प्रकार का दोष आरोपित किया था।

कम्यूनिस्टों की कमजोरी

ट्रीस्ट का प्रश्न नए रूप में पुनर्जीवित करने में ब्रिटेन और अमेरिका का जो उद्देश्य था, वह इटालियन कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रधान मन्त्री तोग्लियती के वक्तव्य के द्वारा पूरा हो गया था। एंग्लो-अमेरिकन गुट के षड्यंत्रों का प्रधान लक्ष्य यह था कि इटली के सामाजिक जीवन में गृह-युद्ध की परिस्थितियाँ पैदा हों और देशप्रेम के जागरण से कम्यूनिस्टों के प्रति जनता में घृणा के भाव गहरे हो जाएँ। तोग्लियती ने जो विवेकहीन वक्तव्य दिया था, उससे इटली की जनता ने काफी अंशों में अनुभव कर लिया कि इटली के कम्यूनिस्ट कम्यूनिज्म की विजय के सामने देश की भौगोलिक सीमा को बेंच देने को भी तत्पर हैं। ट्रीस्ट के अलावा अमेरिका ने इटली के सामने यह भी प्रलोभन रक्खा था कि यदि कम्यूनिस्ट-विरोधी दलों को चुनावों में सफलता मिलेगी तो यह प्रयत्न भी किया जाएगा कि इटली के अफ्रीकन उपनिवेश उसे वापस दे दिए जाएँ।

इटली के कम्यूनिस्टों ने भी प्रचार के क्षेत्र में किसी प्रकार की कमी नहीं रक्खी थी और उन्हें सोवियत रूस के अतिरिक्त पूर्वीय योरप के अन्य देशों से भी काफी सहायता मिली थी। मार्शल-योजना का विश्लेषण कम्यूनिस्टों ने अपने ढंग से किया था और इटली की जनता को चेतावनी दी थी कि उक्त योजना के भीतर अमेरिकन साम्राज्यवाद के विषैले कीटाणु छिपे हुए हैं और 'मार्शल योजना' के जाल में फँसाकर अमेरिका इटली को अपना स्थायी उपनिवेश बनाना चाहता है। कम्यूनिस्टों की सबसे बड़ी शक्ति मजदूर-संस्थाओं में थी। अस्सी प्रतिशत मजदूर-संस्थाएँ कम्यूनिस्टों के हाथों में थीं, लेकिन कम्यूनिस्टों की सबसे बड़ी कमजोरी यह थी कि खुद इटली के आर्थिक और सामाजिक जीवन के लिए उनके पास आकर्षक सिद्धांतों के अलावा कोई ठोस प्रोग्राम नहीं था। द्वितीय महायुद्ध ने इटली को अत्यंत जर्जर और उत्साहहीन देश बना दिया था। मुसोलिनी के फासिस्ट शासन ने जिन समस्याओं को हल करने का आश्वासन इटली की जनता को दिया था और जिनकी आशा में जनता ने फासिज्म को भी अपनाया था, वे समस्याएँ आंशिक रूप में भी हल नहीं की गई थीं। इटली पहले की भाँति ही आर्थिक दृष्टि से अस्वस्थ और राजनीतिक दृष्टि से उत्साहहीन देश था। आजीविका के साधनों के अनुपात में जनसंख्या अठगुनी बढ़ गई थी। राजनीति और अर्थनीति के सैद्धांतिक वैभिन्य के फलस्वरूप राष्ट्र को आर्थिकतः उपयुक्त संतुलन ही नहीं मिला था। उद्योगों के लिए इटली में अपरिमित सम्भावनाएँ हैं—भूमि खनिज-सम्पत्ति से भरी पड़ी है और श्रमशक्ति की भी कमी नहीं है, साथ ही यातायात के साधन भी इटली के पास काफी अच्छी तादाद में हैं लेकिन अभी तक वहाँ कृषि और उद्योगों के संतुलन को कार्यान्वित करने की योजना नहीं बनाई गई। मुसोलिनी ने ब्रिटेन का अनुकरण किया था—घर के दैत्य के निराकरण के लिए उसने साम्राज्यवाद के आधार पर उपनिवेश बसाने की योजनाएँ बनाई थीं; लेकिन उसका स्वप्न समय की गति के विरुद्ध था और इसी लिए वह स्वयं ही असफल नहीं हुआ, उसने इटली को भी गर्त में ढकेल दिया।

भविष्य अनिश्चित

इटली में अभी जो चुनाव हुए हैं, उनके सैद्धांतिक संघर्ष की यह भावभूमि है। आधुनिक संसार की राजनीति के दो सर्वप्रमुख और परस्पर-प्रतियोगी संघों ने इटली में यह 'शस्त्रविहीन युद्ध' लड़ा था। फ्रांस में गत वर्ष ऐसा ही एक संघर्ष हो चुका था और फ्रांस की भाँति इटली के चुनावों में भी एंग्लो-अमेरिकन संघ को ही सफलता मिली है। कम्यूनिज्म का जो ज्वार विश्वव्यापी और आल्प्स के शैल-शृंगों को प्रकम्पित कर रहा था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर]

वह काफी क्षीण हो गया है। इटली के चुनावों ने कम्यूनिज्म को पश्चिमी योरप में एक बड़ा बलवान आघात दिया है। फलतः कम्यूनिज्म की प्रसारोन्मुखी प्रवृत्तियाँ पश्चिमी योरप में काफी निर्बल हो जाएँगी लेकिन चुनाव के प्रतिशत से एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि कम्यूनिज्म की यह पराजय अस्थायी है—चुनावों ने जो निर्णय किया है, वह ठोस निर्णय नहीं कहा जा सकता, क्योंकि क्रिश्चियन डेमाक्रेटों को जो बहुमत मिला है, वह अपेक्षित प्रभुत्व नहीं रखता। नीचे इटली की मुख्य-मुख्य राजनीतिक पार्टियों के निर्वाचन-सम्बन्धी आँकड़े दिए जाते हैं—

दल	सीनेट	प्रति०	चे० आ० डि०	प्रति०
क्रि० डेमा०	१,०७,४०,०००	४७·६	१,२६,८१,०००	४८·७
पापु० फ्रंट	६६,५५,०००	३१·०	७६,६५,०००	३०·७
सोश० यूनि०	१५,८०,०००	७	१८,४८,०००	७·१
नेश० ब्लाक	१३,६४,०००	६·१	६,६६,०००	३·८
रिपब्लि०	६,३७,०००	२·६	६,५०,०००	२·५
मनाकिस्ट	४,६३,०००	२	७,२६,०००	२·८
फासिस्ट	२,४४,०००	१·१	५,२४,०००	२

ये आँकड़े चुनाव के वास्तविक रूप को स्पष्ट कर देते हैं। क्रिश्चियन डेमाक्रेटों को ५० प्रतिशत वोट भी नहीं मिले हैं। साथ ही अमेरिकन सदाव्रत के द्वारा देश के आर्थिक अभावों पर मरहम लगाने के अतिरिक्त क्रिश्चियन डेमाक्रेट पार्टी के नेता गेस्परी के मानस में और कोई दूसरी योजना भी नहीं है। जिस प्रकार इटली के कम्यूनिस्टों ने देश के राष्ट्रीय अभावों को पूरा करने के लिए जनता के सामने कोई ठोस आश्वासन नहीं रक्खा है, वैसे क्रिश्चियन डेमाक्रेटों ने भी अपनी योजनाओं के द्वारा जनता में किसी प्रकार का विश्वास नहीं पैदा किया है। दोनों अंधकार में रास्ता टटोल रहे हैं। इस संघर्ष के परिणामों ने दोनों वर्गों में राष्ट्रीय हितों के आधार पर जनतंत्र-अपेक्षित ऐक्य की परिस्थितियाँ नहीं उत्पन्न की हैं। दोनों का संघर्ष अविराम चलता रहेगा और इटली की जनता का दुःख-दैन्य इसी प्रकार दानवीय रूप ग्रहण करता जाएगा।

आज भी

मैं आज भी वही हूँ, जो तुमने कल देखा; और कल भी वही था जो परसों; फिर भी मेरी एकरसता में तुम्हारे सभी रंग कितनी सफलतापूर्वक बनते और मिटते चलते हैं। अनादि काल से बैठा हूँ मैं, अपलक आत्म-विस्मृत! तुम्हारा चिरपरिचित, प्रेमी, पुजारी!! पर तुम शास्वत हो, मेरे चिर-सुन्दर! आनन्दमय!!

मेरे इस 'पलक-पल्लव-प्रच्छाय' मंच पर कभी चाँद की रेशमी विभा में बिछलते-से, कभी अरुणोदय की कुंकुम-रंजित हेम फुहारों में भीगते हुए तो कभी क्षणिक यौवन सी रागमयी संध्या के मदिर चुम्बनों से अनुप्राणित तुम्हारे असंख्य चित्र तथा तुम्हारी सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अनेकानेक भाव-भंगियाँ युगों से खेलती चली आ रही हैं। पर क्या मैं बदला? या तुम बदले? मेरे जीवन की एकरसता में तुम्हीं रमते आ रहे हो मेरे नित्य-नवीन। तभी तो तुमने मुझे अमर कर दिया और जीवन को नित नूतन। मेरी भिन्न भिन्न मुद्राओं का विश्व-जिज्ञासु की भाँति अध्ययन करता रहा है—मुझे देखकर बोल उठा, सुन्दर पर वह तो मैं नहीं, तुम हो, मेरे सुन्दरतम। मैं तो आज भी वही प्याला लिए बैठा हूँ जो कल था, और आज भी वही प्यास है, उतनी ही, जिसने प्रथम प्याले का चुम्बन किया; फिर दुनिया चाहे लाल कहे चाहे अंगूरी, चाहे बैंजनी—पर मेरे लालायित अधर और आकुल कंठ की एक सधी हुई व्यापक एकरसता में तुम एक अमर पेय हो, नित्य नई बहारवाले! नित्य नया रंग!!

—उमानन्दन चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्थर का हृदय

कुमारी विपुला देवी

अनेक शताब्दी पूर्व की घटना है। एक राजकुमारी थी और था एक वीर युवक सैनिक। वह सैनिक घनघोर युद्धों में अप्रतिहत वेग से लड़ा था। भयंकर-से-भयंकर घाव खाकर भी उसके मुख से धीमी कराह तक निकलते नहीं सुनी गई थी। किन्तु जब राजकुमारी का विवाह किसी राजकुमार के साथ हो गया और राजकुमारी ने स्वयंवर-शाला में स्वयं उसके कंठ में जयमाल पहना दी तथा राजा ने सुरक्षा के विचार से राजकुमारी के साथ अपने सर्व-श्रेष्ठ वीर सैनिक को पतिगृह तक पहुँचा आने का गुरु-भार सौंपा, तब सहसा उसका हृदय मानो फट पड़ने के लिए उद्यत हो उठा।

न जाने कौन सा कुक्षण था, जब उस वीर सैनिक की दृष्टि राजकन्या पर पड़ी थी। जब शत्रुओं को पराजित करके राजा के साथ बड़ी धूमधाम से सेना राजधानी में प्रविष्ठ हो रही थी और वह सम्मानित वीर के रूप में राजा के पार्श्व में चल रहा था, तब आनन्दपूरित नागरियों की पुष्पवृष्टि में भाग ले रही राजकन्या के अकस्मात् दर्शन हुए थे और उसके अंतःकरण में वैसी ही सहास, आनन्द-मुग्ध, पुष्पवर्षा करती राजकन्या सदा के लिए प्रतिष्ठित हो गई थी। प्राचीन प्रसिद्ध लोककथाओं के बीच पले सैनिक ने उस क्षण से एक दुराशा को हृदय में स्थान दिया और एक असंभव आशा से अपने को छलता रहा। किन्तु यह हुआ क्या? वह आशा टूट गई, सपना था जो मिट गया और माथे पड़ा एक कठोर उत्तरदायित्व। निराशा और मौन दुःख से उसका हृदय जल उठा। उत्तरदायित्व?...

दो दिन का मार्ग शेष रह जाने पर राजकुमार अपने साथियों को पीछे छोड़ स्वयं राजधानी की ओर द्रुतवेग से बढ़ चला, क्योंकि उसने एक दुःसंवाद सुना था। रात चाँदनी थी। एक स्थान पर जब विश्राम के लिए डेरा पड़ा, तब राजकन्या अपनी सहेलियों के साथ, एक बड़ी शिला पर शुभ्र ज्योत्स्ना की छटा निरखने के लिए जा बैठी और उस वीर सैनिक को बुला भेजा। सैनिक आया और नम्र भाव से अभिवादन करके समीप ही बैठ गया। पितृगृह से दूर जा रही राजकन्या का मन अपने बचपन के साथी-संगियों के मोह से आच्छन्न हो उठा। वह सैनिक से विगत युद्धों का, नदी, झील, झरनों का और पग-पग पर बिखरे उदार प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन सुनने लगी। जीवन में प्रथम और अन्तिम बार सैनिक ने इतनी निकटता से राजकन्या से वार्तालाप कर सकने का सौभाग्य प्राप्त किया, परन्तु कब? चरम दुर्भाग्य का रूप था यह। उसने सोचा, "यदि राजकन्या के विवाह होने के पूर्व ऐसा अवसर प्राप्त होता तो मैं उसे अपने हृदय की कुछ बातें भी बताता, किन्तु अब क्या हो सकता है? अब तो वह दूसरे की परिणीता है। वह राजकन्या है, यह भी सोच सकता था, परन्तु वह पाषाणी मूर्ति-सी तो नहीं लगती।"

हृदय की कसक बढ़ने लगी, यहाँ तक कि जब राजकन्या उस स्थान से उठ कर चली गई, तब वह हारा-सा उसी शिला पर लेट गया। चरम दुःखावेग में उसके नेत्रों से आँसू की दो बूँदें निकल कर गिरीं और उस पत्थर की एक हल्की दरार में समा गईं।

प्रातः होने पर राजकन्या ने सैनिक की मृत्यु का दुःसंवाद सुना। स्वामिभक्त वीर सैनिक के सम्मान हेतु वह उन स्थान पर गई, जहाँ पिछली रात उसने उससे बातें की थीं। आँसू की एक बूँद उसके नेत्रों से निकल कर उसी पत्थर पर गिरी और उसी दरार में समा गई। दरार बन्द हो गई।

(१)

उक्त घटना के दस शताब्दी उपरान्त! एक मनोहर स्निग्ध प्रभात में एक सुन्दर युवती क्रीड़ा-उपवन के सरोवर तट पर खड़ी मरालों और हंसों के कल कूजन को सुन रही थी। हरित प्रभा से वह स्थान पूर्ण था। प्रकाश की नवआभा उस पर निराला रंग चढ़ा रही थी, ध्यान-मग्ना युवती एकटक सरोवर के उस पार के वृक्ष कुंजों में न जाने क्या देख रही थी कि उसकी पलकें तक नहीं हिलती थीं। "चन्द्रसेना!" राजकुमार नरेन्द्र देव ने पुकारा।

चन्द्रसेना का ध्यान भंग हो गया। वह चौंक उठी। मुँह उठाकर देखा कि युवराज नरेन्द्र सामने खड़ा मुस्करा रहा है। पता नहीं वह कब यहाँ आया और उसने चन्द्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना को ऐसी अवस्था में देख लिया, जिसमें उसके सामने आने के लिए चन्द्रसेना प्रस्तुत न थी। मन-ही-मन वह कुछ खीझी और आवेश से उसका चित्त चंचल हो उठा। भला इस समय राजकुमार यहाँ कैसे? किन्तु प्रश्न मुख तक आकर रुक गया। उसे यह पूछने का अधिकार ही कब था और आज भी कहाँ है? उसने कहा—"आप?"

"क्यों क्या हुआ?" युवराज अपने असमय आगमन का रहस्य समझाने के लिए मुस्कराया। वैसे भी उसकी मधुर मुखश्री अपनी ओर आकर्षित कर सकने की सामर्थ्य रखती थी, फिर इस समय तो वह प्रेम निवेदन करने आया था। एक अपूर्व लावण्य से उसका मुखमंडल प्रदीप्त हो रहा था। चन्द्रसेना ने उसके मुँह की ओर देखते ही सारी बात समझ ली, परन्तु आज उसका चित्त कल्पना के न जाने किस हिंडोले पर चढ़ा झूल रहा था कि उसे प्रसन्नता न हुई। फिर भी उसने कहा—"कुछ हो तो भी क्या, दासी तो इस अनुकंपा से धन्य हुई है। कैसे आज दासी पर इतनी कृपा हुई?"

"कृपा।" नरेन्द्र हँस दिया। उसने कहा—"यह कृपा नहीं है, चन्द्रसेना। इसे तुम और कुछ समझने की भूल न करो। अपार ऐश्वर्य-शालिनी हो तुम, विद्या-गुण की पुंजीभूत गरिमा और अगाध रूप-राशि की स्वामिनी। तुम्हारे पास यदि कोई आएगा तो कृपा करके नहीं, कृपा पाने की इच्छा से ही।"

"मेरा ऐश्वर्य यदि प्रतापी ऐश्वर्यवान् इन्द्र की विभूत को ठुकराने वाले आप जैसे राष्ट्रकूट भूषण के लिए भी प्रलोभनीय है, तो वह धन्य है और वह सब आपकी सेवा में उपस्थित है।"

"निश्चय ही तुम्हारा सौन्दर्य, गुण और विद्या नरेन्द्र के लिए भी प्रार्थनीय है, चन्द्रसेना! मैं तुम्हें राष्ट्रकूट साम्राज्य की भावी सम्राज्ञी के रूप में देखना चाहता हूँ। मणि का उपयुक्त स्थान मुकुट है।" युवराज ने साग्रह कहा और अनुराग पूर्ण दृष्टि से उसके मुँह की ओर ताकने लगा। चन्द्रसेना स्तब्ध रह गई। राजकुमार नरेन्द्र देव की प्रेम-भरी दृष्टि से, कितनी ही बार उसकी आँखें चार हुई थीं और कितनी ही बार वह उस रूपवान् शीलयुक्त उदारचेता मनस्वी युवक की ओर सच्चे मन से आकर्षित हुई थी। परन्तु सहसा परिणय-प्रस्ताव सुनकर वह भी अवाक् रह गई। नर्तकी के साथ विवाह.....नर्तकी पटरानी.....क्या यह राजा और प्रजा दोनों के लिए अपमान-जनक न होगा?

"चन्द्रसेना।"

".....।"

"तुम चुप क्यों हो, उत्तर दो।" अनुराग उसकी आँखों में मूर्तिमान् हो उठा।

चन्द्रसेना किंकर्त्तव्यविमूढ़ सोच रही थी कि साधारण मनुष्य भी जिसके साथ केवल मनोरंजन का संबंध रखना चाहते हैं, उसके साथ प्रबल प्रतापी राष्ट्रकूट-उत्तराधिकारी विवाह करना चाहता है? स्वप्न नहीं तो क्या यह वास्तविकता है! परिहास नहीं, सत्य है? माना, गत छः माह में राजकुमार के साथ उसकी घनिष्ठता बढ़ते-बढ़ते चरम सीमा पर पहुँच चुकी है; जिसके एक पग भी आगे बढ़ने का अर्थ था, युवराज के लिए सर्वनाश और उसके लिए महापमान। यह सच है कि यह युवक राजकुमार साधारण मनुष्य नहीं है। वह रसिक है, बुद्धिमान् है और है पारखी। उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षाएँ हैं, धर्म का सूक्ष्म रहस्य उसे अवगत है और फिर वह वीर भी है। किन्तु विवाह! अति सुन्दरी और ख्यातगुणा आर्द्रा को छोड़कर चन्द्रसेना के साथ विवाह! उसने कुछ सोचने-समझने का प्रयत्न किया परन्तु इसमें असमर्थ रही। तब उसने मुस्करा कर सम्मुख खड़े नरेन्द्र देव की ओर देखा। वह उत्तर की प्रतीक्षा में राग और आह्वानपूर्ण दृष्टि से उसी की ओर देख रहा था। वह बोली—"मुकुट में जड़ा जाना मणि के लिए सौभाग्य है क्योंकि मुकुट सभी मणियों को नहीं प्राप्त होते। परन्तु नर्तकी के साथ विवाह करना किस विधान में है?"

"प्रेम के विधान में।" उत्तर मिला।

"आप भूलते हैं, प्रेम का विधान व्यक्तिगत है। प्रजा उसे स्वीकार नहीं करेगी।"

"मनुष्य पहले मनुष्य है, फिर राजा। यह क्यों भूलती हो?"

"नहीं। राजा पहले राजा है और वह प्रजा का है।"

"नहीं, चन्द्रसेना यह ठीक नहीं है। प्रेम...।"

"प्रेम तो ठीक, परन्तु साधारण मानवी भावों और विकारों के सम्मुख आत्मसमर्पण करते प्रजा अपने राजा को नहीं देखना चाहती।" कहकर चन्द्रसेना मुस्कराई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे राजकुमार को उसका कथन अप्रिय न प्रतीत हो।

परन्तु राजकुमार के हृदय पर उसके इस उत्तर से चोट पहुँची। उसने समझा कि राजा को साधारण मानवी भावों और विकारों से ऊँचा होना चाहिए, यह बात चन्द्रसेना ने कदाचित् इसलिए कही कि उसने साधारण रूप से प्रणय-प्रार्थना न करके, उसे भावी राजा की रानी बनने के लिए कहा। संभवतः इसमें कहीं प्रलोभन का भाव विद्यमान था और चन्द्रसेना ने उसी का मुँहतोड़ उत्तर दिया है। अतएव उसने कहा—"मैं इस विशाल राज्य का भावी सम्राट् हूँ, इसलिए तुमसे विवाह नहीं करना चाहता, वरन् यदि मैं भिखारी होता तब भी यही चाहता।"

चन्द्रा मुसकराई। पल भर के लिए हृदय में मोह का भाव उत्पन्न हुआ परन्तु उसे जहाँ-का-तहाँ दबा कर उत्तर दिया—"आप यह क्यों भूल जाते हैं कि राजनर्तकी भिखारी से प्रेम करना किसी सौभाग्य का लक्षण नहीं समझती। किन्तु छोड़िए इस बात को, इसका कहीं पार नहीं दिखता। क्या सुनने की इच्छा है, मैं क्या गाऊँ?"

नरेन्द्र ने उसकी बात सुनकर मन में लज्जा का अनुभव किया। उसे यह सुन्दर युवती अद्भुत प्रतीत हुई, उसके साथ-साथ उसकी आसक्ति और भी बढ़ गई। फिर भी जो विषय टाल दिया गया, उस पर आगे कुछ कहना इस समय उपयुक्त न समझकर उसने कहा—"जो इच्छा हो गाओ।"

चन्द्रसेना गाने लगी, मादक स्वर-लहरी मानो पंख लगा कर अन्तरिक्ष में उड़ चली। परन्तु उसके समाप्त होने के पूर्व ही, दासी ने आकर विघ्न डाल दिया। उसने युवराज नरेन्द्र देव की ओर विस्मित दृष्टि से देखकर, चन्द्रसेना से कहा—"द्वार पर एक साधु उपस्थित हैं। हमने उनको भिक्षा देकर विदा करना चाहा, किन्तु वे भिक्षा नहीं चाहते। आपसे केवल कुछ बात करना चाहते हैं।"

"बात...मुझसे करना चाहते हैं...?" विस्मित होकर चन्द्रसेना ने पूछा।

"हाँ देवि...।" कहकर दासी ने मस्तक झुका लिया। उसके ओठों पर हँसी की एक महीन रेखा देख पड़ी, जो चन्द्रसेना की दृष्टि से छिपी न रही। गंभीर होकर राजकुमार की ओर उसने देखा और क्षण भर चुप रहकर बोली—"अच्छा, अभ्यागत साधु को सादरपूर्वक अतिथि-गृह में बैठाओ। कुछ देर उपरान्त मैं भी आती हूँ।"

दासी चली गई। राजकुमार ने बेचैन होकर पूछा—"तो क्या मुझे तुम अपना पूरा गीत नहीं सुनाओगी?

"आपने अभी ही सुना है कि अभ्यागत मुझसे बात करना चाहते हैं।"

"अभ्यागत! कहते हिचकती क्यों हो, ये पाखंडी साधु जो भी न करें, थोड़ा है।" अन्तिम शब्द सहसा उसके मुख से निकल पड़े, यद्यपि वह इस ढंग से यह कहना नहीं चाहता था। चन्द्रसेना साधु-अभ्यागत की प्रार्थना से चकित हुई थी, परन्तु राजकुमार के अविवेक-पूर्ण उद्गार उसे खटक गए। उसने असंतुष्ट होकर, अँगड़ाई लेकर उठते हुए कहा—"युवराज! नर्तकी इतनी अपवित्र होती है कि उससे पल भर बात करने की इच्छा प्रकट करने मात्र से आपने साधुमात्र को ही पाखंडी कह दिया। परन्तु जब आप नर्तकी के साथ विवाह करेंगे तब प्रजा क्या कहेगी, यह नहीं सोचा।"

राजकुमार अप्रतिभ हो उठा। पराजित-सा होकर बोला—"मेरी बात दूसरी है, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ न।"

"ठीक है। पर यदि वह साधु यही कहना चाहे तो आप उसे कैसे रोक सकते हैं?" कहकर तीव्र दृष्टि से उसकी ओर देखती हुई चन्द्रसेना चली गई। राजकुमार करारी फटकार खाकर उसे जाते देखता रहा, उसे साहस न हुआ कि उसको रोके। उसका प्रेमभरा हृदय, ऐसे स्वागत से, वेदना से विह्वल हो उठा। आज की इस बातचीत के उपरांत वह उसकी ओर से आशान्वित रहे, या निराश हो जाए, यह तत्काल निर्णय न कर सकने से जहाँ का तहाँ बैठा रह गया। बड़ी देर बाद जब एक दीर्घ निःश्वास त्यागकर वह धीरे-धीरे उठकर खड़ा हुआ और चलना चाहा तब सहसा कुञ्ज-द्वार पर छाया गम्भीर हो उठी और चन्द्रसेना ने प्रवेश करके सहास मुद्रा से कहा—"आप ठहरे रहें, जाएँ नहीं। शीघ्र ही लौटकर मैं आपको पूरा गीत सुनाऊँगी।"

राजकुमार ने लज्जा से पीले पड़कर सोचा कि क्या उत्तर दिया जाय, किंतु उसके कुछ बोलने के पूर्व ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रसेना जा चुकी थी। उसके मुख से सहसा निकल पड़ा—"मायाविनी की प्रत्येक चेष्टा एक गूढ़ पहेली बन जाती है। चन्द्रसेना मेरी है, उसे मेरा होना पड़ेगा।"

(२)

चन्द्रसेना ने जब अपने उस कक्ष में प्रवेश किया, जहाँ का वैभव, राजवैभव को भी नीचा दिखाता था और जहाँ केवल बड़े-बड़े सामन्त, राजा और राजकुमार ही प्रविष्ट हो सकते थे, तब उसने देखा कि गैरिक वस्त्रधारी एक बड़ी अवस्था का संसार-त्यागी संन्यासी शान्त और सुस्थिर भाव से आसन पर विराजमान है। तप, संयम और वैराग्य की ज्योति से उसका सारा मुखमंडल उद्दीप्त है। चन्द्रसेना उस पर दृष्टि पड़ते ही ठिठककर रुक गई। उसे लगा, जैसे कक्ष का समस्त वैभव उस वैराग्य मूर्ति के समक्ष हतप्रभ हो उठा है। सुख केवल धन में नहीं और शान्ति वैभव के प्रदर्शन में नहीं, उसके लिए मानसिक शान्ति और तृप्ति की भी आवश्यकता है, जो उसे नहीं प्राप्त है। उसने संस्कारवश उस संयमी, परिव्राजक को आदरपूर्वक नतमस्तक होकर प्रणाम किया और विनम्र स्वर में बोली—"महाराज, दासी सेवा में उपस्थित है। आदेश...।"

संन्यासी उठकर खड़ा हो गया और स्वागतपूर्ण स्वर में बोला—"तुम दासी नहीं, भगवती हो। श्री और सरस्वती, धृति और मेधावी इस देव प्रतिमा का दर्शन करके मैं धन्य हो गया, माँ! तुम्हारी कला, विद्या और रूप की कीर्ति सुनकर सोचा, चलो दर्शन कर आऊँ। जैसा सुना था वैसा ही पाया।"

चन्द्रसेना ने सुना और आश्चर्य से अनुभव किया कि जैसे उसके अंतःकरण की प्रसुप्त नारी और देवी दोनों करवट बदल रही हैं। पवित्र संन्यासी के मुख से निकले उन उद्गारों में विचित्र शक्ति थी, जिसने उसके हृदय पर गरिमा और शान्ति छिड़क दी। पूछा—"आपको मुझसे कुछ कहना है।"

"कुछ नहीं। केवल तुम्हारे दर्शन करना चाहता था, सो कर लिए! अब जाता हूँ।"

"किन्तु मैं आपको कैसे जाने दूँ। मैं नर्तकी हूँ, मेरा अन्न पवित्र नहीं, उसे ग्रहण करने के लिए अनुरोध...।"

संन्यासी हँस पड़ा। मानों वैराग्य ने शान्ति की सुषमा बिखेर दी। जैसे हिमालय अपना बरद हस्त उठाकर विनध्या के उच्च शिखर की प्रशंसा कर रहा हो। कहा—"अन्नपूर्णा, जननी, तुम तो जगत्माता हो; फिर अपने प्रति यह उपेक्षा और तिरस्कार का भाव कैसा? तुम्हारे परोसने से विष भी अमृत हो जाएगा, फिर अन्न की क्या बिसात।"

"तो मेरा आमंत्रण स्वीकार कीजिए।"

"उत्तराखण्ड जा रहा हूँ। साथ में दो शिष्य हैं। यदि तुम्हें संतोष नहीं होता तो लो मैं बैठ जाता हूँ, परन्तु मेरे शिष्यों को भी बुलवा लो!"

"उन्हें बुला लाने के लिए मैं अभी किसी को भेजती हूँ। पर वे हैं कहाँ?"

"नगर के बाहर, शिवमन्दिर के समीप, विशाल वटवृक्ष के तले।"

चन्द्रसेना चली गई। उसने अपने प्रधान अनुचर को संन्यासी के शिष्यों को बुला लाने के लिए भेज दिया। इसके उपरान्त वह अपने अस्थिर हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करने लगी। रह-रहकर उसके कानों में संन्यासी का गंभीर सुस्थिर कंठ स्वर गूँज उठता। अपने रूप की प्रशंसा और गुण-गान असंख्य बार उसने सुने थे, परन्तु तब वह नर्तकी थी, नगण्य नारी मात्र। मदिरा ढाल-ढालकर सामन्तों के सम्मुख उपस्थित करती थी और वे उसे पान करते थे। कहाँ मोहिनी, कहाँ जगदंबा अन्नपूर्णा...! तुच्छ गायिका और सरस्वती की तुलना कैसी? यह उन विलासी मनुष्यों के मुख से असंगत ही प्रतीत होती, परन्तु इस संन्यासी के मुख से ऐसा क्यों नहीं लगा? यह स्तुति क्यों इतनी प्रिय लगी! क्यों वह इतनी विचलित हो उठी! उसके रतनारे नेत्रों में आँसू छलक आए। उन्हें पोंछकर वह कुछ क्षण स्तब्ध खड़ी अपनी परिस्थिति पर विचार करती रही। फिर उसने अपनी प्रधान दासी को बुलाकर कहा—"राजकुमार को क्षमा-प्रार्थनापूर्वक विदा करके और कल आने को कह दे।"

परन्तु दासी ने लौटकर समाचार दिया— "राजकुमार ने कहा है कि वे प्रतीक्षा करते रहेंगे क्योंकि आपने उन्हें ठहरने को कहा है।"

"किन्तु इतने माननीय अतिथि का आदर-सत्कार करने में मुझे विलम्ब लगेगा। भोजन करने के लिए जिन्हें मैंने आमंत्रित किया है, उन्हें बीच में छोड़कर मैं राजकुमार के समीप न जा सकूँगी, तूने उन्हें यह बता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया होता। तू जा, भली भाँति समझाकर विदा कर दे, कदाचित् उन्होंने सुना न होगा।"

दासी गई और वापस लौटकर बोली—"राजकुमार कहते हैं कि वे तब तक प्रतीक्षा करेंगे, जब तक स्वामिनी को सब कार्यों से छुट्टी न मिल जाए।"

चन्द्रसेना के अनेक कृपापात्र थे, परन्तु उनमें राष्ट्रकूट राज्य के इस उत्तराधिकारी को जो विशेषत्व प्राप्त था, उसके विशाल प्रासाद के अनुचरों से छिपा न था। चन्द्रसेना उसका आदर केवल बाह्य दृष्टि से नहीं करती थी, यह भी प्रकट ही था। परन्तु चन्द्रसेना को आज राजकुमार का यह हठ कुछ अनुचित प्रतीत हुआ, उसने क्षुब्ध होकर कहा—"आज मुझे अवकाश नहीं मिलेगा, जाकर कह दे यही।"

दासी ने पूछा—"क्यों? ऐसा कार्य ही क्या है, केवल...।"

किन्तु उसकी बात पूरी सुने बिना ही, सहसा चन्द्रसेना वहाँ से चली गई। जब संन्यासी के दोनों शिष्य आ गए तब उसकी ओर देखते ही हठात् वह चौंक उठी। पूर्ण यौवन की श्री से परिवेष्ठित उन युवकों की देह पर लापरवाही के साथ गैरिक रंग का दुपट्टा पड़ा था और योग तथा ब्रह्मचर्य का तेज उनके अंग-अंग में व्याप्त था। चाल में निर्भीक स्वतंत्रता और सरलता थी, जैसे उन्हें विश्व में न किसी का भय है और न वे किसी से डरते हैं।

* * *

उस दिन सन्ध्या को इच्छा के विरुद्ध चन्द्रसेना को कला-प्रदर्शन करना ही पड़ा। पिछले एक माह से इस प्रदर्शन का आयोजन हो रहा था, अतः वह उसे अस्वीकार न कर सकी। दूर-दूर से लोग इस समारोह का आनन्द लूटने के लिए आए थे।

परन्तु जब चन्द्रसेना उत्सव से लौट कर आई, उसने संन्यासी के बड़े शिष्य को अपनी प्रतीक्षा में बैठे देखा उसका मुख मंद दीपालोक में अगाध समुद्र-सा शान्त प्रतीत हो रहा था और बड़ी-बड़ी आँखों से मानों प्रकाश की धारा-सी निकल रही थी। चन्द्रसेना सहसा हतबुद्धि-सी रह गई। नृत्य के वस्त्राभूषणों में उसका सौन्दर्य कितना निखर उठता है, यह उसे ज्ञात था परन्तु आज सहसा उस वीतराग ब्रह्मचारी के सम्मुख इस वेश-भूषा में आ पड़ने पर अचानक उसकी इच्छा हुई कि धरती फट जाए और वह अपना काला मुँह लेकर उसमें समा जाए। कुशल इतनी ही हुई कि वह ब्रह्मचारी उसकी ओर नहीं देख रहा था, उसकी दृष्टि नीचे थी। अपने को सँभालकर चन्द्रसेना ने पूछा—"आप इस समय यहाँ कैसे?"

वह उठकर खड़ा हो गया। उसकी आँखें शान्त थीं पर उसके मुखमंडल पर न जाने कैसा भाव था। कुछ क्षण चन्द्रसेना के मुँह की ओर एकटक ताकते रहकर उसने पूछा—" समाप्त हो गया वह उत्सव?"

"हाँ, ऐसा हुए बिना मैं वापस लौट ही कैसे सकती थी। परन्तु आप तो आज ही गुरुदेव के साथ चले जाने वाले थे न, फिर अचानक···।"

"अचानक नहीं···मैं आज नहीं गया···। मैं···।" "कहते हुए वह ठहर गया, जैसे कुछ सोच रहा हो, कुछ तौल रहा हो और कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का निर्णय कर लेना चाहता हो।"

चन्द्रसेना ने उत्सुक होकर उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा। प्रातः से वह जिस अस्वस्ति का अनुभव कर रही थी, संगीत और नृत्य की ताल पर उसे वह धो चुकी थी और अब तक उसने अपने को सँभाल लिया था। विवेक और लज्जा पर कुतूहल ने विजय पाई। उसने पूछा—"आर्य! कहिए न क्या कह रहे थे?"

"क्या कह रहा था मैं। कुछ समझ में नहीं आता कि मैं क्या कहूँ। बैठो, कुछ शीघ्रता नहीं है, फिर कहूँगा···। इतना ऐश्वर्य—इतना प्रभाव···तुम इसके बीच सुखी अवश्य ही होगी।"

"सुखी···। यह तो मालूम नहीं कि सुख किसे कहते हैं और यह सुख है या सुखाभास मात्र; परन्तु मैं अपने जीवन से सन्तुष्ट अवश्य हूँ।" कहती हुई चन्द्रसेना सामने आसन पर बैठ गई। उसके अधरों पर विश्वमोहिनी मुस्कान नृत्य कर उठी, सोई चंचलता जाग उठी। वैराग्य की दीप्ति से सहसा जो आँखें चकाचौंध होगई थीं, वे पुनः अपने राग में रँग गईं। उसने कहा—"आप लोग संसार-त्यागी वैरागी हैं, सब ओर से जकड़े बँधे। हमारे आनन्द और संतोष की बात आपकी समझ में कैसे आ सकती है, तब बतलाने से लाभ?"

"कुछ कहीं, लाभ की बात मैं नहीं सोचता। परन्तु दूसरे लोक में, इस विश्व से भिन्न एक और संसार में,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

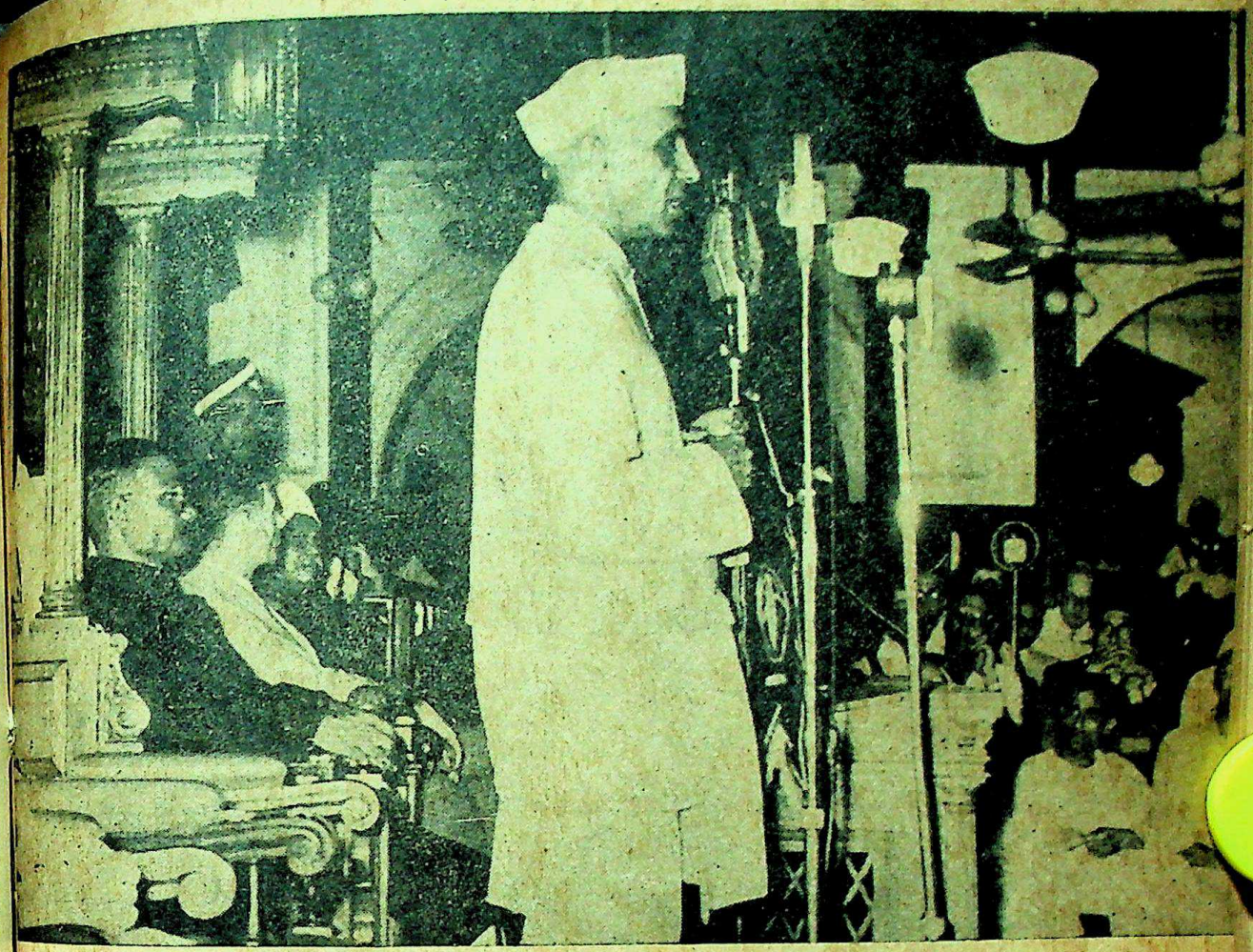

मद्रास धारासभा में भाषण करते हुए पण्डित नेहरू।

स्वागत-समारोह

भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी के स्वागत के उद्देश्य से पिछले दिनों दिल्ली के नागरिकों ने एक सभा आयोजित की थी। सभा में पण्डित नेहरू के साथ राजा जी मुस्लिम महिलाओं के बीच दिखाई दे रहे हैं।

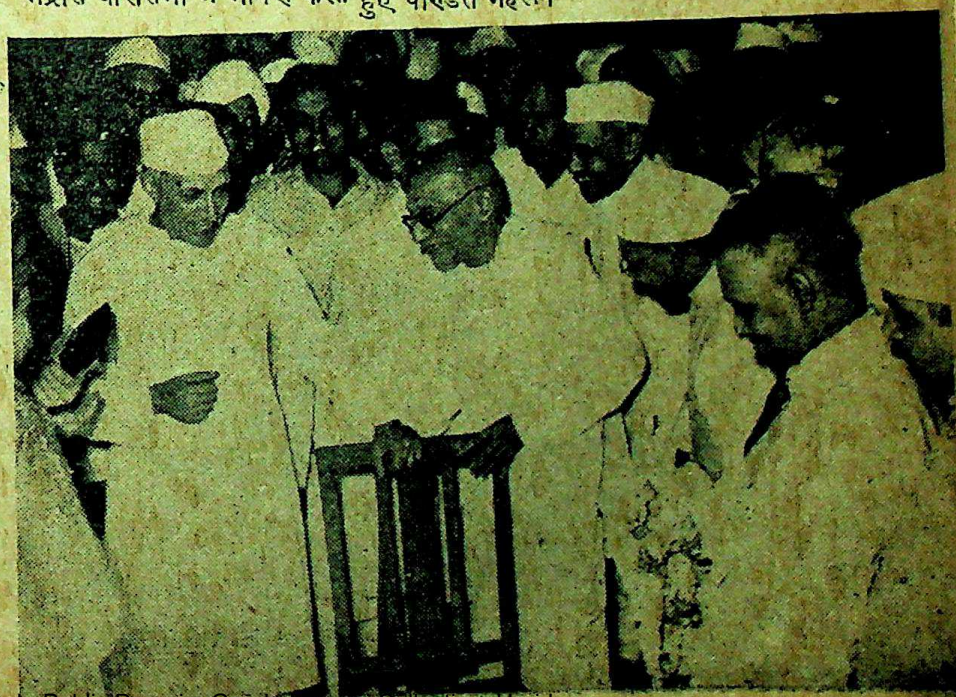

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शरणार्थी-समस्या

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

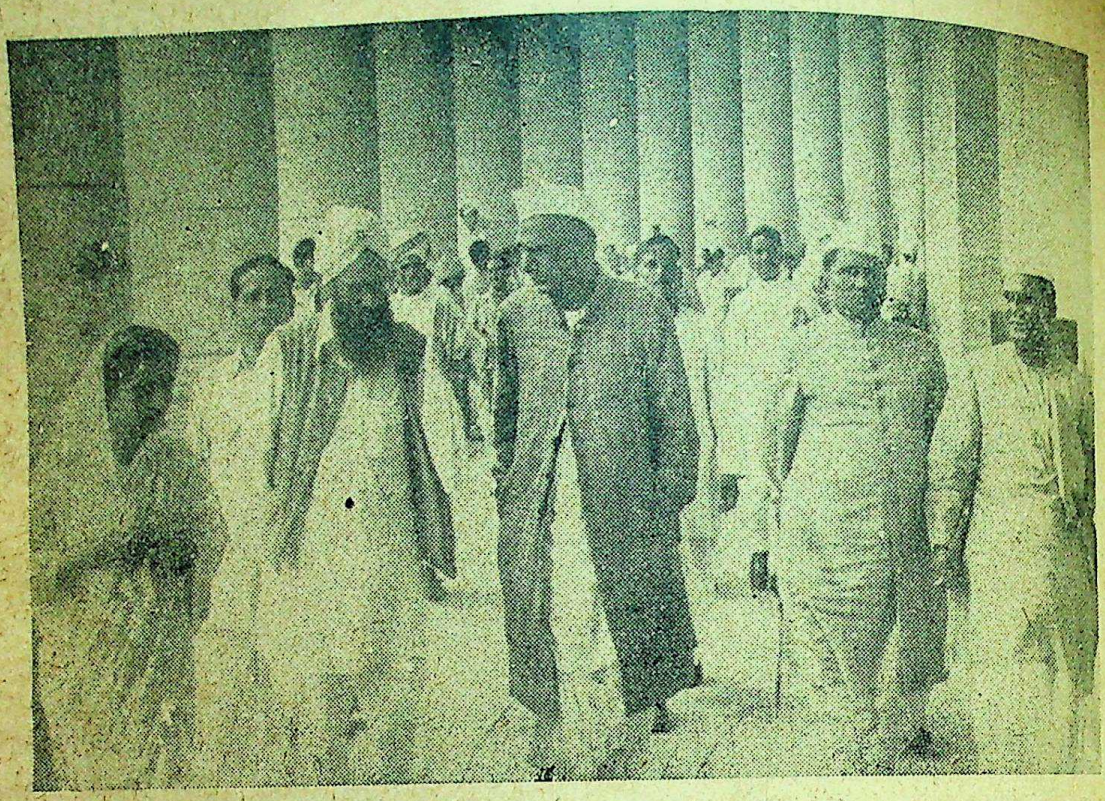

पिछले दिनों नई दिल्ली के काउंसिल भवन में राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें प्रान्तीय प्रधान मन्त्रियों तथा रियासती मन्त्रियों ने भाग लिया था। इस सभा का उद्देश्य था शरणार्थियों के पुनर्वासन की समस्या पर विचार-विनिमय करना। चित्र में सभा के बाद काउंसिल भवन से बाहर आते हुए राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, अन्य अधिकारी व्यक्तियों के साथ अंकित हैं।

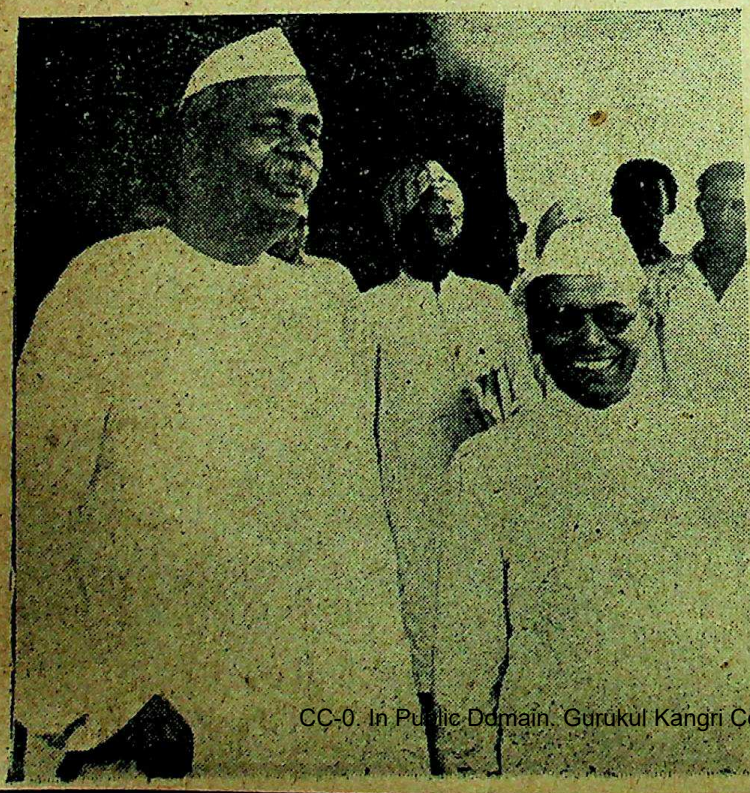

संयुक्त-प्रान्त के प्रधान मन्त्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त और बम्बई प्रान्त के प्रधान मन्त्री श्री बी० जे० खेर भी उक्त सभा में उपस्थित थे। इन दोनों ही प्रधान मन्त्रियों को अपने प्रान्त में आए बहुसंख्यक शरणार्थियों की समस्या हल करनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख और शान्ति का मापदंड बदल जाता है, यह जानती हो...?"

"दूसरा लोक !" इस विश्व से पृथक् वह स्वप्नलोक, जिसकी स्तुति में सैकड़ों ग्रन्थ भरे हैं ? परन्तु वह है भी या नहीं, इसे कौन जानता है किसने देखा है ? और देख कर कौन वापस लौटा है, जो इसे प्रमाणित कर सके।" कहकर वह व्यंग्यपूर्वक मुस्कराने लगी !

ब्रह्मचारी कुछ क्षण चुप रहा। उसके मुँह पर चन्द्रसेना के कथन की कुछ प्रतिक्रिया परिलक्षित हुई पर दूसरे ही क्षण वह गंभीर स्वर में बोला—"उसे ; उस लोक के स्वर्ग थे, चाहे आँखों से न भी देखा हो परन्तु इस लोक का नरक साक्षात् देख रहा हूँ। इतनी देर से मैं तुम्हें देख रहा था, सोच रहा था कि क्या ब्राह्मण कुलोत्पन्ना, निष्ठावती माता की कुक्षि से जनमी इसमें कुछ भी पूर्व संस्कार शेष नहीं रह गया है ? क्या इसकी आँखें मतवाली विलासिता से इतनी अंधी हो गई हैं कि वे आगे-पीछे कुछ भी नहीं देख सकतीं ?"

चन्द्रसेना चौंक उठी। उसके मुँह का रंग फीका पड़ गया। वज्राहत-सी होकर वह चुप बैठी रह गई और अनिमेष नयनों से उसकी ओर देखती हुई थोड़ी देर बाद बोली—"पद्मा...कैसी पद्मा..."।

"वह पद्मा जो समुद्रदत्त की कन्या और पुंडरीक की बहिन थी। पद्मा तुम मुझे नहीं पहचान सकी परन्तु मैं तो तुम्हें राजा की सभा में नाचते देखकर, उसी समय पहचान गया था और आज समीप से देखकर कोई संशय न रहा। आँखों के बीच के इस तिल के रहते धोखा खाने की कोई संभावना नहीं थी।"

"तुम कौन हो, कौन हो तुम ?" चन्द्रसेना ने काँपते स्वर में पूछा। वह अंधी-सी घूर-घूरकर उसकी ओर देख रही थी पर जैसे उस पर्वताकार वैराग्य, त्याग एवं विश्व में उपस्थित व्यवधान की ओट में छिपे किसी को पहचान नहीं पा रही थी, उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

"मैं पुंडरीक हूँ, तुम्हारा बड़ा भाई पुंडरीक, जो बचपन में ही तुमसे और माता-पिता से बिछुड़ गया था और शान्ति की गोद में विश्राम पाने के लिए चला गया था कहीं, अनन्त पथ जिसका जीवन-स्फूर्ति बनकर प्रकट हुआ था। मैं जो चाहता था, उसको पाकर भी जैसे अन्त में मेरी सफलता विफलता में बदल गई, तब तुम्हारी मदोन्मत्त दृष्टि अपने सगे भाई को भी न पहचान सकी। पद्मा यह पतन की पराकाष्ठा है या जीवन का उत्थान, तुम्हीं कहो।" उसने कहा। उसके नेत्र अब भी धीर और स्थिर थे और वह वैसी ही अन्तर्भेदिनी दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था।

चन्द्रसेना ने पाण्डुर वर्ण होकर मस्तक झुका लिया। बड़ी कठिनाई से उसके मुख से निकला—"भैया तुम—।"

"मैं पद्मा का भाई पुंडरीक हूँ, परन्तु क्या तुम मेरी पद्मा हो। वैसी ही जैसी पहले थीं, नहीं.. तुम चन्द्रसेना हो—नर्तकी हो...जिसे ईश्वर पर विश्वास नहीं है।" उसने कहा। उसकी आँखों की चमक बढ़ गई और वह अचानक उठ खड़ा हुआ।

उसी समय चन्द्रसेना उसके पैरों पर औंधे मुँह आ गिरी और मूर्च्छित होते हुए उसने कहा—"मुझे क्षमा करो, भैया...।"

पुंडरीक ने उसे हाथों पर रोक लिया। उसकी आँखों से भी आँसू निकल पड़े। चन्द्रसेना के मुँह पर समीप रखी झारी से जल लेकर उसने छिड़का और माथे पर हाथ रखकर भरे कंठ से बोला—"पद्मा...मुझे क्षमा करो, बहिन ! मैंने तुम्हें बहुत कटु शब्द कहे, पर इस छाती के भीतर आग जल रही है, यह क्या तुम नहीं देख सकीं...।"

चन्द्रसेना धीरे-धीरे सचेत हुई, परन्तु मूर्च्छा भंग होते ही पुंडरीक का हाथ जोर से पकड़कर चिल्ला उठी—"मैं क्या करूँ—अब मैं क्या करूँ ? कैसे मेरा निस्तार होगा, कैसे इस इन्द्रजाल से छुटकारा पाऊँगी, कैसे इस माया-मरीचिका से मेरा पिंड छूटेगा ? भैया, मुझे बचाओ...।" दारुण पश्चात्ताप और भयानक अन्तर्ज्वाला से उसका शरीर मानों कण-कण बिखर जाना चाहता था। पल भर में समस्त वैभव, मान-आदर, कला-यश और रूप-गर्व ने एक कुत्सित हीनतम रूप में परिवर्तित होकर उसके सब अहंकार और दर्द को चूर-चूर कर दिया। अपने भाई को न पहचानना ही उसका अपराध नहीं था, वरन् उसने तो एक साधु के सात्विक आचरण पर, अपनी मतवाली विलासिता के छींटे फेंके थे और कुछ समय पूर्व अपनी दासी से कहा था कि वेद केवल गप्पों का संग्रह है और ईश्वर की असारता घोषित करते हुए नृत्योत्सव की तैयारी की थी। इन सब पापों का प्रायश्चित्त क्या अब संभव है...।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुंडरीक ने एक लम्बी साँस ली और पूर्ववत् गंभीर भाव से बोला—"पद्मा, अभी भी तो बहुत मार्ग शेष पड़ा है, जीवन का एक भाग सामने है। चाहो तो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, तुम बच सकती हो।"

"किन्तु मैं तो पाप से आपाप-मस्तक डूबी हूँ। मुझे ऊपर उठाने में तुम्हारी सारी तपस्या का पुण्य कम पड़ जाएगा...।"

"भले ही पड़ जाए, इसलिए तुम्हें क्या इस नरक में जलने के लिए छोड़ दूँगा। ऐसा नहीं होगा। किन्तु यदि तुम इस नरक से छुटकारा पाना चाहती हो, तो उसके लिए तुम्हें अपनी शक्ति से ही काम लेना होगा। मैं तुम्हारी उतनी ही सहायता कर सकता हूँ, जितनी तुम लेना चाहोगी।"

"तो चलो, अभी इस नरक से निकल चलें।"

"पद्मा, तुम कुछ ठहरकर सोच लो, इतनी जल्दी क्या है? परिवर्तन जीवन का धर्म है, यह सच है, परन्तु अपने को पहचाने बिना, शीघ्रता में किया कार्य पश्चात्ताप का कारण बन सकता है।"

"भैया! यह तुम क्या कहते हो? अपनी बहिन पर तुम्हें विश्वास.....।" कहते कहते उसका कंठ अवरुद्ध हो गया। वह उसके करों से मस्तक हटाकर भूमि पर लोट गई और उसके मूक क्रंदन से कक्ष का सब वायुमंडल जैसे परिव्याप्त हो गया।

पुंडरीक ने कुछ हल्की मुस्कान के साथ कहा—"पद्मा, सोना तपने से ही शुद्ध होता है। आत्मा की शुद्धि के लिए इच्छाग्नि ही पर्याप्त है। तुम्हें डरना नहीं, निर्भय बनना होगा। तुम अपने को अभी तक अपने को भूली हुई थीं, इसीलिए नरक तुम्हें स्वर्ग प्रतीत हो रहा था। किन्तु आज तुम्हारी दृष्टि में जो अन्तर आ गया है, उससे देखो कि यह संसार तुम्हें कैसा लगता है।" उसका कंठस्वर शान्त था और मुखमंडल पर दीप्ति थी।

चन्द्रसेना उठकर बैठ गई। उसने अपने आँसू पोंछ डाले और एकटक उसके मुँह की ओर देखती हुई बोली—"तुम मुझे क्या साथ न ले जाओगे, डरते हो?"

"मेरी ओर देखो, क्या तुम्हें मैं डरपोक दिखाई देता हूँ।" पुंडरीक ने धीर कंठ से कहा और गंभीर निरपेक्ष, मोहरहित दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा।

चन्द्रसेना ने देखा, निर्मल उदार गंभीर स्नेह का समुद्र सन्मुख मूर्तिमान् हो उठा। घृणा और भय का एक बिन्दु समुद्र को गँदला नहीं कर सका, अनन्त और अक्षय उसके अन्तःकरण क ज्वाला क्रमशः शान्त होने लगी। थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा—"यह निश्चित है कि चन्द्रसेना का स्वर्ग पद्मा का स्वर्ग नहीं हो सकता। चन्द्रसेना मर चुकी है, अब तो पुंडरीक की बहिन पद्मा है जो मृत्युंजय बनकर जिएगी...।"

"जो मृत्युंजय है, उसका हलाहल कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम कुछ दिन यहीं ठहरो, गुरुदेव के पास वापस लौटकर शीघ्र ही आऊँगा, फिर हम लोग वृन्दावन चलेंगे।"

"जाओ, पर मैं कब तक तुम्हारे आने की आशा करूँ?"

"शरत्पूर्णिमा तक मैं अवश्य लौटूँगा और तभी तुम्हें ले चलूँगा।"

दोनों उठ खड़े हुए और एक दूसरे के सम्बन्ध में मन-ही-मन सोचते हुए पृथक् हो गए। पुंडरीक चला गया।

(३)

दिन उड़ चले। चन्द्रसेना अपने आप में केन्द्रीभूत होती चली गई। अब उसमें एक विचित्र परिवर्तन आ गया। निरपेक्ष मधुर मुस्कान प्रत्येक क्षण उसके मुख पर जैसे खिलती रहती, आँखों की श्यामता में जैसे गूढ़ संवेदनशीलता की ज्योति जलती रहती।

रात्रि का समय, सुसज्जित शयन-कक्ष जो विविध कलापूर्ण वस्तुओं से अलंकृत था। अनेक दीपाधारों में पंचमुखी बत्तियों से जल रहे थे। कस्तूरी और अगर पात्रों में सुलग रहे थे। मोहक सुगन्ध से कक्ष परिपूर्ण था। श्वेत वस्त्रा, निराभरणा चन्द्रसेना ने अभी अभी वीणा बजाकर रख दी थी और अब शय्या पर अधलेटी विचार-मग्न थी। एक दासी पर्यंक पर बैठी उसके कुसुमकोमल रक्तिम चरणों पर हाथ फेर रही थी, दूसरी चँवर डुला रही थी। चन्द्रसेना की कल्पनादृष्टि के सम्मुख गत जीवन के अनेक चित्र आ-जा रहे थे। वह सब ऐसे स्मरण आ रहा था, जैसे समुद्र में ज्वार उठ रहा हो।

दासी ने आकर समाचार दिया—"राजकुमार पधारे हैं।"

"उनसे कहो कि वापस लौट जाएँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर]

"राजकुमार मिले बिना नहीं जाना चाहते।" उसने पुनः लौटकर समाचार दिया।

"नीला, मैं कुछ अस्वस्थता का अनुभव कर रही हूँ। उन्हें समझा-बुझाकर लौटा दो, मैं उनसे न मिल सकूँगी।"

"आप अस्वस्थता का अनुभव कर रही हैं, यह कब से?" व्यग्र भाव से नीला ने पूछा।

"यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं...।"

परन्तु दासी लौटकर राजकुमार के पास पहुँची भी न थी कि इतने में चन्द्रसेना ने देखा कि राजकुमार कक्ष के अन्दर आ खड़े हुए हैं। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—"दासी के द्वारा इतने विलम्ब से उत्तर प्राप्त करना मुझे सह्य न था, अतएव मैं स्वयं चला आया। मैं समझता था कि तुम मुझे देखकर प्रसन्न होगी।"

चन्द्रसेना मुसकराई और उपेक्षापूर्वक उठकर तकिए के सहारे बैठ गई, सम्मुख रखे आसन की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—"आइए, बैठिए।"

राजकुमार ने देखा, क्या यही चन्द्रसेना है! पुष्पों की एक माला उसकी कलाई में लिपटी है और देह पर श्वेत साड़ी, श्वेत कंचुक और उसके मध्य में शुभ्र ज्योत्स्ना की दिव्य किरण-सी शोभित रमणीरत्न, किसी अंतःपुरिका की स्वामिनी-सी दिखाई पड़नेवाली यह स्त्री, स्वर्गभ्रष्ट कुसुम हो, तो भले ही हो, परन्तु नर्तकी नहीं है।

वह विस्मित-सा चन्द्रसेना की ओर कुछ पल देखता रहा, फिर शय्या के एक किनारे बैठता हुआ बोला—"मैंने तुम्हें केवल दो दिन से नहीं देखा, पर लगता है मानों युग बीत गए।"

"युग! संभव है, क्योंकि मुझे भी यही लगता है।" चन्द्रसेना ने कहा।

"किन्तु इन दिनों तुम मुझसे कटी-कटी रहती हो।"

"यह भ्रम है।"

"शायद! पर क्या तुम सोने जा रही थीं, तब तो मैंने आकर तुम्हारे विश्राम में बाधा ही डाली है। अब शायद तुम मुझे कुछ न सुनाओगी, क्यों?"

"सुनाती तो, किन्तु इस समय मेरा मन प्रसन्न नहीं है।" चन्द्रसेना ने उत्तर दिया। नीला और चँवर डुलानेवाली दासियाँ उस समय कक्ष के बाहर जा रही थीं कि चन्द्रसेना का संकेत पाकर रुक गईं।

राजकुमार ने कहा—"प्यास लगी है, कुछ पिलाओ, चन्द्रा।"

चन्द्रा ने हँसकर दासी की ओर देखा। वह एक थाली में कुछ खाद्य-पदार्थ ले आई और चन्द्रसेना ने उठकर झारी से शीतल जल ढालकर सामने चौकी पर रख दिया। राजकुमार ने देखकर कहा—"यह क्या, जल! इससे क्या प्यास बुझेगी?"

"प्यास बुझाने के लिए तो जल ही चाहिए, राजकुमार! कुछ खाकर जल पी लीजिए, इससे हृदय शीतल होगा, जलेगा नहीं।"

"यह कब से?" उसने कहा और हँस पड़ा। इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने पर उसे आज मदिरा का स्वर्णपात्र कहीं दृष्टिगोचर न हुआ। चन्द्रसेना का कक्ष और उसमें मदिरा का अभाव? उसने कहा—"कपिशायिनी द्राक्षा दो, चन्द्रसेना।"

"चन्द्रसेना के पास तो अब केवल जल ही है तृषा-शान्ति के लिए। पीना चाहें तो सम्मुख उपस्थित है, न चाहें तो असमर्थता है।"

"तुम्हारी बातों में आजकल पूर्ववत् शान्ति और आनन्द नहीं दिखाई देता। उद्विग्न-सी दीख रही हो! कपिशायिनी का अभाव और तुम्हारे यहाँ...?"

"कुमार, प्रसन्नता-अप्रसन्नता समय पर अवलम्बित है। नर्तकियों की अप्रसन्नता पल में आती है और चली जाती है। और रही कपिशायिनी की बात, सो उसके सब पात्र मैंने फिंकवा दिए हैं समुद्र के अतल तल में। उसके उन्माद से किसी का नाश न हो सके, इसलिए...!"

"यह तो अबूझ पहेली है, चन्द्रसेना, मैं समझ नहीं सका कि यह तुम क्या कह रही हो?"

"जो सो रहा हो, उसे जगाया जा सकता है, परन्तु जो जगकर सोने का बहाना कर रहा हो, उसे नहीं जगाया जा सकता! तुम चले प्यार जताने तो तुम्हें मिली इसके लिए एक नर्तकी, जिसके लिए नृत्य-गान ही सब कुछ है और धन सर्वस्व है। क्योंकि उसके लिए इस संसार में जीने का अवलम्बन यही है। न घर, न द्वार, न ममता, न परिवार के प्रति उत्तरदायित्व। तब उसके लिए संसार में खड़े रहने के लिए और बचता ही क्या है। परन्तु जो उसके लिए अवलम्बन है, वह तुम्हारे लिए सहारे का काम कैसे दे सकता है? लँगड़े की वैसाखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ व्यक्ति के किस काम आ सकती है और उसे वैसाखी की आवश्यकता भी क्या ? लेकिन लगता है कि इतना बड़ा सत्य तुम्हारे किसी हितैषी ने तुम्हें जताया नहीं.....।"

राजकुमार ने आश्चर्यपूर्वक यह सुना। चन्द्रसेना की असाधारण गंभीरता उसे प्रभावित कर रही थी। उसकी अद्भुत विरागमय वेष-भूषा में उसे अतीव आकर्षण का अनुभव हो रहा था। उसने कहा—"धन जितना चाहो, उतना दे सकता हूँ। मेरा सर्वस्व ही तुम्हें जब अर्पित है, तब और बातों के जानने की आवश्यकता ही क्या...।"

"तुम्हारे सर्वस्व से मेरी कमी पूरी होगी ? सचमुच तुम कुछ नहीं जानते; मेरा जो प्राप्य है उससे अधिक मैं लूँगी क्यों ?"

"क्यों ? क्या तुम मेरे साथ विवाह नहीं करोगी ? जीने का अवलम्बन, माया-मोह, उत्तरदायित्व, सब तो मैं दे रहा हूँ, फिर अस्वीकृति क्यों ?"

"जीवन का सारा माया-मोह, उत्तरदायित्व-प्यार, जीवन का सम्मान छोड़कर नर्तकी बनी मैं धन के लिए। अब इसे भी छोड़ मैं फिर तुम्हारी बनने चलूँ तो न यहाँ की रह जाऊँ न वहाँ की।" चन्द्रसेना हँस पड़ी।

राजकुमार चौंका। अब तक वह सब बातें सहज भाव से ही कर रहा था पर चन्द्रसेना का मनोभाव अब उसे साधारण नहीं प्रतीत हुआ। उसने अनखाकर कहा—"तो क्या तुम्हें यह जीवन इतना प्यारा है कि इसे तुम छोड़ नहीं सकतीं ?"

चन्द्रसेना मुस्कराई, मानो मरुभूमि में कुमुदिनी खिल पड़ी। बोली—"जो छूट गया है, उसके लिए नहीं। जो पाना है उसके लिए छोड़ सकती हूँ, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक दिन अतीत का मान-मोह-जीवन का सब मान-अपमान पीकर नर्त्तकी बन गई थी।"

"क्या अर्थ है इस बात का ?" शंकित होकर राजकुमार ने पूछा। उसके मुख पर विविध भावों की छायाएँ एक साथ नृत्य कर रही थीं।

"अर्थ...! आम जब तक वृन्त में लगा रहता है, तब तक उसको चाहे जिसे ढंग से रख सकते हो, किन्तु जब वह वृन्त से गिरकर चुटीला होगया, तब उसे सुरक्षित रखने का उपाय ही क्या शेष बचता है। पतिता के लिए पतितपावन वृन्दावनविहारी के सिवा.....!"

"चन्द्रसेना!" राजकुमार चिल्ला उठा। उसके हाथ का ग्रास छूटकर गिर पड़ा। अतिशय व्याकुल भाव से उसने कहा—"यह क्या कहने जा रही हो; कुछ सोचा है तुमने न जीवन का आनन्द ! मनुष्यों की दानवता का नृत्य देख चुकी और स्वयं भी नाचते-नाचते थक चुकी हो, मायापाश को तोड़कर बाहर निकल, उससे भी बड़े में जकड़ जाने का साहस मुझमें नहीं.....।"

"तो ...तो...क्या तुम...!" राजकुमार ने अवरुद्ध कंठ से पूछा। आवेश से उनका शरीर काँप रहा था। अत्यधिक उत्तेजित हो उठे थे। दोनों दासियाँ हतबुद्धि होकर उनके वार्तालाप को सुन रही हैं, इस ओर किसी का ध्यान न था।

"उस भूमि के अतिरिक्त मुझे कौन अपनाएगा और कौन है ऐसा, जो लोकनिंदिता को अपनाकर भी स्वयं अनिंदित ही बना रहे ?"

राजकुमार पल भर स्तब्ध हो मौन हो रहे। पार्थक्य और चन्द्रसेना में कुछ अन्तर है, यह वे अब तक नहीं समझ सके थे। आज वे निस्संशय होगए। आज उन्होंने निश्चित रूप से जान लिया कि चन्द्रसेना उनकी नहीं हो सकती, पतिता के उद्धार के लिए हाथ बढ़ाकर पतित-पावन बने रहने की क्षमता उनमें नहीं है। परन्तु प्रेम... हृदय तो तर्को से नहीं जीता जा सकता। कुछ रुककर बोले—"और मेरा क्या होगा, मेरी आराधना, मेरा प्रेम, मेरी आशा....."

"पागल हुए हो ! मायाविनी के मोहपाश से निकलने इतने सहज में पा जाओगे, इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दो। मेरी एक बात स्मरण रखना, तुम्हारे ही हित की है यह कि यदि सुख चाहते हो तो अपनी गृहलक्ष्मी को प्रतिष्ठा हृदय-सिंहासन पर करना। नर्तकियों से किसी का अन्तःपुर नहीं चमकता, चाहे वह राजा का हो या प्रजा का। और यद्यपि मुझसे तुम्हारा कोई अहित नहीं हुआ किन्तु यह कोई चरम आदर्श नहीं, आगे कभी विवाह का प्रस्ताव नर्तकियों से न करना।

"चुप रहो चन्द्रसेना ! कटे पर अब नमक न छिड़को। अच्छा होता यदि मैं तुम्हारी ओर आकृष्ट न होता। आह, तुम इतनी अच्छी सुन्दरी न होतीं और तुमने मेरे हृदय को आश्रय देने के पूर्व ही टुकरा दिया होतीं ! अब मैं जिऊँगा किस प्रकार ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विष के बिना अमृतपान करके जैसे मनुष्य जीता है, उसी प्रकार जिओगे। राजकुमारी आर्द्रा तुम्हारी वाग्दत्ता पत्नी है। रूप में, गुण में भारत में अद्वितीय...।"

"तुम नहीं जानतीं, आर्द्रा चन्द्रसेना नहीं है और मैं चन्द्रसेना को चाहता हूँ। विमल चन्द्रिका-सी सुन्दरी आर्द्रा की आवश्यकता मुझे नहीं। चन्द्रमा की शीतल किरणें संसार के सब चर-अचर को सुखप्रद होती हैं किन्तु कमल को रंचमात्र भी सुख पहुँचाने में असमर्थ रहती हैं, यह क्यों भूल रही हो ?"

"तुम केवल अपनी ही बात सोचते हो। अपने राज्य, प्रजा के हिताहित और कुलगौरव के सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचते। मेरे हित पर भी तुम्हारी दृष्टि नहीं है। तुम्हारे साथ विवाह करने पर प्रजा मुझे कभी भी क्षमा नहीं करेगी और उसके क्रोध तथा घृणा की पात्री बनकर, युवराज्ञीपद प्राप्त करने पर भी मुझे क्या लाभ होगा ?"

"चन्द्रसेना, पता नहीं तुम पागल हो गई हो या मैं ही...।"

"जीवन को और नरक बनाने की इच्छा नहीं है, राजकुमार, यह पागलपन हो या कुछ हो। परन्तु जीते जी जितने शीघ्र प्रायश्चित्त कर डालूँ...।"

"चुप नहीं रह सकता, इसी से कहता हूँ, चन्द्रसेना ! तुम भी केवल अपनी ही बात सोचती हो। तुम्हारा जीवन बनेगा, मेरा मटियामेट हो जाएगा। नाश हो उन साधुओं का, जिन्होंने तुम्हारा मस्तिष्क...।"

"कभी नहीं। जिस दिन तुम जीवन का सच्चा रूप पहचान लोगे, उस दिन उन साधुओं को भी धन्यवाद दोगे और मुझे भी।"

"नहीं, नहीं। जिन्होंने मेरे बसे-बसाए-स्वर्ग में आग लगाई है, उन्हें मैं कभी धन्यवाद न दूँगा और इस अपराध पर क्षमा भी न करूँगा।"

चन्द्रा हँसी, शान्त निर्विकार हँसी। उसने कहा—"अच्छी बात है। चन्द्रा और उसके भाई पुंडरीक को यदि तुम साथ-साथ ही स्मरण रख सको तो उसमें तुम्हारा कल्याण ही होगा।"

"तुम्हारा भाई पुंडरीक...वह साधु...!" राजकुमार इतने वेग से चौंककर खड़े होगए, मानों पैर के नीचे काला साँप आ गया हो। प्रयत्नपूर्वक उन्होंने आती हुई मूर्च्छा को रोका।

"नरेन्द्र ! मैं पतन के अति गहरे गर्त में गिर चुकी हूँ। पुंडरीक कहाँ और कहाँ नर्तकी...कोई भी समानता नहीं। आज जब मैं पुनः अपने वर्तमान को धोकर, अतीत की पृष्ठभूमि पर भविष्य का निर्माण करने जा रही हूँ, तब क्या इस बार तुम इसमें सहायक न बन बाधक बनोगे ? ठीक उस प्रकार, जिस प्रकार मेरा मन ही एक समय मेरे पथ का विघ्न बन गया था और मैं इस...।"

"अतीत की पृष्ठभूमि पर भविष्य का निर्माण...! चन्द्रसेना, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; तुम्हें प्राणों से बढ़कर चाहता हूँ; तो क्या आज तुम्हारे उत्थान के स्वर्ग में मेरा प्रेम बाधक होगा। नहीं...मैं इसमें बाधक न बनूँगा। जाओ, सपने की प्रकाश-किरण जाओ, समझूँगा कि वह भ्रम था, जिसे मैं सच मानता था...।" असह्य वेदना की तड़प से उनका हृदय फटा पड़ रहा था, जैसे वे स्वप्न की विभीषिका से अभिभूत हो उठे हों। न जाने कैसी संगीत-ध्वनि चन्द्रसेना की हृत्तंत्री से निकलकर उनके कर्ण-कुहरों में प्रविष्ट हो रही है।

चन्द्रसेना अपनी उसी भुवन-मोहिनी मुसकराहट के साथ बोली—"मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ अनुभूति, चैतन्य शक्ति की अमर ज्योति की उपयोगिता, निरुपयोगी बनाकर बुझा दी जाने के लिए नहीं है, नरेन्द्र ! और इस सत्य को जिस दिन समझोगे, उस दिन चन्द्रसेना तुम्हें पीड़ा न देगी। सपने की प्रकाश किरण के साथ सच्ची किरण भी उद्भूत होगी। समय का प्रवाह चन्द्रसेना को पीछे ढकेल देगा, आर्द्रा सामने आएगी...।"

"बस ! चन्द्रसेना यदि तुम्हारे भविष्य-निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि मैं अपना प्रेम लेकर तुम्हारे पास से सदा के लिए चला जाऊँ, अपने सपनों को मिटा डालूँ और अपने हृदय के प्रेम की आकांक्षा के दीप को बुझा दूँ, प्रणय के पौधे को स्वयं नष्ट कर दूँ तो यों ही सही। मैं शपथ लेता हूँ कि मैं अब तुम्हारे जीवन में कभी न आऊँगा। अपने प्रेम को, अपनी आकांक्षा को जीवन की समस्त रंगीनियों और आशाओं के सहित धरती के नीचे गाड़ दूँगा—कहीं दूर, मनुष्य की आँखों से दूर, जनता और शासन-तंत्र के अधिकारक्षेत्र से बहुत दूर, पाप-पुण्य की सीमाओं के परे ऐसे स्थान पर कि वह फिर तुम्हें कभी न दीखे, किसी की दृष्टि उस पर न पड़े।"

राजकुमार की आखों में आँसू भर आए। जीवन में प्रथम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार वह इतना आन्दोलित हो उठा। अप्रत्याशित दिशा से आया तीर सीधे उसके मर्मस्थान में प्रवेश कर गया। उसने अपनी बात पूरी नहीं की परन्तु उसकी यह चुप जैसे जीवन की भीषण विडम्बना के विरुद्ध एक विज्ञप्ति है, चन्द्रसेना इसे समझ गई, किन्तु वह भी मौन हो रही। उसकी तृषित आत्मा अब जीवन के अमृत-सरोवर की ओर अबाधगति से उड़कर पहुँचना और जलपान करके फिर शान्ति प्राप्त करना चाहती है, राजकुमार भी यह समझ गया। उसने कुछ रुककर भग्न स्वर में कहा—"बस, तो अब विदा...।" चन्द्रसेना ने उसे नहीं रोका। चलते समय उसके पैर लड़खड़ा रहे थे पर वह चला गया।

दूसरे दिन विस्मयावृत नागरिकों ने देखा कि नर्तकी चन्द्रसेना का भवन शून्य है।

(५)

राज्य में सर्वत्र केवल एक ही चर्चा व्याप्त थी और हलचल का एक ही विषय था कि राजनर्तकी चन्द्रसेना अन्तर्धान होगई और युवराज मरणासन्न हैं। वह रूप-शिखा पर पतंग बन जल मरे हैं और अब उनके बचने की कोई आशा नहीं, सुयोग्य चिकित्सकों का यह स्पष्ट मत सुन जनता बहुत ही उद्विग्न हो उठी।

राजकन्या आर्द्रा से भी यह संवाद छिपा न रहा। उसने अपनी सखी यमुना से पूछा—"यह चन्द्रसेना-चन्द्रसेना क्या सुनाई देता है? कौन थी वह?"

"वलहरा की प्रसिद्ध राजनर्तकी का नाम नहीं सुना आपने? लोग कहते हैं कि वह कोई स्वर्गभ्रष्ट अप्सरा थी, जो अवधि पूरी होते ही अन्तर्धान होगई...।"

"तो क्या युवराज उसे चाहते थे?" आर्द्रा केवल इतना कह सकी, उसके मुख से और शब्द न निकले, कंठ भर आया।

"उसे कौन नहीं चाहता था! सुना है कि राजकुमार उसको राष्ट्रकूटों की राजलक्ष्मी के पद पर अभिषिक्त करना चाहते थे परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया...।"

"अब क्या होगा?" आर्द्रा ने व्याकुल होकर पूछा।

"कौन जाने? लोग कहते हैं कि वे बचेंगे नहीं, पुरुरवा-उर्वशी का-सा प्रेम था उनमें।"

"हाँ, तभी वह उर्वशी अन्तर्धान होकर उन्हें मरने के लिए छोड़ गई है।" आर्द्रा ने कहा और अन्यमनस्क होकर वातायन के बाहर देखने लगी।

यमुना उसके दुःख को समझ रही थी, परन्तु आश्वासन देने का कोई उपाय उसे सूझता न था। अकस्मात् उसके मस्तिष्क में एक विचार विद्युत्-रेखा-सा चमक गया। वह बोली—"यदि मेरी एक बात स्वीकार की जाए तो कहूँ।"

"कहो, क्या कहती हो?"

"हमारे यहाँ के प्रसिद्ध वैद्यराज मुद्गल यदि युवराज की चिकित्सा करें, तो संभव है कि इन्हें ही यश मिल जाए। चिकित्सा-कार्य में इनका लोहा स्वयं धन्वन्तरि को भी मानना पड़ा, ऐसे हैं...।"

"सच कहती है यमुना!"

"सुना तो यहाँ तक जाता है कि यदि कुशल संदेश-वाहक हो तो केवल लक्षण सुनकर हमारे वैद्यराज रोग का निदान कर लेते हैं और उनकी दी औषधि अचूक होती है।"

"सचमुच, तो जाओ यमुना! देर न करो, वैद्यराज की सेवा में मेरी यह रत्नमाला भेंट करके प्रार्थना करो कि वे राजकुमार को बचाने के लिए प्राणपण से उद्योग करें। रोग का वृत्तान्त तो उनसे छिपा हुआ नहीं है और जैसा तुम कहती हो, यदि वैसा ही हो, तो हम उन्हें इतना धन देंगे, जितना उन्होंने कभी देखा भी न होगा। यश की बात ही नहीं, वह मिलेगा ही।"

"वे धन-लोभी नहीं हैं, सखी! आपका संकेत मात्र ही पर्याप्त होगा। परन्तु वे आडम्बरवान् राजवैद्य नहीं हैं। अतः यदि उनका यथोचित आदर-मान न हुआ तो निश्चय ही यह ठीक न होगा, दूसरा दुर्वासा ही समझो।"

आर्द्रा ने अधैर्यपूर्वक उत्तर दिया—"अपमान कौन करेगा? जाओ, उनसे कहो कि मैं स्वयं उनके साथ चलना चाहती हूँ। यदि उन्हें सफलता प्राप्त होगी तो जितना मान मेरा होगा, जो सुख मुझे मिलेगा, वह सब उन्हीं की कृपा होगी और कुछ भी अदेय न होगा।"

वैद्य मुद्गल को जब यह संदेश प्राप्त हुआ, तब उनके संतोष और प्रसन्नता का अन्त न रहा। वे जैसे आमंत्रण पाने का मार्ग देख रहे थे और औषधियाँ एवं दूसरी वस्तुएँ बाँधे तैयार थे। इतने प्रख्यात वैद्य को दोनों राज्य भुला दें, यह उन्हें असह्य था। राजकन्या का संदेश पाकर वे बोले—"यमुना, तू जाकर राजकन्या से कह दे कि यदि नरेन्द्र न अच्छे हुए तो मैं अपने को वैद्य कहाना छोड़ दूँगा। मेरे पास सब औषधियाँ हैं, केवल एक वस्तु नहीं है, उसे

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने के लिए अनेक चर मैं भेज चुका हूँ। यदि वह मुझे प्राप्त होगई तो युवराज का बाल भी बाँका न होगा।"

यमुना प्रफुल्लित होकर वापस लौटी। महारानी के पास संवाद पहुँचा। रानी ने राजा से कहा। राजा ने कुछ कहने का अवसर न देख, स्वयं ही युवराज नरेन्द्र को देख आने के लिए तैयारी कर दी।

* * *

संध्या का अंधकार क्रमशः घनीभूत होता आ रहा है। राजकुमारी आर्द्रा को आए तीन दिवस व्यतीत हो चुके हैं परन्तु युवराज नरेन्द्र की दशा पूर्ववत् है। वह पूर्णतः चेतनाहीन है। उसे देखकर आर्द्रा और अन्य लोगों की आशा टूट गई परन्तु मुद्गल में न जाने कितना साहस था, जो उसकी सांसों को गिनता बैठा अपने कर्मचारी का पथ निहार रहा था। उसकी निश्चित धारणा थी कि नरेन्द्र बच जाएगा, अतएव अपने कौशल-प्रदर्शन का ऐसा अनुकूल अवसर पाकर वह अत्यन्त प्रसन्न था।

इधर आर्द्रा को अपने भविष्य की चिन्ता थी। उसे प्रतीत हो रहा था कि जैसे मृत्यु की काली घटा चतुर्दिक् छाई हुई है और उसकी छाया क्रमशः बढ़ती ही आ रही है। निस्तार का उपाय अब शेष नहीं रहा। अब तो केवल सच्ची आर्यबाला की अग्नि-परीक्षा ही होनी है, जिसमें तपकर आर्द्रा अमर शलाका-सी, दिव्य नयन-सी, विश्व के सब प्राणियों के मानसलोक में चमकती रहेगी। उसने राज-उपवन की शोभा देखी, जिसे म्लान बादलों-सी कोई वस्तु आच्छन्न किए हुए थी। आर्द्रा ने सोचा, यहाँ एकान्त में बैठकर अपने भविष्य की झलक देख लूँ।

वह एक सघन निकुंज के मध्य में संगमरमर की जड़ित पट्टिका पर बैठ गई और किन्हीं गहन विचारों में खो गई। जिस समय उसका ध्यान टूटा, उसने देखा यमुना पास ही खड़ी है। एक ओर आलोक लिए दासी खड़ी है और यमुना कुछ घबराए परन्तु सान्त्वनामय शब्दों में कह रही है—

"तुम्हें राजमहल में सब खोज रहे हैं। विशालिका ने जब यह बतलाया कि तुम इधर आई हो और किसी को पास आने से मना किया है, तब पता चला। कम-से-कम तुम्हें यहाँ समय-असमय का ध्यान तो रखना ही चाहिए...।"

आर्द्रा ने मुँह उठाकर उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा, जैसे यमुना जो कह रही थी, उसे उसने सुना ही नहीं। बोली—"यमुना, वैद्यराज मुद्गल क्या कर रहे हैं? मैं उनसे मिलना चाहती हूँ।"

यमुना ने देखा आर्द्रा के नेत्रों से आँसू की अनेक धाराएँ उसके आरक्त सुन्दर कपोलों को भिगोते हुए बह रही हैं। बोली—"युवराज की माता-महारानी स्वयं यहाँ आई हैं और वे तुम्हें देखना चाहती हैं। सावधान हो जाओ। चिन्ता मत करो। मुद्गल जो कहते हैं, वही होगा, युवराज निश्चय आरोग्य लाभ करेंगे।"

आर्द्रा ने चौंककर पूछा—"महारानी यहाँ आई हैं...!"

यमुना उत्तर दे सके, इसके पूर्व ही नरेन्द्र की माता ने कुंज में प्रवेश किया। अनेक पदशब्दों से वह स्थान मुखरित हो उठा। आर्द्रा चकित होकर राष्ट्रकूटों की राजलक्ष्मी की ओर देखने लगी। महारानी ने भी देखा, ऐसा सौन्दर्य जो संभवतः राष्ट्रकूटों के राजमहलों ने कभी नहीं देखा। ऐसी करुण स्निग्ध पवित्र भावमुद्रा तो युगों से कदाचित् अदृष्टिगोचर ही है परन्तु यह सौन्दर्य और यह दुर्भाग्य? रानी ने एक दीर्घ-निःश्वास लिया और उसे गले लगाने के लिए आगे बढ़ीं। आर्द्रा ने ज्यों ही झुककर प्रणाम करना चाहा, रानी ने उसे आलिंगन-पाश में बाँध लिया और बोली—"अहा! न जाने कब मेरा लाल आँखें खोलेगा, न जाने कब दोनों को एक साथ देखकर नैन मेरे सिराएँगे! भगवान्.....!"

राजकुमारी ने सुना, यमुना ने सुना और पीछे खड़ी सब दासियों ने भी सुना। सभी के हृदय सहसा धड़कने लगे और साथ ही सब दृष्टियाँ राजकुमारी की ओर उठ गईं। जैसे वही युवराज की भाग्य-निर्मात्री है, जैसे उसी के संकेत पर युवराज स्वस्थ होकर उठ खड़े होंगे।

आर्द्रा को लगा, जैसे उसके पाँवों के नीचे से धरती खिसक रही है। राष्ट्रकूटों की राजलक्ष्मी का वैभव आज आर्द्रा पर अपनी दृष्टि केन्द्रित किए है परन्तु वह नहीं जानता कि युवराज का जीवन आर्द्रा पर नहीं चन्दसेना पर अवलम्बित है। आर्द्रा क्या करे? परन्तु कोई भी यह बात समझना नहीं चाहता। आर्द्रा को ऐसा प्रतीत हुआ कि निराशा और असफलता का आवर्त उसे निगल जाने के लिए झपटा चला आ रहा है। उसकी आँखें मुँद गईं और वह मूर्च्छित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगई। रानी चीख उठीं, यमुना घबरा गई और आर्द्रा को उठाकर राजमहल में ले जाया गया।

(६)

उसी रात में ब्राह्मवेला का मन्द आलोक दशों दिशाओं में छिटकने लगा था। राजकन्या के भी अस्वस्थ होने का समाचार पाकर सब प्रजा दुःखी हो उठी थी। रात भर बड़े-बड़े नागरिकों का आवा-गमन होता रहा। युवराज और भावी रानी के कुशल-संवाद को जानने के लिए व्यग्र भाव से एक भीड़ राजमहल के द्वार पर खड़ी प्रतीक्षा करती रही।

इस अवसर पर यदि कोई शान्त था तो मुद्गल। मंत्रणा-गृह में वह निश्चिन्त भाव से उच्च कुलीन नागरिकों के समक्ष बैठा दोनों राजाओं को समझा रहा था—"युवराज का रोग क्या है? यह तो कुछ नहीं है, दवा की एक ही मात्रा उनको आरोग्य करने के लिए पर्याप्त होगी। जो कुछ विलम्ब है, वह उस ओषधि के तैयार होने में ही है।"

"परन्तु आपकी दवा बनकर तैयार कब होगी?" एक संभ्रान्त नागरिक ने पूछा।

"उधर वह ओषधि आई कि इधर उसे तैयार ही समझें?"

"वह ओषधि क्या यहाँ नहीं प्राप्त हो सकती?"

"यहाँ प्राप्त हो सकती होती, तो क्या मुझे किसी पागल कुत्ते ने काटा था, महाराज, जो मैं उसे लाने के लिए कर्मचारी को हिमालय भेजता! आप लोगों को कुछ यह भी पता है कि वह कितनी अमूल्य और दुर्लभ वस्तु है! एक सहस्र वर्ष प्राचीन प्रस्तरखंड में जब स्वाति और आर्द्रा नक्षत्र में कुछ जलविन्दु प्रविष्ट हो जाते हैं और वे वहाँ जमकर और एक हजार वर्ष पड़े रहते हैं, तब उस प्रस्तरखंड में जीवन पड़ जाता है और उसकी छाती में सुख-दुःख की अनुभूतियाँ मानव हृदय के समान धड़कने लगती हैं। तब उसकी भावनाओं का वेग प्रवाहित होकर प्रस्तर के अन्तरंग में रेखांकित होता जाता है। वही पत्थर का हृदय मुझे चाहिए, समझे!"

राष्ट्रकूट अधीश्वर ने विस्मित होकर कहा—"पत्थर का हृदय! यह तो कभी नहीं सुना गया।"

"नहीं सुना, तो इससे क्या! संसार में लाखों ऐसी वस्तुएँ हैं, जिन्हें आपने नहीं देखा, अनेक ऐसे ग्रन्थ हैं जिन्हें आपने नहीं पढ़ा; अनेक विद्याएँ हैं जिन्हें आप नहीं जानते परन्तु इससे क्या वे हैं ही नहीं यह सिद्ध होता है। हाँ यह अवश्य है कि जैसे सब सीपों में मोती नहीं होते वैसे ही सब दो सहस्र पुराने पत्थरों के हृदय भी नहीं होते। परन्तु होते अवश्य हैं।"

महामंत्री ने प्रश्न किया—"तो वैद्यराज, क्या आपको विश्वास है कि पत्थर का हृदय आपको मिल जाएगा!"

"इसमें संदेह क्यों हो! पचीस वर्ष पूर्व मैंने एक ऐसा प्रस्तरखंड देखा था, जिसमें हृदय का निर्माण अपने अन्तिम विन्दु पर पहुँचा ही चाहता था। उसी को ले आने के लिए चर गए हैं। आप चिन्तित न हों। उसे आने में विलम्ब होगा ही, परन्तु ज्यों ही मेरे हाथ में आया नहीं, युवराज को ऐसे उठते देखिए जैसे कभी अस्वस्थ हों ही नहीं।"

उधर आर्द्रा मंद आलोकमय कक्ष में शिथिल भाव से लेटी थी। कुछ समय पूर्व महारानी तथा अन्य महिलाएँ उसे शान्ति और एकान्त देने के विचार से मुद्गल के आदेशानुसार चली जा चुकी थीं। दो-तीन दासियों के अतिरिक्त कक्ष में कोई न था। यमुना वहाँ उतावली के साथ आई और दासियों को कक्ष के बहिर्गत हो जाने का संकेत करते हुए बोली—"राजकुमारी, एक संवाद है, सुनोगी।"

उसके कंठस्वर में उल्लास था और वाणी में आनन्द फूटा पड़ता था। आर्द्रा ने उत्सुक होकर पूछा—

"क्या है वह संवाद!"

"मुझे आशा है कि तुम उसे सुनकर प्रसन्न होगी।"

"कहो भी!"

"गुप्त बात है, परन्तु पहले यह बताओ कि तुम्हारा शरीर कैसा है, दुर्बलता तो नहीं है? चल सकोगी!"

"हाँ मुझे कोई रोग तो है नहीं, फिर यह प्रश्न क्यों?"

"हाँ, यह तो है। युवराज की ओषधि शीघ्र बन सकने का उपाय हाथ आ गया है। मुद्गल जो चाहते हैं, उसे लेकर चन्द्रसेना स्वयं वृन्दावन से आई है।"

"चन्द्रसेना, कहाँ है वह?"

"अब वह संसार-त्यागिनी संन्यासिनी है। उसे मैं उसी कुंज में बैठा आई हूँ, जहाँ तुम सन्ध्या समय बैठी हुई थीं। चलो, यहाँ गुप्त द्वार है, उससे निकल चलें। उसके यहाँ आने का संवाद किसी को ज्ञात न होगा, यह वचन देकर बड़ी कठिनता से उसे मैं यहाँ तुमसे मिलने के लिए आने के हेतु सम्मत कर पाई हूँ।"

आर्द्रा ने अपने चरणों के आभूषण निकाल डाले, जिससे चलते समय ध्वनि न हो। उसके अनन्तर दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुप्तद्वार से निकलकर उपवन में जा पहुँचीं। यमुना मार्ग पहले ही देख चुकी थी, इससे उस कुंज में पहुँचने में विलम्ब न हुआ। यहाँ पहुँचकर कुंज में छाए अंधकार के कारण जब आर्द्रा चन्द्रसेना को न देख सकी, तो उसने पूछा— "कहाँ है वह ?"

"मैं यहाँ हूँ।" कहकर एक मानवछाया ने बाहु बढ़ाकर आर्द्रा का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा।

"राजकुमारी, इधर आओ, यमुना आगई तुम !"

"हाँ देवि !" यमुना ने उत्तर दिया. उसका कंठस्वर विनय से भीगा था। आर्द्रा को लगा, जैसे सचमुच कोई वंदनीय देवी ही उसके सम्मुख उपस्थित है। जब यमुना ने हाथ का प्रदीप जलाकर समीप ही रख दिया तब उसने देखा कौशेयवसना मुक्तवेशी सौन्दर्यमूर्ति रमणी उसको कंठ से लगा रही है। किंचित् मुस्कराहट के साथ वह बोली— "राजकुमारी, आकांक्षा थी तुमसे मिलने की, तुम्हें देखने की। आज यह मनोकामना पूरी भी हुई, पर परिस्थिति ? परन्तु मैं दुःखी नहीं हूँ, शाश्वत शान्ति और आनन्द की उपलब्धि कर चुकने के अनन्तर मैं तुम्हारे पास आई हूँ, यह तो सुख का विषय है ! यह लो, यह पत्थर का हृदय और वैद्यराज मुद्गल की विद्या पर विश्वास करो।"

राजकन्या ने मनोवेगों को रोकते हुए बरबस अवरुद्ध कंठ से कहा—"युवराज के रोग की ओषधि तुम्हीं हो, चलो स्वयं...!"

चन्द्रसेना हँसी, निर्मल कोमल स्निग्ध हँसी। बोली—"जो बात तुम कह रही हो, मैंने भी सुनी है। परन्तु वह तो रोग था जो औषध मैं दे रही हूँ यह आरोग्य है। उसने युवराज को मृत्यु का संदेश दिया, यह ओषधि जीवन की पूरी मात्रा देगी। यह क्या तुम रो रही हो, ये आँसू.....।"

आर्द्रा रो पड़ी, उसके आँसुओं का बाँध टूट गया। चन्द्रसेना पल भर निर्निमेष नयनों से उसके मुख की ओर देखती रही। फिर बोली—"बस ! अब अंत है तुम्हारे दुःखों का ! इन आँसुओं में तुम्हारा सारा दुर्भाग्य बह कर निकल जाएगा। मैं आशीर्वाद देती हूँ कि दुःख के ये अन्तिम आँसू हों।" कहते-कहते चन्द्रसेना के नेत्र भी सजल हो उठे। वह उठ खड़ी हुई।

"पर बहिन, तुम रुककर उनको स्वास्थ्य लाभ करते क्या देखोगी नहीं ?"

"नहीं, आज मैं नहीं रुकूँगी परन्तु मैं फिर आऊँगी; जब इस राज्य के नूतन उत्तराधिकारी का जन्म होगा।"

"परन्तु देवि, तब आपको अपना यह वचन स्मरण रहेगा ?" यमुना हँसी।

"कुछ भी स्मरण न रहे, तब भी आर्द्रा स्मरण रहेगी, इसे तो न भूलूँगी।" चन्द्रसेना भी मुस्कराई।

प्रभात का मंद आलोक क्रमशः तीव्र होता जा रहा था। उस प्रकाश में चन्द्रसेना आर्द्रा को उस काल की अधिष्ठात्री प्रतीत हुई। निर्मल पवित्रता उसके अंगों में भस्म रूप में लिपटी हुई थी, मूर्तिमान् वैराग्य ही मानों उसके वस्त्रों में विलीन होगया था, आत्मशक्ति के विस्मृत विद्युत् कण चिरकालीन निद्रा त्याग जैसे उठ खड़े हुए थे, मंगलमय आशीर्वाद के साथ नव निर्माण के लिए। आर्द्रा एकटक उसकी ओर देखने लगी।

"अब मैं जाती हूँ, तुम राष्ट्रकूटों की सौभाग्यलक्ष्मी बन चिरकाल तक उनके हृदयों पर शासन करो।"

कहते हुए चन्द्रसेना ने असीम स्नेहपूर्वक आर्द्रा का ललाट चूम लिया और घूमी। यमुना बोली—

"ठहरिए; मैं भी साथ चलती हूँ। आपको राज-उद्यान से बहिर्गत.....।"

"आवश्यकता नहीं। राजकन्या को उनके कक्ष में पहुँचा दो। मैं चली जाऊँगी। यहाँ का कोई पथ मेरा अपरिचित नहीं। और आज तो सभी, बिना बाधा भीतर से बाहर जा सकते हैं और बाहर से भीतर भी आ सकते हैं !"

"तो क्या...!" यमुना ने जाने की अनुमति चाही।

"देखती ही हो कि प्रकाश अब बढ़ चला है। राजकुमारी को अपने कक्ष में पहुँच जाना चाहिए। तुम लोग जाओ, मैं भी चली जाऊँगी।"

आर्द्रा ने एक बार चन्द्रसेना की ओर देखा और दूसरी बार प्रकाश की ओर। आँसू की दो उज्ज्वल बूँदें सहसा निकलकर उसी पत्थर पर गिर पड़ीं, जो उसके पैरों के नीचे था। उसके बाद वे दोनों विनयपूर्वक चन्द्रसेना से विदा लेकर चल दीं। चन्द्रसेना ने देखा उसे जाते हुए। एक विचित्र हर्ष का स्रोत मानों खुल पड़ा और चन्द्रसेना के अंतःकरण में अपरिमित उल्लास के मेघ घनीभूत हो चले। जीवन की सार्थकता, आशा का उज्ज्वल आलोक, पुण्य की गरिमा सब कुछ इसी धरती पर है, इस बात का अनुभव उसने अब किया। इसी अवस्था में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके नेत्रों में जो जलकण पलकों में अटक रहे थे, नीचे गिर पड़े। ठीक उसी स्थान पर, जहाँ आर्द्रा के आँसू कुछ क्षण पूर्व गिरे थे।

प्रस्तर में एक रेखा-सी खिंची। लताओं ने जा रही चन्दसेना की ओर देखा। अन्यमनस्क लताओं के अनदेखे ही प्रस्तर का मुख खुला और वे आँसू उसमें समा गए और भी सहस्र वर्ष उपरांत के डूबते प्राणों और टू आशाओं को नवजीवन प्रदान करने के लिए!

पाषाण के अन्दर नूतन हृदय की रचना आरम्भ हो चुकी थी!

कहानी-कला

श्री प्रभाकर माचवे

कहानी कैसे बढ़ी?

लोकवार्त्ता में आधुनिक कहानी के बीज निहित हैं। श्रम-परिहारार्थ, मनोरंजनार्थ, उत्सव आदि प्रसंगों पर मनोविनोदार्थ आख्यायिकाओं का प्रश्रय लिया जाता रहा है। आरंभ में इन कहानियों में चमत्कार का अंश विशेष था। बाद में वे नीति और उपदेश के दृष्टान्त बन गईं। फिर भी मध्ययुग तक उनमें अस्वाभाविकता की मात्रा अत्यधिक थी। कहानी का आरंभ कैसे हुआ और भारतीय तथा विदेशी साहित्य में उनका विकास कैसे हुआ, इस विषय में हिंदी के तीन प्रसिद्ध कहानीकारों तथा दो आलोचकों के मत सुनिए—

(१) कहानियों का जन्म तो उसी समय से हुआ, जब आदमी ने बोलना सीखा, लेकिन प्राचीन कथा-साहित्य का हमें जो कुछ ज्ञान है, वह 'कथा-सरित्सागर,' 'ईसप की कहानियाँ' और 'अलिफ-लैला' आदि पुस्तकों से हुआ है। यह उस समय के साहित्य के उज्ज्वल रत्न हैं। उनका मुख्य लक्षण उनका कथा-वैचित्र्य था। मानव-हृदय को वैचित्र्य से सदैव प्रेम रहा है। अनोखी घटनाओं और प्रसंगों को सुनकर हम अपने बाप-दादों की भाँति ही आज भी प्रसन्न होते हैं। हमारा खयाल है कि जन-रुचि जितनी आसानी से अलिफलैला की कथाओं का आनन्द उठाती है, उतनी आसानी से नवीन उपन्यासों का आनन्द नहीं उठा सकती और अगर काउण्ट टाल्स्टाय के कथनानुसार जनप्रियता ही कला का आदर्श मान लिया जाए, तो अलिफलैला के सामने स्वयम् टाल्स्टाय के 'वार एण्ड पीस' की कोई गिनती नहीं।'...(प्रेमचंद)

(२) 'कहानी का जन्म मानव-सृष्टि के साथ-ही-साथ हुआ है। आदम और हौवा का जो प्रथम संयोग था, उसकी भी एक कहानी है। एक प्रकार से वही कहानी सृष्टि की समस्त कहानियों की मूल प्रेरणा है।...प्रायः कहानी का मूलाधार कुतूहल में रहता है।...कहानी का उद्गम वास्तव में वृत्तवर्णन में है। चिरवियोग के बाद जब दो मित्र आपस में मिलते हैं तो प्रायः एक दूसरे से कहते हैं—'अपना हालचाल कह जाओ।'...बहुत सम्भव है कि प्रारंभिक कहानी का उद्गम वेदना से हुआ हो। कहानी के मूल रूप हमें संसार के समस्त आदि ग्रंथों में मिलते हैं। ऋग्वेद की ऋचाओं में यत्र-तत्र अनेक कहानियाँ मिलती हैं। प्रायः उनका रूप कथनोपकथन-प्रधान हुआ करता था। हरएक धर्म के मूलग्रंथ कथामूलक हैं। जब हम महाकाव्यों पर दृष्टिपात करते हैं तो उनमें भी हम कथा-साहित्य की विशेषता पाते हैं। क्रमविकास की दृष्टि से देखा जाए तो कहानी की तीसरी पीढ़ी उपदेशपूर्ण छोटी-छोटी कहानियाँ हैं। इसी कोटि में ईसप की कहानियाँ, पंचतंत्र और हितोपदेश आते हैं।'...

(भगवतीप्रसाद वाजपेयी)

(३) प्राचीन युग में सबसे प्रथम भारतीय साहित्य के ऋग्वेद, उपनिषद्, सांख्य, पंचतंत्र, नंदीसूत्र और जातकों में कथासाहित्य का अनूठा संग्रह मिलता है। न्याय और दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों को समझाने के लिए इन सिद्धांतों और उपाख्यानों का उपयोग होता था। विचारों की दृष्टि से इनमें की कुछ कहानियाँ आज भी विश्व-कथा-साहित्य में बेजोड़ ठहरती हैं। रचना-संगठन की दृष्टि से इनमें और आधुनिक कहानियों में विशेष अन्तर है। आख्यानों को न तो उपन्यासों की श्रेणी में रख सकते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कहानियों की। वे एक अलग कोटि के हैं। प्रायः एक आख्यान के अंतर्गत कई उपकथाएँ चलती हैं।...ईसा की चार शताब्दी पूर्व हेरोडोटस ने अपनी पुस्तक में अपने से १०७ वर्ष पूर्व के कहानीकार इसप का उल्लेख किया है। लैटिन-भाषा की सबसे पहिली कथा जो 'गोल्डन ऐस' के नाम से अंग्रेजी में अनूदित हुई, सम्भवतः मौलिक नहीं, वह ग्रीक कथाकार 'ऐप्यूलियस'-रचित है।...ग्यारहवीं शताब्दी में 'कथा सरित्सागर' की रचना हुई। इसके पहिले 'बृहत्कथा मंजरी' प्रकाशित हो चुकी थी। हितोपदेश की रचना चौदहवीं सदी के पूर्व ही हुई, यह निश्चित है।...कुछ लोगों का मत है कि मध्य एशिया की सब जातियों के कथा-साहित्य पर भारत की प्राचीन आख्यायिकाओं की छाप स्पष्ट है। कुछ विद्वान् फारसी की सिंदबादी जहाजी की कथा की मूल भित्ति 'बिन्दक जातक-कथा' मानते हैं।'... (विनोदशंकर व्यास)

और दो मत कहानी के विकासेतिहास पर सुनिए—

'पाँचवीं शताब्दी में आचार्य बुद्धघोष लिखते हैं—'अक्खानं ति भारत रामायणादि।'...घट जातक एक प्रकार से छोटा-मोटा भागवत ही है।...ईसा की प्रथम शताब्दी में आन्ध्र राजाओं के समय गुणाढ्य नाम के किसी पण्डित ने पैशाची भाषा में बृहत्कथा नाम का ग्रन्थ लिखा था। पैशाची भाषा या तो आधुनिक दरदी की पूर्वज भाषा थी या उज्जैन के पास की एक बोली। ('भारत भूमि और उसके निवासी' पृ० २४६—जयचंद्र विद्यालंकार)। यह गुणाढ्य कौन थे, कहना कठिन है। इनकी 'बृहत्कथा' एकदम अप्राप्य है। अब तक किसी के देखने में नहीं आई। इससे नहीं कहा जा सकता कि यह बृहत्कथा कितनी बृहत् थी और उसमें क्या-क्या था।...सोमदेव ने, जो कि एक बौद्ध था, अपना कथा सरित्सागर 'बृहत्कथा' से ही सामग्री लेकर लिखा।...बौद्ध कथाएँ जहाँ जन-साहित्य हैं और उनका उद्देश्य जनसाधारण का शिक्षण रहा है, वहाँ पञ्चतन्त्र के ब्राह्मण रचयिता ने उन कथाओं का उपयोग केवल राजकुमारों को शिक्षित करने के लिए किया है। हितोपदेशों में श्लोकों की अधिकता है। उसमें पञ्चतन्त्र की सहायता ली गई है। आख्यायिका-साहित्य में वैताल-पञ्चविंशति का भी स्थान है। सिंहासन द्वात्रिंशिका, शुक-सप्तति आदि और भी कई ग्रन्थ हैं। जैन वाङ्मय में भी आख्यायिका साहित्य है ही।

'छठी सदी में पञ्चतन्त्र का एक अनुवाद पहलवी या प्राचीन फारसी में हुआ। यह अनुवाद खुसरो नौशेरवाँ की कृति था। इसी अनुवाद से सीरिया की भाषा में एक अनुवाद छपा, जो जर्मन अनुवाद के साथ १८७६ में लिपज़िग् से छपा। पञ्चतन्त्र का एक अरबी अनुवाद लगभग ७५० में असमीकाफ के पुत्र अब्दुल्ला ने किया, जिसका नाम था कलेला दमना, जो १८१६ में अंग्रेजी में अनूदित हुआ। १०८० में इस अरबी अनुवाद का ग्रीक में अनुवाद हो चुका का। १६४४ में अनवारसुहेली का 'लिव्रे दल्यूमिरे' नाम से फ्रेंच अनुवाद हुआ। १८७२ में इटली की भाषा में और १२५० में हीब्रू में अनुवाद छपा।...ईसप की कथाओं के नाम से जिन कथाओं का योरप में प्रचार है और जिनके कुछ अनुवाद हमारी भारतीय भाषाओं में—यहाँ तक कि संस्कृत में भी (अहमदनगर के श्री-बालकृष्ण गाडबोले का) छप चुके हैं...उनका मूलस्थान जातक कथाएँ ही हैं।...दमस्क के संत जान की किताब 'बरसाम एण्ड जोज़फ' का 'बोधिसत्त्व' का बोसत और जोसफ रूप है।'... (भदन्त आनन्द कौसल्यायन)

'हमारी कहानी का जन्म उस समय होता है जब संसार के स्त्री-पुरुष परस्पर एक दूसरे के विषय में सोचने लगते हैं; अथवा मानव-सृष्टि अमानव-सृष्टि से सम्बंध जोड़ती है। ऐसी दशा में यह आवश्यक नहीं है कि इसका परिणाम उपदेश ही हो। मानव तथा अमानव जाति के विषय में कुछ रोचक बातों का स्पष्टीकरण पारस्परिक रूप में कर देना ही कहानी के अस्तित्व का उदाहरण है।...हमें जहाँ तक मानव और अमानव जाति का सम्बन्ध मिलेगा, वहीं कहानी के कीटाणु भी मिल जाएँगे।...अतः मानना होगा कि कहानी की उत्पत्ति अनन्तकाल से है।'

(रामकुमार वर्मा)

कहानी क्यों और कैसे विकसित हुई, इस बात की चर्चा के पश्चात् कहानी क्या है, यह स्वाभाविक प्रश्न है। अब हम कहानी की परिभाषा, मर्यादा और अन्य कहानी-जैसे साहित्य प्रकारों से उसकी समता या विरोध की मीमांसा करेंगे। इसके बाद कहानी के आवश्यक अंग और प्रकार—यानी कहानी किस तरह ? का विचार करेंगे।

कहानी की प्राचीन परिभाषाएँ या अन्य-नाम : कथा, दन्तकथा, वार्त्ता, आख्यायिका, कादम्बरी, हितोपदेश, दृष्टान्त; आदि हम देख चुके; अब आधुनिक काल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयुक्त अनेक नाम किस्सा (उर्दू) ; लघुकथा (मराठी) ; टुंकीवर्त्ता (गुजराती) ; गल्प (बँगला) ; कथा (तामिल), शार्ट स्टोरी (अँग्रेज़ी) की जो परिभाषाएँ हमें पश्चिमी लेखकों-द्वारा मिलती हैं उन्हें देखें और फिर कहानी, एकांकी, उपन्यास, गद्यकाव्य, रूपककथा, लघुनिबंध, किच, रिपोर्ताज से उसका अन्तर स्पष्ट करें। इसी विश्लेषण में से कहानी के टेकनीक और प्रकार के सिद्धान्त-सूत्र आगे मिलेंगे।

(१) 'कहानी में नाम और तारीख के अतिरिक्त सब सत्य होता है और इतिहास में नाम और तारीख के सिवा सब असत्य'; 'आदमी को कुत्ते ने काटा, यह घटना हुई; आदमी ने कुत्ते को काटा, यह कहानी बन गई;' या 'एक राजा था और उसकी एक रानी थी', यह कोई कहानी नहीं बनी; परंतु 'एक राजा था और उसकी दो रानियाँ थीं ; या एक रानी थी उसके दो राजा थे—' यह कहानी का, आरंभ हुआ।

(२) 'कहानी एक प्रकार का वर्णनात्मक गद्य है जिसे पढ़ने में आधघंटे से लेकर एक घंटे तक का समय लगता है। अर्थात् एक बैठक में जो सामान्यरूप से पढ़ी जा सके, वही कहानी है।' (एडगर एलेन पो) 'तीन सौ से तीन हजार शब्दों का वह मनोरंजक गद्य जिसे पढ़ने में १५ से ५० मिनिट लगें और पढ़ते समय पाठक ऊबे नहीं और एक ही बैठक में पूरा पढ़ लेना चाहे, कहानी है।' (एच० जी० वेल्स)

(३) 'प्रत्येक वस्तु में कोई-न-कोई कथानक निहित है, अनन्वेषित है, जिसे हमारी आँखें हमसे पहिले लोग क्या विचार कर गए हैं इसी चिन्ता में उलझी रहने के कारण, हम देख नहीं पाते। छोटी-से-छोटी, क्षुद्र-से-क्षुद्र वस्तु में कुछ अज्ञात तत्त्व है, उसे खोज निकालो।' (गाय द मोपासाँ)

(४) जहाँ तक मैं जानता हूँ, कहानी लिखने के तीन ही तरीके हैं: एक कथानक ले लो और उसमें पात्र जमा दो; या एक पात्र ले लो, और उसके लिए घटनाएँ निर्मित करो ; या फिर, एक विशेष वातावरण ले लो और उसके अनुरूप घटनाएँ और पात्र निर्माण करो।' (ब्रैंडर मैथ्यूज बैलफोर)

(५) 'जो कुछ मनुष्य करे, वही कहानी है।' (ह्यू वाकर) 'मेरा प्रधान उद्देश्य एक मनोरंजक घटना-क्रम वर्णित करना है, जिससे मैं पहिले शब्द से आखिरी शब्द तक पाठक का ध्यान अपनी ओर खींचे रखूँ। जो अच्छे सुगठित, सुनिश्चित नाट्यात्मक अंतवाली घटनावली नहीं लिख सकता, वह अपने आपको क्यों व्यर्थ कहानीकार या उपन्यासकार कहे ?' (गिल्बर्ट फ्रैंकल्यू)

(६) 'मुझे अपनी स्वयम् की कहानियाँ सब से अच्छी लगती हैं, जब तक कि वे लिखी नहीं जातीं।' (कार्ल मारिस)

(७) 'अपनी कहानी में मैं कोई-न-कोई मनोवैज्ञानिक समस्या अवश्य रखना चाहता हूँ।' (प्रेमचंद)

(८) आधुनिक कथा वहाँ शुरू होती है जहाँ घटना सड़क से आत्मा के भीतर प्रवेश करती है।' (एडिथ ह्वार्टन)

(९) 'कहानी का विषय होता है एक प्रकाशित करने वाला तथा स्वयम्-प्रकाशी क्षण, चाहे वह सौंदर्य-भरा हो, चाहे भय-भरा, चाहे विस्मय-भरा !' (बुलेट्)

(१०) 'कहानी के दो ही प्रकार होते हैं: एक जिसमें प्रधान नायक से कोई हेतु सिद्ध कराया जाता है; दूसरी, जिसमें प्रधान नायक स्वयम् कोई निश्चय या चुनाव करता है।' (जौन गलिशॉ)

इसी प्रकार जे०बी० एसेनवाहन के शब्दों में कहानी में प्रभाव की एकता, श्रेष्ठ कथानक, एक प्रधान पात्र, एक समस्या और उसका समाधान अथवा समाधान की दिशा में इंगित रहता है। सुन्दर कथानक के लिए घटनाओं का तारतम्य या प्रवाह आवश्यक होता है और उनमें भी तीव्र स्थिति, तनाव, संभाव्यता, स्वाभाविकता, नाटकीयता, कुतूहल और सूझ, द्वैधीभाव (सस्पेन्स) आदि तत्त्वों का उचित गुम्फन आवश्यक होता है।'

आइए, अब देखें, कि यह जो आधुनिक छोटी कहानी दंत-कथा, परीकथा, नीतिकथा, साहसकथा, प्रेमाख्यान आदि मंजिलें पार कर हमारे सामने है वह उपन्यास से किस प्रकार भिन्न है। कहानी और उपन्यास में केवल लघुता-दीर्घता, आकार या मात्रा का अन्तर नहीं, परन्तु प्रकार का अन्तर है। बड़ी कहानी न उपन्यास बन सकती है; न लघु उपन्यास एक कहानी ही। कहानी और उपन्यास का अन्तर एक प्रकार से गीतिकाव्य और महाकाव्य के अन्तर के समान है। कहानी जीवन के खंड या अंशमात्र को प्रस्तुत करती है; उपन्यास जीवन की समग्रता को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्छृंखलता-कूदता हुआ वन्य निर्झर है; उपन्यास गंभीर कूलहीन समुद्र। कहानी एक दिन ही में मुरझा जानेवाली लिली की कली है; उपन्यास विशाल, युगों-युगों तक स्तब्ध मौन, तना खड़ा देवदारु। कहानीलेखक जैसे द्रुत रेखाचित्र या 'स्नैप' मात्र लेता है; उपन्यास बृहद् भित्ति-चित्र (फ्रेस्को) के समान है। कहानीकार भीड़ को अपनी छोटी-सी खिड़की में से या सराय के एक कोने से देख लेना पर्याप्त समझता है; उपन्यास-लेखक एक ऊँची मीनार पर बैठकर जैसे आसपास का विस्तृत भू-प्रदेश देखता है। बैरी पेन ने ठीक ही कहा है कि उपन्यास पढ़ना भरपेट भोजन से पूरा सन्तोष पाना है; कहानी सिर्फ भूख को लहकाना या उकसानामात्र है। आज की कहानी और उपन्यास दोनों ही मनोवैज्ञानिक बनते जा रहे हैं—लेखक को पाठक के, पात्रों के, उपन्यासगत समाज के मन का ध्यान रखना पड़ता है। इस दृष्टि से अच्छी यथार्थ-वादी कहानी लिखना हँसी-खेल नहीं, टेढ़ी खीर है। वैसे तो जीवन स्वयं एक अनाद्यन्त आख्यायिका है।

कहानी बहुत कुछ एकांकी नाटक के समान होती है। प्रभाव की एकाग्रता, जीवन का आंशिक क्षण-चित्रण, संवाद की स्वाभाविकता, घटनाओं की नाटकीयता आदि दोनों में एक-सी आवश्यक वस्तुएँ हैं। यदि शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय की षोडशी नाटिका को आप पढ़ें जो कि उन्होंने अपने छोटे उपन्यास से स्वयं लिखी; या प्रेमचंद की कहानी 'कफन' का रशीदजहाँ-द्वारा गाँव के थियेटर के काम का दिया गया नाट्य-रूप या इसी प्रकार के कई गल्सवर्दी और चेखाव की कहानियों के एकांकीकरण तो पता चलेगा कि दोनों साहित्य-रूपों में, सिवा कुछ वर्णनों के, जो कि कहानी में अधिक होते हैं, बहुत कम अंतर रहता है। दोनों ही साहित्य-प्रकार आधुनिक अँग्रेजी साहित्य से हिंदी में आए और उसी में के विचार-प्रवाहों, समस्याओं-द्वारा अधिक प्रभावित हैं। कहानी और एकांकी में यदि कोई अंतर है तो इतना ही कि दृश्यों का जितना परिवर्तन कहानी में संभव है, एकांकी में नहीं। एक पात्र कहानी में बैठे-बैठे अपने गत जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों की चित्रपटी खोलकर देख सकता है; एकांकी में वैसा एकान्त आत्म संशोधन संभव नहीं; बल्कि एकांकी का आधार ही किसी-न-किसी प्रकार का कार्य (एक्शन) है।

कहानी और गद्य-काव्य में बहुत बार भेद न चीन्ह पाने के कारण भाव-चित्र या भाव-कहानी या रूपक कथा नामक एक और प्रकार चल पड़ा है। तुर्गनेव के 'ड्रीम्स' सपने; रवीन्द्रनाथ के 'फ्यूजिटिव' में के कई गीत, वि० स० खांडेकर के 'कलिका', 'मंजरी' और 'सुवर्णकण' धूमकेतु की छोटी-छोटी गुजराती बिंदु-कहानियाँ, सोलोखोफ़ की कुछ ऐसी ही कथाएँ, रायकृष्णदास, शान्तिप्रसाद वर्मा, राजकुमार रघुवीरसिंह और प्रकाशचंद्र गुप्त के कुछ गद्य काव्यात्मक रेखाचित्र इसी कोटि में आते हैं। उनमें कुछ तो निश्चित भाव-गीत या 'वैणिक' या ऊर्मि-काव्य (लिरिक) होते हैं; अन्य कुछ होती हैं प्रतीकात्मक छोटी कहानियाँ। उदाहरणार्थ खलील जिब्रान के 'दी प्राफ़ेट' (जीवन-संदेश), 'मडमैन', 'सैंड एँड फ़ोम', आदि पुस्तकों के कई छोटे-छोटे गद्य-गीतों में गीतात्मक कथाएँ इसी के अंतर्गत आ जाएँगी। यदि वे छन्दोबद्ध और पद्यात्मक होतीं तो खंडकाव्य या आख्यानकाव्य कहलातीं—जैसे सियारामशरण जी गुप्त के 'पाथेय' या 'आर्द्रा' की कहानियाँ। सिनेमा में रूसी दिग्दर्शक आइजेन्स्टाइन ने 'मौंटाज' (स्थिर-चित्र) नामक शैली, प्राकृतिक या पार्श्व-भूमि के संकेत-द्वारा किसी घटना को व्यक्त करने के लिए जैसे प्रचलित की, साहित्य में रूपक-कथा भी बहुत अधिक लोकप्रिय हो रही है।

परंतु रूपक-कथा में और हलके निबंध या व्यक्तिगत निबंध में अंतर है। ए० जी० गार्डिनर उर्फ 'अलका आफ दी प्लाउ' के 'फेलो-ट्रैवेलर' में मच्छर के प्रति रेल-प्रवासी के मनोभाव कहानी नहीं कहे जा सकते; या प्रेमचंद की 'कफन' में प्रकाशित 'कश्मीरी सेब' भी कहानी नहीं मानी जा सकती। प्रो० ना० सी० फडके ने मराठी में इस प्रकार के लघुनिबंधों को 'गुज़गोष्टी' (बतकही, सुखदुख-निवेदन या परस्पर-संल्लाप) कहा है। दोनों में विपुल कल्पनाशक्ति; आरंभ और अंत की कुशलतापूर्वक रचना; लघुता; स्वाभाविकता; साधारण विचारपद्धति से भिन्न दृष्टिकोण और विविधता आवश्यक हैं—फिर भी दोनों में मौलिक अंतर है। निबंधकार एक विचारक होता है; कहानीकार कलाकार। निबंध में चिंता प्रधान है तो कथा में रस।

इधर पंत जी की 'पाँच कहानियाँ'; महादेवी वर्मा की 'अतीत के चलचित्र'; सुभद्राकुमारी के 'सीधे सादे चित्र' आदि व्यक्ति-चित्रों की रचनाओं से हिंदी में कहानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और स्केच या शब्दचित्र पर्यायवाची माने जाने लगे हैं। असल में रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध कहानी 'काबुली-वाला' या 'सुधा'; शरच्चंद्र की 'हरिचरण'; प्रसाद की 'मधुआ' या 'बेड़ी'; भगवतीचरण वर्मा की 'एक चक्कर है'; जैनेंद्रकुमार की 'रुकिया बुढ़िया' या 'मास्टरजी' कहानियों से अधिक 'स्केच' हैं। इसका कारण यह है कि घटना की अपेक्षा व्यक्तित्व के एक कोण-विशेष को अथवा एक चामत्कारिक या अ-सामान्य व्यक्तित्व को प्रस्तुत करना उनका प्रधान उद्देश्य रहता है। इस प्रकार के सुंदर व्यक्ति-चित्र मराठी में श्री घाटे ने 'कुछ बुड्ढे और एक बुढ़िया' नामक किताब में लिखे हैं। हिंदी में श्रीराम शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन आदि ने ऐसे शैलीपूर्ण व्यक्ति-चित्र लिखने में विशेषता प्राप्त की है।

व्यक्ति-चित्र की भाँति घटनाओं के विवरण, प्रवास या किसी बड़ी दुर्घटना—युद्ध, भूचाल, अकाल आदि के मनोरंजक ब्यौरे, या प्रचार की दृष्टि से लिखे जानेवाले व्यंग्यपूर्ण प्रसंग-चित्र—जिन्हें फ्रेंच शब्द 'रिपोर्ताज' से पुकारा जाता है, कहानीनुमा होते हुए भी कहानी नहीं। अज्ञेय का 'त्रिपुरी कांग्रेस' पर लेख; रांगेय राघव के बंगाल के अकाल पर 'तूफानों की बीच'; अमृतलाल नागर की 'आदमी नहीं-नहीं'; इल्मा ए-हेनबुर्ग या वासिली ग्रासमन जैसे रूसी उपन्यास-लेखकों के युद्ध के लाभ पर के वर्णन आदि; या आधुनिक उर्दू कहानी में कृष्णचंद्र आदि द्वारा बहुत प्रयुक्त होनेवाली शैली (हम वहशी हैं!) इसी प्रकार की हैं। इसमें कहानी के तत्त्व अवश्य हैं, परंतु जैसे फोटोग्राफी की कला का पोस्टर के लिए उपयोग हो; वैसे रिपोर्ताज कहानी का एक विशेष प्रकार का प्रचारात्मक उपयोग है।

कहानी किस तरह और कितनी तरह की ?

कहानी की मर्यादा निश्चित करने पर अगला प्रश्न कहानी के कला-पक्ष अथवा 'टेकनीक' का है। ('टेकनीक' के लिए उपयुक्त हिंदी शब्द अभी चला नहीं; वैसे कई व्यक्ति 'तंत्र', 'शैली', 'निवेदनपद्धति' आदि प्रयुक्त करते हैं।) कहानी के आवश्यक तत्त्व निम्न माने गए हैं :—

(१) कहानी छोटी हो। (२) एक ही भावना का उसमें उद्रेक हो। (३) कहानी लिखने में जितनी आवश्यकता स्मृति की है, उतनी ही विस्मृति की भी है; यानी कहानी में चुनाव अधिक जरूरी चीज है। (४) कथानक, वस्तु—पात्रों द्वारा किए जानेवाले कार्य या घटनाएँ (५) ऐसी घटनाएँ जिन पर घटित होती हैं, वे पात्र और उनका चरित्र-चित्रण (६) कथोपकथन या संवाद (७) जिस रीति से कथानक विकसित होता है, वह रचना-क्रम (८) भाषा-शैली; वर्णन या वातावरण-निर्मिति तथा उन पर लेखक के विचार (९) शीर्षक, आरम्भ और अन्त (१०) कहानी का समग्र प्रभाव और मूल हेतु, उद्देश्य या आदर्श का निर्वाह। यदि इन बातों में से एक-एक को लेकर विस्तार से लिखें तो कहानी-कला पर एक स्वतंत्र ग्रंथ ही बन जाए। यहाँ पर संक्षेप में इनके संतुलन पर ही विचार दिए जा सकेंगे। एक अंग्रेजी समालोचक के मतानुसार कहानी में प्रधान वस्तु और कथानक ४५ प्रतिशत तथा रचनासौष्ठव २० प्रतिशत महत्त्व रखता है। चरित्रचित्रण, कथोपकथन तथा शैली क्रमशः १५,१५ तथा ५ प्रतिशत महत्त्वपूर्ण हैं। इस प्रकार गुण-विभाजन तो अच्छी कहानी में संभव नहीं; परंतु दो-चार शब्द कहानी के मूलाधार कथानक, चरित्र, वातावरण तथा रचना-शैली पर गुण-दोष-विवेचनरूप संक्षेप में कहना आवश्यक है।

कथानक में प्रवाह, घटनाओं का तारतम्य, कथानक के अंगों का परस्पर-संगठन आवश्यक होता है। कथानक के मुख्य अंग हैं प्रास्ताविक अंश, समस्या का आरंभ, क्लाइमेक्स या चरम-बिंदु, अंत जो कि समस्या की सुलझन भी हो सकता है, अथवा सुलझन की अनेक संभावनाओं में से एक इंगितमात्र। कथानक बहुत लम्बा-चौड़ा भी आवश्यक नहीं, और न कोई कथानक-विहीन कहानी ही अच्छी कहानी कहलाती है। प्रेमचंद की 'रानी सारन्धा' या प्रसाद की 'आँधी', शरच्चंद्र की 'काशीनाथ', 'स्वामी' या जैनेंद्र की 'एक रात', हार्डी के वेसेक्स टेल्स की पहिली कहानी या एण्टन चेखॉव की 'चुम्बन' कहानी काफी लम्बी हैं; इससे उलटे ओ' हेनरी या लुइजी पिरैंदेलो या जैनेंद्रकुमार की कई छोटी कहानियाँ स्पष्टतः कथानक-विहीन कही जा सकती हैं। अतः कथानक की दीर्घता या लघुता के संबंध में कोई निर्णय देना असंभव है; परंतु उसमें प्रारंभ अत्यन्त आकर्षक, कुतूहलोत्पादक, मूल कथा से जुड़ा हुआ, कहानी के उद्देश्य का सांकेतिक दर्शन करानेवाला, एक प्रभाव से संपूर्ण कहानी का प्रेममय प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय होना चाहिए। श्री रामकुमार वर्मा ने कहानी में कुतूहल-विकास का एक मानचित्र-सा अपने साहित्य-समालोचन में पृ० ५७ पर दिया है, जो कि 'रेशमी टाई' की भूमिका में एकांकी के निर्वाह के संबंध में दिए मान-चित्र से बहुत मिलता-जुलता है :—

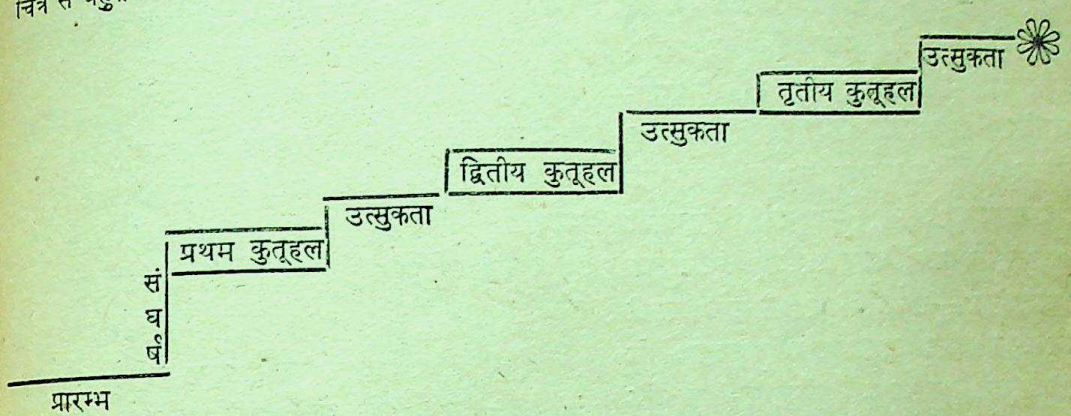

परंतु इस प्रकार मानचित्र बनाकर किसी भी कला-रचना का नियमन नहीं किया जा सकता। यह केवल एक आधारमात्र है। वैसे प्रत्येक कहानी का नक्शा एक दूसरे से भिन्न प्रकार का होगा। कथानक चार प्रकार का कहा गया है—घटनाप्रधान, चरित्रप्रधान, वर्णनात्मक, भाव-प्रधान। कथानक के अंत में कोई-न-कोई अनपेक्षित विचित्रता रखना एक और महत्त्वपूर्ण बात है। पाठक एक प्रकार का अंत मन में सोचता है, जब कि लेखक दूसरा कोई प्रकार बतलाता है। यह चामत्कारिकता कथानक में अतिरिक्त रसोत्पत्ति करती है। कहानी के कथानक के विकास की उपमा जादूगर-द्वारा एक रिक्त पात्र या हैट में बहुत से रूमाल निकालने से दी जाती है। फ्लाबेयर नामक फ्रेंच कथा-लेखक ने एक उत्तम सूत्र दिया है, जो हमारे ब्रह्म-सूत्रों के 'पटवच' के समान है। वह कहता है 'ईय फॉत् इंतरेस्सेर' (मैं इस प्रकार कहानी खोलता हूँ, लपेटे हुए सूत्र सुलझाता हूँ।)

पात्रों के संबंध में पहिली बात जो कही जा सकती है, वह यह कि वे जीवित हों, सप्राण हों। उनमें कहीं यह ध्वनि या इंगित न हो कि ये तो कठपुतले हैं; लेखक की इच्छा से चलनेवाले यांत्रिक खिलौने हैं। अतः पात्रों को गढ़ने, काटकर तैयार करने, खोदने, तार से जोड़ने, चलाने-बुलवाने की बात गलत है। क्रिया कर्ता से अविच्छिन्न है; घटना पात्रों से। ई० एम० फार्स्टर ने अपने 'उपन्यास के पहलू' ग्रंथ में समतल (फ्लैट) और वर्तुल (राउंड) दो प्रकार के चरित्रों की बात कही है। पात्र अतीन्द्रिय या हवाई न होने चाहिए। उनमें वस्तु-वृत्ति (मटीरीयलाइज़ेशन) होनी चाहिए। उनमें चुम्बकीय गुण रहना चाहिए। मार्सल प्रूस्त ने उसे प्राकृतिक गुणसमुच्चय कहा है। कहानी में चूँकि समय और स्थान सीमित होता है, चरित्र के व्यक्तित्व का एक विशेष अंग ही उसमें झलकता है; उपहैम ने जो बात कही है वह महत्त्वपूर्ण है—'चरित्र-चित्रण में सदा भय इस बात का बना रहता है कि वे व्यंग्यचित्र न बन जाएँ; जैसे कि घटनाक्रम संभावनीयता की सीमा लाँघकर पाठक के धैर्य की परीक्षा ले ले।' सजीव चरित्र उपस्थित करने के लिए छोटी-छोटी घटनाओं का चुनाव आवश्यक है, जिसके द्वारा चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट हो सकें! उदाहरणार्थ पात्र का नाम, बाह्य रूप, मुखाकृति, वय, वर्त्ताव, पैतृक गुण-दोष, परंपरागत प्रथाओं का उसके मन पर प्रभाव, शिक्षा-दीक्षा, वार्तालाप की विशेषताएँ, दिनचर्या, जीवन-घटनाएँ आदि आदि बातों के विवरण से पात्र में प्राण फूँके जा सकते हैं। चरित्र-चित्रण के समय प्रत्येक रेखा का मूल्य होता है; कहीं भी अनावश्यक मात्रा में रेखाओं का आधिक्य या अल्पता घातक सिद्ध होती है। चरित्रों के उपस्थित करने के वर्णन, संकेत, वार्तालाप, घटना, पत्र, डायरी, स्मृति आदि कई प्रकार हैं। लेखक चरित्रों के चित्रण में स्वयं प्रवेश करे या हस्तक्षेप करे अथवा नहीं, इस संबंध में दो मत हैं। पुराने लेखक अक्सर चरित्रों से बाहर रहकर बीच-बीच में अपने मंतव्य भी देते जाते थे। आधुनिक लेखक चरित्र से घुलमिल जाता है; चरित्रों से ऊपर अपनी विशेष सत्ता नहीं मानता।

कहानी की तीसरी आवश्यक वस्तु है वातावरण-निर्माण। आखिर किया या कर्ता, घटना या चरित्र किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट देश-काल-परिस्थिति की पार्श्वभूमि में ही रहते हैं। किसी पार्थिव आकाश-वातास में ही साँस लेते हैं। उनका प्रभाव चरित्र या घटना पर अवश्य चेतन-अवचेतन रूप से पड़ता ही है। ऐतिहासिक कहानियों के लिखते समय इस बात का ध्यान विशेष रूप से रखना पड़ता है। मुझे 'अज्ञेय' (हिंदी के एक प्रसिद्ध कहानीलेखक) बतला रहे थे कि 'अंकोरा के पथ पर' और 'कैसेंट्रा का अभिशाप' ('कोठरी की बात' में प्रकाशित) जैसी विदेशी वातावरणवाली कहानियाँ लिखने से पहिले कई महीनों तक जेल में वे उन-उन देशों की सभ्यता, भूगोल, फूल-पत्ती आदि का कैसे अध्ययन करते रहे। मैंने गत विश्वव्यापी युद्ध पर कुछ कहानी जैसे शब्दचित्र लिखे ('संगीनों का साया' नाम से प्रकाशित)—उसके लिए भी मुझे काफी खोज, छान-बीन करनी पड़ी। ताल्स्ताय यदि कज़्ज़ाकों के बीच में सिपाही के नाते न रहता तो संभव नहीं था कि वह इतने उत्तम चित्र 'सेबास्तोपोल की कहानियाँ' में दे पाता; या गोर्की के जीवनानुभव की विविधता (उसकी डायरी में वर्णित) उसकी 'आटम नाइट' या 'ट्वेंटी-सिक्स एंड वन' जैसी कहानियों में अतिरिक्त बल, कडौंस और तिक्तता प्रदान करती है। राहुल सांकृत्यायन ने अपने 'सतमी के बच्चे' में ऐसे ही निम्न-वर्ग के चित्र उपस्थित किए हैं। रवींद्र और शरच्चंद्र की कहानियों में जो वंग-संस्कृति की, विशेषतः पल्लीसमाज की, ग्रामीण वातावरण की ताजगी है, वह कहानी में विशेष रूप से अपेक्षित 'प्रादेशिकता' (लोकल कलर) के उत्तम आदर्श हैं।

अन्त में रचना-शैली (जिसमें संवाद या वार्त्तालाप, भाषा, मुहावरेसाजी, रचनाक्रम आदि बातें आती हैं) का विचार करें। यह सब बातें कहानी के समग्र प्रभाव, मूलोद्देश्य पर बहुत कुछ निर्भर रहती हैं। कहानी लिखने के कुछ ढंग जो बहु-प्रचलित हैं, वे इस प्रकार हैं :

(१) साधारण ढंग—जिसमें लेखक एक दर्शक की भाँति घटनाओं का ब्यौरा देता चले। यह वर्णनात्मक या ऐतिहासिक प्रणाली भी कही जाती है। प्रेमचंद-युगीन की अधिकांश कहानियाँ ऐसी हैं।

(२) आत्मवृत्तात्मक ढंग—जिसमें लेखक स्वयं एक पात्र का रूप ले ले और सारी कहानी प्रथम पुरुष में कही जाए। इस पद्धति की अपनी सीमाएँ हैं। एक बार यह पद्धति आरंभ करने पर पहिली पद्धति नहीं अपना सकते। जैसे अज्ञेय की 'अमर वल्लरी।'

(३) कथोपकथन-प्रधान ढंग—इसमें सारी कहानी वार्तालाप में ही दी जाए। यह बहुत कुछ एकांकी के समान होती है। इसमें पात्रों के मन की बातों को या घटनाओं को केवल संवाद के माध्यम से ही व्यक्त किया जाता है। उग्र और कौशिक की कई कहानियाँ इसी पद्धति की हैं।

(४) पत्रात्मक ढंग—इसमें समूची कहानी कुछ पत्रों का संग्रह-प्राय होती है, जो एक के बाद दूसरे आते-जाते हैं। कई बार ये सब पत्र एक ही व्यक्ति के होते हैं या फिर अनेक व्यक्तियों के हो सकते हैं। जैनेंद्र और 'अश्क' ने कुछ कहानियाँ इस ढंग की लिखी हैं।

(५) डायरी का ढंग—स्मृति-बही में से कुछ बातों को शृंखलाबद्ध या अशृंखलित रूप में याद करते जाना। इसमें अनेक बार बहुत-सा अनावश्यक अंश भी आ जाता है। यशपाल की कुछ कहानियाँ इस ढंग की हैं।

(६) वातावरण का ढंग—भूतों की कहानियों या जासूसी कहानियों में विशेषतः इस प्रकार के प्रयोग को अपनाया जाता है। जहाँ कहानी में प्रधान पात्र एक व्यक्ति न होकर समूचा मुहल्ला या समाज हो, वहाँ भी यह ढंग अपनाते हैं (जैसे अहमदअली की 'हमारी गली')।

(७) मनोवैज्ञानिक ढंग—जहाँ पात्र-विशेष या अनेक पात्रों के मन में, चेतन-अर्धचेतन-अवचेतन स्तरों में क्या चल रहा है, इसका चित्रण किया जाए। यह अत्याधुनिक ढंग है और इसमें बहुत सावधानी रखने की आवश्यकता होती है। चंद्रकिरण सौनरिक्सा, अमृतराय, विष्णु आदि ऐसे प्रयोग कर रहे हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

उत्कल हाईकोर्ट

पिछले दिनों कटक में उत्कल हाईकोर्ट
उद्घाटन-समारोह धूम-धाम के साथ
न हुआ। उक्त अवसर पर भारत के
जस्टिस माननीय सर हरिलाल
न भाषण करते हुए चित्र में दिखाई
हैं। पास ही बंगाल के गवर्नर
र काटजू उड़ीसा के प्रधान मन्त्री
कृष्ण मेहताब के साथ बैठे हैं।

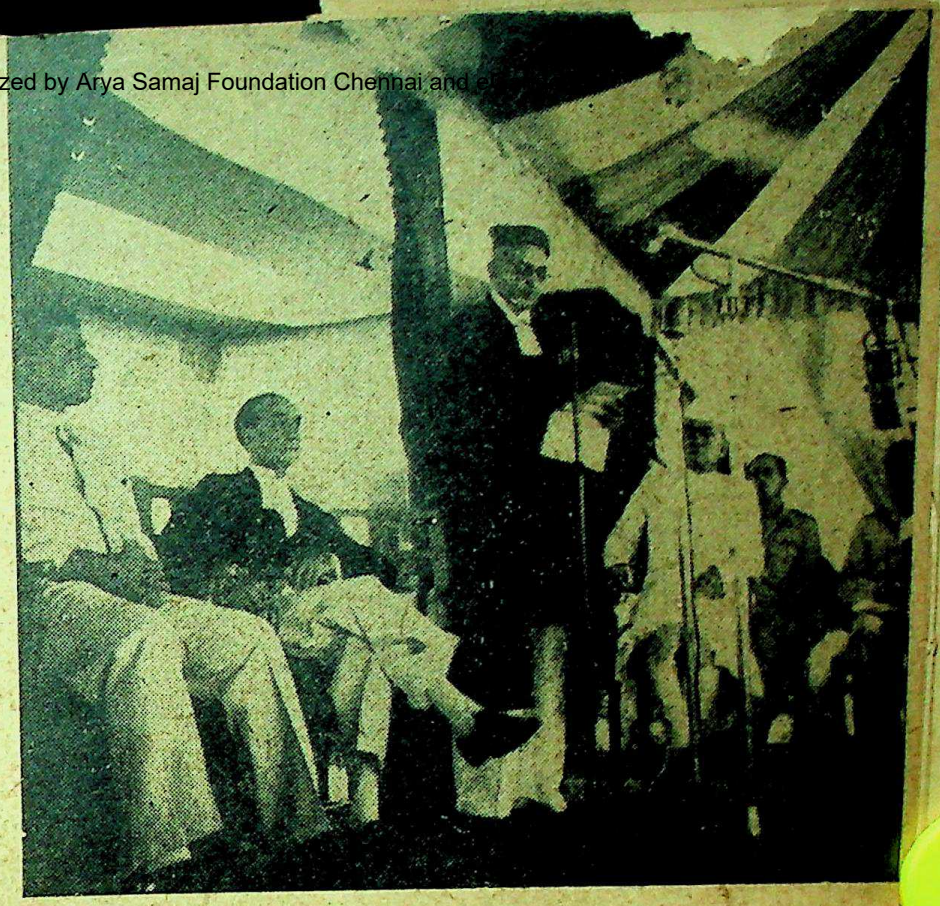

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

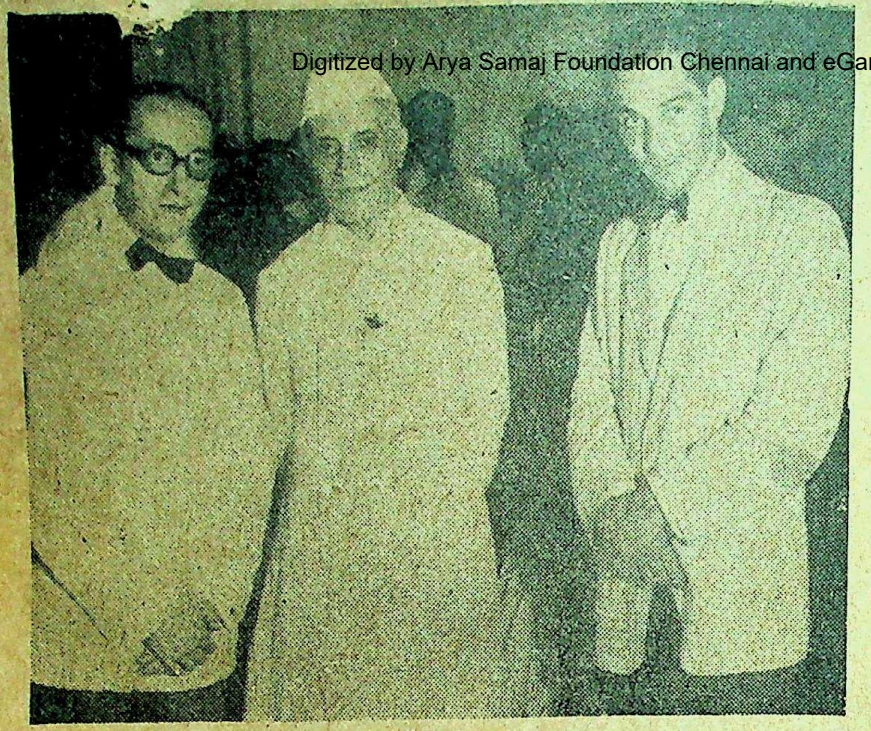

कोलम्बिया-दिवस

पिछले दिनों नई दिल्ली के जिमखाना क्लब में कोलम्बिया का स्वाधीनता-दिवस मनाया गया। उस अवसर पर उपस्थित पण्डित नेहरू डा० एल्फ्रेडो लोजेनो के साथ चित्र में अंकित हैं। डा० लोजेनो यू० एन० कमीशन में कोलम्बिया का प्रतिनिधित्व करते हैं।

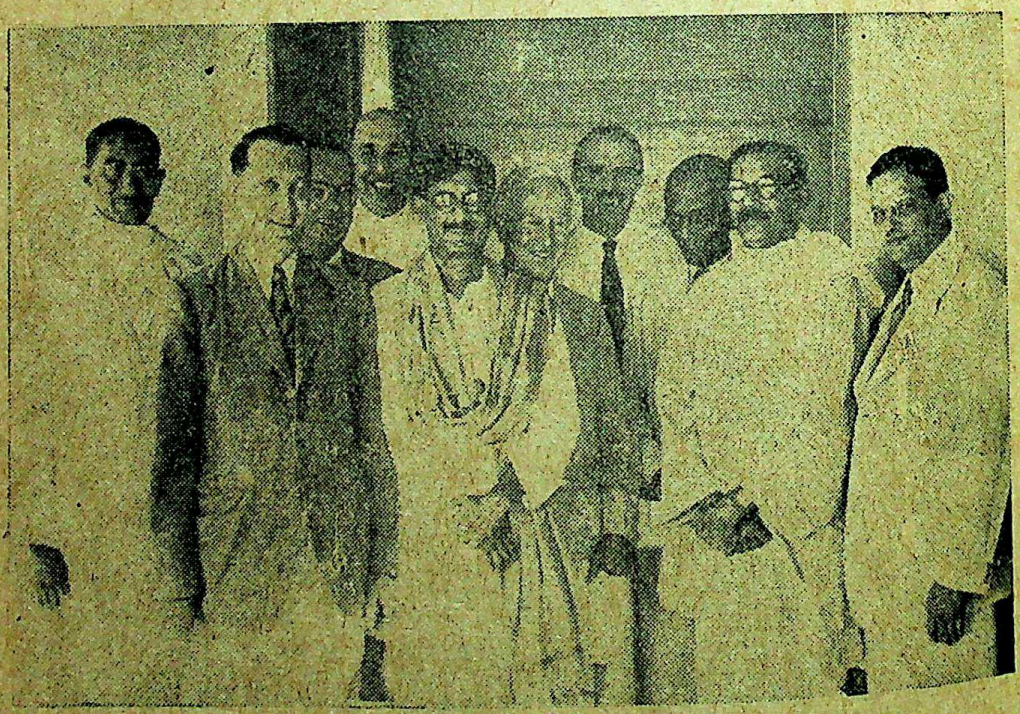

भारतीय एवं पूर्वी समाचार-पत्र-सम्मेलन

बम्बई में पिछले दिनों 'भारतीय एवं पूर्वीय समाचार-पत्र-सम्मेलन संपन्न हुआ, जिसमें प्रमुख पत्रकारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। चित्र में बाएँ से दाहिने—सर्वश्री निर्मल घोष, जे० के० कावले, डबलू० जे० बी० वाल्कर, एम० एन० कामा, तुषारकान्ति घोष, ए० ए० हायल्स, जेहू, आसु दे, सुरेश मजूमदार और मेहता अंकित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्सर्ग

पंडित श्रीराम शर्म्मा

सन् १९४२ के तूफानी दिन ! सितम्बर बीत चला था। अकस्मात् उस छोटे स्टेशन पर डाकगाड़ी के ठहरने से उसे आश्चर्य हुआ। वह वहाँ चबूतरे जैसे नाममात्र के प्लेटफार्म पर निरुद्देश्य घूम रहा था। मालगाड़ी अगले स्टेशन से छूट चुकी थी, ऐक्सप्रेस को वहाँ कुछ देर और ठहरना था। गाँव की मामूली पुलिस-चौकी पर जैसे जिले का बड़ा पुलिस-अफसर पहुँच गया हो। स्टेशन-मास्टर अकेला सकपकाया-सा इधर-उधर चक्कर काट रहा था।

वहाँ तीसरे दर्जे के डिब्बे में एक व्यक्ति सवार हुआ। उम्र २५ वर्ष से अधिक न रही होगी। तीन-चार मास से हजामत न बनने के कारण सिर और दाढ़ी-मूँछ के बाल बढ़े थे। इधर-उधर फैले हुए सिर के बालों से उसकी आकृति कुरूप लगती थी। फटी मिर्जई, घुटनों तक धोती, कन्धे पर गाढ़े की मैली चादर, चोटी तक ऊँचा लट्ठ, इन सबको देखकर उसके गँवई-गाँव के साधारण किसान होने में सन्देह नहीं होता था। पंजों से ऊपर आधी पिंडलियों तक भूरी मटमैली धूल जम गई थी। पिंडलियों के धूलभरे बालों का रंग भी मटमैला हो गया था। मालूम होता था, वह बहुत दूर से पैदल आया है। पाँव-हाथ धोने का अवसर भी उसे नहीं मिला।

कुछ क्षण पहिले अकस्मात् डाकगाड़ी के मिलने से उसे जो प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य हुआ था, उसका कोई चिह्न अब शेष न था।

"बिना टिकट लिए कहाँ घुसे आ रहे हो ?" एक व्यक्ति ने ऊँचे स्वर में ललकार लगाई। इस ऊँची आवाज में इस बात का संकेत नहीं था कि बोलनेवाला व्यक्ति उसे चढ़ने नहीं देगा या चढ़ने पर जबर्दस्ती नीचे उतार देगा। उसके प्रश्न से केवल यह ध्वनि आ रही थी—तुम चल सकते हो किन्तु हमारी पद-मर्यादा का ध्यान रखना। हम भी कुछ हैं, इतना जान गए तो तुम्हारे चलने में हमें कोई आपत्ति नहीं होगी।

बोलनेवाले की बड़ी-बड़ी सुडौल मूछें, गोरा और भरा मुँह, ऊँचा ललाट, ऊँचे ललाट पर लुप्तप्राय अस्पष्ट-सी भौंहें किसी व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त थीं।

खाकी ड्रेस में गोरा रंग और रक्त की लालिमा निखरकर अधिक आकर्षक लगती थी। उस व्यक्ति के कन्धे पर पीतल के चमकीले दो-तीन तारों और राजमुकुट के चिह्न को देखकर नवागन्तुक ने मन-ही-मन प्रश्न किया—इतना बड़ा पुलिस का अधिकारी तीसरे दर्जे के डिब्बे में सफर क्यों कर रहा है ?

"माई-बाप ! आपकी दया चाहता हूँ। इस स्टेशन से पाँच मील दूर मेरी बहिन की ससुराल है। वह बहुत सख्त बीमार है। खबर पाकर मैं यहाँ आया था। आज उसे अठवाँसा लड़का हुआ। लड़का चलता बना। बहिन सबेरे से अचेत, औंधे मुँह पड़ी है। गाँव की दाई कहती थी—बहिन का बचना कठिन है। कहती थी, सोंठ, अजवायन और पीपल का काढ़ा दिया जाए तो शायद वह बच सके। बीस झोंपड़ी का गाँव, ये मामूली चीजें भी नहीं मिल सकीं, पहिले से मालूम होता तो ले आता अब लेने जा रहा हूँ। बहिन का पुण्य उदय हुआ इसलिए आज डाकगाड़ी भी यहाँ रुक गई। पैसेञ्जर में जाता तो रात तक न लौट सकता। अब दोपहर की गाड़ी से ही लौट आऊँगा। भगवान् ने चाहा तो बहिन अच्छी हो जाएगी। आपके चरणों के प्रताप से मेरी बहिन बच जाए ! मैं आपको तकलीफ नहीं होने दूँगा, खड़ा ही चला चलूँगा।"

"हमने यह थोड़े ही कहा कि तुम गाड़ी में मत चलो। बड़े दुखी मालूम होते हो। बैठ जाओ, वहीं नीचे बैठ जाओ।"

उसकी करुण-कहानी और दुःखी चेहरे को देखकर पुलिस-अफसर का हृदय पसीज गया। ग्रामीण अपनी चादर बिछाकर लेट गया।

"आप यह समझ लीजिए"—पुलिस-अफसर ने पास बैठे एक वृद्ध महाशय को सम्बोधित किया। अपनी पिछली अधूरी बात को शुरू करने के लिए बोले—"काँग्रेस के इस आन्दोलन से हमारे नाकों दम है। न दिन चैन, न रात नींद ! कल सन्ध्या के बाद ही अगले स्टेशन पर गुण्डों ने डाका डाला है। गाँव और स्टेशन की पुलिस-चौकी लूट ली गई। तीन-चार सिपाहियों की लाशें मिली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, कुछ का पता नहीं है। पटवारी का दफ्तर आग की भेंट होगया। गुण्डे, जो कुछ मिला, लेकर नौ-दो ग्यारह हो गए। लोग इसे देश-भक्ति कहें, मैं तो डाका कहता हूँ, डाका; इन कामों से देश का क्या भला होनेवाला है? तुम पर हुकूमत करते हैं अंग्रेज। अंग्रेजों से तो कुछ बस चलता नहीं और लगे अपने देश-भाइयों पर क्रोध निकालने। पुलिस के सिपाही भी इसी देश के हैं, देश-वासियों के मारने से देश का भला होगा?"

अफसर की आँखें थोड़ी सुर्ख होगई थीं और साँस कुछ जोर से चलने लगी थी।

नवागन्तुक ग्रामीण इन बातों को सुनकर मन-ही-मन उद्विग्न हो रहा था। मन में आया, मुँहतोड़ उत्तर दिया जाए लेकिन उसकी अपनी स्थिति ऐसा करने से रोक रही थी। विवश होकर उसे अपनी बात निगलनी पड़ी। उसने अपने मन में ही उत्तर दुहराकर सन्तोष अनुभव किया—जब तुम लोग अपने देश-भाइयों की आजादी छीनने के लिए चौबीसों घण्टे कमर कसे रहते हो, अपने देशवासियों की आजादी छीनने के लिए तुम्हारी राइफिलें क्षणभर के लिए भी ठण्डी नहीं होना चाहतीं; तब हम लोग तुम्हें अपना देशवासी और भाई समझने की भूल कब तक करते रहेंगे? हर आदमी से टैक्स वसूल करने के लिए अंग्रेज तो आता नहीं, और न अंग्रेज उन सब लोगों को जेल में ले जाकर बन्द करना चाहता है, जो तुम लोगों से अधिक जनता की सेवा करते हैं और जो जनता के लिए तुमसे अधिक आवश्यक हैं। अंग्रेजी-राज को रस पहुँचानेवाली जड़ें तुम्हीं हो। पत्तों को तोड़ने से लाभ? जड़ें काट डाली जाएँ तो पेड़ अपने-आप सूख जाएगा।

अफसर बिना रुके कहता जा रहा था—

"रात की गाड़ी से वहाँ पुलिस की बड़ी तादाद पहुँच गई है। मैं अब जा रहा हूँ। बहुत-सा काम हो चुका होगा। देखिए, हम लोग कैसी खबर लेते हैं। चार की जगह चालीस जानें जाएँगी और दस की जगह सौ रुपए रिआया से ही वसूल होंगे, एक के दस, सीधा हिसाब है!"

यह कहकर अफसर जोर से खिलखिलाकर हँस दिया। उसकी क्रोधपूर्ण आँखों की ललाई के नीचे होठों की हँसी विद्रूप लगती थी।

वृद्ध महाशय ने अफसर की हँसी में साथ दिया। हँसी रुकने पर उसने स्वीकृत किया—

"जी हाँ, हिसाब सीधा है।"

आगन्तुक मन-ही-मन बड़बड़ाया—

"हाँ हिसाब सीधा है किन्तु हिसाब के सीधा होने से ही सौदा सस्ता नहीं पड़ता।"

अफसर की बातें ग्रामीण को असह्य हो गई थीं। इन बातों से भी अधिक असह्य लग रही थी स्वयं उसकी अपनी विवशता। उसने अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए दरवाजे की खिड़की से बाहर नजर डाली। छोटे-बड़े वृक्ष सरपट दौड़ रहे थे। आँखें किसी चीज पर टिक नहीं रही थीं और मस्तिष्क में एक के बाद एक दृश्य घूमने लगा। अमावस्या की रात, घनघोर अँधेरा। घटाटोप बादल और सन्नाटे में धू-धू करके जलनेवाला स्टेशन, रह-रहकर लोहे का चटकना। लपलपाती हुई लपटें किन्तु फिर भी उस सन्नाटे में, निस्तब्धता में आग इतनी सरलता और समानरूप से जल रही थी, जैसे बर्फ की बड़ी चट्टान अपने आप पिघलकर चुपचाप छोटी होती जा रही हो। कुछ दूर उस प्रकाश से आलोकित सिपाहियों की खून से लथपथ लाशें। एक लाश की अधखुली आँखें और फटा हुआ मुँह.....और इस दृश्य से उसका मस्तिष्क विषाद से भर गया। उसने अपनी नजर फेर ली। देखा—पुलिस अफसर उतरने की तैयारी कर रहा है। सामान एक जगह रखकर उसने अपनी पिस्तौल की खोली निकालकर ध्यानपूर्वक देखा। नौ कारतूस थे। पिस्तौल हाथ में तोल कर वह तनकर खड़ा हो गया, जैसे उसे किसी का डर नहीं। वह अपनी पिस्तौल से सबसे निपट लेगा।

स्टेशन आया। पूरा स्टेशन जलकर खाक हो गया था। काली-काली दीवारें फूटी हुई खड़ी थीं; जैसे वे अपना दुखड़ा रो रही हों, इधर-उधर टीन की चद्दरें और लोहे की बीम भी पड़ी थीं। स्टेशन के आस-पास खड़े नीम के वृक्षों में अधिकांश की पत्तियाँ जलकर नीचे झड़ गई थीं, शेष पत्तियाँ झुलसी और अधजली बड़ी भद्दी लग रही थीं। मोटी-मोटी पिंडियाँ और शाखाएँ लपटों के कारण झुलस गई थीं। जिन यात्रियों को इस दुर्घटना का समाचार नहीं मिला था, वे अकस्मात् स्टेशन की यह हालत देखकर आतंकित हो गए। यात्री स्टेशन को देखते के लिए नीचे प्लेटफार्म पर आना चाहते थे किन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर खड़े सशस्त्र सिपाहियों ने ऐसी ललकार लगाई कि फिर किसी को खिड़की से झाँककर देखने का साहस नहीं हुआ। स्टेशन पर ही नहीं, आस-पास भी कोई यात्री या नागरिक नहीं दिखाई दिया। पचासों पुलिस के सिपाही अपने कंधों पर संगीन-जड़ी बन्दूकें रखे दाँएँ-से-बाएँ रोब के साथ घूम रहे थे। जब वह अफसर उतरा तो सबने अकड़कर सलामी दी। सिपाहियों के बूटों की कड़कड़-ध्वनि से वातावरण में गजब का आतंक छाया था। उस समय कहीं सुई गिरती तो उसकी ध्वनि सुनाई दिए बिना न रहती।

नवागन्तुक ग्रामीण ने अपनी चादर ओढ़ ली। नीचे बैठे-बैठे उसने जले स्टेशन पर नजर डाली। वह सोचने लगा—यह वही स्टेशन है? यही सरकार है? मुश्किल से कुल दस आदमियों ने यह सारा काण्ड किया और अब तुम अपने सैकड़ों सिपाही भेजकर जनता को बताना चाहते हो अपनी ताकत! बेचारी जनता तुम्हारी ताकत से कब इनकार करती थी? फिर यह सब क्यों! वह गाड़ी की फर्श पर लेट गया। आँखें बन्द करके सोने का प्रयत्न करने लगा।

उसके आगे आ खड़ा हुआ एक सात-आठ साल का लड़का। लड़के के आगे थी एक चार-पाँच साल की लड़की; एक बड़ा सा बँगला, बँगले का लम्बा-चौड़ा आँगन और सामने फैला हुआ हरा-भरा बगीचा। लड़की आगे एक खास घेरे में घूम रही थी, घूमते समय वह कह रही थी, "छुओ जी, छूओ जी।" लड़का उसके पीछे-पीछे चलकर उन्हीं शब्दों को दुहराते हुए चक्कर लगा रहा था। दोनों में से कोई किसी को छूता नहीं था लेकिन छूने के लिए दोनों एक दूसरे का आवाहन लगातार करते जा रहे थे। दोनों का अन्तर मिटता नहीं था; उसी घेरे में, उसी फासले से आधे घण्टे तक दोनों चक्कर करते रहे। अन्त में लड़का आगे बढ़ा लेकिन लड़की कतराकर पीछे मुड़ी और आगे बढ़ गई। लड़का झुँझलाकर चल दिया।

लड़के को जाता देखकर लड़की ने कहा—"अजी, कहाँ जा रहे हैं? थक गए क्या? जरा छूकर दिखाओ न?"

"नहीं, हम नहीं छुएँगे। तुम इस तरह मुड़ क्यों गई?"

"मैं मुड़ गई तो तुम दौड़कर पकड़ते!"

लड़का फिर आया नहीं। चला गया।

"तुम इतनी शर्मीली क्यों हो गई हो? कल तक मेरे साथ खेलीं, और आज लगीं मुझसे ही इतना शर्माने? तुम कितनी बदल गई हो! कितनी बड़ी हो गई हो तुम!"

वह नन्हा बच्चा अब कालेज का ग्रेजुएट होकर घर लौटा। दो-तीन वर्ष बाद घर लौटकर उसने देखा—उसके साथ खेलनेवाली लड़की का रूप ही बदल गया है। दो वर्ष में इतना परिवर्त्तन! लड़की न केवल शरीर से बदल चुकी थी अपितु उसका मन भी पूरी तरह बदल गया था। उसकी शरारती और चञ्चल आँखों की पुतलियाँ जैसे किसी ने स्थिर कर दी थीं और उसकी वह उछल-कूद, हिरन की तरह चौकड़ियाँ भरना! ओह, समय भी कितना बड़ा जादूगर है, उसने अपने स्पर्श से, अपने जादू भरे स्पर्श से लड़की में कितना परिवर्त्तन कर दिया है!

"मैं बड़ी हो गई और आप तो अभी वही नन्हें पापा हैं न? अपना मुँह तो देखिए, मैं इतनी नहीं बदली कि आपको आश्चर्य करना पड़े।"

लड़की ने इतने धीरे से कहा कि प्रत्येक अक्षर अलग-अलग मुँह से निकला। उत्तर देते समय वह जमीन की ओर देख रही थी।

"मैं यदि आश्चर्य न करूँ तो क्या तुम वही बन जाओगी, जो पहिले थीं? पहिले मेरे आने पर तुम इस तरह धीरे-धीरे कदम रखकर चलती थीं जैसे पाँवों में मेंहदी लगी हो! तुमसे ऊपर आँखें उठाकर नहीं देखा जा रहा है। और तुम्हारा रूप? कहाँ पा लिया इतना सौन्दर्य? मैं यहाँ छोड़कर गया था एक अबोध बालिका को और मेरे सामने खड़ी है अप्सरा! यह रम्भा है या उर्वशी?"

"देखिए, यदि आप ऐसी बातें करेंगे तो मैं चली जाऊँगी और बुलाने पर भी नहीं आऊँगी। कालेज में क्या यही पढ़ाई हुई है! वहाँ दो वर्ष तक रम्भा और उर्वशी की कहानियाँ पढ़ते रहे, बाबू जी? मैं न रम्भा हूँ न उर्वशी। बाबू जी जागते हुए भी स्वप्न देख रहे हैं। जरा आँखें धोकर आइए!"

"नहीं, आँखें धोने की आवश्यकता नहीं, रानी! मैं इस स्वप्न को देखता रहूँगा। जागने से क्या मिलेगा? क्या जागरण इस स्वप्न से अधिक सुन्दर हो सकता है? यदि बश चले और मैं भगवान् से वर माँग सकूँ तो यह वर माँगूगा कि, हे भगवान्! मेरे इस स्वप्न को शाश्वत बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो ! आँख खुलने पर यह स्वप्न कहीं ओझल न हो जाए।"

"भगवान् तक जाने का कष्ट श्रीमान्जी को नहीं उठाना पड़ेगा। इसके लिए आपको किसी मन्दिर में दीपक नहीं जोड़ना पड़ेगा और न एकादशी का व्रत करके अपने शरीर को ही सुखाना होगा। लेकिन एक बात याद रखिए, स्वप्न स्वप्न ही होता है और जागरण जागरण ही ! जागरण स्थायी और स्वप्न अस्थायी। स्वप्न अनेक आएँगे और आपको लुभाएँगे भी ! एक ही स्वप्न देखते-देखते जब आप उकता जाएँगे, उस समय आप ईश्वर से ही कहेंगे, भगवान् तुमने यह कैसा वरदान दिया है ? मैं मूर्ख था, लेकिन तुम तो त्रिकालदर्शी हो। मैं इस स्वप्न से तंग आगया हूँ। उस समय यदि भगवान् आपकी प्रार्थना स्वीकार न कर अपने वरदान की लज्जा बचाने की चेष्टा करें तो बाबूजी को भगवान् को दोष देने का कारण ढूँढ़े न मिलेगा !"

"न मिले। यदि मुझे ईश्वर के पास न जाकर पृथ्वी के किसी देवता से यह मिलता है तो श्रम करने की मुझे सनक नहीं है। क्या तुम इस देवता का पता-ठिकाना बताने की कृपा करोगी ? उसके पूजा-प्रसाद के लिए क्या कुछ करना पड़ेगा ? शास्त्रीय विधि भी तुम्हें ही बतानी पड़ेगी।"

"समय आने पर सारी विधियाँ अपने आप बता दी जाएँगी, लेकिन एक बात इसी समय कहे देती हूँ, जिसने आपको बी० ए० परीक्षा में पास किया है, उसमें कुछ ज्यादा बुद्धि नहीं थी। लो मैं चली।"

* * *

गाड़ी तेज रफ्तार से अपना रास्ता तयकर रही थी। पहिए निश्चित ताल-स्वर पर थिरक रहे थे। वायु के झोंके आ रहे थे। ग्रामीण ने बाहर दृष्टि डाली। सपाट मैदान था, ज्वार-बाजरे की फसल कट चुकी थी, खेतों में छोटे-छोटे डंठल खड़े थे। दूर-दूर जाकर दृष्टि को कोई आश्रय मिलता नहीं था। इसलिए लौट आती थी।

एक-एक करके तार के खंभे दौड़े जा रहे थे; खंभों के तार कभी फैलते दिखाई देते और कभी सिकुड़ते। एक के बाद दूसरी घटना सामने आ रही थी—

लड़की की आँखों के आँसू सूख चुके थे, किन्तु अभी वह रह-रहकर सिसकियाँ भर रही थी। बोलने का प्रयत्न करती थी किन्तु हृदय में शोक का वेग इतनी जोर से उठता था कि मुँह से एक शब्द नहीं निकलता था। आधे घंटे तक चुप रहने के बाद लड़की ने सिर उठाया और उस युवक का हाथ पकड़कर उसने कहा—"नहीं, आप नहीं जा सकेंगे। अपने जीवित रहते मैं आपको जाने न दूँगी। जब संसार में मैं न रहूँ, तब आप अपनी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए स्वतन्त्र रहेंगे। मेरी प्रार्थना है, यदि आप प्रार्थना स्वीकार न करें तो आज्ञा आपको स्वीकार करनी ही होगी। आप इस तरह अपना बलिदान नहीं कर सकते। जो कुछ बलिदान करना होगा, मैं करूँगी। यदि मैं न भी रहूँ तो दुनिया का क्या बिगड़ेगा ? आप जीवित रहें तो बहुत कार्य कर सकेंगे। मेरा रिक्त स्थान कहीं-न-कहीं से पूरा कर दिया जाएगा किन्तु क्या आपका अभाव मेरे लिए कहीं से पूर्ण हो सकेगा ?" युवती ने और कसकर युवक का हाथ पकड़ा।

"नहीं, अब मेरा जीवन निरर्थक हो चुका है। उसकी सार्थकता इसी में है कि किसी पुण्य-कार्य में, देश की भलाई में मैं तत्काल ही इसका विनियोग कर दूँ। मैं स्मृतियों का खिलवाड़ नहीं बनना चाहता। तुम्हारी शक्ति का मुझे भरोसा है। मैं निश्चिन्तता से अपना उद्देश्य पूरा कर सकूँगा।"

"आप फिर देश के लिए बलिदान देने की बात करने लगे।" इस बार युवती के स्वर में कड़ाई थी, "यदि आप वास्तव में बलिदान और उत्सर्ग की भावना से इस पथ पर जाते तो उस समय मुझसे अधिक किसी को हर्ष न होता। लेकिन यह गौरव मेरे भाग्य में लिखा नहीं है। उस समय मैं स्वयं आपको गर्व से बिदा करती। पर बात ऐसी नहीं है, इस समय आपका अपने भविष्य से विश्वास उठ गया है। भविष्य में कोई आलम्बन न देखकर आप अपने निरर्थकता अनुभव कर रहे हैं। यदि जीवित रहेंगे तो समझती हूँ आपको भूतकाल की स्मृतियाँ अपने अंक में सुरक्षित रखेंगी और इस उपस्थित वर्त्तमान के हट्टे-कट्टे आपके भविष्य का निर्माण कर देंगी। किन्तु इस भविष्य से निराश होकर अपने आपको समाप्त करने की भावना में शुद्ध हीनता और कायरता है। आपकी इस दुर्बलता से मुझे मर्मान्तिक वेदना होती है। आप इसे देश सेवा का नाम दें या बलिदान का, मैं इसे आत्म-हत्या के अतिरिक्त कोई दूसरा नाम नहीं दूँगी। आत्महत्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ-साथ इसमें एक भयंकर स्वार्थ व्याप्त है। केवल अपनी अशान्ति, अपने दुःख से छुटकारे की इच्छा ही आपकी इस दिशा की ओर अग्रसर कर रही है। ऐसे बलिदानों से कभी किसी देश का भला नहीं हुआ। साथ ही जब भ्रम का आवरण दूर होगा, उस समय आप अपने निर्णय पर पश्चात्ताप करेंगे।

उस पश्चात्ताप में मेरा अंश कितना रहेगा, मैं जानती हूँ। तो क्या आप यह चाहते हैं कि मैं दूसरे लोक में जा कर भी यदि वह लोक वास्तव में है, तो पश्चात्ताप और वेदना के बोझ से दबी रहूँ! मेरे लिए, मेरी प्रसन्नता के लिए, दया करके आपको प्रतिज्ञा लेनी होगी कि आप जीवित रहने के लिए जीवन की पूरी शक्ति लगा देंगे! पलायन की भावना मन से निकालिए और जो कुछ आता है, उसका सामना करने के लिए अपने मन में शक्ति एकत्रित कीजिएगा।"

उत्तर पाने के लिए युवती युवक के मुँह की ओर अपलक देखती रही।

"मैं कल सन्ध्या को ठीक उत्तर दे सकूँगा।"

* * *

दूसरे दिन युवक जब उस लड़की के घर गया तब सन्ध्या हो गई थी और अँधेरा गहरा हो चुका था। चिड़ियों की चहचहाहट बन्द हो गई थी। युवक ने उदासी और विषाद के साथ धड़कते हृदय से बँगले के बाग में प्रवेश किया। बगीचे के वृक्षों के झुरमुट से उसे धीमे स्वर में वार्त्तालाप सुनाई दिया—

"बेटी मेरी, जो होना था होगया। मेरी बात मान जा। किसी के कान तक की खबर नहीं होगी।"

युवक के कान खड़े हो गए।

"नहीं माँ, यह मुझसे नहीं होगा। मैंने तुम्हारी किसी बात का आज तक उल्लंघन नहीं किया। मैं तुम्हारी किसी भी बात को टालना नहीं चाहती। न जाने क्यों, मुझसे केवल यही नहीं होगा। तुम कहो तो अभी गले में पत्थर बाँधकर अपने घर की बावड़ी में कूद जाऊँ या तुम बाजार से अफीम मँगवा दो, मैं खाकर सो जाऊँगी। हाथ जोड़कर तुमसे प्रार्थना करती हूँ, इस बात के लिए जोर मत दो, माँ! मेरे लिए इससे बढ़कर अहित की कोई बात नहीं होगी। इससे बचने का एक रास्ता है, अफीम मँगवा दो; तुम्हें और कुछ नहीं करना पड़ेगा। लेकिन इस रास्ते पर चलने के लिए मत कहो। मुझ पर इससे अधिक कोई अन्याय हो सकता।"

"क्या कह रही है?" माँ गरज उठी—"तुझे इसका ध्यान भी है, तूने क्या कर डाला है? वंश पर कालिख क्या अमिट दाग लगा दिया तूने! अगर मैं तेरे ये चरित्र जानती तो पैदा होते ही तेरा गला घोंटकर उफ तक न करती!"

"तो उस भूल को अब ठीक कर सकती हो न?"

"हाँ कर तो सकती हूँ, लेकिन तेरा जैसा तामसी और पत्थर का हृदय मुझे है जो नहीं। यह भूल तेरा गला नहीं अपना गला घोंटकर ठीक करूँगी।"

"चुप हो मां! मैं यह न होने दूँगी। इससे पहिले मैं स्वयं ही तुम्हारी भूल सुधार दूँगी। तुम्हें यह नहीं करना पड़ेगा।"

"नहीं करना पड़ेगा तो तू मेरा कहा क्यों नहीं करती?" अब की बार माँ के स्वर में कम्पन था और गीले कण्ठ के कारण स्वर भी बोझिल होगया था—"प्यारी बेटी, तू जानती है, मैं तुझसे कितना प्यार करती हूँ। तेरे भाई-भावज तुझसे कितना स्नेह करते हैं? मनुष्य से भूल होती है। बड़ों-बड़ों से भूल हुई है। मान लो तुझसे भूल हो गई तो मैं क्या छोड़ दूँगी तुझे? बच्चा कीचड़ में भर जाए तो माँ ही उसे धोकर साफ करती है? मैं तुझे निष्कलंक कर दूँगी। सारा पाप अपने माथे लूँगी। जो दंड भोगना होगा, मैं भोगूँगी। संसार में किसी के कान पर भी यह समाचार नहीं जाएगा। तुझे लोक-परलोक की चिन्ता छोड़ कर मेरी बात माननी होगी। माँ हूँ तो, बाप हूँ तो मैं हूँ। भूल होगई।"

"मैं तुम्हारी सब बातें मानती हूँ माँ, लेकिन यह बात मान नहीं सकती कि मुझसे भूल हुई। अगर भूल होती तो मैं स्वीकार कर लेती। उस भूल के लिए मुझे जो प्रायश्चित्त करना होता, खुशी-खुशी करती। तुम मुझसे सब बातें जानना चाहती हो और नाम भी जानना चाहती हो। इस सब से क्या अर्थ निकलेगा? सब कुछ व्यर्थ है। मैंने जो पढ़ा है, जो सुना है उसके आधार पर मैं इसी बात पर पहुँची हूँ कि इस जगत में मेरे लिए अब कोई स्थान नहीं है। माँ, बस एक बात मैं अपनी मर्यादा को तोड़कर तुमसे कहना चाहती हूँ, इसलिए भी कि शायद उस बात को कहने के लिए मुझमें फिर शक्ति रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या नहीं, मैं तुम्हें यह बता दूँ कि मुझसे कोई भूल नहीं हुई। हम दोनों में स्नेह था। पक्का प्रेम था। बरसों के बाद भी किसी दिन मैंने यह नहीं जाना कि हमारे स्नेह में सन्देह की कहीं गंध भी है। मेरा दृढ़ निश्चय है कि हमारा प्रेम इस समय भी पहिले से अधिक उज्ज्वल और ध्रुव है। मैं समझती हूँ प्रेम पाप नहीं। प्रेम पुण्य है और पवित्रतम है। सांसारिक व्यक्ति यदि उसे, उसके पवित्र रूप को न देख सके तो यह प्रेम का दोष नहीं। मैं जानती हूँ कि किसी समय मेरे मनकी इस पवित्रता का स्थान वासना ने नहीं लिया। जो एक स्वाभाविक और सरल आत्माओं का सम्बन्ध है, उसमें किसी प्रकार की भूल की संभावना नहीं। यदि कोई कहे कि मुझसे भूल हुई तो मैं स्वीकार नहीं करूँगी। भूलना या याद रखना इस मार्ग में है ही नहीं। हाँ, संसार के नेत्रों में उसकी पवित्रता नहीं, कुछ और ही दिखाई देता है! संसार को भी हमें मानना है। इसी लिए अपने कार्य के लिए मुझे प्राणों का मूल्य चुकाना पड़े तो मैं उससे पीछे नहीं हटूँगी और समाज को इसका पूरा-पूरा मूल्य चुका दूँगी। किन्तु इस संसार से जाते समय और यहाँ रहते समय भी मैं अपने हृदय पर यह बोझ नहीं रख सकती कि मैंने एक कार्य किया और उस कार्य की अच्छाइयाँ और आनन्द का उपभोग मैंने किया। फिर जिस समय उसका मूल्य चुकाने का समय आया, मैं पीछे हट गई। नहीं माँ, यह नहीं होने का। मैंने जो किया; अच्छा किया। अच्छाई के लिए जो देना पड़ेगा, मैं दूँगी, तुम्हें कोई पाप नहीं करना पड़ेगा"। उसकी आँखों में आँसू आगए और उसने माँ के पैरों में पड़कर कहा—"आज मैंने बहुत कुछ कह डाला। क्या किसी बेटी ने अब तक अपनी मां से ऐसा कहा है? इसके लिए मुझे क्षमा कर देना।"

युवक और अधिक न सुन सका, वह वहां से चला गया।

* * *

गाड़ी कुछ धीमी हो गई थी। उस ग्रामीण का हृदय धड़क रहा था। वह पसीने से तर हो गया था। गाड़ी रुक रही थी, उसने अपनी लाठी उठाई और दरवाज़ा खोला।

एक यात्री ने पूछा—

"क्या यहीं उतरना है तुम्हें?"

"हां भाई, मेरी यात्रा समाप्त हो गई!" और वह नीचे उतर गया।

———

मानसिक एवं स्नावयिक रोगों का मनोवैज्ञानिक उपचार

श्रीमती मनसा पंडित, एम० ए०

आज संसार में विज्ञान के नए-नए आविष्कार हो रहे हैं। जीवन के प्रत्येक पहलू को विज्ञान की सहायता से उन्नत और शक्तिशाली बनाया जा रहा है। उत्पादन-वृद्धि के लिए नाना प्रकार की मशीनें लग रही हैं। विमान की सहायता से दूरी पर विजय प्राप्त की जा रही है, फलों को सड़ने से बचाने और उन्हें दिनों सुरक्षित रखने के सफल प्रयत्न किए जा रहे हैं। उसी प्रकार ओषधि-विज्ञान में भी नानाविध बीमारियों से लड़ने के लिए प्रतिदिन नए उपचारों का आविष्कार हो रहा है। चेचक रोकने के लिए वेक्सीन से लेकर पेन्सलिन तक तथा अन्य अनेकानेक रोगों के निवारण के लिए नवीनतम आविष्कृत ओषधियों का उपयोग हो रहा है। भारतीय डाक्टर भी इन सभी आविष्कारों का लाभ उठा जनता की सेवा कर रहे हैं। फिर भी यह समझ में नहीं आता कि मनोविज्ञान के नए-नए अनुसंधानों का पूरा फायदा हमारे डाक्टर और ओषधि-विज्ञान के शिक्षालय क्यों नहीं उठाते? बीसवीं शताब्दी के मध्य में भी आज जब कोई रोगी स्नायु-संबंधी कोई शिकायत लेकर डाक्टर के पास जाता है तो डाक्टर साहब या तो उसे पागलखाने भिजवा देते हैं अथवा चित्त प्रसन्न रखने और मनोबल को ऊँचा बनाने का उपदेश देकर वापिस भेज देते हैं। यदि डाक्टर साहब की दृष्टि में रोगी का स्नावयिक व्यवधान इतना गंभीर हुआ कि मस्तिष्क-दौर्बल्य का कारण बन विक्षिप्तता की सीमा तक पहुँच रहा है तो उसे निर्द्वन्द्व भाव से पागल की उपाधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे पास के पागलखाने में भेजने का प्रबन्ध कर देते हैं। और यदि स्नावयिक अव्यवस्था से मस्तिष्क पर कोई विशेष प्रभाव नहीं लक्षित हुआ और शिकायत केवल स्नायु-दौर्बल्य की ही हुई तो फिर ऐसे रोगी को दुर्बलमन, दुर्बल चरित्र, या कर्तव्य-पलायित कह उसे समझा दिया जाता है कि वह अपना चित्त स्वस्थ करे, वही बात जो वह सदा करने का प्रयत्न करता है और जिसे करने में वह अपने को असमर्थ पाता है। बहुत हुआ तो ऐसे रोगी को उपदेश के बाद वही १८ वीं शताब्दी की ओषधि ब्रोमाइड (स्नावयिक उत्तेजन को शान्त करनेवाला एक प्रकार का नमक) देते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि रोगी ब्रोमाइड की सहायता से अपने को चलता-फिरता देख इतना ब्रोमाइड लेना शुरू कर देता है कि उसे ब्रोमाइड का नशा और लत-सी हो जाती है। हमारे ओषधि-विज्ञान के शिक्षालयों में स्नायु-रोगों के विषय में कोई विशेष पाठ्यक्रम नहीं है, लेकिन आजकल जिस किसी समझदार डाक्टर से पूछिए, वही यह कहता हुआ पाया जाता है कि मानसिक क्रियाओं की अस्तव्यस्तता का रोग वृद्धि पर है।

मनोवैज्ञानिक उपचार का आधुनिक रूप विश्वविश्रुत विद्वान् फ्रायड के अनुसंधानों का ही फल है। आज जो कुछ भी ज्ञान विदेशों में मनोवैज्ञानिक अथवा स्नायु रोगों के विषय में प्राप्त है वह सब डाक्टर फ्रायड के ही कठिन परिश्रम का फल है। मनोविज्ञान की सहायता-द्वारा विदेशी डाक्टर आज एक पागल के उन्माद रोग के मूल कारण को आसानी से समझ लेते हैं। हमारे देश में तो १०-१५ वर्ष पहिले तक प्रत्येक रोग के विषय में सोचते समय उसे स्फीति, छूत या इसी प्रकार के अन्य किसी आगन्तुक कारणों-द्वारा उत्पन्न माना जाता था। यह कोई नहीं सोचता था कि शारीरिक विकार, मन अथवा भावना की अव्यवस्था से भी उत्पन्न हो सकते हैं। हिस्टीरिया अथवा मृगी रोग में किसी की एक टांग में पक्षाघात होजाना उतना ही सच्चा और गंभीर है, जितना कूल्हे या जाँघ के किसी स्नायु के टूटने के कारण पक्षाघात होना। तीव्र उद्वेग के कारण उत्पन्न हृदय की असाधारण धड़कन तो एक ऐसी बीमारी है जिसका अनुभव प्रायः थोड़ा बहुत सभी को होगा। यदि यह सब सत्य है तो फिर यह भी ठीक करने की आशा करना भूल है। अवश्य ही दवाएँ थोड़ा-बहुत लाभ पहुँचाती हैं, किन्तु ऐसी सभी बीमारियों का मनोवैज्ञानिक उपचार हुए बिना रोगी की रोगमुक्ति संभव नहीं। यह सिद्ध हो चुका है कि स्नायु-रोगों का कारण पैतृक बहुत कम होता है, जैसा अक्सर सोचा जाता है। इसका मुख्य कारण तो प्रायः शैशव का अवैज्ञानिक लालन-पालन ही होता है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी मनोवृत्तियां बचपन के पालन-पोषण में अत्यधिक दमित हो जाती हैं, जिसके फलस्वरूप जीवन की वास्तविकताओं से सामना पड़ने पर वह अपने को परिस्थितियों के अनुसार व्यवस्थित नहीं कर पाते। परिणाम होता है, मनोबल का ह्रास और पराक्रम-हीनता। दमित मनोवृत्तियों से यहां तात्पर्य उन स्वयंभू प्रवृत्तियों (instructive urges) से है, जिन्हें अचेतन मस्तिष्क चेतन नहीं होने देता, क्योंकि उसे डर रहता है कि कहीं वे प्रवृत्तियां इतनी उग्र न होजाएँ कि वे सामाजिक नैतिकता, धार्मिक विधान और माता-पिता की शिक्षा से टकराकर उन्हें चूर-चूर कर दें, जिन्हीं के सहारे हमारे जीवन के नैतिक पहलू का निर्माण होता है। साथ ही यह अचेतन-मन-यन्त्र ऐसे अप्रिय अनुभवों को भी स्मृति से मिटा देता है जिनसे मनुष्य में अप्रिय भावात्मक उद्वेग पैदा होते हैं। किन्तु दूसरी ओर यदि किसी मनुष्य की दमन-शक्ति प्रबल हुई तो उसके चेतन मन में चाहे इन दमित वृत्तियों की प्रतिक्रिया न घटित हो, परन्तु दमित वृत्तियाँ अपनी ओर से सदा बाहर निकलने तथा मनुष्य में उन्हीं अप्रिय भावोद्वेगों को जाग्रत् करने के लिए सदा ही प्रयत्नशील रहती हैं। जहाँ दमन से आवश्यकता से अधिक काम लिया जाता है, अर्थात् स्वयंभू प्रवृत्तियों का बजाय उचित रीति से संस्कार करने के उन्हें बलात् दफना दिया जाता है, वहाँ यह गतिरुद्ध शक्ति सदा बाहर निकलने का मार्ग खोजा करती है! इसकी सबसे सुन्दर उपमा उस नदी से दी जा सकती है जिसके स्वाभाविक प्रवाह पर रोक लगा दी गई हो और वह किनारों को तोड़-फोड़ उल्टे-सीधे रास्तों से फूटकर वह निकले और आशंकित हानि से अधिक हानि पहुँचा दे।

एक बालक जिसे किसी कारण माता-पिता प्यार नहीं करते जब यह देखता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बालक अपने भाई से घृणा करने लगता है, और उसमें इस प्रकार की भावनात्मक प्रतिक्रिया परिलक्षित होने लगती है, जिसमें माता-पिता के प्रति आक्रमणात्मक भाव होगा। दूसरी ओर उसकी शिक्षा, उसके संस्कार, उसे यह सिखाते हैं कि माता-पिता से प्रेम करना चाहिए; उनकी आज्ञा का पालन करना, उनका मान करना प्रत्येक बालक का धर्म है। छोटे भाई से सदा प्यार करना चाहिए, उससे ईर्ष्या या घृणा करना पाप है, इत्यादि! इन सब का फल यह होता है कि वह दमनशक्ति से काम ले भाई के प्रति घृणा और माता-पिता के प्रति अपने क्रोध की भावनाओं को अचेतन मन के गहरे कूप में धकेल देता है, जो सदा बाहर फूट पड़ने को समय ढूँढती रहती हैं और प्रायः नाना मानसिक और स्नायविक रोगों को जन्म देती हैं। दूसरे प्रकार के वे लोग होते हैं जिनके मनोबल-ह्रास का कारण यह होता है कि वे अपनी शक्ति से कहीं अधिक प्रयत्न करते हैं कि वे किसी प्रकार अपने को जीवन की समस्याओं और परिस्थितियों के अनुकूल बना कर कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकें। इसी प्रकार दमित वृत्तियों की संघर्षात्मकता, अत्यधिक श्रम अथवा अन्य कारणों से उत्पन्न स्नायु-दौर्बल्य और स्नायु-रोगों के विभिन्न प्रकार बताए जा सकते हैं। किन्तु रोग का मनो-वैज्ञानिक उपचार प्रारंभ करने से पहले यह आवश्यक है कि उपचारक प्रत्येक रोग का निदान और उसका वृद्धि-क्रम ठीक-ठीक समझे। साथ ही अपने विषय का ज्ञान तो उसके लिए आवश्यक है ही। स्नायु-रोगों की उत्पत्ति जानने के लिए अचेतन मन का सिद्धान्त जानना आवश्यक है, जिस सिद्धान्त के ज्ञान के लिए हम सब डाक्टर फ्रायड के परि-श्रम के आभारी हैं। इसे समझने के लिए एक बच्चे के चेतन-मन के विकास का अध्ययन सर्वाधिक उपयुक्त होगा। नवजात शिशु के पैदा होते ही उसमें उत्तेजन प्रारम्भ होजाते हैं, अर्थात् पेट में कुछ गड़बड़ होती है और वह रोने लगता है। माँ समझ जाती है कि बच्चे को भूख लगी है। इसी प्रकार नाना उत्तेजनों की सहायता से बालक अपना ज्ञान-कोष भरने लगता है। फिर बालक के जीवन का वह स्तर आता है जब वह चीजों को देखने और देखकर जानकारी प्राप्त करने लगता है। ये निरीक्षण से पुनर्व्यक्त होते हैं तब उनका जो कुछ भी अर्थ होता है वह बालक समझता है और इस प्रकार वह विचार करने की अवस्था में पहुँच जाता है। जब से बच्चे के मन में विचारों के रूप बनने लगते हैं तब से उसका चेतन मस्तिष्क विकसित होना शुरू होजाता है। इस प्रकार अब उसमें तर्क और निर्णय करने की वैसी ही शक्ति आने लगती है, जैसी युवा व्यक्तियों में पाई जाती है। यह तो सभी जानते हैं कि बालक जो कुछ भी सीखता-समझता है वह उन्हीं लोगों से, जो उसे पालते हैं या जिनके साथ वह रहता है। वही उसे विभिन्न उत्तेजनाओं के अर्थ भी बताते हैं। साथ ही वह परीक्षणों और भूलों को भी सीखता है।

हमारे मन का अचेतन भाग बहुत ही आदिम ढंग का होता है। प्रत्येक नवजात शिशु या पशु में कुछ मौलिक उत्प्रेरणाएँ होती हैं, जो जीवन को संचालनशक्ति प्रदान करती हैं। ये मौलिक उत्प्रेरणाएँ विशेषतः दो मुख्य वृत्तियों की ही सहायक होती हैं। वे मुख वृत्तियाँ हैं, आत्म-रक्षा-प्रवृत्ति और संतानोत्पत्ति की प्रवृत्ति। नवजात शिशु में जो आत्मपोषण, उपलाभ एवं आत्म-ज्ञापन आदि प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं, वे सब आत्म-रक्षा प्रवृत्ति की ही सहायक होती हैं। परन्तु यह जानना भी आवश्यक है कि सन्तानोत्पत्ति-प्रवृत्ति भी विस्तृत भावात्मक सम्बन्धों के साथ अविकसित एवं बचकाने रूप में बहुत ही छोटी उमर से उसमें प्रगट होने लगती हैं। इन सब अन्तर्भूत प्रवृत्तियों की सहायक एक-एक निर्दिष्ट भावना होती है और वे भाव-नाएँ धीरे-धीरे परस्पर मिल-जुल कर अधिकाधिक जटिल होती जाती हैं। ये प्रवृत्यात्मक उत्प्रेरणाएँ अपनी सहायक भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के साथ मिलकर ही हमारे जीवन के क्रियात्मक और अनुभूत्यात्मक भागों को बनाती हैं। इस प्रकार मनुष्य के दो हिस्से होगए। एक आदिम, जो उसे प्रवृत्यात्मक ढंग से बिना सोचे-विचारे कार्य करने को प्रेरित करता एवं अनुभूति-ज्ञान उत्पन्न करता है, जिसके द्वारा मनुष्य को सुख और दुःख दोनों ही का अनु-भव होता है, और दूसरा संस्कृत जो धीरे-धीरे विकसित होता है और मनुष्य को विवेकशीलता देता है और उसे भावना-प्रेरित कार्यों के फल का ज्ञान कराता है। इसके साथ एक तीसरी शक्ति और विकसित होती है, जिसको समझना भी अत्यन्त आवश्यक है। यह वह शक्ति है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिकता का बोध करा जीवन के प्रति सही रुख बताती है। इसे हम धर्म-चेतना या आत्मबोध भाव कह सकते हैं। डाक्टर फ्रायड ने इसे 'महान् अहम्' (Super ego) का नाम दिया है।

यदि बालक के लालन-पालन के प्रारंभ में ही इनमें से किसी प्रवृत्ति का दमन कर उसे अचेतन मन में धकेल दिया जाता है तो उसका नतीजा होता है निरन्तर मानसिक उत्तेजन और स्नायविक-व्यवधान। इसलिए बच्चे के पालन-पोषण में उसके प्रवृत्यात्मक विकास का सदा संस्कार करते रहना चाहिए। बच्चा पैदा होते ही प्रवृत्तिगत रूप से स्तनपान करना जानता है, उसे कोई यह क्रिया सिखाता नहीं है। उसे केवल स्तनपान का सही ढंग ही बताना होता है। धीरे-धीरे उसे बोतल से, चम्मच से फिर कटोरे से दूध पीना भी सिखाया जाता है। फिर उसे अच्छी तरह चबा-चबाकर खाने की शिक्षा दी जाती है। जल्दी-जल्दी खाना निगलने पर डाँट भी पड़ती है। इस प्रकार जब तक वह अच्छी तरह स्वयं हाथ से खाना नहीं सीख जाता, उसकी यह शिक्षा चलती रहती है।

इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की प्रवृत्यात्मक उत्प्रेणाओं को उसकी अवस्थितियों के अनुसार ही सुसंस्कृत किया जाना चाहिए। यहाँ सन्तानोत्पादन प्रवृत्ति की कुछ और व्याख्या करके समझा देना शायद अनुचित न होगा। इस प्रवृत्ति के विकास की तीन अवस्थाएँ हैं। सबसे पहले यह प्रवृत्ति और इससे सम्बन्धित भावनाएँ स्वयं की ओर ही प्रवृत्त होती हैं। यह तो सभी जानते हैं कि बच्चा अपना अंग चाटने अथवा आत्मोद्दीपन क्रियाओं (शौचादि) और अपने शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में एक वैचित्र्य-भावना के साथ दिलचस्पी लेता है। सन्तानोत्पादन-प्रवृत्ति के आरंभिक विकास की अवस्था में आनन्दप्रद उत्तेजन पहले जिह्वा और फिर गुदा से सम्बन्धित होते हैं। बच्चे को स्तनपान करने में जो आनन्द आता है वह तो सदा ही देखा जाता है। अनुसंधानों से पता चला है कि बालिग अवस्था की कुछ मानसिक विकृतियों का कारण कई बार यह पाया गया है कि सन्तानोत्पादन प्रवृत्ति की उक्त अवस्था में उस प्रवृत्ति का स्वाभाविक विकास नहीं हो सका। सन्तानोत्पादन प्रवृत्ति की भावनाएँ यदि अचेतन मन में दबा दी जाएँ तो बालक में आत्मरति भाव पैदा हो जाता प्रकार बालक में स्वरमण भाव प्रस्फुटित होने लगता है, जिसका नतीजा बुरा होता है। यदि दुष्प्रवृत्ति का असली कारण समझ में आजाए तो अवश्य ही माता-पिता के लिए बालक में इस आदत को देखकर घबराने की कोई बात नहीं रह जाती। एक साधारण और स्वस्थ बालक में आत्मरति और स्वरमण की अवस्थाएँ बिना किसी विशेष प्रत्यक्षता अथवा अव्यवस्था के आराम से समाप्त हो जाती हैं और आठ वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते दूसरी अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। यह है स्वजातिरति की अवस्था जब लड़के लड़कों अथवा मर्दों की ओर और लड़कियाँ लड़कियों अथवा स्त्रियों की ओर ही आकर्षित होती हैं। अब लड़के लड़कियों में अपनी-अपनी जाति के आदर्श व्यक्तियों के प्रति एक प्रकार का वीर-पूजा (hero worship) भाव पैदा हो जाता है। यह अवस्था प्रायः वयःसन्धि तक या कभी-कभी थोड़ा इससे अधिक रहती है। तीसरी अवस्था, भिन्न-लिंगी रति-अवस्था, वयःसन्धि से लेकर यौवन तक पूर्णतः विकसित हो जाती है।

यही समय होता है जब शरीर-विज्ञान की दृष्टि से और आदिम दृष्टि-कोण से कामप्रवृति का कार्य पूर्ण रूप से प्रारम्भ होना चाहिए और सन्तोनात्पति इसी समय शुरू होती है। सामाजिक नैतिकता के विधि-निषेधों ने रति को निषिद्ध बना दिया है, जो विवाह-प्रथा की ही देन है। मुख्यतः यही मनुष्य की परेशानियों का कारण है। दो ही मार्ग हैं, या तो मनुष्य अपनी कामप्रवृति का दमन करे या उसे सामाजिक नैतिकता के विरुद्ध विद्रोह कर, लज्जा और अपराध की भावना लिए, शान्त करे।

इस प्रकार यह तो साफ ही हो गया कि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृतियाँ सामाजिक नैतिकता के साथ संघर्ष में आती हैं। उसके पालन-पोषण के ढंग, उसके संस्कारों से भी उक्त प्रवृतियों की झड़प होती रहती है। जिज्ञासा भी एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसे गलत ढंग से शान्त करने की चेष्टा की जाती है। डर का भाव हमारे साथ ही हममें पैदा होता है और उसे दूर करने का प्रयत्न हम सभी को करना चाहिए। परन्तु प्रतिदिन देखने में आता है कि उसे बढ़ाने का प्रयत्न किया जा रहा है। बहुत से माता-पिता अपने बच्चे को डर की सहायता से ही अनुशासित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में किसी प्रवृत्ति को जबर्दस्ती रोका जाता है, तो उसका नतीजा यह होता है कि उसी विन्दुविशेष पर एक प्रकार का मानसिक केन्द्रीकरण सा हो जाता है और उस प्रवृत्ति का स्वाभाविक विकास एक दम ठप हो जाता है। यदि किसी २-३ वर्ष के बालक को स्वयंरति के लिए इतनी सख्त सजा दी जाए कि वह उसके मन में सदा के लिए जम जाए तो फिर उसी भाव पर मानसिक केन्द्रीकरण हो जाता है, जिसका नतीजा यह होता है कि बजाय इसके कि उसके काम-जीवन का स्वस्थ-विकास हो, उसकी वह प्रवृत्ति उसे आत्मरति में लगा देती है। वह अपने से ही प्रेम करने लगेगा और उसके यौवन का काम-जीवन अवश्य ही अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

बच्चे पर माता-पिता के व्यवहार का बड़ा प्रभाव पड़ता है। माता के दूध पिलाते समय की भूलें और बेवकूफियाँ ही मनुष्य में कई विशेष बीमारियाँ उत्पन्न कर देती हैं, जो बड़े होने पर उन्हें दुःख पहुँचाती हैं। रोष, कटुता, उद्वेग-इत्यादि का किसी मनुष्य में होना उसकी माता के व्यवहार का ही फल होता है। एक विशेष भाव या रूप के आस-पास मानसिक अवरुद्धता की अवस्थाएँ प्रायः लज्जा और अपराध-भावना की ही प्रतीक होती हैं। बहुत बच्चों में प्रत्यावर्तन की बहुत आदत होती है। जब कभी माता-पिता के विरुद्ध कुछ कहना या करना होगा तो ५-६ वर्ष का बालक भी तुतलाकर बात करेगा या फिर किसी और प्रकार से बचपन दिखाएगा। यह आदत बीमारी के रूप में बालिग लोगों में भी पाई जाती है। प्रक्षेपण-द्वारा मनुष्य दूसरों में किन्हीं विशेष भावनाओं की प्रतिक्रियाओं की कल्पना करता है, और ये भावनाओं की प्रतिक्रियाएँ वही होती हैं जिन्हें किसी समय उसने अत्यन्त दुःखद होने के कारण अपने अचेतन मन में धकेल दिया होगा और जिन्हें वह किसी भाँति भी चेतना में लाने होने देना नहीं चाहेगा। एक मनुष्य जिसे जीवन में सदा असफलता ही मिली है, सम्भवतः इस बात को मानने में दुःखी होता है कि उक्त असफलता का कारण वह स्वयं है या उसकी अपनी भूलें। ऐसा मनुष्य अपनी असफलता का कारण बताते हुए यही कहेगा कि उसके बड़े अफसर या उसके साथी उसे समझ नहीं पाते या उनका उसके साथ व्यवहार अच्छा नहीं है। जब ऐसी आदत बहुत बढ़ जाती है तब वह एक बीमारी का रूप धारण कर लेती है, और ऐसा मनुष्य एक प्रकार के भ्रान्त उन्माद का शिकार हो जाता है।

इन सब बातों और उदाहरणों से हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मानसिक एवं स्नायविक अव्यवस्थाओं का कारण शारीरिक अव्यवस्था नहीं, वरन अधिकतर व्यक्ति की मानसिकता के विकास की प्रक्रिया में आए हुए संकट ही होते हैं और इसलिए इस प्रकार के रोग दवाओं से नहीं ठीक हो सकते। ये बीमारियाँ तो मनोवैज्ञानिक उपचार की सहायता से ही दूर की जा सकती हैं। विदेशी विद्वानों ने इनके भिन्न-भिन्न तरीकों का प्रयोग किया है, जिनका विस्तृत अध्ययन हमारे देश में भी होना चाहिए।

विशाखा

मूल लेखक, पण्डित विधुशेखर भट्टाचार्य : अनुवादक, पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र

(१)

कोशल-राज्य के अधीश्वर महाराज प्रसेनजित के प्रधान मन्त्री का नाम था मृगार। जिस तरह के उत्तम कुल में उनका जन्म हुआ था, उसी तरह की कुलीन कन्या के साथ उनका विवाह हुआ था। समय के अनुसार एक-एक करके उनके सात पुत्र हुए। उनमें से सब से छोटे का

मृत्यु हो गई। मृगार ने अपने पहले छः पुत्रों का विवाह कर दिया था। वे सब अपनी-अपनी पत्नी के साथ निरन्तर आमोद-प्रमोद में ही मग्न रहा करते थे। घर गृहस्थी के काम-काज की ओर उनका थोड़ा-सा भी ध्यान न जाता। यह देखकर मृगार चिन्तित हो उठे। एक दिन जब वे इसी चिन्ता से व्यग्र थे, तब उनके समीप एक ब्राह्मण आया जो उनका बड़ा ही प्रियपात्र था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण ने मृगार को चिन्तित देखकर कहा—हे गृहपति, आप इस तरह उद्विग्न क्यों हैं ?

मृगार ने उत्तर दिया—हे ब्राह्मण, मेरे छहों पुत्र अपनी-अपनी स्त्री के साथ आमोद-प्रमोद में ही सारा समय बिताया करते हैं। घर के काम-काज की ओर उनका जरा भी ध्यान नहीं जाता। इससे मेरी सारी गृहस्थी सत्यानाश होती जा रही है।

"तो आप विशाख का विवाह क्यों नहीं कर देते ?"

"पर विशाख का ही क्या भरोसा है ! सम्भव है कि विवाह हो जाने पर वह उन सब से भी अधिक निकम्मा निकले।"

"अभी से आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं ? वह बहुत अधिक काम-काजी भी तो निकल सकता है ! यदि आप उसका विवाह करना चाहें तो मैं एक उपयुक्त कन्या खोज सकता हूँ।

"अच्छी बात है। ऐसा ही कीजिए।'

ब्राह्मण-देवता कन्या की खोज करते-करते चम्पा नामक नगरी में पहुँचे।

(२)

चम्पा में बलमित्र नामक एक गृहस्थ निवास किया करते थे। उनकी कन्या का नाम था विशाखा। जिस प्रकार वह परम रूपवती और गुणवती थी, उसी प्रकार बुद्धिमती और शीलवती भी थी। एक प्रतिष्ठित कुल की कन्या के लिए शिष्टाचार-सम्बन्धी जिन नियमों का जानना आवश्यक होता है, उनसे पूर्ण रूप से वह अभिज्ञ थी।

एक दिन विशाखा अपनी कुछ सहेलियों के साथ स्वच्छन्द भाव से बगीचे में जा रही थी। ठीक उसी समय घूमते-घूमते वह ब्राह्मण वहाँ पहुँच गया। विशाखा की ओर दृष्टि जाते ही ब्राह्मण के उसकी सावधानी के साथ परीक्षा करने की इच्छा हुई। इसलिए वह उन बालिकाओं के पीछे-पीछे चला।

बालिकाएँ स्वभाव से ही चञ्चल प्रकृति की होती हैं। देखने में आया कि कोई दौड़ रही है, कोई उछल-कूद रही है, कोई गिर रही है, कोई लोट रही है, कोई गा रही है। इस प्रकार सभी बालिकाएँ किसी-न-किसी प्रकार मनोविनोद कर रही थीं। पर विशाखा ऐसा कुछ भी न करके धीर और विनीत भाव से उन सब के पीछे-पीछे चली जा रही थी।

बगीचे में एक तालाब था। उसके समीप पहुँचते ही सब बालिकाओं ने अपनी-अपनी साड़ी खोलकर रख दी और जल में तरह-तरह की क्रीड़ाएँ करने लगीं। पर विशाखा ने साड़ी पहने ही स्नान करने के लिए जल में प्रवेश किया।

देखने में आया कि अन्य समस्त बालिकाओं ने स्वयं भोजन कर लेने के उपरान्त अपने आश्रितों को भोजन कराया। पर विशाखा ने अपने आश्रितों को भोजन करा देने के उपरान्त भोजन किया।

इस प्रकार वाटिका-विहार के सुख का अनुभव करके समस्त बालिकाएँ घर की ओर लौटीं। मार्ग में थोड़ा-सा जल था। उसे पार करना था। समस्त बालिकाएँ जूते पहने हुए थीं ! उन सब ने जूते उतार-उतारकर हाथ में ले लिए और नंगेपैर उस पार गईं। पर विशाखा ने जूते पहने ही जल को पार किया।

सभी बालिकाओं के पास एक-एक छाता था। वे सब उसे बन्द किए ही वृक्षों की छाया में चल रही थीं। किन्तु विशाखा बराबर छाता लगाए रही।

इतने में एकाएक आँधी आई और पानी बरसने लगा। अन्य समस्त बालिकाएँ एक देव-मन्दिर में प्रविष्ट हो गईं, पर विशाखा बाहर ही खड़े-खड़े पानी बन्द होने की प्रतीक्षा करती रही।

(३)

विशाखा के ये समस्त कार्य देखकर ब्राह्मण के हृदय में अपार कौतूहल उत्पन्न हुआ। उसने उससे पूछा—बेटी, तुम किसकी कन्या हो ?

"मेरे पिता का नाम है बलमित्र।'

"बेटी, यदि मैं तुमसे कुछ बातें पूछूँ तो अप्रसन्न तो न होओगी ?"

विशाखा ने मुस्कराते हुए कहा—पिता, जो कुछ पूछना चाहो, पूछो। इसमें अप्रसन्न होने की कौन-सी बात है ?

"बेटी, तुम्हारे साथ में जितनी बालिकाएँ हैं, उनमें से कोई चलते-चलते दौड़ पड़ती है, कोई उछलती-कूदती है, कोई लोटने लगती है, कोई हँसती है, कोई गाती है, कोई इसी तरह का कोई और काम करने लगती है, केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हीं ऐसी हो जो गम्भीर होकर विनीत भाव से चल रही हो। इसका क्या कारण है ?"

विशाखा ने उत्तर दिया—पिता, सभी कन्याएँ माता-पिता के विक्रय की सामग्री हुआ करती हैं। दौड़ने या उछलने-कूदने पर यदि कहीं मैं गिर पड़ूँ और मेरा कोई हाथ या पैर टूट जाए तो भला मुझे कौन पसंद करेगा ? माता-पिता तो जीवन-पर्यन्त मेरा पालन-पोषण करेंगे नहीं।

"बेटी, तुम्हारी बात बिलकुल ठीक है। किन्तु तालाब में स्नान करते समय और बालिकाओं की तरह भला तुमने अपनी साड़ी खोलकर घाट पर क्यों नहीं रख दी ? नग्न होकर स्नान न करके वस्त्र पहने-ही पहने तुमने क्यों स्नान किया ?"

विशाखा ने उत्तर दिया—स्त्रियाँ स्वभाव से ही लज्जा-शीला होती हैं। यदि कोई नग्न अवस्था में मुझे देख लेता तो गड़बड़ होता।

"बेटी, वहाँ देखने ही कौन जा रहा था ?"

"क्यों नहीं ? आपने तो उन बालिकाओं को देख ही लिया।"

"बेटी, अब यह बताओ कि दूसरी बालिकाओं ने स्वयं भोजन कर लेने के बाद अपने आश्रितों को भोजन कराया है। किन्तु तुमने पहले आश्रितों को ही भोजन कराया है, बाद को स्वयं भोजन किया है। बताओ, इसका क्या कारण है ?"

"पिता, मैं पुण्यकर्मों का फल प्राप्त कर रही हूँ, इससे मेरे लिए सदा ही उत्सव का दिन रहता है, प्रतिदिन ही उत्तम-उत्तम खाद्य सामग्रियाँ सुलभ रहती हैं। पर ये सब अपने-अपने दुष्कर्मों का फल भोग रही हैं इससे, दैवयोग से उन्हें जब कभी उत्तम भोजन मिल जाता है, तब वे अपना लोभ नहीं सँभाल पातीं।"

"अच्छा बेटी, तुम्हारी यह बात भी ठीक है। अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि पानी में तुम जूता पहने-पहने क्यों चल रही थीं। दूसरे लोग तो साधारण तौर से सूखे में ही जूता पहनकर चलते हैं, पानी में चलते समय जूता उतार लेते हैं।"

"पिता, मेरी समझ में लोगों का यह तरीका बिलकुल गलत है। जूता वास्तव में पानी में ही पहनकर चलना चाहिए। बात यह है कि सूखी जमीन में तो हम देख सकते हैं कि कहाँ पर काँटा, कंकड़ या कोई और ऐसी चीज है, जो पैर में लग सकती है, पर पानी में कोई चीज दिखलाई नहीं पड़ती।"

"अच्छा बेटी, सब बालिकाएँ केवल धूप में छाता लगाकर चल रही थीं। पर तुमने बगीचे में वृक्षों की छाया में चलते समय भी क्यों नहीं छाता बन्द किया ?

"पिता, उन सबका तरीका गलत है। छाता बराबर में छाया में ही लगाना चाहिए। बगीचों में पक्षियों और बन्दरों का अड्डा रहा करता है। वे सब वृक्षों की शाखाओं पर बैठे-बैठे मल-मूत्र का त्याग किया करते हैं। वे कभी-कभी हड्डी का टुकड़ा, फल की गुठली या छिलका गिरा देते हैं। कभी-कभी जब वे एक डाली से दूसरी डाली पर जाने लगते हैं तब उनके धक्के से बहुधा लकड़ी का टुकड़ा गिर पड़ता है। पर खुली जगह में यह सब ऊपर नहीं रहता। इसलिए बगीचे में चलते समय छाता अवश्य लगा रखना चाहिए।"

"बेटी, तुम्हारा यह कथन भी यथार्थ मालूम पड़ता है। पर आँधी-पानी के समय अन्य बालिकाओं की तरह देव-मन्दिर में प्रवेश न करके बाहर ही क्यों खड़ी रहीं ?"

"इस तरह के देव-मन्दिरों में एकाएक प्रवेश करना उचित नहीं है। बात यह है कि इन मन्दिरों में बहुधा धूर्त और लम्पट लोग अपना अड्डा जमाए रहते हैं। कोई नवयुवती जब कभी उनकी घात में आ जाती है, तो वे उसे अपमानित करने में जरा भी नहीं हिचकते। इसलिए ऐसे स्थान में न प्रवेश करना ही श्रेयस्कर है।"

(४)

विशाखा की इन बातों से ब्राह्मण को बड़ा सन्तोष हुआ। उसका व्यवहार भी उसे बहुत ही मधुर मालूम पड़ा। इससे "स्वस्ति, स्वस्ति" कहते हुए वह बलभित्त के द्वार पर पहुँचा। घर में जो लोग थे उन सबने कहा—ब्राह्मण, यह तो भिक्षा का समय है नहीं। आप ने किस कामना से यहाँ आने की कृपा की है ?

"मैं भिक्षा के रूप में कन्या माँगने आया हूँ। श्रावस्ती राज्य के प्रधान मन्त्री हैं मृगार। उनके पुत्र का नाम है विशाख। उन्हीं के विवाह के लिए एक कन्या की आवश्यकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलमित्र आदि ने कहा—वह कुल तो हमारे सम्बन्ध के लिए अनुकूल है।

"तो फिर आपत्ति का क्या कारण है ?"

"पर वह स्थान यहाँ से बहुत दूर है।"

"दूर ही तो कन्या का विवाह करना चाहिए ?"

"क्यों ?"

"यदि कन्या सुखी होती है तब तो उसके सुख का हाल सुनने से चित्त को प्रसन्नता होती है। पर यदि कहीं उसे किसी प्रकार का क्लेश हुआ तो हाथ बटाना पड़ता है, आदर-सत्कार करना पड़ता है, कुछ देना पड़ता है। इससे अपनी आर्थिक हानि होती है।"

कन्या-पक्ष से उत्तर मिला—यदि ऐसी बात है तो कन्यादान कर देना ही उचित है।

अन्त में आशीर्वाद देकर ब्राह्मण ने श्रावस्ती की राह ली। यथा समय वहाँ पहुँचकर उसने विश्राम किया और मार्ग-श्रम दूर होने के बाद मृगार के पास गया।

कन्या के रूप-गुण और उसकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा करके ब्राह्मण ने कहा—मैंने तरह-तरह के क्लेश सहन करके देश-देशान्तर में भ्रमण किया है, अन्त में कितनी ही कठिनाइयों का सामना करने के बाद ऐसी उत्तम कन्या खोज पाया हूँ। आप उस कन्या के साथ अपने पुत्र का विवाह कर सकते हैं।

मृगार ने शुभ मुहूर्त्त में चम्पा नगरी की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने बड़े समारोह के साथ विशाख का विवाह किया।

(५)

विवाह के उपरान्त विशाखा जब विदा होकर ससुराल जाने लगी तब उसे उपदेश देते हुए उसकी माता ने कहा—बेटी, तुम प्रतिदिन सूर्य और चन्द्रमा को नमस्कार किया करना। अग्निदेव की उपासना किया करना। दर्पण सदा निर्मल कर रखना। शुक्ल वस्त्र धारण किया करना। सहण किया करना, दान मत करना। सदा बात रखना। उठकर किसी को भी आसन न देना। मीठा भोजन करना।

माता के द्वारा विशाखा को दिए गए इन उपदेशों का हाल जब मृगार को मालूम हुआ तब उन्होंने सोचा कि इसे जो बातें बताई गई हैं, वे यथार्थ नहीं हैं। यथार्थ उपदेश इसे मैं दूँगा। यह सोचकर मृगार पुत्रवधू को ले जाने के लिए तैयार हुए।

विशाखा की माता का हृदय स्नेह से व्याकुल था। उनके नेत्र जल से पूर्ण हो उठे थे। कन्या को गले से लगाकर रुदन करते-करते वे बोलीं—बेटी मेरी, यही हमारा-तुम्हारा अन्तिम मिलन है।

माता को सान्त्वना देते हुए विशाखा ने कहा—मा, मैं जानना चाहती हूँ कि तुम्हारा जन्म यहीं हुआ है या तुम्हारे मायके में ?

"मायके में।"

"तो तुम्हारा घर वह है या यह ?"

"यह।"

"ठीक इसी प्रकार मेरा भी जन्म यहाँ हुआ है, किन्तु अब मुझे निवास वहाँ करना होगा। संयोग के बाद वियोग होता ही है। इसलिए शान्त होओ। रोती क्यों हो ?"

(६)

मृगार ने ऊपर स्थल-पथ से तथा विशाखा ने स्वामी तथा पिता के यहाँ से साथ में जानेवाले नौकरों और दासियों के सहित जल-पथ से श्रावस्ती के लिए यात्रा की।

विशाखा को दहेज के रूप में जो वस्तुएँ मिली थीं, उनमें एक छोटा-सा बछेड़ा भी था। स्थल-पथ से श्रावस्ती तक पहुँचने में उसे बहुत ही क्लेश होने की सम्भावना थी, इसलिए निश्चय हुआ कि यह बछेड़ा भी अपनी माँ के सहित नौका से ही जाएगा। पर बहुत प्रयत्न करने पर भी वह घोड़ी नौका पर न सवार हो सकी। इससे वहाँ बड़ा कोलाहल मचा। अन्त में जब यह बात विशाखा को मालूम हुई तब उसने कहा कि पहले बछेड़े को नौका पर चढ़ा दो, तब घोड़ी अपने आप चढ़ आएगी।

नौकरों ने विशाखा की इस आज्ञा का पालन किया। नौका पर बछेड़े के सवार होते ही घोड़ी भी सवार होगई। तब नौका रवाना हुई। किन्तु घोड़ी को नौका पर सवार होने में जो विलम्ब लगा, इसके कारण ये सब नियत समय तक निर्दिष्ट स्थान पर न पहुँच सके। मृगार ने नाविकों से इस विलम्ब का कारण पूछा। अन्त में उन्हें जब सारा वृत्तान्त मालूम हुआ तब उन्होंने पुत्रवधू की बुद्धि की प्रशंसा की और कहा कि चम्पाकुमारी बुद्धिमती है, पण्डिता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७)

मार्ग में सूर्यास्त होते देखकर एक खाली मकान में रात्रि व्यतीत करना निश्चित किया गया। उस मकान में जिस स्थान पर मृगार के लिए बिस्तर लगाया गया, वहाँ की छत बहुत जर्जर थी, शीघ्र ही उसके गिर जाने की सम्भावना थी। पूछ-ताँछ करने पर विशाखा को जब मालूम हुआ कि यह बिस्तर उसके श्वशुर के लिए लगाया गया है तब उसने एक नौकर से उसे वहाँ से हटा देने को कहा।

नौकर ने कहा—क्यों? इसे यहाँ से हटाने की क्या आवश्यकता है?

विशाखा ने उत्तर दिया—यहाँ की छत खराब हो गई है। यदि कहीं सोते समय वह गिर पड़ी तो वे जीवित न रह सकेंगे। उस अवस्था में जीवन-पर्यन्त कलङ्क का टीका मेरे मस्तक में लगा रहेगा। सभी लोग कहेंगे कि यह बहू बड़ी अभागी है। विवाह करके लौटते समय मार्ग में ही श्वशुर की मृत्यु हो गई। वे घर तक भी न पहुँच पाए।

विशाखा की आज्ञा से जैसे ही मृगार का बिस्तर हटाया गया, वैसे ही छत का वह हिस्सा टूटकर गिर पड़ा। यह देखकर सभी लोग दौड़ पड़े और कहने लगे कि गृह-स्वामी अवश्य दब गए हैं।

मृगार समीप ही थे। उन्होंने कहा—आप लोग घबराइए नहीं, मैं यहाँ सकुशल वर्तमान हूँ।

लोगों ने आकर देखा तो मृगार का बिस्तर एक दूसरे स्थान पर लगा था।

यह देखकर कई लोग एक साथ बोल उठे—इसे किसने हटाया वहाँ से?

"विशाखा ने?"

लोगों ने कहा—बड़ी बुद्धिमती है चम्पाकुमारी।

एक दिन एक पुराने बगीचे में ही रात्रि व्यतीत करना निश्चित हुआ। उस बगीचे में एक मन्दिर था, जिसमें कोई मनुष्य नहीं रहता था। मृगार का बिस्तर उसी मन्दिर में लगाया गया।

मन्दिर में बिस्तर लगा हुआ देखकर विशाखा ने पूछा—यह किसके लिए लगाया गया है?

उत्तर मिला—गृहस्वामी के लिए।

विशाखा ने कहा—नहीं, यह बिस्तर इस मन्दिर से हटाकर कहीं अन्यत्र लगाओ।

"क्यों?"

"यदि कहीं यह मन्दिर गिर पड़ा तो वे दबकर मर जाएँगे और मुझे कलङ्क लगेगा।"

बिस्तर हटा लिया गया और उसके बाद ही मन्दिर भी गिर पड़ा। यह देखकर सभी लोग दौड़ते हुए वहाँ पहुँचे और पहले की ही तरह कहने लगे—बड़ी बुद्धिमती हैं चम्पाकुमारी।

(८)

मार्ग में कई रात्रि व्यतीत करने के बाद अन्त में सब लोग श्रावस्ती पहुँच गए। दो-चार दिन विश्राम करने के बाद मार्गश्रम दूर हुआ। इस बीच में एक एक करके आत्मीय-स्वजन भी विदा लेकर अपने अपने घर चले गए। तब विशाखा को अपने कुल की मर्यादा के अनुकूल गृहस्थी का काम सौंपा गया। मृगार की जो छः पुत्र-वधुएँ और थीं, वे सब जिस तरह अपनी-अपनी पारी पर भोजन बनाया करती थीं, उसी प्रकार विशाखा की भी पारी बाँध दी गई। उससे कहा गया कि तुम्हारी पारी पड़ेगी सातवें दिन।

ससुर, सास और स्वामी के देवता को चढ़ाने का स्वयं लगाने के बाद जो चन्दन बच जाता, विशाखा उसे प्रतिदिन सुखा लिया करती। घर के लोगों को खाने के लिए जो सत्तू दिया जाता, उसमें से थोड़ा-थोड़ा निकालकर वह अलग रख लिया करती, बाद को उसे घी मिलाकर लड्डू बनाती। सुगन्धित पुष्पों की जो माला उसके स्वामी धारण किया करते तथा वह स्वयं धारण किया करती, उसे उतारने के बाद विशाखा किसी जगह में रख दिया करती। रात्रि व्यतीत होने के बाद माला, अपने उपयोग से बचे हुए अन्यान्य सुगन्धित पदार्थ उत्तम-उत्तम खाद्य-सामग्रियाँ तथा मद्य आदि वह सब नौकरों को देती। इससे वे सब बहुत ही संतुष्ट होते। कहते कि हमारी मालकिन आजकल हमारा बड़ा खयाल रखती हैं। इससे उत्साहित होकर वे सब पहले से दूना काम करते। यह देखकर राजमन्त्री मृगार ने एक दिन नौकरों से पूछा—आज तो काम बहुत अधिक हुआ है। क्या कुछ और आदमी लगाए गए थे?

नौकरों ने उत्तर दिया—जी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आज इतना अधिक काम कैसे हुआ ?

नौकरों ने कहा—जिस तरह खाने को मिलता है, उसी तरह हम काम भी करते हैं।

"इसका मतलब ?"

नौकरों ने मन्त्री-महोदय को सारी बातें खोलकर बतलाईं। मृगार के अन्यान्य पुत्रों ने भी यह बात अपनी-अपनी स्त्री को बतलाई। यह सुनकर उन सबने भी निश्चय किया कि वे भी घर से थोड़ी-थोड़ी वस्तुएँ चुराकर नौकरों को देंगी, जिससे कि विशाखा की ही तरह वे सब भी उनकी प्रीतिभाजन हो सकें।

एक दिन मृगार ने विशाखा से पूछा—बहू तुम खाद्य-सामग्रियों आदि की व्यवस्था किस प्रकार किया करती हो ?

विशाखा ने हर एक बात स्पष्टरूप से श्वशुर को बतलाई। पुत्रवधू की प्रबन्ध-कुशलता का हाल सुनकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए। उस दिन से गृह-प्रबन्ध का सारा भार विशाखा को ही उन्होंने सौंप दिया। घर के सभी लोगों को बुलाकर वे बोले—आज से विशाखा ही गृह-स्वामिनी हैं। इसलिए सबको उन्हीं की इच्छा के अनुसार कार्य करना होगा और उन्हीं की दी हुई वस्तुओं से सन्तोष करना होगा।

विशाखा के उत्तम आचरण और उसके सद्व्यवहार के कारण घर के सभी लोग सन्तुष्ट हो उठे, किसी को किसी प्रकार का असन्तोष न रहा।

(९)

एक दिन विशाखा के घर के ऊपर से होकर कुछ हंस उड़े जा रहे थे। वे सब अपनी-अपनी चोंच में जड़हन धान की बालियाँ लिए हुए थे। वे बालियाँ उत्तर कुरुद्वीप से वे सब ला रहे थे। ऐसे धान की थीं, जो बिना जोते-बोए उत्पन्न हुआ था। राजप्रासाद में भी एक हंस था। उन हंसों को देखकर वह बोलने लगा। अपनी जाति के ही एक पक्षी का कण्ठ-स्वर सुनकर वे सब भी आनन्द से बोल उठे। उस अवसर पर कुछ बालियाँ राजा के चरणों के समीप गिर पड़ीं। राजा वे सब बालियाँ उठा लाए और अपने मन्त्रियों में वितरित कर दीं। प्रधान मन्त्री मृगार ने अपने हिस्से की बालियाँ लाकर विशाखा को दीं। विशाखा ने उन्हें एक डिब्बे में रख दिया। समय आने पर उसने एक किसान को देकर उन बालियों का धान बो देने को कहा। किसान ने भी उत्साह के साथ थोड़ी-सी जमीन तैयार करके, उसे बो दिया। समय-समय पर वर्षा होती गई। भूमि भी उर्वरा थी। इसलिए पैदावार अच्छी हुई। यह पैदावार क्रमशः वर्ष पर वर्ष बढ़ती गई। इस प्रकार हंसों के द्वारा लाए गए धान से कोशलराज प्रसेनजित का राज्य भर गया।

(१०)

कुछ समय के बाद राजा प्रसेनजित को एक रोग हो गया। उनकी चिकित्सा के लिए कई अच्छे-अच्छे वैद्य बुलाए गए। उन सबने कहा—महाराज, यदि हंसों के द्वारा लाया गया धान मिल सके तो उसके चावल का माँड़ बनवाकर आप पी लें। उसे पीते ही आप स्वस्थ हो जाएँगे।

राजा ने सभी मन्त्रियों को बुलाया। उन्होंने उन सब को धान की जो बालियाँ दी थीं, उनके सम्बन्ध में पूछ-ताँछ की। मन्त्रियों में से एक ने कहा—महाराज, मैंने तो उन्हें आग में डाल दिया था। एक ने कहा—महाराज, मैंने उन्हें बाँधकर द्वार के सामने टाँग दिया था। और मन्त्रियों ने भी कुछ ऐसे ही अनाप-सनाप उत्तर दिए। पर अन्त में जब प्रधान मन्त्री मृगार के सामने यह प्रश्न उपस्थित किया गया तो उन्होंने कहा—महाराज, मैंने उन्हें अपनी पुत्रवधू विशाखा को दिया था। उससे पूछने पर मालूम हो सकेगा कि उसने उनका क्या उपयोग किया।

राजा की आज्ञा से मृगार उसी समय विशाखा के पास पहुँचे। विशाखा ने पूछा—पिता जी, आज महाराज को अकस्मात् उस धान की क्या आवश्यकता पड़ गई ? मृगार ने राजा के रोगग्रस्त होने का हाल विशाखा को बतलाया और कहा कि हंसों के द्वारा लाए गए धान के चावल का माँड़ पीने से ही वे आरोग्य हो सकेंगे।

विशाखा के पास उस धान का चावल बहुत अधिक परिमाण में वर्त्तमान था। उसने झटपट माँड़ तैयार किया और एक सुवर्ण के कटोरे में भरकर श्वशुर को उसे राजा के पास ले जाने को कहा। राजा वह माँड़ पीकर आरोग्य हो गए।

(११)

एक बार प्रजा की ओर से राजा को दो घोड़ियाँ उपहार के रूप में मिली थीं। उनमें से एक दूसरी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बछेड़ी थी। पर वे दोनों बिलकुल समान थीं,—देखने पर यह नहीं मालूम पड़ता था कि कौन सी मां है, कौन सी बेटी। राजा ने अपने सभी मन्त्रियों को आज्ञा दी कि वे सावधानी के साथ दोनों घोड़ियों की परीक्षा करें और इस बात का निर्णय करें कि कौन सी माँ है, कौन सी बेटी।

मन्त्रियों ने बहुत सोच-विचार किया, पर वे कुछ निर्णय न कर पाए, यद्यपि वे सब दिन भर उस विषय पर तरह-तरह के तर्क-वितर्क करते रहे।

दूसरे मन्त्रियों के समान ही प्रधान मन्त्री मृगार की भी बुद्धि इस विषय में कुछ काम न दे सकी। अन्त में साँझ हो जाने पर बहुत ही खिन्न भाव से वे घर गए। वहाँ पहुँचते ही विशाखा ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और उनके विलम्ब से घर आने का कारण पूछा।

मृगार ने पुत्रवधू के सामने अपनी कठिनाई उपस्थित की। विशाखा ने कहा—पिता जी, यह तो एक बहुत ही सरल प्रश्न है। आप दोनों घोड़ियों को बराबर-बराबर चारा दिलवा दीजिए। उनमें से जो बेटी होगी, वह अपना चारा तो खाएगी ही, साथ ही माँ के चारे का भी कुछ-न-कुछ भाग खाए बिना न रहेगी। माँ भी उसके खाने में बाधा न डालेगी। वह मुँह नीचा किए हुए चुपचाप खाती रहेगी।

मृगार ने मन्त्रियों के पास जाकर उन्हें वह युक्ति बतलाई। अन्त में सवेरा होने पर उन सबने राजा को बतला दिया कि कौन-सी घोड़ी माँ है, कौन-सी बेटी।

राजा ने कहा—आप लोगों ने किस प्रकार यह बात मालूम की?

मन्त्रियों ने कहा—महाराज, हम लोगों में इस प्रकार के गूढ़ प्रश्न को हल करने का सामर्थ्य नहीं है। इसे हल करने की युक्ति हमें विशाखा ने बतलाई है।

राजा ने कहा—परम बुद्धिमती है चम्पाकुमारी।

(१२)

एक दिन एक आदमी घाट पर एक कम्बल रखकर स्नान कर रहा था। उसी समय वहाँ एक दूसरा आदमी आ पहुँचा। उसने वह कम्बल अपने मस्तक में बाँध लिया और वहीं जल में प्रवेश करके स्नान करना आरम्भ किया। पहला आदमी स्नान करके जब जल से निकला तब घाट पर उसे उसका कम्बल न दिखाई पड़ा। वह इधर-उधर ताकने लगा। उसे ऐसा करते देखकर दूसरे आदमी ने कहा—तुम क्या खोज रहे हो?

"कम्बल।"

"कहाँ है तुम्हारा कम्बल? सम्भव है कि स्नान करने के लिए जल में प्रवेश करते समय मेरी ही तरह तुमने भी अपना कम्बल मस्तक में बाँध लिया हो?"

"ऐं! यह कम्बल तो मेरा है?"

"वाह, यह कम्बल तुम्हारा कैसे है? यह तो मेरा है।"

अब उस कम्बल के सम्बन्ध में विवाद आरम्भ हो गया। वे दोनों ही उसे अपना कहते। इस सम्बन्ध में उन दोनों में बहुत कहा-सुनी हुई। अन्त में वे दोनों लड़ते-झगड़ते राजसभा में पहुँचे। उनकी बातें सुनने के बाद राजा ने मन्त्रियों को आदेश किया कि वे इस बात का पता लगाएँ कि वास्तव में कम्बल किसका है और जिसका हो उसे वह दें।

मन्त्रियों ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार वास्तविकता का अनुसन्धान करना आरम्भ किया, पर उन्हें कोई उपयुक्त उपाय नहीं सूझ पड़ा। पूछने पर वे दोनों ही आदमी अपने को कम्बल का अधिकारी बतलाते। कोई तीसरा आदमी था नहीं, जिसकी गवाही ली जा सकती।

मन्त्री लोग समस्त दिन इसी सम्बन्ध में सोच-विचार करते रहे, पर बुद्धि को अत्यन्त ही अधिक क्लेश देकर भी वे सब किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सके।

मृगार को उस दिन भी घर पहुँचने में विलम्ब हुआ। विशाखा ने जब उस विलम्ब का कारण पूछा तब उन्होंने उसके समक्ष वह समस्या उपस्थित की।

श्वशुर की बात सुनकर विशाखा ने कहा—पिताजी, इसमें इतना अधिक चिन्तित होने की कौन-सी बात है। उन दोनों ही आदमियों से यह प्रस्ताव किया जाए कि कम्बल के दो टुकड़े करके एक एक टुकड़ा दोनों को दे दिया जाए। इस पर जो वास्तव में कम्बल का अधिकारी होगा, वह तिलमिला उठेगा और कम्बल के फाड़े जाने के सम्बन्ध में आपत्ति करेगा। इसके विपरीत जो धूर्तता से कम्बल लेना चाहता होगा, वह उत्साहपूर्वक यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेगा। वह सोचेगा, कोई बात नहीं, आधा कम्बल तो मुफ्त में मिल ही रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वदेश में

भारत के भूतपूर्व गवर्नर जनरल लार्ड माउण्ट बेटन के इँगलैण्ड पहुँचने पर वहाँ स्थित भारतीय नौ सैन्य ने 'गार्ड आफ आनर'-द्वारा उनका स्वागत किया। चित्र में उसी अवसर का एक दृश्य अङ्कित है।

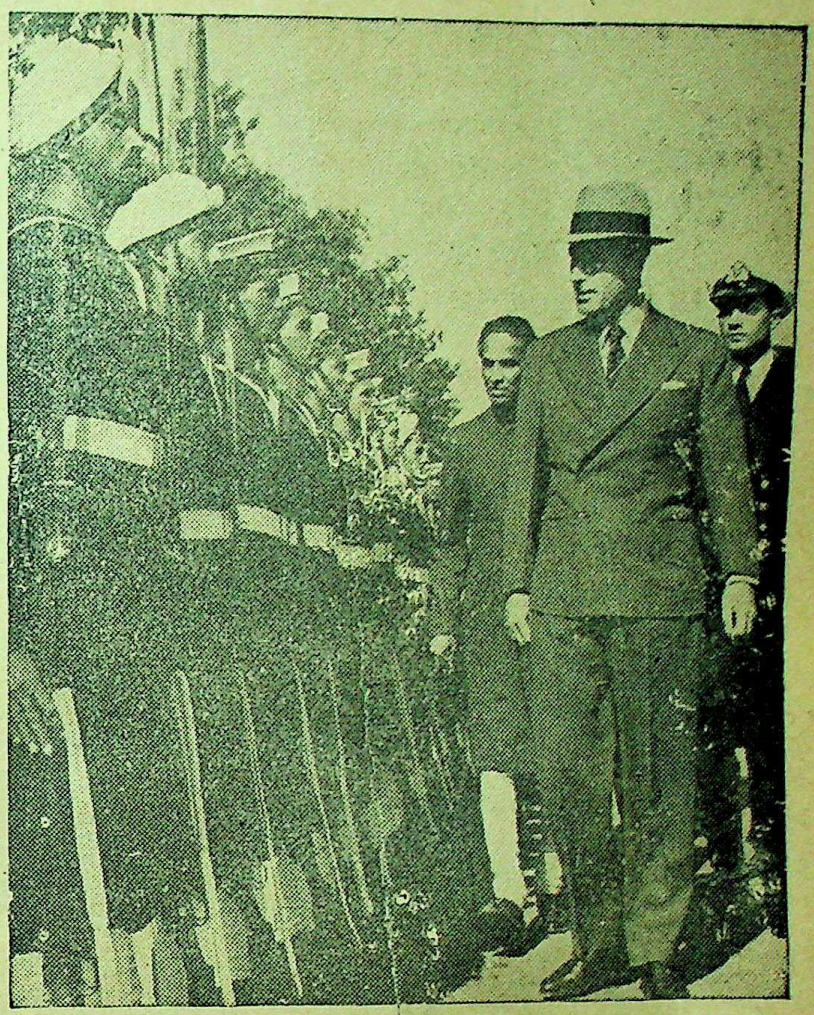

कैम्ब्रिज के नए चांसलर

द० अफ्रीका के सुप्रसिद्ध भारत-विरोधी फील्ड मार्शल स्मट्स को अभी हाल में इँगलैण्ड की कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी का चांसलर बनाकर गौरवान्वित किया गया है। चित्र में उक्त नियुक्ति-समारोह का एक दृश्य दिखाई दे रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

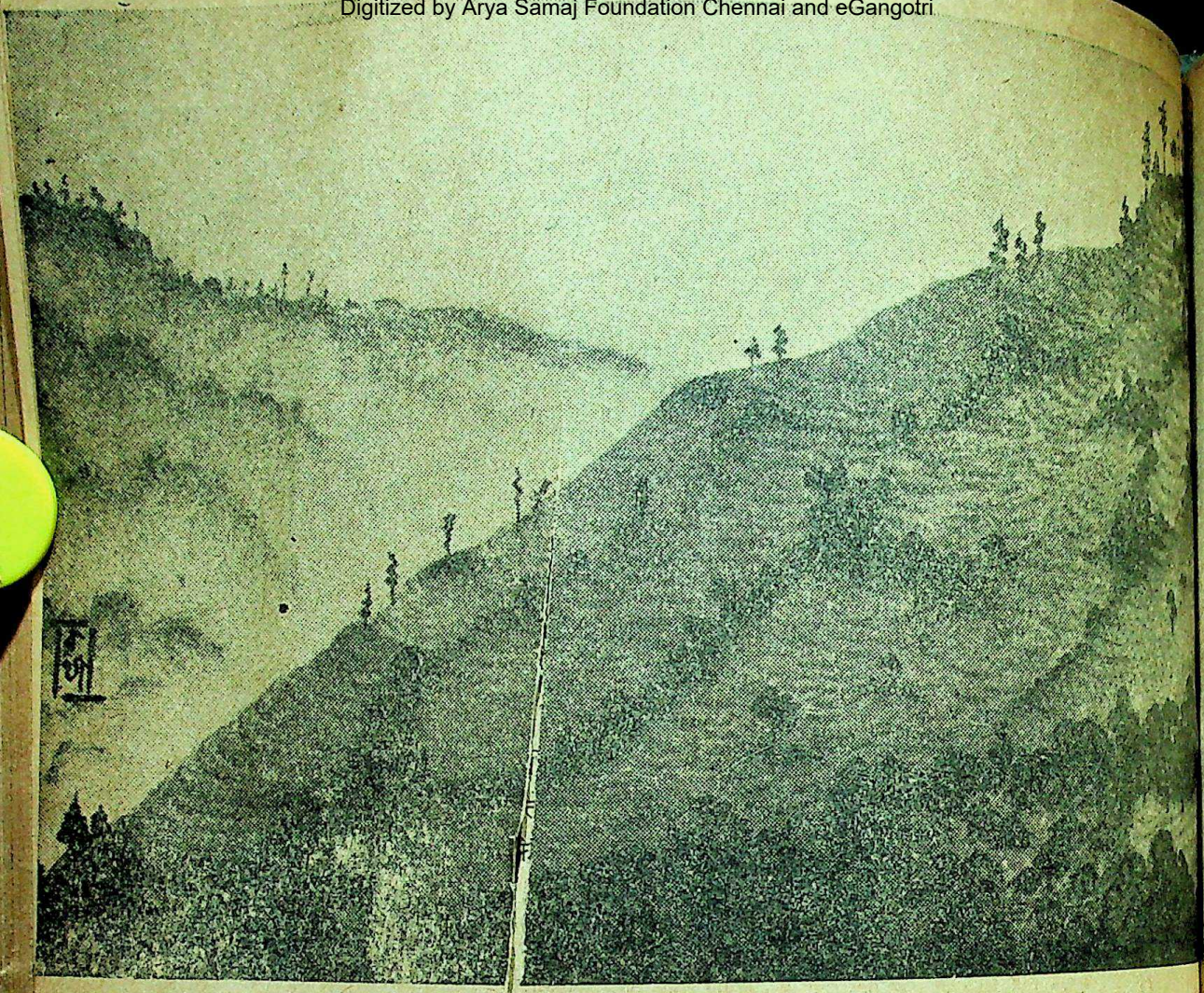

पार्वत्य प्रदेश का एक मनोरम दृश्य

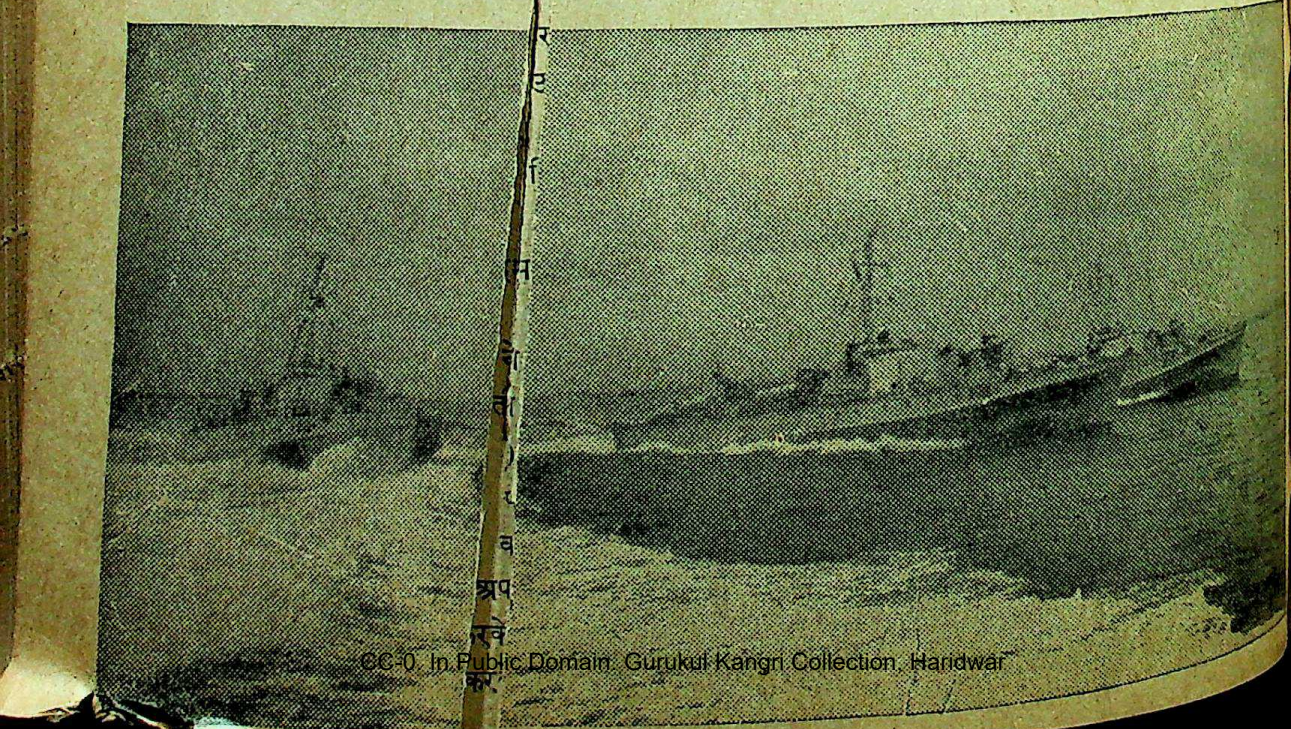

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगार ने पुत्रवधू के इस सत्परामर्श से लाभ उठाया। विवाद का निराकरण करने में उन्हें सफलता भी मिली। सारा हाल मालूम होने पर—राजा ने इस बार भी चम्पाकुमारी की बुद्धि की प्रशंसा की।

(१३)

किसी गाँव में एक गृहस्थ रहा करता था। उसने अपने अनुकूल वंश की एक नवयुवती का पाणिग्रहण किया था। किन्तु चिरकाल तक गृहस्थी के सुख का अनुभव करने के बाद भी वह सन्तान-सुख से वञ्चित रहा। अन्त में सन्तान की कामना से उसने एक दूसरी नवयुवती का पाणिग्रहण किया। पहली स्त्री ने इस बात के लिए बड़ा उद्योग किया कि उसकी इस नई सौत को भी कोई सन्तान न हो। किन्तु उसका यह उद्योग सफल न हो सका। कुछ ही समय के बाद इस दूसरी स्त्री की गोद एक सुन्दर बालक से सुशोभित हो उठी।

इस आशङ्का से कि कहीं मेरी सौत ईर्ष्यावश मेरे पुत्र का किसी प्रकार का अनिष्ट न कर डाले, दूसरी स्त्री ने स्वामी से परामर्श करके उसे पहली स्त्री को ही दे डालने का निश्चय किया। स्वामी से उसने कहा कि यदि कहीं उसे मार डालने पर ही तुल जाएँगी तो हम लोग कब तक उसकी रक्षा कर सकेंगे।

स्वामी ने किसी प्रकार की आपत्ति नहीं की। इससे बालक की माता ने एक दिन अपनी सौत से कहा—बहन, यह बच्चा तुम्हारा ही है। इसे मैं तुम्हें दे डालना चाहती हूँ। तुम्हीं इसका पालन-पोषण करो।

पहली स्त्री ने सौत के इस प्रस्ताव को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। उसने सोचा कि जो पुत्रवती होगी, वही गृहस्वामिनी भी होगी। इसलिए इस बालक को अपने अधिकार में करके इसका पालन-पोषण करने से मुझे लाभ ही होगा, कोई हानि न होगी।

कुछ समय बाद गृहस्थ की मृत्यु हो गई। तब स्वामी की सम्पत्ति के सम्बन्ध में दोनों स्त्रियों में विवाद आरम्भ हुआ। अपना पक्ष-प्रबल करने के लिए वे दोनों ही उस बालक की माता होने का दावा करतीं। उनका यह विवाद क्रमशः बढ़ता ही गया। अन्त में न्याय के लिए उन्हें राजा की शरण लेनी पड़ी। राजा ने मन्त्रियों को इस विषय पर विचार करने का आदेश किया कि वास्तव में इस बालक ने दोनों स्त्रियों में से किसके गर्भ से जन्म ग्रहण किया है।

मन्त्रीगण उस दिन फिर सङ्कट में पड़ गए। वे सब मिलकर समस्त दिन विचार करते रहे, किन्तु किसी निर्णय पर न पहुँच सके। साँझ होने पर प्रधान मन्त्री मृगार जब उस दिन भी विलम्ब से घर पहुँचे और विशाखा ने उनसे विलम्ब का कारण पूछा तब उन्होंने वह समस्या पुत्रवधू के समक्ष उपस्थित की।

विशाखा ने कहा—पिताजी, इस बात का निर्णय तो बड़ी आसानी से किया जा सकता है। आप लोग दोनों स्त्रियों को बुलाकर उनसे कहें—हम लोगों को मालूम नहीं है कि तुम दोनों में से यह किसका पुत्र है। इसलिए जो कोई अधिक बलवती हो, वही इसे ले जाए। यह सुनकर वे दोनों ही बाँह पकड़कर उस बालक को खींचने लगेंगी। बालक भी खूब जोर-जोर से दोनों ओर से खींचे जाने पर पीड़ा का अनुभव करेगा और चिल्लाने लगेगा। उस समय जो वास्तव में बालक की माता होगी, वह बालक को रोते देखकर दया से कातर हो उठेगी और उसकी बाँह छोड़ देगी। वह सोचेगी कि भगवान् की कृपा से यह जीवित रहे, किसी का भी होकर रहे। इस पृथिवी पर इसके वर्तमान रहने पर कम-से-कम आँख भरकर इसे देख तो लिया ही करूँगी। इसके विपरीत दूसरी स्त्री निर्दयता के साथ उसे खींचती ही रहेगी, छोड़ेगी नहीं।

मृगार ने राजसभा में जाकर अपने सहयोगियों को यह युक्ति बतलाई और सबके सहमत हो जाने पर इसी के अनुसार कार्य किया गया। अन्त में सारा भेद मालूम होने पर विशाखा की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए राजा ने कहा—बुद्धिमती हैं चम्पाकुमारी।

(१४)

एक बार मृगार बीमार पड़ गए। वैद्य ने आकर एक दिन उन्हें औषध दी, फिर ज्वर हो आया। विशाखा सावधानी के साथ इस विषय पर विचार करने लगी कि वे जो एक दिन अच्छे रहते हैं और दूसरे दिन बीमार पड़ जाते हैं, इसका कारण क्या है। अन्त में उसने वैद्यों को द्वार पर से ही लौटाल दिया और वह स्वयं चिकित्सा करने लगी। इससे मृगार स्वस्थ हो उठे। वे स्वयं भी इस विषय पर विचार कर रहे थे कि एक दिन क्यों अच्छे रहते हैं और दूसरे दिन बीमार क्यों पड़ जाते हैं। जिस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य ने घर में प्रवेश नहीं किया, उस दिन से वे बराबर अच्छे रहने लगे। इस विषय में मृगार ने विशाखा से प्रश्न किया और उसका उत्तर सुनकर उन्होंने कहा—बुद्धिमती है चम्पाकुमारी।

(१५)

एक दिन मृगार ने विशाखा से कहा—बेटी, तुम्हारी माता जी ने तुम्हें जो समस्त उपदेश दिए हैं, क्या तुम उन सब के अनुसार कार्य करती हो?

विशाखा ने कहा—हाँ पिता जी, मैं माता जी के उपदेशों का पूर्ण रूप से अनुसरण करती हूँ। माता जी ने मुझसे कहा था कि मैं सदा सूर्य-चन्द्रमा को प्रणाम किया करूँ। इसका तात्पर्य यह है कि कुलबधू के लिए सास-ससुर ही सूर्य-चन्द्रमा के समान हैं। मैं उन्हें प्रतिदिन प्रणाम किया करती हूँ। माता जी ने कहा था कि मैं अग्नि की परिचर्या किया करूँ। इसका तात्पर्य यह है कि स्त्री के लिए स्वामी अग्निस्थानीय हैं। उसे स्वामी के समीप ही रहना चाहिए दूर न रहना चाहिए, मैं अग्नि के समान स्वामी की परिचर्या किया करती हूँ। माता जी ने मुझसे कहा है कि मैं दर्पण को निर्मल कर रक्खूँ। इसका तात्पर्य यह है कि घर ही दर्पण के समान है, उसे सदा पूर्ण रूप से स्वच्छ रखना चाहिए। इसलिए मैं प्रतिदिन घर की सफाई किया करती हूँ। उन्होंने जो सदा श्वेत वस्त्र धारण करने का आदेश किया है, उसका तात्पर्य यह है कि अन्य प्रकार का वस्त्र धारण करके घर की सफाई करनी चाहिए और शुक्ल वस्त्र धारण करके देवता का पूजन करना चाहिए। यह भी मैं किया करती हूँ। माता जी ने जो यह कहा है कि ग्रहण किया करना, दान मत करना; उसका तात्पर्य यह है कि यदि कोई व्यक्ति कोई अप्रिय बात कह दे तो उसे सुन लेना किन्तु तुम स्वयं किसी को कोई अप्रिय बात मत कहना। यह भी मैं किया करती हूँ। उन्होंने जो यह कहा है कि बात रखना, उसका तात्पर्य यह है कि जो बात गुप्त रखने के योग्य हो, उसे प्रकट मत करना। इस प्रकार का वाक्-संयम मुझमें है। उन्होंने जो यह कहा है कि तुम उठकर किसी को आसन मत देना, उसका तात्पर्य यह है कि तुम कुलबधू हो, इससे गुप्त स्थान में ही बैठा करना। मैं ऐसा ही किया करती हूँ। उन्होंने कहा है कि मैं मीठा भोजन किया करूँ। इसका तात्पर्य यह है कि खूब भूख लगने पर भोजन किया करूँ। प्रति-दिन घर के सभी लोगों को भोजन करा देने के बाद मैं स्वयं भोजन किया करती हूँ, इससे मुझे खूब भूख लग आती है। माता जी ने मुझसे कहा था कि तुम सुख से सोया करना। इसका आशय यह है कि मैं घर के सारे काम-काज करके रात में शैया ग्रहण करने से पहले बर्तन आदि सँभालकर रख दूँ तब बिस्तर लगाकर सोऊँ, जिससे लेटने पर मुझे यह चिन्ता न रहे कि अमुक कार्य करने को रह गया है। मैं ऐसा ही किया करती हूँ। माता जी ने जो सीढ़ी बनाने को कहा है, उससे उनका तात्पर्य यह है कि तुम अपने शुभ कर्मों के प्रभाव से देवलोक में उत्पन्न होकर फिर मनुष्य-लोक में उपत्न्न हुई हो। यह कर्म-भूमि है। यहाँ भी तुम दान देना, पुण्य करना; पाप न करना यह पुण्य की सीढ़ी है, स्वर्ग की सीढ़ी है। मैं यह भी यथाशक्ति किया करती हूँ।

विशाखा की ये बातें सुनकर मृगार प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा—बहुत अच्छा विशाखा, बहुत अच्छा, तुम बड़ी बुद्धिमती हो, तुम्हारी माँ भी बड़ी ही बुद्धिमती हैं।*

---

* चीवरवस्तु (Gilgit Manuscripts, Vol III. Part 2, pp 52) से संकलित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस दिन

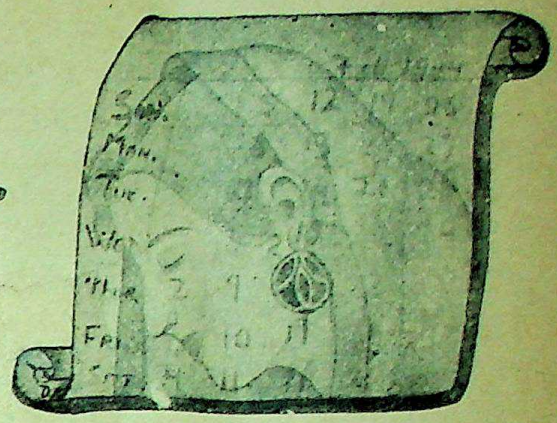

सन्तोष नौटियाल

२७

शुक्रवार २३ फरवरी १६.....

[.....लखनऊ से गोपाल की चिट्ठी आई। क्या मैंने भूल की? शायद। परन्तु अब उसका उपाय ही क्या? मेरा सारा जीवन ही भूलों तथा पश्चात्तापों से भरा है, फिर रोऊँ भी तो कहां तक?.....]

उस दिन सवेरे जब डाकिया आया तो मेरे नाम की एक चिट्ठी थी। पते के अक्षर देखे। लिखाई पहिचानी हुई थी। गोपाल की चिट्ठी थी। पढ़ने की बड़ी उत्सुकता हुई क्योंकि मैं उसकी चिट्ठी की उतनी जल्दी आशा नहीं करता था। लिफाफा फाड़कर चिट्ठी निकाली। चिट्ठी छोटी नहीं थी। अक्षर कांपते हुए कमजोर हाथों-द्वारा लिखे गए थे। लिखा था:—

लखनऊ

२१-२-.....

प्रिय चन्दू!

इतनी जल्दी मेरा पत्र पाकर तुम्हें आश्चर्य अवश्य होगा क्योंकि कायदे से तो पहले तुम्हें अपने कुशल-पूर्वक पहुँचने का समाचार भेजना चाहिए था,—परन्तु आवश्यकता ही ऐसी आ पड़ी। खैर कायदा तो जो कुछ है, वह है ही, पहले मैं तुम्हें यह बतला दूं कि तुमने बहुत बड़ी भूल की है। उसके लिए तुम्हें जितना भी भला-बुरा कहा जाए, थोड़ा है। तुम रजनी से बिना मिले एकाएक चले गए—यह शापित कर्म करने का विचार ही तुम्हारे दिमाग में कैसे आया? यदि इस काम के लिए तुम्हें जीवन भर भी पछताना पड़े तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा।

जिस दिन तुम यहां से गए थे, यानी कल बीस तारीख को, तुम्हारे जाने से कुछ ही देर बाद रजनी का ड्राइवर आया था, तुम्हें रजनी ने बुलाया था। परन्तु मैंने उसे बतलाया कि तुम जा चुके थे। आज सवेरे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जब ड्राइवर फिर मौजूद हो गया। उसने मुझसे कहा कि उसकी बीबी जी मुझे बुला रही थीं। पूछने पर उसने बतलाया कि रजनी बाहर गाड़ी में थी, मैं अभी कमजोर हूँ। काँपते पैरों से बाहर गया। रजनी को देखा और चिहुँककर रह गया। सच चन्दू, तू मूर्ख ही नहीं गधा है बिलकुल। संगमर्मर की सुघड़ प्रतिमा-सी सुन्दर, भागीरथी की भाँति शान्त उस रजनी को जो तू रोने के लिए छोड़ आया है, इसके लिए तू खूब रोएगा—यह मैं तुझे कहे देता हूँ। तेरा मित्र होते हुए भी तेरे इस कर्म से मैं इतना क्रुद्ध तथा दुखी हूँ कि मेरी इच्छा है कि तू सचमुच खूब रोए.....

हाँ चन्दू! मैंने देखा कि रजनी की आँखें टूलपूड़ी के भांति लाल और सूजी हुई थीं। स्पष्ट था कि वह रात भर रोती रही थी। मुझे देख उसने अपने सुन्दर-सुन्दर हाथ जोड़ दिए और मुझे काँपते-कापते बाहर आते देख सहानुभूति-पूर्ण स्वर में बोली, 'क्षमा कीजिए मुझे बड़ा दुःख है कि इतनी दुर्बलता में भी आपको कष्ट दिया, परन्तु मैं क्या करती?' और यहां उसका स्वर भीग गया। वह कुछ क्षण चुप रही फिर बोली, 'आपके मित्र चले गए?'

'हां, मैंने कहा।' उसने फिर पूछा 'इस तरह बिना कहे-सुने, बिना मिले क्यों चले गए? मेरा विचार है कि मेरे विषय में उन्होंने आपको कुछ-न-कुछ कहा होगा। मैं कौन हूँ, कदाचित् यह भी आप जानते होंगे। मेरे विषय में भी उन्होंने कुछ कहा था क्या? यह कहकर वह उत्सुकतापूर्वक मेरे मुंह की ओर देखने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पूछा, 'तो वह आपसे मिला नहीं?' यद्यपि मैं जानता था कि तू वहाँ नहीं गया था। उसने केवल सिर हिलाकर 'नहीं' बतलाया। मैंने कहा, 'चन्दू ने बड़ी नादानी की। वैसे तो वह आपसे मिलने जाने के लिए कह रहा था। पता नहीं, फिर क्यों नहीं गया। आखिरी दिन वह बड़ा बेचैन-सा था—यानी कुछ करने-न करने की उलझन में पड़ा हुआ था। पता नहीं क्या...' इससे आगे मैं क्या कहता। उसकी गीली आँखें देखकर मेरा हृदय रो उठा और मैंने जी भर तुम्हें कोसा। थोड़ी देर चुपचाप आँसू बहा, तुम्हारा पता पूछा। कहने लगी कि तुमने अपने पते का जिकर तो एक आध बार किया था परन्तु उसे ठीक याद नहीं था। उसने एक बार और मुझे 'कष्ट' देने के लिए क्षमा मांगी और अपने ड्राइवर को बुलाया, जो थोड़ी दूर पर खड़ा हुआ मुंह फेर बीड़ी पी रहा था—और चली गई। मैं थोड़ी देर तक खड़ा रह अन्दर आया और यह पत्र तुम्हें लिख रहा हूँ।

तुम जो कहते थे कि रजनी तुम्हें प्रेम नहीं करती, वह तुम्हारी भूल थी। इस बात में अब कोई सन्देह नहीं कि वह तुम्हें—केवल तुम्हें—प्रेम करती थी और करती है। पर तुम गधे निकले। तुम उसे नहीं समझे। तुम्हारे मस्तिष्क में कोई विकार है। परन्तु मैं समझता हूँ कि अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। अब भी किसी तरह उसे प्रसन्न कर सको तो बड़ा भाग्य समझना। स्वयं आओ, चिट्ठी लिखो या कुछ भी करो—परन्तु जब तुमने उसे रुलाया है तो अब हँसाओ भी तुम्हीं।

मेरे विषय में चिन्ता न करना। मैं ठीक हो रहा हूँ। और सब अच्छी तरह हैं। कमजोरी के कारण अधिक नहीं लिखा जाता और मेरा विचार है कि यदि तुम्हारी खोपड़ी में थोड़ा सा भी भेजा शेष है तो इतना ही यथेष्ट होगा।

तुम्हारा ही
गोपाल।

पत्र पढ़कर मैं चित्र-लिखित सा बैठा रहा। सोचता रहा—तो क्या मैंने गलती की है? क्या सचमुच रजनी प्रेम करती है? क्या जो कुछ मैं उससे चाहता हूँ—प्रेम से भरा हृदय, समर्पण—वह सब मुझे ही देना चाहती थी और चाहती है? परन्तु रामनाथ की वह कहानी? और उसका अपना कथन 'क्या तुम भी मुझे गलत समझोगे?' ...'तुम भी'...'तुम भी'...तो मैं अकेला नहीं, और भी...और भी? क्या सब इतने ही घनिष्ठ थे! रजनी की—नारी-हृदय की—थाह कौन पाए? और क्या पता, यह सब भी एक खिलवाड़ ही न हो...' सोचते-सोचते मेरा सर घूमने लगा।

मैं उठा और कालेज चल दिया। सारा दिन सोच-विचार में बीत गया। मैं निश्चय ही नहीं कर पाया कि मुझे क्या करना चाहिए। बार-बार रजनी की मूर्त्ति सामने खड़ी हो जाती। कभी लगता कि उसकी अश्रु-पूर्ण व्यथित-सी आँखें मुझसे कुछ कह रही हैं। गोपाल के पत्र का प्रत्येक शब्द कानों में गूंजने लगता। वह गूंज बढ़ती जाती...बढ़ती जाती...मुझे लगता कि मैं पागल हो जाऊँगा। वह शब्द वह शोर—बन्द होना चाहिए। मैं अपने कान बन्द कर लेता, फिर भी यह शोर बन्द न होता। भाँति-भांति की मूर्त्तियाँ सामने आतीं; रजनी, रामनाथ, गोपाल-डाक्टर साहब...रेलवे क्लर्क—रिलीफ का डाक्टर...

इसी पागलपन की अवस्था में तीन पहर रात तक जागकर सवेरे के समय मैं सो गया।

२८

शनिवार २४ फर्वरी १९.....

['.....एक अपरिचित चिट्ठी। वह मेरे लिए क्या लाई? असीम निराशा, दुःख, ग्लानि, पश्चात्ताप! क्यों न इस शापित जीवन का अन्त कर दूँ, जिसमें न सुख है न शान्ति? मस्तिष्क तथा हृदय में रात-दिन का वह झंझावात। दुःख, निराशा भी अकेले नहीं आते मृत्यु से आलिंगन करना कठिन है.....']

डाकिए ने जब चिट्ठी दी तो मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि लिखावट मेरे लिये अपरिचित थी। मुझे एक बार विचार हुआ कि अक्सर लड़कियों के से हैं परन्तु कोई लड़की मेरी इतनी परिचित नहीं थी कि मुझे चिट्ठी लिखती। मुहर देखने का प्रयत्न किया, जिससे कुछ पता तो चले कि चिट्ठी कहां से आई थी परन्तु दुर्भाग्य से मुहर इतनी गंदी लगी थी कि कुछ पता ही नहीं चलता था। सहसा मेरे मस्तिष्क में यह विचार आया कि वह पत्र रजनी का है। मैंने फिर आँखें गड़ाकर मुहर को पढ़ने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि मैं उस पर लखनऊ पढ़ सकता था। लिफाफे से पत्र निकाला। पत्र बहुत लम्बा था। एक और सरसरी दृष्टि दो-एक पृष्ठों पर डाल गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर पढ़ना आरम्भ किया। बाईं ओर ढुलके हुए मोती-से सुन्दर अक्षरों में लिखा था :—

२६, चारबाग, लखनऊ
२२-२·····

आधी रात बीते, सूनेपन का बोझ उठाए, शून्य अन्धकारमयी निस्तब्ध रात्रि में,

मेरे चांद !

आज इतनी रात बीते भी तो मेरी आँखों में नींद नहीं है। रह-रहकर तुम्हारी याद इतनी सता रही है कि अजब दशा हो गई है। ओह ! कितनी घोर अंधकारमयी रात्रि है। कितनी सूनी···कितनी भयानक·····! मैं यही सोच रही हूँ :

रात आधी हो गई है,
जागती मैं आँख फाड़े
हाय ! सुधियों के सहारे,

जब कि दुनिया स्वप्न के जादू-भवन में खो गई है।

सुन रही हूँ शान्ति इतनी,
है टपकती बूँद जितनी

ओस की, जिनसे द्रुमों का, गात रात भिगो गई है।

रात आधी हो गई है।

और पता नहीं कब तक इसी प्रकार इस अंधकार में, जो प्रकाश के एक वृत्त के परे चारों ओर से मुझे घेरे है, मैं तुम्हारी मंजुल मूर्ति देखते-देखते बैठी रहूँगी।···

तुम आखिर चले ही गए। मैं जानती थी कि तुम 'परदेसी हो, जाना ही होगा तुमको'। तुम नहीं जानते कि जब रेल की दुर्घटना के पश्चात् अपने को तुम्हारी गोद में पाया था तो अपनी बाहों की ओर देखकर सोचा था, 'मैं इन नाजुक बाहों में तुमको कैसे बांध रखूँगी ?' परन्तु इतने शीघ्र, बिना कहे-सुने मुझसे नाराज होकर चले जाओगे, ऐसी तुमसे आशा नहीं करती थी—यद्यपि इस कटु सत्य को कि ऐसा ही कुछ अन्त हमारे मिलन का होगा, मैंने तुम्हारे साथ एक ही दिन रहकर अनुभव कर लिया था।

जिस दिन तुम गए, उसी दिन ड्राइवर को भेजा क्योंकि तुमसे मिले दो दिन बीत चुके थे। उसने आकर बतलाया कि तुम जा चुके थे। विश्वास करने को जी नहीं चाहा। मैंने आँख मूँदकर सामने के भय से बचने का प्रयत्न किया। रात भर आशा, निराशा, विश्वास, अविश्वास, के द्वन्द्वों में फँसी रही। सवेरे स्वयं गई। गोपाल बाबू ने सत्य बतलाकर संदेह के लिए कहीं जगह ही नहीं छोड़ी। तब से अब तक क्या-क्या हुआ है—मुझे कुछ पता नहीं। सारे दिन काम में अपने आपको—अपने आपको नहीं बल्कि केवल अपने शरीर को—इस तरह लगा दिया कि मुझे तन-बदन की सुधि न रही। इस समय आँखों में जलन, शरीर में दर्द और मन में बेचैनी है। दिन भर तो काम में लगी रही परन्तु यह रात्रि ! अब क्या करूँ ? जब नहीं रहा गया तो तुम्हें पत्र लिख रही हूँ और बैठी-बैठी स्मृतियों के जाल बुन रही हूँ। आज रह-रहकर विश्वास-सा नहीं होता कि हम तुम कभी इतने साथ थे—एक-दूसरे के इतने निकट थे—दिन भर में कितनी बार मिलते थे—हँसते थे—रूठते थे और तपती दुपहरी में हँसते हुए जाते थे। ओह चाँद ! तुम्हारे साथ तो वह चिलचिलाती धूप भी चाँदनी से अधिक शीतल तथा सुखद प्रतीत होती थी। आज वे सब दिन स्वप्न से लग रहे हैं। लगता है कि ऐसा हुआ ही कब ! परन्तु इन कुछ दिनों की एक-एक बात याद आ रही है—प्राण छटपटा रहे हैं एक बार तुम्हें देखने को। तुम मुस्कराते थे, हँसते थे, रूठते भी थे, मानते भी थे—ओह ! इतनी सारी बातें हैं कि मैं सोचती हूँ :—

क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं ?
अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,

'रजनी' की सूनी घड़ियों को किन-किनसे आबाद करूँ मैं ?

क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं ?
याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,

दोष किसे दूँ जब अपने से अपने दिन बर्बाद करूँ मैं ?

क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं ?
दोनों करके पछताती हूँ,
सोच नहीं पर मैं पाती हूँ,

स्मृतियों के बन्धन से कैसे, अपने को आजाद करूँ मैं ?

क्या भूलूँ क्या याद करूँ मैं ?

परन्तु अब इससे लाभ ही क्या ? जब पहले-पहल तुम्हें देखा तो हृदय में एक अजब-सी टीस अनुभव की, जो पहले कभी नहीं हुई थी। तुममें आकर्षण था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहा तुम्हें अपना बना लूँ पर साथ ही विचार भी आया 'जल के धरातल पर तैरते हुए दो भटके हुए बुलबुलों की तरह हम मिले हैं, जाने कब अलग हो जाएँ—टूट जाएँ—समाप्त हो जाएँ। मेरा इनका साथ ही कितना? इतने थोड़े समय के लिए इनसे अपनत्व जोड़ा भी तो क्या लाभ, सिवाय इसके कि इन दिनों की स्मृतियों की टीसों से भविष्य जीवन को विषाक्त बना डालूँगी·····' परन्तु मनुष्य जो सोचता है, वही कर थोड़े ही पाता है। होता वही है, जो वह अदृश्य शक्ति उससे कराती है। मैं मन-वचन से तुम्हारी हो गई। मुख ने कभी नहीं कहा परन्तु हृदय तो पुकार-पुकारकर यही कहता था—कहता है। काश तुम उसकी आवाज सुन सकते! मुख से इसलिए नहीं कहा कि कह न सकी और न मैं प्रेम के प्रदर्शन में विश्वास ही रखती हूँ क्योंकि इस विषय में तो सदा यही धारणा रक्खी है :—

प्यार किसी को करना लेकिन–कहकर उसे बताना क्या?
अपने को अर्पण करना पर–औरों को अपनाना क्या?
त्याग-अंक में पले प्रेम-शिशु–उनमें स्वार्थ बताना क्या?
देकर हृदय हृदय पाने की–आशा व्यर्थ लगाना क्या?

और फिर प्यार कहने की वस्तु नहीं होती, वह तो अनुभव करने की होती है। मैं तुम्हारे प्रेम में रंगी हूँ तो कहूँ क्या? याद आती है और छा जाती है एक मीठा दर्द बनकर जो निकलती है कुछ आहों—कुछ आँसुओं-द्वारा–बस। कदाचित् तुम भी कवि के इस भाव से सहमत होगे :—

"वेदना से नेह जोड़ा,
विश्व में पीटा ढिंढोरा,
प्यार तो उसने किया है, प्यार को जिसने छिपाया।"

मैं जानती हूँ, चाँद! तुम मुझे गलत समझे। रामनाथ की बातों से अथवा अन्तिम रात्रि के मेरे व्यवहार से तुम्हें कुछ भ्रम हुआ है। आह चाँद! मैं तुम्हें कैसे बतलाऊँ कि मैं ओस की भाँति पवित्र हूँ? मन, वचन, कर्म से यदि कभी किसी को चाहा है तो केवल तुम्हें। परन्तु तुम पूछोगे कि रामनाथ? मैं उससे इतनी घनिष्ठ कैसे हो सकी? तो मैं तुम्हें कैसे बतलाऊँ? मैं रामनाथ से कुछ दबती हूँ। क्यों?—स्वयं नहीं जानती। उसमें पता नहीं कौन सी शक्ति मुझे उससे बरबस बोलने को, उससे सम्बन्ध रखने को बाध्य करती है। मुझे पाकर मैंने सोचा था कि और सब झंझट छोड़कर मैं तुम्हें लेकर अपना संसार बनाऊँगी परन्तु तुम्हारे एक-दो दिन के व्यवहार से मैं यह समझ गई कि मैं तुमसे प्रेम तो कर सकती हूँ—करूँगी—करना पड़ेगा—मैं उससे बच नहीं सकती;—फिर भी तुम पर निर्भर नहीं रह सकती। और रामनाथ? मैं उससे बिल्कुल भी प्रेम नहीं करती परन्तु इतना जानती हूँ कि मैं क्या—कोई भी स्त्री—उस पर निर्भर रह सकती है। पता नहीं, उसके विषय में मेरी यह धारणा क्यों दृढ़ हो गई है। सब कुछ लिख देने के लिए मुझे क्षमा करना, चाँद! परन्तु जो छिपाना था, जब वही नहीं छिपाया तो और क्या छिपाऊँ?

परन्तु अब, जब कि मेरा सब कुछ तुम पर प्रकट हो गया है तो साथ ही यह भी सुन लो कि यहीं पत्र हमारे दिखावटी संबंध का अंत है—मन में चाहे कुछ भी रहे। चाँद! यदि अन्तिम बार प्रार्थना स्वीकार कर सको तो कभी कभी लखनऊ आओ भी तो मुझसे मिलने का प्रयत्न मत करना। याद रखना, स्त्री कभी अपना प्रेम मुँह से नहीं कहती—जो कहती हैं, वे धोखा देती हैं—और यदि प्रेम एक बार मुख से कह ही दिया तो बस समझो सब कुछ समाप्त हो गया। मुख से कहने के साथ ही हृदय चाहे और पास आ जाएँ परन्तु शरीरों को और भी दूर हटना ही पड़ता है। फिर वे नहीं मिल सकते—नहीं मिल सकते। आशा है कि मेरी प्रार्थना ठुकराकर मेरे रहे-सहे जीवन में आग नहीं लगाओगे, क्योंकि मैं जानती हूँ कि मैं चाहे कुछ भी कहूँ, कुछ भी करूँ—तुम्हें अपने सामने देख पाने पर मैं अपने ऊपर संयम नहीं रख सकूँगी। इस विषय में भगवान् ने नारी को न जाने इतना निर्बल क्यों बना दिया है। मैं सोचती हूँ चाँद कि इस प्रकार हृदय में किसी की याद, मस्तिष्क में किसी की मूर्त्ति, होठों में कम्पन तथा आंखों में आँसू लिए जीवन नहीं बिताया जा सकता; तो चाहती हूँ एक छोटा-सा घर ही बसा लूँ। पिता जी की भी अब यही एक-मात्र इच्छा है। वे अपने इस कर्त्तव्य से निबटकर विश्राम करना चाहते हैं।—हां, वे धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहे हैं।

रामनाथ मुझसे विवाह करने के लिए कई बार प्रार्थना कर चुका है। मैं जानती हूँ कि मैं उसे प्यार नहीं करती परन्तु विधि के विधान को क्या किया जाए; जो जिसे चाहा उसे पा न सकी और जिसे पाऊँगी उसे शायद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाह न सकूं ?' फिर भी इतना तो जानती हूँ कि उस पर निर्भर कर सकती हूँ और उसके साथ जीवन कम-से-कम निश्चिंत होकर तो बिता ही सकती हूँ—यदि सुख से भी नहीं। परन्तु इसके लिए कुछ मुझे दुःख नहीं क्योंकि इतना निर्बल बनाकर भी भगवान् ने नारी को धरती की भांति सहनशील जो बनाया है।

जल्द ही हम विवाह-सूत्र में बँधनेवाले हैं।

बस, बहुत लिख चुकी। अब क्या लिखूं। एक बार फिर अपने सब अपराधों की क्षमा माँगती हूँ। मेरी अन्तिम प्रार्थना न ठुकराना।

एक बात और लिखे बिना मन नहीं मानता—दुर्बल जो ठहरी! यदि कभी इस अभागी की याद में, जिसने संसार में आकर केवल तुम्हें ही चाहा, चांद, एक भी आँसू तुम्हारी आँखों से गिर सका तो मैं अपना जीवन धन्य समझूंगी। अच्छा, चिर विदा।

सदा तुम्हारी ही
रजनी

पत्र पढ़कर क्या हाल हुआ, यह सब बतलाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं, मुझ पर क्या बीती, यह मेरे चरित्र को इतना जान लेने के पश्चात् अनुमान कर लेना कठिन नहीं। रजनी का जीवन धन्य हुआ या नहीं, यह तो नहीं जानता परन्तु यदि मेरे आँसुओं की बूँद से एक-एक का जीवन धन्य होता तो संसार में पशु-पक्षी तथा कीट-पतंगों का जीवन भी अधन्य नहीं रहता।

परन्तु यदि इसके अन्त में एक-आध बात न लिखूं तो 'अनुभव' पूरे नहीं होंगे :

मैं इसी निष्कर्ष पर और भी दृढ़ता से विश्वास करने लगा हूँ कि जान-बूझकर मरना न केवल सरल नहीं है, बल्कि असम्भव है, विशेषतः जब मनुष्य तैरना जानता हो, तीव्र तथा हल्के विषों से परिचित हो और सतर्क इतना हो कि साइकिल की घंटी की पहली 'टन...' पर ही उछलकर दो गज परे कूद सकता है।.....

२६

रविवार २५ फरवरी १६.....

['.....चित्र पूरा करके एक बार उसे धो दिया, जिससे रंगों में कोमलता आ जाए। शाम को बाजार गया। आंधी, वर्षा, तूफान...परन्तु ओह! प्रकृति के क्रुद्ध नृत्य से भी बढ़कर मेरा मानसिक झंझावात! रजनी गई सो गई—वीणा की ओर से भी मेरी आशा अमर निराशा में परिणत हो गई। आज की वह काली रात। तूफान। उस सूनसान समय में वीणा और वे गुण्डे जो निश्चय ही राजेश तथा उसके साथी थे। राजेश और वीणा—फिर वे ही। वीणा की राजेश को बचाने के लिए आतुरता : 'नहीं नहीं राजेश नहीं.....' अब जीवन में रहा ही क्या ?

रजनी नहीं—वीणा भी नहीं तो व्यर्थ जीवन का भार ढोने से क्या लाभ ?']

रजनी का पत्र पढ़ने के पश्चात् मैं सब ओर से उदासीन हो गया! केवल मृत्यु का ही विचार सामने था! मैं जल्दी-से-जल्दी मृत्यु को आलिंगन करना चाहता था। प्रयत्न भी किए परन्तु असफल रहा। तो मैं ओस चाटकर ही प्यास बुझाने की सोचने लगा। अपने चित्रों तथा सितार की गूँज में करुणा तथा निराशा भरकर ही चाहने लगा कि धीमे किन्तु निश्चित रूप से मृत्यु की ओर अग्रसर होऊँ। सोचा 'रात-दिन के रुलाई-भरे वातावरण में कितने दिन बिना रोए रह सकूँगा ? और रात-दिन रोते रहकर कितने दिन जिऊँगा ?'

अपना चित्र पूरा किया। काफी अच्छा बन गया परन्तु उसमें जो कोमलता मैं लाना चाहता था, वह न आ पाई। चित्र धो दिया। रंग फैल गए। चित्र मेरी आशाओं की भांति बिल्कुल धुंधला पड़ गया। थोड़ा-थोड़ा हल्का-सा रंग रह गया, जो कागज के रेशों में समा चुका था और जो निकल नहीं सकता था। चित्र धुल जाने पर उसे बोर्ड पर चढ़ाकर सूखने रख दिया। फिर काम कुछ रहा नहीं। किताबों की ओर आँख उठाकर देखने की भी इच्छा नहीं रही थी। जानता था कि परीक्षा का केवल एक मास शेष रह गया है, परन्तु रजनी की चिट्ठी ने मस्तिष्क पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि परीक्षा पास होना—किसी में भी कोई आकर्षण नहीं रह गया। सब व्यर्थ लगने लगा।

सितार उठाया। दो एक गतें बजाने का प्रयत्न किया परन्तु मस्तिष्क ठिकाने हो तो कुछ बजाया जाए। जब मस्तिष्क ही शान्त नहीं तो फिर कुछ भी नहीं। बजाकर अपने ऊपर केवल झुंझलाहट ही हुई क्योंकि जो बजाना चाहता था, वह बजता ही नहीं था। सितार उठाकर रख दिया। चारपाई पर लेट गया। मुझे लगा जैसे मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शून्यता मेरी ही दृष्टि में भर गई थी। दीवारें, मेज, कुर्सी, किताबें, तस्वीर, स्वयं बेजान-सा पड़ा मेरा शरीर—सब के सब मुझे बेकार, अर्थहीन-से लग रहे थे। मेरी समझ ही में नहीं आता था कि इन सबके वहाँ पड़े होने में क्या प्रयोजन था। सारे दिन इसी खालीपन में पड़े रहकर शाम को मैंने निश्चय किया कि बाजार चला जाऊँ तो अच्छा है। कुछ सामान लाना था और कुछ ध्यान बँटने का भी विचार था।

उस दिन सवेरे से ही बादल छाए हुए थे। मौसम बड़ा अच्छा था बल्कि थोड़ी-थोड़ी ठंढ ही थी। बादल थे सही, परन्तु जल्दी वर्षा आने की सम्भावना नहीं थी। ऐसे अच्छे मौसम में साइकिल पर जाने को जी नहीं चाहा। मैं पैदल ही बाजार की ओर चल पड़ा। बाजार में थोड़ा-बहुत सामान खरीदते, मिलने-जुलनेवालों से बात-चीत करते-करते जब मुझे सहसा ध्यान आया कि समय अधिक हो गया है, अब लौटना चाहिए, तो मैंने देखा कि हवा तेज हो गई थी और बूँदें भी पड़ने लगी थीं। मैं कुछ-कुछ घबराया और तेजी से चलने लगा परन्तु कुछ कदम जाते-जाते ही हवा तेज हो गई और बूँदों की भी बढ़-सी आ गई। इसके बाद जो हवा, आँधी और वर्षा का तूफान आया, वह मेरे अब तक के देखे हुए सबसे भयानक तूफानों में से एक था। हवा गाती, चिल्लाती, शोर मचाती, टीनों को खड़खड़ाती इधर-से-उधर निकल रही थी। बाजार में, सड़कों पर, गलियों में, घरों में, ऐसा शोर मच गया कि कुछ कहा नहीं जाता। बिजली के तार हिल-हिलकर जब एक दूसरे से छू जाते तो गहरे नीले रंग की बिजली चमककर सारे वातावरण को प्रकाशित करके उसे कुछ देर के लिये और घने अंधकार में डुबा देती। छूते हुए तारों से नीले-नीले प्रकाश-से जलते हुए टुकड़े से कुछ गिरते। छन्न...न ... की एक आवाज आती और फिर वही नीला प्रकाश तथा अंधकार। बाजारों में तो पेड़ कहाँ परन्तु और चीजें खूब उड़ रही थीं। थोड़ी देर खड़े रहकर एकाएक मैंने देखा कि मेरे सर के ऊपर से एक टीन सड़.....ड़.....करती हुई उड़ गई...। इतने में मूसलाधार वर्षा पड़ने लगी। उस समय मैं एक दूकान के बरामदे में खड़ा होकर वर्षा-आँधी थमने की प्रतीक्षा कर रहा था।

याद नहीं कि यह आँधी-पानी कितनी देर रहा। वर्षा के रुक जाने पर भी आँधी का वेग था ही। आँधी-हवा कुछ कम हुई तो मैं तेजी से कदम बढ़ाता हुआ छात्रावास की ओर चल दिया। जैसा मैंने कहा, हवा तब भी पूरी तरह शान्त नहीं हुई थी। हवा के साथ-साथ कभी कभी पानी की बूँदें भी आ जातीं, जो तीर-सी लगतीं। ठंढ भी बढ़ गई थी। मैंने अपने कोट की कॉलर ऊपर उठाई और गर्दन नीची करके चेहरे को कानों तक कॉलर में ढक लिया। कभी-कभी जब किसी पेड़ के नीचे से होकर जाता तो हवा से हिलते हुए पेड़ों से पानी की बड़ी बड़ी बूँदें टप्...टप् करके मेरा सिर तथा कपड़े भिगा देतीं। रास्ता भांति भांति की चीजों से अटका था। टूटे-फूटे टीन के टुकड़े, चीथड़े, पेड़ों की छोटी-छोटी टहनियां, पानी के छोटे-छोटे गड्ढे। बीच बीच में एक आध पेड़ विशालकाय मरे हुए दैत्य की भांति पड़ा था। तूफान के कारण बिजली के तार टूट गए थे। खम्भे कहीं जरा टेढ़े और कहीं-कहीं मुड़कर दोहरे हो गए थे। यह सब दृश्य मैं कभी-कभी चमक जानेवाली बिजली के प्रकाश में ही देख पाता था अन्यथा सड़कें बिल्कुल अंधेरी थीं और आसपास प्रकाश का कहीं नाम नहीं था। कभी-कभी मैं एकाएक किसी गिरे हुए पेड़ की टहनियों में जा उलझता—चौंककर, घबराकर उछलता और फिर चुपचाप बिजली चमकने की प्रतीक्षा करता, जिससे आगे मार्ग देख सकूं। उस समय मैं उसी 'सड़क कचहरी पश्चिमी' पर जा रहा था।

थोड़ी दूर जाते-जाते मैं एक आदमी से टकराते-टकराते बचा,—वह बेवकूफ अंधेरे में भागा आ रहा था। 'पागल होगा' मैंने सोचा। मैं चिल्लाया, उसे गाली भी दे दी, परन्तु वह रुका नहीं, बिना उत्तर दिए भागा चला गया। थोड़ी दूर जाने पर सड़क के सबसे सुनसान में मुझे सहसा एक चीख सुनाई पड़ी। पहले मैं समझा कि मेरे कान बज रहे हैं। हवा उस समय भी गीली पत्तियों तथा टहनियों में से होकर बहती हुई सांय-सांय शब्द कर रही थी। निश्चित कुछ भी नहीं था, फिर भी मेरी चाल में तेजी आ गई और मैं जंगली हिरन की भाँति तेजी किन्तु सतर्कता से आगे का रास्ता नापने लगा। फिर चीख सुनाई पड़ी—बहुत पास। अबकी बार सन्देह नहीं रहा। मुझसे कुछ ही कदम आगे दाहिनी ओर से वह आवाज आई थी। तभी बिजली चमकी और मैंने देखा कि एक पेड़ के नीचे कुछ आदमी एक स्त्री को पकड़े हैं और वह छटपटाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छूटने का यत्न कर रही है। इतनी जरा-सी देर में मनुष्यों की संख्या मैं निश्चित नहीं कर पाया।

निमेष मात्र में मैंने अपना कर्त्तव्य निश्चित कर लिया। मैंने दूरी का अन्दाज लगाकर उस स्त्री का स्थान अपने दिमाग में जमा लिया। हाथ का सामान फेंक मैं कूदा और कूदने के साथ ही अपनी आवाज की चोटी पर चिल्लाया, 'खबरदार !'

'हे-ऐ.....' एक अजीब-सी घुटी हुई आवाज कई कंठों से निकली और एक गड़बड़-सी मच गई। परन्तु मैं जो चाहता था, वह हो गया। मैं एकदम उस स्त्री पर करीब-करीब गिर-सा पड़ा। मेरी चिल्लाहट से एकाएक प्रभाव पड़ा था, उससे चौंककर उसे छोड़कर वे जरा अलग हट गए थे। मैंने उस स्त्री को पकड़कर अपनी ओर घसीटा और अन्दाज से ऐसा घूम गया कि अपनी समझ से पेड़ के पीछे हो रहा। एक दबा हुआ सा शोर—बल्कि घुटी हुई गड़बड़—मच गया। मैंने उस स्त्री की ओर झुककर (जिसका शरीर मेरी बाहों के सहारे झुका था) कहा, 'एक शब्द भी नहीं...' और साथ ही मैं झुककर थोड़ा-सा एक ओर खिसक गया। मेरी सहज बुद्धि काम आई। मुझे खिसके एक क्षण भी नहीं हुआ था कि पास से कोई चीज सन्नाती हुई निकल गई। वह शायद कोई छुरा होगा। मैंने धीरे-धीरे खिसकने का विचार किया। तभी बिजली चमकी।

मेरा अनुमान गलत था : हम पेड़ के पीछे नहीं, सामने ही खड़े थे और हमारे सामने कुछ कदम पर तीन आदमी खड़े थे, जिनके मुख कपड़े से ढके थे। एक का हाथ ऊँचा उठा था, जिसमें एक छुरा था।

बिजली चमकना आरम्भ होने के कदाचित् पहले ही क्षण में बहुत सी बातें एक साथ हो गईं : मैंने उस स्त्री को एक हाथ से पेड़ के पीछे धकेल दिया और साथ ही झुककर एक ओर हटा। उसी क्षण एक छुरा मेरे कान के पास से सनसनाता हुआ पेड़ के तने में खस्स से घुस गया। मैंने सामने खड़ी त्रिमूर्त्ति की ओर उछलकर, अपनी समस्त शक्ति दाहिने हाथ की मुट्ठी में एकत्रित करके एक मुक्का चला दिया। तभी अंधेरा हो गया। मैंने किसी की कोमल नाक को मुक्के के नीचे चुरचुराते सुना। एक चीख के साथ कोई धड़ाम से गिरा। इसके बाद दबी हुई गालियाँ और कसमें। हवा में ही अंगों के [illegible] शब्द—शायद वे अंधेरे में मुझे लक्ष्य करके हवा में ही घूंसेबाजी कर रहे थे। परन्तु मैं घूंसा चला, अँधेरा होते ही पेड़ के पीछे हो रहा था। उस स्त्री का शरीर फिर मेरी बाँहों में था। अधिक ठहरने के अर्थ थे एक की जान जाना और दूसरे की बेइज्जती। मैंने चुपके से उसकी कमर में हाथ डाला—हाँ इतनी देर के पश्चात् मुझे इसमें सन्देह नहीं रहा था कि वह स्त्री नहीं बल्कि लड़की थी—युवती। हां तो उसे अपने सहारे ढुलकाए मैं आगे चला, जिधर मैं जा रहा था। उसने कोई आपत्ति प्रकट नहीं की। थोड़ी-थोड़ी हवा तब भी चल रही थी। वह सर्दी में किटकिटा रही थी। मैंने अपना कोट उतारकर उसके कंधों पर डाल दिया। फिर उसे और भी कसकर अपने से सटाते हुए चलने लगा। हम दोनों बिल्कुल चुपचाप चल रहे थे—मतलब मुंह से कुछ नहीं बोल रहे थे, वैसे मेरे मस्तिष्क में उस समय तूफान चल रहा था, परन्तु जो विचार उस तूफान में उस समय चक्कर काट रहे थे, उनका विश्लेषण मेरे वश में नहीं। सहसा मैंने सोचा : 'मैं इसे ले कहाँ जा रहा हूँ ?' तभी मैं रुक गया—अर्थात् हम रुक गए।

मैंने पूछा, 'आप कहाँ जाएँगी ?'

'आबू लेन ?'

मैं सच कहता हूँ कि यदि उस अंधेरे में एकाएक सांप भी मेरे पैर पर लिपट जाता तो भी मैं न उतना चौंकता न उद्विग्न होता।

मैंने कसकर उसकी बाहों को पकड़ा और अंधेरे में ही उसे पूरी तरह अपने मुंह की ओर घुमाकर पुकारा 'वीणा ?'

'चाँद !' उत्तर मिला।

संदेह की कोई गुन्जाइश ही नहीं रही थी। मेरे मस्तिष्क में विचार इस तेजी से चक्कर काटने लगे कि मुझे डर हुआ कि कहीं मैं पागल न हो जाऊँ। एक बार घृणा तथा क्रोध से मेरा सर्वांग कांप उठा। उस घृणा तथा क्रोध की बाढ़ में, वीणा के प्रति आदर तथा प्रेम जो था, सब बह गया।

'खूब !' मैंने सोचा 'यह तो सत्रहवीं शताब्दी के जैसे रहस्य-रोमांचों में फंसकर सड़कों पर द्वन्द्व-युद्ध, झगड़े, करती फिरती है।' तब मैंने सोचा कि उस सामने खड़ी वीणा को [illegible] समझने में मैंने बड़ी भूल

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Harid[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे आंधी-पानी में घर से बाहर रहकर इस तरह के 'कर्तव्यों' की 'नायिका' बनना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं आया। मेरी समझ में ही नहीं आता था कि ऐसा कौन-सा काम आ पड़ा था, जो वैसे समय में वह आबू लेन से उस सड़क पर घूम रही थी—और अकेली! यह विचार आते ही मैंने उससे पूछा। 'तुम अकेली ही थीं?'

'नहीं, नौकर साथ में था।'

'किसका?'

'प्रोफेसर भारद्वाज का।'

'क्यों? और वह गया कहां?'

'वर्षा आने की सम्भावना तो थी नहीं। मैं प्राणि-शास्त्र पढ़ने प्रो० भारद्वाज के यहां अपने नौकर के साथ गई थी। उसे लौटा दिया था क्योंकि प्रो० साहब ने अपना नौकर साथ भेज देने को कहा था। थोड़ी देर में अचानक वर्षा-आंधी आ गई। ज्योंही जरा वेग कम हुआ, उन्होंने मुझे नौकर के साथ भेज दिया। नौकर के पास टॉर्च थी। उस पेड़ के पास आते ही दो-तीन व्यक्ति हम पर टूट पड़े। नौकर के हाथ से टॉर्च छीनकर फेंक दी और उसे मारा। वह तो एक चाँटा खाते ही भाग कर पता नहीं कहां गया। दो आदमियों ने मुझे घेर लिया। मैं चिल्लाई। तीसरे ने मेरा मुंह बन्द करना चाहा। फिर भी मैं एक बार और चिल्लाई। तभी आप आ गए।

'आपने किसी को पहचाना?'

'शायद एक श्यामसिंह था...।'

'तो एक राजेश होगा...।'

'नहीं नहीं राजेश नहीं...।'

वीणा के स्वर की आतुरता ने मुझे चौंका दिया। 'नहीं...नहीं राजेश नहीं।' कितने प्रेम और आग्रहत्व से उसने राजेश को बचाने के लिए कहा था।

'हूँ...' मैंने कहा। उसकी कहानी में सन्देह की कोई बात नहीं थी, फिर भी अपने विचारों के कारण सन्देह के बल पर मुझे उस पर क्रोध आ रहा था। जी कर रहा था कि उसे खूब डाँटूं-फटकारूं परन्तु मैं ऐसा कर न सका। क्रोध उमड़-घुमड़कर भीतर समा रहा था। हमने फिर आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया परन्तु फिर मैं वीणा को अपने शरीर से पहले की भांति चिपटाए नहीं चल सका। मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया, जिसे उसने पकड़ लिया।

कैसी मजेदार बात है कि मेरे स्वप्न-साम्राज्य की साम्राज्ञी वीणा उस समय मेरा हाथ पकड़े, मुझ पर पूर्ण रूप से निर्भर, मेरी बगल में चल रही थी—और मैं आतंकित था, उससे उस समय पीछा छुड़ाना चाहता था।

पेड़ों की टहनियों तथा काठ-कबाड़ से उसे तथा अपने आपको बचाता हुआ मैं चला जा रहा था—बल्कि हम चलते आ रहे थे—ऐसे मानों किसी समाप्त न होने वाली यात्रा पर जा रहे हों—जिस पर हमने तभी चलना आरम्भ ही किया था... ..।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार-विमर्श

ढोल गवाँर शूद्र पशु नारी

श्रीमती ज्ञानवती त्रिवेदी, एम० ए०

गोस्वामी तुलसीदास की स्त्री-निन्दा की चर्चा बराबर होती ही रहती है और इसके लिए उनकी भर्त्सना भी कुछ कम नहीं होती। किन्तु उनकी जिस उक्ति पर लोगों का सबसे अधिक और चटपट ध्यान जाता है और जो सदा उनकी जिह्वा पर विराजमान रहती है, वह है—

"ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥"

स्त्री-निन्दा के इस प्रसंग को लेकर गोस्वामी जी के भक्तों और उनके दोष-दर्शकों में बराबर संग्राम छिड़ा करता है। विजय चाहे जिसकी हो पर इससे कभी इस तथ्य में कोई विशेष अन्तर नहीं होता कि वे स्त्री-निन्दक थे और उन्होंने स्त्री-निंदा की है। अन्य विद्वानों ने उनसे अधिक तथा कहीं अधिक कटुतापूर्ण निंदा की है और यह प्राचीन काल से होती आ रही है, यह सिद्ध कर देने से भी इस तथ्य में कोई परिवर्तन नहीं होता कि गोस्वामी तुलसीदास ने स्त्री-निंदा की है।

अस्तु, तुलसीदास स्त्री-निन्दक थे या नहीं, इस पर विचार करने का यह अवसर नहीं। यहां हमें केवल उक्त उक्ति पर ही विचार करना है। उक्त अर्द्धाली के पाठ और व्याख्या के संबंध में श्री दीनानाथ जी शर्मा ने यथेष्ट लिख दिया है[1] तथा बहुत अन्वेषण करके वेद-शास्त्रों आदि से आपने उद्धरण उपस्थित कर दिए हैं। अनेक दृष्टियों से विचार करते हुए जो गवेषणा आपने की है, उसका निष्कर्ष है—

"जब यह बात भगवान् राम को भी सम्मत है, 'इन्द्र! जहि पुमांसं यातुधानसुत स्त्रियम्। मामयाशा-शदानाम' (अथर्व० शौ० सं० ८।४।२४) इस प्रकार वेदसम्मत है, पूर्व कहे प्रमाणों से धर्मशास्त्रानुमोदित है, पुराणेतिहास-समर्थित है, अर्थशास्त्र से सकारी गई है, तब रामभक्त तथा वेदस्मृति-पुराणेतिहासज्ञ गोस्वामी श्री तुलसीदास जी का, ताड़ना में स्त्री-शूद्र का नामोल्लेख मात्र से, अपमान करना योग्य नहीं है और उनके अभिप्राय से विरुद्ध उनकी चौपाई के मनमाने अर्थ करना भी न्याय नहीं।"

अतः इस संबंध में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। हाँ, जिस बात पर विशेष ध्यान देना है, वह है उक्त चौपाई का वह पाठ जिस पर पंडितप्रवर श्री दीनानाथ जी शर्मा का ध्यान नहीं गया है और जो वास्तव में है बड़े महत्व का। प्रायः सभी मान्य विद्वानों द्वारा जो पाठ गृहीत हुआ है, वह है—

"ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।"

अतएव हम इसी पाठ को लेकर विचार करना ठीक समझते हैं। इस उक्ति को लेकर तर्क तो अनेक किए जाते हैं परन्तु यदि प्रकरण, पात्र और प्रयोजन पर ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इन तर्क-वितर्कों के मूल में कोई सच्ची जिज्ञासा नहीं, हाँ समाधान का प्रयत्न अवश्य है।

वास्तव में प्रसंग समुद्र पार करने का है। भगवान् समुद्र तट पर पहुँचते हैं तो विभीषण से पूछते हैं—'केहि विधि उतरिअ जलधि गंभीरा।' विभीषण सम्मति देते हैं कि सागर से विनय करनी चाहिए, जो स्वयं ही उपाय बतला देगा। भगवान् को यह नीति भा जाती है और वे समुद्र-तट पर दर्भ बिछाकर बैठ रहते हैं। लक्ष्मण को यह नीति सुहाती। उनकी सम्मति है—

"नाथ दैव कर कवन भरोसा।
सोखिअ सिंधु करिअ मन रोसा।"

राम उनका भी मन रखते हुए कह देते हैं—

"अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।
यह मत लछिमन के मन भावा।"

तीन दिन प्रतीक्षा में राम देख लेते हैं कि विनय की नीति से कुछ सधता नहीं दिखाई देता तो रोष की ही नीति को अपनाना निदान—

[1] देखिए मासिक 'सन्मार्ग' कार्तिक २००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Co... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिन होइ न प्रीति॥
लछिमन बान सरासन आनू। सोखौं बारिधि बिसिख कृसानू॥"

इस प्रकार विनय न मानने पर भगवान् बाण का संधान करते हैं। फलतः समुद्र क्षुब्ध और भयभीत हो उठता है तथा तुरंत ही भगवान् के समक्ष उपस्थित हो प्रार्थना करने लगता है। उसकी प्रार्थना सुन लेने पर भगवान् का रोष नहीं रह जाता। मुस्कराकर कहते हैं—

"सुनत विनीत वचन अति कह कृपालु मुसकाइ।
जेहि विधि उतरइ कपि कटक, तात सो करहु उपाइ॥"

प्रश्न उठता है कि समुद्र ने क्या कहा, जो भगवान् का कोप कृपा में परिणत हो गया? इसके लिए समुद्र के कथन का विश्लेषण करना ठीक होगा। उसी से इसका मर्म ज्ञात होगा और 'ढोल गँवार शूद्र पशु नारी' का रहस्य भी खुल जाएगा।

समुद्र के कथन पर विचार करने के पहले यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि गोस्वामी जी ने समुद्र को विप्र-रूप में देखा है और विप्रों के सम्बन्ध में उनका कथन है—

"श्रापत ताड़त परुष कहंता।
विप्र पूज्य अस गावहिं संता।"

तथा—

"पूजिय विप्र शील गुन हीना।"

स्मरण रहे, इसी पूज्य विप्ररूपी समुद्र का कथन है—

"गगन समीर अनल जल धरनी।
इन्ह कै नाथ सहज जड़ करनी॥
तव प्रेरित माया उपजाए।
सृष्टि हेतु सब ग्रंथहि गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कहं जस अहई।
सो तेहि भांति रहे सुख लहई॥
प्रभु भल कीन्ह मोंहि सिख दीन्ही।
मर्यादा पुनि तुम्हरिअ कीन्ही॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।
उतरिहि कटकु न मोर बड़ाई॥
प्रभु अग्यां अपेल श्रुति गाई।
करहु सो बेगि जो तुम्ह

समुद्र का कथन यही है कि "हे प्रभु! गगन, समीर, अनल, जल और पृथ्वी ये पंच महाभूत आपकी ही प्रेरणा पाकर आपकी माया-शक्ति द्वारा उत्पन्न किए गए हैं। ये सृष्टि के हेतु हैं और इनकी सहज प्रवृत्ति जड़ मानी गई है चेतन नहीं। प्रभु की आज्ञा जैसी जिसको मिली है, उसी के अनुसार वह अपने कर्तव्य में निरत और मर्यादा में स्थित है। आपने मुझे सीख दी, यह बहुत भला किया किन्तु जिस मर्यादा का मैंने उल्लंघन नहीं किया, वह मर्यादा आप ही की निर्धारित की हुई है। फिर भी आपका ताड़ना देना उचित ही है क्योंकि जैसा कहा गया है कि ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और नारी ही नहीं सभी ताड़ना के अधिकारी होते हैं। और अब आपकी आज्ञा पाकर मैं सूख जाऊँगा। ऐसा करने में मेरी बड़ाई कुछ न होगी। श्रुतियों से विदित है कि आपकी आज्ञा अपेल है और मैं आपके आज्ञानुसार सूख ही जाऊँगा अस्तु अब आपको जो भाए सो शीघ्र ही करें।"

समुद्र के इस कथन में सर्वप्रथम उसके अन्तिम वाक्य पर ध्यान देना चाहिए। वह अब भी यह नहीं कहता कि मैं अब सूखकर मार्ग प्रस्तुत कर देता हूँ। नहीं, वह तो यही कहता है कि आपको जो भाए सो करें। राम चाहे उसे भरे रहने की आज्ञा दें चाहे सूख जाने की। उसे तो बस राम की आज्ञा का पालन करना है। और उसे पूरा विश्वास है कि उसने जो कुछ कहा है, उसे सुनकर भगवान् कभी भी उसे सूखने की आज्ञा न देंगे क्योंकि वे कभी मर्यादा के प्रतिकूल कुछ नहीं होने देंगे। इसी विश्वास के दृढ़ आधार पर उसने पहले भी सूखकर मार्ग नहीं दिया था। समुद्र ने भगवान् के सामने जो तर्क उपस्थित किया, वह ऐसा ही है कि उसको सुनकर भगवान् उससे सूख जाने को नहीं कह सकते। समुद्र ने जो कुछ कहा, उसका निष्कर्ष यही है कि विनय न मानने पर राम जो कोपकर ताड़ना देने को प्रस्तुत हुए सो ठीक है क्योंकि 'भय बिन होइ न प्रीति' की नीति ही यही है। किन्तु इसके साथ दूसरी बात पर भी ध्यान क्यों नहीं दे रहे हैं? राम मर्यादा-पुरुषोत्तम हैं। समुद्र की मर्यादा भी उन्हीं की बनाई हुई है और उसकी मर्यादा यही है कि वह सदा अगाध और अपार रहे। यदि राम चाहते हैं कि वह सूख जाए तो यह उसकी मर्यादा के प्रतिकूल और भगवान् के विधान के विपरीत भी है। इसी से उसने ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। फलतः उसे ताड़ना मिली। सो तो हो गया। पर अब स्थिति यह है कि या तो मर्यादा का पालन हो या समुद्र सूखकर राम को मार्ग दे और अपने आश्रित जीव-जन्तुओं का विनाश होने दे। वह राम की आज्ञा पा यह भी करने को प्रस्तुत है। अतः अब राम जो उचित समझें कहें।

भगवान् ताड़ना की मर्यादा को ताड़कर प्रसन्न हो जाते हैं और उसी से इसका उपाय पूछते हैं। मार्ग निकल आता है और सेतु भी बँध जाता है। हो सब कुछ जाता है पर ताड़ना का रहस्य अभी नहीं खुलता। कारण यह है कि इस पर ध्यान ही नहीं दिया जाता। बात यह है कि इस पूरे प्रसंग में गोस्वामी जी जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन करना चाहते हैं वह यही है कि ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और नारी ही नहीं, सभी ताड़ना के अधिकारी हैं; क्योंकि ताड़ना यहाँ समुद्र को मिलती है और समुद्र ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और नारी में से कुछ भी नहीं है। कुछ लोग 'जड़' या 'शठ' का प्रयोग पहले आ जाने से इसकी गिनती गँवार में करते हैं। किन्तु यह भी साधु नहीं, क्योंकि जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है समुद्र भगवान् के कुल-गुरु है। वह आता भी है ब्राह्मण के रूप में और कदाचित् इसी कारण उन्हें मर्यादा-पालन की सीख भी देता है। अतः गँवार हम उसे मान नहीं सकते। तो फिर इस उक्ति के भीतर 'सकल' को छोड़कर वह आ कहाँ सकता है? निदान मानना पड़ता है कि 'सकल ताड़ना के अधिकारी' ही यहाँ प्रतिपाद्य विषय है।

अस्तु, यह ताड़ना है भूतमात्र के लिए। तब पंच-महाभूत ही ताड़ना के अधिकारी हैं तो उनसे निर्मित यह सृष्टि इस अधिकार से वंचित रह भी कैसे सकती है? किन्तु ताड़ना किस लिए और कब होनी चाहिए तथा उसकी सीमा क्या होनी चाहिए, इसे दिखा ही इस प्रसंग की इष्ट है और आरंभ से ही इस प्रसंग को दृष्टि में रखने से यह भली भाँति स्पष्ट भी हो जाता है।

सुग्रीव की मिताई से वनवासी राम निर्वनवासी नहीं रह जाते। यहाँ से तो राजनीति की बातें सामने आती जाती हैं और क्षत्रिय-शासन की नीति और कर्तव्य की बातें बार-बार स्पष्ट होती चलती हैं। समुद्र-तट से राम-रावण-युद्ध का आरंभ ही समझिए, क्योंकि चढ़ाई यहीं से आरंभ होती है। यहीं विभीषण राम की शरण आते हैं। वह भक्त हैं। भगवान् उन्हें लंका का राज्य दे भी देते हैं। अब उसी लंका को जीतना है। विभीषण ही उसके राजा होंगे। वे राजनीति जानते हैं और यदि उसमें कुछ कच्चे भी हैं तो भगवान् को उचित सीख दे देनी है। इन्हीं सब कारणों से भगवान् विभीषण को महत्त्व देते हैं और उन्हीं से उपाय भी पूछते हैं। साथ ही सुग्रीव की सहायता भी इसमें चाहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जिस ढब से इस प्रसंग को उठाते हैं, वह देखने के योग्य है। पहले तो राम का परम रूप सामने आता है और फिर उनका नीति-पालक और दनुज-कुल-घालक रूप—

"पुनि सर्बग्य सर्ब उरबासी।
सर्ब रूप सब रहित उदासी॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक।
कारन मनुज दनुज कुल घालक॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा।
केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा॥"

कपीस तो चुप रहते हैं किन्तु लंकेश विभीषण बोल उठते हैं—भगवन्! आपका एक बाण करोड़ों सिंधुओं का शोषण कर सकता है—

"जद्यपि तदपि नीति असि गाई।
बिनय करिअ सागर सन जाई॥
प्रभु तुम्हार कुल-गुरु जलधि,
कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि,
सकल भालु-कपि धारि॥"

राम मान तो लेते हैं किन्तु उन्हें इस नीति में विश्वास नहीं होता। वे भली भाँति जानते हैं कि यह दैव प्रेरणा से भले ही हो जाए, अपने आप तो होता दिखाई नहीं देता। तो भी सखा की बात तो रखनी ही चाहिए। इसी से तो कहते हैं—

"सखा कही तुम नीकि उपाई।
करिअ दैव जो होइ सहाई॥"

लक्ष्मण ऐसे कर्मठ वीर भला दैव के और अनुनय-विनय के सहारे कब तक हाथ-पर-हाथ धरे बैठ सकते हैं? लक्ष्मण को बात भाती नहीं और राम से कह देते हैं कि दैव का कौन भरोसा? आप रोष करके सिंधु को सोख लें। दैव पर भरोसा करके कायर और आलसी बैठे रहते हैं, वीर-बाँकुरे नहीं

स्पष्ट करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तु, स्थिति यह हो जाती है कि एक ओर अनुनय-विनय का प्रस्ताव होता है और दूसरी ओर शासन और संहार का। भगवान् को इन दोनों छोरों को मिलाना अथवा इनके मध्य से मार्ग निकालना है और यह प्रकट दिखा देना है कि वास्तव में दोनों की ही नीति ठीक नहीं। न कोरी अनुनय-विनय ही ठीक है और न आरंभ से संहार ही। सच्ची नीति तो यह है कि पहिले अनुनय-विनय करो और यदि काम न चले और जिससे विनय की जाए उसकी समझ में न आए, वह सीधे से न माने तब ताड़ना दो और अपना काम निकालो। सीधी उँगली घी नहीं निकलता। कोप दिखाए बिना काम चल नहीं सकता। कोरी अनुनय-विनय की नीति राज-नीति नहीं। इसी से तो रावण भी राम की इस विनय की चर्चा सुनकर उनकी हँसी उड़ाता और अपने दूतों से कहता है—

"सहज भीरु कर बचन दृढ़ाई।
सागर सन ठानी मचलाई॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई।
रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई॥"

हाँ, तो जब अनुनय-विनय से काम नहीं निकलता तब कोप उमड़ता है और—

"विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति॥
लछिमन बान सरासन आनू।
सोखौं बारिधि बिसिख कृसानू॥"

यह तो हुई 'भय बिनु होइ न प्रीति' की बात। अब समुद्र का पक्ष लीजिए। समुद्र राम की विनय नहीं सुनता। मार्ग नहीं देता। उपाय भी नहीं बताता। क्यों? कारण यह है कि वह अपनी मर्यादा तोड़ना नहीं चाहता। वह यह भी जानता है कि उसके आश्रित जीव-जन्तु अभिमानवश सहसा राम के प्रताप को मान भी नहीं सकते; और राजा तो प्रजा की रुचि को देखकर ही संधि या समझौता करता है। इसी से वह भी अपने मान में डटा रहता है और किसी राम की नहीं सुनता। जब राम के कोप को देखता और यह भली भाँति जान लेता है कि अब उसके आश्रितों का कल्याण नहीं, उनमें भी खलबली मची है; तब तुरंत विप्र के रूप में नाना प्रकार का उपहार लेकर राम की शरण में आता है।*

'डाँटे पै नवै नीच' की बात तो [illegible] गरुड़ तक ही रह जाती है। समुद्र के [illegible] साथ 'भय बिनु होइ न प्रीति' का ही व्यवहार किया जाता है। जिससे भगवान् के सामने यह स्पष्ट कर देता है कि 'भय बिनु होइ न प्रीति' की नीति तो ठीक है पर साथ ही दूसरी बात भी है जो इससे कम नहीं, कुछ अधिक ही महत्त्व की है, और वह है मर्यादा-पालन। राम ने एक बात का ध्यान रखा है। भय दिखाए बिना काम नहीं चलता अतः भय दिखाया, यह ठीक किया। किन्तु मर्यादा के पालन के बिना संसार में व्यवस्था नहीं रह जाती। वह भी उपेक्षणीय नहीं। भय का स्वरूप ऐसा न हो कि मर्यादा टूट जाए, मर्यादा बनी रहे और भय इतना हो हो कि कार्य सध जाए। इतना नहीं कि विनाश हो और हाहाकार मच जाए। अर्थात् भय की भी कोई मर्यादा होनी चाहिए। कुल यह नहीं कि रोष के आवेश में एक नीति की मर्यादा का ध्यान न रहे और उसके साथ ही दूसरे की मर्यादा का भी उल्लंघन हो।

राजनीति की दृष्टि से विनय की नीति सदा ठीक

तुलसीदास ने इस विप्र के लिए 'नीच' का प्रयोग क्यों किया? उनके इस कथन में कितनी खीझ है—

'काटे पै कदली फलै, कोटि जतन कर सींच।
विनय न मान खगेस सुन, डाटे पै नवै नीच॥'

है तो यहाँ भी 'भय बिन होइ न प्रीति' की ही नीति किंतु उग्रता और चपेट के साथ। जो नीच है, वह डाँटने पर ठीक होता है और वस्तुतः नीच वह है, जो भय-[illegible] को राम-रूप को नहीं जानता।

वस्तुस्थिति यह है कि 'राम-चरित-मानस' के दो पक्ष हैं, एक ओर दशरथ-पुत्र राम का चरित है और दूसरा है [illegible] स्वामी तुलसीदास का 'भगति-निरूपण'। उक्त दोनों को काकभुशुंडि गरुड़ से कह रहे हैं। राम-चरित कहते हुए जब अपने शक्ति के अभिमान का प्रश्न आता है, वहाँ चपट अभिमान-ग्रसित गरुड़ को काकभुशुंडि सचेत करते हैं कि राम के सामने अपनी शक्ति का अभिमान करना जड़ता और मूर्खता है। ऐसे जड़ को नीच नहीं तो और क्या कहा जाए, जो भगवान् से अपनी अकड़ दिखाता है और उनके आशय पर ध्यान नहीं देता। प्रसंग चरित का नहीं भक्ति का है। अस्तु, इसमें शंका का कोई स्थान नहीं है।

---

* टीका—प्रश्न उठ सकता है कि फिर गोस्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। इसी से लक्ष्मण को भाती नहीं और रावण भी आक्रमणकारी राम की इस नीति का परिहास करता है। साम, दाम, दण्ड, भेद में दण्ड-नीति का एक स्वरूप इस प्रसंग में दिखलाया गया है। गोस्वामी जी को 'केवल दण्ड कराल' कह कर तात्कालिक राज-नीति के असंयम की आलोचना करनी पड़ी थी। दंड-नीति की अति का वर्जन करना उन्हें इष्ट था। इस प्रसंग में भी यही बताने का प्रयत्न किया गया है कि ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और नारी ही नहीं, कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, विप्र हो, आदरणीय हो, चाहे जो हो, वह राजनीति के अनुसार अनुशासन और ताड़ना के अधिकारी होते ही हैं। सभी पंचमहाभूतों से निर्मित हैं। अतः जड़ता उनकी प्रकृति में निहित रहती ही है। जब वह जड़ता प्रकट हो जाती है और इष्ट-साधना में बाधक रूप से उठ खड़ी होती है तब ताड़ना देकर, भय उत्पन्न करके कार्य साधना और व्यवस्था बनाए रखना चाहिए। ताड़ना हो, अनुशासन हो, भय हो, चाहे जो हो किंतु सब मर्यादा के भीतर हो। इसी की प्रतिष्ठा तो मर्यादा-पुरुषोत्तम को करना है। उक्त प्रसंग में भय का रूप ऐसा भयंकर हो जाता है कि उससे मर्यादा डरती दिखाई देती है। साथ ही समुद्र की मर्यादा भी भंग होती है। इसी से समुद्र राम से प्रार्थी हो यह निर्देश करता है और उनका ध्यान इधर आकृष्ट कर इसका निर्णय उन्हीं पर छोड़ देता है। उन्हें जो भाए, सो करें।

अब तक जो कुछ कहा गया है, उससे यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि इस प्रसंग में, ताड़ना का महत्त्व दिखलाना ही गोस्वामी जी को इष्ट है। सो भी सभी की, स्त्रीमात्र की नहीं। ताड़ना का जीवन में क्या स्थान है, इसी को स्पष्ट करने के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने इसका विधान इस अवसर पर किया है और राम तथा उनके कुल-गुरु के बीच रार छेड़कर इसे भली भाँति चरितार्थ कर दिया है। अस्तु, यह स्त्री-निन्दा का न प्रसंग ही है और न है स्त्री-निन्दा का यहाँ कोई प्रयोजन ही। यह विचारने की बात है कि इस अवसर पर गोस्वामी जी स्त्री-निन्दा का प्रसंग छेड़ने क्यों जाएँगे? यदि स्त्री-निन्दा ही उन्हें इष्ट होती और यदि यही कहना इष्ट होता कि स्त्री ताड़ना की अधिकारिणी है तो क्या 'राम चरित-मानस' में इसके लिए अन्य कोई प्रसंग नहीं था? अन्य सुअवसरों को छोड़कर राम और समुद्र के प्रसंग में केवल स्त्री-निन्दा के लिए एक ऐसा कथन प्रस्तुत करना, जिससे स्त्री ताड़ना की अधिकारिणी सिद्ध हो, तुलसी ऐसे महाकवि को इष्ट नहीं हो सकता। अतः राम-नारद-वार्ता के प्रसंग को अथवा दशरथ-कैकेयी के प्रसंग को लेकर आप तुलसी को स्त्री-निंदक सिद्ध करने का प्रयत्न भले ही कर लें, (वहाँ तो इसके लिए कुछ स्थान है भी) परन्तु इस पंक्ति के आधार पर उन्हें स्त्री-निन्दक ठहराना कदापि उचित और बुद्धि-संगत नहीं है। इसमें गोस्वामी तुलसीदास का पक्ष इतना ही है कि ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और नारी तक ताड़ना की दृष्टि तो सबकी दौड़ती है पर वस्तुतः सब लोग यह नहीं लख पाते कि सृष्टि के मूल में ही ताड़ना का निवास है। ताड़ना के बिना कार्य चल नहीं पाता। राज-नीति और राजा तो ताड़ना को छोड़कर चल नहीं सकते। परन्तु ताड़ना ऐसी होनी चाहिए कि उससे न साँप मरे न लाठी टूटे पर काम चोखा बनना चाहिए। ढोल की ताड़ना ढब से नहीं हुई तो क्या बना? वह फूट गई या उसका ताल बिगड़ा। इसी से अन्यों को भी समझ लेना चाहिए और विनय तथा ताड़ना के महत्त्व को जानकर ही इनका उपयोग करना चाहिए।

अनुवाद कला

श्री गोवर्द्धन शर्मा

सामान्य विचार-धारा के अनुसार अनुवाद का काम हेय समझा जाता है। अच्छा मौलिक लेखक जितने यश, आदर व संपदा का अधिकारी हो सकता है, उतना एक कुशल अनुवादक नहीं। पर ये विचार भ्रान्त हैं। एक श्रेष्ठ लेखक देश के लिए जो करता है, एक अनुवादक उससे कम नहीं करता। जितना श्रम मौलिक रचना करने में लगता है, अनुवाद करने में उससे कम नहीं लगता। कोई कारण नहीं कि हम अनुवादक का लेखक के तुल्य सम्मान न करें।

अनुवाद का महत्त्व

अनुवादक का काम बड़ी जिम्मेदारी और महत्त्व का है। अनुवादक भूत और भविष्य, देश और विदेश के मध्य सेतु का निर्माण करता है। दूर बसे हुए देशों को निकट लाता है, विभिन्न सभ्यताओं को स्पष्ट करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतकाल को—अतीत के जीवन को वर्तमान में लाता है। अनुवादक किसी देश-सेवक से कम नहीं। एक कुशल अनुवादक मानव जाति का बड़ा हितैषी है। भूतकाल में कुशल भाषा शास्त्रियों व अनुवादकों ने ही नाना देशों में राजनैतिक, धार्मिक और वैज्ञानिक आन्दोलन चलाए हैं। इस समय भी भिन्न-भिन्न देशों के विज्ञान, साहित्य व दर्शन को समझने के लिए अनूदित ग्रंथों की ही शरण में जाना पड़ता है। अनुवादक जनता के मानसिक क्षितिज को विस्तीर्ण करता है, विश्व की एकता का पाठ पढ़ाता है। पूर्व के दर्शन, विचार व आदर्श को पश्चिम में पहुँचाता है और सामंजस्य स्थापित करता है। पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति, विचार-धारा व संस्कृति पूर्व में पहुँचाता है और विश्वबंधुत्व का पाठ पढ़ाता है।

अतीत के इतिहास में अनुवादक का जो महत्त्व रहा है वह किसी से छिपा नहीं है। सिसेरो और लोक्रेटियस ने यूनानी दर्शन को लोकप्रिय बनाया। चीन में बौद्ध धर्म का विकास पाली व संस्कृत भाषा से अनूदित ग्रंथों-द्वारा ही संभव हुआ। मध्यकालीन इस्लामी साहित्यकला उद्धार काल की प्रगति का आधार संस्कृत व इतर भाषाओं से अनूदित रचनाएँ ही थीं। योरप का विद्या पुनर्जीवन-काल भी फ्रेंच, ग्रीक, लेटिन व आंग्ल भाषाओं के परस्पर अनुवाद से बरी नहीं है।

आधुनिक काल में भी इसका महत्त्व घटा नहीं है, बढ़ अवश्य गया है। बुद्ध का पाली साहित्य, चीनी दार्शनिकों के विचार, फारसी कविता, नाना धर्मों के ग्रंथ, इब्सन के नाटक, टैगोर की रचनाएँ तथा अन्य अत्युत्तम कृतियाँ समूचे संसार को अनुवादकों के श्रम से ही उपलब्ध हो सकी हैं।

मौलिक लेखक एक नई सृष्टि का निर्माण करता है तो अनुवादक उसका उद्घाटन। अतएव यह निस्संकोच होकर कहा जा सकता है कि अनुवादक का कार्य कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उसे उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।

पहली आवश्यकता

अनुवादक के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि उसका दोनों भाषाओं में सम्मान रूप से प्रवेश हो। इसके बिना वह अपने काम में कदापि सफल नहीं हो सकता। केवल भाषाओं की अच्छी जानकारी ही उसे अपने काम में श्रेष्ठ नहीं बना सकती, वरन् जिस पुस्तक का अनुवाद करना हो, उसको भली प्रकार समझ लेना भी आवश्यक है। यदि किसी दार्शनिक की पुस्तक का अनुवाद करना हो तो उसे दार्शनिक के सिद्धान्तों व विचार-धारा का भली प्रकार मनन करना आवश्यक है। इसके बिना वह सफल नहीं हो सकता। उदाहरणतः यदि गांधी जी के किसी लेख का अनुवाद करना हो तो गांधी विचार-धारा को समझनेवाला व्यक्ति जो अनुवाद करेगा, वही उत्कृष्ट होगा। टेकनिकल विषयों की पुस्तकों के अनुवादक का उस विषय का ज्ञाता होना अत्यावश्यक है अन्यथा वह अपने विषय का उचित ढंग से प्रतिपादन नहीं कर सकेगा।

अनुवाद के रूप

अनुवाद दो प्रकार से किया जाता है। एक तो शब्दार्थ के रूप में, दूसरा भावार्थ के रूप में। शब्दानुवाद में शब्दों का अर्थ किया जाता है। शब्दानुवाद में इसी लिए वह प्रवाह नहीं आ पाता, जो कि आना चाहिए। केवल यही नहीं, उसमें मौलिक कृति के भाव नहीं उतारे जा सकते हैं; और इस प्रकार के शब्दानुवाद को हम सफल अनुवाद नहीं कह सकते। भावानुवाद में शब्दों के अर्थ पर विशेष ध्यान न देकर उनके भाव पर दिया जाता है। श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने, जिन्होंने कई अंग्रेजी पुस्तकों का हिन्दी में सफल अनुवाद किया है, अपने एक लेख में बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया है। एक बार गांधी जी ने एक लेख में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के बारे में लिखा—Ward of Shanti Niketan! उसी का अनुवाद करके 'हरिजन-सेवक' में देना था। एक सज्जन ने प्रयत्न किया, पर वह अनुवाद गांधी जी को पसन्द नहीं आया। Ward का अर्थ वैसे तो भट्ट होता है। कुछ अरसे बाद स्वयं गांधी जी ने अनुवाद किया। उन्होंने लिखा—'शांतिनिकेतन के प्राण!' कितना उपयुक्त अनुवाद था। भावानुवाद का यह सबसे अच्छा उदाहरण है। शायद ही इससे अच्छा और अनुवाद किया जा सकता था।

भाषा की कठिनाई

अनुवादक का नाम सरल नहीं है। कई बार दो सामान्य भाषाओं में कुछ एक-से शब्द होते हैं, उच्चारण में भी समानता होती है, पर अर्थ में बहुत अन्तर होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उदाहरण के लिए टोकरा शब्द, मराठी में बाँस के लिए प्रयुक्त होता है। उसी प्रकार माकड़ शब्द राजस्थानी में खटमल के लिए काम में लाया जाता है, परन्तु मराठी में इसका उपयोग बन्दर के लिए किया जाता है। यदि अनुवादक इस प्रकार की सामान्य प्रान्तीय भाषाओं का उल्था कर रहा हो, तो उसे सचेत रहना आवश्यक है। भाषा का भ्रम उसे कठिनाई में डाल सकता है।

हिन्दी का अनूदित साहित्य

हिन्दी के क्षेत्र में अनुवाद का काम अभी बहुत बाकी है। टेक्नीकल और औद्योगिक विषयों की बात ही छोड़िए, अभी तो इस क्षेत्र में नगण्य-सा ही काम हुआ है। कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में भी शून्य है। मनोविज्ञान, उद्योग, विज्ञान की सभी प्रशाखाएँ, अर्थ, दर्शन, इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य-रक्षा आदि में अभी बहुत प्रगति की जानी चाहिए। विश्व के कई अच्छे ऊँचे दर्जे के कलाकारों की श्रेष्ठतम कृतियों तक के हिन्दी में अनुवाद अभी तक नहीं हुए हैं। सन् १९४२ तक की प्रकाशित पुस्तकों की सूची के अनुसार थोमस हार्डी, स्काट, डिकन्स, थेकरे, मेरिडिथ की किसी भी रचना का हिन्दी में अनुवाद नहीं हुआ। डेस्टोवेस्की, गोर्की, ह्यूगोजोला आदि की कुछ ही कृतियों का अनुवाद हुआ है। अभी लक्षित साहित्य में ही यह दशा है तो फिर वैज्ञानिक व औद्योगिक साहित्य में अकाल क्यों न हो? आज के विद्वानों को चाहिए कि मौलिक रचनाओं के साथ-ही-साथ अनूदित रचनाओं का भी सृजन करें।

कुछ कारण

अनूदित साहित्य की कमी के कुछ कारण भी हैं। पहला कारण तो यह है कि अनुवाद करने में जितना श्रम होता है, उससे भी अधिक होता है प्रकाशक ढूँढ़ने में। यदि सौभाग्य से कोई प्रकाशक तैयार भी हो गया तो पारिश्रमिक कुछ कम ही मिलता है। नाम व अर्थ दोनों की हानि साफ नजर आने लगती है और इस प्रकार कमी बढ़ती ही जाती है। कुछ राजनैतिक नेताओं, अंतराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त पत्रकारों की रचनाओं अथवा पाठ्य पुस्तकों के अलावा प्रकाशकों की उदासीनता अनूदित पुस्तकों के बारे में होती ही है। अब हिन्दी १० वर्ष पहले की हिन्दी नहीं रही। हमें इसकी सर्वांगीण उन्नति करनी है तभी वह सच्चे अर्थों में राष्ट्रभाषा बन सकेगी। आशा है इस ओर अन्य विद्वज्जन भी यथेष्ट ध्यान देंगे।

यह नई बदलिया आई

लो, लगी बदलियाँ छाने,
नन्हीं बूँदें बरसाने,
यह पीड़ा निखर-निखर रे,
उत्सव-सा लगी मनाने!
नव युवती-नवल वधू-सी–
अलसाई-सी अँगड़ाती–
यौवन का भार सम्हाले–
वह नई बदलिया आती।

है पथ में पलक बिछाए–
पुलकित-सुपङ्ख फैलाए–
मन-मोर नृत्य-बेला में–
जब तक पग द्वैक उठाए,
तत्क्षण ही बिजली चमकी,
भय! दुख! सहमी तरुणाई!
मुसकाती—आहें भरती—
है नई बदलिया आई।

—राजाराम खरे, बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू और मिट्टी की पट्टी

आचार्य नित्यानन्द सारस्वत

बात मुद्दतों पहले की है। उन दिनों मैं निरा बच्चा था। तब मैं हठकर खाने को ज्यादा रोटी माँग लेता। जूठन छोड़ने पर मा नाराज होती और कहती—'पेट पर बाँधकर सो जा।' पता नहीं, वैसा करने से भूख बढ़े या घटे; पर यह तो जँच गया है कि मिट्टी की पट्टी पेट पर बाँधना अमृत के समान गुणकारी है। मिट्टी की पट्टी प्राकृतिक चिकित्सा का ही एक प्रमुख अंग है। महात्मा गांधी तो उससे पूर्ण प्रभावित थे। अपने महाप्रयाण से कुछ समय पहले उन्होंने कहा था—"मेरी सवा सौ वर्ष जीने की आकांक्षा है। इस शेष जीवन को मैं प्राकृतिक उपचार में लगाना चाहता हूँ।"

प्राकृतिक चिकित्सा से सम्पर्क

चिकित्सा की इस प्रणाली से परिचय दक्षिण अफ्रीका में हुआ। उस समय गांधी जी कुछ अस्वस्थ रहते थे। कब्जियत तो उनके पीछे हाथ धोकर पड़ी थी। सैकड़ों दवाएँ ले चुके, पर वह ज्यों-की-त्यों। इस पृष्ठभूमि पर उन्हें 'जुस्ट' की 'प्राकृतिक जीवन' नाम की पुस्तक मिली। पुस्तक युक्तियुक्त थी और बापू ने उसका गहरा अनुशीलन किया। यह तो बापू की खूबी ही थी कि वे जिस चीज को अपनाते, पूर्ण विश्वास के साथ।

प्राकृतिक चिकित्सा में भी मिट्टी की पट्टी पर ही सर्व-प्रथम बापू की आस्था जमी। फिर तो धीरे-धीरे दवाओं पर से उनका विश्वास ही उठ गया। दूसरे शब्दों में वे पूर्ण मृत्तिका-चिकित्सक बन गए।

मिट्टी की पट्टी कैसे जँची ?

जुस्ट की पुस्तक के अनुसार पहले उन्होंने उसकी मिट्टी की पट्टी को अजमाया। उन्हें लगा कि इससे कब्ज में ही, उससे सिरदर्द भी रहता। खान-पान में परहेज और नास्ते का नागा करने से सरदर्द में तो कभी-कभी कमी हो जाती थी, पर कब्जियत न जाती। जब से मिट्टी की पट्टी बाँधी, उन्हें एक चमत्कार-सा प्रतीत हुआ। मिट्टी की पट्टी वे जिस प्रकार बाँधा करते थे, उसकी तरकीब उनकी 'आत्मकथा' में यों है :—"खेतों की साफ या काली मिट्टी लेकर उसे आवश्यकतानुसार ठण्डे पानी में भिगो लेना चाहिए। फिर साफ भीगे कपड़े में लपेटकर पेट पर बाँध लेना चाहिए। मैं यह पट्टी रात को बाँधता। सुबह या जब नींद खुलती तो उतार देता। इससे मेरा कब्ज निर्मूल हो गया।"

बाद में तो वे करीब दो हाथ गहराई की मिट्टी निकलवा कर बारीक करवा, मिट्टी की एक हाण्डी में रखवा लेते। कपड़े को गन्दा होने से बचाने के लिए एक लकड़ी की मामूली-सी पट्टी रखवा लेते, जिससे पट्टी बाँधने में भी सहूलियत रहती।

बापू ने तो 'जुस्ट' की पुस्तक और अपने अनुभवों के आधार पर मिट्टी का इलाज पकड़ा। पर वेद में भी मृत्तिका के द्वारा चिकित्सा का विधान है। 'अक्षादक्षल्लोम्नो लोम्नो' अपने सूक्त का अन्तिम मंत्र है। इस मंत्र को प्राचीन काल से मृत्तिका-स्नान करते समय बोलने की परिपाटी है। आज भी महाराष्ट्र या दक्षिण भारत में चले जाइए, श्रावणी-पर्व के अवसर पर अच्छी और साफ मिट्टी स्वच्छ पानी में मिलाकर शरीर पर लगाई जाती है। कुछ देर बाद शुद्ध जल से सर्वाङ्गस्नान करना चाहिए। जिस सूक्त के अंतिम मंत्र का उपयोग इस प्रकार किया जाता है, उस सूक्त के पहले के मंत्रों में सारे शरीर में होने वाली विविध व्याधियों का उल्लेख है। इससे प्रतीत होता है कि यह सारा सूक्त मृत्तिका से शरीर के विभिन्न रोगों को हटाने के लिए है।

इस कार्य के लिए जो मिट्टी हम लें, वह अच्छी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध रूप में होनी चाहिए। उसमें खाद का अंश हानिकर सिद्ध हो सकता है। खेत में से मिट्टी लेते समय इसे ध्यान में रखें। जहाँ खेती नहीं होती हो, वहाँ से ऊपर की भी शुद्ध मिट्टी ली जाए, तो अच्छी है। मैंने उस मिट्टी का भी प्रयोग करके देखा है, जिससे कुम्हार लोग देशी घड़े बनाते हैं। वह भी उपयोगी प्रमाणित हुई।

अनोखे चमत्कार

बापू मिट्टी की पट्टी कब्ज की ही चिकित्सा में नहीं, बल्कि कितने ही ऐसे रोगों में भी लगाते थे, जहाँ कि दूसरी पद्धतियाँ जरा भी काम नहीं करतीं। सच तो यह है कि जहाँ दूसरी प्रणालियाँ समाप्त हो जाती हैं, वहीं से मिट्टी की चिकित्सा का प्रारम्भ होता है।

गांधी जी इस पट्टी का प्रयोग विभिन्न रूप से करते। जोहान्सबर्ग में तो इसके द्वारा प्लेग के हजारों रोगियों को उन्होंने ठीक किया था। हैजे का किस्सा सुनिए। एक बार वर्धा में ऐसे साहित्य-सेवी रोगी के पास गए, जहाँ महँगे-से-महँगा एलोपैथी का इलाज चालू था। पर वह सफल नहीं हो रहा था। बापू ने झट कहा—'इन्हें आप मिट्टी की पट्टी क्यों नहीं बाँधते?' बेचारे डाक्टर साहेब बापू का मुँह ताकने लगे।

आश्रम में यदि किसी को बर्रे डंक मार देता, तो बापू उस पर तुरन्त मिट्टी की पट्टी बँधवा देते। यही हाल बिच्छू के डंक मारने पर था। एक बार बापू अपनी कुटिया में आराम कर रहे थे। थोड़ी देर बाद ही गहरी नींद में मग्न हो गए। इतने में ही 'बप्पा रे बप्पा!' चिल्लाती हुई एक बुढ़िया कुटिया में घुस आई। चिल्लाहट से नींद टूटते ही बापू ने देखा कि बुढ़िया अपने पैर को पकड़े रो रही है। इस अप्रत्याशित विघ्न की ओर ध्यान दिए बिना ही बापू ने दयार्द्र होकर कराहने का कारण पूछा। पर वह गँवार बुढ़िया एक बार 'बिच्छू डसला' कहकर बाद में 'डसला-डसला' की ही पुनरावृत्ति करती रही! बापू ठेठ मराठी उन दिनों नहीं जानते थे। फिर भी भावभंगी से दर्द होने की बात समझ गए। झट एक हाथ से पैर दबाकर दर्द कम करने की कोशिश की और दूसरे से हवा करने लगे। भाई महादेव देसाई आग ले आए और बड़ी देर तक सेका ताड़ी करते रहे। पर ज्यों ही उनको पता लगा कि बिच्छू ने काटा है, तो झट मिट्टी की पट्टी बँधवा दी।

एक बार बापू की उँगली उनके परिचारक की असावधानी से मोटर के दरवाजे में कुचल गई। टप-टप खून झरने लगा। बापू को एक क्षण बेहोशी-सी रही, पर दूसरे ही क्षण उनका हाथ पानी के बरतन में था। बाद में तो टिंचर भी तैयार था, पर बापू ने मिट्टी की पट्टी ही बाँधी।

इस प्रकार पहले अपने ऊपर आजमाए हुए मिट्टी के प्रयोग ही वे दूसरे को करने की सलाह देते। बिना अनुभव किए अपने किसी अनुयायी को भी वैसा करने की सलाह न देते। एक बार बतलाया था कि—'यह देखो प्यारेलाल जी की बहन सुशीला है। यह एलोपैथ है, पर मैं मिट्टी की चिकित्सा के लिए इस पर जोर नहीं डालता, बल्कि समय-समय पर इसे मदद ही देता हूँ।' यही कारण था कि जिन आश्रमवासियों की मिट्टी पर श्रद्धा नहीं होती, उन्हें कभी मिट्टी की पट्टी का आदेश बापू-द्वारा नहीं मिलता। उनको डाक्टरों और वैद्यों की शरण में छोड़ दिया जाता।

बापू बड़े-बड़े फोड़ों पर मिट्टी की पट्टी बँधाया करते थे। यह भी कहना चाहिए कि प्रायः इसी के द्वारा सफल भी होते थे।

सिर पर भी पट्टी और विनोद

बापू अधिक गर्म मौसम में सिर पर भी मिट्टी की पट्टी रख लिया करते थे। तरकीब में कोई अन्तर न था। दोपहर में कोई मेहमान आता तो उसे अचरज ही करना पड़ता। एक बार बापू जून के महीने में सिर पर पट्टी रखे लेटे हुए थे। कुछ पत्रकार उसी समय आ धमके। बापू लेटे-लेटे ही मुस्कराकर बोले—'आइए, आप प्रश्नों के बाण मेरी ओर छोड़ सकते हैं। मैं पड़ा-पड़ा ही उनको झेल लूँगा।' तभी एक अमेरिकन महाशय फोटो लेने पर उतारू हो गए। बापू ने उनसे कहा—'मेरे सिर की पट्टी देखकर लोग आपसे पूछेंगे, अरे! गांधी का सिर कैसे फूट गया था? तब आप क्या जवाब देंगे?' इसी प्रकार मिट्टी की पट्टी को लेकर बापू के विनोद प्रश्नों की बाण-वर्षा में भी चलते रहे।

साहित्यकों को दार्शनिकता का उत्तर मिलता। जापान के सुप्रसिद्ध कवि योन बागुची ने जब सिर पर बँधी पट्टी को देखकर, उसके बारे में जिज्ञासा प्रगट की थी, तो उन्हें रहस्यमयी हँसी से उत्तर मिला था—'मैंने भारत की मिट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जन्म लिया है, इससे यहाँ की मिट्टी को मैं शिरोधार्य समझता हूँ।' दोनों महापुरुष हँसने लगे।

मेरे निजी अनुभव

बापू की मिट्टी पर अनन्य निष्ठा से मैंने भी उसके प्रयोग की सोची। मिट्टी की पट्टी पर मेरा जो पहला अनुभव था, वह असफल ही नहीं, बल्कि डरावना और घृणोत्पादक भी था। सन् ३४ की बात है। हाथ पर कुछ छोटी-छोटी फुंसियाँ निकल आईं। आरोग्य-विधान के पन्ने उलटे। मिट्टी को गीली कर लेप कर दिया। ऊपर से पट्टी बाँधने लगा। कोई फायदा न हुआ। मैंने प्रयोग जारी रखा। तीसरे दिन ही कुछ छोटी-छोटी फुंसियाँ और नजर आने लगीं। बाद में तो इनका झुण्ड-का-झुण्ड हो गया। मुझे हर समय टीस रहने लगी। मणिबन्ध गलने लग गया। साथ ही मिट्टी पर मेरी अगाध शास्त्रीय श्रद्धा लुप्त होने लगी। मित्रों ने डाक्टर के पास जाने को विवश किया।

पहले पहल एक फौजी डाक्टर से पाला पड़ा। ये महाशय 'मेजर' थे। सारे घाव को देख-भाल कर बिना एक शब्द भी बोले बाँह में एक इंजेक्शन ठोंक दिया। जब तक मेरे हाथ में टोंचा न था, मेरी यह आशंका तक न थी कि यह मेरे ही लिए तैयार हो रहा है। फौजी कानून का गूंगापन और बाधिर्य सुना तो था, पर वहाँ के डाक्टर भी उसके कितने अनुशासन में रहते हैं, यह पहली बार क्रियात्मक अनुभव हुआ। फलस्वरूप थकान-सी महसूस होने लगी। अगर भूलता नहीं हूँ, तो कहूँगा कि बुखार भी चढ़ चला था। अगले दिन दूसरे एम० बी० बी० एस० का दरवाजा खटखटाया। वे मिट्टी के इलाज की कहानी सुनकर माथा ठोंकने लगे। कहते थे 'हम किस मर्ज की दवा हैं, तुरन्त क्यों नहीं आए?' उनके शब्दों में व्रण 'संक्रामक' हो गया था—'पलम' फैल गई थी। कैंसर का भूत सिर से न उतरा।

कब्ज पर ही मुझे भी सर्वप्रथम सफलता मिली। मैं बापू की तरह गीले कपड़े में न लपेटकर मिट्टी पेट पर ही लपेट लेता हूँ। लेप नाभि से नीचे रहता है। मेरा विश्वास है कि मिट्टी का जितना साक्षात् सम्बन्ध होगा, उतना ही विष खींचने का उसका स्वभाव प्रबल होगा। बाद में तो कभी निराशा हुई ही नहीं। सैकड़ों प्रयोग हुए। शत प्रतिशत सफल।

अब क्या करें?

जीवन के अन्तिम दिनों में बापू ने प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार का पूर्ण निश्चय कर लिया था। उरली काञ्चन में प्राकृतिक चिकित्सालय चालू किया था। प्रार्थना के अवसर पर अनेकों बार प्राकृतिक चिकित्सा पर जोर दिया। किन्तु इसका वे समुचित प्रचार नहीं कर सके। उनका यह कमीशन अधूरा रहा। उन्होंने स्वयं माननीय सरदार पटेल को लिखे एक पत्र में स्वीकार किया था कि "पिछले पचास सालों से जो चीज मेरे लिए महज एक शौक की चीज थी, उसी की एक धुन लगी है।"

उनके इस अधूरे काम को हमें पूर्ण करना है। भारत के सात लाख गरीब गाँवों में यही सफल भी हो सकता है। क्या आप अपनी किसी प्रकार की अस्वस्थता के समय प्राकृतिक चिकित्सा और उसके महत्त्वपूर्ण अंग मिट्टी की पट्टी को भूल जाएँगे! बापू का महान् सन्देश आपके कानों में न गूँजेगा!!

मुद्रक और प्रकाशक—के० मित्रा, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः आपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको आपरेशन कराने में असुविधा है या आपरेशन की अपेक्षा औषधियों-द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत—मूँगा जिसका प्रधान अंग—१५ वर्षों से प्रचलित **गौड़ की नारी-सुधा काडियल** सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना आपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा निपट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेदे का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खूराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर खुलकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खूब भूख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। **नारी-सुधा** की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पेकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रुपया पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

से मँगाइए—

बड़े बड़े शहरों में हम एजेन्सी स्थापन कर रहे हैं। नियमावली के लिए पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द-साहित्य

अभी छपी है

१—भारत में विवेकानन्द

विवेकानन्दजी के भारतीय व्याख्यान, अनु०—पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'; पृ० सं० ५९९, मू० ५) रु०।

"इन सुविख्यात स्फूर्तिप्रद व्याख्यानों में वेदान्त का सच्चा स्वरूप उद्घाटित है तथा उनमें स्वामी के राष्ट्र निर्माण-सम्बन्धी वैध और ठोस विचारों की भी झलक मिलती है।"

२—विवेकानन्द-चरित

विस्तृत तथा स्फूर्तिदायक जीवनी; सुविख्यात लेखक, श्री सत्येन्द्रनाथ मजूमदारकृत, सुन्दर गेट-अप, जैकेट सहित, पृ० सं० ५५५, मूल्य ६) रु०।

"प्राचीन भारतीय संस्कृति में पगे तथा भारतवर्ष की प्राचीन परम्परा के अभिमानी स्वामी विवेकानन्द मानवी जीवन की समस्याओं को समझने में नितान्त आधुनिक थे और हम कह सकते हैं कि इस प्रकार उनके जीवन में भारत-वर्ष की प्राचीन तथा वर्तमान संस्कृति का सुन्दर समन्वय हुआ था।" —पं० जवाहरलाल नेहरू

३—श्रीरामकृष्ण वचनामृत

अनुवादक—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुन्दर गेट-अप, जैकेट सहित, तीन भागों में, प्रथम भाग पृ० सं० ६३२, मूल्य ६) रु०; द्वितीय भाग पृ० सं० ६५७, मूल्य ६) रु०; तृतीय भाग पृ० सं० ८२२, मूल्य ७॥) रु०।

"प्रकाशक महोदय ने भगवान् श्रीरामकृष्ण परमहंस के वचनामृत का हिन्दी में अनुवाद करा कर न केवल भारतीय संस्कृति और सन्त-साहित्य की रक्षा की है, वरन् आध्यात्मिक जगत् में एक ऐसे प्रवाह का प्लावन किया है, जिससे विश्व के दुःखी और सन्तप्त प्राणी अपने क्लेशों के घावों को भर सकते हैं। —विशाल भारत

"'श्रीरामकृष्ण वचनामृत' का संन्यासियों और गृहस्थों में समान रूप से आदर होगा, क्योंकि इसमें दर्शन और साधना के जो शाश्वत नियम बतलाये गये हैं वे हर एक के लिए शुभ और विशेष उपयोगी हैं।"' —सरस्वती

४—श्रीरामकृष्ण लीलामृत (विस्तृत जीवनी)—दो भागों में, पृ० सं० ४३६, ४८६ प्रत्येक भाग का मूल्य ५) रुपये। 'श्रीरामकृष्ण ईश्वरत्व की सजीव मूर्ति थे।'

—महात्मा गांधी

विवेकानन्दकृत :—धर्मरहस्य, मू० १); मेरी समर-नीति, मू० ।≥); धर्म-विज्ञान, मू० १॥=); मरणोत्तर जीवन, मू० ॥); मेरा जीवन तथा ध्येय, मू० ॥); रामकृष्ण धर्म तथा संघ, मू० ॥=); हिन्दू-धर्म, मू० १॥)।

विस्तृत सूचीपत्र के लिए लिखिये।

श्रीरामकृष्ण आश्रम, (स) धन्नोली,

नारायण पी० पी०

दशकों से पीड़ित बच्चों की सेवा

जेम्मी के "लिवर क्योर" द्वारा की गई दशकों से "बच्चों के यकृत" से पीड़ित शिशुओं की सेवा ने हजारों बहुमुल्य कली के समान प्राणों को काल के मुखमें जाने से बचा लिया है। प्रारम्भिक अथवा रोगवृद्धि की अवस्था में डाक्टर "सिम्पल" और "कम्पलीकेटेड" लिवर क्योर की सिफारिश करते हैं।

'सिम्पल' लिवर क्योर थोड़ी थोड़ी मात्रा में उत्तम रोग निवारक का काम करता है; क्षुधा बढ़ाता है और पाचन-क्रिया को ठीक करता है; कब्जि-यत दूर करता है तथा यकृत एवं तिल्ली का कार्य नियमित रूप से संचालन करता है।

यकृत से पीड़ित बच्चों की गर्भवती माताओं को जेम्मी का टॉनिक प्रयोग करना चाहिए। यह आयुर्वेद के उन सिद्धान्तों के अनुसार तैयार किया गया है जो यह बताते हैं कि यकृत व तिल्ली एसे अवयव हैं जो माता ही से प्राप्त होते हैं।

जेम्मी का लिवर क्योर

जेम्मी वेंकटरामनैय्या एण्ड सन्स

माइलापुर, मद्रास, (फो. नं. ८१३९)
सैण्डहर्स्ट रोड, बंबई ४. (फो. नं. ४१५९३)
हरिसन रोड, कलकत्ता।
अन्य स्थान-लखनऊ, बंगलोर, त्रिचनापल्ली, इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar J. 234 A Hindi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन के तौलिये अब इतने साफ़
और सफ़ेद प्रतीत हो रहे हैं!

सनलाइट के कारण से ही!

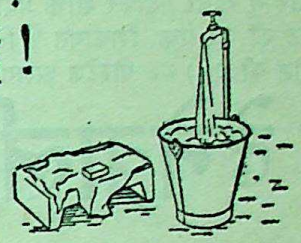

सनलाइट साबुन

बिना पटकने के कपड़े सफ़ेद धोता है!

S, 97-111 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेटभर भोजन करिये

गेसहर [गोलियाँ] गेस का चढ़ना, पैदा होना, मन्दाग्नि, बादी, वायु पेट में पवन का घुंचवाना, भूख की कमी, दिमाग़ में अशांति हो जाना, घबराहट, थकावट, हृदय की कमज़ोरी, पल्पीटेशन ब्लडप्रेसर, दस्त की रुकावट, नींद की कमी वग़ैरह को दूर कर, दस्त हमेशा साफ और खुलासा लाती है। अन्न पाचन करके कड़ाके की भूख लगाती है, शरीर में रुधिर बढ़ाकर शक्ति प्रदान करती है, लिवर, आँत, प्लीहा और पेट की हर एक शिकायत के लिए, अद्वितीय इलाज है। की० १।) रु० तीन की ३॥) रु० पोस्टेज अलग।

कुव्वत देनेवाली दवा

दुग्धानुपान [गोलियाँ] धातु क्षीणता, स्वप्नदोष, बन्धकोष्ठ, पुरुषत्व की कमी, पेशाब की शिकायतें, दिमाग़ की कमज़ोरी, बीमारी के बाद की निर्बलता, रुधिर की कमी, शरीर में दर्द का होना, सुस्ती थकावट का आना, छाती में दर्द का होना, इत्यादि शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर करके, शक्ति और उत्साह तथा स्फूर्ति प्रदान करती है। वज़न बढ़ता है, शरीर तंदुरुस्त बनता है। की० १।) रु० तीन के ३॥) रु०। वी० पी० खर्च अलग। तीन शीशियों से संपूर्ण आराम।

कामविलास [गोलियाँ] वीर्य ज्यादा अरसा तक रोककर युवकों और वृद्धों को संसार-सुख में सच्चा आनन्द देती हैं। की० १।) रु०

आँखों की तमाम शिकायतों के लिए शर्तिया

न० प्र० सुरमा सच्चे मोतियों के इस सुरमे से मोतिया-बिंद, फुला, खील, जाला, शोर्ट-साईट (Short Sight) सुर्खी, रतौंधी, पानी निकलना वगैरह दूर होकर रोशनी बढ़ती है, फी शीशी का १।) रु० तथा २॥) रु०।

प्रमेहहर [गोलियाँ] सुजाक, प्रमेह, पेशाब में जलन, पीप आना वगैरह मूत्रमार्ग के भयंकर रोगों के लिए अक्सीर। की० १॥) रु०

खील, दाग के लिए

खीलोन लोशन

मुंह पर के खील, भद्दे व काले दाग आदि मिटाकर चर्म को मुलायम व कोमल बनाता है। काली चमड़ी को सफेद बनाकर सौंदर्य व कांति में वृद्धि करता है। फी शीशी १।) रु० तीन शी० ३॥) रु०

गर्भांकुश [पिल्स] दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, मासिक धर्म नियमित जारी रहता है, गर्भ निरोध होता है, हानिरहित है, संतति नियमन के लिए उत्तमोत्तम उपाय है। कीमत प्रति शीशी ४) रुपया।

दिव्यांगना [गोलियाँ] स्त्रियों के लिए खास शक्तिवर्धक दवा है। प्रदर, रक्तप्रदर, गर्भ न रहना, गर्भपात हो जाना इत्यादि दूर होकर शरीर तन्दुरुस्त बनता है। की० १।) रु० तीन शीशी ३॥)।

बालकुसुम छोटे बच्चों को ताकत देने-वाली अद्वितीय दवा है, बच्चों के हर प्रकार के रोग, दुर्बलता आदि दूर कर बालक को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। फी शीशी १।) रु०

बहिरापन

कान में से पीप-मवाद निकलना, चसका-शूल होना, पर्दे में तकलीफ, सीं-सीं आवाज़ होना, बधिरता-बहिरापन इत्यादि कान के भयंकर रोगों के लिए

'रसिक' कर्णबिन्दु [ईयर ड्रोप्स] इस्तेमाल करें। कीमत शीशी १।) रु० तीन शीशी ३॥) रु०। तीन शीशी के सेवन से पुनः श्रवण-शक्ति प्राप्त होती है।

वी० पी० से मँगाने का पता—**दुग्धानुपान फार्मेसी सी०, ४ जामनगर (काठियावाड़)**

एजेन्ट्स—

इलाहाबाद—अग्रवाल मेडीकल स्टोर्स, ६६ जॉनस्टोनगंज।
लखनऊ—इन्द्रचन्द एण्ड कुं०, चौक केमीस्ट।
बनारस—राधेलाल एण्ड सन्स चौक बेटरीवाला।
देहली—जमनादास एण्ड कुं०, चाँदनी चौक।
नागपुर—अनन्तराय ब्रदर्स, किराना ऑल इनवारी।
बम्बई—वींछी ब्रदर्स कं० ७६ प्रीन्सेस स्ट्रीट।
अयोध्या—हमारा दवाखाना बाबू बजार।
पटना—अशोक फार्मेसी, मखनीआँ कुआँ बाँकीपुर।
जयपुर—डॉ० आर० पी० गुप्ता, चाँदपोल बाजार।
कलकत्ता—बनेचन्द मावजी, १८ मलीक स्ट्रीट।
कानपुर—गुजरात मेडीकल स्टोर्स जनरलगंज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

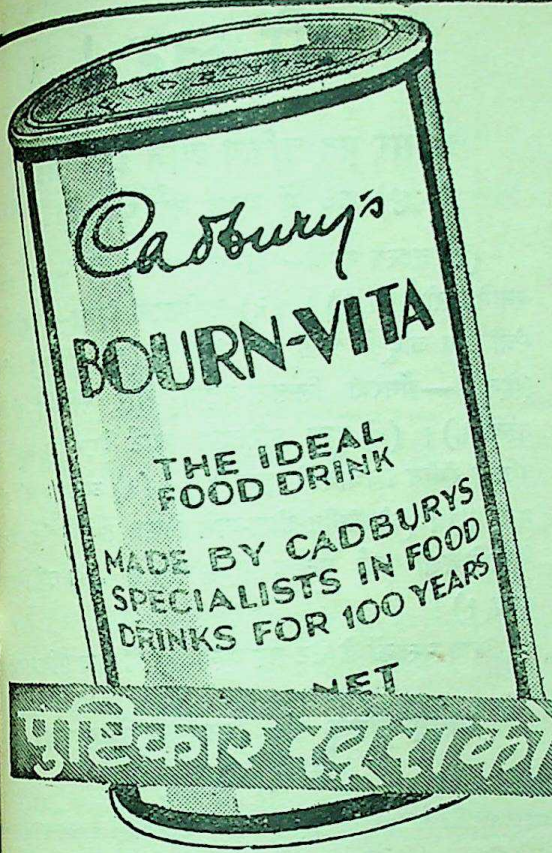

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

पुष्टिकार खूराकों से भरा हुवा

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देने वाले उपादन ९५ सैंकडा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह अैसा मज़ेदार होता है कि इस से हाज़मा तेज़ हो ज़ाता है और यह आसानी से हज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का

बोर्न-विटा

केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

केडबरी का अर्थ गुण

K.B.I HIN.

अगर पूर्तियां मौजूद न हों तो नीचे के पते पर लिखिये :

केडबरी—फ्राई (अेक्सपोर्ट) लिमीटेड (रिपार्टमेंट— ११) पी. ओ. बक्स १४१७ बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन नई पुस्तकें

१—टेलरिङ्ग कटिङ्ग—यह पुस्तक घर बैठे हर प्रकार का कपड़ा काटना, सीना आदि सिखा देती है। मूल्य १॥) पोस्टेज ।≡)

२—हिन्दी-इंग्लिश टीचिङ्ग—बालक-बालिकायें घर बैठे अँगरेजी बोलना, पढ़ना-लिखना सीख सकती हैं। मूल्य २) पोस्टेज ।≡)

३—हिन्दी-उर्दू टीचर—हिन्दी से उर्दू और उर्दू से हिन्दी सीखनेवाली पुस्तक। मूल्य १) पोस्टेज ।=)

ग्लोब ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़ सिटी

कसीदा काढ़ने की मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के सुन्दर बेल-बूटे, फूल-पत्ती आदि बनाने की चार सुइयोंवाली मशीन। मूल्य ३) महसूल डाक ॥≡)।

कसीदाकारी की पुस्तक। मूल्य २) महसूल डाक ॥)।

ग्लोब ट्रेडिङ्ग कम्पनी,
(ई १०३), अलीगढ़ सिटी

भारी लूट!

अवसर मत चूकिये आज ही मँगाइये
४) रु० में सात नई पुस्तकें

(१) ग्रहस्थ शास्त्र—दाम्पत्य जीवन को सुखी, [illegible] बनानेवाली मूल्य २)। (२) वशीकरण विद्या—वशीकरण मंत्रों तथा जादू के खेलों का संग्रह। (३) इंग्लिश टीचर (हिन्दी)—अँगरेजी लिखना-पढ़ना और बोलना सीखें मूल्य ॥।)। (४) हुस्न परिस्तान आर्ट पेपर पर छपी हुई बढ़िया रंगीन चित्रावली मूल्य १।)। (५) व्यापार की [illegible] मूल्य ॥)। (६) संगीत सोल-गान विद्या तथा तबला सिखानेवाली नई पुस्तक मूल्य १।)। (७) ज्योतिष मूल्य १)।

सात पुस्तकों के सेट का मूल्य ४) पोस्टेज पैकिंग ॥)

ग्लोब ट्रेडिङ्ग कं० (न्योसेट सैकरना),
नं० ४, अलीगढ़

फोटो खींचने का अपूर्व साधन

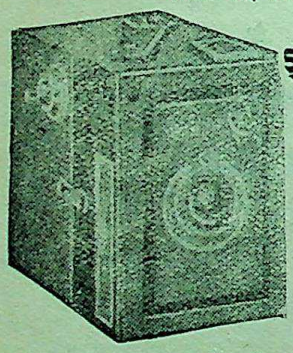

ओरियन्ट बाक्स केमरे

नई डिजाइन के बढ़िया लेन्स-युक्त सुन्दर मजबूत सस्ते काम में विश्वसनीय मनोहर फोटो खींच सकते हैं।

१—बाक्स प्लेट केमरा २॥" × ३॥" साइज का प्लेट पर फोटो खींचनेवाला। साथ में प्लेट, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ़्त। मूल्य ६॥) पैकिङ्ग, पोस्टेज १॥) अलग।

२—बाक्स फिल्म केमरा नं० ६२० फिल्म पर २॥" × ३॥" साइज का फोटो खींचनेवाला। फोटो खींचने की तरकीब मुफ़्त। मूल्य १५) पैकिङ्ग, पोस्टेज १॥) अलग।

आज ही मँगाइये, आप अवश्य सन्तुष्ट होंगे। केमरे से बढ़िया फोटो न खिँचे तो दाम वापस।

ओरियन्टल केमरा हाउस (ई १०१) अलीगढ़

दिव्य सिद्धि तान्त्रिक अँगूठी

आप जो चाहेंगे हो जायगा। गरीबी दूर भाग जायगी, लक्ष्मी आपके कदम चूमेगी, आप धनवान् हो जायेंगे, आपकी प्रेमिका आपसे अटूट प्रेम करने लगेगी, शत्रु मित्र बन जायँगे, मनचाही सन्तान होगी, बुरे ग्रहों का दोष दूर हो जायगा, संसार आपकी इज्जत करेगा, लड़ाई-झगड़े में फतह होगी, विद्यार्थी परीक्षा में पास होंगे, जिसे आप चाहते हैं उसी सुन्दरी से शादी होगी, नाराज हाकिम खुश होंगे, वशीकरण होगा। बात यह है कि हर काम आपके ग्रहों के अनुसार होगा। यह अँगूठी ग्रहण के अवसर पर शुभ मुहूर्त में तैयार होती है। बड़े परिश्रम से तैयार कराई गई है। अब परीक्षा करके लाभ उठाना आपका काम है। मूल्य २॥) डाक-खर्च ॥≡) आना।

भारतीय तान्त्रिक भंडार
(११६), अलीगढ़ सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋण

बहुत सरल शर्तों पर ऋण लीजिये। अपनी आवश्यकता का अँगरेजी में उल्लेख करते हुए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

जी० एस० मोंगा,

पोस्ट बाक्स नं० ११९, बड़ौदा

मृगी (हिस्टीरिया) फिट की

विश्वविख्यात अनुभव सिद्ध जड़ी (बूटी)

इस बूटी को केवल एक ही बार दौरे के समय ी को सुँघा देने से छींकों के साथ ही काले रंग का ा मर कर निकल आयेगा और रोगी सदैव के लिए ोग हो जावेगा।

महात्मा त्यागीबाबा,

अनुसुइया आश्रम, पो० चित्रकूट, बाँदा, यू० पी०

देवियों से

आपके शृङ्गार को सुन्दर बनानेवाली वस्तु क्या है

गले का हार

१—फिर आज ही भारतमन्दिर को सुन्दर, सस्ते एवं कीले मोतियों के अमेरिकन नेकलिस तथा टौप्स के लिए ी आडर भेजकर अपनी सेवा का एक सुअवसर प्रदान ियें। पूरा सेट केवल ५) रु० में। पसन्द न होने पर वापस। २—सुन्दर अक्षरोंवाली रबर स्टाम्प तथा रबर इंक की जिन सज्जनों को आवश्यकता हो वह इसी पते लिखें। मूल्य मय इंक १=) पर लाइन।

भारतमन्दिर रंगमहल, अलीगढ़

कृषि-संसार

में वैज्ञानिक क्रान्ति करनेवाला भारत का सर्वोत्कृष्ट त्र हिन्दी मासिक-पत्र है आज ही ग्राहक बनिये।

कम्पोस्ट विशेषाङ्क निकल चुका है

पर देश-विदेश के वैज्ञानिकों के सुन्दर लेख पढ़िये।

और विशेषाङ्कों की प्रतीक्षा करें

—मैनेजर 'कृषि-संसार' कार्यालय बिजनौर (यू० पी०)

हर शहर में एजेण्टों की जरूरत है

क चन्दा ७)] [एक प्रति ।।।)

शुभ सूचना

समस्त हिन्दी-प्रेमियों, विद्यालयों तथा कृपालु ग्राहकों को यह शुभ सूचना देते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि हमारी लाहौरवाली ब्रांच फिर से दुर्गाचरण रोड, अम्बाला कैंट (पूर्वी पञ्जाब) में आप लोगों की पूर्ववत् सेवा के उद्देश्य से स्थापित हो चुकी है।

मैनेजर

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सफेद बाल काला!

खिजाब से नहीं, हमारे आयुर्वेदिक 'केश संजीवनी, सुगन्धित तेल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तेल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल अधिक पक गया हो तो ४) का तेल मँगाइये।

श्वेत कुष्ट की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनों औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा नहीं करना चाहता। यदि इसके तीन दिन के लेप से सफेदी के दाग जड़ से न आराम हो तो मूल्य वापस लें। मूल्य ३)

पं० ईश्वरदयाल जी नं० ११, पो० कतरी सराय, (गया)

तुलसी-रत्नावली

इसका संकलन, प्रिंसिपल केदारनाथ गुप्त, एम० ए० ने किया है। इसमें गोस्वामी तुलसीदासजी के अमूल्य ग्रन्थों—रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि—से रत्न चुने गये हैं। अनेक ग्रन्थों से अमूल्य रत्नों का संग्रह करना सचमुच बड़ा कठिन काम होता है। जो लोग गोस्वामीजी के समस्त ग्रन्थ न तो ले सकते हैं और न उनका अध्ययन कर सकते हैं उनको इस संग्रह से बड़ा लाभ होगा। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बाल जीवन घुट्टी

मुफ़्त लो १० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ़्त भेजेंगे

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनाती. ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।

— मू० शी० ।७ दर्जन २।।।) डा० व्य० अ० —

सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बच्चों नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।

पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़ यू.पी.

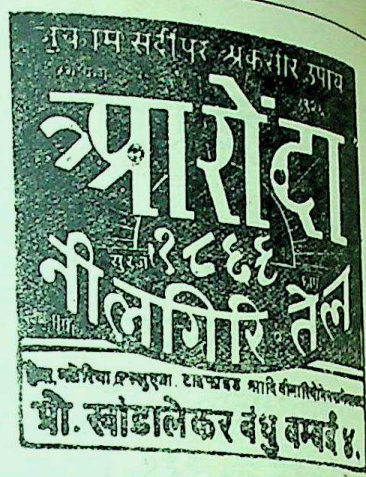

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाएगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

ताकत की अपूर्व दवा

वी० वर० पिल्स

(अर्थात् वीर्यवर्धक गोलियाँ)

इन गोलियों के सेवन से वीर्यक्षीणता, नसों की कमजोरी, नपुंसकता, बीसों प्रकार के प्रमेह, कब्ज रहना, मंदाग्नि, कमर की पीड़ा, श्वांस रोग, खाँसी, बवासीर, खुजली, आँतों के समस्त रोग, स्त्रियों के मासिक धर्म-सम्बन्धी अनेक रोग तथा पुरुषों के सब प्रकार के वीर्य विकार नष्ट होकर अपार बल व वीर्य बढ़ता है और शरीर पुष्ट व रूपवान होता है। मूल्य १ शीशी (२० दिन) ३) रु०, २ शीशी (४० दिन) ६) रु०, डाक व पैकिंग १) पृथक्। नोट—कम से कम दो शीशी मँगाकर लगातार चालीस दिन अवश्य सेवन करें।

पता—गंगेरवाल ट्रेडिङ्ग कम्पनी,
१५ अलीगढ़ यू० पी०

ऐतिहासिक भौतिकवाद

लेखक, भूतपूर्व काकोरी कैदी, श्री मन्मथनाथ गुप्त और श्री रमेन्द्र वर्मा।

समाजवाद के तात्त्विक अध्ययन के लिए ऐतिहासिक भौतिकवाद को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि मार्क्सवाद के विषयों में यही सबसे गहन है। इस विषय पर विश्व साहित्य में बुखारिन की पुस्तक सर्वोत्तम समझी जाती पर इस पुस्तक के प्रकाशन ने उसको पीछे छोड़ दिया। पुस्तक में वे सभी विषय तथा तथ्य हैं जो बुखारिन समय तक उपलब्ध थे। उनके अतिरिक्त नवीन ज्ञान-विज्ञान, नृतत्त्व, और इतिहास में जो उन्नति हुई उन सबका इसमें दिग्दर्शन है। इस पुस्तक में विरोधी मतों का वर्णन करके फिर उनका खंडन करते हुए मार्क्स मतवाद की वज्ञानिकता सिद्ध की गई है।

इसमें आदिम काल से लेकर अति आधुनिक समय विश्व-इतिहास आ गया है। मार्क्सवादी पुस्तकों में अकस्मात् उदाहरण यूरोपीय इतिहास से दिये गये हैं, पर इसमें विशेष कर भारतीय तथ्य दिये गये हैं।

इतिहास की आर्थिक व्याख्या को सहस्रों उदाहरणों से समझाने के अतिरिक्त इस पुस्तक में धर्म तथा सदाचार पर अत्यन्त गम्भीर अध्याय हैं। सदाचार पर जो अध्याय है उसमें विस्तार के साथ बताया गया है कि सदाचार पर मार्क्सवाद का क्या प्रतिपाद्य है। पुस्तक में एक दर्जन अध्याय हैं।

पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग
मूल्य ६)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम कोटि की घड़ियाँ कम मूल्य पर

उत्तम कोटि की, जिवेल-जड़ित, लीवर गति, अत्यन्त फैशनेबुल, आधुनिक घड़ियाँ। प्रत्येक की ३ वर्ष के लिए गारंटी और साथ में उच्च कोटि की 'अमेरिकन प्लास्टिक स्ट्रैप'। पैकिंग और डाक-व्यय मुफ़्त।

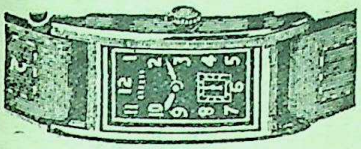

माडेल नं० १४०५

चमकीला क्रोमियम केस	४२)
१५ जिवेल	६२)
" रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष की गारंटी)	५६)
१५ जिवेल	८५)
"	

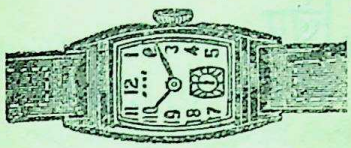

माडेल नं० १४०६

चमकीला क्रोमियम केस	४४)
१५ जिवेल	६५)
" रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष की गारंटी)	५७)
१५ जिवेल	८६)
"	

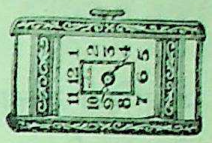

लेडीज माडेल नं० १२०८

चमकीला क्रोमियम केस	५२)
१५ जिवेल	७०)
" रोल्ड गोल्ड १५ जिवेल	९०)

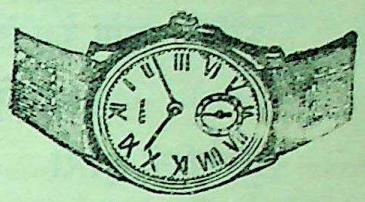

माडेल नं० १४२५

क्रोमियम केस	१८)
७ जिवेल	३५)
" सेण्टर सेकण्ड	३०)
रोल्ड गोल्ड (१० वर्ष की गारंटी)	५०)
१५ जिवेल	६३)
" 'शाक' और 'वाटर प्रूफ'	९५)

एलार्म क्लाक्स २२), २५) और ३०)

कलकत्ता वाच कं०, (सी० ई० २०), पो० बा० नं० १२२०३, कलकत्ता, (सी० ५)

अमर ज्योति

यह पुस्तक बाबू निशीथकुमार राय, बी० ए० की कहानियों का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज़, चरित्रम्, [illegible]हीं, अमरज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरंजन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आग्रह न करके कथा का वर्णन किया है। पूँजीपतियों और मजदूरों के संघर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पाठक को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

मानवी

इस संग्रह में प्रकाशित कविताओं के द्वारा ठाकुर [illegible] ने भारतीय नारी के सुख दुःखमय जीवन का बड़ा सुन्दर, मार्मिक चित्रण किया है। मूल्य २।–) दो रुपये [illegible] आने।

हल्दीघाटी

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय

इस महाकाव्य पर दो हज़ार रुपये का देव पुरस्कार मिला है। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, फड़कती हुई कविता में, किया गया है। पुस्तक पढ़ते समय हल्दीघाटी के युद्ध की सभी बातें आँखों के सामने सिनेमा-फिल्म की तरह खिंच जाएँगी। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

तक्षशिला काव्य

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान तक्षशिला के अतीत गौरव का वर्णन। इसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य आदि काव्योचित गुणों का समुचित रूप से समावेश किया गया है। मूल्य ३) तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ सौभाग्यवती और शौकीन स्त्रियों के लिए

क्या

मनमोहिनी सोहागबिन्दी (गीला हिंगुल्) शीशी १)
सौभाग्य सिन्दूर (सूखा सिन्दूर) शीशी १)
मेंहदी रचाने का तेल शीशी २)

केशों को खूबसूरत बनाने के लिए 'श्री मार्का'

कामिनी कुसुम केश तेल शीशी ५), १॥)

मन को प्रसन्न रखने के लिए

मनमोहिनी सुपारी डिब्बा ३), १॥)

बी० आर० सी० जैन एण्ड कं० १६३।२, हरीसन रोड, कलकत्ता

एजेन्सी के लिए लिखें

श्वास और खाँसी के रोगों में आशु फलप्रद

का सा बि न

सुनिर्वाचित उपादानों से प्रस्तुत इस सुखसेव्य औषधि की कुछ मात्राओं के व्यवहार करने से ही जमा हुआ कफ ढीला होकर बाहर निकल जाता है और जल्द ही स्वासयन्त्र सुस्निग्ध होता है। बच्चों को भी इसे निर्भय दिया जा सकता है।

बेंगल केमिकल

कलकत्ता : बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

वार्षिक मूल्य ६) रु० प्रति अंक ।।) आने

विद्वानों और आलोचकों की दृष्टि में—

प्रोफेसर शिवपूजन सहाय, भूतपूर्व सम्पादक 'हिमालय', राजेन्द्र कालेज, छपरा—'मंजरी' को देखकर यही धारणा हुई कि कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि-पत्रिका 'मंजरी' ही है। छपाई-सफाई और सजावट के लिए तो इंडियन प्रेस का यशस्वी नाम ही प्रमाण है, सम्पादन-कौशल में आपने भी अपनी कला का आकर्षक प्रदर्शन किया है। साज-सज्जा और सामग्री संकलन में सुरुचि का समावेश सर्वथा सराहनीय है। कृपया विदेशों के कथा-साहित्य का ज्ञान भी हिन्दी पाठकों को कराइए। भिन्न भाषाओं की कहानियाँ देकर आप हिन्दी के पाठकों को काफी तृप्त कर रहे हैं। बहुत से पाठकों ने यह मत व्यक्त किया है कि आपकी पत्रिका ही सब कहानी-पत्रिकाओं में श्रेष्ठ एवं उपयोगी है। मैं आपकी आरम्भिक सफलता पर आपको शत-शत बधाइयाँ देता हूँ।

'मनोरंजन' [दिल्ली, मार्च १९४८]—हिन्दी के कहानी-मासिकों की प्रतिदिन बढ़ती भीड़ में यह सर्वाङ्ग सुन्दर, चित्रों से अलंकृत नया पत्र विशिष्टता लेकर अवतरित हुआ है। इसके दो अंक हमारे सामने हैं, जो सम्पादक की सुरुचि और श्रम के परिचायक हैं। कहानियाँ इस प्रकार के अन्य पत्रों की अपेक्षा निश्चय ही ऊँचे स्तर की तथा सुरुचिपूर्ण हैं। कथा-साहित्य-सम्बन्धी गम्भीर व आलोचनात्मक लेखों और टिप्पणियों, नवीन कथा-साहित्य समीक्षा की और लेखकों के परिचय के स्तम्भों ने पत्र की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

काव्य-संग्रह

संक्षिप्त सूरसागर

इसमें महाकवि सूरदास के, चुने हुए, पदों का संग्रह है। इसका एक-एक पद भक्ति तथा प्रेम के रस से ओत-प्रोत है। मूल्य ३।–) तीन रुपये पाँच आने।

विनय-पत्रिका

(टीकाकार पं० रामेश्वर भट्ट)

गोस्वामी तुलसीदासजी की रचनाओं में विनय-पत्रिका का स्थान बहुत उच्च है। इसमें गोस्वामीजी के विनय-सम्बन्धी पदों का संग्रह है। भावार्थ, शब्दार्थ आदि के द्वारा पद का भाव स्पष्ट करने में टीकाकार ने बड़ा परिश्रम किया है। पृष्ठ पौने चार सौ से ऊपर। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

अपराजिता

कविवर 'अंचल की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। भूमिका में पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है। इन पद्यों को पढ़ने पर बाइरन और माइकेल मधुसूदन दत्त का स्मरण आता है।"

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य [illegible] मूल्य ३) तीन रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन उपन्यास

राजदुलारी

इस सामाजिक उपन्यास में कलकत्ते के व्यापारिक क्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाले उत्तर भारतीय हिन्दुओं की सामाजिक अवस्था पर प्रकाश डाला गया है। मूल्य १।–) एक रूपया पाँच आने।

छुटकारा

एक निठल्ले और बेरोजगार भाई की सहायता उपार्जनशील भाई को किस प्रकार करनी चाहिए, यह बात इस उपन्यास से भली भाँति सीखी जा सकती है। १।–) एक रुपया पाँच आने।

सत्याग्रही

श्री गुलाबरत्न वाजपयी

उपन्यास का नाम ही अपने विषय को साफ़ प्रकट कर देता है। एक सत्याग्रही ने अपने आचरण से किस प्रकार उन लोगों को भी सत्याग्रह का समर्थक और स्वदेशी का पुरस्कर्ता बनाया, जो पहले सत्याग्रह का मजाक करते थे। 'सत्याग्रही' में कष्टसहिष्णुता, दृढ़ता, जलजीवन और चरित्र की निर्मलता देखने ही योग्य है। पुस्तक अनुपम है। अवश्य पढ़िए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १॥) डेढ़ रुपये।

अपना-पराया

लेखक पं० देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

इस मौलिक मनोरंजक उपन्यास में एक चीनी तरुणी का मेनका-नृत्य जहाँ आपको आत्म-बिभोर कर देगा, वहीं तिब्बत और चीन की नैसर्गिक छटा, और वहाँ के अजीबोगरीब रस्म-रिवाज भी आपके सामने चलचित्र की तरह नाच उठेंगे। चीन की यह रहस्यमयी तरुणी किस प्रकार भारत आती और अपने धर्म तथा स्वदेशाभिमान की रक्षा का व्रत लेकर, एक भारतीय नौसैनिक की सहायता से अपने देश लौट जाती है, आदि प्रसंग एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण के साथ आपको प्रणय की रंगीनियों परिस्थितियों के झमेलों और जिज्ञासा के झकोरों का जो परिचय देंगे, उसे आप कभी भूल न सकेंगे।

पृष्ठ २३२, सजिल्द और नयनाभिराम दुरंगा आवरण, मूल्य २॥) ढाई रुपये।

कपाल-कुंडला

यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर है। मूल्य १) एक रुपया।

पत्र-पुष्प

इसमें प्रभात बाबू की सामाजिक समस्या, समाधान, पिल्ला, जासूसी का जञ्जाल, अद्वैतवाद, कन्यादान और सतीदाह नामक कहानियों का संग्रह किया गया है। मूल्य २) दो रुपये।

नवीन संन्यासी

इस उपन्यास में ग्राम्य और नागरिक जीवन का यथार्थ और सुन्दर चित्रण किया गया है। हास्य और विनोद की सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में है। मूल्य ४॥≡) चार रुपये ग्यारह आने।

पथ भ्रान्त-पथिक

पुण्डरीकाक्ष पूतितुण्ड ग़रीब था। किसी तरह अपना निर्वाह करता था। उसके घर के पास ही राजा बहादुर का महल था। उनकी कन्याएँ—मेना और एना—शाम को बढ़िया गाड़ी में बैठकर सैर को निकलतीं तो युवा पुण्डरीकाक्ष की ओर देख-देखकर मुसकरा देतीं। पुण्डरीकाक्ष की हैसियत ऐसी न थी कि राजा बहादुर का जमाई हो सकता किन्तु शब्दशिल्पी चारु बाबू ने पुण्डरीकाक्ष को जुए में जिताकर इतना मालदार कर दिया कि उसके साथ एना का विवाह धूमधाम से हो गया। सवा तीन सौ पृष्ठों के इस उपन्यास में लेखक का चमत्कार देखकर दंग हो जाना पड़ता है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य २॥) दो रुपये ग्यारह आने।

रामलाल

ग्रामीण समस्याओं से परिपूर्ण एक मौलिक सामाजिक उपन्यास। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

अपनों की खोज में

(बुकसेलर की डायरी)

लेखक, श्रीयुत रामप्रसाद विद्यार्थी (रावी)

यह ऐसा भ्रमण-वृत्तान्त है जिसमें लेखक ने काफी सूझ-बूझ से काम लिया है। लेखक ने बुकसेलर न होने पर भी बुकसेलर बनकर ही इसके लिखने का अधिकार कमाया है। मनुष्य को पहचानने की कला और दूसरे को अपने अनुकूल करने की युक्ति पाठक को इस पुस्तक के वर्णन में मिलेगी जो बड़े काम आवेगी। मूल्य १) एक रुपया।

संसार का संक्षिप्त इतिहास

(प्रथम व द्वितीय भाग) अनुवादक, श्री मदनगोपाल, बी० ए० एल्-एल० बी०। यह पुस्तक अँगरेजी के प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० जी० वेल्स के इतिहास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें पृथ्वी के आदिकाल से लेकर जीसस के निर्माण के पूर्व तक की कथा सक्रम वर्णित है। द्वितीय भाग में जीसस के निर्माण से लेकर संसार के पुनर्निर्माण तक का वर्णन आ गया है। मूल्य प्रत्येक भाग का ४) चार रुपये।

रणभेरी

(चार मौलिक एकांकी)

रचयिता श्रीयुत वैकुण्ठनाथ दुग्गल की इस पुस्तक में (१) आन, (२) पुनर्संगठन, (३) राष्ट्रधर्म और (४) अजेय भारत नाम के एकांकी हैं। पहले में वीर चम्पतराय और वीर उनकी रानी सारन्धा की एक महत्त्वपूर्ण घटना है; दूसरे महाराज शाहू की, तीसरे में हर्षवर्धन की बहनवाली प्रसिद्ध घटना और चौथे में युवराज अग्निमित्र के यूनानी वीरेश मीनेंडर को जीतने की रोचक कथा। संग्रह की भाषा सुलझी हुई, कथानक बढ़िया और बीच-बीच में सुन्दर कविताएँ हैं। मूल्य केवल १) एक रुपया।

संत कबीर

प्रणेता—प्रो० साधुराम शास्त्री एम० ए०, एम० ओ० एल०

यह सचित्र नाटक है। कबीर साहब का जीवन हिन्दू-मुसलमानों के मन से असहिष्णुता और वैमनस्य को हटाकर एकता और भाईचारे की स्थापना में बीता था। पाँच सौ वर्ष पहले हिन्दू-मुस्लिम-एकता की जितनी ज़रूरत थी उससे आज अधिक ही है। कबीर का उद्देश्य समझने में यह नाटक बहुत काम देगा। इसमें प्रणेता ने कबीर साहब की जीवन-घटनाओं का आश्रय लेकर देशवासियों के सामने सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। मूल्य ।।।) बारह आने।

बाल-नाटक-माला

(चार भाग)

श्री दशरथ ओझा बी० ए० के प्रस्तुत किये इन एकांकी नाटकों में इतिहास, राजनीति, समाज-विज्ञान, चरित्र और मनोविकारों का सफल प्रदर्शन है। शैली सरल और आकर्षक है। मूल्य प्रत्येक भाग का ।।) आठ आने।

भूख

(सामाजिक नाटक)

लेखक श्रीयुत वीरदेव 'वीर' बी० ए०

लेखक ने इस नाटक में भूख से होनेवाले कष्टों का करुण चित्र उपस्थित किया है। हिन्दू-मुस्लिम-एकता, व्यापारियों के जनता को निर्दयता से लूटने और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के सेवा भाव के अनोखे दृश्य इस नाटक में हैं। बीच-बीच में गीत भी बढ़िया हैं। मूल्य १) एक रुपया।

देवयानी

यह नाटिका कुमारी तारा वाजपेयी की रचना है। इसमें शुक्राचार्य की बेटी देवयानी के कन्यात्व का आदर्श बड़ी सफलता से उपस्थित किया गया है। कथा महाभारत से ली गई है। इसमें आर्यों के व्यापक वैवाहिक सम्बन्ध के इस एक अपवाद—क्षत्रिय वर और कन्या ब्राह्मणपुत्री—का स्पष्टीकरण बड़ी सतर्कता से हुआ है। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

युद्ध और शान्ति

यह संसार के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास लेखक और विचारक काउन्ट लियो टालसटाय के प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'वार एण्ड पीस' का हिन्दी रूपान्तर है। लेखक ने यह ऐतिहासिक उपन्यास तब लिखा था जब उनकी शैली परिमार्जित हो गई थी और उन्हें अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा मिलकर शान्ति मिल गई थी। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींचातान बड़ी खूबी से चित्रित की है, तथा जीवन और मृत्यु के रहस्य का भी उद्घाटन किया है। पृष्ठ लगभग पौने सात सौ। सजिल्द प्रति का मूल्य ५।) पांच रुपये पांच आने।

गांधी-मीमांसा

लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधीजी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्ण रूप से हृदयङ्गम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की ह। यह ८५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक ह। मूल्य ४) चार रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

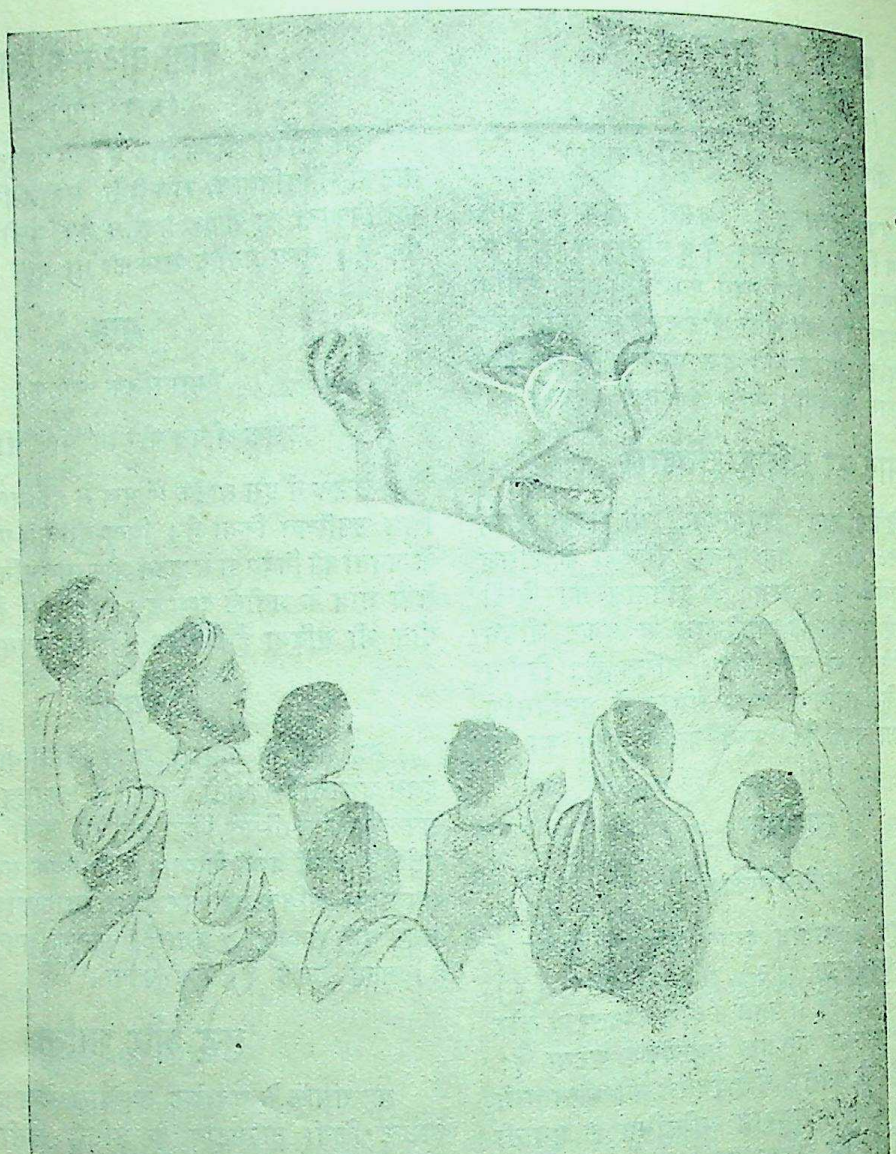

श्रद्धांजलि !

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित् श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश तथा विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रन्थ** तथा **सेवाग्राम** (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी कुछ साहित्यिक पुस्तकें

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी की रचनाएँ

कवि और काव्य

हिन्दी समालोचना के क्षेत्र में यही पहली पुस्तक है, जिसने नये लेखकों में एक नवीन लेखन-शैली का सूत्रपात किया। सरस, प्राञ्जल भाषा, भावपूर्ण मार्मिक विचार और साहित्य में गम्भीर विचारों का विवेचन आदि आपके हृदय को मोहित कर लेगा। यह पुस्तक हिन्दू विश्वविद्यालय और मध्यप्रान्त बरार के कालेजों में, इंटरमीडिएट में, कई वर्ष तक कोर्स में रह चुकी है। पृष्ठ २५६ मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

सञ्चारिणी

इसमें भक्तिकाल की अन्तर्चेतना, वर्तमान हिन्दी-साहित्य और शरद-साहित्य की सरस सुन्दर विवेचना की गई है। इसकी भाषा शैली और विचारों पर मुग्ध होकर आचार्य शुक्लजी के एक अनुयायी ने लिखा था कि रवि बाबू के बाद इसी पुस्तक द्वारा सुन्दर, सुपुष्ट और भावपूर्ण लेखनी का चमत्कार दिखाई पड़ता है। यह पंजाब विश्वविद्यालय की हिन्दी प्रभाकर-परीक्षा में कई वर्ष तक पाठ्य-पुस्तक रह चुकी है। पृष्ठ-संख्या लगभग २७५; मूल्य सजिल्द २) दो रुपये।

युग और साहित्य

इस पुस्तक में युग-द्वन्द्वों और उनसे उत्पन्न भावी सम्भावनाओं को, साहित्य के माध्यम से, उपस्थित किया गया है। इस पुस्तक की बहुत सी बातें सन् १९४२ के अगस्त-आन्दोलन में अक्षरशः सत्य घटित हुई हैं। यह पुस्तक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से साहित्य, समाज और राजनीति के इतिहास का दर्पण है। इसके द्वारा हिन्दू-मुस्लिम समस्या, हरिजनोद्धार जैसे क्षणिक विषय ही नहीं, बल्कि समाजवाद और गांधीवाद, यथार्थवाद और आदर्शवाद जैसे गम्भीर विवादों का भी समाधान हो जाता है। पृष्ठ-संख्या ३५०; मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह बड़ी अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १।) एक रुपया आठ आने।

कामायनी का विवेचन

लेखक, श्री ब्रजभूषण शर्मा, एम० ए०

कामायनी इस युग की अन्तिम देन है। किन्तु विषय की गहनता, कथा की सूक्ष्म अन्विति तथा भाषा की विचित्रता और लाक्षणिकता के कारण साधारण हिन्दी-साहित्य-प्रमी प्रारंभिक अंशों के आगे नहीं बढ़ पाते। हिन्दी की उच्च कक्षा के विद्यार्थी भी प्रायः बिना इस ग्रन्थ के मर्म को समझे हुए परीक्षा देते आ रहे हैं। हिन्दी के इन पाठकों की और विशेष रूप से उच्च कक्षा के विद्यार्थियों की उन कठिनाइयों को ध्यान में रखकर कामायनी का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ग्रन्थ के तात्त्विक तथा मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को स्पष्ट किया गया है; काव्य-सम्बन्धी विशेषताओं का अध्ययन किया गया है और भाषा के स्वरूप का निरूपण किया गया है। परिशिष्ट में कठिन स्थलों को सरल किया गया है। पुस्तक बिलकुल नई दृष्टि से लिखी गई है। मूल्य १) एक रुपया।

अल्पता की समस्या

लेखक, पं० वेङ्कटेशनारायण तिवारी, एम० ए०

"साम्प्रदायिक भेद पर विशेष अधिकार माँगना और ऊल-जलूल दावे पेश करना और उन माँगों के पूरा न होने पर मुल्कफरोशी पर कमर कस लेना किसी सच्चे देश-भक्त का न फर्ज है और न होना चाहिए।" इस पृष्ठभूमि पर तथ्यों और आँकड़ों के साथ इसी महान् समस्या का हल आप इस पुस्तक में पाएँगे। आज जब साम्प्रदायिक तनातनी अपनी चरम सीमा पर पहुँचने का प्रयत्न कर रही है, तब यह पुस्तक हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए समान रूप से हिल-मिलकर रहने का मार्ग दिखाने में सहायक सिद्ध होगी। पृष्ठ-संख्या २०६ और मूल्य २) दो रुपये हैं।

आदर्श महापुरुष

इस पुस्तक में गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, स्वामी शङ्कराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, सन्त कबीर, स्वामी दयानन्द आदि १७ महापुरुषों के जीवनचरित्र तथा उनके मार्ग की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का निरूपण किया गया है। लेखक का उद्देश्य प्रसिद्ध मतों की शिक्षाओं और विशेषताओं से पाठकों को परिचित करना है। संसार के बड़े-बड़े मत किन बातों में समान हैं और किनमें भिन्न हैं, इसका निर्णय भी पाठक इस पुस्तक को पढ़कर कर सकेंगे। सवा सौ से ऊपर पृष्ठों की सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय कवि पण्डित सोहनलाल द्विवेदी की रचना

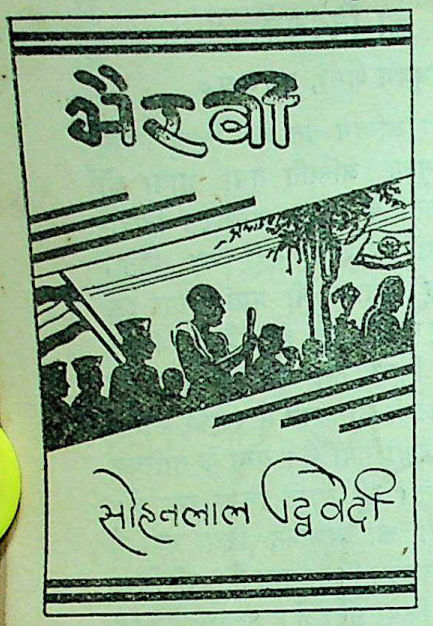

पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने 'भैरवी' की राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥) दो रुपये ग्यारह आने।

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भा प्रवाह तथा ओज और पात्रों का चित्रण कवि की खास विशेष मूल्य १) रुपया।

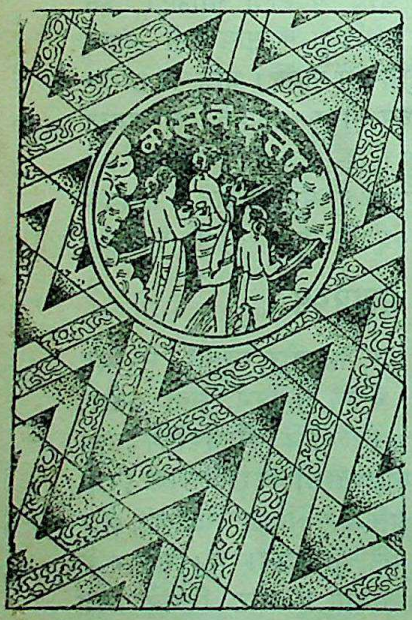

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य है। इस काव्य की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। मूल्य २) दो रुपये।

अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राज-संस्करण ३)

यह कवि की बाल-कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम आगे ही अकेले आदि सुन्दर कविताएँ इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी का मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिपटन

माने

अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

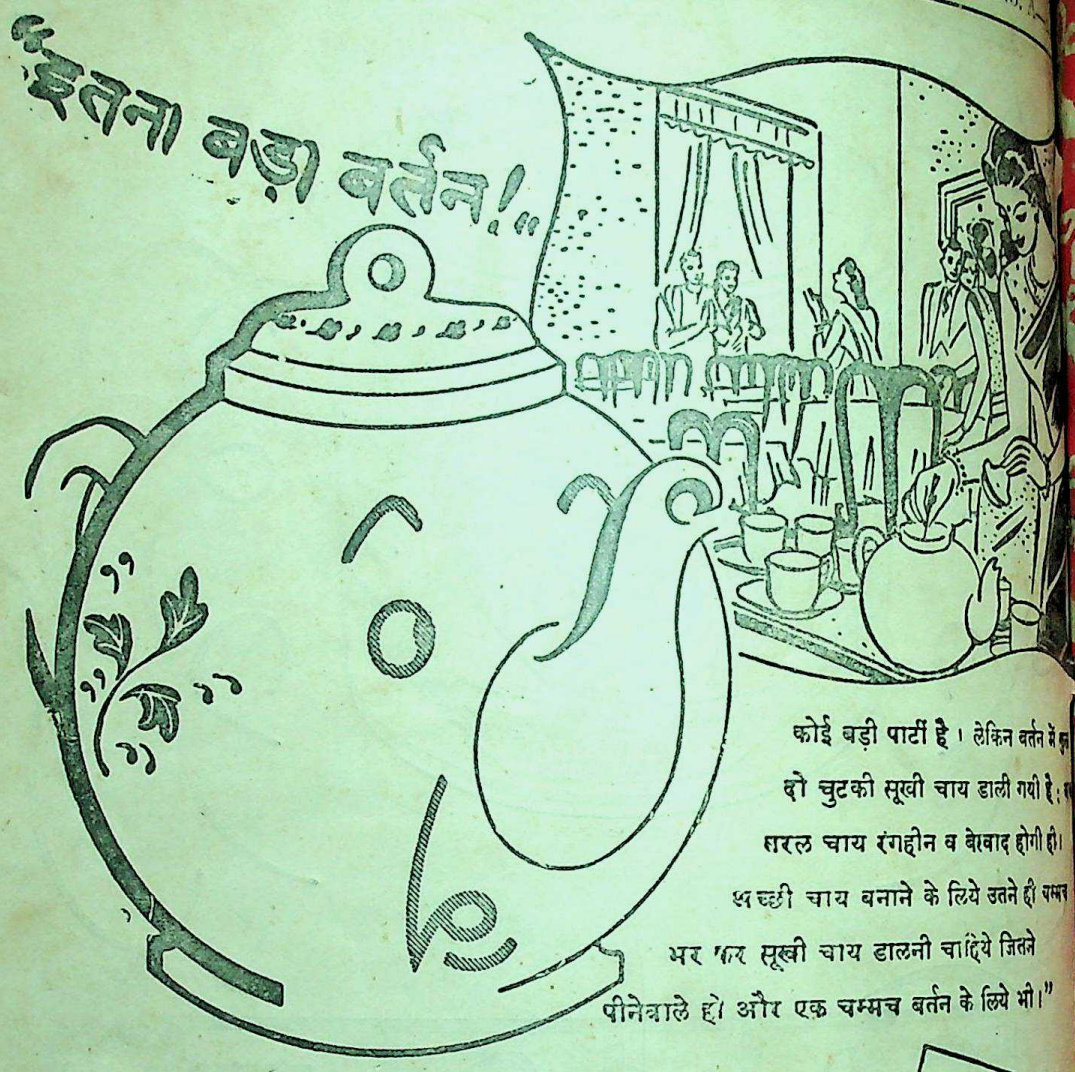

कोई बड़ी पार्टी है। लेकिन बर्तन में सूखी
दो चुटकी सूखी चाय डाली गयी है; सि
तरल चाय रंगहीन व बेस्वाद होगी ही।
अच्छी चाय बनाने के लिये उतने ही चम्मच
भर कर सूखी चाय डालनी चाहिये जितने
पीनेवाले हों और एक चम्मच बर्तन के लिये भी।"

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती : सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी क़ीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन की लीजिये। २. चाय के बर्तन को गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मि तक चाय को सीझने दीजिये। ५. प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मंगाई जा सकती है।

★

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७ वनस्पति युक्त तत्त्वों से बनाया हुआ

कामिनिया आइल (रजिस्टर्ड)

यह केश तेल विशुद्ध और प्रसन्नता वर्धक जड़ी, बूटियों और औषधियों से बनाया गया है। यह सुन्दरता को बढ़ाता, बालों को गिरने से बचाता तथा आकार प्राकृतिक रंग कायम रखता है और मस्तक के लिए शीतल सुगन्धि में अद्वितीय है उसके अलावा इसकी सुगन्ध अत्यन्त मीठी और मनमोहक है।

इत्रों का बादशाह

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

यह बड़े सुन्दर ताजे फूलों से बनाया गया है जो मोहित कर देनेवाली खुशबू देता है। रूमाल पर केवल दो बूँद गिरा देने से ही आपके चारों ओर हाल के चुने हुए फूलों की खुशबू फैल जायगी।

चेहरे की खूबसूरती तथा मोहकता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक इलाज

कामिनियास्नो (रजिस्टर्ड)

हिम-शीकरसा शीत और श्वेत तथा चकचकित यह क्रीम चेहरे के ऊपर मालिश करने से खील फुन्सियाँ, दाग, श्यामता आदि दूर करके चमड़ी चमकीली, स्वच्छ और चेहरा आकर्षक बनता है। सुन्दरता प्रिय स्त्रियों के लिए अत्यन्त आवश्यकीय सिद्ध हो चुका है। पुरुषों को भी हजामत बनाने के बाद इस क्रीम को चेहरे पर मालिश करने से चर्म हमेशा के लिए रेशम-सा मुलायम रहता है। एक बार इस्तेमाल कर परख कीजिए।

'नहाने के लिए उम्दा खुशबूदार साबुन'

कामिनिया ह्वाइट रोज सोप (रजि०) गुलाब की खुशबू का साबुन।
कामिनिया सन्दल सोप (रजि०) चन्दन की खुशबू का साबुन।
कामिनिया लवेण्डर सोप (रजि०) फूलों की खुशबू का साबुन।
दिल बहार सोप (रजि०) बेला चमेली की खुशबू का साबुन।

इनके इस्तेमाल से चमड़ी स्वच्छ और मुलायम बनती है और मधुर खुशबू से तबीयत भी प्रसन्न रहती है।

एँग्लो इण्डियन ड्रग एंड केमिकल कम्पनी,
२८५ जुमा मसजिद, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

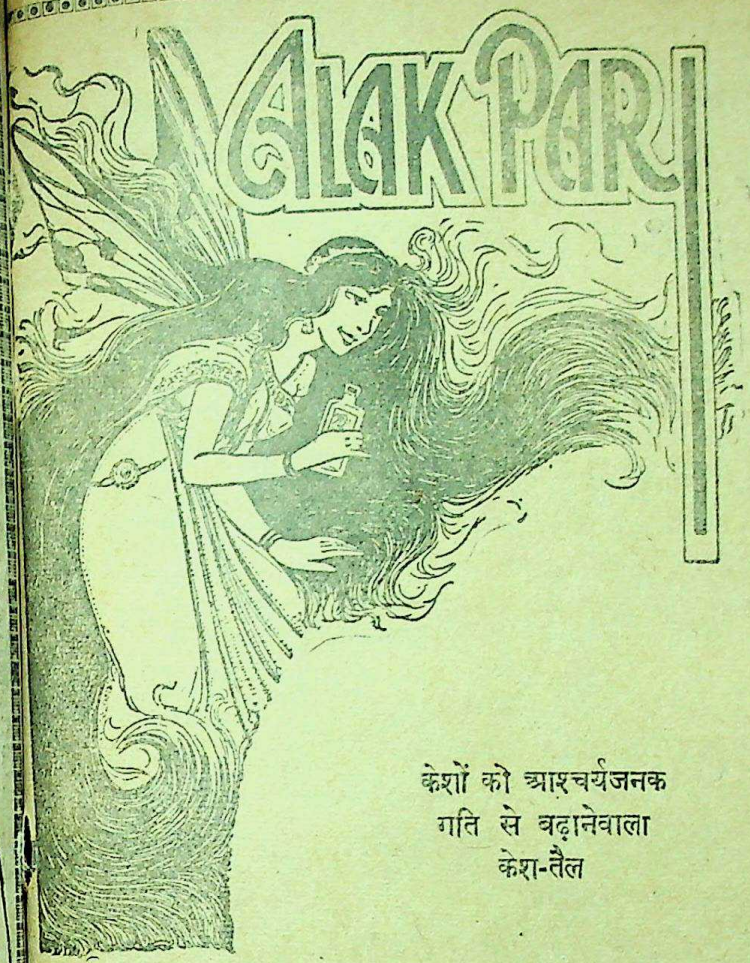

केशों को आश्चर्यजनक
गति से बढ़ानेवाला
केश-तैल

शुद्ध बादामरोगन पर बना

अलकपरी

केशों में प्रतिमास ३-४ इञ्च वृद्धि।
६ महीने में एड़ी-चुम्बी केश।

'अलकपरी' का कोर्स

पहले सप्ताह में रूसी-खुश्की दूर हो जाती है।

दूसरे सप्ताह में केशों का झड़ना और उनके सिरों का फटना रुकता है।

तीसरे सप्ताह में नये केश उगते दिखाई देते हैं।

चौथे सप्ताह के अन्त तक केश ३-४ इञ्च बढ़ जाते हैं। फिर प्रतिमास इसी औसत से बढ़ते रहते हैं।

६ महीने में केश एड़ी-चुम्बी बन जाते हैं।

मूल्य एक शीशी का २॥) है जो एक महीने को काफी होती है। डाक-खर्च व पैकिङ्ग पृथक्। ६ से अधिक शीशियाँ डाक से नहीं भेजी जाएँगी। अधिक के लिए ५) पेशगी भेजिए और अपने रेलवे स्टेशन का नाम लिखिए।

महिलाओं की सम्मतियों की बाढ़

26. 1. 46.
अनेक कम्पनियों की लम्बी-चौड़ी तारीफें पढ़कर मेरा विश्वास उठ चुका था, पर आपकी अलकपरी को मैंने प्रशंसा के अनुरूप ही गुणकारी पाया। इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें और तीन शीशियाँ शीघ्र भेज दें।
—राजकुमारी लालन, राजसदन, मैनपुरी।

11. 2. 47.
Alak Pari is giving much much satisfactory improvement, kindly despatch 6 Phials of it more.
Chadra P. Sethi B. A.
Ramnagar, Lahore.

15. 2. 47.
अपनी पत्नी के लिये अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभ हुआ और बाल बढ़े भी खूब! कृपया १२ शीशियाँ और भेजें।
—गोस्वामी मुकुन्द शर्मा, बड़ा मन्दिर, बम्बई २।

17. 2. 47.
I found Alak Pari to be one of the excellent oils. In fact it has shown well progress in the hair and satisfied me to the most. Kindly despatch 6 Phials more.
Miss Malini V. Nagpurkar, Dadar.

19. 2. 47.
पूर्व आपके यहाँ से अलकपरी मँगाई थी। बहुत लाभकारी प्रमाणित हुई। १ दर्जन शीशियाँ और भेज दें।
—गोस्वामी श्री० १०८, श्री गिरधारीलाल जी महाराज, भवुआ स्टेट।

प्रत्येक बड़े शहर में दूकानदारों के पास मिलती है। न मिलने पर इस पते से मँगाइए—

व्यवस्थापिका—'अलकपरी', नया कटरा इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्बल, निश्चेतन और भोजनपचानेवाला, खून को
निराश क्यों रहते हो? बढ़ानेवाला, पाण्डु और अन्य रोग
के बाद की निर्बलता
को नष्ट करनेवाला

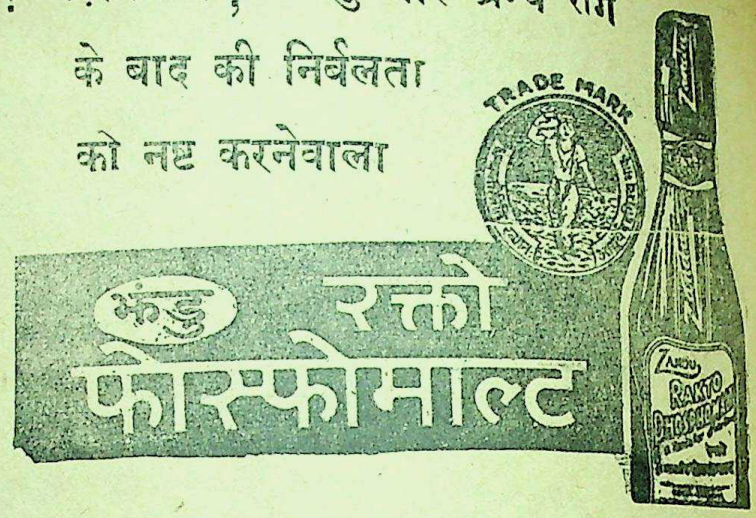

सुमधुर शक्तिवर्धक, अमूल्य ओषधि अवश्य सेवन करें
झण्डु फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई नं० १४
इलाहाबाद के चीफ एजेन्ट—चम्मकलाल कम्पनी, ४६ जान्स्टनगंज।
दिल्ली और यू० पी० के सोल एजेन्ट—कान्तिलाल और पारीख, चाँदनी चौक, दिल्ली।

कमजोर और कृष बच्चे डोंगरेबालामृत के इस्तेमाल
से ताकतवर, पुष्ट और चुस्त बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे को सुंदर और आकर्षक रखिये...

...पांड्स के दो क्रीमों की सहायता से!

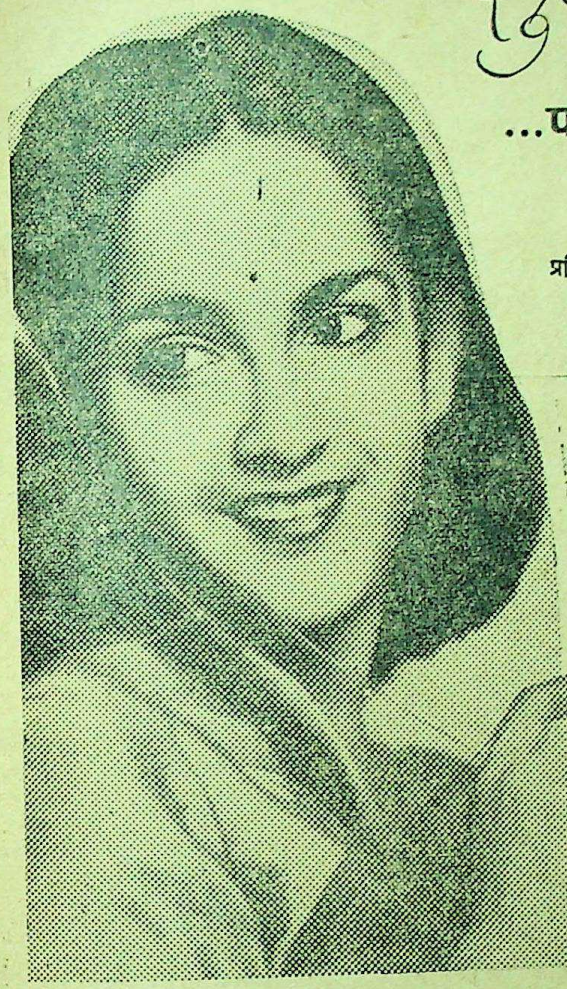

प्रति रात्रि और सवेरे आपको अपने चेहरे का दोहरा संरक्षण करना है जिससे वह सुन्दर और कोमल बना रहे। रात्रि के समय आपके लिये आवश्यक है रोम-छिद्रों में गहराई से प्रवेश कर स्वच्छता देनेवाला तेलसा चिकना क्रीम—पांड्स कोल्ड क्रीम—और दिनको ऐसा हल्का क्रीम जो चेहरे को काला कर देनेवाली सूर्य-किरणों से आपका संरक्षण कर सके—पांड्स वेनिशिंग क्रीम।

त्वचा के कुरूप होने के मुख्य कारण:

मैल और धूल के छोटे-छोटे कण रोम-छिद्रों में प्रविष्ट होकर चेहरे की कुरूप बना देते हैं। अतः स्वच्छता के लिये आपको पांड्स कोल्ड क्रीम की आवश्यकता है। सूर्य की अदृश्य किरणें चेहरे पर कालिमा उत्पन्न कर देती हैं। पांड्स वेनिशिंग क्रीम द्वारा इन किरणों से अपने चेहरे को संरक्षण दीजिये।

प्रतिदिन सवेरे और संध्या को—इस सौंदर्यचर्या का ध्यान रखिये। चेहरे के सौंदर्य के लिये पांड्स के इन दो क्रीमों का प्रयोग कीजिये।

पांड्स

व्यापारिक विवरण के लिये: एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०
बम्बई, कलकत्ता, देहली, मदरास, नोवा गोवा, कराची, कोलम्बो, रंगून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखी भाइयों को हमारा शुभ सन्देश

प्रिय पाठको आप लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आज मैंने लगभग २० साल से प्रेमवटी औषधि देकर जिस प्रकार से आप लोगों की सेवा की है। वह किसी से छिपा नहीं है। क्योंकि हमारा उद्देश्य धन कमाना ही नहीं बल्कि सेवा और सचाई का विश्वास दिलाकर प्रत्येक घर और मनुष्यमात्र के हृदय में उच्च स्थान पाने की आशा रखता है और इसी में अपना कल्याण समझता हूँ ताकि इस तुच्छ सेवक की याद आप लोगों के हृदय-पटल पर सदैव अंकित बनी रहे यही मेरी हार्दिक इच्छा है। कागज के अभाव के कारण हम अब आपको अधिक क्या विश्वास दिलावें हाँ किसी समय हमारे कार्यालय में पधार कर देश और विदेश से आये हुए प्रशंसा-पत्रों को देखिये स्वयं ही विश्वास हो जायगा ग्राहकों की इच्छा देखकर हमने और भी उच्चकोटि की औषधियों निर्माण की हैं। जिन्हें सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित कर अपने परिश्रम को सफल बनाया इन औषधियों का निर्माण योग्य अनुभवी कर्मचारियों-द्वारा होता है यदि आप हर प्रकार से हताश हो चुके हों और अपने जीवन से हाथ धो बैठे हों तो एक बार दवाइयाँ मँगाकर अवश्य परीक्षा करें।

सत्य प्रभा सुर्मा

मनुष्य के शरीर की आँख एक अमूल्य वस्तु है आँख बिगड़ गई तो तमाम जिन्दगी बेकार हो जाती है। हमारे इस सुर्मे को प्रतिदिन लगाने से साधारण जाला, माड़ा, फूली, धुन्धी, रोहे, नाखूना, नजर से कम दिखाई देना आदि दूर होते हैं। कीमत एक शीशी ॥-), तीन शीशी १॥) डाक खर्च अलग।

सत्य संजीवन तिला

यह तिला अन्य तिलाओं की भाँति नुकसान नहीं पहुँचाता है। बल्कि एक ही हफ्ता सेवन करने से कमजोरी, सुस्ती, नपुंसकता तथा गुप्तेन्द्रिय की शिकायतों को दूर करके रग और पुट्ठों में बिजली की भाँति ताकत पहुँचाता है। कीमत एक शीशी २), तीन शीशी ५) डाक खर्च ॥-)।

सत्यामृत घुटी

हमारे यहाँ की घुटी अब तक फेल नहीं हुई है। बच्चों के हरे-पीले दस्त का होना, नजला व जुकाम हो जाना, दाँत निकलते समय कष्ट होना, बुखार बना रहना, पेट फूलना आदि रोगों को दूर करने में राम-बाण साबित हुई है। कीमत एक शीशी ॥), तीन शीशी १।=) डाक खर्च अलग।

सत्य सुन्दरी रक्षक

स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग महीना ठीक समय पर न होना लाल काला धुमैला पानी-सा रज निकलता हो आदि रोगों को दूर कर सन्तान पैदा करने योग्य बनाता है। कीमत आधी खुराक २), पूरी खुराक ३॥) डाक खर्च अलग।

सत्य सरोवर तेल

आपने बहुत से बाजारी तेल इस्तेमाल किये होंगे किन्तु यह तेल अपनी शानी नहीं रखता है। विद्यार्थी वकील, क्लर्क आदि दिमागी काम करनेवाले इसे धड़ाधड़ मँगा रहे हैं। कीमत एक शीशी ॥।), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग।

रूप रक्षक

इसके लगाने से चेचक के काले काले दाग, मुँहासा, झाँई, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी आदि दूर होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती है। कीमत एक डिब्बी २), तीन डिब्बी ५) डाक खर्च अलग।

* सत्य सखा *

इसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह बहुत कम है पेट दर्द, जी मिचलाना, कफ, खाँसी, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार आदि रोगों में तत्काल लाभ होता है। कीमत एक शीशी ॥।), तीन शीशी २-) डाक खर्च अलग एक दर्जन का ६॥।) डाक खर्च माफ।

* सुजाक बिन्दु *

कैसा नया-पुराना भयानक सुजाक क्यों न हो मवाद आता हो, किसी तरह चैन न मिलता हो रो-रोकर रात व्यतीत होती हो इसकी एक ही खुराक से आराम मिलता है। कुछ दिन सेवन करने से पुराने से पुराना सुजाक हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है। कीमत एक शीशी २॥) डाक खर्च अलग।

बाबू श्यामलाल जी रईस, प्रेमवटी आफिस नं० ५०, धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द-साहित्य

१. भारत में विवेकानन्द

अभी छप गई। विवेकानन्दजी के भारतीय व्याख्यान, अनु०—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; पृ० सं० ५९९, मूल्य ५) रु०।

२. श्रीरामकृष्णवचनामृत

अनुवादक—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सुन्दर गेट-अप, तीन भागों में, प्रथम भाग, पृ० सं० ६३२, मूल्य ६ रु०, द्वितीय भाग, पृ० सं० ६५७, मूल्य ६ रु०, तृतीय भाग, पृ० सं० ८२२, मूल्य ७॥ रु०।

"श्रीरामकृष्ण ईश्वरत्व की सजीव मूर्ति थे। उनके वाक्य किसी निरे विद्वान् के ही कथन नहीं हैं, वरन् वे उनके जीवन-ग्रन्थ के पृष्ठ हैं।" —महात्मा गांधी

३. श्रीरामकृष्णलीलामृत (विस्तृत जीवनी)

पं० द्वारकानाथ तिवारी कृत, दो भागों में, सुन्दर गेट-अप, प्रथम भाग पृ० सं० ४३६, द्वितीय भाग पृ० सं० ४८६, प्रत्येक भाग का मूल्य ५ रु०।

"श्रीरामकृष्ण देव का जीवन-चरित्र हमें ईश्वर को अपने सामने प्रत्यक्ष देखने की शक्ति देता है।"—महात्मा गांधी

४. विवेकानन्द-चरित

(विस्तृत एवं स्फूर्तिदायक जीवनी)

सुविख्यात लेखक श्री सत्येन्द्रनाथ मजूमदार कृत, अभी प्रकाशित हुई; सुन्दर गेट-अप, पृ० सं० ५५५, मूल्य ६ रु०।

"प्राचीन भारतीय संस्कृति में पगे तथा भारतवर्ष की प्राचीन परम्परा के अभिमानी स्वामी विवेकानन्द मानवी जीवन की समस्याओं को समझने में नितान्त आधुनिक थे और हम कह सकते हैं कि इस प्रकार उनके जीवन में भारतवर्ष की प्राचीन तथा वर्त्तमान संस्कृति का सुन्दर समन्वय हुआ है।" —पं० जवाहरलाल नेहरू

५. विवेकानन्दजी के सङ्ग में (वार्तालाप)

शिष्य शरच्चन्द्र कृत, सुन्दर गेट-अप, पृ० सं० ४४८, मूल्य ५। रु०।

स्वामी विवेकानन्द कृत—भारतीय नारी ।।।); शिक्षा ।।=); धर्म-रहस्य १); मेरी समरनीति ।≡); धर्मविज्ञान १।।=); मेरा जीवन तथा ध्येय ।।); मरणोत्तर जीवन ।।); श्रीरामकृष्ण, धर्म तथा संघ ।।=); कर्मयोग १।।=); हिन्दू-धर्म, १।।); प्रेमयोग १।=); भक्ति-योग १।=); आत्मानुभूति १।); परिव्राजक १।); प्राच्य और पाश्चात्य १।); शिकागो-वक्तृता ।।=); मेरे गुरुदेव ।।=); हिन्दू-धर्म के पक्ष में ।।=); वर्तमान भारत ।।); पवहारी बाबा, ।।)।

श्रीरामकृष्ण आश्रम, [स], धन्तोली, नागपुर, (१) सी० पी०

प्यारी बहिनों की भलाई के लिए

खुशखबरी

यदि किसी बहिन को पचास वर्ष की कम आयु में या किसी रोग के कारण मासिक धर्म (माहवारी) का होना बन्द हो गया है अथवा खुलकर नहीं होता या प्रति मास ठीक समय पर न होकर आगे-पीछे होता है तो ऐसी हालत में आप मेरी सौ फी सदी आजमाई हुई औषधि **मासिक संजीवन धारा** मंगवा कर सेवन करें, इस औषधि की केवल एक ही खुराक से महीनों का रुका हुआ मासिक धर्म बिना किसी कष्ट के चालू हो जाता है और तीन खुराक से मासिक धर्म बिगड़ने से पैदा हुई सब अन्दर की खराबियाँ दूर होकर मासिक धर्म ठीक समय पर नेम अनुसार आने लग जाता है। मूल्य तीन खूराक तीन रुपया छै आने ३।=) डाक पैकिङ्ग खर्च अलग।

खबरदार—गर्भवती बहिनें इसे सेवन न करें क्योंकि इससे गर्भपात हो जाता है।

गर्भरोक—यदि आप बीमारी या कमजोरी के कारण सन्तान पैदा होने के समय के कष्टों को सहन न कर सकें तो आप यह औषधि सेवन करें, इसकी एक खुराक से दो वर्ष के लिये और तीन खुराक से सदा के लिये गर्भ का रहना बन्द हो जाता है। मूल्य एक खुराक पाँच रुपया ५) रुपया तीन खुराक दस रुपया १०) रुपया डाक पैकिङ्ग खर्च अलग इस औषधि के सेवन से स्त्री के मासिक धर्म तथा स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती।

जरूरी सूचना—पत्र लिखते समय अपना पूरा पता साफ और सुन्दर लेख में लिखें।

पता—राजकुमारी अग्रवाल

(न० ३१६) टोहाना, जिला हिसार (ईस्ट पञ्जाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०००) रु० माहवार कमाइए

इस 'दौलत की खान' पुस्तक में १९२ हुनर छपे हैं, जिससे लोग लखपती हो गये, जो बेकार थे। इस पुस्तक में हर तरह के तैल, साबुन, बाल उड़ाने का साबुन, बाल काले करने का खिजाब, हर तरह के अचार, खानी तम्बाकू, कुलफी की बर्फ, पेटेंट दवाएँ आदि बनाने का नुस्खा छपा है। इन्हें लोग हजारों खुशामद करने पर मरते वक्त तक नहीं बतलाते हैं। कीमत फी पुस्तक २॥) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

अमेरिकन पिस्तौल

यह पिस्तौल अमेरिका से बनकर आई है। बिलकुल असली पिस्तौल के मानिन्द मालूम होती है। इसे बखूबी कोट की जेब में रख सकते हैं। इसमें ६ खाने हैं। घोड़ा दबाते ही चरखी खुद घूमती है। इसकी आवाज निहायत डरावनी है। चोर, डाकू, शत्रु और जंगली खूँख्वार जानवर इसकी शक्ल ही देखकर भाग जाते हैं। इसके रखने में सरकार से लाइसेन्स लेने की जरूरत नहीं पड़ती। बाज वक्त यह पिस्तौल जान-माल की रक्षा करने में बहुत अच्छी साबित हुई है। इसको हर एक मनुष्य रख सकता है। मूल्य मय ५० स्पेशल कारतूस के फी पिस्तौल ४) डाक-खर्च प्रतिपिस्तौल १।-) अलग। कारतूस फी सैकड़ा ३)।

असली कलीद सट्टा

यदि आप सट्टा-लाटरी का शौक रखते हैं और लाटरी सट्टा का नम्बर जानकर फायदा उठाना चाहते हैं, तो हमारी असली कलीद सट्टा नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिए। इसका नम्बर कभी खाली नहीं जाता। सिर्फ गुणा-भाग करने से ही नम्बर निकल आता है। कीमत फी पुस्तक २) डाक-खर्च व पैकिंग माफ।

ओटो पुष्पलता

यह ओटो तमाम सैंटों का सरताज है। लगाते ही आपकी तबीअत मस्त हो खुशबू से बागबाग हो जायेगी। इस ओटो को लगाकर आप जिस रास्ते निकल जाएँगे पास के लोगों को ताज्जुब होगा कि यह खुशबू किस बगीचे से आ रही है। रूमाल में लगा लेने से महीनों खुशबू नहीं जाती है। कीमत प्रतिशीशी ।॥) दर्जन का ६) डाक-खर्च १।-) एक दर्जन एक साथ मँगाने पर एक जोड़ी हाथ व गले के बटनों का सेट व एक बम्बई फैशन सोने की तरह चमकनेवाली अँगूठी, एक फैन्सी रूमाल व एक खूब-सूरत शीशा मय कंघी के इनाम में मुफ्त दिया जाएगा। इस ओटो का प्रचार करने की वजह से यह ऐलान निकाला है। दो दर्जन एक साथ मँगाने पर ऊपर दिए हुए सामान के अलावा एक बढ़िया फाउन्टेनपेन और दिया जाएगा।

आजाद कम्पनी, नं० १ धनकुट्टी, कानपुर

'कथा-साहित्य की सबसे अच्छी प्रतिनिधि पत्रिका'

'मंजरी'

•प्रतिमास सचित्र, सरस और कलात्मक कहानियों द्वारा अपने पाठकों का मनोरञ्जन कर रही है

आप भी नियमित रूप से 'मञ्जरी' पढ़कर स्वीकार करेंगे कि—

१—हिन्दी के आचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने 'मञ्जरी' की मुक्त कण्ठ से जो प्रशंसा की है, वह बात्तव में उचित है।

२—हिन्दी के श्रेष्ठ कथाकारों के अतिरिक्त विश्व-विख्यात् विदेशी कथाकारों की श्रेष्ठ और सरस कहानियाँ 'मञ्जरी' में प्रकाशित हो रही हैं।

३—कहानियों के साथ-साथ, एक धारावाहि उपन्यास, कथा-साहित्य पर विद्वान् लेखकों के अध्ययन-शील लेख और कथा-कृतियों की निष्पक्ष समीक्षा 'मञ्जरी' में रहती है।

४—कहानियों में दर्जनों चित्र, दुरङ्गी छपाई, कला-त्मक मुद्रण-विन्यास, तिरङ्गा आवरण 'मञ्जरी' की अपनी विशेषताएँ हैं।

५—जिन कथाकारों की कहानियाँ आपका मनोरञ्जन करती हैं, उनके चित्र और संक्षिप्त परिचय भी 'मञ्जरी' प्रस्तुत करती है।

सांस्कृतिक मनोरञ्जन के अनुष्ठान में 'मञ्जरी' को आप अपना सक्रिय सहयोग दीजिए—
उसके वार्षिक ग्राहक बनिए।

वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये प्रति अङ्क आठ आने

प्रबन्धक 'मञ्जरी', इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेटभर भोजन करिये

गेसहर [गोलियाँ] गेस का चढ़ना, पैदा होना, मन्दाग्नि, बादी, वायु पेट में पवन का घुंचवाना, मुख की कमी, दिमाग़ में अशांति हो जाना, घबराहट, थकावट, हृदय की कमज़ोरी, फ्लैटीडेशन ब्लडप्रेसर, दस्त की रुकावट, नींद की कमी वग़ैरह को दूर कर, दस्त हमेशा साफ और खुलासा लाती है। अन्न पाचन करके कड़ाके की भूख लगाती है, शरीर में रुधिर बढ़ाकर शक्ति प्रदान करती है, लिवर, आँत, प्लीहा और पेट की हर एक शिकायत के लिए, अद्वितीय इलाज है। की० १।) रु० तीन की ३॥) रु० पोस्टेज अलग।

कुव्वत देनेवाली दवा

दुग्धानुपान [गोलियाँ] धातु क्षीणता, स्वप्नदोष, बन्धकोष्ठ, पुरुषत्व की कमी, पेशाब की शिकायतें, दिमाग़ की कमज़ोरी, बीमारी के बाद की निर्बलता; रुधिर की कमी, शरीर में दर्द का होना, सुस्ती थकावट का आना, छाती में दर्द का होना, इत्यादि शारीरिक और मानसिक रोगों को दूर करके, शक्ति और उत्साह तथा स्फूर्ति प्रदान करती है। वज़न बढ़ता है, शरीर तंदुरुस्त बनता है। की० १।) रु० तीन के ३॥) रु०। वी० पी० खर्च अलग। तीन शीशियों से संपूर्ण आराम।

कामविलास [गोलियाँ] वीर्य ज्यादा अरसा तक रोककर युवकों और वृद्धों को संसार-सुख में सच्चा आनन्द देती हैं। की० १।) रु०

आँखों की तमाम शिकायतों के लिए शर्तिया

न० प्र० सुरमा सच्चे मोतियों के इस सुरमे से मोतिया-बिंद, फुला, खील, जाला, शोर्ट-साईट (Short Sight) सुर्खी, रतौंधी, पानी निकलना वग़ैरह दूर होकर रोशनी बढ़ती है, फी शीशी का १।) रु० तथा २॥) रु०।

प्रमेहहर [गोलियाँ] सुजाक, प्रमेह, पेशाब में जलन, पीप आना वग़ैरह मूत्रमार्ग के भयंकर रोगों के लिए अक्सीर। की० १॥) रु०

खील, दाग के लिए

खीलोन लोशन

मुँह पर के खील, भद्दे व काले दाग आदि मिटाकर चर्म को मुलायम व कोमल बनाता है। काली चमड़ी को सफेद बनाकर सौंदर्य व कांति में वृद्धि करता है। फी शीशी १।) रु० तीन शी० ३॥) रु०

गर्भांकुश [पिल्स] दवा के सेवन से हमेशा के लिए गर्भ नहीं रहता, मासिक धर्म नियमित जारी रहता है, गर्भ निरोध होता है, हानिरहित है, संतति नियमन के लिए उत्तमोत्तम उपाय है। कीमत प्रति शीशी ४) रुपया।

दिव्यांगना [गोलियाँ] स्त्रियों के लिए खास शक्तिवर्धक दवा है। प्रदर, रक्तप्रदर, गर्भ न रहना, गर्भपात हो जाना इत्यादि दूर होकर शरीर तन्दुरुस्त बनता है। की० १।) रु० तीन शीशी ३॥)।

बालकुसुम छोटे बच्चों को ताकत देने-वाली अद्वितीय दवा है, बच्चों के हर प्रकार के रोग, दुर्बलता आदि दूर कर बालक को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। फी शीशी १) रु०

बहिरापन

कान में से पीप-मवाद निकलना, चश्का-शूल होना, पर्दे में तकलीफ, सीं-सीं आवाज़ होना, बधिरता-बहिरापन इत्यादि कान के भयंकर रोगों के लिए

'रसिक' कर्णबिन्दु [ईयर ड्राप्स] इस्तेमाल करें। कीमत शीशी १।) रु० तीन शीशी ३॥) रु०। तीन शीशी के सेवन से पुनः श्रवण-शक्ति प्राप्त होती है।

वी० पी० से मँगाने का पता—**दुग्धानुपान फार्मेसी** सी०, ४ जामनगर (काठियावाड़)

एजेन्टस—

इलाहाबाद—अग्रवाल मेडीकल हॉल, ६६ जॉनस्टोनगंज।
लखनऊ—इन्द्रचन्द एण्ड कुं०, चौक केमीस्ट।
बनारस—राधेलाल एण्ड सन्स चौक बेटरीवाला।
देहली—जमनादास एण्ड कुं०, चाँदनी चौक।
नागपुर—अनन्तराय ब्रदर्स, किराना ऑल इतवारी।
जबलपुर—दिगम्बर जनरल स्टोर्स जवाहीरगंज।
बम्बइ—वींछी ब्रदर्स एण्ड कं० ७६ प्रीन्सेस स्ट्रीट।
अयोध्या—हमारा दवाखाना बाबू बजार।
पटना—अशोक फार्मेसी, मखनीआँ कुआँ बाँकीपुर।
जयपुर—डॉ० आर० पी० गुप्ता, चाँदपोल बाजार।
कलकत्ता—बनेचन्द मावजी, १८ मलीक स्ट्रीट।
कानपुर—गुजरात मेडीकल स्टोर्स जनरलगंज।
अजमेर—महेता स्टोर्स नयाबाजार।
गोरखपुर—भैषज्य भंडार, अलीनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहित स्त्री-पुरुषों के जानने योग्य

ऑपरेशन तथा इन्जेक्शन जरूरी नहीं है

अप्राकृतिक रहन-सहन तथा मिथ्या आहार-विहार के कारण हमारे देश की नारियाँ अधिकांश ऐसी मिलेंगी जो एक न एक गुप्त रोग से ग्रस्त हो निराश जीवन व्यतीत कर रही हैं। अधिकतर गर्भाशय का मोटा हो जाना तथा उस पर चर्बी आ जाना एक आम रोग हो गया है जो गर्भ धारण करने में बाधक होता है तथा अन्य भयंकर रोगों की जिससे उत्पत्ति भी होती है। ऐसी अवस्था में प्रायः आपरेशन कराने से भी बहुत कम रोगियों को सफलता प्राप्त होती है।

यदि आपको आपरेशन कराने में असुविधा है या आपरेशन की अपेक्षा औषधियों-द्वारा कष्ट दूर करने के अधिक पक्ष में हैं तो शास्त्रोक्त अंगूरों का ताजा रस, अशोक, अर्जुन, दशमूल, त्रिफला तथा अन्य श्रेष्ठ औषधियों से प्रस्तुत मूँगा जिसका प्रधान अंग—१५ वर्षों से प्रचलित गौड़ की नारी-सुधा कार्डियल सेवन करें।

नारी-सुधा एक माहवारी से दूसरी माहवारी तक सेवन करने से बिना आपरेशन गर्भाशय की चर्बी, उसका मुटापा तथा निपट बाँझपन नष्ट हो जाता है और सहज ही गर्भ की स्थिति हो जाती है। जहाँ इन्जेक्शन लिकोरिया (सफेद का गिरना) रोकने में असफल होते हैं वहाँ कुछ ही खूराकों में यह सदैव के लिए ठीक हो जाता है। कमजोरी से गर्भाशय अपनी जगह से हट जाता है तथा गर्भपात होते रहते हैं—एक बोतल के सेवन से युक्त स्थान पर दृढ़ हो जाता है, फिर गर्भपात कभी नहीं होते। मासिक धर्म महीने में दो बार या दो महीने में एक बार के बजाय ठीक समय पर खुलकर हँसते-खेलते होने लगते हैं, जिससे हिस्टेरिया (बेहोशी) के दौरे होने बन्द हो जाते हैं। खूब भूख लगती है, खून एक बड़ी मात्रा में बनने लगता है। दिल की धड़कन, कमर-टाँगों का ठहरा हुआ दर्द केवल चौथे दिन दूर हो जाते हैं। जापे का संकट सहन करने तथा बाद की कमजोरी शीघ्र दूर करने की यह विशेष औषधि है। नारी-सुधा की २६ खुराकों की एक बोतल का मूल्य—पैकिंग, वी० पी० व्यय से पृथक्—तीन रुपया पाँच आने है। आवश्यकता होने पर इस मासिक पत्रिका का हवाला देकर

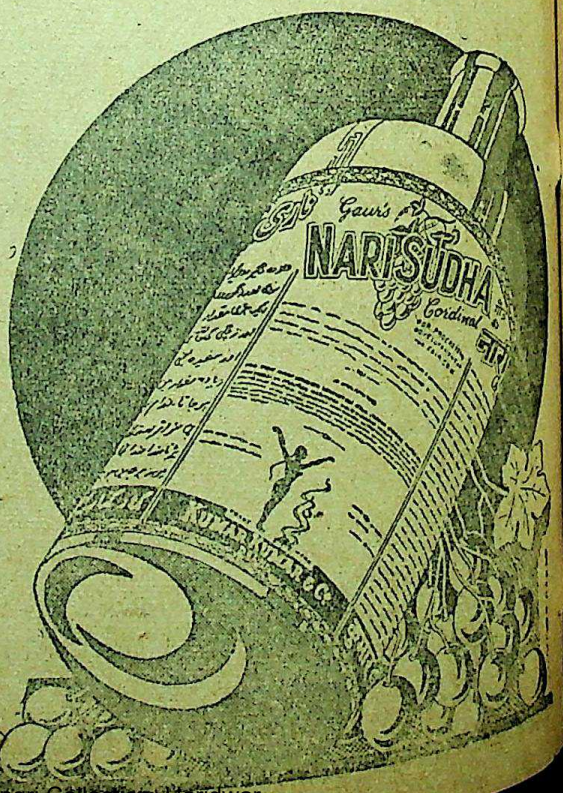

कुमार कुमार एन्ड को०

पोस्ट बाक्स नं० ११९ देहली

से मँगाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँत के रोगी निराश न हों

दंतमुक्ता

दाँत शरीर का अमूल्य रत्न है। इसके नष्ट होने से मुँह की शोभा बिगड़ जाती है और शरीर रोगी हो जाता है। पर दंतमुक्ता हमेशा दाँतों की रक्षा करता है और जल्दी बुढ़ापा आने या पोपले होने से बचाता है। इस कारण इसे हर बच्चे, जवान और बूढ़े को नित लगाना चाहिए। यह दाँत के हर प्रकार के दर्द को जड़ से मिटाता है। ठंडा पानी या हवा के लगने से यह कोई कष्ट नहीं होने देता। दाँतों का हिलना, खून या मवाद का बहना, मसूड़ों की सूजन इत्यादि से बचाता है। पायरिया का ता जाना दुश्मन है। हजारों लोग इससे लाभ उठा चुके हैं और उन स्वामी जी का गुण-गान करते हैं, जिनकी कृपा से यह जंगली जड़ी-बूटियों द्वारा बनाया गया है। एक बार लगाकर परीक्षा कीजिए और लाभ उठाइए। फायदा न होने पर मूल्य वापस। दाम लागत फी डिब्बी ।=), ।।।), १)। १ दर्जन से अधिक खरीदार को उचित कमीशन दिया जायगा। एजेन्टों की जरूरत है।

मिलने का पता—

दंतमुक्ता कार्यालय १६२, कर्नेलगंज, इलाहाबाद २

हृदय की सर्दी (सर्दी और कफ)—लापरवाही करने से मामूली हृदय की सर्दी फेफड़े की सूजन (ब्रांकैटिस) हो जाएगी। इससे बचे रहने का रास्ता बड़ा आसान है। थोड़ा-सा अमृतांजन लेकर छाती पर मलिए। बस, उसकी गरमी सीधे हृदय पर पहुँचती है और कफ को पिघला देती और तुरन्त आराम मिलता है।

अमृतांजन—हमेशा जल्दी से जल्दी आराम पहुँचाता है।

अमृतांजन लिमिटेड, बम्बई और मद्रास

शाखा—कलकत्ता, कराची, दिल्ली

हकीम तुलसी प्रसाद अग्रवाल अलीगढ़ की

असली-मीठी

बाल जीवन घुट्टी

रजिस्टर्ड

मुफ्त लो १० प्रतिष्ठित लोगों के नाम व पते भेजने पर स्वास्थ्य साधन पुस्तक मुफ्त भेजेंगे

बच्चों की हर एक बीमारी को दूर करती कमज़ोर बच्चों को ताक़त वर बनाती. ज़रा सी रोज़ाना चटा देने से बच्चे कभी बीमार नहीं होंगे. दाँत आसानी से निकल आवेंगे।

— मू. शी. ।) दर्जन २।।।) डा. व्य. अ. —

सब जगह बिकती है. नक़ली घुट्टियों से बचो नए सौदागर नमूना मुफ़्त मंगावें।

पता. बाल जीवन कार्यालय अलीगढ़. यू. पी.

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपाय

स्थापना १९२६

आरोग्य

१८६६

सुरज छाप

नीलगिरि तेल

प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाँ, केवल एक ही दिन में।

मेजिक मिस्मरिज्म

लड़के को ज़मीन पर लिटा कर और चादर से ढक कर अजीबो ग़रीब प्रश्नों के सही सही उत्तर पूछना, दहकती आग पर आप चलना व दर्शकों को चलाना, किसी भी समय पर सब दर्शकों की घड़ियों में ६॥ इत्यादि बजा देना, दीवार में आग लगा देना, मुँह में से आग की लपटें निकालना, पानी के अन्दर आग के अङ्गारों का नाच कराना, बन्द लिफाफों के अन्दर का लिखा बता देना आदमी को उड़ा देना, बन्द सन्दूक में से आदमी का निकल जाना इत्यादि अनेक तिलस्मात जादू के अद्भुत, रहस्ययुक्त और रोमांचकारी करिश्में सीखकर

——● दूसरे ही दिन ●——

नवाब, राजे-महाराजे, सेठ-साहूकारों को दिखाकर—बड़े २ धुरन्धर विद्वानों बुद्धि- मानों, विज्ञानवेत्ताओं और प्रोफेसरों की बुद्धि चक्कर और हैरत में डालकर ठनाठन रुपये पैदा करो। मामूली हिन्दी पढ़ लेने वाला यह सब गज़ब का जादू एक दिन में, हाँ केवल एक दिन में जाना जाता है और किसी भी प्रकार के अभ्यास व सिद्धि की झंझट नहीं— ऐसा हमारा दावा और गारण्टी है। फिलहाल इस पूरे कोर्स की कीमत केवल पाँच रुपया। यह सब एक दिन में न आवे तो कीमत वापिस।

देहली के प्रतिष्ठित पत्र 'वीर अर्जुन' तथा कुँवर साहिब जी की ज़ोरदार सिफारिश के साथ सैंकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त।

दी यूनाइटेड मैजिक कम्पनी लिमिटेड,
विभाग नम्बर २६,
मुरादाबाद यू० पी० (इंडिया)

गोल्डेन आमला

हेयर आयल

केश तेलों में नव पर्य्याय

प्राचीन काल से ही केशों के पालन और प्रसाधन में आमला का व्यवहार सुपरिचित है। विशुद्ध तेल से आमला का सार वस्तु और मनोरम गंध के संयोग से प्रस्तुत यह केश तेल स्त्री पुरुष सभी के लिए एक समान तृप्तिकारक है। केश रोगों का निवारण तथा मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करने में विशेष उपयोगी है। बेकलाइट कैप युक्त दर्शनीय आधार।

बेंगल केमिकल एण्ड फार्मेस्यूटिकल वर्क्स लि०, कलकत्ता :: बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों के लिए सर्वोत्तम शक्ति-वर्धक औषधि

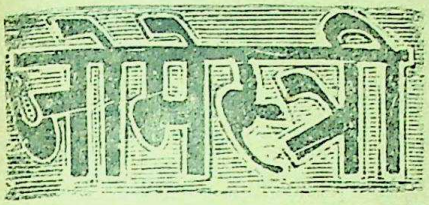

कमर-दर्द, हाथ-पैर का टूटना, हड्डियों का दर्द, बेचैनी, जी घबड़ाना, हिस्टीरिया वगैरह रोग 'जोमेस्त्री' के सेवन से मिट जाते हैं। दुर्बलता नहीं आती। स्त्रियों का आरोग्य आयुष्काल बढ़ जाता है।

जोमेस्त्री लेनेवाली माता का बालक तन्दुरुस्त और हृष्ट-पुष्ट होता है।

हरेक दवाफरोश के यहाँ मिलेगी

जसमाईन एजेन्सी नड़ीयाद (गुजरात)

एजेंट श्रीकेमिकल्स, २३३२, महाराजा लाल बिल्डिंग खुशालराय कटरा, देहली

कान्तीलाल परीख, चाँदनी चौक, दिल्ली

एकमात्र अचूक औषधि

बच्चों के बढ़े हुए यकृत व तिल्ली के लिए

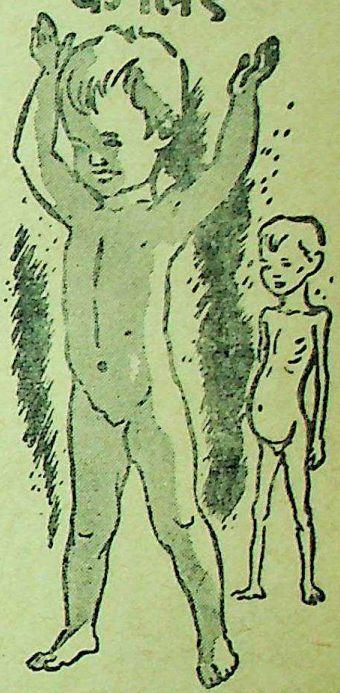

जेम्मीका "लिवर क्योर" बच्चों के यकृत व तिल्ली के रोगों के निदान के लिए वयैक-शास्त्र को एक सर्वश्रेष्ठ एवं अत्यावश्यक देन है।

भारत भर के लब्ध प्रतिष्ठ डाक्टरों ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। बढ़े हुए यकृत व तिल्ली के रोगों की अत्यन्त वृद्धि की दशा में भी इस चमत्कारिक औषधि से लाभ पहुंचा है।

जेम्मी का
लिवर क्योर

जेम्मी वेंकटरामनैय्या एण्ड सन्स
माइलापुर, मद्रास, (फो. नं. ८१३९)
सैण्डहर्स्ट रोड, बंबई ४. (फो. नं. ४१५९३)
हरिसन रोड, कलकत्ता।
अन्य स्थान-लखनऊ, बंगलोर, त्रिचनापल्ली, इत्यादि।

J. 233 A Hindi.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्माजी का चमत्कार

प्रेमवटी ने अपनी खूबी से सारी दुनिया में तहलका मचा दिया

कांग्रेस की राय

(प्रेमवटी वास्तव में एक अद्वितीय औषधि है। पहले हमें इस औषधि पर इतना विश्वास न था, किन्तु जब हमने स्वयं परीक्षण किया तब हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि यह औषधि विज्ञापन में दिये गये तमाम रोगों की केवल एक मात्र औषधि है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में यह कम्पनी इससे भी उत्तम औषधियों का निर्माण कर जनता को पहुँचायेगी।—कांग्रेस देहली)

भारत के योगियों ने वनों और पर्वतों की कन्दराओं में रहकर वह चमत्कार दिखलाये हैं जिससे बड़े-बड़े वैज्ञानिक चिकित्सक हैरत में आ गये हैं। आधुनिक चिकित्सकों को जब कोई रोग की औषधि से सफलता नहीं मिलती तब वह लाइलाज कर देते हैं। परन्तु महात्मा लोग जड़ी-बूटियों की सहायता से मुर्दे को भी जिला देने का दावा करते हैं। भाइयो, इसे ध्यान से तथा अपने इष्ट-मित्रों को सुनाओ। यह लेख जो लिखा गया है, कोई गप्प नहीं है बल्कि मेरे जीवन की चन्द घटनाएँ हैं जो सम्मुख रखता हूँ। मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ। अपने पिता का लाड़ला पुत्र होने के कारण मैं धन और व्यसन में रहता था, लेकिन फिर भी मैं सुखी नहीं था। कुसंगत में पड़कर मुझे जरियान और प्रमेह रोग हो गया। पहले तो एक दो लोकलाज के कारण अपना भेद छिपाये रखा परन्तु रोग ने भयानक सूरत अख्तियार कर ली। अब मैं घबड़ा उठा, संसार में चारों अँधेरा मालूम होने लगा तब मेरी आँखें खुलीं। इलाज शुरू किया गया। बड़े-बड़े डाक्टरों, हकीमों, वैद्यों के फीस रूप में रुपये कीमती दवाइयों के खरीदने में पानी की तरह रुपया बहाने लगा फिर भी मैं निराश ही रहा। अब मैं घबरा उठा और चारों अन्धकार दिखलाई देने लगा और सोचने लगा कि इस दुःखमय जीवन से मर जाना बेहतर है।

पर यह बीस साल पहले की बात है। अब आज मैं खुश हूँ। आज उस परमात्मा की कृपा से आरोग्य हूँ और मेरे स्वस्थ बच्चे भी हैं जो बिलकुल आरोग्य हैं।

हुआ क्या? मुझमें इतना परिवर्तन कैसे हो गया? यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि मैंने एक दवा सेवन की। दवा मैंने सेवन की, वह एक महान् त्यागी परोपकारी साधु की बनाई हुई थी, जो समय काटने के लिए गाँव से कुछ दूर एक खेड़े पर रम रहे थे। यह मेरा सौभाग्य था कि और लोगों के साथ मैं भी दर्शनों के लिए जा पहुँचा। दैवी शक्ति से मेरे दुःखी के पिछले अध्याय उनके हृदय-पट पर खिंच गये और मेरी आँखों ने हृदय का सारा भेद अपने आप उस महान् पुरुष पर प्रकट दिया। मेरी कच्ची उम्र पर महात्मा को दया आई और उन्होंने मुझे कुछ जड़ी-बूटियाँ एकत्र करने की आज्ञा दी। मैंने वैसा ही और तब उनके सम्मुख ही मुझे उनके आदेश और निजी देख-रेख में 'प्रेमवटी' तैयार करनी पड़ी। यद्यपि मुझसे ४० दिन 'प्रेमवटी' का सेवन करने को कहा गया था, तथापि केवल बीस दिन के सेवन से ही मुझमें परिवर्तन हो गया। मेरी कमजोरी तमाम गुप्त बीमारियाँ जड़ से दूर हो गईं। पीले और उदास मुख पर लाली दौड़ने लगी, आँखों में उन्माद झूमने लगा और हृदय जवानी का जोश उमड़ आया। महात्माजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के साथ ही अपने वादे को पूरा करने के लिए दुःखी निमित्त पिछले बीस साल से लगातार मैं इस प्रयोग को मुफ्त बाँट रहा हूँ। यह अनेक पत्र-पत्रिकाओं में भी छप चुका है। मुझे कि इस अमृत तुल्य प्रयोग ने सैकड़ों की प्राण-रक्षा की, हजारों को मौत के मुँह से निकाला और लाखों का इससे भला हुआ। महा प्रदत्त 'प्रेमवटी' का नुस्खा इस प्रकार है; नोट कर लें—

शुद्ध त्रिफला ५ तोला, त्रिकुट चूर्ण ५ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ५ तोला, शुद्ध बङ्ग भस्म ६ माशा, असली केशर ३ माशा, असली अकरकरा ६ माशा, असली नेपाली कस्तूरी ३ रत्ती। इन सब औषधियों को कूट-छानकर खल में ऊपर से शीतल चीनी का तेल २० बूँद, सन्दल तेल २० बूँद, बिरोजे का तेल २० बूँद एक-एक करके मिलायें। उसके बाद ब्राह्मी बूटी के अर्क में १२ घण्टा घोंटकर झरबेरी बेर के बराबर गोलियाँ बनावें और छाया में सुखा लें। एक-एक गोली सुबह-शाम भर गाय के दूध में एक तोला शक्कर मिलाकर सेवन करें। इसकी प्रशंसा हम अपने ही मुँह से नहीं करते बल्कि बड़े-बड़े वैद्यों, हकीमों, सेठ-साहूकारों तथा रईसों, जमींदारों, सरकारी आफिसरों तक ने इसकी सराहना की है। वैद्यराज श्री जमुनादत्त शर्मा का कहना है कि यह वटी धातु का पतलापन, २० प्रकार के प्रमेह के लिए अक्सीर है।

'प्रेमवटी' में कोई हानिकारक चीज नहीं पड़ती। गुणकारी चीजें नुस्खे से ही प्रकट हैं। यह औषधि वीर्य का बीसों प्रकार के प्रमेह, पेशाब के साथ चूने की तरह वीर्य का जाना, पाखाने के समय धातु का जाना, स्वप्नदोष, सुस्ती, कमजोरी, डाइब्टीज, मधुमेह, सूजाक, जवानी में बुढ़ापे की-सी हालत हो जाना, असली ताकत की कमी, स्मरण-शक्ति कमजोर पड़ जाना स्त्रियों के भी प्रदर-सम्बन्धी रोग दूर करके अत्यन्त ताकत देती है और नस नस में नवजीवन का सञ्चार करती है। अन्त में भाइयों को जिन्हें फुरसत नहीं मिलती या शुद्ध औषधि प्राप्त नहीं कर सकते यह प्रयोग स्वयं बनाकर दाम के दाम में भेजने व्यवस्था की है। ४० दिन के लिए पूरी खुराक विधिवत् ८० गोलियों का मूल्य ५॥=) रु० और २० दिन के लिए ४० गोलियों दाम ३=) डाक खर्च ॥।-)

पता—बाबू श्यामलाल जी रईस, प्रेमवटी आफिस नं० ५०, धनकुट्टी, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों

मैं न तो कोई नर्स हूँ न कोई डाक्टर हूँ, और न वैद्यक ही जानती हूँ, बल्कि आप ही की तरह एक गृहस्थ स्त्री हूँ। विवाह के एक वर्ष बाद दुर्भाग्य से मैं लिकोरिया (श्वेत प्रदर) और मासिक धर्म के दुष्ट रोगों में फँस गई थी। मुझे मासिक धर्म खुलकर न आता था। अगर आता था तो बहुत कम और दर्द के साथ जिससे बड़ा दुख होता था। सफेद पानी (श्वेत प्रदर) अधिक आने के कारण मैं प्रति दिन कमजोर होती जा रही थी चेहरे का रंग पीला पड़ गया था, घर के काम काज से जी घबराता था, हर समय सर चकराता, कमर दर्द करती और शरीर टूटता रहता था। मेरे पतिदेव ने मुझे सैकड़ों रुपये की मशहूर औषधियाँ सेवन कराईं, परन्तु किसी से भी रत्ती भर लाभ न हुआ। इसी प्रकार मैं लगातार दो वर्ष तक बड़ा दुख उठाती रही। सौभाग्य से एक संन्यासी महात्मा हमारे दरवाजे पर भिक्षा के लिए आये। मैं दरवाजे पर आटा डालने आई तो महात्मा जी ने मेरा मुख देखकर कहा—बेटी तुझे क्या रोग है, जो इस आयु में ही चेहरे का रंग रुई की भाँति सफेद हो गया है? मैंने सारा हाल कह सुनाया। उन्होंने मेरे पतिदेव को अपने डेरे पर बुलाया और उनको एक नुस्खा बतलाया, जिसके केवल १५ दिन के सेवन करने से ही मेरे तमाम गुप्त रोगों का नाश हो गया। ईश्वर की कृपा से अब मैं कई बच्चों की माँ हूँ। मैंने इस नुस्खे से अपनी सैकड़ों बहिनों को अच्छा किया है और कर रही हूँ। अब मैं इस अद्भुत औषधि को अपनी दुःखी बहिनों की भलाई के लिए असल लागत पर बाँट रही हूँ। इसके द्वारा मैं लाभ उठाना नहीं चाहती, क्योंकि ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दे रक्खा है।

यदि कोई बहिन इस दुष्ट रोग में फँस गई हों तो वह मुझे जरूर लिखें। मैं उनको अपने हाथ से औषधि बनाकर वी० पी० पार्सल द्वारा भेज दूँगी। एक बहिन के लिए पन्द्रह दिन की दवाई तैयार करने पर २॥।=) दो रु० चौदह आने असल लागत होती है और महसूल डाक अलग है।

जरूरी सूचना—मुझे केवल स्त्रियों की इस दवाई का ही नुस्खा मालूम है। इसलिए कोई बहिन मुझे और रोग की दवाई के लिए न लिखें।

प्रेमप्यारी अग्रवाल,

नं० (७४) बुढलाडा, जिला हिसार (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत विख्यात वैद्यरत्न सत्यदेव द्वारा प्रस्तुत

रूपविलास कम्पनी कानपुर की कुछ अद्भुत शक्तिशाली औषधियाँ

वीर्य सञ्जीवन सत (रजिस्टर्ड) मनुष्य के शरीर में ताकत ही एक अमूल्य रत्न है, जिस मनुष्य के शरीर में ताकत नहीं है उससे कोई काम नहीं हो सकता है और जिन्दगी भर पछताना पड़ता है। इसलिए ताकत पैदा करने की तदबीर करनी चाहिए, वीर्य संजीवन सत के खाने से ताकत की कमी, सिर घूमना, कमर-रीढ़ में दर्द, थोड़ा चलने में थकावट, कोई काम करने में दिल न लगना, आँखों के सामने पीली पीली चिनगारी सी उड़ती नजर आना, चेहरे पर खुश्की वा जर्दी, बदन में फुर्ती न रहना, बीसों प्रकार के प्रमेह, दुर्बलता, निर्बलता, स्मरण-शक्ति कम हो जाना आदि रोगों को दूर करने में हमारे वीर्य संजीवन सत ने नाम पाया है और देश-विदेश के लाखों रोगी इसे सेवन कर लाभ उठा चुके हैं और उत्तमोत्तम होने के प्रमाण-पत्र दिये हैं। एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए इससे आपको हाथों हाथ फल मिलेगा और इसके गुण देखकर मुग्ध हो जायेंगे और नष्ट हुआ स्वास्थ्य, खोया हुआ बल, गया हुआ सौन्दर्य तथा लावण्य फिर से वापिस पायेंगे। कीमत एक डिब्बा ३।-) तीन रुपया पाँच आना, डाक-खर्च अलग।

लक्ष्मण धारा (रजिस्टर्ड) इसके सेवन से पेट-दर्द, जी मिचलाना, कफ खाँसी, बुखार, शूल, संग्रहणी, हैजा, प्लेग, अतीसार, मोच, चोट, सूजन, दस्त, बदहजमी आदि कहाँ तक लिखें किसी में खाने से किसी में लगाने से तत्काल लाभ पहुँचता है। कीमत बड़ी शीशी २॥) दो रुपया आठ आना, छोटी शीशी ।॥) बारह आना, डाक-खर्च अलग।

बालकों (रजिस्टर्ड) खाँसी, दस्त, खाना हजम न होना, दुबलापन, सर्दी रहना, सूखा वायु, ज्वर आदि रोग दूर होकर बच्चे प्रसन्नचित्त सुख की नींद सोते हैं। दुबले-पतले कमजोर बच्चों को ताकतवर बनाने की मीठी दवा है। कीमत फी शीशी १), डाक-खर्च अलग।

रूपविलास (रजिस्टर्ड) इसके लगाने से मुहाँसा, झाँई, चेचक के काले काले दाग, फुंसी, खुश्की, बदरौनकी, झुर्रियाँ वगैरा दूर होकर मलिन मुख चमकदार होकर चेहरे पर गुलाबी छटा दमकने लगती हैं यह स्त्री-पुरुष दोनों का दिल मस्त करनेवाली खुशबूदार दवा है। कीमत फी डिब्बा २) दो रुपया, डाक-खर्च अलग।

नारी सञ्जीवन स्त्रियों के हर प्रकार के प्रदर रोग, महीना ठीक समय पर न होना, या कष्ट से होना, जिससे कमर, रीढ़, सिर, पेड़ू, नलों में दर्द रहना, हृदय में जलन, मन मलीन, भूख न लगना, शरीर का पीलापन, वन्ध्यापन, हिस्टीरिया आदि रोग दूर होकर सन्तान दीर्घजीवी पैदा होती है। मूल्य एक शीशी ३८), डाक-खर्च अलग।

फकीरी सुर्मा (रजिस्टर्ड) इसके लगाने से जाला, माड़ा, धुंधी, रोहे, नजला, कोंचा निकलना, नाखूना, परवाल, मोतियाबिन्दु, चश्मा लगना नजर कमजोरी आदि बीमारियों पर इस सुर्मा से बढ़कर अन्य कोई सुर्मा नहीं है। यह सुर्मा १००) तोला भी बेचा जावे तो गुणों के आगे मूल्य कुछ नहीं है। कीमत फी शीशी ।॥), डाक-खर्च अलग।

गर्भदाता रसायन अगर विवाह हुए कई वर्ष हो गए हैं अथवा किसी कारणवश संतान नहीं होती है ऐसी हालत में गर्भदाता रसायन अपना अद्भुत चमतकार दिखाती है। जो स्त्रियाँ सन्तान न होने से निराश हो चुकी थीं वे अब कई बच्चों की माँ हैं। यदि आपके संतान नहीं होती है अथवा खोंखा हो जाती है तो हमारे गर्भदाता का प्रयोग कराकर संतान सुख अवश्य देखें। कीमत एक शीशी ४।८), डाक-खर्च अलग।

रजस्वलीना रुके हुए मासिक को बिना कष्ट के जारी कर देता है। गन्दे खून के रुकने से अनेक बीमारियाँ हो जाती हैं। जब तक मासिक धर्म जारी न होगा तब तक गर्भ हरगिज न रहेगा। इसके बगैर तकलीफ के रज जारी हो जाता है और गर्भ धारण योग्य हो जाता है। गर्भवती स्त्रियाँ इसे सेवन न करें। कीमत एक शीशी ५॥) पाँच रुपया आठ आना, डाक-खर्च अलग।

सुलेमानी साल्ट मंदाग्नि, बदहजमी, पेट दर्द, अफरा, पेचिश, खूनी कमी, हैजा, प्लेग, वायुगोला, तिल्ली, वायु का साफ न होना आदि बीमारियाँ दूर करता है। मूल्य ।॥) फी शीशी डाक-खर्च अलग।

मँगाने का पता—रूपविलास कम्पनी, नं० ४२७ धनकुट्टी, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यारी बहिनों की भलाई के लिए

खुशखबरी

यदि किसी बहिन को पचास वर्ष की कम आयु में या किसी रोग के कारण मासिक धर्म (माहवारी) का होना बन्द हो गया है अथवा खुलकर नहीं होता या प्रति-मास ठीक समय पर न होकर आगे-पीछे होता है तो ऐसी हालत में आप मेरी सौ फी सदी आजमाई हुई औषधि **मासिक संजीवन धारा** मँगवा कर सेवन करें, इस औषधि की केवल एक ही खुराक से महीनों का रुका हुआ मासिक धर्म बिना किसी कष्ट के चालू हो जाता है और तीन खुराक से मासिक धर्म बिगड़ने से पैदा हुई सब अन्दर की खराबियाँ दूर होकर मासिक धर्म ठीक समय पर नेम अनुसार आने लग जाता है। मूल्य तीन खुराक तीन रुपया छः आने ३।=) डाक पैकिंग खर्च अलग।

खबरदार—गर्भवती बहिनें इसे सेवन न करें क्योंकि इससे गर्भपात हो जाता है।

गर्भरोक—यदि आप बीमारी या कमजोरी के कारण सन्तान पैदा होने के समय के कष्टों को सहन न कर सकें तो आप यह औषधि सेवन करें, इसकी एक खुराक से दो वर्ष के लिए और तीन खुराक से सदा के लिए गर्भ का रहना बन्द हो जाता है। मूल्य एक खुराक (तीन रुपया ५) रुपया, तीन खुराक दस रुपया १०) रुपया। डाक पैकिंग खर्च अलग। इस औषधि के सेवन से स्त्री के मासिक धर्म तथा स्वास्थ्य को कोई हानि नहीं होती।

जरूरी सूचना—पत्र लिखते समय अपना पूरा पता साफ और सुन्दर लेख में लिखें।

पता—राजकुमारी अग्रवाल,

[पो० ३१६] टोहाना, जिला हिसार [ईस्ट पंजाब]

बिलकुल मुफ्त

जातीय जीवन के गुप्त प्रश्नों का भेद समझाकर शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त कराने की मार्ग दर्शक

दम्पति विकाश

पुस्तक बिना डाक-खर्च मुफ्त भेजी जाती है आज ही मँगावें।

मदन मंजरी फार्मेसी—जामनगर

बिना चीर फाड़ के अंडकोष का शर्तिया इलाज

किसी प्रकार का फोता हो, चाहे पानी उतर आया हो, वादी का हो या पोते के ऊपर गोश्त उतर आया हो या चोट लग गई हो, वर उतर आई हो या पोते में दर्द होता हो, पोता बढ़कर कितना ही वजनी क्यों न हो गया हो, आँत उतर आई हो, इस दवा के लेप करने से तमाम वादी का पानी सूख-सूखकर पोता अपनी असली हालत पर बगैर किसी तकलीफ के आ जायेगा। कीमत फी टीन ४) रु०, डाक महसूल अलावा। मिलने का पता :—

दी अमृतसागर एन्ड को० नं० ३, मथुरा (यू० पी०)

अमेरिकन कैमरा

युद्ध के बाद प्रथम बार भारत में आया है। इस विश्वसनीय और सुन्दर कैमरे से बच्चा भी १२० नम्बर के फिल्म पर २½" × ३½" के साइज का सुन्दर से सुन्दर फोटो खींच सकता है। प्रत्येक कैमरे के साथ १२ फिल्म मुफ्त दी जाती है। मूल्य १२॥), पैकिङ्ग पोस्टेज १॥) अलग बढ़िया फोटो न खींचने पर दाम वापस।

डिस्ट्रीब्यूटर्स बंगाल कैमरा हाउस

(५५ I. P.) अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख-सूची

१—सम्पादकीय		३७७
२—विश्व की जल-शक्ति —श्री परिपूर्णानन्द वर्मा... ...		३८५
३—क्या सब शून्य हैं ? —कुमारी विपुला देवी		३८७
४—आर्यों का आदि निवास—श्री कुमार		३९३
५—कोने की दूसरी ओर —श्री गोपालकृष्ण भनोत ...		४०१
६—हमारी वैदेशिक नीति —श्री सहदेव चक्रवर्ती, विद्यालङ्कार...		४०७
७—प्राप्ति—कुमारी प्रभा पारीक ...		४१०
८—उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय मुसलमान— प्रोफेसर महेशप्रसाद मौलवी, आलिम-फाजिल		४१८
९—कौए—श्री युगल		४२२
१०—दो गीत—श्री 'नीरव' एम० ए० ...		४२७
११—सत्रह सौ उनतीस —श्री वृन्दावनलाल वर्मा... ...		४२२
१२—विविध-विषय		४३३
१३—काम की किताबें		४३९
१४—सामयिक-साहित्य		४४४

चित्र-सूची

१—बचपन कितना, बुढ़ापा कितना	मुख पृष्ठ
२—राजा जी—भगवती के उपासक ...	,,
३—उपहार	,,
४—महाकवि—महादानी	पृष्ठ ३९६ के सामने
५—श्री राजा जी	,,
६—आगमन	,,
७—गवर्नर काटजू	,,
८—सम्मान-प्रदर्शन	,,
९—स्वागत	४१२
१०—राष्ट्रीय सहयोग सम्मेलन	,,
११—लंदन में	,,
१२—पुनर्मिलन	,,
१३—टिहरी गढ़वाल	४२८
१४—सुरम्य दर्शन	,,
१५—मई-दिवस	,,
१६—कलकत्ता के मैदान में श्रमिकों की बृहत्सभा	,,

मुफ्त मुफ्त मुफ्त

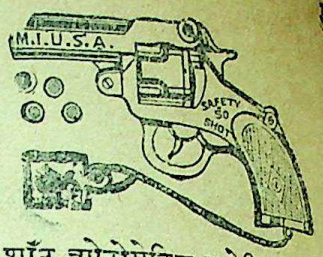

६ शॉट ओटोमेटिक अमेरिकन मॉडल

डमी पाकेट रिवाल्वर

यह रिवाल्वर अभी होशियार कारीगरों द्वारा अमेरिकि नमूने पर तैयार कराया गया है। यह रिवाल्वर देखने में असली से मिलता-जुलता है। इसमें एक चरखी लगी है जिसमें शॉट रखे जाते हैं। असली के मानिन्द घोड़ा लगा है जिसके दबाने से चरखी अपने आप घूमकर ६ शॉट चलाती हैं। चोर, डाकू, लुटेरे, बदमाश जंगली जानवरों को धोखा देने के लिए अच्छी चीज है। थियेटर, नाटकघरों शौकीनों के लिए खास तोहफा है। इसके रखने के लिए लायसेंस की कोई जरूरत नहीं है। कीमत ५) रिवाल्वर के साथ १०० शॉट मुफ्त भेजे जाते हैं। अलहदा १०० शॉट का ३), चमड़े का पट्टा ३), डाक-खर्च १॥)

शंकर अन्ड कम्पनी २९९ गोपालपुरा, मथुरा

कशीदा काढ़ने की मशीन

कपड़े पर हर प्रकार के बेलबूटे, फूल, पत्ती, सीनरी आदि डिजाइनें बनाने की ४ सुइयोंवाली मशीन मूल्य ३।) डाक-खर्च ।॥) तरकीब मुफ्त।

कशीदा-सम्बन्धी सैट (भेंट देने योग्य) जिसमें कशीदा मशीन, कशीदाकारी पुस्तक, रंगीन रेशमी लच्छे, उम्दा कैंची, फ्रेम अक्सी कढ़े हुए कागज, मय तबकों के हैं। सुन्दर लकड़ी के बक्स में मूल्य १२॥) डाक-खर्च १) तरकीब मुफ्त।

कसीदाकारी पुस्तक—कशीदा सम्बन्धी सैकड़ों बेल-बूटे, फूल पत्ती आदि सुन्दर डिजाइनों से सज्जित मूल्य २।॥) डाक-खर्च ।=)।

सिलाई कटाई विज्ञान (सचित्र)—हर प्रकार के कपड़े काटना व सीना सिखानेवाली मूल्य ॥।) डाक-खर्च ।=)

कन्या पाकशाला (सजिल्द)—हर प्रकार के भोजन, अचार, चटनी, दाल, शाक, मुरब्बे आदि, बनाना सिखाने की सरल पुस्तक मूल्य केवल १।=) डाक-खर्च ।=)

बंगाली मिठाई और नमकीन—बनाना सिखाने मूल्य २) डाक-खर्च ।=)

(महिला) हरमोनियम गाइड (सचित्र)—कन्याओं व स्त्रियों को बिना गुरु सुगमता से बाजा सिखाने की उत्तम व एकमात्र पुस्तक मूल्य १।) डाक-खर्च ।=)

पता—कुमार ब्रदर्स (१४) अलीगढ़ (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन कितना, बुढ़ापा कितना ?

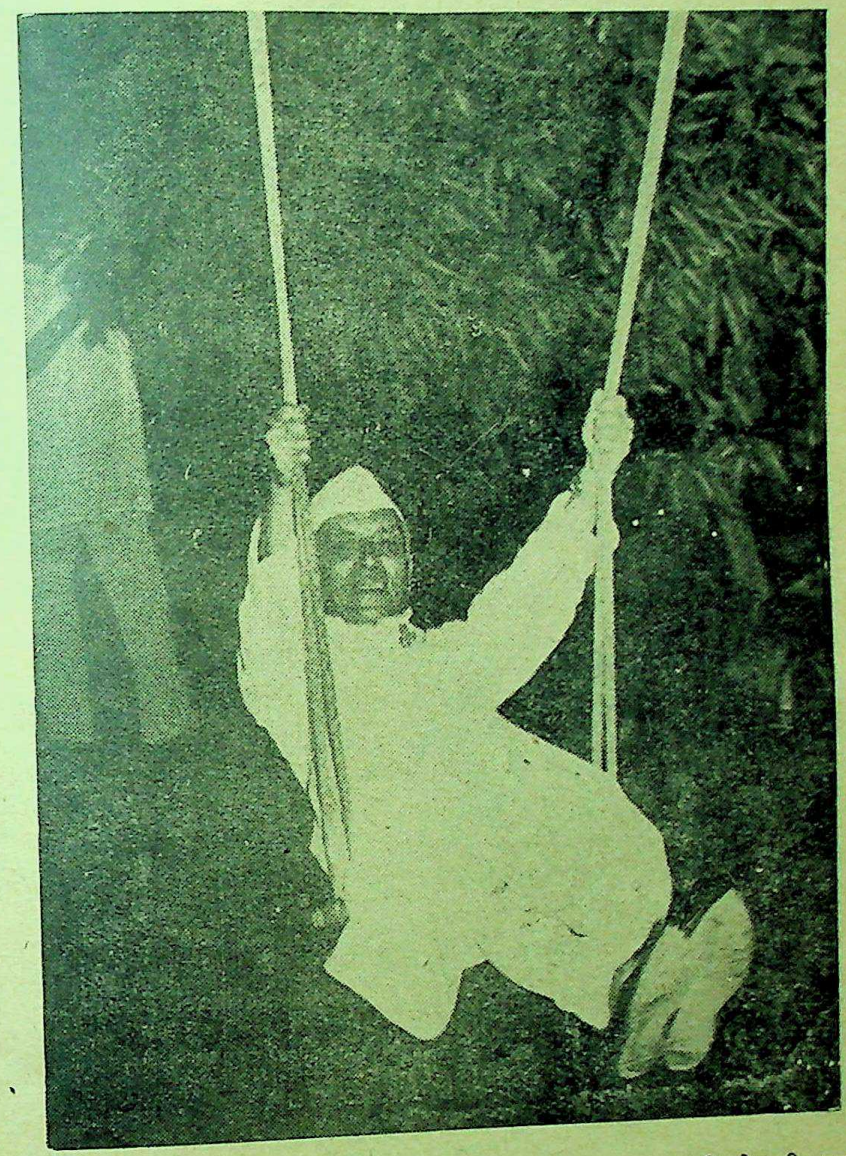

चालीस करोड़ भारतीयों की राष्ट्रिय और अन्ताराष्ट्रिय जिम्मेदारी का बोझ ढोनेवाले हमारे महामात्य यदि बालसुलभ मनोरंजनों को इतना भी न अपनाएँ तो उनका दैनिक जीवन कितना नीरस और भारस्वरूप हो जाए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

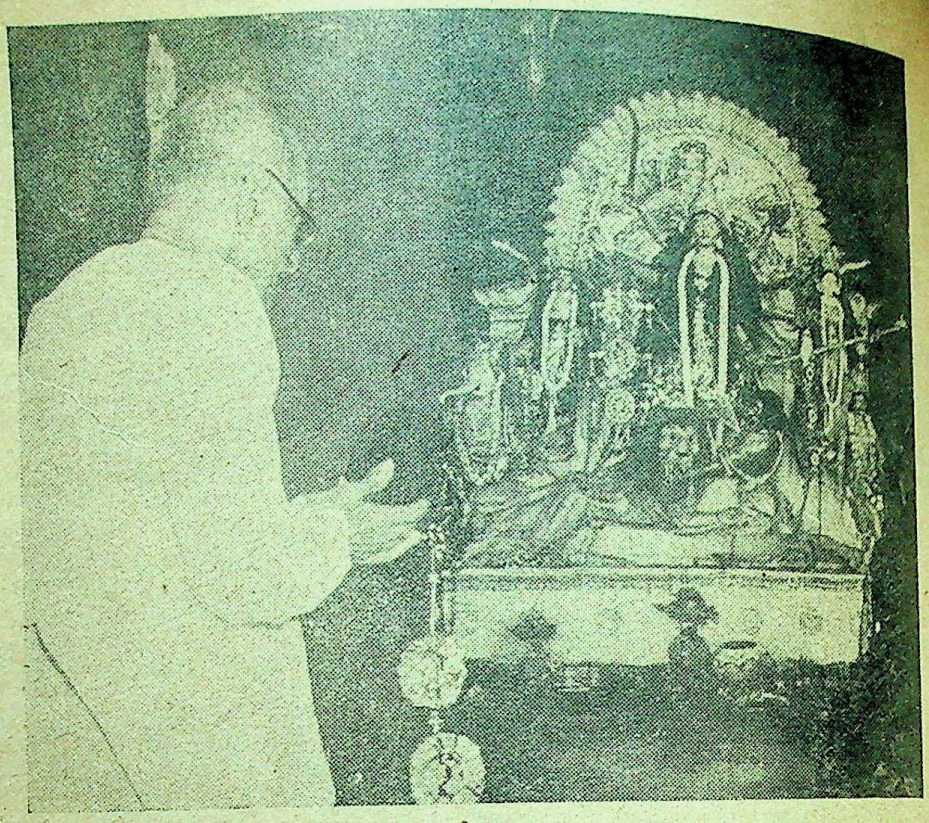

स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल श्री राजगोपालाचार्य--भगवती के उपासक के रूप में।

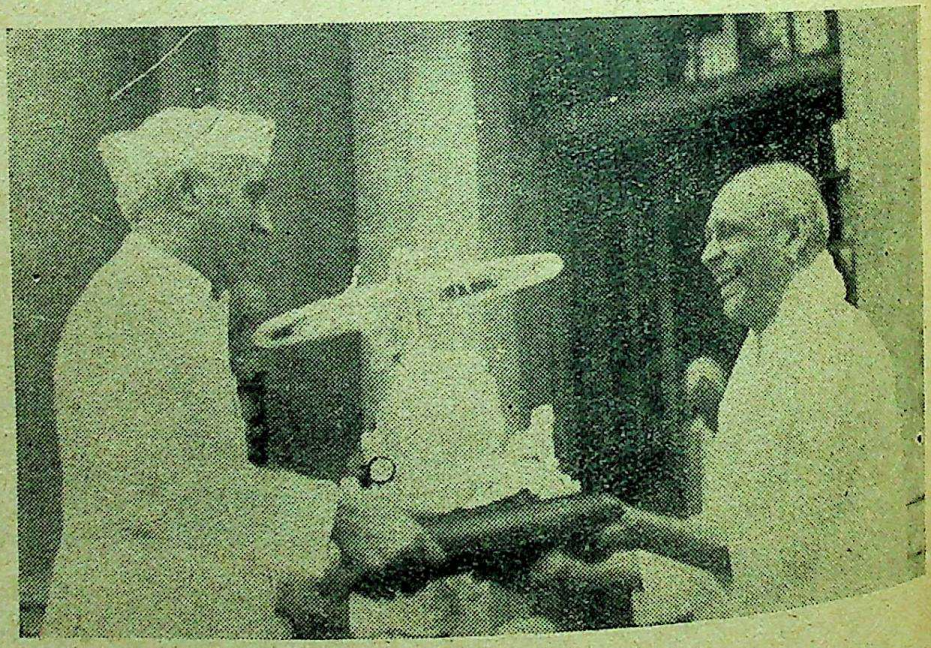

उपहार

सरदार पटेल पिछले दिनों एक वायुयान-दुर्घटना में बाल-बाल बचे। इसी की प्रसन्नता में पंडित नेहरू सरदार पटेल को उक्त वायुयान का छोटा आदर्श उपहार-रूप में दे रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

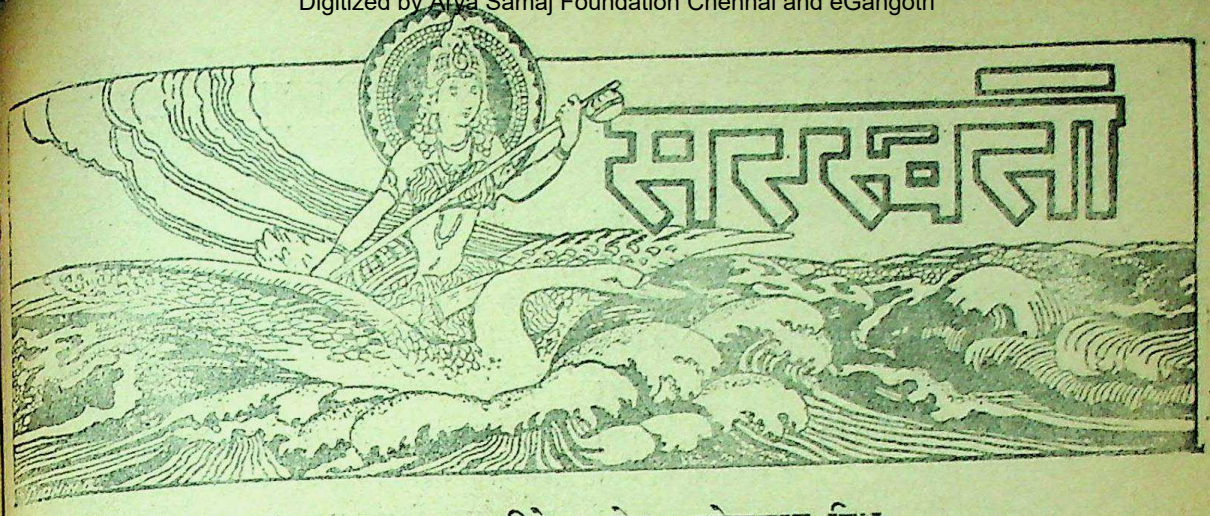

सम्पादक—हरिकेशव घोष : उमेशचन्द्र मिश्र

जून १९४९ ज्येष्ठ २००६ ; भाग ५० खण्ड १ ; संख्या ६ पूर्ण संख्या ५९४

सम्पादकीय

'लुप्तपिण्डोदकक्रियाः'

हमारी लोकप्रिय सरकार के लाख प्रयत्न करने पर भी भ्रष्टाचार का अन्त होता नहीं आ रहा है। अन्त तो दूर रहा, देखा यह जा रहा है कि इस दिशा में सरकारी प्रयत्न ज्यों-ज्यों बढ़ते हैं, भ्रष्टाचार की मात्रा भी उसी अनुपात से बढ़ती जाती है। सुरसा और हनुमान् की कथा जैसे एक बार फिर हमारे सामने आगई है। इस समस्या ने काँग्रेसी सरकार और काँग्रेस को समानरूप से परेशान कर रक्खा है।

इस परेशानी की छाया इधर निरन्तर समाचार-पत्रों में देखने को मिलती है। सरकार का भ्रष्टाचार-विरोधी विभाग सतर्कतापूर्वक ऐसे-ऐसे दर्जनों मामले पकड़कर अदालत के सुपुर्द करता है और उनकी सूचनाएँ छपने के लिए नियमित रूप से पत्रों को भेज देता है। युक्त-प्रान्तीय सरकार का मुखपत्र अपने प्रत्येक अंक में आँकड़े देकर दिखलाता है कि इस अवधि में कितने भ्रष्टाचारियों को किस-किस रूप में दण्डित किया गया। इस प्रचार की आवश्यकता निर्विवाद है। भ्रष्टाचारियों को सचेत करने के लिए ऐसी सूचनाएँ नियमित रूप से प्रचारित होनी ही चाहिए।

पर भ्रष्टाचारी सचेत नहीं हो रहे हैं, यह आश्चर्य की बात है। यही नहीं, उलटा यह देखा जा रहा है कि जब भ्रष्टाचार का एक तरीका प्रकाश में आ जाता है और जनता व सरकार उसे समझ लेती है, तब भ्रष्टाचारी उसी कार्य की सिद्धि के लिए अविलम्ब दूसरा तरीका आविष्कार कर लेता है। उसकी गाड़ी भागती रहती है और सरकारी शकट भी ढचढच करता हुआ रेंगता रहता है।

इस विषवल्लरी को जल कहाँ से मिल रहा है? इतना प्रयत्न होने पर भी इसका मूलोच्छेद क्यों नहीं हो पाता?

अभी एक सप्ताह पूर्व ही पढ़ने को मिला था कि ओ० टी० रेलवे के किसी स्टेशन पर कुछ सज्जन माल-गाड़ी के डिब्बे से कपड़े की गाँठें नीचे फेंकते हुए धर लिए गए थे—और ये सुकर्मी थे सरकारी आदमी—'वाच एण्ड वार्ड' विभाग के कर्मचारी! अर्थात् पहरे-दार नकबजनी कर रहे थे!

ब्रिटिश शासनकाल में पुलिस दरोगों और सिपाहियों को स्वयं डकैती के लिए अपनी बन्दूकें रात भर के लिए उधार देते सुना गया था। स्वतंत्र भारत की सरकार में पहरेदार माल उड़ाने का शुभकार्य कर रहे हैं! 'जब माता विष दे और पिता सर काटने की फिक्र में हो, तब शरण किसकी जाए!' नीतिज्ञ चाणक्य के इस प्रश्न का उत्तर संसार आज तक नहीं दे सका है, अब आगे दे भी क्या सकेगा?

'अखिल भारतीय काँग्रेस समिति' का अधिवेशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत २१ और २२ मई को देहरादून में हुआ था, जिसमें अन्यान्य महत्त्वपूर्ण मसलों पर गम्भीर पर गुप्त विचार-विनिमय हुआ था। कहते हैं, उन मसलों में एक मसला यह भी था कि भ्रष्टाचार को कैसे रोका जाए। इस संबंध में, समाचारपत्रों की सूचना के अनुसार, आचार्य कृपलानी ने शासनतंत्र पर यह आरोप लगाया था कि—"मंत्रिमण्डल रिश्वत के उन मामलों पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता, जो काँग्रेस-कर्मियों के द्वारा पकड़े जाकर विचारार्थ उसके समक्ष उपस्थित किए जाते हैं। जब सरकार संकट में पड़ जाती है, तब वह गाँधी जी का नाम लेती है और उनके आदर्शों की दुहाइँ देती है, पर वह उनके अनुसार आचरण नहीं करती। मन्त्रिमण्डल का परिष्कार नितान्त आवश्यक है।"

काँग्रेस कमेटी का उक्त अधिवेशन गुप्त हुआ था, अतएव वहाँ जो वक्तृताएँ दी गईं या वाद-विवाद हुए, उनकी विस्तृत सूचना प्राप्त नहीं है। पर जो कुछ पर्दे से छन-छनकर बाहर निकल सका है, उसके आधार पर अटकल बहुत कुछ लगाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए श्री नेहरू का यह कथन—"मन्त्रिगण उस आलोचना-प्रत्यालोचना से अवगत हैं, जो उनके संबंध में होती रहती है। परन्तु उनके ऊपर भ्रष्टाचारी होने और अपने सगे-संबंधियों को नौकरियाँ दिलाने का जो लांछन लगाया जाता है, उसमें प्रायः अतिरंजना होती है।"—यह सूचित करता है कि इस प्रकार के आरोप हमारे मन्त्रिमण्डल पर उक्त अधिवेशन में अवश्य लगाए गए होंगे।

हमारे लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल पर ऐसे आरोप उक्त अधिवेशन में पहली बार लगाए गए हों, यह बात नहीं है। सहयोगी दैनिक 'वर्तमान' के गत २० मई के अङ्क में हमने डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद का एक उद्धरण पढ़ा था जिसमें कहा गया था—"मैं कह सकता हूँ कि मंत्रियों में तथा सरकारी अफ़सरों में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार जारी है। मेरे विचार से आम शासन के स्तर को ऊँचा करने के लिए यह आवश्यक है कि जनता का चरित्रबल उन्नत हो। देश में उसकी योग्यता के अनुसार ही सरकार बनती है। यदि हम भले नहीं हैं तो सरकार भी भली नहीं पा सकते।"

और इस पर टिप्पणी करते हुए उक्त सहयोगी ने लिखा था—"भ्रष्टाचार जब मंत्रियों और उच्च सरकारी अफ़सरों में व्याप्त है, तब यह आशा करना कहाँ तक न्यायसंगत होगा कि उनके मातहत कर्मचारियों में भ्रष्टाचार का प्राधान्य न होगा?.....आज इस भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को जारी रखने में जो लोग सहायक हो रहे हैं, वे अपने को कांग्रेसजन कहते हैं। कहीं पर मिनिस्टरों के पास ये रकमें उनके रिश्तेदारों की मार्फत पहुँचती हैं तो कहीं पर प्राइवेट सेक्रेटरी के द्वारा यह सौदा चलता है। जिस ढंग से यह भ्रष्टाचार पनपता है उसमें उसे कभी रंगे हाथों नहीं पकड़ा जा सकता। बेचारे निम्नश्रेणी के कर्मचारी दो-एक रुपए की रिश्वत लेते पकड़ लिए जाते हैं; न्यायालय से उन्हें दण्ड भी मिल जाता है; परन्तु उच्चासन पर बैठनेवाले मंत्रिगण अव्वल तो पकड़े में नहीं आते और जब ज्यादा बदनामी होने लगती है तो इस्तीफा देकर बाहर निकल जाते हैं।.....संसार के अन्य देशों में जब भ्रष्टाचार और घूसखोरी बढ़ती है तब मिनिस्टरों पर खुली अदालत में मुकदमा चलता है और उन्हें कठोर-से-कठोर दण्ड देकर समाज में न्याय की स्थापना की जाती है। हमारे देश में इस संबंध में ढील बरती जाती है। हम देखते हैं कि चोरबाजारी के बड़े-बड़े मुकदमे या तो पकड़े ही नहीं गए, या पकड़कर छोड़ दिए गए। तब यह कैसे कहा जा सकता है कि समाज और शासन को स्वच्छ बनाने का कोई प्रयत्न हो रहा है?"

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद अधिकतम जिम्मेदार व्यक्ति हैं। उनके मुँह से जो शब्द निकलते हैं वे नपे-तुले होते हैं और उनकी आत्मा के सच्चे प्रतिबिंब। भावुकता के प्रवाह में कुछ भी कह डालने के वे आदी नहीं हैं। दूसरे और सहयोगी 'वर्तमान' के सम्पादक भी अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं, स्वयं कांग्रेसी हैं और उन्होंने जो कुछ लिखा है वह जनता की वर्तमान धारणा का शब्दरूप है। इस वस्तुस्थिति में इन सीधे आरोपों और लाञ्छनाओं के चलते हुए, पण्डित जवाहरलाल नेहरू का उक्त निष्करण जनता की दृष्टि में कितना समीचीन ठहर सकता है?

'यथाप्रजा : तथाराजा'

इस सिलसिले में एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि अब ऐसा प्रतीत हो रहा है हमारे कांग्रेसी नेता इस भ्रष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार के निराकरण में अपने को असमर्थ पा रहे हैं; फलतः वे इसके लिए घुमा-फिराकर जनता को दोषी ठहरा रहे हैं। अभी हाल ही में एक महान् नेता ने कहा था कि 'यथाराजा तथाप्रजा' वाली कहावत सामंतयुग की थी। अब वह ठीक नहीं ठहराई जा सकती। अब प्रजातंत्र के युग में इस कहावत का रूप 'यथाप्रजा तथाराजा' हो गया है। आप लोग जैसे होंगे, आपका शासनतंत्र भी वैसा ही होगा। गत २१ मई को देहरादून में एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए हमारे राष्ट्रपति ने भी भ्रष्टाचार रोकने का एक अमोघ अस्त्र यही बतलाया है कि जब तक जनता सरकारी अफसरों को घूस देना और चोर-बाजारियों से माल खरीदना बन्द नहीं करेगी, तब तक ये बुराइयाँ दूर नहीं होंगी। निस्सन्देह सारा दोष जनता का ही है, और इसी दोष के कारण रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार पनप रहे हैं! पर हमारे देश की जनता क्या सचमुच इतनी जागरूक हो गई है कि वह अपने नागरिक अधिकारों को समझ सके और बीच में अड़ंगा डालनेवाले सरकारी कर्मचारियों से निपट सके? हजारों वर्ष की गुलामी ने भारतीय जनता के नैतिक स्तर को काफी नीचा कर दिया है। व्यक्तिगत साहस उसमें अत्यल्प मात्रा में रह गया है। साधारण जीवन-निर्वाह में ज्यों ही सरकारी अधिकारियों के द्वारा कोई बाधा उपस्थित की जाती है, त्यों ही जनता संघर्ष की दिशा में अग्रसर न होकर समझौते की ओर झुकना ठीक समझती है, और उस समझौते का आधार लेन-देन होता है, जिसे कानून की परिभाषा में रिश्वत कहा जाता है।

रिश्वत प्रसन्नता से कभी नहीं दी जाती, सदैव दबकर दी जाती है। इस दबाव की प्रतिक्रिया प्रत्येक के हृदय पर होती है, पर अन्य गति न रहने पर इसे सहन करना पड़ता है। जनता का सदस्य अच्छी तरह जानता है कि रिश्वत देना पाप है और कानूनी अपराध भी। पर वह यह भी जानता है कि रिश्वत लेनेवाले की या भ्रष्टाचारी की शिकायत करने से कुछ हाथ नहीं लगेगा। वह नित्य देखता है कि रंगे हाथ पकड़े गए भ्रष्टाचारी के विरुद्ध अन्ततोगत्वा कुछ हुआ नहीं, क्योंकि कोई-न-कोई मिनिस्टर या तो उसका मित्र है या नजदीकी रिश्तेदार! इस पीठ पर इतना बल है, तभी तो खुले-खजाने रिश्वत चल सकती है!

'यदि रिश्वत देनेवाले न रहें तो रिश्वत लेनेवाले भी नहीं रहेंगे—' हमारे थके हुए नेताओं की यह दलील ठीक है। पर यह भी ठीक है कि यदि उन परिस्थितियों का ही अन्त कर दिया जाए, जिनमें पहल पाने या काम निकालने के लिए रिश्वत का लेना-देना अनिवार्य हो जाता है तो रिश्वत एक दिन में ही उठाई जा सकती है। यह सरकार के करने से ही हो सकता है, जन-साधारण के करने से नहीं। सरकार नित्य नए अंकुश लगाकर अभाव और आवश्यकता की सृष्टि करती है; अंकुशों को सफलता-पूर्वक चलाने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण पदों का आविष्कार करती है और उन पदों पर ऐसे आदमियों को जानबूझकर नियुक्त किया जाता है, भारी-भरकम वेतनों पर, जो बड़े आदमियों के घर के होते हैं। ये पीठमर्द धड़ल्ले से भ्रष्टाचार करते हैं, क्योंकि उन्हें अभयदान प्राप्त रहता है! क्या इसके लिए भी प्रमाणों की आवश्यकता है? प्रमाण इतने प्रचुर हैं कि किसी भी केन्द्र से दर्जनों सहज ही में संग्रह किए जा सकते हैं।

भ्रष्टाचार की खुली छूट

कुछ मामले ऐसे नित्य देखने में आते हैं, जो एक निष्पक्ष नागरिक के हृदय को शंकापूर्ण कर देते हैं। उदाहरण के लिए हम अपने उन भाइयों को ले सकते हैं जिन्हें कल तक हम 'शरणार्थी' कहते थे, पर आज 'पुरुषार्थी' कहने लगे हैं—इसलिए कि वे 'शरणार्थी' पुकारे जाने में अपमान का अनुभव करते हैं और स्वयं को 'पुरुषार्थी' कहलाना चाहते हैं। हमारे ये परम पुरुषार्थी भाई आज नियंत्रित वस्त्र को सड़क के फुटपाथों पर, और अपनी दूकानों पर भी, नियंत्रित मूल्य से सवाए या ड्योढ़े मूल्य पर दिन-दहाड़े बेंचते हैं। 'डालडा' का १० पौण्ड का टीन, जिसका नियंत्रित मूल्य 'ग्यारह रुपए पौने सोलह आने' है, इन पुरुषार्थी भाइयों के द्वारा 'साढ़े बारह रुपए' में बीच सड़क पर दिन में बेंचा जाता है। सरकार का 'भ्रष्टाचार-विरोधी विभाग,' नगर मजिस्ट्रेट और जिला कलेक्टर क्या यह सब देख नहीं पाते हैं, या देखते-जानते हुए उधर से आँखें लपेट लेते हैं? यहाँ यह याद रखना चाहिए कि सहकारी समितियाँ डालडा के इसी टीन को निर्धारित मूल्य पर ही बेंचती हैं; पर उन्हें कोटा इतना कम दिया जाता है कि वे उससे नागरिकों की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पातीं और नागरिकों को विवश होकर पुरुषार्थियों का कृपा-भाजन बनना पड़ता है! भ्रष्टाचार के लिए सरकार की ओर से दिया जानेवाला क्या यह खुला लाइसेन्स नहीं है?

अपराध का पाठ!

ये पुरुषार्थी भाई स्वयं ऐसा करते हों, यह बात नहीं है। ये यथासंभव यहाँ के नागरिकों को भी ऐसा करना सिखा रहे हैं। यदि आप किसी सहकारी समिति के सदस्य हैं तो आपने प्रत्यक्ष अनुभव किया होगा कि जब कोई सहकारी अपनी समिति का 'डालडा' का कोटा उठाने थोक-विक्रेता की दूकान पर जाता है तब ये पुरुषार्थी भाई उसे चारों ओर से घेर लेते हैं और कहते हैं कि 'बारह रुपए दो आने' प्रति टीन के दर से ले लो और पूरा कोटा हमें दे दो। पूरा नहीं तो दस-बीस टीन ही दे दो।" यह प्रलोभन साधारण नहीं है और 'सहकारी समिति' को किसी भी क्षण पतन के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। यह असिस्टेण्ट रजिस्टार ही बतला सकते हैं कि इस प्रकार का लाभ अभी तक हमारी नागरिक सहकारी समितियों में से किसी ने उठाया है या नहीं!

भ्रष्टाचार की खुली छूट किसे है और किसे नहीं है, इस प्रश्न का उत्तर हमारे सहयोगी 'वर्त्तमान' ने स्पष्ट शब्दों में अपने एक सम्पादकीय लेख में दे दिया है। उसके कथन का सारांश यह है कि जिसकी पहुँच शासन-तंत्रियों तक है, वे जो चाहें, कर सकते हैं। उनके विरुद्ध शिकायत की सुनवाई कहीं नहीं है। हमारे महामात्य तक उनका समर्थन करते हैं कि 'यह सब अतिशयोक्ति मात्र है।' अन्ताराष्ट्रिय महत्त्वपूर्ण समस्याओं में उलझा हुआ उनका मस्तिष्क वस्तुतः दैनदिन जीवन के छोटे विवरण की निचाई तक उतर ही नहीं पाता, कि वे ऐसी बातों की वस्तविकता को आत्मसात् कर सकें। जो उँचाई पर रहते हुए भी पृथ्वी पर रेंगनेवाली मानवता को हृदय से लगाए रहता था और उसके हृदय की प्रत्येक धड़कन को स्वयं अपने हृदय की धड़कन से मिलाकर सुनता था, वह मसीहा अब इस संसार में नहीं है। उस परम आस्तिक वैष्णव जन की दिवंगत आत्मा के निकट हम तथाकथित कांग्रेसियों का दिया हुआ पिण्डदान भी ग्राह्य होगा या नहीं, कौन जाने?

माननीय लालबहादुर शास्त्री का शिष्ट पुलिस-विभाग

भारतीय पुलिस अपनी अशिष्टता के लिए सदा से नाम रही है। इधर जब से कांग्रेस के हाथ में शासनसू आया है तब से यह आशा की जाने लगी थी कि उसकी गति-विधि में भी कुछ सुधार होगा और वह व्यवहार में अधिक नहीं तो उतनी तो शिष्ट हो ही जाएगी जितनी योरपीय देशों की पुलिस है, अर्थात् वह स्वयं 'जनता का सेवक' समझने लगेगी, 'मालिक' या 'शासक' नहीं। इस दिशा में प्रयत्न भी अब तक कम नहीं किए गए हैं। सरकार की ओर से एक पत्र 'जनसेवक' सुन्दर चिकने कागज पर छापकर निकाला जा रहा है, आदर्श स्कूल खोले जारहे हैं और दर्जनों पुस्तकें छाप-छापकर वितरित की जारही हैं। माननीय मंत्रीगण और पुलिस के अधिकारी पुलिस के जल्सों में जो व्याख्यान देते हैं, वे भी शिष्टता से भरे होते हैं।

पर इस भगीरथ प्रयत्न का जो फल अब तक हुआ है, उसका एक उदाहरण इन पंक्तियों के लेखक के साथ है। आजकल मोटर गाड़ियों के कागजपत्रों की जाँच हो रही है और यह कार्य शायद सुविधा के लिए पुलिस के सब इन्स्पेक्टरों को सौंप दिया गया है। इस सम्बन्ध में 'आदेश पत्र' लिखित रूप में इन पंक्तियों के लेखक को प्राप्त हुआ है, उसकी अक्षरशः प्रतिलिपि इस प्रकार है—

NOTICE

Shree Umesh Chandra Mishra
7A, Beli Road

You are hereby *ordered* to produce before me all the papers concerning your vehicle No. B.L.A, 1394 within a week from the date given below in connection with the monthly checking of vehicles held in October last. Failure to this will result in challan.

(Signature).....
Sub Inspector Police

हम माननीय लालबहादुर शास्त्री से नम्रतापूर्वक जानना चाहते हैं कि उनकी अधीनता में काम करनेवाला पुलिस-विभाग जिस भाषा का प्रयोग कर रहा है—नोटिस के अनुसार—क्या उसे शिष्ट कहा जा सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसजन बनाम कांग्रेसी मंत्री

गत २१-२२ मई को देहरादून में होनेवाला कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन 'गुप्त अधिवेशन' था। कांग्रेस के इतिहास में यह एक नई परम्परा इस बार से स्थापित की गई है। अखिल भारतीय राष्ट्रिय महासभा अपनी खुली नीति और खुली कार्यवाहियों के लिए प्रख्यात रही है। हमारे राष्ट्रपिता जो कुछ करते थे, खुले रूप में करते थे। उनके मन, वाणी और कर्म में दुराव का कहीं भाग नहीं था। उनकी राजनीति उनकी अपनी जीवनी के अनुरूप ही खुली पुस्तक थी। दुराव और छल-प्रपंच तथा आत्मगोपन उनके जीवन में कभी स्थान न पा सके थे। कारण, ऐसी बातें सत्य और अहिंसा के क्षेत्र से बाहर की थीं, जिन्हें गांधी जी का निश्छल हृदय कभी स्वीकार न कर सकता था।

इस बार होनेवाला 'गुप्त अधिवेशन' गांधी जी की नीति के अनुरूप नहीं था, यह सहज ही माना जा सकता है। इसीलिए इस प्रकार का अधिवेशन महासमिति के कुछ सदस्यों को उचित नहीं प्रतीत हुआ और उन्होंने इस पर आपत्ति की। ऐसी आपत्तियों के उत्तर में हमारे वर्तमान राष्ट्रपति ने जो कुछ कहा है वह विचारणीय है, क्योंकि वह हमारी महा-समिति की भावी नीति की ओर भी संकेत करता है। आपका उत्तर था "सन् १९३७ में कांग्रेस-द्वारा अधिकार ग्रहण किए जाने के पश्चात् आज प्रथम बार मंत्रिमण्डल के कार्य पर विचार हो रहा है। निस्सन्देह यह नया तरीका है, लेकिन इसका विरोध के बजाय स्वागत होना चाहिए।"

मंत्रिमण्डल के कार्य पर विचार होगा तो अनुकूल बातें भी सामने आएँगी और प्रतिकूल भी। वाद-विवाद के समय किसी की जबान पर नियंत्रण तो लगाया नहीं जा सकता, अतः संभव है कि कुछ सदस्यों ने ऐसी बातें भी कही हों जिनका संबंध तथ्य से कम और कल्पना से अधिक हो। ऐसी बातों का जनसाधारण में न फैलने देना ही अच्छा है, क्योंकि जब अतथ्य जनरव का रूप धारण कर लेता है तब वह शीघ्रता से प्रचार पा जाता है और जनमत को विकृत कर देता है। इस दशा में 'गुप्त अधिवेशन' का निश्चय करके हमारे जननायकों ने बुद्धिमत्ता का ही परिचय दिया।

महासमिति के इस गुप्त अधिवेशन से जो कुछ बाहर आ गया है उससे विदित होता है कि अधिवेशन में कांग्रेसी मंत्रियों और साधारण कांग्रेसियों के बीच काफी चखचख हुई। कांग्रेसियों ने मंत्रिमण्डल पर यह दोष लगाया कि मंत्रिगण गांधी जी की नीति का ठीक-ठीक पालन नहीं कर रहे हैं। उधर मन्त्रियों की यह शिकायत थी कि कांग्रेसजनों ने रचनात्मक कार्य को अग्रसर नहीं किया अतएव सरकारों के कार्य में रुकावट पड़ी।

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के कथनानुसार कमजोरी दोनों दलों की रही है। समिति के महामन्त्री ने इस बात को और भी स्पष्ट कर दिया है। उनका कथन है—"३० करोड़ की आबादी में मन्त्रियों की संख्या दो सौ से अधिक नहीं है, अतएव प्रत्येक कांग्रेसी मन्त्री नहीं बन सकता, जबकि प्रत्येक कांग्रेसी मन्त्रिपद से कम कुछ भी नहीं चाहता। कांग्रेसियों को चाहिए कि वे लोभ का त्याग करके रचनात्मक कार्य में जुट जाएँ और सरकार को इस प्रकार सहायता और बल दें?"

महामन्त्री महोदय का यह सुझाव सर्वथा समयानुकूल है और यदि प्रत्येक ऐसा कांग्रेसी, जो मन्त्रिपद से वियुक्त है, अपनी चित्तवृत्ति को रचनात्मक कार्य में नियंत्रित कर दे तो देश की सेवा भी अधिक हो और उसकी मानसिक चंचलता भी मिट जाए। इसीलिए गांधी जी ने अन्तिम दिनों में कहा था कि कांग्रेस को अब अपने को लोकसेवक-समाज के रूप में बदल देना चाहिए। पर यह योग-साधन प्रत्येक कांग्रेसी के मान का है, इसमें हमें सन्देह है। प्रलोभन पर विजय पाना जनसाधारण का काम नहीं है। और मन्त्रिपद ऐसी प्रलोभनीय वस्तु बन गई है जो बड़े-बड़े लोकत्यागियों और बलिदानियों को विचलित कर देती है, साधारण कांग्रेसी की तो बात ही क्या है?

पतन से बचने के लिए प्रलोभन से बचना आवश्यक है; पर यदि प्रलोभन को ही हटा दिया जाए तो सब टंटा सहज ही में दूर हो सकता है। गांधी जी के सच्चे अनुयायी होने का दम भरनेवाले यदि इन्द्रासन पर विराजमान होकर तप और त्याग दिखलाएँ तो उनकी प्रतिष्ठा जनता की दृष्टि में दिनदूनी रातचौगुनी बढ़ेगी। प्रथम बार पद ग्रहण करने पर कांग्रेसी मन्त्रियों ने अधिकतम वेतन पाँच सौ रुपया मासिक निर्धारित किया था। इस महत् त्याग की प्रशंसा विपक्षियों ने भी मुक्तकंठ से की थी। आज भी यदि मन्त्री कम-से-कम वेतन लें, झोंपड़ियों में न सही, साधारण किराए के मकानों में रहें, प्रतिवर्ष नई कारें न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लें, कूलरों और रेफ्रिजरेटरों का चस्का छोड़ दें और दावतों तथा पार्टियों की चकल्लस से अपने को दूर कर लें तो उन्हें लोकसेवा के लिए पर्याप्त समय भी मिले और वे छींटा-कशी से भी बचे रहें। गांधी जी यही चाहते थे; पर उनके अनुयायियों ने और कितनी भी उनकी बातें मानी हों, यह बात नहीं मानी। इसीलिए मन्त्रिमण्डल आज प्रतिस्पर्धा और पारस्परिक विद्वेष का अखाड़ा बन रहा है और उन गंदगियों को उकसा रहा है जिनमें स्वतंत्र भारत के वातावरण को अचिरकाल में ही दमघोट्टू बना सकने की ताकत है। क्या हमारी महासमिति समस्या के इस हल पर भी कभी ध्यान दे सकेगी?

पोस्टकार्ड का लागत मूल्य

युद्ध के दिनों में ब्रिटिश सरकार ने युद्धकर के रूप में पोस्टकार्ड का मूल्य दो पैसे से बढ़ाकर तीन पैसा कर दिया था। उस समय गांधी जी ने सरकार के इस कार्य की निन्दा यह कहते हुए की थी कि पोस्टकार्ड का प्रयोग गरीब जनता ही अधिक करती है, इसलिए इस कर का भार भारत की गरीब जनता पर ही अधिक जाएगा, जो कि अनुचित है।

युद्ध समाप्त हो जाने पर पोस्टकार्ड का मूल्य फिर दो पैसा कर दिया गया था, जो गत मार्च मास तक रहा। नए बजट में हमारी स्वाधीन सरकार ने पोस्टकार्ड का मूल्य फिर तीन पैसे कर दिया और लिफाफा का दो आने। इस मूल्यवृद्धि का औचित्य सिद्ध करने के लिए सरकारी विज्ञप्ति में कहा गया था—"एक पोस्टकार्ड पर लागत खर्च ८.२ पाई पड़ता है। अर्थात् दो पैसे में कार्ड बेंचने पर सरकार को कई लाख का घाटा सहना पड़ता है।"

यदि सरकारी आँकड़े ठीक हों तो पोस्टकार्ड का मूल्य तीन पैसा रखना अनुचित नहीं कहा जा सकता। पर हमें सखेद कहना पड़ता है कि ये आँकड़े ठीक नहीं हैं। श्री कुमारप्पा ने इस संबंध की एक टिप्पणी में लिखा है :—

"एक टीकाकार भाई उचित रोष के साथ इस संबंध में टीका करते हैं कि 'यदि एक पोस्टकार्ड की तैयारी में ८.२ पाई खर्च आता है तो सरकारी छापेखाने के व्यवस्थापक ऐसे अपव्यय के अपराध में तुरन्त हटा दिए जाने चाहिए। कारण, मैंने बंबई के तीन-चार छापाखानों में इसके बारे में पूछ-ताँछ की तो ज्ञात हुआ कि एक पोस्टकार्ड की तैयारी में दो पाई से अधिक खर्च नहीं आ सकता और बड़े पैमाने पर तैयार करने में तो प्रतिकार्ड एक पाई से अधिक लागत न लगेगी।'

"मैंने इस संबंध में स्वयं जाँच-पड़ताल करके देखा है। मुझे ज्ञात हुआ है कि लागत खर्च ८२ पाई होना चाहिए। शायद आँकड़ा बनानेवाले की असावधानी से दशमलव-चिह्न खिसक गया और इसी कारण ८२ पाई का ८.२ पाई हो गया है।"

क्या हमारी न्यायनिष्ठ सरकार इस पर पुनर्विचार करने की कृपा करेगी कि आँकड़े देने में यह भूल किसकी असावधानी से हुई? और यदि सरकारी आँकड़े गलत निकलें तो उनमें सुधार करके पोस्टकार्ड का मूल्य कम करके गरीब जनता का हित-साधन करेगी?

भारत और राष्ट्रमंडल

गत २७ अप्रैल को लन्दन में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उचित शर्तों और प्रतिबन्धों के साथ भारत के राष्ट्रमण्डल का सदस्य होने के संबंध में जो ऐतिहासिक समझौता किया था और जिस पर हमारे देश के कुछ मनस्वियों तथा पत्रों ने काफी टीका-टिप्पणी की थी, उसे १६ मई को दिल्ली में भारतीय विधानपरिषद् ने और २१-२२ मई को देहरादून में काँग्रेस महासमिति ने सोल्लास स्वीकार कर लिया, यह जानकर हमें आन्तरिक प्रसन्नता हुई। उक्त समझौता करते हुए नेहरू जी ने भारत की ओर से जो शर्तें रक्खी थीं, वे काफी स्पष्ट थीं और भारत के सम्मान को बढ़ानेवाली भी। यही नहीं, वे समय की गतिविधि के अनुकूल भी थीं। नेहरू जी ने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि "भारत विशुद्ध प्रजातंत्र राष्ट्र रहेगा। भारतीय विधान में सम्राट् का कोई स्थान नहीं रहेगा, न सम्राट् भारत की आभ्यन्तरिक व बाह्य नीति में किसी प्रकार का हस्तक्षेप ही कर सकेगा। सम्राट् केवल राष्ट्रमण्डल की एकता का प्रतीक रहेगा। भारत का अध्यक्ष या राष्ट्रपति सम्राट् का प्रतिनिधि नहीं माना जाएगा।"

इन शर्तों के साथ भारत ने यदि राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार कर ली तो इससे निस्सन्देह हानि कुछ भी नहीं हुई। पर लाभ क्या हुआ? इस प्रश्न का उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस विज्ञप्ति में मिलता है जो उक्त लन्दन-सम्मेलन के बाद प्रकाशित हुई है। विज्ञप्ति में कहा गया है—"ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी अफ्रीका, भारत, पाकिस्तान और लंका यह सम्मिलित घोषणा करते हैं कि राष्ट्रमण्डल के स्वतंत्र व समान सदस्यों के रूप में वे संगठित रहेंगे और शान्ति, स्वतंत्रता व उन्नति के लिए एक-दूसरे के साथ स्वतंत्रतापूर्वक सहयोग करते रहेंगे।"

भारत आज अनुभव कर रहा है कि अनेक रूप में सबल और सम्पन्न होते हुए भी वर्त्तमान संसार में वह अकेला नहीं टिक सकता। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद उसे अपनी शक्तियों का विकास करना है। यह विकास सर्वतोमुखी होना चाहिए; अतः इसके लिए विदेशों के सहयोग की आवश्यकता होगी। इस कार्य में जो देश सहयोग दे सकते हैं, वे दुर्भाग्य से इन दिनों दो परस्पर-विरोधी गुटों में संघटित हो रहे हैं। एक गुट का नेतृत्व 'अटलाण्टिक चार्टर' की ओट में अमेरिका कर रहा है और दूसरे दल का रूस। ऐसी आशंका भी की जा रही है कि इन दोनों गुटों में शीघ्र ही महायुद्ध छिड़ेगा, जो गत दो महायुद्धों से कहीं अधिक विनाशकारी होगा। यदि ऐसा हुआ तो भारत किस गुट का साथ देगा? क्या वह अमेरिका के पक्ष में जाएगा? क्या राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार करने का स्पष्ट अर्थ यही है? ये प्रश्न और ऐसे ही अन्य अनेक प्रश्न कुछ ऐसे नेताओं के द्वारा बारम्बार पूछे गए हैं, जो पंडित नेहरू के एतत्संबंधी निर्णय से असन्तुष्ट हैं। उत्तर में कहा गया है कि भारत की नीति ऐसे संकट-काल में तटस्थ रहने की हो सकती है। राष्ट्रमण्डल का सदस्य होने के नाते उसे कोई राष्ट्र या राष्ट्रमण्डल अपने पक्ष में लड़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। द्वितीय महायुद्ध के काल में आयर्लैण्ड ने ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का सदस्य होते हुए भी अपनी तटस्थता की नीति को ठीक-ठीक निबाहा था। पर युद्ध तो दूर की बात है। शान्तिकाल में भारत को जो कुछ करना है, उसके लिए उसे विदेशों की सहायता की आवश्यकता होगी। वह सहायता रूस से नहीं मिल सकती, क्योंकि रूस का रुख स्पष्टतया भारत-विरोधी है। उसके इशारों पर चलनेवाले भारतीय कम्यूनिस्ट हैदराबाद, बंगाल और मद्रास में जो कुछ कह रहे हैं और हमारी नवार्जित स्वतंत्रता को जड़-मूल से नष्टकर देश को रूस के हवाले करने में जिस प्रकार कृतसंकल्प दिखाई देते हैं, उससे भी भारत के संबंध में रूसी नीति का ज्ञान हो जाता है। दूसरी ओर इँग्लैण्ड है। गत दो-ढाई सौ वर्षों में भारत में अँग्रेजों ने जो सदाचार किए हैं, उनकी स्मृति अभी ताजी ही है। भारतीयों के हृदय में अँग्रेजों के प्रति जितना अपनत्व है, उसे अँग्रेज भी जानता है और भारतीय भी। पर हमें यह भी ज्ञात है कि अँग्रेज समयानुसार अपनी नीति बदलने में बहुत पटु होता है। वह युद्धकाल में चर्चिल-सरकार का अनुमोदन कर सकता है पर युद्धोपरान्त उसे अनावश्यक समझकर उखाड़ फेंक भी सकता है। उसकी परिवर्त्तन-शीलता का परिचय इधर पिछले दो-तीन वर्ष से तो हमें काफी मिल रहा है। इस दशा में यह आशा की जा सकती है, कि राष्ट्रमण्डल की सदस्यता से भारत को लाभ ही होगा, हानि नहीं। और जब हानि होने की नौबत आएगी, तब भारत अपना संबंध राष्ट्रमण्डल से तुरन्त तोड़ भी सकता है। तब उसे कोई बलपूर्वक सदस्य रख भी कैसे सकता है!

एकतंत्र : प्रजातंत्र

पंडित नेहरू पर इधर कुछ नेताओं और पत्रों ने एकतंत्र का समर्थक होने का आरोप लगाया है। इस आरोप का आधार यह है कि विधान-सभा में अपने द्वारा किए हुए लन्दन-समझौते को अनुमोदन के लिए उपस्थित करते हुए उन्होंने कहा था कि विधान-सभा या तो इसे ज्यों-का-त्यों स्वीकार करले; या फिर पूरे-का पूरा अस्वीकार कर दे। वे यह नहीं चाहते थे कि इस पर संशोधन उपस्थित किए जाएँ और उन संशोधनों पर बहस चले।

पंडित नेहरू का कथन उनकी प्रकृति के सर्वथा अनुरूप ही था। लन्दन की परिषद् में भाग लेने के लिए जाने से पूर्व उन्होंने कई भाषणों के द्वारा विधान-परिषद् के सामने भी और देश के सामने भी अपना मन्तव्य स्पष्ट कर दिया था। विधान-परिषद् यदि नेहरू जी के दृष्टिकोण से असहमत होती, तो उसी समय अपना विरोध प्रदर्शित कर सकती थी। यही काँग्रेस की महासमिति के संबंध में भी कहा जा सकता है। फिर लन्दन की उक्त परिषद् में सम्मिलित होने के लिए वे भारतीय राष्ट्र के प्रधान मन्त्री की हैसियत से गए थे, भारत के राजदूत की हैसियत से नहीं। प्रधान मन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने देश की ओर से संधि-विग्रह आदि जिस प्रकार चाहे, कर सकता है, क्योंकि वह राष्ट्र का वास्तविक प्रतिनिधि होता है और यह मान लिया जाता है कि उसे राष्ट्र का विश्वास और समर्थन पूर्णमात्रा में प्राप्त है। इस दशा में विधान-परिषद् के समक्ष केवल दो ही मार्ग रह जाते थे। एक तो यह कि उसके प्रधान मन्त्री ने जो कुछ किया है उसका वह सर्व सम्मति से अनुमोदन करे और संसार पर यह प्रकट कर दे कि भारत के प्रधान मन्त्री को समूचे राष्ट्र का विश्वास प्राप्त है। दूसरा यह कि विधान-परिषद् उनके कार्य का अनुमोदन न करे और संसार पर यह प्रकट कर दे कि भारत के प्रधान मन्त्री को अपने देश का विश्वास प्राप्त नहीं है। इस दूसरी स्थिति में प्रधान मन्त्री के लिए त्यागपत्र देने के अतिरिक्त दूसरा विकल्प नहीं रह जाता।

रही संशोधन की बात; हमारी समझ से संशोधन की तो ऐसे प्रसंग में गुंजायश ही नहीं है। यदि नेहरू जी का समझौता संशोधित रूप में स्वीकृत किया जाता तो इसका फल यह होता कि उक्त संशोधित रूप पर पुनर्विचार करने के लिए लन्दन में दुबारा परिषद् बुलाई जाती और यदि परिषद् उसमें कुछ और परिवर्त्तन-परिवर्द्धन कराना चाहती तो पंडित नेहरू फिर भारत आकर विधान-परिषद् की स्वीकृति प्राप्त करते। इस तरह यह चूँ-चूँ का मुरब्बा बन जाता, और प्रधान मन्त्री प्रधानमन्त्री न रहकर एक राजदूत भर रह जाता जो अपने राष्ट्र की सम्मति प्राप्त किए बिना अपने अधिकार से कुछ कर ही नहीं सकता।

इन तथ्यों पर विचार करते हुए हमें तो नेहरू जी का एतत्संबंधी रुख सर्वथा न्यायोचित और युक्ति-युक्ति प्रतीत होता है और उसे किसी दशा में एकतंत्र का पोषक तथा प्रजातंत्र का विरोधी नहीं कहा जा सकता। रही विधान-परिषद् के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद के 'रूलिंग' की बात; सो राजेन्द्र बाबू ने संशोधनों की अनुमति देते हुए विधान-परिषद् की परम्परा का पालन करने की बात कही थी; संशोधनों की उपयोगिता या अनिवार्यता की नहीं। इस प्रकार दोनों पक्ष न्याय पर ही थे। प्रसन्नता की बात है कि यह रस्म-अदायगी भी सुन्दरता के साथ हो गई और यह एक बार फिर स्पष्ट हो गया कि पंडित नेहरू को भारत का समर्थन जिस मात्रा में प्राप्त है, उसके अनुपात में विरोध की मात्रा समुद्र में कुछ बूँदों

'यथाकाल प्रबोधिनाम्'

गांधी जी की मृत्यु के बाद से अब तक यह प्रकट हो रहा था कि उस महामानव ने शिवशंकर की भाँति साम्प्रदायिकता के समस्त गरल को पान कर लिया और अब उसकी ज्वाला मानवजाति को न जला सकेगी। पर यह धारणा अब गलत प्रमाणित हो रही है। आज ऐसा लग रहा है कि वह गरल वास्तव में हतवीर्य या हतप्रभाव नहीं हुआ था, वह केवल कंचुकावस्था में चला गया था, प्रतिकूल वातावरण पाकर। आज अनुकूल वातावरण मिला तो वह फिर फुफकार उठा है!

इस अभागे देश में साम्प्रदायिकता का विष वपन करने का श्रेय प्रमुखतः तीन संस्थाओं को प्राप्त है—(१) मुस्लिम लीग, (२) हिन्दू महासभा और (३) राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ।

भारत के बटवारे के पश्चात् मुस्लिम लीग ने कम-से-कम भारतीय संघ के क्षेत्र में अपने पंजे समेट लिए थे और उसके सदस्य राजभक्ति का अभिनय करने लगे थे। 'नेशनल प्रेस' का ताजा समाचार है कि "आलइंडिया मुसलिम लीग के अध्यक्ष मुहम्मद इस्माइल ने इधर सभी लीगियों के नाम गश्ती पत्र भेजे हैं, जिनमें उन्हें लीग की हलचलें फिर से जारी करने की सलाह दी गई है। इधर लखनऊ के धनिक और ताल्लुकेदार मुस्लिम भी महमूदाबाद के राजमहल में गुप्त बैठकें करके इस योजना को सफल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यहीं नहीं, व्यापारियों के वेश में पाकिस्तान से आए हुए कुछ सज्जन भी इसमें योगदान कर रहे हैं, जिनका नेतृत्व मौलाना जमालुद्दीन अब्दुल बहाब कर रहे हैं।" 'नेशनल प्रेस' के इस संवाद में कितनी सचाई है, इसकी जानकारी हमें नहीं है, पर हमारी राष्ट्रिय सरकार को अवश्य होनी चाहिए।

हिन्दू महासभा ने भी अपना रंग फिर बदला और राजनीति में भाग लेने का दुबारा निश्चय कर लिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपना संविधान सरदार पटेल के सामने उपस्थित कर दिया है, जिसमें संघ को यद्यपि प्रजातांत्रिक रूप देने की बात मानी गई है, फिर भी संघ-चालक को चुनाव के नियम से मुक्त रक्खा गया है, अर्थात् उसका पद डिक्टेटर के समकक्ष रक्खा गया है जो संघ की नीति का संचालन करेगा।

ये तीनों संस्थाएँ समय रहते ही निर्विष हो जाएँ, ऐसा प्रयत्न करने की आशा हम अपनी लोकप्रिय सरकार से कर सकते हैं।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व की जल-शक्ति

श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

दुनिया में कोयला इतनी तेजी से खर्च होता जा रहा है कि विद्वानों का अनुमान है कि सौ वर्ष बाद कोयले की शक्ल न दिखाई पड़ेगी। बिजली के इस जमाने में हमें कोयले की सबसे अधिक जरूरत इसीलिए है कि उससे बिजली पैदा हो। अतः बिजली पैदा करने के लिए दूसरा साधन ढूँढ़ा जा रहा है और वह है जल-शक्ति। सभी सभ्य देश इस जल-शक्ति को बढ़ाने में ऐसे जुट गए हैं कि अब यह कहना अनुचित न होगा कि आगे चलकर वही राज्य सबसे आगे बढ़ जाएगा जिसके पास सबसे अधिक जल-शक्ति होगी।

आँकड़ों में

किसके पास कितनी जल-शक्ति है, इसका हिसाब लन्दन से प्रकाशित होनेवाले 'इञ्जीनियरिंग' पत्र ने लगाया है। जल-शक्ति का अनुमान "घोड़ा-शक्ति"—यानी कितने घोड़े की ताकत के बराबर है---से लगता है। पाठक इसे ध्यानपूर्वक समझने का प्रयास करें।

ग्रेट ब्रिटेन तथा उत्तरी आयर्लैण्ड में ५, ५०,००० घोड़ा-शक्ति (इसे हम संक्षेप में घु० श० कहेंगे) की जल-शक्ति पैदा की जा चुकी है---उन्नत हो चुकी है। अनुमान किया जाता है कि ७,००,००० घु० श० और उन्नत की जा सकती है। इतनी शक्ति होने पर भी, वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इङ्गलैण्ड को जितनी बिजली चाहिए, उसे पैदा करने पर ताकत में कमी होगी।

बेलजियम ऐसे छोटे देश में ३२,००० घुड़शक्ति उन्नत है---और अधिक पैदा करने की कोई आशा नहीं है। हालैण्ड में १००० घुड़ श० उन्नत है और २५,००० घुड़ श० पैदा की जा सकती है। कल-कारखानों की वृद्धि के लिए इस शक्ति की बढ़ती होनी ही चाहिए। अतः ऊपर लिखे सभी देशों का औद्योगिक विकास सीमित ही हो सकता है।

ब्रिटेन को जल-शक्ति चाहिए और अपने सभी जल-स्रोतों को काम में लाने पर भी उसकी कमी पूरी न होगी। इसलिए वहाँ सोचा जा रहा है कि उत्तरी स्कॉटलैण्ड के जल-कोष से सहायता ली जाए और सुदूर नार्वे से, समुद्र के भीतर-ही-भीतर लाइन डालकर, इङ्गलैण्ड में बिजली लाई जाए। उत्तरी स्कॉटलैण्ड में सन् १९४४ की योजना के अनुसार पानी से कुल १५,००,००० किलोवाट् बिजली पैदा हो रही है और आगे चलकर ६५,००,००० किलोवाट् अधिक पैदा होने लगेगी। पर, नार्वे में अपार जल-कोष है। अभी तक उसके जल-कोष का केवल १६ प्रतिशत ही वहाँ पर खर्च हो रहा है। कुल जल-शक्ति लगभग ३,००,००,००० घु० श० है जिसमें से नार्वे को अधिक-से-अधिक एक करोड़ घुड़शक्ति चाहिए। बाकी दो तिहाई वह किसी को दे सकता है---जो भी माँगे, यद्यपि सम्भावना ब्रिटेन को ही देने की है।

अमेरिका-अफ्रिका

किसी राज्य के बड़ा या छोटा, सभ्य या असभ्य होने से जल-शक्ति पर प्रभाव नहीं पड़ता। जल-शक्ति के युग में उसी राज्य की तूती बोलेगी, जिसके प्राकृतिक साधन अधिक हों। उदाहरण के लिए कुल मिलाकर उत्तरी अमेरिका में ८,१०,००,००० घु० श० है। अफ्रिका में २७,४०,००,००० घु० श० है। उत्तरी अमेरिका तथा अफ्रिका की उन्नत तथा अनुन्नत जल-शक्ति में बड़ा अन्तर है। अफ्रिका के पास ८,६०,००,००० घु० श० अधिक है। उत्तरी अमेरिका के आँकड़ों में दक्षिण अमेरिका भी जोड़ लेने पर अफ्रिका की ऊपर लिखी अधिकता होगी। दक्षिणी अमेरिका की कुल जल-शक्ति ६,६०,००,००० घुड़शक्ति है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के पास ५,७०,००,००० घु० श० है, जिसमें से २,४०,००,००० काम में लाया जा सकता है। कनाडा के पास ४ करोड़ घु० श० है, जिसमें से केवल १ करोड़ ही काम में लाया जा सका है। ब्रेजिल के पास १३,६०,००० की उन्नत घुड़शक्ति है और २,८०,००,००० का सुरक्षित कोष है। इस प्रकार अमेरिका, कनाडा, ब्रेजिल---सभी को अपने यहाँ काफी जल-शक्ति मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरप में

पश्चिमी योरप की जल-शक्ति कुल ४,६०,००,००० घु० श० है। इसमें से २,४०,००,००० उन्नत है---काम में आ रही है। पूर्वी योरप में, जिसमें योरपीय रूस भी शामिल है, २,६०,००,००० की घु० श० तथा ३०,००,००० की उन्नत शक्ति है। इस प्रकार पश्चिमी भाग (नार्वे को मिलाकर) पूर्वी भाग से कहीं आगे है। स्पेन भी पश्चिमी योरप में जोड़ लिया गया है, इङ्गलैण्ड नहीं। स्पेन की जल-शक्ति कुल ६० लाख घु० श० तथा उसकी उन्नत शक्ति १० लाख है। पूर्वी भाग की उन्नत शक्ति ८ गुना अधिक है---इससे पश्चिमी योरप की औद्योगिक प्रगति का अनुमान लग सकता है। पर इसी हिसाब से पश्चिम में पूर्व योरप की तुलना में अनुन्नत शक्ति १६० लाख घु० श० अधिक है। इसमें नार्वे की अधिकांश अनुन्नत है।

पूर्वी योरप में रूस में १,४०,००,००० घु० श० अनुन्नत है। पूर्वी भाग में सबसे अधिक औद्योगिक प्रदेश जेकोस्लोवाकिया है। पर, वहाँ पर जल-शक्ति शून्य के बराबर है। इसीलिए जेक देश को कोयला आदि पर ही निर्भर करना पड़ेगा। रूमानिया ऐसे बड़े राज्य में केवल १,२७,००० घु० श० उन्नत है---३० लाख घु० श० अभी उन्नत नहीं हुई है। यदि जल-शक्ति आगे चलकर औद्योगिक प्रगति में बड़ा भाग लेनेवाली है तो निश्चयतः पूर्वी योरप (जिसमें रूस भी शामिल है) पश्चिमी योरप का मुकाबला नहीं कर सकेगा।

एशिया—भारत

रूस का एशिया का भाग यानी साइबेरिया भी इस दिशा में बहुत पिछड़ा हुआ है। वहाँ केवल १,३४,५०० घु० श० से काम लिया जा सका है। अमेरिका के उत्तरी-दक्षिणी भागों को मिला देने के बाद जल-शक्ति में वह सर्व प्रथम है। पर उसके बाद नम्बर एशिया का ही है। एशिया की कुल जल-शक्ति १५ करोड़ घु० श० है और इस दृष्टि से सबसे बड़ी शक्ति भारतवर्ष की है। एशिया में सबसे बड़ी जल-शक्ति भारत में है। भारत में जल-शक्ति से काम लेने के लिए बड़ी व्यापक योजनाएँ बन रही हैं। यदि उत्तरी बंगाल की तिस्ता नदी तथा संयुक्त प्रान्त की रिहन्द नदी का बाँध बन गया, तो कम-से-कम १०,००,००० किलोवाट बिजली अधिक पैदा होने लगेगी और इन प्रान्तों का, बिहार को मिलाकर, बड़ा भारी औद्योगिक विकास हो जाएगा। अभी हमारे देश में जल-शक्ति से काम लेने का असली प्रयत्न हुआ ही नहीं है। अन्यथा हमारा संसार में सबसे बड़ा उद्योग-प्रधान राष्ट्र होता। भारत तथा लंका को मिलाकर कुल जल-शक्ति ३,६० ००,००० घु० श० है, जिसमें से अभी केवल ६,८८ ८०० घु० श० उन्नत हो पाई है।

हमारे देश में जल-शक्ति की ओर ध्यान गए अभी ढ़ाई दर्जन साल ही हुए हैं। इसकी योजना का प्रारंभ संयुक्त प्रान्त के तत्कालीन चीफ इञ्जीनियर श्री गाङ्गुले ने सन् १९१८ से किया था। इस दिशा में हमें अभी बहुत कुछ काम करना है।

मिश्र में कोयला पैदा नहीं होता। पेट्रोल भी बहुत कम पैदा होता है। अतः मिश्र की औद्योगिक प्रगति के लिए जलशक्ति प्राप्त करनी ही होगी। इसीलिए मिश्र की सरकार नील नदी पर बाँध बनाकर जल-शक्ति प्राप्त करना चाहती है।

चीन (समूचे चीन) में २,२०,००,००० की जल-शक्ति (घु० श०) है। पर वहाँ कुछ भी उन्नत नहीं है। जापान में ६० लाख घु० शक्ति उन्नत है तथा ७० लाख घु० श० उन्नत करनी शेष है। कोयले के अभाव में जापान काफी औद्योगिक प्रगति कर सकता है, कर रहा है और कर सका था।

प्रशान्त महासागर

प्रशान्त महासागर में तथा भारतीय महासागर में उद्योग-प्रधान आस्ट्रेलिया में जल-शक्ति काफी कम है। फिर भी, आस्ट्रेलिया में २,५०,००० की घु० श० काम लिया जा रहा है और १० लाख अनुन्नत पड़ी हुई है। न्यूजीलैण्ड के टापू में २० लाख की जल-शक्ति में ८,१६,००० घु० श० पैदा की जा सकी है। जावा में १,४०,००० घु० श० काम में है। बोर्नियो के टापू में बहुत अनुन्नत जल-शक्ति पड़ी हुई है।

इस प्रकार हमने विश्व के सभी प्रमुख राज्यों में प्राप्त तथा उन्नत जल-शक्ति के आँकड़े दे दिए। अब पाठक इससे अपना निष्कर्ष निकालें। यह ध्यान में रखना चाहिए कि केवल जल-शक्ति के होने से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं चल जाता। अनेक स्थान ऐसे हैं जहाँ काफी जल-शक्ति है, पर वहाँ पर कोई काम निकाल लेना प्राकृतिक दृष्टि से अभी तक असम्भव है। आगे विज्ञान कितना सम्भव कर देगा, यह कहना कठिन है।

यह स्पष्ट है कि अब उद्योग-धन्धों का विकास जल-शक्ति के निकट ही होगा, जिससे हमारे वर्त्तमान उत्पत्ति-केन्द्र टूट भी सकते हैं।

'कारस्कर का दार्शनिक' की तीसरी कहानी

क्या सब शून्य है ?

कुमारी विपुला देवी

मेरा ध्यान खो गया, मेरी तर्क शक्ति जाती रही। मैं क्या कर रहा हूँ, यह भी मैं समझ नहीं सकता था। शापग्रस्त नारद के समान मैं चारों दिशाओं में बिना रुके भ्रमण कर रहा था। एक वन से दूसरे वन में, एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर मैं सैकड़ों वर्ष भटकता-घूमता रहा। इस प्रकार पता नहीं, कितना समय व्यतीत हो गया।

एक दिन ऐसे ही घूमते हुए मैं एक नगर में जा पहुँचा। शृंगीनाद करते हुए एक भिक्षु को कह ते सुना—"लोक में यावत् सत्य धर्म हैं, उनमें चार आर्य सत्य श्रेष्ठ हैं। धर्मों में वैराग्य श्रेष्ठ है और मनुष्यों में सर्व-ज्ञानी बुद्ध भगवान् ही श्रेष्ठ हैं। इसलिए हे मनुष्यो, भगवान् की करुणामय छाया के तले आओ, सत्यकामी बनो।" कानों के द्वारा वह वाणी अन्तःकरण में उतर गई, विक्षिप्तता दूर हो गई। स्थिरबुद्धि होकर मैं सोचने लगा—"मैं एक बार सत्यकामी बना, किन्तु पाया कुछ भी नहीं। अब दूसरी बार प्रयत्न कर देखने में क्या हानि है ?" मैंने उसके समीप जाकर पूछा—"भगवन्, संसार क्या है, यह जानना चाहता हूँ।"

"यह संसार क्षणिक है। जो कुछ दिखाई देता है, वह सब क्षणिक है। दुःख सर्वव्यापी है और स्वलक्षण तथा शून्य है।" उत्तर मिला।

मैंने कहा—"और प्रमाण क्या है इस बात का ?"

"इनसे ही परम पुरुषार्थ की सिद्धि होती है और मोक्ष प्राप्त होता है। शून्य में सब वस्तुओं का लय हो जाना ही मुक्ति है।" उसने कहा।

मैंने कहा—"भगवन्, मैं दुःखी हूँ। जिस शिवानी के लिए मैंने हेमप्रभ को मारा, वह भी नहीं मिली और न जीवन-रहस्य का उद्घाटन ही कर पाया। सोमरस पान करके दस सहस्र वर्ष की जो अमरता खरीदी, वह अब बोझ प्रतीत हो रही है। बताइए, मेरा निस्तार कैसे होगा ?"

भिक्षु ने चकित दृष्टि से कहा—"तुमने किसकी हत्या की है ? आर्यदेव के रहते तुम क्यों मनोव्यथा सहते हो ? चलो, बुद्ध की शरण में चलो और संघ-धर्म-द्वारा शान्ति प्राप्त करो।"

जब मैं उस प्रसिद्ध उपदेशक आर्यदेव के समीप पहुँचा, त्राहिमाम् करते हुए उनके चरणों पर गिर पड़ा। उन्होंने मुझे उठाकर हृदय से लगा लिया और पापनाशक शान्तवाणी से बोले—"हे सिद्धिविदारिक (नवीन भिक्षु), भगवान् की शरण में आकर भी क्यों रोता है ? तू शान्त हो जा और निर्वाण का सुख प्राप्त कर।"

मैंने कहा—"प्रभु, मैं अत्यन्त पापमति हूँ। दुःख और पापाग्नि से मेरा सारा शरीर और हृदय जल रहा है। यद्यपि मैं परलोक और पाप-पुण्य नहीं मानता, परन्तु फिर भी मेरी आँखों में नींद नहीं है।"

उन्होंने कहा—"यह संसार ही दुःखरूप है। सब जीव इससे छुटकारा पाने का प्रयत्न करते हैं। ज्ञान ठीक होने से दुःख का नाश हो जाता है, आर्य सत्य इस संसार के दुःख सागर से छूटने का उपाय है। संकल्प से क्रिया होती है। तृष्णा को त्यागकर मनुष्य सत्यसंकल्प बनता है और तब वह निरर्थक सहस्र पदसमूहों को त्यागकर एक अर्थवाले सारगर्भित पद को ग्रहण करता है, जिसके सुनने मात्र से शान्ति होती है।"

मैंने कहा—"हे भगवन्, मैं आपके स्पर्शमात्र से अपने में शुद्धता और शान्ति का अनुभव कर रहा हूँ, किन्तु मैंने अपने गुरु आचार्य बृहस्पति की हत्या की है, अपने मित्र गन्धर्व राजकुमार हेमप्रभ के साथ विश्वासघात किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजकन्या शिवानी की मृत्यु का कारण बना हूँ, इससे मेरे पाप का अन्त नहीं है। क्या मरने के बाद मुझे नरक में जाना होगा और क्या सचमुच स्वर्ग-अपवर्ग है, जैसा कि हेमप्रभ कहता था ? वह तो आत्मा भी मानता था और कर्म-अपकर्म भी। यदि आत्मा है तो मुझे इन लोगों से फिर मिलना पड़ेगा और यदि नहीं है तो मैं यह सोचकर फिर भी थोड़ा निश्चिंत हो सकता हूँ कि मैंने जो पापकर्म किया है, उसका प्रायश्चित्त करके, उससे मुक्त हो जा सकता हूँ।"

आर्यदेव ने आश्चर्य में आकर पूछा—"हेमप्रभ के साथ तुमने विश्वासघात क्यों किया ?" "भगवन्, सुन्दरी शिवानी को खो देने और उसके राजकोष के रत्नों के बँटवारे के डर से ?" मैंने कहा और अकपट चित्त से सारी कथा कह सुनाई।

आर्यदेव ने सब कुछ सुनने के बाद कहा—"न आकाश में, न समुद्र में, न पर्वतों की खोह में कोई ऐसा स्थान है, जहाँ प्राणी अपने किए हुए पापकर्मों से त्राण पा सके। दूसरों को हानि पहुँचाना सरल है, किन्तु दूसरों की भलाई करना अत्यन्त कठिन है। सत्यकाम, निश्चय जान लो कि जिस प्रकार वायु में धूल फेंकने से वह फेंकने-वाले ही पर उड़ती है, इसी प्रकार मनुष्य के कुकर्म, जो दूसरों को सताने के निमित्त किए जाते हैं, उसी को कष्ट-दायक होते हैं। भलाई की सुगन्ध, सुवासित पुष्पों की सुगन्ध से कहीं मधुर है और दुःखों का निवारण केवल विश्वास से, सच्चरित्रता से, शौर्य से, विचारों से, न्याय से और सिद्धान्तों के सतत अभ्यास एवं पूर्णध्यान से ही हो सकता है।"

"प्रभु, शिवानी की छाया जैसे मुझ पर अट्टहास करती मेरे पीछे-पीछे डोलती रहती है। उससे कैसे छूटूँगा ?" मैंने कातर होकर पूछा।

"इसका कारण यह है कि तुम शाश्वत आत्मा के संस्कार में अब भी जकड़े हो। इस सारे प्रपंच का मूल 'अहंकार' है। इसका जड़-मूल से नाश कर देने से ही अन्तःकरण में रमनेवाली तृष्णाओं का अन्त हो सकता है, भगवान् बुद्ध के इन वचनों को क्या तुमने नहीं सुना है ?"

"हे भगवन्, आप में मैं भगवान् बुद्ध के दर्शन कर रहा हूँ और आपके श्रीचरणों में रहकर निश्चय ही शान्ति पाऊँगा।" मैंने कहा।

इसके उपरान्त कई वर्ष बीत गए। मैंने आचार्य आर्यदेव के समीप रहकर क्रमशः उन सब बातों को सीख लिया, जो वे जानते थे। शीघ्र ही मेरी त्वरित ग्रहणशक्ति की बड़ाई सारे देश में फैल गई और आचार्य-द्वारा रक्त मेरा नाम प्रज्ञाकीर्ति सर्वख्यात हो गया।

एक दिन जब मैं पिंडयात (भिक्षा) के हेतु ग्राम में गया, सहसा एक गृह का द्वार खोलकर एक युवती मेरे सन्मुख आ खड़ी हुई। वीणा-विनिंदित स्वर में उसने एक दम कहा—"भिक्षु, क्या तुम सदैव भ्रमण किया करते हो ? क्या तुम कभी वैशाली भी गए हो ?"

यद्यपि मैंने स्त्रियों की ओर देखना और बोलना सब कुछ त्याग दिया था किन्तु फिर भी आँखें इस मधुर प्रश्न के कानों में पड़ते ही स्वतः ऊपर उठ गईं। क्या देखा, शुभ्र वस्त्रावृता, निराभरणा, श्यामा युवती सामने खड़ी है। उसका कंठस्वर जितना मधुर था, सौन्दर्य वैसा अपरिमित नहीं था, जिसकी कल्पना उस स्वर के कर्णकुहरों में प्रविष्ठ होते ही अचानक मन में जाग उठी थी। मैंने निराश होकर अपनी दृष्टि नीची कर ली और भिक्षापात्र आगे बढ़ा दिया। युवती ने भिक्षान्न उसमें डाल दिया और अपना प्रश्न दोहराया। अपने मुँह पर अंगुली रखकर, मौन रहने का संकेत करता, मैं ज्योंही आगे बढ़ा, युवती ने निराश स्वर में स्वतः कहा—ओह! भिक्षु, आज तुम्हारा मौन दिवस है। कल बताना और इधर से ही जाना।"

उसका यह स्वर भी कानों में गूँज उठा। अद्भुत मिठास थी उसकी वाणी में और हृदयगत भावों पर उसके शब्द जैसे सीधी चोट करते थे। उनके प्रभाव से बचना असम्भव था। मैं वहाँ से चला आया किन्तु किसी कार्य में मन नहीं लगता था। रह-रहकर उस युवती का वह मधुर स्वर कानों में झंकृत हो उठता था। मैं जानता था कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ, वह उचित नहीं है, फिर भी दूसरे दिन मैं उधर से निकला।

युवती झपटकर सामने आई और उसने कहा—"भिक्षु, क्या तुम सदैव भ्रमण किया करते हो ? क्या तुम कभी वैशाली गए हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अब अपने को रोक नहीं सका। कहा—"भिक्षु सदैव भ्रमण ही किया करते हैं। मैं बहुत दूर-दूर तक गया हूँ, किन्तु तुम क्यों पूछ रही हो ?"

"यदि तुम वैशाली गए हो, तो अवश्य श्रेष्ठ ललित को देखा होगा। वह श्रमणों और श्रावकों का बड़ा आदर करता है।" उसने कहा।

उसके काले दीर्घ नेत्रों में इतनी चमक और उत्साह था कि मुझे नहीं मालूम कि ऐसे चमकीले सुन्दर नेत्र मैंने पहले देखे थे या नहीं। इच्छा होती थी कि उसे देखा ही करें। मैंने हृदय में अद्भुत शान्ति-सुख का अनुभव करते हुए कहा—"मैंने उसे देखा नहीं, किन्तु क्या तुम्हें उससे कोई प्रयोजन है ?"

उसने करुण भाव से मुस्कराकर कहा—"यदि तुम वैशाली जाना तो उससे अवश्य मिलना और कह देना कि नीलतारा उसे पूछ रही थी। बोलो, कह दोगे न ?"

मैं अस्वीकार न कर सका। कहा—"कह दूँगा। वह तुम्हारा कौन है ?"

प्रश्न अनसुना करके, वह मेरी स्वीकृति मात्र से उत्फुल्ल हो उठी। उसने कहा—"भिक्षु, तुम बड़े अच्छे हो। मेरी माता न जाने क्यों भिक्षुओं को कोसती हैं। मैं कभी उनकी बात नहीं मानती। जैसे ललित सबका आदर करते हैं, मैं भी करती हूँ। किन्तु आज तक जितने भिक्षुओं को मैंने देखा, तुम उन सबमें अच्छे हो।" कहती हुई गृह के अन्दर चली गई।

मैंने भिक्षा माँगने के लिए ज्योंही मुख खोलना चाहा, देखा वह पहले से परिपूर्ण है। किस समय नीलतारा ने उसे भर दिया, मैं यह भी न जान सका। स्त्रियाँ सचमुच ही सम्मोहन जानती हैं, इस बात पर मुझे विश्वास हो गया। भगवान् ने इसीसे तो उनसे दर्शन-वार्त्ता का निषेध किया है ! मन-ही-मन लज्जित होकर मैं शीघ्र वापस लौट आया।

उसके अनन्तर मेरे हृदय में सदैव वैशाली-यात्रा की आकांक्षा सजीव रहने लगी। इच्छा न करने पर भी उस ललित का स्मरण आए बिना न रहता, जिसके लिए नीलतारा ने अपना संदेश दिया था। वर्षाकाल समीप आने पर गुरुदेव ने मुझे अपने समीप बुलाया और पूछा—"वत्स प्रज्ञाकीर्ति, क्या तुम वैशाली जाओगे ? वहाँ के संघ-विहार से तुम्हारे हेतु आमंत्रण आया है।"

मन-ही-मन हर्षित होकर, कृत्रिम गाम्भीर्य धारण करके मैंने उत्तर दिया—"आचार्य की जैसी आज्ञा हो।"

"वत्स, मैं चाहता हूँ कि तुम वैशाली को अपने वाक्-चातुर्य्य से निर्वाक् बना दो। अब तो कोई धर्मतत्त्व तुमसे छिपा नहीं रह गया है। मैं जितना जानता हूँ, उतना ही तुम भी जानते हो।"

यद्यपि धर्मानुसार मुझे अरूपराग से बचना चाहिए था, इस पृथ्वी पर ऐश्वर्य की इच्छा तो दूर रही, स्वर्गादि में भी उत्तम स्थान और यश-आदर को प्राप्त करने की इच्छा तक न करनी चाहिए थी, किन्तु उस समय मैं आचार्य की बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वैशाली जाते समय मेरे अन्तःकरण में कुछ अद्भुत कल्पनाएँ और स्वप्न विद्यमान थे, किन्तु मैं उस समय इस सत्य को न जान सका। और जिस समय जाना, अवसर हाथ से निकल चुका था।

नीलतारा ने कहा था, ललित बहुत श्रेष्ठ पुरुष है। सभी अभ्यागतों का एक-सा आदर करता है और उसमें सत्यज्ञान की उत्कट अभिलाषा है। मैंने जब ललित को देखा, तब ऐसा प्रतीत हुआ कि मानों नीलतारा ने जो कहा था, वह इस पुरुष की छाया की पदधूल के भी बराबर नहीं। जैसा सुन्दर गौर वर्ण, साँचे में ढले अंग, गम्भीर भावपूर्ण काली पुतलियोंवाले नेत्र, ऊँचा ललाट और तीक्ष्ण नासिका उसकी थी, उसे देखने पर ऐसा प्रतीत होता था, मानों साक्षात् बोधिसत्त्व सामने खड़े हों। उसकी वाणी बहुत मधुर थी और दूर से केवल कंठस्वर सुनने मात्र से हृदय में अपूर्व शान्ति उत्पन्न होती थी। सहसा यह विश्वास होना कठिन था कि वह साधारण मनुष्य के समान वैसे ही विकारग्रस्त है और उसमें कुछ अन्तर नहीं है। किन्तु कुछ ही दिवसों में मैं समझ गया कि वह कैसा भी प्रभावशाली हो, उदार हो, रूपवान् हो, निर्वाण-प्राप्ति के हेतु उसे मेरी सहायता की बड़ी आवश्यकता है। मुझे आचार्य आर्यदेव के वचन स्मरण आए। मैंने निश्चय किया कि 'निर्वाण-प्राप्ति' में मैं उसकी सहायता करूँगा। नीलतारा को दिया हुआ वचन मैं प्रायः भूल गया। कभी-कभी उसका स्मरण आता परन्तु मैं उसे टाल जाता। ललित का उपकार करने की भावना क्रमशः दृढ़ होती जाती।

बहुत दिन बीते। मैं अपना कल्पना-जाल बुनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। अन्त में एक दिन ललित को सन्मुख पाकर बोला—"ललित, अब किस तृष्णा में पड़े हो? क्या नहीं जानते कि तृष्णा से प्रवृत्ति होती है और तृष्णा से होना होता है, कारण जब प्रवृत्ति होगी तो उसकी पूर्ति के लिए जीवन होना चाहिए। अतएव भव से जन्म और जन्म से मरण की उत्पत्ति होती है। क्या इस दुःख का नाश नहीं करना चाहते?"

"चाहता हूँ, भन्ते, किन्तु कर्त्तव्य का पाश किस प्रकार एकदम तोड़ दूँ।"

"ललित, क्या तुमने भगवान् तथागत के इस उपदेश को नहीं सुना है कि उत्पत्ति पूर्वजन्म की अविद्या, उससे उत्पन्न हुए कर्म और कर्म से बने हुए संस्कारों से होती है। इस दुःख के नाश के लिए अविद्या का नाश करना वांछनीय है और यह शृंखला तीनों जन्मों से सम्बन्ध रखती है। पूर्वजन्म का संचय विज्ञान में रहता है और उसी से जीवन का प्रारम्भ होता है। इन्द्रिय-कर्मों से जो सुख-दुःख होता है, उससे उत्पन्न होनेवाली तृष्णा और तृष्णा से उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति आगामी जन्म का कारण बनती है। इस शृंखला से छुटकारा पाए बिना निर्वाण कहाँ?"

ललित मेरी ओर देखकर मुस्करा या। उसने कहा—"भगवान् तथागत के उपदेशों को मैंने सुना है किन्तु, भन्ते, वे आपके मुख से निकल कर विचित्र प्रभाव मुझ पर डाल रहे हैं। मुझे आप निर्वाण-मार्ग बताएँ। मैं उस पर चलने के लिए कृतसंकल्प हूँ।"

मैंने समझा था कि उसे मार्ग पर लाने के लिए बहुत समझाना पड़ेगा किन्तु उसे इतने शीघ्र पथ पर आते देखकर विस्मित होकर पूछा—"क्या तुम भगवान् बुद्ध की शरण में आते हो?"

"क्यों न आऊँगा? जिस वैशाली पर भगवान् का इतना प्रेम था कि अंतिम बार जब वे यहाँ आए थे, तब जाने के पूर्व विह्वल हो उठे थे। कुछ व्याकुल से होकर बोले थे कि अन्तिम बार इस नगरी को देख लूँ। उसी नगरी के प्रेमवश मैं अब तक यह सोचता था कि भगवान् ने जिसे दृष्टि फिराकर देखा था, उसके सौन्दर्य में न्यूनता न आने पाए। उसका वैभव, उसकी सार्थकता पूर्ववत् बनी रहे।" उसने कहा।

मैं विचार में पड़ गया, बोला—"मैं तुम्हारा गुरु नहीं बनूँगा। तुम संघ के स्थविर से दीक्षा ग्रहण करो मैं केवल सहपाठी मित्रमात्र बना रहकर तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करता रहूँगा।"

ललित ने गृह-त्याग किया। धन-वैभव, मान, कुल-गौरव सब कुछ त्यागकर निर्वाण के लिए वह प्रयत्नशील हुआ।

किन्तु इसके पीछे थोड़े ही दिन बीते थे कि अकस्मात् मुझे वाराणसी जाना पड़ा। वहाँ प्रथम दिवस ही जिस गृह के सन्मुख खड़े होकर मैंने टेर लगाई—"बुद्धं सरणं गच्छामि" उसके कपाट खोलकर एक युवती सन्मुख आ खड़ी हुई। आश्चर्य-भरे स्वर में वह बोली—"भिक्षु, तुम यहाँ कहाँ?"

चकित होकर मैंने अपनी नत दृष्टि ऊपर उठाई; बोला—"देवि, नीलतारा।"

"भन्ते! मेरी अविनय को क्षमा करो। मैं नहीं जानती थी कि आप प्रसिद्ध आचार्य आर्यदेव के शिष्य प्रज्ञाकीर्ति हैं, जिनकी कीर्ति से देश व्याप्त हो रहा है। और अज्ञानवश मैंने आपको एक छोटा कार्य करने के लिए कहा...।" उसने कहा।

मैंने बीच ही में बात टोककर कहा—"हाँ, विश्व मुझे प्रज्ञाकीर्ति कहता है, किन्तु मैं तो केवल सत्यकाम हूँ। और चरम सत्य यही है, जिसे मैं जानता हूँ। इस लिए देवि नीलतारा, आप क्षुभित न हों। मैंने आपका कार्य करने के लिए कहा था और करूँगा।"

निराश वेदना से म्लान होकर उसने पूछा—"तो क्या आप अभी तक वैशाली नहीं गए?"

मैं बोला—"मैं गया था किन्तु जब मैं ललित से मिला तब उसे स्वस्थ और प्रसन्न निर्वाण की प्राप्ति के लिए उत्सुक पाया। अतः मैं केवल उसकी शंका-समाधान करता रह गया, तुम्हारा संदेश कहने का अवसर ही मुझे प्राप्त नहीं हुआ। किन्तु इस बार जब मैं वैशाली जाऊँगा...।"

"भन्ते! आप अत्यन्त उदार और विशालहृदय हैं। इसी से मेरी अविनय को अविनय नहीं मानते। श्रेष्ठ ललित अपने माता-पिता की एकमात्र सन्तान हैं। बचपन में उनके साथ मेरा गठबन्धन हुआ था किन्तु मुझ अभागिनी के दुर्भाग्य से, जिस क्षण से वे विद्याध्ययन के हेतु विदेश गए, घर नहीं लौटे। मेरी सास इसके लिए श्रमणों को दोषी ठहराती हैं, किन्तु मैं कैसे ठहराऊँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित उनका आदर करते हैं और आपने तो ललित को देखा है कि वे कैसे अच्छे हैं।"

"हाँ, वे अच्छे हैं किन्तु, देवि नीलतारा, निर्वाण-सुख सर्वोपरि है। उसके लिए तो सहस्रों ललित अपना गृह-वैभव त्याग भिक्षु बन जाना अपना सम्मान समझेंगे।"

"भन्ते, आपका कहना सत्य है किन्तु नीलतारा के लिए तो एक ललित ही सत्य है, आप उनसे मेरा सन्देश कहना न भूलिएगा।" कहकर वह चली गई।

मैं सोचने लगा कि कर्त्तव्यपथ कठोर होता है। ललित 'निर्वाण-मार्ग' पर उन्मुख हो रहा है, नीलतारा भी उसी मार्ग की पथिक बने, यह प्रयत्न मुझे करना चाहिए। मैं नित्य भिक्षा के हेतु उधर से जाने लगा, नीलतारा प्रति दिवस अपनी वही बातें दोहराती। एक दिन मैंने सुना कि वह गुर्जर प्रदेश की ओर, अपने चाचा के साथ जाएगी। किसलिए, सोमनाथ के दर्शन करने? सुन कर छाती पर साँप लोट गया। अविद्या का कैसा गहरा समुद्र है? क्या मैं इसमें से नीलतारा का उद्धार कर सकूँगा? ललित तो मार्ग पर लग गया। नीलतारा को भी लगना पड़ेगा, इस निश्चय के साथ मैंने सारी योजना बना डाली। जब नीलतारा मध्य मरुस्थल-प्रदेश में पहुँचेगी, मैं उसके सन्मुख जाकर क्या कहूँगा? यह भी निश्चय कर लिया। जब नीलतारा के चाचा ने मुझसे पूछा कि आप निकट का यात्रामार्ग बताएँ, कारण आप तो सदा भ्रमण किया करते हैं, आपको मार्गों का सब हाल विदित ही होगा, तब मैंने उन्हें ऐसा मार्ग बताया, जहाँ भीषण आँधियों के, चाहे जब उठने की सम्भावना बनी रहती थी, जहाँ पर जल दुष्प्राप्य था और जीवन-चिह्न अलभ्य। मैंने कहा—"उस पथ से आप शीघ्र अपने गंतव्य स्थल पर पहुँचेंगे।"

वे चले और मैं भी उनके पीछे चला। उन लोगों के साथ कई ऊँट थे, जलादि सामग्री थी। मैं अकेला एक ऊँट पर चढ़ एक दिन के मार्ग पर उनका पश्चाद्गामी हुआ। भीषण रेगिस्तान में, कड़ी धूप और पवन में, मुझे कुछ कष्ट नहीं होता था किन्तु मैं भूल गया था कि मैंने तो सोमरस पान किया है, इसलिए मेरी गति सर्वत्र समान है। मुझे यह स्मरण आया तब; जब मेरा ऊँट भीषण वेग से हाँफता हुआ जल-प्राप्ति की आशा से मार्ग पर दौड़ चला। मैंने उसे रोकने का प्रयत्न किया किन्तु वह नहीं रुका। तब मैं समझा कि यह क्या हुआ है। मुझे नीलतारा के जीवन की चिन्ता हुई।

मैंने देखा, चारों ओर रेगिस्तान है। जलती रेत और अग्निवत् तप्त सूर्यमंडल के मध्य में एक कोमल कुसुम है, वह उष्णता से मुरझाया जा रहा है। उसे बचाना ही होगा। मैंने ऊँट को और वेग से चलाया। एक दिवस का जो व्यवधान मध्य में था, उसे पार करके मैं जब उन लोगों के समीप पहुँचा, मैंने मृत्यु का सर्वग्रासी दृश्य देखा। डेरे एक ओर पड़े हुए थे। कुछ मरनेवाले थे। मैं उतर-कर उनके बीच में पहुँचा और काँपते कंठ से कहने लगा—"हे मुमूर्षु प्राणियो, जीवन की असारता देखो। कर्मजाल से छुटकारा पाने के लिए भगवान् बुद्ध की शरण आओ। तुम्हारा भला हो। महामंत्र का उच्चारण करो—बुद्धं शरणं गच्छामि। धर्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।

उन लोगों के ओठ हिले किन्तु जो शब्द उन्होंने उच्चारण किए, वह था--पानी? पानी?"

मैंने कहा—"हे मुमूर्षु प्राणियो, यह तुम्हारा अन्तिम समय है; इस समय तो तृष्णा को त्यागकर आर्य सत्य को जानो और समझो। जो धर्महेतु से उत्पन्न हुए हैं, तथागत ने उनका हेतु बतलाया है और उनका निरोध भी बतलाया है। जन्म जैसा दुःख है, मरण भी वैसा ही दुःख है। दोनों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय...। किन्तु इसके उत्तर में केवल एक ही प्रतिध्वनि उस मरु-प्रदेश से निकलकर, चारों ओर गूँज उठी, पानी! पानी! पानी!

"हे तृष्णे, तुम्हारी लीला अपार है!" कहते हुए मैंने अपना माथा ठोंका और उन लोगों को छोड़कर नीलतारा के डेरे की ओर बढ़ा। मेरे पास थोड़ा जल था, उसे मैंने मूर्च्छिता नीलतारा के मुख पर डालकर उसे सचेत किया। उसने सचेतन होते ही अर्धस्फुट स्वर में विलाप किया—"ललित!"

मैंने उस पर झुककर कहा—"भगिनी नीलतारा, मुझे पहचानती हो?"

उसने मेरी ओर देखते ही कहा—"भन्ते, भन्ते आप हैं।"

"भगिनी नीलतारा, मुझे क्षमा करो। तुम्हारी इस दुर्दशा का कारण केवल मैं हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत ही कोमल करुण कंठस्वर से उसने कहा—"भन्ते, ऐसा न कहें। आपने क्या किया?"

"मैंने जो किया है, वह कह नहीं सकता। फिर भी मुझे क्षमा करो।"

उसने कुछ मुसकराकर कहा—"भन्ते, आपने कुछ भी ऐसा नहीं किया है, जिसके लिए क्षमा माँगें। यदि किया हो तो सोमनाथ क्षमा करेंगे, किन्तु ललित से कह देना कि...।"

'अब भी ललित! देवि, सब शून्य है। जितनी वस्तुएँ हैं, सब सत् हैं या असत् हैं। या दोनों नहीं है, क्यों कि जो सत् है, वह असत् नहीं हो सकता और जो असत् है, सत् नहीं हो सकता। अथवा दोनों हैं, क्योंकि जो सत् नहीं है, वह असत् अवश्य होगा और जो असत् नहीं है, वह सत् अवश्य होगा। 'निर्वाण' की इच्छा करो, वह शून्य है। उसमें लय हो जाना ही मुक्ति है।" मैंने कहा। किन्तु मैं नहीं जानता कि उस क्षण मैं जो कह रहा था, वह सत्य और बुद्धि-अनुमोदित था या नहीं।

नीलतारा ने हँस दिया। उसने कहा—"अब मरने के समय सत् और असत् की यह आलोचना रहने दो। मुझे केवल ललित की बात सुनाओ। जब तुम उनसे मिले थे, उन्होंने क्या कहा था''' ?"

मैंने कहा—"नीलतारा, ललित तो भिक्षु हो गए हैं। अब उनकी क्या बात कहूँ? बुद्ध की शरण गहो, जिससे शाश्वत शान्ति मिलेगी। यह संसार मिथ्या है।"

नीलतारा बोली—"संसार मिथ्या है, किन्तु आत्मा सत्य है। ललित से कह देना कि आगामी जन्म में मिलन होगा।"

देखते-देखते वह चिरनिद्रा में सो गई। वेदना से काँपते हुए मैं उठकर खड़ा हो गया। देखा, दूर पश्चिम से आँधी आ रही है, खूनी लाल आँधी। शून्य यदि शून्य है, तो क्या यह आँधी भी शून्य है और जल की प्यास भी शून्य है? क्या बाह्य जगत् में सब कुछ शून्य है, तो अन्तर्जगत् में प्रेम भी शून्य है? मैं चिल्लाता हुआ पीछे हटा। देखा, आँधी सिर पर आगई है। मैं मूर्च्छित होकर वहीं गिर पड़ा किन्तु सोमरस पान किए हुए व्यक्ति की मृत्यु नहीं हो सकती। इसलिए जब फिर चेतना वापस लौटी, मैंने अपने को रेत के एक टीले पर पड़ा पाया। उठकर मैंने देखा कि आँधी सबको समेट ले गई है। नीलतारा, उसके दल और ऊँटों का कहीं अवशेष चिह्न तक नहीं है। मैं उठकर खड़ा हो गया। फिर फाड़कर चिल्लाया—"नीलतारा!"

प्रतिध्वनि चारों ओर गूँजती वापस लौट आई। मर्माहत हृदय से मैं वैशाली की ओर चल पड़ा।

ललित ने यह सुनकर कि नीलतारा मरुभूमि में जल के हेतु तड़पकर मरी है और मरते समय भी उसकी जीभ पर ललित का नाम था, अवरुद्धकंठ से कहा—"हे प्रज्ञाकीर्ति, नीलतारा को मुझसे पृथक् करके तुमने मेरा बड़ा अपकार किया है, किन्तु आज मैं महासत्य को पा गया हूँ। अभी तक जो नीलतारा मुझसे पृथक् सत्ता रखती थी और मुझसे भिन्न और कुछ प्रतीत होती थी, वह शरीर रूपी निर्मिति हट जाने से केवल एक प्रतीत होने लगी है। मैं समझ गया कि बहुरूपत्व का कारण 'वासना' है। वही 'भेद-वासना' जाग्रत् में ज्ञान का नानारूप से भान करती थी। वह वासना स्वतः 'ज्ञान' है क्योंकि ज्ञान के ही साथ उसकी सत्ता है। अतः जो नीलतारा कल तक मुझसे भिन्न थी, आज मेरे अंतःकरण में विलीन हो गई है, उसका बाह्य आकार केवल शून्य था सो शून्य में मिल गया है। जो सत्य था, वह अब भी बचा रह गया है।"

"यह क्या बक रहे हो, क्या दुःख ने तुम्हें पागल बना दिया है?"

"नहीं! दुःख का तो अब अंत हो गया है। नीलतारा विशुद्ध प्रेमरूप से मेरे ज्ञान में उदय हुई है, जहाँ वह सदैव वर्त्तमान रहेगी।"

"अब यह किस भ्रान्ति में पड़ गए...?"

वह बोला—"अनंत ज्ञान के प्रदीप की लौ के समान धारा रूप प्रकाश के दर्शन कर रहा हूँ। जो ग्रहण किया जाए और जो ग्रहण का साधन है, इन दोनों का अस्तित्व ही कब था? ज्ञेय, ज्ञाता और ज्ञान में जो भेद दिखाई देता है, वह भ्रम है। झूठे अहंकार से मैं समझ रहा था कि ललित और नीलतारा दो हैं, किन्तु स्वप्न में वास्तविकता नहीं होती, उसमें एक ज्ञान अनेक रूप से प्रकाशित होता है। किन्तु जैसे ही स्वप्न हट जाता है, ज्ञान पुनः एक हो जाता है। मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा।" कहते कहते अपार शान्तिपूर्वक वह पद्मासन मारकर बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिवस वह उसी प्रकार बैठा रहा। तीसरे दिन उसका कपाल फट गया और देह निर्जीव हो गई। यह देखकर मूर्ख के समान संदेह में पड़कर मैंने अपने गैरिक वसन उतार फेंके और वैशाली छोड़कर मैं घोर वन की ओर चल पड़ा। आर्यदेव * की पढ़ाई सारी विद्या मुझे भूल गई। सब बाह्य और अन्तर् ज्ञान शून्य है, यह आर्यदेव* से मैंने सीखा था। ललित ने निर्वाण पाया किन्तु उसने अन्तःस्थित नीलतारा को सत्य बताया। परन्तु मैं क्या मान लेता कि बाह्य जगत् की नीलतारा मिथ्या थी?

जल मिथ्या था, आँधी मिथ्या थी?
यदि यह सब सच था, तो फिर शिवानी?

* ये आर्यदेव प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थकार देव नहीं हैं।

आर्यों का आदि निवासस्थान

श्री कुमार

आर्यों के आदि निवासस्थान के सम्बन्ध में वर्त्तमान युग के विद्वानों में नाना प्रकार के मत प्रचलित हैं। आज तक जितने भी विद्वानों ने इस विषय पर आलोचना की है, प्रायः सभी ने आर्य जाति का किसी एक बाहरी देश के आगन्तुक के रूप में वर्णन किया है। इस विषय में प्रधानतः तीन मत प्रचलित हैं। अधिकांश पुरातत्त्वज्ञों तथा ऐतिहासिकों के सिद्धान्त के अनुसार आर्यगण मध्य-एशिया के एक अज्ञात प्रदेश में निवास करते थे। वहीं से वे क्रमशः दक्षिण, पूर्व और उत्तर आदि नाना दिशाओं में फैल गए। उनके मतानुसार आर्यों ने कैस्पियन सागर के उपकूल-स्थित किसी भूखण्ड से आकर भारत के उत्तर-पश्चिम प्रदेश, हिमालय तट पर सर्व-प्रथम डेरा डाला और वहाँ से क्रमशः वे उत्तर भारत के अन्यान्य प्रदेशों में बस गए।

मध्य एशिया से आर्यों के आगमन के सम्बन्ध में पुरातत्त्वविद् प्रमाणस्वरूप कुछ कारण प्रदर्शित करते हैं।

प्रथमतः उनके मत में आर्यों के आदि ग्रन्थ ऋग्वेद संहिता में जिन नदी, नालों और गाँवों तथा शहरों का वर्णन आया है, उनमें से कुछ का स्थान मध्य एशिया में निर्दिष्ट किया जा सकता है[1]।

दूसरे, शास्त्रों में आर्यों को श्वेतकाय और सुन्दर पुरुष कहा गया है और उनके विरोधियों-विपक्षियों को कृष्णवर्ण, दैत्य या असुर। मध्य एशिया के निवासियों का रंग श्वेत है और भारतवासी प्रायः काले रंग के हैं। इससे आर्यों के मध्य एशिया-निवासी होने की पुष्टि होती है।

तीसरे, विद्वानों का कहना है कि आर्यों के उपास्य देव-देवियों के नामों और मध्य एशिया के प्राचीन उपास्यों के नामों में अद्भुत साम्य है। यही नहीं, प्राचीन आर्यों की भाषा के अनेक शब्द आज भी मध्य एशिया के अनेक भाषाओं में या तो ज्यों-के-त्यों व्यवहृत होते हैं, या तद्भव रूप में। इससे भी प्रतीत होता है कि आर्य मध्य एशिया के केन्द्रस्थान से ही चारों दिशाओं में फैले थे।[2]

१ ऋग्वेद-संहिता में प्रसङ्गक्रम से यक्षु, अज, आजीक गांधार, रूपम, शारदी, शिग्र, कीकट आदि कुछ देशों और आर्जीकीया, सीता या सीरा, सुवास्तु, कुभा, यव्यावती, क्षेतावती प्रभृति कुछ नदियों का उल्लेख आया है। पुरातत्त्वविद् उनमें यक्षु देश को 'ओक्सुस' (Oxus) या 'ओक्साम' नदी का तटवर्ती देश बतलाते हैं। उनके विचार में सीता या सीरा नदी का आधुनिक नाम जक्सर्त (Jaxartes) अथवा जागजार्त्तेस है। सुवास्तु को वे सोवात मानते हैं या स्वातप्रदेश बतलाते हैं। वर्त्तमान कान्धार देश को वे गान्धार मानते हैं। 'कुभा'—कोफेस नामक नदी काश्मीर के उत्तर-पश्चिम में सु अस्तिव नामक देश में प्रवाहित थी, ऐसी उनकी धारणा है। अन्यान्य नदियों तथा नगरों के नाम भी वे इसी प्रकार निर्धारित करते हैं।

२ वेदोक्त वायु, सोम, यम, मित्र और असुर प्रभृति शब्दों का पारसियों के 'जेन्द-अवेस्ता' नामक ग्रन्थों में वायु, होम, विम, मिथ्र, अहुर प्रभृति के रूप में वर्णन किया गया है। इसी प्रकार वेदोक्त आख्यान, अप्सरा, गन्धर्व, अहना प्रभृति शब्दों का ग्रीक लोगों के ग्रन्थों में इक्सियोन, ईरस, केन्टेरिस, डाफीन आदि नामों से वर्णन किया गया है। वेद-वर्णित इन सब शब्दों का अर्थ से मिलता जुलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे दल के पुरातत्त्वविदों के मत में आर्यगण उत्तरमेरु से क्रमशः दक्षिण की ओर अग्रसर हुए और अन्त में भारत में आकर ठहरे। उनके इस प्रकार विचार प्रकट करने का कारण यह है कि वेदों में दीर्घकाल-व्यापी रात्रि और दिन का उल्लेख है और शीत की अधिकता का वर्णन है। इसके अतिरिक्त ज्योतिषियों की गणना के अनुसार उत्तरमेरु उस समय मनुष्यों के वास के योग्य था।

"वहाँ क्रम से ६ मास दिन और ६ मास रात्रि रहती है।" "वहाँ सूर्य दक्षिण से उदय होता है।" "वहाँ नक्षत्रों का उदयास्त नहीं है।" ऐसे कथन वेद में पाए जाते हैं। इस भौगोलिक परिस्थिति का उत्तरमेरु की भौगोलिक परिस्थिति से साम्य है। मंत्र के साथ इस अवस्था का सादृश्य है।

इसके अतिरिक्त शास्त्रादि में ब्रह्मरात्रि और ब्रह्मदिन को एक वर्ष का बतलाया गया है। उत्तरमेरु प्रदेश में ६ मास का दिन और ६ मास की रात्रि होती है। यही ब्रह्मदिन और ब्रह्मरात्रि है। आर्यों के उत्तरमेरु परित्याग करने का एक कारण भी वे देते हैं। 'जेन्द आवेस्ता' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि आर्यों का स्वर्ग या 'एरियाना भेईजो' उत्तरमेरु प्रदेश में ही अवस्थित है। वहाँ वर्ष में केवल एक बार सूर्योदय होता है। अति हिमपात और शिलावृष्टि के कारण जब वह देश विध्वस्त हो गया और वहाँ अत्यधिक शीत पड़ने लगा तब आर्यों ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। आर्यों के उत्तर-मेरुवासी होने के समर्थक उनके स्थान-परित्याग के सम्बन्ध में जेन्द अवेस्ता का ही प्रमाण उपस्थित करते हैं। स्वर्गीय बाल गङ्गाधर तिलक इसी मत के समर्थक थे। उन्होंने अपने 'Orion or Researches into the Antiquity of the Vedas' और The Arctic Home in the Vedas नामक ग्रन्थों में इस कथन के प्रतिपादन की चेष्टा की है।

एक तीसरे मत के पोषकों का कहना है कि जर्मनी के अन्तर्गत पोलैण्ड प्रदेश (किसी-किसी के मत में स्कैण्डिनेविया) में आर्यों का आदि निवास था। भाषा-तत्व की आलोचना-द्वारा तथा संस्कृत भाषा के साथ जर्मन भाषा के सादृश्य का अनुभव करके ही उन्होंने इस सिद्धान्त का समर्थन किया है[1]।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आज तक जितने भी विद्वानों ने इस विषय पर गवेषणाएँ की हैं, उन सबने आर्यों को भारत से बाहर किसी दूसरे ही देश का निवासी बतलाया है।

इन विभिन्न मतों और सिद्धान्तों की जब हम तुलनात्मक विवेचना करते हैं, तब इनसे सर्वथा विपरीत किसी और ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

वेद के जिन मंत्रों के आधार पर विभिन्न विद्वान् विभिन्न मत प्रकट करते हैं और जिन वैदिक मंत्रों को पृथ्वी की आदि वाणी कहकर संसार के सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं, उनका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष ही है। आज तक कोई भी विद्वान् इस बात का प्रमाण नहीं दे सका है कि वेदों की उत्पत्ति भारतवर्ष के अतिरिक्त किसी दूसरे देश में हुई।[2] प्राच्य और पाश्चात्य सभी विद्वानों ने वेद को भारतवर्ष का ही आदिग्रन्थ बतलाया है। जब यह सत्य स्वीकृत है, तब आर्यों के आदि निवास-स्थान के सम्बन्ध से दूसरा मत ठहर ही किस प्रकार सकता है!

प्रत्येक प्राचीन जाति का परिचय-चिह्न उसकी भाषा और पुरुषानुक्रम परम्परा है। आर्य जाति की भाषा और

संस्कृत के पितृ को पारसी में पेडार, लैटिन में पेटर, द्वि को पारसी में दो, लैटिन में दूओ, युग को पारसी में 'युग्य' लैटिन में युगाम कहा जाता है। इसी प्रकार संस्कृत के अस्मि को 'लिथूनियन' भाषा में एस्मि, 'जेन्दअवेस्ता' में अस्मि; प्राचीन स्लावोनिक भाषा में 'जेस्मि' कहा जाता है। संस्कृत के 'अस्ति' को लिथूनियन भाषा में एस्ति, जेन्दभाषा में अस्ति, प्राचीन स्लैवोनिक भाषा में येस्तो और लैटिन में येस्त कहा जाता है।

[1] जर्मनी में हिटलर के उदय होने पर वहाँ के निवासियों ने अपने आपको आर्यों की विशुद्ध सन्तान कहकर बड़े जोरों के साथ प्रचार करना आरम्भ कर दिया था।

[2] अध्यापक मैक्समूलर ने नाना देशों के नाना ग्रन्थों की आलोचना कर इस सिद्धान्त को निश्चित माना है कि ऋग्वेद ही सभ्य जगत् का आदि ग्रन्थ है। One thing is certain, there is nothing more ancient primitive, not only in India, but in the whole Aryan world, than the hymns of the "Rigveda."—Origin and Growth of Religion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम्परागत परिचय भारत के सिवा और कहाँ मिल सकता है ?

जो आर्यों को मध्य एशिया, उत्तर-मेरु प्रदेश अथवा जर्मनी के उत्तरी प्रान्त का अधिवासी बतलाते हैं, क्या वे उस प्रदेश में आर्यों के आदि निवास के प्रमाण-स्वरूप कोई अतीत का परिचय-चिह्न, संस्कृति अथवा भारत की तरह भाषा प्रभृति की एकता का निदर्शन कर सकते हैं ?

पृथ्वी की जितनी भी जातियों ने आज तक उन्नति की सीमा का अतिक्रमण किया अथवा नाना दिशाओं में फैलकर उपनिवेश बसाए, उनके उद्गम-स्थान, भाषा-भाव और संस्कृति की एकता का कोई-न-कोई निदर्शन अवश्य ही प्राप्त है। इसी आधार पर जो आर्यों को मध्यएशियावासी अथवा उत्तरमेरुवासी बतलाते हैं, वे इसका कोई प्रमाण भी क्या दे सकते हैं ?

कोई जाति उन्नत, शक्तिशाली अथवा बहुसंख्यक होने पर यदि विदेशों में अपना उपनिवेश स्थापित करती है तो इस कारण वह अपने स्वदेश को कभी त्यागती नहीं। उदाहरणार्थ हम अंग्रेज जाति को ही ले सकते हैं। सोलहवीं शताब्दी से आरम्भ कर अंग्रेजों ने संसार के प्रायः समस्त भागों में अपने उपनिवेश स्थापित किए। एशिया, अमेरिका, आष्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि महाद्वीपों में उन्होंने निवास भी अंगीकार किया किन्तु फिर भी उन्होंने स्वदेश को नहीं छोड़ा; न स्वजाति का परिचय-चिह्न खोया। विदेशों में उपनिवेश स्थापित करने के कारण उनके आदि स्थान और आदि जाति की ही अधिकाधिक समृद्धि और उन्नति हुई।

केवल अङ्गरेज ही नहीं, फ्रेंच, जर्मन, डच, पोर्तगीज आदि जिस किसी भी पाश्चात्य जाति पर हम दृष्टि डालें, हमें यही दिखाई देता है कि विदेशों में जाकर उन्नति करने पर उनके अपने देश की ही समृद्धि हुई। यहाँ तक कि अपने देश की उन्नति और उसके साथ अविच्छेद्य सूत्र में आबद्ध होने में वे सर्वदा गौरव का अनुभव करते हैं। इस दशा में यह कैसे माना जा सकता है कि आर्य जैसी एक सुसभ्य जाति ने, जो ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, साहित्य, गणित, ज्योतिष, शौर्य-वीर्य आदि सभी विषयों में आश्चर्यजनक उन्नति कर चुकी थी, अपनी जन्मभूमि को एकदम भुला दिया और विदेश में जाकर विदेशियों के साथ मिलकर उसने अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को खो दिया।

यह भी सम्भव प्रतीत नहीं होता कि संख्याधिक्य के कारण एक सुसभ्य जाति के बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सब विदेश चले जाएँ और उनके आदि निवासस्थान में उनके परिचय-चिह्न-स्वरूप एक भी प्राणी अवशिष्ट न रहे। पृथ्वी के इतिहास में यह एक असम्भव-सी घटना है।

जब आर्यों के आदि निवासस्थान 'आर्यावर्त' के अस्तित्व का परिचय एकमात्र भारतवर्ष में ही मिलता है, उनकी भाषा और साहित्य का प्रकृष्ट निदर्शन वेद, वेदान्त शास्त्र प्रभृति जब इस भारत में ही विद्यमान हैं और ब्राह्मणादि वर्ण-चतुष्टय जब अपने को उन्हीं के पुरुषानुक्रमिक वंशज कहकर परिचय देते रहे हैं, तब भारतवर्ष के अतिरिक्त उनका आदिस्थान और कहाँ निर्दिष्ट किया जा सकता है ?

भारतवर्ष ही आर्य सभ्यता की आदिभूमि है और यहीं से वे देश-विदेश में फैले थे, इसका प्रमाण हमारे धर्मग्रन्थों में ही मिलता है। संसार में जब वैदिक धर्म के अतिरिक्त और कोई धर्म ही नहीं उत्पन्न हुआ था, पृथ्वी पर जब आर्यों से अधिक शक्तिशाली किसी जाति का उद्भव ही नहीं हुआ था, उस समय आर्य ही पृथ्वी के अधीश्वर थे। संसार में वैदिक धर्म के अतिरिक्त और कोई दूसरा धर्म न होने के कारण उस समय आधुनिक काल की तरह समुद्रयात्रा निषिद्ध नहीं थी। हम शास्त्रों में देखते हैं कि आर्यों ने उस उन्नति-युग में अमेरिका महाद्वीप तक अपना राज्य-विस्तार किया था। योरप का प्रत्येक प्रदेश उनके अधीन था, अफ्रीका उनके लिए अगोचर न था।

ऐसा उल्लेख मिलता है कि स्वयंभू मनु[1] के पुत्र

---

१ एक एक मनु के नामानुसार मन्वन्तर की सूचना होती है। शास्त्र में चौदह मनुओं का उल्लेख है—स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, वैवत, चाक्षुव, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि। वर्त्तमान समय सप्तम या वैवस्वत मनु का काल चल रहा है। द्रष्टव्य—: विश्व का इतिहास—दुर्गादास।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियव्रत ने पृथ्वी को सात द्वीपों में विभक्त किया था—जम्बु, प्लक्ष, पुष्कर, क्रोच, शक, शाल्मली और कुश। इन सात नामों से सात द्वीपों को पुकारा जाता था।

यही सात द्वीप वर्त्तमान समय में क्रमशः एशिया, दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका, योरप, एण्टार्कटिक (दक्षिणी मेरु के आसपास का प्रदेश), आष्ट्रेलिया एवं ओशेनिया के नाम से परिचित हैं। यद्यपि पश्चिम के कुछ विद्वान् इस मत से सर्वांशतया सहमत नहीं हैं, तथापि स्थूलतः इन सात द्वीपों के द्वारा समस्त संसार को ही समझा गया था, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

कर्नल विलफोर्ड ने भारतवर्ष को जम्बूद्वीप के नाम से अभिहित किया है। उनके मत में प्लक्षद्वीप—एशिया का उत्तरी भाग और समस्त अमेरिका महादेश, पुष्कर द्वीप—आयर्लैंड, शकद्वीप—ब्रिटिश द्वीपसमूह, क्रोंच द्वीप जर्मनी; शाल्मली द्वीप—आड्रियाटिक और बाल्टिक सागर के सन्निकट देश-समूह; कुश द्वीप—भारत की पश्चिमी सीमा पर स्थित कैस्पियन सागर और पर्शियन उपसागर के निकटवर्त्ती स्थित देशसमूह है।

हमारे शास्त्र और पुराणों में विभिन्न देशों के जो-जो नाम व्यवहृत हुए हैं, उन्हें वर्त्तमान समय में हम भूल चुके हैं। अनेक अनुसन्धान करने पर कदाचित् ही कहीं किसी देश के नाम का पूर्वपरिचय मिलता है। ऐसे परिवर्तनों का होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। दृष्टान्तस्वरूप इस भारतवर्ष को ही हम ले सकते हैं। कभ इस देश का नाम जम्बूद्वीप था, फिर आर्यों के समय में इसका नाम आर्यावर्त्त पड़ा। राजा भरत के राजत्वकाल में इसका नाम भारतवर्ष हुआ, मुसलमानों के आगमन पर हिन्दोस्तान और अङ्गरेजों के आगमन पर इण्डिया।१

भारतवर्ष का ही यह सौभाग्य है कि इतने परिवर्त्तनों के पश्चात् भी उसका अस्तित्व आज तक विद्यमान है। अन्यथा प्राचीन युग के ऐसे अनेक देश हैं, जिनका पूर्व-परिचय आज प्राप्त नहीं है।

कुरुक्षेत्र-युद्ध के पूर्व दिग्विजय-यात्रा में निकलकर पाण्डवों ने जिन-जिन देशों पर अधिकार किया था, महाभारत के सभापर्व में उनका वर्णन आया है। प्रथम यात्रा में उन्होंने बर्मा, चीन, श्याम, तिब्बत, मंगोलिया, तातार, पारस आदि देशों को विजय किया और हीरात, कावुल, कन्धार और बिलोचिस्तान होकर वे स्वदेश वापस लौटे; दूसरी यात्रा में उन्होंने लंका से अरब, मिश्र, जंजीबार और अफ्रीका के विभिन्न देशों को विजय किया।

महाभारत के आदिपर्व में सगर राजा के द्वारा भारत महासागर में स्थित भारतीय द्वीपसमूहों की विजय का वर्णन आया है। अर्जुन के द्वारा पाटल (पाताल) देश-विजय और नागकन्या उलूपी से विवाह करने का वर्णन अमेरिका-विजय का ही वर्णन है। अमेरिका और भारतीय द्वीपपुंजों में कुछ दिन पूर्व भी राम-सीता के पूजन की पद्धति प्रचलित थी। इस प्रकार अनुसंधान करने से ज्ञात होता है कि एक समय संसार के समस्त देशों

---

१ हिन्दु और इण्डिया इन दोनों शब्दों की उत्पत्ति का एक विचित्र इतिहास है। हिब्रू भाषा में हनद शब्द का अर्थ है विक्रम, तेज, शक्ति, गौरव आदि। हिब्रू भाषा के 'एस्तार' नामक ग्रन्थ में लिखा है—राजा आहा सुरेश हनद से लेकर इथियोपिया देश तक राज्य करते थे। अर्थात् उनके राज्य की एक सीमा भारतवर्ष और दूसरी सीमा मिश्र देश तक फैली हुई थी। भारतवर्ष को वे लोग 'हनद' अर्थात् गौरवान्वित राज्य के नाम से पुकारते थे। यह 'हनद' शब्द पारसियों के 'जेन्द अवेस्ता' नामक ग्रन्थ के 'हिन्दव' शब्द से उत्पन्न हुआ है। वही शब्द ग्रीक भाषा में हन्दकोष (Handkosh) इन्डिकोस (Indikos) और इन्डियोस (Indios) प्रभृति शब्दों में रूपान्तरित हुआ। उसी से अंग्रेजी भाषा में 'इण्डिया' की उत्पत्ति हुई। पस्तु भाषा में 'हिनद' और 'हनदु' शब्दों का व्यवहार होता है। इस प्रकार पारसियों के निकट से यहूदियों ने और उनके निकट से अन्यान्य जातियों ने हिन्दू या इन्डिया शब्द को प्राप्त किया। मूलतः इन दोनों ही शब्दों का अर्थ है—"पवित्र गौरवान्वित जाति।" इसके द्वारा प्राचीन काल में हिन्दुगण अन्यान्य जातियों के निकट कितने सम्मानित थे, इसका प्रमाण मिलता है। पारसियों के मत में 'जेन्द अवेस्ता' उनका सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। उस प्राचीन ग्रन्थ में ही जब भारतवर्ष को 'हनद' गौरवान्वित राज्य कहा गया है तब भारतवर्ष का गौरव उससे और भी कितना प्राचीन होगा, इसकी सहज ही कल्पना कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकवि : महादानी

निराला ने युगपरिवर्त्तक
कवित्व ही नहीं, ब्राह्मणत्व भी
पाया है। पिछले दिनों दैनिक
'नवजीवन' में छपा था कि
निराला जी अर्धनग्न और अर्द्ध
विक्षिप्त दशा में लखनऊ की
सड़कों पर घूम रहे हैं। फिर
पत्रों में पढ़ने को मिला कि
प्रान्तीय सरकार ने (सम्भवतः
उनकी दयनीय आर्थिक दुरवस्था
को दूर करने के लिए) उन्हें
१०००) का पुरस्कार दिया है।
आज हम अभिमान के साथ
कह रहे हैं कि इस सच्चे त्यागी
और स्वाभिमानी ब्राह्मण कवि
को उक्त पुरस्कार की सारी
रकम स्वर्गीय नवजादिकलाल
की धर्मपत्नी को सहायता के
रूप में दान कर दी है।

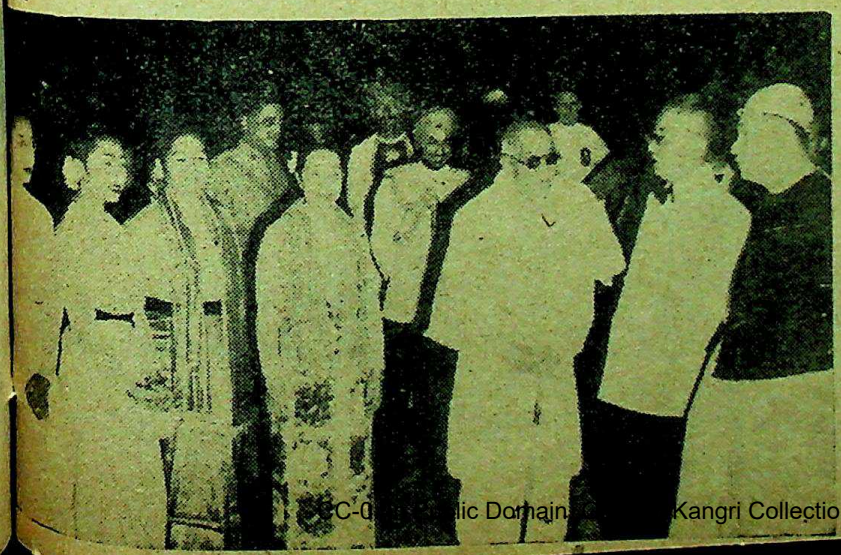

श्री राजाजी

बर्मा के प्रतिनिधियों के बीच
में श्री राजाजी।

CC-0. Public Domain. Digitized by Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगमन

अमेरिका जाने से पहले श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित मास्को में भारत पधारीं। चित्र में दिल्ली के विलिंगडन हवाई अड्डे में पंडित पंत के साथ वे दिखाई दे रही हैं।

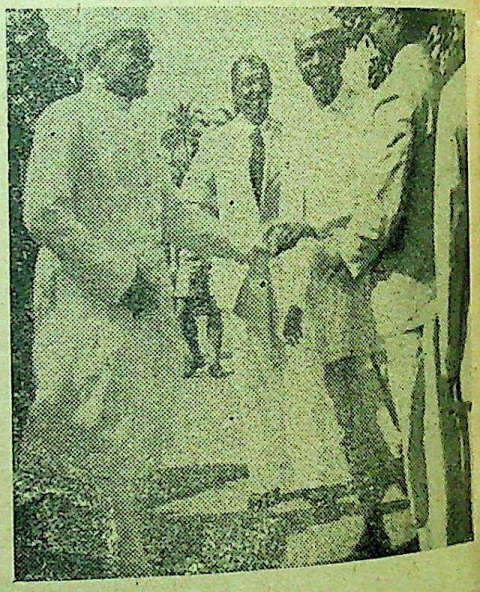

गवर्नर काटजू

बंगाल के गवर्नर डा० कैलाशनाथ काटजू कलकत्ता के लेक 'मेडिकल कालेज और हास्पिटल' का निरीक्षण कर रहे हैं।

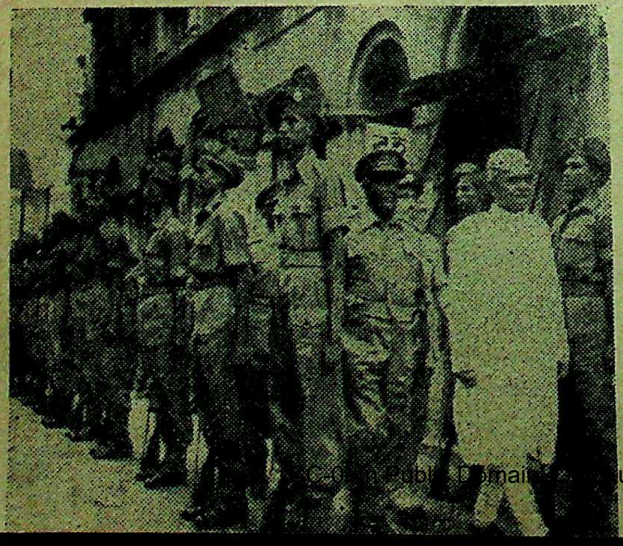

सम्मान प्रदर्शन

बंगाल का राष्ट्रीय रक्षकदल गवर्नर काटजू के प्रति सम्मान प्रदर्शन कर रहा है।

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ भारत का निकट सम्बन्ध था। यहाँ तक कि जिस उत्तरमेरु को आर्यों का आदि निवासस्थान कहा जाता है, वह भी आर्यों के लिए अगम्य न था। महाभारत के वनपर्व में पाण्डु राजा ने कुन्ती से उत्तर कुरुदेश की स्त्री-जाति का वर्णन किया था। इससे ज्ञात होता है कि उत्तर कुरुदेश के विषय में भी उनको जानकारी थी।

भारतीय आर्य पृथ्वी के एकच्छत्र अधिपति थे और संसार के समस्त स्थानों के लिए वे 'अप्रतिहतरथ' थे। इस सत्य को स्वीकार कर लेने पर आर्यों के आदि निवासस्थान के विषय में कोई संशय नहीं रहता।

अब रही ऋग्वेद में वर्णित विविध भौगोलिक संज्ञाओं की बात। उनके संबंध में यह कहा जा सकता है कि किसी वस्तु-विशेष की जानकारी का अर्थ वहाँ का अधिवासी होना नहीं है।

ऋग्वेद में वर्णित नदी-नाले और नगरादि आर्यों के सुपरिचित थे, इसी कारण उनका ऋग्वेद में वर्णन मिलता है। अपने देश के अतिरिक्त दूसरे देशों की नदियों और नगरों के वर्णन करने का अर्थ यह नहीं है कि आर्य उन देशों के निवासी रहे होंगे। इंग्लैण्ड अथवा फ्रांस की किसी पुस्तक में यदि भारत के किसी शहर या नदी का नाम आए तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि इंग्लैण्डवासी या फ्रांसवासी लेखक मूलतः भारत का निवासी है। अर्थात् केवल अभिज्ञता आदिनिवास की परिचायक नहीं है। उत्तर मेरुप्रदेश में ६ मास तक दिन और ६ मास तक रात्रि रहती है, इस तथ्य की जानकारी आर्यों को थी पर केवल इसी जानकारी के आधार पर तो आर्यों को मेरुप्रदेश-निवासी नहीं माना जा सकता।

कुछ दिन पूर्व योरप में रोमनों का इतना प्रभाव हो चुका था कि इंग्लैण्ड, फ्रांस, स्पेन आदि देशवासी रोम-भावापन्न हो गये थे। आज वह सब प्रभाव दूर हो चुका है। केवल उनकी भाषाओं में कुछ रोमन (लैटिन) शब्द मिल गए हैं और उनके आचार-व्यवहार में कुछ-कुछ रोमन भाव का आभास मिलता है। केवल कुछ शताब्दियों के पूर्व की घटना जब इस प्रकार से परिवर्तित हो चुकी है तो उससे कितनी ही अधिक प्राचीन आर्यजाति के सम्बन्ध में इस प्रकार का परिवर्त्तन नितान्त स्वाभाविक बात है।

अधिकांश प्राचीन सभ्य जातियों के ग्रन्थों को पढ़ने से पता चलता है कि वे किसी एक विशेष काल में विशेष स्थान से आकर उस देश में प्रतिष्ठित हुई थीं, किन्तु आर्यों के ग्रन्थों में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं आया है। बल्कि इसके विपरीत शास्त्रों को पढ़ने से यही पता चलता है कि भारतवर्ष से ही उन्होंने बाहर जाकर विदेशों में अपना आधिपत्य स्थापित किया।

आर्यों को सुन्दर श्वेतकाय कहा गया है किन्तु इस देश के मनुष्य कृष्णवर्ण हैं; इस युक्ति में भी विशेष बल नहीं है। भारतवर्ष के ब्राह्मणादि उच्चवर्णों के लोग साधारणतः गौरवर्ण होते हैं। हिमालय प्रदेश, काश्मीर, पंजाब आदि देशों में तो श्वेतकाय सुन्दर मनुष्य ही निवास करते हैं।

आर्य हिन्दु-गण स्वायम्भुव मन्वादि काल से ही आज-तक अपने वंश-परिचय का निर्णय करते हैं। अतएव ऐसी अवस्था में आर्यों का किसी भिन्न देश से भारत में आना किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है।

यदि कोई कहे कि अत्यधिक उत्ताप के कारण उत्तर-मेरुवास के अयोग्य हो जाने पर आर्यगण दक्षिण की ओर चले आए तो, नैसर्गिक अवस्था के विषय में आलोचना करने पर, हम इस सिद्धान्त को भी नहीं मान सकते। पृथ्वी की दैनिक और वार्षिक गति के विषय में जिनको थोड़ा-बहुत ज्ञान है, वे अवश्य ही इस बात को समझ सकते हैं कि मेरुप्रदेश में कभी अत्यधिक उत्ताप की वृद्धि नहीं हो सकती, कारण सूर्य की प्रखर किरणों का वहाँ तक पहुँचना सम्भव नहीं है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की गति के विषय में जो सिद्धान्त प्रकट किए हैं, उनसे इस बात का कोई भी प्रमाण नहीं मिला है कि मेरुप्रदेश में सूर्य की किरणें अधिक पड़ने के कारण वहाँ शीत का अभाव हुआ होगा।

सूर्य की प्रखर किरणें प्रधानतः विषुवत् रेखा के निकट ही पड़ती हैं। विषुवत् रेखा के उत्तर और दक्षिण में जो प्रदेश जितनी दूर तक अवस्थित होगा, उस प्रदेश में उसी के अनुसार उत्ताप की वृद्धि और कमी होगी। मेरु प्रदेश में कदाचित् ही सूर्य की किरणें प्रवेश करती हैं।

सूर्य की गति पूर्व की तरह समान भाव से विद्यमान है, यदि इस बात को स्वीकार कर लें तो मेरु प्रदेश में किसी समय चिरवसन्त विराजमान था और वहाँ संसार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठ जाति निवास करती थी, इस बात को सिद्ध नहीं किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त वेदादि ग्रन्थों में उत्तर-मेरु का जो वर्णन है, इतने दिनों बाद आज भी उसमें कोई परिवर्त्तन नहीं दिखाई देता है। इतने वर्ष पूर्व वहाँ की जो अवस्था थी, आज इतने दिनों पश्चात् भी यदि उसमें कोई परिवर्त्तन न हुआ हो तो फिर किस प्रमाण पर आधार कर हम यह कह सकते हैं कि वहाँ की अवस्था उस समय कुछ और ही थी। यदि भूकम्प अथवा किसी ऐसी ही आकस्मिक दुर्घटना के कारण उस प्रदेश में कोई परिवर्त्तन होता तो उसका प्रमाण हमें प्राचीन ग्रन्थों में अवश्य ही मिलता।

वेद में शीत की अधिकता का वर्णन आया है, ऐसा कहकर जो आर्यों को उत्तर-मेरु का निवासी बतलाते हैं, उनके इस कथन की सत्यता दो कारणों से भ्रमपूर्ण ज्ञात होती है। प्रथमतः वेद में शीत की अधिकता का वर्णन ही नहीं आया है। द्वितीयतः वेद में जिस प्रकार शीत का वर्णन आया है, उसी प्रकार शरद्, हेमन्त और वसन्तादि ऋतुओं का भी वर्णन आया है। अतएव यदि वेद में शीत का वर्णन देखकर ही आर्यों को ठण्ढे देश का निवासी बतलाया जा सकता है तो शरद्, हेमन्त और वसन्तादि का वर्णन होने के कारण उनको शरद्-देश, हेमन्त देश और वसन्त देश का निवासी भी बतलाया जा सकता है।

इस प्रकार की युक्तियों से हम किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते। प्रत्युत शीत, हेमन्त, शरद्, वसन्त, ग्रीष्म और वर्षा इन ६ ऋतुओं का वर्णन देखकर हम इसी सिद्धान्त पर सरलता से पहुँच सकते हैं कि आर्य भारत के निवासी थे[1]। कारण, भारतवर्ष के अतिरिक्त और कोई ऐसा देश नहीं मिलता, जहाँ इन छहों ऋतुओं का ऐसा सुन्दर समावेश हो। फलतः ऋतुओं के सम्बन्ध में आलोचना करने पर भी हमारा यह विश्वास और दृढ़ हो जाता है कि भारतवर्ष ही आर्यों का आदि निवास-स्थान था।

मेरु प्रदेश के विषय में 'जेन्द अवेस्ता' की उक्तियों को यदि हम स्वतःसिद्ध भी स्वीकार कर लें तो उससे केवल यही प्रमाणित होता है कि पारसियों के कोई आदिपुरुष उत्तरमेरु में वास करते थे। इससे किसी प्रकार इस बात का आभास नहीं मिलता कि आर्यों के आदिपुरुष मेरुप्रदेश से यहाँ आए थे।

आर्यगण उत्तरमेरु प्रदेश के निवासी थे, इस सिद्धान्त के समर्थकों में भारतीयों में बालगङ्गाधर तिलक प्रधान हैं। उनके मत में ईसा से १० या ८ हजार वर्ष पूर्व उत्तरमेरु शीत की अधिकता के कारण वास के अयोग्य हो चुका था। उस समय से ८ से ५ सहस्र ईसवी पूर्व के अन्दर आर्यों ने उत्तरमेरु प्रदेश को त्यागकर विभिन्न देशों में गमन किया।

इन कथनों के द्वारा उन्होंने इसी बात को प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि वैदिक मन्त्रों में उत्तरमेरु के वर्णन का जो आभास-सा मिला है, वह आर्यों की पूर्वस्मृति का निदर्शन है। यहाँ यह कहना आवश्यक है कि स्व० तिलक ने आर्यों के उत्तरमेरु-परित्याग के सम्बन्ध में काल-परिमाण का जो निर्देश किया है, वह प्रधानतः अमेरिकन और योरपीय विद्वानों के आधार पर किया है।

वैदिक मन्त्रों के काल-परिमाण का निर्णय और आर्यों के उत्तरमेरु-वास का विचार कहाँ तक युक्तिसंगत है, थोड़ी-सी आलोचना करने पर इसका पता चल जाएगा।

स्वयं तिलक के सिद्धान्तों से ही यह दिखाई देता है कि उत्तरमेरु प्रदेश के त्याग करने के साढ़े चार सहस्र वर्ष पश्चात् वैदिक सूत्रों की रचना हुई। यदि ऐसा ही है तो साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व की स्मृति को आर्य किस प्रकार सुरक्षित रख सके और फिर उसका वर्णन भी कर सके! क्या उत्तरमेरु के वे अधिवासी साढ़े चार हजार

---

१ ऋग्वेद के सातवें मण्डल में शरद्, ६ठे में और ५वें में हेमन्त, १० वें में ग्रीष्म और वसन्त और नाना स्थानों में शीत ऋतु का वर्णन आया है।

१ अमेरिका के बोस्टन विश्वविद्यालय के प्रेसिडेण्ट डाक्टर 'वारेन' ने उत्तरमेरु के सम्बन्ध में जिन ग्रन्थों की रचना की, उन्हीं को पढ़कर तिलक ने प्रथम इस मत का समर्थन किया। इसके बाद मिस्टर गिलबर्ट, मिस्टर 'विल्चेल' अध्यापक 'स्पेन्सर' आदि अमेरिकन पण्डित, अध्यापक 'गिकि', मि० 'मालार्डरिड' आदि इंग्लैण्ड के विद्वानों और 'मोनस्टूअर्ट' 'जेराफ' आदि नारवे के विद्वानों के मतों को पढ़कर वे इस सिद्धान्त पर पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष के पश्चात् भी जीवित थे ? एक मनुष्य के लिए साढ़े चार हजार वर्ष तक जीवित रहना किस प्रकार संभव है ? और इतने दीर्घकाल तक उस स्मृति को हृदय में धारण कर फिर उसको समसामयिक रूप से वर्णन करना भी किस प्रकार सम्भव है ? उत्तरमेरु को त्यागने और वेदों की रचना करने के बीच जो साढ़े चार हजार वर्षों का दीर्घ समय बीता, उस समय में आर्यों ने जो नाना प्रकार के कष्ट सहे, जिन नाना देशों में भटकते फिरे, नाना प्रकार की अभिज्ञताओं का संचय किया, नाना देशों का भ्रमण किया, उनका कोई उल्लेख नहीं किया, यहाँ तक कि आभास तक नहीं दिया और साढ़े चार हजार वर्ष पूर्व की बातें उन्होंने लिख डालीं, यह कैसे माना जा सकता है !

'आर्य' जर्मनी, स्कैण्डिनेविया या पोलैण्ड से देश-विदेश में फैले ; इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए जो युक्तियाँ दी जाती हैं, उनका मूल आधार उन देशों की भाषाओं के साथ आर्यभाषा का साम्य ही है। पर मैक्समूलर आदि पण्डितों के विचार में भाषाओं के अन्दर ऐसा कोई गुरुत्वपूर्ण सादृश्य नहीं पाया जाता। केवल कुछ पशु-पक्षियों के नामों का सादृश्य ही उपलब्ध है। ऐसा सादृश्य पृथ्वी के अनेक देशों में पाया जाता है।

स्कैण्डिनेविया, जर्मनी, आदि समुद्रतटवर्ती देश हैं। यदि आर्य उन देशों से आए होते तो सामुद्रिक मछलियों तथा समुद्री नामों के साथ उनका अधिक परिचय होता, किन्तु ऐसा नहीं देखा जाता है।

इस प्रकार जब हम देखते हैं कि जहाँ आर्यों के विदेश से भारत में आने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है, केवल अनुमान पर निर्भर करके ही विद्वान् उस सिद्धान्त पर पहुँचे हैं, वहाँ आर्यावर्त्त के साथ उनकी कीर्ति और गौरवस्मृति अविच्छेद्य भाव से जड़ित है। वस्तुतः भारत से ही विदेशों में जाकर आर्यों ने अनेक स्थानों में अपने उपनिवेश बसाए और विश्व-विजय की। आर्यों के प्राचीन साहित्य में इसे सिद्ध करनेवाले प्रमाण उपलब्ध हैं।

आर्यों के आदि निवासस्थान का परिचय 'आर्यावर्त्त' शब्द से मिलता है। 'आर्यावर्त्त' शब्द का अर्थ उल्लूक भट्ट ने इस प्रकार किया है—"आर्या अत्राकीर्त्यन्ते पुनः पुनरुद्भवतीत्यार्यावर्त्तः—अर्थात् आर्यों ने इसी स्थान पर बारबार जन्मग्रहण किया है, इसलिए इस स्थान का नाम 'आर्यावर्त्त' है। महर्षि मनु ने आर्यावर्त्त की सीमा इस प्रकार निर्दिष्ट की है :—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधाः।[1]

जिसके पूर्व और पश्चिम में समुद्र विद्यमान है, उत्तर और दक्षिण में पर्वतमाला विराजमान है, वह पुण्य-भूमि ही आर्यावर्त्त है। इससे ज्ञात होता है कि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व में बंगोपसागर और पश्चिम में अरबसागर, इन चार सीमाओं के अन्तर्गत प्रदेश ही आर्यावर्त्त है।

रामायण के आदिपर्व में सगर राजा ने यज्ञवर्णन के उपलक्ष में आर्यावर्त्त का आभास दिया था। उससे ज्ञात होता है कि हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का प्रदेश ही आर्यों का आदि निवासस्थान था।[2]

अमर कोष में लिखा है कि विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यप्रदेश ही आर्यों का निवासस्थान था[3]। यही आर्यावर्त्त ब्रह्मावर्त्त, ब्रह्मर्षि देश, मध्यदेश आदि भागों में विभक्त था।

सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य का प्रदेश ब्रह्मावर्त्त; कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और शूरसेन प्रभृति देश ब्रह्मर्षिदेश; हिमालय और विन्ध्य के मध्य और विनशन के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम का देश मध्यप्रदेश के नाम से पुकारा जाता था[4]। विदेश जय करने पर किसी-किसी समय आर्यावर्त्त की सीमा बढ़ भी जाती थी। वामन पुराण में जम्बूद्वीप (भारतवर्ष) का जो वर्णन है, उससे ज्ञात होता है कि उत्तर में तुर्किस्तान तक भारत की सीमा फैली हुई थी।

महर्षि मनु-द्वारा वर्णित आर्यावर्त्त की सीमा की व्याख्या करने पर कुछ विद्वानों के मत में पूर्व में चीन

१ मेधातिथि ने मनु के उक्त श्लोक का भाष्य इस प्रकार किया है—"पर्वतयोर्हिमवद्विन्ध्ययोर्यदन्तरं मध्यः सः आर्यावर्तो देशो बुधैः शिष्टैरुच्यते"—मनु २ अध्याय २१ श्लोक, मेधातिथि भाष्य।

२ आदिपर्व, ३९ वाँ अध्याय, ४-५ श्लोक

३ आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः
[History of the world by Durgadas द्रष्टव्य]

४ मनुसंहिता, द्वितीय अध्याय, १७-२२ श्लोक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्र तक और पश्चिम में भूमध्यसागर तक आर्यावर्त्त की सीमा फैली हुई थी।

ग्रीक ऐतिहासिक आरियान के मत में भारत वर्ष की सीमा उत्तर में तरास पर्वतमाला, साईलेशिया, लाईसिया, पाम्फेलिया, प्रभृति देशों तक विस्तृत थी।

तरास पर्वतमाला एशिया के तुरस्क राज्य में अवस्थित है। उनके मत में तरास से काकेशस और काकेशस से हिमालय के उत्तर तक भारत की सीमा फैली हुई थी। इस मत के अनुसार अरब, पारस और टर्की का कुछ अंश और अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान-सहित मध्य-एशिया का विराट् अंश भारत के अन्तर्गत था।

चीन, पारसी, पारद, दरद और हूण प्रभृति जातियाँ भारत की सीमा पर निवास करती थीं, मनुसंहिता में ऐसा उल्लेख आया है। आरियान एवं मनु के मतों को मिलाकर पाश्चात्य पण्डितों ने इस प्रकार से भारत की सीमा निर्धारित करने की कोशिश की है।

ग्रीक ऐतिहासिक 'टालेमी' के मत में भारत की सीमा मध्य एशिया के बहुत दूर तक विस्तृत थी। उनके मतानुसार उसके उत्तर में बैक्ट्रिया, पश्चिम में पार्थिया (पारस) और पूर्व में अराकान और ब्रह्मदेश था। आर्यों ने समय-समय पर विभिन्न देश जीतकर अपने राज्य में मिला लिए थे, इसी कारण इस विषय में नाना प्रकार के मत प्रचलित हैं।

ऋग्वेद संहिता में आर्य शब्द का उल्लेख बार-बार आया है[1]। आर्यगण यज्ञ कर रहे हैं; आर्यगण इन्द्रादि देवताओं से वर की प्रार्थना कर रहे हैं, ऐसे उल्लेख ऋग्वेद के बहुत से हैं।

आर्य शब्द का अर्थ है—

'महाकुलकुलीनार्य सभ्यसज्जनसाधवः' (इत्यमरः) "आराजातास्तत्त्वेभ्य इत्यार्याः, आर्या मतिर्यस्य स आर्यमतिः" (वाचस्पति मिश्रः) कर्त्तव्यमाचरन् कामकर्त्तव्यमनाचरन्, तिष्ठति प्रकृताचारो यः स आर्य (इति स्मृतिः)

जो महाकुल, कुलीन, सज्जन, साधु, जो आर्यमति अर्थात् विशुद्ध तत्त्वनिचय का निकटवर्ती श्रेष्ठ बुद्धियुक्त व्यक्ति है; जो कर्त्तव्य परायण, अकर्त्तव्यविमुख और आचारवान् है, वही आर्य नाम से पुकारा जाता है। संक्षेप में जो सुगुणाधार और सम्पन्न थे, वे ही आर्य कहलाते थे।

यास्क ने वेद-व्याख्यान में अपने निरुक्त ग्रन्थ में आर्यों का साक्षात् ईश्वर का पुत्र कहकर वर्णन किया है। कारण वे भगवत्प्राप्ति की चेष्टा में सदैव मग्न रहते थे।

आर्य शब्द ऋ धातु से उत्पन्न हुआ है (ऋ+ण्यत)। ऋ धातु का अर्थ है 'गमन', व्याप्ति'। सायणाचार्य ने उस धातु के अर्थ के अनुसार आर्यशब्द का अर्थ अरणीय या 'गन्तव्य' किया है, जिन्होंने नाना स्थानों में जाकर अपनी कीर्ति की प्रतिष्ठा की। आर्य शब्द के अर्थ से यही समझा जाता है। आर्यों के अतिरिक्त अन्यान्य जातियों को अनार्य कहा जाता था। वेद में उनको कभी दस्यु और कभी दास के नाम से कहा गया है। यदि मध्य-एशिया अथवा उत्तरमेरु के किसी केन्द्र से आर्यगण पृथ्वी के चारों ओर फैलते तो आर्य और अनार्यों की संज्ञा इस प्रकार कभी न दी जाती और न एक ही पूर्वजों के वंशधरों के आचार-व्यवहार, ज्ञान-बुद्धि में इतनी विभिन्नता मिलती; व ऋग्वेद आदि लिखे जाने के सहस्रों वर्ष पश्चात् भी अन्य देशवासी इतने असभ्य और मूर्ख होते। यदि एक ही जाति एक ही समय में भिन्न-भिन्न देशों में फैलती तो केवल भारतवर्ष ही ज्ञान, विज्ञान, दर्शन आदि विषयों में इतना उन्नत न होता और न अन्यान्य देश अज्ञान के अंधकार में डूबे रहते।

---

१ ऋग्वेद के प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, प्रभृति मण्डलों में आर्य जाति का उल्लेख हुआ है।

१ योरपीय आर्य शब्द का अर्थ दूसरे प्रकार से करते हैं। उनके अर्थानुसार आर्यगण 'कृषक' श्रेणी के हैं और आर्य शब्द 'अर्' धातु से उत्पन्न हुआ है। 'अर्' धातु का अर्थ 'भूमिकर्षण' है। अर्थात् भूमिकर्षण या कृषिकार्य जिनकी जीविका थी, वे ही आर्य नाम से परिचित थे। प्राचीन लैटिन और ग्रीक भाषा में 'अर्' (Ar) धातु का अर्थ है 'कर्षण'। योरप की अधिकांश भाषाओं में 'अर्' धातु इसी अर्थ में प्रयुक्त है। अतएव आर्य शब्द का अर्थ भी वे इसी प्रकार करते हैं। यह धारणा कितनी भ्रमपूर्ण है, इसका पता सहज ही मिल जाता है। संस्कृत में 'अर्' नाम की कोई धातु ही नहीं है; आर्य शब्द 'ऋ' धातु से उत्पन्न हुआ है। अतएव पाश्चात्य पंडितों के इस सिद्धान्त को हम किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोने के दूसरी ओर

श्री गोपालकृष्ण भनोत

चाय की प्याली-पर-प्याली उड़ रही थी पर रँग न जमता था। आखिर कौल साहब को पूछना ही पड़ा—"ऐसी भी क्या बात हो गई, जो तुम इतने उदास और मुख लटकाए बैठे हो?" कौल साहब पुराने मित्र ठहरे, उस पर मनुष्य-स्वभाव के जानकार और आलोचक। मुझे तो वे खुली किताब की भाँति पढ़ जाते थे।

"जीवन कुछ नीरस प्रतीत हो रहा है", अपनी अकारण उदासी को मुसकराहट में उड़ाने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा, "प्रतिदिन वही मैं और वही संसार। कोई अन्तर नहीं। मैं तो तंग आ गया हूँ। आखिर कुछ-न-कुछ रंगत तो जीवन में आनी ही चाहिए।" मैंने प्रश्न-सूचक दृष्टि से उनकी ओर देखा।

वह मुसकरा उठे। बोले—"सावधान रहना, मित्र! कौन जानता है, कोने के दूसरी ओर क्या छिपा है? कोना पार करते-ही तुम्हारा जीवन नई धारा में बह सकता है।"

"सब जबानी जमा-खर्च" मैंने अँगड़ाई लेते हुए कहा, "जीवन में एकदम इतना अन्तर भी क्या आ सकता है?"

वह अब भी मुसकरा रहे थे, पर अब उनकी मुसकराहट की स्थिरता उनका किसी खास विचार में मग्न होना जतला रही थी। अचानक वे उठे। कागजों के एक पुलिन्दे में से उन्होंने एक लम्बा-चौड़ा पत्र निकाला और मेरे हाथ में दे दिया। मैंने उलटकर देखा, पीछे कोई नाम न था। प्रश्नसूचक दृष्टि से मैं उनकी ओर देखने लगा। मेरी दृष्टि को भाँपकर वे बोले—"इसे पढ़ो। पढ़कर ही पता चलेगा।" कौतूहल से मैं उसे पढ़ने लगा:—

प्रियवर,

मैं उलझन में आ फँसा हूँ। कुछ सूझता नहीं, क्या करूँ? मेरी इच्छा के विपरीत मुझे चक्र-व्यूह में खींचा गया है और अब मेरे मस्तिष्क ने काम करना बन्द कर दिया है। परिस्थिति ही कुछ ऐसी हो गई है कि करने और न करने दोनों में ही कष्ट है, दोनों में ही अन्याय है। इसीलिए तुम्हें सब लिख रहा हूँ। इस घोर अन्धकार में तुम्हीं आशा की किरण मालूम पड़ते हो। मैं गहरे जल में तैर रहा हूँ। थक गया हूँ। इतनी शक्ति नहीं कि बाहर आ सकूँ, पर डूबना भी नहीं चाहता। हृदय में भय समा रहा है—अज्ञात का भय, असंभव की संभावना का भय हृदय में समा रहा है। इसका अन्त क्या होगा, मैं नहीं जानता। इसीलिए तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। तुम्हीं भ्रमित-मन को उचित मार्ग दिखा सकते हो, पर पहले सब सुनो। इस अद्भुत न मानी जानेवाली घटना को सुनो। फिर अपना मन्तव्य प्रकट करना—

'गर्मी के दिन थे, अप्रैल मास। इतनी गर्मी भी नहीं कि घर से बाहर पाँव ही न रखा जा सके और नंगे सिर बाहिर जाना भी कुछ साहस का काम था। पर साहस अथवा कायरता का प्रश्न ही न था। जाना ही था। यदि पढ़ाई करनी है तो कालिज पहुँचना ही होगा। प्रतिदिन की भाँति सूर्य की ओर उन्मुखताभरी दृष्टि डालकर मैं साइकिल पर चल पड़ा—अकेला, अपने विचारों में तल्लीन। सोच रहा था—मनुष्य के जीवन की क्षुद्रता, निःसारता। और हँस रहा था इस निःसारता को भूले प्रत्येक स्त्री-पुरुष की मूर्खता पर, जो संसार में इतनी तल्लीनता दिखा रहे थे। साथ ही हँस रहा था अपनी मूर्खता पर कि उनकी मूर्खता को समझता हुआ भी स्वयं वही मूर्खता का कार्य करने को बाध्य हूँ। क्या रखा है इस सब पढ़ने में? पढ़कर क्या करूँगा, नौकरी? हमारे घर में भी एक नौकर था बिलकुल अनपढ़। उसे पढ़ने की आवश्यकता न पड़ी। मैं पढ़कर कौन विशेष कमाई कर लूँगा·····प्रतिदिन की भाँति मन विचार-सागर में डूब रहा था। नाना प्रकार के विचार बुलबुलों की भाँति तल पर उठ रहे थे और कुछ देर तक अपने विचित्र रंगों से मानस-चक्षुओं को भ्रमित कर फिर अन्तर्हित हो जाते थे। गर्मी से अनभिज्ञ रहने का यही उपाय मुझे मिला था। पर कब तक गर्मी की विद्यमानता से मैं अचेत रह सकता था? पसीने की बूँदें मेरे माथे पर उभर रही थीं और नीचे को ढुलकनी आरम्भ हो गई थीं। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्डिंज-पुल पारकर दरियागञ्ज की ओर बढ़ रहा था, शीघ्रातिशीघ्र कालिज पहुँचने को। सड़क पर चहल-पहल बहुत कम थी। कभी-कभी कोई मोटर या लारी तेजी से सरसराती या गड़गड़ाती निकल जाती थी। मेरे आगे कुछ दूर पर एक स्त्री साइकिल चला रही थी। हलके लाल रंग की साड़ी उसने पहन रखी थी। पीछे बालों के गुच्छे पर साड़ी का कोना नीचे को खिसक रहा था। मैं देख रहा था उस सरकते हुये कोने को, जैसे उस सुगन्धित कोमल स्थल से हटने को अनिच्छुक होने के कारण, बाधित-सा धीरे-धीरे सरक रहा हो। तेजी से मैं उसके पास से गुजर गया। प्रतिदिन ऐसी कई स्त्रियाँ देखने में आती थीं। रोज की आदत, उसके मुख पर दृष्टि डाले बिना मैं आगे कैसे जा सकता था। पैंतीस-चालीस वर्ष की वह मालूम पड़ती थी। गोरा रंग था, मुख सुन्दर था। धूप की तीव्रता से आँखों को बचाने के लिए उसने ऐनक लगा रखी थी। एक क्षण भर में यह सब देख मैं आगे बढ़ गया, उस क्षण वह भी मेरी ओर देख रही थी। मैं आगे बढ़ गया। एक आध-मिनट उसके मुख की स्मृति मन में चक्कर लगाती रही। उसके बाद फिर पूर्ववत् मैं चलने लगा। एक मिनट कठिनता से बीत पाया था। मुझे तेजी से साइकिल चलने की आवाज सुनाई पड़ी। टक्कर की आशंका से मैंने पीछे को देखा। वही स्त्री तेजी से आ रही थी। उसके मुख पर उतावलेपन का भाव छाया मालूम पड़ता था। मैं कुछ आश्चर्यान्वित होगया। वह मेरी ओर देख रही थी, एक विचित्र भाव से—उसमें हर्ष, आश्चर्य झलक रहा था। कुछ देर में वह मेरे बराबर आ गई। उसकी भाव-भङ्गी में अन्तर आ गया था। उल्लास उसके मुख पर था, मुसकराहट उसके होठों पर खेल रही थी। उसके होंठ कुछ कहने को हिल रहे थे, पर भावों के आवेग के कारण खुलते ही न थे। मैं प्रतीक्षा कर रहा था उसके बोलने की, इस रहस्य के उद्घाटन की। आखिर उसके मुख से हलके स्वर में निकला—आप यहाँ पर स्वामी!

मेरा रक्त बहना बन्द-सा हो गया। शरीर के रोंगटे खड़े हो गए। स्वामी! मैं और स्वामी! मैंने इधर-उधर देखा कि कोई समीप भी जा रहा है कि नहीं। सड़क सुनसान थी। मैंने अपने आपको सँभाला। वह कह रही थी—"यहाँ पर मिले आप और इस अवस्था में!

सूखे हुए कण्ठ से मैंने कहा—क्षमा कीजिए, आपको कुछ भूल हो गई है कदाचित्। न तो मेरा नाम ही 'स्वामी' है और न मैं किसी का स्वामी ही हूँ।

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली—अजी वाह! आप भी क्या खूब हैं? बीस वर्ष बाद भी आप में कोई अन्तर नहीं पड़ा। आप अब भी वह पहले से ही रहे। ठट्ठा करने का भी क्या अवसर मिला है! भला बताइए, क्या कोई स्त्री अपना पति पहिचानने में भूल कर सकती है?

मैं सोच रहा था, या तो सूर्य की गर्मी से 'डॉन किहोटे डि ला माञ्चा' की भाँति मेरा भी दिमाग पिघल गया है और या वही कोई प्रेत-लीला कर रही है। ठट्ठा कर रहा हूँ मैं या वह? कुछ कड़े स्वर में मैंने कहा—कम-से-कम आप तो अवश्य ही भूल कर रही हैं? मैं आपको बता रहा हूँ कि मैं आपका कुछ भी नहीं हूँ। मैंने तो आपको पहले कभी देखा ही नहीं। रही पति होने की बात—सो मैं कैसे हो सकता हूँ!

उसने अपनी भवें सिकोड़ ली थीं। जैसे मेरी बात समझने का प्रयत्न कर रही हो। मेरी बात समाप्त होते ही उसका मुख फिर चमकने लगा। कहने लगी—"आप तो वाकई बिलकुल भूल गए हैं। पर नहीं, भूल नहीं गए, भूल जाने का बहाना कर रहे हैं। मैं तो भूली नहीं। वही मुख, वही रंग, वही नेत्र, वैसी ही नाक, वैसा ही कद, वही चाल-ढाल! भूल कैसे हो सकती है? आप तो बिलकुल वही हैं। बीस वर्ष बाद भी आप ठीक वैसे ही हैं। पर ठहरिए", अभी तक हम साथ साथ साइकिल पर जा रहे थे। अब उतरना ही पड़ा। "आपको क्या अपना घर याद नहीं है।" मुझे अब वह पागल मालूम पड़ रही थी। सकपकाकर मैंने कहा—कौन सा घर? मुझे तो कोई घर याद नहीं है।

"अरे, वही बीअरड रोड। बागीचे के बीच में कोठी। आपके पिता जी ने ही तो उसे बनवाया था" नहीं याद है आपको? अच्छा, और ठहरिए। आपको सुशीला याद नहीं?"

मेरा मस्तिष्क वाकई चकरा रहा था। मैं पति बन चुका था; मेरी बीअरड रोड पर एक कोठी भी थी।। और मेरे पिता जी ने उसे बनवाया था? और अब यह सुशीला"

"सुशीला कौन है?" मैंने माथे से पसीना पोंछते हुए पूछा।

"उसका मुख कुछ उदास हो गया।" आप तो अब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुच सब भूल गए," निराश स्वर में उसने कहा—"सुशीला तो हमारी लड़की थी, बेचारी एक वर्ष बाद चल बसी।" यह तो कुछ अधिक था। मेरी एक लड़की भी थी। यह सौभाग्य है कि वह मर चुकी, मैंने सोचा, नहीं तो पता नहीं क्या होता? किस जादूनगरी में मैं पहुँच गया था? उस स्त्री को एकदम यह क्या सूझी कि मुझे ही पति बना बैठी। वह पैंतीस, चालीस की और मैं केवल इक्कीस। कहाँ, कैसे मैं उसका पति बन सकता था!

कुछ झल्लाकर मैंने कहा—देखिए श्रीमती जी! मुझे तो कालिज को देर हो रही है। मैं आपसे कई बार कह चुका हूँ कि आप भूल कर रही हैं। मैं आपका पति नहीं हूँ, नहीं हूँ, नहीं हूँ। कैसे हो सकता हूँ? अभी तो इक्कीस वर्ष का हुआ हूँ। आपसे मेरा विवाह कहाँ हुआ, कैसे हुआ, कब हुआ, किसके सामने हुआ?

उसके नेत्रों में आँसू भर आए। बोली—आप निर्दयी हैं! इतने वर्षों बाद आप मिले और फिर भी मुझे ठुकरा रहे हैं। अन्ततः सौभाग्य से हमारा पुनर्मिलन हुआ और आप फिर भी मुझसे भागे जा रहे हैं। एक बार पहले भी आप भाग गए थे, मुझे अकेली छोड़कर। पर इस बार मैं न जाने दूँगी।"

मैं सोच रहा था, इसका अन्त कहाँ होगा? वह भूल कर रही है, भारी भूल कर रही है। पर इसे भूल नहीं समझती। व्यर्थ में आँसू बहा रही है। पर उससे छुटकारा भी कैसे मिले? अचानक मुझे एक बात सूझी—

"देखिए", मैंने उससे कहा: "मुझे कालिज को देर हो रही है। अच्छा यही होगा कि कल आपकी कोठी पर आऊँ और तब हम इस पर विचार करें कि मैं आपका पति हूँ कि नहीं?"

उसका मुख काला पड़ गया। "तो आप मुझे छोड़कर जाना चाहते हैं। कल यदि न आए तो," आप-ही-आप वह कह उठी।

"अवश्य आऊँगा। निस्सन्देह आऊँगा", मैंने शीघ्रता से कहा। अविश्वास उसके मुख पर था! "सच कह रहे हैं आप?—नहीं, नहीं। आप पीछा छुड़ा रहे हैं। आप नहीं आएँगे, नहीं आएँगे।" अचानक वह रुक गई। विचारमग्न, अस्फुट स्वर में उसके मुख से निकला, जैसे आप-ही-आप सोच रही है—"पर मैं रोक भी नहीं सकती, रोक भी नहीं सकती"—और एकदम उसके मुख पर दृढ़ भाव छा गया। निश्चय-पूर्ण स्वर में उसने कहा—"आप जाना चाहते हैं तो जाएँ। पर कल आपको अवश्य आना होगा। मैं प्रतीक्षा करूँगी। और यदि आप न आए तो—" उसकी आवाज टूट गई। "अवश्य आऊँगा, अवश्य आऊँगा" मैंने शीघ्रता से कहा। "मैं प्रण करता हूँ अवश्य आऊँगा?" मुझे भय था कि कहीं कोई और बाधा उपस्थित न हो जाए। इस कारण इतना कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना मैंने साइकिल पर पाँव रखा और वह भागा कि कालिज पहुँचकर ही साँस ली।

❀ ❀ ❀

भूल कैसे सकता था मैं उसे? ज्यों-ज्यों प्रयत्न करता, त्यों-त्यों वह पुनः नेत्रों के सम्मुख आ विराजती। यह सारा कैसा अद्भुत व्यापार था! क्या वह स्त्री पागल थी? नहीं। मेरा हृदय नहीं कहता था। जब मैं साइकिल पर उसके पास से गुजरा था, वह बिलकुल सीधी-सादी अन्य पढ़ी-लिखी स्त्रियों-सदृश मालूम पड़ती थी। फिर एकदम उसके मन में क्या आया, जो उसने मुझे पति कहकर पुकारना आरम्भ कर दिया? मेरे अस्वीकार करने पर भी उसमें कोई अन्तर न पड़ा। बात क्या थी? क्या मेरा मुख किसी अन्य पुरुष से इतना मिलता था कि वह भूल कर रही थी, अवश्य यही बात होगी। पर फिर आयु की भूल! उसका पति कम-से-कम चवालीस वर्ष का होता और वह लड़की। या तो उस स्त्री को भ्रांति हो गई थी या मैंने स्वप्न देखा था! मैं उसे भुला देना चाहता था, एक कष्ट-दायक स्वप्न की भाँति उसे भुला देना चाहता था। उसे मृगतृष्णा, पागल की झोंक, गर्मी का प्रभाव कहकर मन से मिटा देना चाहता था। पर वह आँसू-भरा मुख, वह सदैव सम्मुख उपस्थित रहता था।

'कृष्णपाल को तुम जानते ही हो। उन दिनों वहीं मेरे पास ठहरा था। रात को हम प्रायः लोधी रोड पर घूमा करते थे; बातें करते थे, फजूल बातें, जो युवक जवानी की मस्ती में प्रायः किया करते हैं और स्वयं ही उन पर हँसते हैं। उस रात मैंने कृष्णपाल को दिन की सारी घटना सुनाई। हृदय का भार हलका करना था, सुनानी ही पड़ी। सुनकर वह मुझे पकड़कर बिजली के लैंप के नीचे ले गया और ध्यान से मेरी ओर देखने लगा। देख-कर उसने सिर हिलाया, अपना अविश्वास प्रदर्शित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। "तुम झूठ बोल रहे हो," उसने कहा, "मुझे बना रहे हो। यह हो कैसे सकता है? या तो वह पागल थी या तुम्हें भ्रांति हुई है।"

मैंने सिर हिलाया। "नहीं दोस्त, भ्रांति नहीं थी, यथार्थ था। वह इसी प्रकार मेरे समीप खड़ी थी, जैसे इस समय तुम मेरे पास खड़े हो। उसके वे शब्द अभी भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं; मेरे हृदय को झंकृत कर रहे हैं: 'अन्ततः सौभाग्य से हमारा पुनर्मिलन हुआ और आप फिर भी मुझसे भागे जा रहे हैं।' ये पागल के शब्द नहीं थे, ये एक विरहिन प्रेमिका के शब्द थे। मुख पर आच्छादित अनुपम हर्ष को मैं कैसे भूल सकता हूँ।"

आश्चर्य से कृष्णपाल मेरे मुख की ओर देखने लगा—तुम्हें सचमुच कुछ हो गया है। उपन्यास कुछ अधिक तो नहीं पढ़ लिए? किस मर्ज में फँस रहे हो और कहाँ? चालीस वर्ष की बूढ़ी के यहाँ! अरे यार, कोई सीमा होती है। चलो, घर चलें। कल प्रातः तुम्हारा दिमाग ठीक हो जाएगा।

मैं झुँझला उठा। वह मुझे पागल समझ रहा था! मैंने कहा—'देखो! कृष्णपाल, तुम मेरी बात समझे नहीं हो। कौन कहता है, मुझे प्रेम हो गया है? हो भी कैसे सकता है? मैंने प्रेम करने को उसमें देखा ही क्या है? नहीं, यह बात नहीं। केवल उसका वह विषाद-युक्त मुख मुझे अस्थिर कर रहा है। जब उसने गम्भीरता से कहा—'यदि आप न आए तो·····और इतना कहकर चुप हो गई तो उस अपूर्ण वाक्य के सम्भावित मतलब को स्मरण कर मैं काँप उठा। यदि मैं न जाऊँ तो क्या होगा···क्या···क्या··· कौन जानता है क्या होगा···

"तो फिर चले जाओ न", कटाक्ष करते हुए कृष्णपाल ने कहा, "इन्तजार तो वह करेगी ही! हर्ज ही क्या है? आखिर पति ही तो बनोगे! सो भी मुफ्त में, बिना किसी प्रयत्न के।" यह कहकर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसके प्रश्न का उत्तर देना मैंने उचित न समझा। मैं उसकी ओर से मुख मोड़कर घर को चला। पर हँसी मुझे भी आ रही थी। सारी घटना ही ऐसी थी कि कोई हँसे बिना रह नहीं सकता था। मैं धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ा। थोड़ी देर बाद वह भी मेरे साथ आ पहुँचा। हम चुपचाप साथ-साथ चलने लगे। पहले उसने ही शान्ति-भङ्ग की।

"तो तुम कल जा रहे हो?"

"हाँ", कुछ बात समाप्त करने के लिए और अपने हिचकिचाते दिल को दृढ़ करने के लिए मैंने एक दम कह दिया। वह चुप हो गया। पर थोड़ी देर बाद ही खिलखिलाकर हँसने लगा। हँसते-हँसते लोटने लगा। मैंने शान्त और गम्भीर रहने का भरसक प्रयत्न किया पर न रहा गया। पागल की भाँति मैं भी हँस पड़ा।

* * *

कौन सी चीज मुझे उसकी ओर खींच रही थी? उसके विचित्र व्यवहार का हेतु जानने की उत्सुकता? चंचल मन? अथवा उसका करुणापूर्ण मुख? मैं कह नहीं सकता। साँझ हो रही थी। बिजली के स्तम्भों की छाया लम्बी पड़ती जा रही थी। वायु में ग्रीष्म ऋतु के सायंकाल की निश्चलता आभासित थी, जब उछलते मन से मैंने उसकी कोठी में पदार्पण किया। अन्य कोठियों की भाँति उस कोठी के भी चारों ओर उद्यान था, पुष्पपौदों, पुष्प-लताओं से घिरे हुए घास के क्षेत्र थे, जिनके चारों ओर ग्रीष्म की उष्णता से उनकी रक्षा करते हुए श्यामल वृक्ष लहलहा रहे थे और था रात की रानी की कषाय सुगन्धि से पूर्ण स्थिर वायु-मण्डल। धीरे-धीरे पाँव रखता हुआ मैं बढ़ रहा था, उस कोठी की ओर, जिसे सूर्य की किरणें उस दिन अन्तिम बार प्रकाशमय कर रही थीं। मैं जा रहा था, धीरे-धीरे, कोठी के ऊपर दृष्टि जमाए। अचानक पास की पुष्प-लताओं के पीछे से सरसराता हुआ एक पुरुष मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उसके आकस्मिक आगमन से मैं चौंक उठा। वह वृद्ध था पर बलिष्ठ था और हाथ में लिए हुए खुरपे से माली मालूम पड़ता था। तीक्ष्णता से वह मेरे मुख की ओर देखने लगा।

"क्या चाहते हैं आप?" उसने कुछ कठोर स्वर से पूछा। मैं कुछ कहने को ही था पर उसकी भाव-भङ्गी देखकर मेरे शब्द मुख में ही रह गए। उसके नेत्र फूल रहे थे—आश्चर्य से, भय से। कुछ कहने के लिए उसका मुख खुल रहा था—खुला ही रह गया। खुरपा उसके हाथ से इस प्रकार झूलने लगा जैसे कटे वृक्ष की डाली झूलती है। और तब वह चीख उठा: "बाबूजी!" केवल इतना ही और उसके बाद वह भाग खड़ा हुआ, कोठी की ओर। जैसे पिशाचों की सेना उसका पीछा कर रही हो। मैं हैरान खड़ा था। यह 'बाबूजी' क्या मुझे ही कहा गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ? क्या सचमुच ही मैं उस घर का स्वामी था ? तो फिर उस भय का क्या कारण ? कोठी के भीतर किवाड़ जोर से खुलने और बन्द होने की आवाज आ रही थी। थोड़ी देर में बाहर का किवाड़ खुला और वह मेरे सामने खड़ी थी। अस्त होनेवाले सूर्य की एक भूली हुई किरण उसके मुख को आलोकित कर रही थी। वह मुसकरा रही थी, मधुर भाव से, आन्तरिक प्रसन्नता से, जैसे उसकी मनोकामना के अनुकूल उसे उत्तर मिल रहा हो। क्षण भर वह वैसे खड़ी मेरी ओर देखती रही और तब हाथ बढ़ाए शीघ्रता से मेरी ओर आई—"आ गए, मेरे स्वामी !...चलिए, भीतर चलिए।"

मेरी साइकिल पकड़कर उसने एक ओर खड़ी कर दी और मेरी भुजा पकड़कर वह भीतर ले चली, मन्द-मन्द गति से। वही कोमल मुसकराहट उसके मुख पर खेल रही थी। मन्त्र-मुग्ध मैं उसके साथ जा रहा था। मेरे हृदय में एक विशेष आनन्द, एक विशेष सुख का भाव उभर रहा था। "क्या मैं स्वप्नलोक में हूँ ?" मैं सोच रहा था और साथ ही विचार उठ रहा था, "तो यह स्वप्न-लोक सदैव क्यों न बना रहे ?" मैं उस देश का आनन्दोपभोग करने को तैयार था।

उसका मधुर स्वर संगीत-ध्वनि की भाँति मुझे निद्रित-सा कर रहा था। अर्थ जानने की चेष्टा करने की अनिच्छा से, मैं असतर्क-सा उसके शब्द सुन रहा था जैसे मनुष्य पक्षियों का कलरव सुनता हो अथवा बहते जल की धीमी कलकल में लीन हो। "मेरे हृदय में भय समा रहा था," वह कह रही थी, "कि कदाचित् आप न आएँगे। प्रातः से मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। ज्यों-ज्यों रात्रि समीप आ रही थी, मेरी आशंका बढ़ती जा रही थी। मेरे हृदय में अंधकार का भय समाता जा रहा था। प्रतिदिन भी मैं अकेली रहती थी पर आज यह अकेलापन ही मुझे खाए जा रहा था। अब आप आ गए। इतने वर्षों के बाद आप फिर आ गए। वर्षों के बाद मेरा हृदय फिर हरा हो रहा है। मेरे मन में आनन्द की लहर पुनः दौड़ रही है...।" अर्ध-चेतन अवस्था से मैं सब सुन रहा था। बिजली की रोशनी में कमरा जगमगा रहा था। फर्श पर कोमल कालीन बिछा था, जिसमें मेरे पाँव धँसते जा रहे थे। पाँव में सुख-पूर्ण खुजलाहट उत्पन्न हो रही थी। मखमली सोफे और कुर्सियाँ, दूध-सी सफेद मेज, किवाड़ों और खिड़कियों पर हलके नीले रंग के पर्दे—उन सबके मानों स्वाभाविक पारस्परिक संमिश्रण से मन में सुख की लहर-सी उमड़ रही थी। और बिना हिले-डुले, बिना कोई परिश्रम किए मैं उस लहर पर बहता जा रहा था। संसार से अनभिज्ञ, स्वयं से अनभिज्ञ। वह बोल रही थी मैं चुपचाप सुन रहा था, ठीक वैसे ही जैसे विचार-मग्न पुरुष किसी प्रिय गाने को रेडियो पर सुन रहा हो। वह अपनी प्रसन्नता में लीन थी। उसे इस बात का ध्यान ही न था कि मैं उसकी ओर ठीक ध्यान नहीं दे रहा हूँ।

अचानक मेरे मन में उठा कि वह खड़ी है और कोई विशेष बात कह रही दे—"खाना तो खाएँगे न आप ? मैंने स्वयं अपने हाथों से बनाया है !....." मैं कुछ कहने को ही था, कोई आपत्ति प्रकट करनेवाला ही था, वह झटपट भीतर चली गई।

उसके जाते ही मेरा दिमाग कुछ ठिकाने पर आने लगा। खुमारी दूर होने लगी। मैं सोचने लगा "इस प्रकार किसी के घर खाना खाना ठीक नहीं। पता नहीं, वह कैसी स्त्री है ? ... पता नहीं, वह किस भूल में भूली है।..." खाने से पहले मैंने उस भूल को दूर करने की ठानी। आखिर जिस समस्या को सुलझाने मैं आया था, वह तो वैसी ही उलझी पड़ी थी।

स्वयं ही खाना लेकर वह आई। मैंने खाने से इनकार कर दिया। मेरे सिर से भूत उतर चुका था। उसका मुख फीका पड़ गया; होंठ सूख-से गए; आँखें तर हो गईं। मैं स्वयं अस्वीकार करने पर पछता रहा था। कुछ भर्राए स्वर में उसने पूछा—"क्यों ? क्या मुझसे कोई अपराध हुआ है ?" यही तो साफ-साफ पूछने का अवसर कथा। "अपराध तो नहीं हुआ," मैंने हा, "पर आपको मालूम भी है मैं कौन हूँ ?"

"मेरे स्वामी।"

"यह तो आपने कल भी कहा था। पर....."

वह मुसकरा उठी। आँसू धुल गए, "तो कल ठीक ही तो कहा था। कल से आज तक में आप में कोई अन्तर तो पड़ नहीं गया।"

मैंने कहा—"पर आप भूल कर रही हैं। मैं कल भी आपका पति नहीं था, आज भी नहीं हूँ। हो कैसे सकता हूँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हो कैसे नहीं सकते आप ?" वह बोली। "मेरा आपसे विवाह हुआ था। हमारे लड़की हुई थी। आप पति नहीं थे तो और क्या थे ?"

मैं चुप हो गया। इस प्रकार कुछ भी ठीक से मालूम पड़ता न दीखता था। मैंने एक और मार्ग पकड़ा—अच्छा, ठहरिए। ऐसे आप नहीं मानेंगी। आप यह बताएँ मैं आपका पति कब बना था ?

"था का क्या मतलब ?" उसने तुरन्त कहा, "आप अब भी हैं।"

मैं कुछ झुँझला उठा और बोला—मेरा मतलब अब से नहीं। मेरा मतलब है पहले से, बहुत पहले से। जब मैं आपसे बिछुड़ा था। हाँ, कब आपसे बिछुड़ा था ?

"ठीक इक्कीस वर्ष पहले।"

मैं उछल पड़ा—तो देखिए न। इक्कीस वर्ष पहले तो मैं उत्पन्न भी नहीं हुआ था। तभी तो मैं आपसे कह रहा हूँ कि आप गलती कर रही हैं।

वह मुसकरा पड़ी। "गलती नहीं कर रही हूँ, स्वामी, ठीक ही कह रही हूँ। आप तो तब जीवित थे। आपके पैदा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।"

मेरा सिर घूम-सा गया। उठकर मैंने कहा—क्या कह रही हैं आप ? इक्कीस वर्ष पहले मैं जीवित था और बीस वर्ष पहले मैं पैदा हुआ था। मतलब क्या ? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

"भई वाह," वह बोली, "मामूली सी बात है। इक्कीस वर्ष पहले आप जीवित थे। आपका मुझसे विवाह हुआ था। आप इस कोठी में रहते थे। इक्कीस वर्ष पहले ही आप मुझसे बिछुड़ गए...।" घूम-फिरकर वहीं-के-वहीं। पर अब मैं छोड़नेवाला न था।

"बिछुड़ गए का क्या अर्थ ?" बात काटते हुए मैंने कहा, "क्या मैं भाग गया था ?"

रोनी आवाज में उसने कहा—"जी नहीं ! भागे नहीं थे। मृत्यु का हाथ आपके सिर पर था। आप इस संसार से ही चल बसे थे...?"

मैंने एक लम्बी साँस खींची जैसे हृदय से भार उतर गया हो। "तो फिर तो झगड़ा ही समाप्त हो गया। जब मैं संसार से ही चल बसा, जब मेरा शरीर ही भस्म हो गया तो बाकी रहा क्या ?..."

[जून

"आपकी आत्मा तो अमर थी," बात काटते हुए उसने कहा, "एक शरीर का नाश होते ही आपको दूसरा शरीर मिल गया। मैं आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। इक्कीस वर्ष बाद आप फिर मुझे उसी अवस्था में मिले, ठीक वैसे ही, उसी रूप में...।"

यह क्या बकवास थी ? यह हो कैसे सकता था, मैं सोच रहा था। क्या मैं मायाजाल में फँसा पड़ा था ? मेरे मस्तिष्क के चारों ओर चक्कर बँधता प्रतीत होता था। मैं उसे परे हटाना चाहता था। मेरे मुख से स्वयमेव निकल पड़ा—"यह हो कैसे सकता है ?" वह मुसकरा पड़ी—"हो कैसे नहीं सकता ? प्रेम के सम्मुख एक जीवन का क्या मूल्य है ? प्रेम अमर है। प्रेम अमरता प्रदान करता है। यदि इस जीवन में प्रेम हमें मिला सकता है तो अगले जीवन में क्यों नहीं ? एक जीवन की क्षुद्रता में दो प्राणी बुलबुलों की भाँति उठकर शीघ्र ही अन्तर्हित हो जाते हैं पर प्रकृति की अनन्तता में नहीं। उनका अस्तित्व अन्तर्हित नहीं हो सकता। वे किसी और रूप में प्रकट होंगे, अवश्य प्रकट होंगे। प्रेम उन्हें फिर मिलाएगा। इसमें आश्चर्य की क्या बात है ?"

निश्चल बैठा मैं सुन रहा था। तो इस प्रकार उसके लिए मैं अब भी उसका पति था ! असम्भव। यह कैसे हो सकता था ? इसे कैसे माना जा सकता था ? बुद्धि पर छा रहे घने बादल को परे हटाने की चेष्टा करते हुए एक बार फिर मैंने पूछा—"अच्छा बताइए, मेरा उस समय नाम क्या था ?"

"दिनेशचन्द्र।" दिनेशचन्द्र तो अब मेरा नाम नहीं था, मैंने उसे बताया। उसने केवल सिर हिलाया—"इससे क्या अन्तर पड़ता है ? केवल नाम के अन्तर से ही नहीं, आप किसी और ही रूप में भी आ सकते थे; पर मैं आपको अवश्य पहिचान लेती। आप अवश्य मुझे मिलते।" अविश्वास का भाव मेरे मुख पर था। देखकर वह खड़ी हो गई—"आप नहीं मानते ? अच्छा आइए, मेरे साथ आइए। मैं आपको दिखलाती हूँ। वर्षों से जो रूप मेरे हृदय में घर किए है ; वर्षों से जिसकी मैं पूजा करती हूँ, उसे प्रत्यक्ष दिखाती हूँ। आइए...।" चुपचाप, मुग्ध, मैं उसके साथ चल पड़ा। दूसरे कमरे में अँधेरा था। उसने बिजली की रोशनी की। कमरा जगमगा उठा। तसवीरों से, चित्र-क्रियाओं से, किताबों से, कमरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजा हुआ था। "यही आपका कमरा है, स्वामी।...ठीक उसी अवस्था में जैसे आप छोड़ गए थे...और वह देखिए, सामने दीवार से लगे हुए उस फोटो को देखिए..।"

मैं देख रहा था। उसके कहने से पहले ही देख रहा था, फूले नेत्रों से, धकधक करते हुए हृदय से; काँपते हुए शरीर से, अपनी प्रतिमूर्ति की ओर देख रहा था—जैसे मुझे ही उठाकर दीवार पर लटका दिया गया हो...। 'असम्भव है', मेरे दोस्त; तुम कहोगे, 'असम्भव है।' पर मेरी वह तसवीर मेरी उस व्याकुल अवस्था पर मुसकरा रही थी, कौतूहल से, किंचित् कटाक्ष से। मित्र, वह दिन गया और यह दिन आ पहुँचा है। प्रतिदिन मैं उस कोठी में जाता हूँ, जैसे लोहा चुम्बक की ओर जाता है, ठीक वैसे ही। अपने आपको मूर्ख कहता हूँ, पागल कहता हूँ। उसे पागल कहता हूँ, मायावती कहता हूँ। पर मैं जाता हूँ; रोज जाता हूँ। यह सब ठीक नहीं। मेरा मन कहता है, यह सब ठीक नहीं; इसका परिणाम बुरा होगा। घरवालों को यदि पता चल गया तो पता नहीं क्या तूफान उमड़ आएगा पर मैं जाता हूँ। रुक नहीं सकता। प्रतिदिन वह मेरी राह देखती है। मुझे देखते ही हर्ष से खिल उठती है। फिर दो, तीन घंटे बातों में ही बीत जाते हैं। आँसू-भरे नेत्रों से वह मुझे विदा करती है—अनिच्छा से, काँपते हुए हृदय से, जैसे फिर लौटकर नहीं आने का। वह स्मृति मेरे साथ रहती है; मुझे पुनः वहाँ जाने पर बाध्य करती है। क्या कर सकता हूँ मैं? तुम्हीं बताओ? मुझे कुछ नहीं सूझता! मैं स्वयं इस पहेली को सुलझा नहीं सकता.....

तुम्हारा अभिन्नहृदय

❀ ❀ ❀

पत्र मैंने कौल साहब को लौटा दिया। कुछ देर तक चुपचाप बैठा उन्हें पत्र सँभालते देखता रहा, विचार-मग्न, उसी कहानी को सोचते हुए। अन्त में पूछना ही पड़ा—'तो आपने इसका क्या उत्तर दिया, कौल साहब?' वे मेरी ओर देखने लगे, एक भावपूर्ण मुसकराहट से! "मैंने उसे लिखा उससे विवाह कर लो, उसके साथ रहो।" प्रसन्नता से मैं उछल पड़ा।

"फिर क्या हुआ?" उनकी उस विचित्र मुसकराहट का रहस्य जानने को मैं अधीर हो उठा था। उस मुसकराहट में अचानक करुणा का भाव झलकने लगा। उठकर वे अपनी आलमारी के पास गए और कागज के दो छोटे से टुकड़े उठाकर मेरे हाथ पर रख दिए। वे किसी अखबार से काटे हुए थे। एक पर लिखा था—

"जुलाई २२—खबर मिली है कि कल रात भँवर में फँस जाने से यमुना नदी में एक किश्ती उलट गई। उसमें एक स्त्री और एक पुरुष थे। मालूम होता है सुहावनी रात्रि में तरंगों पर चन्द्र-क्रीड़ा का नृत्य देखने की चाह उन्हें काल के मुख में खींच ले गई। लाशों का अभी तक पता नहीं चला। खोज हो रही है।" और दूसरे पर लिखा था—"जुलाई २३—परसों रात यमुना में किश्ती उलटने से जो स्त्री-पुरुष डूब गए थे, उनकी लाशें ओखला के पास पाई गई हैं। इतनी देर जल में रहने से दोनों के शरीर बहुत विकृत हो गए थे। दोनों एक-दूसरे से इतनी दृढ़ता से लिपटे हुए थे कि उन्हें अलग न किया जा सका। दोनों के नेत्र बन्द थे। युवक का सिर उस स्त्री के वक्षस्थल पर था और स्त्री का एक गाल युवक के बालों में उलझा हुआ था। लाशों की पहिचान के लिए उन्हें अस्पताल ले जाया गया। चुपचाप मैंने दोनों कागज उन्हें लौटा दिए। उनकी मुसकराहट करुणा में लुप्त हो गई थी और मैं प्रयत्न करने पर भी एक लम्बी साँस न रोक सका—न रोक सका।

हमारी वैदेशिक नीति

श्री सहदेव चक्रवर्ती, विद्यालङ्कार

ऐसा प्रतीत होता है कि संसार के विभिन्न भागों में अमरीका और रूस के मध्य होनेवाले 'शीतयुद्ध' से उत्पन्न स्थिति की गम्भीरता को हम भली भाँति अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। सबसे पूर्व हमें ग्रेटब्रिटेन की मनोवृत्ति के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। आजकल मलाया में जो कुछ हो रहा है, उसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होना स्वाभाविक ही है। निस्सन्देह मलाया में कम्युनिस्ट दल जो कुछ कर रहा है, वह अत्यन्त घातक एवं भयङ्कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उसने हिंसात्मक साधनों का अवलम्बन करके मलाया की शान्ति को हानि पहुँचाई है। इस दल की छापामार युद्ध-प्रणाली का अन्त किया ही जाना चाहिए। यदि इस प्रणाली के नाश के लिए शस्त्रों का भी प्रयोग करना पड़े तो हमें कोई आपत्ति नहीं। किन्तु मलाया में यदि कम्युनिस्टों का दमन वहाँ की कोई राष्ट्रीय सरकार करती तो सारा संसार इस कार्य की सराहना करता। फिर भी क्या अब हम मलाया में ब्रिटिश सरकार की कठोर साम्राज्यवादी नीति का समर्थन कर सकते हैं? मलाया के लिए वह एक विदेशी सरकार है। अतः वहाँ ब्रिटेन की किसी भी नीति का समर्थन नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त उसे न्याय भी नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार ब्रिटिश जनता-द्वारा अफ्रीका में भी जो नीति अपनाई गई है, वह भी सराहनीय नहीं कही जा सकती। हिन्देशिया के प्रति भी ब्रिटिश मनोवृत्ति आपत्तिजनक है। इन्हीं परिस्थितियों में हमें विचार करना है कि क्या हम वस्तुतः ब्रिटेन के मित्र बने रह सकते हैं और राष्ट्रमण्डल में उसके भागीदार भी।

राष्ट्रमण्डल में भारत के प्रवेश से हमारी स्थिति पूर्वापेक्षया अधिक सुदृढ़ मानी जा सकती है और संसार के वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति में भी हमारा और ब्रिटेन का पारस्परिक सम्बन्ध उपयोगी सिद्ध हो सकेगा। किन्तु इसके लिए सबसे पहली शर्त यह है कि ब्रिटेन अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति को दूर करके उपनिवेशों की जनता को स्वतन्त्र कर दे; और वहाँ सुदृढ़, शक्तिशाली तथा स्थिर शासन की स्थापना में उन्हें यथोचित सहायता दे। जब तक ब्रिटेन ऐसा नहीं करता, तब तक भारत के लिए राष्ट्रमण्डल की सदस्यता स्वीकार करना विशेष महत्त्व का सिद्ध नहीं होगा। सम्भव है, ब्रिटेन अपनी साम्राज्यवादी नीति पर ही दृढ़ रहे; इस वस्तु-स्थिति में हमारा राष्ट्रमण्डल में प्रवेश करना व्यर्थ सिद्ध होगा और हम संसार के उपहास-भाजन ही बनेंगे। क्योंकि ऐसा करना भारत के घोषित आदर्शों के सर्वथा प्रतिकूल समझा जाएगा। जहाँ तक हमारी वैदेशिक नीति का सम्बन्ध है, वहाँ तक ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध स्थापित करना हमारे लिये निश्चिन्तता का कारण ही बनेगा। इस सम्बन्ध में हमें अपनी वैदेशिक नीति की घोषणा स्पष्टतया कर देनी चाहिए।

अमरीका क्या कर रहा है?

संयुक्तराज्य अमरीका सारे संसार को लोकतन्त्रीय सिद्धान्तों एवं आदर्शों में विश्वास करने की दुहाई दे रहा है। किन्तु क्या वह स्वयं भी लोकतन्त्र के चरण-चिह्नों पर चल रहा है? क्या वह सारे संसार को इकाई मानकर एक देश के समान दूसरे देश की और एक व्यक्ति के समान दूसरे व्यक्ति की सहायता कर रहा है? इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक ही है। वह तो पश्चिमी योरप के देशों को ही आर्थिक सहायता देने में रत है। ऐसा क्यों? इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो वह युद्ध से छिन्न-भिन्न पश्चिमी योरप के देशों को उनके पुनर्वास में सहायता देना चाहता है और दूसरे वह उनकी जनता की सोवियत रूस के कम्युनिस्ट प्रभाव से रक्षा करके उन पर अपना आतङ्क लादना चाहता है। चीन में भी अमरीका की नीति घातक रही है। वह तो चीन के साथ मजाक ही करता रहा। उसने मार्शल च्यांगकाई शेक को मिथ्या आश्वासन और आशाएँ दिलाईं और बाद में उसे आपत्ति में डाल दिया। इसका परिणाम एक ही हुआ और वह था मार्शल चांग का अपने देश से अप्रत्याशित पलायन।

क्या अमरीका भारत और अन्यान्य देशों को भी चीन की-सी घातक-स्थिति में पड़ा देखना चाहता है? इस प्रश्न का उत्तर अमरीका को देना ही होगा और यही प्रश्न है जिसके सम्बन्ध में हमारी सरकार के विदेश-विभाग को अमरीका से कोई भी सम्बन्ध स्थापित करने से पूर्व इसके उत्तर की माँग करनी चाहिए। हमें भलीभाँति अनुभव है कि इस समय संसार दो भागों में विभक्त है। संसार के कुछ देश सम्पन्न एवं धनी हैं और दूसरे निर्धन हैं। जहाँ अमरीका जैसे सम्पन्न देश हैं, वहाँ उनकी तुलना में एशिया और अफ्रीका के निर्धन देश भी हैं। क्या ये देश अपनी आर्थिक स्थिति की विषमता के रहते हुए इन समस्याओं के सम्बन्ध में एक हो सकते हैं? यह कदापि सम्भव नहीं। इस समय संसार के राजनीतिज्ञों का एक ही कर्त्तव्य है और वह है संसार को एक करना। क्या अमरीका ने अन्य देशों के स्तर को उन्नत करने के लिए कोई साधनों को जुटाने का विचार किया है? इस प्रश्न का उत्तर अमरीका को अपने हृदय पर हाथ रखकर देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एशिया को कोई सहायता नहीं।

अमरीका ने अभी तक एशिया के लिए कुछ नहीं किया। हम तो इतना ही कह सकते हैं कि उसे पश्चिमी योरप के देशों के समान अन्य देशों को भी आर्थिक सहायता देनी चाहिए। आज तक अमरीका ने बर्मा, हिन्देशिया, हिन्दचीन और चीन की रक्षा का विचार नहीं किया। यदि सुदूरपूर्व एशिया के इन देशों की जनता की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक होती तो क्या उनके लिए विध्वंस-प्रिय दलों से सहयोग करना प्रिय होता? हमसे कहा जाता है कि अमरीका और पश्चिमी देशों की जनता के प्रयत्न से पश्चिमी योरप को कम्युनिज्म के पाश से इसलिए बचा लिया गया, क्योंकि अमरीका ने इन देशों को मशीनरी आदि आवश्यक पदार्थों से भरपूर सहायता की है। अमरीका ने एशियाई देशों की यह सहायता क्यों नहीं की? हमारे विचार में भारत-सरकार के विदेश-विभाग को अमरीका तथा उसके अन्य साथी देशों से स्पष्ट कह देना चाहिए कि यदि आप लोग अधिनायकवाद के बढ़ते हुए प्रभाव के विरुद्ध संसार में लोकतन्त्रीय आदर्शों की स्थापना चाहते हैं तो आपको औद्योगिक और आर्थिक दृष्टि से हीन एशियाई तथा अन्य देशों की सब सुलभ साधनों से सहायता करनी चाहिए। हमें तो सहायता की अपेक्षा है और वह अमरीका से ही प्राप्त हो सकती है।

ब्रिटेन के उदारदली समाचार-पत्र 'मानचेस्टर गार्जियन' ने अभी उस दिन अपने अग्रलेख में लिखा था कि "एशिया में हमारी आर्थिक योजना का आधार भारत ही हो सकता है और पश्चिम का हित भारत की सहायता में ही निहित है। चीन में कम्युनिज्म की विजय का एकमात्र यही उत्तर है।" ब्रिटिश अनुदारदली समाचार पत्र 'डेलीमेल' ने लिखा था कि "पश्चिम भारत को एशिया में एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखना चाहता है। किन्तु पश्चिम की आर्थिक सहायता के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता" इससे स्पष्ट है कि पश्चिम के कुछ लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि यदि चीन, हिन्देशिया, मलाया और हिन्दचीन की भाँति हमने भारत की भी सहायता न की तो वह भी कम्युनिस्ट देशों के पाश में फँस जाएगा।

अमरीका के समान रूस का भी एक पक्ष है। वह भी दक्षिण-पूर्वी योरप के अपने साथी देशों की सहायता में रत है और वह पूर्व के देशों को भी सहायता पहुँचाने की एक योजना बना रहा है।

तटस्थता की नीति

अभी तक हम रूसी या अमरीकी गुटों में से किसी एक से भी कोई सहायता प्राप्त नहीं कर सके। इसका एकमात्र कारण हमारी दोनों राजनीतिक गुटों से पृथक् रहने की नीति की घोषणा है। भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने कई बार घोषणा की है कि हम निर्धन रहना स्वीकार करेंगे, किन्तु किसी गुट में सम्मिलित नहीं होंगे। तब हमें क्या करना चाहिए? हमें केवल तटस्थता की नीति के स्थान पर किसी स्पष्ट नीति का अनुसरण करना चाहिए। हमारे प्रधान मन्त्री ने हिन्देशिया के सम्बन्ध में एशियाई देशों का एक सम्मेलन बुलाकर अपनी निश्चित नीति का परिचय भी दिया था। सिवाय रूस के, संसार के सब देशों के समाचारपत्रों ने पं० नेहरू के इस कार्य की सराहना की थी। जहाँ हमें आंग्ल अमरीकी राष्ट्रों के हितों की ओर ध्यान नहीं देना है, वहाँ हमें अपने पड़ौसी दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों को सहायता देने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। यदि हमारी सरकार ने हिन्देशिया की स्थिति पर विचार करने के लिए आस्ट्रेलिया, लंका और पाकिस्तान आदि सरकारों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन नई दिल्ली में आयोजित किया तो यह उचित ही था।

अब तो एक ऐसा समय आ पहुँचा है, जब कि भारत को एक विशाल लोकतन्त्रीय क्षेत्र के संगठन के लिए एक स्थायी योजना बनानी चाहिए। इस दिशा में भारत बहुत कुछ कर सकता है। जिस प्रकार सोवियत रूस संसार के विभिन्न देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों का संगठन किए हुए है, उसी प्रकार लोकतन्त्रीय देशों को भी अपनी लोकतन्त्रात्मक समाजवादी विचारधाराओं का प्रचार करना चाहिए। अतः हमारे लिए इस प्रकार की घोषणा करना आवश्यक है कि हम साम्राज्यवाद और अधिनायकवाद के विरुद्ध हैं। इन दोनों पहलुओं में इंग्लैण्ड और रूस अपने को लोकतन्त्रीय नहीं कह सकते। हम किसी भी प्रकार के वर्ण-विद्वेष के विरुद्ध हैं और सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनिवेशों में वहाँ की जनता को स्वाधीन देखना चाहते हैं। इस दिशा में अमरीका और ब्रिटेन को अपने को लोकतन्त्रीय घोषित करने से पूर्व बहुत कुछ उन्नति करनी है। हम आर्थिक अधिनायकवाद और एक देश-द्वारा दूसरे देश पर आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करने की परम्परा के भी विरुद्ध हैं। इस दिशा में रूस और अमरीका को अन्ताराष्ट्रिय राजनीति के क्षेत्र में अपने को लोकतन्त्र के समर्थक घोषित करने से पूर्व आर्थिक अधिनायकवाद की अपनी वर्तमान नीति का सर्वथा परित्याग करना होगा।

लोकतन्त्रीय मोर्चा

इस समय राजनीतिक अधिनायकवाद के विरोधी सब देशों को एक लोकतन्त्रीय मोर्चा संगठित करना चाहिए। इस मोर्चे के संगठन के लिए भारत को एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के उन सब देशों को आमन्त्रित करना चाहिए, जो लोकतन्त्र के सिद्धान्तों पर अवलम्बित शान्ति के लिए पारस्परिक सहयोग-द्वारा कार्य करने के इच्छुक हों।

अभी संसार के कई असभ्य देशों में काले कहे जाने वाले लोग बसते हैं, जो अभी तक चिरकाल से साम्राज्यवादी जुए के नीचे पिस रहे हैं। अब वे पान-अफ्रीकन कांग्रेस और एशियाटिक अफ्रीकन पीपल कांग्रेस आदि अपनी राष्ट्रीय संस्थाओं के निर्माण एवं संगठन में लग हैं। अमरीका और पश्चिमी देशों की सरकारों को इन काले लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्पर्क स्थापित करते हुए उनकी स्वाधीनता को प्रमाणित करना चाहिए तथा उपनिवेशों की साम्राज्यवादी शक्तियों को अपने साम्राज्यवादी हथकण्डों के प्रयोग से रोकना चाहिए और संयुक्त राष्ट्र-संघ की ओर से इन निर्धन, निरीह एवं निराश्रित काले लोगों को यथोचित परामर्श देना चाहिए। यदि अमरीका और पश्चिमी योरप के देश ऐसा करने में असफल रहे तो वह दिन दूर नहीं जब कि समस्त संसार सोवियत रूस की विचारधारा का समर्थक और अनुयायी बन जाएगा।

प्राप्ति

कुमारी प्रभा पारीक

'निला ! ओ निला !' माँ ने कई बार पुकारा। निला का कोई उत्तर न मिला। माँ ने झिड़ककर कहा—"ओ निला ! नहीं सुनेगी क्या ?" परन्तु निला का कोई उत्तर फिर भी न मिला। छोटी बहिन ने कहा—"माँ, निला तो अपने ठाकुर के पास आँखें मूँदे बैठी है, वह बोलती ही नहीं।" माँ कुछ गम्भीर हो निला के पास चली गई। सप्तवर्षीय बालिका पृथ्वी पर आसन लगाए, नेत्र मूँदे बैठी थी। उसके सम्मुख संगमरमर के सिंहासन पर चन्दन-चर्चित काले-श्वेत पत्थर रक्खे थे। माँ कुछ पल खड़ी रही, फिर उन्होंने पुकारा "निला, चल बेटी। कुछ खाएगी नहीं ?" परन्तु निला ने नेत्र न खोले। बालिका के कृष्ण वर्ण मुख पर हठीली छाप और भी गहरी हो गई। छोटी बहिन कुछ न समझ सकी। उसको निला की कठोर-शान्त मुद्रा पर कौतूहल हो रहा था। उसने झट निला के कन्धों को झकझोरकर कहा—"जीजी, आँखें खोल।" निला ने आँखें खोलीं। उसके नेत्र विस्फारित हो चारों ओर के वातावरण में सूने-से विचर रहे थे—जैसे कोई सुषुप्ति के स्वप्न को जाग्रत् अवस्था में खोज रहा हो।

नेत्रों के उस भाव को देख माँ ने भयविह्वल हो कहा—"मेरी बिटिया, आज कुछ न खाएगी ?" परन्तु निला जैसे अब भी कोई वस्तु खोज रही थी। माँ के स्वर से कुछ ज्ञान हुआ। कुछ उत्तर न दे रोने लगी। माँ ने बच्चे को बहलाने के सभी साधनों का प्रयोग किया, परन्तु वह न चुप हुई। वह पृथ्वी पर लेट गई और रोते-रोते उसे निद्रा ने आ घेरा।

निला मेरे पड़ौसी-परिवार की कन्या थी। प्राचीन ब्राह्मण परिवार के संस्कारों ने निला के बचपन में ही भक्ति-भावना भर दी थी। जन्मजात संस्कारों के साथ नित्य ही पिता की अर्चना में भगवान् के सबका निर्वाहकर्ता होने की चर्चा तथा भगवान् के अनन्त सौन्दर्यपूर्ण होने का भाव निला के हृदय में और वातावरण में भक्ति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरने लगा। छोटी-सी बालिका पिता-द्वारा बताए पूजा-मार्ग पर चलने लगी। उसके बाल हृदय का समस्त औत्सुक्य, समस्त भोला स्नेह ठाकुर में ही बहने लगा। माता-पिता और पड़ौसी सभी निला को असाधारण दृष्टि से देखते थे। निला और भी अपने ठाकुर में रहने लगी। उसक जागर्ति की क्रिया और सुषुप्ति के स्वप्न ठाकुर में ही थे। माता-पिता कहते, हमारी निला देवी है। वह साधारण बच्चों को उसके पास न जाने देते। निला भी अपने को ठाकुर की कह किसी से न मिलती। उसके मन में एक विचित्र घृणा व्याप जाती। अवस्था के साथ ही उसकी भक्ति भावना अथवा संस्कार-जनित मनोविकार बढ़ता ही जाता था।

प्रबल संस्कारी होने के कारण पिता अपनी पुत्री की मनोभावना समझते थे। वे जानते थे कि निला संसार से पृथक्, साधारण संसारी मनोविज्ञान से दूर केवल ठाकुर के स्वप्न में रत होनेवाली बालिका है। यों उसको पहिचानकर भी वे विवाह का धार्मिक संस्कार पूरा करना चाहते थे। विवाह का अवसर भी आ गया। सोलहवर्षीय निला ठाकुर में रत न तो संस्कार का विरोध ही कर रही थी और न प्रफुल्ल मन से उसमें सहयोग ही दे रही थी। कदाचित् वह अपनी अवस्था के बालक-बालिकाओं में न रहने के कारण विवाह-सम्बन्धी भावों से अनभिज्ञ थी। उसके देवीत्व के हर्ष के कारण कोई ऐसी चर्चा चला भी न सकता था। माता-पिता अब तक निला के देवीत्व में हर्ष और मान अनुभव करते थे परन्तु अब उन्हें निला की ये बातें विचित्र-सी लगने लगीं। अब वे उसके संस्कार बदलकर उसे गृहलक्ष्मी के पद से विभूषित करना चाहते थे। परन्तु निला अब मनुष्य की छाया से भी बचकर अपने ठाकुर की – केवल ठाकुर की होना चाहती थी। उसमें यौवन के सम्पूर्ण चिह्न प्रस्फुटित हो चुके थे और कदाचित् मनोभाव भी। बसन्त की सुकोमलता, अपने हृदय में किसी को अपना कहने की एकांत कामना सब ठाकुर में अर्पण कर रही थी। आतुर मन ढल-ढल कर नित्य ही ठाकुर के स्नेह में बह रहा था। मनमानी करने का यौवन का हठ निला में वर्तमान था। यदि कोई उसके ठाकुर की अर्चना में बाधक होता तो वह क्रोध से तामस हो उठती।

विवाह-बेला में धूम मची थी। जगमगाता घर वर के स्वागत के लिए ओठों पर हँसी लिए था। निला अपने ठाकुर को ले गंगातट के एकान्त को चल दी। माँ ने रोका। निला को सुसज्जित कर जयमाल डालने के लिए ले जाया गया। स्तब्ध-मौन निला खोई-सी चल दी। द्वार-शहनाई के अंचल में छिपा यौवन शृंगार-सा रसमय हो उठा। निला द्वार तक पहुँची। मंगल गान आरम्भ हो गए। द्वार के पास पहुँचते ही निला ठिठककर खड़ी हो गई। स्तब्ध हो विस्फारित नेत्रों से न जाने क्या देखती रही। सहसा जयमाल फेंक जगमगाते दीपकों को बुझाती चल दी। कुछ समय के लिए सभी आश्चर्यचकित खड़े रह गए। किसी की समझ में न आया कि निला यह क्या कर गई। माँ निला को खोजने लगी। घर को अन्धकारमय बना कौन सा प्रकाश खोजने के लिए निला चल दी, कोई भी न समझ पा रहा था। घर में खोजा परन्तु निला का कहीं पता न था। ठाकुर का सिंहासन भी था परन्तु नित्य की ध्यान-मग्ना निला ठाकुर को प्राणों में निवसित कर मधुर-मधुर तपने की साधना छोड़ कहाँ चली गई! उसका असाधारण मनोविज्ञान कोई भी न समझ सका। मानव मन से दूर रहने के कारण उसके असाधारण मनोविज्ञान पर कोई युक्ति भी न जमती थी। एक पहेली थी। क्या निराकार नैश में निला की साकार प्रतिमा ठाकुर में मिल गई।

× × ×

यदि वर्त्तमान के प्रति असंतोष और रहस्य के प्रति कौतूहल न होता तो कदाचित् विश्व की कुसुम-सी कमनीय सुरभित भावना, नित्य नए सुखों की खोज और मानव जीवन के नए पहलुओं का उद्घाटन न होता। विलास-परिचर्या के पिंजरे में घि। मेरा मन बन्दी पक्षी की भाँति उन्मुक्ति-कामना से छटपटाने लगा। सुख की सीमा के बाहर मैं प्रकृति के कंटकों में फँसे सुमन के लिए लालायित हो उठी। उसी समय मेरे भाई को नए वन का मानचित्र बनाने को भेजा जा रहा था। आग्रह कर उनके साथ जाने को तत्पर हो गई।

दिन भर वन का निरीक्षण करने पर भी भय्या को मानचित्र के लिए केन्द्र-विन्दु न मिला। तरु-शाखाओं पर तैरती सन्ध्या की किरणें दिन के अवसान में जा मिलीं। वन अपनी बीहड़ता में साँय-साँय कर रहा था। खोजने पर भी मार्ग का कोई पता न लग रहा था। तरु-छाया और अन्धकार की सन्धि ने वहीं रुककर कोई प्रत्याशित आश्रय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजने को विवश किया। मकान की तो कोई आशा न थी, थोड़ा सा खुला मैदान ही हमारी आशा का सम्बल था। एक झुरमुट में झाँकने पर कहीं टिमटिमाता प्रकाश दिखाई दिया। सघन अंधकार में प्रकाश की दूरी का अनुमान दुस्तर था। फिर भी हम चले। कुछ ही दूर प्रकाश आलम्ब मिल गया। प्रकाश पहिले से अधिक प्रखर हो किसी रन्ध्र से आ रहा था। निकट आने पर पता लगा, प्रकाश आलम्ब एक खंडहर था। खंडहर अपने अन्तिम दिनों की राह पर था। दीवारों में उगी घास और जंगली पौदे पृथ्वी की ओर झुके किसी दिन वन की वनाली में मिलने की चाह में थे। उस निर्जन सनसनाते वन में धीमे प्रकाश में मानवता की रुचि देख मुझे आश्चर्य हुआ। उसी समय मैंने भैया से कहा—"भैया, मैं कहती थी न यदि हम थोड़ा-सा भी आत्मबल, आत्म-विश्वास रक्खें तो अवश्य मार्ग पा जाएँ।" भैया का ध्यान कदाचित् अपने मानचित्र में था और विपरीत परिस्थिति के कारण अशान्त भी। उन्होंने केवल 'हूँ' कहकर टाल दिया। थके होने के कारण आश्रयस्थान की ओर देखा। सहसा खंडहर का आँगन दीपकों की ज्योति से जगमगा उठा। प्रकाश के सहारे खंडहर के अग्रभाग में लकड़ी का द्वार दिखा। द्वार ठेला। आँगन के पश्चात् एक लम्बा प्रकोष्ठ था। उसी में दीपकों की पंक्ति थी। एक श्यामवर्ण स्त्री न जाने किस विचार में खड़ी थी। शरीर पर बहुत कम वस्त्र थे। वस्त्रों से फूटती हुई यौवन-कान्ति किसी नवीन प्रस्फुटित अछूती कली सी खिल रही थी! मुख पर अद्भुत दृढ़ता थी। मुख के भाव से ही प्रतीत होता था कि रमणी अवश्य ही संसार की भावनाओं से पलायन कर आई है और अलक्ष्य को पाने को विक्षिप्त है। हम खड़े-उसकी भावना को पहिचानने का प्रयत्न कर रहे थे। सहसा युवती ने अपने पार्श्व का दीपक बुझा दिया और फिर समस्त पाँति को बुझाती चली गई। मैं उसके विचित्र व्यवहार पर सोच रही थी कि युवती मर्मभरी चीत्कार कर उठी। वन की शून्यता को कम्पित करता हुआ स्वर, वायु में गूँजता उस खंडहर में व्यथा भर श्वास-सा फुटने लगा। मैं सहसा भैया के निकट आ गई। स्त्री का रुदन कम्पित स्वर में फूट रहा था।

"ओ तुम कहाँ गए? कहाँ? कहाँ? देखते नहीं, दीप जलाती हूँ, दीप बुझाती हूँ। सब छोड़कर तुम्हारी छवि के पीछे यहाँ तक चली आई। और तुम यहीं से छोड़कर चले गए। दीप जलाती हूँ, बुझाती हूँ, पर तुम नहीं आते। एक दिन भी नहीं आए! हाय!" कहकर स्त्री पुनः करुणतर स्वर में वन की शून्यता में रुदन करने लगी। खंडहर के प्रान्तर में अन्धकार में फैली अन्तर-व्यथा कण-कण के अस्तित्व में तड़प रही थी। वायुलहरी के तारों पर खेलती करुण रागिनी शून्यता में मिलती जा रही थी। रुदन-स्वर बन्द हो गया था परन्तु दुःखप्लावित हृदय की कम्पन जैसे दूर जा क्षितिज पर घिरी वृक्षाली में मिल रही थी। परन्तु अन्तर भाग में मृत्यु जैसी स्तब्धता और अन्धकार छा गया था। पद-चाप के स्वर से ऐसा प्रतीत हुआ जैसे स्त्री बैठ गई है, अथवा पृथ्वी पर लेट गई है। इतने में ही एक धीमा प्रकाश स्त्री के पीछे से आता दिखाई दिया। एक वृद्ध पुरुष स्त्री के निकट रुक गया। वृद्ध ने स्नेहसिक्त स्वर में पुकारा—'उठ बिटिया! निला!" निला नाम सुनते ही मेरी स्मृति-शृंखला झनझना उठी। स्त्री शान्त हो गई थी। वृद्ध ने फिर कहा—"जा बिटिया, अपने आसन पर सो जा।" स्त्री बेसुध-विस्मृत हो शरीर से पृथक् किसी लोक में थी। श्वास-गति से लग रहा था कि दिन भर का विकल सन-सनाता पवन संध्या की गति में मन्द हो शान्ति-अंचल ढूँढ़ रहा है।

वृद्ध को सम्मुख देखकर भी हम अभिवादन या परिचय का शब्द न कह सके थे। वृद्ध ने जब दीपक उठा-कर सम्मुख देखा तब भैया ने हाथ जोड़ दिए। वृद्ध दीपक ले हमारी ओर बढ़ आया था। उसकी झुकी पलकें ऊपर उठ मानों प्रश्न कर रही थीं कि इस निर्जन वन में आने का साहस हमने क्यों किया। मैंने कहा—"बाबा, हम मार्ग भूल जाने के कारण यहाँ आ भटके हैं। क्या रात भर के लिए आश्रय मिल सकेगा?" वृद्ध ने ओठों पर अंगुली रखकर मौन होने का संकेत किया। पश्चात् खंडहर से बाहर आने को संकेत किया। भयंकर एकाकीपन और अन्धकार में वृद्ध की मौनता से प्राण ऐसे ही जड़ होने लगे थे, जैसे शीत का सनसनाता पवन शरीर को कँपा देता है। हम जड़वत् वृद्ध के पीछे चल दिए। खंडहर के बाहर आकर सब रुक गए। इस उलझन में भी शरीर के वशीभूत जड़ को और स्वार्थ को न भुला सके थे। सनसनाते निर्जन वन की फू-कार से घबड़ाकर मन में प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत

लंदन के भारतीयों के बीच पंडित नेहरू

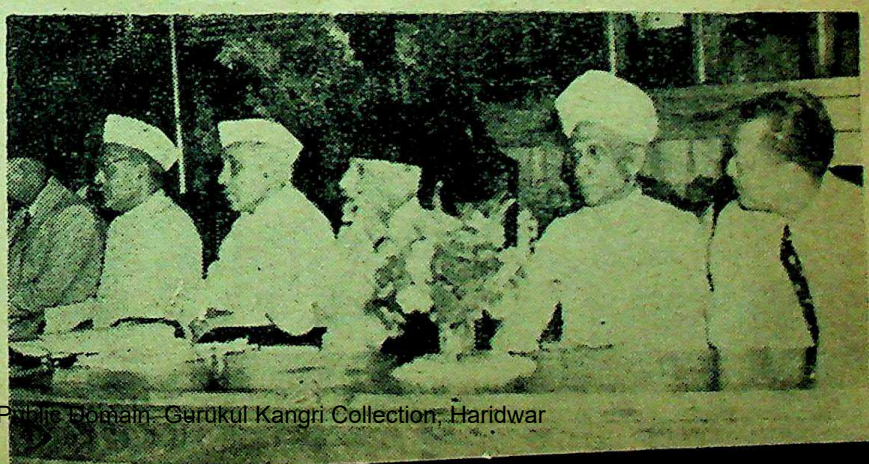

राष्ट्रिय सहयोग-सम्मेलन

भारतीय राष्ट्रिय सहयोग-सम्मेलन की बैठक पिछले दिनों दिल्ली में श्री राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सम्मेलन में पंडित नेहरू और मौलाना आजाद आदि भी उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंदन में

ब्रिटेनस्थित भारतीय प्रतिनिधि श्री मेनन के साथ पंडित नेहरू और श्रीमती इन्दिरा गांधी।

पुनर्मिलन

लंदन में ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल-सम्बन्धी सम्मेलन के लिए पंडित नेहरू और सर स्टेफर्ड क्रिप्स परस्पर बातें करते हुए जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा–क्या इस खंडहर से भी निराश्रित हो वन्य पशुओं का आहार बनना होगा। मोह से एक बार शरीर काँप गया। वृद्ध ने धीमे शान्त स्वर में पूछा––"आप लोगों को आश्रय ही चाहिए या भोजनादि भी?"

भैया ने कहा––"केवल आश्रय ही; भोजन का कष्ट न करें। प्रातः ही तो हम चल देंगे।" वृद्ध ने कोई जिज्ञासा न दिखाई। हम लोगों को वह खंडहर के पिछले भाग में ले गया जहाँ छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं। वृद्ध ने बिछौने पर बैठने का संकेत किया। हम लोग बैठ गए। वहाँ पर गृहस्थी का सभी सामान अल्प मात्रा में जुटा हुआ था। गृहस्थ का सामान और वृद्ध का गेरुआ वस्त्र देखकर शंका हुई कि यह वृद्ध अवश्य ही आध्यात्मिक नहीं है। यदि नहीं है तो फिर संसार में गृहस्थ का उपभोग न करके इस भयंकर अन्धकार की कालिमा में प्रकृति के खुले भैरव रूप में क्यों गृहस्थी सजा रक्खी है? मेरे नेत्र वृद्ध के गेरुआ वस्त्रों में छिपे रहस्य की खोज में उठ गए। वृद्ध शान्त भाव से भोजन बनाने का उपक्रम कर रहा था। भैया चुप थे। मुझे स्त्री का स्मरण आया। क्या वह उसी अवस्था में पड़ी होगी। निला—क्या मेरी पड़ोसिन भक्तिन निला है। यह वृद्ध क्यों कर इसे यहाँ लाया। क्या दुराचार के लिए पकड़ लाया है! परन्तु उसने तो स्पष्ट ही बिटिया कहकर पुकारा था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि भैया क्यों नहीं निला के लिए जिज्ञासा कर रहे हैं। क्यों नहीं वृद्ध से समस्त रहस्य पूछ लेते। इस निर्जन स्थान में दीप जलाना, फिर बुझा देना, चीत्कारकर वन के हृदय को भी हिला डालना, यह सब क्या है? अन्त में मैं अपनी जिज्ञासा न रोक सकी। कह उठी–"बाबा, आप उन्हें ऐसी अवस्था में छोड़ आए हैं। हमारे भोजन की चिन्ता न करें, उन्हें ही सम्भालें।"

वृद्ध ने पलकें झुकाए ही उत्तर दिया–"इस समय बोलना ठीक नहीं। वह स्वयं ठीक हो जाएगी।"

वृद्ध का उत्तर सुनकर मुझे निश्चय हो गया कि यह घटना प्रथम बार नहीं हुई। इसकी आवृत्ति होती ही रहती है। मैंने उत्सुकतावश पूछा—"बाबा उनकी ऐसी दशा क्यों हो जाती है?" इस बार भय्या भी बोल उठे–"मुझे तो यह स्त्री बड़ी विचित्र जान पड़ती है।" वृद्ध ने उसी निश्चितस्वर में कहा–"हाँ, सृष्टि में ऐसे जीव का होना असम्भव नहीं तो विचित्र अवश्य है।" प्रश्न का इतने संक्षेप में सुन मुझे संतोष न हुआ। मैं उस रहस्य के अन्तर में छिपी किसी गूढ़ बात की खोज में थी। मैंने फिर प्रश्न किया––"आप दोनों को इस स्थान में आए कितना समय हुआ? उनकी मानसिक दशा किस प्रकार ऐसी हो गई?"

वृद्ध ने कुछ स्मरण करते हुए कहा–"मुझे यहाँ आए पच्चीस वर्ष हो गए। निला दस वर्ष पूर्व ही यहाँ आई थी। उसकी मानसिक दशा किस प्रकार ऐसी हो गई, मैं स्वयं नहीं समझ सका। परन्तु, हाँ, उसके आगमन से अब तक की दशा देख मुझे उसके समक्ष या किसी महत् सत्ता के समक्ष सिर झुकाना पड़ा। जिस प्रकार माया के अवगुण्ठन से उन्मुक्त हो संसार को त्यागना कठिन था, उसी प्रकार इच्छा होने पर भी इस पगली का मोह त्याग वन की निर्जनता को त्याग जननगरी में प्रवेश करना कठिन है। उसके पागलपन ने मुझे बन्दी बना लिया है। अन्यथा मैं इस वन को त्याग समाज की चहल-पहल में खो गया होता।" मैंने पूछा—"आपको इसने कैसे रोक लिया?" वृद्ध ने कहा—"मुझे? मैं जिस कड़ी साधना की आकांक्षा कर उस ओंकार ब्रह्म को खोजने आया था, वह मुझसे आकाश के सितारों-जैसा दूर भागता गया। आकाश के सितारे तो दीख जाते हैं परन्तु, माया के आवरण ने चैतन्य को इस प्रकार आवृत्त कर लिया कि मुझे ब्रह्म की सम्भावना में भी सन्देह होने लगा। शनैः शनैः मुझे लगा, ब्रह्म कुछ नहीं, अधिदैव कुछ नहीं। यदि कुछ है तो वैभव-विलास में चमचमाता संसार-भोग का माधुर्य, धन का आनन्द। मुझे लगा, संसार में ही ऐसा छलछलाता मद्य है, जिसे पीकर तृप्ति हो सकती है। शेष मृग-मरीचिका है। कंचन-कामिनी और कादंबिनी के रूप ने मुझे ऐसा मोह लिया कि मैं वैराग्य का उपहास करने लगा। संसार की चहल-पहल में लौट जाने को उद्यत हो गया। उसी समय यह आ गई।"

भय्या ने पूछा, "यह यहाँ कैसे आ गई?"

वृद्ध ने अपनी कथा सम्बद्ध रखते हुए कहा—"मेरे मन में माया और ब्रह्म का कोई संघर्ष न रहा था। मैं पुनः समाज में अपना स्थान पाने के विचार में मग्न था। सन्ध्या के धीमे पग पश्चिम में डूब रहे थे। अन्धकार नभ में तैरता चला आ रहा था। मुझे ज्ञात नहीं कब अन्धियारी छा गई। मैं नव आशाओं, माया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नव रूपों में उलझा कुछ भी न देख रहा था। सहसा आज जैसा ही मर्मभेदी रुदन इस वन में गूँज उठा। संसारी आशाओं में उलझे हुए हास्यमय भविष्य पर रुदन का आघात सा लगा। रुदन की मानवी अनुभूति ने मुझे खींच लिया। अन्धकार की पृष्ठभूमि पर अन्धकार जैसा ही मानव शरीर दीखा। उस समय तक यह मूर्च्छित हो गई थी। मैं इसे उठाकर खंडहर में लाया। दीपक जलाकर देखा, युवती स्त्री का शरीर था। एक दो घण्टे पश्चात् इसकी मूर्छा दूर हो गई और यह चिल्लाने लगी "हाय कहाँ हो? तुमने मुझको छला—यहाँ लाकर छोड़ गए। क्यों? क्यों? कहाँ हो?" यह पगली-सी चीखने लगी। मैंने सोचा, अवश्य कोई पापी-दुराचारी अबोध भोली बाला को आत्मतृप्ति के पश्चात् यहाँ छोड़ गया है। क्रोध और घृणा से मेरी भृकुटी तन गई। प्रतिशोध का भाव उदय हुआ। मैंने ढाढ़स देते हुए कहा—"बेटी! धैर्य रक्खो, मैं खोजूँगा। कौन तुम्हें छोड़ गया है?"

"तुम खोजोगे? खोज दो, मेरे बाबा, तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ।" इसका क्रन्दन आर्तवाणी में परिवर्तित हो गया। मैंने पूछा "कौन है वह, बिटिया?" "वह मुझे दीखे थे। बहुत सुन्दर हैं। हाथ नहीं, पैर नहीं। केवल हँसता—हँसता ज्योतिर्मय स्वरूप था। आह, कितना सलोना? मैं पीछे भागती आई पर वह यहाँ खो गया। नहीं!—छिप गया। हाय! कहाँ छिपा? कहाँ? कहाँ?" कहकर चीत्कार कर उठी। मैं समझ गया; इसको मोहने-वाला मनुष्य नहीं; शरीरी नहीं। वह इसके हृदय, मस्तिष्क और आत्मा के चैतन्य से उपजा रूप है। धैर्य दिलाने के लिए कहा—"बिटिया, धैर्य रक्खो; अवश्य मिलेगा।"

"नहीं, तुम न खोज सकोगे। तुमने देखा ही कहाँ है! मैं स्वयं ही खोजूँगी।" कहकर भागने लगी। मैंने कहा—"भाग न, बिटिया! वह स्वयं यहीं आ जाएँगे।"

"आ जाएँगे, बाबा! सच! तो मैं यहीं बैठती हूँ! राह देखूँगी।" कह यह खुले आँगन में बैठी रही। समझाने पर भी भीतर न गई। किस समय इसे निद्रा ने आ घेरा, शान्ति दी; मुझे मालूम नहीं। मौन सितारों की हिलती-डुलती छाया में कितनी देर तक इसके निद्राच्छन्न शरीर को देख सोचता रहा—यदि ईश नाम की कोई भी शक्ति नहीं तो फिर इस बालिका के हृदय में इतनी भक्ति, खोजने की इतनी विकलता, मिलने की इतनी चाह, कैसे आई? क्या यह बालिका विक्षि। है या मेरी बुद्धि भ्रमवश ब्रह्म के सत्य को तज तम में घुलमिल विलास खोज रही है? तारों की सघन छाया में गम्भीर नीलाकाश को देख मेरे मन में एक अप्रत्याशित दुःख चुभने लगा। ऐसा दुःख जो मेरे वैभव-विलास के स्वप्नों पर हँस रहा था। मैं नेत्र मूँद प्राणों को भृकुटि के मध्य ला चित्त एकाग्र करना चाहता था, परन्तु मन चंचल हो बिखर रहा था।

प्रातःकाल के मन्द समीर में मेरा मस्तिष्क स्वप्नपूर्ण तरंगों में तैर रहा था। इसके विकल पगों की आहट से निद्रा टूटी। आँख खोलते ही इसके भविष्य की नवीन चिन्ता व्याप गई। इसको कहाँ पहुँचाना होगा? यदि न गई तो इसके रहन-सहन का पूर्ण प्रबन्ध करना होगा। मैंने पूछा, "बिटिया तू कहाँ जाएगी? मैं पहुँचा दूँगा।"

"मैं कहीं न जाऊँगी। वह यहीं खोया है। मैं उसको ढूढूँगी—कब तक छुपेगा! जाती हूँ, अभी खोजूँगी।" चिल्लाती हुई खँडहर के बाहर भाग गई। इसके विकल वाक्यों से वन मानों रो उठा। मैंने अपना समस्त सामान खोल डाला। सोचा, यह पगली जब तक यहाँ से न जाएगी; मुझे रहना ही होगा। और रहकर उसके भोजन का, रहने का प्रबन्ध करना होगा। मैंने पूछा, "तूने जो रूप देखा था, वह कैसा था, बिटिया?" "वह रूप! वह रूप।" कहकर वह हँसने लगी। फिर उसने रूप को अंकित करने का प्रयास किया, कोई आकार बनाने की चेष्टा की। परन्तु कुछ उल्टी-सीधी रेखाएँ रह गईं। उस दिन से इसे धुन लग गई। जब स्थान या पत्र पाती है, अंकन करती रहती है।" वृद्ध ने कोने में पड़े ढेर की ओर इंगित कर कहा—"यह सब उसी का प्रयास है। इसे अब इन पत्तों की कोई चिन्ता नहीं है। पर मैं चाहकर भी इन्हें जला नहीं पाता। मुझे लगता है कि यह प्रयास है तो किसी महान् आत्मा के अंकन का ही।"

मैंने कुछ पृष्ठ उठा लिए। खोलकर देखा वास्तव में वह रेखाएँ न थीं। वह रंग से आलोक और छाया में कोई रूप उठाने का प्रयास था। रंगों से कोई रूप न बन सका था, परन्तु जिस अनुपात से रंग फैलाए गए थे, उससे लग रहा था कि कोई अनुपम प्रकाश इस छाया के मध्य उठाने का प्रयास था। कई पृष्ठ उठाए, सबमें छाया का स्थान बदला था परन्तु आलोक से किसी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उठाने का ढंग वही था। मानों किसी चित्रकार ने अपना उद्देश्य दर्शाने के लिए चित्रकला के भिन्न भिन्न नियमों का पालन किया हो। मैंने वृद्ध से पूछा—"यह अब भी इसी प्रकार वन में भागती है और चीत्कार करती है?"

वृद्ध ने कहा—"नहीं। इसकी दशा स्वयं ही बदलती गई। पहिले जो विकलता इसमें थी, वह फिर करुणा में बदलने लगी। बाहर भागना बन्द कर दिया। कहने लगी—"मैं कहीं न जाऊँगी। वे ही मेरे पास आएँगे। मैं उन्हें बुलाकर रहूँगी।" मैंने सोचा—अब इसकी विक्षिप्तता दूर हो गई। कदाचित् यह लौट जाए। मैंने इससे कहा—"बिटिया, वे तो हर स्थान पर हैं। लौट चल, वे तुझे घर में ही मिल जाएँगे।"

इसने कहा—'नहीं; मैं न जाऊँगी। वे कभी वहाँ न जाएँगे। मुझे वहाँ एक दिन भी न मिले। जब मिले तो इस वन में ले आए। मिलेंगे तो यहीं। यहीं पर तो खोए थे।" मैंने कहा—"बिटिया, वे फिर वहीं भाग गए होंगे।"

इसने दृढ़ता से कहा—"नहीं! वहाँ क्यों जाएँगे। वहाँ उन्हें कौन चाहता है? किसने देखा है?" मैंने कई बार सोचा, यह तो यहाँ से न जाएगी। मैं कब तक बन्धन में फँसूँगा। छोड़कर भी चलने को उद्यत हुआ। परन्तु मेरा हृदय करुणा से भर गया। इसको तो खाने-पीने की भी सुधि नहीं है। यह यों ही मर जाएगी। मैं रुक गया। दो-तीन वर्ष पश्चात् इसने खँडहर से बाहर जाना बन्द कर दिया। प्रलाप भी कम हो गया। अधिक समय तो यह चुप रहने लगी या चित्र बनाने में संलग्न रहती। चित्र बनाते समय यह कुछ-न-कुछ बोलती रहती थी। परन्तु उतना चीत्कार न करती थी। खाने पीने और वस्त्रों की सुधि खोती जा रही थी। एक दिन मैं आवश्यक वस्तु लेने बाहर चला गया। सन्ध्या समय लौटकर आया तो देखा वह दीपकों को प्रज्वलित कर रही थी। मैं आश्चर्य में रह गया। मुझे प्रसन्नता भी हुई क्योंकि आज तक संसार के किसी व्यक्ति को ऐसा करते न देखा था। वह जो कुछ करती थी, अपने विक्षिप्त-पन में दर्शन के लिए। मैं संसार-त्यागी होकर भी उसके संसारी प्रयत्नों पर प्रसन्न था। परन्तु कुछ समय पश्चात् इसने दीपकों को बुझाना आरम्भ कर दिया और बुझाकर इसी प्रकार प्रलाप करने लगी। इसके प्रलाप से मैं इतना ही समझ पाता हूँ कि किसी ऐसे जगमगाते स्थान पर ही दर्शन हुए थे। दीपकों की जगमगाहट को बुझा इसने वह मूर्ति देखनी चाही थी। इसे वह मूर्ति इस वन की ओर देख पड़ी, अतः यह यहाँ भाग आई। यह प्रायः इसी प्रकार दीप जलाती है, प्रलाप करती है और दुःख-विह्वल हो मूर्च्छित हो जाती है। मुझे इसका भार सँभालते-सँभालते इससे मोह हो गया है। अब किसी दूसरे पर इसका भार छोड़कर मैं निश्चिंत नहीं हो पाता। यह स्वयं निर्बन्ध-निर्मोही हो मुझे बन्धन में बाँध बैठी है। अपने से अधिक इसके लिए चिन्ता करनी पड़ती है। जिस मोह, भ्रम, और सुख दुख की शृंखला को मैंने तोड़ना चाहा था वह इसके रूप में और भी बँध गई। इसे छोड़कर कैसे जाऊँ?"

वृद्ध ने साँस ली। भय्या ने कहा—"यह तो पगली है। क्यों नहीं इसको पकड़कर नगर में ले चलते। जैसी यह यहाँ है, वैसी ही वहाँ भी रहेगी। उसका विकार तो दूर होने से रहा। फिर आप क्यों कष्ट करते हैं?"

वृद्ध की झुर्री पड़ी पलकें ऊपर उठ गईं। उसने भय्या की ओर देखा, मानों कोई आघात पहुँचाया हो। कुछ तीव्र स्वर में कहा—"वह पगली है! कौन से सुख के लिए? वह केवल पगली है एक के लिए। जिसे हम नहीं समझ पाते, जिसे पाने का स्वप्न भी नहीं देखते। किन्तु वही आदि और अन्त है। लय और प्रलय है। पगली ने केवल एक ओर देखा है वही उसका साध्य है। विक्षिप्तता उसकी साधना है। साधना का रूप भिन्न-भिन्न होता है। किसी दिन यह पगली अपने पागलपन में ही सब कुछ पा जाएगी।"

भोजन के उपरान्त सब निद्रा में मग्न हो गए। आँखें खुली तो नभ के कोने में ललिमा छाई थी। भय्या ने उठते ही कहा, "चलो"। उस विचित्र नारी को, अपनी पूर्व-परिचिता पड़ासिन निला को, देखने की इच्छा हुई; परन्तु साहस न कर सकी। विचित्र आकर्षण मुझे राह से खींच रहा था। घर पहुँचने पर इच्छा हुई कि पड़ोसी-परिवार को सूचना दे दूँ कि दीप बुझाकर सहसा चली जानेवाली निला किस विचित्र साधना में लीन है। फिर विचार आया कि वे स्थूल के पुजारी हैं कहीं नीला की साधना में बाधक न हो जाएँ।

वर्षों पश्चात् भय्या का मानचित्र पूरा हुआ। अन्तिम बार उसकी परीक्षा के लिए भय्या को जाना था। मैं भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ चल दी। वनस्थली सदैव ही मेरे लिए जटिल और सघन रूप में खेलती प्रकृति की रंगभूमि रही। उस रूप की जटिलता और सघनता में मैं उलझ जाया करती थी। परन्तु अबकी बार मेरा मन प्रकृति के रूप को देखने के लिए लालायित न था। मेरा मन वनस्थित उस खँडहर की सजीव प्रतिमा निला में उलझा था, जो प्रकृति के सघन और जटिल रूप के अवगुण्ठन के परे उत्तम पुरुष का स्वरूप देखने के लिए विक्षिप्त थी।

खँडहर अब अपने असली खंडित रूप में कम दिखाई देता था। बनैले पौधों ने उसे ढक वन के तादात्म्य रूप में घेर लिया था। मैंने धीमे पग से खँडहर में प्रवेश किया। घुसते ही देखा, निला ध्यानमुद्रा में प्रतिमा-सी बैठी थी। अंग-प्रत्यंग मूर्तिवत् स्थिर थे। झुकी हुई बड़ी पलकों के नीचे अश्रुबिन्दु झलक रहे थे, मानों प्रातः की भीगी कोई कमल-पँखुरी अपनी अंजलि में अर्चना-जल लिए हो। उसके मुख पर पहिले जैसी विक्षिप्तता और व्याकुलता न थी। शान्ति-स्निग्ध दुःख के अन्तर पर खेलती आनन्द-लहरी ने उसके मुख पर गम्भीर भाव अंकित कर दिया था। कितनी ही देर तक मैं बैठी देखती रही। कौतूहल और श्रद्धा के मध्य उलझता हुआ मन कभी निला के भाव-जगत् को खोजने लगता और कभी भावों से भरी निला के पगों पर झुकने लगता। अब तक मेरा ध्यान निला की ध्यानमग्ना मूर्ति से न हटा था। वृद्ध के पगों की आहट से मैं सजग हो गई। पहिले के भाँति वृद्ध खँडहर के बाहर चला गया। मैं संकेत पा पीछे पीछे चली गई। वृद्ध मुझे भूला न था। पहिला परिचय उसे याद था। मैंने पूछा—"बाबा! निला तो बदली हुई सी प्रतीत होती है। उसकी विक्षिप्तता गम्भीरता में परिणत हो गई है।"

वृद्ध ने कहा—"हाँ बिटिया, अब वह पहिले जैसी नहीं रही। महीनों बीत गए, वह इस खँडहर के बाहर नहीं गई। उसका क्षेत्र अब इस खँडहर में ही सीमित हो गया है। न अब पहिले की भाँति प्रलाप ही करती है। अपने मौन में ही हँसती-रोती है। एक शब्द भी नहीं बोलती। घण्टों इसी प्रकार बैठी रहती है। कभी मुख पर हास छा जाता है; आनन्द-तरंगें हिलोर लेती हैं। कभी अलख के मधुरातप में घुल, वेदना में विकल, मन अकलुष हो इतना कोमल हो जाता है कि नेत्र के तरल बिन्दुओं में बहने लगता है। कई दिन बीत जाते हैं, भोजन भी नहीं करती। इसकी मौनता से मैं घबड़ा उठता हूँ।"

मैंने पूछा—"तो, बाबा, क्या यह अपने शरीर के अस्तित्व को भुला चुकी है?"

वृद्ध ने कहा—"अत्यधिक अंश तक। विषयों का सुख-दुःख केवल भ्रांति से उत्पन्न मोह का कारण होता है। विषयों से इसका मोह टूट गया है। इसके चित्त का प्रवाह एकाकार हो गया है। एक ही चिंतन है इसे; दूसरी चिंता उदय नहीं होती। यद्यपि निला शरीर रूप से मिलन चाहती है परन्तु चाह एक ही है। इसके हृदय और मस्तिष्क का प्रवाह एक ही ओर है। जिस दिन अपनी आत्मा में परमशक्ति देख पाएगी इसकी साधना सफल हो जाएगी।" मैंने फिर प्रश्न किया—"क्या उसे दर्शन होते हैं?" "कह नहीं सकता। वह कहती है, 'उसे पहिचानने लगी हूँ। अवश्य पा जाऊँगी।"

* * *

चार-पाँच मास पश्चात् मैंने देखा, वृद्ध खँडहर के पार्श्ववर्ती वृक्ष के नीचे अर्ध-निमीलित विचित्र मुद्रा में बैठा है। मुझे देखते ही बोला—"अब तो बिटिया न हँसती है, न रोती है। अब तो वह मौन बैठी रहती है। नेत्र खुले रहते हैं फिर भी वह कुछ नहीं देखती। मुख गम्भीर है; उसपर दुख की झलक भी नहीं रहती। केवल एक मन्द हास की छाया-सी देख पड़ती है। उसके मौन को तोड़ने का साहस नहीं होता। उसकी सुकुमार विक्षिप्तता से नहीं घबड़ाता था परन्तु उसके मौन से मेरा हृदय टूटा जा रहा है। वह कुछ नहीं खाती। दिन में केवल एक बार कठिनता से दूध पीती है। आज दूध पीते समय ही मैंने पूछा था—"बिटिया कैसी है?" तब उसने कहा—"बाबा, वे हर समय मुझे दीखते हैं। मुझे लगता है जैसे मैं उन्हीं में मिली जा रही हूँ। मैं हूँ ही नहीं, केवल वे ही हैं। जिस समय ऐसा सोचती हूँ, वे दूर हो जाते हैं। जब मैं न रहूँगी तो मेरा शरीर न रहेगा तब वह मुझसे कैसे अलग होंगे। अब मैं उन्हीं के पास जाऊँगी बाबा।" मैंने पूछा—"कैसे जाओगी, बिटिया?"

उसने दृढ़ता से कहा—"मुझे लगता है, मेरे अन्तर में वही रूप है। उसी के दर्शन सदैव होते रहते हैं जिसको पाने की मैं इच्छा करती हूँ। मुझे भूख-प्यास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगती है तो मेरा ध्यान भग्न हो जाता है। उसी समय वे भाग जाते हैं। मैं मिलती-मिलती उस रूप से पृथक् हो जाती हूँ। जब मेरा शरीर न रहेगा तब मेरा अन्तर उस ज्योतिर्मय रूप में लीन हो जाएगा। फिर हम कैसे अलग होंगे। इस शरीर को मिटाना ही होगा, बाबा!"

मेरे मन में प्रश्न उठा, बचपन की हठी निला अपनी बात अवश्य पूरी करके रहेगी परन्तु किस प्रकार यह शरीर को मिटाएगी!

एक मास पश्चात् खँडहर के मध्य का दृश्य देख मैं स्तम्भित हो गई। निला नेत्र मूँदे प्रस्तर मूर्ति-सी बैठ थी। शरीर अति क्षीण हो गया था परन्तु मुख पर जैसे ज्योतिःपुञ्ज नृत्य कर रहा था। वृद्ध ने अति दुखित और कातर स्वर में कहा—"बिटिया आज पाँच दिन से ऐसी ही बैठी है। नेत्र भी नहीं खोले।"

मेरे मन में वृद्ध की बात गूँज गई। वह अपने शरीर को मिटाकर साध्य में मिलने जा रही है।

मानचित्र बन चुका था। उस एकान्त वन में जहाँ रहस्यमयी छाया में पंचतत्त्वों का स्पष्ट नर्तन होता था, जन-समूह के कार्य का मंच बनेगा, सुनकर मैं विचलित हो उठी। निला की वह तपस्विनी मूर्ति कहीं इस कोलाहल में धक्का खा छिन्न-भिन्न न हो जाए। अच्छा हो, यदि वह इस कोलाहल से पूर्व ही अपने जीवन को अपनी कठिन साधना में मिला ले।

दो दिन पश्चात् खँडहर में घुसते ही मैंने वृद्ध को अति उदास और दुखी मन से द्वार से टिका बैठा पाया। देखते ही वह बोल उठा—"अब बिटिया का अन्त आ गया है। आज सातवाँ दिन है। इसने आँखें भी नहीं खोलीं।"

बाईं ओर निला पृथ्वी पर नयन मूँदे बैठी थी। शरीर अति क्षीण हो गया था। मुख पर प्रसन्नता थी, मानों उल्लासित जल पर रवि की प्रथम किरण नृत्य कर रही थी। जो मूर्ति वह बाह्य जगत् में साकार देखना चाहती थी, वह उसके अन्तर नयनों में साकार हो गई थी और विश्व की ओर से नयन मूँदने का अनुरोध कर रही थी। जो प्यासे नयन नित्य ही भटककर अपनी कल्पना का आश्रय दर्शन खोजते थे; जो कर नित्य प्रिय छवि को आँककर अपने सम्मुख रखना चाहते थे, वे सफल हो शिथिल पड़े थे। नयन अब अन्तर्ज्योति थे; शरीर का अंग-अंग, हृदय-मस्तिष्क की चेतना, प्राणों की कम्पन-सिहरन सब एकाकार हो प्रिय के रूप में समा रहे थे।

मैं वृद्ध के समीप बैठ गई। सन्ध्या ढल चुकी थी। पूर्ण चन्द्र की दुग्धाभा खँडहर में उगे पौधों पर उज्ज्वल शान्ति-सी छा रही थी। निला का श्यामवर्ण शरीर शान्त रश्मियों के मध्य दिव्य हो मानों ऊपर उठता जा रहा था। जैसे वह अपनी स्थूलता त्याग चाँदनी में मिले पंचतत्त्वों के समान ही घुल रहा था। वृद्ध को भूख-प्यास न थी। बारम्बार गहरी श्वास ले—'हे ईश', 'हे ईश' कह चुप हो जाता था। परन्तु बिटिया कहकर पुकारने का साहस न करता था। भय्या ने कहा—"बाबा! एक बार पुकार तो देखो।"

वृद्ध ने कहा—"नहीं, भय्या, मैं अपने पार्थिव स्नेह-कलुष से उसके अनन्तदर्शन सुख को न छू सकूँगा। जिसके लिए वह भटकती रही, आज उसे पाकर वह सदा के लिए विश्राम की गोद में चली जाएगी।" वृद्ध के नेत्रों से अश्रुधार बह निकली। हम तीनों प्राणी उस खँडहर में बैठे भावों में उलझे निला की ध्यानमग्ना मूर्ति की ओर देखते रहे।

रात्रि के अन्तिम पहर में चाँद छिप गया। वायु की गति धीमी हो खँडहर को करुण शान्ति में झुलाने लगी। कुछ समय के लिए अँधेरा छा गया। पुनः प्राची में कोमल प्रभा छा गई। उस प्रभाली में निला का शरीर हिलता-डुलता प्रतीत हुआ। हम लोग अपलक दृष्टि से देखने लगे। वृद्ध हर्षित हो निला की ओर दौड़ा। निला का शरीर शनैः शनैः पृथ्वी-शय्या पर शमित हो गया। वृद्ध ने कहा—'बिटिया! निला!" परन्तु कोई उत्तर न मिला। निला का शरीर उसी शान्त मुद्रा में शिथिल पड़ा था। कोई विकार मुख पर न था। श्वास-प्रश्वास विलुप्त हो चुके थे; वह स्वयं अनन्त चेतना में विलुप्त हो चुकी थी। शरीर-व्यवधान हट चुका था। यह अपने दर्शन में लीन हो चुकी थी।

वृद्ध निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा। बोला—"मेरी बिटिया चली गई। वह अपने को पा गई। मैं फिर स्नेह-हीन जीवन ले इस वन की निर्जनता में शेष रह गया।"

उसी शरीर के लिए, जिसे निला ने अपने साध्य और साधन के मध्य व्यवधान समझ त्याग दिया था, हम सोच रहे थे किस प्रकार उसे सुरक्षित रक्खा जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय मुसलमान

प्रोफ़ेसर महेशप्रसाद मौलवी, आलिम-फ़ाज़िल

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में राष्ट्रिय दृष्टि से भारत में मुसलमानों का पतन हो चुका था। भारत के अनेक भागों में हिन्दू शक्तिशाली होगए थे अथवा अंग्रेज लोगों का राज्य बढ़ रहा था किन्तु गूढ़ दृष्टि डालने में यह भी पता चलता है कि धार्मिक दृष्टि से भी मुसलमानों का पतन कुछ कम न था।

भारत में इस्लाम का आगमन ईरान होकर हुआ है। ऐसी दशा में इस्लाम कुछ न-कुछ संस्कार ईरानियों का भी ले आया। इसके पश्चात् कुछ तो कालचक्र की कृपा से और कुछ हिन्दुओं के संसर्ग से उसमें और भी दोष पैदा होगया। शनैः शनैः उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ होने से पूर्व ही उसमें ऐसी बातें पैदा होगईं थीं, जिनके लिए इस्लाम आज्ञा नहीं देता है।

रायबरेली (अवध) के मौलाना सैयद अहमद साहब (स्वर्गीय मई सन् १८३१ ई०) के कारण भारतीय मुसलमानों में धार्मिक सुधार बहुत ज्यादा हुआ है। इनके विचारों का संग्रह 'सरात सुस्तकीम' नामक पुस्तक में है। यह पुस्तक वास्तव में फ़ारसी में लिखी गई थी, इसका उर्दू अनुवाद भी मिलता है। इस पुस्तक का रचनाकाल सन् १८१७ या १८१८ ई० है। इसमें अनेक अधार्मिक बातें ऐसी लिखी हुई हैं, जो उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भिक काल में भारतीय मुसलमानों में पाई जाती थीं। उदाहरणार्थ जानना चाहिये कि इस्लाम में विधवा-विवाह वर्जित नहीं किन्तु मुसलमानों में यह बात बुरी समझी जाती थी।

संयुक्तप्रान्त के रायबरेली नगर से लगभग दो मील की दूरी पर पश्चिम ओर तकिया नामी बस्ती है वहीं पर सैयद साहब सन् १७८६ ई० में पैदा हुए परन्तु रायबरेली के बदले केवल बरेली शब्द उनके नाम के साथ प्रायः प्रयोग में आता है और वह 'सैयद अहमद' बरेलवी के नाम से विशेषतः प्रसिद्ध हैं। इनका एक जीवनचरित्र उर्दू में 'सीरत सैयद अहमद शहीद' के नाम से प्रकाशित है। सन् १९४१ ई० में प्रकाशित इसके द्वितीय संस्करण की भूमिका में लेखक ने उस दशा का वर्णन किया है, जो उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी तथा उसके कुछ पहले मुसलमानों की थी। अतः उक्त पुस्तक के पृष्ठ २८ व २९ में जो शब्द हैं, उनका भाव इस प्रकार है:—

"यदि बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) व शिर्क (ईश्वर के सिवा किसी अन्य की उपासना) संसार में कोई वस्तु है और कोष व धर्मग्रन्थ में इनका कुछ अर्थ है तो वह स्पष्ट रूप से मुसलमानों में बहुत ज्यादा थी। कब्रों व मृतकों के निमित्त एक स्थायी धर्मग्रंथ तैयार होगया था, जिसके अनुसार यह बात अच्छी व आवश्यक थी कि लोग कब्रों के सम्मुख मथा टेकें, मृतकों से याचना करें, कब्रों को चूमें, उन पर भेंटें चढ़ाएँ, चादरें चढ़ाएँ, वहाँ प्रार्थना करें, वहाँ कुरबानी करे, वहाँ गाएँ बजाएँ, मेला लगाएँ, त्योहार मनाएँ, दीपक जलाएँ, वहाँ स्त्रियाँ एकत्र हों।

ईश्वर-भक्त व बड़े-बड़े धार्मिक व्यक्तियों के विषय में लोगों का विश्वास व विचार उसी प्रकार का था, जिस प्रकार के विश्वास व विचार के लिए अरब के ईसाई, यहूदी और मर्तिपूजक बदनाम थे।

हिन्दुओं और शियों की सारी कुरीतियाँ मुसलमानों के जीवन का अंग बन गई थीं और इनसे कोई घर खाली न था। इन (कुरीतियों) को कुरान, हदीस व इस्लामी धर्मशास्त्रों से अधिक माना जाता था। ईश्वर के सिवा अन्य की उपासना, अधर्म-कार्य करना, व्यर्थ व्यय व अज्ञानता इन (कुरीतियों) के अंग थे। धर्म-मार्ग या ग्रन्थ निरर्थक शब्द थे, जो केवल पुस्तकों में रह गए थे। अधर्म की परिभाषा किसी बात पर लागू न होती थी और प्रत्येक अधार्मिक बात एक सुन्दर बात थी। बहुत सी वर्जित बातें उत्तम और बहुत सी उत्तम बातें वर्जित हो गई थीं। इस्लामी बातें उठ रही थीं और उनका स्थान हिन्दुआनी बातें ले रही थीं और ले चुकी थीं। कुरान व हदीस की बहुत सी बातों पर पानी फिर गया था। उदाहरणार्थ विधवा-विवाह और सम्पत्ति का बटवारा दोनों अच्छे-अच्छे मुसलमानों में दूषित व वर्जित हो गए थे। प्रत्येक मुसलमान को हक था कि वह धर्म-शास्त्र में परिवर्तन करे और नए ढंग से उसकी व्याख्या करे और जिस बात को साधारण मुसलमान अच्छा समझे, वही

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६४६]

कुरान एक पहेली थी, जो समझ में नहीं आ सकती थी क्योंकि उसके अनुसार चलने का कोई प्रश्न ही नहीं था और उसका बहुत सा अंश रद्दी होकर बेकार हो गया था और आवश्यक समय के निमित्त शिष्टाचार के साथ दुरुहित रहता था। वह जीवित लोगों के लिए न था बल्कि मृतकों के लिए था। वह इस योग्य नहीं समझा जाता था कि सर्वसाधारण उसे समझ सकें बल्कि उसे पढ़कर मार्ग से भटक जाने का भय था। विद्वानों के पास अवकाश न था कि इसकी ओर ध्यान दें। कर्तव्य व उपासना की उपेक्षा की जाती थी क्योंकि कुछ बातें निश्चित थीं, मृतक के लिए कुरान-पाठ, फातिहा, तीजा, चालीसवाँ और फिरका साधन आवश्यक था।

इस्लाम के मार्ग व ढंगों का हाल इस बात से जाना जा सकता है कि सलाम की रीति उठ गई थी। अच्छे-अच्छे लोगों का कहना है कि दिल्ली के शाह अब्दुल-अजीज ऐसे धार्मिक पुरुष के यहाँ सलाम का चलन न था बल्कि आदाब अर्ज व तस्लीमात अर्ज का चलन था।

उक्त शब्दों के सिवा कुछ अन्य शब्द भी 'सीरत सैयद अहमद शहीद' में हैं, जिनसे उन दूषित बातों का पता लगता है, जो उस समय मुसलमानों में थीं किन्तु उनसे और अधिक न लिखकर 'तकवीयतुल ईमान' से कुछ दिखलाना चाहता हूँ, जिसमें अधिक विस्तार के साथ उन अधार्मिक बातों को बतलाया गया है, जिनका चलन उस समय के मुसलमानों में था। ज्ञात रहे कि उक्त पुस्तक मौलाना मुहम्मद इस्माइल शहीद कृत है, जिनके स्वर्गवासी होने का समय भी मई सन् १६३१ ई० ही है। यह मौलाना वास्तव में रायबरेली के मौलाना साहब के एक बड़े श्रद्धालु शिष्य थे।

उक्त पुस्तक के पहिले अध्याय (बाब) के आरम्भ में जो कुछ लिखा हुआ मिलता है, उसका सार यह है :—

"बहुतेरे लोग पीरों, इमामों, शहीदों, फरिश्तों और परियों को आपत्ति के समय पुकारते हैं और उनसे मुरादें माँगते हैं और उनके लिए भेंट मानते हैं और आवश्यकतापूर्ति के निमित्त उनको उपहार देने का संकल्प करते हैं। आपत्ति दूर होने के लिए अपने बेटों को उनकी ओर सम्बोधित करते हैं। कोई अपने बेटे का नाम अब्दुल नबी (नबी का दास) रखता है, कोई अली बख्श (अली का दिया हुआ), कोई हुसैन बख्श, कोई पीर बख्श, कोई सालार बख्श, कोई मदार बख्श, कोई गुलाम मुही उद्दीन और कोई गुलाम मुईन उद्दीन। और उन (बेटों) के जीते रहते कोई किसी के नाम पर चोटी रखता है, कोई किसी के नाम की बद्धी पहनाता है, कोई किसी के नाम का कपड़े पहनाता है। कोई किसी के नाम की बेड़ी डालता है.....

कोई आपत्ति के समय किसी की दुहाई देता है। कोई अपनी बातों में उसी के नाम की शपथ (कसम) खाता है। निदान जो कुछ हिन्दू अपनी मूर्तियों से करते हैं सो वह सब कुछ झूठे मुसलमान अम्बिया (ईश्वरीय दूत), औलिया (सिद्ध पुरुषों), इमामों, शहीदों और फरिश्तों तथा परियों से कर गुजरते हैं और दावा मुसलमानी का किए जाते हैं।"

कबरों के विषय में दूसरे अध्याय (बाब) में लिखा हुआ मिलता है :—

"इस काल में मूर्ख लोग जानते हैं कि बड़ों की कबरों को ऊँचा बनाना और कबर पर बड़े-बड़े विशाल भवन उठाना और वहाँ रोशनी व उर्स मेला करना, चादरें, हार, फूल, मिठाई चढ़ाना, उनसे अपनी आकांक्षाओं, मुरादों को माँगना, उनके नाम को..... और तोशे, कुण्डे और प्याले भरना।

सुनना चाहिए वास्तव में कबर का दर्शन बेकैद (बिना बन्धन) दिन, और तारीख, और वर्ष और समय और भीड़ (समूह) के, पुरुष के लिए उचित है। अर्थात् यह कि पुरुष को कबर के दर्शन के निमित्त जाना उचित है किन्तु किसी दिन या समय आदि के बन्धन की आवश्यकता नहीं कि अमुक दिन जाए और अमुक दिन न जाए अथवा यह कि अमुक समय जाए व अमुक समय न जाए।

कबर के दर्शन के निमित्त जाना बहुत अच्छा कार्य तथा कर्तव्य है—इस विचार से कि कबरों को देखने से मृत्यु और परलोक याद आए, संसार का स्नेह छूट जाए। इस विचार के सिवा किसी अन्य विचार से कबरों को दूर दूर से देखने के लिए जाना, अथवा दिन समय या तारीख का बन्धन लगाना, मेला और जमघट कबरों पर करना, वहाँ दीपक जलाना, वहाँ

CC-0. (In Public Domain). Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्जिद बनाना, स्त्री का कबर को देखने के लिए जाना, कबरों पर चादरें डालना, कबरों पर गन्ध करना, मृतकों की तारीखें और कुरान शरीफ की कुछ आयतें आदि कबरों में लिख देना, कबरों पर भवन बनाना, कबर एक बीते से ऊँची बनाना, कबर के समीप के स्थान को उत्तम जानकर निमाज पढ़ना, कबरों पर मुजाविर बनकर बैठना, कबरों के साथ उस प्रकार की बातों का करना, जो मसजिदों के साथ विशेष रूप से होता है, कबर के समीप आनन्द-मंगल और खेल कार्य जो कि ईद में चाहिए, उन मृतकों की प्रसन्नता जानकर अथवा पुण्य-कार्य जानकर करना—ये सब कार्य वर्जित और अनुचित हैं। जो लोग इन कामों को करते हैं, बड़ों को अपनी आवश्यकता की पूर्ति करनेवाला जानते हैं और यह समझते हैं कि ये लोग आपत्ति को दूर कर देते हैं। इस कारण इनसे अपनी मुरादें माँगते हैं। इन मृतकों की खुशामद के लिए ये कार्य करते हैं किन्तु वस्तुतः आवश्यकता को पूरी करनेवाला और आपत्ति को दूर करनेवाला खुदा के सिवा कोई नहीं है।"

रायबरेली के मौलाना व मौलाना इस्माइल तथा इनके कुछ अनुयायियों का ध्येय जहाँ यह था कि मुसलमानों में जो दूषित बातें हैं, उनका सुधार हो, उसके साथ ही साथ उनके सम्मुख यह प्रश्न भी था कि पंजाब के पश्चिमी व उत्तरी भाग में, जहाँ मुसलमान रहते हैं और जहाँ उस समय सिक्खों का राज्य था, उसका अन्त कर दिया जाए। इसी विचार से उक्त दोनों मौलाना तथा अनेक मुसलमान वहाँ पहुँचे। उन्होंने वहाँ सिक्खों के साथ घोर युद्ध किया और अन्त में रण-क्षेत्र में मई सन् १८३१ ई० में काम आए थे। एक लेखक का कहना है कि मौलाना इस्माइल साहब इस बात के विरोधी थे कि कोई व्यक्ति किसी की कबर पूजे किन्तु मौलाना की कबर जो बालाकोट नामक स्थान में है, वह मुसलमानों-द्वारा ही वहाँ पूजी जाती है।

मुसलमानों के राष्ट्रिय व धार्मिक पतन को देखकर ईसाइयों की ओर से यह उद्योग हुआ कि इन पर ईसाइयत का रंग चढ़ाया जाए। इसी उद्देश्य से हेनरी मारटिन नाम का एक जर्मन ईसाई सन् १८०६ ई० में कलकत्ता में आया। वह फिर दानापूर में पहुँचा और कुछ काल कानपूर में रहा किन्तु स्वास्थ्य के बिगड़ने के कारण सन् १८१० ई० में उसने भारत को छोड़ दिया। उसकी सेवाओं की महत्ता का फल है कि उसके नाम पर एक संस्था अलीगढ़ नगर के बन्नादेवी नामक स्थान में है जहाँ पर इस्लाम धर्म सम्बन्धी बातों को जानने का बड़ा अच्छा साधन है। मैं कई बार वहाँ जा चुका हूँ और वहाँ की बदौलत बहुत सी उपयोगी बातें जान चुका हूँ।

स्पष्ट रहे कि पादरी हेनरी मारटिन ने भारत के पूर्वीय भाग में काम किया था। पश्चिमी भाग में डाक्टर जान विलसन महोदय (स्वर्गीय १८७५ ई०) द्वारा बड़ा काम हुआ था। इन्हीं के नाम पर बम्बई का सुप्रसिद्ध विलसन कालिज स्थापित है।

विलसन महोदय सन् १८२६ ई० में बम्बई पधारे थे। सन् १८३१ ई० में इन्होंने पारसियों व मुसलमानों के सम्मुख एक प्रश्न रखा। हाजी मुहम्मद हाशिम नाम के एक व्यक्ति के साथ उनका बहुत पत्र व्यवहार हुआ। सन् १८३६ ई० में विलसन साहब ने 'रद्द दीन मुसल्मानी' नाम की पुस्तक फारसी में प्रकाशित कराई क्योंकि उस समय फारसी को बहुत महत्ता प्राप्त थी।

सन् १८४० ई० में कलकत्ता में जर्मन ईसाई पादरी फण्डर साहब आए। सन् १८४१ ई० (मई) में ये आगरा पहुँचे। उस समय उत्तरी भारत में अंग्रेजी राज्य का जितना विस्तार था, उसका एक प्रधान नगर आगरा था और मुसलमानों की दृष्टि में भी इस नगर की महत्ता कुछ कम न थी।

बैपटिस्ट मिशनरी सोसायटी के पादरी चैम्बरलेन और हेनरी पीकाक सन् १८११ ई० में ही आगरा पहुँचे थे और चर्च मिशनरी सोसायटी ने सन् १८१२ या १३ में आगरा डेरा वहाँ डाला था। इस प्रधान नगर से उत्तर की पश्चिम लगभग ५ मील की दूरी पर सिकन्दरा नामक ऐतिहासिक स्थान है। वहाँ चर्च मिशनरी सोसायटी ने एक अनाथालय सन् १८३६ ई० में स्थापित किया था और सन् १८४० ई० में एक प्रेस। निदान वहाँ ईसाइयों का हाल बहुत ही अच्छा था। ऐसे समय में सन् १८४१ ई० में पादरी फण्डर का आगरा पहुँचना ईसाइयों के लिए बहुत अच्छा था। इनकी कई रचनाएँ हैं, जिनमें से मुख्य ये हैं :—

१. मीजानुलहक—पहिले पहिल फारसी में यह पुस्तक १८३५ ई० में प्रकाशित हुई। इसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६४६]

अनेक भाषाओं में प्रकाशित हुए हैं। उर्दू अनुवाद पहिले-पहल सन् १८४३ ई० में मिर्ज़ापुर (युक्तप्रान्त) से निकला है। इसमें प्रभु मसीह को मुक्तिदाता बताया गया है और हजरत मुहम्मद साहब के ईश्वरीय दूत (पैगम्बर) होने का खण्डन है।

२. तरीकुल-हयात—इसमें पाप, उसका मूल कारण और उससे मुक्त होने का साधन बतलाया गया है।

३. मिफ्ताहुल असरार—इसमें प्रभु मसीह की श्रेष्ठता का उल्लेख है।

इसमें सन्देह नहीं कि कुछ लोगों में यह भावना बहुत पहिले से ही थी कि भारतीय मुसलमानों के आचार-विचार में जो त्रुटियाँ पैदा हो गई हैं, वे दूर हों किन्तु ईसाइयों की छेड़-छाड़ से धार्मिक बातों की ओर अनेक लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ। सन् १८४६ ई० या इसके आस-पास की बात है कि नवाब चीना पटन (मैसूर) के भतीजे सैयदशाह अलीअहमद कादरी (उपनाम जियाउद्दीन दिलावर जंग) को जहाद (धार्मिक युद्ध) करने की लालसा हुई। मैसूर से चलकर आगरा पहुँचे। मुफ्ती इनाम उल्ला खाँ साहब के अभ्यागत हुए। वे आगरा में एक प्रतिष्ठित वकील थे। उनके यहाँ विद्वानों व प्रतिष्ठित लोगों का एक अच्छा जमघट रहा करता था। यदि सबों ने नहीं तो अनेक लोगों ने उनके विचार का अनुमोदन किया और उनकी सहायता की। सैयद साहब ने अपने चेलों व मित्रों सहित शाहजहाँपुर की ओर प्रस्थान किया। पूर्वियों से धर्म-युद्ध ठाना अन्त में पुवायाँ (शाहजहाँपुर) के राजा के हाथ से मारे गए।

सन् १८५४ ई० के आस-पास देखा जाता है कि मुसलमानों व ईसाइयों के बीच में मौखिक व लिखित रूप में अच्छी चर्चा रही है। इसके कुछ ही काल बाद सन् १८५७ ई० आता है और इसके पश्चात् जो व्यक्ति इस्लाम के निमित्त विशेषरूप से चिन्तित मिलते हैं, वे हैं सर सैयद अहमद खाँ साहब और मौलाना मुहम्मद कासिम साहब, जिनके हाथों सन् १८६६ ई० में देवबन्द (जिला सहारनपुर) में एक स्कूल की स्थापना हुई जिसकी बदौलत कुछ काम इस्लाम के लिए नहीं हुआ है।

उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक मौलाना हाली की अपूर्व पुस्तक 'मद व जजर इस्लाम' अर्थात् 'मुसद्दस हाली' का प्रकाशन पहिले-पहल सन् १८७९ ई० में हुआ। अब तक इसके जितने संस्करण निकले हैं उतने संस्करण बहुत कम उर्दू पुस्तकों के निकले हैं, इसमें उन्होंने भारतीय इस्लाम व भारतीय मुसलमानों का जो चित्र खींचा है, उससे पता चलता है कि सर सैयद के समय में इस्लाम व मुसलमानों की दशा क्या थी :—

(१) वह दीने हजाजी का बेबाक बेड़ा
निशाँ जिसका अकसाय आलम में पहुँचा
मजाहिम हुआ कोई खतरा न जिसका
न उम्माँ में ठिटका, न कुलजम में झिझका
किए पै सिपर जिसने सातों समुन्दर
वह डूबा दहाने में गंगा के आकर

भावार्थ—इस्लाम का निडर बेड़ा समस्त संसार में पहुँचा। कोई आपत्ति उसके मार्ग में बाधक नहीं हुई। उसने सातों समुद्र पार किए किन्तु वह गंगा में डूबा अर्थात् भारत में आकर उसका नाश हुआ।

(२) करै गैर गर बुत की पूजा तो काफिर
जो ठहराये बेटा खुदा का तो काफिर
कहै आग को अपना कबला तो काफिर
कवाकिब में माने करश्मा तो काफिर
मगर मोमिनों पर कुशादः हैं रहें
परस्तिश करें शौक से जिसकी चाहें

भावार्थ—यदि कोई अमुस्लिम (हिन्दू) मूर्ति की पूजा करता है तो वह अधर्मी माना जाता है। ईसाई लोग जो हजरत ईसा मसीह को ईश्वर का पुत्र मानते हैं वे भी मुसलमानों की दृष्टि में काफिर (अधर्मी) हैं। जो लोग अग्नि के उपासक (अर्थात् पारसी) हैं, वे भी अधर्मी ठहरते हैं। जो लोग तारों में चमत्कार अर्थात् आश्चर्यजनक कर्तव्य मानते हैं, वे भी मुसलमानों की दृष्टि में अधर्मी हैं किन्तु जो लोग अपने आपको सच्चा मुसलमान समझते हैं, उनके लिए सारे मार्ग खुले हुए हैं। वे चाहे जिसकी पूजा करें, अधर्म के भागी नहीं अर्थात् यदि वे लोग कबर या ताजिया की पूजा करते हैं तो अधर्मी नहीं ठहरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) नबी को जो चाहें खुदा कर दिखाएँ
इमामों का रुतबः नबी से बढ़ाएँ
मजारों पर दिन रात नजरें चढ़ाएँ
शहीदों से जा-जा के मांगे दुआएँ
न तौहीद में कुछ खलल इससे आए
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए

भावार्थः—हमारे मुसलमान भाई यदि चाहें तो नबी (ईश्वरीय दूत) को खुदा के समान करके पेश करते हैं। इमामों का पद नबी से भी बढ़ाते हैं। कबरों पर रात-दिन भेंट चढ़ाते हैं। खुदा के मार्ग में जो लोग मारे गए हैं, उनसे याचनाएँ करते हैं—इस प्रकार की बातों से एक ईश्वर पूजनीय को मानने में उनके विचार से कोई बाधा नहीं पड़ती है। उनके विचार से न तो इस्लाम बिगड़ता है और ऐसा करने से उनका ईमान भी नहीं जाता है।

यह बात स्पष्ट है कि सर सैयद ने केवल राष्ट्रीय व शिक्षा-सम्बन्धी कार्य ही नहीं किया था बल्कि उनका सहयोग धार्मिक क्षेत्र में भी कुछ कम न था। कुरान शरीफ, जो समस्त मुसलमानों का प्रधान धर्म-ग्रन्थ है, उसका भाष्य उन्होंने नए ढङ्ग पर करना आरम्भ किया। अनेक लोगों ने उन्हें बुरा-भला भी कहा क्योंकि जो उन्होंने अपने भाष्य में लिखा उससे सब लोग सहमत न थे। खेद है कि सम्पूर्ण का भाष्य वह पूरा न कर सके थे किन्तु जितने अंश का किया, उसका प्रकाशन अच्छा हुआ है और उसके द्वारा अंधविश्वास-सम्बन्धी अनेक बातों पर पानी फिर गया है।

ईसाइयों के सिवा उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में मुसलमानों को जिससे मुठ-भेड़ करने की श्री आवश्यकता पड़ी थी, वह श्री स्वामी दयानन्द जी है। श्री सर सैयद के साथ उनका मिलना-जुलना अनेक बार हुआ था किन्तु दोनों में जनता के सम्मुख शास्त्रार्थ कभी नहीं हुआ था। अन्य अनेक मौलवियों ने उनके साथ शास्त्रार्थ अवश्य किए थे। इनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध मेला चान्दापुर जिला शाहजहाँपुर का है। इसमें मुसलमानों के सिवा ईसाइयों के साथ भी शास्त्रार्थ हुआ था। इस शास्त्रार्थ का समय मार्च सन् १८७७ ई० है।

इस्लामी धार्मिक क्षेत्र में मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी का नाम भी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। ये सर सैयद से लगभग २४ वर्ष छोटे थे। इनका जन्मकाल सन् १८४० ई० है। सन् १८९० ई० में इन्होंने यह घोषित किया कि जो यह भविष्यवाणी है कि मसीह संसार में आएगा सो वह मैं हूँ।

अनेक मुसलमानों ने इनका विरोध किया किन्तु अनेक इनके अनुयायी भी हुए और कादियान जिला गुरुदासपुर में इनका एक अच्छा गढ़ बना। इन्होंने केवल मुसलमानों के साथ ही मुठ-भेड़ नहीं की बल्कि ईसाइयों व आर्य समाजियों से भी मोरचा लिया।

हाँ, यह भी स्पष्ट रहे कि शिया व सुन्नी मुसलमानों में परस्पर कुछ कम बिगाड़ न था। निदान यह कहना अनुचित नहीं कि उन्नीसवीं शताब्दी ईस्वी में मुसलमान धार्मिक दृष्टि से कुछ अच्छी अवस्था में न थे किन्तु उनमें जीवन था, वह सचेत भी थे। यही कारण था कि वे भीतरी व बाहरी दोनों प्रकार के विरोधियों के साथ निपटने में पीछे न थे।

कौए

श्री युगल

कहानी तो गढ़ी जाती है। वास्तविकता नहीं रहती। यों मन बहल जाता है। दिलचस्पी हो जाती है। ऐसा मैं बहुतों से सुन चुका हूँ। कहनेवाले भले आदमी हैं। पढ़े-लिखे हैं। उनका विरोध कैसे किया जाए? एक कहानी है। किसने लिखी, किसने सुनाई, किसने सुना, यह मैं नहीं जानता। लेकिन वह कहानी है, सो जी में गड़ गई है। अब निकलती नहीं। यों वास्तविकता है या नहीं, मैं नहीं कह सकता। विचारने का अपना अपना दृष्टिकोण है। लेकिन एक बात है। चाहे मैं सोचूँ या कोई सोचे। तथ्य पर पर्दा पड़ा नहीं रह सकता। सत्य खुल जाता है।

कहानी छोटी है। समुद्रमंथन हो चुका था। अमृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

निकला था। देवता आपस में बाँट चुके थे। असुर चुपचाप देख रहे थे। उनमें एक चतुर था। और उसने सुचार अमृत ठग लिया था। फिर तो उसका सिर अलग—धड़ अलग। लेकिन अमृत का प्रभाव? एक ने दो रूप धारण किया—राहु और केतु। दोनों जीवित हैं। बेचारे सूरज और चन्द्रमा पर आफत है। उनका रक्त-शोषण होता है। उनकी विवर्णता की एकाध रेखा रह जाती है। और चारों ओर घोर अन्धकार—अन्धकार। किरणों का अर्जन तो होता है। लेकिन उनका शोषण भी होता है। उस एक असुर के प्रसाद को क्या कहा जाए?

अमृत के दो घड़े बच गए। भगवान् ने मनुष्यों के लिए भेजा। भारवाहक को हिदायत थी, जमीन में घड़े न रखना! पवित्रता नष्ट हो जाएगी। लेकिन कौए चतुर निकले। अमृत पाने की युक्ति सोची। भारवाहक के सिर पर चोंच मारी गई। हिदायत भूलकर वह घड़े रख कौए को मारने दौड़ा। इधर कौए अमृत पा गए। भगवान् ने देखा। हँसकर रह गए। प्राणिशास्त्र के जाननेवाले कहते हैं—"कौए किसी भी आदमी से ज्यादा जीते हैं।"...

झील के किनारे पीपल का पेड़ है। छाया घनी रहती है। नीचे चौरस जमीन है। विश्वम्भर अपने कुछ विद्यार्थियों को लेकर यहीं पढ़ाता है। पिछले दिनों लोगों ने सुझाया था—बैठे क्या करते हो? बच्चों को पढ़ाया करो। चार पैसे आ जाएँगे। विश्वम्भर इधर-उधर दौड़ा। लिखा-पढ़ी की। बोर्ड ने पाठशाला की मंजूरी दे दी। विश्वम्भर को प्रति महीने तेरह रुपए मिलने लगे।

युद्ध छिड़ा। रुपयों का भाव गिरा। बयालीस आया। तैंतालीस आया। बंगाल में अकाल पड़ा। समूचे देश में मुर्दनी छा गई। अन्न महँगा हुआ, बहुत महँगा। कंट्रोल की दुकानें खुलीं। लेकिन अन्न गायब ही होता गया। समूचे देश में भीषणता छाती जा रही थी। रुपए सस्ते होते गए। लेकिन परिवार का पेट बहुत बड़ा होता है। तेरह रुपए की क्या बिसात? विश्वम्भर तब भी जीने का साहस लिए चला जा रहा था।

विश्वम्भर का कहीं मन न लगा, तो पीपल के पेड़ के नीचे अपनी पाठशाला में चला आया। पाठशाला में बच्चे नहीं आते। वे जानते हैं कि गुरुजी हड़ताल कर रहे हैं। गुरुजी का मुशाहरा कम है। पेट नहीं भरता। खाली पेट लेकर कोई कैसे काम कर सकता है? लेकिन हड़ताल होगी, तो सरकार रुपए देगी; बच्चे इससे आगे नहीं जानते। आगे सोच भी नहीं सकते उन्हें तो अच्छा है कि पाठशाला बन्द है। चले हड़ताल! सरकार रुपए दे या न दे। वे गुरुजी की छड़ी से तो बचते हैं।

विश्वम्भर थका था, तो पेड़ की जड़ पर बैठ गया। पसीना पोंछा। मुर्दा गोश्त की बू आ रही थी। कहीं कोई मुर्दा सड़ रहा है। विश्वम्भर ने आँखें उठाईं। वह कहीं कुछ टटोल लेना चाहता था। यह मुर्दा कहाँ सड़ रहा है कि इतनी कड़ी बदबू फैला रहा है? लड़कों ने अपने बैठने के लिए जमीन की सतह कुछ ऊँची कर चौतरा-सा बना रखा था। उसी पर सिर डालकर कोई मर गया था। विश्वम्भर उसी ओर जाकर खड़ा हो गया। देखने लगा इसे कहीं मरने की जगह नहीं मिली, तो पाठशाला में आ गया।

मुर्दे का मांस सड़ रहा था—गल रहा था। नाक फाड़ देनेवाली सड़ायँध चारों ओर फैल रही थी। अगर कल को हड़ताल टूट जाए तो लड़के यहाँ कैसे बैठकर पढ़ सकेंगे! मुर्दे के सड़े गोश्त में यह बास कहाँ से पैदा हो जाती है? ऐसा लगता है कि कोई कुष्ट का रोगी हो। लेकिन यह मुर्दा तो सड़ गया है। कैसे कुछ अन्दाज लगाया जा सकता है? और कौए मांस नोचकर खा रहे हैं। दो-चार—आठ-दस। और भी कौए आते हैं। आते हैं और मांस नोचकर उड़ जाते हैं। पीपल की डाल पर बैठकर खाते हैं।

विश्वम्भर का मन पका था। नाक भरी थी। वह मुर्दे को खड़ा-खड़ा देखता रहा। कहीं भी जाने का जी नहीं हो रहा था। वह पेड़ की जड़ पर बैठ गया। कौए मांस नोचकर खाते रहे। मुर्दा जो पड़ा था, कुछ अधिक उम्र का था। उसके सिर के अधपके बाल जैसे चिल्ला-चिल्लाकर सब कुछ बतला रहे थे। भिखारी है। भूखा होगा? मर गया है। अन्न तो यों ही मँहगा है। मिलता कहाँ है? फिर किसके पास इतना अन्न है कि भिखारियों को लुटा दे? मरनेवाला मरेगा ही। चाहे वह भूखा हो, रोगी हो, गलित कुष्ट से उसके अंग मोम की तरह पिघल-पिघलकर गिरते जा रहे हों। मृत्यु तो नहीं रुक सकती। भूख आती है, तो मृत्यु भी आएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग कहते हैं अकाल चला गया है। लेकिन मौत तो हो रही है। अकाल के जाने से भूख तो नहीं चली गई। और अन्न यों भी तो बहुत महँगा है। जिन्हें गिनकर महीने में तेरह रुपए मिलते हों?...

और यह आदमी अब मुर्दा है। मांस सड़ रहा है। हवा में सड़ायँध फैल रही है। भूखा रहकर वह कितने दिन जी सकता था? भूख का दुःख क्या झेला जाता है? भूख से मौत कहीं ज्यादा अच्छी होती है। भगवान् ने मनुष्यों के लिये अमृत भेजा था। कौए चतुर थे। पी गए। अच्छा हुआ। अमरता लेकर आदमी क्या करता? भूखे मनुष्यों के लिए वह अमृत समय पर विष तो बन ही नहीं सकता था, तकलीफ बन जाता। आदमी मरता नहीं, मृत्यु की यन्त्रणा भुगतता रहता। पीड़ा और छटपटाहट से वातावरण कराहता रहता। आदमी वैसे वातावरण में कैसे जीता? अच्छा हुआ कि कौए अमृत पी गए। कम-से-कम प्राणि-शास्त्र के जाननेवालों का तो कहना है कि कौए किसी भी आदमी से ज्यादा दिनों तक जिन्दा रहते हैं। जिन्दा रहते हैं इसलिए कि चतुर हैं। आदमी के हिस्से का अमृत पी सकते हैं। जिन्दा रहते हैं इसलिए कि वे आदमी का मांस खा सकते हैं।

कौए आते हैं। मुर्दा गोश्त नोचकर उड़ जाते हैं। उनका कौन विरोध करता है? कौए अगर विश्वम्भर का मांस नोचकर भी उड़ जाएँ तो वह विरोध नहीं कर सकता। जैसे उसमें विरोध करने की शक्ति ही शेष नहीं है। सिर्फ तेरह रुपए में वह अपने परिवार को कैसे जिन्दा रख सकता है? विश्वम्भर ने जब विवाह किया था, तो उसकी पत्नी कितनी स्वस्थ आई थी। मांसल बाहु और जांघ। गदराया यौवन। जैसे फूटकर बाहर निकल आना चाहता हो। चार वर्षों के बाद एक लड़का हुआ। सुन्दर—स्वस्थ। तब अन्न महँगा नहीं था। तेरह रुपयों से काम चल जाता था। लेकिन अब विश्वम्भर को लगता है कि उसका मांस भीतर-ही-भीतर सड़कर गला जा रहा है। एक विचित्र सड़ायँध उसके भीतर फैल रही है। यही कारण है कि वह बाहर की सड़ायँध में भी साँस ले सकता है। और विश्वम्भर की हड्डियाँ शेष रह गई हैं। ढाँचा है, जो चल रहा है—बोल रहा है। विश्वम्भर की पत्नी और बच्चे का स्वास्थ्य कहाँ चला गया? उन्हें दूध नहीं मिलता! भरपेट अन्न नहीं मिलता। कौए उनका मांस नोच रहे हैं। मांस इसलिए नोचते हैं कि उन्होंने उनके हिस्से का अमृत पिया है। वे आदमी से ज्यादा दिनों तक जिन्दा रहते हैं। जिन्दा रहते हैं इसलिए कि उनका मांस नोचकर उड़ जाते हैं।

समुद्र मंथन होता ही रहता है। उस दिन भी हुआ था। तो देवासुर-संग्राम भी हुआ। कटार निकली, तलवार भी निकली। जमीन खून से लाल हो उठी। दिशाएँ कराह उठीं। लेकिन अपना भाग अपनी मुट्ठी में था। अपना छत्र अपने सिर पर था। अपनी सरकार थी। सन्तोष हुआ। अब जीवन की साँस ले सकेंगे। जीने का सबों का हक होगा। देवता अमृत पिएँगे तो आदमियों को भी मिलेगा। लेकिन कौए तो चालाक होते हैं। वे तो मांस नोचेंगे ही। वे तो पहले से ही अमृत पी चुके हैं। अब उन्हें अमृत दो या न दो। वे किसी भी आदमी से ज्यादा दिनों तक जिन्दा रह सकते हैं। जैसे उनका विरोध करने की शक्ति किसी भी आदमी में नहीं है। मंथन से निकले हुए नए जन्तुओं में भी नहीं। दलील दी जाती है। अगर ये कौए न हों तो मुर्दा गोश्त के मारे भले आदमियों का जीना दूभर हो जाएगा। और ये कौए फिर एक न-एक दिन तो मरेंगे ही। लेकिन विश्वम्भर के सोचने का अपना दृष्टिकोण है। कौए को आदमियों से ज्यादा दिनों तक जीने क्यों दिया जाए?

आज अपनी सरकार है। बुद्धि को यह सब अस्वीकार नहीं। लेकिन भीतर कहीं एक अटक-सी पैदा हो गई है। जो खटक रही है एक असन्तोष बार-बार ऊपर उठना चाहता है। स्वराज्य के बाद जो कुछ मिलना चाहिए था, वह नहीं मिला। निराशा जैसे बहुत संकुल होती हुई निकल सिमटती जा रही है। संक्रान्तिकाल में कुछ विचित्र अवस्था उत्पन्न हो जाती है।...लेकिन—लेकिन इस संक्रान्ति के पहले जो एक क्रान्ति होती है, वह हुई कहाँ? उसका मोह तो रह ही गया। भावनाओं का विद्रोहात्मक रूप तुष्टि नहीं पा सका। भीतर-ही-भीतर दब गया। अपने ही पैर में कुल्हाड़ी क्या मारी जाए? सो अब इन्कलाब का नारा कहीं कुन्द हो गया है। लेकिन भीतर जो पक रहा है, टीस रहा है, वह अव्यक्त रूप से इन्कलाब चाहता है। इन्कलाब हो। प्रत्येक दिशा में हो। प्रत्येक क्षेत्र में हो। प्रत्येक प्रान्त में हो। इन्कलाब हो कि सब कुछ उलट-पुलटकर एकदम नया कर लिया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६

अपनी सरकार होने के बाद वातावरण में कहाँ परिवर्त्तन हुआ है, यह विश्वम्भर नहीं ढूँढ़ पाता! परिवर्त्तन बहुत धीरे-धीरे होता है कि आदमी नहीं जान पाता। और सदियों का पड़ा हुआ मुर्दा एकाएक कैसे उठकर खड़ा हो सकता है? युद्ध के बादल मँडरा रहे हैं। शत्रुओं के विचार न अच्छे हुए हैं, न हो सकते हैं। इसलिए वे आराम की साँस नहीं लेने दे सकते; और इस परिस्थिति से जब तक ऊपर नहीं उठा जाता, हिन्द में कोई ठोस परिवर्त्तन कैसे हो सकता है?

और एक विषम चक्र चल रहा है। मिलें चल रही हैं। उद्योग-धन्धे बन्द हो जाएँगे, तो राष्ट्र कैसे जिन्दा रह सकता है? राष्ट्र को जिन्दा रखना है, इसलिए मिलें चल रही हैं, लेकिन मिलें तो इसलिए चल रही हैं कि राष्ट्र के असंख्य मुर्दे उसे चला रहे हैं। वे मुर्दा हैं, लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि चल रहे हैं। उनके शरीर पर कपड़े नहीं। गोश्त नहीं। कौए उनका मांस नोचकर उड़ जाते हैं। और भीतर-ही-भीतर मुर्दे का मांस सड़कर गला जा रहा है।

मुर्दे चल रहे हैं। इसलिए मिलें चल रही हैं। कौए आसमान में उड़ रहे हैं। उनकी आँखें उन्हीं मुर्दों पर हैं। राष्ट्र को जिन्दा रखना है, उद्योग-धन्धों को जिन्दा रखना है, इसलिए मिलें हड़हड़ाती चल रही हैं, लेकिन कौए तो किसी भी आदमी से ज्यादा जिन्दा रह सकते हैं।

सुना जाता है कि रूस के एजेण्ट हिन्द में भी काम करते हैं। उनका विरोध होना चाहिए। उनसे बचकर रहना चाहिए, लेकिन एक ठोस चीज है, जो सबों के सिर पर चढ़कर बोलना चाहती है। बुद्धि जिसका विरोध करती है, आत्मा उसी को स्वीकार कर ले, तो कोई आश्चर्य नहीं। मन है, इसलिए भावनाओं का अलग स्थान है।

आज की परिस्थिति में हिन्द के लिए हड़ताल बहुत बुरी चीज है। रूसी विचार को उनके एजेण्टों तक रहने दो। जैसे इतने दिनों तक सहा, कुछ दिनों तक और सह लो। फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा। सरकार सब कुछ देख रही है। देख रही है कि लोग भूखे हैं। लोग नंगे हैं। लोगों के लिए अन्न चाहिए। लोगों के लिए वस्त्र चाहिए। सब इन्तजाम कुछ-न-कुछ हो ही रहा है। हड़ताल तो उद्योग-धन्धों का नाश कर देगी। राष्ट्र की रीढ़ कमजोर हो जाएगी। राष्ट्र की रीढ़ तो उद्योग-धन्धे ही हैं।.....सरकार भुलावा नहीं देती। वह अच्छी तरह जानती है कि राष्ट्र की रीढ़ तो वह है, जो उद्योग-धन्धों की रीढ़ मजबूत करता है, लेकिन कौए हैं। हैं इसलिए कि उन्हें माँस नोचकर उड़ जाना है। मिलें हड़हड़ाती हुई चल रही हैं।

और फिर कौन गरीब नहीं है? कौन भूखा नहीं है? विश्वम्भर पढ़ा-लिखा है। अच्छे कपड़े पहनता है, तो लोग समझते हैं, दोनों साँझ पूरियाँ ही छनती हैं। अन्न का भाव दिनों दिन मँहगा ही होता जा रहा है। तेरह रुपए तो बहुत कम होते हैं। और फिर दुर्दिन में गरीबों के परिवार का पेट बड़ा हो जाता है।

सब कुछ सोच समझकर भी, जैसे अनिच्छा से रूस के उन्हीं एजेण्टों के साथ मिल जाना पड़ा। न जाने किस हवा पर उड़ती हुई बातें आकर आदमियों के हृदय में घर कर लेती हैं। पेट की मार जब सही न जाए, तो हड़ताल करो! हड़ताल तो असहयोग है। लेकिन मास्टरों की हड़ताल चल रही है। लाल कागज पर काले अक्षरों में छपा हुआ—'हम भूखे हैं'—का बिल्ला लगाकर विश्वम्भर उस दिन निकला था। गाँव का पटवारी मिला। वह बिल्ले पर के अक्षरों को पढ़कर हँसा—"तुम भी क्या झूठ बोलते हो, मास्टर! घर में रुपए रखे हैं। मौज से खाते हो। ठाठ का कपड़ा पहनते हो। बाहर यह बिल्ला लगाकर निकलते हो कि हम भूखे हैं।...अरे भाई, हड़ताल का जमाना है, तुम्हीं क्यों बाज आते? यह तो अपनी सरकार है। इस तरह तंग तो नहीं किया करो! कंजूसी करते हो। मरोगे, तो चिता पर दो ही पैसे की लकड़ी साथ रहेगी।"

पटवारी जैसा हँसता आया था, वैसा ही हँसता चला गया।

विश्वम्भर सोचता है कि लकड़ी भी बहुत मँहगी हो गई है। एक शाम का खाना बनाने में चार आने की लकड़ियाँ ही जल जाती हैं। और दो पैसे की लकड़ी! दो पैसे की लकड़ी से क्या होगा? उससे तो सिर का बाल भी नहीं जल सकता। मुर्दा जलाने के लिए काफी लकड़ियाँ चाहिए। लेकिन यह मुर्दा, जो यहाँ पीपल के पेड़ के नीचे सड़ रहा है और वातावरण में एक बदबू फैला रहा है, इसके साथ तो वह दो पैसे की लकड़ी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं जा सकी। पैसे होते, तो लकड़ियाँ हो सकती थीं। यह यहाँ इस तरह सड़ता नहीं होता। और अगर पैसे ही होते, तो वह भूखों क्यों मर जाता? लेकिन पटवारी तो यही जानता है कि मास्टर भूखा नहीं है। इस तरह सरकार भी कह सकती है, मास्टर भूखा नहीं है। हड़ताल चलती है। इससे किसका हर्ज होता है? और विश्वम्भर ने तब उस दिन वह बिल्ला उतारकर रख दिया था। लेकिन मास्टर तो जानता है कि वह भूखा है। तेरह रुपए बहुत थोड़े होते हैं। दुनिया उसकी भूख को तो तभी जानेगी, जब वह अपने सफेद कपड़े उतारकर पैसे के लिए लोगों के सामने हाथ बढ़ाता फिरे।

विश्वम्भर जब वह लाल बिल्ला लगाकर पहले दिन स्कूल गया था और लड़कों से कहा था कि आज से वह हड़ताल करेगा, तो लड़कों को बहुत कौतूहल हुआ था। लड़के बिल्ले पर के अक्षरों को पढ़कर मन-ही-मन हँस रहे थे—मास्टर तो भूखा है। भूखा बन्दर बहुत गुस्सा करता है। वह खीझकर दूसरों पर ईंट-पत्थर फेंकता है। और विश्वम्भर सचमुच ही घर की झंझटों से खीझकर भीतर का गुबार लड़कों पर निकाला करता था। लेकिन लड़के थे कि मास्टर के बिल्ले को पढ़कर ऊपर से चुप थे। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि क्या मास्टर सचमुच भूखा है?

रास्ते में पित्तो बोला था—"लड़को, मास्टर भूखा है, उसे एक-एक रोटी लाकर देना!" और वह हँसने लगा था। लड़के उसकी हँसी में सहयोग ही देने जा रहे थे कि कोई लड़का सहानुभूति के स्वर में बोला था—"मास्टर सचमुच ही भूखा है! उसे तेरह रुपए ही तो मिलते हैं!" और लड़कों की सम्मिलित हँसी में उसका स्वर छिप गया था।

विश्वम्भर ने मुर्दे की ओर देखा। हिन्दुओं की लाशें जलाई जाती हैं, मुर्दों को जला देना धार्मिक कृत्य है। लेकिन यह कृत्य कितना वैज्ञानिक है? मुर्दे सड़कर जन-साधारण के स्वास्थ्य को गन्दा न बना सकें। काम की प्रत्येक बात पर धर्म का रंग कितनी खूबी से चढ़ाया गया है? लेकिन यह मुर्दा तो सड़-सड़कर बदबू फैला रहा है। और ऐसा भी तो हो सकता है कि लकड़ी के अभाव में विश्वम्भर की लाश भी इसी तरह सड़ायँध फैलाए।

साँझ घिरती आ रही थी। झील का पानी शान्त था। पीपल के पत्ते शान्त थे। झील के दूसरे किनारे से वीणा का स्वर आ रहा था। वहाँ बंगाली परिवार रहता है। अच्छा पैसा लोग कमाते हैं।...१९४३ में बंगाल में अकाल पड़ा था। लोग भूखों मरते थे—मामूली चींटी की तरह। माँ ने अपने बच्चों को मुट्ठी भर अन्न के लिए बेचा था। जवान लड़कियों ने एक कौर भात के लिए अपना कौमार्य और सतीत्व नष्ट किया था। बंगाल से काफला-का-काफला भागा चला आ रहा था।...लेकिन झील के उस पार जो कोई बंग-किशोरी गा रही है—सबसे बढ़कर जान तो यह है कि पेट भरता है, तो सब सूझता है—गाना, खेल, तमाशा!

विश्वम्भर एक विचित्र करुणा से भरा हुआ उठा। लालाजी के घर के पास से निकलने लगा, तो लाला ने रोका—"क्यों मास्टरजी, हड़ताल तो स्कूल के लिए है। कम-से-कम बच्चों का ट्यूशन तो कर दिया कीजिए!"

विश्वम्भर ने कुछ न समझ सकने की दृष्टि से लालाजी की ओर देखा और उन्हीं के बरामदे पर निढाल-सा एक ओर बैठ गया। लगा कि वह बहुत थक गया है। उससे एक कदम भी चला पार नहीं लगेगा। फिर उसने जरा तेज आवाज में पुकारा—"कहाँ गया रे!—पित्तो!—शिम्बू!"

और दोनों लड़के स्लेट और किताब लिए आ गए। डर से भरे थे। न जाने गुरुजी कौन-सा सबक पूछ बैठें। विश्वम्भर बोला—"तुम लोग बैठ जाओ और नया पाठ याद करो!" फिर वह उदास-सा एक ओर देखने लगा।

बच्चे किताब खोलकर बैठ गए। पित्तो ने पूछा—"हड़ताल क्या होती है, गुरुजी!"

विश्वम्भर अन्तर्मुख बना कुछ सोच रहा था। चौंका—"हड़ताल!—हड़ताल तो—तुम लोग अपना पाठ पढ़ो!" विश्वम्भर नहीं सोच सका कि उसे क्या कहना चाहिए। वह लड़कों को देख रहा था। लेकिन आँखों में दृष्टि नहीं थी। उसकी आकृति चीमड़ होती जा रही थी।

पित्तो ने टोका—"गुरुजी!"

विश्वम्भर सकपकाया—"तो हाँ, समुद्र-मंथन की कहानी तुम लोग जानते हो? उसमें अमृत निकला था। लेकिन दुर्बलों को उनका हिस्सा नहीं मिलता है। और चालाक होते हैं। वे अमृत पी जाते हैं। आदमी दुर्बल ताकता रह जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६४६]

लड़के कुछ समझ नहीं सके। मुँह ताकते रह गए। विश्वम्भर ने कहा—"तुम लोग जाकर आराम करो!" और वह स्वयं अपने घर लौट आया। बच्चा सो गया था। पत्नी ने पूछा—"तुम्हारी हड़ताल कब खतम होगी?"

"ठीक नहीं कहा जा सकता।"

"लेकिन यह फाकाकशी कितने दिन चल सकती है? घर में कुछ था नहीं। बच्चा रोते-रोते भूखा ही सो गया है।"

विश्वम्भर दीर्घ साँस लेता हुआ बोला—"हड़ताल तो एक दिन समाप्त होगी ही। हिन्द रूस नहीं बन सकता। आवश्यकता है उदारता और सहानुभूति की। भावनाओं में त्याग की आस्था होनी चाहिए। सोचने का नया तरीका हो, तो वृत्तियाँ बदली जा सकें। समाज गढ़ा जा सके। यों समुद्रमंथन होगा। अमृत निकलेगा। दुर्बलों का भाग सबलों के हाथ में चला जाएगा। और कौए भी तो चालाक होते हैं।"

पत्नी ने सोचा, विश्वम्भर कुछ पीकर आया है। वह चुपचाप लेट गई।

विश्वम्भर की बार-बार इच्छा हो रही थी कि वह दीवार से टकराकर अपना सिर फोड़ ले।

———

दो गीत

श्री 'नीरव' एम० ए०

क्षण बदले, जीवन बदल गया।
उल्लास भरा यह मन बदला,
मन बदला, थक कर तन बदला;
मन को, तन को, ढोनेवाली—
गतिविधि का कण-कण बदल गया।
मानव इस असफलता के हित,
युग की पीड़ाओं से अविजित;
है वही ध्येय, है साध वही,
मति बदली साधन बदल गया।
तप की न रही वह क्रूर कथा;
हिम की न रही वह शीत व्यथा;
उर में, नयनों में, ऋतु बदली,
मधु बदला, सावन बदल गया।
बदली न हृदय की भावुकता,
बदली न प्रणय की आकुलता;
बदला न नियति का कारागृह,
प्रिय बदला, बन्धन बदल गया।

———

एक प्रहर बीती विभावरी।
प्रिय में जो प्रियजन खोए हैं;
अलकों से मुँह ढँक सोए हैं;
उनके स्वप्न, साध, सुख छूकर,
चली जा रही निशा नागरी।
समझ रही हैं दृग-तारा से—
तम की तम पथ की बाधाएँ,
पल-प्रतिपल घटती जाती है,
अम्बर की, उर की, उजागरी।
हिल जाती है पंकज काया,
सुधि ने जिसको आप बुलाया,
एकाकीपन-सा साथी पा,
आज गई बन व्यथा बावरी।
जो अनन्त आलोक गए बन,
जो जीवनगति रोग गए बन,
उन जानेवाले दिवसों की,
आती है, आरी, सुधि! आरी!

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्रह सौ छनतीस

श्रीवृन्दावनलाल वर्मा

एक मुखिया ने कहा, "रोशनुद्दौला, शेर अफगन वगैरह सब काफिर हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए अगर मुझको अपनी पूरी दूकान बेचकर चन्दा देना पड़े तो दूँगा।"

दूसरा बोला, "मैं भी अपनी सारी दौलत इस नेक काम में लगा देने के लिए हाजिर हूँ।"

सब मुखियों ने इसी प्रकार की बात कही।

गुलाबखाँ ने कहा, "रुपए की इतनी जरूरत नहीं जितनी सबके एक हो जाने की है। वजीरुद्दौला और अमीर आजमखाँ सरीखे सरदार अपने साथ हैं जिनके पनालों में होकर इत्र बहा करता है। जरूरत है दिल्ली के सब अच्छे लोगों को एक राय का बना लेने की। आप लोग हर गली और हर कूचे में जाएँ। पक्के लोगों को इकट्ठा करें। इसके बाद हाजी मरहूम की लाश को शुभकर्ण के मकान पर ले चलें। जब तक कातिल और शुभकर्ण को खतम न कर डालें तब तक हाजी साहब की लाश को न दफनाएँ। शुभकर्ण के मकान को गिराकर उसी खँडहर में लाश दफनाई जाए तब बात है। इसके बाद रोशनुद्दौला वगैरह को समझा जाएगा।"

"लेकिन उनके पास फौज है", एक ने अपनी बाधा जाहिर की।

गुलाबखाँ ने कहा, "तोपखाने के हजारों अरबी और ईराकी सिपाही आप लोगों का साथ देंगे। आप परेशान न हों। पहले सब लोगों को जमा करके शुभकर्ण और उसके सिपाहियों को पकड़िए। उसके बाद देखा जाएगा।"

एक बोला, "मालूम होता है, शुभकर्ण को शेर अफगन ने अपने यहाँ छिपा लिया है। उसके मकान पर ताला पड़ा हुआ है।"

"कुछ परवाह नहीं", गुलाबखाँ ने उत्साहित होकर कहा, "काफी आदमी लेकर शेर अफगन की हवेली पर जाइए। आज हमको इन सबसे निबटना है।"

कुछ लोगों ने दिल्ली में लूटमार मचाने और आग लगाने का भी सुझाव पेश किया, परन्तु लगभग सभी दिल्ली-निवासी हथियारबन्द थे और जूताफरोशों को अपनी दूकानों की भी फिक्र थी, इसलिए इस सुझाव को रद कर दिया गया।

गुलाबखाँ बोला, "यकीन करिए, हमारे सब बड़े सरदार आपकी पीठ पर हैं। सरकार वजीरुद्दौला आपके हमदर्द हैं। उन्होंने भी इस वाकए को सुन लिया है। वे रञ्ज में हैं। मैं तोपखाने की तरफ जाता हूँ। आप अपना काम करिए।"

गुलाबखाँ चला गया। प्रमुख जूताफरोशों ने भीड़ को अपने पक्ष में पक्का किया, और वे 'दीन' 'दीन' के नारे लगाते हुए शहर में फैल गए। सारे शहर के धोबी, नाई, जुलाहे, कसाई, फकीर, भटियारे, जूताफरोश इत्यादि एकत्र हो गए। इनमें कुछ हिन्दुस्थानी दल के पक्षपाती भी थे, परन्तु उस समय की गरम-गरम पुकारों ने उनके प्रतिकूल राजनैतिक मत को गला दिया और वे चोंके सादुल्लाखाँ के जूताफरोशों के जोश में शामिल हो गए। इकट्ठा होकर हल्ला-गुल्ला करने और कुछ उपद्रव कर बैठने की वासना उत्सव मनाने की वृत्ति में परिवर्तित हो गई और उन लोगों को आगे का कार्यक्रम एक बड़ा उत्सव प्रतीत होने लगा।

"इसी चारपाई पर हानी साहब की लाश को रख उनकी तसबी के हत्यारे शुभकर्ण के मकान पर ले चलो। जब तक हाजी के कातिलों को और शुभकर्ण को नहीं मार डाला जाएगा, लाश नहीं दफनाई जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिहरी-गढ़वाल

युक्तप्रान्त की पहाड़ी रियासत टिहरी-गढ़वाल के शासक श्री महावीरेन्द्र शाह। जन-आन्दोलन का सम्मान करते हुए आपने अपनी रियासत में वैधानिक शासन-तन्त्र स्वीकार कर लिया है।

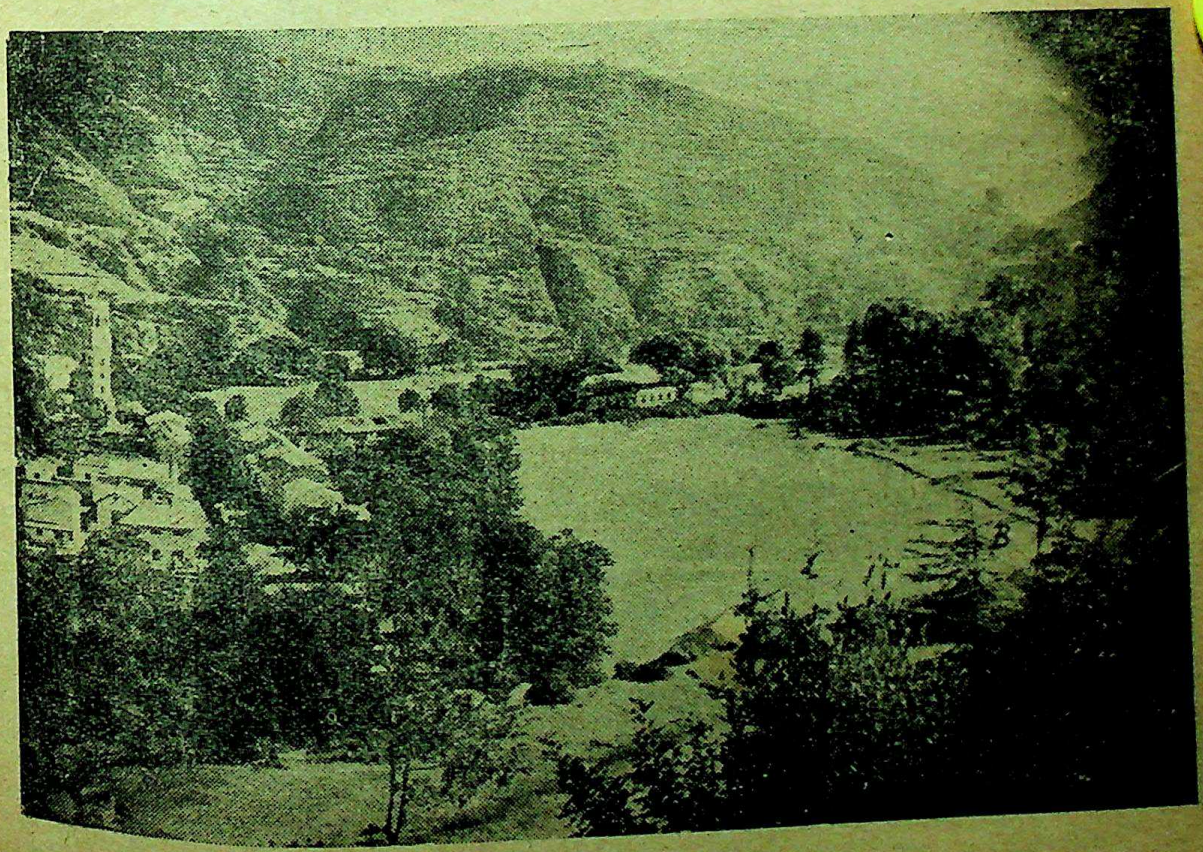

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

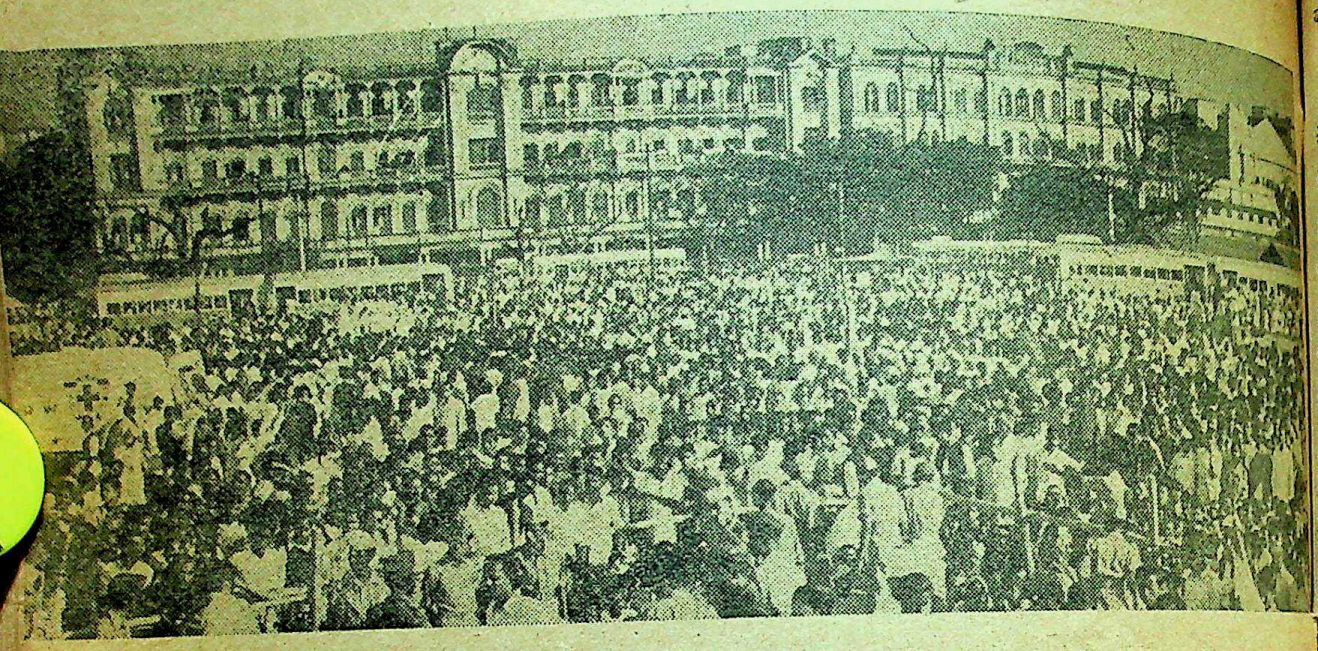

मई-दिवस

उक्त अवसर पर सारे विश्व में श्रमिकों ने व्यापक प्रदर्शन करके यह स्पष्ट कर दिया कि उनमें संगठन का अभाव नहीं है।

ऊपर—कलकत्ता के मैदान में श्रमिकों की बृहत् सभा।
नीचे—मास्को में उक्त दिवस के उपलक्ष्य में सैनिक-प्रदर्शन।

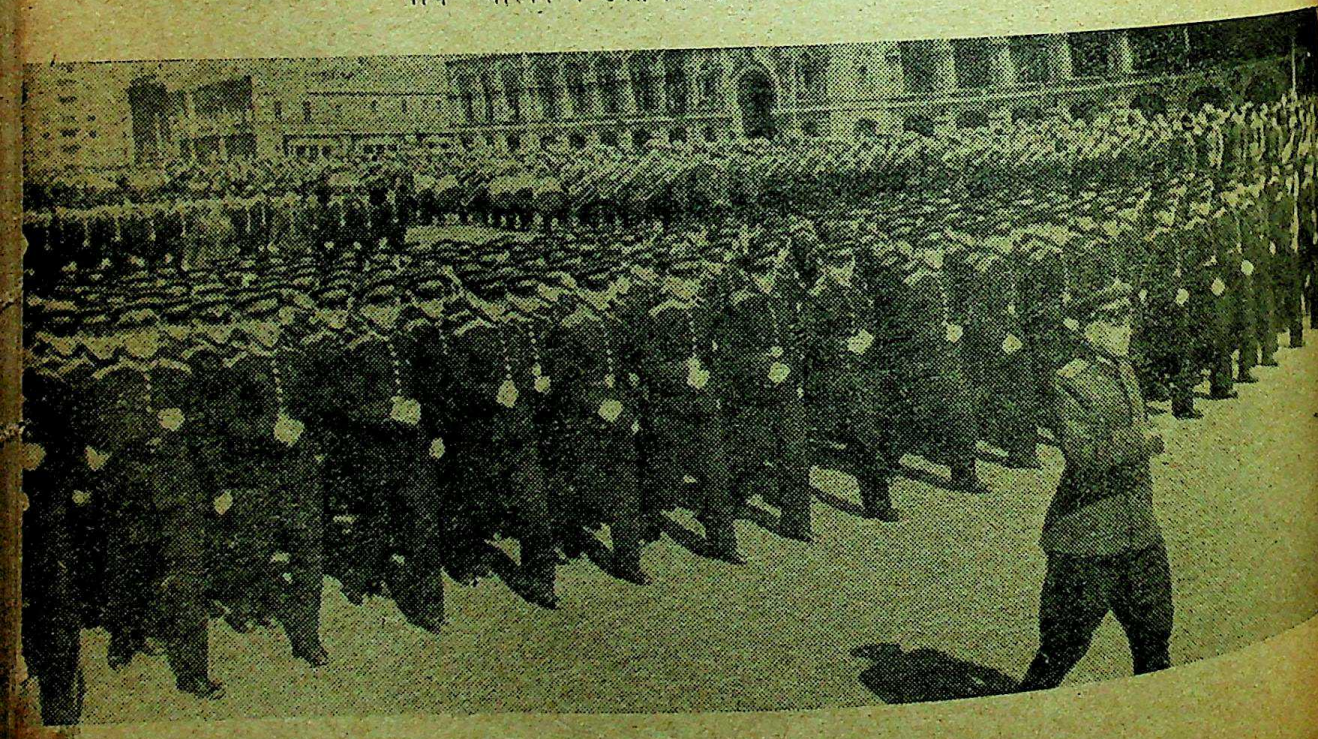

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

उच्च कंठ से विशाल भीड़ ने अनुमोदन किया; और वही उनका कार्यक्रम भी बना।

(१४)

'दीन' 'दीन' का नारा लगाती हुई वह भीड़ शुभकर्ण के मकान पर पहुँची। मकान खाली था। ताले पड़े हुए थे। मालूम हो गया कि शुभकर्ण अपने आदमियों के साथ शेर-अफगन की हवेली में छिपा हुआ है। लाश को चार-पाई पर वहीं हिफाजत के साथ छोड़कर भीड़ रौरा मचाती हुई शेर अफगन की हवेली पर जा धमकी। ड्योढ़ी पर बन्दूक और तलवार से सुसज्जित काफी संख्या में सिपाही डटे हुए थे। भीड़ का कोई भी व्यक्ति हवेली में नहीं घँस पाया। ऊपर की खिड़की में से शेर अफगन ने सिर निकाला। भीड़ की संख्या को देखकर जरा सहमा। फिर सँभलकर पूछा, "क्या बात है ? क्यों परेशान हो ?"

सारी भीड़ ने कुछ-न-कुछ कहने का प्रयत्न किया। शेर अफगन ने हाथ-हिला-हिलाकर भीड़ को चुप करने की चेष्टा की। जब भीड़वालों ने स्वयं अवगत कर लिया कि अपने ही शोर के मारे वे अपनी बात तक नहीं कह पाते तब मुखियों ने दौड़-धूपकर कुछ शान्ति स्थापित की। शेर अफगन ने फिर कहा, "क्या बात है ? कौन सा गजब हुआ ?"

भीड़ के एक व्यक्ति ने, जिसका गला तुरही जैसा प्रखर था, बातचीत की।

"एक गरीब और जईफ मुसलमान को आपके दीवान राजा शुभकर्ण ने अपने सिपाहियों से कल शाम बिना किसी कुसूर के मरवा डाला है। वह नमाज पढ़ रहा था। लोगों ने मना भी किया, मगर राजा शराब में मस्त था। सिपाही भी पिए थे। उन लोगों ने जरा भी परवाह नहीं की। उसको मार डाला और कुछ बच्चों को भी काटकर कुएँ में फेंक दिया।"

"उस बुड्ढे का क्या नाम था ?" शेर अफगन ने सवाल किया।

जवाब मिला, "हाजी"।

उसने फिर सवाल किया, "क्या उसका यही नाम था ?"

बातचीत करनेवाले को हाजी का नाम नहीं मालूम था। उसने अपने साथियों पर दृष्टिपात किया। भीड़ में से अनेक कंठों ने एक साथ कहा, "हाजी हाफिज खाँ, हाजी हाफिज खाँ।",

शेर अफगन बोला, "अच्छा, अच्छा, यह तो मालूम हुआ। वे बिचारे बड़े नेक थे। पर यह समझ में नहीं आता कि उन बिचारों को शुभकर्ण ने बिना कुसूर, और वह भी नमाज पढ़ते वक्त क्यों मार डाला। सही सही बात मालूम हो जाए तो मैं खुद इन्साफ कर दूँगा।"

"बिलकुल बेकुसूर मार डाला है, आला जनाब ! शुभकर्ण मुसलमानों से नफरत करता है। इसलिए उसने इस पाक महीने में उस नेक बुड्ढे को मार डाला।"

"कुछ समझ में नहीं आता। जरा हुल्लड़ कम करो तो ठिकाने की बात हो।"

भीड़ में से एक व्यक्ति ने बेतहाशा चिल्लाकर कहा, "ठिकाने की बात तो जनाब तब होगी जब आप अपनी हवेली के बाहर उस बदकार को कर देंगे।"

"मियाँ होश में बात करो", शेर अफगन ने क्रोध को न दबा पाकर कहा, "यह मैं मानता हूँ कि तुम्हारा एक नेक आदमी मारा गया है, लेकिन अभी यह साबित होना बाकी है कि उसको शुभकर्ण ने या उनके किसी आदमी ने मारा है।"

"अच्छा ! यह दलील ! तरफदारी की हद हो गई ! याद रखिए आप भी मुसलमान हैं।"

"तभी तो कहता हूँ कि सबूत और सचाई की बात करो।"

"यानी हम लोग झूठ बोल रहे हैं ?"

"यह तो तुम जानो, मगर इन्साफ करने के लिए सबूत की जरूरत तो पड़ा ही करती है।"

"हम सबने कतल होते देखा है", भीड़ में से अनेक कंठों से निकला।

शेर अफगन भी चिल्लाकर बोला, "और मैं कहता हूँ कि महज भड़के हुए या भड़काए हुए लोगों की हुल्लड़बाजी को मैं सबूत और सचाई का रुतबा नहीं दे सकता। अपना-अपना काम देखो। किसी के बहकाने में मत आओ। मैं थोड़ी देर में आता हूँ। जिन लोगों ने अपनी आँख से कतल देखा हो वे कोतवाली में आ जाएँ। वहाँ जाँच-पड़ताल होगी और कुसूरवार को मुनासिब सजा दी जाएगी।"

भीड़ क्रोधोन्मत्त हो उठी।

एक ने कहा, "यह सब टालबाजी है।"

दूसरा बोला, "अमीर बेजा तरफदारी कर रहे हैं !!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे ने तुरन्त कहा, "लाश तो तब दफनाई जाएगी जब कातिलों की बोटी-बोटी कुत्ते और कौए खा चुकेंगे।" इस पर भीड़ के अनेक व्यक्तियों ने कसमें खाईं: "जब तक कातिल न मार दिए जाएँगे, लाश नहीं दफनाई जाएगी।"

शेर अफगन का क्रोध दृढ़ता में परिणत हो गया।

बोला, "यह अमल बहुत खराब है। मैं तुमको सीधी राह बतला रहा हूँ, और तुम उलटे बहे चले जा रहे हो।"

"हाँ! हाँ!!"

"या खुदा दिल्ली को यह दिन भी देखना पड़ा!"

"इन्हीं लोगों ने जजिया बन्द करवाया।"

उस हो-हल्ले के बीच में कुछ मुखियों ने आपस में सलाह करके एक निश्चय किया। उस निश्चय को एक व्यक्ति ने शेर अफगन पर प्रकट भी कर दिया, "हम लोग शुभकर्ण के मकान को खाक में मिला देंगे और वहीं हाजी हाफिज की लाश को दफनाएँगे।"

"और तुम लोग वहाँ से खैरियत के साथ लौट आओगे!"

"तब आप शुभकर्ण वगैरह को हवेली से बाहर क्यों नहीं कर देते?"

"यहाँ वे कोई नहीं हैं।"

"यहीं हैं, यहीं हैं। निकालो उनको बाहर।"

"नहीं हैं। मैं कहता हूँ नहीं हैं।"

"कसम खाइए,"

'पठान तलवार चलाते हैं। कसमें नहीं खाते।"

"ओ हो! ओ हो!! यह गरूर!!!" भीड़ किसी भयङ्कर घटना का सूत्रपात करना चाहती थी, उसी समय उनकी बढ़ती हुई संख्या को बढ़ाते हुए कुछ और लोग आ पहुँचे। इस नई टुकड़ी ने सूचना दी: "हजरत बादशाह सलामत की सवारी जफर खाँ के बाग से लौट रही है। चलो वहीं फरियाद पेश करें। फिर देखा जाएगा।"

जितनी जल्दी भीड़ शेर अफगन की हवेली के सामने इकट्ठी हुई थी उतनी ही जल्दी तितर-बितर भी हो गई—मानो सबके सब किसी एक ही भावना के सूत्र में बँधे हों। लगभग सबके सब उस दिशा में दौड़ गए जिस दिशा से बादशाह की सवारी आ रही थी। अभी बादशाह की सवारी कुछ दूर थी। भीड़ ने सवारी के आगे बढ़ने का मार्ग रोक लिया।

(१५)

उधर भीड़ गई, इधर शेर अफगन की हवेली के भीतर स्त्रियों ने चैन की साँस ली। शबनम और देवकी एक ही जगह बैठी हुई थीं।

शेर अफगन ने अपनी हवेली में शुभकर्ण और उसके सहबर्गियों के भोजनादि की व्यवस्था कर दी थी। बावर्ची रसोइए और कहार लगा दिए थे, परन्तु खाना किसी ने भी नहीं खाया गया।

देवकी की आँखों में कृतज्ञता के आँसू थे। उसने कहा, "बहिन, आपका जस कभी नहीं भूलूँगी।"

शबनम बोली, "दीदी, इसमें जस किस बात का? आप मेरी बड़ी बहिन हैं। हम लोगों ने थोड़ा-सा फर्ज अदा किया तो कौन-सा बड़ा काम किया?"

देवकी—"हम लोगों के लिए नवाब साहब ने अपने को विपद में डाल लिया है।"

शबनम—"आप कैसी बातें करती हैं, दीदी? हम लोग आपस में एक-दूसरे की मदद न करेंगे तो क्या बाहरवाले मदद करने आएँगे?"

देवकी—"ये बाहरवाले ही तो ऊधम कर रहे हैं।"

शबनम—"अगर मैं किसी तरह अब्बाजान के पास पहुँच पाती तो उनको समझाती, जिद करती और अपना गला तक काटकर उनके हाथ में रख देती कि बाज आइए; विलायतियों की तरफ को छोड़िए और हिन्दुस्तान को अपना समझिए।"

देवकी—"प्यारी बहिन, आप और आफत में न कहीं पड़ जाना। नवाब साहब तो हम थोड़े से हिन्दुओं के लिए पूरी जोखिम सिर पर ले ही चुके हैं।"

शबनम—"आप बार-बार यह क्यों कहती हैं? थोड़ी-देर के लिए मान लीजिए हम लोग किसी ऐसी जगह होते जहाँ हिन्दुओं ने कुछ शरारत की होती और हम लोग उनके बीच में फँस जाते तो आप क्या करतीं?"

देवकी की आँख एकाएक लाल हो गई। फुफकार कर बोली—

"बहिन, मैं उन सब हिन्दुओं की बोटी-बोटी कर डालती जो आपको या आपके किसी नातेवाले को छूने के लिए आगे कदम बढ़ाते।"

शबनम देवकी से लिपट गई। बोली, "दीदी, हम भी इन्सान हैं। आपके लिए यही खयाल हमारे भी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

में घर किए हुए है। हम आपकी मदद नहीं कर रहे हैं बल्कि हिन्दुस्तानी के नाते सिर्फ अपना फर्ज अदा कर रहे हैं।"

देवकी ने कहा, "बहिन, हम लोगों की चले तो हम लोग फसाद की नौबत ही न आने दें।"

(१६)

सवारी धीरे-धीरे, खरामा-खरामा, आई। पालकियों, तामझामों, पीनसों और शानदार झूलेवाले हाथियों के सुनहले और रुपहले हौदों पर कीमखाब, मखमल और जरदोजी के चमक-दमकदार पर्दों का जलूस चींटी की चाल आया। एक बड़े हाथी के पर्देदार हौदे पर मुहम्मदशाह उस दिन की अपनी किसी प्यारी बेगम के साथ बैठा था। इस जलूस के चारों ओर घुड़सवार, ऊँट-सवार और पैदल सिपाही सशस्त्र थे। मुहम्मदशाह ने पर्दे की जाली में से सामने के भीड़-भड़क्के को देखा और कान फोड़नेवाले नारे सुने :—

"दीन", "दीन"; "इन्साफ, इन्साफ"। बादशाह ने अपना हाथी आगे बढ़ाया। जब भीड़ के जरा पास हाथी पहुँच गया, मुहम्मदशाह ने परदा हटाकर मुँह निकाला। भीड़ शान्त हो गई। बादशाह ने पूछा, "क्या बात है?"

भीड़ में से किसी ने जवाब दिया—

"जबसे जहाँपनाह ने जजिया बन्द कर दिया, हिन्दुओं ने सिर बहुत ऊँचा कर लिया है। पठान जो मजहब की तरफ से लापरवाह हैं, उनके साथी हैं। ये लोग साजिश करके खुलेआम गरीब मुसलमानों के कतल करते हैं। उनकी रोजी पर लात मारते हैं, उनके हकों को पैरों तले रौंदते हैं। अभी हाल में—"

बादशाह ने दाँत पीसे। धीरे-धीरे बड़बड़ाया, "कम-बख्तों ने सुबह का मजा कैसा खराब किया! हिन्दू और पठान साजिश करते हैं तो तुमको साजिश करने से किसने रोका? मेरी जान खाने को रास्ते में आ गए।" जरा ऊँची आवाज में बोला, "किस्सा कोता करो। थोड़े में बतलाओ क्या हुआ है। मुझको महलों में जरूरी काम से जल्दी जाना है।"

भीड़ का एक मुख बोला, "गरीबपरवर सलामत, जहाँ-पनाह, अबुलफतह नसीरुद्दीन, गाजीउलमुल्क—"

मुहम्मदशाह ने तेज स्वर में कहा, "बात भी बत-लाएगा या तोता रट जारी रक्खेगा?"

उसने प्रार्थना की, "जहाँपनाह, राजा शुभकर्ण ने, जो अमीर शेर अफगन के दीवान और जवाहिरखाने के नायब हैं, हाजी हाफिज को कल शाम के वक्त मरवा डाला, बेकुसूर, बिना वजह—"

मुहम्मदशाह ने चैन की साँस ली। सोचा, "बस इतनी सी बात! समझा था मराठों ने लूट लिया!! खैर!"

कहा, "इन्साफ किया जाएगा।"

भीड़ चिल्ला उठी, "दुहाई जहाँपनाह की। शेर अफगन इन्साफ नहीं होने देते।"

"क्यों?" बादशाह ने भरसक चिल्लाकर पूछा। और दाँत तले कहा, "बदमाशों ने कितना बेभाव रौरा मचा रक्खा है! मेरा तो जी मतलाने लगा।"

उत्तर मिला, "शुभकर्ण और कातिल सिपाहियों को अमीर शेर अफगन अपनी हवेली में छिपाए हुए हैं। पनाह दिए हैं। दीन की तौहीन कर रहे हैं।"

बादशाह चिड़चिड़ा गया। उसी चिड़चिड़ाहट में वजीर कमरुद्दीन को बुलवाया। वह जरा फासले पर एक हाथी पर सवार था। हाथी से उतर कर तुरन्त आया। उसने जमीन चूमी और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

मुहम्मदशाह ने कहा, "हजरत, यह सब क्या मजाक है? शुभकर्ण ने एक गरीब को मार डाला और शेर अफगन के यहाँ जा छिपा! वह जहाँ कहीं भी हो गिरफ्तार करो और इन्साफ करो।"

वजीर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने हाथ जोड़कर आज्ञा सिर माथे रक्खी और भीड़वालों को समझा दी। उसी समय एक खास ख्वाजा को शाही फर-मान बजा लाने के लिए शेर अफगन की हवेली पर भेजा। भीड़ ने इस ख्वाजा को अपने बीच कर लिया और खुशी-खुशी उसको हथेलियों पर ले जाने लगे। परन्तु, भीड़ के वहाँ से हटने के पहले ही एक आदमी तेजी के साथ शेर अफगन की हवेली पर पहुँच गया। उस ख्वाजा को लिए हुए भीड़ समुद्र की लहरों की तरह शेर अफगन की हवेली की ओर चल पड़ी।

बादशाह की सवारी भी किले की ओर चली। चोबदार चिल्लाए, "बाअदब, बाकायदा, होशियार, खबरदार।"

बादशाह ने अपनी प्यारी बेगम से, पर्दे के भीतर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "हुल्लड़ को बुखार या नजले ने हैरान कर डाला था, अब उतर जाएगा।"

बादशाह चला गया।

भीड़ आनन्द और उत्साह में मग्न थी। हाजी के मरने का कोई गम भीड़ को न था। कोई भी अनिश्चित उपद्रव करने का उत्साह मन में हिलोरें मार रहा था। दिल्ली के बाजार बन्द हो गए। दूकानों को बन्द होता हुआ देखकर भीड़ को अपना आतङ्क और प्रभाव और भी अधिक अवगत हुआ। एकाध ढीठ या गरीब अधमुँदी दूकान खोले भी था तो भीड़ ने बन्द करवा दी, "नालायक, सारी दिल्ली तो मातम मना रही है और तू दूकान खोले है! बन्द कर।"

(१७)

शेर अफगन की हवेली पर रोशनुद्दौला भी आ गया था। वे दोनों किसी सलाह में व्यस्त थे।

वजीर का भेजा हुआ ख्वाजा अभी नहीं आ पाया था कि भीड़ को छाँटकर एक आदमी पहले ही इन लोगों के पास आ गया। वह एक पठान दरबारी था। उसने आते ही सूचना दी, "कमरुद्दीन बदला लेना चाहते हैं। बिना किसी सबूत के उस भीड़ की गैरमुमकिन झूठी चिल्ल-पों को सही और सच मान लिया गया है। बादशाह सलामत से यह हुक्म जारी करवा दिया गया है कि राजा शुभकर्ण को आपके यहाँ से तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाए और उनके सिपाहियों को भी पकड़ लिया जाए। इसके बाद भीड़ के खूनी जल्लाद इन्साफ करेंगे; वे बिचारे कोतवाली तक पहुँच भी न पाएँगे। मैं बादशाह के हाथी के नजदीक खड़ा था। बादशाह को इस तरह के फरमान जारी करने पर बहुत मलाल था। चेहरे से साफ जाहिर हो रहा था।"

रोशनुद्दौला मिठास के साथ बोला, "हम लोग आपका बहुत अहसान मानते हैं। मैंने खुद तहकीकात कर ली है। राजा साहब का या उनके सिपाहियों का कोई कुसूर नहीं है। मैं उनको बरसों से जानता हूँ। ऐसा नेक नमकहलाल, होशियार और हिम्मतवाला आदमी किस्मत से ही मिलता है।"

"उनका एक बाल भी बाँका न होगा;" शेर अफगन ने दृढ़तापूर्वक कहा, "कमरुद्दीन तो क्या कमरुद्दीन के फरिश्ते भी राजा को या किसी को भी पठान की पनाह से तिल भर भी बाहर नहीं खींच सकेंगे।" पठान दरबारी बोला, "कमरुद्दीन को मुहँ की खिलानी है। अब मैं जाता हूँ। वे लोग आते ही होंगे।" दरबारी चला गया।

थोड़ी देर बाद शेर अफगन और रोशनुद्दौला को दरवाजे की ओर आती हुई भीड़ का शोर सुनाई पड़ा। रोशनुद्दौला ने मुसकराकर शेर अफगन की ओर देखा।

पहरेवाले ने कमरुद्दीन के भेजे हुए ख्वाजा के आने की सूचना दी। शेर अफगन ने उसको बुलवा लिया। बड़ी आवभगत से बिठलाया। ख्वाजा कमरुद्दीन के गुट का आदमी था।

रोशनुद्दौला ने ऋतु की चर्चा की। अभी ठंढक है। कुछ दिन बाद गरमी पड़ेगी। दुपहरी में गरम हवा चल उठी है। दरबारी ने मौसम की और भी ज्यादा शिकायत की। हिन्दुस्थान गरम मुल्क है और दिल्ली गन्दा शहर। अपने जीवन को कठिनाइयों और कष्टों से ओत-प्रोत जाहिर करते-करते उकताने सा लगा।

भीड़ ने अपने उल्लास और क्षोभ को गगन-भेदी नारों से प्रकट किया।

रोशनुद्दौला ने जरा चौंककर आश्चर्य प्रकट किया, "यह शोर काहे का है?"

शेर अफगन ने कहा, "कोई बवाल होगा; दिल्ली में बवालों की क्या कमी है?"

ख्वाजा कान लगाकर बोला, "आपने ठीक फरमाया। मौसम की तेजी के साथ लोगों की तबियतें भी तेज हो गई हैं और मिजाज खराब। यह खराबी यहाँ की मिट्टी तक में है।"

शेर अफगन ने मन में कहा, "यहीं की मिट्टी में ये सोना बीनते हैं और उसी की बुराई करते हैं!"

रोशनुद्दौला के माथे पर शिकनें आईं। बोला, "रास्ता है। हल्ला-गुल्ला करते हुए निकल जाएँगे लोग। आज कोई त्योहार तो है नहीं। मगर बादशाह सलामत कदम-शरीफ से लौटे होंगे। उनका दीदार हासिल करके ये सब वापस आ रहे होंगे।

[क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमिट सौन्दर्य

नूरमहल सौन्दर्य की अप्रतिम प्रतिमा थी। उसकी आँखें सितारों की भाँति चमकीली थीं। उसकी दासी ने उसके रेशम से अधिक कोमल बाल सुलझाते हुए एक दिन कहा:—"मेरे पड़ोस में एक साध्वी अध्यापिका रहती है जो कभी यौवन में खिला हुआ फूल थी। असावधानी में चित्रकार ने उसका चित्र लेकर बड़ी कीमत में मेरे हाथ बेंच दिया। वह चित्र और आपकी आकृति मिलती-जुलती हैं, बेगम; कोई कहे सगी बहनें हैं।"

बेगम ने चित्र देखने की इच्छा प्रगट की जो तत्क्षण ही पूरी की गई। फिर अध्यापिका को देखने की चाह हुई। निर्धन अध्यापिका प्रासाद में लाई गई। अब उसकी उम्र लगभग ६० वर्ष की थी। कमर झुक गई थी। नेत्र आकर्षणहीन थे। यद्यपि चेहरे पर झुर्रियों का अधिकार था, फिर भी खंडहर भवन के सौन्दर्य को प्रकट कर रहे थे। वृद्धा होने से वह उदास व परेशान दिखाई देती थी, मानों जीवन का पथभ्रान्त पथिक खोया-खोया पूछता फिरता है कि अब मैं किधर जाऊं और कहां ठहरूँ। बेगम उसको देखकर भौचक्की हो गई। फिर चित्र और अध्यापिका में महान् अन्तर पाकर बेगम का रंग पीला पड़ गया। "क्या सौन्दर्य का यही परिणाम है? क्या मैं भी इस अवस्था में पहुँचने वाली हूँ जबकि लोग मेरा उपहास करेंगे?"

बेगम ने अध्यापिका को विदा किया, परन्तु स्वयं शृंगार से उदास होकर लेट गई। उसके इस प्रकार चिन्तातुर होने से प्रासाद की चहल-पहल में अन्तर आ गया। सूचना मिलने पर बादशाह सभा विसर्जित करके घर चला आया। बादशाह किंकर्तव्यविमूढ़ बना खड़ा था। बेगम ने सुन्दर नेत्रों को धीरे से उठाते हुए कहा—"मुझे कोई ऐसा नुस्खा या तबीज चाहिए जो कि सौन्दर्य को अमिट कर दे।" कौन नहीं जानता कि सौन्दर्य अमिट नहीं, परन्तु "प्रिय रानी" के कोमल हृदय को विपरीत उत्तर से कौन तोड़े! नारी का हठ यदि अम्बर के तारे तोड़ लाने की मांग करे तो कम-से-कम दिखावे के लिए लम्बी सिढ़ी का प्रबन्ध करके यह दिखाना पड़ता है कि उसकी बात ध्यान-योग्य नहीं रही। यथा-सम्भव प्रयत्न किया गया, परन्तु आकाश के तारे मनुष्य की पहुँच से बाहर हैं। बादशाह ने दिल में कहा कि विकास के इस युग में लोग उस पर हँसेंगे। यह बातें तो पुराने बादशाहों को अच्छी लगती थीं। बीसवीं सदी के शिक्षित शासकों को उचित नहीं कि वह अपने दरबारियों को नाटक का पात्र बनाएँ। बाहर का संसार सुनेगा तो क्या कहेगा? बादशाह ने चाहा कि बेगम को इस मूर्खता पर डाँट दे, लेकिन डरा कि सौन्दर्य का पुष्प तो पहले ही कुम्हला चुका है, ऐसा न हो कि उसका दिल पत्ती-पत्ती हो जाए। विवशतः वह प्राचीन गल्प के पात्र का अभिनय करने पर बाध्य हुआ।

बादशाह उल्टे पाँव वापस लौट आया। मन्त्रियों को बुलाया; योगियों के पास आदमी दौड़ाए; हकीम और वैद्य एकत्र किए; सबके सामने इस प्रश्न की पुनरावृत्ति की कि कोई ऐसा नुस्खा या तावीज बताओ जो सन्दर्य को अमिट कर दे!! तबीबों और हकीमों ने कान पर हाथ रक्खे कि सौन्दर्य परिवर्तनशील है? फकीरों और योगियों ने कहा कि आयु बढ़ सकती है परन्तु शरीर की अवस्था सदा एक-सी नहीं रह सकती। यह सुन बादशाह उदास हो गया। बादशाह को देखकर मन्त्री भी बहुत ही परेशान था क्योंकि बादशाहों के क्रोध के शिकार मन्त्री ही होते हैं। बादशाह के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया। एक दिन वह मन्त्री से अकारण क्रुद्ध हो गया। सूचना बाजार में पहुँची। धीरे-धीरे मन्त्री-कन्या को भी मालूम हुआ कि बादशाह उसके पिता से नाराज हैं। मन्त्री संयम का पुतला था। दिल की बात अपनी लड़की से न कही। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमती कन्या ने प्रासाद की बातें सुनीं तो पिता की कठिनाई का उपाय ढूंढने लगी। कई दिनों के बाद वह परेशान पिता के पास आकर बैठ गई और पूछा:—"आप प्रायः उदास रहते हैं; आखिर क्यों?" पिता पुत्री की बुद्धिमत्ता को मानता था; परन्तु वह अपनी परेशानी में उसे भागी न बनाना चाहता था। आज लड़की ने जो पूछा तो उसने सारा वृत्तांत कह सुनाया। लड़की ने कहा—"इसमें परेशानी की बात ही क्या है? शाह को कहो कि बेगम परेशान न हो।" मन्त्री ने आश्चर्य के साथ पुत्री की ओर देखा। मन्त्री-कन्या बोली:—"पिता जी, बादशाह बेगम को कहें कि सौन्दर्य तीन प्रकार का है, (१) नेत्र के लिए स्वर्ग है, (२) दूसरों के लिए दिल की ठण्ढक है, (३) अपने हृदय की सान्त्वना है। और यह बताकर बेगम से पूछें कि उनका प्रश्न किस सौन्दर्य के सम्बन्ध में है। मन्त्री को पुत्री की योग्यता पर पूरा विश्वास था। जब दरबार लगा तो उसकी आकृति चमक रही थी। शाह ने उसकी तरफ देखा और पूछा—"मन्त्रिन्, आज क्या शुभ समाचार है? मन्त्री ने आदर से कहा, बेगम को उदास होने की आवश्यकता नहीं। बेगम से पूछ कर इतना बताया जाए कि सौन्दर्य तीन प्रकार का है और उनका प्रश्न किससे सम्बन्ध रखता है।

बादशाह ने मन में विचार किया, "निस्सन्देह मन्त्री की बुद्धि जन-साधारण की अपेक्षा बहुत ऊंची है। उसने इतनी बात पहले दिन क्यों न कह दी? क्या यह उत्तर उसने स्वयं पाया है या उसका कोई परामर्शदाता भी है।" यह बात बादशाह ने सानुरोध मन्त्री से पूछी। पहले तो उसने टालने की कोशिश की परन्तु फिर कन्या की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा—"यह उत्तर तो उसका ही सुझाया हुआ है।" बादशाह ने मन में सोचा—"प्राचीन गल्प के पात्र पूर्ण हो गए। प्राचीन किस्सों में भी मन्त्री-कन्याएं समस्या का हल बताती थीं और आज भी परिस्थिति वैसी ही है। बादशाह प्रसन्नता से उठा और धीरे-धीरे प्रासाद की ओर चल पड़ा। उसे इस तरह प्रसन्न देखकर बेगम उठ बैठी, मानों मृतशय्या पर लेटे रोगी को जीवनामृत मिल गया हो। बादशाह बोला—"बेगम, बुद्धिमान् मन्त्री पूछता है कि सौन्दर्य तीन प्रकार का है। किस सौन्दर्य के सम्बन्ध में तुम्हारा प्रश्न है?" बेगम हैरान रह गई। फिर बोली—"सजावट और रूप-रंग सौन्दर्य के प्राण हैं; मैं क्या जानूं, इसके अतिरिक्त भी कोई सौन्दर्य है। इस समस्या को जब तक कोई न समझाए, कुछ समझ में नहीं आ सकता।"

बादशाह ने मन्त्री को बुलाकर परामर्श किया, अन्ततः यह तय हुआ कि पुरुष स्त्रियों की बातों में क्यों आएं। औरत औरत से ही क्यों न निपटले। मन्त्री-कन्या प्रासाद में लाई गई। बेगम ने उसका स्वागत किया। इधर-उधर की बातें करते-करते सौन्दर्य के प्रश्न को छेड़ा गया। मन्त्री-कन्या ने कहा—"अगणित प्राणियों को यह सम्पत्ति मिली और नष्ट हो गई। मैं अनुभव कर रही हूँ, सौन्दर्य नष्ट न हो इस आशंका से आप दुःखी हो रही हैं। यदि आप एक काल्पनिक नाटक में अभिनय करना स्वीकार कर लें तो सारी समस्या सुलझ सकती है।"

बेगम बोली,—"मुझे स्वीकार है।"

मन्त्री-कन्या ने कहा—"आप बादशाह से कहें कि वह सरकारी समाचार-पत्र में यह प्रकाशित करा दें कि फरीदाबाद के सरदार की सुन्दर कुलटा पत्नी ने नवयुवक पति को इस नीयत से विष दे दिया है कि विधवा होकर उसकी रंग-रल्लियों में पति का खटका न रहेगा। इस अभियोग की सुनवाई राजधानी के न्यायाधीश के सामने होगी। १५ मार्च को कातिल दिन के दस बजे कोर्ट में पेश की जाएगी।" बेगम ने कहा, 'यह काम तो आज ही हो जायगा।' मन्त्री-कन्या वापस अपने घर लौट आई। दूसरे दिन मन्त्री-कन्या रात को फिर बेगम के पास आई और बोली—'कल नाटक खेलने का दिन है, जिसमें आपको सौन्दर्य की दूसरी किस्म का हाल मालूम हो जाएगा। लोगों की राय बदलने से सौन्दर्य भी बदल जाता है। सुन्दर लोगों की नजरों में हौआ बन जाता है। मैंने अपने पिता-द्वारा सरकार को इस बात पर राजी कर लिया है कि आपको न्यायाधीश तक बिना पर्दे के जाने की आज्ञा हो। सरकार ने तो यहाँ तक मान लिया है कि यदि कोई यह भी कह दे कि यह तो फरीदाबाद के सरदार की कुलटा पत्नी है, तो भी वह बुरा न मानेंगे।'

बेगम ने कहा, "मैं अब समझी कि मुझे फरीदाबाद के सरदार की काल्पनिक पत्नी बनना पड़ेगा और न्यायाधीश के सामने पेश होना पड़ेगा।" "निस्सन्देह", मन्त्री-कन्या बोली। 'आज १५ मार्च का दिन है, बेगम ने स्नान किया, सुन्दर वस्त्र धारण किए और अप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

शृंगारों से अपने आपको इस प्रकार सुसज्जित किया मानों स्वर्ग की अप्सरा हो। वह रति का प्रतिनिधित्व कर रही थी। जो देखता था, उसके सौन्दर्य की सराहना करता था। वह बग्घी पर बिना-पर्दे सवार होकर प्रासाद के गुप्त द्वार से निकली और मन्त्रि-कन्या के साथ अकस्मात् नगर में प्रवेश किया। उसके साथ सेना के भी कुछ सवार थे। जनता की भारी भीड़ न्यायालय के पास एकत्र थी ताकि फरीदाबाद की कुलटा पत्नी को देख सके और उसकी वैवाहिकता की कहानी सुन सके। मन्त्रि-कन्या के कहने पर कुछ व्यक्ति नियुक्त थे, जिन्होंने बेगम की बग्घी को देख-कर कहा—'सज्जनो! यह देवी फरीदाबाद के सरदार की बहिन है। यह सुनकर सबने कहा कि यह तो सौन्दर्य की देवी है जो संसार को दर्शन देने के लिए प्रगट हुई है। कैसी निष्कपट तथा भोली-भाली सूरत है। पाप का विचार ऐसी स्त्रियों के समीप तक नहीं आता। मुख पर सौन्दर्य नहीं, स्वर्गीय तेज झलमलाता है। सारी जनता ने कौतुकभरी आँखों से उसे देखा। अपने सौन्दर्य की सराहना से सन्तुष्ट होकर प्रसन्नतापूर्वक बेगम जा रही थी। कोचवान "हटो, हटो" कहता भीड़ चीरता गुजरा। अकस्मात् भीड़ में से किसी ने पुकारा—'सज्जनो! यह फरीदाबाद के सरदार की बहिन नहीं है। यह वही कुलटा पत्नी है जिसके अभि-योग की आज सुनवाई है।' एक दूसरे ने पुकारा। 'सच है मैं फरीदाबाद का रहनेवाला हूँ, इसको मैंने कई बार देखा है। मैं इस चुड़ैल को खूब पहिचानता हूँ। इसी ने सरदार की हत्या की है।' ऐसा सुन लोगों के विचार एकदम पलट गए। जिन लोगों ने सौन्दर्य-प्रतिमा मान उसके दर्शनों से अपने को अहोभागी माना था, वही उसी मुंह चुड़ैल चुड़ैल करके पुकारने लगे। कहाँ तो उसके चेहरे पर तेज झलमलाता था और कहाँ अब लोगों की लानत-फटकार की बौछार बरसती दिखाई दे रही है। लोग डायन कहकर उसपर झपटे। सरकारी सैनिकों ने उसकी रक्षा की। लोगों ने उसकी तरफ देखकर घृणापूर्वक थूकना शुरू कर दिया। बेगम यह परिवर्तन देख बहुत लज्जित हुई। भीड़ की प्रतिक्षण घृणा बढ़ती जा रही थी। बेगम गर्दन झुकाए बैठ गई। यदि सहायक सेना न पहुँच जाती तो बेगम पर आक्रमण हो जाता। बेगम ने मन में कहा, "मन्त्रिकन्या ने सच कहा था कि लोगों की राय बदलने से सुन्दर-से-सुन्दर व्यक्ति उपयोगी और भूत बन जाता है। मालूम होता है कि मुझे फरीदाबाद के सरदार की क्रमशः बहिन और पत्नी बतानेवाले मन्त्रिकन्या के आदमी थे। इतने में बेगम न्यायालय में प्रविष्ट हुई और दस दिन का रीमाँड देकर बेगम को दूसरे दरवाजे से निकालकर और गाड़ी पर सवार करके प्रासाद में लाया गया जहाँ मन्त्रिकन्या बेगम की प्रतीक्षा कर रही थी। लोगों को जब मालूम हुआ कि कातिल का रीमाँड हो गया है और भीड़ को क्रुद्ध देख उसे दूसरे दरवाजे से निकाल दिया गया है, तो वह भी तितर-बितर हो गई। मन्त्रिकन्या ने कहा—"बेगम, अब तो आपको समझ आगई होगी कि एक सौन्दर्य वह भी है जो लोगों की नजरों में जंचे। यह सौन्दर्य सम्मति की जरा-सी तबदीली से छीन लिया जाता है। काल्पनिक नाटक के दूसरे दृश्य पर मैं यह साबित कर सकूँगी कि एक धोखेबाज मनुष्य लोगों की नजरों में एक सज्जन की भाँति सुन्दर हो सकता है, शर्त यह है कि वह प्रचार का ढंग जानता हो। अब मैं आपसे इतनी प्रार्थना करती हूँ कि 'सरकारी समाचार' के आ-गामी अंक में यह समाचार प्रकाशित करा दिया जाए कि फरीदाबाद के सरदार की मृत्यु आकस्मिक थी। उनके सम्बन्धियों ने अनकी निर्दोष विधवा पर इस लिए अभि-योग लगाया कि सरदार की विशाल सम्पति पर उनका अधिकार हो जाए। विधवा के सम्बन्ध में छान-बीन की गई है कि वह साध्वी है। गरीबों के साथ उसका व्यवहार अत्यन्त उत्तम है। सरदार की विधवा इस अपराध से बीमार हो गई है और उसकी चिकित्सा हो रही है। १५ मार्च को न्यायाधीश से अभियोग वापिस लेने की प्रार्थना कर दी जाएगी। न्यायाधीश सरकार की ओर से विधवा की गिरफ्तारी पर खेद प्रकट करेगा।"

आज फिर प्रातः ही से बेगम के पास मन्त्री-कन्या आई। आज काल्पनिक अभियोग की काल्पनिक सुनवाई का दिन था। साधारण वेष में बेगम को प्रासाद के गुप्त-द्वार से १० बजे के करीब उसी बग्घी पर बिठाकर रवाना कर दिया गया। वह गाड़ी जेल के ओर से होकर गुजरी ताकि दर्शक यह समझें कि अपराधिनी जेल से ही आई है। भीड़ ने बेगम का हार्दिक स्वागत किया। जिसने देखा 'सरकारी समाचार-पत्र' से प्रभावित होकर कहा, 'सचमुच स्वर्ग की अप्सरा है। इसकी तो आकृति देखकर मनुष्य के हृदय से बुराई का विचार जाता रहता है। ऐसा प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि कोई पुष्प ओस से निखर कर निकला है, अथवा प्रातःकालीन सूर्य की रश्मि है। प्रत्येक नर-नारी ने उसके वस्त्रों को आँखों से लगाया, हाथ को चूमा, पांव को छुआ। श्रद्धा उन के नेत्रों से बरसती थी। दूर खड़े सम्मान से प्रणाम करते थे। जिधर उसकी दृष्टि जाती थी, लोगों की गर्दनें झुक जाती थीं। मकान और छत सटे पड़े थे। बेगम आज साधारण वेश में सुन्दरतम प्रतीत होती थी। बेगम ने मन में कहा, 'निस्सन्देह, सुन्दरता मेरे अस्तित्व में नहीं है; सौन्दर्य लोगों की आंखों में है। वही मैं थी, जिसे भोड़ चुड़ैल और डायन कहती थी, हालांकि मैंने अपने आप को सजाने में किसी शृंगार-साधन की उपेक्षा नहीं की। आज साधारण वेश में उनकी आँखों का तारा हूँ। यदि शारीरिक सौन्दर्य नष्ट भी हो जाए तो कोई चिन्ता नहीं। शर्त यह है कि सर्व-प्रियता में कोई कमी न हो।" बेगम न्यायालय से छुटकारा पाकर प्रसन्नता-पूर्वक प्रासाद में आई। बादशाह को बुलवाया और कहा, 'मैं मंत्रिकन्या की कृतज्ञ हूँ, कि उसने मेरी बेचैनी दूर कर दी। यदि सौन्दर्य अस्थायी भी हो तो भी मुझे-दुःख न होगा। उसने मुझे जनता के नेत्रों में प्रिय बनने की वह विद्या दी है जिसके बिना सौन्दर्य समुद्र की सीप है।' मन्त्रिकन्या ने कहा, "सरकार मैं अब भी कहती हूँ कि सौन्दर्य अस्थायी वस्तु नहीं है। जनता में सर्व-प्रिय होना भी कोई विशेष वस्तु नहीं। लोग तो भावुक होते हैं। किसी ने कह दिया कि अमुक मनुष्य देवता है, लोग उसे देवता मानने लगते हैं। किसी ने नेक को बुरा कह दिया तो आप लोग नेक को भी शैतान समझने लगते हैं। बाह्य सौन्दर्य और जनता की सर्व-प्रियता के अतिरिक्त मेरे पास एक ऐसा नुस्खा है कि मनुष्य जब तक जिए, सुन्दर रहे। यदि जनता अपने समय के युधिष्ठिर के भी विरुद्ध हो जाए तो वह जनता की दृष्टि में काँटा हो जाता है। मैं बहुत शीघ्र आप को बताऊंगी कि वास्तविक सौन्दर्य अमिट है। इसके अतिरिक्त बाह्य सौन्दर्य को भी अमिट बनाया जा सकता है। पहले समझ में आ जाना चाहिए कि वास्तविक सौन्दर्य क्या है! मुझे कुछ दिनों का और आवकाश चाहिए, जिससे मैं अपनी बात को स्पष्ट कर सकूं।'

आज बादशाह राजकार्य से निश्चिन्त होकर प्रासाद में प्रविष्ट हुआ। क्रोध से उसके नयन फूले हुए थे, और नेत्रों से अंगारे निकलते थे। वह सीधा बेगम के कमरे में आया। बेगम ने बादशाह को इस अवस्था में कभी न पाया था, अतः देख कर घबरा गई। पूर्व इसके कि कुछ पूछती, बादशाह ने बेगम को सम्बोधित करके कहा, "तुझे मैंने आस्तीन में छिपे हुए सुन्दर सर्प के समान पाल रक्खा था, और तू अनजाने में मेरे यश को डसती रही। मुझे मेरे विश्वस्त गुप्तचरों ने सूचना दी है कि मन्त्री-कन्या कुलटा है। उसमें और तुममें गठजोड़ इसलिए हुआ है कि तुम दोनों अवारागर्दी में सन्तोष लाभ करो।" बेगम के सिर पर बिजली गिर गई, उसके जिगर पर आरी चल गई। उसने सविस्मय बादशाह की ओर देखा। वह क्रोध से कांप रहा था। उसने क्षण भर के लिए यह समझा कि शायद भयानक स्वप्न देख रही है। उसने आँखें मलकर तसल्ली की, परन्तु बादशाह की क्रोध-पूर्ण दृष्टि पूर्ववत् उस पर पड़ रही थी, क्रोध के मारे उसके होंठ कांप रहे थे। बेगम को अपनी निर्दोषिता का विश्वास था। वह ईश्वर के भरोसे पर सन्तुष्ट हो कर बैठ गई। उसकी आकृति से शहीदों की-सी ज्योति टपकती थी। बादशाह उसे शान्ति से बैठा हुआ देखकर बोला, "पाप ने तेरे दिल को पत्थर कर दिया है। मैं एक क्षण भर के लिए भी तुझे अपने अन्तःपुर में देखना सहन नहीं कर सकता।" यह कहकर क्रोध से कांपता हुआ वह बाहर निकल गया।

यह बात भी पर लगाकर नगर में उड़ गई। सबके मुख पर ताले लगे हुए थे। सारे महल में भय की लहर दौड़ गई थी। नेत्रों के इशारों से बातें की जाती थीं। दो घंटे के बाद दो अधिकारी गम्भीर मुद्रा में गर्दन झुकाये प्रासाद में आए। अन्तःपुर की दासियों ने समझ लिया कि बेगम के लिए कोई शुभ समाचार नहीं। वह छोटे बेगम के कमरे में घुस गए, और नम्र भाषा में कहा, "आपको प्रासाद से शीघ्र निकल जाने का आदेश है। प्रासाद के शहर के बाहर की एक कोठरी आपका भावी निवास-स्थान होगा, यहाँ से कोई वस्तु उठाने और किसी को साथ ले जाने की आज्ञा नहीं।" बेगम नवाब की इस आज्ञा को सुनकर नेत्रों में नीर भर लाई। परन्तु सम्भल से उठकर उन अफसरों के साथ जाने को तय्यार हो गई। उसकी आँखों के सामने संसार अंधकारमय था, परन्तु हृदय में सन्तोष थी कि वह निष्पाप है। भयभीत दासियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६४६]

अपने-अपने कमरों के दरवाजों से लगकर इस हृदय-विदारक दृश्य को देख रही थीं। इस आकस्मिक क्रांति से वे अत्यन्त विस्मित थीं।

अधिकारी प्रासाद की ज्योति और प्राण को ले गए। अब वहां श्मशान-सी नीरवता का साम्राज्य था। अधिकारियों ने बेगम को ले जाकर अश्वशाला के साईसों की एक कोठरी में बन्द कर दिया। वहां सूर्य की किरणें भी न आती थीं। एक टूटी-सी खाट और मिट्टी का बर्तन वहाँ पड़ा था। बेगम ने इस परिवर्तन पर भी ईश्वर का धन्यवाद किया। नमाज पढ़ी, मिट्टी पर निज मस्तक को नवाकर देर तक रोती रही। इस समय से उसकी हार्दिक शान्ति में वृद्धि हुई। अपना सौन्दर्य और उसके अमर होने की इच्छा को तो कहना ही क्या, उसमें जीने की इच्छा भी न रही। सौन्दर्य रहे या जाए, वह मरे या जिए, बेगम को अब इस वादविवाद में कोई रुचि न थी। जनता उसके सम्बन्ध में क्या कहती होगी, उसने यह सोचना भी छोड़ दिया। उसने मन में कहा, "संसार के ऐश्वर्य ही क्या जो किसी की प्रतिकूल दृष्टि से मिट जाएं। और वह सौन्दर्य क्या, जो जनता की सम्मति बदलने के साथ ही रंग और रूप खो दे, और आकृति भयानक दिखाई दे। ऐसी निराधार वस्तुओं के लिए क्यों कोई चिन्तित हो।" दिन-पर-दिन व्यतीत हो गए, मानसिक सान्त्वना ने हृदय की कोठरी में प्रकाश कर दिया था। अब उसकी लौ सच्चे ईश्वर से लग चुकी थी। संतोष आकृति पर झलकता था। वह संसार से छूटकर ईश्वर की हो गई थी। वह प्रातः की निमाज से निवृत होकर प्रभु-स्मरण कर रही थी, कि वही दो अधिकारी उसके पास प्रसन्नमुद्रा में आए और बोले, 'आपकी निष्पापता अकस्मात् बादशाह पर प्रकट हुई है। हम यह प्रार्थना लेकर आए हैं कि आप फिर प्रासाद की प्राण बनें।' बेगम ने यह कहकर अफसरों को लौटा दिया कि यह कोठरी प्रासाद की अपेक्षा उसके लिए श्रेष्ठ है। अधिकारी लौट गए। थोड़ी देर के बाद मन्त्रि-कन्या पालकी में सवार होकर आई और कहा, "बेगम साहिबा, अधिकारियों ने आपका उत्तर मुझ तक पहुँचा दिया। अब आइए। आप को वास्तविक सौन्दर्य का नुस्खा हाथ आ गया। शाह से नाराज न होना, क्योंकि उसने यह सब कुछ मेरे निर्देशानुसार किया। जिससे बाह्य सौन्दर्य के इच्छुक को वास्तविक सौन्दर्य मिल जाए।"

"बेगम साहिबा! मानसिक संतोष सौन्दर्य है, जिसे केवल पाप नष्ट कर सकता है। पाप से घृणा करो, तुम जीवनपर्यन्त अपनी दृष्टि में सुन्दर रहोगी; संसार की कोई क्राँति संतोष-रूपी स्वर्ग को नष्ट न कर सकेगी। पाप मनुष्य को स्वयं अपनी दृष्टि में गिरा देता है। जो आप अपनी दृष्टि में पतित हो उसे मानसिक शान्ति कहाँ प्राप्त हो सकती है? पाप से घृणा वास्तविक सुन्दरता है। ईश्वर की थोड़ी सी भक्ति के पश्चात् सारा समय उसकी सृष्टि की सेवा में व्यतीत करो। वार्तालाप यहीं पर समाप्त नहीं हो सकता। सरकार प्रासाद में उत्सुकता से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। लीजिए, दासियाँ आगईं; बस आप-को यहाँ से चलना चाहिए।"

आज प्रासाद में विचित्र चहल-पहल थी। दासियाँ प्रसन्नतापूर्वक इधर-उधर फिर रही थीं। जब बेगम पहुँची, सब सम्मान से झुक गईं। बेगम ने सब को गले लगाया, सब का सप्रेम माथा चूमा। सब ने अनुभव किया कि बेगम के आचार में परिवर्तन आ गया है। सौन्दर्य के साथ मान स्वाभाविक है। अब बेगम के अन्दर न मान था, न उच्चता की भावना। दासियाँ सद्व्यवहार से और भी प्रसन्न हो गईं। बेगम प्रभु-स्मरण में लीन रहने लगी, यहाँ तक कि उसने अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में सोचना ही छोड़ दिया। मंत्रिकन्या ऐसी अवस्था देखकर चिन्तित हुई। उसने अनुभव किया कि ईश्वरप्रदत्त निधि की अवज्ञा करना पाप है। उसने एक दिन कहा, 'बेगम साहिबा, मैंने रात एक स्वप्न देखा, जो आप से भी सम्बन्धित हैं। मैंने देखा कि विशाल मैदान में लोगों की भीड़ लगी है। शीघ्र ही लोग एक पंक्ति में खड़े होगए। किसी ने लाल झंडी हिलाई, सब लोग दौड़ने लगे। ध्यान से देखने पर प्रतीत हुआ कि प्रायः सभी एक टाँग के सहारे धीरे-धीरे जा रहे हैं। किसी की दाईं टाँग नहीं है, किसी की बाईं। गिनती के कुछ लोग दो टाँगों पर निश्चिन्त होकर जा रहे हैं। उन एक टाँग पर भागने-वालों में से, बेगम साहिबा, मैंने आपको भी पहचाना। निश्चिततापूर्वक यात्रा करनेवालों से पूछने पर मालूम हुआ कि कुछ लोग बाह्य सौन्दर्य पर अधिक ध्यान देते हैं और कुछ स्वभाव तथा आचार पर। वह मनुष्य जो बाह्य सौन्दर्य तथा आचार दोनों को दृष्टि में रखते हैं, जीवन-यात्रा निश्चिततापूर्वक तय कर रहे हैं। जो जीवन के एक ही चित्र को सामने रखते हैं, वे अभीष्ट स्थान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पहुँच सकते। यह उचित नहीं कि मनुष्य किसी एक में प्रमाद का प्रमाण दे और दूसरे के महत्त्व में तल्लीन रहे। जीवन की सफलता के लिए बाह्य सौन्दर्य तथा आचार-व्यवहार दोनों को सुरक्षित रखना परम आवश्यक है।'

बेगम मन्त्रि-कन्या की बुद्धिमत्ता को हृदय से स्वीकार करती थी, इसलिए उसने कहा, 'यद्यपि मैं वृद्धावस्था को अटल-सा समझी थी, पर अब मैं इस तथ्य को मानने के लिए तैयार हो गई हूँ कि आपके पास वस्तुतः कोई ऐसा नुस्खा होगा जो सौन्दर्य को अमर करदे।' मंत्रिकन्या ने कहा, 'निस्संदेह! मेरे पास अमूल्य नुस्खा है, जिसका सारांश यह है :—उत्तम स्वास्थ्य के लिए जलवायु और भोजन का उत्तम होना आवश्यक है। यदि इन तीनों वस्तुओं के प्रयोग में संयम बरता जाए तो जीवनपर्यन्त न केवल सौन्दर्य कायम रखा जा सकता है, अपितु रूठा हुआ यौवन भी मनाया जा सकता है।

भोजन के सम्बन्ध में इस सर्व सुवर्ण नियम को सामने रखो कि दाँतों का काम आँतों से न लिया जाए। भूख हो तो खाना खाया जाए, अभी भूख शेष हो तो हाथ खींच लेना चाहिए। ग्रास को इतना चबाया जाए कि छोटे-से छोटा कण भी कण्ठ में उतरते समय प्रतीत न हो। आरम्भ में थोड़ा-सा कष्ट करना पड़ेगा, तदनन्तर एक मास के भीतर स्पष्ट क्रान्ति उत्पन्न होती दिखाई देगी। यदि भोजन कम-से-कम खाया जाए तो तीन वर्ष के पश्चात् ४० वर्ष का मनुष्य २० वर्ष का युवा हो सकता है और दस वर्ष के पश्चात् सफेद बाल काले हो जाएँगे। आकृति पुष्प की पँखुरी की भाँति हो जाएगी। एक साधारण मनुष्य के लिए एक पाव भोजन पर्याप्त है, उसको चबाने के लिए कम-से-कम आध घंटा चाहिए। यह विचार न करो कि चावल या दूसरा हल्का भोजन शीघ्रातिशीघ्र निगल लिया जाए, उसको भी बड़ी देर तक चबाना चाहिए ताकि वह भी लुआब में हल हो जाए। भोजन के इस नियम को जितना अधिक महत्त्व दोगे, उतनी अधिकता से स्वास्थ्य और सौन्दर्य में वृद्धि होगी।

भोजन के बाद भ्रमण का प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। खुली और साफ हवा अमृत है। प्रातःकाल मुख बन्द करके नाक के द्वारा हवा धीरे-धीरे अन्दर खींचो। सीने में रोको और फिर शनैः-शनैः नाक के रास्ते ही बाहिर निकाल दो। प्रतिदिन पंद्रह मिनट इस कार्य के लिए पर्याप्त हैं।

यदि प्राकृतिक स्रोतों का जल प्राप्त हो तो क्या कहना, अन्यथा पानी उबालकर साफ कर लिया जाए। यदि इन नियमों पर अमल किया जाए तो सौन्दर्य और स्वास्थ्य को बीमा हो जाता है; बुद्धि बढ़ती है, बेगम साहिबा! अब अपनी आकृति को देखो कि केशर की भाँति सुन्दर है, परन्तु तीन मास के पश्चात् यदि अपने आपको दर्पण में देखोगी तो पहले की अपेक्षा सौन्दर्य में पर्याप्त उन्नति होगी। शर्त यह है कि इस समय में तुम भोजन, वायु और जल सम्बन्धी उन हिदायतों पर अमल करो, जो मैंने दी हैं।

बेगम ने तीन मास निरन्तर प्रातः-सायं परिभ्रमण करने के अतिरिक्त उपर्युक्त नियमों का पालन किया। जन-सेवा से उसको मानसिक सांत्वना प्राप्त थी। अब शारीरिक सौन्दर्य और स्वभाव दोनों में क्रान्ति आ गई, वह कुछ और की-और होगई थी। प्रकृति ने सौन्दर्य में विचित्र रूप भर दिया, नेत्र पहले से भी चमकीले थे। अब उनमें शराब-सी छलकती थी। जब वह मुस्कराती थी, दर्शक का हृदय-कमल खिल जाता था। चाल में वह गौरव था कि फरिश्ते रुक-रुककर देखते थे। वायु और भोजन की सावधानता ने उसे वसन्त ऋतु का स्फुटित पुष्प बना दिया था। वह सचमुच स्वर्ग की अप्सरा दिखाई देती थी। बेगम ने बादशाह से कहकर सारी रियासत में इस विषय के बड़े-बड़े 'पोस्टर' दीवारों पर लगवा दिए कि सौन्दर्य तीन प्रकार का है :—

१—नेत्रों के लिए स्वर्ग है।
२—जन-साधारण के दिल की ठण्ढक है।
३—अपनी मानसिक सांत्वना है।

वह सौन्दर्य जो जनसाधारण के दिल की ठण्ढक है, विश्वस्त वस्तु नहीं। ऐसे सौन्दर्य की खोज राजनीतिज्ञों और धोखेबाज आदमियों का काम है।

वह सौन्दर्य जो नेत्रों के लिए स्वर्ग है, जीवनपर्यन्त स्थायी रह सकता है। शर्त यह है कि भोजन को चबाकर खाया जाए, साँस धीरे लेकर छाती में रोकी जाए और जीवन के प्रत्येक कार्य में संयम से काम लिया जाए।

तीसरे प्रकार का सौन्दर्य वास्तविक सौन्दर्य है जो ईश्वर के प्राणियों की सेवा से प्राप्त होता है। यह संतोष का वह अमर उद्यान है, जहाँ पतझड़ नहीं आता। प्रत्येक मनुष्य नेक काम करके, भोजन को चबाकर, साँस को रोक कर और संयम का पालन करके वास्तविक सौन्दर्य को प्राप्त कर सकता है और शारीरिक सौन्दर्य को जीवन-पर्यन्त कायम रख सकता है।

मूल लेखक : चौधरी अफजलहक;
अनुवादक : श्री नारायणलाल मुलतानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम की किताबें

१—शेर-ओ-शायरी : संकलनकर्त्ता, श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय ; प्रकाशक, मंत्री, भारतीय ज्ञान-पीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस ; पृष्ठसंख्या, ६०२ और मूल्य सजिल्द पुस्तक का ८) है।

आलोच्य ग्रंथ हिन्दी पाठकों को उर्दू के सर्वोत्तम 'अशआर' और 'नज़्म' का परिचय कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया गया है। उर्दू शायरी से हिन्दीवालों को परिचित कराने के लिए छोटे-मोटे प्रयत्न अब तक बहुत होचुके हैं। अब से बहुत पूर्व पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने अपने बृहत्संग्रह ग्रंथ 'कविता-कौमुदी' का एक भाग उर्दू-शायरी पर ही प्रकाशित किया था; समाचारपत्रों में भी 'उर्दू शायरी' के परिचयात्मक लेख प्रायः छपे हैं और मुशायरों के द्वारा उर्दू के शायरों की सूक्तियाँ सुनने का सौभाग्य भी अनेक काव्य-रसिकों को प्रायः प्राप्त होता रहता है। परन्तु आवश्यकता और उपयोगिता की दृष्टि से यह प्रयास अपने पूर्ववर्ती सभी प्रयासों से बढ़कर है।

ग्रंथ १० परिच्छेदों में विभक्त है जिनमें 'मीर' से लेकर 'फ़िराक़' तक कुल ३१ शायरों की शायरी पर विचार किया गया है ; परम्पराओं और 'स्कूलों' का भी युक्तियुक्त विवेचन किया गया है ; प्रस्तावना भाग में उर्दू शायरी के विभिन्न पहलुओं, 'टेकनीकों', शब्दों के 'हिज्जों' और काव्यगत बारीकियों पर खुलकर विचार किया गया है और संक्षेप में वह सभी कुछ संकलित कर दिया गया है, जिसकी आवश्यकता उर्दू शायरी को हृदयंगम करने के लिए उर्दू से अल्पपरिचित किसी साहित्य-रसिक के लिए हो सकती है।

इस प्रकार यह ग्रंथ न केवल हिन्दी-पुस्तकालयों के लिए उपादेय है, कवियों, काव्यरसिकों और सूक्ति के दीवानों के निकट भी आदरणीय है।

—पंडित

२—भारतीय सिक्के : लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय, एम० ए० ; प्रकाशक, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद ; पृष्ठसंख्या, २५६ और सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५) है।

इस पुस्तक में, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, भारतीय सिक्कों (मुद्राओं) का परिचय दिया गया है। भारत में सिक्कों का प्रचलन कब से प्रारंभ हुआ, यह ठीक-ठीक कहना कठिन है। ऋग्वेद में 'निष्क' का उल्लेख मिलता है, 'माषक' तथा 'कार्षापण' का उल्लेख भी परवर्त्ती वैदिक साहित्य में हुआ है। 'शतमान' तो जैसे यहाँ की बहुप्रचलित मुद्रा रही है। संभवतः यूनानियों के सम्पर्क से भारतीयों ने 'दीनार' और 'द्रम' का बनाना भी प्रारंभ कर दिया था, क्योंकि ये दोनों सिक्के भी गुप्तकाल से पूर्व ही यहाँ बहुप्रचलित थे। पाणिन ने 'शतमान' और 'रूप्य' का प्रयोग-साधन किया है और 'दीनार' का भी। ये सब ग्रंथ ईसवी पूर्व के रचित माने गए हैं।

परवर्त्ती काल में तो सिक्का विनिमय का आधार ही बन गया था, जो अब तक बना हुआ है। सिक्का क्यों चला; कैसे चला; विभिन्न सिक्कों का माप-तौल, व्यवहार, प्रचलन आदि किस प्रकार का था, इन्हीं सब जिज्ञासाओं का समाधान विद्वान् लेखक ने इस पुस्तक में किया है। प्राचीन सिक्कों के चित्र भी प्रचुर मात्रा में दिए गए हैं और तत्संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों पर भी प्रकाश डाला गया है। भाषा साफ-सुथरी और वर्णनशैली रोचक है जिसने रूखे-सूखे विषय को भी इतिहास की रोचकता प्रदान कर दी है। इतिहास और पुरातत्त्व के विद्यार्थियों के लिए पुस्तक संग्रहणीय है।

—'पंडित'

३—प्राचीन भारतीय शासनपद्धति : लेखक, प्रोफ़ेसर अनन्त सदाशिव अलतेकर, एम०ए०, एल-एल०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी०, डी० लिट्; प्रकाशक, भारती-भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद; पृष्ठसंख्या, २४८; मूल्य, ५)।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक डाक्टर अलतेकर प्राचीन इतिहास और संस्कृति के अधिकारी विद्वान् हैं। यही नहीं, वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इन विषयों के प्रधानाध्यापक भी हैं। इसी से सहज अनुमान किया जा सकता है कि उनकी लिखी हुई पुस्तक कैसी होगी। इस संबंध में हमें एक बात कहनी है; वह यह कि डाक्टर अलतेकर ने अपने अधिकृत विषयों पर अब तक बहुत कुछ लिखा है, पर लिखा है या तो मराठी में या अंग्रेजी में। बेचारी हिन्दी अब तक ऐसे विद्वान् की विद्वत्ता से लाभ उठाने से वंचित थी। यह उनकी प्रथम पुस्तक है, जो मूलरूप में हिन्दी में लिखी गई है। इस नाते हिन्दी-भाषियों को उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

यह पुस्तक १४ अध्यायों में विभक्त है, जिनमें वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य से, मेगस्थनीज व युआन-च्वांग सदृश विदेशी पर्यटकों के लेखों से एवं दानपत्रों व शिलालेखों से एतत्संबंधी प्रामाणिक सामग्री संकलन करके भारत में राजतंत्र के विकास, उसके विभिन्न स्वरूप, नागरिक व ग्रामीण व्यवस्था प्रकार तथा अन्यान्य शासन-तंत्रीय सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है। प्रथम के १३ अध्यायों में राजा, गणतंत्र, केन्द्रीय सभा, आदि राजतंत्र के विकास का क्रमिक विवेचन है और अन्तिम चौदहवें अध्याय में विविध समयों में राजतंत्र किस रूप में था, इसे समझाया गया है। प्राचीन भारतीय शासन-पद्धति पर यह ग्रंथ हमारी दृष्टि में अब तक प्रकाशित सभी ग्रंथों से अपेक्षाकृत अधिक पूर्ण और प्रामाणिक है। अतः इसे इस विषय की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में सादर स्थान दिया जाना चाहिए।

४—अध्यात्म ज्योतिष-विचार—लेखक, श्री ह० ने० काटवे; प्रकाशक, नागपुर प्रकाशन, सीताबर्डी, नागपुर; पृष्ठसंख्या ३२६ और मूल्य १०) है।

पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का चित्र है, जिससे पुस्तक हाथ में आते ही पहली धारणा यह बनती है कि इसमें नेता जी के सम्बन्ध में कुछ लिखा होगा, जब कि पुस्तक का विवेच्य विषय अध्यात्म ज्योतिष है। इस प्रकार का भ्रामक आवरणपृष्ठ देने में प्रकाशकों का क्या उद्देश्य है, यह समझना कठिन है।

लेखक महोदय की 'साधारण प्रतिज्ञा' इस ग्रंथ के सम्बन्ध में यह है कि इसमें योग दर्शन, वेदान्त दर्शन और ज्योतिष शास्त्र का समन्वय किया गया है। लेखक महोदय ने इस बात को स्वयंसिद्ध रूप में मान लिया है कि आर्य संस्कृति के भारत में आने से पूर्व यहाँ द्रविड़ संस्कृति का प्रचार था और द्रविड़ शिव-भक्त और लिंगपूजक थे। प्रमाण में—'मा शिश्नदेवा अपि गुहंत नः' ऋचा को दिया है। इसका अर्थ है—'हे इन्द्र, ये लिंगपूजक हमारे यज्ञकार्य में बाधा न डालें।' हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु को इस पुस्तक में द्रविड़राज माना गया है और नृसिंह को आर्य राजा। प्रह्लाद घर-भेदिया के रूप में 'भक्तियोग' के अनुयायी स्वीकार किए गए हैं, जो द्रविड़ों की 'शिव-भक्ति' के प्रतिकूल थे। इसी से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि योगशास्त्र द्रविड़ों की देन है और उन्हीं से आर्यों ने इसे सीखा है।

योगशास्त्र से ज्योतिष-शास्त्र की उत्पत्ति दिखलाते हुए जहाँ लेखक ने यौगिक नाड़ियों, श्वासोच्छ्वास की संख्याओं आदि का समन्वय किया है, वहाँ ऊष्मा के प्रकरण में यह भी तर्क उपस्थित किया है कि शरीर में ऊष्मा की मात्रा सूर्य के उत्ताप के साथ-साथ बढ़ती-घटती है और यही क्रम क्षुधा का भी रहता है। इस प्रकार लेखक महोदय के मत से शरीर में ऊष्मा की मात्रा सब से अधिक बारह बजे दिन को होती है, अतः उसी समय क्षुधा अधिक सताती है। हमारी समझ में यह धारणा न तो प्राचीन ऋषियों के अनुकूल है और न आधुनिक शरीर-शास्त्रियों के। अत्रि महर्षि ने लिखा है— "दिनान्ते भोजयेत्क्षुधु। श्लेष्मक्षयो विवृद्धोष्मा बलवानलस्तदा।" आधुनिक डाक्टरों के मत से भी शरीर का तापमान अपराह्न काल में सर्वाधिक होता है।

यह तो मामूली मतभेद की बात है। पुस्तक में योग के विविध चक्रों, ज्योतिष के ग्रहों और वेदान्त के तत्त्वों का सूक्ष्म विवेचन है, जो तत्तद्विषयों के जिज्ञासुओं के लिए उपादेय है।

आजकल की मँहगी और इस प्रकार की पुस्तकों की अलोकप्रियता को दृष्टि में रखते हुए भी पुस्तक का दर रुपया मूल निस्सन्देह काफी अधिक है। —'पंडित'

५-६-५-८ अदिति कार्यालय, श्री अरविन्द आश्रम, पांडिचेरी की ४ पुस्तकें:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४९]

(१) **कर्मयोगी**—अनुवादक, श्री जगन्नाथ वेदालंकार, पृष्ठ-संख्या ११५; मूल्य, अनिर्दिष्ट,

(२) **योगदीक्षा**—अनुवादक, श्री कृष्णाशम्भु, पृष्ठ-संख्या, ८५; मूल्य, अनिर्दिष्ट,

(३) **योगविचार**—सम्पादक, डा० इन्द्रसेन, पृष्ठ-संख्या, १९१; मूल्य, अनिर्दिष्ट और—

(४) **प्रकाश की ओर**—लेखक, श्री नलिनीकांत गुप्त; अनुवादक, श्री जगन्नाथ वेदालंकार; पृष्ठ-संख्या, ५५ और मूल्य ॥) है।

श्री अरविन्द भारत के योगिराज माने जाते हैं और योगमार्ग में उनकी गणना संसार के परम सिद्धों में है। उनका योग पातंजल के 'राजयोग' के ढंग का होते हुए भी उससे कुछ भिन्न है। इस दिशा में गत ४०-४५ वर्ष से अभ्यास और परीक्षण करते हुए उन्होंने कुछ नूतन अनुसंधान भी किए हैं, जिनसे योग का दुरूह और रूक्ष मार्ग बहुत कुछ अभिगम्य और रोचक बन गया है। अपने इन अनुसंधानों का प्रकाश श्री अरविन्द अपने लेखों-द्वारा बीच-बीच में करते रहते हैं। यही नहीं, श्री अरविन्द संसार के सर्वश्रेष्ठ विचारकों में भी अपना प्रमुख स्थान रखते हैं और इस नाते सामयिक विचारधाराओं का अवगाहन भी वे समय-समय पर करते रहते हैं।

श्री अरविन्द का साहित्य अब तक अँग्रेजी में ही था; अतः उन जिज्ञासुओं को, जिनका अँग्रेजी भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं है, या जिन्हें योग, ध्यानयोग और कर्मयोग की मार्मिक सूक्ष्मताओं का परिचय नहीं है, श्री अरविन्द के ज्ञान से लाभ उठाने का सुयोग प्राप्त नहीं था। यह संतोष की बात है कि श्री अरविन्द आश्रम के विद्वान् और समय की माँग से अभिज्ञ कार्यकर्ताओं ने इनकी पुस्तकों के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित करने का निश्चय किया है। प्रस्तुत चारों पुस्तकें उसी निश्चय का मूर्तरूप हैं।

प्रथम पुस्तक 'कर्मयोगी' श्री अरविन्द के उन १० अंग्रेजी निबंधों का संग्रह है जो सन् १९०९-१० में उन्हीं के द्वारा सम्पादित 'कर्मयोगिन्' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए थे और जिन्हें पढ़कर अनेक परवर्त्ती विचारकों ने प्रथम राष्ट्रीय प्रेरणा प्राप्त की थी। ये निबंध यद्यपि समय की दृष्टि से पुराने हो चुके हैं, फिर भी इनमें जिस सत्य का उद्घाटन किया गया है, वह चिर नवीन है। आज राष्ट्र के नवनिर्माण की भावना प्रत्येक भारतीय के हृदय में है। श्री अरविन्द ने भारत के नव-निर्माण को लक्ष्य में रखते हुए तब लिखा था—"हम मानवता को दृष्टि में रखते हुए भारत का नव-निर्माण करना चाहते हैं। यही सच्ची राष्ट्रवादी भावना है। मानवता से हमारा यह कहना है कि वह समय अब आ गया है जब मानवता को भौतिकताग्रस्त जीवन से ऊपर उठकर विस्तीर्णतर, उच्चतर और गंभीरतर जीवन को अपनाना चाहिए। इसी प्रकार राष्ट्रवाद-विश्वबंधुत्ववाद का समन्वय हो सकता है। और जब राष्ट्रवाद-विश्वबंधुत्व-वाद में उसी प्रकार सुरक्षित हो जाएगा जैसे व्यक्ति परिवार में, परिवार वर्ग में और वर्ग राष्ट्र में अपने को सुरक्षित रखता हुआ समन्वित हो जाता है, तभी संसार में सच्चे सुख और सच्ची शान्ति की स्थापना हो सकेगी।"

द्वितीय पुस्तक 'योगदीक्षा' में श्री अनिलवरण राय का श्री अरविन्द से योग-जिज्ञासा-विषयक पत्र-व्यवहार दिया गया है। पूर्वपक्ष के पत्रों में विविध जिज्ञासाएँ हैं और उत्तरपक्ष के पत्रों में उनका निराकरण करते हुए योग-की उस शैली का खुलासा किया गया है जो 'अरविन्द-पद्धति' कहलाती है। योगाभ्यासियों और विचारकों के लिए यह पुस्तक विशेष काम की है।

तृतीय पुस्तक 'योग-विचार' में श्री अरविन्द और उनके योग पर १५ अनुभवपूर्ण निबन्ध संगृहीत हैं। इन निबन्धों के विद्वान् लेखक श्री अरविन्द के या तो निकट-वर्त्ती हैं या शिष्य। अतएव श्री अरविन्द की योग-पद्धति की व्याख्या जितनी अधिकारपूर्वक वे कर सके हैं, दूसरा विद्वान् नहीं कर सकता। प्रथम निबन्ध 'जीवन और योग' के लेखक स्वयं श्री अरविन्द हैं। इस निबन्ध में जीवन का योग से कैसा घनिष्ट और अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध है, यह दिखाया गया है। अन्तिम निबन्ध है 'श्री अर-विन्द की साधन-शैली' जो इस पुस्तक के सम्पादक डा० इन्द्रसेन का लिखा हुआ है। इस निबन्ध में उक्त शैली का संक्षेप में परिचय देते हुए लिखा है—"इस योग की इसके अतिरिक्त और कोई पद्धति नहीं कि साधक अपनी समस्त वृत्तियों को एकाग्र करे, ध्यान करे। अधिक उपयुक्त यह है कि यह ध्यान वह हृदय में करे और वहाँ माता (भगवान् के क्रियाशील रूप) की उपस्थिति और शक्ति का आवाहन करे कि वह उसकी सत्ता को अपने हाथ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले ले और अपनी शक्ति के प्रयोग-द्वारा उसकी चेतना को रूपान्तरित कर दे।"

चौथी पुस्तक 'प्रकाश की ओर' में कुछ उपयोगी सन्देश संकलित हैं जिन्हें अपना आदर्श मानकर व्यक्ति आध्यात्मिक पंथ में सफलतापूर्वक अग्रसर हो सकता है। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य इस प्रकार हैं :—

"दूरतम की ओर आगे बढ़ो। उच्चतम की ओर ऊँचे चढ़ो। गंभीरतम में गहरे उतरो।—(प्रेम और अभीप्सा)

"आनन्द का रहस्य है आत्मदान। यदि तुममें कोई भाग आनन्दविहीन है, तो इसका तात्पर्य यह है कि उसने अपने आप को नहीं दिया है; वह अपने आपको अपने लिए रखना चाहता है।" —'पण्डित'

९—जयप्रकाश की विचार धारा—सम्पादक, श्री रामकृष्ण बेनीपुरी; प्रकाशक, पुस्तक-जगत, पटना; पृष्ठ ३२६; मूल्य ४) चार रुपए।

बापू ने एक बार कहा था—'जयप्रकाश हिन्दुस्तान में समाजवाद का आचार्य है। 'समाजवाद के इस आचार्य और अगस्त क्रान्ति के अग्रदूत की विचारधारा में अवगाहन करना प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी के लिए आवश्यक कहा जा सकता है। लाहौर किले में जयप्रकाश जी पर क्या बीती और उस सरकीय किले में भी वे भिन्न-भिन्न प्रश्नों पर किस तरह सोचते-विचारते रहे, यह जानना भी क्या कम दिलचस्प है?

श्री बेनीपुरी जी की सरस और सबल लेखनी के माध्यम से श्री जयप्रकाश जी की विचारधारा का प्रकाशन राष्ट्रप्रेमी हिन्दी पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा। समाजवाद की रूप रेखा, उसके सम्बन्ध में जयप्रकाश जी के विचार, बापू की हत्या; जिम्मेवार कौन, लाहौर किले की यंत्रणाएँ तथा सन् ४२ में गुप्त रहकर छात्रों और सिपाहियों के नाम जयप्रकाश जी द्वारा लिखे गए पत्रों आदि के अतिरिक्त स्वतंत्रताप्राप्ति के पश्चात् जयप्रकाश जी के चार भाषण भी इस पुस्तक में संगृहीत किए गए हैं। सम्पादक का श्रम श्लाघ्य है।

—देवीदयाल चतुर्वेदी

१०—कालिदास-प्रेरित शिल्प शृङ्गार (सचित्र)—मूल लेखक, श्री सी० शिवराम मूर्त्ति, अनुवादक, श्री श्यामसुन्दर द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०; प्रकाशक, 'विक्रम' कार्यालय, उज्जैन (मालवा); पृष्ठ ५८, मूल्य १।)।

साहित्य और शिल्प के मर्मज्ञ श्री सी० शिवराम मूर्त्ति ने जिस ढंग से कालिदास की कोमलतम भावनाओं के चट्टानों या पत्थरों में अंकित होने का विवेचन अपनी इस छोटी-सी कृति में किया है, उससे जहाँ कवि की रागात्मक प्रवृत्तियों तथा चक्षु-सौन्दर्य (Optic Appreciation) के लिए अनेक शिल्प-चित्रों का परिचय मिलता है वहाँ यह एक विवाद का विषय भी स्पष्ट आ उपस्थित होता है कि क्या वास्तव में अन्तिम मौर्य कालीन अवशेषों (तीसरी सदी ई० पू०) से लेकर खीचिंग के ग्यारहवीं शदी के एक प्रस्तर मूर्त्ति के उदाहरण तक जिन शिल्प-सम्बन्धी कृतियों का विवेचन यहाँ किया गया है वे सभी कालिदास की कविताओं से ही प्रेरित हैं। अधिकांश विद्वानों ने तो कालिदास को चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का समकालीन माना है; उस दशा में मौर्यों से लेकर गुप्तों के समय को मध्यवर्तिनी सभी कला-प्रवृत्तियों, जीवन के चित्रों अथवा मूर्त्ति-कला के विषय में लेखक की धारणा के लिए तो कहीं स्थान ही नहीं रह जाता। हाँ अजन्ता, एलोरा तथा अन्य गुप्तकालीन और बाद के कलांकनों में कालिदास का प्रभाव कुछ सीमा तक ढूँढ़ा जा सकता है। मेघदूत (२, ३६) के 'मा भूत्स्तब्ध प्रणयिनि मयि स्वप्नलब्धे—की स्पष्ट अभिव्यक्ति एलोरा के एक कला-खण्ड में तथा 'अस्याङ्कलक्ष्मीर्भव दीर्घबाहोः (रघु० ६, ४३) एवं इस श्लोक-ललितविभ्रमदं विचक्षणं सुरभिगंधपराजित केसरं। पतिषु निर्विविशुर्मधु मंगनाः स्मरसखं रसखंडनवर्जितं॥ (रघु० ९, ३६) सजीव चित्रण अजन्ता की कला में हुआ है। परन्तु यहाँ भी यह कह सकना कठिन ही है कि किस अंश तक यहाँ के शिल्पियों पर कालिदास की काव्य-साधना का प्रभाव पड़ा।

संस्कृत-काव्य के अनेक वर्णन रूढ़िगत (Conventional) हैं। ऐसी स्थिति में केवल कालिदास ही क्यों माघ, भारवि, भवभूति आदि से भी तो शिल्पियों को प्रेरणा मिली होगी। इसका निर्णय करना कि केवल कालिदास-प्रेरित शिल्प के उदाहरण क्या हैं, वस्तुतः उतना सरल नहीं है जितना लेखक-द्वारा मान लिया गया है। यों कविता और शिल्प के तुलनात्मक अध्ययन एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

उनके सहज सौन्दर्य की व्यापक रसानुभूति की दृष्टि से यह पुस्तिका काफी प्रिय हो सकती है। इसका हिन्दी-अनुवाद साधारणतः अच्छा हुआ है, पर भाषा-सम्बन्धी एवं मुद्रण के दोष तो हैं ही; कहीं-कहीं चित्रों की संख्या और श्लोकों के संकेत भी ठीक नहीं हैं। इस तरह की पुस्तकों का प्रकाशन और भी आकर्षक ढंग से होना चाहिए। ऐसा तभी संभव होगा जब मुद्रण तथा चित्र-योजना पर काफी ध्यान दिया जाए।—चन्द्रचूड़, एम० ए०

१२—साधक का संवाद—लेखक, श्री सत्यान्वेषी; प्रकाशक, श्री रमादत्त शुक्ल, बी० ए०, कल्याण मंदिर, कटरा, प्रयाग; मूल्य ३॥)—सजिल्द ४)।

भारत की प्रसिद्धि विशेषतया इसीलिए विश्व में रही है और है कि यही वह देश है, जहाँ अध्यात्म भावना पर न केवल गूढ़-गंभीर मनन किया गया, प्रत्युत उसका समुचित विकास भी हुआ। देश-देशान्तर के पर्यटक यहाँ आकर अवसर पाते ही सबसे पहले यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि भारत की आध्यात्मिकता का 'रहस्य' क्या है। यही नहीं, भारत के युवक या वयस्क नागरिक जब कभी विदेश जाते हैं, तो वहाँ विदेशी लोग घुमा-फिराकर उनसे भारत के रहस्यपूर्ण साधन-तत्त्व को ही जानने का प्रयत्न करते हैं। ऐसी दशा में भारतीय अपने यहाँ की उक्त विभूति से अपरिचित रहें, यह सर्वथा अवांछनीय ही माना जाएगा। खेद है कि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध और पारस्परिक वर्ण विद्वेष के कारण अधिकांश भारतीय भारत के अध्यात्मतत्त्व से बहुत कुछ अनभिज्ञ हैं। उदाहरण के लिए एक मंत्र-तंत्रविद्या और शक्ति-उपासना को ही लिया जा सकता है। इस विषय का साहित्य एक तो संस्कृत के दुर्गम्य ग्रंथों में छिपा हुआ है, दूसरे इसके ज्ञाता इसे 'गोपनीयता' के आवरण में सदियों से छिपाए रहे हैं—ऊपर से एक और मुसीबत यह है कि विदेशी सभ्यता के प्रभाव के कारण मंत्र-तंत्र के नाम से ही लोग चौंक पड़ते हैं और 'अन्ध-विश्वास' कहकर हँसी में उसे उड़ा देते हैं। इस प्रकार किसी समय की एक अत्यन्त उपयोगी और व्यावहारिक विद्या भारतीय हाथ से खो बैठे हैं। शक्ति-उपासना की भी यही दशा रही है। सुनी-सुनाई बातों पर इसे निकृष्ट और घृणित ठहरा दिया जाता है और प्रामाणिक साहित्य के अभाव में जिज्ञासु लोगों को भी प्रवाद पर विश्वास होने लगता है। प्रसन्नता की बात है कि 'कल्याण मंदिर' द्वारा प्रकाशित 'साधन-माला' नाम की मासिक पुस्तकमाला ने इस विषय पर समुचित प्रकाश डालने का काम आरंभ कर दिया है। 'साधक का संवाद' उक्त माला के प्रथम वर्ष की अन्तिम मणि है। इस पुस्तक में एक साधक के आत्मानुभवों का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। सारा वर्णन उपन्यास या कथा-साहित्य की भाँति सरस और साहित्यिक है। बीच-बीच में प्रकृति के दृश्यों का सुन्दर स्वाभाविक वर्णन लेखक की साहित्यिक मर्मज्ञता का परिचय देता है। परंतु सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह पुस्तक उपन्यास जैसा आनंद देती हुई 'शक्ति-उपासना' के गूढ़ तत्त्वों का बड़े ही सरल ढंग से परिचय करा देती है। एक बार इसे पढ़कर आध्यात्मिक क्षेत्र में और प्रवेश करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। मांस-मद्यादि पंचमकारों के महत्त्व के सम्बंध में जो वार्त्तालाप दो विभिन्न सांप्रदायिकों में हुआ है, वह अत्यन्त रोचक तो है ही, साथ ही पाठक को विचार की सामग्री भी प्रदान करता है। इसी प्रकार शक्ति-उपासना के स्वरूप, उसकी विशेषताओं आदि का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया गया है, जिससे पाठक विषय के सम्बन्ध में अपनी एक धारणा बना लेने में सफल होता है।

निस्सन्देह सर्व-साधारण एवं विज्ञ सभी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए क्योंकि इसके द्वारा हमें भारत के उस विषय की झलक मिलती है, जिसके ज्ञान के लिए सर जान उडरफ जैसे कितने ही विदेशी अपना सारा जीवन इस देश के पहाड़ों और मैदानों में साधकों के सत्संग में लगा चुके हैं। फिर आज की भौतिकता हमें जिस प्रकार विनाश की ओर लिए जा रही है, उसे देखते हुए आध्यात्मिक-धारा में अपने को विशुद्ध करने की आवश्यकता और भी अधिक है। शक्ति-उपासना अध्यात्म की वह धारा है, जिसमें भौतिकता को लिए हुए अध्यात्म लक्ष्य को प्राप्त करने का उपाय निर्दिष्ट हुआ है। अतएव 'साधक का संवाद' जैसी मनोरंजक साथ ही ज्ञान-वर्द्धक पुस्तकों की आज अत्यंत आवश्यकता है।

—भद्रशील शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-निवासियों को स्वराज्य की पहली किश्त

[गताङ्क से आगे]

स्पष्टीकरण—यदि कोई गाँव-सभा चाहे तो उपधारा (१) के वाक्यखंड (क) और (ग) के अधीन आध आना प्रति रुपया के हिसाब से एक टैक्स उस लगान पर भी जो आराजी के मालिकों को काबिल अदा होगा १।४ आने प्रति रुपया के हिसाब से लगाया जाएगा।

(३) उपधारा (१) के अधीन टैक्स ऐसे तरीके पर लगाए, तशखीस और वसूल किए जाएँगे और ऐसे समय पर अदा या वसूल होंगे जो नियत किए जाएँ।

मतालबों की वसूली, कोष (फंड) की रक्षा और हिसाब

३८—नियत किए हुए नियमों की पाबन्दी साथ गाँव-पंचायत, पंचायत के टैक्सों और मतालबों की वसूली, कोष (फंड) की रक्षा और हिसाब-किताब रखने का प्रबंध करेगी।

३९—(१) पंचायती अदालत के खर्च उस क्षेत्र के हर यूनिट के गाँव-कोष (फंड) से वसूल किए जाएँगे।

(२) ऐसी सारी रकमें किसी मुकद्दमे, नालिश या कानूनी कारवाई के सिलसिले में कोर्ट फीस के तौर पर वसूल की गई हो या जो जुर्माने के तौर उन मुकद्दमों में वसूल की गई हों जिनकी पंचायती अदालत ने सुनवाई की हो और जिनका उसने फैसला किया हो, प्रान्तीय सरकार बराबर अनुपात से उन गांव-सभाओं को दे देगी जो उस पंचायती अदालत के अधिकार-क्षेत्र में हों।

बजट

४०—नियमों के अनुसार हर गाँवसभा के हिसाबों की हर वर्ष जांच की जाएगी।

४१—(१) (क) प्रत्येक गाँव-पंचायत प्रतिवर्ष आगामी वर्ष के लिए, जो हर पहली अप्रैल से प्रारम्भ होगा, अपने आय-व्यय का अनुमानित बजट तैयार करके गांव-सभा की 'खरीफ' फसल की बैठक में प्रस्तुत करेगी।

(ख) प्रत्येक गांव-पंचायत अपनी एक रिपोर्ट तैयार करेगी जिसमें वास्तविक और आनुमानित आय-व्यय का हिसाब उस वर्ष के लिए दिया होगा जो बैठक से पहले गत मार्च की ३१ तारीख को समाप्त हुआ।

(२) गाँवसभा नियत ढंग के अनुसार उस बजट को जो उसके सामने प्रस्तुत किया जाए स्वीकार कर सकती है या उस पर फिर से विचार करने के लिए उसे ऐसे आदेशों के साथ जिनका देना वह उचित समझे, गाँव-पंचायत के पास वापस भेज सकती है और इसी प्रकार वह रिपोर्ट या किसी दूसरे मामले के बारे में सिफारिश प्रस्ताव भी स्वीकार कर सकती है।

(३) यदि बजट फिर से विचार करने के लिए गाँव-पंचायत के पास भेज दिया जाए, जैसा कि ऊपर बताया गया है, तो सभापति गाँव-सभा की एक असाधारण बैठक करेगा जो उक्त वार्षिक बैठक की तारीख से दो सप्ताह के अन्दर होगी और गाँव-पंचायत उक्त बैठक में उस बजट को ऐसे संशोधनों के साथ, जो सभा के आदेशों के अनुसार आवश्यक हों, फिर से प्रस्तुत करेगी और तब गाँव-सभा नियत ढंग के अनुसार बजट की स्वीकृत करेगी।

इस संबन्ध में बनाए हुए नियमों के अधीन बजट नियत अधिकारी की स्वीकृति के बाद कार्यान्वित होगा और कोई गाँव-पंचायत नियत अधिकारी की स्वीकृति के बजट में परिवर्तन या संशोधन किए बिना बजट की किसी मद में उस रकम से अधिक खर्च कर सकती है, जो उस मद में स्वीकृत की गई हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४९]

पंचायती अदालत का क्षेत्र

४२—प्रान्तीय सरकार या नियत अधिकारी जिले को ऐसे क्षेत्रों में बांटेगा जिनमें गाँव सभाओं की अधिकार-सीमा के अधीन उतने स्थानीय क्षेत्र सम्मिलित हों जितने उसकी राय में आवश्यक हों और प्रत्येक ऐसे क्षेत्र के लिए एक पंचायती अदालत स्थापित करेगी या करेगा।

पर शर्त यह है कि हर इलाके में गांव-सभाओं के क्षेत्र जहाँ तक संभव हो, एक दूसरे से मिले हुए हों।

पंचायती अदालत का विधान

४३—किसी क्षेत्र की प्रत्येक गाँव-सभा उक्त क्षेत्र की पंचायती अदालत में पंचों की हैसियत से काम करने के लिए नियत योग्यता रखनेवाले पांच ऐसे प्रौढ़ चुनेगी जो अस्थायी रूप से उसके अधिकार-क्षेत्र के भीतर रहने-वाले हों। इसी क्षेत्र के सारे गाँव-सभाओं के इस प्रकार चुने हुए पंचों का पंचमंडल होगा।

सरपंच का चुनाव

४४—धारा ४३ के अधीन चुने हुए सब पंच पंचा-यती अदालत के सरपंच का काम करने के लिए अपने में से एक ऐसा व्यक्ति चुनेंगे जो कार्यवाहियों को लिखने की योग्यता रखता हो।

पर शर्त यह है कि ऐसे चुनाव से पैदा होनेवाला कोई झगड़ा (निर्णय के लिए) उस नियत अधिकारी को सुपुर्द किया जाएगा जिसका निर्णय अन्तिम होगा और जिस पर किसी कानूनी अदालत में आपत्ति न की जा सकेगी।

पंचायती अदालत की अवधि

४५—प्रत्येक पंच अपने चुनाव की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए होगा।

पदग्रहण की शपथ

४६—धारा ४३ के अधीन चुने हुए प्रत्येक पंच को, चुने जाने के बाद जितनी जल्दी संभव हो, नियत ढंग के अनुसार पदग्रहण की शपथ लेनी पड़ेगी।

इस्तीफे

४७—कोई पंच अपने ओहदे का इस्तीफा नियत अधिकारी को दे सकता है।

अलग किया जाना

४८—(१) नियत अधिकारी नियत ढंग के अनुसार नियत किए हुए कारणों के आधार पर किसी भी समय अलग कर सकता है।

(२) किसी पंच को जिसे उपधारा (१) के अधीन अलग किया गया हो, ३ साल तक दुबारा पंच चुने जाने का अधिकार न होगा।

४९—(१) सरपंच प्रत्येक मुकदमे, नालिश या कार-रवाई के लिए पंच मंडल (पैनेल) में से पांचों का एक बेंच नियुक्त करेगा, पर शर्त यह है कि बेंच में कम-से-कम एक पंच ऐसा व्यक्ति होगा जो सहायकों और काररवाइयों को लिखने की योग्यता रखता हो।

(२) प्रत्येक ऐसी बेंच में एक पंच ऐसा होगा जो गाँव-सभा के उस इलाके का रहनेवाला हो जिसमें वह व्यक्ति रहा हो जो किसी नालिश या कानूनी काररवाई में मुद्दई हो या कि मुकद्दमे में मुस्तगीस हो और इसी तरह एक पंच ऐसा होगा जो गांव-सभा के उस क्षेत्र में रहता हो और तीन पंच ऐसे होंगे जो गाँव-सभा के उन क्षेत्रों में रहनेवाले हों जिनमें दोनों फरीकों में से कोई न रहता हो, जहाँ अपराध किया गया हो और एक पंच गांव-सभा के उस क्षेत्र का रहनेवाला होगा जिसमें अभियुक्त रहता हो और तीन पंच उन क्षेत्रों के रहनेवाले होंगे जो ऊपर बताये गए क्षेत्रों के अलावा दूसरी जगह रहते हों।

(३) कोई पञ्च या सरपंच किसी ऐसी नालिस, मुकद्दमे या काररवाई में भाग नहीं लेगा, जिसमें वह या उसका निकट संबंधी या मालिक या नौकर या रोजगार में उसका साझी एक पक्ष में हो या जिसमें उनमें से किसी का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ हो।

(४) इस धारा की शर्तों के होते हुए भी प्रान्तीय सरकार किसी झगड़े का निर्णय करने के लिए, जो विभिन्न पक्षों या भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की गाँव-सभाओं के बीच में पैदा हो, या किसी अन्य प्रयोजन के लिए नियमों के अनु-सार खास बेंचों का विधान नियत कर सकती है।

इत्तिफाकिया खाली होनेवाली जगहों का भरा जाना

५०—यदि किसी पंच की जगह उसकी मृत्यु हो जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके अलग किए जाने या इस्तीफा दे देने के कारण खाली हो तो वह जगह धारा ४६ में दिए हुए ढंग के अनुसार भरी जाएगी और यदि जगह खाली करनेवाला पंच सरपंच हो तो धारा ४७ के अनुसार एक सरपंच चुना जाएगा।

५१—(१) दण्डविधि-संग्रह सन् १८१८ ई० में किसी बात के होते हुए भी इस ऐक्ट के अधीन दायर किया हुआ प्रत्येक मुकद्दमा उस क्षेत्र की पंचायती अदालत के सामने दायर किया जाएगा जिसमें अपराध किया गया हो।

(२) दीवानी-नियमसंग्रह सन् १९०८ ई० में भले ही कोई बात हो, इस ऐक्ट के अधीन दायर किया हुआ प्रत्येक मुकद्दमा उस क्षेत्र की पंचायती अदालत के सामने दायर किया जाएगा जिसमें मुद्दाअलेह या यदि एक से अधिक मुद्दाअलेह हों तो उनमें से कोई एक मुद्दाअलेह साधारणतया रहता हो या मुकद्दम दायर करने के समय वहाँ कारबार करता हो, भले ही उसके कार्य का कारण कहीं पैदा हुआ हो।

(३) ऐक्ट मालगुजारी संयुक्त प्रान्त सन् १९०१ ई० में भले ही कई बात हो, तहसीलदार धारा ७० के अधीन प्रत्येक कार्रवाई को उस स्थानीय क्षेत्र की पंचायती अदालत के सुपुर्द करेगा जिसमें संबंधित आराजी स्थित हो और पंचायती अदालत ऐसी कार्रवाइयों का नियत ढंग से फैसला करेगी।

पर शर्त यह है कि जहाँ एक से अधिक पंचायती अदालतों के स्थानीय क्षेत्र सम्मिलित आराजी से संबंधित हों वहाँ वह उस पंचायती अदालत की अधिकार-सीमा में होगी, जिसमें दर्ज किया हुआ असामी या मालिक साधारणतया रहता हो, या यदि वह उनमें से किसी में न रहता हो तो तहसीलदार उन कार्रवाइयों को उस क्षेत्र की पंचायती अदालत के सुपुर्द करेगा जिसमें आराजी का अधिक भाग स्थित हो।

५२—(१) नीचे दी हुई धाराओं के अधीन यदि अपराध किसी पंचायती अदालत की अधिकारसीमा में किया जाए तो उनकी और साथ-साथ ऐसे अपराधों के करने के लिए जो प्रोत्साहन दिए जाएँ या उनके करने के लिए जो प्रयत्न किए जाएँ तो उनकी सुनवाई का अधिकार ऐसी पंचायती अदालत को होगा—

(क) भारतीय दंडविधान, सन् १८६० ई० की धाराएं १४०, १६०, १७२, १७४, २७७, २७९, २८३, २८५, २८६, २८९, २९०, २९४, ३२३, ३३४, ३३५, ३४१, ३५२, ३५६, ३५७, ३५८, ३७४, ३७९, ४०३, ४११ (जब कि चोरी या गबन किए हुए माल का जहाँ तक कि धारा ३७९, ४०३ और ४११ का संबंध है, मूल्य ५० रुपया से अधिक न हो) ४२६, ४२८, ४३०, ४४७, ४४८, ५०४, ५०६, ५०९, ५९९ और ५१०।

(ख) जानवरों के अनधिकार प्रवेश ऐक्ट, सन् १८७१ ई० की धारा २० से २४ तक;

(ग) संयुक्त प्राँत की डिस्ट्रिक्ट बोर्डों की प्रारंभिक शिक्षा के ऐक्ट, सन् १९२६ ई० की धारा १० की उप-धारा (१);

(घ) इस ऐक्ट या इस ऐक्ट के अधीन बनाए गए किसी नियम के अधीन कोई अपराध;

(ङ) आम मजमे में [मारबाजी (सार्वजनिक रूप से जुआ खेलने) के ऐक्ट, सन् १८६७ ई० की धारा ३, ४ और ७ के अधीन कोई अपराध;

(च) प्रांतीय सरकार-द्वारा घोषित किए गए किसी दूसरे कानून के अधीन कोई दूसरा अपराध, जिसकी सुनवाई का अधिकार किसी पंचायत अदालत को हो;

(२) कोई मुकद्दमा जिसका सम्बन्ध भारतीय दंड-विधान, सन् १८६० ई० की धारा १४३, १४५, ५१, या १५ के अधीन किसी अपराध से हो और जो किसी अदालत में विचाराधीन हो, सुनवाई के लिए पंचायती अदालत को भेजा जा सकता है, यदि ऐसी अदालत की राय में अपराध गंभीर न हो।

शांति बनाए रखने के लिए जमानत

५३—(१) जब किसी पंचायती अदालत के सरपंच के पास यह विश्वास करने का कारण हो कि किसी व्यक्ति की ओर से शांति भंग किए जाने या सार्वजनिक शांति में बाधा डालने की आशंका है तो वह ऐसे व्यक्ति से जवाब तलब कर सकता है कि वह कारण बताए कि क्यों न उससे ऐसी अवधि तक के वास्ते शान्ति बनाए रखने के लिए जो १५ दिन से अधिक की न हो, ऐसा मुचालका ले लिया जाए जो १०० रुपए से अधिक का न हो और जो जामिनों सहित या जामिनों के बिना हो सकता है।

(२) सरपंच को मान्य होगा कि ऐसी नोटिस जारी करने के बाद तीन दिन के भीतर एक बेंच कायम करे कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४६]

वह मामले की कारवाई करे, पर शर्त यह है कि बेंच का कम-से-कम एक पंच उस गाँव-सभा का हो जिसमें ऐसा व्यक्ति रहता हो।

बेंच को अधिकार है कि उस आज्ञा को बहाल रखे या ऐसे व्यक्ति या ऐसे गवाहों का बयान सुनने के बाद जिन्हें वह पेश करना चाहें, नोटिस को मंसूख कर दे।

दंड

५४—(१) कोई पंचायती अदालत कारावास का दंड नहीं दे सकती।

(२) कोई पंचायती अदालत जुर्माना कर सकती है जो १०० रुपये से अधिक न होगा लेकिन वह जुर्माना न अदा किए जाने की दशा में कारावास का दंड नहीं दे सकती।

नालिशों की सुनवाई, इत्यादि

५५—कोई अदालत किसी दावे या नालिश की सुनवाई न करेगी जो इस ऐक्ट के अधीन पंचायती अदालत के सुनने के काबिल हो जब तक कि धारा ८५ के अधीन सब-डिविजनल मैजिस्ट्रेट या मुंसिफ ने कोई आज्ञा न दी हो।

कुछ सूरतों में फौजदारी की कारवाइयों को पंचायती अदालत में भेजना

५६—यदि फौजदारी के किसी मुकद्दमें के बीच में, जो किसी मैजिस्ट्रेट के सामने पेश हो, किसी समय भी यह मालूम हो कि इस मुकद्दमे की सुनवाई किसी पंचायती अदालत को करना चाहिए तो वह उस मुकद्दमे को तुरन्त ही उस पंचायती अदालत के पास भेज देगा जो मुकद्दमे की सुनवाई आरम्भ से करेगी।

इस्तगासों को सरकारी तौर पर खारिज करना

५७—पंचायती अदालत किसी भी इस्तगासे को खारिज कर सकती है यदि मुस्तगीस का बयान और ऐसी गवाही जिसे वह पेश करे, लेने के बाद उसको इस बात का विश्वास हो जाए कि वह इस्तगासा परेशान करने के लिए दायर किया गया है या निरर्थक और झूठा है।

इस्तगासे का वापस करना

५८—यदि पंचायती अदालत को किसी समय भी यह मालूम हो—

(क) कि उसको उस मुकद्दमें की सुनवाई का अधिकार नहीं है जो उसके सामने पेश है या

(ख) कि वह अपराध ऐसा है जिसके सम्बन्ध में वह उचित दंड नहीं दे सकती या

(ग) कि वह मुकद्दमा इस तरह का है या इतना पेचीदा है कि उसकी सुनवाई किसी बाजाब्ता अदालत को करनी चाहिए तो वह उस मुस्तगीस को वह इस्तगासा वापस कर देगी और इस बात का आदेश करेगी कि वह उसको ऐसे सब-डिविजनल मैजिस्ट्रेट के सामने पेश करे जिसे ऐसे मुकद्दमे की सुनवाई का अधिकार हो।

कुछ ऐसे व्यक्ति जिनके विरुद्ध मुकद्दमों की सुनवाई पंचायत नहीं कर सकती

५९—कोई पंचायती अदालत किसी ऐसे अपराध की सुनवाई नहीं करेगी जिसमें कि मुलजिम (अभियुक्त) को—

(क) पहिले कभी किसी अपराध के लिए तीन वर्ष या उससे अधिक का या दोनों में किसी भी प्रकार के कारावास का दण्ड दिया गया हो।

(ख) पहिले कभी किसी पंचायती अदालत से चोरी के अपराध में जुर्माने का दण्ड दिया गया हो या।

(ग) मुलजिम जरायम पेशा जातियों के ऐक्ट, सन १९११ ई० की धारा ४ के अधीन जरायम पेशा जाति का रजिस्टर्ड मेम्बर हो; या

(घ) (दण्ड विधि-संग्रह) जाब्ता फौजदारी सन् १८९८ ई० की धारा १०९ या ११० के अधीन अच्छा चालचलन रखने के लिए उसका मुचलका हो चुका हो, या

(ङ) जुआ खेलने के अपराध में सजा मिली हो।

मुस्तगीसों को मुआवजा

६०—जुर्माने का दंड देने की दशा में पंचायती अदालत यह आज्ञा दे सकती है कि जुर्माने से वसूल की हुई रकम का कोई भाग या पूरी रकम—

(क) उन खर्चों को पूरा करने के लिए काम में लाई जाए जो मुस्तगीस ने उचित रूप से मुकद्दमे में खर्च किया हो, और

(ख) किसी ऐसे माली नुकसान या क्षति की पूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मुआवजे) में दी जाए जो अपराध किए जाने के कारण हुई हो।

मुलजिम (अभियुक्त) को मुआविजा

६१--यदि तहकीकात के बाद किसी पंचायती अदालत को इस बात का विश्वास हो जाए कि उसके सामने केवल परेशान करने के लिए निरर्थक और झूठा मुकद्दमा पेश किया गया था तो वह उस मुस्तगीस को यह आज्ञा दे सकती है कि मलजिम (अभियुक्त) को ऐसा मुआविजा अदा करे जो पाँच रुपए से अधिक न हो; जैसा कि वह उचित समझे।

मुजरिमों (अपराधियों) को आजमाइश पर रिहा करना

६२--पंचायती अदालत संयुक्त प्रांत के 'फर्स्ट आफिण्डर्स प्रोबेशन ऐक्ट' सन् १९३८ ई०. की धारा ४ के अधीन अधिकारों को काम में ला सकती है।

मजिस्ट्रेटों के भेजे हुए मुकद्दमों की तहकीकात

६३—जाब्ता फौजदारी (दंड-विधान संग्रह) सन् १८९८ ई० की धारा २०२ के अधीन कोई मैजिस्ट्रेट यह आदेश दे सकता है कि पंचायती अदालत किसी ऐसे मुकद्दमे में जिसमें कि अपराध उस पंचायती अदालत के अधिकारक्षेत्र में हुआ हो, तहकीकात करे और पंचायती अदालत का यह कर्त्तव्य होगा कि वह उस मुकद्दमे की तहकीकात करे और अपनी रिपोर्ट उक्त मैजिस्ट्रेट के पास भेज दे।

अधिकार-सीमा

६४--यदि नालिश की मालियत १०० रु० से अधिक न हो तो पंचायती अदालत नीचे दी हुई किसी भी नालिश की सुनवाई कर सकती है:—

(क) उस मुआहिदा के अतरिक्त जो अचल सम्पत्ति (गैरमनकूला जायदाद) के बारे में हो, उस रकम की हर एक नालिश जो किसी मुआहिदा पर वाजिबुलअदा हो,

(ख) किसी चल सम्पत्ति (मनकूला जायदाद) या उसकी कीमत की वापसी के लिए नालिश;

(ग) किसी चल सम्पत्ति के नाजायज तौर पर ले लेने या उसकी नुकसान पहुँचाने के मुआवजे के लिए नालिश और

(१) उस क्षति के लिए नालिश जो जानबूझ कर अनधिकार प्रवेश के कारण हुई हो।

(२) प्रांतीय सरकार या नियत अधिकारी सरकारी गजट में सूचना देकर यह आदेश दे सकती है कि किसी भी पंचायती अदालत को ऐसी कुल नालिशों की सुनवाई का अधिकार होगा जिनकी व्याख्या सूचना में कर दी गई हो और जो ५०० रु० से अधिक मालियत की न हों।

फरीकों (पक्षों) की रजामंदी से अधिकार-सीमा का विस्तार

६५--किसी नालिश के फरीक एक लिखित राजीनामा-द्वारा धारा ८२ में दी हुई व्याख्या की हुई किसी भी नालिश को इस बात का विचार किए बिना कि उसकी मालियत क्या है, निर्णय के लिए पंचायती अदालत के सामने पेश कर सकते हैं और निर्धारित नियमों की पाबंदी के साथ पंचायती अदालत को इस ऐक्ट के अधीन उक्त नालिश में कार्यवाही करने और उसका फैसला करने का अधिकार होगा।

नालिश जो पंचायती अदालत की अधिकार-सीमा से बाहर होगी

६६---पंचायती अदालत को नीचे दी हुई किसी भी नालिश की सुनवाई करने का अधिकार न होगा—

(१) कोई नालिश शरीकदारी के हिसाब के बकाया के सम्बन्ध में, जब तक कि उस बकाया को फरीकों या उनके ऐजेंटों ने खारिज न कर दिया हो;

(२) किसी गैर-वसीयती जायदाद में किसी हिस्से या हिस्से के किसी भाग के लिए नालिश या किसी वसीयतनामे के अधीन किसी हिबा बिल बसीयत या उसके किसी भाग के बारे में नालिश;

(३) कोई नालिश जो श्रीमान् सम्राट् या किसी जन-सेवक के विरुद्ध या उनकी ओर से उन कामों के बारे में की जाए जो उन्होंने सरकारी कर्त्तव्यों को करने में किए हों;

(४) कोई नालिश जो कोई नाबालिग (अल्पवयस्क), या कोई ऐसा व्यक्ति जिसका दिमाग खराब हो दायर करे या उसकी ओर से दायर की जाए;

(५) कोई नालिश जिसकी सुनवाई संयुक्त प्रांत के ऐक्ट कब्जा आराजी, सन् १९३९ ई० के अधीन कोई अदालत माल कर सके।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रकाशक और मुद्रक—के० मित्तर, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौन्दर्य की कुंजी

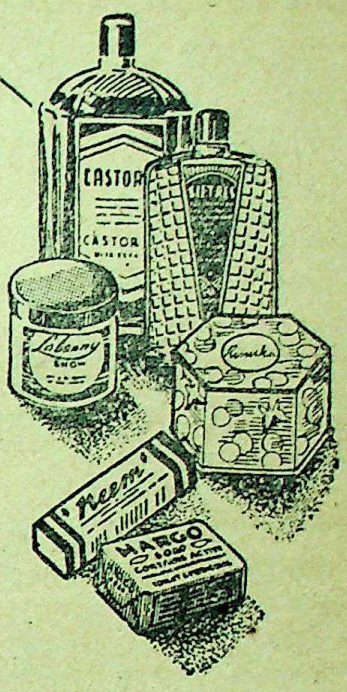

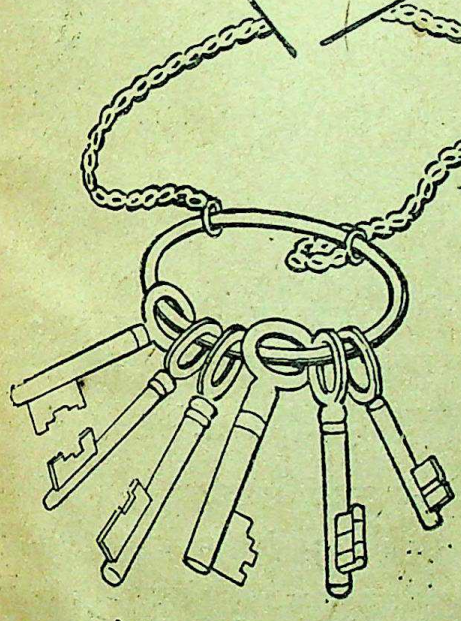

यह सच ही कहा गया है कि सुन्दर स्त्री सबसे अनुपम दर्शनीय सृष्टि है। प्रत्येक स्त्री का स्वयं अपने और समाज के प्रति यह कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक सुन्दर दिखाई दे, और शारीरिक सौंदर्य की विलक्षणताओं को खोलने की चाभियाँ हैं **'कलकेमिको'** की वे बेजोड़ वस्तुएँ, जो आपको सुन्दर, लहराते हुए, सिल्क की तरह मुलायम केश और साफ-चिकनी त्वचा तथा गुलाब की कली जैसा कोमल और मनोरम वर्ण प्रदान करती हैं!

साथ ही वे बनी भी भारतवर्ष की हैं

मार्गो सोप
नीम टूथ पेस्ट
सिलट्रेस श्याम्पू
कैस्टोरल केश तैल
लावणि स्नो और **क्रीम**
रेणुका टायलेट पाउडार

दि कलकटा केमिकल कं० लि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दना

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

हिन्दी की प्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा के गीत और कविताएँ बहुत लोकप्रिय हैं। इस संग्रह में श्रीमती जी की ५२ सर्वोत्कृष्ट, मधुर तथा मर्मस्पर्शी कविताएँ संगृहीत हैं। पुस्तक की भूमिका हिन्दी के सिद्धहस्त कवि पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने लिखी है। आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक और छपाई-सफाई नयन-मनोहर है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का २) दो रुपये।

हिन्दी-साहित्य

प्रणेता, रा० ब० डाक्टर श्यामसुन्दरदास

यह हिन्दी-साहित्य का परिवर्द्धित संस्करण है। कवियों के विषय में जो नये अनुसन्धान हुए हैं उन सबका समावेश इसमें किया गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी के पास होनी चाहिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

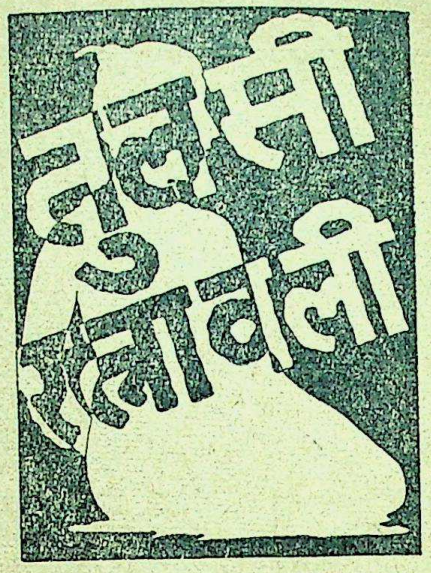
तुलसी रत्नावली

गोस्वामी तुलसीदासजी के विचार उनके बारह-तेरह छोटे-बड़े ग्रन्थों में बिखरे पड़े हैं। उनका संकलन इस रत्नावली में प्रिंसपल केदारनाथजी अग्रवाल एम० ए० ने बड़े परिश्रम से किया है। एक पुस्तक ही अनेक ग्रन्थों का काम देगी। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

छप गया!

सचित्र महाभारत

रचयिता आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी

यह विशाल महाभारत पुराण का सार है। इसमें महाभारत के सभी महत्त्व के अंश आ गये हैं। सारी प्रधान घटनाएँ इसमें हैं। बोलचाल की सीधी सादी भाषा है जिसे बालक, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी, आसानी से, समझ सकते हैं। कथानक भाग बहुत ही रोचक है। पुस्तक बड़े आकार में, अच्छे कागज पर, सफाई से छापी गई है। पूरे पृष्ठ के सादे और रंगीन चित्र हैं। अच्छी जिल्द है। मूल्य केवल ६) छः रुपये।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग,

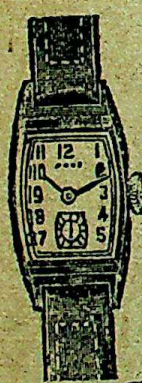

उच्च श्रेणी की कलाई घड़ियाँ

स्विस निर्मित-आठ वर्ष की गारण्टी-क्रोमियम केस-गोलाकृति मय चार ज्वेल में मूल्य १२); सर्वोत्तम मूल्य १४); सेण्टर सेकिन्ड—१५); लेडी साइज २०); क्रोमियम केस-चतुर्भुजाकार मय छः ज्वेल के मूल्य १८); सर्वोत्तम मूल्य २०); रोल्ड गोल्ड मूल्य १५); सर्वोत्तम २७); १५ ज्वेल क्रीम फ्लाट २९); सर्वोत्तम ३२); अलार्म टाइमपीस १४); सर्वोत्तम १५); जेब घड़ी ८॥) पैकिंग तथा डाक-खर्च ॥।=)

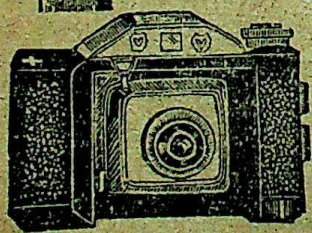

अमेरिकन बक्स तथा फोल्डिंग कैमरा

CII X—de-Luke (U. S. A.) निर्मित कैमरा को लेकर नौसिखुए भी नं० १२७ के रोल फिल्म पर १६ विभिन्न पोजों की फोटो खींच कर ५) रोज आसानी से कमा सकते हैं। फोटो खींचने के आदेश सहित मय एक पूरी रोल फिल्म का दाम १७); सर्वोत्तम १९); फोल्डिंग कैमरा ६०); सर्वोत्तम ७०) पैकिंग तथा डाक-खर्च १॥)

घरेलू छपाई का जेबी छापाखाना

नाम, पते, पत्र, हेडिंग और प्रोग्राम आदि बहुत ही आसानी और सुन्दर ढंग से अपने ही घर पर इसकी सहायता से छापा जा सकता है। मूल्य नं० १, २); नं० ३); सुपीरियर ३॥); स्पेशल ५); पैकिंग तथा डाक-खर्च ॥।=)

लिखने का पता :—कलकत्ता [illegible] [illegible] पोस्टबक्स नं० १२२०३ कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना तीन रु० तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित कर दे उसको दस हजार रु० मुफ्त इनाम दिया जायगा। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दुबारा, तिबारा फर्मायश आई। बा० ला० मुन्शी रामजी क्लाथ मर्चेंट धर्मशाला ने लिखते हैं कि आपका सोना अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला। यह देखकर बहुत खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस चीज को तैयार करके दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। १२ तोले सोना वापसी डाक से भेज दें। बाद में और भी आर्डर दिया जाएगा। यह सोना कसौटी पर असली सोने का रङ्ग देता है, असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है, हर किस्म के जेवरात बनाए जा सकते हैं, जिनको होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहचान सकता है। मशहूरी करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु० तीन तोला का मूल्य केवल ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला २८) रु०।

जरूरी नोट—हर तीन तोला के खरीदार को २ बम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त दी जाएगी, ६ तोला के खरीदार को २ बम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी काँटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोले के खरीदार को एक लाकट बिमय चैन, दो जोड़ी चूड़ी और दो बम्बे फैशन अँगूठी और डाक खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी, (A. S.)

हल्का नं० २२ अमृतसर

विरहनी बाँसुरी

एकान्त चाहने वाले विरही प्रेमियों की संगिनी कृष्ण की बाँसुरी की आवाज गोपियों को मतवाला बना देती थी, और पीतल की विलायती पाइप से चतुर कारीगरों द्वारा तैयार की हुई हमारी यह बाँसुरी विरह और प्रेम के पंथियों की इच्छा पूर्ण कर रही है। चमकदार पालिश। मू० ३) डा० ख० व पैकिंग ॥।=) अ० आर्डर दें। बाँसुरी शिक्षक मू० ॥=) पोस्टेज ।=)

ग्लोब ट्रेडर्स अलीगढ़

भृगु संहिता

संसार भर के मनुष्यों की जन्म-कुण्डलियों का भूत, भविष्य, वर्तमान तीन जन्म का हाल ज्ञात होगा मूल्य ११) पो० १)

भृगु संहिता कुण्डली खण्ड

पृथ्वी भर के मनुष्यों की जन्म-कुण्डली मिलेगी। नष्ट जन्म पत्र बना लें मूल्य ३) पो० ॥=)

मूक प्रश्न भास्कर—गुप्त प्रश्न बताने का अनूठा ग्रन्थ मू० २) पो० ।-)।

ज्योतिष-रत्न पं० अयोध्याप्रसाद मिश्र, झाँसी नं० ६

१०००० रु० की घड़ियाँ और सुन्दर आभूषण मुफ्त बाँट रहे हैं

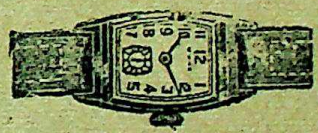

हमारे प्रसिद्ध असली काला तेल नम्बर एक के उपयोग करने से बाल सदा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर ही काले उत्पन्न होते है यह तेल बालों के गिरने को रोकता है—सिर को ठंडक और ताकत देता है जंगली जड़ी-बूटियों से तैयार होता है—मूल्य प्रति शीशी २॥) दो रुपये आठ आने। तीन शीशी पूर्ण कोर्स का मूल्य ६॥) छः रुपये आठ आने। डाक-खर्च माफ। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए प्रति शीशी के ग्राहक को एक फैन्सी म्यूट रिस्टवाच और एक जड़ाऊ अँगूठी एक जोड़ी कान्टा नकली जवाहर जड़ी सोना मिनर्वा न्यू गोल्ड बिलकुल मुफ्त बाँटी जाती है। ना पसन्द होने पर दाम वापस। शीघ्रता करें क्योंकि ऐसा अवसर बारम्बार नहीं आया करता।

दी हिलसन वाच इम्पोर्ट कम्पनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांझ स्त्रियों के लिए

सन्तान पैदा करने का लासानी नुस्खा

मेरी शादी हुए १५ वर्ष बीत चुके थे। इस समय के बीच मैंने सैकड़ों इलाज कराये, लेकिन कोई सन्तान पैदा न हुई। सौभाग्यवश मुझे एक वृद्ध महापुरुष से निम्नलिखित नुस्खा प्राप्त हुआ। मैंने उसे बनाकर सेवन किया। ईश्वर की कृपा से नौ मास बाद मेरी गोद में बालक खेलने लगा। इसके पश्चात् मैंने जिस सन्तानहीन बहन को इसका सेवन कराया उसी की आशा पूरी हुई। अब मैं इस नुसखे को सूचीपत्र द्वारा प्रकाशित कर रही हूँ ताकि मेरी निराश बहनों की आशा पूर्ण हो।

औषधि-तन्त्र ये हैं—असली नैपाली कस्तूरी (जिस पर नैपाल गवर्नमेंट की मोहर हो), केसर, जायफल, सुपारी दक्खिनी, हर एक साढ़े दस माशे, पुराना गुड़ (जो कम-से-कम दस साल का हो) तेरह मासे, लौंग चार अदद, कटियारी सफेद की जड़ (यानी सत्यानाशी सफेद की जड़) सवा तोला, इन सब औषधियों को खरल में डालकर २४ घंटे तक खरल करें और पानी इतना मिलाव कि गोलियाँ बन सकें, फिर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बना लें। इसके सेवन से गुप्त खराबियाँ दूर हो जाती हैं और बहनें इस लायक हो जाती हैं कि सन्तान पैदा कर सकें।

रीति—गाय के थोड़े गरम दूध में मीठा डालकर प्रातःकाल और सायंकाल एक एक गोली तीन रोज तक सेवन करें। ईश्वर की कृपा से कुछ रोज में ही आशा की झलक दिखाई देने लगेगी।

नोट—औषधि-तन्त्र के अन्दर सफेद फूलवाली सत्यानाशी की जड़ मिलाना आवश्यक है, क्योंकि इसके अन्दर सन्तान पैदा करने के अधिक गुण हैं।

मेरी सन्तानहीन बहनों आप इसे बेगुण औषधि न समझें। यदि आप बच्चे की माता बनना चाहती हैं, तो इसे बनाकर जरूर सेवन करें। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि इसके सेवन से आपकी अभिलाषा अवश्य पूर्ण होगी।

यदि कोई बहन इस औषधि को मेरे हाथ से ही बनवाना चाहें तो मुझे पत्र-द्वारा सूचित करें। मैं उन्हें औषधि तैयार करके भेज दूँगी। एक बहन की औषधि पर पाँच रुपये बारह आने, दो बहनों की औषधि पर नौ रुपये आठ आने और तीन बहनों की औषधि पर तेरह रुपये चार आने खर्च आते हैं। महसूल डाक वगैरह बारह आने इससे अलग हैं।

नोट—जिस बहन को मेरे पर विश्वास न हो वे मुझे दवा के लिए हरगिज न लिखें।

पता—श्रीमती सतबाई जैन (३०) सदर बाजार, थाना रोड, देहली

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०,००० रुपये की असली घड़ियाँ मुफ्त इनाम

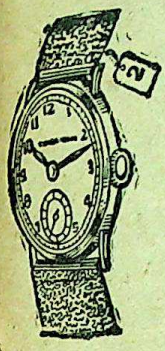

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, उनको लम्बे घूँघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न उगते हों वहाँ फिर से पैदा करता है। आँखों की रोशनी को तेज करता है। दिमाग को ठन्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। दिमागी काम करनेवालों के लिए अक्सीर है। शौकीनों के लिए उमदा तोहफा है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी प्रत्येक शीशी के ग्राहक को एक अँगूठी सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और एक असली अमरीकन रिस्टवाच जिसकी गारण्टी १२ साल है मुफ्त देती है।

नोट—तीन शीशी के खरीदार को छः अँगूठियाँ सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और तीन अमरीकन रिस्ट घड़ियाँ मुफ्त इनाम दी जाती हैं। आज ही आर्डर भिजवाएँ क्योंकि यह अवसर केवल चन्द दिनों के लिए है। नापसन्द होने पर कीमत वापस की गारण्टी।

संन्यासी आयुर्वेदिक फारमेसी, (S. A.)
हलका नं० २२, अमृतसर

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगाएँ।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

५००) रु० मासिक पैदा करें

थोड़े अँगरेजी पढ़े-लिखे भी अवकाश के समय में १००) से ५००) तक आसानी से पैदा कर सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

पता—इंटर नेशनल इन्डस्ट्रीज लि० अलीगढ़

अमेरिकन, इँग्लिश और आई० पी० पी० केमरे

नवीनतम आकार-प्रकार, शक्तिशाली लेंस, मजबूत और टिकाऊ। सबसे सस्ते और सर्वोत्तम। फोटोग्राफी सीखने का अपूर्व अवसर।

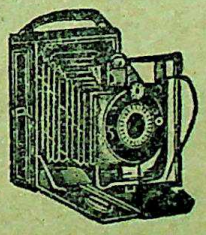

प्रत्येक बार श्रेष्ठ फोटो के साथ-साथ, १००) मासिक सरलता से अर्जित किए जा सकते हैं। कार्य की गारण्टी। $2\frac{1}{8}'' \times 3\frac{1}{8}''$ आकार के फोटो के लिए फिल्म नं० ६२० या १२० का उपयोग किया जाता है।

(१) अमेरिकन—३३), उत्तम ३८), सर्वोत्तम ४३)
(२) इँग्लिश —३०), उत्तम ३५), सर्वोत्तम ४०)
(३) आई० पी० पी०—२२), उत्तम २५), सर्वोत्तम २८)

प्रत्येक केमरा के साथ १२ फिल्म और उपयोग-सम्बन्धी निर्देश मुफ्त दिए जाते हैं। डाकव्यय १॥) अतिरिक्त। सूचीपत्र प्राप्य नहीं हैं।

स्टैण्डर्ड वाच कम्पनी
C/o पोस्ट बक्स नं० ११४१६, कलकत्ता ६ (S)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

कवि अंचल की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता और कल्पना की उड़ान की दृष्टि से ये कविताएँ अनुपम हैं। सजिल्द प्रति का मूल्य ३) तीन रुपये।

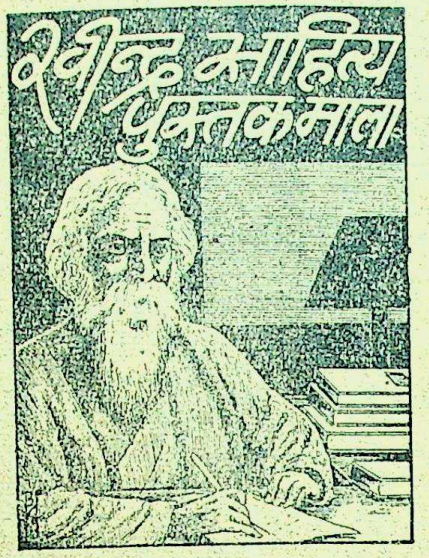

रवीन्द्र-साहित्य पुस्तक-माला के (१) योगायोग, (२) विश्व-परिचय, (३) रूस की चिट्ठी और (४) चार अध्याय का ब्योरा विज्ञापन में अन्यत्र पढ़िए।

शान्त शिष्ट सत्याग्रही प्रताप ने अपने मधुर व्यवहार से विरोधियों को किस प्रकार कट्टर देशभक्त बना दिया और उनको अपना अनुगत बना लिया, इस उपन्यास में पढ़िए। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

किस प्रकार उन्नति करने पर पुण्डरीकाक्ष पूतितुण्ड के साथ राजा बहादुर की बेटी एना का विवाह हो सका, इसका विचित्र वर्णन इस उपन्यास में पढ़िए। सजिल्द प्रति का मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

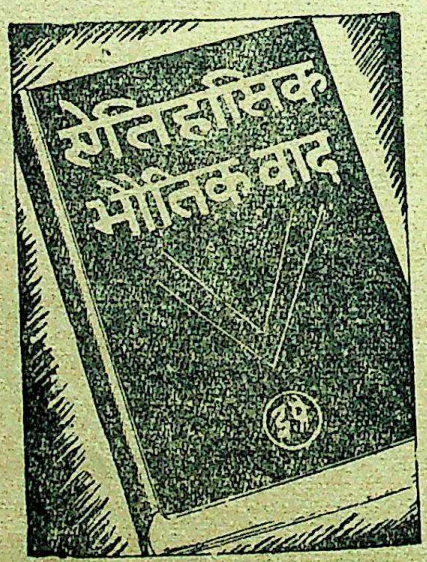

लेखक भूतपूर्व काकोरी कैदी श्री मन्मथनाथ गुप्त और रमेन्द्र वर्मा। समाजवाद के अध्ययन के लिए इसे अवश्य पढ़िए। मार्क्सवाद के दर्शनों में यह सबसे गहन है। एक दर्जन अध्यायों में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मूल्य ६) छः रुपये।

लेखक कुँवर सुरेशसिंह। यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। मनबहलाव के साथ-साथ विविध जानवरों की जानकारी के लिए इसे पढ़िए। १०० से अधिक चित्र। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टीकाकार—रायबहादुर डाक्टर श्यामसुन्दरदास। यह संस्करण अपने ढंग का एक ही है। प्रामाणिक पाठ है। सीधी सरल भाषा में अर्थ है। रंगीन और सादे चित्रों की भरमार है। बढ़िया जिल्द है। मूल्य १२) बारह रुपए।

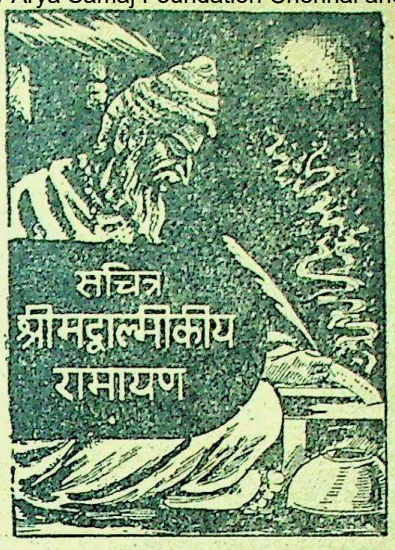

यह आदि-कवि महर्षि वाल्मीकि के प्रसिद्ध ग्रन्थ का हिन्दी रूप है। हिन्दुओं में तो इसका मान है ही, संसार के विद्वानों में भी इसका आदर है। भाषा सुबोध और मनोहर है। दो भागों में ग्रन्थ समाप्त हुआ है। सजिल्द प्रति का प्रत्येक भाग का मूल्य ६॥) छः रुपए आठ आने।

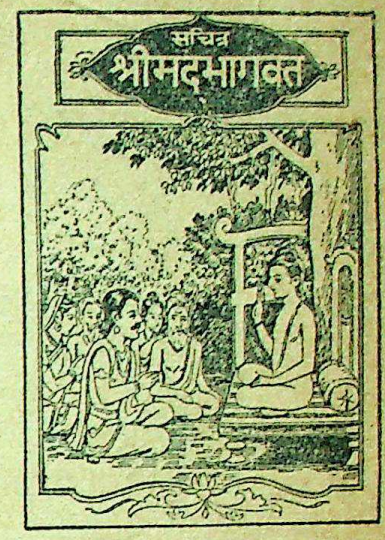

(दो जिल्दों में) महर्षि वेदव्यास के श्रीमद्भागवत का सरल सुबोध भाषा में रूपान्तर। स्त्री, पुरुष, बूढ़े और युवक, सभी के लिए उपयोगी। अच्छे कागज पर बढ़िया छपाई। सैकड़ों सादे और रंगीन चित्रों से युक्त सजिल्द पुस्तक का मूल्य १६) सोलह रुपए।

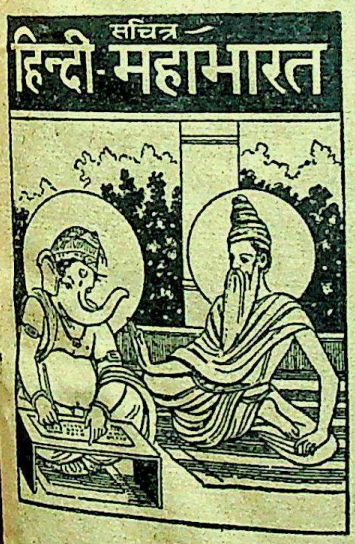

यह व्यास भगवान् के प्रसिद्ध महाभारत का हिन्दी रूप है। सरल भाषा में कठिन विषय समझाया गया है। रंगीन और सादे चित्र मन को मुग्ध कर लेते हैं। पुस्तक १० जिल्दों में पूर्ण हुई है। मूल्य ८०) अस्सी रुपए।

यह प्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव के नये गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अन्तर्द्वन्द्व से पूर्ण है। छपाई सफाई नयनाभिराम। सचित्र सजिल्द प्रति का मूल्य २) दो रुपए।

यह श्री श्यामनारायण पाण्डेय की प्रसिद्ध रचना है। इसमें महाराणा प्रताप के हल्दीघाटीवाले समर का वीरतापूर्ण वर्णन श्रेष्ठ छन्दों में है। सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपए बारह आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

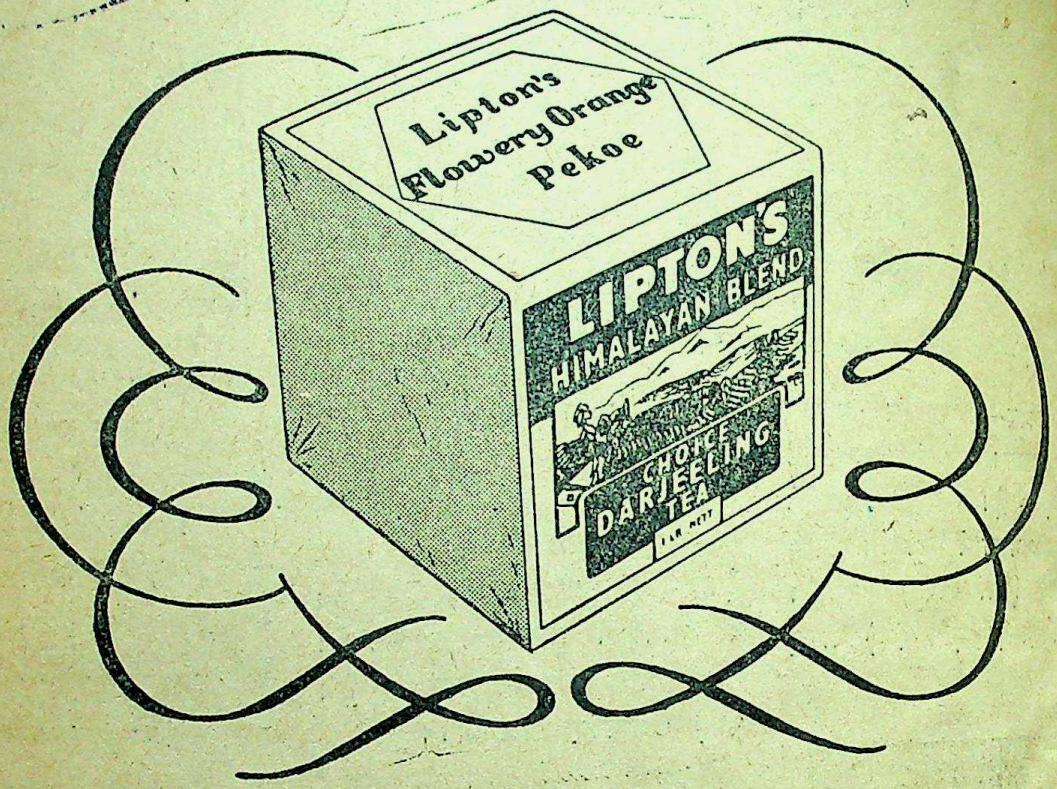

लिपटन

माने

अच्छी चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी नई पुस्तकें

सङ्गति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी जैसी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धाङ्गिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डा० मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र जौहरी कई वर्ष विलायत में रह आया था। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर उसका रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इस रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुए प्रेम पर अधिकार किया। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ की ओर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

पातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। ये कहानियाँ मनोरंजन के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता रायबहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्तर किया है कृतविद्य श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने। इस उपन्यास में विषवृक्ष है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्था में अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का आश्रय पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही गई। फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा हो गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया। उपन्यास की भाषा और कथानक सभी विचित्र है। मूल्य २) दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पण्डित की बेटी थी। उसके विवाह की चिन्ता में माँ-बाप और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में ठहर गये। वहाँ के महन्त अम्बिकाचरण पुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त करने के लिए जाल रचा। अन्त में महन्त का चरण चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और मियाँ का सिर' की कहावत के अनुसार महन्त जी से खासी रकम ऐंठकर और नवदुर्गा को विधि से पत्नी बनाकर चलता हुआ। लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति काशी में लाकर कराई है उससे पाठक विस्मित और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० ब्रजेश्वर वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने एक देहाती लुहार की अल्पवयस्क बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहात से महाराजगंज की रानी पृथाकुंवरि के आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ रानी की कृपा से इस लड़की ने विद्या पढ़ी। फिर इसमें उन गुणों का विकास हुआ जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान पाता है। इसने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और अन्त में कलकत्ता जाकर नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लिखीं, विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँवर की प्रार्थना पर उससे विवाह किया। मूल्य २) दो रुपये।

मिलने का पता—मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं नित्यप्रति कम से कम दो बार चाय पीता हूँ—यह जान डाल देती है। मुझे पता नहीं कि इसने मेरे स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर भी डाला है। सवेरे चाय पीकर मेरा तो दिल खुश हो जाता है और काम शुरू करने की इच्छा होने लगती है

(ह०) डा० मेघनाद साहा

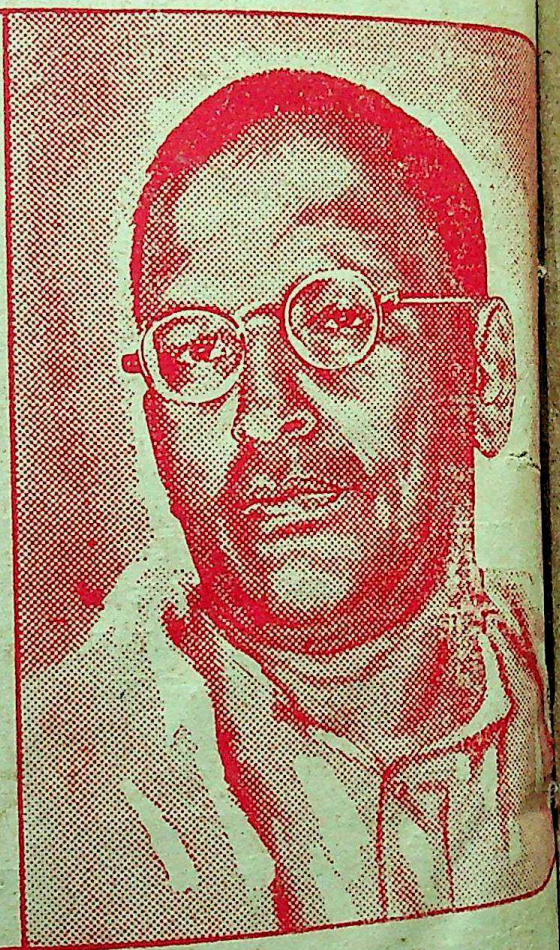

कलकत्ता विश्वविद्यालय के पालित प्रोफेसर और पदार्थ विज्ञान विभाग के सर्वोच्च अधिकारी डाक्टर मेघनाद साहा, डी. एस-सी., एफ. आर. एस. भारत के सर्वोच्च विज्ञान वेत्ताओं में से हैं। पदार्थ विज्ञान में परमाणु केन्द्र सम्बन्धी खोज के कारण ही वे संसार भर में विख्यात हैं। खास कर नक्षत्रों के वर्ण विश्लेषण पर उनके सिद्धान्तों के कारण ही रॉयल सोसाइटी की सदस्यता ने उन्हें वरण किया। रसियन ऐकेडेमी ऑफ साइन्सेज के २२० वें वार्षिकोत्सव में जो १९४५ ई० में हुआ था उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

प्रेरणादायक

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri